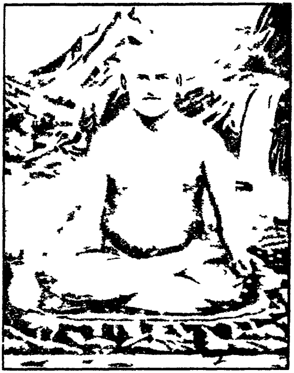
ऋग्वेद | मई-जून १९३६ | ओ३म् | Reg. No L 2121 | यजुर्वेद

सार्वदेशिक



वार्षिक मूल्य २) सम्पादक—ला० देशबन्धु विदेश से ५ शि ग

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का ।)

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय रावी रोड लाहौर

(लेखक—श्री लाला बोसा राम जी आनरेरी सेक्रेटरी)

मास अप्रैल के अन्त में ९७ लड़के और ३१ लड़कियाँ थीं। ५६ लड़के प्राईमरी श्रेणियों में, ३ लड़के मिडिल श्रेणियों में, २ लड़के हाई क्लासों में, ८ लड़के दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय में, ४ लड़के दस्तकारी स्कूल में, १ लड़का प० ठाकुर दत्त Charitable Industries में, १५ लड़के दर्जी क्लास में ८ लड़के अभी छोटे हैं प्रात व सायं १० लड़कों को हारमोनियम सिखाया जाता है। लड़कियों को शिक्षा देने के अतिरिक्त सीना परोना और घर का काम काज सिखाया जाता है।

यह अनाथालय एक रजिस्टर्ड बाडी के आधीन है। जिस के प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज हैं। यहा पर बच्चों को शिक्षा के अलावा दस्तकारी सिखाई जाती है ताकि वे अपनी आजीविका कमा सकें।

इस अनाथालय में हर प्रकार के बच्चे लिये जाते हैं चाहे वह आर्य जाति के किसी भी फिरके के बच्चे न हों, अलावा और बच्चों के आज कल ६ मास का एक बच्चा आया हुआ है। जिस की माता गुज़र चुकी है और पिता उसका पालन नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त अब सरकार हमारे पास वह बालक भेजने लग पड़ी है जो कुछ समय से गुम थे। जिन की खोज के लिये सर. कौर बहादुर ने प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया है। १० वर्ष से १८ वर्ष तक की १६ लड़कियाँ और ५ लड़के आ चुके हैं और ५० बालकों के आने की आशा है। यह बालक अपने बालकपन से चुराये गये थे और यह अपने पते भी नहीं बता सकते। इनके लिये भी मकान की आवश्यकता है। दानी महाशय इस तरफ भी ध्यान दें।

जिन भाइयों ने इस मास सहायता दी है उन का धन्यवाद करते हैं। अनाथालय में मकान की कमी है। दो कमरे ये बनाने शुरू किये थे, वह दानियों की कृपा से बन कर काम में लाये जा रहे हैं अब एक ऐसा कमरा चाहिये जिस में विशेष रोगियों को आवश्यकता पड़ने पर पृथक् रखा जा सके, तथा दूसरा कमरा कार्यालय और तीसरा औषधियों के लिये चाहिये। दानी महाशय इस ओर ध्यान देवें तो यह पुण्य का काम सफल हो जायगा। दानवीरों से प्रार्थना है कि यथा शक्ति सहायता करें। बच्चों के खेलने के लिये कोई ग्राउण्ड नहीं है। इस के अतिरिक्त आटा, दाल, घी, वस्त्र, दरिया चादर, जूतियां, बर्तन और अन्य अख़राजात के लिये नकदी की ज़रूरत है जो भाई जितनी सहायता कर सके हर्ष पूर्वक स्वीकार होगी। अनाथालय की सालाना रिपोर्ट मुफ्त मंगा कर पढ़ें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १०	ज्येष्ठ-आषाढ़ १९९३ मई जून १९३६ ई०]	[दयानन्दाब्द ११२	अंक ३-४

वेद की शिक्षाएँ

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

ऋ० म० १० सू० १२९, म० ७॥

भावार्थ—हे (अङ्ग) मनुष्य! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलय कर्ता है, जो इस जगत् का स्वामी, जिस व्यापक में यह सब जगत् उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा है। उसको तू जान और दूसरे को सृष्टि कर्ता मत मान।

सम्पादकीय—

वेद-भाष्य

वेद भाष्य के सम्बन्ध में दो बातें विशेष रूप से हमारा ध्यान आकर्षित कर रही हैं। उनमें से एक यह है कि वेद-भाष्य का रूप क्या हो तथा दूसरी यह कि इस कार्य्य को अन्तिम रूप कौन दे ?

वेद-भाष्य के रूप के सम्बन्ध में विभिन्न सम्मतियां प्रकाश में आई हैं और इस समय भी आ रही हैं। उनमें से एक सम्मति यह है कि चारों वेदों का नए सिरे से भाष्य हो और पहले वेदों का सरल, सुबोध्य और जन-साधारण के समझने योग्य भाषा में हिन्दी अनुवाद किया जाय उस अनुवाद के आधार पर वेदों का अन्य देशीय तथा विदेशीय भाषाओं यथा अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच इत्यादि भाषाओं में अनुवाद किया जाय जिससे वेद न केवल भारत में ही वरन् भारत से बाहर भी अधिक से अधिक लोक-प्रिय हों। इस कार्य्य के हो जाने के बाद साङ्गोपाङ्ग वेद-भाष्य का कार्य्य शुरू किया जाय। श्री स्वामी जी के भाष्य तथा वेदों के अन्य भाष्यों की सहायता से ऐसा अनुवाद तैयार किया जाय जिसमें विद्या की मौलिकता और महत्ता यथासम्भव सुरक्षित रहे और इसके लिए यथा संभव प्रत्येक विज्ञान यथा साइंस इञ्जीनियरिङ्ग, वैद्यक इत्यादि के विशेषज्ञों की पूरी २ सहायता ली जाय।

एक दूसरी सम्मति उपर्युक्त सम्मति से प्रायः मिलती-जुलती सम्मति है। इन दोनों में जो भेद है वह केवल कार्य-पद्धति के सम्बन्ध में है। पहली सम्मति का तात्कालिक लक्ष्य जनसाधारण के लिए सरल हिंदी अनुवाद है। दूसरी का लक्ष्य दोनों काम साथ२ करनेका प्रतीत होता है। तीसरी सम्मति यह है कि ऋषि दयानन्द ने जितना वेद भाष्य कर दिया है उतना भाष्य छोड़कर शेष किया जाय, इसलिये कि यदि उतने भाग का जितनेका ऋषिने भाष्य किया है दुबारा भाष्य किया गया तो वह जहां उसकी तुलना में हीन सिद्ध होगा, समाज के परिश्रम और धन का अपव्यय होगा वहां इस बात की घोषणा होगी कि आर्य समाज को ऋषि का भाष्य मान्य नहीं है। ऐसी सम्मति रखने वालों का समझौतेके तौर पर कहना है कि यदि उस भाग का छुआ जाना अनिवार्य ही हो तो यह किया जावे कि उस भाष्य की पुष्टि में स्वतन्त्र ग्रन्थ लिख दिये जाय और यदि हिंदी अनुवाद करना भी जरूरी ही हो तो स्वामी जी कृत भाष्य का सरल हिंदी अनुवाद कर दिया जाय। इस सम्मति से कतिपय ऐसे लोगों का जिन्होंने ऋषि के भाष्य की छान-बीन की है मत भेद है। ऋषि के भाष्य और उसके अनुवाद से आवश्यकता की पूर्ति हो सकती है, इसमें उनको सन्देह है।

इन तीनों सम्मतियों पर विचार करने से हमें पहली दो सम्मतियां और उनमें भी यह कि वेदों का तत्काल सरल और सुबोध भाषा में अनुवाद कर दिया जाय, ज्यादा अपील करने वाली प्रतीत

होती है इसलिए कि अनुवाद के हो जाने से समय की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति हो जायगी। साङ्गोपाङ्ग भाष्य के लिए मार्ग साफ हो जायगा और जनता और उसकी मांग के प्रति न्याय होगा। इसलिए वेद भाष्य मण्डलों से हमारा निवेदन है कि वे पहले इस कार्य्य को सम्पादित करें बाद को साङ्गोपाङ्ग वेद-भाष्य के कार्य्य को हाथ में लेवें। दोनों कार्य्य साथ २ किए जाने से दोनों के उद्देश्यों की पूर्ति कठिन प्रतीत होती है।

दूसरी बात यह है कि यह कार्य्य किसके तत्वावधान में हो, पृथक् २ उन सभाओं के जिन्होंने इस कार्य के करने की घोषणा की है या उन सब के सम्मिलित तत्वावधान में।

इस सम्बन्ध में भी विभिन्न मत प्रकाश में आए हैं। सबसे प्रबल मत जो इस सम्बन्ध में प्रकाश में आए हैं वह यह है कि यह कार्य्य सार्वदेशिक सभा के आधीन होना चाहिए जिससे इस कार्य्य की प्रामाणिकता की उस पर मुहर अंकित हो जाय और वह सब के लिए ग्राह्य हो। एक मत यह है कि यदि वे सभाएँ सम्मिलित रूप से इस कार्य को न कर सकें तो पृथक् २ किया जाय और जिसने यह कार्य्य शुरू कर दिया है उसे करने दिया जाय और जनता पर उस भाष्य के अच्छा या बुरा होने का निर्णय छोड़ दिया जाय। लोगों की बुद्धि पर ताला न लगाया जाय। जो भाष्य बुद्धि को ज्यादा अपील करने वाला होगा वह स्वत अन्यों की अपेक्षा मान्य होगा। यदि मान्य न सिद्ध हुआ तो वह भाष्य बाद में रोका जा सकता है और उस कार्य्य के साधन दूसरे काममें लगाए जासकते हैं।

इस प्रकार की सम्मतियों पर विचार करने पर हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि इस कार्य पर जैसा कि हम इन स्तम्भों में इससे पूर्व भी प्रकाश डाल चुके हैं अन्तिम मुहर सार्वदेशिक सभा की होनी चाहिए। सार्वदेशिक सभा की मुहर को भी हम स्पष्ट किए देते हैं। सार्वदेशिक सभा की मुहर का हमारी दृष्टि में अभिप्राय सार्वदेशिक सभान्तगत 'धर्मार्थ सभा' की मुहर से है। इस प्रकार के विषयों में सार्वदेशिक सभा की मुहर 'धर्म्मार्थ सभा' की ही मुहर रहती है जैसा कि अन्य कतिपय विषयों के सम्बन्ध में अब तक रही है। इस सम्मति का यह कार्य्य जब शुरू हो चुका है करने दिया जाय और जनता की बुद्धि पर अनुवाद या भाष्य के अच्छा या बुरा होनेका निर्णय छोड़ दिया जाय, हम आदर करते हैं उसी सीमा तक जहा तक हमारी सभा सोसाइटियों के प्रसिद्ध ढीलेपन के प्रति यह असन्तोष को प्रकाश मे लाती है। हम इस सम्मति से इस अश में सहमत नहीं कि अनुवाद या भाष्य की अच्छाई बुराई, प्रामाणिकता, अप्रामाणिकता का निर्णय जन साधारण पर छोड़ दिया जाय इसलिए कि यह बात मनोवैज्ञानिक सचाई के विरुद्ध है। जन-साधारण की बुद्धि यदि इस निर्णय के लिए समथ Competent होती तो विशेषज्ञों द्वारा या सगठित रूप में इस कार्य्य को करने की जरूरत ही न होती। इस सम्मति के अनुकूल कार्य्य करने का परिणाम यह होगा कि इस कार्य्य का उद्देश्य असफल रहेगा और जनता के धन और श्रम का अप व्यय इससे पृथक् रहेगा। ऐसी सम्मति रखने वालों के पास आर्य्य समाज के बाहर के

उन लोगों के सन्तोष के लिए क्या उत्तर होगा, जो यह प्रश्न करेंगे कि हम किस भाष्य को आदर्श समाज का भाष्य मानें, इसे या उसे। आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के भाष्य को, आर्य प्र० सभा युक्त प्रान्त के भाष्य को, प्रादेशिक सभा के भाष्य को, अमुक पण्डित के भाष्य को, अमुक मण्डल के भाष्य को, अमुक शास्त्री जी के भाष्य को या किसको ?

यह प्रश्न है जिसका उत्तर जनता को मिलना चाहिये ?

हमारी सम्मतिमे इस कार्य्य को सार्वदेशिक सभा द्वारा ही अन्तिम रूप दिया जाना चाहिए। तब ही हम उसे आर्य्य समाज का भाष्य कह सकेंगे, परन्तु इस समय अवस्था यह है कि सार्वदेशिक सभाके पास इस कार्य्य के लिये कोई धन नहीं है और पंजाब सभा की शताब्दी अभी समाप्त हुई है पता नहीं उन्हें इस कार्य्य के लिए कितना धन प्राप्त हुआ है और प्रादेशिक सभा या अन्य किसी सभा ने अभी इस कार्य्य को आरम्भ करने की सूचना नहीं दी है और नाहीं जहां तक हमें ज्ञात है पंजाब सभा ने इस समय तक आरम्भ किया है। यदि यह कार्य्य आरम्भ हुआ है तो संयुक्त प्रान्त की सभा द्वारा ही हुआ है।

—×—

आर्य वीर सेवादल का संगठन

आर्य समाज में एक सुसंगठित आदर्श सेवा दल की बड़ी ज़रूरत है यह निर्विवाद बात है।

इस दल के संगठन का कार्य सार्वदेशिक सभा आर्य्य रक्षा समिति के संचालक मान्य श्री ला॰ ज्ञानचन्द जी के द्वारा करा रही है। वे समाजों में दलों के संगठन के लिए दौरा करते रहते हैं। इन दिनों वे संयुक्त प्रान्त के सहारनपुर, मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर और देहरादून में दौरा कर रहे हैं। उन्होंने कई जगहों पर सेवा दलों के लिए भूमि तैय्यार करदी है। १-२ जगहों पर वीर दल स्थापित व पुनर्संगठित भी किए हैं। उनकी शिकायत रही है और है कि आर्य्य समाजें इस कार्य के प्रति उदासीन हैं और उनमें इस कार्य के लिए वह उत्साह नहीं जो उनमे सेवा दलों की बढ़ती हुई आर्य समाजों की मांग के प्रकाश में होना चाहिए। आर्य समाजों की वर्तमान शिथिलता को दृष्टि में रखते हुए इस शिकायत में काफ़ी वज़न देख पड़ता है। इस प्रकार के आदर्श दल के संगठन के लिये ३ बातों की बड़ी ज़रूरत होती है। एक साहित्य, दूसरे पर्याप्त कार्य कर्त्ता और तीसरे अपेक्षित सहयोग। हमारे यहाँ तीनों बातों का अभाव है यह बड़े दुख की बात है। पहले दोनों अभावों के होते हुए भी सभा ने जो कार्य शुरू किया हुआ है उसमें यदि आर्य समाजों का सभा के कार्य कर्त्ताओं को अपेक्षित सहयोग न मिले तो इससे बढ़कर दुख की और क्या बात हो सकती है। यदि यह कार्य मुख्यतया समाजों के अपेक्षित सहयोग के अभाव से बीच में ही सभा को छोड़ देना पड़ जाय या वैसा न हो जैसा होना चाहिए तो आर्य समाज के लिये यह कोई गौरव की बात न होगी। इसलिये आर्य्य समाजों को इस काम में विशेष दिलचस्पी लेकर इस कार्य को पूर्ण कराना चाहिए। हाँ उनके मार्ग में इस दिशा में जो कठिनाइयाँ सभा से सम्बन्ध रखने वाली हों उनका हल सभा से कराना चाहिए।

संस्थाएँ और अर्थसंकट

आज हमारी सभा सोसाइटियों और संस्थाओं का

आर्थिक संकट बहुत भयंकर देख और सुन पड़ता है। शायद ही कोई समाचार पत्र होगा जिसमें किसी न किसी सभा सोसाइटीकी आए दिन धनकी अपील न देख पड़ती हो। शायदही कोई ऐसा बड़ा नगर होगा जिसमें आए दिन धन के लिए डैपुटेशन घूमता हुआ न देख पड़ता हो। शायद ही कोई उदार दानी होगा जिसे आए दिन मांगने वालों से तग न होना पड़ता हो।

आर्थिक सकट पर जब हम विचार करते हैं तो हमें इसके मूल में ३ ४ बातें देख पड़ती हैं। वे इस प्रकार हैं —

(१) अनावश्यक सभा सोसाइटियों और संस्थाओं की बाढ़।

(२) सस्थाओं के नाम पर दुकानदारी।

(३) संस्थाओं मे धन का भयकर दुरुपयोग।

(४) वर्तमान आर्थिक संकट।

(५) सस्थाओं की अनुपयोगिता।

प्राय एक ही कार्य के लिये अनेक अनावश्यक संस्थायें स्थापित हुई हुई हैं। इसका एक परिणाम धन और शक्ति का अवांछनीय विभाजन है। यदि इन संस्थाओं पर खर्च होने वाला धन आवश्यक संस्थाओं पर ख़र्च हो तो अर्थ सकट बड़ी सीमातक कम होजाय।

सस्थाओं के नाम पर दुकानों और उनमें धन के भयकर दुरुपयोग तथा अन्यान्य कुत्सित प्रगतियो ने जहाँ सार्वजनिक आर्थिक पवित्रता तथा सार्वजनिक जीवन को निकृष्ट बना दिया है वहा इन्होंने सस्था वा 'सभा सोसाइटी' शब्द को काफ़ी बदनाम कर दिया है और इनके अभिशापों का फल हमारी वास्तविक संस्थाओं को भी भुगतना पड़ रहा है। उनमें एक फल आर्थिक संकट है। आवश्यकता इस बात की है कि सार्वजनिक जीवन को और सार्वजनिक आर्थिक पवित्रता को शुद्ध बनाया और रक्खा जाय और नाम निहाद सस्थाओं के अस्तित्व को मिटा दिया जाव।

देश का वर्तमान आर्थिक सकट भी संस्थाओं के आर्थिक संकट के लिये ज़िम्मेवार है, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। लोगों की आर्थिक दशा बहुत ख़राब हो गई है। दान वा सहायता के लिए उनमें दम बाकी नहीं रह गया है। सस्थाओं को लोगों का कम से कम दोहन करना चाहिये।

हमारी संस्थाओं की आर्थिक दुरवस्था के लिये सबसे ज्यादा ज़िम्मेवार उनकी अनुपयोगिता है। हमारी संस्थायें निर्जीव और सत्वहीन हो गई हैं। उनकी आत्मायें उनसे निकल गई हैं। उनका वातावरण रूखा बन गया है। उनमे आकर्षण नहीं रह गया है। उनसे लोगों को वह प्रेरणा और स्फूर्ति तथा मार्ग प्रदर्शन नहीं मिलता है जिनकी जन साधारण उन से आशा करते वा रखते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि हम संस्थाओ में जीवन का सचार करें और उनके आदर्श और आत्मा को जीवित जागृत रक्खे तथा देखें कि जनता को उनसे स्फूर्ति और प्रेरणा मिलती है वा नहीं, जिसकी जनता उनसे आशा रखती हे। यदि एसा हो जाय तो कोई कारण नहीं कि इस आर्थिक सकट के युग में आर्थिक संकट के उपयुक्त विविध कारणो की मौजूदगी में, भी लोगो की थैलियों के मुह उनके लिए खुले हुए न हों परन्तु जितनी ही कोई सभा सोसाइटी उपयोगी, सजीव और आर्थिक साख वाली होगी उतने ही अधिक सहायता प्राप्ति के उसे अवसर प्राप्त होंगे और उसकी आर्थिक कठिनाइयाँ कम होंगी।

आर्यसमाज की प्रवेश पद्धति

लोगों के आर्य्य समाज में प्रवेश की एक ही पद्धति

होनी चाहिये यह चर्चा आर्य समाज में बहुत पुरानी चर्चा है। आर्य-समाज की प्रतिनिधि सभाओं के रिकार्ड से यह बात सिद्ध होती है।

सार्वदेशिक सभा के २७। २८ दिसम्बर सन् १९१० के साधारण अधिवेशन के विज्ञापन में यह विषय निम्न प्रकार अङ्कित देख पड़ता है।

"शुद्धि के लिये एक ख़ास नियम बनाया जाय जो ज़माना हाल के मुताबिक़ हो जिसके अनुसार शुद्धियाँ की जाया करें ताकि शुद्धि पर कोई एतराज़ न कर सके।"

इस विषय पर विचार करके सभा ने निम्न सज्जनों की एक उपसमिति के सुपुर्द पद्धति के बनाने का कार्य्य किया।

१—श्री० स्वामी नित्यानन्द जी (संयोजक)
२— ,, पं० शिवशङ्कर काव्यतीर्थ ,,
३— ,, पं० तुलसी राम ,,
४— ,, ,, आर्य मुनि ,,
५— ,, ,, नन्दकिशोर देव शर्मा ,,
६— ,, ,, बालकृष्ण शर्मा शास्त्री ,,
७— ,, ,, धीरेश्वर शर्मा ,,

इसके बाद इसी कार्य्य के निमित्त ७-१०-१९१३ की साधारण सभा के नि० सं० ८ के अनुसार यह कार्य्य श्री पं० तुलसीराम जो स्वामी तथा स्वामी नित्यानन्द जी की एक उपसमिति के सुपुर्द हुआ। बाद में यह कार्य सभा द्वारा केवल पं० तुलसीराम जी के सुपुर्द हुआ। इस सम्बन्ध में हमें आगे किसी कार्य्यवाही का मथुराशताब्दी तक उल्लेख नहीं मिलता है।

मथुरा के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह प्रश्न 'विद्या परिषद्' के सामने विचारार्थ आया और परिषद् ने निम्न पद्धति की सिफ़ारिश की

'यह परिषद् स्थिर करती है कि प्रत्येक व्यक्ति के चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या अन्य कोई मत सम्बन्धी, आर्यसमाज में प्रवेश को पद्धति एक ही होनी चाहिए और वह यह हो—

जब एक या एक से अधिक ऐसे सज्जनों का जो वैदिक धर्मी नहीं हैं आर्य्य समाज में प्रवेश संस्कार हो तो प्रारम्भ में सब लोग (जिनमें प्रवेशार्थी भी सम्मिलित हों) एकत्रित होकर संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में विहित हवन करें। हवन में सबको स्नानादि से शुद्ध होकर बैठना चाहिए। जिन के शिर पर शिखा नहो उनको शिखा रखाकर बैठना चाहिये। हवन की विधि समाप्त होने पर आचार्य प्रवेशार्थियों से उनकी लोक भाषा में निम्न लिखित दो प्रश्न करें।

(१) क्या तुमने आर्य समाज के दश नियम जान लिए हैं?

(२) क्या तुम वैदिक धर्म के अनुकूल आचरण करने की प्रतिज्ञा करते हो?

प्रत्येक प्रश्न का पृथक् २ स्वीकारात्मक उत्तर मिल जाने पर आचार्य अभिलाषी से गायत्री मन्त्र का पाठ करावें और उसका अर्थ बतलावें।

अन्त में 'अग्ने व्रत पते' इत्यादि और 'अग्ने यज्ञे तप' इत्यादि मन्त्रों से आहुति डालकर पूर्णाहुति की जाय।"

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने अपनी ३०-१२ २६ की बैठक में निश्चय सं० ६ के द्वारा इस पद्धति को स्वीकार करके प्रतिनिधि सभाओं तथा समाजों को इस पर अमल करने की प्रेरणा की। आर्य समाज की यही प्रचलित प्रवेश पद्धति है। आर्य समाजों को इस पद्धति को अब तक से अधिक सक्रिय बनाना चाहिए। आशा है आर्य समाजें इस बात पर विशेष ध्यान देंगी और रक्खेंगी।

अबीसीनिया

इटली का अबीसीनिया को अधिकृत करना संसार के इतिहास की एक काली घटना है। इस घटना से लुटेरी राष्ट्रीयता और भयावने साम्राज्य वाद की विभीषिका लोगो के सामने पूर्णतया आगई है। इटली अन्य साम्राज्यवादियों की नाईं अपनी साम्राज्य विस्तार की योजना को सफल बनाने के यत्न में था। अबीसीनिया उसके लक्ष्य मे आया हुआ था। अबीसीनिया निर्बल था युद्ध के वर्तमान शस्त्रास्त्र से विहीन था। इटली प्रबल था, युद्ध के वर्तमान शस्त्रास्त्र से सुसज्जित था। अबीसीनिया का क़सूर, यदि 'क़सूर शब्द के प्रति अन्याय न किया जाय, तो अपनी और अपने अधिकार की रक्षा करना था। अबीसीनिया का सहायक सिवा दैव के कोई न था। इटली के सहायक कई प्रबल राज्य थे। साम्राज्य विस्तार को महत्वाकांक्षा ने, लुटेरी राष्ट्रीयताने, अबीसीनिया पर आक्रमण किया अबीसीनिया रक्षा के लिए विवश हुआ। युद्ध हुआ जो होना था वही हुआ। बल ने अधिकार पर विजय प्राप्त करली। इटली अबीसीनिया के अधिकृत होगया।

राष्ट्र संघ (लीग आव नेशन्स) का मुख्य उद्देश्य अपने निर्बल सदस्यों की सबल सदस्यो से रक्षा करना है। इटली और अबीसीनिया दोनो ही राष्ट्र संघ के सदस्य थे। उसका कर्तव्य ईटली से अबीसीनिया की रक्षा करना था परन्तु उसने रक्षा न की और इस प्रकार अपनी निस्सारता संसार के लोगो के सामने सुस्पष्ट रूप मे रख दी। इस घटना ने सिद्ध कर दिया है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस का न्याय ही प्रचलित है।

अबीसीनियन सम्राट ने और अबीसीनियों के देश भक्त लोगों ने अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए जिस आत्म त्याग और वीरता का परिचय दिया है उसका वर्णन इतिहास का एक चमकता हुआ अध्याय होगा।

अबीसीनिया और इटली दोनो ही ईसाई राष्ट्र हैं। ईसाई धर्मके बड २ धर्माध्यक्षों और बिशपाका परम कर्तव्य था कि व इटली को अपने अनीति पूर्ण व्यापारसे रोकते परन्तु यह देखने पर कि उन्हो ने इस कर्तव्य का कैसा पालन किया है, कोई भी समझदार व्यक्ति दुखी हुए बगर नही रह सकता। उन्होने इस कर्तव्य की ठाक वैसी ही अवहेलना की है जेसी वे इस प्रकार के अन्य अवसरों पर प्राय किया करते है। उनमे से कुछ ने अबासीनिया के प्रति सहानुभूति ज़रूर दिखलाई। परन्तु उनका सहानुभूति केवल ओठों तक ही रही है।

इटलीने बर्बर अबीसानियनोको सभ्य' बनाना, इस युद्ध का उद्देश्य घोषित किया था। अपने को सभ्य समझने वा घोषित करने वाले इटला ने निर्दोष अबीसीनिया पर जो भयकर अत्याचार किए है उनके द्वारा उसकी सभ्यता की बीभत्सता लोगो के सामने भली प्रकार आई है और वे सभ्यता के सदेश को भलीभाँति समझ गए है। साम्राज्य वादियो की सभ्यता का सन्देश बल, छल, कपट इत्यादि कुत्सित उपायोंसे देशो को अधिकृत करना, उनको हर प्रकार से लूटना, उनका दोहन करना और उनको प्रत्येक दृष्टि मे निर्जीव करना और बनाए रखना है।

इटला के भाग्य विधाता मुसोलिना न अबीसीनिया

की विजय को यूरोप में शान्ति का सन्देशहर प्रगट किया है। साम्राज्य-वादी देशों की स्वाथ-लिप्सा और लालच को यूरोप की महान शक्तियों के विशिष्ट स्वार्थों की पारस्परिक टक्कर को तथा युरोपकी वतमान अशान्त स्थिति को देखते हुए उपर्युक्त प्रगटीकरण लोगों की आँखोंमें धूल झोंकने का प्रयत्न मात्र ही देख पड़ता है विशेषत उन ज़िम्मेवार राजनीति विशारदों के जो युरोप की स्थिति का बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से परिवेक्षण कर रहे हैं इस कथन के प्रकाशमें कि अबीसोनिया का युद्ध एक बड़े यूरोपीय युद्ध का सन्देशहर है।

रामकृष्ण मिशन

रामकृष्ण मिशन के १०२ केन्द्रों में से ४२ केन्द्र भारत में हैं और बाकी युरोप, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका, ब्रह्मा, लङ्का, और स्ट्रेट सैटिलमैण्ट में हैं।

आर्यसमाज के एक उपनियम का स्पष्टीकरण

आर्य्यसमाज के प्रचलित उपनियमों की जिस धाराका स्पष्टी-करण ज्यादा अपेक्षित रहता है वह धारा सं० ४ है और उसमें भी निम्न दो उपधाराओं का।

४ (क) जिनका नाम किसी आर्यसमाजमें सदाचार से एक वर्ष अङ्कित रहा हो और वे अपना आय का शतांश मासिक वा वार्षिक वा अधिक धन उप समाज को देते रहे हों और जिनकी उपस्थिति साप्ताहिक सत्सगों में कम से कम २५ प्रतिशतक हो तो वे आर्य सभा सद हो सकते हैं।

(ख) उपधारा (क) में प्रयुक्त सदाचार की परिभाषा इस प्रकार है —

संध्या आदि नित्य कर्म, शुद्ध वृत्ति, वैदिक संस्कार पतिव्रत तथा पत्नीव्रत इत्यादि सदाचार हैं। व्यभिचार, मद्यादि मादक द्रव्यों और मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन चोरी छल कपट रिश्वत आदि दुराचार हैं।

अभी हाल में आर्य समाज बच्छोवाली लाहौर ने उपर्युक्त उपधाराओं का इस सभा से स्पष्टीकरण कराया है। समाज की शंकाएं और उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है —

शंकायें

(१) सन्ध्यादि नित्य कर्म से क्या अभीष्ट है? सन्ध्याहवन? या पाँचों महायज्ञ?

(२) सदाचार की प्रमाणिकता स्वयं सभासद् करेगा, या अधिकारी गण, या अन्तरंग सभा? श्री स्वामी जी के बनाए हुए नियम उदार हैं। आपका on oath declare करने का प्रश्न है, जो कोई करने को तैयार नहीं होता। लाहौर से declare करके १ दर्जन सभासद् भी न होंगे।

(३) 'सदाचार'की तुलना किस साधन से होगी।

(४) जिन सज्जनों की आय नियमित नहीं है उनकी आयका शतांश ठीक ठीक कैसे आना जा सकता है? declare करने को लोग तैयार नहीं होते। २५०) का नियम स्थगित होना भी यह आर्य्य समाज ठीक नहीं समझता।

(५) मासिक वेतन पाने वाले सभ्यों की आय उनको तत्काल मिलने वाला वेतन ही समझा जायगा या वेतन सम्बन्धी प्रोवीडैण्ट फण्ड बोनस आदि प्रकार की काटे भी सम्मिलित की जावेंगी? ऐसे लोगों की जिनको किसी और प्रकार से जैसे अपने जमा धन के सूद से जो आय होती है आय की आय सम्मिलित करने की प्रथा नहीं है। केवल वेतन का शतांश देते हैं।

मन्त्री

आर्य्य समाज बच्छोवाली

२२-१९३३ लाहौर

स्पष्टीकरण

आपके पत्र सं० × तिथि २-२-३३ में अङ्कित प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं —

(१) उपनियम ४ (ख) में वर्णित सन्ध्या आदि नित्य कर्म से अभिप्राय सन्ध्या और हवन अवश्य है।

(२) सदाचार की प्रमाणिकता किस प्रकार करनी चाहिए, इसका निर्णय स्थानिक आर्य्यसमाज की अन्तरंग सभा के आधीन है।

(३) सदाचार की तुलना किस साधन से होगी। यह प्रश्न अस्पष्ट है। जो नियम ४ (ख) में सदाचार की व्याख्या है उसके सम्बन्ध में दो बातें हैं जिनको लक्ष्य में रख कर सदाचार का निर्णय करना चाहिए —

(i) आर्य्य सभासद की मनोवृत्ति यह होनी चाहिए कि सदाचार के प्रत्येक वर्णित विवरण मे उसका विश्वास है और यह कि उसे उसके पालन करने के लिए यत्नवान होना चाहिए।

(ii) वह पूरा पूरा यत्न उनके पालन करने का करता है।

इन दोनों बातों के सम्बन्ध मे आवश्यक जानकारी प्राप्त करके अन्तरंग सभा को उसके सदाचारी होने का निर्णय करना चाहिए।

(४) जिनकी आय नियमित नहीं है। ऐसे सदस्यों के लिए आवश्यक है कि वे जो चन्दा देते हैं उसके शतांश होने की घोषणा करें। इस सम्बन्ध में आपकी सूचना के लिए यह लिख देना आवश्यक प्रतीत होता है कि २१०) वाले नियम को फिर बना देने का विषय विचाराधीन है और इस सभा ने प्रान्तिक सभाओं से सम्मति मांगी है।

(५) मासिक वेतन वाले कर्म्मचारियों की आय के सम्बन्ध में उनकी आय नियम पूर्वक मिलने वाला वेतन ही समझा जावेगा।

नारायण स्वामी

प्रधान, सार्वदेशिक सभा, देहली

हम बच्चे पैदा करने की मशीन नहीं हैं

गत कॉंग्रेस के अवसर पर लखनऊ में महिला-सम्मेलन में देवियों के जो भाषण हुए थे उनमें से एक भाषण का कुछ अंश इस प्रकार है जो हमारा ध्यान विशेष रूप से खींचता है —

"हम केवल बच्चे पैदा करने की मशीनें नहीं हैं। हमें अधिक उपयोगी और अधिक महान कार्य करना है अर्थात् भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हमें अपना योग देना है, क्योंकि इस संग्राम के पीछे हम ही वास्तविक शक्ति हैं। श्रीमती वेनकारा मूलजी ने मीटिंग को सम्बोधन करते हुए कहा। आगे उन्होंने कहा 'हममें से प्रत्येक सरोजिनी नायडू और कांग्रेस का प्रेजीडेण्ट हो सकती है यदि हम इसके लिए यत्न करें और अपना पार्ट अच्छी तरह खेलें। भारतीय महिलाएँ लजीली और पिछड़ी हुई थीं परन्तु सन् १९३० के राष्ट्रीय आन्दोलन ने एक इतिहास का निर्माण कर दिया है। उसका कारण यह है कि महिलाएँ मैदान मे आई और खुशी-खुशी उन्होंने लाठियों की मार और जेल की यन्त्रणाए सहीं। सबके लिए यह एक चमत्कार था और मेरी अपील आप बहनों से है कि आप अपने दिलों में जागृति की इस ज्वाला को प्रज्वलित रक्खें।'

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में तथा अन्य लोकोपकारी कार्यों में भारतीय महिलायें, जिस वीरता और

आत्म-त्याग का परिचय दे रही हैं उसके लिए हम उनका सम्मान और उनकी प्रशंसा करते हैं। परन्तु हमें सन्देह है कि अच्छे बच्चे पैदा करने और उनका पालन-पोषण करने का शान्त कार्य्य उनके किसी दूसरे कर्तव्य से जिसका वे पालन कर सकती हैं हीन है।

बेशक, महिलायें केवल बच्चे पैदा करने की मेशीने न हैं और न होनी ही चाहिये परन्तु उन्हें यह नहीं भुला देना चाहिए कि उनका एक स्वाभाविक कार्य्य बच्चे पैदा करना है। जाति की माताओं के द्वारा यह कार्य अच्छा भी बनाया जा सकता है और निकृष्ट भी। परन्तु अपने मे वह कार्य घृणा योग्य नहीं है। क्या स्वामी दयानन्द सरस्वती, श्रीमती मनी वेनकारा, वा महात्मा गाधी की माताये अपने मातृत्व को घृणा की दृष्टि से देखने का कारण रखती थीं। कृपया मातृत्व का अपमान मत करो।

माता का हृदय मानव समाज की सबसे बहुमूल्य सम्पदा है और वह सम्पदा बच्चों मे ही फलती फूलती है।

लण्डन सर्व धर्म सम्मेलन

आगामी ३ जुलाई से १८ जुलाई तक लण्डन में सर्व धर्म सम्मेलन का एक अधिवेशन होगा। इस सम्मेलन में बहुत से विद्वान आमन्त्रित किए गये हैं। आर्य समाज के भी २ विद्वान इसमें आर्य समाज का प्रतिनिधित्व करेंगे। सर फ्रांसिस यंगहजबैंड इसके ब्रिटिश नेशनल सभापति हैं। उन्होंने अभी हाल में 'एशियाटिक रिव्यू' में संसार के भ्रातृत्व पर जिसका प्रसार इस सम्मेलन का उद्देश्य है एक लेख लिखा है। वे लिखते हैं—

"कैन्टरबरी के आर्च बिशप ने अपने रविवार के व्याख्यान मे दिखलाया है कि युद्ध रोकने और शान्ति स्थापित करने के लिए माहिदों और स्वीकार पत्रों की अपेक्षा अधिक गहरी शक्ति की जरूरत है। उन्होंने बतलाया कि यह शक्ति आध्यात्मिक होनी चाहिए। उन्होंने यह भी बयान किया कि ईसाई भाव वही आध्यात्मिक शक्ति सिद्ध होगा जिसकी ससार को जरूरत है। यदि लोग नेकी, न्याय, भ्रातृत्व और शुभ भावनाओं के प्रभु के शुभ शासन को सचाई के साथ स्वीकार करले तथा पालन करें तो युद्ध बन्द हो जायेंगे शान्ति स्थापित हो जायगी। ईसाईयों को हर जगह परमात्मा के राज्य की खोज करनी चाहिए और उस साम्राज्य को राष्ट्रीय गलत फ़ैमियों, कटुताओं, उत्तेजनाओं और महत्वाकाक्षाओं के आधिपत्य से उपर रखना चाहिए।' '

दो अन्य आर्च बिशपों ने अपने पत्रों में ससार की शाति की सची और स्थायी नीव रखने मे वर्तमान राजनैतिक माहिदों की असमर्थता प्रगट की है। इसके आगे सर फ्रांसिस लिखते हैं.—

शान्ति स्थापित करने वाली शक्ति आध्यात्मिक होनी चाहिए, यह एक महान सत्य है जिसका मानव समाज को अध्ययन करना है।"

परन्तु इस सत्यके निर्धारण के लिए मानव समाज केवल ईसाई धर्म के व्याख्याताओं पर निर्भर नहीं है। दूसरे धर्मों के व्याख्याता भी शताब्दियों से उसी सत्य की घोषणा कर रहे हैं। और भविष्य में घोषणा जारी रखने के लिए उन पर विश्वास किया जा सकता है। संसार के सब बड़े २ धर्म आध्यात्मिक चीज़ों का उंचा

देवता और पारस्परिक शान्त शुभ भावना और सच्चे भ्रातृत्व के विकाश की आवश्यकता मनुष्यों पर अंकित करते रहे हैं।

आज इन समयों में जब कि संसार म युद्ध के बादल मंडरा रहे हैं और कुछ राष्ट्र आध्यात्मिक शक्ति की महत्ता को जान बूझ कर ठुकरा रहे हैं और जो पशु बल के द्वारा अपने उद्देश्यों की सिद्धि में विश्वास रखते हैं, यह उचित ही प्रतीत होता है कि आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास रखने वाले लोग भले ही उनका धर्म कोई क्यों न हो मिल कर एक जगह बैठें और सम्मिलित उद्देश्य की सिद्धि के उपाय सोचें। यह उद्देश्य भौतिक के ऊपर आध्यात्मिकता का आधिपत्य और मनुष्यो और राष्ट्रों के बीच भ्रातृत्व की भावना को गहरा बना देना है।

मुस्लिम तबलीग का कुत्सित ढंग

पाठक अन्यत्र 'मुस्लिम तबलीग का कुत्सित ढंग' शीर्षक में मुसलमानों के प्रचार के हथकंडो की बाबत पढ़ेंगे। ये हथकंडे लोगो को धन, नौकरी, स्त्री इत्यादि के प्रलोभन देने दिखाने के हैं। ये हथकंडे नये नहीं हैं। जो लोग अपने धर्म के तत्व के द्वारा लोगों के हृदयों को नहीं जीत सकतेहैं वे ही इन उपायों का अवलम्बन प्राय· किया करते हैं। इन हथकंडो पर आश्चर्य करने या उनसे भयभीत होने की ज़रूरत नहीं। ज़रूरत है केवल उनसे सावधान रहने की और लोगों को सावधान रखने की।

आर्य समाज और दलितोद्धार

आज भारतवर्ष में दलितोद्धार के लिए आर्य्य समाज के अतिरिक्त बहुत से व्यक्ति और कई धार्मिक समाज मैदान में देख पड़ते हैं। मुसलमान दलित कहे जाने वाले भाइयो को अपने दायरे में लेने के लिए हाथ फैलाये खड़े हैं, सिक्ख लोग उन्हें अपने यहा आश्रय दे रहे हैं। हिन्दुओं का 'हरिजन सेवक सङ्घ अपने प्रायश्चित की अपील को लिये 'अस्पृश्यता निवारण के लिये बद्ध कटिपर है।

परन्तु ज्यो २ ये व्यक्ति और सोसाइटियाँ दलितो द्धार की समस्याओं को सुलझाने का यत्न करते हैं त्यों २ वह पेचीदा होती जाती है। इसका कारण देखने और समझने वालों को देख पड़ रहा है। वह कारण समस्या को उसके मूल में आक्रमण न करके ऊपर से आक्रमण करने का है। दलितों की समस्या जितनी धार्मिक समस्या है उतनी राजनैतिक,आर्थिकऔर भौतिक नहीं है। दलितों को कतिपय राजनैतिक अधिकारो वा उनकेके प्रलोभनों के देने, प्रायश्चित भावना से उनकी शिक्षा तथा आर्थिक अभ्युत्थान से, उनकी कतिपय समाजिक असुविधाओं के दूर करने कराने से यह समस्या हल नहीं हो सकती। यह समस्या तब ही हल हो सकती है जब धार्मिक रूप से उसका हल किया जाय। वह हल लोगो के हृदय से दलितों को दलित समझने तथा दलितो को भी दूसरों को ऊंचा समझने की प्रवृत्ति का समूलोच्छेद है। यह हल आर्य्य समाज के पास है। आर्य्य समाज की इस समस्या के हल की प्रगतियोंका रिकार्ड उतनाही पुराना है जितना वह स्वयं पुराना है। आर्य समाज को इस समस्या का हल वर्तमान मे अपनी प्रगतियों का एक विशेष अ ग बनाने की ज़रूरत थी। प्रसन्नता है कि सार्वदेशिक सभा ने इस परिस्थिति को समझ कर इस कार्य को विशेष रूप से करने का अपनी २४-९-३६ की

अन्तरंग सभा में निश्चय कर दिया है। सभा ने एक ऐसी योजना बनाने का निश्चय किया है जो दलितों की समस्या को भली प्रकार हल कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभा ने निम्न सभासदों की एक उप समिति बनाई है जो ३ मास के अन्दर पूरी तरह अनुसंधान करके अपनी रिपोर्ट अन्तरङ्ग में पेश करेगी। इस समिति को यह अधिकार दिया गया है कि यदि समिति अपनी रिपोर्ट तय्यार करने के लिए देश के भिन्न २ स्थानों का दौरा करना आवश्यक समझे तो दौरा भी करे।

समिति के सदस्य

(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(२) प्रो० सुधाकर

(३) श्री पं० इन्द्र जी

(४) श्री ला० नारायणदत्त जी

(५) श्री ला० देशबन्धु जी (संयोजक)

आर्य जनता और हिन्दू समाज को इस कार्य में अपने योग के लिये तय्यार रहना चाहिए और यत्न होना चाहिए कि यह स्कीम जनता के समक्ष उचित समय पर आ जाय।

अनाथालय या दूकान

हमारे देश में बहुसंख्यक अनाथालय हैं जो अनाथों की रक्षा का उत्तम कार्य कर रहे हैं। ये अनाथालय हर प्रकार से योग्य बनाकर, शिक्षित करके और दस्तकारी इत्यादि सिखाकर अनाथों को अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ बनाकर न केवल अनाथों का ही वरन् समाज का भी बड़ा हित कर रहे हैं। ऐसे अनाथालय जनता के हर प्रकार के प्रोत्साहन के अधिकारी हैं।

दुर्भाग्य से ऐसे अनाथालय भी हैं जिन्हें 'अनाथालय' के नाम से सम्बोधन करना 'अनाथालय' शब्द के प्रति अन्याय और उसका अपमान करना है। उन्हें 'दूकान' शब्द से सम्बोधन करना ही ज्यादा ठीक होगा। स्वार्थी और गैर ज़िम्मेवार लोगों ने अपने स्वार्थ साधन के निमित्त दूकानें खोली हुई हैं। धर्म्म भीरू जनता की अविवेक-पूर्ण दान-शीलता और चाँदी के टुकड़ों पर ख़रीदी हुई पुलीस के आश्रय में ये दूकानें खूब फल-फूल रही हैं। ये लोग अनाथों का सर्वनाश करते हैं। उन्हें अपनी काम-वासना का शिकार बनाते हैं और हारमोनियम उनके हाथ में देकर उनसे नित्यप्रति घर २ भीख मंगवाते हैं और इस प्रकार समाज में भिखारियों और अयोग्य व्यक्तियों की एक नई श्रेणी बना रहे हैं। वस्तुत अनाथों के हित और सार्वजनिक जीवन की शुद्धता के लिए इन दूकानों का नष्ट किया जाना वांछनीय है इस कार्य्य को जितनी उत्तमता और सफलता के साथ मुख्यतया स्थानीय लोग कर सकते हैं उतनी उत्तमता और सफलता के साथ बाहर के लोग नहीं कर सकते उनसे तो आवश्यक सहायता ही ली जा सकती है। इसलिए उन्हें ही यह कार्य करना चाहिए। निश्चय ही उन लोगों की इस कार्य की सफलता समाज-सेवा में अनुकरणीय योग होगा, और वे अनाथों और अपने नगर का बड़े से बड़ा हित करेंगे। क्या हम आशा करें कि नगरों की बढ़ती हुई बीमारी को दूर करना स्थानीय लोग अपना कर्तव्य समझेंगे और उसे दूर करेंगे?

मेरी केरल यात्रा

डा० अम्बेदकर के विस्फोट से पहले ही मलाबार के इजवाज ने हिन्दू धर्म के परित्याग की इच्छा जाहिर की थी। लगभग १० साल पर्य्यन्त उन्होंने समान व्यवहार प्राप्त करने के हर सम्भव साधन को आजमा कर, परन्तु कोई फल न निकलने पर बड़ी ग्लानि के साथ अपने पूर्वजों के धर्म को तिलाञ्जलि देने का निश्चय कर लिया था। उनमें से कुछ ने बौद्ध और कुछ ने ईसाई या मुस्लिम धर्म स्वीकार भी कर लिया था परन्तु शीघ्र ही उन्हें विदित हो गया था कि एक एक दो दो के धर्म परिवर्तन से कुछ नहीं बनेगा इसलिए वे सामूहिक धर्म परिवर्तन की सोचने लग गए थे। अपने २ धर्म के दृष्टिकोण को समझाने और यह बतलाने के लिए कि इजवाजों को कोई धर्म विशेष अंगीकार करने पर क्या फायदा होगा, योगम ने विविध धर्मों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया था। मुस्लिम धर्म का प्रतिनिधित्व करने के लिए श्री० के० एल० गाबा अपने ३-४ मित्रों के साथ पंजाब से आए थे। अमृतसर के मास्टर तारासिंह बी० ए०, बी० टी० सिक्खों की ओर से तथा सीलोन के २ बौद्ध भिक्षु बौद्धों की ओर से पहुँचे थे। ईसाई मिशनरी वहां पहले से ही बड़ी तादाद में मौजूद थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्य्य समाज का प्रतिनिधित्व करने मैं पहुंचा था। वहां धर्म का चिल्ल पों मची थी। कटु समालोचक को ऐसा प्रतीत होता था मानो केरल के आकाश में इजवाजों के शवों को नोचने के लिए आतुर गिद्धों का झुंड मडरा रहा है।

मैं दो दिन एर्नाकुलम में ठहरा। कोचीन राज्य का यह अत्यन्त महत्व पूर्ण शहर है। वहां मैं इजवाजों के बहुत से लीडरों से मिला और उनके साथ काफी विचार परिवर्तन किया। वहां से अलप्पी और क्विलन के रास्ते त्रिवेन्द्रम के लिए रवाना हुआ। सौभाग्य से श्री मती ब्रजलाल नेहरू के प्रधानत्व में हरिजन सेवक संघ के तत्त्वावधान में वहां (त्रिवन्द्रम) में एक कान्फ्रेन्स हो रही थी। मैं ने भी उस कान्फ्रेन्स में भाग लिया। इसके बाद मैं श्रीयुत केशवन, रामचन्द्रम गोविन्दन और अन्यों से मिला। अन्तिम महाशय प्रसिद्ध इजवा लीडर हैं और रिटायर्ड जज हैं। आजकल वे त्रिवन्द्रम में प्रैक्टिस करते हैं। मैं ने उनसे देर तक बात चीत की और इस सम्बन्ध में कि आर्य्यसमाज किस प्रकार इजवाहों की उत्तमसे उत्तम सेवा कर सकता है, उनका बहु-मूल्य परामर्श मांगा। प्रसन्नता है वह मुझे मिला।

ट्रावन्कोर की आबादी लगभग ५० लाख है। इस में से १६ लाख ईसाई, ८ लाख मुसलमान, ६ लाख इजवाज और १० लाख अन्त अर्थात परियाज, पुलि इत्यादि हैं। इस प्रकार केवल मे ७ लाख तथा कथित उच्च वर्ण के हिन्दू हैं।

इजवाजों में दो विभाग हैं। एक तो उच्च इजवाज जो शिक्षित और सम्पन्न हैं और मुख्यतया नगरों और शहरों में रहते हैं। दूसरे निम्न श्रेणी के इजवाज जो गरीब और अशिक्षित हैं। तथा जो मुख्यतया खेतों में मजदूरों का काम करते और ग्रामों मे निवास करते हैं। उच्च इजवाज ही सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए चिल्ला रहे हैं। दूसरा विभाग बिल्कुल निर्दोष है। इस विभाग के लोग अपने दरवाजों से भेड़िये को भगाने मे अत्यन्त व्यस्त हैं। धर्म परिवर्तन के गुल गपाडे मे शरीक होने के लिये उन के पास समय नहीं है। जैसा कि प्राय होता है। शिक्षित वर्ग अशिक्षितवर्ग का दोहन करनेका यत्न कर रहा है।

ईसाई धर्म प्रचारक गत कई शताब्दियों से मलाबार मे काम कर रहे हैं। उनके असंख्य गिर्जे, हस्पताल, स्कूल और व्यवसाय शालाएं इत्यादि हैं। उनकी संस्थाओंमे हजारों इजवाज काम

पर लगे हुए हैं इसलिए केवल आर्थिक प्रलोभन ही है जो उन्हें ईसाई चर्च के नजदीक ले जाता है।

लम्बे अर्से से वहां मुसलमान भी कर्म क्षेत्र में हैं। बड़ी सीमा तक वे सफल भी हुए हैं। उनकी संख्या लाखों तक पहुँच गई है। इस समय वहां के हरिजनों में बहुत सी जमाअतें काम कर रही हैं। उन्हें काफी आर्थिक सहायता प्राप्त है।

सिक्ख लोग इस क्षेत्र में नवीन हैं। उन्होंने शिरोमणि गुरु द्वारा प्रबन्धक कमेटी के हाल के अधिवेशन में ५ वर्षों में ७ लाख रुपया खर्च करने का निश्चय किया है। इस वर्ष मलाबार में २ लाख रुपया खर्च करने का इरादा है। इससे पूर्व ५ नए दीक्षितो को कुछ जमीन और आर्थिक सहायता का वचन दिया जा चुका है।

प्रादेशिक सभा के आधीन जब प० ऋषिराम जी इन्चार्ज थे कुछ समय तक आर्य्य समाज ने भी वहां काम किया है। हजारों रुपया वहां खर्च हुआ है। कुछ स्कूल और अनाथालय भी खोले गए थे। परन्तु कार्य्य अधिक समय तक जारी न रह सका और समाज का कोमल पौधा केरल के लोगों की अत्यधिक निर्दयता के कारण मुर्झा गया। मेरा विश्वास है कि मलाबार फण्ड में श्री महात्मा हंसराजजी के पास रुपया पड़ा हुआ है।

केशव देव ज्ञानी, प्रचारक
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली

(सार्वदेशिक सभा की ओर से ट्रावनकोर राज्य में इस समय सभा के प्रचारक प्रचार कर रहे हैं। इस कार्य को विस्तृत करने की एक विस्तृत स्कीम सभा के विचाराधीन है। यह कार्य तत्काल विस्तृत किए जाने योग्य है। आर्य नर-नारियों को सभा का इस कार्य में हाथ बटाना चाहिए। —सम्पादक)

शहीदगंज और पीर कक्कूशाह केश का फैसला

मुकद्दमे में सिखों की जीत

लाहौर, २५ मई।

आज सेशन जज की अदालत से पीर कक्कू शाह और शहीद गंज केस का फैसला होगया।

सब सिख अभियुक्तों को सेशन जज ने बरी कर दिया।

शहीद गंज केस में जायदाद सिखों की मानली गई और डाक्टर मुहम्मद आलम के दावे को खारिज कर दिया गया।

स्मरण रहे कि पीर कक्कूशाह केस बहुत दिनों से चल रहा था। ११ सिखों पर जिनमें जत्थेदार तारा सिंह और सरदार कुलदीप सिंह भी शामिल थे, यह अभियोग था कि इन लोगों ने पीर कक्कूशाह की क़ब्र गिराकर मुसल्मानों के जज़बात को ठेस पहुँचाई।

अभियुक्तों की तरफ से कहा गया था कि क़ब्र पीर कक्कूशाह की न थी। दूसरे उक्त कब्र सिखों की जायदाद पर खड़ी थी इसलिए उनको अधिकार था कि वह उसका जो चाहते करते। मातहत अदालत ने उनकी इस दलील को स्वीकार न किया था और ११ सिखोंको ६-६ मास से लेकर *१५-१५ मास तकके कठोर दण्डकी सजा देदी थी।* माननीय सेशन जज ने अपील स्वीकार कर ली और अभियुक्तों को बरी कर दिया।

अभियोग की कहानी

यह मुकद्दमा डाक्टर आलम ने दायर किया था और गत ८ जुलाई को शहीदगंज गुरुद्वारा के अहाते की एक पुरानी टूटी फूटी इमारत के सिक्खों द्वारा कथित गिरा दिए जाने के फल स्वरूप दायर किया गया था। मुसलमानों का दावा था कि यह बिल्कुल मुग़ल शासन में बनी हुई मस्जिद है और सिक्खोंका दावा था कि उनके शहीदों की यह यादगार है। जिनका मुसलमानों ने बध करवाया था।

—

पश्चिमीय विद्वानों
की
अध्यात्म-अन्वेषणा

(ले० पण्डित के० शानी, मद्रास)

डाक्टर पाल ई० जोनसन अमरीका की यूनीवर्सिटी में फिलासफी के प्रोफ़ेसर हैं। आप अपने विषय के आचार्य माने जाते हैं। आपने हाल ही में "अध्यात्म" सम्बन्धी एक लेख लिखा है जिसका प्रारम्भ निम्न प्रकार है—

Man is by nature a seeker There is an nrge within him that will not be still Every nerve is set for action, every heart beats out the restless cadence of life we are a frantic human race, darting and doub'e crossing in a whirl of confusion yet underneath this superficial striving lie deeper motives Can there be any pattern of unity in the diversity of our desires ? The deeper meaning of our incessant exertion is that we are seeking something greater than ourselves, something to worship

The Search Eternal

अर्थात् मनुष्य स्वभावत जिज्ञासु है। उसमें एक आन्तरिक प्रेरणा है जो उसे शान्त नहीं बैठने देती। उसका प्रत्येक हृदय-स्पन्दन सदा प्रगतिशील है। हम सदैव कुछ न कुछ प्रयत्न करते ही रहते हैं।

हमारे अनेकविध प्रयत्नों के मूल में भावना व उद्देश्य की एकता है। क्या यह संभव नहीं कि हमारी विविध इच्छाओं के आधार में एक विशेष समानता हो ?

हमारे अविश्रान्त प्रयत्नों का उद्देश्य किसी महान् वस्तु की प्राप्ति-इच्छा है, किसी ईश्वर (सामर्थ्यशाली) की पूजा है।

उपरोक्त वाक्यों से दो बातों का स्पष्ट पता चलता है। १म वर्तमान अवस्थाओं में अपूर्णता है, अज्ञान है, क्लेश है। २य, इस अपूर्णता व अज्ञान की अवस्थाओं से निकलकर पूर्णता व ज्ञान की प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये। इसे ही *दर्शन शास्त्रों में 'अध्यात्म' का प्रथम सोपान कहा है।*

× × ×

डाक्टर जे० बी० राइन् ने वर्षों मानस-तत्त्व का अन्वेषण करके एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है—Extra sensory Perception इस पुस्तक की भूमिका दो प्रसिद्ध डाक्टरों यथा फ्रैन्कलिन प्रिन्स और मैकडावल ने लिखी है।

इसे "बोस्टन सोसाइटी आफ साइकिकल रिसर्च" ने प्रकाशित कराया है।

इस पुस्तक का विषय लेखक के शब्दों में निम्न है.—

Extra-Sensory perception or E S P is a spaceless function It is the outcome of concentrated attention It is a total response of the organism without a localised sense organ of reception From the psychological approach, E S P resembles sensory response rather than rational, yet not restricted to a localised sensory apparatous, it seems to suggest the mind's independence of material conditions

Extra Sensory perception

अर्थात् मानस-प्रत्यक्ष एक अभौतिक कार्य है। यह एकाग्र शक्ति का फल है। यह किसी विशेष शरीर-इन्द्रिय द्वारा नहीं होता। यह समूचे शरीर अथवा ज्ञान-तन्तु सस्थान द्वारा होता है। मानस-प्रत्यक्ष के लिये भौतिक साधन अनावश्यक है।

पाठक देखेंगे कि डाक्टर राइन् हमारी योग दृष्टि का वर्णन 'मानस प्रत्यक्ष' अथवा E. S P. द्वारा कर रहा है। आज कल पश्चिमी मनोवैज्ञानिक जगत् में "दूर-वीक्षण" "दूर-श्रवण" "दूर-भाषण" आदि विषयों की बहुत चर्चा है। वैज्ञानिक रीति से अनेक परीक्षण किये जा रहे हैं जिनका उद्देश्य शरीर से भिन्न मानस तत्व का सम्यक् अध्ययन है।

उपरोक्त डाक्टर लेखक ने अनेक वैज्ञानिकों की उपस्थिति में यह सिद्ध करके दिखलाया है कि यद्यपि मनुष्य का मन सामान्यत. भौतिक इन्द्रियों द्वारा ही अनुभव करता है परन्तु उचित अभ्यास के अनन्तर इसे बिना भौतिक-साधनों के भी उपयोग में लाया जा सकता है। उक्त डा० ने २५० मीलों की दूरी पर बैठी मिस टर्नर को अक्षरश अनेक मानव सन्देश पहुँचाए तथा अन्य मानस अनुभव दिये।

थियसोफीकल सोसाइटी के अनेक धुरन्धर विद्वान् "मानस—प्रत्यक्ष" पर गम्भीर गवेषणाए कर रहे हैं। वेद का "यज्जाग्रतो दूर मुदति दैवम्" आदि मन्त्रों वाला सूक्त इस विषय में विशेष महत्व रखता है। परन्तु जब तक हम उन मन्त्रों में आए मन-सम्बन्धी विशेषणों को वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा सिद्ध न करें तब तक उनका कोई महत्व नहीं।

× × ×

डाक्टर एलैक्सिज कैरेल (Di Alexis carrel) जो कि राकफेलर इन्स्टिटयूट के सदस्य हैं और जीवन शास्त्र (Bialogy) में नोबल-प्राइज भी ले चुके हैं, मानस-तत्व के विषय में निम्न छ परिणामों पर पहुँचे हैं—

१—दूर-दृष्टि या क्लेयरवायैन्स द्वारा इन्द्रियों की अपेक्षा भी अधिक निश्चित प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

२—बिना बोले चाले एक दूसरे व्यक्ति तक अपना विचार पहुँचाया जा सकता है।

३—मन शक्ति स्थान व समय की सीमा से बाहिर है।

४—कई व्यक्तियों में एक अपूर्व मन शक्ति का विकाश होता है जो शरीर व इन्द्रियों से असम्बद्ध है।

५—दिव्य मानस-दृष्टि द्वारा न केवल दूरस्थ विषयों का अनुभव होता हैं परन्तु भूत व भविष्य का भी प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

६—प्रार्थना व स्व-भावना की शक्ति से मनुष्य की अनेक आन्तरिक व्याधिया दूर की जा सकती हैं।

मिस्टर ई० डब्ल्यू मैक्ब्राइड जो कि लण्डन के "इम्पीरियल कालेज आफ साइन्स" में भूगर्भ शास्त्र के अध्यापक हैं अध्यात्म सम्बन्धी निम्न परिणाम पर पहुँचे हैं—वे एक स्थान पर लिखते हैं—

On the basis of cogent reason, I have come to hold that there does abide an Intelligent power behind the universe, and on the basis of psychical research I am prepared to maintain the immortality of the soul in man

—The Hibbert Journal
for Jan 1936

अर्थात् मैं निश्चित प्रमाणों द्वारा इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि इस संसार की आधार-भूत एक चेतन-शक्ति अवश्य वर्तमान है और मनोवैज्ञानिक अन्वेषणों द्वारा मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि मनुष्य की आत्मा अमर है।

× × ×

उपरोक्त विषय के अतिरिक्त पुनर्जन्म, कर्म-फल, दैवीय अनुभव, सिद्धिया, आत्मिक जगत आदि विषयों पर अनेक पाश्चमी विद्वान परीक्षण कर रहे हैं जिनके विषय में हम फिर कभी लिखेंगे।

सत्यार्थप्रकाश-लेख-माला

सन्तानोत्पत्ति की तय्यारी

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

विवाह का प्रयोजन सतान उत्पन्न करना है। इस पक्ष में अनेक वैद्यों ने अनेक लेख लिखे हैं। मैं इस लेख में उनका उल्लेख न करूँगा। मैं केवल धार्मिक पुस्तकों के लेख उद्धृत करूँगा। मनु जी ने—

प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृह दीप्तय.। मनु ६ २६
उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम्। ,, ,, २७

स्त्री पुरुष के सम्बन्ध से संतानोत्पन्न होती है। जिस समय स्त्री पुरुष की संतानोत्पन्न करने की इच्छा हो उस समय उनको अपने विचार उसके अनुकूल बनाने चाहिये। जितने विचार अनुकूल होंगे उतनी ही संतान उनकी इच्छा के अनुकूल होगी। उस समय की अवधि का उल्लेख पुस्तकों में मिलता है वह न्यून से न्यून तीन दिन है और अधिक से अधिक एक वर्ष लिखा है। इतिहास में यह समय १२ वर्ष तक भी मिलता है। इस लेख में मैं पाठकों की भेंट वही लेख करना चाहता हूँ। जिसमें इस समय का विधान है।

(१) माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध, रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता, सभ्यता को प्राप्त करे वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्न-पानादि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिस से रजस, वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुण युक्त हों।

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास २ के आदि में

इसमें महर्षि दयानन्द जी ने गर्भाधान से पूर्व पाठ लिखा है और उसके साथ भोजनादि का भी विधान किया है।

(२) अत ऊर्ध्वं त्रिरात्र द्वादशरात्रम्॥ ११
सवत्सर वैक ऋषिर्जायत इति॥ १२
आश्वलायन गृह्य सूत्र १। ८

इस पाठ में तीन अथवा १२ रात ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने का विधान करके पश्चात् एक वर्ष का विकल्प भी लिखा है, एक वर्ष ब्रह्मचारी होने से एक ऋषि पुत्र उत्पन्न होता है।

(३) तावुभौ तत्प्रभृति त्रिरात्रमक्षार लवणाशिनौ ब्रह्मचारिणौ भूमौ सह शयीताम्। गोभिल गृ० २, ३, १५।

वर वधू विवाह क्रिया से तीन रात पर्यन्त लवण, क्षार, छोड़ कर भोजन करें ब्रह्मचर्य व्रत से रहें भूमि पर शयन करें।

टीकाकार ने अक्षार लवण पर—

गोक्षीर गोघृत चैव धान्य मुद्गास्तिला यवा ।
अक्षारलवणा ह्येते क्षाराश्चान्ये प्रकीर्त्तिता ॥

अर्थात् गोघृत, गोक्षीर, धान्य, मूग, तिल यव, अक्षार लवण है अन्य क्षार लवण हैं।

ऊर्ध्वं त्रिरात्रात् सभव इत्येके। गोभिल गृ० २,५,७

तीन रात के पश्चात् गर्भाधान किया जाय यह कई ऋषि मानते हैं।

(४) सवत्सर ब्रह्मचर्य चरन्तो द्वादशरात्र (त्रिरात्रमेक रात्र) वा ॥ मानव गृह्य सूत्र १,१४,१४
एक, तीन, बारह रात तक ब्रह्मचर्य व्रत का धारण करके अथवा एक वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रह कर गर्भाधान करे।

(५) त्रिरात्रमुभयोरध शय्या ब्रह्मचर्य क्षार लवण-, वर्जनं च। आपस्तम्बीय गृ० सू० ३, ५, ८
स्त्री पुरुष दोनों तीन रात पर्यन्त भूमि पर शयन करें, ब्रह्मचर्य पूर्वक रहें और लवण तथा क्षार का प्रयोग न करें।

(६) त्रिरात्रं व्रतम्। हिरण्यकेशी गृह्य सूत्र १, २३, १०
तीन रात व्रत करके गर्भाधान करे।

(७) सवत्सरं ब्रह्मचर्य चरत द्वादशरात्र वा। वाराह गृह्य सूत्र खण्ड १८
१२ रात वा १ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके गर्भाधान करे।

(८) सवत्सर ब्रह्मचर्य चरतो द्वादशरात्री. षट् तिस्र एका वा ॥ काठक गृ० सूत्र ३०१
इस पर २ टीकाएँ हैं, एक विस्तार से है, द्वितीय सक्षेप से है। मैं वह भी लिखना उचित समझता हूँ।

(क) ब्रह्मचर्यममैथुन चरित्वा गर्भाधान कार्यमिति। तत्पौर्णमास्याममावस्याय। न मैथुन कर्तव्यमिति च सकल्प। एकैककर्तृकोऽत्र प्रनम् सवत्सर प्रथम कल्प। योवनमदस्यातिशयात्तु अनुकल्पेनापत्कालो विकल्प.। द्वादशरात्री: षटतिस्र एकावेति।

(ख) सवत्सर ब्रह्मचर्य चरतो। विकल्पो वयो विशेषेणोत्सुक्यापेक्षया।

इसका भावार्थ यही है, प्रथम तो एक वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत करके गर्भाधान करना चाहिये यदि यौवनावस्था वा विषयी होने से कोई ऐसा न कर सके तो १२, ६ तीन रात्रो का व्रत करे अन्यथा एक का ही करे।

(९) अथ यदि कामयेत श्रोत्रिय जनयेयमित्या रु धत्युपस्थानात्कृत्वा त्रिरात्रमक्षारलवणाव-शायिनौ ब्रह्मचारिणावासाते ॥ ९ ॥
अहताना वाससा परिधान सायप्रातश्चालकरणमभिप्रुप्रतोदयोश्च धारणमग्निपरिचर्या च चतुर्थ्यां पक्वहोम उपसवेशन च ॥ ११ ॥
अथ यदि कामयेतानूचान जनयेयमिति द्वादशरात्रमेतद्व्रत चरेत ॥ १२ ॥
व्रताते पक्व होम उपसवेशन च ॥ १३ ॥
अथ यदि कामयेत ऋषिकल्प जनयेयमिति मासमेतद् व्रत चरेत ॥ १४ ॥
व्रताते पक्व होम उपसवेशन च ॥ १५ ॥
अथ यदि कामयेत भ्रूण जनयेयमिति चतुरो मासानेतद् व्रतं चरेत ॥ १६ ॥
व्रताते पक्व होमउपसवेशन च ॥ १७ ॥
अथ यदि कामयेत ऋषि जनयेयमिति षण्मा-

सानेतद् व्रतं चरेत ॥ १८ ॥

व्रताते पक्व होम उपसवेशन च ॥ १९ ॥

अथ यदि कामयेत देव जनयेयमिति संवत्सरमेतद् व्रत चरेत ॥ २० ॥

व्रताते पक्व होम उपसवेशन च ॥ २१ ॥

वोधायन गृ० सूत्र १०७

इसमें प्रथम अरुन्धति दर्शन से विवाह के समय का वर्णन है पश्चात चतुर्थ कर्म भी है, जिससे तीन दिन का व्रत विधान किया है, पश्चात् हवन करके गर्भाधान का विधान किया है। इसका क्रम निम्न प्रकार है—

जिसकी कामना हो, श्रोत्रिय पुत्रोत्पन्न हो, वह तीन दिन व्रत करके हवन करके गर्भाधान करे।

,,	,,	अनूचान	,,	,,	बारह	,,	,,	,,
,,	,,	ऋषिकल्प	,,	,,	एक मास	,,	,,	,,
,,	,,	भ्रूण	,,	,,	चार	,,	,,	,,
,,	,,	ऋषि	,,	,,	छ	,,	,,	,,
,,	,,	देव	,,	,,	एक वर्ष	,,	,,	,,

इसमें प्रश्न होता है श्रोत्रिय, अनूचान, ऋषिकल्प, भ्रूण, ऋषि, देव, क्या हैं।

इसका उत्तर स्वाय सूत्रकार ने लिखा है।

उपनीतमात्रो व्रतानुचारी वेदाना किंचिदधीत्य ब्राह्मण ॥ २ ॥

एका शाखामधीत्य श्रोत्रिय ॥ ३ ॥

अंगाध्याय्यनुचान ॥ ४ ॥

कल्पाध्यायी ऋषिकल्प. ॥ ५ ॥

सूत्रप्रवचनाध्यायी भ्रूण ॥

चतुर्वेदाद् ऋषि ।७॥ अतः ऊर्ध्वं देव ॥८॥

वोधायन गृ० सू० । १, ७

अर्थ—यज्ञोपवीत धारण करके व्रताचारी होकर वेद को कुछ पढ़े वह ब्राह्मण है इसी व्रत से एक शाखा पढ़े वह श्रोत्रिय होता है।

,, ,, अग भी पढ़े ,, अनूचान कहलाता है

,, ,, कल्प ,, ,, ऋषि कल्प कहलाता है

,, ,, सूत्र प्रवचन पढ़ने वाला भ्रूण कहलाता है।

जो चार वेद पढ़े वह ऋषि होता है।

इसके आगे पढ़ने वाला देव कहा जाता है।

इन सब उद्धृत पाठों का भाव एक दिन से एक वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य का विधान है। न्यून से न्यून एक दिन है और अधिक से अधिक एक वर्ष है। इसमें भी तीन दिन का विधान प्राय: सब सूत्रकार करते हैं इसलिये महर्षि का कथन कि गर्भाधान से पूर्व वर्णन उचित ही है।

महाभारत में सौप्तिक पर्व में कृष्ण जी ने अश्वत्थामा का वर्णन करते हुए कथन किया है, वहा यह पाठ है।

ब्रह्मचर्य महद्घोर तीर्त्वा द्वादशवार्षिकम्।
हिमवत्पार्श्वमास्थाय योमया तपसार्जिता ॥ ३० ॥
समानव्रतचारिण्या रुक्मिण्यां योचजायत।
सनत् कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुत ॥३१॥

सौप्तिक पर्व अध्याय १२

सौप्तिक पर्व मे यह उस समय का वर्णन है जब कि अश्वत्थामा ने रात को आक्रमण करके धृष्टद्युम्नादि को मार दिया था। उस समय कृष्ण जी ने कहा है। एक बार अश्वत्थामा ने मुझ से सुदर्शनचक्र मागा था। मैंने उसे कहा था यदि आप उसे उठालें तो लेलें, परन्तु यत्न करने पर भी अश्वत्थामा उसे उठा न सके। तब कृष्ण जी

योग तत्व

(श्री गोपाल जी बी० ए० गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ)

गत लेख में यह दिखलाया गया था कि चित्त की वृत्तियोंके रोकने के दो ही साधन हैं। अभ्यास और वैराग्य। और इन दोनों के लक्षण किये गये थे। अब यहा यह बतलाना है कि अभ्यास किन वस्तुओं से किया जावे।

योगदर्शन के अन्दर वृत्तियों के रोकने में कुछ रुकावटें बतलाई गई हैं वे रुकावटें निम्न हैं।

व्याधि—शरीर वा स्वस्थ्य न रहना।

समान—दूसरे की वस्तुओं को अपहरण करना

सशय—निश्चयात्मक न होना। प्रत्येक बात में शक करते रहना।

प्रमाद—आज का काम कल पर छोड़ देना।

आलस्य—कर्तव्य पालन में सुस्ती दिखलाना।

आवरति—उलटा समझना।

भ्रान्तिदर्शन—भ्रम में रहना।

अलब्ध भूमिकत्व—उद्देश के प्राप्त न होने पर हिम्मत हार बैठना।

अनवस्थत्व—डावा डाल तबीयत का बने रहना

यह सब विक्षेप है, पूर्व इसके मनुष्य योग में प्रवृत हो। इनके दूर करने का सबसे पूर्व अभ्यास करना चाहिये। अब दूर कैसे हों। अब इस का उपाय बतलाते हैं।

ने कहा था, मेरे सुपुत्र प्रद्युम्न ने भी यह चक्र कभी नहीं मागा है और उस प्रद्युम्न को मैंने हिमालय के पार्श्व में १२ वर्ष ब्रह्मचर्य पूर्वक तप करके उत्पन्न किया था यही नहीं कि मैंने ही व्रत किया था मेरे साथ मेरी धर्म पत्नी रुक्मणी ने भी बारह वर्ष तप किया था, इससे सिद्ध है कि प्रद्युम्न के जन्म से पूर्व उसके माता पिता ने १२ वर्ष व्रत करके उसे उत्पन्न किया था। यही बात अनुशासन पर्व में भीष्म जी ने पुन भी कही है।

पंजाब में कुछ समय पूर्व यह रिवाज था कि विवाह के समय में वर वधू को खाट पर सोन नहीं देते थे वह भूमि पर ही सोते थे परन्तु इस समय नव शिक्षा के प्रभाव से तथा सुधार की दृष्टि से इस प्रथा को उठा दिया गया है। प्रतीत होता है वह प्रथा इस व्रतका द्योतक थी। यह सत्य है, उस समय विवाह प्राय बाल्यावस्थामें ही होते थे, इसलिये उस समय वह विवाह और यह प्रथा निष्प्रयोजन थी इसलिये उस प्रथा का उस रूप मे न होना ही उत्तम है। परन्तु सन्तानोत्पत्ति से पूर्व दम्पति के लिये अपने आहार, व्यवहार तथा विचार को अनुकूल बनाना शास्त्र की मर्यादा है और सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि ने विधान किया है। इसलिये सद् गृहस्थों को इसका ध्यान रख कर अपने जीवन में लानेका यत्न करना चाहिये। इसी भावना से मैंने यह लेख लिखा है, आशा है पाठक इस विषय पर विचार करने का कष्ट सहन करेंगे।

——

"तत् प्रतिषेधार्थ एकतत्वाभ्यास"

इन का प्रतिवेध करने के लिये एक तत्व का अभ्यास किया जावे, फिर कुछ अभ्यास बतलाये गये हैं, वे निम्न हैं।

पहला अभ्यास

"मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणां सुख दुःख पुण्या पुण्याना भावनात् चित्त प्रसादनम्"?

अर्थात् सुखी आदमियों मे सरल मित्र भाव से रहे। दुखी आदमियों से सरल करुणा का वर्ताव करे पुण्यात्माओं को देख कर प्रसन्न हो। पापियों से घृणा न हो प्रत्युत उनको उपेक्षा करें, यह अभ्यास माननीय है।

मन के शुद्ध होने पर शरीर के रोग स्वय दूर हो जाते हैं

दूसरा अभ्यास

"प्रछर्दन विधारणाभ्या वा प्राणस्य"

प्राणों को बड़े वेग से बाहर अथवा अन्दर फेंके इसे योग की परिभाषा मे भस्त्रा प्राणायाम कहते हैं। प्रात. काल सूर्य उदय के समय खुली हवा मे आसन जमा कर १५ मिनट प्रतिदिन यह प्राणायाम करे, तो ६ महीने में उसके शरीर का ढाचा बदल जावेगा और उसके मुख पर दिव्य ज्योति दिखलाई देगी।

तीसरा अभ्यास

"वीतरागविषयं वा चित्तम्"

वीत राग महात्माओं के जीवम चरित्र का पाठ कम से कम एक घन्टा अवश्य करे, उससे भी मन निर्मल होगा और उसकी विक्षिप्ता दूर होगी।

चौथा अभ्यास

"यथाभिमत ध्यानात् वा"

जो वस्तु मनुष्य को अधिक रुचिकर हो यदि उस मे भी निष्काम भाव से वह जुट जावे तो उमसे भी उसे शान्ति प्राप्त हो सकती है और वही बात उपरोक्त अन्त रूपों को दूर करने में सहायक हो मकती है इनके अतिरिक्त ऋषि ने और भी अनेक छोटे २ अध्याय लिखे है, परन्तु जो सरल तथा सुबोध अध्याय थे, उन्हें यहा उल्लेख कर दिया गया है।

यह अभ्यास प्रारम्भिक है। यह योगारूढ होने के लिये पहली सोढी है, यदि जिज्ञासु इनका सम्यक्तया अभ्यास करले तो उसके लिए आगे का रास्ता खुल जावेगा।

अब प्रारम्भिक वैराग्य का विधान किया जाता है।

किसी वस्तु मे सकाम बुद्धि न रखी जावे कर्तव्य परायण हो अपने धर्म का यथावत् पालन करना हो सच्चा वैराग्य है।

"सम शत्रो च मित्रे च तथा मानापमानय"

शत्रु और मित्र मे समबुद्धि रखना और मानापमान के झन्झट म न पड़कर अपने कर्तव्य का निष्काम बुद्धि से पालन करना ही सच्चा और वास्तविक वैराग्य है। कपड़े रग लेने, या नग्न घूमना, सीखों पर सोना, गङ्गा के किनारे धूनी जमाये लोगों को ठगना अपने शरीर को कृश कर लोगों से रुपया ऐंठने के लिये पाखण्ड करना ऐसा वैराग्य योगदर्शन का अभिप्रेत नहीं इस लिये अगले लेख मे अभ्यास और वैराग्य को और स्पष्ट करेगे।

वैदिक युग का दूसरा नाम विमान युग होना चाहिये

(ले०—श्री राज्यरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी बड़ौदा)

वैदिक युग का दूसरा नाम विमान-युग क्यों हो। उसके लिये कुछ हेतु और एक वेद मंत्र प्रस्तुत करूँगा।

विदित हो कि पंजाब, राजपूताना, गुजरात तथा भारत के सब प्रान्तों में उन उन प्रान्तों की निज भाषाओं में जो जो बाल कहानियां आज तक चालू हैं उन सब में "किसी हिन्दू राजे का उड़न खटोले पर चढ कर सात समुद्र पार जाने की चर्चा आती है।"

इस उड़न खटोले के अनेक नाम चालू प्रांतीय भाषाओं में हैं। पर "राजा" और 'दूसरा उड़न खटोले" का पर्य्याय शब्द जरूर मिलने से Folklore के नियम अनुसार प्राचीन हिन्दू राजे भारत के सब प्रान्तों के विमान रखते थे।

पौराणिक कथाओंमें Personal Airships वा निजी विमानों की चर्चा हम पाते हैं। जैसे सरस्वती देवी आर्य्या का छोटा विमान जो था उसके माथे पर मोर पक्षि का चिह्न था। इसी प्रकार विष्णु देव जी के विमान पर Eagle वा गरुड़ पक्षि का चिह्न था वा उस आकार का वह विमान होगा।

पुराणों में सर्वत्र आर्य्य-महा-पुरुष वा देवता आकाश से विमान द्वारा शस्त्र वृष्टि नहीं किन्तु पुष्प वृष्टि किया करते थे। कवि सम्राट श्री पूज्य कालिदास जी के नाटकों में से एक में एक आर्य्य रानी पर जो विमान के पुष्प किसी कीले के साथ आकाश से आकर गिरे तो वह आर्य्या देवी स्वर्ग सिधार गई। यह बात भी विमान सम्बन्धी ही है।

पंजाब में जब कोई हिन्दू वृद्ध पुरुष पौत्र वाला आज कल भी मर जाता है तो हिन्दू बिरादरी की तरफ से तीन या चार घण्टे उसकी अर्थी को विमान में बिठाने के लिये लग जाते हैं। उस विमान में कितनी सुन्दर झंडियां लगती हैं और उसका घाट किसी विमान के रूप का होता है। पर विद्युत पंखे नहीं होनेसे वह आजकल उड़ नहीं सकता। पुराने काल में इस सच्ची घटना से यह सिद्ध होता है कि आर्य्य वा हिन्दू वृद्ध पुरुष वा स्त्री घर से श्मशान भूमि तक विमान (airship) वा उड़न खटोले में पंजाब में ले जाते होंगे।

आज कल मैं एक नई अतिउत्तम पुस्तक पढ़ रहा हूँ। उसका शुभ नाम—

वैदिक सम्पत्ति

'केरल की सुधि कौन ले?'

(ले०—श्री नारायणदेवजी सिद्धान्तभूषण, वैदिक-मिश्नरी)

मान्य पाठक वृन्द !

आज मैं आप महानुभावों की श्रद्धा केरल की आसन्न विपत्ति की ओर आकर्षित करता हूं। आशा है इस पर अवश्य गौर करेंगे।

डाक्टर अम्बेदकर की हिन्दू धर्म त्याग की भीषणी ने उत्तर भारतीयों पर चाहे कुछ असर न किया हो लेकिन मद्रास प्रान्त के हरिजनों पर खासकर केरल की एक रियासत ट्रावनकोर पर महान आतक छाया है। इस का कारण यह है कि सभी सम्प्रदाय के लोग शिक्षित हैं। संस्कृत के पंडित और अंग्रेजी के विद्वान हरिजनों में भी बहुत से हैं। ग्रेजुएट महिलायें भी बहुत हैं। अब भला बीसवीं शताब्दी में जहां पाश्चात्य शिक्षा और ईसाईयत का इतना जबरदस्त प्रचार है शिक्षित समुदाय हिन्दुओं के अत्याचार को क्योंकर सहन करेगा ? सदियों से हिन्दुओं ने

है। प्रत्येक आर्य्य समाजी तथा हिंदु विद्या प्रेमी को यह युग प्रवर्त्तक अनुसधान पूर्ण रत्न ग्रन्थ पढ़ कर मुझ समान अपने ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिये।

इस अपूर्व रत्न ग्रन्थ की भूमिका में उसके पूज्य स्वर्गीय विद्यानिधि ग्रन्थ कर्ता के निम्न शब्द भी हैं। इन से मेरा नम्र मत भेद भी है। कारण कि मैं तो वैदिक युग को विमान युग कहता हूँ। और पूज्य स्वर्गीय आर्य्य कवि रत्न श्री चौधरी नवलसिंह जी के पद मेरे कानों में अब तक भी गूंज रहे हैं।

"आकाश में चलते विमान थे,
उनकी कुल में हम ही तो हैं।
देख देख हो गये हैरान,
अब ऐसी सतान हम ही हैं।"

(देखो सभा प्रसङ्ग श्री नवलसिंह कृत)

विदित हो कि वैदिक सम्पत्ति के पूज्य कर्त्ता जी के वह शब्द यह हैं—जिनसे मेरा मत भेद है।

"जो लोग वेदों से रेल, मोटर, बिजली की रोशनी निकाल कर वर्तमान भौतिक उन्नति के साथ मेल मिलाते हैं वे गलती करते हैं।"

(वैदिक सम्पत्ति मूल भूमिका)

अब वेद भगवान् का एक मन्त्र विमान सम्बन्धी देकर यह तुच्छ लेख समाप्त किया जावेगा।

पूरा मन्त्र इस प्रकार है—

विमान एष दिवो मध्यऽ आस्तऽआपप्रिवानोद्
सीऽअन्तरिक्षम्। स विश्वा चीरभि चष्टे घृता
चीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम् ॥

यजु० अ० १७ म० ५६

उनपर अत्याचार किया। अब गवर्नमेंट की कृपा से शिक्षा प्राप्ति से पुरातन ग्रन्थों के अवलोकन से उनकी आखें खुल गई हैं। अब वे निमिष भरके लिये भी हिन्दूधर्ममें रहना नहीं चाहते। हिन्दू शब्द उनको बिच्छू काटने के समान प्रतीत हो रहा है।

आजकल ट्रावनकोरके अखबारोंमें ईलवों का हिन्दू धर्म परित्याग प्रश्न ही मुख्य है। इसके बाद विवाद में कई पृष्ठ काले कर डालते हैं और सभी एक आसन्न आपत्ति की या भूकंप की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यहा इनकी सख्या १६ लाख की है और अधिक भाग शिक्षितों का है। ये सामुहिक रूप से ईसाई बनना चाहते हैं क्योंकि ईसाईयों का तो यहाँ अखण्ड ताण्डव है। कोई पूछने वाला ही नहीं। कोई गांव ऐसा नहीं जहा गिरजा न हो कोई शहर ऐसा नहीं जहा हाई स्कूल न हो और एक दो सौ पादिरी न हों। सिर्फ हमारे शहर कोट्टयम में ही ईसाईयोंके २ हाईस्कूल २ गर्ल्स हाई स्कूल और सी० एम० एस कालेज है। यही कालेज केरल का प्रथम कालेज है और समस्त केरल में कोट्टयम ही शिक्षा का और ईसाईयों का मुख्य केन्द्र है। यहा सिर्फ हिन्दुओं का एक थर्ड फारम तक का अंग्रेजी स्कूल है। हिन्दू राज्य होने पर भी ईसाइयों के प्रचार से उनकी सख्या अधिक होगई है। अभी ये 'ईलव' भी ईसाई बन जायेंगे तो फिर हिन्दुओं का संहार ही समझ लीजिये। मुसलमान और ईसाई उनको अपनी ओर बुला रहे हैं। यहा ईजवों की एक एस, एम, डी, पी, योगम है। अखिल भारत कांग्रेस के बाद इसका समठन ही भारत में सर्वश्रेष्ठ है। अभी इसमें यह विचार होरहा है कि प्रत्येक घर में आकर यह राय ली जाय की कौन २ ईसाई होने के लिये तैयार हैं। इस प्रकार सामूहिक परिवर्तनके लिये रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। अब देखिये कैसी परिस्थिति है। ट्रावनकोर वाले एक बैरिस्टर जोर्ज जोसफ ने नागपुर पबलिक कान्फ्रन्स में जो भाषण दिया था वह पाठकों को याद होगा। उन्हों ने बताया कि हम १०० वर्ष में भारत को ईसाई बना लेंगे। इनके प्रश्न का निवारण क्षेत्र प्रवेश से ही हटेगा। हिन्दुओं को समझाने के लिये कौन है? हरिजनों को कौन समझावें। सवर्ण हिन्दुओं में अधिक भाग क्षेत्र प्रवेश के पक्ष में है। लेकिन गवनमेंन्ट का विचार अब तक न बदला। यदि इसके लिये तुरंत ही कुछ न किया जाय तो विपत्ति सिर पर है। फिर शुद्धि के लिये शुद्धि सभा जागे तो "अब पछतावे क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत" यही बात होगी। कई बातें हैं। सब के लिए स्थान पर्याप्त नहीं। मैं सार्वदेशिक सभा का, भा० हि० शुद्धि सभा का तथा अन्य धनी मानी आर्य हिन्दू सज्जनों का ध्यान आकर्षित करता हूँ और यह प्रार्थना करता हूँ कि तुरत ही कुछ अधिकारी डेपूटेशन लेकर ट्रावनकोर आयें और परिस्थिति का अध्ययन करें और उचित कार्य करें। अन्यथा हमारा आर्य होना व्यर्थ है इस लिए केरल प्रचार के लिये दानवीरों को सार्वदेशिक सभा की तन मन धन से सहायता करनी चाहिये।

ईलव जाति और धर्म परिवर्तन

(लेखक—श्री० पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्त भूषण, ट्रावनकोर)

इस हिन्दू जाति में सदियों से धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार होते आ रहे हैं। उन अत्याचारों में से एक है छुआ छूत (अस्पृश्यता)। इस अस्पृश्यता का प्रचार भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में है। परन्तु दक्षिण भारतान्तर्गत केरल देश (ट्रावनकोर, कोचिन, मलाबार) इस विषय में अधिक विशेषता रखता है। यहां कट्टर पंथियों का राज्य है। इसलिये अस्पृश्यता की भी व्यवस्था विचित्र है। यहा के धर्मध्वजियों ने अच्छूतों को अनेक श्रेणियों में विभक्त किया है। उनको सीधे मार्ग से चलने नहीं देते। उन अस्पृश्यों में कुछ ऐसी जातिया हैं जिनकों उच्च वर्णस्थों को मार्ग में देख कर लगभग २४ फ़ीट हटना पड़ता है। दूसरे कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनको ऐसे उच्च जाति वालों को देखकर लगभग ६० फ़ीट दूर भागना पडता है।

उपरोक्त अच्छूतों में जिनको २४ फ़ीट दूर भागने की व्यवस्था कर रक्खी है उनमें से एक है ईलव। ये लोग साधारणतया खेती मजदूरी आदि कड़ी मेहनत करने वाले हैं। केरलकी विभूतन के श्रेय: को मुख्य भाग इनको देना चाहिये। इस देश की समृद्धि में इस "ईलव" जाति का भी पर्याप्त हाथ है। परन्तु फिर भी ये अच्छूत कहे जाते हैं। ब्राह्मणादि ऊँची क़ौम के लोग मार्ग में आ जावें तो सीधे मार्ग छोड़ कर इनको दूर हट जाना पड़ता है।

ईलवों की यह अवस्था देख कर कुछ उच्च वर्णस्थों का हृदय भी दयार्द्र हो उठा। वे इस अवस्था में परिवर्तन लाने के लिए कोशिश करने लगे। वे लोग इनके साथ मिल कर काम करने लगे।

ऐसे समय ईलव जाति में भी एक सन्यासी प्रादुर्भूत हुये। उनका नाम था "श्री नारायण गुरु स्वामी"। आप सच्चे सन्यासी थे। अहिंसा आदि सन्यास व्रत का यथा योग्य पालन करते थे। उन्होंने ईलव जाति की शोचनीय अवस्थाको हटाने की कोशिश की। स्थान २ पर आप के व्याख्यान हुये उनके उपदेशों से कई उच्च जातिस्थ भी प्रभावित हुये। परिणाम स्वरूप स्वामी के शिष्य बने।

इतना सब कुछ हुआ। फिर भी कट्टर पन्थी पौराणिकों की हृदय-हीनता में कोई परिवर्तन नहीं आया। उस सन्यासी के साथ श्रद्धा प्रेमसे पेश नहीं आये। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण निम्न लिखित घटना है। स्वामी महोदय रिक्षा में चढ़कर कहीं जा रहे थे। मार्ग मध्ये कोई कट्टर पन्थी उच्च जाति का व्यक्ति आ निकला। उस व्यक्ति ने मतान्धता में मस्त होकर उस संन्यासी से कहा "मार्ग से हट जा" अन्त में उनको विवश होना पड़ा। परिणाम स्वरूप गाड़ी से उतर कर उन्हें पैदल

ना पड़ा।

ऐसा व्यवहार मतान्धों ने किया। अब भी योग्य व्यक्तियों के साथ मूर्खजन कहीं २ करते भी हैं। परन्तु उनके और अन्य परिष्कृत मानसों के परिश्रम के फल स्वरूप जाति और देश मे जागृति आ गई। यथार्थ कुछ २ लोगों की समझ मे भी आने लगा। "ईलव" लोगा ने श्री नारायण धम परिपालन योगम् S N. D P yogam नामक एक सस्था की स्थापना की। जगह २ उसकी शाखाए भी स्थापित होने लगी। इस प्रकार "ईलव" जाति कुछ सगठित भी हो गई। उस सगठन को कायम रखती हुई यह सस्था लगभग २५ वर्ष से काय कर रही है। प्रारम्भ समय की अपेक्षा वतमान मे छूआ अन्छूत का झगडा बहुत कम है फिर भी गावों मे कट्टरपन्थी अब भी है। वे लोग इनको आगे आने नहीं देते। यद्यपि उनकी सख्या आधे मे अधिक नही। फिर भी विष थोडा भी हानि पहुँचायगा 'इलव' जाति के लोग समाधिकार चाहते है। चेत्र विशेषादि के लिये वे लालायित हैं। एक ही मार्ग से स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करने को उत्कटाभिलाषा है। परन्तु अपनी करतूतों से कट्टर पन्थी बाज नहीं आते इसलिए विवश होकर निस्सहाय होकर—स्वतन्त्रता और सुख प्राप्ति का मार्ग खोज रहे थे।

ऐसे अवसर पर डाक्टर अम्बेदकर ने कहा कि अछूतों की उन्नति का कोई माग है तो वह मत परिवतन—ईसाई व मुसलमान हो जाना—है। डाक्टर साहब के इन शब्दों ने "धधकती आग मे घी का काम किया।"

'ईलव" लोग परिस्थिति से तग हो ही रहे थे। ऐसे मौके पर धम परिवतन की बात सुनकर एक दम निश्चय कर लिया है कि हिंदू धम छोडना चाहिये और इसाई मत स्वीकार करना चाहिए। नेता लोगो ने प्राय बिना सोचे समझे धर्म परिवर्तन का विचार प्रकट किया परन्तु साधारण जनता तो उसके लिए तैयार नहीं। उनके हृदय मे इस प्रस्ताव ने स्थान नहो पाया। इसलिए कुछ लीडर नाम धारी लोग सिर से एडी तक का जोर लगा रहे है। गत जनवरी मास में साधारण सभा मे प्रारम्भिक व्याख्यान देते हुए सभापति महोदय ने फरमाया कि शीघ्र ही प्रत्यक ईलव को हिंदू धर्म छोडकर ईसाई धम मे दाखिल होना चाहिए। इसी मे हमारी उन्नति और कल्याण है।

परन्तु उनका यह विचार केवल मृग तृष्णा है। वे वहा भी आराम से नहीं रह सकगे। क्योकि करल के इसाइयों के सिर पर भी छुआ-अन्छूत का भूत सवार है। जो अछूत (परयर पुलयर आदि) इसाई मत स्वीकार करते है उनके साथ दूसरे इसाइ नहीं बैठते। खान पान का व्यवहार भी बहुत कम करते है। उनको पुतुक्रिस्त्यानि (नवीन ईसाई) के नाम से पुकारते है। उनके लिये अलग गिरजा तक बनवा रक्खा है। रोटी बेटी का सम्बन्ध भी नहीं करते। हिन्दू तो पूर्ववत् उन्हें अछूत समझ कर भगाते है। उन लोगों को नवीन नाम से ईसाई भी नहीं बुलाते। सब के सब पुराने नाम से पुकारते हैं। ईसाईयो का रक्खा नाम कागजों के पृष्ठों मे रह जाता है।

इसलिये उनको वहां भी कोई अधिक स्वतन्त्रता नहीं मिलती। फिर भी हिन्दुओं के मध्य में रहने से अधिक आजादी सी दिखाई देती है। परन्तु उनका धर्म परिवर्तन उनके लिये और हिन्दू जाति को भारी पश्चात्ताप पैदा करेगा। निश्चय उनकी अवस्था "उभयतोभ्रष्ट" वाली होगी।

इसलिए उनको इस आफत से बचाना चाहिये। इस समय क्षेत्र प्रवेश मिल जाय तो सारा मामला समाप्त होजायगा। बातचीत से ऐसा ही स्पष्ट मालूम पड़ा। यह अधिकार दिलाना चाहिए। यह अन्य अधिकार प्राप्त जातियों का कर्तव्य है। मेरा विचार है कि एतदर्थ जगह २ सभा करके प्रस्ताव पास करके ट्रावनकोर और कोचिन गवर्मेन्ट के पास और महाराजाओं के पास पृथक भी भेजा जाय। देश के हिन्दू हितैषी डेप्यूटेशन लेकर केरल प्रान्त में आवें और अधिकारी और जनता से मिलें। इस से उन (ईलवों) को भी कुछ तसल्ली मिलेगी और सरकार अधिक ध्यान से और शीघ्र इस कार्य को करने के लिये बाधित होगी। सोचने विचारने के लिये अधिक समय न लेकर शीघ्र ही इसका प्रतिकार करना चाहिए।

सभापति का आसन किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए ?

(४)

संशोधन

परिभाषा

किसी प्रस्ताव में कोई परिवर्तन करना वा परिवर्तन का प्रस्ताव करना सशोधन कहलाता है।

संशोधन की रीति

निम्न रीति से प्रस्ताव में सशोधन होता है –

(अ) कुछ शब्द निकाल देने से।

(ग) कुछ शब्द अंकित कर देने से।

(स) कुछ शब्द निकाल कर उनके स्थान पर दूसरे शब्द रख देने से।

(द) प्रस्ताव मे कुछ शब्द बढा देने से।

(य) प्रस्ताव के प्रथम शब्द 'कि' के आगे के सब शब्द निकाल देने और उनके स्थान में विषय से सम्बन्धित दूसरे शब्द रख देने से।

संशोधन के सम्बन्ध में कुछ मोटी २ बातें

(१) जब कोई प्रस्ताव नियमित रूप से मीटिङ्ग के सामने आ चुका हो तो कोई भी उपस्थित व्यक्ति उस पर सशोधन पेश कर सकता है।

प्रस्ताव का प्रस्तावकर्त्ता सशोधन का प्रस्ताव नहीं कर सकता। एक व्यक्ति एक समय में केवल एक ही संशोधन का प्रस्ताव कर सकता है।

(२) सशोधन का प्रस्ताव और समर्थन होना चाहिए और प्रधान को प्रत्येक प्रस्तावित और अनुमोदित सशोधन की व्याख्या करनी चाहिये।

कमेटियों में सशोधन के समर्थन की जरूरत नहीं होती।

(३) मूल प्रस्ताव से पूर्व सशोधन पर सम्मति ली जानी चाहिए। यदि सशोधन पास हो जाय तो सशोधित प्रस्ताव पर सम्मति ली जानी चाहिए। यदि संशोधन गिरजाय तो मूल प्रस्ताव पर सम्मति ली जानी चाहिए।

(४) यदि किसी व्यक्ति को अपने प्रस्तावित सशोधन से अधिक अच्छा संशोधन सूझ पड़े तो वह सभापति से उसकी वापसी की प्रेरणा कर सकता है और सभापति मीटिङ्ग की आज्ञा से सशोधन को वापस करलेनेकी आज्ञा देसकता है।

(५) कोई भी प्रस्ताव उस समय तक वापस नहीं लिया जा सकता जब तक सशोधन पर सम्मति न ले ली जाय।

(६) संशोधनों को पृथक रखने के लिए प्रस्ताव को बहुत सावधानता पूवक बनाना चाहिए।

कतिपय बारीक बातें

१ जब किसी प्रस्ताव में एक से अधिक संशोधनों का प्रस्ताव किया जाय तो सभापति उसी क्रम से जिसमें संशोधन प्रस्ताव के शब्दों को प्रभावित करते हों एक समय में प्रस्ताव के प्रथम शब्द से शुरू करके एक ही संशोधन को लेता है।

(२) जो संशोधन प्रस्ताव के पहले शब्द पर प्रभाव डालता हो वह अन्य सब संशोधनों से विशेषता रखने वाला समझा जाता है।

उदाहरण के लिए जो संशोधन प्रस्ताव के चौथे शब्द पर प्रभाव डालता हो वह पाचवें, पाचवां छठे और छठा सातवें संशोधन से विशेषता रखने वाला समझा जाता है। यही क्रम प्रस्ताव के अन्त तक के शब्दों के सम्बन्ध में रहता है। तिथियों और संख्याओं के सम्बन्ध में यह प्रथा है कि पहले अधिक से अधिक निकट की तिथि और संख्या पर विचार किया जाता है।

(३) प्रस्ताव का जो भाग संशोधित हो चुका हो बाद में उससे पूर्ववर्ती किसी भाग का भी संशोधन नहीं हो सकता है। सदस्यों को इस बात का विशेष ध्यान से देखना चाहिए कि उनके संशोधन ठीक २ क्रम में सभापति के पास पहुँच गए हैं वा नहीं।

(४) जब कोई संशोधन पेश किया जा चुका हो और बाद को यह मालूम हो कि कोई सदस्य प्रस्ताव के उस भाग के सम्बन्ध में संशोधन पेश करना चाहता है जिसके आगे के भाग पर संशोधन पेश किया गया है। तो प्रथा यह है कि मीटिङ्ग के सामने संशोधन कर्त्ता शिष्टाचार की दृष्टि से कुछ समय के लिये अपना संशोधन वापस ले लेता है। परन्तु ऐसा करने के लिये वह मजबूर नहीं किया जा सकता।

परन्तु यदि वह अपने संशोधन को वापस लेने से इनकार कर देवे तो उस दशा में उसे चुप रहना चाहिए और जब उस संशोधन पर सभापति सम्मति लेने लग जाय तब प्रस्ताव कर देना चाहिये कि प्रस्ताव या संशोधित प्रस्ताव पर जैसी अवस्था हो, पुनर्विचार किया जाय।

(५) जो संशोधन गिर जाता है उस पर जब तक आज्ञा न मिल जाय, दुबारा विचार नहीं हो सकता।

(६) मीटिङ्ग के प्रस्ताव करने पर किसी भी संशोधन पर पुनर्विचार हो सकता है।

(७) किसी भी प्रस्तावित संशोधन पर संशोधन पेश किया जा सकता है और संशोधन भी प्रस्ताव की नाईं संशोधित हो सकता है।

(८) संशोधनों के द्वारा जो शाब्दिक संशोधन जरूरी हो जाता है वह प्रधान या मन्त्री कर देता है।

हम इन सब बातों को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किये देते हैं।

उदाहरण

कल्पना करो सभा के किसी सदस्य ने एक प्रस्ताव किया है और वह उसके पक्ष में बोल चुका है। प्रस्ताव निम्न प्रकार है—

"अपने जीवन के अधिक महत्व पूर्ण कार्यों में सचाई लाते रहो। इससे तुम अपना हित सिद्ध करोगे।"

एक सदस्य इस प्रस्ताव को समर्थन करता है और बोलने का अपना अधिकार बाद के लिए सुरक्षित रख लेता है।

सभापति प्रस्ताव की व्याख्या करता है और प्रस्ताव को पढ़ता है। यदि प्रस्ताव पर बहस न हो तो तत्काल उस पर सम्मति ले लेता है। सम्मति का प्रकार यह होता है।

'जो प्रस्ताव के पक्ष में हों वे 'हां' कहें जो विरुद्ध हों वे 'नहीं' कहें।

सभापति हां या ना अथवा वोटों के अनुसार जैसी अवस्था हो प्रश्न का निर्णय कर देता है।

इस उदाहरण के लिए हम यह मान लेते हैं कि प्रस्ताव पर बहस होती है और कोई सदस्य प्रस्ताव में निम्न सशोधन पेश करता है—

यह प्रस्ताव करता हूँ कि 'अधिक महत्व पूर्ण' ये शब्द प्रस्ताव में से निकाल दिये जावें। सशोधन का समर्थन हो जाने पर सभापति प्रस्ताव को इस प्रकार व्याख्या करता है —

"मूल प्रस्ताव यह था (प्रस्ताव पढ़ता है) चूँकि संशोधन के रूप में यह प्रस्ताव किया गया है कि 'अधिक महत्व पूर्ण' शब्द प्रस्ताव में से निकाल दिए जावें। अब प्रश्न यह है कि जिन शब्दों के निकाले जाने का प्रस्ताव किया गया है वे प्रस्ताव के अंग रहेंगे।

बहस जारी रहती है। जब खत्म हो जाती है तब सभापति इस पर सम्मति लेता है। वैसा करते हुए वह उन शब्दों की जिनका उसने प्रश्न की व्याख्या करते हुए प्रयोग किया दुहराता है और यह जोड़ देता है।

"जो इस सशोधन के पक्ष में हों वे हां कहें जो विपक्ष में हों वे नहीं कहें।"

वह सम्मतियों के निर्णय के अनुसार घोषणा करता है कि संशोधन स्वीकृत है या अस्वीकृत। यदि यह मालूम होजाय कि पक्ष में ज्यादा सम्मति हैं तब 'अधिक महत्व पूर्ण' शब्द नहीं निकाले जायेंगे और बाद को इन शब्दों में न परिवर्तन हो सकता है और न प्रस्ताव का इन शब्दों से पूर्व का कोई भाग संशोधित हो सकता है। यदि विपक्ष में ज्यादा सम्मति हों अर्थात् मीटिङ्ग का यह निर्णय हो कि 'अधिक महत्व पूर्ण' शब्द प्रस्ताव के अङ्ग नहीं रहेंगे तब सभापति द्वारा प्रस्ताव में से वे शब्द निकाल दिये जायेंगे। हम यह माने लेते हैं कि 'अधिक महत्व पूर्ण' शब्द निकाल दिया गया है।

(ब)

वही या कोई दूसरा सदस्य अपनी जगह से उठता है और निम्न संशोधन पेश करता है—

"अपना शब्द के आगे 'और समाज का शब्द' जोड़ दिया जावे।"

आगे के सशोधनों के सम्बन्ध में वही कार्य्य क्रम रहेगा जो पहले में रहा है परन्तु सभापति अनावश्यक रीति से कोई बात दुहराई न जाय इस विचार से इस असूल का प्रयोग करता है —

"अपना शब्द के आगे 'और समाज का' शब्द जोड़ देने का प्रस्ताव किया गया है। प्रश्न यह है कि प्रस्तावित शब्द जोड़ दिया जावे।"

यदि यह मालूम हो जाय कि बहुमत पक्ष में है तब सभापति द्वारा जोड़ दिये जावेंगे अन्यथा

नहीं।

हम माने लेते हैं कि शब्द जोड़ दिए गए हैं।

(स)

एक सदस्य एक दूसरा संशोधन पेश करता है। वह प्रस्ताव करता है कि 'करोगे' शब्द निकाल दिया जावे और इसके स्थानपर 'करते रहोगे' शब्द रख दिए जावें। सभापति निम्न रीति से प्रश्न की व्य.ख्या करता और उस पर सम्मति लेता है।

"करते रहोगे' शब्दों के अङ्कित कर देने के उद्देश्य से 'करोगे' शब्द निकाल देने का प्रस्ताव किया गया है। प्रश्न यह है कि जिन शब्दों के निकाल दिये जाने का प्रस्ताव किया गया है वे प्रस्ताव का अङ्ग रहेंगे।

यदि बहुपक्ष पहले शब्द के रखने के हक़ में हो तो संशोधन गिर जायगा और यदि हक में न हो तो पहले शब्द निकाल दिए जायगे। इस रीति से प्रस्ताव में एक जगह खाली हो जायगी और सभापति दूसरे शब्दों पर सम्मति लेगा।

प्रश्न यह है कि प्रस्तावित शब्द अंकित कर दिए जावें। इन शब्दों के अंकित किए जाने का निश्चय हो जाने पर शब्द अंकित कर दिए जावेंगे अन्यथा कोई दूसरे शब्द निश्चय हो जाने पर अंकित हो जायगे।

हम माने लेते है कि 'करते रहोगे' शब्द अंकित कर दिए गए हैं।

(द)

इसके बाद कोई दूसरा सदस्य प्रस्ताव के अन्त में निम्न शब्दों के बढ़ाए जाने का प्रस्ताव करता है:—

"और ऐसा करते हुए तुम संसार को भी श्रेष्ठ बनाते रहोगे।"

इन शब्दों का प्रस्ताव की भांति संशोधन हो सकता है। संशोधन हो जाने की अवस्था में सभापति इस पर निम्न प्रकार सम्मति लेता है।

"प्रश्न यह है कि अंकित किये जाने वाले शब्द सशोधित रूप में प्रस्ताव में बढ़ा दिए जावें।

यदि यह संशोधन गिर जाय तो प्रस्तावित प्रस्ताव में शब्द नहीं बढ़ाए जायगे। यदि पास हो जाय तो सभापति प्रस्ताव के शब्द बढ़ायेगा।

हम म.ने लेते हैं कि उपर्युक्त शब्द बिना संशोधित रूप में बढ़ा दिए गए हैं।

अन्य सशोधनों का प्रस्ताव न होने की दशा में सभापति संशोधित प्रस्ताव को मीटिङ्ग को पढ़ कर सुनाता है। संशोधित प्रस्ताव इस प्रकार है —

"अपने जीवन में सचाई लाते रहो। इससे तुम अपना और समाज का हित सिद्ध करते रहोगे और ऐसा करते हुए तुम संसार को भी श्रेष्ठ बनाते रहोगे।

इसके बाद सभापति इस संशोधित प्रस्ताव पर सम्मति लेगा।

यह प्रस्ताव भी अन्य प्रस्तावों के सदृश पास हो वा गिर सकता है। यदि पास हो जाय तो कार्य्य का वह भाग जो प्रस्ताव द्वारा होगा खत्म हो जायगा। हम माने लेते हैं कि प्रस्ताव पास हो गया है।

इस उदाहरण द्वारा हम चार भिन्न २ रीतियों के द्वारा संशोधित हो जाने के उपरान्त प्रस्ताव की अन्तिम गति देख चुके हैं। अर्थात् (अ) शब्दोंके निकाल दिये जाने से (ब) शब्दों के अंकित कर दिये जाने से (स) शब्दों को निकाल कर उनके

स्थान में दूसरे शब्दों के रख दिए जाने से (द) शब्दों के बढ़ा दिए जाने से। अब केवल एक और रीति (य) शेष रह गई है जिसके द्वारा प्रस्ताव का संशोधन हो सकता है। कोई प्रस्ताव पहले शब्द के बाद के सब शब्दों के उन के स्थान में दूसरे शब्द रख दिये जाने के उद्देश्यसे निकाल दिए जाने से भी संशोधित हो सकता है।

इस प्रकार के संशोधन करने वाले व्यक्ति को उन शब्दों को जिन्हें वह अंकित करना चाहता हो मीटिङ्ग को पढ़कर सुनाना चाहिए (यदि मूल प्रस्ताव के शब्दों को निकालना अभीष्ट हो) और अपने संशोधन के सम्बन्ध में युक्तियां देनी चाहिए। संशोधन के अनुमोदित होजाने पर इससे पूर्व के उदाहरण में वर्णित रीति से सभापति को उस संशोधन की व्याख्या करनी चाहिए।

'मूल प्रस्ताव यह था (मूल प्रस्ताव पढ़ता है) चूँकि संशोधन के रूप में सब शब्द निकाल दिये जाने और उनके स्थान में इन शब्दों के रखे जाने (संशोधनको पढ़ता है) का प्रस्ताव किया गया है। प्रश्न यह है कि जिन शब्दों के निकाले जाने का प्रस्ताव किया गया है वे प्रस्ताव का अङ्ग रहेंगे।

सम्मति लेने पर यदि बहुमत शब्दों के निकाले जाने के पक्ष में न हो तो मूल प्रस्ताव के शब्द रहेंगे और बाद को उनमें कोई संशोधन नहीं हो सकेगा और हां उन में शब्द जोड़े जासकेंगे। यदि बहुमत पक्ष में हुआ तो शब्द निकाल दिये जायगे और तब सभापति दूसरे प्रश्न की इस प्रकार व्याख्या करेगा।

"प्रश्न यह है कि प्रस्तावित शब्द अंकित कर दिए जावें।"

मूल प्रस्ताव के शब्दों की नाईं संशोधन के शब्दों का भी संशोधन हो सकता है। वे संशोधित हो सकते और संशोधित शब्द स्वीकृत वा अस्वीकृत भी हो सकते हैं। जब स्वीकृत हो जावें वा संशोधित रूप में स्वीकृत हो जाये तो मूल प्रस्ताव के शब्दों के स्थान में अंकित हो सकते हैं। और बाद में उनका संशोधन भी नहीं हो सकता है। हां उनमें कुछ शब्द जोड़े जा सकते हैं।

यदि अंकित किए जाने वाले शब्द अस्वीकृत हो जायँ तब मीटिङ्ग के सामने कुछ बाकी नहीं रहता है और कोई दूसरा प्रस्ताव पेश हो सकता है। संशोधन की इस रीति से (य) कोई प्रस्ताव खारिज हो सकता है और कोई दूसरा बिल्कुल भिन्न उसके स्थान में रक्खा और मीटिङ्ग द्वारा स्वीकृत हो सकता है।

इस प्रकार (य) के संशोधन के सम्बन्ध में कार्यवाहि करने का सबसे आसान तरीका यह है कि प्रस्ताव और संशोधन को पृथक् २ मान लिया जाय और पहले मूल प्रस्ताव पर कार्यवाहि की जाय। परन्तु प्रस्ताव और संशोधन दोनों के एक साथ पेश किए जाने पर कठिनाई उपस्थित हो जाती है। ऐसे अवसरों पर बड़ी सावधानता की जरूरत होती है।

प्रस्ताव पर पहले कार्यवाहि की जाय, इस बात का प्रस्ताव केवल सार्वजनिक सभाओं के उद्देश्य की दृष्टि में किया गया है जहां कार्यवाहि का बहुत छानबीन के साथ संचालन नहीं किया

जाता है। यह तरीक़ा भी बहुत अच्छा और पूर्ण नहीं कहा जा सकता है परन्तु पहले सशोधनों पर कार्यवाहि करने और मूल प्रस्ताव को संशोधनों के भुगतान तक छोड़े रखने की प्रथा से ज्यादा अच्छा हैं।

पार्लियामेन्ट में ऐसी स्थिति उपस्थित हो जाने पर सभापति संशोधन और प्रस्ताव के सम्बन्ध में बैठक के सदस्यों का भाव जानने के उद्देश्य से पहले प्रस्ताव के कुछ शब्दों को ले लेता है और सम्मति लेता है कि—

'इन शब्दों (शब्दों को पढ़ता है) के निकाले जाने का प्रस्ताव किया गया है इस उद्देश्य से कि उनके स्थान पर दूसरे शब्द रख दिये जावें।

प्रश्न यह है कि जिन शब्दों के निकाले जाने का प्रस्ताव किया गया है वे प्रस्ताव का अंग रहेंगे। यदि सम्मति अनुकूल हो तो शब्द रहेंगे और सशोधन गिर जायगा। इसके बाद प्रस्ताव के बाकी शब्दों पर विचार किया जायगा। अन्त में सभापति सम्मति लेगा कि—

'प्रस्ताव (या सशोधित प्रस्ताव) स्वीकार कर लिया जाय।'

यदि सम्मति प्रतिकूल हो तो प्रस्ताव गिर जायगा और सशोधन के शब्दों पर ठीक उसी भांति विचार किया जायगा जैसे कि मूल प्रस्ताव के शब्दों पर किया जाता है। अन्त में सभापति सम्मति इस प्रकार लेता है।

"जिन शब्दों के अंकित किए जाने का (वा सशोधित रूप में) प्रस्ताव किया गया है वे अंकित कर दिए जावें।"

जिन व्यक्तियों का पहले पहल (य) के ढग के संशोधनों से वास्ता पड़ा है वे तत्काल इस प्रस्ताव को नहीं समझ सकते हैं परन्तु किसी सगठन वा कौंसिल के सदस्य जो समय २ पर मीटिंगों में भाग लेते रहते हैं आसानी से समझ और उससे लाभ उठा सकते हैं।

अस्वीकारात्मक रीति

कोई सशोधन जो प्रस्ताव के बिल्कुल विरुद्ध हो, स्वीकार किया जाय वा न किया जाय इस बात का निर्णय सभापति स्वयं करता है। क्योंकि प्रत्येक संशोधन पर उसकी उपयोगिता की दृष्टि से ही विचार होना चाहिए।

कल्पना करो कि हमारे सामने एक यह प्रस्ताव है कि 'इस विषय को उपसमिति में भेजा जाय।' इस प्रस्ताव पर एक यह सशोधन आता है कि ' में' के बाद 'न' बढ़ा दिया जाय। अर्थात् विषय उपसमिति में न भेजा जाय। ऐसी अवस्था मे सभापति को चाहिए कि वह सशोधन को स्वीकार न करे और कह देवे कि विरुद्ध सम्मति दे देने पर सशोधन का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

कल्पना करो एक दूसरा प्रस्ताव यह किया गया है कि 'प्रजातन्त्र शासन सर्व श्रेष्ठ शासन होता है' और इस पर सशोधन पेश किया गया है कि श्रेष्ठ शासन के आगे 'नहीं' शब्द बढ़ाया जाय। ऐसी अवस्था में सभापति को सशोधन स्वीकार करके मीटिङ्गको अपने प्रजातन्त्र सम्बन्धी विरोध पर बल देने का अवसर देना चाहिए। इस प्रस्ताव के विरुद्ध सम्मति दे देने का सीधा साधा अर्थ यही हो सकता है कि सभा इस विषय पर अपनी सम्मति देने से इनकार करती है।

निशा-पथिक

कहानी—

(२)

(लेखक—रघुनाथ प्रसाद पाठक)

रिक्शाके उसके वासस्थान की ओर रवाना होते ही सत्याचरण की व्याकुलता कम होने लगी। परतु उसी समय नाना प्रकार के विचार उसके मस्तिष्क पर अधिकार करने लग गये। वह सोचता था कि मैंने एक दुखी बहन की रक्षा तो की परन्तु उसके भविष्य का प्रबन्ध मुझे नहीं सूझ पड़ता है। यदि लड़की के स्थान में वह लड़का होती तो प्रबन्ध मे विशेष कठिनाई न होती और समस्या सहज ही सुलझ जाती। मैं उसको विश्वनाथ बाबू के यहा नौकर रखा देता। यदि कनकम्मा को किसी परिवार में "आया" के रूप में नौकर करादूं तो कदाचित उसे बुरा न लगे क्योंकि वह उस वर्ग से सम्बन्धित प्रतीत होती है जिससे प्राय: रंगूनमें "आया" आती हैं। परन्तु कठिनाई यह है कि मैं यहाँ किसी से परिचित नही हूँ जो उसे अपने यहा नौकर रख लेवे। लड़की ईसाई अथवा मुसलमान मिश्नरियो के सुपुर्द की जा सकती है परन्तु ऐसा करना मेरे हिन्दू भावों, आदर्शो एवम् कनकम्मा के प्रति अन्याय होगा। मुझे निश्चय नहीं कि कनकम्मा ईसाई या मुसलमानों की शरण लेना पसन्द करेगी या नही।

इस प्रकार सोचते २ सत्याचरण अपने वास स्थान पर पहुँचा और २०० रुपये लेकर भद्रपुरुष के मकान को लौट गया और उस मोटे मद्रासी के हाथ में २००) रख कर कनकम्मा को मुक्त कर लिया।

जिस भद्रपुरुष ने सत्याचरण की सहायता की थी उनका नाम गोपाल चन्द्र चौधरी था। सत्याचरण ने उनसे पूछा—"महाशय! अब उसके सम्बन्ध मे क्या करना चाहिये?"

गोपाल चन्द्र ने उत्तर दिया—

"रंगून मे इन दक्षिणियो का एक बड़ा उपनिवेश है। कनकम्मा से पूछना चाहिए कि यहा कोई उसका परिचित वा सग-सम्बन्धी है या नहीं'

पूछे जाने पर लड़की ने बतलाया कि रंगून मे उसका कोई सगा सम्बन्धी नहीं है। परन्तु "काला बस्ती" मे एक बुढ़िया है जिसे वह चाची कहती है। लड़की ने यह भी बतलाया कि वह बुढ़िया उसको केवल एक रात अपने पास रख सकेगी और कि वे लोग बहुत ग़रीब हैं। उसका चचा पक्का शराबी है और अधिक समय पर्यंत उसके पास रहने में उसे डर लगता है।

इसपर सत्याचरण ने कहा,

"मगर के मुँह में डाल देने के लिये तो हमने लड़की को शेर के मुंह में से नहीं निकाला है।"

गोपाल बाबू ने कहा,

"प्रिय भाई ! एक रात में तो वे लोग इसे खा नहीं सकते। एक या दो दिन के लिये इसे वहा जाने दीजिये।"

यह कहकर गोपाल बाबू कनकम्मा की ओर मुड़े और पूछा,

"क्या तुम उनके मकान को पहचान लोगी"

कनकम्मा ने उत्तर दिया, यदि मुझे वहाँ ले जाया गया तो जरूर पहचान लूंगी।"

दोनों व्यक्ति एक गाड़ी में बैठकर 'कचा बस्ती' पहुँचे। कनकम्मा ने एक झोंपड़े की ओर इशारा किया और बतलाया कि उस झोपड़े में उसकी चाची रहती है। एक आदमी चटाई पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था वह उसक चचा प्रतीत होता था। कनकम्मा को देखते ही अपनी भाषा में कुछ कहता हुआ वह उठ खड़ा हुआ। उसी क्षण लगभग १०-१२ व्यक्ति वहा आकर जमा हो गये। कनकम्मा ने उस भीड़ में एक बूढ़ी स्त्री की ओर इशारा किया। वह उसकी चाची थी और वह बड़ी भयानक सूरत की स्त्री थी।

सत्याचरण ने कनकम्मा से कहा,

"पूछो यह तुम्हे रखने के लिये तय्यार हैं या नहीं ?"

लड़की ने बुढ़िया से बात चीत की। उत्तर प्रत्युत्तरमें तेलुगु शब्दों का बवंडर उठ खड़ा हुआ। जब बवंडर कुछ शान्त हुआ तब कनकम्मा ने सत्याचरण को बतलाया कि उसकी चाची उसे अपने पास रखनेके लिए तो तय्यार है किन्तु केवल दो दिन के लिए और यह भी कि भोजन व्यय के लिये ॥) वह बतौर पेशगी के चाहती है।

सत्याचरण ने तत्काल ॥) जेब से निकाल कर बुढ़िया के हाथ पर रख दिये।

"हम तुम्हे दो दिन बाद आकर ले जायेंगे", कनकम्मा को यह कहकर सत्याचरण और गोपाल बाबू वहा से लौट पड़े और एक रिक्शा में सवार हो गये।

सत्याचरण ने पीछे की ओर मुड़ कर देखा तो कनकम्मा को करुणा भरी दृष्टि से अपनी ओर टकटकी लगाए देखते हुए पाया। वह उस ग़रीब लड़की के लिये दुखी होने लगा। वह सोचने लगा कि उस की मुक्ति का इस प्रकार का प्रदर्शन करने के बाद हमें कनकम्मा को उस दुर्गन्धमय बिल में नही छोड़ना चाहिए था। जरूर उस बूढ़े शराबी ने उसे पीटना भी शुरु कर दिया होगा।

शहर के बड़े चौराहे पर पहुँच कर दोनों सज्जन रिक्शा से उतरे। गोपाल बाबू ने कहा,

"अब मैं जाता हूं।"

सत्य का हृदय उस समय भी नई समस्या से परिपूर्ण था। उसने पूछा,

"क्या हम दो दिन के भीतर लड़की के लिये किसी अच्छे निवास स्थान का प्रबन्ध नहीं कर सकते।"

गोपाल बाबू ने कहा,

"क्यों नहीं। हमारे पास पूरे दो दिन हैं, इस का अर्थ यह है कि हमारे निर्णय पर ४८ घंटे हैं। साम्राज्य तो इससे भी कम घण्टोंमें बने और बिगड़े हैं।

सत्याचरण ने कहा,

"अगर आप साय काल को अपने मकान पर रहें तो मैं विश्वनाथ बाबू के साथ आप के पास

आ आऊँ।

सत्याचरण विश्वनाथ बाबू के साथ गोपाल बाबू के मकान पर नियत समय पर पहुँच गया। गोपाल बाबू ने सत्याचरण की तरफ देखा और कहा,

"उस कनकम्मा के लिये मैंने एक काम तलाश कर लिया है। यदि तुम उस स्थान पर उसे रखने में सहमत हुए तो वह उस के लिये बहुत उपयुक्त रहेगा।"

सत्याचरण के इस सम्बन्ध मे कुछ अधिक विवरण माँगने पर गोपाल बाबू ने कहा,

"मेरे एक मित्र की पुत्री के लिये एक "आया" की जरूरत है।"ट्रेन्ड आया" यहाँ बडी २ तनख्वाहें माँगतीं हैं। २५) से कम पर तो वे बात भी नहीं करतीं। मेरा मित्र भोजन और निवास स्थान के अतिरिक्त कनकम्मा को १०) मासिक तक दे देगा। कनकम्मा को तुम वहा रख सकते हो। थोड़े दिनों में ही वह अपना काम सीख लेगी। स्थान सुरक्षित है, इस की मैं गारन्टी दे सकता हूँ। अपने माता पिता के यहा भी कदाचित वह ऐसी सुरक्षित नहीं रह सकती जैसे मेरे मित्र के यहाँ।"

विश्वनाथ बाबू ने कहा,

"मेरी सम्मति मे लड़की को वहाँ रख देना चाहिए वह "आया"का काम सीख लेगी और भविष्य में अच्छा वेतन भी प्राप्त करने के योग्य हो जावेगी।"

गोपाल बाबू ने कहा,

"तब तो हमें "काला बस्ती' जाकर उसे ले आना चाहिए। इस समय तक वह काफी पिट चुकी होगी। तुम्हारे लिये यह सबक होना चाहिए कि भविष्य मे इसप्रकार के किसी काम में मत पड़ना। इस संसार में पहले तुम्हें अपनी खबर लेनी चाहिए और दूसरों को अपनी खबर स्वयं लेने देना चाहिए।"

दूसरे दिन प्रातः तीनो सज्जन कनकम्मा को लेने "काला बस्ती" गये। कनकम्मा झोंपड़े के बाहर हथौड़ो से लोहे को पीट रही थी। सत्याचरण और उसके साथियों को पहचानते ही वह मुस्कराती हुई उठ खड़ी हुई और आगन्तुकों के आगमन की अपने रिश्तेदारों को सूचना देने के लिये घर के भीतर दौड़ी चली गई।

विश्वनाथ बाबू ने पूछा,

"कनकम्मा यही है न ? है तो युवती"

इतने में ही पास पड़ौसके स्त्री पुरुष पास-पड़ौस के झौपड़ो मे से निकलकर वहा जमा हो गए। बाबू लोग कनकम्मा को लेने आगए हैं यह खबर पास पड़ौस मे फैल गई। वे लोग सत्याचरण की ओर इतनी उत्सुकता से देख रहे थे कि मारे शर्म के उसका मुँह रक्त वर्ण होगया था। वह अच्छी तरह समझ गया था कि वे लोग उसे लड़की का भावी पति समझते हैं।

कनकम्मा बाहर आई। इन चंद मिनटों में उसने कपड़े बदल लिये थे, हाथो की धूलि साफ़ कर ली थी। बालों में कंघो कर ली थी। पुरानी और फटी हुई साड़ी के बजाय पिछले दिन वाली लाल बार्डर की पीली साड़ी पहन ली थी। सम्भवतः चाची ने उसे विवाह के कुछ उपहार भी प्रदान किये थे। लड़की अपने हाथ में पीतल के दो बर्तन

और दो रंगीन साड़ियाँ लिये हुए थी।

रंगून में तांगे में केवल तीन सवारियां बैठ सकती हैं। चूंकि अब वे ४ व्यक्ति थे इस लिये गोपाल बाबू ने ट्राम से चलने का प्रस्ताव किया। परन्तु विश्वनाथ बाबू को कनकम्मा के साथ एक ही गाड़ी में बैठना पसन्द न था। इसलिये उन्हों ने यह कहते हुए "कि मैं ट्राम में जाऊंगा तुम गाड़ी में बैठ कर मेरे पीछे चले आओ। ट्राम के स्टेशन के सामने मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा, छतरी खोल कर लपक गये और दूसरों के बोलने की भी प्रतीक्षा न की।

कनकम्मा ने बड़ी प्रसन्नता से प्रत्येक से विदा ली। उसके हाव-भाव से स्पष्ट था कि वियोग के दुख से उसे ज़रा भी दुख न था।

स्टेशन के निकट पहुँचने पर विश्वनाथ बाबू प्रतीक्षा करते देख पड़े। वे गाड़ी से उतरे। कनकम्मा ने मुस्कराते हुए सत्याचरण से पूछा "क्या तुम्हारा मकान यहीं है" सत्याचरण को कहना पड़ा "मेरा मकान दूर है।" जो भद्रपुरुष तुम को "आया" के रूप में रखना चाहता है वह नज़दीक ही रहता है।"

ग़रीब लड़की ने सत्याचरण की ओर देखा निराशा और आश्चर्य से उसका चेहरा बात की बात में निष्प्रभ हो गया। उसने पूछा,

"क्या तुम मुझे अपने पास नहीं रक्खोगे?"

कनकम्मा को इस निर्दयी जगत पर विश्वास नहीं रह गया था। अलक्षितभव उसकी ओर मुँह निकाले झाँक रहा था।। उस अपरिचित व्यक्ति (सत्याचरण) के साथ रहने में उसको रक्षा सम्भव थी और वह पूर्णत. सत्याचरण पर अवलम्बित थी।

सत्याचरण के चेहरे पर पसीना छा गया। उसको सूझ नहीं पड़ा कि वह किस प्रकार लड़की पर यह स्पष्ट कर देवे कि ······· ऐसा होना नितांत असम्भव है। हृदय को थाम कर उसने कनकम्मा से कहा,

"मेरा परिवार यहाँ नहीं है इसलिए मुझे नौकरानी की जरूरत नहीं है। सम्प्रति तुम इस भद्रपुरुष के यहाँ काम करो, यदि तुम "आया" का काम सीख गईं तो भविष्य में तुम्हें अधिक वेतन के अच्छे कार्य प्राप्त हो जायेंगे।"

कनकम्मा चुपचाप उदास खड़ी रही। सत्याचरण की युक्तियाँ उसे सन्तोष प्रदान नहीं कर सकीं।

वे तीनों उसे नये स्वामी के मकान पर छोड़ कर अपने २ घर चले गए।

सत्याचरण की अवस्था देखते ही बनती थी। उसका हृदय लज्जा और ग्लानि से परिपूर्ण था, वह सोचता था कैसी विचित्र स्थिति है। क्या सचमुच उसे मेरे साथ रहने की आशा थी? क्या वह बहुत निराश हुई? क्या मुझे उससे मिलना चाहिए या नहीं? परन्तु उससे बिल्कुल न मिलने से मैं क्योंकर बच सकूंगा? मैं उसका संरक्षक बन गया हूँ इसलिए मुझे कुछ हद तक उसकी देख-रेख करनी ही चाहिए। क्या कनकम्मा की अश्रु-पूर्ण चितवन अर्थ शून्य थी? नहीं! नहीं!! उसमें शोक था, नैराश्य था और थी मेरे लिए तीव्र भर्त्सना।'

प्रातः काल का समय सत्याचरण कॉम की

तलाश में व्यतीत किया करता था और सायं-काल का समय कनकम्मा से भेंट करने में। वह बड़ी अनिच्छा से कनकम्मा से मिलने जाया करता था। वह कनकम्मा को प्राय: दो बच्चों के साथ गली में इधर-उधर डालते हुए देखा करता था। सत्याचरण को देखते ही हर्ष के मारे उसकी आँखें चमक आया करती थी और वह सब का छोड़कर सत्याचरणके पास आती और पूछती थी—"बाबू! तुम कुशल से तो हो? इस पर सत्याचरण अपने को बहुत अपराधी अनुभव करता था। उसने लड़की का कल्याण करने की चेष्टा की थी परन्तु इस चेष्टा से उसने लड़की के जीवन में महान् दु:ख और निराशा का सचार कर दिया था। वह सोचता था कि मैंने क्यों असम्भव आशा का लड़की के हृदय में संचार किया है।

वह लड़की के स्वास्थ्य का समाचार पूछता और तत्काल उससे विदा ले लिया करता था। निर्दोष लड़की के भाग्य में कितना दु:ख और बदा है इसकी कल्पना से उसका हृदय कॉप उठता था। इस विचार से कि उसने एक भयंकर गति से उस की रक्षा की है उसे कुछ सान्त्वना मिल जाया करती थी।

सत्याचरण ने काम प्राप्त करने की सिर तोड़ कोशिश की परन्तु दुर्भाग्य से सफलता न मिली। सफलता मिलती यदि उसके पास रिश्वत के लिए काफ़ी पैसा होता या काम प्राप्त करने का वह कौशल जानता होता। वह बड़ा दु:खी और चिंतित रहने लगा। उसका मेजमान बड़ा सभ्य और सच्चरित्र व्यक्ति था। परन्तु फिर भी अनिश्चित काल के लिए उस पर आश्रित रहना सत्याचरण को सह्य न था। इस बलात् आश्रय ने भी उसके दु:ख और चिंता को बढ़ा दिया था। इससे भी बुरी दशा उसकी होने का है इसका उसे पता न था। उसके मेजबान को अपनी पुत्री की शादी के लिए लम्बे अर्से के लिए अपने घर जाना पड़ गया और उसे सत्याचरण का प्रबन्ध एक होटल में कर देना पड़ा। सत्याचरण को उसने एक जगह होटल म दिला दी। वह जगह बड़ी भयङ्कर थी। वह उसे देखकर रोया करता था। कलकत्ते में एक नहीं वरन् अनको कमरे उसके निर्णय पर थे। सवारी में मोटर थी। दुर्भाग्य! अब उसे एक तंग कमरे में अपरिचितो के साथ रहना पड़ता था।

एक दिन चाय पीने के बाद साय काल को वह बाहर निकला। उसके पैर उसे कनकम्मा के घर की ओर ले गये। लड़की अपने दो बच्चों के साथ गली में घूम रही थी। सत्याचरण उसके निकट गया और देखा कि वह बहुत पतली-दुबली हो गई है, उसकी आँखें निकल आई हैं।

अपने योग-क्षेम पूछे जाने से पूर्व ही सत्या-चरण ने कनकम्मा से पूछा।

"तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? खाने को काफी मिलता है या नहीं?"

कनकम्मा ने कहा—

"मैं अच्छी तरह से हूं, बाबू।"

मालकिन मुझे काफी खाना देती है, परन्तु मेरा हृदय बहुत व्याकुल रहता है।

इस बात का उत्तर सत्याचरण के पास न था। वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा और इसके

बाद अपने नए पते की सूचना देकर वहा से चल दिया। उसने कनकम्मा से कहा, कि यदि किसी चीज की आवश्यकता हो तो वह कहला भेजे।

दूसरे समय उससे मिलने के लिये कनकम्मा होटल में गई। सत्याचरण उससे मिलने के लिये गली में उतरा। और पूछा,

"तुम यहाँ किस लिये आई हो ? क्या किसी चीज की जरूरत है ? कनकम्मा ने उत्तर दिया,

"नहीं बाबू। मैं आपका कुछ पैसा अदा करने आई हूँ। जो धन आपने मेरे ऊपर खर्च किया है मैं उसे धीरे २ आपको अदा कर देना चाहती हूँ। इससे अधिक भी मैं आपको देती, परन्तु मुझे कुछ कपड़े और बर्तनों की एवज में प्रतिमास अपनी चाची को अदा करना होता है। सत्याचरण ने पहले पैसा अस्वीकार कर देने का विचार किया परन्तु फिर उसने कुछ विचारके पश्चात् कि यदि कोई आदमी किसी अहसानसे मुक्त होना चाहता हो तो उस पर बलात् अहसान लादना उचित नहीं है—पैसा लेना स्वीकार कर लिया। अगले महीने में भी लड़की की ओर से उसे कुछ पैसा मिला। निम्न श्रेणी की अशिक्षित लड़की के आत्मसम्मान के इस ऊँचे भाव ने उसे सत्याचरण के हृदय में ऊँचा उठा दिया।

इस प्रकार तीन महीने व्यतीत होगए। सत्याचरण को किसी प्रकार का काम न मिला। सत्याचरण के पास जो पैसा शेष बचा था वह दिन प्रति दिन कम होने लग गया। खान-पान और रहन-सहन में भी उसे तंगी पड़ने लगी। बढ़ती हुई परेशानी और चिंता से उसका स्वास्थ्य गिर गया।

वह आसानी से कलकत्ता वापस जा सकता था, परन्तु चूँकि उसकी बहन इलाज के लिये स्विटजरलैंड गई हुई थी इसलिये कलकत्ता जाना वह व्यर्थ समझता था। सचमुच विपत्तियाँ अकेली नहीं आती हैं। शनिवार की रात को दफ्तरों इत्यादि के लोग बहुत देर के बाद सोते हैं। होटल के लोगों में अधिक संख्या दफ्तर वालों की थी। वे लोग अधिक रात गये तक आमोद-प्रमोद में लीन रहे। नौकरों को भी होटल के दरवाजे इत्यादि बंद करने की सुध-बुध न रही। फलत. होटल में भयंकर चोरी हुई और सत्याचरण का सब कुछ चला गया और उसकी दशा भिखारी से भी बदतर हो गई।

विश्वनाथ बाबू ने सत्याचरण को होटल में रखते समय मैनेजर से तय कर दिया था कि वह जब तक सत्याचरण को कोई काम न मिल जाय बिल के पूरे पेमेन्ट पर बल न देवे।

चोरी के दूसरे दिन से ही मैनेजर और उसके साथियों के व्यवहार मे अन्तर आ गया। वे लोग उससे घृणा और उसका अपमान करने लग गए। कभी चायमें दूध नदारद रहता था तो कभी शकर। नौकर न उसका बिछौना बिछाता था और न उसके कपड़े धोता था। शाम को दूसरे लोग चाय और मिठाई उड़ाते थे परन्तु उसे ठंडी और बिना दूध की चाय का प्याला मिलता था।

इसके बाद सत्याचरण के लिये होटल में खाना खाना असम्भव हो गया।

रिक्शा के किराये के लिए उसके पास पैसा

न था अतएव वह निरुद्देश के इधर-उधर सड़कों में घूमता रहता था। एक दिन घूमता २ वह कनकम्मा के मकान की ओर गया। उसे देखते ही कनकम्मा दौड़कर उसके पास आई और पूछा,

"उदास क्यों देख पड़ते हो। क्या तबीयत खराब है।"

सत्याचरण ने कहा,

'तबीयत खराब नहीं है'

इस पर भी लड़की को विश्वास न हुआ। सत्याचरण के हाव-भाव और आकृति को देखते हुए विश्वास करना कठिन भी था। लड़की ने पुनः मालूम किया कि बाहर निकलने से पूर्व सत्याचरण ने कुछ खाया था नहीं ?

इस बार सत्याचरण ने सचाई को छुपाने की चेष्टा न की। भूख और थकान के कारण वह गिरा ही चाहता था कि लड़की ताड़ गई और बोली,

'मेरे साथ आओ बाबू।'

सत्याचरण ठहर गया। वह न घर के मालिक से और न मालकिन से परिचित था अतः केवल इस आधार पर कि वह 'आया' का मित्र है मालिक के कमरे में प्रवेश करना और बैठना सत्याचरण को अच्छा प्रतीत नहीं होता था। परन्तु कनकम्मा ने बतलाया कि बच्चे के अतिरिक्त जो उसके संरक्षण में था घर के अन्य सब व्यक्ति सिनेमा देखने गए हैं। वे देर में लौटेंगे तथा वह और अन्य नौकर घर की चौकसी कर रहे हैं।

• सत्याचरण इतना थक गया था कि वह और अधिक देर तक खड़ा नहीं रह सकता था। वह कनकम्मा के साथ मकान के भीतर दाखिल हुआ। कनकम्मा भोजनशाला में गई और कुछ देर के उपरान्त वापस आई। उसके हाथ में भोजन से भरी हुई एक थाली थी। पास की दूकान से भोजन खरीद कर लाई थी। सत्याचरण के सामने थाली रखते हुए उसने कहा,

खाओ बाबू !

सत्याचरण बहुत भूखा था तो भी कनकम्मा से यह पूछ लेने के पूर्व कि उसे वह कैसे प्राप्त हुआ है वह खाना न छू सका। लड़की ने बताया कि उसने वह खाना अपने पैसे से खरीदा है। उसके मालिक का उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। तब सत्याचरण ने तत्काल खाना शुरू कर दिया। पेट भर भोजन करने के बाद कुछ देर तक उसने कनकम्मा से बातचीत की और जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। कनकम्मा ने उससे दूसरे दिन आने को कहा और कहा कि वह खाना तैयार रक्खेगी। इस निमन्त्रण पर सत्याचरण को कुछ लज्जा अनुभव हुई। वह सोचने लगा कि यदि मैं खाना खाने के लिए प्रतिदिन यहां आऊँगा तो कदाचित मालिक या मालकिनको आपत्ति होगी। परन्तु कनकम्मा ने आग्रह किया।

उसने कहा—

"जब मैं खाने का मूल्य दे दूंगी तो वे नाराज क्यों होने लगेंगे वे बहुत अच्छे आदमी हैं और उन्हें जल्दी क्रोध नहीं आता है। सत्याचरण को जीवन रखने के लिए खाना खाना ही था परन्तु होटल का खाना उसके लिए विष हो गया था। अत. उसे कनकम्मा का निमन्त्रण स्वीकार करना

पड़ा । लड़की ने थाली और लोटा उठाया और उन्हें भोजनशाला में ले गई । तत्काल सत्याचरण न दूसरे कमरे मे स अपनी ओर टकटकी लगाये लड़की को देखते हुए देखा । वह किसी रहस्य के उद्घाटन करने का यत्न कर रही थी । परन्तु उद्घाटन करना जानती न थी । उसे सत्याचरण से और कोई बात पूछने की हिम्मत न हुई ।

सत्याचरण लौट कर होटल में गया और शीघ्र ही उसे निश्चय हो गया कि कनकम्मा के निमंत्रण को अस्वीकार न करने में उसन अच्छा ही किया । ज्यों ही उसने अपन कमरे में प्रवेश किया त्यों ही नौकर ने आकर उसे नोटिस दिया । मैनेजर को एक हफ्ते का नोटिस देने के लिए दुख था। लगभग १००) जो उसकी ओर निकलते थे उसकी अदायगी करके एक हफ्ते के बाद उसे होटल छोड़ देना चाहिए । यदि वह तत्काल अदा कर देगा तो वे लोग उसे रहने की आज्ञा दे देंगे अन्यथा वह बाहर निकाल दिया जायगा और उसका सामान रख लिया जायगा। यद्यपि वह अधिक मूल्य का न था ।

सत्याचरणने पहले उनका खाना खानेसे इन्कार कर दिया था परन्तु इस नोटिस के बाद उसे वहा एक क्षण के लिए भी ठहरना असम्भव अनुभव होता था । तत्काल वह वहा से चल दिया और उसने वह रात एक सार्वजनिक बाग़ में व्यतीत की ।

सुबह को स्नान और कपड़े बदलने के लिये होटल मे गया । लोग चाय पी रहे थे । किसी ने भी उसकी बात न पूछी । मैनेजर यह मालूम करने के लिये कि उसे कुछ पैसा मिला या नहीं उसके कमरे में आया । सत्याचरण ने कहा,

"मैं पूरी २ कोशिश कर रहा हूँ परन्तु अभी तक पैसा नहीं मिला है ।"

मैनेजर ने कहा,

"महाशय पूरी २ कोशिश करो मैं अदालत में जाना पसंद न करूँगा और शायद तुम भी नहीं ।"

सत्याचरण को ऐसा प्रतीत हुआ मानों उसका दिमाग़ अग्नि मे जल रहा है। यह जगत बड़ी अद्भुत जगह है । कोई समय था वह इसी जगत में श्यामाचरण करोड़पति का पुत्र था । आज वही जगत है जिसमें केवल १००) के लिये एक मामूली मैनेजर से अपमानित हो रहा है । कोई समय था जब वह १००) अपने बाएं हाथ से फेंक दिया करता था ।

वह कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा । उसके बाद कपड़े बदल कर वह बाहर चला गया और थोड़ी देर के बाद कनकम्मा के मकान पर पहुँचा । कनकम्मा उसको देखतेही खाना लानेके लिये दौड़ी और जबतक उसने खाना खाया तबतक वह उसके पास खडी रही ।

लड़की ने पूछा,

"धन मिला या नहीं बाबू !"

सत्याचरण ने उत्तर दिया,

"नहीं ! यहा मैं अपरिचित हूँ पैसे का मेरा यहाँ कौन विश्वास कर सकता है ।"

लड़की ने पूछा,

"घर को क्यों नहीं लिख देते हो ।"

सत्याचरण ने कहा,

"घर पर भी मेरा कोई नहीं जो पैसे से मेरी मदद कर सके ।"

कनकम्मा कुछ चिन्तित होने लगी। उसने पूछा "क्या किसी दूसरे होटल मे खाने का प्रबन्ध नहीं हो सकता है ?"

सत्याचरणको अब सब बातें सचसच बतलानी पड़ गई। अपनी दुर्गति का छिपाना उसे उचित न जान पड़ा। कनकम्मा को और कुछ कहना बाकी नहीं रह गया था। सत्याचरण भी अनमना होकर बिदा मागने लगा। वह सोचता था यदि मैं ज्यादा देर ठहरूंगा तो शायद लड़की का कुछ अहित हो जाय। मालिक और मालिकन भले हो सकते हैं परन्तु आखिरकार वे भी मनुष्य हैं।

कनकम्मा जीने के नीचे तक सत्याचरण के पीछे २ गई। तब उसने कहा,

"घबराओ मत, बाबू! तुमने एक असहाय की सुधि ली है परमात्मा तुम्हारी सुधि लेगा। यह कह कर वह पीछे लौट आई।"

सत्याचरण को परमात्मा की दया में विश्वास नहीं था। वह सूखी हँसी हँसा और फिर अपने असीम क्रदम रखने लग गया। बहुत रात गए वह होटल को लौटा और सो गया।

वह बाहर के कमरे में सो रहा था। बड़े तड़के दरवाजे पर किसीके शोरने उसे जगा दिया। कोई बहुत धीरे २ दरवाजे को खटखटा रहा था। वह उठा और दरवाजा खोला। कनकम्मा को अपने सामने खड़ा देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। दरवाजा बन्द करके खड़ा हो गया।

वह लड़की के चेहरे की ओर देखने लगा। लड़की ने नोटों का एक बण्डल हाथ में देकर कहा,

"यह लो, बाबू! और अपने देश को चले जाओ। अब अधिक समय यहा मत ठहरो।"

सत्याचरण किंकर्तव्यविमूढ़ होकर लड़की का तरफ देखने लगा। इतनी बड़ी रकम इतने थोड़े समय मे इस गरीब लड़की को कहाँ प्राप्त हुई। उसने नोट गिने तो पूरे १५०) के पाए। उसने लड़की से पूछा,

'इतना धन तुम्हे कहाँ से मिला ?"

यह बात सत्याचरण पर प्रगट करने की लड़-की इच्छा न थी इसलिये कुछ देर वह चुपचाप खड़ी रही परन्तु सत्याचारण के प्रबल आग्रह पर उसने कहा,

"मैंने फिर अपने को उस मोटे मद्रासी के हाथ बेच दिया है। कल मैं उसके पास जाऊंगी।"

सत्याचरण की आँखों में आँसू भर आए। वह यह कहते हुए, "यह वापस लो! मै इन्हे अंगीकार न करूंगा लड़की के हाथमें नोट पकड़ाने लगा परन्तु कनकम्मा पहले ही जीने से उतरने लग गई थी। उसने रोते हुए कहा,

"परमात्मा मेरी खबर लेगा, बाबू! मेरे लिए दुखी मत होओ।"

सत्याचरण उसे पकड़ने के लिए दौड़ा परन्तु वह पहलेही दौड़ गई थी। सत्याचरण मूर्तिवत कुछ देर खड़ा रहा इसके बाद वह जल्दीसे जीने से उतर कर नीचे आया और अपने चारों ओर देखने लग गया। सड़क पर कोई न था। लड़की लोप हो चुकी थी।

श्री डा० भगवानदासजी का असेम्बली में भाषण

गत १७ अप्रैल १९३६ को लैजिस्लेटिव असेम्बली में अपने 'हिंदू विवाह बिल के सम्मति के लिये प्रचारित किये जानेके प्रस्ताव को कि १५ जुलाई १९३६ तक जनता की उस पर सम्मति प्राप्त करली जाय पेश करते हुए श्री डा० भगवानदास जी ने जो भाषण दिया था उसका अधिकांश भाग इस प्रकार है —

यह बिल स्वतन्त्रता प्रदान करने वाला है। अपनी इच्छा के विरुद्ध अपनी जाति से बाहर शादी करने को यह किसी को मजबूर नहीं करता है। अपनी जातिसे बाहर शादी करने वाले व्यक्ति के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने के लिए भी यह बिल किसी को विवश नहीं करता है। परन्तु मुझे आशा है कि यदि इस हाउस के द्वारा यह बिल पास हो गया तो इसका एक प्रभाव यह होगा कि इस प्रकार के विवाह करने वाले व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा इस घोषणा के आधार पर कि उनकी कोई बिरादरी नहीं रही है—जाति-च्युत होने से बच जायेंगे। इस बिल का यह भी प्रभाव होगा कि इस प्रकार की पब्लिक घोषणायें भी बद हो जायँगी क्योंकि घोषणा करने वाला बदनामी करने का अपराधी समझा जायगा। प्रचलित जात-पात के मूल में कतिपय वैज्ञानिक असूल हैं। मैं आशा करता हूँ कि उन्हें बाद में विस्तार पूर्वक हाउस के सामने रक्खूँगा। आज मैं सत्तेप में एक असूल का उल्लेख करूँगा और वह यह है कि अन्तर्भोज और अन्तर्विवाह का प्रवेश बड़ी सावधानता पूर्वक किया जाना चाहिये। मुझे विश्वास है इस हाउस के मेरे वे सब मित्र जो चिकित्सा व्यवसायसे सम्बन्धित हैं मेरे इस कथन का समर्थन करेंगे कि मानव जाति की ९० प्रतिशतक बीमारियां भोजन और विषय भोग की ग़लतियों के कारण होती हैं। विभिन्न जातियों के पारस्परिक अन्तर्भोज और अन्तर्विवाह के विरुद्ध प्रचलित अन्धविश्वास का कारण केवल इस चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी असूल का ठीक २ रीति से न समझना ही है।

भोजन की पवित्रता व्यक्तिगत और विवाह में स्वभाव की समता जातीय स्वास्थ्य की रक्षा करती है। इन दोनों वैज्ञानिक असूलों का गलत अर्थ लगाये जाने का फल यह हुआ है कि हिन्दू धर्म एक ऐसा भद्दा चित्र बन गया है जिसे हिंदू धर्म का प्रत्येक बाहरी दर्शक आश्चर्य और घृणा की दृष्टि से देखता है।

आज हिंदू धर्म लगभग ३००० जातियों और उप जातियों में बट गया है जो रोटी-बेटा के व्यवहार में आपस में अस्पृश्य हैं। इसका कारण उन वैज्ञानिक असूलों का ठीक प्रकार से न समझना है जो अविवेक पूर्ण स्वार्थ और शादी से परहेज करने के आदर्श में सन्निहित थे। 'अविवेक पूर्ण' शब्द पर ज्यादा बल दिये जाने

मानवी एकता

(लेखक—एक अनुभवी पत्रकार)

यह बहस की जाती है कि ससार के विविध मतों मे व्याप्त एकता के अभाव से मानवी एकता भयकर रीति से छिन्न भिन्न हुई है। जहा कहीं कोई मत सुसगठित रूप में आविर्भूत होता है वही यह दूसरे मतों के साथ भेद-भाव उत्पन्न कर देता है और वह उस कृत्रिम मजहबी प्रभुता को जन्म दे देता है जिसका अस्तित्व मानवी-एकता के लिये खतरा होता है। यह सचाई इतिहास के पृष्ठों मे और आज भी वर्तमान जगत में ऐसी जाजल्वमान है कि अधार्मिक प्रेरणाओं और सासारिक लाभ के उद्देश्यों से प्रचारित मतों की निस्सारता को लोगों को बल पूर्वक स्वीकार करना ही पड़ता है। निर्जीव मूर्त्तियों, अन्धविश्वासों, भयकर अत्याचारों और अनाचारों के प्रचार पर आश्रित मत मानव-समाज की उन्नति में भयकर रोड़ा सिद्ध हुए हैं। उन्होंने जातियों और राष्ट्रों को तबाह कर दिया है और उन्होंने मनुष्यों को मुक्त करने के बजाय दासता के बन्धनों में जकड़ दिया है। इसी वजह से सगठित मजहब ससार के ऊपर अपने आधिपत्य को खो बैठे हैं। जब कोई संगठित मजहब अपने कम सगठित और कम शक्तिशाली मजहब पर विजय प्राप्ति का यत्न करता है तो वह धार्मिक जगत में अव्य-वस्था उत्पन्न करके मानवी भ्रातृत्व का विनाश कर देता है।

सचाई और श्रेष्ठत्व के प्रति हृदय के द्वारों को खुला रखने के बजाय वह मिशनरी उत्साह और हथकडों के द्वारा उनके विरुद्ध निर्मम प्रचार जारी रखता है और इस प्रकार मनुष्यों के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान मे योग देने से चूक जाता है। धर्म्मान्धता और पाखंड का अन्त नजदीक है। तलवार के द्वारा धर्म्म के प्रचार को वर्तमान ससार कदापि सहन नहीं कर सकता। अत यदि किसी मत को जीवित जागृत शक्ति के रूप में रहना हो ता उसे विरोध वा विवाद के नहीं, वरन् दृष्टिकोण की उदारता, आन्तरिक सौन्दर्य्य और पवित्रता के बल पर ही उसे ऐसा करना चाहिए। तब ही वह सवर्षमय मतों की अशान्त दुनिया को शान्ति प्रदान कर सकता है।

धर्म्म सघ जिस रूप में आज संसार के

को जरूरत है। 'सवर्ण विवाह' का वास्तविक अर्थ जाति से बाहर अथवा तथा कथित भिन्न २ जातियों में ही आपस में विवाह करना नहीं है वरन् भिन्न २ जातियों अथवा सम जातियों मे सम स्वभाव वाले व्यक्तियों के विवाह को 'सवर्ण' कहते हैं।

श्री डा० महोदय ने यह भी कहा कि उन सलाहों पर कि बिल में 'एक पत्नीवाद' तथा तलाक की सम्भावना की 'यदि बाद में स्वभाव में भिन्नता आजाय' रक्षा के लिये गुंजाइश रखनी चाहिये वे बाद में कुछ विचार पेश करेंगे।

—

सामने है, ससार के शिक्षित स्त्री-पुरुषों के एक बड़े भाग में व्याप्त नास्तिकता और भौतिकता के लिये बड़ी सीमा तक जिम्मेवार है।

आज लोग बहुत से मतवादियों के संसर्ग में आध्यात्मिकता का उदात्त स्पर्श और वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं पाते हैं। इसके अतिरिक्त धर्माध्यक्ष श्रेणियों और वर्गों, पूँजी और श्रम, साम्राज्य और साम्यवाद के मध्य युद्ध में योग दे रहे हैं। यही एक मुख्य कारण है जिसकी वजह से धर्म संघ का पतन हो गया है और इसने महत्व को खो दिया है। वर्तमान जगत धार्मिक जीवन और उसकी उपादेयता की व्याख्या के लिये लालायित है। वह वर्तमान सभ्यता के अभिशापों से तत्काल मुक्ति की खोज में है। क्या धर्म वर्तमान जीवन की समस्याओं का मुक़ाबला करने का साहस रखता है? वर्तमान धर्मोपदेष्टा के लिये जरूरी है कि वह वेदि से जिस सत्य का उपदेश करे अपने अमल से उसकी क्रियात्मकता का परिचय देवे। धर्म को प्रकाशमान बनाने वाली सब वस्तुओं का उसे प्रबल समर्थक होना चाहिए। उसे संसार को घोषणा करनी चाहिए कि परमात्मा को कोई जाति वा राष्ट्र विशेष प्रिय नहीं है। वह किसी पुस्तक या सिद्धान्त तक सीमित नहीं है वह किसी अकेले पैगम्बर के रूप में दृश्यमान नहीं है। समस्त मनुष्य और प्राणी उसकी दृष्टि में समान हैं क्यों कि सब ही उसके बच्चे हैं। जहा तक भिन्न २ मतों का सम्बन्ध है यदि उदार भाव में धर्म का प्रचार किया जाय और सहिष्णुता की रक्षा की जाय तो निश्चय ही भिन्न भिन्न धर्मों में भ्रातृत्व पैदा होगा और उस भ्रातृत्व के द्वारा मनुष्य एकता और मित्रता के सम्मिलित सूत्रों को ज्ञात कर सकेगा।

सामाजिक अधिकारों और प्रतिबन्धों के द्वारा भी मानवी-एकता सङ्कुचित हो गई है। मजहब और सामाजिक प्रथा के नाम से लोग विशेष अधिकारों का दावा करते हैं और दूसरे लोगों पर जो उनसे हीन समझे जाते हैं अत्याचार करते हैं। भौतिक विशेषताओं, भाषाओं और रीति रिवाज के भेद अनावश्यक और उपेक्षणीय चीजें हैं परन्तु कम पढ़े लिखे, रंग विद्वेषी और संकुचित हृदय वाले लोगों ने इन्हें अत्यधिक आवश्यक बना दिया है। लोग यह नहीं समझते हैं कि विभिन्नता कुदरत का प्रसार है उसका नियम नहीं है। 'एकता' उसका नियम है और यही नियम है जिसका मनुष्य को खुले और उदार हृदय से ज्ञान की दृढ़ खोज के द्वारा अध्ययन करना चाहिए।

मनुष्य संस्कृति और उदार दृष्टि बिन्दु के अभावके कारण एक दूसरे को पराया समझते हैं।

आस्तिक बनना तथा परमात्मा की प्राप्ति करना मानवी एकता का उच्चतम आदर्श है। इसी आदर्श में मानवी-एकता का रहस्य छुपा है और जातियों, मतों और राष्ट्रों को राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक मामलों में इसी की खोज करने और अमल में लाने की आवश्यकता है।

समाप्त

——

हिन्दी साहित्य सम्मेलन नागपुर

के

सभापति श्री राजेन्द्रप्रसाद का भाषण

हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने का दावा करती है। आज भी हिन्दी बोलने वालों और समझने वालों की सख्या १४, १५ करोड़ से कम नहीं है। जो हिंदी-भाषी नहीं हैं उनमें भी नागपुर, गुजरात, बरार, महाराष्ट्र और बगाल जैसे प्रांतों में हिंदी समझने वालों की एक बड़ी सख्या है यद्यपि उनकी गिनती नहीं हुई है और करना कठिन भी है। मुसलमानों में, विशेषकर जो उत्तर भारत में बसते हैं, प्राय सभी हिंदी समझते हैं। दक्षिण भारत के मुसलमान भी प्राय हिंदी समझ और बोल लेते हैं और यद्यपि पजाब में पजाबी बोली जाती है तो भी वहां की अधिकांश जनता हिंदी समझ और बोल सकती है। इसलिए यदि हिंदी आज भी राष्ट्रभाषा होने का दावा करे तो यह स्वाभाविक ही है।

हिन्दी की व्यापक परिभाषा

मेरे कहनेका तात्पर्य आप समझ गये होंगे कि मैं हिंदी की व्यापक परिभाषा कर रहा हूँ। यों तो विद्वानोंमें इस बात में मतभेद है कि हिंदी और उर्दू दो अलग भाषाऐं हैं या एक। स्वर्गीय पंडित गोविन्द नारायण मिश्र जो, जो हिंदी और प्राकृत के प्रगाढ़ विद्वान् थे, उन्होंने द्वितीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन में सभापति-पद से दिये गये अपने भाषण में इस बात पर बहुत जोर दिया था और बहुत से प्रमाण उपस्थित किये थे कि हिंदी और उर्दू एक नहीं, दो भाषाऐं हैं। दूसरी ओर स्वर्गीय बाबू राधाकृष्ण दास ने "हिंदी क्या है" शीर्षक निबन्ध में लिखा है, "हिंदुस्तान निवासी जन साधारण की भाषा का नाम हिंदी है। हिंदुस्तान की यदि कोई एक भाषा हो सकती है तो वह हिंदी है। यथार्थ में उर्दू और कुछ नहीं है, वह हिन्दी ही है।"

आज यह हिन्दी उर्दू का सवाल भले ही विकट रूप धारण कर रहा हो और मुसलमान 'हिन्दी' नाम से झिझक रहे हों, लेकिन थोड़ा पीछे की ओर देखने से पता चलता है कि यह हिन्दी नाम मुसलमानों ही का दिया हुआ है और यह नामकरण और इस नाम का प्रयोग भी किसी साधारण व्यक्ति ने नहीं, बल्कि अमीर खुसरो, मीर तकी, इन्शा और मलिक मुहम्मद जायसी जैसे विद्वानों ने किया है। अमीर खुसरो के विषय में उर्दू के सर्वमान्य श्रेष्ठ कवि गालिब ने लिखा है कि "हिन्दुस्तान के सखुनवरों में अमीर खुसरो देहलवी के सिवा कोई उस्ताद मुसल्लिमुस्सबूत नहीं हुआ" और "मैं अहले जबान का पैरो हूँ और हिन्दियों में सिवा अमीर खुसरो देहलवी के सब का मुनकिर हूँ।" इतना ही नहीं,

गालिब ने और भी कहा है—

"गालिब मेरे कलाम में क्योंकर मजा न हो,
पीता हूँ धो के खुसरुए शीरीं सखुन के पांव।"

गालिब ही नहीं, मौलाना शिबली भी अमीर खुसरो के विषय में लिखते हैं—

'हिन्दुस्तान में छ सौ बरस से आज तक इस दर्जे का जामे कमालात नहीं पैदा हुआ और सच पूछो तो इस कदर मुख्तलिफ गूनागूं औसाफ के जामा ईरान और रूम की खाक ने भी हजारों बरस की मुद्दत में दो ही चार पैदा किए होंगे।"

वही खुसरो लिखते हैं—

"अरबी बोले आईना, फारसी बोले पाईना।
हिंदी बोले आरसी आए, मुह देखे जो इसे बताए।"

जिनके विषय में सुप्रसिद्ध कवि जौक़ ने लिखा है:—

न हुआ पर न हुआ मीर का अन्दाज नसीब।
जौक़ यारों ने बहुत जोर गजल में मारा॥

और गालिब ने कहा है—

"अपना भी यह यकीदा है बकौले मोमिन,
आप बेबहरा है जो मौतकिदे मीर नहीं।"

वही उर्दू के माने हुए, उस्ताद मीर तकी साहब हिन्दी शब्द का प्रयोग करते हैं—

क्या जानूं लोग कहते हैं किसको सुरूरे-कल्ब,
आया नहीं है लफ्ज यह हिन्दी जबा के बीच।

सुप्रसिद्ध कवि इन्शा ने अपनी 'रानी केतकी की कहानी' में उस पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में लिखा है—

"जिसमें हिन्दवी छुट किसी और भाषा की पुट नहीं हो।"

उनसे भी प्राचीन "पदमावत" के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने लिखा है—

"अरबी तुरकी हिन्दवी, भाषा जेती आहिं,
जामें मारग प्रेम का सबै सराहैं ताहि।"

पर मैं इस झगडे में न पड़कर कि व्याकरण और भाषा-विज्ञान के नियमों के अनुसार हिंदी और उर्दू एक हैं या नहीं, केवल व्यवहार रूप से कहना चाहता हूँ कि जितने लोग आपस में एक दूसरे के साथ उस भाषा में बाते कर सकते है जिसको हम हिंदी मानते हैं, चाहे वह व्याकरण के अनुसार शुद्ध हिंदी न भी हो और चाहे उसमें कितने ही शब्द ऐसे हों, जो हिंदी कोषों मे न मिलते हों, वह सभी हमारे काम के लिए हिंदी भाषा-भाषी माने जा सकते हैं, और उन सबको मैंने अपनी उपरोक्त गिनती में शामिल कर लिया है। हिंदी राष्ट्रभाषा तभी हो सकती है जब हम उन सबको शामिल करेंगे। यदि ऐसा न करें तो जो हिंदी आज पुस्तकों में लिखी जाती है वह बहुत थोड़े ही लोगों की मातृभाषा है और हिंदी भाषियों की सख्या कितनी ही प्रान्तीय भाषा-भाषियों की सख्या से भी कम हो जाती है। उदाहरणार्थ, आप बिहार को ही लीजिए। वह हिन्दी-भाषा प्रान्त समझा जाता है और ठीक समझा जाता है, पर उस प्रान्त में कई बोलिया बोली जाती हैं। शाहाबाद, सारन, चम्पारन और मुजफ्फरपुर के कुछ हिस्सों में भोजपुरी बोली जाती है, दरभगा, उत्तर मुंगेर, उत्तर भागलपुर, पूर्निया और मुजफ्फरपुर के उत्तरीय भागों में मैथिली बोली जाती है। पटना, गया, दक्षिण मुंगेर और छोटा नागपुर में मगही

बोला जाती है। तथा भागलपुर, सथाल परगना और मु गेर के कुछ हिस्सों में छीकाछीकी बोली जाती है। इनमें से मथिली के सिवा किसी की अलग लिपि नहीं है, और न किसी का कोई लिखित साहित्य। ये सभी आज की पुस्तकों की हिंदी से बहुत अलग हैं और इन बोलियों के बोलने वालों में जो शिक्षित नहीं है, वह पुस्तकों की हिंदी पूरी तरह नहीं समझ सकता। मै समझता हूँ कि सयुक्तप्रान्त में भी कई बोलिया बोली जाती हैं और आजकी सुसंस्कृत हिंदी शायद हो किसी जिले में पूरी २ शुद्धता के साथ घरों में बोली जाती हो। हा, वह बिहार की बोलियों की अपेक्षा शुद्ध हिंदी के अधिक निकट अवश्य हैं। यद्यपि मुझे मध्य प्रदेश की बोलियों का ज्ञान अधिक नहीं है, पर यहा भी यही कैफियत होगी। राजपूताना भी हिन्दी-भाषी प्रान्त कहा जाता है, लेकिन उसमें भी कई अलग बोलिया हैं। दिल्ली और पजाब के कुछ हिस्सों को भी हिन्दी भाषी प्रान्त कहते हैं, लेकिन वहा भी बोली दूसरी है। इसलिये जब हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखते हैं और विचार करते हैं तब हमको यह मानना ही पडता है कि जो कोई भी इससे काम ले सकता है, वह हिन्दी भाषा भाषी है।

राष्ट्रभाषा से यह अभिप्राय है कि यह अन्त-प्रान्तीय व्यापार और सार्वजनिक व्यवहार में सभी प्रांतों के रहने वालों द्वारा बरती जाय और कन्याकुमारी से बदरिकाश्रम तक और अटक से कटक तक सभी जगहों में एक दूसरे के साथ बातें करने और विचार विनिमय में काम में लाई जाय। अनेकानेक भेदप्रभेद होते हुए भी हिंदी इन शर्तों को पूरा करती है। तेलुगु, तामिल, मलयालम और कनाड़ी भाषाएँ ही केवल ऐसी हैं जिनका हिंदी के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है और जिनके बोलने वाले न हिन्दी समझ सकते हैं और न जिनको हिन्दी बोलनेवाले समझ सकते हैं। उनमें भी सस्कृत शब्दों की बहुलता रहने से थोड़े प्रयत्न से ही सफलता मिल सकती है। फिर भी उत्तर और पश्चिम भारत में जहां आर्य भाषाएँ बोली जाती है, हिन्दी का प्रचार आसान है और दक्षिण प्रदेशों में जहा द्रविड़ भाषाएँ प्रचलित हैं यह काम अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। राष्ट्रभाषा होन की अधिकाधिक योग्यता हिंदी में आनी और लानी चाहिये। इसके प्रचार के रास्ते में जो बाधायें हों उनको दूर करना चाहिए। हिन्दी की त्रुटियों को हटाकर उसे पूर्ण बनाना चाहिए। इस लिये स्वभावत हिन्दी के रूप पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

हिन्दी का शब्द कोष

भाषा के दो अग हैं—शब्द और व्याकरण। यह निर्विवाद है कि इस बात का निर्णय करना कि एक वाक्य विशेष किस भाषा का है इस पर इतना निर्भर नहीं है कि उस वाक्य के शब्द किस भाषा से लिये गये हैं अथवा उनकी उत्पत्ति कहा से और कैसे हुई है, बल्कि इसका निर्णय वाक्-शैली, विभक्तियों और क्रियापदों पर ही निर्भर है। उदाहरणार्थ एक छोटे वाक्य को लीजिये —

"राम ने हुक्म दिया मोटर लाओ"

इस छोटे वाक्य में राम नाम है, हुक्म

अरबी शब्द है, 'दिया' क्रिया है, 'मोटर' अंग्रेजी शब्द है, और 'लाओ' हिंदी शब्द है। इसमें हिंदी अरबी और अंग्रेजी के शब्द आये हैं पर अंग्रेजी और अरबी के शब्द रहते हुए भी यह हिन्दी का ही वाक्य है। इसलिये अगर हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द आ जायें जो किसी दूसरी भाषा से लिये गये हैं तो वह हिन्दी ही रहेगी। जितनी जिन्दा भाषायें हैं वे अपने शब्द कोष को बराबर बढ़ाती जाती हैं और उनके कवि तथा लेखक दूसरी भाषा के नए नए शब्दों का प्रयोग अपनी रचना में करते हैं। बाहर की बात जाने दीजिए, हिन्दुस्तान की भी बँगला, मराठी, गुजराती आदि प्राय सभी भाषाओं में दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है, उर्दू वाले भी इसमें किसी से पीछे नहीं हैं। उर्दू के महाकवि अकबर हिन्दी शब्दों को बड़ी आसानी से ले लिया करते थे। जैसे—

"स.ख़ुन इनसे सवरता है सखुन से मैं सवरता हूँ।"

'आगोश से सिधारा मुझसे यूं कहने वाला"

उन्होंने कितनी आसानी से 'सँवारना' और 'सिधारना' शब्दों को अपना बना लिया है।

स्वा० मौलाना हाली ने लिखा है—"जब तक शायर की फ़िक्र में इतनी भी उपज न हो, जितनी एक बये में घोंसला बनाने की और मकड़ी में जाला पूरने की होती है, उसका हरगिज मुनासिब नहीं कि इस ख्यालेस्लाम में अपना वक्त जाया करे बल्कि खुदा का शुक्र करना चाहिए कि उसके दिमाग में खलल नहीं।"

इसमें 'उपज' और 'पूरना' शब्द उन्होंने हिन्दी की बोलचाल से ले लिये हैं।

आज के युग में जब दुनिया से वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण दूरी और समय का भेद उठता जा रहा है। कोई भी भाषा दूसरी भाषाओं के सम्पर्क से अपने को अछूती नहीं रख सकती। यदि वह ऐसा प्रयत्न करे तो ससार की दौड़ मे वह बहुत पीछे रह जायगी और उनके लिये उन्नति के दर्वाजे बन्द हो जायेंगे। हिन्दी भाषा के गुणों में एक विशेष गुण यह है कि हिन्दुओं की भाषा होती हुई भी उसने अरबी-फारसी ही के नहीं बल्कि तुर्की, पुर्तगाली और अंग्रेजी इत्यादि के शब्दों को भी अछूत नहीं समझा। यदि ऐसा नहीं किया होता तो कितने ही शब्द जो हमारे घरों में पहुँच गये हैं, आज न होते और उनके पर्यायवाची शब्द हमारे पास शायद इतने सुगम न मिलते। इस प्रकार के शब्द प्राय मनुष्य-जीवन के सभी कामों से सम्बन्ध रखते हैं और उनके बिना जीवन निर्वाह कठिन हो जाता। यथा —

सौगात, गलीचा, बहादुर, मुचलका, कुर्ता, कैंची, चाकू, लाश, दरोगा, तोप, चिक आदि तुर्की से।

अल्मारी, अचार, बोतल, कमरा, आलपीन, गमला, गोभी, गोदाम, चाबी, मिश्री, मेज, तम्बाकू नीलाम, तौलिया, परात, बुताम, सन्तरा आदि पुर्तगाली से।

समन, जज, सिगरेट, बर, रजिस्टर, लालटेन मशीन, मजिस्ट्रेट, बैंक, बम, रिपोर्ट, फीस, परेड, टिकट, ड्राइवर, टीन, टेबिल, मैनेजर, मास्टर,

मिल, मेम्बर, मेम, मोटर, मिनट, मिल्टो, बिगुल, प्लेग, पुलिस, बटन, मनीबेग, रजिस्टर, मनी-आर्डर, स्टेशन, प्लेटफार्म, ट्रेन, मानीटर, कांग्रेस, कालिज, कम्पनी, कलेक्टर, कमेटी, कापी, वार्निस कुनैन, कोट, कौन्सिल, ग्लास, गिन्नी, गैस आदि अंग्रेजी से।

हद, बालिग, हलवाई, अमीर, कलम, तोशक, तकिया, हुक्का, असबाब, बुखार, वहम, बलवा, गल्ला, जेब, दलाल, बनावट आदि अरबी से।

पुर्जा, गुलाल, अखबार, नौकर, पुल, बगल, सितार, जलेबी, रन्दा, दवात, दिहात, बेबाक, पलक, चश्मा, वकील, लाला, बीमा, बाबा, पाजी, दामाद, तालाब, बखिया तमाचा, आदि फारसी से।

हिन्दी के प्राचीन प्रसिद्ध कवियों की कविता में भी बहुतेरे शब्द ऐसे मिलते हैं जो विदेशी भाषा के हैं या विदेशी शब्दों के रूपान्तर मात्र हैं। यथा —

जायसी—शेरशाह दिल्ली 'सुलतानू'।

सूरदास—हो हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबरि मेरो इते मान को 'लायक'।

तुलसीदास—गई बहोर 'गरीब नेवाजू'।
सरल सबल 'साहिब' रघुराजू।
भइ 'बकसीस' जाचकन दीन्हा।
बना 'बजार' न जाय बखाना।
जनवासे गवने मुदित सकल भूप 'सिरताज'।
कुम्भकरन कपि 'फौज' बिडारी।
लोकप जाके 'बन्दीखाना'।
जो वस्तु झूठ 'मसखरी' जाना।
बैठे बजाज, सराफ, बनिक, अनेक मनहुँ कुबेर से।
'गनी गरीब' ग्रामनर नागर।
कोटि 'कगूरन' चढ़ गए कोटि कोटि रनधीर।

बोधा—होय 'मगरूर' तापै दूनी 'मगरूरी' कीजै लघु ह्वै चलै जो तासों लघुता निबाहिये।

पद्माकर—एते गज 'बकसे' महीप रघुनाथ राव याही गज धोखे कहूँ काहू देय डारै ना।

भूषण—रूम रूँद डारै खुरासान खूँदि मारै 'खाक' खादर लौं झारै ऐसी साहू की बहार है। राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि केते 'पातसाहन' की छाती दरकति है।

मतिराम—सुबनि को मेटि दिल्ली दल दलिबे को चमू सुभट समूहन सिवा की उमहति है। कहै मतिराम ताहि रोकिबे को संगर में काहू के न 'हिम्मति' हिए में उलहति है। छत्रसाल नन्द के प्रताप की लपट सब, गरबी, 'गनीम, बरगोन,' को दहति है। पति 'पातसाह' की 'इज्जति उमराबन' की राखी 'रैया' राव भावसिंह की रहति है।

बिहारी—लिखन बैठि जाकी 'सबिहि' गहि गहि गरब 'गरूर'।
भये न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥
बपेन बढ़ी 'सबील' हूँ चील घोंसुआ मास।

तुलसीदास तथा हिन्दी के अन्य प्राचीन कवियों की रचना में अरबी फारसी के शब्दों का ही नहीं, उर्दू में आजकल प्रचलित मुहावरों का भी प्रयोग मिलता है। जैसे —

"बालिस बासी अवध का बूझिये न खाको।"

मुस्लिम तबलीग़ का कुत्सित ढंग

एक हिन्दू नवयुवक की आप बीती कहानी

मैं नरेन्द्र कुमार पिता का नाम नारायण कौम सुनार स्थान जलगाव (पूर्वी खानदेश) का रहनेवाला हूँ। एक मनुष्य खद्दर पोश जलगाव की धर्मशाला मे ठहरा हुआ था। इसके साथ एक नौकर भी था। मेरा और उस शख्स का धर्मशाला मे परिचय हो गया। उसने मुझ से पूछा, "क्या पढे हो ?" मैंने कहा "मैं मैट्रिक पास हूँ।" उसने मुझे नौकरी दिलाने के लिए कहा और लखनऊ साथ चलने को कहा। उसने कहा कि हमारी एक बूरे की मिल (Sugar Mill) है, उसमे तुम्हे नौकर करा देंगे। उसने मेरे पिता से मुझे अपने साथ ले जाने के लिये कहा परन्तु उन्होंने मना कर दिया। मेरे समझाने से कि इधर बेकारी

अर्थात् अयोध्या के निवासी खाक भी नहीं समझते।

"कैयो बार कही पिय अजहूँ न आए बाज।"

अर्थात् हे स्वामी, मैंने कई बार कहा, तुम अभी तक बाज नहीं आए।

इसमें—

खाक नहीं समझना और बाज नहीं आना, ये मुहावरे उर्दू मे आजकल प्रचलित हैं, जो शब्द पहले तुलसीदास की बोलचाल मे थे।

(क्रमशः)

अधिक है, कोई काम नही लगता, इससे मुझे आज्ञा दे दो। इस पर मुझे इस शख्स के साथ जाने की आज्ञा दे दी। इस शख्स ने मुझे ५) रु० दिये। मैंने यह रुपये घर वालो को दे दिये। यह शख्स जनेऊ पहने हुए था और अपने को ब्राह्मण बताता था। यह शख्स मुझे अपने साथ लेकर ता० १३ अप्रैल सन १६३६ को ट्रेनमे रवाना हुआ। उसने मुझे खँडुआ स्टेशन पर उतारा। दूसरे दिन फिर हम लोग ट्रेन मे बैठ गये। फिर उसने मुझे इटारसी स्टेशन पर उतारा। इटारसी से दो लड़के यह शख्स अपने साथ और लाया। इटारसी से हम लोग Grand Trunk Express (ग्राड ट्रंक एक्सप्रेस) द्वारा भोपाल तक आये। यह शख्स नौकर को मेरे पास छोड कर कई कई घण्टों के लिए चला जाया करता था। भोपाल से सवार होकर झासी उतरे। झाँसी से कानपुर आये। हम तीनों लड़कों को गाड़ी मे नौकर के साथ रहने दिया और वह स्वय प्लेट-फार्म के बाहर चला गया। बाहर से वह तीन और शख्सों को अपने साथ लाया तथा दो टिफिन केरियरों मे खाना लाया। अब हम सब आठ शख्स हो गये थे। इन लोगो ने हमसे खाना खाने के लिए कहा। खाने में मुझे मास मालूम हुआ। मैंने खाना खाने से इन्कार किया। उस शख्स ने मुझे खाना खाने के लिए आग्रह किया। मैंने पूछा

कि आप ब्राह्मण होते हुए मास क्यों खाते हैं ? उसने कहा कि हमारी तरफ ब्राह्मण मास खाते हैं। मांस खाने से ताकत आती है । मैंने भोजन नहीं किया।

नोकर के मुँह से एक साथ यह शब्द निकले कि "मिया अब तो खाना ही पडेगा।" इस पर मुझे विश्वास हो गया कि यह लोग मुसलमान हैं। नौकर तथा उन दो लड़कों मे से एक ने कहा कि मांस खाने मे बडा मजा आता है। और यदि अब नहीं खाओगे तो मुसलमान बनने के बाद तो खाना ही पडेगा और तुम्हारी शादी भी करा दी जावेगी।

मैंने तथा दूसरे लड़के ने कहा कि हमको धोखा देकर तुम लोग क्यों लाये। यह दूसरा लड़का रोने लगा। इस पर इन मुसलमानों ने हमें समझाया कि हम तुम्हे मुसलमान नहीं बनायेंगे। हमने तुमसे वैसे ही पूछा है। इन लोगों ने कहा कि लखनऊ स्टेशन पर कोई ऐसी गड़बड़ की बात न करना। इन लोगों ने हम दोनों लड़कों को चाकू का भय दिखाया।

हम लोग ता० १७ अप्रैल ३६ को लखनऊ पहुँच गये और हम सब लोग ट्रेन से उतरे। इन मुसलमानों ने हम दोनों लड़कों का हाथ पकड़ लिया। मैंने झटका देकर हाथ छुड़ा लिया और शोर मचाया। वे लोग नीचे के रास्तेसे चले गये। मुझे एक गुजराती सज्जन प्लेट फार्म पर मिल गये। मैंने उनसे सारा हाल कहा। उन्होने मुझसे कहा कि तुम इन लोगों के पीछे मत पड़ो वरना यह तुम्हें और बहकायेंगे। तुम सीधे आर्य्य-समाज मे चले जाओ।

मुझे रास्ते में म० कन्हैयालाल एक नवयुवक मौहल्ला आर्य्यनगर लखनऊ के रहने वाले मिल गये। उन्होंने मुझे गणेशगंज आर्य्यसमाज में श्री प० रासबिहारी तिवारी के पास पहुँचा दिया जहा पर मैंने अपना उपरोक्त बयान दिया।

—

आर्य्य नवयुवकों की कठिनाइयां

(एक आर्य नवयुवक ने अभी हाल में अपने विवाह के सम्बन्धमें श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज से पत्र व्यवहार द्वारा परामर्श लिया है। इस पत्र व्यवहार से आर्य्य नवयुवकों की सामाजिक कठिनाइयों और उनके निराकरण पर बहुत अच्छा प्रकाश पड़ता है इसलिए हम उसे अपने पाठकों के सम्मुख रखते हैं—सं०)

स्वामी जी, मैं जबसे आर्यसमाजी बना तबसे मेरा यह कर्तव्य होगया है कि अपने विद्वानों और आर्य-समाजियों के विचार सुनू, पढ़ू और मनन करू। मैं आपकी पुस्तकें और लेख यथा-समय पढ़ता रहता हूँ और हर प्रकार के आपके शुभ विचार पढ़कर शान्ति अनुभव कर लेता हूँ।

जब से मैं आर्य-समाजी बना तब से मुझे अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ा है परन्तु एक आर्य के नाते मैंने उन सब बाधाओं का सामना कर अपना कर्तव्य पालन किया है। परन्तु इस वक्त मेरे ऊपर एक बड़ी भारी मुसीबत आ पड़ी है और जब तक आप जैसे संन्यासी उस मुसीबत से बचने का उपाय न बतावेंगे तब तक यह मुसीबत दूर नहीं हो सकती। यही कारण है मैंने आपको यह पत्र लिख कर तकलीफ दी। अन्यथा आर्य कुमार छोटी-मोटी बाधाओं का सामना तो खुद हो कर लेते हैं।

मेरी उम्र इस समय २३ साल की है। और मुझे आर्य-समाज में प्रवेश किये करीब ५ साल हो गये हैं। मैंने आर्य समाज के अच्छे २ ग्रन्थ पढ़े हैं। और सब ग्रन्थों के पढ़ने के बाद मेरी रुचि सामाजिक सुधारों की तरफ बढ़ी। मेरी तुच्छ बुद्धिने यह अनुभव किया कि जबतक सामाजिक कुरीतियों का नाश न होगा तब तक भारतवर्ष में फिरसे पुरातन वैदिक सभ्यता का विकास होना दुर्लभ है। इस हेतु को लक्ष्य में रखते हुए मैंने यह विचार किया कि सामाजिक सुधारों में मुझे भी अग्रसर होना चाहिये। मैं यह जानता था कि अगर मैंने सामाजिक सुधार का नाम भी लिया तो मुझे मेरी बिरादरी बहुत तकलीफ देगी परन्तु इसका मैंने कोई परवाह न की और मैं यहां पर यह लिख देना अनुचित नहीं समझता कि जब अजमेर अर्द्ध-शताब्दी में व्रत लेने का समय था तो उस समय भी मैंने यही व्रत प्रभु के सामने लिया था कि प्रभो! मैं सामाजिक सुधार करने में सफल होऊँ।

मैं अविवाहित हूँ। मेरे बड़े भाई साहब और माता पिता जो कट्टर पौराणिक हैं, मुझ पर दबाव डाल रहे हैं कि पौराणिक रीति से प्रचलित जाति के अन्दर ही विवाह करूं। परन्तु मेरा विचार जैसा कि आर्य समाजी का होना चाहिए, इससे उल्टा है। मैं चाहता हूँ मेरा विवाह पूर्ण वैदिक रीति से हो और प्रचलित जात-पात तोड़ कर के हो। मेरे माता, पिता, भाई इत्यादि इस बात के सख्त खिलाफ हैं। मुझे इसी में शान्ति और सुख है कि मैं अपना २५ वर्ष की अवस्था में पूर्ण वैदिक रीति से और प्रचलित जात-पात तोड़कर गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण-व्यवस्था के अनुसार अपना विवाह करूं। अब महात्मा जी आप ही बतायें मैं क्या करूं? मेरे माता पिता रोते हैं, चिल्लाते हैं, लड़ते हैं और धमकाते हैं।

परन्तु दूसरी तरफ मेरी-आर्य-समाज के सिद्धान्त का खण्डन होता है। और आर्यसमाज के सिद्धान्त के खण्डन का मतलब मेरी आत्मा की आवाज के खिलाफ काम करना। मैं चाहता हूँ कि चाहे कुछ भी हो, आर्य-समाज के नियमों के अनुसार ही मुझे विवाह संस्कार करना चाहिये। मेरा यह विचार है कि कोई ऐसा उपाय आप बतावें ताकि मेरे माता पिता भी खुश हों और आर्य समाज के सिद्धान्तका भी बिल्कुल खण्डन न हो। आप आर्य समाज के उच्च कोटि के विद्वान और लीडर हैं। आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य होगी। आप जैसा कहेंगे वैसा ही मैं करूँगा। आप मेरे पिता जी को भी पत्र लिखकर उनको समझावें और मुझे यह भी लिखकर कृतार्थ करें कि अगर मेरे माता पिता अपनी बात पर ही अड़े रहे तो मुझे क्या करना चाहिए। ताकि मैं अपना भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करूं। मेरे दिल मे आर्य-समाज का प्रचार करने की ज्वाला धधक रही है। अगर मैं पौराणिक रीति रस्मों मे फँस गया तो फिर कुछ भी न कर सकूंगा। आप अवश्यमेव मुझे उत्तर देंगे और इस पत्र के मिलते ही उत्तर देने की कृपा करेंगे। साथ मे एक पत्र मेरे पिता जी के नाम भी लिखें। मैं उनको भेज दूंगा। मैं यहा पर यह लिख देना चाहता हूँ कि मैं आर्य-समाज के सिद्धान्त के लिये सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हूँ। आपकी आज्ञा का इन्तजार करता हूँ।

मैं खाली English Matric तक ही पढ़ा हुआ हूँ परन्तु आप लोगों की दया से ६० रु० मासिक तक कमाता हूँ और माता पिता की इस प्रकार कुछ न कुछ सेवा करता हूँ। परन्तु इतना होने पर भी माता पिता मेरे सामाजिक विचार आर्य सामाजिक होने के कारण मुझे पागल समझते हैं और बाल विवाह करने के लिये दबाव डालते हैं।

मै आपसे आखिर मे हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि आप मेरे विचारों पर विचार करें और आप इसका उत्तर अवश्यमेव शीघ्र दें। आप के पत्र का इन्तजार करता हूँ। कृपया अगर मैंने कोई भूलकी हो अथवा खराब शब्द लिखा हो आप माफ करें। आप विद्वान सन्यासी हैं।

उत्तर

श्रीमन्नमस्ते!

मैंने आपका पत्र ध्यान पूर्वक पढ़ा। मेरी सम्मति यह है कि आपको अपने इन निश्चयों में दृढ़ रहना चाहिए अर्थात् २५ वें वर्ष मे विवाह करना चाहिए और वह भी वर्णव्यवस्थानुकूल केवल गुण और कर्म के विचार के साथ, जन्म की जाति का विचार किए बिना, करना चाहिये। इसमे जो कुछ भी विरोध सहना पड़े उन्हें वीर आर्य कुमारों की भांति सह लेना चाहिए। माता, पिता और गुरु की आज्ञा सदैव पालन करनी चाहिए परन्तु इनमे से कोई भी यदि अधर्म की बात कहे तो उसे कदापि नहीं मानना चाहिए। माता पिता का विवाह का, समय से पहले अनुरोध, अधर्म है और पालनीय नहीं है। यह धर्मशास्त्र की मर्यादा है। परन्तु माता पिता की अधर्म की बात न मान कर भी उनकी सेवा शुश्रूषा कभी नहीं छोड़नी चाहिये। सेवा करने से वे एक दिन स्वयं अपनी गलती को अनुभव करके तुमसे प्रसन्न हो जायेंगे। इसी पत्र को तुम अपने पिता जी को दिखला सकते हो। —नारायण स्वामी

विविध पत्र-पत्रिकाएं

विवाह संस्कार

श्री० म० राजेन्द्र जी 'विवाह सस्कार' शीर्षक में 'आर्य मित्र' मे लिखते हैं —

कई बार विचार हुआ कि आर्य समाजियो मे विवाह सस्कारके साथ होने वाली पौराणिक अथवा रूढियों के सम्बन्ध मे 'आर्यमित्र' मे कुछ लिखा जाय परन्तु यह विचार कर चुप हो रहा कि इस प्रकार केवल लेख लिखने से इन कुरीतियों का अंत नहीं हो सकता जबतक कि हम स्वयं इन्हें क्रियात्मक रूप में परिणत करने के लिये कटिबद्ध न हो जायें। किन्तु २६ मार्च ३६ के आर्यमित्र में श्री डा० मिट्ठन लाल जी का इस सम्बन्ध में लेख पढकर यह भावना पुन जाग्रत हो उठा। आर्यमित्र में प्राय यह प्रकाशित होता रहता है कि अमुक स्थान में अमुक विवाह वैदिक रीति से हुआ। किन्तु यदि देखा जाय तो इनमें से निनानवे प्रतिशत यह वैदिक विवाह केवल सस्कार विधि हाथ मे लेकर ही कराये जाते हैं शेष सब वही पुरानी लकीर पीटी जाती हैं। ऐसी सूचनाऐं प्राय सहालगो में जब पौराणिक विवाह होते हैं अधिक प्रकाशित होती हैं। मुझे बडा दुःख हुआ जब मैंने आर्यसमाज के एक प्रमुख विद्वान को हाल ही मे अपने पुत्र का विवाह इन्हीं सहालगो में करते देखा। अब भी यह "वैदिक विवाह" रात्रि को दो तीन बजे और वह भी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के महोपदेशको द्वारा सम्पादित होते देखे जाते हैं। इन निर्बलताओ को हम लोग प्राय दो बातों मे टाल दिया करते हैं कि 'दूसरे पक्ष के लोग आर्य-समाजी नहीं थे' या 'परिवार की अशिक्षित स्त्रियाँ नहीं मानीं' कोई कोई तो यहाँ तक बढ़ जाते हैं कि इन रूढियो की सार्थकता तक सिद्ध करने पर उतर आते हैं। डाक्टर साहब ने भी दबे शब्दों मे सस्कार-विधि में कुछ संशोधन की ही इच्छा प्रकट की है। किन्तु आवश्यकता इस बात का है कि सस्कार-विधि का सशोधन न कराके हम अपनी निर्बलताओं और स्वार्थ परताओ का सशोधन करें।

विवाह सस्कार के अतिरिक्त इस अवसर पर होने वाली शेष सब प्रथाओंमे या तो पौराणिक रूढिवादकी गन्ध आती है या उनमे किसी न किसी रूप मे धन-लोलुपता निहित है। टीका, सगाई लग्न, दरवाजा खेत आदि सब रस्में ठहरावनी और वह भी पाणि-ग्रहण से पूर्व निश्चित धनराशि हथियाने का रूपान्तर है जिस से कहीं विवाह संस्कार के पश्चात् कन्या पक्ष वाले ठहरावनी का रुपया न देकर धता न बतावें। आरम्भ में कन्या पक्ष से दहेज मे धन ठहराने की रीति पड़ी होगी और आगे चलकर जब किसी ने वर पक्ष वालों को धोका दिया होगा तो उस धन राशि को भेंट, टीका लग्न, खेत अथवा दर्वाजे पर ही संस्कार से पूर्व

ही वसूल कर लेने की प्रथा चल पड़ी होगी। मेरी समझ में इनमे लेन देन, भाव ताव और पारस्परिक अविश्वाश के अतिरिक्त और काई सार नही। हम आर्य समाजी भी विवाह मे धनलोलुपता से ही काम लेत हैं तभी हमे संस्कार विधि मे सशोधन की आवश्यकता अनुभव होती है। किन्तु जा समाज अतर्जातीय विवाह की बात सोच रहा हो और यदि वह इन साधारण सी कुप्रथाओं का भी अत न कर सके वह कहा तक कृतकार्य होगा इसे पाठक स्वय विचार कर सकते हैं। तेल, माँगर, निकरौसा अथवा घुड़चढ़ी, देवताओ का पूजा, सहरा, मोहर, जामा, पाय जामा आदि तो ऐसी बातें हैं जिन्हें आर्यो को आज से वर्षों पूर्व ही समूल नष्ट कर देना था। जामा, पायजामा निश्चित ही मुसल्माना राजाओ का पहनावा है। उसके स्थानपर धोती कुर्ता टोपी, साफा आदि देशी वशभूषा अपनाने में बाल की खाल निकालने वाले आर्यसमाजियो के लिय किसी आर्य विद्वान की व्यवस्था की आवश्यकता नहीं। किन्तु हम आर्यसमाजियों का इन छोट-छोटी रूढ़ियो मे आज भी फसा रहना यह सिद्ध करता है कि हम भी अपने पौराणिक बन्धुओ स कम रूढ़ियो के गुलाम नहीं हैं। यह देखने म साधारण सी बातें प्रतीत होती हैं किन्तु वास्तव मे इन्ही बातों का परिणाम है कि आज लोग आर्यसमाज की ओर आकृष्ट नही होते। लोग समझने लगे हैं कि इसके 'खानेके दात और तथा दिखने के और हैं' यदि यह प्रथाएँ हमारे वैदिक संस्कार का अंग होतीं तो ऋषि दयानन्द ने उनका समावेश सस्कार विधि मे पूर्व से कर दिया होता। आर्य लोग जिन कठनाइयो का इन अवसरो पर अनुभव करत हैं वास्तव मे वह स्वयं उन की ही उपस्थित की हुई होती है। क्या आर्य परिवारों मे लड़के लड़कियो का अभाव है जो हम यह कहते हैं कि दूसरे पक्ष वाला अमुक विचारो वाला है? किन्तु आज हम जहा एक ओर धन लोलुपता के कारण अपना पुत्रियो को अन्य मतावलम्बियो क यहाँ देकर आर्य संस्कृति मे पली हुई इन कन्याओं को पददलित करा रहे हैं वहा दूसरी ओर पौराणिक परिवारो की कन्याओ को ग्रहण करके अपनी भावी सतति को अवैदिक वातावरण मे पालित पोषित करने की नीव डाल रहे हैं। आज हम रोते है कि आर्यो की सन्तान आर्य नहीं बनती। किन्तु मै पूछता हूँ कि पुत्र पुत्रियो का विवाह करते समय क्या आप भी यह विचार करते हैं कि जिस परिवार मे हम विवाह सम्बन्ध करने वाले है वह आर्य हैं वा नहीं? अथवा वर वा वधू सुशिक्षित तथा आर्यसस्कृति मे पालित पोषित हैं वा नहा? हम तो केवल मालदारी शान शौकत और पीछे दूसरो को दोष देकर, अपनी निर्बलताओ को छिपाना चाहते हैं।

आज यदि आर्य समाजियो ने ऋषि की बताई हुई विवाह पद्धिति के अनुसार अपने यहा विवाह करने आरम्भ कर दिये होते तो कम से कम शिक्षित हिन्दू समाज उनके पीछे होता। किन्तु हम तो आज ७० वष व्यतीत होने पर भी विवाह पद्धति मे सशोधन की ही बात सोच रहे हैं। विवाह सस्कार ही क्या हम यदि चाहे तो अपन परिवार

में सम्पूर्ण अवैदिक रीति रिवाजों को बन्द करा सकते हैं। आज भी यदि हम दृढ़ता दिखायें तो परिवार की स्त्रियाँ बिना ननुनच किये उनका परित्याग कर सकती हैं। किन्तु हम स्वयं 'ढिल मिल यक़ीन' हैं और व्यर्थ दूसरों को दोष देते हैं। दूसरे लोग, चाहे यह हमारी गृह पत्नी, पुत्र अथवा पुत्री ही क्यों न हों, हमारी दृढ़ता और सिद्धान्तों पर मर मिटने वाली लग्न को देखते हैं और उससे प्रभावित होसकते हैं। कोरी बातोंसे न कभी किन्हीं सिद्धान्तों का, चाहे वह कितने ही अच्छे क्यों न हों, प्रचार हुआ और न हो सकता है।

मध्य प्रदेश की हिन्दू स्त्रियों की दुर्दशा

'आर्य सेवक' सम्पादकीय स्तम्भों में 'प्रान्तीय हिन्दू स्त्रियों की दुर्दशा' पर प्रकाश डालते हुए लिखता है—

हिन्दू-स्त्रियों का इस प्रान्तमें बड़ी तेजीसे ह्रास हो रहा है। हिन्दू स्त्रियाँ विशेषकर श्रम जीवी स्त्रियां यहाँ से अन्य प्रान्तों में पहुंचाई जाती हैं। विशेषकर पंजाब, सी० पी० स्त्रियों का आयात्‌कार है। पंजाब में प्रति १६ मजदूरों में १५ पुरुष हैं और १ स्त्री है। देहली में प्रति ९ मजदूरों में ८ पुरुष और एक स्त्री है। इस प्रान्त में प्रति ३ मजदूरों में २ पुरुष और एक स्त्री है। इस प्रकार हमारे प्रान्त में मजदूरों का तिहाई हिस्सा स्त्रियों का है जो सब से अधिक गुण्डों के और विधर्मियों के चंगुल में फसती रही है। छिंदवाड़ा की पड़ोसी कोयले की खानों में काम करने वाले मजदूरों के महाजन रोहिले और पठान हैं। ये रोहिले और पठान प्रान्तमें श्रम जीवियों से बड़ा कड़ा सूद वसूल कर अपना जीवन चलाते हैं। मजदूर-स्त्रियां इन की दया पर निर्भर रहती हैं। मैंने परासिया स्टेशन पर एक गोरे रोहिले और उनकी काली स्त्री को छोटे २ बाल बच्चों के साथ देखा। आमला स्टेशन पर एक मुस्लिम टिकिट कलक्टर मित्र से मालूम हुआ कि उधर भील जाति तथा अन्य छोटी जातियों की स्त्रियां बड़ी आसानी से प्राप्त हो सकती हैं, खरीदी जा सकती हैं। उसने बतलाया कि आप ५ आने में १ स्त्री खरीद सकते हैं। छिंदवाड़ा और सिवनी में बात चीत से पता चला कि उधर का ग्रामीण स्त्रियाँ सुन्दर होती हैं और यह भी एक कारण होता है कि वे गुण्डों द्वारा जाल में फंसा ली जाती हैं। इससे कम दर्दनाक दशा छत्तीसगढ़ी स्त्रियों की नहीं हैं। वहां की भोली देहाती स्त्रियाँ बड़ा सस्ता शिकार हैं। उनके लिये गुण्डे तो हैं ही किन्तु ईसाई मिशनरियों का भी जाल फैला हुआ है। एक बार एक सभ्य सज्जन, बिलासपुर, अपने एक प्रतिष्ठित भाई के घर गये। वहाँ से एक छत्तीसगढ़ी सुन्दरी को पति से पृथक कर साथ लाये जैसे वह स्त्री छत्तीसगढ़ी की कोई सौगात हो। वह स्त्रीको गर्भ रहा। अपने हिन्दूपन में बट्टा लगजाने से, अपने को बचाने के लिये क्या किया पता नहीं। किन्तु उस युवती का अब पता नहीं है। इस प्रकार स्त्री-पलायन का हाल समस्त प्रान्त में जोर से चल रहा है। एक बार मेरे ग्रामीण ट्रस्ट के कार्यकर्ता ने मुझ से कहा कि "इस नगर बुरहानपुर से हिन्दू स्त्रियां पंजाब में बेची जाती हैं ऐसा हम को पता चलता है। यदि पता चल जाय तो ट्रस्ट उस स्त्री बेचने वाले गिरोह के विरुद्ध अपने व्यय से मुकद्दमा चलाने

को तैयार है।" प्रान्त में कुछ स्थानों पर अड्डे हैं जहाँ इधर उधर से स्त्रियां बटोरी जाती हैं और एकत्रित कर अन्य प्रान्त में लेजा कर बेची जाती हैं।

यह तो हुई ग्रामीण और श्रमजीवी स्त्रियों की दशा। उच्चवर्णीय हिन्दू अबलाओं की भी दर्दभरी दास्तान है। वे बचपन मे वैधव्य प्राप्त कर लेती हैं। प्रान्त की विधवाओं की सख्या प्रति एक हजार की आबादी के पीछे १ दिन स लकर ५ वष तक की आयु की १; ५ से १० तक का ६, १० से १२ तक की १८; १५ से २० तक की २४, २० से ३० तक की ५६ हैं। ये संख्याएँ वैधव्यकी कितनी भीषणता प्रगट करती हैं। विधवा पलायन, गर्भ-पात, भ्रूण-हत्या, विधवा को विष-पान, उनको जाति से पृथक् करना आदि कांड 'वैधव्य' के अनवार्य परिणाम हैं। प्रान्त के हिन्दूओं की आँखें अभी इस ओर बन्द ही हैं। कितनी ही घटनाएँ घट जाती हैं किन्तु जनता का ध्यान उधर नहीं जाता। अभी कुछ दिन पूर्व एक नगर में एक विधवा की विष द्वारा मृत्यु हुई। डाक्टरी जाच में विष के साथ में एक बच्ची भी पेटसे निकली। अफवाह थी कि उस विधवाको विष दे दिया गया था, किन्तु 'दोषी' को सामने लाने की कौन हिम्मत कर सकता है? बल्कि उसका यह नृशंस कार्य धर्म के अनुकूल और पवित्र समझा गया होगा। प्रान्त के प्रत्येक नगर से कितनी ही विधवाएँ इस प्रकार जीवन से हाथ धोती होंगी। एक नगर में आर्यसमाज को प्राप्त भूमि में बने हुए कूए को साफ किया गया तो उस में छे छोटे बच्चों की अस्थिपंजर भी निकले थे। स्त्रियों का भाग जाना या भगा ले जाना भी बड़ा जोरदार है। इन घटनाओं को भी पर्दे की आड़ में रक्खा जाता है। प्रतिष्ठा, कुलअभिमान और लोकोपवाद का भय ही इन बातों को छिपाये रखता है किन्तु क्या प्रतिष्ठा और कुल-अभिमान महिलाओं की लुटी हुई लज्जा को छिपाने में सुरक्षित है? प्रतिष्ठा और अभिमान पर तो उसी क्षण कलंक लग चुका जिस समय अनहोनी घटना घट चुकी। अभी की एक ताजी घटना है। अर्जी के एक उच्चवर्णीय व्यक्ति की नव युवती कन्या और पत्नी एक मुसलमान के घर चली गईं। बात किसी प्रकार प्रगट होगई। स्थानिक आर्य समाजियों ने उसे निकालने का प्रयत्न किया। कन्या को प्राप्त करने में वे सफल हुये। कन्या का वापिस न आने के लिये किया गया दुस्साहस देखने योग्य था। हिन्दुओंके अभिमान और मर्यादाको कुचलनेवाला था। वह युवती आध सेर गोश्त का लोथड़ा अपनी हथेली पर रखे आम बाजार से निकल कर कोतवाली गई। वहाँ उसने सैकड़ों की उपस्थिति में उस गोश्त के टुकड़े को अपनी जीभ से लगाये हुए कहा कि यह गाय का गोश्त है और मैं इसे खा चुकी।

इस प्रकार प्रान्त की स्त्रियों की दिल को दहलाने वाली अनेक दारुण कहानियाँ हैं। उनकी रक्षा यदि किसी ने की है और कोई कर रहा है तो वह है आर्य समाज किन्तु उसका काम भी बहुत कम हुआ है। अन्य संस्थाएँ यत्र तत्र उठती हैं और विलीन हो जाती हैं। वर्षा के मौसमी पौधों के समान उनका जीवन रहा है। आवश्यकता है

कि प्रान्त के प्रतिष्ठित सज्जन इस ओर ध्यान दें और संगठित रूप से स्थान २ पर कार्य शुरू करें। आशा है दलितों के प्रश्न पर प्रान्त के लोग गम्भीरता से विचार करेंगे।

आर्य्य समाज कहाँ है?

श्री० म० कृष्ण जी 'प्रकाश' में आर्यसमाज कहाँ है? शीर्षक एक लेख माला लिख रहे हैं। उस लेख-माला में उन्होंने आर्य्यसमाजियों के कौन्सिलों इत्यादि में प्रवेश का औचित्य सिद्ध करने का यत्न किया है तथा प्रवेश की प्रेरणा की है। वे लिखते हैं —

"१ अप्रैल सन् १९३७ से नया शासन-विधान लागू होगा। इससे पूर्व प्रत्येक प्रान्त में नई लेजिस्लेटिव असेम्बली बन जायगी। न केवल भिन्न २ सोसाइटियाँ लंगर लँगोटे कस कर अखाड़े में उतर रही हैं वरन् भिन्न भिन्न व्यक्ति भी अपने निजू परिचय के बल पर चुनाव के लिए तैयार हो रहे हैं। मैं आर्य्य समाजी भाइयों से कहना चाहता हूं कि वे इस अवसर को हाथ से न जाने दें और अपने अपने हल्कों से खड़े होकर लेजिस्लेटिव असेम्बली में जाने की कोशिश करें। इससे वे अपने प्रान्त की भी सेवा कर सकेंगे। और अपने देश की भी और यदि कभी आर्य्य समाज को उनकी सेवा की जरूरत हुई तो वह भी मिल सकेगी।"

दलितोद्धार और आर्य्य समाज

श्री० पं० भीमसेन जी विद्यालङ्कार 'आर्य्य मुसाफ़िर' में आर्य्य समाज के दलितोद्धार कार्य्य पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं:—

'डाक्टर अम्बेदकर की धमकी तथा मुस्लिम सिक्ख और ईसाई प्रचारकों इत्यादि के आर्थिक तथा राजनैतिक प्रलोभनों द्वारा दलितों को अपनी ओर खींचने की समस्याने दलितोद्धार अधिक पेचीदा बना दिया है। आर्य्यसमाज इस समय तक दलित भाइयों को धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक समानता, स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयत्न करता रहा है। आर्य्य समाज ने आर्थिक तथा राजनैतिक प्रलोभनों से दलितों को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न नहीं किया और न ही इस कार्य के लिए इन प्रलोभनों का उपयोग करना उचित समझा है परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि इन परिवर्तित परिस्थितियों के कारण आर्य्य समाज को अपने दलितोद्धार आन्दोलन की रीति-नीति तथा कार्य्य पद्धति पर विचार करना पड़ा है कि आर्य्य समाज को इस आन्दोलन का संचालन किस प्रकार से करना चाहिए।

(१) जिन दलित भाइयों का उद्धार किया जाय उन्हें पृथक् श्रेणी में सम्मिलित न किया जाय। उन्हें आर्य्य शब्द से ही सम्बोधित किया जाय। उन्हें 'महाशय' 'हरिजन' विशिष्ट आर्य्य' 'मेघ' आदि शब्दों से सम्बोधित न किया जाय। उन्हें आर्य्य समाज में 'आर्य्य' शब्द से ही प्रविष्ट किया जाय।

(२) स्थानीय आर्य्य समाजों को महीने में एक बार सहभोज या प्रीति भोज समाज-मन्दिर में करना चाहिए जिसमें बिना किसी भेद भाव के सब आर्य्य भाई सहयोग दें।

(३) यथायोग्य गुणानुसार इन व्यक्तियों से विवाह संस्कार करने चाहिए।

(४) जहां कहीं इन वर्गों का अधिक संख्या है वहां विशेष रूप से प्रचार किया जाय और इनके सामने समाज तथा वैदिक धर्म का महत्व दर्शाते हुए इन्हें आर्थिक तथा राजनैतिक प्रलोभनों से प्रेरित होकर धर्मान्तर मे प्रवृत्त होने से रोका जाय और इन्हें बतला या जाय कि ये लोग केवल मात्र अपने साम्प्रदायिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्वार्थ के लिए यह चाल चल रहे हैं और स्वयं इनके भीतर अछूतपन है।

(५ मन्दिर-प्रवेश आन्दोलन के सम्बन्ध में आर्य्य समाज को अपने पौराणिक मत-भेद रखते हुए भी धर्म मन्दिरों को मनुष्य मात्र के लिए खोलने का प्रयत्न करना चाहिए। इस समय वास्तविक स्थिति यह है कि भारत में जितने भी सम्प्रदाय हैं उन सबके धर्म्म-मन्दिर किसी न किसी जाति के लिए विशेष शर्तों के कारण बन्द हैं केवल-मात्र आर्य्य समाज का धर्म-मन्दिर ही ऐसा है जहां बिना किसी भेद-भाव के प्रवेश कर सकते हैं। यदि आर्य्य समाजी इस दृष्टि से दलित उद्धार आन्दोलन का संचालन करेंगे तो वे यथार्थ में दलित भाइयों का उद्धार कर सकेंगे।

आर्य्य संस्थाओं की दशा

श्री० बा० शिवनारायण जी शुक्ल एडवोकेट लखीमपुर 'आर्य्य संस्थाओं की दशा' शीर्षक में आर्य-शिक्षा संस्थाओं, कन्या पाठशालाओं और डी० ए० वी० हाई स्कूलों के हवाले से सरकारी ग्रांट के अभिशाप के सम्बन्ध में लिखते हैं—

(१) हम पाठ्य क्रम में कोई परिवर्तन नहीं कर सकते हैं जो पुस्तकें शिक्षा विभाग से स्वीकृत हैं वही पढ़ानी पड़ती हैं।

(२ किसी मुसल्मान ईसाई इत्यादि को हम प्रविष्ट करने से नहीं रोक सकते हैं।

(३) सरकारी परीक्षाओं के लिए ही पुस्तकों का बोझ कुछ कम नहीं है फिर हम धार्मिक शिक्षा का बोझ कैसे लादें। जानने वाले जानते हैं कि कन्या पाठशाला और डी० ए० वी० स्कूलों में धार्मिक शिक्षा का खुला उपहास होता है। यदि आरम्भ मे कुछ प्रार्थना के मन्त्रों का एक साथ उच्चारण और अन्त में शान्ति पाठ या आरती का नाम ही धर्म्म शिक्षा है तब तो यह प्रायः सब में होता है। कन्या पाठशालाओं को अध्यापिकाएँ तो प्रायः अनार्य और कहीं २ ईसाई अथवा बंगाली होती हैं। जब अध्यापिकाएँ ही आर्य्य नहीं हैं तो वे कन्याओं को क्या आर्य्य बनायेंगी और उनके द्वारा वैदिक धर्म्म का क्या प्रचार होता है यह मैं नहीं समझ सका। वर्तमान नियमों के अनुसार कोई शिक्षक या अध्यापिका बिना ट्रेण्ड हुए नहीं रक्खी जा सकती। यदि कोई रक्खे तो उसको सहायता मिलने मे रुकावट डाली जाती है। कई साल हुए एक कन्या पाठशाला म कन्या महाविद्यालय की स्नातिका रक्खी गई। इस पर इन्सपेक्टर नाक भौं सिकोड़ने लगी। मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि ये संस्थाएँ बिल्कुल निरर्थक हैं पर जितनी शक्ति उन पर लग रही है उसका फल हमें नहीं मिल रहा।

आर्य्यसमाज की अन्य संस्थाओंके सम्बन्ध में वे लिखते हैं:—

( ) इन संस्थाओं से आर्य्य समाज या वैदिक

धर्म्म को बहुत ही कम लाभ है।

(२) इन संस्थाओं का पृथक बोर्ड होना चाहिए जिनका समाज की अन्तरंग सभा से कोई सम्बन्ध न हो।

(३) जो संस्थाएँ प्रतिनिधि-सभा से सम्बन्धित रहना चाहें उन्हें कुछ शुल्क प्रति वर्ष देना चाहिए जिससे इन्सपेक्टर्स नियत किए जायें और इन इन्सपेक्टरों के ऊपर एक अधिष्ठाता विद्या-विभाग होना चाहिए।

(४) भविष्य में उसी दशा में संस्थाएँ खोली जायें जब उसके लिये कोई निश्चित धन दे या ट्रस्ट बनाए।

लड़कियों का नया संसार

नई लहर (पश्चिमी लहर) ने हमारे नारी समाज का जो अहित किया है वा इस समय जो अहित वह कर रही है उसका देश के समझदार व्यक्ति चिन्तापूर्वक अध्ययन कर रहे हैं। 'लड़कियों का संसार' शीर्षक में 'हिन्दू' में श्री भाई परमानन्द जी लिखते हुए उस अहित पर निम्न शब्दों में प्रकाश डालते हैं—

नवीन युग ने दो प्रकार की क्रांति उत्पन्न की है। प्रथम तो यह कि धीरे धीरे लड़कियों के स्कूल इतने बढ़ गये कि अब शायद ही कोई क़स्बा या गाव इनसे खाली हो। लाहौर जैसे शहरों में तो लड़कियों के कॉलज दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जाते हैं। इस का परिणाम यह हुआ है कि लड़कियों को घर का काम काज करने का अभ्यास नहीं रहा है और स्त्रियों से जो घर का काम किया करती थी वह काम छिन गया है। अब कपड़ा विदेशों से इतना सस्ता आने लगा है कि चर्खा कातना समय नष्ट करना समझा जाने लगा है। देशमी कपड़ा भी इतना सुन्दर बुनने लगा है कि दहेज के लिए न घर के कपड़े की आवश्यकता रही है न कशीदा के काम को। प्रत्येक कस्बे और नगर में आटा पीसने की चक्कियाँ लग गई हैं। जहाँ घर में चक्की होती थी, अब वह कहीं भी देखने में नहीं आती। पानी के लिए बड़े शहरों मे नलके लग गए हैं। कस्बों और गाँवों में निसन्देह 'पानी लाने का' काम अभी बस्तियों के लिए रह गया है।

लड़कियों के सन्मुख भी अब लड़कों वाला प्रश्न उपस्थित है। लड़की ने प्राइमरी पास करली है अब वह क्या करे? अब उसने इन्ट्रेंस पास कर लिया अब क्या करे? कॉलज की पढ़ाई समाप्त करके वह क्या करे? अभिप्राय यह कि कोई काम करने के लिए नहीं रहा, इस लिए शिक्षा के पीछे पड़े रहना आवश्यक हो गया है। इससे भी कठिन प्रश्न यह है कि इस शिक्षा से लाभ क्या है? लड़कों के लिए तो यह जितनी हानि कारक सिद्ध हुई है सबको ज्ञात है। चारों ओर से आवाज़ आ रही है कि इस शिक्षा ने हमारे नवयुवकों को अपाहिज बना दिया है। परन्तु लड़कियाँ इसी शिक्षा के पीछे दौड़ रही हैं। इसके भयावह परिणाम हमें दिखाई पड़ रहे हैं। एक ओर तो स्वतन्त्रता की चाहने वाली नेत्री हैं जो लड़कियों को बताती हैं कि पतियों की दासतामें रहना विपत्ति है, छोड़ दो, पतियों को! तुम्हारे लिए सिनेमा, थियेटर खुले हैं, रुपया कमाओ और मौज उड़ाओ।" दूसरी ओर शिक्षा प्राप्त, पतित कुछ नवयुवक हैं जो विवाह करने के लिए अपनी क़ीमत मांगते हैं। माँ बाप लड़कियों

की शिक्षा पर सब कुछ व्यय कर देते हैं। (लड़की को उच्च शिक्षा देना लड़के की शिक्षा से मँहगा पड़ता है) इस लिए मा बाप भावी दामादों को इच्छानुसार धन नहीं दे सकते। परिणाम यह है कि निराश होकर लड़कियां आत्म हत्या करना अच्छा समझती हैं। अभी इसके और क्या २ परिणाम होंगे यह भविष्य के गर्भ में है। वे एक एक करके हमारे सामने आजायेंगे।

भारतीय संस्कृति का मूल

लार्ड कर्जन की वजह से ही खुदाई का कार्य्य भारत सरकार का उत्तरदायित्व स्वीकार किया गया था और १९०२ में 'पुरातत्व विभाग' स्थापित किया गया था। १९२३ तक अशोक के समय के पहले का कोई उल्लेख योग्य स्मृति चिह्न नहीं मालूम हो सका था और युरोपीय विद्वानों का बहुत दिनों तक यह विश्वास रहा था कि भारतीय संस्कृति का मूल यूनानी सभ्यता है। 'साइंस और कल्चर' नामक पत्र इस सम्बन्ध में प्रकाश डालता हुआ सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है —

१९ वीं शताब्दी के लगभग आरम्भ में भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में बड़े विरोधी भाव प्रचलित थे। हिन्दू लोग अपनी संस्कृति को बहुत प्राचीन अर्थात् ब्रह्मा के समय की मानते थे और वे अपने दुर्भाग्य का कारण धर्म्म से पतित हो जाना बतलाते थे। विपरीत इसके यूरोपियनों का विश्वास था कि भारतीय संस्कृति अपेक्षाकृत आधुनिक है (जैसा कि स्मिथ रचित इतिहास से स्पष्ट है और जो 'प्राचीन भारत' का वर्णन सिकन्दर के आक्रमण के समय से प्रारम्भ करता है। —सम्पादक सार्वदेशिक) यूरोप के कुछ विद्वानों का यह भी विचार था कि संस्कृत चालाक ब्राह्मणों का आविष्कार है और उनके महाभारत और रामायण जैसे काव्य यूनान और रोम के काव्यों की नक़ल हैं। उनका यह भी विचार था कि हिन्दुओं के धार्मिक विचार 'बाइबिल' से लिए गए हैं और आयुर्वेद और रसायन-शास्त्र को मिला कर अन्य विज्ञान यूनान के विजेताओं से प्राप्त किए गए हैं। परन्तु यह प्रसिद्ध है कि बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी ने भारतीय सरकार की आर्थिक सहायता से काम शुरू करके लगभग १०० वर्ष पर्य्यन्त परिश्रम करके भारत के भूतकाल पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है और भारतीय तथा युरोपीय संस्कृति के मूल से सम्बन्धित पुरानी स्थापनाओं को लगभग ग़लत सिद्ध कर दिया है। बहुत से बौद्ध कालीन शिलालेख इत्यादि प्राप्त हुए थे। परन्तु चूँकि बौद्ध सभ्यता, भले ही वह कितनी महिमामय रही हो, सिकन्दर के भारत के हमले के बाद की थी इसलिए युरोप के लोगों का यह विश्वास कि भारतीय संस्कृति पर यूनान की छाप है नहीं हट सका था।

हम विशेषतया श्रीयुत सर जान मार्शल के कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने सहकर्मियों को भारतीय जगहों की खुदाई का काम करने का अलभ्य अवसर प्रदान किया। राय बहादुर दयाराम साहनी ने १९२१ में हड़प्पा को खोदा और महेनजोदड़ो को १९२३ में श्री आर० डी० बनर्जी ने खुदवाया। श्रीयुत बनर्जी ने निकली हुई मुहरों और वस्तुओं के आधार पर तत्काल जान लिया कि वे

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य्य

—गत २० अप्रैल को त्रिकम गन्तूर में जो मसूर रियासत में एक जिले का हैड आफिस है आर्य समाज विश्वेश्वरपुर बंगलोर सिटी की ओर से श्री प० छुदवनसिंह शास्त्री भास्कर पंत ने श्रीमती रमणम्मा और उनकी पुत्री शान्तम्मा व पुत्र अप्पुराव की शुद्धि की। ये जन्म से ईसाई थे। यह कार्य म० श्यामराव के प्रयत्न से हुआ।

—गत २४ अप्रैल को आ० स० रामनगर (चम्पारन) द्वारा २ नव मुस्लिमों और ६ जन्म के मुसल्मानो कुल ८ व्यक्तियों की शुद्धि की गई। शुद्धि के बाद नेपाल इलाका तराई के थारू क्षत्रियों ने अपनी बिरादरी में मिलाकर इस शुद्धि को चार चांद लगा दिए। ये ८ व्यक्ति मोजा बेतिया (चम्पारन) के हैं और जन्म की मुसलमान ३ कन्याओं के साथ विवाह का नाता भी जोड़ लिया गया है। इस कार्य में सैकड़ों सनातनी भाइयों ने पूरा २ योग दिया है।

देवशरण शर्मा प्रधान

—१६-४-३६ को आर्य समाज दातागंज में नूर मोहम्मद नव मुस्लिम की जो ७ वर्ष पूर्व अपने भाइयों के साथ मनोमालिन्य हो जाने के कारण मुसलमान हो गया था, शुद्धि की गई।

रामस्वरूप मन्त्री

—रियासी निवासी म० प्रेमचन्द्र को जो कतिपय मुसल्मानों की कुसंगति में पड़ कर मुसलमान हो गये थे उनके पश्चात्ताप करने पर शुद्ध किया गया।

मन्त्री, आ० स० मीरपुर (जम्मू)

—सी० पी० प्रान्त में ईसाईयों का अधिक जोर है, आर्यसमाज द्वारा इस वर्ष २०० शुद्धियां हुई हैं।

—आर्य्य समाज शेखूपुराने गत ३० ४-३६ को जन्म के एक ईसाई को शुद्ध किया। उसका नाम मदनलाल रक्खा गया है।

मन्त्री

चीजें बौद्ध भारत कालीन भारत की चीजों से सर्वथा भिन्न हैं। श्रीयुत मार्शल ने २०-९-२४ के इलस्ट्रेटेड लन्दन 'न्यूज' नामक पत्र के द्वारा इन चीजों की ओर जनता का ध्यान खींचा और उसके फल स्वरूप संसार का पुरातत्व जगत आश्चर्य चकित रह गया और बड़े बड़े पुरातत्व विशारद यह समझ गए कि भारत-वसुन्धरा के नीचे अभी भी बहुत से 'आश्चर्य' प्रतीक्षा कर रहे हैं। इन मालूमात का एक नैतिक प्रभाव यह पड़ा है कि इसने बहुत से युरोपियनों के इस विश्वास को कि 'भारतीय संस्कृति का मूल यूनानी सभ्यता है, नष्ट कर दिया है।

इसने भारतीयों के इस विश्वास को दृढ़ कर दिया है कि उनकी प्यारी भूमि मानवी सभ्यता की जन्मदात्री है।"

—ता० ११-५-३६ को आर्य समाज रुड़की ने एक नव मुस्लिम अब्दुररहमान की, जो ४ माह पहले सहारनपुर में जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था, शुद्धि की और उसका पहला नाम हरिश्चद्र रक्खा। यह युवक कौम का सिगानी था।

—ता० १२-५-३६ को एक जन्म के मुसलमान रफीक अहमद काम गाड़ा की शुद्धि की और उस का नाम प्रेम नारायण रक्खा।

रामचन्द्र मन्त्री

—बल्लारशा जिला चांदा (सी. पी.) की किसी कोयले की खान के बन्द हो जाने के कारण एक गरीब परिवार के ४ व्यक्ति जिसमें ३ पुरुष और एक स्त्री है रोटी की खोज में कभी रेल से और कभी पैदल यात्रा करते हुए ता० ६ मई को बुरहानपुर आए। किसी तरह वे स्थानीय आर्य कुमार सभा के प्रधान जी से मिले। इसपर उनके भोजनादि की तत्काल ही व्यवस्था करदी गई क्योंकि वे लोग ४ दिन से बिल्कुल ही भूखे थे। साथ ही उन्हें यह भी कह दिया था कि वे दूसरे दिन मजदूरी के लिये आए। इस बीच में एक 'हजरत' उनके पास पहुँच गये और आठ आने रोज की मजदूरी का लालच देकर उनको मस्जिद में ले गये। वहां उनसे कहा कि तुमने बहुत दिनो से हजामत नहीं बनवाई है इस लिए तुम हजामत बनवालो। हजामत बनवाने पर बिचारों को ज्ञात हुआ कि उनकी चोटी उड़ादी गई है और दाढी रहने दी है। उन्हों ने कुछ कहा सुना भी परन्तु उसका परिणाम केवल इतना ही हुआ कि उन्हें मसजिद से बाहर जाने नहीं दिया गया। यह समाचार जब आर्य कुमार सभा के कार्यकर्त्ताओं को ज्ञात हुआ तो उन्होंने उन लोगों को मसजिद से रात को ही निकाला। दूसरे दिन आर्य कुमार सभा के मन्त्री उनमें से दो आदमियों को मजदूरी दिलाने के लिए ले जा रहे थे तो उन पर चौक बाजार में करीब ५०-६० गुण्डों ने हमला कर दिया और उन दो आदमियों को घसीटते हुए जबरदस्ती मसजिद में ले गये। इसके बाद पुनः उन व्यक्तियों को छुड़ाया गया। अब वे सुरक्षित हैं और उन्हें मजदूरी भी दिलाई गई है।

—गुनिया देवी नामक एक विधवा स्त्री को उसके एक रिश्तेदार ने ३०) में एक पान वाले को बेच दिया था। आर्यकुमार सभा बुरहानपुर ने श्री मुन्नालाल जी शाह के प्रयत्न से उसे छुड़ा कर सर गंगाराम विधवाभवन रायपुर भेज दिया।

विनयकुमार
मन्त्री, आर्यकुमार सभा

देश देशान्तर—द्वीप द्वीपान्तर प्रचार

रियासत हैद्राबाद दक्षिण में आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम की ओर से वैदिक धर्म के प्रचार की धूम

९ मार्च से १२ मार्च सन १९३६ ई० तक आर्य्य समाज लातुर ने अपना होली-उत्सव बड़ी शान से मनाया। इस उत्सव पर बंसी लाल वकील हाईकोर्ट व श्री० लक्ष्मण राव जी ओघले व श्री० आर्य्य भानु जी व श्री० प्रह्लाद जी भजनीक पधारे थे। बड़ा उत्तम प्रभाव रहा। बावनूद फ़िसाद के आर्य्य समाज अपना प्रचार बराबर करता रहा।

१८ व १९ मार्च स० १९३६ ई० को आर्य्य समाज उदगीर में श्री० पंडित रूद्रदत्त जी शास्त्री व श्री० गोविंद राम जी भजनीक द्वारा प्रचार किया गया।

१८ से २० अर्दिबेहेश्त स० १३४५ फ० तक आर्य्य समाज चिटगोपा ने सहस्रों की हाजरी मे बड़ी शान से अपना वार्षिकोत्सव मनाया इस उत्सव पर श्री० बसी लाल वकील व श्री० गोविंद-राम जी भजनीक व श्री० नरेन्द्र जी उपदेशक पधारे थे।

१९ व २२ मार्च स० १९३६ ई० को आर्य्य समाज शाहाली बड़े का उत्सव हुवा। जिसमें श्री० पं० रूद्रदत्त जी शास्त्री व श्री० प्रह्लाद भजनीक के उपदेश व भजन हुवे, शंका समाधान भी होतो रहा। प्रात. हवन व उपदेश होता था।

२५ व २६ मार्च १९३६ ई० को आर्य्य समाज उसमानाबाद का उत्सव हुआ, इस उत्सवपर श्री० प० नरेन्द्र जी उपदेशक व श्री० प्रह्लाद जी भजनीक पधारे थे।

२६ से २८ मार्च स० १९३६ ई० को आर्य्य समाज मोमिनाबाद के उत्सव पर श्री प० रूद्र दत्त जी शास्त्री व बसी लाल वकील व श्री० गोविंद-राम जी भजनीक गये थे। उपदेश व भजन, व्याख्यान शंकासमाधान किया गया।

३ व ४ अप्रैल को हली खेड आर्य्य समाज की ओर से मेले पर प्रचार हुआ श्री बंसीलाल वकील के व्याख्यान व श्री० प्रह्लाद जी के भजन हुवे।

५-६ अप्रैल स० १९३६ ई० अम्बोलगा आर्य्य समाज की ओर से प्रचार किया गया। यहा बसी लाल वकील व श्री० प्रह्लाद जी ने उपदेश व भजन द्वारा प्रचार किया। पौराणिकों की शंकाओं का समाधान किया। जनतापर अच्छा प्रभाव रहा।

११ से १३ अप्रैल स० १९३६ ई० को आर्य्य समाज गुलबर्गा का वार्षिकोत्सव बड़ी शान शौकत से मनाया गया। १२ अप्रैल को नगर कीर्तन प्रात ८ बजे से निकल कर २ बजे वापिस आया। इस उत्सव पर बंसी लाल वकील व श्री० प० रूद्र दत्त जी शास्त्री व श्री० गोविंद राम जी व श्री प्रह्लाद भजनीक पधारे थे। प्रातः हवन, उपदेश, भजन

हुए। दोपहर में शंका समाधान रात्रो में व्याख्यान भजन होते थे। हाजरी से पिण्डाल खचाखच भर जाता था।

१५ से १८ अप्रैल स० १६६६ ई० को हजारों की हाजरी में आर्य्य समाज सुलतान बाजार हैद्राबाद का वार्षिकोत्सव हुआ। एक दिन सर्व धर्म सम्मेलन हुवा। विषय था "सृष्टि-उत्पत्ति का अभिप्राय" सभी धर्म के प्रति निधि पधारे थे। इस उत्सव पर श्री० पं० रुद्र दत्त जी शास्त्री व श्री० प० नरेन्द्र जी व श्री० प्रह्लाद जी बंसी लाल वकील आर्य्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पधारे थे। प्रात हवन, भजन, उपदेश दोपहर में शंका समाधान सायं व्याख्यान भजन होते थे।

इसके पश्चात आ० स० महाराजगज का उत्सव हुआ। सभाकी ओर से यहां श्री० प० नरेन्द्रजी व भजनीक श्री० गोविंद राम जी ने प्रचार किया।

२४, २५, २६, अप्रैल को आर्य्य स० उद्गीर की ओर से प्रचार किया गया। इस में श्री० पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री व बँसी लाल वकील व श्री० गोविंद राम भजनीक व श्री० प्रहलादजी शरीक रहे। चूंकि लिंगायत समाज ने अपना उत्सव मनाकर आर्य्य समाज के विरुद्ध लूव विष उगला अतः आर्य्य समाज उदगीर ने उसका उत्तर देकर जनता के सम्मुख झूठे का भांडा फोड़ कर रख दिया।

इस प्रकार जो वैदिक धर्म का प्रचार करके जनता को ओ३म् के झण्डे के नीचे एकत्रित कर रही है आशा है कि दानी सज्जन अपना कर्तव्य पालन करके सभा का उत्साह बढ़ायेंगे।

सामाजिक जगत

विधवा विवाह

(१)

महमौरा ग्राम की एक ब्राह्मण विधवा का विवाह भलाई निवासी ठा० गोकुलसिंह जी के उद्योग से सिधारपुर के मानी नामक ब्राह्मण के साथ हुआ।

नाहर सिंह सोदलपुर

(२)

१६ अप्रैल को बावली में श्री लाला हरगुलाल मल की सुपुत्री का जो अभी हाल मे विधवा हो गई थी पुनर्विवाह कांधला (मुजफ्फरनगर) के ला० जानकी प्रसाद जैन के साथ हो गया। इस प्रान्त में यह सबसे पहला पुनर्विवाह है जो साङ्गोपाग विधि से हुआ और जिसको कान्धला की जैन-समाज ने उचित मान लिया। विवाह सस्कार सनातन धर्म के पण्डित शंकर दत्त शर्मा ने जैन पद्धति के अनुसार कराया।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज बिसनगर Via मसाना जंकशन B B & C. I (Meter Gauge) के मन्त्री जी चाहते हैं कि आर्य्य समाज के जो संन्यासी तथा उपदेशक अजमेर से बम्बई की ओर उपर्युक्त छोटी लाइन से जाया करें वे कृपया मार्ग में उतर कर उनके यहां भी प्रचार कर दिया करें और अपने पहुँचने इत्यादि की सूचना पूर्व से दे दिया करें।

मन्त्री,
सार्वदेशिक सभा, देहली

आर्य प्रतिनिधि सभा हैद्राबाद (दक्षिण) का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री० पं० विनायकरावजी विद्यालकार बार एट ला हैद्राबाद।

उपप्रधान—श्री० विद्यामित्र उर्फ शामलालजी वकील उदगीर।

मन्त्री—श्री वंशीलाल आर्य वकील हाईकोर्ट।

उपमन्त्री—श्री० रामचन्द्रजी आर्य नलगीर।

कोषाध्यक्ष—त्र्यम्बकरावजी लातूर।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री दत्तात्रय प्रसाद जी वकील हाईकोर्ट गुलबर्गा।

अन्तरङ्ग के सदस्य

श्री० पं० नरेन्द्रजी हैद्राबाद, श्री० वीरभद्रजी औराद, श्री० हीरामन जी उदगीर, श्री० बालकृष्ण जी बुलारम, श्री० गणपत राय जी बथले, श्री० रामस्वरूप जी रायचूर, श्री गणेश लाल जी हिंगोली, श्री० तुलजा राम जी धाराशिव, श्री० हमुल जी धारूर।

बनसीलाल आर्य वकील हाईकोर्ट
मन्त्री आ० प्र० नि० सभा निजाम राज्य

सार्वदेशिक सभा की आवश्यक सूचनाएँ

१

प्रसन्नता है कि इस वर्ष आर्य समाजों ने सभा के आदेशानुसार व्यापक रूप से आर्य-समाज स्थापना दिवस मनाया है और यह स्पष्ट कर दिया है कि आर्य समाजों ने इस पर्व्व को वही महत्व देना शुरू कर दिया है जो उसे दिया जाना चाहिए। सभा ने समाजों को प्रेरणा की थी कि वे इस अवसर पर प्रति आर्य कम से कम।) देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर प्रचार के लिए संग्रह करके सभा में भेजें। हर्ष है कतिपय समाजों ने अपना अपना भाग भेज दिया है। बहुत से बाकी हैं जिनका भाग अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। वे समाजें कृपया यथा सम्भव शीघ्र अपना भाग भेज देवें। आशा है समाजें इस निवेदन पर विशेष ध्यान देंगी।

देशबन्धु मन्त्री
सार्वदेशिक सभा
देहली

२

समस्त आर्य समाजों को सहर्ष यह सूचना दी जाती है कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने, जिन्होंने दस वर्ष से अधिक श्री मदयानन्द उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर के आचार्य पद का कार्य सफलता पूर्वक करके उस काम को अब छोड़ दिया है और जो इस वर्ष, सार्वदेशिक सभा के गत निर्वाचन में प्रशंसित सभा के उपप्रधान भी निर्वाचित हुए हैं, हमारी प्रार्थना स्वीकार करके देहली को अपना हेड क्वार्टर बना लिया है और बलिदान भवन में रहने लगे हैं। आशा है कि स्वामीजी की उत्तम योग्यता और विशाल अनुभव से सार्वदेशिक सभा के कार्यों के संचालन में बड़ी मूल्यवान सहायता मिलेगी।

नारायण स्वामी
प्रधान

❋ दान सूची ❋

सार्वदेशिक सभा बावत मास मार्च-अप्रैल १९३६

१००) श्री, पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी
(सभा की आजीवन सदस्यता की राशि)
५००) श्री पण्डित चमूपति जी " "
६००) श्री सेठ जुगल किशोर जी बिरला
(वेद प्रचारार्थ)
१०६) श्रीमती देवी महादेवी जी पारामारिबो डच गयाना (विदेश प्रचार)
२५) श्री पण्डित ठाकुरदत्त जी अमृतधारा लाहौर
(साहित्य वितरण के लिए)
५) आ० स० हापुड़ (मेरठ) (वेदप्रचार)
४॥) श्री० बा० मेहर चन्द जी पुरी देहली "

१७४०॥)

आर्यसमाज स्थापना दिवस

४॥) सिटी आर्य्य समाज मंगलौर (मद्रास)
५) श्री० चौ० हरवंशलाल गुप्त सहारनपुर
५) आ० स० उदगीर पो० लातूर (निज़ाम राज्य)
२॥≈) " " डगशाई (पंजाब)
७॥।) " " उन्नाव
३।) " " हाथरस
४।≈) " " सीपरी बाज़ार झांसी
१३॥।) " " पेशावर सिटी
१०) " " रानी का तालाब फीरोज़पुर सिटी
५॥) " " बहजोई (मुरादाबाद)
३।≈) " " अलवर
२५) " " हर भगवान बाटरा असिस्टेन्ट इंजीनियर ननकाना साहिब (शेखूपुरा)
४) " " गणपति सिंह जी रईस छिबाई
(बुलन्द शहर)
१॥।) " " इस्लाम नगर (बदायूँ)

८८॥।≈)

१८३६।≈) सर्व योग।
दान दाताओं को धन्यवाद।

कोषाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

साहित्य-समीक्षा

राजस्थान वनिता आश्रम (मदारगेट) अजमेर ६ वर्षीय रिपोर्ट (सचित्र)

[१-४-२८ से ३१-३-३४ तक ।

इस आश्रम में घरों से निकाली हुई वा अन्य प्रकार से सताई हुई असहाय, दुखी और निराश्रिता देवियों, सधवाओं, विधवाओं तथा अविवाहिताओं तथा अनुचित रीति से गर्भवती देवियों की तथा उनके गर्भ की रक्षा की जाती है। जो विधवा शादी करना चाहती है उसकी अच्छे वर से शादी करदी जाती है। जो देवी अपना जीवन आश्रम में रहकर ही व्यतीत करना चाहती है उसके रहन सहन और आवश्यकतानुसार पढ़ाई इत्यादि का प्रबन्ध किया जाता है। अनुचित गर्भ के बच्चों की रक्षा की जाती है। ये गोद दे दिए जाते हैं वा आश्रम की ओर से उनके पालन-पोषण और शिक्षा आदि का प्रबन्ध कर दिया जाता है।

कार्य विवरणान्तर्गत ६ वर्षों में ४३२ कष्ट पीड़ित देवियों तथा ८ अनाथ बच्चों की रिपोर्ट आश्रम को मिली। उनमें से बहुतों को सहायता दी गई और २४२ देवियां आश्रम में ४५ बच्चों के साथ प्रविष्ट की गईं। इनमें से ३७ के विवाह हुए, १८४ उनके घर पहुँचाई गईं वा सम्बन्धियों के सुपुर्द की गईं। शेष में से कुछ चली गईं। कुछ पृथक की गईं कुछ आश्रम में रहीं, कुछ शिक्षा संस्थाओं वा दूसरे आश्रमों में भेजी गईं।

इन वर्षों में दान, भोजन व्यय, सूद इत्यादि स्रोतों से २६११८।)॥ की आय तथा २६५३१।≶)॥। व्यय हुआ जिसकी पूर्ति पिछली बचत से की गई।

आश्रम का भवन मदारगेट पर स्थित है और प्रबन्ध एक जिम्मेवार प्रबन्ध-कर्तृ सभा के आधीन है जिसके अधिकारी प्रतिष्ठित और जनता में स्थान रखने वाले सज्जन यथा प्रो० घीसूलाल जी तथा कुँवर चान्दकरण जी शारदा प्रभृति सज्जन हैं।

आश्रम में पढ़ाई, शिल्प शिक्षण इत्यादि का प्रबन्ध है तथा अच्छी दिन चर्य्या नियत की हुई है।

× × ×

कुमायूँ आर्य्य अनाथालय

[दशम वार्षिक विवरण]

यह अनाथालय गत १० वर्ष से पहाड़ी प्रदेश में हिन्दू समाज के अनाथ बालक बालिकाओं के भरण-पोषण, शिक्षा तथा उनकी विधर्मियों से रक्षा का पुण्य कार्य्य कर रहा है। अनाथालय के दो मुख्य स्थान एक हल्द्वानी और दूसरा अलमोड़ा है। इन दोनों स्थानों पर अनाथालय के अपने निजू भवन हैं। कार्य्य विवरणान्तर्गत वर्ष में अनाथालय मे २८ अनाथ बच्चे तथा लड़कियां और देविया प्रविष्ट हुई और २४ अनाथ बच्चे तथा ७ लड़कियां और देविया उनके वारिसों के पास पहुँचाये तथा पृथक किए गये। विविध स्रोतों

महिला-जगत

(सम्पादिका—श्रीमती विद्यावतीजी विशारदा)

गृहस्थ जीवन का एक मुख्य कर्तव्य*

पुरुष और स्त्री मिलकर ७ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए गृहस्थ मे प्रवेश किया करते हैं। वे ७ उद्देश्य इस प्रकार है —

(१) सन्तानोत्पत्ति और सन्तानों का पालन पोषण शिक्षण रक्षा इत्यादि।

(२) अन्न प्राप्ति

(३) बल सम्पादन

(४) धनोपार्जन तथा उसका रक्षण

(५) सुखोत्पत्ति

(६) ऋतुओं का अनुकूल बनाना

(७) पारस्परिक मित्रता का सपादन

संतानोत्पत्ति

काम वासना मनुष्य की एक स्वाभाविक वासना है। इसका नियन्त्रण मानवी सुख के लिए अनिवार्य है। इसका सम्बन्ध केवल सन्तानोत्पत्ति से है न कि उच्छृंखल रीतिसे इसका शिकार बनने से। सन्तानोत्पत्ति सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। 'पितृ ऋण' इसे ही कहते हैं। सन्तानोत्पत्ति के द्वारा अपना प्रतिनिधि देना मनुष्य का पवित्र कर्त्तव्य है। इसी रीति से मनुष्य 'पितृ ऋण' से उऋण होता है। वह प्रतिनिधि श्रेष्ठ होना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखकर मनुष्यों को अपनी सन्तानों को श्रेष्ठ बनाना चाहिए। पुत्र शब्द पु+त्र दो अक्षरों से मिलकर बना है पु=पवित्र त्र=रक्षा करने वाला। अर्थात् पुत्र वही है जो परिवार का पवित्र और उसकी रक्षा करने वाला हो। यही व्याख्या और अर्थ पुत्र शब्द का है।

सन्तान मे ये गुण आते ही तब हैं जब माता पिता स्वय उन गुणों का अपने सन्तानों में डालने का यत्न करते हैं और स्वयं भी उनको अपने जीवन में धारण करते और व्यवहार मे लाते हैं। 'पवित्रता' के लिए 'शुद्धता' और रक्षा के लिए 'सामर्थ्य' और शक्ति की जरूरत होती है। यदि ये गुण सन्तान में हों तो ठीक अन्यथा इन गुणों से रहित सन्तान के पैदा करने से परिवार और समाज को कोई खास

*श्री महात्मा नारायण स्वामीजीकी (आर्य जीवन) नामक अप्रकाशित पुस्तक से।

तथा दान, सूद, बैंक के किराए इत्यादि से ८१६२।।)। की आय तथा ६५४०।-)। का व्यय हुआ। हिन्दुओं की कट्टरता ईसाईयत और इस्लाम के पहाड़ी प्रदेश में प्रचार सम्बन्धी व्यापक प्रभाव और प्रसार को देखते हुए अनाथालय ने जो सफलता प्राप्त की है वा जो इस समय वह प्राप्त कर रहा है वह नगण्य नहीं है। योग्य संचालन और हिन्दुओं के अधिकाधिक सक्रिय सहयोग और आर्थिक सहायता से जिसका कि वह अधिकारी है यह संस्था बहुत उन्नत हो सकती है और होनी चाहिए।

लाभ तो होता नहीं हां इस सन्तान से परिवार और समाज मे एक अनावश्यक वृद्धि हो जाती है। महाभारत में आता है कि उन दिनों माताएँ निर्बल और अयोग्य सन्तान को पैदा करना पाप समझा करती थीं। इस सम्बन्ध में महाभारत में एक बड़ी उत्तम आख्यायिका आता है। वह

आख्यायिका

इस प्रकार है। एक समय सप्त ऋषि जिनमें एक अरुन्धती भी था यात्रा कर रहे थे। वे चलते चलते एक तालाब पर पहुँचे। वह स्थान बड़ा रमणीक था। उन्होंने खाने के लिए कमल के डंठल तोड़े और स्नान करने के लिए तालाब में घुसे। स्नान करके जब किनारे पर आए तो देखा कि डंठल गायब हैं। उन्होंने किसी आदमी को डंठल ले जाते हुए नहीं देखा था इसलिए संदेह हुआ कि आपस ही में किसी ने छुपा लिए हैं। सन्देह के निवारण के लिये प्राचीन काल में भी 'क़समें' खाने का रिवाज था परन्तु क़समें खाने का तरीक़ा आजकल के तरीक़े से भिन्न था। भरत ननसाल से लौटकर आए थे। राम उनको वापसी के पूर्व ही बन को चले गये थे। भरत कौशल्या के पास गए। कौशल्या ने उन पर यह आरोप लगाया कि रामके बन गमनमें केवल केकई का ही हाथ नहीं है बरन् यह उनकी भी साजिश (षडयन्त्र) का फल है। भरत के माता कौशल्या के इस सन्देह निवारणार्थ ३२-३३ क़समें खाने का वाल्मीकि रामायण में 'अयोध्याकाण्ड' में जिक्र आता है। उन क़समोंमें से भरत ने एक क़सम यह खाई थी कि 'माता' यदि राम के बन जाने में मेरा हाथ हो तो मेरी गति वह हो जो सध्या न करने वाले की होती है। एक दूसरी क़सम यह खाई था 'माता' मैं उस गति को प्राप्त होऊँ, जिसे प्राप्त शिक्षा के अनुकूल मनोवृत्ति न रखने वाले प्राप्त होते हैं। अरुन्धती ने भी सप्त ऋषियों के डंठल के सन्देह के निवारण के लिए जो क़सम खाई थी वह यह थी कि 'जो पाप माता को अनाचार करने से लगता है, निर्बल सन्तान पैदा करने से लगता है वही पाप डंठल चुराने वाले को लगे।' वस्तुत उस समय ये सब एक समानपातकक समझे जाते थे। माताएँ जब निर्बल सतान पैदा करना पाप समझती थीं तब ही राम, भीम, अर्जुन इत्यादि पवित्र और बलवान पुत्रों को पैदा करती थीं। दुःख है आज हमारी माताएं अपने कर्त्तव्यों को भुला देने से हम जैसी निकम्मी सन्तानों को पैदा करती हैं और इसका एक मात्र कारण तैयारी किए बिना सन्तानों, का उत्पन्न करना ही है। यदि तैयारी करके सन्तान पैदा की जाय तो कोई वजह नहीं कि उत्पन्न सन्तान न केवल शक्ल सूरत में ही बरन् गुणों में भी आदमी ही होवें।

पुत्र और पुत्री का पैदा करना

पुत्र और पुत्रियों की पैदाइश के सम्बन्ध में एक बड़ी मनोरंजक बात है। ससार दो भागों में बँटा हुआ है। एक भाग की माताएँ केवल पुत्र चाहती हैं और दूसरे भाग की केवल पुत्रियां। पुत्र इसलिए नहीं चाहतीं कि वह विवाह के बाद अलग हो जाता है। पुत्री के साथ रहने से अपनी

सेवा हो जाती है और अपने से उसका सम्पर्क बना रहता है। पूर्व की माताएँ पुत्र चाहती हैं, पुत्री नहीं, क्योंकि पुत्री का पूत्र में (हमारे यहां) माता पिता से सम्बन्ध छूट जाता है वह पतिकुल की हो जाती है परन्तु पुत्र का सम्बन्ध नहीं छूटता है।

हमारी माताएँ पुत्र ज्यादा चाहती हैं। इसके लिए वे अक्सर इधर-उधर झक मारा करती हैं और अपनी दुर्गति और प्राय सतीत्व का सर्व नाश कराया करती हैं। पुत्रोत्पत्ति के २ प्रकार हैं। एक स्वाभाविक प्रकार है और दूसरा 'रजोदर्शन' से सम्बन्ध रखने वाला है। जर्मनी के डाक्टरों ने खोज करके बतलाया है कि माता पिता की आयु के अन्तर से पुत्र और पुत्रियां पैदा हुआ करती हैं। उनके परीक्षण के अनुसार १०० लड़कियों के पीछे लड़कों के जन्म का अनुपात इस प्रकार है:—

(१) यदि पिता माता से छोटा हो तो	६०६
(२) ,, दोनों समान आयु वाले हो तो	६००
(३) पिता माता से १ से ६ वर्ष तक बड़ा हो तो	१०३०४
(४) ,, ,, ,, ६ से ६ ,, ,,	१२४.७
(५) ,, ,, ,, ६ से १८ ,, ,,	१४३७
(६) ,, ,, १८ या अधिक बड़ा हो तो	२०००

ये अंक उस वैदिक मर्य्यादा का समर्थन करते हैं जिसके अनुसार वधू की आयु वर की आयु से कम से कम ड्योढ़ी होनी चाहिये।

रजोदर्शन की मर्य्यादा

१६ दिन ऋतु दान के समझे जाते हैं। इनका प्रारम्भ रजदर्शन से हुआ करता है। इन १६ दिनों में जो अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या वा पूर्णिमा आवे उन्हें छोड़ देना चाहिये। शेष में से प्रथम की ४ रात्रियां भी छोड़ देनी चाहिएँ। इनके अतिरिक्त ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रियां भी त्याज्य हैं। पुत्र के इच्छुकों को छठी, आठवीं, दसवीं, बारहवीं, चौदहवीं और सोलहवीं रात्रियों में ऋतु दान उत्तम जानना चाहिए और जिन्हें कन्या की इच्छा हो उन्हें पांचवीं, सातवीं, नवमीं और पन्द्रहवीं रात्रियों में ऋतु दान करना चाहिए। साधारणतया पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के आर्त्तव के अधिक होने से कन्या उत्पन्न हुआ करती है। यह स्मरण रखना चाहिए कि दिन में ऋतु दान सर्वथा वर्जित है। इसका कारण यह है कि स्त्री पुरुष के दिन में संगम करने से प्राण क्षीण होते हैं और शक्ति का ह्रास होता है।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, में प्रकाशित।

ॐ

सार्वदेशिक

वार्षिक मूल्य २)   सम्पादक—लाला देशबन्धु   विदश से ५ शिलिंग

पञ्जाब केंद्रीय अनाथालय रावीरोड लाहौर

(लेखक श्री ला० बोसा राम जी आनरेरी सैक्रेटरी)

मास मई के अन्त में ९६ लड़के और ३२ लड़कियां थीं। ४ लड़के प्राइमरी श्रेणियों में, १४ लड़के मिडिल श्रेणियों में, ३ लड़के हाई क्लासों में, ८ लड़के दयानन्द उपदेशक विद्यालय में, ५ लड़के दयानन्द दस्तकारी स्कूल में १३ लड़के दर्जी क्लास में ९ लड़के अभी छोटे हैं। प्रातः व सायं १० लड़कों को हारमोनियम सिखाया जाता है। लड़कियों को शिक्षा देने के अतिरिक्त सीना पिरोना और घर का काम सिखाया जाता है।

यह अनाथालय एक रजिस्टर्ड बाडी के आधीन है जिसके प्रधान श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं। यहां पर बच्चों को शिक्षा के अतिरिक्त दस्तकारी भी सिखाई जाती है। ताकि वह अपनी आजीविका कमा सकें।

इस अनाथालय में हर प्रकार के बच्चे लिये जाते हैं, चाहे वह आर्य जाति के किसी भी फिरके के क्यों न हों। आज कल अलावा और बच्चों के एक बच्चा ना मास का है, जिसकी माता गुजर गई है और जिसका पिता उसका पालन नहीं कर सकता रक्षा के लिये आया हुआ है। इसके अलावा अब सरकार हमारे पास वह बालक भजने लग पड़ी है जो कुछ समय से गुम थे और जिनकी खोज के लिये सरकार बहादुर ने कोशिश करना आरम्भ कर दिया है। १० और १५ वर्ष के अब तक ५ लड़के और १८ लड़कियां आ चुकी हैं, और ४५ और बच्चों के आने की आशा है। यह बच्चे बालकपन में ही चुराये गये थे और अब अपने पते भी नहीं बता सकते। इन के लिये भी मकान की आवश्यकता है। दानी महाशय इस ओर ध्यान दें।

जिन भाइयों ने इस मास सहायता दी है उनका धन्यवाद करते हैं। अनाथालय में मकान की कमी है दो कमरे नये बनाने शुरू किये थे। वह दानियों की कृपा से बन कर काम में लाये जा रहे हैं। अब एक ऐसा कमरा चाहिये जिस में विशेष रोगियों को आवश्यकता पड़ने पर अलग रखा जा सके तथा दूसरा दफ्तर और तीसरा औषध रखने के लिये चाहिये।

दानी महाशय इस ओर ध्यान देंगे तो तुरन्त यह पुण्य का काम सफल हो जावेगा। दान वीरों से प्रार्थना है कि यथाशक्ति सहायता करें बच्चों के खाने के लिये कोई प्रबन्ध नहीं। इसके अतिरिक्त, आटा, दाल, घी, वस्त्र, दरी, चारपाई जूतादि के लिये और दूसरे अखराजात के लिये नकदी की आवश्यकता है। जो भाई जितनी सहायता कर सकें खुशी से स्वीकार होगी। अनाथालय की सालाना रिपोर्ट मुफ्त मंगा कर पढ़ें।

विषय-सूची

* * * *

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १०	श्रावण १९९३ जौलाई १९३६ ई०] [दयानन्दाब्द ११२	अंक ५

वेद की शिक्षाएँ

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन।
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोऽनु मार्ष्टु तन्वो यद् विलिष्टम् ॥ यजु २ । २४

अर्थात्—हम सब (वर्चसा सम् अगन्महि) तेज से संयुक्त हों (पयसा सम्) बलदायक दुग्धादि रस से संयुक्त हों (तनूभिः सम्) उत्तम पुष्ट शरीरों से और (शिवेन मनसा) शुभ विचार करने वाले मन से (सम् अगन्महि) संयुक्त हों (सुदत्र) उत्तम दानशील (त्वष्टा) तेजस्वी पुरुष या प्रजा पति परमेश्वर (रायः विदधातु) हमारे अन्दर सब तरह का ऐश्वर्य धारण करे (तन्वः) शरीर को (यद् विलिष्टम्) जो न्यूनता वा दोष है उसे (अनु मार्ष्टु) वह दूर करे अथवा निर्मल बनाए। इस मन्त्र के अन्दर शारीरिक तथा मानसिक शक्तियों के सम विकास का भाव बहुत स्पष्ट है।

सम्पादकीय—

वेद-प्रचार

आर्य समाज का मुख्योद्देश्य वैदिक धर्म का प्रचार है। इस उद्देश्य की पूर्ति में वह कितना सफल हुआ है इसका अंदाजा देश और विदेश में फैले हुए हमारे कार्य से, समझदार और शिक्षित लोगों के हृदय तथा विविध समाजो और सोसाइटियों के प्रोग्रामों पर पड़ी हुई वैदिक सचाइयों और हमारे प्रोग्रामों की छाप के अवलोकनसे भली-भाति लगाया जा सकता है। परन्तु हमारे प्रचारकी गति सुस्त रही है, यह हमें स्वीकार करना ही होगा। गति के सुस्त होने के कारणों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें इनके मूल में तीन बातें देख पड़ती हैं और वे साधनों की कमी, प्राप्त साधनों का अनुचित उपयोग और विविध कठिनाइयाँ हैं।

साधनों की कमी

हमारे साधनों में ३ कमियाँ हैं और वे कमिया खटकने वाली हैं। हमारे यहाँ धन, व्यक्तित्व और साहित्य सम्बन्धी कमियाँ हैं। अन्य प्रचारक सोसाइटियों के मुक़ाबले में हमारे निर्णय पर नाममात्र को धन है। ईसाई इत्यादि प्रचारक सोसाइटियों के अकेले एक प्रचार केन्द्र के निर्णय पर जितना धन होता है उतना हमारे बहुसंख्यक प्रचार केन्द्रों वा सब प्रचार केन्द्रों के पास मिलाकर भी शायद न होगा। हमारे हिन्दू समाज में धन नहीं है, धनपति नहीं है, दानी नहीं हैं, बात यह नहीं है। अकेले हमारे धर्म्म मन्दिरों में ही इतना धन लगा हुआ है कि यदि वह ही हमारे निर्णय पर हो तो हम बहुत कुछ कर दिखायें और यदि हमारे अन्य उदार धनी-मानी व्यक्तियों के दान का जिसका प्राय कुपात्रों के हाथों में भयकर दुरुपयोग होता है, १०० वाँ भाग भी हमारे उपयोग में आये तो हम इस दान तथा धर्म मन्दिरों के धन से प्रचार कार्य मे चमत्कार कर दिखाएँ। परन्तु दुर्भाग्य से हमारे दान का भयंकर और पतनकारी दुरुपयोग होता है और इसका कारण विवेकहीन दाता और गृहीता हैं। हमारा मतलब यह कदापि नहीं है कि उदार धनी मानी हिन्दुओं से हमें सहायता नहीं मिलती है। हमें सहायता मिलती है परन्तु वह तुलनात्मक दृष्टिसे नाममात्र की सहायता है। जिस मात्रा में हमारे हिन्दू समाजपर जहालत का पड़ा हुआ पर्दा उठेगा और जिस मात्रा में वह दान की महिमाको समझेगा और जिस मात्रामें हम जनता, मुख्यतया हिन्दुओं के हृदयों पर विजय प्राप्त करेंगे उसी मात्रा में यह कमी हमारी कम होगी। इसके लिए हमें यत्न करना चाहिए।

हमारी दूसरी कमी ऊँचे व्यक्तित्वों, ऊँचे प्रचारकों और उपदेश के अधिकारियों की है। हमारे यहा ऐसे व्यक्तित्वों का बाहुल्य होना चाहिए जो संस्था का रूप लिये हुए हों। ऐसा तब ही सम्भव है जब हम देशकी विविध प्रगतियों में अपने मन्तव्यों और आदर्शों की रक्षा और प्रचार पूर्वक

भाग ले और उनमें चमकें।

हमारे यहाँ विविध धर्मों पर अधिकार पूर्वक बोलने वाले विविध देशों विदेशी भाषाओं में प्रचार की योग्यता रखने वाले, प्लेटफ़ार्म के पक्के चरित्र और योग्यता रखने वाले प्रचारकों की बहुत ही कमी है। ऐसे प्रचारक जितने बनाये जाते हैं, उससे कहीं अधिक स्वय बनते हैं। इसके लिए हमें यत्न करना चाहिए और हमे अपेक्षित प्रोत्साहन जिम्मेवार सभा सोसाइटियों से मिलना चाहिए।

हमारा अधिकांश प्रचार अनधिकारियों के हाथ में है जिनकी करनी और कथनी में घोर अन्तर है। इसका परिणाम यह है कि हमारे प्रचार का वह प्रभाव नहीं पड़ता है जो पड़ना चाहिए। लोगों को हमारे उपदेश पर अमल करना तो दूर रहा वे हमारी बातों को सुनना भी पसन्द नहीं करते हैं। जिस सच्चाई का हम प्रचार करना चाहते हैं उस पर हमारे जीवन की छाप हो तब ही वह प्रभावशाली होती है और लोगों को अपील करती है। किसी उपदेश की कीमत को उसके अमली रंग रूप कीदृष्टि से आंकने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के इस युग में हमें यह बात विशेष रूप से हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए और हमारा यत्न होना चाहिए कि उपदेश का अधिकार अधिकारियों के हाथ में हो और हम अपने को अधिकारी बनाएँ।

हमारी तीसरी कमी साहित्य सम्बन्धी है विदेशी भाषाओं मुख्यतया अंग्रेजी में साहित्य का अभाव है, इस बात को प्रचारक लोग और हमारे साहित्यसेवी अनुभव करते हैं। हमारे महा पुरुषों की जीवनियों और मुख्य वैदिक सिद्धान्तों पर विदेशी भाषाओं में ऐसे ग्रन्थों की जिनमें आर्यसमाज के मुख्य २ सिद्धान्तों और मन्तव्यों का प्रतिपादन हो और जो छपाई, भाषा, और स्टाइल की दृष्टि से विदेशी जनता को ग्राह्य हों लिखे और प्रकाशित किये जाने की जरूरत है।

हमारे यहाँ ऐसे साहित्य की भी कमी है जो ऐसे स्टाइल का हो जो बालकों, बूढ़ों, स्त्रियों, पुरुषों ग़रज कि जन-साधारण को रुचिकर हो और जो वैदिक शिक्षाओं की छाप व्यक्त वा अव्यक्त रूप से छोड़ देने वाला हो। इस कमी की पूर्ति का फल यह होगा कि हम अपनी शिक्षाओं को जनता में ज्यादा आसानी से और प्रचुर प्रमाण में लोक प्रिय बनायेंगे। एक फल यह भी होगा कि अपने ऐसे साहित्य की जो जनता की रुचि के अभाव में पड़ा सड़ रहा है, खपत की हमारी चिन्ता कम हो जायगी।

विविध धर्मों के तुलनात्मक साहित्य की भी हमारे यहाँ कमी है। यह भी दूर होनी चाहिए। इसके साथ ही अपने प्रामाणिक साहित्य की छानबीन और आवश्यक संशोधन परिमार्जन भी होते रहना चाहिए। हमारे यहाँ अँग्रेजी के अखबारों का बिल्कुल अभाव है, यह भी दूर हो जाना चाहिए। साहित्य-निर्माण तथा परिमार्जन में हमें आवश्यकतानुसार बाहर के उत्तम लेखकों की सेवाएँ और सहयोग प्राप्त करने में पीछे नहीं रहना चाहिए।

साधनों का उचित उपयोग न होना

हमारे यहाँ धन का सर्वथा अभाव है, ऊँचे

व्यक्तियों का सर्वथा लोप है, ऊँचा साहित्य नहीं है, बात यह नहीं है, य सब चीजें हमें प्राप्त हैं भले ही कमी से प्राप्त हैं। जो साधन हैं, दु ख है हम उनका उचित उपयोग नहीं करते हैं। इसके मूल में जहाँ तक हमने सोचा है निम्न तीन बातें देख पड़ती हैं।

(१) हमारी निकम्मी प्रचार-प्रणाली।

(२) स्थानीय और प्रान्तीय सकीर्णता।

(३) धन और शक्ति का अनुचित विभाजन।

(४) साहित्य का उचित उपयोग न होना।

(५) सभा स माइटियों का ढीलापन और प्राप्त साध ो को समह रखने की अनुदार नीति।

हमारी प्रचार-प्रणाली का दूषित होना अकेले हमारे वर्तमान उत्सवों से ही जाना जा सकता है। हमारे वर्तमान उत्सवों में लाभ की अपेक्षा हमारी शक्ति और धन की ज्यादा हानि होती है, यह एक सर्व सम्मत बात है। उत्सवों के बजाय कथाओं और प्रवचनों द्वारा उपदेश की प्रथा कहीं ज्यादा सस्ती और उपयोगी सिद्ध हो रही है।

इस प्रथा को अपनाया जा सकता है। प्रचार पद्धति के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा ने जनता का मार्ग प्रदर्शन करने का निर्णय किया है। आशा करनी चाहिए कि उस निर्णय के कार्यान्वित हो जाने पर हमारी प्रचार-प्रणाली मे सु दर परिवर्तन हो जायगा।

यह दु ख और लज्जा की बात है कि हम आर्य्य-समाज का स्थानीय और प्रान्तीय पर्दे में से देखन के अभ्यसा बन गए हैं। हम दूसरे स्थानों और प्रान्तों की प्रचार मे सहायता करने और सुध लेने में समर्थ होते हुए भी सहायता नहीं दे रहे हैं और न सुध ले रहे हैं। यदि हम पर्दे मे से देखने के अभ्यासी न बने होते तो हमने अपने प्रचार-काय्य को अब से कहीं अधिक विस्तृत कर दिया होता। तब हमें यह रोना न सुनने को मिलता कि सी० पी० में प्रचार की बड़ी भयंकर अवस्था है बगाल, आसाम, ब्रह्मा, काठियावाड़ को समाज ने परित्यक्त किया हुआ है, मद्रास जैसे विशाल प्रान्तमें २-३ उपदेशक मरुभूमि में जल-बिन्दु के सदृश हैं। प्रवासी भाई वैदिक सन्देश सुनने के लिए तड़फड़ा रहे है, विदेश-प्रचार अभी शुरू नहीं हुआ है, इत्यादि २। प्रचार-कार्य्यकी सुन्दर प्रगतिके लिए इस अभ्यास के परित्याग की जरूरत है। परित्याग स्वेच्छा से हो तो अच्छा, अन्यथा प्रेरणा से कराया जाना चाहिए।

धन और शक्ति के भयकर दुरुपयोग के लिये हम अपनी सस्थाओं के जाल की ओर इशारा कर सकते हैं। इनसे आर्य समाज की जो बदनामी होती है वह हानि पृथक है। हमारी कुछ सस्थाए ऐसी हैं जो 'संस्था' शब्द को बदनाम करती हैं। कुछ ऐसी हैं जो सस्थाए हैं पर अनावश्यक है। जरूरी सस्थाओं की सख्या अंगुलियों पर गिने जाने योग्य हैं। नाम निहाद सस्थाए बन्द की जानी चाहियें। अनावश्यक संस्थाए सचालकों को स्वय बन्द कर देनी चाहिऐं। उदाहरण के लिये किसी प्रान्त में दो अनाथालय जिस आवश्यकता की पूर्ति कर सकते हैं वहाँ उसी के अनुपात में ४ अनाथालय खुले हुए हैं और शक्ति और धन का उनमें अनुचित विभाजन हो रहा है। उस प्रान्त में

केवल २ अनाथालय रक्खे, शेष २ बन्द किए तथा उनके साधन जरूरी अनाथालयों में वा अन्य उपयोगी संस्थाओं में लगाए जा सकते हैं। यही बात इस प्रकार की अन्य संस्थाओं के सम्बन्ध में कही जा सकती है। शिक्षा-संस्थाओं पर धन और शक्ति का अनुचित विभाजन तथा दुरुपयोग दिन की तरह रोशन है। इस पर इस 'पत्र' मे काफी प्रकाश पड़ चुका है। हमारे यहाँ वे ही शिक्षा संस्थाएँ रहनी चाहिएँ तथा उन्ही को प्रोत्साहन मिलना चाहिए जो समाज को अच्छे उपदेशक, अच्छे लेखक, अच्छे वक्ता, अच्छे साहित्यकार और अच्छे नागरिक दें।

हमारे यहाँ बहुत सा उपयोगी साहित्य है परन्तु उसका उपयोग जितना होना चाहिए इसलिए नहीं होता कि हमारी स्वाध्याय की प्रवृत्ति मन्द पड़ गई है। इस प्रवृत्ति के जागृत करने की जरूरत है। हमारे साहित्य के उपयोग का एक तरीका यह भी हो सकता है कि हम गाँव गाँव शहर शहर में लाइब्रेरी आन्दोलन चलाएं और लोगों के घर २ जाकर उत्तम साहित्य पहुँचायें और उससे उचित फायदा उठाने का जन-साधारण को मौका दें।

सभा सोसाइटियों के सम्बन्ध में ज्यादा प्रकाश डालने की जरूरत नहीं है। जिस मात्रा मे हममें और आर्य समाजों में जीवन आएगा हमारे दृष्टिकोणमें उत्तम परिवर्तन आयगा उसी मात्रामें उनमें जीवन आयगा और उनकी रीति नीति तथा दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा।

कठिनाइयां

हमारे प्रचार मार्ग में कुछ कठिनाइया अपनों से सम्बन्ध रखती हैं और कुछ गैरों से। अपनों से सम्बन्ध रखने वाली कठिनाइयों के विस्तार में यहाँ जाने की जरूरत नही है। वे कठिनाइयाँ हमारी दलबन्दियो, झगड़ों मनोमालिन्य और एक शब्द मे हमारी नैतिक गिरावट से सम्बन्ध रखती हैं। हमारी दूसरी कठिनाइयाँ हमारे धार्मिक और सामाजिक अधिकारों पर अनुचित हस्तक्षेप की है। ऐसे देशी, उनमें भी मुख्यतया मुस्लिम राज्य सुनने मे आए हैं जहाँ आर्य समाज का प्रवेश निषिद्ध है, कुछ ऐसे राज्य है जहा समाज का प्रवेश निषिद्ध नहीं है परन्तु जहाँ आर्य समाज के अस्तित्व को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मिटाने का यत्न होता रहता है। हैद्राबाद राज्य इस कथन के लिए ताजा उदाहरण है। ब्रिटिश भारत में नगर कीर्तन की समस्या अभी तक हल नहीं हो पाई है। हमारे प्रचारकोंके विरुद्ध झूठे सच्चे मुकद्दमे चलाए जाते हैं। सरकार द्वारा हमारे प्रचारकों के उन क्षेत्रों में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है जहाँ अन्य धर्मावलम्बियों को अपने प्रचार की खुली छुट्टी प्राप्त है। इसी प्रकार की अन्य कठिनाइयाँ गिनाई जा सकती हैं। इन कठिनाइयों के मूल में यद्यपि अधिकांश रूप मे मजहबी पक्षपात और राजनैतिक चालें होती है परन्तु आंशिक रूप में हमारी नैतिक साख का ह्रास भी होता है। इन कठिनाइयों के निराकरण का एक उपाय हम लोगों का अपने अमल से नैतिक साख की पुनर्स्थापना, अनुपम त्याग और हमारा दृढ़ सगठन है।

आदर्श

साधनों की कमी की पूर्ति और विद्यमान

साधनों के उचित उपयोग तथा कठिनाइयों के निराकरण से निश्चय ही हमारी प्रचार की प्रगति बढ़ेगी और आश्चर्यजनक रीति से बढ़ेगी। इस प्रगति के विस्तार में हमें उस व्यक्ति का आदर्श अपने सामने रखना होगा जो ज्ञान की खोज में लगा हुआ है और खोजों से संसार को मुग्ध होते हुए देखकर खुश तो होता है, परन्तु पूर्ण सन्तोष अनुभव नहीं करता है और चिल्ला उठता है कि मैं बच्चे की नाईं रत्नों की खोज के लिए समुद्र-तटपर घूमता फिरता हूँ।

—

विचार-प्रवाह

ब्रिटिश भारत में हिन्दू विधवाओं के विवाहों को वैध क़रार देने विषयक क़ानून को बने हुए लगभग ८० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस क़ानून मे एक व्यवस्था यह की हुई है कि हिन्दू विधवा शादी कर लेनेपर अपने मृत-पति की सम्पत्ति के समस्त अधिकारों से वंचित हो जाती है, भले ही वे अधिकार गुज़ारे से सम्बन्धित हों या उत्तराधिकार से सम्बन्धित हों या किसी वसीयत से जो स्पष्ट रूप से विधवा को पुनर्विवाह की इजाज़त न देता हो, सम्बन्धित हों। यदि मृत-पति ने अपनी विधवा को शादी करने की इजाज़त न दी हुई हो तो वह (पति) अपनी पत्नी के पुनर्विवाह के विरुद्ध था ऐसा इस कानून मे मान लिया गया है।

अभी हाल मे मैसूर की धारा सभा में हिन्दू विधवाओं के पुनर्विवाह को वैध क़रार दिये जाने के उद्देश्य से एक बिल पेश किया गया है। इस बिल में ब्रिटिश भारत की व्यवस्था से भिन्न यह व्यवस्था रक्खी गई है कि मृत-पति के उत्तराधिकारी के अभाव में, उसकी पुनर्विवाहिता विधवा ही उसकी सम्पत्ति का उपभोग करेगी और उसकी एकमात्र मालिक समझी जायगी। किसी वसीयत इत्यादि के द्वारा प्राप्त अधिकार भी उसकी मिल्कियत होगी। उस दशा में नहीं होगी जब कि इस प्रकार की दस्तावेज़ोंमें पुनर्विवाह का स्पष्ट रूप से निषेध कर दिया गया हो। इस बिल मे एक और भिन्न व्यवस्था यह की गई है कि यदि मृत पति स्पष्ट रूप से पुनर्विवाह के लिए अपनी पत्नी को मना नहीं करता है तो यह समझा जायगा कि उसने अपनी विधवा पत्नी के पुनर्विवाह की पहले से ही स्वीकृति दे दी थी। मैसूर के बिल के अधीन पुनर्विवाहिता विधवा अपने पूर्व पति के बच्चों की संरक्षिका बनी रहेगी, सिवा उस दशा के जब कि कोई सिविल कोर्ट किसी दूसरे व्यक्ति को उसके बच्चों का संरक्षक नियत कर देवे। अस्सी वर्ष के अर्से में विचारों का प्रवाह जैसा रहा है वह इन दोनों के अन्तर से सुस्पष्ट है।

नेपाल राज्य और तबलीग

महाराजा नैपाल के सेक्रेटरी ने अ ंजुमन इस्लामियाँ के नाम निम्नाशय का पत्र भेजा बतलाते हैं —

"इस देश में धर्मपरिवर्तन कानून विरुद्ध है। इसलिए कुछ मुसलमानो को जो हिन्दुओ को मुसलमान बनाना चाहते थे गिरफ्तार किया गया है और जो लोग भाग गये हैं उनकी जायदाद कुर्क करली गई है।"

नियोग और आर्य्य समाज

नियोग के आर्य्य समाज का सिद्धान्त होने में बहुधा आर्य्य लोगों को सन्देह हुआ करता है और चूँकि 'नियोग' ऋषि दयानन्द प्रतिपादित आर्य्य

समाज का सिद्धान्त है और चूंकि आर्य्य समाज का सदस्य बनने और रहने के लिये नियमानुसार सदस्य के आर्यसमाज के सिद्धांतों वा मन्तव्योंके मानने और उनपर आचरण करनेकी एक ज़रूरी शर्त है इसलिए वे लोग जिन्हें 'नियोग'के सिद्धान्तमे सन्देह होता है प्राय इस प्रश्नका समाधान चाहा करते है कि नियोग के अतिरिक्त आर्य्य समाज के अन्य समस्त सिद्धान्तो में आस्था रखने और उन पर आचरण करने वाले व्यक्ति आर्य्य समाज के सदस्य बन सकते वा रह सकते हैं वा नहीं। अभी हाल में आर्य्य समाज ननकाना साहब (पंजाब) के कतिपय आर्य्य सदस्यो ने इस प्रश्न का समाधान सार्व० सभासे चाहा है। यह प्रश्न सम्प्रति धर्म्मार्य्य सभा के जो इस प्रकार के धार्मिक विषयो के निर्णय के लिए सर्वोपरि सभा है विचाराधीन है। इस सभा की अन्तरङ्ग सभा ने इस सम्बन्ध मे अभी हाल मे धर्म्मार्य्य सभा की जनरल सभा को निम्न तजवीज की सिफारिश की है —

"आर्य्य समाज नियोग को आप काल का धर्म्म मानता है और इस रूप मे यह आर्य्य समाज का सिद्धान्त है जिसका समर्थन करना आर्य्य समाज का कर्त्तव्य है। जो इसके विरुद्ध प्रचार न करे वह आर्य्य समाज का सदस्य रह सकता है।"

यह तजवीज अर्पण करने वाली है। आवश्यक है कि जब तक 'धर्मार्य' सभा का निर्णय जनता के सामने न आये तब तक इस प्रश्न का समाधान अन्तरग सभा की उपर्युक्त तजवीज ही समझी जानी चाहिए। यह न होना चाहिए कि धर्मार्य सभा का निर्णय यथासम्भव शीघ्र जनता के समक्ष आ जाय।

दलितों की जनसंख्या

भारतवर्ष मे १९३१ की जन-संख्या के अनुसार दलित कहे जाने वाले भाइयो की संख्या रियासतों को मिलाकर पाँच करोड एक लाख पिचानवे हज़ार सात सौ सत्तर (५०१९५७७०) है अर्थात् हिन्दुओं की तेईस करोड इकानवे लाख पिचानवे हज़ार एक सौ चालीस (२३९१९५१४०) की आबादी का २१ प्रतिशतक है। ब्रिटिश भारत में दलितों की कुल संख्या तीन करोड नब्बे लाख चौसठ हजार नौ (३९०६४००९) है अर्थात् हिन्दुओ की सत्तरह करोड सतत्तर लाख सत्ताईस हजार नौ सौ अठासी (१,७७७,२७,९८८) की आबादी का २२ प्रतिशतक है।

अकेले बम्बई प्रान्त मे दलितो की जन सख्या सत्तरह लाख पचास हजार चारसौ चौबीस (१७५०४२४) है अर्थात हिन्दुओ की एक करोड छयासठ लाख इक्कीस हजार दो सौ इक्कीस (१६६२१२२१) की सख्या का ११ प्रतिशतक है। भारतीय रियासतो मे छ करोड चौदह लाख सड़सठ हज़ार एक सौ बावन (६१४६७१५२) की हिन्दू आबादी के मुकाबले मे दलितो की सख्या एक करोड ग्यारह लाख इकत्तीस हजार सात सौ इकसठ (१११३१७६१) है अर्थात दलितो की सख्या हिन्दुओ की सख्या का १८ प्रतिशतक है।

प्रसगवश यहाँ यह भी उल्लेख किया जासकता है कि रियासतो मे दलितो का सबसे ज्यादा सख्या हैदराबाद राज्य मे है। यह सख्या चौबीस लाख तिहत्तर हजार दो सौ तीस (२४७३२३०) है जब कि राज्य म हिन्दुओ की आबादी एक करोड इक्कीस लाख

छियत्तर हज़ार सातसौ सत्ताईस (१२१७६७२७) है अर्थात यहाँ दलितों की संख्या हिन्दुओं का २० प्रतिशतक है। बम्बई प्रान्त में दलितों में सबसे ज्यादा संख्या महारों की अर्थात बारह लाख चौसठ हज़ार एक सौ चार (१२६४१०४) है। दूसरा नंबर मोगों का है, उनकी आबादी तीन लाख नौ हज़ार नौ सौ अड़तीस (३०९९३८) है। तीसरा नंबर चमारों का है, उनकी आबादी दो लाख इक्यानवे हज़ार आठ सौ ग्यारह (२९१८११) है। इसके बाद भंगियों और 'मेघ वालों' का नंबर आता है जिनकी संख्या क्रमश उनासी हज़ार चार सौ तीन (७९४०३) और उनहत्तर हज़ार सात सौ सत्तानवे (६९७९७) हैं।

ये अङ्क मुख्यतया दलितो की समस्या के अध्ययन में सहायक हो सकते हैं, इसी विचार से उन्हें यहाँ उद्धृत किया गया है।

श्री सुखदा देवी का स्वर्गवास

श्री राज्यरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी की सुपुत्री तथा कुँवर चाँदकरण जी शारदा (अजमेर) की धर्म्म पत्नी श्रीमती सुखदादेवी जी के निधन के समाचार से हमें बड़ा दुःख हुआ है।

देवी जी समाजसेविका थीं। अजमेर उनकी समाज-सेवा का मुख्य केन्द्र था। उनकी मृत्यु से अजमेर के सार्वजनिक जीवन मुख्यतया महिला-समाज को क्षति पहुँची है।

हम इस दुःख में दुखी परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रगट करते और दिवंगत आत्मा की सद्‌गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।



वैदिक ईश्वरवाद

[ले०—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति]

—०—

(४)

वेदों में एकेश्वरवाद वा अनेकेश्वरवाद

(१) कई विद्वान 'वेद असभ्य जंगली लोगों द्वारा बनाये गये और उनमें इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के लिये अग्नि, वायु सूर्य, नदी समुद्र, पर्वत आदि की पूजा का इन्द्र, मित्र, वरुण, मरुत आदि देवों के नाम से उपदेश है' ऐसा बताते हैं।

(२) अन्य कई विद्वान् वेदों में अनेकेश्वरवाद का जिसे अंग्रेजी में (Polytheism) कहते हैं विधान नहीं किन्तु Henotheism वा हीनदेवतावादका प्रतिपादन है ऐसा कहते हैं। जिसका अभिप्राय यह है कि जब कोई भक्त अग्निकी स्तुति करने लगता है तो वह उसीको सर्वोत्तम, सबका उत्पादक और सर्वशक्तिमान् मानकर उसकी पूजा करता है और दूसरे सब देवताओं को उसकी अपेक्षा हीन मानता है। जब वही कवि इन्द्र की स्तुति करने लगता है तो उसे ही सबका स्वामी, सबका पिता और सर्वशक्तिमान् मानता और अन्य सब देवों को उसकी अपेक्षा हीन बताता है। इसी प्रकार वरुण, सविता आदि के विषय में भी समझना चाहिए। सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् प्रो० मैक्समूलर ने बहुत देर तक इसी मत का समर्थन किया था यद्यपि अपने अंतिम ग्रन्थ "Six Systems of Philosophy" के लिखने के समय में उसके विचारों में परिवर्तन हो चुका था ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है।

(३) अन्य कई विकासवादी और ऐतिहासिक यह कहते हैं कि वैदिक कवि लोग पहले अनेकेश्वरवाद वा बहुदेवतावाद (Poly-theism) को ही मानते थे फिर वे हीनदेवतावाद को मानने लग गये। क्रम से जब उनकी बुद्धि विकसित होती गई तो विशुद्ध एकेश्वरवाद (Pure monotheism) की कल्पना उनके मन में उत्पन्न हुई। इस प्रकार विकासवाद की दृष्टि से एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करने वाले मन्त्र नवीन हैं।

(४) अन्य विद्वान ऐसा मानते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान रूप हैं। ऋषि मन्त्रों के कर्त्ता नहीं किन्तु "ऋषयो मन्त्र द्रष्टार" "ऋषिर्दर्शनात् स्तोमान् ददर्शेति" "तद् यदेनांस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्व भ्यानर्शत् तदृषीणामृषित्वमिति विज्ञायते" (निरुक्तम्)।

इत्यादि प्रमाणों से वे मन्त्रों के द्रष्टा अर्थात् वेदों के गूढ़ अर्थ को समझकर उनका प्रचार करने वाले थे। परमदयालु सर्वज्ञ भगवान् द्वारा प्राणिमात्र के उपकार के लिए सृष्टि के शुरू में प्रकट किए जाने के कारण वेद विशुद्ध रूप में एकेश्वरवाद का ही प्रतिपादन करते हैं न कि अनेकेश्वरवाद का। यह अन्तिम पक्ष ही हमको मान्य है। उसके समर्थक कुछ स्पष्ट प्रमाणों का यहाँ उल्लेख करके दूसरे विचारों की आलोचना की जायगी। निम्न लिखित वेद मन्त्र एकेश्वर वाद का अत्यन्त स्पष्ट

शब्दों में प्रतिपादन करते हैं।

(१) इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य. स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधावदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ऋ० १।१६४।४६

इस मन्त्र में यह स्पष्टतया बताया गया है कि परमेश्वर एक ही है किन्तु विद्वान् उसके अनन्त गुणों को सूचित करने के लिए इन्द्र मित्र वरुण आदि नामों से पुकारते हैं। इस प्रकार इन्द्र मित्र वरुणादि शब्द मुख्यतया ईश्वर-वाचक हैं यह स्पष्ट सिद्ध होता है। परमात्मा परमैश्वर्य सम्पन्न होने से इन्द्र, सबका मित्र तथा प्रेममय होने से मित्र, सबसे उत्तम और वरणीय तथा अविद्यादि दोष निवारक होने से वरुण, ज्ञान स्वरूप और अग्रणी सबसे श्रेष्ठ होने से अग्नि पद से उसे कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, महेश्वर, महादेव, बृहस्पति इत्यादि शब्द प्रधानतया उसी एक परमेश्वर को सूचित करते हैं। यह निम्न मन्त्रों से सिद्ध होता है।

(२) त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्य । त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ॥ ऋ० २ । १ । ३ ॥

(३) त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः । त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य सम्भुजं त्वमंशो विदथे देवभाजयुः॥ ऋ० २ । १ । ४ ॥

(४) त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना ॥ ऋ० २ । १ । ६ ॥

(५) सोऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः । सोऽग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः ।
अथर्व १३।४।४,५।

(६) त्वमिन्द्रस्त्वं महेन्द्रस्त्वं लोकस्त्वं प्रजापतिः । तुभ्यं यज्ञो वितायते तुभ्यं जुह्वति जुह्वतः । तवेद् विष्णो बहुधा वीर्याणि ॥ अ० । १७ । १ । १८ ।

इन मन्त्रों पर यदि निष्पक्ष विचार किया जाये तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि एक ही परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र, वृषभ, बृहस्पति, अग्नि, प्रजापति, वरुण, मित्र, अर्यमा, पूषा आदि नाम हैं और इस प्रकार वेदों में अनेकेश्वरवाद के भ्रम का कोई स्थान नहीं रहता। सत्य ग्रहण करने में उद्यत और पाश्चात्य विद्वानों की मानसिक दासता को स्वीकार करने वाले विद्वानों को इन मन्त्रों का अच्छी प्रकार मनन करना चाहिये तब उनका वैदिक एकेश्वरवादमें दृढ़ विश्वास हो जाएगा, इसमें सन्देह नहीं। इन मन्त्रों पर विचार करने से हीन देवतावाद का भी खण्डन हो जाता है।

(७) तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ॥
यजु० ३२ । १

यह मन्त्र भी एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करते हुए उसी परमेश्वर के अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रादि नाम हैं, इस बात को स्पष्ट घोषित करता है। ऐसे मन्त्रों के भाव को लेकर ही कैवल्योपनिषत में—

सब्रह्मा सविष्णुः सरुद्रः सशिवः सोऽक्षरः ।
स परमः स्वराट्। स इन्द्रः स कालाग्निः सचन्द्रमाः

ऐसे कहा है।

भगवान् मनु ने भी—

प्रशासितारं सर्वेषामणीयासमणोरपि।
रुक्माभ स्वपधीगम्य, विद्यात्त पुरुष परम ॥
एतमेके वदन्त्यग्निं, मनुमन्ये प्रजापतिम् ।
इन्द्रमेके परे प्राणम्, अपरे ब्रह्म शाश्वतम् ॥
मनु १२ । १२१-१२३

इत्यादि श्लोकों द्वारा उसी वैदिक भाव का समर्थन किया है ।

(८) यो न' पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यो देवाना नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या ॥ ऋ० १०।८२।३

इस मन्त्र में भी परमात्मा एक ही है जो देवों के नाम अग्नि मित्र वरुणादि को धारण करनेवाला है । ऐसा साफ़ कहा है । यही मन्त्र अथर्ववेद के २ । १ । ३ में थोड़े पाठ भेद के साथ इस प्रकार पाया जाता है—

"स नः पिता जनिता स उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यो देवाना नामध एक एव त संप्रश्नं भुवना यन्ति सर्वा ॥"

इन दोनों मन्त्रोंमें प्रयुक्त "यो देवानां नामध एक एव" यह अश विशेष मननीय है जो वेदों मे अनेकेश्वर वाद विषय के भ्रम को दूर करने को पर्याप्त है।

(९) परमात्मा एक ही है जो सर्वदा और सर्वशक्ति-मान होने से एक मात्र स्तुति करने योग्य है ऐसा निम्न लिखित ऋग्वेदीय मन्त्र में उपदेश किया गया है ।

"य एक इत् तमुष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणि' । पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः ॥" ऋ० ६ । ४५ । १६

इस मन्त्र में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन है । ऐसी अवस्था में वेद अनेकेश्वरवाद या हीन-देवता-वाद का समर्थन करते हैं, ऐसा कहना कितना अशुद्ध तथा पक्षपात सूचक है यह बुद्धिमान स्वयं निश्चय कर सकते हैं ।

(१०) ऋग्वेद ८ । १ । १ साम-द ३।१।१० अथर्व ३० । ८५ । १ में पाया जाने वाला निम्न मन्त्र इन्द्र पद से परमात्मा का बोध कराते हुए अनेकेश्वरवाद का खण्डन और एकेश्वरवाद का प्रबल समर्थन करता है ।

"माचिदन्यद् विशंसत सखायो मा रिषण्यत । इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचासुते मुहुरुक्था च शंसत ॥

अर्थ—हे मित्रो ! केवल सर्वैश्वर्य सम्पन्न परमात्मा की स्तुति करो अन्य किसी की नहीं । इस प्रकार अन्यों की स्तुति करके दु खी न होओ । बार बार यज्ञादि सब शुभ कर्मों में समस्त सुखवर्षक भगवान् की ही स्तुति करते रहो ।

(११) वही एक इन्द्रादि पद वाच्य परमात्मा ही पूजा करने योग्य है अन्य नहीं, यह भाव निम्न मन्त्र में भी स्पष्टतया पाया जाता है ।

"य एक इद्गव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गर्भिरभ्यर्च आभि । य' पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् सत्य सत्वा पुरुमायः सहस्वान् ॥" ऋ० ६ । २२ । १

'चर्षणि' शब्द का अर्थ निघण्टुमें मनुष्य दिया ही है अत' वह एक परमेश्वर ही सब मनुष्यों का पूजनीय है यह मन्त्रार्थ है ।

(१२) प्रजापति (सारी प्रजा का पालक) परमात्मा एक ही है और वही सर्व व्यापक, सर्व-

शक्तिमान् और सर्वज्ञ होने से पूजनीय है, यह हिरण्यगर्भ सूक्त में अनेकेश्वरवाद का निराकरण करते हुए इस प्रकार स्पष्ट बताया गया है।

"प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम् ॥"

इसी सुप्रसिद्ध हिरण्यगर्भ सूक्त के "हिरण्य-गर्भः समवर्तताग्रे। इसी प्रथम मन्त्रको पहले उद्धृत किया ही जा चुका है। उसी सूक्त में।

"यो देवेष्वधिदेव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥" यही मन्त्र परमात्माको देवाधिदेव बताते हुये उसी की पूजनीयता का प्रतिपादन करता है। इस सूक्त के बारे में प्रो० मैक्समूलर ने 'History of the Sanskrit Literature' पृ० ५६८ में इस प्रकार लिखा है।

"I add only one more hymn (Rig-10 121) in which the idea of one God is expressed with such power and decision, that it will make us hesitate before we deny to the Aryan nature an instinctive monotheism,"

अर्थात् मैं एक और सूक्त ऋ० १०। १२१ को उद्धृत करता हू जिसमें एकेश्वरवाद का इतने स्पष्ट तथा प्रबल शब्दोंमें प्रतिपादन है कि हमें आर्य जाति में स्वाभाविक एकेश्वरवाद से इन्कार करने में बहुत ही सकुचित होना पड़ेगा।

(१३) अथर्व वेद के १३ काण्ड में भी अनेकेश्वर का निराकरण करते हुये एकेश्वरवाद का इन स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादन है।

"न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते न पञ्च मो न षष्ठ सप्तमो नाप्युच्यते। नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते स एष एक एकवृदेक एव ॥ अथर्व १३। ४। १६२१।

यहां एक (वृत् का अर्थ एक सन् वृणोति—व्याप्नोति सर्वं जगत्) इस व्युत्पत्ति से सर्वव्यापक है। क्या इससे साफ़ एकेश्वरवाद का प्रतिपादन हो सकता है? ऐसा होने पर भी जो महानुभाव वेदों को अनेकेश्वरवाद प्रतिपादक बताते हैं उनका विकासवादादि विषय में पक्षपात ही सूचित होता है न कि सत्य ग्रहण करने की इच्छा।

(१४) वह एक परमेश्वर ही सारे ससार का स्वामी और पूजनीय है इस विषय को निम्नलिखित दो अथर्ववेद के मन्त्र भी स्पष्टतया बताते हैं।

"दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्य। तं त्वायौमि ब्रह्मणा दिव्य देवा नमस्ते अस्तु दिविते सधस्थम्। अ० २। २। १

(१५) मृडाद् गन्धर्वो भुवनस्य यस्पति रेक एव नमस्य सुशेवा ॥ अ० २। २। २।

यहा गन्धर्व. का अर्थ (गा वाणीं सूर्यं भूमिं वा धरतीति गन्धर्वं) इस व्युत्पत्ति के अनुसार वाणी सूर्य वा भूमि का धारण करने वाला और सुशेवा का अर्थ उत्तम, सुखदायक है। इस मन्त्रमें प्रयुक्त एक एव नमस्य' वह एक परमेश्वर ही पूजा करने योग्य है ये शब्द वेदों में अनेकेश्वरवाद विषयक भ्रम को दूर करने के लिये पर्याप्त हैं यदि इन पर निष्पक्ष होकर विचार किया जाये। और भी सैकड़ों प्रमाण वेदों के विशुद्ध एकेश्वरवाद को सिद्ध करने के लिये दिये जा सकते हैं किन्तु

विस्तार भय से इस विषय को यहीं समाप्त किया जाता है। भिन्न २ वेदों और स्थलों से उद्धृत ये मन्त्र स्पष्ट सिद्ध करते हैं कि वेदों में एकेश्वरवाद ओत प्रोत है। अनेकेश्वरवाद ह्रोन देवतावाद (Henotheism) वा विकासवाद (Evolution theory) के द्वारा इन मन्त्रों की किसी प्रकार भी व्याख्या नहीं की जा सकती। इसलिये निष्पक्ष अनेक प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् भी अब वेदों में एकेश्वरवाद का प्रतिपादन है इस बात को मानने लग गये हैं—जैसा कि निम्न उद्धरणों से प्रमाणित होता है।

पाश्चात्य विद्वान और वैदिक एकेश्वरवाद

(१) प्रो० मैक्समूलर के History of the Sanskrit Literature से एक उद्धरण पहिले दिया जा चुका है। निम्न उद्धरण उनके अन्तिम ग्रन्थ "Six Systems of Philosophy" से दिया जाता है जिसमें उन्होंने स्पष्टतया स्वीकार किया है कि इन्द्र, अग्नि, मातरिश्वा, प्रजापति आदि नामों से वेदों में वस्तुत एक ईश्वर का ही प्रतिपादन है।

"What ever is the age when the collection of our Rigveda Sanhita was finished, it was before that age that the conception had been formed that there is but one, One Being, neither male nor female, a Being raised high above all the conditions and limitations of personality and nevertheless the Being that was really meant by all such names as Indra, Agni, Matarishva and by the name of Praja Pati—Lord of creatures. In fact, the Vedic Poets had arrived at a conception of Godhood which was reached once more by some of the Christian Philosophers of Alexandria, but which even at present is beyond the reach of many who call themselves Christians."

(२) मि० चार्ल्स कोलमैन (Charles Coleman) नामक सुप्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् ने वैदिक ईश्वरवाद के विषय में अपना अभिप्राय इन शब्दों में प्रकट किया है।

"The Almighty, Infinite, Eternal, Incomprehensible, Self-existent, Being; He who sees every thing though never seen is Brahma the One Unknown True Being, the Creator, the Preserver and Destroyer of the Universe. Under such and innumerable other definitions is the Deity acknowledged in the Vedas."

(Mythology of the Hindus)

भावार्थ यह है कि वेदों में परमात्मा को एक सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, अनन्त, नित्य, अवि-

ज्ञेय, स्वयम्भू, सर्व द्रष्टा, जगत्का कर्ता, धर्ता और संहर्ता आदि रूप से बताया गया है।

(३) कौन्ट जार्न्स जर्ना नामक प्रसिद्ध विद्वान्ने 'Theogony of the Hindus' नामक पुस्तक में वेद मन्त्रों के प्रमाण देते हुए लिखा है—

"These truly sublime ideas can not fail to convince us that the Vedas recognise only one God, who is Almighty, Infinite, Eternal, Self-existent the Light and Lord of the Universe"

अर्थात इन उदाहरणों से हमें यह विश्वास हुए बिना नहीं रह सकता कि वेद एक ही परमात्मा को स्वीकार करते और उसका प्रतिपादन करते हैं जो सर्वशक्तिमान, अनन्त, नित्य, स्वयम्भू, जगत का प्रकाशक और स्वामी है।

(४) कोलब्रुक (Colebrook) नामक प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान ने प्राचीन हिन्दू धर्म के विषय में इस प्रकार लिखा है—

"The Ancient Hindu Religion as founded on the Hindu Scriptures (Vedas) recognise but one God" (Asiatic Researches Vol III P 385)

सारांश यह है कि हिन्दू धर्म ग्रन्थों (वेदादि शास्त्रों) पर आश्रित हिन्दू धर्म एकेश्वरवाद का ही प्रतिपादन करता है।

(५) अर्नेस्ट वुड (Ernest Wood) नामक सुप्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान ने "An English man defends mother India" नामक पुस्तक में ईश्वरवाद के विषय में यों लिखा—

"In the eyes of the Hindus, there is but one, Supreme God This was stated long ago in the Rigveda in the following words "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" Which may be translated, "The sages name the One Being variously"

(Page 128.)

अर्थात् हिन्दुओं की दृष्टि में एक ही परमात्मा है। इसका प्रतिपादन बहुत प्राचीन समय में ऋग्वेद में 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' इत्यादि शब्दों द्वारा किया गया था जिसका अर्थ है कि विद्वान् लोग एक ही परमेश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं।

अन्य भी अनेक उद्धरण पाश्चात्य विद्वानों के ग्रन्थों से वैदिक एकेश्वरवाद के समर्थन में दिये जा सकते हैं किन्तु विस्तार के भय से अभी इतने ही पर्याप्त समझकर देवों के विषय में विचार प्रारम्भ किया जाता है।

सत्यार्थप्रकाश लेख-माला—

स्त्रियों का यज्ञोपवीत

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी]

स्त्रियों के यज्ञोपवीत का प्रश्न उसी समय से है जिस समय से स्त्रियों को वेद पढ़ने के लिये न कहा गया क्योंकि वेद पढ़ने से पूर्व उपवीत धारण करना आवश्यक है। यदि स्त्रिया वेद नही पढ़ सकती तो उपवीत भी न होगा। यदि वेद पढ़ने का अधिकार है तो उपवीत भी अवश्य होगा।

आर्य समाज से बाहर प्रायः स्त्रियो का यज्ञोपवीत निषिद्ध माना जाता है। आर्य समाज में कन्याओं का यज्ञोपवीत बालकवत् ही होता है परन्तु कोई २ यह कहते हैं कि ऋषि दयानन्दजी ने सत्यार्थ प्रकाश में कन्याओं को उपवीत का विधान नही किया है। मेरी सम्मति मे यह ठीक नही है। ऋषिने जिस प्रकार वेद पढ़नेका अधिकार दिया है उसी प्रकार यज्ञोपवीत का भी विधान किया है।

उपवीत का विषय मैंने निम्न पुस्तकों में पढ़ा है। पाठक यदि विशेष देखना चाहे तो वहा देखलें उसमें से कुछ पाठ ही उद्धृत करूंगा।

(१) कन्या उपनयन विधि। पंडित महारार्णी शंकर जी कृत।

(२) पुरुषार्थ प्रकाश। स्वामी नित्यानन्द विश्वेश्वरानन्द जी कृत।

(३) निर्णय सिन्धु।

(४) गोभिलीय गृह सूत्र की संस्कृत टीका।

ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है।—

प्रश्न—क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें ?

उत्तर—अवश्य देखो श्रौत सूत्रादि में।

"इम मन्त्रं पत्नी पठेत"

यहा ऋषि ने वेद पढ़ने का विधान किया है। इम मंत्रं पत्नो पठेत, यह पाठ मुझे अब तक नही मिला है परन्तु निम्न पाठ।

'वेद पत्न्यै प्रदाय वाचयेत्'। आश्वलायन श्रौत सूत्र १-११

इससे भी यही बात सिद्ध होती है जो ऋषि लिखित प्रतीक में है।

वेदाधिकार के पश्चात उपवीत विषय में ऋषि के पाठ इस प्रकार हैं।

(१) ..... कृतोपनयन द्विज ब्रह्मचारी कुमार ब्रह्मचारिणी कन्या.... सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ। ४७

इस पाठ में कृतोपनयन विशेषण ब्रह्मचारी कुमार और ब्रह्मचारिणी कन्या दोनो का है इसलिये कन्याओं के उपनयन का विधान है।

द्विज अपने घर मे लड़को का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके। सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३३।

इस पाठ मे लड़कों का उपवीत लिखकर कन्याओं का यथायोग्य संस्कार लिखा है इसलिए कई संदेह करते हैं। इसका समाधान मैं आगे चलकर करूंगा। गोभिलीय गृह सूत्र २-१-१९ मे।

प्रावृता यज्ञोपवीतनीम् ·· ॥ पाठ है। इसके अर्थ करने मे दो पक्ष हैं। जो कन्याओं का उपवीत

नहीं मानते वह कहते हैंकि विवाहमें कन्या उपवीत-वत् वस्त्र धारण करे। जो उपवीत मानते हैं वह कहते हैं—प्रावृताम् शब्द के अर्थ हैं वस्त्र अच्छी प्रकार पहने हुए और 'यज्ञोपवीतिनीम्' के अर्थ हैं यज्ञोपवीत् वाली कन्या। इस लिये यह सूत्र कन्याओंका उपवीत बताता है। इसी सूत्रको संस्कृत टीका में यम और हारीत के नाम से श्लोक लिखे हैं वह श्लोक वर्तमान समय में जो पुस्तकें हारीत और यम के नाम से मिलती हैं उनमें नहीं हैं, यही श्लोक कुछ पाठ भेद से निर्णय सिंधु में इसी नाम से मिलते हैं उनका पाठ इस प्रकार है—

पुरा कल्पे कुमारीणा मौंजी बन्धना मिष्यते।
अध्यापन च वेदाना सावित्रीवचनं तथा। यम

निर्णय सिंधु में 'कुमारीणा' के स्थान पर नारीणाम् है और उसके पूर्व है अर्थात् 'पुराकल्पेत नारीणाम्' पाठ है।

यह श्लोक यह बताता है कि पूर्वसमयमें कन्याओं का उपनयन होता था इससे प्रतीत होता हैकि जिस समय यह पुस्तक लिखी गई उस समय यह प्रथा लुप्त हो चुकी थी।

द्विविधा स्त्रियो ब्रह्मवादिन्य सद्यो वध्वश्च।
तत्र ब्रह्मवादनोनामुपनयनमग्नीन्धनं वेदाध्ययन स्वामहेभिक्षाचर्याम्।

वधूना तूपस्थिते विवाहे कथंचिद्पनयनमात्र कृत्वा विवाह कर्तव्य ॥ हारित ॥

निर्णय सिंधु में कुछ पाठ भेद है यथा।
सद्यो वधूमामुपनपन कृत्वा विवाह कार्य ॥

इस पाठसे प्रतीत होता है कि जिस समय यह पुस्तक लिखी गई है उस समय कन्याओं के उपनयन की प्रथा थी उसके दो भेद थे, एक तो उपनयन धारण कर नियम से विद्याध्ययन करती थीं, दूसरी विवाह के समय उपनयन धारणकरती थीं। जैसा कि आज 'कल कई स्थानों पर बालक का विवाह के समय उपनयन होता है और उसी समय यह करके विवाह भी कर देते हैं।

उपरि उद्धृत पाठ से स्त्रियों का वेदाध्ययन— 'अध्यापनं च वेदानाम्। वेदाध्ययनम्।' पाठ से सिद्ध है और उपवीत 'मौंजीबन्धन' उपनयन पाठ से सिद्ध है। अब प्रश्न होता है कि ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके पाठ क्यों लिखा? मेरी सम्मति में यह लिखना आवश्यक था इसीलिये लिखा गया है। यथायोग्य लिखनेका भाव निम्न पाठसे स्पष्ट है।

स्वगृहे चैव कन्याया भैक्ष्यचर्या विधीयते।
वर्जयेदजिन चीर जरा धारणमेव च ॥ यम।

इसमें कन्या को स्वगृह में भिक्षा का विधान है और अजिन चीर तथा जटा धारण निषिद्ध है।

स्वगृहे भिक्षाचर्यम्। हारीत। इसमें भी भिक्षा का विधान स्वगृह में ही है। मुझे इस समय एक पुस्तक मिली नहीं है। मैंने उसमें पढा है वह पुस्तक मनुस्मृति कुल्लूक टीका सहित गुजराती प्रेस मुम्बईमें छपी है। उसके अतमें लगभग ३०० श्लोक लिखे गये हैं। यह वह श्लोक हैं जो अन्य पुस्तकों में मनुस्मृति के नाम से उद्धृत किये गये हैं और वर्तमान मनुस्मृति में नहीं है। उन श्लोकों में कन्या के लिये कौपीन धारण और मुडन का भी निषेध किया गया है, पाठक चाहें तो उसे देख लें। इससे यह सिद्ध होता है कि यज्ञोपवीतमें बालक के लिये

परिस्थिति परिवेक्षण

(लेखक—श्री० ठाकुर हरिहरसिंह 'वैदिक मिश्नरी')

आसाम का आभास

काश्मीर, सीमा प्रान्त तथा पंजाब की सफल यात्राओंके पश्चात् लगभग एक वष तक पारिवारिक व्यवस्था में फँसे रहने के कारण अन्यत्र न जा विहार प्रान्त में ही प्रचार तथा भ्रमण करता रहा। गत दिसम्बर मासमें आसाम की यात्रा की। अप्रैल मास के प्रथम सप्ताह तक आसाम प्रदेश के प्रधान नगरो का भ्रमण किया। दर्शनीय स्थानो को देखा

मुंडन, कौपीन धारण, अजिन अर्थात मृगचर्म के वस्त्र और भिक्षा मागना आवश्यक है और कन्या के लिये इनका निषेध है इसी कारण से ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश मे 'कन्याओ का भी यथायोग्य सस्कार करके' पाठ लिखा यदि वह ऐसा न लिखते तो सम्भव था कोई पुरोहित कन्याओं के लिए बालक के सम, मुण्डन, कौपीन धारण परगृह। भिक्षा का विधान मान लेता। जो शास्त्रनिषिद्ध है इसी के निषेधाथ ऋषि ने यथायोग्य शब्द लिखा है।

अन्त मे संक्षेप से ऋषि का भाव यह है—

स्त्रियों का वेद पढ़ने का अधिकार, पढने से पूर्व यज्ञोपवीत धारण करना पुरुषवत् सम ही है। अत कन्याओं का भी उपवीत आर्यसमाजियों को अवश्यमेव करवाना चाहिए।

तथा आर्य्यसमाज का प्रचार कर अप्रैल मास के द्वितीय सप्ताह मे लखनऊ कॉंग्रेस में सम्मिलित होने के लिए लौट आया।

काश्मीर यात्रा के सम्बन्ध मे लिखे कई लेख मेरे पत्र पत्रिकाओं में निकल चुके हैं। आसाम यात्रा के सम्बन्ध में हम ने कोई लेख अब तक नहीं लिखा। इस विषय में लेख लिखने को मेरे मित्रों ने तकाजा किया। कई पत्रों के सम्पादक महोदयो का पत्र भी आ धमका अत आसाम के विषय में कुछ न कुछ लिखन को विवश हूँ। आशा है पाठकों को आसाम की जानकारी के साथ साथ काफी मनोरंजन होगा।

भौगोलिक परिस्थिति

भारत के उत्तर पूर्व्व कोने पर यह प्रान्त है। इस प्रदेश के उत्तर मे हिमालय पर्वत, तिब्बत और भूटान है। पूर्वमें पाटकोई पहाड़ो को श्रेणियाँ दीवारोकी तरह खड़ी हैं। पूर्व और दक्षिणमें ब्रह्मदेश की पहाड़िया तथा त्रिपुरा का जिला है। पश्चिम में बगाल के मैमनसिंह, रगपुर नथा कूच बिहार के जिल हैं। मानसरोवर से निकले हुए, अगाध जल पूर्ण ब्रह्मपुत्र नदोकी ललित तरग मालाओ तथा निरन्तर वर्षा होने से हरियालीके कारण इस प्रान्त की प्राकृतिक शोभा अत्यन्त मनोहर तथा

आकर्षक है। इस प्रान्तमें किरासन तेल तथा कोयले की खानें हैं। कहीं २ पहाड़ी नदियोंमें सोना भी पाया जाता है। भीतरी पहाड़ों में अभ्रक मिलता है।

ऐतिहासिक महत्व

प्राचीन काल में यह प्रदेश चार विभागों में विभक्त था। कामपीठ, रत्नपीठ, स्वर्णपीठ और सौमारपीठ। उस समय यह देश कामरूप के नाम से विख्यात था। आज से लगभग साढ़े तीन हजार वर्षपूर्व तक यहाँ सूर्यवंशी राजाओं का राज रहा है। महाभारत के समय के राजाओं में मतिरंग, हिडिम्बापुर, नटकासुर, भगदत्त,बाणासुर तथा भीष्मक अपने वीरत्व के लिये प्रख्यात थे। भीष्मक विदर्भ देश कुन्डिल नगर वर्तमान सदिया के राजा थे। श्री कृष्णचन्द्र जी की अर्द्धांगिनी रुक्मिणी देवी इन्हीं की कन्या थी। बाणासुर की राजधानी शोणितपुर वर्तमान तेजपुर में थी। उषा देवी जिनका विवाह चित्ररेखा की कौशल्यता से कृष्णचन्द्र जो के पौत्र अनिरुद्ध से हुआ था इनकी ही पुत्री थी। लोगों का कहना है कि वर्तमान तेजपुर की कचहरी उषा देवी का महल था। महाभारत में अर्जुन के मस्तक काटने के प्रतिज्ञ अर्जुन के पुत्र बभ्रुवाहन भी मनीपुरमें हुए थे। कितने ही विद्वानों का कहना है कि उलूपी इसी मनीपुर की राजकन्या थी।

भीम तथा हिडिम्बा से जन्मा हुआ महा पराक्रमी घटोत्कच भी हिडिम्ब पुर वर्तमान डीमापुर में पैदा हुआ था। डीमापुर के पास पाण्डवों के बन ये हुए किले का बहुत सा भाग अभी तक टूटी फूटी अवस्था में वर्तमान है। इस प्रान्त में कुछ समय तक बौद्धोंके पश्चात् हिंदुओंका राज्य रहा है। बौद्ध धर्मको उखाड़ फैंकने वाले कुमारिलभट्ट इसी प्रान्त में उत्पन्न हुए थे। जैसे बहुत थोड़े समय से सिक्खों का राज्य उनके हाथ से निकला है उसी प्रकार बहुत थोड़े दिन हुए आसामका राज्य आहूम राजा (जिस की राजधानी शिवसागर में थी) के हाथ से निकल कर बृटिश गवर्नमैंट को मिला है। भारत के इतिहास में यह विचित्र बात देखने में आती है कि विदेशी आक्रमण उत्तर पश्चिम से हो हुए हैं जहाँ के लोग वीर तथा पराक्रमी थे। भारत के उत्तर पूर्व आसाम् की ओर से कोई भी हमला नहीं हुआ, जहाँ के लोग कायर तथा बुजदिल समझे जाते हैं।

वर्तमान आसाम

यह प्रान्त भी पहले बिहार की भांति बंगाल के साथ था। अभी तक इस प्रान्त की अपना हाईकोर्ट तथा युनिवर्सिटी नहीं है। दोनों का काम कलकत्ता से होता है। आसाम प्रान्त का शासन सपरिषद गर्वनर के द्वारा होता है जो शिलांग में रहते हैं। आसाम वैली तथा सुरमावैली दो खण्डों में यह प्रान्त विभाजित है। प्रत्येक भागका शासक कमिश्नर है। इसके अन्दर जिले के शासक डिपुटी कमिश्नर कहे जाते हैं।

अधिवासी

आसाम की प्राचीन जातियों के लोगों के मुख चौड़े, नाकें चिपटी तथा आँखें तिरछी होती हैं। इनके मुंह पर दाढ़ी तथा मूछें कम निकलती हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि यह लोग चीनी व मंगोल वंशके हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो लम्बे क़दके होते

हैं तथा उनकी नाकें खड़ी तथा नुकीली होती हैं। ये अधिकतर ब्राह्मण हैं जिनकी उपाधि शर्मा की है। कहा जाता है कि आसाम राजाको यज्ञार्थ कुछ ब्राह्मणोंकी आवश्यकता हुई, जो कन्नोज की ओर से बुलाये गये थे। वे वहां ही बस गये जिनके ये वंशज हैं। पहाड़ी जातियों में सिकिर, कछारी तथा नागा हैं। ये अपने सिर पर बहुत चौड़े बाल रखते हैं जो कि शिखा के द्योतक हैं। शरीर पर तो कोट कमीज पहिनते हैं पर धोती के बदले लंगोटी धारण करते हैं जिसका अगला हिस्सा घुटनों तक तथा पिछला दुम की नाई होता है इसलिये कितने लोग बतलाते हैं कि ये बाली के वंश के हैं। इनमें का कोई कोई शिक्षित व्यक्ति अपनी पदवी सिंह लिखता है गोत्र पाण्डव बतलाते हैं। जिन नागवंशी लोगों का वर्णन महाभारत में है, कुछ लोग कहते हैं कि ये ही नागा लोग हैं। ये पहाड़ी जाति के हट्टे, कट्टे, मजबूत तथा ईमानदार हैं। जंगलों में रहने के कारण हाथ में जंगल काटने का हथियार दाव हमेशा साथ रखते हैं।

इन जातियों के सिवा हर एक स्थान पर बंगाल, बिहार, पंजाब, यू० पी० तथा मारवाड़ के लोग विशेष रूप से बसे नजर आते हैं।

जीविका

आसाम के अधिवासियों का एक मात्र धन्धा खेती है। खेतों से चाय, रेशम तथा धान उत्पन्न होता है। आसाम से लाखों रुपये की चाय बाहर भेजी जाती है। बिहार, छोटा नागपुर तथा मद्रास के लाखों कुली इन चायबागों में काम करते हैं। खेतों के अरैंड के पेड़ों पर पले कीड़ों से अरैंडी (अरडी), कुसुम के पेड़ों पर पले कीड़ों से मूँगा रेशम तथा शहतूतके वृक्षोंपर पले कीड़ोंसे जो सफेद रेशम बनता है उसकी मांग भारत के कोने-कोने से रहती है। यहाँ का रेशम बिहार के भागलपुर तथा बंगाल के मुर्शिदाबाद के रेशमसे भी अधिक मजबूत तथा सुन्दर होता है। फलों में नारंगी, सुपारी तथा केला भी बहुतायत से होता है।

जंगली लोग बनो से साल, बांस और रबर निकालते हैं। कहीं २ जंगलों से लाख भी निकलता है। खनिज पदार्थों में मिट्टी का तेल, कोयला तथा चूना मुख्य हैं। बंगाली लोग नौकरी पेशा में, बिहारी तथा यू० पी० के लोग ठेकेदारी तथा मजदूरी में, पंजाबी लोग मिस्त्री के काम में तथा मारवाड़ी व्यापार में अधिकतर लगे रहते हैं।

सामाजिक अवस्था

आसाम के स्त्री. पुरुष साफ तथा सुन्दर होते हैं। बाल्य-विवाह की प्रथा इनमें नहीं है। विधवा-विवाह का प्रचार भी आसाम में नहीं है, पर शिक्षित लोग इसकी आवश्यकता महसूस कर रहे हैं। स्त्री शिक्षा का प्रचार खूब तेजी के साथ बढ़ रहा है। आसाम के लोग उसी कन्या से विवाह करना अच्छा समझते हैं जो कपड़ा बुनना भली भांति जानती हो। आसाम के प्रत्येक धनी तथा सभ्य शिक्षित परिवारमें भी चर्खा और कर्घा व्यवहार में लाया जाता है। आसाम का प्रत्येक व्यक्ति कम से कम अपने घर का तैयार किया हुआ गमछा (तौलिया) अपने पास अवश्य रखता है।

आसाम के लोगों में उदारता का भाव है। दूसरे प्रान्त के लोगों को ये सम्मान की दृष्टि से

देखते हैं पर इन लोगों में भी बंगाली भाईयों की भांति संकीर्णता आ रही है। आसाम के हर एक विभाग में नौकरी पेशा में बंगाली लोग हैं। आसाम के शिक्षित लोगों का झुकाव नौकरी की ओर है वे अपने प्रांत के हर एक विभाग में नौकरी चाहते हैं। बंगाली भाई आसामी लोगों को घुसने देना नहीं चाहते। बंगाली लोग आसामी लोगों को हेय दृष्टि से देखते हैं जिसको आसामी लोग बर्दाश्त नहीं कर रहे हैं जिस कारण आसाम में आसामी-बंगाली के प्रश्न को लेकर संघर्ष मचा हुआ है। इस आन्दोलन को चलाने के लिए आसामी लोगों ने संरक्षणी सभा नाम की संस्था भी स्थापित की है। इस कार्य्य में आसामी लोगों को सफलता भी मिल रही है। आसाम प्रांत में आसामी लोगों को नौकरी मिलनी चाहिए, यह गवर्नमेण्ट भी चाह रही है। आसाममें धोबी, नाई, कुम्हार, लुहार मेहतर का पेशा इधर के लोग ही विशेषकर विहार या यू० पी० के लोग करते हैं। विहार और यू० पी० के लोगों को आसाम में देश वाली कहते हैं।

छूआछूत

आसाम प्रांत में पहले छूआछूत का जोर अधिक था। कदाचित यह कुप्रथा यहाँ मद्रास की भांति थी। ८ वर्ष पहले की बात है कि मैं आसाम के जरिहाट शहर में गया था। कुछ कार्यवश जरिहाट से पश्चिम एक गांव में जाना पड़ा। वहाँ ही रात हो गई। एक दूकान से कुछ भोजन की सामग्री मोल ली और रात भर वहाँ रहने का संकेत किया। दूकानदार ब्राह्मण था। शिक्षित भी जान पड़ता था। उसने नम्रता पूर्वक कहा "महाशय! मुझे आपको अपने घर रहने देने में कोई आपत्ति नहीं है, पर यदि ग्राम वाले यह जान जायेंगे कि इसने अपने घर में रात भर देश वाली को रक्खा था तो बिरादरी वाले मुझे जाति-च्युत कर डालेंगे। यह सुनकर मैं दंग रह गया और उसी स्थान पर एक मुसलमान के यहाँ जाकर आश्रय लिया।

इधरके एक सज्जन जो इन दिनो आसाममें रहते हैं उन्होंने बतलाया कि मैं कुछ साथियों के साथ पास के एक शहर से आ रहा था। हम लोगों को प्यास लगी, सड़क के किनारे डि० बो० का कुआ था। उस कुए से पानी लेकर हम लोगों ने प्यास बुझाई। फिर क्या था गाँव में तहलका मच गया। कुए को देश वाली लोगों ने छू दिया। मैं नहीं कह सकता कि यदि मैं अकेला रहता तो मेरी दुर्गति गाव वाले किस प्रकार करते। थोड़े दिनों का जिक्र है कि शिवसागर के एक कुलीन व्यक्ति ने अपनी कन्या को इसलिते मुसलमानों के सुपुर्द कर दिया कि उन्हें अपनी कन्या के चरित्र पर सन्देह हो गया था।

पर ये सब बातें शीघ्रतातिशीघ्र मिटती जा रही हैं। मैंने ८ वर्ष पूर्व भी आसाम पर्यटन किया था। उस समय के और इस समय के सामाजिक जीवन में मैंने बहुत अन्तर देखा। थोड़े दिन हुए जरिहाट शहर के एक उच्च कुल तथा धनी परिवार का युवक यूरोप से शिक्षा प्राप्त कर यहाँ लौटा तो अपने साथ एक यूरोपियन स्त्री को भी लाया। इधर जो प्रतिष्ठा जगद्गुरु

शंकराचार्य की है वही वहां आसाम के गढ़मुढ़िया गोस्वामी को प्राप्त है। गोस्वामी महोदय ने उस यूरोपियन महिला की शुद्धि की और उसका विवाह-संस्कार उस युवक के साथ हुआ जिससे कई सन्तानें हैं।

आसाम में विशेषत तीन जातियाँ अछूत समझी जाती है। कैवर्त्त, नम शूद्र तथा बनिया। आश्चर्य तो यह है कि ये तीनों जातियाँ न गन्दा रहती हैं न गन्दा काम करती हैं फिर भी अछूत समझी जाती हैं।

भाषा

आसाम की भाषा आसामिया कही जाती है जिसमें संस्कृत शब्दोंकी भरमार है। लिखनेके प्राय सब अक्षर बंगला के समान है। आसाम में मैं जहाँ कहीं गया संस्कृत मिली हुई हिन्दी बोलता था जिसे आसामिया लोग आसानी के साथ समझ लेते थे। उर्दू मिली हिन्दी न तो आसामी न बंगाली भाई ही समझ सकते हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन या कॉंग्रेसके वे नेता जो उर्दू मिली हिन्दी लिखने व बोलने के पक्षपाती हैं बहुधा भूल जाते हैं कि आसाम बंगाल के भाईयों को कितनी कठिनाई होगी। आसामिया भाषा किस प्रकार बोली जाती है, पाठकों के मनोरंजनार्थ लिखता हूँ। जरिहाटसे निकलने वाला दैनिक "बातरि" मेरे नाम का हेडिंग देकर इस प्रकार लिखता है —

जरिहाट २९ फेब्रुअरी। विहार प्रदेशेरे वैदिक मिशनरी ठाकुर हरिहरसिंह डागरियाॐ असमलै आहि लामडिंग, नवगाव, जखलाबन्धा आदि ठाईते आर्यसमाजर प्रचार कार्यर बारे वक्तृतादि जारो १८ फेब्रुअरी तारीखे जरिहाट पायहि। कैया‡ पट्टी श्रीयुत देवेश्वर शर्मा वकील डागरिया धरत आसहि भाते थाके··· आदि, आसामिया भाषा में मासिक "अज्ञान" कलकत्ता से साप्ताहिक "आसामिया" गौहाटी से तथा दैनिक "बातरि" जरिहाट से निकलता है।

सार्वजनिक कार्य

आसाम में सार्वजनिक जागृति खूब तेजी के साथ हो रही है। जैसा कि बतला चुका हूँ अपने प्रान्त की उन्नति तथा अन्य प्रान्तके लोगों का लूट खसोटसे बचनेके लिए आसामी लोगों ने सरक्षणी सभाकी स्थापना कर रक्खी है जिसका सगठन भी हो चुका है। आसामिया भाषा की उन्नति के लिए स्थान २ पर साहित्य सभा भी हैं जिनका उद्देश्य आसामिया भाषा को उन्नत बनाना है। प्राय प्रत्येक नगर में मैंने आसामिया थियेटर हाल देखे जिनमें मनोरंजन के लिए नाटक या थियेटर होता है।

आसाम प्रान्तीय हिंदू सभाका प्रधान कार्य्यालय नव गाँव में है। कभी २ इसका वार्षिकोत्सव भी होजाता है। नव गाव में कुछ न कुछ इस सभा का कार्य्य है पर अन्यत्र कहीं काम देखने में नहीं आया। हरिजन सघ का प्रान्तीय कार्य्यालय जोरहाट में है, शाखाएं प्रान्त भरमें खुली है। आसामी लोग अपने उपासनागृह को 'नामघर' कहते हैं। कुछ प्रचारक इस कार्य्य को करने के लिये भेजे गये हैं जिनमें से कुछ तो वहाँ मारवाड़ियों के यहाँ

ॐ महोदय।

‡ मारवाड़ी पट्टी।

नौकरी कर लिए हैं, हाँ कुछ लोग किसी प्रकार हिन्दी सिखाने का कार्य्य कर रहे हैं। आसाम के कुछ लड़के आद्य महाविद्यालय लाहौर, काशी विद्यापीठ तथा परम हसाश्रम बरहज में हिन्दी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आसाम में हिन्दी प्रचार का काम आसामी लोग ही सुगमता से कर सकते हैं। आसाम के लोग हिन्दी का पूर्णज्ञान प्राप्त करने के लिए इधर आना पसन्द नहीं करते। क्योंकि उनमें घर छोड़ने की मनोवृत्ति कम है। विभिन्न प्रान्त की वेश भूषा, खान पान भी रुकावट डालता है। आवश्यकता इस बात की है कि आसाम प्रान्त के अन्तर्गत एक हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की जानी चाहिए जहाँ विशेष कर आसामी लोगों को प्रोत्साहन देकर हिन्दी सिखाने का कार्य्य करना चाहिए। इस कार्य्य के लिए उदार, दानी, मानी सज्जन विशेष कर कुछ मारवाड़ी आसाम में ही मिल जायेंगे। आसाम के लोग सार्वजनिक कार्य्यों के लिए दान देने के अभ्यासी नहीं जिस कारण वहाँ हरिजन सघ, हिन्दू सभा, या हिन्दी प्रचार की प्रगति कम है। इन कार्य्यों के लिए आसामी लोग इधर का मुह देखते हैं कि कब रुपया आवे और कब काम हो। कुछ अंशमें यह काम अखिल भारतीय सभा पूरा भी करती है। यदि किसी कार्य्य के लिए चन्दा करना होता है तो ये लोग एक मात्र मरावाड़ी लोगों के यहाँ दौड़ते हैं।

आर्य्य समाज

आसाम में आर्य्य समाज का प्रचार नहीं के बराबर है। आसाम-बङ्गाल प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान कार्य्यालय कलकत्ता में है। आसाम आने के पूर्व मैंने उपयु क्त सभा को लिखा था कि आप कृपा कर बतलावें कि आसाम प्रान्त में कहाँ कहाँ आर्य्य समाज है ताकि उनके सहयोग से उस प्रान्त में प्रचार कर सकू । परन्तु कुछ उत्तर नहीं आया। वास्तव में मेरे जानते तो आसाम में कोई आर्य्य समाज नहीं है, जिस का सम्बन्ध कलकत्ता से हो।

हा, जहाँ २ विहार यू० पी० या पजाब के आर्य्य समाजी आसाम में हैं उनका सगठन आर्य्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के कार्य्य कर्त्ताओं ने करा दिया है। इस प्रकार की भी सस्था नवगाव, गौहाटी तथा शिलाग में ही है जहा एक २ कार्य कर्त्ता भी हैं। पर इतने बड़े लम्बे चौड़े प्रान्त में जहाँ इसाईयत का बहुत जोर तथा मुसलमानों का प्रबल आक्रमण है तीन आर्य्य समाज या तीन कार्य्यकर्त्ता का होना नहीं के बराबर है। यह तीनों स्थान लोअर आसाममें हैं। अपर आसामके डिबरोई, तिनसुकिया तथा जोरहाट के आर्य्यबन्धु तो यह कह रहे थे कि हम लोगों को संस्कार कराने के लिए कोई पण्डित भी नहीं मिलते। कृपा कर आप प्रबन्ध कराइये।

आसामके लोग आर्य्यसमाज के मूल सिद्धान्तों को जानने के बड़े इच्छुक हैं। जहाँ इधर के लोग आर्य्य समाज के नाम से नाक भौं सिकोड़ते हैं वहाँ आसाम वाले आर्य्य समाज की बातें सुनना पसन्द करते हैं। श्रीयुत चन्द्र धर बरुआ (जोरहाट) जो गत गोलमेज सभा में आसामको

ओर से लएडन गये थे, मुझ से कह रहे थे कि आप स्वामी दयानन्दका संक्षिप्त जीवन तथा फ़ोटो भिजवाईये ताकि मैं बालकों की पढ़ाई आने वाली पुस्तकों के कोस में रखवा सकूं। इस की सूचना मैंने सार्वदेशिक सभा दिल्ली को दे दी है।

आसाम प्रान्त में आसामिया भाषा जानने वाला व्यक्ति सुविधा के साथ प्रचार कर सकेगा। आसाम में आसाम का व्यक्ति प्रचारक हो तो और अच्छा होगा। आसामिया भाषा भाषी न मिल सके तो बंगला भाषाके द्वारा भी कार्य हो सकेगा। दुख की बात है कि आर्य्य समाज की कोई पुस्तक अभी तक आसामिया भाषा में प्रकाशित नहीं हो सकी है। आसाम प्रान्त के प्रचारमें एक और वस्तु बाधा डालती है। आसामके कुछ लोग जो आर्य्य-समाज के तत्व को नहीं जानते वह भी स्वामी दयानन्द के चलाये हुये धर्म को आर्य्यसमाज समझते हैं। आसाम में एक सुधारक श्री शंकर देव हो चुके हैं जो स्वामी दयानन्द के पूर्व कालीन थे। वे अछूतोद्धार तथा शुद्धि चाहते थे। पर ये शंकर देव जी केवल नाम जपना ही महत्व पूर्ण कार्य्य समझते थे। वेद, यज्ञ के प्रति इन्हें आस्था नहीं थी। आसाम के संकीर्ण व्यक्ति स्वामी दयानन्द को शंकर देव से तरजीह नहीं देते पर ये बातें भी आर्य्य समाज के प्रचार में बाधा नहीं डाल सकेंगी। सफल प्रचारक इस प्रश्न को हल कर लगा।

मैं जहा कहीं जाता था विशेषत आसामिया सज्जन के यहाँ ही ठहरता था ताकि उनकी भीतरी बातों को भी जान सकू। संस्कृत मिली हुई हिन्दी में भाषण करता था, कहीं २ स्त्रियों तथा बच्चों को समझाने के लिये अनुवाद की भी आवश्यकता हुई थी।

उपसंहार

आसाम की जलवायु अच्छी नहीं है। समस्त वर्ष, विशेषकर चैत्र से कार्तिक तक बहुत वर्षा होती है। पश्चात् कड़ाके का जाड़ा पड़ने लगता है। वर्षा के दिनों में कभी २ दो २ सप्ताह तक सूर्य्य के दर्शन नहीं होते। आसाम की पहाड़िया विशेष कर नागा, खासी, गारो, जैन्तिया में अत्यन्त वर्षा होती है।

चेरापूजी स्थान पर तो लगभग ५०० इंच वर्षा होता है। शायद संसार में इतनी वर्षा अन्य स्थान में कहीं नहीं होती। आसाम के लोग बहुत ही सुस्त तथा अकर्मण्य होते हैं जिस कारण वहाँ के खेतों में काम करने के लिए भारत के अन्य भागों से समस्त वर्ष, आदमी आते हैं। जन संख्या ७६ लाख है।

आसाम के लोग पानी के लिए छोटी २ पोखरियाँ खुदवाते हैं और उसी का पानी व्यवहार में लाते हैं। जो बीमारी का प्रधान कारण होता है। आसामके अधिकांश स्थानोंकी मिट्टी इस योग्य नहीं कि कुआ खुदवाया जासके या ट्यूबवैल धँसाया जासके। जहा २ इस योग्य मिट्टी मिल रही है वहाँ कुँआ खोदने या ट्यूबवैल धसाने का प्रयत्न होरहा है। आसाम के लोग भात और मछली विशेषकर खाते हैं। दाल खाने के वे अभ्यासी नहीं हैं। दलहन आसाम में होता भी नहीं। आटा या दाल इधर से ही जाता है।

आसाम हिन्दू प्रान्त है पर वहा ईसाइयत बहुत जोर पकड़ती जा रही है। पहाड़ी स्थानों में जहाँ जाने में बहुत कठनाई है वहा भी पादरी अपना अड्डा जमाए बैठे हैं। चाय बागान के कुलियों तथा पहाड़ी जातियों में इनका बहुत प्रचार बढ़ रहा है। प्राय समस्त चाय बागात के कुली तथा पहाड़ी ईसाई बन गये हैं। हरेक शहर में ईसाइयों का बहुत बड़ा महल्ला बसा है जहा पर गिर्जाघर अनाथालय तथा H E स्कूल खुला है। ईसाइयों के इन मुहल्लों को उपनिवेश (कलोनी) कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी। पर स्मरण रखना चाहिए कि ये लोग ईसाई धम के गूढ़ तत्व को समझ कर ईसाई नहीं हुए हैं बरन रोटी के लिए ईसाई हुए हैं, या ईसाइयों के बहकवे में फँस कर बने हैं।

अन्य विधर्मियों का आक्रमण भी कम नहीं है। पिछली मर्दुम शुमारी से पता चलता है कि मुसलमान लोग आसाम में तो संख्यावृद्धि किये ही हैं बाहर के मुसलमानों को भी लेकर बसा रहे हैं। इस सबन्धमें हिन्दुओंकी मनोवृत्ति बड़ी शोकजनक है।

आसाम के जगलों में बनैले जानवर अधिक पाये जाते हैं। हाथी विशेषतया पाया जाता है जिस कारण आसाम में हाथी सस्ता मिलता है। हाथी के व्यापारी यहा से हाथी खरीद कर दूसरे स्थान पर भेजते हैं। आसाम में भूकम्प होता रहता है जिससे मकान अधिकतर लकड़ियों के बनाये जाते हैं। आसाम भ्रमण के लिये धुबरी से जहाज द्वारा गौहाटी, तेजपुर, कोकिलामुख (जोरहाट) डिब्रूगढ़ होते सदिया तक जा सकते हैं। ईस्टर्न बगाल E B) की रेलवे भी कठिहार से लालमुनीहाट होते अमीनगाव तक गयी है। यहा स्टीमर द्वारा पार करके पाण्डु स्टेशन पर A B आसाम बगाल की गाड़ी से गौहाटी, नवगाव, जोरहाट भ्रमण करते तिनसुकिया तक जासकते हैं। तिनसुकिया से एक लाइन डिब्रूगढ़ तक गई है। दूसरी लायन डिगबोई (जहा किरासन तेल की खान है) तथा लीदू (जहा कोयले की खान है) जाती है। तिनसुकिया और डिगबोई के बीच में माकूम जकशन है जहाँ से सदिया जाना पड़ता है। बस यहीं ब्रिटिश राज्य समाप्त होता है। माकूम से लोग परशुराम कुण्ड तीर्थ स्थान को जाते हैं।

मैंने अपने गाँव में बड़े बूढ़ों से सुना था कि जो लोग आसाम जाते हैं वे लौट कर नहीं आते क्योंकि आसामकी स्त्रियाँ बड़ी जादूगरनी होती हैं। ये पुरुषों को भेड़ बकरी बना कर रख लेती हैं। ये बातें तो कोरी गप्प हैं। बात यह है कि आसाम की स्त्रियों में आकर्षण है। जो लोग इधर के जाते हैं उधर की स्त्रियों से फँस जाते हैं। कितने सज्जन जो धनी मानी हैं इधर से वहाँ जाकर आसामी ख़ूबसूरत कन्याओं से विवाह तक कर लेते थे। आसामी लोगों को इधर के शिक्षित धनी युवकों को कन्या देने में हिचकिचाहट भी नहीं होती। पर जो लोग इस प्रकार विवाह आदि करके रह गये हैं वे अपनी पुरानी कुलीनता का ख्याल करके इधर हो पुन विवाह आदि सम्बन्ध करना चाहते हैं जिसमें उन्हें कठिनाई हो रही है।

गौहाटी के समीप कामाख्या हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। यहाँ कुमारी कन्याओं को भोजन कराना

हीरालाल गांधी के मुसलमान होने पर
महात्मा जी का वक्तव्य

महात्मा गाँधी के सब से बड़े पुत्र हीरालाल गाधी ता० २८ मई को नागपुर मे गुप्त रीति से मुसलमान बनाये गये हैं और नाम अब्दुल्ला गाँधी रक्खा गया है तथा २९ मई को बम्बई की जुम्मा मस्जिद में उन के मुसलमान होन की घोषणा की गई। कुछ दिन हुए यह खबर था कि वे ईसाई हाने वाले हैं पर बाद मे हीरालाल गाधी ने स्वयं ईसाई न होने की घोषणा की थी। उन्होने कहा है

हिन्दू लोग धर्म समझते हैं। पण्डो की लडकियाँ पैसे क लिए बहुत दिक करती है इसलिये यहाँ के यात्री पहले से रुपये का पैसा या अद्धी (एक पैस का आधा) बदला कर लिये जाते है जिससे सब कुमारिया में वितरण कर सके। आसाम मे मनीपुर एक देशी राज्य है जहाँ पासपोर्ट लकर जाना पडता है। यहाँ का राजा हिन्दू है। आसाम में ब्रह्मपुत्र के किनारे बसे हुए नगरा का जलवायु उत्तम है। शिलाग का जलवायु तो भारत के इन-गिने स्थानो के समान है। सिलहट की नारङ्गी प्रसिद्ध है। आसाम के बडे नगरो म शिलाग, गौहाटा तेजपुर, जोरहाट, तिनसुकिया, डिब्रूगढ तथा सिलहट है। आसाम म चाय पान की अधिक प्रथा है। आये हुए अतिथि को चाय देना अधिक पसन्द करते हैं।

कि अपने पिता महात्मा गाधी से मतभेद के कारण वे मुसलमान हो गये हैं।

महात्मा जी का वक्तव्य

बङ्गलौर २ जून। अपने बडे लडके हीरालाल गाधी के धर्म-परिवर्तन के सिलसिले मे महात्मा गाधी ने मुसलमान मित्रो के नाम एक अपील प्रकाशित की है। अपील का आशय निम्न है—

"पत्रों म समाचार प्रकाशित हुआ है कि मेरे पुत्र हीरालालके धर्म-परिवर्तन की घोषणा पर जुम्मा मस्जिद में मुस्लिम जनता ने अत्यन्त हर्ष प्रकट किया है। यदि उसने हृदय से और बिना किसी सासारिक लोभ के इस्लामधर्म स्वीकार किया होता तो मुझे कोई आपत्ति नहीं थी। क्योंकि मैं इस्लाम को अपने धर्म क समान ही सच्चा समझता हूँ किन्तु मुझे सन्देह है कि यह धर्म-परिवर्तन हृदय से तथा बगैर किसी सासारिक लाभ के किया गया है।

शराब का व्यसन

जो भी मेरे पुत्र हीरालाल स परिचित हैं वे जानते हैं कि उसे शराब और व्यभिचारका लत पड़ी हुई है। कुछ समयतक वह अपने मित्रोंकी सहायता पर गुजारा करता रहा। उसन कुछ पठानो म भी भारी सूद पर कर्ज लिया था। अभी कुछ दिनो की बात है कि बम्बई म पठान लेनदारो के कारण उस को जीवनके लाले पडे हुए थे। अब वह उसी शहर

में सूरमा बना हुआ है। उसकी पत्नी अत्यन्त पतिव्रता थी। वह हमेशा हीरालाल के पापों को क्षमा करती रही। उसके ३ सन्तान हैं, दो लड़कियां और एक लड़का, जिनके लालन-पालन का भार उस ने बहुत पहले से छोड़ रखा है।

धर्म की नीलामी

कुछ सप्ताह पूर्व ही उसने हिंदुओं के-हिन्दुत्व के विरुद्ध शिकायत करके ईसाई बनने की धमकी दी थी। पत्र की भाषा से प्रतीत होता था कि वह उसी धम में जायगा जो सब से ऊँची बोली बोलेगा। उस पत्र का वांछित असर हुआ। एक हिंदू कौंसिलर के प्रयत्न से उसे नागपुर म्युनिसिपैलिटी मे नौकरी मिल गई। इसके बाद उसने पत्रों में एक और वक्तव्य प्रकाशित किया और हिन्दू धर्म के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट की।

आर्थिक लालसा

किंतु घटना क्रम से मालूम पड़ता है कि उसकी आर्थिक लालसायें पूरी नहीं हुईं और उसको पूरा करने के लिये उसने इसलाम धर्म को स्वीकार कर लिया है। गत अप्रैल में जब मैं नागपुर में था वह मुझ से तथा अपनी माता से मिलने आया और उसने मुझे बताया कि किस प्रकार धर्मों के मिश्नरी उसके पीछे पड़े हुए हैं। परमात्मा चमत्कार कर सकता है। उसने पत्थर दिलों को भी बदल दिया है और एक क्षण में पापियों को सन्त बना दिया है। यदि मैं देखता कि नागपुर की मुलाकात में और हाल की शुक्रवार की घोषणा में हीरा लालमें पश्चात्तापकी भावनाका उदय हुआ है और उसके जीवन में परिवर्तन आ गया है, तथा उसने शराब तथा व्यभिचार छोड़ दिया है, तो मेरे लिए इससे अधिक प्रसन्नता की और क्या बात होती?

जीवन में कोई परिवर्तन नहीं

लेकिन पत्रोंकी खबरें इसकी गवाही नहीं देतीं। उसका जीवन अब भी यथा पूर्व है। यदि वास्तव मे उसके जीवन में कोई परिवर्तन हुआ होता तो वह मुझे अवश्य लिखता और मेरे दिल को खुश करता। मेरे सब पुत्रों को पूर्ण विचार स्वातन्त्र्य है। उन्हें सिखाया गया है कि वे सब धर्मों को इज्जत की दृष्टि से देखें। हीरालाल जानता है यदि उसने मुझे यह बताया होता कि इस्लाम धर्म से मेरे जीवन को शांति मिली है तो मैं उसके रास्ते मे कोई बाधा न डालता। किंतु हम में से किसी को भी, मुझे या उसके २४ वर्षीय पुत्र को जो मेरे साथ रहता है उस की कोई खबर नहीं थी।

मुसलमानों को इस्लाम के सम्बन्ध में मेरे विचार ज्ञात हैं। कुछ मुसलमानों ने मुझे तार दिया है कि अपने लड़के की तरह मैं भी संसार के सब से सच्चे धर्म इस्लाम को ग्रहण करलूं।

गांधी जी को चोट

मैं मानता हूँ, इन सब बातों से मेरे दिल को चोट पहुँचती है। मैं समझता हूँ कि जो लोग हीरालाल के धर्म-परिवर्तन के जिम्मेवार हैं वे अहितयात से काम नहीं ले रहे जैसा कि ऐसी अवस्था में करना चाहिए।

इस्लाम को हानि

हीरालाल के धर्म परिवर्तन से हिंदू धर्म की कोई क्षति नहीं हुई उसका इस्लाम-प्रवेश उस धर्म की कमजोरी सिद्ध होगा। यदि उसका जीवन

पहिले की भांति ही बुरा रहा।

धर्म परिवर्तन मनुष्य और उस के स्रष्टा से सम्बन्ध रखता है। शुद्ध हृदय के बिना किया हुआ धर्म परिवर्तन मेरी सम्मति में धर्म और ईश्वर का तिरस्कार है। धार्मिक मनुष्य के लिये विशुद्ध हृदय से न किया हुआ धर्म परिवर्तन दुःख की वस्तु है, हर्ष की नहीं।

मुसलमानों का कर्तव्य

मेरा मुस्लिम मित्रों को इस प्रकार लिखने का यह अभिप्राय है कि वे हीरालाल के अतीत जीवन को ध्यान में रखें और यदि वे अनुभव करें कि उसका धर्म-परिवर्तन आत्मिक भावना से रहित है तो वे उसको अपने धर्म से बहिष्कृत कर दें, तथा इस बात को देखें कि वह किसी प्रलोभन में न पड़े और इस प्रकार, समाज का धर्म-भीरु सदस्य बन जाय। उन्हें यह बात जान लेनी चाहिए कि शराब ने उसका मस्तिष्क खराब कर दिया है तथा सद्-असद्विवेक की बुद्धि खोखली कर डाली है। वह अब्दुल्ला है या हीरालाल इससे मुझको कुछ मतलब नहीं। यदि वह नाम बदल कर ईश्वर भक्त बन सकता है तो मुझे क्या आपत्ति है। क्योंकि अर्थ तो दोनों नामों का वही है।"

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

उत्सव या नाटक

श्री प० सुरेन्द्र शर्म्मा काव्यतीर्थ 'आर्य्य मित्र' मे 'उत्सव या नाटक' शीर्षक मे पुत्री पाठशालाओं के उत्सवों पर लड़कियो के अभिनयों के सम्बन्ध मे लिखते है —

"पुत्री पाठशालाओं के उत्सव से लोग समाज के उत्सव की शान शोभा और पूरी कामयाबी समझते हैं। क्योंकि इन उत्सवों के प्रोग्राम में कन्याओं के भजन, खेल और कुछ नाच अवश्य ही होते हैं। नाटक और सिनेमाओं के नाच एवं नाटकों से बहुत थोड़ा ही अन्तर रह जाता है। वहाँ टिकट से प्रवेश व दर्शन होता है और यहाँ इस दृश्य का टिकिट चन्दे के रूप में होता है। वहाँ पैरों में घूंघरु बाधकर लड़के या स्त्रियाँ गान के साथ नाच दिखा कर लोगों के मन को सन्न करती हैं और यहाँ इन उत्सवों में बिना घूंघरु के या पैरों के बजाय हाथोंमें लैजिम के रूप मे या डडे इत्यादि उन्ही दूसरे रूपमें ताल और ठुमके के साथ मन बहलावका सामान रहता है। उत्तरभारत की आर्य कन्या पाठशालाओं में यह नृत्य इस समय वृद्धि पर है। कोई २ कहते हैं यह लहर गुजरातसे चली है—इसमें सचाई कितनी है वे ही जानें परन्तु यह है कला वृद्धि पर ही।

हमने कई उत्सवों पर ये नाच स्वय देखे हैं और प्रश्न कर्त्ताओं के सामने मन्दाब भी होना पड़ा है। अभी मथुरा के उत्सव पर भी यही दृश्य था। वहा पर कन्याओं की कमर में गोटा भी बाँधा गया था। आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार देहली के मन्दिर मे भी यही दृश्य नजर आया। यहा देहली मे तो कन्याओं ने गुरु दक्षिणा वाले ऋषि दयानन्द के जीवन का भी नाटक किया था।

२-३ वर्ष पूव कलकत्ते के उत्सव पर तो एक नाटक में दोपहर के समय शायद महाराणा प्रताप का नाटक था या ऐसे ही किसी इतिहास से सम्बन्धित था। कन्याएँ पैरों में घूंघरु बाधकर तथा मुकुट एवं शस्त्रों से सुसज्जित होकर विधि पूर्वक वेद वेदि पर ताल और ठुमके के साथ नाचती हुई उपस्थित हुई थीं। पर्दा हटते और दृश्य के सामने आते ही कई सज्जनों तथा पूज्य स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के कहने पर वह नाटक आरम्भ होने के थोड़ी देर बाद ही रोक दिया गया था।

इस प्रकार से आर्य्य समाजों के उत्सवों पर अब प्राय इस प्रकारके साधनोंसे काम लेकर उद्देश्य वेद-प्रचार को मिट्टी में मिलाया जा रहा है।

नाचना और नाटक दिखाना आर्य्य समाज का ध्येय नही है अत इस काम के लिये अपने समय और धन दोनों का नाश न करना चाहिए।

यदि सस्थाओं के संचालक नृत्य आदि का दिखाना ही परम आवश्यक समझें तो वे कम से कम वैदिक आदर्श के साथ इतनी कृपा अवश्य करें कि वे आर्य्यसमाज के साथ या आर्य समाज

मन्दिर में ऐसे किसी भी उत्सव का आयोजन न किया करें।

बिरादरी की समस्या

बिरादरी की समस्या शीर्षक में 'आर्य्य मित्र' के सम्पादकीय स्तम्भ में आर्य्य बिरादरी बनाये जाने की तजवीज़ का निम्न पंक्तियोंमें खण्डन किया गया है —

आर्य समाज में जब कभी जातपाँत तोड़ने का प्रश्न उठता है तो उसके साथ आर्य बिरादरी बनाने का भी प्रश्न उठा करता है। इसका कारण यह है कि लोग बिरादरी की आवश्यकता समझते हैं, इसीलिए प्रचलित बिरादरी को छोड़कर एक नई बिरादरी बनाने का प्रस्ताव करते हैं। उन्हें यह प्रतीत होता है कि वे बिना बिरादरी के जीवित ही नहीं रह सकते। किन्तु आर्य बिरादरी का प्रस्ताव करते समय वे इस बात को भूल जाते हैं कि सहस्रों बिरादरियों के साथ एक और बिरादरी की वृद्धि करना कहाँ की बुद्धिमत्ता है। आर्य जैसे विस्तृत शब्द को बिरादरी के साथ जोड़ कर हम इसकी भी मिट्टी किरकिरी करना चाहते हैं। हमारी सफलता तो इसमेंही है कि हमारे मण्डल से बाहर के लोग भी हमारी बात समझें न कि अपने को अलग करके बैठ जाने में। जो व्यक्ति दूसरों का सुधार करना चाहते हैं उन्हें तो आदर्श उपस्थित करना चाहिये। बिरादरी का बन्धन तोड़ने का यह अर्थ कभी नहीं है कि हम अपने परिचित जाति बन्धुओं और सम्बन्धियों से द्वेष करें और उनसे सहयोग न करें। सच पूछा जाय तो बिरादरी के प्रेम बन्धन को तोड़ना अपना उद्देश्य ही नहीं है बल्कि एक बिरादरी में दूसरी बिरादरी के प्रति भी उदारता और प्रेम के भाव उत्पन्न करना है। दो चार ऐसे व्यक्ति जिनका जीवन अधिक स्वतन्त्र है और किसी से विशेष लगाव नहीं रखते यदि जाति बन्धन तोड़कर विवाह करलें तो उससे देश का समस्या हल नहीं होगी। हमें तो इस रिवाज को सक्रामक रोग की तरह सर्वत्र फैलाना है अतः अपनी बिरादरी वालों में भी हमें अनेक व्यक्ति अपने पक्ष के उत्पन्न करने चाहिये। एक व्यक्ति को इस बात से रुष्ट और दुखित नहीं होना चाहिए कि उसका बहिष्कार कर दिया गया। ऐसे बहिष्कार दीर्घकाल तक नहीं चलते। यदि वह समझा बुझाकर अपनी बिरादरी के लोगों में से कुछ को भी अपने पक्ष में कर लेगा तो उसे भारी सफलता होगी। इस प्रकार बिरादरियों का दुःखद बन्धन ढीला हो जायगा और उपयोगी प्रेम का बन्धन नहीं मिटेगा। इस कार्य में बिरादरियों के सुधार पक्ष के व्यक्ति भारी काम कर सकते हैं। उनका यह कर्तव्य है कि लोगों को अपनी उपजाति से बाहर सम्बन्ध करने को प्रोत्साहित करें।

प्रायः देखा जाता है कि आर्यसमाजी भी कहने को तो बिरादरी की सभाओंमें भाग लेना समाजके नियमों के विपरीत समझते हैं पर बहुसंख्यक ऐसे ही हैं जो अपनी अपनी बिरादरी की सभाओं में अवश्य सम्मिलित होते हैं। फिर जब वे जाते ही हैं तो क्यों न एक अच्छा उद्देश्य लेकर जाएँ और बिरादरी वालों को भिन्न उपजातियों में सम्बन्ध करने को प्रोत्साहित करें। हमारी समझ में इस उद्देश्य से उन पञ्चायतों में जाना समाज के नियमों के विपरीत नहीं समझा जाना चाहिए।

उन नियमों का क्या मूल्य है जो कागज पर लिखे ही रक्खे रहे। इस प्रकार सबसे प्रथम उपजातियों की सीमाओं को लाघने का भारी प्रयत्न होना चाहिये। पीछे जब उपजातियाँ हिल मिल जायंगी तब वैदिक वर्णव्यवस्था अत्यन्त सरल हो जायगी। आर्य बिरादरी का विचार एक व्यर्थ का विचार है। परस्पर सहयोग, सहायता, सेवा और प्रेम के लिए तो जहाँ जहाँ आर्यसमाज है आर्य बिरादरी बनी हुई है ही। दूसरों से सम्बन्ध विच्छेद करने के लिए आर्य बिरादरी बनाना तो मूर्खता ही होगी और यह कार्य जितना दीखता है उतना सरल भी नहीं है।

पूर्वीय सहिष्णुता और ईसाइयत

श्रीयुत रेवेरेण्ड वेन्डेल फ़िलिप्स के न्यूयार्क (अमेरिका) में दिए गए एक भाषणकी रिपोर्ट 'प्रबुद्ध भारत' में प्रकाशित हुई है। उस भाषण का मुख्य विषय 'पूर्वीय सहिष्णुता और ईसाइयत' है। उस रिपोर्ट का मुख्य भाग इस प्रकार है —

"मैं बल पूर्वक कह सकता हूँ कि कुछ वर्ष व्यतीत हुए जब ईसाई मिशनरी भारत में गए तो कदाचित हमारे सब से बड़े ईसाई प्रचारक श्रीयुत फ़िलिप्स ब्रूक्सने कहा था, "ईसाइयत के भारत में प्रवेश को देखकर मैं बड़ा प्रसन्न होता हूं। इसलिए नहीं कि ईसाइयत से भारत वर्ष को कुछ ज्यादा प्राप्त होगा वरन इसलिए कि भारतवर्ष ईसाइयत को बहुत कुछ देगा।"

यह अच्छा होगा कि हम कुछ क्षण इस बात पर विचार करें कि पूर्व ने ईसाइयत को क्या दिया है, वह क्या दे रहा है और आगे क्या देगा। सब से पहले मेरा यह विश्वास है कि पूर्व परलोक की वास्तविकता का हम में भाव जगा रहा है। दूसरे मेरा यह विश्वास है कि हम पूर्व की महान आत्माओं के उपदेशोंसे न केवल परलोक के रहस्यों को ही वरन् इस महान सत्य को भी जान रहे हैं कि परमात्मा विश्वव्यापी है। वह ईश्वर ईसाइयों का, यहूदियों का और मुसलमानों का ईश्वर नहीं वरन् सबका ईश्वर है। पूर्व के ऋषियों ने, महान् आत्माओं ने जब अपने शिष्यों को प्रचार (मिशन) पर बाहर भेजा था तो उन्होंने उन्हें शिक्षा दी थी कि अपने सामने किसी दीवार को खड़ा मत रखना। ईसाइयों को इस शिक्षा के तत्व को जानना चाहिए। मैंने पूर्व में ३ वर्ष व्यतीत किए हैं। वहाँ हम ईसाइयों की अपेक्षा वे लोग बहुत कम दीवारें रखते हैं। वहाँ रंग की दीवार नहीं है। रंग की दीवार से रहित संसार को देखना और उस अनुभव से ईसाइयत के असूलों, ईसा के उपदेशों का संग्रह करना बड़ी मनोहर वस्तु है। हमारे पास उसके उपदेश ही हैं परन्तु उसके पास पूर्व का अनुभव भी था। हम कैसे अन्धे हैं! ईसा—पूर्वीय जगत् -हम तक कैसे आ सकता है? हम कौन हैं? ऐंग्लो सैक्सन। पश्चिमी लोग। ईसाइयत का हम से क्या सरोकार!

हम ईसाइयों को यह जानना चाहिए कि परमात्मा विश्व-व्यापक है। हम लोग बहुत ज्यादा जातीय संकीर्णतामें रहे हैं। हमें यह भी सीखना चाहिए कि परमात्मा किसी रूप, जाति और नस्ल विशेष का हित नहीं चाहता है वरन् यह कि वह सब लोगों का हित चाहता है।

एक दन्त कथा है कि युवावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच के काल में जिसका कि हमें पता नहीं लगता है कि वह कहाँ रहा। ईसा पूर्व में—ईरान, भारतवर्ष और तिब्बत में रहा और वहाँ रह कर धर्म्म ज्ञान प्राप्त किया। इसी दन्त कथा से हमें पता लगता है कि तिब्बत में एक (बौद्ध) विहार में एक दीवार पर यह लेख है। "मनुष्यों की सर्वोत्कृष्ट सन्तानों में से एक सन्तान सन्त ईसा यहां निवास करते हैं और इसी में वहाँ के उनके कार्य्य कलाप का भी उल्लेख मिलता है। मेरा विश्वास है कि यह कथा एक दन्त कथा ही है परन्तु यह उत्तम कथा है और यह कथा यह बतलाती है कि हमारे प्रभु ने परमात्मा और मनुष्य को पूर्णतया समझने के लिये पूर्व की ओर अपना मुँह फेरा था। आज रात को एक बार फिर हम ईसाई लोग सत्य और परमात्मा के उज्ज्वल दर्शन के लिए पूर्व की ओर दृष्टि फेर सकते हैं"

वे पक्षी जिन्होंने युद्ध में विजय प्राप्ति में मदद की

'अहिंसा' पत्र में एक अंग्रेज सज्जन का एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसमें महासमर में सन्देशहर कबूतरों के आश्चर्यजनक कारनामों का वर्णन किया गया है—

"युद्ध में सन्देशहर कबूतरों ने जो बड़ा भाग लिया है उसका वर्णन इतिहास का बड़ा मनोरंजक और शिक्षाप्रद अध्याय है। इन पक्षियों ने बहुत सी अवस्थाओं में लड़ाई जीतने मे क्रियात्मक सहायता दी है और राष्ट्रों के भाग्य बदल दिए हैं।

लगभग ३७२ वर्ष व्यतीत हुए सन् १५७३-७४ में दक्षिण हालैंड की राजधानी लीडन नगर पर स्पेन वालों ने चढ़ाई की और नगर पर घेरा डाला। नगर के अधिवासी और सेना के सिपाही भूखों मरने लग गये। नगर की समस्याएँ इतनी गम्भीर हो गईं कि शहर के रक्षकों को आत्म-समर्पण करने का निर्णय करने के लिए बाधित होना पड़ गया। ज्योंही आत्म-समर्पण का फ़ैसला किया गया त्योंही एक कबूतर आता और शहर के ऊपर मंडराता हुआ देख पड़ा। एक सैनिक ने भूख मिटाने के लिये उस कबूतर को गोली से मार गिराया परन्तु मरे हुए पक्षी को उठाने पर मालूम हुआ कि उसके एक पैर में एक संदेश बंधा हुआ है। संदेश यह था कि औरंज का राजकुमार एक शक्तिशाली सेना के साथ आ रहा है। इस संदेश के परिणाम स्वरूप राजकुमार के आगमन तक शहर वाले जमे रहे और राजकुमार ने आते ही स्पेन वालों को मार भगाया। यह शुभ समाचार लाने वाला कबूतर भुला नहीं दिया गया। उस कबूतर का शव शीशे के एक केस में सुरक्षित रक्खा गया और आज वह शव लीडन के टाउनहाल में एक अच्छे स्थान पर रक्खा हुआ है।

वाटरलू के प्रसिद्ध युद्ध में सन्देशहर के रूप में कबूतरों ने बड़ी बहुमूल्य सेवा की थी। अफ्रीका के युद्ध में जो १८९९ से १९०२ तक हुआ था, अंग्रेजी फ़ौज की सफलता में कबूतरों की सेवा नगण्य नहीं है। जापान और रूस ने अपने युद्ध में जो इस शताब्दी के प्रारम्भिक दिनों में हुआ था इसी प्रकार की सेवा का आश्रय लिया था और कबूतर उन्हें बड़े उपयोगी सिद्ध हुए थे।

परन्तु सन् १९१४-१९१८ के महासमर में वस्तुतः कबूतरों ने अपना बहुत ही सुन्दर परिचय

दिया था। उस युद्ध मे बचे हुए हजरों सैनिक मौजूद हैं जिनकी जाने उन पक्षियो की वजह से ही बची थी। युद्ध छिड़ने पर कबूतरो का खयाल भी नही किया गया था क्योंकि सन्देश भेजने के लिए मुख्यतया टेलीफोनो का प्रयोग होता था। तो भी गम मे लड़ाई म तीव्र अग्नि वर्षा मे टेलीफोनो पर निर्भर रहना असंभव हो गया था, क्योंकि गोलियो से बार २ तार कट जाया करते थे और उनकी मरम्मत मे बड़ा खतरा रहता था। इस वजह स सन्देश के लिये कबूतर प्रयुक्त करने पड़े और उन पक्षियो ने अनुपम सेवा की।

मित्र राष्ट्रों की सेनाओं के लिये एक समय ५००० कबूतर सन्देश कार्य के लिये तैनात थे और ये पक्षी इस कार्य में कितने सफल रहे यह इस बात से जाना जा सकता है कि लगभग ९० प्रतिशत कबूतर अपने सन्देशों के साथ नियत स्थान पर पहुंचे थे। बाकी शत्रु की सेना द्वारा गोली स उड़ा दिये गये थे। कभी २ ऐसा भी हुआ कि गोली लग जाने पर भी कबूतर तड़फड़ाते हुये अपने बहुमूल्य सन्देश को लिये नियत स्थान पर गये। १९१५ में 'मार्ने' के भयंकर युद्ध मे ऐसी ही एक अद्भुत घटना हुई। सन्देश ले जाता हुआ एक कबूतर जर्मनों के एक सैनिक की गोली का निशाना बना और उसका दाहिना पैर छिन्न-विछिन्न हो गया। महान पीड़ा के बावजूद भी पक्षी अपने नियत स्थान पर आया और सन्देश देते ही मर गया। जो सन्देश वह पक्षी लाया था उसी ने राष्ट्रों की सेना को जर्मनी के एक आक्रमण का निराकरण करने मे समर्थ बनाया था।"

नारी अपहरण

श्री राधा रमण शास्त्री काव्यतीर्थ 'विश्वमित्र' मे 'नारी अपहरण की गम्भीर समस्या' के शीर्षकमे लिखते और यह प्रगट करते हुए कि यह समस्या एक प्रान्त की नहीं वरन् भारत व्यापी समस्या है और बंगाल म अपने अत्यधिक भयावने रूप म देख पड़ती है इस समस्या के हल के कतिपय उपायों पर निम्न प्रकार प्रकाश डालते है—

"नारियो के अपहरण के लोमहर्षक, वीभत्स और कारुणिक काण्डो से सारा भारत सन्त्रस्त, संतप्त हो उठा है। लोग चिन्तित और भयातुर हो रहे हैं। भारत का कोई भी ऐसा प्रान्त अब अछूत नहीं रहा, जहा के वायु मण्डल में अभागिनी अपहृता नारियो का चीत्कार गूँजती न हो। पर सब से दुखद और सबसे आश्चर्य-जनक बात तो यह है कि इन काण्डो की बहुलता बंगाल मे है—उस बंगाल मे जो मातृत्व का शक्ति का उपासक समझा जाता है जहां यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के मानने वाले अन्य प्रान्तो स कम नहीं है।

हर्ष की बात है, इस ओर जनता के साथ ही सरकार का ध्यान भी आकृष्ट हुआ है। बंगाल कौंसिल में 'ह्वीपिंग बिल' पास हुआ है। इस कानून के अनुसार नारी-अपहरण के अपराधी को कैद की सजा के साथ ही बेत भी लगेंगे। किन्तु इतने से ही बङ्गाल सरकार के कर्तव्य की इति श्री नहीं हो जाती। इस कानून का उपयोग सख्ती से किया जाना चाहिये। उसे पुलिस को सख्त हिदायत करनी चाहिये कि वह इन अपराधों के प्रति

सदा सतर्क रहे, और जहाँ भी इस तरह के अपराध का पता मिले, अपराधी को तुरन्त अदालत के सामने उपस्थित किया जाय और उसे सख्त से सख्त सजा दिलायी जाय जिससे उसकी सजा का प्रभाव दूसरे गुण्डों पर भी पड़े, वे डर सहमें और अपनी गुण्डेशाही से बाज आयें। जिस तरह राजनीतिक या अन्य अपराधों के पता देने वालों को पुरस्कार दिया जाता है उसी प्रकार नारी अपहरण और बलात्कार के अपराधों का पता देने वालों को भी पुरस्कार देने और उनके नाम गुप्त रखने की व्यवस्था की जाये, तभी सरकार जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य का पूर्णतया पालन कर सकेगी, जनता की हार्दिक कृतज्ञता का भाजन बनेगी। आशा है, मेरा यह विचार सभी शिष्ट और न्याय प्रिय व्यक्तियों को पसन्द आयगा, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, सरकारी अफसर हों या साधारण नागरिक।

किन्तु यह समस्या सिर्फ सरकार के ऊपर ही छोड़ने की नहीं है। हाँ, यह दूसरी बात है कि सरकार की सहायता भी अत्यन्त आवश्यक है, पर इसके लिये हमें स्वयं सचेष्ट होना पड़ेगा। हमें कुम्भकर्णी निद्रा त्यागकर इसके लिये कुछ आहुतियां देनी होंगी, तभी काम चलेगा। तभी हम अपनी मा-बहनों के सतीत्व की रक्षा कर सकेंगे, तभी हम अपनी लाज बचा सकेंगे। मुझे प्रसन्नता है, इस दिशा में बंगाल में हिन्दू मिशन, नारी त्राण समिति आदि संस्थायें कुछ श्लाघनीय कार्य कर रही हैं। पर गुण्डों की संख्या उनका संगठन और अपहरण काण्डों की अधिकता देखते हुए आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा में काम करने वाली सभी संस्थाओं का सुदृढ़ संगठन कर और उसका केन्द्र कलकत्ते में बना, प्रत्येक छोटे-बड़े गांव और नगर में उसकी शाखा स्थापित की जाय, जहाँ कुछ युवक कार्यकर्त्ता रहें। ऐसे कार्यकर्त्ता, जो मा-बहनों की रक्षा के लिये अपनी आहुति देने को भी सदा सहर्ष तयार रहें। वे वहाँ रह इन बातों की खबरदारी रखें, जिसमें ऐसे काण्ड हो ही न सकें और यदि हों भी तो फौरन उसका प्रतिकार किया जा सके। ऐसे कुछ युवकों के दल का भोजन-भार उस ग्राम का हिन्दूसमाज सहर्ष अपने कन्धों पर लेगा। शेष व्यय-भार केन्द्रीय संस्था पर रहे, और वहीं फण्ड इकट्ठा किया जाय। इस तरह का ठोस काम किये बिना, इन पैशाचिक काण्डों के मूलोच्छेद के लिये कमर कसे बिना इन काण्डों का अन्त होना कठिन है। अगर इन काण्डों के प्रतिकारार्थ डटकर अभी कुछ नहीं किया गया तो कल बंगाल में हिन्दू जीवन का लोप होगा, परसों बिहार और संयुक्त प्रान्त से, चौथे दिन पंजाब और सिन्ध से और फिर अन्य प्रान्तों से भी।

अब इस समस्या के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू पर कुछ कहना है, और वह है अभागिनी अपहृता नारियों के पुनर्ग्रहण के सम्बन्ध में। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि समाज को जीवित रखने के लिये ही नहीं, गुण्डों की गुण्डाशाही को दूर करने के लिये भी इन अपहृता नारियों के पुनर्ग्रहण की अतीव आवश्यकता है। 'चांद' के उक्त लेख के बाद इस सम्बन्ध में मुझे कई दर्जन पत्र मिले हैं, जिनमें एक बड़ा ही रोचक और ताजा है। इस

के लिखने वाले संस्कृत के एक प्रतिष्ठित विद्वान आचार्य और डबल एम० ए० हैं। आप लिखते हैं—"× × मैं आप को धुरन्धर विद्वान ही नहीं समझता था, बल्कि सनातनधर्म का कट्टर अनुयायी भी समझता था, किन्तु आपके उस लेख को पढ़ मेरी धारणा और आत्मा को बड़ी ठेस लगी है। मेरी समझ में ऐसी स्त्रियों का पुनर्ग्रहण शास्त्र सम्मत बता आपने ठीक नहीं किया। धर्म ग्रन्थ में तो सभी अच्छी-बुरी बातों के प्रमाण मिलते हैं, किन्तु इससे वे प्रमाण्य नहीं हो सकते।" इस पत्र का क्या उत्तर हो सकता है ? यह तो सौभाग्य की बात है कि उन अभागिनी स्त्रियों के पुनर्ग्रहणकी स्वीकृति हमारे धर्म ग्रन्थ मुक्तकण्ठ से दे रहे हैं, जिनका अपहरण होता है, जिनपर उनकी इच्छा के विरुद्ध बलात्कार कर जिन का जबर्दस्ती सतीत्व नष्ट कर दिया जाता है, किंतु अगर हमारे प्राचीन ग्रंथ इस की स्वीकृति न भी देते तो यह नि सङ्कोच कहा जा सकता था, कि ऐसी अपहृता स्त्रियों का पुनर्ग्रहण युग धर्म के अनुसार, समाज की परिस्थिति को मद्देनजर रखते हुए, आवश्यक है, उचित है, धर्म सगत है।

गुण्डे जानते हैं कि एकबार जो स्त्री इनके हाथों में पड़ गयी, उसके लिये हिंदू समाज में कोई स्थान नहीं उसके लिये उसके घरका, उसकी जातिका, उसके समाजका दरवाजा बन्द, भले ही वह अपनी बुद्धि, साहस, सौभाग्य या संयोगसे अक्षतसतीत्वा ही क्यों न रह गयी हो! अतएव ऐसी स्त्रियोंका, जिनका वस्तुत अपहरण कर बलात् सतीत्व नष्ट कर दिया जाता है, पुनर्ग्रहण कर हमें गुण्डों का यह भ्रम दूर कर देना पड़ेगा, उनके मनसूबों पर पानी फेरना ही होगा। जब तक हम ऐसा नहीं करते, इन दुखद काण्डों में कमी नहीं हो सकती, हिन्दू समाज का कल्याण नहीं हो सकता—यह निश्चित है, ध्रुव सत्य है!

तलाकके लिये जिम्मेदार कौन ?

विदेशों मे जो तलाकोंकी ऐसी धूम मच रही है इसके लिये अनेक प्रकारके कारण बताये जाते हैं, परन्तु आम तौरपर लोगोंका ख्याल है कि तलाकका प्रधान कारण सम्बन्धियों की अदूरदर्शिता और अनुचित हस्तक्षेप है—खास कर सासका। अमेरिकामें तलाकों के मूल कारण की जाच करने की चेष्टा हुई थी और इससे भी इसी विचारकी पुष्टि होती है। फिलेडेल्फिया (अमेरिका) के म्युनिसिपल कोर्ट की डा० एलाइस जौन्सनने दस हजार तलाक के केसों की जाच की है और अन्त में वह इस नतीजे पर पहुची हैं कि तलाक के पाच प्रधान कारण हैं, इनमें सब से बढ़ कर जबरदस्त एक दूसरे के चरित्र पर पारस्परिक अविश्वास, और दूसरा है लड़की की मा का अनुचित हस्तक्षेप। इसलिये डा०ऐलाइस का मत है कि जो लड़किया अपनी मासे अलग नहा रहना चाहती हैं उन्हें शादी करने का ख्याल ही छोड़ देना चाहिये।

दहेज की कुप्रथा

श्री महात्मा गांधी "हरिजन" में 'दहेज की कुप्रथा' शीर्षक में लिखते हैं —

कुछ महीने हुए कि स्टेट्समैन ने दहेज प्रथा

पर चर्चा छेड़ी थी। यह प्रथा क़रीब-क़रीब हिन्दुस्तान भर में अनेक जातियों में प्रचलित है। 'स्टेट्स्मैन' के सम्पादक ने भी इस विषय पर अपने विचार प्रकट किये थे। 'यंग इण्डिया' में मैं अक्सर इस निंदय प्रथा पर लिखा करता था। उन दिनों इस रिवाज के बारे में जो-जो निर्दयता-पूर्ण बातें मुझे मालूम हुआ करती थीं उनके स्मरण 'स्टेट्स्मैन' के इन लेखों ने फिर से ताजा कर दिये हैं। सिन्ध में जिस प्रथा को 'देती लेती' कहते हैं मैंने उसी को लक्ष्य में रखकर 'यंग इण्डिया' में लेख लिखे थे। ऐसे काफ़ी सुशिक्षित सिन्धी थे, जो लड़कियों की शादी के लिये फिक्रमंद माता-पिताओं से बड़ी-बड़ी रकमें ऐंठते थे। पर 'स्टेट्स्मैन' ने तो इस प्रथा के खिलाफ एक आम लड़ाई छेड़ दी है। इसमें सन्देह नहीं कि यह एक हृदयहीन रिवाज है। मगर जहां तक मैं जानता हूँ, जन-साधारण से जो करोड़ों की संख्या में है, इसका कोई सम्बन्ध नहीं। मध्य वर्ग के लोगों में ही यह रिवाज पाया जाता है, जो भारत के विशाल जन समुद्र में बिन्दु मात्र हैं। बुरे बुरे रिवाजों के बारे में जब हम बात करते हैं, तब साधारणतः मध्य वर्ग के लोग ही हमारे ध्यान में होते हैं। गांवों में रहने वाले करोड़ों लोगों के रिवाजों और तकलीफों के बारे में हम अभी जानते ही क्या हैं?

फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि चूँकि दहेज की कुप्रथा हिन्दुस्तान में बहुत अल्पसंख्यक लोगों तक सीमित है इसलिए हम उस पर ध्यान न दें। प्रथा तो यह नष्ट होनी ही चाहिए। विवाह खरीद-फ़रोख्त की चीज तो रहनी ही नहीं चाहिए। दहेज-प्रथा का जात-पात के साथ बहुत नजदीकी सम्बन्ध है। जब तक किसी खास जाति के कुछ सौ नवयुवकों या नवयुवतियों तक वर या कन्या की पसन्दगी मर्यादित है, तब तक यह कुप्रथा जारी ही रहेगी, भले ही उसके खिलाफ़ दुनिया भर की बातें कही जाँय। इस बुराई को अगर जड़मूल से उखाड़ कर फेंक देना है, तो लड़कियों या लड़कों या उनके माता-पिताओं को ये जात-पांत के बन्धन तोड़ने ही होंगे। विवाह जो अभी छोटी-छोटी उम्र में होते हैं उसमें भी हमें फेर फार करना होगा और अगर जरूरी हो, याने ठीक वर न मिले, तो लड़कियों में यह हिम्मत होनी चाहिए कि वे अनब्याही ही रहें। इस सबका अर्थ यह हुआ कि ऐसी शिक्षा दी जाय जो राष्ट्र के युवकों और युवतियों की मनोवृत्ति में क्रांति पैदा कर दे। यह हमारा दुर्भाग्य है कि जिस ढंग की शिक्षा हमारे देश में आज दी जाती है उसका हमारी परिस्थितियों से कोई सम्बन्ध नहीं, और इससे होता यह है कि राष्ट्र के मुट्ठी-भर लड़कों और लड़कियों को जो शिक्षा मिलती है उससे हमारी परिस्थितियाँ अछूती ही रहती हैं। इसलिए इस बुराई को कम करने के लिए जो भी किया जा सके वह जरूर किया जाय, पर यह साफ़ है कि यह तथा दूसरी अनेक बुराइयाँ तभी, मेरी समझ में, दूर की जा सकती हैं, जब कि देश की हालतों के मुताबिक, जो तेजी से बदलती जा रही हैं, लड़कों और लड़कियों को तालीम दी जाय। यह कैसे हो सकता है कि इतने तमाम लड़के लड़कियाँ जो कॉलिजों तकमें शिक्षा हासिल कर चुके हों एक ऐसी बुरी प्रथाका जिसका कि उनके भविष्यपर उतना ही

महिला-जगत

सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती जी 'विशारदा'

भारत में स्त्री-शिक्षा

(लेखक—एक अनुभवी पत्रकार)

वर्तमान तहक़ीक़ातों से सिद्ध होता है कि भारतीय महिलाओं का बुरा स्वास्थ्य और उनकी हीन शारीरिक अवस्था दोनों भयावह हैं। उनमें साक्षरता का औसत ३ प्रति शतक है। विहार में प्रति १००० व्यक्तियों में केवल ५ महिलाएँ शिक्षित हैं। मद्रास प्रेसीडेन्सी में जहाँ साक्षरता का औसत सबसे ऊँचा है वहाँ प्रति ६ शिक्षित लड़कों के बीच में १ शिक्षित लड़की है।

असर पड़ता है जितना कि शादी का, सामना न कर सकें या करना न चाहें? पढ़ी-लिखी लड़कियाँ क्यों आत्म-हत्या करें—इसलिए कि उन्हें योग्य वर नहीं मिलते? उनकी शिक्षा का मूल्य ही क्या, अगर वह उनके अन्दर एक ऐसे रिवाज को ठुकरा देनेकी हिम्मत पैदा नहीं कर सकती, जिसका कि किसी भी तरह पक्ष-समर्थन नहीं किया जा सकता और जो मनुष्य की नैतिक भावना के बिल्कुल विरुद्ध है? जवाब साफ़ है। शिक्षा-पद्धति के मूल में ही कोई गलती है, जिससे कि लड़कियाँ और लड़के सामाजिक या दूसरी बुराइयों के ख़िलाफ़ लड़ने की हिम्मत नहीं दिखा सकते। मूल्य या महत्त्व तो उसी शिक्षा का है जो मानव जीवन की हर तरह की समस्याओं को ठीक-ठीक हल कर सकने के लिए विद्यार्थी के मस्तिष्क को विकसित कर दे।

भारत वर्ष में स्त्री-शिक्षा की उन्नति के प्रयत्न नितान्त असन्तोष जनक रहे हैं। श्रीमती मार्गेरट ने भारत की अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी द्वारा भारतीय पत्रों में प्रकाशित एक पत्रिका में १९३५ के मध्य में लिखा था कि भारतीय महिलाओं की अवस्था पिछले ३० वर्षों की अवस्था की तुलनामें उन्नत देख पड़ती है, यद्यपि वैदिक तथा बौद्ध कालीन देवियों की अवस्था से बहुत हीन देख पड़ती है, जब कि देवियाँ पुरुषों के साथ पूर्ण समानता रखतीं और पुरुषों के हाथों ऊँचे से ऊँचे सम्मान का उपभोग करती प्रतीत होती हैं।

महिला सभाएँ यथा पूना और बम्बई के सेवा-सदन, बंगाल की सरोज नलिनी दत्त नारी मंडल समिति, भारतीय महिला मण्डल, बंगलौर का महिला सेवा-समाज, पंजाब का आर्य समाज इत्यादि—भारत के भिन्न २ भागों में स्त्री-शिक्षा का कार्य कर रही हैं। अखिल भारतीय महिला-कान्फ्रेन्स ने देहली में लेडी इर्विन कालेज जारी किया है। भारतवर्ष में गृह-विज्ञान का यह पहिला कालेज है। इस कालेजका उद्देश्य गृहस्थ जीवन की आवश्यकताओं के प्रकाश में लड़कियों की शिक्षा को पूर्वीय रूप देना प्रगट किया गया है। पूना का भारतीय महिला विश्वविद्यालय, रामकृष्ण मिशन का सिस्टर निवेदिता गर्ल स्कूल, और दूसरी शिक्षा

संस्थाएँ अपने ढग से भारतीय महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने का यत्न कर रही हैं। ऐसी शिक्षा जो वास्तविक रूप में राष्ट्रीय व्यावहारिक आवश्यकतानुसार कुछ हद तक औद्योगिक चरित्र और शक्ति प्रदान करने वाली हो, इसके लिए ये संस्थाएँ विशुद्ध भारतीय तरीकों को पाश्चात्य तरीको के साथ जोड़ रही हैं। मौजूदा परिस्थितियों से टक्कर लेने और भारतीय महिलाओ की उन्नति के महान काय की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए ये सब प्रयत्न तुच्छ प्रतीत होने हैं। भारत मे महिला-संस्थाओ के सञ्चालक और शुभचिन्तक पर्याप्त धन के अभाव से बड़े परेशान हो रहे हैं।

उचित स्त्री-शिक्षा और भारत मे उसके व्यापक प्रसार की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। इस बात से भी कोई इन्कार नहीं कर सकता कि भारतवर्ष मे उत्तम शिक्षा के द्वारा भारतीय नारियो की अवस्था को उन्नत करन पर उचित ध्यान न देने से राष्ट्र निमाण के कार्य को बड़ी क्षति हुई है। समस्त राष्ट्रों के इतिहास महान पुरुषो और स्त्रियो की माताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता का प्रकाश करते हैं। नैपोलियन बोना पार्ट ने किसी देवी से पूछा कि वह किस रीति से फ्रास का सुख-समृद्धि में वृद्धि कर सकता है। उस देवी का उत्तर था 'फ्रास की प्रजा की माताओं को शिक्षित करो'। भारत की सुख-समृद्धि के लिए उस देवी के उपदेश का अनुसरण किया जा सकता है।

वैदिक काल में स्त्री-शिक्षा बड़ी उन्नत थी और उच्च वर्ग अपनी लड़कियो और लड़को को समान उदार शिक्षा दिया करते थे जिससे समाज में वे उच्च स्थान प्राप्त करने के योग्य हो सकें। उस युग की स्त्रियाँ पति-कुलो मे ऊँचा स्थान रखती थी और उन कुलो पर रानियो की नाई शासन करती थी। ऋग्वेद मे हम पढते हैं कि 'यद्यपि वह सुन्दर वस्त्रो को पसन्द करती हैं परन्तु केवल इस बातसे वह सन्तुष्ट नहीं हैं।" वह उच्च थी, स्वतन्त्र वृत्ति की और निर्भीक थी। वह न केवल वीरों की जननी ही थी वरन् स्वयं भी वीर थी। ऐसी देवियाँ भी थी जो धार्मिक अनुष्ठानो मे सिद्धहस्त थीं और सगीत तथा दूसरी ललित-कलाओ मे अपना सानी नहीं रखती थी।

गार्गी, मैत्रय, लोपा मुद्रा, शचि, विश्ववारा तथा अन्य अमर नाम किसी भी व्यक्ति को ज्ञान और आध्यात्मिकता की उस अद्भुत उच्चता का स्मरण कराते हैं जिन तक उन युगों में हमारी देवियाँ पहुच चुकी थी।

बौद्ध भिक्षुणियो की अनूठी बौद्धिक और आध्यात्मिक योग्यता यह सिद्ध करनेके लिए पर्याप्त हैं कि बौद्ध काल मे स्त्री-शिक्षा कम उन्नत नहीं थी। केवल बौद्ध काल के बाद नवीन ब्राह्मण काल मे हम शिक्षा इत्यादि की दृष्टि से स्त्रियो को अवनत देखते है।

भारतवर्ष के कतिपय वतमान आन्दोलनों ने भारतीय महिलाओं को उसी प्रकार की मुक्ति की प्राप्ति का जिस प्रकार की पश्चिम की महिलाओ ने प्राप्त की है, कार्य आरम्भ कर दिया है। वर्तमान भारत म ऐसे स्त्र-पुरुष है जो ससार व्यापी मौलिक स्त्री-आन्दोलनो में नूतन जीवन की प्रेरणा

अनुभव करते हैं। वे लोग वर्तमान भारतीय महिलाओं के पुनरुद्धार के कार्य में पाश्चात्यतालाने के पक्ष में हैं। कुछ समय हुआ एक भारतीय महिला ने वर्तमान 'रूस की स्त्रियों' पर लिखते और उनकी भूरि २ प्रशंसा करते हुए प्रारम्भ में ही यह लिखा कि 'स्त्री ने समस्त युगों में अपने को मनुष्य की दासी और न्यूनाधिक रूप में उस की सुविधा और मनोरंजन का साधन बनाये रक्खा है। विचार और क्रिया की—व्यक्तिगत स्वतन्त्रता उसे प्राप्त नहीं रही है और इस प्रकार उसका जीवन पशु तुल्य रहा है। इस शताब्दी से ही स्त्री ने अपनी बुद्धि में विश्वास रखते हुए धीरे २ उन बन्धनों को तोड़ना शुरू कर दिया है जिससे वह अब तक जकड़ी हुई थी और अपने लाभ और अपने अभ्युत्थान के लिये उसने उस बुद्धि का प्रयोग भी आरम्भ कर दिया है। आत्म-प्रकाश के लिए प्रत्येक स्वतन्त्रता चाहता है। मनुष्य की नाई स्त्री भी ताजग चाहती है, परन्तु इस स्वतन्त्रता से, जो प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार है, स्त्री वंचित रहती है। पूँजीवाद और दूसरी सामाजिक व्यवस्थाओं में वह घरकी टहलनी समझी जाती है और बच्चे पैदा करना, उनका लालन-पालन करना इत्यादि उसके अस्तित्व का उद्देश्य समझा जाता है। मजदूरी के बाजार में भी उसकी अवस्था अच्छी नहीं है। बर्नड शा कहते हैं—'पूँजीवाद की प्रणाली में स्त्रियों ने पुरुषों की अपेक्षा अपने को ज्यादा दीनहीन अनुभव किया है क्योंकि पूँजीवाद ने मनुष्य को गुलाम बना दिया है और मनुष्य के द्वारा मजदूरी दिए जाने की व्यवस्था से स्त्री मनुष्य की अर्थात गुलाम की गुलाम बन गई है। आज सोवियट रूस अपने स्त्र-समाज के उत्थान के लिए क्या कर रहा है? केवल रूस ही वह यूरोपीय राष्ट्र है जो स्त्री की पूर्ण मुक्ति के लिए प्रयत्न कर रहा है।' जिन व्यक्तियोंकी ऐसी धारणा है वे स्त्रियोंके क्रिया-कलाप की पूर्ण स्वतन्त्रता और मनुष्य के साथ उनकी सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी और आर्थिक समानता की माग का समर्थन करते है। वे इन मामलों में संसार के उन्नत राष्ट्रों की स्त्रियों की वेगवती उन्नति की ओर इशारा करते हैं। अब प्रश्न यह है कि स्त्रियों की उन्नति का पश्चिम का आदर्श क्या है और वर्तमान कालीन महिलाएँ उसकी प्राप्ति में कहाँ तक सफल हुई हैं? रिचर्ड चित्रा थैम्बी 'भारत में स्त्री आन्दोलन' शीर्षक लेख में २० वीं शताब्दी नामक (Twentieth Century) पत्र में लिखते हैं—

"पश्चिम की देवियों ने चिरकालीन संघर्ष के बाद जो स्वतन्त्रता प्राप्त की है वह क्या चीज है? उत्तराधिकार में उसे सम्पत्ति मिलती है और अपनी सम्पत्ति की स्वामिनी हो सकती है। पति की अपर से कटुता के आभास मात्र पर वह उसे तलाक दे सकती है। अपनी इच्छा के अनुसार ही वह, बच्चे पैदा करती है। वह अदालत, खेत, सरकस, घुड़दौड़, और सड़क पर देख पड़ती है। देश के कानून निर्माण में वह सरगर्म हिस्सा लेती है। शासन-विधान के पहिएकी वह धुरी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वह प्रवेश करती है और समान सौष्ठव के साथ वह मनुष्य का कार्य करती है। नर्सिङ्ग और टेलीफ़ोन विभागों पर उसका एका-

धिकार है। वह वोट देती है और सिगरेट सिगार पीती है, पुरुष-मित्रो के साथ वह सिनेमाओ मे जाती है। उनके साथ मोटरो मे सैर करती है। यह स्वतन्त्रता है जो पश्चिम की स्त्रियो ने हासिल क है। यही वह स्वतन्त्रता है जो सामाजिक अभिशाप है। स्त्रियो की सुन्दर प्रवृत्तियो और भोजन-शाला के सुन्दर गुणो का समूलोच्छेद कर दिया गया है। समाज की नूतन व्यवस्था मे जहाँ प्रत्येक चीज फार्मूला अथवा यत्र मे परिवर्तित हो गई है इन चीजो की उसे जरूरत ही नही पड़ती। सच बात यह है कि वास्तविक अर्थों में वह मुक्ति से बहुत दूर जा पड़ी है।" यह कहना कि पश्चिमकी स्त्रियो की स्वतन्त्रता के आन्दोलन की सफलताओ मे प्रत्येक बात बुरी और बासी है अन्याय पूर्ण होगा। युरोप और अमेरिका मे वास्तविक अर्थो मे कई देवियाँ महान हुई है जिन्होंने अपने बुद्धि और चरित्र-बल से महिला-समाज का ऊपर उठाया है और कुछ देवियो ने संसार की स्त्रियो की मुक्ति क अपने कतिपय यत्नो और प्रगतियो से स्त्री जाति को गौरव प्रदान किया है। अब प्रश्न यह है कि वर्तमान कालीन मौलिक स्त्री-आन्दोलनो के क्रातिकारी परिवतन वस्तुत आवश्यक हैं वा नहीं और पश्चिम की स्त्रियो न जो आदर्श पेश किए है वे वातावरण, सामाजिक वपौती और भारतीय महिला समाज की सास्कृतिक मर्य्यादाओ के अनुकूल होगे वा नही ? भारतके बहुतसे व्यक्तियोंकी यह धारणा है कि उस महिमामय सस्कृति की जो उनने अपन अतीत से उत्तराधिकार मे प्राप्त की है लाइनो पर प्रेरित भारतीय महिला के विकास के मार्ग मे इस प्रकार का कोई भी आन्दोलन बाधक सिद्ध होगा। घर और समाज मे अव्यवस्था और अशान्ति व्याप्त हो जायगी। भारतीय स्त्रीत्व के आदर्श पर यह आन्दोलन कुल्हाड़ा चलायगा, पाकशाला के प्रभाव का यह आन्दोलन अन्त कर देगा और पारिवारिक जीवन लुप्त हो जायगा। यह आन्दोलन परिपक्व और शान्त नहीं है। पश्चिम के गुण यह नहीं लायगा वरन् भारतीय स्त्रीत्व और मातृत्व की आदर्श जीवन-व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट कर देगा।

जो शिक्षा दिमाग से लज्जाशीलता को मिट दे और कोमलताको छीन ले,वह स्त्रियोंकी सच्ची शिक्षा नहीं हो सकती। हो सकता है कि ये गुण मध्य कालीन और वर्तमान प्राचीन सस्कृतियो मे भिन्न २ रूप मे प्रकाश मे आए हो परन्तु दोनो मे ही ये आवश्यक है। प्राप्त करने योग्य समस्त शिक्षण को पहल चरित्र निर्माण पर ध्यान देना चाहिए और बौद्धिक विकास को गौण समझना चाहिए।

भारतीय महिला समाज के उत्थान का कोई भी आन्दोलन निश्चय रूप म फेल होगा जो प्राचीन भारत के इतिहास और साहित्य मे वर्णित राष्ट्रीय आदर्शों को उन्नत करता हुआ शुरू वा समाप्त नहीं होगा। भारतीय देवियाँ सीता, सावित्री और गाँधारी के पत्नी के पूर्ण-आदर्श पर पद्मिनी, झाँसी की रानी, चान्द बीबी और अहिल्या बाई इत्यादि के शक्ति, वीरता इत्यादि के आदर्श पर अभिमान कर सकती है। ये आदर्श भारतीय स्त्रीत्व के पथ प्रदर्शन के लिए प्रकाश स्तम्भ होने चाहियें। वर्तमान काल की अवस्थाओ के अनुरूप भारतीय महिलाये योग्य

गृह देवियां और नागरिक बनाई जानी चाहियें। वर्तमान कला कौशल, धर्म, विज्ञान का उन्हें ज्ञान होना चाहिए। पत्नियों और माताओं के कर्त्तव्यों को भी जीवन में पूरा करने की उनमें क्षमताएँ होनी चाहिए। उनकी नैतिक और आध्यात्मिक स्थिति वैसी ही ऊंची होनी चाहिए जैसी प्राचीन काल में थी।

देश के समझदार दूरदर्शी नेता बड़े विचार के बाद अपने देश वासियों को भारतीय महिलाओं को नई रोशनी की न बनाने वरन सीता के पद चिन्हों पर चलाने का आदेश कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'भारत में तथा भारतीय धर्म में विश्वास रक्खो। मजबूत बनो, आशावादी रहो, शर्म अनुभव मत करो और याद रक्खो हिन्दुओं को लेनेकी बहुत कम जरूरत है परन्तु संसार की अन्य जातियों की अपेक्षा देने को उनके पास बहुत कुछ है।

इस बात को दृष्टि में रखते हुए कि हिन्दू माता की महत्ता इतिहास की एक ज्वलन्त चीज है, स्त्री शिक्षा के अग्रणीयों और स्त्री आन्दोलन के समर्थकों को सब से पहले भारतीय देवियों के शारीरिक ह्रास और भयावह अज्ञानता के कारणों को दूर करना चाहिए और इसके बाद उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा की लाइन पर उस सौष्ठव के साथ जो बीसवीं शताब्दी की महती आवश्यकताओं के लिए जरूरी हो डाल देना चाहिए।

देशदेशान्तर द्वीपद्वीपान्तर प्रचार

श्री प० सत्याचरण जी की ट्रीनीडाड की चिट्ठियाँ

२०-४-३१

मैं "सर्वेन्ट आफ़ इण्डिया सोसाइटी" के मि०पी० कोडाण्डा राव के सम्बन्ध में इस उपनिवेश से सम्बन्धित एक सूचना देना चाहता हूँ। अपने आगमन से पूर्व और यहाँ अपने निवास के अन्तिम दिन तक उन्होंने अपने को 'इण्डियन नेशनल काँग्रेस' का प्रतिनिधि और महात्मा गाधी का दूत प्रचारित किया परन्तु उनके वक्तव्य बड़े विचित्र थे। मुझे सर्वेंट आफ़ इण्डिया सोसाइटी की गतिविधि का अच्छा ज्ञान है। परन्तु मैं यह कल्पना नहीं कर सकता था कि उनका एक सदस्य सस्ती प्रसिद्धि और आत्म प्रशंसा की ख़ातिर ऐसे निराधार आन्दोलन की ओर झुक सकता है। स्थानीय प्रेस में इस बातपर संदेह किया गया है कि वे उपयुक्त व्यक्तियों और संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। परन्तु उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया।

जिस बात को देखकर मुझे दुख हुआ है वह यह है कि हिन्दी हित को उन्होंने अपरिमित हानि पहुचाई है। हिन्दी उनकी सम्मति मे भारत, या भारत से बाहर भारतीयों के लिये किसी फायदे की वस्तु नहीं है। इन महाशय ने शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर पर हिन्दी के सम्बन्ध में अपने भाव प्रगट किये है। डाइरेक्टर महादय ने हिन्दी के एक उत्साही कार्यकर्त्ता के साथ बात चीत में इन महाशय के साथ अपनी बातचीत का जिक्र किया और कहा कि जब भारत के आने वाले प्रसिद्ध भारतीय हिन्दी का खण्डन करते हैं तब फिर स्थानीय भारतीय हिन्दी के सम्बन्ध में क्यों परेशान होते हैं? पिछले सात वर्ष से शिक्षा विभाग द्वारा हिन्दी की स्वीकृति के लिए भारतीय लड़ रहे थे। कुछ ही महीने हुये शिक्षा विभाग के डाईरेक्टर ने पाठ-विधि में हिन्दी और उर्दू को सम्मिलित करने का आश्वासन दिया था परन्तु उन महाशय ने भारत के सांस्कृतिक हित को प्रोत्साहन देनेके बजाय इसको भारी धक्का पहुचाया है। 'सर्वेन्ट आव इण्डिया सोसाइटी' को या तो मि० राव का खण्डन करना चाहिए या हिन्दी के सम्बन्ध में अपनी पोजीशन स्पष्ट करनी चाहिए।

वैदिक धर्म का प्रचार सफलता पूर्वक हो रहा है। अब तक ६ समाजों की और स्थापना हो गई है। ४ समाजों की और स्थापना कर शीघ्र ही ट्रीनीडाड आर्य प्रतिनिधि सभा' की योजना की जायगी। विचार है कि एक मास के भीतर ही उक्त प्रतिनिधि सभा की सरकार में रजिस्ट्री करा दी जायगी जिससे सरकारी सुविधा प्राप्त होने में कठिनाई न हाव।

गत ४ अप्रैल को पोर्ट आव स्पेन में पारिवारिक आर्य सम्मेलन का समारोह हुआ। रिम झिम वर्षा पड़ रही थी किन्तु लोगों का उत्साह सराहनीय था। इस अवसर पर १२ व्यक्तियों ने वैदिक धर्म म प्रवेश किया। हर्ष की बात है कि इसमें ४ रोमन कैथोलिक मतानुयायी थे जिन्होंने वैदिक धर्म को सत्यता को स्वीकार कर वेद के झंडे के नीचे आने में ही अपना कल्याण

समझा। वैदिक धर्म में प्रवेश करने वालों में एक गुजराती नवयुवक भी थे। यह सज्जन व्यापार के सम्बन्ध में भारत से लगभग ७ वर्ष हुये यहाँ आये थे। कुछ काल व्यतीत होने पर इनका विवाह एक भारतीय रोमन कैथोलिक धर्मानुयायिनी कन्या से हो गया था। हिन्दू धर्म में तो इनके लिए कोई स्थान था ही नहीं चाहे हिन्दू युवक ईसाई कन्या से विवाह करे अथवा हिन्दू कन्या का ईसाई युवक से पाणिग्रहण सम्बन्ध हो, दोनों ही अवस्था में लाभ ईसाइयों को ही होता है। किन्तु आर्य समाज के प्रचार से धारा बदल गई है। उक्त दम्पति का ही नहीं अपितु कितने हीं अन्य का उद्धार आर्य समाज ने किया है। अब तो यह दशा हो गई है कि आर्य युवती अथवा युवक मुसलमान एवं ईसाई किसी से भी विवाह सम्बन्ध करते हैं तो उन्हें आर्य झण्डे के तले ही लाते हैं। अब हिन्दू पद दलित तथा तिरस्कृत नहीं अपितु विजेता के रूप में प्रगट होने लगे हैं। यह है आर्य समाज का क्रान्तिमय आकर्षण जिसे भारत के लोग बहुत कम अनुभव कर सकते हैं क्योंकि प्रवासी भारतीयों और वहां की समस्यायों में अन्तर हैं।

सारा द्वीप आर्य समाज के सिद्धान्त सौष्ठव को भली भाँति समझ गया है, इसमें लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं। भारतीय संस्कृति, भाषा, देशानुराग का अति पवित्र स्रोत कहीं है तो वह आर्य समाज में है, यह बात ईसाई और मुसलमान भी अनुभव करने लग गये हैं। शिक्षित ईसाई आदि कभी यह कहते हुए भी सुने जाते हैं कि यदि वैदिक धर्म का प्रचार इस द्वीप में पूर्व हुआ होता तो वे भला ईसाई धर्म में क्यों प्रविष्ट हुये होते? यदि जीविका का प्रश्न न हो तो कल हजारों की संख्या में हमारे ईसाई भाई अपने पूर्वजों के पुनीत धर्म में दीक्षित हो जावे। ईसाई मिशनों का जाल भारतीयों को ईसाई बनाने के लिये बिछा हुआ है। क्या यह कम आश्चर्य की बात है, कि आज १४६०००० भारतीयों में ईसाइयों की संख्या लगभग २६००० है। यह संख्या आश्चर्य-जनक रीति से उत्तरोत्तर बढ़ती गई होती यदि भगवान दयानन्द के सेवकों ने एटलान्टिक महासागर के तट पर वेदों का झण्डा न गाड़ा होता।

एक आवश्यक-पत्र

लाहौर के 'ईस्टर्न टाइम्ज नामक' पत्र में पिछले दिनों ट्रीनीडाड के किन्हीं महाशय सी० पी० मथुरा का एक सम्वाद छपा था जिसमें उन्होंने प्रगट किया था कि प० अयोध्याप्रसाद और प० सत्याचरण जी दोनों उन द्वीपों में अपने प्रचार मिशन में असफल रहे हैं और भारतीय प्रेस में उनके कार्य्य की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई हैं वे निराधार और ग़लत हैं। हमने अप्रैल ३६ के सम्पादकीय स्तम्भों में उस संवाद की आलोचना की थी और यह सिद्ध करते हुए कि वह संवाद अपना खण्डन स्वयं करता है जनता को उसकी उपेक्षा करने की प्रेरणा की थी। अभी हाल में ट्रीनीडाड की आर्य समाज एसोसियेशन के मन्त्री श्रीयुत टी० आर महावीर सिंह ने मथुरा महाशय के संवाद पर प्रकाश डालते हुए 'ईस्टर्न टाइम्ज' में एक पत्र प्रकाशनार्थ भेजा है। उस पत्र से वस्तुस्थिति पर उत्तम प्रकाश पड़ता है और जिन परिणामों पर अपनी आलोचना में हम पहुचे थे उस पत्र से उनकी पुष्टि होती है। पत्र का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है —

हमने आपके पत्र के २२ मार्च १६३६ के अङ्क में प्रकाशित नोट को पढ़ा जिसमें पं० अयोध्याप्रसाद तथा पं० सत्याचरण जी की मुख्यतया आर्य्य समाज और साधारणतया भारतीय समाज के प्रति बहुमूल्य सेवाओं पर भीषण आक्षेप किए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस नोट के लेखक म० सी० पी० मथुरा ऐसा करनेके लिये किसी अवांछनीय उद्देश्यसे प्रेरित हुए हैं। और उन्होंने प्रत्यक्ष सत्यको अन्यथा प्रगट करने में सौजन्य की समस्त मर्य्यादाओं का उल्लंघन कर दिया है।

उनके निराधार आरोपों के प्रकाश में आपको सच्ची सूचना देना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं और आशा करते हैं कि आप अपने सम्मानित दैनिकमें यथा सम्भव शीघ्र उसे प्रकाशित करने की कृपा करेंगे।

ट्रीनीडाड के इस उपनिवेश में जब से इन वैदिक मिशनरियों का आगमन हुआ है तब से ईस्ट इण्डियन जाति में अद्भुत राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागृति हो गई है जिसके लिये हम इन मिशनरियों तथा इण्टर नेशनल एरियन लीग (सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा) देहली के, जिसके ये मिशनरी प्रतिनिधि हैं कृतज्ञ हैं।

इन लोगोंने अपने देश के निवासियों मे न केवल वैदिक आदर्श और वैदिक संस्कृतिके प्रचारके लिये ही कार्य्य किया है वरन कई लोक प्रिय व्याख्यान मालाए भी दी हैं जो हमारी भारतीय जाति के प्रत्येक विभाग में बहुत ज्यादा पसन्द की गई हैं। प्रमुख २ हिन्दू, ईसाई और मुस्लिम संस्थाओं द्वारा व्याख्यान देने के लिये वे आमन्त्रित किए जा चुके हैं और अंग्रेज़ी तथा डच प्रेस ने उनकी प्रगतियों को खूब प्रकाशन प्रदान किया है।

जहाँ तक ट्रीनीडाड की आर्य्य समाज एसोसियेशन का सम्बन्ध है आप के संवाददाता ने यह प्रगट करते हुए कि इस समय तक केवल ८ हिन्दुओं और दो मुसल्मानों ने आर्य्य समाज मे प्रवेश किया है और यह कि सैकड़ों तथा हज़ारों हिन्दुओं और मुसल्मानों के धर्म्म परिवर्तन की बात ग़लत है, आपके पाठकों की आँखों में धूल झोंकने का यत्न किया है। हम डंके की चोट कहते हैं कि स्थानीय आर्य्य समाज अपने अस्तित्व के १॥ वर्ष के छोटे अर्से में उपनिवेश के एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई ७ शाखाओं के साथ १५०० व्यक्तियों को अपने झंडे के नीचे ले आया है।

कट्टर पंथियों के तीव्र विरोध और बे असूले आंदोलन कारियों के श्रेष्ठ कार्य्य की निन्दा करते रहने के बावजूद भी, आर्य्य समाज शान्ति पूर्वक अपना कार्य्य करता रहा। अभी हाल में हिज़ एक्सीलेंसी गवर्नर महोदय ने ईस्ट इण्डियन्स के शिक्षा सम्बन्धी हितों पर ध्यान रखने के लिये ईस्ट इण्डियन शिक्षा बोर्ड में प्रतिनिधित्व देकर आर्य्य समाज का सम्मान किया है और हमारे समाज का एक सदस्य उस बोर्ड का मन्त्री नियत हुआ है। सरकारी सम्मान के लगभग सब ही महत्वपूर्ण अवसरों पर आर्य्य समाज को याद किया गया है और अन्य धार्मिक सोसाइटयों के साथ उसे पूरा २ भाग प्राप्त हुआ है। हमारे धर्म्म भाइयों और बहनों ने कुनुपानास के आर्य्य मन्दिर के निर्माण में, जो लगभग ६०००) की लागत का है, उदारता पूर्वक दान दिया है और गवर्नर महोदय से इस समाज को इस मास अन्यत्र कहीं शाखा खोलने की इजाज़त प्राप्त होने की संभावना है। यदि स्थानीय आर्य्य समाज एसोसिएशन को इन शानदार सफलताओं के

बावजूद भी आप का सम्वाददाता उनको गलत बयान करता है वा उन्हें नगण्य दिखलाता है तो हमें कहना पड़ता है कि वह किसी लाइलाज रोग से पीड़ित है ।

अन्त में सम्पादक महोदय ! आपके कल्पित सवाद के लेखकने हमारे दो माननीय सदस्यों श्री बुद्धवीरसिंह और श्रीयुत पन्नालाल सेठ के जो क्रमश हमारी एसोसियेशन के प्रधान और खज़ान्ची हैं, विरुद्ध द्वेष पूर्ण भावों का प्रकाश किया है । श्रीयुत बुद्धवीर सिंह जी नैपाल के एक उच्च क्षत्रिय घराने की सन्तान हैं, जिनके एक भाई ब्रिटिश गयाना की लैजिस्लेटिव कौंसिल के माननीय सदस्य हैं और दूसरे भाई वहाँ ही एक सफल बैरिस्टर हैं । ये सब शुद्ध हिन्दू हैं और भारतीय मात्र के उत्थान में यत्नवान हैं । पन्नालाल सेठ जब से इस उपनिवेश में उतरे हैं तब से वे पक्के निरामिष भोजी हैं । उनको गोमाँस विक्रेता बतलाना बिल्कुल गलत और निराधार है ।

आप का—

(Sd) P R Mahabir Singh Secretary
आर्य्य समाज एसोसियेशन, ट्रीनीडाड ।

\+ \+ \+

आर्य्य समाज पारामारीबो डच गायना में
आर्य्य समाज स्थापना दिवस
(सम्वाददाता द्वारा)

यद्यपि डच गायना में श्रीमती आर्य्य प्रति-निधि सभा डच गायना के अन्तर्गत बहुत समाजें हैं और श्रीमती सार्वदेशिक सभा ने संसार के समस्त समाजों के नाम इस आशय का सन्देश भेजा था कि आर्य्य-समाज दिवस प्रत्येक समाज मनावे परन्तु इस उपनिवेश में इस वर्ष इस त्योहार को समस्त समाजों में पृथक २ मनाना कतिपय स्थानिक असुविधाओं के कारण उचित नहीं समझा गया । निश्चय किया गया कि श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम इस उत्सव को पारामारीबो नगर में मनाने का आयोजन करे और समस्त समाजें इस कार्य्य में प्रतिनिधि सभा की यथोचित सहायता प्रदान करें । इस निश्चय के अनुसार प्रतिनिधि सभा ने तीन दिनों तक अर्थात् २६ २७ तथा २८ मार्च तक लगातार उत्सव मनाना स्थिर किया । आर्य्य समाज पारामारीबो का विशाल और भव्य मन्दिर निर्माण हो रहा था और मन्दिर बनाने वाले कारीगरों ने कार्य्य कर्ताओं को विश्वास दिलाया था कि मन्दिर निर्माण २० मार्च तक समाप्त हो जायगा अत यह भी विचार किया गया था कि इसी शुभ अवसर पर मन्दिर का उद्घाटन कार्य्य भी धूम धाम से सम्पादन किया जाय, परन्तु कतिपय अनिवार्य कारणोंसे २५ मार्च तक भी मन्दिर निर्माण कार्य्य समाप्त नहीं हो सका, मन्दिर उद्घाटनोत्सव इस अवसर पर स्थगित कर दिया गया । श्रीमद्दयानन्द अनाथालय भवन का निर्माण कार्य्य समाप्त हो चुका था अत इसी नव निर्मित अनाथालय भवन में समारोह-पूर्वक आर्य्य-समाज-दिवस मनाने का बृहत् आयोजन किया गया । विचार किया गया था कि आर्य्य समाज पारामारीबो भूमि में इस अवसर पर एक बड़ा मेला लगाया जाय परन्तु एक तो मन्दिर निर्माण कार्य्य समाप्त न होने के कारण दूसरे मार्च मास के प्रथम सप्ताह से ही वर्षा ऋतु आरम्भ हो जाने के कारण दिन रात लगातार वृष्टि होते रहने से मेला लगाना भी बन्द कर दिया गया । २६ २७-२८ मार्च को भी लगातार वृष्टि होती रही इसलिये नगर कीर्तन का जलूस

भी स्थगित करना पड़ा। वर्षा के कारण पारामारीबो के बाहर आर्य्य नर-नारियों को भी आने में असुविधा हुई तो भी पर्याप्त संख्या में २६ मार्च के प्रातःकाल से ही दूर दूर से आर्य्य नर-नारी वर्षा के कष्टों को सहन करते हुए इस दयानन्द महायज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आने लग पड़े, बाहर के आर्य्य नर नारियों के ठहराने का प्रबन्ध श्रीमद्दयानन्द अनाथालय भवन ही में किया गया। २६ तारीख़ के सन्ध्या काल से ही उत्सव का कार्य बृहत् हवन यज्ञ से आरम्भ हुआ। वर्षा होते रहने पर भी बहु संख्या में स्त्री पुरुष उत्सव में सम्मिलित हुये। २७ मार्च को भी वृष्टि होती रही तो भी ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा भावने बहु संख्यक नर नारियों को आकर्षित कर सभा मण्डल में ला उपस्थित कराया। इस दिन प्रातःकाल से ही कार्यवाही आरम्भ की गई, हवन भजन तथा प्रार्थना के पश्चात् श्रीमान् पण्डित अयोध्या प्रसाद जी ने ऋग्वेद से एक सरस्वती सूक्त का पाठ किया और लगातार दो घण्टे तक उस पर भाषण करते रहे और महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुये उस सूक्त की व्याख्या को अत्यन्त ही मनोहर तथा रोचक बना दिया। उपस्थित जनता के हृदय में वेदों के गौरव तथा ऋषि दयानन्द के मानव जाति के कल्याण के लिए जीवन के समर्पण के भावने स्थान कर लिया। उपस्थित जनता को इस बात का पूर्णतया विश्वास होगया कि वैदिक धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करने ही से मानव जाति का कल्याण हो सकता है। मधुर गान तथा शान्ति पाठ के साथ प्रातःकाल का कार्य समाप्त किया गया। संध्या समय भी बृहत् हवन भजन तथा प्रार्थना से कार्य आरम्भ किया गया और कतिपय महानुभावों के व्याख्यान हुये। इस उत्सव में उपनिवेश में यह पहला ही अवसर है कि सनातन धर्मावलम्बी पण्डित भवानी भीख जी भी सभा में उपस्थित हुये थे। सनातनी यहां आर्यों का प्रायः बायकाट ही किया करते हैं और इनके उत्सव आदि में आना तक दोष गिनते हैं परन्तु पण्डित भवानी भीख जी ने इस प्रतिबन्ध को तोड़कर बड़ा ही साहस तथा अपने हृदय की उदारता का परिचय दिया। पंडित जी भारत वर्ष की अभी यात्रा करके वापिस लौटे हैं और वहां के धार्मिक तथा राजनैतिक नेताओं के साथ सत्संग करने का सौभाग्य प्राप्त कर आये हैं और कलकत्ते आर्य समाज के स्वर्ण जयन्ती उत्सव में भी सम्मिलित हुये हैं। पंडित जी ने अपने रोचक भाषण में बताया कि सनातनी होते हुये भी उन्हें आर्य समाज से प्रेम है और इस बात पर अत्यन्त ही खेद प्रगट किया कि इस उपनिवेश में आर्यों और सनातनियों में सामाजिक खैंचातानी है। सत्संग के महत्व पर बोलते हुये उन्हाने बताया कि किस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी विरजानन्द जी महाराज के साथ सत्संग कर इतने बड़े महान् पुरुष और अतुलित विद्वान् बन गये। उपस्थित जनता पर व्याख्यान का बहुत ही उत्तम प्रभाव पड़ा। भारत में पंडित जी महात्मा गांधी जी का दर्शन कर आये थे। और उनका एक संदेश पत्र छपा हुआ भी साथ ले आये थे। जिसे जनता में वितरण किया गया और जनता को पढ़ सुनाया जिसका आशय था कि "इस उपनिवेश में भारतीयों को परस्पर मेल मिलाप से रहना चाहिये। मन वचन और कर्म से पवित्र रहना चाहिये तथा हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये हिन्दी पाठशालायें तथा पुस्तकालय खोलने चाहियें" इत्यादि।

इसी उत्सवके अवसरपर यह उल्लेखनीय बात हुई जो इस उपनिवेश के समस्त सनातनी पण्डितों में श्रेष्ठ

तथा अग्रगण्य समझे जाते हैं और रेवाखण्डे कथा-वाचकों और भागवती पण्डितोंमें सर्वोच्च समझे जाते हैं और जिनके भरोसे पर ही यहां के सनातनी आर्य्य समाजियों से मुठभेड़ मे डटा करते थे खुल्लम खुल्ला वैदिक धर्म को ग्रहण कर लिया ।

इसी सभा मे दूसरी उल्लेखनीय बात यह भी हुई कि श्री माता महादेवी जी की ओर से घोषणा की गई कि आर्य्य समाज पारामारीबो का मन्दिर भवन जिसके निर्माण का सारा धन उन्हीं ने अपने पास से दिया है श्रीमती सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के नाम रजिस्टर्ड कर दिया जाय । मन्दिर का भवन जिस भूमि पर बनाया गया है वह ज़मीन भी श्रीमती सार्व-देशिक सभा के नाम रजिस्टड है ।

ता० २८ मार्च को भी पूर्ववत ही कार्य्यवाही हुई और शान्ति पाठ के साथ उत्सव समाप्त किया गया । इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा द्वारा विदेश प्रचार के लिये जनता से कुछ धन संग्रह किया गया जो सभा के कोष में भेज दिया गया है ।

\+ + +

श्री पं० केशवदेव ज्ञानी की मद्रास की चिट्ठी

श्री प्रधान सभा की आज्ञा से ७ से १५ मई तक मलाबार मे प्रचार कार्य्य के सिलसिले मे रहा । आन्ध्र प्रान्त के उपयोग के लिए इस मास तिलुगु भाषा में शुद्धि विधि तय्यार की । पुस्तक प्रेस मे दे दी गई है । विधवा विवाह अन्तर्जातीय विवाह तथा अन्त्येष्टि आदि ११ संस्कार कराए गए है ।

हिन्दी संस्कृत कक्षाएँ शंकासमाधान आदि कार्य्य यथा नियम होते रहे हैं । आगामी मास अर्थात जून मास में केनोदी मे दलित सम्मेलन मे सम्मिलित होने तथा गंटूर बगलोर इत्यादि स्थानो मे प्रचारार्थ जाने का प्रोग्राम है ।

सामाजिक-जगत

आर्य्य प्रतिनिधि सभा विहार

ता० १६-५-३६ ई० को "आर्यप्रतिनिधि सभा विहार" की पुरानी अन्तरङ्ग सभा की एक महत्वपूर्ण और अन्तिम बैठक तथा ता० १७-५-३६ को नव-निर्वाचित प्रतिनिधियों की 'वार्षिक-साधारण सभा" की प्रथम बैठक, श्री प० वेदव्रत जी वानप्रस्थ प्रधान सभा के सभापतित्त्व में हुई। एक सौ से अधिक प्रतिनिधि एवं विशेष रूपेण आमन्त्रित सज्जन प्रान्त के भिन्न २ जिलों और समाजों से आये थे। सब सदस्यों ने आशा और उत्साह के साथ कार्य्यवाही में भाग लिया।

गत वर्ष की रिपोर्ट जो सभा के सामने स्वीकृति के लिए उपस्थित की गई थी, वह प्रत्येक दृष्टि से पिछले कई वर्षों की अपेक्षा अधिक उत्तम था। प्रान्तीय सभा ने हर विभाग में उन्नति की है। आय व्यय और कार्यो का वर्णन क्रमश प्रकाशित किया जायगा।

अधिकारी वर्ग और अन्तरङ्ग सदस्यः—

१—सर्व्व सम्मति से श्री प० वेदव्रत जी वानप्रस्थ पुन प्रधान निर्वाचित किये गये।

२—श्री बाबू रामविलास सिंह जी रिटायर्ड सबजज दानापुर, उपप्रधान।

३—श्री बा० महेशलालजी, विहार शरीफ उपप्रधान

४—श्री पं० रामावतार शर्म्मा जी वेदतीर्थ (आचार्य गुरुकुल हरपुर जान) ,,

५—श्री बा० महादेवशरण जी 'सिद्धान्त विशारद, प्रधान मन्त्री।

६—श्री बा० जगन्नाथ प्रसाद जी मोतीहारी मन्त्री

७—श्री बा० गुरुप्रसाद जी एम, ए, बाढ़ ,,

८—श्री प० वासुदेव शर्मा जी पटना ,,

९—श्री बाबू परमेश्वरप्रसाद जी कर्ण (मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वैद्यनाथ धाम) मु गेर औडीटर

१०—श्रीमान सेठ मनोहरलाल जी पटना पुस्तकाध्यक्ष

११—श्री बा० सियाहोभक्त जी, दानापुर, कोषाध्यक्ष

इनके अतिरिक्त २० अन्तरङ्ग सदस्य और चुने गये।

श्री स्वामी रामानन्द जी संन्यासी ने अपनी सारी पुस्तकें दो अच्छी अल्मारियो के साथ सभा को प्रदान करके पुस्तकालय को और बढ़ाने की आशा दिलायी है। सभा ने अपने पुस्तकालय का नाम "श्री रामानन्द पुस्तकालय" रख दिया है।

शारदा एक्ट का मामला

दानापुर की बाल-विवाह-निषेधक-समिति के एक सदस्य श्रीमान् बाबू रूप नारायण लाल ने जिला मजिस्ट्रेट के यहा एक अर्जी दी थी कि जोधा साव ने अपने ८-९ वर्षके लड़के नारायण का विवाह कालीचरण साव कान्दू की ५-६ वर्ष की लड़की रमपतिया से १६ फ़रवरी १९३६ को किया है जिसमे नौमी पाण्डे और नथुनी हजाम ने विवाह कराया है। जांच के बाद मामले का विचार हुआ, अभियुक्तों ने अपना कसूर स्वीकार किया। अदालत ने जोधा साव कान्दू और कालीचरण साव कान्दू को १५-१५ रुपये जुर्माना या बदले में दो दो सप्ताह कैद और नथुनी हज्जाम को १०) रुपये जुर्माना या बदले में एक सप्ताह कैद का हुक्म दिया है। पुरोहित नौमी पाडे हाजिर नहीं हुये थे अत जिला मजिस्ट्रेट ने उनपर सम्मन जारी किया और समिति को १०) रुपया खर्च का दिया है।

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य

—कुछ दिन पूर्व शुकल नामक एक ग्वाला की स्त्री को बटू नामक एक मुसलमान भगा ले गया था, जिसके विरुद्ध आसन्सोल सब डिवीजन कोर्ट में मुकदमा चल रहा था। इस मुकदमे में आर्य्य समाज कुल्टी (वर्दवान) ने पूरी २ सहायता की और २१-४-३६ को कोर्ट ने बटू को ६ मास की क़ैद की सजा दी।

—२५ ५-३६ को कारजा आ० समाज ने एक मराठे लड़के को जिसका नाम मारोती उम्र लगभग १५-१६ वर्ष की होगी जो गुण्डों के बहकाने पर मुसलमान हो गया था समझा बुझाकर उसके कुटुम्बियो के पास भिजवा दिया।

—२८ अप्रैल १६३६ को मोजा नगरवार डा० वारा, जिला इलाहाबाद के निवासी गुलाम मुहम्मद नामी मुसलमान की सपरिवार शुद्धि हुई। पिछले ३ साल से मुसलमान चला आता था।

आदर्श विवाह-संस्कार

भिकार मादवो (वैतूल) में कुमारी भागीरथी बाई का विवाह श्री राम कृष्ण देशमुख के साथ २२ मई को हुआ। विवाह मे रूढ़ि नहीं बरती गई। कन्या ने एक पुष्प माला डालकर ही वर को वरण किया। इस विवाह में अनेक गण्यमान्य व्यक्ति तथा समाज सुधारक सम्मिलित हुए। गांधी जी की शिष्या मीरा बहिन भी उपस्थित थीं।

—गणपतराय पटेल

—६ मई को बाबू रघुनाथ जी के पुत्र काशी नाथ जी वैदिक विशारद प्रतापगढ़ (अवध) निवासी का विवाह हैद्राबाद निवासी स्वर्गीय गया प्रसाद जी आर्य्य की छोटी कन्या के साथ पूर्ण वैदिक रीति से रूढ़ियों की अवहेलना पूर्वक सादगी के साथ किया गया। तिलक, दुखोना, दहेज या आभूषणादि का लेन देन नहीं हुआ।

विधवा विवाह

उन्नाव कायस्थ सोशियल रिफार्म लीग तथा बा० राधा बिहारी जी के यत्न से उन्नाव में गत २६ अप्रैल को एक विधवा विवाह बड़ी धूम धाम से हुआ। कानपुर निवासी बा० नारायण प्रसाद निगम ऐडवोकेट और भूतपूर्व मेम्बर लजिस्लेटिव कौंसिल के सभा पतित्व में इस अवसर पर एक बड़ी मीटिङ्ग भी हुई जिसमें उन्नाव, कानपुर लखनऊ इत्यादि के बड़े २ नेताओं और सज्जनों के व्याख्यान हुए। सभा में कई नगरों और उन्नाव जिले के बहुत से सज्जन पधारे और विशेष बात यह थी कि बहुत से बूढ़े आदमी भी शरीक थे। लखनऊ निवासी बा० अशरफी लाल जी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्हों ने पुरानी रूढ़ियों को तोड़ कर यह विवाह करने का साहस किया। उन्नाव में विधवा-विवाह को लोग आदर की दृष्टि से देखने लग गए हैं और ईश्वर ने चाहा तो लखनऊ और कानपुर में भी इस प्रकार के और विवाह होंगे।

—आनन्द पुर (पंजाब) निवासी प० बनवारीलाल जी की विधवा पुत्री का विवाह २१ मई को प० दीनानाथ क्लार्क-श्री दीनानाथ वकील हाई कोर्ट के साथ पौराणिक रीति से बड़ी धूम धाम से हुआ।

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएँ इत्यादि

(१)

आवश्यक निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (Internati onal Aryan League) भूमण्डल के समस्त आर्य्य समाजो की सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा (Representative Body) है। इस सभा की ओर से मद्रास आदि प्रान्तो में, जहाँ आर्य्य समाज का नाम-मात्र प्रचार है, उड़ीसा आदि की जगली तथा गढ़वाल आदि की पहाड़ी जातियो में प्रचार कार्य हो रहा है। जिससे ये जातिया विधर्मी होने से बची रहे और उनकी पूर्णतया रक्षा हो जावे। देश के बाहर भी अमेरिका आदि प्रदेशो मे प्रचार हो रहा है। यह सभा चाहती है कि अन्य सुधारों के सिवा अछूत कहलाने वाली जातियो के प्रश्न को सुलझाने, उनकी स्थिति को ऊँचा करने और क्रियात्मक रूप मे उनको हिन्दू जाति का अङ्ग बनाने के लिए विशेष यत्न करे। उपर्युक्त कार्यों को विस्तार देने तथा अन्तिम कार्य मे विशेष यत्न करने के लिये धन की जरूरत है। इस लिए यह सभा दानी और उदार स्त्री पुरुषो से प्रार्थना करती है कि इस कार्य मे जी खोल कर सहायता करे जिससे यह सभा अधिक से अधिक उनकी सेवा कर सके।

देशबन्धु

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा देहली।

(२)

आर्य जनता को विदित है कि टकारा में आर्य समाज मन्दिर निर्माण का कार्य सार्वदेशिक सभा के अधीन है और आर्य्य समाज बम्बई के सहयोग से भूमि प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है। इस सम्बन्ध मे सभा को प्रगतिया जो रही है वे समय समय पर जनता के समक्ष आती रहा हैं। पिछले दिनो सभा के इस निश्चय की सूचना दी गई थी कि बम्बई आर्य्य समाज को शीघ्र से शीघ्र जमीन प्राप्त करने का प्रबन्ध करना चाहिए। यदि वह प्रबन्ध न कर सकी तो यह सभा अपने ढंग से भूमि प्राप्त करके मन्दिर बनवाने का प्रबध

—आ० स० सीतावर्डी नागपुर ने एक मुसल्मान की शुद्धि की। इस से पूर्व श्री के, वी. शुक्ल जी ने दो शुद्धिया की और ३ स्त्रियों को गुण्डो से छुडाया। —मन्त्री

—आ० स० कालेज विभाग बटाला (पजाब) का उत्सव २३, २४, २५, मई को हुआ। इस अवसर पर २४ मई रविवार को माधव ईसाई को उसकी पुत्री और पत्नी के साथ शुद्ध किया। शुद्धि-संस्कार बड़े समारोह के साथ हुआ।

करेगी।

इन दिनों टङ्कारा की दो बहिनें आर्य समाजों में टङ्कारा की आर्य कन्या पाठशाला समाज तथा मन्दिर के लिए धन सग्रहार्थ भ्रमण कर रही हैं। कई आर्यसमाजोंने हमसे इस सम्बन्धमें आवश्यक सूचना प्राप्त की है जिससे वे मन्दिर निर्माण तथा उन बहनों की सहायता के सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य का निश्चय कर सकें।

जनता की सूचना के लिए उन सूचनाओं का प्रकाश में लाया जाना आवश्यक है इसलिए हम उनपर यहाँ प्रकाश डाले देते हैं। आर्य समाज बम्बई ने भूमि की प्राप्ति के निमित्त एक उपसमिति बनाई है। उसके सदस्य श्री पं० विजय शङ्कर मूल शङ्कर जी तथा बीरपुर के युवराज हैं। मौरवी नरेश ने भूमि प्रदान करने का वचन दे दिया है। आगामी जुलाई मास में समिति के उपर्युक्त दोनो सदस्य तथा मौरवी नरेश टङ्कारा जाकर भूमि के परिमाण तथा स्थिति का फैसला करेंगे। हमने समाजों को यह भी सूचना दी थी कि इस काम के लिए धन सग्रह के लिये वे सभा की आज्ञाओं की प्रतीक्षा करें और उन बहिनों ने धन सग्रह की सभा से आज्ञा प्राप्त नहीं की है।

आशा है कि आर्य समाजें इन सूचनाओं के प्रकाश में टङ्कारा मन्दिर निर्माण तथा उन बहनों को सहायता देने दिलानेके सम्बन्धमें अपने कर्त्तव्य का निश्चय करने में समर्थ होंगी।

देशबन्धु

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, देहली।

अन्तरङ्ग सभा २४-५-३६

महत्वपूर्ण निश्चय

नि० सं० ८

वर्तमान में आर्य्य समाज द्वारा दलितोद्धार का कार्य विशेष रूपसे किए जाने का विषय पेश हुआ। श्री पं० इन्द्र जी की तत्सम्बन्धी स्कीम पेश होकर पढी गई। विचार के बाद निम्न निश्चय स्वीकृत हुआ।

"देश में दलितों की वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए यह सभा निश्चय करती है कि दलितोद्धार के कार्य को सुसंगठित तथा विशेष रूप से चलाने के लिए एक ऐसी योजना की जाय जो दलितो की समस्या को भली प्रकार हल कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्न सदस्यों की एक उपसमिति बनाई जाय जो ३ मास के अन्दर पूरी तरह अनुसधान करके अपनी रिपोर्ट अन्तरग सभा के सामने पेश करे। इस समिति को अधिकार दिया जाय कि यदि अपनी रिपोर्ट तैयार करने के लिए देश के भिन्न भिन्न स्थानों का दौरा करना वह आवश्यक समझे तो दौरा भी करे।

समिति के सदस्य

(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(२) ,, प्रा० सुधाकर जी
(३) ,, पं० इन्द्र जी
(४) ,, ला० नारायनदत्त जी
(५) ,, ,, देशबन्धु जी

नि० सं० ३

नोटिस का विषय स० २—सभा की नियमा-

वली की धारा सं० ३ (क) के स्पष्टीकरण का विषय पेश हुआ। जनरल सभा तिथि ३१ ३-३६ का निश्चय पढ़ा गया। विचार के बाद सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि चूँकि इस धारा में प्रयुक्त 'प्रतिनिधि सभा' शब्द का अभिप्राय इस समय तक कई प्रतिनिधि-सभाएँ जनरल तथा अन्तरग सभा दोनो सभाओ से लती रही हैं और यह सभा उन्हे स्वीकार करती रही है परन्तु इस सभा की सम्मति म उक्त नियम का अभिप्राय केवल जनरल सभा से होना चाहिए, अत सब प्रान्तिक सभाओ को इसकी सूचना दी जाय कि भविष्य मे उक्त धारा में प्रयुक्त 'प्रतिनिधि सभा' शब्दो से केवल 'जनरल सभा' ही समझी जावे।

नि० स० ७

श्री प्रधान जी ने पेश किया कि आर्य पत्रो से विदित हुआ है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग सभा ने श्री आचार्य रामदेव जी को लण्डन के 'सर्व धर्म्म सम्मेलन' मे भेजने का निश्चय किया है। इस सभा ने पण्डित जी की लण्डन यात्रा का व्यय पजाब सभा से मिल जाने की आशा और उक्त सभा के प्रधान श्री आचार्य रामदेव जी की प्रेरणा पर प० अयोध्या प्रसाद जी को सम्मेलन में भेजनेका गत जनवरी मासमें निश्चय कर दिया था और तदनुसार पण्डित जी को सम्मेलन मे शरीक होने की प्रेरणा करदी थी। अब चूँकि आचार्य जी सम्मेलन मे जायेगे और वे इस कार्य के लिए उपयुक्त व्यक्ति हैं। व्यय की दृष्टि से दो प्रतिनिधियों का जाना ठीक नही है इस लिए पण्डित अयोध्या प्रसाद जी को जाने से रोक दिया जाय और आर्य्य प्रतिनिधि सभा पजाब को इस आशय का पत्र लिख दिया जाय। निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी की इस तजवीज से यह सभा सहमत है।

१९३६ १९३७ के लिए आर्य्य रक्षा समिति के पदाधिकारी

प्रधान—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
उपप्रधान—श्री स्वतन्त्रानन्द जी
प्रधान-मन्त्री तथा प्रधान दलपति—श्री ला० देशबधु
कोष ध्यक्ष—श्री ला० नारायणदत्त जी

साहित्य समीक्षा

कुल्यात संन्यासी (उर्दू)

सम्पादक—श्री स्वामी अनुभवानन्द जी 'शान्त'
प्रकाशक—मास्टर शिवचरणदास जी, उप प्रधान आर्य समाज चावड़ी बाजार, देहली।
मूल्य—२ रु०, घटा हुआ १ रु०।
बड़े साइज की पृष्ठ संख्या २२५

यह पुस्तक श्री स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी कृत ग्रन्थो का संग्रह है। पुस्तक में स्वामी जी महाराज की जीवनी भी दी गई है। आगाखाना मत तथा हसन निजामी की 'दाइए इस्लाम' नामक पुस्तक का इस संग्रह से पूरा परिचय मिल जाता है। संग्रह उपादेय है।

\+ \+

हिन्दू धर्म बनाम ईसाइयत (अंग्रेजी)

(Hinduism Vs Christianity)

लेखक—श्री प० केशवदेव ज्ञानी (मद्रास)
प्रकाशक आ० स० १७०) चाइना बाजार मद्रास
मूल्य –)

इस पुस्तक मे हिन्दू तथा ईसाई धर्मो का संक्षेप मे तुलनात्मक विवेचन किया गया है। लेखक का इस पुस्तक के लिखने का उद्देश्य पाठक पर यह अंकित कर देना है कि हिंदू धर्म ईसाई धर्म से किसी भी रूप मे नीचा नहीं है, और बाइबिल की शिक्षाए हिन्दू शास्त्रों की शिक्षाओं से श्रेष्ठ नही हैं।

\+ \+

वर्तमान शिक्षा

लेखक—श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार
प्रकाशक—गीता प्रेस गोरखपुर
मूल्य –)

इस पुस्तकमे माननीय लेखकने स्त्रीशिक्षा, तलाक और सन्तति निरोध, समानाधिकार, समान और सहशिक्षा, सिनेमा इत्यादि शीषकोंमें वर्तमान शिक्षा के अभिशापो पर उत्तम रीति से प्रकाश डाला है और शिक्षा का वास्तविक रूप क्या होना चाहिये इस पर भी विचार किया है।

वर्तमान शिक्षा और पश्चिमी लहर से देश के नवयुवको और नवयुवतियों के बढते हुये भयकर पतन को रोकना वा कम करना, देश के प्रत्येक शुभचिन्तक मुख्यतया जनता मे स्थान रखने वाले नेताओ, सुधारको और प्रसिद्ध साहित्यको का परम कर्त्तव्य है। श्री पोद्दार जी प्रसिद्ध साहित्यिक हैं। इस पुस्तक को लिखकर उन्होंने सचमुच अपने एक बड़े कर्त्तव्य की पूर्ति तथा देश की एक सामयिक सेवा की है।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस देहली में प्रकाशित।

[illegible]   Reg No L 2121

ओ३म्

सार्वदेशिक

वार्षिक मूल्य २)   सम्पादक—लाला देशबन्धु   विदेश मे ५ शिलिंग

[illegible]   ५ प्रति का [illegible]

सामवेद

नम्र निवेदन

[लेखक—ला० नानाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N. W. R. आनरेरी मन्त्री]

पंजाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड पर एक अनाथालय है जिसका नाम पंजाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विशम्भरनाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्त जी वैद्य शास्त्री मुलतान, तथा डा० गणेशी लाल जी M. B. B. S. हैं। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं, प्रत्युत मद्रास, बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक में रहने वाले हिन्दू आर्य भाई भी करते रहते हैं यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पंजाब में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्गपर चल रहा है, यहाँ तक कि अब सरकार भी, जो लावारिस लड़के लड़कियाँ उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता तब तक उनको यहाँ रखती है। इस तरह से अनाथालय में बच्चों की प्रवेश संख्या बढ़ गई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से स्थान काफी नहीं होता। इस न्यूनता को पूर्ण करने के लिए प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है कि तीन नवीन कमरे बनवाये जायें, दो बच्चों के लिये और एक हस्पताल के लिए और उनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनों की सेवा में विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालों के जाल में फंसकर हमेशा के लिए धर्म से पतित हो जायेंगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम का पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के आधीन म्युनिस्पल कमेटी से मंजूर एक मिडिल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखाया जाता है तथा बाहर के लड़के भी इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बाहर के लड़के इस कार्य को सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहाँ से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालयमें इस समय ९५ लड़के और २५ लड़कियाँ हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें। और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी, दरी, चादर, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप ही की ओर से आ रहा है जिससे यह संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक में पुण्य के भागी बनेंगे तथा हम भी कृतार्थ करेंगे।

॥ विषय-सूची ॥

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १० | भाद्रपद १९९६ | अगस्त १९३९ ई० | दयानन्दाब्द ११७ | अंक ६

वेद की शिक्षाएँ

ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूराः ।
महोभिः व्रता रक्षन्ते विश्वाहा ॥

ऋ० म० १ अ० १४ ॥

(ते) वे पूर्वोक्त विद्वान लोग (वसवाना) अपने गुणों से सब को ढापते हुए (हि) निश्चय से (महोभि) प्रशसनीय गुण और कर्मों से (विश्वाहा) सब दिनों मे (वसु) धन आदि पदार्थों की (रक्षन्ते) रक्षा करते है तथा जो (अप्रमूरा) मूढ़त्व प्रमाद रहित धार्मिक विद्वान है (ते) वे प्रशसनीय गुण कर्मा से सब दिन (व्रता) सत्य पालन आदि नियमो को रखते है ।

भावार्थ—विद्वानो के बिना किसी से धन और धर्म्म युक्त आचार रक्खे नहीं जा सकते । इससे सब मनुष्य को विद्या प्रचार करना चाहिए जिससे सब मनुष्य विद्वान होकर धार्मिक हो ।

सम्पादकीय—

उपाकर्म

श्रावण की पूर्णिमा को उपाकर्म होता है। उपाकर्म कहते हैं वेद का पाठ करने को। उपाकर्म का इस तिथि में विकल्प भी है। परन्तु इस समय भारतवर्षमे प्राय यही तिथि नियत सी प्रतीत होती है। इस समय एक प्रथा प्रचलित है। वह यह है –

श्रावण पूर्णिमा के दिन एक रगा हुआ धागा लेकर ब्राह्मण अपने यजमानोके पास जाता है और उनके हाथोमे उस धागे को बाधता है वह उसे कुछ अन्न वा धन देदेते हैं। जिस स य वह धागा बाधता है उस समय एक श्लोक पढ़ता है जिसका पाठ इस प्रकार है —

येन बद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबल ।
तेन त्वमपि बध्नामि रक्षे माचल माचल ॥

धर्मसिधु पृष्ठ ५६।

जिससे दानवेन्द्र महाबलि राजा बलि को (वामन भगवान ने) बाधा था उसी स मै आपको बाधना हूं। रक्षे चलायमान न हो।

वामन और बलि की कथा अत्यन्त प्रसिद्ध है वामनने ३ पग भूमि ली थी जिससे बलिको प तल मे पहुँचा दिया था।

दूसरे इस दिन बहन अपने भाई के हाथ मे एक सूत वा ऊन की बनी हुई वस्तु बाधती है जिस को रखड़ी कहते हैं। प्रतीत होना है वह रक्षा से ही रखड़ी बनी है। और भाई अपनी बहन को कुछ धन देता है। जो स्त्री किसी पुरुष को रखड़ो बाधे वा भेजे तो समझा जाता है वह उसे अपना भ्राता बनाती है।

इसके अतिरिक्त पुस्तको मे इस दिन अन्य बाते भा विकल्पसे मिलती हैं मध्य तैत्तरीय शाखा वाले इस दिन सर्प बलि मानते हैं।

आश्वलायन शाखा वाल इस दिन सर्प बलि और श्रवणाकर्म मानते हैं। कात्यायन भी आश्वलायन वत् सर्प बलि और श्रवणाकर्म कहते है। पारस्करादि गृह्य सूत्र उपाकर्म मानते हैं।

आर्य पर्व पद्धति मे इस दिन उपाकर्म ही माना है इसलिए विकल्पो को छोड़कर आर्यों को श्रावण की पूर्णिमा को उपाकर्म अवश्य करना चाहिए। ऋषि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के १० नियमों मे से तीसरा नियम इस प्रकार लिखा है। 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' ऋषि ने इस नियम मे सब आर्यो को वेद के पढने पढाने और सुनने सुनाने का आदेश दिया है। वेद का पढ़ाना तो उपाध्याय हो कर सकते हैं जो अपने शिष्यो को गुरुकुलो वा विद्यालयो में पढ़ाते हैं और उनके शिष्य वहा पढ़ते हैं परन्तु दूसरे आर्यसज्जनो को इस दिन से वेद के पढ़ने का कार्यारम्भ करना चाहिए। वह नियम से वेद का पाठ उपाकर्म से आरम्भ करे यदि संभव हो तो, उनको जो पढ़ नही सकते हैं, सुनावें और वह नियम से वेद पाठ

सुनें। जहाँ जहाँ आर्य समाजें हैं उनको समाज मन्दिर में श्रावण पौर्णिमा से वेद की कथा आरभ करनी चाहिए ताकि जो वेद नहीं पढ़ सकते हैं वह सुनकर अपने जीवन को सफल बना सकें। यदि कहीं दुर्भाग्यवश वेद पढ़ने वाले वा सुनाने वाले न हों वहाँ किसी धर्मग्रन्थ का ही पाठ होना चाहिए ताकि श्रोता धर्मपरायण हों। इसी प्रकार जहाँ आर्यसमाजें नहीं हैं वहा व्यक्तिगत् पाठ का आरभ करें यथा सम्भव औरों को सुनावें। मनुस्मृति में उपाकर्म के पश्चात् उत्सर्जन काल माघ पौर्णिमा को लिखा है यदि कोई इतना समय न कर सके तो न्यून से न्यून एक मास तो यह कार्य अवश्य करना चाहिए और यदि अधिक पाठ भी न कर सकें तो एक मन्त्र का पाठ प्रतिदिन होना ही चाहिए। अथवा किसी अन्य धार्मिक ग्रथ का स्वाध्याय एक मास किया जाय।

इस समय आर्यसमाजी प्राय नगर के बाहर जाकर किसी नदी में स्नान करते हैं और स्नान के पश्चात हवनादि करके उपवीत बदल लेते हैं। यदि वह उपवीत के साथ २ अपन मन को न्यूनसे न्यून एक मास के लिए स्वाध्यायशील बना लें तब तो उनको उपाकर्म का फल मिल ही जाय यदि ऐसा न करें तो केवल यज्ञोपवीत बदलना लाभदायक न होगा। मैं आशा करता हूं 'सार्वदेशिक' के पाठक मेरी इस विनय पर कुछ न कुछ ध्यान देंगे।

—स्वतन्त्रानन्द

स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द—

श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी की मृत्यु में आर्य जगत और मुख्यत बम्बई प्रान्त अपने एक श्रेष्ठ संन्यासी, उत्तम प्रचारक और अध्यवसायशील कार्य कर्त्ता से वंचित हो गया और उस समय में जब कि बम्बई प्रान्त के हिन्दू जगत् को मुख्यतया आर्य समाज को अछूतोद्धार कार्य्य के सफल संचालन में उनकी अनिवार्य आवश्यकता थी, जब वे डाक्टर अम्बेद कर की हिन्दू धर्म विरोधिनी प्रगतियों को निष्क्रय बनाने तथा अछूतों को उनके मोहक जाल से बचाने का पवित्र कार्य कर रहे थे। इसे हम आर्य जगत और बम्बई प्रान्त का दुर्भाग्य ही समझते हैं।

स्वामी जी हृदय और मस्तिष्क के गुणों से विभूषित थे। शरीर और मन की तुच्छ एषणाओं से ऊपर थे। बड़े त्यागी और तपस्वी थे, बड़े उदार बड़े हँसमुख, बडे चरित्रवान, बहुत कम ज़रूरत वाले और बड़े हास्य प्रिय थे। उनके व्यक्ति गत और सामाजिक जीवन में समता थी। दोनों ही जीवन आकर्षक थे। ऐसे आकर्षक व्यक्तित्व किसी भी समाज की अमूल्य सम्पदा होती हैं। स्वामी जी का व्यक्तित्व आर्य्य समाज की अमूल्य सम्पदा ही थी। उसके वञ्चित हो जाने से सचमुच आर्य समाज की बड़ी क्षति हुई है।

स्वामी जी के जीवन का एक मात्र ध्येय ऋषि मिशन का प्रचार था और उसकी पूर्ति में वे सर्वात्मना अन्तिम क्षण तक लगे रहे। आर्य जनता, प्रचारकों और समाज सेवकों के लिए जिनकी शक्ति और समय का संस्थाओं इत्यादि में दुरुपयोग होता है वे उद्देश्य की पवित्रता और उसकी पूर्ति की सफलता का एक अच्छा

उदाहरण प्रस्तुत कर गये हैं।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

❀ ❀ ❀

मूर्खता पूर्ण कार्य्यवाहि—

पाठक अन्यत्र इंदौर राज्य के एक छोटे पुलीस कर्म्मचारी द्वारा राज्यान्तर्गत मनासा नामक एक स्थान पर आर्य्य-समाज के शात-प्रचार में अनुचित हस्ताक्षेप का समाचार पढ़ेंगे।

समाचार यह है कि आर्य्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा समाज के कतिपय प्रचारक मनासा नामक स्थान पर प्रचारार्थ गए। वे समाज-मंदिर में ठहरे हुए थे कि स्थानीय पुलीस स्टेशन के एक हैड कान्सटेबिल ने उन प्रचारकों के पास आकर उनके नाम और पते इत्यादि नोट किये। दूसरे दिन जब समाज का प्रचार हो रहा था, वह कान्सटेबिल अन्य ३—४ कान्सटेबिलों के साथ प्रचार स्थल पर गया और डरा धमका कर प्रचार बन्द करा दिया। आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं के प्रचार रोकने की लिखित आज्ञा मांगने पर उसने देने से इन्कार कर दिया। कार्य कर्त्ताओं के पुलिस स्टेशन के तत्कालीन इन्चार्ज से लिखित आज्ञा प्राप्त करने के आग्रह पर लिखित आज्ञा तो न मिली, हां प्रचार करने की आज्ञा मिल गई और प्रचार समारोह पूर्वक हुआ। प्रचार की आज्ञा का प्राप्त होना इस बात का सूचक है कि हैडकान्सिटेबिल का हस्ताक्षेप नितान्त अनुचित और मूर्खता पूर्ण था। हम राज्य के उच्च कर्मचारियों से निवेदन करेंगे कि ऐसी कार्यवाहियों से राज्य का न्याय बदनाम होता है इसलिए उन्हें देखना चाहिये कि इस प्रकार की कार्यवाहियां दुहराई नहीं जा रही हैं और न्याय बदनाम नहीं हो रहा है।

❀ ❀ ❀

ईसाइयों की प्रचार प्रगति—

पाठक अन्यत्र 'सामाजिक-जगत्' के स्तम्भों में आर्य-प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री० पं० वेदव्रत जी का वक्तव्य पढ़ेंगे। पं० जी ने उस वक्तव्य में प्रगट किया है कि विहार प्रान्त मे मुख्यतया छोटा नागपुर की जंगली जातियों और हरिजनों में ईसाई मिशनरियों की प्रगतियाँ बड़ी वेगवती हैं, वहाँ आर्यसमाज के प्रचार तथा उन जातियों और लोगों के रक्षण की परम आवश्यकता है और यह शिकायत की है कि ईसाई मिशनरियों को सरकार की ओर से प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन मिलता है और आर्य्य-समाजी तथा हिन्दू मिशनरियों को निरुत्साहित किया जाता है। ईसाई मिशनरियों को प्रचार की खुली छुट्टी प्राप्त है तथा आर्य-समाज के मिशनरियों की गति-विधि पर पुलीस अवांछनीय निगरानी रखती है और उसका प्रचार उन जातियों तथा लोगों में असम्भव बनाने का यत्न किया जाता है। पण्डित वेदव्रत जी एक जिम्मेवार सभा के अध्यक्ष हैं, उनके प्रगटीकरणों पर सहसाही सन्देह नहीं किया जा सकता है। हिन्दू-समाज तथा सरकार के लिए आवश्यक है कि वे पं० जी के वक्तव्य पर विशेष ध्यान देवें। हिन्दू-समाज विशेषत विहार के हिन्दुओं का कर्त्तव्य है कि वे उन जातियों और हरिजनों की रक्षा करें और इस काम में विहार की आर्य्य-प्रतिनिधि सभा को वहां सहायता और योग प्रदान करें जिसकी

वह अधिकारिणी है और जिसकी वह हिन्दुओंसे उचित रीति से आशा कर सकती है।

ईसाई मिशनों से हम कहेंगे कि वे हवा के रुख को देखें और समझें। इस समय ईसा के सच्चे भक्तों, उसके प्रेमियों और प्रशंसकों के दिलों में ईसाई मिशनों की प्रचार सम्बन्धी अनुचित तथा अवांछनीय प्रगतियों, उनके प्रचारके कुत्सित हथकंडोंके विरुद्ध भयंकर बवंडर उठा हुआ है विशेषत जन साधारणको ईसाई बनाने के उनके हथकंडों के विरुद्ध। लोगों के हृदयों को अपनी उदात्त शिक्षाओं से जीतने के स्थान में, भय, धन इत्यादि के प्रलोभनों के द्वारा अपने बाड़े में लाने की ईसाई मिशनों की प्रगतियों को वे धर्म्म-प्रचार की मर्य्यादा के विरुद्ध तथा ईसा और ईसाई मिशनों का अपमान समझते हैं। लोगों को विशेषत अशिक्षित लोगों को यह कहकर कि ईसाई हो जाने पर तुम शासक जाति के अङ्ग बन जाओगे, तुम्हारी बेगार बन्द हो जायेगी, सवर्णों के अत्याचारों से तुम बच जाओगे तथा विविध प्रलोभनों के द्वारा जैसा कि अनुभव से तथा पं० जी के वक्तव्य से स्पष्ट है, भोले-भाले व्यक्तियों को ईसाई बनाने की छोटे नागपुर की जङ्गली जातियों तथा हरिजनों में काम करने वाले ईसाई मिशनों की प्रगतियाँ और हथकंडे अनुचित हैं, धर्म्म-प्रचार की मर्य्यादाके विरुद्ध हैं ईसा तथा ईसाई मिशन का अपमान है और भारतीय आतिथ्य का दुरुपयोग है। उनकी इन प्रगतियों का न केवल समझदार गैर ईसाई ही वरन् सच्चे ईसाई भी समर्थन नहीं कर सकते हैं।

विहारमें विशेषत छोटा नागपुरकी जङ्गली जातियां तथा हरिजनोंमें काम करने वाले ईसाई मिशनोंको जहाँ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सरकारी प्रोत्साहन मिलता है, वहां ईसाई मिशनरियों को प्रचार की खुली छुट्टी प्राप्त है तथा आर्य्य-समाज का प्रचार असम्भव बनाया जाता है। इस शिकायत की सचाई विहार सरकार के गुप्त सरक्यूलर से जो जनता के दिमागों में अभी ताज़ा है, तथा अनुभव से स्पष्ट हो गई थी। पं० जी के वक्तव्य से तो यह और भी ज्यादा स्पष्ट हो जाती है। पं० जी की यह शिकायत बिल्कुल ठीक है कि पुलीस आर्य्य-समाज के प्रचारक के पीछे तो लगी रहती है, उसकी गतिविधि की जांच-पड़ताल रखती है और अशिक्षित लोगोंकी निगाहोंमें उसे नीचा प्रकट करती है और ईसाई मिशनरी इस प्रकार की देख रेख और जांच-पड़ताल से मुक्त रहता है। सरकार के इस पक्ष और बहुत सी अवस्थाओं में बहुत से सरकारी कर्मचारियों द्वारा धर्म्म-परिवर्तन के कार्य्य में ईसाई प्रचारक को दी जाने वाली सहायता का हम घोर विरोध करते हैं। हम यह नहीं कहते कि ईसाई मिशनों को प्रचार की इजाज़त न दी जाय। उन्हें इजाज़त दी जाय परन्तु वहीं तक जहाँ तक उनकी प्रचार प्रगतियाँ वाञ्छनीय ढङ्ग लिए हुए हों।

❀ ❀ ❀

वीरता का अनुकरणीय उदाहरण—

वेगू सराय, ३ जुलाई।

ज़िला मजिस्ट्रेट ने पंसाला ग्राम के रामगुलाम सिंह की पत्नी श्रीमती देवकी को उसकी वीरता के उपलक्ष में २५) का इनाम दिया है।

मामला यह था कि संतोखी नामक एक बदमाश ने जब वह अपने घर में सो रही थी उसकी चांदी की

इसकी गले में से निकाल ली । इस पर वह जाग गई और उसने उस बदमाश को पकड़ लिया और बदमाश ने उसकी कमर पर एक हथियार के जो उसके पास था कई वार किए । तब उसने उस हथियार को छीनने की कोशिश की और उसका पैर पकड़ लिया । बदमाश ने तब उसके मुँह पर चाकू मारा इस पर भी उस स्त्री ने उसको नहीं छोड़ा । इस बीच में मौके पर गांव वाले आ गये और उन्होंने बदमाश को पकड़ लिया ।

❀ ❀ ❀

प्रशंसनीय सेवा—

श्री कैप्टेन रामचन्द्र जी प्रसिद्ध आर्य समाजी डाक्टर हैं। सिविल सर्जन के पद से अभी २–३ साल हुए वे रिटायर हुए हैं। मसूरी के 'दयानन्द मेडीकल मिशन' नामक संस्था के जिसके सम्बन्ध में समय समय पर इन स्तम्भों में प्रकाश पड़ता रहता है वे जन्मदाताओं में से हैं। पिछले वर्ष डाक्टर महोदय ने बिहार में 'मिशन' की एक शाखा खोली थी और वहा उन्हों ने काफी समय तक रहकर मुख्यतया आखों का फ्री इलाज किया था। इस वर्ष वे पिछले मार्च मे जन सेवा के पवित्र मिशन पर टिहरी गए थे और वहा लग भग १ मास पर्यन्त रह कर उन्हों ने सैकड़ो मरीज़ों को लाभ पहुँचाया था। उनके वहा के कार्य के सम्बन्ध में हमें एक बड़ी उत्साह बर्द्धक रिपोर्ट मिली है उस रिपोर्ट से उनकी अमूल्य सेवाओं का जो उन्होंने जन-साधारण की की है, अच्छा परिचय मिलता है। रिपोर्ट के कुछ अ श इस प्रकार हैं—

"श्री० डा० रामचन्द्र जी टिहरी १३ मार्च ३६ को पधारे और ३ अप्रैल ३६ तक टिहरी के हस्पताल में कार्य करते रहे।

डाक्टर साहब के आते ही टिहरी में रोगियों का बड़ा समुदाय एकत्रित हो गया जिनमें अधिकाश आखों के रोगी थे। बहुत से अन्य रोगों से पीड़ित व्यक्ति डाक्टर साहब का नाम सुनकर आते रहे उनकी भी चिकित्सा होती रही। डाक्टर साहब ने राज्य के अन्य डाक्टरों की सहायता से जिनकी सेवाएँ उनके निर्णय पर राज्य द्वारा रखदी गई थीं २१ दिन के भीतर २३३ आपरेशन किए जिनमें १२७ मोतियाबिंद के थे। इनके अतिरिक्त ६३ पलक बन्दी, २८ अन्य नेत्र रोगो के, ४ मसाने की पथरी, १ आत उतरने और १० रसौली आदि के थे।"

डाक्टर साहब रोगियों के केवल आपरेशन ही नहीं करते थे किन्तु बड़े प्रेम के साथ उनकी सब प्रकार की देख भाल भी रखते थे, जिससे रोगी तथा अन्य लोग भी जो डाक्टर साहब के अनथक परिश्रम को देखते थे मुग्ध हो जाते थे। इसी के फल स्वरूप सब आपरेशन सफल हुए। उनके काम की टिहरी दरबार ने भी प्रशंसा की है। दरबार के चीफ सेक्रेटरी के प्रशसा सूचक एक पत्र की लिपि इस प्रकारहै—

"दरबार को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आपने टिहरी में ३ सप्ताह निवास किया और इस बीच में २३३ सफल ऑपरेशन किए जिनमें १२७ मोतिया बिन्द (Cataract) के थे आपने इस राज्य में जिस सफलता के साथ धर्मार्थ काम किया

जिससे प्रजा को बहुत लाभ पहुंचा उसके लिए मैं आपको साधुवाद देता हूँ ।

❀ ❀ ❀

प्रशंसनीय कार्य्य—

ग्वालियर राज्य ने विधवा विवाह को कानूनन वैध ठहरा कर एक प्रशंसनीय कार्य किया है और समाज सेवा की दिशा में सुन्दर योग दिया है। इस कानून के अनुसार विधवा विवाह जायज़ समझा जायगा और पुनर्विवाह से होने वाली सन्तान को वे ही अधिकार प्राप्त होंगे जो और सब सन्तानों को प्राप्त हैं। अब किसी विधवा स्त्री वा विधवा के साथ विवाह करने वाले पुरुष को पुनर्विवाह की वजह से बहिष्कृत न किया जायगा। कानून भंग करने वालों को ५००) तक जुर्माने की सज़ा होगी।

❀ ❀ ❀

देवदासी प्रथा—

देवदासी प्रथा हिन्दू समाज की भयंकरतम दूषित प्रथाओंमें से है। यह प्रथा मूर्ख और अन्ध विश्वासी माता पिताओं इत्यादि के अपनी सुकुमारी पुत्रियों को देवता की सेवा के लिए देव-मन्दिरों को अर्पित करने की प्रथा है। उन्हें आजन्म अविवाहित रहना पड़ता है। उनका काम देव मूर्तियों के सामने तथा अन्यत्र परिवारों इत्यादि में नाचना-गाना तथा पुजारियों इत्यादि की पाशविक इच्छाओं को सन्तुष्ट करना होता है। वे व्यभिचार का जीवन बिताने के लिए बाधित होतीं और रहती हैं।

यह प्रथा प्राय दक्षिण में पाई जाती है। इसने नारी समाज का बड़ा अहित किया है तथा भारत को अपने अभिशापों के साथ इस प्रकार की अन्य भयङ्कर प्रथाओं के साथ बहुत बदनाम किया है। समाज के मस्तकमे इस प्रथाका जितनी जल्दी अन्त हो उतना ही अच्छा है, प्रसन्नता है इस बात को लोग अब समझने लग गये हैं और इसके लिए यत्न भी हो रहा है। समाज सुधारकों द्वारा सफल प्रचार हो रहा है, इस प्रथा के विरुद्ध लोकमत जागृत किया जा रहा है तथा क़ानून बनाए जा रहे हैं।

समाचार मिला है कि कोचीन राज्य ने अभी हाल में इस प्रथा के विरुद्ध एक कानून बनाया है और इस प्रकार राज्य पर लगे हुए इस प्रथा के डरावने दाग को धोने की दिशा में स्तुत्य प्रयत्न किया है। क्या हम आशा करें कि कोचीन राज्य शीघ्र से शीघ्र अपने उस दाग को धो देगा तथा अन्य सरकारें जहाँ यह प्रथा व्याप्त है इस दिशा मे अपने कर्तव्य का पालन करेंगी और इस प्रथा के समूलोच्छेद मे बहुमूल्य योग देंगी।

❀ ❀ ❀

ईसाइयों में छूत-छात—

दक्षिण भारत की नीची जातियों के ईसाइयों ने रोम के पोप को एक मेमोरियल भेजा है कि ऊंची जाति के ईसाई उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते हैं यहाँ तक कि उन्हें गिरजों में भी प्रवेश की आज्ञा नहीं है।

❀ ❀ ❀

साहस पूर्ण मार्ग-प्रदर्शन—

मस्जिदों के सामने बाजे की समस्या ने जो रूप

इस समय धारण किया हुआ है उसकी लगभग १०० वर्ष पूर्व कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। आज यह अवस्था देख पड़ती है कि किसी को हिन्दू जलूस पर आपत्ति करने भर की ज़रूरत होती है और अधिकारी तत्काल जलूस के रास्ते और समय पर पाबन्दी लगाकर आर्डर जारी कर देते हैं। सदैव यह जरूरी भी नहीं देख पड़ता है कि किसी की ओर से उज्र उठाया जाय। क्योंकि अभी हाल में ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जब शान्ति भंग के नाम पर स्थानीय अधिकारियों ने अपने प्रथानुमोदित ढंग से जलूस निकालने के धार्मिक त्यौहारों के मनाने के हिन्दुओं के अधिकारों पर भयंकर पाबन्दियां लगाईं और इसका परिणाम यह हुआ कि बहुत-सी अवस्थाओं में त्यौहार मनाये जाने कतई बन्द हो गए हैं। इसलिए हम बिहार सरकार के शिक्षा सचिव श्री सय्यद अब्दुलअजीज साहबके कतिपय आवश्यक विचारों की ओर जो उन्होंने लोहरदगा में एक मस्जिद में भाषण के दौरान में अभी हाल में प्रगट किए हैं विशेष रूप से ध्यान आकर्षित कर लेना चाहते हैं।

उन्होंने बतलाया कि धर्म या तर्क दोनों में से कोई भी किसी जाति के सदस्यों को दूसरी जाति के सदस्यों के धार्मिक कृत्यों के अनुष्ठान में हस्ताक्षेप करने की आज्ञा नहीं देता है। उन्होंने मुसलमानी शास्त्रों के प्रामाणिक उद्धरण भी यह दिखलाने के लिए पेश किए कि इस्लाम पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता का आदेश देता है और इसलिए उन्होंने अपने मुसलमान भाइयों को समझाया कि वे मस्जिद के सामने किसी भी प्रकार के धार्मिक जलूस के निकलने पर आपत्ति न करें। अपने एक प्रभावशाली मुसलमान भाई की अपील तथा सच्चे मुस्लिम असूलों की स्पष्ट व्याख्या का स्थानीय मुसलमानों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा जिन्होंने हिन्दुओं के जलूसों पर भले ही वे किसी समय, किसी रास्ते से और वर्ष के किसी भी दिन क्यों न निकलें, हस्ताक्षेप न करने का फैसला कर दिया। यह ऐसे स्थान पर हुआ जहाँ मस्जिद के सामने बाजे के जटिल प्रश्न पर दंगे की पूर्ण आशंका था। क्या हम आशा करें कि अन्य मुसलमान नेता देश के दूसरे भागों के अपने भाइयों को इसी प्रकार का साहस पूर्ण मार्ग-प्रदर्शन करेंगे और इस प्रकार दो बड़ी जातियों के मध्य झगड़े के एक बड़े कारण को दूर करेंगे।

* * *

सभ्यता का प्रसार—

एक जर्मन समाचार पत्र के अनुसार इटली के कुछ लेखक इटली के पुरुषों के साथ अबीसीनिया की स्त्रियों के विवाहों का प्रचार कर रहे हैं जिस से नए साम्राज्य के लिए दोगले पैदा हो सकें। हमने पढ़ा कि अबीसीनियाकी नगी सुन्दर स्त्रियोंकी तसवीरोंका रोमकी सड़कों में प्रदर्शन किया जाता है। शायद इटली की सभ्यता की अबीसीनिया में जड़ जमाने का यही सर्वोत्तम उपाय सोचा गया है। एक लेखक नस्लों के इस सम्मिश्रण में बड़ा ख़तरा देखता है और उसे डर है कि फ़ासिष्ट साम्राज्य कालों और गोरों का साम्राज्य हो जायगा।

उसकी सम्मति है कि आर्य्यजातियों में अपनी काली माताओं के गुण होंगे और गोरे पिता का एक भी बहुमूल्य गुण न होगा। ऐसा कैसे हो सकता है? अबीसिनिया की माताएँ बड़े बहादुर पुत्र पैदा करती हैं? मुसोलिनी को चाहिए कि वह वंश परम्परा के

प्रसिद्ध विद्यार्थियों से सलाह करें।

* * *

आर्य्य-सेवा दल—

पाठक अन्यत्र आर्य्य रक्षा समिति के सहायक मंत्री श्री म॰ शिवचन्द्र जी के आर्य्य सेवादल के सगठन सम्बन्धित आर्य्य समाजों में भ्रमण की रिपोर्ट पढ़ेंगे। उससे उन्हें विदित होगा कि गाज़ियाबाद लालकुरती मेरठ इत्यादि समाजो मे सेवादल संगठित हो गए है तथा कुछ समाजो मे संगठन के लिय क्षेत्र तय्यार हो गया है। यह रिपोर्ट उतनी उत्साह वर्द्धक नही है जितनी होनी चाहिए थी, इसलिए नहीं कि कार्यकर्ता के कार्य्य मे कोई त्रुटि है वरन् इसलिए कि आर्य्य समाजे इस सम्बन्ध मे अपेक्षित दिलचस्पी लेती प्रतीत नहीं होती है। जिन समाजो ने दलो को सगठित किया है वे बधाई के पात्र है। हम उन्हें कहेंगे कि दल के केवल सगठन मात्र से ही उनके कर्त्तव्य की पूर्ति नहीं हो जाती है। उनके कर्तव्य की पूर्ति दल के सफल सचालन मे ही समझी जावगी। इस बात पर उन्हे विशेष ध्यान रखना चाहिए। जिन समाजो में उसके संगठनके लिए भूमि तय्यार हो गई है उन्हे सभा के कार्य्य कर्ता के योग और प्रेरणा के बिना ही अविलम्ब दल स्थापित कर देने चाहिएँ। सभाके कार्य कर्ताके योग और प्रेरणा से दल का स्थापित होना ज्यादा शोभा जनक न होगा। जिन समाजो ने अभीतक इस सम्बन्ध मे करवट नही बदली है उनपर हमारी उपयु क्त शिकायत अधिकाश मे लागू होती है। हो सकता है कि उन समाजो के इस सम्बन्ध मे अकर्मण्य होने का कारण उनकी शिथिलता हो या अन्य कोई बाधा हो। कारण कोई भी क्यो न हो, उन्हे उसे दूर करते हुए दल को अविलम्ब सगठित तथा शिकायत का दूर कर देना चाहिए। यदि यह शिकायत दूर न हुई तो हम कहेंगे कि आर्य्य जनता की यह शिकायत कि जिम्मेवार सभा सोसायटियो से रचनात्मक कार्य्य के सम्बन्ध मे प्रेरणा नहीं मिलती है, निस्सार है एव वे स्वय कुछ न कर घर के अपनी अकर्मण्यता को दूसरो के ऊपर डालने का व्यर्थ प्रयास करती है।

उपवास और मौन

[ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज]

आज उपवास भोजन न करने और मौन चुप रहने का नाम प्रसिद्ध है और अनेक स्त्री पुरुष अपने लिये कल्याणदायक समझते हैं कि वे भूखे और चुप रहा करें। उपवास उतना प्रचलित नहीं जितना मौन—कारण स्पष्ट है कि मौन (चुप) रहने मे उतना कष्ट नही होता जितना भूखा रहने में। परन्तु चाहे उपवास हो और चाहे मौन आज केवल उनकी लकीर पीटी जाती है। असली तत्व जो इन क्रियाओं के भीतर था प्राय गायब होचुका है। किस प्रकार उपवास,भूखे रहने, और मौन, न बोलने के अर्थ मे प्रयुक्त होने लगा है यह बात भी इन क्रियाओंका तत्व समझ लेनेसे प्रकट हो जावेगा —

उपवास—शतपथ ब्राह्मण के प्रारम्भ मे एक जगह कहा गया है —

तेऽस्य विश्वेदेवा गृहानागच्छन्ति।

तेऽस्य गृहेपूपवसन्ति स उपवसथ ॥१।१।१।७

अर्थात जिस दिन गृहस्थ कोई यज्ञ विशेष करता या किसी व्रत या इष्टिके प्रयोग में लाने का दिन होता तो उस दिन के लिए कहा गया है कि (विश्वेदेवा) अनेक विद्वान उसके घर आते हैं और आकर उसके घर पर बसते है यही उपवास है। उप नाम समीपका है और वास बसन या रहने को कहते है। विद्वान जो गृहस्थ के घर में आकर रहते हैं इसी को उपवास कहते हैं। उपवास के अर्थ भूखा रहना क्यों हुआ इसके लिये इसी ब्राह्मण के आठवे खण्डको देखें जो इस प्रकार है —

तन्नवेवानवक्लृप्तम्। यो मनुष्येष्वनश्नत्सु पूर्वोऽश्नीयादथ किम यो देवेष्वनश्नत्सु पूर्वोऽश्नीयत्त स्मादुनैवाऽश्नीयात् ॥१।१।१।८

अर्थात् यह अनुचित है कि कोई मनुष्य घर म आवे तो बिना उसके खिलाये घर वाला भोजन करले और फिर जब विद्वान आवें तो यह कैसे हो सकता है कि उनके खिलाये बिना गृहस्थ भोजन कर ले इसलिये उस गृहस्थ को पहले भोजन नहीं करना चाहिए।

अब इन दोनों वाक्यों पर विचार कर लेवें कि विद्वानो का घर आकर रहना उप (समीप) वास और उनकी सेवा सुश्रुषा के कारण गृहस्थ का भोजन न करना —इस प्रकार उपवास कारण भोजन न करने का हुआ—होते होते उपवास के अर्थ ही भोजन न करने के होगये विद्वानों को बुला कर उनकी सेवा सुश्रुषा तो जाती रही भूखा रहना बाक़ी रह गया।

मौन—याज्ञवल्क्य ने कौषानकेय कहोल नाम वाले विद्वान को उत्तर देते हुए उत्तर के अंत मे कहा था —

तस्माद् ब्राह्मण पाण्डित्य निर्विद्य बाल्येन तिष्ठासेद्बाल्य च पाण्डित्य च निर्विद्याथ मुनिरमौन च निर्विद्याऽथ ब्राह्मण।

(बृह० उप ३।५।१)

अर्थात्—इसलिये ब्राह्मण पाण्डित्य=शास्त्र ज्ञान को पूर्णतया प्राप्त करके बल के ऊपर ठहरने की इच्छा करे। इसप्रकार ज्ञान उपलब्ध और बल

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला—

विवाह-मर्यादा

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज]

विवाह प्रत्येक देश और वर्णमे होता है। विवाह सर्व तत्र सिद्धांत सा है। इसमे रीति नीति प्राय भिन्न २ हैं। विवाह किसी रीति वा पद्धति से हो मुझे इसपर कोई विचार नहीं करना है। इसके अतिरिक्त दूसरी बात यह है विवाह वशकी दृष्टिसे समीप हो वा दूर हो, इस विषय मे जो वेद को नहीं मानते हैं वह क्या कहते है इस पर भी इस लेख मे विचार न होगा। इस लेख मे वैदिकधर्मियों के व्यवहार और स्मृति ग्रथो का आधार करके विचार किया जायगा। क्योंकि इस समय भारतवर्ष मे वश दूरी के सम्बन्ध मे एक व्यवहार नहीं है और स्मृतियों मे भी एक ही प्रकार का विधान नहीं है उनका उल्लख करके इन सब के आधार पर जो मेरी सम्मति है अन्त मे मै वह भी लिख दूगा।

इस लखमे गोत्र प्रवर (आर्ष गोत्र) का स्मृतिग्रथो मे पाठ मिलता है इसलिए प्रथम उनका लिख देना उचित होगा ताकि पाठको को समझने मे कठिनाई न हो। इस विषय मे सब से विस्तृत लिखने वाली पुस्तक गोत्र प्रवर-निबन्ध-कदम्ब है। यदि कोई विशेष देखना चाहे तो उसे देखे। फिर निर्णयसिन्धु और धर्मसिन्धु मे भी लिखा गया है. पाठक चाहे तो वहाँ ही देखलें।

गोत्र ८ हैं और प्रवर ४९ है। फिर इनके अनेक भेद हैं। उन भेदो का इस लख मे लिखना असभव है अत उन्हे छोड़कर सामान्य ही लिखा जायगा। 'जमदग्निभरद्वाजो विश्वामित्रात्रिगौतमा। वसिष्ठ काश्यपागस्त्या मुनयो गोत्रकारिण ॥ स्मृतितत्व, उद्वाहतत्व। यही नाम निर्णयसिन्धु मे लिखे हैं। यथा विश्वा मित्र। जमदग्नि। भरद्वाज। गौतम। अत्रि। वसिष्ठ। कश्यप। अगस्त्य। यह ८ गोत्र और ४९ प्रवर हैं। ऊनपचाशदेवेषा प्रवरा ऋषि दर्शनात्। उनके कुछ भेद धर्मसिन्धु में हैं। सप्त भृगव। सप्तदशाङ्गिरस। चत्वारोऽत्रय। दश विश्वामित्र.। त्रय कश्यपा। चत्वारो वसिष्ठा।

प्राप्त करके तब वह मुनि (मननशील) होवे तब मौन (मुनेर्भावो मौनम्) अर्थात् मनन वृत्ति और अमौन = क्रियाशक्ति को प्राप्त करने से वह सच्चा) ब्राह्मण होता है। उपनिषद् के इस वाक्य से स्पष्ट है कि मौन मनन वृत्ति को कहते हैं और यह भी स्पष्ट ही है कि जब वह मनन करेगा तब चुप भी रहेगा। इस प्रकार मनन वृत्ति को गायब करके लोगो ने मौन के अर्थ चुप रहना बना रक्खे हैं। बिना जप और मनन के चुप रहना निरर्थक है और इस प्रकार का चुप रहना कि इशारो से या लिख लिख कर बात करना यह तो सर्वथा ढोंग ही है।

चत्वारोऽगम्या । इनके आगे नाम भी दिये हैं और उनके जो आगे भेद हैं उनपर भी कुछ विचार किया है । प्रवर और आर्ष गोत्र पर्याय हैं यह बात मनु पर टीका लिखते समय मेधातिथि लिखते हैं "आर्ष प्रवर इत्येकोऽर्थ" यही विद्वान विवाह प्रकरण मे एक और बात लिखता है "अन्येतु गोत्र व शमाहु । । तत्रावध्यपेक्षा यावदेतज्ज्ञायते वयमेकव शा इति तावदविवाह ।" इसका भाव यह है कई विवाह में गोत्र व श को ही मानते हैं उनका कथन है इसमे अवधि की कोई अपेक्षा नहीं है अर्थात् सात वा पाच पीढो की भी अपेक्षा नही है जहाँ तक ज्ञात हो अमुक हमारे व श का है वहा तक विवाह न करें । जहा ऐसा ज्ञान न हो वहा विवाह कर लेना चाहिए। इसी टीकाकार ने यह भी लिखा है यदि गोत्र की विस्मृति हो जाय तो सात पीढी छोड कर विवाह करलेना चाहिए। मेधातिथिने ऐसा भी लिखा है—एक गोत्रमे विवाह हो सकता है परन्तु एक प्रवरमें नहीं होना चाहिए।

इसी श्लोक की टीका मे सर्वज्ञनारायण जी लिखते हैं "जन्मनाम्नोरविज्ञानादु-द्वहेदविशकित" इत्यभिधानात् व्यास" अर्थात् सबन्ध हो सकता है जबकि जन्म नामादि का ज्ञान न हो। जैसा कि मेधातिथिजी ने लिखा था 'जब तक ज्ञान हो हम एक व श के है विवाह न करे फिर करले' वैसा ही यह है।

गोत्र प्रवर पर कुछ थोड़ा सा लिखकर अब मैं स्मृतियों के पाठ लिखता हूँ और सामन्य से उनके अर्थ लिखे जायेंगे पश्चात उनपर विचार होगा।

(१) उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम् ।४।
असपिण्डा च यामातुरसगोत्रा च या पितु ।५।
मनु अध्याय ३ ।

द्विज सवर्ण, लक्षणान्वित भार्या विवाहे । वह माता की असपिण्डा और पिता की असगोत्रा हो। इस पर कई टीकाकारो ने असपिण्डा के साथ जो च है उसके अर्थ असगोत्रा और असगोत्रा के साथ जो च है उसके अर्थ असपिण्डा किये हैं। अर्थात् माता की असपिण्डा और असगोत्रा तथा पिता की असगोत्रा और असपिण्डा हो। सपिण्ड छ पीढ़ी तक होता है पश्चात् असपिण्ड वा समानोदक कहते हैं। यथा। "सपिण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते" अर्थात् सपिण्डता सातवीं पीढी में हट जाती है और सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि का लेख है जो कन्या माता के कुल की छ पीढ़ी में न हो। निर्णयसिन्धु में एक पाठ है। अविभक्तधनास्त्वेते सपिण्डा परिकीर्तिता । जब तक धन विभाग न किया जाय तब तक ही सपिण्डता होती है।

(२) अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्यां स्त्रियमुद्वहेत् ।
अनन्यपूर्विका कान्तामसपिण्डा यवीयसीम् ।५२
अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ।
पचमात्सप्तमादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा । ५३ ।
याज्ञवल्क्य (आचारा०)

अखडित ब्रह्मचर्य वाला पुरुष, सुन्दर लक्षण युक्त, जिसका विवाह पूर्व किसी से न हुआ हो, असपिण्डा, शुभ, अपने से छोटी आयु वाली, रोगरहित, भ्राता वाली, जो अपने प्रवर की न हो ऐसी स्त्री से विवाह करे।

अन्त में लिखा है जो माता की पाच और

पिता की सात पीढ़ी मे न हो

इससे प्रतीत होता है याज्ञवल्क्य जी सपिण्डता पाच तक ही मानते थे। इस श्लोकमे पिताकी सात पीढ़ी और प्रवरकी न हो यह दो बात है मिताक्षरा टीकाकार को यह बात खटकी उसने इसका समाधान किया है सात और पाच पीढ़ी शूद्र के लिए है और 'असपिण्डाम् तथा असमानार्षगोत्रजाम्' द्विज के लिए है। क्योंकि शूद्र को गोत्र प्राप्त नहीं है। वहा यह भी लिखा है कि गोत्र क्षत्रिय और वैश्य को भी प्राप्त नहीं है उसका समाधान किया है उनको पुरोहित गोत्र प्राप्त होता है। पाठक इस बात का ध्यान रक्खें

(३) सवर्णामसमानार्षाममातृपितृगोत्रजाम्।

व्यास। २। २

जो कन्या सवर्णा हो और माता, पिता के गोत्र और प्रवर का न हो।

(४) असमानप्रवरै विवाह। १। ऊर्ध्वं सप्तमात्पितृबन्धुभ्यो बीजिनश्च मातृबन्धुभ्य पञ्चमात् ।२।। गोतम धर्मसूत्र प्र० २ अ० ४

जो अपने प्रवर का न हो उससे विवाह करे पिता की सात और माता की पाच पीढ़ी मे न हो। 'बीजिनश्च' के अर्थ नियुक्त पति की सात पीढ़ी मे न हो।

(५) विन्देत विधिवद्भार्यामसमानार्षगोत्रजाम्।
मातृत पञ्चमीं चापि पितृतस्त्वथ सप्तमीम्।

शख ४। १।।

इसकी टीका मे पाठ मे है मै उसी को लिखना उचित समझता हूँ। जो अपने गोत्र और प्रवर की न हो ऐसी स्त्री को वेदोक्त विधि से विवाहे। अथवा जो अपनी माता के कुल मे पाचवी पीढ़ी का हो और पिता के कुल मे सातवी पीढ़ी की हो उसे विवाहे।

(६) असमानार्षगोत्राहि कन्या भ्रातृका शुभाम्।

हारीत ४। १।

जिसके प्रवर और गोत्र अपने से भिन्न हो और कोई भाई जिसका हो।

(७) असमानार्षेयीं कन्या वरयेत्। पञ्च मातृत परिहरेत्। सप्त पितृत। त्रीन्मातृत पञ्च पितृतो वा। स्मृतितत्व, पैठानसी।

जो अपने प्रवर की न हो उससे विवाह करे। पाच माता से और सात पिता से जो कन्या हो उससे विवाह न करे अथवा माता से तीन पीढ़ी और पिता से पाच पीढ़ी हो।

यहा तीन और पाच वाला पाठ याज्ञवल्क्य टीका मे पैठीनसी के नाम से लिखा गया है।

(८) आसप्तमात्पञ्चमाच्च बन्धुभ्य पितृमातृत।
अविवाह्या सगोत्रा च समानप्रवरा तथा।

स्मृतितत्व (नारद)

जो कन्या अपने गोत्र और प्रवर की हो वह विवाह के योग्य नही है जो सात और पाच पीढ़ी पिता माता से हो वह भी न विवाही जाय।

(९) ऊर्ध्वं सप्तमात्पितबन्धुभ्यो मातृबन्धुभ्यः पञ्चमात्। गोतम। ४। २।।

(१०) पचमी मातृबन्धुभ्य सप्तमीं पितृबन्धुभ्य।

वशिष्ठ ८। २।।

माता से पाचवी और पिता से सातवी से विवाह करे।

(११) पञ्चमी मातृपक्षाच्च पितृपक्षाच्च सप्तमीम्।

गृहस्थ उद्वहेत्कन्या न्यायेन विधिना नृप।
वि० पुराण निर्णय सिंधु।

माता से पांचवी और पितृ पक्ष से सातवीं के सात विवाह कर ले।

(१२) सप्तमीं च तथा षष्ठीं पञ्चमा च तथैव च।
एवमुद्वाहयेत्कन्या न दोष शाकटायन।
निर्णयसिंधु।

सातवीं, षष्ठी तथा पांचवी के विवाह में शाकटायन दोष नहीं मानता है।

(१३) उद्वहेत्सप्तमादूर्ध्वं तदभावेतु सप्तमम्।
पञ्चमीं तदभावेतु पितृपक्षेऽप्यय विधि॥
निर्णयसिन्धु।

सात पीढी से आगे विवाह करे यदि ऐसी न मिलता मातवी स कर ले, यदि ऐसी न प्राप्त हाता पाँचवा पीढी म कर ले इसी प्रकार पिता पक्ष में विचार कर लवे।

(१४) पञ्चमात्सप्तमाच्चार्वागपि त्रिगोत्रातरित विवाह
असम्बद्धा भवेन्मातु पिण्डेनैवोदकेन वा।
साविवाह्या द्विजातीना त्रिगोत्रातरिता च या।
सम्बन्ध विवेक।

पांचवी और सातवीं से पहले भी विवाह हो हो सकता है। तीन गोत्र से आगे माता के पिण्ड में निषेध है उदक में नहीं। द्विज को तीन गोत्र के भीतर विवाह न करना चाहिए यहाँ तीन गोत्र तीन वश ही है।

(१५) मातु सपिण्डा यत्नेन वर्जनीया द्विजातिभि।
व्यास (स्मृतितत्व)

द्विजो को माता की सपिण्डा से विवाह न करना चाहिए।

(१६) अतो द्विज समावृत्त सवर्णां स्त्रियमुद्वहेत्।
कुले महति सभूता लक्षणैस्तु समन्वितम्।
सवर्त -३।

द्विज समावर्तन के पश्चात सवर्णा अच्छे लक्षण वाली और बडे कुल में उत्पन्न स्त्री से विवाह करे।

(१७) कुले महति सभूता सवर्णां लक्षणान्विताम्।
विष्णु २६।

बड़े कुल मे उत्पन्न, सवर्णा, सुन्दर लक्षण वाली कन्यास विवाह करे। इनके अतिरिक्त निर्णय सिन्धु और धर्म्म सिन्धु में मातुल कन्या पर भी विचार किया है क्योंकि दक्षिण में मातुल कन्या से विवाह का प्रथा है वहाँ इस समय भी होता है और कहीं कहीं तो भग्नी कन्या से विवाह होता है इसलिए मै एक श्लोक और लिखता हू जो इसी बात की सिद्धि मे है।

(१८) यस्तु देशानुरुपेण कुलमार्गेण चोद्वहेत्।
नित्य स व्यवहार्य स्याद्वेदाच्चैतत्प्रदृश्यते।
निर्णयसिन्धु।

जो देश और कुल का आचार है उनके अनुसार यदि कोई विवाह करे तो वह व्यवहार्य ही है अर्थात् उसका विरादरी से पृथक नहीं करना चाहिए।

अब प्रमाणों की समाप्ति पर इनकी समीक्षा की जाती है।

समीक्षा—

ऊपर लिखित पाठों में मनु, याज्ञवल्क्य, व्यास, गोतम-धर्मसूत्र, शख, हारित, पैठोनसी, नारद इनमे गोत्र में विवाह का निषेध है इनमें से भी

मनु ने तो गोत्र का निषेध असमगोत्रा शब्दसे किया है, अन्य स्मृतिकारों ने आर्ष गोत्र वा प्रवर शब्द से किया है। आर्ष गोत्र वा प्रवर एक ही है यथा 'आर्ष प्रवर इत्येकोऽर्थ' से सिद्ध है और एक गोत्र में कई प्रवर होते हैं यह मैने इस लेख के आरम्भमें ही लिख दिया है इसलिये गोत्र निषेधसे प्रवर निषेध स्वत प्राप्त है परन्तु ८ जो मुख्य गोत्र हैं उनकी ओर केवल मनु ने ध्यान दिया शेष स्मृतिकार उसे छोड़कर प्रवर को ही लिखना उचित समझते हैं इससे प्रतीत होता है उन स्मृतियों के समय में एक गोत्र में विवाह हो सकता था वा होता था परन्तु प्रवर में न होता था। इस समय उन आठ गोत्रों के विस्मृति वाले पर्याप्त हैं इसलिए उनकी *कोई व्यवस्था करनी होगी।*

दूसरे ऊपरलिखित पाठों में याज्ञवल्क्य, गोतम धर्मसूत्र,शख,पैठीनसी इन चारमे जहा प्रवरका निषेध किया है वहाँ सातवीं, पाचवी पीढी का उल्लख भी साथ ही किया है इसलिए इनका लिखना विशेष चिन्तनीय है। यह पक्ष मिताक्षरा के लेखकने उठाया भी है परन्तु उसका समाधान न्यून से न्यून मुझे तो सतुष्ट नहीं करता है। वह लिखता है 'वश का पाठ शूद्र के लिए है और गोत्र का पाठ द्विजों के लिये है।' गोत्र विशेषरूप से ब्राह्मणों का ही होता है। गोत्रप्रवरनिबधकदम्ब में यह बात विस्तार से मिलती है वह क्षत्रिय और वैश्यको अपना गोत्र न *मानकर पुरोहित के गोत्र मानने का विधान करता* है यदि इसे मान लिया जाय तो वर्तमान समय मे पुरोहित के परिवर्तन से यजमान के गोत्र में परिवर्तन होगा। उस अवस्था में क्या यजमान के पुत्र का विवाह अपने पहले गोत्र मे हो सकेगा यदि ऐसा माने तो दृढ़ गोत्रवादियों की क्या व्यवस्था होगी। सत्यार्थप्रकाश में ऋषि ने वश समीप के विवाह का निषेध किया है और आर्यों में प्राय समीप वश में विवाह वर्जित माना जाता है इससे प्रतीत होता है यह स्मृतिकार गोत्र वा प्रवर वश के अर्थो मे ही मानते थे जैसा कि मेधातिथि ने लिखा है 'अन्ये तु गोत्र वशमाहु।' कई गोत्र वश को ही कहते हैं। यदि ऐसा न होता तो यह प्रवर के साथ २ वश का उल्लेख क्यों करते। पुन प्रश्न होगाकि इन्होंने प्रवर क्यों लिखा वश ही लिखा हुआ पर्याप्त था। मै यही मानता हू, वशका विचार ही करना चाहिए। यदि कोई एक ही स्थान में रहते हों वहाँ प्रवर का विचार करते क्योंकि वहाँ पीढी दूर होने पर भी समप अर्थात एक ग्राम मे वास होने से समीप का व्यवहार होता है अत वहाँ प्रवर छोड़ दे अन्यथा पिता की सात और माता की पाँच पीढ़ी छोड़कर विवाह कर लेना चाहिए यह इन स्मृतिकारो का मत प्रतीत होता है।

इसके आगे गोतम वशिष्ठ, विष्णुपुराण (निर्णय सिंधु पिता की सात पीढ़ी और माता की पाच पीढ़ी छोड़ कर विवाह करने की आज्ञा देते है और शाकटायन (नि० सि०) सख्या १३ निर्णय सिन्धु पैठीनसी। सात पाच स समीप पीढी में भी विवाह मानता है और सवत तथा विष्णु वश *का भी उल्लेख कहते हैं* वह उत्तम व श और सु दर कन्या हो लिखते हैं। इन स्मृतियोंको छोड़कर यदि वर्तमान समय के व्यवहार को देखा जाय तो पञ्जाब मे गोत्र को कोई पूछता ही नहीं है वहाँ कुछ उप

जाति वा उपगोत्र प्रचलित है उनका विचार करके विवाह होते हैं, उदाहरण के लिए क्षत्रियों में खन्ना, कपूर प्रसिद्ध हैं इनक विषय में दन्तकथा यह है— यह दोनो भ्राता थे। कपूरचन्द की सतान कपूर हो हो गई और खान (कान्ह) चन्द को खन्ना होगई अब यही गोत्र के नाम से पुकारे जाते हैं। इसी प्रकार ब्राह्मणोंमें पाठक शारदा हैं। यह मुख्य गोत्र नही हैं, ऐसे ही वैश्यों मे मित्थल, वासलहैंयह सब इनको छोड़ते हैं इसके अतिरिक्त आज कल ईसाई वा मुसलमान आय होजाते है जैसे म० धर्मवीर जी प्रथम सय्यद थे उनके पुत्र पुत्री के विवाह समय किस गोत्र का विचार किया जाय। ऐसे ही दक्षिण में मातुल कन्या और भगिनी कन्या से भी विवाह हो जाता है इनके समाधान के लिये तो स्मृतिकारो ने—'यस्तु देशानुरूपेण कुलमार्गेण चोद्वहेत।

नित्य स व्यवहार्य स्यात्। लिख दिया इस लिये जबकि गोत्र किसी २ को स्मरण है अधिक विस्मृति वाले ही हैं तब मेधातिथि के लेख को मानकर सात और पाच पीढा का विचार करके विवाह करना होगा और सर्व स्मृतियो का ध्यान से देखें तो प्रतीत भी यही होता है। वह पीढी पर बल देते हैं और चिकित्साशास्त्र की दृष्टि स भी रुधिर का सम्बन्ध यहाँ तक ही है आगे कुछ नही है, और सत्यार्थप्रकाश में ऋषि ने लिखा भो है—

'जैसे पानीमे पानी मिलानेसे विलक्षण गुण नहीं होता वैसे एक गोत्र पितृ वा मातृ कुल मं विवाह होने में धातुओं के अदल बदल न होने से उन्नति नहीं होता। जहाँ ऋषि ने गोत्र के साथ २ पितृ वा मातृ कुल भी लिखा है अत कुल का विचार मुख्य है और गोत्र का गौण है अथवा गात्र भी कुल वाचक इस प्रकरण में है।"

* * *

शिक्षा जिसकी वर्तमान में भारतवर्ष को आवश्यकता है

(लेखक—एक अनुभवी पत्रकार)

कहा जाता है कि शिक्षा बसवीं शताब्दी का सिगनल है। शिक्षा की पुकार हर जगह है। और समस्त राष्ट्रों ने अपने २ देशो मे निरक्षरताके निवारण और ज्ञान के प्रसार के लिए शिक्षा कार्य न्यूनाधिक रूप में ठीक ठक रीति से प्रारम्भ किया हुआ है। वर्तमान शिक्षा आन्दोलनो मे शिक्षा के सिद्धान्त और अमल मे लाने के उनके उपाय बहुत से हैं और भिन्न भिन्न है। उनकी दृष्टि मे शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को जीवन के लिए तय्यार करना और जीवन के व्यापार को उत्तम रीति से सम्पादन करने के योग्य उसे बना देना है। उत्तमता वा जीवन का तय्यारी का अर्थ लग भग ६० प्रतिशतक लोग किसी को आजीविका कमाने के मार्ग पर डाल देना समझते है। आजीविका कमाना विस्तृत दृष्टिकोण के बजाय जो शिक्षा का सच्चा उद्देश्य होना चाहिए एक सकुचित और स्वार्थ पूर्ण दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति को किसी व्यापार के योग्य बना देना है जिसके द्वारा वह जीवन में धन, पद और प्रभुता प्राप्त कर सके। इसलिए जब किसी व्यक्ति के शिक्षण का प्रश्न विचाराधीन होता है तो हम शिक्षा के मनुष्य बनाने वाले अङ्ग की उपेक्षा कर देते है। बहुत सी अवस्थाओ म इस बात पर कि मनुष्य मे कम धन काल्पनिक पद और चलायमान प्रभुता की ही आशा की जा सकती है, अनुचित ध्यान दे दिया जाता है। व्यक्ति और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य हानिकारक है, यह उद्देश्य बड़ा अन्धा है और सासारिक असफलता के विरुद्ध यह उद्देश्य कोई सरक्षण भी नहीं है। उस चिकने मार्गके विरुद्ध जिसपर मनुष्य का सत्य की अपनी यात्रा पर चलना होता है, सरक्षण की तो बात ही क्या है? शिक्षा प्राप्त करना और जसे तैसे अपने गुजारे का प्रबन्ध करना एक चीज है परन्तु यह देखना कि वह शिक्षा किस प्रकार जीवन की वास्तविक तय्यारी करा सकती है कहीं ज्यादा महत्व पूर्ण चीज है। यदि कोई व्यक्ति किसी शिक्षा से विशेषताओं मे दीक्षित नहीं होता है तो वह शिक्षा, शिक्षा कहे जाने योग्य नहीं है। वर्तमान शिक्षाप्रणाली का सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि इसने विशेषताओ मे ऐसी गड़बड़ पैदा करदी है कि साधारण कोटि का शिक्षित व्यक्ति जीवन के मुख्य विषय मे निर्णय की भयकर भूले कर बैठता है। श्रीयुत डा० जे० यच० स्नोडन (D J H Snodden) कहते है कि—

"अपने पैरो के नीचे की धूल को देखना और मोतियों से अलकृत ऊपर के गुम्बद को न देखना, इस छोटे से ससार को देखना और किसी दूसरे ससार का न देखना निर्णय की सबसे बड़ी भूल है जो मानवी आत्मा कर सकती

है । शिक्षा बड़ी निराशाजनक असफलता है और यह अच्छा होता कि हम इसका कभी प्रकाश न पाते यदि यह हमें उन शाश्वत विशेषताओं के देखने और पसन्द करने में समर्थ नहीं बनाती है जो प्लेटो के शब्दों में शरीर और आत्माके समस्त सौन्दर्य और समस्त पूर्णता में जिनके वे योग्य हैं विकसित होता है ।

वर्तमान शिक्षा ऐसा बहुत सा ज्ञान प्रदान कर देती है जिसकी मनुष्य को उसके भावी जीवन क्षेत्र में जरूरत पड़ सकती है । स्त्री पुरुषों को शारीरिक और बौद्धिक गुणों के वैज्ञानिक विकाश के लिए यह शिक्षा अवसर भी प्रदान कर देती है। परन्तु नैतिक और आध्यात्मिक गुणों की प्राप्ति के लिए जो मनुष्य के सर्वतोमुखी विकाश के लिए अत्यावश्यक है, इस शिक्षा ने मनुष्य को समर्थ नहीं बनाया है। यही कारण है जिसकी वजह से वर्तमान स्त्री पुरुषों के, जिन्होंने बगैर नैतिक और आध्यात्मिक दीक्षा के बौद्धिक शिक्षा प्राप्त की है, मस्तिष्क में बहुत सी अवस्थाओं में हम भयकर मुर्दनी पाते हैं। वर्तमान शिक्षाप्रणाली में मानव जीवन की अत्यन्त आवश्यक समस्याओं की उपेक्षा की गई है ।

लगभग एक मास हुआ, एक बंगाली सज्जन ने 'अमृत बाजार पत्रिका' में प्रकाशित एक पत्र में भारतीय विद्यार्थियों की ओर संकेत करते हुए कलकत्ता यूनिवर्सिटी के द्वारा एक विद्यार्थी-आन्दोलन चलाए जाने पर बल दिया था—

"ऐसा आन्दोलन जो भावना और क्रिया में देश के इतिहास में अभूतपूर्व हो। आदर्शों की अवहेलना और उसके फलस्वरूप आत्मा के ह्रास और मस्तिष्क की गड़बड़ ने देश में पैर जमा दिए हैं।" वर्तमान शिक्षा ने अपने सम्पूर्ण चमकीले धरातल को लिए हुए भारत के शिक्षित स्त्री-पुरुषों में जो अवस्थाएँ पैदा कर दी हैं उन पर भारत के शुभचिन्तक दुखी हुए बगैर नहीं रह सकते हैं। वर्तमान अवस्थाएँ हमें यूनानी युग का स्मरण कराती हैं जब मिथ्या हेतुवादी लोगों Sophists के जीवन की कोई फिलासफी न थी और वे अपने शिष्यों को शिक्षा दिया करते थे कि किस प्रकार वह योग्यता आ सकती है जिससे जीवन में प्रभुता और समृद्धि की प्राप्ति हो। सौफिस्ट लोग कानूनी युद्ध में बड़े पटु थे। वे इस कला को पैसा देनेवालों को सिखाया करते थे। उन्हें भी सिखाया करते थे जो अदालतों में प्रभाव कायम रखने के लिए सीखना चाहते थे। वाग् युद्ध का उनमें कौशल था। और सही या गलत किसी भी बात का वे खण्डन कर सकते थे। यह हद थी परिश्रमपूर्ण और अव्यवस्थित शिक्षण के द्वारा जिस तक पहुंचाने के लिए अपने शिष्यों को वे शिक्षा दिया करते थे। सुकरात मैदान में आये और उन्होंने न केवल बातों से वरन अमल से आत्म-ज्ञान की विशेषता का उपदेश किया। ज्ञान-प्राप्ति और अच्छाई जीवन की उच्चतम योग्यता है, इस बात पर उन्होंने बल दिया। उन्होंने लोगों को शिक्षा दी कि बुद्धिमत्ता को तर जीह दो और व्यक्तित्व और चरित्र को बनाओ। आचार और विचार के गलत तरीकों के विरुद्ध उनका समस्त जीवन एक विद्रोह था।

इसके बाद प्लेटो ने घोषणा की कि जो चीज गुणों की अभिवृद्धि के लिए हितकर न हो उस

शिक्षा में स्थान प्राप्त नहीं होने देना चाहिए। उनके मतानुसार उच्च शिक्षण का उद्देश्य आत्मा को ऐन्द्रियजगत के अध्ययन पूर्वक उसके वास्तविक अस्तित्व के मनन की ओर ले जाना है।"

भारतवर्ष ने अपने अतीत काल में अध्ययन और ज्ञान, ऐहिक और धार्मिक शिक्षा को इस लिए मिलाने का यत्न किया था जिससे पुरुष और स्त्रियां जीवन के परीक्षणों और मुसीबतोंके सहने,और उत्तम जीवन बनाने के लिए पूर्णतया तय्यार हो सके। क्या वर्तमान भारतवर्ष शिक्षा के क्रियात्मक हल के लिए अपने प्राचीन इतिहास के पृष्ठों को नहीं खोल सकता है ?

प्राचीन भारत की शिक्षा का मुख्य असूल मनुष्य की आध्यात्मिक प्रवृत्ति की मान्यता पर आश्रित था। यद्यपि अध्ययनकी अपेक्षा अनुशासन बहुत महत्वशाली समझा जाता था, परन्तु यह असूल जीवन के ऐहिक पहलू की उपेक्षा नहीं करता था। शरीर के नियन्त्रण से बुद्धिके विकाश से आत्मा को अविद्यासे हटाकर विद्या की ओर अग्रसर करने से मानवी क्षमता के सर्वतोमुख विकास में शिक्षा सन्निहित थी। विद्यार्थियों को घर और खेत में काम करना, अपना भोजन बनाना, ईंधन लाना और परिवार के पशुओं का पालन करना होता था।

उन्हें सफ़ाई, पवित्रता और उत्तम आचार-व्यवहार के नियमों का पालन और दैनिक उपासना करनी होती थी। उन्हें न केवल अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए वरन् देश में स्वास्थ्य कर वातावरण पैदा करने के लिए स्वास्थ्य के नियमों का भी पालन करना होता था। समाज के हित के लिए उन्हें कतिपय सामाजिक नियमों का भी पालन करना होता था। अपनी शक्ति को शारीरिक और मानसिक कार्य्यों, आध्यात्मिक व्यायाम और गुरुजनों की व्यक्तिगत सेवा में प्रेरित कर देने से युवावस्था के बढ़ते हुए विकारों से मुक्त होने की उन्हें शिक्षा दी जाती थी। इन्द्रियों के विषयों से किस प्रकार ध्यान हटाया और मस्तिष्क पर काबू रक्खा जाता है यह भी सिखाया जाता था।

यह कल्पना करना गलत है कि प्राचीन काल में अध्यापक लोग केवल वेदों का ज्ञान प्रदान किया करते थे और दूसरी विद्याओं की उपेक्षा किया करते थे। वे समाजशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, विज्ञान इत्यादि की शिक्षा दिया करते थे। यह सोचना भी गलत है कि वे लोग क्रियात्मक शिक्षा की अवहेलना पूर्वक सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान किया करते थे। जिनकी युद्ध में लड़ने, खेती, व्यापार, कलाकौशल की ओर प्रवृत्ति होती थी उन्हें उन्हीं विषयों की शिक्षा दी जाती थी। वर्तमान समय में भी यह सब शिक्षायें विद्यार्थियों को दी जाती हैं। इस अन्तर के साथ कि प्राचीन काल में अध्यापकों और विद्यार्थियों के सम्बन्ध आध्यात्मिक थे और आज कल न्यूनाधिक रूप में व्यापारिक हैं। किसी विज्ञान के शिक्षण का प्रभाव वह चीज़ थी जो किसी विज्ञान विशेष के विद्यार्थी के ज्ञान से कहीं दूर विद्यार्थी में गुणों की वृद्धि करने वाली थी। अध्यापक का कर्त्तव्य था कि वह अपने शिष्य को शिक्षा दे, अपने घर में उसकी रक्षा करे और पुत्रवत् उससे व्यवहार करे।

बौद्धिक विकाश और दुनियादारी की शिक्षा व्यर्थ समझी जाती थी यदि वह व्यक्तित्व और चरित्र के समानान्तर विकाश की ओर मनुष्य को नहीं ले जाती थी। वे चरित्र पर, जिसका समाज पर शासन होना

चाहिए, बहुत बल देते थे। क्योंकि महाभारत में कहा गया है, "वे परिवार जिनमें धन हो, पशु हों, और काफ़ी सन्तान हो सम्मानित नहीं समझे जाते हैं यदि उनमें अच्छे आचार व्यवहारों की कमी हो। विपरीत इसके वे परिवार जिनमे धन का अभाव हो परन्तु आचार व्यवहार के लिए प्रसिद्ध हों सम्मानित समझे जाते हैं। चाहे उच्च हो या नीच हो, वह व्यक्ति जो शिष्ट व्यवहार के नियमों का उल्लङ्घन न करता हो, जिसकी निगाह गुणों पर हो, जो नम्रता और शालीनता से अलकृत हो, उच्च व श के सहस्त्रों व्यक्तियों से श्रेष्ठ होता है।" न मित्र, न धन, न उच्च व श, न शास्त्रीय ज्ञान, न मत्र, और न उत्साह किसी व्यक्ति को परलोक के कष्ट से मुक्त करने मे समर्थ हो सकते है। आचरण ही है जिसके द्वारा कोई वहा आनन्द प्राप्त कर सकता है।" जिस व्यक्ति के पास पुस्तकों के विषयों का वास्तविक ज्ञान होता है वह उस व्यक्ति से बडा होता है जो केवल उन पुस्तकोंको याद रखता है और जो उस ज्ञान के अनुसार व्यवहार करता है वह उस व्यक्ति की अपेक्षा ऊचा होत है जो केवल पुस्तको का ज्ञान प्राप्त किए होता है।"

इस प्रकार हम देखते है कि प्राचीन काल मे शब्द के वास्तविक अर्थों मे शिक्षा मनुष्य बनाने वाली थी और वह शिक्षा प्रत्येक प्रकार से जीवन की तय्यारी थी। शिक्षा का आध्यात्मिक आदर्श प्रमुख बनाया गया था और दुनियादारी का पहलू इस आदर्श के आधीन रक्खा गया था। शिक्षा की इस प्रकार के स्कीम व्यापक हित और सामाजिक आवश्यकता की योग की पूर्ति कर सकती थी। रेवरैंड एफ़, ई की (Rev F E. keay) अपनी 'प्राचीन भारतीय शिक्षा' नामक पुस्तक मे लिखते हैं—

"यदि शिक्षा की परिभाषा जीवन की तय्यारी या पूर्ण जीवन बतलाई जाय तो हम कह सकते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षक इस सिद्धान्त को पूर्णतया स्वीकार कर लेते परन्तु वह सिद्धान्त न केवल इस जीवन की तय्यारी को ही शामिल करता वरन् भविष्य जीवन की तैयारी को भी शामिल करता। इन दोनों उद्देश्यों में उचित परिमाण मे दृढता लाने का कार्य्य शिक्षकों के लिये सदैव कठिन कार्य्य रहा है। यदि यह कार्य्य पूर्णतया पूरा कर दिया जाय तो शिक्षा की बहुत सी समस्याएँ हल हो जायें। युरोप में मध्य युग मे परलोक की तय्यारी पर बल दिया जाता था। वर्तमान युरोप शिक्षा के इस अ ग की प्राय अनुचित अवहेलना कर देता है। हिन्दुस्तान को ऐसी ही समस्या और उस समस्या के हल मे उसे भी युरोप की कठिनाइयों से मिलती जुलती कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। शिक्षा के द्वारा नवयुवक ब्राह्मण पुरोहित तथा शिक्षक के रूप मे अपने क्रियात्मक कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए तय्यार किया जाता था परन्तु परलोक के लिए अपने को तय्यार करने की जरूरत उसकी शिक्षा का अ ग थी। यही बात क्षत्रियो और वैश्यों के सम्बन्ध मे कही जा सकती है जिन्हे जीवन में क्रियात्मक काम के लिए अपने को न केवल तय्यार करना हा होता था वरन् वेदों का और धर्म्मका अध्ययन भी करना होता था।"

प्राचीन भारत के ऋषियो ने "आश्रम व्यवस्था जीवन के क्रियात्मक कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने के लिए

नही निर्धारित की थी। जो विद्यार्थी ससार का त्याग करने के योग्य नही होते थे वे गृहस्थ मे प्रविष्ट हो जाते थे तब इसके बाद वे वानप्रस्था होते थे और उसके बाद वह सन्यासी बन जाया करते थे। इस प्रकार समाज के लोगो के अपवादो को छोड कर क्रमश विकास के द्वारा सत्य मार्ग का पथिक बनाने की शिक्षा दी जाती थी।

प्राचान भारत मे शिक्षक का पद बडा जिम्मेवारी का पद था और अध्ययन बडा पवित्र व्यवसाय समझा जाता था। अध्यापको के अपन विद्यार्थियो के प्रति व्यवहार के हवाले से मनु कहते ह —

"प्राणियो को कष्ट दिए बिना उनके हित की शिक्षा दी जानी चाहिए और जो अध्यापक पवित्र नियम का पालन करना चाहता हो उसे मधुर और कोमल वाणी का प्रयाग करना चाहिए। विचार और क्रिया से उसे दूसरो को अपने से भयभीत नही होन देना चाहिए। ऐसा करने से अर्थात् दूसरो को भयभीत करने से वह सुखो से वचित हो जायगा।"

वर्तमान विद्यार्थियो और अध्यापको मे जो दूरी और पारस्परिक उदासीनता हम दखते है वे वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कटु फला म स है। और यह कहा जा सकता हे कि जब तक उनके सम्बन्ध अधिक अच्छे, सहानुभूति पूर्ण, अधिक नजदाक और ऊँचे नही होगे तब तक शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति न होगी। जहाँ तक वर्तमान भारत का शिक्षा का सम्बन्ध है वर्तमान स्कूलों और कालेजो के अधिकारियो को प्राचीन काल के विद्यार्थी और अध्यापक के ऊचे सबध का पुनर्जीवित करने मे विलम्ब नही करना चाहिए।

प्राचीन काल के शिक्षको की पढाई की समाप्ति पर अपने शिष्यो के प्रति हिदायतो का स्मरण करना बडा मनोरञ्जक है। शिक्षक कहा करते थे —

"सत्य बोलो! धर्म का आचरण करो! वेद से विमुख मत होओ! सत्य से विचलित मत होना। धम से विचलित मत होना। जो उपयोगी हो उसकी उपेक्षा मत करना। वेदो के अध्ययन को मत छोड़ना।"

यह कल्पना करना गलत होगा कि प्राचीन भारत मे लाग सामाजिक कर्तव्यो की पूर्ति पर उचित बल नही देते थे। सामाजिक कृयो के ठीक २ अनुष्ठान पर बल दिया जाता था जिसके द्वारा आध्यात्मिक उन्नति और अन्त मे ईश्वर प्राप्ति होती थी। इसका रहस्य निष्काम भाव से फल का इच्छा किए बगैर अपने कर्तव्य की पूर्ति करना और इस प्रकार प्रभु की उपासना करना था। इस प्रकार जीवन का फिलास्फी आर उसकी क्रियात्मकता भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का अङ्ग थी। इसका फल यह था कि विद्यार्थियो को जीवन का क्रियात्मक समस्याओ का हल विद्यार्थी जीवन मे हा प्राप्त हो जाया करता था। यह बात बड़ी जरूरी है और वर्तमान शिक्षा मे इसकी बडी कमी है।

आज हम लागो को प्राय यह कहते सुनते है कि नैतिक और धार्मिक शिक्षण स्कूलीय शिक्षण से बाहर की बाते हे। उनमे हम कह सकते है कि नैतिक और धार्मिक शिक्षा से रहित केवल पुस्तक ज्ञान ने ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ पैदा की हे जो जीवन के किसी भी क्षेत्र के लिए उपयोगी नही है, भले ही वह क्षेत्र पारिवारिक हो, राष्ट्रीय हो या सामाजिक हो। शिक्षा की यह प्रणाली यदि दूसरे पचास वर्ष तक जारी रहे तो

मय है राष्ट्र का, मनुष्यत्व पूर्णतया नष्ट हो जायगा।

जो शिक्षा हमारे लड़के प्राप्त करते हैं नकारात्मक है। इसका फल उनमें श्रद्धा का अभाव है। श्रद्धा से रहित मनुष्य का शीघ्र नाश हो जाता है। इसलिए हम विनाश के निकट हैं। इसलिए उपाय यह है कि आत्म ज्ञान की शिक्षा का प्रसार किया जाय।

इससे हमारा अभिप्राय बिखरे हुए बाल, लोटा, कमण्डलु या पर्वतों की गुफाएँ नहीं है। हमारा अभिप्राय फिर क्या है? क्या वह ज्ञान जिससे सासारिक बन्धनों से स्वतन्त्रता हासिल की जा सकती है साधारण भौतिक समृद्धि प्रदान कर सकता है? निश्चय ही वह ऐस' कर सकता है। भारत के भावी शिक्षा भवन का प्रधान पत्थर 'श्रद्धा' होनी चाहिए और इसी में भावी सन्तान उच्च गुणों की विभूति और महिमा मय कृत्यों के स्रोत का दिग्दर्शन करेंगी। यही 'श्रद्धा' की समस्या को जिसे उन्नीसवीं शताब्दी में हर्बर्टस्पेंसर ने उठाया था और जिसे आज के नवयुवक और नव युवतियाँ उठा रही हैं हल करेगी। किस प्रकार ज़िन्दा रहना चाहिए? यही हमारे लिए आवश्यक प्रश्न है। न केवल भौतिक अर्थों में ही वरन् विस्तृत अर्थों में। मुख्य समस्या जिससे प्रत्येक सामाजिक समस्या सम्बन्धित है—समस्त परिस्थितियों में समस्त दिशाओं में व्यवहार का उचित शासन है। किस रीति से शरीर का व्यवहार किया जाय, मस्तिष्क का व्यवहार किया जाय, किस रीति से अपने कामों की व्यवस्था की जाय, किस रीति से परिवार का पालन किया जाय, किस रीति से नागरिक के रूप में व्यवहार किया जाय, किस रीति से प्रकृति प्रदत्त आनन्द के स्रोतों का उपयोग किया जाय, किस प्रकार अपने अधिक से अधिक लाभ के लिए अपनी शक्तियों का प्रयोग किया जाय और किस रीति से पूर्ण जीवन व्यतीत किया जाय। वेद, उपनिषद् और गीता द्वारा प्रतिपादित 'श्रद्धा' न केवल मनुष्य की मुख्य शक्तियों को जागृत करेगी वरन् वर्तमान भारत को पुनर्जीवन प्रदान करेगा। बाईविल, कुरान, बौद्ध तथा दूसरे धर्म शास्त्र श्रद्धा का जिक्र करते हैं केवल भिन्न २ तरीकों से और विभिन्न सम्प्रदायों के नेताओं और अधिकारियों का यह काम है कि वे भारत के स्कूलों और कालिजों में इसका प्रचार करें और वर्तमान शिक्षा की स्कीमों में इस असूल का समावेश करें। शारीरिक सौष्ठव, बौद्धिक विकास तथा मानसिक गुणों की अवहेलना नहीं की जानी चाहिऐ परन्तु उन्हें श्रद्धा के पद चिह्नों पर चलते हुए स्वाभाविक और उपयोगी मार्ग का अनुकरण करना चाहिये। सैद्धान्तिक विवादों और धार्मिक कट्टरता से जाए बगैर भारतीय राष्ट्र के हितार्थ वर्तमान भारत के शिक्षकों द्वारा इस प्रकार के शिक्षण की उचित व्यवस्था की जा सकती है।

* * *

विविध पत्र-पत्रिकाएं

प्रचलित वर्णव्यवस्था का विध्वंश

श्री प० रामबिहारीलाल शास्त्री वेदतीर्थ, दयानन्द कालेज, कानपुर 'आर्य्यमित्र' मे 'सब सुधारो की कुञ्जी' शीर्षक लेख में शास्त्रीय आधार पर यह सिद्ध करते हुए कि वर्ण चार ही हैं हिन्दुओ के प्रचलित सहस्रों वर्ण, जातिया और उप जातिया धर्म और शास्त्रानुमोदित नहीं है और हिन्दुओ मे पारस्परिक रोटी बेटी का व्यवहार न होना अधार्मिक और असङ्गत है। हिन्दुओ मुख्यतया सनातनधर्मियो से उपजातियो के विनाश की निम्न शब्दो मे अपील करते है—

"कट्टर सनातनधर्मियो का यह परम कर्त्तव्य है कि सनातनधर्म के धार्मिक ग्रन्थो के विरुद्ध जितनी जातिया और उपजातिया प्रचलित है उनको नष्ट करदे और यह परस्पर रोटी बेटी का सम्बन्ध करने से ही हो सकता है। वर्तमान सनातनधर्मी जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था मानते हैं उसके अनुसार भी उनका परम कर्त्तव्य है कि वे केवल ४ वर्णो को कायम रक्खे तथा उनके उपवर्णो को तथा चारके अतिरिक्त और सब वर्णो को बिलकुल नष्ट करदे तथा इन चारो मे भी रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित करे जैसा आजकल महात्मा गाधी कहते हैं और करते भी हैं।"

आगे आर्यसमाज का वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में आर्यसमाज के कर्तव्य का निम्न प्रकार स्पष्टीकरण करते है—

"महर्षि दयानन्द का वर्ण-व्यवस्था के विषय में सिद्धान्त तथा मत है कि जन्म से वर्णव्यवस्था नष्ट कर दी जावे। गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था का पहला भाग हमरे आधीन है अर्थात् आर्यसमाज जन्म से वर्ण-व्यवस्था नष्ट कर सकता है। गुण कर्म के अनुसार वर्ण-व्यवस्था के कायम करने के सम्बन्ध मे स्वामी दयानन्द का मत है कि वह बालको की शिक्षा समाप्त होने पर आचार्य निश्चित करे और राजा उसका स्वीकार करे। अपना राजा नही न आर्य्यसमाज ने वर्तमान सरकार से कोई कानून गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था स्वीकार करने का बनवाया और न सब लड़के गुरुकुलो मे ही पढते हैं। ऐसी दशा मे असख्य जनता का वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसार कैसे स्थापित की जावे। मेरे विचार मे जबतक अपना राजा न हो या वर्तमान सरकार से वर्ण-व्यवस्था स्थापित की जाय तब तक आर्य्य-समाज का परम धर्म है कि वर्णव्यवस्था की पहली सीढी तो चढ़े अर्थात् जन्म से वर्णव्यवस्था का नाश कर दे जो अपने हाथ की बात है। वह इस तरह हो सकता है कि सब आर्य्यसमाजी अपने को आर्य कहे, ब्राह्मण क्षत्रिय आदि न कहे। फिर देखिए कितने विधर्मी शुद्ध होकर आर्य्य बनते हैं और कितने सामाजिक सुधार, अभी सब मे रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित होता है और आर्य्य समाज उच्च शिखर पर पहुचता है।"

अन्त में वे लिखते हैं—

"इस प्रकार निरन्तर परिश्रम करने से भारत मे वर्तमान वर्णव्यवस्था का विनाश हो सकता है। जिसके कारण सब सुधार रुके पड़े है और कोई उन्नति नही हो सकती।"

आर्यसमाज

आर्य्य समाज का उद्देश्य वैदिक संस्कृति का प्रसार है। वैदिक संस्कृति वैदिक विचार और आचरण के सम्मिश्रण का नाम है। इस कार्य्य के करनेकी मुख्य तम शर्त मनुष्यके व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों जीवना की उन्नता है। ये जीवन किस प्रकार उन्नत बनाये जा सकते है उसका आर्य्य समाज के दस नियमो मे उल्लेख है। व्यक्ति और समाज का पारस्परिक क्या सम्बन्ध है, दोनो उन्नतियो का क्या अर्थ है ? इस पर श्री बा० पूर्णचन्द्र जी "आर्यसमाज" शीर्षक लेख मे प्रकाश डालते हुए लिखते है —

"व्यक्तिगत उन्नतिके साथ २ सामाजिक उन्नति की भी परम आवश्यकता है। सामाजिक उन्नति से अभिप्राय उस सामाजिक दशा का है जिसमे रहकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को सुरक्षित रखता हुआ और उन्नत बनाता हुआ दूसरो की उन्नति मे साधक हो और इसीलिए सामाजिक उन्नति का एक आवश्यक अंग यह भी है कि व्यक्ति और समाज का परस्पर सम्बन्ध निश्चित और मर्य्यादा के अन्तर्गत रहे। व्यक्ति अपनी उच्छृंखलता और नाम मात्र की स्वतन्त्रता के नाम पर सामाजिक संगठन को छिन्न भिन्न न कर सके और न समाज अनुचित प्रतिबन्धो द्वारा व्यक्ति के विकाश को रोक सके।"

निरक्षरों का शिक्षण

'मिशनो की इन्टर नेशनल रिव्यू' नामक पत्र मे श्रीयुत डाक्टर फ्रैंकल्मी ने एक शिक्षाप्रद लेख मे फिलीपाइन द्वीप मे अपने साक्षरता के आन्दोलन के अनुभवो पर प्रकाश डाला है। उनके अनुभव तमाम देशो के समाज संशोधकों के लिए उपयोगी हो सकते है।

"सबसे पहल हमने अपने विद्यार्थियो को क्लासों मे पढ़ाया परन्तु धीरे धीरे हमें अनुभव हुआ कि व्यक्तिगत शिक्षण ज्यादा प्रभावोत्पादक है क्योंकि यह शिक्षण हमारे विद्यार्थी को प्रतिक्षण बातचीत करने के लिए विवश रखता था।

साक्षरता के आन्दोलनके लिए निरन्तर प्रोत्साहनो और असीम किस्मो की जरूरत होती हैं। निरक्षर लोग भीरु होते है और अपनी अज्ञानता का प्रकाश करने मे बड़े लज्जावान होते हैं। जो पढ़ सकते थे हमने उन्हे पिनें दी। जो घर पूर्ण रूप से साक्षर हो चुके थे हमने उन्हे पीले डिप्लोमे दिये। हमने टीन के चिन्ह लाल और पीले रँगवा कर पूर्ण साक्षर परिवारो के घरो के आगे लटक दिए। हमने एक बड़ा थर्मामीटर लगवाया जिस पर हम दिखलाते थे कि हर महीनेमे कितने व्यक्ति लिखना और पढ़ना सीख गये हैं।

लानाओ (Lanao) प्रान्त के प्रत्येक क़स्बे मे हमने शिक्षित नवयुवको की सोसाइटियाँ बनवाईं। उन नवयुवको की जो अपने आदमियो की मदद करने और जो उन वालटीअरो की सेना का अग बनने की प्रबल इच्छा रखते थे जो घर २ जाकर पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो को पढाने का यत्न करते हुए घर २ फिरा करते थे। ये सोसाइटियाँ प्रान्त के प्रमुख समाज सेवक संगठन बन गये हैं। ये सोसा-

इटियाँ उत्तम पानी, स्वास्थ्य सम्बन्धी अत्यन्त वाञ्छनीय सुधारों बिजलीके लिए उत्तम जल-शक्ति के इस्तेमाल उत्तम बीज और खेती के अधिक आधुनिक तरीकों और समाजसेवा के अन्य बीस प्रकारके काम हाथमें लिए हुए हैं। स्त्रियोंको विदित हो गया है कि पढ़ना आसानी से आ सकता है और इस बात ने उनके सामने हुए की एक नई दुनिया रक्खदी है और आज उनकी संख्या प्रति मास पढने वाले पुरुषों की संख्या के बराबर है।

साक्षरता के आन्दोलन के लिए उस भाषा के जिसमें पहले से छपा हुआ कोई मैटोरियल और अच्छा मासिक-पत्र न हो प्रेस और पत्र शुरु में अत्यन्त आवश्यक होते हैं। निरक्षरता मे से निकले हुए व्यक्ति शिक्षित लोगों की अपेक्षा अपने पत्र को ज्यादा ध्यान मे पढते हैं क्योंकि घर में वा कस्बे में वह पत्र ही केवल छपा हुआ मैटर सभव हो सकता है। एक व्यक्ति ने मुझे बतलाया कि उसके गांवमे हमारा पत्र हजारों बारपढा गया था।

फिलिपाइन यात्रा के दौरान में हमने ३ प्रकार के आन्दोलन जारी किए थे। पहले आन्दोलन को १ या २ चर्चों ने चलाया था। उनका उद्देश्य दुहरा था। एक तो समाज को साक्षर बनाना और दूसरे ईसाइ धर्म के सदेश के लिए द्वार खोलने में आन्दोलन का प्रयोग करना।

दूसरे प्रकार का आन्दोलन सार्वजनिक था, वह प्राइवेट स्कूलोंके द्वारा चलाया गया था। हमने लगभग अत्यन्त होशियार दस विद्यार्थियों को चार्टों का प्रयोग सिखलाया। इसके बाद तमाम स्कूल इन शिक्षित विद्यार्थियों में विभाजित होगया था। इन विद्यार्थियों पर दूसरों को शिक्षण-पद्धति सिखाने की जिम्मेवारी होती थी। इस प्रकार तमाम स्कूलने शिक्षापद्धति सीख ली थी। तीसरे प्रकार के आन्दोलन को म्यूनिसिपल कमेटियों के अधिकारियों ने चलाया था। इन अधिकारियों ने प्राइवेट लोगों और कमेटियों के कर्मचारियों को भी आन्दोलन में शरीक कर लिया था। म्यूनिसिपल कमेटी का एक बड़ा नक़शा टाउन हॉल में रख दिया जाता था और पूर्ण साक्षर घरों को सुनहरे चिन्हों से चिह्नित कर दिया जाता था। जब तक प्रत्येक घर पर सुनहरी चिन्ह नहीं लग जाता था तब तक आन्दोलन जारी रहता था।

इस तरीक़े की दो मुख्य विशेषताएँ हैं। एक समय में हम केवल एक विद्यार्थी को पढ़ाते हैं ज्योंही वह पढ़ लिख लेता है त्योंही हम उसे दूसरों को पढ़ाने के काम पर लगा देते हैं। इससे दो उद्देश्यों की पूर्ति होती है। एक तो जो कुछ वह पढता है वह ताज़ा बना रहता है और दूसरे आन्दोलन के सचालन के लिए कार्यकर्ता मिल जाते हैं।"

कन्या-वध

उपर्युक्त शीर्षक से "हरिजन सेवक" में महात्मा गांधी लिखते हैं—

"आज भी इस हतभाग्य देश में कन्या-वध जैसी निर्दय, अमानुषी प्रथा चल रही है यह मानने मे कष्ट होता है। लेकिन जो पत्र मेरे सामने पड़ा है वह मुझे यह माननेपर मजबूर करता है बिहार जिला भागलपुर, के देहात अमरपुर में राजपूत-कन्या-वध विरोधिनी सभा स्थापित हुई है। इस बारे

में सभा-मन्त्री ने एक दुखजनक खत लिखा है। उसमें से नीचे थोड़े फिक्रे दिये जाते हैं—

"भगवान बुद्धने बकरों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। आज उन्हीं की सन्तान अपनी सद्य प्रसूता कन्या को मारने में लगी हुई है। मनुष्यता को कलंकित करने वाली यह कुप्रथा हम राजपूतों में ही है। ऐसे भी घर हैं जहा एक दारोगा, एक तहसीलदार तथा पढ़े-लिखे युवक हैं। आज ५० वर्ष से उनके घर एक भी कन्या नहीं रक्खी गई। जरा उस दृश्य की कल्पना करें जब बच्ची पैदा होते ही मा उससे अलग हो जाती है। दूध नहीं दिया जाता है, बच्ची दम घुटकर मर जाती है। यो नहीं मरी तो नमक चटा कर अथवा तम्बाकू खिलाकर मार दी जाती है। सब से सरल तरीका तो यह है, कि उसके मुह-नाक पर मास का लोथा रख दिया जाता है। कैसा घृणित तरीक़ा है। बकरे को तो हथियार से मारते हैं, लेकिन निस्सहाय मुंह से भी आवाज नहीं निकालने वाली बच्ची को दम घुटकर मारना—कितना अनर्थ है।

"पञ्जाब के जाट राजपूतों और जाट सिक्खों में यह कुप्रथा थी। पंजाब-कौंसिल में उसे रोकने के लिए खास क़ानून बनवाया गया। पर हमारे यहाँ लोग सकोच करते हैं।"

धर्म तो सिखाता है कि जीव-मात्र अन्त में एक ही हैं। अनेकता क्षणिक होने के कारण आभासमात्र है। लेकिन राष्ट्र भावना भी हमें यही पाठ देती है। हम अपने को राजपूत इत्यादि नहीं मानते हैं, न बिहारी, पंजाबी इत्यादि। हम अपने को हिन्दुस्तानी मानते हैं और एक ही राष्ट्र मानते और मनाते हैं। इसलिये धर्म-दृष्टि या राष्ट्र-दृष्टिसे हम एक हैं और एक के दोष की जिम्मेदारी हम सब पर आती है। इस न्याय से इस राजपूत-कन्या-वध के लिए हम सब, राजपूत हों या कुछ भी हों, जिम्मेदार हैं। एक दूसरे के दोष, एक-दूसरे की आपत्ति के लिए हम उदासीन न रहते तो कन्या-वध आज तक निभ नहीं सकता था। इसमें न धर्म का बहाना है, न कोइ आवश्यकता का। कोई एक युग होगा कि जब राजपूत-जीवन अनिश्चित होने के कारण कन्या-जन्म आपत्तिजनक माना जाता होगा, आज तो यह बहाना रहा ही नहीं है। दूसरों की अपेक्षा राजपूत-जीवन अधिक अनिश्चित है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। राजपूतों के सिर पर आज युद्धका बोझ नहीं रहा है। आज राजपूत को अपनी तलवार साथ में रखकर सोना नहीं पड़ता है। राजपूत क़ौम भले ही हो, राजपूत-धर्म जैसी कोई वस्तु नहीं रही। फिर कन्या-वध क्यों? कन्या का बोझ क्या? बोझ तो उन लोगों पर अवश्य पड़ता है जो अपनी कन्या के लिए पति खरीदते हैं और दम निकल जाय इतना दाम देना पड़ता है। ईश्वर की कृपा है कि वे अपनी कन्या का वध करने तक नहीं पहुँचे हैं।

मुझे नहीं पता है कि—आज राजपूत कन्या-वध के लिए कोई बहाना बताया जाता है क्या? अगर कोई ऐसा बहाना है तो नई सभा का इस पर प्रकाश डालना कर्तव्य है। लेकिन बहाना हो भी सही, उसे दूर करना धर्म होगा। कोई बहाना इस राक्षसी प्रथा को क़ायम करने में कभी मान्य नहीं हो सकता। लोक मत को सगठित करके शीघ्र ही

इस प्रथा को मिटाना चाहिए।

आर्य्य समाज की वर्तमान अवस्था

श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए० 'आर्य्यसमाज की वर्तमान अवस्था' शीर्षक मे आर्य्य समाज की धड़ेबन्दियों के सम्बन्ध में ठीक ही लिखते है—

"पार्टीबजी, धड़ेबन्दी का भाव वास्तव में पोलिटिकल समाजका भाव है। धार्मिक समाजमें इसका आविर्भाव होना और वह भी इतने बडे पैमाने पर जितना कि आजकल आर्यसमाजमें आविर्भाव होरहा है साफ जाहिर करता है कि हमने आयसमाज में राजनैतिक समाजों की रीति नीति प्रचलित करदी है। राजनैतिक दायरे में रजोगुण प्रधान रहता है। धार्मिक समाज में जहा सतोगुणप्रधान जीवन का राज्य होना चाहिए भला वहा इस प्रकार की धड़ेबन्दी और पार्टीबाजी का क्या काम। वहाँ तो काज या प्रोप्रम ही दूसरा है। वहाँ अपने स्वार्थको छाड़ना और दूसरों के लिए जीना ही ध्येय होता है। ऐसी हालत मे वहा अधिकारों के लिए लड़ना दूसरों को पछाडना, नीचा दिखाना, स्वार्थ का व्यवहार करना ये सब बातें बेमानी और व्यर्थ दिखाई देती हैं। दुनियादारी और ईमानदारी दो भिन्न २ चीज हैं। धम के क्षेत्र में जो बातें शोभा देता हैं, वे यह हैं कि हम दूसरों को आगे बढाएँ, भलाई का बदला न चाहे खुद पीछे और निष्काम सेवा करते जाएँ—

परन्तु इस वक्त आर्य्यसमाज में यह बातें कहाँ हैं? हम पद और अधिकार के लिये लालायित रहते हैं यदि हमने सेवा ही करनी है और वह भी धार्मिक भाव से तो हमें यह न भूलना चाहिए कि ईश्वरका साम्राज्य तंग नहीं और भिक्षुक की टागें लगड़ी नहीं हैं—यदि कुछ भाई यह समझते हैं कि मैं किसी स्थान पर उपयोगी सिद्ध नहीं हो रहा हूँ चाहे उनका यह खयाल गलत हो क्यों न हो मुझे बेपरवाह होकर स्वय उस स्थान से हट जाना चाहिए और उन भाईयों के लिए रास्ता साफ कर देना चाहिए। यदि मेरे स्थान पर दूसरे भाई अच्छा काम कर दिखाएँ तो मैं उन्हे गले लगा कर शाबाश कहूँ क्योंकि जो काम मैं न कर सका उन्हों ने कर दिखाया। यदि मेरे स्थान पर उनका काम अच्छा सिद्ध न हो तो मुझे कोई अभिमान न होना चाहिए और अपने भाईयों के पुन बुलान पर तत्काल सेवा के लिए हाजिर हो जाना चाहिए। यही धर्म है। यही निष्काम सेवा है। हमें यह बात न भूलनी चाहिए कि दुनिया के सब काम चलत रहेंगे। चाहे हम उन कामों में दूसरे लोगों का हाथ बटावें या न बटावें। हम मोह और गर्व के वशीभूत हो यह समझने लग जाते हैं कि फला काम यदि हम न करेंगे तो चौपट हो जायगा। हमने अपने कानों यह कहते सुना है कि क्या हम अपन सामन अपने लगाये पौधे को उजड़ता देखें? सोचने की बात है कि यदि पौधा उजड़ने लायक है तो हम रे यत्न के होते हुए भी उजड जायगा और यदि उजड़ने लायक नहीं है तो हमें फिक्र क्यों? हमारी अपनी चिन्ता और अधीरता काम खराब कर देती है और हम ,खुद अपने लगाए पौधों के के उजड़ने का कारण बन जाते हैं।

पार्टीबाजी का अन्त कैसे हो? इसके लिए आवश्यक है कि हम अन्तर्मुखी होकर पहले यह

निश्चय करें कि हम आर्यसमाज में आत्मा की शान्ति के लिए हैं या केवल समय गुज़ारने या कोई शग़ल बनाए रखने के लिए। यदि आत्मा की शान्ति वाञ्छनीय है तो हमें अपने भीतर आत्मिक भूख पैदा करनी चाहिए। जब तक वह भूख पैदा नहीं होती तबतक एकान्त सेवन करना चाहिए। यदि इसके लिए समाज से कुछ समय के लिए हट जाना पड़े तो हट जाना चाहिए। जो लोग यह भूख लेकर समाज में जावेंगे उनको पदों और अधिकारों की लालसा कहां ?

उन्नति और भारत वर्ष

पश्चिमी सभ्यता अपनी मूल भूत गड़बड़ को लिए हुए व्यक्तिवाद के आन्तरिक जीवनमें वास्तविक समता पैदा करने में सफल नहीं हो सकती। उन्नति के लुभावने नाम पर परिवर्तन सहन किए जा रहे हैं। फिलीपाइन विश्वविद्यालय के प्रो० धीरेन्द्र नाथ राय 'हिन्दू रिव्यू' में लिखते है—

'परिवर्तन' की चाह ही है जो पश्चिमके जीवन पर प्रतिबिम्बित देख पड़ती है। कोई समय था, बहुत अर्सा नहीं हुआ जब पश्चिम के लोग 'वोड' (Woad) नामक एक पौधे से (जिसकी पत्तियाँ उबालने पर बहुत बढ़िया नीला रंग छोड़ती हैं) अपने शरीरों को रंगा करते थे। उन्होंने इस रंग का लगाना छोड़ा और ऐसा करने वालों को 'जंगली' कहकर तिरस्कृत किया। अब भी अपनी इस प्रकार की सीधी-साधी प्रथा के कारण बहुत से आदिम लोग तिरस्कृत होते हैं। यदि आज कल कोई आदमी यह देखना चाहता हो कि किन लोगों में शरीर गोदवाने की प्रथा ज्यादा प्रचलित है तो उसे पश्चिम की जल और स्थल की सेनाओं के शरीरों को देखना चाहिए। उनकी चमड़ियों पर गोदी हुई चाजों की ओर देखना चाहिए और सभ्य कहे जाने वाले पश्चिम के इन लोगों के सौन्दर्य-रुचि का आदिम काल के लोगों की रुचि के साथ मुक़ाबला करना चाहिए और इस सम्बन्ध में पश्चिम की 'उन्नत' ललनाओं को कौन भूल सकता है ? उनकी ओठों की लाली, चमड़ी का बाहरी कोट इत्यादि सब चीजें क्या हैं ? क्या ये सब लोगों की आंखों में अपने को आकर्षक बनने की वही पुरानी इच्छा नहीं है ? कहा जाता है कि यह सब रहन-सहन का वर्तमान तरीका है ? इसमें क्या नवीनता है ? प्राचीन मिश्र की स्त्रियाँ शृंगारदानों का प्रयोग किया करती थीं जिसमें आठ प्रकार के उबटनों के लिए खाने होते थे। रामायण और महाभारत काल की हिन्दू देवियाँ भी इसी प्रकार के उबटन रखती थीं। आज भी उनके शृङ्गार के भिन्न २ बहुमूल्य ढंग है—

सम्भवतः इस सम्बन्ध में मुस्लिम देवियां अपने समय की दूसरी पूर्वीय स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा परिश्रमशील रही हैं पश्चिम की स्त्रियों ने सुन्दरताकी वृद्धिका एक तरीक़ा इख्तियार किया है। वे भौंहोंको बिल्कुल निकाल देती हैं और उनके स्थान पर बहुत पतले काले महराब बना लेती हैं। हमें पता नहीं कि कोई पूर्वीय स्त्री इस प्रकार अपना सुन्दरता बढ़ाती है। इस पर भी पश्चिम में स्त्रियाँ 'स्वाभाविकता' की 'वाह वाह' लूट सकता है। तौभी यह देखना रह जाता है कि इस प्रकार की काट-छांट परिवर्तन है या उन्नति या केवल मामूली

परिवर्तन। यदि पश्चिम में वास्तविक उन्नति हो जाय तो क्या उसका भारत की संस्कृति से जो पश्चिम के लिए बहुत लाभदायक है कोई मुकाबला हो सकता है ? मान लो वर्तमान उन्नति उन्नति है जब कि समुद्री डाकुओं का पुराना पेशा साम्राज्यवादियों के पेशे के स्थान पर रख दिया गया हो, जब जादूगरनियों का शिकार करने वाले ईसाई सिपाही या मिशनरी बन गए हों जब झूठ प्रोपैगंडा बन गया है, धोखा डिप्लोमेसी (कूट नीति) बन गई हो, गुप्त षड्यन्त्र शान्ति के पैक्ट बन गये हों। इन्द्रिय विलास जीवन का ऊँचा स्टैंडर्ड बन गया हो इत्यादि २ तब क्या इस प्रकार की उन्नति पश्चिम के लोगों को, भारतीयों की अपेक्षा जिन्हों ने इन चीजों को कुछ दूसरी चीजों के कारण जिन्हें उनके तजुर्बे ने अच्छा और लाभदायक साबित किया, बहुत पीछे छोड़ दिया या ज्यादा उन्नत बना सकती है। यह सत्य है भारत की उन्नति कुछ अर्से तक बहुत धीमी रही है और पश्चिम तेजी के साथ बढ़ रहा है परन्तु पश्चिम किस ओर बढ़ रहा है ? उसका उद्देश्य क्या है ? क्या भारत और पश्चिम का सम्मिलित उद्देश्य है ? क्या दोनों एक ही मार्ग पर हैं। मुकाबला करने से पूर्व क्या हमे पहले प्रश्नों का उत्तर नहीं जान लेना चाहिए ?

नेत्र रक्षा

पं० जगन्नाथ जी आयुर्वेदाचार्य 'नेत्र रक्षा' के शीर्षक में 'सनातनधर्म' में नेत्र रोग के निम्न कारण बतलाते हैं।—

(१) गरम से तप्त होने पर तत्काल जल में स्नान करना।
(२) बहुत दूर की चीज देखना।
(३) दिन में सोना तथा रात्रि में जागना।
(४) पसीना अधिक आना।
(५) धूलि व धूम्र (धुआं) में अधिक रहना।
(६) वमन के वेग का रोकना।
(७) अधिकतर पतले पदार्थ खाना।
(८) वमन का अधिक होना।
(९) मल, मूत्र वायु के वेग को रोकना।
(१०) निरन्तर रोदन, शोक तथा संताप।
(११) शिर की पीड़ा।
(१२) अधिक मद्य (नशीली) चीजों का सेवन।
(१३) ऋतु का विपरीत होना।
(१४) अधिक दुःख।
(१५) अति मैथुन।
(१६) आसुओं को रोकना।
(१७) अधिक सूक्ष्म तथा तेज पदार्थों का देखना।

कुश्ती के पेंच

श्री श्रीराम शर्मा 'विशाल भारत' में 'एक महत्व पूर्ण पुस्तक की आयोजना' शीर्षक में कुश्ती के पेंचों के सम्बन्ध में निम्न प्रकार प्रकाश डालते हैं—

प्र०—पेंच कितने होते हैं ?

उ०—तीन सौ साठ पेचोंका लेख मिलता है—दावँ और उनके काट मिला कर।

प्र०—कृपा करके कुछ पेचों के नाम बताइये।

उ०—सामान्य रूप से पेचों को चार भागों में विभाजित कर सकते हैं—(१) सामने के पेच, अर्थात् वे पेच, जो सामने से चलाये जाते हैं, (२) पीछे के पेच, (३) नीचे से निकलने के पेच, (४) चित करने के पेच।

सामने के पेच

१ दस्ती, २ दुदस्ती, ३ धोबीपाट, ४ निाल, ५ मुल्तानी, ६ ढाक, ७ तेगा, ८ इकटगा ९ बगली, १० पुट्ठो, ११ पट, १२ कलागज, १३ गिरह, १४ सखी, १५ बैठक, १६ बाजा, १७ बाहरली, १८ भीतरली, १९ गललपेट, २० घुड़पड़ाँग, २१ इकहरापट, २२ सीधा तीरकश, २३ आड़ा तीरकश, २४ नारटाँग, २५ नागपेच, २६ लुकान, २७ डूब, २८ चपरास, (अटी), २९ मौजा निकालना, ३० झोरी, ३१ कैंची, ३२ सामनेकी रूम, (घूमना), ३३ झड़म ३४ उड़गमार, ३५ खपचा, ३६ गड़ि-हत्था, ३७ जोड़, ३८ गलखोड़ा, ३९ खसोटा, ४० उतार, ४१ पाँवदस्ती, ४२ दस्तमौजा, ४३ रोड़, ४४ दस्तबन्द. ४५ बगलबन्द, ४६ बाजूबन्द ।

पीछे के पेच

१ उखाड़ घस्सा, २ गोलालाठी, ३ मच्छीगोता, ४ महावती, ५ उल्टी, ६ खपचा की उखाड़, ७ पीछे की गिरह, ८ पटकी मोस, ९ गलउखाड़, १० कुप्पी, ११ जम्बूरा, १२ मुरकबन्द ।

नीचे से निकलने के पेच

१ कुप्पी तोड़ना, २ ठिब्बी, ३ गधालोट, ४ धड़ मारना, ५ गिर्दबाँह, ६ ढेकली, ७ रूम, ८ बाहरलीकी टाँग, ९ भीतरलीकी टाँग, १० बिजली चमक, ११ बिलैया, १२ पुश्तक, १३ गोता ।

चित करने के पेच

१ घिस्सा, २ तारकश, ३ कुंडा, ४ सवारी, ५ इकटगा, ६ कमरपेटा, ७ चिरागदान, ८ चरखा, ९ शकल समेट, १० बकरी पछाड़, ११ सड़ड़, १२ बगड़ १३ बेलन, १४ हफ्ता, १५ मुँडपट्टी, १६ निमाजबन्द, १७ परीबन्द, १८ बालसींगड़ा, १९ साँडो, २० लपेट, २१ नाथमुरचा, २२ झोला, २३ सड़ासी, २४ देबबन्द ।

श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी का निधन

(सम्वाददाता द्वारा)

"स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी आर्य्य समाज के बड़े तपस्वी और त्यागी सन्यासी थे। उन्होंने बंगाल, विहार, युक्त प्रान्त, पंजाब, सिन्ध, बलोचिस्तान, मालवा, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, महाराष्ट्र, बरार, सी० पी० गरज़ की लगभग समस्त भारत में वैदिक धर्म का प्रचार किया था। पिछले कई वर्षों से बम्बई प्रान्त उनकी प्रचार प्रगतियोंका मुख्य केन्द्र रहा। लगभग ६, ७ साल पर्य्यन्त कोल्हापुर राज्य में निरन्तर प्रचार किया। पिछले ८-१० वर्ष से बम्बई आर्य्य समाज को उन्हों ने अपना हैडक्वार्टर बनाया हुआ था। २-७-३६ को महाराष्ट्र आर्य्य समाज लोअर परेल बम्बई में व्याख्यान देने गए थे। व्याख्यान देने के बाद उनके सिर में कुछ दर्द हुआ और चक्कर आने लगे। यह शिकायत उत्तरोत्तर बढ़ती गई और उनको कुछ ऐसा विश्वास हो गया कि मेरी जीवन-यात्रा समाप्त होने वाली है। बुधवार ता० ९-७-३६ को उन्हों ने अपनी सम्पत्ति तथा दाहकर्म इत्यादि के सम्बन्ध में एक वसीयत लिख दी। १०-७-३६ को दिन के २ बजे वे हमसे बिदा हो गए। सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। देहान्त के समय स्वामी जी की आयु ७२ वर्ष की थी।

(श्री स्वामी जी के जीवन के संस्मरण बड़े मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हैं। हम 'प्रकाश' में श्री प० कृष्ण जी द्वारा लिखित ऐसे ही एक संस्मरण का नीचे उद्धृत करते हैं। हम चाहते हैं आर्य्य समाज की जीवित तथा मृत ऊंची हस्तियों के संस्मरण अधिक से अधिक जनता के समस्त आते रहें जिस से उन्हें प्रकाश मिलता रहे। 'सार्वदेशिक' अपने स्तम्भों के द्वारा इस काम में अपना योग देने के लिए उद्यत है।

—सम्पादक)

आर्य्यसमाज की मौजूदा नस्ल शायद स्वामी ओंकार सच्चिदानन्दजी के नाम से भी परिचित न होगी। परन्तु उन्होंने बरसों पंजाब में आर्य्य समाज की सेवा की है और चूंकि ऐसे दिनों में जब कि ज्यादा मैं सभा का मन्त्री रहा इसलिए जानता हूँ कि वे कैसे श्रेष्ठपुरुष थे। आर्य्य समाज के प्रचार की जो धुन उनमें थी उसका क्या कहना? वे निहायत ही सरल और सौम्य स्वभाव के थे। आवश्यकताएँ उनकी बहुत कम थीं इसलिए हर जगह काम कर सकते थे। आम फहम बोलने

वाले थे। तबीयत में मजाक था। इसलिए लोग उनके उपदेशों को बडे चाव से सुनते थे। यद्यपि वे जन्म के लिहाज से मरहटा थे परन्तु उन्होंने आर्य भाषा का इतना अभ्यास कर लिया था कि सब जगह काम कर सकते थे। पजाब में कई वर्ष काम कर लने के बाद एक दिन वे मेरे पास आए और कहा मन्त्री जी अब बम्बई प्रान्त को लूटने को इच्छा हुई है।' मैंने कारण पूछा तो उन्हो ने कहा 'आपके यहा तो काम करने वाले बहुत हैं लेकिन वह प्रान्त सुनसान पड़ा है। वहा जाकर मैं ऋषि के मिशन का प्रचार करूंगा' मैं एक परिव्राजक को कैसे रोक सकता था। मैंने कहा 'स्वामी जी जब आप जाने का निश्चय कर ही चुके तो आप क्यों रुकेंगे ? जाइए। परन्तु एक शर्त के साथ वह यह कि आप पजाब का स्मरण रक्खे।' खैर वे चले गए। पिछले साल जब मैं बम्बई गया तो आर्य समाज मन्दिर में मैंने उनके दर्शन किए उन्हो ने मन्दिर की एक २ जगह को बड़े शौक से दिखलाया उन्हों ने कहा कि "यह कुवा स्वामी दयानन्द जी ने खुद अपने सामने बनवाया था और इस कुवें के थडे पर ऋषि बैठा करते थे। जब मैं उनसे विदा लेने लगा तो मैंने उनसे पूछा "क्या आपको वह प्रतिज्ञा याद है जो आपने मुझसे की थी ?" उन्होंने पूछा 'कौनसा ?' मैंने कहा "यह कि आप पंजाब को स्मरण रक्खेगे। आपने तो उसे ऐसा भुलाया कि आने का नाम तक नही लिया। अब ही आप अपने वायदे को पूरा करें और इस वर्ष आने की कृपा करें" उन्होंने उत्तर में हस कर कहा 'अरे बाबा ! इस प्रान्त में अम्बेदकर ने जो आग लगाई है उसे शान्त करने की जरूरत है मैं पजाब कैसे आ सकता हूँ ? मै तो इस प्रान्त के एक २ स्थान पर जाऊंगा और एक २ अछूतको समझाऊंगा कि वह अम्बेदकर के जाल में न फसें।" आर्य्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अर्द्धशताब्दी पर वे लाहौर पधारे थे। उन दिनों उनका स्वास्थ्य बहुत उत्तम था। हां आंखों की शिकायत जरूर थी और उसके इलाज के लिए वे लाहौर ठहरे भी थे। लेकिन उन्हे देखकर किसी को गुमान भी न हो सकता था कि वे चन्द ही माह में हम से जुदा होने वाले है। उनकी मृत्यु सारे आर्य समाज के लिए एक भारी नुक़सान है।"

सामाजिक-जगत्

इन्दौर (स्टेट) में पुलिस कर्मचारियों का समाज के प्रचार में अनुचित हस्ताक्षेप

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान (मालवा) की ओर से श्री स्वामी नित्य सुन्दरानन्द मन्दसोर, पण्डित गोकुलचन्द जी भजनोपदेशक तथा आर्य्य समाज नारायणगढ के मन्त्री म० दीपचन्द जी ८ ६-३६ को प्रचारार्थ आए। पिछले ८ महीनों से यहाँ के कुछ शिक्षित व्यक्तियों ने गाँव मे एक स्थान किराए पर ले रक्खा है। आगन्तुक सज्जनों को इस मकान मे ठहराया गया। समाचार पाकर हेड कान्सटेविल पोलीस मुहम्मद फारुकहोश अब्दुल रहमान के साथ उन लोगों के पास आया और उन सज्जनों से गुस्से मे पूछा कि उन्हे वहाँ किसने ठहराया है। उनके नाम पता इत्यादि उसने नोट किया और उनके सामान की जाच पडताल की। कुछ अपशब्दों का भी प्रयोग किया। म० सीताराम जी को जो यहा आर्य्य समाज के प्रचार की व्यवस्था किया करते हैं तथा जिन्होंने इस प्रचार की व्यवस्था की थी, उसने कहा कि जब वे किसी को धर्म्म प्रचार के लिए बुलाया करें तो उसे सूचना दिया करें—अन्यथा हथकडी पहनाकर उनका चालान कर दिया जायगा। म० सीताराम जी के ये सब बाते लेख बद्ध मागने पर लिखकर देने से उसने इन्कार कर दिया। उसी दिन शाम के वक्त जब बाजार मे धर्म्म-प्रचार हो रहा था, हैड कान्सटेविल यूनिफार्म मे मय ३-४ अन्य सिपाहियों के आया और कहा 'बन्द रक्खो। मत बोलो'। निदान प्रचार बन्द कर दिया गया। उसने एक रिपोर्ट पर जो उसने स्वयं लिखी थी दस्तख़त कराए। हमारे रिपोर्ट का मज़मून पूछने पर बतलाने से इन्कार कर दिया। इस पर समाज के लोग पुलिस स्टेशन (थाना) गए और स्थान य पुलीस आफीसर की पूछताछ करने पर हैड मुहर्रिर पुलाल से विदित हुआ कि वे बाहर दौरे पर गए हैं।

तब लोगोने मुहर्रिर से सब हालात बयान किए। बयान सुनने पर मुहर्रिर ने उन्हे बतलाया कि मुहम्मद फारुक (हैड कान्सटेविल) ने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी है उन्होंने यह भी बतलाया कि आर्य्य-समाज के प्रचार से जनता नाराज है, झगड़े का अन्देशा है। इस पर समाज के लोगों के रिपोर्ट सुनाने का मतालबा करने पर मुहर्रिर ने बतलाया कि जनता की रिपोर्ट नहीं है बल्कि हैड कान्सटेविल की है। उस दिन प्रचार नहीं हो पाया।

दूसरे दिन समाज के लोग थाने में गए और एक दरख्वास्त पेश की जिसमें मांग की गई थी कि या तो प्रचार की आज्ञा दी जाय या बन्दिश की तहरीरी आज्ञा दी जाय। इस पर हैड मुहर्रिर साहब ने प्रचार की आज्ञा दे दी और प्रचार कार्य्य २ दिन तक बडे समारोह के साथ हुआ।

बिहार प्रान्त में ईसाईयों की प्रगतियाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री पण्डित

वेदव्रत जी ने प्रेस को निम्न वक्तव्य दिया है —

"पिछले कुछ सालों से जब से आर्यसमाज ने दलित भाइयों में प्रचार को ओर विशेष ध्यान दिया है और आर्य्य जीवनके आदर्शों और उसके प्रति उनके कर्त्तव्यों की व्याख्या करनी शुरू की है तब से उनकी ओर दूसरे मज़हबों के प्रचारकों का विशेष ध्यान खिचना शुरू हो गया है। ये लोग दलित भाइयों को जो हिन्दू समाज का अङ्ग हैं अपने धर्म में दीक्षित करने का एक सुरक्षित विभाग समझने रहे हैं। हम बड़े आश्चर्य के साथ देखने रहे हैं कि प्राय जब कोई समाज वार्षिकोत्सव के समय जलूस निकालना चाहता था तब अधिकारियों की ओर से असाधारण और अपमानजनक शर्तें लगाई जाती थीं। जलसों में भी जिनमें समाज के कार्यकर्त्ता बोलना चाहते थे स्पेशल मजिस्ट्रेट की नियुक्ति जो प्राय समाज के कार्यकर्त्ताओं को निर्दोष धार्मिक प्रवचनों और व्याख्यानों के लम्बे लम्बे नोट लिखने में व्यस्त रहता था, अनजान जनता में सन्देह और घबराहट पैदा कर देती थी। जब से छोटा नागपुर की जगली और दूसरी जगहों की तथा कथित दलित जातियों में आर्यसमाज के काम से विश्वास पैदा होना शुरू हुआ है ईसाई मिशनिरियों ने आर्यसमाज की इस

प्रगति पर कुठाराघात करने का यत्न शुरू कर दिया है। और अपने इन यत्नों में उन्हें सरकार से भी सहायता मिला है जिसने समाज के कार्यकर्त्ताओं के विरुद्ध सरक्यूलर निकालकर कतिपय क्षेत्रों में उनका प्रवेश असंभव बनाकर आर्य्यसमाज की इस प्रगति को कुचलने का (अप्रत्यक्ष) यत्न किया है। जब दूसरे मज़हबों के मिशनरी बड़ी २ सभाओं में भाषण देते हैं या शुद्धि का अपना कार्य करते हैं तब सरकार की ओर से इस प्रकार की किसी प्रगति को न देख कर हमें बड़ा आश्चर्य होता है। उन पर न कोई प्रतिबन्ध लगाया जाता है, न कोई मजिस्ट्रेट नियुक्त किया जाता है और न कोई गुप्त सरक्यूलर जारी किया जाता है। हमें आश्चर्य है कि आर्य समाज के हिन्दू प्रचारक ही इस प्रकार की देख रेख के लिए क्यों चुने गये हैं? अपने दफ़्तर में इन दिनों हम देखते हैं कि जब कोई प्रचारक या भजनक बाहर से आता है तो बहुधा पुलीस आती है और उसके पिछली प्रगतियों के जानने की कोशिश करती है। कुछ दिन हुए, कुछ ज़िम्मेवार पुलीस अधिकारी मेरे दफ्तर में आए और यह जानना चाहा कि आनेवाले कौन्सिल चुनाव में आर्य्य-समाज क्या करेगा। क्या वह काग्रेस को मदद देगा या हिन्दू सभा के उम्मेदवारों को?

चम्पारन मे पिछले कुछ दिनों तक आर्य्य-समाज की प्रगतिया बहुत अच्छी और मजबूत नहीं थीं और ईसाई मिश्नरी केवल एक गांव बेतिया में ४००० से अधिक हिन्दुओं को ईसाई बनाने में सफल हो चुके थे और ईसाई बनाने का सिलसिला चुपके २ ज़ोरों से जारी था। आर्य्य-समाज ने इन लोगों की तरफ़ अपना ध्यान लगाया और दो प्रमुख व्यक्तियों पण्डित शिवरुद्रा शर्म्मा और बा० गंभीरसिंह को जो बेतिया राज मे स्कूल अध्यापक थे शुद्ध किया। अब इन दोनों ने आर्य्य समाज का कार्य्य हाथ में ले लिया है। मोतीहारी और बेतिया में इससे बड़ी बेचैनी फैल गई है और पटना में भी कुछ हलचल पैदा हुई है।

सन्थाल परगना में भी आर्य्य-समाज की प्रगतियों से ईसाई मिश्नरी चौकन्ने हो गए हैं। श्रद्धानन्द ट्रस्ट द्वारा "उपदेशक विद्यालय" की राची में स्थापना

से आग मे ईंधन पड गया है। ट्रस्ट के मन्त्री तथा समाज के प्रमुख और प्रभाव शाली सदस्य श्री पं० धर्म्मवीर जी वेदालङ्कार ने आर्य्य-समाज के विरुद्ध पहले से विद्यमान इन लोगों के भावो को और भी उत्तेजित कर दिया है।

पटना जिले के बाद सब-डिवीज़न मे, यह विदित हुआ था कि पटना से कुछ मिशनरी साइकिल पर वहाँ कई बार जा चुके थे और चमारों और दुसाधो को इकट्ठा करके उन्हे अपने धर्म्म मे लेने के उद्देश्य से उपदेश कर चुके थे। वे उन्हे कहते थे कि यदि वे ईसाई बन जायेगे तो वे शासक जाति के सदस्य बन जायेगे और जमीदार को जो बेगार मे देते है, वह बन्द हो जायगा। पुलीस उन्हे तंग नही करेगी। सवर्ण लोग उन्हे तंग नही कर सकेंगे। जब समाज को यह मालूम हुआ तो उसने अपने कार्यकर्त्ता वहाँ भेजे उन्होने मिशन के प्रचारको के खोखलेपन को खोल कर रख दिया और लगभग २० परिवारो की ईसाई धर्म मे जाने से रक्षा की।

छपरा मे करीब ३ या ४ महीने हुए, एक ईसाई मिशनरी गया और पुलीस सुपरिन्टेन्डेन्ट के कम्पाउन्ड मे उसने अपना डेरा खड़ा किया। वहाँ वह रोग से पीड़ित बहुत से हिन्दुओ को इकट्ठा कर लिया करता था और उनसे कहा करता था कि तुम लोगो के ईसा के नाम मे कुछ शब्दो के उच्चारण करने से मै पुराने से पुराने रोग को अच्छा कर सकता हूँ' इसका नतीजा यह हुआ कि धर्म भ रु बहुत सी स्त्रियाँ अपनी २ दुख कहानी लेकर उसके पास जाने लग गईं परन्तु यह ज्ञात होते देर न लगी कि ईसाई प्रचारकोका भोलेभाले व्यक्तियोको अपने दायरेमें लेजानेका यह एक तरीका था।

वहाँ तथा गाजीपुर ज़िले मे प्रगतियाँ अभी तक जारी हैं। यह नोट करने योग्य बात है कि शहरो और शिक्षित लोगो से बहुत दूर अशिक्षित लोगो मे ये मिशनरी अपना काम कर रहे है जिससे इन लोगो द्वारा पड़ा हुआ बुरा असर जल्द दूर न हो जाय। यह आर्य समाज ही है जो इस गति को रोकने के लिए जितना वह कर सकता है यत्न कर रहा है।

गत वर्ष हजारी बाग जिले के माल्दा स्थान पर जब आर्यसमाज के उत्सव के पहले दिन का प्रोग्राम खत्म हो चुका था। जब हम लोग प्रात काल का हवन कर रहे थे अचानक गावन वार्डस स्टेट के चपरासी आये और हमारे उत्सव पर आपत्ति की और कहा हम यह मैनेजर के आर्डर से कह रहे है। मैं स्वय मैनेजर से मिलने के लिए गया और सहायक मैनेजर मे बहुत देर तक बात चीत की जिसन बतलाया कि आर्डर के लिए मैनेजर जिम्मेवार है और कि वह बाहर गया हुआ है। पटना पहुँचकर मैने मैनेजर को लिखा, उन्होने मेरे उस पत्र के उत्तर मे जिसमे मैंने मिलकर सब स्थिति स्पष्ट करने के लिए लिखा था मुझे निम्न उत्तर दिया।

'अजनबियो को लैक्चर देने की इजाजत न देना इस स्टेट का असूल रहा है और मै समझता हुँ इससे कुछ लाभ भी न होगा।"

हमें अभी तक यह जानना है कि ईसाई मिशनरियो पर 'अजनबी', शब्द लागू होता है या नही तथा उनका कार्य लाभकारी है या नही?

स्थिति यह है—मैने हिन्दू जनता के सामने बहुत सी बातो मे से बहुत थोड़ी रक्खी हैं। आर्य्य प्रतिनिधि सभा तथा उसके अधीनस्थ समाजें अछूतो और निस्सहाय हिन्दू देवियो का रक्षा तथा उनकी अवस्था

सुधारने का पूरा यत्न कर रहो है। मैं प्रान्त के हिन्दुओं से अपील करता हूँ कि वह स्थितिकी भयंकरता अनुभव कर। मैं यह भो कहूंगा कि उन्हें आर्य्यसमाज को पूरा २ योग देना चाहिए।

हैद्राबाद(निजाम)राज्यमें आर्य्यसमाज का प्रचार (२८ अप्रैल १९३६ से २९ मई १९३५ तक)

उदगीर से श्री० पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री हैद्राबाद गए और प० नरेन्द्र जी वैदिक मिशनरी आर्य्य प्रति-निधि सभा राज्य निज़ाम राज्य, तालू के कलम के प्रचार पर गए। वहाँ कई सरकारी पोलोस की रुकावटों का सामना करना पड़ा। तीन दिन तक बड़ी धूम-धाम से व्याख्यान हुवा और शंका समाधान भी किया गया। सैकड़ों को हाज़री होती थी। आर्य-लंगरमें लोग भोजन करते थे। वहाँ से माणिकनगर के मुकदमे की पेशी के लिए सब हुमनाबाद के "मुसाफ़िर बगले" पर उपस्थित हुए। तारीख़ बदल गई। वहाँ से मैं गुलबर्गा गया। वहां मेरे दो चार दिन व्याख्यान हुवे। प० नरेन्द्र जी व श्री० गोविन्दराम जी भजनीक हैद्राबाद के अन्य महालों के उत्सवों में शरीक हुवे। जैसे कारवानसाहू, धूल पेठ इत्यादि। प्रतिदिन सायंकाल व्याख्यान और भजन हुआ करते थे। ९ मई से ११ मई तक आ० स० रायचूर का वार्षिकोत्सव था। श्री० प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री और श्री० गोविन्दराम जी भजनीक के भजन व व्याख्यान जनता के मन में वैदिक-धर्म की रुचि बढाते थे। यह उत्सव बड़ी कामयाबी से समाप्त हुवा। इसके पश्चात् आ० स० निर्लगा के वार्षिकोत्सव पर जो १४ मई से १७ मई १९३६ तक था सब जनता पहुँची। दस सहस्र के लगभग श्रद्धालु आर्य-भाई इस उत्सव पर पधारे थे। यह वही स्थान है जहाँ गत वर्ष तालुकेदार साहब बीदर की आज्ञा से समाज-मन्दिर ढा दिया गया था। अत्यधिक प्रयत्नों से वह आज्ञा रद्द करा दी गई थी। सरकारी खर्च से पुन मन्दिर बनवाया गया। ज़ब्त किया हुवा माल लौटा दिया गया। आर्य समाज के प्रचार की आज़ादी मिल गई इसलिए इस प्रान्त में बहुत उत्साह बढ गया है। जङ्गल में एक विशाल पिण्डाल बनाया गया था। इसका मुख्य द्वार बड़ा शानदार था। एक ऋषि-लगर खोला गया था। प्रतिदिन प्रात सायं तीन २ सहस्र पुरुष भोजन किया करते थे। आर्य नवयुवकों का उत्साह काम करने की लगन प्रशंसनीय थी। इस उत्सव पर श्र पं० विनायकरावजी विद्यालंकार, बार-ऐटलॉ प्रधान आ० प्र० नि० सभा नि० रा० व मंत्री प्र० नि० सभा व श्री० श्यामलाल जी वकील उप-प्रधान सभा व श्री० पं० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री सांख्य-तीर्थ व पं० नरेन्द्र जो आर्योपदेशक आ० प्र० नि० सभा व प० रघो मदास जी ऑनरेरी उपदेशक आ० प्र० नि० सभा व वीरभद्र जी ऑनरेरी उपदेशक आ० प्र० नि० सभा व श्री० गोविन्दराम जो भजनीक व प्रह्लाद जी भजन कने सभामें पधारकर उत्सव की शोभा बढाई। ४ दिन तक प्रार्थना भजन उपदेश व शंका-समाधान व शाम से व्याख्यान व भजन होते थे। स्त्री-पुरुष बडी शान्ति से सुनते थे। शंका समाधान में निज़ाम राज्य के सनातन धर्म के मशहूर संस्कृत के शास्त्री गोविन्दाचार्य्य जी आकर शंका करते थे। शास्त्री जी के विद्वत्तापूर्ण उत्तरसे निरुत्तर होजाते थे और उपस्थित जनता शास्त्रीजी की विद्वत्ता से बड़ी प्रभावित होती थी। मुकुन्दाचार्य्य जी ने कह दिया कि इस इलाक़े को आर्य्य समाज ने जीत लिया है। यहां से

आर्य्य समाज मोमिनाबाद के उत्सव पर श्री० पण्डित देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री व पण्डित रघोत्तमदास जी व भजनीक गोविन्दराम जी पधारे थे। वहां भी तीन दिन तक खूब धूम-धाम के साथ प्रचार हुआ। नलगुडा आर्य्य-समाज के सालाना जलसे पर श्री० पं० नरेन्द्र जी व श्री प्रह्लाद जी भजनीक गये और खूब प्रचार किया। निज़ामाबाद के वार्षिकोत्सव पर जो २७ मई से २६ मई तक था मैं व श्री० देवेन्द्र नाथजी शास्त्री व पं० नरेन्द्रजी व श्री० गोविन्दराम जी भजनीक गये। यहां का समाज स्थापित हुए तीन-चार मास हुवे मगर आर्य-भाइयों का पुरुषार्थ सराहनीय है। बड़े पुरुषार्थके साथ उत्सव मनाया। खूब उपस्थिति रहती थी। प्रात हवन, भजन, उपदेश, शंका समाधान और रात्रि मे व्याख्यान होते थे। मुसलमान भाइयों ने भी शंकासमाधान में भाग लिया। इस प्रकार एक मास वैदिक धर्म प्रचार हुआ। रियासत भर में आर्य-समाज की चर्चा हो रही है और जनता आर्य-समाज के उच्चकोटि के सिद्धान्तों से प्रभावित होकर आर्य-समाज के झण्डे के नीचे आना अपना सौभाग्य समझ रही है। इसके पश्चात् श्री० पं० देवेन्द्रनाथ जी सिकन्द्राबाद गुरुकुल व श्री० गोविन्दराम जी भजनीक अलीगढ़ चले गये। अब हमारे प्रचारक घूम २ कर नवीन समाजें स्थापित करने में लगे हैं। उनकी रिपोर्ट जो आ रही हैं, उत्साह जनक हैं। आगे फिर कभी विस्तृत समाचारों को प्रकाशित किया जावेगा।

श्रद्धानन्द उपदेशक विद्यालय, रांची

श्री प० धर्मवीर जी का दौरा

(सम्वाद दाता द्वारा)

सेन्ट्रल श्रद्धानन्द मिशन रांची की ओर से 'श्रद्धानन्द उपदेशक विद्यालय' का उद्घाटन समारोह गत मास २८ जून को श्रीयुत सुकुमार हलदार रिटायर्ड डिप्टी मजिस्ट्रेट रांची के सभापतित्व में हो गया था। इस उपदेशक विद्यालय में उराव, मुण्डा, सन्थाल आदि जातियों के मिडिल और मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को उपदेशक बनाने की शिक्षा दी जारही है।

उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्री पंडित धर्मवीर जी वेदालकार, मन्त्री अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द मैमोरियल ट्रस्ट जिन्होंने उक्त सोसायटी की ओर से उपदेशक विद्यालय को आरम्भ किया है श्री पं० देवव्रत जी अधिष्ठाता श्रद्धानन्द आश्रम खूण्टी के साथ मानभूम जिले के कुछ स्थानों का दौरा किया। श्री प० धर्मवीर जी ने झरिया के कई प्रतिष्ठित महानुभावों से "श्रद्धानन्द उपदेशक विद्यालय' के लिये दान प्राप्त किया।

श्रीमान् रायबहादुर हरिप्रसाद जी बैनर्जी	१००)
श्रीमान् ला० बलीरामजी तनेजा	१००)
श्रीमान् सेठ अर्जुनदास जी अग्रवाल	१००)

इस समय उपदेशक विद्यालय के लिए पण्डित धर्मवीर जी ने ८००) एकत्रित किया है। झरिया के महानुभावों ने भविष्य में प्रतिवर्ष श्रद्धानन्द ट्रस्ट को पर्याप्त सहायता देने का विचार प्रगट किया है।

श्री पण्डित धर्मवीर जी ने डी० ए० वी० स्कूल झरिया के विद्यार्थियों में और आर्यसमाज में ओजस्वी भाषण दिए।

केरल (ट्रावनकोर)

गत मई मास १६२६ में केरल प्रान्तान्तर्गत ट्रावनकोर रियासत में निम्न लिखित स्थानों पर मौखिक प्रचार हुआ। यथा —पोनकुन्नम्, चिरकड़व चेरुवेल्ली,

वेलूर, कोटिमता, कावेय पडी, कडकूरपट्टी, उलुवा कोट्टयम्, अतिरपुला, आपूंकरा, माखानम् पापाड़ी।

इसके अतिरिक्त वेल्लूर, मल्लूशेरी कुमारनेल्लूर, कोट्टयम, चड्डानाशेर। आदि स्थानो मे जा २ कर कुछ व्यक्तियो से प्रचारक मिले—उन्हे आर्य समाज के सहायक बनाने का यत्न किया गया। यहा यह बात स्मरणीय है केरल प्रान्त में नायरो को एक मुख्य स्थान प्राप्त है उन्होने नायर समाज कायम कर रखा है। यह समाज लगभग १५ वर्ष से काम कर रहा है। उसके जनरल सेक्रेटरी से प्रचारक मिले और उन्होने आर्य समाज के प्रति सहानुभूति प्रकट की है—

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती का सक्षिप्त जीवन चरित्र (छोटी सी पुस्तिका) लिखकर तैयार की गई। आर्य समाज का परिचय दिलाने वाली एक पुस्तक प्रकाशित हो रही है लगभग आधी समाप्त हो चुकी है।

मद्रास प्रान्त में आर्यसमाज की प्रगतियां

सार्वदेशिक सभा के उपदेशको का प्रचार कार्य

१ दो ईसाई परिवारो की शुद्धि का गई।

२ तीन वदिक विवाह, १ चूडाकर्म तथा अन्य सस्कार कराए गए।

३ पैराम्बू मे Ary un youth league की स्थापना की गई।

४ सेठ घनश्यामदास जी विरला से प्रचारक मिले तथा उन्हे केरल की स्थिति और मद्रास मे आर्य समाज का परिचय कराया।

५ Rejoinder to Xian Reply और Hindus Awake शीर्षक दो ट्रैक्ट लिखे गए।

६ प्रचारक गण्टूर प्रचारार्थ गए। परन्तु अति वर्षा के कारण तान दिनोमे वापिस लौटना पडा।

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य्य

—धार की एक वेश्या ने बगलोर की एक राजाबाई नामक स्त्री को उसकी ३ लड़की और दो लड़कों सहित उड़ाया था। बड़ा लड़कियाँ क्रमश ११ व ८ साल की थीं। उनके साथ वेश्या अपने दोनो लड़कों का निकाह गत ३० जून को करा रही थी। ऐन वक्त पर खबर पाकर आर धार के अधिकारियो से मिलकर श्री लालाराम जी नामक एक सज्जन ने निकाह रुकवाया और राजाबाई तथा उसके बच्चो को हिन्दू-धर्म्म-रक्षिणी सभा के आश्रम मे ले गए।

—बड़वाहा (होल्कर स्टेट) मे गत ३० जून को मोती लाला नामक एक हिन्दू की सधवा लड़को को आशिकअली गुण्डा भगा ले गया। उसे शराब पिलाकर उससे पुलिस में रिपोर्ट भी करादी कि मुझे मेर माँ बाप खाने को नहीं देत अत खुशी से इसक साथ आई हूँ। दूसरे दिन लड़की को मुस्लिम होटलमे खाना भा खिलाया गया। इतन मे खबर पाकर हि० ध० र० सभा के कार्यकर्ता पहुँच गए और गुण्डे से लड़का को छुड़ा लिया। लड़का का नाम यमुनाबाई है।

—५-७-३६ को आर्य्यसमाज चन्द्रधापुर मे अमरावती निवासी २८ वर्षीय मौरिस नामक एक गाव के ईसाई की शुद्धि हुई।

—रामायण शुद्धि सभा फखरपुर बहराइच) ने ३० जून को हाली रामलोध नामक व्यक्ति की शुद्धि की। इसकी आयु इस समय ३० साल की है जब यह ६ महाने का था इसकी मा मुसल्मान हो गई थी। इस शुद्धि मे पौराणिक भाइयों ने भी भाग लिया।

—२१-६-३६ को बिस्मिल स्त्री प० तोताराम जी रायकैथल निवासी की पुत्री बिस्मिल को जो लगभग २ वर्ष से मुसल्मान हो गई थी आर्य स० चन्दौसी ने शुद्ध किया।

—गत १७ जून को २ हिन्दू स्त्रियाँ तथा २ साल की लड़की एक मुसल्मान तागे वाले के चगुल में फस कर उतरौली मे मुसल्मान होन के लिए जामामस्जिद जाने वाली था। यह समाचार मालूम होने पर आर्य कुमार सभा के सदस्यो ने उनको रक्षा की। एक को उसके घर भेज दिया दूसरी को बा० राम नाथ मेम्बर ने अपने गाव भेजकर उसके भोजन आदि का उचित प्रबन्ध कर दिया।

—१६ जून को आ० स० खतौली (मुजफ्फर-नगर) मे एक नवमुस्लिम स्त्री की शुद्धि की गई।

—ता० २०।९।३६ को चादुर रेल्वे म एक हिन्दू धर्म की अबला अपने ३॥ महीने के दुधमुहे बच्चे को केवल समाज के डर से मुसल्मान अथवा ईसाई विधर्मियों को हवाले करने को उद्यत थी परन्तु उसी अवसर पर यहा के आर्यसमाज के प्रधान श्री बालकर ने उसे समझाकर ऐसा करने से विमुख किया और उस बच्चे को आर्यसमाज के मार्फत नागपुर अनाथालय में स्थान दिलवा दिया इस प्रकार एक दुधमुहे बच्चे को दूसरे धर्म में

जाने से बचाया और उसका यथोचित बदोबस्त करवा दिया।

मारुतीराम जी

मन्त्री, आर्यसमाज चादुर रेल्वे

—जौन डेविड साठे नाम के ईसाई पादरी चादा में रहते हैं। वे पहले महाराष्ट्र कोकणस्थ ब्राह्मण थे। उनकी तीन कन्याओं की शुद्धि पण्डित श्री ओंकारदत्तजी के प्रयत्न से वर्धा में की गई।

सबसे बड़ी कन्या लीलावती साठे (उम्र २४ वर्ष की शुद्धि २१-५-३६ को हुई। वह मराठी तथा अंग्रेजी मिडिल तक पढ़ी है और टीचर्स ट्रेनिङ्ग पास है। शुद्धि के उपलक्ष में भोज भी हुआ, जिस में लगभग १२५ व्यक्ति उपस्थित थे। युवती का नाम विद्यावती साठे रखा गया है।

द्वितीय कन्या सुशीला साठे (उम्र २१ वर्ष) और तृतीय कन्या सुत्रीना साठे (उम्र १९ वष) की शुद्धि १४-६-३६ को हुई। उनके नाम सावित्री और सुमित्रा क्रमश रक्खे गये।

शुद्धि के समय बड़ी बहिन ने एक लिखित भाषण दिया था। उनके भाषण में धर्मानुराग झलकता था। उन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की उच्चता स्वीकार कर ईसाई धर्म की कमजोरियों को बतलाते हुए अपने को वैदिक धर्म में प्रविष्ट करने में सौभाग्यशालिनी बतलाया। दो छोटी बहिनों की आत्म कहानियाँ ध्यान से पढ़ने योग्य हैं।

(१) श्री सुशीला साठे कहती हैं —

मैं ईसाई कुलोत्पन्न हूँ। मेरी शिक्षा छठवीं मराठी और दूसरी अंग्रेजी तक हुई है। मैं अध्यापिका का कार्य कर चुकी हूं। नौकरी छूटने के बाद मैं चादा मे रहने लगी। मैं विवाह के योग्य हो चुकी थी। एक जवान आदमी मेरे घर आने जाने लगा। और उसने अपने को ईसाई कहा। धीरे २ मेरे साथ विवाह की बातचीत करने लगा। मैं भी गुप्त रीति से उससे प्रेम करने लगी। हिन्दुस्तानी ईसाइयों ने जो अंग्रेजी के कोर्टशिप की नकल की है उसका परिणाम यह हुआ कि मैं गर्भवती होगई। मैंने अपने कोर्टशिप करने वालों को अपने गर्भ की बात बतलाई। उस समय नीच पापी ने यह कहा कि वह मुसलमान है और अगर मैं भी मुसलमान हो जाऊँ तो वह मेरे विवाह का प्रबन्ध कर देगा। यह सुनकर मै पागल सी हो गई। मैंने मुसलमान होने से इन्कार कर दिया। और इस चिन्ता में पड़ गई कि संसार में अपना मुँह कैसे दिखलाऊँगी। मैं अपने कुटुम्बीजनों से अलग रहने लगी और मैंने अपने गर्भ की रक्षा की। वह पापी बारबार मेरे पास आता और हर तरह की धमकी देता और मुसलमान होने को कहता, लेकिन मै किसी प्रकार भी मुसलमान होने को तैयार नहीं हुई। समय पर मेरे एक लड़की पैदा हो गई मेरी उम्र लगभग २० साल की है।

मैंने समाचार पत्रों मे पढा कि चादा जिले में एक आर्यसमाजी जिनका नाम प० ओंकारदत्त जी सेवक हैं, शुद्धि का काम कर रहे हैं। मैंने अपने दिल को खूब मजबूत बनाया और इनसे मई फ़रवरी १९३६ में मैं चादा में मिली मैंने अपना सब सच्चा हाल उनसे कह दिया उन्होंने मुझे यह विश्वास दिलाया कि वे मुझे शुद्ध कर लेंगे और जीवनको ऊँचा बनाने का मौका देंगे। उन्होंने कहा कि तुम दु ख के कारण क्षुब्ध मत हो बल्कि वैदिक

जीवन व्यतीत करने के लिए, अपने मन को तैयार करो। मैं अपने मन को तैयार करती रही और अपने मनको तैयार करनेके बाद ता० ७-६-३६ को वर्धा में अपनी शुद्धि कराने के लिए आगई हू।

(२) श्री शुदीना साठे की कथा इस प्रकार हैं —

मै ईसाई कुलोत्पन्न हूँ और मेरे पिता साठे कुलोत्पन्न होने के कारण हम लोग आज दिन भी अपने नाम के आगे साठे लिखते हैं। दक्षिण मे जितने ऊँची जाति के हिन्दू ईसाई हो जाते हैं वे अपना आड नाम अपने नाम के आगे रखते हैं। मैं मराठी चौथी तक पढी हू।

मेरा बाल काल उत्तम रहा। परन्तु जब मैं ब्याह के योग्य हुई तो मेरा विवाह जान बाला जो पटेल के साथ हुआ। वह जी० आर० पी० रेलवे मे फीटर का काम करता था। और बल्हारशाह जकशन स्टेशन पर रहता था। विवाह क बाद वह मुझे लकर बल्हारशाह आया। वहाँ आकर मैंन क्या देखा कि वह एक दूसरी औरत जो परधानिन थी उसके साथ प्रेम करता है। मैंन अपने पति से उसका त्याग देन को कहा। परन्तु उसन मुझ मारना पीटना शुरू कर दिया। उसक मुसलमान दोस्त थे। वह एक को अपने साथ लाता और उसे मेरे साथ घर मे बन्द कर देता। मै कमजोर थी, गुण्डो का मुकाबला कहाँ तक करती। आखिर एक दिन मेरे पति ने मुझे घर से निकाल दिया। मै हिंगनघाट आगई क्योकि मुसलमान जबरदस्ती मुझे मुसलमान बनाना चाहते थे और मेरा पति भी चाहता था कि मै मुसलमान हो जाऊँ।

हिंगनघाट आने पर भी मुसलमानो ने मेरा पीछा किया और एक ने कपटरूप धरके मुझे वहाँ छला और बहका कर नागपुर ल आया। मुझे एक हिंदू ने उसके जालसे छुड़ाया। उनकी स्त्री धोलपुर जान वाली थी। मै मुसलमानो से बहुत डरती थी। मैन उनसे कहा कि वह मुझे अपने साथ ही ले चलें। वह मुझे अपन साथ धोलपुर ले गई वहाँ उनके पास रहकर मैंने हिंदू-धर्म की बहुत-सी अच्छी बातो को जाना। मेरा मन हिन्दू होने का होने लगा। वहाँ से मै अपने पिता के घर आई। और अपना सब हाल उनसे कहा और यह भी कहा कि मै हिन्दू होना चाहती हूँ। मेरे माता पिता न मुझे कहा कि तुम वर्धा प० ओकारदत्त जी के पास जाओ। तुम्हारी बडी बहिन हिन्दू हो गई है, और वह उन्ही के पास है, उन्होने मुझे वर्धा मेरे भाई के साथ भेज दिया और मैं यहाँ ता० ७-६ ३६ को आ गई हूँ। ता० १४-६-३६ —सुदिना स ठे

(आर्य्य सेवक)

कर्तव्य पालन कीजिये

सार्वदेशिक समस्त आर्यजगत् को शिरामणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है। प्रत्यक आर्य, आर्य परिवार तथा आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह उसका स्वय ग्राहक बन और दूसरो को भी ग्राहक बनाए। किसी आर्य-परिवार और समाजको बिना 'सार्वदेशिक' को पढे हुए न रहना चाहिए। 'सार्वदेशिक' के प्रचार में योग दान करना प्र यक आर्य का कर्त्तव्य है।

महिला-जगत [सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती 'विशारदा']

क्या पढ़-लिखकर लड़कियां कुमारी ही रहेंगी ?

(ले०—कुमारी गोपालदेवी जी 'प्रभाकरा')

किसी युग मे आर्य-जाति गुणों का सम्मान करती थी, इसलिए उस समय जातिका प्रत्येक व्यक्ति गुणवान होकर ही उज्ज्वल होना चाहता था। प्रत्येक मनुष्य (स्त्री हो वा पुरुष) अपना साथी भी गुण-कर्म-स्वभावानुसार ही खोजता था। गुणों के सम्मुख अन्य धन-सम्बन्धी प्रलोभन अधिक श्रेयस्कर प्रतीत न होते थे। इस कारण माता-पिता सन्तति को योग्य बनाना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे। सन्तान को सुशिक्षित बना तदनुकूल वर या कन्या प्राप्त करने मे उन्हे किसी प्रकार की कठिनाई उपस्थित न होती थी।

'स्वयवर' का अभिप्राय यही है कि कन्या स्वय अपने गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर चुने। ऐतिहासिक ग्रन्थो के अवलोकन से भी यही पता लगता है कि सीता, सावित्री, दमयन्ती और द्रौपदी आदि जितनी पति परायणा रमणियां हुईं, उन्होंने स्वयवर द्वारा ही अपना पति चुना। सैकड़ो राजकुमार एक कुमारी को ब्याहने के लिये लालायित रहते थे। इसी कारण से माता-पिता को कन्या के विवाह करने का समस्या कठिन प्रतीत न होती थी। गुणो का प्राधान्य होने से राजकुमारी सावित्री सत्यवान् को, ऋषि कन्या शकुन्तला राजा दुष्यन्त को प्राप्त हुई। अभिप्राय यह कि वर्त्तमान समय की दहेज़ आदि कुप्रथाएँ उस समय उपस्थित ही न होती थी। केवल गुणो की ही प्रधानता थी।

ज्योंही पौराणिक युग का आरम्भ हुआ, स्वार्थी नाम धारी-ब्राह्मण पण्डो-के हाथों मे अधिकार आए। जन्मानुसार वर्ण-व्यवस्था मनवाने के अतिरिक्त उन्हों ने और भी अधिकार छीने। "स्त्री शूद्रौनाधीयाताम्" आदि श्लोक बनाकर और भी अन्याचार करने प्रारम्भ किए। धीरे-धीरे उनकी सन्तति में विद्या का अभाव दिखाई देने लगा। स्त्री जाति शिक्षा से सर्वथा वञ्चित रक्खी गई। मूर्खा लड़कियों के होने से स्थान पूर्ति के लिए दहेज़ आदि कुप्रथा आरम्भ हुई।

मुसलमानों का राज्य आरम्भ होते ही आर्य-जाति पर पाशविक अत्याचार होने लगे। जाति को सुरक्षित रखने के लिये आर्य दुधमुंही बच्चियो के विवाह करने लगे। उस समय यह अवस्था जाति-रक्षा के के निमित्त किसी अ श मे लाभदायक थी। इस आपत्कालीन प्रथा ने शनै शनै धर्म का रूप धारण कर लिया। मुसलमानो युग के व्यतीत हो जाने पर भी, जब इस प्रथा की आवश्यकता नही रही, तो भी यह आर्य-जाति से पूर्ववत् चिमटी रही, और घुन की तरह खाने लगी।

इसके पश्चात् भगवान् दयानन्द का युग आया। स्त्री-जाति का भाग्योदय हुआ। सैकड़ों वर्षो से जो शिक्षा का द्वार बन्द था, वह उनके लिए खुल गया। लोग कन्याओं को पढाने लगे, परन्तु पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से इस शिक्षा के साथ एक और जटिल समस्या उपस्थित हो गई। दरिद्र भारत के दरिद्र पिता ऋण लेकर भी अपने पुत्रों को परिश्रमा ढंग पर शिक्षा देने लगे। उस ऋण का प्रतिकार लड़के के विवाह के समय लड़की वालो से मांगा जाने लगा।

इसका परिणाम यह हो रहा है कि लड़के की शिक्षा के अनुसार विवाह मार्केट में उसकी क़ीमत आँकी जाती है। परिवार, कुलीनता, स्वभाव और गुण सब गौण हो गए हैं। जिस कन्या का पिता विवाह-मण्डी में सब से अधिक बोली देता है, उसी से कन्या स्वीकार की जाती है। कैसा जघन्य दृश्य है !! पौराणिक काल में स्त्री-शिक्षा का द्वार बन्द था, परन्तु इस धन के युग की अपेक्षा उसमें स्त्रियों का अस्तित्व तो क़ायम था, परन्तु आजकल लड़कों का विवाह हो जाने पर भी यदि कहीं से अधिक धन मिलने की आशा होती है तो वह पहली स्त्री को त्याग कर दूसरा विवाह कर लेते हैं। इस प्रकार की कई एक घटनाएँ मेरे देखने में आई हैं।

एक इञ्जीनियर साहब की दो सुपुत्रियां थीं। समस्त सम्पत्ति की अधिकारिणी भी यही थीं। पिता ने बड़ी कन्या को 'मिडिल' क्लास तक शिक्षा दी। लड़की के १६ वर्ष ही होने पर पिता को उसके विवाह की चिन्ता हुई। कई लड़कों ने अपने आप को प्रस्तुत किया। सब की शर्तें यह थीं कि विलायत का ख़र्च मिलना चाहिए। पिता ने वात्सल्य-स्नेहवश हो किसी एक की शर्त स्वीकार कर ली। साधारण परिवार के बी० ए० पास लड़के से लड़की का सम्बन्ध निश्चित हुआ। मँगनी के दिन २५ पाउण्ड (गिन्नियां) दिए गए। दो मास पीछे बड़े समारोह से विवाह हुआ। पन्द्रह बीस हज़ार का दहेज़ दिया गया। थोड़े दिनों पश्चात् दामाद ने श्वसुर से विलायत जाने का ख़र्च माँगा। लड़का इञ्जीनियरिङ्ग के लिए विलायत चला गया। तीन वर्ष तक पत्नी और श्वसुर को बड़े प्रेम की चिट्ठियाँ आती रहीं। जब पढ़ाई समाप्त हुई, तो उनके श्वसुर के आनन्द की सीमा न रही, परन्तु विधाता ने कुछ और ही दिखाना चाहा ! बहुत दिन तक दामाद की चिट्ठी नहीं आई। परिवार चिन्तातुर होने लगा। चिट्ठियाँ भेजी गईं, तार दिए गए, आने का ख़र्च भी भेजा गया, तब दामाद का चिट्ठी आई कि आप अपनी लड़की को टेनिस, बैडमिन्टन आदि की शिक्षा दिलाएँ। पिता ने 'तथास्तु' कहकर वैसा ही किया। एक वर्ष पीछे दामाद को चिट्ठी लिखी कि लड़की सब कुछ सीख चुकी है, आप भारत लौट आएँ। तब दामाद महोदय ने उत्तर दिया—मैं आपके किए उपकारों के लिए कृतज्ञ हूँ, परन्तु आने के लिए असमर्थ हूं क्योंकि एक वर्ष हुआ मेरा विवाह यहीं एक इङ्गलिश महिला से हो गया है।

यह पढ़ते ही लड़की के पिता मूर्च्छित हो गिर पड़े। माता और पुत्री के हृदय पर तो वज्र ही गिर पड़ा। लड़की को हिस्टीरिया के फ़िट आने लगे। इसके साथ ही ज्वर होने लगा। उपरोक्त घटना के छः महीने पीछे इसी दुःख से वह पति-परायणा देवी मत्सरमय जगत् को लात मारकर स्वर्ग को चली गई।

इस प्रकार की कई घटनाएँ नित्य सुनने तथा देखने में आती हैं, जिन्हें सुनकर रोमाञ्च हुए बिना नहीं रहता। देश की अवस्था प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। इस वायु का झोंका बड़े वेग से बह रहा है। अगर यही अवस्था रही, तो मैं आर्य्य-जाति से पूछती हूँ कि बङ्गाल निवासिनी स्नेहलता की भाँति पञ्जाब की कुमारी कन्याओं को आत्म हत्या करनी होगी अथवा पढ़-लिखकर आजन्म कुमारी ही रहना पड़ेगा ? इसका उत्तर कौन देगा ?

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएँ

मै चातुर्मास मे अपनी पहाड़ी कुटी रामगढ में रहकर लिखने पढ़ने आदि का काम किया करता हूँ। इस काल में बाहर कही प्रचारार्थ नही जाया करता—यह बात प्राय आर्य जगत जानता है परन्तु फिर भी अनेक पत्र वेद प्रचार सप्ताह में कथा करने और इसी काल के मध्य अन्य अवसरो पर प्रचार करने के लिये आर्य जगत के अधिकारी भेज दिया करते है। मुझे उनका एक मात्र निषेध परक उत्तर देना पड़ता है। मैं समझता हूँ कि यह काम अनावश्यक मुझे करना पड़ता है इस लिए मैं आर्य जगत के अधिकारी गण से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन मासो मे मेरे पास कृपा करके पत्र न भेजा करे अन्यथा मुझे उनका उत्तर न देने के लिए बाधित होना पड़ेगा।

❈　　*　　❈

सार्वदेशिक सभा की आर्य रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्री बाबू शिवचन्द्र जी का दौरा

गत मई मास में सहारनपुर, रुड़की, बहादराबाद तथा जून जुलाई मास मे गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर शहर, मेरठ सदर, मेरठ लालकुर्ती तथा कंकर खेड़ा समाजो मे मैने आर्यवीर सेवादल स्थापनार्थ दौरा किया। प्रसन्नता है सहारनपुर गाजियाबाद, मेरठ सदर तथा मेरठ लालकुर्ती समाजों मे सेवा दलो का संगठन हो गया है।

कंकर खेड़ा समाज अभी नई स्थापित हुई है। इसके सन्मुख आजकल अपना समाज मन्दिर बनाने की स्कीम है। इस समाज के अधिकारी तथा सदस्यो ने विश्वास दिलाया है कि जैसे ही उनकी समाज का मन्दिर बनकर तैयार हो जायगा वैसे ही वे लोग सेवा दल की स्थापना अपने यहा कर लेंगे।

अन्य समाजोमे युवक-संगठन के भावके अभाव के कारण सेवादल काफी यत्न करनेपर भी स्थापित नही हो सके परन्तु भविष्य के लिए क्षेत्र तैयार हो गया है। आशा है यह सब समाजें युवक संगठन की ओर विशेष ध्यान देंगे।

❈　　❈　　❈

दान सूची सार्वदेशिक सभा बाबत मासजून जुलाई

१)	श्री ओ० मेहर चन्द्र जी पुरी	(दान)
४००)	श्री सेठ जुगल किशोर जी बिरला	,,
४)	श्रीमती चन्द्रोबाई जी द्वारा म० पन्नालाल राम नारायण जी नेत्र वैद्य हिंगोली (निजाम राज्य)	(दान)
४॥)	आ० स० लालकुर्ती मेरठ	(आर्य समाज स्थापना दिवस)
२१)	,, ,, बैंकौक (स्याम)	,,
५)	आ० स० काशी सिटी	,,
१५)	आ० स० चौक इलाहाबाद	,,
४६२॥)	दान दाताओ को धन्यवाद।	

कोषाध्यक्ष

आर्य-वीर सेवा दल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनानुसार श्री० बा० शिवचन्द्र जी, सहायक मन्त्री आर्य रक्षा समिति, मेरठ नगर में आर्य वीर सेवा दल को सगठित करने के हेतु पधारे। उनके परिश्रम के फल स्वरूप लालकुर्ती में आर्य वीर सेवादल का निर्माण हुआ, जिसकी प्रथम बैठक बा० नन्दकिशोर जी दुबलिश M A के सभापतित्व म हुई। पदाधिकारियों के निर्वाचन के पश्चात् सामयिक भावी कार्य क्रम पर विचार हुआ और निश्चयकिया गया कि—

(१) जनता की शारीरिक उन्नतिके हेतु अखाड़े का प्रबन्ध किया जाय जिसमें गदका, मुद्‌गरादि का आयोजन हो।

(२) न्यून से न्यून माह मे १ बार आर्यवीर निकटवर्ती ग्रामो मे जाकर ग्राम सुधार सम्बन्धी सेवायें करें।

(३) स्थानीय कलक्टर महोदय से 'मैजिक लैटर्न' के लिए प्रार्थना की जाय, जिससे ग्रामीणों को स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा दी जा सके।

(४) नवयुवकों को व्याख्यान एवं लेखों द्वारा आर्य सिद्धान्तों की ओर आकर्षित किया जाय, और उनके आचरण तथा नियन्त्रण पर विशेष जोर दिया जाय।

(५) प्रत्येक आर्य वीर आर्य-भाइयों में प्रेम और भ्रातृभाव उत्पन्न करने का प्रयत्न करे, और मनुष्य मात्र की सेवा करने को तत्पर रहे।

श्री बा० शिवचन्द्र जी को उनके कार्य में पूर्ण सफलता मिली है। नवयुवकों में एक नवीन उत्साह और नवीन स्फूर्ति का सञ्चार हो रहा है और वे दल के सदस्य बनने को अत्यन्त लालायित हैं।

हरिदत्त शर्मा
वैदिक धर्म विशारद
मन्त्री, आर्यवीर सेवा दल लालकुरती मेरठ।

समाप्तम्

रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, में प्रकाशित।

ऋग्वेद | यजुर्वेद

Reg. No. L. 2121

ओ३म्

सार्वदेशिक

वार्षिक मूल्य २) सम्पादक—लाला देशबन्धु विदेश से ५ शिलिंग

एक प्रति का

अथर्ववेद | सामवेद

विषय-सूची

ॐ

सार्वदेशिक

॥ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ॥

वर्ष १० | भाद्रपद(२) १९९३ | सितम्बर १९३६ ई० | दयानन्दाब्द ११२ | अंक ७

वेद की शिक्षाएँ

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य परिष्टुतः ॥

—यजुर्वेद ।

भावार्थ—बुद्धिमान्, महान् ज्ञानी तथा योगी पुरुष उस अद्वितीय जगत्कर्ता ज्ञानी ईश्वर की ही श्रेष्ठ स्तुति मन और बुद्धि द्वारा अच्छे प्रकार किया कर ।

सम्पादकीय

आर्य विवाह बिल

लैजिस्लेटिव असेम्बली मे जो आर्य विवाह बिल पेश हुआ हुआ है 'नाम' तथा 'सीमा' की धाराओं को छोडकर उसकी शेष धाराएँ जो महत्व-पूर्ण थीं इस प्रकार थीं —

(२) इस कानून के लिये आर्य समाजी का अर्थ वह व्यक्ति होगा—

(अ) जो किसी आर्य समाज का सदस्य हो।

(ब) जो इस ऐक्ट के पास होने के ५ साल के भीतर या एक साल के भीतर (जो भी समय अन्त मे समाप्त होता हो) एक लिखित दस्तावेज के द्वारा अपने को आर्यसमाजी या उसके पर्याय वाची शब्दो मे अपना ऐसा होना घोषित कर देवे।

(स) जो (अ) या (ब) धारा मे उल्लिखित किसी व्यक्ति के परिवार का सदस्य हो वा उस पर आश्रित सम्बन्धी हो या उसके संरक्षण मे हो।

व्याख्या—उपर्युक्त धारा के (ब) भाग मे जिस दस्तावेज का जिक्र किया गया है यदि वह दस्तावेज १६०८ के भारतीय रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड हो गई हो तो वह दस्तावेज उस व्यक्तिके आर्यसमाजी होने का अबाध्य सबूत होगी और यह सिद्ध करने के लिये कि वह व्यक्ति आर्यसमाजी नहीं है कोई भी साक्षी स्वीकृत नहीं होगी।

(३) कोई कानून या रिवाज इसके विपरीत होते हुए भी, किसी आर्य्यसमाजी दम्पत्ति का विवाह इसलिए नाजायज न होगा कि वे हिन्दु-समाज की विभिन्न जाति या उपजाति के या वे अथवा उनमे से कोई विभिन्न धर्म्म के रहे थे।

(४) दायाद के लिए इस एक्ट की धारा ३ मे उल्लिखित समस्त अन्तजातीय विवाह सजातीय विवाह समझे जायँगे।

गत ४ अगस्त को यह बिल सिलेक्ट कमेटी मे से गुजर चुका है और इसी शिमला अधिवे-शन मे असेम्बली के सामने आने वाला है। उक्त कमेटी ने बिल को जो रूप दिया है उसमे निम्न बाते है —

(१) विस्तार की 'सीमा' प्राय वही है बल्कि और भी विस्तृत कर दी गई है।

(२) आर्य्य-समाजी' शब्द की परिभाषा उडादी गई है और 'आर्य्य समाजी' कौन है इसका निर्णय ठीक उसी तरह अदालत मे होगा जिस तरह किसी हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान या पारसी की हालत मे होता है।

(३) विवाह के जायज होने वाली धारा प्राय ठीक वैसी ही रक्खी गई है ।

(४) 'दाय भाग' में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है जो निम्न प्रकार से है—

"इस एक्ट की धारा ७ की अनुपस्थिति में जिस स्त्री-पुरुष का विवाह नाजायज होता उनकी तथा उनकी सन्तान की जायदाद का दायाद इंडियन सक्सेशन ऐक्ट की धाराओं के अनुसार होगा।

प्रस्तावित बिल में दायाद की व्यवस्था हिन्दुओं के व्यक्तिगत (Personal Law) कानून के अनुसार रक्खी गई थी। सिलेक्ट कमेटी ने यह व्यवस्था कुछ अंशों में इंडियन सक्सेशन ऐक्ट के अनुसार रक्खी है।

सिलेक्ट कमेटी के ये दोनों ही संशोधन आर्य्य-समाज की इच्छा के प्रतिकूल हैं। दायाद-सम्बन्धी संशोधन तो बहुत ही आक्षेपों से भरा हुआ है। आर्य्य-समाज अपने ऊपर उन शास्त्रों के बजाय जिनमें उसका विश्वास है इंडियन सक्सेशन ऐक्ट के लागू होने के विरुद्ध है। उन आर्य्य-स्त्री पुरुषों की सम्पत्ति के ऊपर जिनके लाभ के लिए यह बिल बनाया गया है, इंडियन सक्सेशन ऐक्ट लागू करना नितान्त अनुचित है और उनकी माग पर आघात है। सर्व आर्य्य-समाजों ने एक स्वर से अपनी इच्छा श्री० बा० घनश्याम सिंह जी गुप्त द्वारा निर्मित बिल के पक्ष मे जाहिर की है जो सरकार को भली प्रकार विदित है।

यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि आर्य्य-समाज वेद और पवित्र शास्त्रों मे विश्वास रखता है और वर्णाश्रम धर्म्म को मानता है। सनातनी हिन्दुओं से आर्य्य समाजियों का भेद यह है कि वे 'जन्म'से 'वर्ण' में विश्वास नहीं रखते हैं, कर्म से वर्ण मानते है। उन मामलों मे जिनमें पवित्र शास्त्र लागू होसकते है, इंडियन सक्सेशन ऐक्टको लागू करके आर्यसमाजियों को अपने विश्वास का परित्याग करनेको कहना है। इन्हीं बातोंको सामने रखते हुए सिलेक्ट कमेटी के कुछ सदस्य श्री० बा० घनश्यामसिंहजी गुप्त, श्री०डा० भगवानदास, श्री० डाक्टर खरे तथा श्री० एम० सी० राजा ने सिलेक्ट कमेटी के दायाद सम्बन्धी संशोधन का विरोध किया है तथा श्री० बा० घनश्याम सिंह जी ने एक और पृथक् विरोधपत्र जोड़ा है जिसमें यह प्रकट करते हुए कि दोनों संशोधन आर्य्य-समाज को माननीय नहीं होंगे, दायाद सम्बन्धी धारा आर्य्य समाजियों के भावों के विरुद्ध है असल धाराओं के रक्खे जाने पर ही जोर दिया गया है।

श्री० बा० घनश्याम सिंह जी ने प्रस्तावित बिल का जो ड्राफ्ट बनाया था उसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री० महात्मा नारायण स्वामीजी की पूर्ण सहमति थी। समस्त आर्य्य समाजों का पूरा २ समर्थन भी उसे प्राप्त हुआ था। यह बिल बा० घनश्याम सिंह जी का नहीं वरन् समूचे आर्य्य-जगत् का है, यह बात सरकार पर भी स्पष्ट की जा चुकी थी। अब एक बार फिर हम स्पष्ट किए देते हैं। बा० घनश्याम सिंह जी की असल बिल को पास करने की माग समस्त आर्य्य-समाज की माग समझी जानी चाहिए। आशा है उसे स्वीकार करने मे सरकार तथा असेम्बलीके सदस्य आर्य्यसमाज की आवश्यक मागको पूरा करनेके श्रेयके भागी होंगे।

असेम्बली के जिन सदस्यों तथा सरकार के जिन कर्मचारियों ने बिल को इस स्टेज तक पहुँचाने में योग दिया है वे आर्य्य-समाज के धन्यवाद के पात्र हैं। हमें आशा है कि उनका योग अंतिम चरण तक बिल को मिलेगा। श्री० बा० घनश्याम सिंह जी जिस लग्न, तत्परता, और मनोयोग से इस कार्य्य में लगे हुए हैं, वह श्लाघनीय है। परमात्मा उनके यत्नों को सफलीभूत करें, यही कामना है।

* *

शारदा ऐक्ट—

श्रीयुत बी० दास जी के शारदा ऐक्ट के संशोधन सम्बन्धी बिल के समर्थन में जो असेम्बली में अपने भाग्य की प्रतीक्षा कर रहा है लंदन मे लार्ड लोथियान तथा अन्य लोगों ने एक पत्र पत्रों में प्रकाशित कराया है। उस पत्र में सरकार से उक्त बिल का समर्थन करने की मांग की गई है . पत्र का सारांश इस प्रकार है —

"१९२९ में सरकार की पूर्ण सहायता से एक ऐक्ट पास हुआ था उसका उद्देश्य १४ वर्षसे कम उम्र की लड़की की शादी को दण्डनीय अपराध करार देना था। दुर्भाग्य से, ऐक्ट की त्रुटियों की वजह से यह ऐक्ट बिल्कुल निकम्मा सिद्ध हुआ है और सरकार ने इसके प्रचलन के लिए कोई व्यवस्थित यत्न नहीं किया है। भारत की महिला समितियों की रिपोर्टें कई वर्षों से यह स्पष्ट कर रही हैं कि यह ऐक्ट प्राय मर चुका है और ये समितियां तथा भारत के समाज-संशोधक इसके संशोधन के लिए यत्न कर रहे हैं। अब यह अत्यन्त आवश्यक संशोधक बिल प्राइवेट सदस्य श्री बी० दास द्वारा पेश किया गया है और यह बिल कानून का रूप ग्रहण न कर सका तो यह बड़े दुख की बात होगी।

वर्तमान कानून की त्रुटियाँ जिनका सुधार मि० दास चाहते हैं तीन हैं—

(१) ऐक्ट के विरुद्ध होने वाले किसी विवाह के रोके जाने की ऐक्ट में कोई व्यवस्था नहीं की गई है। बिल अदालतों को अपनी मर्जी से विवाह के रोकने का हुक्म जारी करने की क्षमता प्रदान करेगा। बिल में यह भी प्रस्ताव किया गया है कि इस प्रकार के हुक्म के उल्लंघन के लिए कड़ा से कड़ा दण्ड नियत होना चाहिए।

(२) ऐक्ट के प्रचलन में सबसे बड़ी एक रुकावट यह है कि मुद्दई को शिकायत के लिए प्रकाश में आना पड़ता है। बाल-विवाह के विरुद्ध कार्य्यवाहि करने का भार प्राइवेट नागरिक पर डाला गया है और १००)के जो कि अदालत में बतौर ज़मानत के जमा किए जाते हैं दावे के फेल हो जाने की अवस्था में खोने की जिम्मेवारी भी प्राइवेट नागरिक को लेनी पड़ती है। बिल में गुप्त सूचना के मिलने पर वगैर किसी प्रकार का प्रतिज्ञा पत्र लिखाए या ज़मानत लिए अपनी मर्जी से कार्य्यवाहि करने का अदालत को अधिकार देने की माँग की गई है।

(३) बाल पत्नी की रक्षा के लिए ऐक्ट में कोई व्यवस्था नहीं की गई थी और इस प्रकारकी व्यवस्था के न होने की वजह से पत्नी के शुभ चिन्तक प्राय अपराधियों के विरुद्ध कार्य्यवाहि करने से रुक जाते थे इसलिए कि वे यह जानते थे कि यदि वे सफल भी हो गए तो समय से पूर्व माता बन जाने के खतरों से लड़की की वे रक्षा नहीं कर सकेंगे और उलटे मुकद्दमें

के बदले के रूप में लड़की के प्रति पति या घर वालों के दुर्व्यवहार के वे कारण बन जाएँगे। बिल अदालत के सामने इस प्रकार की व्यवस्था की ज़रूरत रख देता है अर्थात् जब तक शादी की कानूनी अवस्था पत्नी न प्राप्त करले तब तक के लिये उसे पृथक रखना और गुज़ारे की व्यवस्था करना अदालत के लिए आवश्यक हो जाता है।"

हम इस पत्र का पूर्ण समर्थन करते है और आशा करते हैं कि सरकार इस बिल को अपनी पूरी पूरी सहायता प्रदान करेगी और उसे पास करायेगी। ऐसा करने से निश्चय ही सरकार महिला-समाज तथा समाज संशोधकों के धन्यवाद की पात्र बनेगी। हमारी सरकार की नीति इस प्रकार के मामलों में अनुदार है शारदा ऐक्ट का वर्तमान रूप इसी नीति का फल है। यह नीति देश के विशाल हितों के लिए हानि कारक है और इसकी वजह से सरकार उन्नत क्षेत्रों' मे काफी बदनाम है। यदि इस मामले में उसने उसी नीति का परिचय दिया तो निश्चय ही उसकी बदनामी में वृद्धि होगी। न केवल इस देश में ही वरन् इस देश से बाहर भी जहां के लोगों ने बिल की उपादेयता को अनुभव करके उसके पक्ष म आवाज़ उठाई है और सरकार को प्रेरणा की है। कट्टर पन्थियों का इस प्रकार के उपायों का विरोध रात के बाद दिन की तरह निश्चित है और सरकार राजनैतिक मामलों की वजह से इस प्रकार के विरोध की परवाह भी प्राय नियम के रूप में करती है परन्तु इस नियम के अपवाद भी हमारे सामने हैं जब कट्टर पन्थियों के होहल्ला और विरोध पर सरकार की ओर से ध्यान नहीं दिया गया हाँ मानवता और सामाजिक न्याय पर ध्यान दिया गया है। आशा है सरकार इस बिल के समर्थन में भी न्याय और मानवता के भावों से ही प्रेरित होगी, कट्टर पन्थियों के विरोध इत्यादि से नहीं।

कतिपय सामाजिक बिल--

हम श्रीयुत बा० दास के शारदा ऐक्ट को प्रभावशाली बनाने, श्रीयुत राजा के अछूतों की दिक्कतों को दूर करने तथा श्रीयुत डा० भगवानदासजी के हिन्दुओं के अन्तर्जातीय विवाहों को वैध करार देने विषयक बिलों का समर्थन करते है।

श्रद्धानन्द ट्रस्ट—

छोटा नागपुर की जंगली जातियों में आर्य संस्कृति के प्रचार की आवश्यकता है और ईसाइयों के व्यापक और बढ़ते हुए प्रभाव को देखते हुए इन दिनों यह आवश्यकता बहुत बढ़ी हुई है, यह बात आर्यों और हिन्दुओं से छुपी नहीं है। देहली का श्रद्धानन्द ट्रस्ट उन संस्थाओं में से है जो वहाँ पिछले ४-५ साल से सफल काम कर रही हैं। ट्रस्ट ने वहाँ बहुत से भाइयों को ईसाइयों के जाल से मुक्त किया है बहुतों को जाल म से फ सने मे बचाया है। उसने कई स्कूल तथा शिक्षा सस्थायें यथा खूँटीमें 'श्रद्धानन्द आश्रम' इत्यादि खोली हुई हैं तथा कई प्रचारक लगाए हुए हैं। अभी हाल में ट्रस्ट का अपनी प्रगतियाँ बढानी पड़ गई है ट्रस्ट ने रांची मे 'सेन्ट्रल श्रद्धानन्द मिशन' स्थापित कर के अपना प्रचार उसके आधीन कर दिया है जिससे काम व्यवस्थित रूप से हो, तथा एक उपदेशक विद्यालय खोला है जिससे जगली जातियों में से ही प्रचारक तय्यार किए तथा काम पर लगाए जा सकें। भ त-, वस्त्र पुस्तकें, स्टेशनरी इत्यादि विद्यार्थियों को ,८८

दिए जाने का विचार है। प्रचार के अन्य बहुत से उपायों को क्रिया मे लाए जाने का भी सोची जा रही है। ट्रस्ट की धन जन की प्राय सब शक्तिय इस प्रचार पर लगा दी गई है। ट्रस्ट के कार्य्य कर्त्ता मन्त्री श्री प० धर्म्मवीर जी वेदालङ्कार कार्य्य के निरीक्षणार्थ देहली से जाकर राची मे बैठ गए हैं। ट्रस्ट की समस्त शक्तिया वहाँ प्रचार पर लग जाने पर भी ट्रस्ट को सन्देह है कि वह अपनी बढी हुई और दिन पर दिन बढती हुई प्रगतियो को ठाक ठाक रूप से सचालित कर सकेगा वा नही इसलिए उसने चाहा है कि हिन्दू जनता उसकी धन से अधिक से अधिक सहायता करे और कम से कम ५०० ० रुपया उसके निर्णय पर तत्काल रख दिया जाय। इसके लिए उसने जनता से अपील की है। ईसाइयो के धन जन के साधनो के मुकाबले मे ट्रस्ट इत्यादि सस्थाओ के सब साधन नगण्य है और ट्रस्ट की यह ५००००) की माँग तो बिल्कुल नगण्य है। सरकार हिन्दू मिशनो के प्रचार को उन क्षेत्रो मे असभव बनाने और उन क्षेत्रो को ईसाइयो के लिए साफ़ करने के यत्नमे लगा देख पडती है। ट्रष्ट इत्यादि सस्थाओ का इस प्रकार दुहरा काम हो जाता है। एक काम तो प्रचार के अपने अधिकार को प्राप्त करना वा उसकी रक्षा करना और दूसरा ईसाइयो से लोहा लेना। इन दोनो कामो के लिए जनता के पूरे सहयोग की जरूरत रहता है। अन्तिम काम के लिए तो सहयोग अनिवार्य्य हो जाता है। और जिस सस्था न अपना समस्त शक्ति इस काम पर लगा दी हो और इस पर भा वह सहयोग की जरूरत मे हो तो वह उस सहयोग की पात्र हो जाती है। इस दृष्टि से श्रद्धानन्द ट्रष्ट धनजन के पूरे २ सहयोग का अधिकारी है, वह उसे मिलना चाहिए और उसकी ५००००) की नगण्य माँग को धनी मानी सज्जनो को तत्काल पूरा कर देना चाहिए और आगे भी तय्यार रहना चाहिए।

सब प्रकार का धन श्री ला० नारायणदत्त जी प्रधान मन्त्री 'श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट' १३ बाराखभा रोड न्यू देहली के पते पर पहुँचना चाहिए।

लंडन का विश्व धर्म्म सम्मेलन—

लडन विश्व धर्म्म सम्मेलन का अधिवेशन यूनीवर्सिटी कालेज मे सफलता पूर्वक हुआ और ३ से १७ जुलाई तक अर्थात् २ सप्ताह जारी रहा।

बडौदा नरेश श्रीमन्त गायक वाड के जो विश्व धर्म्म सम्मेलन के अन्तर्राष्ट्रीय प्रेजीडन्ट है एक सार गर्भित भाषण के साथ जो बहुत पसन्द किया गया था अधिवेशन की कार्यवाहि शुरू हुई था।

सर राधाकृष्ण, प्रो० महन्द्रनाथ सरकार, प्रो० सुरेन्द्रनाथ दास गुप्त, सर अब्दुलकादिर, श्रीयुत युसुफ अली और दूसरे नेताओ ने हिन्दू और मुसलमान धर्म्म का प्रतिनिधित्व किया।

सालोन के प्रोफेसर मलालासकरा और टोकियो (जापान) की इम्पारियल यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर सुसुकी ने बौद्ध धर्म का प्रतिनिधित्व किया।

चीन क कवि और नाटक कार श्रीयुत ऐस ग्ल सियोग ने कन्फ्यूशस धर्म्म को बडा उत्तम राति से प्रस्तुत किया।

'विश्व धर्म्म सम्मेलन के २ जन्मदाता शिकागो के श्रीयुत चार्ल्स एफ़ वेलर तथा भारत के केदारनाथ गुप्त अधिवेशन मे भाग लेने के लिए अमेरिका से आए थे। इनके साथ कई अन्य सच्चे कर्य्य कर्त्ता भी थे।

सेन्टपाल और कैन्टरबरी के अध्यक्षों ने समस्त प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया तथा कैन्टरबरी और सेन्टपाल के गिरजों में प्रतिनिधियों के व्याख्यानों की व्यवस्था की।

कान्फ्रेंस एक स्वर से इस परिणाम पर पहुँची कि समस्त धर्मों की आधार भूत सचाइयाँ एक हैं।

उत्तम पुस्तकों का संग्रह श्रेष्ठ सम्पत्ति है—

उत्तम पुस्तकों का संग्रह बहुमूल्य सम्पत्ति होता है। इस सम्पत्ति का उपभोग वर्तमान और आनेवाली दोनों सन्तान करती हैं और उससे अमित लाभ उठाती हैं। संसार के बहुसंख्यक व्यक्तियों ने अपने जीवन काल में उत्तम पुस्तकों का संग्रह किया, वर्तमान सन्तान को उससे लाभ पहुँचाया, गृहस्थो ने अपने संग्रहों मे पुस्तकों के संग्रह को प्रमुख स्थान दिया, उनकी सन्तानों ने फ़ायदा उठाया और आने वाली सन्तान के लिए उत्तम संग्रह छोड़े और इस प्रकार इस बात का उत्तम सबूत दिया कि वे उपयुक्त सचाई को न केवल मानते ही थे वरन् अमल मे भी लाते थे। हमारे पुरुषाओं ने हमारे लिए जो सम्पति छोड़ी है उसमें पुस्तकों के श्रेष्ठ संग्रहालय भी हैं। हमारी इस सम्पत्ति की मिसाल दुनिया में तलाश करने पर भी नहीं मिलती है। हम अब तक उस सम्पत्ति पर जीते रहे हैं और आनेवाले असंख्य वर्षों तक जीते रहेंगे और हमारे हृदय उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते रहेगे। परन्तु हम लोगों ने इस सम्पति में कितना योग दिया है इस प्रश्न का उत्तर हम से पूर्व के लोगों के पास तो था भले हो उत्साह-वर्द्धक न था, पर हमारे पास तो कोई उत्तर भी नहीं है। हम समर्थ होते हुए भी पुस्तकों के संग्रह की ओर ध्यान नहीं देते हैं। इसका कारण हमारी निकृष्ट मनोवृत्ति है। हम अपने घरों को उत्तम पुस्तकों के संग्रह से सजाने के बजाय उन्हें काम और वासनाओं को उत्तेजित करने वाली चमकीली परन्तु थोथी चीज़ों से सजाते हैं। उत्तम पुस्तक अपने बच्चों के हाथ में रखने के बजाय हम उनके हाथ में गन्दी और निकृष्ट चीज़ें रखते हैं। हम उनके शरीरों की थोथी सजावट के जनून में उनके दिमाग़ों की सजावट को भूल जाते हैं। हम उनके शारीरिक भोजन की जितनी चिन्ता करते है उतनी मानसिक भोजन की नहीं करते हैं। हमने देखा है कि अपनी किसी शौक की चीज़ पर या पत्नी की किसी फ़रमाइश पर पिता का दिल और जेब दोनों खुल जाते हैं परन्तु अपनी इच्छा से तो कहाँ बच्चों के इसरार पर भी उत्तम पुस्तकों के ख़रीदने के समय माता पिताओं के दिल और जेब दोनों बन्द हो जाते हैं। यदि इसरार जारी ही रहा तो निकृष्ट चीज़ों के द्वारा शान्त कर देते हैं। गरज़ कि हम अपनी सन्तान के सामने न कोई उत्तम सम्पत्ति रख रहे है और न पीछे छोड रहे हैं और इस प्रकार एक बड़ी भूल कर रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी मनोवृत्ति को बदलें और अपने पूर्वजों की सम्पत्ति मे योग दें। कौन पुस्तक उत्तम है और कौन नहीं है यह समस्या जटिल है और इन दिनों इस विज्ञापनबाज़ी के युग मे जब कि ताँबा और सोना एक ही भाव बिकने लग गया है यह समस्या और भी जटिल हो गई है। इस सम्बन्ध में हमें उत्तम पुस्तकों, विद्वानों और निष्पक्ष समालोचकों से मार्ग प्रदर्शन ग्रहण करना चाहिए और उन्हें जनता का मार्ग प्रदर्शन करना चाहिए।

चीनसरकार की विशेष आज्ञा—

चीन की सरकार ने अभी हाल मे एक विशेष

आज्ञा जारी की है कि अच्छा स्वास्थ्य न रखने वाले जवान पुरुष और स्त्रियाँ शादी नहीं कर सकेंगे।

इस आज्ञा का उद्देश्य कमज़ोर और निकम्मे सन्तानों से समाज को बचाना है। चीन की सरकार का यह क़दम श्लाघनीय तथा अन्य सरकारों के लिए अनुकरणीय है।

साहित्य के लिए दान--

रावल पिंडी के राय साहब श्री मनोखेराय जी ने अंग्रेज़ी पढ़ी लिखी जनता में आर्य समाज का अंग्रेज़ी साहित्य मुख्य तया श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी कृत अंग्रेज़ी वैदिक सध्या (Daily Prayer) के मुफ्त वितरण के लिए सभाके निर्णय पर २००) रखने की उदारता दिखलाई है। रायसाहब का यह दान सद्दान है और उदाहरण अनुकरणीय है। हम राय साहब को इस दान के लिये धन्यवाद देते हैं। सभा को मिलने वाला इस प्रकार का दान यह पहला नहीं है इससे पूर्व धामपुर (विजनौर) निवासी श्री ला० जमुना दास जी आर्य ने जो आर्य समाज को आर्थिक सहायता देने के लिए प्रसिद्ध हैं सभा के निर्णय पर सभा के विदेश प्रचार के कार्य के आदर के रूप में विदेशों मे उत्तम साहित्य पहुंचाने के निमित्त एक विशेष राशि रक्खी है और आगे भी रखते रहने का वचन दिया हुआ है। इसी प्रकार दीवान चन्द ट्रस्ट ने भी दान दिया है। आशा है अन्य धनी मानी महानुभाव इन महानुभावों तथा संस्था का अनुकरण करते हुए साहित्य के लिए सभा के निर्णय पर धन रक्खेंगे।

सार्वदेशिक और विज्ञापन—

पिछले दिनों 'सार्वदेशिक' के एक प्रेमी आर्य सज्जन से बात चीत हो रही थीं। 'सार्वदेशिक' के घाटे का प्रसङ्ग छिड़ने पर उन महानुभाव ने विज्ञापन को अख़बारों की आमदनी का एक अच्छा साधन प्रगट करते और सार्वदेशिक में विज्ञापनों की कमी की ओर संकेत करते हुए मालूम किया कि क्यों नहीं हम इस साधन से अधिक से अधिक लाभ उठाते हैं। हम ने उनकी बात को अक्षरशः स्वीकार करते हुए उनको कहा कि हम यत्न करने पर भी विज्ञापन को आयका साधन नहीं बना सके हैं। विज्ञापन नहीं आते हैं, बात यह नहीं है। बात यह है कि उनमें से बहुतों को हमें वापस कर देना होता है इसलिए कि वे 'पत्र' की विज्ञापन की नीति के प्रतिकूल होते हैं अर्थात् वे वैदिक विचार और आचार और उन शिक्षाओं के प्रतिकूल होते हैं जिनका आर्य समाज प्रचार करता है। उदाहरण के रूप में हमने उन्हें बतलाया कि एक सज्जन ने हमें एक विज्ञापन अभी कुछ दिन हुए प्रकाश नार्थ भेजा, विज्ञापन का मूल्य भी नियमानुसार ऐडवान्स में भेज दिया। फिर भी हमें वह विज्ञापन इस लिए वापस करदेना पड़ा कि उस विज्ञापन में एक प्रकार के जुए की गन्ध आती थी। हमने अपने मित्र को यह भी कहा कि यदि हम इस प्रकार के विज्ञापनों को स्वीकार करते रहे होते तो विज्ञापन न सिर्फ हमारी आमदनी का अच्छा साधन बन गया होता वरन् इस से हमने कुछ कमा भी लिया होता। हमारे इस स्पष्टीकरण पर हमारे मित्र ने स्वीकारी की मुहर लगा दी और साथ ही उन्होंने हमारी मजबूरी को भी अनुभव किया और तत्काल सात्विक विज्ञापन या इसके बदले में अधिक से अधिक ग्राहक देने का हमें वचन दिया और यह प्रकट करते हुए हमें हर्ष होता है कि वे अपने वचन को क्रियात्मक रूप भी देने लग हैं। हम ये पङ्क्तियां इस लिए लिख रहे हैं जिससे

विज्ञापन के सम्बन्ध में हमारी नीति और मजबूरियाँ जनता और सार्वदेशिक परिवार पर स्पष्ट हो जायँ। हमें विश्वास है कि सार्वदेशिक परिवार का प्रत्येक सदस्य उन सज्जन की मिसाल अपने सामने रखकर पुस्तकों, संस्थाओं इत्यादि के सात्विक विज्ञापन वा अधिक से अधिक ग्राहक देकर सार्वदेशिक के प्रति अपने प्रेम का परिचय देगा तथा सार्वदेशिक को पैरों पर स्वयं खड़ा होने के योग्य बनाने में बहुमूल्य योग देगा। ऐसी अवस्था आ जाने पर 'पत्र' को और भी विस्तृत रूप देने में जिसके लिए हमारी एकान्त इच्छा और यत्न है, हम समर्थ हो जायँगे। आशा है हमारे इस निवेदन पर उचित ध्यान दिया जायगा।

जल-प्रलय—

बिहार, संयुक्त प्रान्त और पंजाब आदि प्रान्तों से जल-प्रलय के भयङ्कर समाचार आ रहे हैं। जान और माल की हानि अपरिमित है तथा बचे हुओं की मुसीबतें महान् हैं। वे प्राणी हमारी क्रियात्मक सहानुभूति और सहायता के पात्र हैं। धर्म्म, जाति और प्रान्त के भेद भाव के बिना उन्हें इस मुसीबत के काल में मानवता के नाते सहायता दी जानी चाहिए। हमें प्रसन्नता है कि इस प्रकार के अवसरों पर हमारे देश वासी पीछे नहीं रहते हैं। इस अवसर पर भी वे पीछे नहीं हैं और न रहेंगे। सहायताकी इस प्रकारकी अपीलों का हम हृदयसे समर्थन करते हैं और आशा करते हैं जो सहायता, सहायता-समितियों को अपेक्षित होगी वह उन्हें मिलेगी। आर्य्य प्रतिनिधि सभा बिहार भी पीडित क्षेत्रों मे सहायता कार्य्य कर रही है। आर्य्य सज्जन अपना भाग सीधे उसे वा सार्वदेशिक सभा को भेज सकते हैं।

शवका दाह संस्कार और ब्रिटेन—

लिवरपूल के बिशप डा० डेविड ने 'लिवरपूल रिव्यू' नामक पत्रिका के स्तम्भों में मुर्दों के जलाने के पक्ष मे लिखा हैं। वे लिखते हैं —

"जबतक मुर्दे को जलाने के बजाय जन साधारण मुर्दे को गाड़ना छोड़ने से इन्कार नहीं करेंगे तबतक सिवाय इसके कि वे कठिनाइयाँ कम हो जायँ जो मुर्दे की व्यवस्था करते समय नगर के अधिकारियों के सामने उपस्थित होती हैं ज़मीन का फ़ायदा उठाने का कोई भी तरीक़ा अधिक फलदायक नहीं हो सकता है। मुर्दों के गाड़ने की प्रथा के जारी रहने का मुख्य कारण मृत्यु के सम्बन्ध में लोगों का अन्धविश्वास ही है। परन्तु समाज के अधिक शिक्षित और संपन्न लोगों मे पिछले पचास वर्षों में मृत्यु सम्बन्धी प्रथाओं में क्रान्ति मच गई है और मुर्दा जलाने की असाधारण प्रथा साधारण बन गई है।"

मुर्दा जलाने का तरीक़ा बड़ा स्वास्थ्यप्रद और सस्ता तरीक़ा है और यदि इसके लिए उचित सुविधाएँ कर दी जायँ और मुर्दों की व्यवस्था करने के वर्तमान ख़र्चों में कमी हो जाय तो ब्रिटेन के कम सम्पन्न व्यक्ति बड़ी संख्या मे मुर्दों को जलाने लग जायँ। बिशप महोदय के कथनानुसार वर्तमान में स्मशान भूमि मकान बनाने के काम में आने लगी है। अब जब कि स्मशान भूमि मकानों की जगहों में परिवर्तित होने लग गई हैं तब भावुकता के आधार पर मुर्दा गाड़ने के सम्बन्ध में जो कुछ पक्ष हो सकता है वह भी नहीं रहेगा।

घृणित प्रचार—

धन और स्त्री के प्रलोभनों के द्वारा धर्म्म का प्रचार

करना, धर्म्म का मखौल उड़ाना, उस विशेष को कमज़ोर साबित करना और उसको बड़ी से बड़ी असम्य असेवा करनी है। आजकल मुसल्मान लोग जैसा कि 'हरिजन' में महात्मा गांधी की मुसल्मानों के एक पैम्फ़लेट की आलोचना से स्पष्ट है, हरिजनों में उन्हें अपने दायरे में लानेके लिए, धन और स्त्री के प्रलोभनों के सब्ज बाग दिखलाकर मुस्लिम धर्म्म का प्रचार कर रहे है। वे लोग इस प्रकार के धर्म्म प्रचार से अपने धर्म्म की बड़ी असेवा कर रहे हैं। उनका इस प्रकार का घृणित प्रचार रोका जाना चाहिए। वा असफल बनाया जाना चाहिए। रोकने का काम समझदार मुसलमानों, उनके नेताओं या सरकार को करना चाहिए और असफल बनाने का काम हिन्दुओं को करना चाहिए। मुस्लिम नेताओं और सरकार का इस सम्बन्ध में पिछले कुछ वर्षों का रवैया उत्साह वर्द्धक नहीं रहा है। ऐसे उदाहरण हैं कि जब सरकार ने सगठित आन्दोलन के नहीं वरन् मुसल्मानों के इशारे मात्र पर ही हिन्दुओं के मुसल्मानों के ख़िलाफ़ लिख गये निर्दोष साहित्य व प्रचार को ज़ब्त करने व रोकने में तत्परता दिखलाई है और मुसल्मानों के हिन्दुओं के भावों को बड़ी से बड़ी ठेस पहुँचाने वाले साहित्य के प्रति बड़ी से बड़ी चुप्पी दिखलाई है। यदि कुछ किया भी है तो प्रबल से प्रबल आन्दोलन के प्रभाव से। ज़िम्मेवार मुस्लिम नेताओं के रवैए के सम्बन्ध में तो कुछ न कहना ही ठीक है। इन रवैयों के अनेकों दुष्परिणामों में से एक दुष्परिणाम हिन्दुओं और मुसल्मानों में तनातनी है जो बिल्कुल अवांछनीय है। जिस पैम्फ़लेट पर महात्मा गाधी ने आलोचना की है उसका मुख्य विषय हिन्दू धर्म्म को बदनाम करना है। यह पैम्फ़लेट हरिजन पिता पुत्र के सम्वाद के रूप में लिखा गया है और चूँकि लेखक कोई मुसल्मान हैं उसमें हिन्दू धर्म्म के सम्बन्ध में हृदय को ठेस पहुँचाने वाली अनर्गल बातें लिखी गई हैं। यह पैम्फ़लेट तो इस प्रकार के विषैले साहित्य की जिसका मुसल्मान छुपे छुपे प्रचार कर रहे हैं, एक झांकी है। सरकार और ज़िम्मेवार मुसल्मानों को इस प्रकार का प्रचार और साहित्य रोकना चाहिए। यदि उन्होंने न रोका तो उस हालत में हिन्दुओं को यह काम स्वय करना होगा। असफल बनाने का काम तो उन्हें जारी रखना ही चाहिए। इसके लिए उन्हें मौखिक तथा साहित्यिक प्रचार करना चाहिए। साहित्यिक प्रचार में अपने पक्ष का मंडन तथा विरोधियों द्वारा लिखे गए साहित्य का खंडन होना चाहिए। असफल बनाने का एक तरीका जो अमोघ है वह यह है कि हिन्दुओं को 'हरिजनों' के प्रति अच्छे से अच्छा व्यवहार करना तथा उनकी मुसीबतों को दूर करना चाहिये। इस तरीक़े से न केवल इस प्रकार का प्रचार असम्भव ही हो जायगा वरन् जो कुछ इस प्रचार का प्रभाव हरिजनों पर पड़ सकता है वह भी न ठहर सकेगा।

श्रीमती माता महादेवी जी

धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमान प० रामप्रसाद जी शुक्ल



श्रीमती जी ने डचगायना की राजधानी पारामारीबो नगर में
एक विशाल आर्यसमाज मंदिर बनाने का
यश लाभ किया है।

माता महादेवी जी

सुरीनाम (डचगायना) के इतिहास मे माता महादेवी जी का नाम सदा के लिये अमर रहेगा। जिस त्याग और लग्न के साथ आपने अपनी उदारता का परिचय दिया है उसकी जितनी प्रशसा की जाय वह थोड़ी है। आज डचगायना मे जो आर्य समाज की धूम मची है उसका बहुत कुछ श्रेय आप के दिवगत पतिदेव प० रामप्रसाद शुक्ल तथा आपको है। अत आर्य्य परिवार को दक्षिण अमेरिका की इस भारतीय देवी का परिचय कराना आवश्यक है।

माता महादेवी जी का जन्म कई वर्ष पूर्व नैपाल में हुआ था और वह वहां से अपनी माता के साथ ट्रिनिडाड चली आई थीं। तदनन्तर इनका विवाह सुरीनाम के प्रख्यात प० श्री रामप्रसाद जी शुक्ल से हुआ और तब से देवी जी सुरीनाम में ही निवास करती आ रही हैं। इस देश मे आर्य्य समाज के प्रचार मे प० रामप्रसाद शुक्ल ने बड़े मनोयोग से कार्य किया था और इस पुण्य यज्ञ मे माता महादेवी का सदा हार्दिक सहयोग रहा।

लगभग ५-६ वर्ष पूर्व प० रामप्रसाद शुक्ल जी ने 'आर्य दिवाकर' नाम की सस्था स्थापित की थी जिसमें उन्होने अपने पास से ६०० गिल्डर (१०० सेन्ट=१ गिल्डर, ६० सेन्ट= भारत का एक रुपया) दान दिया था। पतिदेव के देहावसान के पश्चात् माता महादेवी की इच्छा पुष्कल दान द्वारा आर्य समाज के प्रचार के लिये मन्दिरादि निर्माण कराने की हुई। आर्य समाज के प्रचार के सिलसिले में प० अयोध्याप्रसाद जी का सन् १९३४ ई० में सुरीनाम में आना हुआ। उस समय उन्हें देवी जी की दान की इच्छा ज्ञात हुई। अत उन्ही के परामर्श से स्वर्गीय पण्डित रामप्रसाद शुक्ल की स्मृति में जुलाई १९३४ ई० में एक ट्रस्ट स्थापित किया गया जिसमें देवी जी ने ३०००० (तीस हजार) गिल्डर का दान दिया आज यह "प० रामप्रसाद शुक्ल स्टिकटिंग" (डच भाषा में ट्रस्ट को स्टिकटिंग कहते हैं) के नाम से डचगायनामे प्रसिद्ध है। ट्रस्ट की स्थापना के पश्चात् इनकी इच्छा भारत से स्थायी पण्डित बुलाकर आर्य समाज के प्रचार कराने की हुई। अत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को देवी जी ने उपदेशक के मार्ग-व्यय के लिये ८५ पौण्ड (लगभग सवा ग्यारह सौ रुपये) भेजा।

माता महादेवी जी को जब प० सत्याचरण जी एम० ए० का ट्रिनिडाड में जून १९३५ ई० मे आने का समाचार मिला तो उन्होंने ट्रस्ट के अधिकारियो के साथ परामर्श कर पण्डित जी को डचगायना आने के लिये निमन्त्रण भेजा और साथ ही सेकण्ड क्लास का जहाज का टिकट भी भेज दिया। १४ जुलाई को पण्डित जी यहा पहुँचे और उन्हों ने प्रचार आरम्भ किया। उन्होंने एक समाज-मन्दिर की आवश्यकता अनुभव की और

इसकी चर्चा छेड़ी। लगभग १। मास पश्चात् पण्डित अयोध्याप्रसाद जी भी सुरीनाम पुन आ गये। दोनो पण्डितो के परामर्श से आर्य्यसमाज भवन निर्माण की बात निश्चित हो गई और देवी जी ने २००० (दो हजार) गिल्डर देने का वचन दिया। किन्तु जब निर्माण कार्य्य प्रारम्भ हो गया तो देवी जी ने घोषणा की वह मन्दिर निर्माण का समस्त भार स्वय वहन करेंगी। लगभग १५००० (पन्द्रह हजार) गिल्डर का समाज मन्दिर बनवाकर देवी जी ने आर्य्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम को दान दे दिया है। इसके अतिरिक्त देवी जी ने ऋषि निर्वाणोत्सव (१९३५) पर २०० गिल्डर समाज को दान दिया और पश्चात् १००) विदेश-प्रचार निधि में श्रीमती सार्वदेशिक आर्य्यप्रतिनिधि सभा के पास भेजा।

आज आर्य्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम जिस का सम्बन्ध सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली के साथ है, के अन्तर्गत समाज भवन अनाथालय और स्कूल चल रहे है। लगभग दो वर्ष के भीतर आर्य्य समाज की आश्चर्य जनक उन्नति को देखकर डचगायना के निवासी चकित है। परमात्मा देवी जी को चिरायु करे जिससे सुरीनाम मे आर्य्य समाज की लता पल्लवित होकर लोगो को शान्ति और आनन्द प्रदान करे।

सप्त मर्यादा

(ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्ता मेकामिदभ्यंहुरोगात् ।
आर्योह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥

ऋ० १० । ५ । ६ ।

अर्थात ऋषियों ने सात मर्यादायें ठहराई हैं । इन मे से एक पर भी चलता हुआ पुरुष (अंहुर) पापी होता है क्यों कि मार्गका थामने वाला पुरुष ही उन मार्गो के त्याग पर (उपमस्य, नीडे) समीपवर्ती (ईश्वर) के धाम के अन्दर (धरुणेषु) धारण सामर्थ्यो में (तस्थौ) स्थित हुआ है ।

मत्र मे सात मर्यादाओं की बात कहते हुए, बतलाया गया है कि इन मे से एक पर भी चलता हुआ पुरुष पापी होता है क्यों कि मार्ग को दृढता से पकड कर त्यक्तव्य के त्याग देने पर ही मनुष्य ईश्वर के समीप होने की योग्यता प्राप्त किया करता है ।

मर्यादाये दो प्रकार की होती हैं एक ग्रहण करने की, दूसरी छोड़ने की । यहां उन्हीं मर्यादाओं की बात कही गई है । जो त्यक्तव्य हैं ।

यास्काचार्य ने निरुक्त (६ । २७) में इस मन्त्र की व्याख्या करते हुए उन त्यक्तव्य मर्यादाओं का इस प्रकार उल्लेख किया है—(१) स्तेयम्=चोरी करना, (२) तल्पारोहणम्=व्यभिचार, (३) ब्रह्महत्याम्=ब्राह्मणहत्या, (४) भ्रूणहत्याम्=गर्भपात करना, (५) सुरा पानम्=शराब (नशा) पीना, (६) दुष्कृतस्य कर्मण पुन पुन सेवनम्=दुष्ट कर्म का बार बार करना, (७) पातकेऽनृतोद्यम्=पातक लगाने मे झूठ बोलना । वेद के आधार पर, यास्क ने, हजारों वर्ष पहले, जिन पातकों के त्याग की शिक्षा दी थी, सम्भव है उस समय उनकी कम जरूरत हो परन्तु आज इनकी सब से अधिक जरूरत है । "ब्रह्महत्याम्" के दो अर्थ होते हैं एक विद्वान्, दूसरे विद्या (वेद) की हत्या करना, यदि दूसरे अर्थ लिये जावें, तो इसके साथ त्यक्तव्यवाकी ६ मर्यादाएँ भी इस देश में क्या सभी ससार मे इतनी प्रबलता से प्रचलित हैं कि अनेक जगह तो उनका त्याग अनावश्यक सा समझा जाने लगा है ।

जानस्टुआर्ट मिलके प्रचारित उपयोगितावाद मे तो भूखे होने और अन्न न होनेपर चोरी करना कर्तव्य ठहराया गया है । (२) व्यभिचार का प्रचार सन्ततिनिग्रहके नाम से खुले आम होरहा है एमरीका की अनेक देवियां इस पुण्य कार्य की शिक्षा देने के लिये इस देश में भी, समय समय पर, आती रहती हैं (३) विद्या का हनन तो पातक ही नहीं समझा जाता । विद्या जहा "सत्यं वद और धर्मंचर" के लिये थी वहा आज छल कपट जुआ चोरी आदि को उत्कृष्ट साधन बतलाने

के लिये काम में लाई जाती है।

(४) गर्भपात करने के लिये रूस में सरकारी शफाखाने बने हैं जिनमें इसके सिवा दूसरा काम ही नहीं होता ,

(५) सुरापान के बिना तो योरूप और अमरीका की जातियों का काम ही नहीं चल सकता। शराब पीना नशा पीना नही समझा जाता किन्तु दैनिक पेय वस्तुओं में उसकी गणना होने लगी है। अमरीकामे शराब पीना कानूनन बद कर दिया गया था परन्तु काम कैसे चल सकता था इसलिए यह निषेधक क़ानून रद्द कर दिया गया। योरूप की नक़ल करके दुर्भाग्य से इस देश के निवासी भी सुरापान करने में बराबर क़दम बढाते जा रहे हैं।

(६) बुराई करने का तो अभ्यास बनाना अब फैशन की वस्तुओं मे से एक बात समझी जाने लगी है।

(७) पातक लगानेमें झूठ बोलना तो इतना प्रिय और रुचिकर कार्य बन रहा है कि जुबान को इस प्रकार का झूठ बोलने में बड़ा स्वाद आता है।

निष्कर्ष यह है कि ये उपर्युक्त सात त्यक्तव्य मर्यादा॰ इस समय प्राह्य मर्यादाओं का स्थान ले रही हैं। परन्तु क्या यह परिवर्तन शान्तिवर्द्धक होगा ? यह उसी समय हो सकता है जब सूर्य रात मे निकलने लगे।

ब्रह्म यज्ञ

(ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है "सध्योपासना की जो स्नान, आचमन, प्राणायामादि क्रिया है सिखलावे" ।। पृष्ठ ३५ ।। 'सध्यापासन एकांत देश मे एकाग्र चित्त से करे' ।। पृष्ठ ३७ ।। इन वाक्यों से सध्या का विधान किया है। यह ब्रह्मयज्ञ का एक अग है क्योकि ब्रह्मयज्ञ स्वाध्याय को कहते हैं और सध्या में नियत मन्त्रों का पाठ प्रात साय करना होता है। ऋषि ने मनु आदि के प्रमाणों से अपने पक्ष को पुष्टि भी की है। अन्य स्मृतिकर्ता भी सध्या को आवश्यक मानते है यथा—

न ब्रह्मयज्ञादधिकोऽस्ति यज्ञो,
न तत्प्रदानात्परमस्ति दानम्।
सर्वेऽन्तवन्त क्रतव सदाना,
नातोऽन्त इष्ट कैश्चिदस्य द्विजस्य ।।

गोभिलस्मृति प्रपाठक २ श्लोक ५२ ।।

साय प्रात सदा सध्याये विप्रा नो उपासते। काम तान्धार्मिको राजा शूद्रकर्मसु योजयेत्।२० अत्र सायमतिक्रमे रात्र्युपवास। २१। प्रातरतिक्रमेऽहरूपवास ।।२२।। बोधायनस्मृति प्रश्न २ अध्याय ४।

इन श्लोकों मे सध्या को अवश्य करना बताया है और प्रात सायं उभय कालमें यदि कोई इच्छा पूर्वक न करे तो उसे द्विज नहीं माना है और

इस सध्या का महान् फल बताया है और वेद में—

उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् । नमो भरन्त एमसि ॥ ऋग्वेद १ । १ । ७ ॥

में प्रतिदिन उभय काल सध्या करने का भाव दिखाई देता है।

ब्रह्मयज्ञ का दूसरा भाग स्वाध्याय है। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ ६६ पर मनु के यह वाक्य लिखे हैं —

'ऋषि यज्ञम् । स्वाध्यायेनार्चयेद्दषीन्' ।

जिससे स्वाध्याय का विधान किया है और वेद स्वय स्वाध्याय की महिमाका वर्णन करता है।

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् ॥ अथर्व १६ । ७१ ॥

इन विधानों से प्रतीत होता है—महर्षि सध्या और वेद का नित्यप्रति पाठ दोनों ब्रह्मयज्ञ के भीतर गिनते हैं परन्तु इस समय जहा सध्या का विशेष प्रचार है वहा भी स्वाध्याय का उतना प्रचार नहीं है और पूर्व समय के स्वाध्याय को रोचक बनाने वाले लेख भी मिलते हैं जैसा कि स्वाध्याय की महिमामे शतपथ ब्राह्मण मे एक अत्यन्त रोचक लेख है यथा—

अथ ब्रह्मयज्ञ । स्वाध्यायो वै ब्रह्मयज्ञस्तस्य वा एतस्य ब्रह्मयज्ञस्य वागेव जुहूर्मन उपभृच्चक्षुर्ध्रुवा मेधा स्रुवा सत्यमवभृथा स्वर्गो लोक उदयन यावत ह वा इमा पृथिवीं विजेन पूर्णा ददल्लोक जयति त्रिस्तावंत जयति भूयात चाक्षय्यं य एवं विद्वानहरह स्वाध्यायमधीयते तस्मात्स्वाध्यायोऽध्येतव्य ॥ ३ ॥ पय आहुतयो हवा एता देवानाम । यदृचः स य एव विद्वानृचोऽहरह स्वाध्यायमधीते पय आहुतिभिरेव तद्देवास्तर्पयति त एन तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेनरेतसा सर्वात्मना सर्वाभि पुण्याभि सम्पद्भिर्घृतकुल्या मधुकुल्या पितृन्स्वधा अभि वहन्ति ।४। आज्याहुतयो हवा एता देवानाम् यद्यजूषि स य एव विद्वान्यजूऽष्यहरह स्वाध्यायमधीत आज्याहुतिभिरेव तद्देवास्तर्पयति त एन तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सर्वाभि । ५ । सोमाहुतयो हवा एता देवानाम् । यत्सामानि स य एव विद्वान्त्सामान्यहरह स्वाध्यायमधीते सोमाहुतिभिरेव तद्देवास्तर्पयति त एन तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा सर्वात्मना सर्वाभि पुण्याभि ।६। मेद आहुतयो हवा एता देवानाम् । यदथर्वाङ्गिरस स य एव विद्वानथर्वागिरसोऽहरह स्वाध्यायमधीते मेद आहुतिभिरेव तद्देवास्तर्पयति त एनास्तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण प्राणेन रेतसा ॥ ७ ॥ मध्वाहुतयो हवा एता देवानाम् । यदनुशासनानि विद्या वाकोवाक्यमितिहास पुराण नाराशस्य स य एव विद्वाननुशासनानि विद्या वाकोवाक्यमितिहासपुराण गाथा नाराशंसीरित्यहरह स्वाध्यायमधीते मध्वाहुतिभिरेव तद्देवास्तर्पयति त एन तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण । ८ । शतपथ ब्राह्मण काण्ड ११ प्रपाठक ३ ब्रा० ८

इसी प्रकार का पाठ आश्वलायन गृह्यसूत्र में भी मिलता है—

अथ स्वाध्यायमधीयीत ऋचो यजूषि सामान्यथर्वागिरसो ब्राह्मणानि कल्पान्गाथा नाराशसीरितिहास पुराणानीति ॥ १ ॥

यदृचोऽधीते पय आहुतिभिरेव तद्देवतास्तर्प-

यति । यद्यजू षि घृताहुतिभि यत्सामानि मध्वाहुतिभि यदथर्वाङ्गिरस सोमाहुतिभि यद्ब्राह्मणानि कल्पान्गाथा नाराशसीरितिहासपुराणानीत्यमृताहुतिभि ॥ २ ॥

यदृचोऽधीते पयस कुल्या अस्य पितृन्स्वधा उपक्षरन्ति । यद्यजू षि घृतस्य कुल्या । यत्सामानि मध्व कुल्या । यदथर्वांगिरस सामस्य कुल्या यद्ब्रह्मणानि कल्पान्तगाथा नाराशसीरितिहास पुराणानीत्यमृतस्य कुल्या । ३ । आश्वलायन ३-३ ।

भावार्थ—स्वाध्याय में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ब्राह्मण कल्प गाथा नाराशसी, इतिहास, पुराण, पढे । (यह ध्यान रहे ब्राह्मण के आगे जो पाठ है वह ब्राह्मण के विशेष स्थलों का ही है अत ब्राह्मण से भिन्न नही है) जो ऋग्वेद का स्वाध्याय करता है वह पय की आहुति के पुण्य को प्राप्त करता है । यजुर्वेद से घृत, सामवेद से मधु, अथर्व वेद से सोम, और जो ब्राह्मण कल्प, गाथा, नाराशसी, इतिहास, पुराण का पाठ करता है वह अमृत को आहुति के पुण्य को पाता है ।

इस प्रकार के पाठ और भी उद्धृत किये जा सकते हैं परन्तु मै इतने ही पर्याप्त समझता हूँ । इन पाठों से प्रतीत होता है कि प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय अवश्य होना चाहिये इससे वेद में श्रद्धा होती है और वेद की रक्षा होती है । यदि अर्थ सहित पढा जाय तो अत्यन्त उपयोगी है यदि अर्थ न भी आते हों तो भी पाठमात्र से वेद की रक्षा तो होती ही है और स्वर्गीय प० तुलसीरामजी के शब्दों में यदि पशु पर चन्दन हो और उसी प्रकार किसी पशु पर दुर्गंधी युक्त वस हो तब बोझ सम होने पर भी सुगन्धि और दुर्गन्धि का अन्तर और लाभ हानि से चक्षु बन्द करना ठीक नही है ।

—

आर्य ध्यान दें परिवर्तन होरहा है

ले०—श्री पं० नारायणदत्त सिद्धान्त भूषण वैदिक मिशनरी (सार्वदेशिक सभा) केरल

'सार्वदेशिक तथा अन्य अखबारों में अनेक बार केरल के बारे में लेख निकल चुके हैं। उन लेखों से आप लोगों को यह जानने का काफी मौका मिला होगा कि "केरल की दशा दयनीय है। यह प्रान्त धर्म के नाम पर होने वाले अत्याचारों का केन्द्र है। इसलिये प्रतिदिन यहां हिन्दू जाति का ह्रास हो रहा है। विधर्मियों ने खूब जाल बिछा रक्खा है और जो कमी है उसे पूरा करने के लिये विविध उपाय काम में ला रहे हैं। नये नये उपाय सोच रहे हैं ॐ हिन्दू अब भी कुम्भकर्ण की नींद सो रहे हैं। जो जागे हैं वे किंकर्तव्यविमूढ से बैठे हैं। कोई २ आधार हीन तथा अन्याय पूर्ण भेद भावों से तंग आकर हिन्दू धर्म और जाति को कोस रहे हैं। पवित्र वैदिक धर्म की महिमा न जानकर और लोभ लालच में पड़कर अपने घर को सदा के लिये छोड़ने पर तैयार हैं तथा छोड़ रहे हैं इत्यादि

परन्तु अब वह अवस्था बदलती सी दृष्टिगोचर हो रही है। ऐसा भी एक समय था जब कि एक अवर्ण (अछूत) हिन्दू ने सरकारी दफ्तर में क्लर्क का काम मांगा तो ट्रावनकोर गवर्मेन्टने जवाब दिया था कि 'तुम अनधिकारी हो । लेकिन वह अवस्था अब नहीं रही। सरकारी नौकरियों में कोई जातीय भेद भाव नहीं। जो योग्य है उसे स्थान मिल जाता है। आज ट्रावनकोर गवर्मेन्ट के कई विभागों में अवर्ण जाति के लोग उच्च पद को अलंकृत कर रहे हैं।

इतना सब कुछ होने पर भी अछूतों को दुःख ही भोगना पड़ता था। उन्हें राजमार्ग में आराम से चलने नहीं देते थे। अनेक मन्दिरों की चार दीवार के बाहर राजमार्ग है। उन मार्गों में अछूत कहे जाने वाले लोगों का प्रवेश नहीं था। निकटस्थ मार्गों में जिन में सड़े गले कुत्ते तक फिरते हैं अछूत नहीं जा सकते थे मन्दिर के अन्दर प्रवेश करने की तो बात ही क्या? इसी कारण सचार स्वातन्त्र्य के लिये प्रसिद्ध "वैकम सत्याग्रह' हुआ था। उसका फल भी अच्छा ही निकला। उस मार्ग से सब को आने जाने का अधिकार मिल गया। परन्तु उस अधिकार प्राप्ति से अधिक लाभ नहीं हुआ। क्योंकि वह आज्ञा वैकममन्दिर के पास जो सड़कें हैं उन्हीं पर लागू होती थी। उसी तरह के अन्य स्थानों की दशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

ॐ धर्म परिवर्तन के लिये तैयार हुए लोगों में से एक ने हिन्दू धर्म के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी। उसकी एक लाख प्रतियां "क्रिश्चियन मिशन" ने मुफ्त छपवाईं और जनता में मुफ्त बांटीं।

वहा पर पूर्ववत् व्यवस्था चल रही थी।

ऐसे मौके पर धर्म परिवर्तनकी आग भड़की। बिना सोचे समझे यहा के अछूतों ने उसका समर्थन किया। परन्तु मेरी दृष्टि मे इस विषय मे वे निर-पराधो हैं। क्योंकि डूबते को तिनका सहारा है। इस बात से किसी किसी सवर्ण के दिल मे चोट लगी। वे तिलमिला उठे। उन्होंने सुधार करने के विचार से बहुत कोशिश की और कर रहे हैं। परन्तु ऐसो की सख्या उंगलियों पर गिनने लायक भी नहीं। फिर भी उन्होने निश्चय किया कि इस आन्धी को किसी तरह रोकना चाहिये। उसका एक मात्र साधन सबको मन्दिर के भीतर जाने का अधिकार दिलाना है। एतदर्थ केरल के ग्राम ग्राम मे 'क्षेत्र प्रवेश जाता" नामक मण्डलो भ्रमण कर लोगो की विचार धारा मे परिवर्तन पैदा करके जनतासे ही सरकारके पास अपील भिजवा रही थी जिससे सबको मन्दिर में जाने का अधिकार प्राप्त हो। इसकी आयोजना यहा के हरिजन संघ के द्वारा हुई थी। परन्तु सरकार ने उसे उस रूप मे होने नही दिया। इसलिये सारा परिश्रम निष्फल हुआ। इस तरह धींगा धींगी ही हो रही थी कि जनता की भावनाओं को जान कर ट्रावनकोर सरकार ने यह ऐलान निकाला कि समस्त राज मार्गों में (Public roads) सब लोग चल सकते है। राजाज्ञा निकलते ही कई मन्दिरो के ग्राम से अछूत लोग जुलूस निकालते हुए चले गये। कोई रुकावट नहीं हुई। इतना परिवर्तन कोचिन या मलाबार में नहीं हुआ है। फिर भी आशा कर सकते हैं कि वहा की भी परिस्थिति में क्रमश तबदीली आजायगी।

इस मौके पर यहा पर आर्यसमाज सम्यक् प्रकार से प्रचार करे तो मेरा विचार है कि उसे सफलता मिलेगी। यह तो विवाद रहित वार्ता है कि भारत का यह भाग—केरल प्रान्त–बहुत दिनों से वैदिक (आर्य) धर्म प्रचार की प्रतीक्षा कर रहा है। परन्तु यहा का प्रचारकार्य उतना आसान नहीं जैसे अन्य प्रान्तो का है। ईसाई और मुस-लमानोंसे मुकाबला करना पडेगा। सिर्फ शास्त्रार्थो से, सिद्धान्तों का सयुक्तिक समर्थन करने से वा तत्त्वज्ञानोपदेश से काम नहीं हो सकेगा। इस-लिये यहा के प्रचार का ढग ही कुछ और होना चाहिये। उसके लिये विविध उपाय काम में लाने होगे। उन उपायो की ओर भी आप लोगो का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। किन्तु इस बात को अगली बार के लिए रखता हुआ, प्रत्येक आर्य से, आर्यसमाज से, हिन्दू हितैषियों से और नेताओं से इतना ही अब कहता हूँ कि आप लोग इस प्रान्त के निस्सहाय निरीह भाइयो का भी ध्यान रखिये और उनके उन्नति पथ मे हर तरह से सहायक बनिए।

जीवन उद्देश्य

(ले०—श्री सुमेरचन्द जी, गगोह)

व्यायाम—

... मे उठकर शौच दन्तधावन कर समस्त शरीर का भली प्रकार मर्दन कर स्नान करे इससे शरीर के मल, विकार, आलस्यादि नष्ट होकर देह मे प्रसन्नता स्फूर्ति और चैतन्यता का सचार होकर तीनो दोषो का दमन होता है। सारा कायामे समता आजाता है। शारीरिक विद्युत मे वृद्धि होती है उत्तरोत्तर निरोगता प्राप्त होता है। देह मे अधिक भाग जल का है। देह के अभ्यन्तर और वाह्य अवयवो का जल से स्वच्छ अथवा शोधन होकर रोगो अथवा दोषो को दूर करता है। इससे भीतर से गर्मी का प्रवाह त्वचा की ओर दौडता है और रक्त भी बलपूर्वक उसी ओर भागा चला जाता है आर त्वचा को उष्णता देता है। इस प्रकार मर्दन पूर्वक देर तक स्नान से देह के सारे रक्त को शीतलता पहुँच जाती है जिसमे रक्त के सारे दोष रुमकोपो द्वारा बाहर निकल जाते है अन्त म दाष मुक्त देह नव जीवन प्रसन्नता, समता आदि लाभ करता है। देह का ऊपरी भाग प्राय जल का है इस कारण जल सयोग से इसका शोधन शीघ्रता और समता से होता है। व्यायाम का आवश्यकता को पूरी करता है। तुष्टि, पुष्टि का दाता है। इसके साथ ही वायु स्नान और सूर्यस्नान भी हो जाता है जो काया को निरोगता प्रदान करते है।

शरीर के हर भाग का व्यायाम हर आयु मे करना चाहिए। थकावट आलस्य,बुढापा नही आता। आमाशय और अन्तडियां बलवान रहती है। सब प्रकारका खाया पिया पच जाता है। जठराग्नि तीव्र होकर नियम पूर्वक भोजन मे रस, रस मे रक्त, रक्त से मास मास से चरबी, चरबा से हड्डी, हड्डी मे मज्जा मज्जा से वीर्य होते हैं। ३२ दिन मे वीर्य बनता है। गरमी सरदी सहन शीलता आती है। ऐसे व्यायाम अधिक हानि कारक हैं जिनमे सास वेग से निकले। खिचाव और रुकावट के व्यायाम जिसमे समस्त नस नाडियो मे तनाओ होकर रक्त वहा से हटकर और फिर वेग से लौट कर सारे दोषो को दूर कर देता है। पश्चिमतान, ताड, धकेल व्यायाम बहुत उपयोगी है किसी किसी समय अ गडाई लेना बहुत लाभदायक है। वायु शुद्ध हो। श्वास नाक द्वारा लो। शरीर के रुमकोपो द्वारा भा वायु आता जाती है। उनको खुला रक्खो, मैल से बन्द न होने दो, खुले वस्त्र पहनो। शिर व पेर नगा रक्खो आवश्यकता पर टोपी व जूता पहनो।

भोजन—

भोजन सात्विक होना चाहिए। सादा भोजन चबा चबा कर प्रसन्नता से करना चाहिए। जल स्वच्छ घूट २ पीना लाभ कर है। मेवा, ताजाफल, सूखफल, दूध, दही, मट्ठा, सब्जी, अन्न, उत्तरोतर गुणकारी है। नमक का प्रयोग भी अच्छा है। क्योकि आग पर पकाने से नमक कम हो जाता है। दही मे शरीर के विकारो को नाश करने की सामर्थ है। मट्ठा बुढापे को दूर करता है। बडी उत्तम पीने की वस्तु है। उपवास और फलाहार से आतो के विकार और तत्व सम्बन्धा हानिकार जन्तुओ की रक्षा होती है। प्रसन्न चित भाजन करने मे मु ह

और आमाशयका रस ठीक प्रकार से निकलता रहता है और पाचन होता है। भय, क्रोध, चिन्ता, शोक, थकावट की अवस्था मे शुष्क होकर पाचन नही हो सकता। क्रोध से सारे शरीर मे एक भयानक विष फैल जाता है जो हर समय मार डालने वाला है। भोजन भूख रखकर खाना चाहिए। काम अधिक होता है, नीद कम आती है। कम नीद, आयु बढाती है। शरीर निकम्मा वस्तुओं से नही भरता। अभ्यास से कम हो सकता है। अनुभवी पुरषो का कथन है कि पाचन होने योग्य मात्रा से भोजन करने वालो का बहुत थोडा, बन्धा हुआ, चिकना दुर्गन्ध रहित, सूखा काले रग का शौच होता है। प्रात कुछ भोजन नही करना चाहिए। हमारी रात्रि की निद्रा भोजन की आवश्यकता को पूरा कर देती है। भोजन २४ घन्टेमे एक अथवा दो बार करो। खटाई मिर्च मसाले हर प्रकार के हानि कर है। अधिक मिठाई और बारीक आटे से बने पदार्थ मत खाओ, आमाशय को बहुत हानि कर है।

आचार विचार—

आचार विचार शुद्ध सकल्प हो, मानसिक विचारो द्वारा ही हर वस्तु पर सस्कार पडते है इसीसे सामाजिक उत्थान होता है। इससे शरीर नवीन बनता है। प्रकृति हर समय शरीर को नया बनाता रहती है। एक वर्ष मे सारा शरीर नया हो जाता है और कायाकल्प होती है शिवसकल्प मे मनोवृत्तियां शुद्ध होती है। इसी जन्म मे पूर्णता प्राप्त कर सकते है। मन की शुद्धता शरीर को निरोग रखती है। मन के स्थिर होने से शान्ति मिलती है। जब सकल्प विकल्प करता है तब मन, जब चितन करता है तब चित्त, जब निश्चय करता है तब बुद्धि, जब निश्चय के पश्चात क्रिया करने लगता है तब अहकार कहाता है।

चित्त की अवस्था—

अतृप्ति = जिसमे चित्त की वृतियां अनेक सासारिक विषयों मे गमन करती हैं। विक्षिप्त = जिस मे चित्तकी वृत्तियाँ व्याकुल रहती हैं। मूढ=जिसमेचित्त का वृत्तियाँ मूर्छवित रहती है। एकाग्र=चित्त की वृत्तियों का एक ओर लग जाना। निरुद्ध=चित्तवृत्तियो का चेष्टा रहित होजाना। एकाग्रता से जो योग होता है वह सप्रज्ञात कहाता है जिसमे चित्त का अवलम्बन बना रहता है और निरुद्ध अवस्थामे असंप्रज्ञात योग होता है जिस मे चित्त का सपूर्ण वृत्तियो का तुरीय भाव होता है केवल सस्कार मात्र शेष रह जाता है। इसीको 'केवल' कहते है। यहा मोक्ष कहाता है। यही आत्मा की अन्तिम गति है। आत्मा परमात्मा के स्वरूप मे स्थित हो जाता है।

चित्त की वृत्तियां—

१ प्रमाण तीन प्रकार का होता है—प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम। २ विप्रय = मिथ्याज्ञान ३ विकल्प = भ्रमात्मक ज्ञान। ४ निद्रा – अविद्या ग्रस्तवृत्ति, अज्ञान = अभाव, ५ स्मृति = अनुभूत पदार्थों का पुनविचार।

चित्त का स्वभाव—

१ प्रख्या, दृष्ट वा श्रुत पदार्थों का विचार २ प्रवृत्ति विषयो के साथ सम्बन्ध ३ स्थिति, विषयो मे स्थिति।

क्लेश—

१ अविद्या मिथ्या ज्ञान २ असमता, अन्त करण और आत्मा मे अभेद प्रतीति। ३ राग, मोह, अनुराग,

४ द्वेष,घृणा और वैराग्य । ५ अभिनिवेष,मृत्यु आदि का दुःख । ईश्वर के निरन्तर चिन्तन करने को अभ्यास और विषय वासना के त्याग को वैराग्य कहते हैं । चित्त की वृत्तियों के विरुद्ध का वैराग्य और स्थिरता का अभ्यास उपाय है ।

चित्तकी वृत्तिया । कलिष्ठ, सुख देने वाली । अकलिष्ठ दुख देने वाली दो प्रकार की है ।

विकार, गर्व, लोभ, मोह काम, क्रोध, मत्सर ।

मैत्री, करुणा, मृदुता, उपेक्षा, नवद्वार

अष्ट चक्र—

१ मूलाधार, गुदा के पास पृष्टवंश समाप्ति के स्थानपर २ स्वाधिष्ठान इससे ऊपर इसके समीप ही ३ मणिपूरक, नाभि स्थान ४ अनवाहत हृदय देश ५ विशुद्ध कठ, कूप ६ ललना, जिह्वा मूल ७ आज्ञा भवों के बीच ८ सहस्त्रार मस्तिष्क ।

वैराग्य के भेद—

१ शम् अधर्माचरणसे मन को हटा कर धर्माचरण में लगाना २ दम, इन्द्रियों को जीत कर वश में रखना ३ उपरति, दुष्ट कर्म करने वालों से अलग रहना, ४ तितिक्षा, निन्दा, स्तुति, हानि लाभ, द्वन्दोंको सहन करना, ५ श्रद्धा, वेद आदि आर्ष ग्रन्थों और आप्त के उपदेश पर विश्वास ६ समाधान,एकाग्रता ७ मुमुक्षत्व मोक्ष के साधनों के अतिरिक्त किसी अन्य में प्रीति न रखना ।

कोष—

१ अन्नमय, त्वचासे लेकर अस्थिपर्यन्त २ प्राणमय, प्राण जो बाहर से भीतर आता है हृदय देश है । अपान जो भीतरसे बाहर आता है गुदादेश है । समान नाभि देश समस्त शरीर में रस पहुँचाना । उदान कठ देश जो अन्नपान खेचा जाता और बल पराक्रम होता । व्यान सब शरीर में चेष्टा करता है । ३ मनोमय, पाच कर्मेन्द्रिया, हाथ, पैर गुदा, लिंग वाणी, ४ विज्ञानमय, पांचज्ञानेन्द्रियां, कान, आँख, नाक, जिह्वा, त्वचा, ५ आनन्दमय, जिसमें प्रीति, प्रसन्नता, आनन्द प्राप्ति हो ।

अवस्था—

१ जागृत जागा हुआ, २ स्वप्न सोया हुआ, ३ सुषुप्ति गाढ निद्रा ४ तुरीय, ईशभक्ति में योगियों का अचेत हो जाना ।

शरीर—

१ स्थूल, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी से बना हुआ २ सूक्ष्म, पाचज्ञानेन्द्रिया पाँच सूक्ष्म भूत पाँच प्राण, मन, बुद्धि इन सत्रह समुदायों से बना हुआ । यह जन्म मरण मे भी जीव के साथ रहता है इसके दो भेद हैं भौतिक जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना हुआ दूसरा स्वाभाविक जो जीवके स्वभाविकगुण रूप है । यह दूसरा और भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है इसी से जीव मुक्ति में सुख भोगता है । ३ कारण जिसमें सुषुप्ति (गाढनिद्रा) होती है वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु है सब जीवों के लिए एक है ४ तुरीय जिसमें समाधिसे परमात्मा के आनन्द स्वरूप में जीव मग्न होते हैं ।

१ धर्म, नीति नियम, २ अर्थ धन धर्म द्वारा प्राप्ति, ३ काम, सुख, उपभोग की इच्छा ४ मोक्ष बन्धन से छूटना ।

व्यवहार—

१ श्रवण २ मनन ३ निदिध्यासन ४ साक्षात्कार । जैसा हम चाहते है वैसा दूसरों के साथ बर्तना

(जो हमे अपने लिए अनुकूल न हो वह दूसरो के लिए भी नही करना चाहिये)

यम–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ।

नियम–शौच, सतोष तप, स्वाध्याय, ईश्वर परिधान

आसन–सुख पूर्वक देर तक बैठे रहना ।

प्रणायाम–जो चार प्रकार के हैं ।

१ प्राण को बल पूर्वक शनै २ बाहर निकाले और यथा शक्ति वहीं रोके ।

२ प्राण को बाहर से शनै २ अन्दर ले और यथा शक्ति वही रोके ।

३ प्राण को जहाँ का तहाँ रोके ।

४ प्राण के बाहर निकलते समय बाहर न निकलने देने के लिए बाहर के प्राण से धक्का देकर बाहर न निकलने दे और बाहर से प्राण अन्दर न जाने देने के लिए अन्दर के प्राण से धक्का देकर वही यथा शक्ति रोके। प्राण के बाहर निकलने को रेचक, अन्दर लेने को पूरक, और रोकने को कुम्भक कहते है । जब रेचक करेंगे तो उदर का भाग अन्दर को घुसेगा, कन्धे नीचे को झुकेगे और उदर भाग जितना अन्दर आवेगा यहाँ तक की मेरू दण्ड से जा लगेगा उतनी ही देर प्राण अधिक बाहर टिकेगा और जब पूरक होगा तो कधे उपर को उठेंगे और उदर का भाग ऊपर उठेगा । इस से प्राण वश मे होकर मन और इन्द्रिया भी स्वाधीन होती है । बल पुरुषार्थ बढ कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्मरूप हो जाती है । और मनुष्य शरार मे वीर्य वृद्धि को प्राप्त हो कर स्थिर बल पराक्रम, जितेन्द्रियता प्राप्त होती है । पहले प्राणायाम से धातोस्थ रोग नष्ट हो जाते है, जठराग्नि प्रबल और प्रदीप्त होकर पाचन शक्ति की वृद्धि होती है । विष्टब्ध रोग नष्ट हो जाता है, अपान वायु से वीर्य आकर्षण और पुष्ट होजाता है । दूसरे प्राणायाम से प्राण वायु द्वारा मल झड़ता है और दुर्गन्धमय रक्त को बाहर फेंकता है । तीसरा प्राणायाम समान वायु स्थित है जो सब शत्रुओ को अच्छी अवस्था मे स्थित रखता है। चौथा प्राणायाम उदान वायु से पराक्रम बढ़ता है । योगी को परमात्मा से मिलाकर आनन्द प्राप्त कराता है । व्यान वायु सर्वत्र प्राप्त रहकर शरीर को हृष्ट पुष्ट रखता है। मन मे ओम का जप, अर्थ सहित स्मरण करो। इससे इन्द्रियो और मन के दोष दूर होकर आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है इससे एकाग्रता, प्रसन्नता, ज्ञान प्राप्ति, प्रेम भक्ति, कलेशो तथा रोग रूप विघ्नो का नाश होकर परमात्मा का प्रकाश और प्राप्ति होती है । जिसका चित्त इस जप योग मे लगा है वह सब तर्क वितर्कादि छोड के भक्ति का भागी होता है । रात को सोते समय जब तक नीद आवे तबतक ओ३म् का मनमे जप, स्मरण करते२ सो जाओ तो इससे उत्तम से उत्तम लाभ है । वासना मे दृढ़ बदल जाती है । उठते बैठते चलते फिरते हर समय ओ३म् का मन मे जप (कोई अवाच्य हरकत न करे) चिन्तन सहजाभ्यास है इस का अभ्यासी मुक्ति का भागी होता है और परमात्मा का प्रकाश होता है ।

प्राणायाम से अधिगत सब दोष दूर हो जाते है और आधीन होते है । ऋतम्भरा प्रज्ञा खुल जाती है और अध्यात्म प्रकाश होता है । कुम्भक बाहर भातर के प्राण को पुष्टि देते हैं । शक्ति को जागृत करते और सब दोष हर लेते है । सारे रक्त मे वायु भरी है इसको आधीन करना योगका लक्ष है । ओ३म् नामके हर समय

जापमें धारणा ध्यान करो, चलते फिरते काम करते हुए यह आसान तरीका है। ओ३म् नामका नाम हर समय जाप करने से ओ३म् का खुदबखुद जाप होने लगता है और समाधी हो जाती है। वृत्ति का नाम में ध्यान ही समाधी है यह कल्याण का कारण और मुक्तिप्रद है। सविकल्प समाधी में उल्कापात या विद्युत रेखा समान आदि २ होती हैं और निर्विकल्प समाधी में शून्यता (अचल स्थिति) होती है इसमें कुछ भान नहीं होता सब ग्रन्थियोंको शिथिलता देती है। काया शिथिल होजाती है। स्वांस में मंदता आजाती है और सहज में समाधी हो जाती है। शुशुम्णा नाड़ी झीनी है इस पर एक झिल्ली चढी है इसका द्वार मूलाधार है जिसमें आत्म शक्ति का सार है। प्राण पवन या ध्यान जाप से खुलता है आठों चक्रों में मन घूमता है और प्रभू की लीला देखता है। ब्रह्म धाम सबसे ऊँचा है इस में शुशुम्णा धारा जाती है और परमशान्त होकर वहीं समा जाती है। कुण्डलनीका अन्तिम धाम है यह देह प्राण से पूर्ण है जो पवन जैसा नहीं है इसका सम्बन्ध सूक्ष्म पवन के साथ है। मूलाधार जीवी प्राण का कोष है इसके जगने से सभी दोष दूर हैं। कुण्डलनी बाल के सौवें भाग से भी सूक्ष्मतर है जो नाभि कमल के नीचे पड़ी सो रही है इसके जगने से नारायण का बोध होता है। जाग कर सूक्ष्मचाल सुचाल चलती है और क्रमश चक्रों को लांघकर उचित काल में सहस्र कमल में पहुँच जाती है। सहस्र कमल (इच्छा शक्ति) यह मस्तिष्क में सबसे ऊपर है। इस शक्तिके जागृत होनेसे मनुष्य उपासना के उच्च क्षेत्र में पग धरता है और इसी शक्ति के जागृत करने के लिए अन्त करण में से प्रत्येक कर्ण का सदुपयोग करने की जरूरत है।

धी बुद्धि–मस्तिष्क के ऊपरी भाग में ही शक्ति भण्डार से ठीक नीचे उत्कृष्ट अथवा प्रेरिता या मेधावी बुद्धि का स्थान है जिसमे काम लेने से उपासक में श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होता है।

तार्किक बुद्धि–मेधावी बुद्धि से नीचे मस्तिष्क के प्राय मध्य में साधारण वा तार्किक बद्धि का स्थान है जिससे काम लेकर उपासक सत्य असत्य का विवेक करके सत्य का ज्ञान प्राप्त करके उसे ग्रहणीय और असत्य को त्याज्य समझता है।

संदेश तन्तु–सर का निचला भाग मन से सम्बन्धित संदेश तन्तुओं का स्थान है जिनसे काम लेकर मनुष्य ज्ञान प्राप्त किया करता है। यह तन्तु स्वभावत अनिच्छित रीति से शरीर में आत्मा की सत्ता मात्र से काम किया करते हैं। परन्तु अन्तर अधिकार प्राप्त करने से अनेक विशेषताएँ उपासक मे उत्पन्न होती हैं।

मन–वक्ष में हृदयसे ठीक ऊपर इन्द्रियोंके नियंता का स्थान है।

चित्त–जो स्मृति, वासना, संस्कार का भण्डार है और जिससे भावों का भी सम्बन्ध है हृदय और नाभि के मध्य में है।

सूक्ष्म प्राण–चित्तके नीचे सूक्ष्म प्राण रहते हैं। यह अन्त करण का विवरण इन्हें यन्त्रवत समझें। आत्मा इन यन्त्रों से काम लेने वाला यंत्री है और काम लेने का साधन विद्युत या गतिदायनी शक्ति है। इच्छा शक्ति इन यन्त्रों के द्वारा काम करती है। बुद्धि के द्वारा विचार और ज्ञान, मन के द्वारा

इन्द्रिय व्यापार, चित्त के द्वारा भावुकता, प्राण के द्वारा भोग के लिए काम होता है। जब प्रत्येक अन्त करण अपने विभाग की सीमा मे रहते हुए काम करता है तब इच्छाशक्ति के काम में बाधा न पड़ने से इस का विकास और वृद्धि होती है।

शक्ति के काम में विघ्न—(१) जब प्राण इन्द्रिय व्यापार, भाव और विचार में दखल देता है तब मनुष्यों मे विषयो के भोगने की प्रवृत्ति बढकर मनुष्य को अपना गुलाम बना लेता है (२) जब चित्त, मन इन्द्रिय व्यापार और बुद्धि के काम में दखल देता है तब मनुष्य मे भावुकता बढकर मन और बुद्धि दोनो को निकम्मा कर देती है (३) जब तार्किक बुद्धि मेधावी बुद्धि के काममें दखल देती है तब मनुष्य श्रद्धा-हीन बनता है (४) जब विश्वास वर्धनी बुद्धि तार्किक बुद्धि के काम मे दखल देती है तब मनुष्य अन्धविश्वासी बन जाता है।

प्रतिहार—समस्त शक्ति के केन्द्रित करने की कार्य प्रणाली का नाम है जो भीतर की ओर एकत्रित की जावे।

धारणा—इन समस्त शक्तियों को किसी एक स्थान पर लगा देने का नाम है।

ध्यान—और इसी एकत्रित शक्तियोको एक स्थान पर लगानेकी बजाय परमात्मामें लगा देनेका नाम है।

और इसी की उच्च अवस्था को समाधी कहते है। अभ्यासी आत्मा में शक्तियों के लगाने का कोई साक्षात यत्न नही कर सकता परन्तु इस कार्यकी पूर्ति असाक्षात यत्नोंसे हुआ करती है अर्थात् अभ्यासीके विशेष अवस्था के उत्पन्न करलेने मे वह शक्ति आत्मा मे अपने आप लग जाया करती है इसी का नाम ध्यान है अर्थात् मन के निर्विषय करने को ध्यान कहते है। बाह्यमुख वृत्ति को बन्द करने का नाम ही मन का निर्विषय करना है अर्थात् जागृत अवस्था में ही अभ्यासी वह अवस्था बनाले जो सुषुप्ति मे हुआ करती है। मन के निर्विषय होने का साधन ध्यान के अभ्यास हैं। इस प्रकार होजाने पर बाह्य मुख वृत्ति बन्द होकर आन्तरिक मुख वृत्ति अपनें आप जारी हो जाती है। ध्यान की अवस्था में ध्याता किसी ध्येय की प्राप्ति के लिए ध्यान रूपी क्रियाएँ करता है परन्तु जब ऊंची अवस्था मे पहुंच जाता है तब ध्याता, ध्यान दोनो का ज्ञान तिरोहित हो जाता है केवल ध्येय ही उसके समस्त ज्ञान का लक्ष रह जाता है और उस समय अभ्यासी अपनी सत्ता स्थिर रखते हुए बेसुध हो जाता है। इसी को जीवन मुक्त कहते हैं। इसी अवस्था वाले शरीर के छूटने पर मुक्त हो जाता है।



आर्यसमाज मन्दिर पारामारिबो (डच गाइना) का पुरोभाग

कोचीन के थिया लोगों की हिन्दूधर्म के प्रति मनोवृत्ति

पिछले मई मास में कोचीन में थिया लोगों की एक बृहत् कान्फ्रेंस हुई थी। उस कान्फ्रेंस में हुए थिया लोगों के भाषणों और पास हुए प्रस्तावों से हिन्दू-धर्म के प्रति थिया लोगों की वर्तमान मनोवृत्ति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। वह मनोवृत्ति हिन्दू धर्म से बगावत की मनोवृत्ति है। मद्रास के अंग्रेजी दैनिक हिन्दू" में प्रकाशित कान्फ्रेंस की रिपोर्ट का सारांश इस प्रकार है —

श्रीयुत सी के. नारायण मन्त्री ने सभा को सम्बोधित करते हुए बतलाया कि जिस मुख्य प्रश्न पर विशेष आन्दोलन हुआ है, वह यह है कि उन्हें हिन्दू-धर्म्म का परित्याग करना चाहिए या नहीं। यदि करना चाहिए तो उन्हें कौनसा मजहब ग्रहण करना चाहिए जिससे वे सम्मान युक्त जाति के रूप में रह सकें। इस सभा के सचालकों ने विविध तबलीगी मजहबों से पूरा २ विचार परिवर्तन करने का यत्न किया है। मुझे आशा कि भाषणों से हमारी जाति प्रकाश और शिक्षा ग्रहण करेगी।

प्रधान महोदय ने अपने भाषण के दौरान में कहा कि विविध धर्मो के प्रतिनिधियों को इस कान्फ्रेंस में प्रतिनिधित्व के लिए आमन्त्रित करने का विचार उत्तम विचार था। उन्होंने यह भी आशा प्रगट की कि वक्ताओं को चाहिए कि वे किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुँचाएँ और किसी धर्म्म के सिद्धान्तों की आलोचना में कटुता न आने देने पर विशेष ध्यान रक्खे।

इसके आगे उन्होंने धर्म्म की चर्चा करते हुए कहा—

"किसी प्रकारसे थिया लोग हिन्दू कहलाए जाने लगे और उनके हिन्दू कहलाए जाने से जो वास्तव में हिन्दू नहीं हैं, ये सब खराबियां हुई है। जब तक वे हिन्दू रहेंगे तब तक हिन्दुओं और थिया-लोगों में अशान्ति और विद्रोह बना रहेगा। हमारे नेता श्री० नारायण गुरु धर्म्म परिवर्तन के विरुद्ध नहीं है और उनका इस सभावना में विश्वास है कि विभिन्न मतों के लोग एक ही छत के नीचे मित्रता और एकता के साथ रह सकते हैं। यदि थिया लोग थिया के रूप में अपने अस्तित्व को बनाए रख सकते हैं तो उन्हें उनके किसी भी धर्म में चले जाने में कोई आपत्ति नहीं है।

जात-पात निवारक लीग के जन्मदाता स्वामी आनन्द तीर्थ सबसे पहले वक्ता थे। उन्होंने कहा मेरा धर्म्म, प्रेम, मैत्री और भ्रातृत्व का धर्म्म है। जात-पात इन तीनों की विनाशक है। थियों को अपने को एक स्वतन्त्र जात-पात शून्य जाति में सगठित करना चाहिए। अन्तर्जातीय विवाहों को लोक-प्रिय करना चाहिए और किसी

भी सामाजिक पृथक करण को न प्रोत्साहित करना चाहिए और न उसका आदर करना चाहिए ।"

"श्री० नारायण वालटीअर सगठन" के जन्म दाता श्री० ए०सी० शकर नारायणने स्वामीजी द्वारा प्रचारित सिद्धान्तो की व्याख्या की । उन्होने अपने 'सेवादल' की उत्पत्ति और उन्नति का संक्षिप्त परिचय दिया । उन्होने प्रगट किया कि उनके दल के इस समय ६४५ सदस्य हैं । वे सब श्री० नारायण गुरु के धर्म्म का प्रचार कर रहे है और उनका मिशन सामाजिक बाधाओ के विरुद्ध युद्ध करना और अपने लिए शहरी और सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना है ।"

श्रीयुत के० पी० थेपिल 'इस्लाम' पर बोले और थिया लोगों को इस्लाम धर्म्म ग्रहण करने का उपदेश दिया । उन्होने बतलाया कि इस्लाम मे गरीब और अमीर मे कोई भेद-भाव नही है और 'इस्लाम' विश्व-व्यापी भाई चारे का धर्म्म है ।

लाहौर के सरदार लालसिंह एम० ऐम० सी० (लन्दन) 'सिक्ख' धर्म्म पर बोले । उन्होंने कहा कि सिक्ख लोग यहा आप लागो को धर्म्मान्तरित करने के लिए नही आए हुए हैं वरन् आप लोगो की तकलीफो और यथा सभव उनके निराकरण के उपायों को निर्धारित करने के लिए आए है । शिक्षित लोग बगैर धर्म्म के रह सकते हैं (धर्म्म का ठीक २ अर्थ वक्ता पर स्पष्ट प्रतीत नहीं होता है—सम्पादक) परन्तु जन-साधारण को धर्म्म जैसी चीज की जरूरत पडती ही है । कोई जाति समष्टि रूप से ईश्वर से इन्कार नहीं कर सकती है । यदि वह करती है तो उसकी समस्त मर्य्यादाऐं नष्ट हो जायगी । गुरु नानक ने श्री० नारायण गुरु के सदृश ही शिक्षाऐं दी है और गुरु गोविन्द सिंह 'अछूतो' के लिए ही जिए थे । सिक्खों मे जात पात नहीं हैं और न उनमे लड़ाकूगुरुडम है ।" उन्होने थिया लोगो को 'सिक्ख धर्म्म' का अध्ययन करने और उसे स्वीकार करने का निमन्त्रण दिया । उन्होंने प्रगट किया कि सिक्ख-धर्म्म उन्हें स्वस्थ्य शरीर और सच्चा हृदय प्रदान करेगा ।

श्रीयुत ई० माधवन ने कहा कि थिया लोगों को किसी ऐसे धर्म्म की जरूरत नहीं है जो उनकी स्वतन्त्रता पर हर प्रकार की पाबन्दी लगाए । धर्म परिवर्तन कडाही से कूदकर आग मे कूद पड़ने के सदृश होगा । इस्लाम और ईसाई मत का अर्से से अस्तित्व है । परन्तु उन्होंने जन-साधारण की निर्धनता की समस्या हल नहीं की है । इन धर्म्मो के अनुयायियो मे आज ज्यादा गरीबी और मुसीबत है । धर्म्म के बिना भी कोई समाज जीवित रह सकता है ।

श्रीयुत ई० वी० रामास्वामी नईकर ने कहा कि हिन्दू ईसाई और मुस्लिम धर्म्म के संस्थापकों से मेरा कोई झगड़ा नहीं है । उन्होने जो कुछ किया उत्तम किया है । थिया लोगो को मोक्ष की जरूरत नही है वरन अपनी सामाजिक असुविधाओ के दूर कराने की जरूरत है । प्रश्न यह है कि —

२५ लाख थिया किस प्रकार 'अस्पृश्यता' और 'अपश्यता' से मुक्त हो सकते हैं ? इसमे सन्देह नहीं कि हिन्दू-धर्म्म का परित्याग कर देने से वे

सामाजिक असुविधाओं से मुक्त हो जायँगे परन्तु मैं यह नहीं मानता कि धर्म्म अनिवार्य्य है। यदि 'धर्म्म परिवर्तन' किया ही जाय तो अस्पृश्यता के निवारण के लिए 'इस्लाम' सब धर्म्मों से श्रेष्ठ है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुसल्मानो की जबर-दस्त शक्ति है और राजनीति में भी उनका प्रभाव है। मेरे लिए अन्तिम ध्येय साम्यवाद है। भारत पूंजीपति देश है और हर प्रकार के सामाजिक आर्थिक और धार्मिक दोहन का अन्त तब ही होगा जब साम्यवाद का दौर दौरा हो जायगा।

सीलोन के बौद्ध मिशनरी श्री० भिक्षु धर्म्म-स्कन्दन ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या की।

श्री० सी० वी० कुंजरुमन ने कहा कि मेरी सम्मति में थिया लोगों के लिए यह सब से अच्छा होगा कि वे ईसाई धर्म्म को स्वीकार कर लेवे क्योंकि ट्रावन्कोर राज्य में साढे सोलह लाख ईसाई हैं और मुसल्मान केवल साढे तीन लाख हैं।

'युक्ति वादी' पत्र के सम्पादक श्रीयुत एम सी जोसेज वकील ने थिया लोगों के किसी दूसरे धर्म्म के ग्रहण करने का विरोध किया क्योंकि वे लोग उस समाज से सम्बन्धित हैं जिसे "स्वतन्त्र" विचार का नेतृत्व प्राप्त है। उनकी समस्त सामा-जिक बाधाएँ तजी के साथ दूर हो रही हैं। हम किश्तों में स्वतन्त्रता नहीं चाहते हैं और ईसाई और मुसल्मान अपने लाभ के लिए हमारा वैसे ही दोहन करेंगे जैसे हिन्दू लोग कर रहे हैं।

मैं चूंकि बुद्धिवादी हूँ इसलिए सब मजहबों के विरुद्ध हूँ।

श्रीयुत ए० आर० रमन ने तब इस आशय का प्रस्ताव पेश किया कि थिया लोगों को हिन्दू-धर्म्म का परित्याग कर देना चाहिए और अपने को एक स्वतन्त्र आत्माभिमानी वर्ग में सगठित कर लेना चाहिए। इसका समर्थन हुआ और सर्व-सम्मति से पास हो गया।

प्रधान महोदय ने कार्य्यवाहि समाप्त करते हुए सर्व्व सम्मति से प्रस्ताव पास करने के लिए सभा का धन्यवाद दिया। प्रस्ताव प्रत्येक को अपना धर्म पसन्द करलेने की आजादी देता है। साथ ही यह स्पष्ट कर दिया गया है कि उन्हें हिन्दू धर्म्म से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिए। उन्होंने अपील की कि वे किसी व्यक्ति को जो इस प्रकार के धर्म्म परिवर्तन के कारण किसी दूसरे धर्म्म में चला गया है, दूर न फेंके। वे लोग स्वतन्त्र विचार के आन्दोलन के पथ-प्रदर्शक हैं और उनका निश्चय समस्त भारत में तहलका मचा देगा। थिया जाति अपने आदर्श स्वतन्त्र विचार से दूसरों को अपनी ओर खीचेगी बजाय इसके कि वह स्वय दूसरों की ओर खिचे। अन्तिम ध्येय धर्म्म का बहिष्कार और धर्म्म के नाम पर दोहन के सब रूपों का मूलोच्छेद है।

सार्वदेशिक सभा की योजनाएं

'सार्वदेशिक सभा' ने ग्राम प्रचार कार्य के व्यवस्थित रूप से सम्पादन के उद्देश से एक स्कीम तय्यार की है और प्रान्तिक सभाओं को भेजी है कि वे स्कीम में दी हुई लाइनों पर ग्राम प्रचार का कार्य करें। सर्व साधारण के लाभार्थ स्कीम यहां दी जाती है।

ग्राम-प्रचार की योजना

प्रान्तीय सभाओं तथा बड़ी बड़ी समाजों को ग्राम-प्रचार मे यत्नशील होना चाहिये और वे निम्न प्रकार से कार्य आरम्भ करे।

(१) एक बड़े ग्राम को केन्द्र बनाया जाय (जहां डाक घर भी हो) उसके ४-५ मील दूरी पर जितने ग्राम हों उन सब में इसी स्थान से कार्य किया जाय।

(क) उन ग्रामो के नाम।

(ख) उनका फासला मुख्य ग्राम से तथा परस्पर।

(ग) उन ग्रामो मे बसने वालो की सख्या। प्रत्येक जाति की सख्या भिन्न भिन्न। किस धर्म को मानते हैं? धर्म-वार सख्या। अछूतों की सख्या। अछूतो की भिन्न भिन्न जातियां। मुसलमान किस किस फिर्के से सम्बन्ध रखते है, भिन्न भिन्न सख्या? ईसाई किस किस चर्च से सम्बन्ध रखते हैं? लोग क्या क्या काम करते हैं? आर्य, अछूत मुसलमान, ईसाई क्या क्या काम करते हैं और उस काम को कितने व्यक्ति करत हैं। यह ब्यौरा मुख्य ग्राम और प्रान्तीय सभा मे हो।

(२) क—धार्मिक दृष्टि से उक्त ग्रामों में क्या क्या कुरीतियां हैं।

ख—किसी विशेष जाति या फिरके को कोई कष्ट हो तो उसका उल्लेख।

(३) ग्राम में रहने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों के नाम, गाव मे प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम। ग्राम में उपद्रवी व्यक्तियों के नाम। अपने सहायक वा अपने से सहानुभूति रखने वालो के नाम। अपने विशेष विरोधियो के नाम।

सख्या २, ३ का ब्योरा प्रान्तीय सभा मे हो।

कार्य्य

(४) प्रत्येक ग्राम मे समाज का सगठन करना, ध्यान रहे निर्वाचन न किया जाय।

(५) अपव्यय कुरीतियां, मुकद्दमाबाजी, मद्य, मासादि दोषों का निवारण करना।

(६) ग्राम में मार्गों की सफाई, गृह की शुद्धता, वस्त्रों को धोकर पहिनना। पशुओं के स्थानों को साफ रखना आदि बातो की शिक्षा देना।

(७) राजकीय असुविधाओं को सरकारी आदमियो से मिलकर दूर करवाना। यदि सफलता न हो तो सभा को सूचना देना और सभा की सम्मति से कार्य करना।

(८) रोगियों की चिकित्सा। यदि उपदेशक यह कार्य करे तो अच्छा है अन्यथा उन ग्रामों

में जो सरकारी डाक्टर हों उनसे मिलकर अथवा जो वैद्य निजरूप से चिकित्सा करते हों उनसे मिलकर औषधि का प्रबन्ध करे ।

(६) आर्य-भाषा (हिन्दी) प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ाने का प्रबन्ध करना। यदि सरकारी पाठशालायें हों तो उनमें अन्यथा रात्रि पाठशालायें खोलकर वा अन्य उचित उपाय से शिक्षित करने का उद्योग करना चाहिये।

(१०) आर्य भाषा के साहित्य और समाचार पत्रों का ग्रामों में प्रचार करना।

(११) ग्रामों में ग्रामीण शिल्प की शिक्षा का प्रचार करना और उस शिल्प में जनता को लगाना तथा किसी किसी व्यक्ति को नगरों में भेज कर शिक्षा दिलाना।

(१२) गौ, भैंस, बकरी, आदि पशुओं के पालन और वृद्धि के लिये उत्साहित करना।

(१३) अमावस्या, पूर्णिमा को कोई व्यक्ति कृषि आदि काम न करके अवकाश को उस दिन सत्सग में लगाये। उसमें धार्मिक उपदेश और शिक्षा का प्रचार हो। भजन ग्रामीण स्वय गावे उनमे जो वक्ता हों उनको उत्साहित किया जाय। जहा जमीदार पद्धति है वहा जमीदार का धर्म वा उसका व्यवहार तथा उसके आचरण का भी उल्लेख होना चाहिये।

(१४) सुविधा होने पर मैजिक लैन्टर्न से भी व्याख्यान देना।

(१५) ग्रामीणों को अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारने के साधनों की ओर ध्यान दिलाना।

❀　❀

आर्य वीर सेवा दल की योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश भर मे आर्य समाजों के आधीन समाज-सेवा के लिये नवयुवकों को सगठित करने की एक नई योजना तैयार की है। इस नये सगठन का नाम "आर्य वीर सेवा दल" है, जिसके निम्न उद्देश्य हैं —

(१) सामाजिक सेवा के आदर्शों का जनता में प्रचार करना और नवयुवकों को सगठित रूप में सामाजिक सेवा करने की शिक्षा देना।

(२) उत्सव, मेला, दुर्भिक्ष, महामारी और बाढ़ आदि के समय प्राणीमात्र की सेवा करना।

(३) समय पड़ने पर असहायों की सहायता करना तथा दु.खियों के दु ख का निवारण करना।

(४) नवयुवकों के लिये व्यायाम-शालायें खोलकर तथा अन्य खेलों का प्रबन्ध करके उनमें शारीरिक उन्नति सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार करना, तथा —

(५) जन साधारण में स्वास्थ्य तथा ग्राम सफाई इत्यादि की शिक्षा का प्रचार करना।

आर्य वीर सेवा दल के सदस्य दलितोद्धार तथा ग्राम सुधार सम्बन्धी कार्यो में भी सरगर्म भाग लेंगे।

इस सेवा दल के सदस्यों में उनके चरित्र-निर्माण तथा नियन्त्रण की भावना को हृदयाकित करने पर विशेष बल दिया जावेगा।

इन दलों का सगठन करने के लिये सार्वदेशिक सभा की आर्य रक्षा समिति के सहायक

मन्त्री श्री बाबू शिवचन्द्र जी ने आर्य समाजों में दौरा आरम्भ कर दिया है और उन्हें इस कार्य में सफलता प्राप्त हो रही है। आर्ययुवक इस आन्दोलन में उत्सुकता के साथ सम्मिलित हो रहे हैं।

—मन्त्री

❀　　❀

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा १६-८-३६ के महत्त्वपूर्ण निश्चय

नि० स० ६

नोटिस का विषय नि० स० ६—श्रद्धानन्द नगरी (देहली) की सभा की इमारतों की रक्षा इत्यादि का विषय पेश हुआ। श्री रामानन्द जी की रिपोर्ट जिनके सुपुर्द इमारतों की देख रेख का कार्य सभा के अधिकारियों ने किया हुआ है पेश होकर पढ़ी गई। रिपोर्ट में इमारतों की मरम्मत इत्यादि, एक चौकीदार की नियुक्ति तथा एक औद्योगिक शिक्षालय के सचालन की आवश्यकता प्रकट की गई है। मरम्मत का ४००) का तथा चौकीदार का १५) मासिक का आनुमानिक व्यय प्रगट किया गया है तथा यह भी प्रगट किया गया है कि इस व्यय का भार सभा पर न होगा। म० रामानन्द स्वयं धन सग्रह करके इस व्यय की पूर्ति कर लेंगे। विचार के बाद निश्चय हुआ कि म० रामानन्द जी को इमारतों की मरम्मत कराने उनकी देख रेख रखने तथा धन सग्रह करने का अधिकार दिया जाय और १५) मासिक तक के वेतन के एक चपरासी के रखने की स्वीकृति दी जाय। यह भी निश्चय हुआ कि निम्न सज्जनों की एक उपसमिति नियत की जाय —

(१) श्री लाला ज्ञानचन्द जी
(२) ,,　,, नारायणदत्त जी
(३) ,, स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी

यह उपसमिति औद्योगिक शिक्षालय के सचालन के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट आगामी अन्तरग सभा में पेश करें।

(८)

नोटिस का विषय स० ८ आर्यसमाज टंकारा के दयानन्द स्मारक के निर्माण का विषय आर्य प्रतिनिधि-सभा बम्बई के पत्र के साथ पेश हुआ। श्री प्रधान जी ने प्रगट किया कि यह विषय सभा के विचाराधीन हैं। आर्य समाज बम्बई के कतिपय सज्जन मौरवी तथा वीरपुर नरेश के साथ भूमि का स्थान तथा परिमाण नियत करने जुलाई मास में जाने वाले थे, इसी बीच में टकारा की दो देविया 'दयानन्द स्मारक' तथा पुत्री पाठशाला इत्यादि के नाम में अखिल भारत में धन सग्रहार्थ बिना सभा को सूचना दिये वा स्वीकृति प्राप्त किये निकल पड़ी। समाजों ने इस सभा को लिखकर इस सम्बन्ध में कर्त्तव्य पूछा जब समाजों के मार्ग-प्रदर्शन के लिए पत्र पर पत्र आने लग गये तब सभा को एक जरूरी सूचना प्रेस में दे देनी पड़ी कि वे देविया सभा की सूचना और स्वीकृति के बिना भ्रमण कर रही हैं और यह कार्य सभा के विचाराधीन है। आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने इस सूचना का विरोध किया और विरोध का आधार यह प्रगट किया कि आर्य समाज टकारा की ओर से वे देवियों

धन सग्रहार्थ फिर रही हैं और टकारा समाज बम्बई से सम्बन्धित है तथा चाहा कि सभा उस सूचना को वापस लेले और टकारा समाज के धन सग्रह के कार्य में सहायता और योग देवे। विचार के बाद निश्चय हुआ कि जब तक स्मारक इत्यादि के सम्बन्ध में वास्तविक हालात न ज्ञात कर लिये जावे तब तक कोई दूसरी सूचना प्रेस मे न दी जाय तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से प्रार्थना की जाय कि वे कृपया टकारा पधारकर वहा के सही सही हालात जानकर अपनी रिपोर्ट अन्तरङ्ग सभा में पेश करे ।

(६)

नोटिस का विषय स० १० बगलौर सिटी समाज का इस सभा में प्रवेश सम्बन्धी प्रार्थना पत्र पेश हुआ। निश्चय हुआ कि सम्बन्ध स्वीकार है यह भी निश्चय हुआ कि प्रतिनिधि की स्वीकृति का विषय आवश्यक सूचनाए समाज से प्राप्त करके आगामी अन्तरङ्ग सभा में पेशकिया जाय।

(१२)

—अफ्रीका के डेलीगेशन के आर्य समाज की ओर से स्वागत का जो आगामी सितम्बर मे भारत में आ रहा है विषय श्री म० सी० यल० पटेल न्यूदेहली तथा प० आनन्द प्रिय जी के पत्रों के साथ पेश होकर विचार के बाद निश्चय हुआ कि देहली में डेलीगेशनका अखिल भारतीय आर्य जगत की ओर से स्वागत किया जाय। आर्य समाज का उत्तम साहित्य उन्हें भेट किया जाय और बम्बई समाज को प्रेरणा की जाय कि वह बम्बई में डेलीगेशन का स्वागत करे ।

(१३)

—(क)निश्चय हुआ कि यह सभा श्री डा० भगवान दास जी के 'अन्तर्जातीय विवाह बिल' का जो असम्बली में पेश हुआ हुआ है, समर्थन करती है।

(ख) यह सभा सरकारी सिक्कों पर उर्दू, अग्रेजी के लेख के साथ साथ हिन्दी के लेख की आवश्यकता को अनुभव करती है और इस सम्बन्ध में उठी हुई जनता की माग का समर्थन करती है।

(१५)

श्री प० ग गाप्रसाद जी चीफ जज के २०००) के टिहरी (गढवाल) आर्य समाज ट्रस्ट के दान की स्वीकृति का विषय प० जी के पत्र के साथ पेश हुआ जिसमें उन्होंने प्रगट किया है कि वे सयुक्त प्रान्तीय सभा के बजाय सार्वदेशिक सभा को यह ट्रस्ट देना चाहते हैं और सयुक्त प्रान्तीय सभा को इसमें कोई आपत्ति नहीं है। विचार के बाद निश्चय हुआ कि प० जी का दान स्वीकार किया जाय और इसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

(१६)

असेम्बलीकी सिलेक्ट कमेटी द्वारा सशोधित 'आर्य मैरेजबिल', कमेटी की कार्यवाहि, श्री डा० भगवानदास, श्री डा० खरे, श्री एम० सी० राजा तथा बा० घनश्यामसिंह जी के विरोध—पत्र के साथ पेश होकर पढ़ागया। श्री बा० घनश्यामसिंह जी का पत्र भी पढ़ा गया जिसमें उन्होंने सभा

से आगे को कार्यवाहि के सम्बध में आवश्यक निर्देश चाहा है। विचार के बाद निश्चय हुआ कि चू कि सिलेक्ट कमेटी ने दायाद सम्बन्धी धारा में जो सशोधन किए हैं वे समाज को माननीय नहीं हैं क्योंकि उनसे बिल के उद्देश्यों की पूर्ति होनी कठिन है इसलिए यह सभा बिल की असल धाराओं के ही रक्खे जाने पर जोर देती है। निश्चय हुआ कि आर्य समाजों को प्रेरणा की जाय कि वे इन संशोधनों का पूरा पूरा विरोध करे। यह भी निश्चय हुआ कि श्री दीवान बद्रीदास जी से इस विषय पर Criticism लिखाया जाय।

(१७)

—ग्राम प्रचार सम्बन्धी स्कीम पेश होकर पढ़ी गई और स्वीकृत हुई। निश्चय हुआ कि स्कीम की एक २ कापी प्रान्तिक सभाओं को भेजी जाय कि वे इसके अनुसार ग्राम-प्रचार का कार्य करायें तथा समाचार पत्रों मे भी प्रकाशित की जाय।

(क) अछूतोद्धार सम्बन्धी स्कीम पेश होकर पढी गई और स्वीकृत हुई। निश्चय हुआ कि उसके अनुसार कार्य किया जाय।

(ख) यह भी निश्चय हुआ कि १००) वार्षिक सहायता देने वाले सभा के सहायक अधिक से अधिक सख्या मे बनाये जावें तथा प्रान्तो मे धन सग्रहार्थ दौरा किया जाय और इसके लिये श्री प० गगाप्रसाद जी चीफ जज श्री बा० मदनमोहन जी सेठ, श्री प्रो० सुधाकर जी तथा श्री कुँवर चादकरण जी शारदा से प्रार्थना की जाय।

आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम (डच गायना) के अन्तगत श्रीमद्दयानन्द अनाथालय भवन



अनाथ बालक बालिकाय तथा कार्यकर्ता गण

महिला-जगत

सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती विशारदा

मातृत्व का सन्देश

ले०—श्री क्षितिन्द्रनाथ टगौर

(अंग्रेजी से अनूदित)

सन्देश

प्राचीन दन्त कथा के अनुसार जिस प्रकार भगीरथ गंगा को हिमालय पर्वत की ऊंची चोटी से नीचे लाये थे और उन्होने आर्य्यावर्त को हरे भरे बाग मे परिवर्तित किया था इसी भाति 'आधुनिकता' (Modernism) के अमेरिकन कवि श्रीयुत वाल्ट ह्वाइट मैन (Walt Whiteman) ने नवीन जगत मे एक नवीन विचार-धारा को जन्म दिया और पश्चिम के हृदय मे विचारो की एक नूतन श्रृंखला का सूत्र पात किया जब उन्होने हृदय के अन्तस्तल से जोरदार शब्दो म 'मातृत्व' की प्रशंसा मे निम्न पद गाया।

"मै स्त्री जाति का कवि हूँ।
वैसा हो जैसा पुरुष जाति का॥
और मै कहता हूँ स्त्री होना उतना ही महान है जितना पुरुष होना।
और मै कहता हूँ, मनुष्य की माता से बड़ी कोई चीज नही है।'

किसी दूसरे उत्तम रूप मे इस भावको व्यक्त करना कठिन है। ऐसा करने का यत्न करना इस पद की प्रभावोत्पादक सुन्दरता को नष्ट करना ही होगा। यह शायद केवल प्राचीन भारत का ही किसी दूसरे देश का नही, दिव्य साहित्य है जिसमे प्रांजल भाषा मे मातृत्व की महिमा का वर्णन मिलता है। तो भी यह कहा जा सकता है कि ह्वाइटमेन ने भी स्त्री को पुरुष के साथ एक लेविल पर रख दिया है। जब वह निषेधात्मक रूप मे यह कहता है "मनुष्य की माता बनने से ऊँची कोई चीज नही है।' पवित्र मर्य्यादाओं की भूमि प्राचीन भारत के ऋषि ही थे जिन्होने नारी की सच्ची महत्ता को पूर्णतया अनुभव किया था और जो उसके सम्बन्ध मे न केवल नकारात्मक सच्चाई को प्रगट करने मे स्वभावतया नही झिझके थे वरन् जिन्होने एक स्वीकारात्मक सच्चाई का प्रकाश किया था जब उन्होने कहा था 'बच्चो की माता होने के अपने अधिकार के कारण वह हमारे पूर्ण सम्मान निष्ठा और आशीर्वादो का अधिकारिणी है। स्त्री ही है जो घर को रोशन करती है वह गृह लक्ष्मी है—वस्तुत उसमे और देवीमे कोई अन्तर नही है।' (मनु)

ऋषियों का आदर्श

धूप जैसे चमकीले और कमल दल जैसे कोमल शब्द प्राचीन काल के ऋषियों के अतिरिक्त और कोई नही कह सका है। ह्वाइट मेन का दृष्टि विन्दु स्त्री को मनुष्य की माता सोचने के बाहर नही गया है। वे आर्य्य ऋषि ही थे जिन्हे स्त्री को माता और घर की स्वामिनी के रूप मे देखने के लिए दिव्य दृष्टि से युक्त होने का सौभाग्य प्राप्त था। ऋषियो ने इस दिव्य सत्य को स्वय अनुभव करके 'मातृवत परदारेषु' अर्थात् दूसरों की स्त्री को माता समझो—की शिक्षा देकर मानव जगत को उस ऊँचे आदर्श को प्राप्त करने का सीधा साधा

मार्ग दिखलाया था। उनके अनथक परिश्रम और उपदेश का ही परिणाम था कि स्त्री जाति के सम्बन्ध में यह ऊँचा भाव हिन्दू जाति की नसों मे प्रविष्ट हो गया था। शताब्दियों पर्य्यन्त इस भाव ने दुराचार के भयंकर गर्त से हिन्दू जाति की रक्षा की थी। बड़े दुख की बात है कि यह उच्च भाव वेग के साथ विस्मृति की गोद में विलीन हो रहा है और स्त्री के शरीर की पवित्रता के सम्बन्ध मे प्रथानुमोदित उपदेश भूतकाल की वस्तु बनने लग गया है, जब कि पश्चिम के देश यद्यपि वे इस उच्च भाव को ऊँचाई और गहराई को नापने में असमर्थ देख पड़ते हैं, इस भाव अर्थात् सुख और शान्ति की कुञ्जी की ओर बढ़ रहे हैं, भले ही धीरे धीरे बढ़ रहे हैं।

शरारत भरा निर्देश

यह ऊँचा आदर्श इन दिनों हिन्दू मस्तिष्क पर से अपना अधिकार छोड़ रहा है। इसका कारण शिक्षा की वर्तमान गलत प्रणाली है जो ऋषियों द्वारा निश्चित की हुई प्रणाली से विल्कुल भिन्न है। ऋषियों के ज्ञान ने हिन्दू समाज को ऊँचे आदर्शों पर अपनी स्थिति क़ायम करनेके योग्य बना दिया था। आज यह कहना एक फैशन हो गया है कि धर्म्म की ज़रा सी सहायता के बिना भी जो उन ऊँचे आदर्शों का आधार था कोई भी अपने जीवन के कर्त्तव्यों को मज़े से पूरा कर सकता है। क्या इससे ज्यादा शरारत भरा दूसरा कोई निर्देश हो सकता है? भारत के ऋषि जीवन के समस्त क्षेत्रों में धर्म्म को अपने सामने रखते थे और यही वजह थी कि भारत वर्ष ने सुख और शान्ति का धाम होने की ख्याति प्राप्त की थी। आज देश में जो परिवर्तन हो गया है उसका कल्पना भी हमारे वे ऋषि नहीं कर सकते थे। हम बहुत जल्दी ही आचार की ऊँची भित्ति से गिर गए हैं जिसने शताब्दियों पर्य्यन्त हम लोगों पर शासन किया था। पवित्र ऋषियों की हम सन्तान अपने समस्त कार्य्यों से धर्म्मका बहिष्कार करते नहीं डरते हैं।

कर्त्तव्यों की दिव्य प्रणाली

प्राचीन काल के ऋषियों ने अपने समस्त उपदेश धर्म्म पर आश्रित किए थे। धर्म्म वह आन्तरिक आधार है जो मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति के संघर्ष में सहायता प्रदान करता है। धर्म्म ईश्वर-पूजा से कम नहीं है। ऋषि जानते थे कि समस्त ज्ञान उसे प्राप्त होता है जो परमात्मा के ज्ञान का विनम्र जिज्ञासु है। परमात्मा का ज्ञान समस्त ज्ञान की आधार शिला है। उनका सिद्धान्त था धर्म्म का नाश करो धर्म्म तुम्हारा नाश करदेगा, धर्म्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। दिमाग मे यह सिद्धात रखते हुए कर्त्तव्यों की एक दिव्य प्रणाली वे हमे छोड़ गए हैं जिसके द्वारा सोते जागते उठते-बैठते चलने-फिरने कोई भी धर्म की रक्षा तथा जीवन के प्रत्येक व्यापार मे परमात्मा को अपने सामने रखने में समर्थ हो सकता है।

तब और अब मे भेद

यदि हम ऋषियों के उपदेशों का अनुसरण करने पर ध्यान नहीं देते है और अपने अभिमान और दम्भ में उनकी अवहेलना करते हैं और इस प्रकार अपने घरों पर आपत्ति लाते हैं तो निश्चय ही इसके लिए हमारे ऋषि और बुजुर्ग दोषी नहीं हैं। वे हमें जीवन की समस्त बुराइयों के लिए ऐसी संजीवनी बूटी दे गए हैं कि हमारी–उनकी संतान की–सैकड़ों भयकर आघातों

के बावजूद अब भी आध्यात्मिक मृत्यु नहीं हुई है। परन्तु मरते हुए भी हम इस जगत मे नए उत्साह और नवीन स्फूर्ति से विचारों का नया युग लाने की कोशिश कर रहे है। उनकी (ऋषियों की) आध्यात्मिकता का गहरा घूंट पी लेने के फल स्वरूप पतन के इस युग मे भी दूसरे की स्त्री को माता समझने का बचपन से हमे शिक्षा दी जाती है। धर्म के उच्च सिद्धान्त पर बैठ हुए उन ऋषियों ने परमात्मा के मातृत्व की भावना की शोभा को पूरी तरह मे अनुभव कर लिया था और ससार को घोषणा की थी कि स्त्री मुख्यतया दूसरों की पत्नी माता के समान समझी जानी चाहिए। स्त्री जाति के प्रति महान सम्मान का भाव पैदा करने के उद्देश्य से ऋषियो ने यह समझा था कि इस ऊंचे आदर्श पर सन्तान का पालन पोषण होना चाहिए। इसी भाव को सामने रखकर उन्होंने लोगों को प्रत्येक स्त्री को सम्मान पूर्ण शब्दों यथा 'बहन 'पुत्री' और 'माता से सम्बोधन करने की शिक्षा दी थी। परन्तु मौजूदा तालीम के परिणाम स्वरूप हम लोगों ने इस शिक्षा पर ध्यान देना छोड दिया है भले ही यह कितना ही श्रेष्ठ और हृदय की शुभ भावनाओं से संबन्ध ही रखनेवाला क्यों न हो। इसके विपरीत कुतर्क और अनियन्त्रित दिमाग की बेहूदा युक्तियों को काम मे लाते हुए हम यह धारणा बनाने लग गये हैं कि स्त्री आखिर को केवल स्त्री ही है। हमारो पुरखाओं ने हमें जो ऐनक दी थी हम उसे खो चुके हैं। उस ऐनक में से पर स्त्री माता के रूप में देख पड़ती थी।

धर्म्म क्यों बुरा देख पड़ता है

हम जैसे वर्तमान कालीन तथाकथिक शिक्षित हिन्दुस्तानियों के लिए यह स्वाभाविक ही है कि जीवन के प्रत्येक काम को बुजुर्गों की नाइ धर्म के साथ जोड़ने की धार्मिक शिक्षा हमें सुनने में अच्छी न लगे। कारण मालूम करने के लिए दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। हम केवल आराम और मज़े की तलाश रखते हैं और सब प्रकार की वाहियात बाते पसन्द करते हैं इसका अनिवार्य फल यह है कि हम भौतिक सुन्दरता के पीछे पागल हुए फिरते है। हम वासनाओं को उत्तेजित करने वाली चीजों मे बाजी मार ले जाने की कामना करते हैं। यह कामनाए स्वभावतया स्त्री को केवल मास के ढेर की अपेक्षा किसी दूसरे रूप में नही देखने देती हैं। इस प्रकार के लोगों को और हमारे उन देश वासियो को जो दूरदर्शिता के अभाव की वजह से हिन्दुस्तान मे पागल बना देने वाला बाल डान्स (Ball Dance) तथा पश्चिम का इसी प्रकार की दूसरी सामाजिक कुप्रथाओं को प्रचलित करते नहीं झिझकते हैं, और जो निश्चय ही पूर्व मे नैतिक दुष्काल लाने वाली है, परमात्मा और धर्म का नाम बुरा लगेगा ही। स्त्री के मातृत्व का सन्देश, निश्चय ही उन्हें इस उथल पुथल के ज़माने में बेवक्त का राग प्रतीत होगा। उनका उसूल है—"धन क़र्ज लो, खूब खाओ खूब पियो (शराब) और मजा उड़ाओ" उनमें से बहुतों को यह सोचने का समय तक भी नहीं मिलता है कि उनकी शिक्षा और व्यवहार का अनुसरण करते हुए देश विनाश की किस असीम गहराई की ओर अग्रसर हो रहा है। वे सदैव आमोद प्रमोद के स्वप्न जगत में रहना चाहते है।

धर्म्म सदैव भलाई की ओर ले जाता है

यह स्वीकार करना ही होगा कि देश के बहुत से शुभ चिन्तकोंकी भी यह राय है कि लड़के को धर्म और

उसके जीवन के तमाम व्यापारों में धर्म की याद दिलाना उसे मूर्ख और पाखण्डी बनाना है। निर्णय की इस भूल के वशीभूत होकर वे ऋषियों की शिक्षा की तह में नहीं जाने पाते हैं और बिना किसी झिझक के पश्चिम की बहुत सी शिक्षाओं को जो देखने में सुन्दर परन्तु प्रभाव में हानिकारक हैं देव वाणी समझ बैठते हैं। विपरीत इसके हम बिना किसी झिझक के कह सकते हैं कि ऋषियों द्वारा प्रतिपादित आचरण के नियमों का प्रभाव आचरण में दृढ़ता लाना है, मूर्खता नहीं है, बुरे कामों के लिए पश्चाताप है निश्चय ही पाखण्ड नहीं है। निर्दोष आमोद-प्रमोद पर ऋषियों ने कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। उन्होंने हमें यह उपदेश नहीं दिया है कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के बलिदान पर धर्म्म का आचरण करो। जिस पर व बल देना चाहते है वह बात यह है कि आचार विचार मे ऊँचा बनाने वाली चीज़ों का उपयोग तथा धर्म्म का दृढ़ सहारा लेने से ही कल्याण हो सकता है।

मानव समाज का इतिहास साक्षी है

मानव-समाज का इतिहास इस सत्य का पूर्ण साक्षी है। क्या रोम के सम्राट नीरो ने अपनी पाशविक अनैतिक विषय लोलुपता और अमानुषिक अत्याचारों से संसार की भलाई की है या अत्याधिक बुराई? उन उच्च आत्माओं से बढ़कर जिन्होंने सत्य के झंडे को ऊँचा रखने के लिए अपनी क़ीमती ज़िन्दगियों की कुर्बानी कर दी थी कौन है जिसने संसार की भलाई की है। अकेले सुकरात ने विचारों के साम्राज्य में अपने गंभीर आध्यात्मिक चरित्र के द्वारा जो उथल पुथल मचा दी थी क्या उतनी यूनान के अन्य लोग मचा पाए थे? अपनी धार्मिक कट्टरता को लिए हुए इंगलैंड के प्यूरिटन और स्टुआर्ट राजाओं, इन दोनों में से मानव समाज का कौन अधिक शुभचिन्तक कहा जा सकता है?

सैकड़ों ऐसे व्यक्ति हैं जो अभिमान पूर्वक अपने महान् कवि मिल्टन की कविता को जीवन को आलोकित करने वाले साधन के रूप में पेश कर सकते हैं। परन्तु कितने ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने समय के फ़ैशन के लीडर ब्रमेल (Brummel) के सिद्धान्तों पर चलते हुए उच्च ज़ीवन व्यतीत करने का अभिमान कर सकते हैं। क्या चौथे जार्ज के प्रभाव ने इंगलैंड के सामाजिक जीवन में भलाई की अपेक्षा बुराई के अधिक बीज नहीं बोये हैं।

उपसंहार

यदि कोई आदमी इस प्रकार के ऐतिहासिक उदाहरणों के होते हुए भी धर्म्म के सुन्दर प्रभाव में विश्वास करने से इन्कार कर दे तो हम नहीं समझते कि किस प्रकार हम उसके मस्तिष्क पर धर्म की महत्ता अङ्कित कर सकते हैं। दिव्य धर्म में विश्वास रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का मुख्य कर्तव्य है कि वह प्रत्येक को उन विषयों का अनुकरण करने की शिक्षा दे जो परस्पर में धर्म पर आश्रित हों और स्वयं धर्म्म का आचरण करता हुआ धर्म्म के झंडे को ऊँचा रक्खे। धर्म्म का मार्ग कभी कभी चिकना होता है और उसमें दृढ़ खड़े रहने के लिए सावधानता और निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है इसीलिए हमारे ऋषियों ने हमारे लिए यह ज़रूरी ठहराया कि धर्म्म का आचरण करते हुए यह समझो कि मृत्यु हमारे बालों को पकड़े हुए है। हम भारत के पुत्रों से अन्त में अपील करते हैं कि वे परमात्मा को अपने शरीरमें ओतप्रोत समझें।

विविध पत्र पत्रिकाएं

हिन्दुओं का पतन—

श्रीयुत शरद त्रिम्बक कार्निक 'इण्डियन रिव्यू'मे हिन्दुओ का घटती हुई जन सख्या के सम्बन्ध मे निम्न प्रकार प्रकाश डालते है —

"वर्तमान आर्थिक सिद्धान्तो में स्त्री पुरुषो के अनुपात ने कुछ महत्व प्राप्त कर लिया है और इस अनुपात के अध्ययन के बिना जन-संख्या की समस्या का अनुसधान मुशकिल से पूर्ण समझा जाता है। लिंग भेद के वर्तमान लेखको का विचार है कि पुरुषों की सख्या म वृद्धि घटती हुई आबादी की सूचक होती है" यह बात स्पष्ट रूप स भारतवर्ष के सम्बन्ध मे सत्य नही है परन्तु हिन्दुओ की आबादी के सम्बन्ध में जो दूसरे धर्मावलम्बियो की तुलना मे बहुत धीमी गति से घट रही है यह बात कुछ अश मे ठीक है। इसका कारण हिन्दुओ मे तुलनात्मक दृष्टि से स्त्रियो की कमी है और विधवा-विवाह पर रोक थाम और जाति-पात के कठोर बन्धन हैं जिनके फल स्वरूप पुरुषो को सख्या का प्राधान्य हो रहा है। वेस्टर मार्क (Westermarck) की सम्मत्ति है कि "जातियो के सम्मिश्रण से स्त्रियो की पैदाइश मे बहुत ज्यादा वृद्धि होती है।" य महाशय संसार भर मे हुए बहुत से परीक्षणो को प्रस्तुत करते हैं। और डाक्टर नेगेल के पौधो के सम्बन्ध मे किए हुए परीक्षणो को और डाक्टर गाहेल्मर्न के घडो की सख्या के सम्बन्ध मे अनुसधानो को जिनके अनुसार रग मे नर और मादा मे जितना ज्यादा अन्तर होगा उतनी अधिक सख्या बछेड़ियो की होगी उद्धृत करते हैं। यहूदियों में जिनम से बहुत से चचेरे भाई बहिनो से शादी करते है लड़को की पैदाइश आश्चर्यजनक रीति से होती है, इस सिद्धान्त के समर्थन मे पर्याप्त साक्षी दी जा सकती है और यह निश्चित रूप से प्रमाणित समझना चाहिए कि वर्णो के सम्मिश्रण मे स्त्रियो का सख्या मे वृद्धि होती है। हिन्दुओ मे पुरुषो की सख्या की प्रधानता होने का एक कारण विधवा विवाह पर बन्धन बतलाया जा चुका है परन्तु एक दूसरा कारण है वह कारण अपना २ जाति के भीतर शादी करने का परम्परागत रिवाज है। हिन्दुओ की आबादी के निरूपण के लिए स्त्रियों की कमी एक आवश्यक साधन है। हिन्दुओकी कुल आबादी २३९१९५००० है और यह कहना शायद हास्यास्पद समझा जायगा कि इतनी बड़ी आबादी पतन की ओर जा रही है। परन्तु निम्न तुलनात्मक तालिका से हमारी आँखे खुल जानी चाहिए क्योंकि यह समस्या को गम्भीर

विश्व मे ओत प्रोत समझे और उसका आज्ञा पालन करे। इसके लिए अपने जीवन के प्रत्येक व्यापार मे धर्म्म को ओत प्रोत होन देवे तब ही हममे—ऋषियो की सन्तानो मे—दूसरो की स्त्री को माता समझने का योग्यता आयगा और तब ही विश्व मे इस सदेश का प्रसार संभव होगा।

रूप में प्रस्तुत करती है।

	प्रतिशतक वृद्धि १९२१-३१	स्त्रियां १५-४५ प्रति १००० पुरुष २०-५०
ईसाई	३२	१०८०
मुसलमान	१३	१०२६
हिन्दू	१०	८९७ (विधवाओं को निकाल कर)

	आबादी १९३१ में	घटबढ़ प्रतिशतक १९२१-३१	१८८१-१९३१
हिन्दू	२३९१९५०००	+ १०४	+ २६८
मुसलमान	७७६७८०००	+ १३०	× ५९०
ईसाई	६२९७०००	+ ३२५	+ २३८१

हिन्दू आबादी में सन्तान पैदा करने में समर्थ ५१४५०२६६ पुरुषों के मुकाबले में ५४४७३४४८ स्त्रियां हैं अर्थात् १००० पुरुषों के मुकाबिले में १०५९ स्त्रियों का आधिक्य है। यदि लिंग-भेद के लेखकों के प्रगटीकरण को ठीक मान लिया जाय तो हिन्दुओं की आबादी की तेजी के साथ वृद्धि के लिये ये अंक अनुकूल है परन्तु यह वृद्धि विधवाओं की भयानक संख्या ने नगण्य बनादी है। निम्न तालिका एक दुख पूर्ण कहानी सुनाती है।

विधवाए उम्र	१९२१	१९३१	प्रतिशतक घटबढ़
०— १	५९७	१०८१	+ ८१
१— २	४९४	१३४२	+ १७२
२— ३	११५७	२६९५	+ ११४
३— ४	२८३७	७०७८	+ १५०
४— ५	६७०७	११४७१	+ ७१

१५—४०वर्षकी विधवाए (सन्तानोत्पत्ति की उम्र)

१९२१	—	५८१७७८१
१९३१	—	५९८१०९६

बूढ़ी विधवाओं की संख्या से आबादी पर असर नहीं पड़ता है परन्तु बहुत सी जवान विधवाए जो समाज की व्यवस्था की वजह से शादी नही कर सकती हैं समस्या को गम्भीर बनाती हैं।

अरब का विद्रोह—

अरब के वर्तमान विद्रोह के सम्बन्ध में 'माडर्न रिव्यू' में एक टिप्पणी प्रकाशित हुई है उससे विद्रोह के सम्बन्ध में उत्तम सूचनाएं मिलती है। टिप्पणी इस प्रकार है —

"पिछले अप्रैल में पैलैस्टाइन में गड़बड़ मची है उसका वास्तविक कारण अरबों (मुसलमान और ईसाई) और यहूदियोंके कई साल से बिगडे हुए पारस्परिक सम्बन्ध हैं। परन्तु जैसा पिछले जून मे हाउस आफ कामन्स में प्रगट किया गया था इस गड़बड़ का तात्कालिक कारण एक डकैती थी जिसमें एक बसमें ३ यहूदी मार दिए गए थे। इसने तथा इसके बाद की घटनाओं ने खूनी लड़ाई को जन्म दे दिया। इसके बाद अरबों ने एक हड़ताल की जिनमें ईसाई अरबों को मिलाकर समस्त अरब प्रजा ने भाग लिया। विद्रोह की दूसरी सूरते वर्तमान इतिहास के मामले हैं। ब्रिटिश गवर्नमेंट ने जो पैलैस्टाइन में मैनडेटरी है तमाम मामले को जाच के लिए एक रायल कमीशन नियुक्त किया है। परन्तु यह घोषणा की गई है कि कमीशन विद्रोह के शान्त होने से पूर्व अपना कार्य शुरू नहीं करेगा।

मामले में तीन पार्टियां सम्बन्धित हैं—ब्रिटिश गवर्नमेंण्ट, यहूदी और अरब (मुसलमान और ईसाई)। ब्रिटिश गवर्नमेंण्ट साम्राज्यवाद के इरादों से अनुशासित होरही है और साम्राज्यवाद सम्बन्धी उद्देश्यों के प्रसार के लिए वह ससार भरके यहूदियों की सहायता प्राप्त करना चाहती है। पैलैस्टाइन के अरब पिछले १५०० सालसे अरब में रहते रहे हैं। वे अपना यहूदियों द्वारा निकाला जाना पसन्द नहीं करते हैं। उन्हें निकाले जाने का भय है यदि आगे यहूदियों का बिना रोक थाम के आना जारी रहा। ब्रिटिश सरकार के एक आर्डर के अनुसार पैलैस्टाइन यहूदियों का (नैशनल होम) घोषित हो चुका है इस लिए यहूदी लोग यह कहते हैं कि जितने यहूदी देशमें समा सकते हैं उतनों को न आने तथा बसने देने से उस घोषणा का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। पैलैस्टाइन में ब्रिटिश उद्देश्यों के समझने के लिए कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। १९१७ में जब लार्ड बेलफोर ने यहूदियों के लिए पैलैस्टाइन में 'नैशनल' होम का वायदा किया था तब उन्होंने किसी निस्वार्थ लोकोपकारक भाव से प्रेरित होकर ऐसा नहीं किया था बरन् मित्र राष्ट्रों के लिये ससार भर के यहूदियों की सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से ऐसा किया था।

इटली की अबीसीनिया में सफलता के कारण मेडीटेरियन की स्थिति बहुत परिवर्तित हो गई। इस कारण से भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी पैलैस्टाइन की भौगोलिक स्थिति को बहुत महत्व दे रहे हैं।

अरबों और यहूदियों के झगड़े को समझने के लिये यह जानना जरूरी है कि ३० जून १९३५ को पैलैस्टाइन की आनुमानिक आबादी १२६१००० थी जिसमें से ८२५००० मुसलमान ३७५००० यहूदी और १००००० ईसाई थे। वहां के ईसाई भी अरब हैं। इन अकों से स्पष्ट है कि अरबों के यहूदियों से सख्या में कम होने की कोई सम्भावना निकट भविष्य में नहीं हैं। इसके अलावा ब्रिटिश मैनडेट के अधीन पैलैस्टाइन का लगभग १००० वर्ग मील क्षेत्र है और इस क्षेत्रफल में आसानी से ३० लाख व्यक्ति आ सकते हैं।

यह भी ध्यान में रखने की बात है कि देश यहूदियों का प्राचीन घर था और १५ वर्ष पहले जब यहूदियों का आना शुरू हुआ था उससे पूर्व भी कुछ यहूदी वहां रहते चले आये थे। यहूदियों के धन और उद्योग से देश के उन्नत होने की वजह से खेती और व्यवसाय के प्रसार से देश में बहुत आर्थिक सुधार हो गया है और अरबों ने इस सुधार से बहुत लाभ उठाया है। मजदूरी बढ़ गई है। यह सत्य नहीं है कि जो जमीन आज यहूदियों के कब्जे में है वह अरबों से छीनी गई थी। बहुत सी जमीन दलदलों इत्यादि के हटा देने से ठीक करदी गई है और बहुत सी ठीक करदी जावगी। (लीग आव् नेशन्स की १९३३-३४ की ईअर बुक)

इन बातों पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि यहूदियों के पैलैस्टाइन में प्रवास के पक्ष में कुछ कहा जा सकता है।

विपरीत इसके, दूसरे लोगों के सदृश, यह आशा नहीं की जा सकती है कि स्वतन्त्रता प्रिय और स्वतन्त्रताके इच्छुक अरब लोग सदैव ब्रिटिश मैनडेट के अधीन रहेंगे। परन्तु ब्रिटिश राज

नीतिज्ञों की घोषणाएं बतलाती हैं कि ब्रिटेन देश पर हमेशा शासन करना चाहता है। पैलैस्टाइन, ईराक और सीरिया की तरह मैनडेटरी शासन के अधीन है। ईराक मैनडेट के अधीन अब नहीं रहा है। सीरिया स्वतन्त्र शासन के मार्ग पर है। ऐसी हालतमें पैलैस्टाइन के अरबोंसे ही अनिश्चित समय के लिए क्रियात्मक दासता में रहने की क्यों आशा की जाय ?

चूँकि कांग्रेस वाले अरबों के विचारों की ओर झुके प्रतीत होते हैं और भारतीय मुसलमान अपने को परेशान अनुभव करते हैं इसलिए हमने पैलैस्टाइन की स्थिति को समझने और मामले को यथा सम्भव संक्षेप में रखने का यत्न किया है।

ईसाइयों के हथकण्डे—

प्रान्तीय असेम्बलियों के वर्तमान चुनाव आन्दोलन मे ईसाई प्रचारक अधार्मिक हथकण्डों का आश्रय ले रहे हैं, इस पर 'आर्य्य मित्र' के सम्पादकीय स्तम्भों में निम्न प्रकार प्रकाश डाला गया है —

"आज कल प्रान्तीय असेम्बली के निर्वाचन के लिये मतदाताओं की सूचियां ठीक की जा रही है। ईसाई प्रचारकों ने इस अवसर से खब अनुचित लाभ उठाया है। गाजियाबाद टाउन कांग्रेस कमेटी के प्रधान ने हरिजन सघ देहली के मन्त्री को एक पत्र लिखा है जिसकी प्रतिलिपि हमारे पास आई है। उन्होंने लिखा है कि वे तहसील गाजियाबाद (मेरठ) के दुहाई तथा भीखनपुर गावों में गए। वहा एक विचित्र घटनाका पता लगा कि स्थानीय गिरजे के पादरियों ने उस गाव तथा आस पास के गावों के चमारों और भंगियों को ईसाइयों की वोटलिस्ट (मतदाताओं की सूची) में दर्ज करा दिया है। हरिजनों से पूछने पर उन्हें पता चला है कि यह कार्य्य उनकी बिना इच्छा के हो हुआ है। इससे स्पष्ट है कि ईसाइयों के विरुद्ध शिकायत केवल आर्य्य समाजियों को ही नहीं है अपितु धार्मिक पक्ष से रहित कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी है। कारण यह है कि पादरियों के ये कार्य्य धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु नागरिकता और राजनैतिक न्याय की दृष्टि से भी अत्यन्त घृणित हैं। प्रत्येक आर्य्य बन्धु का और विशेषकर आर्य्य समाजों का यह कर्तव्य है कि ईसाई पादरियों की ऐसी करतूतों का पता लगावें और उसकी सूचना शिरोमणि सभाओं, सरकारी कर्मचारियों को तथा निर्वाचन का प्रबन्ध करने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों को दें।"

एक वैज्ञानिक का दावा—

उपर्युक्त शीर्षक में श्री म० गांधी तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर० सी० वी० रमन के ईश्वर और धर्म्म सम्बन्धी अभी हाल के संभाषण के हवाले से 'प्रबुद्ध भारत' साइंस के पूर्वीय और पश्चिमी स्वरूप पर निम्न प्रकार प्रकाश डालता है —

"कुछ अर्सा हुआ सर० सी० वी० रमन ने महात्मा गाँधी से धर्म्म और साइंस की विशेषताओं पर बात चीत की थी। यह आशा नहीं थी कि वे इस विषयपर भी चमक सकेंगे। हम स्वीकार करते हैं कि उनके विचार जैसे 'हरिजन' में प्रकाशित हुए हैं हमारे लिये एक पहेली है। उन्होंने कहा कि यदि परमात्मा है तो हमें संसार में उसे देखना चाहिए यदि नहीं है तो तलाश करने योग्य

नहीं है। हम इस प्रकटीकरण का मतलब पूरी तरह नहीं समझ पाए हैं। क्या पहल से परमात्मा की सत्ता सिद्ध करनी चाहिए और तब विश्व म उसकी खोज करनी चाहिए ? या विश्व की स्कीमके भीतर ही बाहर नही परमात्माकी तलाशकी जासकती है ? परमात्मा की तलाश हो जाने तक सर रमन न नास्तिक रहना पसन्द किया है और आस्तिक कह लाये जाने का विरोध किया है और गरीब ईश्वर विश्वासियों क कुछ सन्ताप के रूप मे उदारता पूर्वक उन्होंने यह भा कह दिया है कि साइन्स की बढ़ती हुई मालूमात परमात्मा के दूर से दर्शन प्रतीत होते हैं। उन्होंने आगे एक बात और मजेकी कही है और उस बात से उनकी धार्मिकता की एक झाकी देख ने को मिल जाती है—उन्होंने कहा कि धर्म्म मनुष्यों को एक दूसरे से मिला नहीं सका है और केवल साइंस ने ही मनुष्यों में भाईचारे की स्थापना का सर्वोत्तम-अवसर प्रदान किया है। क्योंकि क्या समस्त वैज्ञानिक भाई भाई नहीं हैं ? इसमे किसी को आपत्ति नही है कि साइस सत्य के लिए एक खोज है। हम इस सिद्धान्त को बदल कर इस प्रकार रक्खे देते हैं कि सत्यकी समस्त खोजें साइस हैं। साधारण अर्थो म क्या मनुष्यो को भाई २ बनाने की इसकी शेखी ठहर सकती है ? साइम सत्यको खोलकर रख देती है परन्तु हम साइस से किस प्रकार का सत्य हासिल करते हैं ? यह सिर्फ चमत्कार की ऊहापोहपर ज़बान खोल देती है। इसमें भी शका नहीं कि इसकी बहुतसी मालूमात अज्ञान के बादलों को भी साफ कर देती हैं। हम इन सेवाओं क मूल्य नहीं घटाते हैं। परन्तु क्या साइस मनुष्यत्व भ्र तत्व खूबसूरती और सहानुभूति की भी चर्चा करती है ? क्या विशेषताओं के सम्बन्ध मे इसके पास कुछ कहने का है ? यदि साइम विशेषताओं का जन्म देन मे नपुन्सक है तो तो यह मानवी इरादा को कभी भी पवित्र नहीं कर सकता है। ज्यादासे ज्यादा यह यह कर सकती है कि हमारे चन्द गम्भीर विचारो और भावो को देखने मे सुन्दर बना दव। ठण्डी बौद्धिक रोशनी हमारे हृदयों को कभी गर्म नही कर सकती है। क्या हमारे पास भौतिक दृष्टि म एक अच्छी दुनिया को जन्म देन के लिय पर्याप्त वैज्ञानिक सच्चाइया नहीं हैं ? क्या हमार पास ऐसा सचाइया नहीं हैं जो समस्त मानव-समाज को खाना, मकान, आराम शान्त और सम्पत्ति दे सकती हैं ? रास्ते मे कौन बाधक हैं ? परिवर्तन लान मे साइस क्यों लाचार है ? सचाई यह है कि साइस मूल तत्व नहीं है ? अपनी इच्छाओं के अनुसार हम वैज्ञानिक सच्चाइयों का प्रयोग करते हैं। जहा यह कहा जा सकता है कि साइस ने विशेषता से मिलती जुलती कोई चीज़ पैदा की है और इसन हमारी कुछ वृत्तियों की सुरक्षा भी की है वहा यह भी कहा जा सकता है कि इसन हमारी स्वार्थपरता और पाशविकता को दबाने के बजाय उन्हे विविध रूपों में प्रवाहित होने की नई स्वतन्त्रता दे दी है। हम उन फायदो की चर्चा नहीं कर रहे हैं जो साइम ने मनुष्य के लिए सम्भव बना दिए हैं क्योंकि उनके सम्बन्ध मे साइमने कोई अच्छी या बुरी भावना प्रदान नहीं की है। इसीप्रकार स इस द्वारा मालूम किए हुए विनाश के यैंत्रो को भी हम विचार कोटि में नहीं लाते है। हम उन सैद्धान्तिक खोजों पर विचार कर रहे हैं

जिन्होंने हमारी प्रवृत्तियों को एक नूतन आधार प्रदान किया है। इस रीतिसे जाच करने पर मालूम होता है कि इसने कुछ हदतक कुछेक को अमानुषिक बना दिया है। उदाहरण के तौर पर दार्शनिक यथार्थवादियों, उपयोगितावादियों, बलवान को जीने का अधिकार है, कमजोर को नहीं। ऐसा कहने वाले शरीर शास्त्रियों के सिद्धान्तों को हम रूक्षेत्र में पेश कर सकते हैं। हम जातीय पवित्रता, पैत्रिक अहम्मन्यता अनियंत्रित कम्पीटीशन (प्रतियोगिता) के भयकर परिणामों के साथ रग विद्वेष, विदेशियोंके छुपछुप कर जुल्म करने, अल्प सख्यकों और व्यभिचार इत्यादि के सिद्धान्तों की ओर भी सकेत कर सकते हैं। साइंस कुछ झूठे विश्वासों को दूर कर सकती है परन्तु यह हमारी सहानुभूति के दृष्टि बिन्दु को चौड़ा नहीं कर सकती है।

बर्टरैन्ड रसेल (Bertiand Russel,ने किसी स्थल पर कहा है कि यदि तुम किसी साइस दा से उसकी लबोरेटरी मे उसके काम को बाबत प्रश्न करो तो वह तुम्हे बुद्धि परक उत्तर देगा परन्तु यदि तुम लबोरेटरी से बाहर किसी आर्थिक या राजनैतिक विषय पर उससे कुछ पूछ बैठो तो तुम्हे उससे बडा अहम्भाव पूर्ण उत्तर मिलेगा। पिछले दिनों जर्मनी में वैज्ञानिकों का एक सभा में पवित्र साइस और यहूदियों तथा अन्यों की साइंस के दमन की लम्बी चौड़ी बातें हुई थी। वहा यह भी घोषणा हुई थी कि एक ही क्षेत्र में पवित्र और अपवित्र जातियों के वैज्ञानिकों के द्वारा एक जैसी मालूमात पर नहीं पहुचा जा सकता है। बड़े २ वैज्ञानिक वहा अनर्गल प्रलापों का हृदय से समर्थन करते हुए पाये गये थे। आज वैज्ञानिक पाश्चात्य जगत ज्वालामुखी के मुँह पर बैठा हुआ है। वासनाओंके दमनके लिये साइस से ऊंची किसी अन्य चीजकी जरूरत है और दुख तो यह है कि धर्म्म जो सच्ची साइस है और जो मुक्ति दिला सकता है उसे मूर्खों और विद्वानों ने रीति रिवाज और रूढ़िया समझ लिया है।

आत्माओं का सौदा—

उपर्युक्त शीर्षक में मुजे अम्बेदकर पैक्ट पर 'इन्डियन सोशियल रिफ़ार्मर' लिखता है —

"मुंजे-अम्बेदकर पैक्ट जिसके विवरणों का श्रीयुत एम सी राजा द्वारा प्रकाशित पत्र-व्यवहार से रहस्योद्घाटन हुआ है ऐसी दस्तावेज है जिसकी जोड़ का दस्तावेज किसी भी देश के राजनैतिक और धार्मिक इतिहास में नहीं मिलेगा। इसका भाव यह है कि डा० मुजे और डा० अम्बेदकर दोनों इस बात पर सहमत हैं कि जब तक दलित वर्ग हिन्दू रहें वे अछूत बने रहें। किसी दूसरे धर्म में उनके धर्म परिवर्तन से निश्चय ही वे सामाजिक अत्याचार से मुक्त हो जाएँगे और इस्लाम या ईसाई मत में धर्म परिवतन उन्हें कतिपय भौतिक और राजनैनिक लाभ-प्रदान करेगा, और इससे 'हिन्दू सस्कृति' के दायरेसे अछूतोंका एक बड़ा अग पृथक् हो जायगा। सिक्ख धर्म में उनके धर्म परिवर्तन से इस परिणाम की आशंका नहीं रहेगी परन्तु सिक्ख वर्ग सख्या में और धन में अन्त्यजों को अपेक्षित मदद देने के लिए काफी समर्थ नहीं है और हिन्दुओं को उनकी 'संस्कृति' का सम्मान करने के उपलक्ष मे धर्म परिवर्तन के बाद भी—

"पूना पैक्ट" की रियायतें अन्त्यजों को दिलवाकर सिक्ख धर्म में उनके धर्म परिवर्तन को आसान बनाना चाहिए।

डा० अम्बेदकर के डा० मुजे के नाम पत्र मे एक यह भी निर्देश है कि दीक्षित हुए अन्त्यजो की मदद के लिए आर्थिक कठिनाइयो को दूर करने के लिए सिक्खो की हिन्दुओ को पैसे से भी मदद करनी चाहिए। स्वीकृति के लिए हिन्दू महा सभा के सामने पेश करने से पूर्व डा० मुजे ने श्रीयुत एम सी राजा को जो असेम्बली मे दलितों के प्रतिनिधि हैं पैक्ट पर सम्मति देने के लिए लिखा। श्री राजा ने मामले मे आगे कोई कार्यवाहि करने से पूर्व पत्र-व्यवहार को जनता के समक्ष रखना अपना कर्तव्य समझा।

इसके आगे ईसाई धर्म मे दलितो की दशा के इतिहास पर प्रकाश डालते और लम्बे अनुभव और भारतीय ईसाईयो के जिम्मेवार महानुभावो की साक्षियों के आधार पर यह सिद्ध करते हुए कि ईसाई धर्म्म मे दलितो के दीक्षित हो जाने से उनके उद्देश्य की सिद्धि नही हुई अर्थात उनकी सामाजिक दुरवस्था दूर नही हुई, सम्पादक महोदय उनके अन्य धर्मों मे परिवर्तन के सम्बन्ध मे निम्न प्रकार प्रकाश डालते है —

"जहा तक ईसाई मत का सम्बन्ध है डाक्टर अम्बेदकर ने दलितो के लिए फ़ायदो का जो तखमीना लगाया था वह उनके वास्तविक अनुभव के द्वारा बहुत निराद्रित हो चुका है। और निश्चय ही इस्लाम मे धर्म परिवर्तन से जो भौतिक और राजनैतिक फ़ायदे होने सम्भव हैं उनका डाक्टर अम्बेदकर का तखमीना भी बहुत निराद्रित होगा। मुस्लिम प्रजाकी दशा विशेषत उन प्रान्तोंमें जहा वे बहु सँख्या मे हैं ऐसी नही है कि जो डा० अम्बेदकर की कुछ करोड़ दलितो की सहायता की उम्मीद पूरी हो सके ' इन वर्गों के मुस्लिम धर्म मे जान के मार्ग मे एक बडी गभीर बाधा है। यह रिपोर्ट मिली है कि "बम्बई" मे जहा धर्म परिवर्तन की योजना की व्याख्या की गई थी स्त्रियों ने सम्मिलित रूप स यह घोषणा की थी कि वे उस धर्म मे नही जायगी जो हमे पर्दे मे रक्खेगा। सिक्ख धर्म धर्म के रूप में भक्ति सघ है। प्रस्तावित अम्बेदकर मुजे पैक्ट मे जा व्यवस्था की गई है उसमे गुरु गोबिंद सिह की स्प्रिट नही है उसमे सिर्फ सौदे की स्प्रिट है जो सिक्ख धर्म की चीज नही है। इसके अलावा पैक्ट का सार यह है कि इसे हिन्दुओं की न सिर्फ नैतिक ही वरन् आर्थिक सहायता भी मिलनी चाहिए। डाक्टर अम्बेदकर स्वय इस बात को अनुभव करते हैं कि हिन्दुओ की सहायता के बिना सिक्ख धर्म मे जाने से दलितो की सामाजिक-अवस्था मे कोई उन्नति नही होगी। डाक्टर अम्बेदकर का यह विश्वास कि दलित लोग धर्म परिवर्तन से कुछ पा जायगे निरी भूल है।

आर्य्यसमाज की शिथिलता—

आर्य्यसमाज की व्यापक शिथिलता के निराकरण के एक अच्छे उपाय का 'आर्य्य मार्त्तण्ड' के सम्पादकीय स्तम्भो म निम्न प्रकार निर्देश किया गया है।

विगत तीन वर्षो से हम इन कालमों मे एक दफे नही कई दफा आर्यसमाज की गति विधि

सुधारने के लिये एक ऐसे पूछमराड़ सतो की टोली की आवश्यकता दर्शाते रहे हैं जो प्रत्येक समाज मे जाकर समाज के उद्देश्यानुसार व्यवस्था ठीक करे। वहां पर डेरे तब तक जमाय रहे जब तक कि जनता को यह न ज्ञात हो जावे कि आर्य-समाज उस चारद वारी अथवा स्कूल, कालेज सस्था, पाठशाला अथवा व्यक्ति का नाम नहीं है कि जिसको हर सूरत शकल म वे आर्यसमाज के नाम से पुकारते रह हैं। आर्यसमाज इनसे भी ऊ ची कोई चीज है। हर्ष है कि वीतराग श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज न भी अपनी आशा की पुकार मे निराशा के इकरार वाल लख में एक ऐसी ही टोली की सुधार के लिये आवश्यकता दर्शाई है। फर्क इतना ही है कि पूज्य स्वामीजी महाराज पैन्शनयाफ्ता लोगों को इस कामके लिये निकालन चाहते है और हम श्री स्वामीजी जैसे सब मान्य नताओ की टोली का दयानन्द की खेती की निराई के लिये निकल पडना उचित समझते हैं।

हमारे अनाथालय—

प० भद्रसेनजी आचार्य ' विरजानन्द वद विद्यालय ' अजमेर 'हमारे अनाथालय' शीर्षक म लिखते हुए इस उद्देश्य को सामन रखकर कि आर्य्यसमाज का अनाथालयो से अधिकाधिक सख्या म सुयोग्य कार्य्यकर्त्ता और प्रचारक इत्यादि प्राप्त हो, अनाथालयो मे निम्न परिवर्तन सुझाते है।

(१) सब बालको तथा बालिकाओं को आर्य-भाषा, धर्मशिक्षा तथा शिल्पविद्या अनिवार्य रूप स पढाई तथा सिखाई जाय।

(२) उनमे जो अधिक होनहार, बुद्धिमान् तथा सुशील हो, उनको ऋषि दयानन्दकी शिक्षा प्रणाली के अनुसार पूर्ण शिक्षा दी जाय। साथ ही सब धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन भी कराया जाय। विद्यार्थियो की साप्ताहिक सभाएँ कराकर उन्हे व्याख्यान देन तथा शास्त्रार्थ करान का भी अभ्यास कराया जाय उपर्युक्त शिक्षा के साथ ही यदि थोड़ा इँगलिश पढ़ाने का भी प्रबन्ध हो तो बहुत उत्तम है। जिसस कि कुछ युवक विदेशो मे भी जाकर प्रचार कर सकें। इस महत्व पूर्ण कार्य के सम्पादन के लिये एक सुयोग्य, सदाचारी वैदिक धर्म प्रचारम पूरी लगन रखन वाला विद्वान् रखा जाय। तथा उपर्युक्त गुणो से युक्त ही एक इंगलिश का अध्यापक भी रखा जाय। यदि आचार्य ही स्वय इंगलिश पढ़ा सके तो बहुत ही उत्तम है।

(३) अनाथालय के सब बालको का रहन-सहन तथा खान-पान ब्रह्मचर्याश्रम के समान हो। इसके लिए एक सुयोग्य, सदाचारी तथा सुप्रबन्धक अधिष्ठाता रखा जाय, जो कि विद्यार्थियो के खान-पान तथा रहन सहन का सुप्रबन्ध ब्रह्मचर्याश्रम के अनुसार भली प्रकार कर सके। विद्यार्थियो को पिता के समान अपने कण्ट्रोल में रखकर ब्रह्मचर्याश्रम के सब नियम पालन करा सके यदि किसी अनाथालय में बालको की सख्या कम हो तो वहा आचार्य ही अधिष्ठाता का भी काम करे। उपर्युक्त व्यवस्था करने स मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे अनाथालय अपन उद्देश्य मे अवश्य सफल होगे और आर्यसमाज को इस संस्था से थोड़े ही खर्च तथा परिश्रम से वे अमूल्य रत्न मिलेंगे कि जिनको लाखो रूपये खर्च कर के भी समाज दूसरी सस्थाओं से प्राप्त नही कर सका। आशा है कि आर्यजनता, विशेषकर अनाथालयोके सचालक महोदय मेरे इस निवेदनपर अवश्य ध्यान देंगे तथा मेरे इन विचारो को क्रियात्मक रूप देकर यश के भागी बनेंगे।

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य

—मध्य भारत हिन्दू-धर्म्म रक्षिणी सभा इन्दौर ने आर्य्य समाज रतलाम की सहायता से नाथीबाई को विधर्मी होने से बचाया।

—आ० स० कोकिनारा मे ६—८—३६ को श्रीमती सुमित्रा देवी की शुद्धि हुई।

—आ० स० द्वारा ३८—७—३६ को एक २० वर्ष की कुरमी हिन्दू स्त्री जो हवड़ा स्टेशन मे पाई गई थी अबला आश्रम लिलुआ में भेज दी गई। १—८—३६ को एक २३ वर्ष की हिन्दू युवती जिसकी गोद मे वर्ष का एक बालक था रक्षा कर अबलाश्रम में भेजी गई।

—आ० स० गिलौला (बहराइच) में २६ जुलाई को २ व्यक्तियों की शुद्धि में ५० व्यक्तियों ने योग दिया।

—१४—७—३६ को वर्णाश्रम स्वराज्यसघ सभा की ओर से प० श्रीधर वारे शास्त्री जी ने गोदावरी तट पर यशवन्तराव पराञ्जपे पर एक नवयुवक नवमुस्लिम शेख रहीम को शुद्ध कर उसका पुराना नाम लक्ष्मणराय राउत रक्खा। उसे मुसल्मानों ने धन और स्त्री का लालच देकर मुसल्मान बनाया था।

—आर्य्य-समाज बारक पुर (बगाल) ने ३ अबलाओं का उद्धार एव तीन अनाथों का दाह-संस्कार निजधन से तथा ४ शुद्धियां आर्य्य समाज द्वारा कराई।

—ठाकुर यशवन्त सिंह और चौधरी जैराम उपदेशक मडल के यत्न से जो जिला गुड़गावा में प्रचार कर रहे थे १५० ईसाई जो लगभग ५ वष से केवल पानी का छींटा देने से ईसाई बन गए थे वैदिक धर्म्म में शामिल किए गए हैं। शुद्धि का काम जारी है।

सामाजिक-जगत्

मद्रास प्रान्त में आर्य्य-समाज का प्रचार सभा के प्रचारकों के कार्य्य की रिपोर्ट

केरल

प्रचार के सिलसिले में कुम्भकम्, कुमार-वेल्लूर पापाकी, वाल्लूर, कोत्तला, एटुमानूर, पुन्नत्तरा आदि स्थानों की यात्रा की। इस भ्रमण में यह मालूम हुआ है कि अछूत लोग बड़े दु ख उठा रहे हैं। वे निर्धन हैं इसलिये आर्यसमाज के प्रति सहानुभूति होने पर भी कार्य करना असम्भव सा है। सामाजिक सिद्धान्त सम्बन्धी ज्ञान के प्रचार के लिये कोई पुस्तकालय और पाठशाला चलाई जाय तो उनकी अवस्था सुधर जायगी। जो धर्म परिवर्तन की आग उन लोगों में भड़क रही है उसे शान्त भी कर सकते हैं। साथ ही उच्च वर्णस्थ युवकों का भी महकरण प्राप्त कर सकेंगे। उच्च-वर्णस्थ युवकों का स्वतन्त्र न होने से ऐसे कार्यों में दूसरों की मदद के बिना आगे आना और कार्य्य करना बहुत कठिन हैं।

'हिन्दुओं का भ्रम,' 'प्राचीन आर्यावर्त' और 'स्त्री-शिक्षा' नामक ट्रेक्ट मलयालम में तैयार किए गए।

"भारतीय महाविद्यालय" के नाम पर एक सस्था प्रारम्भ की गई है। इस समय इसमें सस्कृत, आयुर्वेद, और हिन्दी पढ़ाई जाती है। धार्मिक क्लास भी थोड़े दिनों के भीतर प्रारम्भ किया जायगा। इस सस्था की स्थिति अच्छी हो जाय तो इस प्रान्त में बहुत कुछ प्रचार हो सकता है। कार्य-कर्ताओं में तीन आर्य्य-समाजी और बाक़ी आर्य्य-समाज के सहायक हैं।

कोट्टयम शहर मे एक आर्य्य-सहायक समाज कायम करने का प्रयत्न किया जा रहा है। कुछ प्रतिष्ठितों से मै मिला हूँ। सब ने उसे स्वीकार किया है। आशा यही कीजाती है कि अगले मास में कार्य आरम्भ कर सकेंगे।

—नारायणदत्त

बंगलौर

इस मास करदगा नामक बेलगाव जिले के एक ग्राम में ३०० हरिजनों के मुसल्मान बनने का समाचार अखबारों में पढ़कर मै बेलगाव, कोह-रमपुर, नैपानी भोज, मिरज आदि गया। इस प्रकार यात्रा का विस्तृत वृत्तान्त भेजा जा चुका है अत उसे दुबारा लिखने की आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त शेषादिपुर, मावल्ली, कैलास् पाल्यम्, कोर्चपाल्यम् आदि की हरिजन बस्तियों और विद्यार्थि-भवनों में दलितोद्धार तथा दलित-भाइयोंमें वैदिक-धर्म-प्रचारार्थकायकिया जाता रहा। हरिजन कार्य-कर्ताओं को सन्ध्या हवनादि भी सिखाये जाते रहे। वैदिक-धर्म के विषय में कई लेख लिखे गये। नैपानी में एक ईसाई की शुद्धि हुई तथा अन्य अनेक ईसाई मुसल्मानों की शुद्धि का प्रयत्न किया जा रहा है। बेलगाव की तरफ की प्रचार यात्रा से लौटने पर श्रावणी के सम्बन्ध

में विशेष प्रचार का प्रबन्ध किया जाता रहा। कई युवकों को हिन्दी-धर्म शिक्षादि पढ़ाई जाती रही। बंगलौर समाज की साधारण सभा बुलवाकर और सार्वदेशिक सभा से सम्बन्ध का प्रस्ताव स्वीकृत कराकर वहां भेज दिया गया।

धर्मदेव

मद्रास

(१) Sayings of Swami Dayananda शीर्षक अंग्रेजी ट्रैक्ट लिखा तथा प्रकाशित किया।

(२) Hinduism Vs. Xianity नामक ट्रैक्ट का तामिल अनुवाद कराकर छपने के लिए दिया। सम्भवत एक सप्ताह में प्रकाशित हो जाएगा।

(३) Hinduism Vs Islam के लिखने की तैयारी की।

(४) तीन ब्राह्मण कन्याओं को मुसलमानों के पंजे से छुड़ाया।

(५) M C Rajah के प्रस्तावित बिल के समर्थनमें सभा का प्रबन्ध किया तथा भाषण दिया।

(६) स्थानीय हरिजन-कालोनी में प्रचार।

(७) एक ईसाई परिवार की शुद्धि।

(८) हिन्दू अभियुक्त की रक्षा का प्रयत्न।

—के० ज्ञानी

विधवा-विवाह

सिकन्दर पुर (भभुआ) सबडिवीजन में श्रीमती रमला देवी का पुनर्विवाह श्री० रामस्वरूप पाडेय से हुआ। ब्राह्मणों में यह पहला विधवा-विवाह है।

—रामगोविन्द प्रसाद

सूचना

श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी की पुत्री सुशीलादेवी का विवाह म० अनिल कुमार जी से जो गया की सिविल कोर्ट में सर्विस में है २१-६-३६ को आर्य समाज मन्दिर कलकत्ता में सानन्द हो गया।

श्री मालवीय-जीवन-चरित-समिति

(सम्पादकीय विभाग)

आगामी दिसम्बर में पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय जी ७५ वा वर्ष पूरा करके ७६ वे में प्रवेश करेगे। अपने ७५ वर्ष के जीवन में उन्होंने धर्म, देश, जाति, साहित्य तथा समाज की कितनी सेवा की है यह किसी से छिपा नहीं है। इस पुण्य अवसर पर हमने उनका जीवन-चरित लिखने का बीड़ा उठाया है किन्तु जनताके सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न न होगा। जनता से यही प्रार्थना है कि कोई सज्जन पूज्य मालवीयजी के विषय में कोई घटना अथवा उनकी विशेषता आदि जानते हो या उनके किसी परिस्थिति के चित्र आदि उनके पास हों तो वे हमें उक्त सामग्री देकर हमारे काम में हाथ बटाएँ। पूज्य मालवीय जी के रहन-सहन, आचार-विचार आदि के विषय मे जो उनकी व्यक्तिगत धारणा हो वह भी लिख भेजने की कृपा करें।

पुस्तक शीघ्र ही छापेखाने मे देनी होगी। यदि शीघ्रातिशीघ्र सामग्री प्राप्त हो जाय तो अनुग्रह होगा।

सीताराम चतुर्वेदी 'हृदय'
एम् ए, बी टी, एल् एल् बी, विशारद
लेखक तथा सम्पादक

× × ×

पूज्य मालवीय जी की हीरक-जयन्ती

के उपलक्ष्य मे
उनका जीवन-चरित, लेख और व्याख्यान सहित
प्रकाशित किया जा रहा है।

पृष्ठसंख्या प्राय १०००, रंगीन और सादे चित्र २००, बढ़िया जिल्द तथा सेल्यूलायड का पाठ-निर्देशक।

लेखक तथा प्रधान सम्पादक—पं० सीताराम चतुर्वेदी 'हृदय' एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत, पाली,) बी० टी०, एल्-एल्० बी०, विशारद,।

दयाल मलकानी—
सहकारी व्यवस्थापक,
तैलङ्ग लाइब्रेरी, कमच्छा, बनारस।

※ इति ※

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, मे प्रकाशित।

अक्टूबर १९३३

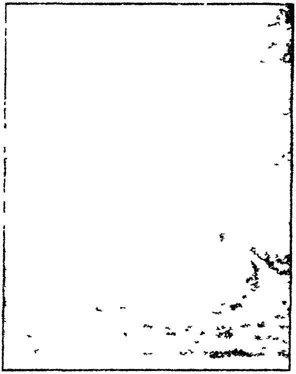
Reg No L 2121

ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



वार्षिक मूल्य २) सम्पादक—लाला देशबन्धु विदेश से ५ शिलिंग

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का [illegible]

अथर्ववेद

सामवेद

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोलाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N W. R, आनरेरी सैक्रेटरी]

पञ्जाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड़ पर एक अनाथालय है जिसका नाम पञ्जाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्त जी वैद्य शास्त्री मुलतान, तथा डा० गणेशी लाल जो M B B S हैं। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसको सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं, प्रत्युत मद्रास, बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक में रहने वाले हिन्दू आर्य भाई भी करते रहते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पञ्जाब में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्गपर चल रहा है, यहाँ तक कि अब सरकार भी, जो चोरी किये हुए लड़के लड़कियाँ उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको यहाँ रखती है। इस तरह से अनाथालय मे बच्चों की प्रवेश संख्या बढ गई है इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से स्थान काफी नही होता। इस न्यूनता को पूर्ण करने के लिए प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, नवीन कमरे बनवाये जायें, जिससे स्थान का कष्ट मिट जाय और इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनो की सेवा मे विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निस्सहाय बच्चो को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालों के जाल में फँसकर हमेशा के लिए धर्म से पतित हो जायेंगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम का पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के अधीन म्युनिस्पल कमेटीसे मजूर एक मिडिल स्कूल है जिनमे अना-थालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिनमें लड़के और लड़कियो को सीने का कार्य सिखाया जाता है तथा बाहर के लड़के भी इसमें काम सीख सकते है। आज कल बीस लड़के इस कार्य को सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहाँ से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ९५ लड़के और ७० लड़कियाँ हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बने अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी, दरी, चादर, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप ही की ओर से आ रहा है जिससे यह संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक में पुण्य के भागी बनेंगे तथा हमें भी कृतार्थ करेंगे।

विषय-सूची

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १० | आश्विन १९९३ | अक्तूबर १९३६ ई० | दयानन्दाब्द ११२ | अंक ८

* वेद की शिक्षाएँ *

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति दूरङ्गमम् ।
ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

❀ ❀ ❀

भावार्थ—हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन् ! यह मेरा मन जाग्रत अवस्था मे दूर दूर भागता फिरता है और उसी तरह सुप्तावस्था में इधर उधर भटकता फिरता है। जो प्रकाशयुक्त है वह मेरा मन आपकी कृपा से उत्तम विचारयुक्त हो। कभी इधर उधर कुमार्ग में न आवे।

सम्पादकीय

वैदिक आर्य-समाज

वेदों म हमे ऐसे समाज की रूप रेखा, उसके विकास की विधि तथा प्राचीन इतिहास मे उस के उत्कृष्ट उदाहरण उपलब्ध होते हैं जो बिना किसी प्रतिवाद के भय के सम्पन्न समाज कहा जा सकता है। जो समाज सदाचारी हो, विद्वान हो, उद्योगी हो, अपनी रक्षा करने मे स्वय समर्थ हो यह रूप रेखा उस वैदिक समाज की है। ऐसे समाज की

विकास की विधि

मनुष्य की स्वाभाविक इच्छाओं की पूर्ति, श्रेष्ठ सामाजिक व्यवहार, सदाचार, उत्तम सम्कार, अच्छी आजीविका तथा रक्षा की उचित व्यवस्था आदि हैं। इन विधियों को और सुस्पष्ट करदेने के उद्देश्य से हम इनके किंचित विस्तार में जाते हैं।

मनुष्य की इच्छाएं

मनुष्य की इच्छाए ७ विभागों के अन्तर्गत है वे विभाग निम्न हैं —

(१) दीर्घ जीवन की इच्छा।

(२) स्त्री, पुत्र, रति, शोभा श्रृङ्गारकी इच्छा।

(३) खाने, पीने, ओढने, पहनने, घर, गृहस्थी, बाग, बगीचे, खेत और पशु पालन की इच्छा।

(४) यश और मान आदि की इच्छा।

(५) विद्या, ज्ञान, विज्ञान और मालूमात की इच्छा।

(६) अपने प्रति न्याय की इच्छा।

(७) मोक्ष प्राप्ति की इच्छा।

ये इच्छाए नैसर्गिक हैं इसका प्रमाण वेदों से और फीनालौजी से मिलता है। वेद के गायत्री मन्त्र में आयु, बल, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन, ज्ञान और मोक्ष पद की प्राप्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने की प्रेरणा की गई है। फीनालौजी में मस्तिष्क में ज्ञान, मान, अर्थ, काम, आयु, विज्ञान और न्याय धर्म के हो ७ प्रधान स्थान बतलाये गये है। इन इन्छाओं की पूर्ति गृहस्थाश्रम के बिना असम्भव है इसलिये इनकी पूर्ति के लिये मनुष्य को गृहस्थ मे जाना पड़ता है। उसमे ये इच्छायें पूरी हो जाती हैं। परन्तु वह गृहस्थ निम्न प्रकार का होना चाहिये।

(१) जिसमे गृहस्थ के लोग सदाचारी हों, परस्पर प्रीति युक्त हो।

(२) जिसमे उत्तम और सभ्य सन्तान हो।

(३) जो धन,धान्य, और पशुओंसे पूर्ण हों।

(४) जिसमे जीवन हो, जिसके लोग पुरुषार्थी, स्वस्थ यशस्वी और बलवान् हों।

(५) जिसमे विद्वानों और अतिथियों का सत्कार होता हो और दान दिया जाता हो।

(६) जिसमें पञ्चयज्ञ इत्यादि यज्ञ होते हों।

उत्तम सामाजिक व्यवहार

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका सम्बन्ध दम्पति, कुटुम्ब, जाति समाज और ससार के मनुष्यों और प्राणी मात्र से है। इसलिए उसका लोगों के साथ व्यवहार श्रेष्ठतम होना चाहिए और इन व्यवहारों का मूल मन्त्र प्रेम, दया और सहानुभूति होना चाहिए। परन्तु ये व्यवहार सदाचार की सुदृढ भित्ति के बिना क़ायम नहीं रह सकते। इसलिये जीवन मे—

सदाचार

धारण करने की अत्यन्त जरूरत है क्योंकि सदाचारी मनुष्य ही समाज मे सुख से रह सकता है। सदाचार की मुख्य मर्य्यादा हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य भाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों के साथ सहयोग करना इन सप्त मर्य्यादाओं का उल्लघन न करना अर्थात् इनमें से किसी भी पाप का न करना है। इसके अतिरिक्त सत्य भाषण करना, सत्य मानना, सत्य कहना, सत्य और मधुर भाषण करना, मन, वचन, और कर्म से मधुर मूर्ति बनना, पापों से बचना, मन को निष्पाप रखना, स्वच्छ और पवित्र रहना, उदार और दानशील बनना, विद्वानों का सग करना आदि व्यवहारों का अनुष्ठान और गुणों का धारण करना भी सदाचार है। सदाचारी बनने के लिये मनुष्य का अपनी आत्मा की पवित्र आवाज को सुनने और उस पर चलने का अभ्यासी होना तथा उत्तम व्रतों वाला दृढ सकल्प और सिद्धान्त पर अटल रहने वाला होना चाहिए। उत्तम व्रत ही सदाचार के मूल है। दृढ प्रतिज्ञावान ही सदाचार की रक्षा में सफल होते हैं। उत्तम व्रतों और सकल्पों के लिए पर्याप्त अभ्यास दरकार होता है। बिना अभ्यास के मनुष्य का व्रतों पर कायम रहना कठिन होता है। अभ्यास सस्कारों से होता है इसलिए श्रेष्ठ संस्कारों द्वारा, मनुष्यके सुसंस्कृत होनेकी नितात आवश्यकता होती है। सस्कारका अर्थ मन, वाणी और शरीरका सुधार है। ऊपर जिस सदाचारका वर्णन किया गया है उस तक पहुचने के लिए मनुष्यका जन्म से ही नही वरन् जन्म से पूर्व गर्भ से ही सस्कृत होना जरूरी है और इसके लिए सस्कारों में मुख्य सस्कार आदर्श वैदिक विवाह संस्कार होना चाहिए। वर वधू हर प्रकार से समान और योग्य होने चाहिए।

आजीविका

मनुष्य का कार्य केवल सदाचारी बनने से ही नहीं चल सकता उसे आजीविका की जरूरत होती है। आजीविका पवित्र और सात्विक होनी चाहिए और सच्चे और न्यायोचित उपायोसे उपलब्ध करना चाहिए।

समाज की रक्षा

इस सम्बन्ध मे 'वेदों' मे बहुत उत्तम प्रकाश मिलता है। वेदों मे उपदेश किया गया है कि जहा २ भय की सभावना हो वही २ रक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। वेदों के रक्षा सम्बन्धी उपदेश ४ भागों मे बाटे जा सकते हैं। बीमारी से रक्षा, प्राकृतिक विप्लवों से रक्षा, समाज के भीतरी दुष्टों से रक्षा और बाहर के शत्रुओं से रक्षा। इन चारों प्रकार की रक्षाओं को आयुर्वेद,

यज्ञ, प्रार्थना और राज्य प्रबन्ध के अन्तर्गत रक्खा गया है।

ऊपर की पक्तियों में वर्णित उन्नत समाज की रूप-रेखा और उसके विकास के स्थूल साधनों के सूक्ष्म विवेचन से जो कई बातें स्पष्ट होती हैं उनमें से एक बात यह है कि ऐसा समाज सुखी, सीधा सादा और सदाचारी होगा या यों कह सकते हैं लौकिक दृष्टि से उन्नत होगा और पारलौकिक दृष्टि से इसके समुन्नत होने की पूरी २ क्षमतायें इसमें होंगी क्योंकि इस समाज के सदस्य खाने पीने रहा इत्यादि की चिन्ताओं से मुक्त होंगे, सुख और शान्ति का साम्राज्य होगा और लोगों को परलोक के सिवा कुछ और खास काम न रहेगा। दूसरी बात यह है कि इस समाज के विकाश की जो विधियां वर्णन की गई हैं वे एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं बिना एक के दूसरी फलवती नहीं हो सकती और समाज का वांछित विकास नहीं हो सकता। तीसरी बात यह है कि जो लोग वर्तमान में आर्य समाज की आवश्यकता अनुभव नहीं करते हैं और कहते हैं आर्य समाज का काम समाप्त हो चुका उनको बतलाया जा सकता है कि आर्य समाज को अभी कितना कार्य करना बाकी है। प्रश्न यह होता है कि क्या इन दिनों इस प्रकार के समाज का विकास संभव है? बहुतों को यह कार्य स्वप्न देख पड़ेगा और वे कह देंगे कि ऐसे समाज का विकास स्वप्न है। वह आर्य समाज ही है जो ऐसा नहीं कह सकता है इसलिये कि उसका जन्म इस प्रकार के स्वप्नों को सच्चा सिद्ध करने के लिए हुआ है। उसने बहुत से स्वप्नों को सच्चा रूप दिया है। और वही, एक मात्र वही, इस स्वप्न को भी सच्चा सिद्ध कर सकता है भले ही ऐसा करने में उसे वर्ष नहीं शताब्दियां लगें। परन्तु यह तब ही संभव है जब आर्य समाज का इसके लिए सच्चा यत्न हो और इस यत्न की सफलता के लिए एक उत्तम साधन के रूप में उसका अपना यह मोटो सामने हो कि 'आर्य समाज तैरकर पार होता है बह कर नहीं।" क्या हम आशा करें कि आर्य समाज ऐसा करेगा?

❀ ❀

आर्य्य-विवाह बिल की प्रगति

२२ और २१ सितम्बर को असेम्बली में "आर्य्य-विवाह बिल" पर विचार हुआ। दोनों दिन उस पर बहस हुई और कोई अन्तिम निर्णय नहीं हुआ।

२२ ता० को सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट के विचारार्थ प्रस्तुत हो जाने पर श्री अणे ने प्रस्ताव किया कि 'बिल' सम्मति के लिए प्रचारित किया जाय क्योंकि बिल में सिलेक्ट कमेटी द्वारा बहुत परिवर्तन हो गया है और उस परिवर्तन का जनता को पता नहीं है। उन्होंने इस बिल की अनावश्यकता दिखलाने के लिए १९२३के–सिविल मैरेज ऐक्ट–की ओर भी संकेत किया और बतलाया कि उस ऐक्टमें 'अन्तर्जातीय विवाह' का विधान है। उन्होंने यद्यपि आर्य्य-समाजियों की उत्सुकता का स्वागत किया तथापि यह कह कर बिल का विरोध किया कि भले ही जात-पात अन्त में नष्ट हो जाय, कानून द्वारा उसके परित्याग के लिए लोगों को बाधित करना वांछनीय नहीं है। सर ऐन० ऐन० सरकार ला मेम्बर ने कहा कि सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट

पर श्री अयो महोदय हस्ताक्षर कर चुके हैं जिसमें स्पष्ट कर दिया गया है कि सशोधित बिल के दुबारा प्रकाशित किए जाने की ज़रूरत नहीं है और इस प्रकार बिल के लिए प्रचारित करने के उनके प्रस्ताव की निस्सारता ज़ाहिर की। ला मेम्बर ने यह भी घोषणा की कि सरकार इस बिल का समर्थन करेगी। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि जो लोग इस बिल का विरोध करना चाहें वे ईमान्दारी के साथ ऐसा करें। उन्हें बिल के प्रचारित करने के प्रस्ताव द्वारा बिल की हत्या नहीं करनी चाहिए। हाउस की सूचना के लिए उन्होंने यह भी कहा कि १९३० मे इसी प्रकार का एक बिल सम्मति के लिए प्रचारित किया जा चुका है। सब ही प्रकार के विचार उस पर ज्ञात हो गए हैं और स्पष्ट किया कि इस बिल का प्रचारित किया जाना व्यर्थ है। श्री० बाजोरिया और सर मुहम्मद याकूब ने बिल का विरोध किया। सर मुहम्मद ने कहा कि जब सिलेक्ट कमेटी के ८ सदस्यों में से ४ सदस्यों ने अपना विरुद्ध मत प्रगट किया है और उन सदस्यों में डा० भगवानदास जैसे हिन्दू विद्वान् भी हैं तो हाउस को इस मामले में सावधानतापूर्वक आगे बढ़ना चाहिए। श्री डा० भगवान्दास जी ने बतलाया कि उनका मत-भेद बिल को प्रचारित करने की सिफ़ारिश नहीं करता है और इस प्रकार उन्होंने सर मुहम्मद की ग़लती का संशोधन किया। सर मुहम्मद ने यह भी तजवीज़ की कि सरकार को इस मामले में निष्पक्ष रहना चाहिए और वह इसका निर्णय हिन्दू वोटों से होने देवे। श्री बाजोरिया ने अपना विरोध इस बातपर आश्रित प्रगट किया कि यदि यह बिल पास हो गया तो यह हिन्दू समाज को छिन्न भिन्न कर देगा क्योंकि शास्त्रों में 'अन्तर्जातीय विवाह' की आज्ञा नहीं है।'

श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने कहा कि आ समाजियों ने इस बिल का समर्थन किया है और उ सम्मति में इसको प्रचारित करने से कोई लाभ होगा। सम्मति लेने पर श्री अणे का बिल को प्रच करने का प्रस्ताव रद्द हुआ। युरोपियन दल और अ लोग उदासीन रहे।

इस संशोधन के गिर जाने पर बिल की ए धारा पर विचार शुरू हुआ। श्री० बाजोरिया ने ऐ संशोधन का प्रस्ताव किया कि 'आर्य्य समाजी वह व है जो विवाह की तिथि से पूर्व कम से कम ३ वर्ष आर्य्य-समाज का सदस्य रह चुका हो। जिसका अ यह था कि कोई आर्य्य है या नहीं इसका नि आर्य्य-समाज के रजिस्टरों से होना चाहिए। शादी के समय जो आर्य्य-समाज का नियमित सदस्य न हो उसकी शादी वैध न होगी, भले ही वह किसी रजि सदस्य का पुत्र, सम्बन्धी, आश्रित इत्यादि क्यों हो। और इस समबसे पूर्वकी तमाम शादियां नाजा होंगी। सर मुहम्मद याकूब तथा श्री० लाल नवल राय ने संशोधन का समर्थन किया। संश पर खूब बहस हुई। ला मेम्बर ने कानूनी दिक्कतें करते हुए बतलाया कि आर्य्य-समाजी की ठीक परिभाषा का नियत करना बड़ा कठिन काम हो उन्होने प्रीवी कौंसिल तथा हाईकोर्टों की नज़ीरें उ करके बतलाया कि बड़े २ जज भी परिभाषा के पर उलझन में पड़ जाते हैं। इस पर मि० सत्य ने मांग की कि प्रश्नों का स्पष्टीकरण करना व्यव पिका सभा का काम है वह उसे करना चाहिए इस प्रकार उन्होंने संशोधन का समर्थन किया।

२६ सितम्बर को पुन बिल पर बहस हुई। श्री॰ ...रिया के उपयुक्त संशोधन के गिरजाने पर उन्होंने ...सरा संशोधन पेश किया कि इस कानून के लिए ...ी आर्य्य-समाजी माना जाय जो विवाह से पूर्व ...र्ष से किसी आर्य्य-समाज का सदस्य हो।

...श्री रामनरायणसिंह ने संशोधन का विरोध ...। डा॰ खरे ने कहा कि जब अन्य किसी सम्प्र... ...को सदस्यों का रजिस्टर रखने की जरूरत नहीं है ...र आर्यसमाजियों के लिए ही यह नियम क्यों ...जाय।

...ा॰ भगवानदास ने कहा कि अपने को आर्य-...ी घोषित करना ही आर्यसमाजी होने के लिए ... प्रमाण समझा जाना चाहिये।

...श्री अणे ने आर्यसमाजी की परिभाषा आवश्यक ...। चाहे आर्यसमाजी के लिये विवाह से एक ... पहिले ही आर्यसमाज का सदस्य होने का ...हो।

...र मुहम्मद याकूब ने श्री बाजोरिया के संशोधन ...मर्थन किया और कहा कि सिलेक्ट कमेटी ने ...माज की परिभाषा को बिल से निकाल दिया है ... बिल का स्वरूप ही बदल गया है। हिन्दुओं ...अन्य सम्प्रदायों के दृष्टिकोण से, आर्यसमाजी की ... कोई परिभाषा जरूरी है।

...ी एन॰ वी॰ गाडगिल ने कहा कि कुछ समय ...क नेता ने हिन्दुओं की परिभाषा नियत करने ...त्न किया था बड़े परिश्रम के बाद उसे यह ...षा मिली कि हिन्दू वह है जो अपने को हिन्दू ... मुसलमानों और पारसियों के लिये भी यही ...। आर्यसमाज हिन्दुओं का ही एक बहादुर भाग है। यदि हिन्दू की परिभाषा नहीं हो सकती तो आर्य्य-समाजी की भी परिभाषा नहीं हो सकती।

सर कावसजी ने कहा कि हम यह चाहते हैं कि इस बिल से विवाह के लिये झूठे धर्म परिवर्तन न होने लगें। इस बिल से यह सम्भव हो सकता है कि कोई स्त्री या पुरुष अपने को आर्यसमाजी बता कर अपना विवाह जायज ठहरा ले। सरकार को ऐसी शंकायें दूर कर देनी चाहिये।

सर नृपेन्द्र सरकार ने बहस का उत्तर देते हुए एक घटना बताई कि एक हिन्दू स्त्री अपने पति से छुटकारा पाने के लिये मुसलमान बन गयी पति ने दावा नहीं किया और इस प्रकार उसका विवाह टूट गया। इसके बाद उसने दुबारा हिन्दू बन कर दूसरे हिन्दू से शादी करली। इस कार्य को अदालत ने जायज बताया। अब बस हाईकोर्ट का फैसला अभी बाक़ी है। विवाह से एक दो घंटे पूर्व भी मुसलमान बनने वाले व्यक्तियों का विवाह जायज माना जाता है। नियत की सचाई या बुराई का प्रश्न बीच में नहीं आ सकता। आपने सर मुहम्मद याकूब को विश्वास दिलाया कि यदि उनकी आशंका मे जरा भी सार होता तो वे बिल का समर्थन न करते। किन्तु श्री बाजोरिया के संशोधन से ऐसे आर्यसमाजी का भी विवाह नाजायज़ कोटि में आ जायगा जो दसों वर्षों से भला आर्यसमाजी रहा हो। मुसलमानों की परिभाषा भी तो किसी कानून में नहीं की गयी। इस पर सर याकूब ने कहा सब जानते हैं कि मुसलमान किसे कहते हैं।

सर सरकार—ने उत्तर दिया इसी लिये पंजाब के पत्रों में कालम के कालम रंगे होते हैं जिनमें एक पार्टी यह सिद्ध करने का यत्न करती है कि अमुक पार्टी

मुसलमान नहीं है।　　　　(हर्ष ध्वनि)

अन्त में श्री बाजोरिया का संशोधन बिना मत-विभाग के गिर गया।

श्री बाजोरिया ने एक और संशोधन पेश किया कि यह बिल पहले की शादियों पर लागू नहीं होना चाहिये अन्यथा रखेलियों से उत्पन्न हुए बच्चे भी जायज उत्तराधिकारी मान लिये जांयगे।

श्री श्रीप्रकाश ने पूछा क्या सनातन धर्म मे रखे लियाँ रखने की आज्ञा है ?

सर एन० एन० सरकार ने बताया कि पहिले की शादियों पर भी यदि यह बिल लागू हो गया तो इस से वर्तमान अधिकारों को कोई आँच नहीं आयेगी। बिल का उद्देश्य सिर्फ प्रत्यक्ष संदेहों को दूर करना है।

श्री कशीरुद्दीन अहमद ने बिल का समर्थन किया। सरदार सन्तसिंह का भाषण हो रहा था कि हाउस स्थगित हो गया।

इस समस्त बहस से कई बातें स्पष्ट हो गई हैं और कई बातें स्पष्टीकरण चाहती हैं। एक बात तो यह स्पष्ट हुई है कि असेम्बली के कट्टर पन्थी हिन्दू तथा मुस्लिम सदस्यों का इस बिल के प्रति घोर विरोध प्रकाश में आया है। हमारी धारणा थी कि हवा के रुख के साथ २ कट्टर पन्थियों की मनोवृत्ति में सुन्दर परिवर्तन आया होगा और वे इस बिल का यदि समर्थन न करेंगे तो कम से कम विरोध भ. न करेंगे परन्तु उनके घोर विरोध को देखने हुए हम मानने के लिए बाध्य हो गए हैं कि उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं हुआ है और हमारी धारणा ग़लत थी। यह दूसरी बात है जो हम पर स्पष्ट हुई है। तीसरी बात यह स्पष्ट हुई है कि सरकार का इस बिल को समर्थन प्राप्त है और शायद इसी वजह से मि० अयो के इसे नष्ट के प्रस्ताव के निशाने से इसकी रक्षा हुई है। बातें हैं जो स्पष्टीकरण चाहती हैं। वे 'सिविल एक्ट' तथा इस बिल का भेद, आर्य्यसमाजी की भाषा तथा, इस बिल का उपयोग है। सिविल एक्ट' की वजह से कतिपय सज्जन इस बिल आवश्यकता अनुभव नहीं करते हैं और इसी क पर इसका विरोध करते हैं। सिविल मैरेज और बिल में जो मुख्य भेद है वह यह है कि सि मैरेज ऐक्ट के अनुसार विवाह एक सौदा है जब इस बिल के अनुसार विवाह एक पवित्र अटूट स है। सिविल मैरेज एक्ट हमें अपने पवित्र शास्त्र विमुख करता है और यह बिल हमारा मु ह की ओर फेरता है। और यह इस बिल की सबसे विशेषता है। सिविल एक्ट का दायाद इण्डि सक्सेसन ऐक्ट की धाराओं से शासित होता है बिल में दायाद हिन्दू शास्त्रों के अनुसार शासित जान की व्यवस्था पेश की गई है। सारांश यह है इस बिल मे विवाह को पवित्रता क़ायम रखने की व्य की गई है जो हिन्दू समाज मे मौजूद है। इस अन्त समझ लेने पर कौन हिन्दू सभ्यताभिमानी होगा ज बिल के मुकाबले मे सिविल मैरेज ऐक्ट को पसंद क दूसरी बात 'आर्य समाजी' की परिभाषा की रह है। जिन लोगों ने बहस में 'आर्य्य समाज' की भाषा के निर्धारण पर ज़ोर दिया है उनमें कुछ भय है कि वर्तमान जात पाँत के टूटने से हिन्दू र छिन्न भिन्न हो जायगा। कुछ को यह भी भय है कि का बाज़ार गर्म हो उठेगा। कुछ को यह भय है केवल वासना के वशीभूत हो लोग अपनी ज

शादी करने के निमित्त अपने को आर्य्य समाजी त करके इस उपायका दुरुपयोग करेंगे और देश में मिक शादियों की भरमार हो जायगी। जिन लोगों ाय है कि इस उपाय की वजह से हिन्दू समाज भिन्न हो जायगा उनसे हम यह कहेंगे कि उन्हें ा भयभीत होनें की ज़रूरत नहीं क्योंकि मजिस्ट्रेट दे आर्य्य समाज का स्थान ग्रहण नहीं कर सकें गे। ा का काम आर्य्य समाज को ही करना होगा इस काम में वर्तमान हिन्दू जाति में पैठी हुई पाँत की गहरी जड़ों को देखते हुए आर्य्य समाज इस काम में चमत्कारिक सफलता नहीं मिल ी भले ही उसका मार्ग कुछ साफ़ हो जाय। चमत्कार जैसी सफलता मिल भी जाय तो उससे समाज छिन्न भिन्न नहीं होगा बल्कि उससे हिन्दू ा की एक महान् सेवा होगी? इसके लिये उन्हें न जात-पाँत प्रथा की हानियों को जानना और ना चाहिए। जिन्हें शुद्धि के बाज़ार गर्म होनेके का ो हम उनसे कहेंगे कि हमारा शुद्धि का आदर्श र, शादी, धन, नौकरी इत्यादि के कुत्सित प्रलोभन ीं। हमारा शुद्धि का आदर्श अपने धर्म की विशे- ों और शिक्षाओं से जिज्ञासु के हृदय और मस्तिष्क शील करने का है। इस अपील की प्रेरणा पर यहाँ लोग आते हैं और काफी संख्या में आते स कानून के बन जाने से यह कानून उस अपील ाधन नहीं बनेगा, हाँ हम शुद्ध शुद्धों के प्रति आधार पर एक महान ज़िम्मेवारी को पूरा करने ा समर्थ हो सकेंगे। जिन लोगों को इस कानून के ाग का भय है उनसे यही कहा जा सकता है कि समाज उन सम्प्रदायों में से नहीं है जो अपनी संख्या वृद्धि के थोथे उल्लास में शैतान को शिव समझें और प्रगट करे। वह इस कानून के सदुपयोग के संबन्ध में उतना ही सतर्क रहेगा जितना अपने सिद्धान्तों की रक्षा में सतर्क रहता है। वह देखेगा और सरकार को मदद देने को तय्यार रहेगा कि इसका दुरुपयोग न हो। वैसे अच्छी से अच्छी चीज़ का दुरुपयोग हो सकता है परन्तु जिस चीज़ मे हानि कम सम्भव हो लाभ ज्यादा उसे हानियों की आशंका पर छोड़ नहीं देना चाहिए वरन् उसे अपनाना चाहिए।

जिन माननीय सदस्यों का 'आर्य्य-समाजी की परिभाषा रखने का आग्रह है हम उनसे निवेदन करेंगे कि मूल बिल में जिसे आर्य्य-समाजों का पूरा २ समर्थन प्राप्त था 'आर्य्य-समाजी' की परिभाषा निर्धारित की गई थी। यदि कानूनी दृष्टि के सम्यक् अध्ययन के बाद भी उनका आग्रह परिभाषा रखाने का हो तो वही परिभाषा ज्यों की त्यों रक्खी जा सकती है।

हम सरकार और असेम्बली के उन माननीय सदस्यों के प्रति जिनकी सहायता बिल को समय २ पर मिलती रही है, कृतज्ञता प्रगट करते रहे हैं। एक बार फिर हम उनकी सहायता के लिए उन्हे साधुवाद देते हैं और आशा करते हैं उन सबके सहयोग से बिल पास हो जायगा। श्री० बा० घनश्याम सिंह जी अपने स्वास्थ्य की क़ीमत पर भी जो कुछ इस बिल के लिए कर रहे हैं उसके सम्बन्ध मे कुछ भी कहना व्यर्थ है। परमात्मा उनके यत्नों को सफलता प्रदान करे।

संस्कृति

[श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज]

संस्कृति (Culture) का भाव नियन्त्रण और मर्यादा को कार्य्य मे परिणत करके उससे आचारिक और मानसिक जीवन का उन्नत करना है। भारतीय और पश्चिमीय संस्कृति के मुख्य अन्तर ये हैं कि भारतीय सस्कृति आचारिक और मानसिक उन्नति के साधनों से आत्मोत्कर्ष चाहती है जब कि पश्चिमी सस्कृति अपने अन्दर आत्मा को कोई स्थान नही देती दूसरे शब्दोंमे यो कहिये कि भारतीय सस्कृति अन्तर्मुखी और पश्चिमी सस्कृति बहिर्मुखी है।

दूसरा अन्तर यह है कि भारतीय सस्कृति विश्वभावनामय है जब कि पश्चिमी सस्कृति इस विश्वभावना (Cosmic sense) से रहित और सकीर्ण जातीय भावना से पूर्ण है। दोनों सस्कृतियों के प्रभाव दोनो ओर के इतिहासों से प्रकट होते हैं। भारतीय सस्कृति ने यदि गोतम, कणाद, पतञ्जलि आदि का एक ओर उत्पन्न किया तो दूसरी ओर राम, कृष्ण और गौतम बुद्ध आदि के जन्म का कारण बनी। इन सभी महान् पुरुषों ने अपना कार्य्य क्षेत्र विश्व को बनाया। और शिक्षा दी कि संसार के सभी प्राणियो मे ईश्वर की सत्ता मौजूद है और इसलिये सभी प्राणी हमारे प्रेम और दया के पात्र हैं। परन्तु पश्चिमी संस्कृति ने यदि एक ओर निटशे, हेकल और हक्सले आदि को पेश किया तो दूसरी ओर जूलियस सीजर, नैपोलियन और बिस्मार्क आदि को जन्म दिया जिन्होंने विश्वभावना की तो कथा ही क्या सारे योरुप को भी एक दृष्टिसे नहीं देखा। यहा यह बात कह देना कदाचित अनुपयोगी न होगी कि क्राइस्ट को हम पश्चिमी सस्कृति की उपज नहीं मानते वह एशियायी होने के कारण एशिया ही मे पला और एशिया ही की संस्कृति से प्रभावित हुआ और प्राय वैसी ही उसने शिक्षा भी दी। यदि आज क्राइस्ट होते तो दक्षिण अफ्रीका के होटलो और गिरजाओंमे नहीं घुस सकते थे न मुसोलनी आदि के कृपापात्र ही बन सकते थे किंतु रगीन जाति का व्यक्ति होने से अनेक प्रकार से अपमानितही किये जाते। अस्तु, ससारकी वर्तमान अशान्ति, पारस्परिक घृणा, ईर्ष्या और द्वेष अनेक प्रकार के प्राणी नाशक गैसें और अस्त्र शस्त्रो की ईजाद ये सब उसी विश्वभावना शून्य आत्मा-रहित पश्चिमी सस्कृति के किये हुए कारनामे हैं। इसके विपरीत भारतीय सस्कृति की घोषणा यह है कि ससार मे जब मनुष्य जन्म लेता या कोई भी प्राणी उत्पन्न होता है तो मानो प्रकृतिने अपने दिव्य हाथों और अलौकिक शक्तियों से ससार मे एक नया ईश्वर का मन्दिर बना दिया है जिसमे ईश्वर उसी प्रकार परिपूर्ण है जिस प्रकार मन्दिर के अन्दर। आत्मोत्कर्ष चाहता है कि आत्मा ईश्वर की ओर चले। यदि मनुष्य को उसी ईश्वर के मन्दिर ससार मे प्राणियों के रूप में दिखलाई

अग्निहोत्र (देवयज्ञ)

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है 'सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र का समय है' यह नित्यकर्म है ब्रह्मचर्याश्रम मे इसका वर्णन है परन्तु यह गृहस्थाश्रम और वानप्रस्थाश्रम में भी कर्तव्य है इसलिये इस पर लेख लिखना उचित समझा है ऋषिवत् वेदांत दर्शन मे—

अग्निहोत्रा कार्यायैश तद्दर्शन ।। वेदांत ४-१ ॥

इसमें अग्निहोत्र आवश्यक कार्य माना गया है और महर्षिजी ने अथर्ववेद कॉंड ११ सूक्त २४ के प्रमाण से कर्तव्य ठहराया है।

आजकल कई प्रश्न करते हैं इस समय घृतादि वस्तुएँ सुलभ नहीं हैं और अग्निहोत्र में इनका प्रयोग आवश्यक है। इस निर्धनता के समय में यदि असभव नहीं तो दु साध्य अवश्य है। प्रथम तो ऋषि ने केवल १६ आहुतिएँ देना लिखा है। यदि लोग अनेक प्रकार के अन्य अप व्यय करे और अग्निहोत्र न करे तब तो उचित प्रतीत नहीं होता है। हाँ यदि निर्धनता न करने का कारण हो तो महर्षियों ने उसका उपाय लिख दिया है और वेद भगवान् स्वयं—

अस्ति तु तस्माद्दोजीयो यद् विहव्येनेजिरे ।

अ० ७-५४

इसमें हव्य रहित की महिमा का वर्णन है और गीता में भी—

दें तो इस (पृथ्वी) भस्कृति में पला हुआ मनुष्य, कैसे संभव है कि उससे प्रेम न करे अथवा उसे अपना कृपा पात्र न ममझे। भारतीय संस्कृति की दृष्टि से संसार एक विशाल परिवार है जिसका पिता ईश्वर और जिसकी माता पृथिवी है। समार के सभी प्राणी भाई भाई हैं। उनमें कोई न छोटा है न कोई बड़ा। इस समता के भाव की जन्म-दात्री भारतीय संस्कृति ही है। इसी ममता के भाव ने संसार में मनुष्यों के उत्पत्ति काल से पश्चिमी संस्कृति के जन्म काल तक शान्ति और भ्रातृ प्रेम को स्थिर रक्खा परन्तु पश्चिमी सस्कृति ने जिसका उत्पत्ति काल क्राइस्ट के जन्म से कुछ पहला है, इस थोड़े ही काल में जाति जाति, देश देश और मनुष्य मनुष्य को लड़ा रक्खा है, और यह आश्चर्य है कि आज योरुप में यह सब क्राइस्ट के नाम से किया जाता है। किसी कवि ने, इसलिये, यह ठीक ही कहा है कि—

मसीह चर्खे चहारुम प अपनी उम्मत से।
हैं पाव रोटी के मानन्द मुँह फुलाये हुये ॥

श्रेयान् द्रव्य मयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञ॰ परंतप। गीता ४ ३३

वेद मानसिक यज्ञ की महिमा और गीता ज्ञान यज्ञ की महिमा का वर्णन करती है इसलिये निर्धन पुरुष इनमें से यथाशक्ति किसी का आश्रय करे। देवयज्ञ नित्य कर्म होने से प्रतिदिन करना चाहिये और न करने वाला प्रायश्चित्तीय होता है। सत्यार्थ प्रकाशमें यह बात विशेष रूप से लिखी गई है परन्तु यदि किसी के पास घृत न हो अथवा सामिग्री प्राप्ति के साधन भी न हों तो वह क्या करे इसका उल्लेख नहीं है इसलिये मैं अग्निहोत्र करने का कुछ विधान और उसमें क्या २ वस्तुएँ हों यदि वह न मिल सकें तो उसके स्थान पर क्या करना चाहिये यह बातें लिखता हूं ताकि पाठक उस पर विचार करके लाभ उठा सकें पाठ सरल है अत मैं अर्थ न लिखूंगा।

शतपथ में यज्ञ का विधान अलङ्कार से लिखा गया है, प्रथम उसे ही लिखता हूँ—

"भृगुर्ह वै वारुणि॰। वरुण पितरं विद्ययाति मेने तद्ध वरुणो विदा चकाराति वै मा विद्ययया मन्यत इति॥ १॥ स होवाच। प्राङ् पुत्रक व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्दृष्ट्वा दक्षिणा व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्दृष्ट्वा प्रत्यग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्दृष्ट्वोदग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्दृष्ट्वैतयो पूर्वयोरुत्तरमन्ववान्तरदेशं व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तन्मऽआचक्षीथा इति॥ २॥ स ह तत एव प्राङ् प्रवव्राज। एदु पुरुषै पुरुषान्पर्वाण्येषा पर्वश सव्रश्च पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति स होवाच भीष्म वत भो॰ पुरुषान्वाऽएतत्पुरुषा पर्वाण्येषा पर्वशः संव्रश्चं पर्वशो व्यभक्तेति ते होचुरित्थं वा इमेऽस्मानमुष्मिँल्लोकेऽसचन्त ताम् वयमिदमिह प्रति सचामहाऽइति स होवाचास्तीह प्रायश्चितीऽ३रित्यस्तीति काति पिता ते वेदेति॥ ३॥ स ह तत एव दक्षिणा प्रवव्राज। एदु पुरुषै पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वश॰ संकर्तं पर्वशो विभजमानानिद तवेदं ममेति स हो वाच भीष्म वत भो पुरुषान्वाऽएतत्पुरुषा पर्वाण्येषा पर्वश सकर्तं पर्वशो व्यभक्तेति ते होचुरित्थ वा इमेऽस्मुष्मिँल्लोकेऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहा इति स होवाचास्तीह प्रायश्चित्ती३रित्यस्तीति काति पितैव ते वेदेति॥ ४॥ स ह तत एव प्रत्यङ् प्रवव्राज। एदु पुरुषै पुरुषास्तूष्णीमासीनास्तूष्णीमासीना अदन्तीति ते होचुरित्थ वा इमेऽस्मानमुष्मिँल्लोकेऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहा इति स होवाचास्तीह प्रायश्चित्ती३रित्यस्तीति काति पितैव ते वेदेति॥ ५॥ स ह तत एवोदङ् प्रवव्राज। पुरुषै पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्यमानान्त्स होवाच भीष्म वत भो पुरुषान्वाऽएतत्पुरुषा आक्रन्दयत आक्रन्दयन्ताऽदन्तीति ते होचुरित्थ वा इमेऽस्मानमु०॥ ६॥ स ह तत एवैतयो पूर्वयोः। उत्तरमन्ववान्तरदेशं प्रवव्राजेदु स्त्रियौ कल्याणीं चातिकल्याणीं च तेऽअन्तरेण पुरुष कृष्ण पिङ्गाक्षो दण्डपाणिस्तेस्थौ तं ह हैनं दृष्ट्वा भीर्विवेद स हेत्य सविवेश तं ह पितोवाचावीष्व स्वाध्याय कस्मान्नुस्वाध्याय नाधीषऽइति स होवाच किमध्येष्ये न किंचनास्तीति तद्ध वरुणो विदां चकाराद्गवा इति॥ ७॥ स होवाच। यान्वै तत्प्राक्ष्य दिक्ष्वद्राक्षी॰ पुरुषै पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वश सव्रश्चं पर्वशो विभजमानानिद तवेदं ममेति वनस्पतयो वै तेऽभवू-

यन्त्स यद्वनस्पतीन् समिधमादधाति तेन वनस्पतीनवरुन्द्धे तेन वनस्पतीनां लोकं जयति ॥ ८ ॥ अथ यानेतद्दक्षिणाया दिश्य-द्राक्षी । पुरुषै पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्तं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति पशवो वै तेऽभूवन्त्स यत्पयसा जुहोति तेन पशूनवरुन्द्धे तेन पशूनां लोकं जयति ॥ ९ ॥ अथ यानेतत्प्रतीच्या दिश्यद्राक्षी । पुरुषैं पुरुषांस्तूष्णीमासीनांस्तूष्णीमासीनैरद्यमानोषधयो वै ता अभूवन्त्स यत्तृणेनाव ज्योतयति तेनौषधीरवरुन्द्धे तेनौषधीनां लोकं जयति ॥ १० ॥ अथ यानेतदुदीच्यां दिश्यद्राक्षी । पुरुषै पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्यमानानापो वै ता अभूवन्त्स यदप आनयति तेनापोऽवरुन्द्धे तेनापां लोकं जयति ॥ ११ ॥ अथ ये एते । स्त्रियावद्राक्षी कल्याणीं चातिकल्याणीं च सा या कल्याणी सा श्रद्धा स यत्पूर्वामाहुतिं जुहोति तेन श्रद्धामवरुन्द्धे तेन श्रद्धां जयत्यथ यातिकल्याणी साऽश्रद्धा स यदुत्तरामाहुतिं जुहोति तेनाश्रद्धामवरुन्द्धे तेनाश्रद्धां जयति ॥ १२ ॥ अथ य एने सोऽन्तरेण पुरुष । कृष्णः पिङ्गाक्षो दण्डपाणिरस्थात्क्रोधो वै सोऽभूत्स यत्स्रुच्यप आनीय निनयति तेन क्रोधमवरुन्द्धे तेन क्रोधं जयति स य एवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति तेन सर्वं जयति सर्वमवरुन्द्धे ॥ १३ ॥

ब्राह्मण ॥ ४ [६ । १] का० ११ । प्रपा० ४ ।"

भावार्थ—भृगु अपने पिता वरुण के पास गया। उसके पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, उत्तर पश्चिम को अन्तर दिशा देखने और जो देखे बताने को कहा। वह गया और क्रम से यह देखा पुरुष पुरुष के अङ्गों को काट रहा है। पुरुष पुरुष के अङ्गों को तोड़ और माप रहा है पुरुष चुपचाप कार्य करता है, पुरुष क्रन्दन कर रहा है। रूपवती स्त्री और कृष्ण वर्ण प्रज्वलिताक्ष पुरुष देखा। जब यह वृत्तान्त पिता को बताया उन्होंने पुत्र को समझाया। प्रथम यज्ञ की समिधा का द्योतक है जो काटकर बनाई जाती है दूसरे दुग्ध और घृत का द्योतक है जो यज्ञ में प्रयुक्त होता है तीसरे वनस्पति का द्योतक है जो चरु, पुरोडाश; सामग्री आदि के रूप में होता है चतुर्थ जल है जिसका प्रयोग यज्ञ में होता है रूपवती स्त्री श्रद्धा है आरम्भ से अन्त तक यह क्रिया श्रद्धा से करनी चाहिये कृष्ण वर्ण पुरुष क्रोध है यज्ञ में इसका निषेध है। जो इस प्रकार यज्ञ करता है वह सब को जीतता है अर्थात् उसका यज्ञ सफल है।

घृताभावे भरद्वाज यौधायन मुनीपृथक् ।
आहतुस्तत्र बौधायनोक्तमाशीर्वदिष्यते ॥४१
घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावेतु माहिषम् ।
आजं वा तदलाभेतु साक्षात्तैलं ग्रहीष्यते ॥४२
तिलाभावे ग्रहीतव्यं तैलं जर्तिलसंभवम् ।
तदभावेऽतसीस्नेह कौसुम्भं सर्षपोद्भवम् ॥४३
वृक्षस्नेहो अथवा ग्राह्यः पूर्वाभावे परः परः ।
तदभावे यवव्रीहि श्यामाकान्यतमोद्भवम् ॥४४
पिष्टमालोड्य तोयेन घृतार्थे योजयेत्सुधीः ।
वृक्ष तैलेषु पुन्नागविल्वैरण्डोद्भवम् त्यजेत् ॥४५
भरद्वाजोऽन्यथाप्याह घृत प्रतिनिधिं मुनिः ।
गव्याजमहिषीणां [illegible] ॥४६
तदभावे गवादीनां क्रमात् क्षीरं विधीयते ।
तदभावे दधि ग्राह्यमलाभे तैलमिष्यते ॥४७
अत्राचमं जनाचार्य भक्षयेत कथंचन ।
तत्र क्षीरमनाहृत्य साक्षात्तैलं ग्रहीष्यते ॥४८

यत्र मुख्यं दधि क्षीरं तत्रापि तदभावतः।
अजादेः क्षीरदध्यादितदभावेतु गोघृतम् ॥४६
मुख्यासत्त्वोऽथवा ग्राह्या कार्यकारण सत्तौ।
अतएव घृताभावे पूर्वं दधि तत पय. ॥५०

त्रिकाड मंडनम् काड द्वितीयम्।

खादिर गृह्य सूत्र पर रुद्रस्कन्द जी टीका करते समय मनु का पाठ लिखते हैं —

वेदोदिताना मित्याना कर्मणा समतिक्रमे।
स्नातकव्रतलोपे च प्रायश्चितमभोजनम् ॥

पश्चात् इसी भाव को सामने रख कर हव्यवन आवश्यक सूत्रकार लिखते हैं —

अविद्यमाने हव्ये यज्ञियाना फलानि जुहुयात् ॥१० पलाशानि वा ॥ ११ ॥ अपो वा ॥ १२ ॥ हुतंहि ॥ १३ ॥ प्रायश्चितमहुतस्य ॥ १४ ॥

खादिर गृह्य सूत्र २-२ ॥

साय होमो न लब्धश्चेत् तस्या रात्रावभोजनम्।
प्रातर्होमो न लब्धश्चेत्तद्दहर्भोजन त्यजेत् ॥३६
यद्यग्निहोत्र होमार्थे पयो न स्यात् कदाचन।
तदाव्रीहियवौ ग्राम्यमौषधान्तरमेव वा ॥३५
आरण्यौषधयो वृक्षफल न्याप इति क्रमात्।
होम कर्त्तुमुपादेयं पूर्वालाभे परं परम् ॥३६
तेषामलाभे जुहुयाच्छ्रद्धया सत्यमात्मन।
माध्यन्दिनश्रुतौ सर्वं विस्पष्टमिदमीरितम् ॥३७

त्रिकाड मण्डनम् कांड २ ॥

"समिधमेवापि श्रद्धाय आदधन्मन्येत यज्ञ इदमिति नमस्तस्मै व आहुत्यो यो वेदेनेति विद्य- यैवाप्यग्नि प्रोतिस्तदेतदरण्यनूषिदत्राच। अगो- रुधाय गविषेदुत्ता यदस्यं वच। घृतात्स्वा- दीयो मधुनश्च वोचतेति। वच एव म इद घृताच्च मधुनश्च स्वादीयोऽस्ति प्रीति स्वादीयोऽस्तित्येव तदाह। आश्वलायन गृह्य सूत्र १-१-५ ॥"

त्रिकाण्ड मंडन में माध्यंदिन श्रुति का उल्लेख है, अत यह पाठ लिखता हूँ —

"तद्धैतज्जनको वैदेह याज्ञवल्क्यं पप्रच्छवेत्थाग्निहोत्र याज्ञवल्क्य३ इति वेद सम्राडिति किमिति पयएवेति ॥ २ ॥ यत्पयो न स्यात्। केनजुहुया इति। व्रीहियवाभ्यामिति यद्व्रीहियवौन स्याता केन जुहुया। इति या अन्य ओषधय इति यदन्य ओषधयो न स्यु केन जुहुया इति या आरण्या ओषधय इति यदारण्या ओषधयो न स्यु केन जुहुया इति वानस्पत्येनेति यद्वानस्पत्य न स्यात्केन जुहुया इत्यद्भिरिति यदापो न स्युः केन जुहुया इति ॥ ३ ॥ स होवाच न वा इह तर्हि किंचनासीदथैतदाहूयतैव सत्य श्रद्धायामिति ॥ ४ ॥

शतपथ काड ११ प्रपाठक २ ब्राह्मण ४ ॥"

आज्य के स्थान में जहाँ अन्य वस्तुएँ ली जाती है गोभिलीय गृह्यसूत्र मे उस पर भी लेख है यथा—

किं तदाज्यम्। सर्पिस्तैल दधि पयो यवागूर्वा।

गो० १-७-२० ॥

घृतं वा यदि वा तैल पयो वा यदि वावकम्।
आज्य स्थाने नियुक्तानामाज्य शब्दोविधीयते।

गो० गृ० संग्रह १०६ ॥

इस विषय में पाठ और भी उद्धृत किये जा सकते हैं परन्तु लेख पूर्व ही दीर्घ कार्य हो गया है अत मैं इस समय उनको न लिखना ही अच्छा समझता हूँ।

❋ ❋ ❋

बृहत्तर—भारत में

आर्यसमाज-प्रचार-योजना

[ले०—श्री पण्डित के० ज्ञानी, मद्रास]

गत कुछ समय से शिक्षित भारतीयों का ध्यान बृहत्तर-भारत की ओर गया है। लका के समीपवर्ती छोटे छोटे टापू यथा सुमात्रा, जावा, बाली आदि और उनके ऊपर तथा ब्रह्मदेश के समीप स्याम, अनाम, मलय आदि इन सबका सामूहिक नाम आजकल Greater India अथवा बृहत्तर-भारत रक्खा गया है और यदि हम गलती नहीं करते तो इस नामकरण के आचार्य कवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगौर हैं।

आज से दो हजार वर्ष पूर्व की बात है कि जब दक्षिण भारत की द्रविड़ सभ्यता अपनी उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी, उस का व्यापार आदर्श अवस्था में था, उसका शिल्प, उसकी कला और उसका विज्ञान तथा साहित्य जगत् प्रसिद्ध था, उस समय कुछ उत्साही युवक "नवीन-राज्यों" की खोज में निकले, और उन्होंने बृहत्तर-भारत का निर्माण किया।

सबसे पहिले हमारा ध्यान इण्डो-चाइना के अन्तर्गत अनाम प्रान्त पर जाता है जहां चम्पा, पाण्डुरंगम् और अंगकोर किसी समय में अपूर्व प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। यहा के राजा जयवर्मन् और यशोवर्मन् अपने उदात्त विचारों तथा राजनीति कुशलता के लिये अपना नाम इतिहास के पृष्ठों में अमर कर गये हैं। १३ वी शताब्दी तक अंगकोर-राज्य खूब फला फूला और पीछे से कुछ प्राकृतिक कारणों से मुरझाने लगा।

इतने में सुमात्रा के श्री विजय राज्यका प्रारम्भ हुआ। अनेक व्यापारी, शिल्पी तथा धर्माचार्य यहा पधारे। बौद्ध धर्म को विशेष सफलता मिली। राजा तथा प्रजा दोनों ही बौद्ध हो गये। और राज्य की सहायता से बौद्ध धर्म दूर दूर तक फैला। श्री विजय साम्राज्य में मलय, पिनाग, सिंगापुर (सिंघपुर) तथा जावा आदि द्वीप सम्मिलित हुए। कई लेखकों की राय में श्रीविजय राज्य लका तक फैल चुका था।

अस्तु, सुमात्रा के पश्चात् जावा द्वीप की बारी आती है। यहा की राजधानी मैंजापोहित (Medjapohit) बड़ी प्रसिद्ध हुई। रानी सुहिता का नाम भी इतिहास के पन्नों में पाया जाता है। जावा-राज्य का चौदहवीं सदी में बहुत विकास हुआ। सैकड़ों मन्दिर व राज प्रासाद बने। दूर २ के राजदूत रानी सुहिता के दरबार में भेंट उपस्थित करने आए। अनेक शिलालेख, अनुशासन तथा प्राचीन ग्रन्थ आज भी उस जमाने की कीर्त्ति बताने को पाए जाते हैं। संस्कृत के रामायण-महाभारत आदि ग्रन्थों का जावानीज भाषानुवाद उसी

ग्राम्य-भारत का उद्धार

[लेखक—एक अनुभवी पत्रकार]

(१)

भारतवर्षकी आबादी वर्तमान वर्षों में वेगके साथ बढ़ती रही है परन्तु पैदावार और आमदनी में सापेक्ष वृद्धि नहीं हुई है। १८८१ और १९३१के बीच पिछले पचास वर्षों में आबादी १० करोड़ वा ३९ फी सदी बढ़ी है। कुल आबादी का ८९ प्रति शतक गावों में निवास करता है। तमाम भारतवर्ष में ६९६८३१ गाव तथा २५७५ शहर हैं। १८९१ को जन-संख्या के अनुसार खेती पर आश्रित आबादी ५९ ८ प्रतिशतक थी। १९११ में यह ७१ ३ तथा ११३१ में ७३ प्रतिशतक हो गई थी। इन अंकों से जाहिर है कि भारतवर्ष में प्रत्येक ४ व्यक्तियों के पीछे ३ व्यक्ति अपनी रोटी जमीन से कमाते हैं। संसार के उन्नत देशों के अंकों के साथ तुलना करने पर हम देखते हैं कि १९२१ और १९३१ के बीच के विभिन्न वर्षों में इंग्लैंड और वेल्स में काम करने वाली आबादी का ७·१ प्रतिशतक भाग खेती और मछली मारने के काम पर लगा हुआ था। अमेरिका में २२, कनाडा में ३१ २ जर्मनी में ३० ५ फ्रांस में ३७ ३ जापान में ५० ३ और भारतवर्ष में ६७ २।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारतीय किसान देश के आर्थिक कल्याण का मुख्य आधार है। इसलिए देशके आर्थिक भविष्यको दृढ़ बनाने और उसकी रक्षा करने के लिए ग्राम्य भारत की समस्याएँ शीघ्र से शीघ्र हल होनी चाहिए। वर्तमान में यह काम और भी ज्यादा आवश्यक हो गया है क्योंकि आर्थिक संगठन तथा दृष्टिकोण में संसार

समय हुआ। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए तो जावा-राज्य ने विशेष प्रयत्न किये। उस समय का जावा राज्य, बोर्नियो, सैलेबीज और फिलिपाइन्स तक फैल चुका था।

पन्द्रहवीं शताब्दी में बृहत्तर भारत में अरब के मुसल्मानों का पदार्पण होता है और हमारे हिन्दू व बौद्ध अपने सनातन स्वभाव-अनुसार परस्पर विभक्त होकर शत्रु का साथ देते हैं और परिणामत जावा-साम्राज्य भग होकर मलाका-मुस्लिम राज्य की नींव पड़ती है।

अस्तु, इस समय हमारी नम्र सम्मति में यदि आर्य्य-समाज इस बृहत्तर-भारत की ओर दृष्टिपात करे तो कार्य का पर्याप्त क्षेत्र है। बृहत्तर-भारत निवासी अभी तक प्राचीन भारती सभ्यता व सस्कारों को नहीं भूले हैं। अतएव उन्हें पुन हिन्दू-धर्म में दीक्षित करना कठिन तो अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं।

इस विषयक विस्तृत लेख फिर कभी लिखेंगे।

की अवस्थाओं मे बहुत परिवर्तन हो रहा है। (१९२८) भारतीय शाही कृषि कमीशन की रिपोर्ट बतलाती है —

"यदि शताब्दियों की अकर्मण्यता पर विजय प्राप्त करनी हो तो जरूरी है कि सरकार के निर्णय पर जितने साधन हैं वे सब ग्रामोद्धार की समस्या के हल मे लगा दिए जायँ। जरूरत इस बातकी है कि सरकार के वे सब विभाग जिनकी प्रगतियां ग्रामीण जनता के वातावरण और जीवनों से सम्बद्ध हैं व्यवस्थित और दृढ़ यत्न करे।"

(२)

ग्राम्य भारत की निर्धनता परिमाण मे बड़ी भयंकर है। औसत किसान की जिन्दगी ऐसी दुखपूर्ण और दीन है जिसकी कल्पना भी नहीं हो सकती है। पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती हुई जन सख्या के साथ साथ जमीन टुकड़ों टुकड़ों मे बट गई है। खेती की औसतन पूञ्जी ४ एकड़ है जब कि आर्थिक पूञ्जी गीली होने की अवस्था मे ६ और सूखी होने की अवस्था मे ४० होनी चाहिये। १९२१ मे बगाल मे प्रति कार्य्यकर्त्ता के पास खेती की औसतन २ एकड़ भूमि थी और बम्बई, सीमा प्रान्त और पंजाब को छोड़कर जहाँ औसत १०॥ एकड़ बतलाया जाता था बड़े बड़े प्रान्तों मे लगभग तीन एकड़ भूमि थी। जमीन पर अत्यधिक बोझ भारतीय ग्रामों की भयंकरतम अवस्थाओं मे से एक अवस्था है। यह अवस्था और भी ज्यादा भयंकर है इसलिये कि यहा पेशों की विभिन्नता नहीं है और गुजारे के मुख्य साधन के रूप मे करोड़ों व्यक्ति खेती की भूमि पर आश्रित रहते हैं।

कोई कोई व्यक्ति भारत की कृषि की अवस्था के सुधार के लिये वैज्ञानिक प्रयोगों और आधुनिक तरीकों को प्रचलित करने की सोचते है। परन्तु लोगो की पूञ्जी इतनी थोड़ी है कि पैदावार और आमदनीको बढ़ाने के लिये वैज्ञानिक तरीकों के प्रयोग से कोई खास लाभ नहीं हो सकता है। इसके अलावा वैज्ञानिक खेती के लिये कीमती औजार और खाद चाहिये और हमारे ग़रीब किसान इन चीजों के खरीदने की सोच भी नहीं सकते हैं। भयंकर दरिद्रता न केवल कृषि सम्बन्धी उन्नति के मार्ग मे रोड़ा ही बनी रही है वरन् इसने और बहुत सी कठिनाइयां पैदा कर दी हैं जिन्होंने ग्राम्य भारत के सर्वनाश मे योग दिया है। श्रीयुत के कृष्ण, आयंगर 'भारतीय नागरिकता' पर लिखी हुई अपनी ताजा पुस्तक मे लिखते हैं:-

"इस दुरवस्था के मूलकारण निम्न है—

(१) उद्योग धन्धो का ह्रास जिसके फल स्वरूप जमीन पर असाधारण बोझ बढ़ गया है।

(२) आधुनिक सरकारके द्वारा ग्राम्य परिवार का छिन्न भिन्न होना और पटेल, मुखिया, या नम्बरदार और एकाउन्टेन्ट (लेखा रखने वाला) का सरकारी नौकर होना, जमीन की रैयत वारी प्रथा और कानून और न्याय की अत्याचार पूर्ण प्रणाली का प्रचलित होना समष्टि रूप से गाव से वसूल किये जाने के बजाय प्रत्येक पट्टेदार से लगान का वसूल किया जाना।

दरिद्रता से बढ़ चढ़कर किसानों मे व्याप्त भयंकर निरक्षरता है जिसकी वजह से वर्तमान

उन्नत तरीकों से अपनी अवस्था का सुधार करने की दिशा में वे क़दम नहीं बढ़ा सकते हैं। सफाई के अभाव ने उन्हें बहुत से संक्रामक रोगों का शिकार बना रक्खा है और उनके शरीर की साधारण अवस्था बहुत ख़राब हो गई है। इसके अतिरिक्त वे कर्ज़ में फँसे हुये हैं और साथ ही उन्हें ऐसे टैक्स अदा करने होते हैं जो उनके लिए भारी होते हैं और जो यान्त्रिक क्रम और अमानुषिक सख़्ती के साथ वसूल किए जाते हैं। इसके बाद कुदरत की मारें यथा सूखा, बाढ़ और अकाल हैं जिनका भारत के प्रत्येक सूबे के असख्य गावों में दौर दौरा रहता है। और जो प्रायः हर साल की चीजें बन गई हैं।

(३)

अत्यधिक आबादी की वजह से पिछले १०० वर्षों में भारत को ज़मीन अनाज की पैदावार में प्रयुक्त हुई है। इसकी वजह से देश की चराई की भूमि में निरन्तर कमी होती चली गई है और इसका भारत के पशुओं की जिन्दगी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। दूध की कमी के परिणाम स्वरूप ग़रीब किसानों की ख़ुराक में से दूध नदारद हो गया है जिनका अधिकांश भाग निरामिष भोजी है। भोजन में दूध के अभाव ने पहले से गिरती हुई उन लोगों की तन्दुरुस्ती को बहुत गिरा दिया है और भारतीय ग्रामों में मृत्यु संख्या में वृद्धि करदी है।

यह भी एक कारण है जिसकी वजह से ससार के दूसरे देशों की अपेक्षा भारतवर्ष में बच्चों की मृत्युसंख्या बहुत बढ़ी चढ़ी है। अच्छी दूध देने वाली गायों की उत्पत्ति एक उपाय के रूप में पेश की जाती है। यदि उनके लिए पर्याप्त चारा न हो तो यह उपाय व्यर्थ है। वर्तमान वायसराय लार्ड लिनलिथगो ने सूबों के गवर्नरों के नाम एक सरक्यूलर में भारतीय किसानों की अवस्था के सुधार के एक साधन के रूप में पशुओं की नस्ल की महत्वपूर्ण समस्या की प्रशंसा करते हुए कहा है कि वे सरकारी तौर पर इस समस्या पर विचार करा रहे हैं क्योंकि वे बहुत ज्यादा अनुभव करते हैं कि पशुओं की नस्ल सुधारने का यत्न उस समय तक व्यर्थ है जब तक उनके खाने के लिए काफी चारा न हो।

इस सम्बन्ध में 'इण्डियन सोशियल रिफार्मर' अभी हाल में लिखता है —

"यह देखने की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेते हुए कि कृषि के लिए उपयोगी कोई भी पशु भूखा न मरे, यह काम केवल सरकार द्वारा ही किया जा सकता है। जब सांड अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर चुके हों गर्भावस्था में गऊओं की रक्षा का व्यय किसानों के बूते से बाहर की बात है। बहुतसी जवान गऊएं क़साईख़ानों में भेज दी जाती हैं क्योंकि जब वे दूध नहीं देती होती हैं उनके मालिक उनकी रक्षा करने में असमर्थ होते हैं। जब तक गवर्नमेन्ट या दूसरी एजेन्सिया सहायता के साथ रैयत की सहायता के लिए नहीं आती हैं या जब तक कुछ समय के लिए गऊओं की देखभाल का काम अपने हाथों में नहीं लेती हैं तबतक भय है कि बछड़ों की उत्तम नस्ल संसार में आने से पूर्व ही पशु खाने के लिए मार दिए जायँगे।

एक के पीछे दूसरी चीज चलती है और जब तक समष्टि रूप से समस्या का अनुशीलन और हल न किया जायगा तब तक अच्छे से अच्छे यत्न भी असफल रहेंगे।"

रेलवे और सुरक्षित जंगलों ने भारतको चराई की भूमि पर बहुत ज्यादा हस्तक्षेप किया है। यदि रेलवे की बेकार जमीने वापिस करदी जाती और सुरक्षित जंगलों में चराई का अधिकार प्राप्त हुआ होता तो भारत के पशुओं को हरा चारा बहुतायत में मिलता। भारत में ऐसी बहुत सी ऊजड़ जमीने हैं जिनका अभी तक पता भी नहीं लगाया गया है। राज्य का तथा जनता का यह कर्त्तव्य है कि वे उन्हें मालूम करें और उन्हें पशुओं की चराई के काम में लाएँ। वर्तमान उन्नत तरीकों से हरा चारा किस प्रकार सुरक्षित रक्खा जा सकता है गाव के लोगों को इस बात की शिक्षा देने के लिए कृषि विशेषज्ञों की जरूरत है। यदि अच्छी नस्ल की व्यवस्था के साथ २ चारे की व्यवस्था पर भी गंभीर विचार कर लिया जाय तो दूध की समस्या बहुत अंशों में हल हो जाय। इसके अलावा हल खींचने के लिए स्वस्थ पशुओं की जरूरत है। पशुओं की रक्षा के लिए स्वस्थ्य स्थानों और चिकित्सा को बहुत कमी है। इस प्रकार पशुओं की रक्षा की समस्या भारत में ग्रामोद्धार का मुख्य अंग है।

जहा तक गऊ रक्षा की समस्या का सम्बन्ध है यह केवल हिन्दुओं की ही समस्या नहीं है वरन जनोपयोगी समस्या है जिस पर भारत की समस्त जातियों को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

कृषि सम्बन्धी उन्नति और ग्रामोद्धार के साथ पशुओं के गहरे सम्बन्ध पर दृष्टि रखते हुये सरकार और जनता को माडल, डेयरियों, पिंजरापोल आदि को पूरी पूरी सहायता देनी चाहिए।



कहानी—

मज़दूर

(लेखक—रघुनाथ प्रसाद पाठक)

**

(एक भुक्तभोगी की ज़ुबानी)

चांदनी चौक (देहली) से सामान खरीदकर एक झल्ली वाले के सिर पर रखकर मैं अपने मकान का रवाना हुआ। इत्तफाक से नई सड़क पर मेरी एक दोस्त से भेंट हुई और मैं उनसे बात चीत करने लग गया। दोस्त से विदा होकर जब मैं चला तो झल्ली वाले को न देखकर हैरान हुआ। उसे इधर उधर देखा, तलाश किया मगर वह दिखाई न पड़ा। समझ गया माल लेकर चम्पत हो गया है। सामान १–२) का न था। ५०–६०) का था। ३–४ घण्टे तक इधर उधर गली कूँचे और बाजार में उसकी तलाश में फिरता रहा मगर कहीं उसका पता न लगा। निराश होकर मैं अपना सा मुँह लिए अपने मकान को चल दिया। रास्ते में खयाल आया कि चलूँ जिस दूकान पर उसके सिर पर सामान रक्खा था उस पर होता हुआ पुलीस मे रिपोर्ट कर आऊँ वैसे सामान मिलने की कोई उम्मेद रह नहीं गई थी। मैं दूकानकी तरफ जा रहा था तो क्या देखता हूँ कि झल्ली वाला सामान को झल्ली मे रक्खे हुए घण्टाघर पर बैठा है। उसे देखते ही जान मे जान आई। मुझे देखते ही वह बोला—

"बाबू जी! तुमने मुझ बड़ा परेसान किया है। घण्टों से खड़ा २ सूख गया, इतनी देर में बाबू जी! मै ४–६ आने की मजूरी कर लेता।

मैंने कहा—मैं भी तुम्हें तलाश करता २ परेशान हो गया हूँ। मुझे तो सामान मिलने की उम्मेद रह नहीं गई थी। सोच लिया था धोखा देकर भाग गया।

उसने कहा—बाबू जी! ऐसा कर तो भला थोड़े ही हो है। तुम ना देखते थे तो ऊपर वाला तो देखता था।

उसे साथ लेकर घर की तरफ चल दिया। वह आगे था और मैं पीछे। रास्ते में वह प्याऊ पर पानी पीनेके लिए ठहर गया, मैं आगे बढ़ा चला गया। कुछ दूर निकल जाने पर मैंने पीछे की तरफ मुड़कर देखा तो प्याऊ के पास उसे पेट पकड़े हुए जोर से रोते हुए पाया। मैं फ़ौरन उसके पास गया। मालूम हुआ कि ख़ाली पेट पानी पी लेने से दर्द हो गया था क्योंकि २-३ दिन से उसके पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं पड़ा था। वह भूखा था। इतना भूखा और ऐसा ईमानदार—यह ख़याल आते ही मेरा मन उसकी तारीफ़ करने लगा। दर्द बन्द हो जाने पर वह उठा और मेरे साथ घर पहुँचा। मैंने फ़ौरन स्त्री को उसे खाना खिलाने को कहा। खाना उसके सामने रक्खा गया और मैंने इस बीच में तमाम क़िस्सा अपनी स्त्री को कह सुनाया। खाना खा चुकने पर हम दोनों ने उससे अपना हाल सुनाने को कहा। इस पर वह रो पड़ा और अपना हाल सुनाने से इन्कार किया। हम दोनोंके बहुत इसरार पर उस ने अपना हाल यों बयान किया—

"बाबू जी! मैं जात का ठाकुर हूँ। चार अक्षर पढ़ा हूँ। मैंने कभी अच्छे दिन देखे हैं। मेरा एक सौतेला भाई है। मेरे मा बाप जितना मुझे प्यार करते थे उतना ही उसे करते थे। उसकी शादी हम भाई बहनों में आख़िरी थी। मा-बाप मेरे उस भाई के ब्याह में अपनी हौस पूरा करना चाहते थे। घर में सब कुछ था। उसके ब्याह में नाच-रंग में पानी की तरह रुपया बहा। रंडियों और भड़ुओं के पास ७००) पहुँच गये। उस ब्याह में हमारे पैर उखड़ गये। उसके बाद से हमारे दिन खोटे आये। २ भैंसें मरीं, १ बढ़िया घोड़ी चोरी गई, नाज में आग लगी। हमारे बाप सदमा बर्दाश्त न सके और चलते बने। उनकी करनी में गांव बिरादरी की रोटी में रहा सहा सब जाता रहा। हम कर्जदार बन गये और कर्जे में हमारा सब कुछ चला गया। बैल तक बिक गये। खेती बन्द हुई। कई २ दिनके फ़ाके होने लगे। मेरे ४ बच्चे हैं मा है भाई है। घर के ८-१० आदमी हैं। लाचार होकर नौकरी मजदूरी के लिए हम दोनों भाई घर से निकल खड़े हुए, मैं यहां आ गया। जो कुछ कमा पाता हूँ घर भेज देता हूँ—अपना गुजारा ज्यों त्यों करके कर रहा हूँ। कभी खाता हूँ कभी भूखा ही पड़ रहता हूँ। २-३ दिन से मजदूरी नहीं मिली थी।"

यह बयान सुनकर हमारे दिलों पर बड़ा असर हुआ। वह जाने लगा। मैंने स्त्रीसे कुछ इनाम देने को कहा, उसने मजबूरी जाहिर की। मैं चुप हो रहा। जब वह कुछ दूर निकल गया मेरी स्त्री ने आकर कहा 'उसे बुलाओ मेरे पास ४०) रक्खे हैं। मैंने ये रुपये रमेश के यज्ञोपवीत की दावत के निमित्त रख छोड़े थे, ये ही उसे दे दो ग़रीब का भला होगा।" मैं फ़ौरन लपका और उसे साथ लाकर वे ४०) उसको देते हुए कहा लो यह तुम्हारी ईमानदारी का इनाम है।

इस बात को हुए क़रीब ६ साल गुजर चुके हैं। पिछले कार्तिक के गङ्गा स्नान वाले दिन चावड़ी बाजार में अचानक एक लोहिया की दुकान पर उससे मेरी मुलाक़ात हुई। उसकी

पोशाक में और बातचीत में अजीब सलीक़ा और शऊर देखकर मैं दंग रह गया। पूछा "भाई ! क्या ख़रीद रहे हो।" उसने कहा "बाबू जी ! कुछ लोहे का सामान ख़रीद रहा हूँ। गाव मे मरघट में एक टीन डलवा रहा हूँ। मींह बूंदी में मुर्दा जलाने में मुसीबत होती है। मां की लाश जलाने में जो मुसीबत हुई थी उसे मेरा दिल ही जानता है। गाव बिरादरी की रोटी मैंने मुल्तवी रक्खी, उसकी जगह यह काम करा रहा हूँ। अगले साल गाव के कुए को ठीक कराने का इरादा है। उसके चारों तरफ पक्का गट्टा कराना है। न्हाने और कपड़े धोने के २ पक्के घाट बनवाने हैं, ऊपर छतरी डलवानी है। पक्षी गन्दी चीजें लाकर डाल देते हैं। बन्दरों के तो मारे नाकों दम है। मेंह बूंदी और गर्मी में पानी भरने वालों को भी आराम रहेगा। आपकी दया से अब टुकड़े के लिए मुहताज नहीं हूँ। मुसीबत तो बड़ी हैं पर शादी ग़मी के काम भी करने ही पड़ते हैं।

उसकी इस स्कीम को सुनकर मैं दंग रह गया, सोचने लगा शादी ग़मी के मनाने का इससे अच्छा और क्या तरीक़ा हो सकता है। यह तो न सिर्फ गाव वालों के लिए ही बरन् शहर वालों के लिए भी नक़ल करने के क़ाबिल है।

पूछा 'भाई ! तुमको ये बातें किसने सुझाई ? वह बोला 'बाबू जी ! ये बातें हमे एक बाई जी ने बतलाई हैं। वे हमारे गाव में आज कल रहती हैं। लखनऊ की रहने वाली हैं। किसी बारिस्टर की छोरी हैं।" मैं विदा होकर नई मंडक की तरफ आने लगा। वह हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़ा हो गया। कहा।

"बाबू जी ! एक विनती है। पूछा 'किसी चीज की जरूरत है ? उसने कहा 'नहीं बाबूजी ! तुम्हारा दिया सब कुछ है।"

पूछा 'फिर भाई क्या चाहते हो ? उसने कहा 'यह चाहता हूँ कि आप और बहुआयन जी कुएँ की प्रतिष्ठा मे आएँ। अगले चैत मे होगी।'

इस पर मैंने कहा देखा जायगा ? उसने हठ करते हुये कहा 'नहीं बाबूजी ! ग़रीब के घर को जरूर पवित्र करें" मुझसे वायदा कराके ही उस ने मेरा पिंड छोड़ा।

× × ×

मेरी स्त्री और मैं पिछले चैत में उसके गाव से लौटे हैं। वह गाव अलीगढ़ जिले में है। मैंने गाव के बहुत से कुए देखे हैं। ऐसे भी जिन्हें देखने को तबीयत भी नहीं करती। लेकिन उस कुएं को देखकर मन फूलकी तरह खिल उठता है। मैं उस गाव से बड़े खुश गवार नजारों की याद लेकर लौटा हूँ। मुझे वह नजारा कभी नहीं भूल सकता जब जिले के बड़े बड़े हाकिमों, अहलकारों रईसों, ग्राम सुधार के कार्य्य कर्त्ताओं सैकड़ों मर्द और औरतों के मजमुए में जो कुए की प्रतिष्ठा में आए हुए थे हम दोनों एक ऊँचे प्लेट फ़ार्म पर खड़े थे, हमारी लोगों से जान पहिचान कराई जा रही थी। बैरिस्टर साहब की लड़की के इस ऐलान का तालियों से स्वागत हो रहा था कि हमारे वे ४०) उस कुए में लगाए गए हैं। मेरी स्त्री आखें बन्द किए हाथ जोड़े खड़ी थी और खुशी उसके चेहरे पर खेल रही थी।

वैदिक धर्म के मुख्य तत्व

वैदिक धर्म और समानता

गत मई मास में लखनऊ में अछूतों का एक सम्मेलन 'आदि हिन्दू सम्मेलन' के नाम से हुआ था। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से पढ़े जाने के लिए श्रीयुत प० धर्म्मदेव जी विद्या-वाचस्पति ने एक भाषण भेजा था। भाषण में वैदिक धर्म्म की महत्ता स्थापित करते हुए आर्य समाज के अछूतोद्धार के अर्थ ढंग और सफलता की ओर सकेत किया गया था। भाषणका सार इस प्रकार है

परमपिता परमात्मा ने मनुष्यमात्र के कल्याणके लिये सृष्टिके प्रारम्भ में वेदों के द्वारा जिस सार्वभौम धर्म का उपदेश किया उसी को वैदिक धर्म अथवा सत्य सनातन धर्म के नाम से कहा जाता है। वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है इसलिये वेद उस ज्ञान के भन्डार हैं जो मनुष्यमात्र को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों के विकास के लिये ज़रूरी है साथ ही उस में मनुष्यों के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक (Social) और राष्ट्रीय (National) कर्तव्यों का भलीभाँति प्रतिपादन किया गया है। परमेश्वर प्राणीमात्र के पिता हैं और सबकी भलाई के लिए ही उन्होंने सृष्टि के शुरू में यह वेद ज्ञान ऋषियों के पवित्र हृदयों में प्रकाशित किया क्योंकि इस दिव्य ज्ञान के बिना मनुष्य अपने कर्तव्य आदि का ज्ञान किसी प्रकार भी प्राप्त न कर सकते थे। अकतक बालक को कोई सिखाने वाला न हो वह शिक्षित नहीं हो सकता। सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर ने गुरुरूप में ऋषियों के हृदयों में प्रेरणा द्वारा उपदेश दिया इसी लिये उसे परम गुरु कहा गया है।

ये वेद मनुष्य मात्र के लिए हैं न कि किसी ख़ास जाति वा देश के मनुष्यों के लिये क्योंकि परमात्मा समान रूप से सब प्राणियों का पिता है इस बात को यजुर्वेद २६-२ में इस प्रकार बताया गया है।

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय चारणाय चस्वाय ।"

इस मन्त्र में भगवान् ने उपदेश किया है कि जिस प्रकार मैंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-अतिशूद्र आदि सब मनुष्यों के लिये इस कल्याण-कारिणी वेद वाणी का उपदेश किया है इसी प्रकार तुम भी किया करो। इसी वेद मन्त्र के भाव को लेकर महर्षि वेद व्यास ने महाभारत में अपने शिष्यों को उपदेश किया था कि—

"श्रावयेच्चतुरो वर्णान्, कृत्वा ब्राह्मणमग्रतः ।
वेदस्याध्ययनं हीदं, तच्च पुण्यं महत्स्मृतम् ॥
सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु ॥"

शान्ति पर्व अ० ३२७। ४८ ४९

अर्थात् सब मनुष्यों की भलाई के विचार को मन में रखते हुए विद्वानों को चाहिये कि वे सब वर्णों के

लोगों को वेद का उपदेश करें क्योंकि वेदों का पढ़ना पढ़ाना बड़े पुण्य का कार्य है।

वेदों की सबसे बड़ी शिक्षा यही है कि सब मनुष्य एक ही परमात्मा के पुत्र और इसलिये भाई हैं। सबको भाई और मित्र समझ कर प्रेम पूर्वक बर्ताव करना चाहिये जन्म से कोई छोटा और बड़ा नहीं है। इस बात का उपदेश वेदों में सैकड़ों स्थानों पर दिया गया है। उदाहरणार्थ ऋग्वेद ५। ६०। ५ में कहा है।

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधु सौभगाय। युवा पिता स्वया रुद्र एषा पृश्नि-र्माता सुदिना मरुद्भ्य ॥"

इस मन्त्र का स्पष्ट अर्थ यह है कि सब मनुष्य (भ्रातर) भाई हैं इनमें जन्म से कोई ऊँचा व नीचा नहीं है इस भाव को धारण करने से ही मनुष्य समाज की सच्ची उन्नति हो सकती है। न्यायकारी परमात्मा सब का पिता है और पृथिवी सबकी माता है। इससे उत्तम समानता वा Equality और सार्वजनिक भ्रातृत्व वा Brother-hood of man का क्या उपदेश हो सकता है? "शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा" (यजु० ११) आदि मन्त्रों में भी सब मनुष्यों को एक ही अविनाशी परमात्मा का पुत्र बताते हुए वेद के उपदेश को सुनने की आज्ञा दी गई है। यजुर्वेद अ० ३६। १८ में कहा है—

दृते दृंह मा मित्रस्य माचक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

इस मन्त्र में केवल मनुष्यों को ही नहीं बल्कि सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का उपदेश दिया गया है। यह उपदेश कितना महत्वपूर्ण है यह बताने की आवश्यकता नहीं। यह समानता और मित्रदृष्टि ही वेद की सारी शिक्षाओं का निचोड़ है इस बात को ऋग्वेद के १० मण्डल के अन्तिम सूक्त १९० में बड़े ही स्पष्ट शब्दों में बताया गया है।

संगच्छध्वं संवदध्वं सवो मनासि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे सजानाना उपासते ॥

समानो मंत्रः समितिः समानी, समान मनः सह चित्तमेषाम्। समान मन्त्रभिमन्त्रये व, समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ॥

इन मन्त्रों का भावार्थ यह है कि हे मनुष्यो! तुम सब मिलकर प्रेम से धर्म मार्ग पर चलो, मिलकर प्रेम से भाषण करो और अपने मनों को ज्ञानयुक्त बनाओ। तुम्हारे लिये ये वेद मन्त्र समान रूप से दिये गये हैं तुम्हारा मन और चित्त समानता वा बराबरी (Equality) के इन भावों से सदा भरा रहे। तुम्हारी सभाओं में प्रवेश का सबको समान अधिकार रहे। तुम्हारे मन के संकल्प भी एक जैसे पवित्र हों मन और हृदय समान हो जिससे तुम मिल करके सब अच्छे कार्यों को कर सको। कोई भी वेदों का निष्पक्ष-विचारक इन मन्त्रों को पढ़ते हुए यह माने बिना नहीं रह सकता कि समानता की शिक्षा वेदों में कूट २ कर भरी हुई है अथर्व वेद ३। ३० में भी इसी प्रकार के अत्यन्त उत्तम उपदेश हैं जिन में से विस्तार के भय से प्रथम मन्त्र का उल्लेख ही काफ़ी है जिसमें भगवान् का मनुष्यों को उपदेश है कि—

"सहृदयं सामनस्यमविद्वेष कृणोमिवः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत, वत्सं जातमिवाघ्न्या ॥"

अर्थात् हे मनुष्यों ! मैं तुम्हारे अन्दर सहृदयता (Concord) और प्रेम (Harmony) को स्थापित करता और तुम्हारे द्वेष के भाव को दूर भगाता हूं । तुम आपस में ऐसे प्रेम करो जैसे गौ नये उत्पन्न बछड़े के साथ करती है । इससे बढ़ कर सच्चे प्रेम और समानता का उपदेश क्या हो सकता है ?

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदों में समानता और विश्व प्रेम (Universal love) का उपदेश है उसमें जन्मसिद्ध जातिभेद (Hereditary Caste-system) और अछूतपन (Untouchability) के लिये कहीं स्थान नहीं हो सकता । ये वेद की पवित्र शिक्षाओं के सर्वथा विरुद्ध हैं जिनका समूल नाश करना वा जिनको जड़ से उखाड़ फेंकना हरेक सच्चे वैदिक धर्मी का मुख्य कर्तव्य है । इस बात को कि वेदों में जन्मसिद्ध जातिभेद वा जात पाँत का कहीं प्रतिपादन नहीं यूरोप के बड़े २ धुरन्धर विद्वानों ने भी एक स्वर से स्वीकार किया है । उदाहरणार्थ प्रो० मैक्समूलर ने "Chips from a German workshop" में कहा है—

If then with all the documents before us, We ask the question, does caste, as we find it at the present day, form part of the most ancient religious teachings of the Vedas ? We can answer with a decided "no,"

अर्थात् यदि यह पूछा जावे कि क्या आजकल की जातपांत का वेदों की पुरानी शिक्षाओं में कहीं प्रतिपादन है तो इसका उत्तर 'ज़ोरदार नहीं' में देना पड़ेगा ।

प्रो० वीबरने "History of Indian Literature" में वैदिक काल के विषय में कहा है कि—

"There are no castes yet the people are still one united whole and bear out one name." (P 38)

अर्थात् वैदिक काल में कोई जातियां न थीं । सब लोग एक अर्थात् मिले हुए थे और एक ही नाम (विश) से उन्हें पुकारा जाता था । इत्यादि ।

कहने का तात्पर्य यह कि जिस जातपांत ने हिन्दू समाज को आज हज़ारों जातियों उपजातियों में बाँट रक्खा है, जो जातपाँत हिन्दुओं की गिरावट का सबसे मुख्य कारण है, जो जातपाँत हिन्दू समाज के संगठन और प्रेम का सबसे प्रबल शत्रु है और जो इस अछूतपन के भयंकर कलंक का मूल कारण है उसका वेदों मे न सिर्फ़ कहीं प्रतिपादन नहीं बल्कि वह वेदों की सार्वभौम शिक्षाओं के बिल्कुल विरुद्ध है यही कारण है कि वैदिक धर्म का प्रचारक आर्य समाज ज़ातपाँत का घोर विरोध शुरू से करता रहा है और अछूतपन के घोर पाप को जड़ से उखाड़ने का शुरू से ही प्रयत्न करता रहा है । आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के विषय में यूरोप के इस समय के सब से बड़े विचारक श्रीयुत रोमारोला ने बहुत ठीक कहा है कि—

Dayanand would not tolerate the abominable injustice of the existence of untouchables and <u>no body has been a more ardent Champion of their rights</u>

"They were admitted to the

Arya Samaj on a basis of equality, for the Aryas are not a caste."

(Gospel of Rama Krishna)

भावार्थ यह है कि ऋषि दयानन्द ने अछूतपन के इस घोर अन्याय को सहन नहीं किया और उनसे बढ़ कर हरिजनों के जिन्हें अछूत कहा जाता था अधिकारों के लिए लड़ने वाला और कोई नहीं हुआ। इन हरिजनों को आर्य समाज के अन्दर समानता के आधार पर दाखिल किया गया क्योंकि आर्य कोई अलग जाति नहीं।

आर्य समाज के मान्य नेता स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, ला० लाजपतराय, चौ० रामभज दत्त, ला० गंगाराम (स्यालकोट वासी) आदि ने इस अछूतपन को जड़ से उखाड़ने के लिये और हरिजन भाई बहिनों को सब तरह से उन्नत करने के लिये सब प्रकार का प्रयत्न किया। आर्य समाज के प्रभाव से उनमें से लाखों ने वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर अपने जीवनों को उन्नत किया। कितनों ने गुरुकुलों के स्नातक बनकर विद्यालंकार वेदालंकार आदि की उपाधियां प्राप्त करके समाज में उन्नत स्थान प्राप्त किया और प्राप्त कर रहे हैं। अन्तर्जातीय भोज (Intercaste dinners) और अन्तर्जातीय विवाह (Intercaste marriages) हजारों की संख्या में हो चुके हैं और इस बात का और जोर से क्रियात्मक प्रचार आर्यसमाज द्वारा किया जा रहा है।

वैदिक धर्म और आर्यसमाज जिस वर्ण व्यवस्था के तत्वों का प्रचार करते हैं उनका वर्तमान जात पात के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं क्योंकि वह जन्म पर नहीं बल्कि केवल गुणकर्म स्वभाव पर आश्रित है। जिसके अन्दर सत्यवान धर्मात्मा आदि उत्तम गुण पाये जाते हैं।

न कुलेन न जात्या वा, क्रियाभिर्ब्राह्मणो भवेत्।
चण्डालोऽपि हि वृत्तस्थो ब्राह्मणो यत्र पुंगव॥

अर्थात् ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से कोई ब्राह्मण नहीं बन जाता किन्तु ब्राह्मणोचित कर्मों से ही मनुष्य ब्राह्मण बन सकता है। जो चाण्डाल कुल में उत्पन्न होकर भी सदाचारी तथा धर्मात्मा हो वह ब्राह्मण ही है। इस प्रकार वैदिक धर्म अछूतपन की जड़ पर ही कुठाराघात करता या कुल्हाड़ा चलाता है। मतङ्ग ऋषि चाण्डाल कुल में उत्पन्न होकर भी महर्षि कहलाये। पराशर चाण्डाली पुत्र होकर भी सर्वमान्य ऋषि पदवी को प्राप्त हुए (श्वपाकस्तु पराशरः) वेद व्यास मल्लाह की लड़की सत्यवती के पुत्र होकर भी लोक मान्य महर्षि बने। ऐसे ही वसिष्ठ मन्दपाल आदि के सैकड़ों उदाहरण वर्ण परिवर्तन के पुराने इतिहास से महाभारत पुराणादि के अनुसार दिये जा सकते हैं। भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पर्व में से एक घटना का उल्लेख करना यहाँ अनुचित न होगा जिसमें बताया गया है कि कण्व काश्यपादि मुनि सरस्वती की आज्ञा से मिश्र देश (Egypt) में गये वहाँ आकर उन्होंने १० हज़ार म्लेच्छों को शुद्ध किया और उनमें से कुछ को शूद्र, वैश्य और क्षत्रिय वर्ण, गुण, कर्मानुसार देकर १ हज़ार को ब्राह्मण बनाया। उनके बारे में वहाँ लिखा है।

मिश्रदेशोद्भवा म्लेच्छाः काश्यपेनैव शासिताः।
संस्कृताः शूद्रवर्णेन, ब्रह्मवर्णमुपागताः॥
शिखा सूत्रं समाधाय, पठित्वा वेदमुत्तमम्।
यज्ञैश्च पूजयामासुः, देवं देवं शचीपतिम्॥

अर्थात् उन १ हज़ार म्लेच्छों ने ब्राह्मण बन कर चोटी जनेऊ वग़ैरह चिह्नों को धारण किया, उत्तम वेदों को पढ़ा और यज्ञ करने शुरू किये। जब अन्य से म्लेच्छों को भी हमारे पूर्वज ब्राह्मण तक बनाने को तय्यार थे तो अपने ही भाइयों को उच्च से उच्च ब्राह्मण बनाने और मानने में आक्षेप ही क्या हो सकता है ?

वैदिक धर्म की विशेषतायें

समय संकोच के कारण वैदिक धर्म की सब शिक्षाओं पर मैं इस समय प्रकाश नहीं डाल सकता। उसकी विशेषताओं को इस प्रकार संक्षेप से निर्देश किया जा सकता है।

(१) वैदिक धर्म देवी देवताओं की नहीं बल्कि एक ही सर्व शक्तिमान् सर्वज्ञ सर्वव्यापक निराकार निर्विकार परमात्मा की शुद्ध हृदय द्वारा मानस पूजा का उपदेश देता है जैसा कि "य एक इत् तमुष्टुहि।" "एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्य" इत्यादि सैकड़ों मन्त्रों से सिद्ध किया जा सकता है। "एकं सद्विप्राबहुधा वदन्त्यग्निं यमंमातरिश्वानमाहु" (ऋग्वेद १।१६४। ४७) यो देवानां नामधा एक एव इत्यादि मन्त्रों में साफ़ बताया गया है कि इन्द्र, मित्र, वरुण अग्नि, यम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शंकर आदि उस एक ही परमेश्वर के अनेक गुण सूचक नाम हैं पृथक् देवी देवताओं के नहीं। स्लीगल्, चार्ल्सकोलमैन, जार्म्सजर्मा कोलम्रुक, थोरियो, अर्नस्टवुड्, प्रो० मैक्समूलर आदि पाश्चात्य अनेक विद्वानों ने भी इस वैदिक एकेश्वरवाद (Vedic Monotheism) को स्वीकार किया है। वैदिक धर्म मूर्तिपूजा अथवा ईश्वर के स्थान में मनुष्य पूजा का किसी रूप में समर्थन नहीं करता।

(२) वैदिक धर्म भोग और त्याग (Enjoyment and renunciation) श्रद्धा और तर्क (Faith and Reason) ज्ञान और कर्म आदि में समता वा Harmony को स्थापित करके मध्य-मार्ग (Middle Path) का उपदेश देता है। वह संसार को मिथ्या वा झूठा मानकर त्याग करने का उपदेश नहीं देता बल्कि "तेन त्यक्तेन भुंजीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम्" (यजु० ४०।१) के अनुसार त्याग-भाव पूर्वक जगत् की वस्तुओं के ठीक उपभोग करने का आदेश देता है। यही क्रियात्मक आदर्श शिक्षा है। वैदिक धर्म अन्ध विश्वास वा Blind belief or Superstition का घोर विरोधी है। वह मेधा अर्थात् विचार शक्ति को सदा काम में लाने और उसकी वृद्धि के लिये प्रयत्न करने का उपदेश।

"मेधा सायं मेधा प्रातर्मेधा मध्यन्दिनं परि"

आदि मन्त्रों द्वारा देता है। वर्तमान हिन्दूमत में जितनी बातें वा विश्वास बुद्धि विरुद्ध आगई हैं वे अवैदिक हैं और इसलिये आर्य्य समाज उनको कभी स्वीकार नहीं करता जैसे मृत पितरों को तृप्त करने के उद्देश्य से ब्राह्मणों को श्राद्ध खिलाना, गङ्गा यमुनादि नदियों में स्नान करने वा तीर्थयात्रा से पाप निवृत्ति, भूत प्रेत पूजा, पशुबलि आदि।

(३) वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक (Scientific) और बुद्धि संगत (Rational) धर्म है। इसकी कोई शिक्षा विज्ञान और तर्क के विरुद्ध नहीं। वस्तुतः वेद में न केवल आत्मिक (Spiritual) विषयों का बल्कि पृथिवी का गोल होना, सूर्य के चारों ओर उसका घूमना, चन्द्र का सूर्य के द्वारा प्रकाशित होना, विमान विद्या आदि का स्पष्ट निर्देश किया गया है। वैदिक धर्म की सृष्टि की उत्पत्ति विषयक

कल्पना इतनी अधिक वैज्ञानिक है कि प्रसिद्ध फ्रान्सीसी विद्वान् मि० जैकोलियट ने "Bible in India" में बड़े आश्चर्य के साथ लिखा है।

"Astonishing fact! The Hindu revelations (Veda) is of all revelations the only one, whose ideas are in perfect harmony with modern Science, as it proclaims the slow and gradual formation of the world."

इस विषय में इतना लिख देना आवश्यक है कि वैदिकधर्म अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं मानता और यही आजकल का सर्व-सम्मत वैज्ञानिक सिद्धान्त है।

मि० ब्राउन (W. D. Brown) ने Superiority of the Vedic Religion में इस विषय में ठीक लिखा है "It (Vedic Religion) recognises but one God. It is thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy."

अर्थात् वैदिक धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जहाँ धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान और तत्त्वज्ञान (Philosophy) पर आश्रित हैं।

(४) अन्य धर्मों की सब उत्तम शिक्षाएँ वैदिकधर्म में पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ ईसाइयत की सार्वभौम भ्रातृत्व Fatherhood of God & Brotherhood of man वेदों में स्पष्टतया पाई जाती है जैसे कि पहले बताया जा चुका है। बौद्ध धर्म की अहिंसा और पवित्रादि विषयक उच्च नैतिक (Ethical) शिक्षाओं का मूल वैदिकधर्म ही है क्योंकि बुद्ध भगवान् ने उस समय के समाज में अज्ञान से प्रचलित जाति भेद, पशुहिंसा आदि के विरुद्ध आवाज़ उठाकर शुद्ध प्राचीन धर्म का उद्धार किया, जैसे कि ब्राह्मण धार्मिक सूत्र, धम्म पद आदि के पढ़ने से साफ़ ज्ञात होता है जहाँ उन्होंने बताया है कि प्राचीन ब्राह्मण पशुयज्ञ न करते थे। इस्लाम की समानता, एकेश्वर पूजा भ्रातृत्व आदि की शिक्षाएँ भी वैदिकधर्म में पाई जाती हैं यह दिखाया जा चुका है सिक्खधर्म के भी उस समय हिन्दू-समाज में प्रचलित बुराइयों और अन्धविश्वासों का विरोध करके शुद्ध रूप में आर्यधर्म के कई तत्त्वों के ही प्रचार का यत्न किया किस प्रकार वस्तुतः वैदिकधर्म से ही अन्य सब धर्मों की उत्पत्ति क्रमशः हुई यह Fountain-head of Religion नामक पुस्तक में पं० गङ्गाप्रसाद जी M. A. M. R. A. S. Chief judge टिहरी स्टेट ने बहुत अच्छी तरह सिद्ध किया है जिसे प्रत्येक सत्यप्रेमी को अवश्य अवश्य पढ़ना चाहिए।

ऋषि दयानन्द ने किसी नवीन मत की स्थापना न करते हुए इसी वैदिकधर्म का विशुद्ध रूप में आर्य-समाज द्वारा प्रचार किया और मूर्तिपूजा, बाल-विवाह, स्त्रियों के प्रति घृणा, जातपात, अछूतपन आदि सब बुरे विश्वासों और रीति-रिवाजों को हटाया। आर्य-समाज मनुष्यमात्र को इस पवित्र वैदिकधर्म की दीक्षा ग्रहण करके लाभ उठाने का निमन्त्रण देता है। वह मनुष्यों में जन्म व देश कृत किसी कल्पित भेद या ऊँच-नीच

शारदा एक्ट का संशोधन

श्री दीवान् हरविलासजी शारदा ने जो शारदा ऐक्टके निर्माता हैं अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में शारदा ऐक्ट के संशोधन के सम्बन्ध में एक लेख लिखा है। उस लेख में उन्होंने स्पष्ट किया है कि इस कानून का प्रभावशाली होना इसके संशोधन पर निर्भर नहीं है वरन् सरकार के इसके दृढ़ता पूर्वक प्रचलित करने पर है। लेख का सार इस प्रकार है —

देश की एक अत्यन्त व्यापक और भयावह महान् बुराईसे लोहा लेनेके सर्व प्रथम यत्नके रूप में सन् १९२९ का 'बाल विवाह निरोधक' ऐक्ट इस प्रकारका बनाया गया था जिससे भय या असन्तोष का कारण दिये बग़ैर लोगों को विषय की गम्भीरता से परिचित करा दिया जाय।

इस ऐक्टने बुराई पर कोई प्रभाव नहीं डाला है इसका कारण यह नहीं है कि इसकी धाराएं निकम्मी हैं वरन् इसका कारण वह भाव है जिससे इस पर अमल किया गया है और वह वह भाव नहीं है जिससे यह ऐक्ट बनाया गया था। न वह वह भाव है जिसने सरकार को इस ऐक्ट का समर्थन करने के लिए प्रेरित किया था और न वह भाव है जिससे लैजिस्लेटिव असेम्बली को इस देश में इसके प्रचारित किये जानेकी आशा थी।

एक बार सरकार ने और लैजिस्लेटिव असेम्बली ने स्वीकार किया था कि देश मे एक बड़ी और विनाशक बुराई का अस्तित्व है। सरकार ने इसके निवारण का निर्णय किया और इस उद्देश्य की पूर्त्यर्थ एक कानून बनाया। प्रबन्ध विभाग का कर्त्तव्य हो गया था कि वे हृदय से विधान विभाग का साथ दें और उसी तरीके से इस ऐक्ट को लागू करें जिसमें चोरी, डकैती और क़त्ल के कानून को वे लागू करते हैं।

जब लैजिस्लेटिव असेम्बली में इस बिल पर बहस हो रही थी तब समस्त देश का ध्यान असेम्बली-भवन पर केन्द्रित था और असेम्बली के तमाम दलों ने बल-पूर्वक और सचाई के साथ अपने विचारों को प्रकट किया था और उन्होंने उस गहरी दिलचस्पी को स्पष्ट कर दिया था जो बिल ने पैदा की थी। बहस ने यह सिद्ध कर दिया था कि एक बार लैजिस्लेटिव असेम्बली सार्वज-

---

के भाव को स्वीकार न करते हुए समानता का पूर्णतया समर्थक है। वह किसी अन्धविश्वास का समर्थन नहीं करता और सब को अपनी बुद्धि को काम में लाकर सत्यनिर्णय करने की शिक्षा देता है। ऐसे सार्वभौम वैदिकधर्म की शरण में आकर सब भाई बहिन अपने जीवनों को आनन्द रस और शान्ति सुख से परिपूर्ण करें यही आर्यसमाज की एकमात्र इच्छा और प्रेमपूर्ण निमन्त्रण है।

निक शासन के खण्डन और उसकी आलोचना के रूखे काम को एक ओर रखकर रचनात्मक करने योग्य और आशा पूर्ण एक उपाय का निर्धारण कर सकती है जो उन भयंकर कष्टों में से जिनसे हमारा महिला-समाज पीड़ित है एक कष्ट से उन्हें मुक्ति और आराम दिला सकता है।

सरकार ने उस स्मरणीय बहस में अपना पूरा पूरा योग देकर असेम्बली के अग्रणी तथा होम मेम्बर के द्वारा घोषणा की थी कि सरकार देश की जीवन शक्ति को चूसने वाली महान बुराईको अनुभव करती है और यह भी कि उसके निवारण के लिये वह कटिबद्ध है।

क्या कानून प्रचारित करने वाले मजिस्ट्रेटों के 'रवैए में इस महान बुराई के प्रति सरकार का रवैया जरा भी प्रतिबिम्बित हुआ है? जबतक इस क़ानून के प्रचारित करने वाला प्रबन्ध-विभाग क़ानून के प्रचलन में अपने गम्भीर दायित्व को अनुभव नहीं करता है और इस अमानुषी प्रथा के दमन और देश के भाल पर लगे हुये कलक को धोने के लिए विधान-विभाग ने उसके उपर जो जिम्मेवारी रक्खी है उसे पूरा करने के लिये वह तय्यार नहीं होता है तब तक कानून को मजबूत बना देना व्यर्थ हो देख पड़ता है। कुछ अधिकारी शारदा ऐक्ट को एक जरूरी बुराई समझते हैं और कुछ उसे अनावश्यक समझते हैं।

अधिकारियों के इस रवैए का परिचय पंजाब गवर्नर की कार्यवाहि से हुआ था जब उन्होंने उस प्रान्त के सबसे पहले मुक़दमे में एक मजिस्ट्रेट द्वारा दी हुई सज़ा को तार द्वारा रद्द किया था। उसका न कोई अपील हुआ था और न सुनवाई।

हर तरफ से यह आवाज आ रही है कि ऐक्ट मर चुका है। जो ऐक्ट अपराध के लिए सजाएँ नियत करता है वह क्योंकर मुर्दा हो सकता है। इस के लिए जिम्मेवार कौन है? फौजदारी का क़ानून केवल तब ही मुर्दा हो सकता है यदि सरकार इसे प्रचलित करने से इन्कार कर दें वा अमल से इसका खण्डन करदे। इसलिये जब तक प्रबन्ध-विभाग लैजिस्लेटिव असेम्बली में होम मेम्बर द्वारा प्रदर्शित रवैए को ध्यान में रखता हुआ क़ानून के प्रचलन का निश्चय नह करता है तब तक इस मे कोई भी सुधार इसे जीवित कानून नहीं बना सकता है।

इसी प्रकार का एक संशोधक बिल आज कल असेम्बली के सामने है जिसका उद्देश्य ऐक्ट को अधिक प्रभावशाली बनाना है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो ३ साधन बिल में रक्खे गये हैं उनमें से एक अदालतों को स्वयं इस ऐक्ट के अनुसार कार्य्यवाहि करने की आज्ञा प्रदान करना है।

यह प्रसिद्ध बात है कि ब्रिटिश भारत के निवासी कभी २ बच्चों का विवाह करने और क़ानून भंग के फलों से बचने की इच्छा से ऐसी भारतीय रियासतों में चले जाते हैं जहां बाल-विवाह विरोधक क़ानून नहीं होता है और वहां शादी करके ब्रिटिश भारतको लौट आते हैं। समस्त प्रान्तों में प्राय सर्वत्र ऐसा होता रहता है। क़ानून के इस बचाव को रोकने के लिए संशोधक बिल में एक इस आशय की धारा होनी चाहिए जो इस

विविध पत्र पत्रिकाएँ

आर्य समाज के लिये एक कार्य

श्री० म० कृष्णजी 'प्रकाश' में 'आर्य्य समाज के लिये एक काम' शीर्षक में 'पूना पैक्ट' और 'साम्प्रदायिक निर्णय' में अछूतों की स्थिति पर निम्न प्रकार प्रकाश डालते हैं —

"मैं जिस काम की तरफ़ आर्य्य समाज का ध्यान दिलाना चाहता हूँ वह तुलनात्मक दृष्टि से छोटा है यद्यपि इसका सम्बन्ध भी अछूतोद्धार से है। भारतवर्ष में जो नया शासन विधान प्रचलित होने वाला है उसके अनुसार पंजाब के अछूतों को ८ सीटें मिलेंगी। पंजाब के अछूत स्वयं अपने ८ प्रतिनिधि असेम्बली में भेज सकेंगे। इन्हें पूना पैक्ट के अनुसार ये सीटें मिलेंगीं। इनका सम्मिलित निर्वाचन भी होगा और पृथक भी। पृथक् इन अर्थों में कि केवल वे लोग ही असेम्बली में आ सकेंगे जिनका नाम अछूत जातियों में दर्ज है। यह क़दम अछूतों को हिन्दू धर्म में रखने के लिये उठाया गया था। यह आर्य्य जाति के लिए सौभाग्य का कारण होगा या दुर्भाग्य का, इसका उत्तर समय देगा। एक दृष्टि से यह सौभाग्य का कारण सिद्ध हुआ है और एक दृष्टि से दुर्भाग्य का। आर्य्य समाज का यह यत्न था कि अछूतों को अपने समाज में हज़म कर लिया जाय उनमें और दूसरे हिन्दुओं में कोई भेद न रहे। इसलिये उसने जब उन्हें अपने अन्दर जज़्ब किया तो उन्हें यह सिखाया कि आज से तुम अपने तईं अछूत कहना छोड़ दो और यदि तुमसे कोई तुम्हारी जाति पूछे तो कह दो कि तुम आर्य्य हो। फलत उन्होंने अपने को आर्य्य कहना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि मर्दमशुमारी में भी उन्होंने आर्य्य लिखाया। मुसीबत यह है कि नये शासन विधान के आधीन वे ही अछूत कौंसिलों में आ सकते हैं और वोट दे सकते हैं जो अपने को अछूत मानें। गोया नए विधान की बदौलत हिन्दुओं में अछूत और ग़ैर अछूत का भेद स्थिर हो गया है। साम्प्रदायिक फ़ैसले के प्रकाशित होने पर महात्मा गांधी ने यदि अपनी जान की बाज़ी लगाई थी तो इसलिये कि अछूत हिन्दुओं से पृथक न होने पावें इस समझौते के अनुसार अछूतों

प्रकार के विवाहों को ऐक्ट के अधीन दण्डनीय ठहराए। ब्रिटिश भारत के निवासी जो भारतीय रियासतों में जाते और बच्चों की शादी करके ब्रिटिश भारत को लौट आते हैं वे इस ऐक्ट की धारा ८४ के अधीन दण्डनीय अपराध के अपराधी समझे जाने चाहिएँ और ब्रिटिश भारत में वापस आने के बाद १ साल के भीतर २ उन पर मुक़द्दमा चलाया जाना चाहिए।

क्या हम आशा करें कि सरकार अपने कर्तव्य के प्रति सजग होगी और इस भयंकर बुराई का अन्त करने और निर्दोष बालिकाओं को उस अत्याचार से बचाने के लिए जो कुछ का अन्त कर देता है और कुछ की जिन्दगियां बर्बाद कर देता है, यत्नशील होगी।

——

एक हाल के अधिवेशन का सभापति चुना था।"

* *

महाभारत में मिश्रण

श्री लक्ष्मी प्रसाद पाण्डेय 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में 'महाभारत के एडूक' शीर्षक लेख में अध्यापक धर्मानन्द कोसंबी जी की अपनी मराठी पुस्तक 'हिंदी संस्कृति आणि अहिंसा' में की हुई इस स्थापना पर प्रकाश डालते हैं कि महाभारत में १३ वीं शताब्दी तक बराबर मिश्रण होता रहा है। वह स्थापना सविस्तर इस प्रकार है—

"अलबेरूनी ने महाभारत का उल्लेख किया है और उसके १८ पर्वों की सूची भी दी है। उसने १९ वें पर्व 'हरिवंश' का भी समावेश कर दिया है। अतः ऐसा जान पड़ता है कि आज कल महाभारत जिस रूप में वर्तमान है करीब २ उसी रूप में वह अलबेरूनी के समय में मौजूद था। किन्तु महाभारत के समय को निश्चित कर देना एक प्रकार से असम्भव है। उसमें भी मूल भाग और क्षेपक का स्पष्ट रूप से पार्थक्य बतला देना तो और भी कठिन काम है। फिर भी यह तो कहा जा सकता है कि भारत काव्य को महाभारत का स्वरूप गुप्त साम्राज्य के समय प्राप्त हुआ है। इसका यह कारण है कि महाभारत में अनेकों स्थलों पर हूणों का निर्देश मिलता है। स्कंदगुप्त को हूणों का मुकाबला करना पड़ा था। उसके भिटारी के शिलास्तंभ लेख से प्रकट होता है कि सन् ४५५ ईस्वी के लगभग उसने हूणों का पराभव किया था इसके पश्चात् सन् ५२८ ईस्वी तक भारत पर हूणों के हमले होते रहे। इसी समय अथवा इसके आगे पीछे भारत को आजकल का स्वरूप प्राप्त होने लगा होगा। फिर भी ईसा की तेरहवीं शताब्दी तक उसमें एकसा मिश्रण होता गया होगा।

वनपर्व का पूरा १९० वां अध्याय अथवा उसका बहुत सा भाग मुहम्मद गोरी के आक्रमण के पश्चात् लिखा गया जान पड़ता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह समस्त अध्याय बौद्धों को लक्ष्य करके लिखा गया है। यह भ्रांत धारणा होने का मुख्य कारण 'एडूकाच्पूजयिष्यन्ति' वाक्य है। पाश्चात्य विद्वानों ने 'एडूक' शब्द का अर्थ बौद्धों के स्तूप किया है और उन्हीं के मार्ग पर हमारे यहाँ के पंडित भी चले हैं। इसी से यह गड़बड़ झाला हो गया है।

न तो बौद्ध वाङ्मय में ही 'एडूक' शब्द का अर्थ स्तूप मिलता है और न वैदिक साहित्य में ही। एडूक दीवार को कहते हैं—

तो फिर उक्त १९० वें अध्याय में जिन एडूकों का वर्णन है वे हैं क्या? उस अध्याय की छानबीन भली-भाँति करने से उत्तर देना कठिन नहीं है।

"म्लेच्छीभूतं जगत्सर्वं निष्क्रियं यज्ञ वर्जितम्।
भविष्यति निरानन्दं मनुत्सवं मथो तथा ॥२९।"

सारा संसार म्लेच्छमय हो जायगा। उसमें न तो यज्ञ भाग आदि क्रियाएँ होंगी, न आनन्द मङ्गल होगा और न उत्सव ही होंगे। हिंसा प्रधान यज्ञ याग आदि भले ही बौद्धों के युग में नष्ट हो गए होंगे फिर भी वे अहिंसा मूलक अग्निहोत्र इत्यादि के रूप में प्रचलित थे ही और आनन्दमय उत्सवों का प्रारम्भ तो पहले पहल अशोक राजा ने ही किया था। बौद्धों के विहारों में गाने-बजाने की रीति अब तक प्रचलित है। ऐसे ही एक बौद्ध उत्सव के कारण सन् ११९५ में सीलोन में

को पृथक् निर्वाचन का अधिकार दिया गया किन्तु बाद महात्मा जी ने अनशन करके इसे समाप्त कर दिया। पूना पैक्ट के अनुसार अछूतों और दूसरे हिन्दुओं का निर्वाचन भी सम्मिलित हो गया परन्तु अछूत और गैर अछूत का भेद वहां स्थिर रहा। अब निर्वाचन में जो अधिकार अछूतों को मिले हैं वे उन्हें छोड़ने को तय्यार नहीं हो सकते। वे यह तो स्वीकार करेंगे कि उनकी अवस्था अछूतों में ही हो और वे अछूत कहलाएँ परन्तु इसके लिए तय्यार नहीं हो सकते कि अपने को हिन्दू कहलाकर उन वोटों से हाथ धो बैठें। यद्यपि इस दृष्टि से कि अछूतपन स्थिर हो गया है दुर्भाग्य का कारण है। सौभाग्य का कारण इस दृष्टि से है कि चूंकि अछूतपन केवल हिन्दू धर्म में ही स्वीकार किया गया है इसलिये कौंसिलों में अपने प्रतिनिधि भेजने का जो अधिकार अछूतों को दिया गया है वह उस समय तक कायम रह सकता है जब तक वे हिन्दू हैं यदि वे किसी दूसरे मत में चले जावें तो उनका पृथक् अस्तित्व समाप्त हो जाता है।"

आगे इस खतरे पर कि कौन्सिलों में अछूतों के अयोग्य प्रतिनिधि न पहुँच जायें और इस प्रकार वे हिन्दुओं की शक्ति के बजाय कमजोरी का कारण सिद्ध न हों, प्रकाश डालते हुए वे अछूतों के योग्य प्रतिनिधियों के भिजवाये जाने की ओर संकेत करते हैं और आर्य्य-समाज को इस काम के करने की निम्न प्रकार प्रेरणा करते हैं—

"आर्य्य समाज यह काम अच्छी भांति पूरा कर सकता है इसका कारण यह है कि इसने सबसे पहले अछूतोद्धार का काम शुरू किया। यदि आर्य्य समाजी इस आगामी निर्वाचन में दिलचस्पी लें और उन अछूतों को कौन्सिलों में भिजवाएँ जो आर्य्य या हिन्दू हैं, जिनके दिल में आर्य्य जाति का दर्द है तो वे आर्य्य जाति की एक महान् सेवा करेंगे। यह काम भी अपने में कम ज़रूरी नहीं है। यदि आर्य्य पुरुष अछूतोद्धार के विस्तृत काम में भाग लेने की शक्ति नहीं रखते हैं तो न सही परन्तु यह काम जो मैंने उनके सामने पेश किया है कम ज़रूरी न होते हुए भी कम परिश्रम चाहता है। इस काम में सफलता भी हो सकती है और अछूतों के प्रतिनिधि कौन्सिलों में भिजवाए जा सकते हैं बशर्ते कोई व्यक्ति इस काम में दिलचस्पी दिखाए।"

❀ ❀

हिन्दू कौन है ?

उपर्युक्त शीर्षक से 'माडर्न रिव्यू' लिखता है —

"बहुत साल हुए एक प्रश्नावली 'हिन्दू' शब्द की परिभाषा निश्चित करने के लिए जारी हुई थी। हिन्दुओं से बहुत से उत्तर प्राप्त हुए थे और यदि हम भूल नहीं करते हैं तो वे एक पुस्तक के रूप में छपे भी थे। हमें मालूम नहीं है कि वह पुस्तक अब प्राप्य है या नहीं, यदि है तो कहाँ से।

जहाँतक जन-संख्या का सम्बन्ध है गवर्नमेन्ट आफ् इण्डिया ब्रह्म-समाजियों और आर्य्य-समाजियों को हिन्दुओं में शामिल करने के पक्ष में है। हिन्दू महा-सभा की 'हिन्दू' की परिभाषा वह पुरुष या स्त्री है जो भारत में प्रादुर्भूत किसी धर्म का अनुयायी हो। अतः इस परिभाषा के अनुसार जैन, बौद्ध, सिक्ख, ब्रह्म समाजी, आर्य्य-समाजी इत्यादि सब हिन्दू हैं और हिन्दू महासभाओं में भी [illegible], [illegible]

बौद्धों और मुसलमानों के बीच प्रबलतम दंगा हो गया था। इस दशा में यह कहना कि बौद्धों के ज़माने में सामञ्जस्य उत्सव बन्द हो जायेंगे, बिल्कुल गलत है।

* *

अछूत समस्या

महात्मा बुद्ध, संत कबीर, इत्यादि महात्माओं ने अस्पृश्यता के निवारण के लिये यत्न किया परन्तु वे इसके समूलोच्छेद मे वा अधिकांश रूप मे हटाने मे समर्थ नहीं हुए। यह एक सचाई है। वे समर्थ क्यों नहीं हुए इस पर "आर्य्य" उत्तम प्रकाश डालता हुआ लिखता है:—

"इस अस्पृश्यता का समूलोन्मूलन न होने में संगठित प्रयास का अभाव भी कारण है परन्तु मुख्य कारण यह है कि हमने हिन्दू जाति की नस नहीं पहचानी। जितने भी सुधारक आए उन्होंने या तो वेद आदि धर्म्म शास्त्रों का विरोध किया या मानवता तथा दयालुता के बल पर अछूतों के साथ समानता का व्यवहार करने के लिए सवर्ण हिन्दुओं से अपील की।

बुद्ध ने अपने आत्मिक प्रभाव से हिन्दुस्तान से प्राणीमात्र पर होने वाले अत्याचारों के समूलोच्छेद का भरसक प्रयत्न किया और वे अपने उद्देश्य में सफल भी हुए। बौद्ध धर्म्म का प्रचार तो बहुत सराहनीय था और पत्थर से भी कठोर दिलको द्रवित करने वाला था परन्तु इसमें कमी यह थी कि बौद्ध धर्म्म ने वेदादि धर्म्म शास्त्रोंके प्रति उदासीनता का भाव ही नहीं रक्खा अपितु उसके विरोध में एक नया दर्शन खड़ा कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दू जाति जिसकी नस २ में वेदादि धर्म्म शास्त्र घुसे हुए थे वेदों के विरोध को न पचा सकी। दूसरे कबीर आदि कई संत महात्मा आए। उन्होंने मानवता तथा दयालुता के बल पर मनुष्यमात्र में मानवी समानता के लिये अपील की तो वे भी कामयाब न हो सके।

चूँकि जहाँ एक ओर हिन्दू यह समझ रहे हों कि हमारे धर्म्म शास्त्र अछूतपन की इजाज़त देते हैं और दूसरी तरफ़ केवल मानवता और दयालुता के बल पर अछूतपन को दूर करने के लिए प्रेरणा की जाय तो वह सूक्ष्म रूप में धर्म्म शास्त्र का विरोध ही है। वास्तव में हिन्दू धर्म्म शास्त्रों से मानवता का विरोध है कि नहीं यह बात जुदा है। परन्तु उस समय सब ही हिन्दू यह समझते थे कि अछूतपन को दूर करने के लिये कहना स्पष्ट धर्म्मशास्त्र का विरोध है, चाहे इस प्रकार के सन्त महात्माओं ने वेदों का विरोध न किया हो और उनको प्रामाणिक भी मानते रहे हों परन्तु उनकी अस्पृश्यता निवारण की शिक्षा का वेदों से समर्थन नहीं होता था अतः हिन्दू जाति ने उस शिक्षा को अपनाया नहीं। इसलिए कबीर इत्यादि सन्त महात्माओं के प्रयत्नों ने पन्थ या सम्प्रदाय का ही रूप धारण किया, वे सर्वमान्य सिद्धान्त न बन सके। इस प्रकार इन सन्त महात्माओं का अछूत समस्या को हल करने का यत्न सफलीभूत न हो सका।

आगे इस समस्या के हल के वास्तविक तरीक़े पर प्रकाश डालता हुआ सहयोगी लिखता है—

"अब विचारणीय यह है कि ऐसा कौनसा तरीक़ा हो सकता है कि जिससे यह समस्या सुलझ सके। वह तरीक़ा महर्षि दयानन्द का है। उन्होंने न तो धर्म शास्त्रों का विरोध किया और न केवल मानवता के

बल पर अपील की अपितु उन्होंने वेदादि धर्म्म शास्त्रों को प्रामाणिक माना और इन्हीं के बल पर यह सिंह गर्जना की कि वेदो मे जिस अछूतपन को तुम मानते हो वह कहीं भी नहीं है। यह गर्जना कोई मिथ्या गर्जना न थी परन्तु वेदादि शास्त्रों के बल पर की गई थी जिसका नतीजा यह हुआ कि आज श्री मालवीय जी भी जो सनातनियों के एक मान्य नेता हैं डके की चोट कहने लगे हैं कि वेदों मे अस्पृश्यता की शिक्षा नहीं है। केवल अस्पृश्यता ही नहीं अपितु जितने भी अन्ध विश्वास हैं उन सब पर स्वामी जी ने भी चोट लगाई थी।

आज जितने भी सुधार आन्दोलन हिन्दुस्तान में हो रहे हैं चाहे वे राजनैतिक हों, सामाजिक हो या धार्मिक हों उनका आदि स्रोत दयानन्द ही है। अछूत समस्या के आधारभूत जन्म मूलक जात-पाँत को उन्होंने वेद-विरुद्ध घोषित किया और वेदों से यह सिद्ध कर दिया कि वर्णाश्रम व्यवस्था गुण-कर्मानुसार माननी चाहिए, जन्म से नहीं। इसलिए महर्षि प्रतिपादित तरीका सर्व श्रेष्ठ है और यह तभी सुचारु रूप से सफल हो सकता है जब प्रत्येक हिन्दू को उसके अपनें वास्तविक वेदों के धर्म्म से परिचित करा दिया जाय और उन्हें यह विश्वास हो जाय कि अस्पृश्यता हमारे धर्म्म का अङ्ग नहीं है अन्य सब यत्न जो इस समस्या को हल करने के लिये किए जायँ वे इसके एक सहकारी अङ्ग तो हो सकते हैं परन्तु केवल मात्र उन्हीं अङ्गों से पूर्ण सफलता हासिल नहीं हो सकती।"

* *

रोना बन्द करो

श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय 'रोना बन्द करो' शीर्षक में, आर्य्य नर नारियों को प्रेरणा करते हैं कि वे आर्य्य समाज की शिथिलता का रोना बन्द करके अपने को काम में लगायें, इसी में आर्य्य समाज का हित है तथा उनके लिये निम्न ८ कामों का निर्देश करते हैं—

(१) वैदिक ग्रन्थों का पढ़ना
(२) " " पढ़ाना
(३) " " लिखना
(४) व्याख्यान देना
(५) भजन गाना और दूसरों को भजन सिखाना
(६) आर्य्य-संस्थाओं में भाग देना
(७) अछूतों से अच्छा बर्ताव करके उनको अपनी ओर खींचना।
(८) दूसरों के उन कामों में सहायता देना जो आर्य्य-समाज के अनुकूल या अवैदिक रूढ़ियों के विरुद्ध काम करते हैं।

यह आठों कार्य्य छोटे बड़े, विद्वान्, अविद्वान् सभी कर सकते हैं यदि वे अपनी शक्ति और रुचि के अनुसार उचित क्षेत्र तलाश कर लें। कोई पुरुष चाहे कितना ही योग्य क्यों न हो उचित क्षेत्र के बाहर सफल नहीं हो सकता और कोई अयोग्य पुरुष ऐसा नहीं है जो क्षेत्र मिलने पर कुछ न कुछ न कर सके। हम कमज़ोर नहीं हैं। हमारे मे दोष यह है कि हम अपने को सभी क्षेत्रों के योग्य समझ लेते हैं। मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो क़ानून नहीं जानते परन्तु क़ानूनी विषयों पर राय देते हैं और किसी वकील की नहीं सुनते। यही अन्य विभागों का हाल है। यदि यह रोग कम हो जाय तो

आर्य्य-समाज फिर हरा-भरा हो सकता है।

❀ ❀

महात्मा गांधी की स्थिति

मौडर्नरिव्यु सम्पादकीय स्तम्भों में उपर्युक्त शीर्षक में लिखता है —

और अधिकार के ज़िम्मेवारी और और ज़िम्मेवारीके अधिकार वांछनीय नहीं। उन्हें जिन्हें अधिकार प्राप्त हैं ज़िम्मेवारी भी लेनी चाहिये और इसी प्रकार उसे या उन्हें जो ज़िम्मेवार ठहराये जानेवाले हों अधिकार प्राप्त होना चाहिये। इस दृष्टि से कांग्रेस में महात्मा गांधी की स्थिति बड़ी भ्रामक है। कहने के लिये वे राजनीति से पृथक् हो गये हैं और इसलिये वे कांग्रेस के कामों के लिये ज़िम्मेवार नहीं हैं। परन्तु क्रियात्मक रूप से, चूँकि तमाम आवश्यक मामलों में और आवश्यक अवसरों पर उनकी सलाह ली जाती है और चूँकि प्रबल दल प्राय उनकी सलाह के अनुसार काम करता है इसलिये उन्हें अब भी शायद किसी दूसरे कांग्रेसी नेता की अपेक्षा ज्यादा अधिकार प्राप्त हैं, यद्यपि कांग्रेस सोशलिस्ट और कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टियों के उदय से पूर्व जितने शक्तिशाली थे अब उतने नहीं हैं उन दिनों वे कांग्रेस के क्षेत्र में सर्वे सर्वा थे।

चूँकि नये युग के कांग्रेस-वादियों में महात्मा-गांधी सबसे ज्यादा अनुभवी और चतुर हैं और वास्तव में उस युग के प्रवर्तक और उसकी मनोवृत्ति के निर्माता हैं इसलिये उनकी सलाह लेना बिल्कुल स्वाभाविक और उचित ही है परन्तु क्या उस अवस्था में उन्हें ज़िम्मेवारी भी अपने ऊपर नहीं लेनी चाहिये?

कांग्रेस की राजनीति से दूर उद्धार का जो कार्य इस समय वे कर रहे हैं वह भी बहुत ज़रूरी है। उसके विरुद्ध हमें कुछ नहीं कहना है और न हमारे वर्तमान उद्देश्य के लिये निश्चय करना ज़रूरी है कि उद्धार के काम और कांग्रेस की पौलिटिक्स दोनों में ही उन्हें एक साथ पड़ना चाहिये या नहीं। और चूँकि दोनों प्रकार के कार्य महत्वपूर्ण हैं, इसलिये उत्तता इत्यादि का प्रश्न न उठता ही है, न उठाया जाना चाहिये।

साहित्य-समीक्षा

विशाल भारत का महिला अङ्क

पृष्ठ संख्या २००, छपाई, सफाई उत्तम, आकार प्रकार आकर्षक

इस अंक का विषयों का चुनाव और सामग्री का संकलन उत्तम है। इस में पतिव्रता देवियों के उज्ज्वल चरित्र-चित्रण हैं। स्नेहमयी माताओं के निस्पृह उत्तम-प्रेम, अनुपम त्याग और अनुकरणीय सहनशीलता की मार्मिक गाथाएँ हैं। नारी-समाज की विविध आधुनिक समस्याओं का गहन विवेचन है। गृहस्थोपयोगी व्यावहारिक ज्ञान और आदर्शों एवं मर्य्यादाओं का स्पष्टीकरण है। देश और विदेश के महिला-आन्दोलनों की प्रगतियों का दिग्दर्शन है। कन्या महाविद्यालय जालन्धर, आर्य्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा, कन्या गुरुकुल देहरादून, प्रयाग महिला पीठ, विहार महिला पीठ, मैसूर का भगिनी समाज, गुजराती हिन्दू स्त्री-मण्डल आदि भारतीय शिक्षा तथा समाज सुधार संस्थाओं के विवरण हैं। देश और समाज की जागृति में महिलाओं के योग का विस्तृत परिचय है। श्री चगताई महोदय तथा श्रीमती कमला देवी चौधरी की कहानियां मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं। अंकमें बहुत से चित्र हैं तथा लेखक लेखिकाओं का परिचय भी दिया गया है।

अंक की प्रवृत्ति सात्विक है और प्रायः वही है जिसका आजकल के अधिकांश नारी-साहित्य में प्राय अभाव देख पड़ता है और जिसकी आज कल अत्यन्त आवश्यकता है। इस दृष्टि से यह अंक बहनों और माताओं के हाथों में बिना किसी संकोच के रक्खा जा सकता है। अंक संग्रह करने योग्य है। अंक के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल बधाई का पात्र है।

+

महापुरुषों के दर्शन

लेखक—प्रो० राम स्वरूप कोशल एम० ए० एम० एस० पी० (लण्डन)

प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड, नई सड़क देहली।

मूल्य— १॥)

इस पुस्तक में श्री कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, हजरत ईसा, हजरत जरदश्त, हजरत मुहम्मद साहब, गुरुनानक देव, राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की संक्षिप्त जीवनियां, उनकी शिक्षाओं के सार सहित दी गई हैं। पुस्तक का उद्देश्य देश के बालक-बालिकाओं के हाथ में ऐसा साहित्य रखना है जिसके पाठ से उनके हृदय की धार्मिक संकीर्णता दूर हो, साम्प्रदायिकता से दूर वे धर्म के तत्त्व को समझें और भिन्न भिन्न धर्मों

...मियों के प्रति सहिष्णु और उदार बनें।

+

वेद का राष्ट्र गान

अनुवादक—श्री राजनाथ पाण्डेय

सम्पादक—१ श्री वीरसेन विद्यालंकार

२ श्रीमती सुमित्रा देवी शास्त्रिणी

प्रकाशक—शारदा मन्दिर लि०, देहली

मूल्य— १)

प्रस्तुत पुस्तक अथर्व वेद के पृथ्वी सूक्त का (मूल तथा शब्दानुवाद सहित) हिन्दी पद्यानुवाद है। वेद की हृदय स्पर्शी कविता की स्वाभाविकता और माधुर्य्य को अनुवाद मे बनाये रखना कठिन काम नहीं है तो भी अनुवादक को काफी सफलता हुई है। कविता मे वेद के शब्दों को तोड़ा मरोड़ा नहीं गया है। वे ज्यों के त्यों रख दिये गये है। कविता सरस है। पुस्तक उपादेय है।

+

अवतार वाद मीमांसा

लेखक—श्री पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी

प्रकाशक—आर्य्य साहित्य मन्दिर हस्पताल रोड लाहौर

मूल्य— ।-)

इस पुस्तक मे वेद और स्वय पुराणों के आधार पर यह दिखलाने की सफल चेष्टा की गई है कि 'अवतार-वाद' अवैदिक सिद्धान्त है। पुस्तक बहुत अशुद्ध छपी है।

+

सुन्दर पुस्तक

प्रकाशक—सुन्दर पुस्तकालय वगवानपुरा लाहौर

मूल्य— १।)

सुन्दर पुस्तकालय के सञ्चालकों ने आकर्षक कलापूर्ण व्यवस्थित रूप मे वैदिक साहित्य के प्रकाशन का कार्य्य शुरु कर दिया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उनके पहले प्रकाशन 'सुन्दर पुस्तक' मे आर्य्य संध्या आदि के मन्त्र ऋषि दयानन्द के हिन्दी अनुवाद के साथ हैं। वस्तुतः यह प्रशसनीय और भेंट मे दिये जाने के योग्य चीज है और घरों मे रखने योग्य है। पुस्तक मे भजन भी दिये गये हैं, भजनों का चुनाव भाषा इत्यादि की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं हुआ है।

महिला जगत्— सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती विशारदा

प्रवासी भारतीय स्त्री समाज

(ले०—श्रीमती सरयूदेवी ब्रिटिश गायना)

प्रवासी भारतीय स्त्री समाज दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक तो वे महिलाएं जो हिन्दुस्तान से यहाँ पर आई थीं और दूसरी उनकी सन्तानें अर्थात् जो उपनिवेशों मे उत्पन्न हुई हैं। परन्तु प्राय दोनों की रहन-सहन एक ही तरह की हो गई हैं, यद्यपि विचारों में अब भी अन्तर है।

उपनिवेशों में उत्पन्न हुई भारतीय बालिकाएँ जोरों से विदेशी महिलाओं का अनुकरण कर रही हैं, उनकी माताओं की स्थिति दयनीय है। उनके मन मे एक प्रकार का अन्तर्द्वन्द्व सा मचा रहता है। पहले तो ये बेचारी अपनी पुरानी रूढियों पर चलने का प्रयत्न करती हैं पर जब वे देखती हैं कि उनके प्रिय बालक और बालिकाएँ अपटूडेट पाश्चात्य वेष भूषा मे रंगती जा रही हैं तब वे भी मोह वश लाचार होकर अपने प्राचीन चाल चलन और रहन सहन को छोड़ कर बच्चों के साथ ही नई लहर मे बहने लगती हैं। फिर भी एक बात ध्यान देने और उल्लेख योग्य भी है। वह यह कि आर्य्य संस्कृति की जड़ भारतीयों के जीवन मे इतनी गहराई तक चली गई है कि वह एकाएकी उखड़ नहीं सकती। इसी कारण भारत से आई हुई हमारी माताओं पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग गाढा नहीं चढने पाता। प्राचीन सदाचार की झलक निरन्तर बनी ही रहती है। आर्य्य संस्कृति के स्थायित्व का यह एक प्रबल प्रमाण है परन्तु चिन्ता की बात यह है कि इन माताओं के पीछे आर्य्य संस्कृति की रक्षा किस प्रकार हो सकेगी ? उपनिवेशों मे पैदा हुई बहनों मे शायद ५ फी सदी भी ऐसी न निकलेंगी जो अपनी मातृ भाषा की ज्ञाता हों, और इन पांच फीसदी का ज्ञान भी मामूली बोल चाल से अधिक नहीं है। ये न तो हिन्दी ग्रन्थ पढती हैं और न हिन्दी समाचार पत्र। पढ भी लें तो समझना इनके लिये आसान नहीं है लिखने की बात तो दूर रही। जब ये बहिनें जनताको अपना हिन्दुत्व जताना चाहती हैं तब कुछ घण्टा के लिये यूरोपीय वेश उतार कर भारतीय साड़ी पहन लेती हैं और विदेशी भाषा द्वारा सभा-समितियों मे अपने विचार ज्यों-त्यों करके प्रकट कर लेती हैं। यह भी एक प्रकार का शौक पूरा करना है।

खेद की बात है कि उपनिवेशों मे उत्पन्न हुई भारतीय बालिकाएँ मातृ भाषा के महत्व को नहीं समझतीं। पूर्व्व अफ्रीका जैसे भारत के निकटस्थ

प्रदेशों की बात मैं नहीं कहती। वहां तो भारत के साथ आवागमन बराबर रहता है इस लिये मातृ-भाषा के महत्व को इन प्रदेशों की भारतीय लड़कियां नहीं भूल सकती। मेरा कहना तो ब्रिटिश-गाइना, ट्रीनीडाड और सुरीनाम जैसे दूरस्थ टापुओं के विषय में है। दुर्भाग्य की बात है कि हमारे भारतीय भाइयों ने भी इधर के प्रदेशों का एक प्रकार से बहिष्कार सा कर रक्खा है। वर्षों बाद कोई उपदेशक आ जाय तो आ जाय। परिणाम यह हुआ कि भारतीय महिला समाज भी प्राचीन भारतीय संस्कृति को भूलता जाता है। उदाहरणार्थ इस देशमें ऐसी भारतीय महिलाएँ भी हैं जो कहने को तो अपने आपको हिन्दू वा आर्य्य कहती हैं परन्तु योरोपियन स्त्रियों की तरह पर पुरुषों के साथ नाचने में अपना सौभाग्य समझती हैं। वैभव तथा ऐश्वर्य मे पली हुई अनेक भारतीय बहिने सदा इसी यत्न में रहती हैं कि किस प्रकार हम योरोपियन महिलाओं की नक़ल करके बिल्कुल उन जैसी बन सकें। यदि ये बहनें कुछ हिन्दी बोल भी सकती हैं तो भूल कर भी उसका उपयोग नहीं करती क्योंकि वे समझती हैं कि हिंदी बोलने से उनकी शान मे बट्टा लग जायगा और वे कुली श्रेणी की समझी जायँगी। यदि हिन्दी मे उनसे कोई सवाल पूछ बैठे तो वे मुँह बना कर बड़े अभिमान से उत्तर देती है, "I am sorry, I cannot understand you" (मुझे खेद है कि मैं आपकी बात नहीं समझ सकती)।

हिंदुस्तानीभाषा तथा भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ इन बहिनों पर मैं दोषारोपण नहीं करती। जब कि इनके माता पिता, भाई बहिन, पति इत्यादि ही पाश्चात्य संस्कृति की लहर में बहे जा रहे हैं, जब कि ये संरक्षक लोग ही अपने बालक बालिकाओं से विदेशी भाषा में बात चीत करते हैं, जब इन्हीं के हृदय मे भारतीय संस्कृति के प्रति उपेक्षा के भाव हैं तो फिर इन भोली-भाली बहिनों का क्या अपराध है? इन बहिनों को विदेशियों द्वारा सञ्चालित स्कूलों में विदेशी भाषा में शिक्षा मिलती है और प्रति दिन विदेशी स्त्री पुरुषों से मिलने-जुलने के अवसर भी मिलते हैं, ऐसी परिस्थिति में यदि इन पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव जम कर बैठ जाय तो इस में आश्चर्य ही क्या है। पर अब क्या किया जाय?

मेरा तो विश्वास है कि जब तक मातृभूमि भारत से इस विषय में सहायता नहीं मिलेगी तब तक यहां दूर वाले उपनिवेशों में भारतीय संस्कृति तथा मातृभाषाओं का जीवित रखना असम्भव ही है। जिन बहिनों के हृदय में मातृभूमि तथा मातृ-भाषा के प्रति प्रेम के अंकुर विद्यमान हैं भी उन्हें सींचने वाला कौन है? उनके लिये कौन साधन जुटायेगा। उन्हें कौन उत्साह देगा। जैसा कि मैं ऊपर लिख चुकी हूँ, बड़े घरों की लड़कियों पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग जोरों से चढ़ रहा है। वे तो इस ओर ध्यान देने से रहीं। साधारण परिस्थिति की स्त्रियां यदि कुछ प्रयत्न करती भी हैं तो उनको कहीं से सहायता नहीं मिलती। भारतवर्ष से समाचार-पत्र, मासिक-पत्र और ग्रंथ मंगाने के लिए रुपये कहां से आएँ। यहां हिन्दी का कोई पुस्तकालय भी नहीं जहां से पुस्तक कुछ

सिर्ला के लिए उधार ली जा सके।

मैंने सुना है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यकर्ता प्रवासी भारतीयों मे भी अपनी परीक्षाओं का प्रचार करना चाहते हैं। यद्यपि उनके इस उत्साह की मुझे प्रशसा ही करनी पडेगी तथापि इतना निवेदन मैं उनको सेवा मे अवश्य करूँगी कि वेस्ट इण्डीज यानी पश्चमी द्वीप समूह (ट्रीनीडाड, ब्रिटिश गायना, सुरीनाम) मे हिन्दी भाषा की परीक्षाओं का प्रचार होने मे कुछ समय लगेगा। उनके लिए पहले क्षेत्र तैयार करना पड़ेगा। हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा प्रयाग महिला विद्यापीठ को यदि अपनी परीक्षाओं का वहा प्रचार करना है—भारतीय सस्कृति की रक्षा के लिए यह भी एक अत्युत्तम उपाय है—तो प्रारम्भमे उसे कम से कम पुस्तकों की सहायता देनी पडेगी। हिंदी के पुस्तक प्रकाशक भी यदि इस ओर ध्यान दें तो बहुत कुछ काम हो सकता है। इस प्रसग मे मैं सार्वदेशिक आर्य्यप्रतिनिधि सभा देहली तथा साहित्य सदन, चिरगाव, झांसी के प्रति कृतज्ञता प्रगट कर देना अपना कर्तव्य समझती हूँ। इन दोनों सस्थाओं के सचालकों ने पुस्तकों द्वारा मेरे हिन्दी प्रचार सम्बन्धी कार्य मे बडी सहायता दी है।

हमारे यहा कितने व्यक्ति ऐसे हैं जो ये समझते हों कि भारत की राष्ट्र भाषा तो हिन्दी है ही, विशालभारत (Greater India) या उपनिवेशों की सामान्य भाषा भी हिन्दी ही हो सकती है ? किसी सरकार ने हिन्दी को ही भारतीयों की सामान्य भाषा स्वीकार किया है।

मैंने सुना है कि पहले पश्चमीय द्वीप समूहों के प्रवासी भारतीयों की दशा और भी चिन्तनीय थी, उस समय भाई परमानन्द ने आकर यहा वैदिक धर्म, मातृ भाषा तथा देश-भक्ति के बीज बोये। इसका प्रारम्भिक श्रेय नि सन्देह भाईजी को ही मिलना चाहिये। खेद की बात है, कि भाई जी यहा अधिक दिन तक नहीं ठहर सके। इसके कितने ही वर्ष बाद महता जैमिनी जी पधारे। आपने अपने प्रभावशाली व्याख्यानों द्वारा भाई जी के लगाये हुये पाधों को सींचा। सौभाग्य की बात है कि सार्वदेशिक सभा देहली का ध्यान इस महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर गया है और पण्डित अयोध्याप्रसाद जी तथा प० सत्याचरण ने इन उपनिवेशों की यात्रा करके भारतीय सस्कृति तथा हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न किया है। यदि भारत के उपदेशकों के आने का यह कार्य निरन्तर जारी रहे तो नि सन्देह प्रवासी भारतीय जागृत हो जायेंगे।

अन्त मे एक बात और भी निवेदन करनी है कि भारत वर्ष से कुछ सद्गृहस्थ अपने घर वालों के साथ यहा पर आऐं और कई वर्ष पर्यन्त रहें तो स्थायी काम हो सकता है।

उपदेशकों मे साथ यदि उनकी शिक्षित पत्नियां भी पधारे तो वे अपने जीवन से बहुत कुछ हम सब को सिखा सकती हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि उपदेशकों तथा प्रचारकों के साथ साथ अध्यापकाएं भी यहा आनी चाहिये। हमें मुख्य बात यह न भूल जानी चाहिये कि जब तक प्रवासी बहिनों के हृदयों में मातृ-भूमि तथा

शुद्धि तथा रक्षा-कार्य

सर्व्व साधारण को सूचित किया जा रहा है कि मुसलमान लोग रहस्य मंडलियाँ बनाकर ग्रामों तथा कस्बों में तमाशा करते फिरते हैं और हिन्दुओं के छोटे २ बच्चों को मुसलमान बना रहे हैं। एक १२ वर्ष का ब्राह्मण जाति का लड़का जिसका नाम अयोध्या प्रसाद है ग्राम सिमरिया पो० घु घचाई तहसील पूरनपुर ज़ि० पीलीभीत का रहने वाला है दूसरा किशन नाम का कायस्थ जाति का लड़का भी इसी मंडली में मौजूद था, उन्हें बहेड़ी के आर्य्य-समाजियों ने बड़ी कठिनाई से मुसलमानों के पंजे से बचाया है।

धर्म्मवीरसिंह वैद्य मंत्री, आ० स० बरेली

—गत १०–८–३६ को आ० स० चाँद चौरा गया के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर मुश्ताक अहमद नामक एक नवमुस्लिम की शुद्धि की गई।

चतुर्वेद सहाय मन्त्री

—आ० स० चाँद चौरा ने गुलरियाचक ग्राम के कुसुदवा नाम्नी स्त्री के बायरक्षैस के मोटर ड्राइवर गफूरमियाँ तथा साइमन साहेब द्वारा भगाए जाने पर, केस को अपने हाथ में लिया। पश्चात् लड़की पादरी के बंगले से बरामद की गई और मुकद्दमा एस० डी० ओ० के यहाँ दायर कर दिया गया। ईसाई महाशय अभी फ़रार हैं पर ग़फूरमियाँ ज़मानत पर छूटे हैं।

—३ सितम्बर को आर्य्य-कुमार सभा डलमैक्षा ने एक हिन्दू पासी की लड़की को जिसकी उम्र १५-१६ साल की है एक मुसलमान के घर से बड़ी वीरता से निकाला।

—गत २३ अगस्त रविवार को बाराबंकी आर्य्य समाज में अब्दुल रहमान नामक नौमुस्लिम की शुद्धि हुई। शुद्धि की उसने निम्न रूप से समाज से प्रार्थना की थी—

"मेरा पहला नाम शंकरलाल था। मैं क़ौम का कलवार भानमऊ का रहने वाला हूँ। मेरा वहाँ की एक मुस्लिम युवती से प्रेम हो गया था। गत २० अगस्त को कुछ मुसलमानों ने कहा कि यदि तुम मुसलमान हो जाओ तो तुम्हारा निकाह उस लड़की से कर दिया जाय और तुम्हें एक इक्का घोड़ा ख़रीद दिया जायगा ताकि तुम्हें कोई रोज़ी कमाने का संकट न रहे। उसी दिन रात को मैं उन लोगों के यहाँ रहा। रात में लड़की मुझसे मिला दी गई। दूसरे दिन शुक्रवार को

मातृ भाषा के प्रति प्रेम जागृत न किया जायगा तब तक कोई स्थायी कार्य नहीं हो सकता क्योंकि ये बहिनें ही थोड़े दिनों बाद मातायें होंगी और माताएं ही अपने बालक बालिकाओं की प्रथम शिक्षिका होती है।

२५ लाख प्रवासी भारतीयों में भारतीय संस्कृति तथा देशी भाषाओं के प्रति प्रेम जागृत रखना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पुण्यकार्य है। आशा है भारतीय जनता इस कार्य्य को उपेक्षा की दृष्टि से न देखेंगी।

(विशाल-भारत महिला अङ्क से उद्धृत)

हरिजनों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र

भारत की दलित जातियों ने हाल मे हिन्दू धर्म को छोड़कर किसी दूसरे धर्म मे जाने का निश्चय किया था। इस निश्चय पर बहुत से अन्य धर्मावलम्बियो के मुँह मे पानी भर गया और उन्होंने अपने धर्मो की खूबियां बतलाते हुए इन लोगों को अपने मे मिलाने की कोशिश आरम्भ कर दी।

भारत व मिश्र के मुसलमान भी इस बारे में कम दिलचस्पी नहीं रखते हैं। मिश्र की 'अल अजहर यूनिवर्सिटी' के रेक्टर शेख अलमरागी ने भारत में इसी काम के लिए एक मिशन भेजने का इरादा जाहिर किया है। सोचा जा रहा है कि इस काम के लिये २५ हजार पौंड की एक भारी रकम एकत्र की जाय और इसी साल में पाच आदमियों का एक मिशन भारत के लिये भेजा जाय।

इस सम्बन्ध मे रेक्टर अलमरागी व भारतीय मुसलमानों के बीच जो पत्र व्यवहार हुआ है वह निम्न प्रकार है —

अलमरागी का पत्र

"प्रिय महोदय!

मैंने मिश्री पत्र 'बलग' मे भारतीय अछूतों की एक कान्फरेन्स का विस्तृत विवरण पढा है जिसमें उन्होंने हिन्दू धर्म को छोड़कर किसी अन्य धर्म को ग्रहण करने का निश्चय किया है। आप समझते हैं कि यह सुनहरी मौका इस्लाम के इतिहास में नहीं, वरन सब धर्मो के इतिहास मे अनोखा है। सब मुसलमानों को दिलोजान से यह यत्न करना चाहिये कि किसी प्रकार फुसलाकर इन अछूतों को इस्लाम स्वीकार करने का प्रयत्न किया जाय अल अजहर यूनीवर्सिटी इन अछूतों को मुसलमान बनाने की कोशिश में भाग लेना चाहती है। मैं आप से पूछता हूं कि भारत आने वाले उक्त मिशनकी क्या योग्यतायें होनी चाहियें।"

भारतीय मुसलमानों का उत्तर

अन्जुमने हिमायत इस्लाम के प्रधान सर

मानमऊ की बड़ी मस्जिद मे मुझे कलमा पढ़ाया गया और अब्दुल रहमान नाम रक्खा गया। मैं प्रेम और लोभ वश अज्ञानता से मुसलमान हो गया मुझे इस्लाम धर्म्म से कतई श्रद्धा न थी। अत मैं शुद्धि के लिए आप लोगों की शरण में आया हूँ।"

—आर्य्य समाज आर्य्य-नगर (पंजाब) में एक नवमुस्लिम की की शुद्धि हुई।

—गत ३० अगस्त को हिन्दू साल्वेशन मिशन अमृतसर ने एक जन्म की मुस्लिम श्री मु० इनायत बेगम को शुद्ध किया।

मोहम्मद इक़बाल ने उपरोक्त पत्र के जवाब में लिखा कि—

'यह तो ठीक है कि इस्लाम हिन्दुओं में बड़ी तेजी से फैलता जा रहा है। लेकिन जहा तक अछूतों का सवाल है उनके लिये एक भारी कठिनाई है कि ये अछूत प्राय दक्षिण भारत में रहते हैं और तक़रीबन आधो दर्जन भाषायें बोलते हैं जिनमें कि धर्म की ऊची भावनाओं को जाहिर करना एक दम असम्भव प्रतीत होता है। आपके मिशनरियों के भाषणों की इनकी भाषा में अनुवाद करने वालों को यह कठिनाई पेश आयेगो। हमारे भी मिशनरो इस समस्या का हल नहीं निकाल सके। इस कारण यदि मिशन भेजा जाय तो उसके सदस्यों का चेहरा मोहरा खूब रौबदार हो और वे वर्त्तमान नवीन विचार के अनुसार इस्लामो सिद्धान्तों की व्याख्या कर सके। मिशन के काम के बाद जब वे मिस्र लौटें तो इन मुसलमान हुए अछूतों में से कुछ को चुनकर अल-अजहर यूनिवर्सिटीमें लेजायें, जहा कि इनकी शिक्षा दीक्षा इस्लाम धर्म के अनुसार हो और जब वे लौट कर आयें तब अपने ही लोगों में प्रचार करने के लिये पक्के बन जायें।

भारत में ता केवल ग़रीब मुसलमानों में हो इस्लाम की धर्म भावना मौजूद है। और उन्हीं में अछूतों को मुसलमान बनाने की प्रबल इच्छा है. अमीर मुसलमान इस काम में दिलचस्पी नहीं लेते।

इसके साथ साथ यह भी सवाल है कि इन नवमुसलिमों पर इस्लाम की परम्परागत प्रथायें कहा तक लागू होंगी ? मुसलमान नियमानुसार खतना कराना अनिवार्य है और स्त्रियों को पर्दे के लिये बाध्य किया जाता है, इससे भी इनको मुसलमान बनाने में दिक़्क़त पेश होगी।

खतने और पर्दे के बारे में अजहर के उलेमाओं ने पहिली बार एक वक्तव्य दिया है कि हाथ और मुंह पूर्णत ढकने की कुछ जरूरत नहीं है क्योंकि यह हजरत मोहम्मद से पहिले ही यहूदियों में जारी था।

× ×

केरल में मुसल्मानों का प्रचार

मुसल्मान लोग केरल के थिया जाति के लोगों को मुसल्मान बनाने के लिए सगठित रूप से जोर शोर से यत्न कर रहे हैं। इस यत्न का परिचय समाचार पत्रोंमें प्रकाशित रिपोर्टों से मिल रहा है। मद्रासके अग्रेजी दैनिक हिन्दू'में प्रकाशित रिपोर्ट का सार हम इसलिए देते हैं जिससे हिन्दू तथा आर्य लाग थिया लोगोंकी रक्षाके सम्बन्धमें अपने कर्तव्य को पहचानें और उसका पालन करें। उनका कर्तव्य केरल में तत्काल विविध प्रचार मिशनों की योजना है। जनता को सूचना के लिए हम यहा यह भी निवेदन कर देना चाहते हैं कि सार्वदेशिक सभा ने स्थिर रूप से वहा पिछले साल से प्रचार का प्रबन्ध किया हुआ है। सभा के सुयोग्य प्रचारक श्री प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति को अध्यक्षतामें केरलमें एक प्रचार मिशन अभी हालमें भेजा गया है। वहा ऐसे जितने अधिक और जितनी जल्दी प्रचार मिशन पहुँच जायें उतना ही अच्छा है।

कोचीन १० अगस्त

कोचीन के मुसल्मानों ने मि० अब्दुल्ला गाधी और उनके साथियों का बंगलौर से उनके आगमन पर कल स्वागत किया। वे केरल में थिया लोगों के धर्म परिवर्तन सम्बन्धी आन्दोलन के सिलसिले में प्रचार मिशन पर आये हुए हैं। प्रचारकों के दल में निम्न सज्जन हैं—

श्री सय्यद गुलाम मीक नारग एम० एल० ए० जनरल सेक्रेटरी जमीअत तबलीगुल इस्लाम अम्बाला सिटी, श्रीयुत सेठ मुहम्मद जकरिया मनीआर और मौलाना नाजिर अहमद खुजान्दी अन्जुमन तबलीगुल इस्लाम बम्बई के मन्त्री तथा मि० सय्यद मुहम्मद अब्दुल हक्क साहिब तबलीग सेक्रेटरी सेन्ट्रल जमीअत तबलीग इस्लाम अम्बाला।

इन लोगों के स्वागतके लिये स्टेशन पर लोगों की बड़ी भीड़ थी।

मि० अब्दुल्ला गाधी ने भीड़ को सम्बोधन करके कहा—

'मेरा मिशन शिक्षा सम्बन्धी आन्दोलन को चलाना है। मैं यहां आप सब लोगों को इस्लाम के असूलों पर शिक्षा देने के लिए आया हूँ। मैं आप लोगों को इस्लाम मे दीक्षित नहीं करना चाहता हूँ। मुझे उम्मेद है मैं आप लोगों और भारत में बहुत से अन्य लोगों के हृदयों में यह बिठा देने मे समर्थ हूँगा कि इस्लाम एक बड़ा जनोपकारक धर्म्म है और जो भी मुसलमान बन जाता है वह परमात्मा और मनुष्य जाति का पक्का सेवक बन जाता है। मेरे हृदय में भय नहीं है। भय न कभी मेरे हृदय में पैदा ही हुआ है। इस्लाम की महत्ता से मैं इतना प्रभावित हुआ हूँ कि कुछ भाषणों के बाद में आप में से हर एक से मुसलमान बनने की प्रेरणा करूँगा।"

इसके बाद बोहाथम्पड़ी मुस्लिम यंगमैन एसोसियेशन के सदस्यों ने मि० अब्दुल्ला गांधी को एक अभिनन्दन पत्र भेंट किया जिसमें उन्होंने उनको प्रशंसा करते हुए कहा यद्यपि कोचीन पधारने का उनका यह सर्व प्रथम अवसर है परन्तु उनके इस्लाम ग्रहण करने के थोड़े अर्से से ही उनका नाम तमाम मुस्लिम जगत में घर-घर पहुँच गया है। अभिनन्दन पत्र मे उनके मिशन की सफलता की कामना भी की गई थी।

इसके बाद कोचनगड़ी नगर मे जहा वे इस यात्रा में ठहरेंगे मुख्य २ सड़कों पर उनका जलूस निकाला गया।

कोचीन ३१ अगस्त

थिया जाति के एक प्रसिद्ध सदस्य डा० के०पी० थेल और अन्य ३३ पुरुषों, स्त्रियों और बालको ने इस्लाम धर्म को ग्रहण किया। आस-पास के ५ हजार मुसल्मान एकत्रित हुए थे। डा० के० पी० ने जिनका मुस्लिम नाम डा० कमाल पाशा रक्खा गया है हिन्दू धर्म मे परित्याग का कारण बतलाते हुए कहा, "मुझे विश्वास हो गया है कि थिया लोग आत्म सम्मान को क़ायम रखते हुए हिन्दू धर्म में नहीं रह सकते हैं। मेरी प्रसिद्ध संस्थाओं ने हिन्दू धर्म के परित्याग का निश्चय कर लिया है और ऐसा निश्चय कराने में मेरा भी कुछ हद तक हाथ था। मेरा विश्वास है मेरा मिशन केरल के थिया लोगों के उद्धार तक ही सीमित नहीं है।

भारत में १० करोड़ दलित और पीड़ित भाई हैं जिन्हें नागरिक जीवनके प्रारम्भिक अधिकार भी नहीं दिए गये हैं। मैंने एक पांच वर्षीय योजना बनाई है उसका प्रारम्भ शुद्धि सप्ताह से जो कल से शुरू हुआ है हो गया है। मेरा विचार है कि तत्काल एक 'अखिल केरल मुस्लिम सभा' बनाई जाय उसमें ट्रावनकोर कोचीन और ब्रिटिश मलाबार भी शामिल हों और उस सभा की तत्काल १ लाख मुसल्मानों को बतौर सदस्यों के भरती की जाय। हजारों उस सभा की शाखाएँ स्थापित की जायेंगी। मेरा विचार है उसका हैड कार्टर कोचीनमें रक्खा जाय। इस केन्द्रीय सगठनके साथ २ एक अखिल केरल वाई०एम०एम०ए० भी स्थापित की जायगी। केरल के मुसल्मानों की आर्थिक स्थिति की भी जांच की जायगी और मुसल्मानों के आर्थिक और औद्योगिक साधनों को उन्नत करने के उपाय भी सोचे तथा काममें लाये जायँगे। निरक्षता निवारण मुस्लिम देवियों की शारीरिक उन्नति के उपायों का काम में लाया जाना, वार्षिक प्रकाशन के रूप में मुस्लिम डाइरेक्टरी की तय्यारी पंच वर्षीय योजना के अन्य अगों में से हैं।"

इसी अवसर पर

श्री अब्दुल्ला गांधीको एक अभिनन्दन पत्र भी पेश किया गया था उसका उत्तर देते हुए अन्त में उन्होंने कहा था—

"मुसल्मानों को चाहिए कि वे अपनी प्रसन्नता की क़ीमत पर भी नवागतों को खुश रक्खें। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें (मुसल्मानों) उनकी मदद के लिए जाना चाहिए। यदि वे अपने इस कर्तव्य का पालन नहीं करेंगे तो मैं मक्का चला जाऊँगा और कभी नहीं लौटूँगा।"

आवश्यक सूचना

"सार्वदेशिक" के ग्राहकों को सभा से पत्र-व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य देना चाहिये।

—मैनेजर
"सार्वदेशिक' देहली।

माता कस्तूर बा
का
अपने पुत्र के नाम मार्मिक पत्र

तुम्हारे आचरण से मेरे लिए जीवन भारी हो गया है

माता कस्तूर बा गान्धी ने पथ भ्रष्ट पुत्र हीरालाल (अब्दुल्ला) गान्धी के नाम निम्न पत्र भेजा है—

मेरे प्रिय पुत्र हीरालाल,

मैंने सुना है कि तुमको मद्रास में आधी रात में पुलिस के सिपाही ने शराब के नशे मे असभ्य आचरण करते देखा और गिरफ्तार कर लिया। दूसरे दिन तुमको अदालत मे पेश किया गया। निस्सन्देह, वे भले आदमी थे, जिन्होंने तुम्हारे साथ बहुत नरमाई का व्यवहार किया। तुमको बहुत साधारण सजा देते हुये मजिस्ट्रेट ने भी तुम्हारे पिता के प्रति आदर का भाव जाहिर किया। जब से मैंने इस घटना का समाचार सुना है, मेरा दिल बहुत दु खी है। मुझे नही मालूम कि तुम उस रात्रि को अकेले थे या तुम्हारे कुसाथी भी तुम्हारे साथ थे ? कुछ भी हो, तुमने जो किया ठीक नहीं किया। मेरी समझ मे नहीं आता कि मैं तुम्हें इस बारे में क्या कहूँ ? मै वर्षो से तुमको समझाती आ रही हू कि तुम को अपने पर कुछ काबू रखना चाहिये। पर, तुम दिन पर दिन बिगड़ते ही जाते हो ? अब तो मेरे लिये तुम्हारा आचरण इतना असह्य हो गया है कि मुझे अपना जीवन ही भारी मालूम होन लगा है। जरा सोचो तो तुम इस बुढापेमे अपने माता पिता को कितना कष्ट पहुँचा रहे हो ? तुम्हारे पिता किसी को कुछ भी नहीं कहते, पर मैं जानती हू कि तुम्हारे आचरण से उनके हृदय पर कैसी चोटें लग रही हैं ? उनसे उनका हृदय टुकडे टुकड़े हो रहा है। तुम हमारी भावनाओं को चोट पहुँचाकर बहुत बड़ा पाप कर रहे हो। हमारे पुत्र होकर भी तुम दुश्मन का सा व्यवहार कर रहे हो। तुमने तो हया शरम सब का तिलाजलि दे दी है। मैंने सुना है कि इधर अपनी आवारागर्दी मे तुम अपने महान् पिता का मजाक भी उड़ाने लग गये हो। तुम जैसे अक्लमन्द लड़के से यह उम्मीद नहीं थी। तुम महसूस नहीं करते कि अपने पिता की अपकीर्ति करते हुये तुम अपने आप ही जलील

होते हो। उनके दिल में तुम्हारे लिये सिवा प्रेम के और कुछ नहीं है। तुम्हें पता है कि वे चरित्र की शुद्धि पर कितना ज़ोर देते हैं, लेकिन तुमने उनकी सलाह पर कभी ध्यान नहीं दिया। फिर भी उन्होंने तुम्हें अपने पास रखने, पालन पोषण करने और यहां तक कि तुम्हारी सेवा करने के लिये रज़ामन्दी प्रगट की। लेकिन तुम हमेशा कृतघ्नी बने रहे। उन्हें दुनिया में और भी बहुत से काम हैं। इससे ज्यादह और तुम्हारे लिये वे क्या करें? वे अपने भाग्य को कोस लेते हैं। परमात्मा ने उन्हें असीम इच्छा शक्ति दी है और परमात्मा उन्हें यथेच्छ आयु दे कि वे अपने मिशन को पूरा कर सकें। लेकिन मैं तो एक कमज़ोर बूढ़ी औरत हूं और मुझसे यह मानसिक व्यथा बर्दाश्त नहीं होती! तुम्हारे पिता के पास रोज़ाना तुम्हारे व्यवहार की शिकायतें आ रही हैं उन्हें यह सब कड़वी घूंट पीनी पड़ती है। लेकिन तुमने मेरे मुह छिपाने तक को कहीं भी जगह नहीं छोड़ी है। शर्म के मारे मैं परिचितों या अपरिचितों में उठने-बैठने लायक़ भी नहीं रही हूं। तुम्हारे पिता तुम्हें हमेशा क्षमा कर देते हैं, लेकिन याद रक्खो, परमेश्वर तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे।

मद्रास में तुम एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के मेहमान थे। परन्तु तुमने उनके आतिथ्य का नाजायज़ फ़ायदा उठाया और बड़े बेहूदा व्यवहार किये। इससे तुम्हारे मेज़बानको कितना कष्ट हुआ होगा? प्रति दिन सुबह उठते ही मैं कांप जाती हूं कि पता नहीं आज के अखबार में क्या नयी खबर आयेगी? कई बार मैं सोचती हूं, तुम कहा रहते हो, कहा सोते हो और क्या खाते हो? शायद तुम निषिद्ध भोजन भी करते हो। इन सब को सोचते हुये बेचैनी में पलकों पर रातें काट देती हूं। कई बार मेरी इच्छा तुमसे मिलने की होती है, लेकिन मुझे नहीं सूझता कि मैं तुम्हें कहा मिलूं? तुम मेरे सब से बड़े लड़के हो और अब पचासवें पर पहुँच रहेहो। मुझे यह भी डर लगता रहता है कि मिलने पर कहीं तुम मेरी बेइज़्ज़ती न कर दो।

मुझे मालूम नहीं कि तुमने अपने पूर्वजों के धर्म को क्यों छोड़ दिया है, लेकिन सुना है कि तुम दूसरे भोले-भाले आदमियों को अपना अनुसरण करने को बहकाते फिरते हो? क्या तुम्हें अपनी कमिया नहीं मालूम? तुम 'धर्म' के विषय में जानते ही क्या हो? तुम अपनी इस मानसिक अवस्था में विवेक-बुद्धि नहीं रख सकते? लोगों को इस कारण धोखा हो जाता है, क्योंकि तुम एक महान् पिताके पुत्र हो। तुम्हें धर्मोपदेश का अधिकार ही नहीं। तुम तो अर्थ-दास हो। जो तुम्हें पैसा देता रहे तुम उसी के हो रहते हो। तुम इस पैसे से शराब पीते हो और फिर प्लेटफार्मों पर चढकर लेक्चर फटकारतेहो। तुम अपने को और अपनी आत्मा को तबाह कर रहे हो। भविष्य में यदि तुम्हारी ये ही करतूतें रहीं, तो तुम्हें कोई कौड़ीके मोल भी न पूछेगा। इससे मैं तुम्हें सलाह देती हूं कि जरा रुको, विचार करो और अपनी बेवक़ूफी से बाज़ आओ। मुझे तुम्हारा धर्म-परिवर्तन बिल्कुल पसन्द नहीं है, लेकिन जब मैंने

पत्रों में तुम्हारा वक्तव्य पढ़ा कि तुम अपना सुधार करना चाहते हो तो मेरा अन्त करण इस बात से आल्हादित हो गया कि अब तुम ठीक जिन्दगी बसर करोगे, लेकिन तुमने तो उन सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। अभी बम्बई में तुम्हारे कुछ पुराने मित्रों और शुभेच्छुओं ने तुम्हें पहले से भी बदतर हालत में देखा है। तुम्हें यह भी मालूम है कि तुम्हारी इन कारस्तानियों से तुम्हारे पुत्र को कितना कष्ट पहुँच रहा है। तुम्हारी लड़कियां और तुम्हारा दामाद सभी उस दुख भार को सहने में असमर्थ हो रहे हैं, जो तुम्हारी करतूतों से उन्हें होता है।

जिन मुसलमानों ने हीरालाल के मुसलमान बनने और उसकी बाद की हरकतों में रुचि दिखाई है, उनको सबोधन करते हुए श्रीमती गाधी लिखती हैं —

"आप लोगों के व्यवहार को मैं समझ नहीं सकी। मुझे तो सिर्फ उन लोगों से कहना है, जो इन दिनों मेरे पुत्र की वर्तमान गति-विधि में तत्परता दिखा रहे हैं। मैं जानती हू और मुझे उससे प्रसन्नता भी है कि हमारे चिर परिचित मुसलमान मित्रों और विचार शील मुसलमानों ने इस आकस्मिक घटना की निन्दा की है। आज मुझे उन उच्चमना डा० अनसारी की उपस्थित का अभाव बहुत खल रहा है, वे यदि होते तो आप लोगों और मेरे पुत्र को सत्परामर्श देते, मगर उनके समान ही और प्रभावशाली तथा उदार मुसलमान हैं, यद्यपि उनसे मैं सुपरिचित नहीं हूँ, जो कि मुझे आशा है, तुमको उचित सलाह देंगे। मेरे लड़के को सुधारने की अपेक्षा मैं देखती हूँ कि इस नाम मात्र के धर्म परिवर्तन से उसकी बुरी आदतें बद से बदतर हो गई हैं। आपको चाहिये कि आप उसको उसकी बुरी आदतों के लिये डाटें और उसको उल्टे रास्ते से अलग करें। परन्तु मुझे यह बताया गया है कि आप उसे उसी उलटे मार्ग पर चलने के लिये बढ़ावा देते हैं। कुछ लोगों ने मेरे लड़के को 'मौलवी' तक कहना शुरू कर दिया है। क्या यह उचित है ? क्या आप का धर्म एक शराबी को 'मौलवी' कहने का समर्थन करता है ? मद्रास में उसके असद् आचरण के बाद भी स्टेशन पर कुछ मुसलमान उसको हार्दिक विदाई देने आये। मुझे नहीं मालूम उसको इस प्रकार बढ़ावा देने में आप क्या खुशी महसूस करते हैं ? यदि वास्तव मे आप उसे अपना भाई मानते हैं, तो आप कभी भी ऐसा नहीं करेंगे, जैसा कि कर रहे हैं, क्योकि आप जो कुछ कर रहे हैं, वह उसके लिये फायदेमन्द नहीं है। पर, यदि आप केवल हमारी फजीहत करना चाहते हैं तो मुझे आप लोगों को कुछ भी नहीं कहना है। आप जितनी भी बुराई करना चाहें कर सकते हैं। लेकिन एक दुखिया और बूढ़ी माता की कमजोर आवाज शायद आप में से कुछ एक की अन्तरात्मा को जगा दे। मेरा यह फर्ज है कि मैं वह बात आप से भी कह दू जो मैं अपने पुत्र से कहती रहती हूँ। वह यह कि परमात्मा की नजर में तुम कोई भला काम नहीं कर रहे हो।"

('हिन्दुस्तान' देहली से)

समाजिक-जगत

मद्रास प्रान्त में वैदिक धर्म्म प्रचार

सार्वदेशिक सभा के प्रचारकों का अगस्त मास का कार्य-विवरण

ट्रावनकोर राज्य में प्रचारक ने प्रचार के सिलसिले में कोडिमता, पेरुला, बालटपल्लो, तिरुवल्ला, अयमनम आदि स्थानों में भ्रमण किया।

एन० एस० एस० के० के जनरल इजलास में प० नारायणदत्त जी ने भाग लिया और लोगों से मुलाक़ात की इसके परिणाम स्वरूप जनरल सेक्रेटरी ने प्रतिनिधियों से (१५० प्रतिनिधि उपस्थित थे) कहा कि "आर्य्य समाज का प्रचारक यहाँ पर आया हुआ है। इसलिये उनसे परिचय प्राप्त करना और उनको प्रचार कार्य में सहायता पहुँचाना प्रत्येक का परम कर्तव्य है"।

सरकारी संस्थाओं में किसी प्रकार का धार्मिक काम न करने के लिए गवर्नमेण्ट की आज्ञा है। परन्तु तिरुवल्ला गवर्मेण्ट अस्पताल में इसके विरुद्ध ईसाई पादरी आकर बेचारे हिन्दुओं को बहकाते हैं इसका कारण यह है कि वहाँ एक ईसाई केन्द्र है। डाक्टर भी ईसाई है। जब वहाँ हिन्दू डाक्टर था तब ऐसा काम अब की अपेक्षा नहीं के बराबर बहुत कम छिपा छिपाया होता था। परन्तु अब प्रतिदिन तीन चार बजे ईसाई पादरी अस्पताल में पहुँचते हैं और अपना कार्य करते हैं। इसके ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रचारक तिरुवल्ला अस्पताल में गया और रोगियों से बात चीत की। उससे बात सत्य प्रतीत हुई परन्तु डाक्टर के डर से रोगी स्पष्ट कहने में डरते हैं। एतदर्थ प्रतिविधान सोचा जा रहा है। एक जगह मेला प्रचार किया। हिन्दी तथा संस्कृत क्लास चल रहा है लेख "धर्म्म का आदि स्रोत' नामक कुछ भाग (२८ पृ०) मलयालम भाषा में किया गया।

+

मद्रास

(१) स्थानीय समाजों में प्रचार के अतिरिक्त निम्न तीन व्याख्यानों का विशेष प्रबन्ध किया —Madras Corporation Teacher's Association 'में' Gurukula System of Education पर। Cain Buck Club, Perambur में Does Hinduism Need a change? विषय पर। और श्री तुलसीजयन्ती समारोह पर Aryasmaj & Hindi विषय पर।

(२) श्रावणी-उत्सव मनाया गया तथा ५५ सभासदों को यज्ञोपवीत दिये।

(३) २ वैदिक विवाह १ विधवा विवाह और १ विशेष यज्ञ किया।

(४) Hinduism Vs Islam शीर्षक अंग्रेज़ी ट्रैक्ट लिखा तथा प्रकाशनार्थ प्रेस में दिया है।

(५) पैराम्बूर-ब्रांच के लिये स्थानीय कार्पोरेशन कमेटी से भूमि-सम्बन्धी बातचीत की।

के० ज्ञानी

+

बंगलोर

इस मास में सर्वत्र वर्षा का ज़ोर होने के कारण

प्रचारार्थ बाहर अधिक नहीं जा सका तथापि स्थानीय कार्य्य के अतिरिक्त कंगेरी, मैसूर, मारी कुप्पम आदि मे प्रचार किया गया। श्रावणी उपाकर्म बड़े समारम्भ से ९ अगस्त को समाज भवन में मनाया गया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित सज्जनों और देवियों के अतिरिक्त लगभग ३५ हरिजन भाइयों ने गायत्री मंत्रोपदेश के साथ विधि पूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण किये। इन हरिजन भाइयो ने वैदिक सन्ध्या हवनादि सीख कर वैदिक धर्म्म के अनुसार आचरण प्रारम्भ किया है। इस पर्व के अन्त में बिना किसी भेद भाव के सबने प्रेम से मिष्ठान्नादि का सेवन किया। श्रावणी के अनन्तर सप्ताह भर मावल्ली ग्राम, अशोक पायक सभा, अनाथालय आदि मे गायत्री मन्त्रोपदेश और प्रचार किया गया। 'Significance of the Sacred Thread'' नामक छोटी पुस्तिका छपवाकर सुशिक्षित लोगों में बँटवाई गई जिसे जनता ने बहुत पसन्द किया।

१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव बड़े समारोह के साथ समाज भवन मे मनाया गया जिस में मेरे अतिरिक्त श्रीयुत सम्पत् आयंगार जी Retired Judge श्रीयुत वेदा जी राव B. A, B L ऐडवोकेट, श्री शामरा जी B A, LL B ऐड्वोकेट के व्याख्यान हुए। हरिजन भाइयों नें भी बडी सँख्या में भाग लिया।

११ अगस्त को महाराजा कालेज मैसूर के प्रोफ़ेसर नागेश्वर राव जी M A के सभापतित्व में मैसूर के टाउनहाल मे "योगिराज श्रीकृष्ण के सन्देश और भक्ति योग" के विषय में मेरा व्याख्यान हुआ। १२ अगस्त को सुन्दर राज नामक एक ईसाई बने हुए युवक और उसकी ईसाई पत्नी मेरीअम्मा की उनके पुत्र सहित मैसूर आर्य समाज भवन में शुद्धि हुई जिसके अन्त मे शुद्धि संस्कार की प्राचीनता पर भी प्रकाश डाला गया।

३० अगस्त को मारीकुप्पम में जो बंगलौर से लगभग ४० मील दूर को लारगोल्ड फ़ील्ड के अन्तर्गत है हरिजनों के नेता श्री नारायण स्वामी पिल्ले म्युनिसिपल कौन्सिलर् की पुत्री का श्री सुब्रह्मण्य नामक शिक्षित युवक के साथ वैदिक रीति से विवाह संस्कार कराया और अंग्रेज़ी मे सब विधियों तथा प्रसिद्ध मन्त्रो की व्याख्या की जिसे उपस्थित जनता ने बहुत अधिक पसन्द किया। यह संस्कार दो ढाई सौ सज्जनो और देवियो की उपस्थिति में हुआ। बंगलौर आर्य्यसमाज के लिये १०) दान मे प्राप्त हुए। हरिजन भाइयों मे वैदिक धर्म के प्रति इतना प्रेम और उत्साह उत्पन्न हो रहा है। यह प्रसन्नता की बात है। अगले मास के २ सप्ताह में मालाबार की तरफ़ जाने का विचार है। शेष दिनो में हिन्दी धर्म-शिक्षादि युवकों को दी जाती रही तथा हरिजनोद्धारादि का कार्य्य किया जाता रहा। धार्मिक सामाजिक विषयों पर लेख आदि भी लिखे जाते रहे।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति।

+

मैसूर स्टेट हरिजन सेवक संघ बंगलौर के अछूतोद्धार कार्य्य की रिपोर्ट

बाबत मास जुलाई अगस्त

संघ के कार्य्यकर्ता विविध हरिजन बस्तियों में प्रतिदिन प्रचारार्थ जाते हैं। स्वास्थ्य और सफ़ाई सम्बन्धी विषयों पर मैजिक लालटेन द्वारा भी व्याख्यान

लिए आते हैं। इस प्रचार के फलस्वरूप बहुत से नवयुवक जो मज़दूर हैं जीवनके वैदिक आदर्शों में बहुत दिलचस्पी दिखलाने लगे हैं। आर्य्य-मन्दिर में उपाकर्म पर्व के अवसर पर बहुसंख्या में वे लोग उपस्थित हुए थे। बंगलौर छावनी, टुमकुर, चितलदुर्ग, हसन, शिमोगा और मैसूर ज़िलों में भी प्रचार कार्य्य हो रहा है। सामाजिक और नैतिक उत्थान के लिए आन्दोलन हो रहा है। हम (मैसूर) राज्य के हरिजनों मे जीवन के उच्च आदर्शों के प्रचार के लिए पूरा २ यत्न कर रहे हैं। रामचन्द्र मन्त्री

+

आर्य्य-समाज जगाधरी के २ प्रस्ताव

(१)

आर्य्य-समाज जगाधरी का यह जनरल इजलास पौराणिक अख़बार "आनन्द" लाहौर के कृष्ण नम्बर में प्रकाशित गोपाल मिश्र नामक किसी व्यक्ति के उस शठता पूर्ण लेख को जिसमें महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पवित्र जीवन पर झूठे लांछन लगाये गये हैं घृणा की दृष्टि से देखता है और गवर्नमेंट से प्रार्थना करता है कि उक्त अख़बार के विरुद्ध तत्काल कोई कार्यवाही की जाये और उस पर मुक़द्दमा चलाया जाय।

(२)

आर्य्य-समाज जगाधरी यह जानकर कि रियासत सिरोही में जो एक हिन्दू रियासत है आर्य्य-समाजियो के साथ अत्यन्त अनुचित बर्ताव होता है अत्यन्त दु:ख और क्रोध प्रगट करता है और महाराजा साहिब सिरोही से प्रार्थना करता है कि आर्य्य-समाज जैसी धार्मिक संस्था के साथ ऐसा अनुचित बर्ताव और फिर एक हिन्दु रियासत में शोभा नहीं देता और आशा करता है कि महाराजा साहिब बहुत शीघ्र इस तरफ़ ध्यान देकर शिकायतों को दूर कर देंगे।

नत्थनलाल, मन्त्री आर्य्य-समाज जगाधरी

+

मुकद्दमे का फ़ैसला

आर्य-जगत् को पता होगा कि आर्यसमाज लातूर के होली पर्व के अवसर पर वहाँ के मुसलमानोंने समाज पर हमला किया था सरकार ने उन पर मुकद्दमा चलाया था। मुकद्दमा वहाँ के विद्वान् जज श्रीमान् वासुदेव प्रसाद जी के इजलास पर चल रहा था। कल (२७-८-३६) मुकद्दमे का फ़ैसला हुआ और अपराधियों को छ २ मासकी कैद की सजा हुई। इस फैसले से निजाम स्टेट का आर्यजगत् हमारी न्याय प्रिय सरकार को धन्यवाद देता है कि उसने अपराधियों को सजा देकर सच्चा न्याय किया। इस मुकद्दमे में वहाँ के वकील श्री बाबूरावजी, नन्दकिशोर जी, भगवानरावजी, बालकिशनराव जी ने जो भी सहाय्य किया उनका भी आर्य्य जगत् धन्यवाद गाता है।

टी० आर० दास मन्त्री

+

आर्य्य-समाज कोरन्टीन वरवीस (ब्रि० गायना) के समाचार

(स्वसंवाददाता द्वारा)

हम लोगों को हर जगह की आर्य्य समाज के शुभ समाचार 'सार्वदेशिक' पत्र द्वारा दृष्टिगोचर हुआ करते है परन्तु दु:ख है कि हमारे आर्य्य समाज की प्रगतियों से सभा बिल्कुल अपरिचित रहती है जिसका मुख्य कारण हमारी सुस्ती और प्रमाद ही है।

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएँ

(१)

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने आर्य्य-समाज के उपनियमो के संशोधन की जो पाडुलिपि सम्मति के लिए प्रचारित की थी उसकी धारा स० ४ (क) अर्थात् आर्य्य-सभासद् वाली धारा में आर्य्य-सभासद् बनने की शर्तों में एक शर्त यह भी रक्खी गई थी कि जो व्यक्ति २४०) वार्षिक वा अधिक धन समाज को दे वह भी आर्य्य-सभासद् बन सकेगा परन्तु यह शर्त उपनियमो को अन्तिम रूप देने वाली सभा ने निकाल दी थी। आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस शर्त की आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस सभा को प्रेरणा की है कि यह शर्त रक्खी जाय और वर्तमान उपनियमों में इसकी व्यवस्था कर दी जाय। इस सभा की अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया है कि इस सशोधन के सम्बन्ध में प्रान्तिक सभाओं, आर्य्य-समाजों और आर्य्य-नर-नारियों की सम्मति प्राप्त की जाय। तदनुसार आर्य्य-समाजो और आर्य्य-नर-नारियों से निवेदन है कि वे कृपया अपनी २ सम्मति से इस सभा को यथा सम्भव शीघ्र सूचित करें।

मन्त्री—

सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभा

बडी प्रसन्नता की बात है कि पं० अयोध्या प्रसादजी की कई मह नों की तपस्या के फलस्वरूप यहाँ के आर्य-पुरुष और आर्य्य-देवियाँ साप्ताहिक सत्सग मे शामिल होकर ईश्वर प्रार्थना इत्यादि के पश्चात् सामाजिक उलझनों पर भी विचार किया करते हैं। इस सप्ताह (जुलाई का तृतीय सप्ताह) हरितृतीया का पर्व्व बड़े समारोह के साथ मनाया गया। समाज-मन्दिर आबाल वृद्ध, स्त्री-पुरुषो से खचाखच भरा हुआ था। श्री म० अर्जुनसिंह की सुपुत्री कौशल्या देवी और श्री म० गणेशप्रसाद जी आर्योपदेशक का पुत्री श्रीमती लक्ष्मी-नारायण जी ने मिलकर कई मनोहर भजन गाए। उपस्थित देवियो ने वचन दिया कि वे प्रत्येक उत्तम जनोपकारी कामो मे पुरुषो का हाथ बटायेंगी और धन सग्रह में यथाशक्ति योग देंगी। अब समाज के आधीन एक अनाथालय खोलने का विषय विचाराधीन है।

---

(२)

इन दिनो मुसल्मान लोग अछूतों मे आर्यों और हिन्दुओ के विरुद्ध अवांछनीय साहित्य का प्रचार कर रहे हैं। जिन भाइयों को ऐसा साहित्य प्राप्त हो वे कृपया उसे इस सभा मे भेज देवे तथा ईसाइयों और मुसल्मानों द्वारा हिन्दुओं के विरुद्ध लिखा हुआ साहित्य भी जो उन्हे मिला करे वह भी भेज दिया करें।

स्वतन्त्रानन्द, उपप्रधान

सार्वदेशिक सभा, देहली

(३)

सभा ने निश्चय किया है कि जो सज्जन सभा की १०) की बिकाऊ पुस्तके खरीदेंगे, उन्हे 'सार्वदेशिक' पत्र एक वर्ष के लिए मुफ्त दिया जावगा। आर्य्य-जनता को इस रियायत से लाभ उठाना चाहिए।

मन्त्री—

सार्वदेशिक सभा, देहली

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये ‘चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस’ देहली, से प्रकाशित।

ऋग्वेद

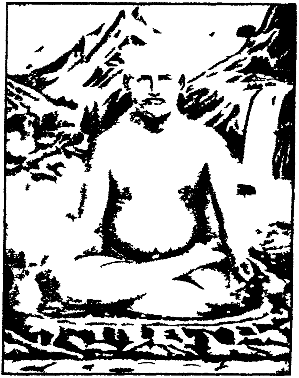
नवम्बर १९३६

ओ३म्

Reg No L 2121

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



वार्षिक मूल्य २) सम्पादक—लाला देशबन्धु विदेश से ५ शिलिंग

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का ≈)

अथर्ववेद

सामवेद

विषय-सूची

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १० | कार्तिक १९९३ | नवम्बर १९३६ ई० | दयानन्दाब्द ११२ | अंक ९

* वेद की शिक्षाएँ *

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न।

यो अस्याऽध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद॥

ऋ० म० १० सू० १२९, म० ७॥

भावार्थ—हे (अङ्ग) मनुष्य! जिससे यह विविध सृष्टि प्रकाशित हुई है, जो धारण और प्रलय कर्ता है जो इस जगत का स्वामी, जिस व्यापक मे यह सब जगत उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, सो परमात्मा हैं। उसको तू जान और दूसरे को सृष्टि कर्ता मत मान।

आर्य्य विवाह बिल की प्रगति

इन स्तम्भों मे गत मास बतलाया जा चुका है कि २२ और २६ सितम्बर को 'आर्य्य विवाह बिल' पर असेम्बली मे बहस हुई थी और कोई अन्तिम निर्णय नहीं हुआ था। पिछली ६ अक्टूबर को भी बिल पर बहस हुई और अन्तिम निर्णय न हुआ और इस प्रकार बिल का भाग्य निर्णय देहली सेशन पर छोड दिया गया। बहस के आरम्भ मे श्री सरदार सतसिंह और डा० भगवानदास जी के भाषण हुए उन दोनों ने बिल का समर्थन किया। श्री अणे ने कहा कि मैं बिल के विरुद्ध नहीं हूँ किन्तु चित्र का दूसरा पहलू भी है जिसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

मौ० शौकतअली ने सामाजिक व्यवस्थापनो के लिये धैर्य और सहिष्णुता से काम लेने की सलाह दी। श्री बजोरिया का यह सशोधन गिर गया कि यदि दम्पति मे से कोई एक भी कभी गैर-आर्य-समाजी हिन्दू या अहिन्दू रहा हो तो उसका विवाह जायज् न माना जाय। सर मुहम्मद याकूब ने इस आशय का सशोधन पेश किया कि यदि विवाह करने वाले कभी अहिन्दू रहे हो तो उनका विवाह जायज् न माना जाय। आपने कहा कि इस व्यवस्थापना का उनके धर्म पर बुरा असर पडेगा। सरदार सतसिंह के अतर्जातीय विवाह के प्रस्ताव का मुसलमान समर्थन नही कर सकते। क्योकि उनका धर्म मनुष्य-कृत नही। इस्लाम ईश्वरीय धर्म है। इसमे स्त्रियो को इतने अधिक अधिकार दिये गये है जितने और किसी धर्म मे नही।

श्री कबीरुद्दीन ने बीच मे ही टोक कर पूछा फिर यह परदा प्रथा कैसी है ? (हसी)

श्री आसफअली ने कहा कि मुसलमानो के भय नावाजिब हैं क्योंकि वे सिर्फ सन्देह पर आश्रित हैं। बिल मे तो स्पष्ट लिखा है कि इस तरह का अन्तर्जातीय विवाह दो आर्यसमाजियो मे ही होना चाहिए। सशोधन पेश करने वाले सदस्यो ने हाउस के दो दिन खराब किये है।

सर मुहम्मद जफरुल्ला ने पूछा कि इस समय ऐसे आर्यसमाजी युगल के विवाह का क्या नियम है जो किसी समय अन्य धर्मावलम्बी रहे हो ?

श्री भूलाभाई देसाई ने जवाब मे कहा कि मेरी सम्मति मे मौजूदा कानून के अनुसार इस तरह का विवाह जायज है।

श्री आसफअली ने अपना भाषण समाप्त करते हुए कहा कि सर याकूब ने बिल के जिन शब्दों पर आपत्ति की है उन से सिर्फ वर्तमान स्थिति स्पष्ट की गयी है। इसलिये बिल का मुसलमानो पर कुछ असर नही पडेगा। आपने सशोधन का विरोध किया।

सय्यद मुर्तजा ने सर याकूब के संशोधन का समर्थन किया और कहा कि इस बिल से ऐसे विवाह भी जायज़ हो जायगे जो इस्लाम धर्म के अनुसार नाजायज़ है। आपने श्री कबीरुद्दीन के जवाब मे कहा कि इस्लाम मे पर्दे का विधान नहीं है वह तो केवल शालीनता का प्रतिपादन करता है।

श्री गुलामभीक नारंग ने कहा कि एक दूसरे धर्म वालों की स्त्रियों को बहका कर अपने धर्म मे लाने के आजकल ही इतने केस हो रहे है। इसके पास हो जाने से तो ऐसा कार्य करने वालों को खूब प्रोत्साहन मिलेगा। लोग झूठ मूठ धर्म-परिवर्तन करके सम्प्रदायों के नियमों को भंग करने लग जायगे।

पं० कृष्णकात मालवीय ने कहा 'जो चाहते है कि हमारी लडकियों को हिन्दू बनने का अधिकार न हो उन्हे चाहिये कि वे अपनी लडकियों को स्कूलो या पार्टीयों मे भेजना बन्द करदें। यदि हिन्दू लडकी मुसलमान हो सकती है और मुस--लमान से विवाह कर सकती है तो यदि मुसलमान लडकी हिन्दू बन कर हिन्दू से विवाह करले तो इसमे क्या बुराई है ?'

श्री अजहरअली ने कहा कि यह पहला ही अवसर है जब कि मैं साम्प्रदायिक रंग देख रहा हूँ। चुनाव से पूर्व इस प्रकार की बहस बहुत बुरी है। हिन्दू धर्म धर्म-परिवर्तन की इजाज़त नही देता।

मौ० शौकतअली ने कहा कि मैं अन्तिम व्यक्ति होउंगा कि किसी मुस्लिम लड़की को दूसरा धर्म स्वीकार करने की सलाह दूं। आपने संशोधन का समर्थन किया।

इस समस्त बहस से इस बार कट्टर पौराणिकों के विरोध के मुकाबले मे मुसलमानों का बहुत ज्यादा विरोध स्पष्ट हुआ है। मुसलमानो का विरोध हमारे शुद्धि कार्य से सम्बन्ध रखता है। इस विरोध की निस्सारता हम गताङ्क मे इन स्तम्भो मे स्पष्ट कर चुके हैं। श्री आसफअली तथा कृष्ण-कान्त मालवीय जी ने भी उपर्युक्त बहस मे वह भली भाति स्पष्ट कर दी है। क्या हम आशा करे कि मुसल्मान भाई बिल को धर्मान्धता के चश्मे मे से नही देखेंगे, हमार शुद्धि कार्य को ठीक ठीक समझने का यत्न करेंगे, उससे जो भय उन्हे है उसकी निर्मूलता को समझेंगे और बिलका विरोध नही करेंगे ?

❀ ❀

डी० ए० वी० कालेज की स्वर्ण जयन्ती—

पिछले दशहरा की छुट्टियों में डी० ए० वी० कालेज लाहौर का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव बड समारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर कालेज न अपने जीवन के ५० वर्ष समाप्त करके ५१ वे वर्ष मे पदार्पण किया है। इस शुभ अवसर पर हम कालेज के सचालको को बधाई देते हैं। कालेज का स्थापना पजाब प्रान्त में वैदिक सभ्यता और पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान की शिक्षा का *प्रबन्ध करके एक नवीन सस्कृति को जिसमे प्राचीन* भारतीयता के साथ उपयोगी पाश्चात्य तत्व का भी समावेश होगा जन्म देने के लिये हुई थी। जहाँ तक पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान के प्रचार का सम्बन्ध है,

कालेज को आशातीत सफलता हुई है इसके लिये इस के सचालक मुख्यत श्री महात्मा हसराज जी विशेष बधाई के पात्र हैं। परन्तु वैदिक ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति के शिक्षण के सम्बन्ध म कालेज के यत्न वैसे नहीं रहे हैं जैसे रहने चाहिये थे। आशा है कालेज आगे अपने यत्नों को पूर्णता तक पहुंचा देगा।

❀ ❀

आर्यवीर-दल की योजना—

श्री मेजर राजा दुर्गा नारायणसिंह जी तिर्वा नरेश आर्य-समाज के अनन्य भक्त हैं। उन्होंने सार्वदेशिक सभा की आर्यवीर-दल की योजना का निम्न प्रकार स्वागत किया है —

"मुझे सभा की योजना की प्रति मिली जिसमें सभा के समाज सेवा के आदर्श अङ्कित हैं। उद्देश्य सराहनीय हैं। निश्चय ही वे आर्य युवकों को अपील करेंगे। इसमे सन्देह नहीं कि यदि योजना ठीक ठाक रीति से परिणत हुई तो यह सेवा-दल जनता की महान् सेवा करेगा। मै आपके यत्न का आदर करता हूं और इस सगठन की सफलता की कामना करता हू।"

❀ ❀

पं० अयोध्याप्रसादजी की भारत में वापसी—

प्रसिद्ध आर्य्य मिशनरी श्री० प० अयोध्या प्रसाद जी बी० ए० लगभग ३ वर्ष पर्य्यन्त विदेशों में आर्य्य समाज का प्रचार कार्य करके पिछले मास स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से भारत लौटे हैं। स्वास्थ्य लाभ करके यथा सम्भव शीघ्र विदेश लौट जाने का उनका विचार है। स्थान २ पर आर्य्य समाजे बड़े उत्साह से उनका अभिनन्दन कर रही हैं और इस प्रकार इस बात का परिचय दे रही हैं कि वे विदेशों में उनके प्रचार का आदर करती है, प० जी इस बात पर उचित रीति मे प्रसन्न होहो सकते हैं। प० जी शीघ्र से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करें जिससे वे पुन उसी उत्साह और मनोयोग से विदेश प्रचार के कार्य्य को करने मे समर्थ हो सके जिससे अबतक करते रहे हैं, प्रभु से यही प्रार्थना है।

❀ ❀

हिन्दू-महासभा—

सहयोगी 'आर्य" उपर्युक्त शीर्षक से लिखता है—

दशहरे की छुट्टियो मे हिन्दू-महासभा का भी वार्षिक अधिवेशन बड़े समारोह के साथ लाहौर मे सम्पन्न हो गया है। इस के लिये सभा के आयोजक प्रत्येक हिन्दू हितैषी के बधाई के पात्र हैं। महासभा के इस अधिवेशन मे हिन्दुओं के नेताओ ने जो निर्णय किये और उनके सम्बन्ध मे जो प्रस्ताव स्वीकृत किए गये उन पर यदि हिन्दू लोग आचरण करने लग जावे तो सचमुच हिन्दुओ और हिन्दुस्तान का कल्याण हो जाये। जहाँ तक प्रस्तावो का सम्बन्ध है कोई भी विचारशील हिन्दू उनसे पूर्ण सहमति रखे बिना नहीं रह सकता। विशेषकर अछूत समस्या साम्प्रदायिक निर्णय, सीमाप्रान्तीय सरकार के हिन्दी-विरोधी सरकुलर सम्बन्धी प्रस्तावों मे तो सारो हिन्दू जाति का हृदय बोल रहा है। इस वर्ष महासभा ने एक विशेष महत्व का प्रस्ताव स्वीकृत किया है। मथुरा में बूचड़खाना है उसमें गौवे भी मारी जाती हैं और दूसरे पशु भी। मथुरा का प्रदेश हिन्दुओं के लिये विशेष महत्व रखता

है। वह महाराज कृष्णचन्द्र की भूमि है। वहां किसी प्राणी का बध नहीं होना चाहिये। गौ का बध तो वहां सर्वथा असह्य है। महासभा ने निश्चय किया है कि यह पशुबध सरकार को बन्द करना चाहिये। और यदि दिसम्बर १९३६ तक यह पशुबध सरकार बन्द न कराये तो महासभा इसे रुकवाने के लिये सत्याग्रह का अवलम्बन करे। सरकार तो पशुबध बन्द कराने से रही। तब यदि महासभा ने सत्याग्रह का अवलम्बन कर लिया तो निश्चय ही महासभाकी जन प्रियता और शक्ति बहुत बढ़ जायेगी। बहुत लोग महासभा के कार्यकर्त्ताओं पर गलत या सही यह आक्षेप करते हैं कि उनमें कुर्बानी की भावना नहीं है वे हिन्दुओं के लिये भी कष्ट नहीं झेल सकते देश के लिये कष्ट झेलने की तो बात ही नहीं पूछनी चाहिये। वह सत्याग्रह चला कर महासभा के नेता इस आक्षेप का क्रियात्मक उत्तर दे सकेंगे। परन्तु महासभा के इस अधिवेशन में हमें एक बात चिन्ता-जनक भी लगी। वह थी भाई परमानन्द जी और पण्डित मालवीय जी के दलों में दिखाई देने वाली कलह। आपस का यह कलह महासभा और हिन्दुओं दोनों ही के लिये अहितकर है। दोनों ओर के नेताओं को समझदारी से काम लेकर इस कलह को शीघ्र सुलझा लेना चाहिये।

❀ ❀

स्वर्गीय प्रेमचन्द जी !

प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्रेमचन्द जी की मृत्यु का समाचार साहित्यिक जगत विशेषता हिन्दी जगत में बड़े दुख के साथ सुना जायगा। उनके निधन से साहित्यिक जगत में वह स्थान रिक्त हुआ है जिसकी पूर्ति होना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। उन्होंने समाज को वही साहित्य प्रदान किया है जो उसे दिया जाना चाहिए था। वह साहित्य सात्विक और समाज को ऊँचा उठाने वाला है। इस दृष्टि से श्री प्रेमचन्द जी का स्थान समाज सुधारकों, जनता के लेखकों और वास्तविक साहित्यकारों में था और रहेगा और वे समाज की अमूल्य सम्पत्ति थे। अपनी रचनाओं से उन्होंने अपना नाम अमर कर दिया और वर्तमान तथा आने वाली सन्तान उन रचनाओं को लेकर अपने को कृत्यकृत्य समझेंगी और उन पर अभिमान करेंगी।

श्री प्रेमचन्द जी का बहुसंख्यक रचनाएँ हमने पढ़ी हैं। उन रचनाओं में मानव-स्वभाव के प्राय प्रत्येक अंग पर प्रकाश मिलता है। और वह भी बिल्कुल स्वाभाविक और वास्तविक। उनकी रचनाओं का मूल मन्त्र आदर्शवादिता मनुष्य और समाज का वास्तविक चित्रण था और मूलस्रोत करुणा थी। राजेन्द्र बाबू के शब्दों में उनका रोता हुआ हृदय उनकी लेखनी में उतर आता था। उन्होंने बहुत कुछ वही लिखा है जो उन्होंने देखा वा सुना था। जो कुछ बाहर से लिया उसे इस रीति से अपनाया जिस से कहना कठिन था कि वह उनका वा दूसरे का है। उनकी कल्पना बड़ी प्रौढ़ थी। भाषा बड़ी सरल और रोचक होती थी। जन-साधारण के समझनेयोग्य थी। वे लिखने के लिए नहीं लिखते थे वरन् आवश्यकतावश लिखते थे। ऐसे लेखक जनता के लेखक होते हैं इस दृष्टि से वे जनता के ही लेखक थे। सेवा सदन रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, गबन, प्रतिज्ञा, गऊदान इत्यादि उनके उत्कृष्ट उपन्यासोंमें से हैं। इसके अतिरिक्त ३००से अधिक उनकी कहानियाँ हैं। ग्राम्य जीवन का जैसा उन्होंने चित्रण

किया है वैसा अन्यत्र नहीं देख पड़ता है। उन्होंने शुरू शुरू में उर्दू में और पिछले १८ वर्षो से 'हिन्दी' में लिखना शुरू किया था। उर्दू में वे अपने असली नाम 'धनपतराय' के नाम से और 'हिन्दी' में प्रेमचन्द के नाम से लिखा करते थे। उनकी कई रचनाओं का हिन्दी से भिन्न मराठी, गुजराती और अपाना देशी विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। ये दानों बात उनकी हिन्दी हितैषिता और उनकी रचनाओं की लोकप्रियता की द्योतक हैं।

श्री प्रेमचन्द जी बड़े खजोले और सादे स्वभाव के व्यक्ति थे। दुनियासाज़ी उनमें न थी। हमें १-२ बार उनके व्यक्तिगत सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है।' चाल चाल वेष भूषा और व्यवहार में अत्यधिक सादापन देख पड़ता था। इसी स्वभाव की वजह से अधिक तो क्या वे अपनी रचनाओं से उतना पैसा भी नहीं कमा सके जितना उनसे कहीं कम प्रसिद्ध लेखकों ने कमाया था इस समय कमा रहे हैं और इसी वजह से उनकी रचनाएँ बाहर और भीतर इतनी लोकप्रिय नहीं हो सकीं जितनी होनी चाहिए थीं।

उनका चरित्र बड़ा आकर्षक था। सिद्धान्तवादिता कूट २ कर भरी थी। अपने आदर्श वादिता पर ही उन्होंने अपने सब डिपुटी इन्सपैक्टरी के पद का परित्याग कर दिया था। यदि वे उसी पद पर बने रहते तो उन आर्थिक संघर्षों में से होकर उन्हें न निकलना पड़ता जिनमें से वे निकलते रहे हैं और शायद पीछे क़र्ज़ भी न छोड़ते। उस समय में उन्होंने एक विधवा से विवाह करके जब ऐसा करना आग के साथ खेलना था उन्होंने अपनी समाज सुधार प्रियता का बहुत सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया था। उनके स्वभाव और चरित्र दोनों ने उनकी रचनाओं में प्रौढ़ता, स्थायित्व, प्रकाश और उत्कृष्टता प्रदान की थी। वही इन दोनो का अमूल्य लाभ उनके निर्णय पर था और यही प्राय उत्कृष्ट लेखकों और कलाकारों के निर्णय पर होता है।

परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति, उनके परिवार को धैर्य और उनके असंख्य मित्रों और प्रशंसकों को इस महान् दुख में शान्ति प्रदान करे।

* *

उत्तम उदाहरण—

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति की अध्यक्षता मे गत मास मे सार्वदेशिक सभा के एक प्रचारक मडल ने केरल मे प्रचार-यात्रा की थी। श्री पण्डित जी ने एक विशाल रिपोर्ट सभा के कार्यालय मे भेजी है। उस रिपोर्ट में एक बडी सुन्दर सूचना दी गई है और वह यह है कि डाक्टर थाइल की धर्मपत्नी ने जो स्वय मुसलमान हो गये हैं और थिया लोगों के इस्लाम धर्म मे दीक्षा के लिए भरसक यत्न कर रहे हैं, पतिदेव द्वारा पूरा जोर और बडे प्रलोभन दिये जाने पर भी इस्लाम धर्म ग्रहण नहीं किया है और वे थिया लोगों के इस्लाम मे प्रवेश के विरुद्ध प्रचार कर रही हैं रिपोर्ट के शब्द इस प्रकार है —

"डा० कमाल पाशा थाइल की धर्मपत्नी श्रीमती सरोजिनी देवी ने अनेक प्रलोभन अपने पति द्वारा दिए

जाने पर भी इस्लाम में प्रवेश से साफ़ इन्कार कर दिया और वे इस मत-परिवर्तन आन्दोलन के विरुद्ध खुले तौर पर प्रचार कर रही हैं। हमने उस देवी से भेंट की है। उसकी धर्मनिष्ठा और साहस को देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने साफ़ शब्दों में अपने पति डा० थाइल के विषय में कहा कि वह केवल पैसे के लिए मुसल्मान बना है। मुझे भी उसने कहा कि यदि तुम मुसल्मान बन जाओ तो तुम्हें बहुत सी सम्पत्ति, बँगला, मोटर कार वगैरह मिल जाँयगे किन्तु मैंने यह कहकर इन्कार कर दिया कि मेरे लिए यह कुटिया ही काफ़ी है। मुझे बड़े बंगले और मोटर कार इत्यादि की ज़रूरत नहीं। हमने उस देवी को Caste system, Inspiring sayings of Rishi Dayanand आदि पुस्तकें भेंट करके उसे प्रेरणा की कि वह आर्य्य धर्म्म की दीक्षा ग्रहण करके उसका प्रचार करे जिसे उसने सहर्ष स्वीकार किया।"

निश्चय ही श्रीमती थाइल के उदाहरण से हिन्दू सभ्यतावादियों को बड़ी प्रसन्नता होगी। देश के अन्य पुरुष स्त्रियों विशेषतः केरल के थिया वर्ग के उन लोगों को जो मुख्यतः आर्थिक प्रलोभनों के वशीभूत हो धर्म्म परिवर्तन के लिए उतावले हो रहे हैं इस देवी के उदाहरण से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। यह उदाहरण इस बात का एक जीता-जागता सबूत है कि हिन्दू स्त्रियों को इस्लाम ग्राह्य नहीं।

❀ ❀

बम्बई का साम्प्रदायिक दङ्गा—

गत मास देश में बम्बई के साम्प्रदायिक दंगे की भयङ्कर और दुःखद घटना हुई है। दंगे का कारण हिन्दुओं के अपने एक मन्दिर का एक भाग बनाना शुरू करने पर हुआ, यह मन्दिर बहुत पुराना था और एक मसजिद के निकट है, मुसलमानों ने इसपर आपत्ति की। हिन्दुओं को सभा मण्डप बनाने का क़ानूनी अधिकार प्राप्त था। हिन्दू और मुस्लिम नेताओं के किसी समझौते पर न पहुँचने पर कुलियों ने पुलिस के संरक्षण में इमारत की नींव खोदनी शुरू करदी और त ी मुसलमानों का आक्रमण हुआ इस दगे में जो लूट-मार अग्निकाण्ड, रक्तपात और गुण्डाशाही का प्रदर्शन हुआ है उसके खण्डन के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं। हमें प्रसन्नता है कि आर्य-समाज बम्बई ने इस अवसर पर पंडितों की सहायता वैसी ही की है जिसकी भारत के इस प्रमुख समाज से की जा सकती है।

❋ हिन्दू महासभा के सभापति का भाषण ❋

कभी कभी हिन्दू महासभा और कांग्रेस मे विरोध हो जाता रहा है और विरोध का आधार सिद्धान्तों तथा उस पर अमल मे भेद ही बना है, फिर भी मै सदा एकता ही के स्वप्न देखता रहा हूँ मै यह चाहता हूँ कि एक सस्था के सदस्य दूसरी सस्था का सन्मान करें। मैं समझता हूँ कि आपने मुझे, इस अवसर पर सभापति बनाने मे जो जिम्मेवारी सौंपी है आपके दिलों में भी यही भावना काम कर रही होगी। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हू कि मै अपनी धार्मिक पोजीशन को न भूलते हुये गृहस्थियों के दृष्टिकोण को भी स्थान देने का पूरा प्रयत्न करू गा। मैं अपने को आप मे रमाने की कोशिश करू गा, ताकि मै अपने अस्तित्व के अतिरिक्त यह भी अनुभव करू कि मै बौद्धों मे बौद्ध, जैनियों मे जैन, ब्राह्मों में ब्राह्म, आर्यसमाजियों मे आर्यसमाजी, सिक्खों मे सिक्ख और दलितों मे दलित हूँ।

मनुष्य जीवन के महान आदर्शों की आर्य ऋषियों ने बडी अच्छी व्याख्या की है। अन्य धर्मो के सिद्धांत अपने तौर पर उपयोगी है लेकिन उनका कार्यक्षेत्र सीमित है। ईसा का धैय से कष्ट उठाने का सिद्धांत चाहे कितना भी नेक हो, उसे विश्व-व्यापी तौर पर लागू नहीं किया जा सकता। यही बात मुहम्मद साहिब की शिक्षा के विषय मे कही जा सकती है। हिन्दू धर्म के मौलिक सिद्धांत विश्वव्यापी हैं। वे सब मनुष्यों के लिये तथा सब समयों के लिये सत्य है। हमे अपने पड़ोसी से इसलिये प्रेम नहीं करना कि वह हमारा भाई है, बल्कि इसलिये करना है कि उस मे वही आत्मा है जो हम मे भी है। यह दुख की बात है कि साधारण मतभेद पर हम रक्तपात पर उतारू हो जाते हैं।

जीओ और जीने दो

यह देख कर बडा दुःख होता है कि हिन्दुस्तान जैसी पुण्य भूमि को युद्ध की भूमि बना लिया गया है और उस मे निर्दोषों का खून बहा दिया जाता है। अगर कुरआन शरीफ मे मस्जिदों के सामने बाजा बजाने की मनाही हो तो यह पाबन्दी केवल उस मत के अनुयायियो के लिये ही होनी चाहिए। लेकिन अगर हिन्दुओं के लिये पवित्र अवसरों पर बाजा बजाना आवश्यक है तो उन्हे बाजा बजाने से क्या रोका जाना चाहिये।

आक्रमक धर्म के अनुयायियों को यह समझ लेना चाहिये कि भारतवर्ष मौलिक रूप से हिन्दुओं के लिये है। हिन्दुओं का जीवन आर्य सस्कृति और हिन्दू धर्म की रक्षा तथा उन्नति के लिये है। यह सस्कृति मनुष्यमात्र के लाभ की है। सम्भव है कि अल्पसख्याओं के दिलों मे यह भय हो कि उनके लिये इस देश मे स्थान नहीं होगा, मैं साफ कर दू कि अल्पसख्याओं को अपने धर्म

और संस्कृति की उन्नति करने की पूरी स्वतन्त्रता होगी। मैं कह चुका हूँ कि हिन्दूधर्म का मूल आधार यही है कि जिओ और जीने दो। मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि भारतवर्ष में जातीयता, धर्म और भाषा हिन्दुओं ही की होनी चाहिये। यह हमारे जातीय विधान का मूलाधार होना चाहिये। इसका ठीक हल यही है कि सम्मिलित चुनाव हो। विशेष समुदायों और सम्प्रदायों की कोई सीट रिजर्व न हो। अल्पसख्या के प्रतिनिधित्व की समस्या इसी प्रकार हल हो सकेगी। प्रजातन्त्रवाद के सर्वोत्तम आदर्श के अनुसार ऐसा ही होना चाहिये। हिन्दूधर्म के सिद्धान्तों के अनुसार भी यही ठीक है। हिन्दूधर्म समता का हामी है, इस पर भा यदि किसी अल्प सख्या को सरक्षण दरकार हो तो राष्ट्र-सघ का वह ठहराव जो अल्पसंख्यक जातियों के लिये है लागू किया जा सकता है।

हमारी घरेलू समस्याएँ

यह नहीं समझना चाहिये कि जो स्कीम साम्प्रदायिक समस्या को हल कर देगी उससे हिन्दू अपने सारे मन्तव्यों को प्राप्त कर लेंगे। क्योंकि कम्यूनल एवार्ड जहा हिन्दूसमाज पर बाहिर से आक्रमण करता है वहा उसमें बहुत सी आंतरिक त्रुटिया हैं। जब से हिन्दुओं ने अपने पूर्वजों के उन्नतिशील सिद्धान्तों का त्याग किया है तब से उसमें बहुत सी कुरीतियों ने घर कर लिया है। जो हिन्दू समाज को निर्बल तथा लचलचा बना रही है और सारी जाति को विभिन्न टुकड़ों में विभक्त कर रही है। कम्यूनल एवार्ड में भी ये भयंकर कुरितिया हैं जिनसे कि हिन्दुओं तथा हिन्दुत्व दोनों को भय है। इस भय का अवश्यमेव मुकाबला करना चाहिये। और यह तभी हो सकता है जब कि इन कुरीतियों को दफना दिया जाये जिससे वे पुनः उठ न सकें और हिन्दू जाति एक मजबूत, सगठित तथा योद्धा जाति बन जाये। ऐसा होने पर ही हिन्दू जाति, हिन्दू सभ्यता तथा सस्कृति का टार्च लेकर ससार की मर्ग प्रदर्शक बन सकती है। इन सारी कुरीतियों को गिनना तो इस समय मेरे लिये असम्भव है, परन्तु मैं यह कह सकता हूँ कि इन सब में भयंकर तथा हानिकारक अस्पृश्यता है। मै इन लोगों के साथ सदैव सहानुभूति प्रदर्शित करता हूँ जिन पर कि हमने अपने हाथोंसे धर्मके नाम पर स्वय अत्याचार किया है। कोई तर्क इसका समर्थन नहीं कर सकता। मनुष्यत्व का कोई विचार इसे सहन नहीं कर सकता। बिना किसी हिचक व झिजक के तथा शीघ्रातिशीघ्र इस इस दैत्य का हनन कर डालना चाहिये। धर्म का अर्थ यह नहीं कि जो कुछ दूसरों ने किया है हम भो वैसा ही करें। शास्त्र अन्धाचरण के विषय नहीं आज हमारे सम्मुख यह प्रश्न है कि शीघ्र से शीघ्र इस हतभागिनी अस्पृश्यता को समूल नष्ट कैसे करें जिससे कि यह पुन पनपने न पाये।

अधिकार

मैं अस्पृश्यता का विरोध इसलिये नहीं करता अथवा मैं उसके निवारण के पक्ष में इसलिये नहीं हूं कि मुझे अस्पृश्यों पर दया आती है। परन्तु मैं समझता हूँ कि यह अछूतों के अधिकार हैं कि उन्हें किसी अवस्था में भी अछूत नहीं रहना

चाहिए। यही कारण है कि मैं "हरिजन" शब्द का भी पसन्द नहीं करता क्योंकि इससे दान तथा दया का भाव टपकता है। और कवल नामों का परिवर्तन मात्र कर देने से इस समस्या का हल नहीं हो जावेगा। कुछ लोग कहते हैं कि डाक्टर अम्बेदकर दुष्ट है। वह हिन्दू समाज मे लड़ाई झगड़े तथा हलचल मचा रहा है। परन्तु मैं कहता हूँ कि हमे उसका कृतज्ञ होना चाहिए कि वह वीरता के साथ अछूत जनता में अछूतपन के भाव के प्रति लज्जा तथा घृणा के भाव भर रहा है और इस निन्दनीय रोग का निवारण करने के लिए उन्हें उत्तेजित कर रहा है तथा उकसा रहा है।

क्या अछूत सिख बन जावें ?

अब मैं एक सगीन प्रश्न पर आता हूँ जो कि हिन्दू जाति की गर्दन पर लटक रहा है। वह प्रश्न है "क्या अछूतो को सिख धर्म मे परिवर्तित हो जाना चाहिए" मैं बड़े जोर के साथ कहता हूँ कि जो जाना चाहते हैं वे बड़े शौक से सिख धर्म स्वीकार करलें। परन्तु यह नहीं हो सकता कि सारे अछूत एक साथ सिख बन जायें। मैं यह स्पष्ट कर दूगा कि किसी हिन्दू के लिए सिख बन जाना धर्म परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। धर्म परिवर्तन का अर्थ एक दूसरे मत में विश्वास करने के हैं। परन्तु इससे बड़ा उपहास और क्या होगा कि हम सिख धर्म को हिन्दू धर्म से प्रथक् समझें। सिख हिन्दुओं का लड़ाका दल है। वे उनके वीरसैनिक हैं। वे हमारी सेना के अग्रणी हैं। इस दृष्टिकोण से क्या यह नहीं कहा जा सकता कि यदि अछूत सिख बन जाये तो हमे बहुत भारी लाभ होगा। क्या हमारे लिए यह आत्मघात नहीं होगा कि हम इस समस्या की उपेक्षा करे और अछूतों के सिख बन जाने का विरोध करे। जब कि हम यह जानते हैं कि ईसाई तथा मुसलमान उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए निरन्तर तथा अथक परिश्रम कर रहे है और ईसाई तथा मुसलमानों के विदेशी राष्ट्र अपने प्रचारक भेज रहे हैं और फण्ड एकत्रित कर रहे हैं।

हिंदुत्व और धर्म परिवर्तन

मैं समझता हूँ कि इस विचार तथा विश्वास ने हिन्दू जाति का बड़ा अहित किया है कि हिन्दू जन्म से ही हिन्दू हो सकता है। अत शुद्धि किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती। इसने हिन्दू धर्म के सन्मुख एक भयकर खतरा उपस्थित कर दिया। दूसरे धर्मो के प्रचार बिना किसी विरोध के हमारे धर्म को हानि पहुँचा रहे थे। वे हिन्दुओं को अपने मे मिला सकते थे, परन्तु हिन्दू धर्म में कोई आ नहीं सकता था। हिन्दुओं का एक फिरका अब भी इस बात पर अड़ा हुआ है कि हिन्दू धर्म शुद्धि की आज्ञा नहीं देता। दूसरे धर्मो के प्रचारक हमारी इस दुर्बलता से लाभ उठाते हैं और तोते की तरह उनके कथनों को दुहरा कर हिन्दू प्रचारकों का विरोध करते हैं। यह बहुत भद्दा है। वास्तव मे हिन्दु धम मे बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन की आज्ञा नहीं है, प्राचीन हिन्दुओं ने, आर्यो ने क्या क्या किया था। वे कितनों ही को अपने आप मे जज्ब कर गये। इसका पता इस

(शेष पेज ४३० पर)

वर्णाश्रम धर्म का वैज्ञानिक विवेचन

[लेखक—विद्वद्वर डा० भगवानदास जी, काशी]

अन्तर्जातीय विवाह बिल का स्वरूप और उसके उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिये वर्ण-व्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ शब्द कहना आवश्यक है, उससे यह स्पष्ट हो जायगा कि वर्तमान जातियों और उपजातियों के भीतर ही विवाह करने के बड़े बन्धन उस व्यवस्था के अनुकूल नहीं हैं। मौलिक स्वरूप में वर्ण-व्यवस्था एक पूर्ण सामाजिक सङ्गठन थी जिसमें परस्पर सम्बद्ध चार और सङ्गठन सम्मिलित थे अर्थात् शिक्षा सम्बन्धी सङ्गठन, जिसमें विद्वान् या ब्राह्मण वर्ग तथा विद्यार्थी या ब्रह्मचारी वर्ग सम्मिलित था, दूसरा रक्षा सङ्गठन, जिसमें वीर या क्षत्रियवर्ग और साधारणतया वानप्रस्थ सम्मिलित थे, तीसरा आर्थिक संगठन, जिसमें व्यापारी या वैश्यवर्ग और गृहस्थ सम्मिलित थे, चौथा शिल्प या श्रमिक संगठन जिसमें शूद्र या कारीगर जो शारीरिक श्रम करते थे, सम्मिलित थे। यह चतुर्मुख सामाजिक संगठन जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र शिक्षाशास्त्र, आहारशास्त्र, कामशास्त्र, स्वास्थ्यविज्ञान और सन्ततिशास्त्र आदि विज्ञानों के आधार भूत विशाल सिद्धान्तों पर स्थापित था। आर्य-जाति के पूर्व पुरुषों ने अत्यन्त प्राचीन काल में इसे एक ऐसे साचे के रूप में बनाया था, जिसमें केवल भारत ही नहीं, किन्तु संसार की समस्त मानव जातिया ढालकर थोड़ी या बहुत आर्य या सभ्य बनाई जा सकती थीं। यह जातिया जो इसके प्रभाव में आती थीं, अपने नाना व्यवसायों, भिन्न-भिन्न ध्येय, विश्वास, रीति-रिवाज, खेल-तमाशे और विधि निषेध के साथ इसमें समा जाती थीं।

देशधर्मान् जातिधर्मान् कुलधर्माश्च शाश्वतान्
पश्यन्ति ? गणधर्मांश्च शास्त्रेस्मिन्नुक्तवान्
पाषण्ड
मनुः ॥

जीव शास्त्र का यह सिद्धान्त है कि प्राणियों के परम्परागत जन्मों के दो नियम काम करते हैं जिन्हें आजकल के विकासवादी पैतृकसक्रमण और सहज वैषम्य का नाम देते हैं, जिसका अर्थ यह है कि (१) एक ही माता पिता की संतान के शरीर और मन माता पिता के अनुरूप और परस्पर समान होते हैं। (२) वह प्राय भिन्न भी होते हैं। इन्हीं के लिये पुराने शब्द जन्म और कर्म हैं। इन दो विपरीत नियमों के अस्तित्व का हेतु इस आध्यात्मिक तथ्य में पाया जाता है कि आत्मा, Unity (एकत्व) Uniformity (समानता) Simi-

larity (सादृश्य) Continuity (सातत्य) Heredity (संक्रमण) Multiplicity (अनेकत्व) Diversity (भेद) और Variation (वैषम्य) आदि का प्रतिनिधि है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त यह है कि मन के तीन कार्य हैं इनमें से कोई एक प्रत्येक व्यक्ति में प्रबल होता है, उसके अनुसार द्विज अर्थात् शिक्षित और संस्कृत व्यक्ति जिनका आत्म परीक्षण और कर्म-अकर्म के ज्ञान के कारण दूसरा जन्म समझा जाता है, तीन मुख्य वर्गों में से किसी एक में आते हैं १—ज्ञान प्रधान, २—कर्म प्रधान, और ३—संग्रह प्रिय, चौथा वर्ग जो बच रहा है उसमें साधारणतया अशिक्षित बाल-बुद्धि व्यक्ति आते हैं जो किञ्चित् दक्षता से या उसके बिना ही श्रम का कार्य करते हैं। ज्ञान-प्रधान व्यक्ति श्रद्धा और सम्मान में ही पूर्ण सन्तोष पाते हैं और वही उनसे कार्य कराने के लिये भारी प्रेरित होता है। कर्म-प्रधान व्यक्ति अधिकार, ऐश्वर्य और आज्ञा-शक्ति को पसन्द करते हैं। संग्रह-प्रिय मनुष्य सम्पत्ति और धन के लिये कार्य करते हैं। श्रमिक मनुष्य इन्द्रिय सुख क्रीडा विनोद आदि चाहते हैं। यह भली भांति स्मरण रखना चाहिए कि सहोदर भाई भी चार भिन्न वर्गों के हो सकते हैं और प्रायः होते भी हैं। यह सहज वैषम्य के नियम के अनुकूल होता है। और पैतृक संक्रमण के कारण वे एक से भी हो सकते हैं।

न विशेषोस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम्॥

वेद के अलंकार के अनुसार चारों वर्ग प्रजापति के शरीर से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए भाई भाई हैं। किन्तु अपने स्वभाव और कर्म के कारण भिन्न वर्णों में विभक्त होते हैं।

एक दूसरा प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है कि विवाह के पश्चात् सन्तान उत्पन्न हो जाने पर कामवासना शुद्ध प्रेम और त्यागपूर्ण उत्तरदायित्व में परिणत हो जाती है। यद्यपि जिस प्रकार 'अति' और कामों में हानिकारक है उसी प्रकार सन्तान उत्पन्न करने में भी है। किन्तु विषय सुख को प्राप्त करते हुये सन्तान का जन्म जान बूझकर त्याग पूर्ण उत्तरदायित्व से बचने के लिये रोक दिया जाय तो काम वासना स्वार्थपरता की भयंकर अग्नि का रूप धारण करती है और शीघ्र ही दाम्पत्य प्रेम और सुख को नष्ट-भ्रष्ट करके दोषों और अपराधों और सामाजिक उथल-पुथल को उत्पन्न करती है। गृहस्थ को इसीलिए बड़ा आश्रम कहा गया है कि यह सबका भरण पोषण करता है और अति प्रसक्ति की निन्दा की गई है।

आर्थिक सिद्धान्त

आर्थिक सिद्धान्त यह है कि घोर प्रतिस्पर्धा को रोकने के लिये अथवा कर्म करने के लिये मनुष्यों को यदि पैतृक-संक्रमण का नियम स्पष्ट दीख पड़े तो अपना पैतृक-व्यवसाय ही करना चाहिए और जब वैषम्य का नियम प्रबल रूप में देख पड़े तो ऐसे व्यक्ति को अपने अनुरूप रोटी कमाने का व्यवसाय करने तथा उसी नाम से कहे जाने के लिये आज्ञा मिलनी चाहिए और उसके

साथ पैसा जोड़ने के लिये कोई दूसरा व्यवसाय उसे नहीं करने देना चाहिये। इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार समाज की सेवार्थ अच्छे से अच्छा प्रयत्न करने तथा अपने निर्वाह के लिए उचित पारिश्रमिक पाने के योग्य होगा। और काम, सम्पत्ति और विश्राम इनका उचित बटवारा होगा। क्योंकि कोई भी व्यक्ति एक के अतिरिक्त दूसरे व्यवसाय से पैसा न कमा सकेगा।

समाज शास्त्र का सिद्धान्त

समाज शास्त्र का सिद्धान्त यह है—जिस प्रकार मनुष्य शरीर में सिर, भुजायें, धड़ और टांगें होती है और एक माननीय मस्तिष्क में ज्ञान-इच्छा, कृति और साधारण जीवन होता है उसी प्रकार सामाजिक शरीर में अर्थात् पूर्ण विकसित उन्नत सभ्य समाज में चार व्यवसायिक वर्ग होते। १—विद्या व्यवसाय, २—आधिकारिक(Executive) व्यवसाय, ३—व्यापारिक व्यवसाय और ४—श्रमिक व्यवसाय। इन चारों के लिये उनके स्वभाव के अनुसार भिन्न २ अधिकार और भिन्न २ कर्तव्य, भिन्न २ कार्य और भिन्न प्रकार के जीवन निर्वाह की सामिग्रिया, भिन्न परिश्रम और भिन्न वेतन और पुरस्कार यह न्यायानुसार वितरित करना चाहिये और किसी को भी दूसरे की वस्तुओं पर विशेषकर जीवन-निर्वाह के साधनों पर आक्रमण न करने देना चाहिये तथा किसी वर्ग मे या व्यक्ति में दो तीन या चारों प्रकार के कार्यों का मिश्रण न होना चाहिये।

एक दूसरा समाज शास्त्र का सिद्धान्त जिसका भारी प्रभाव पड़ता है यह है कि समाज की इकाई परिवार है, व्यक्ति नहीं। इसके विषय में अन्यत्र कहा जाचुका है। एक और सिद्धान्त बड़े महत्व का है। वह यह कि प्रत्येक व्यक्ति का जीवन चार भागों में विभाजित होना चाहिये। प्रथम भाग अध्ययन में लगना चाहिये, द्वितोय भाग गृहस्थ में, रोटी कमाने और सन्तान के पालन-पोषण में और तीसरा निःस्वार्थ सार्वजनिक सेवा में और चौथा आध्यात्मिक अभ्यास और विचार में। व्यक्तिगत स्वार्थों को केवल प्रथम और द्वितीय भाग में नियमित रूप से काम मे लाया जाय और अन्त के दो भागों में अधिक से अधिक सामाजिक सर्वहितकारी कार्य लिये जाय। यह सिद्धान्त आश्रम धर्म कहलाता है और वर्ण धर्म के साथ उसका अनिवार्य सम्बन्ध है जैसे कि ताने का बाने से। तीसरे भाग के ऐसे व्यक्तियों का समूह जो जीवन-निर्वाह की समस्याओं से मुक्त हो चुके हैं, जिनका अनुभव परिपक्व है, जो संसार को और विशेषकर नवयुवक वर्ग को हितकी दृष्टिसे देखते हैं, जो वास्तव मे प्रतिष्ठा के योग्य और प्रतिष्ठित हैं, जो सार्वजनिक कार्य के लिये निर्वाचित कमेटियों, बोर्डों और व्यवस्थापिका सभाओं के लिये सर्वदा मिल सकते हैं, पुन उत्पन्न किया जाय तो स्वार्थपरता और मिथ्याचार जो आज केवल वैतनिक सेवकों मे ही नही अपितु, कुछ अंश में निर्वाचित अवैतनिक कार्य-कर्ताओं में भी फैले हुए हैं, यदि सर्वथा दूर नहीं होंगे तो बहुत कम हो जायगे।

राजनैतिक सिद्धान्त

राजनैतिक सिद्धात यह है कि चारों व्यवसायिक

वर्ग भिन्न २ पचायत स्थापित करें, जो एक दूसरे से सम्बद्ध भी हो। उन चारों की शक्ति का नियमन होता रहे। शक्ति, सैनिक-शक्ति, अर्थ शक्ति और भोग शक्ति किसी व्यक्ति या विशेष वर्ग से केन्द्रित न हो क्योंकि एक ही जगह कई शक्तियों के एकत्रित होने से उच्छृङ्खल अत्याचार पूर्ण दुरुपयोग होने की सम्भावना है। शिक्षक, सैनिक, पोषक और सहायक अपनी अपनी परिधि मे रहे और एक दूसरे को दबाने की चेष्टा न करें।

शिक्षा का सिद्धान्त

शिक्षा का सिद्धात यह है कि प्रत्येक बालक जो शिक्षित होने योग्य है, उसे साधारण शिक्षा के साथ उसके स्वभाव के अनुकूल विशेष व्यवसायिक शिक्षा देनी चाहिये, जिसका निर्णय शिक्षकों को सावधानी से करना चाहिये। स्वास्थ्य-विज्ञान और सन्तति शास्त्र का सिद्धान्त यह है कि आहार और विवाह के सम्बन्ध में हर प्रकार की सावधानी रखनी चाहिये। जिससे एक सी रुचि और स्वभाव के व्यक्ति ही एकत्र भोजन करें और विवाह सम्बन्ध करें। जिससे व्यक्ति और जाति स्वस्थ और सुखी रहें। इन सिद्धान्तों के ऊपर पुराना सामाजिक ढांचा बनाया गया था। इसमें प्रत्येक व्यक्ति जन्म के कारण नहीं बल्कि अपने गुण और स्वभाव के कारण चार में से किसी एक वर्ग में सम्मिलित होता था। इन्हीं चार वर्गों के भीतर मनुष्य के असंख्य व्यवसाय प्रविष्ट हो सकते हैं और प्रत्येक व्यक्ति सरलता से अपना स्थान ढूंढ सकता है और समाज पर भार स्वरूप न होकर उचित निर्वाह प्राप्त कर सकता है।

वर्णाश्रम-धर्म

वर्णाश्रम-धर्म या वर्ण व्यवस्था का मौलिक स्वरूप यही था। इसी में भारत की सैकड़ों जातिया संगठित और सभ्य बनाई जाती थीं। भारत के इतिहास की आरम्भिक शताब्दियों में किसी भी जाति, राष्ट्र, देश, सम्प्रदाय के मनुष्य उनके विश्वास और राष्ट्रीयता और मातृ-भाषा को बिना बदले उसमें सम्मिलित होकर घुल मिल जाते थे। आज भी स्पष्टतया हम देखते हैं कि पंजाबी, मारवाड़ी, अवधी, मध्य देशी, बंगाली, मदरासी, मरहठा, गुजराती और बाली द्वीप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र मौजूद हैं। इनमें से प्रत्येक समुदाय में ऐसे व्यक्ति मौजूद है जो वैष्णव, शाक्त या शैव हैं अथवा अन्य अनेक सम्प्रदायों के मानने वाले हैं और नाना प्रकार की भाषायें बोलते हैं। मौलिक व्यवस्थाके आधारभूत सिद्धान्तों मे चीनी, जापानी, ईरानी, अरब, फ्रेंच जर्मन, ब्रिटिश, ईसाई, मुसलमान या यहूदी लोगों को इन्हीं चारो समुदायों मे सम्मिलित करने के विपरीत कोई कारण नहीं है, बल्कि इसके पक्ष में अनेक हेतु हैं और वास्तव में चार मुख्य व्यवसायिक वर्ग अवश्य पाये जाते हैं, यद्यपि वे साधारणतया माने नहीं जाते और न संगठित ही हैं और श्रम और मजदूरी का उचित वितरण भी नहीं है जैसा कि प्राचीन भारतवर्ष में था। रूसी सोवियटने भी स्वाभाविकतया अपना नाम कृषक, सैनिक और श्रमियों का अर्थात् मानसिक और शारीरिक काम करनेवालों

का प्रजातन्त्र नाम रखा है। ब्रिटेन में भी पादरी, अमीर, साधारण और मज़दूर चार विभाग पाये जाते हैं। .कुरान में भी इल्म, अमर और जुर्रा वाले मनुष्यों का वर्णन है जिसमें मज़दूर भी अन्तर भूत हैं। बाहर के लागों ने प्राय यह कहा है कि हिन्दूधर्म क्या है यह कहना असम्भव है। वास्तव में कोई ऐमा विश्वास या रीति-रिवाज या सस्कार ऐसा नहीं है जो हिन्दू या हिन्दू-धर्म का विशेष लक्षण कहा जा सके। निस्सन्देह हिन्दूधर्म में सार्वभौम धर्म के तत्व पाये जाते हैं जैसा कि संसार के अन्य बड़े धर्मों मे। पर इसके साथ साथ ससार के किसी भाग में पाये जाने वाले रीति-रिवाज, विश्वास और दर्शन नीचे से नीचे और ऊंचे से ऊंचे, स्थूल से स्थूल और सूक्ष्म से सूक्ष्म सभी हिन्दूधर्म के किसी न किसी सम्प्रदाय में अवश्य पाये जाते हैं। ईसाई मत के सैकड़ों सम्प्रदाय हैं, किन्तु ईसा में विश्वास रखना सब में अनिवार्य है। इसलाम के भी बीसियों भेद हैं, किन्तु मुहम्मद में विश्वास करना आवश्यक है, किन्तु हिन्दू के लिये किसी एक व्यक्ति या देवता के नाम या रूप को अनिवार्यता नही है, परन्तु यदि हिन्दूधर्म का कोई लक्षण किया जा सकता है तो वह जाने या अनजाने व्यक्त या अव्यक्त स्पष्ट या अस्पष्ट रूप में इस वर्णाश्रम योजना के भीतर अपने को समझना ही है। प्राचीन ग्रन्थों में हिन्दू शब्द नहीं मिलता। धर्म शास्त्र के शब्द मनुष्य, मानव और नर हैं। प्रथम दो शब्द निरुक्ति के अनुसार वही हैं जो अंग्रेज़ का शब्द मेन (Man) है। यह ठीक है कि आर्य शब्द और उसके विपरीत अनार्य, दस्यु, वृषल और म्लेच्छ धर्म शास्त्रों मे पाये जाते हैं, किन्तु उनका अर्थ सभ्य और असभ्य ही है। हिन्दू शब्द पीछे का है उसी समय का जब से कि भेद-भाव उत्पन्न हुआ जो हमारे समाज को खाये जाता है। वर्ण-व्यवस्था का ऐसा रूप समुदाय, धर्म, व्यवसाय आदि सभी दृष्टियों में समन्वित होता है जो अब तक उसके सम्बन्ध में प्रकट की गई है और मनोवैज्ञानिक, व्यावसायिक वर्ण और जन्मगत जातियों में भेद करके और किसी भी जाति के व्यक्तियों को उनके मानसिक झुकाव और वास्तविक व्यवसाय के अनुसार वर्णों में विभाजित करके उसको वैज्ञानिक और व्यवहारिक रूप प्रदान करता है। वर्ण-व्यवस्था के स्वरूप, उद्देश्य और आधार भूत नियमों की इस रूपरेखा के बाद मुझे इस बिल के सम्बन्ध में जो कुछ कहना है आशा है कि उसे समझने मे कठिनाई नहीं होगी।

वृत्ति विभाजन

वृत्ति-विभाजन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जहा प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षक, रक्षक, व्यापारी या कारीगरों की पचायत मे से एक में सम्मिलित होने के लिये कहा गया है वहा प्रत्येक व्यक्ति से यह भी आशा की गई है कि वह उन्ही व्यवसायों से जीविका करेगा जो उसके वर्ग के लिये निश्चित हैं। किसी अन्य वर्ग के लिये निश्चित व्यवसायों के द्वारा धन कमाने का उसे अधिकार नहीं है। इस प्रकार सम्पत्ति का न्याय्य वितरण हो जाता है और भिन्न व्यक्तियों की भिन्न भिन्न

सत्यार्थप्रकाश लेख-माला—

वस्तु की सिद्धि

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज]

सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास मे ऋषि ने लिखा है—

'लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः' अर्थात वस्तु की सिद्धि लक्षण और प्रमाण से होती है। साधारण रीति से असाधारण धर्म को लक्षण कहते हैं और इसमे तीन दोष होते है (१) अति व्याप्ति, (२) अव्याप्ति, (३) असम्भव। वही लक्षण अपने लक्ष्य को सिद्ध कर सकता है जिस लक्षण में यह तीनों दोष न हों।

अति व्याप्ति उसे कहते हैं जो लक्षण अपने लक्ष्य और अलक्ष्यमें रहे जैसे गो क्या है? यदि गो का लक्षण किया जाय जो सींगोवाली हो वह गो है तो सींग गौ के होते है और गौ हमारा लक्ष्य है परन्तु सींग अजा, महषि के भी होते है वह भी सींगवाली है इसलिये सींगवाली सब होने से यह लक्षण लक्ष्य गो और अलक्ष्य अजादि में व्याप्त होने से अति व्याप्ति दोष से दूषित हो गया।

अव्याप्ति वह है जो लक्षण अपने लक्ष्य के एक देश मे न रहे जैसे गौ का लक्षण करते समय कहे जो कपिला हो वह गौ होती है। यह लक्षण कपिला गो मे होने पर भी श्वेत, लाल वर्ण की गो मे नही जाता है अत किसी गो में है और किसी मे नही है इसलिये अव्याप्ति दोष वाला है।

असम्भव वह दोष है जो लक्षण ही में न जाय जैसे गौ का लक्षण किया जाय एक शफ (सुम) वाली गौ होती है और एक शफ अश्व और गर्दभ के होता है। गो के दो शफ (खुर) होता है अत यह लक्षण गौ मात्र मे ही व्याप्त न होने से असभव दोष वाला है।

जिस लक्षण मे यह तीनो दोष न हो वह लक्षण अपने लक्ष्य को सिद्ध करता है जैसे गौ का लक्षण करें सींग सासना वाली गो होती है।

लक्षण के साथ दूसरा है प्रमाण। प्रमाण पर विस्तृत लेख है उनको छोड़कर अभी पाठक इसीपर

रुचि के लिये क्षेत्र भी मिल जाता है। अन्य दृष्टियों से भी पूर्व लिखित सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्तिवाद और समाजवाद का एक सुन्दर समझौता करके यह व्यवस्था मनुष्य समाज के सामने आने वाली समस्याओं का एक अच्छा हल उपस्थित करती है। वर्ण-व्यवस्थाके आधार भूत नियमो की अवहेलना करके उनको तोडने मरोडने और विकृत अर्थ करने के कारण बलवान और चालाको के द्वारा अधिकारों को बढ़ाने और कर्त्तव्यो से बचने के कारण व्यावसायिक वर्ण-व्यवस्था का वर्तमान विकृत रूप हो गया और अनेक देशों के साथ विवाह सम्बन्धी कठिनाइया भी उत्पन्न हो गई जिनके कारण नया कानून बनाने की आवश्यकता पड़ी।

सन्तुष्ट रहने की कृपा करें 'प्रमा करण प्रमाणम्' जो प्रमाका कारण हो वह प्रमाण होता है और प्रमा कहते है यथार्थ ज्ञान को अर्थात् जो यथार्थ ज्ञानका कारण हो वह प्रमाण कहलाता है और सत्यार्थ प्रकाश में ऋषि ने प्रमाण आठ स्वीकार किये है दर्शनो मे इनकी संख्या न्यूनाधिक है। कोई तीन मानता है तो कोई चार कहता है कोई पाच लिखता है तो कोई छै बतलाता है। यह भेद होने पर भी मानने, इन आठो को ही है। जो न्यून मानते है वह दूसरो को अपने माने हुए प्रमाणोमे अन्तरभाव मान लेते थे। इसलिये संख्या भेद होने पर भी स्वरूप भेद नही होता है। जसे अर्थापत्ति को अनुमान और अभाव को प्रत्यक्ष मे मिला लेने से यह संख्या घट जायगी इसी प्रकार घटाकर अपनी नियत सख्या से प्रत्येक निर्वाह करता है।

प्रमाणोमे प्रथम प्रत्यक्ष प्रमाण है। सत्यार्थप्रकाश मे इसके लिये न्याय का सूत्र लिखा है —

इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यम-व्यभिचारि व्यवसायात्मक प्रत्यक्षम्।

जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और घ्राण का शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध के साथ अव्यव-रहित अर्थात् आवरण रहित सम्बन्ध होता है। इन्द्रियो के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के सयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते है। परन्तु जो व्यपदेश्य अर्थात् संज्ञा संज्ञी के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है वह ज्ञान न हो । अव्यभिचारि जैसे किसी ने रात्रि मे खम्भे को देख के पुरुष का निश्चय कर लिया । व्यवसायात्मक किसी ने दूर से नदी के बालू को देख के कहा कि वहा वस्त्र सूख रहे है ।

इसमे प्रथम भाग यह है। इन्द्रिय और अर्थ के सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ जो ज्ञान वह प्रत्यक्ष है। संज्ञा संज्ञी का ज्ञान भी वैसा होने से अतिव्याप्ति हुई इसलिये अव्यपदेश्य लिखा गया। खम्भेमें पुरुष भ्रम इन्द्रियार्थ सम्बन्ध-जन्य है और संज्ञा संज्ञी वाचक शब्द के व्यवहार से रहित होने पर उसमें अतिव्याप्ति हुई इसलिये अव्यभिचारी कहा क्योंकि वह व्यभिचारी है पुन संशय ज्ञान मे अतिव्याप्ति हुई उसकी निवृत्ति के लिये व्यवसायात्मक शब्द लिखा क्योकि संशय अव्यवसाय ही होता है यह तीनों विशेषण दोष दूर करने के लिये ही है। अब रहा विशेष भाग उसमें इन्द्रियो के विषय इनका परस्पर सम्बन्ध होने से जो ज्ञान होता है वह सम्बन्ध का है। प्रकरण पुस्तकोंमे यह सम्बन्ध छै लिखे गए है ध्यान रहे यह छै सम्बन्ध वह मानते है जो प्रमाण ४ वा पाच मानते है वह अर्थापत्ति प्रमाण और अर्थापत्ति प्रमा न मानकर अनुमान प्रमाण और अनुमति प्रमा लिखेगे और अनुप-लब्धि प्रमाण अस्वीकार करके अभाव को प्रत्यक्ष प्रमाण और प्रत्यक्ष प्रमा के अंतरभूत होंगे वह छै सम्बन्ध यह है—

१ संयोग २. सयुक्त समवाय ३ संयुक्त समवेत समवाय, ४ विशेषण विशेषता ५ समवाय ६. सम-वेत समवाय।

(१) चक्षु—

[क] आख का घट के साथ संयोग है क्योकि चक्षु तैजस द्रव्य है और घट पार्थिव द्रव्य है और दोनो का सयोग सम्बन्ध है।

[ख] चक्षु का घट क रूप क साथ सयुक्त सम वाय है जैसा कि स याथ प्रकाश म क्रिया क्रिया वान्, गुण गुणी जाति०यक्ति, कार्यकारण अवयव अवयवी इनका नि य सम्बन्ध होने से समवाय कहाता है और सयोग वाले को सयुक्त कहते है।

[ग] चक्षु का रूप व क साथ सयुक्त समवेत समवाय सम्बन्ध है। नेत्र का घट से सयोग वह हो गया सयुक्त घट का रूप में समवाय वह होगया समवेत और रूपत्व का रूप में समवाय है।

[घ] घट नीला है सम पीला रग रग नहीं इसी भाति और कल्पना करल उस अभाव म प्रथम के सम्बन्ध जोडकर अथवा सम्बद्ध कह क विशेषण विशेषता सम्बन्ध है।

(२) त्वक—

[क] त्वचा का पट से सयोग है।

[ख] त्वचा का पट क स्पश से सयुक्त सम वाय है।

[ग] त्वचा का स्पर्श व से सयुक्त समवेत सम वाय है।

[घ] त्वचा का कोमल स्पर्श में कठिन स्पश के अभाव के साथ सबद्ध विशेषण विशेषता सब ध है।

(३) घ्राण—

[क] घ्राण पुष्प क साथ सयोग सम्बन्ध है।

[ख] घ्राण का गन्ध क साथ सयुक्त समवाय सम्बन्ध है।

[ग] घ्राण का गध व क साथ सयुक्त समवेत समवाय सम्बन्ध है।

[घ] घ्राण का सुगन्धि में दुर्गंधाभाव होने से उस अभाव से सम्बद्ध विशेषण विशेषता सम्बन्ध है।

(४) रसना—

[क] रसना का वायु के साथ सयोग सम्बन्ध है।

[ख] रसना का रस के साथ सयुक्त समवाय सम्बन्ध है।

[ग] रसना का रस व क साथ सयुक्त समवाय समवेत सम्बन्ध है।

[घ] रसना का मधुर रसमे अमलाभाव होनेसे अभावक साथ सम्बद्ध विशेषण विशेषता सम्बध है।

(५) मन—

[क] कोई २ मन को इन्द्रिय मानते है और कोई २ नहीं मानते है जो मानते है उनक मत म मन का आ मा क साथ सयाग सम्बन्ध है।

[ख] मन का सुख क साथ सयुक्त समवाय सम्बन्ध है।

[ग] मन का सुखत्व क साथ सयुक्त समवाय समवेत सम्बन्ध है।

[घ] मन का सुख म द खाभाव होता है उस अभाव क साथ सम्बद्ध विशेषण विशेषता सम्बन्ध है।

(६) श्रोत्र—

नैयायक अन्य इद्रिया को भूता से उत्पन्न हुई हुई मानते है परतु श्रोत्र का आकाश रूप ही मानते हैं। आकाश से उत्पन्न नहीं मानते और नवीन वेदाति इसको आकाश से उत्पन्न हुई इद्रिय मानते हैं। जो आकाश रूप मानते है उनक मत में शब्द आकाश का गुण है और गुण गुणी का सम वाय सम्बन्ध होता है।

❋ भारत का उद्धार ❋

लेखक—एक अनुभवी पत्रकार

(४)

ग्राम्य भारत में पेशो के बटवारे की समस्या ऐसी समस्या है जिसपर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। भारत में खेती से भिन्न अन्य पेशों के ह्रास ने कुल आबादी के ७३ प्रति शतक हिस्से को खेती पर आश्रित कर दिया है। लोगों को पैदावार की वृद्धि के लिये अपने को उद्योग-धंधों, व्यापार और शासन में अधिक से अधिक लगाना चाहिये। सर ऐम० विश्वेश्वर अपने 'भारत के लिये निर्धारित अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक में लिखते हैं—

पशों की पर्याप्त विभिन्नता का अभाव है। पैदावार की वृद्धि के लिये वर्तमान यन्त्रों और वैज्ञानिक तरीको का बड़े अच्छ पैमाने पर प्रयोग नहीं हुआ है। यदि पेशों का ठीक २ विभाजन हो तो खेती में लगे हुये लोगों में से आधे से कम ही खेती के लिये काफ़ी हों और स्वभावत शेष आधे लोगों को उद्योग धधों और दूसरे पेशों का काम मिल जाय। ऐसा करने के लिये विशाल आयोजनों और पैदावार की वृद्धि के विस्तृत प्रोग्रामों के निर्धारण की ज़रूरत है। इस सम्बन्ध मे देश के भावी हितों की रक्षार्थं उचित परिवर्तन किए जानें चाहिये। सब से ज्यादा दुःख का बात यह है कि किसानों से उनके पुराने पेशे और धन्धे छिन गये हैं।

प्राचीन काल में गावों में कपड़ा तय्यार करने के व्यवसाय से बड़ी सख्या में ग्रामीणों की गुज़र हो जाती थी परन्तु जब यह व्यवसाय नष्ट हो गया तब कातने और बुनने वाले अपने पेशों से वंचित होगये। जब रेलों और अग्निबोटोंने गाड़ीवानों और मल्लाहों के परिश्रम के फलों को हड़प कर लिया तब गाड़ीवान और मल्लाह भूखों मरने लगे। दस्तकारों रंगरेजों और बढ़इयों को वर्तमान प्रति योगिता के कारण बड़ी सीमा तक अपने पेशे छोड़ने पड़े। विविध पेशों की व्यवस्था के लिये उद्योग धंधों के पुनर्जीवित और नये नये उद्योग धधों के आवि-

---

[क] अत श्रोत्र शब्द से समवाय संबन्ध है।

[ख] श्रोत्र का शब्दत्व से समवेत समवाय सम्बन्ध है।

[ग] गत्वादि में कत्वादि का अभाव होता है उस अभाव से सबद्ध विशेषण विशेषता सम्बन्ध होता है।

इस प्रकार यह छ सम्बन्ध सयोग, सयुक्त समवाय, संयुक्त समवेत समवाय, समवेत समवाय, विशेषण विशेषता भेद से होते हैं जिनसे प्रत्यक्ष होता है और जहा प्रत्यक्ष ज्ञान में इन्द्रियार्थ का सन्निकर्ष है वहा इनमें से कोई न कोई होगा यह जान लेना चाहिये।

ष्कृत किये जाने की जरूरत है। भारत की ग्रामीण जनता की रक्षा के लिये गावों और नगरो मे रहने वाले उच्च वर्गों को गृह-उद्योगो का संरक्षण करना चाहिये।

(५)

शराब, ताड़ी, भाग, चरस, गाजा और अफ्यून, इत्यादि नशों ने भारत मे किसानो को तबाह और निर्जीव कर दिया है। शराब और चरस की बीमारी ने उनकी मुसीबतो के प्याले को भर दिया है और उन्हें विनाश की ओर अग्रसर कर दिया है। यदि सरकार और जनता ग्रामीण भारत के अशिक्षित लोगो मे व्याप्त इन बुराइयों के निराकरण का कार्य हाथ मे नहीं लेती है तो निश्चयही भयंकर गढ़े मे से उन्हें निकालने का और कोई दूसरा उपाय नही रह जाता है। सरकार और जनता को लार्ड चैस्टरफील्ड के भाषण के प्रसिद्ध शब्दो को याद करना चाहिये जो उन्होने १७४३ मे लार्ड सभा मे उस आमदनी के विरुद्ध जो नशीली चीजा के टैक्सो से प्राप्त हुई थी दिया था।

माई लार्डस ! विलास की सामग्री पर टैक्स लगाया जाना चाहिये परन्तु बुराई भी रोकी जानी चाहिये भले ही क़ानून के पृथक्करण मे बड़ी से बड़ी दिक्क़तें क्यों न हो। क्या आप धार्मिक आज्ञाओं के उल्लंघन पर टैक्स लगाना पसन्द करेंगे ? क्या यह टैक्स शरारत भरा और भयकर न होगा क्योंकि इसका अर्थ यही होगा कि जो टैक्स अदा करेंगे उन सब के लिये मादक द्रव्यो के व्यवसाय का खुली छुट्टी होगी। राज्य कर की वजह से शराब को दूकानों को लाइसेंस दिये जाने सम्बन्धी इस बिल में वे शर्तें हैं जिनके आधीन आगे लोगो को क़ानून सम्मत दुराचार की शरारत करने की खुली छुट्टी मिल जायगी—इसमे सन्देह नहीं है कि शराब की खपत को प्रोत्साहित करने के मसूबो में मदद करने के लिये अधिकारी लोग अपने मालिकों द्वारा प्रेरित किए जायेंगे जिससे ऐसी बड़ी आय की आशा है। माई लार्डस जब मै इस बिल की प्रवृत्ति पर विचार करता हूँ तो मैं इसे बुराई के प्रचार कला कौशल के दमन और मानव समाज के विनाश की प्रवृत्ति समझता हूँ। मैं इसे मनुष्यों के विनाश की ओर प्ररित किए गए ऐंजिनों मे सब से घातक समझता हूँ। वह ऐंजिन समझता हूं जिसके द्वारा वे सब जो मारे नहीं जायगें, निकम्मे बना दिये जायगे।'

हिन्दू और मुसल्मान दोनो ही धर्म शास्त्र असयम का निषेध करते है और जाति का अनुशासन और लोक मत दोनो ही इसके विरुद्ध है इसलिये यदि राज्य और जनता देश के हित के लिए इनका प्रचलन रोकना चाहे तो यह कठिन काम नही है। अमेरिका ही वर्तमान जगत मे एक ऐसा देश था जिसने राष्ट्रीय वैधानिक नीति के रूप मे शराब पर प्रतिबन्ध लगाया था। प्रतिबन्धक कानून के अर्से में मादक द्रव्यों की तय्यारी और उसका प्रयोग बहुत कुछ घट गया था। अमेरिका के स्कूल नियमित रूप से उन दिनों शराबखोरी इत्यादि की बुराइयो पर शिक्षा प्रदान किया करते थे। शिक्षा-संस्थाओं और दूसरी चीजो के द्वारा देश के लोगों ने इन बुराइयों के निराकरण की योजना की थी और देश के एक छोर से दूसरे छोर तक आन्दोलन किया गया था। क्या ये चीजें भारतवर्ष मे असंभव हैं ? हम समझते हैं भारत-

वर्ष में ये काम कहीं आसान है यदि राज्य और प्रजा दोनों ही इस समस्या पर कुछ ध्यान दें। भारत के ग्रामों में जुए इत्यादि की दूसरी बुराइयों का भी इसी रीति से मुकाबला किया जा सकता है।

(६)

गावों के जवान व्यक्तियों को लिखने, पढ़ने और हिसाब की प्रारम्भिक शिक्षा दी जानी चाहिए। गृह-उद्योगों, सफाई आत्म-निर्भरता, संयम और किफायतशारी का भी उन्हें शिक्षण मिलना चाहिए। ग्राम्य जनता के पिछड़ेपन का एकमात्र इलाज शिक्षा है। जापान के ग्रामों में स्थानीय टैक्सों का ६० प्रतिशतक गाव की शिक्षा सस्थाओं पर खर्च किया जाता है। कथा वार्ता, उत्सव, पर्व्व तथा शारीरिक उन्नति के लिये अखाड़ों इत्यादि की व्यवस्था भी यहा होनी चाहिए। इनसे गावों में अच्छा वातावरण पैदा होगा और ग्रामीण भाई जुआबाजी, शराबखोरी और अन्य दूषित बुराइयों से बच जायेंगे। क्रमिक प्रचार, ट्रैक्टों और उपदेश के द्वारा ऐसी कुप्रथाओं और अन्धविश्वासों के विरुद्ध जो गाव वालों के स्वास्थ्य और चरित्र को हानिकर सिद्ध होते हैं, युद्ध करना चाहिए।

इन सब कामों के लिए ग्राम-सुधार समितिया होनी चाहिए। इस सम्बन्धमें सर ऐम० विश्वेश्वर के विचार नोट करने योग्य है।

"गांवों की वर्तमान अवस्थाओं में सब शिक्षकों के लिये धन और अध्यापकों का मिलना असम्भव नहीं तो कठिन ज़रूर है। परन्तु प्रत्येक ग्राम समूह के लोगों को अपनी मदद से जो कुछ भी वे कर सकते हैं करना चाहिये। अर्थात् अपने प्रमुख २ नेताओं की प्रगतियों या अपनी ग्राम पंचायतोंके द्वारा। सब से पहिला काम गाँव को यह करना चाहिये कि वह शिक्षा की उन्नति के लिये एक सोसाइटी बनावे। इस प्रकार की एक सोसाइटी को अपनी प्रगतियां कई गांवों तक विस्तृत करनी चाहिये जिनसे उन कर्तव्यों के अनुष्ठान के लिये जिनकी सोसाइटी से आशा की जा सकती, काफ़ी चतुर लोगों की सेवा प्राप्त हो सके।

यदि शिक्षित लोग कस्बों और शहरों में रहेंगे और ग्रामीण जनता की उन्नति से उपराम रहेंगे तो गाव वाले अपनी सहायता स्वयं करने में समर्थ होंगे, यह बात सदिग्ध है। समय आ गया है कि शिक्षित लोग बड़ी सख्या में अपने गाव के भाइयों के पास जायें और राष्ट्र निर्माण का कार्य वहीं से शुरू करें।

सभापति का आसन किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए

मत-विभाजन (Division)

(२)

परिभाषा

सभा सोसाइटियो इत्यादि की बैठको मे जब कोई सदस्य प्रधान की इस घोषणा पर कि कोई प्रस्ताव पास होगया या गिर गया मत भेद प्रगट करता है तब नियमित रूप से सम्मति लिये जाने को मत विभाजन कहते हैं।

विविध रीतिया

मत विभाजन की अवस्था म सम्मति लिये जाने का बैठकों के विविध प्रकारों का नाई विविध रीतियाँ है और वे इस प्रकार है —

(१) सार्वजनिक जलसो में 'पक्ष' और 'विपक्ष' की सम्मति हाथ उठवा कर ली जाती है और बहु पक्ष के अनुसार परिणाम की घोषणा की जाती है।

(२) छोटे २ सगठनो यथा कौन्सिलों, बोर्डों और प्रबन्ध कर्तृ सभाओ मे (जब सम्मतियाँ कार्य्य वाहि में अङ्कित होने वाली हो) सम्मति लेने की सर्वो त्तम रीति यह है कि उपस्थित सदस्यो के नाम पढे जाँय और प्रत्येक सदस्य के 'हाँ' वा 'नहीं' के उच्चारण के अनुसार सम्मतियो की गणना की जाय।

(३) बडी २ सभाओ यथा प्रतिनिधियों के सम्मे लनों सभा सोसाइटियो के साधारण अधिवेशनों और दूसरे इसी प्रकार के संगठनो मे सम्मति लेने की सुविधा जनक रीति यह है कि पक्ष म सम्मति देनेवाले सदस्यो को खड़ा किया जाय और जब तक सम्मतिया गिन न ली जायँ तब तक उन्हे खडा रक्खा जाय और इसके बाद विपक्ष' को इसी रीति से सम्मति प्राप्त की जाय। इस सम्बन्ध मे एक और रीति का अनुसरण भी प्राय अच्छा होता है वह यह है कि 'पक्ष' और 'विपक्ष' के सदस्यो में से सम्मति लेने के लिये १—२ सदस्य को प्रधान नियत कर दे और और वे अपने २ पक्ष की सम्मतिया स्वय गिनकर और परिणाम को लिख कर प्रधान को दे दे।

(४) पार्लियामेण्ट मे मत विभाजन के लिये स्थान नियत होते हैं। प्रधान आज्ञा देता है "पक्ष म सम्मति देने वाले दाहिनी ओर चले जाय और विरुद्ध सम्मति देने वाले बाये ओर चले आवे।"

पक्ष' वालोका स्थान प्रधान के दाहिनी ओर होता है और 'विपक्ष' वालों का उसके बाये ओर होता है। सम्मति देने वाले सदस्य अपने २ नियत स्थानों म चले आते हैं और उनके नाम प्रस्ताव के पक्ष वा विरोध मे सम्मति देने वालो के रूप मे अङ्कित कर लिए जाते है।

(५) जिन सभा स्थलो पर 'स्थान' नियत नहीं होते है वहाँ कभी २ पार्लियामेण्ट का उपयुक्त रीति

का अनुकरण किया जाता है । सभापति 'पक्ष' वा 'विपक्ष' वालों को क्रमश: अपने से दाहिनी वा बाईं ओर जाने की आज्ञा देता है परन्तु इस रीति से कभी कभी गलती और गड़बड़ हो जाती है इसलिये सभा सोसाइटियों की रीति नीति के विशेषज्ञ इसकी शिफारिश नहीं करते है ।

जब सम्मति ज्ञात करली जाती है तब प्रधान 'पक्ष' और 'विपक्ष' मे आई हुई सम्मतियो की सख्या मीटिङ्ग को सुना देता है और बहुपक्ष के अनुसार परिणाम की घोषणा कर देता है कि प्रस्ताव पास हुआ वा नहीं। जब सम्मतियां बराबर होती हैं तब वह अपना कास्टिङ्ग वोट (निर्णायक सम्मति) देता है ।

कतिपय आवश्यक बातें

(१) मत विभाजन के अवसर पर प्रत्येक उपस्थित सदस्य को सम्मति देनी चाहिए ।

(२) यदि मत विभाजन के समय नियत कोरम से कम सदस्य वोट देंगे तो जिस विषय पर मत विभाजन हुआ होगा वह समाप्त हुआ समझ लिया जायगा ।

(३) यदि मत विभाजन मे गड़बड़ वा गलती हो जाय तो दुबारा फिर प्रधान मत विभाजन की आज्ञा दे सकता है ।

(४) यदि किसी सदस्य का नाम मत विभाजन मे गलत गिना गया हो तो वह सख्या ठीक करने की माँग कर सकता है और सभापति आवश्यक सशोधन का देगा परन्तु बैठक के दूसरा विषय लेने से पूर्व ही आपत्ति उठाई जानी चाहिए ।

गढ़वाल में आर्य्यसमाज के कार्य की प्रगति

तथा

सार्वदेशिक सभा के प्रचारकों के कार्य्य का विवरण

(अप्रैल १९३६ से जौलाई ३६ तक)

[ले०—श्री रघुवरदयाल जी प्रचारक]

भूगोलिक वृतान्त

गढ़वाल की सीमा—गढ़वाल के उत्तर मे हिमालय पहाड़ है जिस पर बद्री केदाराश्रम तथा गंगोत्तरी जमनोत्तरी भारतवर्ष के तीर्थ स्थान विराजमान हैं। पश्चिम मे टेहरी गढ़वाल देहरादून हरिद्वार, दक्षिण में ज़िला बिजनौर पूर्व में ज़िला नैनीताल, अलमोड़ा हैं।

अब से लगभग १२५ वर्ष पूर्व का गढ़वाल जिसका राज्य सीमा—

पूर्व में काली नदी कुमायूँ के उस पार, उत्तर मे हिमालय पर्वत दीवार के समान खड़ा है जिस पर नन्दा देवी, नीतिघाटा, बद्रीकेदाराश्रम, गंगोत्तरी जमनोत्तरी आदि भारतवर्ष के प्रसिद्ध पवित्र तीर्थस्थान थे। दक्षिण में मुरादाबाद, बिजनौर, सहारनपुर के ज़िले थे। पश्चिम में जमुना नदी तरल तरगों के साथ बह रही थी। उस वक्त के राज्य के अन्तर्गत देहरादून, हरिद्वार, जिला बिजनौर तथा मुरादाबाद का उत्तरी हिस्सा और नैनीताल की उपजाऊ भूमि शामिल थी, इसमें जमुना से लेकर पूर्व में रामगङ्गा के उस पार सुदूर पूर्व में काली नदी तक तराई भावर का सारा भाग जिसके विशाल जङ्गल में नाना प्रकार की जङ्गली बहुमूल्य वस्तुयें विद्यमान थीं।

ऐतिहासिक

दैव की गति तथा काल के चक्र के प्रवाह से सभी देशों की अवस्था परिवर्तित होती आई है। इस काल चक्र के हाथ से गढ़वाल भी न बच सका, और इसकी दशा रोहिलों और गोरखों के लगातार हमलों से बिगड़ती आई। कई बार के ज़बरदस्त हमलों का मुक़ाबिला करके रोहिलों को मार भगाया। पर गोरखों ने बार के श्रम से व गढ़वालियों के नैतिक कुप्रबन्ध होने से देहरादून के मैदान मे गढ़वालियों को पूर्ण शिकस्त देकर अपना आधिपत्य क़ायम किया, महाराज वहाँ से भागकर बरेली अंग्रेज़ों की शरण मे चले गये। वहाँ कुछ दिन रहकर उनसे मित्रता करके उनकी सहायता से गढ़वाल राज्य से गोरखों को हटाया गया। आख़िरी लड़ाई अल्मोड़े में हुई, विजय प्राप्त करके उस उपहार में अंग्रेज़ों को नैनीताल, अल्मोड़ा, ब्रिटिश गढ़वाल, गङ्गा के इस पार देहरादून, भावर तराई सारा दिया गया। इस दर्मियान मे लगभग १२ वर्षों तक गोरखों ने गढ़वाल मे खूब नादिरशाही मचाई, जो गोरखालाके नामसे प्रसिद्ध है। इसके पश्चात् महाराज श्रीनगर से अपनी राजधानी टेहरी ग्राम मे लेगये।

जो अब टेहरी रियासत के नामसे प्रसिद्ध है। इस वर्त्तमान राज्य घराने की इस वक्त लगभग ६० पीढ़ी राज्य की हो आई हैं। जो कि ब्रह्मपुर वर्त्तमान बाराहाट राजधानी की इकलौती पुत्री का विवाह राज्य स्थान मालवा देश के एक नव युवक राजकुमार के साथ हुआ। महाराज ने सारा राज्य अपने दामाद राजकुमार को सौंप दिया। उनकी मृत्यु के बाद राजकुमार ने अपनी राजधानी ब्रह्मपुर से चन्द्रपुर वर्त्तमान चाँदपुर में क़ायम की, इसी राजकुमार की ६० पीढ़ी पर वर्त्तमान राज्य घराना टेहरी गढ़वाल राज्य का विद्यमान है।

वर्त्तमान गढ़वाल

जिसकी लम्बाई चौड़ाई क्रमानुसार १७० और ७० मील है। जिसमें १२ परगने हैं। और ८२ पट्टी हैं, इसमें तीन हजार से ऊपर ग्राम हैं जो कि नीची घाटियों और ऊपर पर्वतों पर बसी हैं। इस जिले का हेड क्वाटर पौढ़ी है जिसमें डिप्टी कमिश्नर की कचहरियाँ और सब क़िस्म के औफ़िस हैं। यहां पर बाज़ार भा है, जिसमें कई मुसलमान भी दुकानदार हैं। जिनकी एक मसजिद भी बनी हुई है। और अपने तबलीग़ का काम भी करते हैं। वहाँ से एक मील पर ईसाइयों का एक हाई स्कूल है, इस हाई स्कूल से एक मील आगे मिशन गर्ल्स स्कूल है गडोली के नाम से मशहूर है। जिसमें ईसाइयों की सैकड़ों लड़कियां लड़के पढ़ते हैं। पौढ़ी में आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब की ओर से एक डी० ए० वी० स्कूल है जिसका निकट भविष्य में हाईस्कूल होना निश्चय हुआ है। इससे ८ मील की दूरी पर उत्तर में अलकनन्दा के किनारे पर श्रीनगर इस जिले का प्रसिद्ध नगर बसा हुआ है। यह प्राचीन समय में यहां के राजाओं की राजधानी रह चुका है इस में गवर्मेण्ट हाईस्कूल भी है। यह नगर उत्तरी गढ़वाल और कुछ टेहरी गढ़वाल का व्यापारी केन्द्र स्थान है। प्रतिवर्ष भारतवर्षके बद्रीकेदाराश्रम जाने वाले यात्रियों का विश्राम करने का यह मुख्य स्थान है। पौढ़ी से दक्षिण तरफ़ ३४ ३५ मील की दूरी पर लैन्सडौन छावनी बसी है, यहां पर गढ़वालियों के चार पल्टन हैं। और कुछ गारखाली पल्टन भी हैं इसमें एक सदर बाजार भी हैं, जिसमें सब लोग आ जा सकते हैं। यहाँ तहसील डिप्टी कलक्टर की कचहरियाँ भी हैं, सदर बाज़ार में कुछ वर्षों से आर्य्य समाज है। इसके उत्तर की ओर २ मील की दूरी पर जहरीखाल स्थान है जिसमें एक गवर्मेन्ट हाईस्कूल है। यहां से पश्चिम की ओर ८ मील की दूरी पर प्रसिद्ध मंडी गढ़वाल की दुगड्डा बसी है, यहां पर आर्य समाज और डी० ए० वी० स्कूल है, यहाँ से पश्चिम की ओर १० मील की दूरी पर कोटद्वारा रेलवे स्टेशन है और मण्डी है। यहां पर भी आर्य समाज है जिसका अपना मन्दिर भी है। इसके सिवाय इस प्रान्त में चन्द छोटे २ बाज़ार भिन्न भिन्न स्थानों पर हैं। हिन्दी पाठशालाओं का डि० बोर्ड की ओर से जिसमें लोअर अपरप्राइमरी तथा मिडिल स्कूल क़ायम हैं जाल सा फैला है, उपरोक्त मुख्य २ स्थानों में प्रचार की आवश्यकता है। क्योंकि इन स्कूलों में प्रान्त भर के लगभग सभी ग्रामों के विद्यार्थी तथा अध्यापक रहते हैं। इनके द्वारा ही प्रांत भर के कोने २ में वैदिक धर्म का सन्देश सरलता से पहुँच सकता है। ग्रामों का मार्ग इतना विकट है कि १० मील चलने पर ही भारी थकावट आजाती है। सब

ग्रामों में सिलसिले वार प्रचार किया जाय तो अधिक से अधिक २ साल मे एक गाँव का नम्बर आ सकेगा। रास्ते में एक गाँव से दूसरे गाँव दिखाई नहीं देता इतनी छोटी २ बटिया हैं।

अधिवासी

दलित जातियों को छोडकर बाकी सब लोगो का रग प्राय गोरा सा होता है। और आकृति मे यू०पी० के अन्य भागों में बसे लोगो से भिन्न नहीं है। ऐसा ज्ञात होता है कि यहाँ पर लोग राज स्थान मध्यभारत आदि देशो से आकर बसे हैं। यहाँ के राजपूतों की विरदावली, उज्जैन, धारा नगरी आदि स्थानो के राजपूतों से मिलती है। यहा पर लोग मिरजाई, कोट कमाज आदि पहिनते हैं स्त्रियाँ धोती, साडी ऊनी लावा घागरा आदि पहिनती हैं तथा जेवर सोने चाँदी आदि के पहिनने का अधिक रिवाज है। लोग मजबूत हड्डे कड्डे होते हैं, कोटद्वारा, दुगड्डा, लेन्सीडोन, पौडी श्रीनगर आदि स्थानों पर मारवाडी, मुसलमान देशी लोग भी बसे हुए हैं।

जीविका

गढवाल के निवासियों का अधिकतर खेती का व्यवसाय है। खेता में काफी उपज न होने से लोगो की आर्थिक दशा सर्वत्र गिरी रहती है इसलिए यहाँ पर दिन प्रति दिन नौकरी की तरफ लोगों की रुची बढ रही है। बहुत से लोग जाडों में भावर तराई में बाँस लकडी आदि काट ढोह कर आजीविका कर लेते हैं। यहाँ के लोग बाहर देशों में अधिकतर नौकरो के लिये जाया करते हैं। नवार नदियों और गङ्गा की घाटियों के स्थानों पर सब प्रकार के देश में जैसे फल आदि सभी पैदावार हो जाती है। श्रीनगर के मीठे आम, केले प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार कटहल, केले, आम, लूकाट, जामन, मर्वा आदि भिन्न २ स्थानो पर पैदा होते हैं। ऊपर पर्वतीय स्थानों में नारगिया मीठी बहुतायत से होती हैं। इसके सिवाय कुछ स्थानो में सेब, नाशपाती खुमानी नीम्बू दाडिम आरु, अञ्जीर हुआ करते हैं। और हिसार दारु हल्दी के फल (किनगोड) काफल प्रसिद्ध हैं। अनाजों में धान, गेहूँ जौ, मडुवा, झु गारो, चीना, कोणा, उडद, मसूर, गैथ, सूँटा, सेम तोरे आदि होते हैं। कपास भी खूब होती थी पर लोगों ने अब बोना छोड दिया है। जगलो मे देवदारु चीड, तुन, साल, बाँस, रिगाल आदि के कमती पेड होते हैं। देवदार को छोड कर बाकी के लिये भावर बहुत ही प्रसिद्ध है जहाँ देहली आदि बडे २ नगरो के ठेकेदार लोग लकडी का ठेका लेने को प्रतिवर्ष आया करते हैं। हिमालय पर्वतों पर अनेकों प्रकार की जडी बूटी हुआ करती हैं। जिनको प्रयोग में लाकर बहुत से लोग अपनी आजीविका किया करते हैं। हिमालय पर कस्तूरा नाम का मृग भी बहुतायत से पाया जाता है, जिसको मारकर लोग कस्तूरी निकालते हैं। यहा के बहुत ब्राह्मण दिल्ली, गुजरात, यू० पी०, पजाब, आदि २ देशो में जाकर धनी लोगों को ज्योतिष विद्या द्वारा खूब ठग लाते हैं। और इन्हीं लोगों के जबानी सुनते हैं कि अमुक स्थान पर अमुक आर्य समाजी हमारे यजमान हैं। परन्तु यहाँ के आर्यसमाजी हम से कोई काम नहीं कराते, बडी आश्चर्य की बात है।

सामाजिक अवस्था

यहां की पुरुष प्राय अपने बालक बालिकाओं का

विवाह अल्प उम्रमें कर देते हैं। जिसके कारण समाज के अन्दर बड़े २ दोष फैल रहे हैं। पर अब पढ़े लिखे लोग इस रिवाज को हानिकर समझ रहे हैं। यहाँ पर लड़कियों के रुपये खाने की भी प्रथा वर्तमान है। अब स्त्री शिक्षा के लिये भी कुछ स्थानों पर कन्या पाठशालायें डि० बोर्ड की ओर से स्थापित हो चुकी हैं। लोगों का ध्यान इस ओर बढ़ता जा रहा है। तम्बाकू पीने का रिवाज़ यहाँ बड़ा भारी चल पड़ा है, आर्य समाजियों के सिवाय बाकी सब लोग तम्बाकू पीते हैं। सरकार की बदौलत से इस प्रांत में जगह २ पर शराब के ठेके खुले हुए हैं। जिसमे मनुष्यों की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक अवस्था छिन्न भिन्न हो रही है, नित्य प्रति अशान्ति बढ़ती जा रही है। यहाँ के मनुष्यों का सामाजिक जीवन बहुत ही निराला है, जिस भू भाग में जाते हैं, वहाँ वैसे ही बन जाते हैं। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोगों में पाश्चात्य सभ्यता घर कर रही है। अण्डे, मुर्गी, चाय, डबलरोटी होटल मे खाना, टोप आदि अंग्रेज़ी पोशाक पहिनना, इनके लिये एक साधारण सी बात है। नौकरी पेशा में लोग ब्राह्मण, क्षत्री अपने २ पक्ष की खींचातानी करते हैं। चुनाव के समय मे यह पक्षपात उग्र रूप धारण कर लेता है। खान-पान में ब्राह्मण, राजपूतों का भेद भाव केवल दाल भात में है। इसी प्रकार कर्मानुसार बड़े छोटे जाति के ब्राह्मण राजपूतों में भी पाया जाता है। आर्य समाजी और वैष्णवों के सिवाय प्रायः सभी लोग मांस खाते हैं। बकरी, मछली, वन सुअर, मृग का मांस खाते हैं। देवतों के नाम पर जीव हत्या अधिक करते हैं। परन्तु अब आर्य समाज के प्रचार से लोगों की रुची उस ओर से घटती जा रही है।

छुआ छूत

छुआ छूत इस प्रान्त में नाम मात्र को भी नहीं है। सब वर्णों के लोग आपस में मिलकर एक साथ बैठ कर पी लेते हैं। केवल पानी पर नहीं लगने देते हैं। भोजन उच्च जाति के लोग अपने बर्तनों पर परोस कर अलग दिया करते हैं। यहाँ पर ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य बिट कहलाते हैं। बाकी कोली, लुहार, तमोटा, मिस्त्री, रुड़िया और दर्जी या दास, मिरासी, बाड़ी डुड़िया, (ये अन्त की तीन जातियाँ नाचने वाली वृत्ति के) ये सब यहां पर डूम कहलाते हैं। दुगड्डा कोटद्वार के नज़दीक ज़िला बिजनौर के निकटवर्ती कुछ कोली, लुहार इत्यादि को छोड़ कर बाकी सब ही डूम मुर्दार गाय भैंस का मांस खाया करते हैं। लेकिन आर्य समाज के प्रचार से मुर्दार गाय का मांस खाना सर्वत्र छूटता गया है। और भैंसा मारने तथा मुर्दार भैंसे का मांस खाने का रिवाज इन लोगों मे से बहुतों में अभी तक चला आ रहा है। यह लोग मुर्गा सुअर पालते हुए आये हैं। इन लोगों की जीविका बिट जाति के लोगों से ही है। जैसे मकान बनाना, खेती करने के औज़ार बनाना कंडे पिटारी आदि बनाना, कम्बल बुनना, कपड़े सीना, बाजा बजाना इत्यादि तथा डोला पालकी लेजाना इन्हीं लोगों मे से कुछ को नजीबाबाद आर्य समाज ने जो कोटद्वार से १५-१६ मील पर है। दुगड्डा बोरेगाँव आदि स्थानों मे आकर शुद्ध करके आर्य समाजी बनाया है। इसके पश्चात् पं० रेवानन्द जी श्री आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक ने इन लोगों में तन मन धन से काम किया। जिसके फलस्वरूप सैकड़ों की तादाद में परिवार के परिवार शुद्ध होने लगे। इनकी बरात में डोला पालकी सरकार की मदद

लकर निकलवाना इ ही का काम है। इसी उपहार म इनक ऊपर एकेश्वर मेल पर मार पडा।

गढवाल मे आर्य समाज कार्य

प्रथम श्री पूज्यपाद स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अकाल पडन पर अकाल पीडितो की सहायताथ पधार। स्थान २ पर जाकर पीडितो का सब सहायता का और इस दमियान महाराज न वैदिक धम का उपदेश सुनान का कष्ट उठाया। पर दुर्भाग्य स वहाँ के निवासिया न स्व मो ज के उपदेश पर विशेष ध्यान नहीं दिया। इसस पूव आय शब्द के नाम से वे लोग चिढ़ते थ। पर महा पुरुष आत्माओ के पदापण से गढवाल मे भा आय विचार के पुरुषो मे साहस बढन लगा पौडा म श्री ठा० सुरेन्द्रसिंह जी व ठा० नरेन्द्रसिह जी स्वर्गीय प० गगादत्त जी तहसलदार चौन्दकोट म श्री ठा० केसरसिह जी ठा० सुरेन्द्र सिह जी ठा० नरेन्द्रसिह ज इत्यादि के परिश्रम से पौडी म आय समाज खुली और चौ दकोट म ठा० केसरसिह के उद्योग से लन्सडौन म श्री म० टकचन्द न श्री बाब मिट्ठनलाल जी इत्यादि के द्वारा दुगड्डा म प० लछमन गुरू लाला तुलाराम के उद्योग से आय समाजें खुली चौन्दकोट आ य समाज का सहायता से सन् १९२६ मे प० द्वारिकादत्त जी पाठक आय प्रतिनिधि सभा के उपदेशक बुलाय गय। प्रथम आय समाज के प्रचार के कारण आया पर खतरनाक मार पडी। प० रेवानन्द जी व ठा० केशरसिह जी पर यहा क लोग खूब जले भुन थे। और इनके जान के प्यासे बन। ईश्वर का कृपा स बड भारा जन समूह म इन लोगो की कुछ सज्जनो की सहायता स जान बची। पुन अदालत मे मुकदमा चला। सरकार मुद्दई बना इस मामले म चार आदमियो को सज़ा हुई। तब स आर्यो को प्रचार करन क सुभीता प्राप्त हुआ। फिर दूसर साल म० मुकन्दराम जी भजनीक प्रतिनिधि सभाके उपदेशक बुलाये गये और उसी एकेश्वर मेले पर सब प्रचार हुआ। श्री ठा० केशरसिह जी न श्री म० मुकन्दराम जी को पौडा आनगर मुख्य २ स्थानो मे लेजाकर प्रचार करवाया। फिर तीसरे साल प० कृष्ण अवस्थी ना सभा के उपदेशक आय उसी प्रकार प्रचार हुआ फिर चौथ साल श्री पूज्य स्वामी कवलानन्द जी महाराज तथा मास्टर गुमानीसिह जी मा० धमन्द्र जी मा० रागी जी इत्यादि महानुभाव आये। पाँचव साल प० गगादत्त जी न मडलाधीश के हैसियत से एकेश्वर मेले पर आन की कृपा की। इन महापुरुषो की कृपा से लोग आयसिद्धान्तो का ममझन लग। और जो पूव भूस लोग क बहकान पर जो अत्याचार किया था उस पर पश्चात्ताप करन लग और जिन २ मुख्य स्थानो पर प्रचार हुआ लोग आर्यो के प्रमी होन लग। प० रवान न्द जी न गढवाल का बडी भारी सेवा क । अनक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए वैदिक धम का प्रचार किया। श्री स्वामी सत्यदव जी महाराज श्रीमान् प० सूयदव जी प्रोफसर द्वारा कोटद्वार दुगड्डा पौडी आदि मुख्य २ केन्द्र स्थानोम प्रचार करवाया। इसके अलावा अन्य २ महानुभाव भी समय २ पर यहाँ आते रह इनक द्वारा भी प्रचार करवाया गया। प० बिहारीलाल जी काव्यतीथ न तीन दफ़ लैन्सडौन छावनी म कानूनी अडचन सुलझाते हुए आय समाज का उत्सव करवाया श्री पूज्य नरदव शास्त्री जी प० बुद्धदव जी ने भ

दुगड्डा तक खूब प्रचार किया। श्री पूज्य स्वामी पूर्णानन्द जी, पं० रुद्रदत्त जी ने श्री पूज्य नरदेव शास्त्री जी के बद्री यात्रा में साथ आये थे, इनके द्वारा भी पौड़ी, श्रीनगर तक प्रचार हुआ। गढ़वाल में कठिनाइयों का सामना करते हुये तथा यहां के अनभिज्ञ लोगों में जिन पूज्य महानुभावों ने आर्य समाज के प्रचार-कार्य को बढ़ाया गढ़वाल के आर्यगण उन महानुभावों के बड़े भारी ऋणी हैं। फलस्वरूप अब सर्वत्र सब लोग वैदिक धर्म के उपदेश सुनने के उत्सुक रहते हैं। इस लिये अब कार्यक्षेत्र बहुत बढ़ गया है। और अन्य विधर्मियों के मुक़ाबिले की भी अति आवश्यकता है। विशेषकर यहाँ ईसाई मिशन का काम जो अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर दलित लोगों में बढ़ रहा है उसका निराकरण करना आवश्यक है।

चार मास का प्रचार कार्य

१—२ अप्रैल ३६ को श्री पूज्य अधिष्ठाताजी की आज्ञा पाने पर देहरादून से आकर गढ़वाल में प्रचार कार्य आरम्भ किया। इस मास में मेला प्रचार तथा हाईस्कूल जहरीखाल इत्यादि जगहों पर प्रचार किया।

२—मई मासमें लैन्सडौन आर्य समाज का उत्सव करवाना, क्योंकि कुछ वर्षों से क़ानूनी झंझटोंके कारण रुका था। पूज्य अधिष्ठाता जी की आज्ञा थी कि वहाँ जाकर उत्सव करवाना आज्ञा अनुसार वहां जाकर उत्सव की तारीख ३–४–५ जून को निश्चित् हुई। इस मास भी कुछ मेलों और ग्रामों में स्कूलों आदि स्थानों में प्रचार किया। मेलों में, स्कूलों में प्रभाव अच्छा पड़ता जा रहा है। उपदेश सुनने को अधिक संख्या में लोग आते थे।

३—जून मासमें लैन्सडौन आर्य-समाज के उत्सव में पं० बिहारीलाल जी काव्यतीर्थ, म० ऋषीराम जी उपदेशक तथा भजनीकों द्वारा प्रचार हुआ। प० बिहारीलाल जी का व्याख्यान जहरीखाल में भी करवाया। इन दिनों शुद्धिशुदा और दलितों में प्रचार किया और इन लोगों की आर्थिक, धार्मिक दशा देखी, शुद्धशुदा लोग अपने कार्य-धन्धा छोड़ रहे हैं। जिससे आर्थिक दशा गिरने का भय है। जिससे भविष्य में इनका धर्म क़ायम नहीं रह सकता, धार्मिक जीवन तथा शुद्ध आचरण बनाने का इनका बिल्कुल ध्येय नहीं है। तम्बाकू सिगरेट आदि दुर्व्यसनों को भी नहीं छोड़ रहे हैं।

४—जून, जौलाई मास में अपर गढ़वाल में प्रचार किया, पौड़ी डी०ए०वी० स्कूल में प्रचार किया। ईसाइयों के मवासों का निरीक्षण किया पौड़ी, चौपड़ा तक ७० मवासे ईसाइयों के हैं। इनका केन्द्र स्थान मिशन हाईस्कूल है। जिसमें एक अमेरिकन पादरी और एक अमेरिकन महिला प्रचारक भी रहती है। और हिन्दुस्तानी पादरी अध्यापक भी हैं यह सब लोग प्रचार का कार्य करते हैं। पौड़ी से थान गाँव तक १२ मील पर प्रचारक पादरियों के ६ स्टेशन हैं। थान गाँव में भी इनका स्कूल है और एक स्कूल खातस्यू कण्डेरी गांव में है जो पौड़ी से १० मील की दूरी पर है। हाल में बिडोली ग्राम में जो थान के नज़दीक है सात मवासे ईसाई हुए हैं।

५—विद्यार्थी लड़कों में वैदिक सिद्धान्तों का अच्छा प्रभाव पड़ रहा है, आर्य साहित्य के लोग इच्छुक हैं। इसलिये अब अजमेर से मँगाने का विचार कर रहा हूं। ग़रीब विद्यार्थियों के लिये कोई दानी सज्जन ट्रैक्ट और पुस्तकें दे सकें तो बड़ा पुण्य कार्य होगा।

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

आर्य समाज के सगठन के साधन

श्री लाला देवीचन्दजी एम० ए०, प्रधान दयानन्द साल्वेशन मिशन 'आर्य समाज के सगठन के साधन' शीर्षक मे प्रकाश' मे चर्च (धर्म संस्था) के शासन के भिन्न २ तरीक़ो पर निम्न प्रकाश डालते हैं।

"चर्च के चलाने के विभिन्न तरीके हैं। इनमे से एक Dictatorship गुरुडम है। कुछ समय के लिये अंध विश्वास से संगठन हो जाता है मगर ज्ञान की वृद्धि से सारा प्रबन्ध बिगड जाता है। स्वतन्त्रता पूर्वक मनुष्य विचार करना छोड देता है। आत्मा और विचारो की स्वतन्त्रता जाती रहती है। जातिया एक व्यक्ति के पीछे चलने से नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। नैपोलियन और कैसर ने लोगो को स्वतन्त्रता पूर्वक सोचने से रोका। ज़ब गुरुडम बढ़ जाता है जनता कमज़ोर हो जाती है। ज्ञान और विज्ञान की उन्नति रुक जाती है।

दूसरा तरीक़ा महात्मा बुद्ध का है। उन्होंने प्रजातन्त्र के असूल को अपने चर्च मे शामिल किया और भिक्षुओं की कौंसिल बना कर सब काम उनके सुपुर्द कर दिए। गुरुडम की अपेक्षा यह ज्यादा कामयाब हुई मगर महात्मा बुद्ध की संस्था मे यह कमज़ोरी रह गई कि महात्मा बुद्ध ने उपदेशकों की संस्था को ठीक असूल पर कायम कर दिया मगर गृहस्थियों को जिनके अन्दर उनके धर्म्म सेवकों को प्रचार करना था किसी नियम मे नहीं बाधा और भिक्षुओ पर निगरानी रखने का जनता को कोई अधिकार नहीं दिया। सच पूछो तो उनके धर्म के ह्रास का बड़ा भारी कारण यह है कि जनता को उनके धर्म्म-संस्था के प्रबन्ध मे कोई दख़ल न था। उपदेशक भोग-विलास मे पड़ कर अपने काम को भूल गये और गृहस्थियों ने उनके हालात को देखकर यह अनुभव किया कि संघ का बोझ परे फेंकने पर बौद्ध धर्म से ही उपरामता एक मात्र सुखका उपाय है। इस उपरामता से बौद्ध मत गिर गया। बावजूद इसके कि उनके अनुयायियों के पास बडे २ मन्दिर मौजूद थे और उनके साधुओं ने बडे २ आडम्बर रचे हुए थे उन्होने मठ बना लिए और वह मठाधीश बन गये।

तीसरा तरीक़ा यह था कि गृहस्थियो और उनकी सभाओं को चर्च के इन्तज़ाम मे अधिकार दिये जाय और उपदेशक मण्डलीं का प्रबन्ध गृहस्थियो के हाथ मे हो, उपदेशक भी समाज के मेम्बर हों और उनको समाज के प्रबन्ध मे सम्मति देने का भी अधिकार हो परन्तु इस अधिकार मे कोई विशेषता न हो। अर्थात चर्च को जनता की पार्लियामेंट के अधीन कर दिया जाय। यह तरीका महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वीकार किया। यह तरीका आर्य समाज का है, आर्य समाज के एक मामूली सदस्य का चर्च के प्रबन्ध मे उतना ही

अधिकार है जितना कि एक अत्यन्त अनुभवी बुजुर्ग व्यक्ति या महात्मा या सन्यासी का है।

दुनिया मे प्रजातन्त्र (Democracy) प्रणाली शासनकी उदार प्रणाली है और यह तरीका पहले दोनों तरीकों से उत्तम है। जौन स्टुअर्ट मिल का कहना है।

Democracy is the best as well as the worst form of Government

'प्रजातन्त्र प्रणाली शासन की उत्कृष्ट और निकृष्टतम प्रणाली है।" प्रजातन्त्रीय प्रणाली की यह विशेषता है कि यदि मत-दाता अपनी उत्तर-दायिता को ठीक तौर पर महसूस करें तो वह स्थिर और लाभदायक हो सकती है यदि वे निर्बुद्धि स्वार्थी, सदाचारहीन, इत्यादि हों तो यह प्रणाली हानि कारक होगी। इगलैंड, फ्रास, जापान, अमेरिका में प्रजातन्त्रीय राज्य प्रणाली का अध्ययन करने से विदित होता है कि असली शक्ति उत्तम प्रबन्ध के बाह्य आडम्बर में नहीं है बल्कि इस बात मे है कि जिन्हें राय देने का अधिकार है वे कैसे हैं?"

इसके आगे आर्य समाज म व्याप्त पारस्परिक वैमनस्य, कलह, लड़ाई, झगड़ों इत्यादि के हवाले से इस प्रणाली के दुरुपयोग पर प्रकाश डालते और इसका कारण समाज के सदस्यों मे प्रजातन्त्र की सच्ची स्पिट का अभाव बतलाये हुए इस स्पिट को पैदा करने के निम्न उपाय सुझाते हैं —

[१] "सदस्यो मे अनुशासन (Discipline) का भाव पैदा किया जाय।

[२] व्यक्तिगत सम्मति को बहुमत के आधीन किया जाय और व्यक्तिगत राय के न माने जाने पर समाज को छोड़ा या कोसा न जाय।

[३] सदस्यों में परस्पर प्रेम और विश्वास होना चाहिए, अधिकारियो पर श्रद्धा होनी चाहिए और उनके कामो को ध्यान पूर्वक देखना चाहिए।

[४] अनुचित हानि और आलोचना से परहेज़ करना चाहिए परन्तु चुप्पी से जहा समाज को हानि पहुंचे वहा अपनी आवाज़ को ज़रूर उठाना चाहिए।

* *

भारतीय धर्म और दर्शन पर दो बड़े इल्ज़ाम

पश्चिम के विचारक और विद्वान जान में वा अनजान में भारतीय धर्म्म और दर्शन पर दो इल्ज़ाम लगाया करते हैं। एक तो यह कि ये दोनों भारतीयों को संसार और कर्म से विमुख रखते हैं और दूसरा यह कि इनमे नैतिकता के लिए स्थान नहीं है। प्रसिद्ध अग्रेजी पत्रिका 'प्रबुद्ध-भारत' इन दोनों इल्जामों का उत्तम रीति से निम्न प्रकार खंडन करती है—

डाक्टर स्विटजरका बहुरूपियापन विद्वानोंके आश्चर्य का विषय रहा है। खेदकी बात है कि वे उन साधारण गढ़ोंसे नहीं बच सके हैं जो पौर्वात्य विशारदोंके मार्ग मे प्राय रहते हैं। 'भारतीय विचारकों का सासारिक दृष्टिकोण' The Wold-view of the Indian Thinkers नामक अपनी ताज़ा पुस्तक में वे भारतीय संस्कृति और धर्म्म के सम्बन्ध में उन कतिपय आलोचनाओं को दुहराते हैं जिन्हें पश्चिम के भारतीयता पर लिखने और बोलने वाले

पुराने विद्वान हमारे कानो मे डालते हुए नहीं थकते थे। दो साधारणतम इल्जाम हम पर लगाए जाते थे और वे ये थे कि भारतीय दृष्टिकोण संसार और कर्मके उपरामता ज़ाहिर करता है तथा भारतीय धर्म्म और विज्ञान मे नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। हमारा विश्वास था कि ये धारणाएं इस समय तक निर्जीव हो गई होंगा। परन्तु जैसा स्पष्ट देख पड़ता है विवाद की धूलि अभी तक नहीं गई है। कुछ महीने हुए प्रोफेसर विन्टरनिज़ (Winternitz) ने एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पत्रिका मे अपने एक निबन्ध मे इस अन्तिम धारणा की निस्सारता स्पष्ट कर दी थी। जर्मनी के दो विद्वानों ने भी अभी हाल मे इस धारणा को नितान्त अप्रमाणिक सिद्ध कर दिया है। प्रो० विनयकुमार सरकार मई १६३६ की 'कलकत्ता-रिव्यू' मे उनकी युक्तियो को निम्न प्रकार प्रकाश मे लाते हैं —

"वस्तुत ससार मे आसक्ति और ससार से विरक्ति भारत में एक दूसरे के साथ सम्मानित रूप में रहो है। और भारतीय सांसारिक दृष्टिकोण मे ये दोनो तत्त्व मौलिक एकता स्थिर रखने वाले माने गए हैं। और यह मौलिक एकता भारतीय जनता के क्रियात्मक जीवन के रूप में उसकी आध्यात्मिक ज़रूरतो को पूर्ण करती है।"

पश्चिम के लोग और भारतीय जनता का एक भाग दोनों भारतीय दृष्टिकोण को चिरकाल पर्यन्त ग़लत समझते रहे है। इसका कारण कुछ तो निराधार है और कुछ निर्दोष शास्त्रो के ग़लत अर्थों के आधार पर बनी हुई गलत धारणाएं हैं। इसका एक बडा कारण पूर्व और पश्चिम के कभी तय न होने वाले भेदों की व्यापकता है। यह सत्य है कि लम्बी ऐतहासिक प्रगति ने पूर्व और पश्चिम मे से प्रत्येक पर अपनी खास विशेषता अंकित कर दी है। हिंदुओं के जीवन का दृष्टिकोण अपने भीतर भौतिकताके लिए स्थान रखता है। परन्तु इसने प्रकृति के ऊपर आत्माको रक्खा है। 'भौतिकवाद' जीवन का एक मात्र उद्देश्य कभी नही समझा गया है। हिन्दू समाज को इसी रीति से बताने और चलाने का बहुत प्राचीन काल से यत्न किया गया है कि वह स्त्री पुरुषों को धीरे धीरे जीवन के अन्तिम लक्ष्य (मोक्ष) तक पहुचा देवे। उस समाज के विभिन्न लक्ष्यो मे सामजस्य रखने को सदैव ज़रूरत रहती है। बहुधा यह समता तोडी गई है और समष्टि रूप से जनता द्वारा दृष्टिकोण विशेष पर बहुत ज्यादा बल दिया गया है। और यह भी शास्त्रो के कुपच के परिणाम स्वरूप हुआ है। परन्तु जब यह अव्यवस्था पैदा हुई तो सुधारक आविर्भूत हुए जिन्होने व्यवस्था क़ायम करने मे योग दिया। यह एक बडी विचित्र पहेली भी है जिसे आज दो हज़ार वर्ष मे अधिक होने को आय। पश्चिम ने हल करने का रंग कष्ट नही किया है। इतिहास के प्रभात स भारत अपन ज्ञान और विज्ञान के लिए प्रसिद्ध रहा है। वह अपनी धन सख्या और वैभव के लिये भी प्रसिद्ध रहा है। वास्तव मे यह साने की चिडिया समझा जाता था और उसके व्यापार को छीनने के लिए राष्ट्रो मे सदैव बाज़ी लगी रही है। बहुधा लुटेरो का लोभी आंख उसकी सपदा पर गडा रही हैं। परन्तु

दुनिया से विरक्तों की जाति के लोग क्योंकर भारत को समृद्धिवान बना सके थे ? ऐसा प्रतीत होता है कि जो सोने की सबसे ज्यादा उपासना नहीं करता है वह संसार से विरक्त समझा जाता है।

* *

सृष्टि सम्वत्

आर्य समाज मे 'सृष्टि सम्वत' के सम्बन्ध मे एक मत नही है। कुछ लोग उस सृष्टि सम्वत को सही मानते है जो ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे दिया है कुछ लोग उसे सही नही मानते है। आवश्यक है इसकी जाच पडताल की जाय और जो पक्ष ठीक हो उसकी घोषणा की जाय। इस सम्बन्ध मे श्री मा० शृंगारसिंह जी 'आर्य मुसाफिर' मे लिखते हुए जाच पड़ताल का निम्न प्रकार प्रस्ताव करते है —

"आर्यसमाज मे जो सृष्टि सम्वत् इन दिनो प्रचलित है वह उससे भिन्न है जिसका उल्लेख ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे किया है अर्थात बजाय १६६०८५३०३७ के १६७२६४६०३७ सृष्टि सम्वत हर पुस्तक पर लिखा जाता है। इस परिवर्तन का कारण यह बतलाया जाता है कि प्रत्येक मन्वन्तर के आदि और अन्त मे एक सत्युग के बराबर १७२८००० वर्ष की सन्धि होती है। इस हिसाब से वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर के आरम्भ तक ७ सन्धिया होता है जिनके वर्षो का तादाद १२०६६००० होती है। ये वर्ष महर्षि के बतलाये हुए सम्वत मे भूल से जुडने से रह गये है। यदि यह तादाद महर्षि निर्दिष्ट सम्वत मे जोड़ी जाय तो सृष्टि सम्वत वास्तव मे आज १६७२६४६०३७ बन जाता है। सार्वदेशिक सभा का कर्त्तव्य है कि वह विद्वानो की परिषद् से इस विषय का फैसला कराए ताकि जनता भ्रम मे न पड़ी रहे। और विरोधियो के झूठे आक्षेपो का निशाना न बनती रहे।

* *

दक्षिण के हिन्दू ईसाई और मुसलमान होरहे हैं

एक लेख मे कविराज प० श्रीराम शर्मा लिखते है कि दुःख है कि दक्षिण भारत मे क्रिश्चियन सोसाइटियों का जितना प्राबल्य देखा उतना भारत के अन्य किसी भी भाग मे नहीं। सवर्ण हिन्दुओं का हरिजनों के साथ सबसे अधिक दुर्व्यवहार दक्षिण भारत मे ही है। दक्षिण भारत मे जिस मोहल्ले मे भी गुजरे उसी मोहल्ले के किसी अच्छे मौके के मकान की छत पर क्राइस्ट की मूर्ती खडी देखोगे। उसके नीचे बडे बडे अक्षरों मे लिखा होगा 'मेरी तरफ आओ तुम्हे यहा पर प्रकाश मिलेगा।" ईसाइयो ने वहा की स्थिति का अध्ययन करके पता लगा लिया है कि हिन्दू-जाति ने अपने अंगभूत इन हरिजनो को इतना ठुकरा दिया है कि इन्हे कोई भी अन्य मत वाला इनकी बेहतरी का आश्वासन देकर अपनी तरफ खींच सकता है। इन हरिजनो को इतनी भी हिम्मत नही रह गई है कि मनुष्योचित अपने अधिकारों की माग सवर्ण हिन्दुओं से कर सकें।

वे बाध्य होकर अन्य मतों की शरण में चले जाते हैं। त्रावणकोर रियासत में आज १०-१२ भिन्न भिन्न क्रिश्चियन मिशन काम कर रहे हैं। [१] लन्दन मिशनरी सोसाइटी—सन १८०६ ई० से काम कर रही है। [२] चर्च मिशनरी सोसाइटी सन् १८१६ ई० से उत्तरी त्रावणकोर में काम कर रही है। [३] मुक्ति फौज—सन् १८६० ई० से काम कर रही है। [४] ब्रादर मिशन—सन् १८६८ ई० से काम कर रहा है। [५] ल्यूथने मिशन—सन् १६०७ ई० से काम कर रहा है। [६] चर्थीड केससिरियन चर्च—सन् १६१५ ई० से काम कर रहा है। [७] इसकी अधीनता में 'क्रोस सोसाइटी' तथा "सन्यासी मिशन" काम कर रहे हैं। [७] एवेञ्जेलिस्टिक एसोसियेशन—सन् १८८८ ई० से काम कर रहा है। [८] चंगिनचेरी डायोसीस सन् १८५३ ई० से काम कर रहा है। [६] एरन कुलम डायोसीस—सन् १८५६ से काम कर रहा है। [१०] वेरापोली डायोसीस—सन् १८८६ ई० से काम कर रहा है। ये सब क्रिश्चियन सोसाइटिया प्रति वर्ष उन्हीं को अपना अनुयायी बना रहीं हैं जिन्हें हम 'अन्त्यज आदि' अनेक घृणित शब्दों से पुकारते हैं। कितने दुःख की बात है कि जब तक ये हरिजन भाई सनातनी बने रहते हैं, तभी तक ये अस्पृश्य समझे जाते हैं और ज्योंही ये अन्य मतावलम्बी हुए कि इनका अछूतपन भी दूर हो जाता है। हमारे इसी दुर्व्यवहार का यह फल देखने में आ रहा है कि त्रावणकोर रियासत में ३१५ प्रति सहस्र और कोचीन रियासत में २७८ प्रति सहस्र मनुष्य ईसाई पाये जाते हैं। ये ईसाई कौन हैं ? इनमे अधिकाश संख्या हरिजनों की है जो हमारे व्यवहार से दुःखी होकर ईसाई मतावलम्बी बन गये हैं। पिछले सौ वर्षो से रियासत त्रावणकोर में हिन्दू ४.२ गुणा ही बढे हैं, किन्तु ईसाई १४.३ और मुस्लिम ८.४ गुणा अधिक हो गये हैं। हिन्दू लोगों का अनुपात सन् १६३१ की मनुष्य-गणना में ६१.६ प्रतिशत ईसाई ३१.५ प्रतिशत और मुसलमानों का ६.६ प्रतिशत हो गया है, जब कि १८१६ और १८२० में हिन्दू लोग ८३ प्रतिशत थे, ईसाई १२.४ प्रतिशत थे और मुसलमान लोग ४.६ प्रतिशत थे। इस प्रकार हिन्दु जनता की संख्या साल-दर-साल घटती ही गई है।

हरिजनो तथा सवर्ण हिन्दुओं में ज्ञान प्रसार की बड़ी आवश्यकता है "हरिजन सेवक संघ" की तरफ से "हरिजन" 'हरिजन बन्धु' तथा "हरिजन सेवक" साप्ताहिक पत्र क्रमश अंग्रेजी, गुजराती तथा हिन्दी में प्रकाशित किये जाने लगे है। आर्य समाज की तरफ से बहुत से ट्रैक्ट भी वितीर्ण किये जाते है। परन्तु जितना प्रचार होरहा है उस से कई गुणे अधिक प्रचार की आवश्यकता है।"

महिला-जगत्— स०—श्रीमती विद्यावती विशारदा

मेरा दुःख

लेखिका—कुमारी गुहा

कुछ समय हुआ मैं एक दावत में निमन्त्रित की गई थी।

सचमुच वह बहुत बड़ी दावत थी। हम लोग—मैं, मेरी चाची और मेरी दादी—उसमे गए। यह दावत एक धनाढ्य पुरुष के यहा थी। बहुत से मेहमान बुलाए गए थे। तमाम प्रसन्न और खुश थे। खाना १ हजार व्यक्तियों के लिए तय्यार किया जा रहा था। एक बड़े कमरे के कोने की खिड़की के पास मै अपनी चाची के पास बैठी थी। मै और मेरी चाची लगभग एक ही उम्र की है और दोनों स्कूल की छात्रा है और विभिन्न क्लासों मे पढ़ती है, हम हंस रही थीं, हम बडी प्रसन्नता से बात चीत कर रही थीं और जब तब हंस पडती थीं। स्त्रिया आ जा रहीं थीं। खाना घंटे दो घंटे मे तय्यार हो जाने वाला था। सहसा ही मेरी चाची ने हमारा ध्यान खिडकी से नीचे की ओर किसी चीज की ओर खींचा। हम सबने खिड़की में से झांका और एक हृदय विदारक दृश्य देखा। मेरी चाची मूर्छित होगईं परन्तु मैं अपनी जगह खड़ी हुई खिड़की में से देखती रही इसके लिये मेरी दादी और अन्य स्त्रियों ने मुझे बुरा भला कहा। मुझे निर्दयी और कठोर हृदया कहा गया क्योकि मै ऐसे भयंकर दृश्य को देखना बर्दाश्त कर सकी थी।

वह दृश्य क्या था ? हमारे खाने के लिये कुछ बकरिया क़त्ल की जा रहीं थीं। वे दुख और पीड़ा से कराह रहीं थीं। शीघ्र ही उनकी दयनीय आहें मेहमानों के अट्टहास में विलीन होगईं और हम भी तत्काल हंसने खेलने लग गई।

खाना तय्यार हो जाने पर हम खाने के लिये गईं। मैं और मेरी चाची उस दिन मास नहीं खा सकीं। मेरी दादी ने जो अधेड़ उम्र की देवी हैं मास की तश्तरियों के प्रति पूरा २ न्याय किया। तब मुझे कहना पड़ा। दादी क्या तुम ममता-शून्य हो। यह कहकर मैं चुप हो गई।

उस रात को सोने से पूर्व मैंने अपनी दादी को कहा कि मुझे उन गरीब बकरियों पर बडा तरस आ रहा है। उन्होंने गहरी सास ली, मुझे अपनी तरफ खेंचा और कहा मेरी बच्ची ! हम क्या कर सकते हैं। हम तो देवताओं के हाथ मे खिलौने मात्र हैं। इससे मुझे ज्यादा संतोष नही

हुआ। मेरी वह रात बडे दु ख से कटी । मैने स्वप्न देखा कि कुछ बकरे बच्चो को नाई कराह रहे है, चिल्ला रहे है। मैने उनकी अश्रुपूर्ण आखो की तरफ देखा और उनमे अपनी आत्मा के सदृश मुझे एक आत्मा देख पडी। वह आत्मा बोल नही सकती थी परन्तु आखें यह कहती प्रतीत होती थीं।

"लडकी हमे इस निर्दयी मौत से बचा।"

सुबह को मै उठी। मै अपने स्वप्न की बाबत किसी से कुछ न कह सकी क्योकि मै सोचती थी कि मेरी मजाक उडाई जायगी। चुप चाप मै उन अभागे प्राणियो की वेदनाओ को सहन करने लगी।

मुझे आश्चर्य है कि कोमल हृदय व्यक्ति गोश्तखोरी के विरुद्ध क्यो नहीं आवाज उठाते है? क्यो? शायद इसका कारण यह हो कि उन लोगो को स्वय मृत्यु-पीडा से विह्वल गरीब पशुओ की आवाजो को सुनना नही पडता है। इसीलिए यह अनिवार्य वेदना जारी है और वह भी उन लोगो की माग के उत्तर मे जो अपने को दयालु समझते है और जो ऐसा ख्याल न किए जाने पर बुरा मानते है और जो अधविश्वास के शिकार हुए होते है। मैं एक [दयालु] भद्र पुरुष को जानती हूँ जो स्वय निरामिष भोजी है जो अपने कमरे मे लगे हुए शहद के छत्ते को तोडने की इजाजत नही देते है भले ही शहद की मक्खिया लोगो को काट खाएं परन्तु वे अपनी धर्मपत्नी अपने बच्चो और महमानो को बढिया बढिया मास खिलाने मे नही झिझकते है। मै इसे मनुष्य-स्वभाव नही समझती हूँ। मुझे यह आश्चर्य प्रतीत होता है। शायद हम पर्याप्त दयालु नहीं है।

रस्किन कहता है 'जो क्रियात्मक रूपसे दयालु नही वह निर्दयी होता है।' प्रश्न यह है कि हम क्या क्रियात्मक दयालुता दिखला सकते है? यह प्रश्न मैं अपने पाठकों से पूछती हूँ। उन्हे इस पर विचार करना चाहिए।

सामाजिक-जगत—

खड़गपूर (बंगाल) आर्य्यसमाज का परिचय

समाज के नियमित कार्य्य सफलता पूर्वक हो रहे हैं। अनाथ बच्चों और अबलाओं की रक्षा तथा शुद्धि और पुनर्विवाह आदि प्राय होते ही रहते हैं। इन कामों में स्थानीय हिन्दू जनता को भी सहानुभूति है।

समाज की ओर से दो उत्साही नव युवकों को उपदेशक बनाने के लिये भेजा गया है और हर्ष की बात है कि दोनों बड़ी लगन के साथ अध्ययन कर रहे हैं। उनके पत्र समय २ पर आते रहते है। और आशा है कि वे लोग पूर्ण योग्यता प्राप्त कर लौटेंगे तथा यहा आकर वैदिक धर्म की सेवा करेंगे।

नगर के जिस भाग में समाज मन्दिर है वहा कोई कन्या पाठशाला न थी जो लोग अपनी लड़कियों को शिक्षित बनाना चाहते थे वे निरुपाय थे। समूचे खडगपूर में रेलवे की ओर से केवल एक गर्ल्स स्कूल है। अस्तु! इस बड़ी भारी कमी की पूर्ति के लिये गत रामनवमी से मन्दिर में ही आर्य्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई है जिसने अत्यल्प काल में आशातीत उन्नति की है। कन्याओं की संख्या अधिक हो जाने के कारण स्थान और अध्यापिका दोनों की अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु यह दोनों कार्य धन के आधीन हैं। समाज के पास धन नहीं है। यदि हिन्दू जनता ने सहायता की तो शीघ्र ही यह पाठशाला एक आदर्श संस्था का रूप ग्रहण करेगी। अन्यथा परमात्मा रक्षक है।

समाज के उत्साही कोषाध्यक्ष म० कृष्णलाल जी मलहोत्रा के पूज्य पिता जी का स्वर्गवास हो गया। आप अत्यन्त वृद्ध और वैदिक धर्म के सच्चे अनुयायी थे। ईश्वर दिवगत आत्माको शाति प्रदान करे। उनके आदेशानुसार म० कृष्णलाल जी ने रु० ४०) विविध सस्थाओं को दान दिया। एतदर्थ धन्यवाद। आप आदर्श पिता के आदर्श पुत्र हैं।

समाज के द्वारा वैदिक धर्म्म का प्रचार लगातार होता रहता है। गत जून मास मे श्री पं० विद्यानन्द विद्यालङ्कार जी ने ८ दिनों तक प्रचार किया। उसके पश्चात् श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने १० दिन तक वेदों की कथा सुना कर तृप्त किया। पुन श्री पं० धनुर्धर शर्म्मा जी ने लगातार लगभग २० दिनों तक प्रचार किया और जनता मे वैदिक धर्म की धाक जमा दी।

गत जनवरी से खड़गपूर में एक सनातन धर्म सभा भी क़ायम हुई है। जिसने जन्मते ही समाज और ऋषि दयानन्द जी को गाली देना मात्र अपना मुख्य कर्त्तव्य बना लिया था। अभी हाल में सनातनी पं० कालूराम जी शास्त्री को बुलाकर लगातार एक महीना तक आर्य्य समाज को भर पेट कोसा

गया और गन्दे २ आक्षेप तथा सीधी २ गालिया दी गई। जिसका प्रत्युत्तर समाज ने वैदिक धर्म की महत्ता दिखाकर दिया। जब पण्डित कालूराम जी ने खुले मैदान समाज को शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज दिया तो समाज ने भी तुरन्त सहर्ष स्वीकार कर लिया और एतदर्थ लिखित पत्र व्यवहार होने लगा परन्तु समाज के ललकारते ही सनातन धर्म्म सभा के महामन्त्री जी ने लिखित उत्तर दिया कि प० कालूराम ने चैलेञ्ज दिया ही नही है और वे शास्त्रार्थ नही करना चाहते इतना लिख कर भी उन्होंने अपना कार्य जारी रक्खा और समाज को गालिया देते ही रहे परन्तु इसका फल यह हुआ कि स्वयं सनातनी भी उनसे घृणा करने लगे केवल वही दस पाच उनके पीछे लगे रहे।

समाज की ओर से श्री पण्डित सुखदेव जी विद्यावाचस्पति ने सार्वजनिक सभाओ मे लगातार कई दिनो तक प० कालूराम जी के एक २ आक्षेप का ऐसा युक्ति युक्त और पाण्डित्य पूर्ण उत्तर दिया कि लोग वाह वाह करने लगे। और साथ ही खुले मैदान ललकार कर कहा कि हम इसी समय और हर समय सनातनी पं० से शास्त्राथ करने को तय्यार है जिसकी इच्छा हो आकर शास्त्रार्थ करले, परन्तु कोई नजर नहा आया। इस हल चल से लोगो पर समाज की धाक जम गई। और पं० कालूराम जी को पूरी दक्षिणा भी नही मिली।

खड़गपुर समाज लगभग ३० वर्ष से स्थापित है। सर्व प्रथम आर्य मुसाफिर प० भोजदत्तजी ने महान कठिन परिस्थिति मे बीजारोपण किया था। उसके बाद श्री पं० शिवशकर जी शर्म्मा काव्यतीर्थ, वेदाचार्य, श्री पडित आर्य मुनि जी महामहोपाध्याय, तथा श्री पं० पूर्णानन्द जी आदि ने समय २ पर पधार कर इसे दृढ किया था।

इधर कई साल से समाज के वार्षिकोत्सव बडी धूम धाम से हुआ करते है। जिनमे उत्तर भारत और बिहार बंगाल के प्रसिद्ध २ पूज्य संन्यासी विद्वान, पंडित और योग्य भजनीको द्वारा वैदिक धर्म का डंका बजाया जाता है। उपस्थिति इतनी अधिक होने लगी है कि समाज को स्थान का प्रबन्ध करना कठिन हो जाता है।

इस वर्ष का उत्सव आगामी दिसम्बर मास की ता० १८ से २१ तक मनाने का निश्चय हुआ है। तय्यारी अभी से आरम्भ हो गई है। सनातनी प्रचार के कारण अब के उत्सव की ओर सर्व साधारण का अधिक ध्यान है।

यह स्थान कलकत्ते से ७२ मील पश्चिम (B N R) बंगाल नागपुर रेल्वे का एक प्रकार से हेड कार्टर है। रेलवे का सबसे बडा कारखाना यही है। यहा से नागपुर की ओर, पुरी जगन्नाथ की ओर तथा गया की ओर तीन लाइने जाती है और कलकत्ते से ही प्राय प्रत्येक गाडी खुलती है। कलकत्ते से लगभग २ घण्टे का रास्ता (ट्रेन के द्वारा) है। खडगपुर मे भारत के प्रत्येक प्रान्त निवासियो की पर्याप्त संख्या है। एक प्रकार से (जैसा कि श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय M A ने कहा था) यह भारतवर्ष का एक छोटा स्वरूप है। यहा का प्रचार सारे देश का प्रचार है। यदि पूज्य महात्मा, पण्डित तथा अन्यान्य प्रचारक

बन्धु इधर से गुजरते हुए दो एक दिन यहां ठहर जाया करें तो बड़ा काम होगा। समाज उनकी यथा शक्ति सेवा भी करेगी।

सार्वदेशिक सभा यदि अपनी ओर से एक निरीक्षक मंडल ऐसा तय्यार करे जिसमें चुने हुए योग्य विद्वान हों और वे लोग एक ओर से बगाल, बिहार, उड़ीसा इत्यादि की ही नहीं बल्कि अन्यान्य प्रान्तों की समाजों का निरीक्षण करें तो बड़ा लाभ हो और एक जाग्रति उत्पन्न हो जावे।

श्रीपाद पान्डुरन्गार्य्य,
प्रधान मन्त्री आर्य्यसमाज, खड़गपुर

❀ ❀

आर्य्य समाज क्वेटा

अक्टोबर मास के मध्य मे मुझे आर्य्य समाज क्वेटा के उत्सव पर जाने का अवसर मिला—आर्य समाज क्वेटा का विशाल मन्दिर और उसी के अहाते मे कन्या पाठशाला का विशाल भवन जिस मे ७०० के लगभग कन्याये शिक्षा पाया करती थी और जिसकी लागत लगभग डेढ़ लाख के थी सारे नगर के साथ ईट और मिट्टी के ढेर के रूप मे परिवर्तित हो गया। अनेक आर्य्य बहन और भाई जिनमें कई बडी लग्न से काम करने वाले थे भूचाल की बलिवेदी की भेंट हो गये। इन सारी खराब परिस्थितियों के होते हुये भी क्वेटे के सज्जनों ने जितने उत्साह से अपना उत्सव रचा और समस्त प्रचार कार्य्य खूबसूरती के साथ समाप्त किया वह प्रशसनीय है। क्वेटा का आर्य्य मन्दिर बनना चाहिये उसके लिये पुष्कल धन चाहिये क्योंकि अब यह मन्दिर अर्थक्वेक प्रूफ बनेगा जिससे फिर कभी इस प्रकार की दुर्घटना घटित होने पर वह हानि से सुरक्षित रहे। आर्य्यसमाज क्वेटा के पुरुषार्थी सदस्य शीघ्र ही उसके लिये अपील निकालना चाहते है और डेपुटेशन भी ले जाना चाहते है। मै आर्य्य भाई और बहनों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि यह सम्भव नहीं है कि सब जगह उनका डेपुटेशन पहुंच सके इस-लिये उनकी अपील निकलने पर उदारता पूर्ण उनकी सहायता करनी चाहिये जिससे शीघ्र ही आर्य्य मन्दिर बन कर बिलोचिस्तान मे वैदिक धर्म के प्रचार का साधन बन सके।

—नारायण स्वामी

❀ ❀

विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार करने वाले प० अयोध्याप्रसाद जी को अभिनन्दन पत्र

महर्षि दयानन्द जी विश्वशान्ति का दिव्य सन्देश

बम्बई आर्य समाज मदिर मे रविवार ता० ४-१०-३६ सायंकाल ६ बजे विदेशो मे वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले—विश्व विख्यात वैदिक रिसर्च स्कॉलर पं० अयोध्याप्रसाद जी को अभि-नन्दनपत्र देने के लिए एक सभा हुई थी, जिस मे समाज के प्रधान श्री रणछोडलाल जी, पं० विजय शंकर जी, समाज के प्रधान मन्त्री श्री वल्लभदास महता एडवोकेट, श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी, पं० परशुभाई, प० आगल जी, पं० रामचन्द्र जी आदि के व्याख्यान हुये थे, अभिनन्दन चांदी की कासकेट मे दिया गया था।

पं० अयोध्याप्रसाद जी

ने उत्तर देते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के उन्नतम जीवन की प्रेरणा से आर्य समाज और वैदिक धर्म की जो कुछ सेवा मै कर सका हूँ उसका यश आप आर्य बन्धुओ को ओर विशेषत बम्बई आर्य समाज के उत्साही और नवयुवक कार्यकर्त्ताओ को है।

अभी काम बहुत है

अमरीका मे हमे कुछ सफलता प्राप्त हुई है सर्व धर्म परिषद् की सभाओ का प्रारम्भ वैदिक प्रार्थना से होता था ओर अन्त मे शान्तिपाठ होता था, मेरे मस्तक से, मेरे हृदय से ओर मेरे बाहुओं से आपके आत्मा को वन्दना करता हूँ, यह भावना वाला "नमस्ते" वहा बहुत लोगो को पसन्द आया है वहा के लोग महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के महान और अनुपम जीवन की मुक्तकण्ठ से प्रशसा करते है।

उपनिवेशों में प्रचार

डच गायना ट्रीनीडाड आदि स्थानों मे अपने बहुसंख्यक भारतीय अपना धर्म, देश, जाति ओर भाषा भूल गये हैं। वहा आर्यसमाजों की स्थापना हुई है किन्तु अभी करने का बहुत काम है। प्रत्येक हिन्दवासी का यह कर्त्तव्य है कि आर्य समाज के इस पवित्र कार्य मे सहयोग दे।

अन्त मे पण्डित अयोध्याप्रसाद जी ने कहा मेरा सारा जीवन महर्षि दयानन्द के काम के लिय है ओर मैं मरूंगा तो भी यह कार्य करते करते। शान्तिपाठ करके सभा विसर्जित हुई थी।

❀ ❀

दयानन्द मेडीकल मिशन

इस सस्था की स्थापना ६ दिसम्बर १६३४ के दिन मसूरी मे हुई थी। १६ जून १६३५ के दिन इस संस्था की ओर से मसूरी मे ही दयानन्द मिशन हौस्पिटल की स्थापना श्री नारायण स्वामी जी महाराज के कर-कमलो से की गई।

इस संस्था का प्रधान उद्देश्य मनुष्य-मात्र की चिकित्सा द्वारा सेवा करना तथा श्रद्धा ओर सदाचार मे सहायता पहुचाना है। भारतवर्ष मे चिकित्सा का प्रबन्ध बहुत कम है। देहातो की तो बात क्या, शहरों मे भी चिकित्सा की समुचित व्यवस्था नही है। अत दयानन्द मैडीकल मिशन का विचार स्थान २ पर ऐसे हौस्पिटल खोलने का है जहा सर्वथा भेद-भाव के बिना मनुष्यमात्र की सेवा की जाय। देहातो मे चिकित्सा को फैलाने के लिये ऐसे चिकित्सक रक्खे जावे जो घूम-घूम कर रोगियों की सेवा करें।

प्लेग हैजा आदि बीमारियों के फैलने पर हम चाहते है कि दयानन्द मडीकल मिशन के चिकित्सक उन स्थानो पर जावे जहा ये महामारिया फैली हो ओर वहा जाकर जनता की सेवा करे।

इसी प्रकार मेले, तीर्थ-यात्रा आदि के अवसर पर जनता की सेवा करना दयानन्द मैडीकल मिशन का एक महत्व पूर्ण कार्य होगा।

इस मिशन के कार्य का प्रधान स्थान मन्सूरी चुना गया है क्योंकि—गर्मियों और बरसात के

मौसम में हज़ारों लाखों यात्री यू०पी०, पंजाब, बंगाल, बिहार, मध्य प्रान्त आदि सभी प्रान्तों से मसूरी आते हैं। मार्च से शुरू कर अक्तूबर तक आठ मास के लगभग मंसूरी भारत भर से आने वाले यात्रियों का निवास स्थान बन जाता है। साथ ही तपेदिक, दमा आदि क्षयकारी रोगों से पीड़ित हज़ारों रोगी हिमालय की स्वास्थ्यजनक जलवायु से लाभ उठाने के लिये प्रति वर्ष मंसूरी में पहुंचते हैं। मसूरी में सफलता पूर्वक कार्य चलने के पश्चात् उसकी शाखायें अन्य स्थानों पर खोली जावेंगी।

यह संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की संरक्षता में है। मिशन ने अपना पहिला कार्यक्षेत्र गुरुकुल कांगडी (हरिद्वार) को वहाके मुख्याधिष्ठाता के निमन्त्रण पर १६ दिसम्बर १९३४ से अप्रैल १९३५ के अन्त तक बनाया। मिशन के कार्यकर्त्ताओं के प्रयत्न से १७५ से ऊपर बडे ओपरेशन गुरुकुल के हस्पताल में हुए और १५० के लगभग बीमार प्रतिदिन इलाज के लिये आने लगे। हजारों की संख्या में गरीब बीमारों को मुफ्त दवा और आवश्यकतानुसार अन्न, वस्त्र भी गुरुकुल की ओर से दिये गये।

मिशन के सम्पूर्ण कार्य का श्रेय कप्टिन डा० रामचन्द्र जी, लेट आई०एम०एस० रिटायर्ड सिविल सर्जन को है। बाबू महेशलाल जी आर्य की प्ररणा से श्री जैन श्वेताम्बर भण्डार पावापुरी जिला पटना (बिहार) के आनरेरी मैनेजर स्वर्गीय बाबू धन्नूलाल जी सुचन्ती ने केप्टन साहब के मैडीकल केम्पके लिये सम्पूर्ण व्यवस्था करदी। २१ दिसम्बर १९३५ से डाक्टर साहब ने पावापुरी मे कार्य आरम्भ किया। १ मास मे कुल ३८१ ओपरेशन हुए जिसमे ३४० मोतियाबिन्द के थे।

पावापुरी मे डाक्टर साहब के कार्य को देखने के लिये बिहार और उडीसा प्रान्तीय सरकार के शिक्षा मन्त्री आए, इस कार्य के विषय में उनकी सम्मति का कुछ भाग यहा उन्ही के शब्दों में इस प्रकार है —

"राय साहब लक्ष्मीचन्द जी सुचन्ती के निमन्त्रण पर मुझे पावापुरी मे व्यवस्थापित नयन चिकित्सा के हस्पतालों को देखने का अवसर मिला। यह प्रबन्ध उन्होंने और कतिपय उदार विचार वाले व्यक्तियों ने किया था। धनी और उदार व्यक्तियों ने अनुभव किया कि इससे बढकर उपकार का कोई काम नहीं है कि पैसे के अभाव में जो नयनहीन हैं उन्हे प्रकाश दिया जाय और जिन्हें ऐसी संस्थाओं के अतिरिक्त और कहीं उचित चिकित्सा मिल ही नहीं सकती। कैपटिन रामचन्द्र को बधाई है कि जिस सफलता के साथ उन्होंने यहा यह काम किया है। उनकी दानशीलता और निस्वार्थ सेवा भी प्रशसनीय है।"

ह० सय्यद अब्दुल अजीज़
पटना बैरिस्टर
३०-१-३६ शिक्षा मन्त्री
बिहार और उड़ीसा।

पं० गगाप्रसाद जी एम० ए० चीफ जज और जुडीशियल मिनिस्टर टिहरी की प्रेरणा से टिहरी महाराज हिज़ हाईनेस नरेन्द्रशाह जी ने डाक्टर साहब के मेडीकल केम्पके लिए पूरा प्रबन्ध किया।

डाक्टर साहब १३ मार्च १६३६ को टिहरी मे पधारे और २१ दिन रहे। इस समय मे २३३ ओपरेशन किये जिनमें १२७ मोतियाबिन्द के तथा अन्य पलकबन्दी, मसाने से पथरी निकालना, आंत का उतरना, रसौली आदि के थे। डाक्टर साहब का रोगियों के प्रति प्रेम का व्यवहार और अनथक परिश्रम के कारण टिहरी गढवाल राज्य की प्रजा डाक्टर साहब के इस पुण्यकार्य को कभी न भूलेगी।

डाक्टर साहब के कार्य के सम्बन्ध में टिहरी महाराज ने चीफ सेक्रेटरी के द्वारा अपनी सम्मति इस प्रकार भेजी —

"आपने इस राज्य में जिस सफलता के साथ धमार्थ कार्य किया, जिससे राज्य की प्रजा को बहुत लाभ पहुंचा—उसके लिये मै आपका साधुवाद करता हूँ।

नरेन्द्रनगर　　　　　　　　ह० एल० एस० गुलरिया
२८-४-३६　　　　　　　　　　चीफ सेक्रेटरी
　　　　　　　　　　　　　　टिहरी गढ़वाल स्टेट।

टिहरी रियासत में कार्य करने का प्रभाव इतना अच्छा पड़ा है कि वहा से बहुत रोगी इलाज कराने के लिये दयानन्द मिशन हस्पताल मसूरी मे आते हैं।

इसी प्रकार डाक्टर साहब इस शीतकाल में जनता की चिकित्सा द्वारा सेवा करने का विचार रखते हैं। सज्जनों के प्रबन्ध के अनुसार निमंत्रण आने पर भिन्न २ स्थानों में मैडीकल कैम्प डाल कर जनता को लाभ पहुंचाना चाहते हैं। जो २ सज्जन जहा २ व्यवस्था कर सकें और गरीबों को सहायता पहुंचाकर उनके आशीष ग्रहण करने के इच्छुक हों वे डाक्टर साहब के साथ पत्र व्यवहार करके १५ अक्तूबर तक समय निश्चित कर ले। डाक्टर साहब का पता दयानन्द मिशन होस्पिटल, कुलरी मंसूरी है।

आर्य समाज के सार्वजनिक कामों मे अभी तक मैडीकल मिशन के नाम की कमी थी। इस कमी को कैप्टिन डा० रामचन्द्र जी लेट. आई. एम एस रिटायर्ट सिविल सर्जन ने पूरा करना ठान लिया है। जनता से इस कार्य मे अभी तक सहायता पर्याप्त नहीं मिली। गरीबों और सर्वसाधारण जनता की सेवा तभी भली भाति की जा सकती है जब कि सहृदय उदार सज्जन अन्य उपायों के साथ २ मैडीकल एड (Aid) को भी मिलाकर ग्रामोन्नति के कार्य को करना चाहते हों वे डाक्टर जी के साथ पत्र व्यवहार करें कि उसको इसके लिये वे तय्यार कर सकें।

यह कार्य सार्वजनिक कार्य है सब प्रकार के मत मतान्तर और भेद भाव से सर्वथा शून्य है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि मनुष्य मात्र इससे लाभ उठाते है। इसलिये आर्य समाजी, सनातनी मुसलमान, ईसाई आदि सब अपनी २ अन्तरङ्ग सभाओं और प्रतिनिधि सभाओं मे इस सस्था की उन्नति का विचार रखकर स्थिर रूप से आर्थिक सहायता पहुंचाने का दृढ़ सकल्प करें और उत्तम निर्देशों से सूचित करें जिससे भारतीय जनता का

स्वास्थ्य उत्तम हो और देशोन्नति में अधिक शीघ्रता से प्रगति हो सके।

इ० एस० दर्शनलाल बैरिस्टर
(Chairman City Board Mussoorie)

वास्तव में यह कार्य बड़े उपकार का है और इस प्रकार के कार्यों से मनुष्यत्व का नाम ऊंचा होता और हो सकता है। प्रत्येक को इस कार्य में सहायता देनी चाहिये।

नारायण स्वामी

❀ ❀

विविध-धर्म-सम्मेलन

आर्य समाज मद्रास

गत रविवार २० सितम्बर के दिन आर्यसमाज मद्रास में एक विशाल जन सभा हुई। हाल खचाखच भरा हुआ था। सैकड़ों दर्शक स्थानाभाव के कारण सड़क पर खड़े हुए थे।

उक्त सम्मेलन के सभापति दीवान बहादुर आर० श्री निवासन ऐम० ऐल०सी० थे। सम्मेलन के अन्य वक्ताओं में निम्न नाम उल्लेख योग्य हैं डबल्यू० ए० किम्बर (ईसाई), ऐम० ए० क्यू० हुसेनी (मुस्लिम) डा० पट्टाभिरामन (बौद्ध) यू० पी० कृष्णमाचार्य (सनातनी) श्री भाष्यम् ऐयँगार रिटायर्ड हाईकोर्ट जज (हरि० सेवक-संघ) स्वामी सहजानन्द (हरिजन--नेता) और पण्डित केशव देव ज्ञानी (आर्य समाज)

सबसे प्रथम सभापति महाशय ने "हरिजन तथा धर्म-परिवर्तन" विषय का संक्षिप्त इतिहास कहा। डा० अम्बेदकर के प्रस्ताव की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि "हरिजनों की सभ्यता प्राचीनतम सभ्यता है। उसी द्रविड़ सभ्यता से आर्य सभ्यता प्रारम्भ हुई। इसी प्रकार द्राविड़ वेद "तिरुकुरल" प्राचीनतम धार्मिक ग्रन्थ है और इसमें समस्त शास्त्रों का सार आगया है। अतएव जो लोग हरिजनों को धर्म-परिवर्तन का मशविरा देते हैं उन्हें "धर्म क्या है?" इसका ही पता नहीं। हरिजनों को किसी नवीन धर्म की सर्वथा आवश्यकता नहीं। उन्हें तो नवीन जीवन और नवीन भावना की आवश्यकता है। यदि उनमें ये दोनों चीजें आ जाय तो हिन्दू--समाज क्या संसार का कोई भी समाज उन्हें अपने जन्म सिद्ध अधिकारों से वंचित नहीं रख सकता।"

तत्पश्चात ईसाई व मुस्लिम प्रतिनिधियों ने भाषण दिये तथा हरिजनों को हिन्दू धर्म छोड़कर विधर्मी बनने की प्रेरणा की। जिसके जवाब में श्री भाष्यम ऐयंगर ने जो कि स्थानीय हरिजन सेवक संघ के प्रधान हैं, पूछा कि क्या मालाबार में जाति--ईसाइयों व हरिजन--ईसाइयों में भेद नहीं है? क्या हरिजन--ईसाई ब्राह्मण--ईसाई की कन्या से विवाह कर सकता है? इसी प्रकार मुसलमानों के शिया, सुन्नो, वहाबी, अहमदिया, आगाखानी आदि भेदों की ओर सभा का ध्यान दिलाया।

सनातनी श्री कृष्णमाचार्य कार्यवशात् सभा में उपस्थित न हो सके। बौद्ध वक्ता ने अपने धर्म की खूबियां बताई।

आर्य समाज की ओर से श्री पण्डित केशव देव जी ज्ञानी ने निम्न बातों पर बल दिया:—

(१) हरिजनों की समस्या धार्मिक नहीं अपितु सामाजिक व आर्थिक है। यही कारण है कि ईसाई पादरी ०७) प्रति मनुष्य के हिसाब से इन्हें अपने धर्म में मिला लेते हैं।

(२) कांग्रेस व महात्मा गांधी से पूर्व ही आर्य समाज अछूतोद्धार का कार्य कर रहा है। और इसका उपदेश आर्य व हिन्दू सभ्यता और संघ शक्ति को स्थिर करना है।

(३) एक ओर तो ईसाई और मुसलमान प्रति दस वर्ष क्रमश ३४ ७ और ८८.४ प्रतिशत बढ़ रहे हैं और दूसरी ओर मद्रास प्रान्त में प्रति दिन ५०० हिन्दू विधर्मी हो रहे हैं। अतएव हिन्दुओं के लिए आवश्यक है कि अपने समाज की रक्षा के लिए उचित उपाय प्रयोग में लायें।

(४) हिन्दू समाज अब जात-पात के ढकोसलों को धीरे २ छोड़ रहा है। हरिजनों को तनिक धीरज से काम लेना चाहिए।

(५) जहां एक ओर उच्च जाति हिन्दू पश्चात्ताप की भावना से काम कर रहे हैं वहां हरिजनों को आत्म विश्वास की भावना की आवश्यकता है। यदि हरिजन सबल हो जाय तो उनकी मांगे ठुकराई नहीं जा सकतीं।

श्री प्रधान जी के अन्तिम भाषण तथा धन्यवाद के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

गत मास के विशेष कार्य निम्न प्रकार हैं

१—मद्रास तथा स्थानीय शाखाओं में नियमित प्रचार।

२—दो अन्त्येष्टि संस्कार।

३—"अखिल-धर्म-सम्मेलन" का आयोजन दीवान बहादुर श्रीमान् आर. श्रीनिवास एम. एल. सी. की अध्यक्षता में हुआ। निम्न वक्ताओं ने भाग लिया—श्रीयुत वी. भाष्यम ऐय्यंगार रिटायर्ड हाईकोर्ट जज, मद्रास, फादर किन्नर आफ लण्डन मिशन, मिस्टर एस हुसैनी एम ए आफ मुस्लिम कालिज मद्रास, स्वामी सहजानन्द एम एल. सी., डाक्टर पट्टाभिरामन और पण्डित केशवदेव ज्ञानी, सिद्धान्तालङ्कार। सम्मेलन का विषय "हरिजन और मत-परिवर्तन" था। सम्मेलन का संक्षिप्त वृत्तान्त प्रकाशनार्थ पृथक भेजा है।

४—Hinduism vs Islam नामक नवीन ट्रैक्ट तथा An outline of Aryasamaj का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया।

के ज्ञानी

❀ ❀

राजग्रह मेला में वैदिक प्रचार

८-६-३६ से १५-६-३६ तक

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार बांकीपुर की तरफ से वैदिक धर्म प्रचारक मण्डली के साथ जिसमें श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, पं० भजनानन्द जी वानप्रस्थ, पं० जगन्नाथ प्रसाद जी, याज्ञिक पं० त्रिवेणीदत्त जी शर्मा व हरिचरणलाल जी तथा श्रीमती कुमारी सुशीलादेवी कर्णवती आदि उपदेशकों व ठाकुर धर्मवीरसिंह, ठा० ईश्वरसिंह जी, ठाकुर रामचन्द्र सिंह जी, ठा० मन्नासिंह जी व जगन्नाथ प्रसाद आदि प्रचारक थे। प्रचार किया और कराया प्रभाव अच्छा रहा जिसमें प्रभातफेरी, हवन, यज्ञ, उपदेश, व्याख्यान, भजन

सार्वदेशिक सभा की आवश्यक सूचनाएँ

'आर्य पर्वावलि' के नामसे एक पुस्तक वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद ने प्रकाशित की हुई है। कोई २ सज्जन अनजान में इसी पुस्तक को आर्य्य समाज के स्वीकृत पर्वों की पुस्तक समझ कर मंगा लेते हैं और पछताते हैं। जनता को सूचना के लिये यह लिख दिया जाता है कि इस सभा की स्वीकारी से छपी हुई पुस्तक आर्य्य पर्व्व पद्धति है जिसका दूसरा संस्करण शीघ्र छपने वाला है।

भारी रिआयत

दयानन्द ग्रन्थ संग्रह जो मथुरा शताब्दी के समय छपा था जिसका दाम उस समय ५) था। उसमें वेद भाष्य को छोड़कर ऋषि दयानन्द कृत सब ग्रन्थ हैं। उसकी कुछ प्रतियां सार्वदेशिक सभा में हैं। सभा उनको २॥) प्रति कापी के हिसाब से बेचती है। यदि कोई समाज १० या दस से अधिक मँगवावे तो माल गाड़ी से रेल का किराया सभा स्वयं देगी। इसलिए प्रत्येक आर्य्य समाज को यह पुस्तक मँगवानी चाहिए ताकि किसी भी आर्य्य के गृह पर ऋषि कृत ग्रन्थों की एक प्रति हो और स्वाध्याय करने में सुगमता हो।

मन्त्री,
सार्वदेशिक सभा
देहली।

शिक्षा पूर्ण होता रहा व शंका समाधान भी होता रहा, वर्षा के कारण कभी कभी बाधा भी पड़ती रही। बिहार शरीफ़ के कतिपय सभासदों ने प्रचार कार्य में सहायता दी व हम लोगों के ठहरने के लिये गोरखणी तथा बुद्ध मन्दिर के महन्त उकुन तिनिया ने अच्छा स्थान देकर कृतार्थ किया जिस के लिये विशेष धन्यवाद है।

मैंने पूर्व्व एक बार यहां आकर अन्वेषण किया था और पुनः भी अन्वेषण किया जिसकी सूचना पूर्व्व पत्रों में दी थी कि यहां के आदिम निवासी जिन्हें रजवाड़ कहते हैं सम्भवतः उन्हीं पुराने राजवंश के हैं जिनके नाम पर राजगृह नाम पड़ा है बहुत बड़ी संख्या में हैं वे आजकल जंगली और असभ्य तथा अछूत समझे जाते हैं इनकी शिक्षा आदि का बोर्ड तथा सुधारक सभाओं की ओर से कुछ भी प्रबन्ध नहीं है और शिक्षा का सुधार होना अति दुस्तर है अतः आर्य प्रतिनिधि सभा और हिन्दू महासभा तथा डि० बोर्ड आदि से मेरा नम्र निवेदन है कि इनकी उचित शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करें और उपरोक्त दोनों सभाएं उपदेशक भेजकर उनकी गिरी हुई दशाओं के सुधार और उन्नति का मार्ग बतावें और जो जो सुधार कार्य हों करें, नहीं तो ये मुसलमान और ईसाई बनते जा रहे हैं।

शुभेच्छु रामानन्द

(शेष पेज ३१२ का)

लिये नहीं लगा कि यह उत्तम करने का काय बहुत धीरे २ था और कोई बडे बाजे गाजे के साथ नहीं किया गया था। यद्यपि हिन्दुओं को अन्य धर्मावलम्बियों को अपने धर्म मे मिलाने के लिए सीमा से अधिक उत्सुक तथा अधीर नहीं होना चाहिए और उन्हीं की शुद्धि करनी चाहिए जो कि हिन्दू धर्म मे आना चाहते हैं, परन्तु जो हमारी उपेक्षावृत्ति तथा अज्ञानता से हमे छोड कर चले गये उन्हें तो वापिस लाने के लिये निरन्तर तथा अथक परिश्रम करना ही चाहिए। यह एक मामला है, जिसे कि हिन्दू महासभा को अपने हाथ मे लेना चाहिये।

भाषा

किसी राष्ट्र की संस्कृति का उसकी भाषा से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र इसी कारण अपनी राष्ट्रीय भाषा की रक्षा करता है और सुरक्षित रखता है। इसलिए हिन्दुस्तान को हिन्दी को ही भारतवर्ष की बोलचाल तथा व्यवहार को भाषा (राष्ट्रीय) बनानी चाहिये। हमे विशुद्ध हिन्दी पर बल देना चाहिए जैसे कि हम विशुद्ध हिन्दू संस्कृति पर बल देते हैं।

कांग्रेस और हिन्दू सभा

अब मैं संक्षेप मे यह बतलाना चाहता हूँ कि कांग्रेस और हिन्दू सभा के सम्बन्ध किस प्रकार हों। कांग्रेस पर यह आक्षेप किया जाता है कि जब कभी हिन्दू हितों का अवसर आता है तो हिन्दुओं के लिये आगे नहीं बढती। तथा सीमा प्रान्त मे सरकार का हिन्दी गुरमुखी घातक सरक्यूलर या काश्मीर मे हिन्दू देवालयों पर मुसलमानों द्वारा कब्जा जमाने की चेष्टा मे कांग्रेस का रवैया। हमे कांग्रेसी नेताओं की नीति को जरा विशाल हृदय से देखना चाहिये, कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जो साम्प्रदायिक संकीर्णता से ऊँची है। इसमे सभी समुदायों के लोग सम्मिलित हैं। इसी कारण से वह भिन्न २ मतो और सम्प्रदायों के शहरी अधिकारों की समस्याओं पर विचार नहीं कर सकती। कांग्रेस मे मुसलमान कम हैं अस्तु वह उन्हें नाराज नहीं करना चाहती। और इसी कारण कम्यूनल एवार्ड पर जो एक साम्प्रदायिक नहीं वरन् वास्तव मे राष्ट्रीय समस्या है, तटस्थ रहकर कांग्रेस ने भारी भूल की है। अत यह अच्छा हुआ कि कांग्रेस ने इस सम्बन्ध मे अपना रवैया बदल लिया है।

मैं कह चुका हूँ कि हिन्दू हितों की रक्षार्थ कांग्रेस पर आगे न बढने का दोषारोपण व्यर्थ है। किन्तु मैं यह भी कह दूं कि इस परिस्थिति मे हिन्दू महासभा को भी कौंसिलो मे अपने प्रतिनिधि भेजने चाहिये ताकि वहा हिन्दू हितों की रक्षा करें। अत हिन्दू महासभा को अपने टिकट पर चुनाव लडने चाहिये। इस चुनाव में कांग्रेस पर कटाक्ष न होना चाहिये। दूसरी ओर कांग्रेस को भी हिन्दू सभा की ओर से स्वतन्त्रता पूर्वक चुनाव लड़ने मे बाधा न देना चाहिये। हा, मैं यह भी कह दूं कि जहा कांग्रेस तथा हिन्दू सभा के हितों मे भेद हो, वहा दोनों को सहयोग से काम लेना चाहिये।

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोलाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N. W. R, आनरेरी सैक्रेटरी]

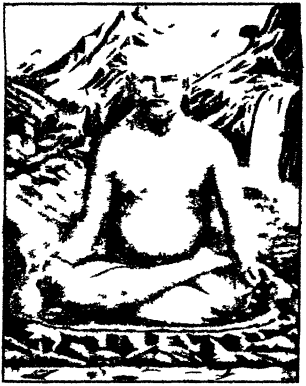
पंजाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड पर एक अनाथालय है जिसका नाम पञ्जाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विश्वम्भर जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्त जी वैद्य शास्त्री मुलतान, तथा डा० गणेशी लाल जी M B B S हैं इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं, प्रत्युत मद्रास बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक में रहने वाले हिन्दू आर्य भाई भी करते रहते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पञ्जाब में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्गपर चल रहा है, यहां तक कि अब सरकार भी, जो चोरी किये हुए लड़के लड़कियां उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसो का पता नही मिलता, तब तक उनको यहां रखती है। इस तरह से अनाथालय में बच्चों की प्रवेश संख्या बढ़ गई है इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से स्थान काफी नही होता। इस न्यूनता को पूर्ण करने के लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, नवीन कमरे बनवाये जाय, जिससे स्थान का कष्ट मिट जाय और इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनों की सेवा में विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालों के जाल मे फँसकर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जायेंगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के आधीन म्यूनिस्पल कमेटी से मंजूर एक मिडिल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखाया जाता है तथा बाहर के लड़के भी इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लड़के इस कार्य को सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहाँ से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ९५ लड़के और ७० लड़कियां हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारी महानुभावो से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात आटा, दाल, चावल, घी, दरी, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप ही की ओर से आ रहा है जिससे यह संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक में पुण्य के भागी बनेंगे तथा हमें भी कृतार्थ करेंगे।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली,
से प्रकाशित।

दिसम्बर १९३६ Reg No L 2121

ऋग्वेद यजुर्वेद



स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का =)

अथर्ववेद सामवेद

विषय सूची

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १० | मार्गशीर्ष १९९३ | दिसम्बर १९३६ ई० | दयानन्दाब्द ११२ | अङ्क १०

* वेद की शिक्षाएँ *

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरञ्च दृशेयं मातरं च॥

ऋ० मं० १ सू० २४, मं० २॥

हम इस स्वप्रकाशस्वरूप अनादि सदामुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हमको मुक्ति में आनन्द भुगाकर पृथिवी में पुनः माता-पिता के सम्बन्ध में जन्म देकर माता-पिता का दर्शन कराता है वही परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था कर्ता सब का स्वामी है।

सम्पादकीय—

ट्रावन्कोर राज्य की घोषणा

ट्रावन्कोर दरबार की दलितोंको मिलाकर समस्त हिन्दुओं के लिए राज्य के मन्दिरों के द्वार खोलने विषयक घोषणा जो उन्होंने अपनी २५वीं वर्षगाठ के उपलक्षमें की है युगातरकारी तथा स्वागतयोग्य है युगातरकारी इसलिए कि न केवल ट्रावन्कोर राज्य में ही वरन् समूचे भारतवर्षमें 'अस्पृश्यता' निवारण की दिशा में यह घोषणा एक नवीन युग को जन्म देगी। यद्यपि आर्य्य समाज मूर्तिपूजा के पक्ष में नही है तो भी यह घोषणा स्वागत योग्य इसलिए है कि इस घोषणा के द्वारा दलितों की परमात्मा के अन्य पुत्रों के साथ समानता का असूल स्वीकार किया गया है तथा उन्हें उनका वह अधिकार प्रदान करके जिससे वे चिरकाल पर्य्यन्त वंचित रक्खे गए थे उनके प्रति न्याय किया गया है। इस साहसपूर्ण कदम के लिये महाराजा ट्रावन्कोर तथा उनके सुयोग्य मन्त्री श्री. सी पी राम स्वामी अय्यर जो अभी हाल में ही इस पद पर आसीन हुए है और जो इस घोषणा के श्रेय के भागी बने हैं दलितों, हिन्दू समाज-सुधारकों तथा उन्नत वर्गों के बधाई के पात्र हैं। इस सुधार के द्वारा उन्हों ने अपने को और अपने राज्य को जनता की निगाहों में बहुत ऊंचा उठा दिया है। अपने उन्नत राज-परिवार की उन्नत और प्रशस्त मर्यादाओंमें उत्तम वृद्धिकी है तथा समस्त भारत मुख्यतया देशी राज्यों के सामने बहुत श्रेष्ठ अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। आशा है शासन इस घोषणा के सफल प्रचलन पर विशेष दृष्टि रक्खेगा और देखेगा कि भाव और भाषा मे इसका ठीक ठीक पालन होता है वा नहीं।

इस घोषणा के पीछे एक इतिहास है। सर्व प्रथम सन् १९१९ में राज्यकी असेम्बलीमे 'मन्दिर प्रवेश' का प्रश्न छिड़ा था। इसके बाद १९२४ में इसी सिलसिले में प्रसिद्ध 'वैकम सत्याग्रह' हुआ था इसके फल स्वरूप हरिजनों के लिए कतिपय निषिद्ध मन्दिरों के राज-मार्ग खोल दिये गए थे। १९३२ में 'गुरु वयूर' का प्रसिद्ध आन्दोलन जिसने समस्त भारत का ध्यान खींचा था छिड़ा था। मन्दिर प्रवेश के पक्ष में इस प्रकार के आन्दोलनों के परिणाम रूप १९३४ मे ट्रावन्कोर राज्य ने एक 'मन्दिर प्रवेश अनुसंधान कमेटी' नियत की थी। इस कमेटी ने हरिजनों के लिए मन्दिर-प्रवेश के एक विशेष रूप की सिफारिश की थी। 'हरिजन सेवक संघ' ने भी इसके लिए उद्योग किया था। इस इतिहास से स्पष्ट है कि मन्दिर प्रवेश की माग बहुत पुरानी माग थी। 'कभी नहीं की अपेक्षा देरी से होना उत्तम है' इस उक्ति के अनुसार इस घोषणा का अब भी होना स्वागत योग्य ही है। मन्दिर प्रवेश के पक्ष में आन्दोलन करने वालों को इस घोषणा से अपने परिश्रम और यत्नों को सफलीभूत देखकर जो खुशी हो रही होगी उसका

वर्णन करना कठिन है।

इस घोषणा का, हमारा विश्वास है, एक तात्कालिक परिणाम यह होगा कि ट्रावन्कोर मे हरिजनों को हिन्दू धर्म्म से पृथक् करने की विधर्मियों की प्रगतियों का जो इन दिनों वेग से जारी थीं, अन्त हो जायगा और बहुत से हरिजनों की रक्षा होगी तथा बहुत से पुन हिन्दू धर्म्म में वापस आ जायेंगे अोर आने के लिए तय्यार होंगे। इस प्रकार इस घोषणा ने आर्य्य-समाज के लिए काम का विस्तार कर दिया है आर्य्य-समाज को इस अवसर पर नहीं चूकना चाहिए।

इस घोषणा ने जो सब से महत्व पूर्ण बात स्पष्ट की है वह यह है कि जनता हिन्दू धर्म्म के उस रूप से ऊब गई देख पड़ती है जिसमें 'अस्पृश्यता' इत्यादि अमानुषिक प्रथाएं जीवित हैं, जिससे कट्टर पन्थी हिन्दू चिपके हुए हैं जिसमें अक्ल का दाखिला नहीं है इस घोषणा ने यह भी स्पष्ट किया है कि जनता उसमे सुधारके लिए उतावली होरही है और उसे पुराना वैदिक रूप देना चाहती है जिसमें अक्लका दाखिला था और जिसमें 'अस्पृश्यता' इत्यादि प्रथाओं का नाम तक न था। हिन्दू धर्म्म के लिए सचमुच ये सौभाग्य के चिह्न हैं। वैदिक धर्म्मी, आर्य्य-समाजी इन चिह्नों पर उचित रीतिसे प्रसन्न हो सकते हैं।

अब्दुला से हीरालाल

महात्मा गांधी के ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल गांधी अब अब्दुल्ला नहीं हैं। आर्य्य समाज बम्बई में वे शुद्ध करके प्राचीनतम आर्य धर्म्म में वापस ले लिए गए हैं। हिन्दू धर्म्म का परित्याग करने में उन्हों ने जो भूल की थी उसे अनुभव करके और प्रकाश रूप में उसे स्वीकार करके उन्होंने अच्छा ही किया है। उनका उदाहरण भारतवर्ष में धर्म्म परिवर्तन करने वालों के लिए एक अच्छा उदाहरण है। हीरालाल जी को हिन्दू धर्म्म के प्रति जो उन्हों न अपराध किया है उसका प्रायश्चित करना बाक़ी रह जाता है। उन्हें चाहिए कि वे हिन्दू धर्म्म के सुसंस्कृत रूप वैदिक धर्म्म का अध्ययन करें और उसके सांचे में अपने जीवन को ढालें। यही उस अपराध का उत्तम प्रायश्चित है। जो मुसलमान हीरालाल को इस्लाम के दायरे में बहुमूल्य वृद्धि समझे बैठे थे और जो उनके सुधार की चेष्टा के बजाय उन्हें 'इस्लाम' के प्रोपैगेंडा का साधन बनाए हुए थे वे गलती पर थे और इस्लाम की कुसेवा कर रहे थे, यह बात यह घटना स्पष्ट करती है और धर्म्म परिवर्तन करने वाली अन्य संस्थाओं को भी अच्छी शिक्षा प्रदान करती है।

पुनर्जन्म का एक और उदाहरण

फ़रीद पुर बंगाल का समाचार है कि वहां के एक होटल के मालिक का ७ साल का लड़का है जिसका बयान है कि वह पिछले जन्म मे एक मुसलमान ज़मीन्दार था उसका नाम शेख़ नूरुद्दीन था जिसे मरे हुए १७ वर्ष बीत चुके हैं। लड़के के बयान पर शेख़ नूरुद्दीन की अतुल सम्पत्ति का जो इसने ज़मीन में गाड़ रक्खी थी पता लग गया है। इस बयान पर हिन्दू मुस्लिम झगड़े का बड़ा भय पैदा हो गया और अधिकारी सतर्क हो गए। हिन्दुओं का दावा है कि लड़का कोई बड़ा सन्त महात्मा है और मुसल्मानों का बयान है कि वह उनका पीर है। लड़के ने जिसका नाम सुन्दर

है शेख़नूरुद्दीन के जीवन की विशेष २ घटनाएं ब्यौरेवार बतलाईं और कहा कि नूरुद्दीन का देहान्त मलेरिया से हुआ। इन बातों को सुनने के बाद लड़के के माता पिता उसे उस गांव में ले गए जहां शेख़ रहता था। लड़का वहां आज तक कभी नहीं गया था। वहां पहुँचते ही उसने शेख़ के ख़ान्दान के तमाम लोगों और बहुत से गांव वालों को पहचान लिया और उनकेनाम लेकर उनसे बात चीत की। लोग हैरान रह गए। सबसे ज्यादा आश्चर्य जनक बात यह थी कि लड़का शेख़ के मकान में घुसते ही फौरन उस जगह गया जहां शेख़ की दौलत दबी पड़ी थी वहां उसने सोने और चांदी के सिक्के ज़मीन से निकलवाने शुरू कर दिये और कहा कि मैं अपनी मृत्यु से पहले अपनी बीबी को उस दौलत के मुतल्लिक़ कुछ न बता सका उसने ११ साला बीबी और बच्चों को पहचाना और कई पारिवारिक सवाल किए।

सुन्दर हिन्दू घर में पैदा हुआ। उसे किसी ने आजतक अरबी का एक अक्षर भी न पढ़ाया मगर तौभी 'कुरान' उसे जुबानी याद है।

यदि यह घटना सच्ची है तो हमारे 'पुनर्जन्म' के सिद्धान्तको असन्दिग्ध मुख्यतया मुसलमानों पर अंकित करने के लिए बहुत अच्छी घटना है। इस उदाहरण से उन मुसलमानों का मुंह बन्द कियाजा सकता है जो इस प्रकार की प्रामाणिक घटनाओं के होते हुए भी इस सिद्धान्त की सचाई को इस लिए नहीं स्वीकार किया करते थे कि वे घटनाएं प्रायः वर्तमान तथा पिछले जन्मों में हिन्दू व्यक्तियों से सम्बन्धित होती थीं।

The Text of the Proclamation

The following is the text of the Proclamation by H H the Maha-Rajah of Travancore —

Profoundly convinced of the truth and validity of Our religion, believing that it is based on Divine Guidance and on all-comprehending toleration, knowing that in its practice it has throughout centuries adapted itself to the needs of changing times, solicitous that none of Our Hindu subjects should, by reason of birth or caste or community be denied the consolations and the solace of the Hindu Faith, we have decided and hereby declare, ordain and command that subject to such rules and conditions as may be laid down and imposed by Us for preserving their proper atmosphere and maintaining their rituals and observances, there should henceforth be no restriction placed on any Hindu by birth or religion, on entering or worshipping at temples controlled by Us and Our Government",

साम्प्रदायिक दंगा और आर्थिक ढंगा

उपर्युक्त शीर्षक में 'मौडर्न रिव्यू' लिखता है—

इस देश में कुछ ऐसे नेता और उनके अनुयायी हैं जो यह सोचते हैं कि साम्प्रदायिक दंगोंका अन्त आर्थिक कानूनों पर निर्मित पार्टियों द्वारा होगा और हो सकता है। साम्प्रदायिक दंगोंका अन्त इस प्रकारकी पार्टियों द्वारा हो सकता है या नहीं यह हम नहीं जानते। परन्तु हम मान लेते हैं कि हो सकता है परंतु

उस दशा में सांप्रदायिक दंगे के स्थान में वर्गयुद्ध होगा युराप के विभिन्न देशों तथा रूस मे वर्ग युद्ध होते रहे हैं। वर्तमान में इस प्रकार का युद्ध स्पेनमें हो रहा है। हम पूछते हैं क्या वर्गयुद्ध सांप्रदायिक तनातनी और बलवों से कम कटु है? युद्ध कोईभी हो वह हमें अपील नहीं करता। यदि दंगे और खून खराबी जारी रहनी होहो तो भयकर सघर्ष के विभिन्न प्रकारों में चुनाव करना उचित नहीं प्रतीत होता है। हम यह विश्वास नहीं करते हैं कि सदैव किसी न किसी प्रकार का युद्ध होता रहना चाहिए। शान्ति की प्राप्ति के लिए संसार को एक बिलकुल भिन्न तरीके की ज़रूरत है और उस तरीके के पीछे घृणा और रग व जाति द्वेष से भिन्न वस्तु होनी चाहिए।

सामूहिक धर्म परिवर्तन और ब्रिटिश धर्माचार्य

कैन्टरबरी के आर्च बिशप ने अभी हाल में सामूहिक धर्म्म परिवर्तन के विरुद्ध घोषणा की है। यदि यह घोषणा डाक्टर अम्बेदकर के अछूत भाइयो के साथ हिन्दू धर्म्म के परित्याग विषयक घोषणा के समय वा उसके तत्काल बाद करदी जाती तो वह सामयिक समझी जाती परन्तु अब डाक्टर अम्बेदकर की घोषणा के काफ़ी समय बाद यह घोषणा सामयिक नहीं समझी जा सकती। तौभी यह स्वागत करने योग्य है। यह निश्चित रूप से विदित हो गया है कि इस्लाम और ईसाई मत दोनो अस्वीकृत होगए हैं ईसाई मत इस लिए कि वह जाति, रग और वर्ण भेदो का सामना करनेमे असमर्थहै और इस्लाम इसलिए कि स्त्रियों ने उस धर्म्मके प्रति अपना तीव्र विरोध प्रगट किया है जो खेत और कारखाने में काम करने की उनकी स्वतन्त्रता का अपहरण आवश्यक ठहराता है। जहां तक हमे विदित है सिक्ख धर्म्मही अधिक ग्राह्य है। यद्यपि मलावारके एक वर्गने बिना किसी धर्म्मके काम चलाने के अपने निश्चय की घोषणाकी है। हिन्दूधर्म्म से सिक्ख धर्ममे परिवर्तन परिवर्त्तन का अर्थ नहीं रखता है और कतिपय हिन्दुओं ने विचाराधीन परिवर्तन के पक्ष में प्रकाश रूप में अपनी सहमति प्रगट की है। अब यह निश्चय सा ही है कि हिन्दू समाज का अधि-

ट्रावनकोर नरेश की घोषणा

अपने धर्मकी सचाई और प्रामाणिकता से पूर्णतया सन्तुष्ट होजाने पर यह विश्वास करते हुए कि यह धर्म दिव्य धर्म है और व्यापक सहिष्णुता पर आश्रित है, यह जानते हुए कि सदियोसे व्यवहारमे इसने अपने को बदलते हुए जमाने की आवश्यकताओं के अनुसार बनाये रक्खा है, इस बात के लिए अधीर होते हुए कि हमारी हिन्दू प्रजा में से कोई भी जन्म, जाति वा सम्प्रदाय के कारण हिन्दू धर्म की शान्ति और प्रासादो से वंचित नहीं रक्खा जाना चाहिए हमने तय किया है और इसके द्वारा हम घोषणा करते हैं निश्चित करते और हुक्म देते हैं कि उन नियमो और शर्तों के आधीन जो मन्दिरों के उचित वातावरण की रक्षा तथा धार्मिक कृत्यों के अनुष्ठान के लिए हम निर्धारित करेंगे, हमारे और हमार सरकार द्वारा संचालित मन्दिरो मे आगे से जन्म वा धर्म्म से किसी भी हिन्दू के प्रवेश वा प्रार्थना पर कोई पाबन्दी नही लगाई जानी चाहिए।

कांग्रेस आग इस परिवर्तन का क्रियात्मक विरोध नहीं करेगा यह भी असूलन नहीं बल्कि समझौते के रूप में।

युद्ध का अंग्रेज़ों का दृष्टि कोण

कैन्टरबरी के आर्च बिशप ने एक बड़ी कान्फ्रेन्स में युद्ध के सम्बन्ध में अभी हाल में अपने विचार प्रगट किये हैं। उन विचारों से निश्चय ही उन लोगों को बड़ा आश्चर्य होगा जिनका विश्वास है कि ईसा मसीह और इसलिए ईसाइयत सब अवस्थाओं मे युद्ध के विरुद्ध है। उनके विचार इस प्रकार हैं —

"The state was not an individual. It was a community organised for Government. It existed to give them protection. The use of force or the sword by the state was the ministry of God for the protection of the people (cheers) If that was true of the state in its domestic relations, it was equally true of the state in its international relations. Every thing depended on the motive or the intention with which its was used. If the force of an army was used for national agression, acquisition and self-assertion it was wrong If it was used for the defence of the people, it was right.

"अर्थात् राज्य व्यक्ति नहीं होता है। शासनके लिए वह एक सुसंगठित वर्ग होता है। वह वर्ग व्यक्ति समूह का ट्रस्टी होता है। उनके रक्षकके लिए इसका अस्तित्व होता है प्रजा की रक्षा के लिए राज्य द्वारा शक्ति या तलवार के प्रयोग के लिए परमात्मा की आज्ञा होती है यदि राष्ट्रीय दृष्टि से राज्य के सम्बन्ध में यह ठीक है तो अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी समान रूप से ठीक है। प्रत्येक चीज उस इरादे पर निर्भर होती है जिस से उसका प्रयोग होता है। राष्ट्रीय संघर्ष, राज्य विस्तार और प्रभुत्व स्थापन के लिए सेनाका प्रयोग ग़लत होता है जनता की रक्षा के लिए ही उसका प्रयोग ठीक होता है।"

आर्च बिशप के उपर्युक्त सिद्धान्त के सम्बन्ध में कठिनाई यह है कि निरोधक और आक्रमक Defensive and Offensive युद्ध की पहचान किस प्रकार होनी चाहिए।

मुसोलिनी की स्थापना थी कि अबीसीनिया इटली के राष्ट्रीय जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना भारत ब्रिटेन के राष्ट्रीय जीवन के लिए। हिटलर कहता है कि अफ्रीका के उपनिवेश जर्मन के आर्थिक जीवन के लिये उतने ही महत्व पूर्ण है जितने वे ब्रिटेश के लिए हैं। इसका निर्णय कौन करेगा कि इनमें से कौन ठीक है और कौन ग़लत है?

स्त्रियों के प्रति अपराध

इस देश में इन दिनों स्त्रियों के प्रति अपराधों की संख्या और भयंकरता में जिस गति से वृद्धि हो रही है वह चिन्तनीय है। समाज और सरकार दोनों को इस पर विचार करना चाहिए और इन्हें कम करने वा इनके उन्मूलन में यत्न शीघ्र होना चाहिए। समाज को इस को साम्प्रदायिक रूप भूलकर भी नहीं देना चाहिए क्योंकि स्त्री स्त्री है भलेही वह हिन्दू स्त्री हो वा मुस्लिम स्त्री और उसको सताने वाला हिन्दू हो वा मुसलमान

वह सताने वाला ही है। प्रत्येक गांव कस्बे में स्त्री रक्षा समितियां स्थापित होनी चाहिए और उसका कार्य इस प्रकार के अपराधों से स्त्रियों की रक्षा होनी चाहिए। सरकारको चाहिये कि इन अपराधों के लिये बड़ी से बड़ी सज़ा निर्धारित करे और जिस गांव कस्बे या शहर में स्त्रियों के प्रति सगठित रूप में अपराध किया जाय उस पर ताज़ीरी टैक्स लगाना चाहिये तथा पुलिस कर्मचारियों को इस प्रकार के अपराधों के सम्बन्ध मे बहुत सतर्क रहने की प्रेरणा करनी चाहिये ।

अखबारों की सब से अधिक संख्या

लन्दन के दो दैनिक अख़बारों, 'डेली एक्सप्रेस' 'डेली हिरैल्ड' की वितरण संख्या दुनिया के सब अख़बारों से ज्यादा समझी जाती थी। प्रत्येक का दावा ससार में सब से ज्यादा प्रचार का था। और प्रत्येक बीस लाख से अधिक अपने ग्राहक बतलाता था। परन्तु जापान की एक ख़बर ने दोनों को चुप कर दिया है। वहां 'ओसाका मनिची' नामक एक पत्र की दैनिक वितरण संख्या ८स लाख और एक दूसरे पत्र की २४ लाख बतलाई जाती है। अख़बारी दुनिया मे जापान की इस स्थति का कारण यह है कि वहां बच्चोंके अतिरिक्त सब ही स्त्री पुरुष पढ़े लिखे हैं।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का महाराजा ट्रावन्कोर के दीवान को बधाई का तार

❀

On behalf of all Arya Samajes in India and abroad I congratulate the Maharaja and you on throwing open state temples to Depressed classes which is a courageous step and an important piece of Reform

भारत तथा भारत से बाहर के समस्त आर्य्य समाजों की ओर से महाराजा साहिब तथा आपको राज्य के मन्दिर दलितों के लिए खोल देने पर बधाई देता हूँ। यह क़दम साहस पूर्ण और यह सुधार महत्व पूर्ण है।

जीवात्मा की सत्ता और मनोविज्ञान

(एक दार्शनिक विचार)

(ले —श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

जीवात्मा अपने बौद्धिक और आचार नैतिक अनुभवों का आला पूरा करता है। अपनी आवश्यकताओं प्रोत्साहनो और अपने ग्रहण शक्ति के प्रकोपों से जीवात्मा अपने कर्तृत्व के आधार पर, जो कार्य सिद्धि के लिए किए जाते हैं, अपने कर्तृत्व के उद्देश्य और परिणाम नियत किया करता है।

इस प्रकार उद्देश्यो के नियत करने का समस्त कार्य, जीवात्मा अपनी सत्ता और सामर्थ्य के भीतर किया करता है। जीवात्मा के सम्बन्ध में, मनोवैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्ष मूलक दृष्टि को मानने के लिए बल देना कि आचार नैतिक जीवनके सम्बन्ध मे वैज्ञानिक निरूपण ही अन्तिम और पूर्णता पूर्ण निरूपण है, अनिपुणता का ग्रहण करना है विशेष कर ऐसा अवस्था में जबकि एक दूसरा दृष्टि कोण मौजूद है जो कि निपुणता पूर्ण और पहले वाद की अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यक है।

कहा जाता है कि अनुभव मूलक या नामरूपात्मक जीव अनुकूल और प्रतिकूल प्रवृतिया और प्रवर्तक शक्तियों का बन्डल मात्र है जिसके नाम और रूप (वाह्य दृश्य) का नाम हा जीवन है परन्तु जब पूछा जाता है कि प्रवर्तक शक्ति क्या है ? तो इसका उत्तर मिलता है कि प्रवर्तक जीव ही है, जीव से भिन्न कुछ नहीं। "यह वस्तु मेरी है"— 'मैंन इसको बनाया" अथवा "मैं आता हूँ जाता हूं" इत्यादि – इन वाक्यों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि 'मैं' प्रवृत्तियों का न विषय ही हूं न उन का स्थिर कोष किन्तु "मैं" इन समस्त कार्य प्रणालियो का क्षेत्र हूँ और ये सब काम मेरे भ तर हुआ करते है।

मनुष्य जीवन जो असल में व्यक्तिगत Personal है, मनोविज्ञान की दृष्टिमे एक अकर्तृक Impersonal विचार प्रवाह अथवा चेतना का नाम रूपात्मक क्रम हैं। अध्यात्म विद्या से, मनोविज्ञान का यह विभिन्नत्व दूर होगा जैसा कि विज्ञान का दूर हुआ है।

आचार नैतिक जीवनकी आलोचना, उसे (अध्यात्म विद्या को) उपर्युक्त जीवन के व्यक्तिगत केन्द्र और आत्मत्व के दृष्टि कोण से, जो मूलतत्व होने के कारण नाम रूप के बन्धन में नहीं आ सकता, करनी चाहिए क्योंकि बिना उस जीव के निरन्तर कर्तृत्व के, वाह्य कार्य प्रणाली, नाम मात्र को भी, न हो सकती है और न जारी रह सकती है। मनोविज्ञान न तो उस मूलतत्व (जीवात्मा) का विवरण ही देसकता है और न उसकी व्याख्या ही कर सकता है क्योंकि प्रत्येक मनोवैज्ञानिक व्याख्या में उस (जीव) के होने की, पहले ही से कल्पना करली जाया करती है। निष्कर्ष इस सब का यह है कि आचार नैतिक दृष्टि से जीव व्यक्तित्व रखता है। जीव के व्यक्तिगत चरित्र ही से आचार नैतिक महत्व प्रकट हुआ करते हैं। अकर्तृक चरित्र कोई सत्तामय वस्तु ही नहीं हो सकती। यही मूल तत्व (जीव) उस समस्त वृत का केन्द्र है जिसकी परिधि का मनोविज्ञान ने, बड़ी सावधानता और परिश्रम से विवरण दिया है यद्यपि मनोविज्ञान उस केन्द्र को अभी तक समझ नहीं सका है।

-धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्

[ले०—विद्यानन्द वेदालंकार, उपदेशक
आर्य० प्र० नि० सभा बङ्गा० आसाम]

(१)

भारत की आध्यात्मिक विभूति एक अमूल्य धन है। आज भी इस विद्या का प्रचार भारत में है, तथा आज भी अद्भुत योगियों के दर्शन लोगों को होजाते हैं।

भारत में महाभारत का प्रलयकारी भयङ्कर युद्ध हुआ था। उसकी स्मृति भारत में बहुत गहरी है। आज भी कोई भयङ्कर, प्रलयकारी, विश्वव्यापी संग्राम होता है, तो उसे भारतीय महाभारत के नाम से ही पुकारते हैं। इस संग्राम से भारत ने बहुत बड़ी शिक्षा ग्रहण की थी कि 'केवल भौतिक उन्नति विनाश का कारण होती है।' महाभारत के काल में भौतिक उन्नति काफ़ी हो चुकी थी। सारे भारत में पारस्परिक व्यापार, वाणिज्य, राजनैतिक तथा सामाजिक सम्बन्ध बहुत अधिक था। सारा भारत परस्पर के सम्बन्ध से एक देश हो रहा था। परन्तु सारे भारत में अनेकों देश, अनेकों राजे, तथा अनेकों नगर प्रजातन्त्र राज्य थे। इस भेद को मिटाने के लिए बड़े २ राजाओं ने इमले प्रारम्भ कर दिये थे। वे एकछत्र साम्राज्य अपना स्थापित करना चाहते थे। जरासंध, शिशुपाल आदि के प्रयत्न इसी के फल थे।

इस समय धर्म की भयङ्कर उपेक्षा प्रारम्भ हो गई थी। वेद पाठी ब्राह्मण न के बराबर थे। ब्राह्मणों में भी उन्हीं का मान था, जो शस्त्रविद्या या युद्धविद्या जानते थे। वेद का अध्ययन बन्द था। बड़े २ राजा भी इस की उपेक्षा करते थे। भीष्म को भी वेद का पता न था। हाँ! कुछ बातें वेद के नाम से सुन कर वे 'धर्मज्ञ' समझे जाते थे। उन्होंने अपने पौत्रों की शिक्षा का प्रबन्ध किया था। सर्व प्रथम 'कृप' रक्खे गये, परन्तु द्रोण धनुर्विद्या में अधिक दक्ष थे। अतः वे चुने गये। धनुर्विद्या परम्परा गत थी, परशुराम के नाम से उस श के कोई महापुरुष भीष्म के गुरू थे। कर्ण ने भी उन्हीं से यह शिक्षा प्राप्त की थी। सम्भवतः वे भी वेद न पढ़े थे, कम से कम भीष्म ने उनसे वेद पढ़ने की कोशिश तो नहीं ही की थी।

इस प्रकार महाभारत काल में धर्म ज्ञान के लिये गुरू की आवश्यकता न थी, किन्तु शस्त्रास्त्र ज्ञानके लिए गुरू की आवश्यकता थी, इस प्रकार हमारे सामने महाभारत का काल स्पष्ट हो गया।

उस समय धर्म की भयङ्कर उपेक्षा थी, वह भौतिक उन्नति के ऐश्वर्य को पाने वाले लोगों की महत्ता का द्योतक जमाना था। लोग छल, कपट, जुआ, चोरी किसी भी प्रकार भौतिक ऐश्वर्य प्राप्त करना अपना लक्ष्य बनाए हुए थे।

कौरव जरासन्ध, कंस, शिशुपाल आदि राजा साम्राज्य के ऐश्वर्य के उपभोग सुख को पाने के लिए मुसोलिनी के समान किसी छोटे राजा व प्रजातन्त्र को कुचल डालनेको तैयार बैठे थे। कौरवों ने तो जो किया वह जग विदित है। वे सब राज ऐश्वर्य के मद में किसी उचित बात की परवाह करने को तैयार न थे। धन, शक्ति, सेना सब इन सम्पन्न राजाओं को प्राप्त थे, इसके साथ उस समय की उन्नत युद्ध विद्या तथा भयङ्कर शस्त्र सब इनकी सेना को प्राप्त थे। वे इन साधनों के बल पर किसी को भी कुचल सकते थे। अतः युद्ध के सिवाय अत्याचार से बचने तथा अपने अधिकार को सुरक्षित रखने का कोई साधन न था। इसीका परिणाम

था—कि उस समय सर्वत्र युद्ध और कोहराम मचा रहता था। जरासन्ध मथुरा तक अपना राज्य फैला चुका था। कृष्ण के यादव, शिशुपाल, जरासन्ध तथा मत्स्यराज से युद्धों में ही मस्त रहते थे। उनकी स्वतन्त्रता सदा खतरे में थी। जरासन्ध तो सैकड़ों राजाओं को कैद कर चुका था।

फलस्वरूप इन आग्नेय, वरुणास्त्रोंसे सम्पन्न अपनी चरम भौतिक उन्नतिको करके भारत एक भयकर युद्ध का शिकार हुआ और नष्ट हो गया। यहां के चुने २ वीर तथा विद्वान् मारे गये। प्रजा भयंकर अकाल तथा दरिद्रता के भयंकर कराल जबड़ों में कराहने लगी। विधवाओंके भयकर करुणनाद ने समाज की शृङ्खला बिगाड़ दी।

वास्तव मे आज भी यही अवस्था यूरोप के ही नहीं सारे ससार के समक्ष उपस्थित है। इगलैण्ड, फ्रांस, इटली, जर्मनी जैसे जरासंध अपनी २ शक्ति के मद में दुनिया में भयंकर युद्ध की चुनौती देरहे हैं। इस स्थिति में यह ख्याल भी ठीक ही है, कि मनुष्य ने ज्ञान वृक्ष का फल खाया, अत पतित होगया। वास्तवमें इसका उत्तर कोई है तो यही है, कि 'धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्' ज्ञान अच्छी वस्तु है, बशर्ते कि हम उसका उपयोग अच्छा करें। हमारे शास्त्रकारों ने इस भाव को विद्या है। "विद्या ब्राह्मणमाजगाम .. " इस प्रकार एक श्लोक है, जिसका भाव है, कि "विद्या ब्राह्मण के पास आई और बोली, कि मुझे किसी सच्चरित्र को देना - न कि कदाचारीको। कहने का अभिप्राय यह है, कि विद्या अच्छी चीज है, किन्तु बुरे पुरुष के हाथमें आकर अनिष्ट ही करती है।

महाभारत काल की विद्या तथा वर्तमान यूरोप का विज्ञान इसी के उदाहरण बन रहे हैं। अत महाभारत युद्ध की शिक्षा आज भी उसी प्राचीन धर्म रहस्य की ओर इशारा कर रही है।

हमारे भारत ने कहा—"कि भौतिक उन्नति पर धर्म का अधिकार होना चाहिये।" हमारा अभिप्राय कोई यह न ले ले—कि हम धर्म का सम्बन्ध केवल आत्मा से समझते हैं। धर्म का सम्बन्ध आदमी से है। वह आदमी केवल आत्मा नहीं किन्तु शरीर भी है। वह शरीरधारी आत्मा है। इस प्रकार हमारा अभिप्राय है, कि मनुष्य को आत्मा के आधीन शरीरकी, या भौतिक शक्तियोंके प्रयोग करने का अधिकार है। अत भौतिक शरीर आत्माके आधीन हैं। वैसे ही भौतिक विज्ञानको धर्मके आधीन होना चाहिये।

—

—संदेश

श्री कस्तूरबा ने अपने पुत्र हीरालाल गाधी की शुद्धि के अवसर पर आर्य्य समाज बम्बई को निम्न तार दिया था —

"मेरे पुत्र का आर्य्य धर्म्म में पुन आगमन सचा है, ऐसी मैं आशा करती हूँ"

महात्मा गाधी के छोटे पुत्र देवदास गाधी ने अपने ज्येष्ठ भ्राता हीरालाल जी के आर्य्य धर्म्म में वापस आने पर प्रेस को निम्न वक्तव्य दिया था —

"मैं इस कार्य्य का स्वागत करता हूँ। इससे हिन्दू मुसलमानों के बीच जो अड़चने हो गई थीं वे रद्द हो जायंगी मैं निजी जानकारी के आधार पर यह कह सकता हूँ कि कितने ही योग्य मुसलमान इस समाचार से सन्तोष अनुभव करेंगे।"

सत्यार्थप्रकाश लेख-माला—

आठ प्रमाण

(लेखक—श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

सत्यार्थ-प्रकाश मे प्रमाण प्रकरण में आठ प्रमाणोंका उल्लेख है, उनमे अभाव प्रमाण भी है। इस विषय मे यह पाठ है:—परीक्षा पांच प्रकार की होती है पांचवी आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, संभव और अभाव।" यहाँ अभावको प्रमाण मानकर आगे चलकर अभाव का स्वरूप भी लिखा है जिसका ज्ञान अनुपलब्धि प्रमाण से होता है। सत्यार्थ-प्रकाश पृष्ठ ६४ पर यह पाठ मिलता है।

'और जो अभाव है वह पांच प्रकार का होता है पूर्व (असत्) न था। जैसेघट वस्त्रादि उत्पत्तिके पूर्व नहीं थे,इसका नाम प्राग्भाव। दूसरा जो होके न रहे—जैसे घट उत्पन्न होके नष्ट होजाय। यह प्रध्वंसाभाव कहाता है। तीसरा जो होवे और न होवे—जैसे यह घोड़ा गाय नहीं और गाय घोड़ा नहीं। अर्थात् घोड़े में गाय का और गाय मे घोड़े का अभाव'' यह अन्योऽन्याभाव कहाता है। चौथा जो पूर्वोक्त तीनों अभावों से भिन्न है उसको अत्यन्ताभाव कहते हैं—जैसे नर-शृंग अर्थात् मनुष्यका सींग''' पांचवां—जैसे घर में घड़ा नहीं, अर्थात् अन्यत्र है। घर के साथ घड़े का सम्बन्ध नहीं है। इसे सामयिकाभाव कहते हैं। ये पांच अभाव कहाते हैं।

इन पांचों अभावों का ज्ञान कई इन्द्रिय-जन्य मानते हैं। वह अभाव प्रमा प्रत्यक्ष से भिन्न नहीं मानते हैं और जो अभाव प्रमा को प्रत्यक्ष से भिन्न स्वीकार करते है वह इसके लिये अनुपलब्धि प्रमाण मानते हैं।

मैं प्रथम किसी लेख में लिख चुका हूँ कि प्रत्येक इन्द्रिय का अपने विषय में कुछ न कुछ सम्बन्ध अवश्य होता है। जबतक इन्द्रियका विषय से सम्बन्ध न हो उस समय तक ज्ञान नहीं होता। नैयायक इस सम्बन्ध को व्यापार कहते हैं जिस भांति ज्ञान के लिये ज्ञाता, ज्ञेय तथा करण की आवश्यकता है उसी प्रकार व्यापार की भी आवश्यकता है। व्यापार कारण से उत्पन्न होकर कार्य का उत्पादक होता है—जैसे यह सम्बन्ध इन्द्रिय और विषयसे उत्पन्न होता है और ज्ञान जो इनका कार्य है उसे उत्पन्न करता है। अभाव ज्ञान मे संबद्ध विशेषण विशेष भाव सम्बन्ध होता है—जैसे रूप के ज्ञान के लिये चक्षु का रूपवान द्रव्य से सम्बन्ध होकर उसमें समवाय सम्बन्ध से रहने वाले रूप का ज्ञान स्व संयुक्त समवाय सम्बन्ध से होता है इसी प्रकार नील रूप मे पीताभाव का ज्ञान भी होता है। वहाँ वह द्रव्य पीतरूप के अभाव वाला होने से उस अभाव के साथ संबद्ध-विशेषण-विशेष भाव सम्बन्ध होगा परन्तु उस द्रव्य में

गुरुत्व का ज्ञान न होगा और न गुरुत्व के अभाव का ज्ञान होगा। गुरुत्व और गुरुत्वाभाव के ज्ञान न होने मे अयोग्य कारण मानना होगा क्योंकि रूप चक्षुज्ञान के योग्य है और गुरुत्व अयोग्य है। योग्यतायोग्यता के निर्णय का सरल ढग इस प्रकार है—जिसके आरोप से ज्ञान हो जाय वह योग्य और जिसके आरोप से ज्ञान न हो वह अयोग्य होता है। यथा यदि घट मे पीतरूप होता तो दिखाई देता। इसमे पीतरूप दृष्टिगोचर नही होता है इसलिये इसमे पीतरूप नही है। जैसे यह है इस प्रकार यह कहना ठीक नहीं है कि यदि वायु मे गुरुत्व होता तो उसका ज्ञान इन्द्रिय से हो जाता क्योंकि जहाँ घटादि मे गुरुत्व है वहाँ भी उसका ज्ञान इन्द्रिय से नही होता है। इस प्रकार रूप को योग्य और गुरुत्व को अयोग्य मानकर उसके ज्ञान न होने मे भी इसका सम्बन्ध मानते हैं, उपलब्धि, ज्ञान पर्याय है और अनुपलब्धि ज्ञान न होना भी पर्याय है। इसलिये योग्यउपलब्धि, योग्यानुपलब्धि भी कहा जाता है। रूप का प्रतीत न होकर अभाव मे योग्यानुपलब्धि है और गुरुत्व ज्ञान न होने मे अयोग्यतानुपलब्धि है। इसलिये योग्य कारण से कार्य सिद्धि होती है अयोग्य से नहीं होती है।

अन्य उदाहरण-मन से आत्मा मे होने वाले सुख दु.ख का ज्ञान साधारण से साधारण मनुष्य को भी हो जाता हैं और मन से आत्मा मे रहने वाले धर्म अधर्म का ज्ञान विद्वान को भी नही होता है। इसमें भी वही बात है सुख, दुःख प्रत्यक्ष योग्य हैं और धर्म, अधर्म प्रत्यक्ष अयोग्य हैं। इसलिये योग्य का ज्ञान हो जाता है और अयोग्य का नहीं होता है। योग्य के ज्ञानाभाव को योग्यानुपलब्धि होने से सहायक असहायक का भेद हो जाता है। यदि सुख वा दुःख होता तो प्रतीत होता कहा जा सकता है परन्तु यदि धर्म वा अधर्म होता तो प्रतीत होता यह कहना ठीक नही है।

नैयायक इस योग्यानुपलब्धि को इन्द्रिय ज्ञान में सहायक मानते है जहाँ २ योग्यानुपलब्धि होगी वहाँ २ इन्द्रिय से ज्ञान हो जायगा और जहाँ २ योग्यानुपलब्धि न हो वा दूसरे शब्दो मे अयोग्यानुपलब्धि हो वहाँ २ इन्द्रिय से अभाव का ज्ञान न होगा परन्तु जो अभाव प्रमा को प्रत्यक्ष प्रमा के अंतरभूत न मानकर भिन्न प्रमा मानते हैं उनके मत मे इन्द्रिय अभाव प्रमा मे अन्यथा सिद्ध होगे अर्थात् अभाव प्रमा के कारण इन्द्रिय नही होगे। जिस प्रकार घट बनाने वाले कुम्हार का पिता कुम्हार प्रति तो कारण है परन्तु घट बनाने मे उसकी कोई आवश्यकता नही है इसलिए घट का कारण कुम्हार ही माना जाता है। और उसका पिता घर के प्रति अन्यथा सिद्ध होने से अकारण ही है। इसी प्रकार अभाव प्रमाको भिन्न माननेवाले अभाव प्रमाका कारण योग्यानुपलब्धिको मानते हैं।

और ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे प्रमाण प्रकरण मे प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव और एतिह्य नाम से आठ प्रमाण माने हैं इसलिये आर्य्य-समाज अभाव प्रमा के कारण योग्यानुपलब्धि रूप प्रमा का मानना आवश्यक है।

इस लेख के साथ २ मैं तीसरे समुल्लास में

सृष्टि सम्वत्

(ले०—श्री पं० विश्वनाथ जी आर्योपदेशक)

विषय विवरण

महर्षि-दयानन्द लिखित ग्रन्थों में ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका, सत्यार्थ-प्रकाशादि में सृष्टि-संवत् १९६०८५३०३७ दिया है परन्तु आजकल १९७२-९४९०३७ व्यवहार में आ रहा है, मेरे विचार में ऋग्वेदा भा० लिखित संवत् ही ठीक है दूसरा नहीं।

दर्शन सम्बन्धी लेखों को समाप्त करता हूँ और आगे किसी अन्य विषय पर किसी समय लिखूगा। दर्शन विषय पर आर्य-समाज में लिखने की आवश्यकता है यह मेरे विचार हैं यदि कोई विद्वान इन विषयों पर किसी किसी समय लिखते रहें तो अच्छा है।

सत्यार्थ-प्रकाश पर भी जिन विषयों पर शास्त्रार्थ होते रहते हैं उन पर पुस्तकें भी लिखी गई हैं—जैसे श्राद्ध, वर्ण व्यवस्थादि, मैं उन पर कुछ न लिखूगा उनके अतिरिक्त जिन विषयों की चर्चा न्यून है और जिनके विषय में मेरे विचार ऐसे होंगे कि आर्य-जनता को उसके जानने की आवश्यकता है, उनको ही मैं लिखूंगा। आशा है पाठक भी इसी दृष्टि से देखेंगे।

पूर्व पक्ष

(१) सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष शास्त्रोक्त है जिसको गणनाकी सहूलियतसे ऋषियो ने १४ मन्वन्तरों में विभक्त किया है। मन्वन्तर का हिसाब इस प्रकार है। ४३२००० वर्ष का कलियुग ८६४००० वर्ष का द्वापर १२९६००० वर्ष का त्रेतायुग १७२८००० वर्ष का कृतयुग। चारो मिलकर ४३२०००० वर्ष होते हैं इसको एक चतुर्युगी कहते हैं। ऐसी ७१ चतुर्युगी का एक मन्वन्तर और १४ मन्वन्तरों का एक कल्प अर्थात् संसार का स्थिति काल होता है। परन्तु इस प्रकार ४३-२०००० × ७१ × १४ = ४२९४०८०००० वर्ष ही व्यतीत होते हैं। अतएव कृतयुग के बराबर एक सन्धि के हिसाब १५ सन्धियाँ १७२८००० × १५ = २५९-२०००० वर्ष यदि इसमें डालें तो ४३२००००००० वर्ष पूरे हो जाते हैं। यह सन्धि एक मन्वन्तर के साथ एक लगी रहनी है जैसा के सूर्यसिद्धान्त में लिखा गया है:—

युगानां सप्ततिसेकामन्वतरमिहोच्यते। कृताब्दा संख्या तस्यान्ते सन्धिप्रोक्तोजलसवः। सूर्यसिद्धान्त १–१८ स सन्धिस्ते मनवः कल्पे ज्ञेयाश्चतुर्दश कृतप्रमाणाः कल्पादौ संधिपंचदशाः स्मृताः १९ इत्थं युग सहस्रेण भूत संहारकारकः कल्पो ब्रह्म महः प्रोक्तं शार्वरी तस्य तावती। २०

जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है—इस समय तक सृष्टि मे से ६ मन्वन्तर व्यतीत हो चुके हैं ७ वे मन्वन्तर की २७ चतुर्युगी भी गुजर गई २८ वी चतुयुगी मे कृतयुग, त्रेत्रा द्वापर हो चुके अब कलियुग का संवत् ५०३७, उपयुक्त मन्वन्तरो की गणना से यह अब तक १९६०८५३०३७ वर्ष ही होते है जो ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका लिखित सृष्टि संवत् है। परन्तु सूर्यसिद्धान्त प्रोक्त ७ सन्धियां भी सम्मिलित होनी चाहियें। सातवें मन्वन्तर के आरम्भ तक ७ सन्धियाँ भी होनी चाहिये जिनके १७२८००० X ७ = १२०९६००० वर्ष होते हैं ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के संवत् में इनको जमा किया जावे तो सृष्टि संवत् १९७२९४९०३७ होगा जो आजकल प्रचलित हो रहा है।

अशुद्धि का कारण

(१) आर्यसमाजके विरोधी लोग इसका कारण महर्षि दयानन्द की भूल बतलाते हैं।

(२) कई आर्य-विद्वान् ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि मे संशोधन की भूल मानते है।

(३) कई आर्य पुरुष ऋषि दयानन्द प्रोक्त संवत् को वैदिक सवत् और प्रचलित को सृष्टि संवत् मानते हैं।

समाधान

(१) महर्षि-दयानन्द सरस्वतीजी ने ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में मनुस्मृति के प्रमाण से सृष्टि संवत् लिखा है। मनुस्मृति में सन्धि तथा सन्ध्यांश युगो में ही मान लिया है मन्वन्तरो की सन्धियो का कोई उल्लेख नही किया। यथा—

चत्वार्याहु सहस्राणि वर्षाणान्तु कृतं युगम्।
तस्य तावच्छतीसन्ध्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः॥
मनुस्मृति १—६९॥

अतएव मनुस्मृति के अनुकूल १९६०८५३०३७ सवत् ठीक है।

(१) महर्षि ने सूर्य सिद्धान्त के प्रमाण का उल्लेख इस विषय में नही किया। यद्यपि अङ्क गणना में उसी स्थान पर किया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि उन्होने सूर्य सिद्धान्त को सृष्टि-विषय में प्रमाणित नहीं किया मनु ही को प्रमाण कोटि में रखा है।

(२) मनुस्मृति में एक हजार चतुर्युगियो का ब्रह्मदिन अर्थात् सृष्टिकाल कहा है—

दैवकानां युगानान्तु सहस्रमिति संख्या।
ब्राह्ममेक महर्ज्ञेयं तावतीरात्रीमेवच॥
मनुस्मृति १—७२॥

सूर्य सिद्धान्त में भी १००० युगो का कल्प-माना है। प्रमाण ऊपर आ चुका है। ऐसा ही गीता में—"सहस्र युग पर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणोविदुः।" १००० युग का कल्प माना है। इन प्रमाणो के अनुकूल कल्प मे १००० युग व्यतीत होने चाहिये परन्तु सूर्य सिद्धान्तके संधियो की गणना से यह हिसाब टूट जाता है क्योकि मन्वन्तर के ७१ युग व्यतीत होने पर कृतयुग के बराबर एक सन्धि आ जावेगी तत्पश्चात् फिर कृतयुग आरम्भ हो जावेगा अर्थात् २ कृतयुग इकट्ठे हो जावेंगे। इस प्रकार चतुर्युगियो का हिसाब ठीक नही रहेगा।

(३) उपरि लिखित सूर्य सिद्धान्त में "सन्धि-प्रोक्तोजलप्लवः" सन्धि को जलप्लव कहा अर्थात्

उस काल में संसार जल मग्न हो जाता है यह केवल पौराणिक गप्प है विज्ञान इसका समर्थन नही करता अतएव सन्धि प्रमाण; कोटि में नहीं आ सकती।

(४) सूर्य सिद्धान्त का उपरि लिखित श्लोक 'कृत प्रमाणाः कल्पादौ संधयः पंचदश स्मृताः' इस श्लोक में कल्प के आदि में १५ सन्धियां व्यतीत होना लिखा है जो पूर्व श्लोकाविरोध है कि प्रत्येक मन्वन्तर के साथ १ सन्धि गुजरती है अत सन्धि का प्रमाण स्वीकार नही किया जा सकता।

(५) इसमें सन्देह नही कि यदि सन्धि का हिसाब न गिना जावे तो एक कल्प में १४ मन्वन्तर व्यतीत होने पर ७१×१४=९९४ युग व्यतीत होंगे और १००० में ६ युग बीतने पर शेष रहेंगे। इनका काल सूर्य सिद्धान्त की १५ संधियों के बराबर होता है। अतएव सूर्य सिद्धान्त के उपर्युक्त १-१८ को प्रक्षिप्त और १-१९ में कल्पादौ को कल्पान्ते का पाठ भेद मान लिया जावे तो सृष्टि विषय मे सब शास्त्रों का समन्वय हो जाता है। इस प्रकार यह १५ सधियां कल्प के अन्त में ६ युगो के रूप में वर्त्तमान होगी और १००० युग या १४ मन्वन्तर के हिसाब से अदृश्य रूप में व्यतीत होंगे।

(६) यह सृष्टि संवत् ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका लिखित सत्यार्थ प्रकाश ७ समुल्लास मेला चांदापुर और दूसरे ग्रन्थों में भी दिया गया है अतएव शोधने की भूल नहीं कही जा सकती।

(७) ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका में सृष्टि संवत् और वैदिक सवत् भी वही कहा गया है। यथा—

वेदाना मुत्पत्तौ किंयन्ति वर्षाणि व्यतीतानि अत्रोच्यते १९६०८५२९७६ वर्षाणि व्यतीतानि सप्तसप्ततितमोयं संवत्सरो वर्त्तते इति वेदितव्यं। एतान्येव वर्षाणि वर्त्तमान् कल्पसृष्टेश्चेति।" ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका वेदोत्पत्तिविषयः। और यदि प्र० ३ की बात ठीक मानी जावे तो इसका यह अभिप्राय होगा कि वैदिक संवत् तक ७ सधियां गुजरी थीं इस हिसाब का आधार कुछ भी नहीं।

संक्षेप

(१) सृष्टि सवत् महर्षि दयानन्द जी ने मनुस्मृति के प्रमाण से लिखा है मनु में संधियां नहीं लिखीं अतएव ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका लिखित ही सृष्टि सवत् ठीक है।

(२) स्वामी जी ने सूर्य सिद्धान्त का प्रमाण नहीं दिया उसे उपेक्षा दृष्टि से देखा अतएव सूर्य-सिद्धान्त के प्रमाण से इस संवत् का खंडन नहीं हो सकता।

(३) सूर्य सिद्धान्त में संधियों अलग लिखना पौराणिक गप्प और प्रत्येक मन्वन्तर के साथ एक संधि होना लिख कर फिर कल्प के आदि में १५ संधियों का लिखना परस्पर विरोध है अतः प्रमाणित नहीं हो सकता।

(४) हां सूर्य सिद्धान्त के अलग को प्रक्षेप और कल्पादौ पाठ के स्थान कल्पान्ते पाठ माना जावे तो सब शास्त्रों का समन्वय हो सकता है।

(५) शास्त्रों में १००० युगों का कल्प माना है संधियों को सूर्य सिद्धान्त लिखित रीति से मानने से यह सिलसिला भी टूटता है।

(६) ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका संवत् ही सत्यार्थ

मनोबल और आचार

[ले०—श्री के० शास्त्री, मद्रास]

मनुष्य को मनन शील कहा है। परन्तु व्यवहार में हम उसे मनन शक्ति से सर्वथा हीन पाते हैं। उसका सारा जीवन शारीरिक सुख-भोग का चिन्ता में ही जाता है। उसे इन्द्रियों के रसों का ऐसा चस्का लगा है कि उनके बिना वह क्षण भर भी जीवित रहना नहीं चाहता। 'खाना, पीना, मजा करना' उसका एकमात्र ध्येय है। पशुओं के समान वह प्रातः उठते ही खाने-पीने की फिक्र में दौड़धूप शुरू करता है। शाम के थक थक कर सो रहता है। बीच में खाली समय मे खेलने के लिये कुछ खिलौने बना रखे हैं। बचपन में वे मिट्टी, लकड़ी व सैलूलायड के होते हैं। जवानी मे हाड़-मांस के और बुढ़ापे में विचारों व स्मृति मात्र के।

मन क्या है? इसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? इत्यादि विषयों पर आज पश्चिमीय विद्वान् अनेक परीक्षण कर रहे हैं। उनका कहना है कि हमारे तीन चौथाई दुःख तथा आधे से अधिक रोग मानसिक हैं। हम स्वय ही अपने मन द्वारा एक विचित्र प्रकार का ताना-बाना बुन कर जाल बिछाते हैं और पीछे से खुद ही उसमें फँसकर दुःखी होते हैं। हमारी इच्छाएं हमने ही पैदा की हैं और उनकी पूर्ति न होने पर स्वयं छटपटाते हैं। हमारी अवस्था उस बन्दर की सी है जो एक घड़े में हाथ डालकर, अन्दर चीजों से मुट्ठी भर लेता है और फिर हाथ बाहिर नहीं निकाल सकता।

शारीरिक रोगों के लिये कल की ही घटना लीजिये। हम एक मित्र के यहाँ बैठे थे। इतने में एक डाक्टर आया। उसने मित्र की स्त्री का परीक्षण किया, दवा लिखी, 'सहानुभूति के शब्द कहे और जाने लगा। इतने में हमने पूछा "क्यों, डाक्टर साहब! मरीज कैसा है?" "अच्छा है, फकत कमजोरी है?" "आखिर बीमारी का पता लगा?" "डाक्टर मुसकराया और कहने लगा "आप भी गजब करते हैं, बीमारी हो तो पता लगे। मैंने 'ब्लड टैस्ट' किया है, 'ऐक्स-रे' भी लिया है, परन्तु कुछ भी विकार नहीं निकला।" "रोगी तो दिल की धड़कन, छाती का भारीपन और सिर दर्द की शिकायत करता है। न कुछ खाता है, न पीता है सदा बिस्तरे ही पर लेटा रहता है। पासा पलटने में भी कराहता सा है।" डाक्टर ने गंभीर होकर कहा उसे वहम की बीमारी है और अब मैं उसे मानस चिकित्सा देने लगा हूँ। आप उसे एक महीने में चलता-फिरता देखेंगे।"

कुछ समय पूर्व समाचार पत्रों में एक घटना निकली। एक सिपाही युद्ध में लंगड़ा हो गया। वह सदा लकड़ी के सहारे चलता था। एक दिन शाम

प्रकाशादि में दिया है अतएव छापे की भूल नहीं।

(७) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में सृष्टि संवत् और वैदिक संवत् भी यही कहा गया है अतएव सृष्टि तथा वैदिक संवत् को पृथक २ कल्पनामी वृथा है।

के समय वह किसी होटल में बैठा नाश्ता कर रहा था कि खतरे का घंटा बजा। होटल में आग लगी थी। सब लोग इधर-उधर भय से भाग रहे थे। उसे भी सामने आग दिखाई दी। भय के समय वह भूल गया कि वह लंगड़ा है और नाठी लाठी की याद आई। अन्यों के समान वह भी उठा और दौड़ कर होटल से बाहिर सड़क पर आया। उस दिन से वह लंगड़ा नहीं रहा।

बम्बई के एक करोड़पति सेठ की घटना है। उसे सट्टे की आदत थी। दो वर्ष पूर्व अमरीका की "सिलवर-पालिसी" का विचार करके उसने चांदी खरीदनी शुरू की। भाव बढ़े और खूब बढ़े। परन्तु ८७) रु० का भाव पहुँच कर घटना शुरू हुआ। एक दिन मे बाजार १०) रु० गिरा। धीरे २ भाव गिरते गये। यहाँ तक कि लगभग आधे रह गये। सेठ इस धक्के को न सह सका। धीरे २ बीमार पड़ा और अब मृत्यु की घड़ियां गिन रहा है।

हमने कई बार देखा या पढ़ा है कि माता अपने पुत्र की और पत्नी अपने पति की मृत्यु का अचानक समाचार सुन कर "हार्ट फेल" से मर जाती है। गतवर्ष क्वेटा-भूकम्प के समय अनेक ऐसी घटनाएं हुईं। मलबे के ढेर से जिन्दा निकली, परन्तु अपने परिजनों का वियोग सुन कर पछाड़ खाकर ऐसी गिरी कि फिर न उठीं।

शास्त्र में लिखा है "आचारः परमो धर्मः।" आचार क्या है? जान स्टुअर्ट मिल ने आचार की व्याख्या निम्न शब्दों में की है:—

Character is the completely fashioned will

अर्थात्, पूर्णतः संयत इच्छा-शक्ति का नाम आचार है।

डाक्टर मैकडानल्ड ने लिखा है:—

Character is essentially a system of sentiments gradually developed through the experiences of Life.

अर्थात्, आचार उन भावनाओं की शृंखला का नाम है जो जीवन के विविध अनुभवों से उत्पन्न होती है।

मनुष्य का मन किस प्रकार कार्य करता है, यह भी एक विचित्र समस्या है। चैतन्य व सुप्त वासनाएं, बाह्य वातावरण, सामयिक प्रलोभन; ये सब किस प्रकार हमारे आचार को ढालते हैं, इस विषय के अध्ययन के लिये एक नवीन मनोविज्ञान की उत्पत्ति हुई है जिसे Psycho-Analysis कहते हैं। इसने बड़े २ दिग्गज विद्वानों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। क्या राजनीति, क्या अर्थ-शास्त्र, क्या समाज शास्त्र और क्या चिकित्सा-शास्त्र सब जगह इसका प्रवेश है। पाठक आश्चर्य करेंगे कि पश्चिम में हजारों डाक्टर आज मानस-चिकित्सा द्वारा रोगियों का इलाज करते है। डाक्टर "कू" का नाम इस चिकित्सा के लिये सुप्रसिद्ध है। इस चिकित्सा का प्रकार मन की शक्ति द्वारा रोगी के स्वास्थ्य को सुधारना है।

गीता में मन को "बलवत्" कहा है। परन्तु प्रायः हम इस बल का उपयोग व्यसनों की पूर्ति के लिये ही करते हैं। भोगो का भोगना ही, एक-मात्र ध्येय, हमने मन के सामने रखा है। आव-

भारत की व्यावसायिक उन्नति

(लेखक—एक अनुभवी पत्रकार)

बेरोजगारी और कम रोजगारी से पीड़ित औसतन हिन्दुस्तानी की मुसीबतों और कष्टोंका मूल कारण वर्तमान में, भारत में खेती और उद्योग धंधों की अवस्थाओं में भयङ्कर असमानता है, इसी विषय पर इस लेख-माला में उत्तम विचार किया गया है।

[१]

आर्थिक अवस्थाओंमें तेज़ीसे होने वाले परिवर्तनों के साथ साथ बेरोज़गारी अथवा कम-रोज़गारी से उत्पन्न साधारण भारतीय की दुरवस्था अधिकाधिक भयङ्कर होती जा रही है। पिछले चालीस वर्षों में रहन-सहन का ख़र्च १ और २·७८ के अनुपात से बढ़ गया है, जबकि आमदनी एक जैसी रही है। मुख्यतया मध्यम वर्ग और मज़दूर वर्ग में बहुत सी अवस्थाओं में मौजूदा ज़माने में आमदनी भयानक ही भयङ्कर परिमाण में कम हो गई है।

रखकता है इसके बदलने की जरूरत है समझाने की कि जीवन समुद्र में विषय-लहरों का मुक़ाबला करना ही वीरता है, उनमें बह जाना नहीं। क्षणिक भोग के लिये शक्ति का नाश मूर्खता है। जीवन का सुख संयम में है, भोग से त्याग श्रेयस्कर है। त्याग और संयम के लिये "मनोबल" की आवश्यकता है। मनोबल का ही दूसरा नाम आचार व सदाचार है।

———

भारत की आबादी में वृद्धि उसके साधनों के अनुरूप ही हुई है तोभी भारत के प्रत्येक भाग में चिरकाल से गरीबी का एकच्छत्र राज्य हो रहा है। आबादी का ३० प्रतिशतक भाग निरन्तर भूखों मर रहा है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि बहुत दिनों से भारत की कृषि तथा उद्योग धंधे सम्बन्धी प्रगतियों में अत्यधिक असमानता रहा हैं। प्रत्येक उन्नत देश में खेती और उद्योग धंधे साथ २ चलते हैं और इसके फल स्वरूप उनमें आर्थिक समानता रहता है। परन्तु बड़े दु:ख की बात है भारतवर्ष में लगभग ७३ प्रतिशतक आबादी खेती तथा उससे सम्बन्धित धन्धों पर निर्भर करती है जबकि दूसरे देशों के यहो अङ्क यूनाइटेड किङ्गडम (ग्रेटब्रिटेन) में १० प्रतिशतक, अमेरिका में २२, जर्मनी में ३०, फ्रांस में ३८·३ और कनाडा में ३१ प्रतिशतक हैं। भारत में व्यवसाय पर आश्रित आबादी लगभग ११·२ प्रतिशतक है जबकि यूनाइटेड किङ्गडम में ३६·७ प्रतिशतक, अमेरिका में ३१·३, जर्मनी में ३८·३, फ्रांस में ३१·२ और कनाडा में २६·१ है। इस असमानता का एक वर्तजा यह है कि खेती और व्यवसाय की साधारण आमदनी का अनुपात भारतवर्ष में बड़ा भयानक है।

भारतवर्ष में खेती और उद्योग धंधों की आमदनी

प्रति Capita क्रमश: २१ और १२ रुपया है जबकि जापान में ५० और १२८ रुपया, स्वेडन में १२६ और ३८४ रुपया, ग्रेट ब्रिटेन में ६२ और ४१२, कनाडा में ३१३ और ४७० रुपया और अमेरिका में १३५ और ७२१ रुपया है। सन् १९३० में ब्रिटिश इण्डिया में सगठित उद्योग धधों में लगे हुए व्यक्तियों की सख्या काम में लगी हुई प्रजा का १ प्रतिशतक थी और उसी वर्ष में खान खुदाई को मिलाकर सब प्रकार के उद्योग धधों में लगी हुई प्रजा का अनुपात १० २ प्रतिशतक था जबकि ग्रेट ब्रिटेन में यही अनुपात लगभग ४७ २ था, अमेरिका में ३२, कनाडा में २५, जर्मनी में ४१-९, फ्रांस में ८३-३ और जापान में १९-५ था।

भारतवर्ष औद्योगिक दृष्टि से कितना पिछड़ा हुआ है और भारतवर्ष में कृषि तथा उद्योग धंधे सम्बन्धी प्रगतियों मे कितनी ज्यादा असमानता है यह बात ऊपर के अङ्कों से भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है।

अभी हाल के वर्षों में ससार के समस्त राष्ट्रों ने आर्थिक स्थिति को मज़बूत करने के उद्देश्य से न्यूनाधिक रूप में अपने साधनों को उद्योग धंधों और माल की तैयारी पर केन्द्रित कर दिया है। ग्रेट ब्रिटेन के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, अमेरिका, कनाडा और जापान ने व्यवसाय के निर्माण में बड़ी उन्नति की है और इस प्रकार राष्ट्रीय सम्पत्ति और आमदनी बढ़ा ली है। इस प्रकार आज आर्थिक राष्ट्रीयता का बोल बाला है। परन्तु दुर्भाग्य से भारतवर्ष अपने उद्योग धंधों के विकास में अबतक कोई उन्नति नहीं कर सका है।

इसलिए यदि भारत के मध्यम वर्ग पूर्ण विनाश के स्टेज तक पहुँच गए हों, मज़दूर निर्धनता और पतन के गढ़े तक पहुँच गए हों और तमाम व्यवस्थित शासन वाले राष्ट्रों में भारतीय की कमाने की शक्ति सब से कम हो तो इसमे कोई आश्चर्य नहीं है।

झूठी आशाएं

कहानी

(ले०—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)

(१)

जब मै दार्जिलिङ्ग आया तब पहाड़ियाँ टपकते हुए बादल के घने कुहरे मे बन्द थी। बाहर निकलने को मेरी तबीयत नही करती थी और न भीतर बन्द रहने की इच्छा ही होती थी। इसलिए खाना खाने के बाद मै होटल से बाहर निकला, मैं बरसाती ओढे और मोटे बूट पहने था।

पानी बरसना बन्द हो चुका था चहुँ ओर कुहरे के धब्बे के सिवा कुछ नजर नही आता था। कलकत्ता सड़क पर मै बढा चला जाता था। उस अभेद्य मेघभूमि मे इस बलात निवास से मै बड़ा खिन्न था और अपनी पांचो ज्ञानेन्द्रियो के साथ रग और ध्वनि के विविध सौन्दर्य्य से परिपूर्ण पृथ्वी माता के स्पर्श के लिए तरस रहा था।

सहसा ही मुझे किसी देवी के चिल्लाने की अस्पष्ट आवाज सुनाई दी। यह कोई नई बात न थी, मैं भी इसपर ध्यान न देता परन्तु इस असीम भूमि मे वह आवाज पीड़ा से कराहते हुए जगत की आवाज के सदृश जान पड़ी। इसलिए मै इस की उपेक्षा न कर सका।

मैं उस आवाज के सहारे चल दिया। क्या देखता हूँ कि एक देवी भगवा वस्त्र पहने और सफेद उलझी हुई लटाओं का सिर पर जूड़ा बांधे सड़क के किनारे पत्थर की शिला पर बैठी हुई धीरे २ रो रही है। उसका दुख ताजा दुख नही जान पड़ता था वरन् थकी हुई आत्मा की गहरी वेदना जान पड़ती थी जो बादलो के पर्दे के पीछे एकान्त मे चुपचाप रो रही थी।

मुझे वह दृश्य बड़ा विचित्र जान पड़ा। 'पर्वत शिखा पर एक सन्यासिन का रोना' एक ऐसा दृश्य है जिसको इन आँखो से देखने की कभी भी आशा न थी। मैं समझ नही सका यह देवी किस प्रान्त की है इसलिए टूटी फूटी हिन्दुस्तानी का लाभ उठाते हुए मैंने दर्याफ्त किया क्या मामला है? उसने अपने अश्रुपूर्ण नेत्रो से कुहरे में से मेरी ओर देखा और मौन रही।

'मुझ से मत डरो। मै भद्र पुरुष हूँ' यह कहकर मैंने उसे विश्वास दिलाया।

इस पर उसने कुछ हँसकर शुद्ध उर्दू मे कहा 'डर क्या चीज है बहुत दिन हुए मैंने इसे भुला दिया है, और न मुझमें शर्म ही बाकी रह गई है। बाबू जी! कोई समय था जब मेरे कमरे में घुसने की मेरे भाई को भी इजाजत लेनी होती थी। आज मैं पर्दा खोले दुनिया के सामने बैठी हूँ।"

पहले तो मुझे बहुत बुरा लगा चूंकि मै पूर्ण

* अंग्रेजी की एक कहानी के आधार पर।

ऐंग्लो इंडियन फैशन में सुसज्जित था इसलिये इस गंदी औरत ने मुझे क्यो बाबू समझा। मैंने निश्चय किया कि कहानी को यहीं खत्म होने दो। मैंने वहां से चल देने का निश्चय किया परतु मेरे कौतूहल ने मुझे मजबूर कर दिया। गले को तंग करते हुए मैंने शान के साथ पूछा "तुम कहां की रहने वाली हो, क्या तुम्हे मेरी सहायता की जरूरत है ?"

कुछ देर तक वह मेरे चेहरे की ओर देखती रही, इसके बाद उसने कहा "मैं बदराऊं के नवाब गुलाम क़ादिर खां की बेटी हूँ"।

बदराऊं नाम के किसी स्थान का नाम मैंने नहीं सुना था और न मैं गुलाम क़ादिर खां नाम के किसी नवाब को जानता था। किस दुर्भाग्य ने इतनी दूर के एक नवाब की पुत्री को हिंदू सन्यासिन के वेष में दार्जिलिङ्ग की इस सड़क पर बैठकर रोने के लिये वाधित किया है, इसकी मुझे कल्पना भी न थी और न मैं इस सब मामले पर विश्वास करने के लिये तय्यार था। फिर भी मैंने सोचा कहानी को बिगड़ने नहीं देना चाहिये क्यो'कि यह मनोरंजक होती जा रही है।

मैंने बड़े अदब के साथ झुककर सलाम किया और कहा "बीबी साहिबा! आप को पहचानने मे असमर्थ होने के लिये मैं माफ़ी चाहता हू"

निश्चय ही इस असमर्थता की मुआफ़ी के हजारो' कारण थे। एक तो यही था कि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था, दूसरा यह था कि उस घने कुहरे में आदमी को अपने अंग ही मुशकिल से देख पड़ते थे। तो भी वह अपना ध्यान मेरी ओर देती देख पड़ी निश्चित रूप से अनमनी होकर क्यो कि उसने एक दूसरे पत्थर की ओर इशारा करते हुए कहा "कृपया बैठ जाइए"

हुक्म किस प्रकार दिया जाता है यह वह जानती थी। उस भीगे, और चिकने पत्थर पर नूरुन्निसा, महरुन्निसा वा शायद नूरुलमुल्क-भले ही उसका नाम कुछ हो—बदराऊं के नवाब की लड़की के गौरव पूर्ण समक्ष में बैठने की कृपा पूर्ण आज्ञा के उच्चसम्मान के भाव से मैं प्रफुल्लित हो उठा। जब मै होटल से चला था तब मुझे यह कल्पना भी न थी कि इस भ्रमण का अन्त इतना शानदार होगा—

पत्थर पर बैठकर मैंने अपनी तहक़ीक़ात जारी की "बीबी साहिबा! क्या मैं जान सकता हू कि आप इस अवस्था को क्यो कर पहुची ?"

उसने अपने माथे पर हाथ मारा और कहा "यह मैं कैसे जान सकती हू।"

मैंने तत्काल कहा "ठीक है! ठीक है!! 'प्रारब्ध' को हम नहीं जान सकते हैं।"

मैं बीबी साहिबा का पिंड आसानी से न छोड़ता परन्तु क्या करता मजबूर था। पहाड़ी लोगो से सीखी हुई मेरी हिन्दुस्तानी भाषा 'प्रारब्ध' पर स्वतन्त्र दार्शनिक बहस के लिए मौजू न थी। नवाब की पुत्री के सुकोमल कानो के योग्य बड़ी मँजी भाषा की जरूरत थी। स्वयं उसके मँजे हुए वाक्य मुझे अपनी इस कमजोरी का अनुभव कराते थे।

बीबी साहिबा ने कहा 'आज हो मेरे जीवन की अजीब कहानी का अन्त हो गया है। यहाँ ही

उपनिषदों मे वेदों का स्वरूप

(ले०—श्री० मदनमोहन विद्याधर जी, गुरुकुल कांगड़ी)

[२]

उपनिषदों के मत में वेद चार हैं

आजकल यह विषय भी बहुत विवाद-ग्रस्त है कि वेद चार है, या तीन हैं या एक है। वर्तमान में सभी विचारों के विद्वान् हैं। इस विषय मे उपनिषदों का मत यह है कि वेद चार हैं। जहाँ कहीं वेदों के तीन होने का आभास मिलता है उसका अभिप्राय आगे स्पष्ट करेंगे और दिखाई देने वाले विरोध को मिटाने का प्रयत्न करेंगे।

(क) मुण्डकोपनिषद् में लिखा है कि —

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः।

(ख) छान्दोग्योपनिषद् के तृतीय अध्याय में चारों वेदों का वर्णन है। इसी उपनिषद् के सप्तम अध्याय के प्रथम खण्ड में लिखा है कि—

इसी दार्जिलिंग में। यदि आप चाहें तो मैं यह भी सुना सकती हूँ।"

मैंने निवेदन किया "हुजूर। यदि आपने यहाँ तक सुनाने की कृपा की है तो आगे भी सुनाइए। इससे आप के उत्सुक सेवक के कानो को बड़ी शांति मिलेगी।" "पाठक यह न सोचें मैंने वास्तव में ऐसा उससे कहा। यही मानना चाहिए कि मैने ऐसा कहनेकी कोशिश की परन्तु कहने में बुरी तरह असमर्थ रहा। नवाबकी पुत्री बोली तो ऐसा प्रतीत होता था मानो पकती हुई खेती के हरे खेत प्रात. काल की वायु में धीरे २ हिल रहे है।

उसने अपनी कहानी शुरू की। 'मेरे पिता की धमनियों (नसों) मे मुगल सम्राटों का खून बहता था। हमारा खान्दान इतना ऊंचा था कि जब मैं सयानी हुई तो मेरे लिय योग्य वर मिलना कठिन साबित हुआ। अन्त में जब मेरे पिता लखनऊ के नवाब के साथ मेरी शादी की तजवीज पर विचार कर रहे थे तब ही सिपाही लोगों ने अपने अंग्रेज मालिकों के विरुद्ध बगावत करदी और तमाम हिन्दुस्तान बारूद के धुएँ से काला हो गया।'

एक सुसंस्कृत देवी के मुंह से सलीस(बढ़िया) उर्दू सुनने का यह मेरा पहला मौक़ा था और तब ही मुझपर यह प्रभाव पड़ा था कि यह भाषा नवाबो और पुराने रईसों के लिए बिल्कुल ठीक भाषा है और रेल, तार इत्यादि के इस युग के अनुकूल नही है। नवाब की लड़की ने अपनी कथा जारी रक्खी 'हमारा क़िला यमुना के तट पर था हमारा सेनाध्यक्ष एक हिंदू ब्राह्मण था। उसका नाम केसर लाल था'। उस केसर लाल नाम मे वह एक क्षण मे ही सब संगीत भरती हुई देख पड़ी जो स्त्री की आवाज में भरा रहता है। मैं अच्छी तरह अपनी पत्थर की सीट पर बैठ गया और ध्यान पूर्वक उसकी कथा सुनने लग गया।

अधीहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं नारदस्तं होवाच यद्वेत्थ तेन मोपसीद ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति ॥१॥ स होवाचर्ग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थम् ॥२॥

इसी अध्याय के द्वितीय खण्ड में आगे लिखा है कि —

वाग्वाव नाम्नो भूयसी वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थम् ॥१॥

(ग) अथर्वशिरोपनिषद् में लिखा है कि —

ऋगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोहम् ।

(घ) अथर्वशिखोपनिषद् में लिखा है कि —

इत्येतदक्षरं परं ब्रह्मास्य पादाश्चत्वारोवेदा. ।
इसके आगे भी बहुत स्पष्ट शब्दों में चारों वेदों का नाम ले लेकर वर्णन किया है ।

(ङ) अथर्वशिरोपनिषद् में लिखा है कि —

अथ कस्मादुच्यते प्रणव. ? यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुःसामाथर्वांगिरसं ब्रह्म ॥

(च) 'साम' नाम से ईश्वर का गुण गाती हुई नृसिंह पूर्व तापिन्युपनिषद् कहती है कि —

ब्रह्म स्वरूपं निरञ्जनं परमं व्योमकं तत्साम्नश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति ऋग्यजु.सामाथर्वाणश्चत्वारो वेदा सांगा स शाखा. चत्वार (साम्न) पादा भवन्ति ॥२॥

तत्साम्नः प्रथमं पाद जानीयात् ऋग्यजुःसामाथर्वरूपः ॥४॥

(छ) शुकरहस्योपनिषद् में लिखा है कि —

चतुर्णामपि वेदानाम् ॥१५॥

(ज) महोपनिषद् में लिखा है कि: —

तत्र ब्रह्मा चतुर्मुखो ऽजायत ।

और आगे चारों वेदों का वर्णन है ।

(झ) मुक्तिकोपनिषद् में लिखा है कि —

राम वेदा. कतिविधा. कृपयावद तत्वतः ॥१०॥

श्रीराम उवाच ऋग्वेदादिविभागेन वेदाश्चत्वार ईरिता ॥११॥

इसी उपनिषद् में आगे भी वेदों के प्रचलित नाम ले लेकर उनका परिगणन कराया है ।

चार व्याहृतियों के विभाग से चार वेदों का वर्णन

'भू , भुव , स्व , मह' ये चार व्याहृतियां हैं । एक २ व्याहृति का एक २ वेद से सम्बन्ध है । उसके लिये कुछ प्रमाण पेश करते हैं ।

(क) तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है कि —

भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः । तासामुह स्मैतां चतुर्थीम् माहाचमस्यः प्रवेदयते । मह इति । तद्ब्रह्म । स आत्मा ॥ भूरिति वा अयं लोक । भुव इत्यन्तरिक्षम् । सुवरित्सौ लोकः । मह इत्यादित्य. ॥

इतना लिखने के बाद लिखा है कि —

भूरिति वा ऋचः । भुव. इति सामानि । सुवरिति यजूंषि मह इति ब्रह्म ॥

(ख) महोपनिषद् में लिखा है कि —

तत्र ब्रह्मा चतुर्मुखो अजायत । सोऽध्यायत् । पूर्वाभिमुखो भूत्वा भूरिति व्याहृतिर्गायत्रं छन्द ऋग्वेदोऽग्निर्देवता । पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भुवरिति व्याहृतिस्त्रैष्टुभं छन्दो यजुर्वेदो वायुर्देवता । उत्तराभिमुखो भूत्वा स्वरिति व्याहृतिर्जागतं छन्दः सामवेदः सूर्यो देवता । दक्षिणाभिमुखो भूत्वा मह

रिति व्याहृतिरानुष्टुभं छन्दोऽथर्ववेदः सोमो देवता ।

इसे हम निम्न कोष्टक द्वारा समझ सकते हैं ।

व्याहृतियां	सं०	वेद	देवता
भू	१	ऋग्	अग्नि
भुव	२	यजु	वायु
स्व	३	साम	सूर्य्य
मह	४	अथर्व	सोम

६ त्रयी विद्या रहस्य

कइयों का यह विचार है कि वेद तीन हैं इसीलिये वेदों का एक नाम 'त्रयी' भी है और अथर्व वेद कोई नहीं। परन्तु उपनिषदों के पढ़ने से हमें कुछ और ही ज्ञात हुआ है जो कि पाठकों के समक्ष रखते हैं। सब से पूर्व हम उन स्थलों को पेश करते हैं जिनमे कि तीन वेदो की ही चर्चा है।

(क) प्रश्नोपनिषद् में लिखा है कि—

"अरा इव रथ नाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
ऋचो यंजूषि सामानि यज्ञः क्षत्रं ब्रह्म च ॥
प्रश्न २ । मंत्र ६ ॥

(ख) कालाग्नि रुद्रोपनिषद् मे लिखा है कि—

अथ सनत्कुमार. पप्रच्छ प्रमाणमस्य त्रिपुण्ड्र-धारणस्य त्रिधा रेखा भवत्याललाटादाचक्षुषोरामूर्ध्नोराभ्रुवोर्मध्यतश्च। यास्य प्रथमारेखा सागार्हपत्यश्चेश्चाकारो रजो भूर्लोक. स्वात्मा क्रिया शक्ति ऋग्वेदः प्रातः सवनं महेश्वरो देवतेति यास्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणाग्निसकार. सत्वमन्तरिक्षमन्तरात्मा चेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यदिनं सवनं सदाशिवो देवतेति यास्य तृयीया रेखा सा हवनीयो मकारस्तमोद्यौर्लोक परमात्मा ज्ञानशक्ति. सामवेदस्तृयीय सवनं महादेवो देवतेति ।

(ग) ब्रह्मविद्योपनिषद् म लिखा है कि—

ऋग्वेदो गार्हपत्यं च पृथिवी ब्रह्म एव च ।
अकारस्य शरीरं तु व्याख्यातं ब्रह्मवादिभि. ॥४॥
यजुर्वेदोऽन्तरिक्षं च दक्षिणाग्निस्तथैव च ।
विष्णुश्च भगवान्देव उकारः परिकीर्तित ॥५॥
सामवेदस्तथा द्यौश्च हवनीयस्तथैव च ।
ईश्वर. परमो देवो मकार. परिकीर्तित. ॥६॥
तिस्रो मात्रास्तथा ज्ञेया. सोमसूर्याग्निरूपिण. ॥८॥

(घ) तारसारोपनिषद् मे लिखा है कि—

अयमृग्वेद. प्रथमः पाद. ॥१॥ यजुर्वेदो द्वितीय. पाद ॥२॥ सामवेदस्तृतीय. पाद. ॥३॥

(ङ) हयग्रीवोपनिषद् में लिखा है कि—

ऋग्यजु. सामरूपाय वेदाहरण कर्मणे ।
प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे नमः ॥२॥

इन सब स्थलों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात हो जाता है कि अ उ म् इन तीन अक्षरो के भेद से ही तीन वेद हैं। (ङ) मे प्रणवरूप तथा ऋग्यजु सामरूप परमेश्वर को कहा है। 'प्रणव' और 'ओ३म्' आपस में पर्यायवाची हैं। इसको हम निम्न कोष्टक से भलिभांति समझ सकते हैं।

सं०	नाम मात्रा	नाम वेद	नाम लोक	नाम देवता	नाम व्या०
१	अकार	ऋग्	पृथिवी	अग्नि	भू
२	उकार	यजु	अन्तरिक्ष	वायु	भुव
३	मकार	साम	द्यौ, स्वर्ग	सोम	स्व

अभिप्राय यह है कि वेद का विभाग अब हम ओ३म् की तीन मात्राओं की दृष्टि से करें तो ऋग्यजु साम ये तीन करने चाहिये। वेदों का यह त्रयी नाम वेदों के तीन होने से नहीं पड़ा अपितु ओ३म् के तीन मात्राओं वाला होने से पड़ा है। कइयों का यह मत कि अथर्व वेद नहीं, अशुद्ध है। उपनिषदों में हम त्रयी के विषय में हम निम्न लिखित निर्देश पाते हैं। छान्दोग्योपनिषद् में त्रयी विद्या क्या है? इसके विषय में उसका एक कथन उद्धृत करते हैं, जिसमें हमारा मत और भी अधिक पुष्ट हो जावेगा प्रथम प्रपाठ के प्रारम्भ में ही—

ओमित्येदक्षरमुद्गीथमुपासीतोमिति ह्युद्-गायति तस्योपव्याख्यानम् ॥१॥

कुछ आगे आकर लिखा है कि—

य एतदेव विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते ॥८॥

तेनेयं त्रयी विद्या वर्तते ओमित्याश्रवयत्योमिति शंसत्योमित्युद्गायत्येतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै महिम्ना रसेन ॥९॥

इसी के आगे पुनः लिखा है कि —

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतोमिति ह्युद्गायति तस्योपव्याख्यानम् ॥१॥ देवा मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्यां प्राविशंस्ते छन्दोभिरच्छादन् यदेभिरच्छादयंस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम् ॥

प्रथमेऽध्याये ४तुर्थ खण्ड ॥

इस उद्धरण से यह स्पष्ट है कि 'ओ३म्' का विद्या का नाम त्रयी है। इसी कारण फिर आगे लिखा है कि —

प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत्तेषां तप्यमानानां रसान्प्रावृहदग्निं पृथिव्या वायुमन्तरिक्षादादित्यं दिवः ॥ १ ॥ स एतास्तिस्रो देवता अभ्यतपत्तासां तप्यमानानां रसान्प्रावृहदग्नेर्ऋचो वायोर्यजूंषि सामान्यादित्यात् ॥२॥ स एतां त्रयीं विद्यामभ्यतपत्तस्यास्तप्यमानाया रसान्प्रावृहद्भूरित्यृग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः स्वरिति सामभ्यः ॥ ३ ॥

ब्रह्मविद्योपनिषद् में लिखा है कि —

ओमित्येकाक्षरम् ब्रह्म यदुक्तं ब्रह्मवादिभिः ।
शरीरं तस्य प्रवक्ष्यामि स्थानं कालत्रयं तथा ॥२॥
तत्र देवास्त्रयः प्रोक्ता लोका वेदास्त्रयोऽग्नयः ।
तिस्रोमात्रार्धमात्रा च त्र्यक्षर शिवस्य तु ॥३॥

इसके आगे का स्थल ऊपर उद्धृत कर चुके हैं।

इन स्थलों से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'त्रयी' वेदों का नाम तीन वेदों के होने के कारण न होकर ओ३म् की तीन मात्राएं होने से है। त्रयी विद्या ओ३म् की विद्या का नाम है। क्योंकि वेदों का विषय ओ३म् का प्रवचन है इसलिये पंच से लक्षणा द्वारा चारों वेदों की विद्या का नाम भी त्रयी पड़ गया। यदि इस पर भी विपक्षी जन न माने तो हम इस विषय में कुछ और विवेचन प्रारम्भ करते हैं।

हमने ऊपर अभी अ उ म् से क्रमशः ऋग्यजु साम का मिलान बतलाने वाली कुछ उपनिषद् श्रुतियों का उद्धरण दिया है। यह देख कर आश्चर्य होता है कि कई उपनिषदों में चतुर्थार्धमात्रा भी मानी गई है और उसके साथ चौथे वेद अथर्व का सम्बन्ध बतलाया है। इसका स्पष्ट यही अभिप्राय है कि ओ३म् को यदि चार भागों में बाँट लागे वेद के भी चार भाग और यदि ओ३म् की तीन ही मात्राएं मानो तो भी त्रयी कहना चाहिये। इसका यह अभिप्राय कभी भी नहीं कि वेद ही तीन हैं।

उदाहरणार्थ अथर्व शिखोपनिषद् से कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं वहां लिखा है कि —

ओमित्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यमित्येतदक्षरं परब्रह्मास्यपादाश्चत्वारो वेदाश्चतुष्पादिदं परं ब्रह्म। पूर्वास्यमात्रा पृथिव्यकारः अग्निभिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः। द्वितीयमंतरिक्षं स उकारः स यजुर्भिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टुब्दक्षिणाग्नि ॥ तृतीया द्यौ स मकारः स सामभिः सामवेदो रुद्रा आदित्या जगत्याहवनीयः। याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा सोमलोक ओंकारः साथर्वणमंत्रैरथर्ववेदः ।

माण्डूक्य में भी ओ ३ म् को चतुष्पाद् कहा गया है। इससे हमारा मत स्पष्ट हो जाता है क्योंकि ओ३म् के चार पाद हैं, इसीलिये वेद चार हैं। जब ओ३म् चतुष्पद तो तद्वाचक प्रणव भी चतुष्पद ही होना चाहिये। इसीलिये अथर्व शिरोपनिषद् में लिखा है कि —

अथ कस्मादुच्यते प्रणवः ? यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामाथर्वांगिरसं ब्रह्म ।

इतना कहने पर भी यदि कोई न मानें तब हम उससे कहेंगे कि जो उपनिषद् वेदों को तीन कहती हैं, वे स्वयं ही चार वेदों का नाम भी दर्शाती हैं। यथा छान्दोग्योपनिषद् में से अभी एक उद्धरण देकर बताया था कि वहां तीन वेदों का परिगणन है। परन्तु उपनिषदों के मत में वेद चार हैं इस शीर्षक के नीचे छान्दोग्य से ही वचन लेकर यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि वेद चार हैं। तो बताइये, समाधान क्या है ?

उपनिषदों के मत में वेद मिथ्यात्व

तेजो बिन्दूपनिषद् में वेदों को मिथ्या कहा है। जैसे —

न भूमिर्न जलं नाग्निर्न वायुर्न च खं क्वचित्।
न देवा नच दिक्पाला न वेदा न गुरुः क्वचित् ॥
५ अ० । ३६ मं० ॥

वेद शास्त्र पुराणं च कार्यं कारणमीश्वरः।
लोको भूतं जनस्त्वैक्यं सर्वं मिथ्या न संशयः ॥
५ अ० । मं० ४३ ॥

यद्यद्वस्तु पुराणेषु यद्वेदेषु निर्णयम् ॥८८॥
सर्वोपनिषदां भावं सर्वं शशविषाणवत् ॥८९॥

इसी प्रकार ब्रह्मविद्योपनिषद् में लिखा है कि —

वेदशास्त्राणि चान्यानि पदपांसुरिव त्यजेत्।
गुरुभक्तिं सदा कुर्याच्छ्रेयसे भूयसे नरः॥ ३०॥

तो क्या वेद मिथ्या हैं ? नहीं। कारण यह है कि तेजो बिन्दूपनिषद् ने तो उपनिषद् तक को मिथ्या कह दिया है उसका तो मत ही यह है कि सब कुछ दृश्य जगत् मिथ्या है।

दृश्यते जगति यद्यत् यद्यज्जगति वीक्ष्यते।
वर्तते जगति यद्यत् सर्वं मिथ्येतिनिश्चिनु ॥५५॥
नास्ति नास्ति जगत् सर्वं ॥ ५ अ० । मं० १०५॥

जब नास्तिक दृश्य कहने वाला मिथ्या है, तो उसका मत कौन सत्य मानेगा ? और वैसे हमें उसका मत हम कर वेदों को चार पुस्तकें मिथ्या हैं, अर्थात् नित्य नहीं हैं मानने में भी कोई हर्ज नहीं। जिस प्रकार हमारा देह सदा रहने वाला नहीं, उसी प्रकार ज्ञान का देह अर्थात् जिन पुस्तकों में लिखा है वह नश्वर है, मिथ्या है, मानने में कोई भी आक्षेप नहीं। परन्तु हां, यदि वेद ज्ञान को मिथ्या है, तो हम उस मिथ्या-

महिला-जगत   सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती जी विशारदा

भारतीय दाम्पत्य

ले०—श्रीमती ब्राह्मी देवी 'विदुषी'

पाश्चात्य सभ्यता के अंध अनुकरण में फंसकर हम अपने सभी अमूल्य गुणो से वंचित होते चले जा रहे हैं। कभी हम आर्जव और सादगी की आहुती डालते हैं तो कभी आत्म-विश्वास की। कभी अनु-करण की भट्टी में स्वभाषा को दग्ध करते हैं तो कभी स्व-वेष का सर्व संहार करने पर तुल जाते हैं। आर्य संस्कृति को उसके अनुरूप सुरम्य रत्नाभरणो से सजाना तो दूर रहा, उल्टे उसके रहे सहे आभूषणो को भी उतार कर उनके स्थान में कांच और टिन के तुच्छ मंडनो को जिनका मूल्य भी क्षणिक और अस्वाभाविक है, पहना रहे हैं। अपनी इस विवेक-हीन प्रवृत्ति के द्वारा उस देवी का भी महान् अपकार ही नहीं अपितु मानव जाति का घोर अकल्याण भी कर रहे है। आर्यावर्त की सस्कृति, केवल भारतीयो के हित की साधिका नही है बल्कि वह तो संपूर्ण मानव वर्ग के लिए अवतरित हुई थी। उसमें सौन्दर्य और पावनता की रक्षा का दायित्व सभी आर्य नर नारियों पर आश्रित है।

जिस प्रकार अन्य सद्गुण विलीन होते जारहे हैं और अपना स्थान परिचर्मा दुर्भावनाओंको देते चले जा रहे हैं उसी रीतिसे दाम्पत्य भाव विद्रूपता धारण कर अपनी वास्तविकता से स्खलित होता हुआ दृग्गोचर हो रहा है। जो सद्भाव और आत्म-बलिदान पूर्वकाल में दम्पति के मानसो में उपलब्ध होता था उसकी मात्रा में न्यूनता का प्रत्यक्ष होने लगा है। जो पवित्रता और दृढ़निष्ठा, प्राच्य दृष्टि-

---

पुरुष की बात भी मिथ्या ही समझेंगे।

ब्रह्मविद्योपनिषद् में जो वेदों को पदपांसु समझने को कहा है उसका भी एक कारण है। वह यह है कि इनके समान अपने आचरण नहीं करना वह पदपांसु समझे। क्योंकि इसी उपनिषद् ने प्रारम्भ में ओ३म् के तीन पादों से ऋग्यजु साम का विधान किया है। यदि हमारा मत ठीक नहीं तो इस विरोधाभास का हल कैसे होगा ?

उपसंहार

हमने अत्यन्त संक्षेप से यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि वेद के विषय में उपनिषदों का क्या मत है ? यदि हम अपने विषय को सूत्र रूप से कहना चाहें तो निम्न शब्दों में प्रगट कर सकते हैं।

"उपनिषदों के मत में वेद मिथ्या नहीं हैं। वे ही सम्पूर्ण ज्ञान के आधार हैं। वे नित्य एवं अपौरुषेय हैं, वेद चार हैं, तीन नहीं। ओ३म् की मात्राओं को तीन मानने से इन्हें तीन भागों में भी बांट लेते हैं। ओ३म् की मात्राओं के तीन होने से ही त्रयी विद्या है, वेदों के तीन होने से नहीं।"

कोण से दाम्पत्य मे वांछित है उसका अभाव सा ही आज नजर आ रहा है। पुरुष और स्त्री दोनो ही सच्चे दाम्पत्य के कर्तव्यो से अनभिज्ञ अतएव पराङ्मुख से होने लगे है। अपराध केवल स्त्रियो का ही नही है अपितु पुरुष वर्ग भी इसमे उत्तरदायी है। जहां बाल-विवाह आदि कुरीतियां इसमे कारण है वहां पुरुषो की वहिर्मुख वृत्ति भी दाम्पत्य के पवित्र आदर्श पर कुठाराघात कर रही है। प्राचीन सभ्यता के पोषक आर्यो की वृत्ति अन्तर्मुखी अथवा आध्यात्मिक होती थी आधुनिक नर मण्डली ऐहिक सौख्य का अध भक्त हो चली है। उसको सांसारिक अभ्युदय ही सब कुछ प्रतीत होता है इसीलिये वह कभी नारी जाति को तिरस्कार और घृणा का लक्ष्य बना देता है। स्त्रियां भी अविद्या और दुराग्रह के वशीभूत होकर अपने आराध्य पतियों की अवहेलना करके कर्त्तव्य से गिर जाती हैं। वास्तव मे दाम्पत्य दो पहियो वाले एक रथ के समान है। जिस प्रकार एक भी चक्र के टूट जाने से रथ चल ही नही सकता ठीक उसी भांति स्त्री और पुरुष दोनो मे से किसी के शिथिल होने पर दाम्पत्य का सुचारू रूप से चलना दुष्कर हो जाता है। औचित्य की कसौटी पर वही दाम्पत्य खरा उतर सकेगा जिसमे पुरुष और स्त्री दोनो ही एक दूसरे का पूर्ण समान और आराधना किया करे तथा एक का हृदय दूसरे के साथ सच्चे अर्थों मे सुसबद्ध हो। जहां एक को तनिक भी कष्ट हुआ कि दूसरा समान वेदना का अनुभव करने लगे। कविकुल गुरू श्रीकालिदा यह पद्य आदर्श दाम्पत्य का ज्वलंत प्रमाण उपस्थित करता है।

गृहिणी सचिवःसखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कला विधौ। करुणाविमुखेनमृत्युना हरता त्वां वत कि न मे हृतम्॥

साकेत (अवध) के अधिराज श्री अज अपनी मनोभिरामा प्रेयसी के असामयिक परलोक वास पर अपने मनहित हृदय का उद्‌गार किस करुणा के साथ प्रकट करते हैं, देवियो और आर्य पुरुषो जरा उत्कर्ण होकर सुनिये। वे कहते हैं "हे देवि तू मेरी सब कुछ थी—गृहणी तो थी ही मंत्रणा के कार्य में सहायक होने से मत्री भी थी अपने सद्‌भाव के कारण मेरी मित्र थी, ललित कलाओ के शिक्षण कम में मेरी प्रिय शिष्या भी थी मुझसे तुझे छीनते हुए विधाता ने क्या कुछ नही छीना। अर्थात् मेरा सर्वस्व अपहरण कर लिया।" आगे चलकर अपनी सफाई देते हुए अपनी पोजीशन को Clear करते हुए महाराज फरमाते है कि—

मनसापि न विप्रियं मया कृतपूर्वं तव किंजहासि माम्। ननु शब्दपति क्षितेरहं त्वयि मे भावनिबन्धना रतिः॥

हे हृदयाधिष्ठात्रि! मैंने तो मनसे भी कभी तुम्हारे विरुद्ध व्यवहार नही किया। क्रिया रूप से अनिष्टाचरण की तो बात क्या, तू अपने असह्य वियोग से मुझे क्यो जलाती है। मै तो सिर्फ कहने भर को मेदिनी का वल्लभ हूँ, मेरा सच्चा नैसर्गिक प्रेम तो तुझपर ही है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के सीता वियोग की दुःसहता का चित्र भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि

कवीश्वर श्री भवभूति के शब्दो में देखिए। श्री राम के हृदय में श्री सीता के प्रति कितना अनुराग था।

हा हा देवि ! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबंधः ।
शून्यं मन्ये जगद् विरलज्वालमन्तर्ज्वलामि ॥
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा ।
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मंद भाग्यः करोमि ॥

सच्चे पत्नी प्रेम के इस से बढ़कर और क्या प्रमाण ढूंढे जा सकते हैं। आदर्श पत्नी के वियोग में वे एक क्षण भी चैन नही पाते थे। जीवन भार भूत हो गया था। इसी प्रकार महिलाये भी पति-प्रेम की वेदी पर सदैव आत्मोत्सर्ग करने को तत्-पर रहती थी। सीता, दमयंती, सावित्री आदि देवियो के प्रातः स्मरणीय चरित इस तथ्य के साक्षी है।

सारांश यह है कि भारतीय दांपत्य का मूल निःस्वार्थ प्रीति ही है। उसका सम्बंध बाह्यपदार्थों से बहुत कम है। वह हृदय की शुद्ध एवं दिव्य हृदय की अक्षय सम्पदा है। रूपजप्रेम उस सच्चे स्नेह की समता कदापि नहीं कर सकता। वह बूढ़ा होना तो जानता ही नही। "क्षणे क्षणे यन्नवता मुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः" इस माघ कवि की सूक्ति को चरितार्थ किया करता है। उसका आधार गीता में वर्णित "परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ" का आदर्श है जिस का अभिप्राय पारस्परिक सहयोग और बलिदान है।

आज कल देश के दौर्भाग्य से दाम्पत्यकी दशा कुछ अच्छी नही है। बहुधा यौवन की वारुणी से मत्त होकर स्त्री पुरुष एक दूसरे से प्राण त्याग तक की प्रतिज्ञा करते हुए सुने जाते हैं किंतु यौवन की बाढ़ शांत होते ही प्रेम का स्थान घृणा और तिरस्कार ग्रहण करने लगता है। पाश्चात्य शैली की कुशिक्षा इस जघन्य प्रवृत्ति को प्रोत्साहन प्रदान करती है। आधुनिक नर सतति बाह्य सुखों को ही प्रधानता देती है आत्मिक श्रेय को नही। इसी से वह दांपत्य मूल्य से अनभिज्ञ है। आदर्श दांपत्य की स्थापना तभी होगी जब पुरुष जाति महिलाओ का महत्व समझने लगे, उन्हे केवल दासी अथवा पाश्विक लालसाओ का साधन ही न जाने बल्कि आध्यात्मिक पथ की सहचारिणी जानकर उन्हे उस दृष्टि से देखे जिस दृष्टि से प्राचीन वैदिक आर्यपुरुष देखते थे उनमे योग्यता का विकास तभी होगा जब उन्हे अविद्या के अंध-कार से निकाल कर ज्ञान के आलोक मे लाने का शीघ्र प्रयत्न करे। उनको रुचि के परिमार्जन के लिये उन्हें साहित्य, दर्शन, इतिहास, वेद और उप-निषदो की शिक्षा देनी चाहिए। तभी वह गार्गी मैत्रेयी और सीता के चरण चिन्हो पर चलने की शक्ति प्राप्त कर सकेंगी। वैवाहिक सम्बन्ध की स्थापना मे उनको पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए। जो माता पिता अपनी सतानो के भाग्य निर्णय मे पूर्ण सहानुभूति करेंगे वे ही भारतीय संस्कृति के चन्द्रालोक को भुवन भर में फैलाने वाले होंगे।

बिछुड़ों का मिलाप--

हीरालाल गांधी की शुद्धि और वक्तव्य

हीरालाल गांधीने जो आर्य्यसमाज बम्बई द्वारा १४-११-३६ को शुद्ध किए गए हैं अपने शुद्धि-संस्कार के समय बम्बई आर्य्यसमाज में जो वक्तव्य दिया था वह सार्वदेशिकके पाठकों के लाभार्थ यहा दिया जाता है:—

OM

Revered Gentlemen, Sisters and Brothers,

Namaste.

It will be a wonder to some men to know why I reconverted myself Many Musalmans and Hindoos might be thinking in many ways but I cannot help myself opening my heart At present what goes under the name of religion does not only consist of its Principles but it includes its culture and moral and social life of those who follow that religion. I embraced Islam to experience all these From what I saw and experienced I can say that, religious principles of ancient Vedic Religion, its culture, language, its literature and social and moral life of its followers are in no way inferior to those of Islam and other prevalent faiths and religions of our country, not only that but they are superior.

If we realize and appreciate the true form of Vedic Religion as shown by Maharishi Swami Dayanand Saraswati wecan emphatically say that whatever true and Universal principles are found in Islam and other religions have all come from Vedic Religion, therefore looking Philosophically there is nothing like conversion than search after truth

As some Universal truth mixed with other sectarian principles have deformed other faiths in the same way I can say that from my associations with some Muslims of India that they have remained very far from the *firmans* and religious principles of Mahomed Saheb

As far as I know Hazarat Khalifa Umar never ordered the destructions of religious places and institutions of the other religionists, which is burning problems of our country at present

Looking to all these circumstances and facts I have come to the conclusion that I cannot serve Islam any more in any way

Just as a fallen man reaches his original place by ascending, similarly I am also trying to reach and realise the true principles of Vedic Religion, as shown by Maharishi Dayanand Saraswati. These principles are true,genuine,original, universal and useful for whole Humanity without restrictions of country, caste or community as the rays of the Sun are These principles have been propounded without any fear or favour by Swami Dayanand Saraswati in his well known books, *Satyarth Prakash, Rigveda adi Bhashya Bhumika* and others. I thus come

at the feet of my Father Religion and Mother culture by the grace of teachings of Swami Dayanand Saraswati and efforts of Arya Samaj If my parents, relatives and friends have become glad by hearing this news I crave their blessings.

In the end I say that protect me, have mercy on me and forgive me I thank heartily the workers of Bombay Arya Samaj and all those who are present here

With Namaste to all I pray God

"Lead Kindly me to light" Aum Shanti

Bombay 14-11-36 **Hiralal Gandh**

* * *

माननीय भद्रपुरुषो, भाइयो और बहनो

नमस्ते !

कुछ आदमियों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि मैंने पुन क्यों धर्म्म परिवर्तन किया। बहुत से हिन्दू और मुसलमान बहुत सी बातें सोच रहे होंगे परन्तु मैं अपना दिल खोले बगैर नहीं रह सकता हूँ। वर्तमान में जो 'धर्म्म' कहा गया है उसमें न केवल उसके सिद्धान्त ही होते हैं वरन् उसमें उसकी संस्कृति और उसके अनुयायियों का नैतिक और सामाजिक जीवन भी सम्मिलित होता है।

इन सब के तजुर्बे के लिए मैंने मुसल्मान धर्म ग्रहण किया था। जो कुछ मैंने देखा और अनुभव किया है उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि प्राचीन वैदिक धर्म्म के सिद्धान्त, उसकी संस्कृति, भाषा, साहित्य और उसके अनुयायियों का नैतिक और सामाजिक जीवन इस्लाम और देश के दूसरे प्रचलित मतों के सिद्धान्तों इत्यादि के मुकाबले में किसी प्रकार भी तुच्छ नहीं है न केवल इतना ही वरन वे उच्च हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म्म के वास्तविक रूप को यदि हम समझें तो हम बल-पूर्वक कह सकते हैं कि इस्लाम और दूसरे मतों में जो सचाई और सार्वभौम सिद्धान्त मिलते हैं वे सब वैदिक धर्म्म से आए हैं इस प्रकार दार्शनिक दृष्टि से सत्य की खोज के अलावा धर्म्म परिवर्तन और कोई चीज़ नहीं है।

जिस भांति सार्वभौम सचाइयों अर्थात् वैदिक धर्म का साम्प्रदायिक असूलों के साथ मिश्रण हो जाने से रूप विकृत हो गया इसी भांति भारत के कुछ मुसल्मानों के साथ अपने सम्पर्क के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि वे लोग मुहम्मद साहब की आज्ञाओं और मज़हबी असूलों से अभी बहुत दूर हैं।

जहा तक मुझे मालूम है हज़रत खलीफ़ा उमर ने दूसरे धर्म्म वालों के धर्म्म स्थानों तथा संस्थाओं को नष्ट करने का कभी हुक्म नहीं दिया था जो वर्तमान में हमारे देश की मुख्य समस्याएं हैं।

इन सब परिस्थितियों और बातों पर विचार करते हुए मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि मैं आगे किसी प्रकार भी 'इस्लाम' की सेवा नहीं कर सकता हूँ।

जिस प्रकार गिरा हुआ आदमी चढ़कर अपनी असली जगह पर पहुंच जाता है इसी प्रकार महर्षि

दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म्म की सचाइयों को जानने और उनतक पहुंचने की मैं कोशिश कर रहा हूँ। ये सचाइया मौलिक स्पष्ट, स्वाभाविक और सार्वभौम हैं तथा सूरज की किरणों की तरह देश, जाति और समाज के भेद-भाव से शून्य तमाम मानव समाज के लिए उपयोगी है। इन सचाइयों या सिद्धान्तों की महर्षि दयानन्द द्वारा उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका और दूसरी किताबोंमे बिना किसी भय वा पक्षके व्याख्या की गई है। इस प्रकार मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं की कृपा और आर्य्य-समाज के उद्योग से अपने धर्म्म रूपी पिता और संस्कृति रूपी माता के चरणों मे बैठता हूँ। यदि मेरे माता-पिता सम्बन्धी और दोस्त इस खबर से प्रसन्न हों तो मैं उनके आशीर्वाद की याचना करता हूँ।

अन्त में मै प्रार्थना करता हूँ। प्रभो! मेरी रक्षा करो, मुझ पर दया करो! और मुझे क्षमा करो!! मैं बम्बई आर्य्य-समाज के कार्य्य-कर्त्ताओं और उपस्थित सज्जनोंदय से को हृ धन्यवाद देता हूँ।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय'

बम्बई हीरालाल
१४-११-३६ गाधी

—ता०१५-१०-३६ को कारंजा आर्य्य-समाज ने अब्दुल रहीम नामक मुसल्मान धोबी को शुद्ध करके उसका नाम अमृत राव रक्खा।

—ता० २-११-३६ को ईसाई प्रचारक मि० राबिन सालोमन ने आर्य्य-समाज पूना द्वारा शुद्ध होकर वैदिक धर्म्म स्वीकार कर लिया है वे गत ३० वर्ष से ईसाई मिशन का प्रचार कर रहे थे। आपका वैदिक नाम 'धर्म्मसिंह' रक्खा गया है।

—ता० २६-६-३६ को परतवाड़ा (अमरावती) में श्री दिगम्बर मार्त्तण्ड देव चिंच वड़ का (गुलाम हुसेन नाम मुस्लिम) ब्राह्मण युवक का शुद्धि संस्कार हुआ।

—ता० २३-१०-३६ को नया बास (देहली) आर्य्य-समाज मे दीवान चन्द जी के उद्योग से एक सरहदी पठान अमीरखा की शुद्धि की गई। नाम धर्मसिंह रक्खा गया। इस व्यक्ति को सम्पूर्ण कुरान याद है ऐसा बतलाया जाता है। उपस्थित जनता ने उसके हाथ से मिठाई ग्रहण की। बयान किया जाता है कि यह कोहाट आर्य्य-समाजमें उपदेश सुना करता था इसी से उसे इस्लाम से अरुचि और वैदिक धर्म से प्रेम हो गया और वह धर्म्म परिवर्तन की फिक्र में रहने लगा।

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

आर्य्य समाज का भावी कार्य्यक्रम

श्री बाबू मदन मोहन जी सेठ ने 'आर्य्य मित्र' के अग्र्यक में आर्य्य समाज के भावी कार्य्यक्रम की रूप रेखा प्रस्तुत की है और निम्न ३ बातों पर विशेष बल दिया है:—

(१) गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्थाकी स्थापना।

(२) वेदादि आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय।

(३) आर्य्य समाज का संगठन।

तीसरी बात पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं:—

"धार्मिक संस्थाओं मे आर्य्य समाज का संगठन बहुत ऊंचा स्थान रखता है। समाज का संगठन जन सत्तात्मक ढङ्ग पर बना हुआ है। आर्य्य समाज की शाखा प्रशाखाएँ फैलकर बहुत विस्तार हो गया है संस्थाओं के कारण अनेक प्रकार के झगड़े भी कहीं २ देखने में आते हैं। मुझे यह अनुभव हो रहा है कि आर्य्य समाज के संगठन को केन्द्रित और दृढ़ करने की भावना का धीरे २ ह्रास हो रहा है। आर्य्य समाजों में जहाँ एक बार झगड़ा शुरू हुआ है कि उसके मिटाने की संभावना जाती रहती है। इस प्रकार के सार्वजनिक संगठन तभी तक सफल रूप से चल सकते है जब तक उसके कार्य्य कर्त्ताओं के भीतर अनुशासन का भाव मौजूद रहे। इस समय आर्य्य समाज मे अनुशासन कम हो रहा है। किसी भी निर्णय को किसी दल से मनवाने की शक्ति आर्य्य समाज के संगठन में नहीं है। लोक मत का प्रभाव भी क़ानूनी हैसियत नहीं रखता है जिसके कारण अनेक उलझनें उत्पन्न हो रही हैं।

मेरी सम्मति में अब समय आ गया है कि संगठन को दृढ करने के लिए क़ानून बनवाया जाय जो आर्य्य समाज की कार्य्य प्रणाली और संगठन के अनुकूल हो। इसके अलावा प्रत्येक आर्य्य पुरुष को संगठन का सम्मान करने और अनुशासन का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है अन्यथा निकट भविष्य में ही आर्य्य समाज के संगठन के लिए खतरा उत्पन्न हो जायगा।

स्वाध्याय और आत्म निरीक्षण की जरूरत

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी 'प्रकाश' के अग्र्यांक में खुदगर्ज़ी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए आर्य्य समाज में व्याप्त झगड़े बखेड़ों का कारण आर्य्य सदस्यों की खुदगर्जी ठीक ही प्रगट करते हैं और आर्य्यों के इस खुदगर्ज़ी का शिकार होने का कारण स्वाध्याय और आत्म निरीक्षण की कमी इस प्रकार बतलाते हैं।

"आर्य्य समाज के सभासद और सहायक क्यों खुदगर्जी की बीमारीका शिकार बने। इसका सबब साफ़ तौर पर आहिर है कि स्वाध्याय और आत्म निरीक्षण (Self Introspection) की कमी। जहां कहीं लोग स्वाध्याय के आदी होते हैं वहां आत्म निरीक्षण न करना उनके झगड़ों मे फँसावट का सबब हुआ करता है। ये दोनों असूल

अच्छे २ ग्रन्थों का देखना और अपने को भी देखना वास्तव मे इंसानियत का दर्जा ऊँचा किया करते हैं और इनका न होना इंसानियत से गिराने का सबब हुआ करता है। आर्य्य समाज के सभासदों और सहायकों को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि उनके अन्दर यह कमी है या नहीं। यदि है तो सचाई और ईमान्दारी के साथ उसके दूर करने का यत्न करना चाहिए।

धर्म्म और ईश्वर का विरोध

अमेरिका के डाक्टर विलडा रैंट नामक एक सज्जन ने एक पुस्तक The meaning of Life 'जीवन का अर्थ' लिखी है। आधुनिक मनुष्य (Modern) की अपने सम्पूर्ण ज्ञान, अपनी फ़िलासफ़ी, अपनी साइन्स और अपनी अत्यधिक विज्ञापित उन्नति के साथ धर्म्म और ईश्वर में आस्थान रखने से जो अवस्था होती है उसका उस पुस्तक में वे निम्न चित्र खींचते हैं। डाक्टर महोदय घोषणा करते हैं।

"मनुष्य के लिए अपनी महत्ता में विश्वास करना और यह विश्वास करना कि जीवन का कोई अर्थ है असंभव प्रतीत होता है। जिंदगी केवल शरीर विद्या सम्बन्धी एक कहानी का रूप ले रही है और हास्यास्पद जन्म और अपमान जनक मृत्यु के बाच अभिनयका एक अजीब गाना बन रही है। साइन्स कोई तसल्ली नहीं देती है। जिस चीज को वह छूती है उसे नष्ट करती देख पड़ती है। यह आत्माको दिमाग, जिंदगी को माद्दा, व्यक्तित्व को रसायन शास्त्र और इन्सान की इच्छा को क़िस्मत बना रही है। जो बचा कभी अविनाशी आत्मा रखता था आज वह ग्लडस अर्थात् गिल्टियां रखता है। आज प्रकृति विद्या के पण्डित के लिए बचा अणुओं का एक समूह मात्र है। प्राणी-शास्त्र के पण्डित के लिए वही बचा मांस पेशियो, हड्डियों और नाड़ियों का एक अनस्थिर संयोग है। डाक्टर के लिए वह बीमारी और कष्टों का लाल ढेर है। मनोवैज्ञानिक के लिए वह वंश परम्परा और वाता-वरण का असहाय स्वर है। वह अवस्थाओं का ढेर है जो भूख और प्रेम के द्वारा व्यवस्थित प्रतिबिम्ब फेंकती है। इस अजीब समूह का लग भग प्रत्येक विचार सदैव धोखा और प्रत्येक भाव घृणा और द्वेष होगा।"

डाक्टर महोदय बतलाते हैं भौतिक साइन्स वा ईश्वर रहित साइन्स हमें ठीक ऐसा ही बनाती देख पड़ रही है। आगे वे कहते हैं—

"हमारे ज़माने का सबसे बड़ा सवाल वर्गवाद वा व्यक्तिवाद नहीं है। न युरोप है न अमेरिका है, न पूर्व है न पश्चिम है वरन् यह है कि मनुष्य बग़ैर ईश्वर के ज़िंदा रहना बर्दाश्त कर सकता है या नहीं। और भी आगे डाक्टर ड्यूरेन्ट लिखते हैं।

"हम अमेरिका में (वह अमेरिका जो धर्म और ईश्वर को धत्ता बता रहा है) एक बड़े परीक्षण में लगे हुए हैं। वह परीक्षण यह है कि सामाजिक व्यवस्था और जातीय जीवन की पूर्णतया ज़मीन पर स्थित नैतिक विधान से रक्षा संभव है या नहीं। यूनान में यह परीक्षण फ़ेल हो गया था और रोम में भी फ़ेल हो गया था। इस गति ने पहले साहित्य, नैतिक आचार-विचार और

नागरिक राजनीति में अमेरिका की ऐंग्लो सैक्सन प्रभुता की नींव खोखली करदी थी और यदि यह जारी रही तो निश्चय ही यह पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समस्त राष्ट्रों को कमजोर कर देगी। अन्त में हम सुषुप्त ज्वालामुखी जायेंगे और एशिया फिर संसार के राजसिंहासन पर आरूढ़ हो जायगा।

डाक्टर साहब और आगे लिखते हैं:—यदि नास्तिक वाद सच्चा है तब

"जीवन निराश प्रयत्न बन जाता है और मनुष्य समाज ऐसी शक्ति बन जाता है जिसके भाग्य में जलालत और पराजय बदी होती है। क्या मनुष्य का इस अन्धकार मय हालत से ऊब कर यह चिल्लाना कि "क्या फायदा है" अजीब नहीं है।

एक भाषा और दो लिपियाँ

इस शीर्षक से 'इंडियन सोशियल रिफ़ार्मर' सम्पादकीय स्तम्भों में लिखता है—

"जहाँ तक लिपियों का सम्बन्ध है एक ही भाषा को लिखने के लिए उर्दू और हिन्दी दोनों लिपियों को क़ायम रखने का कांग्रेस का विचार भाषा सम्बन्धी एक विचित्र पहेली है। निश्चय ही एक भाषा के बजाय एक लिपि की वर्तमान में अत्यन्त आवश्यकता है। यदि एक ही लिपि हुई तो तमाम हिन्दुस्तानी भाषाओं के लेखों को कोषों की सहायता से समझना संभव होगा। विपरीत इसके यदि एक भाषा दो लिपियों में लिखी जायगी तो जरूर यह दो भिन्न २ भाषाओं में छिन्न भिन्न हो जायगी। उदाहरण के लिये यदि अंग्रेजी रोमन लिपि मे और तामिल लिपि में लिखी जावे जो मि० राजगोपालाचार्य्य के कथनानुसार अंग्रेजी से बहुत मिलती जुलती है तो उस पाठक की समझ में जो केवल एक ही भाषा जानता है दूसरी भाषा की लिपि का लेख नहीं आयगा। हिंदी मासिक पत्रिका 'हंस' में विविध भारतीय भाषाओं के लेखों को देवनागरी अक्षरों में लिखे जाने की कोशिश की गई है। यह संभव भी है क्योंकि संस्कृत वर्ण-माला पूर्ण है उसमें प्रत्येक ध्वनि एक विशेष अक्षर के द्वारा स्पष्ट होती है। उर्दू वर्णमाला से यह बात सभव हो सकती है, इसमें हमें सदेह है। इस पत्र के संपादक को उर्दू सीखने की अपनी कोशिश एक ओर इस भाषाकी अपूर्णता और दूसरी ओर इस के शब्दबाहुल्य की वजह से छोड़ देनी पड़ी थी। यदि राष्ट्र की भाषा एक ही होनी होगी तो नितांत वैज्ञानिक आधार पर नागरी लिपि में हिंदी ही वह भाषा होगी। यह हिंदी 'हिंदुस्तान' की हिंदी से भिन्न होगी जिसको क़ायम रखने की पण्डितों की इच्छा है क्योंकि यदि इसे अखिल भारत की भाषा बनना है तो इसे विविध देशी भाषाओं के बहुमूल्य शब्द भण्डार से बहुत कुछ लेना होगा।"

हिन्दू संगठन

हिन्दू—जाति एक असंगठित जाति है। इसमें जातीय भावना का अभाव है। इसके अनेक कारण हैं। मूलकारण हिन्दुओं का एक ध्येय का न होना है। श्री डा० गोकुल चन्द्र नारंग तथा पं० कृष्णकांत मालवीय ने 'शुद्धि पत्रिका' के विशेषांक में विविध कारणों पर विचार किया है और दोनों ही सज्जनों ने प्राय एक

ही जैसा कारण बतलाया है। डाक्टर नारंग बतलाते हैं —

"हिंदुओं का जीवन प्रायः व्यक्तिगत सीमातक ही निर्भर होता है और उनमें से अधिक जाति के हितों की ओर कुछ भी लक्ष्य न रखते हुए केवल निजी स्वार्थों का ही चिंतन करते है।"

श्री मालवीय जी प्रगट करते है —

"हिंदुओ मे सब से बड़ी कमी जो आगई है वह है उनका जीवन का मोह, समष्टिवाद का त्याग और व्यक्तिगत जीवन का प्यार। जबतक हम समाज के लिये थे हम जिए और बढ़े, जब अपनी २ पड़ गई हम गिरने लगे और गिरते २ गढ़े में पहुँच गए है। ईसाइयों में भ्रातृत्व का भाव है, मुसल्मानों में भाई चारा है। एक मुसल्मान मुसीबत में पड़ा हो सैकड़ों राह चलते उसकी सहायता के लिये खड़े हो जायेंगे उसके लिए जान देने को तय्यार हो जायेंगे। एक हिंदू कहीं पिटता हो, सैकड़ों हिंदू उस तरफ से आंख फेर कर नकल जायेंगे सोचेंगे कौन झंझट में पड़े अपना काम देखें।"

इसके आगे श्री मालवीय जी जाति संगठन का निम्न उपाय बतलाते हैं।

'यदि हमे दुनिया में उठना है और संसार को फिर पैरों तले दबाना है तो हमें अपने पूर्वजों का अनुसरण करना होगा और हमे फैलना और बढ़ना होगा। अपने को अपने धर्म्म और सभ्यता को छुई-मुई समझना अपने सर्वनाश को निमन्त्रण देना है।"

हवन की उपयोगिता और हवन के द्रव्यों का वैज्ञानिक विश्लेषण

हवन की उपयोगिता के सम्बन्ध म शिक्षित जगत में दो मत नहीं हैं। हवन की उपयोगिता विशेषतः रोगों को नष्ट करने क इसकी क्षमता विज्ञान के परीक्षणो से भी सिद्ध हो चुकी है। इस सम्बन्ध में हम कतिपय विज्ञान विशेषज्ञों की सम्मति उद्धृत करते हैं।

'जलती हुई खाण्ड के धुएँ में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे, हैजा तपेदिक, चेचक इत्यादि का विष शीघ्र ही दूर हो जाता है।

प्रो० टिलरवट (फ्रांस)

"मुनक्का, किशमिश इत्यादि सूखे फलों को हमने जलाकर देखा है। हमें मालूम हुआ है कि इनके धुए से टाइफाइड ज्वर के कीड़े आधे घण्टे में और दूसरे रोगों के घण्टे २ घण्टे में मर जाते है।"

डाक्टर टाटलिर

'घी, चावल में केसर मिलाकर जलाने से रोग के कृमियों का नाश होता है।"

डा० कर्नलकिंग। सेनेटरी कमिश्नर, मद्रास

"घी जलाने से रोगके कीटाणु मर जाते है।"

डा० हेफकिन (फ्रांस)

सामाजिक-जगत

आर्य्य-समाज मद्रास

१४-११-३६ को "ऋषि निर्वाणोत्सव" बड़े समारोह के साथ मनाया गया। प्रात काल शहर के मुख्य २ मार्गों में जलूस निकले और शाम को आर्य्य-समाज में श्रीयुत् वत्सलम के प्रधानत्व में एक विराट् सभा हुई जिसमें शहर के गण्य-मान्य सज्जनों तथा 'रामकृष्ण मिशन' तथा गौड़ीय मठ इत्यादि के प्रतिनिधियों ने ऋषि दयानन्द के जीवन और कार्य्य पर भाषण दिए और श्रद्धाञ्जलिया प्रस्तुत की।'

केरल में प्रचार

अक्टूबर, ३६

प्रचारार्थ कोट्टयम् करुनागपल्ली, कोट्टारक्करा, वर्कला, कालड़ी, नींडूर और कैपुला गया था, कहीं २ यथार्थ हिन्दू धर्म्म, 'आर्य्य-समाज' हमारी वर्तमान अवस्था आदि विषयों पर व्याख्यान दिया।

"श्रीनारायण धर्म्म-संघ" के वार्षिकोत्सव में भाग लिया। आर्य्य-समाज के प्रति उपस्थित सन्यासियों के हृदय में प्रेम पैदा हुआ। आर्य्य-समाज को प्रचार में सहायता पहुँचाने के विषय में कार्य्यकारिणी समिति सोच रही है।

भारतीय महाविद्यालय में एक धार्मिक क्लास आरम्भ किया है। विद्यार्थियों को सन्ध्या सिखाई जा रही है।

आर्य्य-भाषा प्रचार भी किया जा रहा है।

अखबारों में आर्य्य समाज सम्बन्धी लेख (मलयालम में) लिखते रहे। नारायण दत्त,

गढ़वाल प्रान्त में आर्य्य-समाज का प्रचार

अगस्त सितम्बर मास का विवरण

अगस्त सितम्बर मास ऊपर गढ़वाल में प्रचार किया। इस मास के प्रचार में जो आगे कठिनाइया हुईं, उनका थोड़ा सा विवरण दिया गया है। तारीख २४ अगस्त को जखिन्दाखाल आर्य्य-समाज से प्रचार के लिये चला। ऊपर गढ़वाल के लिये रास्ते में एक ग्राम शासोंखाल पड़ता है। दोपहर १ बजे के क़रीब वहा पहुँचा, थकावट के कारण सोचा यहा पर ठहरकर भोजन करेंगे और प्रचार भी हो जायगा। परन्तु ईश्वर इच्छा कुछ और ही हुई, यहा के दुकान्दार ने आर्य्य जान कर सौदा देने में आना कानी कर दी, प्रचार सुनना तो रहा अलग, भोजन के न होने से तथा नदी के किनारे के मार्ग पर चलने से उस स्थान से दो मील आगे मासों ग्राम में बुखार आ गया। इस गाव में एक व्यक्ति जो गत वर्ष के प्रचार से आर्य्य विचार का हुआ है। आर्य्य प्रचारकों का बड़ा भक्त रहता है। शाम के समय लोग उपदेश सुनने के लिये इकट्ठे हो गये, उनमें प्रचार हुआ। बुखार के कारण भोजन नहीं हो सका। प्रात उठकर चढ़ाई के रास्ता से ३ मील कंडैरी ग्राम में पहुँचा। ग्राम के लोग पूछने लगे आप रास्ता छोड़कर गाव में कैसे आ गये, उनको उत्तर दिया कि गाव के देखने की इच्छा है। लोग इकट्ठे होने लगे, एक नवयुवक जो डी० ए० बी०

कालेज लाहौर में पढ़ता है, उपदेश से प्रसन्न हो रहा था, मैंने विचार किया यह भाई कुछ आर्य-सिद्धान्तों का जानने वाला मालूम होता है। बात चीत में उस से निवेदन किया एक दो रोटी का प्रबन्ध कर दें। यह नवयुवक अपनी माता के पास गया और रोटी के लिये याचना करने लगा। किन्तु मालूम हुआ आर्य नाम से उसके माता-पिता चिढ़ गये, वह नवयुवक उस समय से मेरे सामने आने में शर्मिन्दा हो गया। यहा भी भोजन नहीं हो सका, कारण कोई दुकान भी यहा नहीं थी। इस स्थान पर ईसाइयों का स्कूल है, जिसमें सब जाति के बच्चे पढ़ते हैं। रूपचन्द नाम के पादरी से, 'वैदिक-शिक्षा से ही सर्वत्र धर्म्म का प्रकाश हुआ' इस विषय पर शास्त्रार्थ किया, जिससे आस-पास के ग्राम के लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। रात्री को भूख वा चलने से थकावट अधिक होने के कारण ३ मील आगे एक स्कूलमें रह गया। दुकान वहा से ८ मील की दूरी पर थी। अध्यापक महाशय ने भी रहने को जगह दे दी, परन्तु यह मालूम उनको नहीं हुआ कि आर्य्य है। रात्रि के समय दो पटवारी और कुछ ग्रामीण लोग आकर इकट्ठा हुए, पौड़ी ६ मील से मास और शराब आई। मुझको अतिथि जानकर बड़े प्रसन्न होकर दिखाने लगे और आये गुरुजी करके पुकार रहे थे। अगर इनसे कुछ कहता तो यह लोग जान जाते कि आर्य्य है। इसलिये इनको कुछ उत्तर न देकर बड़ा दुःखी होकर अलग स्थान पर रात्रि को जाड़े में समय बिताया।

उस घटना की याद आते ही बड़ा दुःख होता है, उन लोगों की सेवा करने वाले कुछ विद्यार्थी थे, मन में सोचा कि डि० बोर्ड में जाकर आज की रिपोर्ट दे दूं, परन्तु कुछ कारण-वश ऐसा न कर सका। रात्री के जाड़े के कारण और भी कमजोरी हुई, जिससे ८-६ मील पौड़ी १ बजे पहुंच सका और ४ बजे भोजन कर पाया।

वहा डी० ए० वी० स्कूल में सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम और चतुर्थ समुल्लास पर व्याख्यान दिया। प्रचार में इस प्रकार की बातें मालूम हुई, कि ईसाई मुसल्मान लोगों के मुर्दों को गाड़ने के लिये पढ़े-लिखे हिन्दु-प्रतिष्ठित लोग जाया करते हैं। डूमोंके साथ इस प्रकार का व्यवहार नही है। मुसलमानों के यहा करीब ४० चालीस मंबासे हैं। डि० बोर्ड की ओर से एक गर्ल्स स्कूल है, जिसमें ईसाई महिला अध्यापिका है जिससे लड़कियों का हमारे आदर्शों के अनुसार शिक्षण होना असम्भव है।

परम पिता परमात्मा की कृपा से तथा सभा की गढ़वाल पर परम दया होने से मैं यथा-शक्ति कार्य कर रहा हूँ। प्रथम जिस गाव गया मैं हूँ, आर्य नाम से वा नमस्ते बोलने में लोग चिढ़ते थे, अब ईश्वर कृपासे उन गांवों में नमस्ते का खूब प्रचार हुआ है और आर्य्य कहना लोग अपने को अच्छा समझते हैं। स्कूल के विद्यार्थियों

में जाकर मैंने प्रथम नमस्ते कहा तो हंसने लगे, इतने अनभिज्ञ थे, अब स्कूल के छोटे छोटे विद्यार्थी भी ख़ूब नमस्ते करते हैं। नमस्ते का गढ़वाल में इतना भय है कि कुछ निर्भय आर्य्यों को छोड़ कर, बाकी आर्य भाई भी नमस्ते करने में भय करते हैं। मैंने देहरादून इत्यादि देशों में देखा कि गढ़वाली भाई बड़े उत्साह से नमस्ते करते हैं परन्तु जब कोट द्वारा से ऊपर आते हैं तो क्या डी० ए० वी० के विद्यार्थी क्या अन्य आर्य-बन्धु खुले हृदय से नमस्ते करते नहीं देखे। अधिक साहस हुआ तो हाथ जोड़कर महाराज बोल देते हैं।

जिस गाव में गया, वहीं आर्य्य-समाज का प्रचार कराने वाले सज्जन पैदा हो गये। उन जगहों से पत्र आते हैं कि हमारे गाव में प्रचार की बड़ी आवश्यकता है और लोग उपदेश सुनने के इच्छुक हैं। मास, तम्बाकू कितने ही लोगों से छुड़ाया, संध्या हवन करना कितने ही लोगों को सिखाया इसको दूसरे मास के विवरण में लिखकर सभा की सेवा में भेजूं गा।

रघुवर दयाल उपदेशक,
सार्वदेशिक सभा (देहली)

रियासत छतारी व पिण्डरावल के हरिजन (जाटव)

कुछ महीनों से छतारी व पिण्डरावल रियासतों में वहाँ के जाटव भाइयों को मुसलमान बनाने का प्रयत्न एक निराले ढग से किया जा रहा है। अभी हाल में तारीख १ व २ नौम्बर को क़स्बा पिण्डरावल मे स्वयं नवाब साहब के अहाते में जाटवों की एक पंचायत बुलाई गई। जिसमें लगभग १००० जाटव भाई सम्मिलित थे। पंचायत की शुरूआत जाटवों की ओर से सवर्ण हिन्दुओं से मागों के रूप में हुई। मॉगें इस प्रकार थी। मन्दिर प्रवेश कूओं पर चढ़ना बराबर बैठना आदि। यदि यह मॉगें उसी समय पूरी नहीं की जाती हैं तो वे सब इस्लाम क़बूल करते हैं, हिन्दुओं की ओर से डा० बलभद्रसिंह जी वकील बुलन्दशहर ने उनको विश्वास दिलाया कि देश की बड़ी २ हिन्दू संस्थायें तथा नेतागण इन शर्तों को कभी का स्वीकार कर चुके हैं और वे स्वयं इस से आगे उनके यहां भोजन तक करने को तैयार हैं तो उपस्थित मुसलमानों के फूँक मारने पर जाटवों की ओर से यह आग्रह किया गया कि इन शर्तों को वे, खास पिण्डरावल के हिन्दुओं से ही पूरा कराना चाहते हैं क्योंकि यह बात प्रकट थी कि वहां के सवर्ण हिन्दुओं को यह भय दिखाया गया था कि यदि वे चमारों को कूए आदि पर चढ़ावेंगे तो उनका बायकाट तथा ज़्यादती की जावेगी अत वे लोग भयभीत थे और सभा में उपस्थित नहीं हो रहे थे। बड़ी विकट समस्या उपस्थित हो रही थी। सिक्खों का एक जत्था पहले से वहां आकर उनको सिक्ख मत ग्रहण करने का उपदेश दे रहा था। मुसलमान बड़े प्रसन्न-चित्त काफ़ी संख्या में उपस्थित थे। तथा मौलवी लोग कलमा पढ़ाने के लिए आ चुके थे। कुछ स्वार्थी लोग आपस मे फैसला नहीं होने दे रहे थे। किन्तु भगवान की कृपा तथा कुछ महानुभावों के दो दिन के अथक प्रयत्न से परस्थिति पर काबू किया गया।

सेठ मूलचन्द जी (नु आढव) आगरा । ठाकुर कमलसिंह (आढव) अलागढ़ व ठा० नारायनसिंह जी प्रधान आर्य्य समाज पहासू के नाम उल्लेखनीय हैं। इस सम्बन्ध में बुलन्दशहर आर्य्य समाज के मन्त्री ठा० बलभद्रसिंह जी वकील का कार्य्य विशेष रूप से सराहनीय है, जिन्होंने बड़े परिश्रम से व दलीलादि से एक ओर तो मुसलमानों के पके पकाए कार्य्य को निष्फल किया तथा दूसरी ओर आढव भाइयों की माँगों को सवर्ण हिन्दुओं से पूरा कराया। रात्रि को बहुत से ब्राह्मण राजपूत व वैश्यादि सवर्ण हिन्दुओं ने आढव भाइयों के घरों पर उनके यहाँ का भोजन खाकर भ्रातृभाव का क्रियात्मक परिचय दिया। किन्तु उस इलाके में अभी वह कार्य्य समाप्त नहीं समझना चाहिये। वहाँ स्थाई रूप से प्रचार की आवश्यकता है। अन्य मतावलम्बी उन लोगों को नाना प्रकार से भ्रम में डाल रहे हैं।

ग्राम कमौना
रियासत छतरी

विधवा विवाह

एक विधवा श्रीमती रोशनी देवी का शुभ विवाह ४—१० ३६ को श्री टीकाराम जी नामक २० वर्षीय युवक के साथ आ० स० सलकिया में हुआ।

अन्तर्जातीय विवाह

गत २३ अक्तूबर को श्री अग्रसेन जी आचार्य विरजानन्द वेद विद्यालय अजमेर का विवाह ब० रघुनाथ प्रसाद जी आर्य्य मेम्बर वैद्य सोजतनगर की विदुषी पुत्री श्रीमती सौभाग्यवती देवी जी के साथ समारोह पूर्वक हुआ। वर की जन्म की जाति राजपूत तथा कन्या की क्षत्रिय है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन का ३२ वां वार्षिकमहोत्सव

२५ दिसम्बर से २८ दिसम्बर सन् ३६ तक गुरुकुल भूमि में बड़े समारोह के साथ होना निश्चय हुआ है। उत्सव की ज़ोरदार तैयारियां हो रही हैं। नवीन स्नातकों का दृष्टान्त वेद सम्मेलन, सार्वधर्म सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन, अनेकानेक प्रकार के मोटर शरीर और धनुर्विद्या के खेल, फुटबाल टूर्नामैंट तथा अन्तर्राष्ट्रीय विश्व विद्यालय वाद प्रतियोगिता आदि का विशेष योजनाएं की जा रही हैं। जनता को सादर सप्रेम निमन्त्रण है। इसी अवसर पर नवीन बालक भी प्रविष्ट किये जावेंगे।

नारायणस्वामी — कुलपति
भवदीय दर्शनाभिलाषी — बृहस्पति — मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल वृन्दावन

दान सूची सार्वदेशिक सभा बाबत मास अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर १९३६

१००) ला० रलाराम मेलाराम जी न्यू देहली (दलितोद्धारार्थ)

५००) श्री दीवान तुलसाराम जी हैदराबाद सिंध (आजीवन सदस्यता का शुल्क)

७०) ला० मेहरचन्द जी पुरा देहली (दलितोद्धारार्थ) १००) मद्दे

५) आ० स० भूड़ बरेली (आ० स० स्थापना दिवस)

सार्वदेशिक सभा की ८-११-३६ की अन्तरंग सभा के कतिपय निश्चय

नि० सं० २

नोटिस का विषय सं० ४ हैदराबाद सिन्ध-निवासी श्री दीवान तुलजाराम जी को सभा का आजीवन सदस्य स्वीकार करने का विषय पेश हुआ। श्री प्रधान जी ने प्रगट किया कि दीवान साहब ने नियमानुसार ५००) सभा को दे दिए हैं। सम्प्रति वे आर्य्य समाज मसूरी के सदस्य हैं और नियमानुसार आजीवन सदस्य बनाए जा सकते हैं। निश्चय हुआ दीवान साहब आजीवन सदस्य स्वीकार किए जावें—

नि० सं० ४

नोटिस का विषय सं० २-टिहरी (गढ़वाल प्रान्त) आर्य्य समाज के ट्रस्ट के निम्न नियम पेश होकर पढ़े गए और सर्व्व सम्मति से स्वीकृत हुए और यह भी निश्चय हुआ कि श्री० पं० गंगा प्रसाद जी चीफ जज को इसकी सूचना दी जाय —

नियम

(१) श्री गंगा प्रसाद ने २०००) श्रीमती सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा को नीचे लिखी शर्तों पर देना स्वीकार किया है।

(२) सभा इस रुपए को किसी अच्छे बैंक में वा अन्य स्थान में जमा कर देगी जिससे रुपया सुरक्षित रहे और यथासंभव अच्छा ब्याज मिल सके।

(३) पूर्वोक्त धन से जो ब्याज प्राप्त हो उसमें से आधा रुपया तक आवश्यकतानुसार आर्य्य समाज टिहरी को आर्य्य मन्दिर की वार्षिक मरम्मत के लिए दिया जाय।

(४) शेष रुपया आर्य्य समाज टिहरी को इस अभिप्राय से दिया जाय कि उससे १, २, ३ रुपए तक की मासिक छात्रवृत्तियां प्रताप हाई स्कूल, प्रिवेट पाठशाला वा कन्या पाठशाला टिहरी के छात्र और छात्राओं को दी जाय। दलित जाति के छात्र और छात्राओं का अधिकार इन छात्र वृत्तिया के लिए अन्य छात्र वा छात्राओं से अधिक होगा।

(५) ब्याज का रुपया डा० बेलीराम M B.B S प्रधान आर्य्य समाज टिहरी के पास अथवा जो

---

१४६ ≡) आ० प्र० सभा युक्त प्रान्त (पचमांश मद्धे)
१००) श्री० पं० गंगा प्रसाद जी चीफ जज (दलितोद्धारार्थ)
६००) श्री० सेठ जुगल किशोर जी बिड़ला (पर्वत इत्यादि में प्रचारार्थ)
१३॥) श्री० मेहर चन्द जी पुरी (मासिक दान)
१२१३।॥≡)

दान दाताओं को धन्यवाद
मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

प्रधान हों उनके पास प्रतिवर्ष सभा ऊपर लिखे कार्य्यों के लिए भेजा करेगी।

(६) यदि आर्य्य समाज टिहरी टूट जाय तो सभा को अधिकार होगा कि इस धन के ब्याज को टिहरी गढ़वाल राज्य के भीतर अथवा ब्रिटिश गढ़वाल में वैदिक धर्म्म के प्रचार में जिस प्रकार उचित समझे लगावे।

नि० सं० ६

नोटिस का विषय सं० ७—सभा की सर्विस में जो पुरुष हैं उन पर कुछेक प्रतिबन्ध लगाने से सम्बन्धित श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के निम्न प्रस्ताव पेश होकर सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए और यह भी निश्चय हुआ कि उपदेशकों को इस की सूचना दी जाय।

(१) सभा के अधीन जो उपदेशक कार्य्य करते हैं वे किसी समाज के अधिकारी नहीं होंगे।

(२) जो व्यक्ति सभा से निर्वाहार्थ धन लेता है वह सभा का सदस्य नहीं हो सकेगा।

नि० सं० ७

धर्म्मार्य्य सभा के लिए आगामि ३ वर्ष अर्थात् १६३६ से १६३६ तक के लिए नियम धारा ७ के अनुसार संन्यासियों, विदुषी देवियों, सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधियों तथा उन समाजों के प्रतिनिधियों के जहां प्रतिनिधि सभाएं नहीं हैं निर्वाचन का विषय पेश हुआ। श्री प्रधान जी की याददाश्त पेश होकर पढ़ी गई और निम्न प्रकार निर्वाचन स्वीकृत हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि शेष स्थानों की पूर्ति उचित समय पर आवश्यकतानुसार की जाय —

संन्यासी

(१) श्री स्वामी सर्वदानन्द जी
(२) „ „ नारायणस्वामी „
(३) „ „ स्वतन्त्रानन्द „

विदुषी देवियाँ

(१) श्रीमती विद्यावती विशारदा
(२) „ विद्यावती सेठ बी. ए.
(३) „ लक्ष्मी देवी

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि

(१) श्री पं० मुक्तिराम जी उपाध्याय
(२) „ „ ब्रह्मदत्त „ जिज्ञासु
(३) „ ला० ज्ञानचंद „
(४) „ पं रामचन्द्र „ देहलवी

समाजों के प्रतिनिधि

मद्रास—

(१) श्री० पं० धर्म्मदेव जी विद्यावाचस्पति।
(२) „ „ केशवदेव „ ज्ञानी

दक्षिण अमेरिका—

(३) „ पं० अयोध्या प्रसाद जी बी. ए.

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N. W R, आनरेरी सैक्रेटरी]

पंजाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड पर एक अनाथालय है जिसका नाम पञ्जाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथजी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्य शास्त्री मुलतान, तथा डा० गणेशी लाल जी M B B S हैं। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी हो नहीं, प्रत्युत मद्रास बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक में रहने वाले हिन्दू आर्य भाई भी करते रहते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पञ्जाब में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्गपर चल रहा है, यहा तक कि अब सरकार भी, जो चोरी किये हुए लड़के लड़किया उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको यहा रखती है। इस तरह से अनाथालय मे बच्चों की प्रवेश सख्या बढ गई है इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से स्थान काफी नही होता। इस न्यूनता को पूर्ण करने के लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, नवीन कमरे बनवाये जाय, जिससे स्थान का कष्ट मिट जाय और इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनों की सेवा में विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निरसहाय बच्चों को प्रवेश करने मे बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालों के जाल में फँसकर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जायेंगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के आधीन म्यूनिसपल कमेटी से मंजूर एक मिडिल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीनें का कार्य सिखाया जाता है तथा बाहर के लड़के भी इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लड़के इस काय को सीख रहे हैं। बीस क लगभग लड़के यहाँ से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ९५ लड़के और ७० लड़किया हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी, दरी, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप ही की ओर से आ रहा है जिससे यह संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक में पुण्य के भागी बनेंगे तथा हमें भी कृतार्थ करेंगे।

विषय-सूची

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N W R, आनरेरी सैक्रेटरी]

पंजाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड पर एक अनाथालय है जिसका नाम पञ्जाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथजी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्य शास्त्री मुलतान, तथा डा० गणेशी लाल जी M B B S हैं इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं, प्रत्युत मद्रास बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक में रहने वाले हिन्दू आर्य भाई भी करते रहते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पञ्जाब में ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति के मार्गपर चल रहा है, यहां तक कि अब सरकार भी, जो चोरी किये हुए लड़के लड़कियां उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको यहां रखती है। इस तरह से अनाथालय में बच्चों की प्रवेश संख्या बढ़ गई है इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से स्थान काफी नहीं होता। इस न्यूनता को पूर्ण करने के लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, नवीन कमरे बनवाये जायें, जिससे स्थान का कष्ट मिट जाय और इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनों की सेवा में विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालों के जाल में फँसकर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जायेंगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के आधीन म्युनिस्पल कमेटी से मंजूर एक मिडिल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीनें का कार्य सिखाया जाता है तथा बाहर के लड़के भी इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लड़के इस कार्य को सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहाँ से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ९५ लड़के और ७० लड़कियां हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारी महानुभावों से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी, दरी, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप ही की ओर से आ रहा है जिससे यह संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक में पुण्य के भागी बनेंगे तथा हमें भी कृतार्थ करेंगे।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

॥ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ॥

वर्ष १० | पौष १९९३ जनवरी १९३७ ई० | दयानन्दाब्द ११२ | अङ्क ११

॥ वेद की शिक्षाएँ ॥

आयुर्मे पाहि प्राणं पाह्यपानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि ।
श्रोत्रं मे पाहि वाचं मे पाहि मनो मे जिन्वात्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ ॥

इस मन्त्र के अन्दर परमेश्वर से आयु प्राण अपान मन और वाणी आदि के साथ मन और आत्मा की रक्षा तथा तृप्ति वा शक्ति वृद्धि के लिये प्रार्थना की गई है, जिसका तात्पर्य यही है कि भगवान् की कृपा से हम सब अपनी इन्द्रियों, मन तथा आतमा की सब प्रकार के पापों और दुर्व्यसनों रक्षा करते हुए उनकी शक्तियों के विकास में समर्थ हो सकें, क्योंकि यह बात साफ है कि दुरुपयोग करने से इन्द्रिय, मन तथा आत्मा की शक्तियां क्षीण होती हैं ।

॥ ॥

सम्पादकीय—

सम्राट का राज्य-सिंहासन परित्याग

गत १० दिसम्बर को ब्रिटिश साम्राज्य के सम्राट आठवें एडवर्ड ने राज्य सिंहासन का परित्याग कर दिया। यह सिंहासन परित्याग ससार के इतिहास में अपने ढंग का एक ही है। सम्राट एडवर्ड का श्रीमती सिम्पसन नामक एक अमरीकन महिला से प्रेम हो गया। सम्राट उससे विवाह करना चाहते थे। श्रीमती सिम्पसन कुमारी कन्या नहीं हैं। वे एक अधेड़ उम्र की स्त्री हैं। वे अपने पहले पति को तलाक दे चुकी है। सम्राट से विवाह करने के लिये उन्होंने अपने दूसरे पति को तलाक देने के लिए न्यायालय में अभियोग उपस्थित कर रक्खा है। ब्रिटिश सम्राट एक वैधानिक सम्राट हैं। उनकी सरकार उनके आधीन नहीं है। यह घटना हम पर कई प्रभाव छोड़ती है। उन पर हम यहां विस्तृत विचार करना आवश्यक समझते हैं।

इंगलैण्ड की प्रचलित सामाजिक प्रथाओं के प्रकाश में जहां तलाक जायज है श्रीमती सिम्पसन स्त्रीत्व का निकम्मा नमूना थीं, यह नहीं माना जा सकता है परन्तु यह भी नहीं स्वीकार किया जा सकता है कि वे इस नाटक की आदर्श अभिनेत्री बनने के योग्य स्त्री थी। लोगों की आम धारणा यह है कि सम्राट एडवर्ड विवाहित स्त्री से जिसका पति जिन्दा है इस प्रकार का प्रणय सम्बन्ध न करते तो अच्छा था।

शायद सम्राट प्रधान मन्त्री बाल्डविन, मन्त्रीमण्डल और धर्माधिकारियों इत्यादिकी सम्मति और परामर्श के विरुद्ध शादी कर लेते और गद्दी परित्याग न करते या करने के लिए मजबूरन होते परन्तु अखबारों के पढ़ने से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि सम्राट साधारण लोगों में लोकप्रिय थे और वे लोग श्रीमती सिम्पसन के साथ उनके विवाह के विरुद्ध न थे परन्तु शायद वे घरेलू संघर्ष में अपने देश को नहीं पड़ने देना चाहते थे विशेषत ऐसे समयमें जब युद्धकी सम्भावना देख पड़ती है उन्होंने गद्दी परित्यागसर्वश्रेष्ठ समझा।

जब दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य पर आसीन बने रहने और अपनी पसन्द की स्त्रीसे जिससे वे शादी का वचनदे चुके थे इन दोनों में उन्हें चुनाव करना पड़ा तो उन्होंने अन्तिम मार्ग पसन्द किया। यह बात स्पष्ट करती है कि वे भद्र पुरुष हैं और अपनी बात के धनी हैं। इस पसन्द के लिए हम उनका आदर करते हैं। यद्यपि वधू, के उनके चुनाव को पसन्द नहीं करते हैं।

यद्यपि सम्राट एडवर्ड ने प्रेस में आए हुए एक मात्र इस कारण पर गद्दी परित्याग किया है कि वे अपनी पसन्द की स्त्री से शादी करने के लिये आज़ाद होना चाहते थे तथापि और भी कारण हों जिनका उन पर खास प्रभाव पड़ा हो।

दूसरे लोग जानते हैं और शायद उन्हों ने भी अनुभव किया होगा कि वे बहुत ज्यादा प्रजातंत्रवादी हैं अपने व्यक्तित्वपर ज्यादा ध्यान देते हैं और अपनी इच्छा रखते हैं। ये सब बात वेल्स में दलित वर्गों के उनके दौरेसे स्पष्ट होगई थीं जब वे उन लोगोंके

साथ कधे से कधा भिडाते और उनके लिए कुछ करने की इच्छा प्रगट करते हुए देख पडे थे और जो मन्त्री मंडल के खडन का एक रूप था।

श्रीमती सिम्पसन के सम्बन्ध मे बहुत कुछ अखबारों मे छपा है। हमने पढ़ा था कि उन्होंने स्थिति से पृथक होने के लिए प्रगट कर दिया था जिसका अर्थ सम्राट को उन के साथ शादी के वचन से मुक्त करना गद्दी पर बने रहने मे उन्हे समर्थ बनाना और वैधानिक सघर्ष पर विजय पाने मे ब्रिटेन की सहायता देना था। लेडी सिम्पसन की यह बात उच्च थी और इसके लिए वह प्रशसा की अधिकारिणी हैं। एडवर्ड अष्टम ने इस घोषणा का भी फायदा नहीं उठाया यह बात उन्हे भी ऊँचा उठा देती है।

श्रीमती सिम्पसन एडवर्ड के इस महान त्याग के योग्य सिद्ध होंगी या नहीं यह कहना अभी कठिन है। हम नहीं जानते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य जैसे विशाल साम्राज्यकी सम्राज्ञी बनने के भाव से वे एडवर्ड अष्टमकी ओर आकर्षित हुई थी या नहीं। हम उनके दूसरे तलाक के विस्तृत हालात नहीं जानते हैं जिस से यह निर्णय किया जा सके कि भूत पूर्व सम्राट किसी सीमातक इसके लिए प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप मे जिम्मेवार थे या नहीं। अष्टम एडवर्ड और लेडी सिम्पसन के लिए अब तो कोई भी यही आशा कर सकता है कि अपनी तीसरी शादी के बाद भूत पूर्व राजा के प्रति वह निष्ठावान कर्त्तव्य परायण और स्थिर सिद्ध होगी जिससे भूतपूर्व सम्राट संसारको मस्तिष्क की उसी शान्ति का परिचय देने मे समर्थ हो सकें जिसका परिचय उन्होंने दिया है।

—

आर्य समाज और आगामी निर्वाचन

पाठक अन्यत्र 'आर्यसमाज और असेम्बली चुनाव' से सम्बन्धित एक वक्तव्य पढेंगे और उसी के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का वक्तव्य भी पढेंगे जिसमे आर्यसमाज की इन चुनावों के सम्बन्ध मे नीति स्पष्ट की गई है। इस सम्बन्ध मे सहयोगी 'दिवाकर' प्रकाश डालता हुआ लिखता है—

'कांग्रेस और आर्य समाज' शीर्षक एक विज्ञप्ति पूज्य रामदेवजी आचार्य श्री नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ ज्वालापुर आचार्य देवशर्मा जी गुरुकुल काँगडी प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति तथा अन्य कतिपय आर्य बन्धुओं के हस्ताक्षर से प्रकाशित हुई है। इस विज्ञप्ति मे कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की देश सेवाए एव उनके समय २ पर किये गये त्याग आदि का जो भावपूर्ण उल्लेख हैं उससे हम सर्वांश म सहमत हैं। हम इस बात को भी पूर्णतया मानने को तैयार है "कि स्वतन्त्रता के लिए कष्ट सहन करने वाले तथा कारागार की यातनाये भुगतने वालो मे आचार्य दयानन्द के अनुयायी आर्य सामाजिकों की सख्या अनुपात से सब से अधिक है।" पर हम इस बात से कभी सहमत नहीं हो सकते कि चूं कि काँग्रेस के अब तक के कार्य में व्यक्तिगत रूप से बहुत से आर्य समाजी भाग लेते रहे हैं और काँग्रेस के प्रोग्राम को बढ़ाते रहे हैं इसलिए आर्यों को काँग्रेस के प्रोग्राम में सभी बातो को आँख बन्द करके अपना लेना चाहिये। काँग्रेस के स्वतन्त्रता के ध्येय को हम पुनीत अवश्य

समझते हैं। पर उसकी प्राप्ति के लिए कॉंग्रेस जो मार्ग अब भी निश्चय करें उसे हम महर्षि के अनुयायी होते हुए महर्षि के सिद्धान्तों की कसौटी पर ठोस सत्य देख कर ही अपना सकते है।

कॉंग्रेस की नीति अनको सामाजिक धार्मिक एव राजनैतिक प्रश्नो पर इतनी उलझी हुई और अस्पष्ट है कि आर्य समाज किसी प्रकार भा कॉंग्रेस का सामूहिक समर्थन नहीं कर सकता। आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही हिन्दू जाति के उद्धार और उसके अधिकारों की रक्षा म अपने समय का महत्व पूर्ण समय बिताया है। आज कॉंग्रेस के नेता सम्प्रदाय वाद के विरोध की आड़ मे राष्ट्रीय एकता की इस प्रकार की गूंज में हिन्दू जाति की धार्मिक भावनाओ को मिटा डालने के प्रयत्न मे है। सम्प्रदाय वाद के विरोध में कही जान वाली बाते सुनने मे, जितनी सुन्दरम् होती हैं उतना वे 'सत्य शिव' न होती है न हो सकती है। कांग्रेस का जो दृष्टि कोण है उसे देखते हुये आर्य समाज का "कृण्वन्तो विश्वमार्यम यह मूल मन्त्र धोखे की टट्टी माऽम होता है। स्वय उक्त विज्ञप्ति के लेखकों ने एक ही पैरे में दो बातें कह डाली हैं। वे लिखते हैं कि —

"आर्य समाज सम्प्रदाय वाद (Communalism) का अपने जन्म काल से विरोधी रहा है और जिस समय तक यह सम्प्रदाय वाद का घृणित रोग भारत से दूर न होगा आर्य समाज के कार्य क्रम का विशेष भाग सब ही जातियों तथा मजहबों से साम्प्रदायिकता को मिटा कर शुद्ध वेदानुकूल बुद्धिवाद का प्रचार करना है"। इस वाक्य में उसी गोल मोल शब्दाडम्बर के भीतर वस्तु स्थिति को छिपाने का असफल प्रयत्न किया गया है जैसा कि कॉंग्रेस के बड़े २ नेता साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध में बोलते या लिखते समय करने हैं। सम्प्रदाय वाद को नाश किये बिना आर्य समाज चैन न लेगा तो तब तक क्या करेगा? क्या मुसलमान और दूसरे सम्प्रदायों की कलुषित हिन्दू हित विरोधिनी नीति को कॉंग्रेस की तरह चुपचाप सहन कर पक्षड़ नीति का अनुसरण करके आर्य समाज सम्प्रदाय वाद का नाश कर सकता है? साम्प्रदायवादका नाश करनेसे पहिले जिस वेदानुकूल बुद्धिवाद की स्थापना समाज करना चाहता है उसके लिये महान सङ्घर्ष होगा और वह सङ्घर्ष स्वय एक सच्चे सम्प्रदाय वाद का भयानक रूप होगा। हम रा अटूट विश्वास है कि सम्प्रदायवाद का नाश केवल घोर सम्प्रदायवाद के कठोर रूप से ही हो सकता है न कि दूसरे सम्प्रदायों के डर से अपनी आवाज को गले मे घोट डालने से। इसलिये इस विज्ञप्ति के विद्वान् प्रकाशको से हम पूर्णतया सहमत हैं कि "इस सम्प्रदायवाद को नाश करने मे समाज ने किसी से भी समझौता नहीं किया न आगे करेगा" स्वय इतना ठोस लिख कर भी विद्वान विचारक यह आशा क्यों करते हैं कि आर्य समाज कॉंग्रेस के समझौते के सन्मुख सर झुका देगा। कांग्रेस के नेता स्वयं यह ऐलान कर चुके हैं कि साम्प्रदायिक निर्णय मस्जिद के सामने बाजा, हिन्दुओं की आरती नमाज हिन्दी हिन्दुस्तानी आदि प्रश्नों पर कॉंग्रेस ने जो नीति निर्धारित की है वह किसी सत्य कल्याण का मार्ग अनुसन्धान करके नहीं अपितु, वह नीति हिन्दू मुसलमानों के विरोधी विचारों का स्वर्ण समझौता है। कॉंग्रेस भले ही समझौतों के बल पर क्षणिक राजनैतिक

विजयो को प्राप्त करना अपना चरम लक्ष्य बना ले। पर आर्य समाज के संदेश वाहक दयानन्द के अनुयायी विरोध और लोकमत को ठुकरा कर सत्य सिद्धान्त का प्रचार ही कर सकते हैं। अतएव इस विज्ञप्ति के विद्वान हस्ताक्षर कर्त्ताओं की शुद्ध भावना का आदर करते हुए भी हम इसका समर्थन नहीं कर सकते। हमारी सम्मति में नवीन धारा सभाओ के निर्वाचन मे आर्य समाज का स्पष्ट कर्तव्य यह है कि वह उन्हीं व्यक्तियों और दलों का समर्थन करे जो हिन्दू जाति की रक्षा को दृष्टि में रख कर हिन्दुओं के धार्मिक राजनैतिक एव सामाजिक अधिकारो के प्रश्नों पर बिना किसी खां साहब या मौलाना साहब की रू रियायत किये स्पष्ट शब्दों मे हिन्दुओं के लिए तन कर खड़ा होने की प्रतिज्ञा करें। इस विज्ञप्ति मे लिखा है कि 'हिन्दी को भारत मे राष्ट्र भाषा के पुनीत पद पर प्रतिष्ठित करने का सर्व प्रथम श्रेय क्रान्तदर्शी देव दूत दयानन्द को है" हम इससे अक्षरश सहमत हैं पर कॉंग्रेस के "क्रांतदर्शियो" ने तो मुस्लिम 'देव दूतों' को प्रसन्न रखने के लिये हिन्दी के स्थान में एक समझौता 'हिन्दुस्तानी' के नाम से आविष्कार कर आचार्य दयानन्द के सन्देश को कम्बल डालकर घोंटने का यत्न किया है। इस स्पष्ट सत्य को जानते हुए भी आर्य समाज का सामूहिक सहयोग कॉंग्रेस के लिए मिलना किस प्रकार ऋषि के सिद्धान्तों के अनुकूल हो सकता है? हमारी सम्मति में वर्तमान परिस्थिति मे आर्य समाजी केवल कॉंग्रेस नेश्नलिस्टों को तथा हिन्दू सभा के उम्मेदवारो को अपनी राय देकर ही महर्षि के संदेशों की रक्षा कर सकते हैं। कॉंग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी कांग्रेस की हिन्दू हित रक्षक शाखा है। हिन्दू महासभा क्या है इसे यहॉं बताने का आवश्य कता नही।

हिन्दू महासभा ने अब तक हिन्दू जाति की रक्षा के लिए जो विशेष प्रयत्न और ठोस सेवायें का है उनके विषय में सभव है कि दा सम्मतिया हों पर इस से कौन इन्कार कर सकता है कि देश का उद्धार और हिन्दू जाति की रक्षा केवल हिन्दू सगठन से हो सकती है। हिन्दू महासभा म अब तक क्या किया? इस प्रश्न के उत्तर से हिदू महासभा क्या कर सकती है इसका कोई सबन्ध नही। क्या कोई भी विचार शील व्यक्ति इस बात क्या विरोध कर सकता है कि २१ करोड़ हिन्दुओं का जाता जागता संगठन होने के बाद देश या जाति पर अन्याय करने का साहस करने वाले ही न रहेंगे अतएव हम स्पष्ट रूप से यह घोषणा करना चाहते हैं कि जब तक कॉंग्रेस साम्प्रदायिक मामलो पर अपनी खोखली नीति को छोड़कर स्पष्ट शब्दों मे हिन्दुओ के हित की रक्षा करने का साहस नहीं करती है तब तक आर्य समाज के लिए किसी दशा म भी कॉंग्रेस का सामूहिक समर्थन सम्भव नहीं।

स्पष्टी करण

श्री० म० श्री कृष्ण शर्मा ने 'प्रभाकर के १६ दिसम्बर १६३६ के अङ्क मे 'प्रवासी भारतीय और आर्य्य समाज' शीर्षक लेख म सभा के देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर प्रचार निधि की जिसकी स्थापना मथुरा शताब्दी के अवसर पर संगृहीत धन से हुई थी आलोचना की है और उस आलोचना के सिलसिले म दिसम्बर १६३४ के सार्वदेशिक' की एक टिप्पणी का

एक अंश भी उद्धृत किया है जिसमें 'प्रकाश' पत्र की सभा की अमेरिका प्रचार विषयक धन की योजना के समर्थन का स्वागत करते हुए उस योजना को सफल बनाने के लिये आर्य्य जनता से अपील की गई थी और जिसमें प्रसङ्ग वशात यह प्रगट किया गया था कि सभामें जो धन शताब्दी के समय का जमा है और जो उसकेबाद उसमें जमा हुआ है उस सबके सूदसे मद्रास मे प्रचार कार्य्य हो रहा है। प० जी की आलोचना का सार निम्न प्रकार है।

(१) शताब्दी के अवसर पर जो धन संग्रह हुआ था और जो सभा में विदेश प्रचारके नाम से जमा है वह प्रवासी-भारतीयों में प्रचार के निमित्त संग्रह हुआ था।

(२) वह धन स्वदेश के प्रचार के लिये न था इसलिये मद्रास प्रान्त में खर्च करना अनुचित है।

(३) अमेरिका इत्यादि मे भी प्रवासी प्रचार' के बलिदान पर यह धन खर्च नहीं होना चाहिये।

(४) यह धन केवल प्रवासी भारतीयों के ही प्रचार में व्यय होना चाहिये। यदि सभा ऐसा न करे तो आन्दोलन करके ऐसा करने के लिये सभा को वाध्य करना चाहिये इत्यादि

हमारी टिप्पणी मे प्रयुक्त 'विदेश प्रचार' शब्द से हमारा अभिप्राय 'देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर प्रचार निधि से ही था। हमे प्रसन्नता है कि प० श्रीकृष्ण जी को हमारे अस्पष्ट शब्दसे भ्रम नहीं हुआ है। भ्रम हुआ समझा जाता, यदि वे इस निधि को केवल विदेश प्रचार की निधि ही समझने और विदेश प्रचार में केवल प्रवासी प्रचार' न समझ कर उसमें युरोप और अमेरिका इत्यादि में प्रचार भी सम्मिलित समझते। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि शताब्दी पर अपील पर जो धन संग्रह हुआ था वह अपील देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर प्रचार के नाम में हुई थी इसकी प्रामाणिकता के लिए पं० श्री कृष्ण जी को शताब्दी महोत्सव की रिपोर्ट तथा सभा के वार्षिक विवरण पढ़ने चाहियें। इस निधि के धन को स्वदेश में खर्च करने का सभा को अधिकार है और वह इसी अधिकार के आधार पर मद्रास प्रान्त में खर्च कर रही है। भारत से बाहर प्रचार पर भी वह व्यय करती रहती है इसके लिये भी वे सभा के वृत्तान्त देखें। आर्य्य जनता इन सब बातों के सम्बन्ध में अन्धकार में न रक्खी गई है और न है ऐसी अवस्था में सभा के विरुद्ध आन्दोलन की प्रेरणा जो अर्थ रखती है इसका निर्णय स्वयं पं० श्री कृष्ण करें। जहाँ तक हम समझते हैं विदेश प्रचार के सम्बन्धमें धन की समस्या या सभा की आर्थिक नीति इतनी जटिल नहीं है जितनी योग्य प्रचारकों की प्राप्तिकी समस्या जटिल है। प्रवासी भाईयों में प्रचार के लिये सभा श्री कृष्ण जी तथा उन जैसा विचार रखने वालों से कम चिन्तित नहीं है और न उसे किसी विशेष प्रेरणा की जरूरत है। जिस अनुपात में उसके साधन आज्ञा देते हैं और जितनी योग्य प्रचारकों की सेवाओं से लाभ उठाने की वह अवस्था में होती है वह प्रचार करती और सेवाओं से लाभ उठाती है। ट्रीनीडाड इत्यादि में पं० अयोध्याप्रसादजी द्वारा सफल और शानदार सभा का कार्य्य इस बात का जीता जागता प्रमाण है।

—अध्यात्म-सुधा-धारा

(श्री म० नारायण स्वामीजी महाराज के एक प्रवचन का सार)

—:—

मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति होना चाहिए जिस से उसके कर्त्तव्य दूसरी ओर न जा सकें। कहा गया है.—

"शरीर में आने जाने वाला जीव अमर है। परन्तु यह शरीर केवल भस्म पर्य्यन्त है, इसलिए अन्त समयमें हे जीव! ओ३म्‌का स्मरण कर, बल प्राप्ति के लिए स्मरण कर, अपने किए हुए का स्मरण कर।"

छान्दोग्योपनिषद् में एक स्थल पर एक प्रकरण है। कृष्ण आंगिरस घोर ऋषि के पास शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उक्त ऋषि ने कृष्ण को आखरी बात यह बतलाई कि जब आदमी मरता हो तब उसके मुख से ये तीन वाक्य निकलने चाहिएँ।

(१) हे ईश्वर! आप एक रस रहने वाले हैं।
(२) हे ईश्वर! आप अविनाशी हैं।
(३) हे ईश्वर! आप सर्व जीवनप्रद सूक्ष्मतम हैं।

इन्हीं का उच्चारण करते हुए दुनियां से रुखसत हो जाना चाहिए। कृष्ण इस शिक्षा को सुनकर अपिपासु हो गए। कृष्ण ने क्यों यह समझा कि वे अपिपासु हो गए? यह मृत्यु समय का एक कर्त्तव्य है। जब हम इस बात पर विचार करते हैं तब हमारे सामने मन्त्र का वह भाग कि "तुम मृत्यु समय पर ओ३म् का स्मरण करो आता है।"

वेद के सब मन्त्रों को हम एक दृष्टि से दो भागों में बाट सकते हैं। एक 'उपदेश' और दूसरा 'नियम' भाग है। ब्रह्मचर्य्य-पालन इत्यादि उपदेश हैं। इनका पालन करना न करना हमारे अधीन है परन्तु हम नियमों का उल्लङ्घन नहीं कर सकते। यह हमारे अधीन नहीं है। ऊपर के मन्त्र में उपदेशरूप में 'उसको याद कर' कहा है और 'अपने किए हुए को याद कर' नियम के रूप में है। हम उसका उल्लङ्घन नहीं कर सकते।

मनुष्य जीवन के २ भाग

मनुष्य जीवन २ भागों में बँटा हुआ है—

(१) मृत्यु से पूर्व का
(२) मृत्यु शय्या का

जब मनुष्य पहले भाग में होता है तब उसे कर्म करने की पूरी स्वतन्त्रता होती है लेकिन जब वह मृत्यु शय्या पर होता है तब यह स्वतन्त्रता छिन जाती है। दूसरा भाग, वस्तुतः पहले भाग का चित्र होता है अर्थात् मृत्यु से पूर्व्व की परिस्थितियों और प्रभावों का मृत्यु शय्या का भाग फोटो होता है और यही फोटो दुनिया के सामने आ जाया करता है। अतः स्पष्ट है कि जीवन के पहले भाग में अर्थात् मृत्यु से पूर्व अच्छे कर्म करने चाहिएँ। देखना यह है कि इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में दुनिया का अमल कैसा है? यदि वह अमल में आ रहा हो तब तो इसकी परवाह करनी चाहिए इसकी जाच के लिए हम ऐतिहासिक दुनिया में पैठते हैं।

महमूद गजनवी का उदाहरण

'महमूद गजनवी गजनी का राजा था। उस ने भारत पर कई बार चढ़ाई की थी। उसके जीवन का उद्देश्य उचित या अनुचित किसी भी रीति से धन-संग्रह करना था। उसने गजनीको सोने चांदी से भर दिया था। यहां उसके जीवनका पहला भाग खत्म होता है। इसके बाद हम उसे दूसरे भाग अर्थात मृत्यु शय्या पर पड़ा देखते हैं। वह मरते समय सोने चांदी के ढेर अपने सामने लगवाता है। उस ढेर पर दृष्टि दौड़ाता है। उसी क्षण उसके मन में एक विचार उठता है कि मेरी ही आज्ञा से यह ढेर लगे हैं परन्तु यदि मैं चाहूं तो इसमें से जरा भी अपने साथ नहीं ले जा सकता। जब मजबूरी देखी तो रो पड़ता है और धन पर दृष्टि रखते हुए ही यहा से रुखसत होजाता है। साराश यह है कि जिस प्रकार जीवन पर्य्यन्त उसकी दृष्टि धन पर ही रही उसी प्रकार अन्तिक समय में भी धन पर ही रही।'

महाराणा प्रताप का उदाहरण

महाराणा प्रताप भारत के चमकते हुए एक रत्न थे। भारत के इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। चित्तौड़ और उदयपुर उनके अधिकार से निकल चुके थे। उन की प्राप्ति के लिये उन्होंने अनुपम त्याग किया। अकबर से युद्ध किया। सुन्दर रीति से अपने कर्त्तव्य का पालन किया और अन्त में चित्तौड़ और उदयपुर प्राप्त किए। यहीं उनके जीवन का पहला भाग समाप्त होता है। वे मृत्यु-शय्या पर पड़े थे। उनके निकट सरदार गण खड़े थे। उन्होंने उस समय एक बड़ी आश्चर्य्य-जनक बात देखी और वह यह थी कि उन्हें महाराणा प्रताप की हालत एक लोभी व्यक्ति की हालत के सदृश देख पड़ी। सरदार परेशान थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बात है जिसकी वजह से महाराणा के प्राण अच्छी तरह नहीं निकल रहे हैं। सरदारों ने पूछा, "महाराज! क्या हाल है?" महाराणा प्रताप कहते हैं।—

"सरदारो! मुझे विश्वास दिलाओ कि मेवाड़ उसी प्रकार स्वतन्त्र रहेगा जिस प्रकार मैं ने स्वतन्त्र किया है" सरदारों ने विश्वास दिलाया और विश्वास दिलाते ही उनकी आत्मा निकल गई।

फ्रांस के राजा पीटर का उदाहरण

फ्रांसका एक राजा पीटर था। उन दिनों फ्रांस छोटी छोटी रियासतों में बंटा था। एकतन्त्र राज्य न था। वह धर्म्मात्मा था। येरुशलम तुर्कों के अधिकार में चला गया था। यह वह समय था जब येरुशलम की प्राप्ति के लिए ईसाई लोग धर्म-युद्ध कर रहे थे। पीटर भी येरुशलम की प्राप्ति के लिये कई लड़ाइया लड़ चुका था परन्तु सब में हार गया था। उसके जीवन का उद्देश येरुशलम की प्राप्ति था। उसके जीवन का पहला भाग समाप्त हो जाता है। वह मृत्यु शय्या पर पड़ा है उसे उस समय मुल्क की चिन्ता न थी, उत्तराधिकारी की न थी, चिन्ता थी तो येरुशलम की थी। वह तीन बार "येरुशलम" का उच्चारण करते २ दुनिया से रुखसत हो गया। सार यह है कि मृत्यु शय्या पर दुनिया के सामने उसके पूर्व

भाग का पूरा २ फोटो आ गया था।

ऋषि दयानन्द का उदाहरण

ऋषि दयानन्द का चौथा उदाहरण है। उनका उद्देश्य वेद का प्रचार और प्रजा को आस्तिक बना देना था। उन्होंने सब कष्ट इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सहे और हर प्रकार का त्याग किया। वे मृत्यु शय्या पर पड़े हैं। लोग दूर २ से आए हुए हैं। उन्हीं मे प० गुरुदत्त भी हैं। प० 'गुरुदत्त स्वामीजी का अन्तिम समय देखने के लिए उत्सुक हैं। वे ऐसी जगह खड़े हो जाते हैं जहा से वे स्वामी जी को भली प्रकार देख सकें परन्तु स्वामीजी उन्हें न देख सकें। स्वामीजी वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हैं। गायत्री का पाठ करते हैं। गुरुदत्त की दृष्टि स्वामीजी के चेहरे पर है। स्वामी जी प्रसन्न वदन हैं। गुरुदत्त पक्के नास्तिक थे। उनके दिमाग में लासास जैसे वैज्ञानिक घर किए हुए थे जो ईश्वर को नहीं मानते थे और कहते थे कि उन्हें अपनी सफल से सफल रचनाओं और आविष्कारों मे ईश्वर की कहीं जरुरत ही महसूस नहीं हुई। प्राण त्यागने से पूर्व स्वामीजी के चेहरे पर एक मुस्कराहट आती है। यह मुस्कराहट दिव्य थी। इसी मुस्कराहट पर गुरुदत्त मुग्ध होजाते हैं और उनके हृदय से नास्तिकता तिरोहित होजाती है। स्वामीजी, "प्रभो ! तेरी इच्छा पूर्ण हो।" यह कह कर प्राण त्याग देते हैं।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त केवल सिद्धान्त ही नहीं वरन् दुनिया के अमल मे भी आता रहता है। वह समय; परीक्षा का होता है। यह परीक्षा मृत्यु रूपी परीक्षा है। इसमें सफलता प्राप्त करना मनुष्य के लिए जरूरी है। इसके लिए उसे पूरी २ तय्यारी करनी चाहिए। शिक्षा यह है कि जब अन्त समय आए तब दुनिया के लोग मनुष्य को उस मृत्यु रुपी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हुए देखें। उस मे उत्तीर्ण होने के लिए उसके एक स्मरण की शर्त जरूरी है। यदि ऐसा हुआ तो उत्तीर्ण हुआ समझो। यह तब ही संभव है जब मनुष्य उपनिषद् की कर्त्तव्यों के सम्बन्ध मे निम्न शिक्षा पर पूरा २ अमल करें।

(१) ईश्वर सर्वत्र व्यापक है।

(२) ससार मे जिन चीजों का तुम उपभोग करो उनमें केवल प्रयोगाधिकार समझ कर ही भोग करो।

(३) दूसरों के धन को अपहरण करने की चेष्टा मत करो।

(४) पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करो परन्तु जो कर्म करो उसे कर्त्तव्य समझ कर ही करो।

(५) अपनी आत्मा के अनुकूल काम करो।

यदि इस शिक्षा पर न चलेगा तो कभी भी 'ओ३म्' का स्मरण न कर सकेगा। इस लिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि इस प्रकार का यत्न करे जिससे जब परीक्षा का समय आए तो उस मे पास हो।

—भारत की व्यावसायिक उन्नति

भारतीय कर्म्म-सिद्धान्त का स्पष्टीकरण

(लेखक—एक अनुभवी पत्रकार)

(२)

बहुधा भारत वासियों की मनोवृत्ति की निन्दा की जाती है और औद्योगिक दृष्टि से भारतवर्ष के पिछड़ेपन के मुख्य कारणों में से एक कारण के रूपमें वह प्रगट भी की जाती है। इसके लिए उद्योग शीलता और व्यावसायिक कुशलता के विकास के लिए अवसरों और सहूलियतों का अभाव जितना जिम्मेवार है उतना जनता का दिमाग नहीं है। यदि भारतवर्ष में अंग्रेजी शिक्षा के प्रारम्भ से ही जनता के ट्रेनिङ्ग की व्यवस्था हुई होती, तो उन्होंने भी संसार के उन्नत राष्ट्रों के सदृश अपने को योग्य साबित किया होता।

यह कल्पना करना भी भूल है कि कर्म सिद्धात जो भारतीयों की आत्मा पर दृढ़ अधिकार किए हुए हैं, भारतीयों में व्यावसायिक उद्योग-शीलता के अभाव के लिए जिम्मेवार हैं। कर्म सिद्धात अकर्मण्यता और भीरुता को हरगिज प्रोत्साहन नहीं देता है और न यह सिद्धान्त निराशा की फिलासफी है और न सुस्ती और कमजोरी की नीति। उसके आलोचकोंकी कथनी और इसके झूठे अनुयायियों की करनी के यह सर्वथा विरुद्ध है। ठीक न समझने के कारण ही यह सिद्धान्त घातक सिद्धान्त समझ लिया गया है। यह सिद्धात तो मनुष्य को लोक परलोक दोनों की सिद्धि में सहायता देता है क्यों कि यह उन शक्तियों पर विजय पाने के लिए जो उसको गुलाम बनाने की कोशिश करती रहती हैं, मनुष्य की आभ्यन्तरिक शक्ति को प्रेरणा करता है।

इस सिद्धान्त का अभिप्राय अपनी परिस्थितियों पर शासन करनेके लिए मनुष्यको स्वतत्रता न देना नहीं है वरन् यह तो प्रकृति के हाथों में अपने को खिलौना समझनेके मनुष्य के विचार का बलपूर्वक खंडन करता है। गीता तो वीरता के इस भाव की घोषणा करती है—

"मनुष्य को स्वयं अपनेको ऊँचा उठाना चाहिए उसे अपने आत्मा को कमजोर नहीं होने देना चाहिए। आत्मा ही मनुष्यका मित्र है और आत्मा ही शत्रु है।" कर्म सिद्धान्त स्पष्ट रीतिसे बतलाता है कि मनुष्य सिर्फ वृत्तियों का ही समूह नहीं है वरन् वह आत्मा है जो मानवी क्रिया के नियम पर शासन कर सकता है और कार्य्य और कारण के प्रभावों का जिस प्रकार चाहे उसी प्रकार निराकरण कर सकता है। इस सिद्धान्तकी फिलासफी ने नहीं वरन् इसकी ग़लत व्याख्या तथा प्रक्रिया ने देश की आर्थिक तथा अन्य प्रकार की उन्नति में बाधा पहुँचाई है। आध्यात्मिक प्रयत्न पर जोर जैसा कि भारत के शास्त्रों और साहित्य में देख पड़ता है भारतीय चरित्रकी अनेक बार कमी बतलाई गई है और यह कमी देश की साम्पत्तिक उन्नति में रोड़ा अटकाने वाली सिद्ध कीगई है। जीवन की फिला-सफीको आलोचकों ने कैसा ग़लत समझा है और

उसके झूठे अनुयायियोंने उसका कैसा घातक प्रयोग किया है, यह भी इस बात का एक उदाहरण है। यह जरूरी नहीं है कि भौतिक दृष्टिसे आध्यात्मिक जीवन ग़रीबी और दीनता का जीवन हो।

आध्यात्मिक संस्कृति का अर्थ राष्ट्र की भौतिक उन्नति की नितान्त अवहेलना नहीं है। भारतीय ऋषियों द्वारा प्रचलित जीवन की फिलासफी धनोपार्जन को मानवी यत्न के एक वैध उद्देश्य के रूप में स्वीकार करती है और अर्थ जीवन के ४ पदार्थों में से एक पदार्थ माना गया है। ग़रीबी और बीमारी की वर्तमान अवस्था भारत की आध्यात्मिक संस्कृति की सूचक नहीं है। जब हम प्राचीन भारतकी अवस्था का स्मरण करते हैं, जब उसकी सम्पदा लोक प्रसिद्ध थी और जब उसका राष्ट्रीय जीवन का आध्यामिक स्वर सर्वोपरि था, तो हमें इस सबका कारण भारत की आध्यात्मिक संस्कृति ही देख पड़ता है। इसलिए जो वर्तमान में भारतवासियों की भयङ्कर निर्धनता को देश की आध्यात्मिक विरासत के आधार पर युक्ति-युक्त सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं वे भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ हैं, उसके वास्तविक स्वरूप, युग युगान्तरों में हुए उसके विकास और संसार के लिए उसके विशेष संदेश से भी अनभिज्ञ हैं। स्वामी विवेकानन्द ने बारम्बार देश वासियों को भारत की आर्थिक अवस्था सुधारने की प्रेरणा की क्योंकि अनिच्छित निधनता के मध्य में आध्यात्मिकता मुश्किल से पनप सकती है। भारत के ऋषियों ने भारत को संन्यासियों का राष्ट्र बनाने की कभी नहीं सोची थी यही कारण था वे 'अधिकार' के सिद्धान्त की रक्षा किया करते थे जो अपनो रुचि और योग्यता के अनुरूप जीवन-प्रवाह निश्चित करने की मनुष्य को प्रेरणा करता है। जीवन को आध्यात्मिक बनाने से उनका अभिप्राय लोक और परलोक दोनों की सिद्धि से ही था। दुनिया से लोगों को उपराम रखने से नहीं वरन् उसका उचित उपयोग करने से था। इस सिद्धान्त के अनुसार भारत की आध्यात्मिक विरासत भारतीयों के आर्थिक अभ्युत्थान के मार्ग मे रोड़ा नहीं है और व्यवसायवाद ही एक मात्र औषधि है जिससे वह अपनी निर्धनता और बेकारी की आफ़त को टाल सकता है। इसमें सन्देह नहीं व्यवसायवाद में बहुत से जोखम हैं और देश के जीवन और संस्कृति पर उसका असर भी बुरा होता है, परन्तु भारत के लिये जो मार्ग खुला हुआ है उसे वह अपनी जरूरतों के मुताबिक काम में ला सकता है और साथ ही व्यावसायिक जीवन से पीड़ित देशों के ऊपर अपनी सभ्यता का झण्डा फहरा सकता है।

सत्यार्थ-प्रकाश लेख-माला—

— रजस्वला गमन

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में द्वितीय समुल्लास के आरम्भ में ही निम्न पाठ लिखा है—

'जैसी ऋतु गमन की विधि अर्थात् रजोदर्शन के पांचवें दिवस से लेकर सोलवें दिवस तक ऋतु दान देने का समय है उन दिनों में से प्रथम के चार दिन त्याज्य हैं।"

महर्षि का यह लेख मनुस्मृति के आधार पर है क्योंकि मनुस्मृति अध्याय ३ में यह पाठ है।

ऋतुः स्वाभाविका· स्त्रीणा रात्रय षोडशस्मृता
चतुर्भिरितरै· सार्धमहोभि सद्विगर्हतै
अ० ३। श्लोक ४६।

अर्थात् स्त्रियों का ऋतु काल १६ रात का स्वाभाविक है प्रथम की चार रात दिन सहित निन्दनीय हैं।

संस्कार विधि गर्भाधान प्रकरण म महर्षि ने इसी श्लोक के अर्थ इस प्रकार लिखे हैं—

स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल १६ रात्रि का है अर्थात् रजोदर्शन दिन से लेके सोलवें दिन तक ऋतु समय है उनमें प्रथम की चार रात्रि अर्थात जिस दिन रजस्वला हो उस दिन से ले चार दिन निन्दित हैं प्रथम, द्वितीय, तृतीय, और चतुर्थ रात्रि में पुरुष स्त्री स्पर्श और स्त्री पुरुष का संबंध कभी न करे अर्थात उस रजस्वलाके हाथ का छुआ पानी भी न पीवे न वह स्त्री कुछ काम करे किंतु एकांत में बैठी रहे क्योंकि इन चार रात्रियों में समागम करना व्यर्थ और महारोग-कारक है। रज अर्थात स्त्री के शरीर में एक प्रकार का विकृत उष्ण, जैसा कि फोड़े में से पीव वा रुधिर निकलता है वैसा है।"

रजस्वला का वर्णन महाभारत में तीन स्थानों पर आता है—(संभव है और स्थानों पर भी हो मुझे तीन स्थान ही ज्ञात हैं)

(१) शांतिपर्व अध्याय २८२ में इन्द्र को ब्रह्म हत्या लगने का वर्णन है उसी प्रकरण में श्लोक ४६ का पाठ इस प्रकार है—

रजस्वलासु नारीषु यो वै मैथनमाचरेत्।
तमेषां यास्यति क्षिप्रं व्येतु वो मानसोज्वर।
म० भा० शांति, २८२-४६

ब्रह्मा कहते हैं। जो पुरुष रजस्वला स्त्री से मैथुन करेगा वह ब्रह्म हत्या उसी समय उस पर आक्रमण करेगी इस लिये तुम लोग अपनी मानसिक चिंता त्याग दो।

(२) अनुशासनपर्व अध्याय १०४ के आरंभमें युधिष्ठिर ने आयु वृद्धि के विषय में प्रश्न किया है उसका उत्तर भीष्म जी ने जो दिया है उसमें आयु घटाने के अनेक कारणों का उल्लेख है। उसी प्रकरण का १०८ श्लोक इस प्रकार है—

न दिवा मैथुनं गच्छेन्न च कन्या न च बंधकीम्।

न चास्नातां स्त्रियं गच्छेत्तथायु र्विन्दते महत्।
म० भारत अनुशासनपर्व १०४-४६

पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी ने इसके अर्थ इस प्रकार किये हैं। 'दिनमें मैथुन न करे, कन्या, रजस्वला और व्रती और अस्नात स्त्री गमन न करे इन नियमों का प्रतिपालन करने से दीर्घायु प्राप्त होती है।

मौसल पर्व में वर्णन है। जिस समय कृष्ण जी का स्वर्गारोहण हुआ और अर्जुन द्वारका से उनके कुछ सबंधियों को लेकर इन्द्रप्रस्थ की ओर आ रहा था उस समय पंचनद के समीप वर्तमान डेरा नवाब भावलपुर राज्यांतरगत के समीप उस पर आक्रमण हुआ और अर्जुन उस में पराजित हुआ। पश्चात् वह कुरुक्षेत्र भूमि में व्यासजी से मिला। जिस समय व्यासजीने उसे उदास देख कर कहा। यह श्लोक उसी बात को कहता है—

नख केश दशाकु भ वारिणा किं समुक्षित।
आवीरजानु गमन ब्राह्मणो वा हतस्त्वया॥ ५॥
युद्धे पराजितो वाऽसिगत श्री रव लक्ष्यैत।
न त्वा प्रभिन्न जानामि किमिद भर्तर्षभ॥ ६॥
महा भारत मौसलपर्व अध्यायाय ८० श्लोक ५-६

अर्थ—तुम नख के जल, केश के जल, दश वारि अथवा कु भ के मुखोदक से क्या अभिषिक्त हुए हो ? क्या आपने रजस्वला गमन किया है? वा ब्रह्महत्या की है, अथवा किसी युद्धमें पराजित हुए हो ? हे अर्जुन आपकी इस अवस्था का क्या कारण है।

इन तीनों स्थलों में रजस्वला गमन से हानि का उल्लेख है। प्रथम मे ब्रह्म हत्या पापसम माना है, द्वितीय में आयुक्षय का निमित्त रजस्वला गमन लिखा है, तीसरी में अर्जुन की बुरी अवस्था के कारणों का संदेह होने पर उन कारणों में रजस्वला गमन भी एक कारण व्यास जी ने गिन रखा है। इससे प्रतीत होता है सत्यार्थ प्रकाश के इस लेख की महाभारत भी पुष्टि करता है।

एक वेद का मत्र है यह मंत्र ऋग्वेद और अथर्ववेद मे आता है। पाठमें थोड़ा सा अंतर है यथा—

अश्रीरा तनूर्भवति रुशति पापयामुया।
पति यद्वध्वो वाससा स्वमङ्गमभिधित्सते॥
ऋग्वेद १०-८५-३१

अश्लीला तनूर्भवति रुशति पापयामुया।
पतिर्यद् वध्वो वाससा स्वमङ्गमभिपूर्णुते।
अ० १४-१-२७

अर्थ इस पाप से सुदर शरीर अश्लील हो जाता है जब पति (वध्वो वाससा) रजस्वला वधू के साथ मैथुन करता है।

इस मंत्र के पूर्वार्ध के अर्थों में कोई मतभेद नहीं है उत्तरार्ध में मतभेद है। साधारण रीति से शब्दार्थ इस प्रकार प्रतीत होते हैं। 'जब पति वधु वस्त्रों से अपने अंग को ढापे' अर्थात यदि पति वा पुरुष स्त्री के वस्त्रों को पहने तो उसका शरीर अश्लील होजाता है। परन्तु इस समय जो पुरुष स्त्री वेष बनाकर नाट्यशालाओं में काम करते हैं उनके शरीर अश्लील नहीं हैं अत मेरी सम्मति मे यह अर्थ नहीं हैं वासस शब्द रूढिसे वस्त्र वाचक है परंतु मलवद्वासा शब्द ब्राह्मण ग्रथों में और पूर्व मीमासा में रजस्वला वाचक है। मीमासा में एक प्रकरण ही मलवद्वासा का है इसके अर्थ मलिन वस्त्र भी हो सकते है परन्तु पकज वत्

योगरूढ़ि से इसके अर्थ रजस्वला ही हैं और वेद में केवल वासा शब्द है और फल में शरीर का अश्लील होना माना है अत यहां वासा के अर्थ रजस्वला करके वही मानने उचित हैं। जो रजस्वला के साथ मैथुन करेगा उसका शरीर अश्लील होगा 'वध्वो वाससा' शब्द होने से परकीया और सामान्या का भी निषेध प्राप्त है अत स्वकीया का विधान है उसमें भी प्रथम की रात्रियें वर्जित हैं।

सुश्रुत शारीर स्थान अध्याय २ श्लोक ३१ का 'तत्र प्रथमे दिवसे ऋतुमत्या मैथुनगमनादनायुष्य पुमान् भवति, पश्चान्तत्राधीयते गर्भ: स प्रसवमानो विमुच्यते, द्वितीयऽप्येवं सूतिका गृहेवा, तृतीयेऽप्येवमसम्पूर्णाङ्गोऽल्पायुर्वा भवति । चतुर्थे तु संपूर्णाङ्गो दीर्घायुश्च भवति, यथानद्या प्रतिस्रोत प्लावि द्रव्यं प्रतिक्षिप्त प्रतिनिवर्तते नोर्ध्वं गच्छति तद्वदेव द्रष्टव्यम। तस्मान्नियवती त्रिरात्र परिहरेत्

भावार्थ। रजस्वला स्त्री से जो प्रथम दिवस में मैथुन करे उसकी शक्तिक्षीण होती है यदि स्त्री दैवयोगसे गर्भ धारण करे भी तो वह प्रसव समयमें ही मर जायगा। दूसरे दिन में मैथुन भी अनायुष्य कर है और गर्भ की अवस्था में बालक सूतिका गृह में ही मर जायगा। तीसरे दिन में मैथुन भी आयु क्षय करता है और गर्भ स्थिति में बालक की आयु अल्प होती है। चतुर्थ दिन में ठीक है कोई हानि नहीं।

सतान की इच्छा वाला यदि रजस्वला से मैथुन करेगा तो जिस प्रकार नदी के प्रवाह में वस्तु नहीं ठहरती उसी प्रकार रज-प्रवाह में वीर्य निकल जायगा और गर्भ न होगा। इस लिये प्रथम तीन रात्रि त्याज्य हैं।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में जो विधान किया है वेद, महाभारत, मनुस्मृति और सुश्रुत उसका अनुमोदन करते है अत वैदिक धर्मियों का इस आदेश का विशेष रूप से और मनुष्य-मात्र का भी इसके पालन करने में यत्न-शील होना चाहिये ताकि स्त्री पुरुष इस क्रियाजन्य रोग से मुक्त रहें और उनकी सतान भी नीरोग और दीर्घायुवाली हो।

कांग्रेस और आर्य समाज

तथा

नवीन धारा सभाओं के चुनाव में आर्य-सामाजिकों का कर्त्तव्य

स्वराज्य—मन्त्र के प्रथमाचार्य महर्षि दयानन्द के आदेश

माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी किया गया विदेशियों का राज्य पूर्ण सुख दायक नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश समु० ॥ ८ ॥

परदेशी स्वदेश में राज्य करें तो सिवा दारिद्र्य और दुख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता। सत्यार्थ प्रकाश समु० ॥ १० ॥

के कार्य-क्रम में सब ही वर्गों का हित साधन है तो भी किसान मजदूर तथा दलित वर्गों का जो कि देश के प्राण हैं उत्थान करना उसका प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए।

कांग्रेस के कार्यकर्त्ताओं ने देश की स्वतन्त्रता के लिए समय समय पर जो नाना प्रकार के कष्ट सहे हैं और बहुत से वीरों ने तो मातृ-

देशमें नए विधानके अनुसार असम्बलियोंके लिये जो निर्वाचन होरहे हैं उनके सम्बन्धमें अपना कर्त्तव्य निश्चित करनेके लिये अनेक सज्जन इस सभाकी नीति जानना चाहते है उनके तथा सभी आर्यसमाजों और आर्योंकी जानकारीके लिए सूचना दीजाती है कि आर्यसमाजका सामूहिक रीतिसे इन निर्वाचनोंसे कोई सम्बन्ध नहीं है और उन्हें किसी पक्षके सम्बन्धमें कोई सम्मति नहीं देनी चाहिये परन्तु व्यक्तिगत स्थितिमें प्रत्येक आर्य स्वतन्त्र हैं कि वे जिसके लिए भी चाहें सम्मति देवें। उनके लिए किसी प्रकारका प्रतिबन्ध नहीं है।

नारायण स्वामी

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली।

कोई कितना ही करें परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। सत्याथ प्रकाश समु० ॥ ८ ॥

कांग्रेस जिसका ध्येय "उचित तथा शान्तिमय साधनों द्वारा पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना है" भारत वर्ष की सर्व-मान्य तथा प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है। भारतवर्ष में राष्ट्रीय जागृति का जो कार्य कांग्रेस ने किया है वह निश्चित ही सराहनीय है। कांग्रेस

भूमि की पवित्र बलिवेदि पर आत्माहुतियां तक भी दी हैं प्रत्येक सहृदय मनुष्य निश्चय ही उनकी सराहना करेगा। कांग्रेस के अनुशासन में रहकर तथा स्वतन्त्र रूप से मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये कष्ट सहन करने वाले तथा कारागार की यातनाएं भुगतने वालों में आचार्य दयानन्द के अनुयायी आर्य समाजियों की संख्या उनकी जन संख्या के अनुपात से सब से अधिक है। काले

पानी की सजा काटने वाले तथा फांसी के तख्तों पर लटकने वाले प्रात. स्मरणीय वीरों में भी आर्य सामाजियों की संख्या अत्यधिक है। यह सब ही देश सेवक तथा सेविकाएं आर्य समाज के लिये परम आदर तथा सन्मान के पात्र हैं जेल की चारदीवारी के अन्दर रहते हुए अपने प्यारे वैदिक धर्म के क्रियात्मक-पालन तथा उसके प्रसार का जो प्रयत्न उन्होंने किया है वह सर्वथा स्तुत्य है।

आर्य-समाज सम्प्रदायवाद Communalism का अपने जन्म काल से निरन्तर विरोधी रहा है और जिस समय तक वह सम्प्रदायवाद का घृणित रोग भारत से दूर न होगा आर्यसमाज चैन न लेगा। आर्यसमाज के कार्य क्रम का विशेष भाग सब ही मजहबों तथा जातियों से साम्प्रदायिकता को मिटा कर शुद्ध (वेदानुकूल) बुद्धिवाद का प्रचार करना है। इस सम्प्रदायवाद के नाश करने में आर्य समाज ने कभी किसी से समझौता नहीं किया और न आगे करेगा। आर्य-समाज कांग्रेस की सम्प्रदायवाद विरोधिनी मनोवृत्ति की सराहना करता है और उसे विश्वास है कि कांग्रेस किसी भी सम्प्रदाय के अनुचित दबाव वा साम्प्रदायिक मांगों की भविष्य मे भी दृढ़ता पूर्वक उपेक्षा करेगी। साम्प्रदायिकता की भित्ति पर अवलम्बित सब ही समझौतों या विदेशी हकूमत के फैसलों का कांग्रेस प्रत्येक दशा में दृढ़ता पूर्वक भीषण प्रतिरोध करेगी और इस कार्य में आर्य समाज भी कांग्रेस का साथी होगा इसका हमें विश्वास है।

देश को अछूतपन के रोगसे मुक्त करना आर्य समाज के कार्य-क्रम का जन्म काल से विशेष अङ्ग रहा है। स्वर्गीय लाला लाजपतराय स्वामी श्रद्धानन्दादि आर्य नेताओं ने इस महान् कार्य को, उस समय जब कि कांग्रेस इस कार्य से बिल्कुल उदासीन थी, अनथक परिश्रम से करना आरम्भ किया था। अछूतोद्धार के निमित्त सैकड़ों की संख्या मे आर्य सामाजिक सज्जनों को बड़ी २ यातनाए भुगतनी पड़ी हैं। सामाजिक बहिष्कार आदि की तो गणना ही क्या। पूज्य महात्मा गांधी ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से इस कार्य को जो प्रोत्साहन दिया है वह सर्वथा सराहनीय है। आर्य समाज चाहता है कि अछूतपन का सर्व नाश करके तथा जात-पांत के अवैदिक भेद भाव को मिटाकर पूर्णसमता (Equality) के आधार पर जातीय संगठन किया जाय। आर्य समाज को आशा है कि कांग्रेस आर्य समाजके इस कार्य में तथा इसी प्रकार के अन्य समस्त सामाजिक सुधार के कार्यों में उसका पूर्ण रूप से साथ देगा और देश को शीघ्र से शीघ्र उन्नति के शिखर पर पहुँचायगा।

हिन्दी को भारत की राष्ट्-भाषाके पुनीत पद पर प्रतिष्ठित करने का सर्व प्रथम श्रेय क्रान्त दर्शी देवदूत दयानन्द ही को है। आर्य समाज की यह हार्दिक अभिलाषा है कि ३५ करोड़ भारत-सन्तान मजहब तथा सम्प्रदायों के संकुचित दायरों से निकल कर हिन्दी भाषा तथा हिन्दी लिपि को अभिन्न हृदय से राष्ट्र भाषा तथा राष्ट्रलिपि के आसन पर पूर्णतया प्रतिष्ठित करे। कांग्रेस को इस दिशा मे अपना पग दृढ़ता से आगे बढ़ाना चाहिए।

"सृष्टि सम्वत्"

(लेखक—श्री आनन्दप्रकाश जी सदस्य आर्य समाज पेशावर छावनी)

उक्त शीर्षक लेख "सार्वदेशिक" के मार्गशीर्ष १९९३ वि० (दिसम्बर १९३६) अङ्क में पढ़ा। जिसमें माननीय लेखक ने ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सृष्टि सम्वत् ही ठीक माना है तथा उसके सम्बन्ध में आवश्यक प्रमाण भी उपस्थित किये हैं। लेखक महोदय ने इष्ट विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है परन्तु फिर भी कुछ बातो का वर्णन न होने से सम्पूर्ण सन्देहों की निवृति नहीं होती इसलिये प्रार्थना है कि उक्त महोदय अथवा अन्य विद्वान इन पर भी प्रकाश डालें तो अति उत्तम होगा।

(१) ऋषि ने सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों में सृष्टि की आयु ४ अर्ब ३२ करोड़ मानी है जिस को ब्रह्मदिन भी लिखा है तथा इतनी ही ब्रह्मरात्री है। परन्तु ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा सत्यधर्म विचार आदि पुस्तकों मे सृष्टि की जितनी आयु बीत चुकी है (१,९६,०८,५३,०३७ वर्ष) तथा जो आयु बाकी है (२,३३,३२,२६,९६३) वर्ष दी गई है दोनों सख्याओं को जोड़ने से ४,२९,४०,८०,००० वर्ष बनते हैं और यह संख्या १४ मन्वन्तरोंकी वर्ष संख्या के तुल्य है अर्थात् २,५९,२०,००० वर्षों (६चतुर्युगी) को ऋषि ने किसी ओर भी जमा

नए शासन विधान के अनुसार देश मे जो प्रान्तीय धारा सभाएँ (Legislative Assemblies) बन रही हैं उनमें कांग्रेस ने अपने प्रतिनिधियों को भेजना निश्चित किया है। कांग्रेस का अपने प्रतिनिधि भेजने में तात्पर्य जैसा कि उसके घोषणा-पत्रसे विदित है इन छलावा सुधारों के खोखलेपन को दृढ़ता तथा-निर्भीकता के साथ नग्न रूप में देश के सामने रखना है। इन नामधारी सुधारो हुई धारा सभाओं से होने वाली विशेष हानियों से निरन्तर देश को सचेत करना, सुधारों की आड़में होने वाले देश के भयानक शोषण को रोकना और पूर्ण स्वाधीनता के ध्येय को अपने सामने रख कर हर सम्भव प्रकार से स्वाधीनता यज्ञ की अग्नि को अन्दर से भी प्रज्वलित करना है। अत. वर्तमान परिस्थिति मे पूर्ण रूप से कांग्रेस के सयम मे रहने वाले दृढ देश-सेवकों को तथा कांग्रेस से सयुक्त हुई कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी के प्रतिनिधिओं को इन धारा सभाओं में भेजना देश के लिये हितकर होगा। अतः हम आशा करते हैं कि स्वतन्त्रता देवी के पुजारी विश्वनोमुख क्रान्ति के सूत्रधार आचार्य दयानन्द का प्रत्येक अनुयायी कांग्रेस तथा कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी के प्रतिनिधि को ही अपनी राय देगा।

ह० रामदेव प्रधान, आर्य सम्मेलन पञ्जाब, देव शर्मा 'अभय' आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, चांदकरण शारदा सदस्य परोपकारिणी सभा अजमेर, इत्यादि २।

नहीं किया। क्यों? क्या इसका कोई विशेष कारण नहीं है। केवल भूलसे न जोड़ना प्रतीत नहीं होता।

(२) उक्त लेख के समाधान सं० ४ व ५में परस्पर कुछ विरोध प्रतीत होता है क्योंकि सं० ४ मे संधि का प्रमाण ही स्वीकार नहीं किया और सं० ५ में सन्धियों को युगों के रूप में स्वीकार कर लिया है।

(३) सृष्टि की आयु की गणना करते हुए शास्त्रों मे एक ओर तो ४ अर्ब ३२ करोड़ की सख्या को १००० चतुर्युगि ों मे विभाजित किया है और दूसरी ओर १४ मन्वन्तरों मे (अर्थात्९९४ चतुर्युग)। इस प्रकार ६ चतुर्युग शेष रहते हैं। क्या इस विचित्र विभाजन का कोई विशेष तात्पर्य नहीं हैं?

(४) समाधान सं० ५—सूर्य सिद्धान्त के १-१९ के श्लोक मे "कल्पादौ" पाठ को ही ठीक मानते हुए यदि ६ चतुर्युगियों (२,५९,२०,०८० वर्ष) के समय को जो सृष्टि की प्रलय की उस सूक्ष्म अवस्था से इस स्थूल अवस्था में आने के लिए लगा हो—मान लें तो क्या हानि है? यदि है तो क्या और नहीं हैं तो क्यों? दोनों अवस्थाओं में सप्रमाण प्रकाश डालने की कृपा करें। ऋषि ने मनु० १। ८० का प्रमाण देते हुए सृष्टि की वर्तमानता को मन्वन्तरों में ही माना है।

(५) यह भी विचारणीय है कि सूर्य सिद्धान्त के १ १८ के अनुसार यदि १ मन्वन्तर के साथ १ सन्धि-गुजरती है तो फिर १४ मन्वन्तरों के १४ सन्धियें गुजरेंगी—१५ वीं सन्धि का फिर क्या होगा। इस कारण भी उक्त श्लोक अधिक माननीय नहीं रहता।

(६) ऋषि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के इसी प्रकरण में लिखा है "इसी प्रकार आर्य्य-लोग तिथि पत्र में भी वर्ष, मास, और दिन आदि लिखते चले आते हैं और यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्य्यवर्त देश में एक सा वर्तमान हो रहा है। और सब पुस्तकों में भी इस विषय मे एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है किसी प्रकार का इस विषय में विरोध नहीं है।" ऋषि के यह शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं। इससे प्रतीत होता है कि सृष्टि सम्वत् की गणना का झगड़ा बाद मे चला है और वह भी कुछ विचित्र ही है क्योंकि एक ओर तो हमारी पुस्तकों पर सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०३७ लिखा होता है परंतु मशहूर आलम जन्त्री के कर्त्ता पं० देवीदयाल जी ने सन् १९३६ ई० की जन्त्री में सृष्टि सम्वत् आदि की गणना निम्न प्रकार की है:—

१,९६,०८,५३,०३७ ऋषिदयानन्द द्वारा प्रकाशित विधि अनुसार

१,२०,९६,००० ७ सन्धियों का समय (१७,२८,००० × ७

१,९७,२९,४९,०३७

१,७०,६४,०० ब्रह्म के वर्ष घटाए

१,९५,५८ ८५,०३७ बाकी दिन सृष्टि की उत्पत्ति के रहे

२,३६,४१,१४,९६३ बाकी आयु सृष्टि की जिस के गुजरने पर प्रलय हो जायगी।

४,३२,००,००,००० कुल आयु

अर्थात् उपरोक्त जन्त्री के अनुसार सृष्टि

—आर्य्य समाज पर अनुचित आक्षेप और उनका निराकरण

गत अक्टोबर मासमें बम्बई के सुप्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिकपत्र 'इण्डियन सोशियल रिफ़ार्मर' ने हिन्दू-महा सभा लाहौर के सभापति डा० कुर्तकोटि के अभिभाषण पर विचार करते हुए आर्य्य समाज पर अनावश्यक और अवांछनीय टीकाटिप्पणी करदी था उसका उत्तर श्र० म० शिवचन्द जी देहली ने 'रिफ़ार्मर' में छपवाया है। सार्वदेशिक के पाठको के लाभार्थ वह उत्तर यहां दिया जाता है। (सम्पादक)

श्रीमान जी, नमस्ते !

३१-१२-३६ के सम्पादकीय लेख मे हिंदू महासभा के लाहौर अधिवेशन पर लिखते हुए आपने आर्य्य समाज की अवांछनीय, अप्रासंगिक और अनावश्यक आलोचना की है, इसलिए मै निम्न पंक्तियो को अपने सम्मानित पत्र मे स्थान देने की आपसे प्रार्थना करता हूँ।

आप कहते हैं "पंजाब मे सिक्ख धर्म शुद्धि के क्षेत्र मे आर्य्य समाज का प्रतिद्वन्दी है।" जहां तक प्राचीन वैदिक धर्म की रक्षा मे प्रदर्शित सिक्खों की वीर भावना का सम्बन्ध है, आर्य्य-समाज ने अपने जन्म दिन से अब तक कभी भी सिक्ख धर्म को अपना प्रतिद्वन्दी नही समझा है। सिक्खो के सिवाय भारतीय वर्गों मे से शायद ही कोई वर्ग सिक्ख गुरुओ के नाम को इतनी श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता के साथ याद करता हो जितनी श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता से आर्य्य समाजी याद करते हैं। आर्य्य-समाज उन्हे महान पुरुषो और शहीदो की श्रेणी मे रखता है जिन्होने प्राचीन आर्य्य संस्कृति की रक्षा के लिए जिसे आर्य्य-समाज अपनी ही समझता है धर्मांध मुस्लिम शासको के अत्याचारों पर सब कुछ न्योछावर कर दिया था। आर्य्य समाज के प्रति सिक्खो का भी ऐसा ही भाव है। सिक्ख काफी सयाने है और वे आप के भ्रमात्मक लेख से पथ-भ्रष्ट नहीं हो सकते है। एक पत्रकार की हैसियत से डाक्टर कुर्तकोटि के इस उपदेश या सलाह का कि अछूत सिक्ख धर्म स्वीकार कर लेव विरोध करने का आपको पूरा हक हासिल था। परन्तु आपने आर्य्य समाज और सिक्ख धर्म को घसीटने और उनके हृदयो को एक दूसरे से फाड़ने की व्यर्थ चेष्टा की है। आपको यह ज्ञात रहना चाहिए था कि आर्य्य समाज ने अछूतो के सिक्ख धर्म मे प्रवेश के विचार का कभी विरोध नही किया है।

आप यह भी लिखते है कि आर्य समाजियो ने वर्तमान वर्षों मे हिंदू मिशनरियोकी रीति नीति का अनुसरण किया है और वे महासभापर कब्जा करके हिंदू भारत के नेतृत्व को छीनने की भरसक

सम्वत् १,९६,५८,८५,३०७ हुआ और इस जन्त्री के कर्त्ताने सन् १९०६ ई० से इसी गणना के अनुसार सृष्टि सम्वत् स्वीकार किया है जो कि प्रचलित सृष्टि सम्वत् से सर्वथा भिन्न है। उक्त जन्त्री मे यह कुछ नहीं लिखा कि ब्रह्म के वर्ष कैसे हैं और क्यों घटाये गये हैं।

—

चेष्टा कर रहे हैं।

आपने अपने लेख मे आर्य्य समाजियों के शब्द से समस्त आर्य्य समाज का अर्थ लिया है। आर्य्य समाज हिंदू शब्द से घृणा करता है और उसका यह दृढ़ निश्चय है कि हिंदू शब्द बाहर का शब्द है, मुसलमानों द्वारा प्रचलित किया गया था और इस देश के तत्कालीन हिंदुओं द्वारा जो आर्य्य ही थे मूर्खता वश ग्रहण कर लिया गया था। वेद स्मृतियों रामायण एवं महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में कहीं भी यह शब्द नहीं मिलता है। तब आर्य्य समाजी किस प्रकार ऐसे हिंदू धर्म की रीति नीति को ग्रहण कर सकते हैं जो आप जैसे नेताओं और संपादकों से भरा हुआ है और जो डाक्टर कुर्तकोटिके बुद्धिमत्ता-पूर्ण सलाहके विरोधी हैं और इसपर भी सोशियल रिफ़ार्मर बने हुए हैं? इस में संदेह नहीं आर्य्य समाजी मिशनरी तथा कथित हिंदुओं की ओर विशेष ध्यान देते हैं और भविष्य मे देंगे भी क्योंकि बहुत सी बातोंमे वे उन से मिलते जुलते हैं परन्तु वे आर्य्य मिशनरी के रूप में काम करते हैं न कि हिंदू मिशनरी के, आर्य्य समाज ने समष्टि रूप से हिंदू महासभा को अधिकृत करने की कभी भी चेष्टा नहीं की है। आर्य्य समाज एक धर्म संघ है और इसके अनुयायी व्यक्तिगत रूप मे महासभा, कांग्रेस इत्यादि संस्थाओं में सम्मिलित होने में स्वतंत्र है इस शर्त के साथ कि उनके व्यवहारों से आर्य्य समाज के मुख्य सिद्धांतों पर आंच न आए।

आगे आप लिखते हैं, स्वामी दयानंद की शिक्षाएं पंजाब के बाहर नहीं फैल सकी हैं स्वयं उनकी-जन्म भूमि गुजरात में भी नहीं क्योंकि उन्होंने हिंदु शास्त्रों के सबसे ज्यादा मूल्यवान और दार्शनिक अंग को अपनी सीमा से बहिष्कृत कर दिया है और उनको उस भाग पर केन्द्रित किया है जो महाभारत के काल मे ही निकम्मी सिद्ध हो गई थीं।"

सचमुच आपकी अनभिज्ञता पर मुझे दया आती है। देश में एक भी ऐसा प्रान्त नहीं है जहां आर्य्य समाज नहीं हैं। मद्रास और आसाम प्रान्त को छोड़कर समस्त प्रान्तों में प्रान्तिक सभाएं हैं। और हज़ारों समाजें उनके अधिकार में हैं। मद्रास और आसाम में कई आर्य्य समाजें स्थापित है और वहां कई वर्षों से आर्य्य प्रचारक काम कर रहे हैं। भारत से बाहर भी दक्षिण अफ़रीका, ब्रिटिश अफ़रीका, फिजी, मारीशस, ब्रिटिश-गायना, डचगायना, ट्रीनीडाड, सिंगापुर, अदन इत्यादि में ५०० के लगभग आर्य्य समाजें मौजूद हैं। आपने बड़े ज़ोरों से परन्तु बहुत कम ज्ञान के साथ गुजरात का उदाहरण दिया है। गुजरात में १५ से अधिक दृढ़ समाजें हैं। स्वामी जी के जन्म स्थान टङ्कारा और मौरवी में आर्य्य समाजें हैं। मौरवी राज्य के शासक आर्य्य समाज और महर्षि दयानंदके अनन्य भक्त हैं और उनके राज्य को ५००० वर्षके बाद एक महर्षि को पैदा करनेका गौरव प्राप्त है। यह सच है अन्य प्रान्तों की अपेक्षा पंजाब और यू. पी. में आर्य्यसमाज बहुत बढ़ाऔर फलाफूला है। अन्यान्य कारणोंके अतिरिक्त इसका मुख्य कारण उन दोनों प्रान्तों में उदार भावोंको समझने और ग्रहण करनेकी अन्य प्रांतोंकी

कहानी—

झूठी आशाएं

(ले०—रघुनाथ प्रसाद पाठक)

(२)

केसरलाल ईश्वरभक्त हिन्दू था। प्रति दिन प्रातःकाल, भोर होते ही मै उसे अपनी छोटी खिड़की मे से यमुना मे स्नान करते देखा करती थी। वह घाट पर एक पत्थर पर बैठकर संध्या किया करता और ईश्वरभक्ति के भजन और मन्त्र गाते हुए अपने घर आया करता था।

यद्यपि मैं एक मुसलमान घराने में पैदा हुई थी तथापि अपने धर्म के सम्बन्ध में मैंने एक शब्द भी नहीं सुना था और न मुझे उस धर्म की भक्ति सम्बन्धी क्रियायें ही सिखलाई गई थी। मेरे चारो ओर दुराचार, और आत्म सन्तुष्टि का वातावरण छाया हुआ था परन्तु शायद परमात्मा के मुझे धर्ममे स्वाभाविक रुचि

अपेक्षा अधिक समता, और कम कट्टरता ही है इसका कारण वह नहीं है जो आप पगट करते हैं। आप मुझ से सहमत होंगे कि किसी संस्था के विरुद्ध अप्रमाणिक बाते लिखना बेहूदगी है विशेषत. उस व्यक्ति के लिये जो बुद्धि को जरा सा भी महत्व देता है।

क्या आपने यह सिद्ध करने के लिए एक भी पमाण दिया है कि ऋषि दयानन्द की शिक्षाओ ने हिंदू शास्त्रो के दार्शनिक और मूल्यवान अंग की अवहेलना की है। आर्य्य समाज पवित्र वेदो और उपनिषदो, दर्शनो इत्यादि आर्ष ग्रन्थो मे जिनकी शिक्षाएँ वेद के अनुसार हैं आस्था रखता है। क्या आपका विश्वास है कि उपर्युक्त ग्रन्थो से भी अधिक मूल्यवान अन्य कोई धर्म ग्रन्थ हैं।

अन्त मे आप लिखते है आर्य्य-समाज की तुलना एक सम्प्रदाय से हो सकती है।" आर्य्य-समाज जैसा कि आपने समझा है, सम्प्रदाय नहीं है। वह तो एक संगठन है और धर्म संघ है और इस का सन्देश जाति, रंग, देश, और वर्ग के भेद भाव से शून्य समस्त मानव-समाज के लिए है।

अपने लेख मे आर्य समाज के सम्बन्ध मे आपने जो विचार प्रगट किए हैं उनसे स्पष्ट है कि आपका हृदय आर्य्य समाज के प्रति शुद्ध नही है और आप इसकी वास्तविक स्पिट से अनभिज्ञ है और जिस वर्ग से आप सम्बन्धित है उसके लिए उसने (आर्य्य समाज ने) जो किया है उसका आप आदर नही कर सकते है।

अन्त मे, सम्पादक जी, आर्य्यसमाज उसके महान् संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उसके कामका ठीक २ अध्ययन करने के बाद ही भविष्य मे कुछ लिखने का आपसे निवेदन करूंगा और यह भी निवेदन करूंगा कि आप विषयका पूरा २ ज्ञान प्राप्त करके ही लेखनी उठायेंगे और धार्मिक बातों पर ही विचार करने की ओर विशेष ध्यान रक्खेंगे।

—

प्रदान करनेके कारण अथवा अन्य किसी कारण से, जो मैं नहीं जान सकी हूँ यमुना के नीचे और शान्त जल तक फैली हुई संगमरमर की सीढ़ियों पर प्रातःकाल की शान्ति में केसर लाल की ईश्वरोपासना ने मेरे नए जगे हुए दिमाग़ में अकथनीय भक्ति-भाव भर दिया था। हिन्दू युवक के धर्म प्रेम ने मुस्लिम कन्या के अशिक्षित मस्तिष्क को भक्ति भाव से प्लावित कर दिया था।

मेरे पास मेरी उम्र की एक हिन्दू दासी रहती थी। वह प्रतिदिन प्रातःकाल केसर लाल की वन्दना करने आया करती थी और जब वह संध्या करके घर के लिए रवाना होता था तब उसके चरणोंकी धूलिको उठा लिया करती थी। इस दृश्य से मुझे खुशी भी होती थी और ईर्ष्या भी। हिन्दू त्यौहारों पर वह दासी ब्राह्मणों को आमन्त्रित किया करती, और उन्हें दान-दक्षिणा दिया करती थी। एक बार मैंने दासी को केसरलाल को आमन्त्रित करने के लिए कहा और उसके योग्य किसी अच्छी भेंट के लिए धन देने के लिए भी कहा। परन्तु उसने मुँह बनाकर कहा "दान दक्षिणा लेकर वह कभी अपने को नहीं गिरा सकता है।"

इस प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी भक्ति-भावना प्रदर्शित करने के उपायों से वंचित हो जाने पर मेरे हृदय की भूख अतृप्त रह गई। मेरे एक पुरखा ने एक बंधुआ ब्राह्मण युवती से शादी की थी। ज़नाना ख़ाने के पर्दे के भीतर अपना दिन व्यतीत करते हुए उस युवती के ख़ून को मैं अपनी धमनियों में संचारित होते हुए अनुभव किया करती थी और केसरलाल के साथ इस रक्त सम्बन्ध के भाव से मुझे चैन मिला करता था।

'अपनी साथिन से हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में मैंने सब कुछ जान लिया। जब मैं रामायण और महाभारत की आश्चर्यजनक कहानियाँ सुनती तो मेरे दिमाग़ में हिन्दू संसार का मनोरम चित्र खिंच आया करता था।

इसके बाद ही सिपाही विद्रोह आरम्भ हुआ। और इसकी तूफ़ानी लहरें हमारे ज़नाना ख़ाने पर आक्रमण करती हुई हमारे क़िलेपर आकर टकराईं। केसरलाल ने घोषणा की "सफ़ेद चमड़ी वालों से छुटकारा पाने का यही अवसर है इसके बाद अपने हिन्दुस्तान में शक्ति और अधिकार का जुआ खेलने का हम हिन्दुओं और मुसलमानों का काम होगा।"

मेरे पिता, ख़ान साहब बड़े सतर्क थे। सफ़ेद चमड़ी वाले आततायियों के विरुद्ध अशिष्ट उपाधियों की ओर से अपनेको मुक्त करते हुए उन्होंने कहा "दुनियांमें ऐसा कोई काम नहीं है जो ये लोग न कर सकते हों। हम हिन्दुस्तानियों के लिए उनसे टक्कर लेना मुमकिन नहीं है। बाग़ियोंका साथ देकर अनिश्चित सम्भावनाओं की झूठी आशाओं में मैं अपने छोटे राज्य को जोखिम में नहीं डालूंगा"

'ऐसे समय जब तमाम हिन्दुस्तान का ख़ून उबल रहा था, मेरे पिता के इस उपेक्षा भावके विरुद्ध हम सबके हृदय में बवण्डर उठ खड़ा हुआ था। मेरी माता और सौतेली माताएं तक व्याकुल हो उठी थीं।

इस पर केसरलाल ने अपनी फ़ौज तैयार की और मेरे पिता को कहा "देखो! नवाब साहब!! यदि आप हमारा साथ नहीं देंगे तो काम की समाप्ति तक आप अपने कमरे में क़ैद रक्खे जाओगे। इस बीच में क़िले को मैं अपने क़ब्ज़े में रक्खूंगा।" "मेरे पिता ने

सकर कहा "यह क्या बेवकूफी ! मेरे लिए कठोर कार्यवाही की जरूरत नहीं है। मैं आप लोगों के साथ हूं। केसरलाल ने कहा "खज़ाने से रुपये की जरूरत होगी" मेरे पिता ने अपने वायदे के अनुसार कुछ धन उसे देकर कहा "अब वास्तव में जरूरत होगी, मैं तुम्हें और रुपया भी दूंगा।'

मेरे पास बहुत से बहुमूल्य गहने थे। नख से शिख तक मैं गहनों से लदी थी। मैंने इन सब गहनों का बण्डल बना कर दासी के हाथ केसरलाल के पास भेजा। उसने खुशीसे उन्हें स्वीकार किया और सजावट से शून्य मेरा अङ्ग प्रत्यङ्ग प्रसन्नता से चमक उठा था।

जब केसरलाल तलवारों और अन्य हथियारों का जङ्ग साफ़ करने में व्यस्त था तब ही अंग्रेजी सेना पति अपनी फ़ौज के साथ जो लालवर्दी पहने थी, हमारे क़िले पर चढ़ आया—मेरे पिताने अपने साथियों को धोखा देदिया था।

केसरलाल का हमारे आदमियों पर ऐसा आश्चर्य जनक प्रभाव था कि उन सबने लड़ते हुए मर जाने का निश्चय कर लिया। अपने दगाबाज़ पिता के साये में रहना मुझे असह्य देख पड़ा। मेरा हृदय दुख शर्म और हया से फटा पड़ता था परन्तु आंखों से एक भी आंसू न गिरा। अपने एक बुज़दिल भाई के कपड़े पहन कर मैं क़िले से बाहर निकली। उस खिलबली में मेरी इस कार्य्यवाहि पर ध्यान देने वाला कोई न था।

धूल और धुआँ, बन्दूकों की झनकार और योद्धाओं का चीत्कार आसमान और ज़मीन को भरता हुआ, मृत्यु की भयङ्कर निस्तब्धतामें विलीन हुआ। यमुनाके जल को खून के रंग से चमकाता हुआ सूर्य अस्त हुआ और पूर्ण चन्द्र उस तमाम नज़ारे को चमकाता हुआ ऊपर उठा।

किसी दूसरे अवसर पर मेरा हृदय उन भयंकर दृश्यों को देखकर जो मेरी इन आँखों ने देखे थे दया और दुख से विदीर्ण हो जाता परन्तु मैं युद्ध भूमि में नींद से जागे हुए व्यक्ति के समान केसर लाल को इधर उधर तलाश करने लग गई। मुझे उस समय और सब बातें बड़ी तुच्छ प्रतीत हुईं। तलाश करते २ अन्त में आधी रात के करीब चांदनी में पास पास पड़ी हुई मैंने दो मूर्तियां देखीं। वे दोनों नदी के किनारे आम के एक बाग़ में पड़ी थीं। एक केसरलाल था और दूसरा उसका प्रिय सहायक देवकी था। ज़रूर वे दोनों घावों की पीड़ा से विह्वल होकर उस एकान्तस्थान में अन्तिम श्वास लेने के लिये लुढ़कते हुए पहुंचे होंगे।

'सबसे पहला काम जो मैंने किया वह यह था कि मैंने अपने बालोंको नीचा करके और उसके धूलसे भरे हुए पैरो की उनसे साफ़ करके अपनी बहुत दिनों की अतृप्त भक्ति भावना की वेदना को कम किया। इसके बाद मैंने अपने जलते हुए ललाट को उसके चरणों पर रख कर ठंडा किया। इस पर केसर लाल के शरीर में एक बिजली सी दौड़ी और उसके होठों से बहुत धीमी कराहट निकली और आंखें बन्द किए हुए अस्पष्ट शब्दों मे यह कहते हुए सुन पड़ा "पानी।"

मैं तत्काल नदी की ओर दौड़ी और अपनी साड़ी को भिगो कर उसे उसके सूखे ओंठों पर निचोड़ा। इसके बाद मैंने उसके घावको जिससे उसकी एक आंख लगभग जाती रही थी, साफ़ किया और पट्टी बाँधी। मैं फिर नदी पर गई और साड़ी को भिगो कर लाई और उससे उसके चेहरे और गर्दनको धोया और इससे केसरलाल कुछ होश में आया।

'मैंने पूछा 'क्या और पानी लाऊं।' उसने पूछा 'तुम कौन हो ?' मैंने उत्तर दिया 'आपकी विनीत दासी' परन्तु मैं यह कहना न रोक सकी "नवाब गुलाम क़ादिर ख़ां की बेटी"

मुझे आशा थी उस अन्तिम आज्ञामें केसरलाल मेरी श्रद्धाञ्जली को अपने साथ ले जायगा और मेरे पास वह खुशी रह जायगी जिससे मुझे कोई कभी भी वञ्चित न कर सकेगा।

परन्तु वह चिल्लाता हुआ उठ बैठा "दग़ाबाज़ पिता की पुत्री ! दूर हट क्या मौत के समय मुझे भ्रष्ट करने का तुझे साहस है ? क्या मेरी आंखों में धूल झोंकने की तेरी हिम्मत है ?"

मेरे मुंह से तत्काल निकल पड़ा "जानवर !" मैं औंग खा रहा था। मेरा मुंह एक दम बन्द हो गया। मैं चुपचाप बड़े ध्यान से उस देवी की कहानी सुन रहा था परन्तु मैं अपने को न संभाल सका। पूछा जानवर कौन ?

नवाब की पुत्री की आंखें लाल हो गई। उसने कहा 'क्या मौत की तकलीफ़ में जानवर कभी पानी से इन्कार करता है ?'

मैंने माफ़ी मांगते हुए कहा ' माफ़ करें ! मेरा मतलब गुरुदेव' से था।

उसने चिल्लाकर कहा 'कौन गुरुदेव। क्या गुरु अपने प्रिय भक्त की भेंट को कभी अस्वीकार करता है ?"

"ठीक कहती हो ! ठीक कहती हो !!"

बीबी साहबा अपनी कहानी कहती रहीं। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो आकाश और पृथिवी दोनों मेरे सिर पर टूट कर आपड़े हैं।

'नवाब की पुत्री को साष्टांग प्रणाम करते हुए देख कर केसर लाल ने क्या सोचा यह तो मैं जानती नहीं क्योंकि वह निर्जीव सा हो गया था। उसने एक गहरी निगाह से मेरी ओर देखकर उठने की कोशिश की थी इस पर मैं तत्काल उसे मदद देने के लिए दौड़ी थी परन्तु उसने मेरी क़तई परवाह न की थी और लड़-खड़ाता हुआ नदी के घाट की ओर चला गया था। वहां एक नाव बन्धी हुई थी उसमें वह चढ़ गया था और रस्सा खोलकर नाव को लेकर चला गया था।

नाव मेरी आंखों के देखते २ ओझल हो गई थी। मेरा तमाम शरीर अपने हृदय के बोझ को और अनिच्छित उपासना के बोझ को समर्पित करने के लिए कितना उत्सुक और घायल था यह मैं आपको बतला नहीं सकती हूँ।

यहां उसदेवी की ज़ुबान बन्द हो गयी और वह विचार तरङ्गों में विलीन होगई। मैंने भी उसे परेशान करना उचित नहीं समझा।

धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्

(ले०—पं० विद्यानन्द वेदालंकार)

दिसम्बर अंक का शेष

२० वीं सदी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक । Dr Fleming ने धर्म तथा विज्ञानके बारे में कहा था। "They are not opposed, they are not neutrals, they are allies" (ये दोनों परस्पर विरोधी नहीं है, नाहि उदासीन है, किन्तु सहायक हैं, इसको डाक्टर साहेब ने स्वय समझाया— कि हरेक आदमी के दिल में दो प्रश्न पैदा होते हैं—। Why and How (क्यों और कैसे) इन में साइन्स या विज्ञान 'कैसे' का उत्तर देती है। धर्म क्यों का। जैसे संसार कैसे बना ? यह विज्ञान बतायेगी, परन्तु क्यों बना ! यह धर्म बतावेगा।

वास्तव में इस विचार से हम भी सहमत हैं। क्योंकि संसार में दो वस्तुएें हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन। जड़ सृष्टि में जो रचना प्रकार, व्यवस्था, नियम आदि हैं, विज्ञान उन्हीं का पता लगाता है। परन्तु बुद्धि रखने वाला मनुष्य उसका उपयोग अपनी चेतन शक्ति आत्मा के द्वारा करता है, मैं ने तलवार बनाली, अब लूटूं या रक्षा करू। यह सोचना ही आत्माका काम है। वह जो बताता है। वह उचित रास्ता है, वही धर्म है। इसे ही 'धर्मस्य तत्व निहितं' गुहायाम्।" इस प्रकार कहा गया है। यह रहस्य आत्मा और परमात्मा के योग से ज्ञात होता।

गीता में श्री कृष्ण जी ने लिखा है। "ईश्वर. सर्व भूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति-भ्रामयन् सर्व भूतानि यन्त्रारूढानि मायया" सर्व व्यापक-घट घट व्यापी प्रभु को हर जगह न बताकर केवल हृदय में कृष्ण ने क्यों बताया ? यह एक रहस्य है। श्री कृष्ण उदार स्वतन्त्र बुद्धि के धर्मज्ञ व्यक्ति थे। उनका यह कथन इस बात का साक्षी है कि वे ईश्वर पाने का स्थान हृदय को बता रहे हैं। ईश्वर पाने की वस्तु तो है नहीं, हा ! उसका प्रभाव उस की प्रेरणा, पाई जा सकती है। वह पाने के लिये हृदय की गुहा में प्रवेश करना होगा। वहीं हरेक दिल में सब के मंगल एव कल्याण के लिए भगवान उपस्थित होते हैं।

वेद में भी यही रहस्य है। वेद का सार तथा तत्व-रूप में अचार्य गुरु मत्र का उपदेश देता है। "ओं भूर्भव स्व । तत्सवितु वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योन प्रचोदयात् ।" मैं प्रेरणा देने वाले प्रभु के उस वरणीय तेज का ध्यान करता हूँ। जो मेरी बुद्धि को प्रेरित करता है।" इस प्रकार प्रभु पर विश्वास करके उस से प्रेरित व्यापार धम समझो, यह नियम निकलता है।

मि० विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक "The Varities of the Religious Experiences" में सब धर्मों का मान्य एक लक्षण किया है— "कि मनुष्य का किसी अदृष्ट शक्ति परविश्वास तथा गुरु से प्रेरित व्यापार धर्म कहाता है।" इस प्रकार यह गायत्री मंत्र का अनुवाद ही हो जाता है। हा ! गायत्री मन्त्र का इशारा प्रभु है। परन्तु इस लक्षण के अनुसार सभी सम्प्रदायों के गुरु-इष्ट देवता मान्य हो जाते हैं।

—

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

सामाजिक कानून

उपर्युक्त शीर्षक से 'प्रबुद्ध भारत' लिखता है—

लेजिस्लेटिव असेम्बलीमें ऐसे बहुतसे बिल पेश किए गए हैं जिनसे हिन्दूसमाज पर असर पड़ेगा। इससे प्रेस में एक विचित्र प्रकार की व्यापक प्रतिक्रिया व्याप्त होगई है। उन बिलों के उद्देश्य और उनकी विस्तृत धाराओं पर बहुत से आक्षेप किए गए हैं। बिल ऐक्टों का रूप ले लेने पर उपयोगी होंगे या नहीं यह हम पाठकोंके निर्णयपर ही छोड़ते हैं जो उनके रूप और उद्देश्यों से भली भांति परिचित हैं। इस-प्रकार की विस्तृत और विशेष आलोचनाओं के साथ साथ जनता के एक भाग ने किसी भी सामाजिक क़ानून के बनाए जाने के असूल पर आपत्ति उठाई है।

यह दावा किया गया है कि समाज और धर्म राजनीतिज्ञों की प्रगतियों से बाहर रहने चाहिएँ और भारतीय सोसायटी अपने इतिहास में सदैव राजनीतिक हस्ताक्षेप से पृथक रही है। इस दावे की जाच पड़ताल आवश्यक है। क्या कोई समाज राजनैतिक प्रभाव से बाहर स्थित रहने का दावा कर समता है? यह कहना मूर्खता है कि राजनीतिका समाजसे कोई सरोकार नहीं है। पुलिसकी कार्य्यवाहियों को ही राजनीति मानलेना राजनीति का गलत और संकुचित अर्थ लगाना है। राजनीतिज्ञोंका यह कहना ठीक है कि सबसे कम शासन करना सर्व श्रेष्ठ शासन होता है। यह भी सत्य है कि क्रांतिकारी राजनैतिक विचारक उस समयकी इन्तजार देख रहे हैं जिसमें कोई हकूमत न होगी परन्तु जब तक मनुष्य में पाशविकता रहेगी तब तक न्यायकी रक्षाके लिए सरकारी कार्य्यवाही की जरूरत रहेगी। देखने वाले देख सकते हैं कि भविष्य मे सामाजिक और दूसरे मामलों में सरकार का हस्ताक्षेप वृद्धि पर ही रहेगा। प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक और धार्मिक मामलो में अपने निज के विचार रखनेका हक है परन्तु जब ये विचार समाजके बहु सख्यक लोगों को हानि पहुँचाने वाली प्रथाओं के रूप मे दृढ़ हो जायँ तो सरकार को ज़रूर हस्ताक्षेप करना चाहिए, और करती रहेगी इस शर्त के साथ कि शासक वर्ग के हितोंसे वह हस्तक्षेप कोई सम्बन्ध न रखने वाला होना चाहिए।

भारत के भूतकाल को देखने पर हमे विदित होता है कि यह दावा निस्सार है कि राजनैतिक दृष्टिसे समाजमे हस्ताक्षेप नहीं होता था। यह सच है कि प्राचीन काल में भारत वर्ष में धार्मिक और सामाजिक मामलों में न्यूनाधिक रूप में परिवर्तन का सूत्रपात धार्मिक और सामाजिक नेताओं के द्वारा ही हुआ करता था और उन्हें कोई मुशिकिल से ही राजनैतिक अधिकार प्राप्त रहते थे। सामाजिक और अन्य मामलों में उन्हें काफी आज़ादी होती थी परन्तु प्रश्न यह है कि उस आज़ादीका क्या मन्शा था? और खासकर उन दिनों मे जब बुद्धिमान और ज्ञानवान लोग निर्धनतासे नाता रखते थे और बिना मागे अधिकार स्वत उन लोगों

के पास पहुँच जाया करते थे। जब दूषित प्रथाओंसे बुद्धि पर ताले नहीं लगे हुए थे और जब विदेह [जनक] और प्लेटो जैसे राजाके रूपमें फकीर राज्य करते थे और आश्चर्य्य जनक शान्ति व्याप्त रहती थी।

आर्यसमाज और विद्वान लोग

विद्वान तथा आत्म सम्मान रखने वाले शान्ति प्रिय लोग आर्य समाज के संगठन से वा आर्य समाज से अलग होते आरहे हैं, यह आवाज समाज मे बहुत देर से उठ रही है और तथ्य रखती है 'आर्य मित्र' पृथक्करण के कारणों पर प्रकाश डालता हुआ लिखता है–

"वेद और वैदिक साहित्य जिस पर आर्य समाज का सर्वस्व आश्रित है आर्य समाज ने उसके प्रतिष्ठापन के अनेक दर्शनीय साधन प्रस्तुत किए हैं सही परन्तु उनको उन्नत और आदर्श बनाने का यत्न नही किया उस विषयक विद्वानो को आर्य समाज के क्षेत्र में प्रभूत प्रतिष्ठा से रहने का अवसर ही नहीं दिया। संस्कृत के विद्वानो को धन कुबेरों की तुलनामे एक भिखारी मुखा प्रेक्षी जान कर उनकी सर्वैव अवहेलना ही हो रही है। अधिकार अहं भावके जालमे उपदेशकोको केवल वेतन भोगी भृत्य के पद से अधिक मान देने का कभी विचार ही नहीं उठता। इसका फल यह हो रहा है कि अच्छे उपदेशक और सन्यासी लोग सभा की व्यवस्था में कार्य्य न करके भेंट पुरस्कार के रुप में प्रचार करने में अधिक सुख मानते हैं। वे उस अपमानित छाया से निकल कर अपनी शास्त्रीय योग्यता को तिलांजली देकर अन्य व्यवसायों, धन्धोंमें लग जाते हैं। इस बात का अनेक वार अनुसधान किया गया है। प्राय सब से बड़ा कारण उचित आदर का न होना, उचित साधन सामग्री का प्राप्त न होना और विशेष रूप से विद्वानों से अधिकारियों का क्लर्कों के समान कार्य्य प्राप्त करने की आशंका और मुख्य कारण अयोग्यों और अनधिकारियों का योग्यों और अधिकारियों पर शासन, तथा अनुशासन एव व्यवस्था के भीतर काम करने की हमारी भयावह अयोग्यता है। (रेखाङ्कित शब्द हमारे है—सपादक सार्वदेशिक)

इसके आगे इस अवस्थाके परिणाम की 'सहयोगी' निम्न कल्पना करता और चेतावनी देता है —

"वर्तमान आर्य समाज की व्यवस्था में पारस्परिक कलह से जहा पारस्परिक आदर प्रतिष्ठा का नाश हो रहा है वहा साथ ही विद्वानों का भी सहयोग टूट गया तो वह कुदिन दूर न होगा जो बड़ी २ सभ्यताओ को अपने भीतर विलीन कर चुका है।

आर्य सस्थाओं को अभी से चेतना चाहिए यदि अभी शीघ्र न चेता गया तो आर्य समाज का विशाल भवन कभी घोर अधकारमय हो जायगा।

आदर्श भंगी

महात्मा गांधीने 'हरिजन सेवक' में 'आदर्श भंगी' शीर्षक एक लेख लिखा है उसमे उन्होंने दिखलाया है कि ब्राह्मण और भंगी सामाजिक महत्व की दृष्टि से समान है। भंगी समाज का मैला साफ करके उसे स्वच्छ रखकर उसके शरीर की रक्षा करता है और ब्राह्मण का धर्म्म समाज की आत्मा को स्वच्छ रखने

का है और भंगी समाज का बड़े से बड़ा आधार है। उन्होंने भारतीय ग्रामों और नगरों के अस्वास्थ्य और भंगियों की दुर्दशा का कारण इस आदर्श की अनभिज्ञता या उसकी अवहेलना बतलाई है और समाज के तन, मन, धन से सुखी होने की एक शर्त भंगी के धंधे को सम्मान पूर्ण समझना और भंगी तथा ब्राह्मण के बीच के भेद का दूर होना । प्रगट की है। आदर्श भंगी के आदर्श और उसके पैदा करने की विधि बतलाते हुए, वे लिखते हैं:—

मेरी दृष्टि से आदर्श भङ्गी को स्वच्छता के नियम का उत्तम ज्ञान होना चाहिये । पाखाने कैसे हों, उन्हें किस तरह साफ रखा जाय, मल-मूत्र का खाद किस तरह बनाया जासकता है। यह सब उसे जानना चाहिये । इतना ही ज्ञान काफी न होगा। भङ्गी को मल-मूत्र का भी ज्ञान होना चाहिए। मल की जाच-पड़ताल करके आदर्श भङ्गी उन व्यक्तियों को यह चेतावनी देगा। 'आप के मल में आज अमुक द्रव्य थे, इसलिये आप होशियार हाजाय, आपको पेशाब में शक्कर थी, आपके मैले में आज अत्यन्त बदबू थी, आपके मल में कीड़े थे।' इस प्रकार की ज्ञान-प्राप्ति का अर्थ है शौच-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना। ऐसा आदर्श भङ्गी छोटे-छोटे गावों और बड़े बड़े शहरों में मल-मूत्र की व्यवस्था के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखकर वहा के समाज का सलाहकार और पथप्रदर्शक होगा। इससे इतना स्पष्ट होना चाहिये कि आदर्श भगी को अच्छा अक्षर-ज्ञान हो, क्योंकि उसमें शास्त्रों को पढ़ने की शक्ति होनी चाहिये। ऐसा भंगी अपनी आजीविका प्राप्त करते हुए भी अपना काम धर्म समझ कर करेगा, वह धनिक होने के स्वप्न नहीं देखेगा । वह तो जिस समाज के शौच का ठेकेदार होगा, उस समाज के आरोग्य की रक्षा करने में ही अपनी सफलता और सार्थकता समझेगा।

ऐसा आदर्श भगी कैसे पैदा हो ? अनेक आप्पा पटवर्धन हो तब। भगी का मान बढ़ाना शिक्षित समाज का काम है । खुद शौच-शास्त्र सीखकर, उसमें पारंगत होकर भंगी को सिखाये, भगी की स्थिति समझें, उनमें जो बुराइया पैदा हो गई हैं उन्हें धीरज के साथ दूर करायें, उनको शुद्धता सिखायें। उनके पास आज तो अच्छी झाड़ू नहीं है, मैला उठाने के साधन ठीक नही हैं । पाखाने कितने गन्दे हैं, और उनमें प्रवेश करने का द्वार तो जैसे नरक है। भगी के घर के इर्दगिर्द मल-मूत्र के तालाब भरे होते है। इस स्थिति में फेरफार कराने के लिये यह शिक्षितवर्ग यत्न करे, और इस काम से अपने कार्य की पूर्णता समझ कर ही सन्तोष करे।

ग्रामसेवकों को समझना चाहिये कि उनके अभ्यास-क्रम का आरम्भ इस प्रकार का आदर्श भगी होने में है।

आर्य समाज के अछूतोद्धार का अर्थ

श्री० मास्टर आत्माराम जी 'अछूतोद्धार और सांसारिक प्रलोभन' शीर्षक लेखमें 'आर्य्य मुसाफिर'में लिखते हुए आर्य्य समाज को बताते हैं 'कि उसे अछूतोद्धार की वर्तमान तहरीक में नहीं बहना चाहिए वरन उसे अपने पुराने तरीके पर दृढ़ रहना चाहिए।' उस तरीके पर वे निम्न प्रकार प्रकाश डालते हैं —

नवम्बर दिसम्बर मास की आर्यसमाज की प्रगति

आर्यसमाज की प्रगति के स्थायी रिकार्ड की उत्पत्ति तथा रक्षा में यह कालम सहायक होगा, इस विचार से हम यह नया कालम रख रहे हैं। आशा है जनता इसे पसन्द करेगी और इसके सम्पादन मे आर्य्य समाजों, आर्य्य नर-नारियों और प्रांतिक सभाओं का हमे आवश्यक योग प्राप्त रहेगा—सम्पादक।

संयुक्त प्रान्त

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते !

पिछले कुछ मासों से सयुक्त प्रान्तीय आर्य जगत् का वातावरण दल-बन्दी के विषैले धुए से आच्छादित होरहा है, इसका आपको पता होगा ही। प्रान्त के मुख्य पत्र "आर्य-मित्र" तथा—स्थानीय आर्य समाज के पत्र "दिवाकर" से उस वातावरण का किञ्चित आभास आपको हुआ होगा। उन पत्रों के पढने से ऐसा प्रतीत होता था मानो एक दल प्रतिनिधि सभा से घोर असन्तुष्ट है और वह लड़ाई के मैदान मे उतर आया है और प्रतिनिधि सभा के गढ़ पर गोलाबारी कर रहा है। प्रतिनिधि सभा को छिन्न-भिन्न करके अपने असन्तोष और बुग्ज को निकालने के लिये कमरबस्ता है। और प्रतिनिधि सभा रूपी गढ़ के रक्षक गढ की रक्षा मे व्यस्त हैं या यों कहिए आक्रमण के निरा करण मे व्यस्त हैं। दैवयोग से उन्हीं दिनों एक बाहरी व्यक्ति की हमसे भेंट हुई, जिसे आर्यसमाज से कुछ प्रेम प्रतीत होता था। आर्यसमाज की चर्चा छिड़ने पर उसने पूछा "कहो प्रान्त में समाज का कैसा काम हो रहा है।" हमने कहा—"बहुत अच्छा काम होरहा है धूम धड़ाकेसे उत्सव हो रहे हैं, समाज के निर्वाचन हो रहे है; वैदिक संस्कार हो रहे हैं, समाज खुल रही है, सगठित हो रही हैं, प्रचारक स्थान २ पर घूम रहे हैं। सब कुछ हो रहा है। आर्य समाज का पौधा लहलहा रहा है।" वे महाशय मेरी बात सुनकर एक दम मौन हो गये। मैंने समझा आर्यसमाज का केस मैने भली भाति, योग्यता पूवक रख दिया और उनपर अच्छा प्रभाव पड़ा है। परन्तु जब उन्होंने मेरे हाथ मे 'आर्यमित्र' और 'दिवाकर' की फायलें पकड़ाई तो सम्पादक जी सच जानिये ऐसा प्रतीत हुआ मानो मेरे पैरों के नीचे की जमीन हट रही

'आर्य्य पुरुषोंको दूरदर्शितासे काम लेकर अपने हर काम विशेषत अछूतोद्धार का आधार वेदप्रचार रखना चाहिए जो आर्य्य समाज स्वामी दयानन्द और आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं का अस्ल मशा है और जो तमाम मजहबों को नीचा दिखाकर धर्म का सर ऊँचा कर सकता है और एक अम्बेदकर क्या सैकड़ों अम्बेदकरों को यक़ीन दिला सकता है कि धर्म-परिवर्तन के लिए सचाई की खोज करे न कि अनित्य सांसारिक अधिकारों की।

—

है। मैंने सम्भल कर कहा—"महाराज! अखबारी दुनिया असली दुनिया मे भिन्न होती है। इसीपर से सही अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता।" उन्हों ने कुछ मुस्कराते हुए कहा "हम जैसे बाहरी आदमी तो अखबारों के द्वारा ही अन्दाजा लगा सकते हैं। इनसे तो ऐसा मालूम होता है प्रान्त मे लड़ाई झगड़ों के सिवा कुछ काम नहीं हो रहा है।" मैंने कहा "आप भ्रम में हैं।"

उस दिनरविवार का दिन था, मैं आर्य-समाज के सत्संगमें सम्मिलित होने के लिए जा रहा था, उनसे भी साथ चलने का आग्रह किया। प्रथम तो उन्होने इन्कार कर दिया परन्तु मेरे आग्रह पर मेरे साथ चल दिए। जिस समय हम समाज पहुँचे तो हवन की पूर्णाहुती हो रही थी। उस समय उपस्थिति कुछ अधिक न थी। मैं दिल मे सोच रहा था कि इस उपस्थिति का इन पर कहीं कुप्रभाव न पड़े। हवन के पश्चात् ही भजन गाए गये और समाज के पुरोहित प्रार्थना और वेदोपदेश के लिए वेदी पर आए उन्होंने सत्संगकी महिमा का वर्णन किया। उपदेश की समाप्ति तक उपस्थिति अच्छी हो गई थी। जिस से मेरे चित में भी उत्साह आगया। उपदेश की समाप्ति पर एक भजन हुआ और एक विद्वान व्यख्यान के लिए खड़े हुए। उन्होंने सगठन विषयक मनोहर व्याख्यान दिया पश्चात् मन्त्री जी ने कुछ समाचार सुनाए और वेद मन्त्रों के पाठ के पश्चात् सत्सग समाप्त हो गया। जिस समय हम वहा से निकले तो वे सज्जन भी प्रसन्न थे। उन्होंने मुझे कहा में 'आपके इस कथन को सहर्ष स्वीकार करता हूं कि जो समाचार पत्रों में छपता है वह समाज का असली रूप नहीं है। परन्तु मैं यह भी निवेदन करता हू कि वक्ताओं के जो भाषण हैं-वे भी समाज का वास्तविक रूप नहीं हैं" उनका यह वचन सुनकर मैं कुछ लज्जित भी हुआ और हम दोनों परस्पर नमस्ते करके विदा हुए।

इस मास सयुक्तप्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि-सभा का वृन्दावन मे वृहदधिवेशन हुआ। कन्या गुरुकुल हाथरस तथा गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव हुए। विस्तृत् रिपोर्टें तो अभी प्राप्त नहीं हुई हैं फिर भी यह विदित हुआ है कि, ३-४ स्नातक गुरुकुल से निकले हैं। ६-७ नवीन ब्रह्मचारी भरती हुए हैं। सभा के मुख्य अधिकारियों का निर्वाचन भी पूर्ववत् रहा है अर्थात बा० मदनमोहनजी सेठ प्रधान तथा श्री बा० पीतमलाल जी मन्त्री निर्वाचत हुए हैं। आशा की जानी चाहिए कि प्रान्त में आर्य-समाज की प्रगति को उत्तम रूप देने में ये दोनों महानुभाव जीजान से कोशिश करेंगे। पिछले दिनों आगरा यूनिवर्सिटी के कन्वोकेशन के अवसर पर श्री प० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी का एक व्याख्यान कालिज के मेस्टन हाल मे वेदों और उनकी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा वैज्ञानिक शिक्षा सम्बन्धी अवस्थाओं पर हुआ था। प्रान्तीय सभा ने शिक्षा केन्द्रों में प्रचार की उत्तम योजना की है, उसी के आधीन यह व्याख्यान हुआ था। गढ़ मुक्तेश्वर और बटेश्वर में गगा स्नान के अवसर पर प्रचार हुआ कैराना (मुजफ्फरनगर) के सेठ लालचन्द जी वैश्य की विधवा पत्नी श्रीमती भगवती देवी ने ८ ग्रामों

की सहराई जायदाद "गुरुकुल-वृन्दावन" को दान की है। इसके अलावा यह भी सुनने में आया है कि यदि और किसी स्थान पर देवीजी के नाम पर जायदाद होगी वह भी गुरुकुल की होगी। जब हम यह सुनते हैं कि देवी जी के भाई ने जिसके नाम वे यह जायदाद करना चाहती थीं गुरुकुल को दान देने को अपनी बहन को सलाह दी, उनका भ ई हमारी निगाहों में बहुत ऊँचा चढ जाता है। इस मास बनारस के प्रसिद्ध आर्य श्री बा० गौरी-शङ्कर प्रसाद जी ने "विद्या-सभा" को १ लाख रुपये का दान दिया है।

वृन्दावन में संभल निवासी श्री ला० शिवचन्द्र जी के दान से प्रतिनिधि सभा के आधीन वेद भाष्य का काम कई मासों से चल रहा है। यदि वेद-भाष्य-कर्त्ता अथवा सभा मन्त्री समय २ पर यह सूचना दे दिया करें कि इतना भाष्य हो गया है तो इस से लाभ ही होगा।

पञ्जाब-प्रान्त

श्रीमान् सम्पादक जी, नमस्ते !

इस मास स्यालकोट में "आर्य्य वीरदल सम्मेलन हुआ। उसके सभापति प्रो० राजेन्द्रकृष्ण कुमार एम० ए० थे। सम्मेलन में कई महत्व पूर्ण निश्चय हुए। मुख्य प्रस्ताब यह था कि प्रान्त में जगह २ आर्य वीर दल सगठित किए जाए। दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य-पद में परिवर्तन हुआ। श्री प० प्रियव्रतजी आचार्य नियत हुए। प० जी से विद्यालय की उन्नति की बड़ी २ आशाए लोगों को हैं। यह भी आशा है कि प० जी विद्यालय के भूत पूर्व आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की विविध प्रशस्त मर्यादाओ को कायम रक्खेंगे। इन पक्तियों को लिखने में हमें हर्ष हो रहा था कि वह विद्यालय के एक दु स्वद समाचार से रंज में परिवर्त्तित होगया है। मालूम हुआ है कि विद्यालय में एक विद्यार्थी ने आत्म हत्या करली है। कारण अभी विदित नही हुआ है। उस विद्यार्थी को सार्वदेशिक सभा से वज़ीफा मिलता था।

गुरुकुल कागड़ी का एक डेपुटेशन इस मास मे कलकत्ता इत्यादिमें गया और १२०००) उसने धन सग्रह किया।

आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार देहली में एक आदर्श विवाह हुआ। इस विवाह में रिपोर्ट है केवल ५) व्यय हुए। वर आचार्य श्यामजी एम० ए० थे और वधू लुध्याना निवासिनी श्रीमती पूर्ण देवी की सुपुत्री शान्ति देवी थी। विवाह संस्कार श्री पूज्य नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में हुआ था। वर और वधू दोनों योग्य और सम्पन्न परिवारों के थे।

इस मास भिवानी का एक समाचार अखबारों में छपा है कि वहा के सनातनधर्मियों ने पहले तो आर्य समाजियों को अपने जलसे में शास्त्रार्थ के लिए निमन्त्रित किया और जब वे वहा गये तो उनपर लाठियों से हमला कर दिया, जिससे कई आर्य भाई बुरी तरह ज़खमी हुए। इस घटना के सम्बन्ध में जिम्मेवार सभाके वक्तव्य की प्रतीक्षा उत्सुकता से की जा रही हैं।

इस मास आर्य्य समाज बच्छोवाली लाहौर का वार्षिक उत्सव हुआ। यह उत्सव पंजाबप्रान्त मे

अपना विशेष महत्व रखता है। इसमें न केवल लाहौर के ही वरन लाहौर से बाहर प्रान्तके आर्य्यसमाजी बड़ी संख्यामें सम्मिलित होते हैं। २५, २६ नवम्बर को विविध सम्मेलन हुए। नगर कीर्तन के स्थान में संकीर्तन हुआ। नगर कीर्त्तन की इस साल यह विशेषता थी। संकीर्त्तन का जलूस कालेज और गुरुकुल दोनों विभागों का सम्मिलित था। यह कीर्त्तन आधा मील लम्बा था। हाजिरी पिछले सालों की अपेक्षा कम थी इसका कारण इसी साल कालिज और प्रतिनिधि की जुबलियों का होना बतलाया गया है।

श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने डिंगा (गुजरात) में दयानन्द मठ की स्थापना की सूचना दी है और साधुओं को मठ में रहने का निमन्त्रण दिया है। इस मठके खुलजाने से लोग उस विवाद का अन्त समझते हैं जो श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी द्वारा प्रस्तावित 'मठ' शब्द पर छिड़ा हुआ था। जो एक प्रकार से स्वीकार कर लिया गया है। आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाबके अनुसन्धान विभाग की ओर से अथर्व वेद का भाष्य तैयार किया जा रहा है। अनुसन्धान विभाग ने आर्य्य विद्वानों से शंकाए यदि उन्हे हों वा उन्हें प्राप्त हुई हों मगाई हैं।

इस मास लाहौर से एक बड़ा विचित्र समाचार मिला है कि डी. ए. वी कालेज के विद्यार्थियोंने हड़ताल करदी थी इसलिए कि अधिकारी लोग परीक्षाके दिनोंमें भी उनसे सध्या कराते थे। हम तो सम्पादक जी, इस समाचारसे प्रसन्न हुये हैं क्योंकि बुराई में से भी भलाई निकल आया करती है। मुमकिन है इसमें से भी भलाई निकल आए।

राजस्थान

श्रीमान सम्पादक जी नमस्ते!

राजस्थान में आर्य्य समाज कैसरगञ्ज अजमेर और आर्य्य प्रतिनिधि सभा का झगड़ा बहुत दिनो से चला आता है। इस झगड़े की तह में सुनते हैं पद लोलुपता और दलबन्दी ही है। और उसकी वजह से राजस्थान का सामाजिक वातावरण बहुत दूषित रहता है और कामको बहुत हानि पहुंचती है। उसके दूर करनेकी चेष्टा भी होती रही है परन्तु वह व्यर्थ सिद्ध हुई है। इस बार प० धुरेन्द्रजी शास्त्री ने इसके हल करनेका बीड़ा उठाया है ऐसा सुनने में आया था। पता नहीं वह हल हुआ या नहीं। यदि यह झगड़ा तय हो गया और आर्य्य समाज प्रतिनिधि सभा में मिल गया तो यह बात प्रान्त के काम तथा सगठनके लिए बड़ी शुभ होगी और इसका असर अखिल भारतीय जगत पर उत्तम होगा, ऐसी आर्य्य समाज के शुभ चिन्तकों की भावनाए हैं। हमारी भी ऐसी ही भावना है।

इस मास अजमेरमें राजस्थान प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन २५-२६ दिसम्बरको हुआ। नये साल के लिए पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। प्रधान श्री कुंवर जालिम सिंह तथा मन्त्री श्री प्रो० घीसूलाल जी निर्वाचित हुए।

इस प्रान्त में आर्य्यसमाज की गति बड़ी सुस्त है। प्रतिनिधि सभा अपने थोड़े बहुत प्रचारकों से थोड़ा बहुत काम करती रहती है। इस मासमें ग्वालियर कोटा, ब्यावर, जयपुर, नसीराबाद, केकड़ी, मालवा, शेखावाटी में सभाद्वारा प्रचार हुआ। जयपुर समाज का वार्षिकोत्सव हुआ। २७,२८,२६,३०, नवम्बर

व १ दिसम्बर को गरोठ आर्य्य समाज ने रामपुरा मालपुरा में शत्रोद्धार के मेले में जहा पशु बलि होती है प्रचार कराया और ट्रैक्ट वितरण किए।

समाचार मिला है नारायणगढ़ (इन्दौर) के आर्य्य समाजियों पर झूठे मुकदमे लगाकर पुलीस उन्हें तंग करती है। प्रतिनिधि सभाके वक्तव्य की प्रतीक्षा है। सिरोही राज्य में सुना है राज्य की ओर से आर्य्य समाजियों को सताया जा रहा है पता नहीं कहा तक ठीक है। प्रतिनिधि सभा के वक्तव्य की इन्तजार है।

अजमेर के निकट पुष्कर राज हिंदुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहा प्रचारकी बड़ी जरूरत रहती है। खुशी है अजमेर के आर्य्य भाई यहा प्रचार कराते रहते हैं। २५ से २८ नवम्बर तक यहा अच्छा प्रचार हुआ।

राजस्थान में प्रचार की कितनी बड़ी कमी है यह दिखलाने के लिए मैं शखावाटी के श्री मूलचन्दजी अग्रवाल के जो आर्य्य समाज के बडे प्रेमी हैं पत्र का सार देता हूं।

पत्र

शेखावाटी मे जो भी कुछ इने गिने आर्यसमाज हैं उनमें भी बड़ी शिथिलता समाई हुई है। इसलिए न उनके साप्ताहिक अधिवेशन ही ठीक ठीक होते हैं और न वार्षिकोत्सव ही।

आठ दश वर्ष से इधर रहने के कारण मुझे ऐसा अनुभव हुआ है कि इधर के जाटों में वैदिक धर्म के प्रचार की बड़ी भारी आवश्यकता है। ये लोग चाहे पढ़े लिखे न हों परन्तु इनकी बुद्धि इतनी अच्छी है कि जो भी बुद्धि-पूर्वक बात इन को कही जाती है उसको ये तुरन्त समझ लेते है और तदनुसार आचरण करने में भी विलम्ब नहीं करते हैं।

कोई १९२८ या १९२९ की बात है, रींगस के पास एक ढाणी मे शुरू में चार जाटो को जनेऊ दिये गये थे। उस समय कई लोगोंको तो इस बात का आश्चर्य भी हुआ था कि जाटों को जनेऊ कैसे दिये गये, परन्तु, उसके पश्चात् इधर यज्ञोपवीत का ऐसा तांता लगा है कि सैकड़ों हजारों जाटों ने यज्ञोपवीत धारण कर लिये हैं। मृतक बिरादरी भोज के विषय में इस को कम करने या बिल कुल नहीं करने को इन्हें कहा गया तो कई कुटम्बों ने समर्थ होते हुए भी मुकता नहीं किया। ऐसे सैकड़ों जाट होंगे जो कि पहिले खादी नहीं पहिनते थे, परन्तु उनको खादी की बात कही गई और उन्हों ने खादी पहिनना शुरू कर दिया। पाठशाला के फायदे समझाने पर कई जगह जाटो ने अपने लड़कों को फौरन पढ़ाना शुरू कर दिया है। जाटों की संख्या भी शेखावाटी में अन्य लोगो की अपेक्षा सब से ज्यादा है। ऐसी स्थिति मे आर्य संन्यासियों और उपदेशकों की शेखावाटी में ज्यादा से ज्यादा आवश्यकता है। यदि कहीं पर, जैसा कि नवलगढ़ में पं० गोकुलदत्त जी को रोका गया था, पब्लिक व्याख्यान की व्यवस्था न भी हो सके तो समाज मन्दिर के अन्दर ही धर्मोपदेश दिया जावे तथा कथा की जावे। यदि मन्दिर भी न हो तो गृहस्थों के घरों में घूम घूम कर प्रचार किया जावे।

कई पढ़े लिखे लोग आर्य-समाज को एक सम्प्रदाय समझ कर उसकी उपेक्षा करने लगते हैं, परन्तु मेरा ख्याल ऐसा नही है। मैं तो आर्य-समाज को सार्वजनिक सेवा के महान् केन्द्र के रूप मे देखता हू और देखना चाहता हूँ ।

—मूलचन्द अग्रवाल

मध्य प्रदेश

श्रीमान् सम्पादक जी, नमस्ते।

मध्य प्रदेशकी आर्यसमाजकी प्रगति पर लिखने के लिये उत्साह नही होता है क्योकि यहां आर्य-समाज बड़ी शिथिल अवस्थामे है। कहनेको तो यहां दर्जनों आर्यसमाजे हैं प्रान्तिक सभा भी है परन्तु जीवन नजर नही आता। कारण के विस्तार मे मै जाना नही चाहता आप स्वयं विज्ञ है। स्वयं समझ सकते हैं। आएदिन हिन्दुओके लाल और हिन्दुओ की स्त्रियाँ विधर्मी बनते है,भगाए जाते हैं। इस तरह समाचार पत्रोमें रिपोर्ट छपती है परन्तु ये घटनाएं आर्यसमाज पर कोई विशेष प्रभाव नही छोड़ती प्रतीत होती हैं। समाजो को प्रचारको के न आनेकी शिकायत रहती है प्रतिनिधि सभा को समाजो से दशांश और फार्म प्राप्त न होने की शिकयत रहती है और इन्हीं शिकायतो के करने कराने में समय और शक्ति बरबाद होजाती है जैसा कि अन्यत्र भी होता रहता है। काम होतो कैसे हो ? २-४ सम जो मे जान है वेही कुछ करती भरती रहती हैं। अस्तु कुछ समाचार भेजे ही देता हू ।

१३ नवम्बर को अमरावती समाज मे शारदीय नवसस्येष्टि और महर्षि निर्वाण पर्व्व मनाए गए। इसी समाज मे १७-११-३६ को ईशुदास नामक एक ईसाई नवयुवक की शुद्धि हुई। शुद्धिके बाद उसका पुराना नाम विष्णुप्रसाद रखा गया। चांदूर रेल्वे समाज कुछ शक्ति शाली है। यह अच्छा काम करता रहता है विशेषतः शुद्धि का। ता० १३ को इसने निर्वाणोत्सव मनाया। इसके मन्त्री श्री० मारुतिरामजी कडू की शुद्धिसम्बन्धी चिट्ठी भेजता हूँ इसे छाप देवे।

चांदूर

दो मास पहिले नागो गणेश हरिजन तथा उसकी पत्नि चन्द्राबाई इन्होने धर्मान्तर करके इसलामी धर्म को स्वीकार किया था। तत्पश्चात चांदूर-रेलवे आर्य समाज के कार्य-कर्ताओ के पास पश्चात्ताप सूचित कर के इस्लामी धर्म पर बिलकुल विश्वास और प्रेम न रह कर उभयता शुद्ध होने की और आजन्म वैदिक धर्म का पालन करने की इच्छा प्रगट की। इसलिये आर्य-समाज मन्दिर मे मगलवार ता० ८-१२-३६ को रात्रि मे ८ बजे श्री संत तुकड़ो जी महाराज के नेतृत्व मे दांपत्यो का वैदिक पद्धति के अनुसार शुद्धि-करण कराके उन्हो को पूर्ववत् वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई, पश्चात समाज के मंत्री श्री मारुतिराम जी कडू का शुद्धि-करण पर्यालोचन के विषय पर भाषण होकर श्री सत तुकड़ो जी महाराज का उपदेश पर हिंदी मे भाषण हुवा' । अपने भाषण मे कहा—मुझे अति आनन्द हुवा है कि, एक परधर्म मे गया हुवा हिंदूधर्मीय पुनश्च स्वधर्म मे लेने के शुभ-प्रसंग मे हाजिर रहने की सधि मिली। पहिले मुझे अति दुःख मालूम होता था कि, अपने हिंदू-धर्म का एक ही संप्रदाय

एकदम परधर्म में गया हुवा इस पुनश्च स्वधर्म में मिलने को राजी न था परन्तु आर्य समाज ने ए बाबत विशेष लक्ष दे कर ऐसे लोगों को पुनश्च वैदिक धर्म की दीक्षा देने का स्तुत्य उपक्रम चलाया है। ऐसा प्रसंग देखने का मेरा ए पहिला ही समय है। अपने सब हिंदू बांधवों ने अपने नजर में आये हुये ऐसे लोगों को स्वधर्म में लाने को प्रवृत्त कराना ए बाबत आर्य समाज के ओर से चल रहे हुये कार्य उन को भूषणभूत हैं।

आखरी आभारप्रदर्शन हो कर प्रसाद बांट कर समारम्भ समाप्त हुवा।

उमरखेड़ में आर्यवीरदल स्थापित हुआ है। जबलपुर में भी प्रचार हुआ। भेला घाट में मेले के अवसर पर ३-४ दिन प्रचार हुआ-प्रतिनिधि सभा ने फैजपुर के इण्डियन नैशनल कांग्रेस के अवसर पर प्रचार करनेकी सूचना दी थी और वितीणार्थ ट्रैक्टो का प्रबन्ध कर लिया गया है, ऐसी सूचना दी थी। प्रचार अवश्य हुआ होगा। यदि हुआ होगा तो रिपोर्ट बाद को भेजूंगा।

बम्बई

श्री सम्पादक जी, नमस्ते!

बम्बई प्रान्त मे भी झगड़े का लग भग वही रूप है जो राजस्थान में है। बम्बई समाज कई वर्षों से प्रतिनिधि सभा के संगठन से अपने को पृथक रक्खे हुए है। इस झगड़े के कारण तथा अन्य कारणों से भी प्रान्त में आर्य्य समाज की गति बड़ी मन्द है। कम से कम मुझे तो ऐसी ही प्रतीत होती है। हो सकता है मैं वास्तविक प्रगति से परिचित न हूँ। इसमे मेरा जितना दोष है उस से कहीं अधिक प्रान्त के आर्य्य अखबारो का है जो आर्य्य समाज के अखबार होकर भी जो आर्य्य भाषा का व्यवहार आवश्यक ठहराता है, जो उस ऋषि की मातृभूमि की, आर्य्य समाज की आवाज है जिसने गुजराती का व्यवहार छोड़कर हिन्दी भाषा का व्यवहार अपनाया था सार्वदेशिक भाषा हिन्दी को अपनाने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के इस युग मे भी प्रान्तीय भाषाओं मे निकलते है। अस्तु सम्पादक जी, अच्छा हो, प्रतिनिधि सभा से मासिक प्रगति का विवरण आप मंगा लिया करें मैं तो माफी चाहता हू उस समय तक के लिये जब तक मैं गुजराती न सीख लूं या बम्बई प्रान्त के आर्य्य पत्र हिन्दी मे न निकलने लगें।

"नासिक मे वैदिक धर्म्म प्रचार" शीर्षक एक समाचार हमें मिला है हम उसे यहाँ छापते है।
(सम्पादक)

"नासिक में वैदिक धर्म्म प्रचार"

नासिक शहर मे रेवरेण्ड एच० हाज रांची निवासी ने कलेक्टर नासिक की अध्यक्षता मे विजयानन्द नाटकगृहमे ८, ९ १०दिसम्बरको ईसा की जीवनी और उसके मिशन पर तीन भाषण दिये। कलेक्टर की अध्यक्षता के कारण नगर के गण्यमान्य प्रतिष्ठित हिन्दू भी सम्मिलित हुए। दूसरे दिवस पं० कन्हैयालाल मिश्र आर्योपदेशक आर्य विद्या काशी ने पादरी सा० से वाद-विवाद करने को पत्र दिया परन्तु वर्तमान अध्यक्ष ने स्वीकृति न दी। पादरी सा० के प्रचार के समाप्त

होने के पश्चात् आर्य-समाज नासिक तथा हिन्दू सभा नासिक की ओर से स्थानीय थियेटर हाल में स्वामी शङ्कराचार्य जी की अध्यक्षता में १२-१२-३६ को हिन्दुओ की एक महती सभा हुई जिसमें जनता पांच हजार से ऊपर थी। हाल में बाहिर तक पैर रखने को स्थान न था। श्रीमान् पं० कन्हैयालाल मिश्र ने "विदेशियों पर वैदिक धर्म का प्रभाव" विषय पर एक घण्टा तक अत्यन्त महत्व-पूर्ण और सारगर्भित भाषण दिया। आप ने पाश्चात्य देश के विद्वानों के विचार उनकी पुस्तकों में से बतलाये कि किस प्रकार विदेशी विद्वान वैदिक धर्म की प्रशंसा कर वैदिक धर्म की ओर झुक रहे हैं और बाइबल की शिक्षा से अशान्त हो रहे हैं। डा० विक्टर कजन ने यहाँ तक लिख दिया है कि यदि मेरा पुन जन्म हो तो परमात्मन् मेरा जन्म भारतवर्ष में देना जिससे मैं वैदिक ज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर सकूं। इसी प्रकार अनेक योरोपियन विद्वानों के महत्व पूर्ण विचार बतलाये। इस व्याख्यान से पंण्डित जी की खोज का पूर्ण पता चलता है। आप के व्याख्यान के प्रभाव से प्रभावित होकर नवयुवक बाबूराव जानोबा भेलकर जन्म के ईसाईने परिवार सहित शुद्धी कराके पुन. वैदिक धर्ममें सम्मिलित हो आर्य-समाजी बननेकी घोषणा की। पश्चात् सभापति जी का भी अत्यन्त महत्व पूर्ण और गम्भीर भाषण हुआ। हिन्दू जनता पण्डित जी के व्याख्यान से अत्यन्त प्रभावित थी। धन्यवाद तथा कर्तल ध्वनि और वैदिक धर्म के जय घोष के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

किशन लाल चक्रपाणि तिवारी
उप सभापति, हिन्दूसभा नासिक।

बिहार में प्रगति

श्री० सम्पादक जी, नमस्ते।

'बिहार प्रान्त' आपको पता ही है प्रकृतिके विपल्वों से सताया हुआ है, उन विप्लवों से आर्य समाज को भी बड़ी हानि पहुची है। वहां के आर्यसमाजी भाई समाज की शक्ति के निर्माण में संलग्न हैं। वह प्रान्त पारस्परिक मनो-मालिन्य से शून्य है यह नहीं कहा जा सकता। आप सोचते होंगे मनो-मालिन्य, दलबन्दी का मैं हर प्रान्त मे क्यों जिक्र कर रहा हूँ। परन्तु क्या करूँ मजबूर हूँ हृदय का वेग लेखनी के द्वार से ही निकाल कर कुछ शान्त कर लेता हूँ, वैसे खुशी नहीं है, मुझे खुशी होगी जिस दिन, मुझे ऐसी नाखुशगवार चीजें आपके सामने रखने का मौका ही न मिलेगा। अस्तु-इस मास श्री महात्मा नारायणस्वामी जी प्रधान सार्वदेशिक सभा ने बिहारप्रान्तका दौरा किया। प्रचार की धूम रही। स्वामी जी के दौरे का प्रधान उद्देश्य यह देखना था कि सशोधित उपनियमों का आर्यसमाजों में कैसा प्रचलन हो रहा है। इस दौरेमें प्रधान जी ने मुख्य २ आर्यसमाजोंका निरीक्षण किया तथा कई समाजो को उपनियमों के अनुसार संगठित कराया। हमने आर्य भाइयों को यह मांग उठाते हुएसुना है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान को इण्डियन नेशनल कांग्रेस इत्यादि के अध्यक्षों की नाई प्रान्तों में दौरा करना चाहिए।

आर्य समाजो का निरीक्षण करना तथा उनमें आवश्यक सुधार यदि वाछनीय हो करना चाहिए। इस दृष्टि से यह दौरा बडा महत्व रखता है। प्रतिनिधि सभा बिहार के पधान जी को दौरे का विस्तृत विवरण प्रेस में देना चाहिए। —एक आर्य

मद्रास प्रांत

बगलौर मिशन अक्टूबर नवम्बर का विवरण

अक्टूबर के पृथम सप्ताह के कुछ दिन माला बार पूांत के कोट्टयम (रियासत ट्रावनकोर) आदि के पूचार मे व्यतीत हुए। १ अक्टू० को कोट्टयम (Youngmen Christian Association की स रक्षताम‍े और पो० कुरुविल्ला M A B D की अध्यक्षता मे (जो वहां Seminary मे Theology के प्रोफैसर हैं (Universal Brotherhood वा विश्व भ्रातृत्व पर मेरा अंगरेजी मे भाषण हुआ जिसमे वेद शास्त्रो की इस विषयक शिक्षा की बाइबल की शिक्षा के साथ तुलना की गई। सभापति महोदय ने इस बातपर हर्ष पकट किया कि वेदो मे इतनी उन्च शिक्षाये पाई जाती है। २ ता० को मध्यान्ह भारतीय महाविद्यालय मे जिसके मत्री श्री पं० नारायणदत जी हिंदी भूषण हैं) स स्कृत मे और सायम् एक सार्वजनिक व्याख्यान श्रीयुत A M. पनिक्कर B A.B L के सभापतित्व मे वेदो के सन्देश पर हुआ। ३ ता० को पात भ नन्द हिंदी महाविद्यालय में हिंदी पच र सप्ताह विषयक पथम सभा के सभापति रूप से मेरा भाषण हिंदी तथा स्व० स्वामी श्रद्धानंद जी के स'देश के विषय मे हुआ। उसके पश्चात् आल्वे की स'स्कृत पाठशाला का निरीक्षण करते वहा वदोपनिषद् की शिक्षार्थ उचित निर्देश देते और श्री नीलकण्ठ नम्बूदी नामक ब्राह्मण से धर्म विषयक शास्त्रार्थ करते हुए मै बगलौर वापिस आया क्योकि वर्षा का जोर अधिक हो जाने क कारण विशेष प्रचार असम्भव था तथा अन्य आवश्यक सामाजिक कार्य थ। १८ ता० को ब गलौर आर्य समाज का वार्षिक साधारण अधिवेशन (Annual General Meeting हुआ जिसमे नए अधिकारियो का निर्वाचन तथा भविष्य के कार्य क्रमका निश्चय किया गया।

पृधान—श्री सम्पत आयंगर जी Retired Judge

उपपृधान—श्री पुटैय्या जी B. A

तथा मंत्री श्रीयुत रामकृष्ण B Sc और धर्मदेव विद्या वाचस्पति सर्वसम्मति से चुने गए।

२१ ता० को कगेरी ग्राम विद्यालय, हरिजन वस्ती तथा गुरुकुलाश्रम में पूचार किया गया। मावल्ली इत्यादि के हरिजनो मे भी पचार किया गया। विजय दशमी के अवसर पर मैसूर में बडा उत्सव होता है जिसमे दूर २ से बहुत लोग सम्मिलित होते हैं उस अवसर पर यथा सम्भव पचार सामाजिक साहित्य वितरणादि द्वारा किया गया। और एक आर्य सज्जन के घर म उनकी पुत्री का नामकरण संस्कार भी कराया गया। उधर से लौटनेपर United Mission School Bangalore के रेवरेण्ड कौक्स नामक पादरीके साथ ईसाई मत विषयक शास्त्रार्थ हुआ। पादरी

साहेब ईसामसीह की निर्बलता, मृत्यु से भय इत्यादि विषयक प्रश्नो का कोई संतोषजनक उत्तर न दे सके उन्हे मैंने Glory of the Vedas आदि अपनी लिखित पुस्तकें भी भेंट की।

नवम्बर १९३६

इस मास मे बंगलौर शहर, छावनी अलसूर शेषाद्रिपुर, मल्लेश्वर, बेल्गाम, गोरीबिदनूर, हिन्दूपुर इत्यादि में प्रचार कार्य किया गया। ८ नवम्बर स १५ तक ऋषि दयानन्द सप्ताह की भिन्न ७ स्थानो में आयोजना की गई। बेल्गाम में लक्ष्मीयात्रा नाम से एक बडा पर्व १२ वर्षों में १ बार कुम्भ के मेले की तरह होता है उस अवसर पर यथोचित पचार तथा ऋष्युत्सव के अवसर पर पचारार्थ मुझे बेल्गाम जाना पडा। लक्ष्मीयात्रा मे अधिक सख्या ग्रामोके अशिक्षित लोगो की होती है तथापि यथा संभव शिक्षितो में सामाजिक साहित्य के मुफ्त वितरणादि द्वारा पचार किया गया। इस यात्रा मे पहले भैंसे वगैरह की बलि दी जाती थी पर इस वर्ष इसके विरुद्ध आन्दोलन करने के कारण पशु बलि सर्वथा नही दीगई। बेल्गाम के पतिष्ठित सज्जनो जिनमे कोल्हापुर के भू०पू० दीवान दीवान बहादुर लठ्ठे और असिस्टेण्ट डिस्टिक्ट जज ओक् साहेब का नाम विशेष उल्लेखनीय हे मेरा एक व्याख्यान हिन्दी वर्ग मे और एक गीर्वाणवाग् वर्धिनी सभा मे मधुरवाणी' संस्कृत पत्रिका के सम्पादक श्रीगलगलीरामाचार्य जी के सभापतित्व में सस्कृत में हुआ जिसे पण्डितमण्डली ने बहुत पसन्द किया और अपनी पत्रिका के लिये लेख लिखने की पार्थना की जिसके अनुसार मैने इस मास के अङ्क के लिये १ लेख वेदविषयक और १ संस्कृत कविता प्रकाशनाथ दी है। बेल्गाम मे ऋष्युत्सव ऋ० जिला जज श्री ओक् महोदय के सभापतित्व में १३ नवम्बर को मनाया गया जिस में मेरे प्रधान भाषण के अतिरिक्त प्रिन्सीपल वोहरा डा० बाके आदि स्थानीय सज्जनो के भी सक्षिप्त भाषण हुए और देवी विद्यावतीजी के भजन हुए। अभी और कुछ व्याख्यानो का प्रबन्ध किया जा रहा था कि बंगलौर आर्य समाज के प्रधान श्रीयुत सम्पत् आयंगार Retired Judge के तार पर अत्यावश्यक समाज कार्य होनेसे मुझे १५ ता० को बंगलौर के लिये प्रस्थान करना पडा। बगलौर मे भी ऋष्युत्सव के सम्बंध मे शेषाद्रिपुर कैलस् पाल्यम् छावना आदि मे सार्वजनिक सभाएं की गई। महर्षि दयानन्द के महत्त्व और सन्देश पर एक पुस्तक कर्णाटक भाषा मे पचारार्थ मुफ्त वितरणार्थ ऋष्युत्सव के उपलक्ष्य मे बंगलौर आर्य समाज की तरफ से प्रकाशित कराई गई। पतिष्ठित सभा द्वारा प्रेषित Voice of Arya varta और Daily Prayer of an Arya प्रचारार्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रही है। १५ ता० को बंगलौर छावनी के प्रसिद्ध ईसाई 'Bible Book Society' के मैनेजर मि० बार्नबस् की पुत्री श्रीमती १ न्सम्मा नामक इण्टरमीडियेट् तक शिक्षिता लगभग ३० वर्ष की देवी का शुद्धि सस्कार बडे समारोह के साथ कैलासपाल्यम समाज भवन मे श्रीयुत सम्पत् आयंगार जी रिटायर्ड जज् की अध्यक्षता मे मैंने कराया। वैदिक धर्म के मुख्य तत्वो को

व्याख्या की गई। शुद्धि के अनन्तर एक शिक्षित हरिजन युवक के साथ उसका विवाह संस्कार पृतिष्ठित सज्जनों और देवियों की उपस्थिति में अंग्रेजी में व्याख्या सहित कराया गया जिसका जनता पर विशेष पभाव पड़ा। इस अवसर पर श्रीयुत सम्पन् आयंगार जी पृधान आर्य समाज और उनकी पुत्री श्रीमती लक्ष्मी देवी जी M A L. T के भी संक्षिप्त भाषण हुए। इस शुद्धि से ईसाइयों में बड़ी सनसनी फैल गई है। यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि श्रीमती कांतम्मा के पिता की उस युवक के साथ विवाहार्थ अनुमति थी इस शर्त पर कि वह ईसाई मत को स्वीकार करे पर जब श्री कान्तम्मा ने ही वैदिक धर्म स्वीकार करने की अपनी प्रबल इच्छा प्रकट की तो उसके पिता ने ८ दिनों तक उसे घर से बाहर नहीं निकलने दिया और शिकायत किये जाने पर मजिस्ट्रेटने उसे इस "कैद" से छुड़ाया। २३ ता० को हॉलैंड के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० G H. Mees M. A, LL D के साथ आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों पर सप्रेम संभाषण किया। २८ नवम्बर को सिंह सभा के निमन्त्रण पर गुरुनानक जी के जन्म दिन अलसूर में मैंने 'वैदिक धर्म और सिक्खमत, पर १ घण्टातक व्याख्यान दिया और प्रेम पूर्वक सहयोगार्थ सिक्ख भाईयों से अपील की। सिक्ख भाईयों का हम लोगों के साथ प्रेम प्रशंसनीय है तथा प्रत्येक शुभ अवसर पर निमन्त्रण द्वारा वे इसका परिचय देते हैं।

संसारके सुप्रसिद्धवैज्ञानिक सर सी०वी०रमन् जो Indian Institute of Science बंगलौर के Director हैं की सुयोग्यधर्मपत्नी श्रीमती लोकसुन्दरी रमन् ने इस मास मुझे तथा मेरी धर्म पत्नी श्रीमती विद्यावती देवी जी को सप्रेम निमंत्रण दिया जिसके अनुसार हम लोग २४ नव०को वहां गए। उनको मैंने वैदिक धर्म तथा आर्य्य समाज विषयक कई पुस्तकें भेंट कीं। हमारी सुपुत्री चि० सरस्वती ने जिसकी आयु ४ वर्ष से कुछ कम है लेडी रमन् को प्रार्थना मन्त्र, संस्कृत श्लोक आदि सुनाए तथा स्वय प्रार्थना कर के सुनाईं जिसे सुन कर वे बहुत ही प्रसन्न हुईं और बार २ इनस्टीट्यूट में आने का मुझे निमन्त्रण दिया। वे शीघ्र ही अपने घर तथा सेवा सदन में हमारे द्वारा वृहद्हवन कराने वाली हैं। इन्सटीट्यूट मे इस मास Youngmen's Aryan Association की स्थापना कुछ उत्साही पंजाबी युवकों के परिश्रम से हो गई है जिसके कार्य्य में लेडी रमन् भी बड़ा उत्साह दिखा रही हैं तथा प्रोत्साहित कर रही हैं। सर सी०वी० रमन् से भी मिलने का उस दिन सौभाग्य प्राप्त हुआ। गोरीबिदनूर के एक प्रतिष्ठित सज्जन के निर्देशानुसार मैं २९ नव० को वहां गया। उधर एक आर्य्य सज्जन को प्रेरणा की है और उन्होने इस बात को बहुत कुछ स्वीकार कर लिया हैकि ५०एकड़ जमीन 'दयानन्दपुर' नाम से स्थापित किये जाने वाले एक छोटे उपनिवेश के लिए दान देने की कृपा करें। इस विषय की विस्तृत सूचना निश्चय होनेपर फिर दी जायगी। गोरीबिदनूर से मैं हिंदूर गया जहां ३० ता को वेदोंके पवित्र सन्देश पर एक व्याख्यान हुआ। १,

२, ३ दिस. को ४ और व्याख्यान हो कर जिनका विवरण फिर दिया जाएगा वहां आर्य्य समाजकी स्थापना कर दी गई है। कल ६ तारीख को लेडी रमन् की अध्यक्षता में 'Ancient Aryan Culture' पर मेरा Indian Istitute of Science' में अंग्रेजी व्याख्यान हुआ जिसके पश्चात् वहीं हवन कराया गया जिसमें लेडी रमन् ने मुख्य भाग लिया।

—धर्मदेव विद्यावाचस्पति

नवम्बर के कार्य का संक्षेप

१—दीपावली समारोह श्री भक्तवत्सलम्। डिपुटी मेयर, मद्रास की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर एक बृहत् प्रौसेशन भी शहर के मुख्य २ भागों में गया।

२—चार शुद्धियां एक नामकरण तथा एक विवाह संस्कार हुआ।

३—गुन्टूर मे प्रचार तथा शुद्धियां। गतमास गुण्टूर जिला में १६ ईसाई परिवार जिनके व्यक्तियों का योग ३७ है, शुद्ध होकर पुनः हिन्दू धर्म मे प्रविष्ट हुए।

४—तिरुवन्नायलै नामक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पर मेला प्रचार।

५—सूलै-ब्रांच का वार्षिक निर्वाचन तथा रिपोर्ट

६—Hinduism Vs Islam का तामिल अनुवाद।

—केशवदेव ज्ञानी
मद्रास

ट्रावनकोर में प्रचार

मौखिक प्रचार —नीलं पेरूर, कोट्टयम्, कोडयंपल्ली, कुडमालूर, मन्नानम, एट्टुमानूर, कवियूर, मरियप्पल्ली इत्यादि स्थानों पर व्याख्यान दिया।

मेला प्रचार.—अपूर्क्करा और कुमारनेल्लूर मन्दिर के मेलों पर छ दिन प्रचार किया।

इसके अतिरिक्त प्रचार के सिलसिले में और हैन्दव महासम्मेलनों में भाग लेने के लिए ट्रिवंड्रम आपूर्क्करा पश्चिम, अम्बनम् पुतुप्पल्ली आदि स्थानों की यात्रा की।

एन एस एस (Nair Service Society) के जनरल सेक्रेटरी से सामाजिक विषय पर बात चीत करने से सस्कार विधि (मालयालम) की आवश्यकता उन्होंने अनुभव की। उन्होंने यह कहा है कि "स्वामी जी कृत सस्कार विधि मलयालम में कर दें तो मैं अंतरंग सभा में पेश करूँगा और उसे स्वीकार करा कर सोसाइटी के द्वारा ही प्रकाशित कराने का पूरा २ यत्न करूँगा।

—नारायणदत्त।

पहाड़ी इलाकों में प्रचार की प्रगति

अक्तूबर नवम्बर मास का विस्तृत विवरण

अक्तूबर मासमें कुछ ग्रामोंमें प्रचार करके ता.१८से जहरीखाल लैन्सडोन में प्रचार किया। जहरीखाल विद्यार्थियों तथा आर्य भाईयों में प्रचार किय। शुद्धशुदा आर्य भाइयों से मिला और उन को आर्य सिद्धान्तों पर चलने के लिये उपदेश दिया। जिस समय मैं जहरीखाल आर्य समाज में उपदेश करता था, आर्य समाज के प्रधान मंत्री सिगरेट पी रहे थे, इस समाज में पहिले साप्ता

हिक अधिवेशन नहीं होता था। पर अब ४ मास से मासिक अधिवेशन होता है। यह लोग उपदेश से बड़े प्रसन्न हुए। समाज रजिस्टर में मेरे उपदेश का विवरण मंत्रीका लिखा हुआ है संख्या ३० तक थी। तारीख २०-२१ को प्रचार उसी ग्राम में किया, यहा शुद्धशुदा आर्य भाईयों के ७-३ मवासे हैं। यह भाई भो सिगरेट तम्बाकू खूब पीते हैं। नित्य हवन करने के लिये उन्हें उपदेश दिया और नित्य कर्म करने की प्रतिज्ञा करवाई। दो दिन तक इन भाइयों को अपने साथ हवन करने को बैठाया। रात्री के भूत, प्रेत, तथा वर्तमान देव देवतों के बारे में इनके प्रश्नों का उत्तर देता रहा। वर्तमान देवी देवतों से व भूत प्रेतों से यह भय मानते हैं। कुटम्ब परिवार सहित इनकी संख्या उपदेश सुनने के लिये २० तक थी। तारीख २४ को जहरीखाल से कोटद्वारा को आने के लिये रास्ते मे एक ग्राम कयेला नाम का मुसलमानों का है। इस गाव की देख भाल की, यहा २२ मवासे मुसलमानों के ही हैं। बोल-चाल, रहन-सहन सब इनका गढ़वाली है, खेती इत्यादि जैसी हिंदूओं की है उसी प्रकार इन की भी है। इन की एक मसजिद है। मैंने यहा की स्त्रियों को पूछा कि यहां आप लोग गाय की कुर्बानी करते हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि जैसी माता हिंदू गाय को मानते हैं वैसे हम भी मानते हैं।

कोटद्वारा जाकर आर्य समाज में ठहरा। रात्री में वास करने वाले अतिथि जो भाई टिके थे सिगरेट तम्बाकू पीते थे, शुद्धशुदा भाईयों में से एक वानप्रस्थी भी इस समाज में थे, इन से पूछा यह लोग समाज मन्दिर में ऐसा क्यों करते है ? उन्होंने उत्तर दिया यह आर्य हैं, नहीं मानते। प्रात २५ तारीख को साप्ताहिक अधिवेशन था। कुछ सभासद लोग भी तम्बाकू सिगरेट पीते थे जब उपदेश देते समय इनको व्यसनों के छोड़ने के लिये कहा तो, जवाब देने लगे इन बातों में क्या रखा है ? अपने समाज रजिस्टर में उपस्थिति सख्या लिख दी, उपदेश का विवरण नहीं लिखा और न समाज में मेरी हाजरी लिखी, मेरी इच्छा इन दिनों इन भाईयों में प्रचार करने की थी परन्तु पारिवारिक कारण से इन लोगों में जो प्रचार करने की इच्छा थी वह पूरी नहीं हो सकी। तारीख २७ सवेरे तक ही कोटद्वारा आर्य समाज में रहा। तारीख २८ को ३६ मील जगोदारवाल पैदल पहुंचा। २६ तारीख ८ मील अपने गाव पारवरी आया, शामको दुगड्डेसे लाल तुलारामजीका पत्र मिला कि तुम्हारी पुत्री दुगड्डा अस्पताल मे आगई है। ३० तारीख को ११ वजे २० मील पैदल दुगड्डा पहुंचा।

तारीख १२ को नगरग्राम में गया। इस गांव में अगले साल के प्रचार में आर्य मित्र मगवाने को व आर्य समाज स्थापन करने को कहा था। तब से कुछ भाई रविवार को बराबर हवन करते हैं और आर्य मित्र भी मँगा लिया है। इन लोगों का विचार था कि दीपमाला को हमारे गाव में आर्य समाज की स्थापना हो जाय तो अच्छा है। इसीलिये वहा गया था। सो कतिपय परिस्थितियों के कारण समाज तो स्थापित नहीं हो सका।

उनमे से एक चोन्दकोट्ट आर्य समाज का आर्य सभासद बनाया ओर ५ सहायक सभासद इसी गाव मे सामाहिक सत्सग करने के लिये बनाये। तथा स्वामी जी कृत ग्रन्था को पढने और म गाने के लिये प्रेरित कर आया हूँ। तीन दिन तक आर्य धर्म की विशेषता तथा स्वामी जा के आर्य जाति पर उपकार विषय पर प्रचार किया। जन सख्या ७० ८० तक थी।

तारीख १८ १६ को नौ गाव खाल में ५०० जन सख्या के बीच मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। विषय, सादगी और ईश्वरभक्ति से ही देश का उद्धार होगा। २० ‑३ २४ २५ तारीख दुगड्ड मे रहा। प० जवाहरलाल जी के आने पर गढवाल की जनता ८ १० हजार तक थी। मे भी समय २ पर प्रचार करता रहा। वैदिक धर्म के भिन्न २ विषयों पर लोगों मे उपदेश करता रहा दुगड्डा आर्य समाज मे साप्ताहिक अधिवेशन नहीं होता है।

तारीख २६-२७-२८-२६-३० को मदन मोहन आश्रम हरिद्वार मे श्री प० रेवानन्दजी अध्यापकसे आर्य ट्रैक्टोंक लेनेके लिये आया। १००० हजारके करीब ट्रैक्ट गढवालमे वितीरणार्थ प०जी से प्राप्त किये। प० जी क पास मैजिक लालटैन है उसके द्वारा प्रचार करने की इच्छा थी, पर प० जी ने कहा कारवाइका खर्च अधिक होता है। इसी लिये नहीं ला सका। अगले गो महीने के विस्तृत विवरणों में लिखा था कि सिगरेट, तम्बाकू, मास मदिरा कितने लोगों को छुडाया, पीछे के विवरण मे लिख कर भेजूगा। प्रार्थना है इस समय नही भेज सका क्षमा प्रदान करने की कृपा कीजिय, दूसरे मास के विवरण मे लिख कर भेजूगा।

—रघुवरदयाल आर्य उपदेशक गढवाल

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य

—ग्रीस देश की मिस मक्सिमीनी पोरटास (Maxmeani portias) ने हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों पर मुग्ध होकर हिन्दू धर्मको स्वीकार कर लिया और अपना नाम मिस सावित्री देवी रखा।

—आ० स० हसनगज (पार) लखनऊ मे २७ नवम्बरको एक जन्मके ईसाई परिवार और एक मुसलमान की शुद्धि की गई।

—करोवन जिला उन्नाव के दूसर वैश्य कुलकी एक स्त्री अपनी २ लड़की व २ लड़कोंके साथ एक मुसलमान के साथ बहकाए में आकर चुपचाप घर से निकल भागी और उन्नाव मे एक मुसलमानी मुहल्ले में रहने लगी। पता लगने पर हिन्दू सभा और आर्य्य समाज के विशेष यत्न से पुलीस की सहायता से मुसलमान के घरसे निकाली गयी।

—५-१२-३६ को प्रातःकाल ६ बजे मिस न्योरा (एक योरेशियन) पिता का नाम न्योरा एडवर्ड देहरादून की रहने वाली की प्रार्थना पर आगरा शुद्धि सभा ने प० भोजदत्त उपदेशक द्वारा उनकी शुद्धि कराके उनका नाम श्रीमती नारायणी-देवी रखा शुद्ध होने पर श्रीमती जी के हाथ की मिठाई सब ने खाई। विविध संस्थाओं को दान भी दिया गया। देवीजी का बा हीरालाल खत्री के साथ विवाह संस्कार पं० भोजदत्त और प० अयोध्याप्रसाद शर्मा ने कराया। मन्त्री

—फतेहचन्द ट्रस्ट बिल्डिंग राजामण्डी आगरा में ६-१२-३६ को एक बाहर से आये अग्रवाल जोड़े का विधवा विवाह शुद्धिसभा आगरा द्वारा बड़े समारोह के साथ किया गया। संस्थाओं को दान दक्षिणा दी गई। मन्त्री

—"आहिरवादीन नामक अहीर जो कुछकाल पूर्व मुसलमान होगया था, पश्चात्ताप करने पर पुनः आर्य्यसमाज उन्नाव द्वारा शुद्ध करके वैदिकधर्म में सम्मिलित किया गया। त्रिलोकीनाथ मंत्री

—२५ ११-३६ को मुरा गाव में आ० स० चदौसी द्वारा डूंगरमल व परिवार (६ व्यक्तियों) की शुद्धि की गई। संस्कार प० रुद्रदत्त जी तथा प० रामशरण जी ने कराया प० रामशरणजी के इस गाव में २ व्याख्यान हुए जिनका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। रामप्रसाद मन्त्री

—१०।११।३६ को आ० स० मियांचन्नू में एक मुस्लिम नवयुवक का प्रवेश संस्कार श्री० प० निरञ्जनदेव जी वैदिक मिशनरी ने कराया। उसका नाम मुहम्मद याकूब से बदल कर धर्मचंद रखा गया। मनोहरलाल मन्त्री

—ता० ३-१२ ३६ गुरुवार रात को ९ बजे आर्य समाज पहाड़गज के उत्सव के पण्डाल मे प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की कथा के पश्चात् धर्मवीर व लक्ष्मी देवी जो कि कुछ दिन पूर्व शुद्ध हुए थे उन दोनों का विवाह संस्कार प रामनारायण शर्मा सिद्धान्त रत्न प्रधान वैदिक धर्म प्रचारक मण्डल द्वारा बड़े समारोह के साथ हुआ। विवाह में सैकड़ों की तादाद में स्त्री-पुरुष मौजूद थे। सबने वर वधू को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् प जी ने

साहित्य-समीक्षा

स्त्रियों का ओज

लेखक—श्री पं० चतुरसेन जी वैद्य।
प्रकाशक—शारदामन्दिर लिमिटेड, नई सड़क देहली।
मूल्य १)

इस पुस्तक के लेखक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक श्री चतुरसेन शास्त्री हैं। इसमें १३ राजपूत वीराङ्गनाओं की गाथाओं से भारतीय नारी की वीरता, पातिव्रत, सतत्व रक्षण और आत्मोत्सर्ग की उज्ज्वल भावनाओं का दिग्दर्शन कराया गया है। पुस्तक की कहानिया नई नहीं है हा शैली नई है और बड़ी ओज पूर्ण है वैसी ही ओज पूर्ण जैसी पुस्तक की कथाएँ हैं। पुस्तक प्रत्येक भारतीय नारी के पढ़ने योग्य है। शारदा मन्दिर बहुत उत्तम साहित्य पैदा कर रहा है उसका यह प्रकाशन उस साहित्य मे बहुमूल्य योग है।

एक जन्म के मुसलमान अब्दुलफजल को भी शुद्ध करके नाम देवदत्त रखा उपस्थित जनता ने उन्हों के हाथ से मिठाइया ग्रहण कीं। आप बहुत दिनो से शुद्ध होने की कोशिश कर रहे थे। यह अंग्रजी के विद्वान् और बगाली हैं। वैदिक धर्म की जय तथा शान्ति पाठ के बाद कार्य वाही समाप्त हुई।

मन्त्री, वैदिक धर्म प्रचारक मण्डल देहली।

प्रभाकर

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध पत्रकार आर्य मित्र के भूतपूर्व सपादक श्री प हरिशकर जी के सम्पादनमे आगरेसे 'प्रभाकर' नामक हिन्दी साप्ताहिक पत्रका उदय हुआ है। पत्रके लगभग ८ अक अब तक निकले है। प्रत्येक अकके विविध स्तम्भो मे सुरुचिपूर्ण, मनोरजक और पठनोय सामग्री है। निर्दोष हास्यरस की रचनाओं के लिए श्री प हरिशकर जी सुप्रसिद्ध है। आर्यमित्र मे लोगों ने उन रचनाओं का बहुत आस्वादन किया है। 'प्रभाकर' मे भी यह विशेषत श्री स्व० प० पद्मसिहजी की चिट्ठी मे जो पडितजी की अपनी ही रचना है उस रसका बड़ा बढ़िया आस्वादन होता है। निश्चय ही 'प्रभाकर' की यह अपनी विशेषता रहेगी पत्र की सफलता मे सन्देह नहीं है परमात्मा इसे चिरआयु करे।

महिला-जगत

सम्पादिका—(श्रीमती विद्यावती 'विशारदा')

स्त्री-जाति और अछूतोद्धार

श्रीमती गोपालदेवी 'हिन्दी प्रभाकरा'

भारतवर्ष मे कई बलिदान हुए । इस अर्द्ध शताब्दी मे कितनों ने जाति-रूपी कुण्ड मे अपने आप को स्वाहा किया । आचार्य दयानन्द ने जाति की रक्षा का भार अपने सिर पर उठाया। उस समय भी अपने ही भाई ने महर्षि को विष देकर अपनी क्षुधा मिटाई । पं० लेखराम ने विधर्मियों से जाति की रक्षा का बीड़ा उठाया और अपनी आहुति दी, पं० तुलसीराम और रामचन्द्र यह दोनों ही दलित जातियों को गले लगाने के अपराध में मारे गये । इन महात्माओं की मृत्यु ने आर्य-समाज की परिधि मे उथल-पुथल मचाई । आर्य-जगत् का कोई भी व्यक्ति इनके उपकारों को भूल नही सकता; परन्तु यह किसी को ख्याल तक न था कि अभी एक और बड़ी आहुति और होगी जिससे भारत के कोने-कोने मे अछूतोद्धार के लिये क्रान्ति हो जायगी ।

एक दुष्ट और गुण्डे मुसलमान ने रुग्णावस्था में वीर संन्यासी की हत्या कर अपनी जाति की प्राकृतिक कायरता का परिचय दिया । परन्तु जिस आशा से यह हत्या की गई थी, उसका परिणाम भी विपरीत हुआ । विधर्मियों को इसलिये डाह थी कि यह भगवाधारी राम का नाम लिवा निर्बल जाति को हमारे पंजे से निकाल रहा है । उनकी बुद्धि की सीमा इतनी संकुचित थी । वह भली प्रकार विचार भी न सके । इस एक श्रद्धानन्द की मृत्यु, भारत मे अनेक श्रद्धानन्द पैदा करेगी श्रद्धानन्द मरे नहीं, उनकी आत्मा अमर है । हुआ भी यही । श्रद्धानन्द के बलिदान से केवल आर्य-समाज को ही दु.ख न हुआ, बल्कि समस्त भारत वर्ष में सार्वजनिक शोक-सभाएं हुई । भावी स्थिति पर विचार करके निश्चित प्रोग्राम बनाया गया । बौद्ध, जैन, पौराणिकों और सिक्खो तक की भी आँखें खुलीं और वे आज हिन्दू-जाति की रक्षा का उपाय सोच रहे हैं । आजकल जाति-रक्षाका भाव प्रत्येक हिन्दू के हृदयमें उठ रहा है ।

स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु ने स्त्री-जाति को भी चेतावनी दी । आज कई स्त्रियो के भी ज्ञान चक्षु खुल रहे हैं । इतना तो समझ में आ गया है कि यह अछूत हिन्दू ही हैं किन्तु अभी तक यह बात समझ मे नही आई कि हमारा इन अछूत-जातियों के प्रति क्या कर्तव्य है ?

यद्यपि पंजाब छूआछूत के बखेड़ों से बहुत बचा हुआ है, तो भी यहां की स्त्रियाँ अछूतों से मिलने के लिए तैयार नही होतीं । पुरुष अछूतोद्धार का काम करते हैं । यदि किसी पुरुष की इच्छा होती है कि मैं आज इस दलित भाई को घर मे ले जाकर अपने चौके में भोजन खिलाऊ, तो उसको अपने घर की कलह से डर कर यह

सदिच्छा दबानी पड़ती है। पंजाब में अन्य प्रान्तों की अपेक्षा कुरीतियां बहुत कम हैं। यहाँ स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार भी अधिक है। यहाँ की स्त्रियाँ बाह्य-जगत् की अवस्था से अनभिज्ञ नहीं, तो भी इस विषय में उनका हृदय उदारता का परिचय नहीं देता। इस दशामें संयुक्त प्रान्त सदृश प्रान्तों में, जहाँ यदि अपने ही परिवार का सदस्य चौके में घुस जाय, तो रोटी फेंकनी पड़ती है, स्त्री-जाति की क्या अवस्था होगी ? इस छुआछूत के बखेड़ों ने कई हिन्दुओं के घरों का नाश कर दिया। हमारी इसी छुआछूत से विधर्मी लाभ उठा रहे हैं, और हमारे किये दुर्व्यवहार की आपस में बैठ कर खिल्लियाँ उड़ाते हैं !!

अछूत लगभग सात करोड़ हैं, जिनकी छाया भी ऊँची जाति के कहे जाने वाले हिन्दुओं के हृदयों में खलबली पैदा कर देती है। आर्य-समाज के द्वारा लाखों अछूतों की शुद्धियां हो चुकीं, फिर भी देश में लाखों करोड़ों भाई ऐसे हैं, जिन्हें अभी शुद्ध करना है। इस शुद्धि में यदि स्त्रियाँ भी सहायक हों तो वर्ष भर का काम चार मास में सफलता-पूर्वक हो जायगा। स्त्री-जाति का यह परम पवित्र कर्तव्य है कि जहाँ उनके पति, पुत्र, भाई और पिता आदि अछूतों में काम करते हैं, वहाँ वे भी उन्हें सहयोग दें। पुरुष यदि बाहर शुद्धियां करते हैं तो वे घरोंमें बैठी उन लोगोंसे सद्व्यवहार करें। उनकी स्त्रियों को साथ बिठाएँ और उनका सत्कार करें। अपने घरों में खाने-पीने के लिये उन्हें आमन्त्रित करें तथा उनसे प्रेम करें। जो पढ़ी लिखी स्त्रियाँ हैं, वे उनकी स्त्रियों तथा बच्चों को पढ़ाएँ और उनको अपने रीति-रिवाजों का परिचय दें। मैं यहाँ तक कहने को तैयार हूं कि यदि उन लोगों मे से कोई युवक या युवती योग्य हो, तो उनसे जाति-पाँति का भेद-भाव छोड़कर विवाह आदि का भी सम्बन्ध करें, जिससे दलित या अछूत भाई-बहिन यह समझने लग जाँय कि आर्य-जाति ने हमको दूर नहीं किया हमारा सद्-व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि वे शताब्दियों के हमारे अत्याचारों को भूलकर हमें क्षमा कर दें। हमने अपने अत्याचारों से ही आप ही आप बहुतों को खो दिया है। वह हमारी निद्रा का समय था अब हमें सोना नहीं चाहिये। सभ्य-संसार हमें जगा रहा है।

देश की सभी जातियाँ आगे बढ़ रही हैं। केवल आर्य जाति, जो सदैव सब कामों में सिर-ताज रही हैं, पीछे क्यों रहे ? स्त्री-जाति पर इस काम का बहुत उपालम्भ है। कोई उत्सव या कोई सभा हो, उसमें स्त्री जाति को ही फटकार पड़ती है। कारण यही कि स्त्रियाँ इस काम में बहुत पीछे हैं। इसीलिये अपनी त्रुटि को दूर करके इस उपालम्भ से जल्दी मुक्त होना चाहिये, जिससे अछूत-जाति का शीघ्र उद्धार हो। इस प्रकार उनसे हिल-मिल जाँय जिससे वे हमसे अब पृथक् न हो सकें।

इसके पीछे अन्य धर्मावलम्बियों को साथ मिलाने का प्रयत्न किया जाय। एक योरोपियन विद्वान् का कथन है कि 'स्त्री' एक बड़ी शक्ति है, तो फिर अछूतोद्धार का काम करके क्या वेदों का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सन्देश स्त्री-जाति नहीं सुनाएगी ?

—

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, मे प्रकाशित।

फरवरी १९३८ Reg No L 2121

ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

सार्वदेशिक



वार्षिक मू० २) सम्पादक—लाला देशबन्धु विदेश से ५ शिलिंग

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का =)

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

सख्या	विषय लेखक	पृष्ठ
१	वेद की शिक्षाएँ	५२५
२	सम्पादकीय— संस्कृत और हमारा कर्त्तव्य, उत्तम योजना, प० हरिशंकरजी पुन 'आर्य मित्र' में, एक अंग्रेज विद्वान आर्य धर्म में, अन्तर्प्रान्तीय शाही शादी, इत्यादि।	५२६
३	अध्यात्म-सुधा-धारा (ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)	५३१
४	सृष्टि-संवत (ले० श्री पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टेहरी)	५३५
५	पुत्र (ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)	५३७
६	वैदिक सूर्यविज्ञान (ले० प० प्रियरत्न जी 'आर्ष')	५४१
७	भारत की व्यावसायिक उन्नति	५४४
८	श्री महात्मा नारायण स्वामी जी का बिहार-प्रान्त मे भ्रमण	५४६
९	विविध पत्र-पत्रिकाएँ	५४८
१०	दिसम्बर जनवरी मास की आर्य्य समाज की प्रगति	५५३
११	बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य्य	५६१
१२	सार्वदेशिक सभा की सूचनाएं	५६६
१३	साहित्य समीक्षा	५६७
१४	महिला जगत (सम्पादिका श्रीमती विद्यावती विशारदा) महारानी दुर्गावती	५६८

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पंजाब की राजधानी लाहोर मे रावी रोड़ पर एक अनाथालय है जिसका नाम पञ्जाब केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उप-प्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथजी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्य शास्त्री मुल्तान, तथा डा० गणेशीलाल जी M B B. S है। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके है। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं, प्रत्युत मद्रास बम्बई, ब्रह्मा, चीन, अफ्रीका तथा अमरीका, अरब इराक मे रहने वाले हिन्दू आर्य्य भाई भी करते रहते है। यही कारण है कि यह अनाथालय केवल पञ्जाब मे ही नहीं प्रत्युत भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तो मे भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नतिके मार्गपर चल रहा है, यहातक कि अब सरकार भी, जो चोरी किये हुए लड़के लड़किया उनको मिलती हैं, जब तक उनके वारिसो का पता नही मिलता, तब तक उनको यहा रखती है। इस तरह से अनाथालय मे बच्चो की प्रवेश संख्या बढ गई है इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु सख्या बढ जाने से स्थान काफी नही होता। न्यूनता को कम करने के लिए प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, नवीन कमरे बनाए जायें, जिससे स्थान का कष्ट मिट जाय और इनके बनाने के लिए धन की अपील की जावे। इसलिए मै दानी सज्जनों की सेवा मै विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि यह इस शुभ कार्य मे सभा की सहायता करें ताकि आने वाले अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने मे बाधा न पडे। यदि हम ऐसा न कर सके तो वह बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे वह अन्य मत वालो के जाल मे फॅसकर हमेशा के लिए धर्म से पतित हो जायेगे। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारो पर लगवा दिये जायेंगे।

इस अनाथालय के आधीन म्यूनिस्पल कमेटी से मंजूर एक मिडल स्कूल है जिसमे अनाथालय के तथा बाहर के लडके पढ़ते है। एक दर्जी क्लास है जिसमे लडके और लडकियां को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लडके इसमे काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लडके इस काम को सीख रहे है। बीस के लगभग लडके यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे है। अनाथालय मे इस समय ९५ लडके और ७० लडकिया है जिनके निवास, भोजन, पढाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकार प्रिय महानुभावो से प्रार्थना है कि वह इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी, दरी, कम्बल आदि। यह भी स्मरण रहे कि यह दान आप की ही ओर से आ रहा है जिससे संस्था चल रही है। आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे और जिस तरह भी हो सके सहायता देकर इह लोक तथा परलोक मे पुण्य के भागी बनेंगे तथा हमे भी कृतार्थ करेंगे।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

॥ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ॥

वर्ष १० | माघ १९९३ | अङ्क १२

फरवरी १९३७ ई० | दयानन्दाब्द ११२

॥ वेद की शिक्षाएँ ॥

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥

—यजुर्वेद।

भावार्थ—बुद्धिमान, महान् ज्ञानी तथा योगी पुरुष उस अद्वितीय जगत्कर्ता ज्ञानी ईश्वर की ही श्रेष्ठ स्तुति मन और बुद्धि द्वारा अच्छे प्रकार किया करें।

संस्कृत और हमारा कर्त्तव्य

जब हम ऋषि दयानन्द की महत्ता पर विचार करते हैं तो जिन बातों का महत्व हमारे दृष्टि-पथ में आता है उनमें सस्कृत का महत्व भी है। ऋषि दयानन्द अंग्रेजी के विद्वान न थे फिर भी ससार को वे वह सन्देश देने में समर्थ हो गए जिसे उनके पूर्ववर्ती वा समकालीन अंग्रेजी के विद्वान सुधारक नही दे सके तथा जिसने भाषा, देश, जाति, वर्ग इत्यादि के भेद-भाव से शून्य समस्त मानव समाज के हृदय पर असर किया तथा जो सदैव करते रहने की क्षमता रखता है। यह बात विविध भाषाओं के पंडितों मुख्यतया अंग्रेजी के लोगों के आश्चर्य्य मिश्रित आनन्द का विषय है तथा रही है। निश्चय ही सस्कृत भाषा उस बहु-मूल्य भण्डार की कुजी है जिसके द्वारा ऋषि दयानन्द ने उसमें प्रवेश किया, उसके रत्नों की खोज की, पडताल की, उन्हें लोगों के सामने रक्खा और उस भण्डार का लोगों को स्मरण कराया। जहा तक भाषा का सम्बन्ध है ऋषि ने संसार के लोगों को अपने उदाहरण से बतला दिया कि संस्कृत का पडित अनुपम चमत्कार दिखला सकता है। यह भी बतला दिया कि हमारी सास्कृतिक और साहित्यिक सम्पत्ति इतनी बहुमूल्य है कि उसकी तुलना ससार की अन्य कोई सम्पत्ति नहीं कर सकती है और वह इतनी अधिक और विविध है कि भारत सन्तान को किसी बाहर वाले के आगे हाथ पसारने की जरूरत नहीं है। उसके अपनाने और उचित उपयोग से ही उसका कल्याण तो क्या समस्त संसार का कल्याण हो सकता है, और उसकी वास्तविक प्राप्ति की कुञ्जी सस्कृत भाषा है। इसलिए हम भारत वासियों के लिए मुख्यतया आर्य्य-समाजियों के लिए उसका पठन-पाठन विशेष महत्वरखता है। हमारा यह मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम सुव्यवस्थित रूपमें संस्कृत के प्रचार के उपाय सोचें और उन्हें काम में लाएं। यह दुख की बात है कि हमारे बहुसख्यक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त हिन्दू नेताओं को यह जानने की जरूरत है कि संस्कृत शिक्षण में हमारे देश और मनुष्य समाज के कल्याण की कितनी अधिक सभावनाएँ हैं। हमारे बहुत से शिक्षित देशवासी आजकी दुनिया में भारत के पुनर्निमाण मे सस्कृत को अव्यावहारिक और बेकार समझते हैं। उनमे से कुछ यह भी सोचते हैं कि वर्तमान मे भूतकाल की ओर दृष्टि दौडाना व्यर्थ है। यह प्रश्न है जो प्राय देश के महान् व्यक्तियों के सामने उत्तर के लिए रक्खा जाता है। इस सम्बन्ध मे हम एक बडे व्यक्ति का उत्तर देते हैं जो हमारी सम्मति मे अच्छा उत्तर था। उन्होंने कहा था।

"बहुतबार मुझ से कहा गया है कि भूतकाल को देखने से पतन ही होता है, हमें भविष्य की ओर देखना चाहिए। यह सत्य है। परन्तु भूतकाल में से ही भविष्य बनता है। इसलिए जहातक तुम देख सकते हो पीछे की ओर देखो और अपने पीछे के सुन्दर स्रोतों के गहरे घूंट पिओ और इसके बाद भविष्य की ओर देखो, आगे बढ़े चले जाओ और भारतवर्ष को शानदार, महान

और उच्च बना दो जैसा कभी न रहा हो। हमारे पुरुषा महान् थे। हमे अपने अस्तित्व और रक्त के अवयवों का अध्ययन करना चाहिए। हमारी उस रक्त मे निष्ठा होनी चाहिए और उसमे भी जो इसने भूतकाल मे किया है। उस निष्ठा और पिछली महत्ता की भावना दोनों से महान् भारतका निर्माण करना चाहिए। हम सब यह बात जानते है कि इस प्रकार के काल जरूरी होते हैं। यह पतन का काल जिसमे से हम गुजर रहे हैं जरूरी ही था। इस पतन मे से भविष्य के भारत का निर्माण हो रहा है।"

स्पष्ट है कि हमारा सुन्दर भविष्य अपने भूतकाल में से ही बन सकता है। भूतकाल तक ठीक २ पहुचने और समझने क लिए सस्कृत का पठन पाठन अत्यन्त आवश्यक है।

सस्कृत की अनेकानेक विशेषताएँ है। उनमेसे एक विशेषता उसकी अपरिमितता और मानवोचित प्रेरणाएँ है। सस्कृत के पण्डितों की व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर सम्मति है कि सस्कृत के सात्विक साहित्य के अध्ययन का प्रभाव मनुष्य के दिमाग और आचार पर बहुत ही उत्तम पडता है। अर्थात् एक शब्द मे मानवता को लिए होता है। सस्कृत साहित्य का विस्तार, विविधता और बहुमूल्यता य तीनो बात समस्त कालों मे इसकी महत्ताकी द्योतक है। सस्कृत साहित्य मनुष्य के आन्तरिक जीवन को जैसा परिपक्व, सुन्दर, विश्व भावनामय, वास्तविक अर्थों मे मानवोचित बनाने की क्षमता रखता है वैसी क्षमता दुनिया का अन्य कोई साहित्य नहीं रखता है।

उत्तम योजना

स्वाध्याय मण्डल औ ध (सारतारा) के अध्यक्ष तथा वेदो के सुप्रसिद्ध विद्वान श्रीयुत प० सातव लेकर जी ने 'ऋग्वेद' के मुद्रण का कार्य हाथ म लिया है। इस सस्करण की उन्होने कई विशेषताए प्रगट की हैं सब से मुख्य विशेषता यह है कि पुस्तक अत्यन्त शुद्ध छपगी। इसके लिए उन्होंने महाराष्ट्र के तीन घनपाठी विद्वानो की सहाय प्राप्त का हैं। इन विद्वानों को सपूर्ण ऋग्वद तथा ब्राह्मणादि ग्रन्थ कण्ठस्थ है, इन्हें पद क्रम घन तक सब वद पाठ भी कठ हैं और सब दश ग्रन्थ जागृत हैं तथा इनकी योग्यता इतना बतलाई जाती है कि बिना पुस्तक देखे ही ये सब वद पाठ शुद्ध कर सकते हैं। पुस्तक में कागज बढिया तथा टाइप मोटा लगेगा। ऋषि देवता और छन्द ऋग्वेद सर्वानु क्रमणी आदि मे लिखित प्राचीन परिपाटी के अनुसार ठीक शुद्ध किये जायगे। इसका आकार वर्तमान पुस्तको से बडा होगा। गरज कि यह सस्करण अत्यन्त शुद्ध, छपाई इत्यादि की दृष्टि से बहुत बढिया होगा। इसका मूल्य २) होगा जो वर्तमान अन्य सस्करणो के मुकाबले में कम है। श्रा० प० जी की इसी सिलसिले मे एक योजना यह है कि पुस्तक के कम्पोज क स्टरियो वा ब्लाक बनवा लिये जाय। इससे दो लाभ होग। एक तो यह कि पुस्तक के शुद्ध छपने का सदेव के लिए गारटी हो जायगी। दूसरा यह कि ऋग्वद सस्ते से सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हो जाया करेगा। प० जी का विश्वास है कि १।) मूल्य मे सम्पूर्ण ऋग्वेद का ग्रन्थ मिल जाया करेगा।

इस श्लाकों की बनवाई में लग भग ८०००) के व्यय का अन्दाजा लगाया गया है। प० जी स्वय इस व्यय के वहन करने में असमर्थ हैं। इसलिए उन्होंने सार्वदेशिक सभा से विशेष रूप से इस योजना को कार्य्यान्वित करने की प्रेरणा की है। सभा ने इस योजना को पसन्द किया है और इसे क्रियान्वित करने का यत्न करने का निश्चय किया है। यत्न इसलिये कि सभा के पास भी इस व्यय के लिए धन नहीं है यदि होता तो वह स्वयं बाहरी सहायता के बिना यह काम कर लेती। अत सभा ने निश्चय किया है कि जनता से इस कार्य के लिए धन की अपील की जाय। हम समझते हैं कि काम के महत्व की दृष्टि से ८०००) की यह राशि कुछ भी नहीं है और आर्य्य जनता के लिए इसकी पूर्ति कठिन भी नहीं है। हम चाहते हैं प्रत्येक आर्य्य समाज इस योजना पर विचार करे और इस काम में अधिक से अधिक वह जो धन दे सकता है उसके देने का निश्चय करके सभा में भेज देवे। 'वेद केवल आर्य्य समाज का ही धर्म ग्रन्थ नहीं है, वह तो सम्पूर्ण हिन्दू जगत का धर्म-ग्रन्थ है। हर प्रकार से इसकी रक्षा प्रत्येक हिन्दू का कर्त्तव्य है। इसलिए इस काम मे हिन्दू मात्र को योग देना चाहिए और उनका योग प्राप्त करने की कोशिश करना चाहिए। आर्यो और हिन्दुओं में ऐसे २ धनाढ्य और दानी सज्जन हैं जिनके लिए इस रकम की पूर्ति बहुत मामूली बात है। अकेले कोई भी धनी सज्जन यह रकम दे सकते हैं। ऐसे लोगों का योग प्राप्त होना वा उसके प्राप्त करने का यत्न होना चाहिए।

आशा है जनता इस योजना का सफल बनाने में सार्वदेशिक सभाको समर्थ बनायगी। हम चाहते हैं कि न केवल ऋग्वेद वरन् चारों वेदों तथा श्री० स्वामी जी महाराज के समस्त ग्रन्थों के फ़ोटो लेलिए जावें। श्री० स्वामी जी के ग्रन्थोंके फ़ोटोके सम्बन्धमें कुछ हुआ भी है और यत्न होरहा है, यह खुशीकी बात है। वेदोंके फ़ोटो सम्बन्ध में अभी तक कुछ नहीं हुआ था। इस सबन्ध में भी होना चाहिए और आगे पीछे के लिए यह काम नहीं टलना चाहिए।

पं० हरिशंकर जी पुनः 'आर्यमित्र' में

'आर्य मित्र' के भतपूर्व सम्पादक श्रीयुत प० हरिशंकर जी आर्यमित्र के सम्पादक के आसन पर प्रतिष्ठा पूर्वक पुन प्रतिष्ठित किए गए हैं इस बात का हम हृदय से स्वागत करते हैं और प० जी का इस सम्मान के लिए अन्तस्तल से बधाई देते हैं। 'मित्र' की आर्थिक दुरवस्था के कारण प० जी आए हैं वा लाए गए हैं, ऐसा प्रकाशमें आया है और इस प्रकार प० जी की वापसी आवश्यकता का विषय बना दी गई है। यह बात हमे अपील नहीं करती है। आर्यमित्र के सम्पादक य आसन पर हम उनका अधिकार समझते रहे हैं इसलिए कि वह उनसे बलात छीना गया था। इसलिए उस पर उनका पुन प्रतिष्ठित होना हमारे नज़दीक आवश्यकता का नहीं वरन् अधिकार पूर्ति का विषयरहा है। आर्यमित्र की आर्थिक दुर्दशा वा सुदशा का इससे कोई सम्बन्ध हम नहीं देखते हैं। प्रत्येक दशा मे वे आर्यमित्र में आने के अधिकारी थे। इस अधिकार पूर्ति के लिए हम मित्र के संचालकों को भी हृदय से धन्यवाद देते हैं।

एक अंग्रेज विद्वान आर्यधर्म में

एक प्रसिद्ध आइरिश कवि और थियोसोफिस्ट ने गत १४ जनवरी को त्रिवेन्द्रम (ट्रावनकोर) में हिन्दू

धर्म स्वीकार किया है। संस्कार के अवसर पर गण्य मान्य सज्जन उपस्थित थे। कवि महोदय एक रेशमी धोती और लंबा कुरता पहने सस्कार मडप में आए और संस्कार की समाप्ति पर श्री पदमा नाभ के मंदिर में जो राज्य का सब से बड़ा मंदिर है गए और उपासना की। इस से स्पष्ट होता है कि महाराज ने पिछले दिनों जो मंदिर खोल देने की आज्ञा दी थी उस के अनुसार अब ऐसे हिन्दू भी मंदिर में आ सकते है जो जन्म की दृष्टि से हिन्दू नहीं हैं। संस्कार के बाद उक्त कवि महोदय ने एक भाषण दिया जिस में उन्होंने प्रगट किया कि वे आर्यधर्म का अर्से से अध्ययन करते रहे थे और पिछले ४० वर्ष से निरामिष भोजी थे।

आर्य विवाह बिल

गत २८ जनवरी को असेम्बली मे आर्य विवाह बिल पर विचार होना था। किन्ही कारणो से आगामी २१ फ़र्वरी तक के लिए उस पर विचार स्थगित कर दिया गया है।

अन्तर्प्रान्तीय शाही शादी

ग्वालियर के नवयुवक महाराजा सिंधिया की शादी बगाल की स्वतन्त्र रियासत त्रिपुरा के महा-राज की बहिन श्रीमती कमलाप्रभा के साथ होने वाली है। महाराष्ट्रीय और बगाली राज घरानो के बीच यह दूसरी शादी होगी। पहली शादी कूचविहार के महाराज के साथ बड़ौदा का राजकुमारी इन्दिरा राजा की हुई थी। त्रिपुरा का राज घराना शताब्दियो से साहित्य और कला के सरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। नवयुवक महाराजा के उस भाषण से जो उन्होंने ग्वालियर शिक्षा सम्मेलन में अभी हाल मे दिया है यह आशा की जा सकती है कि वे सुधार के कार्यों को आगे बढ़ाएँगे।

दलितोद्धार के लिये ३ लाख रुपया

उपर्युक्त शीर्षक मे "प्रकाश" लिखता है —

दलितों के उद्धार के लिए निजाम हैदराबाद (दक्षिण ने) ३ लाख रुपया ख़र्च करने की घोषणा की है—यह धन दलितों की सामाजिक और आर्थिक उन्नति पर ख़र्च किया जायगा तथा उनकी शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दिया जायगा। राज्य के हिन्दुओं को शिकायत है कि जो विभाग धार्मिक कार्य्यों के लिए कायम है उसका लगभग तमाम रुपया इस्लाम के प्रचार मे ख़र्च किया जाता है यद्यपि हिन्दुओं की वहा बहुत बड़ी सख्या है। इसलिए राज्य की ओर से हिन्दु-ओ के धार्मिक सस्थाओ पर अधिक ख़र्च किया जाना चाहिए परन्तु ऐसा होना तो दूर आर्य्यसमाज को अपने प्रचार को भी पूरे तौर पर आज़ादी नहीं। इन हालतो में यदि रियासत के हिन्दू यह ख़याल करें कि दलितोद्धार के नाम पर खर्च किया जाने वाला रुपया इस्लाम के प्रचार मे खर्च होगा तो वे युक्तियुक्त है परन्तु हम चाहते है कि यह धन वास्तव में दलितो के उद्धार में ही ख़र्च हो।

आ.प्र. सभा संयुक्त प्रातका स्वर्णजयन्ती महोत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त ने आगामी दिसम्बर मे अपना स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मेरठ नगर में मनाने का निश्चय किया है। मेरठ मे इसलिए कि वहा ही प्रान्तिक सभा अस्तित्व मे आई थी। इस उत्सवके उपलक्ष मे क्या २ कार्य होंगे, क्या २ योज-नाएँ बनाई जायँगी इस सम्बन्ध मे अभी तक कोई निश्चय नहीं हुआ है तो भी जैसा कि सभा के सुयोग्य मन्त्री श्री बा पीतमलाल जी की विज्ञप्ति से जो हमारे

सामने है निम्न कामों के किए जाने का विचार है।

(१) सभा के पचास वर्षीय विवरण का प्रकाशन जिसमे सभा के मुख्य २ विभागो के विवरण के अतिरिक्त प्रान्त की आर्य समाज की मुख्य २ प्रगतियो का उल्लेख होगा तथा गुरुकुल कालेज, स्कूल कन्या पाठशालाएँ इत्यादि संस्थाओं के हाल होगे।

(२) सभा के नियमोपनियमो का संशोधन ।

(३) ,वेद ईश्वरीय ज्ञान है' और 'यज्ञ' पुस्तको तथा विविध साहित्य का प्रकाशन ।

(४) वेद प्रचार संघ की स्थापना जिससे वानप्रस्थियो तथा सन्यासियों को सम्मान पूर्वक निर्वाह की चिन्तासे मुक्त करके धर्म प्रचारमे लगनेका अवसर दिया जा सके, और प्रचारको का अभाव दूर किया जासके।

(५)किसी उपयुक्त स्थानपर एक योगाश्रमकी स्थापना

(६)सभाके स्थिर हैडक्वार्टर्स की लखनऊमे स्थापना

हम सभाके इस निश्चय का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि सभा का यह उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जायगा और प्रान्त के आर्यभाई इसे सफल बनाने के लिए कोई यत्न उठा न रक्खेगे और अभी से तय्यारी शुरू कर देंगे। प्रतिनिधि सभाको यथासंभव शीघ्र कार्य क्रम निर्धारित कर देना चाहिए। जिससे जनता का प्रयत्न सुव्यवस्थित गतिमे प्रवृत्त हो।

इस अवसर पर सभा जहाँ अन्यान्य काम करेगी और योजनाएँ बनायगी वहां हमारी सम्मति मे उसे प्रान्त मे आर्यो की वास्तविक गणना भी इस अवसर पर करा लेनी चाहिए। आर्यो का सरकारी गणना प्राय अशुद्ध होती है और वह प्रामाणिक नहीं होती है। ऐसी अवस्था में उसका यत्न महत्व ही रक्खेगा।

इन प्रकार के उत्सवों के सम्बन्ध मे आर्य जनता का जो अनुभव है उसके प्रकाश म इन उत्सवो का उपयोगिता के सम्बन्ध मे उसकी एक सम्मति नहो है। ये उत्सव महज प्रदर्शन की वस्तु होते हैं और उनसे कोई खास लाभ नही होता है ऐसी उनकी धारणा है तथा बनती जा रही है। प्रान्तिक सभा को यह बात विशेषरूप से अपने सामने रखनी चाहिए और इस धारणा की पुष्टि नहीं होने देना चाहिए।

आर्य्य समाज टंकारा

टंकारा में आर्य्य समाज मन्दिर के निर्माण का विषय इस सभा के विचाराधीन है। पिछले दिनो टंकारा की दो देवियां आर्य्य समाज टंकारा, दयानन्द स्मारक तथा पुत्री पाठशाला के नाम में धन संग्रहार्थ समाजों मे भ्रमण करती रही थी तथा सभा ने समाजो के मार्ग प्रदर्शन के लिए यह घोषणा की थी कि वे देवियां बिना सभा की सूचना तथा स्वीकृति के ऐसा कर रही थी। इस घोषणा पर बम्बई की प्रान्तिक सभा ने आपत्ति की थी इसलिए कि टकारा समाज उसके अधीन है तथा वे देवियां उसी समाज की तरफ से धन सग्रह कर रही थीं और चाहा था कि सभा अपनी घोषणा को वापस लेकर आर्य्य समाज टकारा के धन संग्रह के काम मे सहायता देवे। इस पर सभा ने निश्चय किया था कि यह विषय सभा के विचाराधीन है जब तक वह अपने किसी अधिकारी या प्रतिनिधि द्वारा सही २ हालात न मालूम कर लेवे तब तक कोई दूसरी सूचना प्रेस मे न दी जाय और श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से प्रार्थना की गई थी कि वे टकारा जाकर सही २ हालात जानकर सभा को रिपोर्ट करे।

ये सब बातें जनता के नोटिस मे है। जनता की सूचना के लिए यह निवेदन किया जाता है कि श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज टकारा के लिए रवाना हो गए हैं। उनकी रिपोर्ट मिलने पर सभा आगे की कार्य्यवाहि के सम्बन्ध में निश्चय करेगी आशा है आर्य्य-प्रतिनिधि सभा बम्बई तथा टकारा समाज के अधिकारी स्वामी जी महाराज के काम में पूरा २ योग देंगे तथा बम्बई प्रान्त के आर्य्य नरनारी स्वामी जी की अपने मध्य उपस्थिति से जो लाभ उठाया जा सकता होगा लाभ उठायेंगे।

अध्यात्म-सुधा-धारा

श्री नारायण स्वामी जी महाराज के एक प्रवचन का सार

वेदों में कहा गया है कि—'जो ज्ञान की उपेक्षा करके कार्य करते हैं वे गहरे अंधकार मे जाते हैं, जो कर्म की अवहेलना करके ज्ञान में रमते हैं वे उससे भी अधिक अंधकारमें जाते हैं॥'

'ज्ञान का और ही फल कहते हैं और कर्म का और ही फल कहते है। ऐसा हम धीर पुरुषों के वचन सुनते हैं।"

"जो ज्ञान और कर्म इन दोनों को साथ साथ जानता है वह कर्म से मृत्यु को तैर कर ज्ञान से अमरता को प्राप्त करता है।"

विद्या और अविद्या

यह यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के मन्त्रों का सार है। इनका देवता आत्मा है। अर्थात् इनमें जिस विषयका वर्णन किया गया है वह आत्मा है। जब हम आत्मा के गुणों का विचार करते है तब हमें इसके स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न देख पड़ते हैं। विद्या ज्ञान को कहते हैं। अविद्या के दो अर्थ किए जाते हैं एक पारिभाषिक और दूसरा यौगिक। दर्शनों में प्रायः पारिभाषिक अर्थ 'मिथ्या ज्ञान' के लिये जाते हैं परन्तु अविद्या के यौगिक अर्थ 'विद्या से भिन्न' के हैं अर्थात् जो विद्या या ज्ञान नहीं है। जो ज्ञान नहीं वह क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर इन मन्त्रों का देवता है। इन मन्त्रों का देवता आत्मा है। आत्मा के स्वाभाविक गुण, ज्ञान और कर्म है। ज्ञान से भिन्न कर्म है इसलिए अविद्या का अर्थ कर्म ही है।

कर्म और ज्ञान पर विचार करने पर पता लगेगा कि जो व्यक्ति केवल कर्म को लेते हैं वे अन्धकार में रहते हैं और जो कर्म की उपेक्षा करके ज्ञान को लेते हैं वे उनसे भी ज्यादा अन्धकारमें हैं? क्यों?कर्म का फल मिला करता है। ज्ञानका नहीं इसके प्रकाश में जो केवल कर्म को लेते हैं उन्हे अच्छा बतलाया गया है परन्तु श्रेष्ठ नहीं। जो दोनो को साथ साथ काममें ल ते हैं वे कर्मके द्वारा मृत्यु से पार हो जाया करते हैं और ज्ञान से अमरता को प्राप्त कर लिया करते हैं। उपदेश यह है कि ज्ञान हासिल करो परन्तु आचरण भी उसी ज्ञान के अनुकूल करो। यही वैदिक धर्म है। तुम कही से भी ज्ञान हासिल क्यों न करो, परन्तु वह ज्ञान और उसके अनुसार कर्म मौत के बन्धनों को ढीले करने वाले ही हों। मनुष्य का यही मुख्यतम कर्त्तव्य कहा गया है।

पश्चिमी जगत्

पश्चिमी जगत् में दो नियमकाम करते हैं। वे साइंस और आर्ट हैं।साइंस ज्ञानमें और आर्ट कर्त्तव्य में सन्निहित है। कहा गया है Science consi-

ats in knowing and art consists in doing पश्चिम के देशो की तरक्की के मूल में ये ही दो बाते हैं। देखना यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का आदर्श वैदिक ज्ञान और कर्म के आदर्श के सदृश है वा इन दोनो में कोई विभिन्नता है। वेद और उपनिषद् ने शिक्षा दी है कि ज्ञान और कर्म वे ही होने चाहिएँ जो परतन्त्रता को दूर करने वाले हो, जिनसे मृत्यु के बन्धन ढीले होजाए। परतन्त्रता दु ख है स्वतत्रता सुख है। परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ दूसरो का हकूमत नही है वरन् इन्द्रियो की दासता ही परतन्त्रता के वास्तविक अर्थ है। अपने भीतर स्वतत्रता होने से ही स्वतत्रता मिला करती है। पूर्व के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य यही है, आदर्श यही है। पश्चिम के ज्ञान और कर्म का उद्देश्य और आदर्श यह नही है। साइंस मनुष्य को कहा पहुँचाना चाहती है इसका पता नही है। पश्चिम के लोग तरक्की कर रहे हैं पर उद्देश्य का उन्हे पता नही। पश्चिमी साइस जन-सहारमे काम आ रही है। नाना प्रकारकी जनसहारिणी गैसें तय्यार हो रही हैं। एक गैस इस प्रकार की तय्यार की गई है कि यदि उसका दुनिया के सबसे बड़े नगर लंडन पर प्रयोग किया जाय, यदि वह गैस तीन हवाई जहाजो पर से छोड़ी जाय और वह लंडन मे श्वास लेने वाली वायु मे मिल जाय तो तीन घटे मे अस्सी लाख आबादी वाले लडन शहर की आबादी नष्ट हो जाय। जर्मनी के सात वैज्ञानिकोने एक जहरीली गैस तय्यार की। वे समझते थे कि यह गैस सब से ज्यादा भयानक गैस है। वे स्टोर मे भर रहे थे किसी प्रकार उस गैस का कुछ भाग रसायनशाला की हवा मे मिल गया। श्वास लेते ही वे सातो वैज्ञानिक वही मर गए। जिस गैस को उन्होंने दूसरे हजारो आदमियों के सहार के निमित बनाया था उसी से स्वय मर गए। कहने का मतलब यह है कि पश्चिम के ज्ञान और कर्म का कोई उद्देश्य नही है। वैदिक ज्ञान कर्म का उद्देश्य है। मनुष्य को ऐसे ही ज्ञान और कर्म का सहारा लेना चाहिए जिनका उद्देश्य हो। यही मनुष्य का मुख्य कर्म है।

ज्ञान का क्षेत्र

आगे ज्ञानके क्षेत्र के सम्बन्धमे वेदमे बतलाया गया है कि—

जो केवल असम्भूति (कारण शरीर) को सेवन करते हैं वे गहरे अन्धकार मे हैं और जो केवल सम्भूति—सूक्ष्म और स्थूल शरीर—मे कारण शरीर की उपेक्षा करके रमते है वे उससे भी ज्यादा अन्धकार मे है।"

"सूक्ष्म और स्थूल शरीर के और ही फल कहते हैं और कारण शरीर के और ही फल कहते है।"

"जो कोई कार्यरूप प्रकृति = सूक्ष्म + स्थूल शरीर और कारण रूप प्रकृति = कारण शरीर इन दोनो को साथ साथ जानता है वह कारण शरीर से मृत्यु को तैर कर कार्य शरीर से अमरता को प्राप्त करता है।

इन मन्त्रो का मुख्य विषय सम्भूति और असम्भूति का ज्ञान है। सम्भूति कार्य प्रकृति और

असम्भति कारण रूप प्रकृति को कहते हैं। ये दोनो जब आत्मा से सम्बन्धित होती हैं तब इनके अर्थ कारण और कार्य्य शरीर होते हैं। कारण शरीर की कल्पना घटाकाशवत् है। जगत में व्यापक कारण रूप प्रकृति का जो अंश हमारे भीतर है उसी का फर्जी नाम 'कारण शरीर' है। कार्य्य शरीर दो हैं। सूक्ष्म और स्थूल। इन तीनों के काम अलग अलग हैं।

स्थूल शरीर

यह शरीर सूक्ष्म शरीर का साधन है। उसी के द्वारा विषयमय जगत् से सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध होता है। स्थूल शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से शरीर की उन्नति होती है।

सूक्ष्म शरीर

सूक्ष्म शरीर १७ चीजों के समुदाय का नाम है

५ ज्ञानेन्द्रियां।

५ सूक्ष्म विषय = तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)

५ प्राण

१ मन

१ बुद्धि

सूक्ष्म शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मानसिक उन्नति होती है।

कारण शरीर

कारण शरीर के विकास और उसकी पुष्टि से मनुष्य मे प्रभु-प्रेम का संचार होता है और वह योगी बना करता है। मतलब यह है कि तीनों प्रकार के शरीर उन्नत होने चाहिएं। यदि सूक्ष्म शरीरो की उपेक्षा करके केवल कारण शरीर की उन्नति चाहते हो तो अंधकार मे पड़ना पड़ेगा। यदि कारण शरीर की उपेक्षा करके स्थूल और सूक्ष्म शरीरो को उन्नत करना चाहते हो तो भी भविष्य अंधकारमय होगा, क्योकि इससे नास्तिकता पैदा होगी। दोनों प्रकार के शरीरों की उन्नति साथ साथ होनी चाहिए तभी मौत का बन्धन टूटा करता है।

मनुष्य के उपर्युक्त कर्त्तव्यों को बतलाते हुए उपनिषद् ने मनुष्यों को चेतावनी दी कि इन कर्त्तव्यों के पालन मे सचाई होनी चाहिए अन्यथा इनकी उपादेयता न रहेगी। चेतावनी यह है:—

"कि तुम पुरुषार्थमय जीवन सावधानता पूर्वक व्यतीत करो। संसारमें धर्म क्या है? वेद और उपनिषद् ने स्पष्ट रीति से बतलाया कि धर्म अन्य किन्हीं नियमोंको नहीं वरन सत्य ही को कहते हैं। जो धर्म है वह सत्य है। जो सत्य है वह धर्म है। बतलाया गया कि जिस सत्य को हम प्राप्त करना चाहते है उस पर चमकती हुई चीजो का पर्दा पड़ जाया करता है। हम सोने चांदी और अन्य प्रलोभनो मे पड़कर सत्यसे विमुख हो जाया करते हैं। जब मनुष्य अपनी कमजोरी से सत्य पर पर्दा डाल दिया करता है तब वह धर्म का प्यारा मुंह नहीं देखा करता। प्रभो! उस पर्देको हटा दीजिए। फल यह होगा कि सत्य रूपी धर्म देख पड़ने लगेगा। नीति में खुले तौर पर कहा गया है:—

'यज्ञ, स्वाध्याय, दान, तप, सत्य, धृति, क्षमा, अलोभ धर्म के मार्ग हैं। पहले चार में नुमाइश की जा सकती है परन्तु अन्त के चार मे नहीं।

यदि इनमे सचाई हो तो ठीक । जब इन अन्तिम चार को न छोड़ कर काम करेंगे वह धर्म होगा । इन्हीं के ठीक ठीक आचरण की शिक्षा मे पर्दे के हटाने की कोशिश की गई है ।

सत्य की महिमा

उपनिषद् म सत्य की बड़ी महिमा वर्णन की गई है । सत्य ईश्वर को भी कहते है । वह सत्य मे ही प्रतिष्ठित है । एक जगह ब्रह्म का नाम 'सत्यम्' कहा गया है । ब्रह्म को 'सत्यम्' क्यो कहते हैं ? इसलिए कि 'सत्यम्' शब्द तीन अक्षरो से बना है स+ति+यम् 'स' जीवका वाचक है । 'ति' ब्रह्मांड के लिये प्रयुक्त हुआ है और 'यम' जीव और ब्रह्माण्ड दोनो के नियम मे रखने वाला होने से ब्रह्म का नाम है । इस प्रकार 'सत्यम्' ब्रह्म ही का नाम है । ईश्वर प्राप्ति के लिए सत्य का सहारा लो । सत्य बोलो, सत्य मानो और सत्य ही करो ।

उपदेश

आगे कहा गया है कि—

"वह सब का पालन पोषण करने वाला है । न्याय कारी है ।"

शिक्षा यह है कि जिन साधनो से दुःख हुआ करता है उनसे हमे दूर कराए, जिनसे कल्याण हो वे प्राप्त कराए ।

हे प्रभु ! आप कल्याण कारी हैं, परन्तु हम आपके उस रूपको तब ही देख पायेंगे जब दुःख के साधनो से रहित हो जायेंगे ।

शिक्षा यह है कि ज्ञान प्राप्त करो और उसके अनुकूल आचरण करो तथा मृत्यु को पारकर अमरता प्राप्त करो । तुम्हारे सब कर्त्तव्योमे सत्यता होनी चाहिए और उनका अनुष्ठान दुःख को दूर करने और अन्तिम गतिको प्राप्त करने वाला हो । मतलब यह है कि अपने को श्रेष्ठ बनाओ ।

—

सृष्टि-संवत्

[लेखक—श्री० पं० गंगाप्रसाद जी चीफजज, टेहरी]

ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेदों की उत्पत्ति और सृष्टि का सम्वत् १९६०९ ५२९७६ दिया है। मुझको याद है, कि लगभग ४० वर्ष हुए इस सम्वत् में भूल होने का प्रश्न उठा था। "आर्य सिद्धान्त" नामक मासिकपत्र में जिसके सम्पादक प० भीमसेन शर्मा थे तथा अन्य आर्यपत्रों में इस विषय पर लेख छपे। परिणाम यह हुआ कि भूल मानली गई और उसके अनुकूल अब आर्य समाजों में तथा आर्य डायरी और पुस्तकादि में इस समय आर्य सम्वत्—१९७२९४९०३६ लिखा जाता है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के अनुसार जो सं० १९३३ वि० में लिखी गई थी अब १९६०८५३०३६ होना चाहिए था। प० विश्वनाथ जी के लेख का उद्देश्य ये सिद्ध करना है, कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में भूल नहीं थी, और सृष्टि-सम्वत् उसी के अनुसार जैसा ऊपर लिखा गया मानना चाहिए।

उक्त पं० जी ने लिखा है कि ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में मनुस्मृति के प्रमाण से सृष्टि सम्वत् लिखा, सूर्य-सिद्धान्त के प्रमाण का उल्लेख नहीं किया, जिसके अनुसार अब १९७२९४९०३६ सम्वत् होता है। इससे पं० विश्वनाथ जी का अभिप्राय यह है कि इस विषय पर मनुस्मृति और सूर्य सिद्धान्त में विरोध है, और सूर्य सिद्धान्त की गणना मान्य नहीं। मैं इस से सहमत नहीं। यह लिखना उचित है कि सूर्य सिद्धान्त वेदांग ज्योतिष के मान्य ग्रन्थों में है। इसी स्थल पर ऋषि दयानन्द ने अंक गणना में उसका प्रमाण ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में दिया है। मेरी सम्मति में मनुस्मृति और सूर्य सिद्धान्त में विरोध नहीं है।

मनुस्मृति के अध्याय १ में इस विषय का वर्णन संक्षेप से किया गया है क्योंकि यह उसका मुख्य विषय नहीं। सूर्यसिद्धान्त में जो ज्योतिष का ग्रन्थ है, इस विषय की व्याख्या विस्तार से की गयी है। मनुस्मृति के अध्याय १ श्लोक ६८-७३ में लिखा है कि कृतयुग ४००० वर्ष का होता है, ४०० । ४०० वर्ष की उसकी सन्ध्याएँ होती है, इस प्रकार कृतयुग ४८०० वर्ष का और त्रेतायुग, सन्ध्या सहित ३६०० वर्ष का, द्वापर सन्ध्या सहित २४०० वर्ष का और कलियुग १२००० वर्ष का होता है, और एक चतुर्युगी के १२००० वर्ष होते है। मनुस्मृति में चतुर्युगी के लिए युग शब्द का व्यवहार किया गया है। सूर्य सिद्धान्त के अध्याय १ में भी इसी प्रकार लिखा है, और साथ ही ये भी दिखलाया गया है कि ये गणना दैव वर्षों के अनुसार है। एक दैव दिन एक सौर वर्ष अर्थात् ३६० दिन के बराबर होता है, इसलिए एक दैव वर्ष ३६० सौर-वर्षों के बराबर हुआ। १२०००

को ३६० से गुणा करने से ४३२०००० सौर वर्ष होते है, जो सन्ध्याओ सहित एक चतुर्युगी का मान है। ये बात सूर्यसिद्धान्त अध्याय १ श्लोक १५—१६ मे स्पष्ट कर दी गया है यद्यपि मनुस्मृ० मे सौर वर्षों की गणना नही दी गयी, कवल दैव वर्षों की दी गयी है॥

मनु अध्याय १ श्लो० ७३ मे और सूर्य्य सिद्धान्त मे भी १००० चतुर्युगी का १ ब्राह्मदिन अर्थात् कल्प माना गया है जो चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का होता है। मनुस्मृति और सूर्य सिद्धान्त दोनो ही मे ७१ चतुर्युगी का १ मन्वन्तर और १४ मन्वन्तरो का एक कल्प स्पष्टरूप से लिखा है। परन्तु ७१×१४ के ९९४ चतुर्युगी होती है, जिससे ब्राह्मदिन पूरा करने के लिए ६ चतुर्युगी की कमी रहती है। इसका समाधान मनुस्मृति में कुछ नहीं परन्तु सूर्य सिद्धान्त मे स्पष्ट रूप से कर दिया गया है अर्थात् प्रत्येक मन्वन्तर के पूर्व और अन्त में एक कृतयुग के समान सन्धि मानी गयी है। इस प्रकार १४ मन्वन्तरो की १५ सन्धियाँ होती हैं। कृतयुग के १७२८००० वर्षो को १५ में गुणा करने से २५९२०००० होते है जो ६ चतुर्युगी के बराबर है। इस गणना का उल्लेख पं० विश्वनाथ जी ने भी अपने लेख में किया है। परन्तु इससे मनुस्मृति और सूर्य सिद्धान्त में कोई विरोध नहीं होता। भेद केवल इतना है, कि मनु ने मन्वन्तरों की सन्ध्याओं का वर्णन नहीं किया सूर्य सिद्धान्त ने किया है। प० विश्वनाथ जी ने इस बात को स्वीकार किया है ' इसमे सन्देह नही कि सन्धि का हिसाब न गिना जावे तो एक कल्प के १४ मन्वन्तर व्यतीत होने पर ७१ × १४ = ९९४ युग व्यतीत होंगे, और १००० मे ६ युग बीतने शेष रहेंगे" उनका विचार है कि ६ चतुर्युगी की केवल १ सन्ध्या कल्प के अन्त मे मानी जावे तो १००० युग पूरे हो जाते है और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिकाकी गणना भी ठीक रहती है। कल्पके अन्त मे६युगोकी सन्ध्याका उल्लेख न तो मनुस्मृति मे है और न किसी अन्य ग्रन्थमे देखा गया। प० विश्वनाथ जी ने भी इसके लिए कोई प्रमाण न दिया। इससे यह उनकी केवल कल्पना प्रतीत होती है। यदि कल्प के आरम्भ मे एक और कल्प के अन्त मे दूसरी सन्ध्या मानी जाती तो अधिक युक्त होता क्योकि दिन और रात मे भी दो सन्ध्याएँ होती है। परन्तु ऐसा मानने पर ३ चतुर्युगी की सन्ध्या कल्प के आदि मे और ३ की अन्त मे माननी पड़ती। कल्प का आरम्भ बीत चुका इस लिए ३ युगो के समान काल ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की गणना मे और जोडना पड़ता और उस गणना मे जो भूल अब है उससे कुछ अधिक काल की भूल माननी पड़ती। पं० विश्वनाथ जी का केवल कल्प के अन्त मे ६ युगो की सन्ध्या मानना न तो युक्ति युक्त है, और न प्रमाण-युक्त है। पं० विश्वनाथ जी ने लिखा है कि मनुस्मृति में सन्ध्या व सन्ध्यांश युगों मे ही मान लिए गये। युगो में सन्ध्या और सन्ध्यांश सूर्य्य सिद्धान्त के अध्याय १ श्लो० १५ मे भी स्पष्टतया माने गये हैं। परन्तु इससे यह आवश्यक नहीं कि मन्वन्तरो में सन्ध्या न मानी जाय।

उक्त पं० जी का अभिप्राय इस लेख से केवल

सत्यार्थ प्रकाश लेख माला

पुत्र

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज।)

***

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास मे निम्न पाठ हैं—

प्रश्न—जो किसी के एक ही पुत्र या पुत्री हो वह दूसरे वर्ण मे प्रविष्टि हो जाय, तो उसके मां बाप की कौन सेवा करेगा और वंशच्छेदन भी हो जायगा इसकी क्या व्यवस्था होनी चाहिये ?

उत्तर—न किसी की सेवा का भङ्ग और न वंशच्छेदन होगा क्योंकि उसके अपने लड़के लडकियों के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे सन्तान विद्या सभा और राज्य सभा की व्यवस्था से मिलेंगे। इसलिये कुछ भी अव्यवस्था न होगी।

इसमे पुत्र परिवर्तन का उल्लेख है इस पर कई आक्षेप करते हैं कि जो अपना पुत्र नही है वह पुत्र कैसे बन जावगा। इसलिये इसे समझने

यही प्रतीत होता है कि स्वामी जी के ग्रन्थो मे जो भूल मानी गई उसका परिहार हो सके। पं० जी ने लिखा है "आर्य समाज के विरोधी लोग इसका कारण महर्षि दयानन्द की भूल बतलाते हैं"। परन्तु वास्तव मे आर्य सामाजिक जनता ने ही इस भूल को बहुत वर्षों से मान कर उसका संशोधन भी स्वय कर लिया है। मेरे सम्मति मे इससे आर्य समाज का गौरव बढ़ता है घटता नही। आगे पं० जी ने लिखा है कि "कई आर्य-विद्वान ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि मे संशोधन की भूल मानते हैं"। प० जी ने इस बात पर बल दिया है कि सत्यार्थप्रकाश, मेला चांदापुर और दूसरे ग्रन्थोंमे भी यही संकेत दिया गया है, अतएव शोधन की भूल नहीं कही जासकती। मेरी सम्मति में भूल चाहे स्वामीजी की हो अथवा संशोधको की हो यदि भूल पाई जावे तो उसको मानना उचित ही है। आय समाज का यह मत नही कि स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्भ्रान्त थे। और गणना आदि की ऐसी भूलों से उनकी उच्चता या महत्ता में कोई कमी नहीं आ सकती।

विशेष—मुझको टिहरी राज्य के एक योग्य माननीय ज्योतिषी से ज्ञात हुआ है कि यदि सृष्टि संवत् मे मन्वन्तरों की संध्या न जोड़ी जावें तो वर्तमान से उत्पन्न जो ग्रहगणादि हैं उनमें अशुद्धियाँ आवेंगी जिससे ग्रहणादि दृश्य पदार्थों का ठीक समय गणित से नही मिलेगा।

(यह विवाद सम्प्रति इस लेख के साथ समाप्त किया जाता है। —सम्पादक)

के लिये प्रथम स्मृतियो मे जो पुत्रो का उल्लेख है उसे देख लेना आवश्यक है नाकि यह समझ मे आजाय कि दूसरे का पुत्र अपना पुत्र स्मृतिकार बनना या बनाना किस प्रकार मानते हैं।

औरस. क्षेत्रजश्चैव दत्त' कृत्रिम एव च।
गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्च दायादा बांधवाश्चषट्।।१५९।
कानीनश्च सहोढश्च क्रीत' पौनर्भवस्तथा।
स्वयंदत्तश्च शौद्रश्च षडदायादबांधवा ॥१६०॥
मनु ९।

अर्थ— औरस, क्षेत्रज, दत्तज, कृत्रिम, गूढोत्पन्न, अपविद्ध। धन के भागी छ बांधव है।

कानीन, सहोदर, क्रीत, पौनर्भव, स्वयंदत्त, शूद्र। छ बांधव हैं धन के भागी नही।

अब मनु जी ने स्वयं इनके लक्षण लिख दिये है मैं वह श्लोक ही लिखना उचित समझता हूँ अर्थ सरल है।

(१) स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेत् हि यम्।
तमौरस विजातीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम्। १६६
(२) यस्तल्पज. प्रमीतस्य क्लीवस्य व्याधितस्य वा।
स्वधर्मेण नियुक्तायां सपुत्र' क्षेत्रज. स्मृत.।१६७
(३) माता पिता वा दद्याद्‌य कमपि पुत्रमापदि।
सदृशं प्रीतिसयुक्त स ज्ञेत्रो दत्तक सुत।१६८
(४) सदृशं तु प्रकुर्याद्‌य गुणदोषविचक्षणम्।
पुत्र पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयश्च कृत्रिमः।१६९
(५) उत्पद्यते गृहे यस्य न च ज्ञायेत कस्य सः।
स गृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तस्य च।१७०
(६) मातापितृभ्यामुत्सृष्टं तयोर यतरेण वा।
यं पुत्रं परिगृह्णीयादपविद्ध स उच्यते। १७१
(७) पितृवेश्मनि कन्या तु यं पुत्रं जनयेद्रहः।
तं कानीन वदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवम्। १७२
(८) या गर्भिणी संस्क्रियते ज्ञाताज्ञातापिवा सती।
वोढु स गर्भो भवति सहोढ इतिचोच्यते।१७३
(९) क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रोर्यमन्तिकात्।
स क्रीतक सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशोपि वा।१७४
(१०) या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया
उत्पा येत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते। ७५
(११) मातापितृविहीनो यस्त्यक्तो वा स्यादकारणात्।
आत्मानं स्पर्शयेद्यस्मै स्वय दत्तस्तु स स्मृत'।१७६
(१२) यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां कामादुत्पादयेत्सुतम्।
स पारयन्नेव शवस्तस्मात्पारशव. स्मृतः।१७७

मनु जी ने यह १२ प्रकार के पुत्र लिखे हैं इनमे तीसरा दत्तक पुत्र है और जैसा ऋषि ने लिखा है यह उसमे मिलता है उस श्लोक के अर्थ इस प्रकार है।

माता पिता प्रीति से सत्कार पूर्वक जिस पुत्र को देदे वह लेने वाले का दत्तक पुत्र कहलाता है और ऋषि का लेख है। 'उनको लड़के लड़कियो के बदले स्ववर्ण के योग्य दूसरे संतान विद्या सभा और राज्य सभा की व्यवस्था से मिलेंगे। इस प्रकार दत्तक पुत्र माता, पिता वा विद्या सभा राज सभा से प्राप्त होने से पुत्र ही होगा इसलिये लेख स्मृति अनुकूल है।

याज्ञवल्क्यर्जा ने निम्न प्रकार उल्लेख किया है।

औरसो धर्मपत्नीजस्तत्समः पुत्रिकासुतः।
क्षेत्रज. क्षेत्रजातस्तु सगोत्रेणेतरेण वा। १२८
गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नो गूढजस्तु सुतः स्मृतः।
कानीनः कन्यका जातो मातामहसुतो मतः।१२९
अक्षतायां क्षतायां वा जातः पौनर्भवः सुतः।

दद्यान्मातापिता वा यं स पुत्रोदत्रको भवेत। १३०
क्रीतश्च ताभ्यां विक्रीतः कृत्रिमः स्यात्स्वयंकृतः।
दत्तात्मा तु स्वयंदत्तो गर्भेविन्न सहोढजः। १३१
उत्सृष्टो गृह्यते यस्तु सोऽपविद्धो भवेत्सुतः १३२

इनमे इतनी विशेषता है कि पुत्री के पुत्र को यदि लें तो वह औरस सम ही है और कानीन मातामह (नाना) का पुत्र होता है उस स्त्री के पति का नही और निम्न पुत्रो का नाम इसमे आया है औरस, क्षेत्रज, गूढ़ कानीन, पौनर्भव, दत्तक, कृत्रिम, स्वदत्त, सहोढ़, अपविद्ध।

वसिष्ठ स्मृति मे इस विषय मे इस प्रकार लिखा है। अध्याय १७

द्वादश इत्येव पुत्रा· पराणं दृष्टाः। १२
स्वयमुत्पादित·स्वक्षेत्रे संस्कृतायां॥१३॥(औरस)
तदलाभे नियुक्तायांक्षेत्रजो द्वितीयः॥१४॥(क्षेत्रज)
तृतीय· पुत्रिका विज्ञायते। १५
अभ्रातृका प स· पितृनभ्येति प्रतीचीनं गच्छति पुत्रत्वम्। १६
अभ्रातृकां दास्यामि तुभ्यं कन्यामलङ्कृताम्।
अस्यां योजायतेपुत्रःस मे पुत्रो भवेदिति॥
पौनर्भव चतुर्थः॥ १९॥
या कौमारं भर्तारमुत्सृज्यान्यैः सह चरित्वा,
तस्यैव कुटुम्बमाश्रयति सा पुनर्भूर्भवति। २०।
या च क्लीव पतितमुन्मत्तंवा भर्तारमुत्सृज्यान्यं,
पतिं विन्दते मृते वा सा पुनर्भूर्भवति। २१।
कानीनः पंचमः। २२।
या पितृगृहेऽसंस्कृता कामादुत्पादयेत्,
मातामहस्य पुत्रोभवतीत्याहुः। २३।
अथाप्युदाहरंति। २४।
अप्रमता दुहिता यस्य पुत्रं विन्देततुल्यत।
पुत्री मातामहस्तेन दद्यात्पिण्डं हरेद्धनम इति। २५।
गृहे च गूढोत्पन्नः षष्ठः। २६।
इत्येते दायादबांधवास्त्रातारो
महतो भयादित्याहु·। २७।
अथादायाद बंधुनां सहोढ एव प्रथमो।
या गर्भणी संस्क्रियते तस्यां जात·
सहोढ· पुत्रो भवति। २९।
दत्तको द्वितीयो, यं माता पितरौ दद्याताम्। २८।
क्रीतस्तृतीयस्तच्छुनः शेपेन व्याख्यातम्। ३०।
हरिश्चन्द्रो हवै राजाऽजीगर्तस्य सौयवसे पुत्रं चिक्राय
स्वयमुपागतश्चतुर्थः तच्छुन· शेपेन व्याख्यातम्।
शुनः शेपोवै यूपेन नियुक्तो देवता स्तुष्टाव, तस्येह देवता पाश विमुमुचु तमृत्विजम ऊचुर्ममैवाय पुत्रोऽस्त्विति, तान्हन संपदे, ते संपादयामा सुरेष एव य कामयेत तस्य पुत्रोऽस्त्विति, तस्यह विश्वामित्रो होताऽऽसीत्तस्य पुत्रत्वमियाय। ३३।
अपविद्धपंचमो माता पितृभ्यामपास्तप्रतिगृह्णीयात्।३४
शूद्रा पुत्र एव षष्ठो भवतीत्याहुः। ३५।
अथाप्युदाहरंति। ३७।
यस्य पूर्वेषां पराणां न कश्चिद्दायादः
स्यादेते तस्य दायं हरेरन्निति। ३८।

इन नामो मे और मनु लिखित नामों मे कुछ अन्तर है, संख्या सम ही है उन नामो पर पाठक विचार करले। वह इस प्रकार है

मनु (१) औरसः (२) क्षेत्रज (३) दत्तक (४) कृत्रिम (५) गूढ़? (६) अपविद्ध। वसिष्ठ (१) औरस (२) क्षेत्रज (३) पुत्रिका। (४) पौनर्भव (५) कानीन (६) गूढ। मनु (७)

कामीन (८) सहोद (९) क्रीत (१०) पौनर्भव (११) स्वयंदत्त (१२) शौद्र । वसिष्ठ (७) सहोढ (८) दत्तक (९) क्रीत (१०) स्वयंदत्त (११) अपविद्ध (१२) शौद्र ।

१२ प्रकार के पुत्र पुराणो मे देखे जाते हैं। अपनी स्त्री मे अपने वीर्य से उत्पन्न हुआ औरस पुत्र । अपने वीर्य से न उत्पन्न होने पर अपनी स्त्री मे नियोग से उत्पन्न हुआ क्षेत्रज । पुत्री का पुत्र जो अपना पुत्र बनाया जाय वह तीसरा। जिसका भाई न हो उसका पुत्र मातामह का पुत्र होता है। उसके विवाह के समय कन्या का पिता कहता है अभ्रातिका कन्या अलंकृत तुम्हे देता हूँ इसका जो पुत्र होगा वह मेरा पुत्र होगा। पौनर्भव चतुर्थ।

जो स्त्री अपने कुमार पति को त्याग कर अन्य पुरुष के साथ सब प्रकार का व्यवहार करके फिर पूर्व पति के कुटुम्ब का आश्रय लेती है वह पुनर्भू कहलाती है । २० ।

और जो स्त्री नपुंसक, पतित, उन्मत्त हुए पति को छोड कर अथवा पति के मरने पर अन्य पति को प्राप्त होती है वह भी पुनर्भू कहलाती है ॥२१॥ विवाह से पूर्व कन्या मे उत्पन्न हुआ पांचवां कामीन पुत्र कहलाता है ॥ २२ ॥

जो बिना विवाही पिता के घर मे कामवश होकर किसी से पुत्र को उत्पन्न करे वह कामीन पुत्र अपने नाना का पुत्र होता है ॥ २३ ॥ और भी उदाहरण देते हैं ॥ २४ ॥ बिना विवाही जिसकी पुत्री अपने तुल्य पुरुष से पुत्र को प्राप्त हो तो नाना उस पुत्र से पुत्र वाला होता है। वह कामीन पुत्र अपने नाना का पिण्डदान करे और दायभागी हो ॥ २५ ॥ अपने घर मे गुप्त रूप से उत्पन्न हुआ पुत्र गूढोत्पन्न (छटे प्रकार का) कहलाता है ॥२६॥ यह छहों पुत्र पिता के धन के दाय भागी होते हैं और बड़े भय से रक्षा करने वाले होते हैं ऐसा कहा गया है ॥ २७ ॥ अदायादों मे सब से पहला पुत्र सहोढ होता है जो गर्भवती से विवाह करने पर उत्पन्न होता है ॥ २८ ॥ माता पिताने जिसको दे दिया हो वह द्वितीय दत्तक पुत्र कहलाता है॥२९॥धन देकर मोल लिया तीसरा क्रीत पुत्र कहाता है जैसे शुनःशेप था ॥ ३० ॥ यह वह शुनःशेप है जिसको राजा हरिश्चद्र ने सूयवस से द्रव्य देकर खरीदा था ॥ ३१ ॥ स्वयं राजा ने खरीदा और शुनःशेप अपनी इच्छा से स्वयं राजा के निकट आगया इससे चौथा क्रीत पुत्र भी शुनःशेप समझना चाहिए ॥ ३२ ॥ फिर शुनःशेप यज्ञ के स्तम्भ मे बांधा गया वहां उसने मंत्रो द्वारा देवताओ की स्तुति की, इस पर देवताओ ने उसे बन्धन से मुक्त किया । उस यजमान राजा से ऋत्विजो ने कहा यह हमारा ही पुत्र हो जाय। उन ऋत्विजो के पास शुनःशेप नही गया, तब ऋत्विजो ने यह सिद्धान्त स्थिर किया कि यह जिसके पास रहने की कामना करे उसी का पुत्र हो जाये। इस पर वह विश्वामित्रहोता का पुत्र बना ॥ ३३ ॥ जिसको माता पिता ने फेंक दिया या त्याग दिया हो उसको लाकर जो रक्षा करे उसका वह पांचवां अपविद्ध पुत्र कहाता है । ३४ । शूद्रा का पुत्र छटा होता है ॥ ३५ ॥ यह छै अदायाद पत्र होते हैं ॥ ३६ ॥ और भी ऋषियो ने

वैदिक-सूर्य-विज्ञान

लेखक—श्री प० प्रियरत्न जी 'आर्ष'

१

वैसे तो खगोल में असंख्य ग्रह और तारे है, अति दूर होने से उनमें प्रत्येक क्या है इसका पता लगाना मानवीय मस्तिष्क से परे है। तथापि ज्योतिर्विद् विद्वानों ने उनकी पांच कोटियां निर्धारित की हैं जो कि ग्रह, धूमकेतु, नक्षत्र, राशि और ऋषि के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें जो तारे खगोल के क्षेत्र में स्थानान्तर गति करते हुए स्थूलाकार में आंखो से या दूरवीक्षणयन्त्र से प्रायः नित्य या वर्ष में नियत काल तक दिखलाई पड़ते हैं वे ग्रह कहलाते हैं। जो कभी तीस चालीस या पचास सौ या इससे भी अधिक वर्षों में लम्बायमान पुच्छ से युक्त आते और जाते दृष्टि गोचर होते हैं वे धूमकेतु कहे जाते हैं। जो तारे वृत्तरूप क्षेत्र में परस्पर सदा नियत स्थान पर रहते हुए वृत्त के साथ २ गतिमय दिखलाई पड़ते हैं तथा ग्रह गति के परिचायक हैं वे नक्षत्र हैं। उक्त नक्षत्र-वृत के या ग्रह के गतिचक्र के बारह सम-विभागों का नाम राशि है और जो इन चारो मे न आकर ध्रुव को आधार बनाकर वर्त्तमान है वे तारे ऋषि संज्ञक हैं।

कुछ विद्वानों का कथन है कि वेद में ग्रह धूमकेतु, नक्षत्र और ऋषि का वर्णन तो मिलता है परन्तु राशि का नहीं। हमारा कथन है वेद मे राशि का वर्णन है, देखिये—

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उतच्चिकेत।
तस्मिन्साकं त्रिशता नशङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलास
(ऋ० १।१६४।४८)

इस मन्त्र में स्पष्ट रूप से बतलाया हुआ है कि एक चक्र में 'द्वादश प्रधयः' बारह प्रधियां होती हैं ये ही बारह प्रधियां अर्थात् प्रधान भाग ही राशियां हैं, चक्र अर्थात् कक्षावृत्त के बारह प्रधान भागो का ही नाम तो राशि है। देखिये जयपुर के राज-ज्योतिषी पं० केदारनाथ जी की रची लोकमान्य तिलक निर्मित 'ओरायन' के अनुवादरूप "वेद-काल निर्णय" पुस्तक में "कक्षावृत्त को १२ तुल्य भागों में बांट दिया है। एक २ भाग को राशि कहते हैं" (भूमिका पृष्ठ ४) अस्तु। यहां पर यह एक बात कही जा सकती है कि 'द्वादश प्रधयः' का द्वादश राशयः' अर्थ यदि है तो निरुक्त और ब्राह्मण ग्रन्थों मे इस मन्त्र का अर्थ संवत्सरात्मक काल

कहा है ॥ ३७ ॥ जिस पुरुष के पूर्व कथित औरस आदि ६ प्रकार के पुत्रों में से कोई भी दायभागी न हो उसके धन को यह अदायाद लें सकते है। ३८।

इस लेख में मनु, याज्ञवल्क्य, वसिष्ट स्मृति के आधार पर यह लिखा गया है कि पुत्र कितने प्रकार से मानते हैं उनमें परस्पर कुछ भेद है तौभी उनमें दत्तक और कृत्रिम जो पुत्र हैं उन्हीं में ऋषिका सत्यार्थ प्रकाश का लिखा हुआ पाठ मिल जाता है।

चक्र परक मान 'द्वादश प्रधय.'' का बारह महीने अर्थ क्यो किये तथा साथ 'त्रीणि नभ्यानि'' का तीन ऋतुएं 'त्रिशता षष्टिः शङ्कवः' का वर्ष के तीन सौ साठ अहोरात्र किए हैं। हमारा इसके सम्बन्ध मे वक्तव्य यह है कि निरुक्त आदि का अर्थ आंशिक है, मन्त्रमे न काल शब्द है न मास न ऋतुएँ और न अहोरात्र है किन्तु चक्र, प्रधि, नभ्य और शंकु शब्द है। चक्र मे बारह प्रधियां, तीन नभ्य और तीन सौ साठ शंकु होते है चाहे वह सवत्सरात्मक काल चक्र हो, नक्षत्र चक्र हो, ग्रह चक्र हो या रेखा चक्र हो यह अभिप्राय है। इस अवस्थामे एक चक्रमे 'द्वादश प्रधयः' बारह राशियां 'त्रीणि नभ्यानि' नभ्या नि नाभौ भवानि व्यास परिमाणानि 'भवे छन्दसि-यत् (अष्टा०४।४।११०) नाभि अर्थात केन्द्र मे होने वाले व्यास परिमाण तीन एक चक्र मे होते हैं तीन व्यास परिमाणो के बराबर अर्थात व्यास से तीन गुणा चक्र का माप होता है एवं 'त्रिश ता षष्टि.' शङ्कव। तीन सौ साठ शंकु अर्थात अंश (Degrees) एक वृत्त मे होते है। किसी भी छोटे या बड़े वृत्त का तीन सौ साठवां भाग गोल नही अपितु सीधा अंश समझा जाता है यही बात मन्त्र मे आए शंकु शब्द से व्यक्त होती है। बस इस मन्त्र का यह व्यापक अर्थ है जो खगोल के सभी गोलो के कक्षावृत और इन गोलो की गति विधि के ज्ञान कराने वाले रेखागणित सिद्धान्त का मूल मन्त्र है। इस मूलमन्त्र की 'द्वादश प्रधयः' बारह राशियां किसी ग्रह के कक्षा वृत के बराबर बारह भागो मे, नक्षत्र वृत्त मे कुछ नक्षत्रो के बारह समूहो मे संवत्सरात्मक काल चक्र के बारह महीनो मे, घड़ी के चक्र मे वर्त्तमान बारह बजो मे क्यो न समझी जावे। वरन एक चक्र मे 'द्वादश प्रधयः बारह राशियां होती है। इस मूल अर्थ मे कोई क्षति नही आती। घड़ीके अविष्कर्त्ता ने घटी चक्र मे बारह बजाए यह तो ठीक किया परन्तु उसने एक गलती की है, वह यह कि पृथ्वी के दैनिक गति चक्र के आधे चक्र मे ही बारह बजा दिए किन्तु पृथिवी के पूरे चक्र मे बारह बजाने चाहिए थे, अपने घटी चक्र को पृथिवी चक्र के साथ रखना चाहिए था। मालूम होता है घड़ी के आविष्कर्त्ता को पृथिवी गोल है यह ज्ञान न होगा यदि था तो उसने यह काम ज्योतिर्विद्या के विरुद्ध किया, उसको दिन रात भर मे एक बार ही दिन के मध्य मे १२ बजाने थे। सवत्सरात्मक काल चक्र भी तो स्वतन्त्र वस्तु नही वह भी भिन्न २ रूप मे नक्षत्रो, ग्रहो के कक्षा- चक्र के आश्रित होता है। वहां चन्द्र, शुक्र आदि ग्रहो के कक्षा चक्र की १२ राशियां ही तो अमुक २ ग्रह के १२ मास होते है। इसलिये 'द्वादश प्रधय.' का अर्थ 'द्वादश राशयः' समुचित उपपन्न होकर वेद मे राशि विज्ञान है यह बात सुतरां सिद्ध हुई।

निबन्ध का विषय 'सूर्य विज्ञान' है अतः खगोल विषयक अन्य बातो पर न कह कर अब 'सूर्य विज्ञान' की ओर आता हूँ। सूर्य विज्ञान मे सूर्य की उत्पत्ति, सूर्य का स्वरूप, सूय का आधार सूर्य की गति सूर्य का अन्य गोलो के साथ सम्बन्ध, सूर्य की रश्मियां और सूर्य से यान्त्रिक एवं आयुर्वेदिक उपयोग, इन सात बातो का समावेश है। अब हम उनका क्रमश. वर्णन करते हैं।

सूर्य की उत्पत्ति:—

दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते

राजाना मित्रावरुणा विवाससि।

अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा

सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु॥

(ऋ० १० । ६४ । ५)

इस पर निरुक्त—

व्रते कर्मणि, अतूर्तपन्था अत्वरमाण पन्था:,

पुरुरथो बहुरथ, अर्यमाऽऽदित्य:।

सप्तहोता सप्त स्मै रश्मय:,

विषुरूपेषु जन्मसु कर्मसदयेषु॥

(नि० ११ । २३)

यहाँ "दक्षस्य वादिते जन्मनि" मे वा शब्द से दक्ष का अदिति से जन्म अथवा अदिति का दक्ष से जन्म हुआ ऐसा अभिप्राय होने से इस मन्त्र के दो अर्थ हैं। मन्त्र के दोनो अर्थों मे दक्ष तो आदित्य है और अदिति का अर्थ अखण्ड अग्नितत्त्व है जब कि उससे आदित्य का जन्म लिया जावे "अग्निरप्यदितिरुच्यते" (नि० ११।२३) और जब आदित्य से उसका जन्म समझा जावे तब अदिति का अर्थ पृथिवी है "अदितिः पृथिवी-नाम" (नि० १ । १) हमे चूंकि आदित्य की उत्पत्ति दिखलानी है अतः 'अदिति' के अखण्ड अग्नितत्त्व वाले प्रथम पक्ष के अर्थ को ही लेंगे।

प्रलय के अन्धकार के बाद सृष्टि के प्रारम्भ मे सूर्य आदि ज्योतिष्खण्ड जब खण्ड की अवस्था मे प्रकाशमान नहीं हुए थे किन्तु खण्ड-रूप मे विभक्त होने को थे ही तो जिस वस्तु के ये खण्ड २ बनकर पृथक् हुए वह खण्ड रहित सर्वत्र फैली हुई सूक्ष्म ज्योति थी। वह अखण्ड ज्योति वेद मे अदिति (अ-दिति = अ-खण्ड) नाम से कही गई है। उसी अदिति नाम की अखण्ड ज्योति से पुन: स्थूल ज्योति के रूप मे उसके खण्ड २ हो गए, उसका एक एक खण्ड एक २ सूर्य बना, इसीलिये सूर्य को 'आदित्य' अर्थात अदिति-अखण्ड ज्योति से उत्पन्न हुआ, यह यौगिक नाम वेदो मे दिया गया है। वह आदित्य जब समी चीन रूप से प्रकाश-मान हुआ तो तभी उस मे पृथिवी आदि गोलो को ऊष्मा (हरारत) और प्रकाश (रोशनी) से आगे टक्कर देने वाली शक्ति "मित्र" नाम से मि+त्र मि प्रक्षेपणे (स्वादि) तथा दूसरी उस के विपरीत सौम्य धर्म की उन्ही भूगोल आदियों को सवरण करने वाली अपनी ओर आकर्षित करने वाली शक्ति वरुण नाम से 'वृवरणे' (स्वादिः) वृ+उनन् * वेदो में कही गई है। ये दोनो 'मित्रावरुणौ' शक्तियां उसी समय सूर्यसे अभिव्यक्त हुईं। पुन: उन भूगोल आदिके प्रति भिन्न २ प्रदेशों मे सप्तरश्मि (सात किरणो वाला) सूर्य उदय होने लगा।

उक्त 'मित्रावरुणौ' शक्तियां सौर मण्डल के प्रत्येक गोल पर अपना प्रभाव निरन्तर डालती है 'मित्र' शक्ति उस गोल को ऊष्मा से आगे टक्कर देती है पुन दूसरी वरुण शक्ति उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इस प्रकार दोनो शक्तियां

="अमिचिमि शसिभ्य क्त" उणा० ४।१६४)

*"कृवृदारिभ्य उनन्" (उणा० ३ । ५३)

भारत की व्यावसायिक उन्नति

लेखक—एक अनुभवी पत्र कार

(३)

जब तक राज्य सामाजिक और व्यक्तिगत दोनो प्रकार के कामो को प्रोत्साहन नही देता तब तक व्यवसाय-वाद नहीं फूलता फलता है। परतन्त्र देशों की तो बात ही क्या, स्वतन्त्र देश भी व्यवसाय व्यापार मे तब तक कोई उन्नति नही कर सकते जब तक उनके सरक्षण के लिये दृढ़ राष्ट्रीय नीति न हो। श्रीयुत जे० टेलर पेडी जो अर्थशास्त्र के एक प्रसिद्ध लेखक हैं 'आर्थिक पुनर्निर्माण Eonomic Reconstruction नामक अपनी पुस्तक मे एक स्थल पर लिखते हैं "किसी राष्ट्र का सफल विकास उन अनुकूल अवस्थाओ पर पूर्णतया अवलम्बित होता है जिन्हे सरकार राष्ट के भीतर उत्पादक व्यवसाय के लिये पैदा कर सकती है। जिनमें मनुष्य अपने दिमागों को, अपने शरीर को, स्वास्थ्य को, और बुद्धि को पूरी स्वतन्त्रता के साथ प्रयोग मे ला सकते है। और प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति का पूरा उपयोग करता हुआ अधिक से अधिक प्रसन्नता लाभ कर सकता है।" यह दुर्भाग्य है कि न तो राज्य ने ही और न व्यवसाय के अगुआओ ने ही अब तक

उस पृथिवी गोल आदि की चक्रगतिमे कारण हैं, मानो 'मित्रावरुणौ' सूर्य की दो भुजाए है उन से वह पृथिवी आदि गोलो को पकड़ घुमाया करता है "बाहू वै मित्रावरुणौ" (शत० ५।४।१।१५) यद्यपि इन गोलो के घूमते रहने से दोनो 'मित्र वरुण' शक्तियो का प्रभाव निरन्तर सर्वत्र पड़ता ही है तो भी गोल के प्रदेशो मे इनके प्रभाव का प्रधान और गौणभाव होता रहता है। जब ऊष्मा और प्रकाश मे युक्त 'मित्र' शक्ति गोल के जिस प्रदेश पर विशेष काम करती है तब उस प्रदेश पर उस मित्र' शक्ति की प्रधानता का प्रभाव दिन के रूप मे दिखलाई पड़ता है इसीलिए कहा भी है "मैत्रं वा अहः" (तै० १।७।१०।१) इसी प्रकार जब ऊष्मा और प्रकाश धर्म वाली मित्र' शक्ति अपना प्रभाव गोल के जिस प्रदेश से हटाकर गौ रूप से रहती है तब उस प्रदेश पर उसके विपरीत आकर्षण और सौम्यधर्म वाली 'वरुण' शक्ति विशेष काम करती है और उस प्रदेश पर स्तब्धता, शून्यता तथा उदासीनता आदि विशेष प्रभाव रात्रि के रूप में प्रतीत होता है, अतएव कहा है 'वारुणी रात्रिः" (तै० १।७।१०।१) अस्तु। इस प्रकार 'दक्षस्य वादिते जन्मनि" इस मंत्र का यह समग्र अर्थ और अभिप्राय हुआ। अदिति नाम की अखण्ड ज्योति से आदित्य अर्थात् सूर्य की उत्पत्ति दर्शा देने के अनन्तर सूर्य के स्वरूप का वर्णन किया जायगा।

अपने साधनों को भारत के व्यावसायिक विकास पर केन्द्रित किया है।

सर राधाकृष्ण आंध्र विश्वविद्यालय के १९२७ के अपने प्रसिद्ध दीक्षान्त भाषण में कहते हैं 'उस देश में जहां बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है, मानवी यत्न का भयंकर दुरुपयोग होता है। जमीन और उसकी दूसरी नियामते अपरिमित हैं। धन पैदा करने में समर्थ बहुत से योग्य हाथ भी मौजूद हैं इस पर भी वे सब बेकार पड़े हुए हैं। यह कहना अन्याययुक्त है कि चूंकि भारतीय काम कम करते हैं और स्वप्न ज्यादा देखते हैं इसलिये वे व्यावसायिक जद्दो जहद में अपने को लगाने से बचते हैं। भारतीय दिमाग के संबन्ध में मौलिक रूप से कोई बात गलत नहीं देख पड़ती है। व्यावसायिक क्रांति का सूत्रपात होने तक भारतवर्ष और युरोप में प्राय: एक जैसी अवस्थाएँ थी। हमारे खेती के ढंग आर्थिक दृष्टिकोण, व्यावसायिक उन्नतियां, किसानों और जागीरदारो के सम्बंध ये सब यूरोप की नाईं एक जैसी लाइनो पर शासित होते थे। और हम कई बातों में युरोप से बढ़े चढ़े थे। यह बड़ी चिंता की बात है कि बावजूद इसके कि हमारा ब्रिटेन के साथ राजनैतिक और आर्थिक सम्पर्क बहुत नजदीक का और पुराना रहा है तो भी ब्रिटेन ने हम में जीवन और प्रगति का संचार करने के लिये कुछ नहीं किया है। कोई तो यही आशा कर सकता था कि ब्रिटेन के साथ यह सम्बंध हमे बहुत कुछ उन्नत करेगा और पूर्व में अपने प्रतियोगियों को पछाड़ने में हमें समर्थ करेगा। परंतु इस तरह की कोई बात नहीं हुई है।" कुछ प्रसिद्ध अङ्गरेज लेखक भी इस विषय पर अपने विचार प्रगट करते है। उनमें से एक कहता है:—

"कुछ व्यक्ति आज कल गंभीर भाव में यह कहते हैं कि राज्य को राष्ट्र के व्यवसाय का सचालन करना चाहिए परंतु प्रत्येक गवर्नमेंएट का यह फ़र्ज है कि वह ऐसी अवस्थाएँ पैदा करे और उन्हे बना रखे जिसमें दूसरे लोगो को उनका संचालन करना मुमकिन हो। व्यवसाय के अग्रणियों को देश की व्यावसायिक प्रगति को अपने निज के व्यवसाय के दृष्टि विंदु से देखना चाहिए। केवल गवर्नमेंट ही व्यवसाय के समस्त क्षेत्र का परिवेक्षण करने में प्रत्येक व्यवसाय को आर्थिक दृष्टि से नही वरन राष्ट्रीय उपयोगिता की दृष्टि से जांच करने में राष्ट्र हित में पड़े हुए काले धब्बों को दूर करने के उपाय काममें लाने में, माल पैदा करने वाले और इस्तैमाल करने वाले दोनों के हितों की रक्षा करने मे समर्थ होती है।" स्टेट्समैन के भूतपूर्व संपादक सर ऐलफ्रेड वाटसन ने सन १९३? में रायल ऐम्पायर सोसाइटी के भोज के अवसर पर अपने भाषण में कहा था 'व्यावसायिक दृष्टिसे भारतवर्ष वह देश है जिसने बहुत से अवसरो को खोया है इसमें ब्रिटेन का बहुत बड़ा दोष है। शरारत यह हुई है कि ब्रिटेन ने भारतवर्षकी व्यावसायिक क्षमताओंको उन्नत करने की समस्याकी तरफ विशेष ध्यान नहीं दिया है।" इसलिए यह स्पष्ट है कि भारतवर्ष प्रजा और शासकों के मध्य हितों की समानता की कमी की वजह से अपने व्यवसाय की उन्नति की दिशा मे कुछ नही कर सका है। भारत के व्यावसायिक

श्री० महात्मा नारायण स्वामी जी का विहार प्रांत में भ्रमण

आर्य्य प्रतिनिधि सभा विहार के संचालकों की इच्छानुसार मैंने १५ दिन का समय विहार प्रान्त के जिले के समाजों मे भ्रमणार्थ दिया था। इस भ्रमण का उद्देश्य आर्य्य समाज के संशोधित उपनियमों का आर्य्य समाजों मे लागू करना था। जिससे आर्य समाज के अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों के आचारक जीवन का लेविल ऊंचा हो। तदनुसार ५ वीं दिसम्बर की रात्रि मे चलकर ६ दिसम्बर को ९ बजे रात पटना पहुंचा। स्टेशन पर सभा के अधिकारी और अनेक सदस्यों से भेंट हुई—निश्चित प्रोग्राम के अनुसार ७ से २१ दिसम्बर तक निम्न स्थानों में भ्रमण किया गया। विहार सभा के प्रधान श्री पं० वेदव्रत जी वानप्रस्थ बराबर मेरे साथ रहे.—

१ दानापुर २ गया ३ डालटनगंज ४ रांची ५ जमशेदपुर ६ झरिया ७ मुंगेर ८ भागलपुर ९ मुजफ्फरपुर १० मोतीहारी ११ छपरा १२ पटना

दानापुर से काम शुरू करना निश्चय किया गया था। यह प्रोग्राम मेरे पटना पहुंचने से पूर्व ही वहां के सभा के अधिकारियों ने बनाकर प्रकाशित कर रक्खा था। दानापुर के लिए यह निश्चय हुआ था कि वहां आर्य्य सभासदो की सूची मैं अपने सामने बनवादूं। राय बहादुर बाबू ब्रजनन्दन सिंह इस विशेष अधिवेशन के सभापति थे। उनकी इच्छानुसार उपस्थित समाज के सदस्यो को, उपनियमों मे सशोधन के महत्व को प्रकट करते हुए, किस प्रकार सदाचारी होने पर कोई आर्य्य, आर्य्य सभासद हो सकता है। भली भांति समझा दिया गया और अन्त मे उपस्थित आर्य्य भाइयो से प्रार्थना की गई कि उपनियम की बातो पर विचार करते हुए, वे स्वय बतला देवें कि उनका नाम किस सूची में अंकित किया जावे अर्थात् आर्यों ही की सूची में उनका नाम रहने दिया जावे अथवा आर्य सभासदों में लिख लिया जावे। मेरे प्रसन्नता की कोई हद नही रही जब मैंने सुना कि वहां के वर्तमान प्रधान महोदय ने यह चाहा कि उनका नाम आर्य्य सभासदो में न रख कर केवल आर्यों में रक्खा जावे। उनकी इस उदारतापूर्ण घोषणा से सभा का वायुमंडल धार्मिकता-पूर्ण बन गया और ९५ में से केवल १८ सज्जन आर्य्य सभासदों की सूची मे

विकास की आशा वर्तमान अवस्थाओं के पूर्ण अध्ययन के बाद देश की आर्थिक नीतियों मे मौलिक परिवर्तन मे है। कुछ अर्थ शास्त्रियों का प्रस्ताव है कि देश मे दो एजेन्सियाँ होनी चाहिए। एक सरकारी और दूसरे गैर सरकारी। इन दोनों को देश के व्यावसायिक हितो की रक्षा के लिए पारस्परिक सहयोग से कार्य करने की जरूरत है। क्या हम आशा करें कि प्रजा और सरकार दोनों के आर्थिक कल्याण के लिए निकट भविष्य में इस प्रकार का विचार क्रिया मे परिणत होगा ?

—

लिखे गये व्यक्तियों ने प्रतिज्ञा की कि वे अपने को यथा संभव शीघ्र आर्य सभासद होने के योग्य बनावेंगे। दानापुर की सफलता से बाकी स्थानों का काम हलका होगया और सभी जगहके आर्यों ने इसी उदारता से काम लिया और प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक आर्य उप नियमों की स्प्रिट ही में काम करेगा। सभी स्थानों पर इस आर्यों की सभा के सिवा, सर्व साधारण के लिये व्याख्यान और उपदेश भी होते रहे हैं। इस भ्रमण में कुछ विशेष बातें हैं जो अनुभव में आईं और उनका उल्लेख करना जरूरी मालूम होता है:—

१ डाल्टन गंज में श्रद्धानन्द ट्रस्ट की ओर से जंगली उराऊ आदि जातियों में प्रचार और उनके सुधार का काम हो रहा है। यहां आर्य्यसमाज का मन्दिर नहीं है। वहां के कार्यकर्ता यत्न कर रहे हैं कि शीघ्र मन्दिर बने।

२ रांची मे प्रशंसित ट्रस्ट की ओर से एक अस्थिर उपदेशक विद्यालय और अनाथालय खोला हुआ है। दोनों का निरीक्षण किया गया। उपदेशक विद्यालय में उराओं आदि ४ जातियो के विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। उद्देश्य विद्यालय का यह है कि इन्हीं जातिके लोग उपदेशक बन जावें। तो उनके द्वारा प्रचार कराने में सुगमता होगी। यह काम ट्रस्ट का प्रशंसनीय है। अनाथालय में बालकों को शिक्षा के सिवा कुछ दस्तकारी का काम भी सिखाया जाता है।

३ जमशेदपुर व्यवसायक नगर है वहां वाटर वर्क्स, लोहे के कारखाने, बिजलीघर, डैरी आदि सभी टाटा कम्पनी के हैं। कम्पनी की ओर से सब का उत्तम रीति से संचालन होता है। ये सभी स्थान देखे गये—आइ न वर्कशाप के अंग्रेज मैनेजर ने कृपा करके कंपनी की मोटरकार, विस्तृत कारखाना देखने के लिये देदी थी। पत्थर से लोहा निकालना, लोहे का साफ होना, उसका पिघलाया जाना, उस से ८, ८ फीट लंबे और दो दो ढाई-ढाई फीट चौड़े और मोटे गर्डरो का ढलना उन से गरडर और रेल की पटरी का बनना आदि सभी कार्य, हमारे देखते देखते कुछ घटो के भीतर ही हो गये। वास्तव मे यह कारखाना इस देश मे अद्वितीय और अनुकरणीय है। जमशेदपुरके आर्य भाइयों ने, घंटों हमारे साथ रह कर सब वस्तुये हमें दिखलाई और इसमें उन्हे बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। इसके लिये हम उनके ऋणी हैं। यहा सुवर्ण रेखा नदी के रेतसे सोना निकाला जाता है।

४ झरिया में आर्य्यकुमार भवन और उनका विशाल पुस्तकालय दर्शनीय है। स्वर्ग वासी सेठ हरदेवसहाय को जिनकी उदारता के ये फल हैं, यहां के सभी पुरुष बड़े प्रेम और श्रद्धासे याद करते हैं।

५ मुजफ्फरपुर मे वहां के आर्य्यकुमारों ने पुष्कलभूमि लेकर उस पर आर्य्यभवन के कुछ कमरे तय्यार किये हैं और कुछ और तय्यार करने वाले हैं। इन कमरों में विद्यार्थी रहते हैं। वहां के कुमार बड़े उत्साही और पुरुषार्थी है। दूसरे स्थानों के कुमारों को इनका अनुकरण करना चाहिये।

६ जिले के मुख्य मुख्य १२ स्थानों पर जहा हम जा सके, वहां मुफस्सिल के आर्य्य भाई भी, भिन्न २ समाजों से आकर शरीक होते रहे थे

विविध-पत्र-पत्रिकाएँ

नमस्ते

श्री ज्ञानचन्द्र जी यजुर्वेद विशारद 'आर्य्य मित्र' में 'नमस्ते' शब्द के विविध अर्थों और प्रयोगों के सम्बन्ध मे प्रकाश डालते हुए लिखते है—

सर्व प्रथम उसके अन्य प्रमाणो पर जाने के पूर्व हमे उसका अर्थ जान लेना उचित है। श्री वामन शिवराम जी आप्टे अपने कोष में इसका अर्थ सद्भाव, पूजा सत्कार, भक्ति, अभिवादन, प्रणाम आदि लिखते हैं। अमरकोष में भी शब्द इसी अर्थ मे प्रयुक्त है वैदिक निघंटु मे अर्चति. पूजनि, शब्दार्थ चिन्तामणि में अभिवादन तथा पद्मचन्द्र, कोष मे भी इसी भाव में प्रयुक्त है। इन सब को देखते हुए इसका अर्थ तो केवल 'यथा-योग्य सत्कार, अभिवादन' के अतिरिक्त और कुछ नही प्रतीत होता है।

इस शब्दार्थ के पश्चात् हम इसके विभिन्न

एक बात जिसने, मुझे, प्रायः सभी स्थानो पर प्रफुल्लित किया, यह थी कि ग्राम के आर्य्यभाइयो मे अपने को अच्छा बनाने और समाज का प्रचार करने की बड़ी लग्न थी और वे बड़ी तत्परता से अपने अपने समाजो मे प्रचार कार्य्य करते है। समाज मे शिथिलता बताने वाले भाइयो को यहां के मुफस्सिल के समाजो मे भ्रमण करना चाहिये तब उनको पता चलेगा कि उनकी सम्मति का कितना मूल्य है।

यद्यपि विहार की सभा के कार्य्य कर्ताओ ने, प्रोग्राम बहुत कसा हुआ बना रक्खा था जिसकी पूर्ति के लिये कई राती जागना भी पडा—१००-१०० डेढ डेढ सौ मील लगातार मोटरो पर चलना पड़ा, इन सब दिक्कतो को मै बराबर क्यो भूलता रहा इसका कारण आर्य्यसमाज के सदस्यो का उत्साह था। इस प्रकार ७ से २१ दिसम्बर तक, विहार का भ्रमण समाप्त करके २१ की रात मे देहली के लिये यात्रा की।

इस संक्षिप्त वृतात को समाप्त करते हुये मे विहार प्रान्त के बहन और भाइयो को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जो शुरू से अन्त तक इस भ्रमण मे प्रेम प्रदर्शन करते रहे और सभी प्रकार के मेरे आराम का प्रबन्ध करते रहे। मैं श्री पं० वेद-व्रत जी को विशेष रीति से धन्यवाद देता हूं। उन्हे मेरे साथ रहने के कारण बड़ा कष्ट उठाना पड़ा। मे विहार के भाइयो को अन्त मे संदेश यह देता हूं कि वे अपने को, उपनियमानुकूल सच्चा आर्य्य बनावें और अधिक से अधिक मात्रा मे धर्म प्रचार करें, इसी से शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होकर देश और विदेश सभी का कल्याण होगा।

—

ग्रन्थो के प्रयोगों को देखेंगे। और इनमें सर्व प्रथम वेदत्रय' को लेंगे। एक और बात जो पट्टी की जन साधारण को पढ़ाई जाती है—सर्वथा याद रखने की है कि कुछ लोग कहते हैं कि 'नमस्ते का प्रयोग शास्त्रों में मनुष्यों के लिए नहीं हुआ है वरन् यह शब्द देवताओं के लिए है। उन्हें भी यहीं से यथा अवसर समझ लेना चाहिए कि किस स्थान से इसका प्रयोग बदलता है, उसका प्रयोग पारस्परिक अभिवादन के रूप में हुआ है या नहीं। नम धातु का प्रयोग एक स्थान पर ऋग्वेद में आया है। कि—

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नम युवभ्यो नम आशितेभ्य.। ऋग्वेद १। ६। २७। १३

कि बड़े, बच्चे, जवान विद्वानोंको नमस्कार हो यहां यह भी देख लेने की बात है कि 'नमः' शब्द छोटे बड़े सभी के लिये प्रयुक्त है। एक और स्थान पर आया है कि

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नम. कुलालेभ्य कर्मारेभ्यश्चवो नमो नमोः निषादेभ्य पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमो नम.

अर्थात् लकड़ी छीलने, बनाने बर्तन बनाने वाले शस्त्रादि बनाने वाले कारीगर, निषादादि वन वासियों और पशुपक्षी आदि के शिक्षकों को नमस्कार। यजुर्वेद मे आया है कि

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽस्त्वर्चिषे। यजुर्वेद १७। ११

कि शीतहारी पवित्रस्वरूप, तेजस्वी के लिए नमस्ते।

शिवो नमासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽस्तु मामा हिंसी.। ३। ६३॥ नमस्तेमा मा हिंसी. १८ ५३॥ पिता नोऽसि पिता नो बोधि नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः। य० ३०। २०

ये प्रमाण भी यजुर्वेद मे ही 'नमस्ते' के स्पष्ट रूप से विद्यमान है। सामवेद मे भी 'नमस्ते अग्ने ओजसें गृणन्ति देवकृष्टय। और अथर्ववेद में 'नमस्ते राजन वरुणोऽस्तु आते हैं। ये चारों वेदों मे से कुछ नमस्ते शब्द के प्रयोग हैं। यों तो सभी जानकारों को मालूम है कि वेदो मे 'नम' के समान अभिवादन के अर्थ में और कुछ प्रयुक्त नहीं है।

× × ×

अब उसके पश्चात् हम अन्य फुटकर साहित्यिक तथा धार्मिक ग्रन्थो को देखेंगे।

शतपथ मे एक स्थान पर आया है कि जब ऋषियों और योगिराज याज्ञवल्क्य से परस्पर भेंट हुई तो उन सभों ने उन्हें नमस्ते याज्ञवल्क्य कह कर अभिवादन किया। जनकने भी याज्ञवल्क्य को 'नमस्ते का ही प्रयोग करके अभिवादन किया था नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्यानु माशाधीति। बृहदा ४। २। गार्गीने अपने पतिको भी 'नमस्ते' शब्दसे प्रणाम किया। उसी ग्रन्थ में एक स्थान पर आता है कि सहोवाच नमस्तेरऽस्तु .। बृ० ३। ८। ५ कठवल्ली उपनिषद् में आता है कि "नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्"। सब के अतिरिक्त कात्यायन स्मृति मे आता है कि 'नमस्ते' तर्पयामिति। कि 'नमस्ते पूर्वक तर्पण करना चाहिये।

उत्तर रामचरित में भी श्री रामचन्द्र से भी 'भगवन्नमस्ते' से अभिवादन कराया गया है।

वाल्मीकि रामायण में भी नमस्ते के प्रयोग के कितने प्रमाण हैं।

नमस्तेऽस्तु गमिष्यामि मैत्रेणेक्षस्व चक्षुषा।

वा० रा० का० ५२। १७

नमस्तेऽस्तु महावृक्ष।

वा० रा० आ० का०

मदरोत्सृज काकुत्स्थौ नमस्ते राक्षसोत्तम !

वा० रा० आ० का०

माता कौशिल्या से श्री रामचन्द्र को 'नमस्ते' शब्द से अभिवादन आध्यात्मरामायण में कराई गई है।

श्रीमद्भागवत् में आया है कि

नमोऽस्तुते देव ! विशाल बुद्ध फुल्लारविन्दायत नेत्र।

१ भा १ स्कं० १

इन इतने प्रमाणों के पश्चात् जब कि यह स्पष्ट है कि नमस्ते शास्त्रों से तथा अपने अर्थ से किसी भी प्रकार अनुपयुक्त अभिवादन नहीं है तो अब जो यह प्रश्न उठता है कि नमस्ते ही अभिवादन का जायज रूप क्यों समाज को दिया जाय। इसका कारण यह है कि सैनिक एक वर्दी में रहते हैं, एक पकार क़दम मिला कर चलते हैं। एक साथ कुल बन्दूकें दगती हैं। एक पूकार सलाम करते हैं, इसका कारण क्या है ? इसका उत्तर यह है कि उनमें सैनिकता का जोश तथा आपसी सहयोग की मात्रा बढ़ाने के लिये यह आवश्यक है कि वे सभी एक प्रकारसे अपना रहन सहन करें। स्वामी दयानन्दजी ने भी जब समाजमें सुधारवादी नीति बर्तनी चाही तब इन्होंने एक यूनीफ़ार्म अभिवादन के लिए समाज में नियत कर दिया कि परस्पर एक दूसरे से नमस्ते ही किया जाय। अस्तु प्रत्येक आर्य्यसमाजी तथा सुधारवादी लोगों से चाहे वे किसी मत विशेष के अनुयायी क्यों न हों उचित है कि वे ऋषि निर्णीत सर्वमान्य अभिवादन नमस्ते का प्रयोग करें।

सह नाववतु सहनौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनाव धीतमस्तु मा विद्विषा है।

सवदध्वं सगच्छध्वं सं वो मनासि जानताम्।

देवा भाग यथा पूर्वे संजाना न उपासते॥

(इसी प्रसंग में उस व्याख्या का देना उपयोगी होगा जो पं० अयोध्याप्रसादजी ने शिकागो के विश्व सम्मेलन मे नमस्ते के अभिवादन की की थी और जो उस व्याख्या के बाद सम्मेलन का अभिवादन बन गया था—सम्पादक)

अभिवादन के भाव का पूदर्शन दो प्रकार से किया जाता है (१) अंग-पूत्यंग से और (२) अपने मन से।

मनुष्य में सब से पहले बाहु-बल चाहिए. बाहुको अंग्रेजी में आर्म्स (Arms) कहते हैं। इसी से (Army) शब्द बना, जिसका अर्थ हुआ समाज या देश का बाहु-बल यानी शक्ति। बाहु-बल दो पूकार का होता है—एक तो रक्षा करने के लिए और दूसरा नाश करने के लिए। रक्षा करने के लिए मस्तक का बल चाहिए, बिना बुद्धि-बल के बाहुबल से ऊट पटांग काम हुआ करते हैं। बाबर और महाराणा के मध्य फ़तेहपुर सीकरी में युद्ध हुआ। बाबर की सेना बुरी तरह काट डाली गई। कुछ आदमी शेष बचे जिन्होंने बाबरसे लौट चलने

की विनय की। बाबर ने हिम्मत बधाई और बुद्धि-बल से काम लिया। इधर संग्रामसिंह ने हमला करने का परामर्श किया। पण्डितो ने पत्रा मे १२ दिन बाद हमला करने का शुभ दिन विचारा। बस बाबर ने अपने बुद्धि बल से रात म हमला कर विजय प्राप्त करली। योरोपियन लोगो मे दोनो बल मौजूद है, इसलिए शासन कर रहे हैं। लन्दन मे जमीन के अन्दर, नदी के नीचे रेलगाड़ियां चलती हैं अमरीका मे Coleredo नदी के ऊपर स्वास्थ्य निकेतन (Sanatorium) ह। विचार हुआ कि नदी का प्रवाह स्वास्थ्य निकेतन के सामने होकर हो। बस प्रवाह उधर कर दिया गया। बाहु बल और मस्तिष्क का बल हृदय के आधीन रहना चाहिए। बिना उसके सचाई, लगन, उत्साह नही होता। इसलिए नमस्ते का अर्थ हुआ—अपने बाहु-बल के साथ मस्तिष्क की सारी बुद्धिमानी और हृदय के प्रेम सहित मै आपका मान करता हू। "With all the power in my arm, with all my intelligence in my mind and with all the love in my heart. I pay my respect to you"

डिक्टेटर शिप ?

उपर्युक्त शीर्षक से 'विशाल भारत' लिखता है—

"कांग्रेस के अधिकारियो के रग ढग और चाल-ढाल देख कर प्रतीत होता है कि उनकी मनोवृत्ति का रुख डिक्टेटर-शिप की ओर है और देश की राजनैतिक हवा उसी दिशा मे बह रही है।

श्री जवाहरलाल जी ने अपने लाहौर के भाषण मे कहा है—

'I am not ashamed of saying that I think I am fit for every job I think I am fit to rule India nay the whole world (cheers)

मुझे यह कहने मे कुछ भी शर्म नहीं है कि मै प्रत्येक काम के लिये योग्य तथा समर्थ हू। मैं समझता हू मै भारत वर्ष पर—भारत पर ही नही समस्त ससार पर—शासन करने मे समर्थ हूँ।

(तालियां)

हमारा यह अनुमान है कि उत्साह की लहर मे बहकर ही श्री जवाहरलाल जी ने उपर्युक्त बात कह डाली है, नहीं तो संसार के दो अरब आदमियों पर शासन करने की योग्यता अपने मे मानना महज खाम खयाली है। शायद नैपोलियन और चगेज खां भी इसी मनोवृत्ति के शिकार थे—

प्रिंस क्रोपाटकिन ने एक जगह लिखा है—

—"We affirm that the best of men is made essentially bad by the exercise of authority हमारा यह दृढ निश्चय है कि यदि सर्वश्रेष्ठ आदमियो के हाथ मे भी शासन दे दिया जाय तो वे भी अवश्यमेव खराब बन जायेगे।"

हम यह मानते हैं कि भारतवर्ष मे ऐसे मनुष्यों का ही बाहुल्य है जो बिल्कुल लवड़धोधो तरीके पर काम करते है और उनके लिये डिसि-

प्लिन या नियन्त्रण का जबरदस्त मूल्य है, पर जिस समय डिसिप्लिन अपनी सीमा को पारकर जाती है उस समय वह खुद एक आवाञ्छनीय चीज बन जाती है। जिन पर देश की सारी आशाएँ निर्भर है, यदि वे गलती करने लगे तो इससे अधिक खेदकी बात और क्या होसकती है ?

यदि सहृदयता और न्याय का बलिदान करके डिसिप्लिन की रक्षा की गई तो फिर वह स्वयं एक दुर्गुण बन जायगी।

एक युवक की दुविधा

'एक युवक की दुविधा' शीर्षक से महात्मा गांधी 'हरिजन' में लिखते हैं —

एक विद्यार्थी पूछता है:—

"मैट्रिक पास या कालेज मे पढ़ने वाला युवक अगर दुर्भाग्य से दो-तीन बच्चो का पिता हो गया हो, तो उसे अपनी आजीविका प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए ? और उसकी इच्छा के विरुद्ध पच्चीस वर्ष पहिले ही उसकी शादी करदी जाय तो उसे, क्या करना चाहिये ?"

मुझे तो सीधे से-सीधा जवाब यह सूझता है कि जो विद्यार्थी अपनी स्त्री और बच्चो का पोषण करनेके लिए क्या करना चाहिए यह न जानता हो अथवा जो अपनी इच्छा के विरुद्ध शादी करता हो, उसकी पढ़ाई व्यर्थ है। लेकिन इस विद्यार्थी के लिए तो वह भूतकाल का इतिहास-मात्र है। इस विद्यार्थी को तो ऐसे उत्तर की जरूरत है जो उस को सहायक हो सके। उसने यह नही बताया कि उसकी जरूरतें कितनी हैं ? वह अगर मैट्रिक पास है तो अपनी कीमत ज्यादा न आके और साधारण मजदूरो की श्रेणी मे अपने को रक्खेगा तो उसे अपनी आजीविका प्राप्त करने मे कोई कठिनाई नही आवेगी। उसकी बुद्धि उसके हाथ-पैर की मदद करेगी, और इस कारण जिन मजदूरो को अपनी बुद्धि का विकास करने का मौका नही मिला है उनकी अपेक्षा वह अच्छा काम कर सकेगा। इसका यह अर्थ नही है कि जो मजदूर अंग्रेजी नही पढा है वह मूर्ख होता है। दुर्भाग्य से मजदूरो को उनकी बुद्धि के विकाश मे कभी मदद नही दी गई, और जो स्कूलो मे पढ़ते है उनकी बुद्धि कुछ तो विकसित होती ही है, यद्यपि उनके सामने जो विघ्न-बाधाएँ आती हैं वे इस जगत् के दूसरे किसी भाग मे देखने को नही मिलती। इस मानसिक विकासका वातावरण स्कूल-कालेज मे पैदा हुए झूठी प्रतिष्ठा के खयाल से बराबर होजाता है। इस कारणविद्यार्थी यह मानने लगते है कि कुर्सी मेज पर बैठ कर ही वे आजीविका प्राप्त कर सकते है। अतः इस प्रश्नकर्ता को तो शरीरश्रम का गौरव समझ कर इसी क्षेत्र मे से अपने परिवार के लिए आजीविका प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

और फिर उसकी पत्नी भी अवकाश के समय का उपयोग कर के परिवार की आमदनी को क्यो न बढ़ावे ? इसी प्रकार अगर लड़के भी कुछ काम करने जैसे हो तो उन को भी किसी उत्पादक काम मे लगा देना चाहिए। पुस्तको के पढ़ने से बुद्धि का विकाश होता है, यह खयाल गलत है। इस को दिमाग मे से निकाल कर

आर्य समाज की प्रगति

दिसम्बर, जनवरी सन् ३७

संयुक्त प्रान्त

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते !

मुझे आपका पत्र यथा समय मिल गया था। उससे यह जानकर कि आपके इस नवीन कालम का 'सार्वदेशिक' के प्रेमी पाठकों, आर्यसमाजों और प्रतिनिधि सभाओं ने स्वागत किया है मुझे जितनी खुशी हुई उसका अन्दाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि चिट्ठी मिलने के समय से इस चिट्ठी के लिखते समय तक मैं उसे १५-१६ बार पढ़ चुका हूँ। मैंने अपने पूर्व पत्र में अपने प्रान्त में व्याप्त पारस्परिक मनोमालिन्य की चर्चा की थी। अब वह वैमनस्य अपने स्थूल रूप में लोगों के सामने आ गया है। अखबारों मे पढ़ने पर कि प्रान्तिक सभा एक समाज के विरुद्ध अदालत मे गई है मुझे बहुत दुख हुआ था क्योंकि मैं आर्य समाज के पारस्परिक झगड़ों के निपटारे के लिए सरकारी अदालतोंके दरवाजे खट-खटाने को पसन्द नहीं करता हूँ परन्तु यह जान कर कुछ सन्तोष हुआ कि सभा स्वयं अदालत में नहीं गई है वरन विरोधी समाज की कार्य्यवाहियों की वजह से जाने के लिए मजबूर हुई है। यह भी मालूम हुआ है कि प्रतिनिधि सभा ने आगरा आर्य समाज को उपनियमों की किसी धारा के अनुसार समाज को स्थगित कर दिया है और उसी ने सभा को अदालत मे बुलाया है। प्रसन्नता की बात है कि सगठन प्रेमियों की सहानुभूति सभा के साथ है। हम बड़ी उत्सुकता से इस मामले में अन्तिम निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रान्तिक सभा ने आपने वृन्दावन के पिछले वार्षिक अधिवेशन में अपना पचास वर्षीय अर्थात् स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाना निश्चित

यह सच्चा खयाल मन मे जमाना चाहिये कि शास्त्रीय रीति से कारीगर का काम सीखने से मन का विकास सब से जल्दी होता है। हाथ को या औजार को किस प्रकार मोड़ना या घुमाना पड़ता है, यह कदम-कदम पर उम्मीदवार को जब सिखाया जाता है तब उसके मन के विकास की शुरूआत होती है। विद्यार्थी अगर साधारण मजदूरों की श्रेणी में अपने को खड़ा करले तो उनकी बेकारी का प्रश्न हल हो सकता है।

अपनी इच्छा के विरुद्ध विवाह करने के विषय में तो मैं इतना ही कह सकता हू कि अपनी इच्छा के खिलाफ जबरदस्ती किये जाने वाले विवाह का विरोध करने जितना संकल्प बल तो विद्यार्थियो को जरूर प्राप्त करना चाहिए। विद्यार्थियों को अपने बल पर खड़ा रहने और अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई बात—खासकर ब्याह-शादी जबरदस्ती किये जाने के हरेक प्रयत्न का विरोध करने की कला सीखना चाहिये।

—

किया है। उत्सव आगामि बड़े दिन के अवसर पर मेरठ नगर मे मनाया जायगा। मेरठ मे इस लिये कि वहाँ ही प्रतिनिधि सभा अस्तित्वमें आई थी। इस उत्सवके उपलक्षमे प्रतिनिधि सभा जहां अनेकानेक कार्यों की आयोजना करेगी वहां प्रतिनिधि सभा का पचास वर्षीय इतिहास भी प्रकाशित किया जायगा। हम चाहते हैं प्रतिनिधि सभा इस अवसर पर जहां अन्यान्य कार्य करे और करार वहां अपना स्थिर हैड आफिस जरूर स्थापित कर देवे। इस प्रकार के उत्सवो के लाभ के सम्बन्ध मे, सम्पादक जी, आर्य पुरुषो की एक सम्मति नही है और इसका कारण उनका आती अनुभव सुना जाता है। उनका अनुभव है कि यह उत्सव प्रदर्शन की वस्तु ही बन कर रह जाते हैं उन से जो लाभ होना चाहिए वह नही होता। परमात्मा करे प्रतिनिधि सभा का यह उत्सव इस धारणा को निर्मूल साबित कर दे। हमारी यही एकान्त इच्छा है। हम चाहते हैं इस उत्सव के होने तक प्रान्त मे शान्ति का वातावरण छा जाय और आर्य बन्धुओ की मनोवृत्तियां उत्तम प्रकार की हो जायें।

गुरुकुल वृन्दावन मे सुधार के लिए एक कमीशन बिठलाया गया है। जांच का खास दिलचस्पी का विषय यह है कि गुरुकुल सरकारी परीक्षाओ को अपनाए या नही। देखें क्या इसका निर्णय होता है।

किन्ही संन्यासी आत्मानन्द जी स्वाध्यायी ने, समाचार मिला है, इस मास १००० कोस की प्रचारार्थ पैदल यात्रा की है। रिपोर्ट है उन्हो ने ५०० ग्रामो में वेद का सन्देश लोगो को पहुंचाया है। रिपोर्ट के सम्बन्धमे हमे कुछ नही कहना है। हमे इन स्वामी जो की साहित्यक वृत्ति और त्याग की तारीफ करते हैं। ग्राम प्रचार के कार्य के करने के लिये इसी प्रकार की स्प्रिट की जरूरत है।

सम्पादक जी, आपको पता हो होगा कि 'आर्यमित्र' मे उसके भूतपूर्व सम्पादक पं० हरिशंकरजी पुनः आ गए हैं। उनसे बलात छीनी हुई उनकी प्रिय वस्तु उन्हे पुन सम्मान् पूर्वक सौप दी गई है। भाई हरिशंकर जी को बधाई है।

मैने पिछला चिट्ठी मे कन्या गुरुकुल हाथरस तथा गुरुकुल वृन्दवन के उत्सवो की चर्चा की थी और लिखा था कि विस्तृत रिपोर्टों के प्राप्त हो जाने पर विस्तृत समाचार लिए जाएँगे। वे रिपोर्टें प्राप्त हो गई हैं। कन्यागुरुकुल मे सरस्वती सम्मेलन हुआ जिसमे कन्याओ ने अपने २ निबन्ध पढ़े। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री प्रो० सुधाकर जी एम ए तथा श्री. बा रामचन्द्र जी रिटायर्ड सिविल सर्जन प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम ए. इत्यादि महानुभावो के भाषण हुए। साधु आश्रम हरदुआगंज के छात्रो के धनुर्विद्या के खेल हुए। अपील पर १०००) धन पण्डाल मे एकत्र हुआ। २५०) का दान शाकशाला के लिए प्राप्त हुआ। इस उत्सव की विशेषता यह सुनी गई है कि ग्रामीणजनता ने निरन्तर उत्साह पूर्वक भाग लिया। गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर सरस्वती सम्मेलन ,सर्व धर्म सम्मेलन, कवि सम्मेलन, आर्य्य धर्म सम्मेलन, इत्यादि

विविध सम्मेलनों के अलावा वक्ताओं के व्याख्यान हुए। दीक्षान्त अभिभाषण सभा के प्रधान श्री० मदनमोहन जी सेठ का हुआ। उत्सव में श्री० महात्मा नारायण स्वामी जी, श्री० स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी सत्यदेव परिब्राजक, श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी बी० ए० इत्यादि महानुभावों ने प्रतिनिधि सभा तथा प्रान्त के मुख्य गण्यमान्य सज्जनों के अतिरिक्त उत्सव में भाग लिया। कितना धन दान में आया यह मैं आपको लिखने में असमर्थ हू क्योंकि रिपोर्ट इस सम्बन्ध में मौन है।

आर्य्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपूर के तत्वावधान में स्वामी त्यागानन्द जी तथा पं० रघुनन्दन जी उपदेशक मण्डल के उद्योग से हुमेलवा नामक ग्राम में एक संस्कृत पाठशाला खोली गई है और उसे निशुल्क रूप से कार्य्य करने वाले सज्जनों की सेवा भी मिल गई है। संस्कृत को प्रोत्साहन तथा पुनर्जीवित करने वाले हम प्रत्येक प्रयत्न को आदर की दृष्टि से देखते हैं इसीलिए इस पत्र मे इस पाठशाला की चर्चा की गई है।

इस मास एक शोक सम्वाद भेजता हू–शायद आपको भी मिला होगा। कालपी के प्रसिद्ध और पुराने आर्य्य पं० शिवचरण जी अब इस ससार में नहीं हैं। बुन्देलखण्ड में आर्य्य समाज के प्रचार में उनका पर्य्याप्त योग रहा था।

गढ़वाल प्रान्त में सवर्णों और अवर्णों के पारस्परिक सघर्ष और सवर्णों के अवर्णों के प्रति अत्याचारों की कथा नई नहीं है। सघर्ष और अत्याचारों की घटनायें प्रायः प्रकाश मे आती रहती है। अभी एक घटना का मुझे पता लगा है। वह यह है कि हरिजन के एक लड़के ने एक सवर्ण पौराणिक के छोटे से बालक को गोद मे उठा लिया। इसी अपराध पर उच्च वर्ण वालों ने लड़के के कान पकड़े और उसके मां बाप पर ५) दण्ड तथा जूते लगाए। सम्पादक जी! यह घटना खास घटना नहीं है। इससे भी अधिक भयङ्कर और हृदय वेधक घटनाओं के समाचार मिलते रहते हैं। ये घटनाऐ मुझे ऐसा प्रतीत होता है तब तक जारी रहेंगी जब तक सवर्णों की मनोवृत्ति में अपेक्षित सुन्दर परिवर्तन नहीं हो जाता। इसमे आर्य्य समाज के सिवा कोई सफल नहीं हो सकता। आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को गढ़वाल प्रान्त मे प्रचार करना चाहिये। हमारा मतलब यह न समझा जाय कि वहां प्रचार नहीं हो रहा है। सार्वदेशिक सभा भी वहां प्रचार कर रही है और धीरे धीरे मनोवृत्तियां भी बदल रही हैं परन्तु जैसा प्रचार होना चाहिए वैसा नहीं हो रहा है ऐसी हमारी धारणा है।

आर्य्य समाज सोरों ने मार्गशीर्ष के गङ्गा मेले मे सफलता पूर्वक प्रचार किया ५ दिन तक प्रचार रहा। उपस्थिति १० ० तक हो जाती थी।

सीतापुर आर्य्यसमाज ने २३ १२-३६ को प्रचलित जात-पांत तोड़कर एक विवाह कराया। वर क्षत्रिय जाति का था और वधू दलित वर्ग का थी।

पंजाब

श्री सम्पादक जी, नमस्ते।

मैंने पिछली चिट्ठी में दयानन्द उपदेशक

विद्यालय के एक विद्यार्थी की आत्म हत्या की चर्चा की थी और हम प्रतिनिधि सभा के वक्तव्य की प्रतीक्षा में हैं ऐसा भी जाहिर किया था। हम प्रतीक्षा मे थे ही कि विद्यालय के एक दूसरे समाचार ने हमारी चिन्ता और दुख को और भी बढ़ा दिया था। वह समाचार विद्यालय के विद्यार्थियों की भूख हड़ताल थी। भूख हड़ताल का कारण विद्यार्थियों का असन्तोष सुना जाता है। हड़ताल २-३ दिन जारी रही। उसे बन्द करने के विविध यत्न किए गये परन्तु व्यर्थ गये। विद्यालय के भूत पूर्व आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अकस्मात लाहौर गए। उन्होंने विद्यार्थियो को समझा बुझा कर हड़ताल बन्द करा दी। सुनते हैं प्रतिनिधि सभा ने मामले की जांच के लिए एक कमेटी बिठाई है। जांच का क्या परिणाम होता है तथा प्रतिनिधि सभा उस पर क्या कार्य्यवाही करती है यह देखना है।

इस मास एक घटना ने समस्त आर्य्य जगत को चिन्ता मे डाल दिया था। आर्य्य जगत के प्रख्यात विद्वान आचार्य रामदेव जी को लकवेका गुरुकुल कांगड़ीमें आक्रमण होगया था। परमात्मा की दया से अब वे पहले से स्वस्थ्य हैं और दिन पर दिन स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

इस मास प्रान्त का सामाजिक वातावरण गोपाल मिश्र हरियाना प्रान्त निवासी की शरारतपूर्ण और गन्दी पुस्तक 'कल्जुग इन्सान के लिबास मे उर्फ संगीत दयानन्द' पर क्षुब्ध होता रहा है। समाजों ने इसके विरुद्ध प्रस्ताव पास करके सरकारसे इसकी जब्ती की प्रार्थना की है तथा प्रान्तिक सभा को इस पर कार्यवाहि करने की प्रेरणा की है। देखें प्रतिनिधि सभा इस सम्बन्धमे क्या करती है? मालूम हुआ है यह पुस्तक किसी आर्य्य समाजी पत्रकार के लेखोंके उत्तर मे लिखी गई है। सम्पादक जी। हम वाणी और लेखनी में असंयम और अशिष्टता दोनो के खिलाफ़ है भले ही वह सत्य के मंडन के लिए ही क्यों न प्रयुक्त हुए हों। इस दृष्टि से हमारे भाई भी इस प्रकार के अवांछनीय आर्य्यसमाज के विरुद्ध साहित्य की उत्पत्ति और प्रचार की जिम्मेदारी से नहीं बच सकते हैं।

इस मास शाहपुर में वर्तमान सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों की अवहेलना की दृष्टि से आदर्श विवाह हुआ है। विवाह सम्पन्न परिवारों मे हुआ था तथापि ८ आदमी बारात में गए थे, मुहूर्त, लग्न इत्यादि का खयाल नहीं रक्खा गया था और विवाह सम्बन्धी प्रचलित कई खुराफ़ातों को धत्ता बतलाया गया।

आर्य्य-समाज शाम चौरासी ने १ जनवरी से एक फ्री आयुर्वैदिक औषधालय खोला है। प्रान्त मे इस प्रकार के औषधालय खुल रहे हैं। क्या ही अच्छा हो कि खास २ रोगों के उच्च कोटि के आर्य्य-समाज में चिकित्सालय हों भले ही उनकी संख्या कम से कम क्यों न हो। हमें भय है यदि इन चिकित्सालयों को अन्य संस्थाओं की तरह हम आवश्यकता अनावश्यकता को ध्यान में रक्खे बिना अन्धाधुन्ध खोले चले गए तो इनका उद्देश्य नष्ट हो जायगा—इस खतरे से इन्हें बचाने की जरूरत है।

रियासत रामपुरबू शहर (शिमला) में पौरा-

सिक्खों के मेलों मे वैदिकधर्म का प्रचार हुआ। ये मेले प्रति १२ साल मे या कई वर्षों के बाद होते हैं। इनमें मे एक मेला 'शान्त' कहलाता है परन्तु इसमें असंख्य पशुओं के बलिदान को देखते हुए हमें उस आदमी की अक्ल पर हैरत होती है जिसने इस मेले का नाम 'शान्त' रक्खा है इसका नाम तो 'अशान्त' ही उपयुक्त था। मेले में आर्य्यों के संकीर्तन और नगरकीर्तन हुए। इस अवसर पर व्याख्यान इत्यादि द्वारा प्रचार हुआ। हजारों की संख्या में ट्रैक्ट बांटे गए। सम्पूर्ण यजुर्वेद का एक महायज्ञ हुआ।

राजस्थान

श्री० सम्पादक जी नमस्ते!

पिछली चिट्ठी में मैंने आर्य्य-समाज केसरगंज अजमेर को प्रतिनिधि सभा के साथ पुनः सयुक्त कराने के पं० धुरेन्द्रजी शास्त्री के प्रयत्नों की चर्चा की थी। यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि पं० जी के यत्न सफल हुए हैं तथा केसरगंज आर्य्य-समाज प्रतिनिधि सभा के साथ संयुक्त हो गया है और उसने प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में सोत्साह भाग लिया है। यह परिवर्तन स्वागत योग्य है। हम चाहते हैं यह स्वागत योग्य बना रहे। आपको एक दूसरा हर्षदायक समाचार भेजता हूँ। आर्य्य-समाज केसरगंज में श्री जियालाल जी पिछले ११ वर्षों से मन्त्री पद पर चले आते थे। इस बार भी वे मन्त्री निर्वाचित हुए परन्तु उन्होंने समाज के प्रबल आग्रह पर भी कोई पद स्वीकार करने के लिए इसलिए इन्कार किया कि ऐसा करना उपनियमों की मंशा के विरुद्ध था। श्री जियालाल जी की संगठन के प्रति सम्मान की यह अच्छी मिसाल है। सुनते हैं जियालाल जी के समय मे समाज ने प्रत्येक पहलू में उन्नति की है आशा है वर्तमान अधिकारी उनके अनुगामी बनने का यत्न करेंगे। जियालाल जी अपने कार्य मे सफल होने और इस प्रकार संगठनकी दृष्टिसे त्याग करने के लिए हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

इस मासभगवतगढ़, भुसावर, उदयपुर, भरतपुर, जयपुर इत्यादि में प्रचार हुआ। भगवतगढ़ समाज सवाई माधोपुर की निजामत में अच्छा प्रचार कर रहा है। मीणे लोग तक स्वाध्याय करने लग गए हैं। आर्य्य-समाज के प्रति लोगों का प्रेम और आकर्षण बढ़ रहा है। भगवतगढ़ और भरतपुर समाज के वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक हुए। श्री मूलचन्द्रजी अग्रवाल खादी-आश्रम (रींगस)के द्वारा विदित हुआ कि आजकल जयपुर राज्य मे बाल-विवाहों की धूम है। सुनते हैं राज्य की ओर से इसपर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। हमारा आदर्श यह है कि कम से कम २५ वर्ष के लड़के और १६ वर्ष की लड़की का विवाह होना चाहिए फिर भी शारदा ऐक्ट में निर्धारित उम्र से कम में तो लड़के लड़कियों की शादी हरगिज नहीं होनी चाहिए अर्थात् २१ से कम लड़के की और १४ से कम लड़की की।

सम्पादक जी! आपको पता होगा 'राजस्थान' जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है देशी राज्यों का खास प्रान्त है और इस प्रान्तमें प्रचार की गति के मन्द होने का एक यह भी

एक कारण है। यहां प्रचार में बहुतसी बाधाएं है जिनमे कहीं २ प्रचार पर राज्यों के प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष प्रतिबन्ध मुख्यतम है। मालूम हुआ है प्रतिनिधि सभा उन पतिबन्धों के हटवाने में यत्नशील है।

पान्त में एक योजना हुई है। प्रचलित जात-पांत को तोड़कर जिन व्यक्तियों ने शादी की है तथा जो करने के लिए उत्सुक हैं उस योजना के अनुसार उन्हें संगठित किया जायगा—पता नहीं इस योजना के संचालक कौन नियत हुए है। यदि प्रचलित जात-पांत मे फँसे हुए व्यक्तियों या अत्यधिक जोशीले लोगों के हाथों में यह पड़ गई तो निश्चय ही इसकी खैर नहीं।

मध्यप्रदेश

श्री सम्पादक जी, नमस्ते !

मैंने पिछली चिट्ठी में फैजपुर कांग्रेस के अवसर पर आर्य्य-समाज के प्रचार की रिपोर्ट मिलने की दशा मे भेजने के लिए लिखा था। वह रिपोर्ट मिल गई है। रिपोर्ट के अनुसार लगभग १५० आर्य्य-नरनारी फैजपुर मे उपस्थित हुए थे। इस अवसर पर भारतीय वैदिक साम्यवाद परिषद् आर्य्य-सम्मेलन इत्यादि परिषदो और सम्मेलनों की योजना की गई थी। इस अवसर पर मुख्यतया महाराष्ट्र प्रान्तमें प्रचार के निमित्त 'सत्यार्थ-प्रकाश' का मराठी में छपवाना निश्चित हुआ है। हजारो की संख्या में ट्रैक्ट वितरण किए गए। इस कार्य मे बम्बई समाज ने अच्छा योग दिया था। बुरहानपुर समाज के सेवा-संघ के ५० स्वयं सेवकों ने भी इस अवसर पर सेवाकार्य किया। खामगाम, रामपुर नगरी, जबलपुर में प्रचार हुआ। नगरी में ६ उपनयन संस्कार हुए।

कदाचित् आपने पत्रों में पढ़ा होगा प्रान्तिक सभा प्रान्त में समाज के काम को आगे बढ़ाने का पूरा पूरा यत्न कर रही है और यह भी यत्न कर रही है कि पान्त के साधन प्रान्तीय कार्य्यों में ही कार्य्य मे आएँ तदनुसार उसने समाजों को प्रेरणा की है कि वे पान्त से बाहर के लोगों को जिनके पास सभा का प्रमाण-पत्र न हो धन से सहायता न करें।

विहार बंगाल

श्री सम्पादक जी, नमस्ते !

यह जानकर कि विहार में आर्य्य समाज की प्रगति के सम्बन्ध में श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज के भ्रमण का वृतान्त आप दे रहे हैं और मुझे प्रथक यत्न करने की जरूरत नहीं है मैं विस्तार में नहीं लिखता हूं फिर भी एक दो समाचार विहार बङ्गाल के सम्बन्ध में जो प्राप्त हो सके हैं भेजे देता हूँ।

हावड़ा (कलकत्ता) समाज में तीन विधवाओं के पुनर्विवाह हुए। ३ नाम करण संस्कार हुए। एक ग्रह-प्रवेश, दश शुद्धि तथा तेरह अन्त्येष्टि संस्कार हुए। अठारह स्त्रियों और चार बालकों की रक्षा की गई। स्वामी सर्वदानन्द जी (जौनपुर) को पचीस रुपया सहायतार्थ दिये गये। दो सज्जनों को रेल का भाड़ा देकर सहायता की गई। पाच रोगियों को अस्पताल में सहायता दी गई तथा सात बेकारों को काम में लगाया गया।

तेतीस सज्जनों का आतिथ्य किया गया। समाज एक वाचनालय तथा एक रात्रि पाठशाला चला रहा है जिसमें कई दलित बालक बालिकाएं नि शुल्क शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

रकसौल (चम्पारन) में आर्य्य चिकित्सालय खोला गया है जिसका प्रधान उद्देश्य जनता को ईसाई बनने से रोकना है जो स्थानीय मिशन हस्पताल के कारण आए दिन ईसाई बनती रहती हैं। रोगियों का प्रति दिन का औसत तीस का है। हस्पतालों के द्वारा बनने वाले ईसाई लोगों की रक्षा हमारे चिकित्सालयों द्वारा सम्भव हो सकती है जब हम में ईसाईयों के सेवा भाव का अधिक नहीं तो कम से कम सौवा भाग भी आ जाय। इस चिकित्सालय में सेवा के इसी भाव का वातावरण यदि न हो, तो पैदा करना और रखना चाहिये।

खड़गपुर (बंगाल) में समाज प्रचार का अच्छा काम करती रहती है। इस मास इस समाज का निर्वाचन हुआ जिसका विवरण इस प्रकार है —

समाज का वार्षिक चुनाव ता० १७-१२-१९३६ साप्ताहिक अधिवेशन के पश्चात प० रामनुग्रहजी की अध्यक्षता में हुआ। सर्व सम्मति द्वारा निम्न प्रकार पदाधिकारी सन १९३७ ईसवी के लिये चुने गये।

(१) श्रीमान बा० दण्डयानी जी प्रधान
(१) ,, ,, रामानुग्रह जी उपप्रधान
(३) ,, ,, श्री पाद पाण्डुरङ्गार्य जी उपप्रधान
(३) ,, ,, महाशय सन्तराम जी प्रधान मन्त्री
(४) ,, ,, काशीनाथ जी 'मानके' मन्त्री
(६) ,, ,, भ्रज सुन्दर पण्डा जी मन्त्री
(७) ,, ,, प्यारेलाल जी कोषाध्यक्ष
(८) ,, ,, कृष्णलाल जी महरोत्रा पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरङ्ग सभासद

(१) श्री मान बी. एन. पाठक जी (२) डा० बाबूलाल जी (३) म० रामचरण जी (४) बा० नारायण स्वामी जी [५] बा० बनभूशनदास जी [६] बा० प्रभुलाल जी [७] म० भगवानदीन जी अवस्थी।

काशीनाथ "मानके"
मन्त्रीआर्य्यसमाज खड़गपुर बङ्गाल

बिहार से स्वामी जगदीश्वरानन्द जी को म० तेजसिंह भजनोपदेशक के प्रति यह शिकायत है कि अनेक वार वायदा करके और धन लेकर भी वे उनके यहा नहीं गए। पता नहीं इसमें कितनी सचाई है।

बम्बई

श्री सम्पादक जी !

बम्बई प्रान्त का विवरण न भेज सकने का कारण मैंने अपनी पिछली चिट्ठी में वर्णन किया था और प्रान्तिक सभा से विवरण प्राप्त करने की अनुमति आपको दी थी। आशा है आप ने बम्बई सभा को विवरण के लिये लिखा होगा। (हमने बम्बई सभा को लिखा हुआ है। आशा है

कि उससे प्रति मास हमें विवरण प्राप्त होता रहेगा । और हम इस कालम की पूर्ति में समर्थ रहेंगे । हम यह भी सूचित कर देना चाहते हैं कि हमने अन्य प्रान्तिक सभाओं से भी इसी प्रकार का निवेदन किया है और उनमें से कई के उत्साह वर्द्धक उत्तर भी हमें मिल गए हैं। सम्पादक)

मद्रास प्रान्त करनाटक

दिसम्बर १६३६

इस समय हिन्दूपुर, गोरीबिदूर, चित्रदुर्ग, चन्नपट्टम, शेषाद्रिपुर, मल्लेश्वर, मावल्लीग्राम, कोर्चपाल्यम्, विश्वेश्वरपुर, बंगलौर छावनी, कंगेरी इत्यादि में वैदिक धर्म प्रचार और दलितोद्धार कार्य किया गया। हिन्दूपुर मे वैदिक धर्म-विषयक चार व्याख्यान देकर २ दिसम्बर को आर्य समाज की स्थापना की गई जिसके प्रधान श्रीयुत के नागेश्वर राव Electiic eng neei और मन्त्री श्री वेंकटराम जी ठेकेदार चुने गये। सारे भारत में प्रसिद्ध Indian Institute of Science मल्लेश्वर (बंगलौर) मे एक आर्य-युवक समाज (Aiyan youngmens' Association) की स्थापना की गई है जिसके अवधान में इस मास सर सी वी रमन की सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती लोकसुन्दरी रामन् की अध्यक्षता में मैंने Ancient Aiyan cultme वा प्राचीन आर्यसंस्कृतिपर एक व्याख्यान दिया जिसको विद्यार्थियों ने जिनमें प्राय सब B Sc व M Sc. पास हैं तथा अन्यों ने बहुत पसन्द किया । आर्य युवक समाज के मन्त्री श्रीयुत गुलारी M Sc तथा अन्य सज्जन कहते थे कि अभी तक इतने ध्यान और शान्ति से, आदि से अन्त तक विद्यार्थियों ने सिवाय एक के कभी किसी व्याख्यान को न सुना था। लेडी-रामन् भी व्याख्यान से विशेष प्रभावित हुई। १७ से ३१ दिसम्बर तक श्री श्रद्धानन्द सप्ताह की आयोजना की गई और बगलौर शहर के अनेक भागों, दीन सेवा संघ शेषाद्रिपुर, कगेरी इत्यादि में श्री श्रद्धानन्द दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। स्वर्गीय धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी के मुख्य सन्देश दलितोद्धार को ध्यान में रखते हुए मावल्ली कोर्चपाल्यम्, शेषाद्रिपुर, विश्वेश्वरपुर, कंगेरी आदि की हरिजन बसतियों में सभाएँ करके हरिजन भाई बहिनों को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र सुनाया गया और गायत्री मन्त्रोपदेश करके उन से प्रति दिन स्नान, मास त्याग आदि की प्रतिज्ञाएँ ली गई। 'The mission and message of Swami Shaidhananda ji' इस शीर्षक का एक ट्रैक्ट समाज की तरफ से छपवाकर शिक्षित लोगों मे मुफ्त बाटा गया। २३ को कगेरी के National Middle Scool, हरिजन बस्ती और गुरुकुलाश्रम में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के सन्देश विषयक भाषण देकर २४ ता को मैंने चित्रदुर्ग (मैसूर रियासत) के लिए प्रस्थान किया। २५ ता को एक आर्य सज्जन के घर में उनकी पुत्री के जन्म दिवस के उपलक्ष में प्रार्थना उपदेशादि कराये गये। २६ दिसम्बर को Aiyan Students' Home (जिसके प्रवर्तक

श्रीयुत हनुमन्त राजू नामक दृढ़ आर्य सज्जन हैं) में 'ब्रह्मचर्य' पर विशेषतः विद्यार्थियों और अध्यापकों के लाभार्थ व्याख्यान दिया। २८ और २९ दिसम्बरको चित्रदुर्गके 1st class magistrate and Sub-judge श्रीयुत विश्वनाथन् B A B L के सभापतित्व में 'समाज सुधार' और वैदिकधर्म की सार्वभौम शिक्षाएं। इन दो विषयों पर एक थियेटर हाल में सार्वजनिक व्याख्यान हुए जिनका प्रबन्ध Chitaldurg Sports Association और The Theosophical Lodge वालों ने बड़े उत्साह से किया था और जिन्हें वहां की प्रतिष्ठित देवियों और सज्जनों ने बड़ी सख्या में उपस्थित होकर बड़ी शन्ति से सुना और लाभ उठाया। २९ ता० को श्री भीमाचार्य नामक एक पौराणिक पण्डित की व्याख्यान के अन्त में की गई शङ्काओं का भी समाधान किया गया। 'आर्य समाज' की स्थापना का भी वहां प्रयत्न किया जा रहा है और वैदिक धर्म की तरफ उधर जनता का ध्यान विशेषरूप से खींचने के लिये 'वेदमार्गानुसारिणी ग्रन्थ माला' के प्रकाशन की आयोजना कीगई। चित्रदुर्गसे २९ दिस०को लौटकर ३० को मैं चन्नपट्टण पहुँचा जहां प्रसिद्ध और उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता श्रीयुत आर्यमूर्ति जी मन्त्री आर्य समाज को वैदिक धर्म प्रचार विषयक निर्देश दिये और ३१ को चन्नपट्टण आर्य समाज की तरफ से मगलवार पेट हरिजन-कालोनी, नीलकण्ठन् हल्ली आदि चन्नपट्टण समीपस्थ ग्रामों मे कई आर्य भाइयों को साथ लेकर हरिजनों तथा अन्यों को श्री श्रद्धानन्द जी के कार्य और सन्देश को सुनाते हुए दलितोद्धार कार्य को विशेषरूप से किया गया। चित्रदुर्ग, मद्दूर आदि में कुछ ईसाई और कुछ मुसलमान परिवारों की शुद्धि का प्रयत्न भी किया गया जिसमें शीघ्र सफलता की आशा है।

—धर्मदेव वि वा.

आंध्र

आर्य समाज-मद्रास का कार्य नियम से चल रहा है। इस समय मद्रास नगर में छ समाजें हैं जिनके नाम निम्न हैं —चाइनाबाजार-समाज, ट्रिप्लिकेन-समाज, सूलै या पुलियन्तोप समाज, पौरैम्बूर बैरक्स-समाज, थाउजैण्ड लाइटस समाज मुल्लासाहिब स्ट्रीट-समाज।

दिसम्बर मास के १॥ सप्ताह में पण्डित केशानी सेलम प्रचारार्थ गये। वहां पण्डित जी के ५,६ भाषण हुए। स्थानीय वयोवृद्ध श्री विजय राघवाचारी जी ने भी उनमें भाग लिया। हरिजन सेवक सघ की ओर से पण्डित जी को मानपत्र दिया गया। सेलम में शुद्धि-कार्य के लिये विशेष सहानुभूति है तथा समाज भी शीघ्र खुल जायगी, ऐसी आशा है। मासान्त में श्रद्धानन्द-दिवस की धूम रही। जार्जटाउन में एक सभा श्री स्वामी अविनाशानन्द जी प्रधान रामकृष्ण मिशन की अध्यक्षतामें हुई। और तिलकघाट पर समुद्र किनारे एक वृहत्सभा श्री डाक्टर वरदराजलु नायडू की अध्यक्षता में हुई। हजारों नर-नारियों ने उस में भाग लिया। वक्ताओं में पण्डित के० ज्ञानी, आर० नरेमन बी० ए० बी० ऐल०, ऐम० दामोदर नायडू ऐडवोकेट, कार्पोरेशन-मद्रास, श्री सोमनाथ राडगारु

आदि के नाम उल्लेख योग्य हैं। श्रद्धानन्द-दिवस के उपलक्ष मे एक बड़ा जलूस भी नगर के मुख्य मुख्य भागों मे गुजारा गया।

इस वर्ष दिसम्बर ३६ के अन्त तक मद्रास समाज तथा पण्डित के० ज्ञानी के प्रयत्नों से लगभग ६०० ईसाई व मुस्लिम परिवारो की शुद्धिया हुई।

हिन्दी-भजन-कीर्तन का ५म संस्करण तथा तामिल "आर्योपासनाविधि" अर्थ सहित का ३य प्रकाशनार्थ प्रेस मे दिया है। —सवाददाता

केरल

दिसम्बर १६३६

इस मास मे ३५ इसाइयों को शुद्धि की गई। उनमे एक परिवार बहुत दिनों से ईसाई बने हुए हैं। शेष सब अछूत समझे जाने वाले अर्थात परयर और पुलय जाति से धर्म परिवर्तन किए लोग हैं।

"आर्य सहायक समाज" नामक एक सभा कोट्टयंम मे कायम की हैं उस के द्वारा सामाजिक सिद्धान्तों का प्रचार होने की पूर्ण आशा है।

निम्नलिखित स्थानों मे हिन्दू सम्मेलनों पर विविध विषयों पर व्याख्यान दिए। नंबलकाट, मणिमला, पूवरणी विलकमाटम, किलिरूर, पुत्तेट। इस के अतिरिक्त शुद्धि और प्रचार के सिलसिले मे आयूरा, वैकन् कोट्टयम् पोनकुन्नम माकू०ङा०वम, कोडडू०र कुमार नेलोर कुडमालूर चेनप्पाडी, सल्लूशेरो आदि स्थानों मे यात्रा की।

—नारायणदत्त

लंदन

लंदन मे आर्यधर्म प्रचार की नियमित रूप से आयोजना हो रही है। गत वर्ष हा के स्थायी रूप से रहने वाले कुछ प्रतिष्ठत हिन्दुओं ने अपने धर्म की रक्षा तथा समुन्नति के लिए एक संगठन Hindu association of Europe के नाम से बनाया है। इसकी रजिस्टरी भी कराई गई है, इसका मुख्य उद्देश्य आर्य धर्म तथा संस्कृति की रक्षा और प्रचार है। यहा पर्य्याप्त संख्या मे हिन्दू परिवार है, जो एक प्रकार से स्थायी रूप से बस गए हैं और जिन मे बहुतो ने अंग्रेज महिलाओं से विवाह कर लिए है। इनके बाल बच्चे भी है इनके अतिरिक्त भारतवर्ष के सब प्रान्तो से हजारो की तादाद मे पूतिष्ठित तथा शिक्षित कुलो के नवयुवक विद्या ग्रहण करने के लिए प्रायः यहा रहते है जो शिक्षा समाप्त करके जाते है उनके स्थान पर पूति वर्ष नए विद्यार्थी आ जाते है इस पूकार यहा विद्यार्थियो की भी अच्छी संख्या स्थायी रूप से रहती है। इन दोनो श्रेणियो से भिन्न तीसरा वर्ग यात्रियो का है जिनकी संख्या प्रति वर्ष बढ़ रही है और जो प्राय ग्रीष्मावकाश मे यहाँ आते है इन सब की आवश्यकतानुसार सेवा करने तथा धर्म जागृति के लिए ही इस संस्था का निर्माण हुआ है—

मैं गत जून मास मे लाहौर आर्य प्रादेशिक सभा के प्रतिनिधि के रूप मे यहा के विश्वधर्म सम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिए आया था। यहाँ आकर मुझे प्रचार कार्य की बहुत आवश्य-

कता अनुभव हुई। अंग्रेजों के अन्दर भी आर्य धर्म का अध्यात्मवाद जानने की लग्न है। मैंने यहाँ ठहर कर प्रचार कार्य करना शुरू कर दिया है। अगस्त मास में मैंने जर्मनी का भ्रमण किया और सितम्बर मे पुन लन्दन वापस आकर प्रचार सम्बन्धी प्रबन्ध की आयोजना की। इस एसोसियेशन के सदस्यों ने मेरी सहकारिता का स्वागत किया और कोई नई संस्था बनाने की अपेक्षा युक्ति युक्त प्रतीत हुआ कि इन सब के साथ मिल कर काम किया जाय क्योंकि कार्य का आदर्श एक ही है। संकीर्ण भावों की यहा गुञ्जाइश नहीं। सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से साप्ताहिक सत्संगों का आरम्भ हुआ—प्रत्येक रविवार को आर्य भवन मे सायंकाल सत्संग होता है। यह प्रचारक्रम नियम पूर्वक ४ चार मास से चल रहा है। इन अधिवेशनोंमे भारतीय तथा अंग्रेज सभी शामिल होते है। व्याख्यानों का प्रोग्राम प्रति मास छप कर वितीर्ण हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूसरे गिरजा घरो मे भी व्याख्यान होने लगे है। यहाँ लोगों की गीता पढ़ने मे विशेष रुचि है अत कई अंग्रेज महिलाएँ नियम पूर्वक उसका अध्ययन कर रही है। हिन्दू परिवारो मे भी धर्म सम्बन्धी वार्तालाप होता है।

ऋषिराम आर्यसेवक, आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर
आर्य-भवन
30, Belsige Park, London N W 3

फिजी

फिजी मुस्लिम लीग ने भारतवर्ष से अपने स्कूल के लिये एक मास्टर को मगाया था जो कि सयोग से अहमदिया जमाअत का आगया। उस ने कुछ ताल यूही लगा कर लीग से एक प्रचारक मगवाया। जिसको वह मास्टर बखूबी जानता था कि वह अहमदिया फिर्के से है। जब प्रचारक मुमम्मो मिरजा मुजफ्फर बेग फिजी मे पहुँचे तो कुछ ही दिनो बाद मुस्लिम लीग को मालूम होगया कि अहमदियों ने हम को धोखा देकर मिर्जाई प्रचारक मगवा लिया है। लीग ने इस खबर के मिलने ही सब अहमदियों का तर्क मवालात (बहिष्कार) कर दिया और मस्जिदों में उनका प्रवेश भी बन्द करदिया। जहा पर अहमदी अपनी सभा करते वहीं पर सुन्नत जमाअत वाले पहुँच जाते, एक जगह पर तो यहा तक हुआ कि मिरजा मुजफ्फर बेग और अहमदी जमाअत का प्रधान बावर्ची खाने में जाकर दुबके (छिपे) और जान बचाई। दूसरी बारी नावी मे खूब लड़ाई कराई जब कुछ बन न पडा तो मिर्जा मुजफ्फर बेग ने घरके नीचे घुसकर जान बचाई। अब मिर्जा इयत से तोबा करके अहमदिया जमाअत को छोड़कर फिर सुन्नत जमाअत मे जाने लगे तो मिर्जा मुजफ्फर बेग ने अपनी चाल बदली और आर्य्यसमाज से छेड छाड शुरू करदी। जब आर्यसमाज ने कुछ दिनो के बाद इसकी बाकायदा खबर लेनी शुरु की, तो मिर्जा जी चौकड़ी भूले। एक दफे मिर्जा मुजफ्फर बेग और अहमदिया जमाअत ने आर्य्यसमाज को नोटिस दिया कि ३०० तीन सौ पौन्ड लेकर वकील के यहा जाओ और शर्तों के साथ शास्त्रार्थ करो। आर्य्यसमाज के प्रधान तथा प्रचार मन्त्री छ सौ

पौंड लेकर वकील के पहुँचे और छ सौ पौंड पेश करने को कहा तो लगे मुजफ्फर बेग और उनके साथी बगलें झांकने और अपना मुँह लेकर रह गये और इसके बाद फिर कभी मुह लेकर सामने नहीं आये सिर्फ नोटिसों में गाली गलौज करने लगे और अपनी योग्यता का इसमें भी परिचय दिया। जब हद से बाहर चले ता पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल फिजी ने तलब करके डाट डपट के बाद विदा किया। मुजफ्फर बेग ने एक बार महाशय लीला को जो हमेशा से पब्लिक की सेवा करता आरहा था अपने अखबार 'पैगाम इस्लाम' में 'लीला ठग' लिख मारा उसने बड़ी अदालत में मानहानि का मुकद्दमा चलाया तो मिरजा मुजफ्फर बेग अहमदिया प्रचारक को लरजा आगया और कोर्ट में जाने के बजाय इधर उधर बगलें झांकने लगे। आखिर में नतीजा यह हुआ कि अदालत से एक तरफा डिगरी बड़े कोर्ट से महाशय लीला को मयखर्चे के लगभग ६००) के मिलगई। अब लगे मिर्जाजी और उनके साथी लीला भगत की खुशामद करने। बहुत खुशामद के बाद लीला भगत से फैसला करपाये। इन सब बातों का यह असर हुआ कि मिरजा मुजफ्फर बेग अहमदिया जमाअत के सेक्रेटरी और अखबार पैगाम इसलाम के एडीटर मिस्टर उमरुदीन मय अपने बालबच्चों के वैदिक धर्म की शरण में आये और आर्य्यसमाज द्वारा अपना शुद्धि संस्कार कराया।

मि० मुजफ्फर बेग के फिजी छोड़ने से पहलेही अहमदिया जमाअत सासा लीबोके प्रधान भी मय परिवारके शुद्ध होगये। जब सारी तरफ से लेने के देने पड़े ता यार दोस्तों ने यही मुनासिब समझा कि मिरजा मुजफ्फर बेग महाशयको लीलाका दण्ड भरने के बाद से जो एक गाव में सड़ रहे थे सीधे जहाज से भारत रवाना कर दिया जाय।

रवानगी की रस्म

मिर्जा साहब के अहमदी भाई मास्टर अबदुल्ला और चन्द दोस्तों ने एक छोटी सी सभाकी, जिसके प्रधान मुहम्मद जवाहर खान बनाये गये। मास्टर जी ने कुछ बनावटी पत्र पढ़े, जिसमें प्रचारक साहबसे भारत आजाने की प्रार्थना कीगई थी इस पर प्रधान सभाने कहा कि अब मिर्जाजी का रखना फिजूल है क्योंकि जब ये साढ़े तीन साल में कुछ काम नहीं कर पाये तो अब रह कर क्या करेंगे? इसके बाद यार दोस्तों ने कुछ ताने दिये जिनको कुछ मन चलों ने फिज में फूट फैलाने का तमाशा करार दिया। मिर्जा मुजफ्फर बेग ने सरकार से फिर फिजी में दाखिल होने की इजाजत के लिये दरखास्त दी लेकिन सुनने में आया है कि फिजी की सरकार उन से इस कदर खुश थी कि इजाजत दाखला फिजी मिर्जा मुजफ्फर बेग को नहीं मिली

मिर्जा जी आये थे रोजे बख्शवाने मगर नमाज गले पड़े की कहावत सिद्ध हुई।

—(प्रकाश लाहौर)

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा-कार्य

**

—आर्य्य समाज सिरसा में ३१-१२-३६ को श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती के अवसर पर एक मुस्लिम परिवार की शुद्धि की गई जिसमें ४ व्यक्ति थे। शुद्धशुदा का नाम अमरसिंह रक्खा गया। यह शुद्धि प० श्रीरामजी उपदेशक के परिश्रम तथा चौ० चन्दाराम वल्द ज्ञानाराम ग्राम कुलेरी की सहायता से हुई। 　　गणपतराय मन्त्री

आर्य्यसमाज हलद्वानीमें निम्न शुद्धिया हुईं—

(१) इलाहीबख्श बेटा गुलाम मुहम्मद शेख नौ मुस्लिम उमर ३५ साल। नाम देवदास रखा गया। साकिन रानीखेत तारीख ८-९-३६ ई०।

(२) गोपालसिंह बेटा शौराजसिंह चौहान ३२ साल साकिन जादनपूर मलारपूर थाना बिलारी जिला मुरादाबाद चन्द रोजा ता० १९-९-३६ ई०।

(३) तारादत्त बेटा रामदत्त पन्त उमर १६ साल मौजा भट्टीगाव वहीनला बडाऊ जिला अलमोड़ा ता० १९-८-३६ ई०।

(४) चेतराम बेटा बुधा मोची ५० वर्ष साकिन हलद्वानी चन्द रोजा ता० २९-७-३६ ई०।

द कामताप्रसाद उपप्रधान आ० स० हलद्वानी

देवरिया (बस्ती) के ला० रामलाल जी कायस्थ ने एक मुस्लिम देवी के प्रेम में फंसकर उसे अपने घर में बिठा लिया अत. गाव के हिन्दुओं ने उन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया और उन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था बरसों बाद श्री चन्द्रपाल सिंह जी के परिश्रम से वे १२-१-३७ को सपत्नीक शुद्ध हो गए। स्त्री का नाम पहले मुहम्मद बानू था। शुद्धि के बाद राम राजी रक्खा गया। एक छोटा बच्चा भी औरत के है। उसका नामकरण भी उसी दिन हो गया। लड़के का नाम जोती प्रसाद रक्खा गया।

काशीराम आर्य्य

—आर्य्य समाज जौनपुर में एक ईसाई युवक बैंजमिन पाल अपनी स्त्री इलैजा सहित शुद्ध हुए। नाम ब्रजमोहन और शान्तिदेवी रक्खा गया। समाज मन्दिर में जनता भरी हुई थी। उत्साह खूब था।

—गत १३ जनवरी को हवड़ा आर्य्य समाज में एक २० वर्ष के हिन्दू युवक श्री रामदेव सुनार की शुद्धि की गई। रामदेव ५ वर्ष से मुसलमान हो गए थे और उनका नाम पहले दीनमुहम्मद था और अब रामदेव नाम रक्खा गया।

—सीताराम अहीर जिसकी उम्र लगभग ५० वर्ष है। ५-६ वर्ष से मुसलमान होगया था। आर्य्य व सनातनी दोनों भाइयों की राय से दिलदार नगर आर्य्य समाज मन्दिर में तारीख १७-१-३७ को उसकी शुद्धि की गई और उसका नाम दिल मुहम्मद के स्थान पर सीताराम रख दिया गया।

—इलाके बारह मगा में जोनपुर पनवा व ढलवाड़ा में कुछ सासी घर थे जिन पर मुसलमान अरसे से दृष्टि जमाए बैठे थे। समाज के प्रयत्न के फल स्वरूप लग भग ४० सासियों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया।

—यह समाचार बड़े हर्षके साथ सुना जायगा कि नसी ग्राम [अलवर राज्य] में चौहान राजपूत जो इस्लामी जमाने में जबरन मुसलमान किए गये थे और जो मलखाना कहाते हैं अपने स्वरूप को पहचान कर पुनः शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गये हैं। इनकी तादाद छः सौ से ऊपर है। इन्होंने बड़े प्रेम से लगातार ३ दिन पर्यन्त यजुर्वेद से होने वाले यज्ञ में कठियर कस्बे में भाग लिया और वेदों की सवारी का जलूस निकाला गया।—गोपालचन्द्र दीक्षित(आर्य मित्र)

श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती का दसवर्षी समारोह

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट देहली ने इस वर्ष देश व्यापी श्रद्धानन्द दस वर्षी मनाने का आयोजन किया था। देशके विभिन्न नगरों तथा देहातो से इस सम्बन्ध मे जो समाचार प्राप्त हुए हैं उससे यह स्पष्ट विदित होता है कि यह आयोजन सफल रहा है। देहली में ३१ दिसम्बर के दिन एक शानदार बृहत् जलूस श्रद्धानन्द बलिदान भवन से निकला जो शहर के मुख्य मुख्य बाजारों में से होता हुआ कम्पनी बाग में पहुंचा जहा देहली के प्रसिद्ध रईस श्री मान ला० श्रीराम जी के सभापतित्व में विराट सभा हुई। जिसमें प्रसिद्ध व्याख्याताओं ने अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा श्रद्धेय अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति श्रद्धाञ्जलिया भेंट कीं। देश के प्रसिद्ध नेताओं से इस अवसर पर स्वामी जी के सम्बन्ध में सन्देश मंगवाये गए थे जो पुस्तकाकार में श्रद्धानन्द दर्शन के नामसे प्रकाशित कर दिये गये हैं।

भारतवर्ष में दस वर्षी का विराट आयोजन श्री लाला नारायणदत्त जी प्रधान मन्त्री तथा श्री पं० धर्मवीर जी वेदालंकार सयोजक मन्त्री ने किया था जिस में उन्हें सफलता मिली।

सार्वदेशिक सभा की जरूरी सूचनायें

सार्वदेशिक सभा ने सस्कृत सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य घटा कर ।) कर दिया है। आर्य्य जनता को इस रियायत से लाभ उठाना चाहिये, मुख्यतया आर्य्य समाजों को अपनी२ लाइब्रेरी में इसकी १ प्रति अवश्य रखनी चाहिये तथा सस्कृत के विद्वानों मे मुफ्त वितरण करना चाहिये। इसके अतिरिक्त शताब्दी महोत्सव की रिपोर्ट को मुफ्त वितीर्ण करनेका भी निश्चय किया है। बाहर से मँगाने वालों को डाक व्ययादि स्वय देना होगा इस रियायत से भी आर्य्यसमाजों को लाभ उठाना चाहिये। —मन्त्री

पर्व्व-पद्धति

श्री मद्दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा की कतिपय कीर्तियों को अमर रखने के साधनों में से उसका एक कृत्य यह था कि उसने आर्य्य पर्वों की सख्या नियत करके उनके मनाने की पद्धतियों को आर्य्य जगत के सम्मुख रक्खा। यह ग्रन्थ समाप्त हो चुका है। दुबारा छपवाने से पहिले उसके सुयोग्य लेखक आर्य्य समाज के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान पं० भवानीप्रसाद से सन्शोधन कराके उसका छपवाना निश्चय किया गया है। इस ग्रन्थ के छपवाने में लगभग ६००) व्यय होंगे। इस ग्रन्थ के पहिले सस्करण के बिक्री से प्राप्त धन, अन्य उपयोगी ग्रन्थों के छपवाने में सभा द्वारा व्यय हो चुका है। इसलिये कोई सम्पन्न इस धन के देने के लिये कृपा करें। जो सज्जन धन देंगे उनका नाम ग्रन्थ के मुख्य पृष्ठ पर कृतज्ञता पूर्वक छपवा दिया जावेगा। यह भी इच्छा है कि धन प्राप्त हो जाने पर ग्रन्थ का मूल्य इतना कम रक्खा जावे जिससे वह प्रत्येक आर्य्य के हाथ में सुगमता से पहुंच सके। नारायण स्वामी प्रधान

साहित्य-समीक्षा

वैदिक विवाह संस्कार पद्धति

लेखक—श्री शिवदयालु जी   मूल्य ।)
प्रकाशक—आर्य्यसमाज पुस्तक भण्डार सदर मेरठ

पुस्तक उपयोगी है। लेखक महाशय ने प्रत्येक प्रमाण को साफ करने का सफल प्रयत्न किया है और उसके सहायक अन्य प्रमाण वा जहां वह हैं उन पुस्तकों का नाम लिख दिया है जिससे व्याख्या कर्त्ताओं को सहायता मिलेगी और कई बातें यथा सकल्पादि लिखी हैं जो उचित ही है। इस पुस्तक में विवाह में आने वाले सब पाठ लिख दिये गये हैं जिससे पुरोहित को सुविधा होगी और संस्कार विधि से कुछ कुछ किसी किसी अंश में भेद है। पता नहीं सिद्धान्ती उसे किस दृष्टि से देखेंगे। मेरी सम्मति में लेखक ने उत्तम प्रयत्न किया है और इसका प्रचार अवश्य होना चाहिये।

स्वतन्त्रानन्द

गर्भाधान संस्कार

प्रकाशक—आर्य्यसमाज पुस्तक भण्डार सदर मेरठ,
लेखक व सम्पादक-श्री शिवदयालु जी मूल्य –)॥

यह पुस्तक गर्भाधान संस्कार जो संस्कारविधि में छपा है उसकी समालोचना है और अच्छा विचार किया है जिनकी इस विषय में रुचि है उनको यह अवश्य देखनी चाहिये।

यदि लेखक गर्भाधान में पढ़े जाने वाले सब पाठ को लिख देते तो इससे संस्कार करने वालों को सुविधा हो जाती। अब इसके पास होने पर भी संस्कार विधि से ही संस्कार कराना होगा।

छपने में अशुद्धियां रह गई हैं जो न होनी चाहिए थी यथा पृ० ४ "यक्ष" यज्ञ के स्थानपर छप गया है।

स्वतन्त्रानन्द

1 Catechism on Vedic Dharma and Arya Samaj—*Price 8 anas*
2 The Glory of the Vedas—*Price 0-1-6*
3 Glimpses of Dayananda—*Price 1-4-0*

Published by SHARDA MANDIR Ltd, Nai Sarak, Delhi

The Arya Samaj can not boast of high class literature in English language whereby to attract men of education and culture to its fold. Sharada Mandir Ltd, is keen on removing this need and is bringing out books that will do credit to any good society

Catechism serves the purpose of the Hand book of the Arya Samaj and it gives briefly and concisely, informations regarding the tenants and teachings of the Arya Samaj and the Religion it stands for

It is written by Pundit Dharma Deva Vidya—wachaspati a worthy preacher of the Vedic Dharma, who is devoted to the propaganda work in the South of India

Glimpses of Dayananda is written by Pundit Chamupati, a learned scholar and a preacher of great eminence in the Arya Samaj circles in the Punjab His book is a worthy production of an ardent follower of the great Man, who revolutionized India and delivered his message to the masses of this hoary land

He has portrayed a beautiful personality in beautiful language that strikes the chords of heart and stirs emotions of love and reverence towards it We wish Arya Samajists should present large number of copies of this book to Non-Arya Samajists, especially to Mohamadens and Christians to attract men of alien faiths to this great benefactor of Humanity

—

महिला-जगत् (सम्पादिका—श्रीमती विद्यावती 'विशारदा')

महारानी दुर्गावती

मध्य प्रदेश का प्राचीन नाम गोंडवाना है, क्योंकि उस समय इस प्रदेश मे गोंडों की बस्ती बहुतायत से थी, और वे ही यहां के अधिपति थे। जबलपुर से तीन मील की दूरी पर गढ़ानगर मे उन लोगो की राजधानी थी। अब यह नगर गोंड राज्य का वह गढ़ा नहीं रहा, आज यह एक छोटा सा गाव रह गया है, परन्तु इस उजाड़ अवस्था मे भी यह अपने पूर्व वैभव की साक्षी दे रहा है। मुगलो के समय मे गोंड लोग अपनी राजधानी गढ़ा से हटा कर मण्डला में ले गए। तब यह राज्य गढ़ा-मण्डला कहलाने लगा। आज मण्डला भी अपने उस वैभव को रो रहा है। गोंड राजाओ के समय के कई किले तथा महल अब भी इस प्रान्त मे पाए जाते हैं। मदनमहल उस समय की एक प्रशस्त इमारत है। उसे लगभग आठ सौ वर्ष पहले मदनशाह नामक गोंड राजा ने बनवाया था। यह जबलपुर से पाच मील दूर पहाड़ की एक सुदृढ चट्टान पर स्थित है, और आज भी ज्यों का त्यो मानो उन्नत मस्तक किए खड़ा है। पन्द्रहवे शतक मे नरसिंहपुर ज़िले मे महाराज संग्रामसिंह ने चौरागढ़ का क़िला बनवाया था। इस क़िले में गोंडों ने कई बार मरहठों, मुसलमानो तथा बुन्देलों से अपनी स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया था।

महारानी दुर्गावती इसी संग्रामशाह के पुत्र दलपतिशाह की पत्नी थीं। उन्होंने महोबे के क्षत्रिय राजा चन्देल के यहां जन्म लिया था। दलपतिशाह गोंड थे और चन्देल राजपूत। इसलिए चन्देल उन्हें अपनी बेटी विवाहने के लिए सहमत न थे, पर जब दलपतसिंह ने उन्हें बहुत दबाया, तब उन्होंने दलपति से भयभीत हो, उनसे अपनी रक्षा का वचन ले, उन्हे बेटी विवाह दी। दलपतिशाह अपनी राजधानी मण्डला से उठा कर दमोह ज़िले के सिङ्गौरगढ मे ले आये और वहीं के दुर्ग मे महारानी सहित आनन्द से रहने लगे, परन्तु थोडे ही दिन पश्चात् रानी का सौभाग्य सूर्य अस्त हो गया। विवाह के पाच वर्ष पश्चात् ही महाराज दलपतशाह महारानी की गोद मे चार वर्ष के वीरनारायन नामक बालक को छोड परलोकवासी हो गए। महारानी पुत्र का मुख देख तथा अपनी प्रजा का भावी सकट विचार पति के साथ सती न हुईं, और यह उचित भी न था। वे पुत्र के नाम से गद्दी पर बैठ राज शासन करने लगीं।

दुर्गावती बड़ी पुण्यवती और वीराङ्गना थीं। वे सदा देश की स्थिति तथा राजकार्य्यो पर सूक्ष्मता से ध्यान दिया करती थीं। सदैव उन्हे इस बात का ख्याल रहता था कि किस बात में प्रजा का हित होगा। वे सदा अपने राज-कर्मचारियो को उनके कर्त्तव्य के अनुकूल उपदेश दिया करती थी। उनके राज्य में न कभी कोई आपदा ही आती और न कभी दुर्भिक्ष ही पड़ता था। प्रजा सुख चैन से अपने दिन बिताती थी। महारानी ने पन्द्रह वर्ष तक निर्विघ्नता पूर्वक राज्य किया। इतने समय में उनके राज्य में धन धान्य की इतनी उन्नति हुई थी कि प्रजा अपना लगान मुहरों में चुकाती थी? जान पड़ता है कि महारानी ने अपनी प्रजा को शायद स्वराज्य दे रक्खा था। बिना इसके इतनी उन्नति होना असम्भव जान पड़ता है। जो कुछ भी हो, प्रजा महारानी पर असीम भक्ति रखती थी। महारानी ने प्रजा की भलाई के लिये अनेक अच्छे अच्छे कार्य किये थे। जबलपुर का महारानी ताल दुर्गावती ने

ही बनवाया था। यह अभागा सरोवर आज भी अपनी टूटी-फूटी दशा में महारानीको याद दिलाया करता है।

यह ज़माना शाहन्शाह अकबर का था। वे और उनके सरदार भारत में मुगल-साम्राज्य का पाया पुख्ता कर रहे थे। आए दिन एक न एक राज्य पर इनके हमले होते ही रहते थे। गङ्गा के किनारे कड़ा मानिकपुर नामका एक मुगल-सूबा था। उसके सूबेदार का नाम था आसफखां। उसने गढ़ामण्डला की सम्पत्ति का समाचार सुन कर कई बार मध्य प्रदेश पर हमले किए। प्रजा पर खूब अत्याचार किए पर महारानी के सामने उसे हर बार मुंह की खाना पड़ी। तब उसने अकबर को भड़काया। उसकी बातों से अकबर बहुत खुश हुए। उन्होंने आसफ़खां को मध्य प्रदेश पर प्रचण्ड धावा करने की आज्ञा दी। शाही सहारा पा आसफ़खां फूल उठा। सन् १५६४ ई० मे उसने कोई ५०,०००"सेना लेकर गढ़ामण्डला की ओर कूच किया। गढ़ामण्डला क प्रजा इस विपद् समाचार से घबरा उठी। जिसे जहां जगह मिली भागन की कोशिश करने लगा। प्रजा को दुख देख महारानी कर्त्तव्य-पथ पर आरूढ़ हुईं। वे ज़रा भी निरुत्साहित न हुईं बल्कि द्विगुणित उत्साहसे युद्धका तैयारी करने लगी

महारानी कवच धारण कर तथा धनुष बाण और तलवार ले, हाथी पर सवार हो १५०० हाथी और ८००० सेना के साथ सिङ्गोरगढ के क़िले से निकला और मुगल सेना के सामने जा डटीं। भयङ्कर युद्ध आरम्भ हो गया, मुगल लोग समझते थे कि हमारा इस भारी सेना के सामने एक मामूली औरत जिसके पास थोड़ सी फ़ौज है, कब तक ठहरेगी—आख़िर उसे हटना ही पड़ेगा। अपनी महारानी की वीरता देख गोंड लोग अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये बड़े ही उत्साह से लड़ते थे। दुर्गावती भयकर रूप धारण कर युद्ध करती तथा सेना को आज्ञा देती थी। उनकी यह प्रलयङ्करी मूर्ति तथा गोंडो का अदम्य उत्साह और अद्भुत रणकौशल देख मुगल वाहिनी घबरा उठी। उस समय गोंड वीर जान पर खेल रहे थे। मुगलो के ६,००० जवान खेत रहे और उनकी सेना म भगदड़ पड़ गई। गोंडो ने उनका पीछा किया। विजयमाला महारानी के गले मे पड़ा।

सन्ध्या हाने ही महारानी ने अपनी सेना को विश्राम करने की आज्ञा दी। उनका विचार था कि रातोंरात मुगल सेना पर आक्रमण किया जाय, इसलिए आधी रात गए वे कुछ सैनिक लेकर आगे बढ़ीं। पर आलस्यवश शेष सेना ने उनका साथ न दिया। गोंड समझ रहे थे कि मुगल लोग दो बार मुँह की खा चुके हैं। वे अब क्या हमला करेंगे। तब हम ऐसी सुख की नींद छोड़ रात मे क्यो यह कष्ट करें? लाचार हो महारानी को सब की बात माननी पड़ी, व लौट पड़ी। आह! गोंडो का यह आलस्य उनके गले पड़ गया। उनका बर्बादी तो हुई ही मध्यदेश का स्वतन्त्रता भी नष्ट हो गई।

आसफ़खाँ महारानी से इस प्रकार हार खा लज्जा और क्षोभ से मन ही मन जल रहा था। बदला लेने की फ़िक्र उसे चूर किए डालती थी। अपने गुप्तचर से गोंड सेना के विश्राम की खबर पा आसफखां मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ दगाबाज़ ने सूर्योदय से पहले उसने सोती हुई गोंड सेना पर धावा बोल दिया। एकाएक इस प्रकार विपत्ति आई देख गोंड लोग घबरा उठे महारानी को भी कोई उपाय न सूझ पड़ा। यह देख अट्ठारह वर्ष के वीरनारायण ने स्वयं ही सेनापति बन मुगलो से युद्ध आरम्भ कर दिया। क्षत्रिय बालक का अतुलित पराक्रम देख मुगलो के होश

गायब हो गए। वीरनारायण ने प्रकृत वीर की तरह युद्ध कर दो बार मुग़लों का पाँव हटा दिया, तब तीसरी बार मुग़लों ने भीम वेग से वीरनारायण पर आक्रमण किया। वीरनारायण ने कोशिश तो बहुत की, पर वह इस वार को संभाल न सका। आहत हो धरती पर गिर पड़ा। प्रिय पुत्र को इस प्रकार गिरता देख महारानी तनिक भी अधीर न हुईं। शीघ्र ही उचित प्रबन्ध कर उन्होंने वीरनारायण को चौरागढ़ क़िले में भेज दिया।

दुर्गावती ने समुद्र के समान उमड़ती हुई मुग़ल सेना पर सिंहनी के समान गर्जना कर भीषण आक्रमण किया। उन्होंने बहुत समय तक साहस पूर्वक युद्ध कर सैकड़ों को सदैव के लिए भूतलशायी कर दिया, पर अन्त में उनकी सेना मुग़लों की तोपों के सामने अधिक काल तक न ठहर सकी। लाचार हो, आपदा को आपदा न समझने वाली महारानी दुखित चित से सब सेना एकत्र कर गढ़ की ओर लौटीं।

परन्तु युद्ध के योग्य स्थान न पा वे मण्डला की ओर बढ़ीं। गढ़ा से पूर्व बारह मील की दूरी पर एक तङ्ग घाटी में ठहर गईं और शत्रु के आने की प्रतीक्षा करने लगीं। थोड़ी ही देर में उनकी सेना पर मुग़लों की तोपें अग्नि की वर्षा करने लगीं। एकाएक एक तीक्ष्ण बाण आकर महारानी की आँख में बिंध गया। उन्होंने तुरन्त ही निकाल कर फेंक दिया; पर उसकी अनी टूट कर आँख में ही रह गई। इस घोर कष्ट की ज़रा भी परवाह न कर वे युद्ध करती रहीं। देखते ही देखते एक तीर उनके कण्ठ में आ बिधा। अनन्त कष्ट के कारण वे अधीर तो अवश्य हो गईं, पर उन्होंने रण से पीठ दिखाना अनुचित समझा। वे जानती थीं कि मेरे हटते ही सेना निराश हो जायगी अतएव आप कष्ट भूल, सैनिकोंको उत्तेजना देने लगीं

महारानी की दशा देख उनके महावत ने उन्हें बहुत समझाया कि आप मण्डला को लौट चलिए, पर उन्हो ने कहा—मैं अपने ज़रा से सुख के लिये अपने प्राण बचा कर युद्ध से भागना नहीं चाहती। यह क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध है। क्या तुम क्षत्रिय नहीं? ख़बरदार! क्षत्रिय कन्या समर में सम्मुख हो प्रसन्नता से प्राण दे देती है! भागना कैसा? क्या कोई भी मनुष्य मनुष्यता रहते अपनी मातृभूमि को सङ्कट में छोड़ सकता है? मैं आज तुम लोगों की यह रक्त-रञ्जित तलवार देख अपना कष्ट भूल गई हूँ! इतने में ही मुग़ल सेना आ गई। इस पवित्र देह को मुग़ल न छूने पावें, ऐसा विचार कर महारानी ने शीघ्र ही महावत के हाथ से कटार छीन, अपनी छाती में भोंक ली! क्षत स्थान से ख़ून की धार बहने लगी। देखते ही देखते वीर बाला का प्राण पक्षी तन-पिञ्जर को छोड़ उड़ गया। भारत-माता का एक अनमोल मोती मिट्टी में मिल गया। जो गोंड-वीर बचे, वे भी पीछे न हटे। उन्होंने मरते-मरते जी भर युद्ध किया, पर स्वतन्त्रता छोड़ परतन्त्रता से प्रेम न किया।

इसके बाद नवाब ने चौरागढ़ पर आक्रमण किया। वहां वीर बालक वीरनारायण पहले से ही युद्ध के लिए तैयार बैठा था। उसने दो महिने तक जम कर युद्ध किया। स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करते करते वीर बालक ने वीर गति प्राप्त की। मध्यप्रदेश सदैव के लिए पराधीनता के गड्ढे में गिर गया।

जिस स्थान पर महारानी का देहान्त हुआ उसी स्थान पर उनकी अन्तिम क्रिया की गई। युद्धके पश्चात् उनकी स्मृति में वहां एक चबूतरा अब भी वर्तमान है, जिसमें उस युद्ध का सम्पूर्ण विवरण लिखा हुआ है।

शुद्ध हवन सामग्री

धोखे से बचने के लिये आर्यों को बिना वी०पी० भेजते हैं

पहले =) पोस्ट खर्च भेज कर ऽ। नमूना मुफ्त मगा ले ।

अगर नमूना जैसी सामग्री हो तो मूल्य भेजदे

अन्यथा

कूड मे फेंक दे ।

भाव ॥) सेर, ८०) भर का सेर ।

थोक ग्राहक को २५) रुपये प्रति सैकड़ा कमीशन ।

मार्ग-व्यय ग्राहक के जिम्मे ।

पता—

प० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस देहली
मे प्रकाशित ।

मई १६३७ Reg No L 2121

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सार्वदेशिक



वार्षिक मू० २) सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए० विदेश से ५ शिलिंग

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक एक प्रति का ≈)

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पंजाब की राजधानी लाहौर में रावी रोड़ पर केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उपप्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्यशास्त्री मुल्तानी, तथा डा० गणेशी-लाल जी M B B. S हैं। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं करते हैं, प्रत्युत सब प्रान्तों में रहने वाले हिन्दू आर्य्य भाई भी करते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है, यहा तक कि अब सरकार भी जो चोरी किये हुए लड़के लड़किया उनको मिलते हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको इस अनाथालय में रखती है। इस तरह से अनाथालय में बच्चों की संख्या बढ़ गई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु सख्या बढ़ जाने से कन्याओं के लिये स्थान काफी नहीं है। इसलिए प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, कि नवीन कमरे बनाए जायें, जिससे कन्याओं के स्थान का कष्ट मिट जाय। इनके बनाने के लिए धन की अपील की जावे। इसलिए मैं दानी सज्जनों की सेवा में विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वे बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे, अन्य मत वालों के जाल में फँसकर हमेशा के लिए धर्म से पतित हो जायेंगे और उसका पाप आर्य जाति को लगेगा। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे। इस समय इस कार्य के लिये पाच सहस्र धन की शीघ्र आवश्यकता है जो दानी सज्जनों को पूरी करनी चाहिए।

इस अनाथालय के आधीन म्यूनिसिपल कमेटी से मंजूर एक मिडल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लड़के इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लड़के सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ११२ लड़के और ७० लड़किया हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ़ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारप्रिय महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी आदि खाद्य पदार्थ और पहनने के लिये वस्त्र देकर कृतार्थ करें। यह संस्था पूर्व भी आप जैसे दानियों के दान से चल रही है। अब भी आप से आशा की जाती है कि आप अवश्य सहायता देकर अनाथों का आशीर्वाद लेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

❀ ओ३म् ❀

सार्वदेशिक

❀ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ❀

वर्ष ११ | वैशाख १९९४ | अङ्क ३
मई १९३७ ई० | दयानन्दाब्द ११२

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥

—यजुर्वेद ।

भावार्थ—बुद्धिमान, महान ज्ञानी तथा योगी पुरुष उस अद्वितीय जगत्कर्ता ज्ञानी ईश्वर की श्रेष्ठ परता स्तुति मन और बुद्धि द्वारा अच्छे प्रकार किया करें ।

सम्पादकीय—

एक कामना

आर्यों की अपनी एक विशेष सभ्यता है जो सृष्टि के आदि से लेकर अबतक स्थिर है। आर्यों ने इस सभ्यता को वेदों के आधार पर विकसित किया था और यही वजह इस सभ्यताकी स्थिरता की है। ससारके तत्वज्ञान का वास्तविक ज्ञान और संसार के वास्तविक उपयोगकी विधियों का ठीक २ पता लगाना मनुष्य की बुद्धि से परे की बात है। इनका स्वा ज्ञाता परमेश्वर है। परमेश्वर सृष्टि की आदि मे ये भेद और विधियां मनुष्य को बतलाता है। इन रहस्यों और विधियों का समह ही वेद है। मनुष्य की अल्पज्ञता ही है जिसने आर्यों को अपनी सभ्यता वेदों के आधार पर विकसित करने के लिए प्रेरित किया था।

. इस सभ्यता के अतिरिक्त अनेक सभ्यताएँ प्रादुर्भूत हुईं और देखते ही देखते विस्मृति की गोद मे विलीन हो गईं। उनके विनाश का कारण यह था कि मनुष्यों ने उन्हें सृष्टि की वास्तविक रचना और उसके उचित उपयोग की उपेक्षापूर्वक इत्तिफ़ाकिया और आवश्यकता वश अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये विकसित किया था। अस्थिरता के लक्षण पश्चिमी सभ्यतामे भी आज देख पड़रहे हैं। कभी वह हमारे सामने भौतिक वाद के आवरण में आती है, कभी साम्यवाद के, कभी नेचरवाद के और न जाने और क्या २ रूप लेकर आए। यह भी सृष्टि की वास्तविक रचना और उसके उचित उपयोग की भयंकर अवहेलना करती देख पड़ रही है। यदि यह भी स्थिर न रहे और अपनी वास्तविक अवस्था जंगलीवाद (असभ्यवाद) में समा जाय जिसके लक्षण नग्नवाद और नेचरवाद मे देख पड़ रहे हैं तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

आर्यों ने अपनी सभ्यता की इमारत मोक्ष प्राप्ति की सुदृढ़ नीव पर स्थित की है। चूकि मोक्ष भी इसी दुनिया के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है इस लिए उन्होंने संसार का तत्वज्ञान का प्राप्त करना और ससार का उचित उपयोग करना मुमुक्षु के लिए जरूरी ठहराया है। या यों कहिए उन्होने अपनी सभ्यता उपर्युक्त दोनों बातों को ध्यान मे रखकर विकसित की है। संसार के तत्वज्ञान की प्राप्ति, ससार के उचित उपयोग तथा मोक्ष की सिद्धि के लिए उन्होने एक अनुपम विधि स्थिर की है। वह विधि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष४ भागों मे विभाजित है।

इस विधि के स्पष्टीकरण के लिए हम किंचित् विस्तार में जाते हैं।

शरीर का अर्थ से, मन का काम से, मोक्ष का आत्मा से और धर्म का बुद्धि से सम्बन्ध है।

शरीर और अर्थ मन और काम आत्मा और मोक्ष इन तीनों का पारस्परिक सम्बन्ध तो प्रत्यक्ष है ही। परन्तु बुद्धि और धर्म के सम्बन्ध की बात को सुनकर शायद पाठक चौंकेंगे, क्योंकि संसारके धर्मों को बुद्धिका साथ देते हुए नहीं देखा गया है, परन्तु हम जिस वैदिक धर्म का जिक्र कर रहे हैं वह वेद पर आश्रित है, और वेद बुद्धिपूर्वक

है इसलिये वैदिक धर्म बुद्धिपूर्वक है। ज्ञान में जितना ही अधिक धर्मांश होगा और धर्म मे जितना ही अधिक ज्ञानांश होगा उतनी ही बुद्धि मे स्थिरता होगी। इसी बात को योरुप के प्रसिद्ध विद्वान हक्सले ने निम्न शब्दों में रक्खा है—

'सच्चा ज्ञान और सच्चा धर्म दोनों सगे २ भाई है। इनमे से यदि एकको दूसरे से पृथक करदिया जाय तो दोनों की मृत्यु हो जायगी इत्यादि।" इसलिये धर्म का ज्ञान के साथ और ज्ञान का बुद्धि के साथ और धर्म का बुद्धि के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है, इस मे सन्देह नहीं।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मे मनुष्य को सब इच्छाओं का समावेश हो जाता है, अर्थात् जीवन की अभिलाषा अर्थ मे, स्त्री पुत्रादि की काम मे, मान, ज्ञान और न्याय की धर्म में परलोक की कामना मोक्ष मे समा जाती है।

इन चारो मे आपस मे भी घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह स्पष्ट करने के लिये हम किंचित् विस्तार मे जाते है। बिना काम के शरीर का उत्पत्ति नही हो सकती, बिना अर्थ के शरीर का निर्वाह नहीं हो सकता, और बिना शरीर और शरीर के निर्वाह के मोक्ष की सिद्धि नहीं सकती, इस मोक्ष की सिद्धि के लिये अर्थ और काम अनिवार्य है अर्थात् इन तीनों का आपस मे अनिवार्य सम्बन्ध है, इसी प्रकार मोक्ष का मार्ग निश्चित किये बगैर अर्थ और काम को भी सहायता नहीं मिल सकती। मोक्षकी सच्ची कामनाके बिना अर्थी स्वार्थी हो जाते हैं, और कामना वाले विषयी हो जाते है। और ये दोनों मिलकर समाज को नष्ट कर देते है या समाज की स्वाभाविक स्थिति कायम नही रहती। इस लिये मोक्ष से अर्थ और काम को सहायता मिलती है। तीनों मे सामजस्य उत्पन्न कराने वाला धर्म है। केवल धर्मपूर्वक मोक्षसिद्धि से अर्थ और काम की उचित व्यवस्था हो जाती है और धर्म पूर्वक अर्थ और काम को ग्रहण करने से मोक्ष सुलभ हो जाता है और इस प्रकार ये चारों एक दूसरे के सहायक हो जाते है।

दुखों से, बुरे कर्मों से तथा जन्म मरणादि के दुखो से छूटना और सुख मे रहना मनुष्य की सर्वोपरि इच्छा है। इस इच्छा का परिचय मनुष्य को मृत्यु के समय ही मिलता है। इस इच्छा की पूर्ति वा मृत्यु के भय को दूर करने का साधन मोक्ष सिद्धि ही है। इसी लिए आर्य्यों ने अपनी सभ्यता की इमारत मोक्ष प्राप्ति के उच्च आदर्श पर कायम की है और केवल धर्म पूर्वक अर्थ काम को उसका सहायक माना है—इसके लिए लोगों को अपना जीवन धार्मिक बनाने की शिक्षा दी गई है।

क्या ही अच्छा हो आज ससार के मनुष्य सभ्यता के वैदिक आदर्श को समझे, उसे अपनाएं औरउसतक पहुंचनेकी कोशिश करे"। स्वयं अपने आयु भोगोंको भोगते और मोक्ष सिद्धि करते हुए दूसरोंको भी अपनी २ आयु भोग भोगने दें और उन के लिए मोक्षसुलभ करे और समाज और ससार मे सुख और शान्ति का प्रसार करे वा उसके प्रसार का कारण बने।

यदि मुख्यतया पश्चिम के भौतिकवादी लोग इस सुनहरी शिक्षा पर चले तो युद्धों की चर्चा बन्द हो जाय, निर्बलों और निर्धनों का रक्त शोषण बन्द हो जाय, दमन लूट खसोट रक्तपात, अनाचार और अत्याचार बन्द हो जाये और ससार सुखधाम बन जाय।

———

—आर्य्य-मैरेज एक्ट और इण्डियन सोशल रिफार्मर

सहयोगी 'इण्डियन' सोशियल रिफ़ार्मर' ने २४ अप्रैल १६३७ के अङ्क मे 'आर्य्य-मैरेज़ ऐक्ट' के शीर्षक में इन स्तम्भों में अन्यत्र दिए हुए श्री० प्रो० सुधाकर जी म० सार्व० सभा के प्रेस के वक्तव्य पर आलोचना की है। उसने इस बातका खण्डन किया हैकि इस कानून के बन जानेसे अन्तर्जातीय विवाहोंकी कानूनी दिक्कतें दूर हो गई हैं और इन दिक्कतों की वजह से जात पात के निवारण में विलम्ब हुआ है और प्रगट किया है कि आर्य्य-मैरेज ऐक्ट के अनुसार विवाहों का उत्तराधिकार इण्डियन सक्सेशन ऐक्ट के द्वारा शासित होगा ठीक उसी तरह जिस तरह गौड़ ऐक्ट में होता है। यह भी कि पिछले चौदह वर्षों से गौड़ ऐक्ट विद्यमान है और हिन्दुओं को जांत पांत तोड़कर शादी करनेकी कानूनी सहूलियतें प्राप्त हैं। इस प्रकार और उस ने यह सिद्ध करनेकी चेष्टा की है कि गौड़ ऐक्ट के होते हुए इस ऐक्ट की ज़रूरत न थी। अन्त में ऐक्ट में 'एक पत्नीवाद' के सिद्धान्त की त्रुटि पर प्रकाश डालता हुआ 'आर्य्य-मैरेज बिल' किस रूप में पास हुआ है इस सम्बन्ध में अपनी अनभिज्ञता ज़ाहिर करता है।

आर्य्य-मैरेज ऐक्ट में सक्सेशन सम्बन्धी कोई धारा नहीं है सहयोगी का यह लिखना कि आर्य्य-मैरेज ऐक्ट में उत्तराधिकार की व्यवस्था गौड़ ऐक्ट जैसी ही है ठीक नहीं है। प्रतीत होता है उसने स्मृति के आधार पर ही ऐसा लिखा है। लिखने से पूर्व वह ऐक्ट को देख लेता तो उससे ग़लत बयानी का इस प्रकार की भूल न होती। आशा करनी चाहिए वह इसका परिमार्जन कर देगा।

हम जानते हैं कि पिछले १४ वर्षों से गौड़ ऐक्ट मौजूद है और वह हिन्दुओं को जात-पांत तोड़कर शादी करने की कानूनी छुट्टी देता है। आर्य्य-मैरेज बिल बनाने वाले इस बात से अनभिज्ञ थे—बात यह न थी। वे इससे अभिज्ञ थे। फिर भी उन्हें इस बिल के बनाने और उसे कानून बनवाने की ज़रूरत क्यों पड़ी? श्री० स्व० पटेल बाद को श्री० डा० भगवान्दास जी को हि० दू अन्तर्जातीय विवाह बिलों को पेश करने की ज़रूरत क्यों हुई? गौड़ ऐक्ट १८७२ के सिविल मैरेज ऐक्ट का कुछ संशोधन मात्र है। गौड़ ऐक्ट के अनुसार विवाह का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य्य है। बनने वाले पति-पत्नी को विवाह संस्कार तथा उससे सम्बन्धित धार्मिक अनुष्ठानों के करने की ज़रूरत नहीं है। उस एक्ट में तलाक का भी विधान है। सम्मिलित परिवार प्रथा का अन्त भी उसका एक उद्देश्य है। इस प्रकार वैवाहिक सम्बन्ध को ढीला देने, विवाह-संस्कार को भूतकाल की वस्तु बनाने का कारण बनने और इस पर आश्रित हाकिमों का समाज को शिकार बनाने की मौलिक त्रुटि है जिसकी वजह इस ऐक्ट का पश्चिमी क़ानूनों पर बनाया जाना है जो भारतीय आत्मा के एक दम प्रतिकूल हैं। विपरीत इसके

आर्य्य समाज विवाह को अटूट धार्मिक पवित्र सम्बन्ध मानता है। विवाह-संस्कार को आवश्यक संस्कार समझता है। आर्य्य समाज को ऐसे उपाय की ज़रूरत थी जो अन्तर्जातीय विवाहों को न केवल कानूनी दिक़्क़तों को दूर करने वाला हो वरन् वह विवाह की स्थिरता, पवित्रता और संस्कारों का रक्षक करने वाला भी हो। गौड़ ऐक्ट की उपयुक्त त्रुटि की वजह से आर्य्य-समाज जो प्राचीन आर्य्य संस्कृति को पुनर्जीवित करने और जीवित रखने के लिए स्थित है उससे लाभ उठाने में असमर्थ था इसी लिए आर्य्य-मैरेज बिल को पास कराने की ज़रूरत हुई।

———

—आर्य्य मैरेज ऐक्ट और हमारा कर्त्तव्य

सार्वदेशिक सभाके मन्त्री जी ने आर्य मैरेज बिल को क्रियान्वित किए जाने के सम्बन्ध मे प्रेस को एक वक्तव्य दिया है। उस वक्तव्यका सार इस प्रकार है —

"आर्य मैरेज ऐक्टको वायसरायकी "स्वीकृति प्राप्त हो गई है और समस्त आर्य जगत् इस सफलता पर प्रसन्न है। परन्तु मैं यह कहूंगा कि हमारे योग्य प्रधान श्री बा घनश्याम सिंह जी के वर्षों के परिश्रम को जो उन्हों ने इस बिल के पास कराने में किया है फलीभूत करने और अपने को अजमाने के लिये समाजियो के लिये यह ऐक्ट आवाहन है। इस वर्ष सैकड़ों अन्तर्जातीय विवाह करा के वे इस का उत्तर दे सकते हैं। चूंकि अब इस प्रकार के विवाहों की वैधता कानूनन स्वीकार करली गई है इस लिए प्रजापर इस कानून का महत्त्व और इसकी उपयोगिता दर्शाने तथा उससे लाभ उठाने की प्रेरणा करने का यत्न होना चाहिए।

आर्य समाज सदैव जन्म पर स्थित वर्ण व्यवस्था को मिटाने मे संलग्न रहा है परन्तु कानूनी दिक़्क़तो की वजह से इस कार्य्य मे विलम्ब हुआ है। अब इस कानून से वे दिक़्क़तें दूर हो गई हैं। वर्तमान जात पात से समाज को जो धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक हानि हुई है इस से जो कोई भी परिचित है उसके लिए चुप चाप बैठने और कानून को मुर्दा बनाने का अब कोई बहाना नहीं रह गया है। प्रत्येक आर्य्य समाज को अपने २ यहां आन्दोलन करके अधिक से अधिक संख्या में जात पात तोड़कर विवाह करने चाहिएं और इससम्बन्ध में अपने काम की रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा को भेजते रहना चाहिए जिससे 'सार्वदेशिक पत्र'में वे प्रकाशित की जाती रहें और इस प्रकार इस उत्तम कार्य्य को प्रोत्साहन मिलता रहे। मुझे आशा है कि आर्य समाजी इस ओर विशेष ध्यान देंगे।"

—आर्यसमाज स्थापना दिवस

गत दो वर्ष से सार्वदेशिक सभा ने तमाम समाजो को चैत शु० ५ पंचमीको आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने का आदेश दिया है। बहुत सी समाजें इस पर्व को उत्साह पूर्वक मनाने लगी हैं और इस वर्ष गत वर्ष से अधिक समाजों ने यह पर्व मनाया है। समजों की इस ओर बढ़ती हुई दिलचस्पी इस से प्रगट होती है कि सभा के कार्यालय में इस सम्बन्ध में अनेक पत्र आते रहते हैं।

ऐसा ही एक पत्र आ० स० अम्बाला छावनी के मन्त्री जी ने भेजा है जिसमे उन्होंने प्रस्ताव किया है कि सरकारी छुट्टा कराने का यत्न किया जाय जिससे कि इस पर्व का महत्व तथा गौरव बढ़े। प्रशासित मन्त्री ने जो प्रस्ताव किया है अति उत्तम है। सभा के अधिकारियों ने इस विचार को बहुत पसन्द किया है। इस ओर प्रयत्न किया जायगा।

परन्तु इस सम्बन्ध मे, हम आर्य जनता का ध्यान इस ओर खींचना चाहते हैं कि अभी शायद हमने इस पर्व को उस जोश के साथ मनाना शुरू नहीं किया, जितना चाहिये। सरकार से छुट्टी मनवाने लिये यह ज़रूरी है कि सरकार को और सब को यह मालूम हो कि हम इस पर्व का मनाना जरूरी समझते हैं। पहले सरकारी छुट्टी हो और तब पर्व मनाया जाएगा, यदि यह धारणा रही तो शायद हम दोनों ही कामों में सफल न होंगे। हम पर्व मनावें और खूब धूम धाम से मनावें, जितने सरकारी नौकर आर्य समाजी हैं वे उस रोज़ छुट्टी ले कर मनावें। तब ही हम सरकार को भी किसी बात के लिये बाधित कर सकेंगे। सरकार बाधित हो सकती है वह कृपा नहीं करती।

—वहाँ

प्रभात फिल्म कम्पनी का सबसे ताजा चित्र 'वहाँ' (Beyond the Horizon) है। उसका कथानक आर्य्य समाजियो और आर्य्य संस्कृति के प्रेमियों और प्रशंसकों के लिए आपत्तिजनक है इसलिए कि वह पुराने आर्य्यों और दस्युओ की संघर्ष सम्बन्धी गलत और काल्पनिक बातों के हवाले से आर्य्यों के प्रति घृणा उत्पन्न करने वाला है। इसके विरोध में, ध्यान खींचे जाने पर, श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने एक वक्तव्य निकाल कर संचालकों को प्रेरणा की थी कि वे उसका इस प्रकार संशोधन कर देवें जिससे वह आपत्तिजनक न रहे। इस फ़िल्म के सम्बन्ध मे कानपुर 'प्रताप' में 'सिनेमा जगत' के कालम में विचार किया गया है—वह भी इस फ़िल्म का निम्न शब्दों में विरोध करता है.—

'प्रभात' का सब से नवीन चित्र 'वहाँ' है। इसमे आर्यों और अनार्यों के पुरातन संघर्ष का चित्रण किया गया है। इसमे दिखाया गया है कि लोहयुग के प्रारम्भ मे आर्य्य अनार्यों पर अतिशय अत्याचार किया करते थे। इस के कथानक की ऐतिहासिक सत्यता मे सन्देह की काफी गुंजाइश है। अनार्यों पर आर्यों की विजय सांस्कृतिक थी अथवा शारीरिक इस विषय मे इतिहासवेत्ताओं की एक सम्मति नहीं है। इन्हीं बातों को लेकर आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध नेता श्री नारायणस्वामी जी ने विरोध किया था। हम फिर उनके निर्देशक से आशा करते हैं कि वे भविष्य मे इतिहास का भली भांति अध्ययन करके ही फिल्मों का निर्माण करेंगे—

हमें आशा है कि संचालको ने आवश्यक संशोधन करके उसे आपत्तिरहित कर दिया होगा। यदि न किया होगा तो शीघ्र से शीघ्र कर देंगे या फ़िल्म का दिखाया जाना यदि अभी कहीं दिखाया जा रहा होगा, बन्द कर देंगे और उस समय तक बन्द रक्खेंगे जब तक वह आपत्ति रहित न कर दिया जाय।

वैदिक सूर्य विज्ञान

(ले०—श्री प्रियरत्न जी आर्ष)

गताङ्क से आगे

अर्थ—(देव) ओ विश्व के द्योतमान झाड़फानूस रूप सूर्य ! तू (वहिष्ठेभिर्विहरन) अत्यन्त वहन शील किरणों द्वारा चमचमाता हुआ (असित वस्म) विना बन्धे हुए असमाने-आकाश रूप शामयाने में (तन्तुमत्यपन्) डोरी को न स्वीकार करता हुआ-विना डोरी के लटका हुआ। (यासि) घूमता फिरता है। (सूर्यस्य दविध्वतो रश्मय) तुझ सूर्य की दीप्ति से फरकती हुई किरणें (अपत्रन्तस्तम) अन्तरिक्ष मे से अन्धकार को (चर्मेवावाधु) जैसे शरीर मे से चमड़ी के हटा देने से अन्दर की हृदय, फुफ्फुस आदि यन्त्रा कला दीखने लगती है एव अन्तरिक्ष मे से अन्धकार को विश्व की यन्त्र कला दिखलाने के लिये हटा देती हैं। यह झाड़फानूस रूप सूर्य न केवल डोरी के विना ही अपितु (अनिबद्ध) निबद्ध अर्थात् जड़ा हुआ चिपका हुआ भी नहीं जैसे एञ्जिन में या विमान में जडा हुआ-चिपका हुआ लेम्प चलता है। तथा (अनायत.) आयत खिंचा हुआ किसी दूसरे से आकर्षित किया हुआ भी नहीं है। अहो, आश्चर्य !(अय-उत्तान) यह ऊपर टंगा हुआ (कथा न) क्यो नहीं (न्यङ्ङवपद्यते) नीचे गिर पड़ता। (कया स्वधया याति) किसी साधारण शक्ति से विचरता है, इस बात को (को वेद) प्रजापति जानता है यह बात मानव मस्तिष्क से परे है "प्रजापतिः वैः कः" (ए० २।३८)

अथवा (कया स्वधया याति) किस स्वधारण शक्ति से विचरता है। इस बात को (को ददर्श) कौन जानता है अर्थात कोई नहीं। यह बात मानव मस्तिष्क से परे की है। दोनों अर्थों में 'स्वधया' सूर्य स्वधारण शक्ति से विचरता है यह अर्थ तो अप्रतिहत है, स्थिर है। चाहे इस स्वधारण शक्ति को अपनी आकर्षण शक्ति नाम दे दिया जावे बात एक ही है। वेदने उसको स्वधा-स्वधारण शक्ति महत्वपूर्ण नाम दिया हैं। (दिव) यह सूर्य द्युमण्डल-प्रकाशमण्डल सारे प्रकाशमान गोल समूह का (स्मृत स्कम्भ) दृढ़ खम्भा है इसी से यह सारे गोले बन्धे हुए हैं (नाकं याति) यही इस सारे द्युमण्डल की रक्षा करता है।

इन मन्त्रों में बड़ी आश्चर्यता से वर्णन करते हुए सूर्य को 'अनायत' किसी दूसरे से आकर्षित न हुआ हुआ कहा है। इस प्रकार अर्थापत्ति से सूर्य अपने ही आधार से आकाश में ठहरा हुआ है यह सिद्ध होते हुए भी अन्तिम मन्त्र के उत्तरार्द्ध में "कया याति स्वधया" से सूर्य स्वधारण शक्ति से ही आकाश मे रहता है यह स्पष्ट कह दिया। तथा दूसरे स्थल पर भी वेद मे सूर्य अपने आधार से ठहरा हुआ है। कहा है, मन्त्र निम्न है—

अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः।

स कक्षीवन्तं रेजयत्सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु ॥ (ऋ० १० । ६१ । १६)

खगोल में वर्त्तमान गोलों रूप प्रजाओं का स्वामी सूर्य 'स्वसेतु अपने से ही बन्धा हुआ-किसी दूसरे से नहीं अर्थात् अपने आधार पर ठहरा हुआ।

"स्वसेतुः यस्य स्वभूता रश्मयो जगद्बन्धकाः सन्ति" (सायणः)

'अपस्तरति' अन्तरिक्ष अर्थात् आकाश में विचरता है।

"आपो अन्तरिक्ष नाम" (नि० १ ।३)

तथा चात्र सायण

"अपश्चान्तरिक्षं तरति लंघयति ।"

वह सूर्य 'कक्षीवन्तम्' कक्षा वृत्त में घूमने वाले पृथिवी आदि प्रत्येक गोले *को तथा 'अग्निम्' अपने ज्वालासमूह को नेमि और चक्र की तरह कपाता अर्थात्-घुमाता है। इससे यह भी एक बात सिद्ध होती है कि सूर्य का ज्वाला समूह सूर्य पिण्ड के चारों ओर समुद्र जल के समान चक्र खाता रहता है। अस्तु अब सूर्य के घूमने पर विचार करते हैं—

सूर्य का घूमनाः—

उद्वेति प्रसवीता जनानां महान् केतुरर्णवः सूर्यस्य। समानं चक्रं पर्याविवृत्सन् यदेतशो वहति धूर्षु युक्त. ॥(ऋ० ७ ६३।२)

(सूर्यस्य) सूर्य का (अर्णवः) समुद्र तुल्य वेगवान् (महान्केतु) स्फुरण शील ज्वाला समूह *(जनाना प्रसवीता) जायमान पदार्थों का प्रेरक (उदेति) सूर्य से उद्भव होता है—सूर्य के अन्दर से बाहरस्फुरित होता है। जो (समान चक्रं) सभी पृथिवी आदि के एक मानकारी—थामने वाले चक्ररूप गोलाकार मध्यस्थ सूर्य को (पर्याविवृत्सन्) पर्यावर्त्तयितुमिच्छन्-पर्यावर्त्तयन्निव-परिभ्रामयन्निव स्वस्मिन् स्थाने भ्रामयन्नित्यर्थः—घुमाना चाहता हुआ-घुमाता हुआ जैसा अर्थात् दूसरे गोल के चारों ओर नहीं किन्तु स्वकेन्द्र पर ही घुमाता हुआ धूर्षु युक्त एतश) धुरा में जुड़े घोड़े की तरह (वहति) गतियुक्त करता है।

इस मन्त्र में 'पर्याविवृत्सन्' शब्द से सूर्य का अपने केन्द्र पर घूमने का वर्णन है साथ में उसके घूमने का कारण भी सूर्य का अपना "अर्णवो-महान् केतुः" समुद्रतुल्य चक्रवेगवान् महान् स्फुरणशील ज्वालासमूह बतलाया है। जैसे

---

*'कक्षीवान्' के सम्बन्ध में देखो 'आर्यमित्र' के ऋष्यङ्क में 'कक्षीवान् का इतिहास' या 'वेद में इतिहास नहीं' मेरी लिखी इस पुस्तक में।

*उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्" ॥ (ऋ० १।५०।१)

"उद्वहन्ति तं जातवेदसं रश्मयः केतवः" (नि० १२।१५)

बहुवचन 'केतव.' सूर्य किरणोंको कहा है एव एक वचन 'केतु.' का अर्थ सूर्य का किरणसमूह या ज्वालासमूह है।

अग्निचूर्ण वाले चक्र (बारूद के चरखे) से वेग से निकलती हुई स्फुरणशील ज्वालाए इसको घुमा देती हैं एवं सूर्य की उक्त वेगवाली स्फुरणशील ज्वालाएं सूय को घुमा देती हैं। सूर्य का ज्वाला समूह स्फुरित होता है, यह बात भी वेद में कही है —

"यः सप्तरश्मि र्वृषभस्तु विष्मानवा सृजत् सर्त्तवे सप्त सिन्धून्। यो रौहिण-मस्फुरत् ॥ (ऋ० २।१२।१२)

सूर्य का अन्य गोलों के साथ सम्बन्ध

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ (ऋ० १ ६।३)

ऐ मनुष्यो! यह सूय अपनी उष्ण किरणों से प्रकाश रहित को प्रकाश तथा अरूप रूप को देने के लिये प्रकट होता है।

इस मन्त्र से यह आया कि जितने भी आकाश में पृथिवी आदि गोले प्रकाशमान हैं वे सब सूर्य से प्रकाशित होते हैं।

"सवितुर्देवस्योपस्थे विश्वाभुवनानि तस्थुः" (ऋ० १।३५।५)

द्योतमान किरणों वाले प्रेरक सूर्य के आश्रय पर सारे पृथिवी आदि लोक आश्रित् हैं अर्थात उस के आकर्षण से ठहरे हुए हैं।

"एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वेऽर्धेर-जसो भानुमञ्जते" । (ऋ १।९२।१)

ये सूर्य की उष्ण किरणें किसी भी लोक अर्थात् पृथिवी आदि गोल के 'पूर्वे अर्द्धे' सामने वाले आधे भाग को प्रकाश से युक्त करती हैं पुन दिन को बनाती है।*

आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवे-शयन् पृथिवीमुस्रियाभिः। (अ० ३।८।१)

सूर्य ऋतुओं के साथ युक्त हो अपनी 'उस्रि-याभि' किरणों से पृथिवी को नियत कक्षा मे स्थि ष्ट करता हुआ आता है। "उस्रियाभि: गोभि किर-णैरित्यर्थ" (सायण)

सूर्य की किरणें:—

"इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शतादश। (ऋ० ६।४७।१८)

(क्रमशः)

---

*ऐतरेय ब्राह्मण में यही सिद्धान्त प्रतिपादित है।

स वा एष कदाचनास्तमेति नोदेति। तं यदस्त-मेतीति मन्यन्ते। अह्न एव तदन्तमित्वाथात्मान विपर्यस्यते रात्रमेवावस्तात् कुरुतेऽह: परस्तात्। अथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रिमेव तदन्त-मित्वाऽथात्मान विपर्यस्यते, अहरेवावस्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात (ऐ० ब्रा० ३।४।६)

वह सूर्य कभी न अस्त होता है और न कभी उदय होता है। इसे अस्त हुआ जो माना जाता है वह दिन का अन्त कर पृथिवी के दूसरी ओर हो जाता है रात इधर कर देता है दिन परली ओर में। और जो इस को प्रात काल उदय हुआ माना जाता है वह रात्रि का अन्त कर पृथिवी के इस ओर होजाता है दिन इधर कर देता है और रात उधर कर देता है।

आत्म निरीक्षण

(ले० श्री० ला० श्यामराम जी एम० ए०)

कहावत है कि एक व्यक्ति कुछ समय के लिए कुछ आदमियों को धोखा दे सकता है। कुछ समय के लिए सब आदमियों को धोखा दे सकता है। सब वक्त के लिए भी कुछ आदमियों को धोखा दे सकता है परन्तु सब समय के लिए सब आदमियों को धोखा नहीं दे सकता है। क्योंकि किसी समय कोई न कोई अवश्य उसके छल-प्रपंच को जान जाता है। यह ठीक है परन्तु यदि यह मान लिया जाय कि एक अत्यन्त चतुर व्यक्ति सारी उम्र अपने सम्पर्क में आने वाले सब आदमियों को धोखा दे सकता है तो भी कोई हैरानी की बात न होगी क्योंकि धोखे बाज आदमी, यदि दूसरे इसकी धोखे बाजी को भी जान लें तो भी अपनी हरकत से बाज नहीं आया करता। धोखेबाजी से हटाने वाली एक ही चीज है और वह है 'आत्म-निरीक्षण'। जब मनुष्य के भीतर आत्म-निरीक्षण का गुण आ जाया करता है, जब उसका अन्तरात्मा जाग पड़ता है जब वह अपनी परीक्षा शुरू कर देता है तो वह एक क्षण के लिए भी किसी को धोखा नहीं दे सकता। केवल यही नहीं बरन् जब अपनी आत्मा जाग उठती है जब आत्म-निरीक्षण शुरू हो जाता है तो धीरे २ सब बुराइयाँ दूर हो जाती हैं। आत्म-निरीक्षण ऐसा कड़ा चौकीदार है कि उसके मुक़ाबले मे बड़े से बड़ा बाहरी दबाव कुछ नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति में अपने आप को देखने की आदत नहीं पड़ी ब की दुनियादार कब तक और कहाँ तक और उसकी किस २ बुराई को देखेंगे। बुराई का सम्बन्ध मन से है और एक मनुष्य के मन की हरकत को दुनियाँ की सारी एजेन्सियां मिलकर भी नहीं जान सकतीं। यदि महात्मा गांधी के भीतर आत्म निरीक्षण की आदत न होती तो न वे अपनी आत्मकथा लिखते और न ही अपनी सब बुराइयों को ऐसे नंगे रूप में पेश करते। और यदि कोई और श्रद्धालु भक्त महात्मा जी का जीवन चरित्र लिखता तो वह उन्हें शुद्ध साबित करके अवतार ही बना देता। आत्म-निरीक्षण के बिना व्यावहारिक और धार्मिक उन्नति असंभव है। आत्म निरीक्षण मनुष्य को पग पग पर खबरदार करता है और छोटी से छोटी बात मे उसे सचेत करता है। जिस समाज के नेता आत्म-निरीक्षण के अभ्यासी होते हैं वह समाज फलता फूलता है।

अध्यात्म-धारा

(आर्य जीवन की सार्थकता)

(ले० श्री० स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती)

पवित्रवन्तः परिवाचमासते पितैषां प्रत्नो अभिरक्षति व्रतम्।

महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् ॥ ऋग्वेद म० ६ सू० ७३ ॥

प्रिय पाठक वृन्द ! भुवन-भावन् भगवान की भव्यभाव भरी इस वेदवाणीका तात्पर्य यह है कि यदि हमें मानवीय जीवन के चरम लक्ष्य तक पहुचनेकी प्रबल इच्छा है तो अपने अन्तःकरणको निखिल पवित्रता का केन्द्र बनाकर, भक्त वत्सल भूमा की सत्य प्रिय और हितकारिणी तथा दुरित निवारिणी वेद वाणी को अन्दर के कानो से सुने। इस परीक्षा मे उत्तीर्ण होने वाले आर्य सज्जनो के परोपकारक व्रत की अनाद्यनन्त परिभू परमात्मा भली प्रकार रक्षा करते हैं। इतना ही नहीं, किन्तु इन अनन्य भक्तो के लिये वरुण भगवान् महत्ता के महा मोद-महोदधि को धारण कर रहे है। परन्तु याद रखिये, इस महत्ता के महासागर मे तैरना हर एक का काम नही है। हाँ, जो धीर वीर बन के शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक शुद्धि-सम्पन्न होते हैं, वे ही इस आत्म-प्रसाद को प्राप्त होकर मोद-मुदित हो जाते हैं। ठीक भी तो है—

जिन खोजां तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।
बोरी बन खोजन गयी, रही किनारे बैठ ॥

सकल पदारथ हैं जग माहीं।
कर्म-हीन कछु पावत नाही ॥

अजी ! यहाँ की तो लीला ही निराली है। कोई कवि कहता है—

अन बूडे बूडे, तरे, जे बूडे सब अङ्ग ॥

सौ बातोकी बात यह है कि यह गुरुतर कार्य्य बिना सत्य और साहस की सम्पन्नता के हो नहीं सकता। अतएव सत्पथ के पथिक को चाहिये कि आत्म-विश्वास का पाथेय साथ लेकर, अदम्य उत्साह से अभ्यास और वैराग्य के पुनीत गीत-गाता हुआ तथा शीत, उष्ण, राग, द्वेष आदि द्वन्द्व-दल को पद दलित करता हुआ गम्य स्थान को प्राप्त करले। अथवा यो कहो कि, आत्म श्रेयार्थी, यदि चाहे तो अपने मन तथा इन्द्रिय समूह को वश मे करके, ईश्वरीय विश्वास की दृढ़ नीव पर उच्चतम आर्य-आदर्श की विशाल भित्ति तैयार करता हुआ अपने जीवन को उन्नति के उत्तुंग शिखर पर विराजमान कर सकता है, यही आर्य जीवन की सार्थकता है। ऐसा करने से इष्ट की हानि तथा अनिष्ट की प्राप्ति कभी नही होसकती। यहां पहुंचने पर ईर्ष्या और द्वेष की भभकती हुई प्रचण्ड ज्वाला, प्रेम के अथाह पारावार मे स्वतः शान्त हो जाती है। फिर स्वार्थ और परार्थ मे भेद-भाव की गंध नही रहती। अर्थात् व्यक्ति,

सत्यार्थप्रकाश लेख माला

शिखा

लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

इस समय आर्य जाति का शिखा चिन्ह माना जाता है। ब्राह्मण से शूद्र पर्यन्त इसे प्राय सब रखते हैं और यह चिन्ह भारतवर्ष में प्रत्येक प्रांत में कुछ अपवाद सहित मिलता है। तीन आश्रम (ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ) और चारों वर्ण शिखाधारी हैं। सन्यासाश्रम में प्रवेश के समय इसका त्याग माना गया है इनमें भी जो वैष्णव

समष्टि में पूर्णतया लीन हो जाता है। ऐसी अवस्था में आत्म हित और विश्व हित मे कोई अन्तर विशेष नहीं रहता। इसी अवस्था का नाम उत्तम गति है और यही सच्चे सुख की पराकाष्ठा है। यहां पहुंचने पर फिर किसी को किसी से भय नहीं होता- (द्वितीया द्वै भयं भवति) भय तो दूसरे से ही होता है। जबकि जगत् के प्रत्येक प्राणि हृदय से अपनी हृत्तन्त्री का तार मिला कर प्रेमका पुनीत आलाप आलापने लगे तो फिर भय शोक और मोह का क्या काम ?

(तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत) यही आर्य जीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श है। इसी को अपना सहचर बनाकर हमें संसार यात्रा में अग्रसर होना चाहिये और इस आर्य जीवन को स्वभाव सिद्ध बनाने के लिये सतत प्रयत्न शील बनना चाहिये। शमित्योम् ॥

———

हैं वे साधु कहलाते हैं यदि उनको वानप्रस्थान्तर्गत मानें तो तीन आश्रमों में होने से शिखाधारी ही हैं यदि उनको भी सन्यासाश्रम में गिन लें तो इस आश्रम का बहु भाग शिखी होगा। अब यह देखना है कि इस विषय में लोकमत और स्मार्तमत क्या है। आज कल कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो शिखा रखना आवश्यक नहीं समझते है इनमें कुछ सख्या तो शिक्षितों की है जिसे पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव समझा जाता है। पुस्तकों मे शिखा विशिखा दोनों मिलते हैं। विशिखा से सन्यासी नहीं अन्याश्रमी भी विशिखा मिलते हैं जैसा कि मैं आगे लिखूंगा। प्रथम शिखा के विधान मे लिखा जाता है। यथा गोभिलीयगृह्यसूत्र १.१.२ की टीका मे निम्न पाठ है —

सदोपवीतिना भाव्य सदा बद्धशिखेन तु।
विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम् ॥

अर्थ—सदा उपवीत युक्त और बद्धशिखा कर्म करे। जो शिखा और उपवीत रहित कर्म करता है वह निष्फल होता है। इसमें शिखा का बाधना लिखा है जो शिखा होने पर ही हो सकता है। यही पाठ निर्णयसिन्धु के तीसरे परिच्छेद में भी आया है।

अकृतपादशौचन्तु तिष्ठ मुक्त शिखोऽपि वा।
विना यज्ञोपवीतेन आचान्तोऽप्यशुचि भवेत् ॥
गो ६१.२ की टीका

पाद प्रक्षालन न करके, खड़ा होकर, मुक्त शिखा, उपवीत रहित आचमन करने पर भी अशुचि ही होता है।

"और जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहनते हो और "तमगों" की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीतादि का कुछ बड़ा भार हो गया था" सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११ ब्रह्म और प्रार्थना समाज प्रकरण में। इसमें शिखा रखने का आदेश है। परन्तु दशम समुल्लास में एक और पाठ है जिसमे शिखा को कामचार माना है उसी पर सनातनधर्मी आक्षेप करते हैं और उसी के आधार पर आर्य-समाजियों को विधर्मी होने की व्यवस्था दिया करते हैं वह पाठ इस प्रकार है।

"जो अति उष्ण देश हो तो सब छेदन करा देना चाहिये। क्योंकि शिर के बाल रहने से उष्णता अधिक होती है। (सत्यार्थप्रकाश)

परन्तु अब देखना यह है धर्म पुस्तकों में इस विषय में क्या लिखा है। जिसे सनातनधर्मी धर्म पुस्तक मानते हैं यदि वह भी ऐसा ही या इससे भी कुछ आगे जाते हों तो सनातनधर्मियों का आक्षेप उचित प्रतीत नहीं होता। हा, यदि वह उनके पोषक हों तो आक्षेप ठीक ही है इसलिये मैं इस लेख में केवल थोड़े से पाठ लिखना पर्याप्त समझता हूँ जिससे उनके मत का पता लग जाय। यदि कोई विशेष जानना चाहें तो अन्य पुस्तकों में देखने का कष्ट करें।

(१) यथा गोत्र कुल कल्पम् गोभिलीय गृह्य सूत्र २ ८, २५। जैसे गोत्र, कुल में रिवाज है वैसे ही शिखा रखे। इसकी टीका मे इस विषय पर अन्य पाठ लिखकर दिखाया गया है कि किस प्रकार भिन्न गोत्र, कुलों में भेद है।

वसिष्ठा पचचूडा त्र्युभिचूडा कुण्डपायिन।

अर्थ—वसिष्ठ गोत्र वाले पांच और कुण्ड पापि तीन शिखा रखते हैं।

दक्षिणा कपर्दा शिष्ठस्य आत्रेयास्त्रिकपर्दिन।

अगिरस पच चूडा मुण्डा भृगो शिखिनोऽन्ये।

अर्थ —वसिष्ठ सिर के दक्षिण के भाग में शिखा रखते हैं। अत्रि वशी तीन शिखा रखते हैं। अगिरा वंशी पाच रखते हैं। भार्गव मुण्डा देते हैं शेष एक शिखा रखते हैं।

सशिख वपनं कार्यमास्नानाद्ब्रह्मचारिणाम्।

आशरीर विमोक्षाय ब्रह्मचर्यं न चेद् भवेत्॥

अर्थ —समावर्तन से पूर्व ब्रह्मचारी शिखा न रखे यदि ब्रह्मचर्य व्रत न किया हो तो आजीवन ही शिखा न रक्खे।

कौथुम राणायनीयादिना प्राक् समावर्तनात् सशिखमेव वपनम्।

अर्थ —कौथुम राणायनीयादि समावर्तन से पूर्व शिखा मुडाते रहते हैं। स्मरण रहे कौथुम सामवेदी हैं इस प्रकार बगाली प्राय शिखा मुडा देते हैं क्या यही लेख उस मुंडाने का निमित्त तो नहीं है।

(२) यथा मङ्गल केश शेष करणम्। पारस्कर २-१-२१

भावार्थ —शिखा (केश शेष) कुल के अनुसार रक्खे। इसकी टीका में कर्क लिखते हैं —

यथाशास्त्र यस्य गोत्रे उचितम्। केचित्

त्रिशिखाः केचित् पञ्च शिखा यथा यस्य प्रसिद्धिः ॥

अर्थ:—जिस गोत्र में जैसा उचित है कोई तीन कोई पाच रखते हैं हरिहर लिखते हैं—

दक्षिणत कम्बुजाना वसिष्ठानामुभयतोऽत्रि कश्यपाना मुंडा भृगव पंच चूडा आंगिरस वाजसनेयीनामेका शिखा मगलार्थं शिखिनोऽन्य इति।

अर्थ—कम्बुज, वसिष्ठ दक्षिण भाग मे शिखा रखते हैं। अत्रि, कश्यप दोनों ओर रखते हैं। भार्गव मुंडा देते है। आंगिरस पांच शिखा रखते हैं, वाजसनेयी एक और अन्य भी एक रखते हैं।

कम्बुजाना वसिष्ठाना दक्षिणे कारयेच्छिखाम्।
द्विभागेऽत्रिकश्यपाना मुण्डाश्च भृगवो मता ॥
पञ्च चूडा आंगिरस एका वाजसनेयीनाम्।
मगलार्थं शिखिनोऽन्य स्वकचूडाविधिक्रमादिति ॥

इसके अर्थ पूर्ववत् ही हैं अत पाठक उसे ही देख लें और समझलें। गदाधर लिखते हैं—

केशशेषं तत कुर्याद्यस्मिन् गोत्रे यथोचितम्।
वसिष्ठा दक्षिणे भागे उभयत्रापि कश्यपा ॥
शिखा कुर्वन्त्य गिरस शिखाभिः पञ्चभिर्युक्त।
परित केशपंक्त्या वा मुंडाश्च भृगवो मता ॥
कुर्वन्त्यन्ये शिखामत्र मंगलार्थमिह क्वचित्।

अर्थ–जिस गोत्र में जो विधि है उसी के अनुसार शिखा रक्खे। वसिष्ठ दक्षिण भाग मे, कश्यप दोनों ओर, आंगिरस पाच, अथवा सर्व ओर केश पक्ति और अन्य एक शिखा रखते हैं, भार्गव मुंडा देते हैं।

यह गोभिल तथा पारस्कर सूत्र और उनके टीकाकारों ने लिखा है—जिसमे भार्गव शिखा न रखते थे यह सब मानते हैं और कोथुम राणायनीय ब्रह्मचारी अवस्था में शिखा रहित होते थे। समावर्तन के पश्चात् शिखाधारी बनते थे। यदि नियम से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करें तो आजीवन शिखा रहित ही रहते थे। कम्बोज और वसिष्ठ दक्षिण भाग म शिखा बनाते थे अत्रि, कश्यप गोत्र वाले दोनों ओर रखते थे आज कल पिशावर जिले में दोनों ओर कनपटी के पास रखते हैं क्या यह वह चिह्न है या कुछ और है यह भी चिंतनीय है। आगरिस पचशिखायुक्त थे वाजसनेयी एक शिखावाले थे अन्य भी एक शिखा रखते थे यह सक्षेप से ऊपरिलिखित पाठ का भाव है। निर्णयसिन्धु में भी इसी भाव का पाठ मिलता है यथा—

(३) प्रयोगरत्न के आधार पर—

मध्ये शिरसी चूडा स्याद्वासिष्ठाना तु दक्षिणे।
उभयो पार्श्वयोरत्रिकश्यपाना शिखा मता ॥प० ३

मदनरत्न, लोगाक्षि के आधार पर—

दक्षिणत कमुजा वसिष्ठानामुभयतोऽत्रिकश्यपानामुण्डाभृगव। पञ्चचूडा आंगिरसो वाजिमेकं मगलार्थं शिखिनोऽन्ये यथा कुल धर्म वा इति ॥

स्मृतिदर्पण के आधार पर—

एका शिखा दक्षिणतो वसिष्ठ गोत्रस्य पञ्चांगिरसो भृगोऽस्तु। नैका शिखा कश्यपगोत्रजाना शिखोभयत्रापि यथा कुल च ॥

अर्थ—शिरके मध्यमे शिखा होती है वशिष्ठ दक्षिण मे, अत्रि, कश्यप दोनों ओर शिखा रखते हैं।

वसिष्ठ दक्षिण भाग शिर में शिखा रखते हैं।

आगिरस पाच रखते है। भार्गव मुंडा डालते हैं। अन्य कुल धर्मानुसार एक शिखा रखते हैं। निर्णय सिन्धु के संग्रहीता ने कमुंजा के अर्थ शिखा और वाजि के अर्थ केशपक्ति किया है। यह पाठ उसने लोगाक्षि से लिया है। परन्तु पारस्कर के टीकाकार इसी कमुंजा और वाजि को कम्बुज और वाजसनेयी लिखते है। प्रतीत होता है निर्णयसिंधु का सग्रहकर्त्ता भ्रम मे है। ठीक पाठ कमुंजा नहीं कम्बुजानाम् है और वाजि के स्थान पर वाजसनेयीनाम् ही है। वसिष्ठ गोत्री दक्षिण मे एक शिखा, आगिरस पाच शिखा, कश्यप गोत्रवाले उभय ओर शिखा रखते हैं भार्गव शिखा मुंडा देते हैं इसका भाव भी वही है जो पूर्व लिख दिया गया है। धर्मसिंधु मे कुछ और भी लिखा है अत उसे लिखकर लेख समाप्त किया जाता है।

मध्ये मुख्यैका शिखा अन्याश्च पार्श्वादि भागेष्विति यथा कुलाचारं प्रवर संख्यया शिखा चूडा समये कार्या॥ उपनयन काले मध्यशिखेतर-शिखाना वपनं कृत्वा मध्यभाग एवोपनयनोत्तरं शिखाधार्या। धर्मसिंधु परिच्छेद ३।

अर्थ –शिखाशिर के मध्यमे ही होती है। शिर के अन्य भागोमे कुलाचार से चूडाकरण समय मे रखते है। उपनयन के समय में वह सब मुंडा कर शिर के मध्य भाग मे ही एक शिखा रखनी चाहिये।

सनातनधर्मी जो ऋषि के उक्त देश में शिखा न रखने से ईसाई मत बताते हैं वे इन लेखों को देखें। इनमे जो न रखने का वर्णन है क्या यह भी ईसाई हैं? आशा है वे इनको ईसाई न कहेंगे। इसलिये सत्यार्थप्रकाश का लेख भी वैदिक ही है। यदि इस समय देखा जाय, बगाली शिखा नहीं रखते हैं गुजरात में पटेल जो उपनयन नहीं लेते हैं उनमे से कई नहीं रखते हैं। यह सब रिवाज इन सूत्र ग्रन्थों के आधार पर ही हैं यदि कोई अन्य भी न रक्खे तो उसे भी इसी मे सम्मिलित करना अच्छा है न कि किसी अन्य का नाम देना। महर्षि जी ने जो कामचार लिखा है वह ठीक है और शिखा को कामचार ही मानना चाहिये। मैं स्वयं रखने का पक्षपाती हूँ परन्तु न रखने वाले दण्डनीय नहीं हैं यह भी मै मानता हूँ।

—

मांसाहार

(ले० रघुनाथप्रसाद पाठक)

दुर्भाग्यसे मांस संसारके बहुसंख्यक मनुष्योंका खाद्य पदार्थ बना हुआ है और कहीं २ प्रधान खाद्य पदार्थ बना हुआ है। इससे ज्यादा दुर्भाग्य की बात यह है कि बहुत से प्रसिद्ध शाकाहारी देशों मे इन दिनों माँस भक्षण की प्रवृत्ति वेग के साथ बढ़ रही है। भारतवर्ष इस बात का अपवाद नहीं है। यहाँ भी विशुद्ध शाकाहारी वर्गों में मुख्यतया अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त प्रजा में मांस-भक्षण का प्रचार दिनों दिन बढ़ रहा है। देखना है कि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति मांसाहार की ओर है या नहीं और मांस-भक्षण का चिकित्सा विज्ञान, धर्म्म और नीति इत्यादि का कोई युक्तियुक्त आधार है वा नहीं ?

स्वभाव से मनुष्य मांसाहारी नहीं है

स्वभाव से मनुष्य मांसाहारी नहीं है। यदि होता तो मांसाहारी जीवों में और उसमें समता होती परन्तु मांसाहारी जीवो मे और उसमें बिल्कुल पूर्व्व और पश्चिम की विभिन्नता है, ठीक वैसी ही जैसी अन्य शाकाहारी और मांस-भक्षी जीवों में पाई जाती है। मोटे तौर पर मांसाहारी जीवों मे जो लक्षण पाए जाते हैं उनमें से एक भी मनुष्य या शाकाहारी जीव में नहीं पाया जाता। मांसाहारी जीवों के लक्षण इस प्रकार हैं:—

(१) जितने प्राणी मांसाहारी हैं वे सब जीभ से पानी पीते हैं।

(२) जितने प्राणी मांसाहारी हैं सब अंधेरे में देखते हैं।

(३) जितने प्राणी मांसाहारी हैं सबके शरीर में पसीना नहीं आता।

(४) जितने प्राणी मांसाहारी हैं सब मैथुन के समय जुड़ जाते हैं।

(५) जितने प्राणी मांसाहारी हैं सबके बच्चों की आँखें पैदा होने के समय बन्द रहती हैं।

(६) जितने प्राणी मांसाहारी होते हैं सबके दांत नुकीले और चुभने वाले होते हैं।

(७) जितने प्राणी मांसाहारी हैं सबकी आंतें शरीर के परिमाण से बड़ी होती हैं। सबका मेदा बड़ा होता है और सब डरते हैं।

(८) जितने प्राणी मांसाहारी होते हैं सब भयानक बनावट के होते हैं।

अतः स्पष्ट है कि मनुष्य का स्वभाव और उसका शारीरिक गठन मांसभक्षण के बिल्कुल प्रतिकूल है।

वास्तविक धर्म्म मांसाहार का विरोधी है

वेद मनुष्य समाज का आदिकालीन ज्ञान पुस्तक है ऐसी हमारी ही नहीं वरन् संसार के श्रेष्ठ दिमागों की स्थापना है। वेद में मांसाहार का बहुत प्रबल विरोध पाया जाता है। उदाहरण के लिए हम अनेकों मंत्रों में से अथर्ववेद के निम्न मन्त्र को प्रस्तुत करते हैं:—

"यथा मांसं यथा सुरा यथाक्षा परिदेवने।
यथा पुंस्ते वृषरायते स्त्रियं निहन्यते मनः॥"

इस मन्त्र में शराब, व्यभिचार और मांसाहार इन तीनों की घोर निंदा की गई है।

वेदों मे पशुबलि के आधार पर वेदों से मांसाहार सिद्ध करने की चेष्टा की जाती है। परन्तु वेदों में पशुबलि का विधान है, यह स्थापना गलत है और वेदों के भ्रमात्मक भाष्य पर अवलम्बित है। इन भाष्यों के भ्रम जाल में फंसकर वेदों को मांसाहार का प्रतिपादक समझने की भूल नहीं करनी चाहिए।

चिकित्साशास्त्र मांसाहार का विरोधी है

मांस भक्षण के विरोध में हमारे सामने चिकित्सकों की जो चिकित्सा शास्त्र के मर्मज्ञ है और जो इस विषय पर अधिकार पूर्वक बोल सकते हैं बहुत सी सम्मतियां हैं। उनमें से हम पश्चिम के चिकित्सकों की ३-४ सम्मतियां पेश करते हैं।

" Flesh is an unnatural food, and, therefore, tends to create functional disturbance, modern civilisation is affected with such terrible diseases (Readily Communicable to man) as cancer consumption, Fever, intestinal worms etc to an enormous extent There is little need for wonder that flesh eating is one of the most serious causes of the disease that carry off ninety nine out of every hundred people that are born."

(Josiah old field, D C L M A M R. C S L R. C A Senior physician Lady Margaret Hospital Bombay Herald of the Golden Age. 'I bid P 6 11-1-37)

अर्थात् मांस अस्वाभाविक भोजन है। इससे नासूर, तपेदिक, बुखार, अतड़ियों की खराबी इत्यादि संक्रामक रोग होजाते हैं। जिस रोग से १०० के पीछे ९९ व्यक्ति मरजाते हैं मांसभक्षण उस का एक मुख्य कारण है।

"We can affirm almost with certainty that a vegetarian never contracts this malady The cause of appendicitis is, therefore, flesh-eating (Dr Victor Panchet, La Reforme All men taire, I Bid P 14, 15,"

हम निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि निरामिष भोजी को प्रायः पेट के फोड़े की बीमारी नहीं होती। इस बीमारी का कारण मांसाहार है।

विज्ञान मांस भक्षण के विरोध में है।

मांस भक्षण के विरोध में विज्ञान की बहुत सी स्थापनाओं में से हम कतिपय स्थापनाओं को देते हैं।

Comparative Anatomy teaches us that man resembles the frugivorous animal in every thing, the Carnivorous in nothing (I bid P 4. 11-1-18.

शरीर शास्त्र के तुलनात्मक अध्ययन से विदित होता है कि मनुष्य प्रत्येक बात में शाकाहारी

जीवों से मिलता जुलता है, माँसाहारी जीवों से किसी बात में नहीं।

(प्रो० गैरन)

"To-day there is the scientific fact assured that man belongs not to the flesh-eaters, but to the fruit-eaters To-day there is the chemical fact in the hands of all which none can gain say that the products of the vegetable kingdom contain all that is necessary for the fullest sustenance of human life.

(Josiah old Field)

अर्थात् विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य मांस भक्षियों में से नहीं वरन फलाहारियों में से है। वनस्पति जगतमें वह सब मौजूद है जो मानव जीवन के पूर्णनिर्वाह के लिये जरूरी है।

हीरल्ड आव दि गोल्डन एज

I bid P 6

11-1-17

'It is a vulgar error to regard meat in any form as necessary to life.

'Sir Henry Thompson M D.F R.C S Diet in relation to age, and activity'

मांस को किसी रूप में जीवन के लिये जरूरी समझना बड़ी भद्दी भूल है।

उपर्युक्त स्थापनाओं से स्पष्ट है कि मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है वरन् इस का सेवन धार्मिक, चिकित्सा तथा वैज्ञानिक इत्यादि दृष्टियों से वर्जित तथा हानिकारक है। इन सब बातों के होते हुए भी मनुष्य क्यों मांस खाता है, यह प्रश्न है जो स्वभावतः उठता है। अधिक विस्तार में न जाकर इसका उत्तर यही हो सकता है कि मनुष्य ने अभ्यास के द्वारा अपनी इन्द्रियों की स्वाभाविकता को अस्वाभाविकता में परिवर्तित कर दिया है और मांस से जहां उसे स्वाभाविक घृणा होनी चाहिए थी और उसकी ओर उसे देखना भी नहीं चाहिए था वहां वह उसे खाने ही लग गया है।

घास तथा तृण खाने वाले पशु मांस की ओर देखते भी नहीं और इसी प्रकार मांसाहारी पशु घास की ओर दृष्टि नहीं उठाते है। परन्तु मनुष्य विचित्र पशु है वह भक्ष्याभक्ष्य सबको उदरस्थ कर जाता है। इस सम्बन्ध मे उसे पशुओं से विशेष शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति की स्वाभाविकता की रक्षा करनी चाहिए।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि मनुष्य का स्वाभाविक भोजन क्या है ?

मनुष्य का स्वाभाविक भोजन फल है। यह उसके दांतों की बनावट से स्पष्ट है—उसके दांत मांसाहारी और वनस्पतिभक्षी दोनों प्रकार के जीवों से भिन्न हैं और फलाहारी जीवों से मिलते हैं।

आगे के लेख में हम मांसाहारियों की दलीलों पर विचार करेंगे।

सिंहाली नव-वर्ष

(एक प्रत्यक्षदर्शी द्वारा)

(अंग्रेजी से अनूदित)

सीलोन (लंका) में अप्रैल का १३वां दिन एक महत्त्व पूर्ण दिन होता है क्योंकि उस दिन सिंहालियों का नव वर्ष होता है। पुर्तगाल वालो के क़ब्जे में आने और ईसाइयत का सूत्रपात होनेसे पूर्व और उस समय जब प्रत्येक सिंहाली-बौद्ध धर्मावलम्बी था 'नववर्ष' एक राष्ट्रीय त्यौहार था। परन्तु कालान्तर में ईसाइयत के प्रचार के कारण इस प्राचीन त्यौहार का मनाया जाना केवल बौद्धों तक सीमित हो गया। सिंहाली नव-वर्ष सदैव एक सामाजिक घटना है जो सीलोन के मनोरम द्वीप की बौद्ध जाति के अन्तरतम जीवन मे प्रविष्ट हुई हुई है। फ़र्वरी के मध्यसे हीनए वर्ष का आगमन अनुभव होने लगता है। क़स्बों मे, गावों में और द्वीप के विभिन्न भागो में 'रबाना' (ढोल) की आवाज़ सुनाई देती है जिसके चारों तरफ़ बैठी हुई देवियां उसे बजाती रहती हैं। 'रबाना' नव वर्ष की खास चीज़ होती है और प्रत्येक बौद्ध जमींदार 'रबाना' रखने मे गर्व अनुभव करता है। 'रबाना' का साइज़ और प्रकार मालिक के धन और प्रभाव के अनुपात से छोटा बड़ा होता है।

शिक्षित और सभ्य देवियों को छोड़ कर "रबाना" सीलोन की आम स्त्रियों के मनोरंजन का एक मात्र साधन है और वह भी सालमें एक बार। इस लिये इस अवसर का अच्छे से अच्छा उपयोग करनेका उनका अधिकार है, भलेही दूसरों को इमसे तकलीफ़ और दिक्कत ही क्यों न होतीहो। ज्यों ज्यो दिन नज़दीक आते जाते हैं त्यों त्यों "रबाना" का बजना बढ़ता जाता है, यहां तक कि दसवीं अप्रैल से तेरहवीं अप्रैल तक दिन रात सिवाय उसकी आवाज के और कुछ सुनाई नहीं पड़ता, भले ही लोगों को "रबाना" का बजाया जाना भद्दा ही क्यों न देख पड़े परन्तु स्त्रियां जो उसे बजाती हैं उसमें से खास राग निकलता हुआ अनुभव करती हैं और अपने अभिनय की श्रेष्ठता मे निमग्न हुई देख पड़ती हैं।

नव वर्ष! प्रत्येक चीज़ नई होनी चाहिये। तमाम घर यहां तककि रसोईके बर्तनभी नया रूप लेते हैं। मार्च के अन्त तक मकानों की मरम्मत और सफ़ेदी इत्यादि हो जाती है। नये पर्दे लगादिए जाते है। नये बर्तन खरीदे जाते हैं और फरनीचर Furniture इत्यादि साफ किया जाता है। किन्ही २ पुराने विचार के घरों मे घर के मुखिया यहां तक करते हैं कि तमाम मौजूदा फरनीचर (Furniture) को निकालकर उसकी जगह नया खरीदते हैं, यत्न यह होता है कि जिस तरह भी हो नया वर्ष आराम और खुशी के वातावरण में शुरू होना चाहिये।

त्यौहार वाले दिन से लगभग एक सप्ताह पहिले से स्त्रियां काम में जुट जाती हैं। पोस्ट-आफिस सेविंग बैंकों से पैसा निकाल लिया जाता

है और साल भर की जमा की पाई पाई बाहर निकाल ली जाती है। कुली लोग खाने पीने की चीजो से लदे घरमे आते जाते हैं और घर की मालकिन सामान को बीनती है और अपने अधीनस्थ घर के लोगो को हर एक को काम बांट देती है और खाने पीने इत्यादि का तमाम प्रोग्राम निश्चित कर देती है। उस हफ्ते मे और उससे आगे घर की मालकिन वस्तुत. बड़ी शान की व्यक्ति होती है और उसकी बुद्धि की परीक्षा मिठाइयो की तैयारी मे ही होती है, क्योंकि वह घर, घर नहीं कहलाता है जो नव वर्ष के लिये बहुत सा और तरह २ की मिठाइयां तैयार न कर सकता हो। इन मिठाइयो का बनाया जाना नव वर्ष की शाम तक जारी रहता है जबकि खाने के पुराने बर्तन हमेशा के लिये फेंक दिये जाते हैं और समाप्त होने वाले साल की रसोई की आग हमेशा के लिये बुझा दी जाती है।

महान दिन का उदय होते ही घरो मे ताले लगा कर लोग सबसे नजदीक के चश्मे या नदी पर चले जाते हैं और परम्परागत तेल से स्नान करने लगते हैं अर्थात् सिर से लेकर पैरो तक (गिंगली) का तेल लगाते हैं और अच्छी तरह स्नान करके उस तेल को धोते है या यों कहिये कि पिछले साल की गंदगी को वही छोड़ आते हैं।

नये साल के स्नान के बाद सिर पर तौलिया रखे हुये और हाथ में छोटा सा बर्तन लिये हुए सड़कों और कूचों में स्त्रियो की कतार का देखना बड़ा सुहावना देख पड़ता है। वे अपने घर लौट आये हैं परन्तु अभी तक घर में नहीं घुसे हैं, जब तक शुभ मुहूर्त का निश्चय नही कर लिया जायगा तब तक न ताला खोलेंगे और न घर मे घुसेंगे। पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियां इस सम्बन्ध मे ज्यादा सावधान रहती हैं, क्योकि यह उनका दृढ़ विश्वास है कि आने वाले साल का तमाम सुख और खुशी, शुभ मुहूर्त मे घर मे घुसने और रसोई की आग जलाने पर निर्भर करती है। घर मे घुसने पर सबसे पहला काम जो वह करती हैं वह नये खरीदे हुये बर्तन मे कुछ दूध का गरम करना है।

इसके बाद जो कुछ होता है उसके वर्णन करने की जरूरत नही। तमाम नगर मे आमोद प्रमोद और खुशी मनाई जाती है। भिन्न भिन्न प्रकार के नृत्य और सगीत से वातावरण गूज उठता है। प्रत्येक व्यक्ति एक प्रकार के अलौकिक आनन्द मे मग्न हो जाता है। उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपनी खुशी के आदर्श की भावना के अनुसार खुशी मनाने मे अपने को बिलकुल स्वतन्त्र समझता है।

लगातार तीन दिन तक यह खुशी जारी रहती है। उसके बाद 'भेंटो' का आदान प्रदान शुरू होताहै भीड़ से अटे हुए रास्तो मे लड़कियां घर की बनी मिठाइयो की टोकरी जिनमे कड़ियां भी रक्खी रहती हैं ले जाती हुई देख पड़ती हैं। वे मित्र रिश्तेदार या अन्य किसी शुभचिंतकके घर नववर्ष का उपहार ले जाती हैं। वे लड़कियां खाली हाथों या उनकी टोकरियां खाली शायद ही लौटती हैं। इस प्रकार आने वाले तमाम वर्ष के लिये शुभ

शिक्षा-समस्या

(ले०—रामशरणदास अनूपशहर यू० पी०)

(१)

शिक्षा का अर्थ विकाश है अर्थात् अन्धेरे में से प्रकाश में लाना। इससे मानसिक, आत्मिक और शारीरिक शक्तियों का विकाश होता है। एक जर्मन विद्वान् का कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य बुद्धि से नियन्त्रित स्वतन्त्रता प्राप्त करना और हृदय में आस्तिकता के भाव भरना है।

मनुष्य मनन और संगति द्वारा बनता है चाहे वह संगति जीवित पुरुषों के साथ हो या उनके पश्चात् उनकी रचनाओं से हो। जैसी भी संगत होगी उसी प्रकार के उसके विचार होंगे। यथार्थ के न समझने के कारण भी विचारों में भेद हो सकता है। यही कारण है कि भिन्न २ विचार वालों के अनेक समुदाय और सम्प्रदाय बन गये जिन से परस्पर में वैमनस्य की बहुत सी खाइयां बन गई, शान्ति नाशक युद्ध हुए और हो रहे हैं जिसकी साक्षी में इतिहास बने हुए हैं। यदि रामायण और महाभारत के समय पर विचार करते हैं तो कहीं आकाश पाताल के सदृश अन्तर दिखलाई पड़ने लगता है कहां तो एक ओर त्याग बढ़ा हुआ है और कहां दूसरी ओर इतना अधिक लोभ है कि सूई के अग्र भाग समान भी पृथ्वी देने के लिये इन्कार है और भारत के भाग्य को उलटने वाला युद्ध आरम्भ हो जाता है। आज भी किसी किसी मजहब में इतनी असहिष्णुता है कि वे अपनी वास्तविक बुराइयां और दूसरे मजहबों की भलाइयां सुनने में अपना इतना अपमान समझते हैं कि प्राणों के ऊपर भी आ बनती है। जब हम सब परमात्मा के मानने वाले हैं और मनुष्य से लेकर सब जातियां समान रूप में होने के कारण एक ही कर्ता सिद्ध होता है तब समझ में नहीं आता कि एक का परमात्मा तो आरती से प्रसन्न हो और उसी से दूसरों को अप्रसन्नता हो। हमें तो यह कुशिक्षा का ही फल प्रतीत होता है। समय समय पर समय और स्थान के विचार से कानून के रूप में शास्त्र बने हैं उनको

कामनाओं, मित्रता और सामाजिक भ्रातृभाव के अन्तिम आदान-प्रदान के साथ यह महान वार्षिक त्योहार समाप्त होता है।

इस सम्बन्ध में यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि अप्रैल का तेहरवां दिन हिन्दुओं का भी नव वर्ष का दिन है। तीन दिन बाद अर्थात् सोलहवीं अप्रैल को बर्मा वालों का नव वर्ष होता है। यह सब पास २ के लोग जो रहन-सहन, रीति-रिवाजों और धर्म मे एक दूसरे से इतने भिन्न हैं भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता के एक ही सूत्र मे बंधे हुए थे इसमें सन्देह नहीं हो सकता है।

ही सदैव और हर स्थान के लिये मानना एक बड़ी भारी गलती है। जिस मनुष्य की उत्तम शिक्षा होगी वह सब में समानता के भाव रखता हुआ और कर्मों के अनुसार मनुष्य को भोक्ता मानता हुआ जीवन व्यतीत करेगा। वह जानता है कि धर्म में कभी परिवर्तन नहीं होता है वह तो सब के लिये सामान्य रूप में है। इसलिये विचारवान् पुरुषों ने कहा है कि विद्या ही मुक्ति दाता है।

विद्या ददाति विनय, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्म्मं तत सुखम्॥'

Good Education builds a nation while bad Education destroys a nation, अर्थात् उत्तम शिक्षा राष्ट्र की निर्माता है और बुरी शिक्षा राष्ट्र को नष्टकरने वाली है।

प्राचीन काल—पहिले शिक्षा के वास्तविक अर्थ की पूर्त्ति पर माता, पिता, और आचार्य तीनों का ध्यान रहता था। माता-पिता अपने बच्चों को गुरू के यहा पर भेजने के पहिले ही बहुत कुछ पढ़ा दिया करते थे। गुरु-शिष्य भाव ही उस समय को सतयुग बनाये हुए था। चरित्र निर्माण, सादगी, कर्तव्यपरायणता आदि की नींव पर शिक्षा रूपी विशाल भवन निर्माण किया जाता था। पाठ्य विषयों की प्रधानता थी। उनके द्वारा ही भाषा का ज्ञान कराया जाता था चाहे औद्योगिक विषय का ही विद्यार्थी क्यों न हो उसे भी आध्यात्मिक विषय सरल रूप में रखना ही होता था। मानवधर्म अथवा सामान्यधर्म-"धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह । धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम्" का पाठ प्रत्येक को क्रिया रूप में करना पड़ता था। यह कारण था कि आर्य-जाति उन्नति के शिखर पर थी और ससार भर के विद्यार्थी यहा विद्या प्राप्त करने आते थे। अभी १३०० वर्ष ही हुए हैं कि यहा पर नालन्दा विश्व-विद्यालय था जिसमें १०००० दस हजार विद्यार्थी नि शुल्क शिक्षा प्राप्त करते थे और १५०० विद्वान् अध्यापक थे। संस्कृत राज भाषा थी। इससे और भी प्राचीन समय में और भी उत्तम शिक्षा होना चाहिये। मैगस्थनीज़ अपने समय में लिखता है कि यहा ताले नहीं थे न्यायालयों में कोई विरला ही जाता था, चोरी नहीं होती थी, सत्य का प्रचार था, आदि।

संस्कृत भाषा में आध्यात्मिक, सदाचार, वैद्यक इत्यादि सम्बन्धी पुस्तकों का भंडार है। वाचस्पति मिश्र एक उच्च कोटिके दार्शनिक पडित थे। सरस्वती पुत्र थे। लक्ष्मी ने यतावद्वेश इनको यहा तक कष्ट दिया कि इनको इमली के पत्तों पर उदर पूर्ति करनी पड़ी पर वह अपने पथ से विच-लित नहीं हुए। त्याग ही प्रिय था। न तो धन में लोभ था और न स्त्री और पृथ्वी में ही मोह था। सीता, सावित्री, गार्गी आदि सी साध्वी माताय थीं। अभिमन्यु को चक्र सम्बन्धी शिक्षा गर्भ में ही मिली थी। यहा पर सस्कृत की उत्तम शिक्षा होने से अनेक प्रसिद्ध योगी होगये जिनकी समता कहीं पर भी नहीं है। ससार विजेता एलेग्जन्डर ने इस देश पर चढ़ाई की पर वह भी महात्माओं के दर्शन करने में अपने को कृतार्थ समझ कर लौट गया। बीते समय में भी भक्तों

की विचित्र कथायें हैं यह सब कुछ जादू उत्तम शिक्षा में ही है।

माता-पिता से शिक्षा प्राप्त बच्चों को गुरुकुलों में भेजदिया जाता था। वे ब्रह्मचर्यावस्था तक वहीं रहते थे। आचार्य्य वानप्रस्थी होते थे। शिक्षा निःशुल्क थी। प्रकृतिकी गोदमें हरे २ वृक्षों के नीचे अति उत्तम समीर में ग्राम से दूर विद्यालय होते थे। विद्यार्थी अपने को पुष्ट और सुडौल बनाने के लिये प्राकृतिक व्यायाम किया करते थे। लड़के और लड़कियों के लिये शिक्षालय अलग अलग कुछ दूरी पर होते थे। लड़कों को पाठशालाओं मे पुरुष और लड़कियों की पाठशालाओं में स्त्रियें पढाया करती थीं। यही कारण है कि बच्चे इतने बलवान् और सुन्दर होते थे और भरत समान शेर के बच्चों के साथ खेला करते थे। १०० वर्ष की आयु होती थी। आज भी मनुष्य पृथ्वीराज के उस कवच को जिसे वह युद्ध में पहन कर विजय प्राप्त करता था उसे देख कर अचम्भित होते हैं। पहिले सर्दी और गर्मी की कठोरता को सहन करने की शक्ति थी। विद्यार्थियों के प्रेम में उनके माता-पिता की धनाढ्यता और निर्धनता कोई भेद उत्पन्न नहीं करती थी। कहा योगिराज श्री कृष्ण भगवान् और कहां निर्धन ब्राह्मण सुदामा जिनकी मित्रता अभीतक प्रसिद्ध है। यह उत्तम शिक्षा ही है कि राजा भी विद्यार्थियों का सम्मान करता था।

मध्यकाल—प्राचीन शिक्षा में शनैः शनैः अधोगति की ओर परिवर्तन होने लगा। वेदों के नाम पर पशुबलि होने लगी। होते होते यवन राज्य स्थापित हुआ। उस समय हमारी शिक्षा का पूर्ण ह्रास हो चुका था। हमारा शिक्षण फारसी द्वारा होने लगा। इसने हमें हमारे धर्म- कर्म काण्ड, वर्ण और आश्रमों की शिक्षा से अनभिज्ञ रक्खा। हमारी शिक्षा न होने के कारण संगठन-शक्ति क्षीण हो गई, स्वार्थ बढ़ गया और हम इतने निस्तेज हुए कि हमे अपनी भलाई का भी विचार न होता था। ऐसे अन्धकार के समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का प्रादुर्भाव हुआ उन्होंने खोई हुई प्राचीन संस्कृति प्राप्त करने और सब को पुनः सच्चे सीधे वैदिक मार्ग पर लाने के हेतु प्राचीन शिक्षा का पुनरुद्धार किया। एक उत्तम पाठ-विधि जनता के सम्मुख रक्खी जिस के अनुसार गुरुकुल खोले गये। संस्कृत की पाठशालएँ स्थापित की गई इसके पश्चात आर्य-समाज ने अपने प्रवर्तक के सिद्धान्त के प्रतिकूल अनेक अंगरेजी भाषा की बड़ी २ संस्थाएँ अपने कार्य की उन्नति करने के विचार से खोलीं और अब आधुनिक भाषा के कारण विचारों में परिवर्तन होने से या उसी में रहने के कारण और भी संस्थाएँ खोलते जा रहे हैं। इसलिये हम कह सकते हैं कि आर्य समाज को इस कार्य में पूर्ण असफलता प्राप्त हुई है। राजा राममोहनराय एक बड़े सुधारक और एक सम्प्रदाय के जन्मदाता थे। वे उस समय की शिक्षा प्रणाली से असन्तुष्ट थे यदि वे चाहते तो उसी में राजनैतिक वैज्ञानिक आदि व्यावहारिक विषयों का समावेश करके उसे सर्वांग पूर्ण कर सकते थे, पर दुर्भाग्यवश नवीन स्फूर्ति उत्पन्न करने के हेतु अंगरेजी भाषा की संस्थाओं के खोलने में प्रबल पक्ष लिया जिसका परिणाम आज देखने में आरहा है। (क्रमशः)

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

आर्य्य

श्री कुंवर चान्दकरण जी शारदा 'आर्य्य समाज का महत्व' शीर्षक में 'आर्य्य' शब्द का महत्व दिखलाते हुए लिखते हैं —

'आर्य्य' शब्द का यौगिक अर्थ ज्ञान गमन प्राप्ति है। अतः प्रगति शील और ज्ञानवान् होकर अपने उद्देश्य को सिद्ध करना प्रत्येक आर्य्य का कर्त्तव्य है। आर्य्य विद्वानो ने ही आर्य्य शब्द का यह प्रथम अर्थ करके बतलाया कि आर्य्य के लिए (Knowledge is power) अर्थात् ज्ञान ही शक्ति है। अतः आर्य्य पुरुषो के लिये गायत्री जप और 'धियो यो न. प्रचोदयात्' परमात्मन् आप हमारी बुद्धियो को प्रकाशित कीजिए, ऐसी प्रार्थना करना नित्य प्रति की संध्या हवन मे एक विशेष अंग हो गया। इतने पर ही आर्य्य पुरुष सन्तुष्ट न रहे बल्कि प्राप्ति अर्थ की सिद्धि के लिए कर्म वीर होकर Power of acquisition अर्थात् वस्तु प्राप्तिके लिए कोरी बातें न बनाकर बल सचय करने का मार्ग भी हमे बताया। इसी वास्ते श्रीघनश्याम सिंह जी गुप्त के एसेम्बली मे पास हुए आर्य्य विवाह बिल मे आर्य्य की कोई खास व्याख्या न हो सका।

इसके आगे शारदाजी इस व्यापक व्याख्याका खडन करते हुए कि आर्य समाज के पास अब कोई प्रोग्राम नहीं, आत्मिक उन्नति के प्रोग्राम की ओर सकेत करते हुए आर्य नर नारियों को इसे अपनाने पर बल देते हैं। व लिखते है —

"आर्य समाज के सामने सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रोग्राम आत्मिक उन्नति का है। इस प्रोग्राम से योरुप और एशिया दोनो सुख और शान्ति प्राप्त कर सक्ते है। प्रिय आर्य पुरुषो आप के परम पवित्र वैदिक धर्म को सारे ससार के दूसरे धर्म अपना आदि स्रोत मान रहे है। योरुप के बड़े तत्ववेत्ता स्वीकार कर रहे है कि हमारा सारा दर्शन शास्त्र Aristotle और Plato के सिद्धान्तो पर स्थित है और Aristotle और Plato का ज्ञान भारतीय दर्शन शास्त्रो के आधार पर है। अत आर्य संस्कृति को सब ने ससार की सारी संस्कृतियो से श्रेष्ठ माना है। हाल मे ही डाक्टर G. A. Godin surgeon General of the Victorian institute London In his mirror नामक समाचार पत्र मे लिखते है—Greek Romans learnt from India of Vedic age अर्थात् ग्रीक, रोमन लोगो ने जिन से कि योरुप वालो ने सभ्यता सीखी, उन्होने खुद भारत से ज्ञान प्राप्त किया। अतः आर्य पुरुषों और देवियो को ससार के सामने अपना आदर्श सदाचारी जीवन व्यतीत करके बिताना चाहिये। आर्यों को अभिमान करना चाहिय कि उनको विरासत मे वैदिक सभ्यता जैसी सर्व श्रेष्ठ सभ्यता प्राप्त हुई है। क्या आर्य

पुरुष इस ओर ध्यान देंगे और पारस्परिक कलह, ईर्षा, द्वेष त्याग कर यह समझेंगे कि यह शरीर तो नाशवान् है। आत्मा शरीर से भिन्न है। इस आत्मा की उन्नति के लिए शरीर को स्वच्छ रखते हुए, सत्य-अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह का आचरण आवश्यक है। आर्यसमाज के समासदों को छोटे छोटे कामो से ही इस उन्नति के मार्ग पर चलना चाहिये। यदि आर्य पुरुष साप्ताहिक, अधिवेशनो मे प्रति रविवार को सपरिवार आना प्रारम्भ करदें, और सप्ताह मे २ घन्टे भी साप्ताहिक सत्सगके लिये निकालदें तो श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के शब्दों मे आर्य समाज की काया पलट सकती है और संसार के सामने हम आत्मिक उन्नति का शारीरिक और सामाजिक उन्नति के साथ साथ उत्तम आदर्श उपस्थित कर सकते हैं।

——

एक और एक ग्यारह

संगठन की रक्षा और दृढ़ता के लिये उसके सदस्यों मे तीन गुणो का अर्थात् नियंत्रण, आत्म-त्याग और आत्मपरिचय का होना अनिवार्य होता है। श्री बा पूर्णचन्द्र जी आर्यमित्र मे 'एक और एक ग्यारह' के शीर्षक मे इन तीनों गुणों पर आर्य्य समाज के हवाले से प्रकाश डालते हुए लिखते हैं:—

(१) नियन्त्रण— यह स्वतन्त्रता का युग है। इस लिये स्वतन्त्रता को पसन्द करने वाले व्यक्ति अपना व अपने समाज का सङ्गठन तो चाहते हैं, परन्तु नियन्त्रण नही चाहते। यह बहुत बड़ी भूल है। चाहे कितनी ही बड़ी संस्थाएं क्यो न हो, परन्तु जब तक उनका कोई नेता न होगा, सफलता प्राप्त नही हो सकती। बड़े से बड़े प्रजातन्त्र मे सभापति अथवा राष्ट्रपति की आवश्यकता होती है। क्रियात्मक सफलता के लिये तो यहां तक आवश्यक है कि छोटी से छोटी सस्था की काय-कारिणी हो बलिक ज्यादा अच्छा तो यह समझा जाता है कि किसी को डिक्टेटर नियत कर दिया जावे। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के संघटन मे स्वतन्त्रता और नियन्त्रण का बड़ा सुन्दर समावेश किया है। दसवां नियम इसका द्योतक है। यह बड़े दुःख की बात है कि आर्य-समाज के पवित्र संघटन मे भी कही-कही उच्छृङ्खलता दृष्टिगोचर होने लगी है। परन्तु यह एक सामयिक घटना है। जो सूर्य के मुख को अधिक देर तक नही छिपा सकती। हमारा अनुभव है कि नियंत्रण का विरोध निर्बलता करती है। किसी ने कहा है कि—"Obedience is the first school to Command" अर्थात् यदि किसी को हाकिम बनना है तो सबसे प्रथम उसे आज्ञापालन सीखना चाहिये। सेना का सबसे बड़ा सेनापति साधारण सैनिक से बनता है। किसी नियन्त्रण मे रहना सबसे सच्ची और बड़ी स्वतन्त्रता है। यह प्रसिद्ध कहावत है कि बेसिरी फौज मारी-मारी फिरती है।

२—नियंत्रण के साथी संघटन का दूसरा सफल

उपाय आत्म त्याग है। नेता और प्रजा दोनों के लिये आत्म-त्याग आवश्यक है। नेता बनने के लिये हमे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति का विचार न कर प्रजा के हित साधन का ध्यान रखना होगा और प्रजा को अपना स्वार्थ छोड़ कर नेता की आज्ञा माननी होगी। स्वेच्छाचारिता सांघातिक नीति है इस इच्छा से काम करने वालों के सघटन का नाम ही गुट्ट और दलबन्दी है। यह दलबन्दी चाहे धार्मिक जगत् मे हो चाहे राजनैतिक क्षेत्र मे, दुःखदायिनी ही होती है। दलपति होने या दल बनाने के लिये विशेष प्रकार के उच्च आदर्शों की आवश्यकता है, और उनकी पूर्ति के लिये ही सघठन होना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने उपर्युक्त १० वें नियम मे ही सर्व हितकारी कामो के सम्बन्ध मे आत्मत्याग की शिक्षा दी है। आत्म त्याग की कमी ने आर्यसमाज सम्बन्धी पवित्र कार्यों को बहुत दूषित बना दिया है। गुट्टबन्दी निर्वाचन के शुद्ध स्वरूप को कलंकित कर देती रही है। ऋषि दयानन्द स्वतन्त्र निर्वाचन के समर्थक और अनधिकार चेष्टा व पक्षपात के घोर विरोधी थे। उनका आत्म त्याग यहां तक प्रसिद्ध है कि उन्होने अन्तरङ्ग सभा का सदस्य न होते हुए सभासदो के अत्यधिक आग्रह करने पर भी समाज के कार्यों मे अपने वोट का उपयोग नही किया। इसी लिये आर्य जगत् मे उनको गौरव प्राप्त है।

३–आत्म-परिचय—नियंत्रण व आत्म-त्याग से भी अधिक आवश्यक आत्म-परिचय है। प्रत्येक को अपनी योग्यता का पता होता है और यदि न हो तो हो सकता है। किसी भ्रम मे पड़ अपने को अधिक योग्य समझें तो यह सम्भव है परन्तु हमें अपनी योग्यता का पता न हो—यह एक भयानक भ्रम है। प्रबन्ध की दृष्टि से सबको समान अधिकार है, परन्तु अधिकारके साथ कर्तव्य पालन का भी विचार लगा हुआ है और कर्त्तव्य पालन योग्यता पर अवलम्बित है। सबको प्रधान बनने का अधिकार है परन्तु जिसको प्रधान बनाया जाय उसको भी तो यह सोच लेना चाहिये कि मुझ मे इस पद की योग्यता है भी या नही। अयोग्यो के लिये केवल प्रसिद्ध होने या अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये किसी ऐसे कार्य के करने का भार अपने ऊपर लेना जिसके वह योग्य न हो, भयकर पाप है। अयोग्य और अनधिकारियों के हाथों मे अधिकार पहुंच जाने से बड़ी बड़ी हानि होती है। इस त्रुटि का केवल यही उपाय है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी शक्तियो को ठीक-ठीक समझ कर काम करे। इसके लिये न कोई नियम हो सकते है और न कोई विधान बन सकता है। इसकी पूर्ति तो क्रियात्मक और धार्मिक जीवन पर निर्भर है। आज केवल उक्त त्रुटि के कारण भयकर परिणाम निकल रहा है। उपर्युक्त तीनो उपाय सघटन के आवश्यक अङ्ग और एक और एक ग्यारह की कुञ्जी है।

शंकर और मूलशंकर

प जमुनादास जी वकील स्यालकोट 'शंकर और मूल शंकर' शीर्षक में दोनों की विभिन्नता दिखलाते हुए 'आर्यगजट' मे लिखते है :—

शकर को केवल अपने देशवासी वाममार्गियों

या वैदिकधर्मियो से ही मुकाबला करना था परन्तु मूलशंकर को अपने देशवासी और विदेशी मतों से लड़ना पड़ा। इसलिए दोनों की नीति और विचार भूमि मे भेद हुआ। शंकराचार्य को उस समय के वाममार्गियो, भोगवादियो को सही मार्ग पर लाने के लिए आत्म वाद पर जार देना पड़ा। मगर मूलशंकर (दयानन्द) को जहा देशी और विदेशी भोगवादी मतो क मुकाबिल मे आत्म-त्याग पर जोर देना पड़ा वहीं खोखल वादके विरुद्ध भी आवाज उठानी पडी। इस लिए स्वामी दयानन्द ने समष्टिवाद का प्रचार किया अर्थात् भक्ति, व्यक्ति और शक्ति का मिलाप करने से भोगवाद और त्याग वाद के बीच के मार्ग पर चलनेका उपदेश किया। शंकरने इसके विपरीत मायावाद का आश्रय लेकर त्याग पर जोर देते हुए भोगवाद का हर प्रकार से खडन किया। शरीर से घृणा करना सिखाया। शरीर के सम्बन्धो से और इस प्रकार दुनिया के धन्धो से दूर भाग जाने का उपदेश किया। परिणाम यह हुआ कि शकर के प्रचार से हिन्दुओ मे व्यक्तिगत जीवन और आत्म प्रेम इतना बढ़ गया कि प्रत्येक अपनी शक्ति के लिये यत्न करता हुआ दूसरा की तरफ़ से विलकुल लापरवाह हो गया। स्वार्थ जोर पकडता गया और सामाजिक जीवन का नाश हो गया।

ज्यो २ शंकर का नवीन वेदान्त ज़ोर पकड़ता गया हिन्दु खुदगर्ज बनता गया और सामाजिक जीवन तग होता गया। आजकल हिन्दुओ के भीतर जो व्यक्तिगत या स्वार्थी जीवन पाया जाता है (और जो हिन्दुओ के छिन्न भिन्न और असंगठित होनेका एक प्रधान कारण है।— संपादक सावदेशिक) इसके लिये शकर का नवीन वेदान्त बहुत हद तक जिम्मेवार है। ऋषि दयानद ने गृहस्थ जीवन की महिमा का गान करके भोग वाद को उचित स्थान देते हुए सन्यास आश्रम की उपेक्षा नहीं की और अपने अमल से त्याग की महिमा दर्शाई है। जितना जोर श्री स्वामी शकराचार्य जी ने शरीर से घृणा और ससार से विमुख होने पर दिया है उतना जोर दयानन्द ने शरीर का उन्नति और सामाजिक सेवा पर दिया है। मूलशंकर सामाजिक जीवन को कोरे व्यक्तिगत जीवन पर तरजीह देता है। दोनो के ख़यालात मे बहुत भेद है। शकर दुनिया को माया कह कर उसे असलीयत नहीं समझता। बल्कि उसे धोखा मानता है। वह आत्माको ही मुख्य तत्त्व समझता है। मूलशकर दुनियाको मिथ्या माननेके बजाय उसे एक वैसी ही असलियत समझता है जसी आत्मा को। शंकर इस सारे ब्रह्मांड और प्रत्येक शरीर और प्रत्येक वस्तु मे एक ही आत्मा मानता है। वह परमात्मा और जवात्मा में कोई भेद नहीं मानता। उसके खयाल में जीवात्मा से भिन्न कोई विश्व व्यापी आत्मा नही है। अन्तः करण रूपी उपाधि दूर हो जाने पर मनुष्य का आत्मा परमात्मा है। मूलशकर जीवात्मा को परमात्मा से तीनो 'कालो' में पृथक् मानता है। अन्त करण रूपी उपाधि मूलशकर के ख़याल मे कभी नष्ट नही होती। इसलिये जीवात्मा कभी परमात्मा नही बन सकता।

शङ्कर ने शरीर, स्थूल, सूक्ष्म इन दो को नाश करके अपने आत्मा में लीन होकर मुक्ति पाने पर जोर दिया उसके ख्याल में अपने आत्मा में लीन हो जाना ही मुक्ति है। मूलशङ्कर के ख्याल में अपने अन्तःकरण को शुद्ध करके उसमें ईश्वरीय गुणों का संचार करके अपने आत्मा को परमात्मा के गुण कर्म और स्वभाव के अनुकूल बनाना मुक्ति है। आत्मिक आदर्शों के भेद के कारण स्वभावतः दोनों के दैनिक जीवन के प्रोग्राम में भेद हुआ। शङ्कर ने जहाँ केवल तर्क वितर्क से काम लिया वहाँ मूलशङ्कर ने तर्क वितर्क के साथ साथ समाज के आगे विद्या प्रचार, शुद्धि, अनाथ—रक्षण इत्यादि का अमली प्रोग्राम रक्खा। आत्मिक आदर्श के भेद के कारण दोनों की प्रचार शैलीमें भेद हुआ। शङ्कर ने मठ System जारी किया। अपने चेलों को खास २ स्थानों पर नियत करके उनके सुपुर्द प्रचार का काम सुपुर्द किया। वे नि`त समय पर चढ़ावे चढ़ाने और पूजा करने लग पड़े। व्यक्ति पूजा शुरू हुई। मूलशङ्कर ने मठधारी नीति को हानिकारक समझा और प्रजातन्त्र प्रणाली को प्रचारक के लिये पसन्द किया और अपने प्रतिनिधि आर्य्य समाज के सुपुर्द काम किया। आर्य्य समाज के प्रबन्ध में बहुमत से प्रबन्ध करने का असूल कायम किया।

— हिन्दी चरित्र शुद्धि

महात्मा गांधी 'हरिजन' में उपर्युक्त शीर्षक में लिखते हैं -

मद्रास में दक्षिणभारत हिन्दी प्रचार-सभा की अंतिम परीक्षा में उत्तीर्ण युवक युवतियों को प्रमाण-पत्र देने के लिए पदवीदान—समारंभ रक्खा गया था। उन्हें तेहरी प्रतिज्ञा लेनी थी—हिन्दी-हिन्दुस्तानी का प्रचार, स्वदेश की सेवा और हिन्दी-प्रचार-सभा की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए चारित्र्य शुद्धि, ये तीन व्रत उन्हें लेने थे। सेवा और चारित्र्य-शुद्धि सम्बन्धी व्रत लेने में प्रतिज्ञाकारों की खास मंशा थी। उनका ऐसा अभिप्राय होना चाहिये कि सभा द्वारा पदवी पाने वाले युवक और युवतियां यदि सेवा-भाव से हिन्दी का प्रचार करें और उनका चरित्र परम शुद्ध हो तो ये दो चीजें इन पदवीधारियों की प्रतिष्ठा को बढ़ायेंगी और वे खुद ही हिन्दी-हिन्दुस्तानी को लोकप्रिय करने के लिये विज्ञापन का सबसे सुन्दर साधन बन जायगी। इसलिये मैंने उन्हें पदवी लेते समय प्रतिज्ञा का स्मरण कराया। अपने कथन का समर्थन करने के लिये मैंने एक हिन्दी शिक्षक के पतन की खबर, जो मेरे पास आई थी, उन्हें सुनाई और कहा कि इस पतन ने हिन्दी प्रचार के काम को कितनी हानि पहुँचाई है। यह बात कहते समय मुझको जरा भी कल्पना न थी कि मुझे अभी क्या २ सुनाना बदा है।

दूसरे दिन सवेरे कोई मेरे हाथ में एक ऐसा पत्र रख गया, जिसमें पं० हरिहर शर्मा के चरित्र के पतन के बारे में ब्यौरेवार बातें लिखी हुई थीं। पंडित हरिहर शर्मा उपर्युक्त प्रतिज्ञा के मूल निर्माता और हिन्दी प्रचार सभा के मन्त्री हैं, और सत्याग्रहाश्रम के आरम्भ-काल से ही वे उसके सदस्य हैं। उन्होंने तथा उनकी पत्नी ने हिन्दी-प्रचारकार्य के लिए पर्याप्त योग्यता प्राप्त की है। बरसों से दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार-आन्दोलन के वे प्राण हैं। आश्रम में उनके प्रति सभी को भारी आदर था। जिनके बारे में कभी

शंका ही नहीं उठ सकती, जिनके विरुद्ध कोई उंगली नहीं उठा सकता, ऐसे आश्रमवासियों में उनकी गिनती होती थी। अतः मैं विश्वास नहीं कर सका कि मुझे जो पत्र मिला वह कहां तक सत्य था। दूसरे दिन सवेरे मैंने उनसे बात की। कुछ समय तो उन्होंने अपने ऊपर लगाये दोषारोप का विरोध किया, पर पीछे उसे छिपाना उन्हें असह्य हो गया और उन्होंने सारी बात कबूल करली। आश्रम के आचार धर्म के अनुसार उन्होंने मुझे अपने पाप-कृत्य को प्रगट करने की इजाजत देदी। मैंने तुरन्त ही सभा की कार्यकारिणी समिति को यह खबर सुनादी। कार्यकारिणी तो यह सुनकर स्तब्ध हो गई, वह ऐसी खबर सुनने के लिए तैयार न थी। पंडित शर्मा ने अपने पतन की वजह से त्यागपत्र भी दे दिया। कार्यकारिणी को उनका त्यागपत्र मंजूर करना ही होगा पर मेरे लिए इस विषय का अन्त यहीं नहीं हो जाता। कोई ऐसा मान सकता है कि ऐसी घटनाओं को प्रकाश में लाने की जरूरत नहीं। जो ऐसा मानते हों उन्हें पूरी पूरी बातों का पता नहीं। जिन संस्थाओं के साथ मेरा निकट का सम्बन्ध रहता है, उन्हें जनसमुदाय—पुरुषों तथा स्त्रियों—के साथ काम लेना पड़ा है। ये संस्थाएं सैंकड़ों स्वयंसेवकों के द्वारा काम चलाती है। उनके पास सिवा एक नैतिक बल के दूसरी किसी भी प्रकार की सत्ता नहीं होती। स्वयंसेवकों पर जनता विश्वास रखती है। क्योंकि वह यह मान लेती है कि उनका चारित्र्य तो शुद्ध ही होगा। जिस क्षण वह अपने चारित्र्य-शुद्धि की साख खो देंगे उसी क्षण उनका प्रभाव कम हो जायगा। पाप पङ्क में फंसी हुई संस्था या व्यक्तियों की पाप के प्रकटीकरण से कभी हानि नहीं हुई।

पंडित शर्मा के पतन से सारे भारतवर्ष के लोक-सेवकों को यह सबक लेना चाहिए कि वे निरंतर अपनी चौकसी करते रहें और जब शत्रु आक्रमण करे तब ऊंघते हुए या गाफिल न पड़े रहें। हमारे लिए घबरा जाने या हताश हो जाने का कोई कारण नहीं। जहाँ तक मैं जानता हूँ हिन्दी शिक्षकों ने साधारणतया चरित्र-शुद्धि के सम्बन्ध में निष्कलंक रहकर अपना कार्य सम्पन्न किया है। पतन सिद्ध हो जाने पर एक भी उदाहरण मैंने जनता में छिपा कर नहीं रक्खा। हम प्रलोभन को आमंत्रण दें इसी तरह प्रलोभन से बिलकुल ही बचने के लिए लोहे के पीजरे में बंद हो कर न बैठ जायें। प्रलोभन जब बिना बुलाये हमारे सामने आ जाय तब उसका सामना करने के लिए हमें तैयार रहना चाहिये। शर्मा ने प्रलोभन को निमन्त्रण दिया इसी से उसका पतन हुआ। उन्होंने अपना शक्ति के ऊपर हद से ज्यादा भरोसा रक्खा। शर्मा जब तक आत्मशुद्धि नहीं कर लेते तब तक वे मेरे ही साथ रहेंगे। संस्था से उनके अदृश्य हो जाने का अर्थ यह नहीं कि उनकी सेवा के कार्यकाल का अंत आ गया है। इस पतन ने यदि उन्हें उनके जीवन में शिक्षा लेने लायक पाठ सिखा दिया होगा तो न तो वे खुद गवायेंगे और न हिन्दी-प्रचार का कार्य ही उनके जैसा प्रौढ़ सेवक हाथ से जाने देगा। भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, की हुई भूल को मान लेना और इस तरह आचरण रखना कि जिस से वह भूल फिर न होने पाये यह मर्दानगी है। इस कार्य के लिए आवश्यक पुरुषार्थ का गुण शर्मा में आवे ऐसी हम आशा रक्खें, और यह प्रार्थना करें कि इस पतन से वे अधिक अच्छे सेवक बनें। कौन नहीं जानता कि संसार के कुछ साधु-संत 'प्रसिद्ध पातकी' थे।

—जगज्जननी का ध्यान

(ले०—श्रीमती विद्यावती देवी जी धर्मपत्नी स्वा० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, बंगलौर)

(१)

तू धन्य मेरी माता, दिन रात तुझको ध्याऊँ ।
तेरी ही धुन की धूनी, दिल मे सदा धुखाऊँ ॥

(२)

तेरी उपासना का, बन जाय मन यह मन्दिर ।
मै बैठ उसके अन्दर, अँधियार सब मिटाऊँ ॥

(३)

तेरी ही ज्योति से माँ, जग जगमगा रहा है ।
मैं भी उसी से अपने, दिल का दिया जलाऊँ ॥

(४)

तेरी ही दिव्यता का, दर्शन करूँ मैं निशिदिन ।
तुझको ही अपने दिल मे, केवल मैं देख पाऊँ ॥

(५)

मम रोम रोम मे तू, रम जा ऐ रम्य माता ।
तव प्रेम रस से अपनी, नस नस को मैं न्हिलाऊँ ॥

(६)

ऐसी कृपा करो मैं, भूलूँ तुझे कभी ना ।
पल भर भी तेरा पल्ला, मै छोड़ने न पाऊँ ॥

(७)

जननी तो मेरी ऐसी, जन मे हो जान जैसी ।
मैं जान अपनी को अब, अन्दर ही जान जाऊँ ॥

—मिरज़ापुर—वनचारी सेवा मण्डल

रिपोर्ट

दिसम्बर सन् १९३९

—❀—

यह पहला आयोजन है कि मिर्ज़ापुर ज़िले के जंगली लोग आर्य्य धर्म्म का सन्देश सुन रहे हैं। यह आयोजन श्री सेठ जुगल किशोर जी बिड़ला की कृपा से शुरू हुआ है—सम्पादक।

साधारण विचार

मिरजापुर की जगली हरिजन जातियों में प्रचार करने का मौका बनारस अछूतोद्धार कमेटी को प्राय मिलता रहता है। जगलियों के रहन सहन, उनके धार्मिक सामाजिक व्यवहार इधर के हिन्दुओं से भिन्न भिन्न तरीके के हैं। उनके पुराने इतिहास और प्रचलित ग्रामीण किस्से कहानियों को सुनकर यह ज्ञात होता है कि पहले वे उसी भूमि मे सैनिक के रूपमे रहे होंगे। उनके विशाल शरीर, लम्बी लम्बी भुजा को देख कर यह ज्ञात होता है कि कभी किसी समय में उनका राज्य उन जगलों में अवश्य रहा है। स्थान स्थान पर टूटे फूटे कोट अभी तक पाये जाते हैं। स्थानीय वर्तमान छोटे छोटे स्टेटों के बड़े बूढ़ों से ज्ञात होता है कि ये लोग कई बहुत बड़े बड़े लड़ाइयों में हराए गए हैं और पद दलित किये गये हैं।

तीर कमान का चलाना अभी तक ये लोग खूब जानते हैं किसी बात पर वह धार्मिक हो या सामाजिक धर्म पत्री के नाम पर बहुत जल्द एकत्र हो जाते हैं। संगठन का भाव इनमें कूट २ कर भरा हुआ है। इन हरिजनों में गरीबी अधिक है, पैसे पैसे को मुहताज हैं, बड़ी मुश्किल से इन लोगों का पेट चलता है, मकान फूस और झोपड़ियों के पाये जाते हैं, इनके शरीर पर वस्त्र तो नाम मात्र का रहता है औसत आमदनी इन लोगों की प्रत्येक घर की केवल –)॥ पैसा प्रति दिन की है। इतना होने पर भी कहीं कहीं इन जंगलियों में से बड़े २ जमीदार तक पाये जाते हैं। इन जमीदारों का बड़ा जबरदस्त प्रभाव उन हरिजनों के ऊपर है। जमीदार लोग यह चाहते हैं भी कि हमारी जाति के लोग अति शीघ्र सुधर जायें।

जंगलों में हरिजन कई प्रकार के हैं—

१ कोल २ मुसहर ३ चर्मकार ४ बियार ५ चेरो ६ पनका ७ खरवार ८ मामी ९ भुईहार

इन जातियों में खरवार को छोड़ प्रायः सभी जातियों में प्रचार किया गया है। उपरोक्त जातियों में भुइंहारों की जाति बड़ी खतरनाक होती है वे धनुषबाण अच्छी तरह से चलाना जानते हैं।

शिक्षा का अभाव

जंगलों में शिक्षा की बहुत बड़ी कमी है। डिस्ट्रिक्टबोर्ड मिरजापुर ने बहुत थोड़े स्कूल कायम किए हैं, उन स्कूलों में भी गरीबी के कारण इनके

बालक नहीं पढ़ सकते हैं। दर्जा चार पास पांच विद्यार्थी पाये गये और एक बालक मिडिल में शिक्षा पा रहा है।

सामाजिक जीवन

प्राय शरीर से नगे रहना, केवल काम चलाऊ वस्त्र पहनना, फूस की झोपड़ियों मे निवास, जिन हरिजनों के वर्ग में ब्राह्मण विवाह कराने नहीं जाते वे लोग धनुषबाण द्वारा विवाह अपने से करा लेते हैं। भूत प्रेतों का अधिक विश्वास, स्त्री पुरुषों में स्वतन्त्रता करना एक प्रकारका धार्मिक विश्वास, करमा स्त्री पुरुष दोनों के सम्मिलित गान को कहते हैं। जगलियों के नाच भी होते हैं, उस नाच में स्त्री पुरुष दोनोंको सम्मलित होना पड़ता है। नाच में किसी प्रकार की अश्लीलता नही होती। सदाचार इनमे बहुतायत से पाया जाता है। ताड़ी और गाजा ये अधिक पीते हैं।

पेशा

खेती करना, मजदूरी करना, हल चलाना, डलिया सूप बनाना शहद और लाख निकालना और लकड़ी काट कर बेचना आदि।

आर्थिक संकट

ये लोग काश्तकारों के पास मजदूरी करने जाते हैं, दो पैसा मजदूरी पाते हैं, पैसे के बदले इनको कोई न कोई अन्न मिल जाता है। कर्ज से लदे हैं, अकसर ईसाई लोग क़र्ज़ पर रुपया उधार देते हैं, चुकता न करने पर इनको ईसाई मजबूर होकर होना पड़ता है।

बेगार प्रथा

जगलों में जमींदारों द्वारा बेगार अधिक ली जाती है, आखों देखी घटना है कि हरिजनों से दिन भर बेगार लिया गया, शाम को उन्हें एक पैसा भी नहीं दिया गया। रात्रि को आकर उनका सारा परिवार भूखा सो रहा। बेगारी प्रथा से वे लोग बहुत तङ्ग और दुखी हैं।

ईसाइयों का बृहत् प्रचार:—

उन जगलों में ईसाई अपना प्रचार बहुत कर रहे हैं, हजारों की संख्या में उनको ईसाई बना चुके हैं। ईसाई उनको ईसाई बनाने में बड़े छल और कपट के साथ कार्य लेते हैं। हरिजनों के बच्चों को नये नये वस्त्र देकर लारियों में बैठा कर न मालूम वे कहा ले जाते हैं पता लगाने पर यह ज्ञात हुआ है कि चुनार और मिरजापुर के गिरजे मे उन्हें दाखिल किया जाता है, जिस समय जगलियों से उनके बच्चों को अलग किया जाता है, उस समय बड़ी ही दयनीय दशा उपस्थित हो जाती है। राबर्ट्स गंज में एक गिरजा बहुत पहले से बना हुआ है किन्तु अब दूसरा दश सहस्र का गिरजा तैयार हो रहा है। ईसाइयों को कामयाबी काफी हो रही है।

शुद्धि का प्रचार

जगलियों से ईसाई हुये अपने बिछुड़े बन्धुओं के शुद्धि के सम्बन्ध में बात हुई। उन लोगों ने कहा कि हम ईसाई हुये भाइयों को पचगव्य द्वारा अवश्य मिला लेंगे बशर्ते ग्राम के ब्राह्मण लोग इस विधान को कराने के वास्ते तैयार हों। ईसाई बने

आर्य समाज की मार्च-अप्रैल ३७ की प्रगति

सयुंक्त प्रान्त

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते '

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव प्रबन्धादि का कार्य शुरू हो गया है। प्रान्तिक सभा ने धन संग्रह का कार्य क्रम बना दिया है। प्रान्त में भ्रमण के लिए डेपुटेशनों की आयोजना कर दी गई है। इस अवसर पर कम से कम १ लाख रुपया सग्रह करने का सभा का विचार प्रकाश में आया है। सभा की अपील है कि आर्य जनता को यह राशि पूरी कर देनी चाहिये। हम चाहते हैं कि प्रान्त के आर्य नर नारियों की ओर से बिना किसी प्रेरणा के तथा बिना डेपुटेशन की प्रतीक्षा वा प्रेरणा के सभा की मांग से अधिक कई गुना धन सभा के कोष में पहुँच जाय। और आर्य जनता जयन्ती महोत्सव के प्रति अपने अपने प्रेम का एक प्रकार से सुन्दर परिचय देवे तथा महोत्सव के प्रबंधकों तथा सभा के अधिकारियों इत्यादि की जो शक्ति इत्यादि इस काममें लगती उनको वह अन्य उपयोगी कामो में लगाने का अवसर दे देवे। इतना होते हुए भी डेपुटेशनों का प्रान्त मे भ्रमण करना हम जरूरी समझते हैं। डेपुटेशनों को प्रान्त में भ्रमण करके आर्य समाज की वास्तविक परिस्थिति का परिचय प्राप्त करना चाहिये। जहां जीवन न हो वहां जीवन लाना वा उसके लिये यत्न करना चाहिये जहां जीवन हो वहां उसमें वृद्धि का कारण बनना चाहिये। इस प्रकार के डेपुटेशनों में सुपरीक्षित व्यक्ति होने चाहियें—ऐसे जो लोगों के दिमागों की अपेक्षा दिलो पर ज्यादा प्रभाव डालने वाले हो।

मेरठ में महोत्सव की स्वागत कारिणी सभा का संघटन हो गया है। मेरठ के आर्य लोगों में उत्सव को प्रबन्ध की दृष्टि से कामयाब बनाने का बड़ा उत्साह है। परमात्मा करे यह उत्साह बना रहे और जयन्तीके उत्सव पर बाहर के आगन्तुकों को इसका साक्षात् दिग्दर्शन हो।

पिछली २४ मार्च को मेरठ नगर मे स्वर्ण-जयन्ती समिति की बैठक हुई थी—

हुये हरिजन भाइयों से भी बात चीत हुई वे भी पुनः हिन्दू होने के वास्ते तैयार हैं।

ग्राम में प्रचार

१—महूपुर मडल के ३ ग्राम, २—रावर्टस-गज के मंडल मे ४ ग्राम, ३—सलखन मडल के १२ ग्राम, ४—सेमरी मंडल के २ ग्रामों मे प्रचार किया गया।

भ्रमण

जगलों में कुल १५० मील का भ्रमण किया गया।

भानुचरण आर्येय
उपमन्त्री
अछूतोद्धार कमेटी, नीची बाग़ बनारस

उसमे हमे प्रसन्नता है कि समिति की दृष्टि भारी ताजा सब्जबाग दिखाने वाले कार्यक्रम की रूप रेखा पर नही वरन रचनात्मक तथा हल्की रूप-रेखा पर गई है। समिति का ध्यान प्रान्त मे आर्य समाज की बिखरी हुई शक्ति को केन्द्रित करने, पारस्परिक कलह और वैमनस्य को दूर करने आर्य समाजके अधिकारों की रक्षा तथा अन्यान्य लोक सेवाके लिये आर्य वीरो और वीराङ्गनाओ के सुदृढ दल बनाने, प्रान्तिक सभा को प्रान्त मे एक शक्ति बना देने तथा वेद प्रचार का स्थायी प्रबन्ध करने पर गया है। कार्य क्रम निश्चित करने के लिये एक उपसमिति भी जिम्मेवार व्यक्तियो की बना दी गई है। साथही एक उपसमिति वैमनस्य निवारणार्थ बना दी गई है जिसमे हर्ष है प्रान्त के पुराने, अनुभवी, प्रभावशाली और ऐसे सज्जन है जो जनता मे स्थान रखते है और जो लोगो के हृदयों को अपील करने की योग्यता और क्षमता रखते हैं।

जयन्ती के लिये समाचार पत्रो म एक से एक बढ़िया और नूतन प्रस्तावो की मानो बाढ सी आ गई है। यह सब स्वागत योग्य है। ज्यादा स्वागत योग्य यह होगा कि प्रस्तावो के बजाय जयन्ती क रचनात्मक कार्य-क्रम को पूरा करने और समाज सेवा के लिए, प्रस्तावो की सख्या मे न सही उसके अधिक भाग मे ही आर्यसमाज के गौरव और उसके वास्तविक उद्देश्य वप्रचार इत्यादि पर दृष्टि रखने वाले ऊचे करैक्टर के व्यक्तियो के आकर समाचार पत्रो मे आये। आज आर्य समाज मे इतनी इसकी जरूरत नही है कि क्या किया जाय जितनी इस बात की है कि किए जाने वाले कार्य को करे कौन ?

आमरा आर्य समाज के झगड़े के निपटारे के लिये सुना गया है उपसमिति ने कार्य शुरू कर दिया है। दोनो पक्षो ने लिख कर दे दिया है कि उन्हे निर्णायक समिति का फैसला अन्तिम रूप से माननीय होगा। दोनो पक्षो का यह आत्म—समर्पण श्लाघनीय है। हम उत्सुकता से इस झगड़े के सदैव के लिए शमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वर्तमान हवा मे इस प्रकार के लेख बद्ध आश्वासन का लिया वा दिया जाना ठीक है शोभा जनक नही—शोभा जनक तबही होता जब हमारे जुबानी आश्वासन पत्थर की लकीर होते और इस प्रकार की तहरीरो को हेय साबित कर देते।

हमने अपने किसी पहले पत्र मे जिक्र किया था कि गुरुकुल वृन्दावन के सम्बन्ध मे जाच इत्यादि के लिए प्रतिनिधि सभा ने एक कमीशन बिठलाया है और यह भी कि कमीशन की जाच का मुख्य विषय होगा कि गुरुकुल सरकारी परीक्षाओं को अपनाए या नहीं'। कमीशन की रिपोर्ट पकाश म आ गई है। जाच का बडा भाग गुरुकुल के प्रबन्ध से सम्बन्धित है। उसमे हमारी खास दिलचस्पी नहीं ह। दिलचस्पी पाठ-विधि इत्यादि पर है। कमीशन ने सिफारिश की है कि आठवी कक्षा पास करने के बाद यदि कोई ब्रह्मचारी काशी आदि की परीक्षाओ आदि मे शामिल होना चाहे तो उस मे बाधा न डाली जाय। महाविद्यालय मे जो ब्रह्मचारी वेद विषय

लें इन्हें भी शिक्षा दी जाय। गुरुकुल को आर्य्यसमाज के लिए उच्च कोटिके बहुसंख्या मे उपदेशक देने पर विशेष ध्यान देना चाहिए या यों कहिए साधारण शिक्षा पर जो अन्यत्र भी होती वा हो सकती है वास्तविक शिक्षा की बलि न दी जाय। देखना है प्रतिनिधि सभा से ये सिफारिशे क्या रूप लेकर जनता के सामने आती है।

——

कस्बा जहांगीराबाद जिला बुलन्दशहर मे सवर्ण हिन्दू तथा अन्य व्यक्तियों की ओर से दुर्व्यवहार के कारण वहां की अछूत जनता (चमार व भगी) मे बडी अशान्ति फैली हुई थी। अब हालमे तो उन लोगा मे धर्म परित्याग की लहर अधिक वेग से चल रही थी। ३ भगी इसलाम ग्रहण कर चुके थे तथा करीब ३० चमार मुसलमान बनने के लिये और तैयार हो रहे थे। इस वर्ष होली का त्यौहार उन लोगो ने बहुत कम मनाया था। बुलन्दशहर आर्यसमाजमे यह सूचना प्राप्त होने पर समाजके मन्त्री बलभद्रसिंहजी तथा बा०प्रहलादस्वरूप एडवोकेट व मा० शिवलाल तथा सेठ कैलाशनारायण जी ता० ४ अप्रैल म जहांगीराबाद पहुचे। कस्बे के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को एकत्रित करके परिस्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया गया। शाम को सवर्ण हिन्दुओं को साथ ले जाकर हरिजन बस्तियों म मीटिंग की गई। फलस्वरूप हरिजन भाइयों ने हिन्दूधर्म पर श्रद्धा प्रगट करते हुये आपत्तियां आने पर भी उस पर कायम रहने का मत प्रगट किया। तथा सवर्ण हिन्दुओं ने उनकी शिकायत दूर करने का केवल वचन ही नहीं दिया किन्तु सनातनी भाइयों ने अपने मन्दिर तथा कुए हरिजनो के लिए खोल दिये तथा उनको साथ २ ले जाकर देव दर्शन कराए तथा कुओं से पानी खिचवाया। इस कार्य मे स्थानीय सज्जनो मे प० विश्वम्भरनाथ जी पाठक तथा ला० मक्खनलाल जी ने विशेषरूप से सहयोग दिया। यह सब काय हो जाने पर भी अभी वहा प्रचार की आवश्यकता है। जल्दी ही वहा एक बडा जलसा करने के लिए स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने वचन दे दिया है।

जिला बुलन्दशहर मे कई स्थानो से हरिजनो के धर्म परित्याग तथा उनपर ज्यादती के समाचार आ रहे है। प्रतिनिधि सभा को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

—ज्वालापुरमे आर्य वानप्रस्थियो तथा संन्यासियो के लिए एक आश्रम खुला हुआ है। इसके जन्मदाता श्री पूज्य नारायण स्वामी जी हैं, इसमे इस समय काफी सख्या मे वानप्रस्थ आर्य नरनारी सन्यासी महानुभाव रहते और आत्मिकोन्नतिमें रत रहते हैं। अच्छा हो कि प्रति मास या दूसरे तीसरे महीने इसके समाचार जनता को मिलते रहें। इसका प्रबन्ध एक समिति के द्वारा होता है। पिछली २९ मार्च को इसका वार्षिक चुनाव हुआ था। जो इस प्रकार है:—(१) पूज्य महात्मानारायण स्वामी जी प्रधान (२) भक्त सुन्दरदास जी उप प्रधान। (३) श्री डा० लालचंद जी उपप्रधान (४) स्वामी ब्रह्मानन्द जी मन्त्री (५) प० प्रेमानंद जी उपमंत्री (६) म० मुकुन्दलाल जी कोषाध्यक्ष (७)

स्वामी सदानन्द जी आश्रम प्रबन्धक (८) बाबू गौरीशंकर जी आडीटर (९) स्वा० शुक्लानन्द जी वैदिक आश्रम ऋषिकेश के प्रबन्धकर्त्ता— तथा १२ अन्तरंग सभासद्।

पंजाब

श्री० सम्पादक जी, नमस्ते!

आर्य्य समाज बारह मूगा ने अपने क्षेत्र मे हरिजनों के लिए कुएँ बनवाने का कार्य्य शुरू कर रखा है—लगभग १ दर्जन कुएँ विविध स्थानो मे बन गए हैं।

पजाब के महाशय भाइयो की शुद्धि की सिल्वरजुबिली का उत्सव २६ मार्च से १० अप्रैल तक बड़ी सफलता और समारोह के साथ दीना नगर मे मनाया गया। इस अवसर पर यह निश्चित हुआ है कि शुद्धि के सेनापति श्री चौ० रामभजदत्त जी के जन्मदिन पर जो १६ फाल्गुन को आता हैं दीना नगर में शुद्धि के तमाम शहीदों की याद में एक आर्य्य मेला लगाया जाया करे और एक रामभजदत्त निर्धन अनाथ आश्रम भी खोला जाय। जिसमें दलित जातियों के निर्धन बच्चों की हर प्रकार से सहायता की जाय।

सी० पी०

श्रीमान् सम्पादक जी, नमस्ते,

रायपुर आर्य्य सामज का वार्षिकोत्सव २८, २९, ३० को मनाया गया। श्री० पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय, पं० शिवदत्त ज्ञानी इत्यादि आर्य्य विद्वानों ने उत्सवमें भाग लिया और अपने धर्म्मोपदेशों से जनता को लाभ पहुँचाया। इस उत्सव का सब से ज्यादा सफल अंग नगर कीर्तन रहा। शहर तथा बाहर के बहुसंख्यक आर्य्य नर नारियों के अलावा आर्य अनाथालय हिन्दू सेवा संघ, सरस्वती कन्या पाठशाला और विधवा आश्रम इत्यादि के बालक-बालिकाओं और देवियों ने सोत्साह भाग लिया। नगर में कई स्थानों पर प्रेमी सज्जनों द्वारा नगर कीर्तन का दूध इत्यादि से सत्कार हुआ। इस उत्सव का अच्छा प्रभाव रहा।

सी० पी० के स्व० दानवीर तुलाराम जी ने आर्य्य प्रतिनिधि सभा को अपनी ३-४ लाख रुपए की भूसम्पत्ति गुरुकुल कांगड़ी या कन्या महाविद्यालय जलन्धर की लाइनों पर प्रान्त में एक कन्या गुरुकुल चलाने के लिए दान की थी। दानी की इच्छा छत्तीसगढ़ के किसी केन्द्र स्थान पर गुरुकुल खोले जाने की थी। गुरुकुल कहां खोला जाय इस सम्बन्ध मे विचार चल रहा है अभी अन्तिम निर्णय नहीं हुआ है। बहु सम्मति, दुर्ग और रायपुर के पक्ष में है'—

कुछ लोगों की सम्मति है कि गुरुकुलों के आदर्शों की रक्षा की दृष्टि से यह गुरुकुल शहरों से दूर शुद्ध सात्विक वातावरण युक्त ग्राम में खोला जाय। गुरुकुल शहर में खोला जाय, या ग्राम में हमें सम्पादक जी, यह बात उतनी अपील नहीं करती है जितनी यह कि कन्या गुरुकुल जैसी नाजुक संस्था की रक्षा और देख रेख भले प्रकार हो सकती हो, स्थान स्वास्थ्य प्रद हो और हर प्रकार

के दूषित वातावरण से मुक्त हो।

कारंजा (अकोला) समाज का एक दुःख जनक समाचार भेजता हू। कारंजा समाज श्री० डा० सूर्य्य नारायण शर्मा की मृत्यु मे अपने एक पूसिद्ध कार्य्य कर्ता से वंचित हो गया है। स्व० डा०साहब सेवाका अच्छा रिकार्ड पीछे छोड़ गए हैं। बरार मे कई आर्य्य समाजें अनाथालयो और विधवा भवन इत्यादि सस्थाओ की स्व० डा० साहब ने स्थापना और सचालन किया था।

प्रान्त की मास की अन्य प्रगतियां इस प्रकार हैं।

—मलकापुर मे ता० ९-३-३७ को श्री स्वा केवलानदजी और श्री पं. रामचन्द्र जी विद्यारत्न ने तीन दिन तक प्रचार किया। ऋषि बोधोत्सव भी मनाया गया। गुरुकुल को ५।, दान मे मिले।

—कारंजा आ. स का वार्षिकोत्सव १-३-३७ को मनाया गया। श्री. स्वा शंकरगिरि की उपस्थिति मे हवन हुआ। श्री स्वा. अनंतानंद जी के वैदिक सिद्धान्तो पर व्याख्यान हुए।

—चान्दूर रेल्वे आ स. का वार्षिकोत्सव शिवरात्रि को श्री. प० शिवदत्तजी ज्ञानी एम ए की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया।

—चान्दूर रेल्वे आ. स. ने ता. १३-३-३७ को एक रामराव नारायणराव मराठे को जो कई मास पूर्व मुसलमान हो गया था शुद्ध किया। श्री स्वामी अनंतानन्दजी का व्याख्यान 'ईश्वर की व्यापकता और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता' पर हुआ।

—हीवरखेड़ा मे आर्वी आ० स० के प्रधान श्री चन्द्रपालसिंह जी ने अद्भुत चमत्कारिक खेल चार दिन तक बताये। एक खेल आपने हीवर खेड आ० म० मे दिखलाया। २०) रु० की प्राप्ति हुई। २।। आर्वी आ० स को भेजे गये। ता० १३ मार्च को गांधी चौक मे श्री० पं० रामचन्द्र जी का 'आहार निद्रा' पर व्याख्यान हुआ। उपस्थिति पांच सौ के लग भग थी।

—उमरखेड़ आर्य समाज का शिवरात्रि पर वार्षिक उत्सव श्री० स्वा० अनन्तानंद जी की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। ता० १४ मार्च को श्री० कुंवरपालसिंह और श्री देवकीनंदनजी द्वारा प्रचार हुआ। वेद प्रचार मे ३६) प्राप्त हुआ। देहातो मे एक सप्ताह प्रचार कराया गया। वहांसे वेद प्रचारमे ४०) प्राप्त हुए। ता० २१ को श्री सदारामजी के पुत्र का चूड़ाकर्म सस्कार हुआ। ता० २५ को एक मुसलिम महिला की शुद्धि की गई।

—खण्डवा आर्य समाज का निर्वाचन होलिकोत्सव के उपरान्त हुआ। निम्न सज्जन पदाधिकारी निर्वाचित किये गये। श्री डा० रघुनाथ वर्मा प्रधान रघुवीरप्रसाद जी उपप्रधान श्री सत्यदेवजी स्नातक

राजस्थान

श्री सम्पादक जी, नमस्ते

हमने पिछले किसी मास की प्रगति के विव-

रण मे यह जिक्र किया था कि आर्य्य समाज अजमेर और आर्य्य प० सभा में अखबारी नोक झोक शुरू होगई है और भय प्रगट किया था कि उन दोनों का पुनर्मिलन शाह्य मेल साबित न हो साथ ही आर्य्य प्रतिनिधि सभा के गत वृहद् दधिवेशन के अवसर पर समाज के सदस्यो की इस घोषणा से कि वे १ वर्ष तक सभा म कोई आफिस स्वीकार नही करेंगे उस भय का पुष्ट होना प्रगट किया गया था। आर्य्य समाज कैसरगज ने इस प्रगटीकरण का प्रतिवाद हमारे पास भेजा है। वह लिखता है कि उसके प्रतिनिधि सदस्यों का १ साल तक आफिस स्वीकार न करने की घोषणा का अभिप्राय यह स्पष्ट करदेना था कि वे सभाके साथ सहयोग चाहते हैं और किसी को उनके इस सहयोग पर सन्देह न हो, और चुनाव मे कटुता न हो, इसलिए वे १ साल तक उससे पृथक् रहेंगे।

पं० रामस्वरूप जी भजनोपदेशक बयाना (भरत पुर) के प्रबन्ध मे बयाना तथा आस पास मे समाज का प्रचार हुआ।

आर्य्य समाज पीलवा (मारवाड) की तरफ से भकरी (मारवाड) मे शीतलादेवी के मेले पर प्रबन्ध की व्यवस्था की गई थी। प्रबन्ध की आज्ञा मिल भी गई थी परन्तु बाद को ठाकुर साहब ने आज्ञा रद्द करदी और प्रार्थना करने पर भी पुन आज्ञा न दी स्वय सेवक वापस लौट गए।

११ अप्रैल को बयाना मे भयंकर आग लगी। ईश्वर पक्ते री आर्य्य सेवादल के स्वयं सेवक घटना स्थल पर पहुंचे और आग बुझाने मे लोगो को प्रशंसनीय योग दिया। कहा जाता है पुलीस और बोर्ड ने इस सम्बन्ध मे अपने कर्त्तव्य का पालन नही किया। इस प्रकार की लोक सेवा विशेष महत्त्व रखती है इसलिए हम यहाँ इस घटना का उल्लेख कर रहे हैं।

आर्य्य समाज नागौर की तरफ से ठाकुर भोलासिह जी वैश्य तथा ठाकुर हुकमसिंह जी पडिहार भजनोपदेशक द्वारा पशुओ के मेले पर पचार कराया गया। यहां लोगो की आंखो के बहुत औप्रेशन हुए। स्थानीय आर्य सेवादल ने मरीजो की देख रेख और सेवा सहायता का अच्छा कार्य किया। समाज ने अपने व्यय पर असहाय रोगियो को दूध इत्यादि की व्यवस्था करके सहायता की। इस प्रकार की लोक सेवा आर्य समाज की लोक प्रियता मे बहुत ज्यादा वृद्धि करने वाली है। आर्य समाज ऐसी लोक सेवाओ का जितना अधिक लाभ उठा सके उतना अच्छा।

आर्यसमाज झुझुनू का प्रथम वार्षिकोत्सव बडे समारोह के साथ ता० १७, १८ व १९ अप्रैल को मनाया गया। श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से श्री स्वा व्रतानन्दजी महाराज श्री स्वा० नृसिंहदेवजी सरस्वती श्री मेहता जैमिनीजी वैदिक मिशनरी, पं० भगवानस्वरूपजी न्यायभूषण उपमंत्री सभा, और पं० चन्द्रभानुजी सिद्धान्तभूषण आदि उपदेष्टा और म० रामसेवक जी भजनीक इस उत्सव मे सम्मिलित हुए।

प्रचार का उत्तम प्रभाव रहा।

आर्य्य कुमार सम्मेलन

आर्य्य कुमार सम्मेलन देहली में स्वीकृत प्रस्ताव जिन की चर्चा गत मास की प्रगति के कालमों में की गई थी हमें प्राप्त हो गए हैं वे इस प्रकार है —

प्रस्ताव संख्या १

यह सम्मेलन गत ढाई वर्षों में आर्य समाज के निम्न लिखित नेताओं के हम से दैववश वियुक्त हो जाने पर उनकी आत्मा के लिए परमात्मा से सद्गति की तथा उनके शोक सन्तप्त परिवारों के लिये शान्ति की प्रार्थना करता है :—

पंडित घासी राम जी, M A
,, वंशी धर जी पाठक
,, इन्द्र वर्मा जी
,, लक्ष्मण प्रसाद जी M A.
स्वामी मुनीश्वरानन्द जी
, ओंकार सच्चिदानन्द जी
लाला देव राज जी जलधर निवासी
श्री मती यशोदा देवी जी।

प्रस्ताव संख्या २

यह सम्मेलन भारत में प्रचलित ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के आन्दोलन को अत्यावश्यक समझता है और आर्य कुमारों तथा आर्यकुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे यथावकाश ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के कार्य में यथा शक्ति सहयोग दिया करें।

प्रस्ताव संख्या ३

यह सम्मेलन महाराजा ट्रावनकोर को उनके अस्पृश्यता निवारक घोषणापत्र पर हार्दिक बधाई देता है जिस में कि उन्होंने अपने राज्य के समस्त मंदिरों को अछूत कहे जाने वाले मनुष्यों के लिए खोल कर अपनी उदारता का परिचय दिया है। एवं अन्य नरेशों से प्रार्थना करता है कि वे भी अपने राज्यों के मंदिरों को अछूतों के लिए खोलकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

प्रस्ताव संख्या ४

परिषद् के नियम संख्या ३३-३६ के विषय में यह निश्चय हुआ कि परिषद् की प्रान्तीय सभाओं की योजना पर विचार करने के लिए निम्न सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जावे —

१ प्रोफैसर तोताराम जी
२ पंडित सुखदेव जी
३ प्रोफैसर मुन्शीराम जी
४ साहित्यरत्न रामचन्द्र जी
५ श्रीयुत् जगदीश प्रसाद जी
६ ,, बलदेवदास जी
७ ,, विद्याधर जी (संयोजक)

प्रस्ताव संख्या ५

सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि अन्तरंग सभा इस प्रश्न पर विचार करे कि यदि एक नगर में एक से अधिक आर्यकुमारसभाएँ हों तो उनका आपस में क्या सम्बन्ध हो।

प्रस्ताव संख्या ६

(क) क्योंकि परिषद् के दफ़तर को बार बार जगह जगह लेजाने में बहुत असुविधा होती है और

इससे पुराने रिकार्ड के खोए जाने का डर भी रहता है इस लिए परिषद् का दफ़्तर स्थायी रूप से एक स्थान पर रखा जावे।

(ख) वह स्थान दिल्ली होवे।

प्रस्ताव संख्या ७

यह सम्मेलन भारतीय धारा सभा में प्रस्तावित आर्य मैरेज वैलिडेशन बिल तथा बाल विवाह विरोधक संशोधक बिल का बलपूर्वक समर्थन करता है और असेम्बली के सदस्यों से अनुरोध करता है कि इन बिलों को पास कराने का पूर्ण प्रयत्न करें।

(ख) यह सम्मेलन डाक्टर देशमुख जी को उन के हिन्दू स्त्रियों के जायदादी अधिकारों की रक्षा सम्बन्धी बिल के पास हो जाने पर बधाई देता है और आशा करता है कि इसी प्रकार के अन्य सामाजिक हितकारी कानूनों के बनाने का प्रयत्न जारी रहेगा।

प्रस्ताव संख्या ८

क्योंकि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् को स्थापित हुए २५ वर्ष हो चुके हैं इस लिए यह सम्मेलन निश्चय करता है कि आगामी दीपावली के अवसर पर भारत वर्ष भर की कुमार सभाएं रजत जयन्ती उत्सव (Silver Jubilee) मनावें। उत्सव का विस्तृत प्रोग्राम परिषद् की अन्तरंग सभा निर्धारित करदे।

प्रस्ताव संख्या ९

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा एवं प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं से प्रार्थना करता है कि वे अपनी अधीनस्थ समाजों को आदेश कर कि अपनी समाजों में आर्य कुमार सभाएं स्थापित करें और अपने सभासदों से अनुरोध करें कि वे अपने ८ वर्ष से अधिक आयु वाले प्रत्येक बालकको आर्य कुमार सभा का सभासद् अवश्य बनावें तथा आर्य कुमार सभा की उन्नति का पूर्ण प्रयत्न करते रहें।

(ख) यह सम्मेलन डी ए वी कौलेजों, स्कूलों, गुरुकुलों, अनाथालयों आदि संस्थाओं से अनुरोध करता है कि वे अपने यहां आर्य कुमार सभाएं अवश्य स्थापितकरें।

प्रस्ताव संख्या १०

यह सम्मेलन समस्त आर्य समाजों से प्रार्थना करता है कि वे अपने स्थानों की आर्य कुमार सभाओं के प्रधानों को अपनी अन्तरंग सभाओं में अवश्य ले लिया करें।

प्रस्ताव संख्या ११

यह सम्मेलन अलीगढ़ के मुसलिम विद्यार्थियों को विशेषतया और साधारणतया उन सब मुसलिम विद्यार्थियों को बधाई देता है जिन्होंने अलग मुसलिम विद्यार्थीसंघ बनाने से इनकार करके अपनी देशभक्ति का सबूत दिया है और राष्ट्र की सेवा की है और यह घोषणा करता है कि संकुचित साम्प्रदायिकवाद देश की उन्नति के लिए सर्वथा हानिकारक है।

प्रस्ताव संख्या १२

बहु सम्मति से यह निश्चय किया गया कि आगामी भारत वर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन बिजनौर में किया जावे।

प्रस्ताव संख्या १३

यह निश्चय हुआ कि आर्य कुमार परिषद् की ओर से समस्त भारत वर्षीय आर्य कुमार सम्मेलनों के सभापतियों के भाषण एकत्रित करके पुस्तकाकार

परिषद् की रजत जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित किए जावें ।

प्रस्ताव संख्या १४

यह निश्चय किया गया कि परिषद् आर्य कुमार पत्र शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न करे ।

प्रस्ताव संख्या १५

आर्यकुमारो की वर्दी सम्बन्धी प्रश्न पर यह निश्चय किया गया कि सब आर्य कुमार सभाओं से इस विषय में सम्मति मांगी जावे ।

प्रस्ताव संख्या १६

आर्य कुमार सभाओं के साप्ताहिक अधिवेशनों के कार्यक्रम के विषय मे यह निश्चय हुआ कि सब कुमार सभाओं से इस पर सम्मति मांगी जावे ।

प्रस्ताव संख्या १७

यह सम्मेलन आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि—

(१) नित्य प्रति किसी न किसी अच्छी पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य किया करें चाहे वह पाँच मिनिट के लिये ही क्यों न हो ।

(२) अपनी दिनचर्या हर रोज अवश्य लिखा करें और समय २ पर अपनी आदतों का निरीक्षण करते रहा करें ।

(३) हर समय अपने पास एक डायरी और पैंसिल अवश्य रखा करें ताकि जो भी अच्छी या नई बात उनको मालूम हो तो उसे लिख लिया करें ।

(४) जो कुमार हिन्दी नहीं जानते वे शीघ्र से शीघ्र हिन्दी अवश्य सीख लें ।

(५) पहनने के लिये खादी अथवा स्वदेशी वस्त्र ही इस्तेमाल किया करें और अन्य चीजें भी जहाँ तक हो सके स्वदेशी ही बर्ता करें ।

(६) अपने नामों के आगे जन्म जाति व उपजाति वाचक कोई शब्द शर्मा वर्मा आदि न लगाया करें ।

(७) चलते समय तथा बैठे हुए बिल्कुल सीधे चला और बैठा कर ।

(८) हर स्थान पर थूकने तथा नाक साफ़ करने की आदत को दूर करें ।

(९) फलों के छिलके, रद्दी कागज़ के टुकड़े आदि कभी सड़क या गली मे न फेंकें ।

(१०) अपनी सब वस्तुएँ उनके नियत स्थान पर ही रखा करें, इधर उधर नहीं ।

(११) किसी की कोई वस्तु बिना उसकी आज्ञा के न लिया करें ।

(१२) यथा संभव अपना अपना कार्य स्वयं ही किया करें । कपड़े धोना, बिस्तर बिछाना, चारपाई उठाना इत्यादि ।

(१३) अपना स्वास्थ्य उत्तम करने के लिए नित्य प्रति कुछ न कुछ व्यायाम अवश्य किया करें । दाँत साफ़ किया करें तथा खेलों में भाग लिया करें ।

(१४) अपनी सभा का कोई सभासद् उनको मिले तो फ़ौरन नमस्ते अवश्य किया करें ।

(१५) एक दूसरे की सहायता करने के लिए सदा तत्पर रहा करें और जिस भी कुमार को कोई आवश्यकता हो उसे पूरा करने की कोशिश किया करें ।

(१६) अपने अधिवेशनों तथा अन्य मीटिंगों में जब और कार्यवाही हो रही हो तो आपस में बातें न किया करें और बिना प्रधान की आज्ञा के कोई न बोला करें ।

(१७) आपस में बोल चाल में कभी भी असभ्य शब्द इस्तेमाल न किया करें — खास कर बाजार आदि में चलते हुए।

(१८) जहां तक हो सके सादा जीवन ही व्यतीत किया करें। फैशनमें न पड़ें। पान आदि भी नखावें।

(१९) अपने बड़ों की धर्मानुकूल आज्ञा जिसमें अपनी शारीरिक अथवा आत्मिक किसी भी प्रकार की हानि की सम्भावना न हो, बिना चू चरा किए माना करें चाहे खुद को कुछ कष्ट भी उठाना पड़े।

प्रस्ताव संख्या १८

क्योंकि यह दुख के साथ देखा जा रहा है कि भारतीय युवकों का स्वास्थ्य दिन प्रति दिन गिरता जा रहा है और क्योंकि मानसिक उन्नति के लिए शारीरिक उन्नति अत्यावश्यक है इस लिए यह सम्मेलन समस्त आर्य कुमार सभाओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने अपने स्थानों पर आर्य कुमार व्यायाम मंडलों की स्थापना करें तथा समय २ पर खेलों (sports) को भी आयोजना करे।

प्रस्ताव संख्या १९

(क) क्योंकि आर्य कुमारों की शारीरिक उन्नति के लिए परिषद ने कोई उचित प्रबन्ध अभी तक नहीं किया है और क्योंकि आर्य कुमारों की शारीरिक उन्नति बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है इस लिए यह सम्मेलन आवश्यक समझता है कि दिल्ली में एक व्यायाम केन्द्र खोला जावे जो कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के आधीन रहे।

(ख) इस व्यायाम केन्द्र में उन तमाम आर्य-कुमार सभाओं से जो कि परिषद से सम्बन्धित है, दो दो प्रतिनिधि व्यायाम सीखने के लिये आवें।

(ग) व्यायाम की पूरी शिक्षा समाप्त करके ये कुमार अपनी २ कुमार सभाओं में व्यायाम का खूब प्रचार करें।

विविध सामाजिक समाचार

" सारन जिला में मीरगंज आर्य समाज के प्रधान सुप्रसिद्ध देश भक्त बाबू गोपाल जी साहू ता० १४ फरवरी १९३७ की रात्रि में ८½ बजे इस संसार से चल बसे। वे इधर के एक प्रसिद्ध आर्य थे। आर्य सिद्धान्तों के व्यवहारिक पोषक थे। देश के लिये जब जब जरूरत पड़ा उन्होंने अनेक संकटों का सामना किया दो बार कृष्ण मन्दिर में हो आये थे। इसके अतिरिक्त जुर्माने में भी दोनों बार मिला कर ३००) दे चुके थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार शुद्ध वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। आज ता० २८-२-३७ दिन रविवार को उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने के लिये जिले भर के प्रसिद्ध कांग्रेस कर्मी तथा आर्य समाज के सुविख्यात उपदेशक तथा कार्यकर्त्ता जिन में प्रमुख बाबू वैद्यनाथ प्रसाद जी हेडमास्टर सीवान (सारन) पं० रामरक्ष जी उपाध्याय, बाबू दीनानाथ जी आर्य गोपालगंज (सारन) प० हरिनन्दन पाण्डेय जी महाराज राव जी कर मैनी आर्य समाज (कुचाय कोट) सारन तथा बाबू कमला राव जी मन्त्री जिला कांग्रेस कमिटी इत्यादि शामिल थे। सवेरे ९½ बजे से सम्मिलित सन्ध्या हवन यज्ञ इत्यादि विधिवत् हुए। तत्पश्चात् दिवंगत आत्मा के प्रति सबों ने श्रद्धाञ्जलि अर्पण की। श्राद्ध तथा तर्पण इत्यादि कपोल कल्पित मिथ्या कर्म नहीं किये गये। वीरात्मा गोपाल जी के सुपुत्र काशीनाथ जी भी बधाई के पात्र हैं, जिस दृढ़ता से उन्होंने इस पाखण्ड को दूर किया है, वह हर एक नौ जवान तथा आर्य सभासद के लिये अनुकरणीय है। यहां के हर विचार

के लोग ब्राह्मण से लेकर शूद्र तकतथा मुसलमान भाइयों ने भी प्रचुर सख्या मे अर्थात् सब मिला कर ८०० व्यक्ति से भी ऊपर सहर्ष प्रतिभोज इत्यादि में शामिल हुए। इस दृश्य का बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा है।

श्याम देव नारायण

आर्य्य उपदेशक

ईश्वर की कृपा से आर्य समाज लातूर (निजाम स्टेट) का पाचवा होलिकोत्सव बड़े शान तथा आनन्द पूर्वक ता० २७ २८ २९ ३० मार्च को हुआ जिस में पं० पूर्ण चंद जी, प० नरेन्द्र जी प० मुनिश्वरदेव जी पं० बनारसीलाल जी तथा भजनीक प्रह्लाद जी का बड़ा प्रभाव शाली उपदेश हुआ। हाजरी ४ से ५ हजार तक रहती थी सारे कार्य कर्ताओं ने बड़े ही उत्साह से कार्य किया बाहर से एक हजार आर्य भाई उत्सव मे शरीक होने आये थे उनके खान पानादि का प्रबंध भी उत्तम रीतिसे हुआ।

भवदीय

श्री आर दास मत्री

बम्बई में आर्यपरिवारसंघ की स्थापना

नाम—इस संस्थाका नाम "आर्य परिवार सघ" होगा।

उद्देश—आधुनिक जन्ममूलक जाति बन्धनो से मुक्त होकर महर्षि दयानन्द प्रदर्शित वैदिक सिद्धान्तोको पूर्णतया माननेवाले और तदनुसार आचरण करने वाले आर्य परिवारों का परस्पर सामाजिक सबन्ध स्थापित कर उनको सगठित करना इस आर्यपरिवार संघ का मुख्य उद्देश है।

सभासद—उपर्युक्त उद्देशको स्वीकार कर तदनुसार बर्ताव करनेकी प्रतिज्ञा लेनेवाला कोई भी आर्य परिवार देश, प्रांत या रग आदिके किसी भेद के बिना इस सघका सदस्य हो सकेगा। यदि कुटुम्बमे एक ही व्यक्ति हो तो उस को भी परिवार माना जायगा।

स्थान—इस सस्थाका मुख्य कार्यालय बम्बई में रहेगा।

शाखा—किसी शहर या ग्राम में इस सस्था के दश या दश से अधिक सदस्य होने पर वहां इस सघ की शाखा खोली जा सकती है।

अस्थिर प्रारभिक समिति—इस संघके उद्देश को सफल बनाने के लिए आवश्यक कार्य सपादनार्थ निम्न लिखित सज्जनो की अस्थिर प्रारभिक समिति (Provisional committee) बनाई जाती है। इस समितिको आवश्यकतानुसार अपने सदस्य बढानेका अधिकार दिया जाता है।

इस समितिके सदस्य

१ डा कल्याणदासजी, २ प० आनंदप्रियजी, ३ पं० विजयशंकरजी, ४ श्री वल्लभदास रतनसिंह मेहता, ५ श्री कन्हैयालाल जी कोठारी, ६ म. स्नातक सत्यव्रतजी, ७ श्रीयुत म० अमित ओषि, ८ श्री. गोकुलदास हिरजी, ९ प० लक्ष्मणराव ओघले, १० पं० प्रियव्रतजी, ११ प० रामचन्द्र सिद्धांतालकार, १२ श्री म महेन्द्रचन्द्रजी, १३, श्री म सभाजित, मिश्र, १४ म० खुशालदास पुरुषोत्तमदास १५ श्री सुमत्रा कुमारी १६ श्री सुशीला कुमारी १७ प० महाराणी शकरजी—

मन्त्री—इस अस्थिर कार्यवाहक समितिके मत्री का कार्य वल्लभदास आर महेता तथा श्री. स्नातक सत्यव्रतजी करेंगे और अपने अधिकारीगण स्वय समिति चुन लेगी।

यह समिति चार मासके भीतर उपर्युक्त एकसौ

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य

मध्य भारत हिन्दू धर्म रक्षिणी सभा इन्दौर के अधिष्ठाता प० लालाराम जी ने हाल ही मे दो हिन्दू अबलाओं का मुसलमान गुण्डों के चंगुल से उद्धार किया।

२१ मार्च को आर्यसमाज हावड़ा म पं० रामलाल नामक युवक की शुद्धि हुई। यह महाशय २० वर्ष पहले किसी कारण वश मुसलमान हो गये थे। शुद्धि संस्कार प० जगदीशचन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने कराया।

आर्य कुमार सभा उतरौला (गौंडा) में गत १५ मार्च को एक कोरिन की शुद्धि की गई। यह २ साल से मुसलमानी हो गई थी।

११ अप्रैल को आर्य समाज पूना मे एक ईसाई लड़की कु० हीराबाई शङ्करराव की शुद्धि श्री प० विद्याधर जी ने की। शुद्ध शुदा का विवाह उसी समय एक ब्राह्मण लड़के के साथ कर दिया गया।

प० विश्वनाथ शर्मा भजनोपदेशक ने गया के डेल्टा नामक स्थान पर दो स्त्रियां तथा २ अनाथ बालकों की रक्षा की।

आर्य समाज दरभिंगा में एक नव मुसलिम की शुद्धि की गई।

टाउन आर्य समाज कराची मे २२ मार्च को रंगून के ईसाई युवक की शुद्धि की गई जो बी० एम० सी है। १ अप्रैल को एक और ईसाई की शुद्धि कर उनका नाम रामचन्द्र रक्खा।

गत ५ अप्रैल को आर्यसमाज कारंजा मे गुण्डों से एक हिन्दू अबला का उद्धार कर उसे अकोला विधवाश्रम मे भेज दिया। इस स्त्री के साथ एक ७ साल की बहन भी थी। इस समाज ने एक और स्त्री का मुसलमानों के चंगुल से छुड़ा कर उसकी शुद्धि की। वह भी आश्रम पहुंचाई गई।

या जितने हो सके उतने आर्य परिवारों को संस्था की सभासद बनाकर तथा संघके लिए स्थिर नियम इत्यादि बनाकर स्वकृत्यर्थ सभा बुला कर उस में पेश करेगी आशा है कि आर्य बन्धुगण अपने परिवारके साथ बड़ी संख्या मे इस आर्य परिवार संघमें शामिल हो जायेंगे और अपने परिवार के जीवन को सच्चा आर्य जीवन बनाकर दिखावेंगे।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा

उक्त संस्था का नवम वार्षिक महोत्सव तथा स्नातिका बहनों का पदवी दान समारम्भ समारोह पूर्वक गत होली के अवसर पर मनाया गया। पदवी दान समारम्भ श्री महारानी चिमनाबाई साहेब गायकवाड़ के शुभ करकमलों से हुआ था। निम्न स्नातिकाएं निकलीं।

ललिता कुमारी कोवा भाई, सुभद्रा कुमारी जगदीशचन्द्र, यशोदा कुमारी, मोतीसिंह, रश्मिबाला कुमारी हरीराम, अनन्त बाला कुमारी तुलसीराम, सरस्वती कुमारी भाई लाल, धर्मवती कुमारी रतिलाल, सत्यवती कुमारी गोवर्धन, कमलाकुमारी दयाल जी। इन बहनों को 'भारती समलंकृता' की पदवी मिली है।

सुशीला कुमारी
मुख्याधिष्ठात्री।

२१ मार्च को आर्य समाज बावड़ी बाजार माताहिक सत्संग के समय १ जन्म के मुसलमान परिवार की शुद्धि हुई। परिवार मे ४ व्यक्ति थे। शुद्धि संस्कार पं० रामनरायण शर्मा सिद्धान्त रत्न प्रधान वैदिक धर्म प्रचारक मंडल द्वारा किया गया। नाम देवदत्त ओम्प्रकाश हीरादेवी व धर्मदेवी रक्खा गया।

निर जनदेव शर्मा।

आर्यसमाज मंगलौर (मद्रास) द्वारा शुद्धियाँ

आर्य समाज मगलौर द्वारा निम्न शुद्धियां हुई —

हमव्वा ब्यारी और उनकी धर्मपत्नी अमानम्मा हमव्वा जन्म का मुसलमान है उन्होंने एक हिन्दू स्त्री को मुसलमान बना कर उसके साथ शादी करली थी। शुद्ध करके उनका नाम ईश्वर और पार्वती रक्खा।

मि० एम डा क्रूज। ये हैदराबाद के जन्म के कैथोलिक ईसाई हैं। निजाम सरकार के एकाउन्ट विभाग मे ये असिस्टेन्ट सुपरिटेन्डेन्ट है। शुद्धि के बाद उनका नाम ऐम अनाथर रक्खा गया। उनकी शादी पुत्तुर तालुके के प्रसिद्ध आर्य समाजी म० सुब्बय्या की पुत्री के साथ हुई।

मुहम्मद अब्दुल्ला। वह जन्म का सारस्वत ब्राह्मण था और कई वर्ष हुए मुसलमान बन गया था शुद्धि के बाद उसका नाम रामेशराव रहा।

विक्टर श्रीनिवासन। ये कन्नानौर के एक सुप्रतिष्ठित परिवार के थे। कुछ वर्ष हुए वे ईसाई हो गये थे। शुद्धि के बाद उनका नाम कृष्ण नय्यर रक्खा गया।

लुइस मत्रोरथ। ये हिन्दू जुलाहे थे। कुछ वर्ष हुए ईसाई हो गए थे। शुद्धि के बाद उनका नाम धर्मपाल रक्खा गया।

सार्वदेशिक सभा की सूचनाएँ

(१)

पंडित भास्करानन्द ने जो इस सभा के द्वारा दक्षिणी अमेरिका के उपनिवेशों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ भेजे गये थे "अर्जुन" आदि पत्रोंमे कई लेख लिखा कर सार्वदेशिक सभा तथा उसके द्वारा विदेश प्रचार कार्य की जो आलोचना की है, वह भ्रमोत्पादक है। आर्य जनताके सूचनार्थ के लिये हम इतना ही लिख देना पर्याप्त समझते हैं कि विदेश से आई हुई शिकायतों तथा अन्य कई कारणों से इस सभा ने उपरोक्त उपनिवेशों की सभाओं को जिनके आधीन वह प्रचार कार्य कर रहे थे अक्तूबर सं० १९३६ ई० से सूचित कर दिया था कि उन्हें उपदेशक पद से पृथक् करदें। अत आर्यसमाज के विदेश प्रचार से प० भास्करानन्द का कोई सम्बन्ध नहीं है। जनता इस बात से सचेत रहे।

युद्धवीरसिंह
संयुक्त मंत्री,
सार्वदेशिक सभा, देहली

(२)

डच गायना (दक्षिण अमेरिका) में आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम की स्थापना के पूर्व वहां "आर्य दिवाकर" नामक एक संस्था थी जिसके द्वारा कभी कभी वहा पर यत्र तत्र आर्य समाज के प्रचार का कार्य किया जाता था परन्तु इस संस्था के अधिकारियों मे अधिकाश ऐसे लोग थे जो आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा उसके संगठन के

पोषक नहीं थे इस प्रकार इस संस्था की गति विधि के प्रति वहां की आर्यजनता में असन्तोष उत्पन्न हो गया। तब श्री प० अयोध्याप्रसाद जी ने उचित समझा कि यहां के आर्यसमाजों का सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार किया जावे। तदनुसार श्री पं० जी ने वहां पर आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम की स्थापना की और इसका सम्बन्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से उसकी अन्तरंग सभा तिथि ३१-१-३७ के निश्चय स० २ के अनुसार करा दिया। "आर्य दिवाकर" संस्था का इस सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है बल्कि इस उपनिवेश मे आर्य प्रतिनिधि सभा सुरीनाम ही सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित केवल एकमात्र आर्य संस्था है।

संयुक्त मंत्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

(३)

- श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी जिन्होंने इस सभा की ओर से विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया, उनके उस प्रचार के विरुद्ध कुछ स्वार्थी व्यक्ति समय २ पर वेङ्कटेश्वर आदि समाचार पत्रों में भ्रमोत्पादक समाचार प्रकाशित करते रहते हैं। हम संक्षेप मे इस समय इतना ही लिख देना पर्याप्त समझते हैं कि श्री प० अयोध्याप्रसाद जी को विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार म महान् सफलता मिली है। शिकागो विश्वधर्मसम्मेलन के प्रधान तथा मन्त्री आदि अधिकारियों ने उनके उस योगदान के सम्बन्ध में जो पं० जी ने उस सम्मेलन म दिया था, हमारे पास कई प्रशसात्मक पत्र भेजे थे और उन्होंने इस सभा से यह भी अपनी प्रबल इच्छा प्रकट की थी कि यह सभा श्री प० जी को कुछ वर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका मे ठहरने की आज्ञा दे दे ताकि वह वहां की साधारण जनता को भी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से परिचित करा सकें। इसके अतिरिक्त श्री प० जी ने थोड़े से ही समय मे दक्षिण अमेरिका के उपनिवेशों में सैंकड़ों मनुष्यों को आर्य समाज में दीक्षित किया। कई आर्य समाज स्थापित किये, समाज मन्दिर निर्माण कराए, प्रतिनिधि सभा तथा सैन्ट्रल समाज स्थापित किये और उनका सम्बन्ध सार्वदेशिक सभा से करा दिया। श्री प० जी को अब भी जब कि वह भारतवर्ष मे अवकाश पर आये हुये हैं, उनको पुन. वहां शीघ्र बुलाने के लिये वहां की आर्य जनता के तकाजे पर तकाजे हमारे पास आ रहे हैं। अब तक इस सभा में किसी भी जिम्मेवार आर्य संस्था की श्री प० जी के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं आई है। यदि कोई आई भी है तो वह गैर जिम्मेवार व्यक्तियों की ओर से है और वह शिकायतें सर्वथा निर्मूल हैं।

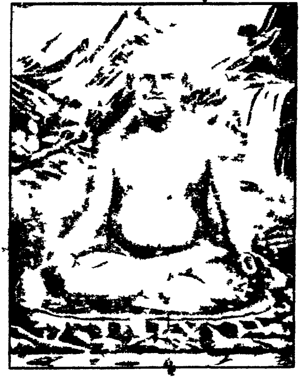
अत श्री प० अयोध्याप्रसाद जी द्वारा किये गये विदेश प्रचार के सम्बन्ध मे इस सभा तथा समस्त आर्यजगत की पूर्ण सहमति तथा विश्वास है।

समाचार पत्रों के सम्पादक महानुभावों से भी हम विनम्र प्रार्थना करेंगे कि इस प्रकार के समाचारों को इस सभा से तसदीक कराकर ही प्रकाशित किया करें तो उचित होगा।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस' देहली, में प्रकाशित।

ऋग्वेद जून १९५७ ओ३म् Reg No L 2121 यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मू० २)

एक प्रति का ≈)

विदेश से ५ शिलिंग

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

नम्र निवेदन

[ले०—ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पंजाब की राजधानी लाहौर मे रावी रोड़ पर केन्द्रिय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली है। उपप्रधान श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुरदत्तजी वैद्यशास्त्री मुल्तानी, तथा डा० गणेशी-लाल जी M B B. S हैं। इस अनाथालय को खुले हुए बीस वर्ष के लगभग हो चुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं करते है, प्रत्युत सब प्रान्तों मे रहने वाले हिन्दू आर्य्य भाई भी करते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय भारतवर्ष के दूसरे प्रान्तों में भी सर्व प्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है, यहां तक कि अब सरकार भी जो चोरी किये हुए लड़के लड़किया उनको मिलते हैं, जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको इस अनाथालय में रखती है। इस तरह से अनाथालय में बच्चों की संख्या बढ़ गई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु संख्या बढ़ जाने से कन्याओं के लिये स्थान काफ़ी नहीं है। इसलिए प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है, कि नवीन कमरे बनाए जायें, जिससे कन्याओं के स्थान का कष्ट मिट जाय। इनके बनाने के लिए धन की अपील की जावे। इसलिए मैं दानी सज्जनों की सेवा मे विनीत भाव से प्रार्थना करता हूं कि वे इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने मे बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न कर सके तो वे बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे, अन्य मत वालों के जाल में फँसकर हमेशा के लिए धर्म से पतित हो जायेंगे और उसका पाप आर्य जाति को लगेगा। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे उनके नाम के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे। इस समय इस कार्य के लिये पांच सहस्र धन की शीघ्र आवश्यकता है जो दानी सज्जनों को पूरी करनी चाहिए।

इस अनाथालय के आधीन म्यूनिसिपल कमेटी से मंजूर एक मिडल स्कूल है जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लड़के इसमें काम सीख सकते हैं। आज कल बीस लड़के सीख रहे हैं। बीस के लगभग लड़के यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय में इस समय ११७ लड़के और ७० लड़कियां हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ़ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकारप्रिय महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस ओर भी ध्यान करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें देकर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी आदि खाद्य पदार्थ और पहनने के लिये वस्त्र देकर कृतार्थ करें। यह संस्था पूर्व भी आप जैसे दानियों के दान से चल रही है। अब भी आप से आशा की जाती है कि आप अवश्य सहायता देकर अनाथों का आशीर्वाद लेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष ११ | ज्येष्ठ १९९४ | जून १९३७ ई० | [दयानन्दाब्द ११३ | अङ्क ४

वेद की शिक्षाएँ

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

यजु० । अ० ३२ मं० १४ ।

हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! आपसे जिस बुद्धि की उपासना विद्वान् ज्ञानी और योगी लोग करते हैं, हमें भी उसी बुद्धि से युक्त सर्वदा कीजिए ।

सम्पादकीय—

काम-वासना

अब हम आर्यों की 'काम' सम्बन्धी नीति पर विचार करते हैं तो हमें विदित होता है कि उन्होंने काम का बहुत ही सूक्ष्म निरीक्षण किया था और इसका ऐसा सुन्दर नियन्त्रण किया था जिससे कि मनुष्य की 'काम' की स्वाभाविक इच्छा की उपेक्षा न हो और यह मनुष्य के अन्तिम ध्येय की सिद्धि अर्थात् ईश्वर प्राप्ति में बाधक भी सिद्ध न हो।

आर्यों ने जीवन को ४ विभागों अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास ४ आश्रमों में विभाजित करके काम के नियन्त्रण की ऐसी विधि उपस्थित की थी जिसकी उपयोगिता और वैज्ञानिकता पर संसार के बड़े से बड़े विमाग़ और समाज शास्त्री मुग्ध रहे हैं और जिससे बढ़कर कोई दूसरी विधि न अब तक विकसित हुई है और न शायद आगे होगी। इस विधि के अनुसार मनुष्य के ७५ वर्ष अर्थात् ३/४ जीवन 'काम' से पृथक् कर दिया गया है अर्थात् केवल २५ वर्ष अर्थात १/४ जीवन में 'काम' के उपभोग की आज्ञा दी गई है। और इस अवधि में उपभोग की ऐसी व्यवस्था की गई है जिसके उचित पालन से मनुष्य ब्रह्मचारी ही रह सकता है। इस प्रकार उनके काम के नियन्त्रण की विधि की आधार शिला ब्रह्मचर्य है। जीवन में मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से मनुष्य अमोघवीर्यत्व प्राप्त किया करता है और अमोघवीर्यत्व प्राप्त कर लेने पर मनुष्य का मन जिसका एक मात्र सम्बन्ध 'काम' से है काबू में हुआ करता है और मन और बुद्धि के काबू में हो जाने पर आत्मा की ओर लग जाता है और आत्मा की ओर लग जाने पर काम वासना क्षीण हो जाती है। विज्ञान भी इस बात का साक्षी है। हर्बर्ट स्पेंसर ने भी जो एक बड़े विज्ञान वेत्ता थे स्थापना की है, कि जितनी ही आत्मिक शक्ति बढ़ेगी उतनी ही काम-वासना कम होगी। काम-वासना के नियन्त्रण के लिये दूसरी जरूरी बात जिस पर आचरण आवश्यक है अर्थ शुद्धि है। अर्थ शुद्धि का अर्थ मोटे रूप में शृंगार वर्जित सादा और तपस्वी जीवन है, और यह जीवन वह जीवन है जिसका कोई सुनिश्चित ध्येय हो। हमारे यहा यह ध्येय ईश्वर प्राप्ति है। बिना जीवन के ध्येय के सीधे सादे और तपस्वी जीवन का कोई अर्थ नहीं। उसकी तुलना ही की जाय तो वह जंगली जीवन से ही भली प्रकार हो सकती है जिसमे विचार और बुद्धि का दाखिला नहीं होता और जो विशेषत. यूरोपीय सभ्यता के प्रारम्भिक स्टेज में देख पड़ता है और आजकल यूरोप के नग्न और नेचर-वाद में देख पड़ रहा है।

आर्यों की सभ्यता में पुत्रोत्पत्ति के ३ सुनहरे सिद्धान्त देख पड़ते हैं। एक सिद्धान्त तो यह है कि विशेष २ व्यक्ति आजीवन ब्रह्मचारी रह कर मोक्ष की सिद्धि कर सकते हैं। इसका सुगम

तरी। ऊतका ब्रह्मचर्य व्रत का पालन है। यूरोपीय इतिहासकार तथा उनका सा मत रखने वाले अन्य इतिहासकार यह आक्षेप करते हैं कि प्राचीन आर्य औलाद के पीछे दीवाने रहते थे। उपर्युक्त सिद्धान्त और इस पर आचरण के अनेक ऐतिहासिक प्रमाणों के होते हुए उनका आक्षेप ग़लत सिद्ध होता है। दूसरा सिद्धान्त यह है कि योग्य पुरुष गृहस्थ मे प्रविष्ट होकर एक दो सन्तान पैदा करके और उन्हें मोक्षाभिमुख बना कर सामाजिक सुविधा पैदा करे और समाज को बल पहुचावे। इस सिद्धान्त की तह मे मनोविज्ञान का उत्तम विश्लेषण छुपा हुआ है। यह सिद्धान्त बतलाता है कि 'काम' से बचना हरेक का काम नहीं। प्रायः लोग गृहस्थ मे प्रवेश किया करते हैं और उनका ऐसा करना अस्वाभाविक नहीं है वरन् एक प्रकार से मनुष्य का कर्त्तव्य भी है क्योंकि यदि गृहस्थ मे प्रवेश न किया जाय तो अन्य आश्रमियों का जीवन निर्वाह जो सर्वथा इस पर अवलम्बित है, कठिन हो जाय। इसलिये सामाजिक सुविधा उत्पन्न करने, काम की स्वाभाविक इच्छा को मर्यादित और नियन्त्रित रूप मे पूरा करने, मोक्ष मार्ग को परिष्कृत करने तथा दूसरों के लिए मोक्ष सुलभ बनाने के लिये गृहस्थ धर्म का पालन जरूरी है। शर्त यह है कि केवल योग्य पुरुष ही इसमें प्रवेश करें तथा १-२ सन्तान उत्पन्न करें। अधिक सन्तान पैदा करने से उन पर कामुकता का आक्षेप आता है। तीसरा सिद्धान्त यह है कि सामाजिक और राष्ट्रीय सुविधा के लिये १-२ से अधिक दस सन्तान तक पैदा करे।

इन तीनों सिद्धान्तो मे जहा आर्यो की अमोघ वीर्यत्व की शक्ति काम करती देख पड़ती है जहा सन्तान पैदा न करना, पैदा करना, वा कम पैदा करना और अत्यधिक पैदा करना सर्वथा मनुष्य के अधीन है, वहा यह भी स्थापना स्वीकार करने के लिए बाधित होना पड़ता है कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को समय समय पर सन्तान की आवश्यकता, अनावश्यकता और अत्यधिक आवश्यकता होती है।

जिस समय समाज मे शान्ति होती है उस समय मोक्ष मार्गियों के अलावा समाज को मृत्यु के परिमाण मे सन्तान की जरूरत होती है। जिस समय युद्ध जारी होता है वा युद्ध बन्द होता है, उस समय सन्तान की बेहद आवश्यकता बढ़ जाती है। इसी तरह सुख शान्ति के कारण जब सन्तान बेहद बढ़ जाती है तब उसके कम करने की जरूरत होती है। अमोघ वीर्यत्व पुरुष में ही यह क्षमता होती है कि वह इच्छानुसार सन्तान पैदा करे, न करे, कम वा ज्यादा करे।

आज माल्थस थियोरी के पक्षपाती कृत्रिम साधनों के द्वारा सन्तति निग्रह करना चाहते हैं परन्तु हम दावे के साथ कह सकते हैं कि वे त्रिकाल मे भी ऐसा नहीं कर सकते। यदि कर भी दें तो उससे स्वास्थ्य और उत्तम सन्तानों के अभाव की दृष्टि से समाज का जो अकल्याण होगा उसकी कल्पना ही भयावह है। सन्तति निरोध के प्रश्न का हल काम वासना के निरोध के बिना संभव नहीं और वर्तमान शृंगार मंडित

कामुकता-जन्य अनार्य सभ्यता में यह सम्भव नहीं। जो लोग कृत्रिम साधना द्वारा संतति निरोध चिल्लाते हैं वे उस चिल्लाहट में समस्या के दूसरे पहलू को भूल जाते प्रतीत होते हैं और वह पहलू शृंगार मंडित इस अनार्य सभ्यता के वीर्यपात को कराने वाले विविध प्रबंध हैं। उन्हें चाहिये कि वे शृंगार मंडित इस अनार्य सभ्यता को शृंगार वर्जित आर्य सभ्यता में परिवर्तित करने का यत्न करें सन्तति निरोध की समस्या स्वतः हल हो जायगी। शृंगार मंडित अनार्य्य सभ्यता में सन्तति निरोध का यत्न समाज को दुराचार और रोगों की ओर प्रेरित करके उसे योग्य सन्तानों से विहीन करके उसका विनाश करना मात्र है।

कुछ लोगों का ख्याल है कि स्त्री को पुरुष और पुरुष को स्त्री उसी प्रकार जरूरी है जैसे भूख के लिए भोजन है। यह बात गलत है। यदि सत्य होती तो पहलवानों का सुरक्षित रहना कठिन हो जाता, विधवा तथा पातिव्रत धर्म का नाम न सुनाई पड़ता। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों की उत्पत्ति न होती। परन्तु हम ये सब बात देख रहे हैं। इससे प्रतीत होता है 'काम' मन का ही विकार है और कमजोर मन वालों के दिमाग की ही उपर्युक्त स्थापना उपज है। वर्तमान अनार्य सभ्यता के कारण मनुष्य के मन बेहद अमर्यादित हो गए हैं और मनुष्य काम्य पदार्थ, काम्य अभिलाषा और काम्य कर्म में लिप्त होकर जिनको वर्त्तमान अनार्य सभ्यता में प्रचुर मात्रा में प्रेरणा मिलती है कामी बन गया है और उसका मन कमजोर हो गया है।

यदि आज का मनुष्य समाज आर्यों की 'काम' सम्बन्धी नीति को जिसको हमने ऊपर की पंक्तियों में रखने का यत्न किया है अपनाकर उस पर आचरण करे तो संसार में जो कामुकता जन्य अशान्ति, दुःख और असमानताएँ व्याप्त हो रही हैं वे दूर हो जावें और संसार में बहुत कुछ सुख और शान्ति का प्रसार हो जाय।

सीमाप्रान्त के हिन्दू

सीमा प्रान्त के हिन्दुओं की दुर्दशा के समाचार जो मिल रहे हैं वे बड़े भयावह और कारुणिक हैं। आए दिन हिन्दुओं को लूट जाने उनके घरों को जलाए जाने, उनको भगाये जाने और कत्ल किए जाने के समाचार सुन पड़ते हैं। अभी हाल में डाकू ४ नौजवान हिन्दू लड़कियों को भगाकर ले गए थे जिनमें से १ वापस मिल गई है। स्पष्ट है वहां हिन्दुओं की धन, सम्पत्ति और जान ही न केवल सुरक्षित नहीं है वरन् उनकी इज्जत भी खतरे में है। उनकी मुसीबतों में हमारी पूर्ण समवेदना है। इतनी बड़ी शक्ति के मुकाबले में सीमाप्रान्त के मुट्ठी भर डाकू बेकाबू हो रहे हैं और महीनों से हो रहे हैं और शान्ति स्थापित होने में नहीं आती, यह बात बड़ी विचित्र जान पड़ रही है। ब्रिटिश सरकार के आगे ये डाकू कुछ भी हैसियत नहीं रखते हैं। यदि सरकार इनके ठीक ठिकाने लगाने पर तुल जाय तो कुछ दिनों में उपद्रव शान्त हो सकते हैं। परन्तु न मालूम इस उपद्रव को शान्त करने में सरकार क्यों ढील से काम ले रही है।

इसका परिणाम वहां के हिन्दुओं को भुगतना पड़ रहा है। सरकार का फ़र्ज़ है कि वह इन सरहदी डाकुओं को उनकी उपद्रवकारी प्रगतियों से रोके और सख्ती से काम ले। जो लड़कियां जबरन भगाई गई हैं और वापस नहीं मिली हैं उन्हें वापस दिलाए, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कुछ वर्ष पूर्व एक यूरोपियन महिलाको, जो सरहदी डाकुओं द्वारा उठालाई गई थी और जिसको वापस लेने के लिए ब्रिटिश सरकार का तमाम ताक़त एक केन्द्र पर केन्द्रित हो गई थी, उसने वापस ले लिया था।

भोपाल नेताओं को सज़ा

उपर्युक्त शीर्षक में सहयोगी 'हिन्दू' लिखता है —

भोपाल सरकार ने अब गत सप्ताह स्थानीय हिन्दू प्रजा परिषद् की बैठक पर पाबन्दी लगाई और पीछे न केवल हिन्दू नेताओं को चुनचुन कर गिरफ्तार ही किया अपितु हिन्दू युवकों को लाठी चार्ज तथा दूसरे अत्याचारों द्वारा आतंक फैला कर त्रस्त किया तो देश भरके प्राय सारे समाचार पत्रों ने सरकार व पुलिस की निन्दा की। जो हिन्दू भाई अपने आपको राष्ट्रीय कहकर इस घटना को साम्प्रदायिक नहीं मानते हैं वे अब आंखें खोलकर देखें कि रियासत के अधिकारियों के मन में साम्प्रदायिकता है या नहीं।

मुकद्दमे में अभियुक्तों का पैरवी के लिये अपने विश्वस्त वकीलों को इजाज़त न देकर अधिकारियों ने अपना पक्षपात दिखलाया है। मौखिक बयान में श्री लालसिंह बी० ए० ने बताया है कि उन्होंने पुलिस आफ़िसर मि० आर्म्स्ट्रांग को साफ २ बता दिया था कि कान्फ्रेंस में कोई भी साम्प्रदायिक कार्यवाही नहीं की जायगी — नाहीं किसी बाहरी व्यक्ति को बुलाया जायगा।

इस पर भी जो सजायें दी गई हैं उनसे स्पष्ट है कि रियासत के अधिकारी केवल नेताओं को ही नहीं दबाना चाहते अपितु वे रियासत के हिन्दू मात्र पर अपना आतंक बिठाना चाहते हैं।

आज प्रजातन्त्र के युग में नवाब भोपाल जैसे नव शिक्षित शासक के राज्य में उनकी बहुसंख्यक प्रजा को ऐसे व्यवहार की कभी आशा नहीं हो सकती। क्या हम आशा करें कि, प्रभावशाली व्यक्ति विशेषतः भारत सरकार इस मामले में हस्तक्षेप कर भोपाल की निरीह हिन्दू प्रजा की सहायता करेगी। इधर देखना यह है कि भोपाल की प्रजा अपने मौलिक नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये कहाँ तक गम्भीर है?"

अनुकरणीय दान

लुध्याना निवासी श्री स्वर्गीय ला० अक्ष्मूराम जी अग्रवालसे १०००) सार्वदेशिक सभाको विदेशप्रचार के निमित्त उनकी सम्पत्ति के ट्रस्ट के कार्यकर्ता श्री दीवान रामशरणदासजी से स्वर्गीय लाला जी की वसीयत के अनुसार प्राप्त हुए हैं। स्वर्गीय लाला जी की यह 'मसाला बा़ी' आर्य्य समाज के प्रति उनके प्रेम तथा विदेशों में वैदिक धर्म्म के प्रचार की उनकी इच्छा और चिन्ता की द्योतक है वहां धनी मानी सज्जनों के लिए अपने धन के सदुपयोग के लिए एक अनुकरणीय मिसाल है। क्या हम आशा करें अन्य धनी मानी सज्जन विदेश प्रचार के निमित्त जो सभा ने हाथ में लिया हुआ है और जिसके सुन्दर फल

जाने लगे हैं सभा के निर्णय पर ध्यान रक्खेंगे ?

ईरान में विवाह प्रणाली में सुधार

ईरान वेग के साथ उन्नति के मार्ग पर बढ़ा चला आ रहा है। वहां स्त्रियों में 'परदा' इत्यादि तो पहले ही नहीं और न मुस्लिम संस्कृति अपने वास्तविक रूप में वहां देख पड़ती है। अब वहां विवाह प्रणाली में यह सुधार किया गया है कि शादी करने वाली लड़की को अधिकार है कि वह अपना जीवन-संगी स्वयं चुने और शादी के पूर्व उससे मिल भी सके।

लाठी राज्य का अनुकरणीय क़दम

काठियावाड़ की एक रियासत लाठी के शासक हिज़हाईनैस ठाकुर साहब ने भमेश्वर के प्रसिद्ध सार्वजनिक मन्दिर का दरवाज़ा हरिजनों के लिए खोल दिया है और तमाम हरिजनों को आज्ञा दे दी गई है कि वे उसमें आकर उपासना कर सकते हैं। यह उदाहरण ट्रावन्कोर राज्य के क़दम के समर्थन के लिए एक अच्छा उदाहरण है।

बनारस के पंडितों की व्यवस्था

श्री पं०' मदनमोहन जी मालवीय ने काशी के सनातनधर्मी पंडितों से अभी हाल में एक व्यवस्था ली है जिसके अनुसार एक वर्ण के अवान्तर भेदों का आपस में विवाह होना शास्त्रीय दृष्टि से जायज़ क़रार दे दिया गया है। इस व्यवस्था के अनुसार कान्यकुब्ज, मालवीय इत्यादि ब्राह्मणों का आपस में रोटी बेटी के व्यवहारों का बंधन तोड़ दिया गया है। यदि आज ऐसा होता है तो कल अन्तर्जातीय विवाहों के बंधन भी टूट जावेंगे, ऐसी आशा उचित रीति से की जा सकती है। हिन्दू जाति के संगठन की दृष्टि से इस प्रकार के क़दम बड़े महत्व-पूर्ण हैं। हिन्दू जाति का हित अपने दिलों में रखने वाले सज्जन निश्चय ही इस व्यवस्था का स्वागत करेंगे।

चिन्ताजनक समाचार

हमें यह जानकर बड़ी चिन्ता हुई है कि सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री बा० घनश्यामसिंह जी के दामाद श्री विश्वनाथ प्रसाद जी दानी केम्ब्रिज (लन्दन) में सख्त बीमार हैं। श्री दानी जी शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करें, यही प्रभु से प्रार्थना है। हमें यह जानकर सन्तोष हुआ है कि लन्दन में श्री टेकचन्द जी तथा पं० ऋषिराम जी बी० ए०, आदि जो आर्य भाई वहां मौजूद हैं यथा शक्य उनकी देख रेख कर रहे हैं। श्री प्रधान जी की पुत्री चि० शकुन्तला देवी दानी बी ए अपने पति के निकट पहुंच गई हैं। कदाचित श्री प्रधान जी को भी वहां जाना पड़ जाय।

एक निमन्त्रण

श्री ला० टेकचंद जी आर्य (लंडन) ने हमें यह घोषणा करने की आज्ञा दी है कि जो भारतवासी लंडन में जावें वे उनकी सेवा से अवश्य लाभ उठावें। इस समय भाई टेकचन्द जी की उम्र ६४ वर्ष की है परन्तु आप में सेवा-भाव अभी तक नवयुवकों के समान वेगवान है। हमें आशा है कि भाई टेकचंद जी अपने जीवन के अन्तिम काल में विदेश प्रचार के किसी महत्व-पूर्ण कार्य के संपादन में सार्वदेशिक सभा का हाथ बटावेंगे।

—x—

श्री ला० टकचन्दजी आर्य्य



आप उन पुराने सदाचारी और दृढ आर्य्य समाजियों में से हैं जिन्हों ने आर्य्यसमाज की सेवा तन मन और धन से की है। आजकल आप लन्दन में व्यापार करते हैं। वहां आप ने अपना एक मकान आर्य्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों के लिए अर्पण कर दिया है।

अध्यात्म धारा

तप और त्याग

(श्री० स्वामी केवलानन्दजी सरस्वती निगमाश्रम, गंज, (बिजनौर)

यह एक निस्सन्देह और निर्विवाद बात है कि ससार के प्रत्येक कर्म-कलाप में, उसके कर्त्ता के व्यक्तित्व का प्रभाव अवश्य पड़ता है। समस्त धार्मिक जगत् का इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रारम्भ काल में उन उन धर्म या मतान्तरों के सस्थापक महानुभावों के वैयक्तिक जीवन ही ने तात्कालिक मानवमण्डल को अपनी ओर अधिक रूप से आकृष्ट किया था। क्योंकि जो कार्य्य सर्वात्मना रूप से किया जाता है वही पुष्पित और फलित होकर विस्तार को प्राप्त होता है। अतएव हमारे प्रात स्मरणीय ऋषि मुनियों ने धर्म-प्रचार के कार्य्य मे प्रचारक को सतत सावधान रहने का सर्व सुन्दर और सार-गर्भित उपदेश दिया है। साख्यशास्त्र मे लिखा है कि उपदेश, उपदेशक के ठीक होने से ही ठीक होता है नहीं तो अन्धपरम्परा अपना गहरा प्रभाव जमा कर मानवीय समाज को विवेक-शून्य बना देती है। तात्पर्य्य यह है कि उपदेशक को अपना कर्तव्य केवल कथनमात्र ही नहीं समझना चाहिये प्रत्युत उन सब बातो को अपने जीवन मे परिणत करके यथार्थ सत्योपदेष्टा होना चाहिये। और यही एक कठिन बात है। यदि जीवन में कथन और कर्म का समन्वय हो जाय तो फिर सत्पुरुषता से सम्बन्ध हो ही जाता है। परन्तु इस धराधाम पर ऐसे नर विरले ही नजर आते हैं। महात्मा तुलसीदास जी ने कहा है —

पर-उपदेश कुशल बहुतेरे।
जे आचरहि ते नर न घनेरे।

एक और किसी अनुभवी का वचन है —

कथनी मीठी खाण्ड सी, करनी विष की लोय।
कथनी से करनी करे, तो विष से अमृत होय। १।
कथनी के शूरा घने-थोथे बाधे तीर।
प्रेम-चोट जिनके लगी, तिनके विकल शरीर ॥ २ ॥

सत्पुरुष का लक्षण भी तो यही है।

"यथा मतिस्तथोक्तिर्यथोक्तिस्तथा मति ।
सत्पुरुषस्य लक्षणमतो विपरीतमसत्पुरुषस्य ।।

अर्थात्—मन वचन और कर्म की त्रिवेणी मे अवगाहन करने वाले तो सत्पुरुष, और इससे वञ्चित रहने वाले असत्पुरुष कहाते हैं। परन्तु यह सत्पुरुषता कोई बाजारू चीज़ नही है जो कुछ द्रव्य खर्च करके खरीद ली जाय। किन्तु जिसने अपने आपको सत्पथारूढ़ करके परमेश प्रेम का पुजारी बना लिया है, उसी के हाथ यह विविध भव्य भावापन्न रत्न-राशि लग जाती है। सचमुच वही महात्मा है जो मानवता को आध्यात्मिक शाश्वत शान्ति का रसास्वादन कराके अपनी इच्छा शक्ति के द्वारा विश्व-हितैषिता के

लिये अग्रसर कर देता है। यह कार्य तभी तो हो सकता है जब जीवन में तप और त्याग का समन्वय हो जाय। यद्यपि तप और त्याग ये शब्द लिखने और पढ़ने में बहुत छोटे लगते हैं परन्तु विचार करने से इनकी गम्भीरता और उपयोगिता आगे से बढ़ती जाती है। यहां हम इन दोनों शब्दों का संक्षिप्त और उपयोगी वर्णन करने के पश्चात् स्वाभिलषित अर्थ की ओर प्रिय पाठकों का ध्यान आकर्षित करेंगे। तप अन्तःकरण की उस वृत्ति के जागरण करने का नाम है जो मानवीय जीवन में द्वन्द्वातीत अवस्था उत्पन्न करके उसे स्वधर्मानुष्ठान की ओर अग्रसर कर देती है, अर्थात् सुख, दुख, हानि, लाभ, मान, आदि विरोधी भावनाओं में समबुद्धि रहने की अमोघ शक्ति प्रदान करके उन्नति के अत्युच्च शिखर पर विराजमान कर देती है। जिस प्रकार गंगा-प्रवाह दुर्गम, विषम पहाड़ों और सन्मुख आये पाषाण-समुदाय को ठुकराता हुआ अपने गन्तव्यस्थान समुद्र में ही जाकर विश्राम लेता है, इसी प्रकार तपस्वी की इच्छा शक्ति का पुण्य प्रवाह भी अपने विघ्न बाधाओं को तिरस्कृत करता हुआ करुणा वरुणालय भगवान् को प्राप्त करके सफल मनोरथ होता है। महाराज मनु का कथन है—

तपो विद्याच विप्रस्य निःश्रेयस्करं परम्।
तपसा किल्बिषं हन्ति, विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

भावार्थ यह है कि विवेकशील ब्राह्मण के लिये तप और ज्ञान ही मुक्ति धाम तक पहुँचाने का सर्व श्रेष्ठ साधन है। अर्थात् तपस्या से समस्त पाप-पुञ्ज को विनष्ट कर ज्ञान से मोक्षानन्द का अनुभव करता है। परन्तु सखेद लिखना पड़ता है कि वर्तमान काल में तपस्या का उद्देश्य प्रायः बाह्यप्रक्रिया-प्रदर्शन मात्र ही रह गया है। अन्दर चाहे कुछ भी हो परन्तु बाहर से हमारा वेष तापस ही होना चाहिये। बस इस भावना ने भारतवर्ष की विमल विभूति तपस्या के सारे सार को नष्टप्राय कर दिया है। किसी कवि का वचन है.—

कामः क्रोधस्तथा लोभ तृष्णाव्याकुलचेतसः।
तेऽपि तिष्ठन्ति तपसि, तपः सारस्ततो मतः॥

अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, तथा तृष्णा के जटिल जाल में जकड़े हुए लोग भी तपस्वी बने फिरते हैं, अतएव तप का सार ही न मालूम कहां चला गया। कहां तक कहें तप की इस दुर्दशा का अवलोकन कर किस विचारशील मनुष्य को दुःख न होगा। न मालूम कब हमारे सुदिनों का सूर्योदय होगा। जबकि हम अपने असली रूप को समझ कर तपस्वी बनेगें। अब रही त्याग की बात। इसके समझने में भी असम्य भूल हो चुकी है। इसे भी हमने बाह्य दृष्टि के पैमाने से नापने में अपनी बुद्धि का कौशल समझा है। भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में अर्जुन ने योगिराज श्रीकृष्ण से स्थितप्रज्ञ के सम्बन्ध में कतिपय प्रश्न किये हैं और पूछा है कि स्थितप्रज्ञ या ज्ञानी का बाह्यरूप तथा बोलचाल, बैठना उठना आदि किस प्रकार का है। इसके उत्तर में भगवान् कृष्ण ने कहा है:—अर्जुन! जिस समय कोई श्रेष्ठ पन्थ का पथिक अपने मन गत समस्त विकारों को त्याग देता है तथा

अपने आप में ही मोद मुदित रहता है, तब उसको स्थित प्रज्ञ कहते हैं। इत्यादि सन्दर्भ से आपको पता चलेगा कि श्री कृष्ण महाराज ने जितने गुण बताये हैं वे सब आन्तरिक ही हैं बाह्य नहीं। क्योंकि बाह्य दृष्टि से ज्ञानी और अज्ञानी का कुछ पता नहीं चलता। इसी लिये अर्जुन के बाह्य दृष्टि वाले प्रश्नों का उत्तर न देकर महाराज कृष्ण ने आभ्यन्तरिक विशेषताओं का ही वर्णन किया है। ठीक तो है —

काक कृष्ण पिक कृष्ण को भेद पिककाकयो ।
वसन्त समये प्राप्ते, काक काक पिक' पिक ॥

सारांश यह है कि बाह्य दृष्टि से काक और कोयल दोनों ही काले हैं। परन्तु वसन्त इन दोनों का व्यावर्तक हो जाता है। अर्थात आन्तरिक गुण से काक और कोयल भिन्न भिन्न अवगत हो जाते हैं। त्याग भी एक आन्तरिक भावना है जब तक वह जागृत नहीं होती तब तक बाह्य आडम्बरों से कुछ काम नहीं चलता। त्यागी तो होना ही कठिन है किसी अनुभवी विद्वान् का वचन है.—

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डित' ।
वक्ता दशसहस्रेषु, त्यागी भवति वा न वा ।

सैकड़ों में कोई शूर वीर तथा हजारों में कोई पण्डित, एव दश हजारों मे कोई वक्ता वो मिल सकता है परन्तु त्यागी मिलेगा या नहीं इस बात को शीघ्रतया नहीं कहा जा सकता।

वास्तव में वासना के परित्याग को ही त्याग कहना चाहिये या यों कहो कि अपनी इच्छा पर निर्भर न रह कर ईश्वरेच्छा का आश्रय लेना ही सच्चा त्याग है। त्यागी पुरुष यह सोच कर कि सुख और दु ख अदृष्टमूलक है, अतएव प्रथम अदृष्ट का विश्वासी होता है फिर यह विचार कर कि अदृष्ट भी तो जड़ है वह भी किसी प्रेरक की अपेक्षा रखता है और वह प्रेरक शक्ति सिवाय ईश्वरेच्छा के और क्या हो सकती है। एव ईश्वरेच्छा भी न्याय मूलक है अत यथा— कर्म, फलदाता परमात्मा ही है। इस प्रकार यह भुवन पावन भगवान् का विश्वासी बनकर तथा निमित्तमात्र विहित कर्मकलाप करता हुआ मनुष्य जीवन के मुख्य उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। इस सारे कथन का तात्पर्य्य यह है कि जब इस तप और त्याग की भावना किसी भावुक भक्त के हृदय में भर जाती है तब काञ्चनमणि सयोगवत् इसका जीवन कान्त गुणों का आधार बनकर जगतीतल के मानव मण्डल को अनुकरणीय हो जाता है। ऐसा महिमा-महान् महात्मा अपने दर्शनमात्र से मानव-समूह को पवित्र करता हुआ सबके लिये श्रद्धास्पद बन जाता है। इत्योम्

सत्यार्थप्रकाश लेखमाला—

गोत्र

[लेखक श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी]

—❀—

सत्यार्थ प्रकाश मे गोत्र दो स्थानों पर मिलता है। एक तो दुर्योधन को महर्षि ने गोत्रहत्यारा लिखा है दूसरे विवाह प्रकरण में 'असगोत्रा च या पितु , पाठ है। विवाह मे कन्या पिता के गोत्र की न हो, यह इसके अर्थ है।

अब चिंतनीय है कि गोत्र क्या है ' इस विषय पर आर्य मित्र मे भी मैंने एक लेख पढ़ा था उस लेख के लेखक महाशय ने लिखा था कि गोत्र स्थायी हैं जिस से प्रतीत होता है कि आपने गोत्र विषयक पुस्तक नहीं देखे हैं केवल सुनी सुनाई बातों को आधार मान कर गोत्र की स्थायी व्यवस्था करदी है। गोत्र विषयक जो पुस्तक हैं उनमें गोत्र प्रवर निबन्ध कदम्ब सब से मुख्य प्रतीत होता है। उसने इस विषय को विस्तार से लिखा है। उसमें यह साफ लिखा है गोत्र मुख्य ब्राह्मणों का ही होता है अन्य क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का गोत्र नहीं होता है। शूद्र का तो और भी कई नही मानते हैं। क्षत्रिय, वैश्य के पुरोहित का गोत्र ही उनका गोत्र होता है ऐसा भी कई मानते हैं। इसके अतिरिक्त चारों वर्णों का अपना २ गोत्र होता है ऐसा मानने वाले भी हैं। स्मृति तत्व में १११ पृष्ठ पर इस विषय पर विचार किया गया है। आर्यसमाज भी चारों वर्णों का गोत्र मानता है। मैं इस विषय पर कुछ 'विवाह मर्यादा' शीर्षक लेख में लिख भी चुका हूं। परन्तु अब यह लिखना चाहता हूँ कि गोत्र कितने माने जाते थे उनके मुख्य २ भेद किस प्रकार हैं इस समय जो गोत्र कहलाते है वे वही हैं जो प्रथम थे अथवा नूतन हैं? ताकि पाठक गोत्र को समझ सकें कि यह क्या वस्तु है। मुख्य गोत्र आठ हैं यथा —

जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रात्रिगोतमा।
वसिष्ठकश्यपागस्त्या मुनयो गोत्रकारिण ॥

जमदग्नि, भरद्वाज, विश्वामित्र, अत्रि, गोतम, वसिष्ठ, कश्यप, अगस्त्य, गोत्र करने वाले मुनि हैं अर्थात् यह आठ गोत्र होते हैं जो इनकी सन्तान हैं वह इनके नाम से कही जाती हैं यह उनके गोत्र हैं इसी प्रकार—

विश्वामित्रो जमदग्निर्भरद्वाजोऽथ गोतमः।
अत्रि वसिष्ठ कश्यपा इत्येते सप्त ऋषयः।
सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमाना यदपत्य तद्गोत्रम्।

विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गोतम, अत्रि, वसिष्ठ, कश्यप सात ऋषि यह और आठवें अगस्त्य इनकी जो सन्तान है वह इसी नाम से कही जाती है। अर्थात् उनका यही गोत्र होता है।

यह जो आठ मुख्य गोत्र हैं इनके फिर आगे भेद हैं यह प्राय ४६ कहे जाते हैं। उनके नाम भी लिखे देता हूं ताकि पाठकों को विचार करने में सहायता मिले।

(१) कुशिका । (२) लोहिता । (३) रौक्षका (४) काम का पत्र । (५) अजा । (६) कता । (७) धनञ्जय । (८) अघमर्षण (९) पूर्णा । (१०) इन्द्रकौशिका ।

इनके पुन क्रम से ४२, ६, ३, ५, ३, ८, ६, ६, ३, २, भेद हैं। यदि सबके नाम देखना चाहें तो अन्य पुस्तकों को देखलें यहा नहीं लिखूंगा।

भारद्वाज ४ प्रकार के हैं—

(१) भारद्वाज (२) गर्गा (३) ऋक्षा (४) कपय

इनके भेद क्रम विकल्प से निम्न हैं—

३ वा १६० । ५ वा ५० । ५ वा ९ । ३ वा २५ ।

अत्रि गोत्र के चार भेद हैं—

(१) अत्रय. (२) वाद् भुतका (३) गविष्ठरा (४) मुद्‌गला ।

इनके क्रम से ५०, ३, १०, ११ भेद हैं

कश्यप गोत्र के चार भेद हैं

(१) निध्रुवा । (२) कश्यपा । (३) रेभा । (४) शाण्डिला ।

इनके क्रमसे ९०, २, ३, ३१ भेद हैं

लौगाक्षि गोत्र भी कश्यप के अंतर्भूत है।

वसिष्ठ पाच प्रकार के हैं—

(१) वसिष्ठ (२) कुण्डिना (३) उपमन्यव (४) पाराशरा (५) जातुकर्णय.

इनके क्रम से भेद यह हैं—

३२, २०, २२, ३०, ५ ॥

अगस्त्य गोत्र के भेद ४ वा १० है इनके नाम यह हैं—

(१) इध्मवाहा । (२) साम्भवाहा । (३) सोमवाहा । (४) यज्ञवाहा । (५) दर्भवाहा । (६) स्मार वाहा (७) अगस्त्या (८) पूर्णमासा । (९) हिमोदका । (१०) पार्णिका ।

इनके भेद क्रम से इस संख्या में हैं—

५०, ३, ३, ३, ३, ३, ३, ३, ३, ३, हैं।

गोतम, भार्गव, आगिरस तीन एक ही माने जाते हैं पुन इनके भेद निम्न प्रकार से हैं।

गोतम गोत्र के १० भेद हैं—

(१) आपास्या। (२) शारद्वता (३) कौमण्डा (४) दीर्घ तमसः। (५) औशनस (६) कोणुपालेय (७) राहुगण । (८) सोमराजक । (९) वामदेवा (१०) बृहदुकथाः ।

इनके भेद क्रमसे इतने हैं—

३ वा १८, ३ वा ७०, ५ वा १०, ३, ३, ३

आगिरस चार प्रकार के हैं

(१) हारीत, (२) कुत्स, (३) कण्व (४) रथीतर। इनके पुन तीन २ भेद हैं। भार्गव ७ भेद वाले हैं।

(१) वत्स, (२) आर्ष्टिषेण (३) यस्का (४) मित्रयुव (५) वैन्या (६) विदा (७) शुनका ।

पुन इनके भेद ५ वा २००, ५ वा २०, ३ वा ५३, ३ वा ३०, ३, ५ वा २०, ३ वा १७ हैं।

इस समय जो गोत्र मिलते हैं वह इनमें नहीं हैं ब्राह्मणों के अवस्थी, शारदा, पाठक आदि इनसे बाहर ही हैं।

क्षत्रियों के खन्न, बहल, चोपड़ा, चड्ढा, खन्ना भी वैसे ही है। वैश्यों के मित्तल, बासल

बाहर हैं।

इसी प्रकार जो अन्य जातियां मानी जाती हैं उनके गोत्र हैं। इस समय सहस्रों गोत्र हैं जैसा कि बोधायन लिखता है —

गोत्राणितु सहस्राणि अयुतान्यर्बुदानिच। जो इनमे नहीं आते हैं।

प्रतीत होता है जो व्यक्ति किसी वश में प्रभाव वाला हुआ उससे गोत्र बनगया जैसे महाराजा पटियाला सिद्धू हैं इनका कोई पूर्वज इस नाम से था उसी की सन्तान सिद्धू होगई। कायस्थों मे एक बरादरी भटनागर है यह भटनेर से आए हुए हैं। आज कल जिसे हनुमान गढ़ कहते है जो बीकानेर राज्यमे है प्रथम इसका नाम भटनेर था वहां से आने से वह भटनागर हो गए। जब यह अवस्था है तो गोत्र स्थायी कैसे माना जासकता। है यह अस्थायी वस्तु है। जैसा कि मेधातिथि ने मनुस्मृति टीका में लिखा है—

अन्येतु गोत्रं वंश माहु। न तत्रावध्यपेक्षा यावदेतज्ज्ञायते वयमेकवशा॥ अर्थात् गोत्र वंश का नाम है जब तक ज्ञात हो कि हम एक वंश के हैं वहां गोत्र होता है इस लिये यह नूतन भी बन सकते है और बनते हैं। सत्याषाढ़ लिखता है—

अज्ञातबन्धो पुरोहितप्रवरेगेति।
आचार्यगोत्रप्रवरानभिज्ञस्तु द्विज स्वयं दत्वात्मान तु कस्मैचित्तद् गोत्रप्रवरो भवेत्।

अर्थात् गोत्र भूलजाने पर आचार्य का गोत्र मानले यह भी स्मरण न रहे तो अपने आप को किसी को देदे तो वही गोत्र होगा।

अत गोत्र अस्थायी ही मानना उचित है स्थायी नहीं। कोई प्रभावशाली व्यक्ति पूर्व गोत्र को बदल देता था और अबभी बदल देगा।

——

वेद और पुराणों का तारतम्य

(ले०—श्री प० सूर्यदेव शर्मा सिद्धान्त शास्त्री, सा हित्यालङ्कार, एम ए एल. टी अजमेर)

आज कल इस प्रकाश के युग में भी हमारे अनेक भाई यह कह दिया करते है कि हिन्दू धम वेदपुराणानुमोदित है—अर्थात् उसके सिद्धान्त वेदो और पुराणों के आधार पर अवलम्बित है। यदि इस कथन मे उनका मतलब पुराणों से प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थों का हो, तब तो हमे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन वे पुराणो का अर्थ वे अष्टादश पुराण करते है जो विभिन्न काल मे भारत के भिन्न २ भागों मे बनते रहे हैं और जिनके कर्ता गलती से महर्षि वेदव्यास जी को बताया जाता है, उसके लिये श्लोक भी गढ लिया गया है, जैसे—

"अष्टादशपुराणाना कर्त्ता सत्यवतीसुत ।"

अर्थात् १८ पुराणो के रचयिता सत्यवती के पुत्र व्यास जी हैं। इस कपोल कल्पित बात की पल तो अब अनेक विद्वान् खोल चुके हैं, और यह पूर्णतया सिद्ध किया जा चुका है कि सारे पुराण किसी एक ही व्यक्ति की रचना नहीं हैं, और न किसी एक ही समय में बने भी हैं। यद्यपि इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि पुराणों के अन्दर से प्राचीन भारतीय इतिहास की निर्माण-सामग्री प्रचुरता से मिल सकती है, और वे विपुल परिश्रम करने वाले इतिहास लेखक के लिये कुछ सहायक सिद्ध हो सकते हैं, लेकिन इससे समस्त पुराणों की सत्यता अथवा उनका एककालीन और एककर्तृत्व किसी प्रकार से सिद्ध नहीं हो सकता। इस बात को सनातनधर्म के महोपदेशक पं ज्वालाप्रसाद जी ने भी अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराणदर्पण" की भूमिका मे दबी जबान से ही स्वीकार किया है। लेकिन हमे हँसी तो उस समय आती है जब पुराणों को घसीट कर परम पुनीत वेदों के मुकाबिले मे रक्खा जाता है, यही नहीं किन्तु अनेक बातों मे पुराणों के पक्षपाती अपनी अज्ञानता अथवा हठ के कारण उन्हें वेदों से भी श्रेष्ठ सिद्ध करने का व्यर्थ और हास्यास्पद प्रयत्न करते देखे जाते हैं। इसी मत का कुछ दिग्दर्शन और निराकरण इस लेख में किया जायगा।

सबसे पहली बात तो वेदों और पुराणों के उत्पत्तिकाल क विषय मे है। यह मत तो अब सर्वमान्य है कि ससार के साहित्य मे वेद सब से प्राचीनतम पुस्तक हैं। पुराण बेचारों की तो गिनती ही किसी मे नहीं है जो उनकी तुलना में रखे जा सकें। वेदों की प्राचीनता को आज न केवल आर्यसमाजी और हिन्दू ही स्वीकार करते है किन्तु पाश्चात्य विद्वान् भी उनकी परमप्राचीनता के सम्मुख नतमस्तक होकर प्रो. मैक्समूलर के शब्दों मे कहने लगते हैं:—

"The Rigved is the oldest book in the Library of the world."

अर्थात् ससार के पुस्तकालय में और मानव समाज के साहित्य में यदि कोई सब से प्राचीन ग्रन्थ है तो वह ऋग्वेद है। न केवल पौरस्त्य और पाश्चात्य विद्वानों का ही इस विषय में ऐकमत्य है किन्तु अनुसन्धान के अन्य साधन पुरातत्व-विभाग आदि द्वारा भी वेदों की प्राचीनता में अब किसी को सन्देह नहीं रहा है। लेकिन शोक है कि अन्यदेशीय और अन्यमतीय विद्वान तो वेदों की सर्वप्राचीनता सिद्ध करें किन्तु हमारे पुराणों के पक्षपाती वेदों के मुक़ाबले में पुराणों की प्राचीनता सिद्ध करने का प्रयत्न करें। सुनिये पुराणों की उत्पत्ति के विषय में शिवपुराण स्वय क्या कहता है —

प्रथमं सर्वशास्त्राणां पुराणं ब्रह्मणा स्मृतम् ।
अनन्तरं तु वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गताः ॥३२॥
(शिवपुराण वायुसहिता खण्ड १ अ. १)

अर्थात् सब शास्त्रों से पूर्व ब्रह्मा ने पुराण का स्मरण किया और तदनन्तर ब्रह्मा के मुखों से चारों वेद निकले। लीजिये हद हो गई! भाषा विज्ञानशास्त्र और तर्कशास्त्र सब एक ओर रक्खे रह गये! पुराण तो वेदों के भी ज्येष्ठ भाई हुये, इसलिये उनका महत्व अधिक माना जाना चाहिये। ऐसे २ अनर्गल प्रलापों से ही वेद की महत्ता लोगों के दिल से कम होती गई है। पुराणों के अनुवादकर्त्ता डा विल्सन जैसे विद्वान् भी ऐसे ही उद्धरणों को पढ़ कर वेदों से अश्रद्धालु से हो गये। शिवपुराण के इस श्लोक ने न मालूम वेद के कितने श्रद्धालुओं के दिलों पर हड़ताल फेर दी होगी। भला जिन पुराणों में मध्यकालीन इतिहास की घटनायें-ईसा और मुहम्मद का हाल और महारानी विक्टोरिया तक का वृत्तान्त दिया हो (जो किसी आगामी लेख में दिखाया जायगा) वे वेदों से भी अधिक प्राचीनता का दावा करें इससे बढ़ कर और हास्यास्पद मिथ्या दम्भ क्या हो सकता है? तब भी पुराणों के विश्वासी अपनी आंखें बन्द किये हुये ही उनको मानते चले जाते हैं।

दूसरी बात वेद और पुराणों के प्रामाण्या-प्रामाण्य विषय की है वेदों का स्वतःप्रमाण होना ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त सभी मानते आये हैं। मनु महाराज ने तो यहां तक लिख दिया है —

"धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः"।

अर्थात् धर्म की जिज्ञासा रखने वालों के लिये सब से बढ़ कर प्रमाण यदि कोई है तो वह वेद ही है। भला जिन वेदों में अटल भक्ति और श्रद्धा रखने वाले कुमारिल भट्टाचार्य यह कहते हुये कि "यदि वेदाः प्रमाणाः स्युः तर्हि जीवेयम्" छत से कूद पड़ते हैं और अपने जीवन की कुछ भी चिन्ता नहीं करते, और भला जिन वेदों की रक्षा के लिये यवनकाल में लाखों ब्राह्मण अपने सिर कटा देते हैं, उनके लिये पुराणों का निम्न लिखित कथन कितना गर्हित और निन्दनीय है —

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः
नासावृषिर्यस्य मतं न भिन्नम् ।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां
महाजनो येन गतः स पन्था ॥
(गरुड़पुराण आचार काण्ड अ० १०९-५१)

अर्थात् तर्क को कोई प्रतिष्ठा नहीं, वेद सब भिन्न २ मार्ग बतलाते हैं। कोई ऋषि भी ऐसा नहीं जिसका मत भिन्न न हो, ऐसी दशा में धर्म की गुफा में छिपा हुआ तत्व कैसे जाना जाय ?

देखा आपने ? यह है वेदों के प्रति श्रद्धा कम करने की शैली। भला इसको पढ़ कर "प्रमाणं परम श्रुतिः" को कौन मानेगा। अप्रत्यक्ष रूप से न केवल वेदों की ही, किन्तु प्राचीन ऋषियों की और तर्क की भी जिसको निरुक्तकार ने "तर्क ऋषि" कहा था कितनी जोरदार निन्दा की गई है। जब वेदों का प्रमाण ही नहीं उसका ऐकमत्य ही नहीं, तो भला उसको कौन पढ़ने लगा है ? उनमें श्रद्धा कौन रखने लगा है ? शायद यही कारण है कि आज हमारे बहुत से भाई वेदों के मुकाबिले में पुराणों का अधिक आदर करते हैं। और वैदिक आर्य कहलाने की अपेक्षा पौराणिक कहलाना अधिक पसन्द करते हैं।

तीसरी बात वेदों की उत्पत्ति के प्रकार के विषय में है। मनुस्मृति में तो लिखा है "अग्नि-वायुरविभ्यस्तु त्रय ब्रह्म सनातनम्"
इत्यादि। अर्थात् अग्नि, वायु, आदित्य से ऋक्, यजु, साम की उत्पत्ति या अभिव्यक्ति हुई। ब्राह्मण भी यही कहता है "अग्नेऋग्वेदो, वायोर्यजुर्वेद, सूर्यात्सामवेद"। और ऐसा ही आज तक के महर्षि और विद्वान् मानते भी आये हैं, लेकिन पुराणों में उनको उत्पत्ति का एक तमाशा ही कर दिया। जैसा पूर्व लिखा जा चुका है-चारों वेद ब्रह्मा के चार मुखों से निकले हुए बतला दिये। इस प्रकार पुराणों ने वेद की प्रतिष्ठा घटानेमें यहा भी कोई बात उठा न रक्खी। एक ४ मुखवाला ब्रह्मा कल्पित कर उसके मुखों से एक एक वेद की उत्पत्ति बतलाना वेदों को असभवता की कोटि में ले जाना है, जिससे उनके प्रति विद्वानों की श्रद्धा कम होती है, हा, मूर्खों को श्रद्धा भले ही बढ़ जाय।

चोथी बात पुराणों में वर्णित उन सिद्धान्तों की है जो स्पष्ट वेद के विरुद्ध जाते हैं। उनमें से प्रत्येक की विवेचना करना तो इस छोटे से लेख में सभव नहीं, लेकिन उनके स्मरण मात्र से यह ध्यान हो जाता है कि इन पुराण कर्त्ताओं को न मालूम सूझा क्या था और वे वेदों के विरुद्ध लोगों को अज्ञानान्धकार में क्यों घसीट रहे थे ? हा, जैसा कि पद्म पुराण ने कह भी दिया है—

"व्यामोहाय चराचरस्य जगतश्चैते पुराणागमा"।

इन पुराणों का आगम ससार में चराचर को मोह में डालने के लिये हुआ है। वास्तव में यही बात ठीक भी जचती है नहीं तो क्या आवश्यकता थी कि जिन देवों की वेद में प्रतिष्ठा है उनकी पुराणों मे निन्दा। "छले दक्ष सुरा सर्वे मुनयश्च तपोधना" अर्थात् सब देवता और मुनि कपट छल में दक्ष हैं। वेद अवतारवाद, मूर्तिपूजा आदि का निषेध करता है—ये पुराण उनका विधान बतलाते हैं। वेद में हिंसा और मासभक्षण वर्जित है, पुराणों में अनेक स्थानों पर मासभक्षण दिखलाया गया है। और "गवा लक्ष छेदनम्" तक कह कर आर्य

आर्य समाज का स्वरूप

ले० श्री ईश्वरी प्रसाद जी

आर्य समाज न तो राजनैतिक सोसाइटी है, न तार्किकों का स्कूल है और न झगडालुओं का गिरोह ही है। यह एक धार्मिक सोसाइटी है और यदि यह शिक्षा और समाज की समस्याओं की ओर ध्यान देती है तो इसलिए कि यह इन समस्याओं को धार्मिक समस्याओं के साथ जुडा हुआ समझती है पृथक चीजें नहीं समझती है। आर्य-समाज का धर्म केवल परमात्मा वा परलोक मे विश्वास पैदा करने तक सीमित नहीं है। वरन् आर्य समाज के धर्म में मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास यथा बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक पूर्णताएँ सन्निहित है। ये धार्मिक जीवन के अङ्ग हैं और इनके द्वारा ही मनुष्य परमात्मा को प्राप्त करने मे समर्थ होता है। आर्य समाज अपनी विविध प्रगतियों के बावजूद भी धार्मिक सोसाइटी है और इसके अस्तित्व का मूलभूत उद्देश्य धार्मिक सुधार करना और प्राचीन वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करना है।

आर्य समाज धार्मिक सोसाइटी है इससे यह न समझा जाना चाहिए कि वह स्वय कोई धर्म वा मत है। यह धार्मिक समाज है जिसका विश्वास वैदिक सिद्धान्तों में है और उन्हीं सिद्धान्तों का प्रचार करना इस का उद्देश्य है। उस का मुख्योद्देश्य संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। यहां आर्य समाजके सैद्धान्तिक स्थापनाओं के विस्तार मे जाना अप्रासङ्गिक ही होगा। वे आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों से वा मूल शास्त्रों से भले प्रकार जानी जासकती हैं। आर्य समाज के धर्म के स्वरूप उसकी स्थापनाओं की पवित्रता और उसके प्रमाण पत्रों की युक्ति-युक्तता का आभास मात्र कराने के लिए उन स्थापनाओं का संक्षिप्त परिचय ही पर्याप्त होगा।

यह ऊपर कहा जा चुका है कि आर्य समाज का विश्वास वैदिक सिद्धान्तों में है और वह वैदिक धर्मका अनुयायी है। इसलिए आर्य समाज के धर्म का परिचय देना वैदिक धर्म का परिचय देना है। और जितने सक्षेप में हम यह परिचय देना चाहते हैं उतने संक्षेप मे वह

सभ्यता और वैदिक धर्म का खात्मा ही करना चाहा है।

कहा तक कहा जाय ऐसे ऐसे अनेक विषय हैं जिन पर पृथक् २ लेख लिखे जाने की आवश्यकता है। मेरा निवेदन पाठकों से केवल इतना ही है कि वे वेद और पुराणों की वास्तविक स्थिति से परिचित रहें और पुराणों के व्यामोह मे पड़ कर वेदों के प्रति श्रद्धा मे कुछ भी कमी न करें किन्तु "वेद का पढ़ना पढ़ाना अपना परम धर्म" समझें।

परिचय देना आसान काम नहीं है तौभी वैदिक धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों का वर्णन करने का हम यत्न करते हैं।

"केवल एक परमात्मा है जो संसार का शासक, नित्य, पवित्र, न्यायकारी, सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द इत्यादि २ है। उससे पृथक् परन्तु उसके अधीन २ और सत्ताएँ हैं अर्थात् आत्मा और प्रकृति। ये तीनों दुनिया के सिद्धान्त हैं। जीव प्रकृति के साथ मिलकर कर्म करने और कर्मों का फल भोगने में समर्थ होता है। ईश्वर कर्मों का फल जीव से भुगवाता है। जीव अपने कर्मों से अपने भाग्य का निर्माण करता है। कर्म का यह सिद्धान्त जीव के आवागमन का प्रति पादन करता है। आवागमन के चक्कर से जीवका छूटजाना मोक्ष है। पवित्र ज्ञान,पवित्र कर्म और पवित्र उपासना से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य और परमात्मा के बीच मे कोई मध्यस्थ नहीं है। परन्तु परमात्मा ने मनुष्य को उसके भाग्य पर नहीं छोडा है। सृष्टि के आदि मे परमात्मा ने उसे वे भेद और विधिया बतलादी हैं जिसके सहारे मनुष्य उस तक (परमात्मा) पहुँच सकता है। उन्हीं भेदों और विधियों का संग्रह 'वेद' है। और ये सच्चे ज्ञान की पुस्तकें हैं। अविद्या तमाम दु खों का मल है और इसका नाश करना चाहिए। परमात्मा की उपासना करने से बुद्धि और आत्मा पवित्र होती हैं और अविद्या का नाश होता है। मोक्ष प्राप्त करना मनुष्य का चरम लक्ष्य है और मोक्ष इस दुनिया के द्वारा ही प्राप्त होता है इस लिए दुनिया का तत्व ज्ञान प्राप्त करना और इसका उचित उपयोग करना मुमुक्षु का प्रधान कर्त्तव्य है। धर्म के दश लक्षण है यथ —धैर्य्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, (पवित्रता) इन्द्रियनिग्रह, अध्ययन, ज्ञान, सत्य, अक्रोध।"

यहा हमे मुख्यतया धार्मिक समाज के रूप में आर्यसमाज ,का स्वरूप उसकी कार्य प्रणाली उसकी विशेषताएँ और उसके मुख्य असूल बतलाने अभीष्ट हैं। इन पर हम आगे कुछ विचार करेंगे।

हमारे सात शत्रु

लेखक—
एक अनुभवी पत्रकार

कुछ महीनों के बाद सर हरिसिंह गौड़ फिर हिन्दू संस्कृति पर अपने उदार विचारों के साथ मैदान में आए हैं। उनके विचारों के प्रवाह को जिनसे उनका हृदय परिपूर्ण देख पड़ता है, देखते हुए ऐसा मालूम पड़ता है कि सर महोदय बड़े देश-भक्त हैं। परन्तु आश्चर्य यह है कि उन विचारों ने उन्हें एक इञ्च भी कार्य की ओर अग्रसर नहीं किया है यद्यपि वे लोग जिनके विरुद्ध वे अपने हृदय के उद्‌गारों का प्रकाश करते हैं, बड़े महत्वपूर्ण सामाजिक और आध्यात्मिक आन्दोलनों में लगे हुए हैं। 'कलकत्ता रिव्यू' के पिछली जनवरी के अङ्क में जिस के स्तम्भ सर महोदय के विचित्र विचारों को स्थान देने में नहीं थकते हैं सर महोदय ने भारत वर्ष के ७ शत्रुओं का आविष्कार किया है। वे सात शत्रु जलवायु, जातपात, अहिंसा, हमारे देवीदेवता दर्शन शास्त्र, भाषा और अकर्मण्यता है। भारतीय भाषाओं पर उनके विचार ध्यान देने योग्य हैं। ये भाषाएँ हम में भेद-भाव पैदा करने वाली हैं। हमें एक सम्मिलित भाषा की जरूरत है। केवल इङ्गलिश ही इस आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है। हिन्दी नहीं। इस लिए हमारी प्राचीन संस्कृति ने निराशा की एक दीवार खड़ी कर दी है और उस दीवार से टकराने से हम भयकर आर्थिक, सामाजिक, दार्शनिक, ऐहिक, धार्मिक और भौगोलिक (अन्यथा जल-वायु और किस प्रकार से बदला जासकता है ?) क्रान्ति के द्वाराही बच सकते हैं।

इस भयकर तूफानके बाद बाकी क्या बचेगा ? शून्य। हां, निश्चित रूप से हमारी गुलामी रह जायगी। यह सब हमे ससार का परिभ्रमण करने वाले एक भारतीय यात्रीके यात्राके अनुभवोंको जो हमने बचपन में पढ़े थे स्मरण कराते हैं। जब वह यात्री पिछली शताब्दीके अन्तिम चरणोंमें ब्रिटिश द्वीप में पहुंचा तो वह उस स्थान की मनोरमता से इतना प्रभावित हुआ कि हठात् वह अपनी काली चमड़ी पर हाथ मलने लगा और उसकी प्रबल इच्छा हुई कि वह आगे उसी द्वीप मे जन्म लेवे। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पढ़े लिखे लोग अभी तक १६ वीं शताब्दी की नींद से पूर्णतया नहीं जागे हैं। कितने दुःख की बात है कि भाग्य ने हमें भिन्न देश, भिन्न भूतकाल और भिन्न संस्कृति में नहीं रखा है। धैर्य रखो ! क्या हमारा उपद्रवकारी दर्शन शास्त्र आवागमन के सिद्धान्त के रूप में हम तक आशा की किरण नहीं पहुंचाता है ?

कुछ दार्शनिक विचार

❀ ❀ ❀

लेखक—
एक मुस्लिम हृदय

संसार का इतिहास साक्षी है कि अन्त मे सत्य की ही विजय होती है और असत्य की भले ही वह सफल होता क्यों न देख पड़ा हो, अन्त में पराजय होती है। जब तक हम प्रकृति की उपासना करते हैं तब तक हम दासता मे रहते हैं। चेतन जगत से घृणा करते है जैसा कि आजकल पश्चिम मे हो रहा है परन्तु ज्यों ही हम आध्यात्मिक स्वतन्त्रता और प्रकृति-उपासना के दुष्परिणामों को समझ लेते है त्यों ही यह प्रकृति *हमारी गुलाम हो जाती है*—

× × ×

मुझे केवल थोडे से व्यक्तियों की प्रसन्नता की चिन्ता है क्योकि समस्त देशो मे समझदार, विचार शील, न्याय प्रिय और वास्तव मे ईमानदार आदमियों की सख्या बहुत कम है। वे लोग जल्दबाजो में और बिना विचार किए कोई फैसला नहीं दे देते हैं। वे स्वय सोचने का माद्दा रखते है और सम्मति बनाना जानते है। वे भावुकता की अपेक्षा बुद्धि और तर्क से ज्यादा प्रभावित होते हैं। बहुत से आदमियों की अपनी कोई सम्मति नहीं होती है। वे बहुधा अपने से अधिक शक्तिशाली व्यक्तियों के विचारों और भावों से प्रभावित रहते हैं और उन भावो और विचारों को ही ज्यों का त्यों उगल देते हैं। एक स्थान पर रिचर (Ritcher) कहता है कि बहुत से व्यक्तियो का फ़ैसला बड़ा रद्दी होता है। क्या तुम बच्चों से अपनी तारीफ़ कराना चाहते हो ?

× × ×

मैं गुणों के आधार पर आदमी की इज्जत करता हूँ जन्म के आधार पर नहीं, अर्थात् मेरी निगाह मे वही आदमो ऊँचा है जिसका आत्मा विकसित हो चुका है वा विकसित हो रहा है। यह शरीर, धन सपदा, मित्र सम्बन्धी और अन्यान्य सासारिक प्रिय वस्तु आज या कल नष्ट हो जायगी परन्तु हमारे कर्मों का लेखा पीढ़ी दर-पीढ़ी कायम रहेगा। इस लिए हमारे कर्म ऐसे होने चाहिएँ जो इस जगत् में हमारी हस्ती को सार्थक सिद्ध करने वाले हो।

× × ×

कभी २ आदमी विपत्तियों और दुखो के बोझ से विचलित होता हुआ देख पड़ता है और अन्धकार के ऐसे अवसरों पर निराश हो कर सोचता है कि दयालु परमात्मा मेरा ध्यान क्यों नहीं करता और कभी २ प्राय ऐसे अवसरों पर इतना निराश हो जाता है कि उसे परमात्मा की सत्ता वा दयालुता में भी सन्देह होने लगता है। परन्तु यदि उसे अपने कर्मो के संग्रहालय के धुधले दर्शन भी हो जावें तो उसे सन्तोष हो

वच्चा

श्री प्रो० बी०आर० अग्रवाल के विचारों के आधार पर

सम्पत्ति अथवा स्वतन्त्र शक्ति

मनुष्य जाति की शिक्षित और अशिक्षित जातियों का बच्चे के प्रति जो व्यवहार रहा है उससे जाहिर है कि पैत्रिक प्रेम शताब्दियों से विकसित होता चला आरहा है और वर्तमान मे बच्चों की शिक्षा और उनके कल्याण और सुधार की दिलचस्पी की उग्रता के अध्ययन से भी स्पष्ट है कि निकट भविष्य मे पैत्रिकप्रेम और भी ज्यादा विकसित होगा।

जगली जातियों के बच्चो के प्रति रुख को ध्यान मे लाना भी दुखदायी है। यह रुख निर्दयता की करुण कहानी है। इस निर्दयता को समझने के लिए हमे याद रखना चाहिए कि बच्चा माता-पिता की मिल्कियत समझा जाता था और इस लिए माता-पिता अपनी अन्य सम्पत्ति के समान उसका जो चाहते थे बनाते थे।

न्यू गाइना के पापुआ लोग अपने बच्चों को मारकर खा जाते है। आस्ट्रेलिया की कुछ जगली जातियों मे यह रिवाज है कि माता अपने पहले बच्चे को मारकर खाजाती है। उनका विश्वास है कि बाद के बच्चों के प्रसव के लिए ऐसा करने से माता मजबूत हो जाती है।

१७८३ ईस्वी के दुर्भिक्ष मे जापान में बच्चे मारे तथा खाए गए थे।

कुछ जातियों मे दुर्भिक्ष अथवा आर्थिक सकट की बनिस्वत बच्चों के मारे तथा खाए जाने के लिए धर्म ज्यादा जिम्मेवार रहा है। आदि कालीन इस्टराइल लोग अपने पहले बच्चे को बलि चढ़ादेते थे और देवता पर बलि चढ़े हुए बच्चेको वे लोग खा जाया करते थे।

जाय कि परमात्मा के अटूट नियम के अनुसार उसके साथ न्याय हो रहा है।

× × ×

पिता का अपने बच्चों को प्यार करना स्वाभाविक है और हम सब के पिता परमात्मा का हमे अधिक प्यार करना औरहमारे कल्याणपर ध्यान रखना और भी ज्यादा स्वाभाविक है। सच बात यह है उससे पृथक् हमारी हस्ती कोई अर्थ नहीं रखती है। हम सब उसमें हैं और वह हम में है। वह सर्व व्यापक, सर्व शक्तिमान् और सर्वज्ञ है। अपने प्रति मनुष्य के जरा से ख़याल को भी वह देखता और स्वीकार करता है और उस के प्रति जिउने के हमारे जरा से भी प्रयत्न का बहुमूल्य उपहार देता है। जब मनुष्य मन और बुद्धि के चक्र से निकल कर बाहर से भीतर की तरफ़ जाता है तब ही हृदय मन्दिर में परमात्मा के दर्शन होवे हैं।

भारतवर्ष में बच्चे की बलि

भारतवर्ष में अभी कुछ वर्षों तक पहले बच्चे को गंगा की भेंट चढ़ाने का रिवाज था। आज भी यह प्रथा भूतकाल की यादगार के रूप मे रुढ़ि के रूप में बड़े पैमाने पर जीवित है और बड़े मेलों के अवसर पर देखी जासकती है। पीले कपड़े पहने हुए बच्चा माता-पिताओं के द्वारा गंगा में फेंका जाता है। निस्सन्देह पंडा बच्चे को डूबने नहीं देता है और कुछ नकदी लेकर गगा के प्रतिनिधि की हैसियत मे बच्चे को माता-पिता को वापस कर देता है।

देवी देवताओं को बच्चों की बलि चढ़ाए जाने की बात सर्वथा भूतकाल की वस्तु नहीं है। बच्चों की धार्मिक बलि के वास्तविक समाचार अब भी कभी २ प्रकाशमें आते रहते हैं। बच्चोंके मारे तथा खाए जाने से कम भयकर बच्चों के वध की प्रथा है। बच्चों के वध का सबसे प्रबल हेतु भोजन की कमी की वजह से आबादी को कम करने की आर्थिक जरूरत थी।

बाल-हत्या सब प्रकार के हीले-बहानों से व्यापक रूप में प्रचलित रही है। अफ्रीका में नव-जात बच्चों को दांतों से मार दिया जाता था। मैडागास्कर में यदि कोई बच्चा वर्षा या तूफान के अवसर पर पैदा होता था तो वह मार दिया जाता था बसुटी नामक जाति में यदि बच्चा पैरों के बल, गांडई जाति में सिर के बल पैदा होता था तो मार दिया जाता था। इन सब बहानों के मूल में माता-पिता की दुर्बल भावना ही देख पड़ती है, जिसके वशीभूत होकर माता-पिता बच्चे को अवाञ्छनीय भार समझते हैं।

युद्धप्रिय जातियों में बच्चियों को बलि चढ़ाई जाती रहीहै। शादी के अवसर पर भारी दहेज सेबचने के लिए प्राय लड़किया मारदी जाती थीं।

लड़की का कितना कम मूल्य था यह बात फ्रैंन्स के कानून से भली भाति जाची जासकती है। इस कानून के अनुसार बाल-हत्या का दंड केवल जुर्माना था। १२ वर्ष की उम्र से कम की लड़की की हत्या का दंड २०० साउस (सिक्का विशेष) था और १२ वर्ष की उम्र के बाद ६०० साउस था।

चीन में बाल-हत्या बहुत प्रचलित रही है। १६५६ में लड़कियों को डुबाने की प्रथा के विरुद्ध शाही फरमान जारी हुआ था।

बच्चा सौदेकी वस्तु

बाल हत्या के बाद दूसरी निर्दयी प्रथा नफ़े के लिये बच्चों के बेचने की प्रथा है। प्राचीन रोम के कानून ने पिता को अपने बच्चों के ऊपर पूर्ण अधिकार दिये हुए थे। वह उन्हें मार सकता था या बतौर गुलाम के बेच सकता था। प्राचीन स्मेरियन में बच्चों की बिक्री जायज और बहुत प्रचलित थी।

आर्थिक कारणों के कारण लड़कियों ने अपने माता पिता के द्वारा बहुत मुसीबतें बर्दाश्त की हैं। यदि आर्थिक दृष्टि से माता पिता के लिए लड़किया बेकार होती थीं तो वे मारदी जाती थीं और यदि वे किसी मतलब की होती थीं तो वे वेश्या वृत्ति अथवा दूसरों की पत्नी बनने के

लिए बेच दी जाती थीं। इस पर भी मुझे आश्चर्य है कि अपनी लड़कियों को देवदासियों के रूप में अर्पण करने वाले माता-पिताओं को कोई लाभ होता है या नहीं ?

योरूप में ७ वीं शताब्दी के अन्तिम चरणों तक बच्चे अन्न प्राप्ति की आवश्यकतावश बेच दिये जाते थे, और विक्री के लिए बच्चे चुराये भीं जाते थे। १६ वीं और १७ वीं शताब्दी में योरूप मे बच्चे सडक के दाये बांये छोड़ दिये जाते थे या कूड़े करकट में फेंक दिये जाते थे। उससे भी बुरी प्रथा भिखमगो के रूप में व्यवहृत होने के उद्देश्य से बच्चों को कुरूप बना देने की थी।

उसके बाद हम बच्चो को काम पर लगाने के काल पर आते हैं। योरुप में फैक्टरियों में बच्चों को २०-२० घण्टे तक प्रतिदिन काम पर लगाया रक्खा जाता था। यदि वे भाग जाते थे तो पकड़े जाने पर पीटे जाते थे और यहा तक कि उनके पैरों में जजीरे डालदी जाती थी। वे बड़े भयङ्कर अस्वास्थ्यकर स्थानों मे रक्खे जाते थे और उनकी मृत्यु संख्या बहुत बढ़ी-चढ़ी थी।

नैपोलियन ने १८११ ई० में असहाय, परित्यक्त और अनाथ बच्चों के सम्बन्ध में राज्य के कर्त्तव्य निश्चित किये थे। यह आन्दोलन जारी रहा और वर्त्तमान वर्षों में इसने बहुत उन्नति की है। अब बच्चों पर माता पिता का वह अधिकार नहीं है जो पहले रह चुका है। अब यद्यपि माता पिता का उनके ऊपर संरक्षण है किन्तु इस सरक्षण के द्वारा उनपर अमानुषिक अत्याचार नहीं होसकते हैं। बच्चों द्वारा मेहनत मजदूरी अब बिल्कुल निषिद्ध करार देदी गई है, यदि आज्ञा है तो कतिपय अस्वास्थ्य कर गन्दे और अति परिश्रम के कार्य वर्जित हैं। उनकी देख रेख और रक्षण के लिए माता पिता जिम्मेवार ठहराये गये हैं। उनका प्रारम्भिक शिक्षण भी अनिवार्य होता जारहा है।

बच्चों के रक्षण के प्रति बढ़ती हुई दिलचस्पी

आज कल बच्चे अपने कृत्यों के लिए पूर्णतया जिम्मेवार नहीं समझे जाते हैं और इसी लिए उन के कृत्य जवानों के कृत्यों जैसे दण्डनीय नहीं हैं। बच्चों के अपराधों के विचार के लिए विशेष अदालतों की सृष्टि हुई है। मैडिकल स्कूलों में बच्चों की बीमारियों के लिए गद्दिया स्थापित हुई हैं। मनोविज्ञान ने एक विभाग को विकसित करके बच्चों के दिमाग के अध्ययन के लिए सुरक्षित करदिया है। सार्वजनिक क्रीडा-क्षेत्र, बच्चे के खेलने के अधिकारों की स्वीकृति की सूचना देरहे हैं। बच्चों की शिक्षा और उनके मानसिक विकास के सम्बन्ध में बहुतसी पुस्तकें लिखी जाचुकी हैं और लिखी जारही हैं। बच्चे की बुद्धि का वैज्ञानिक परीक्षण किया जाचुका है। उनके मनोरञ्जनों और रुझानों का ठीक २ अध्ययन करके लिया गया है।

उनके जीवन से थकान और रूक्षता दूर की जारही है। यदि वर्त्तमान शताब्दी 'बच्चे की शताब्दी' के नाम से पुकारी जा रही है तो इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

हम उस नूतनता की कल्पना कर सकते हैं जो बच्चों के प्रति माता पिता के प्रेम में आने वाली है। निकट भविष्य में माता पिता

अपने बच्चे को न सम्पत्ति ही समझेंगे और न कुत्ते बिल्ली ही समझेंगे बल्कि एक सत्ताधारी जीव समझेंगे जिसका अपना व्यक्तित्व होगा। माता पिता अपने बच्चे के बचपन के मनोविज्ञान का अध्ययन करना अपना जरूरी कर्त्तव्य समझेंगे और अध्ययन के परिणामों के प्रकाश मे बच्चे के प्रति अपने सम्बन्ध निश्चित करेंगे जिससे कि बच्चा शरीर के और मानसिक स्वास्थ्य के लाभों से निश्चिन्त होजाय और बाद मे दिमाग और शरीर दोनों के विकास और स्वास्थ्य के भोग के लिए भी निश्चिन्त होजाय।

— —

ब्रिटिश भारत के ३ महत्वपूर्ण सामाजिक कानून

'सार्वदेशिक' के पाठकों के लाभार्थ हिन्दू स्त्रियों के जायदादी अधिकारों का ऐक्ट, आर्य मैरेज ऐक्ट तथा शारदा ऐक्ट तीनों एक स्थान पर दिए जाते हैं। पहले दोनों ऐक्ट ताज़ा हैं जो अभी हाल में असेम्बली से पास हुए हैं और १७ अप्रैल १९३७ के गजट आफ् इंडिया में सरकार द्वारा प्रकाशितभी हो गए हैं जिसका अर्थ यह है कि १७ अप्रैल से ये लागू हो गये हैं। शारदा ऐक्ट पुराना ऐक्ट है जो पिछले १ अप्रैल १९३० से प्रचलित है। यह ऐक्ट अंग्रेज़ी में इस समय नहीं दिया जा सका इस का हमें खेद है। यदि आवश्यक हुआ तो फिर कभी दे दिया जायगा।

Act No XVIII of 1937

An Act to amend the Hindu Law governing Hindu Women's Rights to Property

Whereas it is expedient to amend the Hindu Law to give better rights to women in respect of property, It is hereby enacted as follows –

Short title and extent.

1 (1) This Act may be called the Hindu Women's Rights to Property Act 1937

(2) It extends to the whole of British India including British Baluchistan and the Sonthal Parganas but excluding Burma.

Application

2. Notwithstanding any rule of Hindu Law or custom to the contrary, the provisions of section 3 shall apply where a Hindu dies intestate leaving a widow

हिन्दू स्त्रियों के जायदादी अधिकारों का कानून

१९३७ का १८ वा ऐक्ट

हिन्दू स्त्रियों के जायदाद सम्बन्धी अधिकारों पर लागू होने वाले हिन्दू कानून को संशोधित करने के लिए कानून।

चूंकि सम्पत्ति के सम्बन्ध में स्त्रियों को और भी अच्छे अधिकार देने के लिए हिन्दू कानून का संशोधन आवश्यक है, इसलिए निम्न प्रकार कानून बनाया जाता है।

१. संक्षिप्त नाम और सीमा

१. यह कानून 'हिन्दू स्त्रियों के सम्पत्ति के अधिकारों' का १९३७ का कानून कहलायगा।

२ ब्रिटिश बलूचिस्तान और सन्थाल परगना को मिलाकर और ब्रह्मा को छोड़ कर यह कानून तमाम ब्रिटिश भारत पर लागू होगा।

२. लागू होना

धारा सं० ३ की शर्तें वहां लागू होंगी जहां कोई हिन्दू अपनी विधवा पत्नी को छोड़कर बिना वसीयत किए मर जाय भले ही हिन्दू कानून की कोई धारा या रिवाज इसके खिलाफ़ ही क्यों न हो।

Devolution of property

3 (1) When a Hindu governed by the Dayabhag school of Hindu Law dies intestate his property, and when a Hindu governed by any other school of Hindu Law or by customary law dies intestate leaving separate property, that separate property shall subject to the provision of sub section (3) devolves upon his widow along with his lineal descendents, if any, in like manner as it devolves upon a son

Provided that the widow of a predeceased son shall inherit in like manner as a son if there is no son surviving of such pre deceased son, and shall inherit in like manner as a son's son if there is surviving a son or son's son of such predeceased son

Provided further that the same provision shall apply *mutatis mutandis* to the widow of a predeceased son of a predeceased son

(2) When Hindu governed by any school of Hindu Law other than the Dayabhag school or by customary law dies intestate having at the time of his death an interest in a Hindu joint family property, his widow shall, subject to the provisions of sub section (3) have in the property the same interest as he himself had

(3) Any interest devolving on a Hindu widow under the provision of this section [illegible] be the limited interest known as a [illegible]ndu woman's estate provided however

३.जायदादका स्थानान्तरित होना वा सरकना

१ जब कोई हिन्दू जिस पर हिन्दू कानून का दाय भाग (बैंगाल में प्रचलित) अंश लागू होता हो अपनी जायदाद की वसीयत किए बगैर मर जाय तो उसकी जायदाद और जब कोई हिन्दू जिस पर हिन्दू कानून का कोई दूसरा अंश या रिवाजी कानून लागू होता हो पृथक् जायदाद छोड़कर बिना वसीयत किए मर जाय तो वह पृथक् जायदाद उपधारा ३ की शर्तों के मुताबिक उसकी औलाद के साथ, यदि कोई हों, उसकी विधवा को भी जायगी ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार लड़के को जाती है।

पिता से पहले मरने वाले पुत्र की विधवा उसी प्रकार जायदाद की मालिक होगी जिस प्रकार पुत्र होता बशर्ते इस प्रकार के पुत्र का कोई पुत्र जिन्दा न हो और यदि इस प्रकार के पुत्र का पुत्र अथवा पौत्र जिन्दा हो तो विधवा को उसी प्रकार जायदाद मिलेगी जिस प्रकार पुत्र के पुत्र को मिलेगी।

पिता से पहले मरने वाले पुत्र के पुत्र की विधवा पर जो अपने पिता से पहले मर गया हो हूबहू एक जैसी शर्तें लागू होंगी।

२. जब कोई हिन्दू जिस पर हिन्दू कानून के दाय भाग (बैंगाल) या रिवाज़ी कानून को छोड़ कर कोई दूसरा कानून लगता हो मृत्यु के समय मुश्तरका खान्दान की जायदाद में कोई हिस्सा छोड़ कर बिना वसीयत किए मर जाय तो उसकी विधवा को उपधारा ३ की शर्तों के मुताबिक जायदाद में वही हक होगा जो स्वयं उसको था।

३ इस धारा की शर्तों के [illegible]न्दू विधवा को प्राप्त होने वाला हक 'हिन्दू [illegible]सत' कहा जाने वाला परिमित (महदूद) ह[illegible] शर्तें कि

that she shall have the same right of claiming partition as a male owner

XXXIX of 1925

(4) The provisions of this section shall not apply to an estate which by a customary or other rule of succession descends to a single heir or to any property to which the Indian Succession Act 1925 applies

Saving

4 Nothing in this Act shall apply to the property of any Hindu dying intestate before the commencement of this Act

बटवारे के दावे का उसे वही हक हासिल हो जो पुरुष मालिक को हो सकता है।

४. इस धारा की शर्तें उस रियासत पर लागू नहीं होगी जो उत्तराधिकार के किसी रिवाज़ी नियम या किसी दूसरे नियम से सिर्फ एक उत्तराधिकारी को जाने वाली हो। या किसी ऐसी जायदाद पर लागू नहीं होगी जिस पर १९२५ का इण्डियन सक्सेशन एक्ट (भारतीय उत्तराधिकार का कानून) लागू होता हो।

४. अपवाद

इस कानून के लागू होने से पहले अगर कोई हिन्दू बिना वसीयत किए कोई जायदाद छोड़ जायगा तो इस कानून में से कुछ भी उस जायदाद पर लागू न होगा।

ARYA MARRIAGE VALIDATION ACT

To Recognise and remove doubts as to the validity of inter marriages current among arya samajists

Whereas it is expedient to recognise and place beyond doubt the validity of inter marriages of a class of Hindus known as Arya Samajists It is hereby enacted as follows—

Short Title and Extent

1 (1) This Act may be called the Arya Marriage Validation Act 193

(2) It extends to the whole of British India including British Baluchistan and the Sonthal Parganas and applies also to all subjects of His Majesty within other parts

एक्ट नं० १९ सन् १९३७

आर्य्य समाजियो मे प्रचलित अन्तर्जातीय विवाहों का जायज़ होना स्वीकार करने और तत्सम्बन्धी शकाओं को दूर करने के लिए।

चूं कि हिन्दुओ के आर्य्य समाजी नामक वर्ग के अन्तर्जातीय विवाह का जायज़ होना स्वीकार करने और तत्सम्बन्धी शकाओ को दूर करने की ज़रूरत है इसलिए इसके ज़रिए नीचे लिखे मुताबिक कानून बनाया जाता है —

छोटा नाम और विस्तार

यह एक्ट आर्य्य विवाह जायज़ बनाने वाला एक्ट सन् १९३७ कहा जावेगा।

यह (एक्ट) तमाम ब्रिटिश हिन्दुस्तान को जिसमें ब्रिटिश बलूचिस्तान और संथाल परगने भी शामिल हैं, लागू होगा और हिदुस्तान के अन्य भागों में

of India and to all Indian subjects of His Majesty without and beyond British India

सम्राट की समस्त प्रजा को और ब्रिटिश हिन्दुस्तान के बाहर और उस पार की समस्त हिन्दुस्तानी प्रजा को भी लागू होगा।

Marriages between Arya Samajists not to be invalid

आर्य समाजियों का विवाह नाजायज़ नहीं होगा

2. Notwithstanding any provision of Hindu law, usage or custom to the contrary no marriage contracted whether before or after the commencement of this Act between two persons being at the time of the marriage Arya Samajists shall be invalid or shall be deemed ever to have been invalid by reason only of the fact that the parties at any time belonged to different castes or different sub-castes of Hindus or that either or both of the parties at any time before the marriage belonged to a religion other than Hinduism

बावजूद हिन्दू रीति या रिवाज के किसी विरुद्ध विधान के (हिन्दू कानून रीति या रिवाज़ कोई विधान इसके विरुद्ध रहते हुए भी) विवाहके समय आर्य्य समाजी रहने वाले दो व्यक्तियों के बीच का कोई भी विवाह चाहे वह विवाह सम्बन्ध इस एक्ट के लागू होने के पूर्व हुआ हो या तत्पश्चात हुआ हो, केवल इसी बात के कारण कि वे लोग किसी समय हिन्दू समाज के भिन्न भिन्न जाति या भिन्न भिन्न उपजाति के थे। या कि उनमें से कोई एक या दोनों ही विवाह के पूर्व किसी समय हिन्दू धर्मके सिवाय किसी अन्य धर्म के थे नाजायज़ नहीं होगा या कभी नाजायज़ था (रहा हो) ऐसा नहीं माना जावेगा।

शारदा ऐक्ट

धारा १—

यह कानून सन् १९२९ का बाल विवाह निषेध कानून (Child Marriage Restraint Act 1929) कहलावेगा।

(२) इसका प्रयोग सारे ब्रिटिश भारतमे होगा जिसमें ब्रिटिश बिलोचिस्तान तथा संथाल परगने भी सम्मिलित हैं।

(३) यह ऐक्ट १ अप्रेल १९३० ई० से प्रयुक्त होगा।

धारा २, परिभाषायें:—

यदि कोई बात विषय या प्रसंग के विपरीत न पड़ती हो तो इस ऐक्ट मे प्रयोग किये हुये निम्नलिखित शब्दो का अर्थ इस प्रकार होगा —

(१) बच्चा (Child) का अर्थ उस लड़के से है जो अठारह वर्ष से कम आयु का हो और उस लड़की से है जिसकी अवस्था १४ वर्ष से कम हो।

(२) 'बाल विवाह' (Child marriage) का अर्थ वह विवाह है जिसमे विवाह करने वाला लड़का,

लड़की कोई भी 'बच्चा' (Child) हो।

(३) 'विवाहसम्बन्ध करने वाले पक्ष' (Contracting party) से अभिप्राय उन दोनों व्यक्तियों का है जिनका विवाह सम्बन्ध उस विवाह से स्थापित होता है।

(४) 'नाबालिग' (Minor) से अभिप्राय उस व्यक्ति से है जिसकी अवस्था १८ वर्ष से कम हो चाहे वह लड़का हो या लड़की।

धारा ३:—

बच्चे से विवाह करने वाले उस पुरुष के लिये जिसकी आयु २१ वर्ष से कम हो दण्ड —

जो पुरुष १८ वर्ष से अधिक परन्तु २१ वर्ष से कम आयु वाला बाल विवाह करेगा उसको एक हज़ार रुपये तक जुर्माना देने का दण्ड दिया जा सकेगा।

धारा ४—

२१ वर्ष से बड़े पुरुष के लिये बाल विवाह करने के लिये दण्ड —

२१ वर्ष से अधिक आयु का जो पुरुष बालविवाह करेगा उसको एक मास तक का साधारण कारावास या एक हज़ार रुपया तक जुर्माना या दोनों दण्ड साथ साथ दिये जा सकेंगे।

धारा ५—

बाल विवाह कराने के लिये दण्ड —

जो व्यक्ति बाल विवाह करेगा या करावेगा या करने की आज्ञा देगा उसको एक मास तक का साधारण कारावास या १००० रुपये जुर्माना या दोनों दण्ड साथ साथ दिये जा सकेंगे जब तक कि वह व्यक्ति यह सिद्ध न करदे कि उसके पास इस बात के विश्वास करने का कारण था कि जिस विवाह में वह भाग ले रहा है वह बाल विवाह नहीं है।

धारा ६—

बाल विवाह से सम्बन्ध रखने वाले माता, पिता या संरक्षक को दण्ड—

(१) उस दशा में जब कि कोई नाबालिग बाल विवाह करेगा तो उस व्यक्ति को, जो उस नाबालिग की निगरानी माता, पिता संरक्षक की हैसियत से या और किसी हैसियत से रखते हुये, चाहे वह निगरानी कानूनी हो या गैर कानूनी विवाह कराने के लिये कोई काम करेगा या उसके किये जाने की इजाज़त देगा या उसके (बाल विवाह के) रोकने में अपनी असावधानी के कारण चूकेगा, एक मास तक का साधारण कारावास या एक हज़ार रुपये तक के जुर्माने का दण्ड या दोनों प्रकार के दण्ड एक साथ दिये जा सकेंगे किन्तु शर्त यह है कि किसी स्त्री को कारावास का दण्ड न दिया जावेगा।

(२) उस दशा में जब कोई नाबालिग बालविवाह कर लेगा तो इस धारा के लिये यह मान लिया जायगा, जब तक कि उसके विपरीत सिद्ध न कर दिया जावे, कि वह व्यक्ति जो ऐसे नाबालिग को निगरानी रखता है बाल विवाह को रोकने में अपनी असावधानी के कारण ही असमर्थ हुआ है।

धारा ७—

धारा ३ में कथित अपराधों में कारावास का दण्ड न दिया जायगा—

इस ऐक्ट की धारा तीन के अनुसार किसी अपराधी को दण्ड देते हुए न्यायालय को यह आज्ञा देने का अधिकार न [illegible] कि जुर्माना न अदा किये

जाने पर उसे किसी नियत समय के लिये कारावास भोगना पड़ेगा। यद्यपि सन् १८१७ ई० के जनरल क्लाजेज ऐक्ट की धारा ५ तथा ताज़ीरात हिन्द की धारा ६१ में इसके विपरीत लिखा है।

धारा ८—

इस ऐक्ट के अनुसार सुनवाई का अधिकार—

इस ऐक्ट के अनुसार किए हुए अपराधों की सुनवाई प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट या डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के अतिरिक्त अन्य किसी मजिस्ट्रेट को नहीं होगा यद्यपि सन् १८६८ ई० के क्रीमिनल प्रोसीज़र कोड की धारा १९० में कुछ और लिखा हुआ होवे।

धारा ९—

अपराधों की सुनवाई की विधि —

कोई अदालत इस ऐक्ट के अनुसार किए हुए जुर्मों की सुनवाई उस समय तक नहीं करेगी जब तक कि उस विवाह के होने से एक वर्ष के भीतर इस्तगासा दायर न किया जाय जिसके सम्बन्ध में अपराध किया जाना बतलाया जाता हो।

धारा १०—

इस ऐक्ट के अनुसार किए हुए अपराधों की प्रारम्भिक जांच — यदि वह अदालत जो इस ऐक्ट के अनुसार किए हुए अपराध की सुनवाई कर रही हो सन् १८६८ के क्रीमिनल प्रोसीजर कोड की धारा २०३ के अनुसार इस्तगासे को खारिज न कर दे तो वह या तो स्वयं जांच करेगी या अपने आधीन किसी दर्जा अव्वल के मजिस्ट्रेट से उस कोड की धारा २०२ के अनुसार जांच करायेगी।

धारा ११—

मुस्तगीस से ज़मानत लेने का अधिकार।

मुस्तगीस के बयान लेने के बाद मुलज़िम की हाज़िरी के लिए इत्तलानामा जारी करने से पहिले अदालत किसी समय भी मुस्तगीस से सौ रु० तक का मुचलका बिला ज़मानती या मय ज़मानत के दाखिल करायेगी परन्तु वह तहरीरी वजूहात बताने पर ऐसा न भी करेगी। यह मुचलका उस मुआवज़े की अदायगी के लिए होगा जो मुलज़िम को सन् १८६८ के क्रीमिनल प्रोसीज़र कोड की धारा २५० के अनुसार मुस्तगीस से दिलाया जा सकता है और यदि ऐसी ज़मानत अदालत द्वारा नियत किये हुए पर्याप्त समय के भीतर न दाखिल की जायगी तो वह इस्तगासा खारिज कर दिया जायेगा।

(२) इस धारा के अन्दर जो मुचलका लिया जावेगा वह सन् १८६८ के क्रीमिनल प्रोसीजर कोड के अनुसार समझा जायगा और उसके लिए कोड की धारा ५१ लागू होगी।

स्त्री-शिक्षा

लेखिका—
श्रीमती सरस्वती देवी

स्त्री और पुरुष में आज दिन बराबरी के लिए एक प्रकार का युद्ध सा छिड़ा हुआ है। फलत यह दोनों के सम्बन्ध का परिवर्तन काल (Transition period) है।

परिवर्तन काल में हमारे सामने का मार्ग बहुधा स्पष्ट नहीं रहता, उसमें एक प्रकार का कोहरा सा छाया रहता है। इस कोहरे को भेद कर ठीक मार्ग पहचानने का काम बहुत कम लोग कर सकते हैं। इस लिये इस काल में बहुत से लोग भटक कर गलत रास्ते पर आ खड़े होते हैं। यह समय खूब सोच विचार कर चलने का है। मार्ग निश्चित करने में थोड़ा समय नष्ट करना उतावली में पड़कर गलत रास्ते पर आ पहुंचने की अपेक्षा कहीं श्रेयस्कर है।

बराबरी का यह अर्थ कभी नहीं होता कि अगर आप का जोड़ी दार काना है तो आप भी अपनी एक आंख फोड़ डालिये। इस लिये सबसे पहिली बात यह है कि हम बराबरी का अर्थ ठीक ठीक समझलें। आज कल बराबरी का अर्थ समझने में भी भारी गड़बड़ी मची हुई है।

एक सिहांसन पर बैठे हुए दो व्यक्तियों में भी कुछ न कुछ अन्तर रहता है। एक का जो वाम कर है दूसरे का वही दाहिना हाथ है। वास्तव में इस संसार में ही आदमी या दो वस्तुएँ पूर्ण रूप में बराबर या समान हो ही नहीं सकती।

स्त्री और पुरुष में जहां २ मनुष्यता की दृष्टि से बात आ पड़े वहां तो हम उन्हें अवश्य ही बराबरी का स्थान देने के लिये तैयार हैं। मनुष्य की हैसियत से इस संसार में दोनों का स्थान बराबर है। कोई एक दूसरे से छोटा या बड़ा नहीं। दोनों एक ही आत्मा के प्रकाश हैं। दो पहलू हैं। लेकिन दोनों के कार्य क्षेत्र अलग है। दोनों के धर्म एवं प्रकृति में अन्तर है।

फिलहाल तो हमें प्रचलित प्रकृति के सामने सिर झुका कर उसकी व्यवस्था स्वीकार करनी पड़ेगी। और पुरुष के लिये योग्य पिता तथा स्त्री के लिये योग्य माता बनने का साधन जुटाना होगा।

एक दल इस विचार का भी है कि स्त्रियां सन्तान तो उत्पन्न अवश्य करें, लेकिन क्या हर्ज है यदि पुरुष सन्तान के लालन पालन में अधिक समय बितावें, किन्तु यह विचार भी ठीक नहीं।

सन्तान को दूध पिलाने की व्यवस्था पुरुष से न होगी। इसके अलावा सन्तान पालन में जिस प्रेम की आवश्यकता है, वह प्राकृतिक नियम के अनुसार माता में पिता की अपेक्षा अधिक है। एक तीसरी बात और भी है। यदि पुरुष सन्तानपालन के लिये घर में रुक जाय तो रोज़ी कौन कमाये? क्योंकि गर्भादि प्राकृतिक कारणों के कारण स्त्रियां इसे कर नहीं सकतीं।

शिक्षा के सम्बन्ध में भी हमें इस नियम को ध्यान में रखना होगा। मनुष्यता के नाते यह मान लेने पर भी कि दोनों बराबर हैं, तथा दोनों को शिक्षा पाने का बराबर हक है। हमें उसी शिक्षा की व्यवस्था करनी

पड़ेगी जिनमे पुरुष योग्य पिता बन सकें। धनोपार्जन कर सके तथा स्त्री योग्य गृहिणी एवं माता बने।

यहां पर हम पुरुषों की शिक्षा का विचार न करेंगे, करेंगे केवल स्त्रियों का, लेकिन यह ज़रूरी होगा कि हम प्रचलित प्रणाली की समालोचना करते हुए यह देखलें कि उसका पुरुषों पर क्या असर हुआ है।

यह बात प्राय निर्विवाद सिद्ध हो चुकी है कि विदेशी शासन द्वारा दी जाने वाली शिक्षा हमें मनुष्य नहीं बनारही है। हमारे मानवी गुणों का विकास नहीं कर रही हैं। वरन वह हमारी राष्ट्रीय विशेषताओं को हमारे अपनेपन को, असलियत को धीरे २ गिरा रही है। एक बात और है। बालकों को दी जाने वाली आजकल की शिक्षा में प्रधान दोष यह है कि प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा की अपेक्षा शुरू में ऊंची शिक्षा का आयोजन अधिक है।

राष्ट्रीय सम्पत्ति अथवा प्रबन्ध का यदि सबका समान अधिकार मानलिया जाय तो यह मानना होगा कि न्याय की दृष्टि के पहिली बात तो यह जरूरी है कि सब के लिये प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध होने के बाद यदि द्रव्य बच जाय तो माध्यमिक शिक्षा तथा उसके बाद सुविधा होने पर तब कहीं ऊंची शिक्षा का नम्बर आना चाहिये।

ऊंची शिक्षा से एक दूसरी हानि यह भी है कि जितने लोग ऊंची शिक्षा प्राप्त कर निकलते हैं उनके लिये हम काम नहीं दे सकते।

सुधारक चाहे कितना ही वावेला मचावे ऊंची शिक्षा प्राप्त कर लोग मोची धोबी आदि का छोटा काम करना स्वीकार न करेंगे।

लेकिन राष्ट्र को तो हर तरह की जरूरतें हैं। उसे तो मोची भी चाहिये, चमार भी चाहिये और भंगी भी चाहिये। वर्तमान शिक्षा राष्ट्र में यह असाम्य ला रही है जिससे प्रत्येक देशों के लोगों में असन्तोष फैल गया है।

प्रत्येक आदमी शिक्षा के लिये दौड़ता है जिससे सभी देशों में योग्य मनुष्यों की कमी हो रही है और शिक्षितों में बेकारी के कारण असन्तोष बढ़ रहा है।

आजकल की ऊंची शिक्षा का यह भी दोष है कि जो जितनी शिक्षा ग्रहण करेगा गुज़र के लिये उसे उतना ही अधिक द्रव्य चाहिये। पर प्रश्न यह है कि द्रव्य आयेगा कहां से?

जो शिक्षा पर आयोजन करने समय हमें इन गलतियों से बचने की कोशिश करनी होगी। लेकिन हमारे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि स्त्रियों के लिये ऊंची शिक्षा की मनाई रहे।

इसके अलावा कई कामों के लिये तो उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं की बड़ी आवश्यकता है। मसलन स्त्रियों की शिक्षा के लिये ही प्रोफेसर चाहिये लेकिन किसी राष्ट्रीय आयोजना के समय हमें अपवादों पर नहीं, वरन साधारण बातों पर दृष्टि रखनी चाहिये। हमें ऊंची शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी लेकिन ध्यान रखना होगा कि अधिकांश बालिकाओं को साधारण शिक्षा (प्राथमिक तथा माध्यमिक) की आवश्यकता है। एम० ए० डाक्टर बनने की नहीं। स्त्रियों के लिये देसी भाषा में ही शिक्षा होनी चाहिये।

एक तो साधारणतः विदेशी भाषा में दक्षता प्राप्त करने की उनके लिये ज़रूरत ही नहीं, दूसरे जब हम इस बात को भी मान चुके हैं कि बालकों की

विदेशी भाषा का माध्यम हानि पहुंचा रहा है तब बालिकाओं के ऊपर यह भार लादने से क्या लाभ ? हां ! अवश्य ही जिन महिलाओं को अंग्रेजी में खास दखल रखने की ख्वाहिश हो वे इसको अलग विषय लेकर पढ़ें । अब रहो विषय की बात—

बालिकाओं को कौन कौन विषय पढ़ने पर ज़ोर दिया जाय यह विषय उपरोक्त सिद्धान्त को मान लेने पर गौण एवं सरल हो जाता है । इस पर मतभेद भी अधिक न होगा, अगर होगा भी तो आगे चल कर एक राह निकल आयेगी। साधारण तौर पर बालिकाओं के लिये धर्म, मातृभाषा, गृह-विज्ञान, धातृ विद्या, संगीत, गणित, चरित्र गठन एवं व्यायाम ये विषय आवश्यक होंगे। गौण विषय में जिनमें १ या दो लेना चाहिये इतिहास भूगोल तथा और दो चार विषय रख दिये जायेंगे ।

— —

हिमालय प्रदेश में वैदिक धर्म प्रचार की आवश्यकता

[हमारे विशेष सम्वाददाता द्वारा]

[पाठकों से हम इस लेख को ध्यानपूर्वक पढ़ने का अनुरोध करते हैं। बङ्गाल की प्रतिनिधि सभा तथा दार्जिलिंग की आर्यसमाज तथा वहा के आर्यपुरुषों का ध्यान इस ओर विशेषतया आकर्षित करते हैं। यदि कोई आर्य वकील महोदय उस प्रान्त मे जाकर बस जाना चाहें तो वे मन्त्री सार्वदेशिक सभा से पत्र व्यवहार करे । स०]

दार्जिलिंग का नाम लगभग सभी शिक्षित अशिक्षित व्यक्ति जानते हैं। यद्यपि यह बंगाल की ग्रीष्म ऋतु की राजधानी है पर यहा के निवासियों में बगाली नाम मात्र को हैं और असली निवासी नैपाली हैं। दार्जिलिंग जिले के अन्तर्गत तीन सबडिवीजन हैं— करसग, सीलीगोड़ी, और कालिङ्गपोङ्ग। सीलीगोडी तो प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है और व्यापार का केन्द्र भी। वहीं से हिमालय प्रदेश में रेल या मोटरें जाती हैं। दार्जिलिंग और करसग तक तो रेल और मोटरें जाती है और कालिङ्गपोङ्ग, जो सलीगोड़ी (E. B Rail way) से लगभग ४० मील की दूरी पर है मोटरें जाती हैं। यद्यपि गीलीखोला तक H D H Ry रेल ले गई है परन्तु आगे ११ मील तक मोटरों को छोड़कर वहा जाने का कोई उपाय नहीं। यह सारा प्रान्त हिमालय पर्वत पर स्थित है।

यहा की जनता

हिमालय प्रान्त की जनता निर्धन है। यहां के लोग नैपाली हैं। यहा के रास्ते तिब्बत, भूटान आदि का मार्ग होने से भोटिये और तिब्बत के लोग भी बस गये हैं। भोटियों के झुण्ड के झुण्ड जाड़ों में यहां आ जाते हैं और जाड़ों में प्राय यहीं रहते हैं। ये लोग नैपालियों की अपेक्षा संपन्न हैं और इन्हीं के द्वारा यहां के लोगों का व्यापार चलता है। ये लोग प्राय बौद्ध हैं। ईसाइयों के प्रचार के कारण कुछ लोग ईसाई भी हो गये हैं।

यहा जमीन खास महल की है और अधिकारी मनमाना कर वसूल करते हैं। ये लोग नैपाली भाषा बोलते हैं नैपाली और हिन्दी की लिपि एक सी है शब्द भी अधिकांश मिलते जुलते हैं। इसीलिये हिन्दी का कुछ प्रचार यहां है। यहा बिहारी और मारवाड़ी लोग भी बहुत बड़ी सख्या मे बस गये हैं और यहा का व्यापार इन्हीं लोगों के हाथ में है। नैपाली अधिकांश अशिक्षित हैं पर मिशनरियों के उद्योग से यहा बहुत से स्कूल कालिज खुल गये हैं और नवयुवकों में पश्चिमीय शिक्षा और सभ्यता तेजी से फैल रही है। सामाजिक अवस्था तो अच्छी है, स्त्रियों में परदा बिल्कुल नहीं है और छूतछात तो नाम को भी नहीं है। मांसाहार आम है और घर घर लोग मुर्गी पालते हैं और बहुत से लोग सूअर भी पालते हैं।

मिशनरियों का प्रचार

मिशनरी लोग बहुत दिन हुए इस प्रान्त मे आये

थे और उन का बहुत बड़ा विस्तृत प्रचार कार्य है। ये लोग अपने मिशन में सफल भी हुए हैं। आर्य समाज तो केवल दार्जिलिंग में है। वहां के कुछ उद्योगी कार्यकर्ताओं ने सन् १८८२ में आर्य समाज की स्थापना की था। उसके बाद कुछ दानी महानुभावों की कृपा से आर्यसमाज का अपना भवन बन गया है और एक कन्या पाठशाला भी है। एक उत्साही नैपाली ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम ११ समुल्लास का नेपाली अनुवाद करा के प्रकाशित भी कराया था। परन्तु यह सब होते हुए भी ये लोग मिश्नरियों के प्रचार को रोकने में सफल नहीं हुए हैं। शायद इन लोगों का ध्येय भी यह नहीं है। हम यह भी ज्ञात हुआ है कि आर्यसमाज भवन दार्जिलिंग का वहाँ के लोग निजी सम्पत्ति बनाने की फिक्र में हैं। मिशनरियों ने प्रत्येक ग्राम में एक पाठशाला खोली है। प्रत्येक मेले और हाट में ये लोग प्रचार कार्य करते हैं और लोगों को ईसाई बनाते हैं। इस समय अकेले कालिंगपोंग में इनकी कई संस्थाएं हैं। यह छोटी जगह है फिर भी यहां एक इण्टरमीडियट कालिज लड़कों का हाई स्कूल, ट्रेनिंग स्कूल, लड़कियों का स्कूल और दस्तकारी स्कूल है। इसके अतिरिक्त एंग्लो इण्डियन लड़के लड़कियों के लिए 'होम्स' नामक संस्था है और केवल लड़कियों के लिए कान्वेन्ट स्कूल है। दो-तीन अच्छे अस्पताल हैं जो मुफ्त दवा देते हैं। मिश्नरी अपने स्कूलों में बाइबल की शिक्षा पर जोर देते हैं और स्कूल में दो एक अध्यापकों को छोड़ कर ईसाई ही रखते हैं। इनमें बहुत से भद्रपुरुष और महिलाएँ भी हैं जो बहुत दिनों से अपना धर्म छोड़ बैठे हैं। मिशनरी सरकारी सहायता अपनी सेवा और धन के बल पर ईसाइयत का प्रचार कर रहे हैं। यही कारण है हिन्दू तो यहां दिन २ कम होते जा रहे हैं और शेष या तो ईसाई हैं या बौद्ध। मिशन स्कूलों से निकले नवयुवक हिन्दू होते हुए भी ईसाई हैं।

हम क्या करें ?

आवश्यकता यह है कि आर्यसमाज ऐसे स्थानों में प्रचार की उपयोगिता को समझे और सार्वदेशिक सभा इस प्रान्त की ओर विशेष ध्यान दे। यहां कुछ उपदेशक भेजकर संगठित रूप से प्रचार कार्य किया जाय। अच्छा हो इन सबका नियन्त्रण एक वकील के हाथ में हो जो कानून से अभिज्ञ हो और वकालत के द्वारा गरीब जनता की सेवा करे और शेष समय में प्रचारकार्य का संगठन करे। इस कार्य के लिए बड़ी तत्परता की आवश्यकता है। यहां बहुत दिनों से स्वामी सच्चिदानन्द जी हिन्दू सभा तथा शुद्धि के द्वारा अपने धर्म की रक्षा में तत्पर हैं। आवश्यकता इस बात की है कि लोग उनका हाथ बटावें। सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला उनको ४०) मासिक सहायता भेजते हैं। यदि वे या और कोई दानी महानुभाव इसी प्रकार इस पुनीत कार्य में सहयोग दें तो बहुत से बिछुड़े भाई बहनों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जा सकता है, पर केवल बातों से काम नहीं चलेगा। परिश्रमी और दृढ़ व्यक्तियों को इस प्रान्त में निश्चित रूप से रहना होगा और यहीं अपना घर समझकर काम करना होगा और ईसाइयों के उन गुणों को अपनाना होगा जिन के कारण वे लोग अपने कार्य में कृतकार्य हुए हैं। यहां की शिक्षित जनता में आर्य समाज के अंग्रेजी साहित्य का वितरण और अशिक्षितों में नैपाली का

साहित्य समालोचना

सन्ध्या रहस्य

लेखक—श्री प्रो० विश्वनाथ जी विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल काङ्गड़ी।

प्रकाशक —मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी। पृष्ठ संख्या १६६ मूल्य १)

यह उत्तम पुस्तक गुरुकुल स्वाध्यायमञ्जरी के अष्टम पुष्प के रूप में इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी की ओर से प्रकाशित की गई है। इसके द्वारा वैदिक सन्ध्या विषयक साहित्य में एक प्रशंसनीय वृद्धि हुई है। पुस्तक लेखक वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं उन्होंने मनसा परिक्रमा के मन्त्रों पर ज्योतिष तथा विज्ञान-शास्त्र की दृष्टि से विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है, जिसमें पाठकों को बहुत सी नई बातें ज्ञात होंगी। उपस्थानमन्त्रों की भी इस पुस्तक में बड़ी उत्तम व्याख्या की गई है। "उद्वय तमसस्परि ... ज्योतिरुत्तमम्।" की व्याख्या करते हुए लेखक महोदय ने ठीक लिखा है कि "शन्नो देवी" मन्त्र से सन्ध्या आरम्भ कर इस प्रथम उपस्थान मन्त्र पर पहुंच कर उपासक को वास्तव में परमात्मा के दर्शन की अनुभूति हो जानी चाहिये तब समझना चाहिये कि उपासक सन्ध्या कर रहा है और उसका मन सन्ध्या में लगा हुआ है। हज़ारों सन्ध्या करने वालों में से कोई शायद ही ऐसा सौभाग्यशाली उपासक होगा जिसे कि इस मन्त्र के जाप के समय तक परमात्मा का दर्शन हो जाता हो। इस मन्त्र के जाप के समय तक भक्त के मन की ऐसी अवस्था हो जानी चाहिये कि 'वह और उसका प्रभ' मानो एक दूसरे के सामने सामने होकर भक्ति का उपहार दे सकें और ले सकें।"　　　　(पृ० १२६)

इस प्रकार यह पुस्तक सम्पूर्णतया अत्यन्त उपयोगी विशेषताओं से पूर्ण है पर 'सम्भवत.' और 'प्रतीत होता है" का अत्यधिक प्रयोग जो सुयोग्य लेखक महोदय की नम्रता का भी सूचक हो सकता है पाठकों को ज़रूर खटकता है। 'प्रतीची दिग्वरुणो रक्षिता' की व्याख्या में "वह वरुण जो कि पृदाकु है अर्थात् Vernal Equinox या वसन्त सम्पात है और जो कि हिड्रा (Hydra) पर किसीसमय होता था, रक्षक था—रक्षा करने वाला था।" इत्यादि वाक्य वैदिक ईश्वरीय ज्ञानवाद की दृष्टि से अत्यन्त विचित्र तथा आक्षेप योग्य हैं। आशा है योग्य लेखक महोदय इनकी सुसम्बद्ध तथा सार्वकालिक व्याख्या का प्रयत्न फिर करेंगे क्योंकि यह व्याख्या वेदों की एक विशेषकालिकता की ध्वनि देती हुई प्रतीत होती है और सन्तोषजनक नहीं है।

एक और बात जिसकी ओर मैं विशेष रूप से सुयोग्य लेखक महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं और जो जनता को भ्रम में डालने

अनुवाद वितरण मुख्य कार्य है। फिर स्थान २ पर आर्यसमाजों की स्थापना और उसके कार्य को स्थायी रूप देने के लिए कोई संस्था खोलना भी आवश्यक होगा यदि अब भी हम न जागे तो अन्त में हमें पछताना पड़ेगा।

—०—

पाती है, वह भूमिका पृ० ११ में की गई यह स्थापना है कि "यह लखनऊ वाली 'सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञविधि' महर्षि दयानन्द की रचित है। इस पुस्तक की लेख शैली ऐसी है जिससे निश्चय होता है कि यह पुस्तक ऋषि द्वारा ही लिखी गई है।"

इसी प्रसङ्ग में सुयोग्य लेखक महोदय ने स्वयं निर्देश किया है कि परन्तु अगले पृष्ठपर 'श्री गणेशाय नमः' लिखा है ऋषिकृत किसी पुस्तक में श्रीगणेशाय नमः नहीं लिखा मिलता अपितु सत्यार्थप्रकाश में ऐसे मङ्गलाचरणों का ऋषि ने खण्डन किया है। इससे प्रतीत होता है कि यन्त्रालय के व्यक्तियों ने अपनी पौराणिक प्रथा के अनुसार यह नमस्कार छाप दिया है।' (पृ० १०)

मुझे ऐसे प्रतीत होता है कि लेखक महोदय ने इस 'सन्ध्योपासनादि पञ्चमहायज्ञ विधि' नामक पुस्तक को सम्पूर्णतया पढ़ने का कष्ट नहीं उठाया अन्यथा उन्हें कभी उपर्युक्त भ्रामक स्थापना को करने का साहस न होता। इस समालोचना को लिखते हुए उपर्युक्त पुस्तक मेरे सामने विद्यमान है उस में सैंकड़ों अवैदिक तथा ऋषि दयानन्दके मन्तव्यके विरुद्धवाते हैं। उसके पृ०१पर लिखा है गायत्री मन्त्रेणार्घत्रयं सूर्याभिमुख प्रक्षिप्य पर ब्रह्म प्राथयेत' यह गायत्री मन्त्रसे तीन अर्घ सूर्यके सन्मुख फेंकना आपके मन्तव्यके अनुकूल नहीं, यह सब जानते हैं। विशेषतः संवत ११३१ वा जुलाई सन् १८८२ में सत्यार्थप्रकाश के निर्माण के भी पश्चात् ऋषि ने ऐसा लिखा है, यह सर्वथा मानने योग्य बात नहीं। इसमें परिक्रमामन्त्र 'ओं गणेशाय नमः' 'ओं सारस्वताय नमः' 'ओं कुबेराय नमः' आदि लिखे हैं जो वैदिक तथा प्रामाणिक आर्ष वाक्य नहीं हैं और जिनका वैदिक प्रेस अजमेर में छपी पञ्चमहायज्ञ विधि से भेद अत्यन्त स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से उद्धरण दिए जा सकते हैं।

ऐसे अवैदिक ऋषि मन्तव्य विरुद्ध पौराणिक भावों के प्रतिपादक ग्रन्थ को महर्षि दयानन्दकृत बतलाकर श्री पं० विश्वनाथ जी ने बड़ी घोर अक्षन्तव्य भूल की है। यद्यपि मेरा दृढ़ विश्वास है कि सारी पुस्तक को पढ़ने का कष्ट न उठाने से ही उन से ऐसी भूल हो गई है। जिसको यदि स्वयं उन्होंने तत्काल प्रामाणिक पत्रों में स्वीकार करके अपनी उपर्युक्त स्थापना को स्पष्ट शब्दों में वापस न लौटाया तो उसका बड़ा भयङ्कर परिणाम होगा और पौराणिक भाइयों को ऋषि दयानन्द के नाम से अपनी पौराणिक कल्पनाओं के समर्थन का अवसर मिलेगा। इस प्रसङ्ग में यह बात भी उल्लेखनीय है कि मेरे तथा पं० चन्द्रभानु जी के ध्यान आकर्षित करने पर आर्य सार्वदेशिक सभा देहली ने इस सन्ध्योपासनादिपञ्च महायज्ञ विधि' के विषय में पूरी जांच कराई थी और अपने एक प्रतिनिधि को इस कार्यार्थ लखनऊ भेजा था। इस जांच के परिणाम स्वरूप प्र० सभा ने एक घोषणा 'सार्वदेशिक' तथा अन्य पत्रों में प्रकाशित कराई थी जिसमें स्पष्ट किया था कि वह सर्वथा श्री स्वामी जी कृत नहीं है। इस ओर श्री पं० विश्वनाथ जी का ध्यान आकर्षित करते हुए मैं उनसे सानुरोध निवेदन करूंगा कि वे अपनी प्रमादजनित किन्तु भयङ्कर भूल के लिये खेद प्रकाशित करते हुए उपर्युक्त स्थापना को स्पष्टतया वापिस ले लें। आशा है सत्य प्रेमी श्री पं० विश्वनाथ जी ऐसा करने में ज़रा भी सङ्कोच व विलम्ब न करेंगे।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति
बंगलौर

विविध पत्र-पत्रिकाएँ

आर्यमित्र 'कार्यकर्त्ता क्यों नहीं मिलते' शीर्षक से लिखता है—

आये दिन यह प्रश्न उठता रहता है कि आर्य संस्थाओं को सद्भावना पूर्वक काम करने वाले व्यक्ति क्यों नहीं मिलते। गुरुदत्त और लेखराम क्यों नहीं पैदा होते। प्रश्न का उत्तर सीधासादा और सुस्पष्ट है। आर्यसंस्थाएं ऐसे व्यक्तियों को प्राप्त करना नहीं जानतीं और प्राप्त होजाने पर उन्हें रख नहीं सकतीं। आर्य संस्थाओं में कोई कितने ही विशुद्ध भाव से क्यों न आवे, भले ही वह कर्तव्यपालन में अपने जीवन की आहुति दे दे, परन्तु यदि वह अपने परिवार-पोषण के लिये चांदी के चन्द टुकड़ लेता है तो घोर अनर्थ करता है। फिर वह नौकर है, गुलाम है, कर्मदास है, और न जाने क्या क्या है? उसके लिये न समाज में कोई अधिकार है और न पद। उसका बस एक ही कर्त्तव्य है, अगर उसे नौकरी करनी है तो वह अपने आकाओं का आज्ञा-पालन करता हुआ सहिष्णुता पूर्वक नीची गर्दन किये सब कुछ सहता और सुनता रहे। ज़रा भी आह की तो आफ़त आयी; समता का नाम लिया तो क़यामत बरपा हुई, न्याय की पुकार की तो कुठार का प्रहार हुआ। अबतक न जाने कितने कार्यकर्त्ता अपनी आशा लताओं को संस्थाधिकारियों की कोपाग्नि में मुलसा कर सदा सर्वदा के लिये निराश हो बैठे हैं। हम अपने प्रान्त की कितनी ही संस्थाओं का हाल मालूम है, जिनमें धुरन्धर विद्वान् केवल सेवा भाव से प्रेरित होकर आये, परन्तु वे वहां कुछ महिनों से अधिक न ठहर सके। क्यों? इसलिये कि वे जीवन निर्वाहार्थ कुछ टके लेने का गुरुतर अपराध करते थे। बिना कुछ लिये काम करने की शक्ति नहीं, लेकर सेवा करना अपराध समझा जाय, तब बताइये गुरुदत्त और लेखराम कैसे जन्म लें। दुर्भाग्य से पञ्जाब में ऐसी प्रवृत्ति नहीं है इसीलिये वहां अब भी निर्वाहार्थ लेकर काम करने वाले ऐसे ऐसे विद्वान् मिशनरी मौजूद हैं, जिन पर सारी आर्य-जनता समान रूप से गर्व कर सकती है। यू० पी० में

Glimpses of Dayanand

लेखक—श्री प० चमूपति जी एम० ए०

प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली। मूल्य १।)

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० चमूपति जी एम० ए० के लिखे Glimpses of Dayanand नामक अंग्रेजी ग्रन्थ को, देहली के प्रसिद्ध प्रकाशन गृह शारदा मन्दिर, नई सड़क, देहली ने प्रकाशित किया है। ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द के जीवन की प्रसिद्ध प्रसिद्ध घटनाओं का बड़ी ओजस्विनी भाषा में, उल्लेख किया गया है। पुस्तक इतनी रोचक है कि समाप्त किए बिना हाथ से पृथक् करने को जी नहीं चाहता। अंग्रेजी संस्थाओं के विद्यार्थियों तथा विदेश के यात्रियों के लिए, पुस्तक बड़े काम की चीज़ है और उन तक पहुंचाने का यत्न करना आर्यों, आर्य्य समाजों और प्रान्तिक सभाओं का काम है। पुस्तक की छपाई, काग़ज़ और गेटप सभी सुन्दर हैं और इसी लिए १।) मूल्य अधिक नहीं है।

नारायण स्वामी

या जिन आर्य संस्थाओं में सरकार का हाथ है, उनमें सत्यावादियों की ज्यादा दिलचस्पी नहीं चलती और ऐसी संस्थाओं को सुयोग्य कार्यकर्ता भी मिले हुए हैं। परन्तु आफ़त तो उन बेचारों की है, जिनका भाग्य-निर्णय अधिकार सत्ता सागर में डूबे, तथा दलबन्दी की दूषित भावना से युक्त व्यक्तियों के हाथों में होता है। जब दूसरे लोग दूर से देखते हैं, कि आर्य संस्थाओं में काम करने वाले व्यक्ति शान्ति, सन्तोष, आदर और सद्भावना का जीवन व्यतीत न कर केवल अपने दिन काट रहे हैं, तो उन्हें इस ओर आने की हिम्मत ही नहीं होती। वे अन्यत्र काम करना पसन्द करते हैं, परन्तु आर्यसमाज की ओर मुंह नहीं करते। जब से दलबन्दियों का दौरात्म्य बढ़ा है तब से तो यह परिस्थिति और भी अधिक भयानक हो गई है। कार्यकर्त्ताओं और कर्मचारियों को या तो परिस्थिति के अनुकूल बन कर हां में हां मिलाने को तैयार रहना चाहिये अथवा उनके लिए अपमान पूर्वक घर जाने को मार्ग खुला हुआ है। यही कारण है कि आर्य संस्थाओं में उच्च कोटि के कार्यकर्त्ताओं का प्रवेश नहीं होरहा, उनमें निःस्वार्थ सेवकों की कमी है। कोई कितना ही त्यागी, तपस्वी और निःस्वार्थ क्यों न हो परन्तु स्वाभिमान की हानि किसी को सह्य नहीं होती। आर्यसंस्थाएं जरा अपने कार्यकर्ताओं का आदर करना सीखें, और उन्हें नौकर तथा गुलाम न समझें तो अपर काल ही में कितने ही बड़े बड़े सिरफिरे मैदान में आकर कार्य करते दिखाई देंगे। अच्छा व्यवहार शत्रु को भी मित्र बना लेता है, जहाँ यह समझा जाता है कि वेतन वालों में धर्म, ईमान, सत्य स्वाभिमान् कुछ नहीं होता वहाँ भयङ्कर अनर्थ काम करता है। किसी ने ठीक कहा है—

गुन न हिरानो, गुनगाहक हिरानो है।

———

आर्य गजट 'महात्मा गांधी की निंदनीय व्यवस्था' शीर्षक में लिखता है —

महात्मा गांधी ने अपने पत्र 'हरिजन' में एक अनोखी व्यवस्था दी है। आपसे एक व्यक्ति ने एक निंदनीय घटना के सम्बन्ध में सम्मति पूछी। वह घटना क्या थी उसका सारांश हम यहां नक़ल किए देते हैं।

एक क्वारी लड़की का मामा जिसकी आयु २१ साल की थी एक कालेज में पढ़ता था। उस लड़के के बहकावे में आकर उसकी क्वारी भांजी उसकी काम वासना की शिकार बन गई। लड़की को गर्भ रह गया। अन्त में बात खुल गई तो इन दोनों ने आत्महत्या कर ली।

महात्मा जी ने इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार सम्मति दी है।

' मेरी तो यह सम्मति है कि ऐसे सम्बन्ध जिस समाज में त्याज्य माने जाते हैं वहां पर ऐसे सम्बन्ध सहसा ही विवाह का रूप नहीं ले सकते परन्तु किसी की स्वतन्त्रता पर समाज या इसके सम्बन्धी आक्रमण क्यों करें? वे मामा और भांजी सयानी उम्र के थे। अपना हिताहित समझ सकते थे। उन्हें पति पत्नी के सम्बन्ध से रोकने का किसी को अधिकार न था।"

हमें समझ नहीं आती कि महात्मा जी जहां ब्रह्मचर्य पर इतना ज़ोर देते हैं वहां वे व्यभिचार में बहने वाले ऐसे नवयुवकों को क्यों खुल्ला छुट्टी दे रहे हैं कि वे अपनी मनमानी कार्यवाहियां करें? आप

फ़रमाते हैं कि "किसी की स्वतन्त्रता पर समाज का सम्बन्धी आक्रमण क्यों करें ?" इसका मतलब तो यह है कि उचित और अनुचित इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को खुली छुट्टी होनी चाहिए। किसी का कोई वास्ता नहीं कि वह किसी की आज़ादी में दखल दें। न मालूम यह अनुत्तरदायित्वपूर्ण व्यवस्था महात्मा जी जैसे उच्च कोटि के व्यक्ति के क़लम से कैसे निकल गई ?

यदि ऐसेही विचारों का प्रचार शुरु हो जाय तो आज ही समाज नष्ट भ्रष्ट हो जाय। एक चोर को चोरी से इसलिए मना न करना कि उसकी आज़ादी में फर्क आ जायगा उसका फल इसके सिवा और क्या हो सकता है कि तमाम घर लुट जावें।

बिछुड़ों का मिलाप

—४ मई को अमानगंज (पन्ना) की एक ब्राह्मण स्त्री तथा उसके बच्चे को हटा (सागर) में शुद्धि की गई। यह कुछ समय से एक मुसलमान के चगुल में फँस गए थे। शुद्धि के समय अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे।

—११ अप्रैल को एक नव मुस्लिम की शुद्धि की गई और उसका पूर्व नाम अम्बिकाप्रसाद रक्खा गया। यह कुछ समय पूर्व मुसलमान हो गए थे। मार्ग व्यय देकर इन्हे इनके घर भेजा गया।

—आर्य्य समाज फ़रीदकोट ने एक नव मुस्लिम की शुद्धि की। रस्म मौलाना देशराज जी ने अदा की।

आर्य समाज की अप्रैल-मई की प्रगति

— ❀ —

संयुक्त प्रान्त

श्री सम्पादक जी नमस्ते !

मैंने अपने पिछले पत्रों में आर्य्य समाज आगरा के मुकद्दमे पर प्रकाश डाला था और लिखा था कि अदालत के फैसले के अनुसार समाज की सम्पत्ति बड़ी अदालतके फैसले तक सरकार के अधीन रहेगी यह भी कि आर्य्य समाज के प्रमुख २ सज्जनों की एक निर्णायक समिति के सुपुर्द यह मामला फैसले के लिए कर दिया गया है और दोनों पक्षों ने लिख कर दे दिया है कि समिति का फैसला माननीय होगा। हर्ष है कि समिति ने फैसला दे दिया है। इस के अनुसार जो मुकद्दमे अदालत में चल रहे थे वे वापस लेलिये जायेंगे और आर्य्य समाज आगरा पूर्ववत् प्रतिनिधि सभाका अङ्ग रहेगा। हमें आशा है कि दोनों पक्ष इस फैसले से सन्तुष्ट होंगे और उसे क्रिया में लाकर इस बात का सबूत देंगे कि आर्य समाजी अपनी पचायतों के निर्णयों का मान करना जानते हैं और आगरा आर्य्य समाज को प्रान्तम मिल कर फिर वही शक्ति बनादेंग जो वह इस झगड़े से पूर्व थी। इस फैसले के बाद कौन पक्ष गलती पर था और कौन नहीं था इस प्रकार की चर्चाओं का नाम भी नहीं सुनाई पड़ना चाहिए। कहना व्यर्थ है इस प्रकार की चर्चाएं शान्ति रक्षा के लिए हानि कारक होती हैं, आर्यों को प्रेम और उदारता का ही परिचय देना चाहिए। आर्य्य समाज का हित यही तकाजा करता है।

संयुक्त प्रान्तीय सभा ने अपनी योजना के अधीन प्रान्त के शिक्षा केन्द्रों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ एक विद्वान् को नियुक्त किया है और योजना को क्रिया में लाने की दिशा म क़दम उठा दिया है। इन विद्वान महोदयका नाम श्री नित्यगोपाल जी भट्टाचार्य है। ये अंग्रेजी के एम० ए० हैं। दर्शन उनका खास विषय है। लंडन युनिवर्सिटी में आपने पौरस्त्य और पाश्चात्य फिलासफियों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों का ज्ञान है। अंग्रेज़ी के अच्छे वक्ता हैं। उत्साही भी हैं। सचमुच शिक्षा केन्द्रों में प्रचार के लिए एक प्रचारक की नियुक्ति करके हमारी सभा ने समय की एक बड़ी ज़रूरत की पूर्ति की है। अन्य सभाओं को इसका अनुकरण करना चाहिए। हमें सन्देह है कि हमारी वर्तमान प्रचार पद्धति से अभीष्ट की सिद्धि हो। इसके लिए एक विशेष प्रकार की प्रचार पद्धति के अनुसरण की ज़रूरत है। देखना है शिक्षा केन्द्रों में प्रचार की कौनसी सफल पद्धति सामने आती है।

गुरुकुल वृन्दावन ने बाहर के विद्यार्थियों को अपने आयुर्वेद महाविद्यालय में दाखिल करने का निर्णय कर दिया है। अविवाहित और सदाचारी तथा नियमित फ़ीस देने वाले विद्यार्थी ही दाखिल हो सकेंगे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यता संस्कृत मध्यमा वा उससे मिलती जुलती कोई परीक्षा, संस्कृत प्रथमा

और मैट्रिक या किसी गुरुकुल की दसवीं श्रेणी का पास होना ज़रूरी है। देखना है यह परीक्षण गुरुकुल शब्द की महत्ता की रक्षा की दृष्टि से कहां तक सफल होता है।

मेरठ का समाचार है कि वहां एक विवाह १) में हुआ है। वर पक्ष की ओर से कोई बारात नहीं आई थी। केवल वर आया था। मेरठ नगर के केवल ५ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समक्ष संस्कार वैदिक विधि से हुआ था। संस्कार विधि मे लिखित ७ प्रतिज्ञा मन्त्रों का हिन्दी अनुवाद प्रतिज्ञा पत्र के रूप में लिख-कर वर, कन्या तथा पांचों सज्जनो के हस्ताक्षर कराए गए थे। पुत्री के पिता का नाम त्रिविक्रम कृष्ण सहाय जी है। मेरठ में मुलाज़िम हैं। वर महोदय के पिता का नाम प० कन्हैयालाल है। वे शाहजहांपुर के रहने वाले है।

पीलीभीत मे श्री डा फुन्दनलाल जी एम डी आरय की अध्यक्षता म यज्ञ प्रचारक मडल की स्थापना हुई है। इसका उद्देश्य यज्ञ के द्वारा तपेदिक और सग्रहणी जैसे रोगो की मुफ्त चिकित्सा करना होगा यज्ञ द्वारा तपेदिक के रोगियों का अच्छा होना मुख्यत पश्चिम के वैज्ञानिको के लिए एक चमत्कार होगा। देखे, मंडल के परीक्षण कितन सफल-होते है।

पंजाब प्रान्त

श्री सम्पादक जी नमस्ते!

प्रकाश में आया है कि पं० बुद्धदेव जी पंजाब सभा के वैतनिक प्रचारक पद से पृथक् हो गए हैं। प्रतीत होता है कि गृह कलह ही इसका कारण है—जब तक वतनिक प्रचारक पद से पृथक् होने का औचित्य साफ़ नहीं हो जाता है तब तक आर्य्य जनता इस घटना को आर्य्यसमाज के हितकी दृष्टिसे दु खद ही समझेगी।

(विदित हुआ है कि पजाब की जनरल सभा ने अन्तरग सभा को आदेश दिया है कि वह प० जी के इस्तीफ़े की स्वीकृति से सम्बन्धित प्रस्ताव को रद्द कर दे और पं० जी को इस्तीफ़ा वापस लेने की प्रेरणा की गई है।—सम्पादक)

सुना है, पजाब सरकार ने गोपाल मिश्र की गन्दी पुस्तक 'कलजुगी इन्सान, उर्फ़ 'सगीत दयानन्द' को जिसके विरुद्ध आर्य्य जगत् ने घोर असन्तोष प्रगट किया था और जिसके विरुद्ध कार्य्यवाही किए जाने की हमने अपने पत्रो में चर्चा की थी, पंजाब सरकार ने अन्य ५-६ सनातनियों और आर्य्य समाजियों की जवाबी किताबो के साथ जब्त कर दिया है। पजाब सरकार ने जितनी देर में यह कदम उठाया है और जिन परिस्थितियों में उठाया है वह पजाब के अख़बारों को पढने वाले जानते है। इसलिए हम उसे साधुवाद नहीं द सकते हैं।

अख़बारो से विदित हुआ है कि उपदेशक विद्या-लय का मामला, फैसले के लिए श्री० दीवान बद्रीदास जी के सुपुर्द किया गया है। दीवान साहब के ऊंचे व्यक्तित्व, इस कार्य्य की योग्यता और आर्य्यसमाज की हित चिन्ता के सम्बन्ध में किसी को सन्देह नहीं है। आशा है वे शीघ्र इस मामले का फैसला कर देंगे और वह फैसला जनता के समक्ष आ जायगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा का मास अप्रैल का कार्य विवरण

इस मास में नीचे लिखी समाजों के वार्षिकोत्सव समारोह के साथ सम्पन्न हुए—

आर्यसमाज (केसर गंज) अजमेर, आर्यसमाज चांदीकुई, बारा (कोटा), शाजापुर (ग्वालियर), सुजानगढ़ (बीकानेर), ठमकौर (जयपुर), झुन्झनू (शेखावाटी, जयपुर) और चित्रगुप्त गंज लश्कर (ग्वालियर)।

इन सभी उत्सवों पर सभा की ओर से श्रीमान् संन्यासी महात्मा, उपदेशक व भजनीक गए। इन उत्सवों में भागलेने वालों में श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज अजमेर, श्री० स्वामी नृसिंह देव जी सरस्वती जयपुर, श्री० स्वामी नारायणानन्द जी, श्री० स्वामी व्रतानन्द जी महाराज चित्तौड़गढ़, प० सुखदेव जी शास्त्री, पं० सुधीन्द्र जी सिद्धान्त शिरोमणि, प० भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण उपमन्त्री सभा पं० चन्द्र भानु जी विद्या भूषण देहली, प० राम सहाय जी आर्योपदेशक और बा० मूलचन्दजी अग्रवाल रींगस तथा भजनीकों में प गोकुलदत्त जी, प भगवती प्रसाद जी व पं रामस्वरूप जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस मास में कुछ समय श्रीमान् मेहता जैमिनी जी वैदिक मिशनरी ने राजस्थान में प्रचारार्थ भ्रमण किया और कई उत्सवों में सभा के सहयोग से सम्मिलित होकर प्रचार कार्य किया।

आर्य समाज शाजापुर के उत्सव पर वहाँ के कुछ मुसलमानों ने उपद्रव करने की ठानी, और आर्य समाज के नगर कीर्तन में विघ्न उपस्थित किया। आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने बड़ी चतुरता से स्थिति संभाली, परन्तु खेद है कि ग्वालियर स्टेट के कुछ मुसलमान अधिकारियों ने वहाँ पर बड़ी ही लापरवाही से कार्य किया। इस सम्बन्ध में उच्च अधिकारियों से लिखापढ़ी हो रही है। आशा है कि स्टेट के उच्च अधिकारी ऐसा प्रबन्ध करेगे कि भविष्य में इस प्रकार की किसी कार्यवाही का अवसर नहीं आने पावेगा।

आर्य समाज नारायणगढ़ (होल्कर स्टेट) में एक झगड़ा कई महीनों से ऐसा चल रहा था कि पोलिस ने वहां के आर्य समाजियों के विरुद्ध कई केस चला रक्खे थे। प्रसन्नता है कि एक २ करके सब केसों का निर्णय आर्य समाज के अनुकूल होता जा रहा है। इस से ही प्रगट होता है कि वे केस पोलिस ने केवल आर्य समाजियों को परेशान करने के लिए तैयार किए थे। सुना है कि सब इन्स्पक्टर पोलिस वहां से बदल दिया गया है। आशा है कि होल्कर गवर्नमेन्ट इसका उचित प्रबन्ध करेगी कि राजभक्त आर्य समाजी व्यर्थ परेशान न किए जावें।

सिंध

श्री सम्पादक जी

नमस्ते।

सिन्ध प्रान्त आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से बड़ा पिछड़ा हुआ प्रान्त है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, एक जबरदस्त कारण आर्य समाजियों

का आपस का कलह भी है। इस कलह को मिटाकर आर्य-समाज के प्रचार के लिए वातावरण अनुकूल बनाने और प्रचार को बढ़ाने का यत्न किया जा रहा है।

सिंध प्रान्त में गुरुकुल स्थापित करने का यत्न किया जा रहा है। श्री स्वामी सेवकानन्द जी ने इस कार्यका बीड़ा उठाया हुआ है। गुरुकुल सक्खर या हैद्राबाद म से किसी स्थानपर खोला जायेगा। दो सज्जनों ने जो सक्खर और हैद्राबाद के निवासी हैं भूमि दान देने का वचन दिया है। स्थिर रूप से सहायता देने वाले सज्जनों का सहयोग प्राप्त किया जारहा है। १६ लाइफ मेम्बर बन चुके बतलाए जाते हैं जो १०१) एकमुश्त देने के अलावा २५) साल दिया करेंगे। २५० और सदस्य बन चुके हैं जो ३) से लेकर २५) प्रति वर्ष सहायता दिया करेंगे। अन्य हर प्रकार की सहायता प्राप्त करने का यत्न जारी है। शिक्षा प्रणाली गुरुकुल कांगड़ी जैसी होगी। गुरुकुल की कई शाखाएँ होंगी। जिनमें दशवीं श्रेणी तक की शिक्षा मुफ्त होगी। भोजन व वस्त्रादि का कुछ नहीं लिया जायगा।

मद्रास—प्रचार

केरल

[१]

मार्च ३७

कनानौर के स्कूलों में धर्म शिक्षा की व्यवस्था की और शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। लगभग २५ लड़के साप्ताहिक सत्संग में भाग लेते हैं। इस मास कासर गोड, होसदुर्ग, पय्यानूर, की यात्रा की और इन स्थानों मे आर्य-समाजों को व्यवस्थित करने का यत्न किया। इस मास ७ व्याख्यान और ३ धार्मिक उपदेश दिए। मलयालम भाषा में (Glory of the Vedas) नामक पुस्तक का अनुवाद किया जा लगभग पूरा हो चुका है।

—साधु शिवप्रसाद

[२]

मार्च १९३७

मौखिक प्रचार—गपलकरी, आपूंकरा, चिरकड़व, फुडभालूर और तिरुवल्ला में व्याख्यान दिया।

मेला प्रचार—मण्डर्‌ाड मन्दिर के मेले में वैदिक धर्म प्रचार किया। कोट्टयम मन्दिर के मेले के कानवेंशन में भाग लिया। समाज सम्बन्धी छोटी पुस्तक जनता मे बाटी गई।

शुद्धि—चार अछूत जो कई वर्ष से ईसाई हुए थे उनकी शुद्धि की गई।

इस के अतिरिक्त प्रचार और शुद्धि के सिलसिले में कुम्मनम, किडङ्गूर, वेल्लूर, पांपाडी, अयिरूर आदि स्थानों की यात्रा की। लोगों का ध्यान शुद्धि की ओर आकर्षित किया। इन स्थानों मे विधर्म में गए हुए अछूतों की काफी संख्या में शुद्धि होने की संभावना है।

नारायण दत्त

आर्य समाज मंगलौर

(दक्षिण कनारा)

मंगलौर आर्य समाज का १६ वां वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर ११/३/३७ को मनाया गया। प्रातः छः बजे ज्ञानोदय समाज मन्दिर से लगभग ३०० नर नारियों का जलूस रवाना हुआ और ७॥ बजे के लगभग नगर में संकीर्तन करता हुआ आर्यसमाज मन्दिर में पहुँचा। यहा ईश प्रार्थना के बाद महिलाओं ने ध्वजाभिवादन किया। इसके बाद श्रीयुत गोपालनायक जी ने ईश्वर प्रार्थना की और उपदेश

दिया। ६॥ बजे श्रीयुत बस्ती कृष्णा शिनाय 'वैदिक सभ्यता' के महत्व पर बोले और श्रीयुत सुब्ब कृष्णप्पा ब्रह्म समाज के मिशनरी ने वेद की शिक्षाओं पर निबन्ध पढ़ा। ज्ञानोदय समाज की संकीर्तन मंडली का सुमधुर गान हुआ और मूर्ति पूजा, अवतार वाद और जात पात इत्यादि अवैदिक प्रथाओं का खंडन किया। इस अवसर पर एक सहभोज हुआ जिसमे भिन्न ७ वर्णों के ३ सौ हिन्दुओं ने भाग लिया।

दोपहर के बाद २ बजे वैदिक धर्म के प्रचार के लिये "वैदिक धर्म प्रचार मंडल" सभा की स्थापना हुई और बहुत से आदमी इस सभा के सदस्य बने। इस सभा का उद्देश्य ट्रैक्टों इत्यादि के द्वारा प्रचार करना है। सेंट अलासियस कालेज के संस्कृत प्रोफेसर पण्डित अनन्त उपाध्याय द्वारा कनरी भाषा मे लिखी हुई 'वेदों का महत्व' नामक पुस्तक मुफ्त बांटी गई। आर्य समाज कार्कल के श्रीयुत मैजुनाथ शिनाय का एक सार गर्भित भाषण हुआ।

शामको ५ बजे श्रीयुत एम० आर० कृष्णमूर्ति पन्थूलू गारु एम० ए० बी० ए० सबऔरडिनेट जज के प्रधानत्व मे एक सार्वजनिक सभा ऋषिबोधोत्सव मनाने के लिए हुई। श्री बाबू मोहनप्पार्थिंगलाय मन्त्री समाज द्वारा वार्षिक रिपोर्ट सुनाए जाने के बाद सार्वदेशिक सभा के प्रचारक साधु शिवप्रसाद जी का व्याख्यान हिन्दुओं की पतित दशा पर हुआ। कुमारी अहल्या बाई बी०ए०, स्वामी दयानन्द सरस्वती के महान कार्यों पर बोली, सभा पतिजी के सार गर्भित भाषण तथा सभापति को धन्यवाद के प्रस्ताव के बाद सभा विसर्जित हुई।

विदेश–प्रचार

लण्डन की चिट्ठी

लण्डन मे वैदिक संस्कार

लण्डनमे सैकड़ों हिन्दू परिवार हैं, स्वभावत ऐसे अवसर आते है, जिन पर संस्कारों की आवश्यकता होती है। परन्तु शोक है कि इस समय तक इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए यहा कोई स्थायी और सन्तोषजनक प्रबन्ध नहीं। बहुतसे हिन्दू राजे महाराजे आते हैं, लाखों रुपया खर्च कर जाते है, दूसरे धनी व्यक्ति भी प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या मे आते हैं, और हजारों रुपये खर्च कर चले जाते है। हिन्दुओं की यह निर्बलता है कि वह धार्मिक मामलों मे बिलकुल ध्यान नहीं देते, और न कुछ खर्च करने के लिए तय्यार होते है। लण्डन मे मुसलमानों की दो मसजिदें हैं, और वह प्रति वर्ष इस कार्य के लिए हजारों पौण्ड खर्च करते है। गत वर्ष यहा के कुछ प्रतिष्ठित हिन्दुओं ने हिन्दु "ऐसोसियेशन आफ युरुप" इस उद्देश्यसे बनाई है। परन्तु उनके आर्थिक साधन बहुत थोड़े हैं, और भारतवर्ष से धर्म प्रेमी हिन्दुओं की सहायता के बिना यह कार्य स्थायी रूप से नहीं हो सकता। मैंने मार्च के अन्त तक यहा रहनेका प्रोग्राम बनाया था, जिसको आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने कृपा पूर्वक स्वीकार किया था और अब मुझे दक्षिण अफ्रीका जाने का आदेश हुआ है। यहा के लोगों ने मुझे दो तीन मास और ठहरनेके लिए सभा से आग्रह किया है। यदि ऐसा हुआ तब भी मैं यहा जून तक ही ठहर सकूंगा।

गत ६ मासमे साप्ताहिक सत्संगोंके अतिरिक्त भिन्न २ संस्कार भी होते रहे हैं। लोगों को ज्ञात होगया है कि संस्कार कराने वाले पण्डित यहा विद्यमान हैं और उनकी सेवा से लाभ उठाया जासकता है।

परन्तु किसी योग्य पण्डित के न होने से यदि संस्कार कराने की इच्छा भी हो तो भी दबानी ही पड़ती है, क्योंकि उसकी पूर्ति का कोई साधन नहीं।

३० मार्च को श्रीयुत बालकृष्ण मुंजे के पुत्र का नामकरण संस्कार हुआ। आप हमारे देश के प्रसिद्ध डाक्टर मुन्जे के बड़े पुत्र हैं और कई वर्षों से यहां व्यापार करते हैं, उन्होंने एक अंग्रेज महिला से विवाह कर लिया है। कुछ दिन हुए उनके घर पुत्र जन्म हुआ और उनकी तीव्र इच्छा हुई कि आरम्भ से ही बच्चे को हिन्दू संस्कार दिया जावे। उन्होंने मुझे टेलीफोन किया और मैंने सहर्ष संस्कार करना स्वीकार किया। श्रीयुत मुंजे और उनकी धर्मपत्नी श्रद्धापूर्वक अग्निहोत्र के लिए बैठे और बालक का नाम विजयकृष्ण मुंजे रक्खा गया। उपस्थित सज्जनों में कुछ अंग्रेज स्त्री पुरुष भी थे। हवन क्रिया को देखकर सब बहुत प्रभावित हुए। एक महाराष्ट्र सज्जन इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने इच्छा प्रकट की कि लण्डन में बृहद्यज्ञ होना चाहिए और इसका उद्देश्य यहां के लोगों को बतलाना चाहिए। श्रीमान् और श्रीमती मुंजे ने अतिथियों का प्रेम पूर्वक सत्कार किया और हिन्दु एसोसियेसन को २१ शिलिंग दान दिया। कुछ दिन पूर्व एक नैपाली हिन्दु का देहान्त होगया। यहां नैपाल महाराजा की तरफ से एक राजदूत रहते हैं, उन्होंने केवल अपने लोगों के लिए एक पृथक् मिशन बनाया हुआ है। जिसमें खुली हवा में दाह संस्कार किया जाता है। साधारण तौर पर यहां ऐसा करने की आज्ञा नहीं। उनकी तरफ से मुझे सूचना मिली कि मैं इस संस्कार को कराऊं। स्थान खुला था वृष्टि भी हो रही थी। सामग्री का प्रबन्ध नहीं हो सका, घृत का प्रयोग किया गया और संस्कार विधि से अन्त्येष्टि करके मन्त्र पढ़े गए। इसी प्रकार जब किसी विद्यार्थी का देहान्त होता है जिसका कोई रक्षक नहीं हो तो उसकी सूचना 'इण्डिया हाउस' में जाती है और वे उस के दाह-कर्म का प्रबन्ध करते हैं। पहले बिना किसी हिन्दु संस्कार के वह गैस की भट्टी में जलादिये जाते थे, परन्तु अब मुझे सूचना दे देते हैं। गत दो मास में मुझे ऐसे दो संस्कार कराने पड़े हैं और यथावसर प्रार्थनादि कराई जाती है। यदि यहां स्थायी रूप से कोई योग्य पण्डित आजायें तो सभी हिन्दु परिवारों में संस्कार का होना आरम्भ हो सकता है नहीं तो इनकी सन्तानें एंगलो इण्डियन या युरोशियन ही बनेंगी। प्रचार के लिए भी बहुत क्षेत्र है।

ऋषिराम

आर्य भवन

गढ़वाल प्रान्त में प्रचार

फरवरी, मार्च १९३७ का विस्तृत विवरण

१ पैठूसैणमें ईसाइयोंका स्कूल सन् १९१० से खुला है, जिसमें ब्राह्मण राजपूतों के लड़के पढ़ते है। यहां ८० लड़के है और सात मास्टर ब्राह्मण राजपूत हैं जिनको लड़कों की फीस से वेतन मिलता है, और एक हेड मास्टर आर० पोटर नाम का ईसाई है जिसको मिशन वेतन देती है। इस स्कूल की आठ बिल्डिंग है, दलित भाइयों के लड़के यहां नहीं पढ़ते। कुकाडी ग्राम में सन् १९१० के पहिले एक ईसाई हुआ है। बाकी इन स्थानो में कोई ईसाई नहीं।

बिरादरी का भूत

१ इस गढ़वाल प्रान्त के आर्य भाइयों को बिरादरी का बड़ा ही भय है। इस पौराणिक बिरादरी ने कितने ही आर्य सिद्धान्तों के पालने वालों को परास्त कर दिया है। जिन आर्य भाइयों

की वैदिक सिद्धान्तों के पालने में या उपदेश देने में दृढ़ता देखी थी और जो आर्य भाई बाहर देशों में रहते हैं उनकी भी सिद्धान्तों पर चलने की प्रशंसा सुनी जाती है तो बड़ी ही प्रसन्नता होती है। किन्तु जब बिरादरी का भूत सवार होने लगता है तो मृतक श्राद्ध तेराई मे पौराणिक नियमों का पालन करते हुये पाये हैं। अन्य २ संस्कारों में भी इसी प्रकार पौराणिक धर्म का पालन करते हैं। इसलिये ऐसे आर्य भाइयों से प्रार्थना की कि बिरादरी का भय न करते हुये ऋषि सिद्धान्तों के जाननेवाले बनो। ऐसा करनेसे ही आपका भला होगा और वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा होगी। लोग आपको सत्यवादी कहेंगे। नहीं तो दृढ़ आर्यो को पौराणिक लोग कई प्रकार का भय दिखाकर कहते हैं बड़े २ आर्यों की नहीं चली, तुम्हारी क्या चल सकेगी।

२ अन्य देशों की अपेक्षा यहां के आर्यों को पौराणिक धर्मियों से बड़ा दु:ख है। कारण इसका यह है कि पहिले आर्य भाई ही थोड़ी संख्या मे हैं। इस पर भी कोई २० मील पर है और कोई तीस मील पर है। तीन तीन पट्टियों में एक आर्य कहने को मिलेगा। ऐसी हालत में बिना सगठन के दु:ख अवश्य होगा। इसलिये आर्य भाइयों से नम्र निवेदन से कहा कि धर्म के नियमों के पालने में हम जितना कष्ट सहेंगे, उतना ही हमारा त्याग और तप बढ़ेगा। ऐसे ही श्रेष्ठ पुरुषों का ईश्वर भी सहायक होता है।

ऋषि बोध सप्ताह

मार्च ता० ५ से ११ तक ऋषिबोध सप्ताह पर दिन और रात में १४ व्याख्यान दिये। और ११ स्थानों में हवन यज्ञ किया। चढ़ाई उतराई पर चलकर ४१ मील, ग्रामों में उपदेश दिया। आय भाईयों को सिद्धान्तों पर दृढ़ रहने के लिए उपदेश किया। दलित भाइयों से शुद्धाचरण तथा पठन पाठन के लिए प्रतिज्ञायें करवाईं। इन सब स्थानों में एक हजार से अधिक नर और नारियों की जन संख्या मे वैदिक धर्म के भिन्न २ विषयों पर ऋषी ने आर्य जाति पर क्या २ उपकार किये हैं उस पर प्रकाश डाला। दो "सार्वदेशिक" के ग्राहक बनाये, और दो आर्यसमाज के मेम्बर बनाये हैं। इन स्थानों में आर्यसमाज चौन्दकोट के प्रधान श्री महाशय केशरसिंह जी तथा कुछ स्थानों में मेम्बरों ने उपदेश कार्य मे साथ दिया। इस सप्ताह में वैदिक धर्म का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

२ पुन इसके बाद जहरीखाल होकर लैन्सडौन गया। इस जहरीखाल स्थान मे जो मकान आर्य समाज का है उसका कुछ हिस्सा गिर गया है। इसके लिये नकशा बनाया गया, और खर्च कितना लगेगा यह विचार किया, जिसके बनने में कुल ८०० आठसौ रुपये लगेंगे। इस स्थान मे आर्य मन्दिर की बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि यहा जब बाहर देशों से पूज्य आर्य अतिथि आते हैं तो उनको ठहराने के लिये कहीं स्थान नहीं मिलता। लैन्सडौन छावनी होने से आर्य अतिथियों के लिये कई प्रकार की अड़चने रहती हैं। इस स्थान पर यह मकान बनजाय तो गढ़वाल के पुरुषों के भी भाग्य खुल जायेगे। गर्मियों में कोई न कोई आदर्श विद्वान सन्यासी यहा आकर ठहर सकते हैं, और गढ़वालियों को उपदेश देते रहेंगे। इस स्थान पर हाई स्कूल के विद्यार्थी अध्यापक तथा दुकानदार वा गढ़वाल के शिक्षित कर्मचारी वकील इत्यादि लोग रहा करते हैं। यहां से गेन्दपुर, दुगड्डा, कोटद्वार प्रचार करते हुये गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर पहुंचा। वहा श्री पूज्य अधिष्ठाता जी से गढ़वाली आर्य भाइयों सहित मिलकर प्रचार कार्य के लिये परामर्श हुआ।

रघुबरदयालु
प्रचारक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

LIGHT OF TRUTH

या

सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी)

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत

इसके विषय मे लिखना सूर्य को दीपक दिखना है। इस एक पुस्तक ने जितनो को आर्य बनाया है उनका शतांश भी अन्य साधनो से नही।

अब तक अंग्रेजी मे इसका सुन्दर तथा सस्ता सस्करण नही था इसी कमी को आर्यसमाज मद्रास ने पूरा कर दिया है।

अजिल्द १॥), सजिल्द २)

THE FOUNTAINHEAD OF RELIGION

या

"धर्मों का मूल स्रोत" (अंग्रेजी)

श्री गङ्गाप्रसादजी, चीफ जज, टेहरी वाले अपनी विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध है। यह पुस्तक उन्हीं की गम्भीर लेखनी से निकली हुई है। इसके अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके है। प्रत्येक अंग्रेजी पढे युवक व युवती को इसका स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

अजिल्द ॥) सजिल्द १)

The Innerman & Other Lectures on ARYA PHILOSOPHY

अजमेर अर्द्ध-शताब्दी के समय, आर्य-फिलासफी पर दिये गये अंग्रेजी व्याख्यानो का सग्रह है।

इनके व्याख्याता श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री पण्डित चमूपति जी तथा बाबू गङ्गाप्रसाद जी टेहरीवाले है। पुस्तककी भूमिका आचार्य रामदेव जी ने लिखी है।

फैदरवेट पपर, बढिया छपाई। पृष्ठ सख्या १२८, मूल्य ।≈) मात्र

THE OUTLINES OF ARYASAMAJ

आर्य समाज का सक्षिप्त परिचय

यह भी पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी की लिखी पुस्तक है। इसमे अंग्रेजी पढ लिखो को सक्षेप से आर्य समाज के सब पहलुओ का परिचय कराया है। मूल्य-)

आर्य साहित्य

अंग्रेजी मे

लागत दामो पर

आर्य समाज मद्रास ने केवल मात्र लोकोपकार के भाव से प्रेरित होकर इन पुस्तको को प्रकाशित किया है। ये पुस्तके सुन्दर कागज तथा छपाई के बा-वजूद भी निहायत सस्ती है। हमे आशा है कि आर्यसमाजें इन्हे अधिक सख्या मे मगा कर हमारा उत्साह बढाऐंगी।

पता—

मत्री, आर्यसमाज,

मद्रास।

The Ten Principles of ARYASAMAJ

या

समाज के दस नियम (अंग्रेजी)

श्री पण्डित चमूपति जी कृत

इसमे योग्य पण्डित जी ने समाजके दस नियमो की वैदिक तथा वैज्ञानिक व्याख्या की है। आर्य स्कूलो व कालिजो में उपहार देनेके सर्वथा योग्य है। ऐण्टिक पेपर। सुन्दर छपाई। पृष्ठ सख्या १६०, मूल्य ।≈) मात्र

The Vedic Caste System & PANCHAMA PROBLEM

वैदिक वर्ण व्यवस्था तथा हरिजन समस्या पर श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने यह सम-योपयोगी पुस्तक लिखी है। प्रत्येक आर्य को पढनी चाहिए।

मूल्य ≈) मात्र।

विषय-सूची

आवश्यक सूचना

ता० २२, २३, २४ जौलाई सन् ३७ को निगमागम संस्कृत विद्यालय गंज जिला बिजनौर का द्वितीय वार्षिकोत्सव होगा, जिस में प्रमुख संन्यासी, उपदेशक और भजनीक पधारेंगे। सब सज्जनों को मित्र मण्डल सहित पधारना चाहिये। नवीन छात्रों का प्रवेश २२ जौलाई ३७ को होगा।

स्वामी केवलानन्द संन्यासी

नम्र निवेदन

[ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N, W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पञ्जाब की राजधानी लाहौर मे रावीरोड पर केन्द्रीय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उपप्रधान श्री पण्डित विश्वम्भर नाथ जी भूत पूर्व गवर्नर गुरुकुल कागड़ी, श्री पण्डित ठाकुर दत्त जी वैद्यशास्त्री मुल्तानी तथा डा० गणेशीलाल जी M, B B S हैं इस अनाथालय को खुले हुये बीस वर्ष के लगभग होचुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं करते, प्रत्युत सब प्रान्तो मे रहने वाले हिंदू आर्य भाई भी करते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय भारत के दूसरे प्रान्तों में भी सर्वप्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है, यहा तक कि अब सरकार भी जो चोरी किये हुये लड़के लड़किया उनको मिलते हैं जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको इस अनाथालय मे रखती है। इस के अतिरिक्त ऐसे नवजात बालक वा बालिकायें भी आने लग गई हैं जिनकी माताएं मर जाती हैं या वह उनको कई गुप्त कारणों से रखना नहीं चाहतीं और इनके लिये एक Trained नर्स भी रखी हुई है। इस तरह से अनाथालयमें बच्चों की सख्या बढ़गई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु सख्या बढ़ जाने से कन्याओं के लिये स्थान काफी नहीं है। इस लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है कि नवीन कमरे बनवाये जायें, जिस से कन्याओं के स्थान का कष्ट मिट जाय। इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मै दानी सज्जनों की सेवा मे विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ के वे इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न करसके तो वे बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे अन्य मतवालों के जाल मे फस कर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जावेंगे और उसका पाप आर्य जाति को लगेगा। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे, उनके नामों के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायंगे। इस समय इस कार्य के लिये पाच सहस्र धन की शीघ्र आवश्यकता है जो दानी सज्जनों को पूरी करनी चाहिये। इस अनाथालयके आधीन म्यूनिसिपैलटी तथा गवर्नमेंट से मंजूर एक प्राइमरी-इण्डस्ट्रीयल मिडल स्कूल है। जिसमे अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमे लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लड़के इस में काम सीख सकते हैं आजकल ४० लड़के और ४२ लड़किया सीख रही हैं। बीस के लगभग लड़के यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय मे इस समय १०६ लड़के और ६५ लड़किया हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकार प्रिय महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस ओर भी दया करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें, दे कर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल, घी आदि खाद्य पदार्थ और पहनने के लिये वस्त्र देकर कृतार्थ करें। यह संस्था पूर्व भी आप जैसे दानियों के दान से चल रही है, अब भी आपसे आशा की जाती है कि अवश्य सहायता देकर अनाथों का आशीर्वाद लेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

❀ ओ३म् ❀

सार्वदेशिक

❀ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ❀

आषाढ़ १९९४

वर्ष ११ { जौलाई १९३७ ई०] [दयानन्दाब्द ११३ } अङ्क ५

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

यां मेधामृभवो विदुर्यां मेधामसुरा विदुः ।
ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्यावेशयामसि ॥ ३ ॥

अ० ६ । १०८ ।

(यां मेधां) जिस मेधाको (ऋभवः विदुः) ज्ञानी जानते हैं, जिस (मेधां) बुद्धिको (असुराः विदुः) असुर जानते हैं, (यां भद्रां मेधां) जिस कल्याणमयी बुद्धिको ऋषि जानते हैं, (तां मयि आवेशयामसि) उस श्रेष्ठ बुद्धिको अपने अन्दर स्थापित करता हूँ ।

सम्पादकीय—

चेतावनी

भाई चमूपति की अकाल मृत्यु को मै आर्य समाज के लिये ईश्वर की ओर से दी हुई एक गम्भीर चेतावनी ख्याल करता हूँ। जब कोई माता पिता अपने बच्चो के व्यवहार से रुष्ट हो जाते है तो चेतावनी के तौर पर उनकी सब से प्यारी वस्तु उनसे छीन लेते हैं। पं० चमूपति आर्य समाज की सब से प्यारी चीज थे। अपनी विद्वत्ता, अपने त्याग, तपस्या और भक्तिके कारण आर्य समाज मे हरदिल अजीज बन चुके थे। ऐसी प्यारी चीज का छिन जाना, यदि दैवी चेतावनी नही तो और इसे क्या कह सकते है ?

अभी पिछले दिनो लाहौर मे भाई चमूपति जी के मैने दर्शन किये थे। यह उनकी मृत्यु से केवल एक सप्ताह पूर्व की बात है। दोपहर का समय था। आप रोग शय्या पर अकेले लेटे हुए थे। उस समय आपको १०४ का बुखार हो रहा था। रबड़ की बोतल मे बर्फ डाल कर अपने हाथों से अपने माथे पर थामे हुए थे। अत्यन्त शान्त और प्रसन्न चहरे से आपने मेरे साथ बातचीत की। थोड़े ही समय मे आपका चेहरा गम्भीर हो गया और उस पर उदासी छा-गई और वे मुझे कहने लगे "आर्य्य समाज पर मरने वाले बहुत हैं परन्तु मुझे दु ख है कि इन आर्य्य समाज के उपर मरने वालो के हाथो मे स्वयं आर्य्यसमाज मरता चलाजारहा है। आह' आर्य्य समाजको बचाने की आवश्यकता है।" पं० जी की वाणी मे उस समय एक ऐसा जादू था कि मेरा दिल अकस्मात भर आया। उस समय और भी बहुत सारी बातें पं० जी ने आर्य्य समाज की वर्तमान स्थिति के ऊपर मेरे साथ की परन्तु मुझे उस समय इस बात का वहमोगुमान भी न था कि यह भी उनके साथ अन्तिम भेंट है और उनके वह शब्द उनके अन्तिम सन्देश का रूप धारण करेंगे।

पं जी ने अपनी इस छोटी आयु मे आर्य्य समाज के क्षेत्र मे अपने लिए बहुत ऊंचा स्थान पैदा कर लिया था। जिन गुणो के वे मालिक थे, उनको याद करके हम प्राय: रोया करगे क्योकि उन गुणो का इस समय बहुत अभाव दीखता है। आर्य्य समाज की साख इसीलिये दिनो दिन गिरती चली जा रही है। पं० जी सरीखे व्यक्ति प ले ही हमारे अन्दर बहुत कम थे, उनका स्थान लेना तो दूर की बात है इस समय तो उनका अनुकरण करने वाले भी बहुत कम व्यक्ति दीखते है।

प० जी के हृदय मे आर्य्य समाज के प्रेम की प्रचण्ड अग्नि हर समय धधकती थी। स्वास स्वास, द्वारा वे अपने आर्य्यत्व का परिचय देते थे। एक एक मिनट उनका आर्य्य समाज की सेवा मे व्यतीत होता था। आपके दिल और दिमाग— इन दोनो शक्तियो पर आर्य्य जनता को अभिमान प्राप्त था। आर्य्य समाज के क्षेत्र मे जो साहित्य सेवा आपने की है उसकी धाक आर्य्य समाज के

क्षेत्र से बाहर भी फैल चुकी थी।

पं० चमूपति अद्वितीय प्रचारक थे। उनका मुकाबिला ऊँचे दर्जे के ईसाई मिशनरियों से किया जा सकता है। आप के जीवन मे एक अपूर्व जादू था जिसका प्रभाव सभी छोटे बड़े जो आपके सम्पर्क मे आते थे, अनुभव करते थे। उनके हृदय के जो उद्‌गार उनके लेखों वक्तृताओं तथा कविताओं से हमे मिलते हैं उनमे पता चलता है कि आप कितने गहरे प्रेम, भक्ति और विश्वास के धनी थे। कभी कभी भक्ति के मद मे मस्त होकर वह अपने श्रोताओं को इस प्रकार वश मे कर लेते थे कि जैसा चाहते थे उनको झुलाते थे।

आर्य समाज के क्षेत्र मे आर्य्य समाज के सेवकों को जो कष्ट, अपमान और आपत्तियां झेलनी पड़ती है उनको कौन नही जानता। यह सब कष्ट और विपत्तियां पं० जी के भाग्य मे भी लिखी थीं। जिन धैर्य्य और सहनशीलता से उन्होंने अपने व्रत को निभाया यह उन्ही का कार्य्य था। चट्टान की तरह स्थिर और अविचलित रह कर वह सदा अपने जीवन कार्य्य मे लगे रहते थे। एक बार अपने प्रिय विद्यार्थियों के हाथों अपमानित होने पर वह प्रगट रूप मे मुस्कराते रहे और अन्तःकरण से यह प्रार्थना करते रहे कि हे भगवन्! इन बालकों को माफ करदो ये नही जानते कि ये क्या कररहे हैं? उन के जीवन की इस घटना ने तो उन को अपने मित्रों तथा विपक्षियों की आंखोंमे एक दम देवता बना दिया था।

जो बात रह रह कर मुझे तथा मुझ जैसे अन्य व्यक्तियों को दुखी बना रही है वह यह है कि हमारे भाई चमूपति निराश होकर हम से जुदा हुए है। आर्य्य समाज से नही परन्तु आर्य समाज का वर्तमान स्थिति से अत्यन्त दुःखी होते हुए उन्होंने अपने शरीर को छोड़ा है। अपने दिल की उमङ्गों को वे अपने साथ लेकर चल दिये हैं। वे चाहते थे कि आर्य्य समाजका मिशन सर्वत्र फैले। वे उस मिशन के दीवाने थे और परवाने के समान सदा उस पर जल मरने को तैयार रहते थे। क्या हम अपने भाई की अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए न संभलेगे? मै ऐसा अनुभव करता हूँ कि यदि हम न सभले और पं० चमूपति की मृत्यु को अपने लिऐ चेतावनी न माना तो आर्य्य समाज का परमात्मा ही मालिक है।

पं० चमूपति जी

कहते हैं कि मनुष्य की कदर उसकी मृत्यु के पीछे पड़ती है। जब तक वह जीवित रहता है और प्रतिदिन के संघर्ष मे आता रहता है, हम उसके महान् व्यक्तित्व को ठीक तौर पर समझ नही सकते। परन्तु इस का यह अर्थ नही समझना चाहिये कि समाज अपने व्यक्तियों का उनके जीवन काल मे उचित आदर और सम्मान कर ही नही सकता। यदि किसी समाज मे श्रेष्ठ व्यक्ति आदर नही पाते तो उस समाज पर कृतघ्नता का कलङ्क अवश्य लगता है। पंडित चमूपति जी के व्यक्तित्व को जितना इस समय उनके वियोग के पीछे हम अनुभव कर रहे है, यदि इतना

ही हम उनके जीवन काल में अनुभव करते तो शायद उनके अन्तिम दिन निराशा में न कटते। इस विषय पर अधिक लिखना ठीक नहीं। केवल इस बात को ओर हम निर्देश कर देना चाहते हैं कि अब पंडित चमूपति जी के परिवार की ओर हमारा विशेष कर्तव्य है। उसको निभाना चाहिये। जिस व्यक्ति ने अपने जीवन का एक एक क्षण तथा अपने खून का एक एक कतरा समाज सेवा के अर्पण किया, उसके परिवार की चिन्ता यदि हम न करें तो हमारी कृतघ्नता की सीमा न होगी। इतना लिखने पर हमें विदित हुआ कि पंजाब प्रतिनिधि सभा ने पंडित जी के बच्चों की भावी शिक्षा का सारा प्रबंध अपने हाथ में लिया है। इसके साथ ही महाशय कृष्ण जी ने ५ हज़ार की अपील पंडित जी के मित्रों से की है, ताकि यह धन दो सप्ताह में इकट्ठा करके उनके परिवार को साधारण जीवन निर्वाह के लिये दिया जावे। हम आशा करते हैं कि इस अपील का उचित उत्तर देकर हम इस दुःखी परिवार के दुःख को किसी हद तक कम कर सकेंगे।

ईसाई और हरिजन

हम कई बार यह लिख चुके हैं कि आजकल लोगों के धर्म परिवर्तन का मूल कारण उन का आर्थिक अथवा सामाजिक संकट होता है। ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं में दलित जातियों के इस संकट का लाभ उठा रहे हैं। महात्मा गांधी जी ने अपने पत्र "हरिजन-सेवक" के पिछले अंक में इसी तथ्य पर इस प्रकार प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं.—

"इससे स्पष्ट है कि यह प्रचार-कार्य बड़ा सफल रूप धारण कर रहा है और इस तरह अपना धर्म छोड़कर ईसाई बननेवालों की संख्या शीघ्र ही इतनी बढ़ जायगी कि जिसका हम अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। हां, जितने भी नये-पुराने लोग ईसाई हुए हैं उनमें से एक ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जो अपने धार्मिक विश्वास के कारण ईसाई बना हो। ईसाइयों के प्रचार को जो सफलता मिली उसका कारण तो यह है कि हरिजन अपनी मौजूदा असह्य स्थिति से बेहद असन्तुष्ट हो रहे थे और उन्हें यह आशा थी कि इस परिवर्त्तन से शायद उनकी स्थिति सुधर जाय। इसलिए धर्म-परिवर्त्तन का मुख्य कारण तो आर्थिक तथा सामाजिक ही है। आम तौर पर हरिजनों को कई अन्याययुक्त लागें भी देनी पड़ती हैं और उन्हें बड़ा ज़लील किया जाता है जो अब उनके लिए असह्य हो रहा है। अगर प्रतिकार करते हैं तो मामला अदालतों तक जाता है। फिर मिशनरी इन बातों से अनुचित लाभ उठाते हैं। पर ये धर्मान्तर आम तौर पर स्थायी नहीं होते।"

आर्य समाज यदि चाहता है कि दलित जातियों का उद्धार करे तथा उनको मनुष्योचित स्थिति प्रदान करे तो उनके आर्थिक और सामाजिक संकटों को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने का उपाय होना चाहिये। हमारे ख्याल में आर्थिक संकटों के दूर हो जाने पर उनके सामाजिक संकट भी बहुत कुछ दूर हो जायेंगे। अतः इन जातियों को व्यापारिक तथा औद्योगिक शिक्षा देने का प्रबंध होना चाहिये ताकि वे जीवन संग्राम



आर्य मैरिज एक्ट के अनुसार यह पहिला विवाह नागपुर में वैदिक रीति से सम्पादित हुआ है। वर का नाम श्री शिवलाल है जो विलायत की यूनीवर्सिटी के एक ग्रेजुएट है और पञ्जाबी है और वधू श्री मती चन्द्राकेला बी० ए० नागपुर के एक इन्जीनियर की पुत्री है।

चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, देहली।

[illegible]





रूस का एक वृद्ध पुरुष

[illegible] विद्यमान [illegible] [illegible] प्राप्त करने का यत्न करें।

में अपने पावों पर खड़े होकर दूसरों का मुह न ताकते रहे।

विश्व-संस्कृति में भारत का भाग

कलकत्ता विश्व विद्यालय के सुप्रसिद्ध उपाध्याय श्री डा० कालीदास नाग आजकल हवाई विश्व विद्यालय में उपरोक्त विषय पर मनोरञ्जक व्याख्यान दे रहे हैं। उनके व्याख्यानो में न केवल विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ही उपस्थित होते हैं अपितु अन्य पठित स्त्री पुरुष भी डाक्टर साहब के विचारों से लाभ उठा रहे है। हम भारत के इस सपूत पर गर्व है। वह भारत का तथा उसकी सस्कृति का गौरव विदेशों में फैला रहा है। आर्य समाज को ओर से लडन में पडित ऋषीराम जी इसी मिशन को लेकर पहुचे हैं। हम दिल से चाहते हैं कि उनको सफलता प्राप्त हो। इंडियन सोशल रिफामर में जो उनका लेख छपा है उससे ज्ञात होता है कि वह वहा 'हिन्दू सस्कृति" का एक केन्द्र स्थापित करना चाहते है। अच्छा होता यदि वह "हिन्दू सस्कृति के स्थान पर 'आर्य सस्कृति" का केन्द्र बनाते। इससे उनके प्रभाव का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो जाता और आर्य समाज जिसके वे वास्य मिशनरी है, उसको भी अपनी विशेषता प्रकट करने का अवसर प्राप्त हो जाता। हिन्दू संस्कृति का भाव हिन्दुओं को एक स्थान पर एकत्रित कर सकता है परन्तु आर्य-सस्कृति का भाव हिन्दुओं से अतिरिक्त अन्य जातियों के लिये भी आकर्षण रखता है। इस आकर्षण से हमें लाभ उठाना चाहिये।

आदर्शों का भेद

बट रेंड रस्सल इगलैण्ड के सुप्रसिद्ध विद्वान और दार्शनिक लेखक हैं। आपकी पुस्तक भारतवर्ष तथा सभी देशो म बड चाव से पढी जाती हैं। दार्शनिकों की श्रेणी म आपका बहुत ऊचा स्थान है। इस समय आपकी आयु ६४ वर्ष की है। हमारे पाठक यह सुनकर आश्चर्य करेंगे कि हाल में ही उनके पुत्र उत्पन्न हुआ है और उनकी स्त्री की आयु केवल २० वर्ष की है और यह उनकी तीसरी स्त्री है। उनकी दूसरी स्त्री से १९३४ में उन्हें तलाक दे दिया था। यह बातें लिखने में हमारा केवल इतना ही प्रयोजन है कि आदर्शों का भेद मनुष्य को कहा से कहा पहुचा देता है। अपने यहा के दार्शनिक इस आयु मे विश्व के विधाता तथा ब्रह्माण्ड के स्रोत में विलीन होकर जहा विलक्षण शक्तियों के प्रसार का कारण बनते हैं वहा पाश्चात्य दार्शनिक गृहस्थ जीवन से ही ऊचे उठ नहीं पाते। अपने देश मे इस समय महात्मा गांधी तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर लगभग इसी आयु के हैं परन्तु उनके जीवन का प्रवाह किस ओर है और रस्सल साहब के जीवन का प्रवाह किस ओर

श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिडला

पाठक श्री सेठ जी के नाम से भली प्रकार परिचित हैं। आप अपने सात्विक दान से हिन्दू तथा आर्य जाति को जिस प्रकार उपकृत कर रहे हैं उसको आज कौन नहीं जानता? यों तो दानी ससार मे बहुत हैं और भारत में भी दान देने वालो और लेने वालो की कमी नही, परन्तु सेठ जी को दान देने के लिये एक विशेष प्रतिभा प्राप्त है। आप का दान सदा एक

विशिष्ट प्रयोजन लिये रहता है। आप पहले किसी तीव्र आवश्यकता को अनुभव करते हैं, उसके पीछे उस आवश्यकता की पूर्ति के साधन सोचते है, उसके पश्चात यह देखते है कि उन साधनों को कौन व्यक्ति या समाज जुटा सकता है। इतना कुछ विचार करने के पीछे वह अपने दान के पात्र को ढूंढ कर अपनी दान की राशि उसके सपुर्द कर देते हैं। इसीलिये हम सेठ जी को दानवीर कहते हैं। सेठजी के दान की गणना करना हमे यहां अभीष्ट नही और नहां हमे उस गणना की सामर्थ्य है। हां यह हम अवश्य कहेंगे कि इस समय श्री सेठ जी के दान से भारतवर्ष मे अनेक उपयुक्त कार्य चल रहे हैं। हमारी सभा का विदेश प्रचार कार्य केवल सेठ जी की कृपा पर ही अवलम्बित रहा है। सेठ जी के हृदय मे आर्य संस्कृति को देश देशान्तरो में फैलाने की प्रचड अग्नि प्रज्वलित हो रही है वह चाहते हैं कि यह सस्कृति सर्वत्र संसार मे फैले। जहा भी उनको ऐसे व्यक्ति दीखने है जो इस कार्यको सम्पादन करनें मे उनके सहायक बन सकते हैं वह उनकी सहायता को तय्यार हो जाते हैं। इस समय देश मे समाज सुधार, जाति सुधार, संस्कृति प्रचार, स्त्री शिक्षा, हरिजन उत्थान इत्यादि जितने कार्य हो रहे हैं, प्राय सभी मे श्री सेठ जी की सहायता का हाथ विद्यमान है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि सेठ जी का उत्साह और सामर्थ्य दिनो दिन बढते रहे ताकि यह परोपकार के कार्य उनकी सहायता से जारी रहें।

आर्य समाज का विस्तार

ले०—श्री प०
इन्द्र जी विद्यावाचस्पति

तीन वर्ष का कार्यक्रम

मैंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित किया था, जो थोड़े से आवश्यक परिवर्तन के साथ स्वीकार होगया—

(१) वर्तमान में आर्य समाजों के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाया जाय जो सामूहिक और अपील करने वाला हो और वह कार्य क्रम १९४१ मे होने वाली मनुष्य गणना को लक्ष में रख कर बनाया जाय।

(२) यह कार्य क्रम कम से कम ३ वर्ष का होना चाहिए और इस काल में आर्य सभासदों और आर्यों की सख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

(३) समाजों को प्रेरणा की जानी चाहिए कि वे नई २ संस्थाएं खोलने का यत्न न करें।

(४) आर्य समाजों को प्रेरणा की जाय कि अन्य धर्मावलम्बियों के साथ सघर्ष से बचा जाय। अनिवार्य होने पर ही सघर्ष मे पड़ना चाहिए।

(५) यत्न होना चाहिए कि ३ साल में आर्य समाजों की सख्या तिगुनी और आर्य सभासदों की सख्या दस गुनी होनी चाहिए।

(६) नौजवानों के संगठन को समाज अपने हाथ में ले और उन्हें आर्य समाज की ओर आकर्षित करने का यत्न होना चाहिए।

(७) आर्य समाज के अधिक से अधिक शिक्षणालय होते हुए भी शिक्षा की समस्या बड़ी जटिल हो रही है। उस पर पूर्ण विचार होकर उसे नया ढंग या Impetus मिले। नित नई सस्थाओं का उद्घाटन न होना चाहिए।

विचार के बाद प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। निश्चय हुआ कि निम्न सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाय जो इस सम्बन्ध में अपनी विस्तृत रिपोर्ट सभा में पेश करे —

(१) श्री प० इन्द्रजी
(२) श्री डा० युद्धवीर सिंह जी
(३) श्री ला० नारायणदत्त जी

इस प्रस्ताव के तीन भाग हैं।

पहला भाग विधायक है। वह इस प्रस्ताव का मुख्य भाग है। उसमें कहा गया है कि आगामी ३ वर्षों में आर्य समाजों की संख्या तिगुनी और आर्य-सभासदों की संख्या १० गुनी हो जानी चाहिये।

दूसरा भाग निषेधात्मक है। उसमें कहा गया है कि यथासभव दो चीजों को रोकने का प्रयत्न किया जाय। अन्य धर्मावलम्बियों से व्यर्थ सघर्ष में न पड़ा जाय, और ढर्रे पर चल कर व्यर्थ में ही सस्थाओं के खोलने का प्रयत्न बन्द कर देना चाहिये।

प्रस्ताव के तीसरे भाग में पहले भाग को कार्य परिणत करनेके लिये उपसमिति का निर्माण किया गया है।

इनमें से पहला भाग ही सबसे आवश्यक है। वही प्रस्ताव की जान है। शेष दोनों भाग उस के

केवल सहायक हैं। उनकी यही आवश्यकता है कि वह पहले भाग मे बताये हुये कार्य क्रम को पूरा करने योग्य परिस्थिति पैदा कर सकते हैं।

मैं इस लेख मे प्रस्ताव के मुख्य भाग को समझाने का प्रयत्न करूंगा।

उपनिषदों में कहा है 'भूमा वै बलम्' संख्या में बल है। यह मानी हुई बात है कि आर्य-समाज के सदस्यों की प्रारम्भिक संख्या-वृद्धि आज से शायद २५ वर्ष पूर्व ही समाप्त हो गई थी। उसके पीछे यदि कुछ संख्या वृद्धि हुई है तो वह कुदरत का परिणाम है, प्रयत्न का नहीं। आर्य-समाजियों की सन्तान अपने को आर्य समाजी कहने लगी और इस प्रकार परिवार के परिवार आर्य समाजी होगये। जो व्यक्ति अब से २५ वर्ष पूर्व आर्य समाजी बन चुके थे, इस समय उन्हीं का विस्तार है। प्रयत्न से नये बनाये हुये नये आर्य समाजियों की संख्या बहुत ही कम है।

इस त्रुटि के अनेक कारण हैं। सब से मुख्य कारण तो यह है कि आर्यसमाज ने अपने आप को स्वयं ही अपना लक्ष्य बना लिया है। जैसे कोई मनुष्य लम्बी यात्रा तय करने के लिये गाड़ी बनाये, परन्तु उस गाड़ी को अपना लक्ष्य बनाकर उसीके रंगने और सजाने में सारी आयु व्यतीत करदे। आर्यसमाज की वैसी ही दशा हुई है। आर्यसमाज का संगठन एक लक्ष्य के लिये हुआ था। वैदिक धर्मका अधिकसे अधिक प्रचार करना, संसारमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों को मानने और तदनुसार आचरण करने वालों की संख्या में अधिक से अधिक वृद्धि करना उसका लक्ष्य था। परन्तु हुआ क्या? आर्यसमाज अपने असली लक्ष्य को तो भूलगया, और अपने संगठन को ही लक्ष्य मान कर उसी के पालन पोषण मे लग गया। जो साधनमात्र, था उसे साध्य बनाकर पूजने लगा।

संख्या मे रुकावट पड़ने का दूसरा कारण यह था कि आर्यसमाज भूल करने में इस से भी आगे बढ़ा। उसने केवल अपने कोही लक्ष्य बना लेने की भूल नही की, उसने अपनी खोली हुई संस्थाओं को भी पवित्र मान लिया नई संस्थाओं की स्थापना और पुरानी संस्थाओं का संचालन उनके लिये एक धर्म सा बन गया है। जो लोग संस्थाओंके उपासक हैं, उनसे पूछिये कि क्या आर्यसमाज उन्नतिकर रहा है? तो उत्तर मिलेगा 'क्यों नहीं'। आर्यसमाज अवश्य उन्नति कर रहा है। देखिए बीस वर्ष पहले आर्यसमाज के पास जितने स्कूल थे, आज उससे ५गुने हैं। जितने कन्या पाठशालायें थी, उससे १० गुनी हैं, और अनाथालय भी अधिक हैं। ऐसे संस्थापक सज्जनों को जानना चाहिये कि संस्था बनाना आर्यसमाज का कोई उद्देश्य नही है। संख्या यदि आर्यसमाज के लक्ष्य की पूर्ति मे सहायक है तो ठीक है, अन्यथा वह केवल बोझ है। इस समय की संस्थाओं का अधिक भाग आर्यसमाज पर बोझ ही है। जो शक्ति प्रचार मे लगनी चाहिये, वह संस्थाओं मे व्यय होगई है। आर्यसमाज की दशा बिलकुल उस बाल-गृहस्थ जैसी हुई है, जिस पर छोटी आयु मे ही सन्तान का बोझ पड़ जाय। जैसे उस मनुष्य की उन्नति कुण्ठित हो जाती है आर्यसमाज की भी वैसी ही दशा हुई है।

एक और भी भ्रान्ति है जो आर्यसमाज के

विस्तार के मार्ग में बाधक होती रही है। प्रारम्भ काल में यह आवश्यक था कि आर्यसमाज के प्रचारक खण्डन और शास्त्रार्थ की रीति का अनुसरण करते। उस समय जनता सीधी थी, और सचाई को सुनने के लिये उद्यत थी परन्तु अब दशा बिलकुल बदल गई है। मतमतान्तरों ने शास्त्रार्थ और खण्डन की पद्धति की निर्बलताओं को समझकर उन से पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया है। अब न शास्त्रार्थ होतेहैं, और न वाद—अब तो शास्त्रार्थ के नाम से अधिकतः तू तू मैं मैं और वितण्डे का ही प्रयोग होता है। उससे सत्यासत्य निर्णय तो खाक भी नहीं होता, उल्टा धर्म का मजाक बनता है, और परस्पर वैमनस्य के बीज बोये जाते हैं।

इस प्रस्ताव मे खण्डन और शास्त्रार्थ को सीमाओं में परिणत करते हुए आर्य-समाज के सामने प्रचार के कार्य को मुख्यता के साथ रखागया है।

१६४१ में मनुष्य गणना होने वाली है। हम चाहते हैं कि आगामी तीन वर्षों में आर्यसमाज के सन्देश को इतने वेग से और दूर २ तक पहुँचाया जाय कि यदि आज उनकी संख्या २० लाख है, तो १६४१ में उनकी संख्या कम से कम २ करोड होनी चाहिये। साथ ही उस बढ़ी हुई संख्या को सम्भालने के लिये आर्यसमाज के केन्द्रों में वृद्धि करने की भी आवश्यकता है। आर्यसमाजों की संख्या को तिगुना करदेने के विचार की तह में यही बात है।

सार्वदेशिकआर्यप्रतिनिधिसभा कीआर्य अन्तरंग सभा ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करके आर्यसमाज को एक सही मार्ग दिखलाया है। यदि सभा ने सचेत होकर पथ-प्रदर्शन किया, और आर्यसमाज ने उत्साह दिखलाया तो तीन वर्षों में आर्यों का दस गुना और आर्यसमाजों का तीन गुना होजाना कुछ कठिन नहीं है। इच्छा और प्रयास का थोड़ा सा सहारा चाहिये, कार्य की पूर्ति बहुत ही सुलभ है।

कम्बोज Combodia की प्राचीन आर्य सभ्यता

लेखक—
श्री पं० के० ज्ञानी जी मद्रास

'Little do they know of India who only India know"

अर्थात् भारतवर्ष के अतीत गौरव तथा पुरातन आर्य सभ्यता को समझने के लिये आवश्यक है कि हम अन्य देशों—विशेषत. चीन, जापान तथा समीपवर्ती द्वीपों को देखें जहां आर्य-धर्म व आर्य-सस्कृति की अमिट छाप पड़ चुकी है।

अभी गत दस-पन्द्रह वर्षो से भारतीय विद्वानों का ध्यान इस ओर गया है और प्रो० फणीन्द्रनाथ बोस, डा० काली दास नाग आदि ने वृहत्तर-भारत की खोज शुरू की है। इनसे पूर्व अनेक डच तथा फ्रैञ्च विद्वानों ने संस्कृत, पाली व ख्मेर भाषा के शिला लेखो से वृहत्तर-भारत की प्राचीन सभ्यता का पता लगाने का प्रयत्न किया है।

यदि हम भूगोल के नक़शे पर देखें तो हमें पता चलेगा कि ब्रह्म देश से लेकर स्याम, इण्डो-चाइना, लका, पिनॉंग, सुमात्रा, जावा बोर्नियो और फिलिपाइन्स आदि प्राय सब प्रान्त ही किसी समय भारत से संलग्न थे और यहां के राज्य वश, धर्म, साहित्य, सभ्यता आदि पर आर्यों का अपूव प्रभाव था।

इस लेखमे हम कम्बोडिया तथा उसकी राज-धानी अङ्गकोर का जिक्र करेंगे।

ऐतिहासिक दृष्टि से इस उपनिवेश का प्रारम्भ कोण्डिन्य नामक महा-पुरुषने किया जो उत्तर से आयाथा। उसके साथ अन्य भारतीयभी थे। इन्हो ने पहिले 'मेकांग' नदी के किनारे आबादी बढ़ाई। यह ईसा की प्रथन शताब्दी के समय की बात है कौण्डिन्य वंश के बाद चौथी सदी में "कम्बु स्वयम्भव"नामक राजा का वर्णन मिलता है जिसे वर्तमान राज-परिवार अपना पूर्वज मानता है। कम्बु स्वयम्भव के समय इस उपनिवेश ने बहुत उन्नति की और सम्भवत 'भरत से भारत' के समान इस राजा कम्बु से इस देश का नाम काम्बोज प्रसिद्ध हुआ है जिसे अंग्रेजी मे "कम्बोडिया" कहते हैं।

ऐतिहासिकों की अन्वेषणाओं से पता चलता है कि ८वी ९वी सदियो मे कम्बोडिया का सुमात्रा के प्रसिद्ध श्री विजय साम्राज्य से पर्याप्त सम्बन्ध था। पीछे से प्रबल मतभेद होने के कारण कम्बो-डिया का राज्य कमज़ोर हो चला था जब कि जावा के जयवर्मन् २य ने इसे पुनः सगठित किया

प्रतीत होता है कि "वर्मन्" नाम दक्षिण-भारत के पल्लव वशी राजाओं के सम्पर्क से पड़ा क्योकि उस समय यहां के राजाओं के सम्बन्ध दक्षिण की राजकन्याओं यथा राजेन्द्र देवी आदि से होते थे और यही कारण है कि ८वीं सदी के पश्चात् कम्बोडिया में अनेक मन्दिर आदि बने जिनकी कला तथा स्तूपादि निर्माण शैली दक्षिण

भारत के मन्दिरों से हूबहू मिलती है।

आगेकी छःसदियों में कम्बोडियाने बहुत उन्नति की। अनेक मन्दिर, मठ, स्तूप तथा भवन बने। बौद्धधर्म के साथ शैव तथा वैष्णव धर्मों का भी प्रचार हुआ। लोगों में प्रशंसनीय धार्मिक सहिष्णुता पाई गई। यह प्राचीन कम्बोज का स्वर्णयुग समझना चाहिये।

इसी समय में ही सुप्रसिद्ध अगकोर की राजधानी व अगकोर मन्दिर का निर्माण हुआ। इसके विषय मे एक डच विद्वान् ने लिखा है —

"Judged by the architectural remains of Angkor, which lie scattered in varying states of preservation over hundreds of miles in the Combodian wilds, this civilization far outclassed that of any other overseas Hindu settlement"

अर्थात् यदि भवन-निर्माण कला की दृष्टि से देखा जाय तो अंगकोर के सैंकड़ों मीलों के खण्डरात से पता चलेगा कि यह उपनिवेश अन्य-हिन्दू उपनिवेशों से बहुत बढ़ा चढ़ा था।

अंगकोर धाम या राजधानी को राजा यशोबर्मन्ने दशमी शताब्दीके प्रारम्भमें बसाया। उस समय इसका नाम यशोधर पुर रखा गया। उसके पीछे ५म जयवर्मन् ने ईश्वरपुर बसाया जिसे आज कल बैंटिये स्रो (Banteay Srey) कहते हैं।

अगकोर वट या मन्दिर १२ वीं सदी में २ य सूर्य-वर्मन्ने बनाया। यह समस्त अंगकोर खण्डरात का मुख्य तथा अमूल्य भाग है। यह समय अंगकोर के ऐश्वर्य का था। यही कारण है कि पड़ौसी बौद्ध स्याम तथा हिन्दू चम्पा के आक्रमणों का वर्णन मिलता है।

श्री फणीन्द्र बोस के लेखानुसार अंगकोर वह "नागरवट" का अपभ्रंश है। संभव है कि एक विशाल वट वृक्ष हो जिसके समीप प्रसिद्ध मन्दिर बनाया गया हो। अंगकोर या नगर—राजधानी के समीप होने से ऐसा नाम पड गया हो।

फ्रैंच विद्वान् Foucher ने इस मन्दिर के विषय में लिखा है —

मन्दिर चतु कोण है। एक ऊंची चट्टान पर तिमंजला बना है। मन्दिर का विमान १८० फीट ऊंचा है। गोपुर उससे भी अधिक। मन्दिर का निर्माण द्राविड़ रीति से हुआ है। मन्दिरमें देवता विष्णु हैं। प्रतीत होता है कि पीछे से बौद्ध-साम्राज्य आने पर इस मन्दिर मे अवलोकितेश्वर की मूर्ति रखी गई है। मन्दिर की दीवारों, विमान तथा गोपुरम पर महाभारत और रामायण के चित्र है। युद्धक्षेत्रमें श्रीकृष्णार्जुन-सम्वाद, द्रौपदी-वस्त्राहरण, युधिष्ठर का स्वर्गारोहण, यम-चित्रगुप्त यात्रा, कैकेयी विशाद, सीता की अग्नि परीक्षा, लङ्का-विजय आदि। मन्दिर के बाहर देवासुर संग्राम, समुद्र- मंथन आदि चित्र है।"

इसी के समीप "बायन" या बुद्ध का मन्दिर है जो पीछेसे शिवालयमें परिवर्तित किया गयाहै। भारत के समान वहां भी बौद्धों व शैवो के झगड़े खासे हुए हैं, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है।

एक मन्दिर और भी है जिसे Ti Piohm अथवा ब्रह्मा का मन्दिर कहते है। यह बहुत विशाल है इसके इर्द-गिर्द १००×१००१ गज की चारदीवार है। इसके अन्दर पाए गये अनुशासनो के पढने से पता चलता है कि किसी समय इस मन्दिर के १८ मुख्य पुरोहित तथा २७४० सामान्य अर्चक थे। मन्दिर के आधीन ६१५ देवदासिया तथा ६६,६२५ अन्य परिचारक थे। मन्दिर के पीछे एक विशाल सरोवर ४५० गज चौडा और ९०० गज लम्बा अभी तक बना है यद्यपि जगली वृक्षो ने उसे बहुत कुछ विकृत कर दिया है।

फ्रासीसी अन्वेषक राघ के अनुसार "मेकॉग" की घाटी मे लगभग ६०० पुराने खण्डरात हैं जिन की यदि पूरी २ खोज हुई तो न केवल प्राचीन कम्बोज अपितु समस्त हिन्दू-उपनिवेशो के उत्थान-पतन के इतिहास का पता चलेगा और उसका भारतीय इतिहास पर भी पर्याप्त प्रभाव पडेगा, यह निस्सन्देह है।

हमारी प्रबल भावना है कि आर्यसमाज को बृहत्तर-भारत मे शीघ्र अपने प्रचारक भेजने चाहिए जो प्राचीन आर्य संस्कृति की खोज के साथ वहाँ के वर्तमान निवासियो म आर्य-धर्म व आर्य भावनाओ को जाग्रत करेंगे।

चीन जापान में वैदिक-धर्म का स्वप्न

लेखक—
श्री प० ईश्वरदत्तजी 'विशारद'

—❀—

अभी तक हमारा विदेश प्रचार कार्य जो हो रहा है और उस मे कहां तक हमे सफलता मिली है, इस लेख मे उसका दिग्दर्शन कराना हमारा उद्देश्य नही है। हम ने विदेश प्रचार मे योरोप, अमेरिका डच गायना और ट्रीनीडाड तक धावे किए है। कुछ पाठशालाए और आर्य समाज के भवन वहा बनवा कर उन्हे कुछ समय को सन्ध्या हवनादि से गुंजा कर हम अपने को सफल मानने लग गए। हमारे मनस्वी विद्वानो ने "वसन्त वल्लोक हित चरन्त" को दृष्टि मे रख कर सुदूर देशो मे प्रचार किया। उस का प्रभाव वहा के निवासियो को कहा तक अक्षुण्ण बनाए रहा है, उस ओर हमने बाद में क्या किया? इस ओर सोचने-विचारने का हम को शायद ही कभी मौका मिला है। विदेश प्रचार के धुनी और अलमस्त हमारे यहा अगुलियो पर गिने जा सकते है।

मुझे जापान रहने और जापानियो की प्रकृति, आचार-विचार का अध्ययन करने का मौका मिला है। कुछ चीनी विद्यार्थी भी मिले है जो धार्मिक मामलो मे अधिक असहिष्णु नही दीखे। मेरा ख्याल है कि हमारी प्रचार-गति यदि पास पड़ौस के निवासियो मे प्रसार पाती, बढ़ती तो हमे आज से कही अधिक सफलता मिली होती।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वेद भगवान् की आज्ञा को सम्मुख रख कर हमारा दावा कहा तक समादरणीय हुआ है। अब भी श्री० राहुल जैसा कर्मठ बौद्ध भिक्षु हमारे यहा कहा? क्य तिब्बत और उत्तर के पार्वत्य प्रदेशो मे हमारा वैदिक नाद गूज गया? क्या कभी हमारे यहा के आदरणीय उपदेशको ने कन्धे पर कम्बल डाल कर उन गह्वर प्रदेशो मे जाने का, वहाँ की स्थिति को समझने का प्रयत्न किया है। क्या करे? कैसे जाए? भोजन और दूध की क्या व्यवस्था होगी? धूप, बरसात और ओलो की मारकैसे सहे?

भगवान बुद्ध के अनुयाइयो ने उनके बाद भी कैसा प्रचार कार्य किया है उसका इतिहास साक्षी है। पर आज कठिनाइया बहुत है, भाषा ही नही आती, कैसे होगा और क्या होगा? यही सोचते विचारते दिखाई देते हैं। क्या कभी किसी ने 'भीमताल' सप्तताल के सरोवरो पर दूर पहाड़ो पर स्थित ईसाई पादरियो की गति विधि को देखा है? हिम से श्वेत बाल और जीर्ण गत शरीर लिए हुए अहर्निश वे महा तपस्वी अपने उद्देश्य के लिये अपने को खपा देने के लिए तैयार बैठे है।

हमारे यहां प्रचार कार्य का ढंग ही अद्भुत है। उसके लिए न तो ट्रेनिंग कैंप ही है और न पास पडौस के नकशे। उन्हे समझे भी तो कोन? हजारो रुपया इस ओर व्यय हो रहा है। सार्व-

देशिक सभा का इस ओर प्रस्तुत्य कार्य हो रहा है पर उस मे भी इस दिशा मे सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है।

जापान जैसे समृद्धशाली देश में और चीन से बड़े प्रदेश में, आप वैदिक नाद गुंजा सकते हैं। इन पास पड़ौस के लोगों से मिलकर उन्हें अपने में मिलाकर आप अपनी बात समझा सकते हैं और बड़ी सरलता से। पर इस के लिए तप, त्याग और कष्ट मय जीवन भोगने के लिए आप को उद्यत होना होगा। १८५९ तक प्रोटेस्टेन्ट ईसाई पादरियोने जापानमे कैसे-कैसे कष्ट उठाए! उन धीर वीर लगो ने भूखों प्यासे चोरी छिपे पड़े रह कर अपने प्रचार कार्य को कभी बन्द न किया।

वहां ११ फरवरी १८८९ में जब सब को धर्म-स्वातन्त्र्य हो गया अब इन की तपस्या का मीठा फल चखने को इन्हें मिला है। ईसाई धर्म अब अपनी सभ्यता, संस्कृति का जापानियोंके दिलोंपर बैठकर अनेक प्रकारके राग अलाप रहा है। जापान और चीन मे भारतवर्ष के श्रेष्ठ माननीय विचारों और स्तुत्य भावो का बहुत समय से आदर रहा बौद्ध धर्म का "अहिंसा परमो धर्मः" का है और अब भी जैसा तैसा चला ही आरहा है। सिद्धान्त तो वहां अब नाम मात्र को ही अवशिष्ट रह गया है। अब भी वे भारत के प्रति अपने को ऋणी समझते हैं। वे हृदय को अपील करने वाले धार्मिक उपदेश सुनने को उत्सुक हैं। आर्य समाज के योग्य विद्वान कुछ ही दिनों में वहां अपना प्रभाव जमा सकते हैं। मानिए आप को किसी प्रकार की दिक्कत नहीं उठानी पड़ेगी।

शाक, सब्जी, फल, दूध और शाकाहारी भोजन सर्वत्र छोटे से छोटे स्थानों पर सुविधा से मिल सकता है। यदि किसी समय भोजन नहीं भी मिलता तो उस के लिए क्या? बौद्ध भिक्षु सिर्फ दिन में एक बार भोजन करता है। रात्रि को वह चाहे कैसा ही थका मांदा निस्तेज क्यों न हो दूध तक न पियेगा। यदि वास्तव में हमें इस ओर लगन है तो कुछ योग्य उपदेशकों को अपने अनुभवी विद्वानों और सन्यासियों के पाद पद्म बैठाना होगा। विदेश प्रचार के लिए उन्हें सब बातों से सज्जित करना होगा। वहां की भाषा अध्ययन का प्रबन्ध करना पड़ेगा। जापान-चीन की भाषा में हमारे यहां जैसी ही वाक्य-रचना होती है। बोलने समझने और व्याख्यान देने की क्षमता आप शीघ्र ग्रहण कर सकते हैं। हां! पुस्तक पढ़ने और समझानेके लिए कुछ समय और धैर्य की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

आप को पहले बता चुके हैं कि चीन-जापान में ईसाई, मुसलमान दिनों-दिन अधिक संख्या में बढ़ रहे हैं। सच्चे उपदेशों और हृदय को अपील न करने वाली बातों से पाठकों ने चीन की हलचलों में देखा होगा। वहां के निवासियों ने किस प्रकार बाइबल की पुस्तकों के ढेर के ढेर सड़कों पर जला डाले है। यदि हमारे प्रचार कार्य की अव्यवस्थित प्रणाली को ठीक ढंग पर लाकर व्यवस्थित रूप दिया जाए तो हम पास पड़ौस के लोगों में अपने आदर्श वैदिक सिद्धान्तों का भली प्रकार प्रचार कर सकते हैं और फिर बढ़ते हुए हम सारे संसार में वैदिक-नाद बजा सकते हैं।

इस सब के लिए रुपया कोई अड़चन नहीं

है। आप का आदरणीय उपदेशक विदेश में भूखा नहीं मर सकता है। अब भी भारत का मुसलमान मौलवी रंगून, पिनांग, सिंगापुर, हांगकाँग में ठहरता और प्रचार करता हुआ आगे बढ़ता ही जाता है। सब जगह के भारत व्यापारी लोग उसे सहायता देते रहते हैं। और वह मजे से चीन-जापान में प्रवेश कर लेता है। हिन्दू व्यापारी भी तृषित नेत्रों से वहां आप की बाट देख रहे हैं। आप जाइए तो यश के साथ आप को धन राशि भी मिलेगी और आदर भी होगा।

"तत्कुरू पौरूषम" को सम्मुख रख कर हमे अपना मार्ग स्वयं बना लेना होगा। ससार की बाधाएं हमें रोक नहीं सकतीं। मेह, आंधी, झंझा वात और भूख-प्यास हमारे मार्ग को पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकते।

वास्तव मे यदि हमें अपने वैदिक धर्म का दिग् दिगन्त में प्रसार देखना है तो उस के लिए तप, त्याग, और तपस्या का जीवन व्यतीत करना होगा। सुदूर पूर्व के कोरिया चीन जापान पास पडौस के लोगों में आप बैठ कर अपनी सभ्यता, संस्कृति और प्रभु के सत्य मगंलमय उपदेश को सुना सकते हैं। दूर स्थित योरोपीय देशों से कहीं अधिक आप का व्यापक प्रभाव इन पर पड़ेगा। कुछ समय ही में आप देखेंगे कि हमारा प्रचार कार्य सुसंगठित हो रहा है और बिना विशेष प्रयत्न के आगे बढ़ रहा है।

वैदिक भक्तिवाद

श्री पूज्य महात्मा
नारायणस्वामी जी महाराज

भक्ति उत्कृष्ट प्रेम को कहते हैं। उत्कृष्ट प्रेम वह होता है जिस में प्रेमी अपने प्रियतम के प्रेम में इस प्रकार लीन होजावे कि उसे अपनी सुध बुध न रहे। वेद में इसी अवस्था के लिये एक जगह इस प्रकार सकेत किया गया है कि "हे ज्योतिमय प्रभू! यदि मैं तू होजाऊं और तू मैं होजावे तब प्रेमी तेरे अमरता के जीवन रूप आशीर्वादको प्राप्त करलेता है।" (ऋ० ८।४४।२३) ऋग्वेद की इस ऋचा में जहा यह कहा गया है कि "मैं तू हो जाऊ और तू मैं होजावे।" इस का भाव स्पष्ट है कि प्रियतम और प्रेमी के बीच में मेरे तेरे पन का भाव नहीं रहना चाहिये। यह मेरे तेरे पन का भाव उस समय प्रेमी के हृदय से दूर हुआ करता है जब वह अहंकार के जाल से बाहर होजाया करता है। जब तक अहंकार के माया जाल में प्रेमी रहा करता है तब तक उस के प्रेम को उत्कृष्ट या अगाध प्रेम नहीं कह सकते। उसका प्रेम अधूरा है उस ने अभी भक्ति का रूप ग्रहण नहीं किया है। कारण स्पष्ट है कि प्रेमी का ज्ञान अभी केवल इन्द्रिय-ज्ञान है वह ज्ञान केवल पदार्थों को केन्द्र बनानेकी योग्यता वाला ज्ञान है। जब प्रेमी इस ज्ञान से ऊपर होता है तब वह अन्तर्मुखी होकर विशेष ज्ञान=विज्ञान प्राप्त करता है। यह विशेष ज्ञान अभ्यन्तर प्रसूत (आत्म-ज्ञान) होता है। प्रेमी इसी ज्ञान (विज्ञान) को, जिस में भक्ति की पुट रहा करती है, प्राप्त करके अहंकार के माया जाल को तोड़ देता है और मेरे तेरे पन के भाव से ऊंचा हो जाता है। अब प्रेमी ने उस अवस्था को प्राप्त कर लिया है जिसमे वह समझता है कि अब सब कुछ प्रियतमके समर्पित है। यहीआत्म समर्पण वैदिक भक्तिवादका चरम लक्ष्य है। आत्म समर्पण करना प्रियतमकेसाथ तादात्म्य होजाना है। इसी अवस्था के लिये ऋग्वेदकी ऊपर संकेतित ऋचाका उल्लेख हुआ है—

यदग्नेस्या अहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिष।

इसी अवस्था के लिये कबीर ने कहा है—

जब मैं थी तब हर नहीं जब हर तब मैं नाय।
प्रेम गली अति साकरी जा में दो न समांय॥

इसी अवस्था के लिये एक उर्दू के कवि ने लिखा है—

बेखुदी छाजाय ऐसी दिल से मिट जाये खुदी।
उनके मिलने का तरीक़ा अपने खो जाने में है॥

ज्ञान-गाम्भीर्य

श्री स्वामी
केवलानन्द संन्यासी

अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो
मनो जवे ष्वसमाव भूवुः।
आदघ्नास उप कक्षास उत्वे
हृदा इव स्नात्वा उत्वे ददृशे॥

ऋग्वेदीय इस मंत्र के शब्दों का भाव यह है कि नेत्रादि समस्त इन्द्रियों की विशेष समता के कारण, समस्त मानव-मण्डल समान सा प्रतीत होता है, परन्तु मनोवेग और बुद्धि-बल में सब समान नहीं हैं। उदाहरण के लिए कल्पना कीजिये अथवा कल्पना ही क्यों ? मंत्र में आये हुए ह्रदा शब्द पर गम्भीर दृष्टि से देखिये ! ज्ञान का एक अथाह शान्त सरोवर विशालता और कमनीयता का केन्द्र बन कर सब प्राणियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और कह रहा है कि मुझ में स्नान कर के मानव जीवन को सफल बनाने के लिए बद्ध परिकर होजाइये इत्यादि। परन्तु कोई विरले सुधी, सुधीर धर्मात्मा पुरुष ही इसमें गोता लगा कर मौक्तिक लाभ प्राप्त करते हैं। दूसरे तो, कोई मुख पर्यन्त, और कोई बगल पर्यन्त इस में उतरते हैं। एवं कोई किनारे पर बैठ कर केवल स्नान मात्र कर लेते हैं। हा ! कोई ऐसेभी तो हैं जो दर्शन मात्र से ही अपने उद्योग्य की इति श्री समझ लेते हैं। और कोई कोई ऐसे भी हैं कि इस की ओर भूल से भी नहीं जाते। केवल परमात्मा की कमियों का कथन करते करते दुर्दैव के प्रकोप का आह्वान करते रहते हैं। भला ! इस में किसी का क्या दोष ? अपनी तैयारी तथा उद्योग की हीनता ही इस अशान्तता का कारण है। वसन्त में भी करीर, पत्र हीन रहे तो वसन्त का क्या दोष ? चारों ओर धाराधरों की अविरल जल धारा से जगतीतल के आप्लावित होने पर भी चातक—पोत—चंचु रिक्त रहे तो धाराधर १४४ की धारा में नहीं आसकता। अजी ! दिवान्ध यदि दिनकर की किरणों का सदुपयोग नहीं करता तो क्या सूर्य ही दोषी है ? कदापि नहीं। हम अपनी विषमता के आप ही कारण हैं। पंजाब में कहा करते हैं, "एका अक्ल खुदाये दी, एका सीख लई। एका मूल में आमदी, पत्थर बून्द पयी॥"

चाहे कोई कितना ही कहो निपट हठीले अट-पटे अपनी मनमानी चाल नहीं छोड़ते। साख्य शास्त्र में लिखा है। (न मलीन चेतस्युपदेश बीज प्ररोहोऽजवत्) अज नाम यहां ऊषर भूमि का परिचायक है नकि इन्दुमति पति का। एक दरिद्री यावद आयु एक ऐसी भूमि पर बैठा रहा जिस की एक गज गहराई मे विपुल धनराशि गड़ी हुई थी जब वह मर गया तब किसी दूसरे ने सोचा कि मरने वाला मागता मागता ही मरा है, इसने यहां कुछ जरूर रखा होगा। थोड़ीसी भूमि खोदी फिर क्या था ? बिल्ली के भाग्य छींका टूट पड़ा। एक लोकोक्ति भी तो है—सकल पदारथ हैं जग माहीं। करम हीन कछु पावत नाहीं।

कबीर जी कहते हैं—

पानी में मीन पियासी। मोही देखत आवे हासी॥

—विरम्यतेऽधुना।

सत्यार्थप्रकाश लेखमाला

कठोरता

[लेखक-श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज]

सत्यार्थ प्रकाश मे मूर्ति पूजा का निषेध है इस विषय मे जो शब्द महर्षि जी ने लिखे हैं कई सज्जन कहते हैं वह कठोर है। ऐसे शब्दो का प्रयोग नहीं होना चाहिये था। मै इस विषयमे कुछ लिखने को तैयार नही कि ऐसे शब्दो का प्रयोग होना चाहिये वा न होना चाहिये परन्तु मैं इस लेख मे अपनी ओर से कुछ न लिख कर दूसरे भक्तो के शब्द लिखना चाहता हूँ जिससे यह पता लगा जाय कि वह इस विषय मे किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसमे भी प्रथम सत्यार्थ-प्रकाश का एक पाठ लिखता हूँ। उसके पश्चात सिखों की धर्म पुस्तक गुरु ग्रंथ साहिब और दशम ग्रथादि के कुछ पाठ लिखू गा। पश्चात् कबीर जी, दादूजी तथा जीवदास जी लिखित ग्रंथों मे से पाठ लिखू गा ताकि पाठकों को निर्णय करने मे सरलता हो और वह निश्चित रूप से निश्चय करसकें कि सत्यार्थ प्रकाश का पाठ कितना कठोर है और दूसरे पुस्तकोंका पाठ कितना कठोर है। आशा है पाठक इस पद्धति से अवश्य लाभ उठावेंगे।

सत्यार्थ प्रकाश मे एकादश समुल्लास मे वेद को धम पुस्तक मानने वाले मतों का खडन है उसी मे मूर्ति पूजा विषय पर निम्न पाठ मिलता है "जो माता पितादि के सामने नैवेद्य वा भेंट पूजा धरेंगे तो वे स्वय खालें गे और भेट पूजा लेंगे तो हमारे मुख वा हाथ मे कुछ न पडेगा। इससे पाषाणादि की मूर्ति बना, उसके आगे नैवेद्य धर घंटा-नाद ट ट पू पूं शख बजा, कोलाहल कर अंगूठा दिखला अर्थात "त्वमगुष्ठ गृहाण भोजन पदार्थं वमहं ग्रहीष्यामि 'जैसे कोई किसीको छले वा चिढ़ावे कि तू घटा ले और अंगूठा दिखलावे उसके आगे से सब पदार्थ ले आप भोगे, वैसे ही लीला इन पुजारियों अर्थात् पूजा-नाम-सत्कार के शत्रुओ की है। मूढ़ो को चटक, मटक, चलक, झलक मूर्तियो को बनाठना आप वेश्या वा भडुआ के तुल्य बन-ठन के विचारे निर्बुद्धि अबोधों का माल मार के मौज करते है—सत्यार्थ प्रकाश ११ समल्लास (३३४ पृष्ठ)। जिन के नीचे रेखा है वह शब्द ध्यान मे रखने चाहिये।

(१) एके पाथर कीजे भाउ।
दूजे पाथर धरीए पाउ॥
जे ओह देउता ओह भी देवा।
(राग गुजरी नाम देव)

(२) घर महि ठाकुर नदर न आवे।
गल महि पाहन लै लटकावे॥
जिस पाहन कउ ठाकुर कहता।
ओह पाहन लै उसको डुबता॥
गुनहगार, लूणहरामी।
पाहन नाव न पार गिरामी॥
राम सूही म० ५ (गु० अर्जुन)

(३) जो पाथर को कहते देव ।
ताकी विरथा होवे सेव ॥
न पाथर बोले न किछ देइ ।
फोकट धर्म निष्फल है सेव ॥
(राग भैरव म० ५ कबीर)

(४) कुंगू चन्दन फूल चढाए ।
पैरी पै पै बहुतमनाए ॥
माणुया मग मग पहने खा. ।
अन्धी कमी अन्ध सजाइ ॥
भुखिया देइ न मादिया रखे ।
अन्धा झगड़ा अन्धी सत्थे ॥
(सारंग वार म० १ नानक जी)

(५) पाहन परमेश्वर किया पूजे सब ससार ।
इस भावा से जो रहे बूडे काली धार ॥
(कबीर)

(६) काहूँ लै पाहन पूज धरयो सिर,
काहूँ लै लिंग गरे लटकायो ।
काहूँ लखयो हरि अवाची दिसा महि,
काहूँ पछाहि को सीस नवायो ॥
कोऊ बुत्तान को पूजत हैं पसु,
कोऊ मृतान को पूजन धायो ।
कूर क्रिया उरभयो सब ही जग,
श्री भगवान को भेद न पायो ॥
(जाप जी ३० गुरू गोबिन्द सिंह जी)

(७) पान थके पाहन कर परसत,
कछु कर सिद्ध न आई ।
अछत, धूप, दीप अरपत है,
पाहन कछु न खै है ।
तामें कहा सिद्ध है रे जड़,
तोहि कहा वर दै है ॥ (हजारे शब्द ६
गु० गोबिन्द सिंह)

(८) काहे को पूजत पाहन को,
कछु पाहन में परमेश्वर नाहीं ।
ताही को ध्यान परमान सदा,
यह फोकट धर्म करे फल नाहीं ॥ १६

(९) जो जगतै करहैं तपसा,
कछु तोहि प्रसन्न न पाहन कै है ।
हाथ उठाय भली विधिसों जड़,
तोहि कछु वरदान न दैहै ।
कौन भरोस भयो इह को कह,
भीर परी नहीं आन बचै है ।
जान रे जान अजान हठी,
इह फोकट धर्म सुभरम गवै है ॥ २२

(१०) नाको कर पाहन अनुमानत,
महामूढ़ कछु भेद न जानत । ॥ ३६२

(११) पाहन की प्रतिमा को अध कध है पुजारी,
अन्तर अज्ञान मत ज्ञान गुर हीनो है ।
४८५ । कवित सवैये (गु० गो०)

इस पाठ में गुनहगार, लूणहरामी, अन्धा-झगड़ा, अन्धी सत्थ, पसु, जड़, अज्ञान, हठी, फोकट धम, महामूढ़, अन्धा शब्द मूर्ति पूजकों के लिये हैं । इसी भांति और

(१२) अन्धे गुंगे अन्ध अन्धार ।
पाथर ले पूजहिं मुगध गवार ॥
(वार विलावल मे है)

(१३) भात पिहल अर लापसी करकरा कासार ।

भोगण हारे भोगया उस मूरत दे मुह छार ॥
राग सोरठ म० १ (गुरु नानकजी)

इस मे अन्धे, गु गे, मुग्ध, गवार शब्द हैं और खाने वाले पुजारी है मूर्ति के मुंह में छार ही है। क्या यह शब्द महर्षि के भाव को ही नहीं कह रहे हैं ?

१. माटी के कर देवी देवा,
काट २ जीव देइया जी।
जो तुहरा है साचा देवा,
खेत चरन क्यों न लेइया जी ॥
कबीर बीजक पृ० २२६ शब्द ७६

२. कहहि कबीर झूंठे मिल झूंठा,
ठग ही ठग विवहारा।
कबीर बीजक पृ० २५८ श० ६३

प्रथम मे निषेध, और दूसरे मे झूठे और ठग लिया है

३. जल पीवे पाषाण धोय,
सोतो आदि अन्त पाषाण होय।
आकाश शीस पाताल पाप,
सो संपुट मे कैसे आप।

४. पथर पूजियां हर न मिलेरे,
सब कोई पूजी जाय ।
पूजो नी घररी घरटिया,
सब जग पीसर खाय।

इस में पाषाण होने का आदेस है और चक्की पूजने की युक्ति है। यह दोनों पाठ राम स्नेही धर्म प्रकाशके हैं।

५. पथर पीवै धोय कर, पथर पूजे प्राण।
अन्त काल पथर भए, बहु बूडे इह ज्ञान ॥
दादूजी ॥१४०

इस मे भी पथर पूजा से पथर होने का विधान है।

६. गरीब पाहन सेती प्रतकी, चेतन सेती दोष
दोजख धारा जाहिंगे कदी न पावे मोक्ष ॥
॥ चाणिक अङ्ग २

गरीब गाल बजाए क्या हुआ,
तुलसी डाल कटोर।
भूले भक्ति भगवंत की,
पाहन सेंसिर फोर ॥ ३०

गरीब पाती तोरे वृक्ष की,
जड़ देवा नहीं खाय।
इससे चौरासी भली,
ऊंट अजा ले जाय ॥ १६

गरीब भेड़ अजा सेवन करो,
ये ठाकुर तहकीक।
जड आगे चेतन खडा,
नाहक गावे गीत ॥ २०

गरीब जड़कूंजूनी पूजता,
जड़ जूनी नहीं देत।
सो तो निश्चय जानीए,
बागड़ थलके पेत ॥ ६६

एक सोने का सालिंग, जरी बाय पहरान।
गरीबदास इस मनुष्य तैं, अकल बड़ी अक श्वान ॥
काशीपुर के सालिंग, सभै समटे आय।
गरीबदास कुत्ता तहां मूते टांग उठाय ॥
कुत्ता मुख में मूत है, कैसे सालिग्राम।

गरीब दास जुलहा कहे, गई अकल किस गाम
धोय धाय नीके किये, फिर आय मारी धार ।
गरीबदास उस पुरी मे, जुलहाहसे चमार ॥ ६
पा०

पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा ।
जड़ मूरत को पूजते, आवेगा टोटा ।
पीतल चामच्या पूजिए, जो खान परोसे ।
जड़ मूरत किस काम की, मत रहो भरोसे ।
बिलावल ।

बाल मुकुन्द मुख बोलत नाहीं, लटक बिहारी लूटे ।
गरुवा के सिर मार परेगी, पिण्डाकदे न छुटे ॥

गरुवा के सिर फरुवा फोडो घर से काढ़ घसीटो ।
इसके मारे पाप नहीं है, याको निश्चय पीटो ॥
या देवलमें देव नहीं है, पान पत्ता से खाई ।
बीली बीठ सीसपर कीन्ही, कुते धार चलाई ॥
मूरत के नहीं श्रवण जिसमे, गरुवा घंट बजावे ।
खीर खांड का भोजन धरके, आपन ही गुटकावे ॥
बैरागर की परख नहीं है, पाहन गाठी बाधे ।
या गरुवा के भीतर लाधो, ये गरुवा सब आंधे ॥

पाहनकूं परमेश्वर कहते, या निंधा बड़ी भारी ।
याकी मोकूं समझ नपरही, पूजा करीका गारी ।
भैरों भूत मसानी पूजें, दुरगा देवी ध्यावें ।
उन्ती के तो तबही बाजें बकरे आन कटावें ॥

नैन, नाक, मुख, श्रवण कीहै,
मुख ते कदे न बोले ।
पाडे की वो अकल गई है,
यह जग मारया झोले ॥

पग नहीं चले, दसब नहीं देवै,
न कुछ खाय न पीवे ।
बड़ा अन्देसा मोकू है,
यौह देवा मरे कि जीवे ॥
(राग आसावरी)

गरीबदासजी के ग्रथ मे सेकुछ शब्द दिये है । इसी भाव के इसी ढंग पर उसमे अनेक शब्द है इन को पाठक ध्यान से पढ़ें और फिर देखें। गरीब दास जीने जो शब्द लिखे है वह कठोर हैं अथवा सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि लिखित शब्द कठोर हैं ।

मेरी सम्मति में तो यह है कि जिस किसीने मूर्ति पूजा का खडन किया है उसने कठोरता का विचार नहीं किया । उसने घटनाओंको सामने रखकर उस पर लिखा है । उसी दृष्टि से पाठकों को देखना चाहिये ।

सामवेद स्वाध्याय मञ्जरी

लेखक—
पं० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार,
विद्यावाचस्पति, बंगलौर

मन्त्रों का पद्यानुवाद

आग्नेय काण्डम्

प्रथम अध्याय

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
(१) ओ३म् अग्न आयाहि वीतये गृणानो
३ १ २ १ २ ३ १ २
हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

पद्यानुवाद — ऋ० ६।१६।१०

हे ज्ञानरूप ईश्वर! हिय मे मेरे समाओ।
अज्ञानतम है छाया, इसको परे हटाओ ॥
दे ज्ञान ज्योति इसको, परमेश जगमगाओ।
निर्मल हृदयके आसनपर तुम विराज जाओ।

१ २ ३ २ ३ २ ३
(२) ओ३म् त्वमग्ने यज्ञाना छं होता-
१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वेषाछंहितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥

पद्यानुवाद — ऋ० ६।१६।१

शुभकर्म जो भी जग मे उपकार के लिये हो।
स्वीकार तुम खुशी से, उसको सदा किये हो।
हितकारि तुम सभी के, हे प्रेममय प्रभो हो।
ज्ञानी जनोंके हिय में आसीन तुम विभो हो ॥

(३) ओ३म् अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं
विश्ववेदसम् । अस्ययज्ञस्य सुक्रतुम् ॥

पद्यानुवाद — ऋ० १।१२।१

वरण करें परमेश्वर का हम, मित्ररूपसे जो स्वामी।
कष्ट निवारक है सुखदायक, सर्वज्ञान्तर्यामी।
इस उत्तम संसार यज्ञ का, जो जगदीश्वर कर्त्ता है।
ज्ञानरूप जो सर्वशक्तिमय, सब लोकों का धर्त्ता है॥

(४) ओ३म् अग्निर्वृत्राणि जंघनद् द्रविणस्यु-
र्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

पद्यानुवाद — ऋ०।६।१६।३४

नाश करे परमेश्वर तमका, विघ्नोंका अरु पापोंका।
सर्वशक्तिमय उसके आगे, नहीं काम सन्तापोंका ॥
शुद्धरूप से स्तुति करता जो,
तन मन धन जन अर्पण कर।
ज्योतिर्मय हरि उसके सकट,
लेता है क्षण भर मे हर ॥

(५) ओ३म् प्रेष्ठं वो अतिथिछंस्तुषेमित्र-
मिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥

पद्यानुवाद — ऋ० ८।८४।१

प्राणों से बढ़कर प्यारे उस
ईश्वर की स्तुति करता हूँ।
जो प्रिय मित्र समान सुखप्रद
ध्यान उसीका धरता हूँ ॥
सर्वव्यापक अतिथि सदृश जो
पूज्य उसी का स्मरण करूं।
रथ समान सुखवाहक को स्मर
भय चिन्ता का हरण करूँ ॥

(क्रमशः)

अनुवादक की टिप्पणी—गत एप्रिल मास में वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर मे मैंने लगभग १५ दिन सामवेद की कथा की थी जिसमे व्याख्या के साथ साथ पद्यानुवाद भी बनाकर सुनाया था। अनेक सत्संगियों के अनुरोध से उसे प्रकाशित किया जा रहा है। —धर्मदेव

आर्यसमाज में "आशा" और "निराशा" वाद !

ले०—
श्री शिवचन्द्र जी

संसार के लिए आर्यसमाज का सन्देश आशा का सदेश था परन्तु गत १० वर्षों में इस समाज में सर्वत्र निराशा क्यों छा गई ? यह एक प्रश्न है जिसका हल हमें सोचना चाहिये । बहुत से पाठक इस बात को अनुभव करते होंगे कि संसार में नास्तिकता को फैलाने का कारण वस्तुत आस्तिक ही सिद्ध हुए हैं । यह क्यों ? जनता ने बहुतसे आस्तिकों को अपने पाण्डित्य, तर्क-बल, वाक्य-चातुर्य तथा लेखन शक्ति द्वारा आस्तिकता तथा प्रभु की सर्वव्यापकता का प्रचार करते हुए देखा और उनके प्रबल प्रमाणों तथा युक्तियों पर वाह वाह की । परन्तु जब जनता ने उन्हीं आस्तिकों को प्रचार के बाद सासारिक व्यवहार में देखा तो उन्हें दुराचार करते, मद्यमास का सेवन करते, रिश्वत लेते, झूठ बोलते, छल कपट करते, बेईमानी करते, दूसरों को कष्ट पहुंचाते तथा इसी प्रकार के अन्य दुष्कर्म करते हुए पाया तो उनके इस आचार और विचार के घोर भेद ने जन साधारण को ऐसा आघात पहुंचाया कि वे आस्तिकता के भव्य भवन को छोड़ कर नास्तिकता के द्वार पर पहुंच गए । ठीक ऐसा ही दृष्टान्त आर्यसमाज में आई हुई निराशा पर घटता है ।

आर्य समाज में भी निराशा को फैलाने वाले वस्तुत आशावादी ही हैं । इन आशावादियों ने जन साधारण को सब्ज बाग दिखा दिखा कर इस अवस्था तक पहुंचा दिया कि वह सवत्र सुनहरा दुर्ग देखने के स्वप्न लेने लगे । परन्तु इन आशावादियों की धुआधार वक्तृताओं के पश्चात् जब जन साधारण इनके व्यवहार, चरित्र और साधारण गति-विधि देखने लगी तो उनको आशा निराशा में परिवर्तित हो गई । इसकी पुष्टि में कई प्रमाण हो सकते हैं जिनमें से सक्षिप्त में कुछेक निम्न प्रकार हैं —

भगवान दयानन्द के बाद से ही कतिपय महान व्यक्तियों को छोड़कर अन्य बहुत से कार्यकर्त्ता वेद का नाम लेकर ऐसी बातों का भी प्रचार करते रहे हैं जिनपर वे स्वय ही आमिल नहीं रहे हैं । जनता ने उन्हें बहुरूपिया और उनके उस प्रचार को बहुरूपिया पन समझा ।

फर्वरी १९२५ में भगवान दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाई गई । जनता को इस अवसर पर बड़ी बड़ी आशायें दिलाई गई थीं । जिस प्रकार बौद्धकाल में बौद्धमत का विस्तार करने के लिए समय समय पर चार बड़ी कौंसिलों की आयोजना की गई थी, उसीप्रकार समस्त भूमण्डल पर वैदिक धर्म के विस्तार के लिए इसे आर्य समाजकी प्रथम

कौंन्सिल बताया गया था। वहा पर बड़े बड़े भिन्न भिन्न सम्मेलन हुये, बड़ी २ स्कीमें और प्रस्ताव स्वीकार किए गए। ऐसा प्रतीत होता था मानो कुछ वर्षों के अन्दर ही सारी पृथ्वी पर आर्य-धर्म का प्रसार हो जावेगा। परन्तु इस महा यज्ञमें स्वीकार किए गए प्रस्तावों को आशावादियों ने कार्यरूप मे परिणत न किया। निस्सन्देह यह महायज्ञ बड़ा शानदार हुआ था परन्तु इसके बाद इसकी क्रियात्मक रूपी दक्षिणा नही चुकाई गई इसीलिए यह यज्ञ निष्फल रहा। वास्तव मे यही से आर्य समाज में 'निराशा' का सूत्रपात होता है। इसके बाद से ही 'निराशा' आर्य समाज में जन साधारण की रोजमर्राह की वस्तु बन गई और आर्य समाज के सच्चे हितैषियों तथा वास्तविक प्रेमियों के हृदयों के लिए निरन्तर वेदना का कारण बन गई। आर्य समाज से सम्बन्धित कोई भी ऐसा पत्र न रहा जिसके प्रत्येक अङ्क मे आर्य समाज मे बढ़ती हुई निराशा के सम्बन्ध में दुःख के आसू न बहाये जाते रहे हों।

इसके बाद सन् १९२७ में आर्य समाजियों के नागरिक अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से देहली में आर्य्यन कांग्रेस हुई उस समय आर्य जनता की उमङ्ग और जोश देखने योग्य था बड़ी धुआधार वक्तृतायें हुई। बड़े मार्के के प्रस्ताव पास हुये परन्तु इस कांग्रेस का भी इन आशावादियों द्वारा कोई परिणाम न निकला और निराशा की गति अधिक तीव्र हो गई।

अक्तूबर सन् १९३३ में ऋषिकी निर्वाण अर्द्ध शताब्दी अजमेर में होने को थी। यह प्रगट किया गया था कि जो कार्य अबतक नहा हो सका।इसके बाद अवश्य किया जावेगा। इस अवसर पर भी एक वृहदार्य सम्मेलन की रचना की गई इसमें बड़े लम्बे वादविवाद हुए, बड़े २ निश्चय हुए, परन्तु आशा वादियों ने इसके पश्चात् भी कुछ न कर इस महा सम्मेलन को भी एक महान् आडम्बर सिद्ध किया और निराशा में वृद्धि की।

इसके बाद आर्यसमाज के उपनियमों के सशोधन की चर्चा चली और जन साधारण का यह ख्याल था कि उनका सशोधन हो जाने के बाद आर्य समाज में से पदलोलुपता लड़ाई-झगड़े तथा शिथिलता आदि दोष बहुत कुछ दूर हो जावेंगे परन्तु इसका भी परिणाम कुछ न हुआ और निराशा दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ने लगी।

हमे निराशा वादियों ने भी कम शिकायत नहीं है यद्यपि इनके जन्मदाता आशावादी ही हैं। आर्य्य समाज मे निराशावादियों की दो श्रेणिया हैं। एक तो वे हैं जो आर्य्य समाज को दिनरात केवल कोसते, नुक्ता चीनी करते रहते हैं। वे न अपने जीवन को आर्य्य जीवन बनाते हैं, न अपने परिवार के जीवन को और नाही आर्य्य समाज के सेवा कार्यों मे अपना कोई समय देते है। ऐसे व्यक्तियों के साथ हमारी कोई सहानुभूति नहीं है और न हम उनको आर्य्य ही कहने के लिये तैयार है। हम चाहते है कि यदि ऐसे लोग पहिले अपने को आर्य्य न बनावें और दूसरों पर नुक्ताचीनी करते रहें तो वे जितनी जल्दी हो आर्य्य समाज को छोड़ देवे उतना ही अच्छा है। जिस विषय में मैं शामिल नहीं मुझे

उस विषय में दूसरे पर उंगली उठाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं ।

दूसरे निराशावादी वे हैं जिनके हृदय में ऋषि के मिशन को नष्ट होते देख कर वास्तव में आन्तरिक वेदना होती है और उनका अपना तथा कतिपय के अपने परिवारों का भी जीवन आर्य है। उन्होंने बहुत वर्षों तक आर्य समाज की सेवा भी की है, वे लोग शान्ति पसन्द रहे हैं। परन्तु जब उन्होंने आर्य समाजमें कलह, द्वेष, लड़ाई-झगड़े और स्वार्थहित साधनों के लिये पार्टी बाजी को बढ़ते हुये देखा तो उन्होंने आर्य समाज के संगठन से किनाराकशी कर ली और शनै शनै करते चले जाते हैं। हम उनके इस रवैये से सहमत नहीं हैं। हम चाहते हैं जिनका आर्य समाज की सेवा में कोई स्वार्थहित तथा पद लोलुपता नहीं है और जो ऋषि के मिशन को आगे बढ़ता हुआ देखना चाहते हैं, उन्हें अपना सगठन कर आर्य समाज की सेवा में जुट जाना चाहिये। संगठनको त्याग कर बाहर हो जाना एक प्रकार की कायरता है।

हम निराशावादी नहीं हैं और न ही निराशावाद को आर्य समाज में फैलते देखना चाहते हैं परन्तु हम आशावादियों से यह नम्र निवेदन करेंगे कि अपने वह 'आशावाद' को क्रियात्मक रूप देवें जिन आशाओं (विचारों,प्रोग्रामों तथा निश्चयों आदि) को वह जनता के सम्मुख रक्खें, उन आशाओं की पूर्ति में वे अपना तन, मन, धन लगा देख। यदि उनका आचरण और व्यवहार उनके आशावाद में उनका साथ नहीं देता तो वे आर्य समाज में निराशा को फैलाने मे सहायक सिद्ध होंगे। यह बात उनके उद्देश्य से विरुद्ध है। अत इस प्रकार के आशावादी जो आचरण को साथ नहीं रखते उन्हें आर्य समाज में अपना स्थान दूसरों के लिये रिक्त कर देना चाहिये ताकि दूसरे अपने उत्तरदायित्व को महसूस कर अपने आचार और व्यवहार के बल पर आर्य समाज की आशाओं को व्यवहारिक रूप देकर जनता को दिनों दिन उन्नति के मार्ग पर ले जा सकें। तब ही वास्तव में आर्य समाज में से निराशावाद दूर होकर आशावाद की सच्ची स्थापना हो सकती है।

—❀—

शंका समाधान

बनारस के श्री पं० भगवद्दत्त जी पुरोहित ने धर्म्मार्य्य सभा के अध्यक्ष से कुछ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए हैं। उन प्रश्नों को और उत्तरों को हम 'सार्वदेशिक' के पाठकों के लाभार्थ यहां देते है.—

प्रश्नावली

१. क्या आर्यसमाज चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को आर्य मानता है या द्विजों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) को ही आर्य मानता है? स्पष्ट करें कि शूद्र आर्य कोटि में हैं या अनार्य कोटि में ?

२ अनार्य शब्दकी व्याख्या जो भगवान् दयानद जी महाराज ने अपने ग्रंथों में की है वही स्पष्ट है या कुछ और भी की जायगी ?, यदि है त स्पष्ट व्याख्या लिखें ?

३ क्या शूद्र को और शूद्र के बालक को यज्ञोपवीत और वेदाध्ययन का अधिकार है ? यदि है तो—

क—किस आयु में ? और,

ख—किस विधान से ?

ग—किस आधार पर ?

४ जब आर्य समाज वर्ण-व्यवस्था गुण कर्मानुसार मानता है तो कौन २ कर्म किस २ वर्ण का कर्म है ? और किस आधार पर ? यथा—

मट्टी के पात्र बनाना, तेल निकालना, पानी भरना, क्षौर कर्म (हजामत बनाना), कपड़े धोना, चमड़ेका काम करना, पाखाना साफ करना आदि। उपरोक्त कर्मों की व्यवस्था दें कि कौन २ कर्म किस २ वर्ण का है और क्यों ?

५. शूद्र मुह पर पट्टी बाध कर भोजन बनावें (दशम् स)

क—ऐसा आदेश क्यों किया ?

ख—क्या आर्य जगत् में इसका पालन हो रहा है ?

ग—क्या गुरुकुलादि में पाचक क्या शूद्र हैं ?

घ—क्या वे यज्ञोपवीत शून्य हैं ? स्पष्ट करें।

६. जब आर्य समाज वर्ण व्यवस्था कर्म से मानता है तो सूचित करें कि एक वर्ण का पिता और दूसरे वर्ण की माता पर सतान किस वर्ण की मानी जायगी ? पिता के वर्ण की या माता के वर्ण की ?

ख—संतानका कर्म भावी जीवनके लिए निश्चित कर दिया जायगा या अपनी योग्यतानुसार करने के लिये जैसे क्षत्रिय से ब्राह्मणी मे उत्पन्न हुई संतान क—किस वर्ण में ? ख— उसके लिये क्या कर्म निश्चित हैं ? ग—स्वतंत्र इच्छानुसार कर्म कर सकता है ? स्पष्ट करें।

७. क्या आर्य समाज और ऋषि दयानंद की की दृष्टि में वर्णसंकरत्व जन्मना या कर्मणा कोई वस्तु है ? यदि है तो क्या और कैसे ?

८. भंगी, चमार, म्लेच्छ, धीमर, कहार, कुम्हार आदि २ जन्म से माने जायेंगे या गुण कर्मानुसार ? ख—इनकी संतान अपना पैत्रिक कर्म करने को बाध्य की जायगी या प्रत्येक कर्म करने में स्वतंत्र रहेंगे ?

९ कुम्हार, धोबी, भंगी, चमार आदि का

आतिथ्य अतिथि लोग क्यों न स्वीकार करें ? जब कि वह अपना जीवन आचार विचार पूर्वक रखता हो ?

१०. वेद मर्यादा और वर्णाश्रम धर्म केवल आर्यों के लिये ही है या सब मनुष्यों के लिये ?

नोट—क्या इसमें कोई भूल तो नहीं है ?

क—ऋषि दयानन्द और आर्य समाज में कोई अन्तर नहीं है।

ख—ऋषि दयानन्द कृत पथ आर्य समाज के प्रतिनिधि हैं।

उत्तर

(१) चारों वर्ण आर्य हैं। वेदमें रुचंनोधेहि

(२) जब तक उस से काम चलगा वहा है। यदि किसीको संदेह होगा तो उसे दूर करना होगा। उसके लिये स्पष्ट करना आवश्यक है।

(३) शूद्र के बालक का उपवीत होने में कोई प्रतिबन्ध नहीं क्योंकि वर्ण गृहस्थाश्रम में होते हैं वह अभी गृहस्थी नहीं है।

(४) जो पुस्तकों में लिखे हैं वा उन से मिलते जुलते और कर्म। यह वैश्य हो सकते हैं।

(५) जो भोजन बनाए उन सब के लिये विधान है।

गुरुकुलों में तो नहीं देखा। मुंह बांधनेकी पद्धति कहीं २ साधुओं में देखी है।

(६) सन्तान अपनी योग्यता से २४ वर्ष की आयु में किसी वर्ण में गिनी जायगी।

(७) जिस में विरुद्ध कर्म हों वह वर्ण संकर है। वह भी कर्मसे होगा।

(८) गुण, कर्म से।

(९) अतिथि बनना वा बनाना अपनी अपनी इच्छा पर निर्भर है। जो चाहे करले न चाहे न करे।

(१०) आर्योंके लिये आवश्यक है वह इसी नाम से (ब्राह्मणादि) कहे जायंगे दूसरे काम तो करें नाम वह न मानेंगे।

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य्य

—६ मई से १६ मई १९३७ तक डाल्टनगंज में २२७ ईसाइयो की शुद्धि हुई। पलामू ज़िले में लगभग २० हजार ईसाई है।

—चन्द्रिका प्रसाद् वर्मा

—आर्य्य समाज हावडा ने एक ब्राह्मण युवक श्री दुर्गादास जी दाक्षित को शुद्ध किया। शुद्धि-संस्कार पं० जगदीशचन्द्र जी विद्यावाचस्पति मुख्याध्यापक हावडा आर्य विद्यालय द्वारा किया गया। यह महाशय कुछ समय पहले मुसल्मान हो गए थे।

—गत २ जून को गोवती (कासगञ्ज) के ठा० वजीर सिह जी को उनके परिवार सहित आर्य्यसमाज कासगञ्ज ने शुद्ध किया। इस परिवार ने लगभग १०० वर्ष पहले इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। शुद्ध शुदा १० व्यक्ति है। इस शुद्धि मे श्रीयुत रुचिराम जी ने बडी सहायता दी —मन्त्री

—८ जून को आर्य्य समाज शामली ने एक जाट नवयुवक की शुद्धि की। यह कुछ समय पूर्व मुसल्मान हो गया था।

—६ जून को आर्य कुमार सभा उतरौला ने एक कोरिन की शुद्धि करके उसकी बिरादरी में मिलवा दिया। यह कुछ दिन पहले अपने तीन बच्चो के साथ मुसल्मान हो गई थी। इस कुमार सभा ने ३ महीने मे २० हिन्दू स्त्रियो को विधर्मियों के फन्देसे छुडाकर उनके धर्म की रक्षा की।

—आर्य समाज मिंटगुमरी (पञ्जाब) में डालू राम नामक एक व्यक्ति जो किसी स्त्री के मामले मे मुसल्मान हो गया था और उसका मुसल्मानी नाम दीन मुहम्मद था उसको प्रार्थना पर शुद्ध किया गया।

—दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने राम प्यारी नामक हिन्दू लडकी को जिसकी उम्र २१ साल की थी मुसल्मानो के पञ्जे से बडी मेहनत से निकाल कर उसकी शादी एक हिन्दू नवयुवक के साथ करदी।

—अबोहर आर्य समाज मन्दिर में एक १८ वर्षीया जन्म की ईसाई लडकी को उसकी प्रार्थना पर शुद्ध किया गया और उसे मिशन से वनिता विश्राम आश्रम मे प्रविष्ट किया।

—आर्य्य समाज सिरसा मे ९ जून को एक जन्म की मुस्लिम स्त्री और उसकी लडकियो की शुद्धि प० श्रीराम जी ने की। इस स्त्री की ६ जून को सूरजसिह राजपूत के साथ शादी की गई।

मन्त्री

—मई १९३७ मे दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने अपने कार्य कर्ताओ के सहयोग से ७४६ विधर्मियों की शुद्धि की। मन्त्री

—आर्य्य स्वराज्य सभा पञ्जाब लाहौर के तत्वावधान मे निम्न शुद्धियां हुई।

(१) जन्म के एक सिक्ख मुसल्मान की।

(२) जन्म के एक हिन्दू मुसल्मान की।

(३) ,, एक मुस्लिम देवी की।

(४) ,,के दो मुसल्मान नव युवको की।

—२० जून के लगभग आर्य समाज संतनगर के सत्सङ्ग में एक जन्म की मुसल्मान स्त्री की जो आ० स० बच्छोवाली (लाहौर) द्वारा शुद्ध हुई थी

बंगलौर आर्य समाज द्वारा एक ईसाई मिशनरी की लड़की लेडी डाक्टर को शुद्धि

डा० भाग्यम्मां MBBS ने जो किंग जॉर्ज हास्पिटल महारानी पेठ विज़गापट्टम में लेडी असिस्टेन्ट सर्जन और गोरीबिदनूर (मैसूर रियासत) के रेवरेन्डमिशनरी भद्रप्पा को सुपुत्री हैं। १ जून को बंगलौर आर्यसमाज के मन्त्री के नाम प्रार्थना पत्र भेजते हुए निम्न निवेदन किया "I am at present a member of the South Indian United Church, and it is my most solemn and deliberate desire to change over and adopt the Religion of the Vedic Rishis as my own. I request you to admit me to the Religion of the Vedas, with due ceremonial, on Sunday the 13th instt"

' अर्थात् मैं अब दक्षिणभारतीय चर्च की सदस्या हूं, किन्तु मेरी यह अत्यन्त गम्भीर और विचारपूर्ण इच्छा है कि मैं वैदिक धर्म को अपनाऊं इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे १३ ता० आदित्य वार को शुद्धिसंस्कार पूर्वक वैदिकधर्म में दीक्षित करें"।

इसके अनुसार १३ जून को बंगलौर आर्यसमाज भवन (कैलासपाल्यम्) में बड़े समारोह के साथ डा० भाग्यम्मां का शुद्धि संस्कार पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने कराया। सुप्रतिष्ठित देवियां तथा सज्जन बड़ी संख्या में उपस्थित थे। डा० भाग्यम्मां ने अपना प्रार्थनापत्र सभा में पढ़ कर सुनाया और धर्म दीक्षार्थ निवेदन किया। शुद्धि संस्कार की विधि के अनन्तर प० धर्मदेव जी ने वैदिक धर्म के मुख्य तत्त्वों की व्याख्या करते हुए ईसाई मत के साथ उसकी तुलना की और वैदिक धर्म की युक्तियुक्तता तथा वैज्ञानिकता का प्रतिपादन किया। उपस्थित जनता की ओर से स्वामी भास्करानन्द जी और सुप्रसिद्ध समाज सुधारक राव बहादुर कुप्पुस्वामी ऐय्यर् ने दीक्षिता सुशिक्षिता महिला को आशीर्वाद और उपदेश दिया। भजन और मिष्टान्न वितरण के बाद यह कार्यवाही समाप्त हुई। डा० भाग्यम्मा गत २,३ वर्षों से आर्य धर्म विषयक ग्रन्थों का स्वाध्याय करती रही हैं। उन्होंने शुद्धि संस्कार विषयक खर्च के अतिरिक्त इस अवसर पर ५) बंगलौर आर्यसमाज को दान दिये और २) प्रतिमास देने का वचन दिया। ६ जून को स्व० जोसेफ मेनुयल की पुत्री मिस एमिली का शुद्धि संस्कार बंगलौर आर्यसमाज भवन में प० धर्मदेव जी ने कराया और उसे विमला देवी नाम दिया गया। शीघ्र ही अनेक अन्य शुद्धियों की आशा है। —मन्त्री आर्य समाज बंगलौर

उसकी एक अविवाहित नवयुवक के साथ शादी की गई। इस संस्कार में पौराणिक और सिक्ख भाइयों ने सोत्साह भाग लिया। शादी को देखने के लिये सैंकड़ों स्त्री पुरुष आये थे।

ता० ३०-५-३७ को आर्यसमाज देहरादून ने एक ईसाई परिवार की शुद्धि की जिस में सब मिला कर ७ व्यक्ति हैं। वह व्यक्ति लगभग २० साल से ईसाई मज़हब का प्रचार करता था। इतने वर्ष के अनुभव के पश्चात ईसाइयत की असलियत का पता लगने पर वैदिक धर्म की शरण ली। समाज का भवन खचा-खच भरा हुआ था। सबन शुद्ध हुये परिवार के हाथ से मिठाई ली सायंकाल को उसके मकान पर जाकर सन्ध्या हवनादि हुआ। जनतापर अच्छा प्रभाव पड़ा।

विविध पत्र पत्रिकाएं

जर्मनी और ईसाई मत

श्री. भाई परमानन्द जी एम. ए. 'आर्य्य गजट' में लिखते हुए एर्यन और सेमेटिक लहरों पर निम्न प्रकार प्रकाश डालते हैं —

"इस समय संसार में दो बड़ी ज़बरदस्त लहरें चल रही हैं जिनका सहारा लेकर भिन्न विचार पैदा होते हैं। एक लहर पुराने 'आर्य्य' विचार की है और दूसरी 'सेमेटिक' विचार की। आर्य्य लहर का स्रोत भारतवर्ष था—जिससे वर्तमान हिन्दुत्व और बौद्ध मत की लाइन पर विचार फैले। सैमेटिक लहर का स्रोत फ़िलस्तीन था जहाँ से यहूदी, ईसाई और मुस्लिम लाइन पर फैलने वाले विचार निकले। आर्य्य विचार इस संसार और उसके अन्दर काम करने वाली प्रकृति को लेकर चलते हैं। उनके सामने सवाल यह था कि यह ब्रह्माण्ड क्या है कहाँ से आया और क्यों बना है? आर्य्य जाति के फ़िलास्फ़रों ने उनका जवाब ढू ंढा और ख़ास नतीजों पर पहु ंचे। सैमेटिक विचार बिल्कुल सांसारिक लाइन पर चलता है। एक ख़ुदा दुनिया का पैदा करने वाला है। शैतान उसका एक बड़ा विरोधी है। वह ख़ुदा इन्सान का एक बड़ा दोस्त है। वह इसान की मदद करता है और उसके दुश्मनों को मुसीबत में डालता है। यहूदी क़बीलों के बुज़ुर्ग इस प्रकार के ख़याल रखते थे। उनके ख़यालात को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों ने भी ऐसा ही कहना आवश्यक समझा।"

इसके आगे श्री. भाई जी जर्मनी में ईसाई मत के दाख़िले और वर्तमान में वहां उसकी गति पर लिखते हुए लिखते हैं:—

'प्राचीन यूरोप में यूनान और रोम दो बड़ी सभ्य जातियां थीं—इन दोनों की विचार धारा एर्यनलाइन पर थीं। चौथी पांचवीं सदी में उन्होंने ईसाई विचारों को ग्रहण किया। लगभग १ हज़ार वर्ष तक जर्मन जाति ईसाई मत की अनुयायी रही। पिछले सौ डेढ़ सौ वर्ष के अन्दर जर्मनी में कई बड़े फ़िलासफ़र पैदा हुए उनकी फ़िलासफ़ी और शिक्षा की गति ईसाइयत के विरुद्ध रही है। वे ईसाई धर्म के सिद्धान्तों के और बाद में इसकी आचारिक शिक्षा के विरुद्ध हो गये, आर्यों के विचार और कल्चर को स्थिर रखने वाला यदि कोई देश था तो वह भारतवर्ष था, अतएव जर्मन फ़िलासफ़ी भारतीय साहित्य की ओर झुकती गई। इस फ़िलासफ़ी की उपज के तौर पर एक मैन आफ़ एक्शन (Man of action) मैदान में आया है। हिटलर ने सलीब को जवाब देकर स्वस्तिक का चिन्ह स्वीकृत कर लिया है। उसने स्पष्टतया ईसाइयत के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है। हिटलर जर्मन जाति को इस १०००–१५०० वर्ष के अन्धकार और मूर्खता से निकाल कर वह जर्मन चर्च में जो कल्चर में आर्यन चर्च है, ले आना चाहता है। जर्मन की जनता हिटलर की पूजा करती है वह बाइबिल की जगह "मेरीजंग" को पढ़ती है, किन्तु रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्च दोनों ने हिटलर के विरुद्ध सिर उठाया है। पोप भी अपने रोमन कैथोलिक चेलों को हिटलर के ख़िलाफ़ उकसा

रहा है। हिटलर के सिद्धान्त अपने नहीं है वह एर्यन फिलासफी को क्रियात्मक रूपदे रहा है। इस फिलासफी का सबसे बड़ा प्रचारक निटशे है। निटशे मनु के धर्म शास्त्र को दुनियां में सबसे ऊंची पुस्तक समझता है, इसकी सारी फिलासफी मनु के सिद्धान्तों पर आश्रित है, इस लिहाज़से जर्मनीकी फिलासफी और चर्च एर्यन है।

एक नवयुवक की मुश्किल

जमालपुर (ईस्टइण्डिया रेलवे) से एक नवयुवक आर्य के आए हुए पत्रके हवाले से सहयोगी 'आर्य्य गजट' इन प्रश्नों पर क्या आर्यो के शुद्धि प्रचार की मोजूदगी मे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य मुमकिन है और क्या सब धर्म समान हैं ? प्रकाश डालता हुआ लिखता है —

"हिन्दू मुस्लिम एकता ठीक बात है और जो लोग यह समझते हैं कि हिन्दुओं का शुद्धि का प्रोग्राम इसको ख़राब कर सकता है वे इसकी वास्तविक महत्ता को नहीं समझते। यदि मुसल्मानों की तबलीग इसको खराब नहीं कर सकती तो हिन्दुओं की शुद्धि कैसे कर सकती है ? वास्तविक हिन्दू मुस्लिम एकता तब ही कायम रह सकती है जब लोगों को पूरी २ धार्मिक आजादी हो। यदि हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की दीवार रवादारी पर कायम न की जायगा तो एकता का यह प्रोग्राम कभी पूर्णता को नहीं पहुंच सकेगा और यही कारण है कि आज तक पूर्णता तक नहीं पहुंच सका है। यह विचार कि सब धर्म एक हैं कोई नया नहीं है। आर्य समाजी तो हमेशा यह कहते हैं वैदिक धर्म आदि सृष्टि से है और दूसरे धर्मों मे जितनी सचाइयां हैं वे इसी से ली गई हैं। सारांश में वैदिक धर्म सब धर्मों का मूल स्रोत है। इसके साथ ही हमारा यह विचार है कि वैदिक धर्म की शिक्षा आजकल प्रत्येक हिन्दू नवयुवक को देनी चाहिए क्योंकि इस शिक्षा की बदौलत ही नवयुवकों में अधर्म, नास्तिकता और प्रकृति पूजा की लहर को रोका जा सकता है।"

कांग्रेस और मुस्लिम जाति

उपर्युक्त शीर्षक से माडर्नरिव्यू लिखता है:—

"कांग्रेस में मुसल्मानों को लाने और कांग्रेस में मुस्लिम सदस्यों की संख्या में वृद्धि करने के लिये जो कोशिशें होरहीं हैं हम उनका पूरा २ समर्थन करते हैं। मुख्यतया यू० पी० के मुसल्मानों की कांग्रेस में जो इलाहबाद में हुई है कांग्रेस में बिना किसी शर्त के प्रवेशके हक़में जो निश्चय हुआ है वह ठीक ही हुआ है। तमाम धार्मिक सोसाइटियों और जनताके समस्त वर्गों को कांग्रेस में लानेके लिए उनके साथ शर्तपूर्ण माहिदे करना कांग्रेस के लिए न तो सम्भव ही है. और न वाञ्छनीय ही है। देश को स्वतन्त्र करना भारत वर्ष के सब निवासियों का कर्तव्य है। कांग्रेस ने अपने ५० वर्ष के इतिहास में ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं किया है जिसने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप में किसी अल्प मत वर्ग को हानि पहुंचाई हो।

कुछ मुसल्मान कहते हैं कि चूंकि कांग्रेस कम्युनिष्ट और सोशलिस्ट विचारों की होगई है इसलिए मुसल्मानोंको इसमें प्रवेश नहीं करना चाहिए। कांग्रेस का यह लक्षण ठीक है या नहीं और इसका विवेचन किए यह पूछा जा सकता है कि जब कांग्रेस ने असहयोग और सविनय अवज्ञा अथवा सोशलिस्ट विचारों का आश्रय नहीं लिया था, मुसल्मान कांग्रेस से पृथक् क्यों रहे ?

मुसल्मानों को कांग्रेस में लाने का आंदोलन

संयुक्त प्रान्त में जहां उनकी आबादी प्रान्त की आबादी का १५ फ़ी सदी है शुरू हुआ है और वहीं इसे कुछ महत्व प्राप्त हुआ है। अब उन प्रान्तों मे जहाँ मुसलमानों का बहुमत है इस प्रकार का आन्दोलन होगा तब ही इस आन्दोलन का प्रामाणिकता संदेहकी सीमा से बाहर होगी।

आर्य्य समाज का साहित्य और सरकारी नीति

अभी हाल मे आर्य्य समाज की पुस्तक 'पोल प्रकाश' को पंजाब गवर्नमेन्ट ने जब्त किया है। यह पुस्तक प्रसिद्ध पौराणिक कालूराम शास्त्री की 'आर्य्य समाज की मौत' नामक पुस्तक के उत्तर में लिखी गई थी। सहयोगी 'प्रकाश' इस सम्बन्ध में सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति पर निम्न प्रकाश डालता है —

"आश्चर्य यह है कि गवर्नमेन्ट ने असल किताब को ज़ब्त नही किया और जवाबी किताब को ज़ब्त कर लिया है। क्या सरकार की यह नीति है कि आर्य्य समाज के खिलाफ जो किताबें निकलती रहें उन्हें हाथ न लगाया जाय, लेकिन आर्य्यसमाज की तरफ से जो पुस्तकें निकलें उन्हें ज़ब्त कर लिया जाय। अभी पिछले दिनों आर्य्य समाज के कुछ प्रकाशन ज़ब्त किए गए थे। आनन्द यह है कि वे पुस्तकें भी स्वतन्त्र नहीं थीं। वर्तमान गवर्नमेन्ट की यह नीति है कि इसके बारे में जो पुस्तकें छपें सिर्फ उनके खिलाफ कार्यवाही की जाय या कि आर्य्य समाज न्याय का अधिकारी नहीं, इस पर जो भी चाहे चोट करे, लेकिन इसे चोटका उत्तर देने का हक नहीं। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं हम इस प्रकार की पुस्तकों को पसन्द नहीं करते चाहे सनातन धर्म्म सभा का तरफ से हों या आर्य्य समाज की तरफ से। परन्तु यह ज़रूर चाहते हैं सबके साथ एकसा सलूक किया जाय। यदि कोई पुस्तक आपत्तिजनक हो तो उसे ज़ब्त किया जाय लेकिन यह न हो कि वह सिर्फ आर्य्य समाज की ही हो। आर्य्य समाज की ओर से जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं वे प्रायः जवाब में होती हैं इसलिए उसकी किताबें ज़ब्ती के योग्य समझी जाती हैं तो कोई कारण नहीं कि वे पुस्तकें सुरक्षित रहें जिनके जवाबमें ये किताबें प्रकाशित होती हैं।

मेरी भूल

म॰गाधी हरिजनमें 'मेरी भूल' शीर्षकमें लिखते हैं—

१ मई के 'हरिजन-सेवक' में 'धर्म-संकट' शीर्षक लेख में मैंने लिखा है कि मामा भाञ्जी के विवाह सम्बन्ध दक्षिण में उच्च माने जाने वाले ब्राह्मणों तक में त्याज्य नहीं हैं, बल्कि स्तुत्य भी माने जाते हैं—ईसाई, मुसलमान, पारसी इत्यादि क़ौमों में भी ऐसे संबन्ध त्याज्य नहीं माने जाते। प्रो॰ बलवन्त राय ठाकोर ने इस सम्बन्ध में एक दिलचस्प पत्र लिख कर मेरी इस ग़लती को सुधारा है, और उन्होंने बताया है कि मामा-फूफी के लड़के-लड़की के बीच दक्षिण मे विवाह-सम्बन्ध होसकता है, पर मामा-भाँजी में नहीं। मुसलमानो में ऐसा सम्बन्ध मना है, ऐसा कवि चमन बतलाते हैं। इन भूल सुधारों के लिए इन दोनों सज्जनों का मैं आभार मानता हूँ। मामा फूफी के लड़के-लड़की के सम्बन्धका मुझे प्रत्यक्ष ज्ञान था। तो मामा-भांजी के बीच भी सम्बन्ध होता होगा, ऐसा अनुमान निकालकर मैंने निश्चयात्मक वाक्य लिखदिया। इसके लिए मैं अपने को अपराधी समझता हूँ। ऐसे विषयमें ऐसे अनुमानों के लिए स्थान नहीं होता, यह मुझे समझ लेना चाहिए था। यदि अनुमान निकाला, तो शंका को स्थान देना चाहिए था। पर मैंने तो नि शंक रीति से जिसका मुझे प्रत्यक्ष ज्ञान न था उसे इस तरह लिख मारा मानों वह प्रत्यक्ष ज्ञान है। इसमें मेरे सत्य के आग्रह को लांछन लगा है। इसकी माफ़ी पाठकों से तो मांगता ही हूं। वे तो उदारतापूर्वक माफ़ी देदेंगे, पर मेरी अन्तरात्मा यों झट से माफ कर देने वाली नहीं। अनुमान-प्रमाण निकालने में बहुत सावधानी से काम लेना पड़ता है, यह सार मर्म अपनी इस भूल में से मैं अधिक स्पष्टतापूर्वक निकालता हूँ, और इसके बाद अब ऐसी भूल न करने मे अधिक सावधान रहने का प्रयत्न करूंगा।

पहाड़ी क्षेत्रों में प्रचार

(अप्रैल मई मास का विवरण)

गढ़वाल

१—अप्रैल १५ तक चौन्दकोट आर्य समाज के उत्सव तथा ऐकेश्वर मेला प्रचार के लिये कुछ ग्रामोंमें उपदेश देकर भली प्रकार परिश्रम किया। ईश्वर कृपा से अन्य सालों की अपेक्षा इस साल में आर्य बन्धुवों ने बड़े उत्साह से कार्य किया। १३००० (तेरह हजार) की जन संख्या के बीच में दो ओ३म् के झण्डे लेकर दो टोलिया भजन गाकर नगर कीर्तन करती थी। मेलामें जगह २ पर खड़े होकर व्याख्यान हुआ करते थे। श्री प्रधान ठा० केशर सिंह जी लोगों को उपदेश सुनने के लिये अपने व्याख्यान से उत्साह बढ़ा रहे थे। सुनने वालों की संख्या अगले सालों से कहीं अधिक थी। यह वही स्थान है जिस मे १४ साल के पूर्व आर्यों पर बड़ी भयानक मार पड़ीथी, तीन दिन तक प्रचार कार्य हुआ। मैंने अपने व्याख्यानों में यह बताया कि भगवान रामचन्द्रजी वा श्रीकृष्ण महाराज जी ईश्वर-भक्ति सध्या अग्निहोत्र से ही किया करते थे, फिर आर्य समाज को मूर्ति-पूजा खडनके लिये क्यों बुरा माना जाता है। इस पर कुछ पौराणिक पडित शास्त्रार्थ के लिये तैयार होगये। उनको समय दिया गया, किन्तु जो श्लोक बाल्मीकि और महाभारत के पढ़ कर मैं ने उनके सामने रखे हैं उनमें मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके। पुन. आर्य समाज में अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रकट की जिस से जनता में आर्य सिद्धान्तों का और भी अधिक प्रभाव पड़ा।

बहिन श्री सत्यवती जी से स्त्री शिक्षा के विषय में व्याख्यान दिलाया। जिससे स्त्री शिक्षा के विरोधियों पर वा माताओं पर अधिक प्रभाव पड़ा। श्री मंत्री चन्द्रसिह जी का लेख वैदिक धर्म विषय पर बहुत ही अच्छा था।

२—तारीख २४ तक, हिन्दी मिलाप में चौन्दकोट तथा बछेली ग्राममें दलितों को सताया जाने का लेख छपा था। दलितोंके घरों पर जाकर उनके दु खोंके विषयमें पूछ-ताछकी। बछेलीग्राममें कांग्रेस उम्मेदवारको वोट न देने के विषयमें एक हरिजन भाई पर एक रुपया दड पञ्चायत ने रखा था। मेरे समझाने पर वह दण्ड नहीं लिया गया। दलित भाइयों के घर पर कई जीव हत्या देवी देवतों के नाम हो रही है। विवाह आदि में इन लोगों के यहा रडियों के नाच की कुप्रथा बढ़ रही है। कहीं इनको सुधार की बातें सुनाने के लिये इकट्ठा किया जाता है तो नहीं होते। अपने सुधार की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं।

३—मेटे ग्राम में एक विधवा थी जिसकी एक लड़की पूर्व पति की है। उसी ग्राम में उसने अपने लिये दूसरा पति नियुक्त किया हुआ था। किन्तु गाव के लोग उनका सयोग नहीं होने देते थे, और उसको उस ग्राम से बाहर करना चाहते थे, जिस मे पतित होने का भय था। वहा जाकर लोगों को समझा कर उन दोनों का सयोग कराया

४—दो संस्कार किये, एक नाम करण संस्कार किया। जिनका सस्कार धन-हीन होने से पौराणिक

पण्डित ने नहीं किया था, इसलिये वह आदमी मेरे पास आया, उसके बच्चे का नामकरण किया। दूसरा अन्नप्राशन किया।

५—मई १ से १४ तक अन्य ग्रामों में प्रचार करके, तारीख १७ तक महादेव सेगे मेला मे जाकर उपदेश दिया। उस स्थान मे महादेव के मन्दिर के पास ही उच्च जाति की लोगों की सभा का स्थान बना हुआ था, वहापर एक हरिजन भाई से शिल्पकारों को क्या करना चाहिये, इस विषय पर व्याख्यान दिलाया। उच्च वर्ण के लोगों ने अपने बीच मे खड़े होने मे कोई आपत्ति नहीं की और उसके व्याख्यान को भली प्रकार सुनते रहे।

६—तारीख १८ से २४ तक ग्रामों मे प्रचार करते हुये, चौन्दकोट आर्य समाज के प्रधान जी की आज्ञा हुई, कि सुना है कि एक व्यक्ति ने जो अपने को प्रतिष्ठित आर्य कहता है और बाहर देशों में भी माना जाता है उसने पशु बलि अष्ठ-बो०ी में जाकर (अष्ठबोली जिसमे आठ जीवों की हत्या होता है) सहायता दी है। इसलिये आप वहा जाकर निर्णय करके लावे। वहा जाकर यह बातें सत्य मिला है।

बडे दु ख से कहना पड़ता है कि इस प्रकार के लोग अपने को आर्य कहने मे क्यों पाप नहीं समझते।

७—तारीख २६ तक दीप मेला में उपदेश का कार्य किया तथा अन्य ग्रामोंमें भी प्रचारकार्य किया।

यदि गढ़वालके आर्य सज्जन आर्य नियमों पर चलने की दृढ़ प्रतिज्ञा करें तो गढ़वाल में दिनोंदिन जनता आर्य सिद्धान्तोंको आदरकी दृष्टिसे देखेगी। मेलोंमें आर्यसमाज का प्रचार करना बड़ा कठिन होता था, परन्तु अब लोग भली प्रकार उपदेश सुना करते हैं। गुरु दयानन्द के सिद्धान्तों के न मानने वाले आर्यो पर जनता दोषारोपण करती है और आदर्श आर्यों को आदर दे रही है।

—रघुबर दयाल उपदेशक

मद्रास-प्रचार

प्रचार कार्य का संक्षिप्त विवरण

मार्च से मई सन् १६३७ तक

बंगलौर आर्य समाज का हरिजनों द्वारा कार्य

बंगलौर, मगलौर, मैसूर तथा कर्णाटक प्रान्त के अनेक भागों में ऋषि बोधोत्सव सप्ताह बड़े समारोह से मार्च ६ से ११ तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। बगलौर आर्य समाज (कैलास-पाल्यम) की तरफ से जो श्रीमती सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध (Affiliated) है इस सप्ताह मौखिक तथा लिखित प्रचारके अतिरिक्त हरिजनों-द्वारकार्य विशेष रूप से किया गया। १० मार्च को ऋषि दयानन्द जन्म दिन के उपलक्ष्य में आर्य समाज भवन कैलाशपाल्यम में श्रीयुत सम्पत आयगार जी B A B L Retd Judge के सभापतित्व में सार्वजनिक सभा हुई जिसमें हवन प्रार्थना के पश्चात प० धर्मदेवजी विद्या-वाचस्पति आदि के भाषण हुए और फिर अन्तर्जा-तीय प्रीत भोज समाज मन्दिर में किया गया जिस में सब जातियों के (१५ से अधिक हरिजन भाई बहिन भी) सज्जन और देवियां सम्मिलित हुए। ११ मार्च को शिवरात्रि अथवा ऋषिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में पुनः समाज मन्दिर में बड़ी सार्व-जनिक सभा हुई जिस में १०० के करीब हरिजन भाई बहिन भी सम्मिलित हुए। श्रीयुत सम्पत आयगार रिटायर्ड जज, श्रीयुत पुट्टप्पा रिटायर्ड सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट प्रेस, श्रीयुत वेंकट वरद

आयंगार और पं० धर्मदेव जी वि० वा० के ऋषिदयानन्द तथा ऐकेश्वरवाद विषयक भाषण हुए जिनके पश्चात सब ने बिना किसी पुकार के भेद भाव के मिठाई खाई। इस सभा में सम्मिलित हरिजन भाई बहिनों के गायत्री आदि मन्त्र-पाठ और भजनोंसे सब लोग बहुत प्रभावित हुए। बंगलोर आर्य समाज मावल्ली और गगम्माचेरी नामक हरिजन बस्तियों के उद्धार पर इस वर्ष अपने ध्यान को केन्द्रित कर रहा है जिसका परिणाम यह है कि सैकड़ोंने प्रतिदिन स्नान करना करना तथा सफाई से रहना शुरू कर दिया है, मद्य मास का परित्याग कर दिया है तथा वैदिक मन्त्रों और भजनों का अभ्यास कर लिया है। आर्य समाज गरीब हरिजनों की पुस्तक, वस्त्रादि द्वारा भी सहायता कर रहा है। हरिजन बस्तियों मे प्रति दिन जा कर उनके सब कष्टों के निवारण थे म्युनिसपिलिटी के अधिकारियों द्वारा भी प्रयत्न किया जा रहा है। ७५ के करीब हरिजन भाई बहिन बडे प्रेम से आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सङ्गों में शामिल हो कर भजनादि गाते हैं। मार्च में पं० लेखराम बलिदान दिवस तथा एप्रिल में आर्य समाज स्थापना दिवस उत्साह पूर्वक मनाये गये। प० धर्म देवजी के उत्तर भारत अवकाश पर जाने पर जहा वे धर्मार्यसभा, गुरुकुलोत्सवादि में सम्मिलित हो कर भाग लेते रहे श्रीयुत गुरुदत्त मल्लिक जो सयुक्त मन्त्री आर्य समाज बॅगलौर ने बड़े उत्साह और लगन से समाज कार्य चलाया। श्रीयुत मल्लिकजी बड़े ही उत्साही कर्म योगी हैं। २६ एप्रिल को अवकाश से लौटने पर पं० धर्म देव जी ने समाज कार्य बड़े उत्साह से पुन शुरू किया। मावल्ली, गगम्मा-चेरी, श्री रामपुर आदि में प्रचार तथा दलितोद्धार कार्य के अतिरिक्त मई मास में प्रचारार्थ पं० धर्म देवजी हिन्दूपुर काकनहल्ली, कैनानोई इत्यादि गये। हिन्दूपुर में पं० धर्मदेव जी के पास म्युनिसपिलटी के Special officer श्रीमल्ल प्यागाहके सभापतित्व में The message of the Gita हरिजन वस्ती में 'हरिजनोंद्धार विषयक भाषण तथा आर्य समाज में ३ हरिजनों की शुद्धि और २ उपनयन संस्कार हुए। काकनहल्ली में 'विवाह का वैदिक आदर्श', 'वैदिक धर्म' ऋषि दयानन्द का अद्भुत कार्य" पर ३ व्याख्यान के अतिरिक्त जो दयानन्द विद्यार्थीमिल्य' में दिये गये वैदिक धर्म विषयक शङ्का समाधान होता रहा जिस से जनता अत्यन्त सन्तुष्ट हुई। ३० मई को पं० धर्मदेवजीके सभापतित्व में केनानोर (मलावार) मे एक देव सम्मेलन (one God Conference) और 'एकधर्म सम्मेलन' हुए जिनका वृत्तान्त अगले अंक मे दिया जायगा। 'एक जाति सम्मेलन' में भी जोरदार व्याख्यान देते हुए पं० धर्मदेवजी ने युवकोंसे जाति-भेदको जान-बूझकर तोड़ने की अपील की जो धार्मिक सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त हानिकार है।

आर्य समाज की मई जून मास की प्रगति

—※—

संयुक्तप्रान्त

श्री सम्पादक जी नमस्ते

इस मास आर्य समाज को श्री बाबू गौरीशंकर प्रसाद जी (बनारस) तथा श्री प० रामचन्द्र जी वैद्य (कनखल) के निधन में अपने २ प्रसिद्ध सेवकों से वंचित होना पड़ा स्व० बाबू गौरी शंकर जी न केवल बनारस में ही वरन् प्रान्त में आर्य समाज के प्रमुख व्यक्तियों में से थे। वे अपने पीछे सार्वजनिक सेवा का उत्तम रिकार्ड छोड़ गए हैं। बनारस और आर्य जगत में उनकी मृत्यु से वह स्थान रिक्त हुआ है जिस की पूर्ति असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। डी०ए०वी०हाई स्कूल बनारस, आर्य विद्या सभा, वेद विद्यालय काशी इत्यादि संस्थाए उनके विभिन्न स्मृति चिन्हों में से हैं। वैद्य रामचन्द्र जी ने प्रान्त में अपने लोकोपकारी व्यवसाय से समाज, देश, और धर्म की बड़ी सेवाए की थीं। सम्पादक जी! आर्य समाज के चुने हुए व्यक्तियों का शीघ्र एक एक करके हमसे छिन जाना हमारे लिये एक विशेष चेतावनी देता है। वह चेतावनी है कि आर्य समाज को रिक्त स्थानों की पूर्ति की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उसे हरसम्भव उपाय से अपने विदा होने वाले सुयोग्य व्यक्तियोंका स्थान लेनेके लिये सुयोग्य व्यक्तियोंको तैयार करते रहना चाहिये। यदि उसने इस चेतावनी पर ध्यान न दिया और उसके सुयोग्य व्यक्ति जिस तेजी से हमसे बिछुड़ रहे हैं उसी तेजी से बिछुड़ते रहे और अन्य सुयोग्य व्यक्ति स्थान ग्रहण करने के लिए न आते रहें तो निश्चय ही आर्य समाज के लिए यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी।

प्रान्त में एक अरुचिकर आन्दोलन ने सिर उठाया है। अभी हाल में गुरुकुल वृन्दावन के जाच कमीशन की रिपोर्ट छपी थी और सभा मे भेजी गई थी। उसपर प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग के कुछ प्रस्ताव भी प्रकाश मे आए थे। कुछ भाइयों को अन्तरंग की उक्त कार्यवाही पर असन्तोष है और उनकी माग है कि कमीशन के प्रस्ताव ज्योंके त्यों स्वीकार किए जाय अन्यथा वे लोग स्वर्ण जयन्ती महोत्सवसे असहयोग करेंगे संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान ने एक वक्तव्य अखबारों में छपाया है। उस में उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि यह माग उचित नहीं है और अपील की है कि वे महोत्सव को सफल बनानेमें अपनी शक्ति और पुरुषार्थ लगाएँ। इस प्रकार के आन्दोलनों के अनुचित कार्य में 'नहीं'। जाच कमीशन अन्तरंग सभा ने नियुक्त किया था। कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करने का उसका काम था। यदि वह अक्षरश. रिपोर्ट को स्वीकार नहीं करती है और इसी लिये आर्य भाई आन्दोलन करते हैं। अक्षरशः उसे मानने का मतालबा करते हैं तो एक प्रकार से वे आर्य प्रतिनिधि सभा की अथारिटी को चैलैञ्ज देते हैं

उनका यह कार्यवाहि चूंकि अनुचित मूर्खता पूर्ण, आवाछनीय और सभा सोसाइटियों के नियमों और अनुशासन के विरुद्ध है इसलिए आन्दोलन-कारियों को सफलता मिलनी कठिन है ।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के लिए धन जन समह का कार्य उत्साह और वेग के साथ होरहा है । सभा के अधिकारी तथा अन्य कार्य कर्त्ता विभिन्न स्थानों में दौरा कर रहे हैं । देखना है कि धन जन की अपील का प्रान्त से कैसा उत्तर मिलता है । हम अबतक के इस कार्य के प्रामाणिक विवरणों की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं । प्राप्त होने पर आपके पाठकों के सामने रखने का यत्न करेंगे ।

पंजाब

श्री सम्पादक जी नमस्ते

प्रान्त का आर्य जगत एक दुखद घटना से क्षुब्ध और बेचैन हो रहा है। यह घटना श्री पं० चमूपति जी का निधन है । प० चमूपति जी आर्य जगत के चोटी के विद्वान थे । उनकी विद्वत्ता उनकी वाणी वा लेखनी से ही नहीं टपकती थी वरन् उनके जीवन से—शान्त, गभीर और सुमधुर जीवन से टपकती थी। वे असाधारण कोटि के न केवल पंडित ही थे वरन व्यक्ति थे । उनकी मृत्यु को आर्य समाज बहुत अनुभव कर रहा है और करेगा । पंडित जी अपने पीछे ६ छोटे २ बच्चे तथा विधवा धर्म पत्नी छोड़ गए हैं । प्रान्त के आर्य बन्धु उनके गुजारे के स्थिर प्रबन्ध का यत्न कर रहे हैं और इस के लिए ५०००) एकत्रित करके स्व० पंडित जी के परिवार को अर्पण करने का निश्चय किया है ।

बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध प्रान्त की सभा पृथक करेगी । प्रान्त के आर्य बन्धुओं के इन यत्नों की हम प्रशंसा करते हैं और सफलताकी कामना करते हैं ।

इस मास प्रान्तीय सभा के अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों का नया वार्षिकनिर्वाचन हुआ है । प्रधान श्री दीवान बद्रीदास जी तथा मन्त्री प० भीमसेन जी निर्वाचित हुए हैं । परन्तु विदित हुआ है कि दीवान साहब ने किन्हीं कारणों से इस्तीफा दे दिया है । यह बड़े दुख की बात है । प्रान्त के आर्य बन्धुओं की अभिलाषा दीवान साहब को इस पद पर आरुढ़ देखने और प्रान्त मे शान्ति का वातावरण लाने मे उन्हें कार्य करता हुआ देखने को, जिसके लिए वे सर्वथा उपयुक्त हैं है ।' देखें यह अभिलाषा पूर्ण होती है वा नहीं है ।

सरकार ने अभी हाल में दो पुस्तकों को जब्त किया है । इनमें से एक सनातन धर्मियों को तरफ से लिखी गई है जिसका नाम है 'पंडित बुद्धदेव का जूता स्वामी दयानन्दके सरपर ।' यह आत्माराम शोख देहलवी की कृति है और मेरठ मे छपी थी । दूसरी किताब पंडित मन्साराम जी आर्योपदेशक को कृति पौराणिक पोल प्रकाश (हिन्दी) है जिसे आर्य साहित्य मंदिर लाहौर ने प्रकाशित किया था इस पुस्तक की जब्ती के सिलसिले में श्री पंडित भीमसेन जी के नवयुग प्रेस लाहौर की १०००) की जमानत जब्त हो गई है !

सार्वदेशिक सभा

अन्तरङ्ग सभा के महत्वपूर्ण निश्चय

ता० ६—६—१९३७

नि० सं० ६

नोटिस का विषय सं० ३—क्या कोई व्यक्ति एक समय में भिन्न भिन्न प्रान्तो मे एक से अधिक समाजों का सदस्य रह सकता है ?

विचार के पश्चात् सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि एक प्रान्त वा भिन्न भिन्न प्रान्तों मे एक व्यक्ति एक ही समाज का सभासद हो सकता है, दो का नही।

नि० स० ८

नोटिस का विषय सं०१—आर्य समाज का भावी कार्य क्रम निर्धारित किए जाने का विषय प० इन्द्र जी के निम्न प्रस्ताव के साथ पेश हुआ।

(१) वर्तमान मे आर्य समाजों के लिए कार्य क्रम बनाया जाय जो सामूहिक और अपील करने वाला हो और वह कार्य क्रम १९४१ में होने वाली मनुष्य गणना को लक्ष में रख कर बनाया जाय।

(२) यह कार्यक्रम कम से कम ३ वर्ष का होना चाहिए और इस काल में आर्य सभासदों और आर्यों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिये।

(३) समाजों को प्रेरणा की जानी चाहिये कि नई नई संस्थाएं खोलने का यत्न न करें।

(४) आर्य समाजों को प्रेरणा की जाय कि अन्य धर्मावलम्बियों के साथ संघर्ष से बचा जाय। अनिवार्य होने पर ही संघर्ष में पड़ना चाहिए।

(५) यत्न होना चाहिए कि ३ साल में आर्य समाजों की संख्या तिगुनी और आर्य सभासदों की संख्या दस गुनी होनी चाहिए।

(६) नौजवानों के संगठन को समाज अपने हाथ मे ले और उन्हे आर्य समाज की ओर आकर्षित करने का यत्न होना चाहिए।

(७) आर्य समाज के अधिक से अधिक शिक्षणालय होते हुए भी शिक्षा की समस्या बड़ी जटिल हो रही है। उस पर पूर्ण विचार हो कर उसे नया ढंग या Impetus मिले।

विचार के बाद प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ। निश्चय हुआ कि निम्न सज्जनो की एक उपसमिति बनाई जाय जो इस सम्बन्ध मे अपनी विस्तृत रिपोर्ट सभा में पेश करें।

(१) श्री पं० इन्द्र जी।
(२) „ डा० युद्धवीरसिंह जी।
(३) „ ला० नारायणदत्त जी।

आर्य समाज मद्रास द्वारा प्रकाशित

सस्ता आर्य-साहित्य (अंग्रेजी मे)

Light of Truth श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश का यह अंग्रेजी अनुवाद है। इसकी भाषा शुद्ध व सुन्दर है। भावों के विषय मे इतना कहना पर्याप्त है कि इस अकेली पुस्तक ने जितनों को आर्य बनाया है उतना अन्य साधनों ने नहीं।

ग्लेज पेपर, केलिको की मजबूत जिल्द २)
अजिल्द १॥)

Fountainhead of Religion इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टिहरी ने पुष्कल प्रमाणों द्वारा वैदिक धर्म को समस्त धर्मों का मूल स्रोत सिद्ध किया है। इस पुस्तक के अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके है। केवल अंग्रेजी मे ही नई संस्करण छप कर हाथों हाथ बिक चुके है।

फेदरवेट पेपर, सुन्दर छपाई। अजिल्द ॥) सजिल्द १)।

Ten Principles of Aryasamaj गुरुकुल-कांगडी के भूतपूर्व आचार्य श्री चमूपति एम ए ने इस पुस्तक मे आर्यसमाज के दस नियमों की विस्तृत, वैज्ञानिक व्याख्या की है।

पृष्ठ संख्या १६० । मूल्य ।=) मात्र ।

Arya Philosophy अजमेर अर्धशताब्दी पर दिये गए अंग्रेजी व्याख्यानो का यह संग्रह है। देश तथा विदेश दोनों मे प्रचार का अत्युत्तम साधन है। इसकी भूमिका श्री आचार्य रामदेव जी ने लिखी है। मूल्य ।=) मात्र

Vedic Caste System and Panchama Problem यह समयोपयोगी ट्रैक्ट श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी मद्रास ने लिखा है। इसमे युक्ति-प्रमाण द्वारा आर्य समाज के पक्ष की पुष्टि की गई है। मूल्य =)

The outlines of Aryasamaj लेखक श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास। इसमे आर्य समाज के सिद्धान्तो का संक्षिप्त परिचय है। ५वाँ संस्करण। मूल्य –)

Sayings of Swami Dayanand इस मे ईश्वर, वेद, वर्ण, आश्रम, शिक्षा राजनीति आदि विषयों पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वचनो का संग्रह है। मूल्य –)

Hinduism Vs Xinity श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने इस पुस्तिका मे हिन्दू-धर्म तथा ईसाईयत का मुकाबिला किया है। शुद्धि प्रचार के लिए उपयोगी है। मूल्य –)

Hinduism Vs Islam ले० पं० केशव देव जी ज्ञानी। इसमे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम का मुकाबिला है। शिक्षित मुसलमानों के हाथों मे देने योग्य है। मूल्य –)

पता —
श्री मंत्री, आर्य समाज
१७०, चाइना बाजार, मद्रास

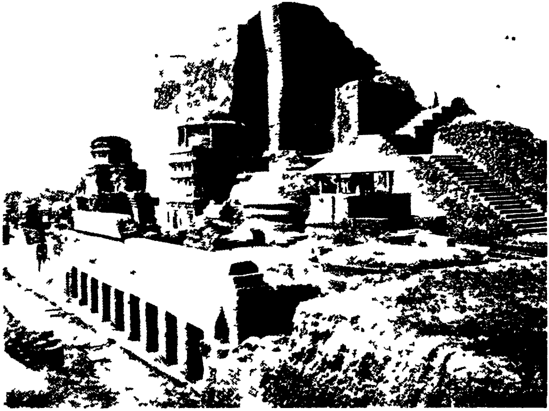
विषय-सूची

नम्र निवेदन

[ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N, W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पञ्जाब की राजधानी लाहौर में रावीरोड पर केन्द्रीय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उपप्रधान,श्री पण्डित विश्वम्भर नाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कागड़ी, श्री पण्डित ठाकुर दत्त जी वैद्यशास्त्री मुल्तानी तथा डा० गणेशीलाल जा M, B B S हैं। इस अनाथालय को खुले हुये बीस वर्ष के लगभग होचुके है। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं करते, प्रत्युत सब प्रान्तो मे रहने वाले हिंदू आर्य भाई भा करते है। यही कारण है कि यह अनाथालय भारत के दूसरे प्रान्तों में भी सर्वप्रिय हा रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। यहा तक कि अब सरकार भी जो चोरी किये हुये लड़के लडकिया उनको मिलते है जब तक उनके वारिसो का पता नही मिलता, तब तक उनका इस अनाथालय मे रखती है। इस के अतिरिक्त ऐसे नवजात बालक वा बालिकाये भी आने लग गई है जिनकी माताएं मर जाती हे या वह उनको कई गुप्त कारणों से रखना नहीं चाहती और इनके लिये एक Trained नर्स भी रखी हुई है। इस तरह से अनाथालयमे बच्चों की सख्या बढ़गई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु सख्या बढ जाने से कन्याओं के लिये स्थान काफी नहीं है। इस लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है कि नवीन कमरे बनवाय जायें, जिस से कन्याओ क स्थान का कष्ट मिट जाय। इनके बनाने के लिय धन की अपील की जावे। इसलिय मै दानी सज्जनो की सेवा मे विनीत भाव से प्रार्थना करता हूं के वे इस शुभ कार्य मे सभा की सहायता करे ताकि अनाथ और निस्सहाय बच्चो को प्रवेश करने मे बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न करसके तो वे बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे अन्य मतवालों के जाल मे फस कर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जावेंगे और उसका पाप आर्य जाति को लगेगा। जो महानुभाव एक सो से अधिक रुपया देंगे, उनके नामो के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे। इस समय इस कार्य के लिये पाच सहस्र धन की शीघ्र आवश्यकता है जो दानी सज्जनों को पूरी करनी चाहिय। इस अनाथालयक आधीन म्यूनिसिपैलटा तथा गवर्नमैंट से मजूर एक प्राइमरी इंडस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है। जिसमे अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते है। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लडके इस में काम सीख सकते हैं। आजकल ५० लड़के और ४२ लड़किया सीख रही है। बीस के लगभग लड़के यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय मे इस समय ११६ लड़के और ६५ लडकिया हैं जिनके निवास भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है . . . . . तो स. . की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकार प्रिय महानुभावो से प्रार्थना है कि वे इस ओर भी दया करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें, दे कर पुण्य के भागी बने अर्थात् आटा, दाल, चावल घी आदि खाद्य पदार्थ और पहनने के लिये वस्त्र देकर कृतार्थ करें। यह संस्था पूर्व भी आप जैसे दानियोंकेदान से चल रही है, अब भी आपसे आशा की जाती है कि अवश्य सहायता देकर अनाथों का आशीर्वाद लेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

सार्वदेशिक



संसार प्रसिद्ध बौद्ध कालीन नालन्दा विश्व-विद्या[illegible] का एक [illegible] जो [illegible] हाल में विद्यालय के
भग्नावशेषो की खुदाई के सिलसिले मे मिला है।

चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस देहली



नालन्दा विश्व विद्यालय का विशाल हाल जिसमे १० हजार विद्यार्थी बैठ कर विद्याध्ययन करते थे।

च द्र प्रिन्टिङ्ग प्रेस कलकत्ता

❀ ओ३म् ❀

सार्वदेशिक

❀ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ❀

वर्ष ११ — श्रावण १९९४ — अङ्क ६

अगस्त १९३७ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

ओं अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।

भावार्थ—हे भगवन्! आप ज्ञान के भण्डार हैं। हमें इस संसार में सुख तथा शान्ति की प्राप्ति के लिये सन्मार्ग दिखाइये। आप सर्वान्तर्यामी हैं। हमारे भले तथा बुरे सब कामों को जानते हैं। पिता जी! आप हमारे ऊपर ऐसी कृपा करें कि हमारे जीवनों से कुटिलता तथा पाप दूर हो जाँय और हम आपकी स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना करते हुये इस मानव जीवन को सफल करें।

सम्पादकीय—

नया शासन विधान और आर्यसमाज

देश में कांग्रेस द्वारा पद-ग्रहण की समस्या हल हो चुकी है। छः प्रान्तों में कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल भी स्थापित हो चुके हैं। इस पर सर्वत्र सन्तोष और प्रसन्नता प्रगट की गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि देश की जनता यह चाहती है कि उसके द्वारा निर्वाचित मन्त्री क्रियात्मक रूप से उसके सुख दुःख में हाथ बटाएं। इसमें कोई सन्देह भी नहीं कि अच्छे से अच्छा विदेशी शासन, स्वदेशी शासन का स्थान नहीं ले सकता। अब हमें ये देखना है कि हमारे अपने प्रतिनिधि शासन की बागडोर अपने हाथ में लेकर प्रजा के कष्टों के निवारण में कहांतक सफल हो सकते हैं।

इसमें भी सन्देह नहीं कि कांग्रेसको अभीतक स्वतन्त्रता का ध्येय प्राप्त नहीं हुआ फिर भी जो कुछ थोड़ी बहुत स्वतन्त्रता प्रान्तिक शासन-विधान के रूप में उसे प्राप्त हुई है उसका पूर्ण उपयोग लेना ही चाहिये। यह बात भी याद रखने लायक है कि जब से कांग्रेस ने जन्म लिया है तभी से आर्य्यसमाज भी इस देश की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक उन्नति मे पूर्ण रूप से सहयोग देता रहा है। यदि विचार-पूर्वक देखा जावे तो मालूम होगा कि इस समय का अधिकाश कांग्रेस-प्रोग्राम आर्य्य-समाज के निरन्तर प्रचार का ही फल स्वरूप है। सब से पहिले स्वराज-शब्द का प्रचार आर्य्य-समाज ने ही किया था। देश में सर्वत्र शिक्षा का फैलाना, शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा को बनाना, शिक्षा को निःशुल्क (Free) रूप में देना, शिक्षा के क्षेत्र में तप, तपस्या और त्याग की भावना को लाना, छूत-छात और ऊंच-नीचके भावों को मिटाना, मनुष्यमात्र में समता के भावों को स्थापित करना, देश की गरीबी को दूर करने के लिये व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा का प्रचार करना तथा शराब आदि मादक द्रव्यों के प्रयोग को हटाना, इत्यादि सभी समस्याओं को सुलझाने में आर्य्य-समाज ने अभी तक अपनी सामूहिक शक्तियों को भलीभांति लगाया है और इन्हीं समस्याओं को अब राजनैतिक क्षेत्र में चरितार्थ करने के लिये कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल पूरा प्रयत्न करेंगे। इस दृष्टि से कांग्रेस का सबसे बडा सहायक आर्य्य-समाज है। कांग्रेसी नेता अपने विचारों के लिये आर्य्य-समाज के ऋणी हैं। हाल ही में राष्ट्रपति प० जवाहरलाल जी ने कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल को त्याग और तपस्या का उपदेश देते हुए कहा था कि मुझे आश्चर्य है कि शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में बड़े २ प्रोफेसर और उपाध्याय भी अपनी योग्यता का अन्दाज़ा अपने वेतनों से लगाते हैं। हमारे राष्ट्रपति को यह अवश्य मालूम होगा कि इस बात में भी आर्य्य-समाज द्वारा स्थापित गुरुकुलों में भिन्न आदर्श को अपनाया हुआ है। वहां गुरु-शिष्य के परस्पर सम्बन्ध के बीच में निःस्वार्थ भावना के अतिरिक्त किसी और भाव को नहीं आने दिया जाता। ज्ञान को ज्ञान की खातिर ही दिया और लिया जाता है।

कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल से हमारा एक नम्र-निवेदन है। आर्य्य-समाज ने गुरुकुल विशुद्ध

राष्ट्रीयता के आधार पर बनाये और चलाये हैं। जहां देश में अन्य राष्ट्रीय शिक्षणालय या तो मर चुके हैं या सिसक रहे हैं, वहां गुरुकुल दिनों दिन वृद्धि और उन्नति को प्राप्त हो रहे हैं। इसका कारण यह है कि गुरुकुलों में देश की आत्मा बसती है, उनके सामने ऊँचे मौलिक आदर्श हैं जो इस देश की अपनी संस्कृति पर आश्रित हैं। दुर्भाग्य से अभी तक देश के विदेशी शासन में गुरुकुल जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं को नहीं अपनाया गया था, उसके स्नातकों को जो मान प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये थी वह उन्हें नहीं मिल सकी। इसके कारण देश उनकी निःस्वार्थ सेवाओं से बहुत कुछ वञ्चित रहा है। कांग्रेसी मन्त्री-मण्डल को राष्ट्रीय महाविद्यालयों की उपाधि (Degree) को स्वीकार कर लेना चाहिये और उनके स्नातकों के मार्ग में सार्वजनिक सेवाओं (Public Services) को स्वीकार करने में जो बाधाएँ हैं उन सब को एकदम दूर कर देना चाहिये। ऐसा करने पर देश को बेशुमार निःस्वार्थ सेवकों की सेवा का लाभ प्राप्त हो जायगा।

आर्य्य-समाज के राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं से भी हमें यह कहना है कि अब उन्हें यह सुअवसर प्राप्त हुआ है कि जबकि वे आर्य-समाज के चौमुखी प्रोग्राम को राजनैतिक क्षेत्र में प्रचलित करवा सकते हैं और नये शासन की शक्ति द्वारा उसे जनता द्वारा स्वीकार करवा सकते हैं। अभी आर्य्य-भाइयों को जो राष्ट्रीय क्षेत्र में काम कर रहे हैं इसी ध्येय को सामने रख कर कार्य्य करना चाहिये और जहां तक बन सके नये शासन-विधान को आर्य्य-समाज तथा उस के कार्य के प्रोत्साहन में लगाने की चेष्टा करनी चाहिये। हमारा धर्म राष्ट्र उन्नति का तथा देश भक्ति को बड़ा ऊँचा स्थान देता है।

भीलों में रक्षाकार्य—

मध्य भारत के भीलों में भयंकर दुष्काल के उपद्रवों तथा भूख की ज्वाला को शान्त करने के लिए हज़ारों भीलों के ईसाइयों की शरण में चले जाने के दुःखद समाचार हमारे पाठक दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों में पढ़ चुके होंगे। उन्होंने यह भी पढ़ा होगा कि आर्य-समाज वहाँ पहुँच चुका है और आर्य प्रादेशिक तथा सार्वदेशिक सभाओं की ओर से रक्षा तथा सहायता कार्य हो रहा है। सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री० बा० शिवचन्द्र जी सहायक मन्त्री आर्य रक्षा समिति काम कर रहे हैं। वहाँ कार्य सफलतापूर्वक हो रहा है और सफलता की पूरी २ आशा है। यहां हम पाठकों की सूचना के लिए इतनाही निवेदन करदेना उचित समझते हैं।

एक महान सत्य की पुष्टि में—

इस्लम्बोल का १० जुलाई का समाचार है कि वहाँ शिकारियों ने ३ वर्ष की एक लड़की को जिसका पालन एक रीछनी ने किया था पकड़ा है। विशेष इलाज के लिए यह लड़की हस्पताल में रखी गई है जिसमें दिमाग सम्बन्धी रोगों और त्रुटियों का इलाज होता है।

इस समय लड़की छोटे रीछ की तरह गुर्राती है और जो आदमी उसके पास जाते हैं उन पर स्वभावतः

हमला करती है। डाक्टरों को आशा है वे उसके मनुष्य स्वभाव को जाग्रत कर लेंगे।

सन् १९२१ में मूसा नाम के गाँव से एक ३ मास की लड़की गुम हुई थी। लोगों का विश्वास है यह वही गुम शुदा लड़की है। लड़की की तलाश आस-पास के सभी पहाड़ों और जंगलों में करली गई थी परन्तु लड़की नहीं मिली थी और अन्त में उसकी ज़िन्दगी की आशा भी छोड़दी गई थी।

जब कुछ शिकारी मूसा ग्राम के पास के जंगल से गुज़र रहे थे उन्हों ने एक बड़ी रीछनी को गुफा के सामने धूप में पड़े हुए देखा। उन्हों ने उसे मार डाला और जब वे उसके शव के पास पहुँचे तो वह लड़की गुफा में से निकली। वह बिल्कुल नंगी थी और हमला करने की धमकी दे रही थी।

लड़की को चोट न आजाय इस ख़याल से शिकारियों को उसे पकड़ने में बड़ी कठिनता का सामना करना पड़ा। उसने दांतों और नाखूनों से उन शिकारियों पर हमला भी किया और उन्हें पशुओं की तरह से काटा भी। लड़की की प्रत्येक चेष्टा से स्पष्ट होता है कि जब से वह गुम हुई थी तबसे ही रीछनी ने अपने निजके बच्चे की तरह उसे खिलाया है और उसकी देख-भाल की है तथा अपने बच्चों के साथ उसका पालन-पोषण किया है।

लड़की को हस्पताल में बिल्कुल अलग रखा गया है क्योंकि जो उसके पास जाता है वह उस पर अब भी हमला करती है।"

भेड़िए की माद से निकले हुए बच्चों की भी ठीक इसी प्रकार की हालत पाई गई है। इस प्रकार की घटनाओं से स्पष्ट है कि मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान नहीं है। जो कुछ भी उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है वह निमित्त से ही होती है। यदि मनुष्य को असली हालत में रखा जाय और कुछ सिखाया न जाय तो उसकी हालत आजके पैदा हुए बच्चे के सदृश होगी। पैदा होने के दिन से बच्चे को जो कुछ ज्ञान की प्राप्ति होती है वह निमित्त अर्थात् दूसरों से होती है। यदि वह मनुष्यों के संसर्ग में रहेगा तो उसे मनुष्यों का सा ज्ञान होगा, यदि पशुओं के संसर्ग में रहेगा तो पशुओं का सा ज्ञान होगा। यह भी प्रत्यक्ष है कि मनुष्य के अतिरिक्त जितने प्राणी हैं वे बिना किसी शिक्षा के अपने स्वाभाविक ज्ञान से अपनी जीवन यात्रा के कार्य संपादन कर लेते हैं। घर ढूंढने, आहार तलाश करने, सन्तान पैदा करने तथा उसका पालन करने का ज्ञान उन्हें बिना सिखाए आप से आप आजाता है और वह ज्ञान मरने तक एक जैसा बना रहता है, घटता-बढ़ता नहीं। परन्तु मनुष्य अपने स्वाभाविक ज्ञान से बिना सिखाए न घर बनाना जाने, न आहार पहचाने, न स्त्री-पुरुष में तमीज़ कर सके, न सहवास जाने न बोल सके, न खड़ा हो सके, न हाथ से खा-पी सके, गरज कि वह एक दिन भी नहीं जी सकता। यह भी स्पष्ट है कि यदि वह मूर्खों की सोहबत में रहेगा तो मूर्ख हो जायगा यदि विद्वानों की सोहबत में रहे तो विद्वान हो जायगा। कहने का मतलब यह है कि मनुष्य को निमित्त से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है, स्वयं ज्ञानकी प्राप्ति नहीं हो सकती। आदि में यह ज्ञान मनुष्यों को परमात्मा के निमित्त से प्राप्त होता है और अब भी दूसरों से ही प्राप्त

होता है, इतिहास और विद्वानों की स्थापनाओं से यह बात स्पष्ट है।

इस मूलज्ञान के सम्बन्ध में हम २, ३ पाश्चात्य विद्वानों की सम्मतियां प्रस्तुत करते हैं। हमारे श्रेष्ठ दिमागों की तो उपर्युक्त स्थापना है ही, उन के सम्बन्ध मे कहना व्यर्थ है।

डिस्कार टीज कहता है कि—"जब मैं बहुत दूर और गहराई तक सोचता हूँ तो ज्ञात होता है कि ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान मनुष्य आपही आप अपने हृदय में पैदा नहीं कर सकता। क्योंकि वह अनन्त है, हमारा मन सान्त है, वह व्यापक है, और हम एकदेशी हैं। इससे यह स्पष्ट है कि मूल विचारों को हमने स्वय नहीं बनाया किन्तु परमात्माने आदि पुरुषों के हृदयों मे अपने हाथ से छाप दिया है।"

मेडम ब्लेवेट्स्की 'सीक्रेट डाक्ट्रिन्' (Se ıet Doctrıne) में कहती हैं—अनेक बडे २ विद्वानो ने कहा है कि उस समय भी कोई नवीन धर्म्म-प्रवर्त्तक नहीं हुआ जब आर्यों, सेमीटिकों और तूरानियों ने नया धर्म व नवीन सचाई का आविष्कार किया था। वे धर्म प्रवर्त्तक भी धर्म के पुनरुद्धारक थे मूल शिक्षक नहीं।"

'चिप्स फ्राम ए० 'जर्मन वर्कशाप' नामी पुस्तक में प्रो० मैक्स मूलर कहते हैं—"आदि सृष्टि से लेकर आज तक कोई भी बिल्कुल नया धर्म नहीं हुआ।

इन प्रमाणों से जाहिर है आदि ज्ञान मनुष्य कृत नहीं और न क्रमश, विकाशका फल है, वरन् वह ईश्वरीय है और अपौरुषेय है।

सत्यार्थ प्रकाश का सस्ता संस्करण

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने अपनी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश की १ लाख प्रतियों के प्रचार का संकल्प किया है और इस कार्य मे आर्य्य साहित्य मंडल अजमेर की सहायता प्राप्त की है कि वह इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश के ।) वाले संस्करणकी उपर्युक्त संख्या में प्रतियां छापे।

यह संकल्प शुभ है और हम चाहते हैं कि उसका यह संकल्प पूरा हो। हमतो यह भी चाहते हैं कि एक लाख की नियत संख्या मे ही नहीं वरन् अपरिमित संख्या मे इस ग्रन्थ रत्न का उस अवसर पर प्रचार हो। सार्वदेशिक सभा ने अभी हाल मे १० हजार का सत्यार्थ प्रकाश का सस्ता संस्करण छापा है। यह संस्करण समाजों मे आ रहा है। हम सार्वदेशिक सभा की ओर से युक्त प्रान्त की सभा को सहायता का निमंत्रण देते हैं कि वह सभा के स्टाक को ले लेवे या प्रचारित कराए। आशा है इस निमन्त्रण को वह स्वीकार करेगी। शेष प्रतियों के लिए वह साहित्य मंडल की सहायता ले सकती है।

आर्य्य प्रादेशिक सभा से

समाचार मिला है कि डच गयाना की 'आर्य्य दिवाकर' सभा लाहौर की आर्य्य प्रादेशिक सभा के साथ सम्बद्ध होने का यत्न कर रही है। यदि इस समाचार मे कोई सचाई है तो इस सम्बन्ध में हम प्रादेशिक सभा को एक निवेदन करेंगे और वह यह कि यह सभा सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बद्ध थी और इस सभा की आर्य्य समाज विरोधी प्रगतियों की वजह से डच गयाना के आर्य्यों की शिकायतों के आधार पर सार्वदेशिक सभा ने इसे अपने से पृथक किया हुआ है। इस बात से कदाचित प्रादेशिक सभा भी परिचित होगी। प्रादेशिक सभा इस सभा को मिलाने में स्वतन्त्र है परन्तु फिर भी हम उससे यह

अवश्य कहेंगे कि यदि उसने सिर्फ इसलिये कि सार्वदेशिक सभा द्वारा पृथक की हुई संस्था को अवश्य शरण देनी चाहिए—मिलाने का निश्चय किया यद्यपि हमें उससे यह आशा नहीं है तो संस्थाओं से उसके संगठन में कोई उल्लेख योग्य वृद्धि तो होगी नहीं हाँ उस सभा को अनुचित प्रोत्साहन मिल जायगा और वह आर्य समाज की असेवा इस प्रकार की ही होगी। आशा है प्रादेशिक सभा हमारे इस निवेदन पर विशेष ध्यान देगी।

महता जैमिनी जी और सार्वदेशिक पत्र—

अगस्त १९३९ के 'सार्वदेशिक' पत्र में एक नोट छपा था जिस के आधार पर तभी से महता जैमिनी जी लगातार सार्वदेशिक सभा तथा उसके विदेश प्रचार को स्थान २ पर बदनाम करने में अपना समय व्यर्थ खो रहे हैं। हम इस समय तक इसलिए चुप रहे हैं कि हम नहीं चाहते थे कि महता जी को उनकी इस वृद्ध अवस्था में किसी सार्वजनीन संघर्ष में डाला जाय। परन्तु विदेश से जो हाल में हमे पत्र मिले हैं उनसे मालूम होता है कि महता जी की अनथक लेखनी 'सार्वदेशिक' को बदनाम करने के व्यर्थ प्रयास में अभी तक भी बन्द नहीं हुई है।

हम यहां पाठकों के निर्णय के लिए 'सार्वदेशिक' पत्र की उस टिप्पणि के आवश्यक अंश को उद्धृत करते हैं जो महता जी के असीम रोष का कारण बनी है:—

'जनता का कर्तव्य है कि वह ऐसे नामधारी प्रचारकों को प्रोत्साहन न देवे और सार्वदेशिक सभा आर्य जगत का आवश्यक मार्ग प्रदर्शन करती रहे तथा अपने विदेश प्रचार को अधिकाधिक व्यवस्थित करती और व्यापक बनाती रहे। हमें यह देख कर दुख होता है कि हमारे कतिपय पत्र, हमारी कोई २ सभा खोखा-हटी आम में या अज्ञान में ऐसे प्रचारकों को अनुचित प्रोत्साहन देते हुए जनता का ठीक २ मार्ग प्रदर्शन न करने की भूल करदेती हैं। ऐसी भूलें नहीं होनी चाहियें और जनता का ठीक २ मार्ग प्रदर्शन होना चाहिए इसी में आर्य समाज का हित है।"

अब पाठक स्वयं विचारें कि इन पंक्तियों पर सिवाय नामधारी प्रचारकों के अन्य किसी को क्यों आपत्ति हो सकती है? म०ता जी के एक पत्र के उत्तर में इसी विषय पर सार्वदेशिक सभा के दफ्तर से उन्हें जो उत्तर दिया गया था उसका आवश्यक भाग हम यहां दर्ज किए देते हैं".—

"हमारा विदेश प्रचार अबतक बहुत बदनाम रहा है और इस बदनामी का कारण हमारे कतिपय ग़ैर जिम्मेवार और वे प्रचारक रहे हैं जिनका मुख्य ध्येय प्रचार की आड में विदेश की भारत-भक्त जनता से व्यक्तिगत लाभ उठाना रहा है। यह एक सचाई है जो दिन की तरह रोशन है और जिससे आर्य जगत भली भांति परिचित है और जिसके अनेकों प्रमाण इस सभा के दफ्तर में मौजूद हैं। यदि सभा का मुख पत्र इस सम्बन्ध में जनता का उचित मार्गप्रदर्शन करता है तो वस्तुत. वह अपने एक कर्तव्यका पालन करता है। वह आलोचना बड़ी व्यापक है और ऐसी ही व्यापक आलोचनाएं इस तथा अन्य आर्य पत्रों में निकली हैं। ऐसी अवस्था में कोई खास व्यक्ति उसे अपने ऊपर कैसे घटा सकता है, यह समझ में नहीं आता और न यही समझ में आता है कि आपही उसे अपने ऊपर क्यों घटाते हैं जबकि आपका उसमें जिक्र नहीं और आपही अकेले प्रचारक नहीं

जो विदेशों मे प्रचारार्थ गये हो ।"

हमें आशा थी कि उपर्युक्त पत्र से महता जी को सन्तोष हो जायगा और वे सार्वदेशिक सभा को बदनाम करने के व्यर्थ प्रयास को छोड़देंगे, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है उनके हृदय का गुबार अभी एक शान्त नहीं हुआ है और वे लम्बे २ पत्र लिख कर व्यर्थ में अपना और दूसरों का समय बर्बाद कर रहे है । हमें खेद से लिखना पड़ता है यदि महता जी अपनी इस प्रवृत्ति का दमन नही करेंगे तो 'सार्वदेशिक' को अपना कर्तव्य पालन करना पड़ेगा । हमें इस बातका और भी अधिक दुख है कि महता जी कई पूज्य व्यक्तियों जैसे श्री डा० केशवदेव जी शास्त्री, श्री भाई परमानन्द जी तथा श्री आचार्य रामदेव जी इत्यादि महानुभावो का जो विदेश म प्रचारार्थ जा चुके है, नाम ले ले कर उनके प्रति अन्याय कर रहे हैं और जनता म मिथ्या भ्रम फैला रहे है ।

हम यहा स्पष्ट लिखदेना चाहते हैं कि हमारी टिप्पणी व्यापक रूप मे केवल नामधारी, स्वार्थी, अर्थ लोलुप और आर्य समाज को बदनाम करने वालो के ऊपर थी । हमे समझ म नही आता कि महता जी अपने व्यवहार से 'चोर की दाढी मे तिनका' वाली कहावत क्यों चरितार्थ कर रहे है ?

एक उपयोगी प्रस्ताव—

आर्य समाज काठ (मुरादाबाद) ने एक उपयोगी प्रस्ताव भेजा है जिसके शब्द इस प्रकार है —

"सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना की जावे कि उक्त सभा देशी राज्यो की राजधानियो मे स्थापित आर्य समाजो को आदेश करे कि वे अपने महाराजाओ की सेवा मे उनके राज्याभिषेक आदि अवसरो पर ऋषि दयानन्द कृत एव वैदिक सम्पत्ति आदि वैदिक ग्रन्थ समर्पित करे '

हम रियासत की समाजों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं ।

सीमाप्रान्त का सरक्यूलर—

आखिर सीमा प्रान्त की सरकार ने अपने हिन्दी, गुरुमुखी विरोधी सरक्यूलर को जिसके विरुद्ध शुरू से ही घोर आन्दोलन हुआ था और इन स्तम्भों मे भी समय २ पर प्रकाश पड़ता रहा था, वापस ले लिया है । इसे हम लोकमत की विजय ही समझते हैं । सीमा प्रान्त की सरकार यदि पहलेही अपने इस कदम की अदूरदर्शिता को अनुभव करलेती तो अच्छा करती ।

भीषण रेलवे दुर्घटना—

अभी हाल मे बिहटा (बिहार) में रेलवे की एक भीषण दुर्घटना से समाचार पत्रों की रिपोर्ट के अनुसार १०० से अधिक व्यक्ति मरे तथा २०० के लगभग घायल हुए हैं । मृत व्यक्तियो के सम्बन्धियो तथा घायलों के प्रति उनके महान् दु ख में हम अपना हार्दिक समवेदना का प्रकाश करते है और मृत व्यक्तियों का आत्माओ की शान्ति और सद्गति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं । जो इस दुर्घटना के प्रभाव से बचे है हम उन्हे बधाई देते हैं । ऐसी लोमहर्षक घटनाए यत्न करके सरकार को भविष्य मे असम्भव बना देनी चाहिएँ । विदित हुआ है घटना के वास्तविक कारण का पता लगाए जाने का जोरो से यत्न हो रहा है । यदि इस घटना का कारण मनुष्य हुआ तो निश्चय ही उसका यह अपराध मानव जाति के प्रति अक्षम्य अपराध होगा और इसके लिए अनेका रोते,

सिसकते और तड़पते हुए हृदय उसे धिक्कारेंगे। घायलों और मृतकों के सम्बन्धियों को मुआवजे या सहायता के रूप में जैसी अवस्था हो, अवश्य कुछ मिलना चाहिए। इससे भी उनके महान् दुःख में कमी ही होगी। जिन व्यक्तियों और सोसाइटियों ने इस अवसर पर दुर्घटना से पीड़ित व्यक्तियों की सेवा और सहायता की है वा जो इस समय सेवा-सहायता कर रहे हैं वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

महत्व पूर्ण निर्णय—

देहली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के ७ जून के अङ्क में शेखूपुरा का निम्न समाचार प्रकाशित हुआ था—

'श्री मौलवी मुहम्मद इब्राहीम सब जज फ़र्स्ट क्लास शेखूपुरा ने एक मुकदमे के फैसले में जो आइशा नामक मुस्लिम स्त्री ने अपनी शादी के विच्छेद की आज्ञा प्राप्त करने के लिए दायर किया था, एक मुख्य बात पर विचार किया। वह बात यह थी कि क्या तलाक हासिल करने के लिए मुस्लिम स्त्री का यह बयान दे देना कि वह इस्लाम का परित्याग करती है काफी है।

मुहायलाह की ओर से यह कहा गया था कि स्त्री ने इस्लाम का परित्याग नहीं किया है और उसका यह बयान कि उसने ईसाई धर्म्म ग्रहण कर लिया है बनावटी है।

सब जज ने विचार कोटि में इस बात को नहीं रक्खा कि मुकदमा दायर करने से पूर्व स्त्री ने इस्लाम का परित्याग कर दिया था या नहीं और नियमानुसार ईसाई धर्म्म ग्रहण किया था वा नहीं।

अदालत ने इस्लाम के सिद्धान्तों पर विचार करने के बाद यह स्थापना की कि मुस्लिम स्त्री को सिर्फ इस नियमित घोषणा के आधार पर कि उसने इस्लाम का परित्याग कर दिया है तलाक हासिल करने का हक है। परित्याग के बाद यह अनावश्यक है कि परित्याग का इरादा शुद्ध था या नहीं या विवाह-विच्छेद का यह बहाना मात्र था। इस्लाम क्रिया-कलापों का धर्म्म नहीं है। इस्लाम में प्रवेश और उसका परित्याग करने के लिए मनुष्य को हार्दिक घोषणा कर देना मात्र पर्य्याप्त है।

अदालत ने मुद्दई को वाञ्छित घोषणा करने के पक्ष में फैसला दे दिया'।

इस फैसले से इस्लाम तथा उसकी तलाक प्रथा पर उत्तम प्रकाश प्राप्त होता है।

धर्म्म परिवर्तन और हिन्दू स्त्री

उपर्युक्त शीर्षक में 'इण्डियन सोशियल रिफार्मर' लिखता है—

हिन्दू स्त्री की स्थिति जो पति से छुटकारा पाने के लिए धर्म्म परिवर्तन करती है आसान नहीं है। जहां तक स्त्री का सम्बन्ध है हिन्दू विवाह अटूट सम्बन्ध है। धर्म्म परिवर्तन करने मात्र से ही वह अपने विवाह से मुक्त नहीं हो जाती है। ऐसा करने के लिए उसे अदालत की सहायता लेनी होती है। पहले उसे अपने पति को अपने पास रहने के लिए बुलाना होता है। यदि वह इन्कार कर देता है तो वह अदालत को दरख़ास्त करती है कि वह ऐसा करने अर्थात् उसके साथ रहने के लिए उसे बाध्य करे या विकल्प के रूप में उस शादी से मुक्त कर दे। पति अदालत में बुलाया जाता है और उससे पूछा जाता है कि वह अपनी पत्नी से वैवाहिक सम्बन्ध रखने के लिए तय्यार है वा नहीं। यदि वह इन्कार कर देता है तो अदालत एक साल तक अपने निर्णय को सुरक्षित रखती है जिससे इस अर्से में पति वा पत्नी अपना विचार बदल सके।

———

स्वागताध्यक्ष संयुक्त प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन श्री प० रामनारायण जी मिश्र बी० ए० काशी का

भाषण

आर्य कुमार सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष का एकमात्र कर्तव्य है कि वह प्रतिनिधियों का स्वागत करे। यह कर्तव्य सहल नहीं है। अतिथियों का आदर करना आर्य जाति के शिष्टाचार पद्धति में बड़ा ऊंचा स्थान रखता है। वर्तमान युग की कठिनाइयों के कारण हम लोग उस ऊँचे आदर्श से नीचे गिर गये हैं, इसलिए जब मैं आप लोगों का हृदय से स्वागत करता हूं, तब मैं यह भी जानता हूँ कि मैं आप लोगों की यथोचित सेवा नहीं कर सका।

थोड़े दिन हुए, मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि दो नवयुवक कलकत्ते से पेशावर इसलिए पैदल आ रहे हैं कि भारत के गावों की अवस्था से जानकारी प्राप्त करें। यूरोपीय नवयुवकों में इस प्रकार के उत्साह और साहस की कथायें अधिक सुनने में आती हैं। कोई बाईसिकिल उठाता है और संसार की परिक्रमा करने का संकल्प कर लेता है। कोई अपने साथ एक किश्ती लेता है और समुद्रों तथा नदियों के खतरनाक रास्तों द्वारा विश्व भ्रमण का निश्चय कर लेता है। कोई पैदल ही चल पड़ता है और पर्वतों की श्रेणियों और दुर्गम मार्गों को पार करने का हौसला करता है। हमारे देश के नवयुवक इस अंश में अभी पीछे हैं। इसलिए जब मैंने इन दो नवयुवकों के कलकत्ते से पेशावर तक जाने की कथा पढी और यह भी जाना कि वे गावों की अवस्था जानने के अभिप्राय से ऐसा कर रहे हैं, तो मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। भविष्य में भारतीय नवयुवकों को अपना केन्द्र गावों में बनाना पड़ेगा। गांवों में अब भी सच्चा भारत विराजमान है। अतिथि सत्कार में, त्याग में परिश्रमी जीवन में, स्वाभाविक सरलता में और खान-पान के संयम में वे शहर वालों से आगे हैं। हमारे सम्मानित पथ प्रदर्शक बाबा राघवदास जी का कहना सच है कि ग्रामीण लोग हमारे शिक्षक हैं। बहुत से विदेशी यात्रियों ने जो सौ बरस पहले भारत आये थे- भारत वासियों की सच्चाई की बड़ी तारीफ की है। यह सचाई अब भी गावों में मिलती है परन्तु जिन स्थानों पर कचहरियों का प्रभाव अधिक पड़ा है वहां झूठ का साम्राज्य है। अब भी हिमालय पर्वत के गावों में चोरी का नाम नहीं। कोई चीज आप कहीं भूल आइये, उसे आप बरस-छः महीने के बाद भी वहीं पायेंगे। मुझे ३७ बरस से देश के नवयुवकों और बालकों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बालचरों में मैंने यह अनुभव किया है कि जितनी जल्दी ग्रामीण लोग बालचर-शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं, उतनी जल्दी शहर के बालक प्राप्त नहीं कर सकते। दौड़-धूप फुर्ती, सादगी तो उनके साधारण गुण हैं। उनमें आह्लाद की अधिकता और परिश्रम करने की आदत स्वाभाविक होती है। उनके दुर्भाग्य से वे निर्धन रहते हैं, इसलिए उनकी उन्नति रुक जाती है। उन का क्षितिज संकीर्ण होता है, इसलिए वे आगे नहीं बढ सकते। जहां गाव वालों में इतना गुण हैं, वहां यह भी मानना पड़ेगा कि स्त्री पुरुषों की अशिक्षा के साथ-साथ वहां मिथ्या विश्वास, बाल विवाह, जात-पात की कठोरता और अनेक प्रकार की कुरीतियां पाई जाती हैं, जिनको दूर करने के अभिप्राय से भी आवश्यक है कि आर्य कुमार सम्मेलन गावों को अपना कार्य क्षेत्र बनाये और वहां के नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित करे।

मुझे दु ख है कि आर्य समाजों की तरह कहीं कहीं आर्य कुमार भी शास्त्रार्थ आदि उलझनो मे पड कर अपना जोवन नष्ट करते है। मनुष्य को बुद्धि से तर्क से, काम अवश्य लेना चाहिये परन्तु तर्क को ही जीवनकी कसौटी नही बनाना चाहिए। कवीन्द्र रवीन्द्र ने ठीक कहा है A mind all logic is like a knife all Blade—तर्क युक्त मस्तिष्क ऐसे चाकू के समान है, जिसमे फल नहीं होता। हमारा उच्च जीवन, हमारी उत्कृष्ट भावनायें, हमारे दैनिक जीवन की पवित्रता दूसरे लोगों को हमारी ओर जल्दी आकर्षित करती है। अभी थोडे ही दिन हुए, आजमगढ के जिले मे एक स्काटिश जमींदारकी मृत्यु हुई है। उनका नाम था मि० मार्टिन। वे देहात ही मे रहते थे। मै उनसे भली भाति परिचित था। ७६ वर्ष की अवस्था मे अभी उनकी मृत्यु हुई है। मरने के पहले उन्होने यह घोषित किया कि वे हिन्दू है और उन्होंने यह इच्छा प्रकटकी कि उनकी अन्त्येष्टि क्रिया हिन्दू रीति से की जाय। उनके जीवन मे यह परिवर्तन गाव वालोंके ससर्ग का परिणाम था। इसलिए आर्य कुमारों से मेरी पहली प्रार्थना यह है कि वे गावों को अपना केन्द्र बनायें और ग्रामीण नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित करें।

आर्य कुमार सम्मेलनों मे कुमार कम देखने मे आते है। अधिक संख्या मे ऐसे ही लोग दिखलाई देते हैं, जिनकी जिन्दगी के सब हौसले पस्त हो गये हैं। योरोप मे Y M C A, Y W C A, Youth Leagues, Scout Association, Wander Wogles, Balila सुनने और देखने मे आते हैं। उनमे अद्भुत आत्मिक बल होता है। मुझे कुछ थोडा सा परिचय उन संस्थाओं से प्राप्त हुआ था और उनमे से बहुतो से अभी तक मुझे पत्र-व्यवहार करने का सौभाग्य प्राप्त है। हमे उनकी कार्य प्रणाली से शिक्षा लेनी चाहिये। मैं चाहता हूँ कि अधिक से अधिक सख्या में आर्य कुमारों को दौड़ते हुए तैरते हुए नये स्थानों मे परिभ्रमण करते हुए, रोगियों की सेवा करते हुए, निरक्षर लोगों मे साक्षरता का प्रचार करते हुए, स्थान २ मे स्वाध्याय-मण्डल, कथा और हवन का आयोजन करते हुए देखू। यदि इस प्रकार सुसंगठित कार्य-क्रम बनाया जाय तो आर्य कुमार सम्मेलनों को सफलता प्राप्त होगी। प्रत्येक आर्य कुमार का कर्तव्य है कि वह संसार की प्रगति से परिचय प्राप्त करे। उसको मालूम रहना चाहिये कि योरप, अमरिका आदि किस ओर जा रहे है, कोनसी ऐसी बातें है कि जो उनको गढ़े मे ढकेल रही है और कोनसी ऐसी बाते है कि जो उन्हे ससार मे अग्रगण्य बना रही है। मै चाहता हू कि एक प्रान्त के नवयुवक दूसरे प्रान्त के नवयुवको से मिलें-जुले। हिन्दी प्रान्त के नौजवानो को कम से कम एक दूसरे प्रान्त की भाषा जानना चाहिए। जैसे बङ्गाली, गुजराती, मराठी, पञ्जाबी इत्यादि।

ये सब बातें हमारे आर्य कुमार सीखें और सिखायें, परन्तु याद रखें कि वे आर्य पहले है और कुमार पीछे। कुमार लोग जल्दी कुमार्ग मे पड सकते हैं, प्रलोभन उन्हे सत्य मार्ग से हटा सकते हैं, परन्तु यदि वे इस बात को नहीं भूलेंगे कि वे आर्य हैं, तो वे सत्य पथ से कभी नही डिगेंगे। इसलिये मैं आशा करता हूँ कि वे मनसा-वाचा कर्मणा आर्यत्व के ऊचे आदर्श का परिचय देते रहेंगे तथा देश और धर्म की सेवा करते रहेंगे। आर्य कुमारों के सामने सब से बडा आदर्श है महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीका। विद्वान्, तपस्वी, त्यागी, ब्रह्मचारी, देश भक्त और दृढ़ व्रत धारी ये सब गुण किसी एक महापुरुष मे एक साथ कम मिलते हैं। महर्षि का ऊँचा आदर्श सामने रख कर देश, काल और अवस्था के अनुसार आगे बढ़िये, यही मेरा निवेदन है।

सोना कसौटी और ज़ेवर

श्री बा० पूर्णचन्द्र जी,
बी ए एल एल बी एडवोकेट

ससार में सोने का बड़ा मूल्य है। सोने के आभूषण बड़े मूल्यवान समझे जाते हैं। सोने का सिक्का अन्य धातुओं के सिक्के से अच्छा समझा जाता है। सोना शरीर के लिए भी अच्छा है। इस तरह सोना एक अच्छी वस्तु है, और इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति उसको अपने पास रखना चाहता है। परन्तु सोने की उपयोगिता के साथ-साथ तीन प्रश्न हमारे सामने आते हैं। (१) सोने का वास्तविक स्वरूप क्या है ? (२) सोने की पहचान क्या है। (३) यदि असली सोना मिल भी जाय तो उस को किस प्रकार उपयोग मे लाया जावे। संसार मे ऐसे देश हैं, या किसी समय मे थे, कि जहा अनेक सोने की खान उपस्थित थीं, परन्तु वहा के निवासियों को पता तक नहीं था। जब उनको पता चला तो उनके पास न उसके परखने के साधन थे और न उपयोग मे लाने की बुद्धि थी।

ससार मे ऐसे भी देश हैं, जहा अनेक परखने वाले उपस्थित हैं, परन्तु सोना ही नहीं जिस को परखें। तीसरी एक वह श्रेणी है कि जहा सोने का पता भी है, और परखने के साधन भी उपस्थित हैं, परन्तु उपयोग में लाने के न साधन हैं और न शिक्षा। सोने का कितना ही अधिक मूल्य क्यों न हो, पर उसका उपयोग तभी होगा, जब वह खान से निकल आवेगा और साफ होकर उसके सिक्के, आभूषण तथा औषधिया बन ने लगेंगी। इस को और स्पष्ट करने के लिए हम आगरे के किनारी बाजार में तीन दुकानों की कल्पना कर सकते हैं। एक दूकान में धातु एक त्रित हैं। वहा पीतल भी है, और सोना भी। और दूसरी दूकान पर जहां एक चादना बिछी हुई है और अनेक प्रकार की कसौटिया रक्खी हुई हैं। उस दूकान के मालिक से पूछा कि क्या बेचते हो ? वह बोला कि कुछ नहीं। हम तो दिन भर बैठे हुए परखते रहते हैं। जो व्यक्ति सोना लेकर यहा आता है, वह अपना सोना परखवा ले जाता है। तीसरी दूकान है जहा बहुत दिनों से खुट-खुट होती रहती है, चिरकाल से सोने का कार्य होता है, परन्तु उसे न असली सोने के मिलने का स्थान विदित है और न परखने के साधनों का ज्ञान है। उस का मालिक बड़े गर्व से यह कहता है कि हमतो सदैव से यही करते आए हैं, हमारे पुरुषाओं ने भी कभी अगर-मगर की और न हम करें। विचार और व्यवहार की दृष्टि से तीनों प्रकार की दूकानें अपूर्ण हैं, और उनमें समानता उत्पन्न करने के लिए, वास्तविक रूप में उपयोगी बनाने के लिए तीनों में एक तारतम्य उत्पन्न कर देने की आ-

वश्यकता है। असली सोना, ठीक कसौटी और चतुर स्वर्णकार को एक जगह एकत्रित कर देना है। फिर देखिए कि बिना सुगध के भी सोने की कैसी प्रसिद्धि होती है। अब जरा इस उदाहरण को धार्मिक जगत् में प्रयोग करके देखें। धार्मिक जगत् मे ऐसे सम्प्रदाय हैं, जिनके पास अनेक प्राचीन शास्त्र उपस्थित हैं। परन्तु न उनके पास समझने के लिये तर्क है, और न क्रियात्मक रूप से जीवनमे उनके अनुसार कार्य करने के साधन। सैकड़ों-लाखों पुस्तकें पुस्तकालय में भरी है। परन्तु उनके पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने की कोई विधि नहीं है। उनके अतिरिक्त ऐसे तर्कवादी हैं, कि जो आयुपर्यन्त तर्क करते रहते हैं, परन्तु किस पर तर्क करें इसका कोई आधार नहीं। तीसरे वह धार्मिक सम्प्रदाय हैं, जो केवल रूढ़िवाद में फँसे हुए हैं, उन्हें न असली सिद्धान्तों का ज्ञान है और न उसके जाच के साधन हैं। ससार की यात्रा मे अथवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिए ससार में सुख और शान्ति स्थापित करने के लिए उपर्युक्त तीनों प्रकार के सम्प्रदाय असफल रहे है। ऐतिहासिक दृष्टि से हमने देखा कि पौराणिक हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्र व ब्रह्मसमाजियो का शुष्क तर्कवाद और बौद्धों का केवल आचरणवाद तीनों ही असफल रहे हैं। अपने को सनातन धर्मी कहने वाले भाई प्राचीन शास्त्रों की दुहाई देते हैं, परन्तु 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' के आधार पर उन शास्त्रों के समझने व समझाने की चिन्ता नही करते। उनके इस प्रकार के अन्ध-विश्वास से दुःखी होकर ऐसे दल उपस्थित हो जाते हैं जो किसी भी प्राचीन शास्त्र की सत्ता व महत्ता को स्वीकार नहीं करते। और फिर एक ओर अन्ध-विश्वास देख कर और दूसरी ओर केवल दन्त-कटाकिट देख कर प्राचीन शास्त्र व उनकी विवेचना दोनों से उदासीन हो जाते हैं। केवल आचरणों पर बल देने लगते हैं। आचरण पर बल देने वाली बात बहुत अच्छी होते हुए भी कुछ समय के पश्चात् इसी प्रकार असफल हो जाती है, जैसे बिना बुनियाद के एक बड़ा सुन्दर मकान कुछ समय के पश्चात ही वायु या जल के प्रवाह से नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। गौतम बुद्ध ने वाममार्ग से प्रभावित दुराचरणों को दूर करने के लिए सदाचार पर बल दिया और ईश्वर तथा वेद की विवेचना का विरोध नहीं किया परन्तु उसको अनावश्यक समझा। इस का परिणाम बहुत भयंकर हुआ। अहिंसा के पुजारी गौतम बुद्ध के अनुयायी आज प्रबल मास-भक्षक हैं और नास्तिक भी हैं। ऋषि दयानंद सब अर्थों मे ऋषि थे। और उनको भारतवर्ष ही नहीं समस्त ससार के वास्तविक सुधार की आवश्यकता थी, इसलिए उन्होंने सर्वाङ्गपूर्ण धर्म ससार के सम्मुख रक्खा। जिस वैदिक धर्म को ऋषि दयानद पुन. प्रचलित करना चाहते थे, वह श्रद्धा, तर्क और क्रियात्मक जीवन का एक सुन्दर मिश्रण है। ऋषि ने आर्य समाज के १० नियमों में भी इस सुन्दर मिश्रण की ओर सङ्केत किया है। वेद असली सोना है, और उनको पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनने-सुनाने और वह भी सत्य को ग्रहण करने और असत्य

ऋषि दयानन्द और पाठन प्रणाली

लेखक—श्री प० गंगाप्रसाद जी
उपाध्याय प्रयाग

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत पाठ्य प्रणाली वर्तमान में कहाँ तक व्यवहार्य है और कहाँ तक हमारे गुरुकुलों इत्यादि में यह व्यवहृत हो रही है, विद्वान लेखक ने इस लेख में यह चर्चा छेड़ी है। वे चाहते हैं कि 'सार्वदेशिक' में इसकी मीमांसा की जाय और इसके लिए उन्होंने आर्य विद्वानों को निमन्त्रण दिया है। यह मीमांसा स्वागत योग्य है। हम अपने आर्य विद्वानों से इस सम्बन्ध में विचार करने का अनुरोध करेंगे और निवेदन करेंगे कि 'सार्वदेशिक' के कालम इस म मासा के लिए उनके निर्णय पर रहेंगे—

सम्पादक

को त्य.गने के लिए उन्नत होकर। यह असली सोने की जाच के लिए असली अचूक कसौटी है। और सब काम धर्मानुसार करने की शिक्षा परखे हुए सोने से लाभ उठाना है। हमे न केवल वेदों पर गर्व करना चाहिए और न समस्त समय शास्त्रार्थों मे लगाना चाहिए, बल्कि प्राचीन वैदिक शास्त्रों का तर्क के आधार पर प्रचार और उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए उत्साहित करना चाहिए। ऐसे सर्वाङ्ग पूर्ण मार्ग को the Golden Rule कह सकेंगे। रूल आफ गोल्ड नहीं। 'सम्पत्ति ससार मे दी रूल आफ गोल्ड है अर्थात् धनिको का प्रभुत्व है, और स्वार्थ का बोल बाला है। और इसलिए सारे ससार मे दुःख और अशान्ति फैली हुई है। इस रूल आफ गोल्ड को दी गोल्डेन रूल से बदल देने की आवश्यकता है। और उसकी केवल एक ही विधि है। वह है आर्य समाज का प्रचार। आर्य समाज के प्रचार से प्राचीन वेदों का महत्व और तर्क से उस की सिद्धि और क्रियात्मक जीवन मे उनकी उपयोगिता सिद्ध होगी।

ऋषि दयानन्द की पाठन-प्रणाली के विषय मे मैंने अनेक व्याख्यान, लेख, वादविवाद आदि पढे तथा सुने हैं और अपनी योग्यतानुसार विचार भी किया है। गुरुकुलों की स्थापना का आरभ ही ऋषि प्रणाली से होता है। गुरुकुलों की पाठ प्रणाली मे समय समय पर परिवर्तन भी होते रहे हैं। गुरुकुल भी कई हैं और कई प्रकार के हैं। कोई छोटे हैं कोई बड़े। कोई प्रतिनिधि सभाओं के आधीन है कोई स्वतन्त्र कमेटियों के। कोई साधारण पाठशालाओ के समान हैं, कोई उन से भेद रखते हैं। परन्तु सभी गुरुकुलों के अधिकारी कहते हैं कि वे यथाशक्ति, यथाकाल और यथादेश ऋषि प्रणाली का अवलम्बन करते है। यथाशक्ति, यथाकाल और यथादेश में बड़ी गुंजाइश है। यह कहना कठिन होजाता है कि 'यथा' शब्द का कहा तक अनुचित प्रयोग हुआ और

कहा तक "चित। जब कभी किसी सज्जन को किसी गुरुकुल के विरुद्ध कुछ कहना होता है तो वह बड़े जोरदार शब्दों मे आक्षेप करता है कि ऋषि-प्रणाली के विरुद्ध कार्य हो रहा है 'ऋषि का विरोध' यह शब्द जादू का काम करते हैं और स्पीकर को अवश्य ही जनता को अप्रसन्न तथा कुपित करने में सफलता प्राप्त होजाती है। ऐसी सभाओं मे ऐसी स्पीचें सुनने का मुझ को कई बार अवसर मिलचुका है और मैं शांति के साथ कोने मे बैठा बैठा बहुधा यह विचार करने लगा हूँ कि ऋषि-प्रणाली वस्तुत क्या वस्तु है और उसको श्रोता तथा वक्ता ने कहां तक समझा है। ऋषि दयानन्द ने इस सम्बन्ध मे अपने विचार केवल सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में ही दिये हैं। कुछ सकेत अन्यत्र भी हों परन्तु विशेष इसी स्थल पर हैं। मैंने इस विषयमें अपने मस्तिष्क को खुला रक्खा है। यहा मैं किस निष्कर्ष पर पहुचा हूँ यह नहीं लिखने का, केवल ऋषि दयानन्द के बचनों को ही उद्धृत किये देता हूँ। रेखाङ्कित चिह्न मेरे हैं। क्यों कि मैं चाहता हूँ कि पाठक इनकी ओर विशेष ध्यान दें —

(१) प्रथम पाणिनि मुनि कृत शिक्षा जो कि सूत्र रूप मे है उसकी रीति·· सब अक्षरों का उच्चारण माता पिता सिखावें।

(२) तदनन्तर व्याकरण अर्थात् प्रथम अष्टाध्यायी के सूत्रों का पाठ ···फिर पदच्छेद फिर समास।

(३) एक बार इसी प्रकार अष्टाध्यायी पढ़ा के धातुपाठ अर्थ सहित और दश लकारों के रूप तथा प्रक्रिया सहित सूत्रों के उत्सर्ग अर्थात् सामान्यसूत्र ·······पश्चात् अपवादसूत्र।

(४) धातु पाठ के पश्चात् उणादि गण के पढ़ाने मे सुबन्त का विषय अच्छे प्रकार पढ़ा के पुन दूसरी बार शङ्का, समाधान, वार्तिक कारिका परिभाषा की घटना पूर्वक, अष्टाध्यायी की द्वितीयानुवृत्ति पढ़ावे।

(५) तदनन्तर महाभाष्य पढ़ावे।

(६) डेढ़ वर्ष मे अष्टाध्यायी और डेढ़ वर्ष में महा भाष्य पढ़के तीन वर्ष मे पूर्ण वैयाकरण हो कर... .... (३ वर्ष)

(७) व्याकरण को पढ़ के यास्कमुनिकृत निघण्टु और निरुक्त छ वा आठ महीने मे सार्थक पढ़ें और पढावें। (८ मास)

(८) तदनन्तर पिङ्गलाचार्य कृत छन्दोग्रन्थ... चार महीने में। (४ मास)

(९) तत्पश्चात मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण और महाभारत के उद्योगपर्वान्तर्गत विदुर नीति आदि अच्छे २ प्रकरण काव्य रीति से अर्थात् पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य, विशेषण और भावार्थ .....इन को वर्ष के भीतर पढ़लें। (१ वर्ष)

(१०) तदनन्तर पूर्व मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, साख्य और वेदा त अर्थात् जहां तक बन सके वहांतक ऋषिकृत व्याख्यासहित अथवा उत्तम विद्वानों की सरल व्याख्या युक्त छ शास्त्रों को पढ़ें पढ़ावें।

(११) परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढ़ने के पूर्व ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय,

तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पढ़ के छः शास्त्रों के भाष्य वृत्ति सहित सूत्रों को दो वर्ष के भीतर पढ़ावें।

(२ वर्ष)

(१२) पश्चात् छः वर्षों के भीतर चारों ब्राह्मण अर्थात् ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणों के सहित चारों वेदों के स्वर, शब्द, अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया सहित पढना योग्य है। (छः वर्ष)

(१३) आयुर्वेद अर्थात् जो चरक, सुश्रुत आदि ऋषि मुनि प्रणीत वैद्यक शास्त्र हैं उन को अर्थ क्रिया शस्त्र, छेदन भेदन, लेप, चिकित्सा, निदान, औषध, पथ्य, शरीर, देश, काल और वस्तु के गुण ज्ञान पूर्वक चार वर्ष के भीतर पढ़ें पढ़ावें।

(४ वर्ष)

(१४) तदनन्तर धनुर्वेद अर्थात् जो राज सम्बन्धी काम करना है इस के दो भेद एक निज राजपुरुष सम्बन्धी और दूसरा प्रजा सम्बन्धी होता है—इस राजविद्या को २ वर्ष में सीखकर। २ वर्ष)

(१५) गान्धर्ववेद कि जिस को गान विद्या कहते हैं उस में स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें। (वर्ष १)

(१६) अर्थवेद कि जिस को शिल्पविद्या कहते हैं उसको पदार्थ, गुण, विज्ञान, क्रिया कौशल-नानाविध पदार्थों का निर्माण पृथ्वी से लेके आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत सीखके

(वर्ष १)

(१७) दो वर्ष में ज्योतिष शास्त्र, सूर्य सिद्धान्त आदि जिस में बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है इसको यथावत् सीखें।

(२ वर्ष)

(१८) तत्पश्चात सब प्रकार की हस्तक्रिया, यन्त्र कला, आदि को सीखें। (वर्ष ?)

(१९) जिस से बीस या इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या उत्तम शिक्षा इत्यादि।

सं० १५, १६, १८ मे समय छूटा हुआ प्रतीत होता है। शेष मिलकर इक्कीस वर्ष होते हैं। सन् १८७५ के सत्यार्थ प्रकाश में भी लगभग इसी प्रकार का वर्णन है। कहीं कहीं कुछ विस्तार से दिया है। वहा स व कुछ अधिक है—

"इस प्रकार से २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़ लेगा।" सम्भव है कि 'तक' शब्द से आयु का बोध अभीष्ट हो। मैंने बीच बीच मे जो स्थल छोड़ दिये हैं उनमें कौमुदी आदि उन ग्रन्थों का भी उल्लेख है जिनको स्वामी जी ने निषिद्ध बताया है और उस के कारण भी दिये हैं कि प्रथम तो इन मे बहुत सा जाल है दूसरे परिश्रम अधिक करना पड़ता है और फल न्यून मिलता है।

इस से इतना तो पता चल जाता है कि ऋषि दयानन्द क्या चाहते हैं। परन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि वर्णन समास रूप से है, व्यास रूप से नहीं। समास भी इतना कि साधारण अध्यापक को आख मूद कर अनुसरण करने मे कठिनाइयाँ ही पड़ सकती हैं।

आजकल पाश्चात्य देशों में कई सौ वर्ष से पाठनविधि पर बहुत कुछ छानबीन हुई है। शिशु मनोविज्ञान का सूक्ष्म से सूक्ष्म रीति से अध्ययन

किया गया है और क्रियात्मक प्रयोगों द्वारा नित्य नये अन्वेषण होते रहते हैं। छोटी से छोटी बात पर छानबीन की जाती है अर्थात् बालक कैसे बैठे? कहां बैठे? किस प्रकार पुस्तक को पकड़े, वह पुस्तक आंख से कितनी दूरी पर हो। भवन कैसा हो? कितना प्रकाश आवे? कितना न आवे? किस ओर से आवे? पुस्तक पर कितना प्रकाश पड़े, आंख पर कितना। साथ साथ कितने विषय पढ़ाये जायं? कौन कौन विषय एक ही श्रेणी मे पढ़ाये जा सकते हैं? कौन कौन विषय क्रम की अपेक्षा रखते हैं? अक्षर किस अवस्था के लिये कितने बड़े हों इत्यादि। यह बातें देखने में तो छोटी प्रतीत होती हैं परन्तु बालकों की उपलब्धि, ज्ञान-शक्ति ज्ञान-राशि तथा बुद्धि-विकास के अतिरिक्त स्वास्थ्य पर बड़ा भारी प्रभाव डालती हैं। इसीलिये इनके ऊपर इतना समय, इतना धन और इतनी शक्ति का व्यय किया जा रहा है। ऋषि दयानन्द ने इनमें से अधिकांश के विषय में प्रतिकूल या अनुकूल कुछ नहीं कहा। संभव है कि यदि वह इनमे से किसी पर लिखते या उनसे प्रश्न किया जाता तो इनमें से बहुत सी बातों से वह सहमत हो जाते। ऋषि दयानन्द लकीर के फकीर न थे, वह परीक्षण और प्रयोग पर विश्वास रखते थे। वह बालकों की सर्वतोमुखी उन्नति चाहते थे। इसलिये यह मानना कठिन है कि ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियों को अपनी बुद्धि का प्रयोग करने के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ा, या अध्यापकों को जो कुछ करना है उस सब का ऐसा विस्तृत उल्लेख कर दिया है कि आंख मूंद कर चलना ही ठीक है।

मेरे मन में इस विषय में बहुत से प्रश्न उठा करते हैं। कुछ को नीचे दिये देता हूं —

(१) संस्कृत जैसी अप्रचलित या ईषत्प्रचलित भाषा के पढ़ाने और हिन्दी जैसी मातृ भाषा के पढ़ाने को विधि मे क्या अन्तर होना चाहिये?

(२) रटने की मात्रा किस अवस्था में कितनी होनी चाहिये जिससे आगे को विद्योपार्जन में कठिनाई न हो और बुद्धि का विकास भी पूर्णतया हो जाय?

(३) कितने विषय वैकल्पिक हों और कितने आवश्यक। आवश्यक विषयों में से किस किस का कितना कितना अंश किस अवस्था मे पढ़ाया जाय?

(४) देश की तात्कालिक अवस्था का पाठ-विधि के परिवर्तन में कितना स्थान हो?

(५) दर्शन, आयुर्वेद, अर्थवेद आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थ ज्यों के त्यों आरंभ कर दिये जाय या उनके पूर्व अन्य आरंभिक पुस्तकों को पढ़ाना भी आवश्यक है?

(६) साहित्य के ग्रन्थ (रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि) को महाभाष्य के पूर्ण होने तक स्थगित करना चाहिये या यह पहले भी पढ़ाये जा सकते हैं?

(७) अष्टाध्यायी के पढ़ाने का क्रम वही हो या वेदांग प्रकाश की भांति भिन्न २ हो?

(८) लघु कौमुदी या सिद्धान्त कौमुदी का कौनसा अंश दूषित और निषिद्ध है। क्या उनमें

सूत्रों का क्रम दूषित है या अर्थ ग़लत है, या उदाहरण अनुचित हैं या विवेचना भ्रमात्मक है?

(६) क्या यह सभव है कि कौमुदी के समान कोई ऐसी पाठ्य पुस्तक रची जा सके जिसमें कौमुदी के गुण तो हों और दोष न हों? क्या इस प्रकार की पुस्तक की आवश्यकता भी है या नहीं? यह भी प्रश्न है।

इस प्रकार के कई प्रश्न हैं जिनका उत्तर मैं नहीं देना चाहता या यों कहिये कि नहीं दे सकता। परन्तु मैं यह अवश्य चाहता हूँ कि विचारशील शिक्षित प्रेमी इन बातों पर ठडे दिल से विचार करें। यदि 'सार्वदेशिक' मे यह मीमासा आरभ हो जाय तो अच्छा ही है। एक बात अवश्य ध्यान में रहे। मीमासा युक्तियों तथा परीक्षाओं तक सीमित रहे, व्यक्तिगत आक्षेप या अभिप्रायों पर चोट न की जाय और न यह समझा जाय कि जो कोई किसी प्रणाली मे ननु-नच करता है वह स्वामी दयानन्द या आर्य्य-समाज का शत्रु है। हम जितना खुले दिल से इन बातों पर विचार करेंगे उतना ही हमारा मार्ग साफ़ होगा और बाहर वाले भी उससे प्रभावित होंगे। इस समय मुझे कई ऐसे संस्कृतज्ञ अध्यापकों का पता है जो भय के मारे अपना मुह नहीं खोलते। उनके विचार मन ही मन मे चक्कर काटते रहते हैं और उसका परिणाम भी बुरा पड़ता है।

जापान की विभूति

ले०—
श्री पं० ईश्वरदत्त जी

[लेखक महोदय अपनी यात्रा तथा जापान सम्बन्धी अपने अनुभवों को एक लेखमाला के रूप में 'सार्वदेशिक' के पाठकों के सम्मुख रखने का विचार रखते हैं। यह लेख उसी माला का एक अंश है। इस से पूर्व एक अंश मार्च १७ के 'सार्वदेशिक' में छप चुका है।]

जापान की राजधानी टोकियो में प्रात. ज्यों ही हमारी एक्सप्रेस ठहरी, मैं अपना सूटकेस उठा बाहर आया तो देखता क्या हूँ कि मेरा कुल सामान पहले ही किसी Goods train से आया हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। पतले बारीक कागज की छोटी-सी चिट जो मेरे सामान की रसीद थी, दिखा कर सुन्दर पोशाक वाले कुली ने मुझे टैक्सी में ला बिठाया। स्टेशन के बाहर ही सामने गगन विचुम्बी अट्टालिकाएँ, भव्य ऊंचे ऊंचे प्रासाद, पंक्तिबद्ध बड़ी बड़ी कोठियां और राजप्रासादके चारों ओर के सुन्दर बाग बगीचों में होकर मुझे जब टैक्सी ले जा रही थी मार्ग के रक्षक, सावधानी से नियम से आने-जाने के रास्ते दिखा रहे थे। फुट-पाथ पर अपूर्व भीड़ का सहज आना-जाना हो रहा था। शोर, धक्कम-धक्का और कोलाहल का काम न था। टैक्सी, ट्राम गाड़ियां, अबाध गति से चल रही थीं। बच्चे, पुरुष, स्त्रियां सभी प्रसन्नवदन सुन्दर कीमोनों और खड़ाऊं पहने खट-खट चले जारहे थे। मैं यह सब देख कर मन्त्रमुग्ध सा रह गया।

जातीय-जीवन के ऐसे सुन्दर रूप जिन पर आज जापान को गर्व है किस तरह बना लिए गए? कैसे थोड़े से समय में ही एशिया की नाक, जापान ने महा शक्ति का सम्पादन कर लिया है और 'एशियाई लोग कोरे आदर्श वादी हैं' यूरोप की इस भावना को असत्य प्रमाणित कर दिया है। १६वीं सदी के अन्तिम भाग ने एशिया की कुछ जातियों को संजीवनी शक्ति दी, वह उठी और उन्हों ने यूरोपसे टक्कर ली। यूरोप की शूरता का सारा गर्व छिन्न भिन्न हो गया और उसने देखा कि एशिया एक मुर्दार चीज नहीं है।

मेरा यह स्वप्न उस समय टूटा जब कि टैक्सी वाला मेरे बताए स्थान पर ले गया। भूल से नम्बर में ग़लती थी। वह स्थान जो मुझे चाहिए था, वह न मिला। झट से वह फिर पोलिस स्टेशन पर नकशा देखने और समझने गया और फिर टैक्सी दौड़ाने लगा। इस बार भी खोजने से वह स्थान न मिला। उसके शरीर और मस्तक से परेशानी की बूंदें झलक आईं। सिर्फ एकबार "सा कुमात्ता ने" बड़ी कठिनाई है, कहकर आगे फिर चल पड़ा। इस बार पूछते ? वह ठीक स्थान पर गया। मैं समझता था अवश्य पैसे के लेने में झगड़ा करेगा। अधिक की याचना स्पष्ट थी। उस के पैट्रोल और समय का मेरी असाव-

पं० ईश्वरदत्त जी 'विशारद'

इनैमल एक्सपर्ट



आप एक उत्साही और प्रतिभावान आर्य नवयुवक है। अभी हाल मे आप जापान से लौटे है और आजकल देहली मे अपने कार्य की आयोजना कर रहे है। सार्वदेशिक मे आप समय समय पर लिखते रहते हैं।

श्री बा० घनश्यामसिंह जी गुप्त एम० एल० ए०

प्रधान—

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा तथा आर्य विवाह ऐक्ट के निर्माता



आप सी० पी० लेजिसलेटिव कौंसिल के अभी हाल मे स्पीकर (प्रधान) निर्वाचित हुए हैं।

थानों से दुरुपयोग हुआ था। परन्तु मेरे आश्चर्य की उस समय सीमा न रही, जब कि मेरे दिए पैसे प्रसन्नता से ले लिए और चलते समय झुक कर 'दोमो आई गातो गोजाई मासता' मैं आप का बडा उपकार मानता हूँ कह कर चल दिया।

कैसी छोटी-सी महत्त्वकी बात उसकी रहीहोगी। जापान एक जीवित जाति का देश है। देश-प्रेम, विनम्रता, आज्ञाकारिता और अद्भुत संगठन जो जातीयता के प्रमुख चिन्ह हैं उनसे वे विभूषित हैं और गर्व अनुभव करते हैं। मेरे दो मास तो शहर के वार्ड्स, रास्ते, स्टेशन, समझने और भाषा याद करने, समझने और बोलने में निकल गए। प्रात भोजनादि से निवृत होकर टोकियो में निरुद्देश होकर उन की सजी दुकानें, ऐश्वर्य के जिन मे पृथ्वी के कुल पदार्थ सुलभ और मनोहारी भण्डार, बड़े २ स्टोर बाग़-बगीचे जिन की रमणीयता और हरीतिमा की क्या बात कही जाए आख फाडकर देखता और एक अनिर्वचनीय सुख अनुभव करता था। वहा दुकानों में सामान की वह वस्तुएं जो स्वावलम्बी और आत्म-विश्वासी आदमी के लिए आवश्यक हैं बड़े सुन्दर ढंग से सजी रखी रहती हैं। नन्हें बच्चों के लिए उन में निकम्मे खिलौने न रखकर ऐसा सामान रखा जाता है जिन के साथ खेल कर वह सच्चे सिपाही बनें और देश को उन्नत कर सकें।

कोई भी दुकान ऐसी नहीं होगी, जहा पर बच्चों के खिलौनों में तलवारें, दूरबीनें, कलाई की घड़िया और अन्य युद्धक्षेत्र में काम आने वाले सिपाही के साज न हों। भिन्न भिन्न प्रकार की बन्दूकें, पिस्तौल और शत्रु पर विजय पाने के अनेक सामान विशेष रूप से रखे जाते हैं। बच्चों का सब से प्रिय खिलौना वहा पर एक छोटी-सी फौजी फौलाद से ढकी हुई स्वरक्षित मोटर कार है। जिस पर हवाई बन्दूक इस ढंग से लगी हुई होती है कि उसका मुख शत्रु की ओर स्वेच्छानुसार किया जा सकता है।

बचपन मे ऐसी ही शिक्षा का यह परिणाम है कि जापान का प्रत्येक बच्चा सिपाही है। संसार में अन्यत्र कहीं भी आपको ६, ७, वर्ष के नन्हें बालक ऐसे नहीं मिलेंगे जो फौजी वर्दी धारण करके प्रसन्न होते हों और रण भेरी के गाने हर समय गुन-गुनाते हों। वहा गलियों में बच्चे अश्लील गन्दे गान नहीं गाते फिरते बल्कि उनका केवल एक यही स्वर होता है "सब से ऊचा झण्डा रहे हमारा"। वहा जातीयता का बीज बचपन में ही बोया जाता है। परन्तु भावी भारतीय जाति के लिए भारत क्या कर रहा है?

किसी भी देश के नवयुवक उस देश का मेरु दण्ड है। नवयुवकों के आधार पर राष्ट्र जीता है। जिस देश के नवयुवक अपने राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को ठीक तौर से समझ लेते हैं उस देश के भाग्य खुल जाते हैं। किसी भी देश के नवयुवकों के जीवन का उद्देश्य जिस में कुछ भी राष्ट्रीयता शेष रह गई है, केवल आजीविका ही प्राप्त करना नहीं है। वे ज्ञान प्राप्त करने के लिए आजीविका के साधन जुटाते हैं। उनके लिए सब से बड़ा उल्लास है, संघर्ष। मृत्यु एक जीवित

जाति के लिए साधारण सी बात है। जब हम जापान के नवयुवकों को मृत्यु के प्राङ्गण में उछलते, हँसते और ज्ञान-विज्ञान की बलि वेदी पर प्राण देते देखते हैं तो हमारे हृदय में ऐसी भावना उत्पन्न होती है कि हमारे देश के नवयुवक कब ऐसा रूप धारण करेंगे।

जब तक हमारे देश के नवयुवक मृत्यु से मैत्री नहीं कर लेते और मृत्यु को नहीं वर लेते *तब तक वह मृत्यु से निर्भय नहीं हो सकते।* हमें मृत्यु से मैत्री करनी चाहिए।

जापानी आत्म हत्या को पाप नहीं समझते। उनका सिद्धान्त है कि दुःखी जीवन की अपेक्षा मर जाना कहीं अच्छा है। इसी कारण जापान में आत्म घात बहुत होते हैं। उन में एक विशेषता साथ में यह रहती है कि ऐसे आत्म-घात के कारण प्राय देश-सेवा और कर्तव्य-पालन होते हैं। बहुत से सिपाही अथवा अधिकारी अपने कर्तव्य पालन में चूक जाने पर आत्म-घात कर लेते हैं और बहुत से इसलिए कि विदेशों से लौट कर वह जापानी भाषा सीखने में कच्चे रह जाते हैं।

एक बार जापान के महाराजा एक विद्यालय का निरीक्षण करने जा रहे थे। पुलिस अधिकारी की भूल से महाराज की सवारी निश्चित मार्ग छोड़कर अन्य मार्ग से चली गई, और इस प्रकार नियत समय से आध घण्टा पूर्व विद्यालय में पहुँच भी गई।

इस भूल के कारण एक प्रान्तीय गवर्नर और अनेक उच्च पदाधिकारियों ने अपने आप को दण्ड देने के लिए स्वत त्याग पत्र देदिए और सवारी का संचालन करने वाला पुलिस अधिकारी अपनी भूल पर बड़ा लज्जित हुआ। जापानी आदेश के अनुसार जब उसे और कोई उपाय न सूझा तो उसने अपनी स्त्री और बच्चे को अन्यत्र भेज कर स्वयं "हाराकीरी" पेट फाड़ लिया।

हमारे नेताओं मे से जो नित्य दल बनाते हैं, कितने ऐसे हैं जिनमें उत्तरदायित्व की ऐसी भावना है?

हमारे यहा आए दिन तागा, ट्राम और मोटर वालों की लापरवाही से पटरी पर चलने वाली अनगिनत जानें नष्ट होती हैं और प्राय आहत को छोड़कर ट्राम, मोटर वाले अपनी गाड़ी बड़े वेग से निकाल ले जाते हैं। परन्तु जापानी ट्राम कम्पनी के नौकर किसी भी आहत के लिये अपना रक्त देकर उसकी जान बचाने के लिए तैयार रहते हैं। एक दिन तीसरे पहर एक ट्राम गाड़ी चौरस्ते से जा रही थी कि एक नन्हा सा पाच वर्षीय बालक भागता हुआ गाड़ी की लाइन पर आ गया। गाड़ी चलाने वाला बहुतेरा चिल्लाया परन्तु बालक टकरा ही गया और उसकी टाँग कट गई। गाड़ी वाला तुरन्त ही बालक को समीप के हस्पताल में ले गया और अपने शरीर में से उसकी रक्षा हित रक्त निकलवा कर बच्चे को दिया। बच्चा बच गया।

परन्तु ऐसी दशा में भारत में क्या होता है? इसमें दोष उनका नहीं। उन बिचारों को उत्तरदायित्व की शिक्षा ही कब दी जाती है। वहां वाले तो इतना ही जानते हैं कि ट्राम्वे २० का साहब

पुलिस में अपने विशेष मेल-जोल के प्रभाव से छुड़ावेगा।

जापान में चोरी और डाकेजनी बहुत ही कम सुनी गई है। वहा के चोर और डाकू भी आत्मा रखते हैं और सिद्धान्त के पक्के होते हैं। एक बार एक नवयुवक "मैगीरू" थाने में सबेरे-सबेरे आया और प्रार्थना की कि वह चोरी के अभियोग में बन्दी कर लिया जाए। उसने बतलाया कि चोरी करते ही उसे ध्यान आया कि तीन वर्ष पूर्व वह "मैगीरू" में ही चोरी करने के अभियोग में पकड़ा गया था और यह वचन देने पर छोड़ दिया गया था कि यदि फिर कभी ऐसा काम करे तो उसकी सूचना "मैगीरू" थाने में दे। पुलिस ने इस बात की जाच की और सत्य पाया ! यह है जापान के कुकर्मी का आदर्श !

परन्तु भारत में न्याय और धर्म के ठेकेदार भी कदाचित् इस जन्म में इस आदर्श तक नहीं पहु च पाते। वहा अनेक बार तो अभियुक्त स्वत ही अपने पूर्व के दुष्कर्मों की गाथा वर्णन कर देते हैं और विशेष दण्ड पाने के लिए आग्रह करते हैं।

भारत में प्राय राजनैतिक कैदियों को कड़ा दण्ड दिया जाता है और न्याय सरकार की आज्ञा पर चलता है। परन्तु जापान के जज ऐसा नहीं करते ! वह भगवान् की आज्ञा मानते हैं।

वर्तमान सरकारी ढग को बदलने के विचार से हत्याएं करने के अभियोग में एक खूनी आत्-मण्डल के १४ सभासदों की जाच हो रही थी। जज महाशय नित्य मन्दिर में जाकर भगवान से प्रार्थना करते थे। "तू न्याय करने की सामर्थ दे"।

हे भगवान भारत में कब ऐसा होगा ?

आर्य विवाह एक्ट

लेखक—श्री०बा० घनश्याम सिंह जी
एम०एल०ए०, प्रधान सार्वदेशिक सभा

उद्देश

आर्य विवाह एक्ट का उद्देश अन्तरजातीय और शुद्ध किये हुए पुरुष और स्त्री के बीच की शादी को जायज करार देने का है।

वर्ण और जाति

हिन्दू धर्म शास्त्रों में सवर्ण विवाह जायज माना गया है। और कुछ हद तक अनुलोम विवाह भी विहित है। परन्तु प्रतिलोम विवाह का निषेध है। धर्म शास्त्रों में इस सम्बन्ध में जो शब्द प्रयोग हुआ है वह "वर्ण" है न कि "जाति"। "वर्ण" शब्द के अर्थ के बारे में आर्य समाज और कट्टर सनातनी भाइयों के बीच मतभेद है। आर्य समाज गुण, कर्म और स्वभाव से "वर्ण" मानता है। और हमारे कट्टर सनातनी भाई जन्म से ही "वर्ण" मानते हैं। इनके लिये "जाति" और "वर्ण" पर्यायवाची हैं। इसलिये इनके मत के अनुसार एक ही जाति के बीच की शादी जायज है और दूसरी नहीं। वर्तमान अंग्रेजी अदालतों में भी यही बात मानी गई है। इसका कारण यह है कि शुरू शुरू में जब अंग्रेजी अदालतें स्थापित हुई तब उनके सामने हिन्दुओं और मुसलमानों के आपस में के ऐसे मुकदमे जो कि "धर्मशास्त्र" या "शरीयत" से सम्बन्ध रखते थे, जब आया करते थे तब वे हिन्दू पंडित और मुस्लिम मौलवियों से सहायता लिया करते थे। ऐसे प्रश्न उन पंडितों और मौलवियों के सुपुर्द किये जाते थे और उनका दिया हुआ फैसला मान्य होता था। अदालतें उन पंडितों की राय के अनुसार ही फैसला दिया करती थीं। यह स्वाभाविक था कि उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार ही तब के पंडित और मौलवी अपनी राय देते रहे। परिणाम यह हुआ कि अदालतों मे भी "वर्ण" का अर्थ "जाति" होने लगा और अपने जाति के बीच का ही विवाह जायज माना जाने लगा। वही परम्परा अब तक अदालतों मे जारी रही।

महर्षि का सत्यार्थ

इसके विरुद्ध सबसे पहिली आवाज महर्षि स्वामी दयानन्द ने उठाई। यद्यपि यह ठीक है कि देश में उस समय भी कुछ ऐसे नेता थे जो अन्तरजातीय विवाह को बुरा नहीं मानते थे परन्तु उनमे और महर्षि दयानन्द मे एक बहुत बड़ा अन्तर था। वे लोग यह मानते थे कि धर्मशास्त्रों मे अन्तरजातीय विवाह का निषेध है और वे उनकी आज्ञाओं का उल्लघंन करने को अपने अनुयायियो को सिखाते थे। पवित्र धर्मशास्त्रों के विरुद्ध उनकी बगावत थी। स्वामी जी धर्म शास्त्रों के विरुद्ध बागी नहीं बल्कि उनके

कट्टर भक्त थे। उनका कहना था कि पवित्र धर्म-शास्त्रों में कोई त्रुटि नहीं। त्रुटि अर्थ करने वालों की है। "वर्ण" शब्द को "जाति" का पर्य्यायवाची कहना अनर्थ करना है और इसके विरुद्ध ऐलानिया तौर से सबसे पहिली आवाज उन्होंने ही उठाई।

आर्य समाज में अन्तरजातीय विवाह

महर्षि के इस अर्थ का आर्य समाज ने अनुकरण किया और आर्य समाज में कई ऐसे विवाह हुए जो जात पात के बन्धनों को तोडने वाले थे। कुछ काल पूर्व सार्वदेशिक सभा के दफ्तर मे जा रिपोर्ट आई उनसे पता चलता है कि लगभग ५०० ऐसी शादिया आर्य समाज मे हुई है।

आर्य समाज का महत्वपूर्ण प्रश्न

इसलिये यह प्रश्न आर्य समाज के लिये एक महत्वपूर्ण प्रश्न हो गया जिसका उपाय करना उसके लिये आवश्यक हो गया। अदालतों मे इन विवाहों के सर्वथा जायज होने में कोई भी शक बाकी न रह जावे इसके लिये उपाय करना जरूरी हो गया।

मथुरा के शताब्दि के अवसर पर यह प्रश्न उठाया गया और तब से लगातार प्रयत्न जारी रहा। श्रीमती सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा ने इस सर्वव्यापी प्रश्न को अपने हाथ मे लिया और समय समय पर असेम्बली के सदस्यों द्वारा कानून बनाने की चेष्टा करती रही। अन्त में बहुत परिश्रम और चिन्ताओं के बाद ता० १४ अप्रेल सन् १९३७ को गवर्नर जनरल साहब की स्वीकृति मिलने पर 'आर्य समाज विवाह एक्ट" पूर्ण रूप से कानून हो गया।

आर्य विवाह एक्ट की धाराएं

आर्य विवाह एक्ट निम्न प्रकार है —

छोटा नाम और विस्तार

१-(क) यह कानून "आर्य विवाह जायज बनाने वाला एक्ट सन् १९३७" कहलायेगा।

(ख) यह (एक्ट) तमाम ब्रिटिश हिन्दुस्तान मे जिसमें ब्रिटिश बलूचिस्तान और सथाल परगने भी शामिल हैं, लागू होगा और हिन्दुस्तान के अन्य भागों मे सम्राट की समस्त प्रजा को और ब्रिटिश हिन्दुस्तान के बाहर और उस पार की समस्त हिन्दुस्तानी प्रजा को भी लागू होगा।

आर्यसमाजियों का विवाह नाजायज नहीं होगा

२-बावजूद हिन्दू रीति या रिवाज के किसी विरुद्ध विधान के (हिन्दू कानून या रीति रिवाज में कोई विधान इसके विरुद्ध रहते हुए भी) विवाह के समय आर्य समाजी कहने वाले व्यक्तियों के बीच का कोई भी विवाह चाहे वह विवाह सम्बन्ध इस एक्ट के लागू होने के पूर्व हुआ हो या तत्पश्चात् हुआ हो, केवल इसी बात के कारण कि वे लोग किसी समय हिंदू समाज के भिन्न भिन्न जाति या भिन्न भिन्न उपजाति के थे या कि उनमें से कोई एक या दोनों ही विवाह के पूर्व किसी समय हिंदू धर्म के सिवाय किसी

अन्य धर्म के थे नाजायज नहीं होगा या कभी भी नाजायज था (रहा हो) ऐसा नहीं माना जावेगा।

एक्ट का विस्तार

यद्यपि यह एक्ट देखने मे बहुत छोटा है तथापि इसका विस्तार बहुत है जिसका दिग्दर्शन मात्र यहाँ कराया जा सकता है।

कहाँ कहाँ लागू होता है

यह एक्ट सारे ब्रिटिश हिन्दुस्तान में लागू तो है ही इसके अलावा देशी रियासतों में तथा विदेश मे भी बृटिश हिन्दुस्तानी प्रजा को लागू है।

किसको लागू है

यह एक्ट सिर्फ आर्य समाजियों को ही लागू है दूसरों को नहीं। उन विवाहों को लागू है जो आर्य समाजी पुरुष और आर्य समाजी स्त्री के बीच में हुई हों या आइन्दा होवें। विवाह के पहिले स्त्री या पुरुष किसी भी जाति या धर्म के क्यों न रहे हों परन्तु यदि विवाह के समय पुरुष और स्त्री दोनों आर्य समाजी हों तो उस विवाह को यह एक्ट लागू है।

कब से लागू है

कानून ता० १४ अप्रेल सन् १९३७ को मुकम्मिल हुआ। परन्तु यह कानून आर्यों के बीच के सब विवाहों को जायज करता है चाहे विवाह कभी भी हुए हों या होवें। आगे जो विवाह हो चुके हैं वे सब और आइन्दा जो होवें वे सब भी इस कानून की परिधि के भीतर आते हैं। इस प्रकार के लगभग ५०० विवाह जो आर्य समाज में हो चुके हैं उन सब के कानून की नजर में जायज होने में कोई शक नहीं रह गया। याद रहे कि यह बात भी नहीं है कि ये सब विवाह ता० १४।७।१९३७ को ही जायज हुए और इसके पहिले नहीं। विवाह के समय से ही जायज हैं।

आर्य समाजी कौन

इस कानून की मंशा में आर्य समाजी कौन है। "आर्यसमाजी" का किसी ऐसी परिभाषा के भीतर जकड़ना जो कि सब आर्यसमाजियों का ठीक ठीक बोध कराते हुए भी अदालत में निर्विवाद सिद्ध हो उतना ही कठिन है जितना कि हिन्दू, मुसलमान या अन्य धर्मावलम्बियों का है। व्यवहार में तो जिस प्रकार मुसलमान या ईसाई को बताना कठिन नहीं उसी प्रकार एक आर्य समाजी को पहिचानना कठिन नहीं। वास्तव में तो जो अपने को मुसलमान कहे वह मुसलमान, जो अपने को ईसाई कहे वह इसाई, इसी प्रकार जो अपने को आर्य समाजी कहे वह आर्य समाजी। आर्य समाज की प्रथा के अनुसार जिसको आर्य समाजी होने में कोई शुद्धि आदि संस्कार की आवश्यकता नहीं, वह तो कहने मात्र से ही आर्य होता है और जिसके लिये शुद्ध करने की प्रथा है वह शुद्ध होते ही आर्य होता है और आर्य होते ही इस कानून की परिधि में आ जाता है।

—०—

गुरुकुल और नव-शासन-विधान

लेखक—
राजवैद्य श्री सुधन्वा जी म्यू दिल्ली

—❀—

आर्य समाज ने अपने जन्मकाल से ही भारत देश के राजनैतिक सामाजिक एवं शिक्षा सुधार सम्बन्धी क्षेत्रों मे जो अनुपम राष्ट्र सेवा कर दिखाई है वह किसी से छिपी नहीं। यह एक मानो हुई बात है कि इस देश के राजनैतिक पहलू को वर्त्तमान दशा तक उन्नत करने में आर्य समाज की वैयक्तिक एवं सामूहिक रुप में की गई कुरबानी का एक बड़ा हाथ है। महात्मा गाधी जी के प्रगतिशील युगका कांग्रेस के जीवन में जबसे उदय होता है तबसे उसका समूचा प्रोग्राम याने सत्याग्रह आन्दोलन-खिलाफत-विदेशी वस्तु वहिष्कार-अछूत-उद्धार-हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार एवं हरिजन तथा ग्रामोद्धार तक जो जो कांग्रेस के कार्य हुए हैं उन में आर्य समाज वा उसके सभ्यों ने पूरा पूरा साथ दिया है और बहुत से कार्य तो कांग्रेस ने आर्य समाज के समूचे ही अपना लिए हैं। इसी कारण से लोग कांग्रेस को एक समाज सुधारक संस्था कहने लग पड़े हैं। सारांश यह कि ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य-समाज की कार्य पद्धति और कांग्रेस की गाधी युग वाली पद्धति में बहुत समानता एवं एक रूपता बनी है। शायद यही बड़ा आकर्षण था जिसने आर्य समाज के कर्मवीर नेता स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी उनके जीवनके अन्तिम वर्षों में कांग्रेस के कार्य की तरफ खींचा और स्वामी जी एक राष्ट्रीय नेता कहे जाने लगे।

पूज्य स्वामी जी ने कांग्रेस और आर्य समाज के कार्यों की इस अभेद भावना का पूरा २ भान किया और उसमें पूरी तत्परता से सफलता लाभ की। कर्मवीर नेता सदा मौके से लाभ उठाते हैं। उनका अपने निश्चित प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए लोक-संग्रह करने का अजीब ढंग हुआ करता है। वे एक खास रूढ़ि के साथ चिपके नहीं रहते। श्री श्रद्धानन्द जी महाराज का जीवन हम आर्यों के लिए इस सिद्धांत का ज्वलंत उदाहरण है। उन्होंने हिन्दी के माध्यम द्वारा ऊची से ऊँची शिक्षा साधन रूप गुरुकुल व कन्या शिक्षणालय खोलकर देश के सन्मुख एक अनूठा सफल कार्य कर दिखाया। उनके इन्हीं शिक्षालयों की नकल पीछे से गाधी युग में कांग्रेस ने भी स्थान स्थान पर राष्ट्रीय विद्यापीठ खोलकर की। यह क्या आर्यसमाज का कांग्रेस को पथ प्रदर्शन न था? आर्यसमाज के नेताओं ने देश के अनेक क्षेत्रों मे प्रतिकूल अवस्थाओं मे राष्ट्र-सुधार के कामों मे कर्णधार का काम किया है। राजा तथा प्रजा पक्ष की सहायता के अभाव मे भी इन महारथियों ने देश के सामने ग्रामोद्धार, शिक्षा प्रचार के अनेक सामयिक उपकारी कार्य कर दिखाए हैं।

आज जबकि हमारे देश मे नव शासन-विधान प्रजा पक्ष के हाथ सौंपा जारहा है, आर्य-समाज के ही नए पुराने कार्यों की चर्चा हो रही है—नव शासन-विधान के कर्णधार नेताओं का ध्यान फिर आर्य समाज की तरफ हिन्दी माध्यम द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्यान्य सामयिक समस्याओं के सुलझाने के लिए लगा हुवा है। वर्त्तमान अंग्रेजी माध्यम द्वारा शिक्षा देने वाली विलायती शिक्षा-पद्धति की इस देश के लिए प्रतिकूलता एवं निस्सारता का भान नए कांग्रेसी नेताओं को पूरा २ हो गया है। ऐसी विषम स्थिति में क्या आर्य समाज के गुरुकुल शिक्षालय वा उसके स्नातकों को देश की इस समस्या को हल करने के लिए अग्रसर नहीं होना चाहिये? मेरे ख्याल में देश के छ कांग्रेसी सूबों में जहा हिन्दी भाषी प्रजाजन का बहुमत है, प्रारम्भिक शिक्षा प्रचार हिन्दी भाषा-माध्यम द्वारा गुरुकुल शिक्षालयों के समान कर देना चाहिये। हिन्दी माध्यम को सर्वत्र यूनीवर्सिटियों में इंग्लिश माध्यमसे बदल देना चाहिये। कालेजों की सख्या कम करके प्रारम्भिक शिक्षालयों की संख्या बढ़ानी चाहिये।

यूनीवर्सिटियों मे हिन्दी माध्यम द्वारा पढ़ाने के लिए उपयुक्त विषयों के प्रोफेसर गुरुकुल के योग्य स्नातकों को भरती करना चाहिये। आर्य समाजके अधिकारियों को चाहिये कि वे इन कांग्रेसी सूबों के प्रधान सचिवों से मिलकर अपने इस सफल परीक्षणके अनुभव पर उन्हें मूल्यवान सलाह देते हुए उनसे उक्त कार्य के लिए अनुरोध करें। हो सके तो गुरुकुल यूनीवर्सिटी को अधिक से अधिक लोकोपयोगी बनाने के लिए उपयुक्त राजाश्रय लेवें। यह एक सुवर्ण अवसर है जोकि गुरुकुल शिक्षालयों के सफल जीवन का नव प्रभात है। देश के सब प्रान्तों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को शीघ्र मिल बैठकर इस मौके से लाभ उठाना चाहिये और नवशासन में हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा सब तरह की शिक्षा के कार्य को अपने हाथ मे लेना चाहिये। पंजाब तथा यू० पी० आर्य प्रतिनिधियों से मेरा विशेष रूपसे यह अनुरोध है कि वे अपने गुरुकुलों के शिक्षापटलों के कार्य कर्ताओं का एक डेपूटेशन कांग्रेस के नए मिनिस्टरों से मिले और राष्ट्रीय शिक्षा के कार्य को अपने सिपुर्द ले लेवें तथा गुरुकुलों के स्नातकों द्वारा देश की भावी शिक्षा पद्धति को सुचारु रूपसे चलावे।

हमारे देश मे सन् १९३१ की जन गणना के अनुसार १०० मे सिर्फ ८ आदमी अक्षर बोध का ज्ञान रखते हैं। देश की ऐसी निराशा जनक शिक्षा की दशा का ध्यान करते हुये इस कार्य की गम्भीरता और भी ज्यादा हो जाती है।

क्या आर्य सार्वदेशिक सभा दिल्ली के अधिकारी वर्ग मेरे इन विचारों पर कुछ गौर करेंगे?

शंका-समाधान

भारत समाज मदुवार (मद्रास) और हिन्दू समाज राज महेन्द्री ने हिन्दू धर्म पर एक प्रश्नावली तय्यार करके हिन्दू और आर्य विद्वानों तथा नेताओं की सेवा में उनकी सम्मति जानने के लिये भेजी थी, इस उद्देश्य से कि हिन्दू धर्म का बदलते हुए ज़माने के अनुकूल एक सुनिश्चित रूप निर्धारित करने के कार्य में जिसकी वर्तमान में मुख्यतया हिन्दुओं के उन्नत वर्गों में आवश्यकता अनुभव की जा रही है, उनका उपयोग किया जासके।

इस प्रश्नावली के सम्बन्ध में जो उत्तर आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान श्री० पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय की ओर से भेजे गए हैं उन्हें हम अपने पाठकों के लाभार्थ क्रमश यहां देते हैं—

1. Scriptures

Questions —

1 What works, if any, should be fixed as Scriptures binding on all Hindus ?

2 In the case of Hindus not knowing Sanskrit, should the above Scriptures be translated into the vernaculars for their use ?

3. What do you consider are the Basic Truths of Hinduism ?

(a) The One Existence, (b) The Many, (c) Reincarnation (d) Karma, (e) Yajnas, (f) Visible and Invisible Worlds. (g) Existence of Devas and Rishis. These and what else ?

Answers :—

1. The Vedas, the original text, are the only scriptures of the supreme authority. For the social unity, Manusmriti can be formed as a workable basic unit.

2 The translations of the scriptures into vernaculars are very necessary, but the text should always follow along with them, as it is not always possible to convey the right idea through translations.

3. The basic truths of the Hinduism as such are difficult to single out. As far we are concerned, we believe in the eternal existences (independent) of God, Souls, and Prakriti, (the trinity or the three eternals) souls under going reincarnations and transmigrations, through the doctrine of Karma, attaining Mukti finally, Panchamahayajnas, and Shodasha Samskaras, the invisible and visible worlds with respect to state and condition, not separated by space or time; Devas and Rishis are humans with special enlightenments and not

species by themselves The Vernashrama Dharma is a basic truth of the Hinduism

धर्म ग्रन्थ

प्रश्न

(१) कौन से धर्म-शास्त्र हिन्दुओ के लिए माननीय ठहराए जाने चाहिएँ ?

(२) जो हिन्दू सस्कृत नहीं जानते हैं क्या उनके उपयोगके लिए उपर्युक्त धर्म शास्त्रोंका लोक-भाषाओं में अनुवाद होना चाहिए ?

(३) क्या आपकी सम्मति में हिन्दू धर्म की आधारभूत सच्चाइया निम्न हैं या अन्य कोई हैं ?

(१) एकेश्वरवाद (२) अनेकेश्वरवाद (३) पुनर्जन्म (४) यज्ञ (५) दृश्य और अदृश्यमान जगत (६) देवों और ऋषियों की सत्ता।

उत्तर

(१) आदि ज्ञान की पुस्तक केवल वेद ही सबसे ज्यादा प्रामाणिक धर्म-ग्रन्थ है। सामाजिक एकता के लिए मनुस्मृति व्यावहारिक आधार के रूप में निश्चित की जा सकती है।

(२) धर्म ग्रन्थों का लोक भाषाओं में अनुवाद जरूरी है परन्तु अनुवाद के साथ मूल भी सदैव होना चाहिए क्योंकि अनुवादों के द्वारा ठीक २ भाव का व्यक्त होना सदैव सभव नहीं होता है।

(३) वर्तमान हिन्दू धर्म की आधारभूत सच्चाइयों का बतलाया जाना कठिन है। जहा तक हमारा सम्बन्ध है हम ईश्वर, जीव और प्रकृति की नित्यता में ,कर्मानुसार जीवों के आवागमन मे और अन्त में मोक्ष प्राप्ति मे, पचमहायज्ञों में, सोलह संस्कारों में, देश या कालसे अबाधित दशा और अवस्था के रूपक दृश्यमान और अदृश्यमान लोकों में, विश्वास रखते हैं। देव और ऋषि विशिष्ट मनुष्य होते हैं। मनुष्यों से भिन्न अपनी उनकी कोई जाति नहीं होती है। वर्णाश्रम धर्म हिन्दू धर्म की एक आधार-भूत सच्चाई है।

श्रीमती हैरियट ऐलीज़बेथ स्टो

लेखक—
श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

As long as the baby sleeps with me nights I cannot do anything, but I will do it at last. I will do that thing if I live."

पाँच बच्चों की मा ने जब उसके छठवाँ बच्चा हुआ था, तब अपनी भाभी को एक पत्र में उपर्युक्त वाक्य लिखा था—"भाभी, जब तक बच्चा रातको मेरे पास सोता है, तब तक मैं कोई काम नहीं कर सकती ; पर मैं करूँगी ज़रूर। अगर ज़िन्दा रही, तो दासत्व प्रथाके ख़िलाफ़ ज़रूर लिखूँगी ."

अमेरिका मे उन दिनों गुलामी की प्रथा ज़ोरों पर थी। बेचारे नीग्रो लोगोंको नरकतुल्य यातनाएँ सहनी पड़ती थीं। जानवरों की तरह उनकी ख़रीद और बिक्री की जाती थी। मा बच्चों से अलग की जाती थी, पति पत्नीसे, पिता पुत्र पुत्रियों से। गुलामो की इस दुर्दशा को देखकर श्रीमती हैरियट एलीज़बेथ स्टो का दिल पिघल गया, और उन्हों ने दृढ प्रतिज्ञा करली कि इस दासत्व प्रथाके विरुद्ध अवश्य लिखूँगी।

एक बार उन्हों ने लिखा था—"अगर मेरे समुद्र में डूबने के साथ साथ गुलामीकी प्रथाके तमाम पाप और अत्याचार भी डूब जायँ, तो मैं समुद्र में डूब कर प्राण देनेको भी तैयार हो जाऊँगा।"

रविवार का दिन था। मिसेज़ स्टो गिरजाघर गई हुई थीं और वहाँ धर्मोपदेश सुन रही थी कि एक साथ उनके मनमे पुस्तक प्रारम्भ करदेने की प्रेरणा उत्पन्न हुई, और उन्हों ने पहला अध्याय वहीं पर बैठे बैठे लिख डाला। फिर उन्होंने वह अध्याय अपने बच्चों को सुनाया। सुनकर बच्चों की आँखों से आँसू टपाटप टपकने लगे! इतने में मिस्सेज़ स्टो के पतिदेव भी आ गये। बच्चों को रोते हुए देखकर वे आश्चर्यचकित रह गये। समझ मे नहीं आया कि माजरा क्या है। तब मिसेज स्टोने वह अध्याय पतिको भी सुनाया, और वे भी रोने लगे! इस प्रकार प्रारम्भ हुआ उस महत्व-पूर्ण ग्रन्थका, जिस ने आगे चलकर संसार मे अक्षय कीर्ति प्राप्त की, जिसका अनुवाद शीघ्र ही तेईस भाषाओं में हो गया और जिसकी लाखों ही कापियाँ शीघ्र ही जनताके हाथों तक पहुँच गई। इस पुस्तकका नाम है 'Uncle Tom's Cabin' अर्थात्—'टाम काका की कुटिया'। इस पुस्तकने हजारों-लाखो ही आदमियों को रुलाया और हजारों ही आदमियों को गुलामी की प्रथाका घोर विरोधी बना दिया। औरतें बर्तन साफ करते समय आपसमें बातचीत करतीं—'बहन तुमने 'टाम काकाकी कुटिया' पढी है? बड़ी हृदयवेधक है!" मज़दूर बोझा ढोते समय कहते—"बड़ी भयंकर पुस्तक है! पढ़कर तबीयत दहल जाती है।" क्या सड़क पर क्या बाज़ारों में और क्या होटलों में, सर्वत्र इसी की चर्चा थी। इस किताब ने लोगों के हृदय में आग सी लगा दी। वे दक्षिणी रियासतो से, जहाँ यह गुलामी की प्रथा प्रचलित थी, घोर घृणा करने लगे। दरअसल इस एक पुस्तकने गुलामी-प्रथा के उच्छेद के लिए जो कार्य किया, वह किसी पुस्तक ने अभी तक नहीं किया था। उत्तरी और दक्षिणी रियासतों मे इसने युद्ध करा

दिया और गुलामी-प्रथाको जड़-मूल से नष्ट ही करा दिया। सन् १८६३ में जब मिसेज़ स्टो अमेरीका के पार्लीमेंट भवन White House में गईं और उनका परिचय प्रेसिडेन्ट लिंकनसे कराया गया, तो लिंकनने, जो क़दके काफ़ी ऊँचे थे, मिसेज़ स्टोसे हाथ मिलाते हुए कहा— "Is this the little woman who brought on so great a war ?"—"क्या इसी छोटी सी महिलाने यह महान युद्ध करा दिया ?"

आशा है, इन मिसेज़ स्टो का संक्षिप्त परिचय 'विशाल भारत' के पाठक-पाठिकाओं के लिए उपदेश-प्रद होगा। हैरियट एलिज़बेथ का, जिनका नाम आगे चलकर स्टो हुआ था, जन्म २४ जून सन् १८११ को संयुक्त राज्य अमेरिका के लिचफील्ड नामक स्थान में हुआ था। वे अपने माता-पिताकी सातवीं सन्तान थीं। हैरियटको अधिक दिनों तक मातृस्नेह प्राप्त नहीं हुआ। जब वे कुल चार वर्ष की ही थीं, इनकी पूज्य माता का स्वर्गवास हो गया। इसलिए इनके लालन पालन का भार पड़ा इनकी बड़ी बहन कैथेराइन पर, जो उस समय पन्द्रह वर्षकी थीं। कैथेराइन सुशिक्षित थीं, और उन्होंने एक स्कूल भी क़ायम कर रखा था। हैरियटको उन्हों ने अपने स्कूल में ही पढ़ाया और आगे चलकर इसी स्कूल में ये छोटी बहन मास्टरनी भी बन गईं। सन् १८३२ में हैरियट के पिताजी एक धार्मिक विद्यालय के प्रधान बनकर सिनसिनाटी नामक नगर को गये और उनके साथ में दोनों बहनें भी गईं। बड़ी बहनका विचार एक कन्या-महाविद्यालय क़ायम करने का था, और हैरियट अपनी बहनकी सहायक के रूप में वहाँ गई थी। विद्यालयके साहित्यिक जीवन में हैरियट ख़ूब भाग लेती थी। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में छोटे-छोटे लेख भी लिखती थी। दो-चार कहानियाँ और स्केच भी उसने लिखे थे, और अपनी जीजी की मदद से उसने भूगोल की एक किताब भी बना डाली थी। पिताजी के धार्मिक विद्यालय में एक अध्यापक थे, जिनका नाम था कैलविन ऐलिस स्टो। ६ जनवरी सन् १८३६ को हैरियट का विवाह मि० स्टोके साथ हुआ और तबसे वे श्रीमती स्टोके नाम से प्रख्यात हुईं। दुर्भाग्यवश मिस्टर स्टोका स्वास्थ्य ख़राब रहा करता था और आमदनी भी उनकी थोड़ी ही थी। मिसेज़ स्टोको बहुत चिन्ताग्रस्त रहना पड़ता था और कभी २ खाने-पीने का भी कष्ट हो जाता था, इसलिए पतिव्रता मिसेज स्टो को लेख लिखकर कुछ कमाना पड़ता था। इस प्रकार अपने पति की आर्थिक सहायता भी वे करती थीं। सन् १८४३ में 'मे फ्लावर' नाम से उनकी कहानियों और स्केचों का संग्रह प्रकाशित हुआ। सन् १८५२ में उनकी अमर पुस्तक 'टाम काकाकी कुटिया' छपकर जनता के सम्मुख आई। किन किन कठिनाइयों में मिसेज़ स्टो को अपना साहित्यिक कार्य करना पड़ता था, इसका अन्दाज़ा निम्न लिखित बातों से लग सकता है।

उन्हें घर-गृहस्थी का सारा काम—बर्तन साफ करना, कपड़े धोना, कपड़े सीना, भोजन बनाना, सामान ठीक-ठिकाने रखना इत्यादि—ख़ुद ही करना पड़ता था। ख़ुद ही वह किवाड़ों पर रंग करती थीं, तकिये, गिलाफ़, रजाई सीती थीं, और तो और पतिके जूतों की भी सिलाई वे ख़ुद ही कर लेती थीं। एक बार वे अपने लिए कोई कपड़ा काट रही थीं कि उनकी एक पड़ोसिनने कहा—"कोई नमूना भी तुम्हारे सामने है कि यों ही कपड़ा काटती जाती हो ?" मिसेज स्टोने

उत्तर दिया—"बहन, मेरा ख़याल है कि अपनी शकल तो मैं जानती ही हूँ।" पतिदेव हेब्रू, ग्रीक, लेटिन तथा अरबी के ग्रन्थ पढ़ा करते थे और विद्यालय में बाइबिल पढ़ाया करते थे। अपनी पत्नी से प्रसन्न होकर एक बार उन्होंने कहा था—"तुम्हारी जैसी स्त्री दुनियामें थोड़े ही मिल सकती है। भला, कौन औरत ऐसी होगी, जो इतनी परिश्रमशील हो और इतनी किफ़ायतशार, जिसकी भावुकशक्ति इतनी प्रबल हो, पर जो कभी डाट फटकार न बतलावे, जिसमें इतना माधुर्य हो और साथ ही साथ इतनी दृढ़ता।"

इसका उत्तर मिसेज़ स्टोने बड़ी मधुरतापूर्वक दिया था—"If you were not already my dearly loved husband, I should certainly fall in love with you"—'अगर तुम पहले से ही मेरे प्रिय पति न होते, तो जरूर ही तुम्हारे गुणों पर मुग्ध होकर मैं तुम्हारे प्रेम में फँस गई होती।'

मिसेज़ स्टो में मातृत्व काफ़ी था। बच्चों की सेवा-शुश्रूषा करते हुए अपने जीवन को खपा देने में वे अपना गौरव मानती थीं। स्कूल के दिनोंकी अपनी एक सहेली को उन्होंने चिट्ठीमें लिखा था—"बहन, मुझे तो अपने छः बच्चों की देखभाल और उनका पालन-पोषण करनेमें बड़ा आनन्द आता है। इच्छा होती है कि इसी प्रिय कार्यको करते-करते बूढ़ी हो जाऊँ, अपना जीवन बिता दूँ। मैं चाहती हूँ कि कभी तुम यहां आकर इन बच्चों के बीचमें मुझे देखो। मेरी सारी चिन्ताओं और विचारों का वे केन्द्र हैं, और यदि वे कहीं दूसरी जगह चले जावें, तो मेरे जीवनके लिए रह ही क्या जाय? ये बच्चे ही मेरे कार्यक्षेत्र हैं और डरती काँपती हुई इन्हींकी मैं सेवा किया करती हूँ।"

सन् १८४९ में सिनसिनाती नगर में हैज़ेका प्रकोप हुआ और एक दिनमें ही ११० आदमियों की मृत्यु हो गई, जिनमें एक बच्चा मिसेज़ स्टो का भी था। पतिदेव स्वास्थ्य-सुधारके लिए दूर गये हुए थे, और वे बेचारी अकेली ही बच्चोंकी देखभाल कर रही थीं। प्रेमी माता के दुःखका अनुमान ही किया जा सकता है। जिन दिनों मिसेज़ स्टो पुत्र शोक के वज्राघात से पीड़ित थीं और जिन दिनों उनकी गोदका बच्चा दूध पीता था, उन्हीं दिनों मातृ-हृदय की असीम करुणा से प्रेरित होकर उन्होंने इस अमर पुस्तककी रचना की थी। पुस्तक के फ़ार्म जब छप-छपके आते थे, तो वे उन्हें अपने पति और बच्चों को सुनाती थीं। सब बैठकर एक साथ पवित्र आँसू बहाते थे। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि 'टाम काकाकी कुटिया' ने आगे चलकर असंख्य पाठक-पाठिकाओंको रुलाया। पुस्तककी सफलताका अन्दाज़ इसीसे लगाया जा सकता है कि पुस्तकके छपते ही उसकी तीन लाख प्रतियाँ एक साथ बिक गईं। आठ प्रेस इसी अकेली पुस्तक के छापने में लगे हुए थे। अमेरिकाके प्रसिद्ध प्रसिद्ध लेखकों और कवियोंने मिसेज स्टो के पास बधाई की चिट्ठियाँ भेजीं। इंग्लैण्ड के सुप्रसिद्ध लेखक डिकिन्स, मेकाले किंग्सले, लार्ड कार्लाइल लाइसिल इत्यादि ने उनका अभिनन्दन किया। इंग्लैण्ड में पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि एक सालमें इसकी डेढ़ लाख प्रतियाँ बिक गईं। पेरिस में इसके आधार पर एक ड्रामा लिखा गया और खेला गया। वह आठ जगहोंमें समाप्त हुआ था और जनता इसे रात के डेढ़ बजे तक देखती रही और रोती रही। फ्रेंच, जर्मन, रशियन, जापानी, चीनी, हिन्दी इत्यादि भाषाओं में इसके अनुवाद हुए।

पुस्तकके प्रकाशित होनेके चार महीने बाद मिसेज़ स्टो को १०हज़ार डालर या (३०हज़ार रुपये) का एक चेक मिला और तब उन्होंने अपनेपतिको लेकर पहली बार यूरोप-यात्रा की। यूरोप से लौटकर उन्होंने एक दूसरी पुस्तक लिखी—'A Key to Uncle Tom's Cabin'—'टाम काकाकी कुटिया की कुंजी'। इस ग्रन्थ में उन्होंने अकाट्य प्रमाणों द्वारा अपनी कहानी की सत्यता सिद्ध की थी। मिसेज़ स्टो ने और भी कई ग्रन्थ लिखे, जिनमें मुख्यके नाम ये हैं—

(1) Dread, a Tale of the Dismal Swamp (2) The Minister's Wooing

उन्होंने धार्मिक कविताओंका एक संग्रह भी प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त वे 'अटलांटिक मथली,' 'इण्डिपेंडेण्ट,' 'क्रिश्चियन यूनियन' इत्यादि पत्रोंमें लेख भी लिखा करती थीं। उनके भाई इन पत्रों में सहायक सम्पादक या सम्पादकका कार्य करते थे, और इन दोनों भाई बहनों की साहित्य सेवा वास्तव में आदर्श थी। सन् १८६३ में पतिदेवने अपने अध्यापकी के कार्य से छुट्टी ले ली। मिसेज़ स्टोका एक पुत्र कैपटन फ्रेडरिक बीचर स्टो युद्धमें वीरतापूर्वक लड़ा था और बहुत घायल होगया था। प्रेमी माताने अपने पुत्रके स्वास्थ्य लाभ के लिए फ्लोरिडा में एक कोठी खरीदी और वहाँ उसके साथ रही। सन् १८८६ में मिसेज़ स्टो के पतिका देहान्त हो गया। इसके बाद दस वर्ष तक और वे जीवित रहीं, पर अब इस सती-साध्वी विधवाका जीवन सर्वथा एकान्तमय था। पहली जुलाई सन् १८१६ को ८५ वर्षकी उम्र में स्वर्ग सिधारी। अक्टोबर नामक स्थानमें पतिकी समाधि के पास ही उनकी समाधि बनी हुई है।

वह दिन हमें अच्छी तरह याद है, जब रेलमें बैठे बैठे हमने 'टाम काकाकी कुटिया' पढ़ी थी और पुस्तकसे मुँह ढककर आंसू बहाये थे, जिससे साथ के यात्री रोने का कारण न पूछ बैठें। यदि जीवन में कभी अमेरिका-यात्रा का अवसर मिला, तो दो स्थानोंकी तीर्थ-यात्रा हम अवश्य करना चाहते हैं, एक तो एमर्सनको समाधि और दूसरे इस आदर्श दम्पति मिस्टर और मिसेज़ स्टो की समाधि।

वह सौभाग्यपूर्ण दिन कब आवेगा, जब हमारी मातृभाषामें भी श्रीमती हैरियट एलीज़बेथ स्टो जैसी लेखिकाएँ उत्पन्न होंगी।　　　　(विशालभारत)

विविध पत्र पत्रिकाएँ

एक मस्जिद

उपर्युक्त शीर्षक में श्री चन्द्रगुप्त वेदालङ्कार 'गुरुकुल' में लिखते हैं —

पिछले दिनों मैं निजाम हैदराबाद में था। घूमता-घामता एक दिन सिकन्दराबाद जा पहुंचा। मेरे साथ मेरे एक मित्र थे। वे मुझे सीधे स्टेशन की ओर ले गये और कहने लगे कि आज मैं आपको एक ऐसी वस्तु दिखाऊँगा जैसी सम्भवतः आपने अभी तक नहीं देखी होगी। मैं चकित था कि भला वहां ऐसी कौनसी वस्तु है जो अपनी विशेषता से इतनी निराली है कि सारे भारत में भी उसकी समानता को कोई दूसरी वस्तु न मिलेगी। जब स्टेशन कुछ ही दूर रह गया तो उन्होंने एक दम उंगली से इशारा किया और कहा वह देखिये। सचमुच उस दिन जो दृश्य मैंने देखा वैसा मैं कहीं नहीं देख सका था। वह दृश्य मेरी आंखों में बस गया है। उसे मैं भुलाये भी नहीं भूल सकता हूँ।

सायंकाल का समय था। अन्धकार की छायें संसार को कुछ कुछ काला बना रही थीं। बाजारों की बिजलियां जल चुकी थीं। मेरे सामने कुछ ही दूर एक मकान था जिसके बीच की पतली दीवार जो सम्भवतः एक ईंट की थी उसे दो भागों में बांट रही थी। दीवार के इस ओर एक देवालय था। उसमें घण्टों की टन टन के साथ आरती उतारी जा रही थी। इसी के दूसरी ओर बीस तीस मोमीन शान्ति के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे। मंदिर का पुजारी मस्त हुआ घण्टा ध्वनि के साथ गा रहा था। दूसरी ओर उठते, बैठते, हाथ फैलाते तथा झुकते हुए एक साथ बीस व्यक्ति पूजा कर रहे थे। सामने खड़े दर्शक को ऐसा मालूम पड़ता था मानो बाजों के साथ मूक नृत्य हो रहा हो। इस दृश्य को मैं बहुत देर तक देखता रहा। पूजा पाठ समाप्त होने पर मेरे मित्र मुझे नगर में ले गये। उस स्थान से लगभग पौन मील चल कर वे एक दम रुक गये और कहने लगे— वह भी आपने देखा था और इसे भी देखिये। मैंने देखा कि मैं एक और छोटी सी मस्जिद के सामने खड़ा हूँ। मुझे बताया गया कि तीन वर्ष पूर्व इसी स्थान से जब हिन्दुओं की सवारी बाजा बजाती हुई गुज़र रही थी और मुसलमान बाजा बन्द करने का हठ कर रहे थे तब किसी प्रकार भी समझौता न हो सकने के कारण यहीं से दोनों जातियों में भयंकर रक्तपात का प्रारम्भ हुआ था। मैं सोचने लगा-एक वह स्थान था जहां आरती के घण्टे नमाज़ में बाधा न होकर भारत में एक साथ रहने वाली दो जातियों के पारस्परिक सौहार्द का कीर्तन कर रहे थे और एक स्थान यह भी है जहां सड़क पर सर्राटे से गुजरती हुई मोटरों के भोंपू, फेरी वालों की बहरा करने वाली ज़ोर की आवाज़ें, रेडियो तथा ग्रामोफोन की तीखी आवाज़ें तो नमाज़ियों का ध्यान भङ्ग नहीं कर सकतीं, परन्तु अपने सहवासियों द्वारा वर्ष में एक बार आनन्दोल्लास में बजाये हुए बाजों की मधुर ध्वनि

परमेश्वर की पूजा में मस्त हुए भक्तों का ध्यान सहसा ही तोड़ देती हैं। पौन मील में ही मनोवृत्ति में इतना भेद कैसे आ गया? क्या वहां के रहने वाले देवता हैं और यहां के परस्पर रुधिर के प्यासे जानी दुश्मन? क्या उनका मन नहीं जो घण्टे की आवाज़ से भी विचलित नहीं होता या उन्हें कोई सिद्धि प्राप्त है कि उन पर उन घण्टों का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता? अथवा यहां के निवासियों का मन ही इतना चञ्चल है कि वह किसी वस्तु पर टिक ही नहीं सकता या इन्हें तो पारस्परिक शान्ति ही पीड़ा देती है?

मुझे स्मरण आया कि इन्हीं के भाई पूना के सोन्धामारुति मन्दिर में तीन इञ्च व्यास की घण्टी भी न बजने देते थे जबकि कलकत्ता और दिल्ली की मुख्य मस्जिदें उन स्थानों पर हैं जहां दिन रात ट्राम मोटर, सिनेमाघर तथा बाज़ार का शोर कानों के पर्दे फाड़े डालता है। इन्हीं के भाई बम्बई में मारुति-मन्दिर का सभामण्डप न बनने देने पर उतारू थे जबकि हैदराबाद निज़ाम के प्रसिद्ध 'चार मीनार' इमारत के दो मीनारों में आमने सामने १५ गज़ की ही दूरी पर एक में देवी का मन्दिर तथा दूसरे में मस्जिद प्राचीन काल से अब तक विद्यमान है। यही लोग रेवाड़ी और पानीपत में मस्जिद के सामने बाजा नहीं बजने देते जबकि बनारस की प्रसिद्ध ऐतिहासिक मस्जिद श्री विश्वनाथ मन्दिर के बग़ल में ही खड़ी है और वहां २४ घण्टे दिल खोल कर नगाड़े पीटने पर भी नमाज़ पढ़ने वालों का ध्यान नहीं टूटता। यही लोग आगरे में रामलीला के जलूस का समाचार सुनकर सैकड़ों की संख्या में लाठियां लेकर परमात्मा की पूजा के लिये मस्जिद में आ सकते हैं जबकि दसों वर्षों तक उस मस्जिद में एक भी व्यक्ति नमाज़ पढ़ने न गया हो और उन में से अधिकांश को उस मस्जिद की सत्ता भी उस दिन पहली बार ही पता चली हो। उत्तरीय भारत के कई नगरों में हिन्दुओं को रामलीला तथा आर्यसमाजियों के नगर कीर्तन इन्हीं लोगों की आपत्तियों के कारण बन्द हैं। जबकि उन्हीं मस्जिदों के सामने से शादी और नेताओं के जलूस ढोल पीटते हुए चले आते हैं और किसी की पूजा में हर्ज नहीं होता।

यही मस्जिद और बाजे की समस्या आज उत्तरीय भारत की प्रधान और पेचीदा समस्या बनी हुई है। इसी को दोनों जातियों ने अपने जीवन मरण का प्रश्न बना रक्खा है। पंजाब सरकार ने हाल ही में इस समस्या का पूर्ण निवारण करने का निश्चय किया है। इसलिये उसने दोनों जातियों के नेताओं से मिल कर निर्णय करने का निश्चय कर लिया है। यदि पंजाब से लोक नेता सचमुच ही इस प्रश्न का पूर्णरूप से निराकरण करना चाहते हैं तो उन्हें कुछ क्षण के लिये अपना ध्यान उस मस्जिद की ओर ले जाना चाहिये। फिर वह दिन दूर नहीं जब देर या सवेर में पंजाब में भी गांव गांव में वही दृश्य दिखाई देगा।

महात्मा जी का महत्व पूर्ण वक्तव्य

महात्मा गांधी ने 'हरिजन' में 'कांग्रेस मन्त्री मंडल' शीर्षक एक लेख में मन्त्रियों के कर्त्तव्यों तथा उनके व्यक्तिगत आचरण की मर्य्यादाओं पर बहुत उत्तम प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं—

शराब की आमदनी से शिक्षा का ख़र्च चलाने के बजाय शिक्षा को स्वावलम्बी बनाकर मन्त्रिमण्डल तत्काल मद्य-निषेध को अमल में ला सकते हैं। यह एक धोका देने वाली बात मालूम पड़ेगी, लेकिन मैं तो इसे सर्वथा व्यावहारिक और बिलकुल उचित समझता हूँ। इसी तरह जेलों को सुधार-गृहों और कारख़ानों का रूप दिया जा सकता है। उस हालत में बजाय ख़र्चीले और ताज़ीरी महकमों के वे स्वावलम्बी और शिक्षणात्मक हो जायगें। इर्विन गांधी पैक्ट के अनुसार, जिसकी कि सिर्फ़ नमक वाली धारा अब भी क़ायम है, ग़रीबों के लिए नमक मुफ्त मिलना चाहिये। लेकिन ऐसा है नहीं। अब कम से-कम कांग्रेसी प्रांतों मे तो यह हो ही सकता है। इसी तरह जो भी कपड़ा ख़रीदा जाय वह खादी का ही होना चाहिए। शहरों के बजाय गावों और किसानों की तरफ़ अब ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए। ये तो इधर उधर के कुछ उदाहरण भर हुए। ये सब बातें पूरी तरह क़ानून-सम्मत है, मगर इनमें किसी एक के लिए भी कभी प्रयत्न तक नहीं किया गया, क्योंकि भूमण्डल पर हमारा ही राष्ट्र सबसे ग़रीब है जिसमे कि लाखो लोग अध-भूखे रहते है। उसके प्रतिनिधि ऐसे ढग और तौर-तरीकों से रहने का साहस नहीं कर सकते जो उनके निर्वाचकों के रहन-सहन और तौर-तरीकों से मेल न खाते हों।

कांग्रेसी मन्त्री अगर सादगी व किफ़ायत शारी की उस विरासत को क़ायम रक्खें जो १६२० से उन्हें मिली है, तो वे हज़ारों रुपये की बचत और लोगों में आशा का संचार करेंगे और शायद हुक्कामों के रुख़ को भी बदल दें।

यह सीधा-सादा काम तो यह प्रदर्शित करने की भूमिका रूप होना चाहिए कि नया विधान जनता की इच्छा-पूर्ति करनेके लिए बिलकुल नाकाफ़ी है और उस का अन्त करनेके लिए हम दृढता के साथ तुले हुए हैं।

मुझे इस बात की बड़ी आशा है कि छ प्रान्तो के (जहां कि कांग्रेस का बहुमत है) मन्त्री उनकी ऐसी व्यवस्था करेंगे जिससे ऐसा कोई सन्देह न रहे। अपने मुसलमान साथियों को वे बता देंगे कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या सिक्ख अथवा पारसी के बीच कोई भेदभाव नहीं है। न सवर्ण और अवर्ण जाति के हिन्दुओं में ही वे कोई भेदभाव मानेंगे। वे तो अपने हरएक कार्य से यही जाहिर करेंगे कि उनके लिए सब एक ही भारतमाता की सन्तान हैं, न कोई ऊचा है, न कोई नीचा। गरीबी और आबोहवा बिना किसी भेदभाव के सबके लिए समान है और मुख्य समस्याएँ भी सबकी एक सी ही हैं। अगर अग्रेज़ या अग्रेज़ियत मे पले हुए हिन्दुस्तानी और कुछ नही तो भारतीयता को कांग्रेस के दृष्टिकोण से देख सके तो समझना चाहिये कि कांग्रेस ने लड़ाई जीत ली।

पद-ग्रहण इसलिए नहीं किया जा रहा है कि किसी-न किसी तरह नये विधान पर अमल किया जाय। यह तो कांग्रेस का अपना मुकम्मिल ध्येय सिद्ध करने की दिशा में एक ऐसा गम्भीर प्रयत्नमात्र है, जिसमे एक ओर तो खूनी क्रांति यानी रक्तपात को बचाया जाय और दूसरी ओर सामूहिक सविनय अवज्ञा को ऐसे पैमाने पर करने से रोका जाय जिस पर कि अभी तक प्रयत्न नहीं किया गया है। ईश्वर! हमारे इस प्रयत्न को आशीर्वाद दे।

आर्य समाज की जून-जुलाई मास की प्रगति

यू० पी०

श्री० सम्पादक जी, नमस्ते !

आपको ज्ञात ही है यह प्रान्त देश के उन छः प्रान्तों में से है जहां कांग्रेस शासनारूढ़ हुई है। प्रान्त की जनता जैसा कि स्वाभाविक है, शासन में इस नए परिवर्तन से अपने आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी उत्थान की बड़ी २ आशाएँ लगा रही है। आर्य्यसमाज को भी अपने आदर्शों के प्रसार के लिए बड़ी २ आशाएँ हैं। हम इस परिवर्तन का हार्दिक स्वागत करते हुए, प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे आशाएँ पूर्ण हों और प्रान्तमें एक सुन्दर युग का उदय हो।

सभा का स्वर्ण जयन्ती सम्बन्धी कार्य्य वेग के साथ हो रहा है। धन-संग्रह का कार्य्य हो रहा है। स्वागत कारिणी का निर्वाचन होने वाला है—सुनते हैं १०० के लगभग सदस्य मेम्बर बने हैं। यह संख्या कम है इसलिए इसको बढ़ाने की कोशिश की जा रही है।

लखनऊ में सभा का कार्य्यालय भवन बनाए जाने की योजना बन रही है। संयोजकों का यत्न है कि यह भवन निर्माण-कला इत्यादि की दृष्टि से बहुत बढ़िया बने। हम भी यही चाहते हैं यह सभा के महत्व का बोधक ही होगा। यदि इस कार्य्यालय भवन को किराए पर चढ़ाए जाने योग्य इमारतें इसके साथ बनवाकर विस्तृत कर दिया जाय तो यह सभा की आय का लखनऊ जैसे शहर में निश्चित और अच्छा साधन होगा। प्रसन्नता है प० देवीदत्त जी टेम्प्रेन्स प्रीचर ने कार्य्यालय भवन के लिए २८००) रु० सभा को दान किया है। उनके पास २८००) रु० के अलावा कुछ और होता तो निश्चय ही वह भी वे दान कर देते क्योंकि उन्होंने सभा को अपना सर्वस्व अर्पण करदिया है—सभा के स्वर्ण जयन्ती इतिहास के लिखने का कार्य्य शुरू होने वाला है। सामग्री उपलब्ध की जा रही है। इस सम्बन्ध में लोगों के कई सजैशन है। मुख्य सजैशन यह है कि इतिहास ऐसा होना चाहिये जिसमें व्यक्तियों और समाज की सफलताओं (Achievements) को उचित अनुपात और स्थान प्राप्त हो। मतलब यह है कि जो व्यक्ति या जो कार्य्य इतिहास में जितने और जिस स्थान का मुस्तहक हो उसे वहीं दिया जाना चाहिए और अवश्य दिया जाना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों और ऐसे कार्यों को स्थान नहीं दिया जाना चाहिए जो उसके अधिकारी न हों। उसी दशा में वह कोई चीज बनेगी और इतिहास कहलायेगी, और गैर आर्य्यसमाजियों के हाथों में रखने योग्य चीज़ होगी।

आपको विदित ही है प्रान्तिक सभा की योजना के अनुसार, श्रीयुत् नित्य गोपाल जी एम० ए० भट्टाचार्य प्रान्त के शिक्षा-केन्द्रों में प्रचार कार्य्य करेंगे। सुनते हैं १५ जुलाई से वे अपने मिशन पर निकलेंगे। हमारी सम्मति में उनकी प्रचार शैली केवल लेक्चरबाज़ी नहीं वरन् विद्यार्थी समुदाय में घनिष्ठ सम्पर्क में रहकर अपने आदेश, उपदेश और आचरण से उनमें वैदिक धर्म की महत्ता स्थापित करनी चाहिए, तब ही भट्टाचार्य जी अपने कार्य्य में सफल होंगे परन्तु उन्हें अपने ऊपर बहुत कड़ा नियन्त्रण

रखना होगा। हम इस सम्बन्ध में अधिक कहने-लिखने की ज़रूरत नहीं समझते हैं। वे स्वयं इस सम्बन्ध में अपना कर्तव्य जानते होंगे।

पंजाब

श्री० स्वर्गीय प० चमूपति जी के परिवार की सहायतार्थ पंजाब के आर्य्य भाई २०००) एकत्र करने का यत्न कर रहे हैं, गत मास मैंने इस समाचार की चर्चा की थी। प्रसन्नता है वह रकम एकत्रित हो गई है। पंजाब के आर्य्य भाइयों में विशेषत प० चमूपति जी के परिवार के लिए इस रकम का इकट्ठा हो जाना मामूली बात थी। इससे अधिक भी यदि यह रक़म होती तो उसको भी वे पूरा कर देते, परन्तु यह ज़रूर था कि संग्रह मे कुछ समय लगता। परन्तु यह रक़म जिस तेज़ी से इकट्ठी हुई है वह आश्चर्य में डाल देने वाली है और असाधारण बात है। शुभ काम में देर नहीं होनी चाहिए, पंजाबके आर्य्य भाइयो ने यह बात अपनी इस बात से पूर्णतया चरितार्थ करदी है। धन संग्रहकरने तथा शीघ्र संग्रह करने के लिए निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

क्वेटा में आर्य्य समाज का कार्य्य नियमपूर्वक शुरु हो गया है तथा नया समाज बन गया है।

समाचार मिला है कि आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रचारक श्री० पं० शान्ति प्रकाश जी पर १५३ धारा के अधीन मुक़दमा चलाया गया है। मुक़दमे का आधार उनका कोई भाषण है जो उन्होंने आर्य्य-युवक समाज क़ादियां में दिया बतलाते हैं। मुक़दमा गुरुदासपुर में चलेगा। इस समय वे ज़मानत पर छूटे हुए हैं। मुक़दमे की पैरवी की पूरी २ तैयारी की जा रही है।

बंगाल आसाम

श्री सम्पादक जी नमस्ते !

आसाम बंगाल प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री बा० हरि गोविन्द जी गुप्त द्वारा माघ का समाचार मिला है। कृपया छाप देवें।

कलकत्ता आर्य्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक श्रीयुत पण्डित भुवन मोहनदेव जी शर्मा मैमनसिंह जिला और आसाम प्रान्त के ग्राम ग्राम में घूम कर छ महीना तक वैदिक धर्म का प्रचार करके ता० १५ जुलाई को वापिस कलकत्ता आगये।

उक्त पण्डित जी के साथ स्थानीय उपदेशक पण्डित सुरेशचन्द्र आर्य्य, पं० निवारणचन्द्र आर्य्य और भजनोपदेशक श्रीनिधिराम आर्य्य और श्री अश्वनीकुमार आर्य्य ने साथ २ घूमकर प्रचार कार्य्य किया। उपरोक्त पण्डित मण्डली ने मैमनसिंह ज़िला और आसाम प्रान्त के देहातों मे १६ बड़ी २ सभायें की। कई सभाओं में पौराणिक पण्डितों से शास्त्रार्थ भी किया। मैमनसिंह ज़िला में ५११ और आसाम प्रान्त मे ३८४ व्यक्तियों को वैदिक संस्कार विधिद्वारा यज्ञोपवीत संस्कार कराके आर्य समाज के सदस्य बनाया। और ५ हिन्दू जो कि हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई हो गये थे उनकी शुद्धि करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया।

एक अन्तर्जातीय विवाह, उन्नीस विधवा विवाह और १३ कुमारी कन्याओं के वैदिक रीति से विवाह संस्कार कराये।

पण्डितजीके प्रयत्नसे बहादुराबाद ग्राममें एक सह भोज हुआ जिसमें लगभग ४०० हिन्दुओंने जो सभी वर्णोंके थे, एक साथ बैठकर जातपांत छूत छात का विचार

त्यागकर भोजन किया। सभी एक पंक्ति मे बैठ थे और प्रेम मे विभोर होकर परस्पर एक दूसरे के गले मिलकर आनन्दयुक्त हो रहे थे। उक्त पण्डित जी के प्रचार से प्रभावित होकर जनता ने करुणाग्राम मे श्रीदयानन्द विद्यालय और मालती ग्राम मे आर्य्य विद्यालय और आसाम प्रान्त के बाला ग्राम मे शंकर नाथ विद्यालय स्थापित किया। आगामी फरवरी मास मे बङ्गाल आसाम की वृहत् आर्य्यकानफ्रेंस टेगाराममे होग। उसकी तैयारी मे लोग अभी से लगे हुए है।

श्री सम्पादक जी नमस्ते!

कुछ आर्य्य सज्जनो के प्रयत्न से बयाना (भरतपुर) मे वैर की एक लीलावती बाल विधवा ब्राह्मणो का पुनर्विवाह, जो कि ६ वर्ष की आयु में ही विधवा हो गई थी और जिसकी, आयु अब १८ वर्ष की थी एक मेरठ के ब्राह्मण के साथ हुआ। बरात में बडे २ प्रतिष्ठित सज्जन, ब्राह्मण, वैश्य सम्मिलित हुये। कन्यापक्ष की ओर से भी बहुत से ब्राह्मण वैश्य नवयुवको ने बरात का स्वागत किया और विवाह में सहयोग दिया। सभा सज्जन धन्यवाद के पात्र है।

भरतपुर के प्रतिष्ठित ला० गुलाबसिंह जी ठेकेदार तथा म्यूनीसिपल कमिश्नर का पुनर्विवाह मथुरा के ला० कुन्दनलाल जी की सुपुत्री के साथ हुआ। लडकी कई वर्ष हुए विधवा हो गई थी। इस विवाह में विशेषता यह थी कि वर बीसा अग्रवाल और लडकी कदीमी अग्रवाल है। ला० गुलाबसिंह को बीसियों कन्यायें बीसा अग्रवाल वालों की मिल रही रहीं थीं, परन्तु उन्होंने बालविधवा से ही शादी स्वीकार की सो भी उसकी रूढि के जातिबन्धन को तोडकर, इसके लिए वर वधू विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। विवाह मे भरतपुर आदि के बहुत से प्रतिष्ठित ब्राह्मण वैश्य सज्जनों ने भाग लिया और बरात मे गये। वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ। कोई पुरानी रूढि नहीं हुई, ५१) संस्थाओ को दान दिया।

बिछुड़ों का मिलाप तथा रक्षा कार्य्य

—अलीगढ आर्य्य समाज मे बुद्धा जोटव सपरिवार शुद्धि हुई। ये लोग भूल से मुसलमान हो गए थे।

—आर्य्य समाज अपल कुचलाई (सीतापुर) द्वारा ५ व्यक्तियो की शुद्धि हुई। ये लोग कुछ दिनो से मुसलमान हो गए थे।

—६ जुलाई १९३७ को आर्य समाज गुना (ग्वालियर) मे म० कुंवरलाल जी और उनकी धर्म पत्नी रूपाबाई की शुद्धि की गई। ये लोग भार्गव-ब्राह्मण है। २० साल से धर्मच्युत थे।

—गत २ जुलाई को जालौन मे मिस नैनसी कुमारी को शुद्ध करके हिन्दू धर्म मे मिला लिया गया। यह संस्कार बडे समारोह के साथ हुआ।

—११ जुलाई को आर्य समाज धनबाद मे बा० राम सुन्दर लाल के प्रयत्न से एक युवक को शुद्ध किया गया। यह कुछ समय पहले ईसाई हो गया था।

[illegible] —प्रकाशक के लिए '[illegible] प्रिंटिंग प्रेस' [illegible]
में मुद्रित ।

सितम्बर १६३७

Reg. No. L. 2121.

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

उ० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मू० २) एक प्रति का [illegible]) विदेश से ६ शिलिंग

अथर्ववेद सामवेद

विषय-सूची

नम्र निवेदन

[ले० ला० बोलाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर N, W R आनरेरी सैक्रेटरी]

पञ्जाब की राजधानी लाहौर में रावीरोड पर केन्द्रीय अनाथालय है जिसका प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन है, जिसके प्रधान श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली हैं। उपप्रधान श्री पण्डित विश्वम्भर नाथ जी भूतपूर्व गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी, श्री पण्डित ठाकुर दत्त जी वैद्यशास्त्री मुल्तानी तथा डा० गणेशीलाल जी M, B B S हैं। इस अनाथालय को खुले हुये बीस वर्ष के लगभग होचुके हैं। इसकी सहायता केवल लाहौर निवासी ही नहीं करते, प्रत्युत सब प्रान्तों में रहने वाले हिंदू आर्य भाई भी करते हैं। यही कारण है कि यह अनाथालय भारत के दूसरे प्रान्तों में भी सर्वप्रिय हो रहा है और दिन प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। यहा तक कि अब सरकार भी जो चोरी किये हुये लड़के लड़किया उनको मिलते हैं जब तक उनके वारिसों का पता नहीं मिलता, तब तक उनको इस अनाथालय मे रखती है। इस के अतिरिक्त ऐसे नवजात बालक वा बालिकायें भी आने लग गई हैं जिनकी माताएं मर जाती हैं या वह उनको कई गुप्त कारणों से रखना नहीं चाहतीं और इनके लिये एक Trained नर्स भी रखी हुई है। इस तरह से अनाथालयमें बच्चों की सख्या बढगई है। इस समय तक तो निवास स्थान पर्याप्त था परन्तु सख्या बढ़ जाने से कन्याओं के लिये स्थान काफी नहीं है। इस लिये प्रबन्धक सभा ने निश्चय किया है कि नवीन कमरे बनवाये जायें, जिस से कन्याओं के स्थान का कष्ट मिट जाय। इनके बनाने के लिये धन की अपील की जावे। इसलिये मैं दानी सज्जनों की सेवा मे विनीत भाव से प्रार्थना करता हूँ के वे इस शुभ कार्य में सभा की सहायता करें ताकि अनाथ और निस्सहाय बच्चों को प्रवेश करने में बाधा न पड़े। यदि हम ऐसा न करसके तो वे बालक जिनको हम स्थान न दे सकेंगे अन्य मतवालों के जाल मे फस कर हमेशा के लिये धर्म से पतित हो जावेंगे और उसका पाप आर्य जाति को लगेगा। जो महानुभाव एक सौ से अधिक रुपया देंगे, उनके नामों के पत्थर उन कमरों की दीवारों पर लगवा दिये जायेंगे। इस समय इस कार्य के लिये पाच सहस्र धन की शीघ्र आवश्यकता है जो दानी सज्जनों को पूरी करनी चाहिये। इस अनाथालयके आधीन म्यूनिसिपैलटी तथा गवर्नमेंट से मजूर एक प्राइमरी इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है। जिसमें अनाथालय के तथा बाहर के लड़के पढ़ते हैं। एक दर्जी क्लास है जिसमें लड़के और लड़कियों को सीने का कार्य सिखलाया जाता है तथा बाहर के लड़के इस मे काम सीख सकते हैं। आजकल ५० लड़के और ४२ लड़किया सीख रही हैं। बीस के लगभग लड़के यहा से काम सीख कर अपना निर्वाह भली प्रकार कर रहे हैं। अनाथालय मे इस समय ११६ लड़के और ६५ लड़किया हैं जिनके निवास, भोजन, पढ़ाई आदि का प्रबन्ध अनाथालय की तरफ से किया जाता है। इस काम के लिये भी सहायता की आवश्यकता है। दानी तथा परोपकार प्रिय महानुभावों से प्रार्थना है कि वे इस ओर भी दया करें और जिस प्रकार की भी सहायता दे सकें, दे कर पुण्य के भागी बनें अर्थात् आटा, दाल, चावल घी आदि खाद्य पदार्थ और पहनने के लिये वस्त्र देकर कृतार्थ करें। यह संस्था पूर्व भी आप जैसे दानियोंकेदान से चल रही है, अब भी आपसे आशा की जाती है कि अवश्य सहायता देकर अनाथों का आशीर्वाद लेंगे और पुण्य के भागी बनेंगे।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष ११ | भाद्र-पद १९९४ | अङ्क ७

सितम्बर १९३७ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

वेद की शिक्षाएँ

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य परिष्टुतिः ॥

—यजुर्वेद।

भावार्थ—बुद्धिमान्, महान्, ज्ञानी तथा योगी पुरुष उस अद्वितीय जगत्कर्ता ज्ञानी ईश्वर की ही श्रेष्ठ स्तुति मन और बुद्धि द्वारा अच्छे प्रकार किया करें।

सम्पादकीय—

झोंपड़ों में प्रचार

इस समय आर्य्यसमाज के क्षेत्र मे प्रचार-प्रगति को मन्द पड़ते देखकर बहुत से आर्य्य भाई चिन्तित हो रहे हैं। उनकी यह चिन्ता सार्थक है। जिस आर्य्यसमाज ने विश्वभर को वेद का सन्देश पुनः सुनाना था तथा संसार भर को वैदिक संस्कृति के प्रभाव मे लाना था, यदि वह इतनी जल्दी अपने लक्ष्य के प्रति उपराम हो जाये तो इससे बढ़कर दूसरी शोचनीय बात क्या हो सकती है? श्री० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी ने अभी हाल ही मे एक प्रचार-योजना आर्य्य-जगत के सामने रक्खी है, जिसके प्रति आर्य समाचार पत्रो तथा आर्य्य समाजो का ध्यान आकृष्ट हो रहा है। इस प्रचार योजना का सार यह है कि भारतवर्ष की आगामी मनुष्य-गणना के अवसर तक इस देश मे आर्य्यसमाजों की संख्या तीन गुणा तथा आर्य्यों की संख्या दस गुणा अधिक हो जानी चाहिये।

इस महत्वाकांक्षा को सामने रखकर प्रत्येक आर्य्यसमाजी का हृदय गद्‌गद्‌ हो जाता है। परन्तु आकांक्षामात्र से कुछ नही बनता। जब तक आकांक्षाओ की कठोर परिश्रम तथा अनवरत त्याग द्वारा पूर्त्ति न की जाये तब तक मनोरथ सिद्ध नहीं हो सकते। ऐसी दशा मे उपरोक्त महत्वाकांक्षा की पूर्त्ति के लिये अभी से हमे जुट जाना चाहिये। आर्य्यसमाजो की संख्या तीन गुणा कर देना तथा आर्यों की संख्या दसगुणा कर देना सहल कार्य्य नहीं। प्रान्तिक प्रतिनिधि सभाओं को अपना प्रचार-प्रोग्राम निश्चित कर लेना चाहिये। परन्तु सफलता तभी हो सकेगी जबकि हमारे प्रचारक शहरों की ओर से हटकर ग्रामों की ओर अपने प्रचारकार्य्य को बढ़ायेगे। यह बात सभी लोग जानते हैं कि अधिकांश भारतीय जनता गावों मे रहती है। उसी जनता की ओर हमारे प्रचारकों को आकृष्ट होना चाहिये। ग्राम निवासियो मे धर्म्म प्रचार का कार्य्य बहुत सहल होजाता है जब हम सेवा के नाते उनके अन्दर जाकर बसने लग जाते हैं और उनके सुख दुःख मे शरीक होने लगते हैं। जब हम ग्रामवासी बनकर ग्रामवासियो की तरह जीवन बिताने लगें तो इसका प्रभाव ग्रामीणों पर बहुत गहरा पड़ता है।

ग्रामो मे प्रचार कार्य्य करने के लिये हमे शीघ्र अति शीघ्र प्रचारको का एक संघ तैयार करना होगा। ऐसे प्रचारको के लिये अधिक विद्या और ऊँची शिक्षा की आवश्यकता नही। केवल हृदय रखने वाले, साधारण बुद्धि के व्यक्ति भी इस कार्य्य को भली भांति सम्पादन कर सकते हैं। ग्रामीण लोगो को साक्षरता और सफाई की सबसे बड़ी आवश्यकता हैं। बीमारियों से बचने की विशेष विधियां उन्हे बतानी होगी, उनके रोगी हो जाने पर उचित चिकित्सा की व्यवस्था भी करनी होगी। रात्रि के समय जब गांव वालों को अवकाश मिले तो उन्हे बोलचाल की भाषा मे देश विदेश के

समाचार सुनाने होंगे। उन्हें रहन सहन के साधारण कायदे कानून भी बतलाने होंगे। उनके अन्दर से मिथ्या विचारों तथा अन्ध विश्वासों को दूर करने के लिये साधारण तौर पर मैजिक लैन्टर्न द्वारा व्याख्यानों का प्रबन्ध भी करना होगा। इन सब बातों के साथ साथ उन्हें साधारण धर्म्मशिक्षा, संस्कारों का ज्ञान तथा धर्म्ममन्दिरों में सम्मिलित सन्ध्या, प्रार्थना, भजनोपासना इत्यादि की शिक्षा भी देनी होगी।

इस समय हम देख रहे हैं कि कांग्रेस और सरकार दोनों का ध्यान ग्रामीण जनता की ओर आकर्षित हो रहा है। यह दोनों शक्तियां भी हमारे धर्म प्रचारकों के लिये सहायक सिद्ध होंगीं। परन्तु हमें — ग्रामीण प्रचारकों को — कटिबद्ध हो जाना चाहिये। हमारी प्रान्तिक सभाओं को अपने अपने केन्द्र स्थानों पर एक एक शिक्षणालय (Training School) तुरन्त खोल लेना चाहिये। इन स्कूलों में कम से कम एक एक सौ प्रचारक तैय्यार करना चाहिये। यदि यह प्रचारक स्वयं ग्रामीण हो तो बहुत ही अच्छा होगा। उस अवस्था में यह लोग ग्रामीण लोगों की प्रत्येक आवश्यकता को स्वयं अनुभव कर सकेंगे। केवल छ मास की शिक्षा देकर इन प्रचारकों को गांव, गांव बिठा देना चाहिये, और उन्हें यह ताकीद कर देनी चाहिये कि वह ग्रामवासियों के समान अपना रहन सहन बना कर उन में प्रचार कार्य्य शुरू करदें। थोड़े ही समय में यह परिणाम सिद्ध होगा कि ग्रामनिवासी अपने आप को आर्य्य कहकर पुकारेंगे और आर्य्यशब्द से उन्हें विशेष स्नेह पैदा हो जायेगा। ऐसी दशा में दश गुणा तो क्या पचास गुणा भी यदि आर्य्यों की संख्या बढ़ जाये तो कोई आश्चर्य्य की बात न होगी।।

कांग्रेस नैतिक बल से शासन करेगो

'हरिजन' मे लिखते हुए महात्मा गाधी लिखते हैं—

'फिर केवल यही काफ़ी नहीं होगा कि मन्त्रीगण सादगी से रहें और केवल खुद ही खूब काम करते रहें। उन्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि उनके मातहत के महकमें भी ठीक उसी तरह काम कर रहे हैं जैसा कि वे चाहते हैं। उदाहरण के लिए अब जनता को न्याय जल्दी और कम खर्च में मिल जाना चाहिए। आज तो वह अमीरों की विलास-वस्तु और जुए का खेल है। पुलिस का भय मिट जाए और अब वह जनता का मित्र बन जाय। शिक्षा में भी ऐसी क्रान्ति हो कि वह साम्राज्यवादी लूट खोरों की ज़रूरतों की नहीं बल्कि ग़रीब ग्राम वासियों की ज़रूरतों की पूर्ति करने लगे।

अगर मंत्रियों के बस की बात होगी तो अब शीघ्र ही वे सब कैदी छोड़ दिये जायेंगे जिन्हें राजनैतिक अपराधों के कारण—चाहे वे हिंसात्मक अपराध भी हों—क़ैद कर लिया गया था। यह एक गम्भीरतापूर्वक ध्यान करने की बात है। क्या इसके मानी यह है कि अब सब को हिंसा करनेकी छूट मिल गई? हरगिज़ नहीं। कांग्रेस के अहिंसात्मक उद्देश के यह बिलकुल खिलाफ़ होगा। व्यक्तियों की हिंसा से इस

सरकार को, जिसे कि कॉंग्रेस उखाड़ना चाहती है, जितनी घृणा है उससे कहीं अधिक घृणा खुद कॉंग्रेस को है। कॉंग्रेस इस हिंसा का प्रतिकार सत्ता अर्थात् सुसंगठित हिंसा द्वारा नहीं बल्कि अहिंसा द्वारा करेगी। वह गुमराहों को मैत्रीभावपूर्वक समझा बुझा कर और हर प्रकार की हिंसा के खिलाफ़ ज़ोरदार और विचारपूर्ण लोकमत तैयार करके उसे दूर करेगी। दूसरे शब्दों में, कॉंग्रेस सेनाबल पर भरोसा रखने वाली पुलिस की सहायता से नहीं बल्कि जनता की सदिच्छा पर आधार रखनेवाले अपने नैतिक बल से शासन करेगी। वह आज जो शासन करने जा रही है उसका आधार अस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किसी महान् सत्ता की दी हुई शक्ति नहीं, बल्कि उस जनता की सेवा है जिसका कि वह अपने हर कार्य मे प्रतिनिधित्व करना चाहती है।

तमाम प्रकार के साहित्य पर लगाई गई बन्दी भी उठाई जा रही है। मेरा ख्याल है, इस साहित्य में कुछ ऐसी भी पुस्तकें होंगी जिनमें हिंसा, अश्लीलता तथा जातीय विद्वेष का प्रचार भी होगा। कॉंग्रेस राज्य के मानी हिंसा अश्लीलता और जातीय विद्वेष फैलाने की आज़ादी नहीं है। कांग्रेस को विश्वास है कि आपत्तिजनक साहित्य के प्रचार करने में भी सुशिक्षित नागरिक उसका पूरा साथ देंगे। मन्त्री भी अगर देखें कि उनके प्रान्तों में हिंसा, जातीय विद्वेष या अश्लीलता बढ़ रही है तो ताज़ीरात हिन्द या ऐसे ही तमाम उपायों का अवलम्बन करने से पहले वे यह आशा करें और चाहें कि कांग्रेस कमेटियां उनकी तत्काल और पूरी सहायता करेंगी। ठेठ कार्यसमिति से भी सहायता मांगे। सचमुच कॉंग्रेस की विजय का नाम तो यही है कि वह किस हद तक पुलिस और सेना को बेकार साबित कर देती है। और अगर वह यह नहीं कर सकी, ऐसे प्रसंग आ ही जायँ कि जब पुलिस और सेना की सहायता लेना अनिवार्य हो जाय तो कहना होगा कि वह बुरी तरह असफल हुई। इस मौजूदा विधान को तोड़ने का सब से उत्तम तरीका यही है कि कॉंग्रेस सेना से किसी भी प्रकार की सहायता न ले और यह सिद्ध करके दिखा दे कि वह अच्छी तरह शासन कर सकती है। पुलिस से भी, जिसका कि मैत्रीभावसूचक कोई नया नाम-करण किया जा सकता है—वह कम-से कम सहायता ले।

फ्रेंच भारत में शारदा ऐक्ट

शारदा ऐक्ट से बचने के लिए बहुत से ब्रिटिश भारत के लोग फ्राँसीसी हिन्दुस्तान तथा उन देशी रियासतों में जहाँ बाल विवाह निषेधक कानून नहीं है आकर अपने लड़के लड़कियों की शादी कर जाया करते थे। अब फ्रांस की सरकार ने शायद प्रेरणा किए जाने पर अपने इलाके में एक कानून के द्वारा १६ वर्ष से कम आयु के लड़के और १४ वर्ष से कम उम्र की लड़की की शादी निषिद्ध करार देकर शारदा ऐक्ट के प्रचलन में एक बड़ी बाधा का निवारण कर दिया है। क्या ही अच्छा हो रियासतें भी इस बाधा का निवारण कर देवें! बाल विवाह की बुराइयों तथा इस प्रकार के कानूनों की आवश्यकता उनके सम्मुख रखने की कोई विशेष ज़रूरत नहीं है।

काशीप्रसाद जायसवाल

श्री० डा० काशीप्रसाद जी जायसवाल की मृत्यु

से हमारे बीच मे से एक बड़ा विद्वान, एक प्रसिद्ध इतिहासकार, एक बड़ा कानून तथा पुरातत्व विद्या विशारद उठ गया है। प्राचीन भारतीय इतिहास पर प्रकाश डालने की दिशा मे उनका योग बहुमूल्य रहा है। उन्होंने कलकत्ता मे मनु और याज्ञवल्क्य पर एक बहुत उत्तम व्याख्यान माला दी थी—हिन्दू मानव-शास्त्र का उन्हे बहुत विस्तृत और गहरा बोध था। विदेशी पंडित और भारतवर्ष पर लिखने और बोलने वाले विदेशी विशेषज्ञ भी उनके पुरातत्व और ऐतिहासिक ज्ञान तथा हिन्दू राजनीतिज्ञता का लोहा मानते थे। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दू पालिटी' से प्राचीन भारत की विविध राजनीतिक संस्थाओ तथा शासन प्रणालियो पर बहुत ही उत्तम प्रकाश मिलता है। मोटे रूप मे यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत, शासन की मुख्य प्रणालियो से परिचित था, और अपने इतिहास के किसी न किसी समय मे और अपनी सीमाओ के भीतर किसी न किसी प्रदेश मे उसने उन्हे क्रिया मे परिणत किया था। उन्होने अपना इस इतिहास की समस्त सामग्री भारतीय साहित्य से ही ली है। उन्होने यूरोपीय ऐतिहासिकों का अनुसरण नहीं किया है और विदेशियो के इस आक्षेप का खण्डन किया है कि प्राचीन भारतवासी लोकतन्त्र व्यवस्थासे अनभिज्ञ थे। विहार और उड़ीसा की रिसर्च सोसाइटी और उसके पत्र' को वतमान रूप में लाने का कार्य्य डाक्टर महोदय का ही कार्य्य था।

उनके अनुसंधानो और ऐतिहासिक ग्रन्थों ने प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्धकारमय युगो पर प्रकाश डाला है। श्रीयुत भिक्षु राहुल सांस्कृतायन की तिब्बत की अनुसंधान यात्राओ में स्वर्गीय डाक्टर जी का बड़ा हाथ था। सांस्कृतायन जी तिब्बत से जो असंख्य हस्त लेख और दूसरी सामग्री अपने साथ लाए है वे सम्पादन, प्रकाशन और बाद की व्याख्याओ और प्रयोग की प्रतीक्षा कर रही हैं। यह बड़े दुख की बात है कि इस महत्वपूर्ण कार्य्य मे योग देने तथा इसे शीघ्र सम्पादित करने के लिये आज जायसवाल जी हमारे मध्य मे नहीं हैं।

डाक्टर महोदय में भारतीय इतिहास के विभिन्न क्षेत्रो के नवयुवक विद्यार्थियों के कार्य्य की महत्ता को समझने की क्षमता थी और उनसे उन्हे प्रोत्साहन भी मिलता था। ऐसे महान विद्वान और इतिहासकार की मृत्यु वस्तुत अन्तर्राष्ट्रीय क्षति है जिस पर जितना दुख प्रकाशित किया जाय उतना ही कम है।

डाक्टर महोदय का जन्म संयुक्तप्रान्त में मिर्ज़ापुर जिले मे हुआ था। उनकी स्कूलीय शिक्षा मिर्ज़ापुर मे तथा कालेज की शिक्षा आक्सफ़ोर्ड (लन्दन) मे हुई थी। वैरिस्टरी पास करके उन्होने पटना मे प्रैक्टिस शुरू की जो सफलतापूर्वक चली। आप अपने पीछे विधवा पत्नी, पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ छोड़ गए हैं। आपके एक पुत्र सिंगापुर में वैरिस्टरी करते हैं एक पुत्री एम ए, और वैरिस्टरी पास कर चुकी है। मृत्यु के समय आपकी अवस्था ६२ वर्ष की थी।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति और शोक-संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

वैतनिक और अवैतनिक सेवक

पिछले कुछ समय से पंजाब के आर्य्य जगत मे यह विवाद छिड़ा हुआ है कि आर्य्य समाज के प्रबन्ध मे वैतनिकों— उपदेशको—का हाथ रहे वा नहीं। एक

सम्मति यह है कि उपदेशकों का प्रबन्ध में हाथ नहीं होना चाहिए। इस का एक कारण यह बतलाया जाता है कि उपदेशक का पद ऊंचा है उन्हें प्रबन्ध की झंझट मे पड़कर विविध संघर्षों और मानवी कमज़ोरियो के प्रभाव में आकर जो प्राय प्रबन्ध के साथ जुड़े होते हैं, उपदेशक पद की मर्य्यादा को नीचा नहीं करने देना चाहिए। दूसरा कारण यह बतलाया जाता है कि उपदेशक लोग व्यक्ति विशेषो के कन्वेसिंग एजेन्ट बनकर उनके मन्त्री या प्रधान इत्यादि बनाए जानेके लिए समाजोमें प्रचारके स्थान में कन्वेसिंग का कार्य्य करते है। यह प्रबन्धकी दृढ़ता तथा सुचारुता के लिए अवांछनीय हैं इससे समाजों में कलह या अनुचित समर्थन होता है। इसलिए उनका हाथ प्रबन्ध मे नहीं होना चाहिए। इस सम्बन्ध मे हम सम्प्रति विस्तार में न जाकर केवल एक दो बातें कह देना चाहते हैं। एक तो यह कि वैतनिक और अवैतनिक दोनो ही समाज के सेवक हैं। सेवा कार्य्य ही उनका एक मात्र काम है। इस सेवा कार्य्य में वे एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। कोई व्यवस्था या प्रबन्ध करता है और कोई उस व्यवस्था के आधीन काम करता है—या यों कहिए किसी को प्रबन्ध में प्रभुता मिलती है और किसी को प्रचार में। दोनो के सम्बन्ध समाज सेवक के होने चाहिएँ, शासक या गुलाम के नहीं। आपस में दोनों प्रकार के सेवकों का व्यवहार आदर, प्रम और सहानुभूति का होना चाहिए और समाज सेवा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। व्यवस्थापकों को प्रचार सेवको का आदर करना तथा उनका ध्यान रखना चाहिए और प्रचार सेवकों को व्यवस्था का मान करना और अनुशासन में रहना चाहिए तब ही सबकी सिद्धि होती है उन्हें भी आदर, प्रेम, नम्रता और सहानुभूति का परिचय देते रहना चाहिए। वेतन या गुजारा लेने वाला इसलिए घृणा का पात्र या गुलाम नहीं समझा जाना चाहिए कि वह पैसे लेता है। अवैतनिक इसलिए प्रभु नहीं समझा जाना चाहिए कि वह पैसा नहीं लेता है। समाज का कोई सेवक कितना उपयोगी है, केवल इसी आधार पर वह मान सम्मान का अधिकारी है। आर्य समाज धार्मिक समाज है। उसकी रीति नीति तथा प्रबन्ध धार्मिक तत्वों पर आश्रित रहने में ही उसकी उपयोगिता है और उसका सौन्दर्य है। नौकरशाही की रीतिनीति छल फरेब और कूटनीतिसे उसको ऊपर रहना चाहिए। यदि दुर्भाग्य से कहीं हमारे यहाँ यह प्रविष्ट हो गई हो—और दुख है प्रविष्ट हुई हुई भी है—तो उसका जितनी जल्दी अन्त हो जाय उतना ही अच्छा है। हमारे प्रबन्ध और प्रचार में धार्मिकता, सच न्याय और सदाचार सर्वोपरि रहने चाहिए। इस प्रकार के विवादों पर जब हम विचार करते हैं तो हमें इनके मूल में हमारी एक बड़ी भारी त्रुटि देख पड़ती है और वह हमारे पास किसी निश्चित प्रोग्राम का न होना है। खाली रहने पर ही हमें ऐसे विवादों की सूझती है और हम उनमें प्रवृत्त होते हैं। हाथ भरे से हम उनकी सोच भी नहीं सकते। इस त्रुटि के दूर होने से हमारा विश्वास है इस प्रकार के अवांछनीय विवाद नहीं रहेंगे, यदि रहेंगे तो वे आसानी से दब सकते हैं। यह त्रुटि शीघ्र से शीघ्र दूर होनी चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला—

यज्ञोपवीत

[ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

सत्यार्थ प्रकाश में से तीन स्थानो से उपवीत का वर्णन लिखता हूँ। यथा—

(१) नवें वर्ष के आरंभ मे द्विज अपने संतानो का उपनयन करके आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करने वाली हों वहां लड़के और लड़कियो को भेज दें और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना विद्याभ्यास के लिये गुरुकुल में भेज दें। —समुल्लास २।

(२) प्रथम लड़को का यज्ञोपवीत घर मे हो और दूसरा पाठशाला मे आचार्य कुल मे हो। —समुल्लास ३।

(३) और जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान, ईसाइयो के सदृश बन बैठना व्यर्थ है।

—समुल्लास ११ (ब्रह्म समाज प्रकरण)।

अन्य स्थलों पर भी यज्ञोपवीत का उल्लेख है। परन्तु महर्षि ने यह कहीं नही लिखा है कि यज्ञोपवीत कितना लम्बा होता है, कितने तंतु का होता है, किस भांति पहनना चाहिये इत्यादि।

इस लेख में इन सब बातो पर सप्रमाण लिखूँगा ताकि पाठक विचार करके निश्चय कर सकें कि क्या करना चाहिये। इस विषय में निम्न बातें हैं जिनमे यज्ञोपवीत का बनाना, पहनना, लम्बाई आदि का उल्लेख है।

(१) यज्ञोपवीत कहाँ बनाया जाय।

देवागारेऽथवा गोष्ठे नद्यां वान्यत्र शुचौ।
सावित्र्या त्रिवृतं कुर्यान्नवसूत्रं तु तद्भवेत्॥
—देवल।

अर्थ—मंदिर, गौशाला, नदी तट, अथवा अन्य पवित्र देश मे गायत्री का पाठ करता हुआ नव तंतु का तीनलड़ा यज्ञोपवीत बनावे।

(२) कितना लम्बा यज्ञोपवीत होता है।

(क) ग्रामाभिष्क्रम्य संख्याय षण्ण
वत्यंगुलीषुतत्।
तावत् त्रिगुणितं सूत्रं॥ —देवल।

अर्थ—ग्राम से बाहर जाकर ९६ अंगुल लम्बा तिलड़ा बनाले।

(ख) शुचौ देशे शुचि सूत्रं सहतांगुलिमूलके।
आवर्त्य षण्णवत्या तत्त्रिगुणं कर्त्यं यत्नतः
······तन्नवतन्तु कार्यम्।
—पारिजात देवल।

अर्थ—शुद्ध देश मे शुद्ध सूत्र का मिली हुई अंगुलि के मूल से नाप कर ९६ अंगुल लम्बा लेकर तीन लड़ी का बनावे। यज्ञोपवीत के नव तन्तु हों।

आजकल जो यज्ञोपवीत विदेश से बने

बनाये आते हैं। वह किस किस भांति बनते हैं इसका ज्ञान उन ही को होगा। शुद्ध देश मे बनते हैं या अशुद्ध देश मे। ९६ अगुल लम्बाई किसकी अगुली से मापते हैं यह बनाने वाले ही जानते है।

(३ यज्ञोपवीत किस प्रकार और कितने तन्तु का होता है ?

(क) त्रिवृदूर्ध्व वृतं कार्यं तनु त्रयमधोवृतम्।
त्रिवृत चोपवीतंस्यात्तस्यैको ग्रंथिरिष्यते॥
—धर्म प्रदीप, छन्दोग परशिष्ट

तीन तन्तु मिला कर ऊपर को बट दे फिर नीचे को देकर तीनलड़ा यज्ञोपवीत बनाकर एक ग्रंथी डाल कर बनावे।

(ख) यज्ञोपवीत कुर्वीत सूत्रेण नव तांतवम्।
देवतास्तत्र वक्ष्यामि आनुपूर्व्येण या स्मृताः॥ ४८।
ओंकार प्रथमस्तंतु द्वितीयश्चाग्नि दैवत ।
तृतीयो नाग दैवत्यश्चतुर्थः सोम देवतः॥ ४९
पंचम पितृदैवत्यः षष्ठश्चैव प्रजापतिः।
सप्तमो वासु दैवत्योऽष्टमो यम दैवतः॥५०
नवम सर्व दैवत्य इत्येते नव ततवः।
द्विगुणं त्रिगुणं वापि एक ग्रन्थीकृत विदु.॥५१
—गो० गृह संग्रह

यज्ञोपवीत सूत्र नव तन्तु का बनावे। क्रम से नव तन्तुओं के यह देवता हैं--ओम्, अग्नि, नाग, सोम, पितर, प्रजापति, वासुदेव, यम और सर्वदेव।

यज्ञोपवीत द्विगुणा वा त्रिगुणा करके बनावे। यह नई बात है कि उपवीत द्विगुण भी होता है। टीकाकार ने लिखा है यदि त्रिगुण न हो सके तो द्विगुण करले। उसका पाठ यह है--

त्रिगुणत्वासभवे द्विगुणत्व बोधत्वम्।

संस्कार मार्तण्ड मे नव तंतुओ के देवताओ मे कुछ भेद है। उसमें प्रजापति के स्थान पर ब्राह्म लिखा है जो पर्याय माना जा सकता है। वासुदेव की जगह 'वायु' और यम के स्थान पर सविता लिखा है। इससे प्रतीत होता है यज्ञोपवीत मे एक ग्रंथी और तीन तन्तु होते है। उन तीन मे प्रत्येक मे पुन तीन २ होते हैं। इस प्रकार नव तन्तु का यज्ञोपवीत होना है। प्रथम वट ऊपर को देते हैं पुन नीचे को देते है। ऊपर के वट के समय भी धागा तिलड़ा होता है और नीचे को देते समय भी तीन तन्तु मिलाकर ऐसा करते है। इससे सब नव तन्तु हो जाते हैं और वे साधारण देखने मे तीन होते है। पजाब मे इसको एक ग्रम भी कहते हैं।

पूर्व मै लिख चुका हू कि यज्ञोपवीत ९६ अंगुल का होता है और अगुली मूल से मापना चाहिये, परन्तु इसका माप और ढंग पर भी लिखा मिलता है। उसमे यह लेख है पहने हुए उपवीत को शरीर पर कहा रहना चाहिये।

(४) यज्ञोपवीत शरीर मे कहा तक हो

पृष्ठवंशेच नाभ्यांच धृतं यद्विन्दते कटिम्।
तद्धार्यमुपवीतस्यान्नातिलब न चोच्छ्रितम्। कात्यायन

अर्थः—पृष्ठ और नाभी को स्पर्श करता हुआ जो कटिपर्यंत हो ऐसा यज्ञोपवीत धारण किया जाय न अधिक लबा हो और न अति छोटा हो।

(ख) नाभेरूर्ध्वमनायुष्यमधो नाभेस्तप. क्षय ।
तस्मान्नाभिसमं कुर्यादुपवीत विचक्षणः। वासिष्ठ
नाभी के ऊपर ही रहे तो आयु नाशक है। और नाभी के नीचे तप का नाश करता है। इस लिये बुद्धिमान् नाभी पर्यंत ही धारण करे। जो उपवीत ९६ अंगुल लम्बा होता है वह कटि के नीचे पहुच जाता है और कात्यायन कटि पर्यंत मानते हैं। इन दोनों को शौच क्रिया के समय कान पर लगाना पड़ता है। और वसिष्ट की रीति से यज्ञोपवीत नाभि तक ही होता है। इसको कानपर लगाने की आवश्यकता नहीं है। आर्य समाज मे मैंने दोनो प्रकार के देखे है और महर्षि ने यज्ञोपवीत की लम्बाई का कहीं उल्लेख नही किया है। इस लिये इस विषय मे आर्य समाजियों को स्वय निश्चय करना होगा कि कौनसा पक्ष स्वीकार किया जाय। मेरी सम्मति मे नाभि पर्यंत मानना सुविधाकारक है और गोभिल गृह संग्रह २, ५४ मे यह पाठ लिखा है।

स्तनादूर्ध्वमधो नाभे र्न कर्तव्यं कथंचन।
स्तनादूर्ध्वे श्रियं हंति नाभ्यधस्तात्तप. क्षय.।
किसी समय स्तन से ऊपर और नाभि के नीचे उपवीत न पहने। प्रथम से श्री का नाश और दूसरे से तप क्षय होता है। इसमे वसिष्ठ से इतना ही भेद है कि यह नाभि से ऊर्ध्व स्तन तक तो मानता है स्तन से ऊपर का निषेध करता है और वसिष्ठ नाभि से ऊपर नहीं मानता है।

(५) कितने यज्ञोपवीत धारण किये जॉय।

(क) उपवीतं वटोरेकं द्वेतथेतरयोः स्मृते।
एकमेव यतिनां स्यादिति शास्त्रस्य निश्चयः॥ देवल

ब्रह्मचारी एक, गृहस्थी, वानप्रस्थी दो और यति एक यज्ञोपवीत पहने। यह शास्त्रका निश्चय है।

(ख) यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौत स्मार्तेषु कर्मसु।
त्रितीये चोत्तरीयार्थं वस्त्रालाभे तदिष्यते॥ हेमाद्रौ
श्रौत स्मार्त कर्म मे दो उपवीत पहने जायं और तीसरा वस्त्राभाव मे पहना जाता है।

उपरि लिखित पाठ में दो बातें नवीन हैं। एक तीसरा उपवीत वस्त्र न होने पर पहना जाय और दूसरी यति एक उपवीत पहने। इस समय वैष्णव साधु उपवीत पहनते हैं परन्तु वस्त्राभाव में भी कहीं पहना जाता है मुझे इसका पता नही है। सनातन धर्म को मानने वाले शैव और आय सन्यासी साधु उपवीत नहीं पहनते हैं इसलिये यती का पहनना वैष्णवों को देख कर लिखा प्रतीत होता है। गृहस्थी और वानप्रस्थी दो पहने इसमें दो पहनने का कोई कारण नहीं दिया है। प्रतीत होता है जबसे स्त्रियो को पहनने का निषेध माना गया उसी समय पुरुषों को दो का विधान भी माना गया क्योंकि ब्रह्मचारी अविवाहित होता है और यति को स्त्री त्याग का विधान है। उनको एक मानकर गृहस्थी स्त्री वाला ही होता है और वानप्रस्थी के साथ भी रह सकती है। उनको दो लिख दिये। आर्य समाजमे स्त्रिए भी पुरुषवत् ही पहनती हैं। इसलिये एक ही पहनना चाहिये। एक स्थान पर तो अनेक पहनने की बात भी लिखी है।

त्रीणि चत्वारि पचाष्ट गृहिणः स्युर्दशापिवा।
कश्यप

तीन, चार, पाच आठ, दश भी पहनलो ।
यह विचित्र व्यवस्था है और सर्वथा त्याज्य है ।

स्नातकानां द्वितीयं स्याद् तर्वासस्तथेतरमिति ।
स्नातक दो पहने । एक वस्त्र के अंदर, दूसरा बाहर । यह भी त्याज्य है । अंदर पहने वा बाहर पहनना एक ही चाहिये ।

(६) किस भांति पहना जाय

उद्धृते दक्षिणे पाणावुपवीत्युच्यते द्विजः ।
सव्ये प्राचीनआवीती निवीती कठ सज्जने ।

दक्षिण हाथ के नीचे उपवीत, बाईं ओर प्राचीनावीति और गले मे सीधा निवीत होता है ।

बाईं ओर विशिष्टावस्था मे पहना जाता हैं । दाईं ओर और सीधा गले मे । इस समय कई आर्य पहनते हैं । प्रतीत होता है स्तन से ऊपर न हो यह सीधा पहनने वालो के लिये ही है ।

(७) यज्ञोपवीत सदा पहने वा कर्म करने के समय मे ही पहने ।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च ।
विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम् ॥
—भृगु ।

सदा उपवीत रखे और सदा शिखा बांध कर रहे ।

इससे प्रतीत होता है कि उपवीत सदा पहनना चाहिये और उत्तरार्ध मे विशिख और व्युपवीत को कर्म फल का निषेध किया गया है जिससे प्रतीत होता है कर्म समय तो अवश्य ही पहनना चाहिये ।

इस सारे लेख का संक्षेप रूप से भाव यह है—

यज्ञोपवीत सदा पहनना चाहिये । यज्ञोपवीत नौ धागो का होता है । प्रथम धागा बनाकर उसकी तीन लड़ी बनाकर एक बना ले फिर तीन लड़िएँ बनाकर गांठ लगावें । यज्ञोपवीत नाभि तक लम्बा हो । ब्रह्मचारी गृहस्थ, वानप्रस्थ प्रत्येक एक यज्ञोपवीत पहने । जिस भांति पुरुष पहनते हैं इसी प्रकार स्त्रियां भी यज्ञोपवीत धारण करें । यदि किसी विशेष कारणवश प्रथम न हो तो कर्म करते समय यज्ञोपवीत अवश्य पहना जाय । यज्ञोपवीत शुद्ध स्थान में शुद्ध सूत्र का बनाना चाहिये ।

ऋषि दयानन्द और पाठन प्रणाली

लेखक—प्रो० स्नातक
धर्मदेव विद्यावाचस्पति बङ्गलौर ।

"सार्वदेशिक" के अगस्त मास के अङ्क मे आर्य समाज के सुयोग्य और सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० गङ्गा प्रसाद जी उपाध्याय M A ने उपर्युक्त शीर्षक से एक लेख लिख कर अन्यों को अपने विचार निस्सङ्कोच प्रकट करने के लिये आमन्त्रित किया है। श्रीयुत सम्पादक 'सार्वदेशिक' जी ने मुझे प्रेरित किया है कि मै भी इस अत्यावश्यक किन्तु विवादास्पद विषय मे अपने विचार आर्य जनता के सन्मुख रक्खू । अपने विचार कुछ स्पष्ट रूप मे प्रकट करने से पूर्व मै श्रीयुत मान्य उपाध्याय जी के इस वाक्य की ओर पाठक महोदयो का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करना चाहता हू कि "मीमांसा युक्तियो और परीक्षाओ तक सीमित रहे व्यक्तिगत आक्षेप या अभिप्रायो पर चोट न की जाए और न यह समझा जाए कि जो कोई किसी प्रणाली मे नुनु नच करता है वह स्वामी दयानन्द या आर्य समाज का शत्रु है ।।"

ऋषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व और कार्य के लिये जो श्रद्धा मेरे मन मे है उस के प्रकट करने की इस लेख मे कोई आवश्यकता नही। अन्य क्षेत्रो की तरह ऋषि दयानन्द ने शिक्षा क्षेत्र मे भी मौलिक अत्यन्त उत्तम विचार 'सत्यार्थ प्रकाश आदि द्वारा जनता के सामने रख कर एक नई क्रान्ति और जागृति उत्पन्न कर दी। उस समय के शिक्षितो की दासता-पूर्ण मनोवृत्ति को परिवर्तित करने और ब्रह्मचर्य सदाचार, सादगी तपस्या आदि के प्राचीन आदर्शों की ओर जनता का प्रेम उत्पन्न करनेमे उनको पर्याप्त सफलता हुई ऐसा कहने मे कोई अत्युक्ति नही । इस समय के प्रायः सब बड़े २ विचारक और नेता गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के मौलिक सिद्धान्तो की उत्तमता को स्वीकार कर उन्हे यथाशक्ति अपनाने मे तत्पर दिखाई देते है। जिन वेदादि शास्त्रो को 'गडरियो के गीत' कहा जाता था और जिस संस्कृतभाषा को 'मृत भाषा' कहा जाता था आज उनके गौरव को प्रायः सब निष्पक्ष पाश्चात्य धुरन्धर विद्वान् भी मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर रहे हैं। "सब को तुल्य वस्त्र खान पान, आसन दिये जाएँ चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो। सब को तपस्वी होना चाहिये। "(स० प्र० ३य स०)"

' इसमे राजनियम वा जातिनियम होना चाहिये कि पांचवें अथवा आठवे वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियो को घर मे न रख सके। पाठशाला मे अवश्य भेज देवें, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।" (स० प्र० पृ० ३६)

इत्यादि वाक्यो द्वारा दूरदर्शी ऋषि दयानन्द ने साम्यवाद के शिक्षाविषयक मौलिक तत्त्व और

अनिवार्य शिक्षा के सिद्धान्त का कितनी उत्तमता से प्रतिपादन किया है ? वस्तुतः शिक्षा के उद्देश्य "जिससे विद्या,सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूट उस को 'शिक्षा' कहते हैं" स्वमन्तव्य २२स०प्र०स्वम० तव्या मन्तव्य प्रकाश पृ० ६७७) तथा आदर्श के विषय में ऋषि दयानन्द का लेख प्रामाणिक कहा जा सकता है जिस को प्राय. सभी पौरस्त्य तथा पाश्चात्य शिक्षा वैज्ञानिक स्वीकार करते चले जा रहे हैं।

अब प्रश्न पाठन प्रणाली के सम्बन्ध मे विस्तार (Details) का रह जाता है जिस मे परीक्षणो और अनुभवो के लिये सदा गुञ्जायश रहती है और रहनी उचित ही है। मेरे विचार मे ऋषि दयानन्द का यह कभी अभिप्राय न था कि उन के इस विषयक लेख के एक २ अक्षर को विना ननु नच के वेद की तरह प्रमाण माना जाए और उस म स्वतन्त्र विचार तथा परीक्षण सिद्ध अनुभव लेने के लिये कोई अवकाश न रक्खा जाए। ऋषि दयानन्द के ही ग्रन्थो मे इस पाठन प्रणाली तथा विद्याभ्यास के लिये समय इत्यादि के सम्बन्ध मे जो भेद पाये जाते हैं उन पर ध्यान देने से मेरे उपर्युक्त विचार का स्पष्ट पुष्टि होती है। श्रीयुत मान्य उपाध्याय जी ने सत्यार्थ प्रकाश के ३य समुल्लास से इस विषयक कुछ आवश्यक उद्धरण दिये हैं जिन के अनुसार उन्हों ने लिखा है कि गान्धर्व वेद और अर्थ वेद को छोड़ कर जिन का अध्ययन काल सत्यार्थ प्रकाश मे छूट गया प्रतीत होता है शेष विषयों के अध्ययन मे २१ वर्ष लगते हैं। सन् १८७५ के सत्यार्थ प्रकाश से भी एक वाक्य "इस प्रकार से २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़ लेगा" उद्धृत करते हुए उन्होने अपना यह विचार प्रकट किया है कि सम्भव है कि 'तक' शब्द से आयु का बोध अभीष्ट हो।

इस लेख को लिखते हुए सन् १८७५ का सत्यार्थ प्रकाश मेरे पास विद्यमान नही है इस लिये उस के पाठ क्रम और अध्ययन काल के विषय मे मैं कुछ नही कह सकता पर मुझे आश्चर्य है कि श्रीयुत उपाध्याय जी.ने 'सस्कार विधि के वेदारम्भ प्रकरण मे दिये पाठ क्रम वा कालादि का इस प्रसङ्ग मे तुलनाके लिये क्यो उल्लेख नही किया ' सम्भवत. वह प्रकरण उनकी स्मृति मे उपर्युक्त लेख लिखते हुए न आया हो परन्तु मेरे विचार मे वह भी विशेष विचारणीय है । सत्यार्थ प्रकाश मे जिन दो विषयो " गान्धर्व वेद और "अर्थ वेद" का अध्ययन काल छूट गया प्रतीत होता है संस्कार विधि के अनुसार उनका समय क्रमश. ३ वर्ष और ६ वर्ष है। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के ३य समुल्लास मे दिये पाठक्रम को पूर्ण करने म २१+३+६=३० वर्ष लगेंगे अर्थात् यदि कोई बालक ८ वर्ष की आयु मे गुरुकुल मे प्रविष्ट हुआ और उस इस सम्पूर्ण पाठ क्रम के अनुसार शिक्षा दी गई तो वह लगभग ३८ वर्ष की आयु में स्नातक बनेगा।

इसके साथ संस्कार विधि के वेदारम्भ प्रकरण मे दिये गये पाठक्रम की तुलना करने पर निम्नलिखित अन्तर स्पष्ट दृष्टिगोचर होवे

हैं। पाठकों को इस अन्तर का स्पष्ट भान हो जाय इसके लिये विषयों तथा वर्षों की तालिका सत्यार्थ-प्रकाश और संस्कार विधिके अनुसार पृथक् २ देता हूँ।

पाठ्य विषय	सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार अध्ययन काल	संस्कार विधि के अनुसार अध्ययन काल वा क्रम
व्याकरण शास्त्र	३ वर्ष	४ वर्ष
निघण्टनिरुक्त	८ मास	१½ वर्ष
छन्द शास्त्र तथा श्लोक रचना	४ मास	६ मास
मनुस्मृति, विदुरनीति, रामायण के भाग आदि	१ वर्ष	१ वर्ष
गणित विद्या	२ वर्ष	१ वर्ष
निघण्टु से ज्योतिष तक वद क्र	..	४ वर्ष
दर्शन शास्त्र तथा १० उपनिषद्	२ वर्ष	२ वर्ष
चारों वेद ब्राह्मण सहित	६ वर्ष	६ वर्ष
आयुर्वेद	४ वर्ष	३ वर्ष
धनुर्वेद	२ वर्ष	३ वर्ष
गान्धर्व वेद	क्रम । नही दिया	३ वर्ष
अर्थ वेद विमान		
तार विद्यादि		६ वर्ष
	२१ वर्ष (पिछले २ विषयों को छोड़कर)	३८ वर्ष

इस प्रकार निष्पक्ष विचारशील पाठक देखेंगे कि संस्कार विधि के पाठक्रमानुसार ३८ वर्ष की आयु में नहीं बल्कि ३८ वर्ष तक अध्ययन के पश्चात् कोई स्नातक बन सकता है अर्थात् यदि ८ वर्ष की आयु में कोई बालक प्रविष्ट हो तो लगभग ४६ वर्ष की आयु मे वह गुरुकुल का स्नातक बन सकेगा। इन दो पाठक्रमो में अध्ययन काल के अन्तर के अतिरिक्त एक बड़ा अन्तर यह है कि जहां सत्यार्थ प्रकाश मे गणित विद्या वा ज्योतिष विद्या को सब से अन्त में रखा है वहां संस्कार विधि में मनुस्मृति विदुरनीति आदि के पढने के पश्चात् उसके अध्ययन का विधान है।

जो लोग ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रम का अक्षरशः अनुसरण करना चाहते हैं उन्हें ऐसे गुरुकुलो की स्थापना करनी होगी जिनमे २९ और ३८ वर्षों तक अध्ययन की व्यवस्था हो। यह ठीक है कि प्रत्येक मनुष्य को सारा जीवन ही विद्यार्थी बने रहना चाहिये किन्तु प्रश्न यह है कि देश की वर्तमान सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थिति मे ३८ अथवा ४६ वर्षो तक अपने पुत्रो को अध्ययनार्थ गुरुकुलों में छोड़ने को कौन माता पिता तय्यार है तथा यह समाज तथा देश की वर्तमान अवस्था मे कहां तक व्यवहार्य हो सकती है ? यह बात भी सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि के पढ़ने से स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द ने "तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनम्" इत्यादि वाक्यों के आधार पर कनिष्ठ ब्रह्मचर्य २४ वर्ष का माना है जिसे वसु ब्रह्मचर्य कहा जाता है। रुद्र ब्रह्मचर्य ३६ से ४४ वर्षों का और आदित्य ब्रह्मचर्य ४८ वर्षो का माना है। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि उनके ग्रन्थों में ऐसी पाठविधि का

प्रतिपादन नही जो वसु ब्रह्मचारियो के लिये उपयोगी हो। यह बात तो सब स्वीकार करेंगे कि वर्तमान समय मे रुद्र तथा आदित्य ब्रह्मचर्य का पालन कर सकने वालो की सख्या वसु ब्रह्मचारियो की अपेक्षा बहुत कम होगी। मै तो इस सारे विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर इस परिणाम पर पहुॅचा हू कि ऋषि दयानन्द ने जीवनोपयोगी पाठ्य विषयो की एक सूची हमारे सन्मुख रख दी है जिनमे से अपनी शक्ति, योग्यता, परिस्थिति तथा समय के अनुसार जितनो का कोई अध्ययन कर सके उसे लाभ ही होगा पर उनके इस विषयक लेख को अक्षरश माना जाए और उसमे समय, देश और समाज की परिस्थिति तथा विद्यार्थियो की योग्यता, प्रवृत्ति आदि के अनुसार कोई परिवर्तन न किया जाय ऐसा उनका अभिप्राय नही था, अन्यथा उनके अपने ही ग्रथो मे इस विषयक कोई अन्तर न होना चाहिये था। जब वर्तमान परिस्थिति मे केवल नियमित विद्याध्ययनार्थ २९ अथवा ३८ वर्ष समय लगाना लगवाना विद्यार्थियो और उनके सरक्षको के लिये सभव नही है तो ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आदर्श उद्देश्य तथा प्रणाली को ध्यान मे रखते हुए उसमे आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना अनुचित नही कहा जा सकता। जैसे कि मै पहले लिख चुका हूँ मुख्य बात शिक्षा के मूल भूत तत्वों के अनुसरण करने की है। पाठन प्रणाली व पाठक्रम मे तो परीक्षण तथा अनुभव के अनुसार परिवर्तन की गुञ्जायश रहनी ही चाहिये इसमें कट्टरपन से काम नही चल सकता। उदाहरणार्थ ऋषि दयानन्द ने व्याकरण शास्त्र को सबसे प्रथम पढ़ाने का विधान किया है और उनके लेखानुसार ३ या ४ वर्ष मे कोई भी बालक पूर्ण वैयाकरण बन सकता है। अर्थात् यदि कोई बालक ८ वर्ष की आयु मे गुरुकुल मे प्रविष्ट हो तो ११ या १२ वर्ष की आयु तक वह व्याकरण का पूर्ण पण्डित बन सकता है। मै इस सभावना से इन्कार नही करता कि ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट क्रम मे व्याकरण की शिक्षा दी जाय तो ३, ४ वर्षों मे कोई पूर्ण वैयाकरण बन सकता है। किन्तु प्रश्न यह है कि एक ८ वर्ष या इससे भी कम आयु के बालक पर व्याकरण जैसे शुष्क समझे जाने वाले विषय का निरन्तर दबाव डालना (यदि ऋषिके लेख का यह अर्थ समझा जाय कि प्रारम्भ मे केवल व्याकरण ही पढाना है अथवा एक समय मे एक ही विषय पढ़ाना है—यद्यपि मुझे इस अर्थ के ठीक होने मे अत्यन्त सन्देह है) कहां तक उसके उचित मानसिक वा बौद्धिक विकास की दृष्टि मे ठीक कहा जा सकता है ? क्या यह अधिक अच्छा न होगा कि संस्कृत साहित्य गणित इतिहास भूगोलादि के साथ २ व्याकरण को भी पढाया जाय जिससे उसका अधिक दबाव प्रतीत न हो। मै जब गुरुकुल मुलतान मे प्रविष्ट हुआ था (सन् १९०९ मे) तो गुरुकुल कांगड़ी में उस समय प्रचलित पाठविधि के अनुसार २ वर्षों में ही हमें सारी अष्टाध्यायी याद करा दी

गई थी किन्तु पीछे यह अनुभव किया गया कि विद्यार्थियो पर अधिक दबाव न पड़े इसके लिये अच्छा है कि २ के स्थान पर ५ वर्षो में अष्टाध्यायी का मूल पाठ कराया जाए। वर्तमान बालकों की मानसिक योग्यता या बुद्धि विकास को दृष्टि में रखते हुए यह आशा करना कि एक १० वर्ष का विद्यार्थी महाभाष्य जैसे कठिन ग्रन्थ को समझ सकेगा असंभव साही प्रतीत होता है। शायद उस अवस्था में संभव होता होगा जबकि पूर्ण ब्रह्मचर्य और विद्या की समाप्ति पर अत्यन्त बुद्धिमान् युवक और मेधाविनी युवती गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हों और स्वाभाविकतया उनकी सन्तान भी मेधासम्पन्न हो। एक ११ वर्ष के बालक में निरुक्त समझने की पूर्ण योग्यता हो यह भी आज कल की दृष्टि से अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है यद्यपि मेधावियो के लिये यह असम्भव नही कहा जा सकता। श्री शङ्कराचार्य जी के विषय में कहा जाता है कि ७ वर्ष की आयु में ही उन्हों ने सब शास्त्रो का अध्ययन कर लिया था। किन्तु यहां हम सामान्य विद्यार्थियो का विचार कर रहे हैं न कि अपवाद स्वरूप अद्भुत मेधावियों का। लग भग १३ वर्ष की आयु के बालक के लिये पूर्व मीमांसादि कठिन शास्त्रो को समझना भी आज कल की दृष्टि से असम्भव प्राय है। इस लिये वर्तमान परिस्थिति, बालकों की योग्यता प्रवृत्ति, अध्ययन का समय, व्यावहारिक आवश्यकताएं इत्यादि सब बातों को दृष्टि मे रखते हुए ही पाठविधि का निर्माण करना उत्तम है न कि लकीर के फ़कीर बन कर कार्य करना। यह अच्छा होता यदि श्रीयुत मान्य उपाध्याय जी अपने विचारों को स्पष्टरूप में विचारशील जनता के सन्मुख रखते और अपने उठाए प्रश्नों का स्वयम् उत्तर देते। यह मानना तो कठिन है कि उन जैसे अत्युत्तम गम्भीर विचारक तथा शिक्षा वैज्ञानिक अपने अनुभव के आधार पर उन प्रश्नों का उत्तर नहीं देसकते (जैसे कि निरभिमानिता सूचक सङ्कोच वश उन्हों ने लिखा है)। इस से अन्यों को भी निस्सङ्कोच अपने वास्तविक विचार प्रगट करने का अच्छा अवसर होता और विचार विनिमय के पश्चात् विद्वन्मण्डली किसी परिणाम पर पहुंचने में शीघ्र समर्थ हो सकती तथापि एक विचार दिशा का उन्हों ने निर्देश कर दिया है जो निस्सन्देह उपयोगिनी है। उन्हों ने जो प्रश्न अपने लेख के अन्त में उठाये हैं उन में से प्रत्येक का विस्तृत उत्तर देने में लेख का विस्तार हो जाएगा और उन में से कइयो पर मैंने पूर्ण विचार—अभी तक नही किया अतः कुछ पर संक्षिप्त टिप्पणी अपनी वैयक्तिक सम्मति के रूप में यहां देना ही पर्याप्त समझता हू शेष उपर्युक्त लेख से बुद्धिमान् समझ सकते हैं।।

(१) संस्कृत जैसी अप्रचलित वा ईषत् प्रचलित भाषा और मातृ भाषा हिन्दी के पढाने की विधि में अन्तर होना आवश्यक है। यत्न यह करना चाहिये कि हिन्दी की तरह संस्कृत का भी वायुमण्डल तय्यार किया जाए अर्थात् कम से कम दिन के कुछ घण्टे (विशेषत प्रात कालके समय) विद्यार्थी संस्कृत मे ही संभाषण

करें, संस्कृतोत्साहिनी इत्यादि सभाओं द्वारा उन्हें संस्कृत में धार्मिक सामाजिक विषयों पर वाद विवाद का अभ्यास कराया जाए। व्याकरण पर अत्यधिक बल देने का यह परिणाम आज कल के विद्यार्थियों पर देखा जाता है कि उन्हें संस्कृत से अरुचि होने लगती हैं। और वह इसे "हौवा" सा समझने लगते हैं। दक्षिण भारत में स्व०आप्टे की संस्कृत पुस्तकों के अध्ययन से जिनमें व्याकरण की अधिकता है विद्यार्थी प्राय घबराते और संस्कृत को पर्यायविषय के तौर पर लेना नापसन्द करते हैं। संस्कृत साहित्य के साथ व्याकरण के आवश्यक नियमों की व्याख्या करने से वह अरुचि उत्पन्न नहीं होती और उपयोगी बोध भी हो जाता है। संभाषण के अभ्यास के बिना केवल व्याकरण वा संस्कृत पुस्तकों से बहुत कम लाभ होता है। दूसरे शब्दों में वा आज कल की भाषा में संस्कृत के पढ़ाने में यथासंभव Direct Method का प्रयोग करना चाहिये ताकि संस्कृत भी कुछ अभ्यास के पश्चात् मातृ भाषा के समान हो जाए। मुलतान गुरुकुल में मैंने अपने आचार्यत्व में सन् १९२६ में इस प्रकार के संस्कृतमय वायुमण्डल को उत्पन्न करने का प्रयत्न किया था जिस का परिणाम संस्कृत में रुचि और योग्यता की दृष्टि से बहुत अच्छा हुआ था।

(२) स्मृति शक्ति को बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना और उसके लिये अवसर देना बाल्यावस्था में कुछ अंश तक उचित ही है किन्तु वह इतनी मात्रा तक न हो कि विषय को समझे बिना विद्यार्थी केवल रट कर पास होना पर्याप्त समझे अन्यथा बुद्धि के विकास में बाधा पड़ेगी। अष्टाध्यायी, निघण्टु तथा उत्तम नीति वचनों का स्मरण आगे अध्ययन के लिये काफी सहायक हो सकता है।

(३) ऋषि दयानन्द के लेख से यह स्पष्ट नहीं कि वे सभी विषयों को (जिनमें से निस्सन्देह उपयोगी सभी हैं) आवश्यक वा अनिवार्य रूपसे पढ़ाना चाहते थे या विद्यार्थियों की भिन्न भिन्न प्रवृत्तियों को देख कर कुछ को वैकल्पिक रखना पर्याप्त समझते थे। सब विद्यार्थियों की सब विषयों मे समान रुचि होना असंभव सा है इस लिये मेरे विचार में व्याकरण का इतना ज्ञान जिस से शुद्ध संस्कृत बोलने और लिखने का अभ्यास हो सके, संस्कृत साहित्य, चारों वेदों के सङ्कलित अंश, १० उपनिषदें, दर्शन शास्त्रोंके मुख्य सिद्धान्त हिन्दी गणित का सामान्य ज्ञान जितना व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी हो (जो अष्टम श्रेणी तक पर्याप्त है) विज्ञान (१० म तक) इतिहास भूगोल (भारत का विस्तृत— अन्य देशों पर साधारण व्याख्यान) इतने विषय १० म श्रेणी तक आवश्यक रूप में पढ़ाये जाएँ आगे महाविद्यालय में वैदिक साहित्य, दर्शन शास्त्रों का सामान्य परिचय, संस्कृत के उत्तम ग्रन्थ इतने आवश्यक रूप मे पढ़ाते हुए अन्य विषय–विज्ञान पाश्चात्य दर्शन, गणित, इतिहास अर्थ शास्त्र, कृषि विद्या, आयुर्वेद । विशेष अध्ययन वैकल्पिक हों, इस विषय पर व्याख्यानों के द्वारा सामान्य ज्ञान सब को दिया जाए) गान्धर्व वेद वा सङ्गीत,

अर्थवेद् वा शिल्पविद्या, धनुर्वेद वा राजनीति विद्या (सामान्य ज्ञान सब को कराया जाय व्याख्यानादि द्वारा किन्तु विशेष रुचि रखने वालों को वैकल्पिक विषय रख कर विशेष अध्ययन कराया जाय) इनके साथ धर्म का तुलनात्मक अनुशीलन ये पर्यायविषय रूप में पढ़ाये जाएँ। इस प्रकार किसी के मस्तिष्क पर अनुचित दबाव न पड़ेगा और अपनी रुचि वा प्रवृत्ति के अनुसार विद्यार्थी उचित विषयों का चुनाव करके उन मे अच्छी उन्नति कर सकेगा। इतना अध्ययन १४ वर्ष के काल मे किया जा सकता है, यह अनुभव सिद्ध बात है। यह बात ठीक है कि आदर्श ज्ञान की दृष्टि से इतना ज्ञान अपर्याप्त होगा किन्तु सब की सब विषयों मे रुचि होना भी तो सभव नहीं और बिना रुचि के किसी को पढ़ाने से क्या लाभ हो सकता है ?

इस विषय मे एक बात और विचारणीय है। ऋषिदयानन्द अपनी पाठ विधि में अंग्रेजी तथा अंग्रेजी के विज्ञान मनोविज्ञानादि विषयक ग्रन्थों को कहाँ तक स्थान देना चाहते थे यह बात उनके लेख से स्पष्ट नहीं तो भी यह कहना मेरे विचार में सर्वथा अशुद्ध होगा कि वे अंग्रेजी वा अंग्रेजी में विज्ञानादि के सर्वथा विरोधी थे। उनके वेद भाष्य आदि देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे विज्ञान (science) से प्रेम रखने वाले थे। अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों का उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। साथ ही सत्यार्थ प्रकाश २ य समु में उन्होंने लिखा है "जब पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओंके अक्षरों का भी"। (पृ० २७)—यद्यपि आगे पाठविधि में ऋषि ने अंग्रेजी के विज्ञान अथवा अन्य ग्रन्थों के पढ़ने का कोई स्पष्ट निर्देश नहीं किया तथापि यह नहीं माना जा सकता कि वे केवल अंग्रेजी आदि भाषाओं के अक्षर सीखने के ही पक्ष में थे। कुछ भी हो, वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए और ज्ञानवृद्धि की दृष्टि से भी सब विषयों का तुलनात्मक अनुशीलन Comparative study) ही इन दिनों अधिक उपयोगी हो सकता है और इसलिए पाठ विधि मे अंग्रेजी को उचित स्थान मिलना ही चाहिये, इस की व्यावहारिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए ५म या षष्ठ श्रेणी से इसे भी आवश्यक रूप में कमसे कम वैकल्पिक रूप में पढ़ाना ही अच्छा है अन्यथा अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ेंगी और विद्यार्थी अपने ज्ञान से शिक्षित जनता को अधिक लाभ भी न पहुँचा सकेंगे।

(४) इस विषय पर कि "देश की तात्कालिक अवस्था का पाठविधि के परिवर्तन में कितना स्थान हो।" मैं ऊपर कुछ प्रकाश डाल चुका हूँ। इसे भी ध्यान में रखते हुए पाठ विधि का निर्माण होना चाहिए।

(५) दर्शन, आयुर्वेद अथर्ववेद, आदि प्राचीन ग्रन्थ ज्यों के त्यों शुरू कर दिये जाए यह आवश्यक नहीं यदि उन विषयों का सामान्य ज्ञान देने के लिए आरम्भिक पुस्तकों की सहायता ली जाय तो उन्हें समझना अधिक सुगम हो जायगा।

(६) साहित्य के ग्रन्थो (रामायण—महाभारत —मनुस्मृति आदि) का अध्ययन महाभाष्य के पूर्ण होने तक स्थगित रखने की आवश्यकता नही। उन्हे व्याकरण के साथ २ पढ़ाया जाना ही अधिक उपयोगी होगा।

शेष प्रश्नो का उत्तर मेरी अपेक्षा कोई व्याकरण शास्त्र के पढ़ानेमें अधिक अनुभव रखने वाले महानुभाव अधिक अच्छी तरह दे सकेंगे इसलिये उनका उत्तर मैं उन्हीं के लिये छोड़ देता हू।

आशा है विचार शील महानुभाव इस लेख पर निष्पक्ष होकर वर्तमान परिस्थिति बालको की सामान्य योग्यता, प्रवृत्ति आदि को ध्यान में रखते हुए विचार करेंगे। एक सत्यप्रेमी के रूप मे मैं इन विचारो में उचित परिवर्तन करने के लिए सदा उद्यत हूँ यदि कोई महानुभाव मुझे इन विचारो की अशुद्धता का विश्वास दिला दें।

"आर्यसंस्कृति और स्त्रियां"

श्रीमती स्नातिका सुशीला देवी
विद्यालंकृता-सोनगढ़ महाविद्यालय
काठियावाड़

"भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रोंसे नहीं अपितु पुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका होता।" (महर्षि दयानन्द)

पुरुष और प्रकृति, ब्रह्म और माया, नर और नारी ये युगल हैं—ब्रह्माण्ड के सृजनहार। प्रखर, तेजस्वी, मूर्धा समान, प्रकाशमान और द्युलोक के दिनमणि के समान पुरुष है, तथा शीतोष्ण एवं सुख-दु:खों के द्वन्द्वों में अचल रहकर चन्द्र की चन्द्रिका की भांति उरोदधि को उछालती हुई, छलकाती हुई, सर्वसहा, पृथिवी की तरह विशाल हृदया और क्षमाशीला है स्त्री।' द्यौरहपृथिवी त्वम्।" (अथर्व) पुरुष प्राण है तो स्त्री वाणी है"अमोऽहमस्मि सा त्वम् (अथर्व) पुरुष सूर्य है तो नारी है चन्द्रमा, पुरुष साम है तो नारी ऋचा है। 'सामाहमस्मि ऋक् त्वम्' (अथर्व) पुरुष गान है तो नारी उसका ध्रुवपद है। इस प्रकार ये दोनों दूसरे के पूरक हैं, अन्योन्य आश्रित हैं और एक एक दूसरे के साथ सम्बद्ध है Each completes the other

इन सब प्राकृतिक गुणोंके होते हुए भी अपने अपने क्षेत्रों में दोनों शक्तियों का महान् और स्वर्गीय महत्व होते हुए भी समय समय पर स्त्री पुरुष सम्बन्धी भावनाओं में बड़े ही विचित्र और असह्य परिवर्तन होते गये हैं। समाज का दृष्टिकोण बदल सा गया, असाधारण भाव साधारण हो गये, आध्यात्मिकता का माप उत्तरोत्तर अवनत होता गया। राष्ट्र के पतनके साथ ही इतिहास का पतन भी प्रारम्भ हो गया। स्त्रीके दैवी अधिकार छीन लिये गये। स्त्री की कोमलता पुरुषके उच्छृ-ङ्खल होने का साधन बन गई। मध्ययुग के कठोर इतिहास के पृष्ठ पलटते हुए तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मनुस्मृतिके पवित्र भावमय निम्न श्लोक का विपरीत अर्थ करके महान् अनर्थ किये गये। श्लोक कितना सुन्दर और भावमय है देखिये—

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति

अर्थात् कुमार अवस्था मे कन्या पितासे रक्षित होती है, यौवनावस्था में या विवाहित होकर पति से, वृद्धावस्था मे पुत्र रक्षा करते है। स्त्री कभी अलग अकेली स्वतन्त्र अरक्षित होकर न रहे।

इस श्लोक से स्त्री की कोमलता का तथा उसके मूल्य का आभास होता है। मूल्यवान् वस्तु को ही खूब सुरक्षित गोप्य रखना पडता है। परन्तु बड़े २ विद्वानों ने इसके वास्तविक अर्थ को न समझकर उसकी पवित्रताका अपमान किया। उसके मूल्य को पैरों से ठुकराया, उसको अविश्वसनीय समझा, उसकी स्वतन्त्रता छीन ली, उसे पुरुषों के बराबर अधिकारों के उपयुक्त न समझा, उसके आत्मिक व मानसिक विकास के विशाल द्वार पर ताला

ठोक दिया। उपनयन संस्कार से वञ्चित रख कर सदाके लिए अविद्या के अन्धकूप में धकेल दिया। "स्त्रीशूद्रौ नाधीयता मितिश्रुतिः" की मनगढ़न्त रचना करके वेदों के नाम से भी भ्रम उत्पन्न करने लगे। बौद्धकालीन स्थिति तो बड़ी दर्दनाक थी, बौद्ध-संघ मे स्त्री जैसी पवित्र व्यक्ति को दाखिल करने की मनाही थी, बुद्ध भगवान ने अपने ही श्रीमुख से आनन्द से जो शब्द कहे थे उससे उस समय के बड़े से बड़े विद्वानो के अन्त प्रदेशों मे देवियों के प्रति कितना सन्मानका भाव था, इसका भलीभांति अनुमान हो सकेगा। भगवान कहते हैं और बिल्कुल स्पष्ट कहते हैं कि—

"हे आनन्द ! यदि तथागत द्वारा प्रतिपादित धर्म विषय मे स्त्रिया प्रव्रज्या न पातीं तो यह धर्म चिरस्थायी होता, सद्धर्म सहस्र वर्ष तक ठहरता। लेकिन क्योंकि आनन्द ! स्त्रिया भिक्षुणी हुई अत अब यह धर्म चिरस्थायी न होगा, सद्धर्म ५००वर्षों तक ही ठहरेगा।"

औरों की तो बात जाने दीजिये। सर्वप्रथम उनकी माता महाप्रजापति गौतमी ने संघ मे प्रविष्ट होनेके लिये तीन बार आज्ञा मागी परन्तु तीनों बार उन्हें निराश होना पड़ा। बहुत कुछ अनुनय-विनय के उपरान्त जब कृपा की तो उनके लिए भिक्षुओं की अपेक्षा कहीं अधिक कड़ नियम निर्माण किये गये। उनमे से एक यह भी था कि चाहे कोई भिक्षुणी देवी कितनी ही वयोवृद्ध क्यों न हो, चाहे सौ वर्षों की आयु वाली भी हो तो भी उसे उसी दिन के नवदीक्षित भिक्षु के लिये सन्मान सूचक अभ्युत्थान, अभिवादन आदि शिष्टाचार प्रदर्शित करने पड़ेंगे इतने पर भी लाखों भिक्षु पुरुषों में भिक्षुणियों किंवा स्त्रियोंकी संख्या अधिक से अधिक ५०० ही थी। बौद्ध साहित्य के अन्तर-नुशीलन से यह भी विदित होता है कि उस समय एक-पत्नी व्रत का आदर्श लुप्त हो चुका था। बड़े २ राजाधिराज बहुविवाह करते थे। राजा बिम्बसार की १६००० रानियो का जातक ग्रन्थों मे वर्णन आता है।

यह तो हुआ मध्ययुग के पूर्वार्ध के या बौद्ध-कालीन इतिहास के कुछ थोड़े पृष्ठो का दिग्दर्शन। यदि उत्तरार्ध के पन्ने पलटाए जॉय तो हृदय क्रान्ति की ज्वाला से जल उठता है और उबल उठता है। स्त्रियों पर समाज के अत्याचार और अन्यायो ने इस समय के इतिहास को इतना कलुषित कर दिया है कि इतिहास के पन्ने समाज की स्वेच्छाचारिता की कालिमा से सदा काले ही रहेंगे। इस समय भारतीय रमणी को मनुष्य की कोटि में नहीं गिना जाता था। पशु वर्ग मे भी उसका स्थान सुरक्षित था या नहीं इसमें भी सन्देह रहता है। जहा समाज मे उसकी कोई स्थिति न थी वहा परिवार में भी गिनती न थी। उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व ही नष्ट हो गया था। शंकराचार्य जैसे प्रगाढ़ पण्डित ने भी निस्संकोच हो कह दिया। "प्रश्न— द्वारं किमेकं नरकस्य ? उत्तर—नारी" नरक का द्वार यदि देखना है तो नारीको देखलो। कितना रोमाञ्चकारी पतन था ? और तो और तुलसीदास जी जैसे भक्त सन्त भी कितना स्पष्ट कहते हैं—

"ढोर गँवार शूद्र पशु नारी ये सब ताड़न के अधिकारी" स्त्रियों ने विश्व मे केवल मात्र मार खाने के लिये ठोकरें खाने के लिये लातें खाने के लिये तथा गालियां सुनने के लिये ही शायद जन्म धारण किया था। मानवजन्म धारण करते हुए भी स्त्रियां पशुओं से अधिक पतित मानी गई थीं। वे पैर की जूती के समान समझी जाती थीं। जिस प्रकार पैर की जूती जीर्ण-शीर्ण हो जाने पर या पुरानी हो जाने पर बदल दी जाती है इसी प्रकार स्त्री को भी बदला जाता था। साराश यह कि दुनिया का कूडा कर्कट स्त्री को समझा जाता था।

हिन्दू रमणी का जीवन तो देख लिया। अब आइये सेमेटिक धर्म मे स्त्री का कैसा स्थान है उसे देखे। इस मत ने भी देवियो क विषय मे बड़ी विचित्र मान्यता रक्खी है। यहूदियों की मान्य पुस्तक बाइबल के पुराने अहदनामे मे लिखा है कि खुदा ने मिट्टी से गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि को बना दिया परन्तु उसमे रूह नहीं फूंकी। इसी प्रकार स्त्री को भी बनाया किन्तु उसमे भी रूह नहीं फूंकी अर्थात् आत्मा नहीं डाली। उसे जड़वत् बनाया। अन्तत आदम को बनाकर उसमे रूह फूंकी। इसीलिये पक्के ईसाई मुसाई और मुहम्मदी पशुओं और स्त्रियों को समान मानते हैं। दोनों को अनात्मा या जड़ मानते हैं। स्त्री की उत्पत्ति ही कितनी विषम मानते हैं? मुसलमान लोगों का सिद्धान्त है कि दो स्त्रियों की गवाही एक पुरुष के बराबर है। अर्थात् दो स्त्रियों के बराबर एक पुरुष की बुद्धि होती है। स्त्रिया अविश्वसनीय तथा बुद्धिहीन होती हैं। चीन के एक धुरन्धर सुधारक कन्फ्यूशस का कथन है कि "स्त्रियों का उचित स्थान घरही है। उसे घरके सिवा अन्य कहीं बाहर नहीं जाना चाहिये। उनसे अधिक परिचय भी नही बढ़ाना चाहिये। पारसी धर्म तो उसे पदपदका गुलाम बनाना चाहता है। वह कहता है कि प्रात उठकर एक एक काम के लिये स्त्री को चाहिये कि दश दश बार अपने पति को पूछे। अपनी स्वतन्त्र इच्छा से कुछ न करे। कहने का अभिप्राय यही हुआ कि एक समय पारसी रमणी सैमेटिक नारी तथा हिन्दु-देवी सब की लगभग समान ही स्थिति थी। सभी समाजों ने स्त्रियों का यथाशक्ति अपमान किया, पददलित करने में कोई कसर न रक्खी।

परन्तु 'अति' का सदा विनाश हो जाता है। जब कोई कुप्रथा या दुश्चरण अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है, जब किसी भी प्रकार का पतन सीमातीत हो जाता है, हद लाघ जाता है तब उसमें प्रतिक्रिया की भावना जागृत होती है, प्रतिकार या बदला भयङ्कर स्वरूप धारण करता है। जब पापका घड़ा छलाछल भर जाता है तब आखिरकार वह स्वयमेव फूट पड़ता है। एक रबर जैसी निश्चेतन वस्तु भी यदि उसकी सीमा से अधिक खींची जाती है तो वह भी टूट पड़ती है। तो यह तो समाज है, विश्व का एक प्रधान अङ्ग है, सस्मृति का आदि स्रोत है। उसकी सीमातीत अधोगति का भी उचित परिणाम निकलना ही था। ईश्वरीय नियमानुसार इस "अति" के अनन्तर प्रतिक्रिया की भावना उद्बुद्ध हुई। सत्य ने अपना शिव और सुन्दर स्वरूप धारण किया और प्रका-

शित हो उठा।

वह समय भी आया जब स्त्रियां अपने अधिकारों को समझने लगीं, उन्हें भी आत्म-ज्ञान होने लगा। पाश्चात्य देशों में तो स्त्रियों के अधिकारों के लिए एक प्रबल आन्दोलन १७६२ मे मेरी वोल्स्टन ने प्रारम्भ किया (सब से पहले इङ्गलैंड में) और इसके लगभग ५० वर्षों के अनन्तर जेम्स स्टूअर्ट मिल ने स्त्रियों के व्यक्तित्व पर जोर शोर से अपनी कलम चलाई और इस आन्दोलन को दार्शनिक सहारा दिया। इस समय पश्चिम की बहिनें अधिकाश अपने अधिकारों में सफल होगई हैं,उन्हें नागरिकता के अधिकार मिल गये हैं और वे वोट भी दे सकती हैं। टर्की तथा अफ़गानिस्तान जैसे देशों मे भी देवियों ने बुर्क़े उतार फेंके हैं, और वे अपने अधिकारों की, अपने व्यक्तित्व की, एव अपने स्त्रियोचित आदर्शों के विचार करने लगी है। आज हमारे देश मे भी देवियों ने कांग्रेस मे अपने स्थान की भली भाति पूर्ति की है, आज तो जिधर ही दृष्टिपात करे उधर ही स्त्रियो के समानाधिकार, स्वतन्त्रता आदि की खूब चर्चा सुनाई दे रही है, यह आन्दोलन या स्त्रियो को महत्ता देने का विचार कोई आज का नहीं है। वैदिक साहित्य में स्त्रियों के माहात्म्य के विषय मे अनेक वर्णन आते हैं। परन्तु इस युग मे देवियो को पददलन से बचाने के सर्व प्रथम विचारक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी थे। उन्होंने स्त्रियों की गिरती हुई दशा को सम्भाल लिया, वे ही उनकी डूबती हुई नैया के कर्णधार बने। वेही उनका वास्तविक स्वरूप और महत्ता पहचान सके, उन्हों ने मार्ग खोल दिया, ईश्वरीय आदेश सुनाकर मृतप्राय स्त्री जाति को पुनर्जीवित किया। मातृशक्ति की वन्दना करने वाले वे ही एक सच्चे मातृ-भक्त निकले। एक पाच वर्ष की बाला के सामने भी श्रद्धा और भक्ति से वे अपना मस्तक नवा देते थे। क्योंकि भविष्य मे उसने माता बनना है, पुरुषको जन्म देना है। उस विश्व-निर्मात्री शक्तिकी दुर्दशा उनके नेत्रोंको सदा सजल रखती थी और उनके अन्तरमें एक तमन्ना पैदा हो गई थी स्त्री जाति में उत्थान की—पददलित जाति की उन्नति के श्रीगणेश करने की। उनके विचारों का स्रोत वेद है, इस लेख मे हम अति सक्षेप से वेदों में स्त्रियों के सम्बन्ध में कैसे कैसे विचार है उनका दो शब्दोंमे वर्णन करनेका प्रयत्न करते हैं।

अब हम मध्ययुग मे आर्य रमणियों, सैमैटिक मतावलम्बी देवियों, मुस्लिम तथा पारसी स्त्रियों के लिये उनके मतान में जो भाव थे और उन्हीं के विरुद्ध या उसी सम्बन्ध में हमारे वेदो में क्या विचार आते हैं उन्हें देखने का यत्न करेंगे। सैमेटिक मत कहता है स्त्रियों मे आत्मा नहीं वे जडवत हैं, परन्तु क्या पुरुषों की भाति स्त्रिया अनुभव नहीं करतीं? तर्कना नही करतीं? विचार नहीं करतीं? क्या ये सब आत्मा के विषय नहीं? आत्मिक बल के बिना वह माता बन ही नहीं सकती, आत्मन्वती हुये बिना वह आत्मा वाले पुरुषों को उत्पन्न कर ही नहीं सकती। यदि स्त्री आत्म हीन है तो उसकी सन्तति मे आत्मा कहां से आ सकती है? तो फिर पुरुष भी आत्म-हीन ही होंगे। परन्तु हमे इन तर्कों में नहीं पड़ना,

अथर्ववेद का एक मन्त्र इस विषय में क्या ही सुंदर ध्वनि करता है—

"आत्मन्वत्युर्वरा नारीयमागन् तस्यां नरो वपत बीजमस्याम्"

अर्थात् (आत्मन्वती) आत्मिक बल से युक्त (उर्वरा) उत्तम संतान उत्पन्न करने वाली यह (नारी) स्त्री (आगन्) आगई है (हे नर.) मनुष्यो ? इस स्त्री में (बीजं वपत) बीज बोवो।

इससे स्पष्ट है कि स्त्री में आत्मा है "सह" है, अनात्मवस्तु आत्मा को उत्पन्न नहीं कर सकती, आत्मा की सर्जक शक्ति 'अनात्म' नहीं हो सकती। स्त्री "आत्मदा" है, आत्मा को देने वाली है जो वस्तु स्वय अपने पास न हो वह दूसरे को कैसे प्रदान की जा सकती है ? स्त्री के बिना तो पुरुष आधा है, तथैव पुरुष के बिना स्त्री आधी है, दोनों मिलकर ही पूर्णाङ्ग बन सकते हैं। दोनों ही एक दूसरे के बिना अधूरे हैं और दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। शतपथ ब्राह्मण में आता है—

"आत्मैवेदमग्र आसीत् पुरुषविध । सोऽह-मस्मि इत्यग्रे व्याहरत् तत अह नामाभवत्। स वै न रेमे। तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत्। सहैतावानास यथा स्त्रीपुमांसौ संपरिष्वक्तौ। स इममात्मानं द्वेधापातयत्। तत पतिश्च पत्नी चाभवताम्।"

इस प्रकार पति और पत्नी एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं। इस बात को यह सदर्भ कितने सुन्दर अलङ्कार से वर्णन कर रहा है। इसलिये जो अधिकार पति के अर्थात पुरुष के हैं वे स्त्री के भी होने चाहिये। जब वह अनात्म वस्तु नहीं है, पुरुष की भांति आत्मावाली तथा उसकी पूरक भी है तो उसे भी मनुष्यता का, उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व का, तथा अपने क्षेत्र में पुरुष के बराबर ही अधिकार हैं वैसे तो स्त्री और पुरुष की प्राकृतिक उत्पत्ति में ही विभेद है। उस विभेद के अनुसार स्त्री को गृह के अन्तर्विभाग का तथा पुरुष को बाह्य विभाग का क्षेत्र सम्भाल लेना चाहिये। परिवार में उसका भी उच्च स्थान होना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि स्त्रियों को पशु के समान, दासी के समान समझा जाता रहा है। वस्तुत वह तो घर की रानी है दासी नहीं। अथर्ववेद में इस सम्बन्ध में एक मन्त्र आता है कि—

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा।
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्त परेत्य ॥

(यथा) जिस प्रकार (वृषा सिन्धु) बलवान समुद्र ने (नदीना साम्राज्य) नदियों का साम्राज्य (सुषुवे) उत्पन्न किया है (एव) इसी प्रकार पत्यु अस्त परा इत्य) पति के घर जा कर (त्व सम्राज्ञी एधि तू साम्राज्ञी बन कर रह।

न केवल पति के ऊपर ही अपितु—

"सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्युत देवृषु।
ननान्दु सम्राज्ञ्येधि सम्राज्युत श्वश्र्वा ॥

अर्थात् अपने श्वशुर के साथ, देवर पर तथा ननदों के उपर भी तेरा ही साम्राज्य हो शासन हो और राज्य हो।

इतना महत्व घर में या परिवार में स्त्रियों का है। अत पुरुष तथा स्त्री दोनों के अपने २ क्षेत्र हैं। पुरुष अपने क्षेत्र का राजा है तो स्त्री अपने घरकी महारानी है। वह रक्षणीया है तथा पोष्या

है। अत पुरुष उसकी रक्षा करे न कि उसकी कोमलता पर अपनी परुषता या कठोरता का लाभ उठाए। घर की रानी कहने से भी केवल घर की चार दिवारों में ही उसे "असूर्यम्पश्या राजं दारा" बन कर बैठे रहना चाहिये ऐसा अभिप्राय नहीं है। जैसे ऊपर एक चीन के सुधारक कनफ्यूशस का मत उद्धृत कर आई हूँ। ऋग्वेद का एक मंत्र बड़ी ही सुन्दर भावना में कहता है कि—

" अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी"

(अहं केतु) मैं ज्ञानवती हूं, (अह मूर्धा) मैं घर में मुख्य हू तथा (अह उग्रा विवाचनी) मैं धैर्यशाली वक्तृत्व करने वाली वकील भी हूँ। इससे विदित होता है कि स्त्री भी विदुषी तथा बाहर के कामों से अभिज्ञ भी होनी चाहिये। तभी वह अपने पति को प्रत्येक काम में सम्मति दे सकती है " कार्येषुमन्त्री " बन सकती है।

हमारे पूर्वज ऋषि कहा करते थे कि विष्णुर्विदेहसरस्वती ' अर्थात् स्त्री सरस्वती है तथा संसार की वैष्णवी महामाया है। यदि सचमुच विश्व के आयुष्य की वृद्धि करनी हो, यदि वस्तुत जीवन रस विकसित करना हो, यदि सच्ची प्रेरणा की शक्ति सचित करनी हो तो वैष्णवी महामाया की अर्चना करना, पूजा करना हमारा परम धर्म है। " यत्र नार्यस्तुपूज्यन्ते रमन्तेतत्र देवता " द्रौपदी की मान रक्षा करते हुए भारत ने महाभारत का दर्शन किया, और सीता के पतिव्रतानल मे आर्यावर्त ने रामायण के इतिहास का अवलोकन किया है। वस्तुत अबला अबला नहीं है। वह तो देवाधिदेव की दिव्य वृत्ति है, शक्ति की पुञ्ज है, बलकी साकार प्रतिमा है, ज्योतिपरायणा कोई लोकोत्तर मूर्तिमन्त साधना है, तपस्या की देवी है, विश्व के निर्माणमंत्र घोषा, विश्ववारा, अरुन्धती और लोपा मुद्राओं द्वारा निर्मित हैं। पुण्यात्मा और सती साध्वी सुशीला स्त्री क समान दुनिया में अन्य कोई वस्तु सुदर नहीं है, शोभन नहीं है और मंगलमयी नही है। तभी तो भगवान कृष्ण ने कहा है गीता में—

"स्त्रीषु दुष्टासु कौन्तेय ! जायते वर्णसकर "

स्त्रियो के बिगड़ने से वर्णसंकर प्रजा पैदा होती है और स्त्रियों के उत्थान से जाति का अभ्युदय हुआ करता है। अत इस दिव्य शक्ति को पूर्णत पहिचान कर उसका आदर करना चाहिये। उसके दैवी गुणों का मूल्य आकना चाहिये।

स्त्रिया तो साक्षात, क्षमा, दया और स्नेह की प्रतिमाएं हैं। कई दृष्टियों से तो उनका महत्व पुरुषो से भी अधिक है। वेद इस बात को बड़ी सुन्दरता से स्पष्ट करते हैं। जैसे—

"उत त्वा स्त्री शशीयसी पु सो भवति वस्यसा ।। अर्थात "यह विषय प्रसिद्ध है कि बहुत सी पतिव्रता स्त्रिया पुरुषों से अधिक धर्म मे दृढ़तर और प्रशंसनीया होती हैं।" यह आदर्श या माहात्म्य केवलमात्र वेदमन्त्रों में ही निहित नही रह गये। आइये प्राचीन इतिहास पर ! इन आदर्शों के अनुसार देवियो ने कितनी प्रगति की थी, कहा तक गति प्राप्त की थी, इस पर कुछ दृष्टिपात करके इस लेख को समाप्त करें।

गार्गी मैत्रेयी जैसी दिव्य ब्रह्मवादिनियों ने तो ब्रह्मज्ञान में ऋषियों को भी चकित कर दिया

था। हजारों वेदज्ञ ब्राह्मणों की परिषद् में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को ब्रह्मज्ञान के विषय में आह्वान किया था और याज्ञवल्क्य ने "गार्गि! याति प्राची" कह कर उसकी विद्वत्ता को मुक्तकंठ से स्वीकारा था, शिरोधार्य किया था। उभयभारती ने मंडनमिश्र और शकराचार्य के शास्त्रार्थ में मध्यस्थ होकर अपने पति के पक्ष को पुष्ट करने के लिये कहा था—"शकर! अर्ध देह पर विजयी होकर गर्व न कीजियेगा, सच विजयी होना हो तो पूरे देह के साथ अर्थात् मेरे साथ भी शास्त्रार्थ करो!" शंकर स्तब्ध हो जाते हैं। कहने का अभिप्राय यही है कि यदि स्त्रियों को भी पुरुषों के बराबर विकसित होने का अवसर दिया जाय तो वे उनसे किसी भी प्रकार पीछे नहीं रह सकतीं। उनमें भी मन, बुद्धि, आत्मा पुरुषों के समान ही है। हमारा प्राचीन इतिहास इन देवियों के उज्वल चरित्रों से चमक रहा है देखिये, आज भी वे पृष्ठ जिनपर गार्गी, मैत्रेयी, कात्यायनी, उभयभारती, विद्याधरी, ब्रह्मवादिनी, सुलभा आदिके स्वर्णाक्षरों में नाम खुदे हुए हैं, गर्व से मस्तक ऊंचा कर देते हैं, आज भी सती सीता, पार्वती, दमयन्ती, सती सावित्री, साध्वी सेन्ट टेरोसा और केथेराइन की त्याग और तपस्यामय जीवन-ज्योतिया हरएक भारतीय नारी के हृदय मे द्योतित हो रही है, आज भी महारानी लक्ष्मीबाई, विमला, उत्तरा, कुन्ती, जोन आफ आर्क, विदुला, केकैई आदि वीराङ्गनाए एक भारतीय के रोम रोम में वीरता का सञ्चार कर रही हैं। आज भी उस सिंहनी, रणचण्डिका दुर्गा की शूरता से भीगे हुए शब्द मेरे कानों में गूज रहे हैं—

यो मां जयति स ग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके, स मे भर्ता भविष्यति॥

कैसा सुन्दर चैलेञ्ज है, किस रमणी की नसों में ये शब्द नवीन रक्त का सचार न करेंगे? नव-शक्ति जागृत न करेंगे और अपनी दीन दशा को बदलने के लिये प्रतिक्रिया की ज्वाला में जला न देंगे?

इसलिये आओ! मातृशक्ति के उपासको! आओ!! और बड़ी श्रद्धासे आकर अपनी जनयितृ शक्ति की वंदना करो। उस वैदिक युगका आह्वान करो। देवाधिदेव के चरणों में हृदयाञ्चल पसार कर उन रमणी रत्नों की भिक्षा मागो जिनके नाम से आज तक हमारा गौरव स्थिर है। यदि इस गुलाम दशा में भी आशा की झांकी करनी है तो झाको अपनी माताओं के हृदयों में, उनका उद्धार करो, उनकी शिक्षा के लिये, उनकी मान-सिक उन्नति के लिये कमर कसो, उन्हें ठुकराओ मत, फिर देखो वह दिन दूर नहीं जब वह प्राचीन युग का पुन दर्शन हो जाएगा, स्वर्गीयता हमारे देश में छा जाएगी।

जग क्या है ?

हो गया कभी यह जग सपना,
फिर कभी स्वयं ही सत्य बना ।
इस असमञ्जस में जग क्या है,
खो गया ज्ञान भी अब अपना ।

था कभी यहां दिन का प्रकाश,
फिर कभी निशा का हुआ भास ।
तम द्युति के आवागमन बीच,
पद्दलित हुआ मेरा विकास ।

थी कभी यहां आशा प्यारी,
फिर कभी निराशा की बारी ।
इन दोनों ने मिलकर मेरी,
ली लूट शांति की निधि सारी ।

था कभी जगत् यह करुणा मय,
था कभी जगत् यह अति निर्दय ।
बस अदल बदल कर सुख दुख का,
हो रहा यहां पर क्रय विक्रय ।

अब समझ गया सारी बातें,
ये थीं मेरे मन की घातें ।
यह मन ही का था चमत्कार,
जो दिन में भी देखीं रातें ।

ब्र० राम कुमार, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

लेखक—
श्री० पं० रामनारायण मिश्र काशी

श्रद्धेय पं० रामनारायण जी मिश्र बी० ए० का विद्यार्थियों और नवयुवकों के साथ बहुत लम्बा और घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। उन्होंने हाल में काशी विश्वविद्यालय के सेन्ट्रल हिन्दू हाई स्कूल की सेवाओं से चिरकाल पर्य्यन्त हेडमास्टर पद पर कार्य्य करने के बाद विश्राम ग्रहण किया है। उन्हों ने विद्या थियोपयोगी काफ़ी साहित्य पैदा किया है। उनके एतत सम्बन्धी लेख को आर्य्य कुमारों के लाभार्थ हम यहां क्रमश देते हैं।

जो व्यवहार भले आदमी एक दूसरे के साथ करते हैं उसको शिष्टाचार कहते हैं। उसका मूल सिद्धात है दूसरों को अपने प्रेम और आदर का परिचय देना और किसी को असुविधा और कष्ट न पहुंचाना।

बचपन ही से शिष्टाचार के नियम जान लेने चाहिएँ। ऐसा करने से उन पर चलना स्वाभाविक हो जाता है। ये नियम भिन्न भिन्न समाजों मे भिन्न-भिन्न हैं और देश-काल के अनुसार बदलते रहते हैं। उनमे से कुछ नीचे लिखे जाते है—

(क) बड़ों के साथ व्यवहार-सम्बन्धी

(१) बड़ों को सदा 'आप' कहो, 'तुम' नहीं।

(२) उनको, सवेरे उठते ही, अथवा जब पहले-पहल उनका सामना हो जाय, सोने से पहले, और उनसे अलग होने के समय प्रणाम करो।

बहुत से अच्छे घरों मे शाम को, चिराग दीया बलने, के समय भी प्रणाम करने का नियम है।

किसी नए आदमी से परिचय कराया जाय तो उसको प्रणाम करो।

इलायची आदि या किसी प्रकार का पुरस्कार यदि कोई दे तो उसको प्रणाम करो।

प्रणाम करने के समय हाथमे कोई भद्दी चीज न रहनी चाहिए।

प्रणाम चिल्लाकर मत करो, शान्ति से, सामने होकर, नम्रतापूर्वक करो।

(३) कोई बड़ा बुलाए तो "क्या", ऐं" या "हां" मत कहो, "जी" "जी हाँ" कहो।

बंगालियों मे ऐसे अवसर पर "आज्ञा" और राजपूताना मे "हुक्म कहते हैं।

(४) लोगों को बुलाने, पत्र लिखने या उनकी चर्चा करने में उनके नाम के पहले श्री, श्रीयुत, पंडित, बाबू, महाशय या मौलवी, जो उचित हो, अवश्य लगाना चाहिये। नाम न लिया जाय तो 'पण्डितजी" या "मौलवी साहब" आदि कहना या लिखना चाहिए।

अपने नाम के आगे 'पंडित" आदि मत लगाओ।

(५) अपने से बड़े की तरफ, जहाँ तक हो सके, पीठ करके मत बैठो या पीठ करके मत चलो।

(६) अपने गुरु, पिता आदि के साथ चलना हो तो उनसे एक दो कदम पीछे रहो। वे पीछे हों तो रास्ता देकर उनको आगे होजाने दो। असबाब उनके हाथ में हो तो कुल या उसका हिस्सा अपने हाथ मे उठा लो। दर्वाजे के अन्दर जाना हो तो पहले उनको जाने दो। दर्वाजा बंद हो तो आगे बढ़कर उसको खोल दो और आवश्यकता हो तो अंदर रोशनी कर दो।

दर्वाजे पर यदि पर्दा हो तो उसको उस समय तक उठाए रहो जब तक वे अंदर न चले जायें।

(७) कोई काम साथ करना हो तो जो छोटा है उसको पहले तैयार हो जाना चाहिए, अच्छा तो यही है कि दोनों साथ ही तैयार हों। अपने लिए अपने से बड़े को इंतजार नहीं कराना चाहिए।

(८) कोई बड़ा किसी दूर के आदमी को बुलाने के लिए कहे तो वहीं से मत चिल्लाओ, जरा आगे बढ़कर उसको बुला लो। किसी बड़े को बुलाना हो तो दौड़कर उसके पास चले जाओ।

(६) कथा या व्याख्यान या भजन के बीच में से न उठो। उठना ही हो तो जो प्रसंग चल रहा है या भजन हो रहा है उसको समाप्त हो लेने दो। बीच मे उठ जाना अपनी बे-खबरी प्रगट करना है और बोलने वाले विद्वान् या गानेवाले का एक प्रकार से अनादर करना है।

व्याख्यान, कथा आदि में बातचीत नहीं करनी चाहिए। जो देर करके आए उसको पीछे बैठना चाहिए आगे बैठने की कोशिश न करनी चाहिए। जिसको खासी का रोग हो उसको कथा, व्याख्यान आदि में बैठकर विघ्न नहीं डालना चाहिए। वहा ऊँघने लगना भी ठीक नहीं।

पुस्तकालय और वाचनालय में भी चुपचाप बैठकर पढ़ना चाहिए।

(१०) हम किसी चबूतरे पर या ऊँची जगह खड़े हों और अपने से बड़े से बातचीत करनी हो तो हमें नीचे उतरकर बात करनी चाहिए।

अपने से बड़े से बातचीत करनी हो तो खड़े हो जाओ विशेषकर यदि वे खड़े हों।

(११) मेज पर झुककर बातचीत मत करो, खड़े रहना हो तो सीधे खड़े रहो। बैठना हो तो कमर टेढ़ी करके मत बैठो।

(१२) अपने से बड़े या मेहमान के साथ गाड़ी पर बैठना हो तो उनके बाएँ बैठो या उनके सामनेवाली बैठक पर। गाड़ी अपनी ही हो तो इस नियम पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

हम गाड़ी पर बैठ हों और हमसे बड़े दूसरी गाड़ी पर आवें तो उनसे बातचीत हमे गाड़ी से उतरकर करना चाहिए, विशेषकर जब वे उतर आवें।

अपने से बड़े या मेहमान के साथ चारपाई पर बैठना हो तो सिरहाने की तरफ उनको बैठाओ जहा तक हो सके, चारपाई पर मत बैठो। चारपाई सोने ही के काम आनी चाहिए।

(१३) अपने से बड़े या मेहमान के आने पर उनका स्वागत खड़े होकर करना चाहिए और जब तक वे बैठ न जाएँ खड़े रहना चाहिए, जब वे जाने लगें तब भी खड़े हो जाना चाहिए और हो सके तो दर्वाजे तक या गाड़ी तक उनके साथ

जाना चाहिए। यदि कोई प्रेम से हमसे मिलने आए, तो हमें भा उनसे मिलने जाने की चेष्टा करनी चाहिए।

(१४) कोई बड़ा या अतिथि हमारे स्थान रीति के विपरीत व्यवहार कर बैठे तो उस पर हँसो मत।

(१५) भोजन या जलपान के समय कोई अतिथि, विद्वान, संन्यासी आ जायें तो उनसे भोजन करने की प्रार्थना करो।

(१६) जब कोई बड़ा या अतिथि हमारे यहा भोजन करे तो उचित यही है कि हम अपने हाथ से भोजन परोसें और उनके भोजन कर लेने के उपरात खायँ। उनसे पहले ही खा लेना तो किसी हालत मे भी ठीक नहीं। साथ भोजन करने की अवस्था मे भोजन पहले उनके सामने रखना चाहिए और यदि थालिया छोटी-बडी हों तो बडी थाली उनके और छोटी अपने सामने रखनी चाहिए। बहुत से लोग खाने बैठें तो सबसे पहले ही खाने न लग जाओ। औरों को खाना पहले शुरू करने दो।

मेहमान के साथ बैठकर खाने मे जल्दी मत करो, धीरे धीरे उनका साथ दो। भोजन के उपरान्त जब लोग मुँह-हाथ धो लें तो उनको इलायची, लौंग आदि किसी बरतन मे रखकर अपने हाथ से दो, नौकर आदि के द्वारा नहीं।

(१७) जब कोई इलायची आदि सामने रखे तो उसमें से दो ही एक उठाओ सब न उठा लो।

(१८) गुरु, मालिक बड़ों आदि के आसन पर उनके न रहने पर भी मत बैठो।

(१९) जिनके मेहमान बनो उनके भोजन का समय पूछ लो और उसी समय उनका साथ दो। न खाना हो तो पहले ही से कह दो।

(२०) जब अपने से बडे के साथ चलो और छाता एक ही हो तो उसको अपने हाथ मे ले लो। छाता इस प्रकार उठाओ कि साथी को तीली न लग जाय।

(२१) किसी का नाम पूछना हो, तो पूछो, "आपका शुभ नाम क्या है ?"

(२२) किसी मित्र के साथ कोई अनजान आदमी आ जाय तो यह न पूछो कि आप कौन हैं। अपने मित्र से, अनजान आदमी की तरफ इशारा करके, पूछो "आप कौन सज्जन हैं ?" मुसलमान लोगों मे पूछते हैं "आपकी तारीफ ?"

(२३) अच्छे लोग उचित स्थान पर "कृपा" शब्द का प्रयोग करते हैं, जैसे "कृपा" कर बैठिए, इत्यादि।

शंका समाधान

(२)

II Puja or Worship

Questions

1. Is Puja or Worship conducted in temples Theerthas and in other places in the right manner in your province

2 If not please state the defects and your suggestions for improvement

3. Are there any rituals formulated in your province for different kinds of worship?

4 Do you think their revision necessary to suit present times and if so on what lines?

5 What qualifications If any should be prescribed for those officiating as priests?

Answers

1 Not at all

2 Temples and Tirthas are more a place of exploitation rather than of worship No improvement can be suggested under the present state A substantial change in the attitude towards worship is required, a wholesome overhauling.

3 and 4 The same as above

5 Priests should not **officiate** they may be **guides.**

प्रश्न

१—क्या आपके प्रान्त मे मन्दिरो, तीर्थों और दूसरे स्थानो मे पूजा या उपासना ठीक रीति से होती है ?

२—यदि नहीं होती तो है त्रुटियाँ लिखें और सुधार के उपाय भी।

३—क्या आपके प्रान्त मे विभिन्न प्रकार की पूजा के लिए कोई विधियाँ बनी हुई हैं ?

४—क्या आपकी सम्मति मे उन्हे वर्तमान समयो के अनुकूल बनाने के लिए उनमे संशोधन की जरूरत है ? यदि है तो किन-लाइनो पर यह सशोधन होना चाहिए ?

५—क्या उन लोगो की कोई विशेष योग्यता होनी चाहिए जो पूजा इत्यादि मे पुरोहित का स्थान ग्रहण करते है। यदि हो तो वह क्या होनी चाहिए ?

उत्तर

१—बिल्कुल नही।

२—मन्दिर और तीर्थ उपासना की जगह नही वरन् लूट-खसोट की जगह है। वर्तमान अवस्था में उनमे कोई सुधार नही सुझाया जा सकता है। पूजा के प्रति मनोवृत्ति के बदल जाने की जरूरत हैं।

३ ४—ऊपर के अनुसार।

५—पुरोहितो को स्थानापन्न नही वरन् मार्ग-प्रदर्शक होना चाहिए।

शंका स० २

नैरोबी (ईस्ट अफ्रीका) से एक आर्य्य सज्जन ने धर्मार्य सभा के मन्त्री जी से कुछ शंकाओं के उत्तर प्राप्त किए हैं। वे शकाएँ तथा उनके उत्तर इस प्रकार हैं —

१—यहां पर कई मनुष्य हंडिया चलाने की क्रिया को सत्य मानते हैं। कितने ही प्रामाणिक पुरुष भी इसको प्रत्यक्ष दृष्ट कहते हैं। हंडिया चलाना यू॰पी॰ से चमारों द्वारा एक क्रिया होती है जो मन्त्र द्वारा हंडिया को उस आदमी तक ले जाते हैं जिसे मारना होता है और हंडिया उस तक स्वयं जाकर टूट जाती है और वह आदमी मर जाता है। इसी प्रकार की और भी कई शाक्त विधियां बताई जाती हैं। क्या इन शाक्त विधियों (मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण) इत्यादि मे कुछ भी सचाई है या सब व्यर्थ ही है। एक पुराने आर्यसमाजी जो अब इन विधियो के विश्वासी होकर आर्य्यसमाज से विरक्त हो गये हैं उनका कहना है कि किसी स्त्री ने उनके बच्चे के पोचड़ो को लेकर कोई जादू टोना किया और उनका बच्चा मर गया। बाद मे वह अपने बच्चो के पोचड़ो को सभाल कर रखते है और सब सन्तानें ठीक हैं। अभी एक बच्चा जिसका दिमाग ठीक था कुछ दिनो से बिगड़ गया है। उसकी माता जो समाज की मेम्बर है बच्चे को तावीज कराती है और मनुष्य खोपड़ी की राख टोने के तौर पर बच्चे को देती है व बच्चा तावीज और राख से ठीक भी हो रहा है। इन सब बातो का क्या कारण है ?

२—क्या दीर्घायुष्य के लिये कोई विशेष यज्ञ है और उस यज्ञ में क्या विधि है ? यहां एक आर्य्यसमाजी सज्जन जिनको उनकी स्त्री के लघु आयु का भय हो गया है वह यज्ञ कराना चाहते है, उनके लिये कौन सा यज्ञ कराना ठीक होगा।

३—काम्य यज्ञो की क्या कोई वैदिक विधियां है या शाक्त विधियो से ही उन यज्ञो को होने दिया जाय। एक हिन्दू भाई काम्य यज्ञ (पुत्रेष्टि) कराना चाहते है। मैंने तो कभी पुत्रेष्टि यज्ञ होते नहीं देखा है। आप ही लिखें कि उसकी विधि कहां से प्राप्त होगी—या इन महाशय को यज्ञ कराने से मना कर दिया जावे।

४—धन प्राप्ति इत्यादि के लिये भी क्या गायत्री मन्त्र का जप उपयुक्त होता है या किसी दूसरे मन्त्र का जप—या वर्तमान सिद्धान्तानुसार यह जप इत्यादि व्यर्थ ही है। यहां पर कई भाई साम्प्रदायिक बातो मे इसलिये फॅस जाते हैं कि उनके धार्मिक लोग इस प्रकार की प्रक्रियाओ पर बड़ा बल देते हैं। उनका प्रचार इस प्रकार है कि परमात्मा सब कुछ देते है उनसे हर प्रार्थना और यज्ञ करने की विशेष विधियां होती हैं जिसका आर्य्यसमाज को बोध नहीं है। स्वामी जी ने अश्वमेध पर्य्यन्त जो यज्ञ लिखे हैं उनमे पुत्र-प्राप्ति, धन-प्राप्ति, दीर्घायुष्य, शत्रु-विनाशन, मित्र-रक्षा रूप अनेक यज्ञ हैं पर आर्य्यसमाज को उनका ज्ञान नहीं है इसी से कई आदमी हमसे विमुख हो रहे हैं—उनको हमारा अप्रपञ्चा धर्म पसन्द नहीं है।

५—मरने के समय बड़ा विचार उठ खड़ा होता है कि मनुष्य को चारपाई से नीचे उतारा जाय या नहीं। कई बार तो यह विवाद भयंकर

रूप धारण कर लेता है और मुझसे व्यवस्था मांगी जाती है। आर्य्यसमाज की इस बारे मे क्या राय है—यदि न उतारा जाय तो क्या होता है और क्या उसका कुछ प्रायश्चित्त भी है।

६—मरने के समय मरते आदमी के लिये क्या प्रार्थना करनी चाहिये या उस कमरे मे उसी समय हवन होना चाहिये—यदि न हो तो क्या हानि है—उस समय गीता उपनिषद् के वाक्य या उसके कान मे ओ३म् का नाम बोलना चाहिये ?

७—श्मशान यात्रा के समय क्या मन्त्र या एक छोटा सा शब्द बोला जाय जैसे बगाल मे 'हरि बोल' और पजाब मे 'राम नाम सत है' इत्यादि बोला जाता है—या चुपचाप जाना चाहिये ?

८—क्या राख को जरूर नदी या समुद्र में डालना चाहिये और हड्डियां जरूर चुगनी चाहियें—यदि श्मशान मे ही खड्डा बड़ा करके गड़वा दिया जावे तो क्या अच्छा नही है ?

९—श्मशान वेदी जिसमे मृतक यज्ञ हो उसका आकार चौडाई इत्यादि बनाकर भेजें ताकि यहां श्मशान मे वह बन सके।

उत्तर

१—हंडिया चलाना सर्वथा असत्य है। जो आपको कहते हैं उनको भ्रम है। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी आज मेरे पास ही हैं उनसे संयुक्तप्रान्त के विषय में पूछा था वह कहते हैं कहीं नहीं है। गृहस्थी प्रायः मोह मे फंस जाते हैं, संतान का स्नेह होता है और उसके वशवर्ती होकर प्र य. विचार हीन हो जाते हैं।

२—कोई विशेष यज्ञ नही है। चिन्ता रहित, प्रसन्न रहना भोजन छादन मे नियमबद्ध रहना, स्त्री संग अधिक न करना और व्यायामादि का करना ही आयुवर्द्धक है। यदि कोई भ्रममे हो तो वेद के दीर्घायु वाले मन्त्रों से हवन करके उसे विश्वास दिलादें परन्तु आयु केवल यज्ञ से न बढ़ेगी।

३—अभी तक कोई विधि लिखी नही गई है। पुत्रेष्टि के लिए प्रथम रजवीर्य का निरीक्षण होना चाहिए ताकि पता लग जाय दोष स्त्री का है वा पुरुष का। फिर उसको औषधि देनी होगी और संस्कार विधि मे गुल्लर के बर्तन में गुल्लर की रई से मथनादि करके घृत बनाकर हवन करना और खिलाना होगा।

४—गायत्री मे बुद्धि की प्रार्थना है। धन के लिए धन वाले मन्त्र का पाठ करना होगा। परन्तु यह कृत्य केवल धन ठगने के लिए है यजमान को धन मिलेगा वा नहीं यह ईश्वर जाने।

५—चारपाई पर मरने से कोई हानि नही है और न ही कोई प्रायश्चित्त ही है। यदि कोई उतार दे तो भी लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं।

६—उसका मन संसार के पदार्थों से हटाने के लिये ईश्वर प्रतिपादक मन्त्र, उपनिषदादि का पाठ हो सकता है।

७—मेरी सम्मति मे ओ३म् नाम सत्य है। ओ३म् पाठ करे तो अच्छा है। वह भी मिलकर

और शांति से, अन्यथा चुप रहना ही ठीक है।

८—स्वामी जी ने संस्कार विधि में अस्थि-चयन लिखा है उसे उठाकर समुद्र वा नदीमे डाल दें, अथवा भूमि मे गाड़दें। ऋषिने भूमिमे गाड़ना अपने लिए भी बताया था यदि न उठावें तो भी कोई आपत्ति नहीं। यह सब साधारण हैं। मेरी समझमें न उठाना वा उठाकर नदी पास होतो उस मे डालना अन्यथा भूमि मे गाड़ना क्रम से हैं।

९—लगभग ८फीट लम्बी, ६फीट चौड़ी, ६ फीट गहरी हो। लम्बाई चौड़ाई ऊपरसे है। हवन कुण्डवत नीचे न्यून होगी। यदि सब भूमि मे खोदी जाय तो वायु नहीं आता है, इसलिए तीन फीट भूमि और तीन फीट बाहर हो और उसमें भी वायु जाने के लिए छिद्र रखना चाहिये।

पुनर्जन्म के विषय में—

श्री प० जगत्कुमार जी का एक पत्र बहुत दिन हुए मेरे पास आया था। वह तभी खोया जा चुका और उसका उत्तर भी लिखा न जा सका। मुझे उनका पता नही मालूम। उस मे दो बातें पूछी थीं। एक तो मनुस्मृति कब तक छप सकेगी। दूसरा प्रश्न यह था कि दिल्ली की शान्ति देवी तथा अन्य पुनर्जन्म के उदाहरण यह बताते हैं कि स्त्री का पुनर्जन्म स्त्री की ही योन मे क्यों होता है। वस्तुत' इधर दो चार उदाहरण जो मिले वह ऐसे ही थे जिन मे पुरुष ने पुरुष की और स्त्री ने स्त्री की योनि में जन्म लिया। परन्तु यह आवश्यक नहीं है। स्त्री पुरुष और पुरुष स्त्री हो सकता है। हा, एक बात अवश्य है। हमारे अगले जन्म का इस जन्म से बहुत बड़ा सम्बन्ध है। जिस प्रकार की प्रवृत्ति हम इस जन्म मे बनाते हैं, वैसी ही दूसरे जन्म मे होती है। इस लिये 'साधारण रीति' से तो स्त्री का स्त्री या पुरुष का पुरुष होना स्वाभाविक है। क्योकि स्त्रिया स्त्रियोचित और पुरुष, पुरुषोचित कार्य करते हैं और उनके वैसे ही संस्कार होते हैं, परन्तु परिवर्तन संभव भी है और होता भी है। क्योंकि एक स्त्री पुरुषोचित और पुरुष स्त्रियोचित कार्य कर सकते हैं, ऐसा कम होगा परन्तु होगा।

—गंगा प्रसाद उपाध्याय, प्रयाग

साहित्य-समीक्षा तथा प्राप्ति स्वीकार

अग्नि होत्र (अंग्रेजी)

लेखक—श्री डा० सत्यप्रकाश जी डी यस सी. लेक्चरार प्रयाग विश्वविद्यालय।

प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

मूल्य २॥)—५ शिलिङ्ग।

इस पुस्तक मे वैज्ञानिको के इस आक्षेप का कि हवन से कार्बन गैस पैदा होती है जो हानिकारक है, वैज्ञानिक परीक्षणो के आधार पर खंडन करने का यत्न किया गया है। पुस्तक के लेखक स्वय एक वैज्ञानिक है। वैज्ञानिको का आक्षेप बहुत पुराना आक्षेप है। आर्य्यसमाज की ओर से खंडन का यत्न बहुत पहले हो जाना चाहिये था फिर भी यह यत्न 'कभी नही की अपेक्षा देरी अच्छी है' इस कहावत के अनुसार इस समय भी स्वागत योग्य है और इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनो बधाई के पात्र हैं।

हवन के सम्बन्ध मे आर्य्यसमाज मे अपने प्रकार की जहां तक हमे पता है यह पहली पुस्तक है। निश्चय ही यह पुस्तक हवन के सम्बन्ध मे वैज्ञानिक अनुसधान को प्रोत्साहन देगी। पुस्तक मे हवन यज्ञ की उपयोगिता इत्यादि हरेक आवश्यक बात पर प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। पुस्तक प्रत्येक आर्य्य-समाज की लाइब्रेरी मे रखने तथा अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगो मे प्रचारित किए जाने योग्य है। जो लोग हवन यज्ञ को एक धार्मिक रूढ़ि वा क्रिया कलाप समझ कर इसमे आस्था नही रखते है और जो वैज्ञानिक कसौटी पर ठीक उतरी हुई सचाई के कायल है उन्हे तो यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए और आर्य्यसमाज को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। पुस्तक सजिल्द है। आकार, प्रकार, छपाई, सफाई इत्यादि उत्तम है।

त्रिदोष विज्ञान पूर्णिमा

लेखक—श्री पं० परमानन्दजी, आयुर्वेदाचार्य, देहली।

प्रकाशक—प० दुर्गादत्त शास्त्री, आयुर्वेद विशारद।

मूल्य—॥)

वातादि तीन दोष आयुर्वेद प्रासाद के भित्ति-स्वरूप हैं। आयुर्वेद का अस्तित्व इन तीनो पर ही निर्भर है। यद्यपि इन तीनो का विवेचन भिन्न २ प्रणाली से अनेक विद्वानो ने किया है, और सफलता भी प्राप्त की है, किन्तु वे वातादि दोषो की अपनी विवेचनात्मक धारा मे नहाकर स्वय भी उनकी धारा मे बह गये। प्रस्तुत छोटी सी पुस्तक मे लेखक ने उत्तम रीति से त्रिदोष-विवेचन किया है। विवेचनप्रणाली सरस, सरल एव प्रसाद गुणयुक्त है। लेखक ने प्रौढ़मति वैद्यो के साथ २ ही अल्पमति छात्रो का विशेष ध्यान रक्खा है जिससे कि वे इस दुरूह विषय को सरलता से हृदयङ्गम कर सकें। आयुर्वेदीय छात्रो के लिये पुस्तक लाभदायक है।

पृष्ठ सख्या ६३ – मूल्य ॥)

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त इस मास हमे निम्न पुस्तकें समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं। इनमे

से केवल उन्ही पुस्तकों की समालोचना की जायगी जो समालोचना के योग्य समझी जायेंगी। पुस्तक प्रेषक कृपया नोट कर लेवें। यह भी कृपया नोट कर लेवें कि भविष्य मे भी यही नियम रहेगा। समालोचनार्थ २ पुस्तकें आनी चाहियें।

(१) देवयज्ञ—लेखक पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प्रकाशक अनुसंधान विभाग, आर्य्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, लाहौर। मूल्य ।=) ।

(२) नागवश प्रकाश अर्थात् संथालादि क्षत्रिय परिचय—संकलयिता तथा प्रकाशयिता स्वा० शिवानन्द तीर्थ हवेली, खड्गपुर (मुंगेर)। मूल्य ॥) ।

(३) कन्या विक्रय या लोभी पिता—लेखक चन्द्रिकाप्रसाद सिंह 'चन्द्र', प्रकाशक श्री दीन दयाल लाल, मुरारपुर (गया)। मूल्य ॥)

(४) मानव धर्म्म भाष्य—लेखक स्वामी विवेकानंद जी, प्रकाशक रसायन कार्य्यालय, सेगरिया (बीकानेर)। मूल्य ।=)

(५) उद्गार (गद्य काव्य)—लेखक-अध्यापक 'कनक' साहित्यभूषण एव विशेषज्ञ राजबनेड़ा (मेवाड़)। मूल्य ॥)

(६) बालकोपयोगी धर्म्म शिक्षा (गुजराती) —लेखक प० ज्ञानेन्द्र, सिद्धान्तभूषण, प्रकाशक आर्य्य प्रकाश प्रेस, आर्यन रोड, आनद (खेड़ा)।

(७) हम आर्य्य है—लेखक पं० भद्रसेन आचार्य्य, विरजानंद वेद विद्यालय, अजमेर, प्रकाशक प्रधान, आर्य्य-प्रतिनिधि सभा, राजस्थान अजमेर। मूल्य ‒)

(८) शहन्शाही सन्देश अर्थात् मन की कुंजी —लेखक शहनशाह जी महाराज, शहन्शाही कुटिया, सूत्र मंडी, लाहौर। मूल्य १॥)

मद्रास प्रचार

श्रीमन्नमस्ते!

दुःख है कि पिछले दो-तीन मासो से आपको यहां के समाचार नहीं भेज सका। इसका एक विशेष कारण था। संभव है आपने समाचार पत्रों मे पढ़ा हो। एप्रिल के अन्त में यहां एक हिन्दू-मुस्लिम फसाद शुरू हुआ जो लगभग दो महीनों तक "गुरिल्ला वार" की तरह चालू रहा। इसका आरम्भ भी "पूना" की तरह मारुति-मन्दिर से है। देवता की सवारी जा रही थी, मार्ग मे मुसलमानों ने पत्थर मारने शुरू किये। हिन्दुओ को भी जोश आ गया। लड़ाई घमासान रही। दोनो जमातों के अनेक व्यक्ति घायल हुए। पुलिस की पकड़-धकड़ शुरू हुई। इस लपेट मे स्थानीय आर्यसमाज की दो शाखाएं भी आ गई। कई सभासद् भी पकड़े गये। दोनों शाखाओ की तलाशियां हुई। मुकद्दमे चल रहे है। लेखक जब पुलिस-कमिश्नर से मिलने गया तो उसने आर्यसमाज को निम्न शब्दो मे दोषी ठहराया:—मुझे मालूम है आज से कुछ वर्ष पूर्व यहां के हिन्दू लड़ाई-झगड़े से कतराते थे। जब से आर्यसमाज यहां आया है हिन्दू भी गैर-हिन्दुओं से लड़ाई पर आमादा है। और यह हिन्दुओं की जबर्दस्ती है कि इतने दिनो तक फ़साद जारी रहा और सैकड़ों मुस्लिम ज़ख्मी हुए।"

पाठक यह जानकर हैरान होंगे कि गत ३ मासो से यहां की आर्यसमाज पर पुलिस की

कड़ी दृष्टि है।

५०००) का दान

पैरम्बूर (मद्रास) के इलाके मे जहां उपरोक्त फ़साद हुआ वही पर ही तीन ग्राउण्ड भूमि समाज के लिये लेने का प्रयत्न हो रहा है। एक स्थानीय चेट्टी-व्यापारी ने इस भूमि तथा मकान के लिये ५०००) रु० तक दान देने की प्रतिज्ञा की है। सम्भवतः थोड़े दिनों मे ही जमीन मोल ले ली जायगी।

शुद्धियां—

शुद्धि कार्य निरन्तर जारी है। आन्ध्र प्रान्त के गुण्टूर तथा कृष्णा जिलो मे प्रायः ४०-५० परिवारो की शुद्धियां प्रतिमास हो जाती हैं। ये शुद्धियां प्रायः आन्ध्र-हरिजन ईसाइयो की हैं। इस शुद्धि-कार्य का विशेष लाभ यह है कि जहा २ शुद्धियां होती है वहां २ ईसाइयत की प्रगति लगभग बन्द हो जाती है।

पिछले दिनो मद्रास समाज द्वारा निम्न उल्लेख योग्य शुद्धियां हुई हैं:—

मुहम्मद हिमोरा की शुद्धि—

यह सज्जन जापानी व्यापारी हैं। आप जापान के एक मिनिस्टर क सम्बन्धी भी हैं। आपका बड़ा परिवार है। आप दो वर्ष पूर्व दिल्ली की जुम्मा मस्जिद मे मुसलमान हुए थे। अब आप आर्यसमाज-मद्रास द्वारा शुद्ध होकर पुन. आर्य-धर्म मे प्रविष्ट हुए है। आपका विचार जापान मे आर्य-धर्म का प्रचार करने का है।

कमला जोसफ की शुद्धि—

स्थानीय आदि-द्राविड़ा जमात के एक सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता की सुपुत्री कमला जोसफ की शुद्धि हुई। उसका हिन्दू नाम कमला देवी रखा तथा उसका विवाह भी एक उच्च जाति हिन्दू से आर्यसमाज रीति से हुआ।

ऐंग्लो-इण्डियन लड़की की शुद्धि—

बैंगलोर की एक शिक्षित ऐंग्लो-इण्डियन लड़की मिस म्यूरियल की शुद्धि भी आर्यसमाज-मद्रास द्वारा हुई तथा सुशीला नाम रखा गया। शीघ्र ही इनका विवाह एक ब्राह्मण पुलिस सब इन्स्पैक्टर से होने वाला है।

पाण्डिचरी में आर्यसमाज—

दो सप्ताह पूर्व पाण्डिचरी में एक विवाह वैदिक रीति से हुआ जिसका पौरोहित्य आर्यसमाज-मद्रास ने किया। उस अवसर पर व्याख्यान आदि भी हुए। शीघ्र ही आर्यसमाज खुल जाएगा ऐसी आशा है। पं० केशव देव जी ज्ञानी शीघ्र पाण्डिचरी जा रहे है क्योंकि पाण्डिचरी में फ्रैञ्च भाषा बोली जाती है इसलिये वहां प्रचारार्थ फ्रैञ्च साहित्य की आवश्यकता है। यदि सत्यार्थ प्रकाश का फ्रैञ्च अनुवाद, जिसके लिये श्री पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रयत्न कर रहे थे, शीघ्र छप जाय तो बहुत सहायता मिलेगी।

छोटे २ ट्रैक्टों को फ्रैञ्च में छपाने का उद्योग आर्यसमाज-मद्रास द्वारा शीघ्र ही प्रारम्भ किया जाएगा।

—प्रधान मंत्री, आर्यसमाज, मद्रास।

कर्नाटक प्रचार

इस मास बंगलौर शहर और छावनी के अनेक भागों में प्रचार तथा दलितोद्धार कार्य के अतिरिक्त कगेरीग्राम येलालुग्राम मावल्ली शेषा द्रिपुर आदि ग्रामों मे सामाजिक कार्य विशेषरूप से किया गया जिसके परिणामस्वरूप ग्राम वासियो तथा हरिजनो मे बडी जागृति उत्पन्न हो रही है। इस मास २ हरिजनो के विवाह वैदिक-रीति से व्याख्यासहित कराये गये जिनम सैकडो नर-नारा सम्मिलित हुए। स्व० सैम्मुएल्जोसेफ ा पुत्री मिस एमिली की ६ जून को आर्यसमाज भवन कैलासपाल्यम् मे शुद्धि होकर उसका नाम विमला देवी रक्खा गया।१३ जून को डा० भाग्यम्ना M B B S की जो ईसाई मिश्नरी रेवरेण्ड भद्रप्पा की सुपुत्री और किंग जाज हास्पिटल् विजागपट्टम मे लेडी असिस्टेन्ट सर्जन् हैं शुद्धि समाज भवन कैलास पाल्यम् मे बडे समारोह के साथ स्नातक धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने कराई। श्रीयुत नीलकण्ठम् ने जो Intermediate College Library के पुस्तकाध्यक्ष हैं अपने पिता जी के देहान्त होने पर श्राद्धादि पौराणिक क्रियाओ के स्थान पर स्ना० धर्मदेव जी को घर बुलाकर हवन प्रार्थना उपदेशादि कराये। बहुतसे घरो मे अब यही रिवाज होता जा रहा है। इस मास भी मावल्ली और गंगम्माचेरी की हरिजन-बस्तियो के सुधार का विशेष प्रयत्न किया गया। स्कूलो मे हरिजन बालक बालिकाओं के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता यह जानकर उनके मुख्याध्यापक मुख्याध्यापिकाओ को स्ना० धर्मदेव जी ने पत्र लिखे जिनका यह परिणाम हुआ कि अब उनक साथ प्रेमपूर्ण समानता का व्यवहार किया जाने लगा है। म्युनिसपलिटी के अधिकारियो को मिल कर भी उनके कष्ट निवारणार्थ यत्न किया जा रहा है। ७ ७५ हरिजन भाई-बहिन आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनो में सम्मिलित होकर वैदिक भजनो द्वारा क्रियात्मक भाग लेत रहे। इस मास बंगलौर क मौलवी इनायतुल्ला साहेब १८ जून को स्ना० धर्मदेव जी के पास जिज्ञासु भाव से आये और उनके प्रश्न के उत्तर में स्नातक जी ने वैदिक एकेश्वर पूजा के समथन में कई प्रमाण उनको बताये जिनको उन्होने खुशी से नोट कर लिया। ये अच्छे प्रेमी सज्जन प्रतीत होते हैं।

पहाड़ी इलाकों में प्रचार

जोलाई मास में महाशय शांतिस्वरूप जी उपदेशक सार्वदेशिक सभा ने अल्मोड़ा रानाखेत के अतिरिक्त ११ पहाड़ा ग्रामो में भा प्रचार किया। आर्य समाज के प्रचार स अब जागृति होता जाती है। बेनी नाग क इलाक में कार्की व बोरा लोग बड़ी तायदाद में आबाद हैं। यह अपन आपको क्षत्रिय कहत है। पर इनकी गणना अन्य द्विज द्विजो म नही करते। उपदेशक महाशय ने इन लोगो मे भी प्रचार किया और उनको यज्ञोपवीत देने को भी प्रस्तुत हुए पर वे लोग चाहते है कि रानीखेत के प० हरगोविन्द पत

आकर उनको जनेऊ दें और उनका पानी चलावें। पंडित जी को लिखा है। यहां पर इसलामो का ज्यादा जोर है। उपदेशक ने १० जुलाई को एक शिल्पकार की पुत्री की शुद्धि कराकर उसका विवाह शिल्पकार जाति में ही करा दिया।

बद्री प्रसाद,
प्रचार अधिष्ठाता।

———

विदेश प्रचार

श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा, सुरीनाम द्वारा प्रचार कार्य्य

गत मास मे ता० २४ मार्च को अलखमार मे श्रीमान् रामलषण के पुत्र का नामकरण संस्कार तथा श्रीमान् पञ्चम जी के पिता की मृत्यु के उपलक्ष मे हवन यज्ञ पंडित अमृतप्रसाद जी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। सारामाका के अन्दर एक व्यक्ति को संस्कार दिया और मखेन्ता समाज के अन्तर्गत एक उपनयन संस्कार तथा विवाह कराया। अलियॉस मे सुन्दरलाल के प्रयत्न से एक ईसाई की शुद्धि तथा उनकी स्त्री को वैदिक धर्म मे संस्कार करके दीक्षित किया। एवम् अलखमार, कर्मभोग, अलीयॉस, बांकी फीन्सट्यन्शी, और सारामाका के अन्दर, एतफैक, स्वरौनेक, फरोल हार्डेन, परीयांस, कलकत्ता, बम्बई, हीवलख सोर्ख, हानामुलेश, मुन्दरें बौती मे वैदिक व्याख्यान दिया। अलियॉस एवम् फरोल हार्डेन मे आर्य्यसमाज की सभा की भी स्थापना हो चुकी है।

श्रीमान पं० नर्वदाप्रसाद जी के आचार्यत्व मे विवाह संस्कार, महाशय मंगरू तथा महाशय महावीर की पुत्री व धर्म्मसिंह जी की पुत्री, वंसराज सिंह जी के पुत्र का विवाह स० हुआ। म० सुखदेव मंगल की पुत्री का नामकरण संस्कार व आर्य्यसमाज मन्दिर पारामारीबो मे ईस्हाक मुसलमान की शुद्धि की एवं समयानुकूल वेद प्रचार भी किया।

आर्य्यसमाज मन्दिर पारामारीबो मे प्रति सप्ताह हवन यज्ञ होता रहता है, एवं बालकों को भी धर्म शिक्षा दोनो समय मे दी जाती है। पंडितों द्वारा प्रति सप्ताह मे व्याख्यान भी होता रहता है।

———

आर्य समाज मद्रास द्वारा प्रकाशित

सस्ता आर्य-साहित्य (अंग्रेजी मे)

Light of Truth श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश का यह अंग्रेजी अनुवाद है। इसकी भाषा शुद्ध व सुन्दर है। भाषा के विषय मे इतना कहना पर्याप्त है कि इस अकेली पुस्तक ने जितनों को आर्य बनाया है उतना अन्य साधनों ने नहीं।

ग्लेज़ पेपर, केलिको की मजबूत जिल्द ३)
अजिल्द २॥)

Fountainhead of Religion इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टिहरी ने पुष्कल प्रमाणों द्वारा वैदिक धर्म को समस्त धर्मों का मूल-स्रोत सिद्ध किया है। इस पुस्तक के अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके हैं — केवल अंग्रेजी मे ही कई संस्करण छप कर हाथों हाथ बिक चुके हैं।

फारवेट पेपर, सुन्दर छपाई। अजिल्द ॥) सजिल्द १)।

Ten Principles of Aryasamaj गुरुकुल-कांगडी के भूतपूर्व आचार्य श्री चमूपति एम ए. ने इस पुस्तक मे आर्यसमाज के दस नियमों की विस्तृत, वैज्ञानिक व्याख्या की है।

पृष्ठ संख्या १६० । मूल्य ।=) मात्र ।

Arya Philosophy अजमेर अर्धशताब्दी पर दिये गए अंग्रेजी व्याख्यानों का यह संग्रह है। देश तथा विदेश दोनों मे प्रचार का अत्युत्तम साधन है। इसकी भूमिका श्री आचार्य रामदेव जी ने लिखी है। मूल्य ।=) मात्र

Vedic Caste System and Panchama Problem यह समयोपयोगी ट्रैक्ट श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास ने लिखा है। इसमे युक्ति-प्रमाण द्वारा आर्य समाज के पक्ष की पुष्टि की गई है। मूल्य =)

The outlines of Aryasamaj लेखक श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास। इसमे आर्य समाज के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय है। ४र्थ संस्करण। मूल्य —)

Sayings of Swami Dayanand इस मे ईश्वर, वेद, वर्ण, आश्रम शिक्षा, राजनीति आदि विषयों पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वचनों का संग्रह है। मूल्य —)

Hinduism Vs Xinity श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने इस पुस्तिका मे हिन्दू-धर्म तथा इसाईयत का मुकाबिला किया है। शुद्धि प्रचार के लिए उपयोगी है। मूल्य —)

Hinduism Vs Islam ले० पं० केशवदेव जी ज्ञानी। इसमें हिन्दू धर्म तथा इस्लाम का मुकाबिला है। शिक्षित मुसलमानों के हाथों मे देने योग्य है। मूल्य —)

पता —
श्री मंत्री, आर्य समाज
१७०, चाइना बाज़ार, मद्रास

शुद्ध हवन सामग्री

धोखे सेबचने के लिये आर्यों

की

बिना वी० पी० भेजते हैं

पहले ।) पोस्ट खर्च भेज कर ऽ॥ नमूना मुफ्त मँगा लें

अगर नमूना जैसी सामग्री हो तो मूल्य भेजदें

अन्यथा

कूड़े मे फेंक दें ।

फिर मूल्य भेजने की आवश्यकता नहीं ।

क्या इससे भी बढ़कर कोई सच्चाई की कसौटी हो सकती है

भाव ॥) सेर, ८०) भर का सेर ।

थोक ग्राहक को २५) रुपये प्रति सैकड़ा कमीशन ।

मार्ग-व्यय ग्राहक के जिम्मे ।

पता—

रामेश्वरदयालु आर्य प्रो० अमोली (फतेहपुर) यू० पी०

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—[illegible] के लिये [illegible] प्रिंटिंग प्रेस देहली
में प्रकाशित ।

ऋग्वेद

अक्टूबर १९५७

ओ३म्

Reg No L 2121

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—[illegible]नाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मू० ५) एक प्रति ।=) विदेश से २ शिलिंग

अथर्ववेद

सामवेद

विषय-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)

—⊙०⊙—

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं है और शीत ऋतु आरहा है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएगे वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखे।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजे अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करे।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयो की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकडे थे जिनके सबधियो का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे है।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते है। उनके पढाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

,, डाक्टर गणेशीलाल जी M. B. B S

कोषाध्यक्ष, विज्ञानशील जी बी० ए०

अत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्म प्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यनुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष ११ | आश्विन १९९४ | अक्टूबर १९३७ ई०] [दयानन्दाब्द ११३ | अङ्क ८

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

अग्नेनय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥

भावार्थ—हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आप हमे सन्मार्ग मे चलने मे प्रवृत्त कीजिये। आप सब के ज्ञाता है हमे पापकर्मों से बचने की सद्बुद्धि प्रदान करें, आप हमारे पाप कर्मों को नष्ट कर। हम आप को बहुत २ नमस्कार करते है।

सम्पादकीय—

पानीपत आर्य्य-समाज नगर-कीर्तन

कुछ दिन पूर्व समाचार-पत्रों में इस बात की चर्चा छिड़ी कि पानीपत आर्य्य समाज के नगर कीर्तन पर, इस वर्ष सरकार कुछ नई पाबन्दिया लगाना चाहती है। पानीपत मे आर्य्य समाज के संकीर्तन के जलूस तो कई वर्षों से बन्द चले आ रहे हैं। आर्य्य-समाजियों ने उन पर लगाई गई पाबन्दियों के प्रतिवाद में आवाज उठाई थी, परन्तु उसका कोई असर न हुआ। इस वर्ष जब उन्होंने यह सुना कि उनके वार्षिक नगर कीर्तन पर भी सरकार प्रतिबन्ध लगाना चाहती है तो इस नूतन हस्ताक्षेप को सहन करना उन्हें गवारा न हुआ। यह बात निर्विवाद सत्य है कि यदि हम स्वय अपने नागरिक स्वत्वों (Civic rights) का रक्षण नहीं कर सकते तो उसके लिए कोई दूसरा हमारी सहायता को नहीं आयगा।

पिछले कई वर्षों से हम देख रहे हैं कि जहा भी किसी आर्य्य समाज के नगर कीर्तन पर जब कभी कोई प्रतिबन्ध लगाया गया तो वहा की समाज ने उसके प्रतिवाद में नगर कीर्तन को बन्द तो जरूर कर दिया परन्तु अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सिवाय याचना का हाथ पसारने के और कुछ भी नहीं किया। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि अनेक स्थानों पर आर्य्य समाज के नगर कीर्तन कई वर्षों से रुके हुए हैं। परन्तु आर्य्य समाज पानीपत ने इस नीति का अवलम्बन नहीं किया। वहा के आर्य्य भाइयों ने जब यह देखा कि हमारे धार्मिक तथा नागरिक स्वत्व खतरे में हैं तो उनकी अन्तरात्मा ने विप्लव खड़ा कर दिया और वे उन स्वत्वों की रक्षा के लिए कमर कस कर तैयार हो गए। ईश्वर और समाज उन्हीं की सहायता करते हैं जो स्वयं अपनी सहायता के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं।

यह बात सत्य है कि पानीपत आर्य्य समाज ने अपनी प्रान्तिक प्रतिनिधि सभा को अपने कष्ट की सूचना दी और उससे सहायता की याचना की। उसने अपनी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा को भी इस आड़े समय मे सहायता प्रदान करने के लिए लिखा। परन्तु जिस भाव के कारण इन दोनों सभाओं ने अपना अपना नैतिक सरक्षण उसको दिया वह यह था कि पानीपत आर्य्य समाज अपने अन्त करण की आवाज को सुन कर किसी बाह्य सहायता के बिना भी अपने स्वत्वों की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध था। इसी भाव के कारण पानीपत के आर्य्य भाई अपनी सफलता के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

१ अक्टूबर १६३७ को पानीपत आर्य्य समाज के उत्सव के उपलक्ष में वार्षिक नगर कीर्तन होना था। इस बात की आशंका निरन्तर बनी हुई थी कि मुसल्मान भाइयों की आवेशा मांगों को परितुष्ट करने के लिए नगर कीर्तन के जलूस पर प्रतिबन्ध लगाए जायेंगे। आर्य्य भाइयों ने इस बात की घोषणा कर दी थी कि चाहे कुछ भी हो वे अपना जलूस नियमानुसार निकालेंगे और

पाबन्दियों की दशा मे सत्याग्रह करने को उद्यत हो जायेंगे। उनकी इस सरगर्मी को देख कर हमारे भाई लाला देशबन्धु, एम एल ए ने शिमला मे हिन्दू समाज के अन्य नेताओं के साथ मिल कर इस बात की बडी कोशिश की कि किसी तरह पजाब सरकार के प्रधान मन्त्री सर सिकन्दर हयात खा को इस मामले को सुलझाने की प्रेरणा की जाय। इधर सार्वदेशिक सभा की ओर से भी एक आवेदन पत्र सर सिकन्दर हयात खा की सेवा मे भेजा गया जिसमे यह स्पष्ट अङ्कित किया कि आर्य्य समाजी अपने धार्मिक तथा नागरिक स्वत्वों की रक्षा मे अपना कदम पीछे नहीं हटायेंगे।

समय आने पर लाला देशबन्धु जी, पूज्य महात्मा नारायण स्वामीजी, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा श्री बाबू शिवचन्द्र जी सहायक मन्त्री, आर्य रक्षा समिति तथा अन्य बहुत से आर्य्यवीर देहली से चलकर पानीपत जा पहुंचे ताकि वहा के आर्य्य भाइयो का सरक्षण भली प्रकार किया जा सके। पंजाब से भी ला० अमृतराय जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य सेवक, श्री डाक्टर लालचन्द जी तथा अन्य उत्साही कार्यकर्त्ता भी वहा पहुच गए। इस तत्परता का परिणाम यह हुआ कि जिला अफसरों को समय पर सत्-प्रेरणा हो गई और उन्होंने आर्य्य समाज के स्वत्वो पर हस्तक्षेप न किया और एक भयानक स्थिति पैदा होते होते रुक गई। पानीपत का मोर्चा लगते लगते रह गया।

हम आशा करते है कि सभी प्रान्तो के आर्य भाई पानीपत के आर्य्य भाइयो को उनकी तत्परता के लिए हार्दिक धन्यवाद देंगे। हमारे ख्याल मे उनकी यह धार्मिक तत्परता अन्य समाजों के लिए एक बड़ी शिक्षा का पाठ पढाने वाली है। यदि कोई समाज सम्मान पूर्वक जीना चाहती है तो उसे सम्मान पूर्वक जीने के लिए हर प्रकार के कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। यह जीवन की बाजी जान जोखो की बाजी है। जो व्यक्ति या समाज जान जोखो मे डालना पसन्द न करेगा उसे सदा कायरता का जीवन व्यतीत करना पडेगा और जो जान जोखो या खतरो स नही डरते वे सदा बाजी ले जाते है। पानीपत आर्य्य समाज के नगर कीर्तन के सम्बन्ध मे हम इस समय केवल इतना कहना चाहते है कि अन्त भला सो भला।

हिन्दी या हिन्दुस्तानी

उपर्युक्त शीर्षक मे आर्यमित्र लिखता है —

राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध मे कुछ दिनो से एक नयी चर्चा चल रही है, वह यह कि हिन्दी को हिन्दुस्तानी कहा जाय, और उसको एक ऐसी नई भाषा बनाया जाय जिसके समझने म किसी प्रकार की कठिनाई न हो। चर्चा चलाने वालो का उद्देश्य हिन्दी, उर्दू का मेल-मिलाप करा देना मालूम पडता है, जिसम फिर भाषा सम्बन्धी प्रश्न उपस्थित ही न हो। बात तो अच्छी है, परन्तु कार्य रूप मे परिणत होने लायक नही। अगर हिन्दू-मुसलमान दोनो मिलकर वास्तव मे—दिखाने को नही—हिन्दुस्तानी बन सकते है, तो भाषा का प्रश्न भी आसानी से हल हो सकता है। हिन्दी वह भाषा है, जिसे देश के अधिकाश निवासी

बोलते, लिखते और पढ़ते हैं। भारतवर्ष ग्रामों मे बसा हुआ है। वहा जो बोली बोली जाती है, वही हिन्दी या हिन्दी का रूपान्तर मात्र है। जिन लोगो का प्रयत्न है कि बोल-चाल और लिखने पढ़ने की भाषा में एकदम समानता स्थापित करदी जाय, उन्हे सफलता मिलनी कठिन है। इन दोनों मे थोड़ा बहुत अन्तर अवश्य रहेगा। वास्तव में हिन्दी उर्दू मे कोई भेद नहीं है। हिन्दी को ही कुछ लोग उर्दू कहने लगे हैं। हिन्दी में न तो अरबी-फारसी के शब्दों की प्रधानता होनी चाहिए और न सस्कृत के कठिन शब्दों की भर मार। सस्कृत की बड़ी बेटी होने के कारण हिन्दी का उससे प्रभावित होना तो स्वाभाविक ही है,— परन्तु उसे जान बूझकर क्लिष्ट बना देना उचित नही कहा जा सकता। बोल चाल की सीधी साधी सरल भाषा का नाम ही हिन्दी है, चाहे उसे देवनागरी म लिखिये, चाहे किसी अन्य लिपि में। हिन्दुस्तानी भाषा की हिमायत में,मदरसों में, कामन लैंग्वेज रीडर पढ़ाई जाने लगी हैं, परन्तु उसका भाषा को पढ़कर हँसी आती है। न उसे हिन्दी कह सकते हैं न उर्दू। इसका नया नाम खिचड़ी भाषा भले ही रख लिया जाय। हिन्दुस्तानी कही जाने वाली भाषा काम भले ही चला दे, परन्तु वह अपना साहित्यिक महत्व स्थापित नहीं कर सकती। कोमन लैंग्वेज रीडरों में तो भाषासौष्ठव की बिल्कुल हत्या ही होती दिखाई देती है। हमारा तो मत है कि प्राचीन इतिहास कुछ भी हो परन्तु अब तो हिन्दी और उर्दू दोनों अपनी अपनी पृथक् पृथक् सत्ता रखती हैं। हिन्दी का भी साहित्य है और उर्दू का भी। एक सस्कृत प्रधान और दूसरा फारसी अरबी मिश्रित। अब ये दोनों भाषायें उसी प्रकार नहीं हिल मिल सकतीं जिस प्रकार बगला, गुजराती या हिन्दी और मराठी। हां, उद्योग अवश्य किया जाय कि साधारण प्रोपैगेंडा और काम-काज की भाषा बहुत सरल, बोल चाल की और सब की समझ मे आने लायक होनी चाहिए। यह बात इस दिशा म अवश्य माननीय है।

एक बड़ी आवश्यकता—

आर्य्य समाज के साहित्य को मूल्यवान बनाने के लिए श्री प० रामचन्द्र देहलवी का वैदिक सिद्धान्तो की व्याख्याओं के लेख-बद्ध होने की आवश्यकता आर्य्य जगत में वेग के साथ अनुभव की जा रही है। वस्तुत, यह बहुत बड़ी आवश्यकता है। जितनी जल्दी इस दिशा म यत्न किया जाय उतना ही अच्छा है। यदि प० जी स्वय इस कार्य्य को करते तो अच्छा था परन्तु पंडित जी को जो व्यक्ति जानते हैं वे जानते हैं कि पंडित जी से यह कार्य्य होना कठिन है। ऐसी अवस्था म स्वय आर्य्य समाज को यह कार्य्य करना चाहिए। यह कार्य्य दो प्रकार से हो सकता है। एक तो यह कि पंडित जी के किसी स्थान पर विशेष २ व्याख्यान कराए जाया करें और उन्हे लेखबद्ध कर लिया जाया करे और पंडित जी को दिखलाकर छपा दिए जाया करे। इन लेखों के सकलन में प० जी के भाषण की मधुरता, ओज, प्रवाह और आनन्द की रक्षा होनी चाहिए तभी उनके लिए यत्न सफल समझा जायगा। इसके लिए प० जी के भाषणों का हूबहू लिखा तथा सुसम्पादित रूप में प्रकाशित किया जाना आवश्यक है। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि प० जी के निर्देशपर एक सुदक्ष

लेखक रख दिया जाय और पं० जी स्वय अपना व्याख्याएं उसके द्वारा लेख-बद्ध करा देवें। इस समय ऐसे ग्रन्थकी बड़ी आवश्यकता अनुभवकी जा रही है जिसमे आर्य्य समाज के मुख्य २ सभी सिद्धान्तों की व्याख्या एक स्थान पर प्रामाणिक सरल रोचक और उन्नत स्टाइल में उपलब्ध हो। इस कार्य्य के लिए पं० जी बहुत उपयुक्त व्यक्ति हैं। आशा है पं० जी तथा आर्य्य जनता इस आवश्यकता पर गंभीरता पूर्वक विचार करेगी और इसकी पूर्ति का यत्न करेगी। पं० जी के लेखक का व्यय कोई भी धर्म्म प्रेमी आर्य्य सज्जन देकर पुण्य और यश के भागी बन सकते हैं। हम समझते है धन की व्यवस्था कोई कठिन कार्य्य नही है।

लाहौर वधस्थल—

भारत सरकार ने गोमांस की सप्लाई के लिए लाहौर में एक बड़े वध स्थल खोलने का विचार छोड़ दिया है क्योंकि उनकी सम्मति मे ऐसा करने से प्रजा की धार्मिक भावनाओं को ठेस लगती थी परन्तु हिन्दुओं और सिक्खों ने केवल धार्मिक आधार पर इस स्कीम का विरोध नहीं किया था। उन्होंने और बहुत से मुसल्मानों ने आर्थिक आधार पर भी स्कीम का विरोध किया था।

पं० जवाहरलाल और भारतीय नारी जाग्रति

अभी हाल मे श्रीयुत प० जवाहरलाल नेहरू ने अहमदाबाद में एक सार्वजनिक सभा मे बोलते हुए आल इण्डिया वीमेन कान्फ्रेन्स (अखिल भारतीय स्त्री-सम्मेलन) की गति विधि की आलोचना की थी। उसमें उन्होंने प्रगट किया था कि यह संस्था अमीरों की संस्था है जन-साधारण की नहीं है। उन्होंने यह भी कहा था कि भारत में इन दिनों स्त्रियों मे जो जागृति हुई है उसका श्रेय कांग्रेस को है।

वर्तमान युग मे भारतीय स्त्रियों मे जागृति ब्रह्म समाज आर्य्य समाज इत्यादि संस्थाओं ने की है और शारदा ऐक्ट इत्यादि उपयोगी कानूनो और उपायो के समर्थन और प्रचलन इत्यादि कार्यों के द्वारा आल इण्डिया वीमेन कान्फ्रेन्स ने भी की है। साथ ही राजनैतिक जागृति कांग्रेस ने पैदा की है। आर्य्य समाज और ब्रह्म समाज ने तो जागृति का सूत्रपात ही किया था। ऐसी अवस्था में जागृति का तमाम श्रेय कांग्रेस को किस प्रकार जा सकता है यह समझ मे नहीं आता। स्त्रियों मे जागृति का अर्थ उन्हे भारतीय लाइनों पर सुशिक्षित करना, भारतीय महिलाओ के घर और बाहर के—कर्त्तव्यों, आदर्शों और मर्य्यादाओं का स्मरण कराना और देखना है कि वे कहा तक उन्हे पूरा करती है। एक शब्द मे जागृति की मुख्य कसौटी यह देखना है कि हमारी जाग्रत नारियो का दृष्टि कोण भारतीय है या अभारतीय। यदि भारतीय है तो सचमुच उन्होने जागृति की है। यदि अभारतीय वा पश्चिमी है तो उनकी जागृति को जागृति नहीं कहा जा सकता है। इस कसौटी पर परखकर देखना चाहिए कि जागृति मे किसका श्रेय अधिक है हम समझते है इसमें आर्यसमाजका श्रेय ही अधिक होगा। खद्दर धारण कर लेने मात्र से, घर गृहस्थ के कर्त्तव्यो के बलिदान पर सार्वजनिक जीवन मे आजाने भारतीय नारित्व के के आदर्शों और प्रतिभा के विरुद्ध तलाक, बर्थकन्ट्रोल आर्थिक स्वतन्त्रता, पुरुष के साथ प्रतियोगिता इत्यादि का समर्थक बनने बनाने से हमारी नारियां जागृत नहीं कही जा सकती हैं।

महानुभूति—

चीन की विपत्ति में जिसमें साम्राज्य वादी जापान ने बलात् आक्रमण करके उसे डाला हुआ है हम महानुभूति प्रगट करते है। इस युद्ध में हवाई आक्रमण से बम्बों द्वारा जो निर्दोष पुरुष और स्त्रियाँ मारे गए हैं उनके भाग्य पर हम आंसू बहाते है। इसके सिवा हम गुलाम देश के अधिवासी और कर ही क्या सकते हैं। इस प्रकार के युद्ध पर कौन हृदय रखने वाला होगा जो घृणा प्रगट न करे और आततायियों के अमानुषी कृत्यों पर क्षुब्ध न हो उठे। सचमुच इस प्रकार के युद्ध डाके ही कहे जा सकते है युद्ध नहीं।

प्रसन्नता है चीन प्राणपण से मुकाबला कर रहा है यदि चीन मुकाबले में सफल हुआ तो सचमुच चीन की नहीं वरन् न्याय और मनुष्यता की विजय होगी।

कांग्रेस और हिन्दू सभा—

उपर्युक्त शीर्षक में माडर्नरिव्यू लिखता है.—

"यह सुना जाता है कि पंडित जवाहरलाल जी ने मध्य प्रदेश से आई हुई एक प्रश्नावली का उत्तर दिया है कि कांग्रेस के सदस्य किसी हिन्दू सभा के सदस्य नही होने चाहिए। यदि यह नियम मुसल्मानों ईसाइयो, सिक्खों, पारसियो इत्यादि के साम्प्रदायिक सस्थाओं की उनकी सदस्यता पर भी लागू होता है तब तो इस पर आपत्ति नहीं हो सकती है अन्यथा यह आपत्ति जनक है।

क्या महाभारत इतिहास नहीं है ?

श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज

महाभारत में अनेक स्थलों में अस्वाभाविक बातें देखकर अनेक पश्चिमी विद्वान, विशेषकर अगरेज विद्वान, कह दिया करते हैं कि महाभारत की गणना इतिहास की कोटि में नहीं की जा सकती। परन्तु अन्य देशों की इसी प्रकार की अस्वाभाविक घटनाओं से मिश्रित किताबों को, उन्हें इतिहास कहने में सङ्कोच नहीं होता। उदाहरण के लिये रोम के इतिहासवेत्ता लीवी (Livy) आदि, ग्रीक के इतिहासज्ञ हेरोडोटस (Herodotus) आदि तथा मुसलमान इतिहास लेखक फरिश्ता आदि के लिखे ग्रथों को देखें, जो इतिहास के नाम से प्रसिद्ध हैं, तो उनमें सैकड़ों अस्वाभाविक और अनैतिहासिक बातों का समावेश मिलेगा। जब ये सभी ग्रथ इतिहास कहे और माने जा सकते हैं तब समझ में नहीं आता कि महाभारत को क्यों इतिहास न माना जावे। अवश्य रोम के इतिहास लेखकों में, आजकल के इतिहासज्ञ लीवी की जगह गिब्बन (Gibbon) फ्रूड (Froude) का मान करते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि गिब्बन आदि ने जो इतिहास लिखे हैं उनका आधार तो वही लीवी आदि के लिखे हुए इतिहास हैं।

(२) इगलैंड आदि देशों में पद्य में, केवल वीर पुरुषों के वार्ताद्योतक (Epic) काव्य लिखे जाया करते हैं, आख्यान ग्रथ नहीं लिखे जाते इसलिये महाभारत को पद्य में देखकर उन्होंने इसे भी काव्य ही कहना शुरू कर दिया परन्तु इन लोगों ने यह नहीं समझा कि हमारे देश में तो कानून आदि सभी प्रकार के ग्रन्थ पद्य ही मे लिखे गये हैं जैसे मनुस्मृति आदि अनेक स्मृतिया। इन्हें कौन काव्य कह सकता है ? ये कानून के ग्रन्थ हैं।

(३) वेबर ने एक जगह लिखा है —Since Megasthenes Says nothing of this epic (महाभारत), it is not improbable hypothesis that its Origin is to be placed in the interval between his time and that of "Chrysoston", for what ignorant sailors took not of, would hardly have escaped his observation (History of Sanskrit Literature by Weber, English translation p 186 1882) परन्तु वेबर ने इस बात पर विचार नहीं किया कि मेगेस्थनीज के ग्रन्थ तो अब अप्राप्य हैं। उसके ग्रन्थो के उद्धरण अनेक ग्रन्थों से लेकर डाक्टर श्वान बेक (Dr Schwan Beck) ने संग्रह किया है। इस सग्रह के आधार पर, कोई भी समझदार पुरुष यह नहीं कह सकता कि मेगेस्थनीज ने क्या नहीं लिखा ?

इन सब बातों पर विचार करने के बाद जो परिणाम उचित रीति से निकाला जा सकता है वह यह है कि महाभारत के इतिहास कहने के विरुद्ध जो पश्चिमी विद्वानों की दलीलें हैं वे थोथी और रद करने के योग्य हैं और महाभारत ठीक उसी तरह से इतिहास है जैसे लीवी और फ़रिश्ता आदि के इतिहास। अवश्य जो उसमें अस्वाभविक बातें हैं उन पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

भारतवर्षीय प्रदेशों के प्राचीन नाम

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

मैं भारतवर्ष के प्रान्तों के प्राचीन नाम पाठकों के लाभार्थ लिखने लगा हूँ। इसका मुख्य कारण यह है कि जिस समय कोई व्यक्ति महाभारत का पाठ करने लगता है। उसको यह कठिनाई होती है। वह समझ नही सकता कि जो नाम वह पढ़ रहा है वह किस प्रात का नाम है क्योंकि उस समय जो नाम थे वह नाम इस समय नहीं हैं इस लिये पाठक सदेह मे रहते हैं।

ब्रह्मा, जावा, सुमात्रा, मलाया द्वीप के विषय में कुछ लिखना कठिन है इसमें से कुछ भाग तो भारतीयों ने जाकर बसाए थे। शेष पर भारतीयों का प्रभाव था या राज्य था, यह कहना अभी कठिन है परन्तु इनके अतिरिक्त जो अन्य प्रांत हैं उन पर भारतीयों का राज्य रहा है। महाराजा अशोक का धर्म विजय वहा तक था और पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ के पूर्व जिन प्रातों को विजय किया था वह भी यही प्रात थे। चारों भ्राता भीम, अर्जुन, नकुल सहदेव इन प्रातों के विजयता थे। दक्षिण में समुद्र है, पश्चिम में कस्पियन समुद्र, उत्तर में शियेनशान पर्वत तक अर्जुन गया था। पूर्व में आसाम तक का पूरा पता मिलता है। अश्वमेध के समय में अर्जुन ने इनमें से कई प्रातों की विजय यात्रा की थी। आज जिस उत्तर पश्चिम प्रात से भारतीय भययुक्त रहते हैं उनके पूर्वजों ने अपनी विजय पताका वहा फहराई थी। यह सब प्रात भारतवर्ष में ही माने जाते थे इस लिये प्राचीन भारत वर्तमान भारत से कहीं विस्तृत था इसलिये मैं ने भारतवर्ष के भिन्न २ प्रांतों के पुराने नाम लिख कर उनके आगे वर्तमान नाम वा अन्य प्रकार से उसका पता देने का यत्न किया है जिससे पाठक सहज में समझ जाय कि यह प्रात कहा था और कौनसा है

मैंने यह पाठ 'भारतवर्ष के इतिहास की रूप-रेखा' से लिये हैं जिसके लेखक पं० जयचन्द्र जी नारंग विद्यालकार हैं और पुस्तक शारदा मन्दिर लिमिटेड देहली से प्राप्तव्य है। आशा है पाठको को इससे कुछ न कुछ लाभ होगा।

यदि कोई अन्य सज्जन इसमें सुधार कर के इन प्रातों के नाम लिखें अथवा दूसरे देशो के नाम लिखें तो मै उनका धन्यवाद करूगा। क्यों कि पुराने नामों के समझने मे विशेष कठिनाई होती है।

स्वर्णभूमि—बरमा, स्याम, मलाया द्वीप
स्वर्ण भूमि—सुमात्रा
स्वर्ण भूमि—करका की समुद्री किनारा
यव द्वीप, जहव—जावा
कालकम—बरमा (समुचय)

प्राग्ज्योतिष—आसाम और उसके उत्तर का पहाड़ी प्रदेश। इसी नाम से एक प्रात महाभारत के पाण्डव अश्वमेध में रावी के समीप भी पर्वत

में लिखा है।

चीन—याक० चेक्यॉंग, पीलीनदी (होयागहो) के मध्य का प्रदेश

गाधार—चीन का युईनाम प्रात

मालवा—लओ

दशार्ण—लओ का पूर्वी भाग वर्तमान लुआङ० फ्रा बाङ

कशमीर— जेहलम की उपरली दून। वेरीनाग से वराममूल तक

दर्द—कृष्ण गंगा से सिन्ध तक, गिलगित से हुंजा तक

अभिसार—जेहलम, चनाव के बीच। पुंच्छ राजौरी, भिम्बर का प्रात।

दार्व—चनाव, रावी के बीच, डुग्गर, जम्मू का प्रांत।

कष्टवार—मकदूदा से चनाव तक। वर्तमान किशतवार।

भद्रावकाश- दार्व, कष्टवाट के बीच का देश। वर्तमान भद्रवा

त्रिगर्त—रावी, व्यास, सतलज के बीच का प्रात। जिला कांगड़ा, होशयारपुर, जालधर बलासपुर, नालागढ़, मंडी, सुकेत।

चम्पा—रावी की दून। चम्बा के आसपास का प्रांत

उत्सव संकेत, लाहुल—चन्द्रभागा की उपरली दून किशतवार के ऊपर, चम्पा के आगे।

कनौर—सतलज की उपरली दून। बुशाहर राज्य। सिमला से तिब्बत रोड़ पर ५० मील से।

लद्दाख जडसकर रूपशू हानले चूमूर्ति	यह सब सिन्धु की दून मे कशमीर, कनौर के बीच मे क्रम से पूर्व से पश्चिम की ओर है।

गुगे—चुमूर्ति के आगे का प्रदेश

डरी—मानसरोवर के चौगिर्द कैलाश पर्वत तक।

कुलूत—कुल्लु का प्रदेश, व्यास की उपरली दून। त्रिगर्त के आगे।

क्युठल—सतलज, रौंस नदी के मध्य। क्युंथल, सिमला, डगशाई, बघाट (सोलन) कसौली, जुब्बलादि राज्य।

साल्व, जौनसार—रौंस नदी के पूर्व, देहरादून के ऊपर का प्रदेश।

कट प्रदेश—गढ़वाल। भागीरथी से पिण्डर तक गङ्गा की धाराओं का प्रदेश।

कूर्माचल—कुमाऊ, गढ़वाल से पूर्व।

शाकल प्रदीप—कुमाऊ से नैपाल तक का प्रदेश।

नैपाल—नैपाल प्रदेश।

सिकिम, भोटान, तोवाङ, अका, दफला, मीरी अबोर—क्रम से नैपाल से पूर्व को हैं।

किरात—नैपाल का पूर्वीय प्रदेश जिसे अब भी नैपाल वाले किरात नाम से कहते हैं।

त्रिविष्टप—तिब्बत

बोलौर—सिंधु श्योक के मध्य का देश जिसे कशमीर वाले छोटा तिब्बत कहते हैं उपरला हिन्द। चीनी तुर्कस्तान

गधार पश्चिमी—युसफजई, बुनेर, स्वात, बाजौर, दीर। सिन्धु से कुनार नदी तक का प्रदेश। इसकी राजधानी पुष्करावती, स्वात कावल नदी के सगम पर थी।

कपिशा—दोरा, खावक घाटा के बीच कावल नदी तक, गधार और कपिशा की सीमा कुनार नदी बनाती थी वर्तमान काफरस्तान।

वाह्नीका—वलख प्रदेश। बदखशा के पश्चिम।

पामीर—बदखशा, वलख, हिन्दुकुश, वन्दे वाव के उत्तर आमू की धाराओं का प्रदेश।

काष्कार—चितराल।

पकथ कम्बोज—अफगानिस्तान और रूस राज्य का कुछ भाग।

पार्थव, पाह्नव—खुरासान प्रदेश

उडीपान—स्वात की उपरली दून

तुर, तुरान—रूसी तुर्कस्तान।

उत्तर कुरु—थियेनशान पर्वत के आंचल में। यह पर्वत चीनी तुर्कस्तान के ठीक उत्तर में है।

कम्बोज—गलचा प्रदेश, कश्मीर के उत्तर में

तुरवार—बदखशा, वलख के पूर्व।

लम्पाक—लमगान।

नगरहार—निम्रहार, जलालावाद के आस-पास का प्रदेश।

पकथ—तीराह

सुग्ध—बुखारा समरकन्द का प्रदेश

खोतन—सीता नदी के निचले काठे से कुछ पूर्व। सीता का नाम अब 'यारकन्द' है

हूणों का प्रदेश—वक्ष, मुर्गाव के बीच का प्रदेश

रोह, लोहित—अफगानस्तान का भाग जो वलख के इधर है।

चोल (उत्तर)—वलख के पश्चिम दक्षिण में रेतीली पहाड़ियों का प्रदेश।

सुम्ह (उत्तर)—चरीकर, काओशां के बीच का प्रदेश।

परम कम्बोज—आमू नदीका मैदान, जरफशा नदी के साथ २ बदखशां के समीप।

ऋषिक—उपरला हिन्द। चीनी तुर्कस्तान।

हर उवति—कन्धार नगर के आस पास के प्रदेश।

मकस्थान—मकरान

जरक, शकस्थान—सीस्तान।

आरिया—हेरात प्रदेश (हरात)।

कलात—दर्रा बोलान के दक्षिण का प्रदेश।

लासवेला—पुराली नदी के आस पास।

मद—ईरान का उत्तर पश्चिमी भाग।

पार्सो—मद के दक्षिण फारस खाड़ी तक।

मर्व—कस्पियन सागर के पूर्व का देश।

वर्कन—मर्व के दक्षिण का भू भाग।

उरशा—जिला हजारा। एबटाबाद।

गधार पूर्वी—रावल पिण्डी से पश्चिम, तक्षशिला राजधानी थी।

सिन्ध—डेरा जात। डेरा इस्माइलखा, डेरा गाजीखा का जिला, कुछ सिन्ध प्रान्त का भाग।

सौवीर—सिन्ध प्रात।

कैकेय—जिला जेहलम, शाहपुर (सरगोधा) गुजरात।

मद्र—रावी चनाव के बीच का प्रदेश राजधानी स्यालकोट।

क्षुद्रक—वियाशा (व्यास के दाई ओर। विपाडकी)।

मालव—रावी की निचली धारा के दोनो ओर।

कठ—माझा जिला लाहौर, अमृतसर का तरनतारन का भाग।

उशीनर—पूर्व उत्तर पजाब।

शिवि—रावी, चनाव के सगम के पास, कमालिया के चौगिर्द रहते थे।

अम्बष्ट, क्षत्र, वसाति—पचनद के पास, उब भावल पुर स्टेट मे रहते थे।

मुचि कर्ण—रोडी के पास आवाद थे।

यौधेय—जोहिया वार। सतलज के निचली तरफ फीरोजपुर से भावलपुर तक।

वाहीक—सारा पंजाब वाहीक कहलाता था।

कुनिन्द, कुलिन्द—जिला अम्बाला, सहारनपुर, देहरादून टौंस नदी तक।

कुरु—हस्तिनापुर (जिला मेरठ मे) से सरस्वती तक।

कुरुक्षेत्र—सरस्वती के आस पास का प्रात।

मत्स्य—मेवात। जिला गुडगावा अलवर, जयपुर राज्य।

शाल्व देश—आबू का चौगिर्द

मरुस्थल—मारवाड़ जोधपुर, जैसलमेर।

सुराष्ट—काठियावाड

शूरसेन—मथुरा का प्रांत।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती धगर के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मर्षिदेश—कुरुक्षेत्र, शूरसेन, मत्स्य पंचाल, सब मिलाकर।

पंचाल उत्तर—रुहेलखड।

पंचाल दक्षिण—जिला फरुखाबाद, कनौज कानपुर।

मल्ल—जिला गोरखपुर मे गण राज्य था।

कोशल उत्तर—गोंडा, बहरायच का प्रदेश।

कौशल दक्षिण—जिला छतीस गढ।

चेदी—चम्बल, केन के बीच का देश, बंधेलखड।

दशार्ण—वेतवा केन के बीच का प्रदेश। पूर्वी मालवा।

वत्स—जिला प्रयाग काशीराज्य के पश्चिम।

काशी राज्य— गङ्गा के उत्तर दक्षिण काशीनगर के आस पास।

कारुप—वत्स राज्य दक्षिण

अयोध्या—अयोध्या शहर के चौगिर्द

मिथिला—जनकपुर सीतामढी, दर्भंगाका प्रात।

मगध—दक्षिणविहार।

अवंति—उज्जैन मालवा।

आकर विदिशा—भिलसा का प्रांत।

सुराष्ट्र—काठियावाड।

लाट—दक्षिणी गुजरात।

वरुगजू भरु कच्छ—कोकण दक्षिणी गुजरात के मध्य का प्रदेश

अपर्क शूर्पारक—कोंकण (महाराष्ट्र मे समुद्री तट) कर्नाटक के उत्तर।

चेर केरल —पालाघाट कोटियम सेलम तक। मद्रासप्रात का उत्तरीय पश्चिमी तट।

पाण्ड्य—मदुरा, तिरमावली, त्रावनकोर।

कोचीन का प्रांत।

चोल—इसकी दक्षिणी सीमा पदद् कोटा की वेलार नदी थी। (मद्रास प्रांत का भाग)

ताम्रपर्णी द्वीप सिंघलद्वीप—सेलोन

नाग द्वीप—सेलोन का उत्तरीय भाग

माल दिविन—मालद्वीप

रठिकपेशतोहरए—महाराष्ट्र

कर्नाटक—महाराष्ट्र के कोकण के नीचे बंबई प्रांत, मैसूर राज्य।

वनवास—उत्तरीय कर्नाटक

महिषमंडल—दक्षिणी कर्नाटक (मैसूर)

दामिल, तामिल नाड—मद्रास सूबा जहाँ तामिल भाषा है।

परिलिया—तामिल प्रांत में पुरुल तट का प्रदेश।

आंध्र—तामिल के उत्तर जहा तेलगू भाषा है।

विदर्भ—वरार प्रांत, अमरावती, युतमाल आदि जिले

निषध—सतपुडा की पश्चिमी सीमा

समतट—गंगा, ब्रह्मपुत्र के मुहाने के पास का प्रदेश।

वरेन्द्र—गंगा ब्रह्मपुत्र के बीच का प्रदेश। समतट के उत्तर।

वंग—पूर्वी बंगाल

राढ—समतक के पश्चिम का प्रदेश।

अंग—जिला भागलपुर।

पुण्ड्र—बंग का उत्तर प्रांत।

सुम्ह—वंग का पश्चिम जिला मेदनीपुर।

कलिंग—उडीसा का समुद्रीतट

अशमका—आंध्र के उत्तर। मूलक के दक्षिण कलिंग के पश्चिम।

मूलक—अशमक के उत्तर का प्रांत।

मूषिक मूतिका—अशमक कलिंग के बीच में एक छोटासा राज्य था।

पिछले जन्म की याद

प्रो० जिनारजा दास के विचार

अभी हाल में श्रीयुत प्रो० जिनारजा दास का ग्वालियर के राजमहल में महाराजा की प्रेरणा पर एक भाषण हुआ था। उस भाषणमें पुनर्जन्मके समर्थन में प्रो० महोदय ने उत्तम विचार प्रगट किए हैं। भाषण का सार॰इस प्रकार है:—

"पुनर्जन्म का सिद्धान्त हिन्दुओं, बौद्धों और जैनियों तक ही सीमित न था। ससार के अन्य बहुत से भागों में भी यह सिद्धान्त पाया जाता था। यूनान में प्लेटो इस सिद्धान्त का समर्थक था और पाइथागोरस ने इस सिद्धान्त का अपने उपदेशों का आधार बनाया था। सिद्धान्त के रूप में पुनर्जन्म सब के लिए बड़ा आकर्षक है और आज भी इस सिद्धान्त में व्यापक रूप से विश्वास किया जाता है।

अमेरिका में तो इस सिद्धान्त पर बहुत ही विश्वास किया जाता है। इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में सिर्फ एक शंका है और वह यह है 'यदि मेरे पिछले जन्म थे तो मुझे उनकी याद क्यों नहीं है।"

पिछली स्मृतियां

एक फ्रेंच फिलास्फर बर्गसन ने कहा है 'अपने पिछले जन्म के सम्बन्ध में विचार द्वारा हमें बहुत कम याद रहता है परन्तु पुनर्जन्म का अधिकांश स्मरण हमारी इच्छाओं, क्रियाओं, स्वभावों और चेष्टाओं से होता रहता है। जिस प्रकार गुण और उसकाप्रकाश है उसी प्रकार इस के पीछे पिछली स्मृतियों का रिकार्ड भीहै। मनुष्य मे जो असाधारण गुण होते है वे पिछले जन्मों की स्मृति को ज़ाहिर करते हैं।

पुनर्जन्म के सिद्धान्त के अलावा तात्कालिक मित्रता और शत्रुता की बात को अन्य किसी बात से नहीं समझाया जा सकता है। जब दो व्यक्ति मिलते हैं,और जैसा कि कहा जाता है, एक दूसरे से प्रेम करने लगजाते हैं तो गहरे प्रेम और त्याग का जो वे तत्काल ज़ाहिर करते हैं क्या कारण हो सकता है? इस प्रकार॰ के प्रणय-भाव का कारण हमारी पिछले जन्म की स्मृतिया ही हैं। इसी प्रकार के घृणा और विरोधी भावों का कारण पिछले जन्म की शत्रुता और विरोध होता है। नैपोलियन को जब कि वह बहुत छोटा अफसर था सेना सचालन का बहुत अच्छा ज्ञान था और ३० वर्ष की अवस्था से पूर्व ही सेना-पति के रूप में उसने युद्ध-कला के ज्ञान का आश्चर्य्यजनक परिचय दिया था। उस की इस प्रतिभा का कारण पैत्रिक न था, क्यों कि उसके खान्दान में पहले कोई सैनिक न था। वैज्ञानिक साक्षी द्वारा भी यह बात सिद्ध नहीं है कि पूर्वजों द्वारा संगृहीत गुण हर अवस्था में बच्चों तक पहुचें। नैपोलियन का इस जन्म मे प्रतिभा-शाली योद्धा होना उसके पूर्व्व जन्म के संस्कार ही हो सकते हैं।

प्रसार कैसे हो ?

श्री चन्द्र गुप्त जी वेदालंकार

लेखक के विचारो तथा लेखके उद्धरणों से हम सर्वांश मे सहमत नही है फिर भी-लेख मे काफ़ी पठनीय सामग्री है इसी लिए हम इसे दे रहे है—

सम्पादक

ढाई हजार वर्ष पुरानी बात है कि महात्मा बुद्ध सारनाथ मे खड़े अपने पाच शिष्यो से कह रहे थे-"चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजनहिताय बहुजन कुशलाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय देव-मनुस्सान। देसेथ भिक्खवे धम्मं आदिकल्याणं मज्झकल्याण परियोसानकल्याण सात्थ सव्यञ्जनं ब्रह्मचरिय पकासेथ" अर्थात् भिक्षुओं ! अब तुम जाओ और बहुतो के कुशल के लिये तथा देवताओं और मनुष्यों को भलाई के लिये भ्रमण करो। तुम उस सिद्धान्त का प्रचार करो जो आदि मे उत्तम है, मध्य मे उत्तम है और अन्त मे उत्तम है। सम्पन्न, पूर्ण तथा पवित्र जीवन का प्रचार करो। तथागत का अपने शिष्यों को यही प्रथम उपदेश था। यही से भगवान् का धर्मचक्र प्रवर्त्तन प्रारम्भ होता है। अपनो शिक्षाओ का प्रचार करने के लिये बुद्ध से पूर्व किसी भी सुधारक ने अपने शिष्यों को इतनी प्रबल प्रेरणा न दी थी और नाही ससार की शिष्य-मण्डलियों मे से किसी ने अपने गुरु के उपदेश का इतनी दृढता से पालन किया जितना बौद्ध भिक्षुओंने। इन भिक्षुओंकी दृढ प्रतिज्ञा तथा अपूर्व उत्साहके सम्मुख मीलो ऊंचा बर्फ से लदा हुआ हिमाचल लज्जावनत हो गया। सैकड़ो मील लम्बी, सुनसान तथा ज्वालामयी मरुस्थलिया ठण्डी सडकें बन गई। प्रचण्डघोषकारी सागरोकी तरल तरङ्गावली कोमल फूलो की सेज बन कर बिछ गई। ये लोग सोने-चान्दी की खानें ढूढने न निकलते थे, तेल के कुओं या चाय के बगीचो की भी इन्हे चाह न थी। अन्य राष्ट्रो को अपना दास बना कर उन पर शासन करने की उमग इनके मन मे एक क्षण को भी कभी न उठी थी। इनके सम्मुख तो एक ही उद्देश्य था और वह यह कि-प्राणिमात्र का कल्याण करना है। प्रेम, सेवा, दया अहिंसा और सत्य को लेकर वे एक के अनन्तर दूसरे देश मे बढ़ते चले गये। वे जहा भी गये अपार

जब हम लाखों पीडित व्यक्तियों की साधारण जीवन दशा देखते हैं तो हमे मालूम होता है कि इन लोगो के लिए पुनर्जन्म का सिद्धान्त ही एक मात्र आश्वासन का कारण बन सकता है। क्योंकि हम यह देखते है कि जो न्यूनताएँ इस जीवन मे उपस्थित है उनकी पूर्ति की आशा हमे दूसरे जन्म में हो सकती है। साथ ही-पुनर्जन्म का सिद्धान्त हमारे लिए भारी उन्नति का एक विशाल क्षेत्र पैदा कर देता है जो कि इसी एक ही जन्म को मानने वालों की दृष्टि में कदापि आ हो नही सकता।

———

जन समुदाय उनको शिक्षा के सम्मुख सिर झुकाता चला गया। तनिक सोचिये आज उत्तर तुर्किस्तान के बीच सौ मोल लम्बी पहाड़ी पट्टी है। कोई पड़ाव नहीं, कोई रास्ता नहीं, किसी प्रकार का रहने-सहने, खाने-पीने का प्रबन्ध नहीं, पीठ पर सामान लाद कर लेजाना भी अत्यन्त दुष्कर है। आज यदि इस प्रदेश को नापने के लिये कहा जाए तो कितने मनुष्य ऐसे होंगे जो इस कार्य को करने के लिये तय्यार होंगे? लेकिन जिन्होंने उस समय जब न मोटर थी, न रेल थी, न तार था, न वायुयान थे-कोई भी साधन न था इसे पार कर धर्म का सदेश फैलाया था। उन्होंने कितना महान कार्य किया था इसका अनुमान लगा सकना कुछ कठिन नहीं है? बौद्ध भिक्षुओं के आत्म त्याग का ही यह परिणाम था कि बुद्ध के परिनिर्वाण के छ सौ वर्षो के भीतर ही जापान, कोरिया, चीन, खोतन, बर्मा, स्याम, अनाम, कम्बोडिया, मलायाप्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा बोर्नियो, और शलिवस तक बौद्ध धर्म प्रचण्ड अग्नि की भाति फैल गया'

यह चित्र है जिसे एक दिन आर्यसमाज ने अपना आदर्श बनाया था। प्रत्येक आर्य एक ऐसे दिन का स्वप्न लेता है जब मक्का और मदीने की बड़ी से बड़ी मस्जिद पर 'ओ३म्' की वैजयन्ती फहराती होगी। ऐसा ही स्वप्न अमरात्मा श्रद्धानन्द ने लिया था। उन्होंने कहा था-"मैं तो उस दिन को देखने को व्याकुल हो रहा हूं जब कि योरुप और अमेरिका के बड़े से बड़े पार्लियामैन्ट हाऊस की ऊंची से ऊंची चोटी पर वैदिक पताका लहराती हो।"

परन्तु प्रश्न यह है कि बौद्धों ने अपना विशाल धर्म-साम्राज्य स्थापित कैसे किया? क्या इसके आधार में बड़े बड़े शास्त्रार्थी महारथियों के कलेवर बिछे हुए हैं, जिस पर यह भवन खड़ा है? नहीं, बिलकुल नहीं। बौद्धधर्म के सम्पूर्ण इतिहास में शास्त्रार्थों का महत्त्व बहुत कम रहा है। स्वय महात्मा बुद्ध ने महाकाश्यप के शास्त्रार्थ के पश्चात् कोई भी शास्त्रार्थ नहीं किया। उनकी शिक्षाओं का प्रभाव उपदेशों तथा उनके क्रियात्मक जीवन द्वारा आप से आप फैलता चला गया। चीन में जब काश्यपमातङ्ग ने कन्फ्यूशस और ताऊधर्मी दोनों को परास्त कर दिया और चीनी सम्राट मिङ्ती ने बौद्धधर्म स्वीकार कर लिया, फिर वहा भी शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं रही। तिब्बत में जब आचार्य पद्मसम्भव ने विधर्मियो को हरा दिया और तिब्बती सम्राट तान्-चङ्-गम्-पो ने बुद्ध की शरण ग्रहण की फिर वहा भी कोई शास्त्रार्थ नही हुआ। तदनन्तर मगोलों का समय आया। मगोलों की राजधानी कराकुरम मे कुबलेईखा के सभापतित्व में जब 'नेमो' ने ताऊ-धर्मियों को पछाड़ दिया और ७०० ताऊधर्मियों ने सिर मुडाकर बौद्धमत स्वीकार कर लिया तथा कुबलेइखा ने यह कहते हुए बौद्धधर्म की दीक्षा ग्रहण की कि जिस प्रकार सब अंगुलिया हथेली से निकली हैं वैसे ही सब धर्म बौद्धधर्म से निकले हैं। इस घटना के पश्चात् मगोल साम्राज्य मे फिर कोई शास्त्रार्थ नहीं हुआ। बौद्धमत फैला और बिना शास्त्रार्थ के फैला। महात्मा बुद्ध ने

मगध, काशी, कोशल, कौशाम्बी, अवन्ती, शाक्य लिछवी, भग्ग, कोलिय, मोरिय, मल्ल, तथा अङ्ग के राजाओं और प्रजाओं को शास्त्रार्थों द्वारा अपना अनुगामी नहीं बनाया था। प्रत्युत अपने मधुर उपदेशों के द्वारा ही पूर्व देश के सम्पूर्ण राजाओं, यश जैसे समृद्ध नागरिकों को, अनाथ पिण्डुक-से बडे-बड़े व्यापारियों को, जीवक से वैद्यों को, शरीपुत्र और मौद्गलायन से महा-विद्वानों को, महाप्रजापति गौतमी, भद्राकापिलानी और सामावती-सी रानियों तथा कुलीन देवियों का अपने उपदेशों तथा समयानुकूल शिक्षाओं द्वारा ही आकृष्ट किया था। बुद्ध के पश्चात् सम्राट् अशोक ने बौद्धधर्म के प्रति विशेष उत्साह प्रदर्शित किया। उसने भी शास्त्रार्थों का आश्रय न लेकर सेवाव्रत को अपनाया। अशोक की कार्य्यप्रणाली का वर्णन उसके शिलालेख सहस्रों वर्षों पश्चात् आज भी कर रहे हैं। उसने कुएं बनवाए, धर्म-शालाए खड़ी कीं, चिकित्सालय खोले, सड़कों पर पेड लगवाए, पशुहत्या बन्द की, दागना रोका, धर्म-यात्राएं कीं, जनता मे धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिये कर्मचारी नियुक्त किये और इन सबसे बढ़कर उसने धर्म के लिये अपनी सम्पत्ति, अपना तन, अपना मन और अपने हृदय के टुकड़े राजकुमार और राजकुमारी तक दे डाले। एक बार प्रचारार्थ निकले हुए, दूर—लङ्का में बैठे अपने आंखों के तारों को उसने आयुभर फिर कभी देखा तक नहीं। ये कारण थे जिनसे बौद्धधर्म की दुन्दुभि मिश्र से लेकर सिंहल द्वीप तक बजने लगी। तृतीय महासभा की समाप्ति पर काश्मीर, गान्धार, हिमवन्त प्रदेश, वनवासि, ऊपरान्त, महिषमण्डल, सुवर्णभूमि और सिंहल-द्वीप मे जो प्रचारक मण्डल भेजे गये थे उन्होंने भी शास्त्रार्थ द्वारा प्रचार न किया था। दीपवंश और महावंश को पढने से इसमें तनिक भी सन्देह नही रहता कि सभी प्रचारकों ने जो इन देशों में प्रचारार्थ भेजे गये अपनी अलौकिक शक्तियों तथा उपदेशामृत द्वारा देश के देश धर्म में दीक्षित कर लिये। इनमे से एक ने भी शास्त्रार्थ नहीं किया। कुशान सम्राट् कनिष्क ने मध्य एशिया तक बौद्धधर्म को फैलाया। उसने भी बिना शास्त्रार्थों के विंध्याचल से लेकर पामीर की पर्वतमाला के परे तक बुद्ध का सन्देश प्रचारित कर दिया। भिक्षुओं में परस्पर फूट पडी, विवाद उठे, झगड़े हुए, सम्प्रदायों का विकास भी हुआ, यहा तक कि एक समय ऐसा भी आया जब बौद्ध-संघ निश्चितरूप से १८ सम्प्रदायों में बट गया। उनके पृथक् पृथक् दर्शन, साहित्य और सिद्धान्त भी चलने लगे। इतने पर भी बौद्धसघ एक रहा। प्रत्येक देश मे सब सम्प्रदाय साथ साथ चलते रहे। विहारों और पूजास्थलों में कोई भेद न था। सघारामों में सभी यात्रियों का समान आदर होता था। ह्वेन्-त्साङ् लिखता है "यात्रियों का आदर सभी जगह बहुत होता है। उनसे उनके धर्म, विचार आदि के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया जाता। इसी नीति के कारण ही आज भी मनुष्यजाति का एक तिहाई भाग बुद्ध का उपासक बना हुआ है।"

आज आर्यसमाज को आवश्यकता है कि

विविध देशो मे प्रचारार्थ प्रचारक भेजे जाएँ। जाने वाले योग्य व्यक्तियों का अभाव है। हर एक दूसरे के गले पर छुरी चलाना चाहता है। इस कार्य के लिये अपने को कोई आगे नहीं बढाता। सम्राट अशोक ने तो अपने पुत्र और पुत्री तक को परदेश भेज डाला था। चीनी दूत मण्डल की प्रार्थना पर काश्यप मातङ्ग, धर्मरक्ष तथा कुमार जीव स्वय चीन गये थे। तिब्बती सम्राट् के निमंत्रण पर नालन्दा के आचार्य अतिशा, पद्मसम्भव आदि स्वय जाते रहे। हिन्दू-धर्म के प्रतिनिधि बन कर विवेकानन्द स्वय अमेरिका गये। एक दिन आर्यसमाज के नेता भी इसी तरह मैदान मे उतरे थे। और बड़े बड़े विद्वान् अफ्रीका के विस्तृत मैदानों मे धर्म का सदेश लेकर पहुंचे थे। पर आज दशा दूसरी ही है। आज तो आर्यसमाज के विद्वान् पारस्परिक झगडो की उलझन मे उलझे हुए है। वे इसे तिलाञ्जलि देकर प्रचारार्थ क्यो नही निकलजाते? प्रचार की तो बात दूर आज तो समाज प्रमाणवाद से चिपट रहा है। वह एक एक शब्द पर मरने लगा है। विचार स्वातन्त्र्य महापाप समझा जाता है। ज़रा ज़रा सी बात पर बडे बड़े नेता निकाल दिये गये। यही कारण है कि समाज का क्षेत्र बहुत सकीर्ण होता जा रहा है। विद्वान लोग इसमे सम्मिलित होते हुए सकुचाते हैं। ऋषि दयानन्द ने तो अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे स्पष्ट शब्दों मे विचार स्वातंत्र्य को स्वीकार किया है फिर न जाने यह संकीर्णता कहा से घुस आई? सत्य, अहिंसा आदि धर्म के तत्त्वों पर तो कोई विचार तक नही करता लेकिन सगठन के अवान्तर गौण भेदों को ही धर्म अधर्म का प्रश्न बना रक्खा है। दूसरी ओर बौद्धधर्म को देखिये। महात्मा बुद्धने विचारो मे खुली छूट दे रक्खी थी। अगुत्तर निकाय मे कथा आतीहै—एक व्यक्ति तथागत के पास पहुंच कर कहने लगा २५० नियमो का पालन करने मे असमर्थ हूँ। इस पर तथागत ने कहा क्या तुम ३ शीलो का पालन कर सकते हो? उत्तर मे आगन्तुक ने स्वीकृति दी। इसके अतिरिक्त बुद्ध ने देश तथा परिस्थितियो के अनुसार सीमान्त निवासियो, बनवासियो आदि को विशेष छूट दे रक्खी थी। ह्वेन त्साङ् अपने यात्रावृत्तान्त मे लिखता है कि वैशाली के भिक्षु कुछ नियमो का पालन नहीं करते। पूछने पर ज्ञात हुआ कि बुद्ध ने उन्हे इस की छूट दी थी। सब प्रकार से स्वतन्त्रता देने पर भी बौद्धधर्म की आत्मा का हनन न हुआ। धर्म की आत्मा वही रही, बाह्य आकार भी वही रहा, केवल समय तथा देश के अनुसार थोडा थोडा परिवर्तन आता रहा। इस का कारण बुद्ध का उपदेश था जो उन्होंने निर्वाण के समय आनन्द को दिया था। उन्हो ने कहा था-"अत्तदीपा विहरथ अत्तसरणा अनञ्ञसरणा धम्मदीपा धम्मसरणा अनञ्ञसरणा।

अर्थात् आनन्द! आत्मा ही तुम्हारी ज्योति है, तुम्हारा प्रदर्शक है, आत्मा ही तुम्हारी शरण है इसके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु तुम्हारी सहायक नही। तुम धर्म की ज्योति मे चलो, धर्म की शरण मे रहो और किसी की नही। यदि आर्य-

सौर पञ्चांग

❀ ❀

लेखक—
श्री प०गङ्गाप्रसादजी चीफ जज टेहरी।

मेरी सम्मति है कि सौर पञ्चाङ्ग का प्रचार सारे भारतवर्ष मे और आर्य्य जगत मे किया जावे तो कई प्रकार से लाभदायक होगा। सौर वर्ष मे अधिमास नही आता। प्रात वर्ष १२ मास ३६५ दिन होते है इसलिए उसका मिलान योरोप के कलेन्डर व पञ्चाङ्ग स सुगमता से होता रहता है।

यह ठीक है कि वर्तमान सौर पञ्चाङ्ग मे लग भग २१ वा २२ दिनकी भूल है। विषुवत् सक्रान्त जो इस समय लगभग १३ अप्रैल को होती है २३ मार्च को होनी चाहिए। विषुवत शब्द का अर्थ ही यह है कि जिस में रात और दिन समान हों,जैसा अमरकोष मे भी लिखा है "यत्र रात्रिदिने-साम्य विषुव विषुवच्च तत्"। ऐसा लगभग २३ मार्च को होता है १३ अप्रैल को नहीं। इस भूल का कारण यह है कि कई सहस्र वर्षों से हमारे सौर पञ्चाङ्ग मे संशोधन नहीं हुआ। यौरोप के कलेन्डर मे जो उस समय Julian Calendar कहलाता था इसी तरह १० वा ११ दिन का फरक था। पोप ग्रेगरी ने सत्रहवीं शताब्दी मे इसका सशोधन किया और उसकी आज्ञा से जनवरी मास मे १० वा ११ दिन छोड दिये गये थे और आगे के लिए ऐसा नियम किया गया जिससे फरक न बढने पावे। उस सशोधित कलेन्डरको रोमन कैथोलिक मतानुयायी देशो ने उसी समय मान लिया। ईग्लैन्ड तथा अन्य प्रोटेसटेन्ट देशों ने कुछ समय पीछे माना। अब समस्त योरोप और अमरीका मे संशोधित कलेन्डर जो ग्रेगोरियन कलेन्डर कहलाता है प्रचलित है।

हमारा सौर पञ्चाङ्ग भी उसी प्रकार सशोधित हो सकता है। एक वर्ष में २१ या २२ दिन छोड़ने होंगे। मैंने इस विषय में एक लेख कुछ वर्ष हुए लिखा था और इस विषय को अजमेर दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर सार्वदेशिक सभा की ओर से धर्म्मार्य सभा में भी रखा था, सभा ने उस प्रस्ताव को स्वीकार कर के उसको

समाज आज इसे आदर्श बनाकर चले तो शीघ्र ही ससार का कल्याण हो सकता है। फिर हमारा वह स्वप्न पूर्ण हो सकता है जबकि सम्पूर्ण ससार आर्य्यसभ्यता का अनुयायी होगा। आर्य-समाज की आज भी आवश्यकता है। ससार मे शान्ति स्थापना अत्याचार दमन, भेदभाव तथा छूआछूत को मिटाने के लिये आर्य सस्कृति की आज भी जरुरत है। लेकिन उसके सदेश को संसार के कोने कोने में पहुँचाने के लिये योग्य कार्यकर्ताओं यथा उत्तम योजनाओं की आवश्यकता है। आशा है आर्य भाई मेरे विचारों पर उदारतापूर्वक विचार करेगे।

भारतवर्ष के प्रमुख ज्योतिषियों के पास भेजा परन्तु फल कुछ न निकला।

मैंने अपने लेख की एक प्रति श्रीयुत महामना पूज्य मालवीय जी तथा सौर पञ्चाङ्ग काशी के प्रकाशक और ज्ञान मंडल प्रेस के स्वामी श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त जी के पास भी भेजी थी क्योंकि मेरा यह विचार था कि यदि पञ्चाङ्ग का सशोधन काशी व काशी विश्वविद्यालय से हो जावे तो सम्भव है कि सारी हिन्दू जनता उसको अपना लेवे। पूज्य मालवीय जी ने उत्तर में लिखा था कि वे इसके लिए यत्न करे गे। इसके कुछ समय पीछे लगभग दो बरस हुए इन्दौर में अखिल-भारतवर्षीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था जिसके सभापति महामना मालवीय जी हुए थे। कुछ ज्योतिर्विदों से जो उस सम्मेलन में गये थे मुझको ज्ञात हुआ कि पूज्य मालवीय जी ने सौर-पञ्चाग की पूर्वोक्त भूल को दूर कराने को उद्योग किया परन्तु उसमें सफलता न हुई। लगभग २०० उपस्थित ज्योतिषियों में से केवल १५ वा २० ने उक्त सशोधन का समर्थन किया शेष ने इस कारण से नहीं किया कि उससे फलित के अनुसार प्रचलित पर्व आदि में परिवर्तन होते थे।

ऐसी दशा में पूर्वोक्त संशोधन जिसमें किसी एक वर्ष के २१ वा २२ दिन छोड़ने होंगे सम्प्रति सम्भव नहीं मालूम होता तो भी मेरी दृढ़ सम्मति है कि सार्वदेशिक सभा और समस्त आर्यप्रतिनिधि सभाओं को सौर पञ्चाङ्ग को अपनाना और फैलाना चाहिए। देशी सौर वर्ष की तिथियों में स्थान २ पर कुछ भेद पाये जाते हैं। प्रति वर्ष प्रत्येक मास में निश्चित दिन भी नहीं होते। परन्तु ज्ञान मंडल से प्रकाशित होने वाले "सौर पञ्चाङ्ग और "सौर रोज़नामचे" में इस त्रुटि को दूर कर दिया गया है। उसमें प्रत्येक सौर मासके दिन नियत कर दिए गये हैं जो इस प्रकार हैं—मार्गशीर्ष और पौषके २५ दिन, कार्तिक,माघ, फाल्गुन और चैतके ३० दिन, आषाढ़ के ३२ दिन और शेष मास अर्थात बैसाख, ज्येष्ठ, सावन, भाद्रपद और आश्विन के ३१ दिन, चौथे वर्ष फाल्गुन मास भी ३१ दिन का होता है। मेरी सम्मति है कि यदि सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ज्ञान मण्डल प्रेस के सौर पञ्चाङ्ग को स्वीकार करके अपने अधीन समस्त सभाओं और समाजों को भी उसके स्वीकार करने का आदेश व परामर्श देवे तो उत्तम होगा और इस समय जो भारतवर्ष मे अनेक पञ्चाङ्ग प्रचलित हैं और सौर पञ्चाङ्ग की तिथियों में भी जो न्यूनाधिक भेद हैं उनके स्थान में एक पञ्चाङ्ग के प्रचार मे सहायता मिलेगी जो कई प्रकार से देश के लिये लाभदायक है।

स्त्रियों की शिक्षा कैसी होनी चाहिए ?

रघुनाथप्रसाद पाठक

—❀—

स्त्री-शिक्षा के सम्बन्ध में कई विचार प्रचलित हैं। एक विचार यह है कि स्त्रियों का यह काम नहीं है कि वे पढ़ना लिखना और हिसाब सीखें। उन्हें दक्षतापूर्वक गृहस्थ का सचालन करना चाहिये। खाना बनाना तथा बच्चों का पालन-पोषण करना उन्हें आना चाहिये। उन्हें सीना पिरोना भी आना चाहिये इससे अधिक और कुछ नही। यदि वे पढ़ना जानेंगी तो वे अपना वक्त नाविलों के पढ़ने में गुजारेंगी और घर का काम धन्धा न हो सकेगा। ना ही भोजन बनाने में उनका मन लगेगा। शिक्षित मनुष्यों की तरह शिक्षित स्त्रियों का भी स्वास्थ्य खराब होता है। सख्त मेहनत वे नही कर सकती हैं। प्रसव के समय उनकी मृत्यु संख्या बिना पढ़ी लिखी स्त्रियों की अपेक्षा अधिक होती है। शिक्षित स्त्रियां ही अधिक संख्या में तपेदिक इत्यादि बीमारियों की शिकार होती हैं। इस विचार की सम्यक परीक्षा की जरूरत है तथापि हम विस्तार में न जाकर केवल इतना ही कह देना चाहते हैं कि यह सर्वांश में सत्य और ठीक विचार नहीं है। स्त्रियों को शिक्षा प्राप्ति का उतना ही हक है जितना पुरुषों को और अब इस युग मे स्त्रियों को बिल्कुल न पढ़ाये जाने की बात उपहासास्पद ही प्रतीत होती है। इस प्रकार के विचार कुछ उन लोगों के हैं जो रूढ़ियों के गुलाम हैं या मानसिक दासता के कारण जिनकी विचार शक्ति कुण्ठित हुई हुई है और जिनकी दृष्टि मे स्त्री पुरुष की दासी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और जिसका एक मात्र काम सेवा तथा बच्चे पैदा करना है। कुछ उन लोगों के भी हैं जो वर्तमान शिक्षा-पद्धति से निराश तथा उसके दुष्परिणामों से भयभीत हुए हुए हैं यद्यपि वे स्त्रियों के पढाए जाने तथा उनकी उन्नति के पक्षपाती हैं। यों कह सकते है कि लड़कियों की वर्तमान शिक्षा पद्धति से लोग इतने निराश हो गए हैं कि अब वे लड़कियों का बिना पढा-लिखा होना पढे-लिखे होने से ज्यादा अच्छा समझने लग गए हैं। इसे हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रतिक्रिया का नतीजा ही कह सकते हैं। इस विचार की हमे क़द्र करनी ही होगी और स्वीकार करना होगा कि वर्त-मान लाइनोंपर स्त्रियों की शिक्षा, शिक्षाके उद्देश्यको ठीक उसी प्रकार पूरा नहीं कर रही है जिस प्रकार बच्चों की शिक्षा के उद्देश्य को। यह पद्धति उन विषयों की शिक्षा देती है जो उनके जीवन के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं। पिछले दिनों प्रेस मे एक विवाद छिड़ा था। सवाल किया गया था कि 'क्या ऐलजब्रा और ज्योमेटरी अच्छी पत्नियां बनाती हैं ?' किसी मनचले आलोचक ने यह

प्रश्न करके इस बात का उत्तर दिया था कि 'क्या ऐलजब्रा और ज्यौमेटरी अच्छे पति बनाती हैं ? इसमें सन्देह नहीं जो शिक्षा-पद्धति गृहस्थ संचालन की कला और ज्ञान के बलिदान पर विभिन्न कलाओं और विज्ञान में दक्षता प्रदान कराती हो वह त्रुटिपूर्ण है। इस सिलसिले में एक बड़ी मनोरञ्जक मजाक की जो हमने कहीं पढ़ी थी याद आती है—

'Papa said a young girl to her father, 'Did you see my result ? I have got honours in Philosophy and economics, Is n't it Capital ?' 'Really' said the father, 'And it would be grand if your prospective husband secures honours in cooking, sewing, knitting and child welfare'

'पिताजी ! क्या आपने मेरा इम्तिहान का नतीजा पढ़ा ? फिलासफी और इकनामिक्स में मैं मुमताज रही हूँ। क्या यह अच्छी सफलता नही है ? पिता ने कहा ' बेटी ! वस्तुत: यह शानदार होगा यदि तुम्हारा होनेवाला पति खाना बनाने, सीने-पिरोने और बच्चों के पालन-पोषण मे मुमताज रहे।' स्पष्ट है यह शिक्षा-पद्धति त्रुटि-पूर्ण है और एकदम अस्वाभाविक है। स्त्रियों के लिए न केवल अस्वाभाविक ही है वरन ज्यादा भयकर भी है।

जो शिक्षा स्त्रियों को स्नेहमयी माता, कुशल गृह देवी, ममतामयी बहिन, पति की सहचारिणी और अनुव्रता पत्नी तथा देश, धर्म और जाति के लिए उपयोगी बनाने में समर्थ हो वही शिक्षा शिक्षा कही जा सकती है।

आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति में इस प्रकार का परिवर्तन किया जाय जिससे शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति हो। कांग्रेसी सरकारों को इस कार्य्य को पूर्ण करके देश की एक बड़ी सेवा करनी चाहिए।

महात्मा गान्धी जी से शुद्धि विषयक पत्र व्यवहार

[ले०—श्रीयुत के ज्ञानी, मद्रास]

—❀—

शायद् पाठकों को ज्ञात होगा कि गत कुछ मासों से मद्रास में हिन्दू-मुस्लिम झगडा है। दुर्भाग्य से आर्य समाज-मद्रास भी इस लपेट में आगया है और इसका परिणाम यह हुआ है कि स्थानीय दो समाजें लगभग ४ मासों से बन्द पड़ी हैं। बहिरंग प्रचार रुक गया है। कुछ मुकद्दमे चल रहे हैं। नगर मे १४४ धारा लागू है। अस्तु।

इसी सम्बन्ध में १४ सितम्बर को मैं श्री सी राज गोपालाचारी जी के पास, जो इस समय मद्रास प्रान्त के "प्राइम-मिनिस्टर" हैं, भेंट के लिये गया। उन्होंने लगभग ४५ मिनटों तक बड़े ध्यान से मेरी सब बातों को सुना और सब प्रकार की सुविधा देने की आशा दिलाई। केवल एक विषय पर उनका मतभेद था। उन्होंने कहा —

"आप मानते है कि आर्य समाज के शुद्धि-प्रचार से मुसलमान नाराज् होते हैं ? फिर आप इस कार्य को स्थगित क्यों नहीं कर देते ?" मैंने कहा —

'हमारा शुद्धि कार्य तो बहुत कुछ Defensive या स्व-रक्षात्मक है। यदि मुसलमान हिन्दुओं को धर्म-भ्रष्ट न करें तो शुद्धि-कार्य की विशेष आवश्यकता ही न रहेगी।"

उन्होंने कहा —

"आखिर यहां (मद्रास प्रान्त में) मुसलमान हैं ही कितने ? मुश्किल से छः फी सदी। और हिन्दू ? लगभग ६० फी सदी। क्या हिन्दुओं को इतना घबड़ाने की जरूरत है ?"

मैंने कहा —

"आज से कुछ सदिया पूर्व पंजाब व बंगाल के हिन्दू भी ऐसा ही कहा करते थे। पर अब उन की क्या अवस्था है ? ज़रा, वहीं के हिन्दुओं से पूछ कर देखिये ?"

उन्होंने कहा —

"तुम मेरा मतलब नहीं समझे। तुम्हें जातीय दृष्टि कोण से इस विषय को देखना चाहिये। आखिर, परस्पर वैमनस्य पैदा करके तो देश उन्नति नहीं कर सकता ?"

मैंने कहा —

"जातीय दृष्टि से मैं निवेदन करूंगा कि आप एक राज्य-नियम बनादें कि सब मत-परिवर्तन" सिविल मैरिज" के समान किसी न्यायाधिकारी के सामने हुआ करें। मुझे आशा है कि आर्य समाज इस विषय में सहमत हो जाएगा।"

उन्होंने कहा —

"मैंने शुद्धि सम्बन्धी अपने विचार तुम्हें कह दिये हैं। आगे तुम स्वय विचार सकते हो।"

मैंने कहा —

"यह प्रश्न केवल आर्य समाज का ही नहीं

सारे हिन्दू-समाज का है । अतएव मै आप को इस विषय में अन्य उत्तर नहीं दे सकता । हा ! मैं आपका विचार अपने लोगों के सामने अवश्य रखूगा तथा महात्मा गाधी जी से भी उचित पत्र-व्यवहार करूगा ।"

१५ सितम्बर को मैंने निम्न पत्र द्वारा महात्मा गाधी जी से इस विषय मे प्रश्न किये जिनका उत्तर उन्होंने २५ सितम्बर के "चार प्रश्न" शीर्षक से 'हरिजन' मे दिया है ।

मेरा पत्र

माननीय बापू जी !

मै लगभग १५ वर्षों से शुद्धि-कार्य कर रहा हूं । हजारों शुद्धिया मेरे द्वारा हुई हैं । यद्यपि मैं अपने तुच्छ अनुभव से यही मानता हू कि शुद्धि कार्य की हिन्दू समाज को अत्यन्त आवश्यकता है, तथापि देश में एक ऐसा पक्ष भी है जो इस कार्य को राष्ट्रीय दृष्टि से हानिकर समझता है । अत एव मेरी नम्र प्रार्थना है कि आप निम्न प्रश्नों पर प्रकाश डालने की कृपा करें । यदि आप उचित समझें तो "हरिजन" मे इन प्रश्नों का उत्तर प्रकाशित कर सकते हैं ।

(१) उन हिन्दुओं को, जिन्होंने किसी भी कारण से एक बार इस्लाम व ईसाइयत मे प्रवेश कर लिया हो, और अब हार्दिक प्रायश्चित्त करके पुन हिन्दू-धर्म में प्रविष्ट होना चाहते हो । क्या उनकी शुद्धि अभीष्ट है ? उदाहरणार्थ आप अपने पुत्र "हरिलाल" को ही ले सकते हैं ।

(२) जैसा आप को ज्ञात ही है, लाखो हरिजनों ने, विशेषत दक्षिण प्रान्त में, सामूहिक रूप से मत-परिवर्तन किया है । परन्तु ट्रावन्कोर की मन्दिर-घोषणा और आपके हरिजन-हितैषी कार्य ने उनकी आखें खोल दी हैं । वे अब पुन हिन्दू धर्म में आना चाहते हैं । आप इस विषय मे क्या सलाह देंगे ?

(३) एक हिन्दू को विशेष प्रलोभन देकर विधर्मी बनाया गया । परन्तु पीछे से उसे "अन्यों" की वञ्चना पता चली । अब वह आकर हिन्दू-धर्म का द्वार खटखटाता है । क्या आप उसे अन्दर आने देंगे ?"

(४) अनेक हिन्दू लडके व लडकिया मिशनरियों व मुल्लाओं द्वारा अबोध अवस्था मे ही विधर्मी बना लिये जाते हैं । परन्तु यदि समझ आने पर वे हिन्दू धर्म मे फिर दाखिल होना चाहें तो क्या आप उन्हें कबूल करेंगे ? "

महात्मा गान्धी का उत्तर

"यद्यपि ऐसे प्रश्नों का उत्तर मै पहिले भी कई बार दे चुका हूँ फिर भी दुहराने में कोई हर्ज नहीं। मेरी सम्मति मे उपरोक्त मत परिवर्तन वास्तविक नही। यदि एक व्यक्ति भय, लालच व बलात्कार से विधर्मी होता है तो उसे विधर्मी नहीं कहना चाहिये । सच्चा परिवर्तन तो हृदय से होता है और उसमें भगवान की प्रेरणा रहती है । भगवान् की पुकार मनुष्य की पुकार से सदैव भिन्न होती है । जिन दृष्टान्तों को ऊपर प्रश्नो मे लिया है वे सच्चे मत परिवर्तन के नही हैं । वे तो छल, प्रवचना और जाल हैं जिनके द्वारा

विधर्मी अपना उल्लू सीधा करते हैं। ऐसे मत-परिवर्तन को मैं जाली सिक्के की मिसाल दूगा जिसे धोखेबाज लोग भोले लोगो मे चला कर मौज लूटने है।'

"अतएव मैं उपरोक्त अवस्थाओं मे निस्सन्देह उन सब हिन्दुओं को अपने मत मे पुन प्रविष्ट कर लूगा जो हृदय से प्रायश्चित्त करते है। मैं तो उनके लिये शुद्धि-सस्कार की भी आवश्यकता नहीं समझता क्यों कि वे वस्तुत हृदय से विधर्मी बने ही नहीं।'

❀ ❀ ❀

लेखक ने निम्न का एक और प्रश्न भी श्री म० गांधी जी से किया था जिसका उन्होंने किसी भी कारण से उत्तर देना उचित नहीं समझा। वह प्रश्न यों है —

"मै मानता हू कि आर्य समाज व हिन्दू सभा के शुद्धि कार्यों ने मुसल्मानों को हिन्दुओं का विरोधी बनाया है। परन्तु क्या आप यह उचित समझते हैं कि हिन्दू तो शुद्धि करना बन्द कर दें और मुसलमान व ईसाई मजे म हमारे हजारो लाखो भाइयो को प्रति वर्ष विधर्मी बनाते चले जाए ?"

शंका समाधान

(क्रमागत)

Questions —

III YAJNAS

1. Please name the various kinds of Yajnas in vogue in your Province.

2. Which of them, if any, do you consider essential for the present age and present conditions and how are they to be performed ?

3 Are the 'Pancha-Maha-Yajnas' performed properly now-a-days, even by those who are doing them ?

4 If not, how do you propose to rectify the defects ?

5 Should not animal sacrifice be abolished ? If the answer is in the affirmative, what steps do you propose to carry out the above object ?

Answers:—

1 Out of the 5 Mahayajnas, Sandhya and Agnihotra should form the minimum for a household. Other Yajnas besides Mahayajnas are extinct. Yajnas in connection with Samskaras, and a few such as Purnamasi, Navasamvatsareshti, or shasyesti may be introduced.

2. Agnihotra should form the essential central basis of these Yajnas.

3 & 4 Sandhya (Brahmayajna) and Agnihotra these two are the most common. The other Yajnas have changed their forms according to the needs of the present society.

5. Animal sacrifices are now much less common and whatsoever they are, they should be abolished by creating public opinion against them, and if possible by law also.

प्रश्न

१–अपने प्रान्त में प्रचलित विविध प्रकार के यज्ञों के नाम बतलाएँ।

२–यदि कोई यज्ञ प्रचलित हों तो वर्तमान युग और वर्तमान अवस्थाओं के लिए उनमें से कौन २ आवश्यक हैं और उनके करने की क्या २ विधियां हैं ?

३–जो लोग आजकल पंचमहा यज्ञ करते हैं क्या वे भी उन्हें ठीक २ रीति से करते हैं ?

४-यदि नहीं करते हैं तो आपकी सम्मति में त्रुटियों का निवारण किस प्रकार हो सकता है ?

५-क्या पशु-बलि बन्द नहीं होनी चाहिए ? यदि बन्द होनी चाहिए तो आपकी सम्मति मे क्या कार्यवाही की जानी चाहिए ?

उत्तर

१-पांचों महा यज्ञों का अनुष्ठान होना चाहिए और कम से कम संध्या और अग्निहोत्र गृहस्थ में अवश्य होने चाहिएँ ।

२-इन यज्ञों का केन्द्रीय आधार अग्निहोत्र होना चाहिए ।

३, ४-संध्या और अग्निहोत्र ये दो बहुत प्रचलित हैं। वर्तमान सोसायटी की आवश्यकताओं के अनुसार दूसरे यज्ञों का रूप बदल गया है ।

५ पशु-बलि अब बहुत कम प्रचलित है और यदि कहीं २ है तो उसके विरुद्ध लोकमत पैदा करके उसे बन्द कर देना चाहिए । यदि सम्भव हो तो कानून द्वारा भी बन्द करा देनी चाहिए ।

विवाह

नैरोबी के एक सज्जन ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी मन्त्री धर्मार्य सभा से (विवाह) सम्बन्धी कतिपय शंकाओं का समाधान प्राप्त किया है । शंकायें तथा समाधान इस प्रकार हैः—

प्रश्न —विधवा विवाह और सामान्य विवाह की विधियों मे कुछ भेद है या नहीं—यदि है तो क्या ? दूसरी बात यह भी लिखें कि विधवा विवाह की अवस्था में दूध पीता बच्चा या छोटा बच्चा किस अवस्था तक माता के साथ रहना चाहिये या बच्चा माता के साथ ही रहना चाहिये ? कानूनी दृष्टि इस बारे मे क्या है ? गहने कपड़े का क्या फैसला होना चाहिये और विवाह लड़की के माता पिता को करना चाहिये या श्वशुर पक्ष को ? यदि श्वशुर पक्ष की सम्मति न हो तो विवाह हो सकता है वा नही ? यदि श्वशुर पक्ष की सम्मति है और माताजी नहीं है तो क्या स्थिति होगी और यदि दोनों की न हो लड़की की हो तो विवाह हो सकता है या नही ? इस अवस्था मे कन्या दान कौन करेगा ?

गोत्र क्या है ? अमुक गोत्रोत्पन्ना मे गोत्र के स्थान मे कौन सा गोत्र है—क्या सगोत्र विवाह निषिद्ध है—गोत्र शब्द पाणिनि मुनि का गोत्र है या उपजातियों का नाम है ।

क्या विवाह से पहिले समावर्तन संस्कार कराते हुये अलंकरणमसि कह कर चूड़ा या कोई आभूषण पहिनाना अवैदिक है—समार्वतन संस्कार होना चाहिये वा नहीं ?

उत्तर -विधवा विवाह और सामान्य विवाह में भेद है। एक विधि पहले छपी थी । उस कमेटी मे मै, रामदेवजी, ब्रह्मदत्तजी,नारायण स्वामीजी, आर्य मुनिजी थे। वह राजपाल से मिलेगी अथवा स्वामी धीरानन्द जी से पता लगजायगा । मेरी सम्मति मे यदि कई संतान हों तो पाणिग्रहण पर्याप्त है । यदि एक आध संतान हो, वह भी अल्पवयस्क हो तो कुछ करलेना चाहिये और यदि बिना संतान और युवती ही हो १६-२४ वर्ष तक तो विधि अधिक कर लेनी उचित होगी ।

(२) जब तक बालक माता का दूध पीवे माता के पास रहना चाहिये फिर न रहे। तीन वर्ष पर्याप्त होंगे।

(३) जो स्त्री धन है वह स्त्री ले अर्थात् जो माता, पिता भ्राता पति ने दिया है वह स्त्री का ही है जो श्वशुर ने दिया है वह भी थोडा हो तो स्त्री का है और यदि अधिक हो तो श्वशुर ले सकता है यह सब सामयिक बातें है जैसा उचित हो कर लेना चाहिये।

(४) जिस पक्ष की सम्मति हो वह विवाह कर दें। यदि दोनों की न हो और स्त्री चाहे तो अपने आप करले। प्रश्न कन्यादान का है। गाधर्व विवाह मे कन्यादान कोई नहीं करता है और इसे छोड़ दिया जाय।

(५) गोत्र वश ही है अन्येतु गोत्र वशमाहुं। जो उपम्यजातिया है यह भी कुछ काम देसकतीं हैं। विवाह में माता की पाच और पिता की ७ पीढी के अन्दर विवाह न होना चाहिये।

(६) चूड़ा पहनाना आवश्यक नहीं, इच्छा पर है, चाहे पहन ले चाहे न पहने। जैसे स्नातक को भूषणादि का विधान सस्कार विधि में है परन्तु आजकल कोई नही पहनता है।

सार्वदेशिक सभा के प्रचारकों का कार्य्य

कर्नाटक

अगस्त सन् ३७ के प्रचार तथा हरिजनोद्धार कार्य का संक्षिप्त विवरण

इस मास बंगलौर शहर छावनी तथा समीपस्थ ग्रामों मावल्ली गगम्मा, चेरी, शेषाद्रिपुर आदि में प्रचार और दलितोद्धार कार्य करने के अतिरिक्त कंगेरी, शूले, टिप्टूर, कृष्णराज पुरम्, मैसूर इत्यादि में शुद्धि, हरिजनोद्धारादि विषयक कार्य किया गया। २१ अगस्त से २८ ता० तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाते हुए बगलौर, कगेरी, शूले इत्यादि में स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति जी ने ५०० से अधिक हरिजन भाई बहिनों को गायत्री मत्र दीक्षा दी। २१ अगस्त को समाज भवन (कैलासपाल्यम) में श्रावणी व उपाकर्म मनाते हुए जिस में हरिजन भाई बहिन भी बहुत बड़ी सख्या मे उपस्थित थे अन्यों के अतिरिक्त १० हरिजन बालकों का नियमपूर्वक उपनयन संस्कार हुआ। अनेक देवियों ने भी उस अवसर पर यज्ञोपवीत धारण किया। २२ ता० को कंगेरी गुरुकुलाश्रम में वहा के अधिकारियों की प्रार्थना पर स्नातक जी ने यज्ञोपवीत और गायत्री मंत्र की व्याख्या करते हुए उपाकर्म (श्रावणी) की विधि करवाई। अमेरिकन् मिशन् के मि० कैथन इत्यादि सज्जन भी सभा में सम्मिलित हुए जिनको स्नातक जी ने "Daily Prayer of an Arya" 'The Significance of the Vedic Sanskaras", "Exposition of the Gayatri" "Voice of Arya Varta" आदि पुस्तकें भेंट की। इधर हरिजनों के सुप्रसिद्ध नेता श्री स्वामी निश्चल प्रकाश जी (उपनाम श्री नारायण स्वामी पिछले भू० पू० Municipal Counciller बंगलौर छावनी) ने अपनी षष्ठिपूर्ति (६० वें वर्ष की समाप्ति पर किये जाने वाले समारोह) के उपलक्ष में हवन प्रार्थना उपदेशादि के लिये स्नातकजी से प्रार्थना की जिस के अनुसार २२ ता० को कंगेरी से शूले जा कर हवन, प्रार्थना, उपदेश (लगभग २५० हरिजनों को गायत्री मंत्र दीक्षा सहित) के अतिरिक्त सार्वजनिक सभा में जो 'षष्ठिपूर्ति' के सम्बन्ध में सायंकाल की गई और जिसमें ६०० से अधिक उपस्थित हुए ईश्वर भक्ति' पर स्नातक जी ने भाषण दिया। यह समाचार किसी सज्जन के पत्र द्वारा जान कर कि २००, ३०० व्यक्ति टिप्टूर की तरफ ईसाई होने वाले हैं स्नातक जी तुरन्त वहा पहुंचे और मतपरिवर्तन (Conversion) को रोकने का प्रबन्ध किया गया। शीघ्र ही बहुत सी शुद्धियों का प्रयत्न उधर किया जा रहा है। वहाके S A V नायडू नामक P W. D contractor की जो १० वर्ष हुए ईसाई हो गया था ईसाई क्षेत्र में भाषणादि के कारण उधर सुप्रसिद्ध था स्नातक जी ने मैसूर आर्य समाज भवन में १२ अगस्त को

शुद्धि कराई। उसकी अपनी इच्छानुसार उस सज्जन का नाम सत्यज्ञानानन्द रक्खा गया। उसी दिन श्रीमती प्रेम अम्मा नामक एक देवी की जो अध्यापिका का कार्य करती हैं और जिन के दादा ईसाई हो गये शुद्धि कराकर 'दयावतीदेवी' नाम रक्खा गया। शुद्धि संस्कार के पश्चात् वैदिक रीति से इन दोनों का विवाह संस्कार स्नातक जी ने व्याख्यान सहित करवाया जिस में बड़ी संख्या में मैसूर की देवियां तथा सज्जन सम्मिलित थे। श्रीयुत सत्य ज्ञानानन्द ही अब अनेक शुद्धियों के लिये टिप्टूर की तरफ प्रयत्न कर रहे हैं। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हरिजन भाई बहिन वैदिक धर्म और आर्य समाज की ओर अधिकाधिक आकर्षित हो रहे हैं। उनके मान्य नेता भी समाज के प्रति प्रेम दिखाते हुए वैदिक संस्कारों को अपना रहे हैं। इस मास हरिजनों के सुप्रसिद्ध नेता श्री मुर्गेशम् M R A. M L C के सुपुत्र श्री गणेशन् पिल्ले का विवाह संस्कार श्रीमती अमृत लक्ष्मी के साथ स्नातक जी ने १६ अगस्त को वैदिक रीति से व्याख्या सहित कैलासपाल्यम् में कराया। इसका उपस्थित जनता पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि श्रीयुत मुर्गेशम पिल्लेजी ने स्नातकजी को अत्यन्त हार्दिक धन्यवाद देते हुए सब को वैदिक संस्कार कराने की प्रबल प्रेरणा की जो वास्तविक दलितोद्धार का प्रधान साधन है। स्नातकजी द्वारा लिखित "The significance of Vedic Sanskaras" के द्वारा जिसका कर्णाटक और तामिल भाषा में अनुवाद भी तय्यार हो गया है, वैदिक संस्कारों की लोकप्रियता खूब बढ रही है। तामिल भाषा में अनुवाद सेन्टजोसेफ कालेज बंगलौर छावनी के तामिल भाषा के प्रोफेसर चंगलवरायन जी ने किया है। ये दोनों अनुवाद भी शीघ्र छपने वाले हैं। कर्णाटक अनुवाद 'हिन्दूधर्म' नामक मासिक पत्र के (जो कंगेरी गुरुकुलाश्रम से प्रकाशित होता है और जिसमें स्नातकजी पूर्ण सहयोग इस शर्त पर दे रहे हैं कि उसमें वैदिक सिद्धान्त विरुद्ध लेख न प्रकाशित होंगे) अगस्त अङ्क में श्रीयुत सुधाकरजी सिद्धान्त विशारद ने करके प्रकाशित किया है। स्थानीय पत्रों तथा उत्तर भारत के पत्रों के अतिरिक्त स्नातकजी ने इस मास ईसाइयों के कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले "Epiphany" नामक साप्ताहिक पत्र में जिसका वार्षिक चन्दा केवल ४ आ० है ईसाईमत पर समालोचना प्रश्न रूप में भेजी जो उस पत्र के २१ और २८ अगस्त के अङ्कों में प्रकाशित हुई और जिसके अत्यन्त उपहासजनक उत्तर सम्पादक की ओर से दिये गये हैं। स्नातकजी ने उस पत्र में पत्रव्यवहार को जारी रखने का निश्चय किया है।

कृष्णराजपुरम में Seventh Day Advent Mission का एक Spicer's College' नामक प्रसिद्ध ईसाई कालेज है जिसमें अधिकतर प्रचारकों को तय्यार किया जाता है। इस कालेज में कलकत्ता के रेवरेण्ड मुकर्जी बाइबल के प्रोफेसर हैं। उनसे ३१ अगस्त को लगभग ३ घण्टे तक स्नातकजी ने ईसाईमत की तर्क और विज्ञान-विरुद्धता तथा उसकी विशेषत: Old

Testiment की ईश्वर विषयक कल्पना की निस्सारता पर चर्चा की। रेवरेण्ड मुकर्जी उनकी युक्तियों का कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके। स्नातकजी ने उन्हे वैदिकधर्म विषयक अनेक पुस्तकें भेट की। 'मिर्जा रहीमबेग' इत्यादि कुछ मुसलमान सज्जनों के साथ स्नातकजी का वैदिक-धर्म, इस्लाम, वेद, आर्य समाज आदि धार्मिक विषयों पर १६ ता० को प्रेमपूर्वक सम्भाषण हुआ। २६ अगस्त को समाज भवन मे श्री कृष्णजयन्ती समारोह मनाने के अतिरिक्त इस अवसर पर स्नातकजी ने Yogi Raj Shri Krishna and 'Arya Samaj नामक ट्रैक्ट लिखकर प्रचारार्थ शिक्षित जनता मे वितरणार्थ आर्य समाज की ओर से प्रकाशित किया।

उल्लेखनीय अन्तर्जातीय विवाह

पाठक महोदय 'सार्वदेशिक" और "आर्य मित्र " आदि मे गोगी बिदनूर के रेवरेण्ड भद्रप्पा की सुपुत्री डा० भाग्यम्मा M B F R F P B, (Glasgow) की शुद्धि जो विजागपटेम मेडिकल कालेज मे असिस्टेन्ट प्रोफेसर और वहा के किंग-जार्ज हस्पताल मे लेडी असिस्टेन्ट सर्जन है) की प० धर्म देव विद्यावाचस्पति द्वारा बंगलौर आर्य समाज (कैलाम पाल्यम) मे १३ जून को कराई थी। शुद्धि का वृत्तान्त पढ चुके होंगे। गत १६ सितम्बर को उक्त देवी का आन्ध्र युनिवर्सिटी वाल्टेयर मे फिलासफी के प्रोफेसर डा० पुरुषोत्तम नायडू M A Ph D (London) के साथ विवाह सस्कार पत्थरपुर मे प० धर्मदेव जी ने वैदिक रीति से कराया। वर वधू ने विवाह सस्कार के समय शुद्ध खादी के वस्त्र धारण किये थे और प्रतिज्ञा मन्त्रो का उन्हो ने स्वयम् अर्थ-सहित पाठ किया। स्नातक जी ने अंग्रेजी मे विवाह सस्कार की विधियो तथा मुख्यमन्त्रो की व्याख्या की जिसका जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। ईश्वर की कृपा से ये वैदिक सस्कार अच्छे लोकप्रिय हो रहे है। इसी मास स्नातक जी ने दो और विवाह सस्कार हैदराबाद मे कराये जिनमे सैकड़ो आर्य सज्जनो और देवियो के अतिरिक्त अनेक मुसलमान, ईसाई 'यूरोपियन' तथा हैदराबाद रियासत के बहुत से अधिकारी भी सम्मिलित हुए। वैदिक सस्कार को देख और उसकी व्याख्या को सुन कर सब बडे प्रसन्न हुए। ८ सितम्बर को होने वाले विवाह मे वर गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक म० शिवप्रसाद जी आर्य के सुपुत्र प० सुरेशचन्द्रजी विद्यालङ्कार थे और वधु बेलगाम के सेठ बिहारीलालजी की सुपुत्री श्रीमती राजकुमारीजी स्नातिका कन्या-महाविद्यालय जालन्धर थी जो इस वर्ष पजाब युनिवर्सिटी की 'विशारद' परीक्षा मे सर्व प्रथम निकली है। ११ सितम्बर को महात्मा शिवप्रसादजी आर्य की सुपुत्री श्रीमती सावित्री देवी का विवाह श्रीयुत वेलो राम जी B. A के साथ हुआ। कन्या के अर्थ सहित शुद्ध वेद मन्त्र पाठ को सुनकर जनता पर विशेष प्रभाव पडा।

केरल

मौखिक प्रचार—वेल्लूर, कोयलोन, शुचीन्द्रम् पारशाला, कन्या कुमारी इन स्थानो मे व्याख्यान

दिया। व्याख्यानों से लोग पुन धीरे २ सचेत होने लगे हैं।

इस के अतिरिक्त प्रचार और शुद्धि के सिलसिले मे तोड्पुला, कुत्ताटकुलम, नेयाटिवकरा, वेङ्गानूर, नगर कोइल आदि स्थानों की यात्रा करके लोगों से बातचीत की। विशेषतया पुलय जाति के नेता मि० अयकाली से मिला। बातें करने से मालूम हुआ कि लोगों का विधर्मी हो जाने का कारण धार्मिक पराधीनता (छुआछूत आदि) नहीं अपितु गरीबी ही है। इसलिए किसी ऐसी सस्था के द्वारा काम करें तो सफलता होगी जिसमें अध्ययन करके निकलने पर वे अपने पैरों पर खड़ा हो सकें। लोग आर्य समाज को हृदय से चाहते हैं। परन्तु परिस्थिति ही बाधा पहुँचाती है।

शुद्धि —इस महीने में २० ईसाइयों को शुद्ध करके हिन्दू बनाया।

लेख —"Daily Prayer of an Arya" का अनुवाद किया जा रहा है। आधे से अधिक हो चुका है।

नारायणदत्त

लंका

साधु शिव प्रसाद जी ने लगभग तमाम जुलाई मास में कोलम्बो (लंका) में प्रचार कार्य्य किया। साधु जी 'प्रवासी महा सभा' के निमन्त्रण पर वहा गये थे। वहा उनके प्रचार का बहुत उत्तम प्रभाव रहा। बड़े २ प्रतिष्ठित, विद्वान और सम्मानित व्यक्तियों की बड़ी २ सभाओं में वैदिक धर्म्म के विभिन्न पहलुओं पर उनके कई व्याख्यान हुए। प्रसिद्ध बौद्ध संस्था बौद्ध मिशन विद्योदय कालेज में कोलम्बो के सर्वोच्च धर्म्माचार्य के निमन्त्रण पर वे पधारे और उनका व्याख्यान हुआ। नगर के बड़े २ सम्मान्य और धर्म्म प्रेमी सज्जनो ने प० जी को अपने यहा आमन्त्रित करके उनके साथ धर्म्म चर्चा की। कोलम्बो के लार्ड मेयर से भी उनकी भेंट कराई गई और उन्होंने लार्ड मेयर को आर्य्य समाज का परिचय दिया। कैंडी के भारतीय एजेन्ट म प० जी के 'वैदिक धर्म्म द्वारा विश्व शान्ति' लैक्चर में भाग लिया।

कोलम्बो में लगभग १०००० भारतीय हैं जिनमें से लगभग ४०००० मलावारी हैं। दूसरे भारतीय मुसल्मान, ब्राह्मण, बगाली, भाटिया, बोहरे, मराठ, पार्सी, हिन्दुस्तानी, खोजे इत्यादि हैं। अधिकांश लोग सिहाली हैं जो कट्टर बौद्ध हैं। यद्यपि कोलम्बो बड़ा खर्चीला शहर है तो भी वहाँ वैदिक धर्म्म का अच्छा प्रचार हो सकता है।

श्री बा० शिवचन्द्र जी का दोरा

आर्य्य रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्री बा० शिवचन्द्र जी मध्य भारत के दुष्काल पीड़ित भीलों में सभा की ओर से सहायता कार्य्य करके देहली लौट आये हैं। उन्होंने अजमेर, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर झाबुआ, थादला, दोहद, फ़ीरोज़गञ्ज, इन्दौर, नागपुर और दु ' की यात्राए कीं।

इस समय भीलों की अवस्था वैसी चिन्तनीय नहीं है जैसी १—२ मास पूर्व्व थी चूँकि उधर काफ़ी वर्षा हो चुकी है और शाघ्र फसल तय्यार हो जायगी। बा० शिवचन्द्र जी की रिपोर्ट है कि भीलों म स्थायी रूप से बैठकर प्रचार कार्य्य करने से हा कुछ फल

निकल सकता है। और वह बहुत ज़रूरी कार्य्य है। इस सम्बन्ध मे उन्होने सभा में एक विस्तृत स्कीम प्रस्तुत की है जिस पर सभा गंभीरता पूर्वक विचार कर रही है। यदि भीलों मे काम करने वाले कार्य्य कर्त्ता धर्म्म भाव वाले लग्नवान और परिश्रम-शील हो तो, भले ही भील लोग बहुत पिछड़े हुए है, उनमें जागृति पैदा की जा सकती है और उनकी हालत सुधारी जा सकती है। भीलो मे शिक्षा तथा अन्य सुधार कार्य्य जो किया गया है उसका अच्छा परिणाम निकला है। इस समय इस प्रकार के कार्य्यों को विस्तृत करने की ज़रूरत है।

इस दौरे मे बा० शिवचन्द्र जी ने शाजापुर और इन्दौर में आर्य्य वीर सेवा दलों की स्थापना की और कई सभाओं में जिनमे इन्दौर के मेडीकल स्कूल की जन्माष्टमी की सभा भी सम्मिलित है व्याख्यान दिए—अजमेर के झगड़े के सम्बन्ध में सभा के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने अजमेर की यात्रा की थी—उन्होने अपनी रिपोर्ट सभामें भेज दी है। शाजापुर (ग्वालियर) आर्य्यसमाज के गत कीर्तन पर वहाँ कई सौ मुसलमानो ने हमला कर दिया था इसके सम्बन्ध मे आपने वहां के अधिकारियो से भेट की।

पं० ज्ञानेन्द्र जी सिद्धान्त भूषण का कार्य्य

ता० १-८-३७ के दिन बीलीमोरा ज्ञान मन्दिर में 'ध्वजारोहण' उत्सव मनाया गया। भजनादि होने के बाद 'ध्वज का महत्व' पर एक मनोहर व्याख्यान दिया गया। युवकों की उपस्थिति अच्छी मात्रामें थी।

१-८-३७ तक बालकों और युवकों का समय समय आना होता रहा। धर्म शिक्षा का और शंका समाधान का समय रखा गया था। प्रति दिन का कार्य यही रहा।

१०-८-३७ को मरोली में A V पटवर्धन स्कूल मे हेड मास्टर श्री केवल भाई की अध्यक्षता में "ईश्वर की सत्ता और उसका स्वरूप" पर व्याख्यान हुआ। शंका समाधान भी किया गया। उसके प्रभाव से प्रभावित होकर दूसरे व्याख्यान के लिये श्री केवल भाई ने कहा।

ता० ११-८-३७ को 'ज्योतिष' विषय पर शंका समाधान रखा गया।

ता० १२-८-३७ उपरोक्त हाई स्कूल में 'रामायण और उसकी आवश्यकता' पर व्याख्यान हुआ।

ता० १४-८-३७ और ता० १५-८-३७ को कछादे में अवतार, वेद, पुराण, मूर्त्तिपूजा, कंठी यज्ञोपवीत पर शंका समाधान हुआ।

ता० १६-८-३७ को हरि स्कूल मे श्री. डा रमणलाल की अध्यक्षता में 'पूर्व और पश्चिम का नैतिक धोरण' पर व्याख्यान हुआ। बाद मे शंका समाधान रखा गया।

ता० १८-८-३७ को विद्यार्थियो की सभा हुई, चर्चा का विषय "विधवा विवाह होना चाहिए वा नहीं ?" उस दिन का अध्यक्ष मुझे बनाया गया। चर्चा की समाप्ति पर मैंने विवाह का उद्देश्य बताया, गुण, कर्म और स्वभावानुसार विवाह होना चाहिए। योग्य उमर पर हो तो विधवा विवाह की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। यदि कोई करे तो वे शूद्र हैं। आपत्ति काल मे नियोग होना चाहिए। वर्तमान कलुषित परिस्थिति देखकर विधवा विवाह होता है। वह स्मार्त है वैदिक नहीं है।

ता० १५-८-३७ से १८-८-३७ तक हरिपुरा में प्रातः काल और सायंकाल को संध्या हवन होते रहे।

ता० १७-८-३७ को "भद्रं कर्णेभिः" मंत्र पर कथा की गई। उपस्थिति अच्छी थी।

ता० १८-८-३७ को "एकता में आर्य्य समाज का कार्य" विषय पर व्याख्यान हुआ। शंका समाधान रखा गया। लोगों में अच्छा प्रभाव पड़ा उपस्थिति अच्छी थी।

ता० २१-८-३७ को बीलीमोरा 'ज्ञान मन्दिर' में श्रावणी के उपलक्ष्य में एक सभा हुई। व्याख्यान का विषय 'यज्ञोपवीत की आवश्यकता' थी। जनता की उपस्थिति अच्छी थी।

ता० २६-८-३७ को प्रात काल के ६॥ बजे 'ज्ञान मन्दिर' से सरघस निकला। शहर के भिन्न भिन्न भाग मे फिरता हुआ ८॥ बजे 'ज्ञान मन्दिर' पर आया।

८। बजे यज्ञ किया गया तीन जिज्ञासुओं ने यज्ञोपवीत धारण किये।

सायंकाल सभा हुई व्याख्यान का विषय 'आदर्श कृष्ण' था।

यज्ञ भजनादि होने के बाद व्याख्यान हुआ।

(गढ़वाल प्रचार)

आजकल शिल्पकार भाइयों की हालत इस प्रकार हो रही है कि पहिले इन लोगों ने अल्मोड़ा और गढ़वाल की एक शिल्पकार सभा बनाई थी। कुछ गढ़वाल के शुद्ध हुए आर्य भाई हैं, उनका उस सभा से मतभेद होने से, आर्य्य शिल्पकार नाम की अलग सभा खोल रखी है। इन लोगों ने दो चार स्थानों में सभा करके कोली लुहार, औजियों का एक खान पान करने का कार्य किया था। उसमे कुछ शुद्ध हुये भाई तो इसलिये सम्मिलित नहीं हुये कि जबतक यह लोग मास इत्यादि खाना नहीं छोड़ेंगे और न शुद्ध होंगे, तबतक इनके साथ खान पान नही कर सकते। उधर जिन थोड़े कोली लुहारों ने औजी भाइयों के साथ खान पान किया था उनकी बिरादरी ने उनका बहिष्कार कर रखा है। किसी २ भाई ने तो ऐसा करने के लिये दूसरे समय के लिये अपनी बिरादरी को बचन दे दिया है कि ऐसा अब कभी नही करेंगे। जब इनको समझाने का परिश्रम किया कि औजियों के साथ खान पान करने मे कोई हानि नहीं है तो यह लोग कहते हैं कि हम तो सनातनी हैं, आप लोग हमको गिरा रहे हैं? अब यह लोग आर्य्य समाज का भी उपदेश नही सुनते हैं। सगठन के बदले शिल्पकार भाईयों में अनेक प्रकार का विरोध फैल रहा है। जो भाई इस प्रकार के कार्य्य करने वाले हैं जब उनसे निवेदन किया कि जिस आर्य्य समाज की कृपा से सबका उद्धार हो रहा है आपका और हमारा कर्त्तव्य है कि सब मिलकर आर्य्य समाज का प्रचार करेंगे, ऐसा करने से ब्राह्मण, अछूत कोली, लुहार इत्यादि का एक खान पान होता जा रहा है इससे ही सबका सचा सगठन बन सकता है। जिन ऋषि सिद्धान्तों से सबमें प्रकाश फैल रहा है उन्हीं सिद्धान्तों से आपकी जाति उठेगी। जब कोई भाई शुद्ध होने के लिये तैयार होते हैं, तो

उनको टाल देते हैं कि हमने पहले अपनी जाति का सगठन करना है जिससे हम डि० बोर्ड आदि से अपना हक ले सकेंगे। आर्य शिल्पकार सभा शिल्पकार सभा का विरोध समाचार पत्र मे तथा प्रस्ताव मे करती है और इसी प्रकार शिल्पकार सभा, आर्य शिल्पकार सभा का विरोध करती है।

अगस्त मास का विवरण

एक ग्राम मे पशुबलि होने वाली थी। प्रचारक ने वहा जाकर उन लोगों को उपदेश दिया जब हिंसा के विषय मे उनसे प्रश्न किये कि आप सनातन धर्म मे जीव हिंसा करना बता सकते हैं। परन्तु उन लोगों ने उत्तर देने के बदले ध्यान तक भी नहीं दिया है। देवो के पुजारियों से कहकर अपना कार्य आरम्भ किया, रात्रि का समय था हम भी उनसे आज्ञा लेकर उसी स्थान पर बैठ गये। लेख के अधिक होने से पूरा विवरण नहीं लिख रहे हैं परन्तु उनमे से एक बात सृष्टि उत्पत्ति के विषय पर लिखकर भेज रहे हैं। पुजारियो ने देवी की विरदावली गढवाली भाषा के गीतों मे आरम्भ की, इन्होने भागवतादि पुराणों से भी सृष्टि उत्पत्ति एक निराली ढग की गाई। प्रथम शक्ति रूप पार्वती के सिवाय कुछ नहीं था, अब पार्वती ने मन में विचारा कि अकेले रहकर क्या करूंगी, तो प्रथम कलिया लुहार और उसकी स्त्री मोना लोहन उत्पन्न किये, कलिया लुहार पार्वती से हाथ जोड़कर कहने लगा मुझको क्या आज्ञा है। पार्वती ने आज्ञा दी कि सृष्टि पैदा करो, उसने प्रश्न किया किस तरह सृष्टि पैदा करूंगा, पार्वती ने एक बैल पैदा किया और कलिया लुहार से कहा इसको मारकर सींगों के मंडेसा बनाओ, और पैरों का हतोड़ा, आज्ञा पाकर कलिया लुहार ने ऐसा ही किया। फिर तीन खम्भे लोहे के बनाये उन खम्भों मे शूर्म, ऊर्म, कूर्म नाम के देवता पैदा करके बैठाये, इस प्रकार तो सृष्टि बनी है। पुन पार्वती सोचने लगी कि बिना पति के कैसे रहेंगे, तो ऊंडू और पूंडू नाम के दो नाग पैदा किये, इन दोनो से समुद्र मंथने का काम किया गया है। समुद्र के मथने से प्रथम इन्द्र, विष्णु, ब्रह्मादि देवता हुये, परन्तु पति बनना किसीने स्वीकार नहीं किया, सब यही कहते गये कि आपने हमको पैदा किया हम तो आपके पुत्रवत् हैं। महादेवजी ने पति बनना स्वीकार किया है। इतने मे एक देवीजी नाचते २ पुरुषों के बीच दौड़ती हुई आई फिर पुरुषो ने भी नाचना शुरू किया। हम वहा से उठकर चले गये हैं। अपने मन मे उस परम पिता जगदीश्वर को बार २ धन्यवाद करता रहा कि जिसकी महान् कृपा से ऋषि का आना हुआ नहीं तो इसी प्रकार जितने मनुष्य उतने ही पुराण बनते जाते, तब इस आर्यावर्त की क्या हालत होती, जब कि अठारह पुराण से ही आर्य जाति में मतभेद हो रहा है। दूसरे दिन मेला हुआ जिसमे ४००० हजार मनुष्य इकट्ठे हुये थे, ब्राह्मण लोग इन जीवों को मुक्ति दिलाने के लिये पाठ कर रहे थे, जिस ग्राम में यह मेला किया, वहां सब ब्राह्मण देवता ही

रहते हैं। इस मेले मे भी आर्य समाज का प्रचार हुआ।

२—आर्य भाईयो के स्थानों पर जाकर वेद प्रचार के कार्य करने के लिये सब भाईयो को सगठन होने के लिये आर्य समाज मे आने को कहा गया।

३—२१ तारीख से २८ तक वेद प्रचार सप्ताह कार्य किया गया जिसमे दश ग्रामों मे जाकर ग्यारह स्थानो पर हवन यज्ञ हुआ। उन्ही स्थानो मे आर्य जाति को वेदो के पठन पाठन का उपदेश किया गया। आर्य समाज के दो मेम्बर बनाय गए।

शुद्धि तथा रक्षा कार्य्य

—१७ ८ ३७ को आर्य समाज कलम (निजामस्टेट) की तरफ़ से यवनो के पंजे से एक राजपूत परिवार की शुद्धि की गई। शुद्ध शुदो के नाम जानकी बाई, विठल सिह, सुन्दरबाई, पाडुरङ्ग, गादाबाई, गङ्गाबाई, रामकृष्ण है।

—आर्य समाज समस्तीपुर ने एक ईसाई की शुद्धि की। यह महाशय पहले ब्राह्मण थे। कुछ समय पहल ईसाई हो गए थे।

देहरादून मे एक हिन्दू पजाबी जो कपडे की दूकान करते थे उन्होने मरनेमे ३ घटे पहिले इस्लाम धर्म स्वीकार किया। मुसल्मानोने उनका जलूस निकाला और उसके २० मनुष्यो को भी मुसल्मान बनाना चाहा परन्तु आर्य समाज के उद्योग से इस परिवार को रक्षा हो गई। इसका श्रेय बा० नारायण जी को है।

—आर्य समाज पु घर्ला ने आर्य समाज मिमना बाजार के उद्योग से एक जन्म के ईसाई की शुद्धि की। उपस्थिति लगभग ७०० के था।

—आ० स० आँवला (बरेली) के उद्योग स एक जन्म के मुसल्मान की शुद्धि हुई। उसका नाम मुहम्मद से बदल कर मोहनलाल रक्खा गया।

—७ अगस्त को आ० स० गया द्वारा एक स्त्री की शुद्धि हुई जो कुछ दिन पूर्व मुसल्मान हो गई था।

—आ० स० अजमेर मे मि० एडवर्ड जौन डेविड और मिस क्यू इराबारेन्स को शुद्धि १५ अगस्त को समारोह पूर्वक हुई।

विविध पत्र पत्रिकायें

आर्यो चेतो

श्री प्रो शिवदत्त ज्ञानी एम ए 'आर्यो चेतो' शीर्षक लेख मे 'आर्य सेवक' मे आर्यो की वर्तमान व्यापक गिरावट के कारणो पर विचार करते हुए लिखते है —

"निस्संकोच भावसे कहा जा सकता है आर्यो ने वैदिक सिद्धान्तो को आचरण मे लाने का प्रयत्न नही किया। उन्होने राजनैतिक वातावरण से प्रभावित होकर विचार और आचार को अलग २ ही रखना सीखा। उन्होने यह नही समझा कि जबतक विचार और आचार मे सामंजस्य स्थापित नहीं होता तब तक कोई भी स्थायी उन्नति अथवा विकास नही हो सकता। लोगो ने समझा कि केवल चार आने मासिक चन्दा दे समाज के रजिस्टर मे नाम लिखा कर साप्ताहिक अधिवेशनो मे उपस्थित हो जाने से हा सच्चे आर्य समाजी या 'दयानन्द क वीर सैनिक' बन सकते है। इस आत्म वचना स प्रभावित होकर लोग समाज मे प्रविष्ट हाने लगे। वहाँ जाकर पद के लिये, अधिकार के लिए या किसी और स्थान के लिए झगडने लगे।"

आगे इस स्थिति के भ कर परिणाम की ओर वे निम्न शब्दो मे इशारा करते हैं —

"यदि यही स्थिति रही तो वह समय दूर नही जब आर्य समाज इस हिन्दू धर्म का एक कुंठित सम्प्रदाय मात्र रह जायगा जिसमे नाना प्रकारके रोगोत्पादक कीटाणु भी उत्पन्न हो जायेंगे।"

साहित्य समीक्षा तथा प्राप्ति-स्वीकार

इस शीर्षक में केवल उन्हीं पुस्तकों इत्यादि की समालोचना कीजाती है जो समालोचनाके योग्यसमझी जाती है। इसका निर्णय कि कौन पुस्तक समालोचना के योग्य है कौन नहीं है सम्पादकीय विभाग करता है। यदि हमारे इस नियम के अनुसार किन्ही भाइयों को निराशा हो तो वे इसके लिए कृपया हमे क्षमा करेगे। प्रत्येक प्रकार के प्राप्त साहित्य की प्राप्ति स्वीकार इस स्तम्भ मे करनेका प्रयत्न किया जाता है। समालोचनार्थ पुस्तकों की २ प्रतियां आनी चाहिये।

सम्पादक

समीक्षा

(१)

बालकोपयोगी धर्म्म शिक्षा

लेखक—ज्ञानेन्द्र जी मू० —)॥।

मिलने का पता —

ज्ञानमन्दिर बीलीमोरा B B & C I R\

प० ज्ञानेन्द्र जी सिद्धान्तभूषण लिखित बालोपयोगी धर्म शिक्षा जो गुजराती भाषा और गुजराती लिपि मे है प्राप्त हुई। यह पुस्तक बालकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। आर्य समाज की जानने योग्य अनेक बाते इसमे आ गई है। सध्या, हवन स्वस्तिवाचन शान्तिप्रकरण भी इसमें है। यह पुस्तक कन्या पाठशालाओं और बालक पाठशालाओं में लगाने योग्य है। जिन आर्य समाजियोके बालक सरकारी स्कूलों मे पढ़ते है उनको भी यह अवश्य पढ़ाई जानी चाहिये।

(२)

मूर्तिपूजा रहस्य

मिलने का पता—

ज्ञानमन्दिर बीलीमोरा B B & C I R\

मूल्य)। १।) सैकड़ा

इस पुस्तक मे मूर्ति पूजा पर युक्ति युक्त विचार किया गया है और स्मृति तथा श्रुति के आधार पर भी विचार किया है। पूजा प्रेमियो के पढने योग्य है।

वैदिक धर्म्म की सार्वभौमता

मूल्य ।≈)

मिलने का पता—

ज्ञानमन्दिर बीलीमोरा B B & C I R\

इस पुस्तक मे तुलनात्मक विचार किया गया है। इस लिए यह अधिक उपयोगी हो गई है। पहले प्रकरण मे धर्म का स्वरूप, दूसरे मे साम्य भाव, तीसरे मे विश्वव्यापी प्रेम, चौथे मे सर्वाङ्गीण उन्नति, पाचवे मे विज्ञानकी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है इनसे ही विषयों का पूर्ण परिचय हो जाता है। इसमे लेखक महोदय ने श्रुतिस्मृति विद्वानो और प्रतिष्ठित सज्जनों के प्रमाणों से अपने पक्ष को सिद्ध किया है। हमारी सम्मतिमे प्रत्येक धर्म प्रेमी पुरुष को जिसे गुजराती भाषा आती हो इसे पढना चाहिए। इस पुस्तक लिखने पर हम लेखक को बधाई देते है।

स्वतन्त्रानन्द

Gems of Vedas

प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली मूल्य -)॥

यह पुस्तक वेद की चुनी हुई छोटी २ बहुमूल्य शिक्षाओं का संग्रह है। इसमें ईश्वर देश, व्यक्तिगत और सामाजिक उत्थान सम्बन्धी विविध विषयों का समावेश किया गया है। ये शिक्षाय कण्ठाग्र किए जाने योग्य हैं। पुस्तक न केवल अंग्रेज़ी जानने वालो के लिए ही वरन हिन्दी जानने वाले स्त्री पुरुष या बच्चे सब के लिए समान रूप से उपयोगी है। पुस्तक अधिक से अधिक मात्रा में प्रचारित किए जाने योग्य है।

—

प्राप्ति-स्वीकार

बालधर्म बोध (२ भाग)

लेखक—श्री विश्वम्भरसहाय प्रेमी, प्रेमी प्रेस मेरठ मूल्य -) प्रत्येक का।

जीवन विज्ञान (आयुर्वेदीय मासिक-पत्र)

विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाडी हस्पताल का मुख पत्र वार्षिक मूल्य २॥)

११८ एमहर्स्ट स्ट्रीट कलकत्ता

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और शीत ऋतु आरहा है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरिया की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएगे वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके सबंधियो का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान प० विश्वम्भरनाथ जा उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

, प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

,, डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष ११ | कार्तिक १९९४ | अङ्क ६

नवम्बर १९३७ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

* वेद की शिक्षाएँ *

ओ३म् क्रतो स्मर । Yaju. 40—15

हे कर्मशील मनुष्य ! तू ओ३म्, का स्मरण कर ।

O Man of action! Meditate on Om—thy Lord, Creator and Protector.

स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु । Yaju 32—8

वह व्यापक प्रभु सब प्रजाओं में ओत प्रोत है ।

The Universal Lord is All-Pervading. He is present everywhere

'Gems of Wisdom'

सम्पादकीय

दीपावली आई और गई

दीपावली का उत्सव भारतवर्ष में बड़े चाव और उत्साह से मनाया जाता है। लोग इसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। इस त्योहार को मनाने के लिए सजावट के सभी सामान जुटाते हैं। घरों को साफ सुथरा बनाते हैं। नये बही खाते खोलते हैं। दीपावली की रात्रि को प्रकाश और प्रसन्नता का समुद्र उमड़ता दीखता है।

आर्य समाज के लिए दीपावली का महत्व और भी बढ गया है। हिन्दु त्योहार होनेके कारण तथा भगवान रामचन्द्र जी के उपलक्ष में मनाया जाने के कारण, पहले से ही त्योहार कुछ कम महत्व का नहीं था, परन्तु भगवान दयानन्द का निर्वाण दिवस होने से तो आर्य समाजियों के लिए यह दिन एक गम्भीर सन्देश को लाने वाला बन गया है।

दीपावली के दिन हम लोग प्रति वर्ष अपने आचार्य भगवान् दयानन्दका निर्वाण उत्सव मनाते हैं। समाज मन्दिरों अथवा विशाल मण्डपों मे एकत्रित होते हैं। ऋषि के गुणों का बखान होता है। उसके जीवन की बडी बड़ी घटनाओं का उल्लेख करके जनता को उनके उपकारों की याद दिलाई जाती है। महर्षि का दिव्य जीवन भारत के लिए एक महान् विभूति है। उस जीवन के पाठ से बाल-वृद्धों, नर-नारियों सभी को लाभ पहुच सकता है। जिस प्रकार एक विशाल पर्वत के सामने खडे होकर हम अपनी क्षुद्रता को थोड़े समय के लिए भूल जाते हैं, ठीक उसी प्रकार दयानन्द जीवन को सुन कर हम अपने भीतर एक प्रकार का उल्लास, उभार तथा उत्थान अनुभव करते हैं। इस देश की, वत्तमान समय मे, जो भी प्रगति दृष्टिगोचर हो रही है, उसका मूल कारण यदि ढू ढा जावे तो वह किसी न किसी रूप मे आचार्य दयानन्द की शिक्षा मे ही मिलेगा। यदि यह कहा जावे कि दयानन्द इस युग के प्रवर्तक हुए हैं तो इसमे जरा भी अत्युक्ति न होगी।

परन्तु एक बात यह है जिस का जिकर किये बिना हम नही रह सकते। दीपावली के उत्सव पर जब निर्वाणोत्सव मनाते समय हम ऋषि के गुणों का चिन्तन करते हैं तो अनायास ही यह प्रश्न हमारे हृदय मे उत्पन्न हो जाता है कि दयानन्द जैसे आचार्य को पाकर, जिसकी प्रशसा आज सारा ससार मुक्त कठ से कर रहा है, हम उसके मिशन को क्यों सफलता पूर्वक सर्वत्र फैला नही सके? ईसामसीह कोई बड़े विद्वान् न थे परन्तु उन्होंने चद लकड़हारों और मछली पकडने वालों को इकट्ठा करके, उनके द्वारा अपने मिशन को बड़ी सफलता से चहुँओर फैलाया। महात्मा बुद्ध ने सीधी सादी शिक्षा का आश्रय लेकर अपना मिशन ससार भर मे फैला दिया। यहीं तक नही, हजरत मुहम्मद जैसे अनपढ व्यक्ति ने भी जितनी सफलता से अपनी शिक्षा का प्रसार किया उस का स्मरण करके हम चकित हो जाते हैं। परन्तु दयानन्द का मिशन जिस धीमो और मंद गति से चल रहा है उस का ध्यान करके सिवाय निराशा के और कुछ नहीं सूझता। यह क्यों?

इस का क्या कारण है ?

हमे तो यही सूझता है कि योग्य आचार्य को योग्य शिष्य अभी तक प्राप्त नहीं हुए। हम मानते है कि आर्यसमाज मे लगन से कार्य करने वाले व्यक्ति मौजूद है और थोड़ी बहुत प्रगति जो आर्यसमाज मे दीखती है, यह सब उनकी ही तत्परता का फल स्वरूप है। परन्तु दयानन्द का मिशन इतना महान् है कि उसके चलाने और फैलाने के लिये साधारण तत्परता से काम न चलेगा। हम मे अनेक मिशनरी उत्पन्न होने चाहिये जो अपने घरबार को छोड कर, सुखो को लात मार कर बोद्ध भिक्षुओ या ईसाई मिशनरियो के समान बर्षों तक अन्य देशो मे बैठकर उस मिशन का प्रचार करें। हमारी सभा-सोसाइटियों को ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करनी चाहिये जिसमे ऐसे व्यक्ति पैदा हो सके जो भगवान दयानन्द के मिशन को सर्वत्र फैलाने का बीडा उठावे।

यदि दीपावली के दिन हम सब अपने आप से यह प्रश्न पूछे कि भगवान दयानन्द के मिशन को फैलाने मे हम व्यक्तिरूप कहा तक सहायक हो रहे है और यदि उसका उत्तर संतोषजनक हो तो दीपावली का उत्सव हमारे लिये प्रसन्नता का देने वाला हो सकता है अन्यथा नहीं।

आर्य्यसमाज का भविष्य किस प्रकार उज्वल हो सकता है

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का अभी हाल मे एक लेख आर्य्य पत्रो मे छपा है। उसमे उन्होंने वे उपाय लिखे है जिनसे आर्य्यसमाज अपना भविष्य उज्वल कर सकता है। वे उपाय निम्न प्रकार है —

(१) आर्यसमाज के अन्तर्गत सस्थाओ का पृथक ट्रस्ट बना दिया जाय और वही ट्रस्ट कमेटी सस्थाओ का प्रबध करे। आर्यसमाज की अन्तरंग सभा केवल प्रचार का काम करे जिसमे मौखिक और लेखबद्ध दोनों प्रकार के प्रचार शामिल है।

नोट—ट्रस्ट इस प्रकार बनाया जा सकता है जिससे आर्यसमाज के अधिकार तो सस्था से पृथक् न हो किन्तु प्रबध अवश्य प्रथक् होता रहे।

(२) आर्यसमाजो मे आमतौर से निर्वाचन की प्रथा बंद करदी जावे। प्रत्येक समाज का निर्वाचन ३ आदमियो की एक उपसभा कर दिया करे जिस उपसभा मे आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि एक समाज का और तीसरा एक विद्वान् उपदेशक या सन्यासी हो।

(३) प्रान्तिक और सार्वदेशिक सभाओ मे केवल प्रधान का निर्वाचन हुआ करे। बाकी अन्तरंग मण्डल आदि को प्रधान स्वय बनाया करे।

(४) आर्य सभासद ठीक ठीक उपनियमो के अनुकूल बनाए जाया करे उनकी सख्या चाहे कितनी ही न्यून क्यो न हो जावे।

(५) आर्यसमाज के मन्दिरो का गौरव बढ़ाने के लिये उनमे बारात आदि का ठहराना बद कर दिया जाय। उनमे नियम पूर्वक प्रतिदिन या प्रति दूसरे दिन कथा, स्वाध्याय और सिद्धान्तों का विवेचन हुआ करे।

(६) आर्यों मे पारस्परिक सद्भाव और विवाह की प्रथा गुण कर्मानुसार जारी की जावे।

(७) परिवारो मे आर्य जीवन के लाने का पूरा पूरा प्रबन्ध किया जावे।

और भी कुछ बाते हो सकती है, सम्प्रति विचार विनिमय और कार्य प्रारम्भ करन के लिये यह काफी है।

ईरान में पर्दे का अभाव

"ईरान और अफगानिस्तान के दर्शक को इन दोनों देशों मे जो बडा भेद दृष्टिगोचर होता है वह यह है कि ईरान मे पर्दे का नाम निशान नहीं है। स्त्रिया यूरोपीय वेश म तमाम ईरान में घूमती फिरती हैं मानो किसी यूरोपीय नगर मे घूम रही हैं। लडके और लडकियो की शिक्षा के लिए शिक्षा सस्थाओ का जाल बिछा हुआ है। लडको और लडकियो की प्रारंभिक शिक्षा साथ २ होती है।" इस प्रकार के विचार मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग के डा० बी० एम० डी० सूफा, एम ए, डी लिट ने कलकत्ता के एक प्रस प्रतिनिधि पर प्रगट किए है। डाक्टर महोदय ने शिक्षा सम्बन्धी ससार यात्रा की है। ईरान की देवियों को पर्दे से मुक्ति मिल गई है और लडकों और लडकियों की शिक्षा के लिए वहा पूरी २ व्यवस्था है यह बात प्रशसनीय है। परन्तु ईरान की स्त्रिया यूरोपीय कपडे क्यों पहनती हैं? क्या उनकी अपनी जातीय पोशाक नहीं है? यदि नही है तो वे कोई सुन्दर और सलीकेदार पूर्वीय पोशाक नियत कर सकती हैं?

——

शिक्षा-कान्फरेंस

मारवाडी शिक्षा मडल की रजत जयती की अध्यक्षता मे, गत् २२ और २३ अक्तूबर को वर्धा में शिक्षा-कान्फरेन्स का अधिवेशन हुआ। पहले दिन की कार्यवाही के बाद गांधी जी के तैयार किये हुए नीचे लिखे मूल प्रस्तावो पर अपनी राय जाहिर करने के लिये कान्फरेस खुद-ब-खुद एक कमेटी मे परिणत हो गई :—

१ शिक्षा की वर्तमान पद्धति किसी भी तरह देश की आवश्यकताओ की पूर्ति नहीं कर सकती। उच्च शिक्षा की तमाम शाखाओ मे अग्रेजी भाषा को माध्यम बना देने के कारण, उसने उच्च शिक्षा पाये हुए मुट्ठी भर लोगो तथा अपढ जनसमुदाय के बीच एक स्थायी दीवार सी खडी कर दी है। इसकी वजह से जनसाधारण तक छन छनकर ज्ञान के जाने मे बडी रुकावट पड गई है। अग्रेजी को इस तरह अत्यधिक महत्व दे देने के कारण शिक्षित लोगो पर इतना भार पड गया कि प्रत्यक्ष जीवन के लिए उनकी मानसिक शक्तिया पगु हो गई हैं और वे अपने ही देश मे विदेशियो की भाति बेगाने बन गये हैं। धन्धों के शिक्षण के अभाव ने शिक्षितों को उत्पादक काम के सर्वथा अयोग्य बना दिया है और शारीरिक दृष्टि से भी उनका बडा नुकसान किया है। प्राथमिक शिक्षा पर आज जो खर्च हो रहा है वह बिलकुल निरर्थक है। क्योंकि जो कुछ भी सिखाया जाता है उसे पढने वाले बहुत जल्दी भूल जाते हैं और शहरों तथा गावों की दृष्टि से उनका दो कौडी का भी मूल्य नहीं है। वर्तमान शिक्षा पद्धति से जो कुछ भी लाभ होता है उससे देश का प्रधान कर दाता तो वञ्चित

ही रहता है। उसके बच्चों के पल्ले तकरीबन कुछ नहीं आता।

२ प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम कम से कम सात साल का हो। इसमें बच्चों को इतना सामान्य ज्ञान मिल जाना चाहिये जो उन्हें साधारणतया मैट्रिक तक की शिक्षा में मिल जाता है। इसमें अंग्रेज़ी नहीं रहेगी। उसकी जगह कोई अच्छा सा धंधा सिखाया जाय।

३ इसलिए लड़कों और लड़कियों का सर्वतोमुखी विकास हो, सारी शिक्षा जहाँ तक हो सके एक ऐसे धंधे द्वारा दी जानी चाहिए, जिसमें कुछ उपार्जन भी हो सके। इसे यों भी कह सकते हैं कि इस धंधे द्वारा दो हेतु सिद्ध होने चाहिएँ—एक तो विद्यार्थी उस धंधे की उपज और अपने परिश्रम से अपनी पढ़ाई का ख़र्चा अदा कर सके, और साथ ही, स्कूल में सीखे हुए इस धंधे द्वारा उस लड़के या लड़की में उन सभी गुणों और शक्तियों का पूर्ण विकास हो जाय, जो एक पुरुष या स्त्री के लिए आवश्यक हैं।

पाठशाला की ज़मीन, इमारतें और दूसरे ज़रूरी सामान का ख़र्च विद्यार्थी के परिश्रम से निकालने की कल्पना नहीं की गई।

कपास, रेशम और ऊन की चुनाई से लेकर सफ़ाई (कपास की) धुनाई, पिंजाई, कताई, रंगाई, माँड लगाना, ताना लगाना, दुसूती करना, डिजाइन (नमूने) बनाना तथा बुनाई, कसीदा काढ़ना, सिलाई आदि तमाम क्रियाएँ, कागज़ बनाना, कागज़ काटना, जिल्दसाज़ी, अलमारी फरनीचर वग़ैरा तैयार करना, खिलौने बनाना, गुड़ बनाना, इत्यादि ऐसे निश्चित धंधे हैं जिन्हें कि आसानी से सीखा जा सकता है और जिनके करने के लिए बहुत बड़ी पूंजी की भी ज़रूरत नहीं होती।

इस प्रकार की प्राथमिक शिक्षा से लड़के और लड़कियाँ इस लायक हो जायँ कि वे अपनी रोज़ी कमा सकें। इसके लिये यह ज़रूरी है कि जिस धन्धे का शिक्षा उन्हें दी गई हो उसमें राज्य उन्हें काम दे। अथवा राज्य द्वारा मुक़र्रर की गई क़ीमतों पर सरकार उनकी बनाई हुई चीज़ों को ख़रीद लिया करे।

४ उच्च शिक्षा को ख़ानगी प्रयत्नों और राष्ट्र की आवश्यकता पर छोड़ दिया जाय। इसमें कई प्रकार के उद्योग और उनसे सम्बन्ध रखने वाली कलाएं, साहित्य शास्त्रादि तथा संगीत, चित्रकला आदि शामिल समझे जायें।

विश्व विद्यालय केवल परीक्षा लेने वाली संस्थाएं रहें और उसके अनेक विभागों के लिए पाठ्यक्रम तैयार करें और उसे स्वीकृति दें। किसी भी विषय की शिक्षा देने वाला तब तक एक भी स्कूल नहीं खुलेगा- जबतक कि वह इसके लिए अपने विषयसे सम्बन्ध रखने वाले विश्व विद्यालय से मंजूरी हासिल नहीं कर लेगा। विश्व विद्यालय खोलने की इजाज़त किसी भी ऐसी सुयोग्य और प्रामाणिक संस्था को उदारतापूर्वक दी जा सकती है, जिसके सदस्यों की योग्यता और प्रामाणिकता के विषय में कोई सन्देह न हो। हां यह सब को बता दिया जाय कि राज्य पर उसका ज़रा भी ख़र्च नहीं पड़ना चाहिए, सिवा इसके कि वह केवल एक केन्द्रीय शिक्षा-विभाग का ख़र्च उठायगा।"

दूसरे दिन, कमेटी जिन निश्चयों पर पहुँची उनके

परिषद् के सामने रखा गया, उसपर बहस हुई, और अन्त को उन्हें स्वीकार कर लिया गया। कांफ्रेंस में जो प्रस्ताव पास हुये वे यह हैं।

(१) इस कांफ्रेंस की राय में देशके सब बच्चों के लिए सात बरस की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का इन्तजाम होना चाहिए।

(२) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।

(३) यह कांफ्रेंस महात्मा गांधी की इस तजवीज का अनुमोदन करती है कि इस तमाम समय में शिक्षा का मध्यबिन्दु किसी किस्म की दस्तकारी होना चाहिए, जिससे कुछ काम हो सके, और बच्चों में जो अच्छे गुण पैदा करना हैं और उनको जो शिक्षा दीक्षा (तरबियत) देना है वह जहां तक हो सके इसी केन्द्रीय दस्तकारी से सम्बन्ध रखती हो और इस दस्तकारी का चुनाव बच्चों की रुचि और योग्यता का ध्यान रख कर किया जाय।

(४) यह कान्फ्रेंस आशा करती है कि इस तरीके से धीरे धीरे अध्यापकों के वेतन का खर्च निकल आयगा।

एक प्रवासी आर्य्य भाई का वियोग !

अपने एक सम्वाददाता के पत्र से यह जान कर हमें अत्यन्त दुःख हुआ कि ट्रीनीडाड के प्रसिद्ध आर्य्य श्रीयुत सेठ पन्नालाल जी अब इस संसार में नहीं हैं। श्री पन्नालाल जी को श्री पण्डित अयोध्या प्रसाद जी ने आर्य समाज में दीक्षित किया था। आर्यसमाज से उन्हें बहुत प्रेम था। ट्रीनीडाड में तथा दक्षिण अमेरिका के उपनिवेशों में आर्य समाज को वे एक शक्ति के रूप में देखने का स्वप्न रखते थे और तन मन धन से उसके लिये यत्नवान थे। सच मुच उनकी मृत्यु ट्रीनीडाड में आर्यसमाज की प्रगति के लिए एक बड़ा धक्का है। गत वर्ष सेठ पन्नालालजी के व्यक्तिगत सम्पर्क में आनेका हमें दहली में जब कि वे भारत यात्रा के लिए आये थे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके सरल और सात्विक व्यक्तित्व तथा आर्य समाज के प्रति उनके अटूट प्रेम से हम बड़े प्रभावित हुए थे। उन जैसे लखाधीश की सहज सरलता विनयशालता और श्रद्धा देखते ही बनती थी। धर्म शास्त्र दानियों में विनय निष्काम भावना, श्रद्धा इत्यादि जो गुण और विशेषताएं होनी चाहिएं वे उनमें देख पड़ती थीं।

श्री सेठ जी अपने पीछे बहुत से मित्र तथा भरा पुरा परिवार छोड़ गए हैं। इस महान दुःख में हम उनकी धर्मशीला पत्नी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

ऋषि दयानन्द का प्रभाव

ले०—श्री पं० चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण
आर्यसमाज हनुमान रोड नई देहली

ऋषिवर दयानन्द जहा अनेक गुणों के धनी थे वहा वे एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के भी मालिक थे। ऋषिनिर्वाणोत्सव के उपलक्ष मे सार्वदेशिक के पाठकों को उनके विविध प्रकार के प्रभावों की प्रभा का आभास कराने के लिये उनके विशाल जीवन की कुछ घटनाओं का उल्लेख किया जाता है--

विद्या का प्रभाव

महर्षि विद्या के समुद्र थे, उनका पाण्डित्य अगाध था। अनेक पण्डित उनसे शास्त्रार्थ की ताब न लाकर ईर्ष्या करते थे तथा जन साधारण मे उनके सम्बन्ध मे इधर उधर की बाते उडाने लगते थे। सवत् १९२५ वि० स्थान फरूखाबाद का जिक्र है कि वहा पर एक सखरिया धुरन्धर पण्डित आया, उसको वहा एक पण्डित ने कहा कि बहुत लोग दयानन्द को ईसाइयों का मनुष्य कहते है। चलो, किसी, समय उसके पास पहुंचे और इस बात का पूरा पता लगाये। वे दोनों गुप्त रीति से रात के दो बजे स्वामी जी के पास पहुंचे। ऋषि उस समय आसन लगाये बैठे थे। शिष्टाचार के पश्चात— सरयूपारी पण्डित ने स्वामी जी से अनेक श्रौत, स्मार्त और दार्शनिक प्रश्न पूछे। उनका उत्तर पाकर वह परम तृप्त होगया और चलते समय चरण स्पर्श करके कहने लगा, भगवन्! हमने सुना तो यह था कि आप कपटवेषी प्रच्छन्न ईसाई हैं परन्तु दर्शनों से पता लगा कि आप एक धर्मावतार हैं और विद्या के पारावार हैं। अगले दिन उस ब्राह्मणवर्य्य ने सर्व साधारण को कहना आरम्भ कर दिया कि श्री दयानन्द जी ऐसा दूसरा पण्डित भारत भर में नही हैं। उन्होंने मुझे ऐसे शास्त्रीय रहस्य बताये हैं कि जो मैंने पहले कभी नही सुने थे। उनका कथन सर्वांश में सत्य है।

वार्तालाप का प्रभाव

स्वामी जी जहां विद्या में निपुण थे वहा वे वर्तालाप में भी बड़े पटु थे, वे बड़े २ उद्दण्ड और उद्धत पुरुषों को अपनी वाणी के जादू से सीधा कर दिया करते थे। विद्या की राशि काशी मे सवत् १९२६ की एक घटना है कि वहा एक रामस्वामी मिश्र, महा महोपाध्याय निवास करता था। वह युवावस्था के प्रभाव से स्वामी जी के लिए बहुत ऊंच नीच वचन बोला करता था। उसे गर्व था कि यदि मै एक बार भी स्वामी दयानन्द से बात चीत करूं तो उनसे प्रतिमा पूजन आदि का खण्डन छुडवा कर उन्हें सीधा करदूं। वह महाराज के पास आता इसलिये नहीं था कि उन का मुख देख लेने से पातक लग जाएगा। यह सोचकर कि अन्धेरे मे दयानन्द का मुख देखे विना भी उसे सीधा किया जासकता है वह एक दिन रात के समय स्वामी जी के पास आया

और कहने लगा "तेरे जैसे पतित पुरुष के साथ मै देववाणी मे बोलना पाप समझता हूँ इसलिये देशभाषा मे बात-चीत होगी, परन्तु पहले तुम्हे मेरी एक शर्त्त माननी पडेगी।'

स्वामी जी ने हँसकर कहा, "आप मुझे सस्कृत भाषा बोलने से रोकते है परन्तु सस्कृत भाषा के शब्द तो बोलने देंगे ? अच्छा, यही सही, अब आप अपनी शर्त्त कहिये।"

उसने कहा "मैं अपने साथ एक छुरी लेता आया हूँ। वह दोनों के बीच रक्खी जायगी। जो शास्त्रार्थ मे हार जायगा उसकी इससे नाक काट ली जायगी।"

स्वामी जी ने हँसते हुए कहा, "पण्डित जी ! एक शर्त्त मेरी भी मान लीजिये। वह यह कि एक चाकू भी पास रख लिया जाय। जो हम मे से हार जाय उससे उसकी जीभ काट ली जाय। क्यो कि नाक तो इन बातों मे निर्दोष है। वाद विवाद में जो कुछ अनर्थ होता है वह जीभ द्वारा ही होता है। कोई आध घडी तक स्वामी जी ने उसके साथ वार्त्तालाप किया इस से वह इतना प्रभावित हुआ कि फिर आगे से सभ्यता और सरलता से वर्त्ताव करने लगा।

व्यक्तिगत प्रभाव

इस छोटे से लेख में ऋषि के अन्य प्रभावा की चर्चा न करके केवल उनके व्यक्तिगत प्रभाव की एक घटना और लिखी जाती है क्योकि एक आदर्श प्रभावशाली महान् आत्माके लिये जहा उस की विद्या और व्यवहारकी बातो को परखना पडता है वहा सबसे बढ़कर उसके व्यक्तिगत प्रभाव की झाकी भी देखनी पडती है, इस कसौटी पर भी ऋषि दयानन्द पूरे उतरते हैं। सन् १८७८ ई० स्थान हरिद्वार की बात है कि एक दिन एक २० वर्ष का नवयुवक जो अमृतसर का रहने वाला था श्री स्वामी जी की सेवा मे उपस्थित हुआ और कहने लगा कि मै आर्यसमाज अमृतसर का सभा सद् था परन्तु मुझे वहा के आर्यसमाजियों ने आर्यसमाज की सभासदी से निकाल दिया है। स्वामी जी ने पूछा कि आपको किस अपराध पर बहिष्कृत किया गया ? उसने उत्तर दिया कि मुझ पर पुस्तकें चुराने का दोष आरोपित किया गया था। इस पर स्वामीजी ने जरा गंभीर होकर कहा कि सच सच कहना तुमने पुस्तकें चुराई थीं या नहीं ? ऋषि दयानन्द की यह बात सुनकर वह सकपका गया, उसकी गर्दन नीची होगई, वह भूमि कुरेदने लगा परन्तु थोडी ही देर मे ऋषिदयानन्द के तेजस्वी मुख-मण्डल ने उस पर बिजली का असर किया, वह अपने को छिपा नहीं सका और कहने लगा—महाराज ! यह दोष मुझ से हुआ अवश्य है। मुझ इसका हार्दिक पश्चात्ताप है, मै आप से प्रार्थना करता हू कि मुझे फिर से आर्य समाज मे शरण दी जावे। स्वामी जी ने यह देखकर कि यह अपने किये पर हृदयसे लज्जित है उसका अपराध क्षमा कर दिया और ला० राम-शरणदास जीं रईस मेरठ से कह दिया कि आर्य-समाज अमृतसर को लिख दो कि इसका अपराध हमने क्षमा करदिया है, इसे पुन आर्यसमाज मे प्रविष्ट कर लें।

———

शान्ति पाठ

श्री बा० पूर्णचन्द्रजी बी० ए०
एल० एल० बी० एडवोकेट

आर्यसमाज के प्रत्येक धार्मिक कार्य के अन्त मे शान्ति पाठ पढने की प्रथा है। बहुधा यह शान्ति पाठ रस्म की अदायगी के रूप मे पढा जाता है। जहां तक हम ने देखा है, आर्यसमाज के अतिरिक्त दूसरे मतो मे इस प्रकार शान्ति पाठ नही होता। हमे गंभीरता से यह विचार करना है कि शान्ति पाठ से वास्तविक क्या अभिप्राय है और इसके पढने से क्या प्रयोजन है? शान्ति पाठ में हम ईश्वर से याचना करते हैं कि हे ईश्वर? आपकी कृपा से यह देवलोक, अन्तरिक्ष यह पृथ्वी ओषधि और वनस्पति जल और अग्नि शान्ति प्रदान करने वाली है। प्रश्न यह है कि क्या इन सब शक्तियो मे अथवा भौतिक पदार्थो मे अशान्ति भरी हुई है जो हमको इनके द्वारा शान्ति प्राप्त करने की प्रार्थना करने की आवश्यकता हुई। दूसरा प्रश्न यह है कि क्या शान्ति या अशान्ति इन शक्तियो मे है? या उसका केन्द्र कही और है? इस केन्द्र के समझ लेने से हमारे लिए शान्ति पाठ का अभिप्राय समझ लेना सरल हो जायगा। जिस प्रकार ईश्वर प्रार्थना और उपासना की अन्य विधियो का सम्बन्ध हमारे क्रियात्मक जीवन से है, इसी प्रकार शान्ति पाठ का भी। शान्ति पाठ पढ़ते ही हमारे हृदय के अन्दर कुछ विशेष भाव आने चाहिए और उन भावो का प्रभाव हमारे धार्मिक और क्रियात्मक जीवन पर पड़ना चाहिये।

शान्ति या अशान्ति हमारे मानसिक भावो का परिणाम है। हमारा ससार के पदार्थों व दैनिक शक्तियो से भोक्ता व भोग का सम्बन्ध है ईश्वर की प्रदत्त यह दैविक व आदि भौतिक शक्तियां हमारे सुख के लिए हैं और उनका उद्देश्य हमारे लाभ पहुचाने के लिए है। परन्तु हम अपनी कल्पनाओ व विचारो से, इन शक्तियो से अपनी स्वार्थ सिद्धि करना चाहते है, और स्वार्थ सिद्धि की भावना उत्पन्न होते ही यही सुख के साधन हमारे दु ख के साधना हो जाते है। हम अपने मन्तव्य को एक उर्दू के कवि के शब्दो मे प्रकट करेंगे।

"जीने न देगी आँखें, तेरी, बेवफा मुझे।
इन खिड़कियो से झांक रही है कजा मुझे॥

यह कवि महाशय अपने प्रेमी की आंखो की शिकायत करते हैं। पहले तो कवि ने किसी से अनुचित प्रेम की वासना उत्पन्न की और फिर उसे अपने आधीन करना चाहा, जिससे वह प्रेम करते है, वह अनुचित पराधीनता क्यो स्वीकार करे। और इस पर कवि महाशय बेवफाई का दोष आरोपण करते है। और दूसरे की निरपराध आँखो से आप को इतनी अशान्ति हो रही है, कि आपको मौत के स्वप्न दीखते है। जीते जी

मौत याद आती है। बहुत सम्भव है कि जिसकी आखो से कवि के अन्दर इस प्रकार अशान्ति उत्पन्न हुई उस वेचारे को खबर भी न हो। हम ससार मे बहुधा एक चीज को देखते है, और उस से अनुचित मोह करने लगते है किसी दूसर को देखकर अकारण रुष्ट हो जाते है चाहे अनु चत क्रोध हो चाहे उचित मोह फल दोनो का अशान्ति है। शान्ति पाठ करते समय इस लिए हमको अपनी मानसिक भावनाए और जीवन के व्यवहारो पर दृष्टि रखनी चाहिए। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि यदि हम अशान्ति से बच कर शान्ति प्राप्त करना चाहते है, तो हमारे हृदय और मस्तिष्क के विचार इस योग्य होना चाहिए। जब मै यह देखता हू कि समाज के साप्ताहिक अधिवेशन क पश्चात् या किसी सस्कार के अन्त मे लोग एक दम खड़े होकर जल्दी जल्दी शान्ति-पाठ करते जाते है और जूता पहनने की ओर उनकी दृष्टि होता ह, तो मुझे बडा दु ख आश्चय और निराशा होती है। हम आयसम ज मे एक बार के स्थान मे तीन बार शान्ति की प्रार्थना करते है और तिगनी ही अशान्ति बढता जाता है। हम सब को इस सुन्दर प्रथा को सार्थक और वास्तविक रूप म लाभदायक व उपयोगी बनाना चाहिये। आज अन्य देशो मे मनुष्य अन्य मनुष्यो के मारने की चिन्ता मे लगे हुए है, और वह मारने का यत्न हवा मे, पृथ्वी पर, जल पर बल्कि जल के भी अन्दर मारने का यत्न करते है और ऐसे दूषित व्यवहारो का ही यह परिणाम है कि जनता को सब ओर से दु ख और अशान्ति दृष्टि गोचर होरहा है। इस से बचने के लिए हमे अभ्यास और ईश्वर की शक्ति पर मनन करने की आवश्यकता है। और तभी यह पृथ्वी जल और वायु हमारे लिए शान्ति प्रदान करने वाली होगी। इन जड पदार्था मे शान्ति है न अशान्ति। यह तो हमारे मानसिक व्यवहारो पर आश्रित है। चोरी करने जाने वाला वायु के चलने से भी भय भीत हो जाता है चौकीदारी करने वाले कुत्ते तेज हवा के चलने पर भी भौकने लगते है, और इसी प्रकार हम अपने जीवन को अपने मानसिक सकल्प की छाया मे दुखी और सुखी स्वय बनाते रहते है। और इस लिए हम को दुःख और अशान्ति ही नसीब होती ह। हम को रूढ़िवाद से बचना चाहिए और ऐसा उपाय करना चहिए कि यह शान्ति पाठ केवल एक प्रथा न रह जाय बल्कि सार्थक लाभदायक विधि सिद्ध हो।

श्रीयुत नटरञ्जन और आर्य्यसमाज

ले०—श्रीयुत बा० शिवचन्द्रजी, सहायक मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

(लेखक ने यह लेख अंग्रेजी मे इंडियन सोशियल रिफ़ार्मर, लीडर तथा हिन्दुस्तान टाइम्ज़ इत्यादि पत्रो मे छपाया है—मि० नटरजन ने, सार्व० सभा की ओर से जो साहित्य उन्हे भेजा गया है और जिसकी चर्चा इस लेख में की गई है उसकी प्राप्ति पर, रिफ़ार्मर में प्रसन्नता प्रगट की है। आशा है जिस उद्देश्य से से यह साहित्य भेजा गया है वह उसे पूरा करेगा।

—सम्पादक

१८ सितम्बर १६३७ के इण्डियन सोशियल रिफार्मर मे 'मेरी किसमें आस्था है' शीर्षक एक लेख इंडियन सोशियल रिफार्मर के सपादक श्री० नटरंजन जी के नाम से प्रकाशित हुआ है। इस लेख में मुख्यतया आर्य्य समाज के सम्बन्ध मे कतिपय भ्रम पूर्ण बातें लिखी गई हैं और उन बातों की वजह से विवाद उठ खडा हुआ है।

श्रीयुत नटरजन लिखते है 'मेरी धार्मिक उन्नति की कहानी ब्रह्म समाज और बौद्ध धर्म्म का जिक्र किए बगैर पूर्ण नहीं होगी। आर्य्य समाज का आधारभूत वेदों के कर्मकाड वा याज्ञिक भाग का जबरदस्ती किया हुआ भाष्य है यद्यपि जिसे क्रियात्मक दृष्टि से नियमित रूप मे हिन्दू धर्म में परित्याग नहीं किया गया है। यदि नटरजन महोदय ब्रह्मसमाज और बौद्ध धर्म्म के ही कुछ गुण गान पर सन्तोष करते तो किसी को कुछ कहने की आवश्यकता न थी परन्तु वे बिना प्रसग के आर्य्यसमाज की चर्चा कर बैठे हैं। श्रीयुत नटरंजन महोदय से उस मान सहित जिसके वह अधिकारी हैं, मुझे कहना चाहिए कि आर्य्य समाज के विरुद्ध अपनी बातों को उन्हें सप्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए था। 'बलात भाष्य' की, जो आर्य्य समाज के विरुद्ध उनका दोषारोपण है, उन्हें अवश्य ही व्याख्या करनी चाहिए थी। प्रतीत होता है सायण, महिधर, मैकसमूलर और ग्रिफिथ के वेदों के याज्ञिक भाग क भाष्य में जो यज्ञों में पशु-बलि का विधान करते हैं श्री० नटरजन जो को आस्था है। ऋषि दयानन्द कृत यज्ञ-भाग का अर्थ, जिसे आर्य्य-समाज बुद्धि-सगत मानता है, यज्ञ, होम तथा अग्निहोत्र या जिसका अर्थ परोपकार करना, दुष्प्रवृत्तियों का दमन करना और स्वास्थ्य के लिये सुगन्धित द्रव्यों और बनस्पतियों को अग्नि मे जलाना था। विवाह मे तथा अन्य दूमरे सस्कारों के अवसरों पर होने वाले क्रियाकलाप के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार की बातें कही जा सकती हैं। निस्संदेह महर्षि दयानन्द भारत के "लूथर" थे। बेहूदा रीति-रिवाजों और कुप्रथाओं के विरुद्ध उन्हें युद्ध करना पड़ा था। वेदों मे वर्णित जीवन की अकृत्रिम सीधी सादी और स्वाभाविक विधियों की ओर ऋषि दयानन्द हमें ले गए। 'दयानन्द और वेद' पर लिखते हुए योगी अरविन्द घोष लिखते

हैं "वेद भाष्य के सम्बन्ध मे मेरा निश्चय है कि भले ही वेदों का अन्तिम और पूर्ण भाष्य कोई हो ऋषि दयानन्द को लाग ठाक २ पते की बात मालूम करने वाला पहिला व्यक्ति मानकर उसका सम्मान करगे। प्राचीन अन्धकार, और अव्यवस्था तथा युगो की गलत फहमियों मे भी ऋषि दयानन्द की आखें साक्षात् प्रकाश को देखन वाली थीं। उनकी पेनी आखें सत्य पर गई और जो आवश्यक था उस पर जाकर ठहरीं। ऋषि दयानन्द को उन दरवाजो का कुजी मिली है जिन्हें समय ने बन्द कर दिया था और उन्होने पिजडों मे बन्द स्रोतों पर लगी हुई मुहरों को छिन्न भिन्न कर दिया है।' योगी अरविन्द स्वयं सस्कृत साहित्य क प्रकाण्ड पण्डित हैं धार्मिक और सामाजिक साहित्य मे उनकी अच्छी गति है। पाठक स्वय निर्णय कर सकते हैं कि ऋषि दयानन्द क वेदों के याज्ञिक भाग के भाष्य क सम्बन्ध मे श्रीयुत अरविन्द घोष और श्रीयुत नटरञ्जन दानो की सम्मतियों म से किसकी सम्मति ठीक है।

श्रीयुत नटरञ्जन आगे लिखते हैं "शिव की मूर्ति पर चूहे के चढने की घटना जिसने आर्य्य समाज क निर्माता की जीवन धारा को बिल्कुल बदल दिया और पौराणिक धर्म्म का विरोधी बना दिया, किसी आदमी क धामिक दृष्टकोण मे इस प्रकार का महत्व पूर्ण परिवर्तन कर सकती है यह समझ मे नहीं आता।' श्री नटरञ्जन महोदय ने लोगो को मरते हुए अवश्य देखा होगा और यह बात प्रतिदिन के जीवन की बहुत साधारण घटना है। परन्तु क्यों नही वे भगवान बुद्ध जैसी जीवन की उच्च अवस्था को प्राप्त कर सके है? उन्होंने बन्द बर्तन मे पानी को खौलते हुए, भाप बनते हुए और ढक्कन को हरकत करते हुये देखा होगा। उन्होने पतङ्ग उड़ते और वृक्ष से फल गिरता हुआ देखा होगा। परन्तु क्यो नहीं उन्होंने वाष्प एञ्जिन और वायुयान आविष्कार किया और क्यो नहीं वे आकर्षण के नियम म कोई नई बात मालूम कर सके? इस प्रकार की घटनायें बहुत तुच्छ है लेकिन फिर भी वे किसी की जीवन धारा को बदल देती है और उसके दृष्टिकोण मे महत्व पूर्ण परिवर्तन कर देती है जिनका परिणाम अद्भुत होता है।

मि० नटरञ्जन आगे लिखते हैं "परमात्मा की दृष्टि मे मनुष्य उससे भी तुच्छ है जितना हमारी दृष्टि मे चूहे तुच्छ है। हम अपने दैनिक जीवन मे आत्माओं की आत्मा क साथ खिलवाड करते है। ऐसा करने की हमे छुट्टी है। परन्तु किसी ने भी यह नहीं कहा कि चूकि हम ऐसा करने की आज्ञा है इसलिए परमात्मा पाखण्ड या भ्रम है।' यदि लेखक महोदय आर्य्य समाज से चिढ हुए न होते तो वे इस प्रकार की बात न कहते। ऋषि दयानन्द ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है, परमात्मा की सत्ता का नहीं।

श्रीयुत नटरञ्जन आगे लिखते हैं—"शुद्धि से मुझे स्वभावत घृणा है।" कट्टर पथी व्यक्ति को भले ही शुद्धि से घृणा हो परन्तु सत्य के जिज्ञासु को कभी घृणा नहीं हो सकती। निस्सन्देह आर्य-समाज छल कपट, भय अथवा प्रलोभन के द्वारा शुद्धि को कभी भी सहन नहीं करता है। परन्तु

यदि कोई व्यक्ति अन्तरात्मा की आवाज पर सत्य, प्रकाश और धर्म्म की खोज के लिए आता है तो किसी को क्या अधिकार है कि उसे ऐसा करने से रोके तब क्या उस दशा में वह ऊंचे दर्जे की स्वार्थपरता और पाप नहीं होगा ?

श्रीयुत नटरञ्जन भ्रान्त धारणा के वशीभूत प्रतीत होते हैं जब वे लिखते हैं 'कि हिन्दूधर्म्म ने दूसरे धर्म वालों के जिहादी आन्दोलन के होते हुए भी जिसकी पीठ पर राजनैतिक शक्ति थी और प्रचुर आर्थिक साधन थे अपनी स्थिति को सुरक्षित रक्खा है क्योंकि वह साधारण विश्वास के विरुद्ध निश्चय रूप से शुद्धि से उपराम रहा है।"

श्रीयुत नटरञ्जन इस बात को भली भाति जानते हैं कि मुसल्मान लोग जो भारत में आक्रमण कारियों के रूप में आए थे और यहा बस गए थे मुट्ठी भर थे। परन्तु आज उनकी संख्या आठ करोड हो गई है। क्या वे आकाश से टूट पडे हैं ? वे सब श्रीयुत नटरञ्जन के विचार के कट्टर पन्थी हिन्दुओं मे से ही गए हैं। क्या इसका यह अर्थ है कि हिन्दू धर्म्म ने अपनी स्थिति को सुरक्षित रक्खा है ? वह ऋषि दयानन्द ही था जिसने प्रवाह को बदला है और एक बार हिन्दू धर्म्म को धर्मान्तर करने वाला धर्म्म बना कर उसे निर्मूल होने से बचा दिया है। आज भी यदि आर्य्य-समाज मि० नटरञ्जन के मतानुसार अपना हाथ खींच ले और अगले १०० वर्ष तक ऋषि दयानन्द जैसी महान् आत्मा आविर्भूत न हो, और मुसल्मान और ईसाई निर्बाध गतिसे अपना कार्य्य करते रहे तो निश्चय ही हिन्दू धर्म्म का पृथ्वीतल से अस्तित्व मिट जायगा।

श्री युत नटरजन यह भी लिखते हैं —
राजा राम मोहन राय मूर्ति पूजा के विरुद्ध न थे। मैं समझता हूँ नटरजन जी ने राजा साहब की जीवनी नही पढ़ी है। यदि वे पढेंगे तो उन्हें मालूम हो जायगा कि राजा साहब भी मूर्ति पूजा के विरुद्ध थे। मूर्ति पूजा के विरुद्ध उनके बहुत से विचारों में से एक इस प्रकार है —

"मूर्ति पूजा जैसी हमारे देश वासियों में इस समय प्रचलित है जिसका हमारे विद्वान पंडित उसे सदाचार में वृद्धि करने वाली कहकर समर्थन करते हैं न केवल व्यापक रूप से शास्त्रों द्वारा त्याज्य है वरन् साधारण बुद्धि से भी उसे महान भयकर समझना चाहिए और समझना चाहिए कि यह दुराचार की ओर प्रेरित करने वाली तथा सामाजिक सुखों का विनाश करने वाली है। इसके द्वारा अश्लीलता, व्यभिचार, विषयासक्ति, झूठ, कृतघ्नता कपट और विश्वासघात का बोल बाला रहता है। निरसन्देह महर्षि दयानन्द भी मूर्ति पूजा के विरुद्धथे उनका अटल विश्वास था कि मूर्ति पूजा वेद-विरुद्ध है और भारत के पतन और उसकी दासता के मुख्य कारणों में से एक है। उन्होंने इस विषय पर अपने समय के बड़े २ विद्वानों को बनारस मे तथा अन्य जगहों में परास्त किया था।

मुझे अत्यन्त दुख है कि श्रीयुत नटरंजन

महोदय ने अपनी स्वाभाविक अरुचि के कारण ऋषि दयानन्द जैसी महान व्यक्ति और उनके स्थापित किए हुए आर्य समाज को पढ़ने और समझने के अवसर को गवा दिया है। ऋषि दयानन्द के प्रति योगी अरविन्द के मूल्य वान विचारों की ओर एक बार फिर हम अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। महर्षि दयानन्द और राजा राम मोहन राय की तुलना करते हुए वे लिखते हैं, "राम मोहन राय उपनिषदों पर जा कर ही रुक गये। दयानन्द ने इससे आगे दृष्टि दौड़ाई और मालूम किया कि हमारा वास्तविक आधार मूल वेद है। ऋषि दयानन्द में स्वाभाविक प्रतिभा थी और वह उसे प्रकाशमान बनाने में समर्थ हुए।

डाक्टर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भी लिखा है, मैं महान गुरु दयानन्द का अभिनन्दन करता हूँ जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास मे 'सत्य और एकता के दर्शन किए थे, जिसके प्रकाशमान मस्तिष्क ने भारतीय जीवन के समस्त विभागों को समझा था। जिस की भारत के प्रति आवाज भूत-काल के अन्धकार और अज्ञान की निद्रा छुड़ा कर सत्य और पवित्रता के प्रकाश को ओर ले जाने की थी।

श्री युत नटरंजन जी को कदाचित स्मरण होगा जब उन्होंने गत एक अवसर पर भी आर्य समाज और उसके यशस्वी संस्थापक पर आक्रमण किया था। मैंने उन आक्रमणों का निराकरण करने का यत्न करते हुए उन्हें निवेदन किया था कि वे शान्त हृदय से और निष्पक्ष दिमाग से उन दोनों का अध्ययन करें, और तब ही उनके पक्ष या विपक्ष में लेखनी उठाए। प्रतीत होता है उन्होंने ऐसा नहीं किया है। तौभी अन्त में, मैं बहुत सम्मान पूर्वक श्री युत नटरंजन जी से ऋषि दयानन्द के जीवन और उनकी शिक्षाओं को गम्भीरता पूर्वक अध्ययन करने का यत्न करने का निवेदन करूंगा और कहूंगा कि हिन्दू धर्म पर उनके (ऋषि दयानन्द) द्वारा किए गये उपकारों का आदर करें। यह दुख की बात है कि 'इण्डियन सोशियल रिफार्मर' के संपादक आधुनिक भारत के सब से बड़े सोशियल रिफार्मर के उपकारों का अब तक भी आदर नही कर सके हैं। हमारी सार्वदेशिक सभा ने आर्य समाज के सम्बन्ध मे उन्हें कुछ साहित्य भेजा है। मुझे आशा है उनके सम्यक् अध्ययन से श्रीयुत नटरंजन महोदय अपने जीवन के सायकाल में आर्य समाज के सिद्धान्तों को समझने में समर्थ होंगे। "कभी नहीं की अपेक्षा देर अच्छी होती है।"

सत्यार्थप्रकाश लेखमाला—

मोक्ष का स्वरूप

(ले०—श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

मोक्ष के साधन ज्ञान कर्म उभय है। वह समुच्चयवाद से है यह मैं पिछले लेख में सप्रमाण लिख चुका हूँ इसके पश्चात् मोक्ष का स्वरूप भी चिन्तनीय है। प्रथम यह चिन्तनीय है मोक्षभावरूप है वा अभावरूप है। आर्य समाज मोक्ष को भावरूप मानता है। साधारण रीति से भी देखा जाय तो जीव की प्रवृत्ति सर्वथा अभाव में नहीं है। यह सत्य है जीव दु ख नही चाहता दु खाभाव चाहता है वह भी केवल दु खाभाव ही नहीं उसके साथ सुख हो तब तो जीव प्रसन्न होता है केवल अभाव तो शून्य ही होगा इसलिये केवल अभाव मानना शून्यवाद का दूसरा नाम ही है जिसे वैदिक सिद्धान्त लिखना ठीक नहीं है इसलिये आर्य-समाज मोक्ष को भावरूप मानता है सत्यार्थ-प्रकाश समुल्लास ९ पृष्ठ २९३ पर निम्न पाठ है—

प्रश्न—मुक्ति किसको कहते है ?

उत्तर—'मुञ्चति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्ति' जिसमें छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है।

प्रश्न - किससे छूट जाना ?

उत्तर—जिससे छूटना चाहते है।

प्रश्न—किससे छूटना चाहते है ?

उत्तर—दु.ख से।

प्रश्न—छूट कर किसको प्राप्त होते और कहाँ रहते हैं ?

उत्तर—सुख को प्राप्त होते है और ब्रह्म मे रहते है।

इस पाठ से सिद्ध है कि महर्षि जी मोक्ष को भावरूप मानते है। इसके पश्चात् एक बात विचारणीय है वह यह कि मोक्षावस्था मे जीव ब्रह्मरूप हो जाता है वा जीव जीव ही रह कर मोक्ष सुख का भोक्ता होता है। यदि जीव को ब्रह्म रूप की प्राप्ति स्वीकार करली जाय उस अवस्था मे जीव सुखरूप (आनन्द रूप) तो हो जायगा क्योंकि ब्रह्म को सब ही सच्चिदानन्द रूप मानते है उस अवस्था मे वह सुख का भोक्ता न होगा। ब्रह्म को कोई भी भोक्ता नहीं मानता है। जो भोक्ता होगा वह कर्त्ता भी होगा यह सामान्य नियम है। जीव कर्त्ता है अत भोक्ता है जीव कभी दु खी होता है कभी सुखी। जीव को सुख दु ख निमित्त से होते है ब्रह्म मे वेसे निमित्त न होने से वह जीववत् भोक्ता न होगा और जीव ब्रह्मरूप न होगा।

इस विषय मे सब से अधिक विचार उपनिषद् और वेदांत सूत्रो मे है। और सूत्रो के विषय वाक्य उपनिषद् वचन ही है इसलिये मैं उनके पाठ लिखना उचित जान कर लिखता हू आशा है पाठक उन पर विचार करेंगे।

संपाद्याविर्भाव स्वेन शब्दात्। वेदांत सूत्र अध्याय ४ पाद ४ सूत्र १ मुक्तः प्रतिज्ञानात् २ आत्मा प्रकरणात ३।

इन सूत्रो के विषय वाक्य इस प्रकार है —

एष मेष सम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय पर ज्योतिरूपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यत। स उत्तम पुरुष। छान्दोग्योपनिषद् ८, १२, ३।

भावार्थ—इस प्रकार यह जीव (सम्प्रसाद) इस शरीर से पृथक् होकर परं ज्योति (ब्रह्म) को प्राप्त होता है और अपने स्वरूप मे (स्वेन रूपेण) स्थित होता है वा स्वराज को प्राप्त होता है वह उत्तम पुरुष है।

इसमे शङ्का होती है इसको मोक्ष विषयक क्यों माना जाय यह किसी अन्य अवस्था का प्रतिपादक क्यो नही। इस शङ्का के निवारण करने के लिये दूसरा सूत्र है "मुक्त. प्रतिज्ञानात्" इसका विषय वाक्य है।

अशरीर वाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत।

छा० ८ १२ १।

भावार्थ—जीव को सुख दु ख शरीर साथ होने की अवस्था मे ही होते है अशरीर अवस्था मे इनका स्पर्श नही होता इसलिये यह अशरीरावस्था विषयक होने स मोक्ष विषयक ही है। और प्रकरण आत्मा का है। यथा—

य आत्माऽपहतपाप्मा विजरो विमृत्यु।

छा० ८, ७, १।

जो आत्मा पापरहित जरारहित और मृत्यु रहित है उस आत्मा का प्रकरण होने से मोक्ष का ही प्रतिपादक है।

इन सूत्रो और वाक्यो मे "स्वेन रूपेण" पाठ है और आगे उसे उत्तम पुरुष लिखा है क्या यह जीव ब्रह्मरूप मे रहता है इस बात को कहते हैं वा जीव जीवरूप में ही रहता है इसका प्रतिपादक है अगले सूत्र मे इस शङ्का को निवृत्त कर देते है।

सङ्कल्पादेव तु तच्छ्रुतेः। वेदांत दर्शन ४ ४ ८

मोक्ष म जितने भोग है सब सङ्कल्प से ही प्राप्त होते है ससार सम यत्न साध्य नही होते।

"स यदि पितृलोककामो" भवति सङ्कल्पादेवास्य पितर समुत्तिष्ठन्ति। छां ८, २, १

मोक्षावस्था मे यदि पितृ लोक की कामना हो तो सङ्कल्प से ही प्राप्त हो जाता है। वह सुख सङ्कल्प से मिल जाते है।

जब सङ्कल्प स भोग मिलते हैं तो ब्रह्म नहीं जीव ही होगा इसके आगे फिर लिखा है—

जगद्व्यापारवर्जं प्रकरणादसंनिहितत्वाच्च।

वेदांत दर्शन ४, ४ १७।

शङ्करभाष्य जगदुत्पत्त्यादि व्यापारं वर्जयित्वान्यदणिमाद्यात्मकमैश्वर्यं मुक्तानां भवितुमर्हति। जगद् व्यापारस्तु नित्यसिद्धस्यैवेश्वरस्य।

जगत् रचना तो परमात्मा के ही आधीन है यह जीव को कभी प्राप्त नही होता अन्य बातें मोक्ष जीव में हो जाता है। फिर सूत्रकार लिखता है—

भोग मात्र साम्य लिङ्गाच्च। ४, ४, २१।

भोगमात्रमेवैषामनादिसिद्धेनेश्वरेण समानमिति श्रूयते। शङ्करभाष्यम्

भोग मात्र ईश्वर की समता है अन्य सब बातो मे समता नही है अर्थात् जीव को मोक्षा-

सार्वदेशिक आर्य संघ की आवश्यकता

[श्री प० भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण अजमेर]

आर्य्य समाज सिद्धान्त रूप से सदा से वर्ण को गुण कर्मानुसार मानता रहा है, इस विषय पर अनेक शास्त्रार्थ हुए, आर्यसमाज ने बड़ी शान के साथ सदा विजय प्राप्त की। विरोधियों के छक्के छुडाए। आर्य्यसमाज के अन्तर्गत जब कभी किसी ने इस विषय पर मत भेद प्रकट किया आर्य्यसमाज ने बड़ी दृढ़ता पूर्वक उनके साथ वर्ताव किया। अगर नहीं माने तो दूध मे से मक्खी की तरह निकाल फेंका। इतना होते हुए भी जैसा चाहिए आर्य्यसमाज ने इस का क्रियात्मक रूप से प्रचार नहीं किया, ऐसा अनेक लोगो का ख्याल है।

मेरा ख्याल है कि आर्य्यसमाज मे अनेक ऐसे हैं जिन्होने कभी का ही जन्म गत जात पात के जूए को अपने कधे से उतार फेंका है, परन्तु सब बिखरे हुए है। एक को एक का पता नही। यही कारण है कि उन्हें कठिनाइयां उठानी पड़ी और पड़ रही है क्योंकि जन्म गत बिरादरी को तो उन्हो ने छोड ही दिया था और ससार मे कोई सघटन न होने से उन्हे कोई सोसाइटी मिली नही।

यद्यपि यह है कटु परन्तु सत्य है अतएव लिखने मे मुझे सकोच नही कि वर्तमान समय

वस्था मे दु ख नही होता वह सुख मे ही रहता है ब्रह्म आनन्द स्वरूप है जीव सुख (आनन्द) का भोक्ता होता है इसी सुख मे दोनो की समता है।

यह सब प्रमाण इस बात को सिद्ध करते हैं जीव ब्रह्म मोक्षावस्था मे भी भिन्न ही रहते हैं यह दोनों एक कभी नही होते है इसलिये जो जीव को मोक्ष मे ब्रह्मरूपता कहते हैं वह सिद्धांत ठीक नही है।

सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास में महर्षि ने इस बात को इस प्रकार लिखा है—

प्रश्न—मुक्ति मे जीव का लय होता है वा विद्यमान रहता है?

उत्तर—विद्यमान रहता है।

प्रश्न—कहां रहता है?

उत्तर—ब्रह्म मे।

अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति मे हो जाता है। और सङ्कल्प मात्र शरीर होता है जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियो के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति मे सब आनन्द भोग लेता है

क्योंकि मुक्ति जीव की यह है कि दु:खो से छूटकर आनन्द स्वरूप सर्व व्यापक अनन्त परमेश्वर मे जीव का आनन्द में रहना।

इस प्रकार आर्य समाज के सिद्धान्त में मुक्ति भावरूप है अभाव रूप नही। मोक्षावस्था में जीव ब्रह्मरूप नही बनता प्रत्युत जीवरूपसे आनन्द का भोक्ता होता है।

मे आर्यसमाज एक प्रकार का कनब बन गया है। अधिकांश लोग आर्यसमाज के सदस्य रहते हुए अपनी २ बिरादरी मे ही रहते हैं। उन का खान पान, विवाह व्यवहार शादी गमी सब बिरादरी से है अतएव वे बिरादरी मे शरीक होते है। बिरादरी उन के यहां शरीक है। जिन्हो ने उसे छोड दिया है इस बात को देखते और अपने आपको अलग पाते हुए कुछ खिन्न प्रतीत होते हैं।

यद्यपि इस समय भी अनेक नवयुवक ऐसे है जो जन्म गत जात पात से बड़े दुःखी हो रहे है उस की जंजीरो को तोड़ने के लिए कटिबद्ध है, परन्तु इस दृश्य को देख कर रुक जाते है, आगे बढने का साहस नही करते।

इन कारणो से मेरा विचार है कि श्रीमती-सार्वदेशिक सभा एक ऐसा सघ बनावे कि जिस मे इस प्रकार के व्यक्तियो का समावेश हो, जो जन्म गत जात पात के विरुद्ध क्रियात्मक पग बढ़ा चुके हो या बढाने को उद्यत हो।

कदाचित आप को ज्ञात होगा, अभी मुम्बई मे आर्य परिवार सघ की स्थापना हुई है, इसी प्रकार यू० पा० पजाब बगाल, और राजस्थान आदि सभी प्रान्त की सभाओं ने इस दिशा में कुछ न कुछ किया है परन्तु वह सब अपूर्ण पड़ा हुआ है। यदि सार्वदेशिक सभा इस कार्य को अपने हाथ मे लेवे और इसे सार्वदेशिक संघ बनाने का यत्न किया जावे तो मे समझता हूँ सभी प्रान्तीय सभाओ का जो कुछ पृथक २ प्रयत्न है वह केन्द्रित हो जायगा और सफलता की अधिक आशा हो जायगी।

इस समय तक सभाओ ने जो कुछ इसका मसाला किया है वह सार्वदेशिक सभा मगाले और एक ऐसी सूची तैय्यार की जावे जिन मे भारत या इससे बाहर के भी उन समस्त आर्य व्यक्तियो की नामावलि मय पता के व पूर्ण परिचय के हो जिन्होने इस दिशा मे कार्य किया है और जो आगे को उद्यत है। वह सूची उन सब सदस्यों को दी जावे। सदस्यो से इस के निमित्त कुछ शुल्क लिया जावे।

ऐसा करने स लाभ यह होगा कि अभी जो पृथक न रहते हुए अपने आप को अकेला अनुभव करते है वह पूरा हो जायगा, दूसरे ब्याह शादी आदि के लिए प्रत्येक को पता रहेगा कि उसके विचारानुकूल व्यक्ति कहा है वह चुनाव सरलता पूर्वक कर सकेगा।

आशा है सभा इस विषय पर विचार करके कोई क्रियात्मक रूप देने का आयोजन करेगी। मे इस विषय मे सदा योग्य सहायता करने को उद्यत हूँ। इस प्रकार के विचार वाले अनेक व्यक्ति इसमे सहयोग देने को उद्यत होगे।

आत्मा का अमरत्व

एक अंग्रेज महिला के विचार

मृत्यु का भय

मौत से कोई नहीं बच सकता है क्योंकि यह अनिवार्य्य है। यदि जहर का प्याला पीनेसे पूर्वक सुकरात के शब्दों को वा प्लेटो के मृत्यु सम्बन्धी विचारों को याद करें, भारतवर्ष की शिक्षाओं के मृत्यु सम्बन्धी ऊचे आदर्शों का तो बात ही क्या, तो हमें विदित होता है कि 'मृत्यु' का अर्थ चोले का बदलना है, और यही बात स्पष्ट रूप से सत्शास्त्रों मे बतलाई गई है, मुख्यतया १८ वीं और १६ वीं शताब्दी म जब नास्तिकता ने वहा अपने पैर जमा लिए थे, हम पश्चिम के अस्पष्ट दिमागों मे 'मृत्यु' के लिए एक प्रकार का पाशविक भय देखते हैं। अब भी हम मृत्यु के लिए वहा यह लिखा हुआ देखते हैं।

Death is so fearful that I hate life more for the reason that it leads to Death, rather than for the thorns with which the path of life is sown"

मृत्यु बड़ी भयावनी है। जीवन का रास्ता काटों से भरा हुआ है इस की वजह से मै जिन्दगी से जितनी घृणा करती हूँ उससे कहीं ज्यादा इस लिए घृणा करती हूँ कि यह मृत्यु की ओर लेजाती है।

प्रकृति के नजदीक रहने वाले लोगों में आमतौर से 'मृत्यु' शब्द का प्रयोग नहीं होता है। वे कहते हैं, वह चला गया, वह विदा हो गया, अर्थात् इस जीवनके उसके व्यापार खतम हो गए।

प्रकृति के सम्पर्क मे रहने वाले व्यक्ति सत्य की आधार भूत शिक्षाओं के सम्पर्क मे रहते हैं और वे मृत्यु के रहस्य तथा महत्व को स्वभावत समझते हैं। मृत्यु का दु ख दुर्जनों में पैदा होता है जो अपराधों और जान बूझ कर की हुई गलतियों से अपनी आत्मा को कलुषित करते हैं। यह भली भाति पूर्णतया समझ मे आ गया है कि प्रत्येक दुरात्मा मृत्यु स डरता है।

केवल दुरात्मा तथा अज्ञानी लोग ही मृत्यु से डरते है, बात यह नहीं है। बड़े २ विद्वान और विचारक भी जिन्दगी के परिवर्तन अर्थात् मृत्यु से पूर्व बडे भयभीत देखे गए हैं, और यह बड़ी आश्चर्य्यजनक बात देख पडती है। ऐसी अवस्था मे लोग जानना चाहेंगे कि सासारिक पदार्थों के प्रति उनका कैसा रुख रहा है। निश्चय ही उनका रुख सासारिक पदार्थों में मोह का रहा है त्याग का नही रहा है।

जो धार्मिक विचारों के नही हैं वे भी मृत्यु का विचार आने पर धामिक अनुष्ठानों की ओर झुक जाते हैं परन्तु मृत्यु के विचार के मन से निकलते ही वे ऊल जलूल बात कहने लग जाते हैं। बीसवी शताब्दी Twentieth Century नामक पत्रिका में श्री० प्रो०ए०आर० वादिया बीसवीं शताब्दी के विचारों और वास्त-

विक्ताओं के सम्बन्ध में बहुत सी मनोरञ्जक सम्मतियों पर प्रकाश डालते हुए एक सम्मति इस प्रकार प्रगट करते हैं।

"दुनिया धार्मिक भाव से वंचित हो रही है। धर्म के सन्देह मे, दुनिया धर्म के अर्थ और महत्व के प्रति अधी बन रही है" इसमें सन्देह नहीं विद्वान् प्रोफेसरकी सम्मति बिलकुल सही है। वास्तव मे मनुष्य समाज ने इस सन्देहावस्था मे ग्रसित होकर बहुत कुछ खो दिया है जो उसकी मानसिक और शारीरिक रचनात्मक शक्ति को दृढ़ बनाने मे उत्तम योग देता।

जो व्यक्ति आत्मा के अमरत्व को जानता है वह शारीरिक और मानसिक प्रत्येक प्रकार के व्यापार के अपने आनन्दप्रद कर्तव्य को भी जानता है। प्रार्थनाओंमे 'आत्माकी अमरता' शब्दों का महत्व दर्शा दिया गया है। जो इस बात पर मनन करता है वह समझता है कि मनुष्य विविध योनियों मे-मानवी और पाशविक-अपने कर्म के अनुसार जन्म लेता है। वह यह भी समझता है कि क्षण २ मे प्रत्येक वस्तु बदल रही है और अपनी पूर्वावस्था मे कभी नहीं आई है। संसार की इस गति मे सबसे महान रचनात्मक उदारता सन्निहित है और अपनी शक्ति के अनुसार इस सर्वतोमुखी रचना मे अपने कर्तव्य की पूर्ति करना बड़ा आनन्द दायक है?

रूसो कहता है ' जिस व्यक्तिका यह दावा है कि वह बिना भय के शान्ति पूर्वक मृत्यु का आलिङ्गन करता है वह झूठा है," महान् लेखक रूसो—ने तमाम मानव जाति की ओर से बोलने का काम अपने जिम्मे इसलिए लिया होगा कि वह स्वयं मृत्युसे डरता होगा। निश्चयही मृत्यु प्रतिदिन की बातों और कामों की सीमाओं से परे है। इसलिए हृदय की विशेष शान्ति के द्वारा ही यह कार्य सम्पन्न होना चाहिए। यह भाव दैनिक जीवन की शान्ति से कहीं दूरकी बात है। जीवन-परिवर्तन में दिव्य शान्ति का परिचय वास्तविक साहस होना है जिसके साथ ज्ञान जुड़ा हुआ है। भारत के ऋषियो ने साफ तौर पर बतलाया है कि 'हम मरते नहीं हैं वरन् बदलते हैं, इन चन्द शब्दों मे 'आत्मा को अमरत्व' का सर्टिफिकेट दिया हुआ है। गीता के उन शब्दों को याद करो जिनमे आत्मा को अपरिवर्तन वादी, अमर और अनश्वर बतलाया गया है। तमाम युगों मे आत्मा के अमरत्वकी विजय हुई है और अमरत्व स्वीकार किया गया है। आज आत्मिक वैज्ञानिकों ने भी इस बात को स्वीकार कर लिया है। बड़े दुःख की बात है कि बुद्धिमान विचारक मौत से डरते है और भोले भाले-साधारण व्यक्तियों को उस डर की बीमारी लगाते हैं। क्यों नहीं वे अपने को उस प्रकाशमान प्राचीन ज्ञान से जिसपर संसार के सर्वश्रेष्ठ दिमागों ने अपनी स्वीकृति की मुहर लगादी है आलोकित करते हैं। निश्चय ही श्रेष्ठों के सम्पर्क में आनेपर वे भी श्रेष्ठ परिणामों पर ही पहुंचेगे।

संसार के पदार्थों और रिश्तों में ममता और स्वार्थ छोड़ने वालों और उनमें प्रयोगाधिकार और कर्तव्यबुद्धि रखने वालों को मृत्यु का डर नहीं रहता। उत्तम ज्ञान और उस ज्ञान के

अन्तर्जातीय विवाह की आवश्यकता

[लेखक—रघुनाथप्रसाद, पाठक]

अन्तर्जातीय विवाहों को आर्य्य समाज इसलिए प्रोत्साहित करता है कि जन्म की जात-पात की दीवारों को उनके अगणित अभिशापों के साथ छिन्न भिन्न करके वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना की जाय और समाज को अपनी स्वाभाविक स्थिति में गति करने दिया जाय। आर्य्य-समाज के इस सिद्धान्त का अर्थ विघातक नहीं है जैसा कि आर्य्य-समाज के विरोधी समझते हैं वरन् रचनात्मक है। विवाह पर समाज का कल्याण और उसकी स्वाभाविकता बहुत कुछ आश्रित है। विवाह का मुख्यतम उद्देश्य समाज को उत्तम सन्तान देना है। इसके लिए आवश्यक है कि विवाहयोग्य लड़के और लड़कियों में हो जिनमें गुण कर्म और स्वभाव इत्यादि की समता हो तथा वे उत्तम कुलों के हों। यह तभी सम्भव है जब विवाह का क्षेत्र विस्तृत हो और समाज का विकास गुण कर्म, स्वभाव पर आश्रित ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के विभाजन पर हो जन्म की जात-पात पर न हो। यही उद्देश्य आर्यसमाज के अन्तर्जातीय विवाहों का है।

वर्तमान ब्राह्मण, क्षत्रिय इत्यादि वर्ण जन्म की जात-पांत पर आश्रित है और इसलिए कृत्रिम हैं। अपने २ वर्णों मे विवाह करने की प्रवृत्ति से आर्थिक सामाजिक तथा अन्यान्य कई प्रकार की हानियां हो रही हैं। योग्यों का अयोग्यों के साथ विवाह हो रहा है, इतना ही नहीं वरन इस प्रवृत्ति की वजह से उनका भी विवाह हो रह है जो विवाह के कतई अधिकारी नहीं है। परिणाम यह है कि अयोग्य सन्तानों की, मूर्खों, नपुंसकों, बहरों, गूंगो, भद्दा सूरत वालो, आत्महत्या करने वालों, वेश्याओ, पागलो, चिडचिड़े स्वभाव वालो और अन्य अपराध करने वालो की संख्या बढ़ रही है। यह तो रहा इस समस्या का सामाजिक पहलू।

जन्म की जात-पात की वजह से विवाह के संकुचित क्षेत्र मे एक दूसरी दिक्कत पेश आती है। योग्य लड़कों और लड़कियो के संरक्षकों को धन लूटने का अमोघ अवसर प्राप्त हो जाता है। कुछ जातियों मे लड़कियों की तुलना में लड़कों की संख्या अधिक है दूसरी जातियो में लड़कियों की संख्या अधिक है। इस प्रकार माग

अनुसार उत्तम आचरण से मनुष्य मृत्यु को पार किया करता है। यही संसार के श्रेष्ठतम धर्म का आन्तरिक रहस्य है। आत्मा का स्वाभाविक गुण ज्ञान और प्रयत्न है। श्रेष्ठतम धर्म्म इन दोनों बातों का ठीक २ नियमन करता है इस नियमन के हो जाने पर मनुष्य को मौत नहीं डराती है।

और उसकी पूर्ति का नियम क्रिया मे आ रहा है इसलिए हम देखते हैं कुछ जातियों मे (आम-तौर पर ऊँची जातियो मे) लड़कों के अभिभावक लड़कियो के अभिभावकों से इतना अधिक पैसा मागते हैं कि लड़की की शादी ही कठिन हो जाती है। दूसरी जातियों मे (आम तौर पर नीची जातियों मे) लड़के के अभिभावकों को लड़की के अभिभावकों को पैसा देना होता है। नतीजा यह है कि बडी २ उम्र के लडके और लडकिया बिन ब्याहे बैठे रहते हैं और इस प्रकार बैठने के दुष्परिणाम प्रत्यक्ष ही हैं। यह विकृत तभी दूर हो सकती है जब विवाह का क्षेत्र विस्तृत हो जाय और यह अन्तर्जातीय विवाहों से ही हो सकता है।

एक ही वर्ण मे विवाह करने का एक और दुष्परिणाम है जिसे हम सहज ही नहीं जान सकते हैं। यह गम्भीर अध्ययन और समझ का विषय है। वैज्ञानिकों की स्थापना है एक ही जाति या उपजाति मे यदि लम्बे अर्से तक विवाह होते रहे तो एक ही रक्त के दौर से सन्तानो का शरीर और दिमाग का विकास स्थिर हो जाता है उनमें नए रक्त के न आने से नूतनता नही आती और कालान्तर में समाज के विकास का स्रोत कुंठित होकर उसका विनाश हो जाता है। यह विषय सम्यक् विचार की अपेक्षा रखता है और अधिक विस्तार चाहता है। इस समय हम केवल सकेत ही किए देते हैं। इस बात को उन लोगों को विशेष रूप से नोट करना चाहिए जो यह कहते हैं कि जब अपने वर्ण मे ही योग्य जोड़ मिल जाय तो क्यों अन्य वर्ण मे शादी की जाय।

इन सब बातों को देखते हुए आवश्यक है अन्तर्जातीय विवाहों को अपनाया जा और उनका प्रचार किया जाय। बात और। लडके लडकियों की योग्यता, रुचि, गुण स्वभाव तथा वल ही अन्तर्जातीय विवाहों मे सर्वो रि होने चाहिएं केवल जन्म की जात-पात को तोडने का ही एक मात्र भाव सर्वोपरि नही होना चाहिए। ऐसा होने से लाभ के बदले हानि ही होगी। साथ ही आर्य-विवाह ऐक्ट की सिप्रट मे ही ये विवाह होने चाहिएं सिविल मैरेज ऐक्ट वा उससे मिलते-जुलते ऐक्ट की स्प्रिट मे नहीं जो हमे हमारे शास्त्रों और धर्म्म और आदर्शों से विमुख करते हैं।

महर्षि के भाष्यों की बहिरङ्ग परीक्षा

ले०—श्रीमती सुशीलादेवी त्रिवेदी विद्यालङ्कृता
गुरुकुल महाविद्यालय सोमगढ़ (काठियावाड़)

इस लेख में हमें यह देखना है कि महर्षि के वेदभाष्य कितने हैं ? उन्होंने किस किस वेद पर किस भाषा में कितने समय मे भाष्य किया ? इस विषय पर विचार करने से आधुनिक समय में ऋषिभाष्य पर की जाने वाली अनेक आपत्तियों का समाधान हो सकता है ।

स्वामी जी महाराज का संपूर्ण भाष्य तो केवल मात्र यजुर्वेद पर ही मिलता है ऋग्वेद पर तो वे ७ वें मडल ६१ वे सूक्त के दूसरे मत्र से आगे किन्हीं दैवी कारणों से भाष्य न कर सके । फिर सामवेद तथा अथर्ववेद पर वे कब कलम उठाते ? कमनसीब भारतीयोंके भाग्याकाश मे वह अनमोल सितारा अधिक समय तक न चमक मका, अकाल ही में अस्त हो गया । अत वर्तमान काल में ऋषि के भाष्य यजुर्वेद पर तथा आधे से अधिक समय तक ऋग्वेद पर ही उपलब्ध होते हैं । परन्तु उनकी शैली का परिचय इन भाष्यों से भी प्राप्त किया जा सकता है ।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य का निर्माण स०१६३४ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की छठी को प्रारम्भ किया था । इस विषय में ऋग्वेद भाष्य के प्रारम्भ में लिखा है ।

विद्यानन्दं समवति चतुर्वेदसंस्तावना या,
संपूर्यश निगमनिलयं संप्रणम्याथ कुर्वे ।
वेदत्र्यङ्क विद्युयुतसरे मार्गशुक्लेऽङ्क भौमे,
ऋग्वेदस्याखिलगुणगुणिज्ञादातुर्हि भाष्यम् ।।

अर्थात जो चारों वेदों की भूमिका विद्यानन्द को देती है उसे पूरा कर परमेश्वर को प्रणाम कर सं० १६३४ मार्ग शुक्ल छठी मंगलवार के दिन ऋग्वेद भाष्य का आरम्भ करना है । इसके कुछ समय के अनन्तर विक्रमी स० १६३४ के पौष सुदि १३ गुरुवार के दिन यजुर्वेद भाष्य का आरम्भ किया इस सम्बन्ध मे भाष्यारम्भ मे निम्न श्लोक दिया गया है ।

चतुस्त्र्यङ्कैरकै अवनिसहितैर्विक्रमसरे
शुभे पौषे मासे सितदलभविश्वोन्मिततिथौ ।
गुरोर्वारे प्रात प्रतिपदमतिष्टसुविदुषा
प्रमाणैर्निबद्धं शतपथ निरुक्तादिभिररि ।।

विक्रमीय स० १६३४ पौष सुदि गुरुवार त्रियोदशी तिथि के दिन यजुर्वेद भाष्य का बनाना प्रारम्भ किया जाता है । एवम ऋग्वेद भाष्य के प्रारभ से लगभग एक मास के पश्चात ऋषि ने यजुर्वेद भाष्य का निर्माण प्रारभ कर दिया था । इस भाष्य की समाप्ति के विषय मे भाष्य समाप्ति पर निम्न लेख लिखा गया है--

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १ (एक) शनौ सं० १९३६ मे समाप्त किया । वैशाख शुक्ल ११ स० १६४६ में छप कर समाप्त हुआ एवं ऋग्वेद तथा

यजुर्वेद का भाष्य ऋषि ने लगभग एक ही समय प्रारम्भ कर दिया था उनमे यजुर्वेद का भाष्य लगभग पाच वर्षों मे पूरा कर लिया था। साथ ही साथ आधे से अधिक ऋग्वेद का भाष्य भी वे निर्माण कर चुके थे।

महर्षि के ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का मुद्रण स०१९३४मे प्रारम्भ हुआ था तथा १९३५में समाप्त हो चुका था। परन्तु वेद भाष्यों का मुद्रण तथा सशोधन उनके स्वर्गारोहण के पश्चात् भी १९४० तक होता रहा। उनके भाष्य प्रथम तो मासिक अङ्कों में ही निकलते रहे थे तथा उनके जीवन काल में यजुर्वेद के ११ अध्याय एवं कतिपय मंत्र ५१ अङ्कों तक मुद्रित हुए थे और ऋग्वेद का प्रथम मंडल ८९ सूत्र के पाचवे मंत्र तक ही ५१ अङ्कों तक मुद्रित हो पाए थे। इस प्रकार उनकी उपस्थिति में दोनो भाष्यों के लगभग पाचों हिस्से ही मुद्रित होसके थे शेष तो उनके देहावसान के पश्चात् प्रगट हुए हैं। यजुर्वेद का पूर्ण मुद्रण तो उनकी मृत्यु के लगभग ६ वर्षों के अनन्तर १९४६ में हुआ है। ऋग्वेद भाष्य का पूर्ण मुद्रण तो इस के भी १० वर्षों के बाद लगभग १९५६ वि० अषाढ़ मास और कृष्ण पक्ष की पाचवी को हुआ है। इससे स्पष्ट हुआ कि यह दोनों भाष्य उनकी मृत्यु के चिरकालान्तर वर्तमान स्वरूप में दृष्टि गोचर हुए हैं। भाष्यों में अनेक त्रुटियों के आने का यही कारण है। इन भाष्यों का हिन्दी में अनुवाद भीमसेन आदि विद्वानों ने किया है। और संस्कृत भाष्य भी अधिकाश महर्षि की देखरेख में पण्डितों ने किया है। इस विषय मे उनके एक पत्र का कुछ अश यहा उद्धृत करते हैं जिससे भलीभाति प्रतीत होता है कि उनके भाष्यों मे कुछ गड़बड़ी का आभास उन्हें स्वयं हो रहा था—

" और समर्थदान से लिखा है कि ज्वालादत्त नई भाषा बनाता है। यदि वह हमारे सस्कृत और अभिप्राय के अनुकूल हो तो ठीक है नहीं तो जो पोपलाला की भाषा बनाकर वहीं छपवादे और हमको मालूम न हो पश्चात प्रसिद्ध होने से कोलाहल होगा तो क्या होगा? हा अब तक तो उसने कुछ भी नहीं किया परन्तु सम्भव है कुछ गड़बड़ करे तो हो सकता है। इस लिए जो कुछ वह बनावे उस पर समर्थ दान देखलो। जैसा कि अब भाष्य में एक गोल-माल शब्द (देवता) लिख दिया था। सो यह हमारे दृष्टिगोचर होने से शुद्ध हो गई यदि वहा ऐसी छपगई तो बड़ी हानि का सभव है इस लिए ऐसा न होना चाहिये।

मि० आ० व० ९
शुक्रवार स० १९४०
जोधपुर मारवाड़

दयानन्द सरस्वती

भाष्यों का बहुत कुछ अश महाराज की मृत्यु के अनन्तर ही संशोधित तथा मुद्रित हुए हैं। इन बातों को ध्यान में रख कर क्या ऋषि के उपलब्ध भाष्य अक्षरशः प्रमाणित माने जा सकते हैं? यदि नहीं तो, इसमें ऋषि का तनिक भी गौरव घटता नहीं है। रात दिन प्रचार में व्यग्र रहने से ऋषि वेदभाष्य के लिये प्रतिदिन तीन चार घटों से अधिक समय न निकाल सकते थे फिर उन्होंने

भाष्य अपनी लेखनी से भी नहीं लिखे पंडित से ही लिखवाये। अत अशुद्धियों का रह जाना स्वाभाविक है एवं किसी भी अवस्था में मिलता हुआ उनका भाष्य हमारे लिये स्तुत्य है, वेद के ज्ञान का प्रकाशस्तम्भ है।

इनके भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों में है। संस्कृत में पहिले पदार्थ फिर अन्वय तथा भावार्थ दिये गये हैं, स्थान स्थान पर निरुक्त, व्याकरण, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, और मनुस्मृति आदि आप्त-ग्रन्थों के प्रमाणों से भाष्य सजे हुए हैं। कहीं कहीं उव्वट सायणादि आचार्यों के पक्षों का विरोध भी बताया गया है। यजुर्भाष्यमें तो प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर अध्याय का सार तथा पूर्व अध्याय से संगति भी दिखाई गई है। प्रत्येक मंत्र के आदि में उसका प्रतिपाद्य विषय भी दिया गया है। हिन्दी भाष्य मे अर्थ तथा भावार्थ दण्डान्वय सहित दिये गये हैं। दोनों प्रकार मे भाष्यों की तुलना करने से कहा जा सकता है कि भाषा भाष्य संस्कृत की तुलना मे कहीं २ असमीचीन है। मुद्रण तथा संशोधन की त्रुटियों के अतिरिक्त अर्थ विषयक अशुद्धियां भी हैं अत भाषा भाष्य बहुत प्रामाणिक नहीं प्रतीत होता। संस्कृत भाष्य में ऋषि ने पदों का अर्थ देने में अपनी अनुपम योग्यता का परिचय दिया है। गंभीरता से यदि अवलोकन करें तो प्रतीत होता है कि यह भाष्य ब्राह्मण उपनिषद् तथा निरुक्त की आर्ष शैली को ही अनुसरण करता है। भाष्य में दण्डान्वय के साथ पदों का अर्थ नहीं किया गया है इससे प्राय करते समय कठिनता प्रतीत होती है वस्तुत देखा जाय तो ऋषि ने ऐसा करके महान् उपकार किया है। पदों के अर्थ दे दिये गये हैं। पाठक उनका भलीभांति चर्वितचर्वण करें उनका एक के स्थान मे अनेक अद्भुत अर्थ प्रतीत होने लगे गे। जब शब्दों के अर्थों क अन्तस्तल मे प्रवेश कर लिया जाय फिर मंत्र को देखने से अर्थ में कुछ नवीन भव्यता और सुन्दरता प्रतीत होगी। दण्डान्वय के साथ दिये गए अर्थों मे पाठकों को परिश्रम नहीं करना पड़ता है जिसका परिणाम यह होता है कि शब्दों को गहराई में चले जाने का स्वभाव नहीं पड़ जाता और इससे मंत्र का सहज गंभीर मनन करना कठिन होजाता है। इस लिये महर्षि की यह शैली तो पाठकों की विचार शक्ति को अधिकाधिक उत्तेजना देने वाली है।

एक एक पद के अर्थ ऋषि भाष्य में प्रकरण भेद से भिन्न २ किये गये है। इन पदों के अर्थों का संग्रह करके एक कोष का भी निर्माण किया जा सकता है (किया भी गया है)। ऋषि के भाष्य में पदों के जो अर्थ किये गये हैं वे निराधार नहीं हैं। उनके आधार मे अन्य आर्ष ग्रन्थ है। ऋषिभाष्य के पारायण के समय हमे एक शब्द के उस विशेष स्थान मे दिये गये अर्थ से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये प्रत्युत् जितने भी अर्थ किये गये हैं उनका वहां प्रयोग करके अर्थका आनन्द लेना चाहिये शब्दों के नाना अर्थ मे संकोच न करना चाहिये। क्योंकि प्रकरण तथा विशेषणों के आधार पर शब्दों के अनेक अर्थ हो ही जाया करते हैं। सिद्धान्त के विरोधी न होने से उन अर्थों के लेने में कोई बाधा नहीं होनी

है। हम देखते भी हैं कि प्राचीन ऋषियों ने मंत्रों के भिन्न २ अर्थ किये हैं परन्तु वे सब संगत तथा सिद्धान्त के अनुरूप है। हमे भी इस विषय का ध्यान रखकर अपनी सुबुद्धि से नाना अर्थ करने में सकोच न करना चाहिये। ऋषिभाष्य को इस दृष्टि से देखने से हम अन्तत इम परिणाम पर पहुचते है कि ऋषि ने मन्त्रों के जो अर्थ किये हैं वह एक रूप से पूर्ण हैं, सर्वथा पूर्ण नहीं क्योंकि स्वयं उनके ही पदार्थों के अनुसार उस मंत्र का सगत द्वितीय अर्थ भी हो सकता है। इस रीति से देखने पर ऋषि भाष्य अनेक प्रकार के विचारों का भाडार प्रतीत होता है।

अपने भाष्य के विषय में लिखते हुए ऋषि लिखते हैं—

परन्त्वेतैर्वेदमंत्रैर्यत्रग्नि होत्राद्यश्व मेधान्ते यद्यत्कर्तव्य तत्तदत्रविस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुत कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेयशतपथब्राह्मणपूर्व-मीमासाश्रौतसूत्रादिषुयथार्थ विनियोजितत्वात्। • ...तथैवोपासनाकाण्डस्यापि प्रकरणशब्दानुसार तो हि प्रकाश करिष्यते। एवमेवज्ञानकाण्डस्यापि।"

अर्थात् ऋषि की प्रतिज्ञा है कि उनके भाष्य मे ज्ञान कर्म तथा उपासना काण्ड का विचार नहीं किया जाएगा क्योंकि यह विषय दर्शन, उपनिषद् तथा ब्राह्मण ग्रन्थों मे विचार पूर्वक कहे गये हैं इसलिये भाष्य मूल अर्थ दिया जाएगा। इससे स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द जी के भाष्य अन्वय पूर्वक अर्थ का ही प्रतिपादन करते हैं। अन्य भाष्य-कारों की भाति मत्रगत भावों की व्याख्या नहा करते हैं। इसका कारण पाठकों की मनन शक्ति तथा विचार प्रवाहिणी शक्ति की रक्षा करना ही है।

उक्त विचारों को ध्यान मे रख कर वर्तमान काल मे उपलब्ध महर्षि दयानन्द के भाष्यो में प्रतीयमान शाब्दिक व आर्थिक त्रुटिया का समाधान हो जाता है। इस लेख मे हमने भाष्य की बहिरङ्ग परीक्षा ही करने का प्रयत्न किया है। किसी अन्य अवसर पर अन्तरङ्ग परीक्षा करने का प्रयत्न करेंगे।

हमारा साहित्य और स्त्री-समाज

सौ० कमलाबाई किबे

म॰य-श्रेणीके लोगों को सारे दिन कड़ी मेहनत के काम करने पड़ते है, इसलिए उन्हें यह मालूम ही नहीं पड़ता कि दिन कब बीता। थोड़ी बहुत जो फुरसत मिलती है, तो उसमे पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती है। किताब मोल लेकर पढ़ना तो बहुत दूर की बात है। यदि मुफ्त म पुस्तक मिल जाय, तो उसपर भी मुश्किल से ही ध्यान जाता है। वे यही कहते है—"हमे पढ़न का वक्त ही कहा है? काम करते-करते जी ऊब उठता है। थोड़ा आराम करने की भी फुरसत नहीं मिलती, फिर पढना कैसा? अगर पढें भी तो किताबें चाहिए, उन्हें मोल लेन के लिए पैसा नहीं है। किसी से मागने जायें तो देता नहीं। पुस्तकालयों मे तलाश करे, तो मातृ भाषाकी पुस्तकें रखने वाले पुस्तकालयों का अभाव है।" दूसरी ओर प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की यह चिल्लाहट सुनाई पड़ती है कि पाठको और और खरीदारो के अभाव मे उन्हें अपनी पुस्तकों की प्रतिया रद्दी के भाव मे बेचनी पड़ती है। इस बात मे सत्य का अश न हो, सो बात नहीं। हा कुछ लोगों को मुफ्त मे कोई किताब मिल जाय तो पढ़ने की अनिवार्य इच्छा हो आती है, लेकिन पुस्तक जिस हालत में मिलती है, उसी हालत मे उसका वापस आना बहुत कम होता है, पर इससे अधिक आशा करना भी फिजूल है।

इधर हमारे अनेक देशवासी सन्तोष की मूर्ति बने बैठे हैं। भविष्य में अच्छा समय आने वाला है, बस इसी आशा पर किसी वर्तमान हलचल में भाग लेना हराम समझते हैं—नशेबाजों की तरह सुखस्वप्न देखने मे ही व्यस्त। भविष्य मे नया जोश और नई स्फूर्ति आने की बात सोचते हैं; किन्तु स्फूर्ति रखने का जो प्रधान साधन है पुस्तकावलोकन, उससे स्वप्न मे भी परिचय प्राप्त नहीं करते। संसार के अनेकानेक विषयों के ज्ञान से भरी हुई पुस्तकें आप लोगों का उत्सुकता से मुह ताक रही है। बाहरसे निर्जीव दीखने वाली पुस्तक आपको घर बैठ सब प्रकार की जानकारी देने को सदा तय्यार रहती है। पुस्तकों का यह स्वाभाविक धर्म ही है कि मनुष्य जब चाहे, तभी वे उसे ज्ञान दान करने को प्रस्तुत है। उन्हें कभी आलस छू कर भी नहीं निकलता, पढ़ने वाले यदि उसकी उपेक्षा भी कर, तब भी वे उपका तिरस्कार नहीं करती, वरन् वे अपने पाससे निकलने वाले व्यक्ति की ओर भी प्रेम से निहारा करती हैं। तब जो उन्हें अपनावेगा, उसके प्रति उनमे कितनी सहानुभूति और आदर पैदा होगा, यह आप स्वयं सोच लीजिए। जो पुस्तक अपने मे भरा हुआ अगाध ज्ञान-भण्डार हमे हरदम सौंपने को तय्यार रहती है, उसे अपने पास से हटाना कितनी शरम की बात है। इसका अर्थ तो यही है कि 'सब सुख दाता कल्प वृक्ष के नीचे बैठकर भी मनुष्य अकिंचन ही रहे। कल्प वृक्षों को साधारण इतर वृक्ष समझने वाले नादान मनुष्य के समान ही हमारे समाजकी

सीधी राह पर ले जाने वाले अच्छे लेखकों की भी कमी है।

आजकल समाज मे पढने की कुछ-कुछ रुचि उत्पन्न हुई दीख पडती है। ऐसी परिस्थिति में पुरुषों और स्त्रियों के हाथ मे जो साहित्य पहुँचे वह उच्च कोटि का होना चाहिए। यदि ऐसा न होगा, तो समाज बाल्यवस्था में ही गलत रास्ते पर भटक जायगा, जिससे समाज और देश दोनों को हानि पहुँचेगी। ऐसा होने से उसका उत्तरदायित्व हमारे साहित्यनिर्माताओं पर होगा। भावी पौध के कल्याण पर दृष्टि रखकर हमारे साहित्यकारों को न्याय-बुद्धि, सगठन और विकार-रहित भावसे अपने इस कर्तव्यको निभाना चाहिए— विशेषकर इस बात में बहुत सतर्क रहना चाहिए कि हमारी महिलाओं के हाथ में जो पुस्तक जाय, वह ऐसी हो, जो उसके विचारों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे और उनके मन मे अच्छे संस्कार उत्पन्न करे। बात यह है कि कोई भी पुस्तक पढ़ने से उसका प्रभाव पाठक के मन पर पडता है—अच्छी का अच्छा, बुरी का बुरा। स्त्रियोंके स्वभाविक कोमल अन्त करण पर तो यह प्रभाव बहुत जल्द पड़ता है। इसलिए यदि हमारी देशी भाषाओं के लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यिक खोज-बीन करके अपनी-अपनी

भाषाओं की ऐसी पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर दें, जो विशेषकर महिलाओं के पढ़ने योग्य और हितकारी हो, तो देश का बड़ा उपकार हो इस काम को अनिश्चित समय तक के लिए उठा रखना हानिकारक है, क्योंकि महिलाएँ ही प्रत्येक समाज की आधार होती हैं, अत देश हितैषी साहित्यकारों का कर्तव्य है कि वे महिलाओं की सर्वांगीण उन्नति में सहायता पहुँचायें।

प्रति वर्ष अनेकों पुस्तके निकलती हैं, बहुत-सा सामयिक साहित्य भी पैदा होता है, किन्तु महिलाओं मे उन्हें पढ़ने वालियों की सख्या कितनी है? बहुत कम। यह बात ठीक नहीं है। मै यह मानती हूँ कि सब साहित्य एकदम नहीं पढ़ा जा सकता, फिर भी बराबर समय निकाल कर प्रयत्न करते रहने से बहुत कुछ पढा जा सकता है। दुर्भाग्य वश हमारे समाज में कितनी ही स्त्रिया ऐसी पाई जाती हैं, जो अंग्रेजी भाषा मे प्रकाशित कहानियों और उपन्यासों को पढने मे अपना गौरव समझती हैं, पर जब मातृ भाषा के ग्रन्थोंका प्रश्न आता है, तो वे कह बैठतीं हैं–"हमारी भाषा में पढने लायक चीज निकलती ही क्या है?"

ऐसी महिलायें क्या कभी अपनी सन्तान मे मातृभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न कर सकेंगी? क्या संकुचित विचारों की ये स्त्रिया आदर्शमाता बन सकती हैं? इस प्रसग में एक घटना का वर्णन कर देना अनुचित न होगा। एक मुख्य विद्यालय की अध्यापिका से मैंने पूछा—"क्या आपके विद्यालय मे खास खास धार्मिक ग्रन्थ पढाये जाते है?" उक्त अध्यापिकाजी ने तुरन्त ही उत्तर दिया "पाठ्य-विषय तथा विद्यालय-सम्बन्धी अन्य व्यवहारिक कार्य ही कौन थोड़े हैं, जो धार्मिक ग्रन्थों का बोझ सिर पर लादा जाय?" यह उत्तर सुनकर मैं आश्चर्य में आ गई। जिन शिक्षिकाओं के हृदय मे धार्मिक ग्रन्थों के प्रति ऐसी भावना हो, वे लड़कियों को धर्म का ज्ञान क्या देंगी? अच्छा भाई

धार्मिक भावना से नहीं, बल्कि सुन्दर, ग्रंथ समझ कर ही हमारी बहनें यदि वाल्मीकि रामायण और महाभारत पढ़ें, तो उनको कितना बौद्धिक लाभ होगा ? जब महिलाएं इन राष्ट्रीय ग्रन्थों का इतना आदर करती हैं, तो फिर अशिक्षिता स्त्रियों के विषय में क्या कहना।

जिन स्त्रियों के हृदय में राष्ट्रीय ग्रन्थों के प्रति ऐसी उपेक्षा हो, उनकी लडकियों मे राष्ट्रीय विचार कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ? बच्चों को क्या क्या अवश्यमेव पढ़ाया जाना चाहिए, इसका एक पाठ क्रम बनाने की जरूरत है।

अपनी मातृभाषा के ग्रन्थों का अध्ययन तो नित्यप्रति कर्तव्यकी भाति होना चाहिए। स्वय तो पढ़ना ही चाहिए, अन्य भाई-बहनोंको भी स्वाध्याय की आदत डालने के लिए प्रेरित करना चाहिए। सुन्दर विचारों से परिपूर्ण पुस्तक तो संसार के असख्य रत्नों से भी अधिक मूल्यवान है। यदि किसी आदमी के पास अगणित द्रव्य हो, तो वह रत्नों को खरीद सकता है, शूर सैनिकोंकी सहायता से मनुष्य सम्राट भी भले ही बन जाय, पर यदि प्रतिभाशाली लेखककी प्रतिभा वाचकोंके अभावसे निरुत्साहित होकर लुप्त हो गई, तो वह किसी मूल्यपर भी वापस नहीं मिल सकती। मातृभाषा की अभिवृद्धि के लिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्तव्य है कि वह यथाशक्ति द्रव्य, लेख अथवा प्रोत्साहन द्वारा अपने लेखकसमाजकी सहायता करे।

हमारी मातृभाषामें जो ग्रन्थ निकलते हैं, उनपर मासिक पत्रों तथा समाचार पत्रों में सम्मतियां तथा आलोचनाएँ प्रकाशित होनी चाहिए जिससे लेखकोंको प्रोत्साहन मिले। जनता को यह बतलानेकी आवश्यकता है कि कौन-कौन से ग्रन्थों में क्या क्या विचार हैं। वह दिन बड़े सौभाग्य का होगा, जब अपने देशके श्रेष्ठ कवि, उत्तम, प्रतिभाशाली नाटक रचयिता और उच्चकोटिके दार्शनिकोंक विचारों से हमारे घर-घर के छोटे-बड़े सभी परिचित होंगे। अभी उस दिन एक बड़े घराने की महिलासे मैंने कवीन्द्र रवीन्द्रनाथका जिक्र किया, तो मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि कवीन्द्रके विषय मे वे बिलकुल नहीं जानतीं। मेरा ऐसा ख्याल नहीं था कि हमारे लक्ष्मीपतियोंने विद्वानोंको अपने घरसे इतनी दूर रखा है। बिजली के छू जानेसे जैसा धक्का लगता है, वैसा ही धक्का मुझे उपर्युक्त घटनासे लगा।

अन्तमें एक बात और निवेदन कर दू। आज-कल पढ़ी-लिखी स्त्रियोंमें भी एक बुरी आदत पड़ती जाती है, वह यह कि अपनी मातृभाषा बोलते समय वे अगरेजी शब्दों का व्यवहार करने लगती हैं। यह लक्षण ठीक नहीं है। मेरी प्रार्थना इतनी ही है कि बोलना किसी एक ही भाषा मे चाहिए, जब मातृभाषामें बोलना हो, तब शुद्ध मातृभाषामे और जब अगरेजीमे बोलना हो, तो केवल अंगरेजी मे। दोनों भाषाओंकी खिचड़ी बनाना ठीक नहीं।

अपनी मातृभाषाका प्रयोग शुद्ध रीतिसे हो और उसकी दिनों-दिन वृद्धि हो, इसके लिए प्रयत्न करना प्रत्येक स्त्री-पुरुषका कर्तव्य है। दृढ़ इच्छाशक्तिवाला एक व्यक्ति भी अपनी कार्यक्षमता से जब परिस्थितिको बदल सकता है, तो फिर यदि हम मिलकर अपनी मातृभाषाके साहित्यके भडार की पूर्तिका प्रयत्न करें, तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी। (विशालभारत)

शंका समाधान

(क्रमागत)

इन शङ्काओं के समाधान के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय जिम्मेवार है।

—सम्पादक

Questions —

IV SAMSCARAS

1 Which of the Samscaras do you consider essential for the present age and which unessential ?

2 Which of the Samscaras should, in your opinion, be made obligatory and which optional ?

V MARRIAGES

1. Of the different forms of Marriages in vogue at the present time, which do you think are suited to the present conditions of the country, and which of them are to be condemned ?

2 What are your views regarding (a) inter-caste marriages, (b) inter-racial marriages, (c) early and unequal marriages and (d) civil marriages ?

3 What do you think is the reasonable age for a boy or a girl to marry ?

4. Do you think pre-puberty marriages should still continue ?

5. What are your views regarding 'Varasulkam' and 'Kanyasulkam' ?

Answers —

1 The 16 are prescribed, the most essential being all of them but the most common are . Jatakarma, Namakarana, Annaprasana, Chudakarma, Karnavedha, Upanayana, Vivaha and Antyesthi

2. The above eight may be made obligatory and others may be left to the option

1 Only one form of marriage which is performed with the due Panigrahana ceremony is to be welcomed,

2 There should be no prejudice against inter-caste marriages In fact, the Arya Samaj dose not recognise the present caste system of the Hindu Society So the inter-caste question does not arise There is nothing against inter racial

marriages also The question is of political and social importance Early and unequal marriages should be stopped If the intercaste marriages become legal under the ordinary circumstances, civil marriages would become meaningless

3 24 for a boy and 16 for a girl is the ideal minimum It may be provisionally lowered to 20 and 14 but not less

4 There is no meaning to pre puberty marriages. They should be altogether stopped.

5 Vara or Kanya sulkam are abhorring terms Nothing in the name of dowry or contract should be permissible and a strong opinion against it should be created

प्रश्नः—

संस्कार

१. आपकी सम्मति मे वर्तमान काल मे कौनसे संस्कार जरूरी हैं और कौनसे गैरजरूरी हैं ?

२ आपकी सम्मति में कौनसे संस्कार अनिवार्य्य और कौनसे ऐच्छिक होने चाहिएं ?

विवाह

१ विवाह के भिन्न २ रूपों में से जो आजकल प्रचलित हैं आप किन्हें देश की वर्तमान अवस्थाओं के अनुकूल समझते हैं और किनको त्याज्य समझते हैं ?

२ अन्तर्जातीय, अन्तर्प्रान्तीय बाल तथा अनमेल विवाह तथा सिविल विवाह के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ?

३ आपकी सम्मति मे लडके और लड़की की विवाह योग्य कम से कम क्या उम्रें होनी चाहिएं ?

४ क्या आपकी सम्मति में युवावस्था से पूर्व अर्थात् अपरिपक्व अवस्था की शादियां अब भी जारी रहनी चाहिएं ?

५ वरशुल्क और कन्याशुल्क के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

उत्तरः—

१ १६ संस्कारों का विधान है। ये सब ही आवश्यक हैं परन्तु निम्न बहुत प्रचलित हैं—

जातकर्म्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, विवाह और अन्त्येष्टि।

२ ये आठों संस्कार अनिवार्य्य तथा अन्य ऐच्छिक ठहराए जा सकते हैं।

१. विवाह का केवल वही रूप स्वागत योग्य है जो पाणिग्रहण संस्कार के उचित अनुष्ठान के द्वारा पूर्ण हो।

२ अन्तर्जातीय विवाहों का विरोध नहीं होना चाहिए। वास्तव मे आर्य्य समाज हिन्दू समाज की वर्तमान जात-पात की पद्धति को स्वीकार नहीं करता है इसलिए अन्तर्जातीयता का प्रश्न नहीं उठता है। अन्तर्जातीय विवाह के विरुद्ध भी कोई बात नहीं है। समस्या एक राज-

नैतिक और सामाजिक महत्त्व की है। बाल तथा अनमेल विवाह बन्द हो जाने चाहिएँ। यदि सामान्य अवस्थाओं में अन्तर्जातीय विवाह जायज होजायँ तो सिविल मैरेज का कोई अर्थ न रहेगा।

३. विवाह की कम से कम आदर्श आयु लड़के की २५ और लड़की की १६ है। आरजी तौर पर यह २० और १४ भी की जा सकती है परन्तु इससे कम किसी अवस्था में भी नहीं होनी चाहिए।

४ अपरिपक्व अवस्था के विवाहों का कोई अर्थ ही नहीं है वे बिलकुल बन्द हो जाने चाहिएँ।

५ 'वर और कन्या शुल्क' दोनों घृणित शब्द है। दहेज वा सौदे के नाम पर कुछ भी विहित नहीं है। और इसके विरुद्ध जबरदस्त लोकमत पैदा होना चाहिए।

शंका (२)

आर्य्य समाज के उपनियम (क) से विदित होता है आर्य्य सभासद् बनने के लिए 'सदाचार' से रहने की व्यवस्था दी हुई है। कृपा करके व्यवस्था दीजिए कि क्या कोई पुरुष एक समय में दो विवाहिता स्त्रियां रखते हुए किसी आर्य्य समाज का सदस्य सिद्धान्तानुसार हो सकता है? जब कि प्रथम विवाहिता स्त्री सर्वथा स्वस्थ्य हो—

समाधान

इस मामले में उपनियम स्पष्ट है। सदाचार की व्याख्या में पतिव्रत और पत्नीव्रत को भी शामिल किया गया है। एक से अधिक स्त्री के साथ विवाह करना पत्नीव्रत के सर्वथा विरुद्ध है इस लिए वह सिद्धान्तानुसार समाज का सदस्य नहीं हो सकता है।

शंका सं० (३)

(१) क्या स्वामी दयानन्द जी महाराज ने कहीं पर अपने पत्र-व्यवहार में नियोग के स्थान पर पुनर्विवाह या विधवा विवाह पर बल दिया है। क्या पुनर्विवाह या विधवा विवाह आर्य्य समाज की दृष्टि से विधेय है।

(२) आर्य्य समाज के वर्तमान सिद्धान्तों में (नियमों में नहीं) परिवर्तन करने का आर्य्य समाज को अधिकार है?

समाधान

(१) विधवा विवाह विधेय है। इसके पक्ष में ऋषि के पूना के व्याख्यान और मथुरा-शताब्दी का प्रस्ताव है।

(२) स्मार्त सिद्धान्तोंका परिवर्तन होसकता है।

शंका समाधान पर शंका

सितम्बर १९३७ ई० के सार्वदेशिक पत्र में पृ० ३०६ पर शंका समाधान प्रकरण में जो उत्तर छपे हैं उनमें सं० ३ का उत्तर अभावात्मक उचित नहीं है।

काम्य यज्ञों में पुत्रेष्टि-यज्ञ भी एक है प्राचीन काल में इसकी पद्धति जहां तहां काम में लाई जाती थी। इसकी वह शुद्ध विधि लुप्त थी जिसे १५-१६ वर्ष के परिश्रम से सन् १९३६ ई० में तैयार करके छापा गया है। इस सचित्र पुत्रेष्टि यज्ञ में लेखक द्वारा किये गये यज्ञों से उत्पन्न हुए २ बहुत से बालकों का सचित्र परिचय भी भूमिका में दिया गया है।

चारों वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, और आयुर्वेद को मथ कर पूर्ण अनुभव के साथ यह "पुत्रेष्टि-यज्ञ" छापा गया है। इस व्याख्या को आर्य्य समाज के विद्वानों और पत्रों ने पसन्द किया है।

संयुक्त प्रान्त में आर्य-वीर-सेवादल की वृहत् आयोजना

सार्वदेशिक सभा की आर्य्य-रक्षा समिति के सहायक मन्त्री जी का प्रस्तावित दौरा

आर्य्य-रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्रीयुत बा० शिवचन्द्र जी ने निम्न विज्ञप्ति आर्य्य-सामाजिक प्रेस में भेजी है —

संयुक्त प्रान्त की जिन जिन आर्य्य-समाजों में आर्य्य वीर सेवादल अभी तक स्थापित नहीं हुये हैं वहाँ पर यह दल मेरठ में होने वाले जयन्ती महोत्सव से पूर्व स्थापित हो जाने चाहिये ताकि जयन्ती के अवसर पर आर्य्य रक्षा समिति द्वारा स्वीकृत संयुक्त प्रान्तीय आर्य्य वीर सेवादल समितिका सगठन होसके।

आज युवक समुदाय आर्य्य समाज से निराश है और इसकी ओर आकर्षित नहीं होता है। इसके कई कारणों में से एक मुख्य कारण यह है कि इस समय आर्य्य समाज की ओर से उनके सन्मुख संगठित रूप से कोई रचनात्मक प्रोग्राम नहीं रक्खा हुआ है। युवक का जीवन उत्साह और उमंग का जीवन होता है। जहां भी कहीं उसे इन गुणों का विकास करने का अवसर मिलता है वहीं वह आता है। आज उसे आर्य्य समाज में वह अवसर प्राप्त नहीं है। इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि आर्य्य-समाज देश के युवकों के सम्मुख एक ऐसा क्रियात्मक तथा रचनात्मक प्रोग्राम रक्खे जो उनके उत्साह को आगे बढ़ाने वाला हो जिससे वे आर्य्य समाज के भविष्य को आशामय और उज्ज्वल बना सकें। आर्य्य-वीर सेवादल के प्रोग्राम को इस प्रकार का बनाने का यत्न किया जा रहा है जिससे उक्त अभाव की पूर्ति की जा सके।

ऐसा विचार है कि जयन्ती के अवसर पर आर्य्य-वीर सेवादल सम्मेलन करने से पूर्व इस योजना में विशेष रुचि रखने वाले कुछ मुख्य व्यक्तियों को लगातार कई दिवस तक बैठक की जावे और उनमें गम्भीरता पूर्वक यह विचार किया जावे कि आर्य्य वीर सेवादल के कार्य को किस प्रकार विस्तार दिया जावे। इसके द्वारा युवकों को किस प्रकार आर्य्य समाज की ओर आकर्षित किया जावे तथा आर्य्य समाज मे आई हुई निराशा और शिथिलता को किस प्रकार दूर करने मे यह सेवादल सहायक हो सकता है।

आशा है आर्य्य समाजें शीघ्र से शीघ्र आर्य्य वीर सेवादल स्थापित कर उसकी सूचना मुझे तथा पं० शिवदयाल जी, सदर, मेरठ को देने की कृपा करेंगी। आर्य्य वीर सेवादल के नियम तथा प्रवेशपत्र आदि सार्वदेशिक सभा से मिल सकते है।

आर्य्य वीर सेवादल की योजना को संयुक्त प्रान्त में सफल बनाने के लिये दिवाली के पश्चात् मैं अपना दौरा आरम्भ करूँगा। मेरा प्रोग्राम इस प्रकार होगा। कृपया इन समाजों के मन्त्रीगण नोट कर लें —

६—७ नवम्बर मुरादाबाद, ८—१० चन्दौसी,

११—१२ बरेली, १३—१४ शाहजहाँपुर, १५—१६ हरदोई, १७—१९ लखनऊ, २०—२१ फैज़ाबाद, २२—२५ बनारस, २६—२८ बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, २९—३० मिर्जापुर, १ दिसम्बर—४ इलाहबाद, ५—६ फतेहपुर, ७—८ कानपुर, ९—११ आगरा, १२ मथुरा, १३ गुरुकुल वृन्दावन।

यदि उक्त प्रोग्राम मे किसी प्रकार का परिवर्तन करना पड़ा तो उसकी सूचना पत्र अथवा तार द्वारा दे दी जावेगी।

मेरे दौरे के सम्बन्ध मे जो मीटिंग बुलाई जावे, उस मे यथासम्भव केवल आर्य पुरुषोको ही सम्मिलित किया जावे। आर्य्य युवको को विशेष रूप से सम्मिलित करने का यत्न किया जावे।

सिवाय आर्यसमाज चन्दौसी के अन्य समस्त समाजो मे उसी दिन सायकाल को जिस दिन मैं पहुँचूँ मीटिंग बुलाने का प्रबन्ध किया जावे। मीटिंग बुलाने का समय सायंकाल के ७ बजे से पूर्व और ७॥ बजे के पश्चात न रक्खा जावे! समय की पाबन्दी की जावे।

जिन शहरो मे एक से अधिक आर्यसमाजें हों वहा पर वहाँ की सबसे बड़ी समाज म मीटिंग बुलाने का प्रबन्ध किया जावे।

शुद्धि-समाचार

गत १ अक्टोबर को मिस अरोहा मोआना हार्ड केसिल (Miss A H Hard Castle) नामक एक अंग्रेज़ महिला की शुद्धि हिन्दू धर्म्म में श्रीयुत जगद्‌गुरु शंकराचार्य (कुर्तकोटि) द्वारा बम्बई मे हुई। यह देवी स्विटज़रलैंड मे पैदा हुई थी और वहीं उनकी शिक्षा हुई थी। स्विटज़रलैंड की यूनिवर्सिटी की आप एम ए हैं और रोम तथा यूनान के धर्म्म और दर्शन ये उनके रिसर्च (अनुसन्धान) विषय रहे थे। गत वर्ष वे भारत मे पधारी थीं और अध्ययन तथा अनुभव ने उन्हें आर्य्यधर्म्म को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया था। इस अवसर पर श्री जगद्‌गुरु ने आर्य्य धर्म्म की महत्ता पर अच्छा प्रकाश डाला था। उनके भाषण का सार इस प्रकार है —

'हिन्दू धर्म्म संसार के प्रचलित धर्म्मों में सबसे अधिक सहिष्णु है यह बात इसके आन्तरिक भाव को ठीक २ समझने से स्पष्ट होती है। जो लोग जिनमें बहुत से हिन्दू भी शामिल हैं यह कहते हैं कि आर्य्य धर्म्म के दर्वाजे बाहर वालों के लिए बन्द हैं वे गलती पर हैं।

सनातन आर्य्य धर्म्म का वर्तमान हिन्दू-धर्म्म विकृत वा परिवर्तित रूप है और इस परिवर्तन की वजह से ही लोग इस प्रकार की गलती कर बैठते हैं। आर्य्य धर्म्म समस्त कालों और समस्त लोगों के लिए था और इस गलती की वजह से ही वह हिन्दुस्तान तक ही कट्टर ब्राह्मणों द्वारा परिमित कर दिया गया था। वास्तव मे हिन्दू धर्म्म का वह रूप जो प्राचीन काल के आर्य्यों के धर्म्म के साथ सम्बन्ध स्थिर रख सका है उदार और सहिष्णु होगा क्योंकि मानव-इतिहास के प्रारम्भ से ही आर्य्य जाति ही सबसे अधिक उदार और सहिष्णु रही है।—हमारा कर्त्तव्य है जो लोग इस धर्म्म के प्रासादों से लाभ उठाना चाहें उन्हें लाभ उठाने दें। ऐसा न करना स्वार्थपरता और अधार्मिकता है और हिन्दू धर्म्म की स्प्रिट के विरुद्ध है।

'हिन्दू धर्म्म भेड़ें नहीं मूंडता है और इसका कारण यह है कि हमारा धर्म्म सहिष्णुता पर आश्रित है। हमारा कर्त्तव्य है हम अपनी भुजाओं को पसारें और पश्चिम के उन लोगों का स्वागत करें जो हममें आना चाहें और उन आध्यात्मिक प्रसादों का भोग करना चाहें जो हिन्दू धर्म्म हमें प्रदान करता है। परन्तु मैं इस अवसर पर यह चेतावनी दूंगा कि जब हम अपने मे नए भाइयों और बहनों को मिलाएँ तो हमें इस पर खुशी से फूलना नहीं चाहिए। हमारा व्यवहार ऐसा भी नहीं होना चाहिए मानो हमने दूसरे मत पर विजय प्राप्त की है। यह धार्मिक भावना नहीं है और निश्चय ही आर्य्य धर्म्म की भी यह भावना नहीं है। हम केवल पथ प्रदर्शकों और सहायकों के रूप मे ही अपने दायरे मे नए आगन्तुकों का स्वागत करेंगे। पश्चिम के कुछ लोग हममें मिल गए हैं और हमारे धर्म्मानुयायी हो गए हैं इस पर हमें विजय दुंदुभि नहीं बजानी

चाहिए। क्यों ? इसलिए कि हमने कभी संख्या बढ़ाने की नहीं सोची है। हमारी जाति ने कभी भी मुट्ठी भर से सौ, सौ से हजार और इससे आगे लाख, करोड़ इस प्रकार के अनुपातों में उन्नति नहीं की है। हमें कोई समय याद नहीं है जब हम मुट्ठी भर थे। हम सदैव एक बड़ी जाति और एक बड़ा परिवार थे।

मैं बड़े प्रेम से कुमारी हार्ड कैंसिल का जो इसके बाद 'अरुणा' के नाम से सम्बोधित होगी। आर्य्य धर्म्म में स्वागत करता हूँ। मैं उनके सुख और प्रसन्नता की कामना करता हूँ। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि वह उन लोगों के साथ रहेंगी जो उनकी दृष्टि में असभ्य होंगे और कभी २ उनके भावों को ठेस पहुँचाएँगे और न उन्हें यह अनुभव करना चाहिए कि अपने बचपन के धर्म्म से उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। उनके नए धर्म्म में सब श्रेष्ठतम शिक्षाएँ उन्हें मिलेंगी जो व्यापक रूप में उनका प्राचीन धर्म्म हा है। मैं उनसे कहूँगा कि वे हिन्दू देवी के रूप में अपना नया जीवन यापन करें।

मेरी कामना है कि कुमारी अरुणा हिन्दू समाज में बहुमूल्य योग सिद्ध होंगी और अपनी उपस्थिति से सदैव उसे आल्हादित करेंगी।

———

साहित्य-समीक्षा

'अग्नि-होत्र' (अंग्रेजी)

श्रीयुत डा० सत्यप्रकाश रसायन शास्त्र के विद्वान हैं। वैज्ञानिक आधार पर अग्निहोत्र और उसकी महत्ता के अध्ययन का आपका मौलिक प्रयास सर्वथा स्तुत्य है प्रस्तुत पुस्तक मे आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अग्नि-होत्र की विवेचना की गई है। आज के भौतिक उपयोगितावाद के युग में प्रत्येक बात को तर्क तथा वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर ग्रहण करने वाली जनता के लिए विषय की सूक्ष्म आध्यात्मिक विवेचना न करके, आपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही, अग्निहोत्र की भौतिक उपयोगिता सिद्ध की है। पूर्वीय सस्कृतिकी प्रत्येक बात को अन्धविश्वास और धार्मिक ढकोसले के नाम से पुकारने वाले व्यक्तियों के प्रति एक सच्चे वैज्ञानिक के नाते आपने एक महत्व पूर्ण विषय पर प्रकाश डालकर अपना कर्त्तव्य पालन किया है। पुस्तक की उपादेयता इस कारण और भी बढ़ जाती है कि अग्निहोत्र जैसे आवश्यक विषय के अध्ययन के लिए इससे पश्चिमी विद्वानो को भी प्रेरणा मिलेगा।

प्रारम्भिक अध्यायों में आपने अग्निहोत्र के लिए आवश्यक ज्ञान का सकलन किया है। अग्नि होत्र के विविध कृत्यो का विश्लेषण करते हुए आपने बतलाया है कि इसकी रीति पूर्णत वैज्ञानिक है। यज्ञ का समय उसके उपकरण, यज्ञ के आरम्भ मे अग्नि प्रतिष्ठा, समिधा प्रदान तथा एक नियमित समयान्तर से वैदिक मन्त्रों के अन्तमें आहुतियों का दिया जाना, घृताहुतियो का सामग्री की आहुतियों से पूर्व विवरण आदि सम्पूर्ण बातें एक निश्चित वैज्ञानिक ढग पर रखी गई हैं उपयुक्त सम्पूर्ण क्रियायें यज्ञ कुण्ड में प्रतिष्ठित अग्नि को शनै शनै एक नियमित रूप से बल देकर प्रज्वलित करने मे सहायक बनती है। विचारन से स्पष्ट हो जाता कि इन क्रियायो मे जरा सा व्यतिक्रम होने से भी अग्नि का स्थिर रूप से प्रज्वलित रहना असम्भव हो जायगा अग्नि प्रतिष्ठा के उपरान्त यदि घृत की समिधायो का विधान न रखा जाय, अथवा समिधाप्रदान की क्रिया से पूर्व पच घृताहुतियों का विधान रखा जाय, और सामग्री की आहुतियों को घृताहुतियों मे पूर्व ही रखा जाय तो ये सब क्रियाएं जो एक वैज्ञानिक शृङ्खला में आबद्ध होकर अग्नि के प्रज्वलन मे सहायक होती हैं, प्रत्येक प्रकार से उस कार्य मे बाधक बन जाये। अस्तु अग्नि के नियन्त्रित तथा नियमित रूप से जलने के लिए ही इन सब क्रियाओं को एक विशेषक्रम मे बाधा गया है।

अगले अध्याय म यज्ञ मे काम आने वाले काष्ठ, बनस्पतियो तथा अन्य पदार्थों का वर्णन, गुण विवेचन तथा वैज्ञानिक विश्लेषण है। इन पदार्थों का गुण-विवेचन सस्कृत, बगला, अरबी फारसी तथा अ ग्रेजी ग्रन्थो के आधार पर किया गया है। पदार्थो के रासायनिक विवेचन में पारिभाषिक शब्दो का प्रयोग सर्व साधारण को कठिन जान पड़ेगा।

रासायनिक प्रक्रियाओ का वर्णन करते हुए आप लिखते हैं कि हमारे पूर्वज इस तथ्य पर पहुच चुके थे कि प्रत्येक वस्तु के परमाणु अग्नि के सम्पर्क द्वारा अधिक क्षमता पूर्ण तथा प्रभावशाली बन जाते है। जल अपने मूल गुणो को अक्षुण्ण रखते हुए बाष्प में परिवर्तित

लेखक—श्री सत्यप्रकाश डी०एस०सी। प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली। कागज़ छपाई सुन्दर सजिल्द पुस्तक का मूल्य २।) विदेश से ४ शिलिंग।

होते ही शक्ति का रूप धारण करलेता है। अग्निहोत्र की सम्पूर्ण उपादेयता इसी सिद्धान्त पर स्थिर है। यदि औषधियो का मूल रूप में ही सेवन किया जाय तो वे इतनी गुणकारी सिद्ध न होगी जितनी वे अग्नि के सम्पर्क में आकर बन जाती है। इस प्रकार अग्निहोत्र के वायु मिश्रित सूक्ष्म तत्त्व हमारे शरीर मे प्रवेश कर हमे ही स्वस्थ नही बनाते, अपितु हमारे लिए एक स्वास्थ्यकर वातावरण भी पैदा करते हैं, जिससे हमारे प्राणो को बल मिलता है। पाश्चात्य वैज्ञानिक प्राय १८वीं शताब्दि तक जलने की वास्तविक प्रकृति से अनभिज्ञ थे केवल इस विचार को ध्यान मे रखते हुए हमें अग्नि होत्र की अवहेलना न करनी चाहिए। हमारे ऋषियों ने शायद अपनी अनुभूतियों तथा अनुभव के आधार पर ही अग्निहोत्र की उपयोगिता को समझ लिया था, और उसके लिए इस प्रकार की वनस्पतियो को भी चुन लिया था जो हमारे लिए स्वास्थ्यकर एव बलप्रद हों। अपने अनुभव के आधार पर ही सम्भव उन्होंने यह भी जान लिया था कि अग्नि होत्र की क्रिया द्वारा हम बहुत से सक्रामक रोगा से मुक्त रह सकते हैं। आधुनिक वैज्ञानिको ने भी फ़िनाइल सदृश कतिपय कीट नाशक औषधियो का आविष्का किया है। विद्वान लेखक ने अपने वैज्ञानिक अनुभव द्वारा यह सिद्ध किया है कि अग्नि होत्र की रासायनिक प्रक्रिया मे कई प्रकार के एमिड तथा फिनाइल जैसे अनेक पदार्थ उत्पन्न होते है जो निश्चित रूप से कीट नाशक तथा सक्रामक रोगो से रक्षा करने वाले हैं।

प्रारम्भ के अध्यायो मे बताया गया है कि अग्निहोत्र में विभिन्न काष्ठ, वनस्पति, मेवा आदि काम म आते हैं। अग्नि का तापमान पर्याप्त ऊचा तथा क्रमश परिवर्तनशील रहता है। १२०० सेंटी ग्रेड से १३००° सेंटी ग्रेड अशो तक अधिक से अधिक रहता है। लपटो के बुझ जाने पर २२० सेन्टी ग्रेड से ६००° सें० अ श तक ताप रहता है। यह ताप कतिपय रासायनिक क्रियाओ के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। २००° से ३५०° अंश तक का ताप चन्दन अगर, देवदारु तथा ऊचे ताप से उबलने वाले अन्य सुगन्धित पदार्थ के तैल तत्वो को वायु मे मिला देता है। इसी प्रकार अन्य पदार्थ अपने अनुकूल ताप पर वायु मे मिलते रहते है। वायु मे मिश्रित होने की क्षमता रखने वाले तत्वो के वायु में मिलने के उपरान्त एक और महत्वपूर्ण रासायनिक क्रिया होती है जिसे फोटो कैमिकल रीएक्शन कहते है। सूर्य की किरणो के सम्पर्क से वायुमिश्रित इन तत्वो मे जो परिवर्तन होता है, वह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपादेय होता है।

पुस्तक के अन्त में ऋतुओ के अनुकूल सामग्री के परिवर्तन शीर्षक पाठ में आपने सामग्री मे इसप्रकार को पूर्णत वैज्ञानिक सिद्ध किया है।

हमे आशा है कि अ ग्रेज़ी पाठकों में पुस्तक का यथेष्ट समादर होगा। इस प्रकार के साहित्य का हिन्दी मे प्राय अभाव-सा ही है। ऐसी उपयोगि पुस्तक के अनुवाद की अ यन्त आवश्यकता है। विदेशी चकाचौध मे आकर जो लोग हवन की खिल्ली उडाया करते है उन्हे श्री डाक्टर सत्यप्रकाश जी की लिखी इस पुस्तक को अवश्य पढना चाहिए। इससे उन्हे विदित होगा कि अग्नि होत्र की विधि कितनी विज्ञानमूलक, उपयोगी और अनिवार्य है।

श्री सत्यप्रकाश जी डी० एस० सी० के परिचय के सम्बन्ध मे इतना कह देना काफ़ी है कि आप श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के सुयोग्य पुत्र और इलाहबाद यूनिवर्सिटी मे विज्ञान के अध्यापक है। डाक्टर साहब ने प्रस्तुत पुस्तक अपने पूज्य पिता जी को ही समर्पित की है। (आर्य्यमित्र)

लेख-सूची

—०—

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)

(१) इस समय इम अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाए है और शीत ऋतु आरहा है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएगे वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयो की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकडे थे जिनके सबधियो का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे है।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं। उनके पढाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

, प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

,, डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

❀ सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र ❀

वर्ष ११ | मार्गशीर्ष १९९४ | दिसम्बर १९३७ ई० | दयानन्दाब्द ११३ | अङ्क १०

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता । Yaju 32-10

वह हमारा बन्धु, उत्पादक और पालक है ।

The Lord is our Friend Creator and Sustainer

स न इन्द्रः शिवः सखा । Rig 8 93-3

वह परमेश्वर हमारा कल्याणकारी मित्र है ।

The Lord is our Gracious Guide and Friend

सम्पादकीय—

आर्य्य समाज का भविष्य

श्रीयुत माननीय म० कृष्ण जी ने अपने पत्र 'प्रकाश' मे 'आर्य्य समाज का भविष्य' शीर्षक एक लेख लिखा है। उसमें उन्होंने इस समस्या पर विचार किया है कि इन दिनों आर्य्य समाज की ओर नवयुवक क्यों नही आकर्षित होते हैं और आर्य्य समाजियों के बच्चे आर्य्य समाज में क्यों नही आते हैं। श्री महाशय जी आर्य्य समाज के पुराने और अनुभवी सेवक हैं। हमे आशा थी कि वे इस समस्या पर जो इस समय आर्य्य समाज की एक अत्यन्त महत्व पूर्ण समस्या है ऐसा प्रकाश डालेंगे और इसका ऐसा हल प्रस्तुत करेंगे जिसके सम्बन्धमे कुछ कहनेकी आवश्यकता शेष न रहेगी परन्तु खेद है उसके सम्बन्ध में बहुत कुछ कहने की आवश्यकता शेष रह गई है।

आर्य्य समाज की ओर नवयुवकों के आकर्षित होनेके सम्बन्ध मे जो चर्चा श्री कृष्ण जी ने अपने पत्रमे की है उसको पढकर तो यही कहना पडता है कि "दोनों पक्षोमे बहुत कुछ कहा जासकता है।" "आर्यसमाज की ओर नवयुवकोंको आकर्षित करना चाहिए, वह इस समय आकर्षित नहीं हो रहे, यदि आर्य समाजियो के लडके आर्य समाज मे नही आते तो कोई मुजायका नहीं, हमे आर्य समाज के बाहर के नवयुवकों को खीचना चाहिए, पर करें क्या रोटी का प्रश्न तथा राजनैतिक अवस्थाएँ नवयुवकों को आर्य समाज मे नहीं आने देती।" 'इस प्रकार के विचार प्रकट करते हुए, अपने लेख के अन्त में श्री म० कृष्ण जी अपने पाठकों को यह प्रेरणा करते हैं कि "आदर्शवादी बनो, आदर्श को हर समय अपने सामने रक्खो, विश्वभर को आर्य बनाओ।"

हमें इस लेख का बहुत कुछ अंश अप्रासंगिक प्रतीत हुआ है, ऐसा कहने के लिए हम अपने भाई से क्षमा मागते हैं। प्रश्न यह है कि आर्य समाज में नवयुवक क्यो नहीं आते? इसका उत्तर सीधे तौर पर हमे देने का यत्न करना चाहिए। आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का इस प्रश्न से कोई सम्बन्ध नही और यदि कोई है भी तो उसके विचार करनेकी हमें यहां आवश्यकता प्रतीत नही होता।

नवयुवकों को आकर्षित करने के लिए नवयुवकों जैसे हृदय रखने वाले, उनके समान ऊंची आकांक्षाओं में ओत प्रोत रहने वाले, उदार-हृदय विशाल व्यक्तित्व रखने वाले, अपने तन, मन, और धन को नवयुवकों के अर्पण करने वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। हम पूछते हैं कि ऐसे व्यक्ति इस समय आर्य समाज में कहा हैं? आर्यसमाज के प्रारम्भिक जीवनमें महात्मा हंसराज तथा महात्मा मुंशीराम जी ने अनेक नवयुवकों के लिए अपने आपको आकर्षण का केन्द्र बनाया था और उनके हित के लिए वे अपने आपको सर्वदा अर्पण करनेके लिए तय्यार रहते थे। सैंकड़ों नवयुवक इस समय ऐसे मिलते हैं जिनकी आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक सहायता इन महापुरुषों ने की थी। उनका यह गुण अर्थात् आत्मसमर्पण नवयुवकोंके लिए आकर्षणका कारण

बनता था।

स्वर्गीय पण्डित केशवदेव जी शास्त्री आर्य समाज के क्षेत्र में सम्मोहनी शक्ति से युक्त प्रभाव शाली व्यक्तित्व के मालिक थे। जहा वे रहते थे, देश के कोने २ से सब प्रान्तों के नवयुवक उनके पास खिंचे चले आते थे। उनका घर विद्यार्थियों के लिए एक आश्रम का रूप धारण किए रहता था, उनकी कमाई नवयुवकों के लिए साझी कमाई समझी जाती थी। नवयुवक स्थान २ से उनसे पत्र व्यवहार द्वारा अपन सुख दुख का वृत्तान्त लिखते रहते थे और शास्त्री जी सदैव उनके पत्रों का आशा-भरी भाषा मे उत्तर देना अपना गौरव समझते थे। इस समय जब हम उनके व्यक्तित्व का चिन्तन करते हैं तो हमे उनके समान आर्य्य-समाज में दूसरा व्यक्ति देखने में नही आता।

आर्य समाज के नेता नि सन्देह आर्य समाज की सेवा में लग रहे हैं परन्तु नवयुवकों की समस्याओं को सुलझाने, उनकी आकाक्षाओं में उनका साथ देने तथा उनके जीवन-मार्ग पर उनके साथ चलने के लिए बिरला ही कोई व्यक्ति इस समय हमे देख पड़ता है। यही कारण है कि आदर्शवादी नवयुवक आर्य समाज के निकट आना पसन्द नहीं करते।

बाकी रही यह बात कि आर्य्य समाजियों के बच्चे आर्य्य समाज मे क्यों नही जाते इसका कारण हमारे ख्याल मे आर्य समाज के वर्तमान घरेलू युद्ध हैं। नवयुवकों के मन मे यह भाव दिनोंदिन स्थान पकड़ता जाता है कि आर्य समाज में सिवाय व्यक्तिगत झगड़ों के दूसरी बात नहीं रही है। हमारे सामाजिक पत्रों में जब दिनरात एक दूसरे के व्यक्तित्व को गिराने तथ पार्टी बाजी की घृणित चालों को प्रोत्साहन देने का कार्य हो रहा हो तो उस समय यदि आर्य्य समाजियों के लडके आर्य्य समाज में जाना पसद न करे तो आर्य्य समाजी उनको बाधित भी कैसे कर सकते हैं ?

धार्मिक समाज के उत्थान का सबसे बडा साधन आत्म-समर्पण समझा जाता है। आत्म-समर्पण के अर्थ यह होते हैं कि हम दूसरा को सदा अपने से आगे रखे या रखने की चेष्टा करे। उनके प्रति सदैव उदारता का व्यवहार करें। यदि वे किन्हीं अधिकारों को हमसे छीनकर अपने हाथ में लेना चाहें तो हम प्रसन्नतापूर्वक उन अधिकारों को उनके हाथों सौंप दें और स्वय चुप्पी साधकर कुछ अर्से के लिये दूसरों को यह देखने का अवसर देवे कि हमारे विरोधियों की रीति नीति कहा तक कृत कार्य्य सिद्ध हो सकती है। परन्तु यदि हम धार्मिक समाज के अन्दर अपने विरोधियों के प्रति उदारता का व्यवहार न करते हुए स्वय डटकर अपने स्थान से टस से मस न हों तो हम धार्मिक समाजको एक राजनैतिक क्षेत्र बना देते है। जब आत्मसमर्पण (Self-Surrender) के स्थान में आत्म सवर्द्धन (Self aggression) के नियम का व्यवहार होता है तो उसकी त्रुटिया सब उसके साथ उपस्थित हो जाती हैं।

संक्षेप में आर्य्य समाज के क्षेत्र मे नवयुवकों के लिये आकर्षण न होने के निम्न कारण हैं जिन पर ठडे दिल से हम लोगों को विचार करना चाहिये :--

(१) उदार तथा विशाल व्यक्तित्व का अभाव।

(२) नवयुवकोंके प्रति सहानुभूति तथा सम्वेदना रखने वाले व्यक्तियों का अभाव।

(३) नवयुवकों के लिये अपने तन, मन, धन को अर्पण करने वाले आर्य्य समाजस्थ पुरुषों का अभाव।

(४) आर्य्य समाज के परस्पर घरेलू झगड़ों की बढती हुई प्रवृत्ति तथा उसके कारण नवयुवकों को उत्तम प्रेरणा का न मिलना।

(५) आर्य्य समाज के क्षेत्र में आत्म समर्पण के स्थान में आत्म गवर्द्धन के नियम का व्यवहार।

ऋषि दयानन्द का चित्रपट (फिल्म)

श्री पंडित गंगाप्रसाद जी चीफ जज टिहरी के 'आर्य्य मित्र' में प्रकाशित लेख के आधार पर कि ऋषि दयानन्द का चित्रपट (फिल्म) बनाया जाय आर्य्य पत्रों में विवाद उठ खड़ा हुआ है। यह विषय जैसा कि पंडितजी ने अपने लेख में प्रगट भी किया है सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के विचाराधीन है। अच्छा होता यदि अन्तरंग सभा के निर्णय की प्रतीक्षा की जाती और आवश्यक होने पर ही लोकमत जाना जाता।

नाटक और सिनेमा का कोई मूल्य ही नहीं है यह हम स्वीकार नहीं कर सकते हैं। इनका मूल्य इनके आचार वर्द्धक सुरुचिपूर्ण होने और सदुपयोग पर आश्रित है। आज पश्चिम में भी सिनेमाओं द्वारा विविध विषयों की शिक्षा के प्रचार में इनका प्रयोग उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं जो रूप इन दोनों का हमारे सामने इस समय है वह एक दम भयंकर है। इसी पर से लोगों को ये त्याज्य समझ पड़ते हैं और उनका ऐसा समझना स्वाभाविक और ठीक ही है।

ऋषि दयानन्द का फिल्म बनाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं देख पड़ती है। ऋषि का जीवन इतना प्रकाशित है कि फिल्म द्वारा उसके प्रकाशित किए जाने की आवश्यकता प्रतीत हो नहीं होती है। जनता सिनेमाओं के वर्तमान दूषित वातावरण और इस प्रवृति के दुष्परिणामों से इतनी भयभीत हो चुकी है कि वह ऋषि के फिल्म की बात सोचना भी गवारा नहीं करती है। इसके सैद्धान्तिक पहलूके सम्बन्ध में यदि कोई है सार्वदेशिक या धर्मार्य्य सभा को शीघ्र सुनिश्चित व्यवस्था देनी चाहिये। नाटकों इत्यादि के सबन्ध में भी व्यवस्था देनी चाहिये।

जो लोग आर्यसमाज के प्रचार में सिनेमा के उपयोग या ऋषि दयानन्द के फिल्म की बात कहते हैं उनके इरादों पर सहसा सन्देह नहीं होना चाहिए। जो आर्य्य लोग इस प्रकार का प्रस्ताव करते हैं उस पर हमें ठंडे दिल से विचार करना चाहिए और यदि सिनेमा द्वारा प्रचार व्यवहारिक दृष्टि से ठीक जंचता हो तो उसका उपयोग करने में झिझक नहीं होनी चाहिए। यदि इस प्रकार के प्रचार को अंगीकार करने में कोई सैद्धान्तिक कठिनाई होतो इसे उसी भांति अंगीकार करना चाहिए जिस भांति विधवा विवाह को सैद्धान्तिक कठिनाई के होते हुए भी व्यवहारिक दृष्टि से अंगीकार किया था। इसके दो लाभ होंगे एक तो हमारा प्रचार सुरुचि पैदा करने में सहायक होगा दूसरा यह है कि आर्य्य समाज के कार्य्यों पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में जो कुछ कुठाराघात इन दिनों हो रहा है वह बंद हो जायगा साथ ही सिनेमाओं के द्वारा आर्य्य समाज के विरुद्ध जो प्रचार होता है उस पर भी प्रतिबंध लग जायगा।

श्री रैम्जे मैकडानल्ड

इस मास भारत तथा भारत से बाहर जो उल्लेखनीय मृत्युएँ हुई हैं उनमें से एक ब्रिटिश साम्राज्य के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रैम्जे मैकडानल्ड की मृत्यु है। हम भारतवासी उनके जीवन से जो सबसे बड़ी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं वह यह है कि वे एक स्वनिर्मित व्यक्ति थे। एक साधारण स्थिति से उठकर वे उच्च स्थिति पर पहुंचे थे और वह भी अपने अध्यवसाय परिश्रम और व्यक्तित्व के द्वारा। लन्डन के एक अंधेरे गोदाम में १२शि० प्रति सप्ताह पर मामूली मज़दूरी का काम करने वाले मैकडानल्ड ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्री बन गये थे जिसका गौरव हरएक को प्राप्त नहीं होता है। निःसन्देह उनका व्यक्तित्व असाधारण था। हमें इस बात का गौरव है कि श्रीयुत मैकडानल्ड गुरुकुल कांगड़ी में पधारे थे जब कि महात्मा मुन्शीराम जी (स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी) तथा आचार्य रामदेव जी उसके कर्णधार थे। वे आर्य समाज द्वारा प्रचारित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने इसकी बड़ी प्रशंसा की थी।

श्री जगदीशचन्द्र वसु

प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री जगदीशचन्द्र वसु की मृत्यु से भारतीय गगन मंडल का एक आजस्वमान सितारा अस्त हो गया है। श्रीयुत बोस की वैज्ञानिक प्रतिभा के चमत्कारों ने विज्ञान की दुरूह गुत्थियों को जिन्हें पश्चिम के वैज्ञानिक सतत परिश्रम करने के बाद भी हल नहीं कर पाए थे या जो बातें उनके दिमाग में भी नहीं आई थीं उन्हें हल कर दिया था और पश्चिम के विद्वानों की इस भ्रमपूर्ण धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिया था कि भारतीय लोग जन्मसे ही असभ्य और जंगली हैं। श्रीयुत बोस का विज्ञान के प्रति सब से महत्त्व पूर्ण योग वृक्षों में जीव ज्ञात करना समझा जाता है। कलकत्ते में उन्होंने बोस रिसर्च इन्सटीट्यूट स्थापित की हुई थी जिसमें वृक्षों के बहुमूल्य परीक्षण किए जाते थे और देश और विदेश के विद्यार्थी उनके चरणों में बैठकर विज्ञान का अनुसन्धान किया करते थे। निःसन्देह वसु महोदय ने न केवल विज्ञान का ही वरन् अपने भारतवर्ष देश का गौरव भी बढ़ाया था और वह भारत की इस पतितावस्था में एक बहुमूल्य देन थे जिसको लेकर भारतवासियों का सिर सभ्य कहे जाने वाले लोगों में गर्व से ऊंचा था। ऐसे नररत्न के निधन पर हम अपने को जितना अकिञ्चन समझें और पश्चात्ताप करें उतना ही कम है।

श्री जयशंकर प्रसाद जी—

श्री जयशंकर प्रसाद जी के निधन से हिन्दी संसार एक प्रसिद्ध लेखक प्रतिभावान कवि और नाटककार से वंचित हो गया है। 'प्रसाद' जी ने समाज को सुरुचि पूर्ण और सात्विक साहित्य प्रदान करके उसकी उल्लेखनीय सेवा की थी इसलिए उनकी मृत्यु राष्ट्रीय और सामाजिक क्षति है। आज यों तो समाज में बरसात में मेंढकों की नाईं स्वयंभू बहुत से लेखक और साहित्य सेवी विद्यमान हैं परन्तु उनकी और उनके साहित्य की सामाजिक उपादेयता नहीं के बराबर है। यदि यह कहें कि उनमें से बहुत से समाज के दूषण हैं तो अत्युक्ति न होगी। 'प्रसाद' जी लेखकों और साहित्य सेवियों की इस श्रेणी से भिन्न हिन्दी के उच्च श्रेणी के लेखकों में से थे जिसमें श्री प्रेमचन्द जी

श्री नाथूराम शकर, श्री मैथिलीशरण गुप्त प्रभृति कवियो और लेखको को स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त रहा है और जो सच्चे अर्थो म सामाजिक विभूति है तथा रहे है। 'प्रसाद'जी ने हिन्दी साहित्यम विशिष्ट नाटक रचना के अभाव की पूर्ति की थी और इसका सर्व प्रथम श्रेय उन्ही को है। उन्होने अपने नाटको से प्राचान आर्य्य सस्कृति का गौरव स्थापित करने का सत्प्रयत्न किया है। हम दिवगत आत्मा की शान्ति और सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए उनके दुखा परिवार और हितू बाधवों के प्रति हार्दिक समवदना प्रगट करते है।

कन्या-वध की कुप्रथा—

सहयोगी 'हरिजन सेवक' उपर्युक्त शीर्षक से लिखता है:—

गत वर्ष गाधी जी ने बिहार प्रात के कतिपय राजपूतो मे प्रचलित कन्या वध की अमानुषिक कुप्रथा पर 'हरिजन-सेवक' मे एक लेख लिखा था। इस कुप्रथा के समूल नाश के लिए वहा एक सभा भी काम कर रहा है, जिसका नाम 'कन्यावध निवारिणी सभा' हे। यह कुप्रथा भागलपुर, मु गेर और पूर्णिया जिल मे सर्वत्र तथा सथाल परगना और दरभगा जिल मे जहा तहा प्रचलित हे। केवल बिहार मे ही नहीं, राजपूताने के शेखावाटा मारवाड आदि, और पजाब व सयुक्तप्रात के कुछ हिस्सा मे भा यह कुप्रथा प्रचलित है। कही यह तिलक दहेज की प्रथा के कारण जावित है, तो कही तथोक्त वश गौरव के नाम पर! सद्य प्रसूता बच्चियों का किस निदयता के साथ वध किया जाता है उसके स्मरणमात्र से ही रोमाच हो आता है। ठाकुर भोलानाथसिह जी लिखते है —

"कन्या को मारने का काम स्वय उसकी माता करती है! कोई नमक चटाकर और कोई तम्बाकू खिलाकर मार डालती है। कोई नवजात शिशु के मु ह पर गर्भ का जेर रख देती है। बच्ची दम घुटकर मर जाती है। जो इस तरह नही मारना चाहती, वह उसे दूध पिलाना छोड देती है। दाई उसके रक्त मज्जा आदि को साफ नही करती, और चीटिया कीडे आदि उसके शरीर मे लिपटकर खून चसते रहते है। कैसा बीभत्स व्यापार है!'

कही कही इससे भी अधिक निर्दयता के साथ कन्या-वध किया जाता है। कहते हैं—खाट के पाये के नीचे उसे दबा देते है।

लोग बच्चियो को मारकर सूप मे रखकर ले जाते है गढ्ढा खोदकर मृतक बच्चो को उसमें डाल देते है, और मिट्टी से ढक देते हे, सूप को उसी जगह छोड आते है। श्मशान मे अक्सर अनेक सूप पडे हुए मिलते है।

राजपूतो मे यह पैशाचिक प्रथा प्रचलित है, इसलिए केवल राजपूत ही इसके दोषी नही हैं। यह तो सभा के ध्यान देने की बात है। गाधी जी के इन शब्दो पर हम सब ही का ध्यान जाना चाहिये—"हम अपने को राजपूत इत्यादि नही मानते, न बिहारी, पजाबी इत्यादि। हम अपने को हिन्दुस्तानी मानते है और एक ही राष्ट्र मानते और मनाते हैं। इसलिये धर्म दृष्टि या राष्ट्र दृष्टि से हम एक है और एक के दोष की ज़िम्मेदारी हम सब पर आती है। इस न्याय से इस राजपूत कन्यावध के लिए हम सब, राजपूत हों या और कुछ, जिम्मेदार है।'

पुत्र जन्म पर आनन्द बधाइया गाने वाले किंतु

आर्य समाज का तीसरा नियम

श्रीयुत पं॰ गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रयाग ।

आर्य समाज का तीसरा नियम यह है—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

झांसी के श्रीयुत महाशय शिवलाल जी शर्मा की एक छपी हुई विज्ञप्ति मेरे पास इस आशय की आई हुई है कि इस नियम का संशोधन इस प्रकार कर दिया जाय :—

वेद ईश्वरीज्ञान सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब मनुष्य मात्र का परम धर्म है।

शर्माजी ने मेरी सम्मति मांगी है। संशोधन के देखने से ही स्पष्ट हो जाता है कि शर्मा जी एक श्रद्धालु और धर्म परायण पुरुष हैं। उनको आर्यसमाज से हित है और इसी भाव से प्रेरित होकर उन्होंने इस संशोधन का प्रस्ताव किया है। परन्तु मुझे खेद है कि मैं संशोधन के पक्ष में नहीं हूं।

इसका मुख्य कारण यह है कि किसी संस्था के नियमों और उपनियमों में भेद होता है। नियम स्थायी और व्यापक होते हैं। उपनियम देश, काल की अपेक्षा से बदलते रहते हैं। अभी आर्य सार्वदेशिक सभा कुछ उपनियमों को बदल चुकी है और सम्भव है कि

पुत्री के जन्म लेते ही उसका गला घोंट देने वाले नादान माता-पिता गांधी जी के इन अमूल्य शब्दों पर ध्यान दें, और इस भ्रूण-हत्या जैसे महान् पाप से अब भी अपना हाथ खींच लें।

पुत्र और पुत्री दोनों को जीने का समान अधिकार है। दोनों के अस्तित्व से ही जगत् चल सकता है। तब पुत्र-जन्म से हर्ष क्यों और पुत्री जन्म से शोक क्यों ?"

श्रद्धानन्द जयन्ती—

इस वर्ष श्रद्धानन्द जयन्ती ३ १२ ३७ बृहस्पतिवार को पड़ेगी। आशा है आर्य्य जगत इस दिवस को समारोह पूर्वक मनायगा और स्वर्गीय स्वामी जी के गुणों और उपकारों को स्मरण करेगा।

स्वर्गीय स्वामी जी में क्या २ गुण थे उनका व्यक्तित्व कैसा था? आर्य्य समाज और देश के प्रति उनकी क्या २ सेवायें और त्याग थे और उनमें उनका स्थान कैसा था यहां इस पर प्रकाश डालने की जरूरत नहीं है व प्रायः सब पर प्रगट हैं। उनका बलिदान हमारे लिए क्या अर्थ और सन्देश रखता है यहां यह भी बतलाने की जरूरत नहीं है। एक मुस्लिम धर्म्मान्ध ने श्री स्वामी जी की हत्या करके यह स्पष्ट कर दिया था कि वैदिक धर्म्म इस्लाम धर्म्म के मुकाबले में ऊंचा है और जब तर्क, बुद्धि इत्यादि सभ्य और मानव चित उपाय वैदिक धर्म्म के असूलों को निस्सार सिद्ध नहीं कर सके थे तो तलवार के उपाय का आश्रय लिया गया था जिसका समर्थन प्रकाश के इस युग में कोई भी बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति नहीं कर सकता है और जो ऐसे मामलों में कमजोरी का सूचक होता है सचमुच मुस्लिम हत्यारे ने वैदिक धर्म्म की यह एक बहुत बड़ी सेवा और इस्लाम धर्म्म की एक बड़ी असेवा की थी। स्वामी जी के बलिदान की यही बात हमें सबसे ज्यादा अपील करती है।

भविष्य में भी अनेक परिवर्तनों की आवश्यकता पड़े । परन्तु नियम एक स्थायी चीज हैं। सस्था संचालन के लिए उनका नियम बदलना सस्था के लिए हानिकारक है। वह नियम ऋषि ने बहुत गम्भीर विचार के पश्चात् बनाये हैं। इनमे उदारता, व्यापकता तथा स्थायित्व है। इसलिए जनता का कर्त्तव्य इन नियमो का पालन करना है न कि उनको बदलना।

इन नियमों का आर्यसमाज के साथ एक प्रकार का सम्बन्ध हो गया है। आर्यसमाज शब्द को उच्चारण करते ही इन नियमो का स्मरण आजाता है। एक प्रथा बन चुकी है। इसको विचलित करना मेरी सम्मति म ठीक नही। यदि ऋषि ही ने कुछ शब्द परिवर्तन कर दिया होता तो वैसी परिपाटी बन जाती। परन्तु अब बनाई परिपाटी को भग करना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। नियमों में कोई ऐसी धारा भी नहीं है जिसके अनुसार जनता को नियम बदलने का अधिकार हो।

एक बात और है। मेरी राय में सशोधन अनावश्यक भी हैं।

सत्य विद्या और ईश्वरीय ज्ञान में भद भी नहीं। वहां 'सत्य विद्या का 'परमेश्वर' को 'आदि मूल' बतलाया है। इससे वद सत्य विद्याओं की पुस्तक होने से ईश्वरीय ज्ञान होजाता है। यहा ऋषि का सकेत केवल पुस्तक से है। वह वदों के विषय मे दार्शनिक उलझनों की ओर सकेत नही करते। वे आर्यों के दैनिक कर्त्तव्य की ओर इशारा करते हैं। उनका तात्पर्य है कि आर्य्य समाज के सभासद् लिए ही वेद को पढ़ें पढावें, सुने सुनावें।

उन्होंने यह दस नियम आर्य्य समाज के बनाये हैं जो नियम जिस संस्था का होता है, वह उसी के सभासदों पर लागू होता है। जो उस सस्था से सम्बन्ध नही रखना चाहता उसके लिये कोई नियम नहीं बनाये जा सकते न उनको मनवाया जा सकता है। अत यह तीसरा नियम भी आर्यों के लिये ही है। आर्य वही हैं जो वदो को मानते हैं, जो वेदों को नहीं मानते वे आर्य्य नही और न उन पर कोई हमारा जोर है कि हम उनके लिये कोई नियम बनावें या उनसे पाबन्दी करा सक।

इस में कोई सकुचितपना भी नहीं है। प्रत्येक पुरुष आर्य्य समाज में आ सकता है। जो आयेगा वही आर्य्य होगा। और उसी पर नियम लागू होगा। जो आर्य्य समाज मे प्रविष्ट होना नहीं चाहता उसे इन नियमों की क्या परवा? उसका परमधर्म कुछ हो परन्तु वह उसको सोचता ही नहीं। अत उसके विषय म कहना हमारे क्षेत्र से बाहर है। जब हम कहते हैं कि वेद का पढना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है तो इस का अर्थ यह है कि 'आर्य होना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है या आर्य्य समाज में प्रवेश करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। आर्य्य समाज खुला ही सब के लिये है। परन्तु जो अपने इस कर्त्तव्य को नहीं समझता, उस पर हमारे नियम किसी प्रकार भी लागू किये नही जा सकते।

—'आर्य्य मित्र'

तृत्व (त्रेत्) वाद

ले०—
श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज

आर्य्य जाति में प्राचीन (वैदिक) काल से वेद की शिक्षानुसार ईश्वर, जीव और प्रकृति के नित्य मानने का सिद्धान्त माना जाता चला आ रहा है। आर्य्य समाज इसी तृत्व वाद का अब भी प्रचार करता है। यह सिद्धान्त एक समय बड़ा व्यापक और आकर्षक था। इस सम्बन्ध मे, कुछेक महत्व की बातों का, उल्लेख किया जाता है —

१—असारिया के प्राचीन निवासियों ने इस सिद्धान्त को अपनाया था और वे इस तृत्व वाद को मानते थे। उनके तृत्व का रूप यह था —

(१) मानवी मस्तिष्क को, बुद्धि प्रदर्शनके लिए चित्त के स्थान मे मानते थे।

(२) बैल का शरीर, बल प्रदर्शनार्थ, सत के स्थान पर मानते थे।

(३ गरूडपक्षी सर्वव्यापकत्व के लिये, आनद की जगह मानते थे।

तीनों के मिलाने से वही आर्यों का प्रसिद्ध तृत्ववाद सूचक, ईश्वर की सत्ता और स्वरूप का द्योतक, "सच्चिदानन्द" शब्द बन जाता है। इस प्रकार यह सिद्धान्त असीरिया में ईसा के ७२० वर्ष पूर्व प्रचलित था—

२—मिश्र में ७०० वी० सी० में, पूर्ण पुरुषत्व के प्रदर्शक, ये तीन बातें मानी जाती थीं।

(१) बल के चिन्ह रूप, पशुत्वका होना=सत

(२) बुद्धि की व्यक्त सत्ता=चित्त

(३) आत्मा = आनन्द

इसके सिवा ईश्वर मे वे तीन रूपों का समाविष्ट होना मानते थे। ईश्वर को मिश्रवाले आर्य्य हाउस (Haius) कहते थे।

(१) ईश्वरत्व महत्त्वाद्योतनार्थ=सत

(२) रा (Ri) जावत्व—चेतना प्रदर्शनार्थ =चित

(३) इसकारा ब्यूस (The scara baeus) आनन्द प्रदर्शनार्थ=आनन्द

३—उस समय का पश्चिमी दर्शन शास्त्र भी तृत्ववाद ही माना करता था। प्लेटोनिस्ट Platonist का एक स्कूल, इलकजेंडरिया मे था जो ईश्वर में (देखो Cudworth's Intellectual System) तीन बातों का होना आवश्यक मानता था—

(१) महान ईश्वरत्व (The supreme God)

(२) मस्तिष्क या बुद्धि

(३) आत्मा

इस प्रकार युरोप और उसके आस पास, वैदिक तृत्ववाद का कुछ शुद्ध और कुछ विकृत रूप आम तौर से माना जाता था और इनका मानना उस समय का फैशन बना हुआ था।

४—ईसाई मत मे उस समय तृत्व वाद (तसलीस या Trinity) नहीं माना जाता था। बाइबिल के पढ़ने वाले जानते हैं कि Trinity या इसके समान अर्थ वाला कोई शब्द, उसमें

नहीं आया है। ईसा की दूसरी शताब्दी के अन्त से पहिले तक—इस वाद को ईसाई नहीं जानते थे। उस समयके ईसाई पादरियो ने, अपने भीतर इस कमी के होने को अनुभव किया, इसलिए सन् ३२५ ईस्वी मे नाइस की कौन्सिल (The Council of nice) ने ईसा मे ईश्वरत्व के होने का विधान किया और ईसा को 'God of God very God of very God" पुकारे जाने का निश्चय किया— इसके बाद सन् ३८१ A D मे हुई कुस्तुन्तुनिया की (The Council af Constantinople) ने ईश्वरमे तीन व्यक्तित्व (Three person in one God) के होने का निश्चय किया और तत्कालान राजाथियोडोसियस (Theodosius) ने घोषणा की कि जो कोई इस तृत्ववाद को उपर्युक्त भांति न मानेगा, उसे दण्ड मिलेगा— तब से यह तृत्व वाद ईसाई मतावलम्बी मानने लगे हैं।

(५) अभी हाल की बात है कि कैम्ब्रज विश्वविद्यालय के गिरजे मे, सरमन होते हुए विशप डैन—राशडैल L L D ने, ईसाइयों मे प्रचलित तृत्ववाद की निरर्थकता प्रकट करते हुये कहा था कि—

The father is power = सत
The son is wisdom = चित
The holy Spirit is love = आनन्द

स्पष्ट है कि विशेप महोदय वेद प्रतिपादित तृत्व वाद ही को महत्त्व पूर्ण समझते हैं।

—

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला—

मोक्ष का साधन

(ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

मोक्ष का साधन ज्ञान है, वा कर्म है, अथवा ज्ञान और कर्म उभय हैं यह विचार मोक्षवादियोंमे आरम्भ से चला आता हैं। इसमें आर्यसमाज का पक्ष क्या हैं इस बात को बताने के लिये यह लेख लिखता हूं।

प्रथम पक्ष ज्ञान का है।

(१) वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय। यजुः अ, ३१, म० १८

सर्व व्यापक महान् प्रकाश स्वरूप, अज्ञान-रहित परमात्मा को जानकर ही मौत से तर जाता है मोक्ष के लिये अन्य मार्ग नहीं है।

(२) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। सांख्य दर्शन

बिना ज्ञान के मोक्ष प्राप्त नहीं होती।

(३) भूतेषु भूतेषुविचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति। केन० १३

ज्ञानी उस परमात्मा को व्यापक जान कर इस लोक से मर कर मोक्ष को प्राप्त होता है।

(४) तमात्मस्थं, येऽनुपश्यंतियिधीरास्तेषां शांतिः शाश्वती नेतरेषाम्। कठ० ५।१३

जो धीर उस आत्मस्थ को देख लेते है उनको शांति प्राप्त होती है दूसरों को नहीं।

(५) ज्ञान की आई आंधी

देखो भाई

सभै उडानी भ्रम की टाटी रहे न माया बांधा रहाउ। दुचिते की दुइ थून गियरानी मोह बलेडा टूटा।

तिसना छान परी धर ऊपर दुरमत भांडा फूटा ॥१॥

आंधी पाछे जो जल बरषे तिह तेरा जनभीना कह कबीर मन भया प्रगासा उदे भान जब चीना।

कबीर साहिब

यह प्रमाण ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति का विधान करते हैं इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रमाण हैं और ऐसे भी हैं जो कर्म निषेध करते हैं इसलिये इनके आधार पर कहा जा सकता है मोक्ष ज्ञान साध्य है।

दूसरे पक्ष मे कर्म मोक्ष के साधन हैं इसमें भी प्रमाण मिलते हैं। यथा—

(१) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥
यजुर्वेद अ० ४०।२

कर्म करते हुए शत वर्ष जीने की इच्छा करे, इस प्रकार कर्म मे लिप्त नहीं होता अन्य मार्ग नहीं।

(२) तस्यै तपो दम कर्मेति प्रतिष्ठा। केन० ३३

ब्रह्म की प्राप्ति के लिये तप, दम, कर्म प्रतिष्ठा

रूप है।

(३) नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्म कृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।
गीता अ० ३ ५

बिना कर्म किये कोई क्षण भर भी नहीं रह सकता, स्वभाव से विवश होकर कर्म किये जायगे।

(४) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः॥
गीता अ० ३।८

अकर्म से कर्म श्रेष्ठ है तू कर्म कर बिना कर्म तेरी शरीर यात्रा भी सिद्ध न होगी।

इन प्रमाणो से कर्म करने का विधान सिद्ध होता है इन सब मे केवल कर्म पद है वह कर्म नित्यानैमित्तिक काम्य प्रायश्चितादि भेद से नाना प्रकार के है। परंतु इस लेख मे इस प्रकरण मे मैने यह विचार नहीं करना है किसे करे और किसको न करे। इस समय तो यही दिखाना है कि वेद, उपनिषद् गीता ज्ञानवत् कर्म करना भी मानते हैं ज्ञान कर्म उभय मानने वालो के दो भेद है क्रम समुच्चय, सम समुच्चय। क्रम समुच्चयवादी अतः करण की शुद्धि ज्ञानोत्पत्ति के लिये कर्म मानते है जिस समय ज्ञान हो जाय पुनः किसी कर्म की आवश्यकता नहीं सम समुच्चयवादी ज्ञान कर्म को एक काल मे कर्तव्य समझते है। प्रथमपक्ष वाले जैसे ज्ञान कर्म का परस्पर विरोधी मानते हैं दूसरे इस प्रकार नहीं मानते है। क्रम समुच्चय वाद मे विशेष विवाद नही है। उनको यदि ज्ञान वादियो म मान लें तो भी निर्वाह हो जायगा परन्तु सम समुच्चय वादियो का किसी मे समावेश नहीं हो सकता इसलिये उभयवाद के अर्थ इस समय सम समुच्चय ही समझने चाहिये।

नवीन वेदांत ज्ञान वादी है। नैष्कर्म्य सिद्धि उनका प्रसिद्ध पुस्तक है और प्रकरण पुस्तको मे कर्म का निषेध मिलता है परन्तु इस समय उन को न लिखकर मैं नवीन वेदांत के फलाध्याय के कुछ सूत्र लिखता हू जो ज्ञानोत्पत्ति पश्चात् भी कर्म करने स्वीकार करता है।

(१) अग्निहोत्रादि तु तत्कार्यायैव तद्दर्शनात्।
वेदांत दर्शन ४ ।१६

पुण्यस्याश्लेषविनाशयोऽन्यायोऽतिदिष्ट सोऽनिर्देश सर्वपुण्य विषय इत्याशंका प्रतिवक्ति—अग्निहोत्रादित्विति—तु शब्द आशंकामपनुदति यन्नित्य कर्म वैदिकमग्निहोत्रादि तत्कार्यायैव भवति ज्ञानस्य यत्काय तदेवाम्यापि कार्यमित्यर्थ, कुतः तमेत वेदानुवचनेन ब्राह्मणाः विविदसति यज्ञेन दानेन तपसा बृ० ४।४ २२ इति दर्शनात्। शांकर भाष्यम्।

इसका भावार्थ यह है, पुण्य का अश्लेष मानने से वह भी अघवत् त्याज्य होगा इस प्रकार सर्व पुण्य विषयक शंका होने से उसकी निवृत्ति के यह सूत्र है इसमे तु शब्द शंका निवारण करता है और अग्निहोत्रादि वैदिक कर्म को कर्त्तव्य बताता है क्योकि जो ज्ञान का कार्य मोक्ष है वह मोक्ष कर्म का भी कार्य है। उपनिषद मे ऐसा ही लिखा है ब्राह्मण वेद स्वाध्याय से यज्ञ, दान, तप से ब्रह्म जानने की इच्छा करते हैं।

(२) इस सूत्र अग्निहोत्रादि कर्मो का सम समुच्चय है और अगले सूत्र अतो अन्यापि

ह्यकेषामुभयो ॥ १७ ॥

अतो अग्निहोत्रादेर्नित्यात्कर्मणोन्यापिह्यस्ति-साधुकृत्या या फलमभिसंध्यय क्रियते तस्या एव विनियोग उक्त एकेषां शाखिनाम्। सुहृद् साधु कृत्यामपयति, इति। शांकर भाष्यम्।

भावार्थ—अग्निहोत्रादि नित्य कर्मो से भिन्न साधु कर्म अच्छे कर्म। सत्य भाषणादि एक शाखा वाले कर्तव्य मानते हैं। सूत्रकार अग्निहोत्रादि और अन्य नेक कर्मों का करना मानता है इससे यह सम समुचय का प्रतिपादक है इस प्रमाण के होते हुए भा पता नहीं वेदांती कर्म त्याज्य किस प्रकार मानते हैं।

इसी सिद्धान्त को मानकर महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास के आरभ मे ही वेद मन्त्र लिखा है और उसके अर्थ लिख कर इस सिद्धान्त को माना है।

(३) विद्या चाविद्या च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृत ॥
मश्नुते ॥ यजु० ४।१४

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २८७

इस मंत्र के पूर्व दो मत्र हैं जो अविद्या अर्थात् कर्मोपासना मात्र सेवी को अधकार की प्राप्ति की घोषणा करके केवल ज्ञानवादी को उससे भी अधिक तम की प्राप्ति बतलाते है।

इसलिये इस मन्त्र मे कर्म ज्ञान का सम समुचय है। और यही वैदिक सिद्धात है जिसे आर्य समाज मानता है।

प्रमाण वाद के पश्चात् यदि युक्ति से विचार करें तो भी दोनो की आवश्यकता है।

यदि कोई व्यक्ति किसी नगर को जाना चाहे और द्रुतगति से चले परन्तु उस गन्तव्य नगर की विपरीत दिशा मे चलता हो वह न पहुचेगा इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति उस नगर के मार्ग से भलीभाति परिचित है परन्तु कर्म कुछ भी नही करता है वह भी गतव्य स्थान को प्राप्त न करेगा और जिसको दिशादि मार्ग का बोध है और उसी दिशा म चलने का यत्न करता है वह गन्तव्य स्थान को अवश्य प्राप्त कर लेगा।

इस प्रकार प्रमाण (वेद, उपनिषद, गीता, वेदात सूत्र) तथा युक्ति से सम समुचय वाद सिद्ध है और प्रत्येक जिज्ञासु को इसका आश्रय लेकर भव सागर से पार होने का यत्न करना चाहिये।

देवासुर संग्राम

[लेखक—आचार्य श्री चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति आचार्य गुरुकुल विद्यालय, सोनगढ़ काठियावाड़]

संसार एक समरस्थली है। कभी इसमे राम रावण का युद्ध होता तो कभी कौरव पाण्डव का, कभी इटली अबिसिनिया को हड़पने को तैयार होता है तो कभी जापान की मछली चीन के मगर को खाना चाहती है। बड़े बड़े राजनैतिक कहते हैं कि विश्व १९१४ के महान् युद्ध से भी सन्तुष्ट न रह कर उससे भी भयङ्कर विप्लवकारी विग्रह का स्वप्न ले रहा है तो क्या विश्व क्रम मे शान्ति देवता का कोई स्थान नहीं है? तो क्या इन अमानुषीय युद्धो के भयङ्कर परिणामों को देख कर भी मानव-समाज सचेत होना नहीं चाहता है? वस्तुत सत्य तो यह है कि यह दीखने वाले युद्ध तो न दीखने वाले इनसे भी भयङ्कर युद्धों के प्रतिबिम्ब मात्र है। विधाता ने मनुष्य की इन्द्रियों को स्वभावतः बहिर्गामी बनाया है—"पराचि खानि-व्यतृणत् स्वयभू तस्मात् पराङ पश्यति नान्तरात्मन्" इस लिए यह 'उच्चै श्रवा" बाहर के ऊचे २ शब्द ढोल और नगाड़ों के आवाज, वाहनों की गड़गड़ाहट तोप व बन्दूक के भयङ्कर शब्दो को सरलता से सुन सकता है, वाह्य वस्तु के दर्शनादिअनायासेन कर सकता है, अन्दर की धीमी अन्तरात्मा की आवाज इस कैसे सुनाई दे सकती है? कोई विरला धीर पुरुष ही आंखों को मून्द कर अन्तर्गत को देखने का प्रयत्न करता है—"कश्चिद्धीर प्रत्यगात्मानमैक्षद्‌ावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्" बहिर्जगत की अन्र्जातीय की छाया मात्र है—वाह्य युद्ध अन्दर के अमूर्त युद्ध के मूर्त प्रतिबिम्ब ही है। इस त्रिकाला वाधित सत्य को न समझने से ही जगत यादव-स्थली का केन्द्र बना हुआ है। "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे" वाह्य युद्धों के विजेता नेपोलियन, सिकन्दर अशोक और चन्द्रगुप्त की कीर्तिपताका के सम्मुख हम नतमस्तक अवश्य होते हैं परतु हमारी श्रद्धा का पुष्प हार तो बुद्ध, महावीर, कृष्ण चन्द्र और महर्षि दयानन्द के चरणों मे ही चढ़ा करता है। क्योंकि यह बीर ही नही महावीर हैं। उन्होने भौतिक साधनों से स्वराज्य को प्राप्त नही किया प्रत्युत अभौतिक दैवी साधनों से सच्चे स्व को (आत्मा को) प्राप्त किया है। कोटि कोटि योनियों मे परिभ्रमण करने वाले आत्मा रूपी हस पर अशुभ वासनाओं का ऐसा जाल बिछा हुआ है कि वह पराधीनता के पाश में भी शान्ति का स्वप्न देखता है। आत्म सुवर्ण के ज्ञान व कर्म पखो पर आसुरी सम्पत्ति का इतना भार पड़ा हुआ है कि दैवी संपत को सर्वथा भूलकर आत्म-हस पराधीनता की तामसी शान्ति को ही रामराज्य समझने लगता है। इस पराधीनता की शान्ति की अपेक्षा ससार के सघर्षों, अन्तः एवं बहिर्जगत के घोर संग्रामों में वीरों की भान्ति अचल रहना प्रशस्ततर है। लौंगफेलो Long fellow ने ठीक ही कहा है—

In the world's broad field of battle,
In the bivouac of Life,
Be not like dumb driven cattle,
Be a hero in the strife

अशुभ वासनाओं के जाल में परतन्त्र रहकर छटपटाते आत्मा की श्मशान-शान्ति की अपेक्षा दुन्दुभिनाद खून की नदियां सहस्रगुणा प्रशंसनीय है परन्तु जीवन का चरम लक्ष्य तो शुभ वासनाओं के वायु मण्डल में विहरते हरि (आत्मा) हंस का दिव्य आत्म स्वरूप में विहार करके प्रेम निधान शांति-सदन में प्रतिष्ठित होना ही है।

प्रधान वैदिक एवं लौकिक संस्कृत साहित्य मे तथा भिन्न २ धर्मों के साहित्य में, विविध रूपों में देवासुर संग्राम का वर्णन किया गया है। वेद ब्राह्मण व पुराणों में देवों के राजा इन्द्र तथा दैत्यों का राजा वृत्र दैत्य के संग्राम का वर्णन किया गया है। इन्द्र तथा वृत्र की कथा का आधिदैविक तथा आधिभौतिक स्वरूप से भिन्न आध्यात्मिक स्वरूप ही है। सम्भवत कथा का यही वास्तविक तात्पर्य है। ऐतिहासिक कथाओं के आध्यात्मिक अर्थीकरण (Spiritual interpretation) से धर्मों के इतिहास की गुत्थियां खुल सकती हैं। यह पद्धति ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषदें तथा आचार्य यास्क के निरुक्त में ही उपलब्ध नही होती अपितु स्वीडन बोर्ग के अनुयायियों तथा ईसाई गाथा शास्त्र के विद्वानों ने भी इसको स्वीकृत किया है। महाकवि टेनीसन तथा शेक्सपीयर के नाटकों की कथा वस्तु के विषयों को भी इसी पद्धति से समझा जा सकता है। प्रायः कवियों के काव्य में वर्णित पात्र-मूर्तिमन्त भाव हुआ करते हैं अत यह सहज में कहा जा सकता है कि इन्द्र और वृत्र की कथा आलंकारिक है। ऐश्वर्य शाली दिव्य गुणों व शुभ वासनाओं का अधिपति आत्मा इन्द्र है। और असुर भावों का प्रेरक ज्ञान को आवृत्त करने वाला अहं भाव अनात्म-भाव का प्रतिनिधि वृत्र है वास्तव में इन्द्र (आत्मा) अजात शत्रु युधिष्ठिर है जैसे सूर्य के प्रखर प्रताप के सन्मुख मेघ तितर बितर हो जाते हैं, सामने खड़े हो नहीं रह सकते हैं—जैसे प्रकाश के आते ही अन्धकार भाग जाता है वैसे ही अजेय आत्मा की सत्ता मात्र ही अनात्म भाव की विरोधनी होती है तथापि अशुभ वासनाओं के सान्निध्य से आत्मा रूपी सिंह अपनी स्वाभाविक स्थिति को भूल कर अपने को यौद्धा मान बैठता है वस्तुत इन्द्र स्वरूप आत्मा आठ चक्रों तथा नव द्वारों वाली देहरूपी अयोध्या पुरी के अजेय राजा राम हैं। "अष्ट चक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या" अत. वेदादि धार्मिक ग्रंथों में इन्द्र तथा वृत्र के युद्धों के जो वर्णन आते हैं वे सब मायिक है—काल्पनिक है—रूपक रूप से ही हैं। वेद में कहा भी गया है "न त्वं युयुत्सेकतमच्चनाह न ते अमित्रं मघवन् कश्चिदस्ति मायेत्सा ते यानि युद्धान्याह न त्वं युयुत्से ननु पुरा युयुत्से" वास्तव में हरएक प्राणी के देह रूपी राष्ट्र में प्रति क्षण देवासुर संग्राम के प्रतिनिधि रूप से इन्द्र वृत्र लड़ रहे हैं। पुण्य-पाप, प्रकाश-अन्धकार, दिन रात, सत्य, अहिंसा, अभय, प्रेमादि दैवी सम्पत तथा असत्य- हिंसा, द्वेषादि आसुरी संपत शुभ अशुभ वासनायें देवासुर संग्राम के योधा हैं।

वशिष्ठ मुनि योगवासिष्ठ में कहते हैं 'द्विविधो वासनाव्यूहः शुभश्चैवाशुभश्चते" "शुभाशुभाभ्या मार्गाभ्या वहन्ती वासनासरित" अर्थात् शुभ वासना तथा अशुभ वासना की नदिया बह रही हैं, आत्मा की नौका को किसी न किसी नदी में बहना ही पड़ता है। आत्मा तटस्थ होकर केवल साक्षी बन कर नहीं रह सकता है। कठ उपनिषद् में कहा गया है "श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत तौ सपरीत्य विविनक्ति धीर। श्रेयोहि धीरो अभिप्रयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमात् वृणीते" अर्थात् मनुष्य को श्रेय और प्रेय दोनो प्राप्त हैं बुद्धिमान दोनों को ठीक ठीक जाच कर अलग अलग करता है निसन्देह बुद्धिमान मनुष्य प्रेय के मुकाबले श्रेय को मागता है और बुद्धिहीन सासारिक सुख की प्राप्ति तथा रक्षा के लिए प्रेय को मागता है।

इस ससार में कर्तव्य और सुख, श्रेय और प्रेय [Duty and pleasure] दोनों के एक ही समय में उपस्थित होने पर अशुभ वासनाओं की सारता मे बहने वाला जीव सुख को महत्व देकर कर्तव्य की मूक पुकार को दबा देता है। ऐसी अवस्था में शुभ व अशुभ वासनाओं की नदी पर आत्मा तटस्थ तो नह रह सकता इस लिये जो आत्मा शुभ वासनाओं मे अपना जीवन नौका को ले जाता है वह कर्तव्यपथ से कभी विमुख नहीं होता और फलत शुभ वासनाओं के प्रबल प्रवाह में इतने वेग से बहता जाता है कि अशुभ वासनाओं में बहजाने को सम्भावना भी नहीं रह जाती। यही अवस्था है जब कल्याण वाहिनी चित्तनदी ऋतम्भरा प्रज्ञा के आलोक से आत्मा को अजेय बना देती है। अब क्रान्ति शान्ति में, प्रवृत्ति निवृत्ति में परिणत हो जाते हैं। विवेक और विचार का श्रम स्वभाव-सिद्ध भक्त-पुरुष-सुलभ शम के स्वरूप को धारण किया करता है। यह अवस्था स्थितप्रज्ञ की हुआ करती है। परन्तु इस दशा से पूर्व तो हजारों रामायण और महाभारत के घोर संग्राम लड़ने होते हैं। सुख दुःख, मान अपमान, जय पराजय, हानि लाभ के द्वन्दों से ऊपर उठकर कमल-दल की भाति अछूता रहकर जो वीर धीर बनकर लड़ता है जयमाल उसके ही गले मे डला करती है यहां कायर का काम नहीं वीर और महावीरो का काम है। लड़ते लड़ते वीर जब कभी हताश और निराश होजाते हैं भक्तवत्सल भगवान तब करुणा का मेघ बन बरसा करता है।

हमारे शरीर में ज्ञानेन्द्रियों और कर्मन्द्रियों का आत्मा के साथ भयङ्कर सग्राम (Tug of war) छिडा हुआ है। इसमें आत्मा तब ही पूर्ण विजयी होता है जब भक्ति से आवर्जित हुए भगवान प्रसन्न हुआ करते हैं। अहुरमज्दा की अङ्गिरामन्यु तथा स्पेन्तामन्यु रूप शक्तिओं का परस्पर संग्राम, सुरा और शैतान का युद्ध, ये सब देवासुर सग्राम के ही नामान्तर है। इन संग्रामों के महत्व को समझकर हमें वीरों की भान्ति किले पर किले फतह करने चाहिये। तब गवान की अपार कृपा के हम पात्र हो सकते हैं।

देवासुर संग्राम में असुरों को हराने के लिये देवों ने दधीचि ऋषि की अस्थि का वज्र बनाया

या दूसरे शब्दों में कहे तो याज्ञिक भावनाओ का सहारा लिया था परन्तु कदम कदम पर, अणु २ मे व्यापक विष्णु स्वरूप परमात्मा को पुकार पुकार कर ही पूर्ण विजय प्राप्त की थी । धृतराष्ट्र रूप अन्धे मिथ्या ज्ञान ने आत्मा का राष्ट्र मचाया हुआ है। अज्ञान (धृतराष्ट्र) से उत्पन्न प्रबल अहंकार (दुर्योधन) आसुरी सम्पति का अधिनायक बन कर इसकी सहायता कर रहा है । इस युद्ध मे विजयी बनने के लिये युधिष्ठिर रूप व्यवसायात्मिका धर्मबुद्धि, अर्जुन रूप उज्ज्वल विवेक शक्ति, और भीम रूप प्रबल आत्मबल, भगवद्भक्ति के प्रतिनिधि कृष्ण की सहायता लेकर ही प्रवृत्त हुए है। "यतो धर्मस्तत कृष्ण, यतः कृष्णस्ततो जय", देवासुर-संग्राम मे धैर्य और दृढ निश्चय का बहुत मूल्य है। मंजिल कितनी ही दूर हो तो भी बहादुर घबराता नही। कार्लाइल के शब्दो म 'I will achieve it or die' "देह वा पातयामि कार्य वा साधयामि" को ज्वाला मे जलने वाला आत्मा रूपी पतगा ध्येय को पा लेता है, श्रुति कहती है 'एष त साधु कर्म कारयति यमूर्ध्व निनीषते" अर्थात प्रभु की करुणालहरो से ही समस्त शुभवासनायें तथा तदनुसारी कर्मो की स्फुरणा हुआ करती है। भगवान् जिसे वरना चाहते है उसीको छाती से लगा लेते है। "यमेवैष वृणुते तेनैव लभ्य"

मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने रावणरूपी राक्षस को हराकर सीता-माता के सतीत्व की रक्षा के द्वारा आर्यो व देवो को विजयी बनाया था। इसीलिए वे विजया-दशमी के प्रिय-देवता बने और अयोध्या की जनता ने उनके स्वागत मे स्नेह-भरे आत्म-दीपो से दिवाली मनाई है, सच है कि देवासुर संग्राम के विजेता ही विजयादशमी और दिवाली के वीर देवता हुआ करते है, ठीक ऐसे ही विजेता महर्षि दयानन्द और स्वामी रामतीर्थ थे।

दशेन्द्रिय रूपी रावण पर विजय पाकर उत्कट वैराग्य विवेक तथा ब्रह्मचर्य स्वरूप हनुमान् की सहायता से देवराज दयानन्द ने सती सीता रूपी परमात्म विद्या को स्वाधीन बनाकर कामक्रोधादि आसुरी माया पर विजय प्राप्त करके सच्ची विजया-दशमी मनाई और भगवत्स्नेह मे रोम रोम की बत्ती बना बनाकर ज्ञान की अमर दीपावली मनाई है रात मे प्रभात और मृत्यु मे जीवन का रहस्य समझाया है यही सच्चा देवासुर संग्राम का विजय है। गीता ने क्या ही सुन्दर कहा है—

"या निशा सर्वभूताना तस्या जागर्ति सयमी
यस्या जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने

शंकासमाधान

(क्रमागत)

VI SHRADDHAS

(Including Apara Kriyas or Funeral Ceremonies)

Questions —

1 Please name the Shraddhas in vogue in your province?

2 Do you think performance of Shraddhas necessary? If your reply is in the affirmative, what useful purpose do they serve?

3 Are they performed in the right way now-a-days? If not, what in your opinion are defects and what are your suggestions to improve them?

4 Is it desirable that they be given up altogether as is done by some at present?

5 Which of the Shraddhas do you consider essential and which unessential?

6 Is the present ritual suitable? If not, how is it to be modified?

Answers —

Arya Samaj does not advocate Mrita Shraddha, and is deadly against it. Perpetuation of the memory of a deceased is quite different a thing.

श्राद्ध

प्रश्न—

(१) कृपया अपने प्रान्त में प्रचलित श्राद्धों के नाम लिखें ?

(२) क्या आप श्राद्धों का होना आवश्यक समझते हैं ? यदि आपका उत्तर स्वीकारात्मक हो तो लिखे उनसे क्या लाभ होता है ?

(३) क्या आजकल श्राद्ध ठीक २ रीति से होते हैं ? यदि नहीं तो उनमें क्या त्रुटियाँ हैं और वे किस प्रकार दूर की जा सकती हैं ?

उत्तर—

आर्य्य-समाज मृत श्राद्ध का समर्थन नहीं करता है वरन् इसके बिलकुल विरुद्ध है। मृतक व्यक्ति को स्मृति कायम करना एक बिलकुल जुदी बात है।

(२) मूर्ति पूजा

(१) प्रश्न—जो कि ४ धाम सप्तपुरी आदि नगरों और ग्रामों में उन्नत शिखर और मन्दिर और उनमें देवताओं की मूर्तियों का स्थापन हो रहा है और परम्परा से पूजा होती आती है तो इसमें क्या भ्रम या सन्देह है ? जो सन्देह है तो श्रुति-स्मृति के प्रमाण दीजिए। यदि नहीं है तो वह व्यक्त कीजिएगा।

उत्तर—मूर्ति-पूजा निश्चय ही वेद-विरुद्ध है। उसके करने का आदेश न किसी ऋषि-मुनि के वाक्य

से और न शास्त्र के प्रमाण से सिद्ध है। किसी पुस्तक में देव के अर्थ पाषाणादि की मूर्ति के नहीं हैं किन्तु केवल परमेश्वर, विद्वान्, वेद मन्त्र आदि के हैं जो दिव्य गुणों से युक्त हैं।

यजुर्वेद अ० ३२ के मन्त्र ३ में स्पष्ट कहा गया है—

न त य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश ।
हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिं सीदित्येषा यस्माज्जात इत्येष ॥

परमेश्वर की कोई प्रतिमा, प्रतिकृति प्रतिबिम्ब, मूर्त्ति नहीं जिसका नाम महान् यश वाला है। उसका वर्णन इन ऋचाओं म आया है जिनके आदि मे हिर ण्यगर्भ मा मा हि ँ सीत् यस्माज्जात इत्यादि है।

हिरण्यगर्भ समवर्ततामे भूतस्य जात पति रक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ऋ० अ० ८। अ० ७ व मन्त्र १

जिसके गभ में प्रकाशित लोक सूर्यादि है वही सारी सृष्टि से पूर्व वर्तमान था और वह एक ही सब उत्पन्न सृष्टि का पति है इस पृथ्वी और द्युलोक को उसी ने धारण किया है उसी सुख स्वरूप परमेश्वर की उपासना करनी योग्य है।

अन्धन्तम प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्या रता ॥

यजु० अ० ४० मन्त्र ६

जो लोग कारण रूप प्रकृति की उपासना करते है वे अन्धकार में गिरते हैं और उनसे भी अधिक अन्ध कार में वे गिरते हैं जो कार्य्यरूप प्रकृति जन्य पदार्थो की उपासना करते हैं।

इन वैदिक प्रमाणों से स्पष्ट है कि पाषाणादि मूर्ति की पूजा नहीं करनी चाहिए केवल पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

युक्ति से भी मूर्ति पूजा ठीक सिद्ध नहीं होती। यदि कहा जाय कि मूर्ति में देव की भावना की जाती है तो यह भावना सच्ची होगी या झूठी। यदि सच्ची है तो सुख को भावना करने से सुख ही सुख होना चाहिए दु ख न होना चाहिए परन्तु हम देखते हैं दु ख होता है। क्या कभी जल में दुग्ध की मिट्टी में मिश्री की भावना सच्ची हो सकती है? यदि भावना झूठी है तो मूर्ति पूजा झूठी हो ही गई।

यदि कहो कि परमेश्वर सर्व व्यापक है और मूर्ति में भी है तो वह पुष्प चन्दन आदि मे भी व्यापक हुआ फिर वे वस्तुएँ मूर्ति पर क्या चढ़ाते हो? वह तो मूर्ति पूजकों के शरीर म भी व्यापक है तो अपने म ही व्यापक क्यों नह मानते?

यदि कहो कि मूर्ति पूजा अज्ञानियों के लिए ब्रह्म के जानने का साधन है तो गुण उपयुक्त साधन द्वारा प्राप्त होता है निराकार और चेतन ब्रह्म का ज्ञान साकार और जड पदार्थ के द्वारा कैसे हो सकता है

यदि कहो कि प्राण प्रतिष्ठा करने से मूर्ति सजीव हो जाती है तो यह बात भी झूठी है। किसी भी मूर्ति मे जीव के लक्षण नहीं पाए जाते। शरीर में तो प्राण के आने जाने के लिए छिद्र होते हैं मूर्ति मे वह भी नहीं।

यह कहना कि मूर्ति पूजा परम्परा से चली आती है सर्वथा मिथ्या है। वेद अनादि है जब उन्हीं में मूर्ति पूजा नहीं तो कैसे कहा जा सकता है यह परम्परा

से चली आती है ?

बिना आकार के प्रतिबिम्ब नहीं उतर सकता और जब कि परमेश्वर का आकार नहीं तो उस की मूर्ति झूठी। यदि किसी का फोटो ठीक २ प्रति कृति उतार कर स्मरण करने, और देखने को सामने रखा जाये तो ठीक है परन्तु परमेश्वर की मूर्ति और अनुकृति बनाना और नकल करना सर्वथा मिथ्या और अवैध है।

प्रश्न—यदि ध्यान करते समय चन्दन का एक चिन्ह बना लिया जाय और उस पर दृष्टि जमाई जाय तो क्या ध्यान अच्छी तरह नहीं हो सकता ?

उत्तर—परमेश्वर मनुष्य की आत्मा मे और उस के शब्द मे भी व्यापक है। अत सब को अपने आत्मा मे ही सच्चे मन से ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। चन्दन का चिन्ह बनाया जाय तो उस से भी ध्यान मे विघ्न पड़ेगा। इसी प्रकार माला फेरने मे भी गिनती मे ध्यान रहेगा।

प्रश्न—नशे की दशा मे ध्यान खूब जमता है और मनुष्य उसी मे मग्न हो जाता है अत जैसा ध्यान ईश्वर का नशे की दशा में हो सकता है वैसा अन्य दशा मे नहीं हो सकता।

उत्तर—यह तो ठीक है कि नशे की अवस्था मे जिस वस्तु का ध्यान आता है मनुष्य उस मे मग्न हो जाता है परन्तु उसे वस्तु का वास्तविक ज्ञान नहीं होता क्योंकि ऐसा ज्ञान एक वस्तु का दूसरी वस्तुओ के साथ का यथार्थ सबन्ध स्थिर करने से होता है और यह नशे की दशा मे होना असम्भव है। उस मे गुणी का गुणो से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। ऐसी अवस्था मे यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

प्रश्न—साकार मूर्ति पर ध्यान लगाने का अभ्यास करने से मन स्थिर हो जाने का स्वभाव हो जाता है इस लिए भविष्य मे निराकार ईश्वर के ध्यान मे भी लगाया जा सकता है। क्या यह ठीक नहीं ?

उत्तर—नहीं। साकार पदार्थ पर किए हुए ध्यान का अभ्यास निराकार का ध्यान करने में काम नहीं दे सकता। यदि दे सकता है तो साकार विषय मे लीन मनुष्य का ध्यान भी ईश्वर में लगना चाहिए जिसे कोई भी अनुभवी पुरुष नहीं मान सकता। उस से भी बढ कर इस के विरुद्ध क्रियात्मक प्रमाण यह है कि कोई भी बुद्धिमान् योगाभ्यासी सज्जन किसी जड मूर्ति का चिन्तन व मनन नहीं करता इस लिए ईश्वर के ही गुणो का ध्यान तथा मनन जिज्ञासु को करना चाहिए इसी से उस का मन शुद्ध होगा क्योंकि अन्त करण जिस प्रकार का मनन या चिन्तन करता है वैसा ही बन जाता है। यही वजह है सर्व शक्तिमान ईश्वर के पवित्र गुणो का मनन तथा ध्यान करने से जिज्ञासु को शक्ति और पवित्रता प्राप्त होती है और उस का दृढ अभ्यासी होने पर वह ईश्वर का निश्चित ज्ञान और आत्मा से उस का प्रत्यक्ष भी कर सकता है।

क्या सिनेमा-टाकी धर्मप्रचार में उपयोगी साधन होगा ?

[ले०—श्री० गोविन्दराम हासानन्द कलकत्ता]

"आर्य मित्र" में कुछ सप्ताहों से इस विषय के लेख निकल रहे हैं, प्रस्तावक महाशय ने सिनेमा द्वारा प्रचार की आवश्यकता को बताकर ६० हजार रुपये का प्रस्ताव करते हुए एक महाशय १० हजार रुपये लगाने को प्रस्तुत हैं, सूचित किया है।

आर्यसमाज एव ऋषि दयानन्द के अनुयायी होने के नाते मै अपने विचार आर्य जगतके समक्ष विचारार्थ रखना चाहता हूँ। कारण आर्य समाज का नियम है "सब काम धर्मानुसार विचार करके करने चाहिये"।

लोग धर्म मन्दिरों में श्रद्धा और भक्ति के भाव लेकर जाते हैं और थियेटरों मे तमाशा देखने का भाव लेकर जाते हैं। धर्म तमाशे का विषय नही

धर्म मे उसी आचार्य वा उपदेशक का प्रभाव पड़ता है जिनके आचरण शुद्ध हों मन, वचन, कार्य एक से हो, ढागी और आडम्बरयुक्त उपदेशक का प्रभाव नहीं पड़ता, ऋषि दयानन्द का जो प्रभाव ससार पर पड़ा वह हम १० लाख आर्यों का नहीं पडता इसका कारण हमारे मन, वचन, कर्म एक नहीं।

"दयानन्द सिद्धान्त भास्कर" नामक पुस्तक के २७ वें पृष्ठ पर ऋषि के एक पत्र का हवाला देते हुए स्पष्ट सिद्ध किया गया है कि ऋषि दयानद नाटक तमाशे के विरोधी थे।

सिनेमा द्वारा प्रचार के प्रस्तावक महाशय लिखते हैं कि "जो लोग सारे जीवन में ऋषि की पूरी जीवनी नही पढ़ पाते थे ढाई तीन घन्टे में चित्रपट पर उसका अध्ययन कर लेंगे" क्या खूब लिखा है ५७ सौ पृष्ठों पर लिखी गई सैकड़ों शिक्षाप्रद घटनाओं का अध्ययन ५-७ घटनाओं के चित्र देखकर ऋषि की सारी जीवनी का अध्ययन हो जायगा ? क्या कहना।

सिनेमा से यदि धर्म प्रचार और आचरण का सुधार वा प्रभाव पड़ना होता तो राम, कृष्ण, हरिश्चन्द्र, सीता, सावित्री, शैव्या आदि के चित्र और चरित्र सिनेमा और नाटको मे देखने वाले हिन्दू-मुसलमानों मे कितने ही सचरित्र, भक्त और अनुयायी बन गये होते।

कर्णवास के राव कर्ण सिंह द्वारा आयोजित राम लीला के निमन्त्रण में ऋषि दयानन्द के न जाने पर कर्ण सिह क्रोधित हुए, ऋषि ने कहा "तुम कैसे क्षत्रिय हो महा पुरुषों की नकल लौंडों से करवाते हो।"

आर्य जगत मे यह प्रसिद्ध बात है कि ऋषि दयानन्द अपना फोटो नही खिंचवाते थे इसी लिए प्रामाणिक चित्र आज हमारे सामने नहीं हैं। आज भी आर्य समाज के वीतरागी, आदर्श सन्यासी स्पष्ट वक्ता श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज फोटो लेने नहीं देते, उनका जो चित्र

देखने में आता है यह सन्ध्या करते समय आख बन्द रहते लिया गया है।

मुनिवर पं० गुरुदत्त जी से एक सज्जन ने कहा आप ऋषि भक्त है सुलेखक हैं ऋषि की जीवनी क्यों नही लिखते ? मुनिवर ने उत्तर दिया मै लिख रहा हूँ, कुछ मास बाद पूछा गया कितना लिखा गया ऋषि भक्त गुरुदत्त उत्तर देते है "मै ऋषि की जीवनी कागज पर नहीं लिख रहा अपने जीवन मे अङ्कित करने की चेष्टा कर रहा हूँ। जो ऋषि की जीवनी का अध्ययन करना और कराना चाहते है उनको उपरोक्त कथन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

हजरत ईसा, मूसा मुहम्मद गुरुनानक गुरु गोविन्द सिंह को किसी सिनेमा वा थियेटर कम्पनी ने अपने परदे पर वा स्टेज पर लाने का साहस किया ? ऋषि दयानन्द को परदे पर लाने का साहस इसलिए हो रहा है कि आर्य समाज में ९०–६५ सैकड़ा सदस्य पौराणिक विचार और सस्कार वाले भरती हो गये हैं।

सिनेमा के चित्रपट पर ऋषि दयानन्द का चरित्र चित्रण और भौपू पर ऋषि दयानन्द की आवाज भरने वाले कौन होंगे ? चरित्र भ्रष्ट दक्ष एक्टर्स या आदर्श सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द या स्वतन्त्रा नन्द

सीनेमा द्वारा "कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" का सुख स्वप्न और प्रलाभन दिखाने वाले सज्जन इस चर्चा और कार्य को छोड़ देवें वरना अपना नुकसान और आर्य समाज को गिराने के साधन बनेंग।

आर्य-ध्वज

(लेखक—श्री शिवदयालु जी मेरठ)

"आर्य्य ध्वज" के आकार स्वरूप ध्वज-रोहण के गीत इत्यादि के सम्बन्ध मे प्राय आर्य समाजे अन्धकार मे पाई जाती हैं। 'आर्य्य ध्वज' के सम्बन्ध मे अजमेर की अर्द्धशताब्दी के अवसर पर कुछ निश्चय हुए थे। इस लेख मे उन निश्चयों का स्पष्टीकरण किया गया है। आशा है आर्य्य समाजें उनसे यथेष्ट प्रकाश ग्रहण करेगे।

आर्यसमाज वेदों मे विश्वास रखने वालो की युग २ में ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तो द्वारा लिखे गये उपनिषदा, दर्शनादि सूत्रो मे आस्था रखने वाले समारके समस्त मनुष्यों की एक प्रमुख तथा मान्य सस्था है। आर्य समाज का धर्म निश्चय और निर्विवाद रूपेण सार्वभौमिक (Universal) तथा सार्वकालिक (Eternal) है। सत्य की पूजा (Truth Worship) विश्वभ्रातृत्व (world brotherhood) तथा समता (Equality) उसका मानव-जाति के प्रति प्रमुख सन्देश है।

आर्यसमाज केवल भारत देश मे ही नहीं अपितु बाहर भी कितने ही देश विदेशों मे सस्थापित है और उस शुभ घडी की उत्सुकता पूर्वक बाट जो रहा है, जब कि संसार के कोने कोने मे भगवान् दयानन्द का यह पवित्र सघ सुसगठित होगा।

आर्य-जाति अज्ञात काल से नाना प्रकार के चिह्नों से चिह्नित ध्वजो को धारण करती आई है इन सब ध्वजों में ओङ्कार का चिह्न तो प्राय सर्वत्र ही पाया जाता है। आर्य जाति के ध्वजों की भित्तिका (Surface) तो लगभग सर्वदा ही लाल, केसरी, बसन्ती व गेरुआ वर्ण की रही है। अभिप्राय यह है कि लालिमा से आर्य-ध्वज सदा चमकते रहते हैं। भले ही युग २ ध्वज मे कुछ २ परिवर्तन होता रहा हो किन्तु मौलिक परिवर्तन का कहीं पता नही। वर्तमान युग में भी आर्य्य सभ्यताभिमानियों को अपने एक सम्यक् निर्धारित ध्वज की कल्पना करने की आवश्यकता विशेष प्रकार से प्रतीत हो रही थी और यह अनुभव किया जा रहा था कि आर्य ध्वज के आरोहण, अवतरण आदि की पद्धति भी सुचारु रूप से निर्धारित हो जानी चाहिए। तथा ध्वज गीत व जयघोष आदि का वर्णन भी किया जाना आवश्यक प्रतीत हो रहा था।

आर्य सभ्यता के महान् प्रचारक महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर शताब्दी सभा ने अपने विशेष प्रस्ताव द्वारा आर्य-ध्वज का निम्न लिखित स्वरूप निर्धारित किया —

आर्य-ध्वज का रग लाल (गेरुवा) होना चाहिये और उस पर सूर्य के आकार के बीच मे ओ३म् 'ॐ' यह चिन्ह अङ्कित होना चाहिये।

इस निश्चित प्रस्ताव के अनुसार मथुरा शताब्दी मे समारोह-पूर्वक आर्य-ध्वज का आरोपण किया गया। किन्तु आर्य-ध्वज के भाव तथा महत्व (Significance) आदि का स्पष्ट निदर्शन न

होने तथा ध्वज के आरोहण, अवतरण आदि का प्रकार निश्चित न किये जाने के कारण ध्वज का कोई विशेष प्रचलन न हुआ। आर्य-समाजो तथा आर्य-संस्थाओं ने भी अपने २ विशेष पर्व व उत्सवादि पर इस ध्वज को उत्साह पूर्वक फहराने की ओर कोई विशेष ध्यान न दिया।

अत महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज की अर्द्ध-शताब्दी के शुभ अवसर पर शताब्दी समिति की आज्ञा से आय-ध्वज समिति ने निम्न प्रकार से आर्य-ध्वज के स्वरूप की व्याख्या तथा उसके आ-रोहण व अवतरण तथा ध्वजगीत व जयघोष आदि का निश्चय किया था। ससार के प्रत्येक आर्य-समाज, आर्य सस्था, समिति तथा संघ को चाहिये कि वह ध्वज के उच्चतम सार्व-भौमिक लक्ष्य को दृष्टि मे रखते हुये विशेष हर्ष और उत्साह के साथ इस का आरोहण करे।

आर्य-ध्वज का स्वरूप तथा उस की व्याख्या

ध्वज की कल्पना मे साम्प्रदायिक भेद भावो को कोइ स्थान नही प्रदान किया जा सकता। आर्य ध्वज किसी देश विशेष की सीमाओ से भी असीमित तथा विश्व बन्धुत्व विरोधक वतमान युग के राष्ट्-वाद (Nationalism) के बन्धन से भी मुक्त है। पूजीवाद (Capitalism) तथा साम्राज्य-वाद (Imperialism) की अनर्थकारी संस्थाओं (Institutions) से भी आर्य ध्वज का कोई सम्बन्ध न होगा।

आर्य-ध्वज की भित्तिका (Surface) लाल रग की होगी। लाल रग सदा से शक्ति तथा बलिदान का सूचक रहा है। ससार के अन्दर महान् से महान् सत्य भी बिना शक्ति और बलिदान के फैल नही सकता। अपनी सभ्यता तथा गौरव की रक्षा के लिये आर्य-जाति को शक्तिशालिनी बनाना होगा। और निरन्तर तप त्याग और बलि-दान की सुन्दर बलिवेदी को सजाना होगा।

आर्यध्वज के मध्य मे अंशुमाली सूर्य का आ-कार स्वर्ण (सुनहरी) वर्ण मे चिन्हित होना चाहिये। सूर्य अन्धकार का नाशक तथा वैदिक ज्ञानप्रभा प्रकटाने की ओर संकेत करता है। सूर्य का स्वर्ण (सुनहरी) वर्ण मनुष्यो को श्रेष्ठतम कर्मों (Golden Deeds) के आचरण करने का उ-देश देता है।

सूर्य-मण्डल के अन्दर श्वेत वर्ण में ओंकार का "ओ३म्" यह चिन्ह चिन्हित होना चाहिये। ओ३म् यह परमात्मा का सर्व-श्रेष्ठ तथा निज नाम है। ससार के साहित्य मे ओ३म् की महिमा का अनुपम और असीम बखान है। ससार का एक एक अणु मूक भाव से उस महान् प्रभु की महिमा का अहर्निश गान करता है। वसुधातल के सारे साधु, सन्त और साधक उस अद्वितीय उपास्यदेव की अलौकिक अनोखी झांकी के लिये विह्वल रहते है। इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महान से भी महान् सच्चिदानन्द ब्रह्म को प्राप्त करना मानव-जीवन का चरम लक्ष्य है। यह ही ससार के सारे श्रेष्ठ कर्मों का मर्म है। ओ३म् चिन्ह का श्वेत वर्ण परमात्मदेव के निर्मल निर्विकार शुद्ध स्वरूप का सूचक है।

संक्षेप में आर्य्यध्वज का स्वरूप निम्न प्रकार है।

आर्यध्वज का स्वरूप

(१) भित्तिका—लाल वर्ण की।

(२) सूर्य्य-मण्डल—मध्यमें स्वर्ण (सुनहरी) वर्णका।

(३) ओंकार—सूर्य-मण्डल के मध्य मे श्वेत वर्ण में चिह्नित ओ३म् यह चिह्न।

(४) लम्बाई चौडाई—ध्वज की लम्बाई (धरती के समानान्तर बाजू) तथा चौड़ाई (ध्वज-स्तम्भ का समानान्तर बाजू) का अनुपात (निस्बत) ३ २ होगा अर्थात् यदि लम्बाई ६ फीट होगी तो चौड़ाई चार फीट होगी।

(५) ध्वज-वस्त्र—ध्वज का कपड़ा शुद्ध तथा स्वदेश निर्मित होना चाहिए।

आवश्यक नोटः—

ध्वज की भित्तिका का वर्ण सूर्य-मण्डल तथा ओकार के वर्ण, आकार ध्वज में उनके विहित स्थान ध्वज की लम्बाई, चौड़ाई तथा वस्त्र उपरोक्त प्रकार के ही होने चाहियें। यदि असावधानता के कारण कोई त्रुटि रह गई तो वह ध्वज आर्य-ध्वज न माना जा सकेगा तथा आर्य ध्वज के मान की अवहेलना करने वाला तक समझा जावेगा।

ध्वज आरोहण की तैयारी

जिस स्थान पर ध्वज खड़ा करना हो वह चौरस विस्तृत साफ तथा सुरक्षित होना चाहिए। झण्डे का स्तम्भ खूब मजबूत तथा सुन्दर होवे। सड़ा, फटा, टूटा या बाका तिरछा बास वा बल्ली स्तम्भ के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। ध्वज-स्तम्भ में कभी भी लम्पो की तरह जोड़ नहीं होना चाहिए स्तम्भ सफेद रगा हुआ होना आवश्यक है।

स्तम्भ की लम्बाई के अनुरूप ही ध्वज की भी लम्बाई चौड़ाई होनी चाहिए। ध्वज की चक्री तथा डोरी भी मजबूत होनी चाहिए। स्तम्भ खड़ा करने से पहले डोरी को चक्री पर चढ़ा दी जावे। डोरी सफेद सूत की होनी चाहिए, दूसरे किसी भी रग की न हो।

स्तम्भ काफी गहरा गड्ढा खोद कर मजबूती के साथ गाड़ना चाहिए। यदि स्तम्भ अधिक ऊचा हो तो उसे दो अलग जगहों से तीन तीन रस्सियों से बाध कर तान देना चाहिए। स्तम्भ इतनी मजबूती से खड़ा किया जाय कि तेज से तेज हवा में भी वह झण्डे के झोकों को सह सके। स्तम्भ के चारों ओर आवश्यकता पड़ने पर पक्का चबूतरा बनाया जा सकता है और उसे गमलों से सजाया जा सकता है।

ध्वज-स्तम्भ विन्दु के पीछे ६ फीट के फासले पर एक रेखा खीचीं जावे। बाद मे स्तम्भ-बिन्दु से रेखा को छेदने वाली लम्बी रेखा खीच कर उसके दो सम भाग किये जावें। जिस स्थान पर यह लम्बी रेखा बड़ी रेखा को काटेगी उस स्थान पर अध्यक्ष को खड़ा रहना होगा। स्तम्भ-बिन्दु को ध्वज-क्षेत्र का मध्य-विन्दु मानकर पहले खींची हुई बड़ी रेखा को छेदने वाला एक वर्तुल (सरकिल) निकाला जावे। यह वर्तुल उस रेखा के नीचे नहीं चाहिए जिससे उसका आकार घोड़े की नाल के सदृश दिखाई दे। इस वर्तुल के समानान्तर चार-चार फीट के फासले से आवश्यकतानुसार वर्तुल निकाले जायें।

बड़ी रेखा के मध्य पर अर्थात् स्तम्भ विन्दु से ६ फीट पीछे अध्यक्ष का स्थान होना चाहिये। इस स्थान के दो फीट पीछे बाईं ओर शिविराधिपति तथा दाहिनी ओर सेनापति का स्थान होता है।

ध्वज-स्तम्भ की रेखा से बाईं ओर शङ्ख व बिगुल बजाने वाले तथा दाहिनी ओर ध्वज-रक्षक महाशय खड़े होते हैं। स्तम्भ के सम्मुख स्तम्भ को मुख़ातिब होकर ध्वज-गीत के उद्गाता खड़े रहते हैं। अध्यक्ष के पीछे दोनो ओर दल के भिन्न भिन्न अधिकारी खड़े रहते हैं। उनके पीछे सन्यासी, वानप्रस्थी तथा निमन्त्रित सज्जन अथवा आर्य्यसमाज, ज़िला उप-प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा, सार्वदेशिक सभा अथवा अन्य आर्य्यसभ्यताभिमानी सभा सस्थाओ के अधिकारी व अन्तरग सदस्य यथास्थिति उपस्थित होते हैं। ध्वज के सामने खींचे हुए वर्तुल रेखाओं पर ध्वजवन्दन करने वाले आर्यवीर-दल आदि स्वयंसेवक सस्थाओं के सैनिक खड़े रहते हैं। तदुपरात पहली कतार मे ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी-मण्डल, बालक, बालिका आदि उनके पीछे महिलाए तथा उनके पीछे अन्य स्वय-सेवकों की कतारें खडी की जाती हैं।

उपर्युक्त वर्तुल रेखाए निकालने के बाद उनके पीछे तीनो ओर १० फीट फ़ासला छोड़ कर एक बड़ा आयात (Rectangle) निकालना चाहिये। इस आयात मे बाहिर दर्शको का स्थान होता है। दर्शकों को इस आयात के भीतर आने नहीं देना चाहिये।

ध्वजारोपण करने के पहले उसकी तह निम्न-लिखित प्रकार से करके या बाध कर उसे ऊपर चढ़ा देना चाहिये। ध्वज के चारों कोने पहले खींच कर उसकी ३ या ४ लम्बी तह की जावें तदुपरात इस लम्बी पट्टी को हवा में फहराने वाले सिरे से लेकर पगड़ी के सदृश मोड़ कर छोटी तह की जावे। रस्सी का जो सिरा चक्री के ऊपर से बाहरी बाजू मे आता है उसे ऊपर के सिरे को लगाया हुआ बन्द बाध देना चाहिये तथा अन्दर से आए हुए नीचे के रस्सी के सिरे को ध्वज वस्त्र के नीचे के सिरे का बन्द मज़बूत बाध देना चाहिये। इसी नीचे के सिरे से छोटी तह बनाए हुए ध्वज को बाद मे इस प्रकार गाठ बाध कर उसकी गठड़ी बनाना चाहिये कि जो ज़ोर से खींचते ही खुल जावे तथा ध्वज हवा मे फहरने लगे। इस गठडी को ध्वज वन्दन के पहले ऊपर चढ़ा रखनी चाहिये तथा नीचे लटकने वाली रस्सी को स्तम्भ मे विशेष दक्षता के साथ बाध देना चाहिये। इस प्रकार ध्वज फहरने की तय्यारी होती है।

ध्वजारोहण के अनुष्ठान के पूर्व आर्य्यवीर-दल आदि स्वयसेवक सघों के अधिकारी अपने अपने दल तय्यार कर ध्वज-वन्दन क्षेत्र की बाईं ओर से एक के पीछे एक सिलसिले वार लेजावें तथा नियत स्थानों पर उन्हें खड़ा करें। ऐसा करते समय ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, बालक बालिकाओं का स्थान ध्यान मे रखते हुए उन्हें ही पहले भीतर लाया जावे। शङ्ख व विगुल बजाने वाले, उद्गाता तथा भिन्न २ अधिकारी अपने २ नियत स्थानों पर जाकर खड़े रहें तथा आर्यसमाज व आर्य-जाति के

प्रमुख नेता निमन्त्रित सज्जन आदि को भी आदरपूर्वक उनके लिये नियत किये हुए स्थान प्रदर्शित किये जावें जिससे वह भी सब अपने २ स्थानों पर स्थित हो जावें।

ध्वजारोहण-विधि

ध्वजारोहण के समय समस्त आर्यवीरों, स्वय-सेवकों तथा दर्शकों को अपने २ स्थान पर 'होशियार' की हालत में खड़ा रहना चाहिये। प्रत्येक आर्य्य सभ्यताभिमानी के लिये यह आवश्यक है कि वह आर्य-सभ्यता के चिह्न अपने इस आर्य-ध्वज के आरोहण के समय ध्वज को मान प्रदान करने के भाव से बिलकुल शात तथा गम्भीर-चित्त होकर खड़ा रहे। परस्पर वार्तालाप करना सर्वथा अनुचित है।

टेढ़ा, तिरछा, टांगे पसार कर आलस्य-युक्त होकर खड़ा रहना, टहलने लगना या बीच में ही वहा से निकल जाना अनुचित है। अन्य व्यक्ति भी जो इस अवसर पर उपस्थित हो उन्हे भी सावधान होकर खड़ा रहना चाहिये।

सब से प्रथम उद्गाता लोग 'वेद-मंत्रों' द्वारा ईश-प्रार्थना करेंगे तदुपरान्त ध्वजरक्षक अध्यक्ष महोदय से अभिवादन पूर्वक ध्वज फहराने की प्रार्थना करता है तथा ध्वज-स्तम्भ के समीप जाकर बँधी हुई डोरी खोल देता है। रस्सी को खोलने के बाद उसका भीतरी भाग अध्यक्ष के बाए हाथ में अर्पण कर देता है तथा बाहरी हिस्सा, जिससे ध्वज की गठरी बँधी हुई रहती है, दाहिने हाथ में अर्पित कर ध्वजरक्षक उसे खींचने की अध्यक्ष से प्रार्थना करता है। उसके खींचते ही गठरी की गाठ खुल जाती है तथा ध्वजा हवा मे फहराने लगता है। स्वय-सेवकों तथा समस्त उपस्थित सज्जनों को इस समय अत्यन्त शात तथा गम्भीर भाव से "होशियार" की हालत मे खड़ा रहना पड़ता है। ध्वज फहरते ही शख, बिगुल तथा बाजे बजने लगते हैं।

ध्वजा फहराने लगने पर ध्वजरक्षक स्वय-सेवकों को "कदम खोल" "आराम" यह आज्ञाएँ देकर ध्वज की रस्सी स्तम्भ को पहिले ही के समान दक्षता-पूर्वक बाध देता है, अध्यक्ष को अभिवादन कर फिर पीछे हटकर अपने स्थान पर जाकर खड़ा होता है। अध्यक्ष भी अपने स्थान पर जा खड़े होते हैं।

इसके बाद फिर से "होशियार" की आज्ञा दी जाती है।

और फिर—

"जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी"

यह सुन्दर भावपूर्ण ध्वज-गीत गाया जाता है। ध्वज गीत को गायकगण स्वर के साथ गान करें। गान समाप्त होने पर अध्यक्ष का भाषण होता है तथा आवश्यक कार्य-क्रम आदि भी विशेष दशा मे घोषित किया जा सकता है। अन्त मे तीन बार अनुशासनपूर्वक 'वैदिक-धर्म की जय' इन जयकारों के साथ ध्वजारोहण विधि समाप्त होती है। वर्तुल (सरकिल) के बाहिर जाते समय भी आर्यवीरों को अनुशासन का पूरा २ ध्यान रखना चाहिये। उन्हें चाहिये कि वह सब से प्रथम पहली कतार, उसके बाद दूसरी, इसी

प्रकार एक के पीछे एक सिलसिलेवार अपनी दाहिनी ओर से बाहिर निकल जावें। तथा बिना किसी भी प्रकार की अशान्ति के अपने २ दल के अधिनायकों की आज्ञा के अनुसार कार्य करने में प्रवृत्त हो।

ध्वजावतरण विधि

इस विधि के करते समय भी सब आर्यवीरादि ध्वजा रोहण विधि के समान ही ध्वजा के सामने वर्तुलाकार अनुशासन-पूर्वक खडे होकर ध्वज-रक्षक के आदेशानुसार पूर्ववत्—

"जयति ओ३म् ध्वज व्योम विहारी"

इस ध्वजगीत का गान करें। तदुपरान्त स्तम्भ से रस्सी खोलकर ध्वज को उतारना आरम्भ किया जाता और उसी उतारते समय शंख, बिगुल तथा बाजे बजाते जाते हैं। ध्वज को उतार लेने के उपरान्त पूर्ववत् उसकी तह कर उपस्थित उच्चाधिकारी को सुरक्षित रखने के लिये अर्पण कर देना चाहिये। ध्वज-रक्षक के कथन तथा अनुशासन के अनुसार अन्त में तीन बार विधि-पूर्वक 'वैदिक-धर्म की जय' का घोष करना चाहिये। और पूर्व कथित विधि से समस्त आर्य-वीरादि सिलसिलेवार ध्वजक्षेत्र से बाहिर निकल आवें।

ध्वजारोहण विधि प्रातःकाल यज्ञ की समाप्ति पर अथवा उससे पूर्व की जानी चाहिये। तथा ध्वजावतरण की विधि साधारणतया सूर्यास्त से पूर्व की जानी चाहिये। ध्वज की रक्षा का उचित प्रबन्ध न होने की दशा में एक घण्टा पर्यन्त ध्वज-क्षेत्र में ध्वज फहराने के उपरान्त उपर्युक्त विधि से उतार लिया जाना चाहिये।

जय-घोष

आर्य-जाति के अन्दर जय-घोष की पद्धति भी कोई अनोखी वा अर्वाचीन नहीं है। अज्ञातकाल से इसका प्रचार है। आर्य-सभ्यता के महान् प्रचारक ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, बुद्ध, शंकर, दयानन्द आदि का जय-घोष करना, आर्य-जाति के महान् नेता राम, कृष्ण, शिवाजी, प्रताप, गुरु गोविन्द, तिलक तथा गांधी आदि की जय के नारे लगाना कोई अनुचित बात नहीं अपितु समय २ पर इनकी आवश्यकता तथा विशेष प्रयोजन भी होता है। इन महा-पुरुषों की जयन्तियां तथा इनसे सम्बन्धित उत्सव व पर्वों पर इनके जयकारे लगाना सर्वथा युक्ति-युक्त तथा आवश्यक है। किन्तु चाहे जिस अवसर पर चाहे जिसका जयकारा लगाने लगना यह कोई नियम वा अनुशासन की बात नहीं है।

यह भली भांति ध्यान में रखना चाहिये कि जब २ आर्य्य-ध्वज के आरोहण तथा अवतरण का प्रसंग हो तब किसी व्यक्ति का, चाहे वह कितना भी महान् तथा वन्दनीय क्यों न हो, जयकारा नहीं लगाना चाहिये।

इस अवसर पर तो 'वैदिक धर्म की जय' केवल यह ही घोष करना उचित ठहराया गया है। वैदिक-धर्म की जय में संसार के सभी ऋषि, मुनि, साधु-सन्त, महात्मा तथा महापुरुषों की जय सम्मिलित है, क्योंकि इनका जीवनोद्देश्य जगति-तल पर विशुद्ध आर्य्य वैदिक-संस्कृति का प्रचार करना तथा आर्य्य-आदर्श और गौरव की रक्षा करना ही रहा है। व्यक्तियों से आर्य्य-धर्म कहीं अधिक महान्, पूज्य तथा आदरणीय है। अतः एक बार नहीं, तीन बार "वैदिक-धर्म की जय" का सुहावना घोष किया जाना चाहिये।

"वैदिक-धर्म की जय" केवल यह ही एक पुनीत जय घोष संसार के समस्त आर्य-सभ्यताभिमानी देशों तथा जातियों में गूंजना चाहिए। संसार के समस्त आर्य, हिन्दू बौद्धादि बन्धुओं को तथा आर्य सभ्यता से प्रेम रखने वाले अन्य ईसाई, मुसल-

मान, यहूदी आदि सज्जनों को वैदिक-धर्म की उदार पताका के नीचे विश्व-बन्धुत्व के नाते श्रद्धा और प्रेम के साथ एकत्रित होकर वैदिक-धर्म का जय-घोष करना चाहिए।

नोट —दयानन्द निर्वाण अर्द्ध-शताब्दी समिति ने महर्षि दयानन्द जी महाराज की स्मृति म मनाए गए निर्वाण-अर्द्धशताब्दी के अवसर पर आर्य-ध्वजारोहण के समय तीन बार विधि-पूर्वक 'वैदिक-धर्म की जय' का घोष करने के उप-रान्त एक बार 'महर्षि दयानन्द की जय' का घोष करना भी निश्चय किया था। यह विकल्प केवल शताब्दी के अवसर के लिए ही था।

जय-घोष सिखाने की पद्धति

"वैदिक-धम की जय" इस जय-घोष में से ध्वजरक्षक ज्यों ही उच्चे स्वर मे "वैदिक धर्म की" उन शब्दों का उच्चारण करे त्यों ही समस्त आर्य वीरों, सेवकों व उपस्थित जनता द्वारा "जय" की गगनभेदी ध्वनि की जानी चाहिए। जय-घोष के समय आवाज गूंजती हुई हो इसका पूरा २ ध्यान रखना चाहिए। रोते हुए स्वर मे जयघोष कदापि नही करना चाहिए। जय-घोष का अथ है वैदिक धर्म के प्रति अपने हृदय के प्रेम तथा हर्ष को प्रकट करना। अतएव जय-घोष की ध्वनि उच्च तथा पराक्रमयुक्त गूंजती हुई गगनभेदी स्वर मे होनी अत्यावश्यक है।

आवश्यक निवेदन

१—ध्वजारोहण की विधि का अनुष्ठान किसी भी आर्य-सभ्यताभिमानी समाज, सभा, सघ, समिति संस्था वा सेवक-दल आदि द्वारा निश्चित दिवस पर किया जा सकता है। विशेष २ पर्व तथा त्यौहारों पर उत्सव, सम्मेलन तथा मेलों के अवसर पर निश्चित स्थान तथा समय पर ध्वजारोहण करने की प्रथा का प्रचार करना उचित तथा उपादेय है।

२—ध्वज के आरोहण तथा अवतरण की दोनों विधियां बहुत गौरव समन्वित हैं अतएव इनका अनुष्ठान विशेष अनुशासन के साथ शान्ति पूर्वक किया जाना चाहिए। आर्य्य-मन्दिरों तथा सस्था भवनो पर आर्य-ध्वज का निरन्तर फहरना अत्यन्त आवश्यक है। वर्ष के अन्दर (पुराना हो जाने पर) २ वा ३ बार निश्चित पर्वों पर इन ध्वजो को बदल भी देना चाहिये।

३—व्यक्तियो का भी अपने २ भवन पर ध्वजारोहण करने का अधिकार है। इसके लिए समयादि तथा विधि आदि का कोई बन्धन नहीं है। ध्वज के प्रति उचित मात्रा मे मान-प्रदर्शन किया जाना ही पर्याप्त है।

४—ध्वज-वस्त्र पर बेल बूटे निकालना गोट लगाना आदि सब वर्जित है। ध्वज को माला आदि चढ़ाना सर्वथा अनुचित तथा अनार्य कर्म है। किसी भी आर्य को भूलकर भी ऐसा अनार्य कर्म करने में प्रवृत नहीं होना चाहिए। अपने क्रियात्मक जीवन से आर्य-धर्म का पालन करना, आर्य-सभ्यता का प्रचार करना तथा आर्य गौरव की रक्षा मे अपना सर्वस्व समर्पण करने तक के लिए उद्यत रहना ही आर्य-ध्वज का सर्व-श्रेष्ठ सम्मान माना गया है।

५—ध्वज के इधर उधर नही पड़ा रहना चाहिए। उसको सुरक्षित स्थान पर रखना आवश्यक है। उसको पैर तले रूदना, उससे झाड़नका काम लेना उसकी एक प्रकार से अवहेलना करना है। अतएव जब ध्वज चढ़ा हुआ न हो तो उसकी तह करके सुरक्षित रखना चाहिये।

६—फटा पुराना या जिसका रग उड गया हो ऐसा ध्वज स्तम्भ पर कभी न चढाया जावे। पुराने यज्ञोपवीत के समान उसका भी विसर्जन कर देना चाहिए।

—

आर्य्य-ध्वज-गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम विहारी।
विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ॥ जयति० ॥

सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह लता सरमाने वाला।
साम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भवभय हारी ॥
॥ जयति० ॥

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी ॥
॥ जयति० ॥

इससे सारे क्लेश शमन हों, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरङ्ग बहे सुखकारी ॥
॥ जयति० ॥

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच नीच का भेद भुलाकर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखंड बिसारी ॥
॥ जयति० ॥

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भरदें वेद-ज्ञान घर घर में।
सुभग शान्ति फैले जगभर में मिटै अविद्या की अँधियारी ॥
॥ जयति० ॥

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जलावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी ॥
॥ जयति० ॥

आर्य जाति का सुयश अक्षय हों, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ॥
॥ जयति० ॥

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

ले० श्री पण्डित रामनारायण जी मिश्र
बी० ए० काशी

साधारण

(१) कोई दूसरा आदमी पैसा, रुपया, मिठाई दे तो बिना माता-पिता की आज्ञा के हर्गिज मत लो।

(२) किसी को कोई चीज देनी हो तो बाएं हाथ से मत दो और लेनी हो तो बाएँ हाथ से न लो।

(३) जब तक जान-पहचान न हो, मर्द स्त्री से चार आंख करके बात चीत नहीं करते। पराई स्त्री से बात करने की जरूरत पड़ जाय तो स्त्री के पैरों की तरफ देखना चाहिये न कि आंखों की तरफ। स्त्रियों की तरफ टकटकी लगाकर देखना या उनको घूरना या उनके शरीर को छूना बहुत बड़ी असभ्यता है। स्त्रियों को यदि माला पहनानी हो तो माला उनके हाथ में दे दो। वे स्वयं अपने गले में डाल लेंगी।

(४) स्त्रियों, बच्चों या अपाहिज और कमजोर लोगों पर कहीं आक्रमण हो अथवा वे किसी प्रकार में संकट में हों तो तुरंत उनकी रक्षा करो।

(५) किसी के घर में जिधर स्त्रियां रहती हों (जनाने में) न आना चाहिए। अपने घर में भी स्त्रियों को किसी प्रकार से सूचना देकर जाना चाहिए।

(६) जिस स्थान पर स्त्रिया नहाती हों या जस रास्ते में स्त्रियां ही जाती हों उधर न जाओ।

(७) जिस कमरे मे कोई स्त्री अकेली हो, सोई हो या कपड़ा पहनती हो या अनजान या परदा करने वाली स्त्री हो उसमे नहीं जाना चाहिए।

(८) बच्चों को गहना नहीं पहनाना चाहिए।

(९) छोटे बच्चों को पैसा नही देना चाहिये। उनमें पैसा मागने की आदत नहीं डालनी चाहिए।

(१०) कोई छोटा बच्चा कुछ कहना चाहे तो उसकी बात पहले सुनलो।

(११) भारतीय संस्कृति मे बच्चों के सुन्दर और प्यारे नाम रखने की प्रथा है। इस प्रथा को मत बिगाड़ो।

(१२) गाड़ी, नाव आदि में बच्चों को पहले चढ़ने दो, तब आप बैठो।

(१३) बच्चों, स्त्रियों और नौकरों को कभी न मारो। उनकी कमजोरी सब के सामने न बतलाओ।

(१४) बच्चों को पहले खाना दो। सबसे छोटे बच्चे से शुरू करो।

(१५) किसी मित्र या रिश्तेदार के घर जाओ तो बच्चों को अपने प्यार का परिचय दो।

(१६) विशेष अवसर पर किसी

करो तो उसके बच्चों को बुलाना मत भूल जाओ और जो नौकर साथ आवे उसको अवश्य कुछ खिला दो। निमंत्रित सज्जनों को उनकी स्थिति के अनुसार बैठने की जगह देनी चाहिए।

(१७) जब तक कोई भारी अपराध न हो जाय, किसी की रोजी न लो।

(१८) नौकर को भी भोजन-विश्राम आदि के लिए समय दो।

(१९) नौकर, हज्जाम, धोबी आदि से व्यर्थ बातें मत करो। उनसे दूसरों के घर की बातें मत पूछो और यदि वे ऐसी बाते करें तो मत सुनो।

(२०) जिसके मेहमान बनो उसके नौकर-चाकर को चलते समय थोड़ा-बहुत इनाम देना अच्छा है। यदि कोई मित्र या रिश्तेदार मिठाई आदि भेंट भेजे तो लाने वाले नौकर को कुछ इनाम दो।

(२१) सभ्य-समाज मे डकार लेना, खखारना, जीभ निकालना, नाक मे उँगली डालना, जमहाई लेना, पैर फैलाकर बैठना या हिलाते रहना, उंगली चटकाना, दात से नाखून काटना, कपड़ा चबाना, काना-फूसी करना, अंगड़ाई लेना, कान उंगली या कलम डालना इत्यादि बुरा समझा जाता है। जमहाई, खासी या छींक आवे तो मुंह पर हाथ या रूमाल रख लेना चाहिए, नाक बहती हो तो रूमाल से साफ कर लेनी चाहिए। हिचकी आवे तो सभा से उठ जाना चाहिए। और पानी पीकर या और किसी उपाय से उसको रोकना चाहिए।

(२२) साधारणतः सड़क पर किसी के गले में बाह डालकर चलना अच्छा नहीं।

(२३) दूसरे की चीज कहीं पहुँचानी हो तो जिस हालत मे मिले उसी हालत में पहुँचवा या पहुंचा दो।

(२४) गाड़ीवान, दूकानदार आदि से लेन-देन के लिये भौं भौं मत करो। गरीबों के पास दो-एक पैसा ज्यादा चला जाय तो जाने दो।

(२५) रेल के प्लेटफार्म पर या किसी सभा आदि मे जहा टिकट लगा हो, बिना टिकट या बिना निमंत्रण मत जाओ। जिस क्लास का टिकट हो उसी में बैठो।

(२६) ट्रेन की खिड़की से पानी न फेंको। ऐसा करना ही पड़े तो हाथ नीचे करके फेंको। जिस कमरे में बैठो उसको गंदा मत करो।

(२७) जहां कई मित्र ऐसे जमा हों जिनकी मातृभाषा भिन्न भिन्न हो, वहा जहां तक हो सके, ऐसी भाषा मे बातचीत करो जिसे सब समझ सकें।

(२८) जब तक आवश्यकता न हो अथवा बहुत गहरी जान-पहचान न हो बिना पूछे राय मत दो।

(२९) जहा बहुत से लोग बैठे हों वहा अपना रोना मत रोओ और अपने ही रोजगार की चर्चा मत करो।

(३०) भूल से तुम्हारा पैर या धक्का किसी को लग जाय तो उससे माफी मागो।

(३१) जहा दो-तीन आदमी हों, किसी एक से कान में बात मत करो। जिससे काम हो उसको अलग लेजाओ।

(३२) बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग करना शिष्ट लोगों मे भद्दापन समझा जाता है। उनके भाव सकेत से अथवा कोमल शब्दों मे प्रकट करने चाहियें। यदि प्रकट करो तो लघुशंका, शौच, जगल, टट्टी इत्यादि शब्दों से।

(३३) धोती या कुर्ता हटा कर कपड़े के अन्दर हाथ डालना या बदन खुजलाना अच्छा नहीं।

(३४) किसी के पीठ पीछे उसकी बुराई मत करो। दूसरे आदमी के गुणों की चर्चा करना अच्छा है पर वह भी उसके मुह पर नहीं। यदि दूसरे की बुराई करनी ही पड़े तो ऐसे शब्दों में करो जिसका प्रयोग उसके सामने भी कर सको। अपनी स्तुति आप मत करो, सुनो भी नहीं और अपनी बुराई सुनकर लड़ने मत लगजाओ। अपनी निन्दा सुनकर शान्त रहना बड़ी भारी तपस्या है।

(३५) सड़क पर किसी मुरदे (शव) को ले जाते हुए देखो तो एक तरफ हट जाओ अङ्गरेजी रिवाज टोपी उतारने का है। किसी की लाश का अनादर मत करो।

(३६) घर में किसी की मृत्यु हो जाय तो अपना शोक जोर जोर से चिल्लाकर मत प्रकट करो। ऐसे समय में धैर्य आवश्यक है।

(३७) पड़ौसी, मित्र, रिश्तेदार आदि के यहा शादी मौत आदि के अवसर पर अवश्य जाना चाहिए। मौत के अवसर पर बिना बुलाये ही जाना चाहिए और पूरी सेवा और समवेदना प्रकट करनी चाहिये। ऐसे समय मुर्दा भी उठाना हो तो उसको ऊँचे दर्जे की सामाजिक सेवा समझो। जो गरीब और असहाय हो उसके साथ तो ऐसा भी जरूर करना चाहिए। पडौसी जब मुर्दा जलाकर लौटे तब उनके यहा भोजन भेजो और आग्रह तथा प्रेम से उनसे भोजन करने के लिए कहो।

(३८) दूसरे आदमी की बात जब तक समाप्त न हो, बीच मे मत बोल उठो। ऐसा हो जाय तो तुरन्त क्षमा मागो।

(३९) "जो है सो" इत्यादि सखुन-तकिया की आदत न डालो। ऐसे अनावश्यक शब्दों को बात चीत मे बार-बार कहना बुरा है।

(४०) कोई आदमी रासता भूल जाय तो उस को ठीक रास्ते पर डाल देना चाहिए, चाहे ऐसा करने मे तकलीफ भी हो।

(४१) रास्ते मे कोई चिट्ठी पढ़वाए तो रुक कर पढ़ दो, यदि किसी अन्धे आदि को मदद की जरूरत हो तो उसकी तुरन्त मदद करो।

घर की लक्ष्मी

(ले०—श्रीमती शान्ता देवी)

स्त्रियां घर की लक्ष्मी होती है और उन्ही से घर की शोभा है। लक्ष्मी धन और ऐश्वर्य का देवी है, यह सदिग्ध है, परन्तु घर मे धन-सम्पदा की भरमार होने से ही यह नही कहा जा सकता कि घर मे लक्ष्मी की शोभा हो गई। घर की लक्ष्मी सुगृहिणी है। जिस सम्पद मे शोभा नही, सौन्दर्य नही, शृंखला नही, वह कुबेर का ऐश्वर्य हो सकता है; परन्तु लक्ष्मी श्रीहस्त का स्पर्श उसमे नही है। साधारण को जो असाधारण बना सकती हैं तुच्छ को जो अनुपम रूप दे सकती हैं, मनुष्य उन्ही को लक्ष्मी कहता है। यह लक्ष्मी नारी है, न कि पुरुष। पुरुष का कारबार है दूकान, कारखाना, आफिस, अदालत, राज्य और साम्राज्य के साथ, छोटी चीजो पर आसानी से उनकी दृष्टि नही जाती। परन्तु स्त्रियो का कारबार छोटी-मोटी बातो और तुच्छ से तुच्छ चीजो से चलता है। इन सब बातो मे आर्थिक वल पर नही, बल्कि सिर्फ अपने गुणो से जो सोन्दर्य और शोभा की सृष्टि कर सकती है, वे ही लक्ष्मी स्वरूपिनी कहलाती है। वास्तव मे गृह रचना और घर सम्हालना एक जबरदस्त कला है, इसमे सृजनी शक्ति का अभाव होने से काम नहीं चल सकता।

साधारणतः आर्ट या कला कहने से हम जो कुछ समझते हैं स्त्रियो की घर-गृहस्थी मे उसका स्पर्श बिना हुए घर हतश्री और प्राणहीन हो जाता ह। शिक्षा के बल से हो और चाहे अशिक्षित पटुत्व के कारण ही हो सुगृहिणी मे कला प्रतिभा का थोड़ा सा मिश्रण होना जरूरी है। परन्तु संसार मे अशिक्षित-पटुत्व इतना सुलभ नही जो बिखरा बिखरा फिरे। इसलिए स्त्री-शिक्षा का उद्देश्य यदि "घर के लिए सुगृहिणी बनाना" या "घर की लक्ष्मी" बनाना हो तो लड़कियो को घर और विद्यालय मे सर्वत्र ही शिल्प-कला की शिक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए। इस आधुनिक सभ्यता के जमाने मे घर-गृहस्थी को कल कारखानो से बहुत आराम मिलने लगा है। अब कमल और ताड़पत्र के पङ्ख से बीने हुए बीजने से बयार करने की भी जरूरत नही पड़ती, अब ता बिजली का बटन दबाते ही पङ्खा चलने लगता है। गई-गाँव मे भी रुई की बत्ती बटकर दिया जलाने की जरूरत नही रही, अगर हरीकेन लालटेन के लिए एक रुपया खर्च करने की सामर्थ हो। शहरो मे तो गैस और बिजली की बत्तियो की भरमार है। पैसा पास हो तो अब मिट्टी के घरो मे रहने की भी जरूरत नहीं, और वैसी हालत में लीपने-पोतने की जरूरत तो खामख्वाह ही मिट जाती है। पक्के मकानो के फर्श और दीवारें सिमेन्ट और पलस्तर से वैसे ही झक दिखाई देती हैं, यही कारण है कि स्त्रियो मे फर्श और दीवारो को

लीपने-पोतने और चित्रित करने का आग्रह अपने-आप ही जाता रहता है।

बच्चों को मां स्वयं अपना दूध पिलाती थीं, और अब विलायती डब्बे से और कहीं कहीं धाय से काम लिया जाता है। दूध पिलाने के पुरान तरीके को दूर कर अब बोतल और रबर की नली से काम लिया जाता है। इसी तरह अनेक पुरानी चीजों की जगह नई चीजों ने ले ली है। इसका नतीजा यह हुआ है कि आदमी के हाथ आलसी और वह निठल्ले हुए जा रहे है, मनमें भी जड़ता आ रही है और वह उसकी सृजनी शक्ति को ढके दे रही है। बड़े बड़े वैज्ञानिक बड़े-बडे आविष्कार कर-करके ससार भर के अभाव को दूर करने की व्याख्या किए दे रहे है, और छोटे छोटे साधारण मनुष्य कल-कारखानों से या तो उनकी आज्ञा पालन कर रहे है, और नही तो निकम्मे बैठे हुए है। स्त्रियों की सृजनी शक्ति तो बिल्कुल ही दब गई है, मानो उसे लकवा ही मार गया हो। वे अपने घर गृहस्थी की छोटी-मोटी जरूरतें पूरी करने के लिए अपने निजी सौन्दर्य ज्ञान और कला प्रतिभा का प्रयोग किया करती थीं परन्तु अब मशीन की बनी भाकेवाली चीजों की बाढ़ से उनकी अपनी चेष्टा और पसन्द की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती। अब स्त्रियों को फुरसत ज्यादा मिलने लगी है और ही एक तरह की शोभाहीन घर-गृहस्थी मे बरतन आदि असबाबो की भरमार होती जा रही है। और इससे जरूरत भी पूर्ण हो जाती है इसलिए अधिकांश लोगों के मन मे सौन्दर्य के प्रति विशेष आकर्षण न होने से स्त्रियों के मन में भी घर गृहस्थी मे सौन्दर्य-शोभा लाने की कोई खास तागीद भी नही आती। बचपन ही से ही इस तरह की तागीद या इच्छा को, घर और विद्यालयो मे, लडकियो मे जाग्रत कर देना जरूरी है। घर-गृहस्थी का काम 'किसी तरह काम चल जाय' की भावना से न होना चाहिए, उसमे सौन्दर्य और लक्ष्मी की शोभा रहनी ही चाहिए। उस सौन्दर्य-सृष्टि से ही स्त्रियों की अपनी-अपनी प्रकाशन शैली विशेष विशेष रूप में दिखाई देगा। उसी मे उनकी विशेषता है। थोड़े से अलमुनियम के बरतन, बाल्टी, लालटेन तथा चीनी मिट्टी के प्याले प्लेट और कुछ जापानी देशी या विलायती मिल के कपड़े और कम्बल होने से ही घर का काम किसी तरह चल ही जाता है। तो फिर उसके पीछे पैसा या वक्त बरबाद करके सौन्दर्य लाने का कारण बहुतो की समझ मे नही आता। बहुत से लोग कहेंगे "इतना सुन्दर करने की कोशिश भी विलासिता है, यह सब न करना ही अच्छा है।" परन्तु विशृङ्खलता और असुन्दरता मनुष्य की आंखों और मन को कष्ट पहुचाती है, इस बात का अज्ञात दशा में अनुभव करते रहने पर भी, स्वरूप से हम उसे समझ नही पाते।

वास्तव मे सौन्दर्य ज्ञान विलासिता नहीं, बल्कि शृंखलता का ही नामान्तर है। कुछ रेखाये और रग जहां छन्दहीन बेसिलसिले से पडे हों वहीं अशोभन है। जहाँ उन रेखाओं और रगों को किसी खास सिलसिले से सजा दिया जाता है, वहीं सौन्दर्य और शोभा हो जाती है। उस सौन्दर्य और

शोभा को देख कर हमारी आखें तृप्त होती हैं, मन मुग्ध और शान्त होता है। इसलिए यह सौन्दर्य विलास हमारा उपकार ही करता है। अगर हम पृथिवी की ओर अच्छी तरह देखें, तो मालूम होगा कि यह विलासिता हमने प्रकृति से ही सीखी है। हम धोतियो या साड़ियो की किनारियों पर पर्वत-शिखर, पानी की लहरें, लताओ की गति, मेघो के स्तर आदि अकित करते है और पेड़ के हरे पत्तो पर लाल फूल देख कर साड़ी की पाड़ पर भी हम उसी की नकल करते है। प्रकृति की वर्ण-सुषमा या रेखाओ के छन्द को जहाँ हम लांघना चाहते है, वहा देखते है कि हमारी आखे उसका अनुमोदन नहीं करती, मन व्यथित हो उठता है। विधाता की सृष्टि को स्वीकार करते हुए अगर हम घर-गृहस्थी की छोटी से छोटी सृष्टि का काम कर सके, तभी हम कला की मर्यादा रख सकते हैं। विधाता की प्रकृति मे नील आकाश में सफेद मेघ उड़ा करते हैं, हरे पेडो पर अनेक रगो के फूल खिला करते हैं, तितली के पङ्खो पर एक के ऊपर एक कितने ही विचित्र रग कैसे सुन्दर ढङ्ग से दिखाई देते है मोर के पङ्खो मे कैसे मनोहर विचित्र रङ्गो का इन्द्रजाल-सा होता है। इसी तरह पानी की लहरो मे, पेडो की डालियो और पत्तियो मे राजहँस की गर्दन मे नदी के मुहाने मे, लता की गति मे, पक्षियो के पङ्खो मे, मछलियो के डेनों मे, फूलो की पङ्खड़ियो मे, पानी के भँवर मे कैसी विचित्र और देखने लायक सजावट और शोभा होती है। कला तो उसी प्रकृति की छाया है—उसी का प्रतिबिम्ब है। फिर भला वह कैसे हमसे छूट सकती है? प्रकृति की यह विचित्रता ही तो हमारी कला प्रियता की मुख्य बाधा को दूर कर देती है। असल मे प्रकृति को देखना ही कलावान का मुख्य कार्य है। प्रकृति को जिसने पहचाना है, उससे जो प्रेम करने लगा है और उसके भीतर की शृङ्खला के नियमों को जान गया है, उसकी आँखें अशोभन को कभी सह ही नही सकती।

प्रकृति को पहचानने का ही दूसरा पहलू है देशको पहचानना। विधाता की पृथिवी पर नारियल के पेड़पर सेव या ताड़वृक्षपर अगूर नही लगते। परन्तु हमारे देशके बाजारो मे बहुत सी शिल्प वस्तुओ मे ऐसी असम्भव बात भी सम्भव होरही हैं। भारतकी स्त्रियो के गहने, कपड़े, बासन और असबाब पर यथासम्भव भारत की प्रकृति की छाया न पड़े, तो कला की दृष्टिसे उसे उपयुक्त नही कहा जा सकता। भारतीय स्त्रियो की साड़ाकी किनारापर 'बिलो या बेंतके पेड़के नीचे राजहंसका चित्र देखा है, परन्तु महावर-रंजित-चरणा और सिन्दूर शोभिता भारतीय वधू के शरीरपर वह साड़ा और काली लेसदार विक्टोरिया कटका ब्लाउज कितना बेढंगा और भद्दा दिखाई देता है, इसे हमारे व्यापारी भाई और घरके मालिक बिना समझे ही घर-घरमे उन कपड़ोका चलन चलाते हो जा रहे हैं।

जिनके पास पैसा है, वे दो चार सौ रुपये खर्च करके श्यामा भारतीय ललनाओके लिए भड़कीली क्रेप या जार्जेटपर चमकदार जरी की फेजन्ट फ्लैमिंगो या बर्ड-आफ पैराडाइज लगवा-

कर समझते हैं कि आधुनिकता और आभिजात्यका चरम कर डाला। परन्तु भारतीय स्त्रियो के शरीरके रग और गठन पर हजार बिलायती रग-ढगकी चीजें लाद दीजिये, उन विजातीय चीजो से उनकी शोभा नही बढ़ सकती, बल्कि एक तरह का बेतुकापन ही दिखाई देगा। परेशानी तो यह है कि हम इस अस्वाभाविकताको समझ ही नही पाते।

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तो के शिल्पकार अपने-अपने प्रान्तो के लिए अपने यहाँ की लड़कियो और प्रकृति को ममता की दृष्टिसे देखा करते थे, इसीलिए सैकड़ो वर्षो से उन्होंने अपने जनो को जिन आभरणोंसे सुशोभित किया है, वह समय की कसौटी पर ठीक उतरा है, और आदमी की नजरो मे क्रमशः वह प्रकृतिके समान ही स्वाभाविक होगया है। अगर सहसा हम दो-चार वर्ष के अत्याचार से उसे उड़ा देने की कोशिश करें, तो यह हमारी भूल है और हमे यह शोभा भी नही देता। हमारे ढाका, बालूचर, मुर्शिदाबाद, बनारस आदिके बने हुए कपड़ो पर जो काम या नक्शा होता है, उसके भीतरकी रेखाओ और रगो मे जो सौन्दर्य है, उसे समझकर उसी धारा के अनुसार हमे नई सृष्टि की जांच करनी होगी। यह ठीक है कि मनुष्य सिर्फ पुराने को लेकर ही नही रह सकता, नवीन की सृष्टि हमेशा से चली आई है और चलती रहेगी, परन्तु नवीन का मतलब सिर के बल चलना या दिन मे चांद का उदय होना हरगिज नही। वास्तव मे उसके भीतर पुरातन की धारा ही नवीन रूप धारण करती हैं।

स्कूल की लड़कियो को सूची-शिल्प (सूई का काम) सिखाते समय, कुरतो की बाहो पर आसमानी रग मे आड़वी लता न कढ़ा कर हम अगर पुरान दुशालो या जामदानी साड़ीकी पाड कढाने की कोशिश करे, तो बहुत-कुछ सामंजस्य की रक्षा हो सकती है। इसी तरह घर की दीवारो पर गुलाबी ऊन से बने हुए कार्पेट के विलायती कुफूर किटश के फूल न टांग कर अगर कसीदे के काम की कोई चीज टांगे, तो वह अपना देशी घर सा मालूम होगा।

लोग कहते है कि घर-बार अच्छी तरह चलाने के लिए काफी पैसा चाहिए। परन्तु वास्तव में यह बात नही। तेल के कनस्तर, कांच और चीनीमिट्टी के भाडो से घर न भर कर अगर हम सुन्दर बनावट के मिट्टी के बरतनो को एक पैसे के रंग से चित्रित कर के उन्ही से अपना भडार घर सजावें, तो उस मे कम ही खर्च होगा। पुरानी धोती-साड़ियो की पाड़ो मे से रंगीन सूत निकालकर उस से कुरती, जम्फर आदि तथा कंथडियो पर नक्शे काढे, तो उस मे एक कोड़ी का भी खर्च नही। गांवो की दूकानो मे सेलुलायेड के बने जापानी खिलौनोकी भरमार है और सिफत यह कि एक पैसे वाले मिट्टी या लकड़ी के खिलौने ढूढें, तो मिले नही। स्त्रियां अगर मिट्टी और लकड़ी के खिलौने बनाकर अपने हाथो से उन्हे रग कर उन्ही से अपना घर सजावें तो उस मे क्या खर्च है। पुराने जमाने की माताऐ मिट्टी के खिलौने और पुराने कपड़ो से गुड्डे-गुड़ियां बना बनाकर अपने बच्चो को दिया करती

थी और बच्चे उन से तरह तरह के खेल खेला करते थे। साथ ही माकी देखा देखी बच्चे भी खिलौने बनाना सीख जाया करते थे। मगर आज हमे अधेले का खिलौना भी लेना हो, तो वही जापानी।

यह सच है कि अपने देश के महान कलाकारो की सहायता सब समय सब को नही मिल सकती। परन्तु सुप्रसिद्ध कलाकार नन्दलाल वसु आदि की पुस्तकें हम अनायास ही प्राप्त कर सकते है, जिन मे उन के रचे हुए अनेक प्रकार के चित्र और नक्शे है —आलीपन के नक्शे, पीढ़े के चित्र कपड़ो की किनारी और पल्ले आदि 'रूपरेखा' आदि पुस्तको मे मनुष्य के हाथ पैर, मुह, गरदन, बाहो की बनावट अनक प्रकार के जूडे तथा सुन्दर से सुन्दर गहनो के चित्र हैं, जिन्हे देख कर सीखना अँकित करना और काढ़ना सहज है। इस के सिवा गावो मे जो अप्रसिद्ध कलाकार हैं, जिन पर आधुनिकताका तुषार अभीतक नही पडा है उनसे बहुत सी बाते सीखी जा सकती हैं जैसे पुराने जमाने के से खिलौने; गुडे-गुडिया, लकडी के घोडे और डिबियां, मिट्टी के खिलौने कासे के बरतनो पर नक्काशी का काम, बालूचरी और ढकाई साड़ियो के पल्ले, कपड़ो के चन्दो पर फूलकारा का काम, बांस की रंगीन डालियां और सूप तथा आलीपन आदि। आज कल मेलो आदि मे भी उनकी यह कृतियां कम दिखाई देती हैं परन्तु देश मे स्वादेशिकता के नव जागरण स अब फिर पुराने गहने और कपड़े आदि कुछ-कुछ नवीन रूप मे दिखाई देने लगे हैं। फिर भी स्त्रियोपयोगी कम कीमत की चीजें अब प्राय. देखने मे ही नही आतीं। इस तरफ हमारा ध्यान जाना चाहिए।

सचमुच, अब जरूरत इस बात की है कि देश मे जहां जहा पीढ़ी-चित्र, कशड़ी-सिलाई, सुपारी कतरना मिठाई बनाने के सांचे, नारियल और मूंज की रस्सी, जूड़ा बांधने सूत या ऊन की चीजे तथा छीके बनाने की जो कारीगरी है, उन सब का संग्रह किया जाय। देश मे जितने भी बालिका विद्यालय है, उन सब से पत्र व्यवहार करके यदि इस बात का पता लगाया जाय कि वे लड़कियो को शिल्प की शिक्षा देते है या नही, और खास कर देशी शिल्प पर जोर देते है या नही, तो इस तरह शिल्प-शिक्षा का प्रचार बढ़ सकता है। इसके सिवा प्रत्येक पाठशाला और विद्यालय से अनुरोध करना चाहिए कि वे देशके शिल्पो का नमूना, जब जैसा मिलता रहे संग्रह करके एक खास कमरे मे रखते रहे और छात्राओ को हमेशा उस संग्रह के काम मे उत्साहित करते रहे। हमारे गावो मे अब भी देखा जाता है कि पैसे-पैसे के मटैले पत्थर के दिए, चार,चार पैसे की दीवटें, छोटे-छोटे सुन्दर बरतन सुराहियां, खाट के पाये पानदान, पखे आदि बिका क ते हैं, जिन का गठन और काम बिलकुल निर्दोष और सुन्दर होता है। इन सब चीजो से विद्यालय और घर सजाने से बहुत ही सुहावना मालूम पड़ता है और साथ ही बालक बालिकाओं का शिल्प-सौंदर्य का ज्ञान भी बढ़ता है।

हमारे देश के विभिन्न प्रान्तों मे अभरक और

रेशम के काम के पंखे, अभरक के साथ सिलाई का काम, सोने चांदी के सलमा-सितारे और गोटा किनारी का काम, काश्मीरी रेशम और ऊन का काम इसी तरह के और भी अनेक प्रकार के शिल्प कार्य प्रचलित हैं जिनकी शुमार नहीं की जा सकती। इन सब पर हमारी दृष्टि रहनी चाहिए, क्योकि बिना जाग्रत दृष्टि रखे हमारे हाथो का आलस छूटना और मन मे सौन्दर्य-ज्ञान को पुनर्जीवित करना कठिन है। इस लेख म जिस शिल्प कला की आलोचना की गई है, वह है मडन-शिल्प अर्थात् घरेलू कारीगरी। यह हमारे लिए घर-गृहस्थी मे काम आने वाली चीजो की सौन्दर्य वृद्धि के ही काम आती है। इससे बड़ी चीज् अर्थात् भास्कर शिल्प और चित्रविद्या सीखना हर एक के लिए कठिन है। भारतीय भास्कर्य और चित्रविद्या देखनी हो, तो प्राचीन इमारतो म उनके अच्छे से अच्छे नमूने मिल सकते है। परन्तु यहां हमे उस विषय की चर्चा नहीं करना। साधारणत. स्त्रियों मे जो शिल्प चलता चला आया है, उसी की रक्षा का उपाय होना चाहिए। कहने का मतलब यह कि हमारे देश की वतमान और भावी गृह लक्ष्मियो के लिए घरेलू शिल्प का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, और साथ ही घर घर में होना उसका प्रचलन भी।

इससे कोई यह न समझ बैठे कि हम विदेशी शिल्प का बहिष्कार करना चाहते है। शिल्प मे स्वदेश विदेश का प्रश्न उठ ही नही सकता, जो सच्ची कला है, वह कला के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकती। परन्तु कला की रचना यदि अपने वास्तविक आवेष्टन मे न रहे और प्रकृति के परे चली जाय तो उसका रूप निखरता नही। यही कारण है कि इस देश की महिला के हाथ में कमल और फारस की सुन्दरी के हाथ में बसरेरा-गुलाब ज्यादा खिलेगा—यद्यपि देखने मे दोनो ही फूल अतुलनीय है।

वास्तव में, नारी का घर शोभा का मन्दिर होना चाहिए इस बात को नारी सर्वदा याद रखे और इस बात को सच समझे कि प्रकृति की रूप-सृष्टि तथा देश की विशेषता को घर-गृहस्थी के काम मे भुलाया नही जा सकता तो क्या घर और क्या शिक्षा-मन्दिर, सर्वत्र ही उनके लिए शिल्प-शिक्षा सहज हो सकती है। घर की लक्ष्मी की सार्थकता इसी मे है।

वर की आवश्यकता

साहित्य-समीक्षा

इंडिया एंड दी पैसिफिक (अंग्रेजी)

(India and the Pacific)

लेखक—श्रीयुत दीनबन्धु सी यफ़ ऐन्ड्रूज़ ।

प्रकाशक—ज्यौर्ज एलन ऐंड अनविन लिमिटेड लंडन

मूल्य—३ शि० ६ पेंस २॥=)

श्रीयुत दीनबन्धु सी यफ़ ऐन्ड्रूज़ का विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। भारत वासी मुख्यतया भारत का शिक्षित समुदाय उनके नाम भारतवर्ष के प्रति उनके प्रेम तथा उनकी बहुमूल्य सेवाओं से भली भांति परिचित है। उनके जीवन का मिशन दीन और पीड़ित मानव समाज की सेवा है। ऐन्ड्रूज़ महोदय उन सच्चे ईसाइयों में से हैं जो महात्मा ईसा की स्पिरट में, वर्ण, देश, और जाति के भेद भाव से शून्य निष्काम और निस्स्वार्थ भाव से मनुष्य समाज का कल्याण सम्पादन करते हैं। वे उन अंग्रेजों में से हैं जिन्हें भारतवासी जितना अपना समझते हैं उतना उनके देश वासी उन्हें अपना नहीं समझते हैं ऐन्ड्रूज़ महोदय जन सेवा के अपने पवित्र-मिशन पर प्राय प्रवासी भारतीयों म जाते रहते हैं उनकी स्थिति का अध्ययन और कष्टों और कठिनाइयों के निवारण का यत्न करते रहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक के पैसिफिक महासागर स्थित फिजी आस्ट्रेलिया, चीन जापान इत्यादि की बहुत सी और भिन्न २ यात्राओं के फल स्वरूप प्रकाश में आई हैं। इसमें मुख्यतया उपयुक्त क्षेत्रों के भारतीयों की समस्याओं पर विचार किया गया है। लेखक महोदय ने उन भारतीयों के हितार्थ जो शर्तबन्दी की अमानुषिक और असह्य प्रथा के आधीन फिजी में चले गए थे ३ बार फिजी आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड की यात्रा की है। जब से शर्तबन्दी की प्रथा नष्ट हुई है तब से भारतीयों ने जो चमत्कारिक उन्नति की है इस पुस्तक में उसका बहुत उत्तम वर्णन किया गया है और उनके सर्वाङ्गीण सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी उत्थान पर प्रकाश डाला गया है तथा उत्थान मार्ग में जो बाधाएं हैं उनका तथा उनके निवारण के उपायों का सम्यक् वर्णन किया गया है।

फिजी के भारतीयों और स्वयं भारत से सम्बन्धित आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के सम्बन्धों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस विषय पर विचार करते हुए युरोपियनों का भारतीयों के प्रति रीति नीति की आलोचना की है और कई महत्व पूर्ण सुधार प्रकाश में लाए गए हैं।

भारत के चीन और जापान के घनिष्ठ सम्बन्धों की बड़ी हृदय ग्राही चर्चा की गई है।

श्री० ऐन्ड्रूज़ महोदय आर्य्य समाज को बड़ी प्रशंसनीय दृष्टि से देखते हैं। फिजी इत्यादि में आर्य समाज के उत्तम कार्य्य को उन्होंने इस पुस्तक में स्वीकार किया है।

आर्य्य समाजियों तथा प्रवासी समस्या में दिलचस्पी तथा प्रवासी भारतीयों का हृदय में हित रखने वालों के यह पढ़ने योग्य पुस्तक है।

प्रत्येक आर्य्य समाज की लायब्रेरी में इस पुस्तक का होना अनिवार्य्य है। पुस्तक शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली से भी मिल सकती है।

योगामृत

लेखक—श्री गोपाल जी बी ए सहायक मुख्या-धिष्ठाता गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ।

प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली।

मूल्य—१)

योग जैसे गूढ़ और कठिन विषय को जन साधारण के हितार्थ सरल रूप में रखने के यत्न स्वरूप यह पुस्तक लिखी गई है। लेखक के यो विषयक प्रवचनो को हमने स्वय सुना है। उन्हे सुसपादित और लेखबद्ध रूप मे रखे जाने की आवश्यकता को हम बहुत अनुभव करते थे। प्रसन्नता है यह आवश्यकता विद्वान लेखक ने स्वय पूरी कर दी है। निश्चय ही योग के जिज्ञासुओ को इस पुस्तक से लाभ पहुंचेगा और लोगो में योग के प्रति श्रद्धा और रुचि उत्पन्न करने मे यह सहायता देगी। पुस्तक में योग साधन की रीतियों, योग सिद्धि के लिए जिज्ञासुओ के करने योग्य अनुष्ठानो और कर्त्तव्यो, प्राणायाम के लाभों और उसके करने की विधियों तथा साधारण जीवन व्यवहार में योग सिद्धि के उपायो इत्यादि विषयो का अच्छा और समझने योग्य विवेचन किया गया है।

पुस्तक का आकार प्रकार छपाई सफ़ाई बहुत ही उत्तम और आकर्षक है और ठक वैसो ही है जिसके लिए शारदा मन्दिर ने अपना एक विशेष ख्याति स्थिर कर रखी है। पुस्तक आर्य्य पुस्तकालयो में रखने योग्य है।

सार्वदेशिक सभा ने किसी समय ज्योति पाठशाला में चार विद्यार्थी प्रविष्ट किये। एक तेलगू, दूसरा तामल, तीसरा मलयालम, चौथा कनड़ी, भाषा भाषी था। पश्चात् ज्योति पाठशालावन्द करते समय यह विद्यार्थी दयानन्द उपदेशक विद्यालय में लाहौर भेज दिये गये। वहां आकर तामल भाषी का शीतला से देहान्त होगया, कनड़ भाषा भाषी गृह प्रबन्ध बिगड़ जाने से गृह पर चला गया, तेलगू भाषी कुछ समय पढ़ कर योग की ओर लग गये उनका पता नहीं कहां है, शेष रहे मलयालम भाषी उनका नाम नारायणदेव था उन्हो ने सिद्धान्त भूषण पास करके पंजाब विश्व विद्यालय की हिन्दी की प्रभाकर परीक्षा पास की पश्चात् वह केरल में आये और वहां श्रद्धानन्द हिन्दी महा विद्यालय की स्थापना कोहयम (ट्रावनकोर) में की जिसे लगभग तीन साल होते हैं। इस थोड़े समय में इस विद्यालय ने पर्याप्त ख्याति प्राप्त करली है। क्योंकि केरल प्रान्त में इस विद्यालय द्वारा २०० विद्यार्थी हिन्दी परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुके हैं और इस वर्ष मद्रास विद्यालय ने विद्वान परीक्षा हिन्दी की आरंभ की है उसकी पढाई केरल में इस वर्ष केवल इसी विद्यालय में है। मैंने इस विद्यालय में १० मील दूर से आकर विद्यार्थी पढते देखे हैं कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि पं० नारायणदेव जी उत्तम अध्यापक हैं उनका शिष्य होने में हम गौरव मानते हैं।

नारायणदेव जी ने इस विद्यालय के साथ २ एक पुस्तकालय भी बनाया है जिसमे अभी पुस्तकों की सख्या इस प्रान्त की दृष्टि से तो है परन्तु जितनी चाहिये उतनी नही है। वह इसको अच्छा पुस्तकालय बनाना चाहते हैं।

केरल प्रान्त में हिन्दीप्रचार में इस प्रकार सार्वदेशिक सभा का नाम प० नारायणदेवजी द्वारा उज्वल हुआ है और सभा ने इनको शिक्षित बना कर अच्छा कार्य किया है इसलिये इस विद्यालय से गुरुकुल स्कूल की भांति आर्य समाज का भी प्रचार होता है। यदि आर्य सज्जन धन से तो नहीं इस विद्यालय के पुस्तकालय में आर्य समाज सम्बन्धी पुस्तकें भेज कर इनकी सहायता करें तो जहां इनको उत्साह होगा वहां आर्य समाज का प्रचार भी उस प्रान्त में होगा जहां अभी आर्य समाज का प्रचार भी नहीं हुआ है।

१८-११-३७

स्वतन्त्रानन्द
उप-प्रधान—सार्वदेशिक सभा

लेख-सूची

—❀—

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और शीत ऋतु आरहा है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएगे वहा इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखे।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयो की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके सबधियो का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे है।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी हैं जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

„ प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

„ डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष ११ | पौष १९९४ | अङ्क ११

जनवरी १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

वेद की शिक्षाएँ

स एष एक वृदेक एव । Ath 13-4-20

वह ईश्वर एक और सचमुच एक ही है

He is One and only One God

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति । Rig 1-164-46

उस एक सत्ता वाले को विद्वान् लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।

The wise call that One God by various names

सम्पादकीय—

अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी।

ससार में दो प्रकार के व्यक्ति पाए जाते हैं। एक वे जो नए हालात पैदा करते हैं। दूसरे वे जो मौजूदा हालात के अनुसार अपना साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। पहले प्रकार के लोगों को निर्माता, लीडर, नेता या रहबर कहते हैं। दूसरे प्रकार के लोग पीछे चलने वाली जनता या सर्व साधारण लोग कहलाते है। स्वामी श्रद्धानन्द पहले प्रकार के व्यक्ति थे।

स्वामी श्रद्धानन्द साधारण स्थिति मे पैदा हुए परन्तु होश संभालने के पश्चात ही उन्होंने अपने उन हालात का मुकाबला करना शुरू कर दिया, जिन में प्रकृति ने उनको रक्खा था। जिसप्रकार एक संगतराश पत्थरके साथ युद्ध करता हुआ उसमे से एक सुन्दर मूर्ति का निर्माण कर डालता है, ठीक उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने विरोधी हालात की चट्टानों के साथ संघर्ष करते २ ससार को अपने जीवन की एक सुन्दर मूर्ति अथवा उदाहरण दिया जिसका अनुकरण हम लोगों के लिए अनिवार्य्य है।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का सब से बड़ा गुण यह था कि वे खामोशी से बैठना नहीं जानते थे। उनके लिए निष्क्रिय बैठना मृत्यु के समान था। वह यह नहीं चाहते थे कि मुर्दा बनकर जीवन व्यतीत किया जाय। हममे से असंख्य व्यक्ति लाशों के समान घसीटे जा रहे हैं। ऐसे जीवन में क्या आनंद है ? स्वामी श्रद्धानन्द जहां भी रहे, जिस परिस्थिति में रहे, उन्होंने विरोधी अवस्थाओं से लड़ना नहीं छोड़ा। वह कहा करते थे कि जीवन का आनन्द संग्राम में है, परन्तु संग्राम भी वह जो किसी ऊचे उद्देश्य को सामने रखकर लड़ा जाय। लड़ने की खातिर लड़ना कुत्तों का काम है। मर्द लड़ते हैं तो किसी मुराद के लिए। वह मुराद ऊंची मुराद होनी चाहिए। उसी मुराद के अनुसार हमारी हार जीत का निर्णय होता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जब किसी नए काम को हाथ मे लेते थे तो उसकी आम घोषणा करते थे, मानो शेर के समान अपनी गर्जना की गूंज से जगल में अपने उपस्थित होने का परिचय देते थे। वह एक विशाल प्रोग्राम बना लेते थे और उसकी पूर्ति के लिए निरन्तर प्रौपैगैन्डा जारी करने के लिए सर्व प्रकार के आवश्यक सामान जुटा लेते थे। वह एक सेनापति के समान युद्ध की बारीकियों का पूरा २ अनुमान कर लेने मे सिद्ध हस्त थे। लड़ाई प्रारभ करने से पूर्व वह व्यूह रचना को पूरे तौर पर जाच पड़ताल कर लेते थे। भाग्य पर भरोसा करना उन्हें स्वीकार न था। अपने बाजू की शक्ति पर उन्हें सदा अभिमान रहता था।

ईश्वर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को ऐसी विशाल काया—भव्यमूर्ति—प्रदान की थी कि वह जहा भी खड़े हो जाते थे, हजारों में रहते हुए भी वह अकेले प्रभावशाली व्यक्तित्व को दर्शाते हुए देख पड़ते थे।

सब की आखें उनकी ओर लग जाती थीं।

वे दूसरों को अपनी ओर इस प्रकार खेंचते थे जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है ।

जब वे अपना प्रोग्राम तय कर लेते थे तो अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना शुरू कर देते थे। उस समय वे सर्व साधारण की नुकता चीनी, चूंचरा और रोने धोने की कोई परवाह नहीं करते थे। "शेर सीधा तैरता है वक्ते रफतन आ। में"। इस लोकोक्ति के अनुसार वह अपने आप को मझधार में डाल देते थे और देखते २ इस पार से उस पार पहुच जाते थे। यदि आप उनके जीवन पर दृष्टि पात करें तो आप को चकित करने वाली अनेक घटनाएं पढ़ने को मिलेंगी।

स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में हालात को पलट देने वाली सबसे बड़ी घटना वह थी, जब स्वामी जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उलट देने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। शहरों के भोग विलास को छोड़ कर उन्हों ने जंगल की राह ली थी और ५-७ बच्चों को साथ लेकर वह प्रकृति की गोद में अकेले बैठने और शक्तियों को इकट्ठा करने के लिए हरिद्वार के पास गंगा के तट पर जा बैठे थे। बैठे ही नहीं अपितु घोर युद्ध की तैयारी में लग गए। जिस प्रकार श्री रामचन्द्र ने अपनी असहायावस्था में निविड़ वनों को अपने उद्देश्य की पूर्ति का साधन बनाया था, उसी प्रकार स्वामी श्रद्धानंद ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चीनी दीवार को तोड़ने के लिये अपनी असहायावस्था की परवाह न करते हुए विचारों की एक ऐसी सेना तैयार करदी कि जिसने थोड़े ही समय में देश की काया पलट दी और जनता के हृदयों में प्राचीन शिक्षा प्रणाली का सिक्का बिठा दिया। स्वामी श्रद्धानंद की यह एकाकी विजय न थी। इसके पीछे उन्होंने कई युद्ध लड़े। सभी में उन्हें सफलता प्राप्त हुई।

आओ! हम उनके जीवन की सफलता के रहस्य को पहचानें। उनके जीवन का अनुकरण करें। जिस क्षेत्र में उन्होंने पाव रक्खा, सफलता ने उनका चरण-चुम्बन किया। वह सदा ऊंचे आदर्शों के पुजारी बने रहे। समाज, धर्म, राजनीति, सभी स्थानों में उन्हें पूरा २ प्रवेश था। वह सर्वदा युद्ध क्षेत्र मे सब से आगे की पक्ति में खड़ा रहना पसन्द करते थे। आगे की पंक्ति में खड़ा रहने की जो जिम्मेदारी होती है, उसको वे सर्वदा उठाने के लिए सहर्ष तैयार होते थे। स्वामी श्रद्धानंद के गुणों को इस समय धारण करने की बड़ी आवश्यकता है क्यों कि उन गुणों का इस समय आर्य समाज मे सर्वथा अभाव दीखता है। स्वामी जी के गुणों को धारण करने से हम निश्चय पूर्वक समाज को धकेल कर आगे ले जा सकते हैं। खड़ा रहना, विचारते रहना, उन्नति के मार्ग में रुकावट पैदा करता है। आगे बढ़ना, धावा बोलना और विजय प्राप्त करना, सामाजिक उन्नति के लिए अनिवार्य्य गुण हैं। ये सब गुण स्वामी जी महाराज में पाए जाते थे। ईश्वर करे ये गुण हम में भी आ जायें।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव

—o—

बड़े दिन की छुट्टियों में सयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव मेरठ नगर में बड़े समारोह और सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के प्राय सभी प्रसिद्ध २ नेता और विद्वान् पधारे थे। आर्य नर नारियों की उपस्थिति भी बड़ी उत्साह वर्द्धक थी। लगभग ७०-८० हज़ार व्यक्ति उत्सव में पधारे थे। वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्यसम्मेलन, आर्य वीर दल सम्मेलन, कवि सम्मेलन इत्यादि कई सम्मेलन और परिषेद हुई। विविध विषयों पर विद्वानों और पण्डितों के उपदेश और व्याख्यान हुए। एक बैठक में कई २ विषयों के व्याख्यानों के रखने की प्रचलित प्रथा का परित्याग करके एक ही विषय पर दो दो तीन तीन व्याख्यानों की व्यवस्था की गई थी। यह परिवर्तन लाभदायक था। विदित हुआ है इस अवसर पर सभा को ८० हजार का दान प्राप्त हुआ है। निस्सन्देह उत्सव आशा से भी अधिक सफल हुआ है इसके लिए संयुक्त प्रान्त के आर्य भाई बधाई के पात्र हैं।

इस उत्सव मे जो विशेष बात देखी गई वह संयुक्त प्रान्त से बाहर के आर्य भाइयो की बहु-संख्या मे उपस्थिति थी। मध्य प्रदेश, बरार, हैद्राबाद (दक्षिण) सिन्ध, बिहार, बंगाल, राजस्थान और पंजाब भारत के प्रायः सभी प्रान्तों के नर—नारी उत्सव में सम्मिलित हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह उत्सव युक्त प्रान्त का न होकर भारत भर के आर्य्यों का मेला है। पंजाब के आर्य्य भाई तो बहु सख्या में उपस्थित थे और पजाब की प्रान्तिक सभा के अधिकारी, उपदेशक और गुरुकुल तथा कन्या गुरुकुल इत्यादि संस्थाओं के छात्र छात्रायें तथा अध्यापक कई दिन स्थिर रूप से उत्सव में रहे थे। मुख्यतया पंजाब के आर्य्य भाइयों तथा साधारणतया युक्त प्रान्त के बाहर के आर्य्य भाइयों का यह सहयोग प्रशंसनीय था। शायद ही प्रान्त विशेष का कोई मेला या उत्सव हो जिसमें सभी प्रान्तों के आर्य्य नर नारियों का ऐसा अपूर्व सम्मेलन रहा हो जैसा इस उत्सव में रहा है। यह बात अत्यन्त स्वागत योग्य और उत्साह वर्द्धक है। सचमुच ऐसे ही अवसरों पर हम अपनी सम्मिलित शक्ति और सहयोग का श्रेष्ठ परिचय दे सकते हैं।

नगर कीर्तन तो देखते ही बनता था। भिन्न २ प्रान्तों के आर्य्य नर नारियो का २॥ ३ मील का लम्बा जलूस मेरठ नगर के इतिहास में अभूतपूर्व घटना थी। गली कूचों और हाट बाज़ारों में प्रत्येक की जिह्वा पर यही शब्द थे कि मेरठ में कांग्रेस इत्यादि संस्थाओं के बड़े २ विशाल जलूस निकले परन्तु ऐसा जलूस नहीं निकला है।

सुप्रबन्ध के लिये स्वागत कारिणी समिति धन्यवाद की पात्र है। श्री० बा० काली चरण जी प्रधान मन्त्री स्वागत समिति की तन्मयता देखते ही बनती थी। उनका पुत्र टाइफ़ाइड से पीड़ित था फिर भी उसकी पर्वाह न करके वे प्रबन्ध के गुरुतर भार में संलग्न थे। यह बात उन्हें हमारी निगाहों में बहुत ऊंचा उठा देती है और ऋषि के उन भक्तों का स्मरण करा देती है जिन्होंने आर्य्य समाज के यज्ञ में सब कुछ न्योछावर किया है या जो न्योछावर करने को तय्यार हैं। भाई महेन्द्र प्रताप जी को भी किन शब्दों में धन्यवाद दें। उनका परिश्रम भी स्तुत्य है। मेले की सफ़ाई, दूकानों की सुव्यवस्था जल, भोजन, रोशनी, डेरों, हस्पताल डाक तार सवारी इत्यादि की उत्तम व्यवस्था थी। इस महोत्सव के सुप्रबन्ध को देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि यात्रियों के आराम और सुविधा की शायद ही कोई बात प्रबन्धकों की दृष्टि से ओझल हुई होगी। वस्तुत यात्रियों के आराम और सुविधा का पूरा २ ध्यान रखने का यत्न किया गया था।

आर्यसमाज का संगठन
और
उसके दृढ़ करने की योजना
प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य समाजों के नाम सर्क्यूलर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनेक उपकारों की जो इस भारतभूमि पर उन्होंने किये हैं एक विशेषता है कि उन्होंने सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र मे हमें सगठन दिया है। यह सगठन आर्य समाज की विशेषता है। जब कि अन्य सस्थायें सगठन रहित थी तब आर्य समाज सुसगठित था और दृढ था। आपस मे आर्य समाज के सदस्यो म विश्वास और प्रेम था और इसलिये सम्मिलित कार्य दक्षता भी उसने दिखाई।

अनेक आर्यसमाजो को एक और नये सूत्र मे सुसगठित करने का ज़माना आया और प्रान्तो के आर्य्य समाज एक प्रतिनिधि सभा के रूप म सुसगठित हुए यह आर्य समाज के सगठन के विकास म दूसरा स्टज (Stage) है। तीसरा स्टेज वह हुआ जब कि स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रयत्न से सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई। सगठन के क्रममे सार्वदेशिक सभा शिरोमणि सभा कहा जा सकती है और आर्य्य सगठन के विशाल मन्दिर मे यदि विविध आर्य्य समाज पुख्ती नींव है और प्रतिनिधि सभायें मज़बूत दीवार हैं तो सार्वदेशिक सभा को सुन्दर और सुदृढ कलश का रूप धारण करना चाहिए जहा पर से महर्षि की ओ३म् की पताका फहराती हुई समस्त भूमडल को दृष्टि गोचर हो। इसी उद्देश्य को लेकर मैं यह प्रार्थना पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हू। इस अवसर पर जब तक हम अपनी कमज़ोरियों की तरफ़ दृष्टि पात न करेंगे तब तक हम सुदृढ और शक्ति शाली होने के वास्तविक उपाय को भी नहीं सोच सकेंगे। प्राय देखा गया है कि लोकल आर्य्य समाज तो मज़बूत है उनमे आपस की कमज़ोरी का बज इतना नहीं पाया जाता परन्तु कई स्थानों मे अभी तक प्रतिनिधि सभाये मज़बूत नहीं हो पाई हैं। कई जगह देखा गया है कि आर्य्य समाजे और उनके प्रान्त का प्रतिनिधि सभाओं के बीच में कोई सम्बन्ध नही है और कहीं कहीं तो प्रमुख आर्य्य समाज और प्रतिनिधि सभा के बीच विरोध का भाव विद्यमान है। मे इन विरोधो के उन कारणो पर नही जाऊगा जो व्यक्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं। मुझे भली प्रकार मालूम है कि झगडों के तह पर व्यक्तिगत द्वेष की मात्रा बहुत काफी रहती है और लीडरी की लालसा और किसी सस्था पर अधिकार की महत्वाकाक्षा ऐसे झगडो की बुनियाद है। इस अवसर पर मै उस ओर विशेष दृष्टि डालूंगा जो कि हमारे सगठन के मौलिक सिद्धान्त से वास्ता रखता है। आर्य्य समाज के सगठन की विशेषता को हमे जानना चाहिए जिससे कि हम उपाय ठीक सोच सके। आर्य समाज का सगठन इस प्रकार का है कि वह नीचे से ऊपर को बढ रहा है। केवल उदाहरण के लिए मैं उसकी तुलना कांग्रेस के संगठन से करूगा ताकि हम हमारी खूबी समझ म आ जाय। कांग्रेस जहा ऊपर से नीचे को बढ़ी है, वहाँ आर्यसमाज नीचे से ऊपर को बढ रहा है। कांग्रेस का इतिहास अगर आपको याद होगा तो आपको मालूम होगा कि ज़िला कांग्रेस कमेटियाँ तथा प्रान्तीय कांग्रेस

कमेटियों का जब नामोनिशान भी न था उस समय भी कांग्रेस चल रही थी। कांग्रेस ज्यों ज्यों शक्ति प्राप्त करती गई त्यो त्यों उसकी जड़ें नीचे को पहुंचती गई। कांग्रेस के शक्तिशाली होने के बाद प्रांतीय कांग्रेस कमेटियों का संगठन सुदृढ़ और नियमित हुआ और उसके बाद ज़िला और ताल्लुका कांग्रेस कमेटियां हुई। हमारे यहा ठीक इसके उल्टा क्रम रहा है। हमारा आर्य समाज पहले हुआ, उसके बाद प्रतिनिधि सभाओं का संगठन हुआ और उसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी की दूरदर्शिता से सार्वदेशिक सभा का संगठन हुआ। इन दो विभिन्न परिस्थितियों के कारण संस्थाओं की शक्तियों में भी विभिन्नता है जहाँ हम यह देखते हैं कि अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी शक्तिशाली है और अपनी शक्ति का परिचय प्रांतीय और ज़िला कांग्रेस कमेटियों को दे सकती है वहां प्रान्तीय और जिला कमेटियां उतनी शक्तिशाली नहीं हैं। आर्य समाज मे जहां प्रमुख आर्यसमाज शक्तिशाली हैं वहा प्रतिनिधि सभाओं की शक्ति कमजोर है और प्रतिनिधि सभायें भी यदि शक्तिशाली हैं तो सार्वदेशिक सभा कमज़ोर है। इस अवसर पर मैं यह भी कहने का साहस करता हूं कि आर्य समाज की नींव की मजबूती इस बात की गारन्टी है कि आर्य समाज का भविष्य उज्वल और खतरे से बाहर है। जिन संगठनों की मूलाधार संस्थाए मजबूत हुआ करती हैं वे संस्थाए इतिहास में चिरस्थायी रह सकती हैं। इतना कहने के पश्चात मै यह भी निवेदन करना चाहता हू कि केवल नींव मजबूत हो जाने से हम कोई सार्वभौम काम नहीं कर सकते। नींव की मजबूती से हम अपना अस्तित्व तो चिरकाल तक कायम रख सकते हैं परन्तु जब तक इस विशाल भवन की दीवारें और कलश मज़बूत न हों तब तक हमारा यह दावा कि हम संसार को अपना स्वरूप दिखा सकें अपनी पवित्र पताका भी दिखा सकें, भ्रम मात्र और निर्मूल रहेगा। इसलिए प्रत्येक आर्य समाजी का यह परम कर्तव्य होना चाहिए कि वह प्रतिनिधि सभाओं को और सार्वदेशिक सभा को शक्तिशाली बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति और सम्पूर्ण ताकत प्रदान करें। इस भूमिका के पश्चात् मेरी निश्चित राय है कि

(१) कोई भी आर्य समाज ऐसा न हो कि जो प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के साथ सम्मिलित न हो।

(२) यथा सम्भव कोई भी प्रतिनिधि सभा न हो जिसका सम्बन्ध सार्वदेशिक सभा के साथ न हो।

(३) सार्वदेशिक सभा को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि उसका अपना स्वयं एक विशाल फ़रड हो जिसके जरिये वह न केवल भारतवर्ष के समाजो का सामान्य नेतृत्व कर सके अपितु समस्त भूमण्डल में आर्य समाज की छाप लगा सके और सब समाजों और प्रतिनिधि सभाओं को इस प्रकार केन्द्राभूत कर सके जिसमें सब की शक्तियां सम्मिलित होकर विशाल परिणाम ला सकें।

(४) आर्य समाज की सारी सम्पत्तियाँ प्रतिनिधि सभा के नाम कानूनी तरीके से रजिस्ट्री हों।

अब मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि कृपया आप सार्वदेशिक सभा के दफ्तर को सूचित करें:—

(१) आपके प्रान्त में कौन कौन सी समाजें हैं जो प्रतिनिधि सभा के साथ सम्मिलित नहीं हैं।

(२) आर्य समाज की कौन कौन सी सम्पत्तियां हैं जिनकी प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री नहीं हुई हैं?

आपसे मै यह भी आग्रह करूंगा कि आप कृपया इस बात की कार्यवाहि शीघ्र प्रारम्भ करदें कि जो आर्य समाज प्रतिनिधि सभा से सम्मिलित नहीं हैं वे शीघ्रातिशीघ्र सम्मिलित हो जाय।

आर्य समाज की सारी सम्पतियों की ब्योरे वार सूची प्रतिनिधि सभा के दफ्तर में रहे और जिनकी रजिस्ट्री अभी तक नहीं हुई उनकी रजिस्ट्री प्रतिनिधि सभा के नाम पर करने के लिए कार्यवाही की जावे। इस दफ्तर को आप कृपया यह भी सूचित करें कि इसमें आपने क्या कार्य शुरू किया है और समय समय पर अपनी रिपोर्ट भेजते रहेंगे।

घनश्यामसिंह गुप्त
प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

धर्म और विज्ञान

[श्री स्वामी शिवानन्द]

—ॐ—

"साइन्स और आस्तिकवादकी शत्रुता बहुत पुरानी नहीं है। प्राचीन आस्तिकवादी सृष्टिके नियमों का अवलोकन करके ही ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते थे। परन्तु कुछ दिनों पश्चात् साइन्स और आस्तिकवाद में झगड़ा हो गया। आस्तिकवादी समझने लगे कि ईश्वर का सृष्टि-रचना से क्या सम्बन्ध, उन्होंने मनमाने गुण ईश्वर में आरोपित करने शुरू कर दिये। ज्ञान-मार्ग का अन्त हुआ और भक्ति मार्ग चला। भक्ति मार्ग ने अन्धविश्वासको बढ़ाया, इसीके साथ साइन्स-वादका ह्रास हुआ। इसके बाद साइन्स का पुनरुत्थान पश्चिम में हुआ। उस समय वहां आस्तिकवाद तो न था, परन्तु उसीके नामपर अन्धविश्वास अवश्य फैला था प्राचीन भारतवर्षीय तो ज्ञानको ईश्वर प्राप्ति तथा मोक्ष का साधन मानते थे। नवीन कालमें साइन्स या विज्ञानको अनीश्वरताका एक चिन्ह समझने लगे होंगे।

साइन्स और धर्म का झगड़ा यूरोप से आरम्भ हुआ। उस समय योरुप में ईसाई धर्म का प्राबल्य था। ईसाई धर्म का अर्थ ही यह था कि पोप जो कुछ कहदे वही सत्य है मनुष्यको आंख, कान खोलकर चलनेकी वहां आज्ञा न थी। परन्तु जब कुछ लोगोंने आंख कान खोलकर सृष्टिका अवलोकन करना आरम्भ कर दिया तो धर्माध्यक्षोंने उनका विरोध किया। इसलिये गैलिलियो आदि स्वतन्त्र विचार के अन्वेषकों को कड़ी यन्त्रणाएं दी गईं। यह लड़ाई का आरम्भ था और इस वैमनस्यने जो पहला प्रभाव साइन्स वेत्ताओंके हृदय पर डाला, वह यह था कि हमारे ऊपर अत्याचारोंका कारण आस्तिकवाद है। ज्यों ज्यों आस्तिकवादी अपने कल्पित ईश्वरके निराधार सिंहासनको साइन्सवालोंके पंजे से बचाने का यत्न कर रहे थे, त्यों त्यों साइन्सवालोंको आस्तिक-वादकी निर्मूलता विश्वास होता जाता था। इसमें भूल दोनों ओर से थी, परन्तु अधिक भूल धर्मा-ध्यक्षोंकी ओरसे थी यदि धर्माध्यक्ष समझते कि साइन्सवेत्ता केवल उन नियमों के अन्वेषणमें लगे हुए हैं जिन नियमों की आस्तिकवादी पूजा करते हैं तो साइन्स धर्मसे विरुद्ध न होकर सच्चे आस्तिकवादकी महत्ता दिखलानेमें संलग्न होती। साइन्सवालोंको यह सोचना चाहिये था कि आस्तिकवाद केवल उन्हीं सिद्धान्तों का नाम नहीं है जो अन्धविश्वासियोंने प्रचलित कर रक्खे हैं। परन्तु जब आस्तिकवाद के नामपर साइन्सवालोंके प्राण लिए जाने लगे और उनको देखने-सुनने और सोचनेकी आज्ञा न रही तो मरता क्या न करता। उन्होंने खुले मैदान में लड़ना आरम्भ कर दिया। यह युद्ध यहां तक बढ़ा कि साइन्सवालोंको आस्तिकवाद नाम तकसे भी घृणा हो गई और वह घृणा अब तक चली आ रही है। यह बात नहीं है कि साइंसवाले सभी उसी पुराने विचारके हैं। साइंसकी वर्तमान उन्नतिने साइंसवालोंको

भी इस बात का निश्चय करा दिया है कि चाहे विशेष प्रकारका आस्तिकवाद झूठा और निर्मूल हो, तथापि साइंस के नियमोंके लिये किसी न किसी नियन्ताकी आवश्यकता है। किन्तु जिस प्रकार धर्ममे अन्ध विश्वास होते है उसी प्रकार साइंसमे भी अन्ध विश्वास हैं। वस्तुत विचार किया जाय तो साइंस और आस्तिकवाद एक दूसरे से विरुद्ध नहीं है। साइंस क्या है? सृष्टिकी घटनाओंका भली भांति निरीक्षण करना, और यह सिद्ध करना कि यह अनियमित नहीं है, फिर उन नियमोंका वर्गीकरण करना। इसी का नाम साइंस है साइन्स की जैसे जैसे उन्नति होती जाती है, वैसे ही संसार के वर्तमान नियमोका उसे पता लगता जाता है। उन नियमोंका पता लगाकर इसके आगे न बढना और यह मान लेना कि यह नियम स्वयं ही बिना किसी बुद्धि तथा इच्छा या शक्ति के काम करते रहते है, साइंस के मौलिक नियमो का स्वयं खण्डन करना है। जो साइंसवेत्ता अन्वेषण आरम्भ करता है कि साइंस की घटनायें एक दूसरे से असम्बद्ध नहीं है, वर वे नियम रूपी सूत्रो मे पिरोई हुई है। यदि ऐसी न हो तो साइंस वालोको आगे बढने का साहस भी न होता, साइंस एक पग भी उन्नति न कर सकती। जैसे एक साइंस-वेत्ताने एक शीशी भर जलका विश्लेषण करके यह पता लगाया कि शीशी का उतना जल हाइड्रोजन और आक्सिजन से मिलकर बना है। अब उनको यह भी विश्वास है कि जो नियम इस शीशी भर पानी मे काम करता है वही संसार के अन्य जलों मे कार्य कर रहा है। इस प्रकार समस्त साइंस का मूलाधार सिद्धान्त यह है कि संसार की सारी घटनायें असम्बद्ध नहीं, किन्तु नियमबद्ध हैं। यह सिद्धान्त उस समय भी था, जब साइंस छोटी सी बच्ची थी। अब भी है जब कि साइंस इतनी उन्नति कर गई है। आगे भी रहेगा। साइंस केवल इतना ही नहीं मानती कि संसार की घटनायें नियमबद्ध है। किन्तु वह इससे आगे चल कर यह मानती है कि यह नियम भी स्वयं एक और सूक्ष्म नियम सूक्ष्मतर नियमों के साथ बधे हुए है। जब साइंस ने इतना मान लिया तो फिर उन नियमो के लिये चेतना अर्थात् ज्ञान और इच्छा शक्ति की आवश्यकता न समझना साइंसवेत्ताओं को शोभा नही देता। इसी लिये बडे साइंसवेत्ता आगे किसी चेतन शक्ति पर विश्वास करते हैं या केवल यह कह कर सन्तुष्ट हो जाते है कि हमारी गति केवल इन्हीं नियमो तक है। न हम इससे बढना ही चाहते है। कुछ कह रहे है कि साइंस का अधिकार केवल भौतिक नियमों तक है, अभौतिक संसार इसकी सीमा से बाहर है। उनका यह उत्तर भी यह प्रकट करता है कि वे नास्तिक नहीं है। केवल आस्तिकवाद के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ है।

वैदिक सिद्धान्त साइंस (विज्ञान) और धर्म दोनों को स्थान देता है। साइंस भौतिक जगत्का निरीक्षण करता है और धर्म अभौतिक सत्ता का परिज्ञान कराता है।

धर्म और देश प्रेम

[ले०—रघुनाथ प्रसाद पाठक]

(Religion and Patriotism)

प्राय ईसाई आचार-शास्त्री धर्म और देश भक्ति में संगति बिठाते समय बहुत परेशान रहते हैं। धर्म, प्रेम, सत्य न्याय, सहानुभूति, आत्मसमर्पण और प्राणि मात्र से प्रेम और उनके कल्याण को श्रेष्ठ भावनाओं और आचरण की शिक्षा देता है। देश प्रेम जो वस्तुत एक पवित्र गुण है बहुत निकृष्ट अर्थों में व्यवहृत होने लग गया है। साधारणतया लोग देश-प्रेम को घृणा, युद्ध और प्रत्येक प्रकार के अत्याचार और हिंसा का प्रतिपादक समझने लग गये हैं। ऐसी अवस्था में देश प्रम और धर्म में विरोध का दीव पड़ना स्वाभाविक है यही कारण है लोग देश-प्रेम का अर्थ युद्ध मानने लग गये हैं। और युद्ध विरोधी लोग देश-प्रेम विषयक इस प्रकार की परिभाषाओं का समर्थन करने लग गये हैं कि 'देश प्रेम धूर्तों का आश्रय स्थान है"।

Patriotism is the last refuge of a scoundrel परन्तु क्या वस्तुत देश-प्रेम धर्म-विरोधी है ?

देश-प्रेम विश्व-प्रेम का दूसरा रूप है। इसका वास्तविक रूप मानवता का प्रसार तथा उसका संरक्षण करना, सबके समान रूप से जीने तथा हर प्रकार की लौकिक और पारलौकिक उन्नति कर देना, संसार के प्राणीमात्र का कल्याण सम्पादन करने की सुविधा प्रदान करना तथा समाज में सुख और शान्ति का वातावरण स्थापित करना है। दूसरे शब्दों में इसे ही हम धर्म का स्वरूप कह सकते हैं। देश प्रेमका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य देश-प्रेम के वशीभूत हो मानवता के नाते उचित और अनुचित का विचार किए बगैर आचरण करे और अपने देश से भिन्न-देशों से घृणा करे तथा पापाचार से समाज की सुख शान्ति और समृद्धि का विनाश करे। देश-प्रेम का जो रूप ऊपर रक्खा गया है वस्तुत वह धार्मिक ही है और देश-प्रेम और धर्म में कोई विरोध नहीं है। इस का अर्थ यह नहीं है कि देश-प्रेम के इस विशाल दृष्टि-कोण को दृष्टि में रख कर मनुष्य अपने देश को या उसके प्रति अपने कर्त्तव्यों को भूल जाय, या उनकी उपेक्षा करे। मनुष्य को अपने देश की सेवा, जो कुछ बन पड़े अवश्य करनी चाहिए परन्तु मानवता के विशाल भाव से उसकी रक्षा करते हुए और इस इच्छा के साथ कि देश अपनी जो सर्व श्रेष्ठ वस्तु मानव समाज को अर्पण कर सकता है, अवश्य करे तथा अपने देश और समाज की सुख शान्ति और अभिवृद्धि में श्रेष्ठ योग देवे।

श्रीयुत लुइस यल० मैन (Mr Louis L. Man ने पिछले दिनों यूनिटी (unity) नामक सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र में इस विषय पर अच्छा विचार किया था। उन्हों ने सिद्ध किया था कि देश-प्रेम धर्म-विरोधी नहीं है वरन धर्म का ही दूसरा रूप है। उनके लेख के कुछ आवश्यक अंश इस प्रकार हैं.—

"There is the patriotism that is true and the patriotism that is false the latter embraces the sentiment "My country right or wrong"— Our generation, has been wrongly conditioned upon the subject of Patriotism We are totally blind to its peaceful implications, whenever the word is uttered, it at once calls up the picture of war in our mind As if peace did not have her victories no less renowned than war As if peace did not have need of patriotism as demanding and acting as that of war. As if those great souls who struggle to abolish poverty, to alleviate disease, to reduce crime, to eliminate ignorance, to free schools from the control of politics. who fight against graft and corruption and dishonesty in Government, to say nothing of the microbe hunters' and the 'Death fighters' and the Red Cross and the Salvation Army who struggle to redeem the victims of misfortune from their lordly estate, are not patriotic. Patriotism must not be defined as a love for one's country, in terms of a willingness to die for one's country It must be redefined as a love for one's Country— to live for one's countrymen"

अर्थात देश-प्रेम के २ रूप हैं। एक सच्चा और दूसरा झूठा। सच्चा देश-प्रेम धर्म की अवज्ञा नहीं करता। दूसरा अर्थात झूठा देश-प्रेम सैनिक-वाद, और युद्धवाद को स्वीकार करता है।

जिसका अर्थ—मेरा देश सही हो या ग़लत—सम्राज्य वाद और राष्ट्रीयता (Nationalism) है।। हमारी वर्तमान सन्तति का देश-भक्ति के गलत रूप पर निर्माण हुआ है। हम देश-भक्ति के शान्त गूढ़ भावों के प्रति नितान्त अन्धे हैं। देश भक्ति शब्द का नाम लेते ही मस्तिष्क में युद्ध, का चित्र आजाता है, मानो शान्ति संसार से बिदा हो गई है। मानो शान्ति का देश-प्रेम पर कोई अधिकार नहीं हैं। सब कुछ अधिकार 'युद्ध' का ही है। मानो संसार के महान् व्यक्ति देश-प्रेमी नहीं है। जो निर्धनता के विनाश, महामारियों के उन्मूलन अपराधों के निराकरण और अज्ञान के निवारण के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। जो राजनीति के पाश से स्कूलों को बेईमानी, धूर्तता, मक्कारी, शोषण, दोहन, लूट-खसोट से शासनो को मुक्त करने की चेष्टा कर रहे हैं। दार्शनिकों, धर्म जीवियों और जनोपकारक संस्थाओं की तो गणना ही क्या जो दुःखी और पीड़ित समाज के कष्टों के निवारण के उपाय कर रहे हैं या बतला रहे हैं। देश के लिए मरने की इच्छा के रूप में देश-भक्ति

की परिभाषा नहीं होनी चाहिए। वरन् इसकी परिभाषा देश वासियों के लिए जीने की इच्छा के प्रकाश के रूप मे होनी चाहिए जिससे देश-विशेष समस्त मानव समाज के कल्याण सम्पादन मे जो योग दे सके देवे। इस प्रकार के देश-प्रेम और धर्म मे कोई विरोध न होगा। वरन् वह स्वयं धर्म का ही दूसरा रूप होगा।

इन विचारों से कौन समझदार व्यक्ति होगा जो सहमत न होगा। इसमे संसार भर को कुटुम्ब समझने की वैदिक शिक्षा की स्पष्ट झलक है।

वस्तुत जब तक समाज का इस प्रकार की वैदिक शिक्षाओं पर पुनर्निर्माण नहीं होता तब तक इस प्रकार की गलत फहमिया दूर न होगी और न उसका अभीष्ठ कल्याण ही सिद्ध होगा। हर्ष है वह समय तेजी के साथ आ रहा है जब संसार वैदिक शिक्षाओं के चारों ओर घूमेगा और अपना कल्याण सम्पादन करेगा।

—

"मृत्यु-किरण" या नरघातक आविष्कार ।

(ले०—श्रीयुत रामनारायण जी)

जैसे-जैसे हम भावी महायुद्ध के विषय में नयी-नयी बातें सुनने के आदी होते जाते हैं, हमारे सामने अनेकों प्रकार के अस्त्र-शस्त्र तथा युद्ध सम्बन्धी योजनाएं प्रकट होती जाती हैं। कभी हम वायुयानों द्वारा बम और गैस-वर्षा की आशंका सुनते हैं, तो कभी प्रलयंकर शस्त्र प्रहारों द्वारा नर-हत्या के उपाय। कभी कभी ऐसे आविष्कारों के बारे में भी हमें समाचार मिलते हैं, जिन्हें वैज्ञानिक 'मृत्यु-किरण' के नाम से पुकारते हैं। 'मृत्यु किरण' यद्यपि अभी तक किसी ने देखी नहीं है, तथापि उसके बारे में सुना बहुत है।

'मृत्यु-किरण' नामक आविष्कार के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि यदि इन किरणों का उपयोग शत्रु सेना पर किया जाय तो उनके शरीर का रक्त मवाद में बदल जायगा, शरीर के वस्त्र जलकर भस्म हो जायगें। इन किरणों की शक्ति से उड़ते हुए हवाई जहाज को निश्चेष्ट करके भूशायी किया जा सकेगा तथा चलती हुई मशीनों को बन्द किया जा सकेगा।

बहुत से वैज्ञानिकों ने ऐसी किरणों की खोज निकालने का दावा किया है। समय समय पर इस प्रकार के समाचार सुनने में आते हैं कि अमुक वैज्ञानिक इस प्रकार के आविष्कार में निमग्न है। और उसने सफलता भी प्राप्त कर ली है। कहा जाता है कि आजकल प्रसिद्ध गणितज्ञ प्रो० अयंस्टीन भी इसी प्रकार के नर-घातकी आविष्कार की खोज में लगे हैं, अमेरिका की सरकार उनके आविष्कारों को गुप्त रखती है और उन्होंने बहुत से महत्वपूर्ण अस्त्र-शस्त्र खोज निकाले हैं।

कहा जाता है कि इङ्गलैण्ड के वेल्स प्रान्त में एक सुरक्षित बंगले में एच० ग्रिडेल मैथ्यू नामक वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में इस प्रकार के अनुसन्धान में निमग्न हैं। उनके बंगले के चारों ओर बिजली के करेंटयुक्त तार लगाये गये हैं और दिन रात वहां संगीनों का पहरा रहता है। इस वैज्ञानिक ने, कहा जाता है कि, ऐसी किरण का आविष्कार किया है जिसके द्वारा शत्रुओं के वायुयानों को आकाश में ही बिलकुल रोक दिया जा सकता है। इसी वैज्ञानिक ने बेतारकेतार द्वारा टारपीडो चलाने और वायुयान संचालन करने वाले यन्त्रों का आविष्कार किया है, जो पाच मील के फासले पर से गोले बरसा सकते हैं।

इङ्गलैण्ड ही के एक दूसरे वैज्ञानिक हैं, डा० चैटफील्ड। इन्होंने बिना किसी कष्ट के ही मनुष्य का प्राणान्त कर देने वाली रश्मियों का आविष्कार किया है। एक डेनिश इञ्जीनियर हैं मि० रेयन। कहा जाता है कि इन्हों ने ऐसी रेडियो तरंगों का आविष्कार किया है जिस के द्वारा एक सौ मील के फासले पर से डिनेमाइटको उड़ाया जा सकता है। इसके अलावा, एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने ऐसी पिस्तौल तैयार की हैं, जिनसे गोली के बदले गैस छोड़ी जाती है, जो मनुष्य

को क्षण भर के लिये अन्धा, परन्तु जन्म भर के लिये अपंग बना देती है। इसी प्रकार अमेरिका के निकोला टेल्सा नामक विद्वान ने ऐसे प्रकाश का आविष्कार किया है जो युद्ध होने पर अपनी सीमा के चारों ओर क्षण भर में ही फैला दिया जा सकता है और वह दस लाख सैनिकों के आक्रमण को विफल करने तथा दस सहस्र आक्रमणकारी वायुयानों को गिराने के लिये पर्याप्त होगा।

इङ्गलैण्ड के मि० पौन हम्फरी मेकनील नामक सुप्रसिद्ध परा-लाल-किरण (Infra-Red Ray) के अनुसंधानक ने एक और नवीन रहस्यमयी किरण का निर्माण किया है। कहा जाता है कि इन्हों ने अपने आविष्कार का प्रदर्शन भी स्थल और जलसेना-विशेषज्ञों के समक्ष किया है। इस किरण से नर-हत्या नहीं होती, वरन् अप्रदृश्य मनुष्य के अनुसंधान में यह किरण उपयोगी होती है। छिपा हुआ मनुष्य चाहे एक मील की दूरी पर हो, उसके शरीर की गर्मी द्वारा यह किरण उसकी उपस्थिति जान लेगी। इस किरण द्वारा वायुयान की गर्मी का भी पता लग जाता है, चाहे वह कितनी ही दूर हो या कितनी ही ऊंचाई पर हो। जलयान को ढूंढ निकालने में तो तनिक भी कठिनाई उपस्थित नहीं होती। ऐसी किरण का आविष्कार न केवल महत्वपूर्ण है, वरन् सम्भव भी हो सकता है।

एक अन्य नर-घातकी आविष्कारक का दावा है कि उसने एक ऐसी युक्ति का निर्माण किया है जिस के द्वारा वह रासायनिक और गैसीय (Gasous) पदार्थों को रेडियो तरङ्गों द्वारा विस्तृत कर सकता है। हाईड्रोमाइनिक एसिड नामक गैसको यदि रेडियो-तरङ्गों द्वारा विस्तरित किया गया तो क्षण भर में प्रलय के दृश्य उपस्थित हो जाने में कुछ भी सन्देह नहीं है। किसी भी प्रकार की महामारी के कीटाणुओं का ब्रौडकास्ट यदि किया जा सकेगा तो शत्रुपक्ष क्षण भर में महामारी-ग्रस्त हो जायगा।

इन घातक वैज्ञानिकों के आविष्कारों की सत्यता में किस प्रकार विश्वास किया जाय, यह वैज्ञानिक ही बता सकते हैं। ससार के कुछ प्रमुख वैज्ञानिक इन आविष्कारों की सत्यता में सन्देह करते हैं। परन्तु इगलैंड की 'रेडियो सोसाइटी' नामक सस्था ने 'मृत्यु-किरण' के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है। इस सस्था ने एक ऐसा विभाग खोला है, जिसमे मृत्यु-किरण सम्बन्धी आविष्कारों का अध्ययन किया जायगा। अल्ट्रा शार्ट तरङ्गों (Ultra short-wave) द्वारा पतिंगों, मक्खियों तथा अन्य कीटाणुओं की हत्या करने के प्रयोग किये जायेंगे।

वैज्ञानिकों ने अनेक अवसरों पर अल्ट्रा शार्ट-तरङ्गों के मार्ग में कीटाणुओं को रखकर उनकी हत्या करने मे सफलता प्राप्त कर ली है। न्यूयार्क मे इस प्रकार के एक प्रयोग का हाल में ही प्रदर्शन किया गया था। एक छोटे यन्त्र द्वार पृथ्वी पर तरङ्गों का प्रभाव डाला गया। दो मिनट तक तरङ्गो के विस्तार के उपरान्त कृषि-शास्त्र विशेषज्ञों ने अनुसंधान कार्य आरम्भ किया। इन तरङ्गों के प्रभाव से उस बाराभर में,

जिसमें यह प्रयोग किया गया था, कीटाणुओं का नाम निशान भी शेष न रहा। वृक्षों की लकड़ी के भीतर रहने वाले कीटाणु भी जल-भुन कर राख हो गये।

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि रेडियम और एक्स-किरणों को उचित मात्रा में एकत्र करके प्रयोग किया जाय, तो उसका प्रभाव संहारक हो सकता है। एक वैज्ञानिक ने इसका वर्णन किया है कि किस प्रकार केवल रेडियम के उपयोग से ही सफलतापूर्वक पूर्ण हत्याकाण्ड किया जा सकता है। परन्तु रेडियम द्वारा तुरन्त मृत्यु नहीं हो पायगी। रेडियम का एक बालुका सदृश कण भी घातक होगा, परन्तु उसका भीषण प्रभाव कुछ काल के बाद ही ज्ञात होगा।

फेयरहम (Fareham) के लार्ड ली महोदय ने उन घातकी परिणामों का वर्णन किया है, जो रेडियम के प्रभाव से हुए हैं। कहा जाता है कि न्यूजर्सी में घड़ी बनाने के एक कार्यालय में मिश्रित रसायनों का उपयोग घड़ी के डायल पेण्ट करने में किया जाता था। जो लड़कियां ब्रश द्वारा घड़ी के डायल पेण्ट करतीं थीं, बहुधा ब्रश की नोंक को सीधा करने के लिये वे उसे जीभ पर लगा लेती थीं। रेडियम के अदृश्य कण उनके शरीर में व्याप गये। कई वर्षों के पश्चात् उसका प्रभाव ज्ञात हुआ। इन लड़कियों के शरीर से रेडियम का तेज फूट निकला और मृत्यु हो जाने पर भी रेडियम का तेज चमकता ही रहा। उनको जो पीड़ा अनुभव हुई, उसका वर्णन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता। इनमें से एक लड़की ने एक दिन अन्धेरे में अपने शरीर से तेज किरणों को निकलते देखा और वह एक अद्भुत पीड़ा में ग्रस्त हो गयी।

यदि 'मृत्यु-किरण' का अस्तित्व सत्य है, तो मृत्यु-किरण इन्हीं किरणों को कहा जा सकता है, जिनका वर्णन हमने ऊपर किया है। इसमें सन्देह भी नहीं है कि रेडियम अल्ट्रा-शार्ट तरङ्ग, स्पेक्ट्रम तथा 'कास्मिक किरणों' की शक्ति के विषय में अनेक प्रयोग और अनुसंधान किये जा रहे हैं। इन अनुसन्धानों का परिणाम क्या होगा, यह वैज्ञानिकों पर निर्भर है।

परन्तु क्या वैज्ञानिक अपने अनुसन्धानों और प्रयोगों को गुप्त रखे हुए हैं और उनके परिणाम से संसार अनभिज्ञ रहेगा? क्या वैज्ञानिकों ने 'मृत्यु किरण' सरीखी कोई वास्तविक वस्तु खोज निकाली है? हम अभी तक अन्धकार में हैं, हमने सम्भावनाएं और समाचार ही सुने हैं। अभी तक 'मृत्यु-किरण' का रहस्य प्रकट नहीं हो पाया है। मृत्युकिरण सम्बन्धी आविष्कारों को सुन-सुनकर हमारा हृदय कांप जाता है, परन्तु वास्तव में मृत्यु-किरण कोई वस्तु है भी, इसमें हमें सन्देह है, और तब तक सन्देह रहेगा, जब तक संसार के प्रमुख वैज्ञानिक 'मृत्यु-किरण' के अस्तित्व में विश्वास न करने लगेंगे।

(विश्वमित्र)

शंका-समाधान

(क्रमागत)

VII. CASTE

Question

1 Are you for retention, abolition or modification of the present Caste system, including divisions into sub-castes ?

2. Is it possible to allow Hindus to retain their present caste distinctions and yet create in them such a community of interest that the members of all castes may regard each other as equally important parts of the Hindu Society ? If your answer is in the affirmative, please state what steps are necessary to bring about the above result.

Answer

Arya Samaj is in favour of complete demolition of the present caste system It believes in Varnas on the basis of GUNA, KARMA and SVABHAVA and not on heredity

जात पांत

प्रश्नः—

(१) क्या आप वर्तमान जात-पाँत और उप जातियों पक्ष में हैं और क्या आप उनका उन्मूलन या संशोधन चाहते हैं ?

(२) क्या यह संभव है कि हिन्दू लोग अपने वर्तमान जात-पांत के भेदों को स्थिर रखते हुए ऐसी जाति में परिणित हो जायं जिस से कि समस्त जातियो के लोग एक दूसरे को हिन्दू समाज के समान रूप से महत्वपूर्ण अंश समझें। यदि आपका उत्तर स्वीकारात्मक हो तो कृपया लिखे कि ऐसा करने के लिए किन किन आवश्यक उपायो का अवलम्बन किया जाय।

उत्तर —

आर्य्य समाज वर्तमान जात पांत की प्रथाओ के पूर्ण उन्मूलन के पक्ष मे है। गुण कर्म, और स्वभाव पर आश्रित वर्णों मे उसकी आस्था है। जन्म की जात पांत मे बिलकुल नहीं—

ईश्वर की सत्ता

प्रश्न :—

तुम ईश्वर ईश्वर चिल्लाते हो यदि ईश्वर होता तो दिखलाई क्यों न पड़ता ? चूंकि वह दिखाई नही देता है इसलिये ईश्वर है ही नहीं ?

उत्तर —

यदि ईश्वर दिखाई देता तो शायद सब कोई अपनी २ मनोवाञ्छा पूरी करने की प्रार्थना करता और उसे हैरान करता। दूसेरे जिन तत्वो से मनुष्य का यह शरीर बना है उनसे उसको देखना असभव है। परमेश्वर दिखाई भी देता है; यह मनुष्य, पशु, वृक्ष आदि सब पदार्थ जो इस संसार में दिखाई देते हैं, उनका कोई एक बनाने वाला जान पड़ता है यही उसका देखना है। जैसे सुख दुख पहचाना जाता है वैसे ही परमेश्वर को पहचानो। ब्रह्म सबमें है और

हममें भी है और जैसे सुख दुख की प्रतीति मन में होती है वैसी ही उसकी भी हो सकती है। ईश्वर सब जगह एक सा है परन्तु यह बात है कि उस चेतन का जितना जिसके आत्मा में प्रकाश है अर्थात् जितना जिसे ज्ञान है उतना ही उसे परमात्मा का अनुभव होता है।

प्रश्न —

यह बात स्पष्ट नहीं हुई। कृपया और स्पष्ट कीजिए। ईश्वर की सत्ता विज्ञान से सिद्ध है या नहीं?

उत्तर —

इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी होना प्रत्यक्ष है। वैज्ञानिकों में भी ईश्वर का विषय अब मान्य हो गया है परमेश्वर है या नहीं इस विषय की नई छान बीन से पता लग गया है कि बिना परमेश्वर की सत्ता को माने साइंस का काम ही नहीं चल सकता। विज्ञान और धर्म (Religion & Science) नामी पुस्तक में साइंस के महा विद्वान डा० जे० ए० फ्लिनिंग कहते हैं कि 'साइंस के अध्ययन से हमको इस प्राकृतिक जगत में तरतीब योजना, धारणा और विचार दिखलाई पड़ते हैं। ये बातें इत्तिफाक से अचानक नहीं आगई। ये विचार और चेतनता की सूचना देते हैं। यह संसार केवल वस्तु ही नहीं है। प्रत्युत यह विचार मय है जो बिना विचारवान कभी हो ही नहीं सकता। इस जगत में एक सर्व व्यापक चैतन्य विचारवान सत्ता भासित होती है जिसका हम भी एक नमूना हैं।" और भी देखो। शरीर में किस प्रकार की ज्ञान पूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बन्धन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़ा, पंखा, कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप, मूल रचन, लोम नखादि का स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिये स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागीकरण, कला कौशल स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को बिना ईश्वर के कौन कर सकता है? इसके बिना नाना प्रकार के रत्न धातु से जटित भूमि, विविध प्रकार वट वृक्ष आदि के बीजों मे अति सूक्ष्म रचना, असंख्य हरे, सफेद, पीले, काले, चित्र, मध्य रूपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल मूल निर्माण, मिष्ट, क्षार, कटु, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध रस सुगन्धादि युक्त-पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द मूलादि रचन, अनेकानेक क्रोडों भूगोल, सूर्य्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता। नाना प्रकार सृष्टि में विविध रचना बनाने वाले परमेश्वर को सिद्ध करती है। जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाती है उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शङ्का और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय निशङ्कता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है।

हिन्दू जाति के रोग का वास्तविक कारण क्या है ?

(श्री भाई परमानन्द जी)

"उच्च सिद्धान्त तथा उसके मानने वालों का आचरण ये दो विभिन्न बातें हैं। मनुष्य की उन्नति और सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके सिद्धान्त और आचरण में कहां तक समता पाई जाती है। जब तक यह समता रहती है—वह उन्नति करता है, जब मनुष्य के सिद्धान्त और आचरण में विषमता की खाई गहरी हो जाती है तब अवनति आरम्भ हो जाती है। मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि उसका लक्ष्य सदा ऊंचे सिद्धान्तों पर रहता है, परन्तु जब तक उसके आचरण में दृढ़ता नहीं होती वह उन (सिद्धान्तों) की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है, परन्तु फिर भी संसार को वह यही दिखाना चाहता है कि उन सिद्धान्तों का पालन कर रहा है। इस प्रकार मानव समाज मे एक बड़ा रोग उत्पन्न हो जाता है धार्मिक परिभाषा में इसे ही 'पाखंड' कहते है। जब कोई जाति या राष्ट्र इस रोग से घिर जाता है तो इसकी उन्नति के सब द्वार बन्द हो जाते हैं और उसके पतन को रोकना असाध्य रोग सा असम्भव हो जाता है"।

जब किसी जाति या राष्ट्र में उन्नति की अभिलाषा उत्पन्न हो तो इसको कार्यरूप मे परिणत करने का प्रथम आवश्यक साधन उसके व्यक्तियों के आचरण की दृढ़ता है। चरित्र जितना अधिक उच्च और भला होगा उतना ही शीघ्र उच्च और भले विचार बद्धमूल होंगे। 'चरित्र' के खेत को भली भांति तय्यार किये बिना उच्च विचाररूपी बीज बखेरना ऊसर भूमि में बीज फेंकने के समान ही व्यर्थ होगा, उच्च विचारों की शिक्षा देने के साथ २ आचरण और चरित्र को ऊंचा रखने का विचार अवश्य होना चाहिये। अन्यथा चरित्र के भ्रष्ट होने साथ २ यदि उच्च विचारों की बातें हो रहीं तो 'पाखंड' का भयानक रोग लग जाना स्वाभाविक हो जायगा।

यह पाखंड हिन्दुओं में कैसे उत्पन्न हुआ ? और किस प्रकार भीतर-ही भीतर दीमक की भांति खोखला कर रहा है यह बात मैं यहां दो तीन उदाहरणो से स्पष्ट करता हूं। 'तपस्या' का अर्थ आजकल प्रचलित भाषा में नियन्त्रण (Discepline) किया जा सकता है। जिस युग मे हिंदू जाति के पुरुषार्थों ने तपस्या' को जीवन का महत्वपूर्ण सिद्धान्त निर्दिष्ट किया था, वे इसके महत्व को जानते हुए यह भी समझते थे कि जिन लोगो को इसका उपदेश दिया जा रहा है वे भी इसके महत्व को समझते है और इन्द्रियदमन व मन के वश करण को आचरण मे लाना 'तपस्या' का लक्ष्य समझते हैं। समय आया कि जब लोग इस तप को कुछ से कुछ समझने लगे और अब तप इसलिये नहीं किया जाता कि अपने मन को वश में करना है अपितु इसलिये कि संसार को दिखा सकें कि हम 'बड़े तपस्वी' हैं। आग की धूनी लगाकर बैठ गये।

कभी एक हाथ ऊंचा उठा लिया कभी दूसरा और लोगों में प्रसिद्ध कर दिया कि हम बड़े तपस्वी हैं। 'तप' सिद्धांत रूप मे बहुत ऊंचा सिद्धांत है—परन्तु यह जिन लोगों के लिये है—उनका आचरण गिर गया। 'सिद्धांत' और 'आचरण' में विषमता होने के कारण पाखण्ड आरम्भ हो गया और आज हज़ारों लाखों स्त्री-पुरुष इस पाखंड के शिकार है। 'त्याग' को ही लीजिये। त्याग' के उच्च सिद्धांत पर आचरण करने के स्थान पर आज लाखों व्यक्तियो ने इसलिये घरबार छोड़ रखा है कि वे गृहस्थ जीवन की कठिनाइयों को सहन नहीं कर सकते। वे त्यागियों का बाना धारण कर दूसरों को ठगने का काम कर रहे हैं। कितनों ही ने न केवल सांसारिक इच्छाओं का त्याग ही किया अपितु इनकी पूर्ति के लिये प्रत्येक अनुचित उपाय का अवलम्बन तक किया है। जाति की पतितावस्था मे 'त्याग' का ऊंचा आदर्श एक भारी पाखड के रूप में रहता है।

देश के लिये बलिदान का आदर्श भी उच्च आदर्श है। परन्तु यदि देश भक्त कहलाने वाले व्यक्ति इसके सिद्धांत के आचरण में इतने गिर जांय कि वे अपने से भिन्न व विरुद्ध सम्मति रखने वाले व्यक्ति को सम्मति प्रगट करने की स्वतन्त्रता भी न दें। ऐसी देश भक्ति एक प्रकार से व्यवसाय रूप देशभक्ति है। कई बार ये लोग रुपया उड़ा लेते हैं और फिर इस बात का प्रचार करते हैं कि ससार में कोई भी व्यक्ति रुपये के लालच से नहीं बच सकता। इसलिये जो व्यक्ति इनसे असहमत रहता हो उसे भी वे अपने ही समान रुपये के लालच में फंसा हुआ बताते हैं। ऐसी अवस्था में देश भक्ति की भावना एक पाखंड का रूप धारण कर लेती है। इसी प्रकार, अनाथालय, विधवाश्रम आदि सब परोपकार और सर्व साधारण की भलाई के कार्यों के नाम पर आज जो रुपया एकत्र होता है वह सब चरित्र-बल न होने के कारण धोखे की टट्टी बने हुए हैं। "निर्वाण" या "मुक्ति" प्राप्त करने की भावना भी उच्च आदर्श है। परन्तु आज चरित्र बल न होने से चरित्र हीन व्यक्तियों ने इसी "निर्वाण" और "मुक्ति" के नाम पर सैकड़ों अड्डे बना रखे हैं। और लाखों नर नारी इनके फंदे मे फस कर भी गर्व करते है।

यदि मुझ से कोई पूछे कि हिन्दू जाति की निर्बलता और उसके पतन का वास्तविक कारण क्या है? तो मेरा तो एक ही उत्तर होगा कि इस रोग का वास्तविक कारण यह ढोंग है। हिन्दुओं मे प्रचलित इस 'ढोंग' से यह भी प्रमाणित होता है कि किसी युग में हिन्दू जाति का चरित्र और आचरण बहुत ऊंचा था। और इसीलिये उन्हें ऊंचे आदर्श की शिक्षा दी जाती थी—परन्तु पीछे से घटना क्रम के वश हिन्दू जाति का आचरण गिरता गया, और 'सिद्धांत' शास्त्रो मे सुरक्षित रहने के कारण ऊंचे ही बने रहे। व्यक्ति इन सिद्धांतों के अनुकूल आचरण न रख सके—फिर भी उनकी यह इच्छा बनी रही कि ससार यह समझे कि उनका जीवन उन्हीं ऊंचे आदर्शों के अनुसार है। इस प्रकार 'सिद्धांत और आचरण' अथवा 'आदर्श और चरित्र' में विभिन्नता हो जाने के कारण 'दिखावा' या ढोंग' का रोग लग गया। इस समय यह 'ढोंग' दीमक के समान जाति की जड़ो मे लगा हुआ है। इस जाति के उत्थान का यत्न करने की इच्छा रखने

सत्यार्थप्रकाश लेख माला

मोक्ष से आवृत्ति

(लेखक—स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

मोक्ष के साधन कर्म तथा ज्ञान उभय हैं और मोक्ष में जीव ब्रह्ममात्र को प्राप्त नहीं होता है अपितु जीव ही रह कर आनन्द को भोगता है यह बात मैं दो लेखों में पूर्व लिख चुका हूँ इस लेख मे इस विषय पर विचार करना है मोक्ष नित्य है वा अनित्य है अर्थात् जीव मोक्ष को प्राप्त करके पुन किसी समय बन्ध को प्राप्त होता है अथवा सर्वदा मुक्तावस्था मे ही रहता है। इस विषय मे आर्य समाज का सिद्धात है जीवन के लिये मोक्षावस्था नित्य नही है अनित्य है।

जो मोक्ष को नित्य मानते हैं उनको इसका विचार करना आवश्यक है। जो वस्तु नित्य होती है उसका कारण नही होता है जिनका कारण हो वह अनित्य होगी जैसे घट पट आदि के काष्ठ, तन्तु आदि कारण होने से वह अनित्य हैं और आकाश का कारण न होने से वह नित्य है। इस नियम के अनुसार यदि मोक्ष नित्य है तो उसके कर्म अथवा ज्ञान कारण क्यों माने जाते हैं प्रकरण पुस्तकों मे वैराग्यादि बाह्य साधन हैं और श्रवणादि अतरग साधन है। अथवा कर्मादि बाह्यसाधन हैं और ज्ञान अतरग साधन हैं। यह बातें क्यों लिखी हैं और प्रत्येक महात्मा धर्म करो की रट क्यों लगाता है जो वस्तु नित्य होती है वह साध्य होती है और मोक्ष तो साध्य है यह सिद्धान्त सर्व तत्र है इसलिए इस समय तक यह दु साहस किसी ने भी नही किया है कि मोक्ष को साध्य न माने इस अवस्था मे मोक्ष नित्य न होगी।

जो वस्तु जन्य होती है वह जिस प्रकार सादि होती है उसी प्रकार सात भी होती है ऐसी कोई वस्तु नही है जो सादि अनन्त हो। इस विषय में कई प्रध्वंसाभाव को उदाहरण में रखा करते हैं नैयायिक प्रध्वंसाभाव को सादि अनत मानते हैं। इसे समझने के लिए कुछ विस्तार से लिखता हूँ। जिस समय किसी पदार्थ का नाश होता है वह उसका प्रध्वसाभाव है जैसे जिस समय घट मुद्गरादि से टूट जाता है पट अग्नि से जल जाता है। उस समय घट और पट का स्वरूप नष्ट हो जाता है वही घट पट का प्रध्वसाभाव है यदि इसको सात मान लिया जाय तो उनके मत मे प्रागभाव, प्रतियोगी, प्रध्ववसाभाव इन तीनों में से किसी समय कोई एक होता है। जब घट पट की उत्पत्ति

वाले के लिये आवश्यक है कि वह पहले इस 'पाखड वृत्ति' को निकाल फैंके। यदि हम अपने आचरण या चरित्र को ऊंचा नहीं बना सकते तो उच्च आदर्श का पाखंड रचने की अपेक्षा अच्छा तो यह होगा कि हम ऊंचे आदर्शों का लोभ त्याग कर अपने आचरणों के अनुसार ही आदर्श को अपना लक्ष्य बनावें।

न थी तब तो उनका प्रागभाव था जब घट, पट बन गये तब प्रागभाव का नाश होकर प्रतियोगी घट, पट बन गए और इस काल मे प्रागभाव, प्रध्वसाभाव नहीं हैं प्रतियोगी है और उत्पत्ति से पूर्व प्रतियोगी प्रध्वसाभाव न थे प्रागभाव था अब जब घट, पट का नाश होगा उस समय प्रध्वसाभाव उत्पन्न होगा। इस समय प्रतियोगी का नाश होने से यह नहीं है और प्रागभाव का नाश प्रतियोगी की उत्पत्ति काल में हो गया था दोनों के न होने से तीसरा प्रध्वसाभाव है यदि उसको सात मानें तो उसके नाश के समय के साथ २ इनमें से किसी एक का भाव होना चाहिये इनका भाव होना असभव है अत प्रध्वंसाभाव सादि अनन्त है।

जैसे प्रध्वंसाभाव सादि है इसी प्रकार मोक्ष भी सादि और अनंत है इसका उत्तर यह है प्रध्वसाभाव अभाव रूप है अभाव को भाव समता नहीं होती इसलिए प्रध्वसाभाव को सादि अनत होने पर भी मोक्ष जो भाव रूप है वह सादि अनंत न होगी यदि मोक्ष को केवल दु खाभाव रूप माना जाय तो यह उदाहरण माना जा सकता था परन्तु मोक्ष को हम दु खाभाव के साथ २ सुख रूप भी मानते हैं इस लिए जो सुख उत्पन्न हुआ है उसका नाश भी अवश्य होगा जो उस सुख का नाश है वही मोक्ष की अनित्यता सिद्ध करता है इस प्रकार युक्ति से मोक्ष की नित्यता सिद्ध नहीं होती।

अब रहा प्रमाणवाद। मोक्ष की नित्यता में निम्न प्रमाण दिये जाते हैं।

१ अनावृत्ति शब्दात्। वेदात दर्शन ४-४-२२

२ ब्रह्मलोकमभिसंपद्यते न च पुनरावर्तते।

छा० ८। १५। १

३ स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते।

कठ . ३। ८

४ तस्मिन्वसति शाश्वती समाः। बृ० ५-१०-१

५. यद्गत्वा न निवर्तते तद्धाम परमं मम। गीता

अर्थ—श्रुति मे लिखा है आवृत्ति नहीं होती।

ब्रह्म लोक को प्राप्त करके पुन. जन्म नहीं लेता है।

वह उस पद को प्राप्त होता है जिससे फिर जन्म नहीं होता है वहा अनंत काल तक वास करता है।

जहा जाकर फिर नहीं आता वही मेरा परम धाम (मेरा स्वरूप) है। इनको देख कर कई कहते है पुनरावृत्ति नहीं होती यदि वह ध्यान से इनको देखे और इन पर विचार करके दूसरे वाक्यों से इनकी सगति करे तो इनका भाव प्रतीत हो जाय। इनमें जो आवृत्ति का निषेध है वह पुनर्जन्म वत् इसी समय आवृत्ति का निषेध है न कि मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति का निषेध।

वेदात सूत्र स्वयं कहता है कि शब्द ऐसा कहता है इस लिए आवृत्ति है इसमें छांदोग्योपनिषद् का ८-१५-१ का कथन है उसके पूर्व 'यावदायुषम्' पाठ है जिसके अर्थ मुक्ति की अवधि है और इसी उपनिषद् में एक और पाठ इस प्रकार है।

'सएतान्ब्रह्म गमयत्येश देव पथो ब्रह्म पथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवावर्तं नावर्तते। छा० ४-१५-५

वह इस मार्ग से ब्रह्म को प्राप्त होता है इसी

का नाम देव पथ, ब्रह्म पथ है इससे ब्रह्म को प्राप्त इस मानवावर्त में फिर नहीं आता है अर्थात् दूसरे कल्प में आता है। उपनिषद् की मिताक्षरा नाम की टीका में इसके अर्थ लिखते समय लिखा है।

'कल्पांतरेषु आवर्तंत एनेममिनि विशेषणात्।

भावार्थ—इमं विशेषण होने से कल्पांतर मे जन्म होता है। यही बात स्वामी आनन्दगिरि जी ने इसकी टीका में लिखी है दोनों वाक्यों में ब्रह्म की प्राप्ति है इस लिये वह निषेध इस कल्प के लिये है सर्वदा के लिए नहीं है इसी वाक्य का पोषक महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में माडूक्योपनिषद् का यह वाक्य दिया है

ते ब्रह्म लोकेषु प्रान्त काले परामृत: परिमुच्यति सर्वे। मु० ३-२-६

कल्प के अन्त में (मोक्ष की अवधि समाप्त होने पर सर्व मोक्ष से छूट कर जन्म प्राप्त करते हैं यह इसका भाव है और गीता मे दो वाक्य दूसरे हैं।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तानह वेद सर्वाणि नत्वं वेत्थ परंतप॥
गीता ४।५

हे अर्जुन! तेरे और मेरे अनेक जन्म बीत गये मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

आब्रह्म भुवनाल्लोको पुनरावर्तीनामर्जुन (गीता)
ब्रह्म लोक पर्यंत सब पुनरावर्ती हैं।

श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी ने 'वैदिक धर्म' नाम की पुस्तक में चार मन्त्र दिये हैं वह चारों ऋग्वेद मंडल १० सूक्त ६२ के हैं उनमें से मैं एक लिखता हूँ—

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृत्य त्वमानशे। तेभ्यो भद्रमगिरसो वो अस्तु प्रतिगृभ्णीत मानवं सुमेधस ॥ ऋ० १०-६२ १

अर्थ—जिन महात्माओं ने यज्ञ, दक्षिणा से इन्द्र का सख्य मोक्ष रूप को प्राप्त किया है ऐसे उत्तम बुद्धि युक्त ज्ञानी मनुष्य शरीर को पुनः प्राप्त करते हैं वा करें और उनका कल्याण हो उनको सुख हो।

इस प्रकार वेद, उपनिषद्, गीता, आवृत्ति में प्रमाण हैं और ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में ऐसा लिखा है।

"प्रथम तो जीव का सामर्थ्य शरीरादि पदार्थ और साधन परिमित हैं पुन उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है? अनन्त आनन्द को भोगने का असीम सामर्थ्य कर्म और साधन जीवों में नहीं इस लिए अनत सुख नहीं भोग सकते। जिनके साधन अनित्य हैं उनका फल नित्य कभी नहीं हो सकता" पृष्ठ २६६

इस प्रकार युक्ति और प्रमाण से मुक्ति की अनित्यता सिद्ध है इसलिए आर्य समाज के सिद्धातानुकूल मुक्त जीव की मुक्ति की अवधि पूरी होने पर आवृत्ति होना आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द और वेद भाष्य शैली

(लेखक आचार्य पं० चन्द्रकान्त जी वेदवाचस्पति गुरुकुल महाविद्यालय सोनगढ़ काठियावाड़)
तथा
[लेखिका—श्रीमती सुशीला देवी त्रिवेदी विद्यालकृता, गुरुकुल महाविद्यालय सोनगढ़]

उत्थानिका

वेदों के ऊपर समय २ पर विद्वानों ने कलम उठाई हैं, ब्राह्मणग्रन्थ-रचियता ऋषियों के बाद पौराणिक काल में, आचार्य उव्वट, महीधर तथा सायण आदि ने वेदों पर भाष्य किये हैं। इसी प्रकार आधुनिक युग में मैक्समूलर, विटनी ग्रिफ्थ आदि पाचात्य लेखकों ने भी वैदिक साहित्य पर बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इन विद्वानों के ग्रन्थों में वेदों की आत्मा का विकास नहीं हुआ है। पौराणिक कालीन भाष्यकार तो याज्ञिकवाद, देवतावाद ऐतिहासिकवाद, आदि वादों की बाधाओं से जकड़े गये हैं। वे अपने समय की रूढ़ियों से ऊपर नही उठ सके हैं। उन्होंने पूर्व परिग्रह से रगी ऐनकों से वेद को तो देखा है। यही हालत पश्चात्य लेखको की भी है। एक तो इनके भाष्य अक्षरशः अनुवादमात्र हैं, फिर ये अनुवाद लौकिक तथा वैदिक सस्कृत मे भेद करते प्रतीत नहीं होते। इस पर मजे की बात यह है कि ये सायणाचार्य के पदचिन्ह पर ही चलते हैं। और विकासवाद (अशुद्ध अर्थो में) की रट लगा २ कर वेदों के असली तात्पर्य से दूर हो गये हैं। इस लिये वैदिक साहित्य को समझने के लिये इनके लेख प्रामाणिक नहीं माने जा सकते।

ऋषि दयानन्द और उनकी परिस्थिति

ब्राह्मणकार, पौराणिक भाष्यकार और पश्चात्य भाष्यकारों के अतिरिक्त आधुनिक समय मे वेद के ऊपर युगपरिवर्तनकारी कलम उठाने वालों मे सब से प्रमुख नाम महर्षि दयानन्द का है।

इनका जन्म १८८१ मे एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इन्होंने सामवेदी होते हुए भी रुद्राध्याय का पाठ करके यजुर्वेद पढा था। इनके समय मे वेदविद्या का ह्रास हो रहा था। वेदों की अनेक शाखाय लुप्त होचुको थी जो थी वे भी दुर्लभ होरही थी। वेद का पठन पाठन बंद हो चुका था। भारत के विद्या मन्दिर काशी में भी वेदों के नाम मात्र पण्डित ही रह गये थे। फिर इन को सायण आदि आचार्यों की भाति न तो कोई राजकीय आश्रय ही मिल सकता था और न कोई विद्वान् सहायक ही मिल सकते थे। ऐसी अवस्था में इन्होंने अपनी अप्रतिम प्रतिभा से वेद के ऊपर आये हुए बादलों को हटाकर वेद सूर्य के प्रकाश से मानव-जाति को पुनरुज्जीवित किया है। वैदिक साहित्य में की हुई इनकी क्रान्ति किसी भी क्रान्ति से कम महत्व की नहीं है क्योंकि इसै ने भिन्न २ देशों में विशेषत: पाश्चात्य सभ्यता में ऐसे भारतीय नवयुवकों के हृदयों में सभ्यता और संस्कृति का नया सन्देश फूका है। उन्नीसवीं

सदी में ऋषि के रूप में एक प्रचन्ड अग्नि इस आर्यावर्त में जगी थी जिस में कि सब मत मतान्तर भस्म होते थे। इस अग्नि की समिधायें छन्दोबद्ध ऋचायें थीं। ऋषि ने इन ऋचाओं का सत्य अर्थ प्रकाशित करके ससार को सभ्य धर्म का उपदेश दिया है।

इस प्रक ए मे हमें विस्तार से यह देखना है कि महर्षि के वेद-भाष्य कितने हैं। उनकी भाष्य शैली मे वे कौन सी विशेषतायें है जिन से कि वेद जीवित और जागृत प्रतीत होने लगते हैं और इनसे पूर्व के भाष्यकारों की त्रुटियों का क्रियात्मक समाधान हो जाता है।

स्वामी जी के भाष्यग्रन्थ—महाराज का सम्पूर्ण भाष्य यजुर्वेद पर ही मिलता है। ऋग्वेद पर तो वे सातवे मण्डल ६१ वे सूत्र के दूसरे अंग से आगे किन्ही अपरिहार्य कारणों से भाष्य न कर सके फिर सामवेद और अथर्ववेद पर वे कैसे कलम उठाते? अत वर्तमान समय मे ऋषि के भाष्य यजुर्वेद पर तथा आधे से अधिक ऋग्वेद पर ही उपलब्ध होते हैं परन्तु इन से भी अधिक शैली का पूर्ण परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद भाष्य का निर्माण सं० १६३४ मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष की छठी को प्रारम्भ किया था। इस विषय में ऋग्वेद भाष्य के आरंभ में लिखा है—

विद्यानन्द समवति चतुर्वेद संस्तावना या
सपूर्येषं निगमनिलयं सप्रणम्याथ कुर्वे।
वेदत्र्यङ्क विधुयुतसरे मार्गशुक्लेऽङ्कभौमे
ऋग्वेदस्याखिल गुण गुणिज्ञादातुर्हि भाष्यम्॥

अर्थात् जो चारों वेदों की भूमिका विद्यानन्द को देती है उसे पूरा कर प्रणाम कर स १६३४ मार्ग शुक्ल ६ ठी मगलवार के दिन ऋग्वेद-भाष्य का आरभ करना है। इसके कुछ समय के अनतर विक्रमीय स० १६३४ के पौष सुदी १३ गुरुवार के दिन यजुर्वेद भाष्य का प्रारम्भ किया। इस सम्बन्ध मे भाष्यारभ मे निम्न श्लोक दिया गया है—

चतुस्त्र्यङ्कैरङ्कैरवनिसहितैर्विक्रमसरे
शुभे पौषे मासे सितदलभविश्वोन्मित तिथौ।
गुरोर्वारे प्रात प्रतिपदमतीष्टं सुविदु ।
प्रमाणैर्निवद्ध शतपथनिरुक्तादिभिरपि॥

विक्रमीय स० १६३४ पौषसुदी गुरुवार त्रयोदश तिथि के दिन यजुर्वेदभाष्य का बनाना प्रारम्भ किया जाता है। एवम् ऋग्वेद भाष्यके प्रारम्भसे लगभग एक मास पीछे ऋषिन यजुर्वेदभाष्य निर्माण प्रारम्भ कर दिया था। इस भाष्य की समाप्ति के विषय में भाष्य समाप्ति पर निम्न लेख किया गया है। मार्ग-शीर्ष कृष्ण पक्ष १ (एक) शनौ स० १६३६ में समाप्त किया। वैशाख शुक्ल ११ स० १६४६ में छप कर समाप्त हुआ। एव ऋग्वेद तथा यजुर्वेद का भाष्य ऋषि ने लगभग एक ही समय प्रारभ कर दिया था। उन में यजुर्वेद का लगभग ५ वर्षों मे पूरा कर लिया था। साथ ही साथ आधे से अधिक ऋग्वेद का भाष्य भी ऋषि निर्माण कर चुके थे।

भाष्योंमें त्रुटि आनेका क्या कारण है?

ऋषि की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का मुद्रण

सं० १६३४ मे प्रारंभ हुआ था और १६३५ मे पूरा हो चुका था। परन्तु वेदभाष्यो का मुद्रण तथा संशोधन ऋषि के स्वर्गारोहण (१६४० स०) के अनन्तर भी होता रहा। ऋषि के भाष्य पहले २ मासिक अको मे ही मुद्रित किये गये थे। ऋषि के जीवन काल मे यजुर्वेद के ११ अध्याय और कतिपय मंत्र ही ५१ अको तक मुद्रित हुए थे और ऋग्वेद प्रथम मडल ८६ सूक्त के ५ वें मंत्र तक ही ५१ अर्कों मे मुद्रित हो पाया था। एव ऋषि के सामने दोनों भाष्यो के लगभग पाचों हिस्से ही मुद्रित हो सके थे। शेष उनके लीला सवरण के बाद मुद्रित हुए है। यजुर्वेद का पूर्ण मुद्रण लगभग ऋषि की मृत्यु के ६ वर्ष बाद सं० १६४६ मे हुआ है और ऋग्वेदभाष्य का पूर्ण मुद्रण इससे भी १० वर्ष बाद लगभग १६५६ विक्रमी आषाढ कृष्ण पक्ष पंचम को हुआ है। एवम् ऋषि की मृत्यु के चिरकाल के बाद ही ये दोनो भाष्य वर्तमान रूप मे आये थे।

इन भाष्यों का हिन्दी मे अनुवाद भीमसेन आदि विद्वानों ने किया है। और संस्कृत भाष्य भी बहुत अशो में महाराज की देख रेख मे पण्डितो ने किया है*। भाष्यों के बहुत कुछ अश महाराज के लीला सवरण के अनन्तर हीं ही संशोधित तथा मुद्रित हुए है। इन बातों को ध्यान मे रख कर ऋषि के उपलब्ध भाष्य क्या अक्षरश प्रमाण माने जा सकते हैं? यदि नहीं तो इसमे ऋषि का तनिक भी गौरव घटता नहीं है। रात दिन प्रचार करने मे व्यग्र रहने से ऋषि वेद भाष्य के लिये प्रति दिन ३-४ घंटे से अधिक समय ही न दे सकते थे फिर उन्होंने भाष्य अपनी लेखनी से नही लिखा, पण्डितों से लिखवाया जिन से अशुद्धियों का होना स्वाभाविक था। जैसा कैसा भी ऋषि भाष्य मिलता है वह हमारे लिये तो अगाध ज्ञान-उदधि के तुल्य है, वेद के सत्यज्ञान का प्रकाश स्तंभ है।

ऋषि के भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनो मे उपलब्ध होते है। सस्कृत भाष्य मे पहले पदार्थ फिर अन्वय तथा भावार्थ दिये गये है। स्थान २ पर निरुक्त, व्याकरण, ब्राह्मण ग्रन्थ, मैत्रायणी आदि उपनिषद्, मनुस्मृति आदि आप्त ग्रंथों के

*स्वामी का पत्र "और समर्थदान से लिखा है कि ज्वालादत्त नई भाषा बनाता है। यदि वह हमारे सस्कृत और अभिप्राय के अनुकूल हो तो ठीक है नहीं तो जो पोपलीला की भाषा बना कर कहीं छपवा दे और हम को मालूम न हो, पश्चात् प्रसिद्ध होने से कोलाहल होगा तो क्या होगा हा, अब तक तो उसने कुछ नहीं किया, परन्तु सभव है कुछ गड़ बड़ करे तो हो सकता है। इस लिये जो कुछ वह बनावे उस पर समर्थ दान देख लो। जैसा कि अब भाष्य मे एक गोलमाल शब्द (देवता) लिख दिया था। सो यह हमारे दृष्टि गोचर होने से शुद्ध हो गई। यदि वहां ऐसी छप गई तो बड़ी हानि का सभव है। इस लिये ऐसा न होना चाहिये।

मि० आ० ब० ३
शुक्रवार सं० १६४०   दयानन्द सरस्वती
जोधपुर   मारवाड़

प्रमाणों से भाष्य अलकृत हैं । कहीं २ पर महीधर, उव्वट, सायण आदि आचार्यों के पक्षों का विरोध भी प्रदर्शित किया गया है। यजुर्वेद भाष्य में तो हर एक अध्याय की समाप्ति पर अध्याय का सार तथा पूर्व अध्याय से सगति भी प्रदर्शित की गई है। हरेक मंत्र के प्रारभ में उस मंत्र का प्रतिपाद्य विषय भी निर्दिष्ट किया गया है। हिन्दी भाष्य में अर्थ तथा भावार्थ दण्डान्वय सहित किये गये हैं। दोनों भाष्यों (हिन्दी, सस्कृत) में तुलना करने से प्रतीत होता है कि भाषा भाष्य सस्कृत के मुकाबले में कहीं २ असमीचीन है । मुद्रण तथा सशोधन की त्रुटियों के अतिरिक्त अर्थ विषयक भी नाना अशुद्धिया दीख जती हैं। इस लिये भाषा भाष्य बहुत प्रमाणिक नहीं होता है। सस्कृत भाष्य में ऋषि ने पदों का अर्थ देने में अपनी अनुपम योग्यता का परिचय दिया है। गहराई से देखने से प्रतीत होता है कि यह भाष्य ब्राह्मण, उपनिषत् तथा निरुक्त की आर्षशैली को ही अनुसरण करता है।

ऋषि भाष्य का सामान्य परिचय

भाष्य में दण्डान्वय के साथ पदों का अर्थ नहीं दिया गया। इस से प्राय अर्थ करते समय कठिनता प्रतीत होती है। परन्तु वास्तव में देखा जाय तो ऋषि ने ऐसा करके महान उपकार किया है। पदों के अर्थ दे दिये गये हैं, पाठक उनको भली भाति चर्वितवर्वण करें। उनको एक के स्थान पर अनेक अद्भुत प्रतीत होने लगेंगे। जब शब्दों के अर्थों का अन्तस्तल में प्रवेश कर लिया जाये, फिर मत्र को देखने से अर्थ में कुछ अद्भुतता प्रतीत होगी। दण्डान्वय के साथ दिये गये अर्थों में पाठकों को परिश्रम नहीं करना पड़ता है जिस का परिणाम यह होता है। कि शब्दों की गहराई में जाने का स्वभाव नहीं हो जाता। जिस के परिणाम स्वरूप मत्र का स्वाभाविक गहरा मनन करना कठिन हो जाता है। इस लिये ऋषि की यह शैली तो पाठकों की विचार शक्ति को उत्तेजना देने वाली है।

एक २ पद के अर्थ ऋषि भाष्य में प्रकरण भेद से भिन्न २ किये गये हैं। इन पदों के अर्थ का सग्रह कर के एक कोष का भी निर्माण किया जा सकता है (जो कि किया भी गया है) ऋषि के भाष्य में पदों के जो अर्थ किये गये है वे निराधार नहीं हैं उनके आधार में अन्य आर्ष ग्रन्थ हैं। ऋषि भाष्य के पारायण के समय हमे एक शब्द के उस विशेष स्थान में दिये गये अर्थ से ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये प्रत्युत् जितने भी अर्थ किये गये हैं वहा उनका प्रयोग करके अर्थ का आनन्द लेना चाहिये। शब्दों के नाना अर्थ करने में सकोच न करना चाहिये क्योंकि प्रकरण तथा विशेषणों के आधार पर शब्दों के नाना अर्थ हो ही जाया करते हैं। सिद्धान्त के विरोधी न होने से उन अर्थो के न लेने में कोई बाधा नहीं होती है। हम देखते भी हैं कि प्राचीन ऋषियों ने मत्रों के भिन्न २ अर्थ किये हैं—परन्तु वे सब सगत तथा सिद्धान्त के अनुरूप हैं। हमें भी इस विषय का ध्यान रख कर अपनी ऊहा से नाना अर्थ करने में हिचकना नहीं चाहिये

ऋषि भाष्य के इस दृष्टि से देखने पर हम इस परिणाम पर पहुंचते है कि ऋषि ने मत्र को जो अर्थ किया है वह एक रूप से पूर्ण है सर्वथा पर्ण नहीं क्योंकि स्वयं ऋषि के ही पदार्थों के अनुसार उस मत्र का सगत द्वितीय अर्थ भी हो सकता है। इस रीति से देखने पर ऋषि भाष्य अनेक प्रकार के विचारों का भाण्डार प्रतीत होने लगता है।

अपने भाष्य के विषयों पर लिखते हुए ऋषि लिखते हैं—

"परन्त्वेतद्वेदमन्त्रैर्यत्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्तव्यं तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुत कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेयशतपथ ब्राह्मणपूर्वमीमांसा श्रौतसूत्रादिषु यथार्थं विनियोजितत्वात्। तथैवोपासनाकाण्डस्यापी प्रकरणशब्दानुसारतो हि प्रकाश करिष्यते। .. एवमेवज्ञानकाण्डस्यापि"

अर्थात् ऋषि की प्रतिज्ञा है कि उनके भाष्य में ज्ञान, कर्म तथा उपासना वा गुण का विचार नहीं किया जायगा क्योंकि ये विषय दर्शन, उपनिषत् तथा ब्राह्मण ग्रन्थों मे विचार पूर्वक कहे गये हैं भाष्य मूल-अर्थ ही दिया जायगा। इससे स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द के भाष्य अन्वय पूर्वक अर्थ का विवेचन करते हैं। अन्य भाष्यकारों की तरह मत्र गत भावों की व्याख्या नहीं करते हैं। इस का कारण पाठकों को मनन शक्ति तथा विचार स्वातन्त्र्य की रक्षा करना ही है।

———

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[ले० श्री पं० रामनारायण जी मिश्र]

गताक से आगे

साधारण

(४३) शीशे का टुकड़ा, ईट, पत्थर, काटा या कोई ऐसी चीज रास्ते मे देखो, जिस से दूसरे को कष्ट होने की संभावना हो तो उसको हटा या हटवा दो।

(४४) दूसरों की सेवा इस भाव से मत करो कि उसके बदले में कुछ इनाम मिलेगा। ऐसी सेवा निष्काम भाव से करो।

(४५) गाली-गलौच मुंह से न निकालो। एक्के वालों या बैलगाडी वालो को, जो अपने घोड़ो या बैलों को मा-बाप की गाली देने लगते हैं, ऐसा करने से प्रेम पूर्वक रोको। भद्दी हसी दिल्लगी किसी से भी न करो। विवाह के अवसर पर या किसी त्यौहार पर गदे गीत मत गाओ। होली के त्यौहार पर जो रग लगवाने से परहेज करे उसके साथ जबरदस्ती न करो।

(४६) जिस बाजार मे बदचलन औरते रहती हों या जिस विवाह-शादी मे बदचलन औरत नाचने-गाने आवे, वहा मत जाओ।

(४७) कसम कभी नही खानी चाहिये।

(४८) किसी देश या जाति के झडे या राष्ट्रीय गान का निरादर मत करो। जब राष्ट्रीय गान गाया जाय, खड़े हो जाओ।

(४९) सब धर्मों के प्रवर्तकों का नाम आदर से लो। धार्मिक बहस नम्रता और प्रेम के साथ करनी चाहिये।

(५०) प्रार्थना के समय आखें बद रखो। मन को स्थिर रखने की चेष्टा करो।

(५१) बहस मे गर्मागर्मी नही होनी चाहिये। दूसरे की बात सब्र से सुननी चाहिये और उसका शान्ति से जवाब देना चाहिए।

(५२) किसी कमरे में काम होता हो तो उसके पास से इस तरह गुजरो कि अन्दर वालों का हर्ज न हो।

(५३) दो आदमी बातें करते हो तो उनके पास बिना पूछे न जाना चाहिये।

(५४) कई आदमी बैठे हों तो उनके बीच मे से न जाना चाहिये। जाना हो तो पीछे से जाओ। बीच ही मे से होकर जाना पडे तो झुक कर क्षमा मागते हुए निकल जाओ।

(५५) कई आदमी एक साथ भोजन करने बैठे तो सब को साथ ही शुरू करना चाहिये। और साथ ही उठना चाहिये। कोई पहले खा ले, तो उस समय तक बैठा रहे जब तक सब न उठें जल्दी उठो तो आज्ञा ले लो और अपनी जूठी थाली या पत्तल दूर हटा दो जिस में खाने वाले को ग्लानि न मालूम न हो।

(५६) किसी स्थान मे जाएँ जहा हमारा आदर सत्कार हो और हमारे साथ कोई मित्र या अतिथि हो तो हमे उसको भूल न जाना चाहिये उसको भी अपने आदर-सत्कार मे शरीक करना चाहिए।

(५७) किसी को अपने साथ गाड़ी पर लाओ तो उसको यथासंभव उसके घर तक पहुंचाओ।

(५८) अपनी गाड़ी पर बाहर जाओ और किसी स्नेही मित्र या बड़े को पैदल जाते देखो तो उनको भी साथ बैठा लो।

(५९) हम किसी तंग पगडंडी पर चल रहे हों जिसके दोनो तरफ खेत हो या ककड हों और दूसरी तरफ से भी आदमी आ रहे हों तो जो नगे पैर हो उसको हमे पगडडी पर चलने के लिए जगह देनी चाहिए।

(६०) रेल मे आवश्यकता से ज्याद जगह मत लो। रेल के अन्दर जाकर बाहर वालों को अन्दर आने से न रोको।

(६१) किसी लंगड़े, लूले, भिखमंगे, तुतला कर बोलने वाले की उसके सामने नकल न करो। किसी का भी मुह चिढ़ाना, उसकी हसी उड़ाना या नकल करना अच्छा नहीं।

(६२) कोई हमारी गिरी हुई चीज उठा दे या हमारा काम करदे तो हमे उसको धन्यवाद देना चाहिए। मुसलमान लोग ऐसे अवसर पर "तसलीम" कहते हैं।

(६३) किसी की खोई हुई चीज कहीं मिल जाय तो कोशिश करके उसको उसके मालिक के पास पहुंचाओ या सेवा-समिति के सपुर्द करो।

(६४) किसी की धरोहर (अमानत) अपने काम में मत लाओ।

(६५) किसी मंडली में यदि ऐसे आदमी से बात करनी हो जो दूर बैठा है तो अपनी जगह से ही चिल्लाकर बात मत करने लग जाओ, उठकर उसके पास चले जाओ।

(६६) खिड़की में निरर्थक बैठे रहना और नीचे झाकना बुरा है, विशेषकर स्त्रियों के लिए।

(६७) दूसरे की चिट्ठी ऊपर से या पीछे से झाककर या किसी हालत में भी मत पढ़ो।

(६८) जब तक आवश्यक न हो किसी से यह मत पूछो कि तुम कहा जाते हो। दूसरे की गुप्त बातें जानने या सुनने की कोशिश मत करो और अगर जान लो या सुन लो तो उसको अपने तक रखो। दूसरे की डायरी मत पढ़ो।

(६९) किसी से उसकी तनख्वाह आमदनी या जात मत पूछो, जब तक कि पूछना आवश्यक न हो।

(७०) किसी के घर जाकर उसकी चीजों को मत छुओ या उनका उलट-पलट मत करो। यदि उठाना ही पड़े तो उन्हे उसी तरह रख दो जिस तरह वे पहले थी। किसी के बगीचे में जाकर फल-फूल मत तोडो।

(७१) खेल मे हारो तो विरोधी का दोष मत बतलाओ, जीतो तो अपनी तारीफ मत करो। हारने वाले से ऐसे प्रेम का व्यवहार करो कि उसको हारने की शर्म न मालूम हो।

भूल हो जाने पर सच्चे दिल से माफी, क्षमा मागो। माफी के शब्द बनावटी नहीं होने चाहिएं।

(७२) किसी से मिलो तो बारबार घड़ी मत

देखो। कहीं जाना हो तो स्पष्ट कह दो।

(७३) कोई मिलने आवे और उसको इंतजार करना पड़े तो वक्त काटने के लिए कोई अखबार या किताब दे दो।

(७४) कोई पत्र लिखे तो उसका जवाब देना मत भूल जाओ, परन्तु बहुत अधिक पत्र-व्यवहार करना उचित नहीं।

(७५) किसी घनिष्ठ मित्र का भी, जहा तक हो सके, अहसान मत लो। सार्वजनिक कामों मे सेवा-भाव से ऐसा करना बुरा नही है। पर स्वयं दूसरों की उचित सेवा के लिए सदा तैयार रहो।

(७६) सभा आदि मे यदि किसी कुर्सी पर टोपी आदि पड़ी हो तो समझ लो कि वह कुर्सी खाली नहीं है। उस पर जो चीज पडी हो उसको मत हटाओ।

(७७) कुर्सी पर टाग उठा कर मत बैठो।

(७८) किसी से कर्ज मत लो, चाहे कितना ही कष्ट हो,। अपनी कमाई थोड़ी भी हो तो उसी में गुजर करो। कर्ज लेना ही पड़े तो उसको जल्दी चुकाने की चिंता करो। किसी सस्था का रुपया तुम्हारे पास हो तो उसका ठीक ठीक हिसाब रखो एक मद का रुपया दूसरे किसी मद पर खर्च न करो। हिसाब बराबर जॅचवाते रहो। सार्वजनिक सस्था का या दूसरे किसी का धन अपने खर्च में मत लाओ। दसरे के रुपए में तुम्हारी असावधानता से कमी हो जाय तो उसको अपने पास से पूरा कर दो।

(७९) कर्ज देना बुरा है। दूसरों के भी लेन देन में मत पड़ो।

(८०) भीख मागना बुरा है।

(८१) जूआ खेलना बुरा है। लाटरी आदि से भी दूर रहो।

(८२) जहा तक हो सके नीलाम की चीजें मत लो। नीलाम-घर में बार बार जाना ठीक नही

(८३) चुंगी, टैक्स, किराया तुरन्त दे दो। चुंगी और टैक्स वसूल करनेवालो से कोई बात मत छिपाओ और न उनसे लडाई झगडा करो। अनुभवी पुरुष उनसे गंभीरता से बातचीत करते है।

(८४) किसी को दान या इनाम दूर से, घमंड या घृणा से, मत दो—मुस्कराते हुए दो। किसी की सेवा अपना बड़प्पन प्रगट करते हुए मत करो, विनीत भाव से करो।

(८५) जेब मे हाथ रख कर बातचीत मत करो।

(८६) पेंसिल, कुंजी पैसा आदि हर वक्त उंगली में नचाते मत रहो, न उनको मुँह में डालो।

(८७) किसी जीवित आदमी के नाम पर कोई सस्था खोलना हो या उनको कोई पद प्रदान करना हो, तो उन से आज्ञा ले लो।

(८८) आतिशबाजी से दूर रहो। इस पर धन नही फूंकना चाहिए पर इसका प्रदर्शन अब कभी हो तो खुले मैदान मे होना चाहिए, घर के अन्दर या नंग गली में नहीं।

(८९) किसी घटना का जिक्र करो तो पहले यह निश्चित करलो कि वह सची है या नहीं।

(९०) यज्ञोपवीत कुर्ते के बाहर मत निकाल

रखो। काम हो जाने पर उसको फिर भीतर कर लो।

(९१) चोटी, शिखा बँधी रखो और यदि टोपी पहनी हो तो देखो कि वह उसके बाहर न रहे।

(९२) पजामे का इजारबद (नाला) या जूते का फीता इस प्रकार रखो कि वह लटकता न चले। कोट, कमीज आदि का बटन टूट जाए तो उसको पहनकर बाहर न जाओ जब तक बटन न लग जाए।

(९३) डूबते हुए आदमी को बचाने को उसी को जाना चाहिए जो डूबने से बचाने की कला और तैरना दोनों जानता हो, नहीं तो रस्सा आदि फेंककर बचाने का यत्न करो।

(९४) अपनी आमदनी के सौवें हिस्से से लेकर दसवें हिस्से तक अलग करके जितना हो सके किसी सुपात्र को अथवा किसी सस्था को दान देते रहना चाहिए।

(९५) अनावश्यक खर्च कम करना चाहिए। जीवन में सादगी होनी चाहिए। प्रकृति की गोद में रहने की आदत होनी चाहिए, जिसमें मौसिम की गरमी-सरदी सहने की आदत पड़ जाय।

(९६) परस्पर का झगड़ा आपस में तय करलो आत्म-सम्मान अथवा स्वजातीय गौरव मे फर्क न पड़े तो झगड़ा न बढने न दो थोड़ी बरदाश्त अच्छी है।

(९७) जहा दो आदमी लड़ रहे हो वहा भड़काने की बातें मत करो। कोशिश करो कि मेल हो जाय।

(९८) दूसरो के घरेलू झगडों या उनकी बुराइयो का जिक्र कही न करो, विशेष कर उनका, जो वही रोजगार करते है जो हम करते है। अपने हमपेशा के माल को बुरा मत कहो।

(९९) पाप से और गन्दगी से दूर रहो, घृणा करो पर पापी या गन्दे आदमी से प्रेम का व्यवहार मत छोडो।

(१००) दिहात के लोगों और दिहाती वायु-मडल को बुरा न समझो। जितना उनके निकट जाओगे उतना ही उनको अच्छा पाओगे

सार्वदेशिक सभा के प्रचारकों का कार्य्य

सितम्बर, अक्टूबर, ३७

—※—

मद्रास-समाचार

[श्री मन्त्री द्वारा]

आर्य समाज-मद्रास का कार्य भली भांति चल रहा है। अक्टूबर नवम्बर मासो मे अनेक शुद्धियां, विवाह तथा अन्य वैदिक संस्कार हुए है। बहिरंग-प्रचार जो कई मासों से हिन्दू मुस्लिम-फ़साद के कारण बन्द था अब पुनः प्रारम्भ हो गया है।

कुछ सप्ताह पूर्व सा दे सभा के उपप्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज यहां पधारे थे। उन्होंने मद्रास में एक आर्य प्रतिनिधि-सभा खोलने का विचार बल पूर्वक सामने रखा है। यद्यपि कई वर्ष पूर्व मद्रास-कांग्रेस के समय स्व० डा० केशव देव शास्त्री की प्रेरणा से उपरोक्त प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई थी तथापि परिस्थितियां अनुकूल न होने के कारण वह चल न सकी। अब क्योंकि दक्षिण मे समाज का प्रचार पूर्वापेक्षया अधिक है इस लिये संभव है कि प्रतिनिधि सभा बन सके।

दयानन्द-दिवस

दीपावली के अवसर पर इस वर्ष बड़ी धूमधाम से प्रसिद्ध गोखले हाल में श्री—"दयानन्द-दिवस" मनाया गया। इसके प्रधान श्रीमान् मुनि स्वामी पिल्ले, मद्रास-मिनिस्टर थे। वक्ताओं में श्रीमान् सत्यमूर्ति ऐम एल ए. (सैन्ट्रल), मिस्टर बी ऐस मूर्ति, पार्लियामैण्टरी सैक्रेटरी, मद्रास, श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी, डाक्टर वरद राजलु नायडु और कैप्टेन वेंकटेश्वर आदि महानुभाव थे।

प्रधान महाशय ने आर्यसमाज के हरिजन-कार्य की भूरि २ प्रशंसा की।

श्रीमान् सत्यमूर्ति जी के भाषण का निम्न अंश आवश्यक है—

"गुजरात को गर्व है कि उसने प्रसुप्त भारत को जाग्रत करने के लिये स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी जैसे दो कुशल कार्यकर्ता दिए हैं। मैंने दयानन्द की लहराती खेती को उत्तर भारत में अपनी आंखों से देखा है। आर्य समाज का शिक्षा कार्य समस्त देश के अभिमान का विषय है। आर्यसमाज ने अपने आचार्य के चरण चिन्हों पर चलते हुए प्राचीन हिन्दू धर्म को नवीन बौद्धिक वेश प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द का हिन्दी व अछूतोद्धार का कार्यक्रम जिस प्रकार आज फलीभूत हो रहा है उससे ऋषि की दिव्य दृष्टि का पता चलता है।"

श्री सत्यमूर्ति जी के भाषण के पश्चात् श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने भाषण दिया। उनके भाषण का सार यह था—

"स्वामी दयानन्द भारतीय समाज को सर्वांग-पूर्ण बनाना चाहते थे। इसी लिए उनके कार्यक्रम में निम्न चार विषय मुख्य थे—'स्वधर्म", "स्वभाषा", 'स्वदेशी" और "स्वराज"। जिस उत्थान कार्य को

दयानन्द अधूरा छोड़ गये थे आज उसे महात्मा गांधी पूरा करने की चिन्ता में है।"

अन्य वक्ताओं के भाषण तथा सभापति महोदय के उपसंहार के साथ सभा समाप्त हुई।

अक्तूबर का केरल प्रचार

(ट्रावनकोर स्टेट)

पं० नारायणदत्त जी सिद्धान्त भूषण वैदिक मिश्नरी

मौखिक प्रचार—कोट्टयम, नट्टाशेरी, काज़डी वेल्लूक्कुट्टा, वैकम, वेल्लूर इन स्थानों में विविध विषयों पर व्याख्यान दिया।

इसके अतिरिक्त पांपाडी पोनकुन्नम में जाकर लोगों से मिलकर आर्यसमाज की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। पांपाडी वाले एक हैन्दव समाज कायम करके उसके द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए तैयारी कर रहे हैं। शीघ्र ही एक हिन्दू समाज कायम होने की संभावना है।

शुद्धि—इस महीने में आठ ईसाईयों की शुद्धि की। यदि शुद्धि के कार्य को और भी सहायता मिले तो यहां शुद्धि का कार्य अधिक ज़ोर से चल सकता है।

लेख—महात्मा नारायण स्वामी जी कृत वैदिक सन्ध्या और आर्यसमाज के नियमोपनियम (सार्वदेशिक सभा द्वारा संशोधित) का मलयालम भाषा में अनुवाद किया गया है।

कोट्टयम में श्रद्धानन्द हिन्दीमहाविद्यालय में एक हिन्दी क्लास भी चलाई जा रही है।

नारायणदत्त

बम्बई

पारडी—ता० १ १०-३७ शुक्रवार को पारडी में सभा हुई। गान्धि जयन्ति के दिन ईश्वरभक्ति और झण्डा और उसकी पूजा पर विवेचन किया गया।

गोलवड—ता० २ १०-३७ शनिवार को गोलवड बारडी हाई स्कूल मे प्रचार किया गया। इस दिन भी गान्धि जयन्ति मनाई जा रही थी। उस दिन 'अहिंसा का वास्तविक स्वरूप और गान्धि' पर विवेचन किया गया।

उसी दिन गोलवड कांग्रेस हाउस में भी सभा हुई उसमें अछूतोद्धारक का वास्तविक मार्ग। 'सत्कार और गान्धि' मद्य निषेध और आर्यसमाज और वर्तमान परिस्थिति आदि विषयों पर विवेचन किया गया।

दहाणु—ता० ३ १० ३७ रविवार को स्टेशन के पास आने वाले गजानद प्रिंटिंग प्रेस के बरामदे मे श्री० अच्युत नारायण खरे, जो एक प्रतिष्ठित वकील माने जाते हैं। उनकी अध्यक्षता में व्याख्यान हुआ। विषय "मानव धर्म" था। शंका समाधान भी रखा गया था।

ता० ४ १० ३७ सोम वार को उसी स्थान र श्री० डा० दत्तात्रेय जी की अध्यक्षता में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय "भारतीय संस्कृति" था।

वापी—ता० ५ १० ३७ मगल वार को धर्म चर्चा हुई।

वलसाड—ता० ६ १० ३७ बुध वार को सार्वजनिक हाई स्कूल मे "धर्म ही जीवन है" विषय पर मुख्याध्यापक श्री० घाटे की अध्यक्षता में व्याख्यान हुआ। बाद को शंका समाधान भी रखा गया था।

ता० ७-१०-३७ से ११-१०-३७ तक केन्द्र में प्रचार और गुजराती पत्रों में लेख से प्रचार किया गया।

बीलीमोरा—१४-१०-३७ बृहस्पतिवार को श्री० मुकुन्दराव नारायण राव लल्देसाई की अध्यक्षता में हिन्दू व्यायामशाला मन्दिर बंधों में एक सभा हुई। व्याख्यान का विषय "विजय दशमी का संदेश" था। जनता की अच्छी उपस्थिति थी।

ता० १२-१० ३७ से २१ १०-३७ तक 'ज्ञानामृत' प्रथम भाग १०० से १२५ पृष्ठों मे लिखा गया।

ता० ३० १० ३७ शनि वार को बीलीमोरा के हनुमान मोहल्ला में 'उपनिषदों का रहस्य' पर कथा की गई।

ता० ३१ १० ३७ रविवार को उसी स्थान पर कथा की गई। साथ में शंका समाधान भी रखा गया था। जनता की उपस्थिति अच्छी होती थी।

२०० हरिजनों को ईसाई होने से बचाया

ईसाई मिशनरियों से शास्त्रार्थ

दावनगेटे (मैसूर रियासत) नामक नगरसे ५ मील की दूरी पर स्थित 'बाथी' नाम के ग्राम में लगभग २०० हरिजन सवर्ण हिन्दुओं के अत्याचार से तंग आकर ईसाई बनने वाले हैं यह समाचार सुन कर पं० धर्म देव विद्यावाचस्पति गत ९ अक्तूबर को बंगलौर से दावनगेटे गये। वहां के प्रतिष्ठित व्यक्तियों विशेषत चन्द्र शेखरैय्या B A, B L, M L C साहूकार रंगप्पा आदि से वे इस सम्बन्ध में मिले और अगले दिन दावनगेटे अखिदया ज्ञान प्रसारक सङ्घ के प्रचारक श्रीयुत शेषाचलैय्या तथा तीन अन्य उत्साही युवकों को साथ लेकर वे पैदल पुराने बाथी नामक गाँव में पहुंचे। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि ८ ईसाई प्रचारक गत ३ दिनों से उस गाँव मे तम्बू लगाये हुए हैं और इन हरिजनों को ईसाई बनाने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। यह भी ज्ञात हुआ कि उसी दिन हमारे वहां पहुंचने से लगभग दो घण्टे पूर्व उस गाँव के पटेल तथा अन्य कुछ सवर्ण हिन्दुओं ने हरिजनों को मारा था जिससे वे लोग बड़ी घबराहट की हालत मे थे। हम लोगों ने हरिजन भाइयों को प्रेम पूर्वक समझा बुझा कर शान्त किया और उनको विश्वास दिलाया कि उनके कष्ट निवारणार्थ सब यत्न किया जायगा। हरिजनों की उपस्थिति मे स्ना० धर्मदेव जी ने ४ ईसाई मिशनरियो के साथ जो उस गांव में आये थे ईसाइयत के विषय मे शास्त्रार्थ किया। उनके प्रश्नों का वे मिश्नरी लोग कुछ उत्तर न दे सके। इस शास्त्रार्थ का भी हरिजनों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा और उन्हों ने शपथ खाकर विश्वास दिलाया कि हम ईसाई या मुसलमान न बनेंगे। स्नातक जी ने उनको ईसाइयत और वैदिकधर्म विषयक, कुछ पुस्तकें भी दीं। इसके पश्चात उस ग्राम के पटेल को प्रेरित करके स्नातक जी ने सवर्ण हिन्दुओं की एक सभा रात ९ से ११ बजे तक मन्दिर मे करवाई जिसमें धर्म की व्याख्या करते हुए अस्पृश्यता निवारण और हरिजनोद्धार पर विशेष बल दिया। सवर्ण हिन्दुओं ने वचन दिया कि आगे से हरिजन भाइयों के साथ बुरा व्यवहार न किया जायगा। वहाँ से बड़े बाथी नामक ग्राम में प्रचार करते हुए स्नातक जी का दल दावनगेटे पहुंचा जहाँ श्रीयुत चन्द्रशेखरैय्या M L C इत्यादि प्रतिष्ठित सज्जनों से मिल कर स्नातकजी ने सारी स्थिति

बनाई और शिक्षादि विषयक हरिजन भाइयों के कष्ट निवारणार्थ प्रयत्न करने को उन्हे प्रेरित किया। शीघ्र ही उस ग्राम म एक सरकारी विद्यालय की स्थापना का प्रयत्न किया जा रहा है जिसकी बडी भारी आवश्यकता थी। स्नातक जी ने उन सज्जनो को कम से कम सप्ताह में एक बार वहाँ जाते रहने और उनके साथ प्रेम पूर्वक सम्पर्क मे रहने की प्रेरणा की जिससे हरिजन लोग धर्म पर दृढ रहें। इस प्रकार २०० हरिजन भाई और बहिन ईसाई बनने से बचा लिये गये। यह खुशी की बात है कि अब ब्रह्मसमाज के सज्जन भी आर्य समाज और आर्य धर्म के प्रति विशेष प्रेम रखने लगे है। बगलौर छावनी ब्रह्मसमाज की प्रार्थनानुसार स्नातक जी ने २ व्याख्यान सितम्बर में और अक्तूबर मे दिये जिनमें वैदिक ईश्वर वाद, वैदिक यज्ञादि वैदिक तत्वो की अंगरेज़ी मे व्याख्या की। Inter National Fellowship के अधिवेशनो मे भी जिस के मन्त्री श्रीयुत पुट्टैय्या जी B. A. Retd Supt of the Govt Press आर्य समाज के उपप्रधान है स्नातक जी ने सितम्बर और अक्तूबर के अधिवेशनो मे भाग लिया। गाँधी जयन्ति के सप्ताह मे स्नातक जी ने बगलौर शहर छावनी कगेरी, बेरापट्टम ग्राम (चन्नपट्टम के पास) इत्यादि मे चार व्याख्यान अस्पृश्यता निवारण, ग्राम सगठन समाज सुधार आदि पर दिये।

गढ़वाल

इस मास में उपदेशक महाशयने अनेक देहातों मे प्रचार किया, पिथोरा गढ़ मे समाज स्थापित हुआ और अनेक व्यक्ति उसके सदस्य व सहायक बने। इस प्रान्तमे मूर्ति पूजा का विशेष प्रचार है उपदेशक महाशय के प्रचार से जनता मे कुछ जागृति होती जा रही है आगामी वर्ष भी यही प्रचार कराया जायगा।

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में आदर्श विवाह

गत ४ अक्टूबर को दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध नगर डरबन के सिटी हाल मे श्रीमान मेयर के सभा पतित्व मे एक भारतीय विवाह का जो उत्सव मनाया गया वह यहाँ के प्रवासी भाइयो के इतिहास में अभूत पूर्व है। श्री मगन लाल और श्री गायत्रीदेवी के विवाह के उपलक्षमे साउथ अफ्रिकन इन्डियन कॉग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री अब्दुल्ला इस्माइल काजी और स्वामी भवानी दयाल जी सन्यासी की ओर से एक चाय पार्टी दी गई थी जिसमें डरबन के सभी प्रख्यात भारतीय और युरोपियन सम्मिलित हुए थे।

श्री काजी साहब ने अपने विनोद पूर्ण व्याख्यान से उत्सव का श्री गणेश किया। आपने नगर के मेयर श्री फ्लेमिङ्ग जोनसन् की उपस्थिति पर बडी प्रसन्नता प्रकट की और पाचवी बार मेयर के पद पर निर्वाचित होने के कारण उनको बधाई दी। माननीय सेठ इ० एम पारख ने मेयर को पुष्पहार पहनाया और मेयोरेस एव गायत्री देवी को पुष्प गुच्छ प्रदान किया।

श्रीमान मेयर ने वर और कन्या के मगल भविष्य के लिए शुभ कामना प्रगट की। नेटाल की प्रोविन्शियल कौन्सिल के माननीय मेम्बर श्री एस० जे० स्मिथ ने श्री मगन लाल की योग्यता का बखान किया और यह भी कहा कि प्रवासी भारतीयो की अपूर्व सेवा करके स्वामी भवानी दयाल और श्री अब्दुल्ला इस्माइल

काजी उनके प्रेम और आदर के पात्र बन गए हैं। उनके बाद हिन्दू महा सभा के प्रधान श्री वी० एम० पटेल आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सत्यदेव, बैरिस्टर एम० आर० पत्तर और श्री सब्नुद्दीन ने वर और वधू को बधाई दी। श्री मगन लाल ने सभी वक्ताओं की शुभ कामना के लिए धन्यवाद दिया। अन्त में स्वामी भवानी दयाल जी ने सभी अतिथियो और विशेषत मेयरके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

इस उत्सव में जिन लोगों ने भाग लिया था उनमें से निम्न व्यक्तियों का नाम विशेष उल्लेख योग्य है—डाक्टर और श्रीमती फ्रेमिङ्ग जोनसन, श्रीमती सोराब जी रुस्तम जी, सपत्नीक कौन्सिलर कपल, श्री उमर हाजो अहमद जवेरी, श्री अलेख वेन लेख एम. पी सो, श्री शेख हमीद, श्रीमती यूल, डाक्टर सिदात, सपत्नीक श्री क्रेमर, श्री के० बैजनाथ शास्त्री कालिज के प्रिन्सपल श्री बसु और उनकी पत्नी, श्री ए एम एम कोकाट, श्रीमती मारेल, रेवरेन्ड बी एल. ड्. सिगामनी, सपत्नीक श्री सेन्ड फोर्ड, सपत्नीक श्री बी लायरेन्स, श्री आर राजकुमार, सपत्नीक श्री बैली, श्री एम बी नायक, सपत्नीक श्री मेकाले, पं० रामसुन्दर पाठक, श्रीमती और कुमारी जानसन् सपत्नीक श्री सत्यपाल, श्रीमती और कुमारी जेम्स, सपत्नीक श्री सापूरजी रुस्तेरिया, सपत्नीक श्री फिरोज-शाह, श्री रामप्रसाद, श्री इ एम अली, श्री अब्दुल हक काजी, श्रीमती कुंजबिहारी सिंह, श्री राघव जी रघुनाथ, श्री तुलसीलाल, श्री गोविन्दमाली, श्री इ जे तुम्नू और श्री बी वेचू।

इस विवाह का धार्मिक कृत्य पूर्ण वैदिक विधि से महात्मा गान्धी के जन्म दिवस पर दूसरी अक्तूबर को जेकब्स (डरबन) मे हुआ था। यह सम्बन्ध जात बन्धन को तिलाञ्जलि देकर हुआ है। वर एक सुशिक्षित युवक है और वधू है—आलन्धर कन्या महाविद्यालय की एक छात्रा और स्वामी भवानी दयाल जी की भतीजी। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयो के इतिहास में यह पहला ही विवाहोत्सव है जो नगर के श्रीमान मेयर की अध्यक्षता में डरबन के सिटी हाल में मनाया गया है। हिन्दू सन्यासी और मुसलमान काजी इस उत्सव के मेज़बान थे और मेहमान थे। हिन्दू, मुसलमान ईसाई और पारसियों के सभी प्रमुख व्यक्ति और अनेक भारतीयों के हित चिन्तक प्रतिष्ठित युरोपियन। सिटी हाल की सजावट और प्रथम श्रेणी के वाद्य गान के कारण उत्सव की शोभा और भी बढ़ गई थी।

साहित्य-समीक्षा

AGNIHOTRA by Dr Satya Prakash D Sc (The Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha Delhi Price Rs 2 8/

Dr Satya Prakash's object in writing this book is to interpret the various details of Devayajna from the modern scientific point of view and to study the effects on the process of fumigation or oblations to fire prescribed by the Vedas on the health of a religious and devout Hindu family The chemical composition of the articles used in the ceremony and the products of their slow and partial combustion and the disinfecting properties of these products e g formaldehyde formic acid and carbon di oxide have been described in detail

Dr Ganga Nath Jha contributes a fore word and Dr N R Dhar of the Allahabad University a preface to the book

All those interested in placing religious ceremonies on a scientific and utilitarian basis and reading such a significance in these ceremonies will find this book instructive

Reviewed by United India & Indian States, NEW DELHI

हिन्दू-समाजमें विधवाओंकी दशा

श्री चन्द्रकला देवी

आज देश क्रान्ति के युगमें गुजर रहा है। सामाजिक, साहित्यिक और राजनैतिक क्षेत्रो में उग्र-से-उग्र विचार प्रगट किये जा रहे हैं। यदि इन विचारोंके अनुसार कुछ अशोंमें भी काम किया जाता, तो देश उन्नतिके शिखरपर पहुँच गया होता; पर ऐसा नही हो रहा। यदि गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय, तो सामाजिक सुधारों को कार्यरूपमें परिणत करना राजनैतिक लेक्चरबाजीसे कही अधिक कठिन है। कितनी ही बार ऐसा देखा जाता है कि राजनैतिक क्षेत्रमें उग्र विचार रखनेवाले लोग भी सामाजिक मामलोंमें घोर प्रतिक्रिया वादी हैं। विधवाओके प्रश्नको ही लीजिए। इतने वर्षोंके आन्दोलनके बाद भी विधवाओंकी दुर्दशा लगभग ज्यों-की त्यों बनी हुई है। विधवाश्रम क़ायम किये जाते हैं, विधवाओं की दुर्दशाका प्रदर्शन करके उनके नाम पर चन्दे की अपीलें की जातीं हैं और श्रद्धालु जनता से रुपया भी इकट्ठा किया जाता है, पर क्या इससे मुख्य प्रश्न किसी अंशमे भी हल हुआ है? समय-समय पर विधवाश्रमाके जो भडाफोड समाचारपत्रोंमे पढ़ने को मिले हैं, उनसे हिन्दू समाज के गौरवमे कोई वृद्धि नही होती और पुरुष-जातिके उत्तरदायित्व के प्रति कुछ सम्मान भी नहीं उत्पन्न होता है।

दरअसल बात तो यह है कि रोगका निदान किये विना ही लोग इसका उपचार करनेके लिए उतारू हो जाते हैं। पजाबमें सर गगाराम तथा दक्षिणमें सेवा-सदनके उद्योगको छोड़कर देशके अन्य भागोंमें कोई उल्लेखयोग्य कार्य हो रहा हो, तो मुझको उसका पता नही है।

इस देशमे स्त्री-समाजकी और विशेषत विधवाओंकी जो दुर्दशा है, वैसी शायद ही किसी देशमे हो— और बाल विधवाएं तो, जिन्हें गृह-जीवन का सुख एक दिन के लिए भी नसीब नहीं हुआ, इतनी अधिक किसी भी देशमें न पाई जाती होंगी। एक तो विधवाएँ वैसे ही अभागी होती हैं और फिर उनका दैनिक जीवन कठोर सामाजिक बन्धनों तथा रूढियों से इतना अधिक जकड़ दिया जाता है कि वह मृत्युसे भी अधिक भयकर बन जाता है। मै यह नहीं कहती कि सभी घरोंमे विधवाओं का जीवन नरकतुल्य बना दिया जाता है, कितने ही घर ऐसे भी हैं जहा वे देवी की तरह पूज्य मानी जाती हैं, पर अधिकांश कुटुम्बोमे उन्हें अपने दैनिक जीवनमें अत्यन्त कटु अनुभव होते है। चाहे पीहरमें रहें चाहे ससुरालमें, पर उन्हे चैन नही। विधवा—रात-दिन काम धन्धेमे जुटी रहनेवाली, रातों चक्की खींचनेवाली, दिन-भर चूल्हा झोंकनेवाली विधवा—कठिन-से कठिन काम करनेसे न घबराती, यदि सास, ससुर, ननद, देवरानी, जिठानी आदि की व्यंग्यवर्षा उस बेचारीके टूटे हुए हृदयपर न होती। हत भाग्य तो वह है ही, पर वह अपने को और भी हीन समझने लगती है, जब सास जी नाक भौं

सिकोड़कर अपना फतवा देती हैं— 'जब से यह कम्बख्त हमारे घरमें आई है, तबसे हमारा तो नाश ही करती चली आई। डायन मेरे फूल-से बच्चे को निगल गई, इतनेपर भी छातीपर ही धरी रह गई। इसकी मौत न-जाने कहां जा छिपी। पीहर भी तो जाकर नहीं मरती। अभी न-जाने क्या-क्या गुल खिलायेगी !'; और ससुर साहब भी कटु बात कहनेसे नहीं चूकते।

कितना निन्दनीय व्यवहार है। ससुराल में ही ऐसा निन्दनीय व्यवहार होता हो, सो बात नहीं—पीहरमें भी कुछ कमी नहीं रहती। यदि वहां भौजाईका शासन हो, तब तो कुछ कहना ही नहीं। अपशब्दों का प्रयोग तो एक मामूली-सी बात है, वैसे नौबत तो चुटिया खींचने तक आ जाती है और गाली-गलौजका तो कहना ही क्या है। ससुराल वाले पीहर को दुत्कारते है और पीहर वाले ससुराल को। ऐसी दशा मे हतभाग्य विधवा जाय तो कहां जाय? उस बेचारी का और ठिकाना ही कहां है? ऐसी ही अमानुषिक परिस्थितियों के कारण हजारों विधवाओं ने वेश्यावृत्ति ग्रहण कर ली है।

घर के अत्याचारों का अन्त नहीं। विवाहोत्सव है। बड़ी भारी चहल-पहल है। सबके हृदय-कमल खिले हैं, परन्तु बेचारी विधवा को उत्सव में भाग लेने की आज्ञा नहीं है। उसे अशुभ समझ कर विवाह की प्रत्येक रीति से अलग रखा जाता है। तब उसका कोमल हृदय किसी अज्ञात वेदना से तड़प उठता है। वह रोकर दिल का गुबार निकालना चाहती है, पर रो नहीं सकती। जिह्वा रहते हुए भी वह गूंगी है। अपनी दुःख की बातें कहे तो किससे? उसकी सुनने वाला इस संसार में और है ही कौन? बेचारी मन मारकर बैठ रहती है। मनुष्य होकर भी वह पशु है। जिस प्रकार एक पशुको खाने, पहनने और काम करने में दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है, उसी प्रकार विधवा भी समाजके डंडे से हांकी जाती है। उसकी प्रत्येक इच्छा को पशु बल से दबाया जाता है। सुनते हैं कि गुलामी की प्रथा कभी की नष्ट हो चुकी, पर यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय, तो आधुनिक विधवाओं की दशा पहले के गुलामों की दशा से भी कहीं अधिक बदतर है। गुलामों को स्वतन्त्रता पूर्वक हंसने खेलने, ओढने-पहनने की आज्ञा तो थी, पर बेचारी विधवा को इतनी भी आज्ञा नहीं कि वह किसी से हंस बोल सके, मन चाहा पहन-खा भी सके। उसका जीवन जीवन नहीं है, वह एक जेलखाना है। वह इस संसार की बन्दिनी है। विधवा अपने एकाकी जीवन को चाहे कितना ही पवित्रता से व्यतीत करे, पर समाज उसके उठने बैठने, खाने पीने, पहनने ओढ़ने, सोने-जागने, हर एक काम को अत्यन्त सतर्कता से देखता है और उसके उज्जवल सतीत्व मे भांति-भांति की आशंकाएँ करने लगता है। भयंकर अपराध के किसी अभियुक्त पर भी इतनी कड़ी दृष्टि नहीं रखी जाती, जितनी एक अनाथ विधवा पर!

समाज के कर्णधारो! क्या आपने कभी विधवाओं के आन्तरिक भावों को समझने की चेष्टा की है? क्या कभी आप उस अनन्त विरह

वेदना का अनुमान भी कर सकते हैं, जो उस अभागी को दिन-रात सताया करती है ? क्या आपने कभी अशोक-वाटिका मे सीता-विलाप सुना है ? अवश्य सुना होगा और उसे सुनकर हृदय अवश्य ही दु खित हुआ होगा, पर विधवा विलाप उससे कहीं उग्रतर है । उस विलाप मे आशा का आलोक कुछ सान्त्वना प्रदान करता है पर इस विलाप में निराशा की दग्ध लपटें हृदय-तलको निरन्तर जलाया करती हैं । दरअसल आप *विधवाओं के इस अविरल रुदन सुनने के आदी* हो गये है । जैसे फैक्टरियों मे काम करने वाले कलाकों के काम में मशीनों की खट खट की आवाज कुछ नहीं जान पडती, ठीक वैसे ही विधवा-जगत का करुण क्रन्दन भी आपकी सुख-शान्ति को भग नहीं कर सकता ।

समाज को विधवाओं का भार तो ढोना ही है—चाहे वह इस भार को रो-सीक कर ढोये, चाहे हसी-खुशी से । यह बात दूसरी है कि जो काय प्रसन्नचित्त से किया जाता है, वह बहुत सरल मालूम होता है, और नो काम नाक-भौं सिकोड कर किया जाता हैं, उसका पूरा मुश्किल से ही पडता है । ऐसी हालत मे समाज की बुद्धिमानी इसी मे है कि वह इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करे । विधवाश्रमों के विषय मे जो समाचार समय समय पर पत्रो मे प्रकाशित होते रहते हैं, उनके देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि किसी जिम्मेवार संस्था की ओर से (उदाहरणार्थ, अखिल भारतीय महिला-सभा की तरफ से) इन विधवाश्रमों की विधिवत जाच कराई जाय । जिन गैर जिम्मेवार आदमियों ने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए विधवाश्रम खोल रखे हैं—जहा जानवरों की तरह विधवाओ का क्रय विक्रय हुआ करता है-उन्हें समाज तथा सरकार की ओर से घोर दण्ड मिलना चाहिए । मैंने सुना है कि अधिकाश विधवाश्रम पंजाब तथा सिन्ध के पुरुषों के लिए स्त्री बेचने के अड्डे बने हुए हैं ।

चाहे जिस के साथ विवाह कर देने से ही तो विधवाओं की समस्या हल नहीं हो जाती, और लाचार हो कर विधवाश्रमों की शरण लेने वाली बहनों की सख्या कुल सख्या की दस हजारवा हिस्सा भी न होगी । फिर अभी तक देश में विधवाओं के लिए जो कुछ प्रयत्न हुए हैं, वे सब प्राय बाल-विधवाओं तक ही परिमित हैं । ऐसी विधवाओं के लिए जिन के दो एक बच्चे हों, अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया । उनकी समस्या और भी अधिक जटिल है । उन की ओर ध्यान दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है । आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक प्रान्त मे पूना के सेवा-सदन की तरह की एक केन्द्रीय सस्था हो, जिसका मुख्य उद्देश्य विधवाओं की सेवा करना हो उन्हें अध्यापन, डाक्टरी इत्यादि की उचित शिक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए । शिक्षा प्राप्त होनेपर कुछ बहनें ऐसी भी निकलेगी, जिनमे साहित्यिक रुचि हो । इस रुचिको विकसित करनेके अवसर उन्हें मिलने चाहिए । सद्ग्रन्थोंके अध्ययनसे दु खोंका बोझ कुछ तो हलका होगा । विधवाओंकी दुर्दशाका वास्तविक चित्र तो कोई सुशिक्षित भुक्तभोगी बहन ही खीच सकेगी पुरुष लेखक तो उन कठिनाइयो की कल्पना भी नही कर सकते, जो भारतीय विधवा-समाजको उठानी पडती हैं । जब तक हिन्दू-समाज उस महान शक्तिको, जो विधवाओंमें सन्निहित है और जो आज भारी पत्थर के रूप में समाज की छाती पर विद्यमान है, जीवन के भिन्न-भिन्न विभागों मे उपयोग करना नहीं सीखता, तब तक वह पिछड़ा हुआ ही रहेगा । आवश्यकता है रचनात्मक कार्योंकी, न कि व्याख्यानों अथवा प्रस्तावों की ।

आर्य समाज मद्रास द्वारा प्रकाशित

सस्ता आर्य-साहित्य (अंग्रेजी में)

Light of Truth श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश का यह अंग्रेजी अनुवाद है। इसकी भाषा शुद्ध व सुन्दर है। भावों के विषय मे इतना कहना पर्याप्त है कि इस अकेली पुस्तक ने जितनों को आर्य बनाया है उतना अन्य साधनों ने नहीं।

ग्लेज़ पेपर, कैलिको की मजबूत जिल्द २) अजिल्द १॥)

Fountainhead of Religion इस पुस्तक के विद्वान लेखक श्री गंगाप्रसाद जी चीफ जज, टिहरी ने पुष्कल प्रमाणों द्वारा वैदिक धर्म को समस्त धर्मों का मूल-स्रोत सिद्ध किया है। इस पुस्तक के अनेक भाषाओं मे अनुवाद हो चुके है। केवल अंग्रेजी में ही कई संस्करण छप कर हाथों हाथ बिक चुके है।

फैदरवेट पेपर, सुन्दर छपाई। अजिल्द ॥) सजिल्द १)।

Ten Principles of Aryasamaj गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य श्री चमूपति एम ए ने इस पुस्तक मे आर्यसमाज के दस नियमों की विस्तृत, वैज्ञानिक व्याख्या की है।

पृष्ठ संख्या १६० । मूल्य ।=) मात्र ।

Arya Philosophy अजमेर अर्धशताब्दी पर दिये गए अंग्रेजी व्याख्यानो का यह संग्रह है। देश तथा विदेश दोनों मे प्रचार का अत्युत्तम साधन है। इसकी भूमिका श्री आचार्य रामदेव जी ने लिखी है। मूल्य ।=) मात्र

Vedic Caste System and Panchama Problem यह समयोपयोगी ट्रैक्ट श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी मद्रास ने लिखा है। इसमे युक्ति-प्रमाण द्वारा आर्य समाज के पक्ष की पुष्टि की गई है। मूल्य =)

The outlines of Aryasamaj लेखक *श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी, मद्रास। इसमे आर्य* समाज के सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय है। चतुर्थ संस्करण। मूल्य —)

Sayings of Swami Dayanand इस मे ईश्वर, वेद, वर्ण, आश्रम, शिक्षा, राजनीति आदि विषयों पर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वचनो का संग्रह है। मूल्य —)

Hinduism Vs Xinity श्री पण्डित केशवदेव जी ज्ञानी ने इस पुस्तिका मे हिन्दू-धर्म तथा ईसाईयत का मुकाबिला किया है। शुद्धि प्रचार के लिए उपयोगी है। मूल्य —)

Hinduism Vs Islam ले० पं० केशव देव जी ज्ञानी। इसमे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम का मुकाबिला है। शिक्षित मुसल्मानो के हाथों मे देने योग्य है। मूल्य —)

Vrses From The Vdas ले० के० ज्ञानी जी। इसमे चारों वेद के मन्त्र चुन कर उनकी सरल अंग्रेजी मे व्याख्या की गई है। वेद प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। मूल्य —)

पता —

श्री मंत्री, आर्य समाज

१७०, चाइना बाज़ार, मद्रास

लेख-सूची

—❀—

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७५ बालक बालिकाएं हैं और इस समय शीत ऋतु है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके सबंधियो का पता नहीं लगा वह सब बालक इसी अनाथालय में रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

उप प्रधान पं० विश्वम्भरनाथ जी उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

" पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी लाहौर

" डाक्टर गणेशीलाल जी M B , B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अंत में नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ॐ

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

वर्ष ११ | माघ १९९४ | अङ्क १२

फरवरी १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

वेद की शिक्षाएँ

एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः । Ath 2-2-1

वह एक ही पूजा करने योग्य और प्रजाओं में प्रशंसा करने योग्य है ।

He alone is worthy of adoration and worship by His creatures

एको विश्वस्य भुवनस्य राजा । Rig 6-36-4

वह सब लोकों का एक ही स्वामी है ।

He is the King and Ruler of the entire Universe

सम्पादकीय—

दीवान-हाल का उद्घाटन

गत ३० दिसम्बर को देहली में 'दीवान हाल' का उद्घाटन श्री० माननीय पुरुषोत्तम दास जी टंडन स्पीकर यू० पी० असेम्बली, द्वारा समारोह पूर्वक हुआ। यह हाल जैसा कि हम इससे पूर्व इन स्तम्भों में लिख चुके हैं श्री स्वर्गीय ला० दीवानचन्द जी की वसीयत के अनुसार बना है और इसका शिलारोपण श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा गत वर्ष हुआ था। इस हाल पर लगभग २ लाख रुपया व्यय हुआ है। हाल में लगभग ३००० व्यक्ति बैठ सकते हैं। यह आर्य समाज देहली के अधिकार में होगा और इसका नाम आर्य समाज दीवान हाल होगा। सुन्दरता और आकार की दृष्टिसे हाल देखने योग्य है और देहली में अपने ढंग की एक ही इमारत है। इस सब का श्रेय दीवान चन्द ट्रस्ट तथा उसके सुयोग्य मन्त्री श्री ला० नारायणदत्त जी को है जिनके सचिन्त्य उद्योग और परिश्रम से न केवल ट्रस्ट की अन्य सब शर्तें ही शीघ्र से शीघ्र पूरी हुईं वरन् लोगों के देखते ही देखते इतना विशाल भवन भी बन गया।

श्री पुरुषोत्तम दास टंडन ने ट्रस्ट को साधुवाद देते हुए ठीक ही कहा था कि बहुत कम ट्रस्ट इस ट्रस्ट जैसे देखने में आते हैं जो अपनी जिम्मेवारी को इतनी तत्परता और सुन्दरता के साथ निबाहते हैं। अधिकांश ट्रस्ट प्रबन्ध इत्यादि के लिए बदनाम होते हैं और दानी की सम्पत्ति नियत उद्देश्य में प्रयुक्त न होकर मुकदमेबाजी इत्यादि मे नष्ट भ्रष्ट हो जाती है।

इस अवसर पर श्री टण्डन जी ने आर्य्य-समाजियों को भी एक चेतावनी दी थी और वह यह थी कि वर्तमान में आर्य समाजी वैदिक शिक्षाओं को क्रिया मे लाने में पिछड़ रहे हैं।

'वेद ज्ञान के भाण्डार हैं, हमारे शास्त्र सर्वोपरि हैं' केवल यह कहने चिल्लाने से काम नहीं बनेगा काम बनेगा उनपर आचरण करने से। उन्होंने यह भी कहा कि आर्य समाजियों से हमे प्रकाश और आदर्शग्रहण करना है इसलिए उनको वैदिक शिक्षाओं को अधिक से अधिक अमल मे लाना चाहिए। यह चेतावनी नए समाज मन्दिर के उद्घाटन के समय दी जानी उचित ही है।

लार्ड लोथियन

कदाचित पाठकों को ज्ञात होगा अभी हाल में इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ श्रीयुत लार्ड लोथियन कुछ समय भारत में रहकर और यहा की सामाजिक और राजनैतिक प्रगति का अध्ययन करके इंग्लैण्ड को रवाना हुए हैं। देहली में भी वे कई दिन पर्यन्त रहे थे। सार्वदेशिक सभा की ओर से हिन्दू महा सभा के द्वारा उन्हें आर्यसमाज का अंग्रेजी साहित्य भेंट किया गया था। आशा है उन पुस्तकों का अध्ययन और मनन धर्म और आर्य संस्कृति का वास्तविक परिज्ञान कराने में सहायक होगा। कहने की आवश्यकता नहीं इस प्रकार के महानुभावों तक इस प्रकार का जितना साहित्य पहुँचे उतना ही उत्तम है।

शहीदगंज का विषय

उपयुक्त शीर्षक से 'हिन्दुस्तान टाइम्स' लिखता है:—

आल इण्डिया मुस्लिम लीग ने शहीदगञ्ज के निर्णय की उत्तरदायित्व लीग के एक विशेष अधिवेशन पर छोड़ दी है जो इसी काम के लिए बुलाया जायगा। वह निर्णय क्या होगा उस पर इस समय विचार करना व्यर्थ है। परन्तु इस बीच में मुसलमान नेताओं की एक जिम्मेवारी है जिससे वे नहीं बच सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं पंजाब और दूसरी जगहों के मुसल्मान बहुत बेचैन हैं और चूंकि मस्जिद के कब्जे से सम्बन्धित झगड़ा है इसलिए भावों को भड़काने और गड़बड़ पैदा करने वालों के लिए ऐसा करना बहुत आसान काम है। मुस्लिम लीग की इस सम्बन्ध में जो अन्तिम स्थिति हो सकती है उसकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी लीग का नेता होने के कारण मि० जिन्ना पर है।

मि० जिन्ना प्रसिद्ध वकील हैं। इस तमाम मामले मे निहित जो कठिनाइयां हैं वे उनसे अनभिज्ञ नहीं हो सकते हैं। नेतृत्व का अर्थ केवल हवा के रुख के साथ बहना ही नहीं है वरन् इसका अर्थ ठीक २ निर्णयों का करना और उन पर दृढ़ रहना है भले ही कुछ समय के लिए वे अप्रिय ही क्यों न देख पड़ें। नेता का कर्त्तव्य यह भी देखना है कि जो लोग किसी नेता में अपना विश्वास करते हैं वे कमजोर अथवा लुढ़कने वाले नेतृत्व से किसी गलत स्थिति में न पड़ जायं। मि० जिन्ना ने अपने देहली के भाषण में कहा है यदि ८ करोड़ मुसल्मान मुस्लिम लीग के सहायक हो जायँ तब ही वह यह कहने में समर्थ हो सकेंगे कि शहीदगंज और पैलेस्टाइन के सम्बन्ध में वे क्या करना चाहते हैं। इस बात का आलङ्कारिक अथवा वक्तृत्व कला सम्बन्धी कोई भी प्रभाव क्यों न हो निश्चय ही वे मामले का गला घोंटरहे हैं और उसका सामना नहीं कर रहे हैं।

हम तो मुस्लिम समाज और मुस्लिम नेताओं के सामने स्थिति से सम्बन्ध रखने वाली कतिपय बातें रख देना चाहते हैं और चाहते हैं कि किसी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व उन पर विचार किया जाय। किसी पक्ष या जाति के लिए यह मानना कि वे अदालत के फैसलों को तभी मानेंगे जब वे उसके हक़ में होंगे और जो हक़ में न होंगे नहीं मानेंगे असंभव पोजीशन है। इस रीति से हम समस्त व्यवस्थित गवर्नमेंटों की मृत्यु के निकट होंगे। निस्सन्देह मुसल्मानों को अधिकार है कि वे मुकदमे को प्रीवी कौंसिल तक ले जायँ परन्तु प्रीवी कौंसिल भी हाई कोर्ट के निर्णय को पुष्ट करेगी यही सम्भावना है जो उन्हें चिन्तित कर रही है। इस प्रकार की स्थिति में हमें कोई वैधानिक उपाय नहीं देख पड़ता है जिससे वे मस्जिद का अधिकार प्राप्त कर सकते हों। सर सिकन्दर हयात का मन्त्रिमण्डल भी हाई कोर्ट के फैसले के विरुद्ध नहीं जा सकता है और न सिक्खों से बलात छीन कर मस्जिद मुसल्मानों के हवाले कर सकता है। हो सकता है मन्त्रिमंडल इस विषय पर त्याग-पत्र दे दे। यदि वह दे देगा तो कांग्रेस सरकारें बड़े ध्यान से बाद की घटनाओं का अध्ययन करेंगी इसलिए कि ऐसी स्थितियों का यदि किसी समय उन्हें सामना करना पड़ जाय तो वे घटनाएँ उन्हें क्या सबक दे सकती हैं। सत्याग्रह से केवल कष्ट ही होगा और मस्जिद की प्राप्ति नहीं होगी। हमें आशा है कि मुसल्मान नेता सस्ती वाह वाह लूटने के लिए जाति के वास्तविक हितों को कुर्बान नहीं करेंगे।

म० वेदप्रकाश का वध

पाठक अन्यत्र हैदराबाद राज्यान्तर्गत गजोटा नामक स्थान पर आर्य्य नवयुवक म० वेदप्रकाश जी के मुसलमानो द्वारा वध के समाचार पढ़ेंगे। कहा जाता है कि धर्मान्ध मुसलमानों ने मन्त्री समाज के घर में घुसकर उसे पकड़ा और कहा गया या तो इस्लाम धर्म्म स्वीकार करो अन्यथा मार डाले जाओगे। उस धर्म्म वीर ने आर्य्य वीरो की प्रथा और मर्यादा के अनुसार इस्लाम धर्म्म का आलिंगन करने के बजाय मृत्यु का आलिंगन करना पसन्द किया। इस वीरता और धर्म्म रक्षा का मूल्य उसे अपने प्राणो के द्वारा देना पड़ा और उसका वही वध कर दिया गया।

इस प्रकाश के युग में सहसा ही इस समाचार पर विश्वास नही होता है साथ ही हैदराबाद राज्य मे पिछले कुछ अर्से से आर्य्यों पर जो नृशंस अत्याचार देखे और सुने जाते है और राज्य का आर्य्य समाज के प्रति जो रुख देखा जाता है उन सब की मौजूदगी मे सहसा ही इस घटना पर सन्देह भी नही होता है। कौन ऐसा सहृदय व्यक्ति होगा जो इस वध की निन्दा न करेगा। हमे आश्चर्य्य है कि निज़ाम सरकार ने इस घटना के सम्बन्ध में जहां तक हमे विदित है कोई प्रकाश नही डाला है। प्रतीत होता है निजाम सरकार इस घटना को उस गभीरता में नही लेती है जिसमे ली जानी चाहिए।

आर्य्य जगत में इस घटना से असन्तोष, और क्रोध की लहर दौड़ गई है।

आर्य्य समाज की ज़िम्मेवार सभाएं और आर्य्य समाजे इस घटना पर प्रस्ताव पास करके अपने असन्तोष को प्रगट कर रही हैं और निजाम सरकार से मांग कर रही है कि वह इस घटना की निष्पक्ष जांच कराके और अपराधियो का पता लगाकर उन्हे समुचित दण्ड दे और आगे के लिए इन घटनाओं को असभव बना देवे। आर्य्य समाज के इस असन्तोष और हलचल का निज़ाम सरकार को पता होगा या इस समय तक पता हो गया होगा। उसे चाहिए वह स्थिति की गभीरता को अनुभव करे और आर्य्यों की मांग का आदर करते हुए इस सम्बन्ध में अविलम्ब उचित कार्य्यवाही करे।

वे भाई बड़े भोले हैं जो सचाई को दबाने के लिए इस प्रकार के जघन्य उपायो का अवलम्बन करते है। इन उपायो से सचाई छिपने के बजाय और भी निखर जाती है। भाई वेदप्रकाश के वध से वेदप्रकाश तो अमर हो ही गया साथ ही हैदराबाद में आर्य्य समाज को भी अमर कर गया।

— —

पश्चिमी देशों मे शव-दाह

पाश्चात्य देशो मे मुर्दे जलाने की प्रथा बढ रही है। सन् १९३३ से सन् १९३५ तक जर्मनो मे ११५२१, सोवियट रूस मे १२०८३, ब्रिटेन मे ३६१४, फ्रांस मे १३३०, स्विटजरलेंड मे ६३१७, आस्टिया मे ३११६, डेनमार्क मे ३३०४ और जकोस्लावाकिया मे ५६१२, मुर्दे जलाये गये। इन दो वर्षों मे सारे युरोप मे इनकी सख्या १०५२८७ से बढकर ११२८८५ हो गई। जर्मनी मे ११५ ब्रिटेन मे २१, और स्विटजरलैंड म २० क्रेमोटरियन है जहा मुर्दे बिजली से जलाये जाते है। युरोप मे इस प्रथा का प्रचार करने के लिए कई समितियां बनी हुई हैं। गत सितम्बर में लडन मे इनका सम्मेलन हुआ था जिसमे प्रचार कार्य के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सघ स्थापित किया गया है।

मुर्दे का दाह सस्कार करना आर्य सभ्यता की स्वास्थ्य सम्बन्धी एक उत्तम वैज्ञानिक प्रथा है। प्रसन्नता है युरोप में यह प्रथा वेग के साथ प्रचलित हो रही है। युरोप मे इस प्रथा के प्रचलन का महत्व और भी अधिक बढ जाता है इसलिए कि युरोप ईसाई धर्म्म प्रधान देश है और ईसाई धर्म मुर्दे के दाह की आज्ञा नहीं देता है।

———

आर्य्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या

जैसा कि पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे 'आर्य्य मैरेज ऐक्ट' की व्याख्या सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रकाशित की जा रही है। व्याख्याकार बिल के निर्माता तथा उसे ऐक्ट का रूप दिलाने वाले सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री० बा० घनश्याम सिंह जी गुप्त हैं। इस व्याख्या से आशा है कि कानून के सामाजिक और कानूनी दोनों पहलुओं का अच्छा ज्ञान हो जायगा और कानून के समझने में जो बाधाएँ उपस्थित हो सकती थीं वे न रहेंगी और कानून के अधिक से अधिक प्रचलन में मदद मिलेगी। हम बिल के पास होने के समय से ही हम सोच रहे थे कि इस कानून की एक तो उपर्युक्त प्रकार की व्याख्या दूसरे इस बिल का शुरू से अन्त तक का इतिहास तय्यार हो। इस बिल के सविस्तर इतिहास से जनता को पता लगेगा कि इस बिल को प्रगति बड़ी मनोरंजक रही है। उदार और अनुदार भावों का बहुत उग्र स घर्ष रहा है। नई २ विविध कानूनों, सामाजिक और धार्मिक स्थापनाएँ और खोजें प्रकाश में आई हैं और सब से बढ़कर आर्य्य समाज का गौरव स्थापित हुआ है तथा बिल के पक्षपातियों को घोर परिश्रम करना पड़ा है। प्रसन्नता है कानून की व्याख्या की तजवीज़ स्थूल रूप में हमारे सामने आ गई है। क्या ही अच्छा हो दूसरी तजवीज़ भी स्थूलरूप में आ जाय भले ही कुछ और समय के बाद आए। आशा है आर्य्य समाज और आर्य्य जनता इस व्याख्या का अधिक से अधिक प्रचार करेंगे।

पादरियों का दृष्टिकोण

(उपर्युक्त शीर्षक से 'आर्य मित्र' लिखता है)

केण्टरबरी के लाट पादरियों ने एक कमीशन नियत किया था जिसकी रिपोर्ट में कई प्रचलित विश्वासों पर आपत्ति उठाई गई है और यह बात स्वीकार कर ली है कि बाइबिल निर्भ्रान्त नहीं है। कमीशन ने लिखा है कि कुमारी मरियम के गर्भ से पुत्रोत्पत्ति के सम्बन्ध में साक्षी निर्णयास्पद है। यह धारणा भी भ्रान्त है कि कयामत के दिन मुर्दे इकट्ठे खड़े होंगे। चमत्कारों (मुअजिज़ों) के सम्बन्ध में भी परस्पर मत भेद है। हां रिपोर्ट में यह अवश्य स्वीकार किया गया है कि परमात्मा चाहे तो चमत्कार दिखा सकता है। रिपोर्ट में विकास सिद्धान्त पर भी कोई आपत्ति नहीं की गई। इस प्रकार की रिपोर्टों और तहकीकातों का यही अर्थ है कि ईसाई लोग भी अपने धर्म्म की असम्भवता को दूर कर उसे वैज्ञानिक रूप देने की चिन्ता में हैं। वस्तुत जो धर्म्म तर्क की टक्कर सहकर बुद्धिवाद के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता वह आधुनिक युग में अपनाए जाने योग्य नहीं हैं। यही कारण है कि सत्य सनातन वैदिक धर्म्म का महत्व उत्तरोत्तर बढ़ रहा है और समझदार जनता इसे किसी न किसी रूप में स्वीकार करने के लिए अत्यन्त उत्सुक दिखाई देती है।

आर्य विवाह एक्ट

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा ने अपने ६-१-३८ के अधिवेशन में जो कई महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास किए हैं उनमें एक आर्य्य विवाह ऐक्ट सम्बन्धी निम्न प्रकार है —

"आर्य विवाह एक्ट के लिए 'आर्य समाजी' की परिभाषा नियत करने के सम्बन्ध में उपसमिति के सदस्यों की सम्मतियां तथा उन पर श्री प्रधान जी की रिपोर्ट पढ़ी गई। विचार के बाद सर्व्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी द्वारा निर्धारित निम्न दोनों फ़ार्म स्वीकृत किए जावें तथा प्रान्तिक सभाओं के पास आर्य समाजों तक पहुँचाने के लिए भेजे जावें। इस सभा की यह भी स्थिर सम्मति है कि आर्यसमाज के उपनियमों में 'आर्य' और 'आर्य सभासद' का जो परिभाषा है वह केवल आर्यसमाज के संगठन के लिए ही है और विस्तृत आर्य जगत के लिए नहीं है अतः जो प्रधान जी द्वारा प्रतिपादित घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे वे 'आर्य विवाह एक्ट' की मद्धा के भीतर आर्य समाजी होंगे, इसमें सन्देह नहीं—

घोषणा पत्र सं० (१)

मैं पुत्र/पुत्री निवासी तहसील जिला उम्र पेशा घोषणा करता हूँ/करती हूँ कि मैं आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत के पुत्र/पुत्री ......के साथ जिसकी अवस्था की है और आर्य समाजी भी है विवाह करना चाहता/चाहती हूँ।

ह　　घोषणा करने वाला/वाली

तिथि

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए

ह० मन्त्री आर्य समाज　　ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि　　तिथि ..

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण .

.. ..

घोषणा पत्र सं० (२)

मैं पुत्र/पुत्री ... निवासी तहसील जिला उम्र ... पेशा.. घोषणा करता/करती हूँ कि तिथि को शुद्धि करा के आर्य समाजी हो गया/गई हूँ। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि मैं आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत के पुत्र/पुत्री श्रीयुत/श्रीमती के साथ जिसकी उम्र है और जो आर्य समाजी भी है विवाह करना चाहता/चाहती हूँ शुद्धि से पूर्व मैं .. था/थी ❀

ह०　　घोषणा करने वाले के

तिथि ..

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए।

ह० मन्त्री आर्य समाज　　ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि　　तिथि ....

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

यह निश्चय स्वयं अपनेमें स्पष्ट है। इस निश्चय के प्रकाश में वे सब आर्य्य समाजी जो आर्य्य समाज के रजिस्टर्ड मेम्बर नहीं हैं इस ऐक्ट से लाभ उठा सकते हैं।

❀ मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, इत्यादि,

अजमेर आर्य्य-जगतके झगड़ेके सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभाके प्रधान आनरेबिल श्रीयुत

घनश्यामसिंह जी गुप्त का निर्णय

१—सब मुकदमात उठा लिए जावें या खारिज करा दिये जावें। इस कार्य का भार श्रीमान् चांदकरण जी शारदा तथा श्रीयुत दत्तात्रेयजी बावले पर सौंपा जाता है जो इसे शीघ्रातिशीघ्र सपन्न करके सार्वदेशिक सभा को सूचित करेंगे।

२—एक दूसरे के विरुद्ध और किसी भी संस्था के विरुद्ध कोई नोटिसबाजी न होगी।

३—अजमेर में जितनी आर्य-समाजें हैं उन सबका पृथक अस्तित्व प्रबन्ध आदि रहेगा। जब तक कि वे स्वय स्वतन्त्रतापूर्वक सम्मिलित होना न चाहें।

४—एक वर्ष के लिए यहां के सब आर्य-समाजोंका साप्ताहिक अधिवेशन और पर्व आदि पर अधिवेशन एक ही साथ और एक ही जगह में हुआ करेगा।

इन अधिवेशनों में

(१) श्री कुँवर जालिमसिह जी प्रधान होंगे।

तथा—

(२) श्री प० सुर्यदेव जी शर्मा मन्त्री होंगे।

सम्मिलित अधिवेशन में निम्न नियम लागू होंगे—

५—(क) अजमेरके प्रत्येक आर्यसमाज का प्रत्येक सभासद उपस्थित हो सकेगा।

(ख) उस आर्य समाज के मन्त्री जिन जिन को अपने समाजका मेंबर बनावें वह मान्य होगा। और उस पर कोई बहस इस सम्मिलित अधिवेशन में न होगी।

(ग) इस सम्मिलित अधिवेशन की बैठक के लिए श्रीमान् जालिम सिंह जी को सूचना पाने पर स्थान बिछावन आदि की सुविधा तथा आर्यसमाज के भवन के उपयोग की अनुमति उस आर्य समाज का मन्त्री देगा जिसके पास कुवर साहब सूचना भेजें।

(घ) सम्मिलित अधिवेशनों को सुचारु रूप से चलाने का अधिकार तथा जिम्मेवारी कुँवर साहब पर पूरी पूरी होगी। उस सम्बन्ध में उनकी बाते सब का मान्य होंगी।

६—हरएकआर्य समाज प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित रहेगा और केसर गज स्थित आर्यसमाज अगले निर्वाचन पर अपने प्रतिनिधि नियमानुसार भेजेगा।

७—अजमेर तथा अन्य किसी स्थान का जो भी आर्यसमाज अपना जो नाम बतावे वह प्रतिनिधि सभा को मान्य होगा और उसी नाम से वह आर्य समाज निर्दिष्ट होगा। यदि एक ही नाम के दो या अधिक आर्य समाज हों तो पते में भिन्नता की जावेगी नाम में नहीं।

८—हरएक आर्यसमाज का भवन व अन्य स्थावर सम्पत्ति प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री की जावेगी इस काय के लिए केसर गज स्थित आर्य समाज अजमेर को दो वर्ष की मुहलत दी जाती है।

९—जो भी कोई आर्य किसी भी आर्य समाज में प्रवेश होना चाहे उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होगी। किसी को सदस्य न बनाने तथा सदस्यता से पृथक करने का अन्तिम अधिकार सार्वदेशिक सभा के हाथ में रहेगा। आर्य समाज अपना रिपोर्ट भेजगा।

१०—इस सम्बन्ध में तथा अन्य कोई झगड़ा जो उपस्थित हो वह श्रीमान् प्रम्सपल शेषाद्रि जी तथा श्रीमान् प्रोफसर देवकीनन्दन जी के सामने निर्णय के लिए पेश किया जावेगा और उनका निर्णय मान्य होगा। उनके निर्णय पर यदि किसी को एतराज हो तो वह सार्वदेशिक सभा को दरखास्त दे सकता है परन्तु सार्वदेशिक सभा के निर्णय होने तक उक्त महानुभावों का फसला मान्य रहेगा।

११—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को आशा है कि उक्त दोनों बातों के यथोचित पालन होने पर किसी को किसी व्यक्ति के विरुद्ध या किसी सस्था के विरुद्ध शिकायत का मौका न रहेगा, तथापि यदि किसी खास शिकायत की विद्यमानता रही तो सार्वदेशिक सभा उनपर उचित विचार और अनुसन्धान करके उचित कार्यवाही करेगी।

आर्य्य प्रतिनिधि सभाओं के नाम सार्वदेशिक सभा के सरक्यूलर

(१)

सभा के उप प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का इस सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्यों के चुनाव से सम्बन्धित निम्न प्रस्ताव आपकी सेवा में सम्मति के लिए भेजता हूँ। आशा है आप अपनी सभा की सम्मति से यथा सम्भव शीघ्र सूचित करेंगे।

"प्रान्तीय सभा जिस समय अपनी साधारण सभा में सार्वदेशिक सभा के लिए माननीय सदस्यों का निर्वाचन करें उस निर्वाचन के पश्चात् वह माननीय सदस्य जो सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के लिए निर्वाचित हुए हैं वे यदि प्रान्तीय सभा के सदस्य हों तो वहां से त्याग-पत्र देकर स्थान रिक्त कर देंगे और वे सार्वदेशिक सभा के ही सदस्य होंगे। एक ही समय में कोई सदस्य प्रान्तीय और सार्वदेशिक सभा का सदस्य न होगा बल्कि एक ही सभा का सदस्य हो सकेगा।" मन्त्री सभा,

सरक्यूलर

(२)

सभा की ओर से प्रथम प्रान्तीय सभाओं को आदेश किया गया था कि वह आर्य्य समाजों को प्रेरणा करें। जहां जहां जेलखाने हैं वहां वहां उन जेलखानों में धर्म प्रचार का प्रबन्ध किया जाय। उस समय प्रान्तीय सभाओं ने सभाओं को उत्तर दिया था कि उन्हों ने आर्य्य समाजों को ऐसा करने को लिख दिया है। आशा है आर्य्य समाजों ने उस विषय में कुछ न कुछ कार्य्य किया होगा।

अब पुनः प्रान्तीय सभाओं को निश्चित कार्य्य लिख कर सभा प्रेरणा करती है कि वह आर्य्य समाजों को ऐसा करने का आदेश करें।

(१) जहां जहां जेल घर हैं वहां के अधिकारियों से पत्र व्यवहार करके धर्म प्रचार के लिए समय नियत करके किसी व्यक्ति को नियत किया जाय। जो नियम पूर्वक वहाँ जाकर प्रचार करे। यदि एक व्यक्ति इतना समय देने वाला न मिल सके तो एक से अधिक व्यक्ति नियत किए जाए।

(२) उसी अवसर में अथवा भिन्न समय में कारागार वासियों को आर्य्य भाषा पढ़ाने का प्रयत्न किया जाय। कोई व्यक्ति वहां जाकर उन्हें पढ़ावे अथवा अन्य कोई उचित प्रबन्ध किया जाय।

(३) कारागार वासी सज्जनों को पढ़ने के लिए पुस्तक दिये जाय। जब वे उसे समाप्त कर लिया करें तो वह लेकर और दिए जांय। इसके लिए उन स्थानो की आर्य्य समाजों में पुस्तकालय बनाए जाय।

स्वतन्त्रानन्द उपप्रधान
सार्वदेशिक सभा, देहली।

श्री युत शिवचन्द्र जी का दौरा

गत नवम्बर तथा दिसम्बर मास में श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने आर्यवीर सेवा दलों के स्थापनार्थ संयुक्त प्रान्त में एक लम्बा दौरा किया और मुरादाबाद चन्दौसी, बरेली, हरदोई, लखनऊ, फैज़ाबाद, बनारस, मिर्जापुर, इलाहबाद, फतेहपुर तथा आगरे में उक्त दलो की स्थापना की तथा मेरठ जयन्ती महोत्सव के अवसर पर संयुक्त प्रान्तीय आर्यवीर सेवादल समिति का निर्माण कराया।

आपने जनवरी मास में अजमेर के झगड़े के सम्बन्ध में श्री प्रधान सार्वदेशिक सभा के साथ अजमेर की यात्रा की।

॥ ओ३म् ॥

आर्य्य पर्वों की सूची

सार्वदेशिक सभा आर्य समाजों की सूचना के लिए प्रति वर्ष स्वीकृत आर्य पर्वों की देशी तथा अंग्रेजी तिथियों के उल्लेख के साथ, जिन पर वे पर्व पड़ते हैं, सूची प्रकाशित किया करती है। इस वर्ष की सूची निम्न प्रकार है:—

क्रम सं०	नाम पर्व्व	देशी तिथि	अंग्रेज़ी तिथि
१.	नवसम्वत्सरोत्सव	चैत्र सुदि प्रतिपदा	१-४-१९३८
२.	आर्यसमाज का स्थापना दिवस	चैत्र सुदि ५	५-४-३८
३.	रामनवमी	,, ९	८-४-३८
४.	हरि तृतीया (तीज)	श्रावण सुदि ३	२९-७-३८
५.	श्रावणी उपाकर्म	,, ,, १५	११-८-३८
६.	कृष्णाष्टमी	भाद्रपद वदी ८	१९-८-३८
७.	विजयादशमी	आश्विन सुदि १०	३-१०-३८
८.	दयानन्दनिर्वाण (दीपावली)	कार्तिकवदी ३०	२२-१०-३८
९.	श्रद्धानन्द दिवस	पौष ९ (सौर)	
१०.	मकर संक्रान्ति	माघ कृष्ण ६	१४-१-३८
११.	वसन्त पंचमी	माघ शुक्ला ५	५-२-३८
१२.	सीताष्टमी	फाल्गुन वदी ८	२२ २ ३८
१३.	दयानन्द जन्म दिवस	,, ,, १३	२८-२-३८
१४.	लेखराम वीर तृतीया	,, सुदि ३	५-३-३८
१५.	वसन्त नवसस्येष्टि (होली)	,, ,, १५	१५-३-३८

नोट—श्रद्धानन्द दिवस की निश्चित तिथि की सूचना उचित समय पर दी जायगी।

सुधाकर एम० ए०,
मन्त्री—
सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभा,
बलिदान-भवन, देहली।

हैदराबाद-राज्य

The International Aryan League has adopted the following resolution at its meeting held on the 9th January at Delhi—

'Resolved that the International Aryan League puts on record its sense of profound sorrow and deep indignation at the assassination of Mr Vedaprakash Arya by Muslim Fanatics at Gunjoti in Hyderabad State and urges upon the Nizam Government to have this accident investigated by an impartial tribunal and to punish the accused suitably The League further hopes that the Nizam Government would render the commission of such atrocities impossible in future.

'सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा धर्म्मान्ध मुसलमानों द्वारा निज़ाम राज्यान्तर्गत गंजोटी में म० वेद प्रकाश जी के वध पर दुख प्रकाश करती हुई इस वध की घोर निन्दा करती है और निज़ाम सरकार से आग्रह करती है कि वह इस घटना की निष्पक्ष ट्रिब्यूनल के द्वारा जांच कराए, और अपराधियो का पता लगा कर उन्हे समुचित दण्ड देवे। यह सभा यह भी आशा करती है कि निज़ाम सरकार भविष्य में इस प्रकार के अत्याचारों को असंभव बनादेगी।

आर्य्य विवाह एक्ट की व्याख्या

सर्व साधारण विशेषत. आर्य्य जनता की सूचना के लिए घोषित किया जाता है कि 'आर्य्य विवाह ऐक्ट' की कानूनी और सामाजिक व्याख्या इंगलिश और हिन्दी में तय्यार कराई गई है और प्रेस में दे दी गई है। शीघ्र पुस्तक रूप में प्रकाशित होगी। यह सौभाग्य की बात है कि व्याख्याकार स्वय बिल के निर्माता सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री बाबू घनश्यामसिंह जी बी एस सी एल एल बी है। इस व्याख्या से ऐक्ट के हरेक पहलू का पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है। इस व्याख्या को ऐक्ट की कुञ्जी कह सकते है। आर्य्यमात्र को यह व्याख्या अपने पास रखनी चाहिए और आर्य्य समाजों को अधिक से अधिक सख्या मे यह जनता तक पहुँचानी चाहिए ताकि ऐक्ट अधिक से अधिक और ठीक ठीक प्रचलित हो। यह व्याख्या सार्वदेशिक सभा देहली द्वारा प्रकाशित की जा रही है और इसकी न्यून से न्यून कीमत रक्खी जायगी। आर्य्य भाइयों तथा आर्य्य समाजों को शीघ्र से शीघ्र सार्वदेशिक सभा को सूचित करना चाहिए कि उन्हें हिन्दी तथा अंग्रेज़ी व्याख्या की कितनी कितनी प्रतियां दरकार होंगी ताकि उतनी ही सख्या मे प्रतियां छपवाई जा सकें।

सुधाकर
मन्त्री—सार्वदेशिक सभा, देहली

ग्राहकों से निवेदन

प्रायः ग्राहक महानुभाव पत्र व्यवहार में वा मनीआर्डर इत्यादि भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या नहीं लिखते हैं। इससे कार्यालय को असुविधा होती है और स्वय ग्राहकों को भी पत्र समय पर नहीं मिलता। अतएव ग्राहक महानुभावों से निवेदन है कि वे पत्र व्यवहार इत्यादि मे अपना ग्राहक नम्बर लिखना कृपया न भूला करें—

"अमैथुनि सृष्टि और युवा प्राणियों का उत्पन्न होना"

लेखक—
श्री नारायण स्वामी जी महाराज

महा प्रलय में जगत का अत्यंताभाव हो जाता है। कार्य्य रूप में परिणत प्रकृति का चिन्ह बाकी नहीं रहता न कोई लोक बाकी रहता है न कोई योनि, सूर्य्य चन्द्र सभी कारण रूप प्रकृति की गोद में शयन करने लगते हैं। ऋग्वेद में इसी कारण रूप प्रकृति अथवा सत रज और तम की साम्यावस्था के लिये "तमासीत्तमसा गुहमग्रे" (देखो ऋग्वेद १०।१२९।३) कहा गया है। प्रचलित विज्ञान ने भी इस महाप्रलय वाद का समर्थन किया है। क्लाशियस (The founder of the mechanical theory of heat) ने ताप को दो भागों में बांटा है —

(१) The Energy of the universe is constant, It is convertable into work

(२) The entropy of the universe tends towards a maximum (It is not convertable into work) Entropy (ie force that is directed inwards) this energy already converted into heat and distributed in the cooler masses, is irrevocably lost as far as any further work is concerned. The entropy is continuously increasing at the cost of the other half (The first kind of energy) As, therefore the mechanical energy of the universe is daily being transferred into heat, and this can not be reconverted into mechanical force, the sum of heat and energy in the universe must continually tend to be reduced and dissipated All difference of temperature must ultimately disappear and completely the latent heat must be equally distributed thro one invert mass of motion less matter All organic life and movement must cease, when this maximum of entropy has been reached, that would be a real end of the world

इस अवस्था के प्राप्त हो जाने और नियत अवधि तक क़ायम रहने के बाद जब जगत उत्पन्न होता है तब प्रत्येक लोक क्या और प्रत्येक योनि क्या, नये सिरे से ही बनती हैं। यहां लोक नहीं किन्तु योनि के उत्पन्न होने के सम्बन्ध में विचार करना है —

भिन्न भिन्न प्राणियों के शरीर, जैसा वैशेषिक दर्शन में लिखा है, दो प्रकार के होते हैं —

(१) "योनिज" जो माता पिता के संयोग से

उत्पन्न होते हैं। (मैथुनि सृष्टि)

(२) अयोनिज जो बिना माता पिता के संयोग के उत्पन्न होते हों १ (अमैथुनिसृष्टि)

समस्त प्राणी जो जगत में उत्पन्न होते हैं उनकी उत्पति चार प्रकार से होती है —

(१) जरायुज जिन के शरीर जरायु (झिल्ली) से लिपटे रहते हैं और इस जरायु को फाड़ कर उत्पन्न हुआ करते हैं जैसे मनुष्य पशु आदि।

(२) अण्डज जो अंडों से उत्पन्न होते हैं जैसे पक्षी, साप, मछली, मेंढक आदि।

(३) स्वेदज जो पसीने और सील आदि से उत्पन्न होते हैं।

(४) उद्भिज जो पृथिवी फाड़ कर उत्पन्न होते हैं जैसे वृक्ष आदि।

इन में से अन्तिम दो को तो सदैव अमैथुनिसृष्टि हुआ करती है और प्रथम दो की मैथुनि और अमैथुनि दोनों प्रकार की सृष्टि हुआ करती है।

अमैथुनि सृष्टि का क्रम

स्थूल भूतों की उत्पत्ति का आरंभ आकाश (Ether) से हुआ करता है आकाश के बाद क्रम से वायु, अग्नि, जल और पृथिवी उत्पन्न होती है। पृथिवी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य (वीर्य से तात्पर्य रज और वीर्य दोनों हैं), और वीर्य से पुरुष उत्पन्न होता है।१

चाहे मैथुनी सृष्टि हो या अमैथुनी दोनों में प्राणी रज और वीर्य के मेल ही से उत्पन्न हुआ करता है। मैथुनी सृष्टि में रज और वीर्य के मिलने और गर्भ की स्थापना का स्थान माता का पेट हुआ करता है परन्तु अमैथुनि सृष्टि में मेल का स्थान, माता के न होने से, माता के पेट से बाहर हुआ करता है।

प्राणी शास्त्र के विद्वान बतलाते हैं कि अब भी ऐसे जन्तु पाये जाते हैं जिन के रज और वीर्य माता के पेट से बाहर ही मिलते हैं और उन्ही से बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं। उन में से कुछ का विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) समुद्रों में एक प्रकार की मछली होती है जिनकी मादा मछलियों में नियत ऋतु में बहु संख्या में रजकण (ova) प्रकट हो जाते हैं और इसी प्रकार नर मछली के अंडकोषों में जो पेट के नीचे (within the abdominal avity) होते हैं वीर्यकण (zoosperms) प्रादूर्भूत होने लगते हैं। जब मादा मछली किसी जगह अंडे

(१) तत्र शरीर द्विविधं योनिजमयोनिज च ॥

नोट—इस सूत्र के भाष्य में—(वैशे० ४।२।५।)
"आचार्य्य प्रशस्त पाद ने लिखा है कि अब अग्नि और वायु से उत्पन्न शरीर अयोनिज होते हैं आचार्य्य प्रशस्त पाद की यह बात प्रशस्त नहीं है।

(१) तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाश सम्भूतः।
आकाशाद्वायु वायोरग्नि अग्नेराप ः।
अद्भ्य पृथवी। पृथिव्या ओषधय·।
ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतस. पुरुषः॥
(तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्द वल्ली, प्रथम् अनुवाक)

देने के लिये रज कणों को, जो हजारों की सख्या में होते है, गिराती है वह जगह प्राय: जल की निचली तह में रेतीली अथवा पथरीली भूमि होती है, तो उसी समय नरमछली वहीं पहुंच कर उन्हीं रज कणों पर वीर्य कणों को छोड़ देता है जिस से पेटके बाहर ही गर्भ की स्थापना होकर अडे बनने लगते है।

(२) इसी तरह एक प्रकार के मेंढक होते है जो रज और वीर्य कण बाहर ही छोड़ते हैं। नर मेंढक मादा मेंडक की पीठ पर इस प्रकार बैठ जाता है जिससे मादा के छोड़ते हुये रज कणों पर वीर्य कण गिरते जावें और इस प्रकार मेंढकी के पेट से बाहर ही इन के अडे बना करते हैं।

(३) एक प्रकार का कीट जिन्हें टेपवर्म (Tapeworm) कहते हैं और जो मनुष्यों के भीतर पाचन क्रिया की नाली (Human digestive canal)में पाया जाता है, २० हजार अडे एक साथ देता है। एक अ डे में से जब कीट निकलता है तो उसका एक मात्र शिर हुकों के साथ जुड़ा हुआ होता है (It consists simply a head with hooks) उन हुकों के द्वारा वह आतों की श्लैष्मिक कला (mucuons membiance of the intengtines) से जुड़ जाता है और उसी शिर से उस का शरीर विकसित होता है और इस प्रकार उत्पन्न शरीर अनेक भागों (Segments) में विभक्त हो जाता है। और वे क्रमश: सख्या और आकार में बढ़ते जाते हैं। प्रत्येक भाग में स्त्री पुरुष के अंग होते हैं जिन से, स्वयमेव, बिना किसी बाह्य सहायता के गर्भ की स्थापना हो जाती है। कुछ काल के बाद पुराने भाग (Segments) पृथक होकर स्वतन्त्र कीट बन जाया करते हैं, इत्यादि।

इन उदाहरणों से यह बात अच्छी तरह समझी जा सकती है कि यह असम्भव नहीं है कि रज और वीर्य का सम्मेलन माता के पेटसे बाहर हो और उस से प्राणी की उत्पत्ति हो सके।

इसी मर्यादा के अनुसार अमैथुनि सृष्टि में रज और वार्य का मेल माता के पेट से बाहर होकर एक झिल्ली में गर्भ की तरह सुरक्षित रहते हुए बढ़ता रहता है।

रज और वीर्य किस प्रकार झिल्ली में आकर मिल जाते हैं इसका कुछ अनुमान फूलों के पौधों से किया जा सकता है। फूल के पौधे नर भी होते हैं और मादा भी। नर पौधों से पक्षी वीर्य कण ले जाकर मादा पौधों के रज कणों पर छोड़ देते हैं और उसका फल फून की उत्पत्ति हुआ करती है और इसी लिये पक्षियों को Marriage priest of flowers कहा करते हैं। इसी अथवा अन्य इसी प्रकार की किसी विधि से रज और वीर्य का सम्मेलन झिल्ली में हो जाया करता है। यहां पर झिल्ली का अभिप्रायवृक्षों के चौड़े पत्तों आदि से उत्पन्न झिल्ली समझना चाहिये। अस्तु, जब प्राणी इस बाह्य गर्भ में इतना बड़ा हो जाता है कि अपनी रक्षा आप कर सके, तब वह झिल्ली फट जाती है और उसमें से वह निकल आया करता है। इसी का नाम अमैथुनि सृष्टि है।

"एक कोट का उदाहरण"

अमैथुनि सृष्टि की कार्य प्रणाली भली भांति समझी जा सके कि किस प्रकार बिना प्राणियों के यत्न के रज और वीर्य का स्वयमेव सम्मेलन तथा प्राणी के पुष्ट और स्वय काय करने के योग्य होने पर झिल्ली का अपने आप फट जाना आदि कार्य अलौकिक रीति से हो जाया करते हैं, इसके लिये एक उदाहरण दिया जाता है —

सुदर्शन नामक औषधि एक प्रसिद्ध औषधि है। कानों की तकलीफ इसका रस डालने से दूर हो जाया करती है। इस सुहावने पोधे मे एक प्रकार का कीडा लग जाता है और वह इसके पत्ते और फूल सब को खराब कर दिया करता है। वह कीडा कहा से आ जाता अथवा किस प्रकार उत्पन्न हो जाता है इसी के जान लेने की जरूरत है।

जब इस के नये पत्ते निकल आते है तो ध्यान पूर्व देखते रहने से पता चलेगा कि कोई काले रग की सूखी चीज इस के पत्ते पर कही से आकर गिर पडती है। और पत्ते से अलग नहीं होती, दो चार दिन मे किसी अज्ञात विधि से वह चीज पत्ते के मोटे दल और झिल्ली के बीच में आ जाती है और साफ तौर से मालूम होता रहता है कि वही काली वस्तु पत्ते के मोटे और पतले दलो के बीच मे आ गई है। फिर कुछ दिनो के बाद वही वस्तु अब पत्ते के दलों के बीच मे इस प्रकार आ जाती है कि अब उसका रूप रग कुछ दिखलाई नही देता, परन्तु पत्ते के भीतर एक गाठ सी मालूम होने लगती है। अब क्रमश पत्ते के भीतर वह वस्तु लम्बाई मे बढती जाती है और लगभग दो इ च के लबी हो जाती है। इसके बाद कुछ कार्य भीतर ही भीतर होता है। और अन्त मे कई दिन के बाद वह पत्ता फट जाता है और उसमे से हरे रंग का एक लगा और गोल कीडा निकल आता है, इस कीडे की लबाई दो सुनहरी रेखाओ से ३ हिस्सो मे बटी रहती है। यही कीडा है, जो सुदर्शन की पत्तिया का खाकर अपने को तो पुष्ट बनाता है परन्तु पौदे को खराब कर डालता है। अब इसी कीड़े को एक शीशे की अलमारी मे रखकर उसका भोज्य सुदर्शन की पत्तिया उसमे डाल दी जावें। तो ८-१० दिन के बाद वह कीडा ३ तितलिया के रूप मे परिवर्तित हो जाता है और ये तितलिया अलमारी खोलते ही उड जाती है।

यह परीक्षण, जिसे जब भी कोई चाहे कर सकता है, अमैथुनि सृष्टि की अनेक अलौकिक बातो पर प्रकाश डालता है कि किस प्रकार ये सब कार्य प्राकृतिक नियमों के द्वारा हो जाया करते हैं।

साचे का उदाहरण

यह अमैथुनि सृष्टि और उसके बाद इसी से होने वाली मैथुनि सृष्टि का क्रम वैज्ञानिक और ठीक उसी प्रकार का है जैसे खिलोने आदि बनाने वाले पहले एक साचा बना लेते हैं और उसके बाद उसी साचे से अनेक खिलौने ढाल लिया करते हैं। अमैथुनि सृष्टि की प्रत्येक योनि साचे

के सदृश है और उसके बाद की मैथुनि सृष्टि उसी साचे से, ढले हुये खिलोनों की भाति है ।

यहा तक जो कुछ कहा गया उस से स्पष्ट हो जाता है कि अमैथुनि सृष्टि का होना न तो कोई अस्वाभाविक बात है और नहीं कोई आश्चर्य जनक अप्राकृतिक घटना। धार्मिक और वैज्ञानिक जगत इसे बराबर स्वीकार करता रहा हैं। आदम और हव्वा की उत्पत्ति अमैथुनी सृष्टि के द्वारा ही हुई थी। इसे यहूदी, ईसाई आदि सभी सिमिटिक मतों के मानने वाले स्वीकार करते है।

Darwin ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ Origin of Species मे ईश्वर द्वारा जगत के प्रारंभ में प्राणियो की उत्पत्ति स्वीकार की है। उसके शब्द ये हैं —

There is a grandeur in this View of life having been Originally breathed by the Creator into a few forms or into one"

अमैथुनि सृष्टि में केवल मनुष्य ही नही अपितु पशु पक्षी सभी उत्पन्न होते हैं। ये भिन्न भिन्न योंनिया क्यों उत्पन्न होती हैं, इसका उत्तर वैशेषिककार ने दिया है कि इससे पहली सृष्टि के अन्त में प्राणियों के कर्मानुसार नवीन अमैथुनि सृष्टि में उन्हें भिन्नभिन्न योनिया मिलतीं हैं।१ इससे वैशेषिक दर्शन में अमैथुनि सृष्टि होने के सम्बन्ध मे दो सूत्र और दिये हैं—एक में कहा गया है कि महा प्रलय हो जाने पर किसी दिशा अथवा स्थान मे कोई प्राणी किसी योनि मे भी बाकी नही रहता इसलिये अमैथुनि सृष्टि का होना अनिवार्य्य हो जाता है। (२) दूसरे मे कहा गया है कि प्राचीन आर्य्य प्रथानुसार अमैथुनि सृष्टि में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों को पिता के नाम से नहा पुकारते जैसे भरद्वाज का पुत्र भारद्वाज किन्तु उत्पन्न होने वालों के मूल नाम ही लिये जाते है जैसे अग्नि वायु, आदित्य, अगिरा तथा ब्रह्मा आदि इसलिये कि इनके कोई माता पिता नही थे। (३) इन हेतुओं को देने के बाद दर्शन कार ने परिणाम यह निकाला है कि "अयोनिज शरीर" का होना आवश्यक है। (४) और इस की पुष्टि मे प्रकट किया है कि वेद म अमैथुनिक सृष्टि का प्रमाण पाये जाने से भी उसकी सिद्धि होती है। ५

वेदों में अनेक स्थानों पर, मनुष्य, पशु और पक्षी आदि की, ईश्वर द्वारा रचना का विधान किया गया है। पुरुष सूक्त मे उदाहरण के तौर पर, देखा जा सकता है। इनके सिवा ऋग्वेद में एक जगह कहा गया है —

ईश्वर अमैथुनि सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों से कहता है कि "हे समस्त प्राणियो! तुम न पशु

१ धर्म विशेषाच्च ॥ (वैशे० ४-२-८)

२ अनियत दिग्देश पूर्वकत्वात् ॥ (वैशे० ४-२-७१)

३ समाख्याभावाच्च ॥ सज्ञाया आदित्वात् ॥ (वैशे० ४-२ ६,१०)

४ सम्त्ययोनिजा ॥ (,, ४ २ ११)

५ वेद लिङ्गाच्च ॥ (वैशे० ४ २ १२)

— सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला —

राम स्नेही

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास मे ऋषि ने राम स्नेही मत पर लिखा है। इसकी दो शाखायें हैं एक शाहपुरा मेवाड वाली दूसरी सिंहथल वाली। मुझे प्रथम शाखा के विषय मे कोई पुस्तक नहीं मिला है परन्तु दूसरी के विषय मे एक पुस्तक मिला है। उसके मिलने की भी कथा है। मैं एक बार बीकानेर गया था। स्टेशन से जो सगा लिया वह मुझे प्रथम राम स्नेही मन्दिर में लेगया वहा पूछ कर फिर मैं आर्य समाज मे पहुँचा। एक आर्य समाजी सज्जन से मैंने राम स्नेही मत के सम्बन्ध मे पूछा उसने कहा उनकी धर्म पुस्तक छपी हुई है

हो और न छोटे बालक किन्तु (महान्) युवा हो।२

नोट—सायणाचार्य ने भी शिशु और कुमार न होने और महान होने का भाव भी यही लिया है "सर्वेयूयं सवयसो नित्य तरुणा भवथ"।

मन्त्र मे स्पष्ट रीति से अमैथुनि सृष्टि मे उत्पन्न प्राणियों की अवस्था वर्णन की गई है। इसलिए अमैथुनि सृष्टि मे युवा प्राणियों का उत्पन्न होना न अस्वाभाविक है और न प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध।

२ न हि वो अस्त्यर्भको देवा सो न कुमारक.। विश्वे सतो महान्त इत ॥ (ऋ० ८ ३० १)

—

मैंने उनको ही पुस्तक लाने के लिए भेजा। वह उत्तर लाय कि वह कहते हैं हम उसको देते हैं जो तम्बाकू आदि मादक द्रव्यों का सेवन न करता हो। मैंने कहा यह व्यसन मुझे नहीं हैं। जब जाकर यह कहा तब महंत ने कहा हम आपको पुस्तक न देंगे। उस समय यह बात समाप्त हो गई। परन्तु उस आर्य सज्जन ने चलते समय मुझे कहा मैं आपको पुस्तक अवश्य भेजूंगा। सचमुच कुछ मास पश्चात् मुझे वह पुस्तक मिल गई। उसका नाम है श्री राम स्नेह धर्म्म प्रकाश' इसके प्रकाशक चौकसराम जी सिंहथल निवासी हैं। यह पुस्तक प्रथम बार विक्रमा १९८७ तदनुसार ईसवी १९३१ मे निर्णय सागर मुंबई मे छपी है। इसमे अनेक महात्माओं के वचनो का सग्रह है।

सत्यार्थ प्रकाश में निम्न पाठ है अब

दूसरी इनकी शाखा 'खेडाया ग्राम मारवाड से चली है। उनका इतिहास एक रामदास नामक" • • "'सीथल' मे ढेढों का गुरु राम दास था उससे मिला उसने उसको रामदेव का पंथ बताके अपना चेला बनाया। उस रामदास ने खेडाया ग्राम मे जगह बनाई और इसका इधर मत चला' एकादश समुल्लास। सीथल पर समर्थदास ने टिप्पणि दी है कि सीथल जोधपुर राज्य में एक बड़ा ग्राम है। वह हुन्री जी को ग्रम है। सिंहथल

बीकानेर राज्य में है और बीकानेर से ६ कोस है जो रेल बीकानेर से हिसार को जाती है उस पर स्टेशन है।

ऋषि ने इस मत में राम नाम जप का विधान माना है। पुस्तक में प्रथम इस शाखा के महंतों के नाम लिखना उचित समझता हूँ ताकि पाठकों को ठीक २ पता लग जाय इस पुस्तक के आरम्भ में ही परिचय शीर्षक से जो पाठ दिया है उसमें लिखा है श्री रामानुज स्वामी की २३ वी पीढ़ी में श्री रामानन्द स्वामी हुए, और इनकी ११ वी पीढ़ी श्री जैमल दास जी महाराज हुए। आप सांवतसा ग्राम (बीकानेर) में रहते थे और मन्दिर की पूजा करते थे। १७६० में उनको बोध प्राप्त हुआ पश्चात् आप दुलचोसा और फिर रोडे ग्राम में रहे १८१० में इनका शरीरांत हो गया दुलचासा और रोडा में इनके रामदास नामक शिष्य ने मकान बनवाये थे जो सिंहथल के गुरु स्थान माने जाते हैं यह वैष्णव हैं।

आगे रामस्नेही सम्प्रदाय इस प्रकार है। सिंहथाल ग्राम में 'हरि रामदास का जन्म भाग्यचंद जोशी ब्राह्मण के घर हुआ आप जैमलदास जी के शिष्य हुए और सिंहथल में गद्दी बनाई। १८३४ में आपका देहांत हुआ उसके पश्चात् क्रम से श्री बिहारीदास जी, श्री हरदेवदास जी, श्री मोतीराम जी, श्री रघुनाथ दास जी, श्री चेतनदास जी, श्री रामप्रताप जी महंत हुए। पुस्तक छपने के समय यही सिंहथल के महंत थे।

खेडाया स्थान बनने का कारण इस प्रकार है। श्री रामदास जी का जन्म १७८३ विक्रमी में बीकोंकोर ग्राम जो जोधपुर राज्य में है हुआ था। आप बड़े होकर शाक्तिक हो गए। भ्रमण करते थे और औघड़ रूप रखते थे सिंहथल आकर शिष्य बनना चाहा श्री हरिरामदास जी ने कहा रामस्नेही आप जैसे औघड़ नहीं होते हैं। अन्त में शिष्य हो गए। १८०६ में शिष्य हो गए और १८२२ में खेडाया जाकर ठहरे और स्थान बनाया और सहस्रों शिष्य बनाकर रामस्नेही मत का प्रचार किया। १८५५ में आप परधाम पधारे। इनके पश्चात् श्री दयालुदास जी महंत बने १८८५ में देहावसान हुआ, पश्चात् पूर्णदास जी महंत बने यह १८८८ को मालवा प्रांत के मेलकी ग्राम में वैश्य वंश में उत्पन्न हुए थे १८८५ में महंत हुए इनके पश्चात् श्री अर्जुनदास जी तदनन्तर श्री हरलाल दास जी श्री लालदास जी महंत बने जो पुस्तक छपने के समय पर महंत थे।

वह क्रम से सिंहथल और खेडाया की गद्दी के महंत हैं। शाहपुरा का विवरण कोई लिख देंतो अच्छा है क्योंकि मुझे उसका कोई पता नहीं है। शाहपुरा में राजाधिराज उम्मेदसिंह जी हैं उनके स्वर्गीय पिता जी ऋषि के शिष्य थे वहां से पता लेना सहल है।

राम जप को ही यह मुख्य मानते हैं।

(१) राम नाम नहिं चेतयो कर कर मन की ढोल। पृष्ठ ६६

(२) राम बिना कुण रखसी ज्यूं खेती किरसान। पृष्ठ ६८

(३) निशि दिन सुमरे राम कबू नहिं भूलरे। पृष्ठ ५६

राम शब्द प्रमाण संग्रह पृष्ठ ८४ से ९३ तक किये हैं पुराण तंत्र, साधु वचन, राम तापनी आदि उपनिषद जहा कहा मिला संग्रह किया है। इसलिये यह राम राम जप से मोक्ष प्राप्ति मानते हैं।

आरभ मे राम स्नेहियों के सिद्धान्त दिये हैं।

रामस्नेही धर्म के १५ नियम

(१) निर्गुण निराकार एक रामजी का ही इष्ट रखना और उन्हें निर्लेप निरजन परमेश्वर की पराभक्ति से उपासना करना।

(२) वेद, श्रुति, स्मृति गुरुवाणी, शास्त्र, आर्षग्रंथ, पुराण, आप्त वाक्यों को मानना और सद्विद्या का प्रचार करना।

(३) पाठपूजन सध्या वन्दनादि नित्य कर्मों का पालन करना और शरीर के सारे सुखों को छोड़कर निरन्तर राम स्मरण पूर्वक योग भ्यासी होना।

(४) सद्गुरु और संतों की आज्ञा मानना उनको ईश्वर रूप जानना और सत्सग को परम लाभ समझना।

(५) अपने सर्व व्यवहारों को ईश्वराधीन जानना और हिंसा रहित सत्य धर्म युक्त सात्विक उद्यमी होना।

(६) भोजनाछादन की चिंता न करना और न किसी से याचना करना केवल सर्वशक्तिमान एक ईश्वर का ही आशा विश्वास रखना।

(७) ईश्वर के अर्पण किया हुआ प्रसाद ग्रहण करना अन्य देवताओं के प्रसाद का स्पर्श तक न करना और न अन्य देवताओं को देवत्व बुद्धि से मानना।

(८) शील, संतोष, त्याग, वैराग्य, क्षमा, सरलता, धृति, आदि धारण करना और हितमित सत्यभाषी होना।

(९) काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, अभिमान, ईर्षा, निन्दादि का त्याग का अत करण शुद्ध रखना संयम नियम से रहना और स्त्री मात्र को माता बहन समझना।

(१०) जल छान कर पीना, रात्रि में भोजन न करना जीव रक्षार्थ पाव देख कर धरना और चातुर्मास मे विहार न करना अर्थात् एक जगह रहना।

(११) दूसरों के सुख दु ख हानि लाभ को अपनी ही तरह समझना। और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानना।

(१२) मानापमान रहित होकर तन मन वचन से परोपकार करना और सपूर्ण प्राणी मात्र को एक ही आत्मरूप से देखना

(१३) भाग, तम्बाकू, अफीम, पोस्त, गाजा, चरस, सुलफा आदि नशों से तथा मास, मदिरा जुआ आदि सर्व व्यसनों से रहित होना और व्यसनी व बुरे पुरुषों को संगति से बचना।

(१४) बाह्याडबर में रत न हो शुक्ल अथवा सात्विक रग रंजित वस्त्र धारण करना और हर समय ईश्वर को याद करते रहना।

(१५) भ्रमात्मक भीरु हट में न फस कर सद्गुरु द्वारा प्राप्त वेदानुकूल सत्पथ का अनुसरण करना।

"लोकसेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है'

श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के एक भाषण का सार

आज कल लोग ईश्वर की उपासना के लाभ पूछते हैं। मैं ऐसे लोगों के विश्वास के लिए यह मजमून रख रहा हूँ कि हमारे पास ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है। यदि आप किसी मुसलमान से यह प्रश्न करें तो वह कहेगा कि हम खुदा की इबादत करते हैं। "इबद" का अर्थ बंदा है अर्थात् वे अपने खुदा के सामने अपने बंदा होनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। और उससे शब्द बन्दगी निकला है लोग आजकल प्राय एक दूसरे को बन्दगी करते हैं। हिन्दू भी प्राय ऐसा करते हैं। तो ऐसा कह कर अपने आपको गुलाम बनाया जाता है। इसलिये कम से कम हिन्दुओं को ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिये। अब आप एक सनातनी से पूछ वह कहेगा कि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। भक्ति का अर्थ सेवा है। परन्तु आर्य-समाज की उपासना का अर्थ है परमात्मा के निकट होना। परमात्मा के नजदीक रहने का क्या है मतलब इसके साथ ही मुसलमानों की इबादत और सनातनियों की भक्ति इन तीनों चीजों पर रोशनी डालूगा।

मैंने एक बार दीनानगर के एक शास्त्रार्थ में मुसलमान भाई से पूछा कि आप बतलाए कि इस नमाज का क्या अर्थ है। इससे क्या लाभ है? उसने फरमाया कि हम ख़ुदा का अदब बजा लाते हैं। मैने उनसे पूछा कि क्या खुदा इससे प्रसन्न हो जायगा, क्या वह बाह्य चीजों से प्रसन्न होता है या अभ्यंतरिक भाव देखकर? यदि आन्तरिक भाव देख कर तो बाह्य दिखावट का क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मैंने यह प्रश्न किया कि सचमुच खुदा प्रसन्न होगा, यदि वह खुश होगा तो उसमे तबदीली आ गई। आपने एक कुरानशरीफ की आयत पढ कर इस बातको दर्शाया कि ख़ुदा ने अपने बन्दों को इबादत के लिए उत्पन्न किया उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं इस लिए उस में तब्दीली नहीं आती। तो फिर खुश करने का क्या अर्थ? वह भाई उससे आगे न चल सका। अब आर्य्य-समाज की उपासना को लें। हम पर यह प्रश्न किया जाता है कि उसके समीप जाने का क्या अर्थ है? क्या परमात्मा दूर है जो इसके निकट जाएं। हमारा कहना यह है कि परमात्मा और जीव के

गुरुवाणी से उद्धृत

यह नियम किसी गुरू ने तो नही लिखे हैं वाणी से भाव लेकर बनाए गए हैं।

रामस्नेही राम का जप करते हैं। गुरू बनाना आवश्यक है. स्त्री-पुरुष प्रत्येक बनाता है। यही इनका सार है।

अन्दर मकानी (दैशिक) या जमानी (कालिक) कोई फासला नहीं। मतलब यह है कि यदि हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करलें तो हम उसके निकट चले जायेंगे। परमात्मा हर स्थान पर विद्यमान है। वह जीव के साथ रहता है। हम में और उसके मध्य इलमी फासला है। उदाहरण रूप में कई वस्तुये हमारे निकट होती हैं परन्तु हमें पता नहीं चलता। कई बार लेखनी कान में होती है हम उसे मेज पर ढूढते हैं। गाजिआबाद में एक बार मैंने अंधकार मे अपना उपनेत्र(ऐनक)पगड़ी में रख दिया। जब ऐनक का ख्याल आया तो हम इधर उधर ढूंढते रहे। अन्त में सिर की पगड़ी में से मिल गई। मतलब यह कि यह इलमी भूल थी परमात्मा जाहिलों [मूर्खों] से दूर है और आक़िलों [बुद्धिमानों] के समीप है।

अब सनातनियों की भक्ति को लीजिए। मैंने एक भाई से पूछा कि सेवा के क्या अर्थ हैं वह ख़िदमत के अर्थ न कर सका। मैंने कहा कि समय पर किसी मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करना ख़िदमत कहलाता है। अर्थात् आवश्यकता पूरा करना। अब आवश्यकता किसे कहते हैं ? मुझे एक बार अध्यापक ने आवश्यकता का अर्थ बताया कि जिस वस्तु के बिना हमारा जरूर नुक़सान हो उसे जरूरत कहते है। अर्थात् जिस वस्तु के बिना हम रह नहीं सकते वही जरूरत है। यदि हम जल न पिएं तो मर जायें। परन्तु क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि जिस ईश्वर की आप जरूरियात (आवश्यकतायें) पूरी कर रहे हैं, उसकी आवश्यकतायें क्या हैं ? हम किसी को प्रसन्न करने के लिये सबसे प्रथम यह देखते हैं कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। मै एक मनुष्य के घर अभ्यागत रूप से जाता हूँ। वह मुझ से पूछता है कि आप क्या खायेंगे ? वह पूछता है कि आप चाय पीवेंगे ? मै कहता हूं कि चाय मैंने कभी नहीं पी। तब वह कहता है कि अच्छा दूध पीलो। मैंने कहा दूध रात को पीता हू, वह कहता है कि अच्छा पूरी खालो, रोटी खालो। मै कहता हूं कि अभी रोटी की जरूरत नहीं। गर्ज़ेकि वह ऐसी चीज ढूंढना चाहता है जिससे कि वह मुझे प्रसन्न करे। परन्तु कभी चूक भी हो जाती है। भाषा की गलतफहमी हो जाती है। और सेवा बेजा रीति से भी हो सकती है। एक बार लाला लाजपतराय जी गुजरात काठिया-वाड़ मे गये। वहा उन्हें एक सज्जन ने चाय पर बुलाया। चाय पेश की जब और देने लगे तो लाला जी ने कहा कि काफी है। उन्होने फिर पूछा फिर लाला जी ने कहा कि काफी है। काफी का अर्थ यह है कि और नहीं चाहिये परन्तु उन्होंने उसको "पीने वाली" समझा। और वह काफी बनाकर लाला जी के सामने ले आए। इस प्रकार बेजा तरीके पर भी ख़िदमत हो सकती है। एक रोगी को बादाम का हलवा खिला दिया जाय तो यह उसकी सेवा नहीं है बल्कि हानिकारक है। एक वृद्ध को यदि कठिन लड्डू दे दिये जायें तो वह अप्रसन्न हो जाएगा। इसी प्रकार किसी का उदर भरा हुआ हो, उसे खाने के लिए दिया जाए और जो भूखा है उसे न खिलाया जाय यह भी एक गलती है।

मूर्ति को हलवा खिलाया जाता है किन्तु वह उस के होंठो के आगे नहीं जाता, सब जानते हैं। देहली मे स्त्रिया एक स्थानपर मूर्ति की पूजा करती हैं। वहा पर कई पदार्थ खाने के लिये पेश किये जाते हैं। एक बार मुझे उधर से गुजरने का अवसर मिला। देखा स्त्रिया मूर्ति के मुख पर हलवा लगा रही हैं। मैने सोचा चलो इन्हे कुछ उपदेश ही दे चलें। मैने मूर्ति के समीप जाकर देखा कि मूर्ति के होटों पर हलवा कई दिनों से चिमट कर सूख गया है और लकडी की तरह हो गया है। मैने देवियों से कहा यह तो पहला हलवा भी नहीं खाती और इसे क्यों खिलाती हो देख लो यह कितने दिन का हलवा इसपर लगा हुआ है। देविया देख कर हस पड़ी। मैने कहा यह मूर्तिया कुछ नहीं खाती। यदि यह खाने लग जावें तो सब से पहले उनका विरोध पुजारी ही करेंगे क्योंकि अगर मूर्तिया ही सभी कुछ खा जावें तो पुजारियों को क्या मिले।

परमात्मा पूर्ण है उसे किसी वस्तुका आवश्यकता नही, परन्तु फिर भी कोई लड्डू ले जारहा है कोई फूल। ईश्वर पूर्ण है और प्रकृति जड। जो चीज पूर्ण है वह किसी से कुछ नही चाहती वह दूसरों के लिये है प्रकृति न अपने सम्बन्ध मे कुछ जानती है और न किसी के विषय में, किन्तु ईश्वर अपने आप को भी जानता है और दूसरों को भी। एक ईश्वर पूर्ण है और दूसरी प्रकृति। न ईश्वर को किसी चीजकी आवश्यकता है न प्रकृति को। उन से कोई चीज ली जा सकती है, उन्हें दी नही जा सकती। आर्य समाजी उपासना करना चाहता है ईश्वर के समीप बैठना चाहता है इसलिए कि ईश्वर से कुछ लेकर उस की खिदमत करे। अब खिदमत किस तरह की जाती है। आप एक पडितजीके घर जाते हैं और एक हाथीका खिलौना भी उनके घर ले जाते हैं। आप पडितजीके लड़के को वह हाथी देते हैं और कहते है कि लो बालक। इस पर सवारी करो। पडित जी बहुत प्रसन्न होगे और आपका सत्कार करेंगे। परन्तु यदि वही हाथी आप लेकर पण्डित जीसे कहे पण्डितजी! यह है आप की सवारी के लिये, पण्डितजी अति क्रोध करेंगे। उनकी स्त्री अलग नाराज, बच्चा दूर दूर। अब हाथी को दोनो अवस्थाओं मे एक हो घर मे रहना है फिर कारण क्या है कि बच्चे को देने पर पण्डित जी खुश पर जब उन्हे दिया गया तो नाराज।

लोक सेवा ही ईश्वर की खिदमत है। पण्डित को उस हाथी की जरूरत नहीं किन्तु उस के लिये वह अत्यन्त हेय है परन्तु यदि उसे दिया तो वह बड़ा नाराज होगा। क्या ईश्वर नाराज न होगा। यदि उस किसी वस्तुकी आवश्यकता न हो और दी जाय। यदि वही चीज उस के बच्चों को दी जाय तो वह प्रसन्न होगा। और यह उस की सेवा है, भक्ति है। खिदमते खलक भी ईश्वर की उपासना और खिदमत है और अगर उस के बच्चों को लाभ पहुचेगा तो ईश्वर प्रसन्न होगा। अब आप सब शंका मे पड़ जाएगे कि यदि लोक सेवा ही ईश्वरकी उपासना है तो दो समय संध्या पढने की क्या आवश्यकता है। इसके सम्बन्ध में आप को बतलादू कि दो समय संध्या पढना जरूरीही है। सध्या करना अपने आपको खलक की सेवा के लिये तय्यार करना है।

हिन्दू-समाज में स्त्री

एक अंग्रेज महिला के विचार

अभी हाल में लंदन में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है और वह थोड़े अर्से में ही काफी अप्रिय हो गई है।

'मनुष्य के हाथ की कठपुतली' पुस्तक का यह नाम है। उसकी लेखिका कोई मिस (कुमारी) साउथगेट हैं, जिसका दावा है कि वह भारतवर्ष को प्रेम करती है। परन्तु जो व्यक्ति भारतीय लोगों को बहुत निकट से जानता है और स्वयं कुमारी जी भी ऐसा ही कहती हैं उसके लिए उनकी लम्बी गाथा पर स्वीकृति की मुहर लगा देना कठिन है। उन्होंने हिन्दू देवियों को बदनाम करने की चेष्टा की है।

पिछले कई वर्षों से कीचड़ उछालने वालों की जो सेना अस्तित्व में आई हुई है कुमारी जी उस की ताजा रंगरूट हैं। इन लोगों ने हिन्दू रस्म रिवाजों और रहन-सहन की खिल्ली उड़ाना और सच्चाइयों को तोड़ मोड़ कर भोली भाली जनता के समक्ष रखना अपने जीवन का ध्येय बना रक्खा है।

सचमुच इस प्रकार के द्वेष पूर्ण प्रचारकों की जितनी निन्दा की जाय थोड़ी है। जिस बात या प्रणाली का उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान न हो वा लेश मात्र ज्ञान हो उसपर आक्रमण करने के लिए वे क्यों मैदान में आते हैं ? मुझे आश्चर्य है।

अपने निज के वास्तविक अनुभव से मैंने हिन्दू देवियों को कई बातों में उनकी पाश्चात्य देशों की बहनों से कहीं अच्छा पाया है, ऐसी अवस्था में मिस मेयो और साउथगेट जैसी शरारत फैलाने वाली प्रचारिकाओं की वे दया की पात्र नहीं हैं।

निःसन्देह हिन्दू रीति रिवाज ऐसे नहीं हैं जो हवा मे उड़ाये जा सकें। वे सर्व साधारण के समझने योग्य हैं और अनुपम तर्क पर आश्रित हैं।

'आलोचना स्वतन्त्र होती है परन्तु सचाइयां पवित्र होती हैं।' हिन्दू धर्म को स्त्रियों के प्रति अभिशाप रूप में जाहिर करना ग़ैर जिम्मेदारी की पराकाष्ठा है। स्त्रियों के प्रति हिन्दू धर्म का दृष्टि कोण हजारों वर्षों की परम्पराओं पर आश्रित है और हिन्दू लोग उजड्ड और पशु होने के बजाय स्वयं बुद्धिमान और सभ्य हैं

श्रीमती सेसिल चेस्टर टन इस समय (Cecil chesterton) 'इधर उधर बहती हुई स्त्री' शीर्षक एक मनोरंजक लेख-माला लिख रहीं है। यह उन लड़कियों की अत्यन्त कारुणिक कहानियों का संग्रह है जो हिन्दू समाज में पाशविक अत्याचारों का शिकार बनाई दिखलाई जाती हैं।

मैक्समूलर ने जब हिन्दुओं को 'दार्शनिकों की जाति' कहा था तो उसने बहुत बड़ी ग़लती नहीं की थी। हिन्दुओं की सामाजिक प्रणाली

शताब्दियों के विचार और अनुभव का भव्य परिणाम है।

समष्टि रूप से यह पूर्ण है। हिन्दुओं की प्रत्येक प्रथा अकाट्य नियमों से शासित है और ये नियम प्रकृति से प्राप्त किए गए हैं। हिन्दुओं के सर्व श्रेष्ठ मस्तिष्कों ने सामाजिक समस्याओं की ग्रन्थियों को कई युग व्यतीत हुए उस समय ही सुलझा दिया था जब पश्चिम के लोग जो आज पूर्व के ज्ञान विज्ञान के पुनर्निर्माण की कल्पना करते हैं घोर अन्धकार, अज्ञान और अन्ध विश्वासों मे डूबे हुए थे।

हिन्दू घरानों में विवाह बहुत कम असफल रहते हैं। मैं यह बात दावे के साथ कहती हूँ क्यों कि मैं जानती हूँ, मै ठीक हूं। मैं असंख्य हिन्दू महिलाओं के साथ आज़ादी के साथ रही हू। और मैने उन्हें प्रसन्न और अपनी दशा में संतुष्ट पाया है। यह भी तब जब कि उनमे से बहुतों की बहुत छोटी उम्रों में शादी हुई थी जिस प्रथा के विरुद्ध समालोचक ज़मीन आस्मान एक कर देते हैं।

हिन्दू समाज में पहले विवाह और बाद को प्रेम होता है। विवाह सूत्र में बंधकर लड़के और लड़की निरन्तर बढ़ती हुई मात्रा में एक दूसरे की ओर आकर्षित होते रहते हैं और धीरे २ वे अनश्वर पारस्परिक प्रणय में बन्ध जाते हैं। विवाह के बाद कुछ समय तक एक दूसरे से बोलने भी नही दिए जाते हैं (इस प्रथा का तेजी के साथ अन्त हो रहा है)

इस प्रकार के प्रतिबंध दोनों को एक दूसरे के अधिक निकट ही लाते हैं। कभी२ होने वाली पारिवारिक कटुता के होते हुए भी समष्टि रूप से उनका जीवन सुखमय होता है और वे सुख दुख मे प्रेम और प्रीति के साथ एक दूसरे के प्रति सच्चे रहते हैं। यदि यह प्रेम नहीं है तो मै जानना चाहूँगी वह क्या है?

हिन्दुओं मे विवाह अटूट और पवित्र सम्बन्ध होता है। अग्नि के सामने वर और वधू प्रतिज्ञाएँ करते हैं और जीवन पर्यन्त अग्नि उनका साक्षी रहता है। यह विषय बड़ा गम्भीर होता है। यदि विवाह अवाञ्छनीय होते हैं तब भी वैवाहिक पवित्रता उन विविध बुराइयों से जो मेरे अपने देश के वैवाहिक जीवन में पाई जाती है विनष्ट नहीं होती।

सचमुच हिन्दुओं की सामाजिक प्रथा स्त्रियों मे अत्यन्त प्रिय गुणों के विकास और रक्षण के लिये हितकर है। हिन्दू देवी की आकर्षक लज्जा, निष्कलङ्क सतीत्व, वीरोचित आत्म-समर्पण और दया और सहानुभूति देखते ही बनती है। यह प्रथा उसमे ऊँचे नैतिक गुण और विशेषताएँ कूट २ कर भरती है। यह प्रथा उसमे स्वाभाविक सुकुमारता और विशुद्ध प्रेम का सचार करती है।

औसत हिन्दू देवी प्राय धर्म परायण, प्रेममयी, गंभीर, विनम्र और लज्जाशील होती हैं। वह मनुष्य की संगिनी होती है, प्रति स्पर्द्धनी या अमित्र नहीं होती। उसका पति उसका भली भाति पालन पोषण करता है और वह उसके लिये तन मन धन सब कुछ न्यौछावर करने को उद्यत रहती है।

विधवाओं के सम्बन्ध में ही केवल हिन्दू प्रणाली कठोर देख पड़ती है।

समय के प्रवाह ने हिन्दू समाज प्रणाली में अवाञ्छनीय परिवर्तन उपस्थित कर दिया है। इसका मुख्य कारण आधार भूत सिद्धान्तों के न समझने की भूल ही है।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (स्वर्ण जयन्ती महोत्सव)
आर्य वीर सेवादल सम्मेलन के सभापति श्री ला० देशबन्धु जी एम०एल०ए० का
अभिभाषण

परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है, उसने हम ऋषि सन्तानों को ससार मे सर्व श्रेष्ठ मर्यादाओं, आदर्शों और उत्तराधिकार का अधिकारी बनाया, जिनको लेकर हम अब भी अपनी असहायावस्था मे गर्व अनुभव कर सकते हैं। उन्हीं आदर्शों और परम्पराओं में से हमारा 'सेवा' का चमकता हुआ आदेर्श है। हमारे पूर्वजों ऋषियों और महर्षियों ने, सुधारकों और धर्म गुरुओं ने, राजाओं और साधारण स्त्री पुरुषों ने, राजकुमारों और राजकुमारियों ने अपने उदाहरण से सेवा के इस आदर्श को गौरवान्वित किया है। हमारे सेवा के आदर्श का मुख्य स्वर परोपकार भावना से, फल की कामना के बिना पीड़ित मानव समाज की बौद्धिक, आर्थिक आध्यात्मिक और शारीरिक सेवा करना रहा है और सेवा-धर्म के उचित पालन के लिए त्याग, बलिदान और आत्म समर्पण मुख्यतम योग्यतायें रहीं हैं। हमारी सेवा का क्षेत्र विशाल मानव समाज रहा है और देश या समाज विशेष तक सीमित नहीं रहा है। हमारी 'सेवा' का अर्थ आत्म विकाश एवं जीवन की सर्वाङ्गीण पूर्णता की सिद्धि करना रहा है। हमारा आदर्श धर्म्म भावनाओं से ओत प्रोत धर्म की दृढ़ चट्टान पर केन्द्रित है। सचमुच धर्म के बिना हमारे यहां समाज सेवा की बात सोची भी नहीं जा सकती है।

बुद्ध और महावीर की अहिंसा में, महात्मा ईसा की पर दु:ख कातरता में, शङ्कर और दयानन्द के बलिदान में तथा अन्यान्य असंख्य ज्ञात और अज्ञात महान आत्माओं के त्याग और उत्सर्ग में सेवा के इस महान आदर्श को हम प्रतिष्ठित, गौरवान्वित और प्रतिध्वनित होते देखते रहे हैं और श्रद्धा और प्रेम से अनायास ही हमारा मस्तक उनके चरणो मे झुकाता रहा है। दुर्भाग्य से हम अपनी इन श्रेष्ठ मर्यादाओं और आदर्शों को भूल गये थे। हमें पता नहीं था हम किस बहुमूल्य उत्तराधिकार के अधिकारी हैं। परमात्मा को किन शब्दो में धन्यवाद दें जिस की असीम कृपा से देश में दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ और उस महान आत्मा ने हमे हमारे उत्तराधिकार से परिचित करा के उसकी रक्षा के लिए आर्य समाज को जन्म दिया और सेवा के गौरवमय आदर्श को हमारे सम्मुख उपस्थित किया।

आर्य्य समाज ने सेवा के इस पुनीत आदर्श को पुन प्रतिष्ठित और जीवित किया है। आर्य समाज की उन्नति में जहां महर्षि के त्याग, तप और बलिदान तथा आर्य समाज के महान सिद्धान्तों का योग रहा है वहां आर्य समाज के सदस्यों के निस्वार्थ-सेवा के पुनीत व्रत ने भी कम योग नहीं दिया है। दुर्भाग्य से सेवा का यह आदर्श हम से दूर होता जा रहा है और निष्काम भाव का स्थान स्वार्थ भाव, मान प्रतिष्ठा और पद लोलुपता के भाव ले रहे हैं। आत्म समर्पण का स्थान आत्म-संवर्द्धन ले रहा है।

श्रद्धा पर कुतर्क भावना विजयी हो रही है। इसी कारण हमारे सामाजिक जीवन में विप्लव मचा हुआ है।

इसका दुष्परिणाम यह हुआ है कि समाज-सेवाके क्षेत्र से हम दूर होते जा रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि असंख्य आर्य्यवीर निष्काम सेवा के पुनीत व्रत से दीक्षित होकर मैदान में आएं और समाज सेवा तथा आर्य्य-समाज के कार्य्य को पुन उच्च पद पर आसीन करें और उसे अधिक से अधिक जितना सम्भव हो गौरवान्वित, विस्तृत और प्रकाशित करें। आर्यवीरों को हताश नहीं होना चाहिए। आशा के भावों और पवित्र उद्योग से उन्हें कार्य्य में जुट जाना चाहिए। उनके लिए सेवा का विशाल क्षेत्र मौजूद है। सफलता यश और कीर्ति स्वयं उनकी ओर दौड़ी चली आयगी। निश्चय ही हमें अब सेवा को नया रूप और नयी प्रेरणा देनी है और इसके लिए सगठित प्रयत्न की ज़रूरत है।

आर्य्य समाज के प्रत्येक सदस्य पर हर प्रकार की सेवा का उत्तर-दायित्व है और समाज का प्रत्येक सदस्य आर्य्यवीर है। परन्तु यहां प्रश्न उपस्थित होता है कि जब आर्य्य समाज के सुदृढ सगठन के भीतर रहते हुए आर्य्यवीर सेवा कर सकता है तो फिर आर्य्यवीर सेवा दलों के पृथक सगठन की क्या आवश्यकता है? हमारा यह निवेदन है कि सेवा जैसे गहन और कठिन कार्य को सगठित रूप मे करने के लिए आर्यवीर सेवा दलों की स्थापना नितान्त आवश्यक है। आज आर्य्य समाज में प्रचारकों की कमी अनुभव की जा रही है जो भी हैं वे निर्वाह मात्र लेकर प्रचार करने वाले प्रचारक तथा इने गिने सन्यासी महानुभाव हैं। हम मानते है इनकी आवश्यकता रहेगी परन्तु दल प्रचारको के अभाव को बहुत कुछ दूर करके समाज को सुपरीक्षित और सुनियन्त्रित सेवक प्रदान कर सकते हैं। आर्य्य समाज की सेवा के प्रत्येक क्षेत्र मे भले ही वह प्रबन्ध सम्बन्धी हो या प्रचार सम्बन्धी हो, साहित्यिक हो या जनोपकारक हो, आर्य्य वीर बहुत उपयोगी कार्य्यकर्त्ता सिद्ध हो सकते है। कौन जानता है इन्ही वीरों मे से समाज को लेखराम, गुरुदत्त और श्रद्धानन्द जैसे सेवक प्राप्त हो जाय।

सन् १९२७ मे पर्यन कांग्रेस देहली के अवसर पर आर्य्यवीर दलों के आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। उस समय ये दल आर्य्य समाज के अधिकारों की रक्षा के तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अस्तित्व मे आये थे और जनोपकारक (Humanitarian) कार्य्य तथा समाज सेवा के आदर्शो को प्रचारित करने के लिए इस दल का एक सेवा विभाग पृथक नियत कर दिया गया था। हम लोगो ने और हमारे आर्य्य समाजो ने इन दलों के संगठन के प्रति असम्य उदासीनता दिखलाई है। इसका कारण हमारी लापरवाही हो सकती है या इन दलो की आवश्यकता और उपादेयता की अस्पष्टता हो सकता है परन्तु जहा तक मैंने विचार किया है एक मुख्य कारण किसी ऐसे कार्य्यक्रम का अभाव भी है जो आर्य्य वीरो को सेवा कार्य्य में सलग्न रख सकता। अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि कोई ऐसा कार्य्यक्रम बन जाय जो उनके सामने स्थिर कार्य रख सके। सौभाग्य से कहो या दुर्भाग्य से आर्य्य समाज अधिकारो के रक्षक

की परीक्षा में अभी तक नहीं उतरा है। यदि कहीं उतर जाता तो निश्चय ही इस प्रकार के सुसंगठित दलों की आवश्यकता के प्रति उसकी आंखें खुल जातीं। सेवा दल जहां २-४ देख और सुन पड़ते हैं वे मेलों, कान्फ्रेंसों और सम्मेलनों इत्यादि के प्रबन्ध में अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ बैठते हैं और ट्रेनिंग के अभाव में उनकी सेवा का कोई महत्व नहीं होता है। आर्य्य समाजों को इन दलों के संगठन के प्रति उदासीनता और अकर्मण्यता नहीं दिखानी चाहिए। उन्हें अपना सुदृढ़ अंग बनाना चाहिए और अपने अधीनस्थ संगठनों इत्यादि की भांति उनकी देख रेख और सहायता करते रहना चाहिए। जहां तक संभव हो आर्य्य वीरों को सेवा में लगाना चाहिए। सेवा कार्य के लिये उन्हें हर प्रकार की सहायता और सुविधाएं प्रदान करनी चाहिये। सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को भी इन दलों के संगठन में पूरा सहयोग तथा सहायता प्रदान करनी चाहिए।

आर्य्य वीरों के लिए उत्तम से उत्तम ट्रेनिंग की व्यवस्था होनी चाहिए। बाय स्काउटिंग, सेवा-समिति की नाईं-जनोपकारक सेवा के लिए उन्हें तैरने, निशाना मारने, राइफल चलाने और फ़र्स्ट एड इत्यादि के शिक्षण का प्रबन्ध होना चाहिए। फ़ौजी शिक्षा की भी यथा संभव व्यवस्था होनी चाहिए। सदाचार, निष्काम भाव से चुपचाप विनम्र भाव में सेवा करना, अनुशासन इत्यादि के भाव उनमें अंकित करने का यत्न होना चाहिए। जनोपकारक कार्य्यों के लिए आर्य्य वीरों के ट्रेनिंग कैम्प के खुलने की विशेष आवश्यकता है। हमें अविलम्ब इस आवश्कता की पूर्ति करनी चाहिये।

आज भारत वर्ष को भारत वर्ष के ग्रामों को जगाने की नितान्त आवश्यकता है। प्रसन्नता है देश हितैषियों का ध्यान शहरों से हट कर ग्रामों पर केन्द्रित होगया है। सुपरीक्षित संस्थाएं और कार्य्यकर्त्ता ग्रामोद्धार के संपादन के लिए सेवा के व्रत से दीक्षित होकर ग्रामों में बैठ गए हैं। देश की विविध गवर्नमैन्ट उनकी पीठ पर हैं। ग्रामों में एक प्रकार की मूकक्रान्ति पैदा होने वाली है। आर्य्य समाज को इस क्रान्ति का बड़ी सावधानता के साथ निरीक्षण करते रहना चाहिए। देखना चाहिए कि क्रान्ति की इस लहर में धार्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से हमारे ग्राम, अवांछनीय दिशा में न बह जांय। वहां हमारे गंभीर सिद्धान्तों की व्याख्या और हमारा शुष्कतर्कवाद कार्य्य न कर सकेगा। वहा तो सीधी साधी उनकी सेवा से, उनके दुखों, कष्टों और मुसीबतों के निवारण से उनमें उनकी इच्छाओं और जीवनी में ओत प्रोत होने से उनके आर्थिक सामाजिक राजनैतिक और शिक्षा सम्बन्धी उत्थान कार्य्य करने से ही काम चल सकेगा। बहुत से कार्य्य हैं जो उनके हित के लिए किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ ग्रामों की सफ़ाई उनमें व्याप्त कुरीतियों का निवारण, निरक्षरता का नाश, औषधि वितरण, राजनैतिक अत्याचारों का निवारण, वयस्कों की शिक्षा, अनेकानेक कार्य्य हैं जिन में बाहरी आर्थिक वा अन्य प्रकार की सहायता की ज़रूरत नहीं और जिनके सम्पादन के लिए किसी प्रकार की योजना की ज़रूरत नहीं। जीवन के साधारण व्यवहार द्वारा ही इस प्रकार हम बहुत कुछ सेवा कर सकते हैं।

आर्य्य समाज का संगठन

श्री० पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

श्री प्रधान जी सार्वदेशिक सभा ने एक महत्वपूर्ण सरक्यूलर प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य्यसमाजों के नाम जारी किया है। इसमें आर्य्य समाज के संगठन की आवश्यकता बताई गई है और कांग्रेस तथा आर्य्य समाज के संगठन की तुलना करके यह दिखलाया गया है कि जब तक आर्य्य समाज की शक्ति केन्द्रित न हो उस समय तक आर्य्य समाज के काम को आगे बढ़ाया नहीं जा सकता। वस्तुत यदि आप बड़े बड़े समाजों में भी जाइये और प्रधान या मन्त्री को छोड़ कर अन्य सदस्यों से पूछिये कि प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा क्या है या सार्वदेशिक सभा क्या है तो वे उसके विषय में कुछ भी नहीं जानते। वे तो केवल इतना ही समझते हैं कि आर्य्यसमाज एक चीज है जिसके वे सभासद हैं। दान देते समय भी आज तक मैंने नहीं देखा कि किसी ने प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा को दान दिया हो। क्यों? इसलिए कि हम को इनका पता भी नहीं। आर्य्यसमाज के मन्त्री तथा प्रधानों को वर्ष के अन्त में केवल प्रतिनिधि सभा का याद आ जाती है। वह भी निर्वाचन के समय और विशेष कर उन सज्जनों की बदौलत जो प्रान्तीय निर्वाचन में भाग लेने के लिये उत्सुक हों या विशेष आन्दोलन में भाग लेना चाहें। प्रतिनिधि सभा से कभी कभी उपदेशक आकर मन्त्री या प्रधान को प्रतिनिधि सभा के अस्तित्व का कुछ पता दे जाते हैं। सार्वदेशिक पर तो यह बात भी लागू नहीं होती। कांग्रेस के राष्ट्रपति को कांग्रेस के बाहर के लोग भी जानते हैं। भारतवर्ष के दस लाख आर्य्यों में शायद एक हज़ार भी ऐसे न होंगे जिन्होंने सार्वदेशिक के प्रधान का नाम सुना हो। उनको तो यह भी नहीं मालूम कि इस प्रकार का व्यक्ति भी कोई हुआ करता है। समाज और समाज के मन्दिर या संस्थायें तो प्रत्यक्ष पदार्थ हैं जिनको आर्य्य भाई बहिन रोज़ देखते हैं। प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा तो अदृष्ट अमूर्त और परोक्ष चीज़ें हैं। परोक्षप्रिय तो विरले ही होते हैं और देव कहलाते हैं। प्रत्यक्ष प्रिय हरएक हो सकता है। इसीलिये संगठन नहीं हो पाता। बहुत से आर्य्य, आर्य्य सिद्धान्तों की आवश्यकता है समझते हैं परन्तु आर्य्य समाज की नहीं। वे घर पर संध्या और हवन कर सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश

परमात्मा हमें अपने प्राचीन सेवा धर्म को पुनर्जीवित प्रतिष्ठित और गौरवान्वित करने और समाज में व्याप्त हर प्रकार की अशान्ति और विप्लव को दूर करके सुख शान्ति समृद्धि का प्रसार करने में समर्थ बनाए, इस कामना और शुभेच्छा के साथ अपना भाषण समाप्त करता हूं और आपके प्रेम और वात्सल्य के लिए एक बार पुनः धन्यवाद देता हूं।

पढ़ सकते हैं या उपनिषद् की कथा सुन सकते हैं। फिर आर्य्य समाज का सभासद् होने की क्या आवश्यकता। इसी प्रकार बहुत से समाज प्रचार कर लेते हैं, उत्सव करा देते हैं, यज्ञ आदि का अनुष्ठान कर लेते हैं उनको प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। उनको यह नहीं पता कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा न हो तो आर्य्यसमाज कभी ऐसे झगड़े में फंस सकता है जिससे छुटकारा कठिन हो जायगा। सार्वदेशिक का भी यही हाल है। आर्य्यसमाजें क्या जानती हैं कि सार्वदेशिक सभा से भी उनको कुछ सहायता मिल सकती है या ऐसा अवसर आ सकता है जब सार्वदेशिक के बिना काम न चले। जब प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं का निर्वाचन होता है तो कई सौ सदस्य होते हैं। सार्वदेशिक का निर्वाचन थोड़े ही सदस्य कर लेते हैं। इसलिये इसका गुलशा नहीं होता। इसलिये किसी को ज्ञान भी नहीं पड़ता। यह अवस्था है बड़ी शोचनीय। जो हृदय का अवयवों से सम्बन्ध है वही सार्वदेशिक का समाजों से होना चाहिये। हृदय धड़क धड़क कर सब अंशों को सचेत करता रहता है। इसी प्रकार सार्वदेशिक को भी कोई ऐसा काम करना पड़ेगा कि समाजें उसको जान जाय। इसके लिये मेरी सम्मति में सबसे पहले तो उच्च अधिकारियों का दौरा होना चाहिये। यह दौरा पहले से निश्चित कर लिया जाय और समारोह के साथ होना चाहिये कि आर्य्य समाज के अमुक मुख्य नेता का शुभागमन हो रहा है। हम में बड़ा दोष यह है कि हम अपने नेताओं का मान नहीं करते इसलिये बाहर वाले भी उनको मान की दृष्टि से नहीं देखते। हम समझते हैं कि प्रधान जी तो हम में से ही एक हैं। इन में क्या विशेषता है ? उनको समझना चाहिये कि इतनी विशेषता क्या कम है कि वह हमारी उच्च सभा के प्रधान हैं। कांग्रेस को देखिये। वह भी तो सार्वजनिक संस्था ही है। परन्तु जहां कांग्रेस का प्रधान जाता है राष्ट्रपति, राष्ट्रपति की ध्वनि गूंजने लगती है। शत्रु भी कान बन्द नहीं कर सकते। इससे कांग्रेस का मान बढ़ता है। हमारी सभा के सभापति का भी इसी प्रकार मान होना चाहिये। ऐसा करने में हम अपने किसी व्यक्ति का मान नहीं कर रहे किन्तु अपनी सभा का मानकर रहे हैं। ऐसा करने में जो कुछ काम भी होगा वह व्यर्थ नहीं जायगा। उससे आर्य्य समाज का दूसरो पर अधिक प्रभाव पड़ेगा।

—

हैदराबाद के हिन्दुओं की हीनावस्था

लेखक—रघुनाथ प्रसाद परसाई

हैदराबाद हिन्दुस्तान की सब से बड़ी रियासत है, इसके शासक मुसल्मान हैं, राजनैतिक दृष्टि से वहा प्रजातंत्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रजा की भाषा व संस्कृति की रक्षा की अपेक्षा इसलामी सस्कृति व भाषा हैदराबाद के हिन्दुओं पर लादी जा रही है और राज की नौकरियों में भी ८५ फी सदी मुसल्मानों की तादाद है। मुसल्मानों की मनुष्य सख्या कठिनाई से १५ फी सदी होगी और हिन्दुओं की तादाद ८५ फी सैकड़ा होते हुए भी उन्हें १५ फी सैकड़ा जगह दीजाती है। जहा राजनैतिक क्षेत्र में पक्षपात होता है वहा यदि धार्मिक पक्षपात भी हो तो कोई आश्चर्य नहीं। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि एक ओर दुनिया के सम्मुख निज़ाम महोदय व उनकी सरकार यह ऐलान करती है कि उनकी रियासत में किसी की धार्मिक स्वतन्त्रता पर किसी तरह का आघात नहीं किया जाता व पक्षपात छोड़ सब को समानता की दृष्टि से सरकार देखती है, और दूसरी ओर हिन्दुओं पर नित्य अत्याचार होते हैं तथा उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता पर आघात होते रहते हैं। यही नहीं पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रयत्नों से राज कर्मचारी इस्लाम के प्रचार को उत्तेजना देते हैं और हिन्दुओं की जागृति के मार्ग मे रुकावट पहुँचाते हैं। जहा मुसलमान खुले आम अपना प्रचार करते हैं वहा हिन्दुओं को पग २ पर आज्ञा लेनी पड़ती है, जो कभी मिलती है और कभी नहीं। आर्यसमाजियों का तो पूछना ही क्या है ? न उनको जलसे करने दिये जाते हैं और न उन्हें नगरकीर्तन ही निकालने दिये जाते हैं। हलीखेड़ा आदि अनेकों आर्य समाजियों के वार्षिक उत्सव वर्षों से राज्याज्ञा प्राप्त न होने के कारण बन्द हैं। हैदराबाद में ऋषि दयानन्द का उत्सव तक भी बिना आज्ञा न मनाने दिया गया और सब तैयारियां बन्द करा दी गई। अखिल भारतीय आर्यन कान्फ्रेन्स की इजाजत न मिलने पर निजाम स्टेट में आर्य सम्मेलन करने के लिये आर्य-समाजियों ने दरख्वास्त दी, वह भी अस्वीकृत कर दी गई।

जैसा ऊपर कहा गया है कि एक तो उत्सव आदि के लिए इजाजत नहीं दी जाती और यदि कहीं आज्ञा मिल गई तो नोटिस आदि नहीं लगाने दिये जाते। एक बार ऐसे ही नोटिस लगा देने पर दुबलगुर्दी के नुरनदप्पा को मुन्तजम ने जूतों से पिटवाया। वैसे कानून यह है कि यदि चहारदीवारी के भीतर कोई जलसा हो तो उसके लिए कोई रोक न की जाय पर पुलिस ऐसे जलसे भी नहीं होने देती। उदगीर, हिंगोली, मुरम, कल्याणी आदि स्थानों में ऐसे जलसे रोके जा चुके हैं। कभी यदि जलसे करने की आज्ञा मिल जाती है तो हथियार न रखने, यूनिफोर्म ड्रेस न पहनने आदि की शर्तें लगा दी जाती हैं और प्रोग्राम की

कापिया पुलिस, तहसील व डिवीजन में भेजना लाजिमी होता है। मुहर्रम के माह में हिन्दुओं के विवाह बिना इजाजत नहीं हो सकते। यदि राम नवमी आदि को ऐसा त्योहार आ जाए तो हिंदुओं को बिना बाजे बजाये अपने घर में चुपचाप पूजा करना लाजिमी होता है। हुमनाबाद के नाजिम ने एक बार किसी के मुहर्रम में शादी कर लेने पर मानिक नगर के सैक्रेटरी को कानूनन कार्यवाही करने के लिए लिखा था। आर्य समाज मालेगाव को एक बार राज्य की ओर से लिखा गया कि मोहर्रम के ११ दिन काद जिआरत होते हैं, इसलिए कोई व्याख्यान आदि करने के लिए सरकार की इजाजत नहीं है। रामचन्द्र वल्द आनन्द आर्य राजेश्वर वाले को हिदायत दी गई कि तुम्हारे घर वसी लाल हलीखेड़े से दीवाली पर आए हैं, वे व्याख्यान नहीं दे सकते हैं यदि व्याख्यान देंगे तो कानूनी कार्य वाही की जावेगी। एक साल हो गया जब रघुनाथप्रसाद नागरसौजा को लिखा गया था कि हवन कुंड बाकायदा कायम नहीं कर सक्ते हगरा में दो लड़कों के यज्ञोपवीत किये जाने पर नोटिस दिये गये थे कि कौनसा उत्सव मनाया गया और वे दो लड़के कौन थे। नरसिंग रेड्डी मौजा छागल को तहसीलदार ने लिखा कि तुमने बलदेव नाम का आर्यसमाजी बुलाया और हिंदू मुसलमानों में झगड़ा फैला रहे हो इसलिये तुम्हें पुलिस की रिपोर्ट पर मुअत्तल किया जाता है। कल्याणी में कोई २० वर्ष से एक स्कूल चलता था पर उसे आर्यों का स्कूल कहकर पुलिस द्वारा बन्द करा दिया गया। प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की ओर से "वैदिक आदर्श" एक पत्र निकलता था उसे बन्द कर दिया और इजाजत मागने पर दूसरा पत्र निकालने की आज्ञा नहीं दी गई इस लिये कुछ उत्साही सज्जनों ने सोलापुर से "वैदिक संदेश" पत्र निकाला है। आर्यसमाजियों के साथ यहीं तक बात खतम नहीं होती है उन पर निगरानी रक्खी जाती है, जैसे कि वे कोई जरायम पेशा हों। सातेगांव के नाकेदार को सबइन्सपेक्टर ने लिखा कि सुना है कि सातेगाव में आर्यसमाजी आये हैं अतएव लिखो कि वे कहा से आये हैं, क्यों आये है और कितने आये हैं, कहा ठहरे हैं, और किसने उन्हें बुलाया है, उनका लीडर कौन है. उनके कार्यों की जुम्मेदारी आप पर है। बोरी के इन्सपेक्टर को उसमानाबाद के सबइन्सपेक्टर ने लिखा कि आर्यों की सख्या, उनकी उमर, उनका पेशा लिखो और सुना है कि होली के समय पर लातूर मे बहुत से आर्य आने वाले हैं सो उनकी खूब खबर ली जावे और खबर लेते समय होशियारी रक्खी जावे। साकोर के विषय में एक कर्मचारी ने लिखा है कि साकोर का भाग आर्यावर्त बन गया है वहा सरकारी कर्मचारी को कोई नहीं पूछता।

यदि इधर सरकार ध्यान नहीं देगी और आर्यों का दमन नही करेगी तो सरकार व उसके नौकरों की कोई कद्र नहीं रहेगी। केवल आर्यसमाजी ही नही उनसे सबन्ध रखने वालों पर भी निगाह रक्खी जाती है और उन्हें तंग किया जाता है। आर्यसमाजी व उनके साथी राजकर्मचारियों का तबादला कर व तरक्की न देकर तग किया जाता है। रघोतम नामक एक सज्जन की उनके महकमे के आलाह अफसर ने सिफारिश की कि उसे तरक्की दी जाय और मुस्तक़िल किया जाय। ऊपर से हुक्म निकला कि उसे स्थायी रूप से रक्खा ही न जाय।

एक ओर हिन्दुओं के साथ राजकीय ओर से यह व्यवहार होता है, दूसरी ओर मुसल्मानों को सहूलियतें दो जाती हैं। वे मन माना अपना प्रचार कर सकते हैं। उनके नोटिस हर जगह यहां तक कि अदालत पर भी लटके रहते हैं। सिद्दक दीन-

दार उर्फ चदबैश्वर बिना इजाजत आम जलसे करता रहता है। मेलादुननबी के जलसे हर जगह बिना इजाजत होते रहते हैं। मोमूली से मामूली मौजे में मुसलमानों का अंजुमन मोजूद है। न उनको कोई दरख्वास्त भेजने की जरूरत और न इजाजत की। उमर मजहबी एक मुसलमानी धर्म के प्रचार के लिये अलग महकमा है। इस महकमे का हिन्दुओं के मन्दिर आदि से भी सम्बन्ध है? पर इसका मुख्य काम इस्लाम का प्रचार ही है क्योंकि इससे अंजुमन को मदद मिलती है और वह इस्लाम के प्रचार के लिये हिदायतें भी देता रहता है। नाजिर को आज्ञा उसके द्वारा ही मिलती रहती है। इसकी ही आज्ञा से जब अछूत बालक मुसल्मान हो जाते हैं तो बिना फीस पढ़ाये जाते है। मोहम्मद हनीफ साहिब व सैयद मोहम्मद कासिम साहिब को खास तौर से इस महकमे में मुकर्रिर किया है जिससे इस्लाम का प्रचार हो। यह महकमा एक ऐसी तजवीज मे है जिससे एक ऐसी पाठशाला व बस्तीगृह (colony) बनाई जाय जहां इस्लाम व उनकी संस्कृति की शिक्षा दी जाय।

इस प्रकार के पक्षपात से मुसलमानों का हौसला बढ़ना स्वाभाविक है। वे हैदराबाद को अपना ही राज्य समझते हैं और अपने आपको शासक कौम का समझकर हिन्दुओं व आर्यसमाजियों पर मनमाना अत्याचार करते हैं। और राजकर्मचारी जो अधिकांश मुसलमान हैं उन्हें सब करने देते हैं। और कहीं-कहीं तो वे स्वयं भी खुलेआम अत्याचार करनेमें मजहबी दीवाने बन कर शरीक रहते हैं। कल्याणी के मंत्री आर्यसमाज को मुर्तजिम स्वयं मारता हुआ सड़क पर लेगया। हुमनाबाद और परली मे पुलिस व मुसलमानों द्वारा आर्यसमाजियों के यज्ञोपवीत तोड़ डाले गये। निलगे में हवनकुंड ठुकरा दिया गया। अधरी, हल्लीखेड़ी मुरम, उदगीर इत्यादि स्थानों में आर्यों पर एक नहीं, सैकड़ों मुकदमे चलाये गये ताकि उनका पैसा व समय बरबाद हो, वे सदा सत्ता द्वारा तंग किये जाते रहे हैं। गुलबर्गे के साप्ताहिक अधिवेशन पर पत्थर फेंके गये और हालीखेड़े मे हजारों मुसलमानों ने लाठी तलवार बन्दूकें लेकर आर्यों व हिन्दुओं के विरुद्ध जलूस निकाला, इसी प्रकार उदगीर में अनेकों बार पत्थर फेंके। निलगा में अनेकों बार जलूस पर आक्रमण हुए, मानिक नगर मे श्री० श्याम लाल जी व प० नरदेव पर छुरे व डंडों से आक्रमण किया जिससे गहरी चोट आई और उल्टे उनपर ही मुकदमे चले। ओरादशाहजाने में प्रचार के समय ५०० मुसलमानों ने आकर बन्दूक के फायर किये, कल्याणी में गणपत शास्त्री व प० उदयभानु के मकानों पर आक्रमण किये, और वीरभद्र को पीटकर उनका रिवालवर मुसलमानों ने छीन लिया, चिटगोपा व कमलाकोर के आर्यसमाज पर मुसलमानों ने हमला किया और आर्यसमाजियों से मार पीट की। युवक वेदप्रकाश का कत्ल तो अभी की ताजी घटना है।

एक नहीं बल्कि ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। उपरोक्त बातें तो संक्षेप मे इसलिये लिखी गई है कि पाठकों को हैदराबाद के न्याय व धार्मिक स्वतन्त्रता का कुछ ज्ञान हो जाय, आशा है कि इतने से हिन्दुओं व आर्यसमाजियों पर होने वाले अत्याचारों और अन्यायों का बोध पाठकों को हो जावेगा।

आशा है हिन्दूमात्र हैदराबाद के साथ सहानुभूति दिखा कर उनका साथ देंगे और इन अत्याचार व अन्याय यों को जड़मूल से नष्ट करने की कोशिश करेंगे।

—※—

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥ — धर्म से ही विद्या की शोभा होती है

आर्य कुमार जगत्

[भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की प्रार्थना व अनुरोध से 'सार्वदेशिक' में ये पृष्ठ 'आर्य कुमार जगत' के नाम से प्रतिमास रहेंगे। इन पृष्ठों मे आर्य कुमारों व कुमार सभाओं के समाचार तथा उनकी प्रगति पर लेख आदि रहा करेंगे। आशा है आर्य कुमार इनसे लाभ उठावेंगे। —सपादक सार्वदेशिक]

धन्यवाद

श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने मासिक पत्र 'सार्वदेशिक' मे 'आर्य कुमार जगत्' को हमारी प्रार्थना पर स्थान देकर जो कृपा की है उसके लिये हम सभा को धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि ये पृष्ठ आर्य कुमारों व कुमार सभाओं में सगठन व जागृति उत्पन्न करने मे लाभदायक सिद्ध होंगे।

मत्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्।

आर्य कुमारों व आर्य कुमार सभाओं का कर्त्तव्य

आर्य कुमारों से हमारा विशेष अनुरोध है कि वे 'सार्वदेशिक' के ग्राहक बन जावें जिससे उनको तमाम कुमार जगत के समाचार और परिषद् की सूचनाएं बराबर मिलती रहें। आर्य कुमार सभाओं को तो तुरन्त एक साल का चन्दा भेज कर 'सार्वदेशिक' अपने नाम जारी करा लेना चाहिए।

आर्यकुमार सभाओं को अपने समाचार इन पृष्ठों मे छपने के लिए मंत्री, भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद के पास हर महीने की २० तारीख तक भेज देने चाहिएं।

मत्री—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्,
दीवान हाल, दिल्ली।

विशेष भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन, मेरठ

सयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मेरठ में शनिवार तारीख २५ दिसबर १९३७ को मध्याह्न के ३॥ बजे से पंडित बुद्धदेव जी वेदालकार के सभापतित्व में मुख्य पडाल मे एक विशेष आर्यकुमार सम्मेलन हुआ।

स्वागताध्यक्ष प० अलगूराय जी शास्त्री MLA के भाषण के पश्चात् सभापति महोदय ने अपना मौखिक भाषण पढ़ा जिसमें उन्होंने आजकल की देश की सामाजिक दशा तथा आर्य कुमारों के कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् निम्न दो प्रस्ताव पास हुए जिन पर पंडित रामचंद्र जी देहलवी, डाक्टर युद्धवीरसिंह जी, पंडित सूर्यदेव जी शास्त्री, पंडित शिवदयालु जी तथा बाबा इन्द्रमणि जी ने अपने विचार प्रगट किए।

१—इस सम्मेलन की सम्मति मे मानव जाति के संगठन के लिए जो भावी कार्यक्रम रखे जाते

हैं उनमें इस समय साम्यवाद (Socialism) का मुख्य सिद्धान्त ही अग्रगण्य है। परन्तु वैदिक धर्म द्वारा उपस्थित किया गया वर्णाश्रम व्यवस्था का कार्यक्रम उसकी अपेक्षा भी अधिक लोक हितकारी है। इसलिए इसे राजनैतिक क्षेत्र मे व्यवहारिक रूप देकर जल्दी से जल्दी ससार के सामने लाना आर्यकुमारों का वर्त्तमान समय मे प्रथम कर्त्तव्य है।

२—आर्यसमाज का सामूहिक रूप से तो राजनैतिक क्षेत्र मे सम्मिलित होना जितना अनुचित है व्यक्तिगत रूप मे अथवा आर्यसमाज से पृथक् तथा आर्य सिद्धान्तो के अनुकूल सगठित रूप मे राजनैतिक कार्यो मे भाग लेना उतना ही उचित और आवश्यक है।

अब तक आर्यसमाज के नेताओ की नीति व्यक्तिगत रूप मे भी राजनैतिक कार्य्यों मे भाग लेने को प्रोत्साहित करने की नहीं रही है। किन्तु इस सम्मेलन की सम्मति मे अब वह समय आ गया है जब कि नवयुवक इस बात की घोषणा करदें कि हम राजनैतिक ससार मे एक जीवित जागृत तथा प्रभावशाली शक्ति बने बिना नहीं रहेंगे और अतएव यह सम्मेलन आर्य युवकों को साग्रह प्रेरणा करता है कि वे राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश करके वहा भी वही स्थान प्राप्त कर दिखावे जो उन्होंने आज तक शिक्षा और समाज सुधार के कार्य मे कर दिखाया है।

परिषद् की अन्तरंग सभा

सम्मेलन के पश्चात् परिषद् की अतरंग सभा की बैठक हुई जिसम पास हुए कुछ प्रस्ताव निम्न प्रकार हैं।

प्रस्ताव स० ३—निम्न आर्यकुमार सभाओं के आवेदन पत्र स्वीकार हुए तथा वे परिषद् से सम्बन्धित करली गई—

आर्य कुमार सभा इन्दौर तथा आर्यकुमार सिरसा।

आर्य कुमार सभा पीलीभीत का फोर्म इस शर्त पर स्वीकार किया गया कि वह अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेज दे।

प्रस्ताव स० ४—आगामी वार्षिक सम्मेलन की तिथियों के विषयमे आर्य कुमार-सभा बिजनौर का पत्र पढा गया। सम्मेलन के लिए मई १६३८ का तृतीय सप्ताह निश्चय किया गया तथा कार्य कारिणी सभा को अधिकार दिया गया कि वह आर्य कुमार सभा बिजनौर से परामर्श करके सम्मेलन का प्रोग्राम तय कर ले।

प्रस्ताव सं० ६— वैदिक धर्म विशारद परीक्षाओं के शुल्क तथा पाठ विधिमे निम्न परिवर्तन किए गए जो सन् १६३६ की परीक्षाओं से कार्य रूप मे आवेंगे —

(१) प्रथम खण्ड का शुल्क चार आने से बढा कर छ आने कर दिया गया

(२) 'ईश्वरीय ज्ञान वेद' तथा 'वृहत् विज्ञान' पुस्तकें बाजार मे न मिल सकने के कारण कोर्स से हटा दी गई तथा परीक्षा मन्त्री को अधिकार दिया गया कि वह परीक्षा समिति के सदस्यो से राय लेकर इनके स्थान मे दूसरी पुस्तकें रखदें।

(३) परीक्षाओ के नियम स० ५ का दूसरा भाग जो इस प्रकार है "परीक्षा समिति किसी दीन विद्यार्थी को व्यवस्थापक की इच्छानुसार शुल्क से मुक्त भी कर सकती है" हटा दिया गया।

———

अन्तरङ्ग सभा के १२ अक्तूबर १६३७ के अधिवेशन में पास हुए कुछ प्रस्ताव।

आर्य कुमारों की वर्दी

निश्चय हुआ कि आर्य कुमारों के लिए निम्न प्रकार की दो वर्दियां होंगी —

(१) विशेष अवसरों के लिए अर्थात उत्सवों जल्सों इत्यादि पर खादी का सफेद कुरता, सफेद गाधी टोपी तथा धोती।

(२) सेवा कार्य के अवसर पर (अर्थात जब स्वय सेवक का कार्य करना हो) खादी की आधी बांह की सफेद कमीज तथा खाकी निकर।

आर्य कुमार सभाओं के साप्ताहिक अधिवेशनों का कार्य क्रम

कार्य क्रम इस प्रकार निश्चित हुआ —हवन, सध्या, प्रार्थना, सामूहिक भजन गायन, स्वामी दयानन्द अथवा अन्य किसी महानुभाव का जीवन चरित्र (आरम्भ स्वामी जी के जीवन चरित्र से हो) 'सत्यार्थ प्रकाश' आदि की कथा या किसी महात्मा का व्याख्यान।

ऊपर लिखा सब कार्यक्रम अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त क्रम से वाद विवाद (Debates), व्याख्यान आदि रहे जो समयानुसार किए जा सकें।

प्रांतिक आर्य कुमार परिषद्

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् इस बात पर विचार करते हुए कि आर्य कुमार दो सभाओं के शासन व चन्दे के भार को बर्दाश्त करने में असमर्थ हैं, किसी नई प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् को स्थापित करना उचित नहीं समझती और चाहती है कि सब आर्यकुमार सभायें अपना साक्षात् सम्बन्ध भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् से ही रखें। परन्तु जो प्रान्तीय सभायें पहले से स्थापित हैं और आगे अपने अस्तित्व को रखना भी चाहती हैं उनसे भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् अनुरोध करती है कि उनको भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् से सम्बन्ध कर लेना चाहिए। और जो कुमार सभायें अपनी प्रान्तीय परिषदों से सम्बन्धित हैं वे उसी तरह पर रहें। इनको उनके नए सम्बन्ध की आवश्यकता नहीं है।

२२ वां भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन

आर्यकुमार सभाओं का विशेष ध्यान सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव सख्या २ व १८ की ओर दिलाया जाता है। जिन आर्यकुमार सभाओं ने अभी इन प्रस्तावों को कार्य रूप नहीं दिया है वे कृपा कर इस ओर ध्यान दें। प्रस्ताव निम्न प्रकार है —

सख्या २—यह सम्मेलन भारत में प्रचलित ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के आन्दोलन को अत्यावश्यक समझता है और आर्यकुमारों तथा आर्यकुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे यथावकाश ग्राम सुधार तथा ग्राम प्रचार के कार्य में यथा शक्ति सहयोग दिया करें।

सख्या १८—क्योंकि यह दुःख के साथ देखा जा रहा है कि भारतीय युवकों का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है और क्योंकि मानसिक उन्नति के लिए शारीरिक उन्नति अत्यावश्यक है इसलिए यह सम्मेलन समस्त आर्यकुमार सभाओं से प्रार्थना करता है कि वे अपने २ स्थानों पर आर्यकुमार व्यायाम मडलों की स्थापना करें तथा समय २ पर खेलों (Sports) का भी आयोजन करें।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

ले० श्री० पं० रामनारायण जी मिश्र

(ख) स्वास्थ्य-सम्बन्धी

(१) पानी, दूध, घी आदि में उंगली या नाखून मत डालो। दूध में चीनी उंगली से मत घोलो, चमचे से काम लो या दो बर्तनों में उलट-फेर कर लो। ध्यान रखो कि ऐसा करने में दूध की एक बून्द भी बाहर न गिरे।

(२) जिस वर्तन में पीने का पानी या दूध आदि रखा हो उसको ढकना मत भूल जाओ। उसको जमीन से कुछ ऊपर रखना अच्छा है। वर्तन ऐसा होना चाहिए जो अन्दर से साफ हो सके। जिस शीशी में तेल आदि रखा हो उसको कार्क से बन्द करना मत भूल जाओ, विशेषकर जिसमें दवा हो।

(३) नई दवा या कोई और चीज किसी पुरानी बोतल में डालो तो पहले बोतल को गरम पानी और सोडा से धो लो।

(४) पानी, दूध, घी आदि निकालने के लिए जिस लोटे, कटोरे या ग्लासको वर्तन में डालो उसकी पेंदी पहले धोलो या साफ कपड़े से पोंछ लो। उसको धोती या कुरते से मत पोंछो। उसके लिए एक अलग साफ कपड़ा रखो।

(५) डोल बालटी या घड़े के पास हाथ धोने के लिए भरा हुआ लोटा हमेशा रखना चाहिए। खाली होने पर उसे फिर भर देना चाहिए। पानी से भरे हुए डोल, बालटी या घड़े में हाथ नहीं डालना चाहिए। हाथ की कलाई से लोटे को टेढा करके पानी लेना चाहिए, उसमे भी हाथ नही डालना चाहिए।

(६) हाथ धोने या वर्तन मांजने के लिए हर जगह की मिट्टी इस्तेमाल मत करो। देख लो कि जहा की मिट्टी लेते हैं उस जगह को लोग गंदा तो नही करते। साफ मिट्टी ढूंढकर काम मे लाओ। जमीन खोदकर खेत की मिट्टी मिल सके तो अच्छा है। मिट्टी जमा करो तो उसको हंडी या कनस्टर मे रखो, जमीन पर रखने से बिल्ली आदि जानवर उसको गन्दा कर देते हैं।

मिट्टी के बदले चूल्हे की राख इस्तेमाल करना अच्छा है।

(७) पहनने के कपड़े, जूते आदि रोज झाड़ लिया करो। सोने से पहले प्रतिदिन अपने बिछौने का हर एक कपडा झाड़ लो।

(८) वर्तन या खाने की चीज किसी नई जगह रखने से पहले उस जगह को धो डालो या साफ कर लो।

(९) रात को जो कपड़े पहन कर सोओ, उनमें जो सूती हों उनको दूसरे दिन धो डालो और जो ऊनी हों उन्हे धूप मे डाल दो। याद रखो, ऊनी या काले या गर्द खोर कपड़ों में भी मैल लगता है, उनको भी धोते रहना चाहिए। शरीर के साथ जो कपड़े लगे रहते हैं उनको खूब साफ रखो। उनमें बदबू न आनी चाहिये। जो लोग जनेऊ पहनते हैं उनको अपना जनेऊ खूब साफ रखना चाहिए।

(१०) हाथ और पैर के नाखून बढ़ने मत दो, उनके अन्दर मैल न जमने दो।

(११) जिस बिछौने पर सोओ उसको थोड़ी देर धूप में रहने दो परंतु इसका ध्यान रखो कि उसको चिड़िया आदि गंदा न करदें। पहनने के कपड़ों को भी इसी प्रकार धूप दिखला दो।

(१२) मोजा भी रोज पहनने के बाद धो डालना चाहिए।

(१३) पहनने से पहले और उतारने के बाद कपड़ा झाड़ लो। पैजामा झाड़ने के वक्त उसके नीचे का हिस्सा पकड़ों क्योंकि उसमें गर्दा ज्यादा रहता है। नगे पैर रहो तो बाहर से आकर पैर झाड़ डालो या धो डालो।

(१४) अपने साथ हमेशा एक अंगोछा या रूमाल रखो। धोती, दुपट्टे या कुरते से नाक साफ करके नाक और हाथ धो लेना चाहिए।

(१५) कूड़ा रखने के लिये बालटी, कनस्टर आदि घर मे दो-तीन जगह अवश्य होना चाहिए। जो कूड़ा उसमें जमा हो जाय उसको दिन में दो तीन बेर हटा देना चाहिए। जिसमें कूड़ा रखा जाय उसको भी प्रति दिन अन्दर से साफ करना चाहिए और उसके नीचे की जमीन मे झाड़ू लगा देना चाहिए।

लिखने-पढ़ने की मेज के नीचे रद्दी के लिए एक टोकरी रखनी चाहि।

कूड़ा घर से दूर लेजाकर या तो जला देना चाहिए या खाद के काम में लाना चाहिए।

(१६) घर मे हर जगह जूता नहीं ले जाना चाहिए, सीढ़ी मे या कमरे के बाहर एक तरफ उतार देना चाहिए। भोजनालय में जूता ले जाना ठीक नहीं।

(१७) जूता या जूठे बर्तन छूकर हाथ धोना चाहिए।

(१८) बाहर से आकर जूते को झाड़ डालना चाहिए—जूते पर बराबर पौलिश आदि लगाते रहना चाहिए। पहनने से पहले जूता—भीतर और बाहर से—झाड़ लेना चाहिये। गीला जूता जब सूख जाए तब पहनो।

(१९) लिखते समय उंगलियों में स्याही न लगा लो—यदि लग जाय तो तुरन्त रगड़ कर हाथ धो डालो।

(२०) लिखने के बाद अक्षरों को उंगली से नहीं सुखाना चाहिए, सोखता काम में लाना चाहिए।

(२१) रोशनाई कलम से जमीन पर न छिड़को और न उसको सिर के बालों से पोछो।

(२२) मिट्टी लगा हुआ लोटा या गगरा कुएँ में मत डालो।

(२३) कुए से दूर नहाओ जिससे बदन का पानी कुएँ मे न जाय।

(२४) कुएँ की सफाई कराते रहना चाहिए। उसमें कभी २ थोड़ा परमैंगनेट पोटाश डालते रहना चाहिए।

(२५) पीने का पानी लेना हो, तो नदी में जरा आगे बढ़ कर धारा के पास जाओ, और कपड़े धोने हों तो नदी के बहाव के नीचे की ओर जाना चाहिए। ऐसा करने से पानी गन्दा नहीं होता।

(शेष फिर)

निजाम स्टेट में आर्य्य समाज की वेदी पर एक आर्य्य वीर 'वेदप्रकाश' का पहिला बलिदान

मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा समय पर पहुंच गये

गञ्जोटी इलाके पायगा में मोहतमीम साहेब पोलिस, तालुकादार, तहसीलदार की उपस्थिति में मुसलमानों ने (जिनमें सरकारी मुलाजिम अरब चपरासी, घोड़ सवार, ऊंट सवार व जिला डरैस पुलिस भी थी)—दंगा किया। प्रातःकाल से सारे मुख्य मुख्य पुरुषों को मोहतमीम साहेब ने सन्धि कराने के लिए अपने पास बुला लिया इधर मुसलमानो ने सबसे पहले एक जलूस निकाला और दाऊदखां के घर जाकर उसे फूलों की माला पहनाई। फिर मन्त्री आर्य समाज को पकड़ कर गले पर तलवार रक्खी गई। पोलीस को सूचना देने पर अमीन साहेब जाकर मन्त्री को लेकर आए और कहा कि कुछ नहीं कुछ लोग सन्धी पीकर गड़ बड़ कर रहे थे। एसा कह कर मुख्य मुख्य लोगों को बातो में लगाकर वहीं पर ठहरा लिया गया उधर मारपीट होने लगी। हिन्दुओ के घरों पर हमला होने लगा। अकेले दुकेले को मारने लगे। सन्धि के भरोसे पर हिन्दू जनता निश्चिन्त रही। एक वेद प्रकाश आर्य्य युवक को मन्त्री आर्य्य समाज के घर में घुस कर पकड़ लिया। वह रिक्त हस्त था। उसे कहा गया कि मुसलमान होजा, जीवन दान दिया जायगा। उत्तर मिला कि मुसलमान हो कर जीवित रहने से मैं मृत्यु को अधिक पसन्द करता हूं। यह उत्तर सुन कर उसे नीचे गिरा कर छुरे से उसका गला काट दिया गया केवल चार अंगुल छोड़ा गया। तड़पता देहछोड़ कर चले गए। दोपहर को जब टोलियां घूमती फिरती थीं तो कहती थीं कि जो आर्य्य होगा उसका वध कर दिया जायगा। मार्ग शीर्ष शुक्ल मगल के दिन "वेद प्रकाश" मारा गया। इसकी आयु २१ वर्ष की थी। आर्य्य समाज की वह जान था। अपना सारा जीवन आर्य्य समाज के कामो मे अर्पण कर चुका था। बृहस्पति वार को प्रातःकाल दस बजे मोटर से शव तुलजापुर के दवाखाने को भेजा गया क्योंकि स्थानिक डाक्टर पर सन्देह था क्योंकि वह मुसलमानो के मशवरों मे शरीक रहता था। पोलिस ने कोई प्रबन्ध नहीं किया। आर्य्य समाजियों ने मोटर स्वयं मगवा कर शव तथा अन्य घायल पुरुषो को तुलजापुर के दवाखाने में भेजा। आर्यों को स्थानिक पुलिस पायगा पर विश्वास नही है अभी दंगा करने वाले स्वछन्द फिर रहे हैं, सारी हिन्दू समाज भय भीत है। यदि ठीक समय में प्रबन्ध न हो तो जान वा माल का खतरा है। मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा समय पर पहुंच गए।

राम देव शास्त्री

(वैदिक संदेश सोलापुर २१-३८ से)

साहित्य-समीक्षा

(समाचार पत्रों की सम्मतियां)

अग्निहोत्र

लेखक—श्रीयुत डा० सत्य प्रकाश डी० एस सी०
प्रकाशक—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली,
मूल्य २॥)

इस पुस्तक के लिखने का डा० सत्य प्रकाश जी का उद्देश्य आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि कोण से 'देव यज्ञ' के विविध रूपों की व्याख्या करना और धार्मिक और निष्ठावान हिन्दू परिवार के स्वास्थ्य पर वेदों में विहित अग्निहोत्र के प्रभावों का अध्ययन करना है। अग्निहोत्र की सामग्री के पदार्थों की रासायनिक क्रियाएँ, प्रक्रियाएँ मूल्य इत्यादि का भी सम्यक् विश्लेषण उपस्थित किया गया है। डाक्टर गंगानाथ झा ने पुस्तक का पूर्व्व वचन लिखा है तथा इलाहाबाद विश्व विद्यालय के डाक्टर ऐन० आर० धर ने भूमिका लिखी है।

जो व्यक्ति धार्मिक संस्कारों को विज्ञान और उपयोगिता की कसौटी पर परखने के अभ्यस्त हैं और जो इन संस्कारों में इस प्रकार की महत्ता का दिग्दर्शन करने के इच्छुक हैं अवश्य ही वे इस पुस्तक को उपयोगी और शिक्षा प्रद पावेंगे।

(इलस्ट्रेटेड इण्डिया ऐण्ड इंडियन स्टेट नई देहली)

[१]

हमारे पास एक अत्यन्त सुन्दर सजिल्द अंग्रेज़ी पुस्तक 'अग्निहोत्र' नामक समालोचनार्थ आई है जिसे श्रीयुत पंडित सत्य प्रकाश जी डी० एस सी० कैमिस्ट्री उपाध्याय इलाहाबाद यूनिवर्सिटी ने बनाया है तथा सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया है। हमने इस पुस्तक का अध्ययन किया है और हम प्रतिवाद के भय के बिना कह सकते हैं कि यह अपने ढंग की पहली और विद्वत्ता पूर्ण रचना है। विद्वान लेखक ने वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित 'हवन-यज्ञ' मानवी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभ दायक है। अंग्रेज़ी पढ़े लिखे लोगों और योरप वालों में यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी। हम विद्वान लेखक को साथ ही सार्वदेशिक सभा को इस उत्तम पुस्तक को प्रकाशित करने पर बधाई देते हैं। हमारी सम्मति में किसी अंग्रेज़ी भाषा विज्ञ आर्य्य समाजी को इस पुस्तक के पढ़े बगैर नहीं रहना चाहिए। तमाम आर्य्य समाजों को इस पुस्तक को अपनी लाइब्रेरियों में रखना चाहिए। कागज़ छपाई इत्यादि बहुत उत्तम है। मूल्य केवल २॥)

(आर्य्य मुसाफ़िर लाहौर)

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)

(१) इस समय इस अनाथालय में १७५ बालक बालिकाएं हैं और इस समय शीत ऋतु है। उनके लिये गरम वस्त्र, रजाई, तुलाई, और दरियों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १३००) मासिक है वह दानी महाशयों की कृपासे पूरा होगा इसलिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे जिनके सबधियों का पता नही लगा वह सब बालक इसी अनाथालय मे रखे हैं।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेज जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान प० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

,, पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष श्री विज्ञानशील जी, बी० ए०

अंत मे नम्र निवेदन है प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १२ | फाल्गुन १९९४ | अङ्क १

मार्च १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११३

❀ वेद की शिक्षाएँ ❀

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा । Rig 1-32-15

परमेश्वर चराचर का राजा है ।

He controls both the animate and inanimate Universe

एष इन्द्रो वरिवस्कृत् । Rig 8-16-6

यह इन्द्र ही बल का देने वाला है ।

He is the Giver of strength—moral, physical and spiritual

वेद के प्रकाश में धर्म-यात्री

(लेखक—प्रो० ऐम० बी० वेंकटेश्वर एम० ए०)

कर्म और उन्नति

आध्यात्मिक धर्म) यात्री का प्रथम कर्तव्य आत्मा को निष्कामता से बचाना है। मनुष्य आलसी बनने के लिए पैदा नहीं होता है। पुरुषार्थ का भाव उसकी आत्मा में ओत प्रोत है और मनुष्य के प्रत्येक हाव भाव से और उसके शरीर के अंग प्रत्यंग से पुरुषार्थ की ध्वनि निकलती है। मनुष्य दुनिया में पैदा होता है और इस दुनिया के साधन से वह अपनी उन्नति करता और मोक्ष को प्राप्त करता है इसलिए उसे दुनिया के व्यापारों में से होकर गुज़रना होता है। वैदिक साहित्य में इस प्रकार के स्थल हैं जो सन्तान, सन्तति और शक्ति की आशाओं का मनुष्य में संचार करते हैं परन्तु वे बतलाते हैं कि दुनिया का इस प्रकार भोग करो कि वह तुम्हारी जीवन यात्रा के अन्तिम ध्येय ईश्वर प्राप्ति में साधक हो बाधक न हो। दुनिया में लिप्त न हो और उसही ध्येय न समझो। यह भाव तभी विकसित और स्थिर रहता है जब हम दुनिया की चीज़ों के प्रयोग की भावना ही रक्खें उनमें ममत्व की अधिकार की भावना न जाए।

उत्थान के लिए कोई राज मार्ग नहीं है। वह हमें अपने पुरुषार्थ से ही बनाना होता है। परन्तु इतिहास अपने को दुहराता है और हम से पूर्व जो इस पथ में रह चुके हैं हम उनके अनुभवों से अच्छा फायदा उठा सकते हैं। इसलिए धर्म यात्री को आदेश किया गया है। उस मार्ग पर अपनी दृष्टि रक्खो जिस पर तुम्हारे पुरुषा चले हैं परिणाम यह होगा कि तुम्हारी आत्मा प्रकाश मान हो जायगी। ठीक रास्ते के चिन्ह निम्न प्रकार दर्शाए गए हैं —

१) तुम्हारा मार्ग कंटकों और समाज के दुष्टों से शून्य हो।

(२ तुम्हारा मार्ग प्रशस्त और सुख दायक हो।

३) सबका मित्र ऐश्वर्य और सुखों की वृष्टि करने वाला पालन करने हारा और दुर्बलों का रक्षा करने वाला तुम्हारा मार्ग दर्शक हो

प्रकृति से सम्पर्क

धर्म यात्री को प्रकृति के चमत्कारिक सौन्दर्य और भव्य औदार्य्य का पान करने की प्रेरणा की गई है। प्रभात कालीन आकाश के इन्द्र धनुष के रंग गुलाबी उषा काल। रात की कोमल शान्ति में प्रकृति का संगीत ये सब मनुष्य के ममत्व और आत्मा पर आच्छादित धूलि को धो देते हैं धर्म यात्री के समस्त स्वाध्याय और क्रिया कलाप का विधान उस समय किया गया है जब पुराने खेतों में प्रकृति नया अन्न प्रदान करती है। श्रावणी पूर्णिमा को उसके स्वाध्याय (उपाकर्म) का वार्षिक सत्र शुरू होता है। इस समय हरी २ औषधियों पर वर्षा की पड़ी हुई बूंदें मनोरम दृश्य उपस्थित करती हैं और प्रकृति एक नए जीवन से ओत प्रोत होती है। जब मेंढकों की ध्वनि शुरू होती थी वैदिक विद्यार्थी अपना अध्ययन प्रारम्भ करते थे। जब प्रकृति क्रुद्ध अवस्था

में होती थी अर्थात् जब आकाश धुंधला होता था, या जब बिजली चमकती थी अथवा वायु में मृत्यु और रोग होता था निस्सन्देह तब पढ़ाई में विघ्न पड़ जाते थे। दिन के समय में वह दर्वाजों के भीतर बन्द नहीं रहता था। वनस्थली के विद्या केन्द्र में गुरु चरणों में बैठ कर उसे प्रकृति के प्रत्यक्ष सपर्क मे रहना होता था।

विद्यार्थी जीवन समाप्त करने के पश्चात् भी प्रकृति उसकी मित्र रहती थी क्योंकि विद्वान् यात्री को दूर दूर की यात्रा करनी होती थी। इस रीति से स्थानीय और प्रान्तीय सग भावनाओं का समुचित सुधार होता रहता था।

वैदिक ग्रन्थो में यद्यपि प्राकृतिक दृश्यों का सम्यक वर्णन है फिर भी वे एक देशीय नहीं हैं और विशेष गुण के तौर पर घर का प्रेम और विशेष सिद्धान्त के तौर पर देश का प्रेम उनमें नहीं पाया जाता है।

यह आवश्यक है कि हमारी शक्तियां प्रकृति की शक्तियो के साथ २ गति करें। प्रकृति की इन शक्तियो मे सबसे अधिक प्रभावशाली शक्ति सूर्य है। सूर्य की दिन प्रति दिनकी गति दिखलाती है कि पुरुषार्थ और कार्य्य दिव्य है। सूर्य हमें नि स्वार्थ सेवा और निरन्तर पुरुषार्थ की शिक्षा देने वाला सर्व प्रथम शिक्षक है। बाहरी और भीतरी अधिकारे को प्रकाश मे बदल कर, और नीचेको ऊंचा बनाकर यह हम बहुत उत्तम शिक्षा प्रदान करता है।

———

अध्यात्म धारा

भगवान कृष्ण गीता मे कहते है, जब मनुष्य परमात्मा का उपासना करने लगता है, तब उसका भाव दो रूप ग्रहण करती है। वे दो रूप ज्ञान और कर्म है। बिना कर्म किए मनुष्य ज्ञान का प्राप्ति नही कर सकता है और बिना ज्ञान के केवल ज्ञान रहित कर्म से मनुष्य मोक्ष प्राप्त नही कर सकता है। मनुष्य एक क्षण के लिए भी निष्काम नहीं रह सकता है। इच्छा के न होते हुए भी मनुष्य की आभ्यन्तरिक प्रवृत्तिया उसे काम करने के लिए बाधित करती है। सदैव अपने कर्तव्य कर्मों के सपादन में लग रहो। कामको टालने की अपेक्षा उसका कर डालना उचित है। सब कामो को टालने से तुम्हारे शरीर का रक्षण भी असम्भव हो जायगा। वेद बतलाते है ब्रह्म ज्ञान का प्राप्ति किस प्रकार हाती है? आत्म ज्ञान किसे कहते हे? उसका प्राप्त के उपाय क्या हैं? मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती है? यही विषय है जिनकी हमें वेद शिक्षा देते है व घोषणा करते है ईश्वर प्राणी मात्र मे ओत प्रोत है।

उसको कौन प्राप्त कर सकते है? जो वीर हैं बुद्धिमान है अर्थात जिनका शरीर और आत्मा बलिष्ठ है वह उस प्राप्त कर सकते हैं। कमज़ोर शरीर और मस्तिष्क वाला आत्म ज्ञान का प्राप्ति नहीं कर सकता है। आत्मा और शरीर को बलवान बनाओ ईश्वर का प्राप्ति हो जायगा। वेद सच्चे और अनादि धर्म की चर्चा करते है। अनादि और सच्चे धर्म से क्या अभिप्राय है? जो धर्म समान रूप से सब समय मे सबके आचरण योग्य हो और जो सदैव एक जैसा रहता हो और जो अपरिवर्तन शील हो। पुराण बाइबिल, कुरान इत्यादि दूसरे धर्म्म ग्रन्थ मनुष्यों की एक श्रेणी या विशेष देश और काल के लिए ही अभिप्रेत हो सकते है।

शास्त्र कहते है सृष्टि का आदि नहीं है। यदि सृष्टि का आदि स्वीकार कर लिया जाय तो परमात्मा मे अपूर्णता का दोष आता है।

यदि यह कहा जाय कि सृष्टि से पूर्व भी वह पूर्ण था तो यह मानना पड़ेगा सृष्टि के बाद वह और ज्यादा पूर्ण हो गया। यदि यह कहा जाय कि सृष्टि के बाद वह ज्यादा पूर्ण हो गया है तो इसरा यह अर्थ हुआ कि पहले वह अपूर्ण था। ये दोनो ही विकल्प गलत है। अधिक पूर्ण' शब्द अपना खंडन स्वयं करता है। क्यो कि जो पूर्ण था और अधिक पूर्ण हो गया वह वस्तुत अपूर्ण ही था। यदि सृष्टि का आरम्भ स्वीकार कर लिया जाय तो हम इससे परमात्मा में निर्दयता का दोष लगायगे। क्या हम जगत में कुछ व्यक्तियो को गरीब, बिना पढ़े लिखे और रोगी नही देखते हे जब कि दूसरे समृद्ध विद्वान और स्वस्थ्य है। यदि परमात्मा ने विविध व्यक्तियो को इस प्रकार का विविध परिस्थितियो में रक्खा है तो परमात्मा में पक्षपात और निर्दयता के दोष प्रत्यक्ष हो जाते हैं। इसी लिए शास्त्र सृष्टि को अनादि बतलाते है। सृष्टि प्रवाह से अनादि ही है।

जगत में हम देखते हे कुछ व्यक्ति गरीब है और कुछ अमीर है। कुछ सुखी हैं और कुछ दुखी है। कुछ विद्वान हैं और कुछ मूर्ख है। इस भेदका क्या कारण है?

शास्त्र कहते है कर्म ही इस अन्तर का कारण है। शास्त्रो में विशाल अर्थो में कर्म शब्द व्यवहृत हुआ है। वे कहते है कि सूर्य्य चन्द्र नक्षत्रादि की भी कर्म से ही उत्पत्ति है। जब सृष्टि का आदि नही है तो यह कहना बेकारहै कि कर्म भी जो सृष्टि मे समस्त

भेदों का कारण है अनादि है।

कर्म के फलों को कोई नहीं टाल सकता है। तुम कोई भी कर्म करो, तुम जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे। यह बड़ा कठोर है। मानसिक कार्य्य अर्थात भावों और विचारों के उठने के भी फल हैं। बुरे विचार के मन में आते ही उसके फल स्वरूप तमाम शरीर अपवित्र हो उठता है। यदि विचार बलशाली हो तो यह भौतिक या शारीरिक कार्य्य के रूप में अपने को प्रगट करदेता है। कभी २ हम कर्म के फलों को नहीं देखते हैं परन्तु वे अवश्य कहीं न कहीं छुपे होते हैं इसमें सन्देह नहीं है। स्वास्थ्य के नियमों का कोई भी अति क्रमण शारीरिक रोग के रूप में स्पष्ट हो जाता है। दवाइयों से रोगों का शमन हो जाता है। यह क्या है? यह केवल कर्म फलों के एक प्रकार का परिवर्तन मात्र है। अर्थात औषध प्रदान से स्वास्थ्य के एक नियम का दूसरे में परिवर्तन ही होता है। यह भी कर्म का एक दूसरा रूप है। परन्तु हम दोनों के फलों को भुगतना होता है। कोई भी नष्ट नहीं हुआ था। फर्क केवल इतना ही है कि दोनों एक परिणाम को जाहिर करने के लिए मिल गए हैं। यही भेद है। परन्तु कर्म फल कभी नष्ट नहीं होते हैं।

कुछ क्षेत्रों में यह विश्वास प्रचलित है कि किसी अवतार पर विश्वास करने मात्र से पाप धुल जाते हैं। वेद इसका निषेध करता है। हमारी मुक्ति हमारे अपने यत्नों से ही संभव है। ये अवतार कहे जाने वाली महानआत्माएं हमें क्या मदद देती है। हम महान जीवनों से प्रकाश ही ग्रहण कर सकते हैं। कहा जाता है, कुदरत आचारिक विशेषताओं की कतई परवा नहीं करती है और साधु और पापी में कोई भेद नहीं करती है। यह विचार बड़ा उथला है।

यदि साधु प्रकृति किसान की ज़मीन मे ही वर्षा होती और यदि आकर्षण शक्ति पापी का नुकसान पहुंचाती और अच्छों को अछूता छोड़ देती तो निश्चय ही सज्जनता बुद्धिमत्ता का ही विषय बन जाती और शब्द के ठीक २ भाव में सुजनता का अस्तित्व ही लोप हो जाता। चीज़ों के बनने बिगड़ने में अनिश्चितता का यह अंश ही नैतिकता को संभव बनाता है। जिस दुनियां में अच्छे काम का समृद्धि द्वारा तत्काल बदला मिल जाय और बुरे काम का दुख दारिद्रय द्वारा बदला मिल जाय तो उस दुनियां का कोई अर्थ ही न होगा। सचमुच जिस जगत में मानवी जीवन के सुख दुख, असमानताएं और बहुत सी अनिश्चित बातें हों तो वही एक दुनियां है जिस में अच्छाई पाई जा सकती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में इंग्लैंड में दो कवि थे उनमें से एक लोक प्रिय था और दूसरे को कोई पूछता न था। लोक प्रिय का नाम सेमुअल रोगर्स और दूसरे का नाम विलियम वर्ड्सवर्थ था। समय ने दोनों को उचित स्थानों पर रख दिया। आज रोगर्स को कोई नहीं जानता। और वर्ड्सवर्थ अमर है। दो हजार वर्ष हुए नीरो—एक राक्षस—राजसिंहासन पर विराजमान था और पाल—एक साधु—कैदखाने में था। समय ने उसे भी ठीक कर दिया। आज अंग्रेज लोग अपने बच्चों का नाम पाल रखने में गर्व अनुभव करते हैं परन्तु नीरो का नाम कुत्तों के लिए रिज़र्व हो गया है।

एक पुराने लेखक ने कहा है—

God does not always pay his wages on saturday night but he always pays them' अर्थात् परमात्मा अपनी प्रजा को सदैव शनिवार को ही मजदूरी नहीं बांटता है परन्तु बांटता अवश्य है। भाव यह है कि किए हुए का फल यह जरूरी नहीं तत्काल मिल जाय पर यह जरूरी है कि फल मिलता अवश्य है। इससे कोई भी कर्मी भी नहीं बच सकता है। इसलिए हमारे कर्म श्रेष्ठ होने चाहियें और ऐसे होने चाहिये जो हमारी परतन्त्रता दूर करते हुए मृत्यु के बंधनों को ढीला करने वाले हों।

———

विवाह-भेद

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

विवाह का प्रचार समग्र समार मे है। प्रत्येक सम्प्रदाय मे इसका विधान है। वेद मे अनेक स्थलों पर इसका उल्लेख है उनमे से ऋग्वेद मडल १० सूक्त ८५ और अथर्ववेद काड १४ विवाह परक ही है परन्तु इस लेख मे मुझे वेद मन्त्रो पर विचार नहीं करना है जो वेद म इस विषय की जिज्ञासा रखते है उनका वेद मे उपारलिखित स्थलो मे देख लेना चाहिये। इस लख मे मुझे केवल विवाह के भेद दिखाने है। यह विषय स्मृतिकारों का है क्योंकि समयानुसार विवाह मे भेद होना अनिवार्य सा है। स्मृतिकार उसे व्यवस्था मे लाकर नियम बना देते हैं। स्मृतियो से ही इन भेदो का उल्लेख करके विचार करना है कि इस समय कौन २ से विवाह प्रचलित है।

(१) अथ ब्रह्म देयाया प्रदान विधि वक्ष्याम।
काठिक गृह्य सूत्र प्र० १५-१

इस सूत्र मे ब्रह्म विवाह का उल्लेख है यह ब्रह्म विवाह की विधि का वर्णन करता है। अन्य किसी विवाह विधि का नहीं। इससे प्रतीत होता है यह एक ही प्रकार विवाह मे मानता था।

(२) षड् विवाहा। २८। ब्राह्मो दैव आर्षो गाधर्व क्षात्रो मानुषश्चेति। २६। वासिष्ठस्मृति अ० १

विवाह ६ प्रकार का है १ ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ गाधर्व ५ क्षात्र ६ मानुष इनमे ४ के लक्षण आगे चलकर लिखूगा अन्य दो के लक्षण यहा ही लिखता हूँ क्योंकि यह दोनो नाम अन्य स्मृतियों म नही हैं।

या बलेन सहसा प्रमथ्य हरति स क्षात्र। ३४
वासिष्ठ स्मृति अध्याय १

जिस कन्या को बलपूर्वक हरण किया जाता है वह हरण युक्त विवाह क्षात्र विवाह है। यही दूसरी स्मृतियो म राक्षस के नाम से लिखा है।

पणित्वा धन क्रीता स मानुष। ३५। वा० स्मृति अध्याय १

जिस विवाह मे कन्या धन देकर प्राप्त की जाय वह विवाह मानुष विवाह कहा जाता है यही अन्य जगह आसुर है।

जिस प्रकार वासिष्ठ स्मृति मे विवाह ६ प्रकार का लिखा है इसी प्रकार वासिष्ठ धर्म सूत्र में भी विवाह ६ प्रकार का ही है और उसमे भी यही नाम है और वही लक्षण है। वासिष्ठ स्मृति और वासिष्ठ धर्म सूत्र वसिष्ठ के होने से एक मत का होना स्वाभाविक ही है।

(३) ब्राह्मो दैवस्तथैवार्ष प्राजापत्यस्तथासुर।
गधर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधम॥
मनुस्मृति अध्याय ३। २१

१ ब्राह्म २ दैव ३ आर्ष ४ प्राजापत्य ५ आसुर ६ गधर्व ७ राक्षस ८ पैशाच।

मनु जी इस प्रकार आठ प्रकार के विवाह मानते है

शख स्मृति अध्याय ४ श्लोक २ मे मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे है।

गौतम स्मृति अध्याय ४ श्लोक २ में मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाद लिखे हैं।

गौतम धर्म सूत्र प्रश्न १ अध्याय ४ में मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे हैं।

वैखानस धर्म सूत्र प्रश्न ३ अध्याय १ मे मनुवत् आठ प्रकार के ही विवाह लिखे हैं।

आश्वलायन गृह्य सूत्र १, ६ में भी मनु की भाति विवाह आठ ही लिखे हैं।

इन आठ प्रकार के विवाहों के लक्षण सबने लिखे हैं मै उन सब के पाठ लिखना उचित न समझ कर केवल धर्म सिंधु और याज्ञवल्क्य स्मृति के पाठ उद्धृत करता हूं ताकि पाठक समझ सकें कि उनके क्या लक्षण हैं और दूसरी स्मृति मे भी केवल शब्द भेद हैं भाव भेद नही हैं।

(१) योग्य वरमाहूयालंकृत्य कन्यादानविधिना तस्मैदान ब्राह्मो विवाह

(२) यज्ञे ऋत्विग् कर्मकुर्वतेलकृत्य कन्यार्पणं दैव ।

(३) वरादेक गो मिथुन द्वैवा गृहीत्वा तस्मै कन्यार्पणमार्ष ।

(४) त्वयैतयैव सह गृह धर्म आचरणीय एतस्या जीवन पर्यन्त विवाहोत्तर चतुर्थाश्रमोन कार्य इत्याभाष्य कन्यादानं प्राजापत्य ।

(५) ज्ञातिभ्यो यथेच्छं धन दत्त्वा विवाह आसुर ।

(६) वरवध्वोरिच्छयान्योन्य सयोगो गधर्व ।

(७) युद्धादिना बलाद्धरणा राक्षस ।

(८) चौर्येण कन्या हरणं पैशाच ।

योग्य वर को बुलाकर अलकृत कन्या विधि पूर्वक देना ब्राह्म विवाह है इस समय भी इस प्रकार के विवाह होते हैं परन्तु उनकी संख्या अत्यत न्यून है।

जिसमें ऋत्विज् कर्म करने हों उस प्रकार शान से अलकृत कन्या वर को देना दैव विवाह है

आज कल अधिक विवाह इसी कोटि मे किये जाते हैं। विवाह में बरात बुलाना ऋण उठाकर भी प्रतिष्ठा प्राप्त करना आज कल देखा जाता है यह दैव विवाह ख्याति के इच्छुक जनों के लिए आवश्यक प्रतीत होना है।

तीसरा आर्ष है जिसमे एक वा दो गौ वरसे लेकर उसे कन्या दी जाती थी। इस समय इस प्रकार गौ लेने की प्रथा मैंने किमी प्रात में देखी नही है इस आधार पर मै यही लिख सकता हू कि आजकल यह विवाह नही होना है।

इसके साथ जीवन पर्यन्त गृहस्थ में रहकर गृह धर्म का पालन करवाना और वानप्रस्थ वा सन्यास में न जाना इस प्रकार का निश्चय करके कन्या देना चौथा प्राजापत्य विवाह था।

आजकल प्राय 'वानप्रस्थ वा सन्यास में नहीं जाते हैं इस दृष्टि से तो अधिक विवाह प्राजापत्य ही हैं परन्तु विवाह समय वर से ऐसा पूछा नही जाता इतनी न्यूनता होने पर भी कार्य की दृष्टि से इन विवाहों को प्राजापत्य मान लेना चाहिये।

कन्या वालों को धन देकर विवाह करना आसुर विवाह है। यह विवाह इस समय भी होते हैं। कन्या के सम्बन्धी जितना धन निश्चय करले उतना वर से लेकर विवाह कर देते हैं। जहा कन्याओ की संख्या न्यून है वा जिन बिरादरियों में न्यून

कन्याएं हैं उनमें दाम भी अधिक पड़ता है। इस विषय में महाभारत में भी पाण्डु के विवाह समय जब भीष्म पितामह जी ने मद्र के राजा से माद्री के विषय में पूछा तो उसने भी यही कहा था कि हम तो धन लेकर कन्या दिया करते हैं जिससे पता लगता है पूर्व समय मे भी यह परिपाटी कई परिवारों मे निश्चित रूप में थी।

वर कन्या का अपनी इच्छा से विवाह करना गधर्व विवाह था।

इस प्रकार के विवाह अब भी होते हैं परन्तु कुछ समय पूर्व तो इसका अभाव सा ही था आज कल विवाह युवावस्था मे होने से इनकी सख्या भी अधिक हो गई है।

लड़ाई करके कन्या को उठा ले जाना राक्षस विवाह था—

ऐसे विवाह अब भी कही २ होते हैं।

चोरी से कन्या का हरण करना पिशाच विवाह था। कई स्मृतियों मे कन्या को मादक द्रव्य पिलाकर उन्मत्त होने पर हरण का उल्लेख है। यह विवाह भी कही २ हो जाता है।

अत के दोनो विवाहों को विवाह इसलिये माना है जिस कन्या को लड़कर वा चोरी से ले जाया जाय उसके साथ आजीवन रहना होता था। उसको फिर छोड़ा नही जाता था। इसलिये यह भी विवाह माने जाते थे परन्तु यह अच्छे न माने जाते थे इसी प्रकार आसुर विवाह भी अच्छा न माना जाता था। उसमे कन्या का क्रय है।

याज्ञवल्क्य स्मृति मे यह आठ विवाह इस प्रकार लिखे है।

ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलङ्कृता।
यज्ञस्थ ऋत्विजे दैव आदायार्षस्तु गोद्वियम्॥
इत्युक्त्वा चरता धर्मं सह या दीयतर्थिना-
प्राजापत्य।
आसुरो द्रविण दानाद् गधर्व समयान्मिथ॥
राक्षसो युद्ध हरणात्पैशाच कन्यकाछलात्।

याज्ञवल्क्य आचार अध्याय विवाह प्रकरण।

इसके अर्थ पूर्व से मिलते जुलते ही हैं। इस प्रकार विवाह आठ प्रकार के होते थे परन्तु इस समय इनके अतिरिक्त परिवर्तन का विवाह भी है अर्थात् अपनी कन्या किसी के पुत्र को देकर उसकी कन्या का विवाह अपने पुत्र से कर लेना। यह विवाह स्मृतियों मे कही नहीं है। इसी प्रकार कन्या पक्ष से धन लेकर विवाह करना इस समय प्रचलित है धनी लोग ऐसे विवाह अधिक करते हैं। आसुर विवाह में वर पक्ष वाले कन्या पक्ष वालो को दिया करते थे अब उसके विपरीत वर पक्षवाले कन्या पक्ष वालों से मागते हैं इसका भी उल्लेख पुरानी स्मृतियों मे नहीं है। यह दो विवाह इस समय प्रचलित हैं और दोनों ही निन्दनीय हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे विवाह प्रकरण में मनुस्मृति के आधार पर आठ विवाह लिखे हैं उनमे भी दो निन्दनीय है दो मध्यम और चार श्रेष्ठ हैं ऐसा लेख है। इस समय ब्राह्म का प्रचार बढाना चाहिये दैव विवाह मे धन व्यय न करके परोपकार के कार्यो में व्यय करना ठीक होगा आर्ष मिट चुका है प्राजापत्य, गधर्व भी अच्छी तरह हो सकते हैं राक्षस, पिशाच, आसुर का तो नाम भी न लेना चाहिये।

वैदिक यज्ञों की अहिंसात्मकता

(लेखक—प्र० स्वा० धर्मदेव सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति वैदिकधर्मप्रचारक)

(नवम अखिलभारतीय प्राच्य विपश्चित्सम्मेलन (All India Oriental Conference) के ट्रिवेन्ड्रम (ट्रावनकोर) अधिवेशन मे २१ १२-३७ को प्रो० सुनीति कुमार चैटर्जी के सभापतित्व में पढे सस्कृत निबन्ध का भाषानुवाद)

ओ३म् योभूतं च भव्यं च सर्व यश्चाधितिष्ठिति स्वर्यस्य चकेवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणेनम' ॥

ओ३म् अग्नेय यज्ञमध्वर विश्वत परिभूरसि। स इद् देवेषुगच्छति ॥ ऋ १।१।४

श्रीयुत मान्य सभापति जी तथा मान्य विद्वद्-वृन्द।

आज मे आपके सामने वैदिकयज्ञों की अहिंसात्मकता" इस विषय पर निबन्ध पढना चाहता हूँ। सत्य सनातन वैदिकधर्म के प्रेमी आप सब इस निबन्ध को सावधान होकर सुनेंगे और निष्पक्ष हो कर इस आवश्यक विषय पर विचार करेंगे ऐसा मेरा दृढ विश्वास है। समय के सकोच के कारण मै विस्तार से सब प्रमाणों को प्रस्तुत नहीं कर सकूंगा और न उनकी समालोचना कर सकूंगा इस बात का मुझे खेद है। सक्षेप से ही इस विषय पर प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

(१) यज्ञ की प्रधान धर्मता—

सम्पूर्ण वैदिक साहित्य के अनुशीलन करने पर यज्ञ के प्रधान धर्म होने मे सन्देह का जरा भी कारण नहीं हो सकता।

"यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकमहिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्या सन्ति देवाः॥' ऋ० १०।९०।

इत्यादि वेदमन्त्र यज्ञ को प्रधान धर्म बताते हुए उसके द्वारा पूजनीय भगवान् की पूजा का प्रतिपादन करते हैं। विष्णुर्वै यज्ञः ॥ऐत० १।१५ विष्णुर्यज्ञः। गोपथ उ० १।१२ विद्वांसो हिदेवाः॥ (शतपथ ३।७।७।६ सत्यसंहिता वैदेवा ॥ ऐत० १।६ सत्यमयाउ देवाः॥ (कौषीतकि ब्रा० २।८) इत्यादि प्रमाणों से मन्त्र के प्रथम चरण का उपर्युक्त अभिप्राय है कि सत्यनिष्ठ विद्वान् लोग यज्ञ के द्वारा पूजनीय परमेश्वर की पूजा करते है। मन्त्र के २य चरण मे यज्ञ के सब से उत्तम धर्म होने और तृतीय चतुर्थ चरणों में उसके द्वारा ही विद्वान् सकल क्लेश रहित परमानन्द रूप मोक्ष को प्राप्त करते है यह बताया गया है।

(२) यज्ञ शब्द के अर्थ का विमर्श—

अब इस बात का विचार करना है कि यज्ञ शब्द का अर्थ क्या है ? उसके महत्व का विशेष कारण क्या है ? और क्यों 'यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा' इसमें यज्ञ के लिये एक वचन का प्रयोग होने पर भी 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्' बहुवचन का प्रयोग किया गया है ?

सब से पूर्व यज् धातु से बने यज्ञ शब्द के धात्वर्थ का धातु पाठ के आधार पर विचार किया जाएगा। धातु पाठ मे यज धातु के देव पूजा सगति करण दान ये तीन अर्थ बताये गये है। सत्यनिष्ठ विद्वानो को देव नाम से कहा जाता है इस बात को सप्रमाण पहले दिखाया ही जा चुका है। सङ्गति करण का अर्थ जनता मे एकता उत्पन्न करना तथा सङ्घ सम्मेलनादि द्वारा मिल कर कार्य करना है।

दातव्यमिति यत् दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देश काले चपात्रे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम ॥
(गीता अ० १७)

इत्यादि गीता वचन के अनुसार देश काल पात्र का विचार करके कर्त्तव्य बुद्धि से अनाथ असहाय दुःखित तथा उत्तम सस्थाओ की सहायता करना दान है। इस प्रकार यह स्पष्ट ज्ञात होता हैं कि यज्ञ शब्द द्वारा हमारे तीनो प्रकार के उत्तम कर्त्तव्यो का जो अपने से बड़ो, अपने समानो तथा किसी अवस्था मे हमारी अपेक्षा हीन स्थिति के लोगो के प्रति है, समावेश हो जाता है जिन्हे क्रम से पूजा वा सत्कार, सगति करण और दान शब्दो द्वारा बताया गया है। यज्ञ शब्द के एक होन पर भी इन तीन प्रकार के कर्त्तव्यो का बोधक होने के कारण 'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्' यहां बहुवचन के प्रयोग का रहस्य तथा सार्थकता इस व्याख्या से स्पष्ट हो जाती है। 'यज्ञो वैश्रेष्ठतमकम' (शत० ।१।७।१।५) यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म'' (त० ३ । २ । १ । ४) इत्यादि वचनो की यथार्थता को भी बुद्धिमान इस प्रकार जान सकते हैं। इस रीति से यज्ञ का शब्दार्थ सक्षेप से बताकर उसकी व्यापकता और विशालता का प्रति पादन किया जाता है।

(३) यज्ञ शब्द की उदात्तता और व्यापकता—

यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक है और परोपकारार्थ केवल कर्त्तव्य बुद्धि से किये जाने वाले सब शुभकर्मों को यज्ञ नाम से पुकारा जा सकता है। यह वेद ब्राह्मण उपनिषत्, भगवत् गीता आदि के अनुशीलन से हमे स्पष्ट ज्ञात होता है। 'यज्ञो वै सुम्नम्" (शत० ७ । २ । २ । ४) यज्ञो वै विट (शत० १४ । ३ । १ । ८) 'यज्ञो वै विशो यज्ञे हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि।" (शत० ८ । ७ । ३ । २१) "पुरुषो वाव यज्ञ" (छान्दोग्य) "पुरुषो यज्ञ" (शत० ३ । १ । ४ । २३)

द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा, योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च, यतय संशित व्रता ॥ २९
अपाने जुह्वति प्राण, प्राणेऽपान तथापरे।
प्राणापानगती रुद्ध्वा, प्राणायाम परायणा ॥ २८
अपरे नियताहारा, प्राणान् प्राणेषु जुह्वति।
सर्वेऽप्येते यज्ञ विदो, यज्ञ क्षपित कल्मषा ॥ ३०
गी अ ४

"आत्मा यजमानो मनो ब्रह्मा लोभादयः पशव.।" (गर्भोपनि०) 'अस्य शरीर यज्ञस्य आत्मा यजमान, बुद्धि पत्नी, ओङ्कारो यूप, काम पशु, केशा दर्भान इत्यादि (प्राणाग्न होत्रोपनि) यज्ञस्यात्मा यजमान, श्रद्धा पत्नी शरीर निध्मम् हृदय यूप, मन्यु पशु दम शमयिता (महानारायणोपनि०) "आत्मा वै यज्ञ" (शत० ६ । २ । १ । ७) "वागु यज्ञ" (शत० १ । १ । ४ । ११) इत्यादि वाक्यो

से यज्ञ की विविधता उदात्तता तथा अत्यन्त व्यापकता स्पष्ट हो जाती है। 'स्वाध्यायो वै ब्रह्म यज्ञ (शत० ११।५।६।२)
अध्यापन ब्रह्म यज्ञ, पितृ यज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिभौतो, नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥ (मनु० ३।७०) इत्यादि वचनों से भी उपर्युक्त तत्त्व का समर्थन होता है तथा व्यक्ति, समाज और जगत् के हितकारक सब शुभ कर्मों का यज्ञ शब्द मे समावेश स्पष्टतया ज्ञात होता है। इसी लिए भगवद् गीता मे चार वर्णों के धर्मों का पालन भी यज्ञ नाम से कहा गया है। स्वार्थत्याग, सेवा परोपकार और लोकहित की भावना ही यज्ञ की प्रधान भावना है। इस प्रकार यज्ञ के लिए किए गये कर्म बन्ध का कारण नही होते इस बात को—

'यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र, लोकोऽयकर्म बन्धन। तदर्थ कर्म कौन्तेय, मुक्त सङ्ग समाचर। ३।९)

(गीता इत्यादि वचनों द्वारा योगिराज श्रीकृष्ण महाराज ने स्पष्ट बताया है।

(४) अध्वा शब्द की व्याख्या—

सारे वैदिक और लौकिक सस्कृत साहित्य मे अध्वा शब्द का प्रयोग यज्ञ के पर्याय रूप से किया गया है इस मे सभी सहमत है।

"अध्वरो वै यज्ञ" (शत० १।२।४।५॥ १। ४।५।३॥ २।३।४।१०॥ ३।५।३।१७॥ ३।९।२।११॥

अध्वर इति यज्ञ नामसु॥ (निघ० ३।१७) इत्यादि अनेक वाक्यो को इस सम्बन्ध मे यहां उद्धृत किया जा सकता है। अध्वा शब्द की निरुक्ति आचार्य ने बताते हुए लिखा है "अध्वर इति यज्ञ नाम। ध्वरतिर्हिंसा कर्मा तत्प्रतिषेध॥ अर्थात् अध्वर यज्ञ का नाम है जिस का धात्वर्थ हिंसारहित कर्म है, इससे वैदिक यज्ञो की अहिंसात्मकता का स्पष्ट समर्थन होता है।

'अग्नेयं यज्ञ मध्वर विश्वत परिभूरसि। सइद् देवेषु गच्छति॥ ऋ० १।१।४'

इत्यादि वेद मन्त्र अहिंसात्मक यज्ञ ही दिव्यगुणो और आनन्दो को प्राप्त कराने वाला और स्वीकार करने योग्य होते है इस तत्व का स्पष्ट प्रतिपादन करते है।

(५) अहिंसा तत्त्व के बोधक वैदिक आदेश—

"पशून पाहि" (यजु० १।१)

'कृत्यामपयुव॥ यजु० ३५। ११ (कृत्या शब्द कृता-छेदने से बना है जिसका अर्थ हिंसा है अत इस मन्त्र खण्ड का अर्थ हिंसा को दूर करना वा अहिंसक बनना है।

'पशूस्त्रायेथाम्" (यजु० ६।२२) अर्थात् हे स्त्रीपुरुष। तुम दोनो पशुओ की रक्षा करो "मा हिंसी पुरुषं जगत्" (यजु० १६।३)

मा हिंसी स्तन्वो प्रजा॥ (यजु० १२।३२) अर्थात् पुरुषो और जगत् के अन्य प्राणियो की हिंसा मत कर। अपने शरीर से अन्य प्रजाओ वा प्राणिवर्ग की हिंसा मत कर।

द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्। (यजु १२।९५) दोपाये मनुष्यादि और चौपाये पशु सब नीरोग तथा स्वस्थ रहे।

द्विपादव चतुष्पात् पाहि॥ (यजु० १४।८) अर्थात् हे मनुष्य! तू दो पाये मनुष्यो और

चौपाये सब मनुष्यों की रक्षा करे।

शमसद् द्विपदेश चतुष्पदे। विश्वं तुष्ट ग्रामे अस्मन्नवातुरम्॥ (यजु० १६। ४८)

स्वस्ति मात्र उतपित्रेनो अस्तु स्वस्ति गोप्यो जगते पुरुषेभ्य। विश्वसुभूत सुविदत्र नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्॥ (अथर्व १। ३१। ४)

इमं मा हिंसीद्विपादं पशुम्॥ यजु० १३। ४७)

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभि त्वचपशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्। त्वष्टु प्रजाना प्रथम जनित्रमग्ने माहिंसी परमे व्योमन्॥ यजु० (१३। ५०)

दृतेदृहमामित्रस्य मा चक्षुषासर्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ यजु० ३६। १८

इत्यादि वेदमन्त्र अहिंसा के तत्त्व और पशु-हिंसा के निषेध का स्पष्ट उपदेश करते है, इन मन्त्रों मे सब प्राणियो के कल्याण की प्रार्थना करते हुए उन्हे मित्र दृष्टि से दिखाने का उपदेश किया गया है। यज्ञोवैश्रेष्ठतम कर्म' इस प्रकार जिस यज्ञको सब से उत्तम कर्म कहा गया है उस मे पशुहिंसा का विधान कैसे सङ्गत हो सकता है? इस विषय मे निम्न वेद मन्त्र जो पशुरक्षा का विधान करने वाले और हिंसा का प्रतिषेध करने वाले है विशेष ध्यान देने योग्य हैं—

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति पशून्ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति तेन: पशुषु जाग्रति॥ (अथर्व १९। ४८। ५)

इस मे सज्जनो के विषय मे कहा है कि वे सब पशुओ की रक्षा करते है और सावधान जागरूक रह कर सब कार्य दिन और रात को करते है।

न कि देवा इनीमसि न क्यायोपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि॥" (सामवेद छ० आर्चिक अ० २ ख० ७ म० २)

इस मन्त्र पर सायणाचार्य का भाष्य निम्न प्रकार है हे (देवा) युष्मद् विषये (नकि इनीमसि) न किमपि हिंस मीङ् हिंसायम् न च (योपयामसि) योपयाम—अनुष्ठानेन अन्यथा नुष्ठानेन वा मोहयाम युप-मोहनेकिंतर्हि—मन्त्रेपु रमार्ं श्रुतो विधिवाक्य प्रति पाद्य यद् युष्मद् विषये कर्म तत् आचराम इति।

भावार्थ—हे देवो हम तुम्हारे विषय मे वा तुम्हारे उद्देश्य से हिंसा नही करते और न विरुद्ध अनुष्ठान वा कर्तव्य त्याग द्वारा मोहित करते है किन्तु मन्त्रो मे जो कुछ प्रतिपादित हैं उनके अनुसार कर्म करते हैं। इसकी व्याख्या मे बगाल के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय श्री प० सत्यव्रत सामाश्रमी जी ने इस प्रकार लिखा था, (न इनीमसि) प्राणिवध कर्म पश्वादि याग न कुर्म इत्यर्थ। (न योपयामसि) यूपनिखननमपि न कर्म, वृक्षौषध्यादि हिंसामपि न कम॥" अर्थात् हम प्राणि हिंसादि कर्म यज्ञ के नाम से नही करते और न व्यर्थ वृक्ष ओषधि आदि की हिंसा करते है। यज्ञादि मे गाय इत्यादि पशुओ की हिंसा—करने वालो की मूर्खता का वेदो के निम्न मन्त्र मे स्पष्ट प्रतिपादन है।

मुग्धा देवा उत शुनायजन्तीत गोरङ्गैः पुरुधाय-जन्त। य इम यज्ञ मनसा चिकेत प्रणो वाचस्तमिहेह ब्रवा॥ (अथर्व ७। ५। २५)

इस मन्त्र का सायण भाष्य निम्न लिखित है—(मुग्धा) कार्याकार्य विवेकरहिता (देवा) यजमाना (उत, अपि (शुना) अत्यन्तगर्हितेन पशुना (अयजन्त) अखाद्यान्त परमावधि श्वा अवध्यानां परमावधिर्गौ एवं (पुरुधा बहुधा पशु यज्ञ विवेकरहिता मूढा कुर्वन्तीति कथनेनापि याज्ञिकै रेतन्निन्द्य कर्म यज्ञे क्रियत इत्याश्चर्यमेव तन्नकर्तव्यम्। क्रियते चेत् तैस्तदा तेषां मुग्धत्वं मूढत्वंमस्त्येव॥ भावार्थ यह कि यज्ञो मे पशुओ की हिंसा करते है वे मूर्ख है। अत. यज्ञादि मे

भारतवर्ष और समाज-सेवा

[ले०—श्री० स्वामी सम्बुद्धानन्द (रामकृष्ण मिशन)]

(अंग्रेजी लेख का सार)

(१)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। संसार मे होश सभालते ही वह अपने को सामाजिक वातावरण में रखा हुआ अनुभव करता है। ज्यों २ उसकी आयु और उसके ज्ञान में वृद्धि होती है, वह सामाजिक जीवन के अधिकारों और प्रसादों का आनन्दानुभव करता है। यत वह बुद्धि से युक्त होता है इसलिए उसे सहज ही यह अनुभव हो जाता है कि समाज के लिए बदले के रूप मे उसे भी कुछ करना है। बाद मे वह समय आ जाता है जब वह समाज सेवा को मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार मानने लगता है।

एक शब्द में समाज-सेवा का अर्थ प्रेम-प्रयास है। जब समाज सेवा बिना किसी स्वार्थ या फल की कामना से की जाती है तब वह उपकार कार्य्य समझा जाता है। शाब्दिक रूप मे वह सेवा जो किसी सोसायटी के लिए अभिप्रेत होती है सामाजिक और जब वह किसी देश की समस्त सोसाइटियों के लिए अभिप्रेत होती है तब राष्ट्रीय और जब वह बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के विशाल मानव-समाज के प्रति अभिप्रेत होती है तब जनोपकारक कहलाती है।

समाज-सेवा आत्म-विकास का सर्वोत्तम साधन है। मनुष्य जीवन की सर्वाङ्गीण पूर्णता की सिद्धि का यत्न है। प्रत्येक यत्न जब वह सच्चा और शुद्ध होता है अनायास ही सामाजिक और देशीय सीमाओं का अतिक्रमण करके विश्व प्रेम की सर्वोच्च शिखा पर आसीन हो जाता है।

भारतवर्ष मे समाज-सेवा विशेषता-शून्य नहीं है। ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका में इस शब्द का कुछ भिन्न अर्थ है। भारतवर्ष में समाज-सेवा अपने को ऊंचा समझने तथा अहंकार भावना से रहित है जो प्राय परोपकार के इस प्रकार के कार्य्यों के साथ अविच्छिन्न रूप मे जुड़े होते हैं। भारतवर्ष मे इस प्रकार के कार्य्य प्रेम और श्रद्धा के भावों के सूचक होते हैं। समाज-सेवा की कुंजी निःस्वार्थ भावना और बलिदान है। समाज-सेवा के प्रत्येक कार्य्य में निःस्वार्थ-भावना अवश्य ही सर्वोपरि होनी चाहिए। अन्यथा वह

पशुहिंसा कभी न करनी चाहिये और ज्ञानियो से यज्ञ के तत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

विस्तार के भय से इस विषयक अन्य मन्त्रों का यहां उल्लेख नही किया जा सकता। ईश्वरीय ज्ञान रूप वेदों मे कभी परस्पर विरोध नहीं हो सकता। सायण उव्वट महीधर आदि के भाष्यों मे जहां यज्ञों में पशुहिंसा का प्रतिपादन प्रतीत होता है वह भाग परस्पर विरुद्ध और ऊपर उद्धृत वैदिक आदेशों के विरुद्ध होने के कारण सर्वथा अमान्य है॥

(क्रमश:)

कार्य्य निश्चित असेवा समझा जायगा। भारतवर्ष मे बिना त्याग के सेवा सोची भी नही जा सकती। सेवा अविच्छिन्न रूप मे त्याग के साथ सम्बद्ध होती है। सेवा और त्याग एक दूसरे का बहिष्करण नहीं करते हैं वरन् शरीर और आत्मा के सदृश एक दूसरे पर आश्रित होते है। समस्त प्रकार की सेवाओं की अन्तरात्मा 'त्याग' होता है इसी मे वह प्रगट होती और चमकती है।

समाज-सेवा जैसी कि ऊपर प्रस्तुत की गई है वर्तमान युग की साम्यवादी सेवा से नितान्त भिन्न है और हमे किसी प्रकार के भ्रम मे नही पडना चाहिए। साम्यवाद जो पूर्णतया एक वाद' और आन्दोलन है और जिसका उद्देश्य सम्मिलित स्वामित्व एव उत्पत्ति और निर्यात के साधनो पर सम्मिलित शासन के द्वारा जन-साधारण के स्वार्थों के लिए जाति का सामूहिक सगठन करना है, एक एक करके देशों पर आक्रमण कर रहा है और पिछली कई शताब्दियो से ससार को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान साम्यवादी न धर्म्म का समर्थन ही करते हैं और न विरोध ही। परन्तु भारतवर्ष मे समाज सेवा वैसी ही पवित्र और शुद्ध मानी जाती है जैसा धर्म्म माना जाता है। इतना ही नहीं, धार्मिक जीवन के प्रत्येक व्यापार मे यह महत्व पूर्ण स्थान रखती है और धर्म का एक अनिवार्य अग समझी जाती है। यत सेवा पीडित मानव-समाज की शारीरिक 'बौद्धिक' आचारिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओ से सम्बन्धित होती है इसलिए सेवा कार्यों का निम्न प्रकार वर्गीकरण हो सकता है —

(१) आर्थिक (२) मानसिक (३) आध्यात्मिक और (४) शारीरिक।

प्रत्येक राष्ट्र का अपना निजू आदर्श होता है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आदर्श सेवा और आत्म-समर्पण है। इन स्रोतों मे उसे दृढ बनाओ शेष के लिए वह स्वय व्यवस्था कर लेगा। सेवा और त्याग भारतीय सस्कृति की आधार भित्ति हैं। उसकी आकाक्षाए और भावनाए सुरक्षा और समृद्धि ये सब इस ऊचे आध्यात्मिक आदर्श पर केन्द्रित है। इसी आदर्श से भारतवर्ष ने ससार मे एक बार अपना अद्भुत महत्व स्थापित किया था। अब उसके लिए इसमे परिवर्तन करना असभव है। भारतवर्ष का यह आदर्श उतना ही पुराना है जितनी यह सृष्टि है। यह कहना कि भारतवर्ष मे समाज सेवा का आदर्श अपने विविध प्रकाशमान रूपों मे सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक विद्यमान है अत्युक्ति नहीं है।

भारत में नवजीवन और पश्चिमी जगत्

(लेखक—एक मर्मज्ञ)

संस्कृतियों का इतिहास 'विचारों की विजय' होती है। इतिहास के सुदूर प्रभात से जब बड़ी २ संस्कृतियों का सूत्रपात हुआ और वे विकसित हुईं प्रत्येक संस्कृति कुछ मुख्य २ विचारों को क्रिया में लाने का यत्न करती रही हैं और वे विचार उस संस्कृति के प्रत्येक पहलू पर अपनी छाप छोड़ गए हैं। रोम की संस्कृति कानून और व्यवस्था पर यूनान की संस्कृति स्वतन्त्रता पर, असीरिया की संस्कृति युद्धवाद पर और चीन की संस्कृति आचार सम्बन्धी उत्थान पर केंद्रित रही है। भारतीय संस्कृति का मुख्य और निराला स्वर नए २ और ताजे रूपों में आत्मा का अवगाहन करता रहा है।

भविष्य में संसार की जो संस्कृति विकसित होगी, जिसमें प्रत्येक देश अपना श्रेष्ठतम योग देगा उसमें भारत वर्ष का योग स्थिर महत्व का योग होगा क्योंकि केवल आत्मा ही भौतिक वाद की विनाशक और भयावह शक्तियों को काबू म रख सकता है साथ ही अलौकिक वस्तु ही लौकिक चीजों का ठीक २ नियन्त्रण और समन्वय कर सकती है। यह सचाई धीरे २ जाति विद्वेष की दीवारों पर विजयी हो रही है और पश्चिम के ईमानदार विचारक इस सचाई को स्वीकार कर रहे हैं, सर फ्रांसिस यंग हजबैंड, आध्यात्मिक विषयों में जिनकी दिलचस्पी प्रसिद्ध है 'न्यू यार्क टाइम्स मैगजीन, (New York Times Magazine) में एक छोटे लेख में इस सचाई की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

'भारत में आध्यात्मिक नवजीवन की प्रेरणा मिल रही है' शीर्षक में लिखते हुए, लिखते हैं —'

हजारों लाखों वर्ष तक भारत वर्ष अध्यात्म वाद का मूल-स्रोत रहा है। भारत वर्ष में ऐसे बहुत से पवित्र व्यक्ति छुपे पड़े हैं जो पब्लिक प्रदर्शन और प्रकाशन से घृणा करते हैं। इसलिए उत्सुक अन्वेषकों को स्वयं उनकी तलाश करनी चाहिए। जिस प्रकार शहद की मक्खी शहद के लिए फूलों के पास जाती है उसी प्रकार हमें भी उनके पास जाना चाहिए और वे लोग हमारे पास आयेंगे यह आशा नहीं करनी चाहिए। यह ठीक है युरोप और अमेरिका में लेक्चर देने के लिए भारतीय आते हैं परन्तु विचारों के प्रसार का यह स्वाभाविक तरीका नहीं है और पब्लिक प्लैट-फ़ार्म पर हम उन्हें सफल रूपमें नहीं देखते हैं। इसी लिए वे अत्यन्त बहुमूल्य चीज़ हमें नहीं दे पाते हैं। यदि हम उस बहुमूल्य वस्तु को चाहते हैं तो हमें ही उनके पास जाना चाहिए।

पश्चिम के लोगों को भारतीयों के पास क्यों जाना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर सीधा साधा है। भारत वर्ष का आत्म ज्ञान ही संसार की वर्तमान अशान्ति को दूर करके शान्ति स्थापित कर सकता है। हम पश्चिम वालों को अपने बड़प्पन के ख़याल को

शंका समाधान

VIII. ASHRAMAS

1 What do " Ashramas " in a man's life represent ?

2 Is it desirable to preserve them ? If so in what form ?

3 Are they to be renovated ?

4. If they are to be renovated, what should be the Dharma of a person in each of the Ashramas ?

ASHRAMAS.

1. Ashramas represent four stages of ones, life, Brahmacharya the only compulsory and the other optionals.

2 Preservation of all the four is desirable but a discipline is necessary regarding the Vanaprastha and Sanyasa Undesirable element entering into these ashramas should be discouraged

4. Manusmriti gives the necessary Dharma

आश्रम

प्रश्न

१—मनुष्य के जीवन में 'आश्रमों का क्या महत्व है ?

२—क्या आश्रमों का बनाए रखना वाञ्छनीय है ? यदि हाँ तो किस रूपमें ?

३—क्या वे पुनर्जीवित होने चाहिएँ ?

४—यदि वे पुनर्जीवित हों तो प्रत्येक आश्रम धर्मी का धर्म क्या होना चाहिए—

उत्तर

(१) आश्रम के ४ विभागों को जाहिर करते हैं। ब्रह्मचर्य उनमें अनिवार्य है और अन्य दूसरे ऐच्छिक हैं।

(२) चारों आश्रमों का बनाए रखना वाञ्छनीय है परन्तु वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के लिए नियन्त्रण आवश्यक है। उन आश्रमों में अवाञ्छनीय अंश का प्रवेश निरुत्साहित होना चाहिए।

(३) मनुस्मृति में आश्रमों के आवश्यक धर्म मौजूद हैं—

दूर रख कर यह स्वीकार करना ही होगा कि यदि भारत वर्ष वैज्ञानिक उन्नति, यांत्रिक आविष्कारों, बड़े२ व्यापारों शासन और संगठन कला में पश्चिम से बहुत कुछ सीख सकता है तो हमें भी आत्मिक ज्ञान विज्ञान में, जिसकी हम में भयंकर कमी है, भारत से बहुत कुछ सीखना है। हम भारत वर्ष के आध्यात्मिक नेताओं से सीख सकते हैं कि जब तक आत्मा की बाहरी गति को उसकी अन्दरूनी गति में परिवर्तत नहीं करते तबतक हमारा कल्याण सम्भव नहीं है।

● ● ● ●

पुनर्जन्म

प्रश्न—आवागमन सत्य है वा असत्य और इसका क्या प्रमाण है ?

उत्तर—आवागमन सत्य है। जो जैसे कर्म करता है वैसा ही शरीर पाता है। अच्छे कर्म करने से मनुष्य का और बुरे कर्म करने से पक्षी आदि का। बहुत उत्तम कर्म करने से मनुष्य देवता अर्थात् विद्वान और बुद्धिमान होता है।

प्रश्न—अन्य प्रमाण इसके सम्बन्ध में दीजिए ?

उत्तर—(१) बालक पैदा होते ही अपनी माता का दूध पीने लगता है क्यों कि उसको पहले जन्म का अभ्यास बना रहता है।

(२) संसार में लोगों को धनी, कंगाल, सुखी, दुखी अनेक प्रकार के ऊंच नीच देखने से विदित होता है यह सब पूर्वजन्म के कर्मों के कारण हैं।

(३) जीव अनादि है। यदि जीव का एक ही जन्म हो तो जगत में सुख दुख की व्यवस्था नहीं रहती फिर यह भी है कि मरने के बाद कयामत के दिन तक न्याय की प्रतीक्षा में जीव को हवालात में रहना होगा।

(४) जीव और जीव के गुण, कर्म स्वभाव अनादि हैं और परमेश्वर के न्याय करना आदि गुण भी अनादि हैं। जीव के कर्मों का जो प्रवाह रूप से अनादि चले आते हैं, ठीक २ फल देना ईश्वर का काम है। कर्म फल जीव बिना शरीर धारण किए पा नहीं सकता अतः आवागमन सिद्ध है। जीव के हर जन्म में सञ्चित और क्रियमाण कर्म होते हैं, एक जन्म का जोक्रियमाण कर्म है, दूसरे जन्म का संचित कर्म बनता है। जो जीव की उत्पत्ति मानी जावे तो उसका नाश भी मानना पड़ेगा क्यों कि उत्पत्ति और विनाश दोनों का ही कुछ कारण अवश्य होना चाहिए। बिना कारण के कार्य्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

(५) ऐसे बहुत से बच्चों के प्रमाण से आवागमन सिद्ध है जिन्हों ने अपने पूर्व जन्म की ठीक २ बातें बतलाई हैं।

(६) एक ही माता पिता की, एक ही परिस्थितियों और वातावरण में पली हुई सन्तानों में मानसिक रुझानों बुद्धि और प्रतिभा इत्यादि में विभिन्नता होती है। कोई चंचल होता है, कोई शान्त होता है। कोई बुद्धिमान होता है कोई कम बुद्धिमान होता है। कोई मूर्ख होता है। यह विभिन्नता पुनर्जन्म को सिद्ध करती है। इसके अतिरिक्त बहुत से कुटुम्बों में ऐसी विशेषताओं के साथ व्यक्ति जन्म लेते हैं जो उन कुटुम्बों में नहीं होता है। उदाहरणार्थ कहते हैं, शेक्सपीयर के कुटुम्ब में उसके पूर्व कोई कवि नहीं देखा या सुना गया था।

क्रमशः

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥　　—　　धर्म से ही विद्या की शोभा होती है।

आर्य कुमार जगत्

विजयी युवक

(लेखक—श्रीयुत् डाक्टर युद्धवीर सिंह जी, उप प्रधान भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्, उप मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

यूं तो प्रत्येक मनुष्य की लेकिन प्रत्येक युवक की तो अवश्य ही यह कामना होती है कि वह विजयी बने। चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्य कर रहा हो उसकी प्रबल इच्छा यह होती है कि वह सब से आगे रहे। अगर वह डाक्टर या वकील है तो एक दम यश और धन कमा लेना चाहता है। वह व्यवसायी है तो अपने कारबार को सब से बढ़ कर चलाना चाहता है। उसकी मनोवृत्तियाँ धार्मिक हैं तो वह समाज में उच्च कोटि का धर्मोपदेशक बनना चाहता है। राजनीति में नेता बनने की उसकी उत्कट अभिलाषा रहती है—इत्यादि। यह है युवक का स्वभाव! यदि कभी किसी देश और जाति के युवकों में से यह स्वाभाविक भावना जाती रहे उनके हृदयों में ऊंचा उठने और आगे बढ़ने की उमग और उत्साह न रहे तो समझ लीजिए उस जाति या समाज का नाश अवश्यंभावी है। उस जाति के बड़े चाहे जितना ज़ोर लगावें यदि उसके युवक निरुत्साह हो गए हैं तो वह जाति गढ़े मे गिरेगी और अवश्य गिरेगी। इसी लिए जाति के समझदार और बूढ़े नेता युवकों को भी निरुत्साहित नहीं करते।

एक किस्सा कभी किन्हीं मौलवी साहब ने सुनाया था वह यह कि एक पठान सौदागर ने अपने लड़के को पढ़ाने के लिए एक मौलवी साहब रखे। एक दिन ठीक न पढ़ने के कारण मौलवी साहब ने लड़के को गाली दी और शायद चपत भी मारा। पठान युवक अपना अपमान बरदाश्त न कर सका और उसने खूंटी पर से अपने पिता की तलवार उतार ली। तलवार के दर्शन करते ही बूढ़े मौलवी भाग खड़े हुए। पीछे युवक पठान और आगे मौलवी जा रहे थे कि रास्ते में पठान मिल गया। उसने घबराकर मौलवी साहब से सब हाल पूछा। और सारा किस्सा सुन कर मौलवी को पकड़ कर बोला कि "मौलाना! मेरे लड़के ने आज सब से पहिली दफ़ा तलवार उठाई है। उसको भला तलवार उठाते ही आज मैं कैसे रोक दूं"।

किस्सा साधारण है मगर वह मूर्ख पठान भी युवक हृदय को समझता था। युवकों का उत्साह भग करने से क्या हानि होती है इस को जिस

जाति के नेता समझते हैं वे जातियां आगे बढ़ती हैं। जब हम कालेज में पढ़ते थे तो यह देख कर मुझे बड़ा आश्चर्य होता था कि अंग्रेज प्रिन्सिपल और प्रोफैसर लड़कों की शरारतों और नटखटपन की शिकायतों को बड़ी ही साधारण दृष्टि से देखा करते थे और कभी २ तो वे लड़को का बड़ा पक्ष भी लेते थे। मगर हिन्दुस्तानी प्रोफैसरों से ऐसी आशा रखना व्यर्थ था। वे जरा सी बात पर लड़कों को अपमानित करने मे झिझकते न थे। हमारे युवक भी क्या आज विजय कामना लेकर आगे बढ़ रहे हैं। और अगर नहीं बढ़ रहे हैं, उत्साहहीन हैं तो क्या युवकों का दोष है। नहीं दोष हमारा है। आज आर्य समाज का युवक कहा है? आर्य समाज की गोद म पला, आर्य समाज के स्कूल और कालेज मे शिक्षा पाया हुआ युवक आर्य समाज से रुष्ट है—आर्य समाज मे नहीं है। दोष किसका है? आर्य समाज का या युवक का? यह एक प्रश्न है जिस पर यदि आज आर्य समाज के नेताओं ने विचार नहीं किया तो कल आर्य समाज शनै २ मृत्युपथ पर दिखाई देगा।

युवक से आप एक ही मॉग कर सकते हैं कि वह अभिवादनशील हो—बुजुर्गों की इज्जत करने वाला हो। मगर उसके मुकाबले मे बुजुर्गों को उस युवक को एक चतुर माली की तरह किस तरह पालना पोसना है, किस तरह उसका दिल रखना, उसका मान रखना, उसका उत्साह भग न करना, उसकी उत्तम शिक्षा और दीक्षा करना है, यह कभी हमने शायद नहीं सोचा है। हमारे समाज के जीवन और मरण का प्रश्न आज हमारे युवकों की कामनाओं पर है।

उत्साही युवक समाज की शक्ति होते हैं। यह जान लेना बहुत जरूरी है कि उपदेश और लम्बे जीवन और उत्साह नहीं पैदा करते। क्षणिक उत्साह चिरकालीन उदासीनता उत्पन्न करता है। उत्साह उत्पन्न करने के लिए वायु मंडल पैदा करना होता है। वायु मडल पैदा करना आज आर्य युवको की सस्थाओं—आर्य कुमार सभाओं आदि का कर्त्तव्य है। इनकी उपेक्षा न कर आर्य विद्वानो और नेताओ को इन सस्थाओ को एक फुलवाड़ी की तरह बड़ा समय और धन खर्च करके ऐसा बनाना चाहिए कि जिस प्रकार सुन्दर बाग को देख कर हमारा मन हरा भरा हो जाता है उसी तरह आर्य कुमार सभाओं मे शामिल होते ही कुमारों और युवको के जीवन हरे भरे हो जावें। उनमे उमगें पैदा हो जावें और वे विजय कामना करने लगें। जब इन सस्थाओ से हम ऐसे कुमार और युवक पैदा करने में समर्थ होंगे जिनके अन्दर विजय—सब ओर विजय करने ही की आकाक्षाए होंगी तो आर्य समाज और वैदिक धर्म की विजय के लिए हमे कुछ और न करना होगा।

आज तमाम आर्य कुमार सभाएं और उनके सचालक इस विषय पर गौर करें कि क्या उनकी सभाएं यह फर्ज पूरा कर रही है और हम फिर कभी इसके उपायों पर इन पृष्ठों में विचार करेंगे।

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती

आर्य कुमार सभाओं को यह जान कर हर्ष होगा कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती के अवसर पर जो कि बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) में मई १९३८ के तृतीय सप्ताह मे २३वें अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में मनाई जावेगी, परिषद् की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है। इस पुस्तक मे परिषद् के संक्षिप्त इतिहास के अतिरिक्त परिषद् से सबंधित आर्य कुमार सभाओं के वृत्तान्त भी होंगे। इस लिए भारत की समस्त आर्य कुमार सभाओ से हमारी सानुरोध प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही अपने संक्षिप्त वृत्तान्त हमारे पास भेज दें तथा जो आर्य कुमार सभाएं अभी परिषद् से सम्बन्धित नहीं हुई हैं वे भी परिषद् के कार्यालय से नियमादि मंगवा कर शीघ्र ही परिषद् में सम्मिलित हो जावें।

इस पुस्तक मे अन्य ऐसी संस्थाओ के वृत्तान्त रहेंगे जिन मे आर्य कुमार शिक्षा पाते है अत गुरुकुलों, डी ए. वी स्कूलों तथा कालेजों, आर्य अनाथालयो आदि से भी हमारी प्रार्थना है कि वे भी अपने २ संक्षिप्त वृत्तान्त भेजने की कृपा करें। संक्षिप्त वृत्तान्त मे निम्न बातें अवश्य हों —

संस्था कब स्थापित हुई ?

संस्था के अधिष्ठाता का नाम ?

संस्था किस अवस्था मे कार्य कर रही है ?

संस्था के अन्तर्गत आर्य कुमार सभा भी है या नही।

हमे पूरी आशा है कि इस पुस्तक को सुन्दर तथा सर्वोपयोगी बनाने मे आर्य कुमार सभाएं तथा अन्य आर्य संस्थाएं हमे पूरा सहयोग देंगी।

जयन्ती के केवल २॥ मास रह गए है। इस लिए आप सब को इस सम्बन्ध मे शीघ्रता करनी चाहिए।

मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
१६२०, नया बजार, दिल्ली

कर्त्तव्य पालन कीजिए

सार्वदेशिक समस्त आर्यजगत् को शिरोमणि सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य पत्र है। प्रत्येक आर्य, आर्य-परिवार तथा आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह उसका स्वयं ग्राहक बने और दूसरों को भी ग्राहक बनाए। किसी आर्य-परिवार और समाजको बिना 'सार्वदेशिक' को पढ़े हुए न रहना चाहिए। 'सार्वदेशिक' के प्रचार में योग-दान करना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

(लेखक—श्री० पं० रामनारायण जी मिश्र काशी)

—*—

स्वास्थ्य सम्बन्धी

(गतांग से आगे)

(२६) रोगी से, विशेषकर पागल से, छेड़-छाड़ मत करो। रोगी से मीठी बातें करनी चाहिएँ, चिढ़ानेवाली नहीं। रोगी को जल्दी क्रोध आ जाता है, इसका बुरा मत मानो।

(२७) छूतवाले रोगी से दूर रहना चाहिए, परन्तु उसको निस्सहाय (बिना सेवा के) न छोड़ देना चाहिए। जिसको चेचक निकले उसके कपड़े या तो जला देने चाहिएँ या उबलते हुए पानी में कुछ देर रखने चाहिएँ और उस पानी में नीम की पत्ती डाल देनी चाहिए।

(२८) आँखों की पूरी रक्षा करो, उठते ही उनको धो डालो, आँख में मैल आ जाए तो उसको साफ करो। आँखें आ जाएँ तो धूप रोशनी की चमक, गर्द और मक्खी से उनको बचाओ और हरे कपड़े से उनको ढँक दो। यह छूतवाला रोग है।

संगतराश, सान रखने वाले, नाल जड़नेवाले, आतशबाजी आदि से आखों को दूर रखो। हरी तरकारी, दूध, मक्खन आदि और हलके भोजन से आखों की रक्षा होती है।

(२९) जिस रूई या कपड़े आदि से पीप या खून पोंछा जाय उसको जला डालना चाहिए।

(३०) साधारण रोगी के भी कपड़े, बिछौने रोज बदलो।

(३१) साधारण रोगी के पास भी उन्हीं को जाना चाहिए जो उसकी सेवा करना चाहें या उसका दिल बहला सकें। रोगी के पास भीड़ लगाना या रोगी से प्रश्न करना या जबरदस्ती या जोर से बातचीत करना अच्छा नहीं। किसी रोगी को देखने जाना ही पड़े तो अपने साथ बच्चों को न ले जाओ।

(३२) थरमामेटर मुँह या बगल में लगाने के पहले और बाद धो डालना चाहिए।

(३३) बीमार के सामने, विशेषकर रोगी बच्चे के सामने, लड्डू, पेड़ा या चटपटी चीजें मत खाओ या उससे कहकर मेले तमाशे में मत जाओ।

(३४) क्षय रोग के रोगी के थूक को गाड़ देना चाहिए या जला देना चाहिए। उसको पुराने कपड़े के रूमाल या थैली में थूकना चाहिए जिसको जला देना चाहिए।

(३५) हर जगह थूकने की आदत बुरी है। इससे बीमारी फैलती है। रोग के कारण थूकना जरूरी हो तो पीकदान आदि रखो। हर जगह नाक भी नहीं सिनकना चाहिए इसके लिए रूमाल रखो।

(३६) लिफाफा थूक लगाकर नहीं बन्द करना चाहिए, न उस पर थूक से टिकट चिपकाना चाहिए और न पोथी के पन्ने थूक लगाकर उलटने चाहिएँ।

(३७) नदी या तालाब के अंदर कुल्ला नहीं करना चाहिए। उसके अन्दर मल-मूत्र, कूड़ा-ककड, काटा आदि फेंकना तो बहुत ही बुरा है।

(३८) सवेरे उठकर कुल्ला करो। दातन की जिस कूची से दात साफ करो, उसी कूची को आगे-पीछे मसूड़ों पर भी रगड़ो और दातन के दो टुकड़े करके उसी से जीभ साफ कर लो, तब उसको धोकर कूड़े की टोकरी मे फेंक दो। दातन बिना धोए मत फेंको। दातन और कुल्ला इस प्रकार करो कि दात के आगे और पीछे का हिस्सा, जीभ, मसूड़े आदि भी साफ हो जायँ।

(३९) सोने से पहले रात को भी मंजन से दात साफ करो या दातन कर लो। ऐसा करने से दात साफ और सफेद रहेंगे और मुँह से बदबू नहीं आएगी। कड़वे तेल मे नमक डालकर उससे दात साफ कर लेना बहुत अच्छा है।

(४०) सवेरे बिना शौचादि गए और दात साफ किए कुछ मत खाओ। भोजन तो नहाने के बाद ही करना अच्छा है।

(४१) जिस बर्तन मे एक बार पानी पी लो या खाना खा लो, या कोई दूसरा पानी पी ले या खाना खा ले, उसको माजकर तब काम मे लाओ। जब बर्तन जूठा हो जाय तब उसको अलग एक तरफ रख दो। बर्तन मिट्टी का हो तो उसको एक ही बार इस्तेमाल करके फेंक दो।

(४२) दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ साबुन, रूमाल या तौलिया यथासंभव काम मे न लाओ।

(४३) दूसरे की इस्तेमाल की हुई बासुरी मत बजाओ। बजानी ही पड़े तो उसको पानी से खूब धो लो।

(४४) एक ओढ़ने में दो आदमी मत सोओ। बचपन ही से अलग सोने की आदत डालो। दूसरे के ओढने और बिछौने को बिना धोये काम मे मत लाओ।

(४५) दूसरे की पहनी हुई धोती, जब तक खूब साफ न हो जाय, काम मे मत लाओ।

(४६) दूसरे की इस्तेमाल की हुई कघी काम मे कभी मत लाओ। दूसरे की इस्तेमाल की हुई आख मे सुरमा लगाने का सलाई इस्तेमाल मत करो।

(४७) जिस कपडे पर स्याही का, पान का या और किसी चीज का दाग लग जाय उसको, जब तक दाग छूट न जाय, मत पहनो। थोड़ा सावधान रहने से ऐसा दाग लगने ही नहीं पाएगा।

(४८) जिस कपडे को पहनकर शौचादि जाओ या हजामत बनवाओ, उसको धो डालना अच्छा है।

(४९) शौचादि के लिए पानी कम मत ले जाओ। लघुशका के बाद भी पानी का प्रयोग करो।

(५०) खेत मे शौच जाओ तो उठने के बाद मल को मिट्टी से ढक दो। ढूंढने से मिट्टी न मिले तो लोटे से जमीन खुरचकर जमा कर लो। खुर्पी से गढ़ा खोदकर उसी में शौच जाना और पीछे उसमे मिट्टी भर देना सबसे अच्छा है।

(शेष फिर)

प्राप्ति स्वीकार

१—भक्ति प्रकाश या अनमोल मोती, आर्य्य प्रतिनिधि सभा मौरिशस द्वारा प्रकाशित।

२—सिद्धान्त कौमुदी की अन्त्येष्टि, लेखक श्री० प० राजेन्द्रनाथ शास्त्री प्रकाशक दयानन्द सेवा संघ निगम बोध घाट देहली मूल्य ≡)।

३—टंकारा लेखक श्री प० श्रीकृष्ण शर्मा आर्य्य मिशनरी। प्रकाशक—दयानन्द मिशन राजकोट मूल्य ।≈)

४—संगीत सुधा—अर्थात परेयद् गीतिकाएं, सपादक—१ ब्र० भद्रेव २ ब्र० ज्ञानेन्द्र गुरुकुल वृन्दावन प्रकाशक—प्रकाशन विभाग आर्य्य, प्र० सभा संयुक्तप्रान्त मूल्य ≈)

५—मूर्ति पूजा रहस्य (गुजराती), लेखक—प० ज्ञानेन्द्र सिद्धान्त भूषण विद्यामारा B B & C. I मूल्य)।

६—स्वामी जी की पाठ विधि का वास्तविक स्वरूप, लेखक—आचार्य विश्वश्रवा, प्रकाशक—वेद मन्दिर कार्यालय ११ बाज़ार मोतीलाल बरेली (यू० पा०) मूल्य ।)

७—वेद और विज्ञान वाद, लेखक—श्री० प्रेम चन्द जी काव्य तीर्थ। प्रकाशक—साहित्य सदन हिन्दू महा सभा भवन नई देहली मूल्य ।)

८—भजन कीर्तन (छटा संस्करण), श्री प० केशवदेव ज्ञानी द्वारा सगृहीत और सपादित प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास मूल्य ≈)

९—(Hinduism and Islam) हिन्दू धर्म और इस्लाम, लेखक—प० केशवदेव ज्ञानी प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास।

१०—Verses from the Vedas, वेद मन्त्रों का संग्रह टीका सहित, लेखक—पं० केशवदेव ज्ञानी प्रकाशक—आर्य्य समाज मद्रास,

११—Atharvana Collection of Hymnes पिप्पलाद सहिता, श्री प० रामदत्त शुक्ल एडवोकेट तथा श्री० वासुदेव शरण एडवोकेट। प्रकाशक—प्रकाशन विभाग आर्य्य प्र० सभा संयुक्त प्रान्त (मेरठ) मूल्य ≡)

१२—Indian Influence on Early Western Thought प्रारम्भिक पाश्चात्य विचारों पर भारतीय प्रभाव, लेखक शिशीर कुमार मित्र मूल्य –)आर्य्य प्र० स० संयुक्त प्रान्त।

१३—Daya Nanda the man & his Work (Reprint) दयानन्द का व्यक्तित्व और उनका कार्य लेखक—श्री० अरविन्द घोष मूल्य –) आर्य्य प्र० सभा० संयुक्त प्रान्त।

१४—A Commentary on Arya Marriage act आर्य विवाह ऐक्ट की व्याख्या। व्याख्याकार श्री बा० घनश्याम सिंह गुप्त प्रधान सार्वदेशिक सभा तथा स्पीकर सी० पी० लैजिस्लेटिव असेम्बली प्रकाशक—शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली मूल्य ।)

नोट - उपर्युक्त साहित्य में से समालोचना योग्य साहित्य की समालोचना यथावसर प्रकाशित की जायगी

—सपादक

ऋतुदान सम्बन्धी एक सिद्धान्त का

वैज्ञानिक आधार

(लेखक—श्री. मास्टर आत्मा राम जी अमृतसरी)

वैदिक शास्त्रों मे ऋतुदान की १६ रात्रियों मे पूर्णिमा, अमावस्या चतुर्दशी और अष्टमी की अन्य त्याज्य रात्रियों मे गणना की गई है। इसका वैज्ञानिक आधार है।

प्रोफेसर विलैन फोर्ड अपने जीव विज्ञान भूगोल के पृष्ठ ४८ पर लिखते हैं "सबसे बड़ा और सब से छोटा ज्वार भाटा पूर्णिमा और अमावस्या को अथवा इसके कुछ उपरान्त प्रकट होता और बीच के ज्वार भाटे व हैं जिनमें पानी का उभार और उतार सब से कम हो।

प्रथम प्रकार के २ कारणों से प्रकट होता है —

(अ) जब सूर्य्य और चन्द्र दोनों पृथ्वी के एक ओर ही हों अर्थात अमावस्या को।

(ब) जब सूर्य्य और चन्द्र विरुद्ध दिशा में हों अर्थात् पूर्णिमा को और दूसरे प्रकार के ज्वार-भाटे बार २ प्रगट तब होते है जब सूर्य्य और चन्द्र ९०° का कोण बनाते हों, अर्थात दोनो अष्टमियों को।

सूर्य्य और चन्द्र के प्रभाव और आकर्षण का खेल वही लोग अनुभव कर सकते हैं जो समुद्र तटों पर बसते है। पूर्णिमा की रात को किस प्रकार समुद्र लहरें मारता हुआ दौडता और चचल घोडे की तरह मुह से झाग गिराता हुआ दृष्टि पड़ता है। अमावस्या को किस प्रकार विशेष रीति से धीरे २ नाचता हुआ देख पडता है। अष्टमी को अपना उभार कम किए हुए मानो रेंग रहा है। यही नहीं इस अवसर पर सूर्य्य और चन्द्र का आकर्षण और उनका प्रभाव समुद्र मे आश्चर्य जनक परिवर्तन उत्पन्न करते हों, बरन सारी पृथ्वी को नदियों, तालाबों, फलों और पशुओं के रक्त में भी उनके असर से इस अवसर पर मुख्य परिवर्तन होते है। रक्त मे क्योकि जल का भाग है इसलिए रक्त पर इन दिनों मुख्य रीति पर प्रभाव पड़ता है। पुरुष की अपेक्षा स्त्री पर चाद का प्रभाव विशेषता से होता है। चतुर्दशी अथवा अमावस्या अष्टमी और पूर्णिमा को पुरुष और स्त्री के वीर्यादि धातु विषम हो जाते है। इसलिए यदि ऋतुदान इन पर्व्व तिथियो पर किया जाय तो वीर्य और आर्त्तव व्यर्थ जाते हैं, स्वास्थ्य खराब हो जाता है। यही वजह थी इन पर्व्व तिथियो पर प्राचीन काल में छुट्टिया हुआ करती थी। अमावस्या और पूर्णिमा को विशेष हवन यज्ञ स्वास्थ्य रक्षा और जलवायु की शुद्धि के लिए किये जाते थे जिनको पर्व्वेष्टि यज्ञ कहते थे। जिस प्रकार से इन दिनो मे समुद्र की दशा विषम हो जाती है उसी प्रकार से मनुष्य के रक्त की दशा हो जाती है। उस विषमता को दूर करने के लिए हवन यज्ञ अत्यन्त लाभ कारी है। इस अवसर पर इन यज्ञों के कारण से ही ये दिन मानो आज तक त्यौहार बन रहे हैं।

विद्यार्थियों को इन दिनों पढने का निषेध है। दूकानदारों के लिए छुट्टिया हैं। जब साधारण व्यवसाय तक करने का इन दिनो निषेध है तो क्या गर्भादान से महान कार्य करने की वे ऋषि कभी आज्ञा दे सकते थे ? कदापि नहीं। इसलिए ऋषियों का उपदेश इन पर्व्व तिथियों पर विशेष हवन करने का है, न कि स्वास्थ्य को बिगाडने और वीर्य नष्ट करने का।

पश्चिम के सारे विद्वान सूर्य्य चन्द्र के जल पर प्रभाव को मानते हैं, परन्तु अभी तक मनुष्य के शरीर पर इसके प्रभाव को ठीक २ अनुभव नहीं किया है परन्तु धीरे २ वे इन ऋषि सिद्धान्तों पर ठोकरें खाते हुए आयेंगे।

मद्रास प्रचार

केरल (१)

जनवरी के अधिकांश भाग में साधु शिवप्रसाद जी सभाप्रचारक ने ट्रावनकोर राज्य में त्रिवेंद्रम हैडक्वाटर से प्रचार किया। लग भग २३ व्याख्यान दिए। ट्रावन्कोर राज्य के दीवान सर सी० पी० रामा स्वामी प्रभृति प्रसिद्ध पुरुषों से धर्मालाप किया तथा वैदिक साहित्य भेंट किया।

साधारण जनता में भी काफी साहित्य वितरण किया।

केरल (२)

मल्लशेरी, मांपारा, वेल्लूर, पाकिल, इन स्थानों मे विविध विषयों पर व्याख्यान दिया। लोगों में व्याख्यानो से आर्य समाज के सिद्धान्तो की ओर अभिरुचि बढ़ती जारही है।

निम्न लिखित स्थानों में शुद्धि और प्रचार के सिलसिले में भ्रमण किया और लोगों का ध्यान सामाजिक सिद्धान्तो और शुद्धि की ओर आकर्षित करने के लिए अनेक व्यक्तियों से मिल कर बात चीत की है।

सत्ताईस ईसाइयों की शुद्धि की गई है। मन्दिर प्रवेश की घोषणा होने के बाद बहुत ईसाई वैदिक धर्म में प्रविष्ट होने को तैयार है परन्तु उनकी परिस्थिति इस कदर खराब है कि ईसाइयों का साथ छोड़ दें तो उनका जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। उनके बच्चों की पढ़ाई आदि में मदद करने के लिए और उन पर आने वाली आपत्तियों का सामना करने के लिए कोई संस्था नहीं। इस लिए वे भी रुके हुए हैं। कोई संस्था उपरोक्त बातों के लिए तैयार हो जाय तो यहां की शुद्धि में और भी सफलता हो सकती है।

निरन्तर हिन्दी क्लास चलता रहा है। साधारण लोगों में बांटने के लिए एक पुस्तक प्रश्नोत्तरी के रूप में लिखना प्रारंभ किया है।

नारायण दत्त
सिद्धान्त भूषण

आन्ध्र

विजगापट्टम

इस समय यहां पर समाज चल रही है। यहां पर मैंने एक आर्य हिन्दी विद्यालय भी खोला है। उसमें २० विद्यार्थी तथा ५ विद्यार्थिनियां है। इस बार इस विद्यालय की ओर से १० परीक्षार्थी मद्रास की हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। परन्तु इसमें जो विद्यार्थी पढ़ने आते हैं वे प्रायः सभी अच्छी स्थिति के हैं अपना पाठ समाप्त करके वे धर्म के विषय में चर्चा आरम्भ कर देते है। यहां की समाज जैसे तैसे चल चल रही है द्रव्य एकत्रित करने में सब से अधिक कठिनाई है।

ताडीपल्लीगूडम् में भी साधारण कार्य हुआ है। राजमहिन्द्री में केवल एक चक्कर श्री उपप्रधान जी के साथ लगाया था।

अब तक इधर केवल थोड़ी सी नाममात्र का हल चल हुई है। जनवरी फर्वरी में मैं सारा ध्यान विजगा की ओर दूंगा। यदि यहां पर समाज पूरे पक्के रूप में चल पड़े तो चारों तरफ कार्य चलने की पूरी आशा है।

—मदन मोहन, विद्याधर

योग रहस्य

(ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी)

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उनविधियों को भी बतलाया गया है, जिनसे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।–)

मिलने का पता —
सार्वदेशिक सभा (देहली)।

[करनाटक]

All India Oriental- Conference मे प्रचार लगभग १६० ईसाइयो की शुद्धि

(दिसम्बर)

इस मास स्ना० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति ने बंगलौर शहर, छावनी, मावल्ली ग्राम, दौड्ड बैल्लापुर, ट्रिवेन्ड्रम, करेकुलम अरुवेक्करे, कन्ननूमूला इत्यादि मे प्रचार दलितोद्धार तथा शुद्धि का कार्य किया। १३ दि० को दौड्डबैल्लापुर मे एक बालविधवा का विवाह संस्कार कराया। दो नाम करण और १ चूडाकर्म संस्कार बंगलोर मे कराये। इस मास की उल्लेखनीय घटना त्रिवेन्द्रम (ट्रावन्कोर रियासत की राजधानी) में होनेवाले अखिल भारतीय प्राच्य विपश्चित्सम्मेलन (All India Oriental Conference के नवम अधिवेशन मे जो २० से २२ दिस० तक डा० थॉमस M A C I E Professor of Sanskrit oxford University के सभापतित्व मे हुआ स्नातक जी का सदस्य रूप मे सम्मलित हो कर उस मे क्रियात्मक भाग लेने का है। स्नातक जी ने कान्फ्रेन्स के वैदिक विभाग में वैदिक-यज्ञानामहिंसात्मकत्वम्" इस विषय पर संस्कृत मे लिखे निबन्ध का यथा आवश्यक अंग्रेजी भाषा में विवरण सहित २१ दिस० को पढ़ा और उस पर किये गये प्रश्नों का उत्तर दिया (२१ दिस० की शाम को ट्रावन्कोर के महाराज श्री सर बलराम वर्मा जी G C I E ने कान्फ्रेन्स मे आये कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों और विद्वानों को अपने राज महल (Kandiyur Palace) मे फल भोज के लिये निमन्त्रित किया था। स्नातक जी भी इन आमन्त्रित अतिथियो मे थे। वहा उन्हों ने महाराज को The Mission and Message of Maharshi Dayananda Saraswati, the Mission & Message of Swami Shraddhananda ji, the Glory of the Vedas Catechism on Vedic Dharma & Arya Samaj, The Significance of the Vedic Sanskaras इत्यादि अपनी बनाई हुई पुस्तकें साक्षात् भेंट की जिन्हें महाराजा ने सधन्यवाद स्वीकार किया। २२ दिस० को कान्फ्रेन्स की पण्डित परिषत् मे स्नातक जी ने ब्रह्मस्वरूप निरूपणम्" पर महामहोपाध्याय दण्डपाणि दाक्षित संस्कृत महोपाध्याय अन्नमलै युनिवर्सिटी के सभापतित्व मे संस्कृत मे व्याख्यान दिया। ट्रावनकोर महाराज भी पण्डित परिषत् मे कुछ देर के लिये उस दिन आये थे। Modern Indian Language Section मे भी सम्मिलित हो कर स्नातक जी ने विचार विनिमय मे भाग लिया। इन भाषणों के अतिरिक्त स्नातक जी ने कान्फ्रेन्स के सभापति डा० थॉमस, हॉलैण्ड के सुप्रसिद्ध विद्वान् Dharma and Society नामक वर्णव्यवस्था पर उत्तम पुस्तक के लेखक डा० मीज M A LL D जर्मनी के डा० स्ट्रॅटरहेम फ्रांस के प्रो० मील, सीलोन के डा० नोल्, शान्तिनिकेतन के प्रो० मणिलाल पटेल लखनऊ कालेज के प्रो० गोपालदेव जाधर दास इत्यादि अनेक सुप्रसिद्ध देश विदेश के

विद्वानों से मिले और उन्हें आर्य साहित्य दिया (कान्फ्रेन्स उद्घाटनोत्सव स्वयं ट्रावन्कोर महाराज ने किया था जिस अवसर पर नियमानुसार स्नातक जी अपने गुरुकुल विश्वविद्यालय के चोले मे सम्मिलित हुए जिस के अद्भुत होने के कारण भी उनकी ओर जनता का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। २३ दिस० को त्रिवेन्द्रम में मालावार के सुप्रसिद्ध महाकवि परमेश्वर ऐयर M A B L, के सभापतित्व में स्नातक जी और साधु शिवप्रसाद जी के The Mission and Message of Swami Shraddhananda ji पर जोरदार व्याख्यान हुए। २४ दिस० को श्री युत गोविन्दन् B A B L Retired Distt Judge के निमन्त्रण पर स्नातक जी उनके और साधु शिवप्रसाद जी के साथ त्रिवेन्द्रम् से १२ मील की दूरी पर अर्हविक्कर नामक ग्राम गए जहां उन्हों ने १२ ईसाइयों की वैदिक रीति से शुद्धि कराई। २६ दिस० को त्रिवेन्द्रम के समीपस्थ कन्नन मूला नामक ग्राम मे स्नातक जी ने एक व्याख्यान दिया जिस का साधु शिवप्रसाद जी ने मलयालम में अनुवाद किया और उसके पश्चात् ल० १५० ईसाइयों की शुद्धि उसी स्थान पर व्याख्यान सहित कराई जिसका उन दीक्षित व्यक्तियों और जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। इस का प्रबन्ध श्री युत कुन्ही कृष्णन् B A B L नामक एक उत्साही ऐडवोकेट ने कराया था। २६ की शाम को त्रिवेन्द्रम् पेट स्टेशन के मैदान में स्नातक जी ने The Message of the Universal Vedic Dharma" पर अंग्रेजी और साधु शिवप्रसाद जी ने मलयालम में श्री युत गोविन्दन् Retired Distt Judge के सभापतित्व मे व्याख्यान दिये। ट्रिवेन्ड्रम में आर्य समाज की नियमित स्थापना का भी प्रयत्न किया गया जिस में शीघ्र सफलता होगी।

अखिल भारतीय सेवा समिति स्काउट मेला

(लेखक—एक दर्शक,)

सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसियेशन ने कलकत्ते मे २६ से ३० दिसम्बर ३७ तक अपना नवम मेला मनाया। देश के भिन्न २ भागों के लगभग ५००० स्काउटों ने मेले मे भाग लिया।

'मेला' अंग्रेजी के 'जम्बोरी' शब्द का पर्य्याय वाची है, और देश के नवयुवकों मे भ्रातृत्व और सहानुभूति के भावों को भरने के लिए प्रति वर्ष किया जाता है। यह मेला शिक्षा सम्बन्धी अनुभव से कहीं अधिक महत्व रखता था। यह स्काउटों के नियम और प्रतिज्ञा, देश भक्ति और नागरिकता, विश्व बन्धुत्व और सबसे अन्तिम ट्रेनिंग, डिसिप्लिन और सदाचरण का वास्तविक प्रदर्शन था।

बेडेन पावल बॉयस्काउट एसोसियेशन, नेशनल स्काउट एसोसियेशन, अर्थात् बालक यद्यपि भारतवर्ष मे १६११ में प्रचलित हो गए थे परन्तु वे भारतीयो के लिए नहीं थे। भारतीय बच्चों के लिए बालचर शिक्षण (Scouting) की आवश्यकता को अनुभव करते हुए स्वर्गीय ऐनी बिसेन्ट और डाक्टर जी-यस अरुन्डेल ने १६१७ मे दक्षिण भारत मे भारतीय बॉयस्काउट एसोसियेशन की नींव डाली। उत्तर भारत में पण्डित मदनमोहन मालवीय, पण्डित हृदयनाथ-कुंजरू और पण्डित श्रीराम बाजपयी ने १६१८ मे सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसियशन स्थापित की।

१९२१ मे संसार के चीफ स्काउट लार्ड बेडन-पावल भारत में पधारे और कतिपय शर्तों के अधीन उस समय की भारत की सब स्काउट समितियों को अपनी समिति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की सुविधा प्रदान की। यद्यपि बहुत सी समितियों ने उनके निमन्त्रण को स्वीकार किया परन्तु भारत में बालचर शिक्षण के आरम्भिक मार्ग प्रदर्शकों के एक भाग का यह प्रस्ताव सन्तुष्ट न कर सका। देशी राज्यों के कई स्काउट एसोसियेशनो और सेवा समिति स्काउट एसोसियेशन ने नितान्त राष्ट्रीय लाइनों पर कार्य्य करना पसन्द किया।

सेवा समिति का आचारिक मूल्य अनुभव और स्वीकार किया गया और भारत के कोने २ में यह आन्दोलन वेग के साथ फैल गया और १६२२ मे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने इसे अपना सरक्षण प्रदान करके शिक्षा विभाग ने सरकारी तौर पर स्कूलों के लिए इसकी सिफारिश की। सेवा समिति एसोसियेशन के अधीन गर्लसगाइड विभाग भी है। लार्ड बेडन पावल द्वारा भारतीय आचरण और सम्मान-भावना Indian character & Honour पर जो आलोचना हुई थी और उसके कारण हाल मे जो आन्दोलन उठा था उसके फल स्वरूप स्काउटिंग मे राष्ट्र के सम्मान रक्षण का भाव जाग्रत हुआ है और सेवा समिति के कार्य्य को प्रगति मिली है।

पुरी कांग्रेस कमेटी के प्रधान पं० रघुनाथ-मिश्र के शब्दों मे जो मेले मे निरन्तर ५ दिन

बिन्दु ग्वालनका मुकदमा

टीटागढ़ आर्यसमाज का प्रशंसनीय कार्य

"इस मामले मे विचार के समय अदालत में और सभ्यजगत के सामन निर्ममतापूर्वक और कल्पनातीत रूप से कामवासना और पाशविक प्रवृत्तिके चरितार्थ करने की मर्मभेदी कहानी बतायी गई है।"—इस प्रकार अपनी राय देते हुए गत १६ फरवरी को अलीपुर के अतिरिक्त सेशन जज मि० ई० एस० सिम्पसन न जूरी के साथ सहमत होकर बारकपुर के मुस्तार और म्यूनिस्पल कमिश्नर अलीहैदर और अहमद सरदार (विद्वान जजने अपने फैसले मे इसे अलीहैदर के लिए स्त्रियों को फसा कर लानेवाला बताया है।) असगर और फेकनको बिन्द ग्वालिनी नामकी एक २० वर्षीया हिन्दू विधवा को गैर कानूनी ढग से रोक रखने और उस पर पाशविक अत्याचार करने के अभियोग में क्रमश १० वर्ष, ७ वर्ष और सात-सात वर्षा का सपरिश्रम कारावास दण्ड दिया।

अभियोगका विवरण—

अभियोग के विवरण में बताया गया है कि प्रायः एक वर्ष पूर्व बिन्दू के पति का देहान्त होगया था, इसके बाद वह श्याम बाजार में अपनी फुफेरी सास के घर रहा करती थी। किन्तु उसके साथ वहां दुर्व्यवहार होता था, इसलिए उसने अपनी फुफेरी बहन के घर चली जाने का विचार किया। १६३७ के सितम्बर महीने के अन्त में एक दिन शामको वह सियालदह जाकर रेलगाड़ी में बैठी—अलीहैदर को छोड़ कर बाकी चार अभियुक्त भी गाड़ी के उसी डब्बे मे बैठे थे जिस मे बिन्दू बैठी हुई थी। बिन्दू से बातचीत करके उन लोगों ने जान लिया, कि वह बेलघरिया में अपनी बहन

तक रहे थे, "देश के नवयुवकों को आपस में मिलाने और मातृ-भूमि की सेवा के लिए उनको लाभ दायक रूप मे लगाए रखने के लिए स्काउटिंग एक उत्तम मार्ग है। जैसा कि प० जवाहर लाल जी की धारणा है। "स्काउट्स भारतीय स्वतन्त्रता के सिपाहियों का रूप लेंगे।" श्रीयुत अरून्डेल ने ठीक ही कहा है 'सेवा समिति आन्दोलन' ने हमारे देश की बहुत बड़ी सामाजिक सेवा की है। हमारे नवयुवकों और नवयुवतियों में आत्म समर्पण और जन-सेवा के उच्च भाव भरने में इस आन्दोलन ने उत्तम योग दिया है।" कलकत्ते के मेम्बर ने मेले के उद्घाटन के अवसर पर अपने भाषण में सेवा समिति के सदृश राष्ट्रीय स्काउट संगठन की आवश्यकता पर बल दिया और देश के बुद्धिमान लोगों को प्रेरणा की कि वह किताबी शिक्षा के संशोधक के रूप में इस प्रकार के आन्दोलनों को अपनाएँ।

के घर जा रही है। उन्हों ने बिन्दू से उसके बहनोई का नाम भी पूछ लिया।

बिन्दू को अकेली जाते हुए देख उन अभियुक्तों ने कहा कि हम तुम्हारे बहनोई को जानते हैं और उसके घर का पता भी हमे मालूम है। उन्हों ने बिन्दू का टिकट भी ले लिया और इसके बाद टीटागढ़ के स्टेशन पर उतर पड़, इसके बाद उसे रमजान नामक एक आदमी के घर ले गये। तत्पश्चात पाचों अभियुक्तों ने क्रमश. बिन्दू क साथ पाशविक दुराचार किया। दूसरे दिन शाम को बिन्दू हाजी नगर मे राजा. मिया के घर पहुँचाई गइ। इसक बाद फिर रमजान के मकान मे लाई गई। और ६ हफ्ते तक यहाँ भी रखी गयी। अन्त मे यहाँ से उसे हटाकर अभियुक्त अहमद के घर पहुचायी गई। और वहाँ १९३७ क अन्तिम जून तक रोक रखी गई। अन्त मे एक दिन वहा से किसी तरह भाग कर उसने रहीमन बीबी नाम की एक मुसलमान औरत के घर जाकर शरण मागी रहीमन का घर अभियुक्त के पिछवाड़े वाले रास्ते पर है, रहीमन ने बिन्दु को आर्यसमाज मे भेजवा दिया। इसके बाद उसने अभियुक्तों क विरुद्ध अदालत में मुकदमा दायर किया।

जूरीने सर्वसम्मति से अपराधियों को, बिन्दूको अहमद के घरमें गैर कानूनी तरीके से रोक रखने और उसपर पाशविक अत्याचार करनेका अपराधी करार दिया। एकको छोड़ कर बाकी चार जूररोंने रमजानको दो बार बिन्दूके ऊपर पाशविक अत्याचार के अपराध का अपराधी बताया। एक को छोड़ कर बाकी चार जूररोने रजाके घरमे रहनेके समय, हैदर और अहमदको बिन्दू को पीटनेके अपराध मे भी अपराधी करार दिया। इसके बाद सभी जूररोने एक मत होकर हैदर और अहमद पर बिन्दू को रजा मिया के घर मे रोक रखने के जुर्ममे मुजरिम करार दिया। अधिकाश जूरीने रमजानके घरमे दो बार गैर कानूनी ढग से बिन्दू को घर में रोक रखने का दोष बतलाया अजीज के ऊपर भी अहमद के मकान में बिन्दू के ऊपर व्यभिचार करनेका अभियोग लगाया गया। हैदर और अहमद पर बिन्दूके ऊपर अस्वाभाविक उपायसे अत्याचार करने का जो अभियोग लगाया गया था उसे जूरीने सन्देहात्मक बताया।

विद्वान जज की राय

अपराधियों को उनके भीषण अपराध के लिए उपयुक्त दण्ड प्रदान करते हुए विद्वान जजने लिखा है "केवल यही नहीं कि बिन्दूका सतीत्व नष्ट किया गया था, वरन सतीत्व नष्ट करते समय घोर नृशंसता और निर्लज्जता का प्रदर्शन किया गया था। आर्यसमाज और मातृ-सदन वाले अगर इस आत्मीय स्वजन-विहीना असहाया अनाथिनी स्त्री की सहायता न करते तो इसका सतीत्व अपहरण करने वाले अपराधियों पर मुकदमा चलना भी सम्भव न होता।

सम्पादकीय—

हमारे पत्र का नया वर्ष

'सार्वदेशिक' के इस अंक के साथ इस पत्र का तेरहवां वर्ष प्रारम्भ होता है। इतने समय में इस पत्र ने आर्य्य समाज की जो सेवा की है उसके सम्बन्ध में हम स्वयं कुछ लिखना नहीं चाहते। यह बात हमारे पाठकों पर भली प्रकार विदित है कि आर्य्य समाज को उत्तम समाचार पत्रों तथा उच्च कोटि के पत्रकारों की बड़ी आवश्यकता है। आर्य्य समाज का मुख्य ध्येय संसार से अज्ञानता को दूर करना है, इसीलिए इसके प्रवर्तक ने आर्य्य समाज के नियमों में आठवां नियम इस प्रकार नियत किया है 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।"

आर्य्य समाज ने अपने प्रवर्तक की उपरोक्त आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए अनेक स्कूल, विद्यालय गुरुकुल तथा पाठशालाएं स्थापित की हैं। आर्य्य समाज की इस सेवा को आर्य्य समाज के बाहर के विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है परन्तु अज्ञानता तथा अविद्या को दूर करने का, आधुनिक समय मे एक बड़ा साधन समाचार पत्र हैं। आर्य्य समाज ने सम्पादनकला क्षेत्र में भी हमेशा से विशेष रुचि दिखलाई है और इसके पत्र-कारों ने समाज सेवा में पर्य्याप्त भाग लिया है।

'सार्वदेशिक' पत्र के गत बारह वर्ष, आर्थिक स्थिति को देखते हुए, बड़ी कठिनाई से व्यतीत हुए हैं और इसे प्रति वर्ष घाटा ही घाटा रहा है। यदि 'सार्वदेशिक सभा' का इसे संरक्षण प्राप्त न होता तो यह पत्र कभी का बन्द हो गया होता। यूं तो आर्थिक कठिनाइयां सभी पत्रकारों को दरपेश होती हैं परन्तु वे इन कठिनाइयों को विज्ञापनों तथा अन्य साधनों के अवलम्बन से बहुत कुछ हल कर लेते हैं। आर्य्य पत्रकारों को ये साधन भी प्राप्त नहीं क्योंकि उन्हें विज्ञापनों की अश्लीलता आदि का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। यही कारण है कि इतने समय तक हम अपने पत्र के लिए अच्छे विज्ञापनों का संग्रह नहीं कर सके।

ऐसी दशा में हम इस पत्र को कब तक जीवित रख सकेंगे इसके सम्बन्ध मे कुछ निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। इसमें सन्देह नहीं कि यह पत्र आर्यसमाज के लिए देश तथा विदेश में प्रोपैगेण्डा का एक अच्छा साधन है। इसी को देखते हुए कई महानुभावों ने हमें यह सलाह दी है कि इस पत्र को द्विभाषी (B lingual) कर दिया जावे—अर्थात् इसका आधा भाग अंग्रेजी भाषा में रहे और दूसरा आधा हिन्दी भाषा में। यह विचार बहुत उत्तम है।

परन्तु आर्थिक कठिनाई का हल जब तक हमें नहीं सूझता तब तक हम इस उत्तम विचार को क्रियात्मक रूप कैसे दे सकते हैं। यह नितान्त सत्य है कि अभी तक आर्य्यसमाज के प्रोपैगेण्डा के लिए अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की बड़ी भारी आवश्यकता है और यह खेद का विषय है कि भारतवर्ष में आर्य्य समाज जैसी संगठित समाज के हाथ मे एक भी उच्च कोटि का अंग्रेजी समाचार-पत्र नहीं, जब कि इसी देश में आर्य्य समाज से कहीं अधिक छोटी संस्थाओं के हाथ में उच्च कोटि के अंग्रेजी समाचार-पत्र हैं। मिसाल के तौर पर राम कृष्ण मिशन को ही ले लीजिए। उनका "प्रबुद्ध भारत" अंग्रेजी भाषा में एक उच्च कोटि का पत्र है जिसको देश विदेश में मान की दृष्टि से देखा जाता है। यदि इसी कोटि का एक मासिक पत्र इस सभा के हाथ में होता तो विदेशों में उसके द्वारा कितना महान् कार्य्य सम्पादित हो सकता। आर्य्य समाज के अन्दर

प्रोपैगेण्डा की शक्ति को अनुभव करने वाले तथा उस के लिए सहायता देने वालों की बहुत कमी है।

लोग छोटी छोटी संस्थाओं को जारी रखने के लिए अपना पैसा देने में संकोच नहीं करते, परन्तु जब उनको पत्रकार की हैसियत में पत्र जारी रखने की अपील की जाती है तो वे उसकी तरफ ध्यान नहीं देते।

हम अपने पाठकों से यह विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि वे इस पत्र की आर्थिक सहायता को अपनी दृष्टि में रक्खें। यदि कतिपय धनाढ्य व्यक्ति एक वर्ष के लिए इसके हाथ में पाच हजार सौंप देवें तो इस पत्र को द्विभाषी पत्र बनाया जा सकता है और इसका हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में इकट्ठा सम्पादन किया जा सकता है ताकि यह पत्र इस देश में तथा अन्य देशों में आर्य्य समाज तथा वैदिक धर्म का सन्देश ले जा सके। निवेदन करना हमारा कर्त्तव्य है उस पर ध्यान देना हमारे पाठकों के हाथ में है। देखें इसका आगामी वर्ष कैसे गुजरता है?

अन्त में हम अपने कृपालु लेखकों तथा अन्य सहायकों का कोटिश धन्यवाद करते हैं जिनकी असीम कृपा से यह पत्र अपनी आयु के तेरहवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। आशा है उनका यह सहयोग 'पत्र' के साथ आगे भी बना रहेगा।

कुरान की आलोचना

श्रीयुत पाल सिम्पसन (Pauls Simpson Mcelroy) ने जिन्हों ने निकट पूर्व (Near East) में एक कालेज में अध्यापक के रूप में कुछ समय व्यतीत किया था जहां इस्लाम' पर वर्तमान विचार धारा के प्रभाव का अवलोकन करने का उन्हें पर्याप्त अवसर मिला था 'मुस्लिम संसार' (Moslem World) नामक पत्र में 'मुस्लिम जगत परिवर्तन काल में' विषय पर एक लेख लिखा है। 'ईसाईजगत' (World Christianity) पत्र में प्रकाशित उक्त लेख के भाग से निम्न अंश लिए गए हैं।

'Moslems themselves are now asking if the Koran is literally inspired. Such questions challenge the Sheikhs embarrassingly

It means that the Koran must undergo higher criticism, Just as the Bible has done Higher criticism of the Koran can be postponed no longer

Within a very few years the enrolment in the ancient & conservative Theological school, 'El Azhar' University is reported to have dropped from about ten thousands to less than five thousands So significant a drop can hardly be attributed to the depression when tuition is virtually free and when many have chosen Government or foreign schools instead. Modern Mohammedan youths refuse to attend this orthodox institution revered as it is, many of whose teachings are now regarded as obsolete

'स्वयं मुसलमान लोग अब पूछ रहे हैं कि क्या कुरान अक्षरशः दैवीय (इल्हामी) है इस प्रकार के प्रश्न शेखों को चैलेन्ज रूप में परेशान कर रहे हैं। इस का अर्थ यह है कि जिस प्रकार बाइबिल की उच्च आलोचना हुई है अवश्य ही उसी प्रकार की कुरान की होगी। कुरान की उच्च आलोचना अब और ज्यादा समय के लिए नहीं टल सकती है।

मुसलमानों के 'अल अज़हर' नामक पुराने और कट्टर पन्थी धार्मिक मकतब में थोड़े वर्षों के भीतर ही विद्यार्थियों की संख्या १० हज़ार से घट कर ५ हजार से भी कम रह गई है। इस महत्व पूर्ण कमी का कारण आर्थिक संकट मुशकिल से ही बतलाया जा सकता है वह भी उस समय जब शिक्षा निःशुल्क हो और जब बहुतों ने सरकारी स्कूलों में जाना पसन्द किया हो। वर्तमान मुस्लिम युवक इस कट्टर पन्थी संस्था में जाने से इन्कार करते हैं। भले ही यह संस्था सम्मानित है इस संस्था की बहुत सी शिक्षाएं अब असामयिक और पुरानी समझी जाती हैं।"

शाबास आर्य्य वीरो ?

पाठक अन्यत्र इसी अङ्क में बिन्दु ग्वालन नामक एक हिन्दू बंगाली विधवा के मुस्लिम गुन्डों द्वारा अपहरण तथा उसके अभियोग के अलीपुर के सेशन जज के फैसले का सारांश पढ़ेंगे।

घटना इस प्रकार बतलाई जाती है कि उक्त युवती विधवा अकेली अपनी बहन के पास जाने के लिए रेल में यात्रा कर रही थी। जिस डब्बे में वह बैठी थी उसी में ४ मुस्लिम गुंडे भी बैठे थे। वे चारों उसे धोखा देकर कि वे उसके बहनोई को जानते हैं और उसे उसके पास पहुंचा देंगे अपने घर ले गए और बलात ४-५ मास अपने पास रक्खा। इस बीच में उस पर जो बीता और उसका सतीत्व नष्ट करने में जिन अमानुषिक अत्याचारों का वह शिकार बनाई गई और जिस निर्लज्जता का प्रदर्शन किया गया उसका किंचित आभास माननीय जज के फैसले के अवतरणों से मिलता है। अन्त में वह असहाया एक सहृदया मुस्लिम देवी की सहायता से उन गुंडों के पाश से मुक्त हुई जिसने उसे आर्य्य समाज टीटागढ़ की शरण में भेजा। आर्य्य समाज टीटागढ़ ने देवी की रक्षा की और उन गुंडों पर मुकदमा भी चलाया। माननीय जज ने अभियुक्तों को उचित दंड देते हुए अपने फैसले में आर्य समाज के इस सत्कार्य को उचित रीति से स्वीकार किया है। और यह भी प्रगट किया कि आर्य्य समाज के प्रयत्नों के कारण ही यह मामला अदालत तक पहुंचा है।

आर्य्य समाज के इस प्रकार के कार्य्य साधारण कार्य्य हैं। उसने देवी की रक्षा करके और अभियोग चला कर अपने एक साधारण कर्त्तव्य का पालन किया है इस पर हम हर्ष ही प्रगट कर सकते हैं। निस्सन्देह मुस्लिम देवी का कार्य्य असाधारण है जिसने अपनी पीड़िता बहन की सहायता करके नारी हृदय की कोमलता; परदुःख कातरता और सुन्दरता का परिचय दिया है। उसके सहधर्मियों ने अपने जघन्य कृत्य से इस्लाम की जो अक्षम्य असेवा की थी उसने अपनी बहुमूल्य

सेवा से उसकी मात्रा में कमी करदी है। इस सहृदया देवी के लिए अनायास ही हमारे हृदय से 'धन्य' शब्द निकल पड़ता है यह भी सुना जाता है कि अभियुक्तों का अदालत इत्यादि स्थानों पर पुष्प हारों के द्वारा कुछ गुमराह मुस्लिम भाइयों ने सत्कार करने का भी आयोजन किया था। यदि यह सत्य है तो हम यह कहे बिना नहीं रहेंगे, मानों उनकी दृष्टि में गुंडों का एक असहाया देवी को धोखे से अपने चंगुल में फंसा कर बलात् उसका सतीत्व नष्ट करना और उसे अपने कब्जे में बलात् रक्खे रहना, इस्लाम धर्म्म के प्रति एक बड़ी भारी सेवा थी। इस प्रकार के कृत्य जघन्य हैं और उनका समर्थन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता चाहे वे हिन्दुओं द्वारा, मुस्लिम देवियों पर और मुसलमानों द्वारा हिन्दू देवियों पर किए जावें और जो धर्म्म अपने अनुयायियों की धर्म्म प्रसार की इस प्रकार की प्रवृत्तियों के लिए जिम्मेवार हो भले ही वह कोई भी धर्म क्यों न हो उसका कम से कम वर्तमान युग में ईश्वर ही रक्षक है।

देहली का सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्ज़ इस घटना पर सम्पादकीय स्तम्भों में विचार करता हुआ निम्न शब्दों में सरकार का ध्यान आकर्षित करता है।

"The observations of Mr Simpson Additional Session Judge of Alipore, in convicting and sentencing five men, one of them a Municipal Commissioner and a Mukhtar to varying terms of imprisonment extending from 7 to 10 years for the offence of wrongfully confining and assaulting one Bindu Goalin, a young widow of 21 deserves to be taken note of by the Government of Bengal . . This is by no means a solitary offence and it is for the Government of Bengal to see that 'Goondas' and 'Badmashes' are not let loose in the Province

अर्थात् अलीपुर के ऐडीशनल सेशन जज श्रीयुत सिम्पसन के विचार बंगाल सरकार द्वारा नोट किए जाने योग्य हैं जो उन्हों ने ५ आदमियों को जिन में एक म्यूनिसिपल कमिश्नर और मुख्तार भी है बिन्दु ग्वालन नामक एक २१ वर्षीया हिन्दू विधवा को जबरदस्ती रोक रखने और उसका सतीत्व नष्ट करने के अपराध में ७ से १० साल तक की मियाद की भिन्न २ सजाएँ देते हुए अपने फैसले में प्रगट किए हैं।

यह अपने ढंग की अकेली घटना नहीं है। बंगाल सरकार का कर्त्तव्य यह देखना है कि प्रान्त में बदमाश और गुण्डे मनमानी न करने पावें।

भयङ्कर फूका-प्रथा

जब गाय भैंस खासने (दूध बन्द होना) पर आती हैं, तब दूध देने की अवधि बढ़ाने के विचार से, उन्हें दुहने के लिए अत्यन्त क्रूरता पूर्ण फूका-प्रथा से काम लिया जाता है। सबसे प्रथम गाय या भैंस के चारों पांव मज़बूत रस्सी से जकड़ कर बाँध दिये जाते हैं, और फिर पूछ को उसके मूत्र मार्ग में प्रविष्ट कर देते हैं पूछ के साथ ही मनुष्य का हाथ भी जहाँ तक जा सकता है, पशु के मूत्रमार्ग में प्रविष्ट किया जाता है, इससे बेचारे पशु को मर्मान्तक वेदना होती है पर बेचारा विवश है, हाथ पाँव तक नहीं छुट पटा सकता। केवल बुरी तरह 'बां' करके रँभाता रहता है। थोड़ी देर बाद पूछ को निर्दिष्ट स्थान पर छोड़ कर हाथ निकाल लिया जाता है और फिर दूध दुहने का कार्य शुरु होता है। सक्षेपमें यही फूका -प्रथा है। फूका प्रथा का कलकत्ता बम्बई आदि बड़े शहरों में खूब प्रचार है। बेरहम लोग दया करुणा के भावों को भट्टी में झोंक कर अपने स्वार्थ साधन के लिए इस पापाचार को करने में तनक भी नहीं शर्माते। बड़े बड़े डाक्टरों की स्पष्ट सम्मति है कि फूका-प्रथा द्वारा जो दूध प्राप्त किया जाता है, वह अत्यन्त अस्वाभाविक और हानिकारक है। मनुष्य को वह कभी न पीना चाहिए। उसमें पौष्टिक तत्वों का सर्वथा अभाव होता है। वायसराय ने भी इस अमानुषिक फूका की घोर निन्दा की है। राष्ट्रपति प० जवाहर लाल नेहरू तो कहते हैं कि यह क्रूर और भयंकर प्रथा क्षण-भर के लिए भी सह्य नहीं। कारपोरेशन और गवर्नमेंट को एक दिन के लिए भी इस पापाचार की आज्ञा न देनी चाहिए। श्रीयुत राजेन्द्रप्रसाद जी, श्री रामानन्द चटर्जी, श्री फ़जलुल हक प्रीमियर बगाल महामना मालवीय जी, श्री सुभाष बोस, श्री रवीन्द्रनाथ टगौर ,श्रीजिन्हा, श्रीमती सरोजिनी नायडू इत्यादि सभी देशमान्यों ने फूका प्रथा को तुरन्त बन्द कर देने की सम्मति दी है।

प्रसन्नता है बगाल गवर्नमेंट ने इस प्रथा के निराकरण के लिए कानून पास कर दिया है। इस कानून के अनुसार अपराधियों को २ वर्ष तक की कैद और ५०० रुपए तक जुर्माने का दण्ड होगा।

साम्प्रदायिक क़त्ल और मुस्लिम नेता

कराची का समाचार है अपर सिन्ध फ्रंटियर के डिप्टीकमिश्नर श्रीयुत जे० बूथ ने जकोबाबाद में फ्रंटियर वार्षिक दरबार में भाषण देते हुए साम्प्रदायिक हत्याओं का अन्त करने और धर्म को बचाने के बहाने से हिंसा को प्रोत्साहन देने वाली मौलवियों में व्याप्त प्रत्येक प्रवृत्ति को नष्ट करने के लिए अपील की।

डिप्टी कमिश्नर ने तीन साम्प्रदायिक क़त्लों का जिक्र करते हुए जिनमें फ्रंटियर ज़िले में हाल में मुसलमानों द्वारा ३ निर्दोष हिन्दुओं की नृशंस हत्या की गई थी और हत्यारों का यह खयाल प्रतीत होता था कि वे इस्लाम की कोई सेवा कर रहे हैं, कहा इस प्रकार के अपराध केवल तबही बन्द हो सकते हैं जब जातियों के नेता धर्म के नाम में होने वाली इस प्रकार की ज्यादतियों का बिना किसी प्रकार की झिझक और पक्ष के खुले आम खडन करने का साहस करेंगे। आगे श्रीयुत बूथ ने कहा 'आप लोगों को शायद इस बात का भय है कि यदि हम कुछ गुमराह मौलवियों के भाषणों पर प्रतिबन्ध लगावेंगे और दूसरी जाति के विरुद्ध उठे हुए आन्दोलन का खडन

करने के लिए हम आगे बढ़ेंगे तो लोग हमारी धार्मिक निष्ठा पर सन्देह करेंगे। आप लोगों को इस तरह के मामलों में अपनी सम्मति का स्वय नेतृत्व करना चाहिए और दूसरों की ग़लत सम्मति का आदर करके अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं होना चाहिए।"

यह भाषण स्वयं अपने मे स्पष्ट है, क्या हम आशा करें मुस्लिम नेता भाषण मे स्पष्ट किए हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करने का साहस किया करेंगे ? सच मुच धर्म के नाम पर होने वाली हिन्दुओं की हत्याओं और अन्धाधुन्ध अत्याचारों के समय मुस्लिम नेताओं की चुप्पी अप्रत्यक्ष रूप से इन क़त्लों और ज्यादतियों के बढ़ जाने के लिए जितनी जिम्मेवार होती है उतनी शायद ही अन्य कोई बात हो। यह एक सचाई है और श्रीयुत बूथ की नाईं देश के समझदार और दूर दर्शी लोग इसे अनुभव करते और प्रगट करते हैं।

जेल सुधार और हमारा कर्त्तव्य

संयुक्त प्रान्तीय सरकार जेलों मे सुधार की आयोजना कर रही है। इस आयोजना का मूल भूत आधार अपराधियों का सुधार करना है। वर्तमान में जेल जीवन के इस पहलू की भारत वर्ष में बहुत अवहेलना हुई है। प्राय देखा जाता है कि जेल जीवन मे अपराधी का सुधार तो क्या वरन् उल्टा उसका जीवन पहले से भी बदतर हो जाता है और वह जेल से लौट कर समाज का एक अच्छा अंग होने के बजाय पहले से भी ज्यादा हानि कारक अंग बन जाता है और कुछ हालतों मे वह परित्यक्त अंग के रूप में रहता है। इसका कारण जेल में सुधार के भावों के स्थान में बदले के भावों द्वारा उस पर शासन होना ही जेल-जीवन का परीक्षण करने और उसका सम्यक ज्ञान रखने वाले एक स्वर में प्रगट करते हैं।

जेलोंमे सुधार के कई प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत हुए हैं। सब से मुख्य प्रस्ताव यह है कि कैदियों को कई श्रेणियों मे विभक्त किया जाय और उन्हें पृथक् २ रक्खा जाय जिससे निरन्तर स्वभाव के रूप में अपराध करने वाले इत्तिफ़ाक रूप में अपराध करने वालों को न बिगाड़ सकें। राजनैतिक अपराधियों को नैतिक अपराधियों के साथ सम्पर्क में आने की इजाज़त देदी जाय। एक प्रस्ताव यह भी है कि जेल के कर्मचारियों के शिक्षण के लिए एक स्कूल खोला जाय। यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि दस्तकारी का शिक्षण दिया जायगा या इसके अलावा भी कोई शिक्षण दिया जायगा। इस सम्बन्ध में देश के उच्च वर्ग के कतिपय लोगों की सम्मति है कि जेल कर्मचारियो को ऐसा शिक्षण भी दिया जाय जिससे उनका व्यक्तित्व भी शिक्षा प्रदान कर सके। वे लोग मानवी भावनाओं से युक्त होने चाहिएँ और केवल यन्त्र जैसे मनुष्य नहीं होने चाहिएं जो हाथ मे कोड़ा लिए हुए काम लेना ही जानते हों।

जेलों के अधिकारी ऐसे होने चाहिए जो मनोविज्ञान के पूर्ण ज्ञाता हों। वर्तमान मे डाक्टरों को जल का सुपरिन्टेन्डेन्ट बनाने की प्रथा का भूतकाल में ही शायद कोई महत्व रहा हो। इंग्लैंड में जेलोंके अधिकारी डाक्टर लोग बड़े सहृदय सिद्ध हुए हैं यह ठीक है परन्तु भारत वर्ष में अपवादों को छोड़ कर वे लोग सब जगह असफल हुए हैं। संक्षेप में मानवीय भावों से पूर्ण व्यक्ति ही जेल के संचालन में लगने चाहिए। हम बड़ी उत्सुकता से भारत में जेलों के सुधार

के आवश्यक और लोकोपकारक कार्य को देखेंगे।

आर्य्य समाज म जेलों में प्रचार कार्य पर इन दिनों बहुत बल दिया जा रहा है यह बहुत उत्तम है। इस कार्य के दूरवर्ती सुपरिणामों को यहां गिनाने की जरूरत नहीं है। केवल यह देखना है कि हमारी अकर्मण्यता से यह कार्य न हो अथवा अपेक्षित रीति से हो।

भारत मे शराब बन्दी

अभी हाल में बम्बई सरकार के स्वास्थ्य विभाग के अप्रजी मन्त्री ने भारत म शराब विरोधी प्रगतियों के सम्बन्ध म अच्छे उद्गार प्रगट किए है। उन्हों ने कहा कि भारत वर्ष ससार के अन्य देशों की अपेक्षा शराब बन्दी के लिए ज्यादा तय्यार है। और जो लोग इस आन्दोलन की अन्य स्थानो पर असफलता का चर्चा करते हैं वे यहा की अवस्थाओं को अनुभव नहा करते है। भारत वर्ष मे धार्मिक और सामाजिक भाव शराब के बिलकुल विरुद्ध है। यदि सरकार धार्मिक शक्तियो का ठीक २ उपयोग करती तो निश्चय ही इसमे शराब ख़ोरी को बन्द करनेमें समर्थ होती। पश्चिम म मिक़दार में मांस खाना और शराब पीना एक जैसा ही समझा जाता है। भारत मे यदि कोई थोड़ी सी भी शराब पीता है तो वह शर्म अनुभव करता है। वह समझता है शराब पीना एक बुरा और बदनामी का काय्य है।

भारत मे इस बुरी आदत के प्रचार के लिए कौन ज़िम्मेवार है इस पर प्रकाश डालने की ज़रूरत नही है। यह अवश्यक है जितनी जल्दी इस बुराई का अन्त हो देशके स्वास्थ्य और लोगो की आर्थिक और नैतिक सुरक्षा के लिए उतना ही अच्छा है।

शारदा ऐक्ट मे सशोधन

शारदा एक्ट के प्रभाव से सुरक्षित रहने के लिए कुछ लोग अपने पुत्र पुत्रियों के विवाह १८ और १४ वर्ष की आयु से पूर्व किसी रियासत या फ्रन्च इलाके म जाकर कर आते हैं जहा बाल विवाहों का निषेध नही है। इस कानूनी दोष का दूर करने के लिए केन्द्रीय धारा सभा के पिछले अधिवेशन म एक सशोधन पेश किया गया था जो पास होगया। इस संशोधन के अनुसार अब कोई भी ब्रिटिश प्रजा रियासतों या फ्रन्च इलाके म जाकर बाल विवाह न कर सकेगी यदि कोई करेगा तो उसे उसी प्रकार दण्ड मिलेगा जिस प्रकार ब्रिटिश भारत में बाल विवाह करने पर मिलता।

बम्बई सरकार का अछूतोद्धार सम्बन्धी कानून

बम्बई गवर्नमेंट ने अभी हाल में अछूतोद्धार सम्बन्धी एक कानून पास किया है। इस कानून के अनुसार जहों लोकमत पक्ष म होगा मंदिरो के ट्रस्टी अछूतों के लिए मंदिर खोल सकेंगे।

पोंगा पंथियो का दुष्कृत्य

समाचार मिला है कि दक्षिण भारत में इरना कुलम स्थान पर पोंगा पंथियो ने एक अछूत कहे जाने वाले भाई पर आक्रमण किया केवल इस अपराध पर कि वह एक देव मन्दिर के दरवाज़े के भीतर चला गया था और उस बेचारे को एक हस्पताल मे रक्षा के लिए शरण लेनी पड़ी। घटना के विस्तृत समाचार हमारे सामने नही है इसलिए नहीं कहा जा सकता है कि अछूत भाई का वास्तविक अपराध मन्दिर प्रवेश ही था अथवा अन्य कोई अपराध था। परन्तु यह ज़रूर

कहेंगे कि इस घटना से अछूतों के प्रति लोगा को सहानुभूति बढ़ेगी ही। अछूतों के उद्धार के लिए इस समय जो वातावरण बना हुआ है उसमें पोंगापंथियों से इस प्रकार की घटनाओं से अधिक और आशा ही क्या की जा सकती है। सचमुच उस अछूत भाई पर जितने डंडे पड़े है उन में से प्रत्येक उसकी जाति की बहुमूल्य सेवा में योग देगा।

आर्य्य मैरेज ऐक्ट की व्याख्या

आर्य्य मैरेज ऐक्ट की अंग्रेजी व्याख्या जिसकी चर्चा आर्य्य जगत् मे पिछले सप्ताहों से चल रही थी छपकर तैयार हो गई है। पुस्तक की छपाई गैटअप इत्यादि बहुत अच्छा है, इससे पुस्तक आकार इत्यादि की दृष्टि से भी बहुत आकर्षक बन गई है। सभा ने इस व्याख्या को प्रकाशित करके जनता के ऐक्ट सम्बन्धी मार्ग प्रदर्शन के लिए अपने एक महत्व पूर्ण कार्य्य को पूरा कर दिया है। अब आर्य्य समाजो, प्रान्तिक सभाओं तथा आर्य्य जनता का फर्ज़ है कि वे इस व्याख्या का अधिक से अधिक मात्रा मे प्रचार करें।

प्रत्येक आर्य्य समाज में इस ऐक्ट की हिन्दी और अंग्रेजी दोनों की १ १ कापी तो अवश्य रहनी हो चाहिए साथ ही आर्य्य समाजो को आर्य्य भाइयों तक ही तक नहीं वरन् गैर आर्य्य समाजी भाइयों तक अधिक से अधिक सख्या में पहुचानी चाहिए और इसमें प्रमाद वा शिथिलता नहीं होनी चाहिए। इसका मूल्य I) रक्खा गया है और सार्वदेशिक सभा (देहली) वा शारदा मन्दिर नई सड़क देहली से मिल सकती है। इस ऐक्ट की व्याख्या के साथ२ आर्य्य समाजों में शारदा ऐक्ट, हिन्दू विधवाओं के उत्तराधिकार सम्बन्धी ऐक्ट तथा अन्यान्य इस प्रकार के समाज सुधार के ऐक्ट भी रखने चाहिएँ।

हिन्दी की व्याख्या, आशा है इस मास के अन्त तक तयार हो जायगी कहने की आवश्यकता नही आर्य समाजो को केवल हिन्दी ही की व्याख्या अपने यहां रखना पर्याप्त नही समझना चाहिए हिन्दी की व्याख्या के साथ २ अंग्रेजी व्याख्या भी अवश्य रखनी चाहिए।

कुम्भ -प्रचार

प्रसन्नता है आर्य्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने आगामि कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार में निरन्तर १ मास पर्य्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार करने का आयोजन किया है। इस अवसर पर ही गुरुकुल कांगड़ी और महा विद्यालय ज्वालापुर के उत्सव भी होगे। और आर्यों का भी हरिद्वार में काफी जमाव होगा। पंजाब की सभा ने इस कार्य के सम्पादनार्थ धन और साहित्य की अपील की है। उसका विचार अन्य साहित्य के अतिरिक्त १०००-२००० सत्यार्थ प्रकाश वितरण करने का है। हम इस अपील का समर्थन करते हैं। आशा है देशभर के आर्य नर नारी पजाब की सभा की अपील का आशा वर्द्धक उत्तर देंगे। कुम्भ प्रचार सार्वदेशिक महत्व रखता है अब का यह प्रचार सार्वदेशिक सभा ने इस बार उक्त सभा को ही, उसकी प्रेरणा पर सुपुर्द किया है। इसलिए यह प्रचार सार्वदेशिक ही समझना चाहिए और पंजाब की सभा को पूरी २ सहायता देनी चाहिए।

———

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये चन्द्र प्रिण्टिंग प्रेस बहला से प्रकाशित

ऋग्वेद | अप्रैल १९३८ | ओ३म् | Reg No. L. 2121 | यजुर्वेद

सार्वदेशिक

सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

अथर्ववेद | वार्षिक मूल्य स्वदेश ३) एक प्रति का ≡) विदेश से ६ शि० वार्षिक | सामवेद

लेख-सूची

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

—:o:—

(१) इस समय इस अनाथालय मे १८० बालक बालिकाएं है जिनका न केवल पालना पोषण किया ज ता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सासारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए बिस्तरो और अन्य वस्त्रो की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहाँ अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाए वहा इन बालका का भी अवश्य ध्यान रखे।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृत भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय १५००) रु० मासिक है वह दानी महाशयो की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकडे थे और जिनके सबधियो का पता नही लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखें है वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते है वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते है। यह अनाथालय सरकार की तरफ स Register d भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखें और Audit किए जाते है।

(५) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनक पढाने के लिये टैकनीकल स्कूल भा है जो सरकार से स्वीकृत है। इसम बाहर के बालक भी मुफ्त पढाये जाते हैं।

(६) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री प० विश्वम्भरनाथ जा, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

, श्री प० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B A, लाहौर।

अत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय म आता है उस की रसीद तत्काल भेजी जाती है।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १३ | चैत्र १९९५ | अप्रैल १९३८ ई० | [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क २

* वेद की शिक्षाएँ *

येषामिन्द्रस्ते जयन्ति । ऋग० ८—१६—६

प्रभु जिनका सहायक है वे विजयी होते हैं ।

They alone conquer in the long run who are befriended by God

तमेव विद्वानेन विभाय मृत्योः । अथर्व १०—८१४

परमात्मा को अनन्य भाव से जानने वाला ही मृत्यु के भय से मुक्त होता है ।

One who knows Him with singlemindedness or realize His presence everywhere is not afraid of Death.

अध्यात्म धारा

शान्ति (Peace)

'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् बुद्धिमान् लोग भिन्न २ रूपों में एक ही परमात्मा की चर्चा करते हैं। इस प्रसिद्ध वैदिक लोकोक्ति में भारत के प्राचीन ऋषियों का संदेश छुपा है और यही शान्ति' की वैदिक भावना का नीव है। यह एक सीधी सादी सचाई है परन्तु सीधी सादी सचाइयों को क्रियाम लाने के लिए तत्पर होना बड़ा कठिन होता है। परमात्मा व्यक्ति विशेष नहीं है वह एक महान् निराकार चेतन सत्ता है जो तमाम विश्व में ओत प्रोत है। कोई खास देश या जाति यह दावा नहीं कर सकती है कि परमात्मा केवल उसका है। परमात्मा सबका है और सब ही परमात्मा के हैं। हम सब एक परिवार के सदस्य और उसके बच्चे हैं। सब धर्मों का सुदूरवर्ती स्रोत वही प्रभु है। यदि हम प्राणी इस सचाई को ठीक २ समझ लेवें तो हम शान्ति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम उठा लेवें—

वेद शिक्षा देते हैं कि धर्म्म का अर्थ जीवन है। यह अनुभव है। प्रतिदिन के जीवन के व्यवहार में आने और लाने योग्य वस्तु है। रीति-रिवाजों और क्रिया-कलापों का नाम जैसा कि हम गलती से समझ बैठे हैं, धर्म नहीं है। विशेष प्रकार के विश्वास सिद्धान्त या मत का रूप ले लेते हैं और प्राय लोग उन्हें ही सत्य का सार समझ बैठते हैं। इस प्रकार वे सिद्धान्त हमारी कोई खास मदद नहीं करते हैं। धर्म्म का सार जीवन से और अनुभव से और जीवन को पवित्र बनाने से ही प्राप्त होता है। जब हम ईमानदारी और सचाई से धर्म्म तत्व को प्राप्त करने के यत्न में लगे होते हैं तो हम सचमुच शान्ति के राज मार्ग पर चलते होते हैं। शान्ति में जितनी अधिक आध्यात्मिक प्रेरणा है और जितनी अधिक यह मूल्यवान है उतनी शायद ही अन्य कोई वस्तु हो। सच्चे आनन्द और सच्ची पवित्रता का ही दूसरा नाम शान्ति' है। हम आर्य्य लोग शान्ति के विशेष रूप से इच्छुक रहे हैं। हम शान्ति पाठ के द्वारा अपनी भावना को प्रगट करते हैं। हमारी प्रार्थना, उपासना, हमारे उपदेश प्रवचन और शंका समाधान और शास्त्रार्थ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !!! के साथ समाप्त होते हैं। शान्ति की यह भावना हमारी परम्परा में ओत प्रोत है परन्तु यह भावना तब ही पूरी हो सकती है जब हम अपने सिद्धान्तों को काम में लाएं, अपने आदर्शों को सच्चे अर्थों में चरितार्थ करें, तथा दूसरे लोगों के साथ हमारा व्यवहार श्रेष्ठ हो। अध्यात्म जीवन के लिये सब से पहली आवश्यक चीज साम' (शान्ति) होती है। पूर्ण और किसी प्रकार की मिलावट रहित शान्ति का ही दूसरा नाम 'मोक्ष' है।

आज दुनिया को सबसे अधिक जरूरत 'शान्ति की ही है। केवल शान्ति का उपदेश करते रहने ही से 'शान्ति' प्राप्त नहीं हो सकती है विशेषत जबतक हमारे विचारों और आचारों में चौड़ी खाई हो। बाह्य शान्ति के लिए सबसे पहले भीतरी शान्ति की जरूरत होती है। मन को शान्ति अध्यात्म और धर्म्म मार्ग की विशेषताओं और

गुणों को जिनका सत्शास्त्रों मे वर्णन किया गया है चरितार्थ करने से ही प्राप्त हाती है।

सत्य, ईमान्दारी, और प्रेम के व्यवहार मे बाहरी शान्ति उपलब्ध करने की हममें योग्यता आती है। तबही अपने साथियों के साथ हमारे व्यवहार शुद्ध होते हैं। व्यक्तियों की तरह राष्ट्रों को भी शान्ति के लिए योग्यता प्राप्त करने की जरूरत हाती है। हाथ में तलवार लेकर तुम शान्ति के लिए काम नहीं कर सकते हो इस का अर्थ अविश्वास और सदेह है, यह दोनों शान्ति के सबसे बड़े शत्रु होते हैं। शान्ति के लिए कोशिश करने का पेशा बनाने से भी काम नहीं बनता। इस कोशिश के साथ पूर्ण आचारिक तपस्या और नियन्त्रण होना चाहिए जो बदले प्रति हिंसा' शोषण, और दोहन इत्यादि की दुर्भावनाओं को साफ करदे।

वास्तविक जीवनों में हम प्राय एक दूसरे से अनुचित लाभ उठाते हैं। हम ईर्ष्या और अभिमान से अपने सच्चे आइने को मैला करदेते हैं। हम पक्के आत्म प्रपंची बनगए हैं। हम न सिर्फ दूसरों को ही वरन् अपने को भी बहुत धोखा देते हैं। जब तक हम इस लबादे को उतार कर नहीं फेंक देते हैं और सत्य और नम्रता का व्यवहार नहीं करते है तब तक सच्ची शान्ति की कोई आशा नहीं हो सकती है। मक्कारी मौजूदा दुनियाँ का सबसे बड़ा पाप है और जब इसके साथ अभिमान जुड़ जाता है तो यह बड़ा अनर्थ और हर प्रकार का पतन करती है।

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज हम दुखी ससार मे रहते हैं। विरोध और अविश्वास के भाव प्रबल हैं। इस सब के होते हुए भी हम सबका कर्त्तव्य है कि पारस्परिक सद्भाव को पैदा करे।

स्वाभाविक धर्म

(लेखक—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी ऐडवोकेट आगरा)

अनेक प्रचलित धर्मों मे से मनुष्य के लिये कौन सा धर्म सब से प्राचीन और मानने योग्य है यह एक जटिल प्रश्न है। इस पर सदैव से विचार होता रहा है और होता रहेगा। पूर्व इसके कि हम यह निश्चित कर सके, कि कौन से धार्मिक सिद्धान्त स्वाभाविक हैं हमे यह जानना जरूरी है कि मनुष्य के स्वभाव से क्या अभिप्राय है। और उस अभिप्राय को लक्ष्य मे रखकर हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि जिन धार्मिक सिद्धान्तों से स्वाभाविक गुण विकसित हो सके वही सिद्धान्त स्वाभाविक धर्म के सिद्धान्त है। यहा पर दूसरी बात और स्पष्ट कर देनी है कि धर्म के शब्द से आजकल कही तो अधिक विस्तृत अर्थ लिये जाते है और कही अधिक सङ्कुचित। धर्म और मजहब पर्यायवाची नही है। स्वाभाविक धर्म से हमारा अभिप्राय उन धार्मिक सिद्धान्तो से हैं, जो रूढियों और रिवाजो से परे है। जो देश काल और इतिहास के बन्धन से रहित हैं। जिस मे साम्प्रदायिकवाद का रग नहीं है। जो स्त्री-पुरुष काले-गोरे, जातीय और वश की शृंखलाओं से जकडा हुआ नही है।

धर्म को यदि हम सार्वजनिक और सार्वभौमिक रूप देना चाहते है अथवा धर्म का ऐसा स्वरूप समझना है जो ससार मात्र में प्रचलित होने योग्य और हर दशा मे लागू हो तो हमे सच्चे स्वाभाविक धर्म की खोज करनी चाहिये।

मनुष्य का स्वभाव क्या है ?

मनुष्य के स्वभाव से अभिप्राय जीवात्मा के स्वाभाविक गुणो से है। जीवात्मा के स्वाभाविक गुण प्राचीन वैदिक साहित्य के अनुसार निम्न लिखित है —

(१) ज्ञान

(२) इच्छा }
(३) द्वेष } = कर्म
(४) प्रयत्न }

(५) सुख }
(६) दुख } = भोग

जीव के छ स्वाभाविक गुण हैं। वह छ तीन के अन्तर्गत आजाते हैं। अर्थात् ज्ञान कर्म, और भोग के और कर्म और भोग का भी घनिष्ट सम्बन्ध है। कर्मों का फल भोग हैं और भोग भी कर्मों ही द्वारा होता है। जीव के उपयुक्त छहों गुणों का यदि ठीक २ विकास होता रहे तो जीव उन्नति करके इस कर्म और भोग के बन्धन से एक विशेष नियत अवधि के लिये छुटकारा पा सकता है।

इन गुणों का विकाश कैसे हो ?

सब से पहिले हम जीव के ज्ञान सम्बन्धी गुण को लेंगे। ज्ञान ही मनुष्य की विशेषता है और यह विशेषता ही उसे प्राणी मात्र मे श्रेष्ठ बनाती है।

ज्ञान की वृद्धि स्वाध्याय से होगी, जितना हमारा ज्ञान बढ़ेगा उतना ही हमारा विकास होगा इसलिये हमेंहर समय स्वाध्याय करते रहना चाहिये, चाहे वह पुस्तकों से हो, या सत्सङ्ग से हो अथवा ससार के पदार्थों के परीक्षण और देख भाल से हो।

ज्ञान के पश्चात् हमें कर्म के विषय पर विचार करना है। कर्म जब हम करते हैं, तो उसके मुख्य दो कारण होते हैं। हमारे अन्दर किसी चीज की प्राप्ति की इच्छा होती है इसका नाम इच्छा है। किसी चीज को हम अपने पास से हटाना चाहते हैं इसका नाम द्वेष है। चाहे इच्छा की पूर्ति के लिये चाहे अनिच्छित चीज को अपने पास से हटाने के लिये हमे उद्योग करना पड़ता है। इस उद्योग का नाम ही प्रयत्न है। यह जीवात्मा के तीनों गुण अर्थात कर्म करने का स्वभाव उस समय पूर्ण रूप से विकाश पा सकता है जब कर्म करने की हम मे शक्ति हो, और हम कर्म करने के योग्य हों। यह दशा शौच और तप से प्राप्त हो सकती है। शौच सफाई का नाम है न केवल शारीरिक सफाई बल्कि मन की बुद्धि को और विचारों की भी सफाई। हमारे निर्मल विचार होने चाहियें और कर्म करने मे मिहनत, सहनशीलता होनी चाहिये और जिसमें जरा भी आलस्य न हो। शौच और तप से कर्म मर्यादित हो जाते हैं। कर्म ठीक ठीक मर्यादित होजाने पर भी भोग का प्रश्न फिर भी शेष रह जाता है क्यों कि कर्मों का फल तो किसी दूसरी शक्ति द्वारा प्राप्त होता है। कर्म मर्यादित होते हुये भी भोग की दशामे मर्यादा होने की महान् आवश्यकता है।

जब हम इच्छा या द्वेष के कारण प्रयत्न करेंगे तो उस के दो ही परिणाम हो सकते हैं। हमें इच्छित पदार्थ मिल जावे या न मिल जावे। यदि हमारी इच्छा पूरी होगई तो इसका नाम सुख और न पूरी हुई तो इसका ही नाम दुःख है। कर्म करते हुए सुख और दुख उत्पन्न होते रहना स्वाभाविक है। यदि हम सुख की दशा में मर्यादा के अन्दर और दुख की दशा मे भी मर्य्यादा के अन्दर रहें तो हमारा विकास होता रहेगा। अर्थात् हमारे ज्ञान और कर्म की शक्ति रहेगा। सुख की दशा मे अभिमान उत्पन्न होजाना बडी साधारण सी बात है। अभिमान आते ही दूसरों से द्वेष होजाता है और अपने को सब से अधिक सुखी समझने से यदि हम किसी दूसरे को अधिक सुखी देखते है तो वह हमारे सुख की दशा दुःख में बदल जाती है। सुख की दशा में विकास ईश्वर पर भरोसा करने से होगा। अर्थात ईश्वर प्रणिधान से। ईश्वर पर भरोसा करने से हमारे अन्दर सफलता की दशा मे यह भाव होंगे कि हमे जो कुछ सफलता मिली है, वह ईश्वर की ही कृपा है। दुःख की दशा में सब्र या सन्तोष की आवश्यकता है। सन्तोष के

बिना दुःख का कोई उपाय नही है। यदि हम दुःख को सुख मे परिवर्तित करना चाहे तो न तो यह सदैव सभव है और इसका उद्योग भी कुछ कम दुःख का कारण नहीं। दुःख की अचूक औषधि सन्तोष है। सन्तोष भी ईश्वर पर ही भरोसे का दूसरा रूप है। सफलता मे हमें यह समझना चाहिए कि सफलता उसके अनुग्रह से हुई, असफलता मे हमे यह समझना चाहिए कि हम ने तो भरसक उद्योग किया परन्तु परिणाम ईश्वर के अधीन था। दुःखी तो हम जब हो जब हमारे परिश्रम मे कमी हो, पूरा परिश्रम करके परिणाम ठीक न होने पर दुःखित न होना इसी का नाम सन्तोष है। यहा यह भी स्पष्ट कर देना है कि सन्तोष अकर्मण्यता या आलस्य का नाम नहीं है। कर्म और योग का घनिष्ट सम्बन्ध है। कर्म पूरा पूरा करके उसके फल पर चिन्तित न होना सच्चा सन्तोष है और हमे सुखी बनाने के लिए रामबाण है।

हमने जहा तक जीवात्मा का विचार और आचार सम्बन्धी बातो से सम्बन्ध है, उसके लिए स्वाभाविक धर्म ऊपर दिखलाये, जिस के आवश्यक अंग इस प्रकार है—

स्वाध्याय, शौच, तप, ईश्वर प्रणिधान और सन्तोष। अब हम जीवात्मा के लिए व्यावहारिक धर्म के भी आवश्यक अगों पर विचार करना है।

मनुष्य ससार मे अकेला नही रहता और न रह सकता है, वह स्वभाव से मिल-जुल कर रहता है और उसका सम्पर्क दूसरो से होता है। यदि हमारे आचार और विचार ठीक भी हों परन्तु यदि हमारा व्यवहार दूसरो से ठीक न हो या दूसरो का हम से तो भी परिणाम ठीक न होगा, जीवात्मा का विकास न हो पावेगा, वह अपने आचार से एक पग आगे बढावेगा तो दूसरे उसे चार कदम पीछे घसीट लेंगे। व्यावहारिक धर्म के अगो पर विचार करने मे भी हमे जीवात्मा के ऊपर वर्णित स्वाभाविक गुणों पर ही दृष्टि रखनी होगी। यदि स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है तो हमे दूसरो के साथ अपने स्वाध्याय को ठीक ठीक रूप मे रख देना चाहिए। अर्थात् सब से पहला व्यावहारिक धार्मिक नियम सत्य अर्थात सच बोलना और सत्य व्यवहार करना, जो बात जैसी हो, उसे वैसी ही कह देना, इस लिए जीव का स्वाभाविक गुण ज्ञानी होना, सत्य से वास्तविक रूप मे विकसित हो सकता है।

जीव का स्वाभाविक दूसरा गुण अर्थात कर्म करना यदि व्यक्ति गत दृष्टि से शौच और तप से विकसित होते है तो दूसरो के व्यवहार मे ब्रह्मचर्य और अहिंसा की आवश्यकता है। ब्रह्मचर्य का और शौच का घनिष्ट सम्बन्ध है। ब्रह्मचर्य से अभिप्राय हर प्रकार की व्यावहारिक शुद्धि से है। हमारे मन, वाणी व कर्म न केवल अपने लिए शुद्ध होने चाहिए बल्कि दूसरों के सग व्यवहार मे भी। इसी लिए ब्रह्मचर्य एक आवश्यक अंग है। तप के लिए अहिंसा की आवश्यकता है। हमे खूब परिश्रम करना चाहिए परन्तु हमारे परिश्रम से किसी दूसरे को कष्ट नहीं होना चाहिए। यदि हमारे परिश्रम का फल दूसरों को दुख पहुचाना हुआ तो उसका नाम तप नहीं होगा, वह तो एक

कोई और ही दशा होगी। इसी प्रकार योग में हमें अस्तेय और अपरिग्रह की आवश्यकता है। यदि हमें असफलता में सन्तोष न होगा तो हम दूसरों की चीज चुराने की चेष्टा करेंगे। सन्तोष हमारे व्यक्ति गत सुधार के लिए है, और उसका व्यावहारिक रूप चोरी न करना है। जो चीज हमें अपने परिश्रम से प्राप्त नहीं हुई है उसके लिए हमें दूसरों के पास से बलात्कार या छिप कर लेना बहुत बुरा है। इसी प्रकार सफलता की दशा में हमें अपरिग्रह अर्थात् कंजूसी से बचना चाहिए। जो चीज हमें प्राप्त हो गई है उससे हम अपनी आवश्यकता पूरी करें और फिर उसको दूसरों के लाभ में लगावें। जिस प्रकार दूसरे की चीज को बिना अधिकार के लेना चोरी है, उसी प्रकार अनुचित मोह के कारण चीज को अपने पास अनुचित रूप से रोके रखना और दूसरों तक न जाने देना भी एक प्रकार की चोरी है। अपरिग्रह का दान की मर्यादा से घनिष्ट सम्बन्ध है, और इस लिए जीव के लिए व्यावहारिक धर्म जिन्हें हम स्वाभाविक कह सकते है, यह है ब्रह्मचर्य अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह।

बाधाओं से बचना

विकास प्राप्त करने के लिए यदि किन्हीं विशेष सिद्धान्तों की आवश्यकता है, तो हमें उन बातों से भी सचेत हो जाना चाहिए जो उनमे बाधाएं उत्पन्न करती हैं। हम उनको चाहे अधर्म के नाम से कहें चाहे धार्मिक मार्ग मे रुकावटों के नाम से।

अहंकार अर्थात् अभिमान सत्य का विरोधी है। काम अर्थात् अनुचित इच्छा ब्रह्मचर्य की विरोधी है। क्रोध अहिंसा का विरोधी है। लोभ चोरी की जड अर्थात् अस्तेय का मूल कारण है। मोह का सम्बन्ध अपरिग्रह से है। इस लिए हमें व्यावहारिक दृष्टि से भी और व्यक्ति गत आचरण की दृष्टि से भी अहंकार काम, क्रोध, लोभ और मोह से बचना चाहिए। अहंकार से स्वाध्याय असफल हो जायगा, क्रोध से तप में बाधा होगी काम से शौच मे त्रुटि आजायगी, और लोभ और मोह से न सन्तोष रहेगा और न ईश्वर प्रणिधान।

लक्ष्य क्या होना चाहिये।

उपयुक्त प्रकार के विचार आचार और व्यवहार सम्बन्धी स्वाभाविक धार्मिक नियमों के पालन से हमें लक्ष्य क्या रखना चाहिए। और वह यह है कि सब से पहिला लक्ष्य रखना धर्म पालन करना है। अर्थात् Duty for Duty Sake उससे अर्थ की प्राप्ति होगी और अर्थ की प्राप्ति से कामना पूरी होगी, और कामना पूरी होजाने का ही नाम मोक्ष है। अर्थात् हम धर्म के साथ अर्थ प्राप्त करते हुए अपनी कामनाओं को पूरा करेंगे। और इस जीवन मे सुखी रहेंगे और मोक्ष भी प्राप्त कर सकेंगे।

विज्ञान और सृष्टि-संहार

रघुनाथ प्रसाद पाठक

पश्चिम का विज्ञान (सायंस) अर्से से विशाल मानव समाज को प्रेम करने वाले लोगों में तिरस्कृत है, क्योंकि यह निरुद्देश्य है। पता नहीं यह मानवसमाज को कहां पहुंचाना चाहता है। मनुष्यों का हित करने के स्थान में वह सिर्फ उनका अहित ही नहीं कर रहा है वरन उन के संहार में भी प्रयुक्त हो रहा है। वैज्ञानिक आविष्कार संसार की सुख शान्ति और प्रसन्नता के समुदाय में योग देने के बजाय उन्हे ही मिटा देने पर तुले हुए दीख पड़ते हैं। इस विज्ञान ने मानवी-प्रतिभा के प्रति शान्ति प्रिय लोगों के हृदयों में भयकर तूफान पैदा कर दिया है। आज पूर्व और पश्चिम के रंग-मंच पर सृष्टि संहार का जो ताण्डव नृत्य हो रहा है, उस में सब से अधिक वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रयोग हो रहा है। वर्तमान में स्पेन और चीन की निर्दोष प्रजा के विध्वंस ने हवाई जहाज़ो द्वारा बम वर्षा से आहत पीड़ित, रोती, बिलखती और तड़पती हुई प्रजाके चीत्कारो ने मनुष्य समाज से प्रेम करने वाली जनता की आत्मा को कपा दिया है। पश्चिम तथा पूर्व के साम्राज्यवादी राष्ट्र अधिक से अधिक और शीघ्र से शीघ्र विध्वंसकारी आविष्कारों की होड़ में लगे हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ससार में

विध्वंस का एक महान विप्लव

आने वाला है। लोगों का तभी तो कहना है कि भावी युद्ध जिस के लक्षण असंदिग्ध रूप में देख पड़ रहे हैं बहुत अंश समाप्त होगा और १९१४ के महा-समर से भी जन—संहार इत्यादि प्रत्येक दृष्टि से अधिक भयङ्कर होगा। साम्राज्यवादी राष्ट्र कैसे २ भयङ्कर आविष्कारों मे लगे हुए हैं, अख़बार पढ़ने वाले प्रायः जानते होंगे। अभी हाल में समाचार मिला है कि जर्मन लोग युद्धमें शहरी आबादी (Civil population) के सहार के लिए प्लेग, हैजे, पीले बुख़ार, चेचक, पेचिश इत्यादि संक्रामक और घातक रोगों के कीटाणु (germs) तय्यार करनेकी सोच रहे हैं। हवाई जहाज़ो से बम वर्षा इत्यादि के मुक़ाबले में ये कीटाणु कितने प्रलयङ्कर सिद्ध हो सकते हैं इस का पाठक सहज ही अनुमान कर सकते हैं। इस सम्बन्धमें २१ सितम्बर के न्यूयार्क टाइम्ज़ (New York Times) की रिपोर्ट से अच्छा प्रकाश पड़ता है।

Wireless to the New York Times.
Berlin—Sep 21

With chemical warfare already proved in the World-War, experts now are busy discussing the potentialities of Germ warfare

A discussion of the effectiveness of distributing deadly microbes among the enemy civilian population is contained, in "Deutsche Wehr," a military publication The author bases his conclusions on those of an Italian medical officer who recently published his views.

The immediate effect of Bacterial Warfare, with the probable paralyzing

of the opposing nations moral is stressed in the article

Three main points are dealt with First the most infectious germs, Second the ways and means of their distribution and third the necessary preparations for the generations of contagious diseases and the spreading of pestilences

The study and preparation of contagious germs is for chemical experts in laboratories , it is pointed out

The most efficacious microbes would include Spotted Typhus, Yellow Fever Typhoid, Small pox, Cholera and Plague.

अर्थात विशेषज्ञ कीटाणुओं के युद्ध की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे हैं। शत्रु की शहरी आबादी के संहार के लिये पीले बुखार, टाइफ़ाइड चेचक, हैज़े और प्लेग के कीटाणुओं के प्रयोग की सोचा जा रही है और रसायनशालाओं में उनके परीक्षण पर भी विचार हो रहा है।

आगे इस रिपोर्ट में बतलाया गया है कि मच्छरों से पीले बुखार के कीटाणु पैदा किए जाएंगे। कूओं तथा अन्यान्य जलाशयों में हैज़े के कीटाणु फैलाए जाएंगे। यह भी प्रगट किया गया है कि ये कीटाणु प्रयोग कर्ताओं के लिए निर्दोष और बीमारी फैलाने में सशक्त होंगे। यह भी कहा है कि पिछले युद्ध में यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है। प्लेग के कीटाणु सब से ज्यादा भयकर खयाल किए जाते हैं क्योंकि ये ठण्डी और तर हवा में भी फैलाए जा सकते हैं। यह भी सोचा जा रहा है कि शत्रु सेना पर इन कीटाणुओं का प्रयोग युद्ध क्षेत्र में सेना के विरुद्ध नहीं होना चाहिये, वरन्, शत्रु की शहरी आबादी पर होना चाहिए। यदि सेना पर प्रयोग होगा तो आक्रमण करने वाली सेना के लिए भी खतरा होगा। हवाई जहाज़ों द्वारा इनका वितरण बहुत प्रभावशाली बतलाया जाता है या विशेष ंत्रों के द्वारा वितरण होगा।

प्रश्न होता हैं

कि विज्ञान का ऐसा दुरुपयोग क्यों होता है। इस के कई कारण हैं। सब से मुख्य कारण विज्ञानऔर जीवनकी भावना को समझनेकी भूल है। ज्ञान बुद्धि का विषय है। वर्तमान विज्ञानने बुद्धिके अद्भुत चमत्कार फैलाए हैं इस के कारण लोगों ने और राष्ट्रों ने आशातीत उन्नति की हैं। यह सब होते हुए भी लोगों और राष्ट्रों में शाँति नहीं है। इसका कारण इस बुद्धि और ज्ञान में समन्वयी या उचित बेलेन्स (balance) रखने वाली वस्तु का अभाव रहा है वह चीज़ धर्म. आध्यात्मिकता या नैतिकता है। यही बात पश्चिम के विचारक और समझदार व्यक्ति मानते और प्रगट करते हैं। अभी हाल में श्रीयुत लार्ड लोथियान ने जो भारत में आए हुए थे, अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में दीक्षांत भाषण के दौरान में इसी सचाई को प्रगट किया है। उन्हों ने कहा है —

'Modern science in the West has had two main results, On the one hand it has enormously extended the control of man over nature and the forces latent in nature, on the other hand it has undermined the authority of traditional organized religion in the minds of the university educated world,

Civilized man has worked marvels with the new powers that science has put in his hands. But he has made no equivalent advance on the moral side so as to ensure that these powers shall be used for the benefit rather than for the destruction of mankind,

अर्थात् "पश्चिम की वर्तमान सायन्स के दो बड़े परिणाम है। एक यह कि इसने प्रकृति पर मनुष्य की शक्ति को बहुत बढा दिया है और दूसरे इसने धर्म की ऐतिहासिक शक्ति का नाश कर दिया है। आज यूनिवर्सिटियों के पढ़े हुए सभ्य पुरुष साइन्स से प्राप्त हुई नई शक्तियों से अद्भुत कार्य्य सम्पादन कर रहे हैं। किन्तु इसने उन के नैतिक (Moral) आचार विचारो में कोई ऐसी उन्नति नहीं की जिस से यह शक्तियाँ मनुष्य जाति के लिये विध्वंसकारी होने के स्थान में लाभकारी सिद्ध हो सकती"। कारण, जब तक विज्ञान और धर्म्म में उचित समता न होगी तब तक न विज्ञान ही कल्याणकारी हो सकती है और न धर्म ही।

विज्ञान और धर्म का अटूट सम्बन्ध है

बिना एक के दूसरा व्यर्थ और विनाशक है। जितने अंश मे सायन्स मे धर्म का अंश होगा उतने अंश में ही वह फले फूलेगी। जितने अंश म धर्म मे ज्ञान का अंश होगा उतने ही अंश मे वह फले फूलेगा। दार्शनिको के कारनामे धर्म-मार्ग में प्रेरित की हुई बुद्धि के जितने फल हैं उतने केवल बुद्धि के नहीं है। ये विचार एक दूसरे पाश्चात्य विचारक हर्बर्ट स्पेन्सर के है, जो उन्होने अपनी पुस्तक Education (शिक्षा) मे दर्शाए है।

तब ही आजकल के विचारक यह कहने के लिए बाधित हुए है कि हमें आज न बौद्धिक धूर्तों (Intellectual Knaves) की जरूरत है और न आध्यात्मिक मूर्खों (Spiritual Fools) की।

हमें आवश्यकता है

बुद्धिमान और धर्म परायण व्यक्तियो की। अर्थात् दिल और दिमाग दोनो रखनेवाले सज्जनो की। वैदिक धर्म के आचरण मे ही ऐसे व्यक्ति सम्भव हैं। अन्य किसी प्रकार से नहीं। क्योकि यही बुद्धि युक्त धर्म है।

जब तक पश्चिम का विज्ञान ऊल जलूल रीति से निरुद्देश्य रहेगा और जब तक भारत की प्राचीन आध्यात्मिकता के रङ्ग से वह रङ्गा जाकर लोगों की दृष्टि को न बदल कर, विश्वबन्धुत्व, मानव जीवन की पवित्रता तथा चेतन जगत के प्रति घटते हुए प्रेम को न बढायगा, तब तक पश्चिम का विज्ञान भयकर परिणाम पैदा ही करता रहेगा और विश्व की शान्ति और सृष्टि का सौन्दर्य्य खतरे में ही रहेगा। क्याही अच्छा हो यदि हम लोगो का दृष्टिकोण बदल सकें?

हिन्दी के लिये रोमन लिपि ?

[श्री बाबू शिवप्रसाद जी गुप्त काशी]

मैने सम्मानित भाई सुभाष बाबू का हरिपुरा में राष्ट्रीय सभा के मञ्च से किया हुआ, अभिभाषण पढ़वाकर सुना। मुझे एक बात उस में बहुत खटका यह भाषण राष्ट्रीय महासभा के मञ्च से किया हुआ है इस कारण इस का एक विशेष महत्व है और इसी कारण इसके विचारों की आलोचना करना देश के एक छोटे से छोटे व्यक्ति का भी कर्तव्य हो जाता है। मै अपने सम्मानित मित्र को विश्वास दिलाना चाहता हू कि यह पंक्तियां इसी विचार से लिखी जा रही है मै इसको अच्छी तरह अनुभव कर सकता हू कि इन के लिखने की योग्यता और पाण्डित्य मुझ में नहीं है तो भी दुस्साहस के लिये क्षमा मागता हुआ नीचे के विचार अङ्कित कर ही रहा हू।

उक्त राष्ट्रपति महोदय ने भारत वर्ष के लिये "रोमन लिपि मे" व्यवहार का जिक्र करते हुए उस के गुणो का वर्णन किया है। मुझे अत्यन्त खेद है कि उन्हे स्वीकार करने मे मैं अपने को असमर्थ पाता हू। 'रोमन लिपि में" उन सब उच्चारणो को व्यक्त करने की शक्ति नहीं है जिसके बिना भारतीय भाषाओं का ठीक-ठीक उच्चारण हो ही नहीं सकता। मै इस बात को दावे से कह सकता हूँ कि जो व्यक्ति भारतीय भाषाएं नहीं जानता वह "रोमन अक्षरों में लिखी हुई किसी भी भारतीय भाषा का शुद्ध उच्चारण कदापि नहीं कर सकता। इतना ही नहीं वरन् रोमनाक्षरों में लिखी जाने वाली यूरोपीय भाषाओं का उच्चारण भी उन भाषाओं से अनभिज्ञ पुरुष नहीं कर सकता। एक व्यक्ति जो फारसीसी भाषा नही जानता वह रोमन भाषा जानते हुए भी फारसीसी भाषा नहीं पढ सकता। इस के विपरीत "नागरी' अक्षरों में लिखा हुई किसी भी ससार की भाषा का उच्चारण नागरी लिपि जानने वाला कर सकता है। यह बहुत बड़ा दावा है अस्तु कोई भी निरपेक्ष व्यक्ति इसे परीक्षा की कसौटी पर कस कर इस की परीक्षा कर सकता है।

आगे चल कर राष्ट्रपति महोदय ने यह भी कह डाला है कि तुरकी वालो ने "तुरकी" भाषा के लिये अरबी अक्षरो के स्थान में रोमनाक्षरो को ग्रहण कर लिया है और इससे वे वर्तमान जगत के निकटतम पहुंच गये हैं। यह बात कहां तक सही है इस मे मुझे बड़ा सन्देह है। हां, यह अवश्य सत्य है कि "कमाल अता तुर्क ने" तुरकी म रोमन लिपिका प्रचार किया है यह बात सन्दिग्ध है कि तुरकी के उच्चारण रोमन लिपि में ठीक-ठीक आ गये है, या इस परिवर्तन से तुरकी मे शिक्षा के प्रचार मे उन्नति हुई है। हां यह बात कुछ अंशों मे मानी जा सकती है कि अनेक चिन्हों को रोमन लिपि मे मिला जुला कर तुरकी भाषा उसमें लिखी जाने लगी होगी,यह बात मानने के लिये कम से कम मैं तैयार नहीं हू कि इस प्रकार रोमन अक्षरों में लिखी हुई तुरकी को "अतुरकी" (तुरकी भाषा न

बदलने वाला) पड़ सकता है। परन्तु यह बात तुरकी वालों की है, वे इसका निपटेरा स्वयम् कर लेंगे और समय इसका निपटेरा करा लेगा।

राष्ट्रपति महोदय ने यह भी कहा है कि देश की भिन्न भिन्न लिपियों के कारण जो कठिनाइयां पड़ती हैं उनको सुलझाने में भी यह व्यवस्था सहायक होगी। क्या देश की भिन्न २ आर्य लिपियां देवनागरी अक्षरों में नहीं लिखी जा सकती ? वास्तव में देश की आर्य भाषाओं के लिखने के लिये जो लिपियां व्यवहृत होती हैं वे सभी "ब्राह्मी" लिपि हैं या उसी का रूपान्तर हैं उदाहरणार्थ हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, तेलुगू अक्षर जो देखने में भिन्न २ जान पड़ते हैं वास्तव में वे एक ही हैं और सभों की "बारहखड़िया एक ही हैं। हां, भिन्न २ प्रान्तों में व्यवहृत होने के कारण उनकी रूप रेखा में थोड़ा भेद पड़ गया है जो थोड़ा सा यत्न करने से और आपस में सद्भाव होने से बहुत अंश मिटाया जा सकेगा। इस ओर प्रातःस्मरणीय श्री शारदाचरण मित्र महोदय ने उद्योग करना प्रारम्भ भी किया था और "देवनागर पत्र" निकाल कर इस पर आन्दोलन प्रारम्भ भी किया था पर उनकी मृत्यु के कारण यह कार्य रुक सा गया है, जो फिर से आरम्भ किया जा सकता है और किया जाना चाहिये।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि कोई अक्षर ऐसे हैं जो सारे संसार को वर्णमाला बन सकने की योग्यता रखते हैं तो वह देवनागरी अक्षर ही हैं। पर मैं यह मानता हूं और जानता हूं कि इस की वर्तमान् बारह खड़ियों में कतिपय अन्य अनेक उच्चारणों के वर्णों को बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि इस में पांच पांच अक्षरों की जगह आठ आठ अक्षर एक एक वर्ग में कर दिये जावें तो संसार के सब उच्चारण इस में अङ्कित किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिये अगर 'क' वर्ग में "क़ाफ़, खे, ग़ैन," के उच्चारण के लिये अक्षर बढ़ा दिये जावें तो यह लिपि पूर्ण वैज्ञानिक लिपि हो जावेगी जैसी कि रोमन लिपि कदापि नहीं बनाई जा सकती।

अब रह गयी अरबी लिपि की बात। लिपि और भाषा का सम्बन्ध धर्म से नहीं हुआ करता पर हमारे दुर्भाग्य से हमारे देश में यह प्रश्न भी धर्म का अङ्ग माना जाने लगा है। हमारे कुछ मुसलमान भाइयों ने इसे भी अपना धार्मिक प्रश्न बना लिया है। मैं उनकी जानकारी के लिये यहाँ यह लिख देना चाहता हूं कि भारतवर्ष में भी सब प्रान्तों में मुसलमान भाई इस पर आग्रह नहीं करते। बङ्गाल में बङ्गाली मुसलमान अधिकांश बङ्गाली ही बोलते हैं और बङ्गाक्षरों का ही व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार गुजराती मुसलमान गुजराती अक्षरों में ही अपना बही-खाता लिखते हैं और कारोबार करते हैं। यही दशा दूसरे प्रांतों की भी है, दूर कहाँ तक जावें, अपने संयुक्त प्रांत के मुसलमान व्यापारी भी अपना बही खाता हिन्दी में ही रखते हैं। हाँ अब थोड़े दिनों से इन में 'अरबी' अक्षरों का प्रचार हो रहा है पर यह चन्द रोज़ा है यह टिकने वाला नहीं है और न टिक ही सकता है। जिस प्रकार आज ब्रिटिश अंगरेजों की गुलामी से अंगरेज़ी भाषा और रोमनाक्षरों का बोलबाला हो रहा है उसी तरह चार पाँच सौ वर्ष पूर्व जब यहां विकट पश्चिमी जातियों का बोलबाला और राज था उस समय यहां 'अरबी' अक्षरोंका रिवाज हुआ और चल गया पर यह भी देवनागरी अक्षरों के निकालने में असमर्थ रहा। मैं यहाँ कह देना चाहता हूं कि मैं मुसलमानों को विदेशी और बाहर से आया

हुआ नहीं मानता। वे भारतीय हैं और उनके बाप दादा भी सात पुश्त तक भारतीय थे। अरब या फारस से चन्द आदमी सुदूर भूत काल में आये रहे होंगे पर आज तो भारतीय मुसलमानों की धमनियों में भारतीय रक्त ही बहता है और वे भारतीय हैं और सदा भारतीय रहेंगे। धर्म और जाति से कोई सम्बन्ध नहीं है। वे दो पृथक् वस्तुएं हैं। आज भारत के ईसाई सज्जनों को कोई अंगरेज नहीं कहता और न वे अंगरेज हैं ही, उसी प्रकार भारतीय मुसलमान 'अरब' या फारसी न हैं और न हो सकते हैं। जो मुसलमान सज्जन खिलाफत आन्दोलन के समय भारत से 'हिजरत कर के काबुल या अन्य देशों में गये थे उन से पूछिये कि उनकी क्या दुर्दशा हुई और जो बेचारे लौट सके वे उस मुसीबत और उस बुद्धि के विपरीत बात का अन्दाजा बता सकते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा और अक्षर का चोली-दामन का साथ है वह क्षणिक आवेश और ज़रा ज़रासी बात पर बदला नहीं जा सकता। हां मैं यह मानने को अवश्य तैयार हूँ कि जहां कहीं इन अक्षरों में कमियाँ हों या कठिनाइयाँ हों उन्हें सुधार लेना चाहिये। उदाहरणार्थ, यदि आज कल की छपाई में ऊपर नीचे की मात्रा से असुविधा होती हो तो छपाई के लिये ऊपर नीचे की मात्राओं को आगे पीछे लगाकर जैसे बङ्गला प्रकार में लगाई जाती हैं, यह दिक्कत दूर की जासकती है पर इनका आमूल परिवर्तन बुद्धिमत्ता न होगी। मैं इसकी ओर भाई जवाहरलाल और श्री रणजीत सीताराम पण्डित का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ क्योंकि आप लोग रोमन अक्षरों के बड़े पक्षपाती एक समय थे और स्यात् अब भी हो सकते हैं और उन से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि इस विचार धारा के लाभ और हानि की ओर विचार करके अपनी सोची हुई सम्मति देने की कृपा करें।

इस विषय में बहुत कुछ लिखा जासकता है और पक्ष तथा विपक्ष में बड़ी बड़ी दलीलें दी जा सकती हैं पर यह काम विद्वानों का है और वे ही इसे करेंगे। मुझे तो केवल राष्ट्रपति की बातों की ओर देश का ध्यान आकृष्ट करना था वह इतने से हो जायगा।

—('आज' काशी)

ऋषि दयानंद और वेद भाष्य शैली

[लेखक—आचार्य प० चन्द्र कान्त जी]
तथा
[लेखिका—श्रीमती सुशीला देवी विद्यालङ्कृता त्रिवेदी]

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

ऋषि दयानन्द की असाधारण योग्यता वा भाष्यों की मौलिकता का परिचय ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका से हो जाता है। इनकी भाष्य शैली का मर्म इस ग्रंथ की पंक्ति २ में प्रतिभासित हो रहा है। ऋषि के प्रतिपक्षी विद्वान भी इस ग्रंथ की प्रशंसा करते हैं। मैक्समूलर लिखते हैं—

* We may divide the whole Sanskrit Literature beginning with the Rigveda and ending with Dayanand's introduction to his edition of the Rigveda, his by means intersting Rigveda Bhoomika, in two great periods (India what can it teach us III lecture)

अर्थात् "संस्कृत साहित्य का प्रारंभ ऋग्वेद से होता है और भाष्य भूमिका पर आकर समाप्ति होती है। यह बड़ी रुचिकर है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाष्य-भूमिका वैदिक साहित्य के मौलिकता के युग की सन्देश वाहक है। ऋषि ने अपनी भाष्य शैली को संक्षेप में समझाने के लिये यह भूमिका लिखी है। जिस विषय का विशेष प्रतिपादन भूमिका में किया है उसी को भाष्य में चरितार्थ किया गया है। भूमिका में सिद्ध किया गया है कि वेद अनादि हैं, ईश्वर प्रणीत हैं, वेदों मे एकेश्वर वाद है और वेद सर्व सत्यविद्याओं के भण्डार हैं। समस्त मन्त्रों का प्रतिपाद्य विषय ईश्वर ही है। अर्थात वेद की अध्यात्म व्याख्या ही सर्वश्रेष्ठ है। भाष्य में इसी विचार को विशेष महत्व दिया गया है। ऋषि को अन्य प्रकार के अर्थों के साथ २ आध्यात्मिक अर्थ विशेष पसन्द थे। ऋषि का विचार है कि याज्ञिकों की ३३ देवों की स्तुति का, पाश्चात्यों की जड पूजा का वेदों मे विधान नहीं है प्रत्युत अग्नि, वायु, सूर्य आदि नामो से स्पष्टतया परमात्मा का ही वर्णन होता है। अर्थात् ऋषि दयानन्द औपनिषत् पक्ष के ही पोषक थे। उनके विचारो मे पूर्व के भाष्यकारों से मौलिकता वा स्वतन्त्रता का प्रकाश पाया जाता है। इस विषय मे निम्न सम्मतियां दर्शनीय हैं—

आधुनिक विद्वानों की ऋषि भाष्य शैली पर विवेचना

(१) सन् १८७० के मार्च मास के 'क्रिश्चियन इन्टेलीजेन्सर' में प्रो० सहल्फ होर्नले ने ऋषि के विषय मे लिखा है—

He is an independent student of the Vedas and free from the trammels of traditional interpretations.

The standard commentary of the famous Sayon is held of little account by him

अर्थात् दयानन्द वेदों को स्वतंत्रता से पढ़ते हैं और परपरागत (पौराणिक कालीन पद्धति) पद्धति की परवाह नहीं करते। आचार्य सायण का भाष्य वे निष्प्रयोजन समझते हैं।

(२) 'वैदिक मैगजीन' के 'Daynand and his work" नामक लेख में निम्न विचार अरविन्द घोष ने प्रगट किये हैं—

(१) दयानन्द वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। वेद उनके लिये जीवन की दृढ़ आधार शिला थी।

(२) उन्हों ने सायण के याज्ञिक विचारों के पर्दे को हटा कर वेद को प्रतिबोध Intuition की आखों से देखा है।

(३) पाश्चात्यों की सम्मति में वेद असभ्य अथवा अर्धसभ्य लोगों के स्तुतिगान हैं। परन्तु ऋषि दयानन्द जी इनको मानव जाति के लिये ईश्वरीय ज्ञान समझते हैं। आगे चल कर ये लिखते हैं—

To start with the negation of his work by his critics in whose mouth does it lie to accuse Dayanand's dealing with the Veda of a fanatastic or arbitrary ingenuity? Not in the mouth of those who accept Sayon's traditional interpretation For if ever there was a monument of arbitrarily erudite ingenuity of great learning divorced, as great learning too often is, from sound Judgment and sure test & a faithful, critical and comparative observation, from direct seeing and often even from plainest common sense or of a constant fitting of the text into the Procrushean bed of preconceived theory, it is surely this commentary, otherwise so imposing, so useful as first crude material, so erudite & labourious, left to us by the Acharya Sayana. Nor does the reproach lie in the mouth of those who take as final the recent labours of European scholarship For if ever there was a toil of interpretation in which the loosest vain has been given to an ingenious speculation in which doubtful indications have been snatched at as certain proofs, in which the boldest conclusions have been insisted upon with the scantiest justification, the most enormous difficulties ignored & preconceived prejudice maintained in face of the clear and often admitted suggestions of the text, it is surely this labour, so eminently respectable otherwise for its industry, good will & power of research, performed through a long century by European vedic scholarship

What is the main positive issue in this matter?

An interpretation of Veda must stand or fall by its central Conception of the Vedic religion & the amount of support given to it by the intrinsic evidence of the Veda itself. Here Dayanand's view is quite clear, its foundation

inexpugnable, The Vedic hymns are chanted to the one deity under many names, names which are used and even designed to express His qualities & powers Was this conception of Dayanand's arbitrary conceit fetched out of his own too ingenius imagination ? Not all, it is the explicit Statement of the veda itself, ' One existent, sages not the ignorant, mind you, but seers, the men of knowledge speak of in many ways, as Indra, as Yama as matarisvan, as Agni ' the Vedic Rishis ought surely to have known some thing about their own religion, more, let us hope tnan Roth or Maxmuller, and this is what they knew. We are aware how modern scholars twist away from the evidence This hymn, they say, was a late production. this lcftier idea which it expresses with so clear a force rose up some how in the later Aryan mind or was borrowed by those ignorant fire-worshippers, sun-worshippers, sky-worshippers from their cultured and philosophic Dravadian enemies But through out the Veda we have confirmatory hymns and expressions, Agni or Indra or another is expressly hymned as one with all the other gods Agni contains all other Divine powers within himself the Maruts are described as all the gods, one deity is addressed by the names of others as well as his own, or most commonly, he is given as Lord and kins of the universe, attributes only appropriate to the Supreme Deity Ah, but that can not mean, ought not to mean, must not mean the worship of one, Let us invent a new word, call it, henotheism & suppose that the Rishis did not really believe Indra or Agni to be supreme Deity but treated any god or every god as such for the purpose that he might feel the more flattered & lend a more gracious ear for so hyperbolic a compliment But why should not the foundation of Vedic thought be natural monotheism rather than this new fangled monstrosity of henotheism? Well because primitive barbarious could not possibly have risen to such high conceptions & if you allow them to have risen you imperil our theory of evolutionary stages of human development & you destroy our whole idea about the sense of the Vedic hymns & their place in the history of man kind Truth must hide herself or else disappear from the field so that a theory may flourish I ask in this point, and it is the fundamental point, which deals most straight forwardly with the text, Dayanand or the Western Scholars ?

It this fundamental point of Dayanand is granted, if the character given by the Vedic Rishis themselves to their gods is admitted, we were bound whenever hymns speak of Agni or another, to see behind one supreme Deity or else

one of his powers with its attendant qualities or workings Immediately the whole character of the Veda is fixed in the sense Dayanand gave to it, the merely ritual, mythological, polytheistic interpretation of Sayana collapses, the merely meteorological and naturalistic European interpretation collapses We have instead a real scripture, one of the world's sacred books & the divine word of a lofty and noble religion

संदर्भ का सार

इस सन्दर्भ मे निम्न विचार दिये गये हैं—

(१) सायण भाष्य ऊपर से महत्त्व पूर्ण प्रतीत होता है। परन्तु उसमे वेद का वास्तविक अर्थ प्रतीत नहीं होता है। इसको अपना आधार मान कर चलाने वाले पाश्चात्य लोगों के भाष्यों मे भी पूर्वा पर सगति नहीं है तथा स्थान २ पर सधियों की भरमार है।

(२) वेद का अर्थ वेद से करना चाहिये। इस विषय मे ऋषि का विचार स्पष्ट है।

(३) वेद के सूक्त भिन्न २ नामों से एक ही प्रभु का वर्णन करते हैं अनेक का नही। मैक्समूलर तथा रोथ की अपेक्षा ऋषि लोग अपने धर्म को तो अवश्य ही अधिक समझते हैं।

(४) पाश्चात्य विद्वान् स्थान २ पर बहुत खींचातानी करते हैं। ऊंचे विचारों वाले सूक्तों को आधुनिक काल का बताते हैं। एकेश्वरवाद के विचारों को वेद में मानते हुए वे हिचकते हैं। क्यों कि इसके मानने से उनके प्रियतम विकासवाद के सिद्धान्त को ठेस पहुंचती है। परन्तु इस विषय में ऋषि वेद का सीधा निष्पक्ष अर्थ करते हैं। वेद मे अग्नि आदि देवों के सचमुच ऐसे विशेषण हैं जो कि प्रभु के सिवाय कहीं नहीं घटते इस बात को ऋषिभाष्य स्पष्ट करते हैं।

(५) इन के उपर्युक्त विचारों के परिणामभूत याज्ञिक, बहुदेवतावाद, सम्बन्धी विचार भस्मीभूत हो जाते हैं। पश्चात्यों के केवल अन्तरिक्ष आदि देवों के सम्बन्ध मे किये अर्थ ओझल हो जाते हैं और वेद एक ससार का पवित्र दिव्य धर्म ग्रन्थ लगने लगता है।

ऋषि अरविन्द के ऊपर के विचारों में भगवान् दयानन्द की भाष्य शैली की दिशा का तथा ऋषि की अन्य भाष्यकारों से विशेषता का परिचय मिल जाता है। यह प्रतीत होने लगता है कि ऋषि ने अपने भाष्यों मे याज्ञिक, ऐतिहासिक तथा देवतावाद सम्बन्धी विचारों का स्थान नही दिया है प्रत्युत वेद को ईश्वरीय ज्ञान मान कर सब सत्य विद्याओं का भण्डार समझ कर वेद की अध्यात्म-अधिभूत तथा अधिदैव व्याख्या की गई है।

एक स्वाभाविक प्रश्न।

इस प्रसग मे इस प्रश्न पर विचार कर लेना उचित है कि महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'शतपथे व्याख्यात" लिखते हुए शतपथ को अपने भाष्य का प्रामाणिक आधार माना है। और शतपथ ब्राह्मण मंत्रों की याज्ञिक व्याख्या करते हुए प्रतीत होते हैं। लेकिन उनके भाष्य में 'कपाल' आदि दो चार शब्दों के अतिरिक्त कहीं पर भी याज्ञिक भाव दृष्टि गोचर

नहीं होते। इसका क्या कारण है ? एक कारण तो यह हो सकता है कि स्वामी जी शतपथ को ही प्रमाण न मानते हों और किसी ने पीछे से "शतपथे व्याख्यात" लिख दिया हो। परन्तु यह इस लिये ठीक नहीं क्यों कि शतपथ के प्रामाण्य को तो ऋषि ने स्थान २ पर माना है। दूसरा यह हो सकता है कि शतपथ ब्राह्मण को प्रमाण मानते हुए भी स्वामी जी प्रतीयमान याज्ञिक भावों से भिन्न किन्हीं अन्य भावों को भी शतपथ का विषय समझते हो। प्रथम पक्ष ठीक नहीं है। दूसरा पक्ष ठीक प्रतीत होता है। इसके विशेष स्पष्टीकरण के लिये 'भाष्य भूमिका' के प्रतिज्ञा विषय का निम्न सन्दर्भ द्रष्टव्य है—

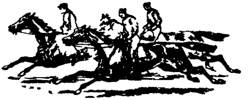
भाष्य भूमिका का सन्दर्भ।

अत्र वेद भाष्ये कर्म काण्डस्य वर्णनं शब्दार्थत करिष्यते परन्त्वेतैर्वेद मन्त्रैः कर्मकाण्ड विनियोजितैर्यत्र यन्त्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्त्तव्यं तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुत ? कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेय शथपथब्राह्मण पूर्वमीमासा श्रौतसूत्रादिषु यथाथ विनियोजितत्वात् - पुन पुनस्तत् कथनेनानृषिकृतग्रन्थवत् पुनरुक्तपिष्टपेषण दोषापत्तेश्च तस्माद्युक्तिसिद्धो वेदादिप्रमाणानुकूलो मन्त्रार्थानुसृतस्तदुक्तोऽपि विनियोगो ग्रहीतु योग्योऽस्ति"

सन्दर्भ स्पष्ट है। इससे ज्ञात होता है कि ऋषि दयानन्द शतपथ आदि ग्रन्थो की याज्ञिक व्याख्या से असहमत न थे लेकिन उन की दृष्टि मे यज्ञ' शब्द विस्तृत अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत अर्थों मे प्रयुक्त होता था। वह यह समझते थे कि ब्राह्मण ग्रन्थो का तात्पर्य वेद की याज्ञिक व्याख्या के अतिरिक्त अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत व्याख्या मे है। यह विषय 'वेदार्थ तथा ब्राह्मण ग्रन्थ' नामक प्रकरण म हमने विस्तार से लिख दिया है।

अब विशेष विस्तार न जान कर हमे यह देखना है कि ऋषि के भाष्यो मे मौलिक वे कोनसी विशेषतायें है ? जिनसे कि उनका भाष्य समस्त भाष्यो से विलक्षण हो गया है।

(क्रमश)



आत्म निरीक्षण—

कड़वी सचाइयाँ

(ले० आचार्य रामदेव जी)

(१) साप्ताहिक सत्सङ्ग

आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों मे वेद भगवान् को आगे नहीं ले जाया जाता, यद्यपि आर्यसमाज का नियम है कि वेद का पढना-पढाना सुनना सुनाना आर्यों का परमधर्म है। इसके विपरीत आजकल के आर्यों का परमधर्म अखबारों का पढ़ना-पढ़ाना अथवा हिन्दू सङ्गठन या कांग्रेस के प्रोग्राम की चर्चा करना मात्र रह गया है। ईसाईयों के गिर्जे में जब कभी सत्सङ्ग होता है तो उसमें बाइबिल की किसी आयत को लेकर उसकी व्याख्या की जाती है, इस व्याख्या मे ही देश और जाति अथवा पारिवारिक एवं वैयक्तिक जीवन की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला जाता है। मेरी सम्मति में प्रत्येक आर्यसमाज मे एक पुरोहित होना चाहिए जो एक सप्ताह पूर्व उस मन्त्र अथवा सूक्त की सूचना कर दिया करे जिसकी कथा या व्याख्या साप्ताहिक सत्सङ्ग में होनी हो (इस विषय में 'वैदिक विनय' या वैदिक सम्पत्ति' उपयोगी हैं)। इससे यह होगा कि सब सदस्य उस मन्त्र अथवा सूक्त को पढ़ कर आवें और अपनी शङ्काएं तथा अपने विचार पुरोहित के सम्मुख रख सकेंगे। इस प्रकार साप्ताहिक सत्सङ्ग बहुत मनोरञ्जक हो जावगे और उनकी प्रतिदिन घटती हुई उपस्थिति फिर ठिकाने आजायगी। सत्सङ्गियों के लाभ के साथ चरित्र भी उन्नत होगा। आजकल के सत्सङ्ग तो सिर्फ एक प्रकार का ढोंग मात्र ही रह गये हैं। यह आवश्यक नहीं कि पुरोहित केवल वही हो सके जिन्हें दक्षिणा मिलती हो प्रत्युत किसी भी स्वाध्यायशील आर्य पुरुष को पुरोहित नियत किया जा सकता है। यज्ञ वेदि पर ब्रह्मा के स्थान में पुरोहित ही बैठे इससे वेदि का महत्त्व बढेगा। आजकल आर्यसमाज की वेदि का न तो कोई गौरव ही है और न कोई मर्यादा ही। उपासना मन्दिर मे न तो किसी व्यक्ति को जूता पहन कर जाने की इजाजत मिलनी चाहिये और न वहा कोई पाठशाला आदि खुलनी चाहिये। इसके अतिरिक्त समाज-मन्दिर मे प्रति दिन हवन एव सकीर्तन होने चाहिए, चाहे, उसमे दो तीन आदमी ही क्यो न सम्मिलित हों।

(२) सङ्गीत-शास्त्र का उद्धार

आर्यसमाज में सङ्गीत की बुरी तरह से हत्या होती है। प्रार्थना के भजन थियेटर की तर्ज पर गाये जाते हैं और श्रोताओं में भी किसी प्रकार की गम्भीरता का भाव नहीं होता। भजनीकों के चरित्र पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। यह भुला दिया जाता है कि भजनीक भी एक तरह का उपदेशक ही है। यह कहने की जरूरत नहीं कि यदि उपदेष्टा के जीवन मे ही वह चीज न हो जिसका वह उपदेश कर रहा है तो उसका श्रोताओं पर कुछ असर नहीं हो सकता। दूसरी बात यह है कि हारमोनियम का बहिष्कार करके उसके स्थान पर सितार, सारंगी, तबला, दिलरुबा एवं

वीणा आदि का प्र.।।. ५रना हिए। अंग्रेजी बाजे मे पियानो और ऑर्गन आदि को काम मे लाना चाहिए।साप्ताहिक सत्संग मे खण्डन मण्डन के भजन न होकर ...... भक्तिरस परिपूर्ण भजन होने चा..ए। ...... जन बनाए जावे तो वे वेद मन्त्रों के आधार पर हों। शान्ति प्रकरण और स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का सरल हिन्दी मे पद्यानुवाद कर देना चाहिए। और वे पद्यानुवाद ही पर्वों तथा संस्कारों के अवसरों पर सब ...... पुरुषों को मिल कर गाने चाहिएं। गायन मे सभी को सम्मिलित होना उचित है। जब गिरजे मे सङ्गीत होता है तो महार ...... भी दूसरे लोगों के साथ साथ गाते हैं। भारत के गिर्जों मे भी वाइसराय सब के साथ मिल कर गाते हैं।

आर्यसमाज मे गाना छोटे आदमियों का काम समझा जाता है। इसी लिए आर्यसमाज ने गायन विद्या का यथोचित लाभ नहीं उठाया। आर्यसमाज मे भजन गाने वालों की एक ऐसी जमाअत पैदा होगई है जो अपने साथ आर्यसमाज को भी ले डूबेगी। अत इस कृत्रिम जमाअत को हटाकर स्वय सब नर-नारियों का प्रभु के गुणगान मे सम्मिलित होना चाहिये। सूरदास कबीर मीरा नानक-रहीम नामदेव चैन ...... इत्यादि भक्तों के अमर गीतों मे से भी वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार एक संग्रह तय्यार होना चाहिये, जिसका उपयोग सत्सङ्ग के अवसर पर किया जाय।

(३) शास्त्रार्थ और वाद-विवाद

शास्त्रार्थ आज कल गाली-अर्थ एवं शस्त्र-अर्थ बन रहे हैं तथा डण्डे और गाली से सत्य का अपमान किया जाता है। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों मे घोषणा की थी कि शास्त्रार्थ लिखित होने चाहिए। विषय एक मास पूर्व निश्चित कर दिया जाय और उभयपक्षी तैयार होकर आवें। विधर्मियों के आग्रह करने पर अथवा झूठी लोक लज्जा के वश होकर भय के कारण कभी भी आर्य समाज को ऋषि-प्रदर्शित मार्ग से च्युत नहीं होना चाहिए। सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को इस विषय की आज्ञाएं भेजकर उनका पालन कराना चाहिए। जो उपदेशक तू तू मैं मैं मे भाग लें अथवा सदसद् के निर्णय मे इस नियम का पालन न करें उन्हें समाज मे बहिष्कृत कर देना चाहिए।

(४) पर्व और उत्सव यज्ञरूप हों

पर्वों और उत्सवों के लिए यज्ञीय पद्धतियों का निर्माण हो और इनके लिये उपयुक्त वेदमन्त्रों का हिन्दी मे सरस तथा सरल पद्यानुवाद हो जिसे यज्ञ की समाप्ति पर सब मिलकर गावें। इन पर्वों मे ऋषिबोधोत्सव, गुरुदत्त दिवस, श्रद्धानन्द बलिदानोत्सव तथा लेखराम बलिदानोत्सव आदि उत्सव भी शामिल होने चाहियें। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिये कि वेदों के अङ्गों एवं वेदों के मन्त्रों का प्रचार हो, यदि कोई आदमी दौर्भाग्य से वेद के मूल शब्दों को नहीं समझ सकता हो तो उसके लिए प्रचलित भाषा द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के समझ का अवसर उपस्थित होना चाहिये तथा वे उसके मुख से उच्चारित होने चाहिये।

(५) संस्थाओं का एकीकरण

आर्यसमाज की संस्थाओं को केन्द्रित करना चाहिए विशेष कर गुरुकुल को। मेरी सम्मति मे गुरुकुल विश्वविद्यालय तो एक ही होना चाहिये और अधिकारी तथा ८वीं परीक्षा तक बहुत से गुरुकुल उससे संयुक्त होने चाहियें। विश्वविद्यालय के शिक्षा पटल मे सब प्रान्तीय प्रतिनिधि होने चाहियें। गुरुकुल कांगड़ी मे जितने प्रोफेसर हैं वे ५०० विद्यार्थियों को पढ़ा सकते हैं अत विश्वविद्यालय तब तक नया नहीं खुलना चाहिये जब तक १००० विद्यार्थी महाविद्यालय विभाग मे न होवे।

आर्य समाज के कौलिजों मे संस्कृत की एक प्रवेशिका परीक्षा पास करनी अनिवार्य हो। जो विद्यार्थी इस के लिए तैयार न हो उन्हे कौलज से निकाल देना चाहिये। पंजाब, यू०पी० के स्कूलो मे हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम होनी चाहिये। जिन स्कूलों मे हिन्दी से इतर कोई भाषा माध्यम हो तो उन्हे बन्द कर देना चाहिए। पंजाब और यू० पी० के बाहर भी जहा, जिस प्रान्त मे आर्य स्कूल हो वहा भी हिन्दी का पढ़ना अनिवार्य कर देना चाहिये। और संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा भी अनिवार्य कर देना चाहिये। स्वतत्र शिक्षणालयो को भी प्रान्तीय सभाओं का निरीक्षण स्वीकार कर लेना चाहिये। यदि वे शिक्षणालय प्रान्तीय सभाओं का निरीक्षण स्वीकार न करें तो आर्य-जनता उन्हें आर्यसमाजी संस्था न मानें।

(६) प्रचारक संघ

बौद्धों ने अपने धर्म के प्रचार में जिन श्रमणों को नियुक्त किया, उनके आचार, व्यवहार, शिष्टाचार इत्यादि के नियम विनय पिटक द्वारा निश्चित किये। ऐसा करने से श्रमण अपने नियमों का आजकल भी अन्य धर्मों मे नेताओं की बात तो दूर, साधारण जनता भी अपने अपने धर्म के नियमों, उपनियमो का पालन बड़ी कठिनाई से करती है। यह अचिन्त्य है कि कोई मुसलमान अपनी नमाज न पढ़े। यह अचिन्त्य है कोई अपनी प्रार्थना किये बिना रात को पा जाय। परन्तु हमारे आर्यसमाज के साधारण सभासदों की बात तो अलग है नेता तथा प्रचारक लोग भी संध्या हवन नहीं करते। और न यज्ञोपवीत धारण करते हैं जिनसे जनता पर उन प्रचारकों का यथेष्ट प्रभाव नहीं पड़ता। कॉग्रेस की मीटिंग मे से एक मुसलमान अपनी नमाज पढ़ने के समय उठकर चला जाता है, परन्तु हमारे आर्यसमाज के उत्सव और सभाएँ होती ही प्राय संध्या वन्दन के समय पर है जब नेताओं को ही संध्या आदि का कुछ ध्यान नहीं आता तब सामान्य जनता के बारे में या कहना ही क्या? अत इन सब बातों पर ध्यान देकर प्रचारकों के आचार व्यवहार तथा वेषभूषा आदि के नियम निश्चित हो जाने चाहियें तथा प्रचारकों को उनका पूर्णतया पालन करना चाहिये।

(७) संगठन का मान

आर्यसमाज मे संगठन की कमी है। जिस किसी आदमी को शिकायत होती है अथवा कोई निर्वाचन से असन्तुष्ट होता है तो वह सीधी अखबारों की शरण लेता है और एक जबर्दस्त आन्दोलन करना आरम्भ कर देता है। वस्तुतः

उसे वैदिक रीति का अनुकरण करना चाहिये और इस बात से सम्बन्ध रखने वाली समाज की अन्तरङ्ग सभा अथवा प्रान्तीय सभा से निर्णय कराना चाहिये। ऐसा करने से संगठन बढेगा। नियन्त्रण हीन समाज शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(८) नियमों तथा उपनियमों का पालन

नए बने उपनियमों का हर तरह से पालन होना चाहिये। प्राय इन नियमों की अवहेलना की जाती है। अनेकों सदस्य अभी तक मासाहारी हैं, अथवा कितने ही ऐसे हैं जो अपनी आमदनी का मासिक शताश समाज को दाने नहीं करते। समाजो के प्रधान तथा मन्त्री नियमो का पालन न करने वाले व्यक्तियों को भी समाज का सदस्य प्रमाणित करते है जिससे आरम्भ मे ही असद्भावना का सूत्रपात हो जाता है। आर्यसमाज मे ऐसा बल होना चाहिये कि जो सभ्य नियमो की उपेक्षा करे उसे समाज से पृथक् कर दिया जाय।

(९) आर्यसमाज के नेता

आर्यसमाज के नेता ऐसे होने चाहियें जो अपना पूरा समय समाज की सेवा मे बिता सकें। कांग्रेस का प्रधान कांग्रेस के काम के अतिरिक्त दूसरा कोई काम नहीं करता, तब आर्यसमाज के नेता और और काम भी करते हुए समाज की यथोचित सेवायें कैसे कर सकते हैं। साथही समाज की सेवा मे अपना सारा समय देने वाले सज्जनो के भरण पोषण का भार भी समाज पर ही होना चाहिये। आर्यसमाज के धनी पुरुषों मे एक घातक प्रवृत्ति बढ़ रही हैं, वे यह समझने लगे हैं कि जो व्यक्ति अपने निर्वाह के लिये कुछ लेकर काम करता है वह नौकर है और इस लिये उस का नेतृत्व नहीं होना चाहिये।

आर्यसमाज का काम मुख्य रूप से शिक्षा तथा प्रचार है। ईसाई लोग भी प्रचार एक बड़े पैमाने पर करते है लेकिन उनके प्रचार का समस्त प्रबन्ध और नियन्त्रण वेतन भोगी (दक्षिणा लेने वाले) बिशपों एव लाट पादरियो के हाथ मे ही होता है। शासन का उत्तरदायित्व उन पूंजीपतियो के हाथ मे नहीं होना चाहिये जो किन्हीं भी उपायों से धन का सचय करते रहते हैं और केवल अपनी आमदनी के बल पर साधुवृत्ति वाले प्रचारकों पर शासन करना चाहते है।

गवर्नमेण्ट के पास भी शिक्षा का काम आर्यसमाज की अपेक्षा कहीं ज्यादा है, परन्तु वेतन भोगी प्रिन्सिपल ही उस शिक्षा का अन्तरीय प्रबन्ध करते है, वेतनभोगी डाइरेक्टर प्रिन्सिपलो के कार्य का निरीक्षण करते है और वेतन भोगी मिनिस्टर इन डाइरेक्टरों की देखरेख करते हैं। मिनिस्टरों के कार्य को परखने वाले भी असेम्बली के वेतन-भोगी सदस्य होते है। ब्रिटिश पार्लमेण्ट सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के लिए कानून बनाती है, उसमे वेतनभोगी बिशप तथा लाट पादरी भी होते है। उन की सम्मति का मूल्य भी पूजीपतियों की सम्मति के बराबर होता है। भारत के सेवा-क्षेत्र मे कार्य करने वाले जितने संघ हैं प्राय. उन सबको पूर्ण स्वराज्य प्राप्त है, जैसे गाधी सेवा संघ, सर्वेण्ट्स ऑफ दी पीपल सोसाइटी आदि।

संन्यासी भी वेतनभोगी ही होते हैं, क्यों कि

वेतन का अर्थ यह नहीं है कि मास के अन्त में एक निश्चित धन राशि ली जाय, लेकिन वे सब भी वेतनभोगी ही समझने चाहिएं जिनके भरण पोषण का भार समाज पर है। आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब में कई भद्र पुरुषों ने एक बार ऐसा नियम पास करा लिया था कि वेतनभोगी लोग शासन सम्बन्धी मन्त्रणा में भाग न लें परन्तु महात्मा मुंशीरामजी का जब बस चला तो उन्होंने फौरन् इस प्रस्ताव को रद्द करा दिया। संयुक्त प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी ऐसे प्रस्ताव को ठुकरा दिया। लेकिन कई भाई इन दोनों प्रान्तों में दक्षिणा लेकर काम करने वालों को बदनाम करने पर तुले हुए हैं। यही कारण है कि पञ्जाब तथा संयुक्त प्रान्त में कोई भी ऐसा निर्धन व्यक्ति जिसकी आजीविका का कोई अन्य साधन न हो, पूरे समय काम करने के लिए तय्यार नहीं होता। परिणाम यह होता है कि वे लोग जो ५०-५५ वर्ष की अवस्था में रिटायर होकर समाज की सेवा करना चाहते हैं, इस लिए तय्यार नहीं होते क्योंकि कई भाई उनकी बदनामी करेंगे। अतः वे वृद्धावस्था में भी कमाते हैं और जब पर्याप्त धन जमा कर लेते हैं तब काम करने के अयोग्य होने पर भी सेवाकार्य संभालने को उद्यत होते हैं।

आर्यसमाज से बाहर भी यदि यही घातक प्रवृत्ति हमारे देश में होती तो महात्मा गांधी हमारे सर्वमान्य नेता न बन पाते, क्योंकि वे भी २० वर्ष से वेतनभोगी ही हैं। चाहे इस शब्द की कटुता को दूर करने के लिए किसी और मधुर शब्द का प्रयोग ही क्यों न करें परन्तु यह तो मानना ही पड़ेगा कि उनके पालन का भार सोसाइटी पर ही है। कांग्रेसी सरकारों की नीति का निर्णय गांधी जी ही करते हैं और अपना वेतन भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में लेते हैं।

संसार में सभी वेतन भोगी हैं, परन्तु ब्राह्मण और वैश्यों में भेद होता है। ब्राह्मण Work-first-men तथा वैश्य Fee first men होते हैं। आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि यहां वैश्य ब्राह्मण के अफसर होकर उन्हें अपने मातहत करना चाहते हैं। ब्राह्मण सेवा करते हैं और दक्षिणा स्वीकार करते हैं, परन्तु वकील तथा ठेकेदार पहले फीस रखवा लेते हैं फिर सेवा का नाम लेते हैं। इस पर भी वैश्य लोग ब्राह्मणों को अपना नौकर समझ कर उन्हें अपमानित करने की कोशिश करते हैं। यदि इस प्रवृत्ति का एक दम गला न घोटा गया तो यह समाज को ले डूबेगी तथा समाज की सेवा में कोई अनुभवी एवं त्यागी मनुष्य आने से झिझकेगा और शासन वैश्यों के हाथ में रहेगा। उनके शासन में कोई सच्चा ब्राह्मण काम करना न चाहेगा।

वेतनभोगी शब्द बुरा नहीं है। शुक्रनीति में राजा को भी वेतनभोगी कहा गया है। ऋषि दयानन्द ने महाराना उदयपुर को एक पत्र में लिखा था कि राजा प्रजा का वेतनभोगी भृत्य है। अतः इस में क्या दोष है कि समाज की सेवा के लिये अपना तन, मन तथा सम्पूर्ण समय अर्पित करने वाले अथवा समाज सेवा को छोड़कर कोई अन्य काम न करने वाले नेताओं के पालन का भार सोसाइटी पर हो।

यह बात स्पष्ट है कि जो कुछ हम ने लिखा है उसके अनुसार वेतनभोगी का अर्थ केवल निर्वाहार्थ लेने वाले ही समझना चाहिये। यदि कांग्रेस के प्रधान सक्रेटरी ७५) मासिक लेने पर भी नेता माने जाते हैं और वे अपने वक्तव्य भी प्रकाशित करते हैं तो फिर आर्यसमाज में ही सारा आदम क्यों निराला है कि इस में काम करने वाले या तो गुजारे मात्र पर मिलते नहीं या उनका उचित मान नहीं होता।

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥ —— ॥ धर्म से ही विद्या की शोभा होती है ॥

आर्य कुमार जगत्

— —

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती

भारतीयवर्षीय आर्य कुमार परिषद की रजत जयन्ती बिजनौर मे आगामी २२, २३ व २४ मई को मनाई जावेगी। आर्य कुमार सभा बिजनौर जयन्ती को सफल बनाने के लिए काफी उत्साह से कार्य कर रही है। बिजनौर निवासी आर्य पुरुष भी आर्य कुमार सभा को पूरा सहयोग दे रहे हैं तथा जयन्ती के लिए स्वागत कारिणी भी बनाली गई है।

स्वागत कारिणी के कार्यकर्त्ताओं के नाम इस प्रकार है —

प्रधान—श्रीयुत बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता मुख्तार।
उप प्रधान—पंडित जगदीश प्रसाद जी शर्मा
चौधरी शूरवीरसिंह जी वकील।
चौधरी रघुराजसिंह जी रईस।
चौधरी नरदेवसिंह जी रईस।
बाबू मगनसिंह जी वकील।
बाबू गंगा शरण जी मुख्तार।
पण्डित रामस्वरूप जी वकील।
श्रीयुत ईश्वर दयालु जी आर्य।
पंडित रामेश्वर प्रसाद जी शर्मा।
पंडित इन्द्रमणि जी।
बाबू जगदीश प्रसाद जी गर्ग।
पंडित सोम देव जी शर्मा।
महाशय मनफूलसिंह जी।
चौधरी रघुवीरसिंह जी।
कोषाध्यक्ष—बाबू शान्ति स्वरूप जी।

स्वागत कारिणी की ओर से आर्य कुमार सभाओं को जयन्ती मे प्रतिनिधि भेजने के लिए फार्म इत्यादि शीघ्र भेजे जावेंगे। जो कुमार सभाएं अभी तक परिषद् से अलग है वे शीघ्र ही परिषद के कार्यालय से नियमादि मँगवाकर परिषद् मे सम्मिलित हो जाये।

—— —

२—जैसा कि हमने गत मास के 'आर्य कुमार जगत मे लिखा था, जयन्ती के अवसर पर परिषद की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित की जावेगी जिस मे परिषद के इतिहास के अलावा कुमार सभाओं के तथा अन्य ऐसी संस्थाओ का भी परिचय होंगे जिनमे आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं जैसे गुरुकुल, अनाथालय डी० ए० वी० कौलेज तथा स्कूल आदि। हमे यह लिखते दुःख होता है कि अभी तक बहुत ही थोडी सभाओं ने हमें अपने परिचय भेजे हैं। इस पुस्तक को उपयोगी बनाना आप सब के हाथ है। इस लिए शीघ्र ही अपने परिचय लिख भेजने की कृपा करें।

इस परिचय मे अन्य बातों के अलावा निम्न

बातें अवश्य हों —(१) संस्था कब स्थापित हुई। (२) संस्था के अधिष्ठाता का नाम। (३) संस्था किस अवस्था में कार्य कर रही है। (४) तथा संस्था के अन्तर्गत आर्य कुमार सभा है या नहीं।

कुमार सभाओं को तो शीघ्र ही अपना पूरा वृत्तान्त भेज देना चाहिए। कार्यकर्त्ताओं के नाम तथा सभासदों की संख्या अवश्य हो।

———

३—यद्यपि 'आर्यकुमार जगत' को निकलते यह तीसरा मास है और हमने पहिले ही अङ्क में आर्य कुमार सभाओं से प्रार्थना की थी कि वे अपनी रिपोर्टें तथा सभा सम्बन्धी अन्य समाचार 'आर्य कुमार जगत' में छपने के लिए हमें प्रत्येक मास की २० तारीख तक अवश्य भेज दिया करें। फिर भी अभी तक कुमार सभाओं ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है कुमार सभाओं को चाहिये कि वे अपनी रिपोर्टें बराबर भेजते रहा करें।

४—जयन्ती के सम्बन्ध मे परिषद् का सर्क्यूलर हाल में ही सब कुमार सभाओं को भेजा गया है। जिन कुमार सभाओं के पास अभी तक न पहुंचा हो वे हम से मंगालें।

कुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे जयन्ती में अधिक से अधिक प्रतिनिधि भेजें ताकि वे सम्मिलित कर परिषद् को जो कि भारतवर्ष की आर्य कुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है संगठित करने में सहयोग दे सकें

मंत्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्
१६२०, नया बाजार, दिल्ली

—*—

साम्प्रदायिकता का अभिशाप

श्री डाक्टर भगवानदास जी ने साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में अखबारों में भी अभी हाल में लेख लिखे हैं और कांग्रेस का साम्प्रदायिकता के सम्बन्ध में जो दख है वह गलत प्रगट करते हुए सुधार के उपाय सुझाये हैं। उन लेखों का सार हम अपने पाठकों के लाभार्थ 'सार्वदेशिक' में छाप रहे हैं।

(१)

अस्तित्व विहीन बीमारी

गत २० मार्च को दयालसिंह कालेज लाहौर में विद्यार्थियों की एक सभा में भाषण देते हुए श्रीयुत भूला भाई देसाई ने 'साम्प्रदायिकता' की चर्चा की और कहा कि मैं "उन व्यक्तियों में से हूं जो यह मानते हैं कि भारतवर्ष में साम्प्रदायिकता नहीं है। साम्प्रदायिकता एक बीमारी है जो भारत में नहीं है।" श्री भूला भाई असेम्बली में हमारे सम्मानित नेता हैं। वे भारत के ५—६ प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। 'साम्प्रदायिकता एक रोग है और उसका भारत में अस्तित्व नहीं है।' उनके इस कथन का अवश्य ही कोई अर्थ होगा। परन्तु उनके कथन का क्या मतलब है यह मेरी समझ में नहीं आया है। वे ईसाई वैज्ञानिकों और दिमाग के रोगों को दूर करने वालों के स्वर में मुशकिल से ही बोल सकते हैं जो यह कहते हैं 'विश्वास रक्खो तुम्हें रोग नहीं है और न तुम्हें रोग होगा।' मेरी कमजोर आंखों ने श्री भूलाभाई देसाई के फतवे से ४ दिन पूर्व देखा कि यह अस्तित्व विहीन बीमारी मेरे अपने अभागे बनारस में हत्याओं द्वारा १० और मेरे पड़ोसी प्रयाग नगर में १४ जानें ले गई और बहुतों को चोटों द्वारा घायल कर गई।

लौकिक शिक्षा

श्री भूला भाई जी ने उसी दिन उस भाषण से पूर्व डी० ए० वी० कालेज में पारितोषिक वितरण समारंभ के प्रधान पद से कहा "मेरा यह विश्वास है कि देश का कल्याण लौकिक शिक्षा से ही हो सकता है। व्यापक धर्म एक ही है।"

चार शिक्षाएँ

ब्रिटिश शासन ने भी लौकिक शिक्षण की नीति का दृढ़ता से पालन किया है और नतीजा यह है कि देश की साम्प्रदायिकता और उसके दुष्परिणामों से मुक्ति पहले से भी ज्यादा दूर की बात हो गई है। परन्तु शायद श्री देसाई जी का किसी दूसरे प्रकार की मुक्ति से अभिप्राय होगा जो हमारे 'स्वराज्य' शब्द की नाईं गूढ़ और परिभाषा में न आने योग्य होगी। मेरा यह विश्वास हो गया है कि हमारा कल्याण केवल लिखने पढ़ने और अरिथमेटिक से न होगा। बल्कि लिखने, पढ़ने अरिथमेटिक और व्यापक धर्म (Universal Religon) से होगा जिस के मूल तत्व सब धर्मों में समान पाए जाते हैं और जो रीतिरिवाजों और क्रिया-कलापों से भिन्न है।

ध्यान पूर्वक प्रचार करो

'व्यापक धर्म्म एक ही है'। श्रीयुत देसाई का यह कथन उदार और प्रशंसनीय है और वस्तुत सब ही धर्मों के उदार चेता सज्जन बार २ इसे दुहराते और स्वीकार करते हैं। इस कथन से प्रतीत होता है, श्रीयुत देसाई सब धर्मों के विरुद्ध नहीं हैं परन्तु एक बड़े कालेज के विद्यार्थियों की एक विराट सभा में लौकिक शिक्षण सम्बन्धी उनके विश्वास की पूर्व घोषणा के यह कथन न्यूनाधिक रूप में विरुद्ध जाता है। मेरे जैस विचार के लोग जो इसमें विश्वास रखते हैं, वह यह कहते हैं कि यह सचाई है परन्तु दृढता और व्यवस्था के साथ बच्चों, नवयुवकों और नवयुवतियों के हृदयों पर उपदेश और पुस्तकों के द्वारा इसके अंकित किए जाने का यत्न भी तो होना चाहिए। सिर्फ जब तब जिक्र कर देने से ही तो काम नहीं बनेगा।

दो मुख्य समस्याएँ

शायद यह कहा जाय और बहुधा हमारे नेता कहते भी हैं कि जिसे साम्प्रदायिकता कहा जाता है या जो साम्प्रदायिकता के रूप में देख पड़ती है यह तो कुछ स्वार्थियों और अपना हल्वा माण्डा सीधा करने वाले व्यक्तियों की पैदा की हुई समस्या है। कुछ थोड़े से व्यक्तियों की यह सुनिश्चित सम्मति हो सकती है परन्तु जहां तक मुझे पता है भारतवर्ष के हितैषियों और विचारकों के एक बहुत बड़े भाग की सम्मति इसके विपरीत है। उनका विश्वास है कि आज भारतवर्ष की मुख्य दो समस्याएं हैं। एक हिन्दू मुस्लिम और दूसरी गरीब-अमीर की समस्या है। केवल अन्तिम एक ही समस्या नहीं है।

क्या मनुष्य अजान देते और आरती के घंटे बजाते हुए स्वर्ग में जायेंगे ? क्या गउओं का बध करते अथवा बकरियां भैंसे, सुअर और ऊंटों की हत्या करते हुए स्वर्ग को प्राप्त करेंगे ? क्या लोग धोती या पाजामे में सुसज्जित हुए, सिर पर या ढोडी के नीचे लम्बे बाल रक्खे हुए, बड़ी बड़ी मूछें रक्खे हुए या बिलकुल साफ कराए हुए, लंबे लम्बे चोले धारण किए, माला या तस्बीह घुमाते हुए ऊंची हिन्दी या उर्दू बोलते हुए परमात्मा को अर्बी या संस्कृत में आव्हाहन करते हुए स्वर्गारोहण करेंगे ? आज इसी प्रकार की साम्प्रदायिक समस्या है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कुछ लोग यह कहते हैं कि वास्तव मे साम्प्रदायिक कोई समस्या नहीं है। 'धर्म्म खतरे में है' यह षड्यन्त्रकारी ही आवाज लगाते है जो धर्म्म गुरुओं के वेश में जनता को जान बूझ कर अपने स्वार्थो के लिए गुमराह करते हैं। इस बात में सत्य का कुछ अंश अवश्य है परन्तु यह पूर्णतया सत्य नहीं है। धर्म्म खतरे में है इस आवाज का जनता द्वारा जिस तत्परता और लगन से, अन्धा धुन्ध रीति से और वस्तुत अति करते हुए उत्तर दिया जाता है उतना रोटी खतरे में है इस प्रकार का नहीं दिया जाता है।

जनता धर्म्म के मामले में इतनी जल्दी क्यों उत्तेजित हो जाती है ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है

कि हमारे सामने दो समस्याएँ हैं सिर्फ एक समस्या नहीं है। यह माना वे दोनों एक दूसरे में घुली मिली हैं ठीक उसी तरह जिस तरह हृदय और पेट के कार्य्य एक दूसरे में घुले मिले है।

कुछ नहीं किया गया

हम कांग्रेसियों ने और हमारे नेताओं ने इस समस्या का वास्तविक और स्थिर रहने वाला क्या हल किया है ?

जहां तक मैं देख सकता हूँ—कुछ नहीं किया है।

जहा तक साम्प्रदायिक समस्या का सम्बन्ध है पब्लिक व्याख्यानों, लेखों और व्यक्तिगत तौर पर नेताओं द्वारा भावों को भड़काने वाला काफी आदेश उपदेश होता रहा है और इस समय भी हो रहा है। हमारे कांग्रेसी मन्त्री भी एकता सम्मेलनों के प्रस्तावों से हिन्दू और मुसलमान नेताओं के हस्ताक्षरों से युक्त सार्वजनिक अपीलों द्वारा यह कार्य्य कर रहे हैं। परिणाम यह हुआ 'कि ज्यों २ दवा की मर्ज बढ़ता ही गया'।

साम्प्रदायिक—राजनैतिक नेता या हिन्दुओं और मुसलमानोंके अवाञ्छनीय नेता जो तीसरी पार्टी बने हुए चले जाते है वे अपने २ अनुयायियों में इस आगको भड़काने के लिए कम जिम्मेवार नहीं हैं। इस वर्ष होली न सिर्फ रंगसे वरन बहुत जगहों पर लाल खून से खेली गई है ? कांग्रेसी मन्त्री और अन्य कांग्रेसी नेता क्या कर रहे हैं? वे वही पुरानी अनुनय-विनय-उपदेशों और अपीलों का जो सत्य है परन्तु प्रभाव-शून्य है राग अलाप रहे हैं और कोई निश्चित उपाय नहीं बतलाते हैं। प्रत्येक इस प्रकार की बातें जानता है और धार्मिक-राजनैतिक नेता एकान्त में उन पर हसते है और अपने मन में कहते हैं हम चाहते हैं हमारे हाथ में शासन हो तुम कांग्रेसी मन्त्रियों के हाथ में नहीं।

जन साधारण लड़ते चले जारहे हैं और यह (ध्यान देने योग्य बात है) कभी भी कोई साम्प्रदायिक राजनैतिक-नेता 'धर्म्म खतरेमें है' की उच्च और महान आवाज देता हुआ बहादुरी के साथ युद्ध क्षेत्र में अपनी सेना का नेतृत्व करते हुए नहीं देखा गया।

मेल किस प्रकार हो ?

मिनिस्टरी के भीतर या बाहर किसी कांग्रेसी लीडरने हमें यह कभी नहीं बतलाया कि मेल किस प्रकार किया जाय ? दूसरी ओर मौलवी और पंडित लोग फूट का जोरों के साथ जनता में प्रचार करते फिर रहे हैं।

दिनमें ऋतुदान क्यों वर्जित है ?

(ले० श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी)

मनु महाराजने 'प्रशस्ता दश रात्रय अर्थात् गर्भाधान के लिये दश रात्रिएं उत्तम हैं' ऐसा लिखा है। तथा अन्य नीति और शास्त्रकारों ने गर्भाधान के लिये रात्रि का विधान किया है। प्रश्न होता है गर्भाधान के लिये रात्रि ही क्यों निश्चित की गई है। दिन क्यों नहीं ? इसका उत्तर हम इन पङ्क्तियों में देने का यत्न करेंगे।

दिन में गर्भाधान करने से गर्मी ज्यादा बढ़ जाती है। शास्त्रकार लिखते हैं कि गर्भाधान के बाद उचित समय पर स्नान करना चाहिये। क्योंकि गर्भ-क्रिया से शरीर की गरमी उत्तेजित होजाती है और इसके उत्तेजित होजाने से दिमाग़ में आलस्य छाजाता है। गर्भ-क्रिया के बाद यदि स्नान न किया जाय तो शरीर शिथिल और रोगी हो जाता है। दिन के समय में जोकि उष्णता का समय है गर्भाधान करने से गरमी के अत्यन्त उत्तेजित होजाने से पागलपन का रोग हो जाने की आशङ्का होती है। जो लोग दिन में गर्भाधान करते हैं वे भद्दे और निष्प्रभ हो जाते हैं। उनका चित्त काम करने को सर्वथा नहीं चाहता।

पश्चिमी देशों के अनेक डाक्टर गर्भाधान के लिये दिन का ही समय बताते हैं। इन डाक्टरों को अभी तक पता ही नहीं गर्भाधान का समय दिन अच्छा है अथवा रात। ये डाक्टर दिन के समय में गमन करने के लाभ बुद्धि पूर्वक कुछ नहीं बतलाते अधिकतर एक युक्ति के कारण दिवस गमन पर बल देरहे हैं। इनका असत्य विचार यह है कि लोग जो रात्रि को गमन करते हैं वे कदाचित इसलिये करते हैं कि गर्भाधान कोई बुरा कार्य है जिसको छिपाकर रात के समय करना पड़ता है। और जोकि इन डाक्टरों के विचार में गर्भाधान पाप कर्म नहीं इसलिये इसको दिन धौले में करने की ये शिक्षा देते है। हम यहां तक तो इन डाक्टरों से सहमत हैं गर्भाधान पाप कर्म नहीं वरना हम पूछते हैं कि क्या रात के समय जो कार्य किये जाते हैं वे सब पाप कर्म ही होते हैं और क्या दिन को जो कर्म किये जाते हैं वे सब पुण्य रूप ही होते हैं। वे कभी इस बात को सिद्ध नहीं कर सकेंगे कि दिन में पाप नहीं किया जा सकता और रात में पुण्य कर्म नहीं हो सकता। जब यह बात है तो इनका यह कहना ठीक नहीं है। दूसरीओर अन्तिम तर्क यह किया जाता है कि दिन के बारह बजे मनुष्य में पूर्ण बल होता है इसलिये दिन के समय अर्थात् दोपहर को गर्भाधान करना चाहिये। यहां भी डाक्टरों से भूल इस कारण से हुई है कि प्रथम उन्होंने इस बात पर विचार नहीं किया कि गर्भ क्रिया से दिमाग़ में कितनी ज्यादा गरमी बढ़ जाती है। दिन के समय जब कि पहिले ही दिमाग़ उष्ण होता है उस समय इस क्रिया के करने से शिर दर्द और अनेक दशाओं में पागलपन आदि कई प्रकार के रोगों के होजाने का भय है। दूसरे दिमाग़ और शरीर की शक्तियों में उन्होंने अन्तर नहीं रक्खा। आधी रात से लेकर दिनके बारह बजे तक आदमी की मानसिक शक्ति और दिन के बारह बजे से आधी रात तक शारीरिक शक्ति पूर्णता को पहुंचती है। गर्भाधान कोई रेखागणित की साध्य (शकल) का हल नहीं जिसमें अधिकतर मानसिक शक्ति से काम लेना है। वरन् यह कर्मेन्द्रियों का कार्य है जो मुख्यतया शारीरिक अवस्था से सम्बन्ध रखता है इसलिये उसका समय दिन के स्थान में रात का होना चाहिये था। इन डाक्टरों के मत का खण्डन एक अन्य पश्चिमी डाक्टर निम्न प्रकार करते हैं।

"दो पहर के बाद का समय शारीरिक कामों के लिये अत्यन्त उपयुक्त है रात्रि का समय विचार व पठन-पाठन के लिये ठीक नहीं। वरन् साधारण कार्य और मिलने जुलने के लिये उचित है। रात्रि के ६ बजे का समय प्रेम के भोग के लिये स्वाभाविक और उचित है।

शंका समाधान

IX WOMEN

Question—

1 What is considered to be the status of women in your province according to the Shastras ?

2 What is her status at present ?

3 If you think there is degradation, what are your suggestions to improve her status ? In particular do you think woman should have greater economic rights than she has at present ?

4 What steps should be taken to enable her to play her proper part in the social scheme ?

Answer—

1 Woman is the mistress of the house, a comate of the husband, an ideal wife and mother Besides being wife in a family, she has her own individuality also where her Dharma is similar to that of a man

2 The status of woman at present in the Hindu society is more of a wife than of an individual human The status can be improved by education and self consciousness In a good family, the question of economic rights is immaterial but there should be some provision for special cases

3 In a social scheme, she should work in co-operation with and side by side of her husband Both of them together should form one unit

स्त्री

प्रश्न—

१–शास्त्रों के अनुसार आपके प्रान्तमें स्त्रियोंका क्या दर्जा समझा जाता है ?

२–वर्तमान में उसकी क्या स्थिति है ?

३–यदि आप समझते हैं कि गिरावट की अवस्था है तो आपकी सम्मति मे उसकी स्थिति के सुधार के क्या उपाय होने चाहिए ? मुख्यत क्या आपके विचार में वर्तमान की अपेक्षा उसके अधिक आर्थिक अधिकार होने चाहिए ?

४–सामाजिक स्कीम में अपना उचित भाग लेने में उसे समर्थ करने के लिए क्या उपाय काम में लाने चाहिएं ?

उत्तर–

१–स्त्री घरकी मालकिन है, पति की संगिनी आदर्श पत्नी और माता है। परिवार में पत्नी होने के अतिरिक्त उसका अपना निजी व्यक्तित्व भी है जहा उसका धर्म मनुष्य जैसा ही धर्म है।

१–वर्तमान में हिन्दू समाज में स्त्री का मानव-प्राणी के स्थान में पत्नी का ही अधिक स्थान है। शिक्षा और आत्मजागृतिसे ही उसकी स्थिति सुधार सकती है। सद् गृहस्थ में आर्थिक अधिकारों का प्रश्न अनावश्यक है परन्तु विशेष अवस्थाओं के लिए कोई व्यवस्था होनी चाहिए।

३–समाज कार्य में स्त्री को अपने पति के सहयोग और संगमे ही कार्य करना चाहिए। दोनों को एक साथ मिल कर एक सत्ता के रूप में काम करना चाहिए।

परन्तु सब से प्रामाणिक कारण जैसा कि ऊपर बतलाया गया है यह है कि रात्रि गमन से दिमाग़ में गरमी अधिक नहीं बढ़ती। गर्भ क्रिया से शारीरिक गरमी प्रबल होजाती है और दिन के समय अब पित्त का राज्य होता है वह क्रिया रोग उत्पन्न करती है। दिन के समय में सोने से क्यों सिर में दर्द होने लगता है और शरीर शिथिल हो जाता है इसका कारण यह है कि सोने से दिमाग़ में गरमी बढ़ जाती है इस बात की पुष्टि में कि गर्भ क्रिया से गरमी उत्तेजित होजाती है हम सुश्रुतकारका मत लिखकर इस लेख को समाप्त करते हैं।

"स्त्री पुरुष का संयोग होने पर जो गरमी पैदा होती है वह शरीर में वायु को उत्तेजित करती है और फिर उस गरमी और वायुके मेलसे शुक्र निकलता है।"

मूक सन्देश

केवल आर्य समाजियों के लिये

ले० एक मर्मज्ञ

मैं आर्य समाज के सम्बंध में आजकल बहुत सी विपरीत चर्चा सुनता हूं। मुझे असीम दुःख होता है कारण यह कि आर्य समाज देश धर्म और जाति के सच्चे हित के लिये स्थापित हुआ था। इस का ध्येय बहुत ऊंचा था। आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार केवल आर्य समाज द्वारा ही हो सकता था क्योंकि उस संस्कृति में इसी को अगाध श्रद्धा थी। परन्तु वर्त्तमान समय के आर्य समाजी अपनी बनाई आदतों के ऐसे गुलाम बन गये हैं कि उन्हें अब अपना ध्येय या तो दीखता ही नहीं या दीखता है तो उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा। मैंने एक बार 'सार्वदेशिक' पत्र के सम्पादक से निवेदन किया कि यदि वह मुझे यह अधिकार प्रदान करें कि मैं आर्य समाजियों के साथ हार्दिक सम्भाषण कर सकूं तो मैं उन को स्पष्ट बता सकता हूं कि वह किन कुत्सित आदतों के शिकार बन रहे हैं और यदि वह उन आदतों को न छोड़ेंगे तो सर्वदा के लिये अपने उपार्जित यशको खो बैठेंगे और समाज का उज्वल भविष्य सदा के लिये अन्धकार मय बन जावेगा। सम्पादक महोदय ने मुझे यह अधिकार प्रदान किया और मैं अपना पहली किस्त इस अङ्क द्वारा अपने पाठकोंके सन्मुख पेश करता हूं।

इस समय के आर्य समाजी प्रायः सभी उपदेशक हैं। उनके उपदेशों को आर्य समाज के मन्दिरों में लोग नहीं सुनते। मन्दिर में जाने वाले आर्य समाजियों की सख्या दिनों दिन घट रही है। जब वहां पर उपदेश होता है तो अधिकांश सुनने वालों का ध्यान उपदेश के सुनने में नहीं रहता। जो सुनते भी हैं, वह पीछे यही कहते सुनाई देते हैं कि इन महाशय ने कहा ही क्या है? यह बातें तो अनेक बार सुनी हैं। कुछ तो उपदेश ही नीरस होते हैं, कुछ विपरीत आलोचना उन के रहे सहे प्रभाव को मिटा देती हैं। आर्य समाज के मन्दिर से उठकर श्रोता और वक्ता दोनों ही कोरे उठते हैं।

आर्य समाजियों में नम्रता को ढूंढना व्यर्थ का प्रयास करना है। प्रत्येक आर्य समाजी अपने को अफलातून समझता है। भला जिस समाज में सारे अफलातून हों उसकी क्या गति! "विद्या ददाति विनय" वाली बात आर्य समाजियों मे क्यों दिखाई नहीं देती? मेरे विचार में इस का एक मात्र कारण यह है कि उन का सारा स्वाध्याय योग्यता-प्रदर्शन के लिये होता है न कि अपनी संकीर्णता और अज्ञान को दूर करने के लिये।

आर्य समाजियों की दृष्टि सर्वदा दूसरों के दोषों को देखने में लगी रहती है। उनका यह अभ्यास इतना बढ़ गया है कि भूल कर भी वे अपने भीतर नहीं देखते। वैयक्तिक उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि हम अपने आप को उस दृष्टि से भी देख सकें, जिस दृष्टि से लोग हमको देखते हैं। प्रायः हमारी सम्मति अपने विषय में पक्षपात-पूर्ण होती है। अतः यह ज़रूरी है कि हम कभी कभी अपने सम्बंध में दूसरों की सम्मति भी जान लिया करें और सम्मति का आदर करते हुए उसके अनुसार अपना सुधार कर लिया करें।

हम देखते यह हैं कि जब कभी किसी आर्य भाई को यह कहा जाता है कि लोक मत को अपने सम्बध में उपेक्षा वृत्ति से न देखो तो वह यही कह देता है कि लोक मत का अवहेलना में ही तो उन्नति है। यह भोले भाई इस बात को नहीं जानते कि अपने सम्बध में लोक मत को सदा दृष्टि में रखना चाहिये। एक अंग्रेज कवि ने क्या ही अच्छा कहा है—

Would the Giftie Power give us,
To see ourselves as others see us

आर्यसमाजी अपना प्रदर्शन स्वयं करते रहते हैं। वे इस बातकी प्रतीक्षा नहीं करते कि उनके गुणोंकी महिमा दूसरे गायन करें। अपना ढोल स्वयं पीटना कोई अच्छी बात नहीं समझी जाती। पर आर्य समाजियों की इस प्रवृत्ति ने आर्य समाज में एक आडम्बर और कृत्रिमता का वायुमण्डल पैदा कर दिया है, जिस के विरुद्ध कोई आवाज़ उठती सुनाई नहीं देती।

पुनर्जन्म में एक और प्रमाण

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, देहली)

एक बालक जिसका नाम अमरसिंह सुपुत्र बचना जाट ग्राम-तलवण्डी साबो (रियासत पटियाला) का रहने वाला है। उसकी आयु ७ साल की है। वह तीन साल से हिसाब की बातें बताता है। स्कूल में इसी साल पढ़ने के लिए भेजा। अभी उर्दू के कायदे के एक दो पृष्ठ पढ़े हैं। परन्तु किसी प्रकार का हिसाब का प्रश्न यदि उससे करें तो उसका उत्तर जबानी ठीक ठीक देता है। लिखता कुछ नहीं है। उसे अंक अभी १०० तक भी लिखने नहीं आते। हिसाब वह चुप चाप बैठा करता है। कुछ बोलता नहीं है मैंने उससे निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे .—

(१) आपकी आयु क्या है ? इसमें कितने महीने हुए ? पश्चात् पूछा कितने दिन हुए।

(२) सोने का भाव ३१) तोला है ५ रत्ती का दाम क्या हुआ ?

(३) एक चीज १) मे २॥। सेर आती है ।)॥। मे कितनी आयेगी ?

(४) १) में २॥ गज कपड़ा आता है तो ७ गिरह का दाम क्या होगा ?

(५) एक जमीन का टुकड़ा इतने गज लम्बा और इतने चौड़ा है तो उसका क्षेत्र फल (रकबा) कितना हुआ ?

उस सबके उत्तर प्रश्न करने के बहुत थोड़ी देर बाद ही ठीक ठीक दिए। मैंने उससे पूछा कनाल कितनी लम्बी चौड़ी होती है। उसने कहा मै कनाल नहीं जानता। बीघा और घुमा जानता हूँ जिससे पता लगता है कि वह जिस प्रश्न को नहीं जानता उसे उसी समय कह देता है मुझे नही आता।

उसका पिता निरक्षर है न उसकी माता पढ़ी हुई है और न घर मे और ही कोई पढ़ा हुआ है। इस अवस्था मे बिना पिछले जन्म के सस्कारों के और कोई कारण प्रतीत नहीं होता यदि किसी को उसे देखने की अभिलाषा हो तो वह भटिण्डा स्टेशन पर उतर कर मोटर लौरी से तलवंडी साबो जा सकता है। लारी का किराया लग भग ॥) होगा। अथवा B.B. & C.I. Ry से रामा स्टेशन पर उतर कर चार कोस चल कर तलवण्डी साबो जाना होगा। रामा में गेंदाराम प्रधान आर्य्यसमाज अथवा म० निहालचन्द्र मन्त्री आर्य्यसमाज अथवा किसी व्यक्ति से तलवण्डी साबो जाने में सहायता प्राप्त कर सकता है।

सम्पादकीय--

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

कोई समय था जब कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के गौरव की गाथा सभी प्रान्तों मे बड़े चाव से सुनी जाती थी। इसका कार्य्य, इसका संगठन तथा इसके आदेश सभी प्रान्तों के आर्य्य नर नारी आदर की दृष्टि से देखते थे, परन्तु कुछ वर्षों से इस सभा के आन्तरिक घरेलू झगड़ों ने पजाब के आर्य्य सामाजिक वातावरण को इतना गंदा कर दिया है कि गम्भीर आर्य्य समाजी अब आर्य्य समाज के भविष्य को ही सदेह की दृष्टि से देखने लग गये हैं। जब झगड़े साधारण सीमा से आगे बढ़ जाते हैं और वैयक्तिक आक्षेपों तथा घडे बन्दियों का रूप धारण कर लेते हैं, तो उस समय धर्म, कर्म का ख्याल उड़ जाता है और केवल प्रति पक्षी को गिराने और उसको जलील करने का ख्याल बाकी रह जाता है। परन्तु लड़ने वाले व्यक्ति अपने समय पर अपने कार्य्य क्षेत्र को किसी न किसी कारण छोड़ जाते हैं, परन्तु उनके लड़ाई झगड़ों से जो क्षति एक समाज, सोसाइटी या सगठन को पहुंचती है उसका कलङ्क हमेशा के लिए बना रहता है। यदि लड़ने वाले व्यक्ति इस भाव को अपने हृदय मे स्थान देंगे तो सम्भव है कि वे अपने समाज के हितों को दृष्टि में रखते हुए लड़ाई झगड़ों से दूर रह सकें।

हमें अभी तक यह बात समझ में नहीं आती कि धर्म के क्षेत्र में इस प्रकार के लड़ाई झगड़े क्यों होते हैं? यहा किसी की विशेष सम्पत्ति का कोई प्रश्न नहीं। सेवा के लिए लोग समाज में आते हैं। सेवा की दृष्टि से वे समाज में अग्रसर होते हैं। फिर सेवकों में एक दूसरे को पद-दलित करने की वृत्ति क्यों पैदा होती है? सेवकों में सहायता, सहयोग का भाव तो समझ में आ सकता है, परन्तु स्पर्धा और दूसरों को कुचलने का भाव नि.स्वार्थ सेवा के गौरव को गिराने वाले हैं।

कुछ भी हो इस समय पजाब प्रतिनिधि सभा के घरेलू झगड़ों ने भयानक रूप धारण कर लिया है, कई वर्षों से इस प्रान्त से बाहर के आर्य्य समाजी उस शुभ अवसर की प्रतीक्षा मे हैं कि इस सभा का पुराना गौरव, यश और अभिमान पुन स्थापित हो जावे। परन्तु उनकी यह अभिलाषा अभी तक पूर्ण नही हुई। इस सभा के गत वार्षिक साधारण अधिवेशन मे यह आशा की गई थी कि राय बहादुर दीवान बद्रीदास के प्रधानत्व मे सभा के अन्तर्गत दोना विरोधी दल मिलकर काम करेंगे और पारस्परिक झगड़ों की सर्वदा के लिए समाप्ति हो जायगी। जनता को यह आशा पूर्ण नहीं हुई। हम इसके कारणों में नहीं जाना चाहते।

राय बहादुर बद्रीदास आर्य्यसमाज के उन कतिपय व्यक्तियों में से हैं जिनकी गम्भीरता विद्वत्ता और नीति की प्रशसा सारे पंजाब में होती है। वह चोटी के कानून दां हैं उन्होंने अपने जीवन में सैकड़ों कानूनी उलझनों को सुलझाया होगा। शहीदगंज जैसे जटिल अभियोग में जो

गहरी विवेचना उन्होंने की थी उसकी हाई कोर्ट के जज ने भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की थी। क्या इतना दिमाग रखने वाले आर्य्यसमाज के कर्णधार अपनी सभा के साधारण घरेलू झगड़े को मिटाने में असमर्थ हैं? हम ऐसा स्वीकार नहीं करते। हमारी सम्मति है किन्हीं कारणों से दीवान बहादुर जीने अपने हाथों में इस समस्या को सुलझाने का कार्य्य दत्त चित्त होकर नहीं लिया। हमें पूर्ण विश्वास है कि अभी तक भी दोनों दलों के प्रमुख व्यक्ति दीवान बद्रीदास जी की न्याय शीलता को आदर और भक्ति की दृष्टि से देखते हैं और हमें इसका समर्थन दोनों दलों की ओर से मिल चुका है। अत हमारा दीवान बद्रीदास जी से सानुरोध निवेदन है कि वह अपने संकोच को तिलाञ्जलि देकर इस बात के लिए कटिबद्ध हो जावें कि वह दोनों दलों के सम्बन्ध मे अपना अन्तिम निर्णय जनता के सन्मुख रक्खें। आर्य्य जनता यह जानना चाहती है कि उनके शिरोमणि नेता आर्य्यसमाज के घरेलू झगड़ों के सम्बन्ध में अपनी क्या सम्मति रखते हैं? यदि उनके हस्तक्षेप से झगड़ों का निपटारा न होसका तो भी इतना तो आर्य्य जनता को अवश्य मालूम होजायगा कि ज्यादती का अंश किस ओर है? इस ज्ञानके प्राप्त हो जाने पर आर्य्य जनता अपनी किं कर्त्तव्य विमूढ़ता को छोड कर एक दम जाग्रत हो जायगी। और जिन ग्रन्थियोंको वह अबतक सुलझा नहीं सकी उनको एक झटके से तोड़ कर फेंक देगी। हम आशा करते हैं कि दीवान बहादुर आर्य्यसमाज की यह सब से बड़ी सेवा करने को तैयार होंगे।

हैदराबाद राज्य

अभी हाल में श्रीभाई परमानन्द जी मैसूर, भूपाल और हैदराबाद राज्यों की यात्रा करके लौटे हैं। आपने यात्रा के वर्णन में जो अखबारों में छपा है हैदराबाद राज्य के सम्बन्ध में श्री भाई जी लिखते हैं —

सर अकबर हैदरी से भेंट

पूर्व सूचनानुसार सर अकबर हैदरीसे मैं १० बजे उनके कार्यालय में मिला। मैंने पहला प्रश्न उनसे यही किया कि महासभा के शिष्टमण्डल को उत्तर क्यों नहीं दिया गया? जिसके उत्तर मे सर हैदरी ने कहा कि हमारी नीति यह है कि रियासतों में बाहरी लोगों का कोई हस्तक्षेप न हो। मैंने पूछा "रियासत मे उनके सहधर्मियों के कष्ट दूर न होंगे तो बाहरी लोगों के लिये और मार्ग ही क्या है?" उत्तर में कहा गया कि निजू भेंट या पत्र व्यवहार से काम चल सकता है। उनकी सम्मति में मेरी यह भेंट भी उचित न थी।

मैंने हिन्दुओं के कष्ट निम्न शीर्षकों में रखे—

(१) हिन्दू प्रजाको धार्मिक कठिनाइयां,

(२) राज्य की नौकरियों में हिन्दू प्रजा के उचित भाग का अभाव।

(३) राज्य की ओर से उर्दू को प्रोत्साहन तथा प्रजाको दूसरी विभिन्न भाषाओं की उपेक्षा। राज्य में ७० लाख तैलगू, ३६ लाख मराठी और २० लाख हिन्दी बोलने वाले हैं, जब कि उर्दू बोलने वाले केवल १५ लाख हैं।

(४) दलितवर्गों के सामूहिक धर्म परिवर्तन में राज्यके अधिकारियों का सक्रिय भाग।

(१) हिन्दू प्रजाको सभा सम्मेलन व भाषण आदि के मूल नागरिक अधिकारोंका अभाव।

हमने इनपर परस्पर विवाद किया। सर हैदरी का विचार है कि राज्यकी हिन्दू प्रजाको विशेषतया कोई कष्ट नहीं है। ये शिकायतें हिन्दू और मुसलमान दोनों की हैं। धर्म परिवर्तन को वह नहीं रोक सकते, हां राज्यके अधिकारियोंको इन में कोई सहायता न करने की आज्ञा उन्होंने प्रचरित कर दी है। नौकरियों के लिये एक विशेष समिति नियुक्त करदी गई है जिसे निष्पक्ष रहने का निर्देश दिया गया है। मुझे विश्वास दिलाया गया कि यदि भविष्यमें कोई शिकायत सुनें तो मुझे लिखें। मैंने तीन विशेष घटनायें उनके सामने रखीं जिनमें अधिकारियों ने हिन्दू प्रजा को कष्ट दिया। इसकी जांच के लिये उन्होंने तत्काल आज्ञादी। कौंसिल के सदस्यों से उन्होंने मेरा परिचय करवाया और मैंने इस सब के लिऐ उनका धन्य वाद दिया।"

हैदराबाद राज्य में हिन्दुओं और आर्य्यों को जो मुसीबतें है, भाई जी द्वारा वर्णित मुसीबतें उनकी स्थूल रूप रेखा मात्र ही है। वहाँ आर्य्य समाज की जो स्थति है वह पाठकों से छुपी नहीं हैं। यदि बतलाई ही जाय तो हम एक शब्दमें कहेंगे कि वहाँ आर्य्य समाज जीवन और मृत्यु के बीच में झूल रहा है। म० वेद प्रकाश के तार्जे कत्ल से बढ़ कर क्या और कोई बात इसके प्रमाण में हो सकती है? प्रश्न यह है कि हैदराबाद में इस असाधारण स्थिति का अन्त किस प्रकार किया जाय और आर्य्य समाज की रक्षा किस प्रकार की जाय? केवल दुख और असन्तोष के प्रस्ताव पास कर देने से ही काम नहीं चलेगा। असाधारण स्थिति के अन्त के लिए असाधारण उपायों की जरूरत होती हैं वे आर्यसमाज को अपनाने होंगे तबहीं स्थिति ठीक होगी। इस समय पर हमें गम्भीरता पूर्वक विचार करके उपाय निश्चित करने चाहिए और उन्हें पूरी तनदेही से काममें लाना चाहिए।

आर्य्य कन्या पाठशालाओंमें मांस प्रचार

आर्य्य सेवक सभा अमृतसर द्वारा प्रकाशित कन्या पाठशालाओं में मांस प्रचार शीर्षक हमें एक पोस्टर मिला है जिसमें आर्य्य कन्या पाठशालाओं के पाठ्य क्रम में नियत कुछ ऐसी पुस्तकों का विरोध किया गया है। जिनमें मांसाहार की पुष्टि में कतिपय पाठ हैं। और मांग की गई है कि शीघ्र से शीघ्र कन्या पाठशालाओं के सञ्चालकों को वे पाठ निकलवा देने चाहिये या वे पुस्तकें हीबदल देनी चाहियें। पोस्टर में उन पुस्तकों के कुछ अवतरण भी दिए हैं जिन से मांसाहार की पुष्टि होती है।

उदाहरणार्थ—

स्वास्थ्य विधि पृष्ठ ८०—उत्तम पुष्टिकारक भोजन खाना उचित है। जैसे दूध मक्खन, मलाई अण्डा, मास,

पृष्ठ ११९—अण्डे का शर्बत और अन्डे का जल बनाना जो अति बलदायक और उपकारी है।

पृष्ठ १६७—धीरे २ आयु के अनुसार बच्चों को अन्न देना आरम्भ करना चाहिये, जैसे दाल, चावल खिचड़ी, अन्डा, माँस का शोरबा इत्यादि।

सुशिक्षित स्त्री अर्थात् सुघड़ बीबी भाग १

पृष्ठ ११०—इसलिये अन्डा बड़ा उत्तम खाना है जिसे परमेश्वर बच्चों के लिये तैयार करता।"

रोगी की सेवा

पृष्ठ १०१—(च) खाने के १॥ घण्टे बाद एक या होसके तो दो कच्चे अण्डे तोड़कर एक गिलास में डालो। फिर ज़रा सा नमक और काली मिर्च मिलाओ और खिलाओ।

(छ)—दोपहर को अच्छा भोजन, बियर, लाल शराब या स्प्रिट भी साथही।

पोस्टर प्रकाशित करने वालों का विरोध और मांग दोनों ही उचित हैं। इस प्रकार के मामलों में अन्यों को मांग प्रदर्शन करने के बजाय स्वयं अपनी पाठशालाओं में इस प्रकार के साहित्य का प्रचार करना या प्रचार का कारण बनना आर्य्य समाज के लिये बड़ा लज्जा जनक है। ऐसी पुस्तकों का आर्य्य कन्या पाठशालाओं में होना एक क्षण के लिये भी सह्य नहीं है कन्या पाठशालाओं के संचालकों को इस तरफ शीघ्र ध्यान देकर मांग की पूर्ति करनी चाहिये।

यदि ऐसी पुस्तकों के रखने के लिये प्रबन्ध मजबूर हो तो बजाय ऐसी पुस्तकों के रखने के पाठशाला का न रखना ही अच्छा होगा क्योंकि विशेषता शून्य वा विशेषता से वंचित हुई किसी भी संस्था का जीवित रहना समाज पर भार और समाज के उद्देश्यों के विरुद्ध काम करने वाली वा उसका कारण बनने वाली संस्था समाज का अभिशाप ही होती है।

रोमन लिपि और भारत की सम्मिलित लिपि

पाठक अन्यत्र काशी के सुप्रसिद्ध विद्या प्रेमी रईस श्री० बाबू शिव प्रसाद जी गुप्त का लेख पढ़ेंगे जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय महासभा के प्रमुख श्री० सुभाष-चन्द्र बोस की हरिपुरा कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में अपने भाषण में स्थापित हुई इस स्थापना का खंडन करने का सफल यत्न किया है कि भारत वर्ष को सम्मिलित लिपि के रूप में रोमन लिपि को स्वीकार कर लेना चाहिए इस सम्बन्ध में यद्यपि विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं रह गई है और माननीय बाबू जी ने उत्तम प्रकार से अपने पक्ष को रख दिया है फिर भी एक दो बातें बाबूजीके कथनमें वृद्धिके तौरपर कहदेना चाहते हैं।

श्री० सुभाष बाबू ने रोमन लिपि को स्वीकार करने के पक्ष में सबसे बड़ा हेतु अपने हरिपुरा कांग्रेस के अभिभाषण में यह दिया है कि इस लिपि को ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दोनों प्रकार की महत्ता है और इस लिपिके अपनाने से हमें वे ही लाभ प्राप्त होंगे जो संसार के अन्य देशोंको प्राप्त हैं। आज कल एशिया में भारत को यदि हम छोड़ भी देवें ब्रह्मा, लंका, स्याम, जापान, तिब्बत, मंगोलिया और मुस्लिम देशों में रोमन से भिन्न अपनी २ लिपियां हैं। उत्तरी अफ्रिका के कुछ देशों में अरबी लिपि प्रचलित है। पैलेस्टाइन के यहूदियों की लिपि हिब्रू है। युरोप में सबसे बड़े प्रदेश सोवियट रूस में रोमन से भिन्न लिपि है। यूनान में भी भिन्न लिपि है। जर्मनी ने भी अभी तक पूर्ण रूप से रोमन लिपि को नहीं अपनाया है। अतएव श्री० सुभाष बाबू की यह स्थापना कि रोमन लिपि को अपनाने से संसार के अन्य देशोंके समान इस लिपि से हमें लाभ होगा, ठीक नहीं है। श्री० सुभाष बाबू का यह भी विचार है कि रोमन लिपि के माध्यम से युरोपीय भाषाओं के अध्ययन में सहूलियत होगी। परन्तु भारत वर्ष में इस लिपि के व्यवहार से कुछ स्वरों और व्यञ्जनों की ध्वनि कतिपय युरोपीय भाषाओं

में प्रयुक्त उन्ही स्वरों और व्यञ्जनो की ध्वनि से भिन्न होगी और इस कठिनाई की वजह से इस लिपि का अपनाना संभव नहीं देख पड़ता है। रोमन लिपि के अक्षर संस्कृत, देव नागरी और संस्कृत जैसी अन्य लिपियों के अक्षरों के मुकाबले में नाम मात्र के वैज्ञानिक हैं और यह सुनिश्चित निर्विवाद सत्य है फिर रोमन लिपिकी वैज्ञानिकता से सुभाष बाबू का क्या अभिप्राय है यह समझ में नहीं आया।

एक प्रवासी भाई का आगमन

इस मास हमें देहली में मौरिशस के औपनिवेशिक भाई श्री० पं० गयासिंह जी आर्य्य के दर्शन करने और मौरिशस में आर्य्यसमाज के सम्बन्ध में विचार विनिमय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। गयासिंह जी १० वर्ष के बाद आर्य्यसमाज के पुनीत मिशन पर मातृभूमि को लौटे हैं। उनकी यात्रा के फल स्वरूप सभा के उप प्रधान श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी बहुत सभव है सभा की ओर से निकट भविष्य मे आर्य्यसमाज के प्रचारार्थ और वहाँ के आर्यों के पारस्परिक मनो मालिन्य के निवारणार्थ मौरिशसकी यात्रा करेंगे।

हमसे विदा लेने के बाद श्री० गयासिंह जी ने २०-२१ दिन के अर्से में भारत के भिन्न २ प्रान्तों यथा बम्बई, सी० पी०, काठियावाड़, राजपूताना, बिहार, बगाल, पजाब, यू० पी० सिन्ध इत्यादि में आर्य्य समाज की प्रगति का अध्ययन करने और उस अध्ययन से मौरिशस में आर्य्य समाज को जो लाभ पहुंचाया जा सकेगा लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से यात्रा की। वस्तुतः उनका धर्म प्रेम और साहस प्रशसनीय है। उनकी यात्रा का संक्षिप्त हमारे सामने है। उन्हें सिन्ध, गुजरात और काठियावाड़ में आर्य्य समाज की गति अन्य प्रान्तों की तुलना में बहुत मन्द देख पड़ी है। इन प्रान्तों के आर्य्य भाइयों को विशेष रूप से आर्य्य समाज के प्रचार की ओर ध्यान देना चाहिये।

दृष्टि कोण में सुधार

महिला नैशनल कौंसिल की भारतीय शाखा ने अभी हाल में खाद्य पदार्थ सम्बन्धी एक उपसमिति की रिपोर्ट को स्वीकार किया है तथा एक प्रस्ताव द्वारा भारतीय सरकार के स्वास्थ्य सुधार तथा पुष्टिकारक भोजन सम्बन्धी उपायों और यत्नों की प्रशसा की है, तथा गवर्नमेन्ट को प्रेरणा की है कि वह अच्छे और सस्ते दूध के प्रबन्ध पर विशेष ध्यान दे हाथ के कुटे हुये चावलों की बाजारों में व्यवस्था करे और खाने की चीजों में जो इन दिनों अन्धाधुन्ध मिलावट होरही है उसे बन्द करे।

महिला कौन्सिल को यह प्रस्ताव पास करने के लिये हम बधाई देते हैं। हमें प्रसन्नता है महिला कौन्सिल ने स्वास्थ्य वर्द्धक तथा पुष्टिकारक भोजन की आवश्यकता की ओर अपना ध्यान दिया है। राजनैतिक तथा अन्य प्रकार की समानताओं के शोर में जिसपर बहुतसी हमारी बहने पिछले कई वर्षों से ज़ोर देरही हैं हमारी यह धारणा हो गई थी कि वे आवश्यक बातों की उपेक्षा कर रही हैं। पश्चिम की नारियों का अन्धाधुन्ध अनुकरण करते और पश्चिमको प्रकाश स्थान समझते हुए हमारी बहुतसी देवियोंने इस बातकी लगभग बिलकुल उपेक्षा की थी कि उनका प्रारम्भिक और जो वास्तविक कार्य्य-क्षेत्र घर है वहां उन्हें राष्ट्र के

लिये उत्तम नागरिकोंका पालनपोषण और शिक्षण करना चाहिये। परिवार के लोगों के लिये उपयुक्त भोजन की व्यवस्था करना उनका एक मुख्य काम है। राजनैतिक और आर्थिक समानता का पश्चिम की स्त्रियों के लिए भले ही कोई महत्व हो परन्तु जिन स्थितियों में हमारी बहने हैं और उनकी जो परम्पराएं और आदर्श हैं उनको देखते हुए परिवार का पालन-पोषण करना उनका एक मुख्य कर्तव्य है। महिला-समितियों द्वारा, दुःख है स्त्रियों के इन कर्तव्यों की पिछले वर्षों मे बहुत अवहेलना हुई थी।

भारतीय चिकित्सा प्रणाली

अभी पिछले दिनों श्रीमती विजय लक्ष्मी मिनिस्टर यू० पी० सरकार ने यू० पी० असेम्बली में बजट की बहस के सिलसिले मे वैद्यक और यूनानी भारतीय चिकित्साओं के समर्थन और संरक्षण मे एक बहुत उत्तम और खोज-पूर्ण व्याख्यान दिया था। उनके व्याख्यान का सार यह था कि इन दोनों, को जो हमारी लापरवाही और राजनैतिक दासता के कारण कोने मे डालदी गई है कांग्रेस सरकार द्वारा प्रोत्साहन मिलेगा और उन्हें उनकी प्राचीन महत्ता की ओर लेजाने की दिशा मे यत्न किया जायगा।

वर्तमान डाक्टरी व्यवसाय पर प्रकाश डालते और सेवाका उत्कृष्ट आदर्श रखते हुये उन्होंने अपना भाषण इस प्रकार समाप्त किया।

"मैं समझती हू इस सभा तथा उसके बाहर डाक्टरों के सम्बन्ध मे काफी कहा जाचुका है।

चिकित्सा के पवित्र पेशे के किसी सदस्य विशेष के सम्बन्ध मे मुझे कुछ नहीं कहना है। परन्तु मैं यह कहना चाहती हूं कि जहां तक डाक्टरों का सम्बन्ध है पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली का व्यापारिकता मे तेजी के साथ पतन हो रहा है और जब तक यह नही रोका जायगा तब तक यह उच्च विज्ञान वह नहीं होगा जो होना चाहिये। यह बात भारतवर्ष तक ही सीमित नहीं है वरन तमाम पश्चिम में पाई जाती है। मिशनरी भाव का, जो इस पेशे की जान है ह्रास हो रहा है और सेवा के भाव का लोप हो रहा है। डाक्टर लोग वर्गों में बट गए हैं और उनमें हर प्रकार की तुच्छ ईर्षाएं पाई, जाती है। मै यह भी कहना चाहती हू कि जब हम पश्चिम की नकल भले के लिये करने लगें तो हमे उस पश्चिम की नकल करनी चाहिए जो हमे कुछ सिखा सकता हो। हमे उस पश्चिम की नकल नहीं करनी चाहिये जिसको उसके ही विचारक बुरा कहते हों।

इस सम्बन्ध मे भारतीय रीति को अपनाना चाहिये। वह रीति यह है कि "सेवा" पैसों की माप से नहीं नापी जानी चाहिये। राष्ट्र-निर्माण के लिये हमें आज इसी भाव की जरूरत है और मुझे इसमे सन्देह नहीं है यदि समय दिया जाय तो भारत के बच्चों के दिमाग में सेवा का यह भाव घर कर जायगा और हम न केवल आराम पहुचाने में ही वरन् चरित्र बनाने मे भी सफल होंगे और एक बार फिर हमारा ज्ञान विज्ञान और हमारी चिकित्सा प्रणाली बुद्धि पूर्वक उन्नति करती हुई बौद्धिक कौशल की उस उच्चता को प्राप्त करेगी जिस पर से अन्याय पूर्वक वह गिरादी गई है।"

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली,

से प्रकाशित

मई १९३८ Reg. No L. 2121.

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का [illegible]) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

लेख-सूची

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ | वैशाख १९९५ | अङ्क ३
मई १९३८ ई० | दयानन्दाब्द ११५

* वेद की शिक्षाएँ *

न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन । ऋग०१०—१५२—१

ईश्वर के भक्त को कोई नष्ट नहीं कर सकता और न जीत सकता है ।

They who have dedicated their lives to the service of the Lord are neither destroyed nor conquered

तस्य ते भक्तिवांसः स्याम । अथर्व, ६—७९—३

हे प्रभो ! हम तेरे भक्त हों ।

May we all become devoted to Thee, O Lord !

अध्यात्म-धारा

हम क्या हैं ? इस प्रश्न के उत्तर के साथ जीवन का अर्थ जुड़ा है। खाना-पीना और मौज उड़ाना ही जीवन का अर्थ है, इस भावना के वशीभूत हो हम जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूल जाते हैं। हमारे चारों ओर की दृश्यमान और निरन्तर बदल ने वाली दुनिया हमारी इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है और हमारी आखें सासारिकता की खाई से ऊपर नहीं उठतीं है। हम आत्मा को भूल जाते है। हमारी इन्द्रियों का स्वभाव बाहर की ओर देखने का है इसी लिए उनके वशीभूत हो हम भीतर की ओर न देखकर बाहर की ओर देखते हैं। हमें आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये, इसी के द्वारा हम जीवन का अर्थ समझ सकते हैं और इसी के द्वारा हम उसका व्यवहार जान सकते हैं। आत्मा के अस्तित्व और अनादित्व के सम्बन्ध मे विशेष कहने की जरूरत नहीं है। ये दोनों बातें हमारे यहा स्वय सिद्ध हैं। और जो लोग इन मे विश्वास नहीं रखते थे अब वे भी विश्वास करने लग गए हैं।

मैं कहाँ से आया हूँ ? और मैं क्या हूँ ? ये प्रश्न पवित्रात्माओं और कर्म परायण व्यक्तियों के लिए भले ही साधारण हों परन्तु जो व्यक्ति ससार के अनित्य आनन्दो मे लिप्त हैं उन साधारण व्यक्तियों के लिए कौनसा मार्ग है ? इस प्रकार के लोगों के लिए आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय और सत्पुरुषों का सत्संग, जिन की आत्मा उन्नत और बलिष्ठ हो मुख्य मार्ग है। यहाँ सत्पुरुषों से मतलब उन लोगो से नहीं है, जिन्हें आत्मिक ज्ञान तोते की नाईं रटा हुआ होता है, वरन् उन लोगों से है जिन्हे वह ज्ञान जीवन के अनुभव से प्राप्त होता है और जो ऋषि होते है केवल विचारकही नहीं होते है। ऋषि उन लोगों को कहते हैं जो अपनी जाग्रत अवस्था मे,साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा अन्तिम सचाइयों को ज्यादा गभीरता से अनुभव करते है। वे आध्यात्मिक अन्वेषक होते हैं जिनके लिए अध्यात्मिक जीवन किताबी विद्या का विषय नहीं होता है वरम् जिनका उन सचाइयो से साक्षात् कार होता है जो इन्द्रियों से ऊपर होती हैं। केवल विचारक न्यूनाधिक रूप मे दार्शनिक होते है जो वाद विवाद और तर्क मे निमग्न और सन्तुष्ट रहते हैं। श्रीयुत रसकान मनुष्यों की इन दो श्रेणियो मे अपने एक निबन्ध मे निम्न प्रकार भेद दर्शाते हैं—

"जितना अधिक मैं इस विषय पर सोचता हूँ उतना ही अधिक मुझ पर अङ्कित होता है कि मनुष्य की आत्मा सबसे बड़ा कार्य जो इस दुनियाँ मे करता है वह किसी वस्तु को देखना और उस देखे हुए को सीधे सादे तरीके मे प्रगट करना है। सैकड़ों आदमी उस आदमी की चर्चा कर सकते हैं जो सोच सकता है परन्तु हजारों आदमी उसका

सवाल कर सकते हैं जो देख सकता है। साफ २ रीति से देखना ही कविता, ज्ञान और धर्म है"।

आत्म-ज्ञान के जिज्ञासु के लिए हृदय और दिमाग के कुछ विशिष्ट गुणों से युक्त होना चाहिए। सबसे पहली चीज नम्रता है। इस के बिना जिज्ञासु को आत्म ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। शंकराचार्य जी के पास एक शिष्य था जिसने उनकी बड़े दिनों तक सेवा की परन्तु फिर भी उन्हों ने उसे आत्म-ज्ञान की शिक्षा न दी। एक बार शंकराचार्य जी अकेले बैठे थे, उन्होंने अपने पीछे किसी के आने की आहट सुनी। उन्होंने पुकारा कौन है ? शिष्य ने उत्तर दिया 'महाराज मैं हूँ।" शंकर ने कहा "यदि तुम्हें 'मैं' शब्द इतना अधिक प्रिय है तो तुम इसे या तो अपरिमित रूप से फैलाओ या उसका सर्वथा परित्याग करदो।"

जिज्ञासु के लिए दूसरी वस्तु 'तर्क वितर्क' है उसे आत्म-ज्ञान की प्रबल प्रेरणा होनी चाहिये और सत्पुरुषों से तर्क वितर्क करना चाहिये।

तीसरी योग्यता श्रद्धा और विद्वानों की सेवा है। सत्संग से हृदय पवित्र होता है और सेवा श्रद्धा से शरीर और दिमाग का शिक्षण और नियन्त्रण होता है।

ससार के बड़े २ सभी शिक्षको ने इस बात पर बल दिया है कि ज्ञान की प्राप्ति और उस प्राप्त ज्ञान के अमल से ही कल्याण होता है। वह ज्ञान और कर्म शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। भले ही उसे तुम कहीं से भी क्यों न प्राप्त करो, और यह ज्ञान परतंत्रता के बंधनो को ढीला करने वाला होना चाहिये। उस ज्ञान से मृत्यु पर विजय प्राप्त करके कर्म से अमरता की सिद्धि करनी चाहिए। आत्म-ज्ञान के जिज्ञासु को भौतिक जीवन में मोह छोड कर हर प्रकार के त्याग और तपस्या के लिये तय्यार रहना चाहिए। उसे इस संसार में लिप्त हरगिज न होना चाहिए वरन् अपने कार्य की सिद्धि के लिए इस दुनिया को साधन समझते हुए उसका उचित उपयोग करना चाहिए। इसका अर्थ अपने को जीवन की समस्याओं और खतरों से पृथक रखना नहीं है और न इसका मतलब अपने सासारिक कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व से बचना ही है।

ससार में लिप्त होने का एक मुख्य कारण मनुष्य का बड़ी २ आशाओं का बाधना बतलाया जाता है। इसी लिए धर्म ग्रन्थों में अपने कर्त्तव्य कर्मों के फल की इच्छा न करने की शिक्षादी गई है। इसका भाव यह है कि आध्यात्मिक प्रयत्नों की सफलता निस्वार्थ भाव के गुण को धारण करने पर निर्भर है।

आध्यात्मिक जीवन एक कला है, क्यों कि यह उस सुन्दर वस्तु की प्राप्ति का यत्न है जो प्रत्येक व्यक्ति में छुपी होती है। जीवन की सच्ची कला आत्मिक जीवन में पूर्णता को प्राप्त होती है और यह जीवन आत्मा द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने में छुपा है या बाहर से भीतर की ओर चलकर आन्तरिक उन्नति करने में है और यही आन्तरिक उन्नति मनुष्य की वास्तविक उन्नति कहलाती है।

सत्यार्थ प्रकाश लेख माला

नियोग और पुनर्विवाह

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी]

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे महर्षि जी ने यह पाठ लिखा है।

प्रश्न—स्त्री और पुरुष का बहु, विवाह होने योग्य हैं वा नहीं ?

उत्तर—युगपत् न, अर्थात् एक समय मे नहीं।

प्रश्न—क्या समयान्तर में अनेक विवाह होने चाहियें ?

उत्तर—हां ... किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य वर्णों में क्षतयोनि स्त्री, क्षत वीर्य पुरुष का पुनर्विवाह न होना चाहिये।

प्रश्न—पुनर्विवाह में क्या दोष है ?

उत्तर—(पहिला) स्त्री पुरुष मे प्रेम न्यून होना क्यों कि जब चाहे तब पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष छोड़ कर दूसरे के साथ सम्बन्ध करले।

दूसरा—जब स्त्री वा पुरुष पति व स्त्री के मरने के पश्चात् दूसरा विवाह करना चाहे तब प्रथम स्त्री वा पूर्व पति के पदार्थों को उड़ा लेजाना

तीसरा—बहुत से भद्र कुल का नाम वा चिन्ह भी न रह कर उसके पदार्थ छिन्न भिन्न हो जाना।

चौथा—द्विजों में पुनर्विवाह वा अनेक विवाह कभी न होना चाहिये।

प्रश्न—पुरुषों को नियोग करने की क्या आवश्यकता है क्यों कि वह दूसरा विवाह करेगा।

उत्तर—हम लिख आये हैं द्विजों में स्त्री और पुरुष का एक ही वार विवाह होना वेदादि शास्त्रों मे लिखा है, द्वितीय वार नहीं।

प्रश्न—नियोग मरे पीछे ही होता है वा जीते पति के भी ?

उत्तर—जीते भी होता है।

प्रश्न—...रहा न जायतो फिर क्या करें ?

उत्तर—...किसी से नियोग करके उसके लिये पुत्रोत्पत्ति करदे परन्तु वेश्यागमन वा व्यभिचार कभी न करें।

इस उद्धरण से निम्न बातें सिद्ध होती हैं।

(१) नियोग, (२) नियोग पति के जीते भी हो सकता है (३) पुनर्विवाह।

(१) देवराद्वा सपिण्डाद्वा स्त्रिया सम्यङ्नियुक्तया।
प्रजेप्सिताधिगन्तव्या संतानस्य परिक्षये॥ मनु ६. ५६

सतान न होने की अवस्था मे संतान की इच्छा वाली स्त्री विधि पर्वक देवर (पति के भ्राता) अथवा सपिण्ड के पास संतानार्थ जाय।

यह श्लोक सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि जी ने लिखा है।

अपतिरपय लिप्सुर्देवरात्। पिण्ड गोत्रर्षि संबंधेभ्यो योनि मात्राद्वा।
नादेवरास्येके। गौतम धर्म सूत्र प्रश्न २ अध्याय ६ सूत्र ४, ६, ७।

पति की मृत्यु पर संतान की इच्छा वाली देवर, सपिण्ड, सगोत्र, समान प्रवर अथवा ब्राह्मण से संबंध करके संतान वाली बने। कई कहते हैं केवल देवर से ही संबंध करे अन्य से नहीं।

अत ऊर्ध्वं गुरुभिरनुमता देवराज्जनयेत्पुत्र-मपुत्रा।

बोधायन धर्म सूत्र प्रश्न २ अध्याय २ सूत्र ६२

एक वर्ष वा ६ मास पति की मृत्यु पर बीत जांय, तब गुरु आदि से अनुमति लेकर देवर से संबंध करके पुत्रवति बने।

अपुत्रा गुर्वनुज्ञातो देवर पुत्र काम्यया।

इन प्रमाणों से मृत पति स्त्री को नियोग का विधान है।

सपिण्डो वा सगोत्रो वा घृताभ्यक्त ऋतावियात्। याज्ञवल्क्य विवाह प्रकरण पुत्र रहित स्त्री गुरु की आज्ञा से देवर, सपिण्ड, सगोत्र से ऋतु समय शरीर में घृत लगाकर संतान उत्पन्न करे।

(२) जीवित पति वाली स्त्री के नियोग में प्रमाण—

यस्तल्पज प्रमीतस्य क्लीवस्य व्याधितस्यवा।

स्वधर्मेण नियुक्ताया स पुत्र क्षेत्रज स्मृत॥ मनु अध्याय ९, १६९। जो मृत, नपुसक प्रसव विरोधी व्याधि युक्त पति की स्त्री नियोग से संतान उत्पन्न करे वह क्षेत्रज पुत्र कहलाता है।

इसमें नपुंसक और व्याधि युक्त जीते समय के विशेषण हैं।

तदलाभे नियुक्तां ना क्षेत्रजो द्वितीय.। वसिष्ठ स्मृति अ० १७।

औरस न होने पर नियोग से उत्पन्न क्षेत्रज पुत्र होता है।

इसमें भी पति के जीते समय नियोग का विधान है।

(३) पुनर्विवाह

या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया।

उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते। मनु० अध्याय ९, १७५। कल्लूका, या भर्त्रा परित्यक्ता मृत भर्तृका वा स्वेच्छया न्यस्य पुनर्भार्या भूत्वा...।

जो पति से छोड़ी हुई अथवा विधवा अपनी इच्छा से अन्य पति से विवाह करके संतान उत्पन्न करे उसे पौनर्भव कहते हैं।

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतिते पतौ।

पंचस्वापत्सु नारीणा पतिरन्यो विधीयते॥ पराशर स्मृति ४ ३०।

पति—विदेश गये (जिसका पता न लगे) मरे, सन्यासी बने, नपुंसक होने, पतित हो जाने पर स्त्री अन्य पति करले।

इस श्लोक पर सत्यार्थ प्रकाश में यह टिप्पणी है—

"क्या स्त्री के पाच ही आपत्काल हैं जो रोगी पड़ा हो वा लड़ाई हो गई हो इत्यादि। आप-काल पाच से भी अधिक हैं"।

या च क्लीवं पतितमुन्मत्त वा भर्तारं मुत्सृज्यान्यं पति विन्दे मृतेवा सा पुनर्भूर्भवति। वसिष्ठ स्मृति अध्याय १७, २१।

जो स्त्री नपुंसक, पतित वा उन्मत्त पति को छोड़ के अथवा पति के मरने पर अन्य पति करती है वह पुनर्भू कहाती है।

'विधवोद्वाह मीमांस' लेखक बदरीदत्त जोशी

शर्मा मैशीन प्रिंटिङ्ग प्रेस, मुरादाबाद सम्वत१९८० विक्रमी प्रथम संस्करण के पृष्ठ ९६ पर लिखा है

अब हम कुछ ऋषियों के प्रमाण 'सनातन धर्म' नामक पुस्तको मे से उद्धृत करते हैं।

नष्टे सन्न्यासमा पन्ने व्याधि ग्रस्ते चभर्त्तरि।

पुन स्त्रीणा विवाहः स्यात्कलावपि न संशय अत्रिस्मृति यह बात संशय रहित है कि कलियुग में भी, यते के माने, संन्यास लेने, व्याधिग्रस्त होने पर भी पुनर्विवाह कर सकती है। मरणानन्तरं भर्तर्यपनाहत योनय।

स्त्रियो विवाह मर्हन्ति नात्र कापी विचारणा। गौतम स्मृति। पति की मृत्यु पर यदि स्त्री सन्तान रहित हो अथवा अक्षत योनि हो तो विवाह कर सकती है, इस में कोई सन्देह नहीं है।

पुरुषाणामिव स्त्रीणा विवाहा बहवो मताः।

भर्तृ नाशे पुनः स्त्रीणा पुन्सो पत्नी नये यथा वैशपायन स्मृति, पुरुषों की भाति स्त्रियों के भी बहुविवाह संभव है पति मरने पर स्त्री भी विवाह कर सकती है जिस प्रकार पत्नी मरने से पति करता है।

ब्राह्मणा: क्षत्रिया वैश्या शूद्रा स्वकुल योषिताम्। पुनर्विवाह कुर्वीरन्नन्यथा पाप संभव। जावालि चारों वर्ण अपनी विधवा स्त्री का पुन विवाह करें अन्यथा अचार दोष की संभावना है।

पत्नी नाशे यथा पुरुषो भर्तृ नाशे तथा स्त्रियां पुनर्विवाह कर्त्तव्य कलावपि युगे तथा। व्याघ्रपाद जिस प्रकार पत्नी नाश पर पुरुष पुन विवाह कर लेता है इसी प्रकार पति नाश पर स्त्री कर सकती है कलियुग मे दूसरे युगों की भाति। इसी प्रकार और स्मृति तथा पुराणों के श्लोक लिखे हैं मैंने पुराणों को इस में कोई स्थान नहीं दिया और स्मृतियों के भी कई छोड दिये है मेरी सम्मति में यह प्रमाण पर्याप्त है यदि कोई अधिक देखना चाहेतो उसी पुस्तक को देखलें।

इसी प्रकार महाभारत से भी उद्दालक पाण्डु आदि के नाम लिखे जा सकते हैं यह सब देखकर निश्चय होता है स्मृति मे नियोग और पुनर्विवाह दोनों विधान रुप से लिखे गए हैं अब विचारना यह है इस समय तक पत्नी देहात पर किसी महा-पुरुष धर्म विधायकने पतिपर पुन विवाह करने में कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है केवल महर्षिदयानन्द जी हैं जो खुले शब्दों मे लिखते है द्विजों मे क्षत वीर्य पुरुष का पुन विवाह न होना चाहिये, आर्य समाज ने भी इस विषय को अधिक महत्व नहीं दिया है क्योंकि जहा आर्य समाज मे महाधन स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वर्गीय लालानन्द लालजी आदि व्यक्तियो ने पत्नी देहात के पश्चात् पुनर्विवाह नहीं किया वहा करने वालों की संख्या न करने वालों से अधिक है और करने वालों को आर्य समाज मे विशेष घृणा से भी नहीं देखा जाता है इस लिये सत्यार्थ प्रकाश का यह लेख दोनों पर प्रतिबध लगाता था जब पुरुषों ने इस का पालन पूर्ण रीति से नहीं किया तो स्त्रियों से यह आशा करना कि वह विवाह न करें उचित नहीं है।

द्विजों मे स्त्रियों पर पूर्ण रुप से पुनर्विवाह का प्रतिबन्ध था परन्तु समय ने उनको भी इस स्थान से हिला दिया है, अब भारत के प्रत्येक

प्रांत में प्रत्येक वर्ष में पुनर्विवाह सुनने में आते हैं उनको विशेष घृणा से नहीं देखा जाता है, यदि कोई देवी स्वय न करना चाहे तो न करे जो करना चाहे वह कर सकती है भविष्य में यह प्रथा बढ़ेगी ऐसी आशा की जा सकती है।

इस समय भारत वर्ष के किसी प्रांत मे नियोग की घटना सुनने में नहीं आई है। प्रत्येक प्रांत मे प्रत्येक जाति में (ईसाई, मुसलमान आर्य) पति के होतेहुए पर पुरुष गामिनी स्त्री कोई न कोई मिल जायगी जिस का पति को भी पता हो परन्तु वह व्यभिचार हैं नियोग नहीं, पति की मृत्यु पर इस समय दो अवस्थाए हैं, एक धन सपन्न स्त्रिये हैं और दूसरी धन रहित स्त्रियें हैं। इन दोनों मे ब्रह्मचारिणी रहने वाली भी हैं वह स्त्राध्वी, पूज्या हैं। और प्रथम कक्षा मे जो जितेन्द्रिया नहीं है विषयवासना युक्त हैं उनको एक ओर धन आकर्षण करता है दूसरी ओर विषय प्रबल है वह अपनी ओर खींचते है धन लोभसे वह उस गृहको छोड़ना नहीं चाहती इस लिये वह व्यभिचारिणी होकर भ्रूण इत्यादि पाप कर्म करती है। मेरी सम्मतिमे यदि वह नियोग करले तो इन पापों से बच सकती है। बिना नियोग के उनके लिये और कोई उपाय प्रतीत नहीं होता है। महर्षि जो ने सत्यार्थ प्रकाश में इनके लिये ही 'पूर्व पति के पदार्थों को उठा लेना' लिखा है।

दूसरे जो निर्धन विधवायें हैं, उनके धनहरण की कथा हीं क्या उनको तो अपना पेट भरने की चिन्ता है,और युवा अवस्था के कारण विषय प्रवृत्ति भी है यदि उनका पुनर्विवाह कर दिया जाय तो उनके जीवन की दोनों कठिनाइया दूर हो सकती हैं। उनके पास पूर्व पति का धन न होनेसे धन ले जाना असम्भव है, और पूर्व पति के लिये पुत्रोत्पन्न करने से भी कोई लाभ नहीं उस पुत्र का पालन पोषण कहा से होगा, माता को तो अपना पेट भरना दु साध्य हो रहा है। इस प्रकार विधवाओं का नियोग और पुनर्विवाह हो सकता है।

शष रहा जीते पति के पुत्रार्थी का नियोग, शास्त्र इसकी आज्ञा देता है। पुत्रार्थियो के लिये अन्य उपाय भी दत्तक कृत्रमादि पुत्रों द्वारा किया है उन साधनों मे नियोग भी एक साधन है यह पुत्रार्थी का इच्छा पर है जिस साधन को प्रयोग मे लाना चाहे ला सकते हैं।

इसप्रकार मेरी सम्मति का सार यह है—

(१) जो धन सपन्न,विषय वासना युक्त विधवाऐं है, उनको नियोग कर लेना चाहिये।

(२) जो धन रहित, विषय वासना वाली विधवाए है वह पुनर्विवाह करें।

(३) क्लीव दीर्घ रोगी आदि पति वाली स्त्री और पति यदि पुत्र की अभिलाषा रखते है और साथ ही पृथक् भी होना नही चाहते है वह कृत्रमपुत्र बना सकते हैं यदि स्त्री को विषय वासना भी है तो उसके लिये भी नियोग ही है, वह भी पति के भ्राता से किया जाय तो ठीक है, यदि पति या पत्नी पृथक् होना चाहें तो पृथक् होने पर वह स्त्री भी पुनर्विवाह करले।

विज्ञान

[श्री० रघुनाथ प्रसाद जी पाठक]

आर्य धर्म मे विज्ञान की वास्तविक भावना सृष्टि के कार्य और कारणभाव की जाँच करना है और उस ज्ञान के द्वारा परतन्त्रता के बन्धनों को छिन्नभिन्न करते हुये मोक्ष की सिद्धि करना है। इस विज्ञान से सृष्टि, जीव ईश्वर कर्मफल पुनर्जन्म, प्रलय तथा ईश्वर प्राप्ति और सृष्टि के उचित उपयोग का रहस्य स्पष्ट होजाता है। इन सिद्धान्तो के मौलिक ज्ञान और सृष्टि उपयोग की मोलिक विधि अर्थ और काम के ठीक उपयोग से मोक्ष सुलभ हो जाता है। एक समय था जब पश्चिम का विज्ञान ईश्वर जीव इत्यादि सचाइयो का कतई निषेध करता था और यह बडे भयङ्कर अनर्थों के लिये जिम्मेवार रहा था। परन्तु समय के प्रवाह से इस विज्ञान ने पलटा खाया और इसे जीव, ईश्वर, इत्यादि सचाइयों को स्वीकार करना पडा। विज्ञान का यह युग डार्विन इत्यादि नास्तिक वैज्ञानिकों के युग के नाम से प्रसिद्ध है। आज समय के प्रवाह ने इस नास्तिक विज्ञान को आस्तिकता के रग से रग दिया है, भले ही पूरे तौर से गाढे रंग मे नहीं। सचमुच मानव जाति के आधुनिक युग मे यह बडे महत्व की बात है और भारत के प्राचीन ऋषियों की बुद्धि के चमत्कारों की अकाट्यता और महत्ता की द्योतक है, आज बड़े २ वैज्ञानिक अपनी सतत खोजो और अन्वेषणाओं के फल स्वरूप विज्ञान को परमात्मा की सृष्टि के रहस्यों को खोलने वाला एक मात्र साधन स्वीकार करने के लिये बाधित हुए हैं। वे मानते और कहते हैं, कि यह विश्व विचार मय है, इसके पीछे कोई विचारवान महान सत्ता है। निस्सन्देह वैज्ञानिक क्षेत्र मे यह बात युगान्तरकारी है और इसका परिणाम भी मानव जाति की भलाई की दृष्टि से शुभ ही सिद्ध होगा। होसकता है यह परिणाम कुछ देर से हो।

भारतवर्ष और पश्चिम मे सत्य मालूम करने के तरीको मे एक मुख्य भेद है। भारतवर्ष ने हमेशा अपने अन्वेषणों को भले ही वे वैज्ञानिक रहे हो या अन्य किसी प्रकार के, जीवन के आध्यात्मिक अङ्ग पर केन्द्रित रक्खे हैं, और पश्चिम आध्यात्मिक लाभों की अपेक्षा साईस की खोजो के क्रियात्मक फायदों पर अधिक ल देता है। भारतवर्ष का इन कारणों से विदेशी लोगों ने बहुत मजाक उड़ाया है। भारतवर्ष को उन्होंने दार्शनकों, रहस्य और आदर्श वादियों या स्वप्न लेने वालों और जीवन तथा मृत्यु की अप्रत्यक्ष बातों का व्यर्थ विचार करने वालों का देश प्रगट किया है। ऐसा करते हुए भारत वासियों की उदाहरण के रूप मे पेश होने वाली सुख समृद्धि और सम्पत्तिको वे कदाचित भूल जाते प्रतीत होते थे। भारतवर्ष की सृजनी प्रेरणा को पश्चिम की सृजनी प्रेरणा से पृथक करने वाली

तीन चीजें रहीं हैं और वे मानवी-प्रतिभा के सदु-पयोग पूर्वक मानवी विचारधारा को समुन्नत करते हुए मनुष्य के हर्ष समुदाय और संस्कृति में योग देनेके अपने ऊंचे आदर्श वाद को चरितार्थ करना और ससार में सुख और शांति के हितों को समुन्नत करना रही है।

उन्होंने कभी भी मानवी प्रतिभा और बुद्धि के साथ व्यभिचार नहीं किया है और न होने दिया है। जैसा कि आजकल युरोप और अमेरिका के साइन्सदा नर संहारक आविष्कारों मे कर और कराके मानवी प्रतिभा के प्रति घृणा पैदा करने का कारण बन रहे हैं. और मनुष्य जाति के प्रति अक्षम्य अपराध के भागी बन रहे हैं। केवल भौतिक उद्देश्यों के लिये साइन्स की अन्धाधुन्ध ढ़ूंढ़ तलाशों के भयंकर परिणामों और विज्ञान की बहुमूल्य सम्पदा के दुरुपयोग ने पश्चिम में मानव जीवन और प्राणी मात्र पर जो गजब ढाए हैं भारत उन सब से पूर्ण परिचित है। नि सन्देह भौतिक विज्ञान ने मनुष्य समाज को लाभ पहुंचाया है। परन्तु इन लाभों का पलड़ा उन ऊचे उद्देश्यों के मुकाबले मे जो इसे पूरे करने चाहिए थे हल्का रहा है। आज भारतवर्ष को अपनी आर्थिक स्थिति की उन्नतिके लिए विज्ञान से पूरा २ लाभ उठाने की सलाह दी जाती है। यह सलाह ठीक है परन्तु उसके लिए इस सलाहको वहीं तक ही क्रिया में लाना लाभप्रद और उचित होगा जहां तक उसकी आध्यात्मिक सम्पदा जो उसकी बहु-मूल्य सम्पति रही है और इस समय भी है अक्षुण्य बनी रहे।

बर्ट्रेंड रसेल (वैज्ञानिक दृष्टिकोण (The Scentific out look) में कहते हैं।

"ज्ञान का प्रेम जिसके कारण साइन्स की उन्नति हुई है दो प्रकार की प्रवृत्ति का फल है। हम किसी पदार्थ के ज्ञान में प्रवृत्त हो सकते हैं एक तो इस-लिए कि हमें उस पदार्थ से प्रेम है दूसरे इसलिये कि हम उसपर शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। पहिला उद्देश्य विचारात्मक ज्ञान की ओर प्रवृत्त करता है और दूसरा व्यवहारिक ज्ञान की ओर। शक्ति का भाव व्यवसाय वाद और राजनैतिक चालबाजियोंसे सम्बधित है यह उपयोगिता वाद और धूर्तता वाद के साथ भी जुड़ा है। शक्ति अपने में खतरनाक नहीं है। शक्ति के लिए शक्ति संचय करना हानि कारक है। वर्तमान जगत के नेता शक्ति के मद में चूर हैं। शक्ति जीवन का उद्देय नहीं है बल्कि दूसरे उद्देश्यों के लिये साधन है। और जबतक मनुष्य यह नहीं याद करेंगे कि शक्ति का प्रयोग ऊचे उद्देश्योंके लिये हुआ करता है तबतक विज्ञान संसार का सम्मिलित लाभ जो उसे करना चाहिए नहीं करेगी।"

साइन्स के द्वारा मनुष्य समाज पर जो अत्या-चार हुए हैं वे बड़े भयानक और जघन्य हैं यहा उन्हें गिनाने की जरूरत नहीं। साइंस के अस्त्रों द्वारा चीन, स्पेन, और अबीसीनियां में जिस अधन्यता और नर सहार का प्रदर्शन ससार ने देखा है, वह पुराना नहीं ताजा ही है। चीन और स्पेन में तो अब भी यह जघन्य व्यापार जारी है। कहने की जरूरत नहीं यदि साईन्स मनुष्य को

ईश्वर भक्ति

श्री पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी के एक भाषण का सार—

खतौली मे जैनी साहिबान के साथ शास्त्रार्थ हो रहा था। जैनी 'जीव' की एक अवस्था का नाम ईश्वर मानते है। वे जगत का कर्ता ईश्वर नही मानते। प्रतिपक्षी ने सवाल किया "आप बहुत खुदा खुदा कह रहे है। जिस वृक्ष के नीचे मैं खड़ा हू इस में कौनसी तरतीब देख पड़ती है। आप कहा करते हैं कि परमात्मा की सृष्टि मे बुद्धि के अनुसार बनावट है इस वृक्ष मे क्या तरतीब है?" जैनियो के २० पण्डित उनके स्टेज पर बैठे थे। मैंने कहा 'ये पण्डित जो आपने कुर्सियो पर बैठाए है उनमे क्या तरतीब है? कहने लगे उनमे विद्या की तरतीब है? मैंने जवाब दिया। बस जिस वृक्ष के सम्बन्ध में आप पूछ रहे है उसमे तरतीब यह है कि इतना बड़ा वजन कितने बड़े तने पर होना चाहिए। फिर शाखे कितनी बड़ीं और कितने बड़े डंठल में निम्बोलियाँ लगना चाहिए"? क्या यह तरतीब नहीं। कहने लगे हम इसमें बहुत से परिवतन कर सकते हैं। मैंने कहा आप इसीलिये परिवर्तन कर सकते हैं, कि परमात्मा ने उनमे परिवर्तन की गुञ्जाइश रक्खी है। परमेश्वर ने भिन्न २ वृक्षों में भिन्न २ गुण रक्खे हैं। कहने लगे यह क्या तरतीब है? यदि तरतीब देखनी हो तो हमारे बाग में चलकर देखिये। एक ओर तमाम सतरे के वृक्ष है तो दूसरी ओर सेव के पेड़ है। लोगो को इस बात ने अपील किया कि वास्तव मे बाग मे तो तरतीब है परन्तु परमात्मा के बाग मे ऐसी कोई बात नहीं। मैंने उनसे पूछा यदि कोई आदमी शेक्सपीयर की Lambs Tales ले और किसी बच्चे से कहे कि इसमे से ए बी सी डी इत्यादि अक्षर सब छाँट लो। इसके लिये कितनी योग्यता चाहिए? आप यह बात किसी एम ए को सुपुर्द करेंगे या केवल अक्षर सिखाता को। यही हाल आपके बाग में है कि सतरे और सेब छटे हुए हैं।

पाशविक प्रवृत्तियों के साथ खिलवाड़ करती और राजनीतिज्ञो के हाथ मे संहार का अस्त्र बनी रही तो निश्चय ही शान्ति और भ्रातृत्व के भावो को बढ़ाने के अपने ऊंचे उद्देश्य मे वह सफल नही होगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतवर्ष साइन्स के प्रसादो से अपनी आर्थिक दुर्दशा को ठीक करने मे लाभ उठाए, उसी शर्त के साथ जिसका उल्लेख हमने ऊपर किया है और पश्चिम अपने वैज्ञानिक दृष्टि कोण मे आमूल परिवतन करदे और साईन्स तथा जीवनके वास्तविक उद्देश्य को समझ जाय तो इस प्रकार दो विचार धाराओ के सम्मिश्रण का फल मानव जाति के कल्याण के लिये एक ऊंची संस्कृति का प्रादुर्भाव होगा जिसकी आज नितान्त आवश्यकता है।

—※—

थोड़े पढ़े लिखे की निगाह थोड़ी होती है। किसी विद्वान की लिखी हुई एक किताब ऐस से शुरू होती है। एक बच्चे ने कहा "यह अजीब मामला है" कि पुस्तक ऐस से शुरू करता है। क्या विद्वान वही है जो ए. बी. सी डी सिलसिलेवार वाले जो इधर उधर करे वह विद्वान नहीं। वाह अच्छा तर्क है ?

जब मैंने यह कहा तो प्रति पक्षी महोदय ज़रा झेंप से गये। कहा आप भी ऐसा ही ईश्वर चाहते हैं जो ए बी सी डी पढ़ा करे।

यदि योग्यता न हो तो ख़त भी नहीं पढ़ा जाता। कहने लगे कि, सुनार लोग जब सोना गलाते हैं तो फूकनी में सोना खींच लेते है।' मैंने कहाँ बिलकुल गलत, क्या ठंडी फूकनी में गरम सोना आ जायगा और वे फूकते रहेंगे। बस वह इसी तरह की अक्ल के लोग हैं जो व्यर्थ की बातें कहते रहते हैं।

एक लड़का था। हिरण्यकश्यप और प्रहलाद की तरह का अर्थात् लड़का आस्तिक और पिता नास्तिक था। लड़के को पिता यही उत्तर देता कि तू हमसे पैदा हुआ है या हम तुझ से पैदा हुए हैं। तू हमें क्या सिखायगा। मूर्ख लोगों के पास बस यही बड़ी दलील होती है एक दिन लड़के ने हिम्मत की कि चाहे कुछ हो पिता को आस्तिक बना कर ही छोड़ूंगा यह दृढ़ निश्चय करके पुत्र ने यह काम किया कि जहाँ पिता बैठा करता था उसके पैड पर "नालायक" "बेवकूफ ' उल्लू का इत्यादि शब्द लिख दिये। अब ज्यों २ पिता जी का मेज पर आने का वक्त निकट आता है लड़के के दिल को धड़कन बढ़ रही है पिता जब मेज पर आये तो बस देखते ही गुस्से में आगये और कहने लगे 'यह उसी का काम है।" लड़का भी आगया। थोड़ा सा आगे बढ़ा पिता ने कहा 'मूर्ख' यह तूने क्या किया है ? तेरे सिवा और कोई नहीं होसकता।

बच्चे ने कहा 'पिता जी' आप किस बात से नाराज़ हैं ? पिता ने कहा 'ऐसी बुरी बातें क्यों लिखी ?" बच्चे ने पूछा किसने लिखी है ? कागज़ और पेंसिल ने ही तो लिखो है ? और आप कैसे कहते हैं। "तेरे सिवा और कोई नहीं लिख सकता।" बस इसी पर दोनों में झगड़ा होगया। पिताने कहा क्या ये स्वयं लिख सकती है ? बच्चे ने कहा "यदि कलम ज़रा सी खड़ी होजाय और हिल जाय तो बस लिख गई।"

बापने कहा "भला ऐसा भी कभी हो सकता है ? बच्चे ने कहा बस फैसला होगया। यदि यह बात है तो फिर ये सूर्य और चाँद क्या खुद ही चल रहे हैं या इन्हें कोई चला रहा है।"

पिता प्रसन्न होगया और बच्चे को शाबाशी दी।

आज नवयुवकों की बहु संख्या परमेश्वर को नहीं मानती है। जहाँ तक बनावटी ईश्वर का सम्बन्ध है मैं उनके साथ हूं। एक ताक में गणेश जी रक्खे थे। एक नवयुवक कहने लगे, क्या यह हमारा ईश्वर है ? मैंने कहा नहीं। यह गेट की पर (द्वारपाल) है। वास्तव में तो कोई इन्सान ऐसा नहीं हो सकता। अलबत्ता नकशा खींच सकता है।

एक और नवयुवक कहने लगे "बाबा जी सन्ध्या तो करते है परन्तु मैं उनके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं देखता। मुझे आप कोई ज़िन्दा मिसाल दें कि सन्ध्या करने से फ़ायदा होता है ? मैंने कहा यदि बाबा सिर्फ मन्त्रोच्चारण करता है तो मन्त्र की रक्षा होती है,

उसकी अपनी नहीं। यदि मतलब न समझा और समझ न किया तो कोई फायदा नहीं। जिस प्रकार कोई किसी नुस्खे को याद करे परन्तु उसके अनुसार आचरण न करे तो कोई लाभ न होगा। फिर उसमे कहा अपनी ही भाषा मे सन्ध्या क्यों न करली जाय। मैंने समझा था कि एक वेद मन्त्र के बहुत से अर्थ होते हैं।

सन्ध्या मे जो एक अर्थ उचित समझे लिख दिए हैं। यदि मन्त्रकी रक्षा न की जाय तो वह ख़ज़ाना जो इसके भीतर है खो जायगा। यदि रोटी बनने के बाद पत्नी से कहो कि पराठे बनाओ तो वह कैसे बनायगी। हाँ आटे से परोठा बन जायगा। आट से दलिया नहीं बनता अलबत्ता गेहू से दलिया बन सकता है। एक अर्थ करके सस्ती प्रार्थना तो करली जा सकती है। इस मन्त्र के जो और अर्थ उसमे से निकल सकते हैं वह आप न जान सकेंगे। इसलिये घ टे में रहेंगे पण्डित ज्वालाप्रसाद जी ने 'ये त्रिषप्ता' वाले मन्त्र के १६ अर्थ किए हैं । उपासना समझकर करनी चाहिये वरना कोई फायदा न होगा। एक पुरुष ने पूछा कि आप ने कहा है कि परमात्मा सब जगह है आप बता सकते हैं कि कोई जगह परमात्मा से खाली नहीं और वह सब जगह है। क्या गलाज़त और टट्टी में भी ईश्वर हैं ? उन्होंने साथ ही नाक पर रूमाल भी लगा लिया। मैंने कहा अजीब नाजुक मिजाजी है। यदि नजर आजाय तो न मालूम क्या हो। क्यो जी। जब वे बाहर तशरीफ लाते हैं तभी बदबू आती है न। अन्दर तो नहीं आती कहने लगे हां मैंने कहा तो पता लगा कि नाक बाहर काम करती है अन्दर नहीं। परमात्मा से प्रार्थना करे कि वह आपकी नाक का सम्बन्ध अन्दर करदे। कहने लगे वह तो बड़ी बदबलनी होगी। मैंने कहा सब चीजें मेरे परमात्मा के अन्दर हैं। जब आपके अन्दर का मैला आपको बदबू नहीं देता तो परमात्मा को कैसे देगा ?

——

High Thoughts (ऊँचे विचार)

Ability (सामर्थ्य)

(1) Ability involves responsibility power to its last particle is duty

सामर्थ्य का अर्थ उत्तर दायित्व और कर्तव्य होता है।

(2) To know how to hide one s ability is great skill

अपनी योग्यता कैसे छिपाई जाती है यह जान लेना सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता है।

(3) There is something that is much more scarce something finer for, something rarer than ability It is the ability to recognise ability

कोई चीज है जो बड़ी महगी है, बड़ी नाजुक और सुन्दर है और योग्यता से भी ज्यादा अलभ्य है। वह चीज योग्यता को समझने की योग्यता है।

(4) The winds and waves are always on the side of the ablest navigators

हवा और लहरें सदैव सुयोग्य मल्लाहों का साथ देती हैं।

रूस और धर्म

(ले०—एक भारतीय यात्री)

मास्को के पुश्किन स्क्वेअर में एक गिर्जे के सामने हमारी कार ठहरी। अन्य बहुत से गिरजों के सदृश यह गिरजा धर्म विरोधी अजायब घर में परिवर्तित हो गया है। दरवाजे के बाहर कुछ मिनटों तक हमें प्रतीक्षा करनी पड़ी, इस प्रतीक्षा का मुझे कोई सन्तोष जनक कारण नहीं बतलाया गया शायद अजायब घर की अध्यक्षा देवी कहीं दूसरी जगह चली गई थी। मैने अपनी गाइड (मार्ग-निर्देशिका) से अजायब घर की चीजों को समझाने के लिए कहा। अजायब घर बहुत बड़ा नहीं है परन्तु उसके कुछ संग्रह बहु मूल्य थे।

नकशों और चित्रों के द्वारा अनपढ़ जनता में यह विश्वास पैदा करने के लिए कि यह ससार और स सार की समस्त चीजें स्वयं विकसित हुई हैं और उनका बनाने वाला या परमात्मा कोई नहीं है विकासवाद के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है। यह तर्क निस्सन्देह गभीर और बुद्धिमान मनुष्य के तर्क का सामना नहीं कर सकेगा। क्रान्ति से पूर्व के दिनों में जिस प्रकार रूस के चर्च ने किसानों को बेवकूफ बनाया था और सन्तान प्राप्ति, अच्छी फसल, रोगों से निवृत्ति पापों से मुक्ति, और परमात्म दर्शन की झूठी आशाएँ दिलाकर उनके धन और सर्वस्व का अपहरण किया था उसी प्रकार धर्म विरोधी वर्तमान सरकार उनके सामने निस्सार तर्क और जीवन और प्रकृति की गलत फिलासफी रखकर उन्हें बेवकूफ बना रही है। सत्य और न्याय की वेदि के सम्मुख वर्तमान सरकार वैसीही अपराधी है जैसा रूस का प्राचीन चर्च था।

हम अजायब घर के उस हिस्से में पहुँचे जहाँ उन चीजों का सग्रह था जिन्हें जन साधारण पवित्र समझता था और जिनमें उनका विश्वास था कि वे न छुई जा सकती हैं और न उनकी आलोचनाही की जा सकती है। सुनहरी जिल्दों के बाइबिल, क्रास और अन्यान्य धर्म चिन्ह आज दर्शनीय चीजों के रूप में रक्खे हुए हैं, जिनकी किसी दिन हजारों स्त्री-पुरुष घुटने टेककर उपासना किया करते थे, मुसीबत और खतरे के समय जिनपर वे लोग आख मीच कर अपनी पूर्ण श्रद्धा रखते थे जिनसे वे लोक और परलोक में अपने सुखों की याचना किया करते थे, जिनके सामने वे अपने अपराध स्वीकार किया करते थे, इस अन्ध विश्वास से कि वे ईश्वर द्वारा मुआफ कर दिए जायेंगे। आज वे उन्हें छू सकते हैं और उनकी निस्सारता के सम्बन्ध में विचार कर सकते हैं। आज वे उन्हें साधारण ऐतिहासिक दर्शनीय चीजों से अधिक महत्व नहीं देते हैं परन्तु उनपर न तो बिजली ही टूटती है, न महामारियाँ उनके परिवारों को नष्ट करती हैं, न उनके हाथ और होठ गलकर टूटते हैं। इन सब बातों का नतीजा यह हुआ है

कि किसानों का यह विश्वास हो गया है कि जिन्हें उन्होंने ईश्वर मानकर देरतक उनकी पूजा, अर्चना की थी वे सब निर्जीव, शक्तिहीन झूठी और निकम्मी चीजें थीं जब उनमे अपमान से अपनी ही रक्षा करने की क्षमता नहीं है तो फिर वे दूसरों की कैसे रक्षा कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा और राजसी ठाठ वाले पादरियों का आकर्षण विदा हो गये हैं जिनके परमात्मा के साक्षात प्रतिनिधि होने की शिक्षा दी जाया करती थी। बाइविल की पवित्रता भी कूच कर गई है। धर्म्म विरोधी नए विचारों से प्रभावित किसान लोग बाइविल के पृष्ठों को सिगरेट के कागजो के तौर पर इस्तेमाल किया करते थे। उन्होने क्रासों को अग्नि के अर्पण कर दिया था और क़बरो के पत्थरो को उखाड़कर उन्हे अपनी इमारतों के काम मे ले आए थे।

मेरा विश्वास है यद्यपि बोलशेविक लोग आर्य्य धर्म्म के तर्क और फिलासफी पर विजय नही पा सकते हैं तो.भी-यह स्वीकार करना चाहिये कि 'ईसाई धर्म' के विरुद्ध पर्याप्त साक्षी और युक्तिया प्रस्तुत करने मे वे एक बड़ी सोमातक सफल हुए हैं और यह एक बहुत बड़ी चीज है। उन्होंने साबित कर दिया है कि बाइविल के बहुत से सिद्धान्त जो ईसाई धर्म्म की आधार शिला है एक दम गलत हैं सूर्य्य का पृथ्वी के चारों तरफ घूमना, सृष्टि की उत्पत्ति जिसके सम्बन्ध मे साईन्स बाईविल से बिल्कुल विरुद्ध बोलती है इत्यादि बाइविल की शिक्षाओ को अब कौन पढा लिखा समझदार स्वीकार कर सकता है। ये सब असत्य सिद्ध हो चुकी हैं। रूसियों ने बाइविल के विचारों और सिद्धान्तों की सचित्र व्याख्या की है और इसी के साथ ही उनके सम्बन्ध मे साइन्स मत दर्शा दिया है। उन्होंन ऐसे पत्र और साक्षिया प्रस्तुत की हैं जिनसे सिद्ध होता है कि पादरी लोग जनता क हितों को कुचल कर सदैव जार का पक्ष लिया करते थ। कुछ साक्षि यह प्रगट करता हैं कि जब कभी-बडी राजनैतिक गड-बड की सम्भावना होती थी तो पादरी लोग जार से सलाह करक काई धमिक पर्व और उत्सव की घोषणा कर देते थे जिससे धर्म जीवी किसानों का ध्यान बट जाया करता था। यह तथा इस प्रकार की बातें भोले भाले किसानो मे पादरियों के प्रति जिन्हें वे अपना गुरु और शुभ चिन्तक समझते थे घृणा और अश्रद्धा पैदा करन के लिए पर्य्याप्त समझी जा सकता हैं।

रूस का कट्टर पन्थी चच धम की रूढियों और क्रिया-कलापां पर ज्यादा बल देता था और इस प्रकार चर्च और पादरियो के प्रति सम्मान क बाह्य प्रदर्शन का खूब ढोल पीटता था। जब किसानो न उनके विरुद्ध बगावत की तो स्वभावत धम की रूढियो और स्वय धर्म के ही वे खिलाफ हो गए परन्तु रूस मे ईसाइयो का एक दूसरा सम्प्रदाय भी था। प्रोटे स्टेंट लोग धर्म की बाहरी क्रिया कलापों के स्थान मे समाज के लिए जनोपकारक काय मे लगे हुए थे, उन्होने हस्पताल, स्कूल और लाइब्रेरिया खोली हुई थीं और इस प्रकार देश के जनसाधारण से उनका वास्तविक सम्बन्ध था। अतएव पादरियों के विरुद्ध आन्दो-

धन का इस सम्प्रदाय पर कोई असर न हुआ और स्वय सरकार को भी बल पूर्वक इसका गला घोटने का साहस नहीं होता था। इसके विपरीत, क्रांति के पहले कुछ वर्षों में यह धर्म खूब फला-फूला क्योंकि यह सम्प्रदाय जिन सामाजिक कर्तव्यों की शिक्षा देता था वे सब सोशलिज्म की शिक्षाओं से मिलती जुलती थीं। यह लोग (प्राटस्टैंट) केवल परमात्मा का प्रभुत्व स्वीकार करते थे और उन किसानों को जो बचपन से धर्म का छत्र-छाया में पले और बढ़े थे यह धर्म बड़ा प्रिय लगता था। बोलशेविक लोग प्रोटैस्टैंट मत की लोक प्रियता से घबरा गए और १६२६ मे उन्होंने एक कानून पास किया, जिसके द्वारा उन्होंने धर्म के समर्थक व्याख्यानों पर पाबन्दी लगादी और समस्त धार्मिक सोसाइटियों का जनोपकारक कार्यों के द्वारा समाज पर प्रभाव डालने की मनाहीं कर दी। आज कल यह कानून किसी भी सार्वजनिक संस्था द्वारा १८ वर्ष से कम उम्र के बच्चों को धार्मिक शिक्षण की मनाही करता है। निस्सन्देह १८ वर्ष से ऊपर की उम्र वाला कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म का अध्ययन और उसे अंगीकार कर सकता है और इस मे राज्य को कोई आपत्ति नही होती है। विदेशियों द्वारा यह कहा जाता है कि रूस के सब गिर्जे गिरा दिए गए हैं और रूस के अधिकारी लोग धार्मिक स्त्री-पुरुषों को शत्रु वत समझते हैं। परन्तु मैं पूर्णतया इस कथन से सहमत नही हूँ क्योंकि इसका आधार दुर्भाव पूर्ण आन्दोलन ही है। रैड स्क्वेअर मे क्रिमलिन के ठीक सामने और सेंट बसिल चर्च की बगल में जो आज कल धर्म विरोधी अजायब घर है मैंने अपनी आखों से एक छोटा गिर्जा देखा है जहां बहुत से बूढ़े स्त्री पुरुष घुटनों के बल बैठे बड़े श्रद्धाभाव से परमात्मा की उपासना कर रहे थे, और बोलशेविकों में 'सुमति' जागृत करने के लिए प्रार्थना कर रहे थे। आजकल रूस में गिरजाओं को केवल राज्य का वह विशेष सरक्षण प्राप्त नहीं है जो जार के समय मे प्राप्त था। वे किराये से मुक्त नही हैं, बरन् उन पर भारी टैक्स लगा है। जिन लोगों के अधिकार में कोई चर्च होता है, उनकी बिना रजामन्दी के वह नहीं तोड़ा जाता। किसी चर्च को तोड़ने अथवा उसे किसी दूसरी संस्था म बदलने से पहले वोट लिये जाते हैं और बहुसम्मति के अनुसार कार्य किया जाता है। यह सत्य है कि राज्य की धर्म के प्रति बड़ी भारी उदासीनता है, परन्तु इस का परित्याग कराने के लिए राज्य सीधे बल का प्रयोग लोगों पर नही करता है। राज्य हर सम्भव उपायों से जो उसकी शक्ति मे होते है, धर्म के विरुद्ध प्रचार करता है। राज्य अखबारों, किताबों और रेडियो इत्यादि के द्वारा प्रचार करता है।

जब हम बाहर आये तो अजायब घर की अध्यक्षा ने मेरी मार्ग-प्रदर्शिका से धर्म के सम्बन्ध में मेरी सम्मति पूछने की प्रार्थना की।

क्रमशः

हैदराबाद-समस्या

विचारों का नियन्त्रण

कई वर्षों से हमें हैद्राबाद राज्य में आर्य्य तथा हिन्दू जनता पर किए गए अत्याचारों के समाचार प्राप्त होरहे हैं। हिन्दू जनता तो सोई हुई है। हैद्राबाद राज्य में ८५ प्रतिशत हिन्दुओं की सख्या होते हुए भी हिन्दुओं को शासन विभाग में नाम मात्र के अधिकार प्राप्त हैं और नहीं उनको अपनी सामाजिक धार्मिक स्थिति को सुधारने का पूरा अवकाश दिया जाता है। रियासत की शिक्षा की बागडोर मुसलमान अधिकारियों के हाथ में है और हिन्दू जनता को अपनी शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। केवल आर्य्य-समाज ही सदैव और सर्वत्र हिन्दू समाज के हितों को अपना समझ कर कार्य करती है, इस समय आर्य्य समाज वहाँ घोर सङ्कट का सामना कर रही है और बलिदानों की आहुतियाँ देकर भी वहाँ के आर्य्य वीर हिन्दू जनता के मान मर्यादा की रक्षा कर रहे हैं।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि सार्वदेशिक सभाने हैद्राबाद में होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए अब तक क्या कुछ किया है? आर्य्य जनताकी सूचनार्थ मैं सक्षेप से इस विषय में कुछ लिखना चाहता हूँ। चार वर्ष पूर्व सार्वदेशिक सभा के वर्तमान मन्त्री ने हैद्राबाद में १५ दिन रहकर वहाँ की स्थिति का भली प्रकार अनुशीलन किया और वे उच्च कर्मचारियों से भी मिले जिन्होंने उन्हे यह आश्वासन दिया कि भविष्य में आर्य्यसमाज के प्रचार मार्ग में कोई रुकावट न डाली जावेगी।

इसके पश्चात निज़ाम सरकार की वही नीति रही। श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा पढ़ी की गई। स्वयं निज़ाम साहब की सेवा में भी प्रार्थनायें भेजी गईं परन्तु उन पर लेश मात्र भी ध्यान न दिया गया।

जब सभा ने यह देखा कि निज़ाम सरकार की कठोर और हटीली नीति के सामने प्रार्थनाओं और पत्र व्यवहार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता तो यह निश्चय किया कि आर्य्य समाज के कर्णधार तथा इस सभा के मुख्य कार्य्यकर्त्ता श्री पूज्यमहात्मानारायणस्वामीजी महाराज श्री आचार्य रामदेव तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वयं हैद्राबाद में जावें और आर्य्यसमाज पर लगाये हुए प्रतिबन्धो को तोड़ कर वहाँ प्रचार कार्य करें। उन्होंने लगभग एक सप्ताह वहाँ रह कर ऐसा ही किया। इसमें सन्देह नहीं कि इन महानुभावों की उपस्थिति से हैद्राबाद की हिन्दू तथा आर्य्य जनता को बहुत आश्वासन प्राप्त हुआ और निज़ाम सरकार कर्मचारियों ने उनके प्रचार कार्य्य में कोई हस्तक्षेप नहीं किया परन्तु उनके चले जाने के पश्चात् निज़ाम सरकार की साम्प्रदायिक नीति में कोई अन्तर नहीं आया।

इसके पीछे जब पुनः आर्यों तथा हिन्दुओं की कष्ट गाथा सुनने में आई तो इस सभा ने एक वृहत डेपुटेशन की आयोजना की, जिस में हिन्दुओं तथा आर्य्य समाजियों के नेता सम्मिलित हुए और वे सब मिलकर देहली में निज़ाम हैद्राबाद के प्राइम मिनिस्टर तथा

अन्य उच्चाधिकारियों से मिले और इस कष्ट-गाथा को उनके सामने रक्खा। फिर पूर्ववत उसी आश्वासन को दुहराया गया और यह आशा दिखाई गई कि वे महानुभाव स्वयं इन कष्टों की जांच पड़ताल करेंगे और शीघ्र उनका निराकरण करेंगे। इस बात को भी पूरा डेढ़ वर्ष व्यतीत हो चुका है और इस अन्तर में आर्य्य समाजों पर जो अत्याचार हुए हैं उनके रोमाञ्चकारी समाचार समय समय पर समाचार पत्रों में छपते रहे हैं। अभी हाल में ही आर्य्यवीर वेद प्रकाश का बलिदान जो गुञोटी में हुआ उसका वृतान्त भी आर्य्य जनता तक पहुंच चुका है। हुपला के हिन्दुओं के साथ जो रोमाञ्चकारी अत्याचार हुए हैं जहां तीन जीवित हिन्दुओं को जलाया और मारा गया, ये सब घटनाएं प्रकट करती हैं कि निज़ाम सरकार की साम्प्रदायिक नीति कितनी भयानक है।

आर्य्यसमाज के मन्दिरों में पुलिस द्वारा जूते पहिन कर आना, यज्ञ कुण्ड आदि को अपमानित करना, ओ३म् के झण्डे का निरादर करना तथा आर्य्यों पर झूठे मुक़द्दमे चलाकर उनको ज़लील करना ये तो अब साधारण बातें होगई हैं।

उपर्युक्त शिकायतों का एक क्रमबद्ध विवरण तैयार करने के लिए मैंने इस सभाको आर्य्य रक्षा समिति के सहायक मन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी को हैद्राबाद में भेजा था। उन्होंने वहां डेढ़ मास तक स्थान स्थान पर भ्रमण करके आर्य्यों और हिन्दुओं की कष्ट गाथा की पूरी फायल तैयार करली है और हैद्राबाद-काण्ड का विषय सभा की आगामी अन्तरंग सभा (१० अप्रेल) में उपस्थित होने वाला है।

निज़ाम सरकार की नीति इस समय तक तो यही मालूम होती है कि बाहर से तो आश्वासन दिये चलो और अन्दर से अपना कार्य्य सिद्ध किये चलो। हैद्राबाद से हमारी दूरी भी एक ऐसा कारण है जो हमारे आन्दोलन को बहुत प्रभाव शाली नहीं बना सका। बृटिश सरकार ने भी हमारे आन्दोलन पर कोई ध्यान नहीं दिया। यद्यपि भारत सरकार तथा रेज़िडेन्ट तक भी शिकायतें पहुँचाई जा चुकी हैं। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए मेरा निमन्त्रण गम्भीर और शान्त प्रकृति आर्य्य सज्जनों को है कि वे शीघ्रातिशीघ्र इस सभा को अपना परामर्श दें कि इस हैद्राबाद काण्ड की समस्या को कैसे सुलझाया जावे।

सुधाकर एम० ए०
मन्त्री,
सार्वदेशिक सभा

—High Thoughts (ऊँचे विचार)

(5) Ability is a poor man's wealth
निर्धन की संपदा उसकी योग्यता होती है।

(6) There may be luck in getting a good job but there's no luck in keeping it.

अच्छा काम भले ही भाग्य से प्राप्त हो जाय परन्तु उस काम को बनाए रखने में भाग्य का कोई प्रश्न नहीं होता।

(7) Faith in the ability of a leader is of slight service unless it be united with faith in his justice

किसी नेता की योग्यता में विश्वास रखने से कोई लाभ नहीं होता जबतक उसकी न्याय परायणता उस विश्वास के साथ जुड़ी हुई न हो।

दंगे का कारण कौन है ?

❋

पाच एप्रिल १६३८ मगलवार की रात मे मुहल्ले धूलपेठ मे हिन्दू मुसलमानों के दरमियान एक दगा हो जाने की खबर सारे हैद्राबाद मे गश्त लगा रही थी, एक सन्दल के साथ जुमला मुहल्लेजात से जमा हुवे ७ बाहथियार तीस हजार मुसलमान धूल पेठ को चारो तरफ से घेरे हुए थे। इस रात व दूसरे दिन कुछ लूट खसोट हुई व चन्द जाने भी जाया हुई। इस दगे की निस्बत गुरवार के रोज सरकार ने एक कम्युनिक निकाला। जिस मे सरकार ने यह बयान किया कि धूलपेठ की आर्यसमाज की बैठक मे करीबन छै सौ आर्यों ने सम्मिलित होकर इस बात का निश्चय किया था कि वह मुसलमानो पर हमला करें। उस कम्युनिक मे सरकार ने दबे शब्दों मे यह भी जाहिर करने की कोशिश की थी कि सन्दल पर जो पत्थर फेके गये थे वह भी आर्यो का ही काम था। इस कम्युनिक का जो नतीजा होना था वह होकर रहा। इसने दहकती आग मे पेट्रोल का काम किया। कम्युनिक के छपते ही हर मुसलमान की जबान से एक ही बात सुनाई दे रही थी कि यह झगडा आर्यसमाजो न ही लगाया है। परिणाम स्वरूप शुक्रवार के बारह बजे के करीब आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के प्रधान जी के मकान को करीब चार पाच हजार मुसलमानों ने घेर लिया और वे सब के सब गुस्से के मारे आग बबूले हो रहे थे। उनकी ललकारो और शोर व गुल से साफ जाहिर हो रहा था कि अगर समय पर ओनरेबल मिस्टर क्राफटन और पोलिस के ओहदेदारान न पहुच पाते, और शस्त्रधारी पोलिस का फौरन इन्तजाम न कर पाते तो मकान की ई ट से ई ट बज जाती और अन्दर रहने वालो की क्या अवस्था होती इसकी निस्बत कुछ नहीं लिखा जा सकता। उस दिन से आज तक हर मुसलमान हैद्राबाद के आर्यसमाजियो को ही दगे का बानी मुबानी करार दे रहा है।

बहुत से मुसलमान जिन पर सबसे अधिक दगे का दोष आरोपित किया जा सकता है जान बूझ कर इस अफवाह को फैला रहे है। तथापि हमे पूर्ण आशा है कि अधिकारी वर्ग मे तथा आम जनता मे बहुत से ऐसे मुसलमान भाई मोजूद है जिनके सामने अगर सही वाकयात का इजहार किया जाय तो वे इस विश्वास को छोड देंगे कि दगे का प्रारम्भ और उसका ऐसा भीषण स्वरूप आर्य समाज की वजह से हुआ है। इसी तौर पर अगर सरकार ने किसी खास पौलीसी के आधीन आर्य समाजियो को दंगे की बुनियाद करार दिया है तो हमे कुछ नहीं कहना है क्यो कि असलियत कभी न कभी जरूर खुल ही जायगी। लेकिन अगर अफसरों की बेबुनियाद बातो पर विश्वास करते हुए महज गलत फहमी की बिना पर हैद्राबाद की गवर्नमेंट

ने यह करार दे दिया है कि दगे की बुनियाद आर्य समाज की तहरीक है तो हम सरकार को विश्वास दिलाते हैं कि मौजूदा दगे से आर्य समाज का कोई भी ताल्लुक नहीं है।

आर्य समाज हैद्राबाद में आज चालीस साल से काम कर रहा है। गत बीस वर्षों से आर्य-समाज के उत्सवों में हजारो की तादाद में हिन्दू मुसलमान जमा होते रहते हैं मगर आज तक उनके यह जलसे किसी झगड़े के कारण नहीं हुये हैं।

ऐसी अवस्था में समझ में नहीं आता कि यह समाज तीस हजार के मुसलमानों के मजमे मे क्यों दगा बरपा करने गया होगा, यह बात ऐसे ही अविश्वसनीय मालूम होती है।

दूसरी बात जिसकी ओर हम सरकार की तवज्जो दिलाना चाहते हैं वह यह है कि हैद्राबाद शहर के जुमला आर्य समाजो के मेम्बरों को मिलाया जाय तो उनकी सख्या तीन सौ से अधिक न होगी। हमे यह कतअन समझ मे नहीं आता कि यह तीन सौ की तादाद जब कि न दीगर हिन्दू न मुसलमान किसी तौर का दगा करना चाहते थे, तो किस प्रकार इतना बड़ा दगा बरपा कर सकती थी। अगर दंगे की बुनियाद यही हों तो इन तीन सौ अशखास को फौरन गिरफ्तार कर लिया जा सकता था और दगा उसी वक्त बन्द हो जाता। पाच रोज तक शहर व शहरियों को परेशान रहने की कोई जरूरत न थी। लेकिन सरकार ने ऐसा अमल नहीं किया क्योंकि सरकार खूब समझती थी कि इन सौ आदमियों को जेल-खाने में डालने से या इनको सीमा के बाहर करने से यह आग बुझने वाली नहीं, यह आग उनकी लगाई हुई न थी और उन पर किसी तरह का अवरोध रखने से रुकने वाली न थी। इस आग के लगाने वाले अशखास वे हैं जिन्हों ने तीन सौ आर्य समाजियों की आड़ में तीस हजार आदमियों को जमा कराया उनको भडकाया और उनको धूलपेठ के मोहल्ले में सशस्त्र छोड़ दिया।

सरकार की तवज्जो हम इस तरफ खास तौर से दिलाना चाहते हैं कि यह तीस हजार का मजमा बगैर किसी साबिका तय्यारी के जमा नहीं हो सकता था। जिस सन्दल के साथ हजार दो हजार से जायद कभी मजमा नहीं रहा, वहा इस साल तीस हजार बाहथियार अशखास का जमा होना खास माने रखता है। इनको जमा करने के लिये मुमकिन है कि आर्य समाजियों के नाम का इस्तेमाल किया गया हो। मगर यह कह देने से कि आर्य समाजियों के खौफ से इन तीस हजार बाहथियार आदमियों को जमा किया गया था, आर्य समाजियों पर दंगे की जवाबदारी नही आती है।

वास्तव मे बात यह है कि कुछ वर्षों से हैद्राबाद सरकार की पुरानी पौलीसी में फरक आने के कारण हैद्राबाद के हिन्दुओं को अपने भविष्य की निस्बत फिक्र पड़ गई है और उन में एक प्रकार की जागृति उत्पन्न हो गई है। हैद्राबाद के हिन्दू अपने अधिकारों और अपनी मागों को सरकार के सामने रख रहे हैं। सरकार भी, सुना जाता है कि, इस पर किसी कदर गौर

व खोज कर रही है। परन्तु मुसलमानों में एक पार्टी ऐसी पैदा हुई है जिनको शोक से कहना पड़ता है कि बहुत से स्थानों पर सरकारी मुलाज-मीन की बड़ी सहायता रहती है। जो कि लट्ठ के जरिये हिन्दुओं की इस तहरीक को दबाना चाहती है। इस समय फेडरेशन का भी सवाल आकर खड़ा हो गया है। इन प्रश्न को भी यह पार्टी डंडे और ताकत के जोर पर हरिजनों और गरीबों को धर्मान्तर कराके हल कर देना चाहती है और चूकि आर्य समाज की शुद्धि की तहरीक इनके इस कार्य में विघ्न डालती है इसलिये इस पार्टी ने आर्य समाज के विरुद्ध भी शोर मचा रक्खा है। हैद्राबाद की गवर्नमेन्ट को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिये, अन्यथा उनका यह लाडला बेटा बहुत बोझल साबित होगा। आज के रोज तक ही हैद्राबाद स्टेट में काफी दंगे फिसाद हो चुके हैं और हो रहे हैं। अगर इस पार्टी को इसी तरह स्वतन्त्र रखा गया तो कुछ दिनों में इनके कारण जो क्रिया और प्रतिक्रिया उत्पन्न होगी उसकी वजह से हैद्राबाद स्टेट एक दगल का मैदान हो जायेगी जिसको रोकना सिवाय किसी बाह्य शक्ति के हैद्राबाद सरकार को मुश्किल हो जायेगी।

हम फिर दोबारा बता देना चाहते हैं कि आर्यसमाज सोलह साल से शान्ति के साथ हैद्राबाद में प्रचार कर रहा है और उसी शान्ति के साथ फिर भी प्रचार करता रहेगा। आर्य-समाज का हैद्राबाद के दंगे से या किसी और दगे से जो कि स्टेट में बरपा हो रहे हैं कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्य समाज के खिलाफ जो तोहमत लगाई जारही है वह गलत है, वे बुनियाद और किसी न किसी खास मकसद के तहत है। हमें शोक है कि सरकार ऐसे बेबुनियाद वाकयात पर भरोसा करके कम्युनिक तक शाया कर देती है जिस का नतीजा बजाय भला होने के हानि-कारक साबित होता है। मसलन ६ तारीख के सरकारी कम्युनिक में जो यह वाकया बयान किया गया था कि धूलपेट की आर्यसमाज की बैठक में ६ सौ आर्यसमाजी जमा हुये थे वह सिर्फ गलत ही नहीं था बिल्क मुजरिमाना भी था। सरकार को चाहिये कि उस अफसर का सख्त तदारुक करें जोकि ऐसे वे बुनियाद वाकये को कम्युनिक में दर्ज कराने का जिम्मेदार बना है।

बहर हाल अब शहर में शान्ति स्थापित हो चुकी है अब सरकार का कर्तव्य है कि वह एक निष्पक्ष कमीशन द्वारा इस बात की सही और सच्ची तहकीकात करायें कि इस दगे के व दीगर दङ्गों के जो कि अजला में हो रहे हैं और हो चुके हैं बानी मुबानी कौन हैं ताकि भविष्य में शान्ति का प्रसार हो सके। (वैदिक सन्देश)

HIGH THOUGHTS (ऊँचे विचार)

(8) Men are often capable of greater things than they perform they are sent into the world with bills of credit and seldom draw to their full extent.

मनुष्य जितना कार्य करते हैं उनमें उस से अधिक कार्य करने की योग्यता होती है। वे ससार में पूर्व सस्कार सहित भेजे जाते हैं और वे उस से कदाचित् ही पूर्ण लाभ उठाते हैं।

इन्दौर राज्य में एक आर्यवीर की नृशंसहत्या

—※—

सार्वदेशिक आर्य्र प्रतिनिधि सभा के कार्य्यालय में इस आशय की सूचना मिली है कि इन्दौर राज्यान्तर्गत नारायण गढ़ आर्य्य समाज के प्रधान श्री पं० मेघराज महाराज का नृशसता पूर्वक बध किया है गया। देहली के हिन्दी दैनिक 'वीर अर्जुन' अप्रैल के अङ्क में भी यह छपा है कि श्री महाराज ने कई अछूत बच्चों को स्कूलो मे दाखिल कराया था और इन्दौर दरबार की मन्दिर-प्रवेश सम्बन्धी वर्त्तमान घोषणा को दृष्टि में रखकर वे रामनवमी की रात्रि में 'देव–दर्शन' के लिए अछूतो का एक जलूस ले जाने की व्यवस्था कर रहे थे। इस व्यवस्था से कुछ सनातनी नाराज हो गये थे।

जलूस निकाले जाने से पूर्व श्री महाराज का निर्दयता पूर्वक बध कर दिया गया, उनकी आखों में कीले गाडदी गई, हाथ और पैर काटे गए और शरीर के टुकडे २ कर दिये गए। यह भी कहा जाता है कि पुलिस इस मामले में उचित तहकीकात नही कर रही है और इस भयकर अपराध के करने वालो के बच जाने की सभावना है।

मैं महात्मा गाधी और पडित मालवीय जी का ध्यान इस दुर्घटना की ओर खीचता हूँ और होल्कर गवर्नमेन्ट से आग्रह करता हूँ कि वह अपराधियों का पता लगाकर उन्हें कठोर दण्ड देवे। मैने राज स्थान आर्य्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री को तार द्वारा प्रेरणा की है कि वे तत्काल नारायण गढ जाकर हमें पूरे २ विवरण भेजे।

मुझे निश्चय है इस प्रकार की घटनाओं से आर्य्य समाजी हताश और निरुत्साहित न होगे वरन देश से अस्पृश्यता को उखाड़ फेंकने के लिए दूने उत्साह से कार्य करेगें।

समाज–सशोधन का कार्य्य इस प्रकार के बधों से कभी नही रुकता है। प्रतिवर्ष अपने बलिदानों की सूचि मे उत्तम वृद्धि करने का आर्य्य समाज को अभिमान है। हमे याद रखना चाहिए यदि हम अपने ध्येय के लिए जिसका हम प्रचार करना चाहते है मरने के लिए तय्यार न रहे तो हमारी कोई उपयोगिता नही। शहीदो का खून धर्म्म भवन की आधार शिला होती है।

मन्त्री
सार्वदेशिक सभा

अमरशहीद धर्मवीर श्री मेघराज जी के सम्बन्ध में

श्री दीपचन्द्र शर्मा मन्त्री आर्य-समाज नारायणगढ़ की रिपोर्ट ।

❀

महाराजाधिराज राजराजेश्वर श्री सवाई यशवन्त राव होलकर की हरिजनों के प्रति जो घोषणा निकली थी, स्थानीय समाज की ओर से वह सब को सुनाई गई और बधाई देने के लिये प्रार्थना कीगई तत्पश्चात् यहाँ पर हरिजनों के मोहल्लो मे आ आकर सरकार की घोषणा सुनाई गई । हरिजन-सेवा-सङ्घ इन्दौर से भी श्रीमन्त की घोषणा नारायणगढ आर्यसमाज मे आई थी । हरिजन लोग अत्यन्त गरीब होने के कारण स्कूल में आकर पढ़ने में मजबूर थे अतः हम सब ने यथा शक्ति उन्हें सहायता प्रदान कर पढ़ाने का निश्चय किया । इसी सिलसिले में स्थानीय कार्यकर्ता श्री घनश्याम माहेश्वरी ने हम लोगो के सहयोगके आधार पर हरिजनों को स्कूल में भर्ती कराने का पूर्ण निश्चय कर लिया परन्तु उन्हे उनके परिवार वालों तथा अनेक शरारती लोगों ने तकलीफें दी, मार कूट से पेश आये भरती कराने के पूर्व रात्रि को २ बजे सोये हुवे घनश्याम के मकान को ताला लगा दिया । घनश्याम को अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करना था । इसलिये उसने दीवार में एक ६ इन्च की तार की लगी हुई कील द्वारा मकान की दीवार को भीतर से खोदना शुरू कर दिया । सूर्य्य के निकलने से पहिले ही घनश्याम घर से बाहर निकल गया और हरिजनो के बालकों को ले आने वाले लोगों के साथ हो गया यह घटना ता० २ अप्रैल की है ।

ता० ४ को कन्या पाठशाला में हरिजनों की लड़कियों को ले आकर दाखिल कराया गया । घनश्याम को और भी अधिक तकलीफें दी जाने लगीं यहां तक कि उनके पिता ने उनको दूसरे गांव मे रख दिया । परन्तु ता० ८ ४ ३८ को शाम को रामनवमी होने से हरिजनों को मन्दिर में ले जाने का प्रोग्राम बना था । अत घनश्याम ता० ७ को ही दूसरे गांव से आगया । इधर ७ ता० को हरिजन लडकियो को स्कूल से हैड अध्यापिका ने उनके घर भेज दिया उसका कारण यह था कि ता० ६ को रघुनाथसिंह ठाकुर मगनीराम पटवारी तथा मूलचन्द्र कुमट ने नाथू नामक हरिजन को धमकियाँ दीं, कि यदि तुम लोग स्कूल में पढोगे तो तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के सिर फोड़ दिये जावेंगे उस पर से ता० ६ की रात को श्रीयुत मेघराज जी ने वाचनालय के अन्दर कहा था कि ता० ८ को रामनवमी के दिन, शाम को हरिजन लोग मन्दिरो में दर्शन करेंगे। हम लोग सिर फुड़वाने के लिये तैयार हैं ।

ता० ८ को मुझे कार्यवशात् मनासा जाना पड़ा मनासा जाने से पहिले श्रीयुत मेघराज जी और मैं दिन के १२ बजे तक आपस में हरिजनों के मन्दिरों में दर्शनार्थ वार्तालाप करते रहे, जिसकी कि चर्चा गाँव में फैल चुकी थी ता० ९ को १० बजे मुझे मनासा खबर मिली कि नारायणगढ़ मे मेघराजजी का कत्ल होगया। अत, मैं ३।। बजे की मोटर से नारायणगढ़ आया । आने के पूर्व मुझे एक पत्र मिला था कि नारायणगढ़

में तुम्हारा भी कत्ल होने वाला है अत आप कदापि वहाँ न जाय। नारायणगढ़ पहुंचते ही मैंने प्रथम श्री मेघराज जी के परिवारके लोगों को संभाला तत्पश्चात् घटना का हाल मालूम किया जो क निम्न प्रकार है–

श्रीयुत मेघराज जी अपनी भैंसें लेकर पानी पिलाने के लिये कुए पर गये थे। करीब दो बजे अधिक गर्मी पड़ने के कारण एक झाड़ के नीचे जाकर लेट गये। अचानक एक ओंकार सीताराम नामक कट्टर सनातनी ने पीछे से आकर लाठी मारी। मेघराज जी ने उसको पकड़ कर नीचे डाल दिया और छाती पर चढ़ बैठे। पीछे से दो आदमी और आये वे भी उसी के परिवार के थे उन्होंने श्री मेघराज जी पर लाठियां बरसाना शुरू कर दिया। श्री मेघराज जी ने भी यथाशक्ति हिम्मत तो की, परन्तु और भी आदमी आ गये और उन्होंने आपको जमीन पर डालकर चाकू से आपको आंखें फोड़ दीं, पैर तोड़ दिया। हत्यारे लोग आपको मरा समझ कर छोड़ के चले गये। आस पास काफी मनुष्य थे। हत्या का स्थान खुला मैदान था। कपास की बधोटी का खेत था, लेकिन आस पास के देखने वाले दुष्टों ने इनकी तरफ देखा ही नहीं।

तुलसी नाम की एक लड़की ने मेघराज के घर पर जाकर खबर दी कि मेघराज जी मारे गये हैं। उनकी धर्म-पत्नी आनन्दी बाई बुखार में सोई हुई थी। अचानक इस घटना को सुनकर दौड़कर भागी और उसके पीछे २ पड़ोसी भी भागे। घटना स्थल पर सब से पहले आनन्दी बाई पहुँची और अपने पति का सिर गोद में लेकर रोने लगी। पोखर खटीक और हीरा जटुवा भी वहां पहुँच गये। आनन्दी देवी ने मेघराज जी से पूछा कि आपको किन हत्यारों ने मारा है? मेघराज जी सचेत होकर बोले कि देवी जी मुझे जल्दी खाट पर डालकर ले चलो पुलिस में बयान हो जावेंगे तो ठीक है। देवी जी ने फिर भी पूछा कि आप मेरे से कहो आपको किसने मारा है? उन्होंने ९ आदमियों के नाम बताये, एक पहिचानने में नहीं आया। जल्दी से खाट मगाई गई और पड़ोसी लोग उनको खाट पर डाल कर शफाखाने की ओर ले जाने लगे, रास्ते में एक नीम का झाड़ आया, मेघराज जी ने कहा यहाँ पर ठण्ड मालूम पड़ती है- मुझे नीचे उतार दो। खाट नीचे उतार दी गई, पानी मांगा, परन्तु पानी दूर था इसलिये उनको उठाकर शफाखाने ले गये। शफाखाने जाकर उन्होंने पूछा कि क्या यह दवाखाना है? तब मेघराज जी ने डाक्टर साहब को बुलाकर कहा कि डाक्टर साहब मुझे दवा दो, परन्तु डाक्टर साहब ने कोई हमदर्दी न दिखलाते हुये कहा कि पुलिस में ले जाओ। कम्पाउण्डर ने दवा पिलाई, दवा पिलाते ही प्राणान्त हो गया।

लाश को लेकर पुलिस में गये। वहां से पुलिस वाले शफाखाने लाये। डाक्टर साहब ने फिर कहा कि इसका पोस्टमार्टम कल होगा। आज रात्रि पड़ जायेगी। फिर लाश को लेकर पुलिस में गये और वहा लाश के पास रात भर रहना पड़ा। दूसरे दिन डाक्टर साहब ने १० बजे के बाद पोस्टमार्टम किया। तत्पश्चात् मेघराज की लाश जलाने का अवसर आया। आनन्द बाई और दो पड़ोसियों के कहने पर ६ आदमियों को निगरानी में ले लिया गया। पुलिस ने पञ्चनामा किया उसमें पूछा कि इसमें कोई आर्य समाजी तो नहीं है। उसका पञ्चनामा हम नहीं लेंगे। पुरावा होने लगा तो पूछा कि कोई आर्यसमाजी तो नहीं है। उस पर ता

मेघराज जी के साथ सहानुभूति रखने वालों को कोई भी उम्मेद नहीं होने लगी कि कत्ल का केस सुधर सकेगा ।

ता० १० को डी आई जी साहब गरोठ से आये, उन्होंने मौका मुलाहिज़ा किया । पश्चात् आरोपियों को हवालात में लिया । केस के लिये मनासा के सब इन्सपैक्टर दौलतसिंह जी पवार और जाम्री के सब इन्सपैक्टर साहब को नारायणगढ के सब इन्सपैक्टर मोहनसिंह जी की इमदाद के लिये मुकर्रर किया गया है और डा० आई० जी०

साहब ने हम लोगों को आश्वासन दिलाया है कि मामले की जाँच होरही है । आप लोग चिन्ता न करो। यह बात आपने ता० १२-४-४८ को फरमाई थी और यह भी कहा था कि बहुत सी बाते सबूत मे भी रही हैं ।

ता० १५ की शाम को श्रीयुत बा० अभयसिंहजी डाँगी एडवोकेट अजमेर, श्रीयुत बा० शोभारामजी वकील छावनी नीमच तथा, मि० चन्दनसिंहजी, आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आये । ता० १६ के ४ बजे तक आप सबने जाँच-पड़ताल की और घटना स्थल का मौका देखा । मेघराजजी की धर्म पत्नी आनन्ददेवी को धैर्य दिया । आनन्ददेवी का कहना है कि मैं अपने पति मेघराजजी की राम नवमी की प्रतिज्ञा को पूर्ण करना चाहती हूँ, क्योंकि मैं उनकी अर्धांगिनी हूँ । मुलजिमो का चालान नहीं हुआ है । ता० १७ को आर्य समाज मल्हारगञ्ज इन्दौर से श्रीयुत किशोरीलालजी B.A. LL.B वकील हाईकोर्ट आये उन्होंने भी आशा दिलाई कि इन्दौर का जितना भी कार्य होगा वह हमारा समाज व हम कर सकेंगे ।

ता० १८-४-४८ को १२ बजे की मोटर से श्री मेघराजजी की धर्म पत्नी आनन्दीदेवी को और पड़ोस के लोगों को तथा पाखर पुना खटीक और हीरा, गुलबा जटूबा को डी० आइ० जी० के पास बयान कराने को नारायणगढ पुलिस सब इन्सपैक्टर श्री मोहनसिंहजी ले गये है । बात-चीत से मालूम होता है कि अभियुक्तों मे से दुलीचन्द कुलमा को चालान से बचा लेंगे जो कि षड्यन्त्र कारियों का एक प्रमुख व्यक्ति है । षड्यन्त्र मे यह व्यक्ति बहुत चुस्त-चालाक है, इसके पीछे और भी आदमी हैं । इन्हों लोगो ने तीन रोज तक पुरावा नही होने दिया । पुरावा देने वालों को भय दिखलाया। यहाँ तक कहा जाता है कि लोगो में दुलीचन्द के छूटने की उनके साथियो ने खबर देकर डाट देरखी है । दूसरी बात इसके छूटने से यह भी होगा कि दकियानूसी हमले दबे छिपे आर्यों पर अवश्य होंगे जिसका पुरावा मिलना मुश्किल होगा ।

—

विद्या धर्मेण शोभते। धर्म से ही विद्या की शोभा होती है।

आर्य कुमार जगत्

मार्च मास के 'आर्य कुमार जगत्' में हमने लिखा था कि जयन्ती पर परिषद् की ओर से एक पुस्तक प्रकाशित होगी। अब हमें यह लिखते हर्ष होता है कि पुस्तक के लिए काफी सामग्री एकत्रित हो गई है और पुस्तक अवश्य प्रकाशित होगी। पुस्तक का नाम "उन्नति की ओर" होगा और उस मे निम्न विषयों पर विद्वानों के लेख होंगे—

उन्नति का रूप, कुमार जीवन, वातावरण और उसका उन्नति पर प्रभाव, स्वास्थ्य, चरित्र गठन, शिष्टाचार, अभिवादनशीलता, नियंत्रण (Discipline) सत्य, अहिंसा स्वाध्याय, आश्रम धर्म धैर्य्य इन्द्रिय निग्रह, श्रद्धा और भक्ति, देश धर्म, शिक्षा, ऋषि दयानन्द, धर्म, मजहब और सम्प्रदाय, पाप और पुण्य।

इन लेखों के अतिरिक्त गायन, कविताएँ तथा नेताओं के चित्र भी होंगे। लेकिन पुस्तक का मुख्य अंग परिषद् का इतिहास तथा कुमार सभाओं के परिचय होंगे। मुझे यह लिखते दुःख होता है कि अभी तक बहुत ही कम कुमार सभाओं ने अपने परिचय भेजे हैं। इस लिए जिन कुमार सभाओं ने अपने परिचय अभी नहीं भेजे है उनसे फिर प्रार्थना है कि वे १० तारीख तक अवश्य भेजदें।

पुस्तक में आर्य कुमारों के लेख भी होंगे। इस लिए जो आर्य कुमार अपने लेख व कविताएँ भेजना चाहें भेजदें।

अन्य आर्य सस्थाओं से भी जिनमें आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं हमारी प्रार्थना है कि वे भी पुस्तक में छापे जाने के लिए अपने परिचय हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा करें।

आर्य सस्थाओं से अपील

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् भारत की सब आर्य कुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि सस्था है। इसके नियमों में आर्य "कुमार सभाओं से उन तमाम सभाओं से तात्पर्य है जो परिषद द्वारा निश्चित नियमों को मानती हैं, वास्तविक नाम उनका चाहे कुछ भी हो। इस लिए हमारी समस्त ऐसी सस्थाओं से जैसे गुरुकुल, डी० ए० वी० कालेज व स्कूल, अनाथालय आदि—जिनमें आर्य कुमार शिक्षा पाते हैं, प्रार्थना है कि वे परिषद् में सम्मिलित हो जावे ताकि हम सब मिलकर भारत के नवयुवकों मे आर्य समाज का प्रचार अच्छी प्रकार कर सकें।

आर्य कुमार सभाओं के समाचार

१-आर्य कुमार सभा मुरादाबाद।

इस कुमार सभा की ओर से निम्न प्रस्ताव भेजा गया है।

"आर्य कुमार सभा मुरादाबाद महाशय काजमी के 'शरियत बिल' को समस्त हिन्दू जनता के अधिकारों का घातक समझती है और उसका तीव्र प्रतिकार करती हुई आशा करती है कि असेम्बली के सभी सदस्य तथा सरकार बलपूर्वक उसका विरोध करेगी"

२—आर्य कुमार सभा, पटना सिटी।

आर्य कुमार सभाकी ओर से गत अप्रैल मास मे बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन किया गया। आर्य कुमार सभा को हम इस शुभकार्य के लिये बधाई देते है और आशा करते है कि सम्मेलन पूर्ण सफल हुआ होगा। सम्मेलन के पूरे समाचार आने पर अगले मास मे छापे जावेंगे।

३—आर्य कुमार सभा, मल्हार गंज इंदौर।

यद्यपि यह सभा गत वर्ष ही स्थापित हुई है परन्तु इसका कार्य बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा है। यह इस सभा का सौभाग्य है कि इसमे अनेक उत्साही युवक अपना पूरा समय दे रहे है और इन्दौर के दानी पुरुषो का भी इस पर हाथ है। सभा ग्राम प्रचार का काफी कार्य कर रही है।

सभा की इन्दौर रियासत द्वारा रजिस्ट्री भी हो गई है।

४—आर्य कुमार सभा, लल्लापुर काशी।

इस सभा का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है। सभा के अतर्गत सार्वजनिक पुस्तकालय भी है और आर्य वीर सेवा दल भी।

५—आर्य कुमार सभा, बुरहानपुर।

इस कुमार सभा का कार्य काफी फैला हुआ है। यह सभा बहुत सुचारु रूप से चल रही है। इस सभा की यह खूबी है कि इसके अन्तर्गत एक गरीब विद्यार्थी पुस्तकालय भी है जिसके द्वारा गरीब विद्यार्थियों को सहायता मिलती रहती है। सभा मे आर्य कुमार सेवादल भी है।

६—आर्य कुमार सभा, रांची।

यह सभा न केवल स्वय सुचारु रूप से चल रही है बल्कि इसके अधिकारी रॉची ज़िले मे अनेकों स्थानों मे आर्य कुमार सभाएँ स्थापित करते जा रहे है। सभा की ओर से ग्राम प्रचार कार्य भी हो रहा है।

७—आर्य समाज गोपाल गंज, सारन।

आर्य समाज, गोपालगंज सारन के अधिकारियो के हम कृतज्ञ हैं कि उन्होने अपने समाज के अन्तर्गत शीघ्र ही आर्य कुमार सभा खोलने का निश्चय कर लिया है।

अन्य आर्य समाजें भी इसी प्रकार हमारी सहायता करें।

८—आर्य कुमार सभा, भिमडेगा।

इस सभा का मुख्य कार्य ग्राम प्रचार है। सभा के प्रधान श्रीयुत कृष्ण गोविन्द जी आर्य सुदूर जङ्गली स्थानो मे आर्य समाज का खूब प्रचार कर रहे हैं।

मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली।

"कुमारों का सुधार"

[लेखक—श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु दरिबा गंज देहली]

मनुष्य समाज का सब से बड़ा धन उसके कुमारों का पवित्र जीवन है। देश और समाज कुमारों के भावों, विचारों, और कार्य्यों पर निर्भर है। कुमार ही देश और जाति की आशाएँ हैं। जिस देश और समाज में कुमारों के जीवनों को पवित्र, धार्मिक और उपयोगी बनाया जाता है उस देश और समाज का भविष्य सदा उज्जवल रहता है।

आर्य्य वर्त के पुराने आर्य्य अपने कुमारों के जीवनों को सयमी, सदाचारी और धार्मिक बनाते थे। परन्तु दुर्भाग्य वश कुछ काल से आर्य्य जाति अपने कुमारों की ओर से नितात उदासीन और लापरवाह हो रही है। जिस के दुष्परिणाम स्वरूप हम देख रहे हैं कि आधुनिक आर्य्य कुमार अपनी संस्कृति, सभ्यता, वेश और भाषा से घृणा कर रहे हैं। न उनकी माता पिता और बड़ों में श्रद्धा है न गुरुजनों में भक्ति। न उन्हें ईश्वर से प्रेम है न वेदादि धर्म शास्त्रों में विश्वास। आज यदि उन्हें कोई वस्तु प्रिय है तो वह है चटपटी, मसाले दार, उत्तेजक और बुद्धि नाशक खाद्य-सामग्री, फैशनेबल और भड़कीले कपड़े, उपन्यासों और नाटकों का अध्ययन, और सिनेमाओं का प्रदर्शन।

इस बिगाड़ का मुख्य कारण तो है कुमारों के माता पिताओं का उनकी ओर से उदासीन होना हाँ इसके साथ २ आधुनिक पाश्चात्य नास्तिकीय शिक्षा दीक्षा का भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। मेरी सम्मति में हमें शीघ्राति शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए और जैसे बने अपने कुमारों के जीवनों की रक्षा कर अपना, अपनी जाति और देश का कल्याण करना चाहिए। यदि निम्न लिखित नियमों का पालन करें तो कुमारों का सुधार हो सकता है॥

(१) माता पिताओं को अपने बच्चों की ओर से सदा पूर्णतया सतर्क और सावधान रहना चाहिए। जिस से वे कुसङ्गति में न पड़ें। (२) अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षणालयों में ही शिक्षा दिलानी चाहिए जिस से वे उत्तम वायुमण्डल में रहकर धार्मिक एव सदाचारी बन सकें। (३) बच्चों को सदा सादा नियमित तथा तपस्वी जीवन व्यतीत करने का अभ्यास कराना चाहिए जिस से कि वे अपने आगामी जीवन सग्राम में आने वाली कठिनाइयों और विपत्तियों को सहन कर सकें और धर्म पथ से च्युत न हों।

(४) धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में उनकी रुचि बढ़ानी चाहिए जिससे कि वे अपने धर्म के महत्व को समझ सकें। (५) उन्हें अपने देश और जाति के बड़े २ धार्मिक महापुरुषों के जीवन की गाथाए सुनानी चाहिएं जिस से उनके मनों में शुभ संस्कार पड़ें और वे पूर्वजों के पद चिन्हों पर

चल अपने देश और जाति के सच्चे भक्त तथा सेवक (रक्षक) बन सकें। (६) बच्चों को सेवा भाव का महत्व समझाया जावे। उन के सामने अपने बड़ों की सेवा स्वय कर के आदर्श उपस्थित किया जावे जिस से वे अपने जीवन में सच्चे सेवा व्रती बन सकें। (७) दैनिक तथा नियमित व्यायाम की बान डाली जावे जिस से बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहे उनके शरीर सुन्दर और सुगठित बन सकें। (८) बच्चों में खोज और पूछ ताछ की जो शक्ति है माता पिताओं को उसे दबाने और कुचलने के स्थान पर बढाना चाहिए जिससे उनका ज्ञान बढ़े और वे सन्तुष्ट रहें। (९)बच्चों को धर्म स्थानों, सत्सङ्गों, कथा और उपदेश आदि मे अपने साथ ले जाना चाहिए और वहाँ उन्हे शान्ति पूर्वक अपने पास बिठा कर ध्यान से सब कृत्य देखने और सुनने की बान डालनी चाहिए जिस से वे धर्म में विश्वास, श्रद्धा और प्रेम करने लग जावें। (१०) घर पर भी साय प्रात यज्ञ, सन्ध्या प्रार्थना और भजन आदि करते समय अपने बच्चों को अपने साथ सम्मिलित करना चाहिए। जिस से वे ईश्वर विश्वासी बन सकें। (११) कुमारों को कभी खाली न बैठने देकर उन्हें सदा किसी न किसी अच्छे काम मे लगाये रखना चाहिए जिस से वे परिश्रमी उत्साही और परोपकारी बन सकें। (१२) उन्हे स्वदेशी वस्तुए ही प्रयोग करानी चाहिऐ, स्वमातृ भाषा हिन्दी का प्रेमी बनाना चाहिए और अपनी सभ्यता एव सस्कृति का गर्व सिखलाना चाहिए जिस से वे सच्चे भारतीय और दृढ़ आर्य्य बन सकें। (१३) माता पिताओं को सब से बढ कर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने कुमारों को कुमार सभाओं का सदस्य बनवा देवें और उन्हें प्रति सप्ताह ठीक समय पर कुमार सभा के सत्सङ्ग मे और अन्य कार्य्यों में भाग लेने भेज दिया करें और कुमार सभा से वापसी पर कुमारों से पूछा करें कि उन्होंने वहाँ क्या २ अच्छी बातें सुनी हैं या नोट की हैं और उन्हें कई तरह से प्रोत्साहित करते रहा करें ताकि कुमारों की कुमार सभाओं मे जाने की रुचि बढे।

—x—

कर्त्तव्य पालन कीजिये

सार्वदेशिक समस्त आर्यजगत् की शिरोमणि सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है। प्रत्येक आर्य, आर्य-परिवार तथा आर्यसमाज का कर्तव्य है कि वह उसका स्वय ग्राहक बने और दूसरों को भी ग्राहक बनाए। किसी आर्य-परिवार और समाजको बिना 'सार्वदेशिक' को पढ़े हुए न रहना चाहिए। 'सार्वदेशिक' के प्रचार में योग-दान करना प्रत्येक आर्य्य का कर्त्तव्य है।

इन्दौर में सर्व धर्म सम्मेलन

वैदिक धर्म के प्रतिनिधि का भाषण

गत मास १८ से २१ एप्रिल तक इन्दौर के किंगऐडवर्डहालमें सव धर्म सम्मेलन वा All Faith- Conference का तृतीय अधिवेशन बड़े समारोह से मनाया गया जिसमें सिक्ख, ईसाईयत, जैन, इस्लाम, ब्रह्म समाज, बहाई इत्यादि अनेक मतों के प्रतिनिधि दूर २ प्रान्तों तथा देशों से सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन का उद्घाटन इन्दौर के प्राइम मिनिस्टर सर एस एम बापना Kt C I E ने १८ को सायंकाल किया। महानुभावों तथा विदुषी देवियों ने सम्मेलन में विशेषरूप से भाग लिया उनमें से निम्न व्यक्तियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं (१) डा मु जे भू पू प्रधान अखिल भारतीय हिन्दू महासभा (२) प्रो० गङ्गासिंह प्रिन्सिपल सिख मिशिनरी कालेज अमृतसर (३) ब्र० शीतलप्रसाद जैन (४) प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति (५) डा० मुहम्मद हफ़ीज़ सय्यद M A Ph D D Lit प्रयाग विश्वविद्यालय (६) मिस मार्था रूट (न्यूयार्क) बहाई मत प्रचारिका (७) श्रीमती शारीन् फौज़्दार Secretary All Faiths League Bombay बहाईमत (८) डा० सुरेन्द्रनाथ M A Ph D (ब्रह्मसमाज) इत्यादि। सम्मेलन के आयोजकों की प्रार्थना पर श्रीमती सार्वदेशिक सभा ने अपने सम्मानित प्रचारक श्री स्नातक धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति को अपने प्रतिनिधि रूप में इन्दौर भेजा जिन्होंने सम्मेलन की विषय निर्धारिणी समिति (Subjects Committee) तथा गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conference) में विशेष भाग लेने के अतिरिक्त २० एप्रिल को सम्मेलन के खुले अधिवेशन में "वेदों की सार्वभौम, युक्तियुक्त और वैज्ञानिक शिक्षाएँ" (The Universal, National and Scientific Teachings of the Vedas) इस विषय पर एक महत्त्व पूर्ण व्याख्यान दिया जिसे World Fellowship of Faith, के प्रतिनिधियों, न्यूयार्क में सुप्रसिद्ध सम्पादिका मिस् रूट् तथा अन्य उपस्थित विद्वान् महानुभावों और विदुषियों ने बहुत पसन्द किया और उन्हें हार्दिक बधाइयां दीं। अनेक बार करतल ध्वनियों से जनता ने उनके विचारों पर हर्ष प्रगट किया। उस भाषण का सारांश निम्न है।

"इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य मात्र में भ्रातृभाव तथा प्रेम को उत्पन्न करना है, जो अत्यन्त प्रशंसनीय है। वेदों में इस उत्तम तत्त्व का बहुत ही अच्छी तरह प्रतिपादन किया गया है। वेदों की शिक्षाएँ सार्वभौम हैं और उनका उद्देश्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है। वेदों के अन्दर

"त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।"

"त्वं त्राताःतरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्"

इत्यादि मन्त्रों द्वारा परमेश्वर को सारे प्राणियों का पिता और माता बताया गया है। हम सब उस

एक भगवान् के पुत्र हैं, अतः हमें परस्पर पूर्ण प्रेम भाव से रहना चाहिये तथा भ्रातृ भाव धारण करना चाहिये इस बात को

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।

"समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥"

"समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥"

इत्यादि मन्त्रों में स्पष्टतया बताया गया है जो ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के हैं और जिन में वेदों की पवित्र शिक्षाओं का निचोड़ दिया गया है कि हे मनुष्यो! तुम सब एक उच्च उद्देश्य की ओर मिल कर आओ, मिल कर प्रेम से संभाषण करो तथा तुम्हारे मन पर स्पर मिले हुए और सुसंस्कृत हो। वेद मन्त्रों का उपदेश तुम सब के लिए समान रूप से किया गया है। तुम्हारी सभाओं में सम्मिलित होने का सब को समान अधिकार हो (जन्म के कारण प्रतिबन्ध न हों) तुम्हारा मन और चित्त समान हो। तुम्हारे संकल्प समान हों। तुम्हारे हृदयों और मनों के अन्दर प्रेम और समानता के भाव पूर्णतया भरे हुए हों जिस से तुम्हारा परस्पर पूर्ण सहयोग हो सके। इस प्रकार वेद हार्दिक प्रेम और एकता का कितना सुन्दर उपदेश करते हैं यह स्पष्टतया ज्ञात हो सकता है। जब तक हृदय और मन मिले हुए नहीं तब तक ऊपर ऊपर की एकता से कुछ लाभ नहीं हो सकता। अथर्ववेद के एक सूक्त में इस विषय का उपदेश इस रूप में दिया गया है।

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।

अर्थात् मैं (परमेश्वर) तुम्हारे हृदय और मन को मिलाता और द्वेष भाव को दूर करता हूँ। तुम एक दूसरे के साथ ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नये पैदा हुए बछड़े के साथ करती है।

भ्रातृभाव का इससे अधिक स्पष्ट और उत्तम उपदेश और कहाँ पाया जा सकता है जितना निम्न लिखित वेद मन्त्र में है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सम्भ्रातरो वावृधुः सौभगाय। युवा पिता स्वपा रुद्र एषां, सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥

अर्थात् सब मनुष्य भाई हैं। इन में कोई बड़ा वा छोटा नहीं है। इस भावको मनमें धारण कर के प्रेमपूर्वक कार्य करने से ही सौभाग्य प्राप्त होता तथा समाज की उन्नति होती है। सब मनुष्यों का सर्वशक्तिमान परमात्मा है और प्रकृति व भूमि माता है। इस प्रकार जन्ममूलक ऊंच नीच के भावों का सर्वथा परित्याग करते हुए भ्रातृ भावना धारण करने का वेद भगवान् उपदेश देते हैं। मनुष्य मात्र को मित्र दृष्टि से देखने तथा अपने सारे जीवन को मधुमय अथवा प्रेममय बनाने का उपदेश निम्न वेद मन्त्रों में कितनी अच्छी तरह से किया गया है ?

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्। वाचावदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः ॥

इन दो मन्त्रों का भावार्थ यह है कि मैं सब

प्राणियों (केवल मनुष्यों को ही नहीं) को मित्र की दृष्टि अर्थात् प्रेम से देखूं । सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें । हमारा खाना पीना तथा अन्य सब व्यवहार मिठास से भरा हुआ हो । हम वाणी से सदा मीठी बातें बोलें इतना ही नहीं, किन्तु हमारी दृष्टि में भी मिठास अथवा सच्चा प्रेम भरा हुआ हो । ऐसा न हो कि हम ऊपर २ से मीठी बातें कहें और अन्दर से छुरी चला रहे हों किन्तु हमारा सारा जीवन प्रेम मय होजाए ।

वेद एकेश्वर पूजा का प्रतिपादन करते हैं जो इसी रूप में हो सकती है कि हम अपने हृदयों को पवित्र करके भगवान के पवित्र गुणों का चिन्तन करें और उन्हें अपने अन्दर यथाशक्ति धारण करने का प्रयत्न करें तथा जनता विशेष दीन दुखितों के कष्ट निवारण का सदा यत्न करें ।

य एक इत् तमुष्टुहि, कृष्टीनां विचर्षणिः । पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः ॥

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ।"

स एष एक एकवृदेक एव ।

दिव्यो गन्धर्वो भुवनस्य यस्पतिरेक एव नमस्यो-विक्ष्वीड्यः ।

इत्यादि मन्त्रों में यही उपदेश किया गया है कि सब मनुष्य श्रद्धाभक्तिपूर्वक एक सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान् सर्वज्ञ भगवान् का भजन करें क्योंकि वही एक पूजनीय तथा सारे संसार का धारक और स्वामी है । वह परमात्मा एक और केवल एक है २,३,४,५,६,७,८, ९,१०, वा परमात्मा नहीं। वेद परमात्मा को सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ।

इत्यादि मन्त्रों द्वारा सर्व व्यापक सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, निराकार, निर्विकार तथा सर्वथा शुद्ध पवित्र पाप रहित बताते हैं ईश्वर विषयक वैदिक विचार सर्वथा युक्ति युक्त है । किन्तु आज कल के कुछ अर्धशिक्षित मनुष्य यह समझते हैं कि इस ईश्वर वाद का जिसका वेद भी प्रतिपादन करते हैं विज्ञान से स्पष्ट विरोध है । विज्ञान ईश्वर के अस्तित्व का स्पष्ट खण्डन करता है फिर विज्ञान विरुद्ध ईश्वर वाद को कैसे स्वीकार किया जा सकता है ?

इस अशुद्ध विचार का निराकरण करते हुए वक्ता ने बताया कि विज्ञान की उन्नति के साथ २ उसका झुकाव ईश्वर वाद की ओर होता जा रहा है । यह कहना सर्वथा अशुद्ध है कि विज्ञान ईश्वर वाद का खण्डन करता है अथवा सब बड़े २ वैज्ञानिक ईश्वर की सत्ता से इन्कार करने वाले हैं । इस सम्बन्ध में Science and religion by seven men of science The religion Science by Dr Paul Religion of the Scientists edited by Draw Bridge M A., Religion and Science a syonposium इत्यादि अत्युत्तम ग्रन्थों का निर्देश करते हुए जिन में इस समय के वैज्ञानिक शिरोमणियों के धर्म विषयक विचारों का संग्रह किया गया है और उन में से कुछ उद्धरण देते हुए वक्ता ने सिद्ध किया कि सर आलिवर लाज F R S, D Sc, LL. D President Royal Society प्रो० स्लेमिङ्ग M A. D Sc, F R S प्रो० बोल्मले M A, Ph D, F L S., F C. S., प्रो० हुड़ हेड M A LL. D M D, F R.,

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा का वार्षिक चुनाव

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा काबृहद-धिवेशन १-५-१९३८ को बलिदान भवन देहली में हुआ। आगामी वर्ष के लिए बजटकी स्वीकृति तथा पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ। इस निर्वाचन की विशेषता यह थी कि सभाने माननीय श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त बी० एस० सी० एल० एल० बी०, स्पीकर, लेजिस्लेटिव एसेम्बली (सी० पी०) का प्रधानपदके लिए निर्वाचन करके शेष अधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यों की नियुक्ति का इस वर्ष के लिए विशेष रूप से उन्हें अधिकार दे दिया था।

निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ —

प्रधान—श्री माननीय घनश्याम सिंह जी गुप्त

उपप्रधान—(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(२) ,, प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति।

(३) ,, पं० गगा प्रसाद जी एम० ए० चीफ जज

मन्त्री—श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए०

उपमन्त्री—श्री डा० युद्धवीर सिंह जी

कोषाध्यक्ष—श्री लाला नारायणदत्त जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री लाला ज्ञानचन्द जी

अन्तरङ्ग सदस्य

(१) श्री राय बहादुर ठाकुर ब्रजनन्दन सिंह जी (बिहार)

(२) श्री प० बन्सीलालजी (हैदराबाद दक्षिण)

(३) ,, बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट (उपनिवेशोंसे)

(४) ,, लाला देशबन्धुजी एम एल ए (समाजों से)

(५) ,, महात्मा नारायण स्वामी जी

(६) ,, म० कृष्णजी बी० ए०

(७) ,, प० भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण (राजस्थान)

(८) श्री बाबू ज्योति स्वरूप जी

(९) ,, राय साहिब मदन मोहन जी सेठ एम० ए० एल० एल० बी सब जज (संयुक्त प्रान्त)

१०) श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम० ए० (सयुक्त प्रान्त)

(११) श्री डा० श्रीराम जी (संयुक्त प्रान्त)

(१२) श्री प० ज्ञानचन्द जी बी० ए० आर्य सेवक (पजाब)

(१३) ,, आचार्य्य राम देव जी बी० ए० (पजाब)

C P F, R S F प्रो थौम्पसन् B A, M D LL D, D Sc. F R S इत्यादि वर्तमान समय के प्रायः सब धुरन्धर वैज्ञानिक ईश्वरवाद को (जैसा वेदों में बताया गया है) स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर् आइज़क न्यूटन के

All this material Universe is the handi work of one Omniscient and Omnipotent creator

तथा लॉर्ड केल्विन् नामक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक के

Science positively affirms creative power. We are absolutely fored by science to believe with perfect confidence in Directive power

इत्यादि वचनों का यहां में विशेष रूप से निर्देश किया।

(शेष अगले अङ्क में)

—प्रतिदिन की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर महत्व पूर्ण सम्वाद

श्रीमती सोफियावादिया अखिल भारतीय प्रसिद्धि की एक सुशिक्षित महिला हैं। उन्होंने 'बुद्धिमानों का भ्रातृसघ' नामक संस्था की स्थापना की है। अभी हाल मे जहाज पर श्री मोतीलाल दास नामक एक सज्जन से ससार की वर्तमान कई समस्याओं के सम्बन्ध मे प्रश्नोत्तर के रूप मे उनकी बातचीत हुई थी जो अप्रैल मास के माडर्न रिव्यू' मे छपी है। सार्वदेशिक के पाठकों के लाभार्थ उस बातचीत का सार हम यहां प्रस्तुत करते हैं। —सम्पादक

श्री मोतीलाल जी —क्या धर्म म आपका विश्वास है? क्या धर्म के बिना संस्कृति जीवित रह सकती है?

श्रीमती वादिया—जीवन के आन्तरिक मार्ग के रूप म धर्म मे मेरा विश्वास है। आजकल जैसे धर्म में मेरा विश्वास नहीं है। आज का धर्म आत्मा रहित शरीर और प्रकाश रहित छाया के सदृश है। सच्चे धर्म के बिना संस्कृति जीवित नही रह सकती है झूठा और बाह्य आडम्बर युक्त धर्म संस्कृति को नष्ट कर देगा।

मो०—धर्म के भविष्य के सम्बन्ध मे आपका क्या विचार है?

वादि०—जबतक धर्म के सार्वभौम आधार भूत सिद्धान्त पुन प्रतिष्ठित नहीं होते हैं और धर्म जीवन का विषय नहीं बन जाता है तब तक धर्म का कोई भविष्य नही है। रूढ़ियां बाह्य आडम्बरों और कट्टरता से युक्त मत मतान्तरों का विनाश अवश्यम्भावी है।

मो०—संसार की आर्थिक प्रणालीके प्रति आपका कैसा रुख है? क्या सब समान रूप से धनवान हो सकते है? ससार में शांति किस प्रकार स्थापित हो सकती है?

वादि०—जबतक हमारे भीतर शांति नहीं होती है तबतक बाहर शान्ति नही हो सकती है। बाहरी दुनिया की लड़ाई हमारे भीतर जो युद्ध हो रहा है उस का प्रतिबिम्ब है। पहले से ही हम सबके पास काफ़ी है परन्तु लाभ और कम्पीटीशन की प्रणाली की वजह से संघर्ष हो रहा है। सब आदमियो के पास समान पैसा हो सकता है इस में मेरा विश्वास नही है। मेरा विश्वास उस आर्थिक प्रणाली मे है जो लालच के स्थान पर निःस्वार्थ भाव पर आश्रित हो।

मो०—उन्नति के सम्बन्ध में आपका क्या विचार है? क्या दुनिया म कभी पूर्णता प्राप्त हो सकती है?

वा०—केवल धन वैभव की उन्नति को मैं उन्नति नहीं समझता हूँ। वास्तविक उन्नति मानसिक विकाश और सदाचरण के पैमाने से ही नापी जाती है। इस दुनिया मे पूर्णता प्राप्त हो सकती है और वह जन्म जन्मान्तरो के बाद आत्म संयम और परोपकार का जीवन व्यतीत करने से संभव है।

मो०—विवाह की वर्तमान थ्यूरी के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं ? आपकी सम्मति में विवाह प्रथा का भविष्य क्या होगा ?

बा०—आज कल की दोस्ती की शादी को मैं बहुत बुरा समझती हूँ। मेरा विश्वास है जब इस प्रकार की शादियों की बुराइयाँ सब पर जाहिर हो जाँयगी तब यह शादियाँ बन्द हो जायँगी। रूस मे सरकार विवाह गृहस्थ निर्माण और बच्चोके पालन-पोषण के सम्बन्ध में प्रौपैगैन्डा कर रही है।

मो०—तलाक के सम्बन्ध मे आपकी क्या सम्मति है ? क्या इसे आप पसन्द करती है ? स्त्री जाति का भविष्य क्या होगा ?

बा०—कुछ अवस्थाओं मे और हमारी वर्तमान सांस्कृतिक दशा में तलाक ठीक हो सकता है परन्तु ऐसा तलाक नहीं जैसा आज कल फैल रहा है ?—जो स्त्री पुरुषों को अपनी हीन वृत्तियों को पूरा करने को आजादी दे रहा है।

मेरी सम्मति में स्त्री और पुरुष मे शरीर काही एक मात्र भेद है वास्तविक सत्ता (आत्मा) स्त्री पुरुष के भेद भाव से शून्य है। बतौर आत्मा के स्त्रियो का भविष्य वैसाही महान होता है जैसा पुरुषो का।

मो०—क्या जगत में आपका विश्वास है ? मनुष्य के भविष्य के सम्बन्ध में आपका क्या मत है ? क्या पुनर्जन्म में आपका विश्वास है ? क्या अमरता की आपको इच्छा नहीं ?

बा०—पुनर्जन्म में मेरा विश्वास है। ससारकी सब पैदाशुदा चीजों का विनाश निश्चित है। अपने शरीरकी अमरता की मुझे इच्छा नही है। इस जीवन में काम करने के लिए शरीर एक आवश्यक अंग है। आत्मा की अमरता की जो पहले से ही निश्चित है मुझे अवश्य इच्छा है।

मो०—बुराई से क्या मतलब है ? ससार में आम रूप से जो बुराई पाई जाती है क्या उससे आपको घृणा है ? और क्या वह आवश्यक है ?

बा०—वास्तविक बुराई मानव स्वभाव में है। जान बूझ कर गलती करने को मैं बुराई समझती हूँ और मनुष्य जानते बूझते और समझते हुए बुराई करता है। इस प्रकार की त्रुटियों की प्रति क्रिया दुख-दायक होती है। परमात्मा निदय नही हैं वरन मनुष्य स्वय निर्दय है और वह प्रत्येक को उसके कर्म का उचित फल देता है। वह महान शिक्षक है। उसकी सार्वभौम व्यवस्था से मेरा कोई विरोध नहीं है। मैं इसे अच्छा समझती हूँ और इसके अस्तित्व के लिए बड़ी कृतज्ञ हूँ।

मनुष्य बहुत धीरे २ सीखता है इसीलिए उसे बार २ शिक्षा दी जाती है। ज्योंही मनुष्य पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जीवनोद्देश सीखना है त्योंही वह बुद्धिमान जिज्ञासु बन जाता है और वह बहुत से कष्टों से बच जाता है।

मो०—क्या प्रेम में आपका विश्वास है ? फ्रायड की थ्योरी का बाबत आपका क्या मत है ?

बादि०—सच्चे प्रेम में मैं विश्वास करती हू वह भी वासनाओं की उत्तेजनाओं में नहीं जो आज प्रेम समझा जाता है वरन् आत्मिक प्रेम में। फ्रायड की थ्योरी हमारे गूढ़ और मिश्रित स्वभाव के एक अङ्ग पर अतिशयोक्ति पूर्ण प्रकाश डालती है और इसे ही हमारी समस्त प्रतिक्रियाओं का आधार ठहराती है। न वह सत्य है और न वाँछनीय है। इस थ्योरी ने हमारी सभ्यता को बड़ी हानि पहुचाई है।

मो०—क्या आप आशावादी हैं या निराशा वादी है ?

श्री ला० मेघराज जी की हत्या तथा हरिजनोद्धार कार्य

इन्दौर सरकार का कर्तव्य

[लेखक—प्र० ला० धर्मदेव विद्यावाचस्पति]

मैं अभी हाल ही में नारायण गढ़ (इन्दौर-राज्य) से लौट कर आया हूँ, जहा पाठकों को ज्ञात होगा कि गत ८ एप्रिल को मध्यान्ह रामनवमी के दिन नारायण गढ़ आर्य समाज प्रधान श्री मेघराज जी की क्रूर हत्या की गई थी। इन्दौर-राज्य के प्रकाशन विभागाध्यक्ष (Publicity-officer) की तरफ से पिछले दिनों एक सूचना समाचार पत्रों में प्रकाशित कराई गई है कि श्री मेघराज जी की हत्या का हरिजनाद्धार अथवा अस्पृश्यता निवारण कार्य के साथ कोई सम्बन्ध न था। वह हत्या केवल वैयक्तिक द्वेष के कारण उनके कुछ जाति बन्धुओं ने की थी। इन्दौर के सर्व धर्म सम्मेलन और आर्य समाज संयोगिता-गज इन्दौर के उत्सव के पश्चात् २७ एप्रिल को प्रात मैं नारायण गड पहुंचा और वहा जाकर मैने इस सम्बन्ध में जाच की। हत्या के स्थल, सार्वजनिक वाचनालय श्री मेघराज जी का घर हरिजन मोहल्ला तथा अन्य स्थानों को देखा और लगभग ४० व्यक्तियों की साक्षी ली, जिन में से बहुतों ने लिखित बयान भी दिये। उनके आधार पर मै बिल्कुल निश्चित तौर पर इस बात को कह सकता हूँ कि श्री मेघराज जी की हत्या कुछ कट्टर पन्थियो ने उनके हरिजन कार्य से चिढ़ कर और अस्पृश्यता निवारण के कार्य में बाधा डालने के लिये ही की थी। इस विषय में निम्न लिखित स्पष्ट घटनाओं का उल्लेख पर्याप्त है जो एप्रिल मास सन् ३८ मे हुई और जिन से इस घोर हत्या के हरिजन कार्य के साथ सम्बन्ध होने मे अणुमात्र भी सन्देह नहीं रह सकता।

(१) २ एप्रिल को श्री मेघराज जी की प्रेरणा से आर्य समाज नारायण गढ के मन्त्री श्री-दीपचन्द जी और आर्य नवयुवक श्री घनश्याम जी आदि ने ११ हरिजन बालकों को लड़कों के स्कूल में दाखिल कराया।

वादि०—मैं आशावादी हू परन्तु मूर्ख आशावादी नही। मैं मानवी स्वभाव की पवित्रतामें विश्वास रखती हू। साथ ही कर्म फिलासफी में मेरी आस्था है मेरा यह भी विश्वास है कि मनुष्य जब अपने पाशविक स्वभाव को मानव स्वभाव में बदलेंगे और तब पशुत्व देवत्व में बदल जायगा।

मो०—जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? आदर्श स्टैंडर्ड क्या है? जीवनका आपकी फिलासफी क्या है?

वादि०—मनुष्य समाज को लाभ पहुचाना मोक्ष प्राप्त करना मेरी सम्मतिमें जीवनोद्देश्य है। यह ऊचे स्वप्न देखने और उन्हें जीवन के प्रति दिन के व्यवहार में लाने से सम्भव है केवल स्वप्न देखने मात्र से नहीं।

—

(२) ४ एप्रिल को कुछ हरिजन लड़कियों को नारायण गढ की कन्या पाठशाला में श्री मेघराज जी की विशेष प्रेरणा से दाखिल कराया गया।

(३) ६ एप्रिल को नारायण गढ़ के पौराणिक दल के प्रमुख मूलचन्द्र कुमठ तथा मगनी राम पटवारी ने नत्थू तथा मन्नालाल नामक २ हरिजनों को बुलाकर धमकी दी कि यदि तुम (हरिजनों) ने अपने लड़के लड़कियों को स्कूलों से नहीं हटा लिया तथा मन्दिर मे प्रवेश का यत्न किया तो तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के सिर फोड दिये जाएगे। उन्हों ने यह भी कहा कि हमारे पास एक २ मन्दिर मे पाच २ सौ आदमियों का (इस काम के लिए तुम्हें न घुमने देने और घुसने पर मारपीट करने) बन्दोबस्त है। उन्हों ने यह बात श्री दीपचन्दजी मन्त्री आर्य समाज को कही।

(४) श्री दीपचन्द जी ने रात को ८ बजे सार्वजनिक वाचनालय में श्री मेघराज जी को यह सारी बातें सुनाई और पूछा कि इस बारे मे आप का क्या करने का विचार है? तब श्री-मेघराज जी ने बड़ी गम्भीरता और उत्साह के साथ वाचनालय में अनेक जनो की उपस्थिति मे यह घोषणाकी (जिसे वे १५,१६दिन पहलेसे प्रकट कर चुके थे) कि मै रामनवमी के दिन सायकाल (८ एप्रिल) हरिजनों का जलूस निकलवा कर मन्दिर में अवश्य ले जाऊंगा। मै सब से पहले अपना सिर फुडवाने को तय्यार हूँ। इस घोषणा के समय वाचनालय के अन्दर और उसके सामने बाहर की तरफ (राम मन्दिर के सामने के चबूतरे पर,) अनेक पौराणिक कट्टर पन्थी लोग उपस्थित थे।

(५) ८ एप्रिल की दोपहर को (रामनवमी के दिन जिस दिन श्री मेघराज जी ने जलूस निकलवाकर हरिजनों को मन्दिर ले जाने की घोषणा कर रखी थी) जब श्री मेघराज जी अपनी भैंसें लेकर पानी पिलाने के लिये कुए पर गए हुए थे और अधिक गर्मी के कारण एक वृक्ष के नीचे कुछ आराम कर रहे थे तब ओंकार सिंह, ओंकार-लाल, मथुरालाल, वरदीचन्द, भवरलाल और दूलीचन्द इन ६ व्यक्तियों ने पहले एक दो ने अलग २ और फिर मिलकर उन पर लट्ठों, चाकू और कुल्हाडी से हमला किया। उनकी आखों में चाकू लगा कर उन्हें फोड़ दिया गया। उनका दाया पैर तोड डाला। शरीर के सब हिस्सों का लाठी कुल्हाडी आदि के प्रहार से जख्मी और लोहू लुहान कर दिया।

ठीक रामनवमी के दिन इस हत्या का होना भी श्री मेघराज जी के हरिजन कार्य के साथ इस के सम्बन्ध को सूचित करने के लिये किसी भी विचार शील निष्पक्ष सज्जन की दृष्टि में पर्य्याप्त है। यह आश्चर्य और खेद की बात है कि इन स्पष्ट घटनाओं को छिपाने की कोशिश की जा रही है। नारायण गढ के पोलीस सब इन्स्पेक्टर मि० मोहनसिह का जिसके पिता वहाँ कथावाचक हैं कई वास्तविक घटनाओं के छिपाने, प्रत्यक्ष-दर्शियों तक के बयान लेने से इन्कार करने और इस मामले को केवल वैयक्तिक द्वेष का रूप देने में सब से अधिक भाग है। नारायण गढ की जनता का दृढ़ विश्वास है कि मि०मोहन सिंह की जो आर्य समाज और आर्य समाजियों का कट्टर

विरोधी है जब तक नारायणगढ से एक दम बदली न कर दी जाएगी और उस की जगह पर किसी निष्पक्ष पोलीस आफिसर को नियुक्त न किया जाएगा तब तक बहुत सी सच्ची घटनाए प्रकट न होगी। अभियुक्तो मे से दो के पिता नारायणगढ की सनातन धर्म सभा के प्रधान हैं। उनका श्री मेघराज जी के हरिजन कार्य से नाराज हो कर मन्दिर प्रवेश रोक देने के लिये निश्चित समय से कुछ ही घण्टे पूर्व हत्या कर डालना जरा भी आश्चर्य जनक नही। यह सत्य है कि हत्या करने वालो मे से ४ मेघराजजी के (तथा कथित जाति वाले थे किन्तु इसी आधार पर यह कहना सर्वथा असङ्गत है कि केवल वैयक्तिक द्वेष वश उन्होंने ऐसा घोर कार्य किया। सन् १९२३ मे जम्मू के श्रीयुत रामचन्द्र जी का (जो रियासत मे खजान्ची थे) हरिजनोद्धार कार्य के कारण ही उन के अपने राजपूत बन्धुओ ने वध कर डाला था। ऐसे ही अन्य कई उदाहरण दिय जा सकते हैं। इस मामले को दूसरा रूप देने के लिये जा द्वेष की बात कही जाती है वह जाच करने पर ज्ञात हुआ कि एक कुए के सम्बन्ध म झगडे की ह जिसे लगभग ४० वर्ष हो चुके है। वह कु आ श्री मेघराज जी का था जिस औरो ने छीन लिया था। इतने वर्षो के पश्चात अब विरोधयो न उनकी हत्या इस कारण करदी इस बात को कौन बुद्धिमान मान सकता है ? श्री मेघराजजी की धर्म पत्नी श्रीमती आनन्दी बाई तथा इन के पुत्र श्री जगदेव सिंह वर्मा इत्यादि से जाच करने पर भी यही ज्ञात हुआ कि इस प्रकार के वैयक्तिक द्वेष का गत कई वर्षों से कोई कारण ही न था। इस लिये वैयक्तिक द्वेष का बहाना न बताते हुए इन्दौर सरकार को चाहिये कि अपराधियो को कठोर से कठोर दण्ड इस घोर अपराध के लिये दे। इन्दौर राज्य के प्राइम मिनिस्टर सर वामना Kt (I I से आर्य समाज इन्दौर का एक डेपुटेशन मेरे नेतृत्व मे २६ एप्रैल को मिला था और उन का ध्यान इस विषय की ओर विशेष रूप से आकर्षित करते हुए उन से निवदन किया गया था कि शीघ्र से शीघ्र उचित जाच करके फैसला कराया जाय और अपराधियो को कठोर दण्ड दिया जाए क्यो कि इन्दौर महाराज की अस्पृश्यता निवारण तथा मन्दिर प्रवेश विषयक घोषणा का पालन करते हुए ही श्री मेघराज जी की क्रूर हत्या की गई है जैसे कि उपर्युक्त घटनाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है।

यहा जनता की सूचनार्थ इतना और बतादेना चाहता हूँ कि श्री मेघराज जी के बडे पुत्र डा० रघुनाथसिह जी टीकम गढ रियासत मे लगभग १३०) पर (Customs commissioner) है अत उनकी धर्म पत्नी श्रीमती आनन्द बाई जी अपने निर्वाहार्थ जनता से कुछ लेना अनुचित समझती है। उन की यही प्रबल इच्छा है कि उन के पात देव का जिस अस्पृश्यता निवारण दलितो द्धारादि कार्य करते हुए बलिदान हुआ है उस कार्य को जनता जोरसे चलाये। और उनके स्मारक रूप म नारायणगढ मे आर्य समाज मन्दिर (अब तक वहा आर्य समाज का अपना मन्दिर नही है) और हरिजन पाठशालादि की स्थापना की जाए। इसी से उनको सन्तोष होगा।

सम्पादकीय—

हैदराबाद और आर्य समाज

इस पत्र के सम्पादक ने थोड़े दिन पूर्व एक सरक्यूलर द्वारा आर्य समाजो तथा आर्य समाजियों से अपील की थी कि वे आर्य समाज की जो गति विधि हैद्राबाद में इस समय बन रही है उस पर गम्भीर दृष्टि से विचार करें। ४ वर्ष से यह समस्या हमारे सामने उपस्थित हो रहा है और ४ वर्ष से ही लगातार सार्वदेशिक सभा इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्नकर रही है और जो प्रयत्न सार्वदेशिक सभा द्वारा इस समय तक हो चुके हैं, उन्हे ब्यौरेवार उस सरक्यूलर में दर्ज कर दिया था। यह सरक्यूलर भी इसी अङ्क में अन्यत्र दिया जा चुका है। पाठक वृन्द उसे पढकर अन्दाजा लगा लेंगे कि वैधानिक उपाय अवलम्बन करन में इस सभा ने कोई कसर उठा नहीं रक्खी। परन्तु फिर भी हैदराबाद गवर्नमेंट टस से मस नहीं हुई। उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया है कि वे अनेक आश्वासनों के देने के पश्चात् भी अपनी निश्चित नीति को बदलने के लिए तैयार नहीं।

हैदराबाद राज्य में हिन्दू जनताकी प्रबल प्रधानता है और हम यह अनुभव करते हैं कि हिन्दू जनता को अपने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विकाश में वहाँ की सरकार को पूरी सहाता देनी चाहिए। परन्तु ऐसा लेशमात्र भी नहीं हो रहा। विपरीत इस के आर्य समाज तथा हिन्दू जनता की धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को क्रूरता पूर्ण व्यवहार से कुचला और मसला जा रहा है।

यह स्थिति बहुत दिनों तक नहीं रह सकती। जैसा कि सरक्यूलर में प्रगट किया गया था इस विषय पर गम्भीर विचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा की अन्तरग सभा ने अपने १०-४-३८ के अधिवेशन में बहुत देर तक इस परिस्थिति पर वाद विवाद किया और श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति के एक महत्व पूर्ण प्रस्ताव को सर्व सम्मति से पास किया। हम अपने पाठको की सूचनार्थ उस प्रस्तावको अक्षरश नीचे दे रहे हैं। यह प्रस्ताव प्रत्येक दृष्टि से परिस्थिति की गम्भीरता को दर्शाने वाला है। इस प्रस्ताव में जो निर्देश आर्य्य समाज को दिए गए है उनकी पूर्ति के लिए आर्य्य समाज को आगामी काल में बड़ा उद्योग करना पड़ेगा। साथ ही यह प्रस्ताव आर्य्य समाजियों को एक भारी त्याग के लिए आवाहन करता है। हमें पूर्ण आशा है कि आर्य्य समाज अपने परीक्षा काल में अवश्य उत्तीर्ण होगा। प० इन्द्र जी को हम बधाई देते हैं कि उन्हो ने हैद्राबाद समस्या को सुलझाने के लिए आर्य्य समाज का विशेष रूप से मार्ग प्रदर्शन किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव इस प्रकार है —

यह सभा हैदराबाद रियासत मे आर्य्य समाज और आर्य्य समाजियो पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी घोर निन्दा करती हुई उस रियासत के आर्य्य निवासियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

इस सभा को इस बात का विशेष दुःख है कि रियासत के उच्च अधिकारियों ने सभा के प्रतिनिधियों को बार बार आश्वासन दिए हैं कि रियासत में आर्य्य समाज के साथ न्याय पूर्ण व्यवहार किया जायगा। परन्तु सदा उन आश्वासनों को तोड़ा गया है और स्थिति को अधिक से अधिक भयंकर होने दिया है। यह सभा समझती है कि अब दशा बहुत ही बिगड़ गई है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है।

सभा की हैदराबाद रियासत से मांग है कि—

(१) गश्ती निशान ५४ को मन्सूख कर दिया जावे।

(२) कवायद तक़रीबन मजहबी मन्सूख कर दिये जायं।

(३) कानून अखाड़ा मन्सूख कर दिये जाय।

(४) खानगी मदरसे की गश्ती मन्सूख कर दी जाय।

(५) फिर्के वारी दंगों के मुकद्दमे की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा कराई जाय।

(६) बाहर के उपदेशकों पर इजाजत की पाबन्दी न लगाई जाय। कोई खिलाफ़ कानून काम करे तो मुकद्दमा चलाया जाय। जिस का दाखिला बन्द है खोल दिया जाय।

(७) पुस्तकें बिना जाच जब्त न किये जावें।

(८) समाचार पत्र के निकालने की आज्ञा दीजाय।

(९) मुसलमान हिन्दु और आर्य्यों के त्यौहार मिलकर आने पर उनके मनाने की स्वतन्त्रता रहनी चाहिये।

(१०) आर्य्य समाज, हवन कुण्ड के स्थापित करने के लिए इजाजत की जरूरत न रखी जाए।

(११) जेल खाने में कैदियों को मुसलमान न बनाया जाय और हमको उन में प्रचार की आज्ञा हो।

(१२) सरकारी नौकर जो आर्य्य हैं उन पर आर्य्य होने के कारण सख्ती न की जाय।

(१३) आर्य्यों को अपने घरों पर और आर्य्यसमाज पर झंडा लगाने की स्वतन्त्रता दी जाये।

(१४) गुलबर्गा निजामाबाद, हैद्राबाद के मुकद्दमों की तहकीक़ात निष्पक्ष कमीशन द्वारा की जाये।

क्योंकि सभा को दिए गए आश्वासनों की रियासत के अधिकारियों ने कोई परवाह नहीं की, और सभा यह भी आवश्यक समझता है कि सम्पूर्ण आर्य्य जनता को इस आवश्यक प्रश्न के सम्बन्ध में साथ लेना आवश्यक है इसलिए सभा निश्चय करती है कि पांच मास के अन्दर अन्दर मध्य प्रदेश में अथवा महाराष्ट्र में किसी ऐसे केन्द्र में जो हैद्राबाद रियासत के समीप हो, एक आर्य्य महा सम्मेलन (Aryan Congress) की जाय जिस में विशेषतया हैद्राबाद की समस्यापर विचार हो।

सभा की सम्मति है कि यदि रियासत के अधिकारी शीघ्र ही अपनी नीति में परिवर्तन करने को तैयार नहीं, तो सम्पूर्ण आर्य्य समाज को सब उचित उपायों से, जिन में सत्याग्रह भी शामिल है, अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

यह सभा आर्य्य रक्षासमिति को आदेश देती है

कि वह इस प्रस्ताव के अनुसार आर्य महासम्मेलन के संगठन, तथा अन्य सब आवश्यक उपायों को काम मे लाकर हैद्राबाद मे आर्यसमाज के अधिकारो की रक्षा का प्रयत्न करे।

श्री० पं० मेघराज जी का बध

नारायण गढ़ (इन्दौर) आर्य्यसमाज के प्रधान श्री प० मेघराजजी की हत्या के समाचार आर्य जगत का मिल चुके हैं। हत्यारे कौन और कितने व्यक्ति थे हत्या किस नृशसता और क्रूरता पूवक की गई और हत्या का कारण क्या था ये सब बाते आर्य्य जनता पर पर्याप्त रूप से विदित हो चुकी है। अन्यत्र प्रकाशित समाचारो से भी उन पर काफा प्रकाश पड़ता है। हत्या करने वाले हिन्दू धर्मानुयायी थ और हत्या का कारण प० मेघराजजी का हरिजनो का इन्दौर दरबार की घोषणाके अनुसार रामनवमाके दिन मन्दिरा में देवदर्शन कराने का निश्चय और उसकी घोषणा थी। यद्यपि इन्दौर दरबार के प्रकाशन विभाग ने हत्या के इस कारण का अखबारो मे खडन किया है और उसका कारण व्यक्तिगत द्वेष प्रगट किया हैं तथापि नारायणगढ़ आर्य्यसमाज के मन्त्री के वक्तव्य तथा अन्य जिम्मेवार महानुभावो की जाच पड़ताल के परिणामो से जो उन्होने मौके पर पहुच कर प्रत्यक्ष दर्शियों के बयान मौखिक और लिखित रूपों में लेलेकर की है प्रकाशन विभाग की सूचना को पुष्टि नहीं होती है और हत्याका कारण हरिजनोद्धार कार्य्य ही पुष्ट होता है। यह हत्या रामनवमा के दिन हुई है, स्व० मेघराजजी ने हरिजन बालको और बालिकाओं को सवर्णों के स्कूलों मे दाखिल कराया था, हरिजनों को मन्दिरों मे ले जाने की घोषणा की थी और उन सवर्ण लोगों को चुनौती भी दी थी जिन्होंने मन्दिर प्रवेश के लिए हरिजनो को मारने पीटने की धमकी दी थी। ये सब बातें सच्ची बतलाई जाती हैं। ऐसी अवस्था मे इस हत्याका कारण व्यक्तिगत द्वेष किस प्रकार हो सकता है यह समझ में नहीं आता। इस हत्या की तह मे व्यक्तिगत द्वेष ही यदि मान लिया जाय जैसा कि बतलाया जाता है कि स्व०मेघराजजी की अपना बिरादरी वाला से शत्रुता थी तब भी हत्याका तात्कालिक कारण यह द्वेष सिद्ध नहीं होता है। लगभग ४० वर्ष हुए जब उनका बिरादरी वालो से अपने किसी कुंए के मामले म झगड़ा हुआ था। ४० वर्ष बाद ठीक रामनवमी के दिन हरिजनोद्धार सम्बन्धी उनके कार्यों और घोषणाओं की मौजूदगी मे उनका बध उस व्यक्तिगत द्वेष का कारण हो सकता है इसे कौन सामझेदार व्यक्ति स्वीकार कर सकता है।

हमे आश्चर्य है कि इन्दौर दरबार के प्रकाशन विभाग ने इस प्रकारकी घोषणा क्योंकर निकाली। हमें मालूम हुआ है कि पुलिस इस मामले को दबाने का पूरा२ यत्न कर रही है। आर्यसमाज इन्दौर का इस मामले को हाथ में लेकर इन्दौर दरबारसे न्याय कराना चाहिये हम आर्य जगत की ओर से इन्दौर समाज को विश्वास दिला देना चाहते है कि उसको हर प्रकार की सहायता उसे प्राप्त होगी। यदि यदि यह मामला दबा दिया गया तो इस से आर्य समाज के दीवानों को प्रगतियों में कोई बाधा नहीं पहुचेगी। वे अपनी सुनिश्चित प्रथा और मर्यादा के अनुसार कार्य में दत्त रहेंगे। इस प्रकार के बध और हत्याओ की आशङ्का या भय उनके

कर्त्तव्य पालन में कभी भी बाधक नहीं हुई हैं। निश्चय ही यह हत्या उस क्षेत्र में हरिजनोद्धार कार्य मे ठीक उसी प्रकार चार चाँद लगायगी जिस प्रकार राजपूतों द्वारा म० रामचन्द्रजी की हत्या ने जम्मू राज्य में चार चाँद लगाये थे। हाँ इस मामले के दबाए जाने से इन्दौर दरबार की प्रशंसनीय घोषणा को क्रियान्वित करने वाले अन्य सुधारकों को बड़ी निराशा होगी जो स्वयं इन्दौर दरबार वा अन्य प्रगति शील सज्जनों को वाँछनीय न होगा। आर्यसमाज अपराधियों को बदले की किसी भी भावना से दण्डित नहीं कराना चाहता है न वह देव मन्दिरों में हरिजनों के दर्शनों का पक्षपाती है परन्तु वह अपने एक बलिदान को स्वार्थियों के प्रयत्नों के द्वारा विस्मृति की धूलि में विलीन नहीं होने देना चाहता है और इसके लिए वह कोई यत्न उठा न रक्खेगा। आर्य समाज केवल मानवता के अधिकारों की रक्षा के लिये ही देव मंदिरों इत्यादि में हरिजनों के प्रवेश का पक्ष लेता है जिसप्रकार अहमदी उपदेशक के अफ़गानिस्तान में संग सार किए जाने पर आर्य समाज ने उसे घृणा की दृष्टि से देखा था और प्रचार स्वतन्त्रता की मांग की थी और उसके लिये यत्न करता है। यह बात हम डंके की चोट स्पष्ट कर देना चाहते हैं।

हम किन शब्दों में स्वर्गीय मेघराजजी के परिवार तथा उनकी धर्म पत्नी आनन्दी बाई के प्रति अपनी सम्वेदना प्रगट करें यह सूझ नहीं पड़ता है। हमारा हृदय उनके दुख में फटा पड़ता है। स्वर्गीय मेघराज जो वस्तुतः मरे नहीं हैं जिस काममें उनकी मृत्यु हुई है वह बड़ा उच्च है और इसमें वे अमर होगये हैं यह सोचकर उनके परिवार को उनके बलिदान पर दुख नहीं वरन हर्ष प्रगट करना चाहिये।

हमारा यह विचार है कि आर्यसमाज को इस प्रकार के व्यक्तियों और अन्य कार्य्य कर्ताओंके आश्रित निराधार परिवारों के भरण पोषण इत्यादि की व्यवस्था संगठित रूप से करना चाहिए। इस घटना ने हमारे इस विचार को बहुत उग्र रूप दे दिया था और हमने मालूम किया था कि स्व० मेघराजजी के आश्रित परिवार को सहायता की जरूरत होगी वा नहीं। मालूम हुआ है उन्हें सहायता की जरूरत नहीं है, उनकी धर्मपत्नी चाहती हैं कि स्व० मेघराजजी की याद में नारायण गढ़ में आर्यसमाज तथा हरिजनोद्धार सम्बन्धी पाठशाला इत्यादि के रूप में स्मारक बना दिया जाय। यह विचार शुभ है उसके लिए यत्न होना चाहिए। परन्तु साथही सहायता की व्यवस्था के उपर्युक्त विचार पर गंभीरता पूर्वक विचार करके उसे भी क्रियान्वित करना चाहिए। हम समझते हैं सार्वदेशिक सभा में 'आर्य्य परिवार सहायता निधि' या अन्य किसी उपयुक्त नाम से तत्काल निधि खुलनी चाहिए और उसके लिए आर्य्य जनता को उदारता पूर्वक धन देना चाहिए।

धर्म्मार्य्य सभा—

तिथि १-५-१९३८

नि० स० १

यह सभा श्री पं० चमूपतिजी की मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रगट करती हुई उनके परिवार के प्रति सम्वेदना प्रगट करती है।

नि० स० ३

अन्तरंग सभा द्वारा भेजा हुआ वानप्रस्थाश्रम सम्बन्धी व्यवस्थाओं का विषय पेश हुआ। विचार के पश्चात् निम्न निश्चय हुए —

(१) वानप्रस्थियों के लिये पेंशन अथवा अपने पुत्रादि से निर्वाहार्थ धन लेना विहित है परन्तु उन्हें पेंशन से अपने निर्वाहार्थ लेकर शेष धन सार्वजनिक कार्यों में खर्च कर देना चाहिए।

(२) वानप्रस्थी अपने पूर्व सम्बन्धियों के पास कुछ समय के लिये आवश्यकतानुसार उसी प्रकार ठहर तथा उनसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं जिस प्रकार अन्य गृहस्थियों के यहाँ ठहर तथा पत्र व्यवहार करते

हैं ।

(३) वानप्रस्थी किसी ऐसी संस्था में कार्य कर सकते हैं जहाँ उनके आश्रम सम्बन्धी कर्त्तव्यों में बाधा न पड़े । आवश्यकतानुसार वे भोजन और वस्त्र संस्था से ले सकते हैं, वेतन किसी दशा में भी नहीं ले सकते ।

(४) वानप्रस्थी आश्रम में कुटी बना कर रह सकते हैं ।

(५) कन्द मूल आदि के स्थान पर इस समय वानप्रस्थियों का भोजन सात्विक दाल रोटी इत्यादि होना चाहिए ।

६—उनके वस्त्र-कुर्ता और धोती सफेद बिना लाँग की होनी चाहिये और एक पीला दुपट्टा गले मे डालना चाहिए । धोती के नीचे लंगोट पहनना आवश्यक है ।

(७) वानप्रस्थियों को देश कालानुसार जटिल अथवा मुण्ड होना चाहिये आंशिक मुण्ड नहीं होना चाहिये ।

(८) वानप्रस्थियों को केवल 'वानप्रस्थ' शब्द से सम्बोधित करना चाहिये गृहस्थों की भाँति लाला जी, बाबू जी इत्यादि से सम्बोधित नही करना चाहिये ।

नि० सं० ५

नोटिस का विषय सं० १—संस्कार विधि के संशोधन का विषय पेश हुआ । श्री प्रधान जी ने विषय का स्पष्टीकरण किया तत्पश्चात् श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने निम्न प्रस्ताव रखा—

चतः २८३ ३४ के अधिवेशन मे जहाँ तक संशोधन कार्य किया था उसके आगे उसके बाद कुछ नहीं हुआ न उस समय के निश्चय के अनुसार अन्य कोई कार्यवाहि हुई है अत इस पर आगे कार्यवाहि की जाय । इस प्रस्ताव का स्वामी ब्रह्मानंद जी ने अनुमोदन किया ।

इस प्रस्ताव पर स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने संशोधन प्रस्तुत किया कि निम्न शब्द उपर्युक्त प्रस्ताव में और जोड़ दिये जावें —

संस्कारोंकी आर्य विद्वान एक ऐसी संक्षिप्त संस्कार विधि के केवल विधि भाग के आधार पर से पद्धति बनावे जिससे संस्कारों में उनमे श्रद्धापूर्वक करने में आर्य जनता की रुचि बढ़े ।

पं० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति ने संशोधनका अनुमोदन किया ।

वाद विवाद के पश्चात् संशोधन पर सम्मति लेने और पक्ष विपक्ष में ५, ५ सम्मतियाँ आने पर श्री प्रधान जी की सम्मति से संशोधन पास हुआ ।

(१) निश्चय हुआ कि वर्तमान संस्कार विधि के संशोधनीय स्थलों को छाँटने तथा संशोधनों की सूची बनान का कार्य निम्न सज्जनों की उप समिति के आधीन किया जाय ।

(१) श्री प० भद्रसेन जी (संयोजक)
(२) ,, ,, ब्रह्मदत्त ,, जिज्ञासु
(३) ,, ,, जयदेव ,, विद्यालङ्कार
(४) ,, ,, सूर्यदेव ,, ,,

तथा संक्षिप्त विधि लिखनेका कार्य निम्न सज्जनों के सुपुर्द किया जाय ।

(१) श्री स्वामी वेदानन्द जी
(२) ,, प० बुद्धदेव जी
(३) ,, ,, धर्मदेव जी

ये तीनों सज्जन पृथक् पृथक् अपनी अपनी सम्मति के अनुकूल संक्षिप्त विधि बनाकर यथा संभव शीघ्र इस सभा के कार्यालय में भेज देंगे ।

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R.)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय में १७१ बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सांसारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए वस्त्रों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकारके खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय (१५००) रु० मासिक है। वह दानी महाशयों की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) बालकों के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी गृह कोई नहीं है इन में से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक है अतः यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करें ताकि वह कष्ट दूर हो जावे।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बंधियों का पता नहीं लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखें हैं वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते हैं। यह अनाथालय सरकार की तरफसे Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते हैं।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन है —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, श्री पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B A, लाहौर।

अंत में नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय में आता है उस को रसीद तत्काल भेजी जाती है।

विषय सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे काग़ज़ पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटा हुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।–)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	≡)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	≡)॥	≡)
(६) गो करुणानिधि	≡)	–)॥
(७) शिक्षापत्री	≡)	–)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	≡)	–)॥
(९) सत्यधर्म विचार	–)॥	–)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	–)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	–)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य –) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य –)॥, घटा हुआ मूल्य –)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमे आर्यसमाज के दश नियमों को विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ॥।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक मे वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातो पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शो और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक मे आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-सस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढने और सग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक मे वर्णित मत को एक जगह सग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिप आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शी व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ सख्या लग भग ५०० मूल्य १॥ पि

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धा शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के प्र आर्य समाज के प्रसिद्ध २ सगीतज्ञों कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ है इसमें देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमा महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमा मे तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवा में श्रेष्ठ सगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई माग को पूरा कर के उद्देश्य से ही इस सग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपा गया है। मूल्य ॥)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता सस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रा १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		मू०	घ० मू०			अ० मू०	घ०
(१४)	वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६)	विरजानन्द विजय	।)	≈
	„ २५ प्रति का	१।)	१।)	(१७)	हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	≈
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	≈)	≈)				

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown th during the process of this fumigation, such products are given out which are bactricidal an vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and produc tive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science.** He has brought to bear upon the subject a the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

—*Ganganath Jha*

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As. 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As. 10, Reduced price As 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8. Reduced price As. 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya —price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A. L. L B —price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली ।

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा

३० वां वार्षिक वृत्तान्त

वियोग

वर्ष का विवरण देने से पूर्व्व यह प्रगट कर देना आवश्यक है कि इस वर्ष श्री० प० चमूपति ो एम० ए० के निधन से आर्य जगत को महती हानि उठानी पड़ी है।

(१) निर्माण-व्यवस्था

गत वर्ष तक इस सभा में १४ प्रति निधि सभाएँ सम्मिलित थीं। कार्य्य विवरणान्तर्गत वर्ष आर्य्य प्रति निधी सभा (दिवाकर) डच गायना अपनी अनियमित और आर्य्य समाज विरोधी ार्य्य वाहियों के कारण अन्तरग सभा तिथि ६-६-१९३७ के नि० स० २ के अनुसार सभा से थक् की गई। इस वर्ष जो प्रति निधि सभाएँ इस सभा में सम्मिलित रहीं उनके नाम और नके प्रति निधि सदस्यो की सख्या प्रत्येक के सामने निम्न प्रकार दी जाती है —

नाम सभा		प्रतिनिधि सदस्यों की संख्या
१ आर्य्य प्रतिनिधि सभा	पजाब	७
२ ,, ,, ,,	संयुक्त प्रान्त	७
३. ,, ,, ,,	राजस्थान	३
४ ,, ,, ,,	बिहार	५
५ ,, ,, ,,	बम्बई	५
६ ,, ,, ,,	बंगाल	५
७. ,, ,, ,,	मध्य प्रदेश	३
८. ,, ,, ,,	निजाम राज्य	२
९. ,, ,, ,,	नैटाल	१
१० ,, ,, ,,	मौरिशस	१
११. ,, ,, ,,	फिजी	४

१२.	आर्य्य प्रतिनिधि सभा	सिन्ध	×
१३.	,, ,, ,,	सुरी नाम	×
		डच गायना	×
			४२

नियमानुकूल वे आर्य्य समाज जिनके आर्य्य सभा सदो की सख्या ५० या अधिक हो और जो प्रति वर्ष दशाश इस सभा को देवे वे इस सभा मे प्रविष्ट हो सकते हैं। इस वर्ष ११ आर्य्य समाजें इस सभा मे प्रविष्ट रही।

	नाम समाज	प्रतिनिधियों की संख्या
१.	गाजियाबाद	×
२.	खुर्जा	×
३.	बरेली	१
४.	बगदाद	×
५.	देहली शाहादरा	×
६.	मद्रास	×
७.	टिप्लीकेन	×
८.	सूलै	[illegible]
९.	मगलौर	[illegible]
१०.	देहली	[illegible]
११.	बंगलौर	×
		३

प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य

इस वर्ष निम्न महानुभाव सभा के प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य रहे —

प्रतिष्ठित सदस्य

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
(२) ,, स्वामी सर्वदानन्द ,,
(३) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(४) ,, स्वामी ब्रह्मानन्द ,,

आजीवन सदस्य

(१) श्री० म० वेद मित्र जिज्ञासु जी
(२) ,, ला० ज्ञानचद ,,
(३) श्री बाबू ज्योति स्वरूप जी
(४) श्री लाला रलाराम ,,

(५) श्री ला० नारायण दत्त जी
(६) „ प० मूलचन्द्र „
(७) श्री प० गंगा प्रसाद जी चीफ जज
(८) „ दीवान तुल्जाराम „

इस वर्ष के अन्त में यह सभा १३ प्रतिनिधि सभाओं ११ आर्य्य समाजों के ४५ प्रतिनिधि सदस्यों ४ प्रतिष्ठित और ८ आजीवन कुल ५७ सभा सदों का समुदाय थी। •

(२) सभा के अधिकारी और अन्तरंग सदस्य

गत वर्ष की अपेक्षा कार्य्य विवरणान्तर्गत वर्ष में अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों में क्या अन्तर हुआ था यह प्रगट होजाय इस लिये दोनों वर्षों के अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों के नाम नीचे दिये जाते हैं —

गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान
(२) „ स्वा० स्वतन्त्रानन्द „ उप „
(३) „ प० गगाप्रसाद जी चीफ जज उपप्रधान
(४) „ बा० घनश्यामसिंह जी „
(५) श्री ला० देशबन्धु जी मन्त्री
(६) „ „ नारायणदत्त „ कोषाध्यक्ष
(७) „ „ ज्ञानचंद „ पुस्तकाध्यक्ष

कार्य्य विवरणांतर्गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री बा० घनश्यामसिंह गुप्त प्रधान
(२) „ „ गगा प्रसाद जी चीफ जज उप „
(३) „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द „ „ „
(४) „ प्रो० सुधाकर „ मन्त्री
(५) श्री डा० युद्धवीरसिंह जी उप मन्त्री
(६) „ ला० नारायणदत्त „ कोषाध्यक्ष
(७) „ „ ज्ञानचंद „ पुस्तकाध्यक्ष

गत वर्ष के अन्तरंग सदस्य

(१) श्री० प्रो० सुधाकर जी एम० ए० (राजस्थान)
(२) „ पं० वेदव्रत „ (बिहार)
(३) „ म० नगीनदास „ (बम्बई)
(४) „ बा० पूर्णचन्द्र „ (प्रवासियोंके प्रतिनिधि)
(५) „ बा०ज्योतिस्वरूप „ (आजीवन सदस्यों के प्रतिनिधि)
(६) „ डा० श्यामस्वरूप „ (समाजों के प्रतिनिधि)
(७) „ पं० चमूपति „
(८) श्री म० कृष्ण जी
(९) „ पं०इन्द्र „
(१०) „ आचार्य रामदेव „
(११) „ पं० ज्ञानचन्द „
(१२) „ प्रो०महेन्द्रप्रताप „
(१३) „ बा० पीतमलाल „
(१४) „ बा० श्रीराम „

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष के अन्तरंग सदस्य

(१) श्री० प० वेदव्रत जी	(विहार)	(८) श्री बा० ज्योतिस्वरूप जी		
(२) „ म० नगीनदास „	(बम्बई)	(९) „ बा० श्रीराम	„	(युक्त प्रान्त)
(३) „ बा० पूर्णचन्द्र „ प्रवासियों के प्रतिनिधि		(१०) „ प० धुरेन्द्र	,	„
(४) „ ला० देशबन्धु „ (समाजों के प्रतिनिधि)		(११) „ बा० मदन मोहन	सेठ	,
(५) „ नारायण स्वामी „		(१२) „ प० ज्ञानचन्द	„	(पंजाब)
(६) „ म० कृष्ण „		(१३) „ „ इन्द्र	„	„
(७) „ कुँवर चान्दकरण ,		(१४) „ आचार्य रामदेव,,		„

अन्तरंग सभा तिथि ३-१०-३७ के निश्चय स०३ के अनुसार श्री० प०धुरेन्द्रजी शास्त्री के स्थान में श्री कुँवर हुक्मसिंह जी अन्तरग सदस्य निर्वाचित हुए।

(३) मद्रास प्रचार

इस वर्ष मद्रास प्रान्त में सभा की ओर से निम्न प्रचारक काम करते रहे —

१ श्री पं० धर्म देव जी (कर्नाटक) मैसूर
२ „ „ केशव देव जी (आंध्र तामल) मद्रास
३ „ „ नारायणदत्त जी (दक्षिण केरल)
४ श्री प० साधु शिव प्रसाद जी (उत्तर केरल)
५ , „ मदन मोहन विद्याधर जी (आंध्र)

श्री प० केशवदेव जी ज्ञानी ने १८ मई १९३७ से सभा की वैतनिक सेवाओं से अपने को मुक्त करके अवैतनिक रूप से प्रचार कार्य किया। प० जी के स्थानपर १६ सितम्बर १९३७ से श्री पं० मदन मोहन विद्याधर जी स्नातक गुरुकुल कागड़ी नियुक्त हुए और वे विजगापट्टम को प्रचार केन्द्र बनाकर प्रचार कार्य्य करते रहे। इन प्रचारकों के अतिरिक्त श्री मती देवी विद्यावती जी धर्म पत्नी श्री प० धर्म्म देव जी, भी अवैतनिक प्रचारिका के रूप में अपने पतिदेव के साथ प्रचार कार्य्य में योग देती रहीं ।

कर्नाटक (मद्रास)

मौखिक प्रचार—बंगलौर शहर, बंगलौर छावनी, मैसूर, हिन्दू पुर, कान्कन हल्ली, गौरी-विदनूर टिप्पूर, दावन गेरे, हैद्राबाद, कगेरी शूलै, राज पुरम, श्री रामपुर, मावल्ली इत्यादि स्थानों पर प्रचार किया गया —

लेख बद्ध प्रचार—इस वर्ष निम्न लिखित पुस्तक तथा ट्रैक्ट लिखे और प्रकाशित किए गए-

(1) Thunder Voice of Rishi Dayananda.

यह ट्रैक्ट ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर प्रकाशित हुआ।

(2) The significance of the Vedic Sanskars—Outline of the Vedic Marriage Ceremony

(3) Yogiraj Shri Krishna and the Arya Samaj

यह ट्रैक्ट कृष्ण-जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित किया गया।

(4) The Mission and Message of Rishi Dayananda

ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर यह ट्रैक्ट प्रकाशित हुआ।

(५) वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी।

यह पुस्तक हिन्दी से कनरी मे अनूदित हुई।

उपर्युक्त ट्रैक्टों के अतिरिक्त मंगलौर आर्य समाज की तरफ से वैदिक धर्म ग्रन्थ माला के ६ पुष्प 'वेदों का महत्व' 'वैदिक धर्म का महत्व' 'शंकर रामानुज दयानन्द' 'संस्कार' 'श्राद्ध निर्णय' 'पूजा रहस्य इत्यादि विषयों पर इस वर्ष प्रकाशित हुए।

पर्व और सम्मेलन

पर्व

इस वर्ष ऋषिबोधोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रावणी उपाकर्म, कृष्ण जयन्ती, विजया दशमी, ऋषि निर्वाणोत्सव, श्रद्धानन्द दिवस, वसंत पञ्चमी इत्यादि पर्व बड़े समारोह पूर्वक कर्नाटक तथा केरल के अनेक नगरों और ग्रामों में मनाए गए तथा आर्य समाज के प्रचार में इन पर्वों का अधिक से अधिक उपयोग किया गया। इन सब पर्वों में हरिजन भाई बहु संख्या में सम्मिलित होते रहे और उनके साथ सब आर्य भाई प्रेम और समानता पूर्वक भोजन तथा मिष्टान्नाहार आदि करते रहे।

सम्मेलन

इस वर्ष निम्न लिखित सम्मेलनों की आयोजना वैदिक धर्म प्रचार तथा समाज सुधारार्थ की गई जिन में सभा के प्रचारकों ने विशेष क्रियात्मक भाग लिया —

एक देव सम्मेलन (One God Conference)

२ एक धर्म सम्मेलन (One Religion Conference)

ये दोनों सम्मेलन ३० मार्च १९३७ को कनानौर के निकट चौवा में सभा के प्रचारक श्री पं० धर्मदेवजी के सभापतित्व में हुए।

(३) समाज सुधार सम्मेलन-यह सम्मेलन बेंगलौर में ३० जनवरी १९३८ को श्री स्वामी भारतानन्द जी (Mr Maurice-एक पौलैन्ड निवासी सज्जन ने संन्यास ग्रहण किया हुआ है तथा आर्य्य धर्म और संस्कृत के अत्यधिक प्रेमी हैं) के सभा पतित्व में हुआ। इस में श्रीमती लोकसुन्दरी

रमन (सर. सी० वी० रमन की सुयोग्य धर्म्म पत्नी) श्रीमती नम जम्मा B H L. T. प्रो० यामुना चार्य M. A श्रीयुत सम्पत आयगर रिटायर्ड जज इत्यादि प्रतिष्ठित देवियो और सज्जनों के बाल-विवाह, जाति भेद, अस्पृश्यता, दहेज प्रथा इत्यादि कुप्रथाओं के विरुद्ध भाषण हुए और समाज सुधार विषयक प्रस्ताव पास हुए।

इस के अतिरिक्त सभा के प्रचारक श्री० प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति ने अखिल भारतीय ओरियन्टल कान्फ्रेंस मे जो २० से २२ दिसम्बर १६३७ तक त्रिवेन्द्रम मे हुई थी आर्य्यसमाज के प्रतिनिधि केरूप में भाग लिया और "वैदिक यज्ञाना महिंसात्मकत्वम इस विषयपर सस्कृत मे अ ग्रेजी भाषा नुवाद सहित निबन्ध पढ़ कर सुनाया। इसी अवसर पर सभा के प्रचारक ने ट्रावन्कोर के महाराजा को फल-भोज के अवसर पर जो महाराज ने सम्मेलन के विद्वान प्रतिनिधियो को अपने राज प्रसाद मे दिया था और जिसमे सभा के प्रचारक भी आमन्त्रित किये गए थ, आर्य्यसमाज का हिन्दी अंग्रेजी और कनरी का साहित्य भेट किया।

इस अवसर पर भिन्न २ धर्म्मों के देश और विदेश के प्रसिद्ध २ प्रतिनिधियों और सज्जनों से सभा के प्रचारकों का विचार विनिमय हुआ और उन्हे आर्य्य साहित्य भेट किया गया।

संस्कार—

इस वर्ष वैदिक सस्कारो को लोक प्रिय वनाने का विशेष प्रयत्न किया गया। इस विषय मे मौखिक तथा लेखवद्ध दोनों प्रकार के उपायो का आश्रय लियागया। इस वर्ष निम्न सस्कार हुए —

११ विवाह सस्कार, २ नाम करण, १ मु डन १ गृहप्रवेश, ६० यज्ञोपवीत,—

इन सस्कारों मे श्रीमती डाक्टर भाग्यम्मा ऐम बी बी ऐस, ऐफ आर सी का आन्ध्र विश्व विद्यालय के उपाध्याय डा० पुरुषोत्तम एम ए., पी यच डी के साथ विवाह सस्कार विशेष उल्लेख-नीय है। देवी जी ईसाई धर्म्म से आर्य्य धर्म मे दीक्षित हुई हैं।

शुद्धि—

इस वर्ष लगभग १५० ईसाइयो की शुद्धि की गई जिनमे सबसे अधिक उल्लेखनीय ईसाई मिशनरी रेवरेंड भद्रप्पा की पुत्री डा० भाग्यम्मा एम बी बी ऐस जो मैडिकल कालेज विजगापट्टम में प्रोफेसर हैं, की शुद्धि है।

इन शुद्धियों के अतिरिक्त दावनगेरे (मैसूर राज्य) मे २०० हरिजनों को ईसाई बनने से बचाया।

अछूतोद्धार—

हरिजनोद्धार का कार्य्य इस वर्ष भी प्रचारकों की प्रचार-प्रगतियों का एक मुख्य अंग रहा है। इस वर्ष हरिजनों मे ५ विवाह संस्कार तथा १० यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति से कराएगए तथा

आर्य्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों मे वे बहु सख्या में भाग लेते रहे। इसके अलावा उनमें व्याप्त मद्य मासादि सेवन की बुरी आदतों, अन्यान्य सामाजिक कुरीतियों, तथा उनके विविध नागरिक कष्टों के निराकरण का यत्न होता रहा है।

आर्य समाज स्थापना

कंगेरी में एक आर्य्य समाज की स्थापना की गई।

इस समाज को मिलाकर अब तक इस भाग में निम्न समाजें स्थापित हुई हैं —

(१) मगलौर (२) बेंगलोर (३) मैसूर (४) तीर्थहल्ली (५) कासर गोड (६) कुकरपुर (७) नलनागढ़ी (८) बेलगाव (९) हुब्ली (१०) पुत्तुर (११) होस दुर्ग (१२) हिरी पढ़क (१३) रामचन्द्र पुरम (१४) कार्कल (१५) कन्नानौर (१६) हिन्दू पुर (१७) देवनहल्ली (१८) बगलौर छावनी (१९) कंगेरी।

आन्ध्र

मौखिक प्रचार

विजगा पट्म, एलूर, ताड़ी पल्ली गूढ़ा, बरहामपुर, पन्डूर, (विजयनगर स्टेट)

कक्षाएं

विजगा पट्म में पहली दिसम्बर ३७ से आर्य्य हिन्दी विद्यालय' को स्थापना की गई। विद्यार्थियों की संख्या लगभग ३० है। २० विद्यार्थियों को दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाओं के लिए तय्यार किया गया। कई वकील भी इस विद्यालय मे हिन्दी का अध्ययन करते रहे हैं। आर्य्य समाज की शिक्षाओं के प्रचार की दृष्टि से भी यह प्रयोग सफल रहा है।

संस्कार

१ विवाह तथा २ नाम करण सस्कार कराए गए।

लेख-बद्ध प्रचार

१२ पुस्तकें उड़िया भाषामें लिखी तथा अनुवादितकी गई। सत्यर्थ प्रकाश उड़ियामें छप चुका है।

तेलुगु भाषा में भी आर्य समाज के साहित्य के निर्माण की व्यवस्था की जा रही है।

मालावार (केरल)

मौखिक प्रचार

इस वर्ष तिरुवल्ला, कोट्टयम, मूवाटयला, आलप्पी, कुत्ताट कुलम, कालड़ी, कन्या कुमारी, वेल्लूर, त्रिवेन्द्रम, कोचीन, कन्नानौर, कल्ली कट, सीलोन, लंका पलघाट इत्यादि में प्रचार हुआ।

लेखबद्ध प्रचार

वैदिक सध्या, प्रार्थना पुस्तकें मलयालय भाषा में अनूदित तथा दो ट्रैक्ट मलयालय में लिखे तथा प्रकाशित किए गए।

शुद्धि

इस साल मए कीड़, तिरुवेचूर, कुमार नेल्लौर, मूवाटपुला, वेल्लूर, वेल्ल. कट्टा, और पाकिल इन स्थानों पर ४१६ ईसाइयों की शुद्धि की गई।

संस्कार—१ वैदिक विवाह कराया गया।

कक्षाएँ

इस वर्ष निरन्तर हिन्दी क्लास लगती रहीं। कुछ समय पर्य्यन्त सध्या क्लासें भी जारी रहीं। इन क्लासों में उपस्थिति लगभग ३० के रही।

गत अक्टोबर मास में श्री स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी उप प्रधान सभा सभा के मद्रास प्रचार के निरीक्षणार्थ मद्रास प्रान्त में गए। सभा के प्रचार केन्द्रों विजगापट्टम बरहामपुर, बगलौर मद्रास, कोटयम, कनानौर तथा विविध आर्य समाजों मे कार्य का निरीक्षण किया। उनकी रिपोर्ट सभा में विचाराधीन है। मद्रासप्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभा तथा मालाबार मे ईसाइयोंसे हिन्दुओं की रक्षार्थ अनाथालय के ढग पर किसी सस्था की स्थापना का प्रश्न उठ रहा है। सभा इस प्रान्त में आर्य समाज के कार्य को सगठित तथा उन्नत करने पर गभीरता पूर्वक विचार कर रही है।

(४) पहाड़ी इलाकों में प्रचार

गढ़वाल और कुमायूं प्रदेश में वर्ष पर्य्यन्त प्रचार होता रहा। श्री० प्रो० महेन्द्र प्रताप जी देहरादून की अध्यक्षता में म० रघुवरदयालु जी तथा म० खुशहालसिंह जी द्वारा गढवाल मे तथा श्री० बा० बद्रीप्रसाद जी (हल्द्वानी) की अध्यक्षता में श्री० प० शान्ति स्वरूप जी द्वारा कुमायू मे प्रचार हुआ। सभा इन दोनों सज्जनों को धन्यवाद देती है। प्रचार कार्य्य का विवरण इस प्रकार है—

गढ़वाल

इस वर्ष उपदेशकों ने एक एक हजार मील से अधिक पैदल यात्रा करके लगभग ५०० ग्रामो में ६०-६५ हजार व्यक्तियों तक वैदिक धर्म्म का सदेश पहुचाया है। ३ नाम करण, ३ चूड़ा कर्म ६ यज्ञो पवीत तथा ३ विवाह सस्कार वैदिक रीति से कराये गए। १ विधवा का पुनर्विवाह कराया गया।

"१० मवासों के ७० आदमियों की शुद्धि हुई। इसके अतिरिक्त ४ ईसाईयों तथा १ मुसलमान की शुद्धि की गई।

३ नए आर्य्य समाज स्थापित हुए तथा ८६ नए सदस्य बनाए गए।

१६ आर्य्य समाजों का निरीक्षण किया गया। पौड़ी आर्य्य समाज के सत्सगों को नियमित किया गया।

१०० सत्यार्थ प्रकाश तथा २५ संस्कार विधि वितीर्ण किये गये।

१० मेलों मे प्रचार किया गया जिन में वैसाखी तथा देहरादून का झंडे का मेला उल्लेखनीय हैं।

कुमायूं

इस वर्ष निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया —

हल्द्वानी, काशीपुर, राम नगर, चैनपुरी, गो जानी, चौपडा, लेंडी, रामपुर ढकली, कुन्दन पुर भूवरा, वास खेड़ा, रानी खेत, अल्मोड़ा सोमेश्वर, गारुड, नागेश्वर, बैजनाथ, बास, पिथौरा गढ इत्यादि।

२०० व्याख्यान हुए। ४ वैदिक विवाह तथा २ विधवा विवाह हुए। १ मुडन सस्कार तथा ७० यज्ञोपवीत सस्कार कराये गये, १६ शिल्पकारो को शुद्धि हुई। अगल्या, पिथौरा गढ, बड़ा बाजार रहमतगज इन स्थानों पर ४ आर्य्य समाज स्थापित हुए तथा १५० आर्य्य समाज के सदस्य बनाए गए। ८ मेलों मे प्रचार किया गया।

पहाडी इलाकों में प्रचार का व्यय श्री० सेठ जुगल किशोर जी बिडला के धन से हुआ। सभा श्री सेठ जी की इस सहायता के लिए कृतज्ञ है।

श्री० पं० ज्ञानेन्द्र सिद्धान्त भूषण का कार्य

श्री० प० ज्ञानेन्द्र जी मई १९३७ से वर्ष पर्यन्त अवैतनिक रूप में बम्बई प्रान्त के गुजरात प्रदेश मे वीली मोरा में हैड क्वाटर बना कर सभा की ओर से प्रचार कार्य्य करते रहे। प्रचारकार्य्य का विवरण इस प्रकार है —

मौखिक प्रचार

बलसाड बीली मोरा, गोलवड, पारडी और मरोली आदि हाई स्कूलों में प्रतिमास २ बार प्रचार हुआ। इसके अतिरिक्त सीमोदरा, सोनम, गगाधरा, सूरत, विजलपेट, कासिकवंडी, हरीपुरा अहमदाबाद, विश्वनगर, बम्बई, नवसारी, आनन्द, बड़ौदा आदि स्थानों पर प्रचार किया गया।

लेख बद्ध

निम्न ट्रैक्ट प्रकाशित किये गये —

(१) वैदिक धर्म की सार्वभौमता (२) बालकोपयोगी धर्म शिक्षा (३) मूर्ति पूजा रहस्य (३) सहशिक्षण एक रोग।

वर्ग—हिन्दी तथा संस्कृत क्लासें नियम से चलती रहीं।

संस्कार—२ नामकरण १ विवाह ३ उपनयन सस्कार कराए गए।

मेला—५१ वें राष्ट्रीय महासभा के हरिपुरा अधिवेशन में वैदिक धर्म के प्रचार मे भाग लिया गया।

पुस्तकालय

विकाऊ पुस्तकों का विवरण	गत वर्ष पुस्तक	मूल्य	कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष	पुस्तक	मूल्य
गत वर्ष का स्टाक	२३३१८	१६१७६|||≡)	गतवर्ष का स्टाक	१५१७५	१२६६३||)
आय	१९	४०|||=)	आय	२	४|||)
योग	२३३३७	१६२००|||−)	योग	१५१७७	१०६६८|)
बिक्री तथा फ्री वितरण	८१६२	६२३७|−)	बिक्री तथा फ्री वितरण	२१२१	१४०३|−)
१५३० शा० वृत्तान्त					
शेष	१५१७५	१०६६३||)	शेष	१३०५६	११५५४|||≡)

सार्वदेशिक पत्र

आय	
ग्राहकों तथा विज्ञापन से	१०७६|||)
व्यय	
कागज	१६४)
छपाई	८४६|=)|
वेतन लेखक	३००)
डाक व्ययादि	३३३|=)|
	१६७३|||)||
घाटा	५६७)||

गत वर्ष पत्र के ५२२ ग्राहक थे तथा घाटा ४०८|||)|| था। इस वर्ष के अन्त पत्र पर ४१६ ग्राहक तथा घाटा ५६७)|| है।

कार्यालय व पत्र व्यवहार

कार्यालय मे जो पत्र व्यवहार इस वर्ष हुआ उसका विवरण इस प्रकार है :—

	गत वर्ष	कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष
आने वाले पत्रों की संख्या	१८७२	१११४
जाने वाले "	३५४८	१४४३

इस पत्र व्यवहार के अतिरिक्त २ पत्रिकाएँ आर्य समाज के संगठन को दृढ़ करने तथा आर्य विवाह ऐक्ट के प्रचलन की प्रेरणा के साथ प्रान्तिक सभाओं तथा आर्य समाजों को भेजी गई।

प्रान्तिक सभाओं के द्वारा आर्य पर्वों की सूचि आर्य विवाह ऐक्ट सम्बन्धी सभा द्वारा निर्धारित घोषणा पत्र, तथा ग्राम प्रचार की स्कीम भी समाजों में सरक्युलेट की गईं।

कार्यालय में गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी २ लेखक और एक चपरासी काम करते रहे। इनका १०७) मासिक व्यय रक्षा सार्वदेशिक और कार्यालय ३ विभागों में इस प्रकार विभाजित रहा—

कार्यालय	५२)
रक्षा समिति	२७॥)
सार्वदेशिक पत्र	२७॥)
	१०७)

अधिवेशनों का विवरण

इस वर्ष इस सभा की साधारण सभा का १ तथा अन्तरग सभा के ५ अधिवेशन हुए जिनमे सभा सदों की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है—

साधारण सभा

१	श्री० आचार्य्य रामदेव जी	×	१५ ,,	प्रो० सुधाकर जी	१
२	श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति	१	१६ ,,	कुँवर चान्दकरण ,,	१
३	श्री० म० कृष्ण जी बी० ए०	१	१७. ,,	पं० भगवान् स्वरूप ,,	१
४	,, पं० विश्वम्भरनाथ जी	१	१८ ,,	राय बहादुर ठाकर—	×
५	,, ,, बुद्धदेव ,,	१		ब्रजनन्दन सिंह ,,	×
६	,, ,, ज्ञानचन्द ,,	१	१९ ,,	प० वेदव्रत ,,	×
७	,, ,, भीमसेन ,,	१	२० ,,	पं० दीनानाथ जी विद्याऽलंकार	×
८.	,, बा० मदन मोहन सेठ ,,	१	२१ ,,	बा० राजेन्द्र प्रसाद जी वकील	×
९.	,, प० गंगाप्रसाद उपा० ,,	१	२२. ,,	स्वा० रामानन्द ,, संन्यासी	×
१०	,, बा० गदाधर प्रसाद ,,	१	२३. ,,	स्नातक सत्यव्रत ,,	×
११	,, कुँवर हुक्म सिंह ,,	+	२४. ,,	पं० हरिशंकर ,,	×
१२.	,, प्रो० महेन्द्र प्रताप ,,	१	२५. ,,	डा० कल्याणदास देसाई	×
१३	,, बा० प्रीतमलाल ,,	१	२६.	बा० नटवर लाल वकील	×
१४.	,, बा० श्रीराम ,,	१	२७. ,	नगीनदास कापड़िया	×

२८	श्री बा० हरिगोविन्द जी गुप्त	×	४४	श्री म० वेद मित्र जिज्ञासु जी	×
२९.	,, प० सुखदेव जी	×	४५	,, ला० ज्ञानचन्द ,,	१
३०	,, सेठ कृष्णलाल पोद्दार जी	×	४६	,, ,, रलाराम मेलाराम जी	१
३१	,, प० दीनबन्धु वेद शास्त्री जी	×	४७	,, प० मूलचन्द जी	१
३२	,, बा० विष्णुदास वासल	×	४८	ला० नारायण दत्त जी	१
३३	,, प्रो० शिवदत्त ज्ञानी एम० ए०	×	४९	,, प० गंगा प्रसाद चीफ जज	१
३४	,, लक्ष्मैया नरसैया जी	१	५०	,, बा० ज्योति स्वरूप जी	१
३५	,, प० विनायक राव जी	×	५१	,, महात्मा नारायण स्वामी जी	१
३६	,, ,, दत्तात्रेय ,,	/	५२	,, स्वा० स्वतन्त्रा नन्द ,,	१
३७	,, स्वा० भवानीदयालु जी सन्यासी	×	५३	,, बा० पूर्णचन्द ,,	१
३८	,, आर० के० कपीटेन		५४	,, ला० देशबन्धु ,,	१
३९	,, सत्यदेव जी	×	५५	,, डा० युद्धवीर सिंह ,,	१
४०.	,, बा० घनश्याम सिंह जी	१	५६	,, स्वा० सर्वदानन्द	१
४१.	,, बी० ए० मेघराज ,,	`	५७	,, दीवान तुलजाराम ,,	१
४२	,, स्वा० श्रद्धानन्द ,,	१			
४३	,, डा० श्याम स्वरूप ,,	१			३७

अन्तरङ्ग सभा

	१४-२-३७	२७-३-३७	६-६ ३७	३-१०-३७	९-१-३८	य.ग
श्री बा० घनश्यामसिंह जी	१	१			१	३
,, प० गंगाप्रसाद जी	१	१	१			३
,, स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी	१	१	१	१		४
,, प्रो० सुधाकर जी	१	१		१	१	४
,, डा० युद्धवीरसिंह जी			१		१	२
,, ला० नारायण दत्त जी		१	१	१		३
,, प० वेदव्रत जी						
,, म० नगीनदास जी						
,, बा० पूर्णचन्द्र जी		१	१			२
,, ला० देशबन्धु जी		१				१
,, नारायण स्वामी जी	१	१		१	१	४
,, म० कृष्ण जी		१				१

श्री कु० चान्दकरण शारदा जी		१		१	१	३
,, बा० ज्योतिस्वरूप जी	१	१	१	१	१	५
,, ,, श्रीराम जी		१	१			२
,, पं० धुरेन्द्र जी						
,, बा० मदनमोहन सेठ जी		१	१			२
,, पं ज्ञानचन्द्र जी		१	१	१		३
,, इन्द्र जी			१		१	२
, आचार्य रामदेव जी						
, ला० ज्ञानचन्द्र जी	१		१	१	१	४
बा० प्रीतमलाल	१					१
, कु० हुक्मसिंह जी					१	१
	८	१४	११	८	६	

आर्य्य रक्षा समिति

इस वर्ष समिति का संगठन इस प्रकार रहा —

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि

१ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
२ , बा० घनश्यामसिंह ,
३ , स्वा० स्वतन्त्रानन्द ,
४ म० कृष्ण ,
५ , कु० चान्दकरण शारदा ,,
६ , बा० श्रीराम ,,
७ श्री बा० पूर्णचन्द्रजी
८ , ला० नारायण दत्त ,,
९ ,, , ज्ञानचन्द्र ,,
१० ,, प्रो० सुधाकर ,,
११ ,, ला० देशबन्धु ,,

आर्य्य वीरदल के प्रतिनिधि

१ श्री म० देशराज जी
२ , म० रतिराम जी
३ , प० मिश्रीलाल जी
४ श्री प० पन्नालाल जी
५ , स्वा० ब्रह्मानन्द जी

नामजद किये हुए प्रतिनिधि

१ श्री ला० अमोलकराम जी
२ , प० शिवदयालु जी
३ , बा० शिवचन्द्र जी
४ श्री प० धर्म्म वीर जी
५ ,, भक्त फूलसिंह जी

इस वर्ष समिति के निम्न अधिकारी रहे :—

१ श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान
२ „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उप प्रधान
३ „ ला० देशबन्धु प्रधान मन्त्री तथा दलपति
४ „ ला० नारायण दत्त जी कोषाध्यक्ष

आर्य्य रक्षा समिति की निधि का कुल धन वर्ष के अन्त मे २६८६०॥=) १० पाई था। जिसमे से २५०००) स्थिर निधि है।

आर्य्य वीर सेवा दल

आन्दोलन तथा श्री बा० शिवचन्द्र जी, सहायक मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति के दौरे के फलस्वरूप इस वर्ष निम्न आर्य्य वीर दल स्थापित हुए —

(१) मेरठ सिटी (२) मुरादाबाद (३) चन्दौसी (४) बरेली (५) हरदोई (६) लखनऊ (७) फैजाबाद (८) बनारस (९) मिर्जापुर (१०) इलाहाबाद (११) फतेहपुर (१२) कानपुर (१३) आगरा (१४) इन्दौर (१५) शाजा पुर।

इस सभा तथा प्रान्तिक सभाओं के यत्नो के फल स्वरूप आर्य्य वीरदलों के प्रति आर्य्य-समाजों और आर्य्य जनता की दिलचस्पी जाग्रत हो रही है और यदि आर्य्य समाजों ने अपने कर्त्तव्य का यथोचित रीति से पालन किया तो निकट भविष्य में ही बहुत से सुसंगठित दल हो जायेंगे।

आर्य्यवीर दल सम्मेलन मेरठ

इस वर्ष मेरठ मे आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर श्री ला० देशबन्धु जी के प्रधानत्व में आर्य्य वीर दल सम्मेलन हुआ जिसमे कई प्रस्ताव पास हुए। जिनमे विशेषरूप से आर्य्य जगत की हर प्रकार की सेवा तथा जनोपकारक कार्य्य के लिये सुसंगठित और सुनियन्त्रित आर्य्य वीर सेवा दलों की स्थापना और संगठन पर बल दिया गया—

इसी अवसर पर श्री०बा० शिवचन्द्रजीके उद्योग से संशोधित संगठनके अनुसार संयुक्त प्रान्तीय आर्य्यवीर सेवादल समिति का निर्माण हुआ और श्री बा० तेजनारायण जी वकील लखनऊ प्रान्तिक दल पति निर्वाचित हुए। आशा है उनके तत्वावधान मे दल का अच्छा कार्य्य होगा।

देहली आर्य्यवीर सेवादल

देहली के आर्य्य वीर सेवादल की अवस्था बहुत शिथिल हो गई थी, उसकी अवस्था ठीक करके नवीन निर्वाचन कराया गया। आशा है आगे उसका कार्य्य पूर्व की नाई ठीक ठीक रीति से होता रहेगा।—

पानीपत और शाजापुर के नगर कीर्तन

पानीपत

पानीपत मे आर्य्य समाज का नगर कीर्तन पिछले ४० वर्षों से निकलता आ रहा था। इस वर्ष कुछ मुसलमानों की माग पर सरकार द्वारा नगर कीर्तन पर कुछ अनुचित प्रतिबन्धों के लगने की चर्चा छिड़ी थी। पानीपत के आर्य्य भाई अपने ४० वर्ष के पुराने अधिकारों की रक्षार्थ कटिबद्ध हो गए थे और आर्य्य समाजों की वर्तमान नीति के प्रतिकूल विरोध रूप में नगर कीर्तन स्थगित न करने का उन्होंने फैसला कर लिया था और साथ ही वे हर प्रकार की कुर्बानी करने के लिए तय्यार हो गए थे। सार्वदेशिक सभा तथा आर्य्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने हर प्रकार की उनकी सहायता करने का फैसला करके उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान की। श्री० लाला देशबन्धु जी ने पंजाब सरकार के प्रधान मन्त्री सर सिकन्दर हयात खा तथा अन्य अधिकारियों से मिलकर आर्य्य समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयत्न किया। इस सभा ने भी श्री लाला जी के प्रयत्नों में आवश्यक योग दिया, तथा पजाब सरकार से आवश्यक लिखा-पढ़ी की। आर्य्य जगत् को पानीपत समाज की रक्षार्थ सहायता के लिए प्रेरणा की और प्रसन्नता है आर्य्य जगत आशा से अधिक सहायता के लिए कटिबद्ध हो गया। आर्य समाजों ने अपने २ जत्थे आवश्यकतानुसार सत्याग्रह के लिए भेज दिए। श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी उपप्रधान सार्वदेशिक सभा श्री० बा० शिवचन्द्र जी गुप्त स० मन्त्री रक्षा समिति व आर्य्य प्रतिनिधि सभा पजाब के श्री० प० ज्ञानचन्द जी, श्री० राय साहब अमृतराय जी तथा श्री० डा० लालचन्द जी तथा अन्यान्य आर्य्य नेता और आर्य्यवीर नगर कीर्तन वाले दिन पानीपत पहुँच गए। आर्य्य समाज के इन प्रयत्नों और कटिबद्धता का नतीजा यह हुआ कि नगर कीर्तन पर कोई प्रतिबन्ध न लगा, और नगर कीर्तन सानन्द समारोह के साथ निकल गया। इसका यह भी परिणाम हुआ कि रामलीला आदि हिन्दू त्यौहारों पर जो प्रतिबन्ध लगाये गए थे वे भी सरकार को हटाने पड़े।

शाजापुर (ग्वालियर)

ता० १० अप्रैल १९३७ को आर्य्य समाज शाजापुर (ग्वालियर) के नगरकीर्तन पर कई सौ मुसलमानों ने आक्रमण किया। सभा ने स्थिति की जाच के लिये श्री बा० शिवचन्द्र जी को शाजापुर भेजा तथा आर्य्यसमाज की रक्षा और बलवाइयों के प्रति उचित व्यवहार के लिये ग्वालियर सरकार को प्रेरणा की गई। श्री शिवचन्द्र जी ने स्थिति की जाच करके और यह सन्तोष करके कि आर्य्य समाजियों के प्रति अन्याय हुआ है, शाजापुर के डि० मजिस्ट्रेट, सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस, डि० इन्सपेक्टर जनरल आदि अफसरों से भेंट की जिन्होंने आर्य्य समाजियों की मुसलमानों से भविष्य मे रक्षा का आश्वासन दिलाया। बलवे मे ६५ मुसलमान गिरफ्तार हुए थे और उनपर मुक़द्दमा चल रहा है।

अजमेर का झगड़ा

अजमेर के आर्य्य भाइयों मे पिछले कई वर्षों से आपस मे झगड़ा चला आता था। इस वर्ष इस झगड़े ने बड़ा उग्र रूप धारण कर लिया था और सभा का हस्ताक्षेप नितान्त आवश्यक हो गया था। फलत सभा ने हस्ताक्षेप का फैसला करके मामले की जाच और रिपोर्ट के लिये श्री शिवचन्द्र जी को अजमेर भेजा। उन्होने अपनी विस्तृत रिपोर्ट सभा में पेश की। इसके बाद श्री डा० युद्धवीर सिह जी मन्त्री सभा मामले को शान्त करने के लिये अजमेर गये और उन्होंने पूरा २ यत्न किया। अन्त मे जनवरी ३८ मे श्री बा० घनश्याम सिह जी प्रधान सभा, डा० युद्धवीरसिंह जी तथा श्री बा० शिवचन्द्र जी के साथ अजमेर गए और उन्होंने दोनो पक्षों से बातचीत और विचार विनिमय करके निम्न फैसला किया और मामला शान्त कर दिया।

१—सब मुकद्दमात उठा लिये जावे या खारिज करा दिये जावें। इस कार्य्य का भार श्रीमान चादकरण जी शारदा तथा श्रीयुत दत्तात्रेय जी बावले पर सौंपा जाता है जो इसे शीघ्रातिशीघ्र सपन्न करके सार्वदेशिक सभा को सूचित करेंगे।

२—एक दूसरे के विरुद्ध और किसी भी सस्था के विरुद्ध कोई नोटिस बाजी न होगी।

३—अजमेर में जितनी आर्य्य समाजें हैं, उन सब का पृथक अस्तित्व प्रबन्ध आदि रहगा जब तक कि वे स्वयं स्वतन्त्रता पूर्वक सम्मिलित होना न चाहे।

४—एक वर्ष के लिये वहा के सब आर्य्य समाजों का साप्ताहिक अधिवेशन और पर्व आदि पर, अधिवेशन एक ही साथ और एक ही जगह मे हुआ करेगा।

इन अधिवेशनों में—

१ श्री कुँवर जालिमसिह जी प्रधान होंगे।

तथा—

२ श्री प० सूर्य्यदेव जी शर्मा मन्त्री होंगे।

सम्मिलित अधिवेशन मे निम्न नियम लागू होंगे —

५—[क] अजमेर के प्रत्येक आर्यसमाज का प्रत्येक सभासद उपस्थित हो सकेगा।

[ख] उस आर्य समाज के मन्त्री जिन २ को अपने समाज का मेम्बर बतावें वह मान्य होगा, और उस पर कोई बहस इस सम्मिलित अधिवेशन में न होगी।

[ग] इस सम्मिलित अधिवेशन की बैठक के लिये श्रीमान जालिमसिंह जी की सूचना पाने पर स्थान बिछावन आदि की सुविधा तथा आर्य समाज के भवन के उपयोग की अनुमति उस आर्य समाज का मन्त्री देगा, जिसके पास कु वर साहब सूचना भेजें।

[घ] सम्मिलित अधिवेशनों को सुचारु रूप से चलाने का अधिकार तथा ज़िम्मेवारी कुंवर साहब पर पूरी पूरी होगी। उस सम्बन्ध में उनकी बातें सब को मान्य होंगीं।

६—हर एक आर्य समाज प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित रहेगा और केसर गञ्ज स्थित आर्यसमाज अगले निर्वाचन पर अपने प्रतिनिधि नियमानुसार भेजेगा।

७—अजमेर तथा अन्य किसी स्थान का जो भी आर्य समाज अपना जो नाम बतावें वह प्रतिनिधि सभा को मान्य होगा और उसी नाम से वह आर्य समाज निर्दिष्ट होगा। यदि एक ही नाम के दो या अधिक आर्य समाज हों तो पते में भिन्नता की जावेगी नाम में नहीं।

८—हर एक आर्यसमाज का भवन व अन्य स्थावर सम्पत्ति प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्ट्री की जावेगी। इस कार्य के लिये केसरगंज स्थित आर्य समाज अजमेर को दो वर्ष की मुहलत दी जाती है।

९—जो भी कोई आर्य किसी भी आर्य समाज में प्रवेश होना चाहे उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होगी। किसी को सदस्य न बनाने तथा सदस्यता से पृथक करने का अन्तिम अधिकार सार्वदेशिक सभा के हाथ में रहेगा आर्य समाज अपनी रिपोर्ट भेजेगा।

१०—इस सम्बन्ध में तथा अन्य कोई झगड़ा जो उपस्थित हो वह श्रीमान् प्रिन्सिपल शेषाद्रि जी तथा श्रीमान् प्रोफेसर देवकीनन्दन जी के सामने निर्णय के लिये पेश किया जावेगा और उनका निर्णय मान्य होगा उनके निर्णय पर यदि किसी को एतराज हो तो वह सार्वदेशिक सभा को दरख्वास्त दे सकता है परन्तु सार्वदेशिक सभा के निर्णय होने तक उक्त महानुभावों का फैसला मान्य रहेगा।

११—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा को आशा है कि उक्त दोनों बातों के यथोचित पालन होने पर किसी को किसी व्यक्ति के विरुद्ध या किसी संस्था के विरुद्ध शिकायत का मौका न रहेगा, तथापि यदि किन्हीं खास शिकायत की विद्यमानता रही तो सार्वदेशिक सभा उन पर उचित विचार और अनुसन्धान करके उचित कार्यवाही करेगी।

प्रसन्नता है, श्री प्रधान जी के उक्त फैसले पर दोनों पक्ष अमल कर रहे हैं। वहां का वातावरण शान्त है। अभी आर्य्य समाज का कार्य्य पारस्परिक सहयोग पूर्वक हो रहा है।

भीलों में प्रचार तथा सहायता कार्य्य

मध्य भारत के राज्यों में वर्षा की कमी से जून ३७ के लगभग दुर्भिक्ष फैल गया था वहा के भील लोगों की जो खेतीके लिए सर्वथा वर्षा पर आश्रित रहते हैं हालत खराब होगई थी। साहूकारों ने कर्जा देना बन्दकर दिया था और वे भूखे मरने लगे थे। दुर्भिक्षके समाचारों के प्राप्त होते ही आर्य्य समाज और हिन्दू मिशन रक्षार्थ भीलों में पहुँच गए। इस सभा की ओर से श्री शिव चन्द्र जी गए। उन्होंने रतलाम, उज्जैन, झाबुआ, दोहद, बामनिया, प्रीलेडगंज, थादला, मेघ नगर तथा इन्दौर इत्यादि में भ्रमण और भीलों की स्थिति का अध्ययन करके झाबुआ को केन्द्र बनाकर लगभग १॥ मास

पर्य्यन्त सेवा सहायता और प्रचार कार्य्य किया। भीलों की मुख्यतया ईसाइयो से रक्षा तथा उनमे प्रचार कार्य्य की एक स्कीम सभा के विचाराधीन है।

झाबुआ में प्रचार

झाबुआ तथा बासबाड़ा राज्य के दीवान तथा अन्य उच्च पदाधिकारियों से बाबू शिवचन्द्र ने आर्यसमाज के प्रचार के सम्बन्ध मे बातचीत की। इस बातचीत का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। उन्हे आर्य्य समाज का अंग्रेजी साहित्य भी भेंट किया गया।

श्री बा० शिवचन्द्र जी का मौखिक तथा लेखबद्ध प्रचार कार्य्य

अंग्रेजी के प्रसिद्ध साप्ताहिक इंडियन सोशियल रिफार्मर 'बम्बई के सम्पादक श्री नटराजन जी ने पिछले दिनों एक लेख के सिलसिले मे अप्रासंगिक रूप से आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द की अनुचित आलोचना की थी। श्री० बा० शिवचन्द्र जी ने उस आलोचना का उत्तर 'रिफार्मर' तथा लीडर, हिन्दुस्तान टाइम्ज, सर्चलाइट, हिन्दू, आउटलुक तथा अन्य अंग्रेजी और हिन्दी, उर्दू के समाचार पत्रो मे प्रकाशित कराया साथ ही संपादक महोदय को आर्य्य समाज सम्बन्धी साहित्य भेजा जो उन्होंने धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया।

श्री० बा० शिवचन्द्र जी ने आर्यवीर दलों के संगठनार्थ तथा अन्य कार्यार्थ प्रचारयात्राओं का वैदिक धर्म के प्रचार में मुख्यतया विद्यार्थियो मे आर्य्य समाज का संदेश पहुचाने में पूरा उपयोग किया। उनका इन्दौर, बनारस और चन्दौसी के कालेजों के छात्रों मे प्रचार कार्य्य विशेष उल्लेखनीय है।

हैद्राबाद राज्य

पिछले दिनों गुन्जोटी मे आर्यवीर वेदप्रकाश का मुसलमानो द्वारा वध किया गया जिसका वृत्तान्त समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार हुपला ग्राम में तीन जीवित हिन्दुओं को मुसलमानों ने जला दिया। आर्य्य समाजियों पर झूठे मुकदमे चलाये जाने के समाचार भी सभा मे प्राप्त हुये। इन सब बातो की तहकीकात तथा एक क्रमबद्ध विवरण तयार करने तथा हैद्राबाद राज्यमे आर्य्य समाज की वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन करने के लिये श्रीशिवचन्द्रजी हैद्राबाद गये। उन्होने श्री पं० बन्सीलाल जी मन्त्री आ० प्र० सभा निजाम राज्य के साथ १-हैद्राबाद, २-सिकन्दराबाद, ३-बीदर, ४-झम्बेसामन्नी, ५-हुपला, ६-उदगीर, ७-अहमदपुर, ८-लातूर, ९-उसमानाबाद, १०-तुलजापुर, ११-गुरुम, १२-गुन्जोटी, १३-उमरगाह, १४-हुमनाबाद, १५-मानिकनगर, १६-हल्लीखेड़ का दौरा किया। गुन्जोटी, हुपला तथा अन्य स्थानों पर वास्तविक घटनाओं को नोट किया।

तथा कई लोगों के बयान लिये । इन सारी घटनाओं तथा बयानात की एक पृथक फायल तैयार की जारही है।

वे हैद्राबाद में मिस्टर एस० टा ही लेन्स, आई० पा० ऐस० डाईरेक्टर जनरल पुलिस निजाम राज्य तथा अन्य अधिकारियो से मिले और निजाम राज्य मे आर्य्य समाज की कठिनाइयों के सम्बन्ध मे बात चीत की। उन्होंने हैद्राबाद, लातूर आदि स्थानों म हिन्दू तथा आर्य्यों की काफी भीडो म व्याख्यान भी दिये।

हैद्राबाद राज्य में आर्य्य समाज की समस्या के सम्बन्ध में उन्होने अपनी रिपोर्ट पृथक पेश का है जा अन्तरग सभा म विचाराधीन है।

आर्य्य समाज मद्रास के मुकदमे

इस वर्ष हिन्दू मुस्लिम झगडे की आड मे मद्रास मे पुलिस द्वारा आर्य्यों पर सख्तियें हुई और उन पर झूठे मुकदमे चलाए गए। आर्य्य समाज मद्रास ने मुकदमो की पूरी २ तन देही से पैरवी की। प्रसन्नता है सब आर्य्य समाजी निर्दोष प्रमाणित होकर छूट गए। इन अभियोगो में सभा ने (५०) मद्रास समाज को सहायतार्थ दिए।

बरहामपुर ट्रस्ट

इस वर्ष भी इस ट्रस्ट का कार्य्य सचालन श्री० वत्स पाड्या जी तथा म० बवलेश्वर जी को सहायता पूर्वक होता रहा। सभा के प्रचारक श्री० प० मदन मोहन जी विद्याधर समय २ पर इसका निरीक्षण करते रहे है। सभा के उप प्रधान जी ने भी इस वर्ष इस सस्था का निरीक्षण किया है यह देखने का यत्न किया जा रहा है कि यह संस्था उडीसा म प्रचार के लिए मुख्यतया आर्थिक दृष्टि से कहा तक सहायक हो सकती है। इस वर्ष आर्य्य समाज के प्रचार तथा गोरक्षण का जो कार्य हुआ वह इस प्रकार है —

आर्य्य समाज प्रचार कार्य्य

मौखिक प्रचार—आश्रम म तथा उसके निकट वर्ती स्थानो म आर्य्य समाज का प्रचार किया गया। आश्रम म आर्य्य समाज की स्थापना हो गई है जिस के वर्ष के अन्त में लगभग ४० सभासद थे। भविष्य म यहां प्रचार कार्य्य की बडी आशा है।

लेख बद्ध—/० ट्रैक्ट श्री० वत्स पाड्या जी द्वारा उडिया भाषा मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ लिखे गए।

इस वर्ष भी गाय तथा स्वस्थ गऊ बैल और बछड़े लगभग २३ पशुओं को आश्रम में आश्रय दिया गया। इस आश्रम को गोपालन के आदर्श आश्रम का रूप दिए जाने का यत्न जारी है। आश्रम को उन्नत और व्यवस्थित करने के लिए सभा के निरीक्षण मे ही बरहामपुर तथा रसूलकुण्डा के कुछ प्रतिष्ठित दानी महानुभावों की एक उपसमिति बनाए जाने का यत्न हो रहा है।

आय व्यय

ट्रस्ट को इस वर्ष ज़मीन के लगान, अन्य बिक्री चन्दे और दूध की बिक्री इत्यादि से ६४४॥=) की आय तथा सरकारी माल गुजारी गोशाला और आश्रम के प्रबन्धादि मे ६५४॥=) का व्यय हुआ।

सार्वदेशिक भवन

इस वर्ष यह भवन नवम्बर ३७ तक श्री डा० पी० यन० भार्गव जी के पास १२५) मासिक किराये पर रहा। हाउस तथा वाटरटैक्स पर १२१॥=) व्यय हुआ। दुख है म्यूनिसिपल कमेटी के नल के फट जाने से भवन फट गया है और उसका अस्तित्व खतरे मे पड गया है। म्यूनिसिपल कमेटी से हर्जाने के लिए लिखा पढ़ी हो रही है।

बलिदान भवन

इस वर्ष इस भवन की तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ। इस निमाण तथा भवन की अन्य आवश्यक मरम्मत इत्यादि मे ७४६३) व्यय हुआ। भवन के नीचे की दूकानों तथा दूसरी मंजिल मे कार्यालय के किराए से १३२०) की आय हुई। आगामी वर्ष से नीचे की दूकानो का १०) मासिक किराया बढ़ गया है। सार्वदेशिक भवन के किराये की बचत से तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ है।

भूकम्प निधि

इस वर्ष इस निधि के सूद से ५) मासिक की १ छात्रवृत्ति बिहार के एक होनहार और ग़रीब विद्यार्थी को जारी रखी गई।

दलितोद्धार सभा

गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी इस सभा का प्रबन्ध निम्न सज्जनों की एक उपसमिति के अधीन रहा :—

(१) श्री प्रो० सुधाकर जी
(२) „ ला० नारायणदत्त जी
(३) „ „ ज्ञानचन्द जी

श्रद्धानन्द नगरी की भूमि तथा समाज मन्दिर इत्यादि इमारतों की रक्षा और व्यवस्था का कार्य श्री म० रामानन्द जी के अधीन रहा। इमारतों की न केवल व्यवस्था और रक्षा ही समुचित रीति से की गई वरन् इमारतों मे एक कमरे की वृद्धि भी की गई। एक और दूसरे कमरे के बनवाए जाने का यत्न होरहा है उसके लिये एक दानी सज्जन ने धन देने का वचन दिया है।

इस वर्ष श्रद्धानन्द नगरी समाज का उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया तथा वर्ष पर्यन्त

समाज का कार्य उत्तम रीति से होता रहा। उत्सव के अवसर पर देहली क्लाथ मिल के श्री ला० शंकरलाल जी ने १००) दान देने की कृपा की। सभा उनको इस सहायता के लिए धन्यवाद देती है।

श्रद्धानन्द नगरी विद्यालय का कार्य भली भाँति चलता रहा है। वर्ष के अन्त मे विद्याल मे ३ अध्यापक तथा १०० से अधिक विद्यार्थी थे।

दुःख है दयानन्द पाठशाला समैपुर की ग्रान्ट का देहली के शिक्षा विभाग ने अभी तक कोई फैसला नहीं किया है। उन से बराबर पिछले दो साल से लिखा पढी हो रही है। खेद है इस वर्ष समैपुर के खेती के कुएँ का सिचाई योग्य बनाए जाने का कार्य नहीं हो सका है आशा है यह कार्य शीघ्र ही हो जायगा।

आर्य विवाह ऐक्ट

इस ऐक्ट के प्रचलन मे सहायता और आवश्यक मार्ग प्रदर्शन के लिए श्री प्रधान सभा ने हिन्दी और अंग्रेजी मे इस वर्ष इसकी व्याख्या लिखी। यह व्याख्या प्रकाशित हो गई है, इसके अतिरिक्त अन्तरङ्ग सभा ने इस ऐक्ट के सम्बन्ध मे जनता के मार्ग प्रदर्शन के लिए अपनी ६-१-३८ की बैठक मे निम्न महत्व पूर्ण प्रस्ताव पास करके प्रतिनिधि सभाओ मे समाजों तक पहुचाने के लिय सरक्यूलेट किया है।

"आर्य विवाह एक्ट के लिए 'आर्य समाजी' की परिभाषा नियत करने के सम्बन्ध मे उप समिति के सदस्यों की सम्मतिया तथा उन पर श्री प्रधान जी की रिपोर्ट पढी गई। विचार के बाद सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी द्वारा निर्धारित निम्न दोनो फार्म स्वीकृत किए जावें।

इस सभा की यह भी स्थिर सम्मति है कि आर्यसमाज के उपनियमो मे 'आर्य' और 'आर्य सभासद' की जो परिभाषा है वह केवल आर्य समाज के संगठन के लिए ही है और विस्तृत आर्य जगत के लिए नहीं है अत जो प्रधान जी द्वारा प्रतिपादित घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करेंगे वे 'आर्य विवाहएक्ट' को मशा के भीतर आर्य समाजी होंगे, इसमे सन्देह नहीं

घोषणा पत्र स० (१)

मै   पुत्र/पुत्री   निवासी   तहसील   जिला   उम्र   पेशा   घोषणा करता/करती हूँ कि मै आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत   के पुत्र/पुत्री   के साथ जिसकी अवस्था   की है और आर्य समाजी भी है, विवाह करना चाहता/चाहती हूँ   ह   घोषणा करने वाले/वाली

तिथि

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुये।

ह० मन्त्री आर्य समाज
तिथि

ह० प्रधान आर्य समाज
तिथि

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

घोषणा पत्र स० (२)

मैं पुत्र/पुत्री ... निवासी तहसील

जिला उम्र पेशा घोषणा करता/करती हूँ कि तिथि को शुद्धि करा

के आर्य समाजी हो गया/गई हूँ। मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि मैं आर्य समाजी हूँ और श्रीयुत

के पुत्र श्रीयुत/पुत्री श्रीमती ..के साथ जिसकी उम्र है, और जो आर्य समाजी भी है, विवाह करना चाहता/चाहती हूँ

शुद्धि से पूर्व मैं ..था*/थी ह० . घोषणा करने वाला/वाली

।तिथि

हमारे सामने उक्त घोषणा की गई और हस्ताक्षर भी हुए।

. ...

ह० मन्त्री आर्य समाज ह० प्रधान आर्य समाज

तिथि . . तिथि...

हस्ताक्षर अन्य उपस्थित सज्जन गण

वैदिक आश्रम ऋषिकेश

इस आश्रम की भूमि १००० मुरब्बा गज है। १९३५ के जून मास में इस भूमि ४ कुटियों तथा १ कुएँ इत्यादि की लगभग ३००७।-) की मालियत की रजिस्ट्री इस सभा के नाम हुई थी। रजिस्ट्री हो जाने के समय से इस समय तक लगभग ५०००) की मालियत के मकान बन चुके हैं जिन का विवरण इस प्रकार है --

(१) आर्य्य समाज मन्दिर

(२) यज्ञ शाला

(३) एक गुफा

(४) ११ कुटियाएँ (८ पुरुष वार्ड की)
(३ स्त्री " ")

(५) सदरद्वार

(६) २ रसोई घर

(७) १ स्नानागार

पिछले ३ वर्षों में आश्रम को ८०४४।।।-)।।। की आय तथा ७६७५॥=) का व्यय हुआ।

आश्रम में साधु सन्यासी और वानप्रस्थी निवास करते हैं। प्रतिमास पूर्णिमा और अमावस्या तथा रविवार को सत्संग तथा प्रचार होता है। समय २ पर उपनिषदों इत्यादि की कथाएँ और

---

* मुसलमान ईसाई, पारसी, यहूदी, इत्यादि

प्रवचन भी होते रहते हैं। श्री० स्वा० देवानन्द जी महाराज का प्रचार मे सब से ज्यादा योग रहता है। सभा उनको धन्यवाद देती है।

इस आश्रम का प्रबन्ध सभा ने वानप्रस्थाश्रम के अधीन किया हुआ है। सम्प्रति श्री० स्वामी शुक्लानन्द जी आश्रम का प्रबन्ध बडी तत्परता और परिश्रम से कर रहे हैं। एक प्रकार से आश्रम का अस्तित्व और वर्तमान रूप उन्हीं के प्रयत्नों का फल है। सभा उनकी सेवाओं के लिए उन्हें धन्यवाद देती है।

धर्म्मार्य्य सभा

इस वर्ष २३-३-३७ को इस सभा का वृहदधिवेशन हुआ जिस मे नियोग सम्बन्धी अन्तरंग सभा का निम्न निर्णय स्वीकार किया गया। संस्कार विधि के संशोधन के सम्बन्ध में सदस्यो तथा अन्य विद्वानो की सम्मतियां काफी संख्या मे प्राप्त हो गई है। आशा है, आगामी वर्ष इस विषय पर विचार करके निर्णय हो जायगा।

निश्चय सं० ४

नोटिस का विषय सं० २ आर्य्य समाज ननकाना साहब (पंजाब), का नियोग सम्बन्धी पत्र अन्तरंग सभा तिथि ३१-३-३६ के निश्चय सं० १ के साथ पेश हुआ। उक्त समाज ने इस सम्बन्ध मे व्यवस्था चाही थी कि कोई व्यक्ति जो सिवा नियोग के आर्य्य समाज के प्रत्येक सिद्धान्त को मानता हो और उस पर अमल भी करता हो आर्य्य कहला सकता है, यदि हो तो क्या वह किसी समाज का सदस्य भी बन सकता है या नहीं? विचार के बाद निश्चय हुआ कि आर्य्य समाज नियोग को आपत्काल का धर्म मानता है और इसी रूप मे यह आर्य्य समाज का सिद्धान्त है जिसका समर्थन करना आर्य्य समाज का कर्त्तव्य है। जो इसके विरुद्ध प्रचार न करे, वह आर्य्य समाज का सभासद रह सकता है।

बम्बई समाज का मामला

बम्बई प्रतिनिधि सभा तथा आर्य्य समाज बम्बई मे गत कई वर्षों से मनोमालिन्य चला आता था। श्री प्रधान सभा ने इसे हल करने का उद्योग किया। और उन्हें अपने मिशन मे सफलता भी मिली। वे इस झगडे के अन्त के लिए पूरा प्रयत्न कर रहे हैं आशा है सदैव के लिए यह झगडा शान्त हो जायगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

२८-२-३८ को समाप्त होने वाले वर्ष

का

आय व्यय

आय		व्यय	
विविध दान	३७८॥)	मद्रास प्रचार	४७२६॥।≡) ११
सूद और मकान किराया	४८३३॥।) ७	सार्वदेशिक पत्र का घाटा	५९७) ६
पंचमांश (प्रान्तिक सभाओं से)	३०४≥)	कागज छपाई पोस्टेज और	
दशांश	५॥।–)	स्टाफ व्यय २६७३॥।)॥	
		आय चन्दे व विज्ञापन से १०७६॥।)	
	३५२२≡)२	कार्यालय	१८८८≥)
घाटा वर्ष का	१७८६॥–) ३	प्रौवीडेन्ट फंड	५८≥)
		घिसाई टाइप राइटर	२७॥)
	५३०८॥।) ५		५३०८॥।) ५

For Jagdish Prasad & Co

(*Sd*) **Jagdish Prasad**

B A B COM C D A R A

Registered accountants

Auditors

Chandni Chowk
Delhi
19th April 1938

वास्ते जगदीश प्रसाद ऐंड कम्पनी

(ह०) जगदीशप्रसाद

बी० ए० बी० कॉम० जी० डी० ए० आर० ए०

रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट आडीटर्स

चांदनी चौक देहली
१९-४-३८

(*Sd*) Raghunath Prasad Pathak	(*Sd*) Sudhakar M A	(*Sd*) Swatantra Nand
Accountant 19 4 38	Secretary	President
ह० रघुनाथप्रसाद पाठक	ह० सुधाकर एम० ए०	ह० स्वतन्त्रानन्द
एकाउन्टेन्ट	मन्त्री	प्रधान

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली

बैलेन्स शीट

२८-२-३८

१०३२५१) स्थिरनिधियाँ

५००००) देशदेशान्तर प्रचार
२५०००) रक्षा
२००००) सार्वदेशिक भवन
५०००) चन्द्रभानु वेद मित्र निधि
२०००) गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार
६५०) शिवलाल वेद प्रचार
५०१) ढोढाराम चूड़ामणि
१००) होमा महतासुन्दर देवी

१२७५०) विशेष फन्ड

६०००) बिहार
१५००) काशमीर
२०००) दलितोद्धार
२२५०) दयानन्द आश्रम

३८१-) ६ कर्म्मचारियों का प्रॉवीडेन्ट

१६५२७॥=) ४ पुस्तक प्रचार निधि

२५३३५॥।-) विविध फन्ड

६१३१।≡) सार्वदेशिक भवन
४८६०॥=) १० रक्षा (चलत)
३८५४।) ७ बिड़ला वेद प्रचार
३२६७॥-) ६ देशदेशान्तर (चलत)
२७६६॥≡) ६ अमेरिका प्रचार
१२७२) विदेश निधि
१०८६॥।) ६ मार्ग व्ययार्थ छुच गायना
६५६=) ६ आसाम रिलीफ
३५१≡) टंकारा निधि
१६२॥।≡) ६ दयानन्द

४६६४७।≡) ६ ज़मीन तथा इमारतें

२२५५७।-) ६ सार्वदेशिक भवन पिछला
१८७) वृद्धि इस वर्ष
२२७४४।-) ६
१५७००) गत शेष बलिदान भवन
७४६३-) ६ इस वर्ष की वृद्धि
२३१६३-) ६
१०१०) गाजियाबाद भूमि

३००) टाइप राइटर

३३७॥) गत शेष
३७॥) घिसाई
३००)

२६०००) पाटौदी हाउस ट्रस्ट

५००३३≡) ५ इन्वेस्टमेंट

२५०००) गवर्नमेन्ट लोन
१३२३१) कैश सर्टिफिकेट सेन्ट्रल ब न
३८२३१)
१०) आर्य्य साहित्य मण्डल अजमेर शेअ०
११७६२≡) ५ पीपल बैंक

१८८३१॥-) ३ पुस्तकालय

८११२॥।≡) ६ विविध उधार

४६५०॥।-) ३ पाटौदी हाउस ट्रस्ट (सूद)
४६॥) ३ देहली इलै० कम्पनी

दलितोद्धार

१६०॥=) ३ सूद चन्द्रभानु निधि

१४५।-) ६ सूद काशमीर फंड

१२३।=) ६ आर्य्य मैरेज

१०६।॥) विद्वत सम्मेलन

१००) सुमाटरा आर्य्य समाज

८६।=) ७ सूद दयानन्द आश्रम

५०) सूद गंगाप्रसाद ट्रस्ट

१६॥) ६ नाथूराम स्मारक फंड

८॥=) ३ सूद बिहार निधि

-०४५)६ विविध अमानतें

१००) दीवानचन्द ट्रस्ट

१३३०=) ३ सेठ बैजनाथ भरथिया

५३४॥=) ३ विविध अमानतें

८०) प्रचारकों की अमानतें

१६०२८५॥-) ४

३०००) दीपचन्द कृष्णलाल कलकत्ता

४१५॥=) विविध

३३८५॥।≡) २ नकद और बैंको मे

३७८।) पंजाब नेशनल बैंक देहली

१≡) ३ सेन्ट्रल बैंक देहली

३२१।=) ५ पोस्ट आफिस से० बैंक

१७५॥=) ६ स्टाफ इम्प्रेस्ट

२५०६≡) कैश हाथ मे

२६७४।=) ६ घाटा खाता

८८७॥-) २ गत वर्ष का

१७८६॥-) ३ इस वर्ष का

१६०२८५॥-) ४

आज की तारीख की हमारी रिपोर्ट के साथ साथ हमने सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली के हिसाब की जांच पड़ताल की और हम प्रमाणित करते हैं कि उपयुक्त बैलैन्स शीट और साथ का आय व्यय का विवरण हिसाब के रजिस्टरों और कागजों के अनुसार जो हम दिखाए गए है ठीक है।

Subject to our separate report of even date we have examined the accounts of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha Delhi and certify that the above Balance Sheet and annexed Income and Expenditure a/c are correct in accordance with the account books and papers shown to us

वास्ते जगदीशप्रसाद ऐण्ड कम्पनी

चांदनी चौक देहली (सं०) जगदीशप्रसाद

१६ ४ ३८ बी० ए०, बी० काम०, जा० डा० ए०, आर० ए०

रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट (आडीटर्स)

(ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक	(ह०) नारायणदत्त	(ह०) सुधाकर एम० ए०	(ह०) स्वतन्त्रानन्द
एकाउन्टेन्ट	कोषाध्यक्ष	मन्त्री	प्रधान

आर्य रक्षा समिति की प्रगतियां

COMMUNAL RIOTS IN HYDERABAD.

Serious Allegations by the Secretary, Aryan Defence Committee.

Mr S Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Arya League, vehemently contradicts the Communique, dated 7th April, issued by the Nizam's Government holding the Arya Samajists responsible for the recent riots in Hyderabad. The facts as gathered by him from responsible sources in Hyderabad are to this effect —

'That on the 5th April a procession consisting of thousands of armed Muslims in connection with an Urs reached Dhruvapeth beating Hindus in the way and crying slogans, 'we shall plunder the Hindus to-day" The entire population of that locality got terrified and began to close their shops and houses One Bahadur Yarjung, a Tabligh Worker who is always inciting the Muslims against the Hindus in the State, addressed the Muslims and excited them against the Hindus The Muslim fanatics, thereupon, attacked the houses of the Hindus The Lodhas, a sub-caste of Hindus residing in that locality defended themselves bravely The Police which is composed of ninety five per cent of Muslims made a lathi charge on the Hindus even who were defending themselves Thus the Hindus were beaten both by the Muslim mob and the Police Happily Mr Hollins, Director-General of Police reached the spot and with great difficulty he averted the tragedy

On the 6th of April, although police surrounded Dhruvapeth, yet the armed Muslim crowds were entering there and the Hindus were banned Again the Hindus were beaten and their shops and houses were burnt The Hindus were disarmed and thus lost the opportunity of self-defence The Arya Samaj of Druvapeth and its library were attacked The Muslim mob was shouting "Maro" Maro" and 'Deen" "Deen"

On the 7th, stray assaults continued In Goliguda a Sikh boy was also assaulted Arya Girls' School of Dhruvapeth was mobbed by Muslims and it was with great difficulty that the girl students could be rescued The Arya Samaj of Maharajganj was also attacked and several Aryas received injuries Hindu houses were set on fire From another reliable news it transpires that when an influential deputation of Hindus waited upon Sir Akbar Hydari and apprised him of the serious situation created by Muslims, he expressed great surprise and said that he was informed only of a very mild and ordinary trouble This is really a terrible thing that even the highest official was kept in ignorance of the serious situation,

On the 8th morning it appeared that the situation had taken a better turn, but at about 10 A M as soon as the Nizam's Government Communique appea-

red in the papers, holding Aryas responsible for the trouble, it added fuel to the fire and infuriated the Muslims, who attacked in ten thousand the house of Pandit Vinayak-Rao, Barrister, the president of the Arya Pratinidhi Sabha, Nizam State It was by the timely and lucky arrival of Hon'ble Mr Crofton the Police Minister that Pandit Vinayak Rao's family were saved from the impending tragedy at the hands of the ruffian Moslems It is also learnt that this huge mob of Moslems was headed by some responsible Muslim leaders and there were also some office-bearers of the Osmania University Students' Union In spite of the promulgation of Section 145 of the Nizam's Government banning people carrying weapons, the Muslims were freely carrying them It is also learnt that the breasts of the Hindu ladies were mutilated by the Muslims

Thus the whole of the communique issued by the Nizam's Government seems to be halting and misleading, especially that part of it which holds Aryas whose number in Hyderabad is infinitely small, responsible for the riot

We ask the Government of India to appoint an impartial Commission to inquire into these unhappy happenings in the Nizam's State, where the plight of the Hindus and Aryas is becoming every day more evident We also thank Messrs Crofton and Hollins for their timely handling the situation on two occasions

Mr. MEGHRAJ'S MURDER.

Mr S Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League, has issued the following statement to the press refuting the communique of Indore Government regarding Mr Meghraj's murder—

The Communique, issued by the publicity Officer of Indore Government alleging the murder of Mr Meghraj, President of the Aryasamaj at Narayangarh, due to some personal troubles between him and some of his caste-fellows has been brought to my notice I am extremely sorry and surprised to find that the Publicity Officer has entirely relied upon the one-sided report of the Police-officers at Narayangarh and has shut his eyes at many glaring facts in totally denying the connection of Mr Meghraj's murder with his Harijan activities I put the following questions to the Publicity Officer requesting him to come forward with his replies in the press —

(1) Is it not a fact that on the 2nd of April 1938, some Harijan boys were admitted into the school at Narayangarh, particularly at the instance of late Mr Meghraj ?

(2) Is it not a fact that on the 4th of April 1938, some Harijan girls were admitted into the girls' school at Narayangarh again at the instance of late Mr Meghraj ?

(3) Is it not a fact that the admission of the Harijan girls into the school created an uproar among orthodox Hindus there so much so that the Harijan girls were turned out of the school ?

(4) Is it not a fact that on the 6th of April, 1938, one Mool Chand Kumath and Mangni Ram Patwari called two Harijans, named Nathu and Manna Lal while they were passing by the road-side, and threatened them that in case they would not withdraw their children from the school and would enter the temple, they and their supporters would be beheaded ?

(5) Is it not a fact that after hearing about the above threat from Mr Deep Chand Sharma, Secretary Aryasamaj, Narayangarh Mr Meghraj declared in the local public library in the evening of 6th April, 1938 that he would surely lead a procession of the Harijans to enter into the temples for Dev-Darshan on the evening of Ram Navmi Day, i e 8th April, and that he was prepared even to be beheaded serving a noble cause ?

(6) Is it not a fact that Mr Meghraj was murdered just on the Ram-Navmi Day at about 2 P M, only a few hours before the time fixed and announced by him for leading the Harijan procession for temple-entry ?

I challenge the Publicity Officer of Indore State to prove that the above are not facts If these are facts—as they surely are—how absurd it is to say that the murder of Mr Meghraj had nothing to do with Harijan cause The Aryan League has in its possession sufficient material to substantiate the above, which facts the Police officers at Narayangarh are trying to suppress by giving a different colouring to this incident Even the statements of some eye witnesses are not being recorded by Mr Mohan Singh, the Sub-Inspector of of Police at Narayangarh whose prejudice against the Aryas is too well-known to be mentioned here Unless Mohan Singh is immediately transferred from Narayangarh and replaced by an impartial police officer, there is every likelihood that the facts of the case may not come to light and proper justice may not be meted out

I would, therefore, respectfully beg of Sir Bapna, the Prime Minister of Indore State to appoint an impartial commission to inquire into the details regarding this murder, otherwise he will not only be doing injustice to the Aryas but also to that Harijans' noble cause which is so near and dear to the present ruler of Indore

हैदराबाद राज्य में आर्यों पर अत्याचारों का ताँता

पिछले दिनों हैदराबाद राज्य मे वहाँ की सरकार की ओर से आर्यों पर जो अत्याचार हुए हैं उनमें से कुछेक सक्षेप मे इस प्रकार है —

१—निज़ामाबाद में चार प्रतिष्ठित आर्यों को अकारण ही वहा की पुलिस ने गिरफ्तार कर हवालात में बन्द कर दिया और उनके यज्ञोपवीत जबरदस्ती तोड़ दिये, उनको बारी बारी से एक पृथक् कमरे मे रात्रि के समय लेजा कर उन्हें नग्न कर पीटा, उनके मुह मे पेशाब डाला, उनके मुख पर मास लाकर रक्खा। उन्हें पब्लिक में अपमानित करने के लिये हाथों में हथकड़ियाँ डाल कर तमाम बाज़ार और शहर मे घुमाया। उन पर यह झूठा इलज़ाम लगाया गया है कि वे हिन्दुओं को मुसलमानों से लडने के लिये भड़काते हैं। उन पर मुक़द्दमा चल रहा है।

२—गत् होली के अवसर पर गुलबर्गा मे होली खेलते हुए कुछ लिंगायतों तथा मुसलमानो

म झगड़ा हो गया था, जिस के फलस्वरूप एक मुसलमान मारा गया बतलाया जाता है। इन होली खेलने वाले लिंगायतों में आर्य एक भी नहीं था, चूंकि यह सर्व विदित बात है कि आर्य लोग होली नहीं खेलते है। जिस समय यह होली खेली जा रही थी, आर्य लोग आर्य-समाज मे होलिका यज्ञ कर रहे थे। परन्तु फिर भी वहा की पुलिस ने चार आर्यों को झूठ कतल के अभियोग मे गिरफ्तार कर लिया और उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है।

३—कल्यानी मे वहाँ के एक मुसलमान तालुक्केदार ने आर्य समाज पर से ओ३म" का झण्डा जबरदस्ती उतार दिया। उसके सम्बन्ध मे इस सभा की ओर से निज़ाम सरकार को तार भेजे जा चुके है।

४—हैदराबाद मे पिछले दिनों वहाँ के मुसलमानों ने हिन्दुओ को मारना और लूटना शुरू किया। इस प्रकार वहाँ हिन्दू मुसल्मानों मे बलवा हो गया। इस पर निज़ाम सरकार ने एक निराधार विज्ञप्ति निकाल कर आर्यों को बलवे के लिये जिम्मेवार ठहराया, जिसके कारण वहा के आततायी मुसलमान और अधिक उत्तेजित हो गये और उन्हों ने सशस्त्र दस सहस्र की सख्या मे निज़ाम राज्य की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीयुत पंडित विनायकराव जी बैरिस्टर के मकान पर हमला कर दिया। मिस्टर क्रास्टन, पुलिस मेम्बर के घटना-स्थल पर पहुँच जाने से वह भयङ्कर दुर्घटना होने से बच गई। निज़ाम सरकार की उक्त निराधार विज्ञप्ति का जोरदार प्रतिवाद इस सभा की ओर से समाचार-पत्रों मे किया जा चुका है और इसी आशय के तार भी निजाम सरकार को भेजे जा चुके हैं।

५—इसी पिछले बलवे के सम्बन्ध मे कई निरपराधी आर्यों को गिरफ्तार कर उन पर झूठा कत्ल का अभियोग चलाया जा रहा है।

६—अभी हाल मे निज़ाम सरकार की एक गश्ती चिट्ठी निकली है कि कोई भी आर्य बिना सरकार की आज्ञा के हवन कुण्ड न बनाये।

७—अभी हाल मे वहाँ की सरकार ने एक विज्ञप्ति द्वारा श्री प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री तथा श्री प० नरेन्द्र जी को व्याख्यान देने से बन्द कर दिया है।

इन सब ज्यादतियों की तह में असल बात तो यह है कि निज़ाम सरकार अपनी रियासत मे आर्य समाज के मिशन को हर प्रकार से दबाने पर तुली हुई है। ऐसी दशा मे आर्य-समाज किस प्रकार निज़ाम सरकार की इस नीति का मुकाबिला करे, इन्हीं सब बातो पर विचार करने के लिये इस सभा ने मध्य प्रदेश अथवा महाराष्ट्र प्रान्त मे हैद्राबाद रियासत के निकट किसी स्थान पर आर्यन कांग्रेस बुलाने का निश्चय किया है। उस कांग्रेस के अधिवेशन के सम्बन्ध मे समय समय पर विज्ञप्तियों तथा समाचार-पत्रों द्वारा आर्य जनता को सूचनायें मिलती रहेंगी।

शिवचन्द्र
मन्त्री—आर्य रक्षा समिति,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।

विद्या धर्मेण शोभते । 　　　　　　 विद्या से ही धर्म की शोभा होती है ।

आर्य कुमार जगत

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती का २२, २३ व २४ मई को होना बिल्कुल निश्चित हो गया था और परिषद् तथा स्वागत कारिणी सभा की ओर से सब तैयारियां हो गई थीं। अचानक २३ अप्रैल को स्वागत कारिणी के मन्त्री महोदय का पत्र मिला कि बिजनौर ज़िले में हैज़ा फैलनेका पूरा अन्देशा होने के कारण बिजनौर निवासी सम्मेलन करके बाहर से प्रतिनिधियों को बुलाने की जिम्मेदारी लेने में हिचकते हैं। इसलिए उन्होंने प्रार्थना की कि सम्मेलन २२, २३ व २४ मई को न करके सितम्बर मास में किया जाय। परिषद् की कार्यकारिणी सभा ने अपनी २८ अप्रैल की मीटिंग में स्वागत कारिणी सभा की इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यह निश्चय किया कि सम्मेलन बिजनौर में ही सितम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में किया जावे। इसकी सूचना स्वागत मन्त्री की ओर से अब तक सब आर्यकुमार सभाओं को मिल गई होगी।

हम नहीं चाहते थे कि जयन्ती की एक बार जो तारीखें निश्चित हो चुकीं थीं उनमें कोई परिवर्तन किया जाय। लेकिन जिस परिस्थिति में ऐसा किया गया है और जो आपके सामने है उसमें परिषद् और स्वागत कारिणी सभा का कोई दोष नहीं है। अस्तु।

इस प्रकार जयन्ती में लगभग चार मास हैं। इस समय से हम सबको पूरा लाभ उठाना चाहिए। आर्यकुमार सभाओं को चाहिए कि स्वागत कारिणी सभा के कार्य को ढीला न पड़ने दें और जो २ बातें उनसे पूछी गई हैं उनका शीघ्र उत्तर दे दें। स्वागत-मन्त्री महोदय के पास से शिकायत आई है कि बहुत ही थोड़ी आर्यकुमार सभाओं ने उनके पत्रोंके उत्तर दिए हैं। स्वागतकारिणी सभा ने जयन्ती की तैयारियों में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं रखी है। अब यह आर्यकुमार सभाओं का कर्त्तव्य है कि वे जयन्ती को अधिक से अधिक सफल बनावें। जितने अधिक प्रतिनिधि वे जयन्ती पर भेजने की सूचना स्वागत कारिणी सभा को समय पर भेजेंगी उतना ही बिजनौर निवासियोंका उत्साह बढ़ेगा, और उतना ही अधिक प्रतिनिधियों का स्वागत होगा सम्पूर्ण बिजनौर ज़िला उत्सुकता से देश के आर्यकुमारों के इस मेले की आशा लगाए हुए है,और ज़िले भर के प्रत्येक ग्राम से जो बन पड़ा है उसने इस हेतु तन, मन, धन से सहायता दी है। हमें पूरा विश्वास है कि आर्यकुमार सभाएँ बिजनौर निवासियों की आशाओं को अवश्य पूरा करेंगी।

जयन्ती पर परिषद् का अधिवेशन भी होगा। इस लिए आर्य कुमार सभाओं और आर्य कुमारों को अपने प्रस्ताव अभी से भेज देने चाहिएँ, क्योंकि हम इन प्रस्तावों को प्रकाशित करना चाहते हैं, ताकि उन पर अधिक से अधिक सम्मतियाँ आ जावें और प्रतिनिधियों को उन पर अच्छी प्रकार विचार करने का समय मिल जावे।

जो बातें स्वागत मन्त्री महोदय ने अपने १ अप्रैल १९३८ ई० के पत्रों में पूछी हैं,उनके उत्तर सीधे उन्हीं के पास जाने चाहिएँ। प्रस्ताव सब परिषद् के कार्यालय को भेजने चाहिएँ।

आर्यकुमार सभाओं के समाचार

१—आर्यकुमार सभा इसलामनगर, बदायूँ—यह सभा सन् १९१९ से स्थापित है। इसके सभासदों

की संख्या थोड़ी होनेपर भी इसके कार्यकर्त्ता संलग्नतासे कार्य कर रहे हैं और यदि इसी प्रकार कार्य होता रहा तो सभा अवश्य उन्नति करती जावेगी।

इस सभा ने एक फंड खोल रखा है, जिसके द्वारा गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकों मे तथा अन्य बातों मे सहायता दी जाती है।

सभाने इस वर्ष एक व्यायाममण्डल भी खोला है।

२—आर्य कुमार सभा, बुरहानपुर का वार्षिक अधिवेशन १ व २ मई १९३८ का हुआ जिसमें निम्न प्रस्ताव पास हुए —

(१) यह सभा नारायणगढ़ के हरिजनोद्धारक आर्य वीर श्री मेघराजजी के आततायियों द्वारा किए गए वध पर रोष प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(२) यह सभा भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद से प्रार्थना करती है कि वैदिकधर्म-विशारद परीक्षाएं अगस्त या सितम्बर मास मे रखी जावें।

(३) यह सभा मध्य प्रदेश तथा बरार प्रान्त के प्रत्येक आर्यसमाज से सानुरोध प्रार्थना करती है कि सच्चे आर्य वीर पैदा करने के लिए वे अपने आधीन एक २ आर्य कुमार सभा की स्थापना करें।

३—आर्यकुमार सभा कांठ—यह सभा सन् १९२४ में स्थापित है। इस सभा का प्रत्येक सभासद तथा प्रत्येक कार्यकर्त्ता उत्साह से अपने २ कार्य को पूरा करता है। इस सभा को स्थानीय आर्य-समाज का भी पूरा सहयोग प्राप्त है फिर क्यों न यह सभा दिन पर दिन उन्नति करती जावे।

४—आर्यकुमार सभा गोपाल गंज सारन—हमने गत मास लिखा था कि आर्यसमाज गोपाल गंज में शीघ्र ही एक आर्य कुमार सभा स्थापित होने वाली है। हमें यह लिखते हर्ष होता है कि आर्य समाज ने हमारी आशाओं को पूरा कर दिया। आर्य कुमार सभा में धन की कमी है। सभा ने इस पत्र द्वारा दानी सज्जनों से धन की प्रार्थना की है। आशा है दानी सज्जन इस सभा की सहायता करेंगे।

५—आर्यकुमार सभा सिमडेगा—इस सभा ने हाल में ही ६ मुख्य केन्द्रस्थल ग्रामों में एक २ आर्य समाज स्थापित किया है, जिसमें अच्छी जागृति हो रही है। शिक्षा के निमित्त चार स्थानों में पाठ शालाएँ खोली गई हैं जिनसे ग्रामीण बच्चों का बहुत उपकार हो रहा है। शिक्षा निःशुल्क है। ग्राम-प्रचार के निमित्त, जो इस सभा का मुख्य कार्य है, बा० कैलाश बिहारी जी को नियत किया गया है।

हम पंडित धर्मवीर जी, मन्त्री, भारतवर्षीय श्रद्धानन्द मैमोरियल ट्रस्ट के अत्यन्त कृतज्ञ हैं कि वे अपना अमूल्य समय देकर बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सभाओं को पूरी सहायता दे रहे हैं।

हमारे अन्य आर्य नेता भी यदि इसी प्रकार आर्य कुमारों को उनके कार्य में उत्साहित करते रहें, तो फिर हम आर्यकुमार क्या नहीं कर सकते। क्या हमारे आर्य नेता इस ओर ध्यान देंगे।

मन्त्री

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् देहली।

अध्यात्म धारा

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के प्रवचन का सार

मृत्यु

उपनिषद् की सबसे महत्व पूर्ण शिक्षा मृत्यु के सम्बन्ध में है अर्थात् मृत्यु बहुत कष्ट प्रद नहीं बल्कि सुख प्रद है। मनुष्य का प्रात-काल बाल्यावस्था में और अन्त वृद्धावस्था में होता है। बुढ़ापे की अवस्था प्राप्त कर लेने पर मृत्युरूपी रात्रि आती है और वह उस वृद्ध आदमी को छोटे बालक के रूप में बदल जाती है। मृत्यु आराम देने, बुढ़ापे रूपी थकान को दूर करने और नए जन्म रूपी नई जिन्दगी, उत्साह और पुरुषार्थ की देने वाली है तब फिर वह क्योंकर कष्ट प्रद हो सकती है।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, 'मेरे और तुम्हारे बहुत से जन्म बीते हैं, मैं इस बात को जानता हू। तुम नहीं जानते हो। यह जन्म-मरण रूपी चक्र अनादि काल से चला आया है और अनन्त काल तक जब तक मोक्ष नहीं मिलेगा चलता ही रहेगा।' यह तो रही सिद्धान्त की बात। अब हम दुनिया के अमल को देखते हैं तब हम मृत्यु को बड़ा डरावना पाते हैं। उदाहरण के रूप में एक कोढ़ी को लाजिए जो बहुत ही पीड़ित है परन्तु फिर भी वह मौत के नाम और उसकी कल्पना से डर जाता है।

मृत्यु कष्ट-प्रद नहीं वरन् सुख-प्रद ही है। इसकी सर्माित कैसे हो ? जब मनुष्य गम्भीरता पूर्वक विचार करता है तब उसे इन दोनों की संगति स्पष्ट दीख पड़ती है। एक साहूकार है। वह मरता है। उसकी धन दौलत एक तरफ रह जाती है और वह दूसरी तरफ़ चला जाता है। एक राजा है। वह बड़े और सम्भ्रान्त राज्य का मालिक है। मृत्यु आती है उसका राज्य एक तरफ़ चला जाता है और वह दूसरी तरफ़ चला जाता है। स्पष्ट है कि मृत्यु का काम मनुष्य को उन चीज़ों से जो उसे प्राप्त हैं अलग कर देना ही है। जब मनुष्य अपनी चीज़ों से स्वयं अपनी प्रसन्नता से अलग हो जाया करता है तब उसे दुःख नहीं होता और जब वह ज़बरदस्ती अलग किया जाता है तब दुःखी होता है। प्रसन्नता से तभी अलग होता है जब वह उन चीज़ों को केवल अपने प्रयोग की वस्तु समझता है। प्रसन्नता से तब नहीं छोड़ता जब उनमें उसकी ममता होती है या जिन्हें वह अपनी समझता है। यही बात ठीक मृत्यु और संसार की वस्तु और भोग के सम्बन्ध में है।

एक हँसाने वाला आईना होता है उसमें देखने पर आपको अपनी शक्ल खराब दीख पड़ेगी और दूसरे शीशों में खराब नहीं दीख पड़ेगी। इसमें दोष किस का है ? आईने का या शक्ल का ? दोष आईने का ही है। इसी तरह मौत तो अच्छी चीज़ है। जब हम उसे ममता के आईने में देखते हैं तब हमें मौत डरावनी दीख पड़ती है परन्तु जब हम ममता से पृथक करके देखते हैं तब हमें डरावनी नहीं मालूम पड़ती।

इङ्गलैण्ड के एक डाक्टर ने परीक्षण किया कि मृत्यु दुःख देने वाली है या नहीं। उसकी उम्र ६६ वर्ष की थी। उसने परीक्षण के लिए ऐसा ज़हर तय्यार किया जिससे मृत्यु धीरे धीरे हो। उसने ज़हर पी लिया और परीक्षण करने लगा और परीक्षण को एक नोट बुक में लिखने लगा। उसने अपनी नोट बुक मे लिखा है:—

आर्य संस्कृति की रक्षा का एक साधन

लेखक—श्री प्रो० ताराचन्द्र गाजरा, एम० ए०

आर्यावर्त्त में इस समय पूर्वीय और पश्चिमीय सस्कृतियों का सघर्ष हो रहा है। इस सघर्ष म पूर्वीय सस्कृति का ह्रास होने लगा है प्राचीन विचार बड़े जोर से बदल रहे हैं। लगभग एक शताब्दी से सस्कृत विद्या तथा प्राचीन ढग की वस्तुओ की कीमत बाजार मे बिलकुल कम हो गई है इसलिए पुराना ज्ञान गुम होता रहा है और आज हमारे देश के बहुत से लोग न केवल निरक्षर है परन्तु वह उपयोगी बाते जो पहिले वे लोग हमारे चलते फिरते पुस्तकालय, सन्यासी आदि महानुभावो से सीखते थे वह भी भूल गये है।

इस समय हमारे कई देश वासियो के मन मे ऐसा विचार उत्पन्न हुआ है कि देश भर के अन्दर दौरा लगाकर लोगो को साक्षर बनाया जाय यह कार्य बड़ा उत्तम है। परन्तु उसमे कुछ थोड़ा सा दोष आने की सम्भावना है, वह यह है कि वे लोग जो इस कार्य को करना चाहते हैं वे सारे गाधी जी के भक्त नही। उनमे कई एसे है जो ईश्वर को नही मानते कई रशिया के ढगकी क्रान्ति लाना चाहते है। परिणाम यह होगा कि प्राचीन सभ्यता का बचा खुचा जो कुछ भी है वह भी नष्ट हो जायगा। और भारतवर्ष ईसा वर्ष नही तो लेलिन वर्ष तो बन ही जायगा। इस अवसर पर आर्यसमाज को जिसका प्राचीन सभ्यता पर पूर्ण विश्वास है उठकर के खड़ा होना चाहिए और बलपूर्वक कार्य करना चाहिए।

आर्यसमाज के पास साधन विद्यमान है आर्यसमाज के गुरुकुल, कौलिजो पाठशाला तथा स्कूलो मे सहस्रो अध्यापक तथा लाखों विद्यार्थी है इन सबको अपना अवकाश इस कार्य के लिए देना चाहिए।

चीन, स्पेन और रशियामे क्रान्ति लानेमे विद्यार्थियो ने विचित्र कार्य करके दिखाया है यदि आर्यसमाज के नेता लोग इस कार्य म जुट जायेगे तो देश में एक तहलका सा मच जायगा, हिन्दी का भी प्रचार होगा और वैदिक विचारो का भी फैलाव होगा।

कार्य आरम्भ करने से पूर्व किसी मुख्य स्थान में आर्यविद्या सभाओं तथा आर्य विद्यालयो के प्रतिनिधि एक स्थान पर इकट्ठे होने चाहिए और वहा पर मिलकर इस कार्य के लिए योजना करनी चाहिए श्रीमती सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाको इस कार्य में हाथ डालना चाहिए और एक सरक्यूलर द्वारा सब आर्यों की सम्मति लेना चाहिए फिर अजमेर नगर म राजस्थान प्रतिनिधि के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर एक मीटिंग बुलानी चाहिए।

Japanese taught Death is lovely. I feel fine and no pain

अर्थात् जापानी ठीक कहते है कि मृत्यु प्यारी है। तात्पर्य यह है कि जब हम ससार की चीजो में अपना प्रयोगाधिकार समझ लेते है तब हमें मृत्यु दुखदाई नही होता।

वेद भाष्य का उत्तरदायित्व

आर्य विद्वानों के नाम खुली चिट्ठी

"वेद भाष्य का उत्तरदायित्व" शीर्षक एक गम्भीर लेख श्री प० सातवलेकरजी ने अपने "वैदिक धर्म" (वर्ष १९ अङ्क २) में लिखा है, इसका पूर्वाङ्क देखने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। अङ्क ३ में 'वैदिक सूक्तों के ऋषि' शीर्षक लेख गवेषणापूर्ण है। इधर ये दोना लेख हैं तो उधर आर्यमित्र, आर्यमार्तण्ड आदि पत्रों में श्री सातवलेकरजी के प्रतिवाद मे लेख छपे हैं। देवता विषय में श्री सातवलेकरजी की भ्रान्ति' यह लेख जिज्ञासु जो के मेरठ वेद सम्मेलन में दिये भाषण की परिवृ.ित आवृति प्रतीत होती है। "ऋषि दयानन्द प्रदर्शित देवतावाद" यह लेख भी आर्य मार्तण्ड में छपा। आर्यमित्र के लेख की प्रतिलिपि है जो कई टुकड़ों में छपा है।

वेद भाष्य के उत्तरदायित्व को वे विद्वान् हो भली भाँति समझ सकते हैं जिन्होंने गुरु-चरणों में बैठकर कुछ वेद ज्ञान प्राप्त किया है—सोचिये तो सही, कि कितना कठिन कार्य है ? ज़रा स्वर चूका कि अर्थ बदला। इसीलिये वेदों के साथ ऋषि, देवता, छन्द, स्वर आदि लिखने की परम्परा चलाई गई थी। जिससे वेद ज्ञान में सहायता मिले। इस परम्परा में हस्तक्षेप करने का किसी को अधिकार नहीं।

यदि कोई नया ऋषि खड़ा होता है और उसके ध्यान में कोई अन्य देवता आते हैं तो उसके शिष्यों को चाहिए कि वे अपना वेद पृथक् और नये देवता लिखें। पर किसी अन्य ग्रन्थ में गड़बड़ करने का किसी को कोई भी अधिकार नहीं है। यह कदापि शिष्ट रीति नहीं है कि "ऋषि तो वे पुराने ही रक्खे जायँ और देवता अपने ध्यान अथवा ज्ञान के अनुसार बदल दिये जायँ—" मेरी समझ मे छन्द और स्वर तो बदल ही नहीं सकते।

उस दिन कुम्भ के अवसर पर एक विद्वान् मुझसे पूछने लगे कि प्रचय स्वर के पश्चात् अनुदात्त कैसे आया ? समय की व्यग्रता ने पूर्ण विचार नहीं होने दिया, नहीं तो विचार बढ़ता ही। श्री "जिज्ञासु" महाशय का कथन है कि नये ऋषियों को नये देवता बदलने का अधिकार है किन्तु हम कहते हैं कि यदि कोई नये ऋषि हैं और वे मन्त्रार्थ द्रष्टा की कोटि में आ गये हैं तो बेशक वे उन नये ऋषियों के नाम के साथ नये आविष्कृत देवता लिख सकते हैं — प्राचीन ऋषि और देवता परम्परा को बदलना असाध्य प्रयत्न होगा। इस प्रकार कोई भी परम्परा सुरक्षित नहीं रहेगी। फिर यह भी बात विचारणीय रहेगी कि नये मन्त्र द्रष्टाओं मे कोई किसी को ऋषि मानेगा और कोई नहीं और मुख्य विषय गौण पड़कर यह नया विवाद ही मुख्य बन बैठेगा।

इस लिए मेरा अपना विचार है कि दस बीस विद्वान जिज्ञासु ऐसे विद्वान् जिनमें अहम्भाव की मात्रा कम हो किन्तु विद्वत्ता अधिक हो, ऐसे विद्वान् दो चार मास के लिए कहीं एकत्र हों और ऐसे जटिल प्रश्नों पर खुले हृदय से विचार करें और पहुँच सकें तो किसी निर्णय पर पहुँचें—इस प्रकार आम जनता में ललकारने की कुटेव छोड़ें—इससे कोई लाभ नहीं—इस प्रकार श्री सातवलेकरजी और ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की लेख मालायें कोई फल न

जायेंगी और यह सम्भव है कि जो भी 'स्वामीदयानन्द' का नाम लेकर बार बार कहेगा, चाहे उसका पक्ष उसकी निर्बलताओं के कारण विद्वानों की दृष्टि में गिरता हुआ ही क्यों न हो, साधारण जनता से प्रबल माना जायगा। इसमें भूल उनकी ही होगी जो व्यर्थ स्वामी जी का नाम समय—असमय बीच में लाते हैं। एक और प्रकार से घोषित करते हैं कि 'हम तुम्हारी एक बात भी नहीं सुनेंगे।'

वेद शुद्ध छपें किस को अभीष्ट नहीं है। जितने भी प्रयत्न किए जांय थोड़े हैं। हम जन साधारण में देखते हैं कि भिन्न भिन्न स्थानों से एक ही पुस्तक के अनेक संस्करण निकलते रहते हैं। जिस स्थान के संस्करण की ख्याति हो जाती है जनता उसी को ले लेती है—इसमें झगड़ा क्या है? यदि वैदिक यन्त्रालय में वेद शुद्ध नहीं छपे या नहीं छपते तो श्री-सातवलेकर जी के शुद्धिकरण को कोई सहृदय संमान देगा ही।

अब रहा 'ऋषि–देवता विषयक वाद।'' इसमें मेरा कथन यह है कि प० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु पहिले उन सब मन्त्रों को एकत्र करें जिनके देवता श्री स्वामी दयानन्द जी ने नवीन आविष्कृत किये हैं। फिर एक जगह बैठेंगे, गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे। पर परम्परा प्राप्त ऋषि अथवा देवताओं में स्वेच्छया परिवर्तन करने का किसी को अधिकार नहीं, क्योंकि वह एक परम्परागत धरोहर चली आ रही है। यदि प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु चाहें तो वेद का नया संस्करण निकालें। जहां जहां स्वामी जी द्वारा नये आविष्कृत देवता हों वहीं मन्त्रों के ऊपर "ऋषि. दयानन्द देवता सविता।" इत्यादि छाप सकते हैं। पर ये ध्यान रक्खें कि इस प्रकार नये ऋषि और नये देवता बढ़ते जायेंगे और उनके प्रामाण्याप्रामाण्य पर चर्चा खड़ी होती रहेगी। श्री ब्रह्मदत्तजी जैसे विद्वान् किसी को ऋषि कहेंगे और विद्वान् उनको ऋषि नहीं मानेंगे फिर एक नया वितण्डवाद खड़ा होगा। फिर जिज्ञासु जी स्वामी जी का नाम लेकर ललकारना शुरू करेंगे, जनता भ्रम में पड़ जायगी, और रोग वहीं का वहीं रहेगा—

मैं इस विषय में विस्तृत रूप से अपने विचार प्रगट करना चाहता था कि ता० १६ अप्रैल से मैं बराबर रुग्ण हूं और दूसरे ऐसे गम्भीर जटिल विषयों का साधारण अज्ञ जनता के सामने उपस्थित नहीं करना चाहता। यह लेख भी कतिपय विद्वानों के अनुरोध से लिख रहा हूं और आशा करता हूँ कि श्री सातवलेकर जी और श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

मैं तो यही नहीं समझ सका कि ये दोनों महानुभाव किस से कह रहे हैं? अज्ञ जनता से? इससे कोई लाभ नहीं। पण्डितों से? तो फिर कहीं एक स्थान पर एकत्र होकर विचार कीजिए और तब तक उठिए नहीं जब तक किसी निर्णय पर न पहुँचे। तब फिर लिखने-लिखाने की बात कीजिये, उससे पूर्व नहीं—(शेष आवश्यकता होगी तो लिखूँगा)

—नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ महाविद्यालय—

ज्वालापुर।

सम्पादकीय

सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक सभा का बीसवा वार्षिक वृत्तान्त पृथक प्रस्तुत किया जा रहा है। सभा मे इस वर्ष जो कार्य हुआ है वह उसमे पाठक पढ़े गे। उस पर यहा प्रकाश डालने की जरूरत नही परन्तु यह हम अवश्य कहेंगे कि आर्य्य जगत की सहानुभूति और दृष्टि सभा की ओर अब विशेष रूप से खिंचने लगी है और वह सार्वदेशिक सभा से आवश्यक मार्ग प्रदर्शन की बहुत ज्यादा आशा करने लग गया है। इन आशाओं के अनुपात मे सभा की उत्तरदायिता, बढ गई है। सभा उस उत्तरदायिता को पूर्ति के निमित्त यथा-साध्य प्रयत्न करती है।

हम मानते हैं सार्वदेशिक सभा को अभी भी उस सभा का रूप प्राप्त नहीं हुआ है, जो प्राप्त होना चाहिये। यह तो सर्वथा आर्य्य जनता के हाथ की बात है। जितनी मात्रा मे आर्य्य जगत मे उत्साह होगा, आर्य्य समाजो मे स्फूर्ति होगी प्रान्तिक सभाओ मे दृढ़ता और जीवन होगा उतनी मात्रा मे सार्वदेशिक सभा जीवन ग्रहण करेगी। समाजो और प्रतिनिधि सभाओं से ही तो सार्वदेशिक सभा बनी है। हम उस दिन का स्वप्न देखते है जब सार्वदेशिक सभा सुदृढ सर्वोच्च सत्ता का रूप ग्रहण करेगी, क्या ही अच्छा हो हमारा यह स्वप्न शीघ्र से शीघ्र पूरा हो।

निरन्तर बढती हुई उत्तरदायिताओं और उसके क्षेत्र के विस्तार के साथ साथ उसकी धन जन की आवश्यकताए भी दिन पर दिन बढ रही है और उनका हल अनिवार्य है। सभाको पग पग पर अपने कार्यो के सम्पादन के लिए आर्थिक कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है। अपने परिमित आर्थिक साधनों से अधिक से अधिक कार्य्य करने की यह कोशिश करती है परन्तु परिमित साधनोके कार्य्यो के परिणाम भी परिमित ही होते है। हम चमत्कारिक कार्य्य तभी प्रस्तुत कर सकते है जब हमारे हाथ हर प्रकार से दृढ हों। बिना ऐसा हुए चमत्कारो की आशा करना दुराशा मात्र है। हमारे आर्थिक साधनो की परिमितता का पाठको को अन्दाजा आय व्यय का विवरण देखने से विदित होगा। इस वर्ष सभा के सेन्ट्रल कार्यों मे १८००) के लग-भग घाटा हुआ है। यही दशा गत वर्ष थी। यदि यही रफ्तार जारी रही तो समझ नही पडता, कार्य्य कैसे होगा।

सभा के कार्य के लिये आय का कोई खास साधन नही है। सभा ने आर्य्य समाज स्थापना-दिवस की आय को अपना स्थिर साधन बनाने की योजना की है। परन्तु दुख है यह योजना नाम मात्रको सफल देख पड़ रही है। एक दूसरी योजना सभा की मासिक सहायता करने वाले सहायको की है। इसमे भी जैसी सफलता होनी चाहिए नही हो रही है। आशाओ के अनुरूप सभा की गति के लिए उसे आर्थिक चिन्ताओ से मुक्त करना सबसे बडा कार्य्य है जिसकी शीघ्र से शीघ्र व्यवस्था होनी चाहिये। यदि उपर्युक्त दोनो योजनाएँ सफल हो जाय तो भी बहुत कुछ कठिनाइया कम हो सकती है। आर्य्य जनता का

गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार करना चाहिये।

इस वर्ष की रिपोर्ट में हमें 'विदेश प्रचार के हैडिङ्ग की कमी बहुत अखर रही है। विदेश प्रचार के लिए हमारे पास थोड़ा बहुत धन भी था, औपनिवेशिक आर्य्य भाई भी इस व्यय में सभा का हाथ बटाने के लिए उद्यत थे। फिर भी उपदेशक न भेजने का कारण यह था कि हमें काफी यत्न करने पर भी अच्छा योग्य प्रचारक न प्राप्त हो सका। वस्तुत. सुयोग्य कार्य कर्त्ताओं की कमी भी आर्य्य समाज के कार्य्य में बाधक सिद्ध हो रही है। आशा है इस वर्ष हम किसी उपदेशक को विदेशों में भेजने में समर्थ हो जायगे। इङ्गलैण्ड, अमेरिका इत्यादि मे तो हमें पूर्णत अपने ही व्यय पर प्रचारक रखने होंगे।

हैद्राबाद में आर्य्यसमाज की समस्या गत कई वर्षों से हमारे सामने है। उसका हम हल करते रहे हैं। परन्तु अभी भी वह समस्या लगभग ज्यों की त्यों चली आ रही है। इस वर्ष सभा ने इसका अन्तिम हल करने का निश्चय किया है। आश्चर्य नहीं यह समस्या आर्य्यजगत को एक कड़ी परीक्षा में डाल देवे। सभा के जितने साधन हैं वह तो इसमे लगेंगे ही, परन्तु जनता को हर प्रकार के साधन जुटाने के लिए तय्यार रहना चाहिये।

इन शब्दो के साथ सभा के गत वर्ष के कार्य्य का अध्ययन और उसका सिंहावलोकन करने का हम पाठकों को निमन्त्रण देते हैं।

आर्य विवाह एक्ट का संशोधन

आर्य एक्ट की समालोचना कई स्थानों पर की गई है। उनमें से कुछ ऐसी हैं जो उस एक्ट को परिधि को न समझते हुए की गई है। इण्डियन सोशल रिफार्मर तथा कुछ अन्य समाचार पत्रों में इस बात का आग्रह किया गया है कि आर्य मेरिज एक्ट में ऐसी एक त्रुटि रह गई है जो बहु विवाह मे सम्बन्ध रखती है वे आर्य मेरिज एक्ट में इस प्रकार का सशोधन कराना चाहते हैं कि जिससे वह एक्ट सिर्फ एक पत्नी विवाह में भी लागू हो सके। यह कहाँ तक इस एक्ट की मन्शा के भीतर होगा, गम्भीरता पूर्वक विचारणीय विषय है। यह बात साधारण जनता से छिपी हुई नहीं है कि बहुत थोड़ी सी विशेष अवस्थाओं को छोड़ कर आर्य समाज एक पत्नीव्रत के सिद्धान्त का अनुयायी हैं। परन्तु वर्तमान आर्य विवाह एक्ट में यह कैद लगाना उचित होगा या नहीं इसके लिये आर्य विवाह एक्ट जिस उद्देश्य को लेकर बना है उस ओर ध्यान देना होगा। यह स्मरण रहे कि आर्य विवाह एक्ट आर्यों की विवाह पद्धति का सम्पूर्ण कानून नहीं हैं। जिस समय हम इस बात को भूलते हैं उसी समय हम गलती कर बैठते हैं। एक्ट का उद्देश्य केवल एक ही है और वह यह है कि शुद्धि विवाह और अन्तर्जातीय विवाह के जायज होने की जो शङ्का थी वह शङ्का दूर कर दी गई है। अब शुद्धि, विवाह और अन्तर्जातीय विवाह भी वैसे ही जायज हैं जैसे कि सजातीय विवाह से। उनकी सन्तान भी अपने पैत्रिक सम्पति की उसी प्रकार उत्तराधिकारी बनती है जैसे कि सजातीय विवाह से। इसलिए वह सशोधन एक्ट की मन्शा के बाहर होगा। जब तक हम आर्यों के विवाह सम्बन्धी सम्पूर्ण नियमों का एक्ट बनाना न चाहें तब तक इस एक्ट में केवल एक बात का जोड़ना उचित न होगा बल्कि खतरेसे भरा हुआ होगा। केवल एक पत्नी विवाह का विषय ही जोड़ना उचित न होगा। इसके

कारण हैं। धर्म शास्त्रों में यह भी विहित है कि कुछ विशेष अवस्थाओं मे एक पत्नी के जीवित रहते हुए भी दूसरा विवाह किया जा सकता है। इसके सिवाय विवाहके और भी कई प्रतिबन्ध हैं। जैसे सगोत्र और सपिण्ड का होना। इस प्रकार के अनेक नियम हैं। जिनका एक ऐसे एक्ट में रखना अभिप्राय है जो कि आर्यों के सम्पूर्ण विवाह सम्बन्धी नियमों को एक सरकारी एक्ट में बांधना चाहता है।

इसलिये इन सब बातों को सोचते हुए यह ठीक प्रतीत नहीं होता कि आर्य मेरिज एक्ट मे इस प्रकार का कोई संशोधन किया जाए।

घनश्यामसिंह प्रधान सार्वदेशिक सभा।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब—

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक निर्वाचन २४ मई को लाहौर में होगया है। सभा ने श्री दीवान बहादुर बद्रीदास जी को प्रधान निर्वाचित करके शेष अधिकारियों और अन्तरंग सदस्यों की नियुक्ति का अधिकार उनको दे दिया था। मन्त्री पद पर इस वर्ष भी श्री पं० भीमसेन जी ही नियुक्त हुए हैं।

पंजाब के अप्रिय झगड़े के अन्त के एक उपाय के रूप में हमने इन स्तम्भों में प्रगट किया था कि यह मामला दीवान बहादुर के निर्णय पर छोड़ दिया जाय। हमें प्रसन्नता है कि इस उपाय का यथोचित आदर किया गया। आशा करनी चाहिए कि दीवान बहादुर के सुदक्ष मार्ग प्रदर्शन और नियन्त्रण में सभा तथा प्रान्त में शान्ति का वातावरण पैदा होगा और आर्य्य समाजियों की शक्ति और उत्साह आर्य्य समाज के हितों की वृद्धि के वास्तविक कार्य में खर्च होगी।

इन दिनों आर्य्य समाज के वास्तविक रचनात्मक तथा उसके अधिकारों की रक्षा के लिए सम्मिलित और सुव्यवस्थित शक्ति और उत्साह की जितनी जरूरत है उस पर प्रकाश डालने की जरूरत नहीं है। आर्य्य जनता उससे भली भांति परिचित है। इसलिए उसका लड़ाई झगड़ों मे अपव्यय होना न केवल अवाञ्छनीय ही है वरन् घातक भी है।

पंजाब के दोनों दलों से हम प्रार्थना करेंगे कि वे उदारता से काम लें और आर्य्यसमाज के हितों की सिद्धि का अपने को अधिक से अधिक कारण बनाए।

शरियत बिल का विरोध—

आर्य्य समाजों ने मि० काजमी के शरीअत बिल (Muslim Women's Opostacy Bill) का जो सैन्ट्रल लैजिस्लेटिव असेम्बली में प्रस्तुत है खूब विरोध किया है और इस समय तक यह विरोध जारी है। विरोध के कतिपय आधार इस प्रकार हैं।

(१) यह बिल न केवल हिन्दू धर्म के प्रतिकूल है अपितु इस बिल के पास हो जाने से हिंदू कानून (Hindu Law) मे अनुचित हस्ताक्षेप होता है जिसका कि मुसलमान सज्जनो को कोई अधिकार नही है।

(२) इस बिल के कानून बन जाने से हिंदू मुसलमानों में वैमनस्य बढ़ेगा। अत यह बिल राष्ट्रीयता का विघातक है।

(३) यह बिल मुसलमानों की जो शरीअत अब तक है उसके बिलकुल विरुद्ध है।

(४) भारत के समस्त हाईकोर्टों का फैसला यह है कि किसी हिन्दू स्त्री का सम्बन्ध उसके पति से जीवन

में विरुद्ध नहीं हो सकता। पर उस पर भी यह बिल कुठाराघात करता है।

(५) इस बिल के पास होने से (Freedom of Religion Aat xxl o 1850 में भी बाधा पहुँचती है।

(६) इस बिल से सरकार की नीति–जो धार्मिक मामलों में दूसरे धर्म वालों में हस्ताक्षेप न होने देने की है, उसमें भी विघ्न पड़ता है।

सामाजिक नैतिकता का अपराधी

राजनैतिक कार्य कर्त्ता चौधरी शेरजग के विरुद्ध उठे हुए आन्दोलन की चर्चा पाठकों ने समाचार पत्रों में पढ़ी होगी। चौधरी महोदय उत्तर भारत की एक रियासत के निवासी हैं। वे अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे अभी हाल में पजाब की किसी जेल से छूटे हैं। यह सजा उन्हें किसी क्रान्तिकारी राजनैतिक अपराध में हुई थी। जेल से मुक्त होते ही उन्होंने निर्मला एम० ए० नामक किसी पजाबी लड़की से शादी की है। उनकी दो पूर्व पत्नियां जीवित हैं। यही कारण उनके विरुद्ध आन्दोलन का है। कहा जाता है इस विवाह में पजाब प्रान्त के प्रमुख २ राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए थे और उन्होंने शेर जग को बधाइयाँ दी थीं। यह भी सुना जाता है कि इस अपराध के लिए चौधरी महोदय के सामाजिक बहिष्कार का आयोजन हो रहा है। निर्मला देवी से मातृत्व के सम्मान रक्षार्थ इस विवाह के विच्छेद की अपील भी की जा रही है।

इस आन्दोलन से एक महत्व पूर्ण बात स्पष्ट है और इसकी हमें प्रसन्नता है। वह यह है कि सामाजिक नैतिकता को नष्ट करने वाले इस प्रकार के दुष्कृत्यों के विरुद्ध अब लोकमत काफ़ी जाग्रत हो गया है और यह दीख पड़ने लग गया है कि समाज ऐसे दुष्कृत्यों को आगे बर्दाश्त नहीं करेगा और समाज में स्थान रखने वाले लोगों को तो वह क्षमा भी नहीं करेगा।

चौधरी महोदय के प्रति हम दो शब्द कह देना उचित समझते हैं। उन्होंने देश के लिये त्याग किया है। देश में उनका स्थान भी बन गया था। उन पर अपने सामाजिक और व्यक्तिगत जीवनों की पवित्रता की महान् ज़िम्मेवारी थी कम से कम इस देश में तो इन जीवनों के सम्बन्ध में यही बात है, भले ही भारत से बाहर पश्चिम में इन जीवनों को पृथक रखने की बात हो और उसका अन्ध अनुकरण करने वाले भारतीय नवयुवकों और नव युवतियों की इस बात का कि किसी के 'प्राईवेट, जीवन में हस्ताक्षेप करने का किसी को अधिकार नहीं।' यहां इस देश में मूल्य नहीं के बराबर है। ऐसी अवस्था में इस विवाह का भले ही उसके मूल में कोई कारण क्यों न हो, भारतीय प्रजा का ऊँची दृष्टि से न देखना स्वाभाविक है। यदि लोग यह समझने और कहने लग जायँ, कि उन्होंने देश के लिए किए हुए अपने त्याग का इस विवाह के रूप में दुरुपयोग किया और अपनी सेवाओं का समाज से बेजा मूल्य चाहा है अथवा आंका है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न होगी। भारत की वर्तमान दयनीय अवस्था में उसके पास अब भी कई अनुपम निधियां सुरक्षित हैं। आचारिक विशेषता उसकी एक ऐसी ही निधि है जिस पर देश अभिमान करता और बाहर के लोग ईर्षा करते हैं।

यदि हमारे सार्वजनिक कार्य कर्त्ता स्वय अपने कृत्या से उसके ह्रास अथवा विनाश का अपने को कारण बना देवें तो इससे बढ़कर दुख और पश्चात्ताप का और क्या बात होसकती है। सार्वजनिक जीवन निरीक्षण का जीवन होता है। प्रतीत होता है यह शादी करते समय चौधरी शेरजग ने इन बातों को अपने सामने नहीं रक्खा था।

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यो को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियो के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक उनके जीवन क प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमशः =) =)॥ =)॥, =)॥, =)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीकत ॥।=) सत्य-निर्णय १।)
(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं मे से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए इस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।=)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नवयुवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर मे न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।-)

(३) आर्य्य पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य परिवार मे रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ।।=)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यो की नित्य कर्म विधि इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमे दी गई हैं। मूल्य =)।।

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य ।=)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—प० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते है इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ।=)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वासवानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप मे बहुत ओजस्वनी भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य =)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound—By Bhuma nand Saraswati M A)-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well bound	1 4
Un-bound	-/1

(१०) अमृत वर्षा ।।।)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

स० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति १)

मिलने का पता —

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) स स्कूल सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—— ※ ——

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएं

(ले० ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर N W R)
(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७१ बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सांसारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है। उनके लिए वस्त्रों की आवश्यकता है। दानी सज्जन जहां अपने बालकों के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालकों का भी अवश्य ध्यान रखें।

(२) वस्त्रों के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकारके खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है। दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें।

(३) अनाथालय का व्यय (५००) रु० मासिक है। वह दानी महाशयों की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें।

(४) बालकों के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी गृह कोई नहीं है इन में से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक है अतः यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करे ताकि वह कष्ट दूर हो जावे।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय में यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बन्धियों का पता नहीं लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखें है वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते हैं। यह अनाथालय सरकार की तरफ से Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते है।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नहीं भेजे जाते हैं। उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है। इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

,, श्री पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

,, श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B, B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B.A, लाहौर।

अत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यानुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें। जो धन इस अनाथालय में आता है उस की रसीद तत्काल भेजी जाती है।

ध्यानयोग प्रकाश

यह वह प्रसिद्ध पुस्तक है जिसको योगी श्री स्वा० लक्ष्मणानन्द जी ने लिखा था और जिसको अपने विषय का अद्वितीय पुस्तक समझा गया था। यह पुस्तक कई वर्षों से अप्राप्य थी। श्रीमती विद्यावती जी सेठ आचार्य्या, कन्या गुरुकुल देहरादून ने अब इसे पुनः छपवा कर सर्व्व साधारण के लिये प्राप्य बना दिया है और इसकी भूमिका भी स्वयं लिखी है और आचार्य्य रामदेव जी ने भी पुस्तक के प्रारम्भ में अपना वक्तव्य दिया है। आर्य्य समाज तथा उसके बाहर के क्षेत्र में योग विषयक चर्चा दिनों दिन बढ़ती जा रही है, परन्तु इस पुस्तक में जो गभीर तथा क्रियात्मक आलोचना इस विषय की की गई है वह किसी दूसरी पुस्तक में नहीं मिलती। इस पुस्तक की मांग इससे ही प्रगट होरही है कि अब इसका तीसरा संस्करण जनता के हाथ में जा रहा है। ४०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक की कीमत केवल १।=) सजिल्द और १।) अजिल्द रक्खी गई है।

पुस्तक मिलने का पताः—

शारदा मन्दिर लिमिटेड,

नई सड़क देहली।

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस' देहली,
से प्रकाशित

जुलाई १९३८

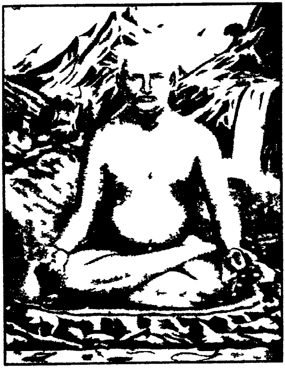
Reg No L 2121

ॐ

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर, एम० ए०

सह सम्पादक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मूल्य स्वदेश २) एक प्रति का ।= विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद

सामवेद

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें.—

	असली मू०	घटा हुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।॥) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज को भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ सख्या लग भग ५०० मूल्य १।।)

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा सस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, सगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का सग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ सगीतज्ञों कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं। संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज में तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारो मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह सग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ।।)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २०×३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)।। प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

	अ० मू०	ध० मू०		अ० मू०	ध० मू०
(१४) वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	≈)
२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	≈)
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान	≈)	≈)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8-0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation, such products are given out which are bactricidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

—*Ganganath Jha*

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public."

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—
This valuable book cantains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As. 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—
It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture —
The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal —price As. 10, Reduced price As 8.

22 Torch Bearer—
A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—
This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—
This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8. Reduced price As. 2

25 The daily Prayer of an Arya—
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya.—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—
Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A L. L. B —price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ | आषाढ़ १९९५ | अङ्क ५
जुलाई १९३८ ई० | दयानन्दाब्द ११४

वेद की शिक्षाएँ

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते । ऋग० ८—४५—२०

हे बलों के स्वामिन ! तू मुझ निर्बल की लाठी है ।

Thou art source of my strength May Thou be my staff or support in this life !

न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः । ऋग० ८—६१—११

हम ईश्वर का मनन पापी, कंजूस और यज्ञहीन होकर न करें ।

May we not meditate on Thee as sinners, misers or those bereft of unselfish deeds !

सत्यार्थ प्रकाश लेखमाला—

दन्तधावन

(ले० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

*

भारतवर्ष में दन्तधावन नित्य कृत्य माना गया है—प्रात काल उठकर शौचादि से निवृत्त हो कर स्नान से पूर्व दन्तधावन करने की परिपाटी है इस समय अनेक जन अंग्रेजी ढंग पर ब्रुश से भी दात साफ करते हैं। ब्रुश के साथ २ मंजन का प्रयोग भी होता है। विक्रेताओं ने अनेक प्रकार के मंजन बनाये हुए हैं। कई लोग ब्रुश का प्रयोग करके मंजन का व्यवहार दन्तधावन के साथ भी करते हैं, जिनके दांतों में कोई व्याधि हो वह उस व्याधि की निवृत्ति के लिये इस प्रकार का व्यवहार करते हैं। यदि रोग न हो तो केवल दन्तधावन के व्यवहार से ही दात शुद्ध किये जाने की प्रथा अधिक है।

किसी २ प्रान्त मे आजकल युवक मार्ग में चलते चलते दन्तधावन भी करते जाते हैं और अपने साथियों से बातें भी करते जाते हैं। किसी २ प्रान्त मे ऐसा नहीं करते है। वहा किसी स्थान में बैठकर दन्तधावन करते हैं। इन अवस्थाओं को देखकर ही मेरे मन में विचार हुआ है कि इस विषय पर यदि प्राचीन पुस्तकों में कुछ मिले तो उसे जनता के ज्ञानार्थ सार्वदेशिक पत्र में छाप दिया जाय। एक दिन मै एक पुस्तक देख रहा था उसमें यह विषय मिल गया। उससे मेरे विचार की पूर्ति होगई। आशा है पाठक इस पर विचार करके कुछ न कुछ निश्चय अपने लिये अवश्य कर लेंगे।

तत ऊर्ध्व क्रमेणैव धावयेत्त्वा त्वया दत। अङ्गिरा
पूर्व ऊर्ध्व दन्तान सशोध्य पश्चादधो दन्तान्शोधयेत

दन्तधावन से प्रथम ऊपर के दाँतों को शुद्ध करके पश्चात् नीचे के दात साफ करे।

मध्यागुलि सम स्थूल द्वादशागुलि सम्मतम्।
स त्वर्क दन्त काष्ठं स्यात्तदग्रेण तु धावयेत्। कूर्म

मध्यागुलि के सम दन्तधावन स्थूल हो, और द्वादशागुल लम्बी हो। त्वचा सहित हो उसके अग्रभाग से दातों को साफ करे।

इद तु विषम दन्तस्य इतरस्य तु कनिष्ठिकागुलि। समं स्थूलम्।

यह विषम दांत वालों के लिये है अन्य के लिये कनिष्ठिकागुलि (सब से छोटी अगुलि) के सम स्थूल होनी चाहिये।

सूक्ष्मं तु हीन दन्तस्य सम दन्तस्य मध्यमम्।
स्थूल विषम दन्तस्य त्रिविधं दन्तधावनम्। विष्णु
द्वादशागुलिक विप्रे काष्ठमाहु मनीषिण।
क्षत्रविट् शूद्र जातीना नव षट् चतुरगुलिम्। विष्णु

पतले दात वालों के लिये सूक्ष्म, सम दात वालों के लिये मध्यम और बड़े दाँत वालों के लिये मोटी दातुन चाहिये। ब्राह्मण को १२ क्षत्रिय को ९ वैश्य को ६ शूद्र को ४ अगुल लम्बी दन्त-

धावन हो।

वर्ण भेद से दन्तधावन की लम्बाई का भेद युक्ति रहित प्रतीत होता है इसका भाव यही लिया जा सकता है जो दन्तधावन १२—४ अ गुल तक लम्बी हो। यह तो हुआ दन्तधावन के परिमाण के विषय मे, आगे दन्तधावन कैसे करनी चाहिये यह लिखा हुआ है। यथा—

प्रक्षाल्य पादो हस्तौ च मुखं च सुसमाहित ।
दक्षिण बाहुमुद्धृत्य कुर्याज्जान्वन्तरातु तत्। व्यास

हाथ और पग धाकर मुख भली प्रकार साफ करके दक्षिण भुजा जानु के अन्दर करके दन्तधावन करे।

इसमे हाथ, पग और मुख धोकर लेख होने से यही प्रतीत होता है कि प्रात काल शौचादि के पश्चात् दन्तधावन की जाय। चिकित्सा के पुस्तकों में कहीं २ भोजन के अनन्तर भी दन्तधावन का विधान है, उस समय भी हाथ पग मुख साफ करके ही करना होगा।

प्रक्षाल्य भक्षयेत् काष्ठ प्रक्षाल्यैवतु संत्यजेत्।

दन्तधावन को धोकर ही मुख मे डाले और धोकर ही फैके।

यह विधि एक स्थान पर बैठकर ही हो सकती है। जो व्यक्ति चलते चलते दन्तधावन करते हैं उनके लिये यह असंभव है अत बैठकर ही करना चाहिये।

दन्तधावन का प्रयोजन क्या है इस विषय में मन्त्र कह कर एक पाठ लिखा है मै उसे भी लिख देना उचित समझता हूँ। वह इस प्रकार है,

मुख दुर्गन्धि नाशाय दन्ताना च विशुद्धये ।
ष्ठीवनाय च गात्राणा कुर्वेऽह दन्तधावनम्।

मुख की दुर्गन्धि दूर करने और दात शुद्ध करने, शरीर को ठीक करने के लिये मै दन्तधावन करता हूँ।

तूष्णीं वा दन्तधावनम्।

अथवा चुपचाप दन्तधावन करे।

इस लेख मे दन्तधावन करने के विषय में सन्याषाढ़ श्रौत सूत्र मे जो प्रमाण लिखे हैं मैंने उनको लिख दिया है जिसका सार यह है।

१ दन्तधावन करनी चाहिये।
२ दन्तधावन ४–१२ अ गुल तक लम्बी और कनिष्ठिका के अग्रभाग से मध्यमागुलि की मोटाई सम मोटी हो।
३ काष्ठ को धोकर मुख मे डाले और धोकर हो फैंके जिससे जिह्वा को साफ करने का भाव निकाला जासकता है।
४ बैठकर दाएं हाथ को जानु के अन्दर करके दन्तधावन करे।
५ मुखादि शुद्धि का भाव रख ऐसे शब्दो को बोलकर दन्तधावन करे अथवा चुपचाप करे।

यह तो हुआ दन्तधावन का विधान, अब एक प्रश्न शेष है कि दन्तधावन किस काष्ठ की कीजाय, इस विषय मे कहीं २ वृक्षों के नाम भी लिखे है उसमें कोई वृक्ष किसी प्रातमे होता है और किसी मे नहीं होता है। उसमें भी सब वृक्षो के नाम नहीं लिखे हैं इस लिये जिनके नाम नहीं लिखे उनके विषय मे भ्रम हो सकता है कि इस वृक्षकी दन्तधावन बन सकती है वा नहीं। इस बात को ध्यान में रख कर सामान्य लक्षण लिख देना

पश्चिम और उन्नति

(ले०—श्री पं० रघुनाथप्रसाद पाठक)

❀

मानवी—सफलता केवल सांसारिक समृद्धि के पैमाने से नहीं मापी जा सकती है। यह पैमाना भ्रम में डालने वाला होता है। आज इसी पैमाने के द्वारा पश्चिम बहुत उन्नत समझा जाता है। किसी काल में भारत वर्ष अपनी समृद्धि के कारण संसार प्रसिद्ध था परन्तु भारत के पतन के कारणों का विश्लेषण करने वालों का यह ठीक मत है कि भारत की यह उन्नति वास्तविक उन्नति नहीं थी, भारतको इसने आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया बना दिया था और यही अपने विविध दुष्परिणामों के साथ भारत के पतन का कारण बनी थी। ठीक यही दशा आज पश्चिम का है। वह आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया है, उसका उन्नति वास्तविक उन्नति नहीं है और वह उसे विनाश की ओर जिसके लक्षण देख पड रहे है अग्रसर कर रही है।

वस्तुत भौतिक उन्नति अपना स्थान और मूल्य रखती है परन्तु वह एक उद्देश्य की सिद्धि के लिए साधन होती है। वह उद्देश्य आत्मिक उन्नति होता है। जब हम इस साधन को सिद्ध मान कर चलते हैं तभी ध्येय आंखों से ओझल हो जाने से हम अवनति की ओर अग्रसर हो जाते है। वे लोग और राष्ट्र धन्य है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से उन्नत होते है। ऐसे ही लोगों और राष्ट्रों से संसार की उन्नति और उसका कल्याण होता है। क्याही अच्छा हो पश्चिम उन्नति के इस मर्मको समझे और उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्य से शिक्षा ग्रहण करे।

पर्याप्त मानकर उसे ही लिखता हूँ।

सार्द्रं दन्त काष्ठ सम छिन्न सत्वक् पर्वक कषायं तिक्तं कटुकं कण्टकान्वितम्। सुगन्धिवृक्ष गुल्मान् क्षीरिणो वा भक्षयेत्। दन्तधावनं कीटाद्य दूषितं शुचि वितस्तिमात्रम्। सन्याषाढ गृह्य सूत्र

दान्तधावन का काष्ठ आर्द्र (गीला) सम सत्वक कषाय, (कसेला) तिक्त (तेज) कटुक (कड़वा) सकण्टक वृक्ष का हो। जिस वृक्ष, गुल्म में सुगन्धि है अथवा दूध भी है उसका भी प्रयोग हो सकता है। वह काष्ठ दूषित न हो, कीटादि का खाया हुआ न हो उस पर कोई बुरी वस्तु भी न लगी हो अर्थात् शुद्ध हो और वितस्ता-मात्र लम्बा हो।

आशा है पाठक इस पर विचार करके कुछ लाभ उठाने का यत्न करेंगे। चिकित्सा शास्त्र मे यह विषय इससे अधिक भी मिलता है परन्तु मैंने इस समय केवल सन्याषाढ सूत्र के आधार पर ही कुछ लिखा है। अन्य प्रमाणों की उपेक्षा जान बूझ कर की है।

सर्वधर्म सम्मेलन इन्दौर में वैदिक धर्म के प्रतिनिधि प्र० स्वा० धर्मदेवजी विद्यावाचस्पति के २०-४-३८ को दिये भाषण का सारांश

(सार्वदेशिक के मई-अङ्क के आगे।)

ईश्वरवाद की फिलासफी के साथ सम्बन्ध के विषय मे इङ्गलैण्ड के सुप्रसिद्ध निबन्ध लेखक बेकन ने जो लिखा था अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के कारण उसका उल्लेख करना यहा अनुचित न होगा—

A little philosophy inclineth man's mind to atheism, but depth in philosophy bringeth man's mind about to religion, for while the mind of man looketh upon second causes scattered, it may sometimes rest in them and go no further; but when it beholdeth the chain of them confederate and linked together, it must needs fly to Providence and Deity

भावार्थ यह कि थोड़ा सा दार्शनिक ज्ञान (Philosophy) मनुष्य के मन को नास्तिकता की ओर झुका देता है किन्तु गम्भीर तत्त्वज्ञान मनुष्य के मन को अवश्य ही ईश्वरवाद और धर्म की ओर प्रवृत्त करता है। यह सभव है कि गम्भीर विचार न करने पर मन केवल बाह्य गौण कारणों तक सीमित रह जाए और आगे न जाय किन्तु जब संसार के अन्दर क्रम और शृङ्खला-बद्ध नियम दृष्टिगोचर होता है तो मन स्वभावत और आवश्यक तौर पर ईश्वर की ओर दौड़ता है।

न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त सब दर्शनकार एक स्वर से वेदों को परम प्रमाण मानते हैं क्योंकि उन में कोई बात बुद्धि के विरुद्ध नहीं है।

सार्वभौम धर्म के लिये यह बात आवश्यक है कि उस की शिक्षाएं और सिद्धान्त विज्ञान और बुद्धि के अनुकूल हों। वैदिक धर्म न केवल विज्ञान के विरुद्ध नहीं है बल्कि वह पूर्ण वैज्ञानिक है इस बात को अनेक निष्पक्षपात पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है, उदाहरणार्थ मि० ब्राउन (W D Brown) नामक अंग्रेज विद्वान् ने The Superiority of the Vedic Religion नामक अपने ग्रन्थ में वैदिकधर्म के विषय मे लिखा है —

"It recognises but one God It is throughly *Scientific Religion* where Religion and Science meet hand in hand Here Theology is based upon Science and Philosophy"(करतालिका ध्वनि)

अर्थात वैदिकधर्म केवल एक ईश्वर को स्वीकार करता है। यह पूर्णतया वैज्ञानिकधर्म है जहा धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिला कर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान और तत्वज्ञान पर आश्रित हैं।

फ्रांस के सुप्रसिद्ध विद्वान् जैकोलियट् महोदय

न अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ The Bible in India में मत मतान्तरों की सृष्ट्युत्पत्ति विषयक कल्पनाओं का इस विषयक वैदिक सिद्धान्त के साथ तुलना करते हुए आश्चर्य के साथ लिखा था—

Astonishing fact! The Hindu Revelation (Veda) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect *harmony with modern science* as it oclaims the slow and gradual formotion of the world

अर्थात् यह बडी आश्चर्यजनक घटना है कि ईश्वरीय ज्ञान माने जाने वाले सब ग्रन्थों में से केवल वेद ही है जिस के विचार वर्तमान् विज्ञान सर्वथा अनुकूल हैं क्योंकि उन में जगत की क्रमिक उत्पत्ति का प्रतिपादन किया गया है।

मिसेज ह्वीलर ह्विलोक्स (Mrs Wheeler Wilcox) नामक सुप्रसिद्ध अमेरिकन विदुषी ने वेदों के विषय में कहा था—

We have all heard and read about the ancient religion of India It is the land of the great Vedas—the most emarkable work containing not only religious ideas and perfect life but also facts which all the science has since proved true

Electricity Radium, Electrons, Airships all seemed to be known to the sires who found the Vedas (quoted ere from Mother America)

अर्थात् हम सबने भारत के प्राचीन धर्म के विषय में सुना और पढा है। यह भारत महान् वेदों की भूमि है जो अत्यन्त आश्चर्य जनक तथा महत्व पूर्ण ग्रन्थ हैं जिन में न केवल पूर्ण जीवन के लिये उपयोगी धार्मिक विचारों का प्रतिपादन है किन्तु वे सचाइयाँ पाई जाती हैं जिनको विज्ञान ने सर्वथा सत्य सिद्ध किया है। विद्युत, रेडियम् ऐलक्ट्रोन्स विमान इत्यादि सब विषय वैदिक ऋषियों को ज्ञात थे ऐसा प्रतीत होता है।

विस्तार भय से वैदिक धर्म की वैज्ञानिकता विषयक अन्य उद्धरण यहां नहीं दिये जा सकते।

वैदिक धर्म के अन्दर अन्य मतों की सब अच्छाइयों का समावेश हो जाता है। उदाहरणार्थ पारसी मत के मूल ग्रन्थ जिन्दावस्ता में पवित्रता पर बहुत बल दिया गया है। वेदों के पवमान सोमपान पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु नः ॥ (ऋ० ६।६७।२२)

सहस्त्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ॥ (ऋ० ६–७३–७)

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। (यजु० ३४ १।६

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे अथो अरिष्टतातये ॥ (अथर्व० ६।१६)

इत्यादि मन्त्रों में शारीरिक, वाचिक,मानसिक सब प्रकार की पवित्रता के लिये प्रार्थना तथा उपदेश हैं।

जैन और बौद्ध मत के ग्रन्थों में जिस अहिंसा तत्त्व का प्रतिपादन है उसका

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। (यजु० ३६।१८)

पशूंस्त्रायेथाम् (यजु० ६।२१)

द्विपाच्च चतुष्पान्पाहि (यजु० १४।८)

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य ।। (अथर्व १।३१।४)

इत्यादि मन्त्रों में बहुत अच्छी तरह से विधान करते हुए सब प्राणियों के हित के लिए प्रार्थना की गई है।

ईसाइयों के मतग्रन्थ न्यूटेस्टेमेन्ट (New Testament) में परमेश्वर को सब के पिता और मनुष्य मात्र को भाई समझने Fatherhood of God and Brotherhood of man) के सिद्धान्त पर बल दिया गया है जो वेदों के त्वंहिन पिता वसो त्व माता शतक्रतो बभूविथ । पिता माता सदमिन्मानुषाणाम् इत्यादि मन्त्रों में स्पष्टतया पाया जाता है जैसे कि पहले सप्रमाण बताया जा चुका है। वेद भगवान् को न केवल पिताके रूप में अपितु मङ्गलमयी करुणामयी माता के रूप में मानने का आदेश करते हैं जो अत्यन्त शान्तिदायिनी पवित्र भावना है। इसलाम के मूल ग्रन्थ कुरान में एक ईश्वर की पूजा पर जोर दिया गया है साथ ही ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव उस में प्रधान है। वेदों में एकेश्वरवाद का ही स्पष्ट प्रतिपादन है और उसके प्रति अपने को समर्पित कर देने का भाव वैदिक प्रार्थनाओं में ओत प्रोत है, इस बात को सक्षेप से पहले सप्रमाण बताया ही जा चुका है।

कौन्ट जौर्न्सजर्ना (Count Bjornsjerma) श्लीगल, कोल ब्रुक् अर्नेस्टवुड मि० ब्राऊन इत्यादि अनेक धुरन्धर पाश्चात्य विद्वानों ने

The Ancient Hindu Religion as founded on the Hindu Scripture Vedas) recognises but one God (Colebrook) "There truly sublime ideas can not fail to convince us that the Vedas recognise only one God" (Count Bjornsjema)

इत्यादि वाक्यों द्वारा अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में इस बात का स्वीकार किया है कि वैदिक धर्म विशुद्ध एकेश्वरवाद प्रतिपादक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अन्य मतों की सब उत्तम शिक्षाएं विशुद्ध रूपसे वेदों में पाई जाती हैं और वैदिक धर्म ही सब धर्मों का आदि स्रोत है। इस सार्वभौम युक्तियुक्त और वैज्ञानिक धर्म की उत्तम शिक्षाओं पर जिन में से विश्वप्रेम तथा विश्वबन्धुत्व विषयक कुछ शिक्षाओं का इस भाषण में निर्देश किया गया है जब मनुष्य आचारण करते हुए परस्पर प्रीति पूर्वक व्यवहार करने लगेंगे तभी जगत में सच्ची शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता। परमपिता परमात्मा हम सब के हृदय में सच्चा प्रेम स्थापित करते हुए वेद की इन पवित्र शिक्षाओं पर चलने का हमें सामर्थ्य प्रदान करें यही हमारी प्रार्थना है।

ओ३म् शान्ति शान्ति शान्तिः

पत्नी का चुराया तथा पति का छीना जाना

(लेखक—श्री रामानन्द जी चटर्जी)

पत्नी का चुराया जाना चाहे वह फुसलाए, बहकाए अथवा भगाए जाने से ही क्यों न किया जाय, समस्त सभ्य देशों में अनुचित समझा जाता है और भारत वर्ष में भी ऐसा ही समझा जाता है।

भारतवर्ष में और कुछ दूसरे देशों में उन जातियों में जिनमें एक से अधिक पत्निया रखने की मनाही है यदि किसी लड़की की शादी ऐसे आदमी के साथ हो जाती है जिसकी दूसरी अथवा कई पत्निया जीवित होती हैं तो यह जरूरी नहीं कि वह लड़की पति को चुराने वाली कही जाय क्यों कि आमतौर से इस प्रकार की शादियाँ नाबालिग लड़कियों के संरक्षकों द्वारा होती हैं। इन जातियों में भी सभ्य और पढ़े लिखे लोग एक से अधिक पत्नियाँ रखने की प्रथा को घृणित समझते हैं।

पश्चिम में पत्नीका चुरायाजाना तथा पति का छीना जाना दोनों होते हैं। जिस प्रकार कुछ आदमी तलाक अथवा क़ानूनी विच्छेद कराने के बाद दूसरे आदमियों की पत्नियों से शादी कर लेते हैं इसी प्रकार कुछ स्त्रियाँ विवाहित पुरुषों को अपनी पत्नियों से प्रेम की पूर्ति करने के बाद उनसे शादी कर लेती हैं। इन दोनों दशाओं में पुरुषों का ही दोष होता है।

भारतवर्ष में भी कुछ व्यभिचारिणी स्त्रिया कुछ विवाहित पुरुषों के मन अपनी पत्नियों की ओर से फेर देती हैं परन्तु यह बदनाम स्त्रियाँ पतियों पर कब्जा करने वाली ठीक २ रीति से नहीं कहीं जासकती हैं। क्योंकि जो आदमी उनके वशमें होते हैं वे उनके पति नहीं बन जाते हैं।

पश्चिम की अर्थात ब्रिटिश, अमेरिकन तथा अन्य युरोपियन देवियों ने ऐसे हिन्दुस्तानियों से शादी की है जिनकी अन्य स्त्रियाँ भी जीवित थीं। पश्चिम की इन देवियों में से कुछ ने यह न जानते हुए ही कि पुरुष की पहले से शादी हुई है ऐसा किया है परन्तु कुछ ने सब कुछ पूछते हुए किया है। ये अन्तिम देवियाँ पतियों को छीनने वाली कही जानी चाहिएं।

यह बड़े दुख की बात है कि पिछले कुछ वर्षों में भारतवर्ष में पढ़ी लिखी और उच्च घरों की स्त्रियों द्वारा पति छीनने की घटनाएं हो गई हैं। यद्यपि उनकी सख्या बहुत ही नगण्य है तब भी उन घटनाओं का होना मगल सूचक नहीं है। हम यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

कुछ वर्ष हुए देस और विदेश में शिक्षा प्राप्त एक भद्र महिला ने अपने से भिन्न जाति के एक नवयुवकसे जिसकी पतिपरायणा पत्नी जीवित थी, शादी की थी। यह शादी सिक्खोंके आनन्दमैरेज एक्ट के अधीन हुई थी।

कुछ हफ्ते हुए एक विवाहित हिन्दू और एक अविवाहित कैथोलिक भद्र महिला ने आपस में शादी की है। यह दोनों विवाह के समय ब्रह्म-समाजी बन गए थे।

ब्रह्म-समाज के प्रमुख ने इस मामले का पता लगतेही इस शादी का खण्डन कर दिया और प्रगट कर दिया कि आचारिक और कानूनी दोनों ही दृष्टियों से यह शादी अनुचित थी।

अभी हाल में एक नवयुवक ने जिसकी भारत तथा विदेश में शिक्षा हुई है और जिसकी सुयोग्य पत्नी जीवित है एक भद्र नवयुवती से—जिसकी शिक्षा भी देश और विदेश में हुई है—शादी की है। ये दोनों हिन्दुओं की भिन्न २ जाति के थे इसलिए विवाह कानूनन जायज बनाने के लिए उन्हें 'आर्य्य मैरेज ऐक्ट' की शरण लेनी पड़ी।

इस प्रकार की घटनाएँ भयंकर हैं और यह विषय भी रुचिकर नहीं है, इन सब घटनाओं में पुरुष भी दोषी थे।

किसी भी विवाहित भद्र पुरुष को अपने को अविवाहित नहीं प्रगट करना चाहिए, और विशेषत जब वह अविवाहित नवयुवती महिलाओं के बीच में रहे।

यदि किसी ऐसे व्यक्ति को किसी महिला के आकर्षण का जरा सा भी आभास हो तो तत्काल उसे किसी न किसी प्रकार अपने विवाहित होने का पता देदेना चाहिए।

किसी विवाहित पुरुष के हृदय को चुराना तो दूर, किसी भी अविवाहित स्त्री को जान में वा अनजान में किसी पुरुष की ओर आकर्षित नहीं होना चाहिए और न उसे ही अपनी ओर आकर्षित होने देना चाहिए।

टर्की मुस्लिम देश है। इस्लाम बहुपत्नीवाद का निषेध नहीं करता है तौभी टर्की मे बहु पत्नी-कानूनन नाजायज है। शायद भारत वर्ष में भी बहु पत्नीवाद हिन्दुओं, मुसल्मानों और अन्यों के लिए जिनमें यह अभी तक अवैध नहीं है अवैध बनाया जायगा। इस बीच में हमारी धारा-सभाओं को ऐसा कोई नया कानून नहीं पास करना चाहिए जो बहु पत्नीवाद का निषेध न करता हो। और उन्हें नए कानूनों को जिनका ऊपर उल्लेख किया गया है और जो पास हो चुके हैं इस प्रकार सशोधित करदेना चाहिए, जिससे पतियों को छीनने के कृत्यों को वैध करार दिया जाना बन्द हो जाय।

(माडर्न रिव्यू)

शारदा ऐक्ट

'सार्वदेशिक' के पिछले किसी अङ्कमें हम शारदा ऐक्ट दे चुके हैं। फिर भी हमारे प्रेमी पाठकों का आग्रह था कि हम उसे पुनः प्रकाशित करें और इस वर्ष उसमे जो संशोधन केन्द्रीय धारासभा द्वारा हुए हैं वे भी दे दिए जायँ। उस आग्रह की पूर्त्यर्थ हम शारदा ऐक्ट को सशोधित रूप में प्रस्तुत करते हैं।

छोटा नाम हद और आरम्भ

१—(१) यह क़ानून सन् १६२६ का बाल विवाह निषेधक क़ानून कहलाया जावेगा[1]।

(२) यह समस्त ब्रिटिश भारत में ब्रिटिश बिलोचिस्तान और सन्थाल परगना सहित लागू होगा और नीचे लिखे अनुसार भी लागू होगा[2] —

(ए) भारत के किसी भाग की समस्त ब्रिटिश प्रजा और सरकारी नौकर।

(बी) समस्त ब्रिटिश प्रजा जो भारत के किसी भाग में बसी हो और चाहे जहा रहती हो।

(३) यह पहली अप्रैल सन १६३० से जारी होगा।

परिभाषाः—

२—यदि विषय और प्रकरण के प्रतिकूल न हो तो इस क़ानून में—

(ए) "बाल" का अर्थ वह व्यक्ति है जो यदि पुरुष हो तो १८ वर्ष से नीचे की आयु का है और यदि स्त्री हो तो १४ वर्ष से कम आयु की है।

(बी) "बाल-विवाह" का अर्थ वह विवाह होगा जिसमें विवाह करने वाले वर अथवा वधू में कोई "बाल" हो।

(सी) "विवाह करने वाले फरीकों" का मतलब यह है कि वर वधू में से कोई एक व्यक्ति जिसका विवाह किया जाने वाला हो या किया गया हो[3]।

(डी) "नाबालिग" शब्द के अर्थ वह व्यक्ति स्त्री या पुरुष होगा जिसकी आयु १८ वर्ष से कम हो।

२१ वर्ष से कम उम्र वाले बालिग पुरुष को १४ वर्ष से कम आयु वाली लड़की से विवाह करने पर दण्ड

३—१८ वर्ष से ऊपर और २१ वर्ष से कम उम्र का कोई पुरुष अगर बाल-विवाह करे तो

फुटनोट १—१६३० के क़ानून नम्बर ८ जिसका कि नाम रीपीलिंग एन्ड एमेन्डिङ्ग क़ानून सन् १६३० है, उसकी धारा २ शिड्यूल १ के अनुसार १६२८ के स्थान में सख्या १६२६ की गई।

फुटनोट २—धारा १ की मद नं० २ के (ए) और (बी) वर्ग बाल विवाह निषेधक सशोधित क़ानून नं० ७ सन् १६३८ की धारा २ के अनुसार बढ़ाये गये। इसको बड़े लाट साहब ने ता० १२ मार्च सन् १६३८ को मंजूर किया।

फुट नोट ३—"विवाह किया जाने वाला हो" यह शब्द बाल-विवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून सन् १६३८ ऐक्ट नं० १६ सन् १६३८ की

उसको एक हजार १०००) रुपये तक के जुर्माने की सजा हो सकेगी।

२१ वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुष को बाल-विवाह करने पर दंड

४—अगर कोई २१ वर्ष से अधिक उम्र वाला पुरुष बाल-विवाह करेगा तो उसको १ महीने तक की सादी कैद या १०००) एक हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनों सजाए दी जा सकेंगी।

बालविवाह करने पर दण्ड

५—अगर कोई व्यक्ति बालविवाह करावेगा या विवाह संस्कार रचावेगा या उसको करने की आज्ञा देगा तो उसको एक महीने तक की सादी क़ैद या एक हजार १०००) रुपये तक के जुर्माने की या दोनों सजायें दी जा सकेंगी बशर्ते कि वह यह न साबित कर दे कि उसके पास इस बात पर विश्वास करने का कारण था कि वह विवाह बाल विवाह नहीं है।

बालविवाह से सम्बन्ध रखने वाले माता पिता या वली को दण्ड

६—(१) यदि कोई नाबालिग "बालविवाह" करेगा तो जिस व्यक्ति की देख रेख में वह नाबालिग रहता होगा, चाहे वो माता पिता हों, चाहे अभिभावक या और कोई व्यक्ति जो क़ानूनन या ग़ैर-क़ानून तौर से उस नाबालिग की किसी दूसरी हैसियत से देख रेख रखता हो तो उस व्यक्ति को जो विवाह की सहायता मे कोई काम करे या उस विवाह के करने की आज्ञा दे या उसके रोकने मे अपनी लापरवाही से कासिर रहे तो उसे एक महीने तक की सजा या १०००) रुपये तक का जुर्माना या दोनों सजाए दी जा सकेंगी। परन्तु शर्त यह है कि किसी औरत को कारावास की सजा न दी जावेगी।

(२) इस धारा के सबूत के लिये यह बात पहिले से ही मान ली जावेगी, बशर्ते कि इसके विरुद्ध प्रमाण न दिया जाय कि जब नाबालिग ने बालविवाह किया है तो उसकी देख रेख करने वाले व्यक्ति ने उस विवाह को रोकने की कोशिश नहीं की है।

तीसरी दफे के अन्तर्गत क़सूर के लिये कारावास न दिया जावे

७—जनरल क्लाजेज ऐक्ट सन् १८६७ की दफा २५ या ताजीरात हिंद की दफ़ा ६४ में चाहे जो लिखा हो —पर इस क़ानून की धारा ३ के अनुकूल जो अदालत अपराधी को जुर्माने की सजा देती है, उसको अख्तियार नहीं है कि वह यह आज्ञा दे कि यदि जुर्माना अदा

धारा २ के अनुसार जोड़े गये हैं, जिस को कि बड़े लाट साहब ने १ अप्रैल सन् १९३८ ई० को स्वीकार किया है।

नहीं होगा तो जुर्माना न दे सकने पर उसको किसी समय तक कारावास भुगतना पड़ेगा।

इस एक्ट के नीचे न्यायाधीश को जांच और विचार का अधिकार

८—जाब्ते फौजदारी सन् १८६८ की धारा १६० में चाहे जो लिखा हो—पर कोई भी अदालत जो प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट या मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल[4] का नहीं है उसको इस क़ानून के अनुसार किसी अपराध के मुकद्दमे की जांच और विचार करने का अधिकार न होगा।

अपराधों की जाँच और विचार का नियम

६—विवाह[5] होने की उस तारीख से जब कि कसूर होना बतलाया जाता है एक वर्ष बाद कोई भी अदालत इस कानून के अनुसार फ़रियाद नहीं सुनेगी।

इस क़ानून के अनुसार अपराधों की प्रारम्भिक जांच

१०—वह अदालत जो इस क़ानून के अनुसार अपराध की जाँच या विचार करने के लिये नालिश स्वीकार करे, बशर्ते कि वह ज़ाब्ता फौजदारी सन् १८६८ की २०३ धारा के अनुसार नालिश ख़ारिज न करदे या तो स्वयं ज़ाब्ता फौजदारी की धारा २०२ के अनुसार जाच करेगी या अपने नीचे के किसी अव्वल दर्जे के मजिस्ट्रेट को इसकी जाँच के लिये आज्ञा देगी।

फरियादी से ज़मानत लेने का अधिकार

११—(१)[6] इस क़ानून के अनुसार अपराध की जाँच और विचार के लिये जब न्यायाधीश प्रार्थनापत्र स्वीकार करे, तो फरियादी के बयान लेने के बाद और अभियुक्त के नाम उसको हाजिर होने के लिये समन जारी करने के पहिले चाहे किसी वक्त, यदि न्यायाधीश की इच्छा हो तो वह कारण लिखकर फरियादी से १००) एकसौ रुपये तक का मुचलका ज़मानत सहित वा रहित लिखा लेगी ताकि ज़ाब्ता फौजदारी

फुटनोट ४—यह शब्द 'मजिस्ट्रेट दर्जे अव्वल के पहिले नहीं थे, पहले शब्द 'डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, था परन्तु बाल विवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून न० १६ सन् १६३८ कीधारा ४ के अनुसार शब्द 'डिस्ट्रिक्ट' का उड़ा कर शब्द 'मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल' रख दिया गया।

फुटनोट ५—बालविवाह निषेधक द्वितीय संशोधित क़ानून न० १६ की धारा ४ के अनुसार यह सारी धारा न० ६ पुरानी धारा ६ को उड़ा कर नई रक्खी गई है।

फुटनोट ६—यह धारा बालविवाह निषेधक द्वितीय संशोधित कानून न० १६ सन् १६३८ की धारा ५ के अनुसार पुरानी धारा ११ के स्थान में नई बनाई गई है।

सन् १८६८ की दफा २६० के अनुसार मुस्तगीस को हरजाने दिलाने का हुक्म हो तो उस अमानत मुचलके से वसूल कर लिया जाय और अगर अदालत की बताई हुई मुनासिब मुद्दत के अन्दर २ वह न दाखिल की जावेगी तो इस्तगासा खारिज कर दिया जावेगा।

ऐक्ट नं० ५ सन् १८६८

(२) इस धारा के अनुसार लिया हुआ मुचलका जाब्ता फ़ौजदारी सन १८६८ के अनुसार लिया हुवा मुचलका माना जावेगा और इस पर जाब्ते फौजदारी का ४२ वा अध्याय लागू होगा।

इस क़ानून के खिलाफ शादी करने वाले के खिलाफ शादी रोकने का हुक्मनामा इम्तनाई निकालने का अधिकार

१२—(१)[7] इस क़ानून में कोई भी बात होने के बावजूद, अदालत को इस्तगासे के जरिये या किसी दूसरी तरह से सूचना मिलने पर, यदि यह सन्तोष हो जावे कि इस क़ानून के विरुद्ध बालविवाह रचाया जाने वाला है, या रचने का प्रबन्ध होगया है, तो अदालत ऐसे आदमियों में से किसी व्यक्ति के विरुद्ध, जिनका कि इस कानून की ३, ४, ५, व ६ धारा में जिक्र आगया है, शादी रोकने का हुक्मनामा इम्तनाई निकाल देगी।

(२) कोई भी हुक्मनामा इम्तनाई मद नं० १ के अनुसार किसी व्यक्ति के विरुद्ध न निकाला जावेगा जब तक कि अदालत ऐसे व्यक्ति को पहिले से नोटिस न दे दे और उसको इस बात का अवसर न दे दे कि वह आकर वजह जाहिर करे कि उसके विरुद्ध हुक्मनामा इम्तनाई क्यों न निकाला जाय।

(३) अदालत या तो अपनी मर्जी से या किसी दूसरे व्यक्ति की अर्जी पर उस हुक्म को, जो कि उसने मद न० १ के अनुसार निकाला है, मसूख या तबदील कर सकती है।

(४) जब कि ऐसी अर्जी अदालत के पास आवे तो अदालत का यह कर्त्तव्य होगा कि वह प्रार्थी को बहुत जल्दी अपने सामने या तो स्वयं या अपने वकील के मारफत उपस्थित होने का अवसर दे, और यदि अदालत पूरी अर्जी को या उसके कुछ भाग को अस्वीकार करदे तो अदालतको अस्वीकार करने के कारण लिखने पड़ेंगे।

(५) जो कोई यह जानते हुए कि इस धारा की मद १ के अनुसार उस पर हुक्मनामा इम्तनाई निकल गया है और फिर भी वह उस हुक्मनामे की अवहेलना करता है तो उसको तीन महीने तक की सख्त या सादी कोई कैद या १०००) एक हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनों सजायें दी जा सकेंगी।

परन्तु शर्त यह है कि किसी स्त्री को कैद की सजा न दी जावेगी।

फुटनोट ७—बालविवाह निषेधक द्वितीय सशोधित कानून नं १६ सन् १६३८ की दफा ६ के अनुसार यह दफा १२ नई जोड़ी गई है।

आर्य्य समाज में एक मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता

श्री मिहिरचन्द्र धीमान्, हिन्दीभूषण 'कुसुमाकर' स० मन्त्री, बङ्ग-आसाम आर्य प्रतिनिधि सभा

इस समय अवस्थाएँ ऐसी हैं कि अपना अस्तित्व अक्षुण्य बनाए रखने और अपने कार्य्य की प्रगति को बढ़ाने के लिए आर्य्यसमाज को अपने संगठन में कुछ मौलिक परिवर्तन कर देने चाहिएँ।

मैं यहां अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार एक रास्ता बताना चाहता हूं। वह यह कि हम भारतवर्ष की राजनैतिक, सामाजिक, व धार्मिक समस्या पर विचार करने के लिए Constitutions में कुछ परिवतन करें। अपने Constitutions में कांग्रेस का सा परिवर्तन करें। जैसे अपने प्रधान को कांग्रेस चुनती है उसी तरह ही हम भी चुनें। हम ऐसे प्रधान को चुनें जो रात दिन वर्ष भर कांग्रेस के प्रधान की तरह प्रचार में लगा रहे। हमारे इस आयोजन का नाम All India Aryan Congress (अ० भा० आर्य कांग्रेस) हो—इसी तरह एक बड़ी जबरदस्त वर्किङ्ग-कमेटी हो जो कार्य्य सम्पादन करने के लिए भारत मे आर्य्य समाजियों को संकेत करे (Directions) दे। आर्य्य नवयुवकों, आर्य्य कुमारों में नवजीवन फूकने के लिए आर्य्यवीर सेवादल भारतवर्ष में Organise चालू करें। अपने प्रधान का स्वागत करने के लिए जब All India session हो तो बड़ी ज़ोरदार स्वागत कारिणी समिति बनायें जो आर्य्य-वीरों द्वारा अपने प्रधान का Right Royal Salute से स्वागत करे। यह Military का युग है। ऐसे युग में हम वीर बन कर ही रह सकते हैं। आल इण्डिया आर्य्य- कांग्रेस का उत्सव तो में एक दफा हो और सार्वदेशिक का उत्सव (अधिवेशन) तीन वर्ष के अनन्तर एक दफा हो ताकि अन्य देशों के प्रतिनिधि भी तीन वर्ष में सम्मिलित हो कर अपने अपने देशों की अवस्था से सूचित कर सकेंगे। हमारा ध्येय बहुत ऊँचा है, हमें 'कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्' की ध्वनि गुञ्जानी है। उसके लिए सामान भी वैसा ही करना होगा। अगर हमारी सार्वदेशिक सभा का चुनाव तीन वर्ष के अन्दर होता है तो हमें All World Aryan Conference तीन वर्ष के अनन्तर ही करना चाहिए तब ही जापान, जर्मनी विलायत, अमरीका से हमारे प्रतिनिधि तीन वर्ष में एक दफा सम्मिलित हो सका करेंगे और All India Aryan Congress का अधिवेशन प्रति वर्ष एक दफा अवश्य हुआ करे। इस ख्याल को कार्य रूप में परिणत करने में हम बंगाल के आर्य्य-समाजी तैयार हैं। अगर हमारे आर्य्य-समाज के कर्णधारों की ऐसी सम्मति हो तो आल इण्डिया आर्य कान्फ्रेन्स का पहला अधिवेशन बुलाने के लिए हम तैयार हैं, चार पांच मास के समय मिलने से हम आर्य्यवीर दल आदि और कान्फ्रेन्स को कार्य्य में और भली भांति Organise कर सकते हैं। मैं यह समझता हूँ कि हमारी सब बीमारियों का एक मात्र इलाज यह हमारे Constitution Radical change होने से हो सकता है। हम ऐसे ही सगठित होकर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं। अगर इन विचारों में से कुछ कार्य्य रूप में परिणत करने के योग्य हों तो समाज के कर्णधार अपनी सम्मति से सूचित करें ताकि हम लोग इसको कार्य का रूप देने में लग पवे।

ARYA SAMAJ & NIZAM GOVERNMENT.

POLICE HIGH-HANDEDNESS.

Need for the Session of All-India Aryan Congress

Mr S. Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League has issued the following to the press —

The International Aryan League is constantly receiving news of the sad plight of Aryas in the Hyderabad State Some of the recent atrocities perpetrated by the police underlings reveal a terrible state of affairs with regard to Aryasamaj situation I will mention only a few of them

1 The police officials of Nizamabad arrested four respectable Aryas on 14th March, 1938, without serving any warrant and kept them in the lock-up Their sacred threads were forcibly removed and during night they were given brutal beating on their stark-naked bodies They were paraded hand-cuffed through the main bazars and roads of the town On the second day when warrants were served on them, they were forcibly made to give ante-date signatures The charge levelled against them was that they instigated Hindus to fight against the Muslims

2 On the last Holi occasion, at Gulbarga, when some Lingayats were playing Holi, there was a scuffle between them and the Muslims It is alleged that this resulted in the death of one Muslim Though there was not a single Arya playing Holi, as it is well-known that Aryas do not play Holi like other Hindus, still it was alleged that Aryas participated in the scuffle, and the police, therefore, arrested four Aryas on a false charge of murder On the same day, two innocent Hindu professors of the local Intermediate College were dragged and beaten by the police under the suspicion of throwing stones from their houses on Muslims

3 The Taluqadar of Kalyani forcibly removed OM Flag' from Arya Samaj temple The Aryan League lodged a strong protest but to no avail

4, In the month of April last, Muslims beat and looted Hindus in Hyderabad city, and this incident afterwards assumed the shape of a Hindu Muslim riot The Nizam's Government issued a baseless and misleading communique, holding Aryas responsible for this trouble The communique added fuel to the fire It infuriated Muslims, who fully armed, numbering approximately ten

thousands, attacked the house of Pandit Vinayakrao, Barrister, the President of the Arya Pratinidhi Sabha, Nizam State. The above communique of the Nizam's Government was strongly refuted in the Press by the Aryan League In connection with the riot, several innocent Aryas have been arrested and charged with murder

5 Recently a circular was issued by the Nizam's Goverment to the effect that Aryas could not instal Havankund without permission. This is a case of glaring interference with religious liberties

6 The latest ban, imposed on Mr K F Nariman, Barrister, who was briefed to defend Hindus and Aryas charged with murder, shows that even legal rights regarding self-defence are denied to our people in the State.

The Nizam's Government have often declared through the Press and correspondence with the Aryan League that Aryas enjoy full freedom in the State, but practically, the situation is the reverse of it, as is clear from the facts given above The policy of the Nizam's Government seems to be directed against the workers of the Aryasamaj and seeks to suppress their activities, as they cause awakening among the general Hindu public who form 85 percent of the population in the State The public can now draw its own conclusion as to the situation which faces us. Aryasamaj refuses to be cowed down It is determined to face difficulties The Aryan League, therefore, decided to convene a Session of the All-India Aryan Congress at some suitable place in Central Provinces or Maharashtra, somewhere on the border of Hyderabad State, to start an extensive agitation against the vagaries of the Nizam's Government and to secure our legitimate rights. The entire Hindu Community is with us.

Further particulars regarding the Session of the Aryan Congress will be communicated to the Public through the Press from time to time

DECISION OF

INTERNATIONAL ARYAN LEAGUE
ON
ARYASAMAJ SITUATION IN HYDERABAD (Dn.)

The copy of a resolution, passed at the last meeting of the Working Committee of the International Aryan League, held at Delhi —

"Resolved that this meeting of the Working Committee of the International Aryan League strongly condemns the atrocious treatment meted out to the Aryas by the Nizam's Government in Hyderabad State and expresses its sympathy towards all those who have suffered and are still suffering as a result of this oppression

"This League is deeply pained to learn that in spite of the repeated assurances given by the high officials of the Nizam's Government, that justice will be done to the Aryasamaj, those assurances have been flagrantly violated by them, and thereby worsening the situation.

"In the opinion of this League, the situation in regard to the Aryasamaj in Hyderabad territory has become so acute that it can no longer be ignored and disregarded. This League, therefore, demands an early settlement on the following points:—

(1) Circular No 54, prohibiting public meeting, should be cancelled

(2) Restrictions, regarding religious ceremonies, should be removed.

(3) Laws, prohibiting the opening of Akharas, should be repealed

(4) Circular, prohibiting the opening of private schools, should be cancelled.

(5) Cases, relating to communal disturbances, should be investigated by an impartial tribunal.

(6) Restrictions imposed on religious workers from outside should be removed. If any worker acts contrary to the established law of the State, he may be tried in a Court of Law.

Bans on religious workers should be lifted.

(7) Books should not be proscribed without scrutiny.

(8) Restrictions on the publication of Aryan Newspapers should be removed

(9) There should be complete freedom for the observance of Hindu and Arya festivals when these coincide with Muslim festivals.

(10) Circular, requiring Aryas to obtain permission for the installation of Havankund should be withdrawn

(11) Hindu prisoners in the State prisons should not be converted to Islam and the Aryas may be allowed to impart religious teachings to such prisoners

(12) No victimization of Aryas in State Service should be allowed

(13) Aryas should have complete freedom for hoisting and flying (OM) Flags on their houses and Aryasamaj temples.

(14) Cases already started against the Aryas in Gulbarga, Nizamabad and Hyderabad should be investigated by an impartial tribunal

"Whereas the assurances given to this League till now, by the Nizam's Government, have not been fulfilled, this League proposes to hold within the next five months in Central Provinces or in Maharashtra at a suitable place on the borders of Hyderabad State an All-India Aryan Congress to consider and discuss particularly the Hyderabad problem in view of the recent developments in respect of Aryasamaj situation in the State

"This League declares that if State officials are not going to alter their policy in respect of Aryasamaj then the entire Aryan Community shall be called upon to undertake all peaceful and legitimate means including Satyagraha to defend their religious rights

"This League also calls upon the Aryan Defence Committee to take early steps to organise the All-India Aryan Congress in compliance with this resolution and also to make stupendous efforts to protect the religious rights of Aryas in the Nizam's State."

Civil Liberties in Hyderabad

Prof. M. Sudhakar, M. A., Secretary, International Aryan League has issued the following statement to the Press regarding the banning of Mr K F Nariman's entry into Hyderabad State:-

"Those who always sing praises of the progressive nature of administration in Hyderabad should learn a lesson from recent happenings in that State I would content myself with citing of only one glaring case, in which Hindus charged with serious alleged offences such as murder, have been denied the right of availing themselves of the services of a competent criminal lawyer These accused selected Mr. K F Nariman, the well known criminal advocate of Bombay, who has earned reputation as a fearless fighter and an astute lawyer.

"Mr Nariman, it is pleasing to note, was naturally permitted to undertake his duties by the High Court, i e, the highest Judiciary in the State, as a fit and duly qualified advocate to appear and to conduct the defence. But the Executive, by its arbitrary interference, have deprived the accused of the legal rights granted and recognized by the High Court. If this is not an instance of gross injustice and interference with civil liberties of citizens, what else can it be called?

"To us the banning of entry of Mr K. F Nariman in the State is uncalled for and a clear abuse of authority Mr Nariman was coming on a purely, professional business and not on any political mission At most, the Executive could have easily secured an undertaking from him that as long as he was in the State he would not participate in any political activity and this undertaking would have made it possible for him to place his services at the disposal of the accused But to deny the accused of their legal right of self-defence is repugnant to our sense of justice and contrary to all codes of civilized society.

"The news about the banning of Mr Nariman created a stir both in and out side of Hyderabad State Various protest resolutions were passed and sent to the authorities concerned, but so far as we know the Nizam Government has proved adamant in its reactionary policy The very idea of unfair encroachment upon the fundamental rights of accused persons is revolting and we ask with emphasis, whether Sir Akbar Hydari, the Prime Minister is aware of what is passing under his very eyes, and whether he can still boast of the progressiveness of his administration, in the face of such happenings? I am sure, all enlightened Muslims, who believe in civil liberties of citizens, are with us in our condemnation of policy adopted by the Nizam Government in respect of banning the entry of Mr. K F. Nariman"

Nizam's ban Mr K. F. Nariman.

The Secretary International Aryan League sent the following telegram to the Nizam's Government —

"Aryan League strongly condemns the order prohibiting Barrister Nariman entering Hyderabad in defence of Hindus and Aryas charged with murder His visit purely professional, apart from question of civil liberties, ban deprives innocent accused of rights of self-defence and suitable legal help Please withdraw ban and assure Hindu Community of full justice to accused"

हरिजन-विरोधी प्रचार

नारनौल रियासत पटियाला से विश्वस्तसूत्र द्वारा आर्य्य-रक्षा-समिति को निम्न समाचार प्राप्त हुआ है —

"जब से नारायणगढ़ (इन्दौर राज्य) में म० मेघराज जी का पौराणिकों द्वारा वध हुआ है, यहाँ के भी चन्द शरारती पौराणिकों के हौसले बढ़ गये हैं और यह लोग दंगा फ़िसाद पर आमादा हैं, आर्यसमाज को नेस्तनाबूद कर देने का षड्यन्त्र रच रहे हैं। दलितोद्धार के प्रश्न को लेकर यहाँ भी पौराणिकों से २-३ वर्ष से संघर्ष चल रहा है।

"सार्वजनिक तालाब 'जनक सागर' में मुसलमान तो सवर्णों के साथ नहाते थे, किन्तु बेचारे हरिजनों को यह पौराणिक नहीं नहाने देते थे। गत वर्ष आर्यों ने साहस करके हरिजनों को तालाब जनक सागर में स्नान करा दिया था। पौराणिकों ने उनपर मुक़दमा चलाया। हाईकोर्ट पटियाला तक उनकी विजय हुई। तब से अभी तक हरिजन आनन्द से तालाब में नहा रहे हैं।

"अब कुछ मास से एक व्यक्ति किशनलाल नामक इन्दौर प्रवासी यहाँ केवल हरिजन विरोधी प्रचार करने आये हुए हैं। इनकी प्रेरणा से यहाँ के कुछेक पौराणिक, ग़रीब हरिजनों को तालाब जनक सागर में नहाने से ज़बरदस्ती रोकने की तैयारी कर रहे हैं।

"तालाब शोभा सागर में चन्द पौराणिकों के ऐतराज़ करने पर नाज़िम साहब ने हरिजनों को स्नान करने से रोक दिया था। हरिजनों ने हाईकोर्ट पटियाला में नाज़िम साहब को हुक्म के विरुद्ध निगरानी कर दी है।"

आर्य-वीर-दल स्काउट्स, देहली

का

यमुना पर सेवा-कार्य

ज्येष्ठ दशहरे के स्नान के अवसर पर आर्य वीर-दल स्काउट्स, देहली ने ता० ७ तथा ८ जून १९३८ को ४ बजे प्रातःकाल से मध्याह्न १२ बजे तक घाटों, सड़कों तथा जल के अन्दर किश्तियों के द्वारा सेवा-कार्य किया। तीन खोये बच्चों को उनके संरक्षकों के पास पहुँचाया। इन दोनों दिनों में १० डूबते हुए स्त्रियों, बच्चों तथा पुरुषों की जानें बचाईं।

यदि किन्हीं को उक्त दल की सेवाओं की आवश्यकता हो तो वह कृपया दल के कार्यालय मकान न० २०२२ मुहल्ला आबाद, गली मन्दिरवाली सब्ज़ीमण्डी को सूचना दे सकते हैं।

चौधरी मुखीसिंह आर्य,

मन्त्री, आर्य-वीर दल स्काउट्स,

देहली।



आर्य नेताओं से अपील

२५ वाँ भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन जो बिजनौर में गत मई मास में होने वाला था अब बिजनौर में ही आगामी सितम्बर मास में होगा। इस अवसर पर भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् अपनी रजत जयन्ती भी मनावेगा।

वैसे तो जयन्ती तथा सम्मेलन करने की एक प्रथा सी चल पड़ी है लेकिन आप में से जिनका गत वर्षों में भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् से कुछ न कुछ सम्बन्ध रहा है वे जानते हैं कि परिषद् उन संस्थाओं में नहीं है जिनका ध्येय केवल सम्मेलन करना रहा हो। हाँ कुछ वर्षों से देश में राजनैतिक आन्दोलन के जोर पकड़ने से हमारे अधिकांश आर्यकुमारों का ध्यान उस ओर खिंच गया और उन्होंने सामाजिक सुधारों को गौण समझ कर ढीला डाल दिया। आर्यकुमारों के प्रति हमारे आर्यसमाजों की उदासीनता भी इसका कुछ कारण हुई।

लेकिन बड़े हर्ष की बात है कि हमारे आर्य नेताओं का ध्यान फिर आर्यकुमारों की ओर खिंचने लगा है। हमें प्रेरित किया जा रहा है कि हम सामाजिक सुधारों को अपने हाथ में लें और हम से अनेकानेक आशाएँ बाँधी जा रही हैं।

हम भी अपने नेताओं को विश्वास दिलाते हैं कि अब वे हमें जो भी प्रोग्राम देंगे हम उसे पूरा करने में पीछे न रहेंगे। हम नहीं चाहते कि जयन्ती पर तत्सामयिक क्षणिक जोश के साथ अच्छे से अच्छे प्रस्ताव पास कर दिये जायँ और फिर उन्हें कार्य रूप में लाते समय आर्य समाजों की ओर से रुकावटें डाली जायँ। इसलिये हमारी प्रत्येक आर्य पुरुष से जो आर्य जाति की उन्नति चाहता है, प्रार्थना है कि वह अपने विचार हमें लिख भेजें ताकि हम उन्हें सब आर्य सामाजिक पत्रों में प्रकाशित करके उन पर अधिक से अधिक सज्जनों की सम्मतियाँ लेलें और जयन्ती के अवसर पर उन पर अच्छी प्रकार विचार हो सके।

निवेदक—

मन्त्री,

भारतवर्षीय आर्य्य-कुमार परिषद्।

आर्य संस्थाओं से निवेदन

भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् देश की समस्त आर्यकुमार सभाओं की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था है। इसकी रजत जयन्ती २५ वें भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन के रूप में बिजनौर में आगामी सितम्बर मास में मनाई जायगी। इस अवसर पर परिषद् की ओर से "उन्नति की ओर" नाम की एक पुस्तक भी प्रकाशित होगी जिस में चार मुख्य प्रकरण होंगे। (१) लेख, (२) परिषद् का इतिहास, (३) आर्यकुमार सभाओं के विवरण तथा (४) अन्य ऐसी आर्य संस्थाओं के विवरण जिनमे आर्यकुमार शिक्षा पाते हैं जैसे गुरुकुल, डी० ए० वी० स्कूल तथा कालेज अनाथालय इत्यादि।

इस लिए आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी संस्था का सचित्र विवरण जिसमे अन्य बातों के अलावा निम्न बातें अवश्य हों शीघ्र भेजने की कृपा करें —

१—नाम

२—कब स्थापित हुई ?

३—उद्देश्य तथा कार्य

४—क्या संस्था के अंतर्गत आर्यकुमार सभा भी है ?

मन्त्री

भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्

देहली।

वैदिकधर्म विशारद परीक्षा

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के परीक्षा-मन्त्री महोदय ने निम्न बातों पर परीक्षा-समिति के सदस्यों से सम्मति माँगी है। अन्य सज्जन भी इन पर अपनी सम्मति परीक्षा-मन्त्री को इस पते पर भेजने की कृपा करें:—

श्री पंडित सूर्यदेव जी शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, डी० ए० वी० हाईस्कूल अजमेर।

(१) 'ईश्वरीय ज्ञान वेद' और 'ब्रह्म विज्ञान' अप्राप्य पुस्तकों के स्थान पर 'धार्मिक शिक्षा' तथा 'विश्व की पहेली' पुस्तकों का रखना जो अत्यन्तोपयोगी है।

(२) आर्य साहित्य मण्डल द्वारा प्रकाशित 'धार्मिक शिक्षा' के कुछ भाग प्रथम और द्वितीय खण्डों में रखना।

(३) परीक्षाएँ जनवरी के स्थान में दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में हुआ करें।

परिषद् के सहायक

इस वर्ष परिषद् की सहायतार्थ निम्नलिखित सज्जनों की ओर से आर्यकुमार सभाओं की ओर से धन प्राप्त हुआ है, जिसके लिए उन्हें अनेकानेक धन्यवाद। अन्य सज्जनों से तथा कुमार सभाओं से हमारी प्रार्थना है कि वे भी अपना भाग शीघ्र भेजने की कृपा करें। जयन्ती समीप आरही है और हमें इस समय धन की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्यकुमार सभाओं का तो कर्त्तव्य है कि वे अपनी एकमात्र प्रतिनिधि संस्था को अपना वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजदें और हमे पूरी आशा है वे अपने कर्त्तव्य को अवश्य पूरा करेंगी।

ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार, नई दिल्ली	२५)
ला० ज्ञानचन्द ज ठेकेदार, नई दिल्ली	२५)
ला० हसराज जी गुप्ता, देहली	२५)
पण्डित रामचन्द्र जी देहलवी	५)
श्रीयुत कृष्णचन्द्र जी, दिल्ली	५)
„ डाक्टर युद्धवीरसिंह जी, दिल्ली	५)
„ रामदत्त जी ज्ञानी, बुरहानपुर	५)
रायसाहब मदन मोहन जी सेठ, मिर्जापुर	५)
प्रोफेसर तोताराम जी, कानपुर	५)
„ मुन्शीराम जी कानपुर	५)
श्रीयुत विद्याधर जी „	५)
„ बी० एम० जवेरिया जी, काशी	५)
„ विष्णु भास्कर जी केलकर काशी	५)
कुँवर कान्तिवीर जी, बिजनौर	५)
लाला देशराज जी, दिल्ली	५)
श्रीयुत जगदीश्वर प्रसाद जी, राँची	१)
„ जगदीश प्रसाद जी, कानपुर	१)
„ गंगानन्द जी, सिरसा	१)
„ हरिश्चन्द्र जी, मुरादाबाद	१)
„ देवीदयाल जी, गाजियाबाद	१)
„ हीरालाल जी „	१)
„ सुन्दरलाल जी, कानपुर	१)
„ ईश्वर दयाल जी, बिजनौर	१)
„ मनुराम जी	५)
आर्य कुमार सभा राँची	२)
„ „ „	४)
आर्य कुमार सभा, गाजियाबाद	५)
„ „ „ दीवान हाल, दिल्ली	८)
„ „ „ „ „	१०)
„ „ „ बौंठ	५)
„ „ „ „	१०)
„ „ „ बिजनौर	४)
„ „ „ बुरहानपुर	५)
„ „ „ मल्हार गज, इन्दौर	२)
„ „ „ सिरसा	३)
„ „ „ अजमेर	५)
„ „ „ मुरादाबाद	४)
„ „ „ कानपुर	५)
	२२०)

कार्यकारिणी सभा

परिषद् की कार्य कारणी सभा की एक मीटिंग रविवार ता० १६ जून १६३८ को दिल्ली में पंडित

रामचन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता मे हुई जिसमें कई आवश्यक विषयों पर विचार किया गया।

अवध का कन्हैया।

कुछ समय हुआ आर्यकुमार सभा राँची की ओर से हमें ज्ञात हुआ कि Ideal Films Ltd, Lucknow एक चल चित्र तैयार कर रही है जिसका नाम उन्होंने "अवध का कन्हैया" उर्फ 'वाजिद अली शाह" रक्खा था। परिषद् की ओर से कम्पनी के डायरेक्टर महोदय को लिखा गया कि क्योंकि भगवान् कृष्ण को समस्त हिन्दू जगत् आदर की दृष्टि से देखता है यहाँ तक कि हमारा सनातन धर्म तो उन्हें ईश्वर का अवतार मानता है, इस लिए एक मामूली बादशाह का नाम ऐसे महान् आत्मा के नाम के साथ नहीं रखना चाहिए।

हमे यह लिखते हर्ष होता है कि कपनी के डायरेक्टर महोदय ने हमारी बात को मान लिया और अब फिल्म का नाम केवल "वाजिद अली शाह" रखा गया है।

हम फिल्म के डायरेक्टर महोदय को भी धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने नाम के विषय मे किसी प्रकार की टीका टिप्पणी न करते हुए हमारी उचित माँग को स्वीकार कर लिया।

मन्त्री—

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्,

दिल्ली।

आर्यकुमारों तथा आर्यकुमार-सभाओं के प्रति

१—आर्यकुमार सभाओं के नियम कई वर्षों से सशोधित नहीं हुए हैं इस वर्ष उनमे सशोधन करने का विचार है। इसलिए आर्यकुमार, आर्यकुमार सभाएँ तथा अन्य आर्य पुरुष इन नियमों मे जो सशोधन चाहे वे कृपया निम्न पते पर भेजदें।

इसी प्रकार परिषद् के नियमों मे जो सशोधन चाहें भेजदें।

२—गत सम्मेलन मे जो दिल्ली मे फर्वरी सन् १९३७ मे हुआ था आयकुमार सभाओं तथा आर्यकुमारों को दो प्रोग्राम दिए थे। पहला ग्रामप्रचार और दूसरा व्यायाम शालाएँ खोलने का। अनेक आर्यकुमार सभाओं की रिपोर्टों से पता चला है कि उन्होंने इन दोनों प्रोग्रामों को हाथ में ले रखा है और आर्यकुमार उनमे भाग ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि अन्य आर्यकुमार सभाएँ भी परिषद् के इन प्रोग्रामों को पूरा कर रही होंगी वे भी अपनी रिपोर्टें भेजदें।

३—जयन्ती पर प्रकाशित होने वाली "उन्नति की ओर" नाम को पुस्तक के लिये लेख इत्यादि आरहे है। लेकिन अभी बहुत सी आर्यकुमार-सभाओं के विवरण नहीं आए हैं। आर्यकुमार-सभाएँ इस ओर विशेष ध्यान दें और शीघ्र ही अपने विवरण परिषद् को भेजदें।

मन्त्री

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, देहली।

महिला-जगत्—

महिलाओं के लिए पंचवर्षीय योजना

(सर हरीसिंह गौड़ के विचार)

—:o:—

मैं महिला-कान्फ़रेन्स और महिला-समाज के लिये सिर्फ़ ज़बानी सहानुभूति दिखाने का क़ायल नहीं, मैं तो महिला-समाज को तरक़्क़ी के रास्ते पर पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ते देखना चाहता हूँ, और तरक़्क़ी के रास्ते की ओर मैंने यहाँ पहले संकेत भी किया है। उदाहरण के लिए एक बात को ले लीजिये—महिलाओं की क़ानूनी अयोग्यता और असमानता को। भारतीय महिला-समाज पर हज़ारों वर्षों से अन्याय होता चला आ रहा है—इतने लम्बे अर्से से इनके ऊपर सामाजिक तथा क़ानूनी अयोग्यता का बोझ लदा हुआ है। अब उससे छुटकारा पाना ही होगा। जो महिलाएँ क़ानून-पेशा को अपना चुकी हैं, वे मेरी इस बात से पूर्ण सहमत होंगी, कि स्मृतियों ने हमारे महिला-समाज के सामने जो क़ानूनी कठिनाइयाँ पेश कर रखी हैं, उनमें सब से बढ़कर पेचीदा प्रश्न है स्त्री-धन का। जीमूत वाहन को भी अपने 'दायभाग' में कहना पड़ा कि "अब हम निहायत पेचीदा स्त्री-धन के प्रश्न पर विचार करते हैं।" यह प्रश्न अभी तक ज्यों का त्यों पड़ा है और इसकी ओर लोगों का ध्यान ही नहीं जाता। यह क़ानून आज भी अस्पष्ट और पेचीदा बना हुआ है। अतएव मैं चाहता हूँ कि इस अस्पष्टता और पेचीदगी को जल्दी से जल्दी ख़त्म कर दिया जाय। इसके लिए सिर्फ़ प्रस्ताव पास करते जाने से कोई लाभ नहीं, इसके लिए ज़रूरत इस बात की है कि महिला कान्फ़रेन्स कम से कम उन सात प्रान्तों की सरकार पर तो ज़बर्दस्त ज़ोर डाले, जहाँ कांग्रेस के हाथ में शासन-सूत्र आ गया है, कि स्त्री-धन-सम्बन्धी क़ानून को स्पष्ट कर दिया जाय, क्योंकि इन प्रान्तों की सरकारों की सहानुभूति महिला-समाज के साथ है। क्या ही अच्छा होता, कि क़ानून इस बात की घोषणा कर देता कि महिला के पास जो सम्पत्ति है, उसकी मालकिन वही है—उसे सिर्फ़ उसका उपयोग करने का अधिकार नहीं, बल्कि उसपर पूरा अधिकार है। यह एक सीधी-सादी बात है, फिर भी आज तक क़ानून ने महिला के अधिकार को इस रूप में स्पष्ट नहीं किया है।

लेकिन अगर किसी ऐसे पुरुष के सामने यह प्रश्न रखें, जो क़ानूनदाँ नहीं है, कि क्या यह सीधी-सी बात नहीं है कि जिस महिला के अधिकार में जो सम्पत्ति हो, उसकी मालकिन उसीको मान लेना चाहिये, तो वह निस्सन्देह ऐसे प्रश्न को मूर्खतापूर्ण समझेगा, क्योंकि उस की तो यही धारणा है कि जिसके पास जो सम्पत्ति हो, उसका मालिक अवश्य वही होगा ही! परन्तु क्या आप यह नहीं जानते कि सम्पत्ति का मालिक

स्त्री नहीं, उसका पति है ? इसलिए मैं एक अर्से से इस कोशिश में लग रहा हूँ कि सम्पत्ति पर महिला के अधिकार को क़ानून बनाकर स्वीकार कर लिया जाय। मेरा यह पक्का विश्वास है कि हमारे कांग्रेसी दोस्त महिला-समाज की उन्नति हृदय से चाहते हैं और इसके लिए वे प्रयत्नशील भी हैं, परन्तु मैं जोर देकर यह बता देना चाहता हूँ कि महिलाओं को आप तबतक उन्नत दशा में नहीं पहुँचा पायेंगे, जबतक उन्हें भी सम्पत्ति पर पुरुष की भाँति ही पूरा हक न दें। जब तक उन्हें भी पुरुषों की तरह यह अधिकार न मिल जाय कि वे जब चाहें, अपनी सम्पत्ति को बेच सकती हैं। महिला-समाज के उद्धार के लिए चलनेवाले आन्दोलन को सफल बनाने के हेतु यह एक मौलिक काम होगा, और सच पूछा जाय तो महिलाओं को कब का इस प्रश्न को अपने हाथ में लेना चाहिये था। हम पुरुषों ने इसके लिए इतनी कठिनाइयों के रहते हुए भी कोशिशें कीं; महिलाओं को उनके वाजिब हक़ दिलाने के लिए मौजूदा क़ानून में संशोधन कराने की कोशिश करते रहे हैं, लेकिन अब तो महिला कान्फ्रेन्स को स्वयं इस काम को अपने हाथ में लेकर इसे पूरा करना चाहिये।

इस महत्वपूर्ण प्रश्न के अतिरिक्त जो काम पञ्चवर्षीय योजना के अन्दर आने चाहिये, उनमें एक है—महिलाओं के स्टेटस का सवाल। इस बात से तो इनकार नहीं किया जा सकता कि इधर पिछले वर्षों के आन्दोलन और जागृति के फलस्वरूप महिलाओं का 'स्टेटस' ऊँचा उठा है, फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि समाज में अभी तक उनको पुरुषों के समकक्ष स्थान नहीं प्राप्त है। आखिर उनको वह स्थान कैसे प्राप्त होगा ? इसका स्पष्ट उत्तर तो यही है कि महिलाओं को समाज में पुरुष के सामाजिक और वैयक्तिक अधिकार क़ानून द्वारा सुरक्षित रहेंगे। वर्तमान समय में उनके ये अधिकार क़ानून द्वारा सुरक्षित नहीं हैं। सभा मंचों से हम लोग महिला-समाज की उन्नति के लिए लम्बी-चौड़ी तकरीरें करते हैं और कहते हैं कि ये हमारी बहनें हैं। लेकिन घर जाकर हम उनके साथ फिर वैसा ही व्यवहार करते हैं। जैसा कि सैकड़ों वर्षों से करते आ रहे हैं। कहा गया है कि लड़की बचपन में पिता के अधीन रहती है, जवान होने पर पति के अधीन और बुढ़ापा आने पर पुत्र के आदेशाधीन रहती है। वर्तमान महिला-समाज के लिए तो वास्तव में यही बात कही जा सकती है। वर्तमान समाज में महिला की ऐसी ही स्थिति है। गर्ज़ यह कि मरण-पर्यन्त उसको किसी न किसी के अधीन ही रहना पड़ता है—स्वाधीनता उसे कभी मयस्सर नहीं होती, क्योंकि मनु महाराज का यही आदेश है।

आज तक जो महिलाओं को तरह तरह की असुविधा और प्रतिबन्धों में जकड़े रहना पड़ता है, उसका मुख्य कारण यह है कि लोगों की धारणा है कि स्त्री का अस्तित्व तो पुरुष की कृपा पर निर्भर है। मैं स्त्री-पुरुष की समानता क़ायम करना चाहता हूँ—सिर्फ क़ानून के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक क्षेत्र में भी। परन्तु यह

हिन्दू-स्त्रियाँ और सम्बन्ध-विच्छेद

(लेखक—एक मर्मज्ञ)

इस समय समाचार-पत्रों में इस विषय पर विशेष चर्चा छिड़ गई है कि हिन्दू-स्त्रियों को क़ानून की दृष्टि से सम्बन्ध-विच्छेद की आज्ञा मिलनी चाहिए अथवा नहीं। यह प्रश्न कोई नया नहीं। हिन्दू-जगत् मे स्त्रियों की कानूनी असमानता और क़ानूनी अयोग्यता चिरकाल से विचारशील लोगों को अखरती रही है। किसी भी सभ्य जाति में कानून के सामने यदि स्त्री और पुरुष समान स्थिति नही रखते तो वहाँ संघर्ष और आन्दोलन का होना एक लाज़मी बात है। आधुनिक काल में शिक्षित समाज के अन्दर स्त्री-पुरुष की समानता के अतिरिक्त कोई दूसरा विचार हम अपने हृदय में धारण नहीं कर सकते।

प्रश्न यह है कि जब हिन्दू-समाज में एक पुरुष अपनी स्त्री के साथ अमानुषिक व्यवहार करता हुआ एक से अधिक स्त्रियों के साथ विवाह कर सकता है और क़ानून उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं डालता तो उस दशा में उन स्त्रियों के लिए, जो बहु पत्नी विवाह को घृणा की दृष्टि से देखती हैं, बचाव की सूरत क्या हो सकती है? हम यह प्रश्न इसलिए उठाते हैं कि पुरुषों को स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में विचार करते हुए सर्वथा यह ध्यान रखना चाहिए कि स्त्रियों के भाग्य का निर्णय हमेशा उनके हाथ मे नहीं रह सकता। अब वह जमाना बदल चुका है, जब कि यह विचार बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था कि स्त्री अबला और रक्षणीय है और उसे हमेशा पुरुष के आश्रय में ही स्थान मिलना चाहिए। इस जमाने मे स्त्रियाँ अपनी रक्षा का कार्य अपने हाथों मे लेने के लिए तैयार हैं और अपने भाग्य के सम्बन्ध मे स्वयं स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करने को व्यग्र हो रही है। अतः पुरुषों को

तब तक सम्भव न होगा, जब तक महिलाओं के साथ भी क़ानून का वैसा ही व्यवहार न हो, जैसा पुरुषों के साथ होता है—जब तक स्त्री पुरुष के अधिकारों का भेदभाव न मिटा दिया जाय। ये प्रश्न निहायत ज़रूरी हैं, जिनको आज से बहुत पहले ही हल कर लेना था, लेकिन इनके अलावा और भी प्रश्न हैं, जो पचवर्षीय योजना में सम्मिलित किये जाने चाहिये। शिक्षा का प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं, इसके अतिरिक्त विवाह-सम्बन्धी कानून में संशोधन होना भी ज़रूरी है। बहुविवाह, अनमेल विवाह आदि कुप्रथाओं को क़ानून द्वारा रोकना होगा। मैंने यहाँ कुछ कामों का ही संक्षेप में जिक्र किया है, जिनको पंचवर्षीय योजना का अंग बनाया जा सकता है। अगले पाँच वर्षों के अन्दर अगर महिला-समाज इतने काम कर ले, तो इसमें कुछ भी शक नहीं, कि भारतीय महिला-समाज की कायापलट हो जायगी और देश महिला-समाज के उद्धार के लिए बहुत कुछ कर चुका होगा।

अब सचेत हो जाना चाहिये और स्त्रियों के अधिकारों के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए स्त्रियों की आकांक्षाओं को दृष्टि से ओझल न करना चाहिये।

विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) की चर्चा करते हुए हिन्दू-जनता में पुरुष एक प्रकार की दुहाई देने लग जाते हैं और कहते हैं कि हमारे धर्मशास्त्र हमें कभी आज्ञा नहीं देते कि यह कुत्सित प्रथा जारी की जाय। हम इन भद्रपुरुषों से पूछते हैं कि क़ानून के प्रचलित हो जाने से तुम्हारे धर्मशास्त्रों की आज्ञाओं को पालन करने में क्या बाधा उपस्थित होती है ? तुम कहते हो कि हमारा विवाह-सम्बन्ध अटूट है। मान लिया कि आदर्श की दृष्टि से यह बात सत्य है, परन्तु अटूट सम्बन्ध को मानते हुए एक हिन्दू अपनी स्त्री के होते हुए दूसरा विवाह कैसे कर सकता है ? दूसरा विवाह कर लेने पर वस्तुत: पहली स्त्री के साथ आदर्श की दृष्टि से विवाह-सम्बन्ध का विच्छेद हो जाता है। ऐसी दशा में बहुपत्नी विवाह के माननेवाले हिन्दुओं को अटूट सम्बन्ध की दुहाई देने की बात शोभा नहीं देती।

यदि हम विचारपूर्वक देखें तो कोई भी क़ानून हमें अपने आदर्शों से हटा नहीं सकता। हमारे व्यावहारिक जीवनमें सहायक तो बन सकता है, परन्तु बाधक नहीं हो सकता। क़ानून वस्तुत: हमें बहुत सी कठिनाइयों से बचाते हैं। सभ्य समाजों में क़ानून जातियों के व्यावहारिक जीवन को उन्नत करने के लिए पग-पग पर सहायता देते हैं। हमें केवल यह देख लेना चाहिये कि क़ानून किस मर्ज की दवा है और किन हानियों से बचाने के लिए बनाया गया है।

डा० देशमुख ने हिन्दू-स्त्रियों के लिए विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद के जिस क़ानून की आवश्यकता का आन्दोलन किया है उसका वास्तविक स्वरूप समझ लेना चाहिये। डा० देशमुख निम्न अवस्थाओं में विवाह-सम्बन्ध-विच्छेद की आवश्यकता स्वीकार करते हैं —

(१) जब किसी स्त्रीका पति विवाह के पश्चात् नामर्द हो जाय और वह मर्ज़ लाइलाज हो।

(२) जब उसका पति अपना धर्म परिवर्तन कर ले।

(३) जब उसका पति उसके होते दूसरी स्त्री के साथ विवाह कर ले।

(४) जब उसका पति उसको तीन साल तक बराबर छोड़ रखे।

उपरोक्त अवस्थाओं के उपस्थित हो जाने पर यदि स्त्री-पुरुष का पारस्परिक जीवन कलुषित हो जाय और उनका परस्पर सहवास असम्भव बन जाय तो उस दशा में यदि हिन्दू-स्त्री चाहे तो क़ानून की सहायता लेकर वह अपने आपको पृथक् कर सकती है। क़ानून की शक्ति जबरदस्ती उसके विवाह-सम्बन्ध का विच्छेद नहीं कराती; परन्तु उसके अपने हाथ में यह अधिकार सौंपती है कि यदि वह चाहे तो क़ानून की सहायता ग्रहण करे। "अटूट सम्बन्ध" माननेवाले नि:संकोच अपने आदर्शों पर कटिबद्ध रह सकते हैं, परन्तु प्रश्न फिर उपस्थित होता है कि क्या सचमुच हिन्दू अपने व्यवहार से "अटूट सम्बन्ध" का परिचय

वैदिक आश्रम और साम्यवाद

(लेखक—श्री० अवधबिहारीलाल, एम० ए०)

वेदों ने मनुष्य के जीवन को चार भागों में बाँटा है। वे चार भाग चार आश्रम कहे गये हैं। मनुष्य की औसत आयु सौ वर्ष की मानकर, पहले २५ वर्ष ब्रह्मचर्य, फिर २५ वर्ष गृहस्थ, फिर ५० वर्ष की आयु से ७५ वर्ष की आयु तक वानप्रस्थ, तत्पश्चात् आयु के शेष भाग तक सन्यास आश्रम में बिताने के लिए निर्देश किया गया है।

ब्रह्मचर्य आश्रम में घरबार, माता-पिता को छोड़ बालक को गाँव से दूर जङ्गलों में गुरु के घर रहना पड़ता था। बच्चे माता-पिता के पास से वेद के शब्दों में "आवासस परिधानात्" अर्थात् जब कपड़े पहनने लगे, तभी गुरुकुलमें दाखिल हो जायँ। यह नियम राजा-रंक—सबके लिए एक समान था। घर से बालकों के लिए कोई माहवार रक़म नहीं भेजी जाती थी। चाहे राजकुमार कृष्ण हो, चाहे दरिद्र का लड़का सुदामा हो—दोनों को एक जैसे नियम में रहना पड़ता था। दोनों ही भिक्षाटन और गुरु-सेवा समान रूप से करके विद्योपार्जन किया करते थे। खाना-पीना, सोना-रहना, चलना-फिरना—धनी, निर्धन सब के पुत्रों के लिए एक जैसे थे। यहाँ न किसी को जन्म का अभिमान हो सकता था, और न कोई जन्म के कारण धनी-निर्धन ही हो सकता था। ऊँच-नीच का कोई भेदभाव यहाँ हो ही नहीं सकता था। अपने पुरुषार्थ से, अपने बाहु-बल से, अपनी योग्यता से अपने लिए अपना स्थान संसार में बनाना सीखो, दूसरे के कमाये धन को अपने उप-योग में न लगाओ, ऐसा स्वावलम्बन और सादगी

दे रहे हैं ? यदि हिन्दू अपने व्यवहार से इस 'अटूट सम्बन्ध" को प्रति दिन तोड़ रहे हों तो उस दशा मे यदि हिन्दू-महिलाएँ पुरुषों के बला-त्कार से बचने के लिए क़ानून की सहायता लेना चाहें तो हम उनके रास्ते में क्यों बाधा डालें। स्त्री और पुरुष के जीवन का सच्चा विकास तभी हो सकता है जब उनको एक-दूसरे के प्रति पूर्ण स्वतन्त्रता हो। तभी उनका पारस्परिक प्रेम सच्चा और गहरा बन सकता है। जहाँ स्वतन्त्रता है वहाँ ही हमारे परस्पर के सम्बन्ध अधिक दृढ़ और अधिक निश्चित रूप धारण कर सकते हैं।

हम आर्यसमाज के विचारशील व्यक्तियों को यह प्रेरणा करना चाहते हैं कि वे स्त्रियों की स्वा-धीनता की रक्षा करने में किसीसे पीछे न रहें। जब आर्यसमाज ने स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोलकर उनको स्वाधीनता के मार्ग पर डाल दिया है तब उनके मार्ग में व्यर्थ के रोड़े अटकाने से कुछ न बनेगा। हिन्दू साम्प्रदायिक जनता की तरह उन्हें अपनी विचारशैली को संकीर्ण न बनाना चाहिए। उन्हें केवल इस दृष्टि से सोचना चाहिए कि वेद प्रतिपादित स्वाधीनता का उपयोग स्त्री और पुरुषों के लिए समान रूप से विहित है।

तप और त्याग की शिक्षा जीवन के प्रारम्भिक काल में देकर मनुष्य को सच्चे अर्थों में साम्य-वादी बना दिया जाता था।

गृहस्थ आश्रम में मनुष्य विवाह कर योग्यता और पुरुषार्थ के अनुसार धनादि उपार्जन कर परिवार पालन कर सकता था। लेकिन यहाँ पर भी उसको विषयासक्त और परिग्रही होने की आज्ञा न थी। वह धन तो कमाये, लेकिन यज्ञ के लिए कमाये, यह आदर्श था। यज्ञ क्या है, यज्ञ का मन्त्र हम बतलाता है—'इदं प्रजापतये इदन्नमम"—यह धनादि भोग्य पदार्थ परमात्मा के लिए हैं, मेरे लिए नहीं। परमात्मा तो वेदोंके शब्दों में "वसुन पृथ्यस्पत" सारे धनादि पदार्थों का स्वामी है, उसे कोई क्या खिलायेगा, इसलिए अपने धनादि को परमात्मा की सन्तान मनुष्य नहीं, प्राणीमात्र के लिए अर्पित कर दे, यह था गृहस्थ-जीवन का उद्देश्य। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम, गृहस्थों के दानपर ही निर्भर रहते हैं। गृहस्थ के नित्य कर्मों में से थे—(१) देवयज्ञ, जिसमें उसे विद्वानों का सत्कार करना पड़ता था, (२) पितृयज्ञ, जिसमें वृद्ध माता पिता, पितामहादिकों का अन्नादि से सत्कार किया जाता था, (३) अतिथियज्ञ, जिसमें धार्मिक विद्वान्, सत्योपदेष्टा सन्यासि-जनों को भोजनादि से मान्य करना होता था और (४) भूतयज्ञ, जिसमें श्वपच, चाण्डालादि (जिनका कुकर्मादि के कारण सामाजिक बहिष्कार किया गया हो, अतएव जिन की जीविका छिन गयी हो), पापरोगी (अर्थात् भगन्दर, कुष्ठ, यक्ष्मा अर्श आदि भयंकर रोगों से पीड़ित एवं अन्धे, लूले-लंगड़े आदि जीविको-पार्जन में अक्षम), यहाँ तक कि कुत्ते, कौए, कीड़े आदि तक को भोजन देने का विधान है। गृहस्थों के कर्त्तव्यों में गृह्यसूत्रादिकों में बतलाया गया है कि प्रत्येक गृहस्थ के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने भोजन करने के पहले देख ले कि उसके पड़ोस में कोई जीविकोपार्जन में असमर्थ भूखा तो नहीं है, इत्यादि। ऐसी सुन्दर व्यवस्था में गरीबों का रक्त-चूसकर बढ़नेवाला पूँजीवाद कहाँ से पनप सकता था? वर्तमान तथाकथित साम्यवाद अथवा समाजवाद के हाहाकार और श्रीमानों को लूटकर पापी पेट की आग बुझाने की पुकार ही क्योंकर सम्भव हो सकती है?

कहा जा सकता है कि वैदिक धर्म की यज्ञ दान आदि की शिक्षाओं ने भारतवर्ष में निकम्मे भिखमंगे पैदा कर दिये। लेकिन यह कहनेवालों की भूल है। वैदिक धर्म (सनातनधर्म) के नाम पर आज छप्पन लाख सण्डे-मुसण्डे परान्नपुष्ट भारतवर्ष में उत्पन्न हो गये अवश्य, सनातनधर्म के नाम पर उनको हिन्दू-जनता पोस रही है अवश्य, पर ऐसी अवस्था वैदिक धर्म के कारण नहीं हुई, बल्कि वैदिक धर्म की शिक्षाओं को भूल जाने के कारण हुई है। देखिये, वेदार्थतत्वज्ञ महाराज मनु ने कैसा सुन्दर उपदेश इस सम्बन्ध में दिया है—

"पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकान्शठान्।
हैतुकान् बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत्॥"

अर्थात् पाखण्डी, वेदविरुद्ध कर्मों में निरत, बिडाले भगत, व्यर्थ के बकवादी, कुतर्की, बगुला-

भगत लोगों को वचन-मात्र से भी सत्कार न करे।

अतपास्त्वनधीयान: प्रतिग्रहरुचिर्द्विज.।

अम्भस्यश्म प्लवेनैव सह तेनैव मज्जति ॥

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य आदि तप से रहित बिना पढ़ा-लिखा, दान लेने में शौकीन नामधारी ब्राह्मण दानवता के साथ ही अधोगति को प्राप्त होता है—जैसे पत्थर की नाव मे बैठकर तैरने-वाला नाव के साथ ही समुद्र मे डूब जाता है।

अतएव देश, काल और सत्पात्र का विचार करके दिया हुआ दान ही सात्विक दान है और वैसा दान देना चाहिये, ऐसी सम्मति भगवान् कृष्ण ने भी गीता में दी है। निकम्मे सण्ड-मुसण्डों को दान देना कदापि कर्तव्य नहीं है। भूखे, पीड़ित आतुरों को भोजनादि देना गृहस्थों का धर्म ही ठहरा, अतएव भिखमंगी रही कहाँ ?

तीसरा आश्रम वानप्रस्थ आश्रम है। शास्त्रों मे विधान है कि मनुष्य धनादि के लोभ में पड़कर विषयासक्त न हो जाये और उसको सासारिक वैभव और प्रभुत्वका अभिमान न हो, इसलिए पचीस वर्ष से अधिक अपने जीवन का गृहस्थाश्रम में न बिताये। जब उसके पुत्र का पुत्र हो जाय तो मनुष्य घर छोड़कर जङ्गल में रहे। वहाँ गाँव या नगरभर के गृहस्थों के बालकों को पढ़ाये। तप और स्वाध्याय के योग्य बनाये, घरबार, धन-दौलत से कुछ भी सम्बन्ध न रखे। वृक्ष के नीचे रहकर जङ्गल के फल-फूल आदि खाये। इस आश्रम में फिर भी छोटाई-बड़ाई, ग़रीब-अमीर का कोई प्रश्न न रहा। राजा भी जङ्गल में रह कर ज़मीन पर सोकर तथा फल-मूल खाकर परमात्मचिन्तन और परोपकार में समय लगाये, रंक भी वैसा ही करे—सब बराबर! यह हुआ वैदिक साम्यवाद।

चतुर्थ अन्तिम आश्रम है—संन्यास-आश्रम। वित्तैषणा, पुत्रैषणा, लोकैषणा अर्थात् धन की इच्छा, पुत्र का मोह, ससार में नाम कमाने की ख्वाहिश-इन तीन प्रकार की एषणाओं से, जिनसे छुटकारा पाने के लिए वानप्रस्थ आश्रम में तैयारी की गयी थी और जिनपर विजय प्राप्त हो चुकी है, उनसे ऊपर उठकर मनुष्य अब परिव्राजक सन्यासी बने। वह अब किसी स्थान, परिवार या जातिविशेष का नहीं है। वह अब ससार का है, ससार के सभी जीव उसके कुटुम्ब हैं। उसका जीवन अब जगदीश्वर की सेवा मे अर्पित है। परमपिता उसका पिता, सभी जीव उसके भाई हैं।

समाजवाद की शिक्षा पाश्चात्य जगत् क्या देगा ? वैदिक धर्म मे व्यष्टि से समष्टि की ओर जाना प्रत्येक मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। प्रथम के तीन आश्रमों में धीरे-धीरे, किन्तु ठोस तरीके से तैयारियाँ करते हुए मनुष्य उस ओर पग उठाता हुआ सन्यास आश्रम में वहीं पर पहुँच जाता है।

जीवन की किसी भी परिस्थिति में रहकर हमें धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने मे कष्ट न हो, इसलिए ब्रह्मचर्य आश्रम में तप और त्याग का

अभ्यास डालकर हम अपने को योग्य विद्वान् बनाते हैं। यहाँ पर हमें अपने शरीर और आत्मा से ही सम्बन्ध रहता है, अकेले अपने को योग्य बनाते हैं, क्योंकि बिना अपनी तैयारी के दूसरों के लिए कुछ कर सकना असम्भव है। गृहस्थ आश्रम में स्त्री और लड़के रहते हैं। उनका भरणपोषण करना, उनको योग्य बनाना ही हमारा मुख्य ध्येय होता है। इस व्यष्टि-समष्टि की ओर कुछ आगे क़दम रखते हैं। वानप्रस्थ आश्रम में समष्टि की ओर हम और अधिक बढ़ते हैं। हमारा जीवन ग्राम, नगर या राष्ट्र के लिए हो जाता है। उसके बाद चतुर्थाश्रम-सन्यास में हम इस योग्य हो जाते हैं कि हम विश्व-बन्धु बनें। तब हम देश, जाति, राष्ट्र—इन सबके तग दायरों से निकलकर 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे" मित्र की दृष्टि से संसार के प्राणीमात्र को देखने लग जाते हैं॥

कांग्रेस-वर्किङ्ग कमेटी और सीमाप्रान्त का अध्यापक

—०:—

जनता फ्रॉन्टियर (सीमाप्रान्त) के अध्यापक अब्दुल्लाशाह के मामले को नहीं भूली होगी जिसका रामकौर नामक एक हिन्दू लड़की के अपहरण से सम्बन्ध था और जो सीमाप्रान्त की वर्तमान कांग्रेस-सरकार द्वारा अपनी जगह पर बहाल कर दिया गया है। कांग्रेस की वर्किङ्ग कमेटी की बम्बई की बैठक में इस विषय पर विचार हुआ था। वर्किङ्ग कमेटी ने प्रधान मन्त्री को केवल मामले की क़ानूनी जाँच-पड़ताल करने के लिए कहा है, मानो प्रमाणित अदालतों ने जो दण्ड दिया था और वह भी—पूरी-पूरी लम्बी सुनवाई के बाद—वह नाकाफ़ी था।

बहुत से देशों के पिछले इतिहासों में राजा लोग विजयी राजा के साथ अपनी बहन या पुत्री की शादी करके सुलह किया करते थे। यह सुलह पब्लिक के लिए बहुत अपमानजनक होती था, फिर भी लड़की की शादी की जाती थी और उसका किसी प्रकार अपमान और बेइज़्ज़ती नहीं की जाती थी। यह आशा की जाती है कि स्त्री-जाति के प्रति जो अपमान किया गया है उसकी उपेक्षा करना दो पार्टियों में सन्धि न स्थापित करने का ताज़ा विचार नहीं है।

❀ ❀ ❀

श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का

छोटा नागपुर का दौरा

श्रद्धानन्द ट्रस्ट की प्रगतियां

—*—

(विशेष संवाददाता द्वारा)

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि-सभा के कार्य-कर्ता प्रधान श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी गत कई मास में श्रद्धानन्द ट्रस्ट की ओर से जिसके स्वामी जी एक प्रतिष्ठित सदस्य हैं, कार्य का निरीक्षण करने के लिए इस प्रान्त में पधारे थे। ट्रस्ट के कार्य के अतिरिक्त उन्होंने प्रान्त में आर्यसमाज के कार्य का निरीक्षण तथा प्रचार भी किया। उनका यह दौरा बड़ा सफल रहा। स्थान-स्थान पर उनका स्वागत किया गया। राँची, लोहरदगा, डाल्टन गंज में उन्हें अभिनन्दन-पत्र भेंट किये गये। राँची के मेन्टल अस्पताल में तो उनके व्याख्यान का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। अस्पताल के अध्यक्ष मेजर धान जी आई० आई० ऐस० ने स्वामी जी का बड़ा उपकार माना था।

इधर छोटा नागपुर में श्रद्धानन्द ट्रस्ट की बड़ी उपयोगी प्रगतियाँ हैं और वे दिन पर दिन बढ़ रही हैं। राँची इन प्रगतियों का मुख्य केन्द्र है। यहाँ ट्रस्ट की 'श्रद्धानन्द हिन्दू अनाथ आश्रम, नामक एक उपयोगी संस्था काम कर रही है। स्थान बड़ी रमणीक जगह पर है। इस समय इस में आदि जातियों के १४ बालकों की रक्षा होती है। इसमें बुनना और सीना सिखाया जाता है। बाजा क्लास भी है।

राँची से २२ मील की दूरी पर खूण्टी नामक स्थान में ट्रस्ट का आश्रम है। उसमें २३ विद्यार्थी रहते हैं जो अन्य स्कूलों में पढ़ते हैं।

लोहरदगा से दो मील की दूरी पर जुरिया में ट्रस्ट का एक प्राइमरी स्कूल है। इसमें ४१ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

ट्रस्ट की ओर से इस समय ८ उपदेशक श्री० पं० धर्मवीर जी वेदालंकार की अध्यक्षता में काम रहे हैं। इनका प्रचार-क्षेत्र विशेषतया आदि जातियाँ हैं तथा ये सब उपदेशक एक दो को छोड़कर आदि जातियों के ही हैं, जिन्हें ट्रस्ट ने स्वयं तैयार किया है।

सन् ३६ में १२००, सन् ३७ में ८००, तथा इस वर्ष इस समय तक ३००, कुल २३०० व्यक्तियों की शुद्धि हुई है।

वस्तुत यहाँ ट्रस्ट की ओर से बहुत उत्तम कार्य हो रहा है और ईसाइयों से आदि जातियों की रक्षा हो रही है। इस कार्य का बड़ा श्रेय श्री० पं० धर्मवीर जी को है। इनके मिशन तथा उनसे यहाँ के सामाजिक जीवन में बड़ी प्रेरणा प्राप्त हुई है। इसलिए श्रद्धानन्द ट्रस्ट धन्यवाद का पात्र है।

विदेश-वार्ता

फ़ीजी

वैसे तो फ़ीजी द्वीप लगभग दो सौ पचास टापुओं में विभक्त है किन्तु भारतवासी अधिकतर दो ही टापुओं में रहते हैं और उनमें भी वीटालेवू नामक द्वीप में ही उनकी संख्या अधिक है। फ़ीजी की राजधानी सूवा में भी बहुत से भारतीय रहते हैं। दूसरा टापू वनुआलेवू है, वहाँ भी भारतीयों की संख्या कुछ कम नहीं है। फ़ीजी के सम्बन्ध में पूज्य पं० तोताराम जी सनाढ्य, श्री० सी० एफ० ऐंड्रूज़, पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी, आर्यमिशनरी जैमिनि महता तथा अन्य विद्वानों द्वारा पुस्तकों व समाचार-पत्रों में काफ़ी हलचल हो चुकी और हो रही है, इसलिए यह विषय तो मैं उन विद्वानों पर ही छोड़ता हूँ। मैं तो आर्यसमाज के विषय में ही अपने विचार प्रकट करना चाहता हूँ। आशा है, आर्य-जनता मेरे इन विचारों पर अपनी राय प्रकट कर कृतार्थ करेगी।

फ़ीजी ने आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए पहले-पहल स्वामी राममनोहरानन्द जी गये थे। उन्होंने खूब लगन के साथ २ वैदिकधर्म का प्रचार किया और आर्यसमाज के स्थापना के बाद ही आर्य-प्रतिनिधि-सभा की भी स्थापना की गयी। फिर उनके विचारों में परिवर्त्तन होने लगा और उन्होंने अपनी शादी करली। इसपर आर्य-जनता बिगड़ गयी और उक्त स्वामी जी ने आर्यसमाज से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। तब आर्य-प्रतिनिधि-सभा फ़ीजी ने संयुक्त प्रांतीय आर्य-प्रतिनिधि सभा को लिखा और वहाँ से पं० योगेन्द्रनारायण जी पथिक, जो अजीतमल जि० इटावा के रहनेवाले हैं, फ़ीजी में प्रचारार्थ भेजे गये। उन्होंने गुरुकुल का संचालन अपने हाथों में लिया और खूब लगन से

छोटा नागपुर में आर्यसमाज और श्रद्धानन्द ट्रस्ट पारस्परिक सहयोग से कार्य करते हैं। ईसाइयों का यहाँ कितना अधिक प्रभाव है यह लिखने की ज़रूरत नहीं। इतना ही लिख देना पर्याप्त है कि ईसाइयों की प्रगतियों की तुलना में समाज का यह प्रचार समुद्र में विन्दु के समान है, इसमें हमारा अभिप्राय कार्य को घटाकर प्रस्तुत करना नहीं, वरन् इस कार्य को बढ़ाये जाने की आवश्यकता अंकित करना है। यहाँ ईसाई लोग सन् १८४५ से काम कर रहे हैं। रोमन-कैथोलिक मिशन के ३ लाख से ऊपर तथा जर्मन-मिशन के १ लाख से ऊपर अनुयायी हैं। इंगलिश तथा अमेरिकन मिशन के अनुयायियों की संख्या भी बड़ी चढ़ी है। छोटा नागपुर में राँची, झरिया, जमशेदपुर (टाटानगर), डाल्टनगंज की आर्य-समाजें उत्तम अवस्था में हैं। लोहरदगा समाज का अभीतक अपना मन्दिर भी नहीं है।

राँची में आर्यसमाज और आर्यकुमार सभा में कुछ मतभेद था। जिसके सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा को प्रेरणा की गयी थी। यह झगड़ा भी श्री स्वामी जी के आने से शान्त हो गया।

—रघुनाथप्रसाद पाठक, मन्त्री।

कार्य किया। उन्हीं की प्रेरणा से श्री० पं० श्रीकृष्ण शर्मा जी आर्यमिशनरी फीजी गये, आपने नौ वर्ष तक द्वीप में रहकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। फिर आप भारत लौट आये और फिर फीजी जानेवाले थे, परन्तु वहाँ की सरकार ने आप को दुबारा फीजी आने से रोक दिया, और ऐसा करने का कारण पूछे जाने पर भी सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया। इसलिए प्रचार की कमी के कारण लोगों में शिथिलता आगयी है। आजकल भी फीजी में पं० योगेन्द्रनारायण जी, पं० अमीचन्द्र जी विद्यालंकार तथा ठा० कुन्दनसिंह जी विद्यालयों मे अध्यापन कार्य कर रहे हैं और उस कारण उन्हें प्रचार करने का अवकाश नहीं मिलता।

आर्य-प्रतिनिधि-सभा के प्रधान मन्त्री प० विष्णुदत्त जी खूब लगन से कार्य कर रहे हैं। परन्तु वहाँ की व्यवस्थापिका सभा के सदस्य होने के कारण आप को राजनैतिक विषयों पर काफी वादविवाद करना पड़ता है, अत: आपको पूरा समय नहीं मिलता।

मैं जब भारतवर्ष आनेवाला था तो वहाँ की आर्य जनता ने कहा था कि यदि सार्वदेशिक सभा कोई उपदेशक भेजदे तो अति उत्तम हो और उसके लिए एक पत्र श्री नारायण स्वामी जी महाराज के लिए भी दिया था, उनसे मिलकर भी मुझे इस बारे में कुछ परामर्श करना है, किन्हीं कारणवश मैं अभी तक उनके दर्शन न कर सका मैं अभी देहरादून मे हूँ, और यहाँ की आर्यसमाज में भी मैंने अपने विचार प्रकट किये थे। प्रो० महेन्द्रप्रताप जी, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० ने मुझे विश्वास दिलाया था कि सार्वदेशिक सभा के एक प्रचारक जो सिंगापुर गये हुए हैं, सम्भवत. वे वहाँ का कार्य पूरा कर फीजी भेज दिये जायें। जब उन्होंने यह आश्वासन दिलाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं तो आर्यसमाज की उन्नति में खुश हूँ। परन्तु फीजी में दो साल रह कर कोई प्रचारक महाशय अपना समय दे सकें तो बड़ी दया हो। यदि कोई योग्य संन्यासी जायें तो फीजी का बड़ा भारी उपकार हो सकता है, क्योंकि संन्यासी ही निर्द्वन्द्वतापूर्वक प्रचार-कार्य कर सकते हैं। जब आर्यसमाज का दावा है कि वह सारी दुनिया में आर्य विचारों का प्रचार करना चाहता है, तब उसी दुनिया में फीजीद्वीप भी तो है। साधु संन्यासियों को चाहिये कि दो-चार मास का समय फीजी द्वीप के लिए दें। यदि कोई महाशय आने जानेका मार्गव्यय लेकर फीजी जाने को तैयार हो तो मुझे लिखने की कृपा करें। फीजी आ० प्र० सभा को लिखूँगा। जानेवाले महाशय अपने विचार आर्यमित्र, आगरा या अन्य आर्य-समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित कर दें तो अच्छा हो।

मैंने अपने विचार प्रकट कर दिये हैं और इस समय फीजी द्वीप में प्रचारक की विशेष आवश्यकता है। आशा है, आर्य-विद्वान् मेरी तुच्छ सम्मति पर विचारकर फीजी मे वैदिकधर्म प्रचार की कोई योजना तैयार करेंगे।

हरदयाल शर्मा,
प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा, फीजी
c/o प्रो० महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी,
डी० ए० वी० कालेज,
देहरादून।

मद्रास-प्रचार

❀ ❀ ❀

(जून)

प्र० स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने इस मास बंगलौर शहर, बँगलौर छावनी, कंगेरी, श्रीरामपुर, चुंचन् कट्टे, होनगहल्ली ग्राम होनगोन् हल्ली ग्राम (सयछत्रा), मावल्ली ग्राम इत्यादि में प्रचार तथा दलितोद्धार कार्य किया। यह प्रसन्नता की बात है कि जनता में वैदिक संस्कारों के प्रति प्रेम बढ़ता जारहा है और दूर दूर स्थानों से प्रतिष्ठित सज्जन सभा के प्रचारक महोदय को संस्कारार्थ निमन्त्रित करने लगे हैं। इस मास १ नामकरण-संस्कार, १ मुण्डन-संस्कार, १ गृहप्रवेश और ३ विवाह-संस्कार स्नातक जी ने वैदिक रीति से व्याख्या-सहित कराये जिन का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। तीनों विवाह-संस्कार, जिनमें से एक बँगलौर छावनी और २ बंगलौर से लगभग ५०-६० मील दूरस्थ होनगहल्ल तथा सोमाहल्ली नामक ग्रामों में कराये गये, विशेष महत्वपूर्ण थे। ६ जून को बँगलौर छावनी में हैदराबाद के श्रीयुत चतुष्कोटि वर्मा की शिक्षिता पुत्री श्रीमती सरस्वती देवी का डा० गोपालन् B. A., M. B. B S. के साथ विवाह संस्कार स्नातक जी ने कर्नाटकी भाषा में व्याख्यासहित कराया। वर के माता-पिता तथा प्रायः अन्य सब सम्बन्धी कट्टर पौराणिक थे, किन्तु उन सबने वैदिक-विवाह-पद्धति को बहुत ही पसन्द किया। १६ जून को होनगहल्ली नामक ग्राम में वक्कलिगर जाति के गुरु श्री गुरु महालिङ्गानन्द की शिक्षिता पुत्री का, जो अध्यापिका थी, विवाह स्नातक जी ने व्याख्या सहित कराया, जिसे देखने के लिए लिङ्गायत् सम्प्रदाय के पुरोहित आदि भी सम्मिलित हुए थे। वैदिक विवाह-पद्धति को देख तथा उसकी व्याख्या को सुनकर उन सबने मुक्तकण्ठ से उसकी प्रशंसा की। गुरु महालिङ्गानन्द जी पर तो इसका इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने संस्कार-विधि के कर्नाटकी भाषानुवाद के प्रकाशनार्थं उदार आर्थिक सहायता का वचन दिया है, जिसे शीघ्र समाप्त करने का प्रयत्न हो रहा है।

तीसरा विवाह चुंचन कट्टे नामक तीर्थस्थल में वक्कलिगर जाति के प्रसिद्ध नेता गुरुकुल अनाथालय के संस्थापक श्रीयुत् पुट्टय्या जी की सुपुत्री श्रीमती शारदा देवी (आयु १६ वर्ष) का जिन्होंने इस वर्ष (Intermediate) की परीक्षा दी है श्रीयुत रामय्या B. A (Hons) के साथ होनगोनहल्ली नामक ग्राम में २० ता० को बड़ी धूमधाम से हुआ। सैकड़ों लोग दूर-दूरसे इस आदर्श वैदिक विवाह को देखने के लिए आये थे और वक्कलिंगर जाति के गुरु स्वामी शिवानन्द जी आदि भी पधारे थे। विवाह-संस्कार तथा उसकी व्याख्या को सुनकर सब बड़े प्रभावित हुए और स्वामी शिवा-

नन्द जी ने अपनी अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुए जनता से इन वैदिक संस्कारों के अपनाने की प्रबल प्रेरणा की। रात को स्नातक जी तथा चन्नपट्टण आर्यसमाज के मन्त्री श्रीयुत आर्यमूर्ति जी के वैदिक विवाह-पद्धति, गृहस्थधर्म आदि विषयपर प्रभावशाली भाषण हुए। १० जून को श्रीरामपुर में (मैसूर से लगभग ५० मील की दूरी पर) भक्तलिंगर सम्मेलन हुआ जिसमें स्नातक जी ने सम्मिलित होकर प्रार्थना सहित ओ३म् ध्वजारोहण कराया और वैदिक संस्कार, वैदिक धर्म, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आदि को अपनाने के लिए जनता को विशेष रूप से प्रेरित किया। सम्मेलन के अध्यक्ष श्रीयुत शामल्ला गौड़ ने भी अपने अध्यक्ष भाषण में वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज को अधिकाधिक अपनाने के लिए जनताको प्रेरित किया, जिस के कारण ही उन्होंने कहा कि समाज का उद्धार हो सकता है, अन्यथा नहीं।

"वैदिक धर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी" नामक स्नातक जी की पुस्तक का कर्नाटकी अनुवाद इस मास प्रकाशित हुआ है, जिससे विद्यार्थियों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ विशेष सहायता मिलेगी। बंगलौर में निवास के दिनों में स्नातक जी अनेक सज्जनों को संस्कृत, वेद, उपनिषद् संस्कार-विधि आदि पढ़ाते तथा मावल्ली आदि ग्रामों में जा कर हरिजनोद्धार कार्य करते रहे।

साहित्य-समीक्षा

आर्य-जीवन और गृहस्थ-धर्म

लेखक—प्रो० रघुनाथप्रसाद पाठक

प्रकाशक—आर्य-साहित्य मण्डल लिमिटेड, अजमेर। मूल्य ।=)

यह पुस्तक मण्डल ने आर्य-प्रतिनिधि-सभा, संयुक्तप्रान्त की स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष में प्रकाशित की है। पुस्तक में आर्य-जीवन तथा गृहस्थोपयोगी प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की गई है। विषय के स्पष्टीकरण के लिए विविध शिक्षाप्रद आख्यायिकाएँ और उदाहरण भी दिये गये हैं। यह पुस्तक लेखक के शब्दों में मुख्यतया श्री पूज्य महात्मा नारायणस्वामीजी महाराज के प्रवचनों के आधार पर लिखी गई है। अन्य भी महानुभावों तथा महात्मा गाँधी प्रभृति महानुभावों के विचारों से पुस्तक के सम्पादन में सहायता ली गई है। सहयोगी 'हिन्दू' के शब्दों में यह पुस्तक प्रत्येक आर्य के लिए उपहार योग्य है। यह पुस्तक इस योग्य है कि प्रत्येक आर्य नर, नारी युवक और युवती के हाथ में पहुँचे। गृहस्थ धर्म-सम्बन्धी शायद ही कोई विषय हो जिस पर इस पुस्तक में विचार न किया गया हो। वर्तमान में विवाह इत्यादि के सम्बन्ध में नई रोशनी की नवयुवतियों और नवयुवकों की जो भ्रमपूर्ण धारणाएँ हैं उनका तो इसमें बड़ा ही उत्तम खण्डन प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक शारदा मन्दिर लिमिटेड, नई सड़क तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से भी मिल सकती है।

शारदा ऐक्ट

लेखक—देशभक्त श्री कुँ० चाँदकरण शारदा
वकील अजमेर

मिलने का पता—"शारदा भवन" दौलतबाग, अजमेर। मूल्य ।)

इस पुस्तकमें शारदा ऐक्ट, उसका संक्षिप्त इतिहास

और अदालतों की उसपर कतिपय व्यवस्थाएँ (Rulings) दी गई हैं। अभी हाल में इस ऐक्ट में जो संशोधन हुए हैं वे भी हिन्दी-अनुवाद-सहित देकर ऐक्ट पूर्व तथा वर्तमान रूपमें प्रस्तुत किया गया है। ऐक्ट के प्रचलन के क़ायदे और तरीक़ों का भी निर्देश किया गया है। सारांश, ऐक्ट-सम्बन्धी ज़रूरी-ज़रूरी लगभग सभी बातें पुस्तक में मिल जाती हैं। ऐक्ट से लाभ उठानेवालों को इससे काफ़ी मदद मिल सकती है। बाल-विवाह की हानियों पर भी विचार किया गया है। ऐक्ट के निर्माता श्री दीवान बहादुर हरबिलास जी शारदा ने पुस्तक की भूमिका लिखी है।

"शारदा मन्दिर" लिमिटेड नई सड़क, देहली के नये उपयोगी प्रकाशन

(१) "बच्चों के नाटक" इस पुस्तक में ११-१२ वर्ष की आयु के बच्चों को उभारने के लिए छोटे-छोटे नाटक, जिनको वह घरों में तथा पाठशालाओं में खेल सकते हैं, दिये गये हैं। इन नाटकों के विषय "साधारण जीवन' से लिए गए हैं और उनको इतना रोचक तथा शिक्षाप्रद बनाया गया है कि बच्चे उनको चाव से पढ़ते हैं। मूल्य ॥)

(२) सहेली—लड़कियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। लड़कियों के जानने योग्य सभी बातों को सरल भाषा में समझाया गया है। यह पाठ्य-पुस्तक बनने योग्य है इस पुस्तक को कन्या पाठशालाओं में स्थान मिलना चाहिये। मूल्य ॥=)

(३) सखा की सीख, सखी की सीख } यह दो परमोपयोगी पुस्तकें लड़के-लड़कियों के लिए लिखी गई हैं ॥), ॥=)



आर्य-कांग्रेस की आवश्यकता

—+—

जब से हैदराबाद की समस्या हमारे सामने उपस्थित हुई है, हमें दिनों-दिन आर्य-कांग्रेस के अधिवेशन की आवश्यकता अनुभव होने लगी है। हम यह महसूस करने लगे हैं कि किसी निश्चित स्थान पर आर्यसमाज की सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया जाय और हम आर्य-जनता के सम्मुख एक ऐसा अवसर उपस्थित करें, जहाँ उसे हैदराबाद की समस्या का वास्तविक स्वरूप देखने को मिल सके। इस समय हैदराबाद में आर्यसमाज पर जो कुछ बीत रही है उसका रोमाञ्चकारी वर्णन समाचार-पत्रों में पाठकों को समय समय पर मिल रहा है। हैदराबाद और गुलबर्गा मे भयानक क़त्ल के अभियोग आर्यों के विरुद्ध चलाए जा रहे हैं। स्थान-स्थान पर साधारण सी बातों पर आर्यों को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया जाता है और बिना वारण्ट के उनको बन्दीगृह में रखकर उनके साथ घोरतम अत्याचार किया जाता है। आर्यसमाजियों को अपने साधारण साप्ताहिक अधिवेशन करने अथवा वार्षिक

उत्सव मनाने अथवा हवन-कुण्ड आदि की स्थापना करने या ओ३म् का झण्डा अपने मन्दिरों पर फहराने के मार्ग में निज़ाम-सरकार की तरफ़ से रुकावटें डाली जाती हैं। ८५ प्रतिशत हिन्दुओं की आबादी होते हुए भी हिन्दुओं की करुणाजनक दशा आर्यसमाजियों से नहीं देखी जाती। आर्यसमाज केवल इसीलिए निज़ाम-सरकार की आँखों में काँटा सिद्ध हो रहा है, क्योंकि उसे अपने धार्मिक स्वत्वों का सदा ख्याल रहता है।

जो क़त्ल के अभियोग हैदराबाद तथा गुलबर्गा में चल रहे हैं, उनमें मुलज़िमों की क़ानूनी सहायता के लिए बम्बई के प्रसिद्ध वकील श्रीमान नरीमैन को बुलाया गया था, परन्तु निज़ाम-सरकार ने उनका दाखिला बन्द करके वहाँ के आर्य और हिन्दुओं को अत्यन्त निस्सहाय बना दिया है। हमारे कर्मवीर भाई बंसीलाल जी वकील तथा उनके सहकारी दूसरे आर्य-सज्जन दिन-रात इस यत्न में हैं कि अभियोग में पीड़ित भाइयों की पूरी सहायता की जाय। सार्वदेशिक सभा ने उनको अपने सहयोग का पूरा आश्वासन दे दिया है। उनकी सहायता के लिए बड़े से बड़े फौजदारी वकीलों का प्रबन्ध किया जा रहा है। हमें आर्य-जनता से इस बात का विश्वास है कि वह इस नाजुक समय में हैदराबाद के आर्य-भाइयों को निस्सहाय न रहने देगी और धन, जन से जो भी सहायता सम्भव हो सके उनको देने के लिए हर समय तैयार रहेगी।

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री० घनश्यामसिंह जी गुप्त आर्य-रक्षा-समिति के सहायक मन्त्री शिवचन्द्र जी गुप्त को साथ लेकर हैदराबाद की स्थिति को अपनी आँखों से अवलोकन करने के लिए वहाँ पहुँच गये हैं। उनकी उपस्थिति से आर्यवीरों को अवश्य ढाढ़स बँधेगा। श्री प्रधान जी का यह विचार है कि निज़ाम गवर्नमेन्ट के उच्चतम कर्मचारियों से मिलकर वे उन्हें यह स्पष्ट बतला दें कि आर्यसमाज अपने धार्मिक स्वत्वों की रक्षा करने के लिए हर प्रकार के बलिदान के लिए तैयार है। अच्छा होगा, यदि निज़ाम-सरकार आर्यसमाज को सम्मानपूर्वक जीने दे।

परन्तु यदि निज़ाम-गवर्नमेन्ट को आर्यसमाज की परीक्षा ही करनी अभीष्ट है तो उसके लिए आर्य-जनता को तैयार रहना चाहिये। इसके निमित्त सार्वदेशिक सभा ने यह आयोजना तय्यार की है कि मध्यप्रान्त या महाराष्ट्र के किसी ऐसे स्थान पर, जो हैदराबाद के राज्य की सीमा पर हो, एक बृहद् आर्य-सम्मेलन अथवा कांग्रेस की जाय, जहाँ भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के आर्यसमाजियों को बुलाकर उनके सम्मुख हैदराबाद-राज्य में आर्यसमाज पर होते हुए अत्याचारों का नग्न स्वरूप पेश किया जाय और एक ऐसा ज़बरदस्त आन्दोलन खड़ा किया जाय जो आर्यसमाज के धार्मिक स्वत्वों को छीननेवालों के लिए हमेशा के लिए एक भारी शिक्षा का काम दे सके।

आर्य-कांग्रेस का स्थान तथा तिथि अभी तक निश्चित नहीं हुई है। इसके लिए म० शिवचन्द्रजी को विशेष रूप से भेजा गया है कि वह हैदराबाद

के आर्य-भाइयों से मिलकर उपयुक्त स्थान का निर्णय करें और उसके पश्चात् तिथि का निर्णय करके काम्र स की प्रारम्भिक तैयारी मे लग जायं। सार्वदेशिक सभा आर्य-जनताको काम्र स के सम्बन्ध मे सर्व वृत्तान्त गश्ती चिट्ठियों तथा समाचार-पत्रों द्वारा पहुँचाती रहेगी । आर्य-जनता से हमारा केवल इतना निवेदन है कि वह समय आने पर काम्र स के स्थान की ओर धर्म-यात्रा करने के लिए तैयार रहें ।

सार्वभौम उपदेशक महामंडल

कुछ दिन हुए श्री प० सुरेन्द्र जी शर्मा गौड त्रिशास्त्रतीर्थ के उद्योग से देहली नगर में सार्वभौम महामण्डल' तथा सार्वभौम धर्मार्थ महासभा' की नींव रखी गई। दीवान हाल के विशाल भवन में बाहर से आये हुए १०९ उपदेशकों ने २१ दिवस निरन्तर बैठकर बड़े-बड़े गम्भीर प्रश्नों पर गम्भीर दृष्टि से विचार करके इन दो भारी भरकम नामवाली सभाओं की स्थापना करके जनता का जो उपकार किया है उसको आनेवाली नस्लें याद करेगी। अभी तक हमारे देश में सार्वभौम संस्थाओं की स्थापना नहीं थी, यद्यपि संस्थाओं की कोई कमी नहीं थी। अब सार्वभौम संस्थाओं के उपस्थित हो जाने पर कोई यह न कह सकेगा कि हम लोग संकुचित दायरे में रहनेवाले हैं। सार्वभौम उपदेशक महामण्डल की स्थापना में एक युक्ति यह भी दी जाती है कि वर्तमान युग संगठन का युग है। अब धोबी, नाई, चमार, भंगी, तांगेवाले और मोटरवाले सभी अपनी अपनी यूनीयन (संघ) बनाकर अपने अपने स्वत्वों की रक्षा कर रहे हैं तब क्या उपदेशक ही ऐसे गए-गुजरे हैं जो अपने हितों और स्वत्वों की रक्षा नहीं कर सकते। इसी गम्भीर विचार को लेकर हमारे १०९ उपदेशक महानुभावों ने कमर कसकर ऐसी विशाल सार्वभौम आयोजना को ३ दिन के निरन्तर परिश्रम से हमारे सम्मुख उपस्थित कर दिया है। ईश्वर करे इस आयोजना को सफलता प्राप्त हो, परन्तु क्या हम यह पूछने की धृष्टता कर सकते हैं कि उपदेशक महोदयों को धोबी, नाई, चमार भंगी की सीमा पर उतरने की क्या आवश्यकता है? सच्चा उपदेशक तो वह है, जो अपने हितों को छोड़कर जनता के हितों की रक्षा के लिए उतारू होता है। वह आत्म समर्पण के भाव को लेकर अपने आपको भूलकर दूसरों की सेवा में तल्लीन हो जाता है। ऐसे उपदेशकों के लिए जन-साधारण के समान लौकिक संघों की स्थापना करना क्या अर्थ रखता है?

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्त करण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य।—)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्च पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर शृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश ≤) ≤)॥ ≤)॥, ≤)॥ ≤)॥ —)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीक़त ।॥≠) सत्य-निर्णय १।)
(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।≠)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नवयुवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य ।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य परिवार में रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥≈)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमे दी गई हैं। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य ।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—प० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक मे वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन सक्षेप में बहुत ओजस्विनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well – Bound – By Bhumanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well-bound	1/4/
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ॥।)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—— ❀ ——

सार्वदेशिक मे विज्ञापन छपाई
के
रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम — १।) प्रति सैकड़ा
)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

केन्द्रीय अनाथालय, रावी रोड, लाहौर की आवश्यकताएँ

(ले० श्री ला० बोसाराम, रिटायर्ड स्टोर कीपर, N W R)

(मन्त्री केन्द्रीय अनाथालय)

(१) इस समय इस अनाथालय मे १७१ बालक बालिकाएं हैं जिनका न केवल पालन पोषण किया जाता है बल्कि उनको धार्मिक तथा सांसारिक शिक्षा देकर अच्छा नागरिक बनाया जाता है । उनके लिए वस्त्रो की आवश्यकता है । दानी सज्जन जहां अपने बालको के लिये वस्त्र बनवाएं वहां इन बालको का भी अवश्य ध्यान रखें ।

(२) वस्त्रो के अतिरिक्त भोजन के लिये सर्व प्रकारके खाद्यपदार्थ घृतादि की आवश्यकता है । दानी सज्जन घृतादि भेजें अथवा उसके लिये दान देकर कृतार्थ करें ।

(३) अनाथालय का व्यय (१५००) रु० मासिक है । वह दानी महाशयों की कृपा से पूरा होगा इस लिये प्रत्येक नर नारी दान देकर इस व्यय को पूरा करें ।

(४) बालको के रहने के लिये स्थान पर्य्याप्त है परन्तु रोगी गृह कोई नहीं है इन मे से किसी न किसी का किसी समय रोगी होना स्वाभाविक है अत. यदि कोई दानी कमरा बनवाना चाहे तो वह बनवाने की कृपा करें ताकि वह कष्ट दूर हो जावे ।

(५) इस अनाथालय के प्रबन्ध के विषय मे यह लिखना पर्याप्त होगा कि सरकार ने जो भगाए गए बालक पकड़े थे और जिनके सम्बधियो का पता नही लगा वे सब बालक इसी अनाथालय मे रखे है वा जो अन्य असहाय बालक सरकार के पास आते हैं वे भी इस अनाथालय मे भेजे जाते है । यह अनाथालय सरकार की तरफसे Registered भी है इसके हिसाब किताब बराबर रखे और Audit किए जाते है ।

(६) अनाथालय के बालक कभी बाहर मांगने के लिए नही भेजे जाते हैं । उनके पढ़ाने के लिये टैकनीकल स्कूल भी है जो सरकार से स्वीकृत है । इसमे बाहर के बालक भी मुफ्त पढ़ाये जाते हैं ।

(७) इसके अधिकारी इस समय निम्न सज्जन हैं —

प्रधान श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

उप प्रधान श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी, उप प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

„ श्री पं० ठाकुरदत्त शास्त्री मुलतानी, लाहौर

„ श्री डाक्टर गणेशीलाल जी M B , B S

कोषाध्यक्ष लाला विज्ञानशील जी B A, लाहौर ।

अंत मे नम्र निवेदन है कि प्रत्येक धर्मप्रेमी सज्जन अपनी शक्त्यनुसार कुछ न कुछ दान देकर सभा का हाथ बटावें और पुण्य के भागी बनें । जो धन इस अनाथालय मे आता है उस की रसीद तत्काल भेजी जाती है ।

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है । इसमें आर्यसमाज के दश नियमों को विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≥)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।=)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।।।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफ़ाई, काग़ज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।=)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श**— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ५०० मूल्य १॥

(१२) **भजन-भास्कर**— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनो और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध ७ संगीतज्ञो कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं संग्रहकर्त्ता श्री प० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दों की बढती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारों मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि में छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश**— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

	अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४) वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	=)
,, २५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	=
(१५) वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2-8-0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation such products are given out which are bactericidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments'

Ganganath Jha

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N. R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture —

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As 10, Reduced price As. 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8 Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya —price As 4, bound and As 3/- unbound

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M A L. L. B —price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली ।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १२ | श्रावण १९९५ | अगस्त १९३८ ई०] | [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क ६

* वेद की शिक्षाएँ *

यत्र सोमः सदमित् तत्र भद्रम् । अथर्व० ७-१८-२

जहाँ परमेश्वर की ज्योति है वहाँ सदा कल्याण ही है ।

Peace and Prosperity reign over there where God—our Lord shed His Light and Love

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम् । ऋग० ८-१-५

हे ईश्वर ! मैं तुझे किसी कीमत पर भी न छोड़ूँ ।

May we ever stick to Thee O Lord ! and never desert Thee at any cost !

अध्यात्म धारा

क्षमा धर्म

दैनिक जीवन में व्यवहार योग्य श्रेष्ठ बातें

—※—

मनुष्य का स्वभाव भूल करने का है। मनुष्य में मानवी और दैवी—दोनो ही प्रकारके गुण होते हैं। यह होते हुए भी उसका मार्ग भूलों और ठोकरों में से होकर गुजरता है। ससार में कोई भी व्यक्ति पूर्ण नहीं है।

संसार के बडे-से-बडे और पूज्य मनुष्य भी त्रुटियों से खाली नहीं होते हैं। कहावत है कि 'हाथी का पैर भी फिसलता है।' पूर्ण पुरुष तो केवल एक परमात्मा है।

हम सब गलतियाँ करते हैं, परन्तु सचमुच बडा वही होता है जो अपनी गलतियों को स्वीकार करता और दूसरोंके प्रति विनम्र होता है। हम आत्म-प्रवंचना के वशीभूत हो दूसरों की गलतियों को क्षमा नहीं करते हैं। हम भूल जाते हैं कि यदि हम भी उन्हीं अवस्थाओं मे ग्रस्त होते तो हम भी वैसी ही गलती करते।

मनुष्य कभी-कभी अज्ञान-वश गलती करते हैं। उन्हें पता नहीं होता कि क्या सही है और क्या गलत है? निष्पक्ष भाव से देखने से उनके कार्य अनैतिक की अपेक्षा नैतिकता-शून्य होते हैं। वे पागलों और मूर्खों की श्रेणी के व्यक्ति होते हैं, परन्तु बुद्धिमान लोग सही और गलत बात को जानते होते हैं। नैतिक दृष्टि से वे सचेत होते हैं, इसलिए वे अपने कार्यों के लिए जिम्मेवार होते हैं, क्योंकि पसन्दगी या ना-पसन्दगी की उन्हें आजादी होती है।

परन्तु कभी-कभी अवाञ्छनीय पुराने अभ्यास या आदत के कारण मनुष्य फिसल जाता है। उसका हृदय उसे रोकता है, परन्तु शरीर नहीं मानता है। आदतों की ताकत का मुकाबला बडा कठिन होता है। पवित्र उद्देश्यों और इरादो के होते हुए भी वह मनुष्य हवा के झोंके के सामने तिनके के समान होता है।

इस सब पर विचार करते हुए हमे दूसरों के प्रति धैर्यवान् होना चाहिये। गिरा देना आसान है परन्तु खडा करना बडा कठिन है। हमारे जीवन का नियम क्षमा करना ही होना चाहिये, क्योंकि गलती करना मानवी तथा क्षमा करना दैवी होता है। क्षमा के आचरण से संसार अच्छा और सुखी बनेगा और असहिष्णुता और अधैर्य कम होगा।

महर्षि दयानन्द की जीवनी को पढने पर उनके जीवन मे क्षमाशीलता के अनेक उत्तम उदाहरण मिलते हैं। अपने हत्यारे को क्षमा कर देना क्या ऋषि के जीवन में कम दिव्य बात थी? इसी प्रकार संसार के अन्य महापुरुषों में

हम इस गुण को मूर्तिमान देखते हैं। बाइबिल में एक स्त्री की कहानी है। व्यभिचार के दोष में वह पकड़ी जाकर दण्ड के लिए ईसा के सामने प्रस्तुत की गयी। ईसा ने अपने असीम प्रेम और दयाभाव से उसे क्षमा कर दिया और आगे से ग़लती न करने का प्रायश्चित का वचन लेकर उसे मुक्त कर दिया। जो लोग उसे पत्थरों से मार डालना चाहते थे, उन्हें ईसा ने कहा, "जिस व्यक्ति ने कोई ग़लती न की हो वह पहले इस स्त्री को पत्थर मारे।" इसपर वे सब बगलें झाकने लग गए और कोई भी पत्थर मारने के लिए तैयार न हुआ।

गिराने अथवा मिटाने से काम नहीं बनता है। यह तो हानि करके अपमान करने जैसी बात है। यह अपराधी और आरोपी दोनों को ही गिरानेवाली होती है। भूल करनेवालों को गिराने या मिटाने की अपेक्षा सहानुभूति और सदुपदेश से ऊँचा उठाना चाहिये।

क्षमाशीलता एक बहुमूल्य गुण है, जिसका आचरण हमें प्रति दिन के व्यवहार में करना चाहिये। यदि हम दूसरों को क्षमा करना नहीं जानते हैं तो हम कैसे अपनी भूलों के लिए दूसरों से क्षमा की आशा कर सकते हैं?

क्षमा न करने की प्रवृत्ति घृणा से पैदा होती है और घृणा एक प्रकार का जहर होता है, जो घृणा करनेवाले को उस व्यक्ति से ज्यादा हानि पहुँचाता है, जिसके प्रति घृणा की जाती है। प्रेम और घृणा दोनों लौटकर उसी आदमी के पास पहुँच जाते हैं जिससे ये प्रवाहित होते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है।

यदि हम प्रेम करेंगे तो बदले में हमें प्रेम मिलेगा। यदि हम घृणा और द्वेष से भरे हुए हैं तो जिस किसीके सम्पर्क में हम आयेंगे वही हम से घृणा करेगा। महामुनि पतञ्जलि का कथन है, "जीवन में अहिंसा धारण कर लेने पर मनुष्य के शत्रु नष्ट हो जाते हैं।"

जितना ही हम जीवन में क्षमाशीलता और प्रेम धारण करेंगे उतने ही हम अहिंसक और दिव्य बनेंगे।

यदि आदमी हमसे द्वेष करते हैं तो कोई वजह नहीं हम भी उनसे द्वेष करने लग जायँ। बदला या प्रतिशोध तो जाहिलों और बर्बरों की चीज होती है—सभ्यों की नहीं। सभ्यता का तक़ाजा यही है कि मनुष्य ऊंचे आध्यात्मिक नियमों और धर्मों का आचरण करे। इसीलिए कहा गया है—प्रेम और क्षमा से घृणा को और सज्जनता से दुष्टता को जीतो।

एक बार एक महात्मा एक नदी के किनारे जा रहे थे। उन्होंने नदी की धारा में एक बिच्छू को बहते हुए देखा। उन्हें उसकी दशापर दया आयी और उसे पानी में से निकाल लिया। बिच्छू ने महात्मा को काटा। इस प्रकार महात्माने तीन बार उसे बचाने की कोशिश की और तीनों ही बार बिच्छू ने उन्हें काटा और पानी में चला गया। अन्त में तंग आकर महात्मा ने उस दुष्ट बिच्छू को उसके भाग्य पर छोड़ देने का इरादा किया। ज्योंही उन्होंने यह इरादा किया त्योंही उनके हृदय

में प्रेरणा हुई, "बिच्छू का स्वभाव काटना है। तुम्हारा कर्तव्य उसे प्रेम तथा क्षमा करना ही है।"

प्रेम और क्षमाशीलता साधु, महात्माओं और विद्वानों के मुख्य गुण होते हैं। भक्ति की एक पुस्तक में एक बड़ी उत्तम शिक्षा आती है। हम सबको उस शिक्षा को अपने दैनिक व्यवहार में चरितार्थ करना चाहिये। शिक्षा यह है कि मनुष्य को घास के डण्ठल के समान नम्र और वृक्ष के समान धैर्यवान् और क्षमाशील होना चाहिये। जो आदमी हमारे मान और सेवा के पात्र हैं उनका हमें मान करना चाहिये और इस बात का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिये। परमात्मा की सेवा और उसे प्रसन्न करने का यही सर्वोत्तम मार्ग है। यह शिक्षा नम्रता, धैर्य, क्षमा और निष्काम सेवा की मनुष्य से माँग करती है। यदि हम इस शिक्षा पर आचरण करें तो हम में पवित्रता बढ़ सकती है।

प्रश्न होसकता है कि न्याय और दण्ड का क्षमा के सामने क्या अर्थ रहता है। न्याय और दण्ड का स्थान है, परन्तु वह क्षमा के स्थान से बिलकुल अलग है। न्याय, दण्ड और क्षमा का निर्णय अपराध के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में होता है। उनके लिए एक जैसा नियम नहीं होता है और न हो सकता है।

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

—❀❀❀—

Heaven never helps the man who will not act

अकर्मण्य व्यक्ति की परमात्मा कभी मदद नहीं करता है।

❀ ❀ ❀

Action may not always bring happiness but there is no happiness without Action

यह निश्चित नहीं कि कर्म से सदैव सुख की प्राप्ति हो, परन्तु कर्म के बिना सुख कभी नहीं मिलता, यह निश्चित है।

❀ ❀ ❀

Our grand business is not to see what lies dimly at a distance, but to do what lies clearly at hand

हमारा बड़ा काय्य यह देखना नहीं है कि फासले पर क्या धुंधली चीज पड़ी हुई है, वरन् जो साफ तौर पर हमारे पास पड़ी हुई है, उसका करना हमारा बड़ा कार्य है।

❀ ❀ ❀

Only actions give to life its strength as only moderation gives it its charm

केवल कर्म ही जीवन को उसका बल प्रदान करते हैं, जैसे केवल सयम उसे उसका सौन्दर्य प्रदान करता है।

❀ ❀ ❀

Every noble activity makes rooms for itself

प्रत्येक उच्च कार्य अपने लिए स्थान बना लेता है।

❀ ❀ ❀

The actions of men are like the index of a book, they point out what is most remarkable in them

मनुष्यों के कर्म, पुस्तक की विषय-सूची के समान होते हैं। वे बतलाते हैं कि मनुष्यों में सबसे मुख्य चीज क्या है।

❀ ❀ ❀

Happiness is in action and every power is intended for action Human happiness, therefore, can only be complete as all the powers have their full and legitimate play

कर्म में ही प्रसन्नता होती है और प्रत्येक शक्ति कर्म के लिए ही होती है। मनुष्य का सुख केवल तभी पूरा हो सकता है जब उसकी तमाम शक्तियों को कार्य करने का पूरा पूरा और उचित अवसर मिले।

❀ ❀ ❀

वैदिक वर्णव्यवस्था और साम्यवाद

[ले० श्री अवध बिहारीलाल एम० ए०]

*

योरोप की देखादेखी भारत में साम्यवाद के प्रचार करने की कोशिश की जा रही है और लोग लाठी के हाथ सब को एक सतह में लाने की सोच रहे हैं। इसी विचार से वैदिक वर्ण-व्यवस्था को मिटाने की सोची जा रही है और चोटी-जनेऊ आदि चिह्नों को भी असमानता के द्योतक समझकर हटाने की धुन में बहुतेरे नौनिहाल लगे हैं। अब विचारणीय यह है कि जैसी समानता लाने का विचार किया जा रहा है वह त्रिकाल में भी कभी सम्भव है या नहीं। एक मनुष्य अध्यवसायशील और परमपुरुषार्थी है वह परिश्रम करके अत्यधिक धन पैदा करेगा ही, दूसरा निकम्मा-आलसी अवश्य निर्धन रहेगा। यह परमात्मा का अटल विधान है। एक मनुष्य सयम-व्यायाम आदि करेगा तो अपने शरीर को अवश्य बलवान् कर लेगा, दूसरा कुसयंमी-व्यभिचारी होगा वो रोगी और दुर्बल अवश्य होगा। इन दोनों को बराबर करने की क्षमता किसमे है ? एक मनुष्य परिश्रमशीलता से विद्योपार्जन करेगा विद्वान् बन ही जायगा। पुरुषार्थहीन अतएव विद्याविरहित मनुष्य उसको विद्या-प्राप्ति से रोक अपने समान मूर्ख बनाकर समानता स्थापित कैसे कर सकेगा, यह बात समझ सकना कठिन है। प्रत्येक कर्म का फल होता ही है—कर्म-फल यथायोग्य देना ही परमात्मा की न्यायकारिता है और इस विधि-विधान में कर्मशीलता और अकर्मण्यता के कारण धनी, निर्धन, सबल, दुर्बल विद्वान्, मूर्ख आदि का होना नितान्त अनिवार्य है। ऐसे सब प्रकार के लोगों को अपनी योग्यता के अनुसार श्रेणियों में विभक्त करना ही वर्णव्यवस्था है और यह स्वाभाविक और सृष्टि-नियम के सर्वथा अनुकूल है, और यदि किसी चिह्न विशेष से हम उनको आसानी से पहचान सकें तो ऐसे चिह्न बुरे किंवा निरर्थक नहीं है।

हाँ, यदि इस प्रकार की व्यवस्था प्रचलित हो जाय कि पुरुषार्थ और कर्म सिद्धान्त का कुछ भी विचार न किया जाय, बल्कि ऐसा नियम हो कि विद्वान् का लड़का ही पढ़ने का अधिकारी हो, मूर्ख का नहीं, धनी का पुत्र ही धन कमा सके, निर्धन के पुत्र को धन प्राप्त करने का हक़ हासिल न हो, और कोई मनुष्य अपने नाम ही के कारण धन, बल विद्या आदि की प्राप्ति से वञ्चित समझा जाय, तो वह समाज जिसमें ये बुराइयाँ हो सर्वथा अन्यायी समझा जायगा। मूर्ख के पुरुषार्थी लड़के के लिए विद्या का द्वार बन्द होने से और विद्वान् के लड़के के पुरुषार्थहीन होकर मूर्ख हो जाने से समाज में मूर्खों की भरमार हो जायगी। उसी प्रकार समाज में निर्बल और निर्धन भरकर समाज का सत्यानाश कर देंगे। उसी प्रकार यदि विद्वान् और धनी ही समाज में बड़े समझे जायँ

और लोग छोटे समझे जाकर मानवता के साधारण अधिकार से वञ्चितकर घृणा या उपेक्षा से देखे जायँ, यदि बलवान् कमजोरों को मारकर खा जाने की सोचें और उसमें कृतकार्य हो सकें तो भी समाज में अशान्ति का घोर साम्राज्य हो जाय। ये दोनों ही अवस्थाएँ जाति या राष्ट्र की उन्नति के बाधक हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि ये बातें पौराणिक वर्तमान वर्ण-व्यवस्था में प्रचलित हैं। यहाँ कुल विशेष में जन्म लेने से मनुष्य अधिकार विशेष से वञ्चित होता है, यहाँ एक जाति दूसरी जाति से छोटी समझी जाकर पददलित और तिरस्कृत होती है अवश्य, पर यह दोष वर्ण-व्यवस्था के कारण नहीं है, क्योंकि यथार्थ में वैदिक वर्ण-व्यवस्था इन दोषों से सर्वथा खाली है। भोजन न मिलने पर किसी के बालू खाने पर भोजन मात्र का निषेध करना बुद्धिमानी नहीं है, बल्कि अच्छे भोजन का प्रबन्ध करना बुद्धिमानी है। उसी प्रकार वर्ण-व्यवस्था की प्रचलित बुराइयों के कारण वर्ण-व्यवस्थाको मिटाना बुद्धिमानी नहीं है। कर्तव्य है वैदिक वर्ण-व्यवस्था की पुन सस्थापना करना।

वेद की शिक्षा विशुद्ध साम्यवाद की शिक्षा है। ऋग्वेद कहता है—

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सम्भ्रातरो
वावृधु. सौभगाय। युवा पिता स्वया
रुद्र एषां पृश्निर्मोता सुदिना मरुद्भ्य ॥

अर्थात् मनुष्य मात्र एक ही माता-पिता की सन्तान जैसे भाई-भाई हैं, न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। सबको उन्नति करने की पूरी स्वतन्त्रता है। यह बात वैदिक वर्ण व्यवस्था में पूरी तरह घटती है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव पर अवलम्बित है, जन्म पर नहीं। वृणाव्रृणोते ऐसी व्युत्पत्ति बतलाकर निरुक्तकार ने स्पष्ट किया कि वर्ण वही कि जो अपनी योग्यतानुसार मनुष्य अपने लिए चुने (वरण करे)। गीता में श्री कृष्ण की भी यही सम्मति है। इसी कारण तो यहाँ मछुआइन के पुत्र महर्षि वेदव्यास, जन्म का व्याध रत्नाकर आदिकवि वाल्मीकि चाण्डाल कुलोत्पन्न मातङ्ग ब्रह्मर्षि गणिका-गर्भ-सम्भूत वशिष्ठ राम के कुलगुरु दासीपुत्र नारद देवर्षि हो सकते हैं। यह है पक्का साम्यवाद!

चारों वर्णस्थ पुरुष वर्णानुसार अपनी व्यवस्था का पालन करते हुए एक दूसरे से छोटे या बड़े नहीं कहे जासकते। कारण दरजों (Degree) का भेद एक प्रकार (Kind) के वस्तुओं में होता है। उन पदार्थों में नहीं जिनके प्रकार भिन्न हैं। एक स्थान पर पचास बढ़ई काम करते हैं तो उनमें एक को हम अव्वल कहते हैं। लेकिन जहाँ एक बढ़ई, एक जिल्दसाज, एक कृषक और एक सिपाही हो तो हम किसको प्रथम या अव्वल कहेंगे? किसी को नहीं। तीन गज कपड़ा और पाँच सेर अन्न में हम किसको बड़ा कहें? हाँ, तीन गज कपड़े को हम एक गज कपड़े से तो बड़ा कह सकते हैं, एक सेर अन्न से पाँच सेर अन्न को बड़ा कह सकते हैं। यहाँ बड़ा छोटा इसलिए कहते हैं कि बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा प्रयोजन

सिद्ध होता है। एक सेर अन्न से यदि दो मनुष्यों के पेट भरते तो पाँच सेर से दस मनुष्यों की तृप्ति होती है। जो काम एक सेर अन्न से हो सकता है वह हजार गज कपडे से नहीं हो सकता है। इसलिए हजार गज कपड़े को हम एक सेर चावल से बड़ा नहीं कह सकते। इसी प्रकार एक शूद्र यदि दस घड़े पानी भर सकता है तो वश्य यदि बीस घडे, क्षत्रिय चालीस घड़े और ब्राह्मण सौ घड़े पानी ला सकते तब हम वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण को शूद्र से बड़ा कहते, लेकिन बात वैसी नहीं है। ब्राह्मण मे शूद्र के समतुल्य शारीरिक श्रम की योग्यता नही है वैश्यके समतुल्य व्यापार की दक्षता और क्षत्रिय के समान युद्ध निपुणता नही है। अतएव वर्णों मे प्रकार भेद है। वे एक प्रकार के नहीं, इसलिए छोटे-बड़े नहीं।

जिसका जो क्षेत्र है, उस क्षेत्र मे वही बडा है। सिर पर लाठी से प्रहार होता है तो हाथ सिर के ऊपर जाकर सिरकी रक्षा करता है। सिर यदि अभिमान से हाथ को ऊपर न उठने दे तो सिर चूर चूर ही हो जाय। इसी प्रकार ब्राह्मण की रक्षा के समय क्षत्रिय ही बड़ा है। इसी प्रकार सिर मे कितनी ही बुद्धि क्यों न भरी हो, बाहुओं मे बल कितना ही क्यों न हो, योद्धा के पाँवों मे यदि बल न हो तो वह योद्धा लडाई मे मारा जाता है, क्योंकि विजय उसी योद्धा की होती है जो पैतरे अच्छी तरह बदल सकता है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र–सबकी साथ साथ उन्नति होने से ही समाज फलता-फूलता है और इस प्रकार वैदिक वर्ण-व्यवस्था हमको सच्चे अर्थो मे Socialism या समाजवाद की शिक्षा देता है।

वैदिक वर्ण व्यवस्था का साम्यवाद हम एक और प्रकार से देख सकते हैं। यहाँ किसी एक वर्ण का एकाधिपत्य नहीं है, चूँकि वैदिक धर्म मे मान लेने और ईमान लाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यहाँ बुद्धिवाद की प्रधानता है और धर्म के मामलो मे तर्क से अनुसन्धान करने की स्पष्ट आज्ञा है। इसलिए यहा मुल्ले पादरी, महन्त, मठधारियों की तरह जन-साधारण को ब्राह्मण, धर्माचार्यों की धार्मिक (मजहबी) गुलामी करने की आवश्यकता नहीं है।

राजनीतिक मामलों मे क्षत्रियों का एकाधिपत्य भी नहीं चल सकता। वेदों म पूर्ण प्रजातन्त्रवाद का उपदेश है। राजा को धार्मिक वेदज्ञ विद्वानों की सभा के अधीन रहने की स्पष्ट आज्ञा है। शतपथ ब्राह्मण कहता है —

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्री विश घातुक। विशमेव राष्ट्रायाद्या करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्ट पशु मन्यते इति।

अर्थात राष्ट्र का एकाधिपत्य राजा (Autocrat Monarch) प्रजा का नाश कर देता है, जैसे मृगराज सिंह जङ्गल के पशुओ को खा जाता है।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था मे धनपतियो (वैश्यों) का भी प्रभुत्व नही हो सकता, क्योंकि भौतिकवाद का उपदेश ऋषियो ने दिया ही नहीं। महर्षि कपिल ने कहा 'नदृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्ति दर्शनात।' अर्थात् तीनों प्रकार के दुःखो की अत्यन्त निवृत्त जिसके लिए जीव का परम पुरुषार्थ होना चाहिये भौतिक पदार्थों से नहीं हो सकती। इसलिए वैदिक धर्म मे धनादि परम लक्ष्य नही हो सकते। समाज मे शूद्रों क कर्मों को नीची निगाह से देखने का स्पष्ट निषेध है। यजुर्वेद ने "तपसे शूद्र" कह कर शूद्र के कर्मों को तप बतलाया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे श्रीकृष्ण ने अतिथियों के पाव धोने का काम लिया। उस समय के सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी महात्मा भीष्म ने कृष्ण को ही पूजा का अधिकारी बतलाया। इसलिए शूद्र के सेवाकार्य को परम पवित्र दृष्टि से देखना वैदिक आदर्श है।

क्या धर्म के बिना मनुष्य का काम चल सकता है ?

सर राधाकृष्ण के विचारों का सार

ऐसे भी मूर्ख मनुष्य हैं जो यह पूछते हैं कि धर्म की मनुष्य को आवश्यकता है या नहीं और बिना धर्म के मनुष्य सुख और शान्ति से रह सकता है या नहीं। इस प्रकार के प्रश्न करना ऐसी ही मूर्खता है जैसी यह पूछना मूर्खता है कि मनुष्य भोजन, वायु और जल के बिना जिन्दा रह सकता है या नहीं। यह प्रश्न प्राय इसलिए किया जाता है कि हमारे दिमाग जीवन की रोजाना की चख-चख और झिक-झिक से आगे जीवन का अर्थ समझने के योग्य नहीं रह गये हैं तथा स्वार्थी लोगों ने रूढियों और निर्जीव क्रिया-कलापों का अडङ्गा डालकर गडबड़ पैदा करदी है। मनुष्य धर्म से दूर नहीं भाग सकता है, क्योंक उसकी जड़ें मनुष्य के सच्चे व्यक्तित्व में गहरी पैठी होती हैं।

गत वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने एक भाषण में श्री सर राधाकृष्ण ने इस बात पर बहुत बल दिया था। उन्होंने कहा था कि "जबतक मनुष्य में बुद्धि रहेगी तबतक धर्म की समस्या रहेगी। केवल पशु ही सन्तोषी जीवन बिता सकता है, परन्तु मनुष्य पशु जैसा कभी पूर्ण सन्तुष्ट नहीं हो सकता। उसमें पूर्णता की प्राप्ति की क्षमताएँ हैं। वह पशु जैसा स्वाभाविक और खुदबखुद चलनेवाला जीवन नहीं बिता सकता। जहाँ तक पशु-जीवन का सम्बन्ध है पशु कभी यह प्रश्न नहीं करता कि मैं क्या हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। मनुष्य में बुद्धि का सङ्घर्ष चलता रहता है।

इस सङ्घर्ष पर विजय कैसे प्राप्त की जाय ? जीवन के इस सङ्घर्ष का इलाज करने में साइंस असमर्थ है। जीवन अज्ञात स्थान से आता है और अज्ञात स्थान को चला जाता है। आदि और अन्त दोनों जगह अँधेरा है। साइंस तो इन दोनो के बीच की प्रकाशमान जगह से ही सरोकार रखती है। यह सङ्घर्ष केवल मुक्तावस्था को पहुँचने से दूर हो सकता है, जो बुद्धि की पहुँच से परे होती है और मुक्तावस्था धर्म के आचरण से प्राप्त होती है, अर्थात् मन को इन्द्रियों से हटाकर बुद्धि की ओर चलाने से, बुद्धि को आत्मा की ओर लगाने से और आत्मा को परमात्मा, पवित्रता और पूर्णता की ओर लगाने से मुक्तावस्था प्राप्त होती है।

आर्यसमाज एक्ट की आवश्यकता

[श्री० रामकृष्ण एम० ए० एल० एल० बी० लखीमपुर खेरी]

जिस समय मनुष्य मनमानी करना चाहता है या अच्छे बुरे का ज्ञान उसको नही रहता या उच्छृङ्खल होकर स्वार्थ की अवधि का उल्लङ्घन करता है उस समय उसको नियन्त्रित अथवा शान्त करना आवश्यक होता है, जिससे कि वह शान्त हो सके तथा बुरे भले को ज्ञात कर सके। ठीक इसी प्रकार की व्यवस्था राष्ट्रों की अथवा संस्थाओं व सभाओं की है—आर्यसमाजें—संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध के लिए मैं लिख रहा हूँ—आधुनिक समय में उच्छृङ्खल हो रही हैं, जो स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री या प्रधान महोदय के मस्तिष्क मे आता है वे वही करते है। वह आर्य-प्रतिनिधि सभाकी विज्ञप्तियों पर ध्यान ही नहीं देते, कारण कि समाजें यह समझने लगी हैं कि प्रतिनिधि सभा उनको किसी प्रकार लाभ नही पहुँच ती है। समाज के मन्त्री महोदयो की यह धारणा है कि यदि हम वार्षिकोत्सवों पर सभा से प्रचारक व उपदेशक बुलायें तो उन लोगो को दक्षिणा व मार्ग-व्यय देना पडता है, कोटिधन दशांश, प्रति निधि फीस, वेद-प्रचार-फण्ड का रुपया इत्यादि ? तो प्रतिवर्ष देना ही पडता है, परन्तु समाजो *के मन्त्री महोदय एक बहुत बडी बात भूलते है*—वह यह है कि प्रतिनिधि सभा तो प्रान्तकी समाजों की एक सगठित संस्था है। जिस प्रकार सूत का एक धागा फूँक से उड जाया करता है, उसी प्रकार यदि समाजें सगठित न होतीं तो आज तक कई समाजों का नीलाम तक हो गया होता !! परन्तु कई सूत के धागे मिलकर रस्सी के रूप मे जिस समय परिवर्तित हो जाते है उस समय बडे-बडे हाथियों को भी छठी का दूध याद आता है। सगठित संस्था पर आक्रमण करना सुगम नहीं। प्रतिनिधि सभा अपनी अधीनस्थ समाज की प्रत्येक रूप से रक्षा करती है। अत यदि इस संगठन के लिए हमे १००) वार्षिक भी देना पडे तो कोई अधिक नहीं और वह भी वेद प्रचार आदि ही मे व्यय होता है। सभा के वार्षिक वृत्तान्त में स्पष्ट हो जाता है कि कितनी आय हुई और कितना किस किस मद मे व्यय हुआ।

परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी समाजे सभा के नाम रजिस्टर्ड नहीं !! संयुक्त प्रान्त की प्रमुख समाजें अभी सभा के नाम रजिस्टर्ड नही है !! क्या इसे उच्छृङ्खलता नहीं कह सकते !!

अत मेरी सम्मति में आर्यसमाज ऐक्ट का निर्माण कराना आवश्यक है। उससे समाजों का सगठन होगा, उच्छृङ्खलता दूर होगी समाजें सभा की रहेंगी, समाजों तथा सभा के अन्तर्गत *सुव्यवस्था रहेगी* और परिणाम स्वरूप प्रतिनिधि-सभा भी इस समय की अपेक्षा कहीं अधिक शक्ति शाली हो जायेगी। मुझे पूरी आशा है कि आर्य विद्वज्जन इस गम्भीर विषय पर विचार प्रकट करने का कष्ट करेंगे।

जर्मनी में बच्चों की शिक्षा

जर्मन देश में बच्चे की इज्जत की जाती है। अध्यापक उसे बड़े प्रेम से पढ़ाता है तथा माता-पिता अपने बच्चे को विचार की पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं। स्कूल में बच्चा प्रतिदिन सुबह को १५ मिनिट उच्च संगीतज्ञों के गाने तथा मानवी विचारों की ऊँची से ऊँची उड़ान की पुस्तकों के पाठ सुनता है। इस उद्देश्य के लिए भगवद्गीता, उपनिषद्, गांधी, टैगोर, स्वामी विवेकानन्द और रामकृष्ण परमहंस के ग्रन्थों का खूब प्रयोग किया जाता है। इन पाठों के बाद शान्ति में बैठकर उन पर विचार और मनन करने का उन्हें समय और अवसर दिया जाता है।

जर्मन अध्यापक अपने विषय का न केवल पण्डित ही होता है, वरन् जो बच्चे उसके चार्ज मे रखे जाते हैं उनका वह मित्र और मार्ग-प्रदर्शक भी होता है।

जर्मन देशवासियों की यह धारणा है कि रटाने से बच्चे की सृजनी शक्तियां दब जाती हैं और यह उसे रद्दी ग्रामोफोन मशीन बना देता है। जर्मन के अध्यापक को अपने विषय में खूब स्वतन्त्रता दी जाती है। रूखे करीक्यूलम अथवा नियत टाइम-टेबिल पर चलने के लिए जर्मनी का अध्यापक बाध्य नहीं किया जाता है। विपरीत इसके अपने बच्चे में जो विषय वह पढ़ाता है उसमें स्वतन्त्र विचार की योग्यता पैदा करने की अध्यापक से आशा की जाती है। बहुधा अपनी पसन्द के चित्रों अथवा ड्राइंग इत्यादि के द्वारा अपने मनोवैज्ञानिक विकास का प्रकाश करने के लिए बच्चे को प्रेरणा की जाती है। इन चित्रों इत्यादि से अध्यापक को बच्चे के रुझान का पता लग जाता है और इससे बच्चे की कठिनाइयों के हल करने के प्रयत्नों में उसे सहायता मिल जाती है।

उच्च शिक्षा

[ले०—मो० क० गाधी]

*

उच्च शिक्षा के विषय में जो मेरे विचार हैं उन्हे मैं पहले से भी अधिक पूर्णता से व्यक्त कर दूँ, ताकि पाठक मेरे विचारो को भली भाँति समझ ले ।

मैं अपने उन निष्कर्षों को बता दूँ जिनपर कि मैं कई वर्षों से पहुँचा हुआ हूँ और जब भी कभी मौका मिला है उनको अमल मे लाने की कोशिश की है ।

(१) दुनिया मे प्राप्त हो सकनेवाली ऊँची से ऊँची शिक्षा का भी मैं विरोधी नही हूँ ।

(२) राज्य को जहाँ भी निश्चित रूप से इसकी ज़रूरत हो वहाँ इसका ख़र्च उठाना चाहिये ।

(३) साधारण आमदनी द्वारा सारी उच्च शिक्षा का ख़र्च चलाने के मैं ख़िलाफ़ हूँ ।

(४) मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे कालिजों में साहित्य की जो इतनी सारी तथाकथित शिक्षा दी जाती है वह सब बिलकुल व्यर्थ है और उसका परिणाम शिक्षित वर्गों की बेकारी के रूप मे हमारे सामने आया है । यही नहीं, बल्कि जिन लड़के-लड़कियों को हमारे कालिजों की चक्की में पिसने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी इसने चौपट कर दिया है ।

(५) विदेशी भाषा के माध्यम ने, जिसके ज़रिए कि भारत में उच्च शिक्षा दी जाती है, हमारे राष्ट्र को हद से ज्यादा बौद्धिक और नैतिक आघात पहुँचाया है । अभी हम अपने इस ज़माने के इतने नज़दीक हैं कि इस नुक़सान का निर्णय नही कर सकते । और फिर ऐसा शिक्षा पानेवाले हमीं को इसका शिकार और न्यायाधीश दोनों बनना है, जो कि लगभग असम्भव काम है ।

अब मेरे लिए यह बतलाना आवश्यक है कि मैं इन निष्कर्षों पर क्यो पहुँचा । यह शायद अपने कुछ अनुभवो के द्वारा ही मैं सब से अच्छी तरह बतला सकता हूँ ।

१२ बरस की उम्र तक मैंने जो भी शिक्षा पायी वह मातृभाषा गुजरातीमें पायी थी । उस वक़्त गणित, इतिहास और भूगोल का मुझे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान था । इसके बाद मैं एक हाईस्कूल में दाखिल हुआ । इसमे भी पहले तीन साल तक तो मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम रही, लेकिन स्कूल-मास्टर का काम तो विद्यार्थियों के दिमागमें जबरदस्ती अँगरेजी ठूँसना था इसलिए हमारा आधे से अधिक समय अँगरेजी और उसके मनमाने हिज्जों तथा उच्चारण पर काबू पाने में लगाया जाता था । ऐसी भाषा का पढ़ना हमारे लिए एक कष्टपूर्ण अनुभव था, जिसका उच्चारण ठीक उसी तरह नहीं होता जैसी कि वह लिखी जाती है । हिज्जों को कण्ठस्थ करना एक अजीब सा अनुभव था, लेकिन यह तो मै प्रसगवश कह गया, वस्तुत मेरी दलील से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है । मगर पहले तीन साल तो तुलनात्मक रूप में ठीक ही निकल गये ।

ज़िल्लत तो चौथे साल से शुरू हुई । अलजबरा, (बीजगणित), केमिस्ट्री (रसायन-शास्त्र) एस्ट्रानामी

(ज्योतिष), हिस्ट्री (इतिहास), ज्याग्राफ़ी (भूगोल)–हरेक विषय मातृभाषा के बजाय अङ्गरेज़ी में ही पढ़ना पड़ा। कक्षा में अगर कोई विद्यार्थी गुजराती, जिसे कि वह समझता था, बोलता तो उसे सज़ा दी जाती थी। हाँ, अङ्गरेज़ी को, जिसे न तो वह पूरी तरह समझ सकता था और न शुद्ध बोल सकता था, अगर वह बुरी तरह बोलता तो भी शिक्षक को कोई आपत्ति नहीं होती थी। शिक्षक भला इस बात की फ़िक्र क्यों करे? क्योंकि खुद उसकी ही अङ्गरेज़ी उसके लिए भी उसी तरह विदेशी भाषा थी जिस तरह कि उसके विद्यार्थियों के लिए थी। इससे बड़ी गड़बड़ होती। हम विद्यार्थियों को अनेक बातें कण्ठस्थ करनी पड़तीं, हालाँकि हम उन्हें पूरी तरह नहीं समझ सकते थे और कभी कभी तो बिलकुल ही नहीं समझते थे। शिक्षक के हमें ज्यामेटरी (रेखा-गणित) समझाने की भरपूर कोशिश करने पर मेरा सिर घूमने लगता। सच तो यह है कि यूक्लिड (रेखा गणित) की पहली पुस्तक के १३वें साध्य तक हम न पहुँच गये, मेरी समझ में ज्यामेटरी बिलकुल नहीं आयी। और पाठकों के सामने मुझे यह मञ्जूर करना ही चाहिये कि मातृभाषा के अपने सारे प्रेम के बावजूद आज भी मैं यह नहीं जानता कि ज्यामेटरी, अलजबरा आदि की पारिभाषिक बातों को गुजराती में क्या कहते हैं। हाँ, यह अब मैं ज़रूर देखता हूँ कि जितना गणित, रेखागणित, बीजगणित, रसायन-शास्त्र और ज्योतिष सीखने में मुझे चार साल लगे अगर अङ्गरेज़ी के बजाय गुजराती में मैंने उन्हें पढ़ा होता तो उतना मैंने एक साल में आसानी से सीख लिया होता। उस हालत में मैं आसानी और स्पष्टता के साथ इन विषयों को समझ लेता। गुजराती का मेरा शब्द ज्ञान कहीं अधिक समृद्ध होगया होता और उस ज्ञानका मैंने अपने घरमें उपयोग किया होता। लेकिन इस अङ्गरेज़ी के माध्यम ने तो मेरे और कुटुम्बियों के बीच, जोकि अङ्गरेज़ी स्कूलों में नहीं पढ़े थे एक अगम्य खाई खड़ी कर दी। मेरे पिता को यह कुछ पता न था कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं चाहता तो भी अपने पिता की इस बात में दिलचस्पी पैदा नहीं कर सकता था कि मैं क्या पढ़ रहा हूँ। क्योंकि यद्यपि बुद्धि की उनमें कोई कमी न थी, मगर वह अङ्गरेज़ी नहीं जानते थे। इस प्रकार अपने ही घर में मैं बड़ी तेज़ी के साथ अजनबी बनता जारहा था। निश्चय ही औरों से ऊँचा आदमी बन गया था। यहाँ तक कि मेरी पोशाक भी अपने आप बदलने लगी। लेकिन मेरा जो हाल हुआ वह कोई असाधारण अनुभव नहीं था, बल्कि अधिकांश का यही हाल होता है।

हाईस्कूल के प्रथम तीन वर्षों में मेरे सामान्य ज्ञान में बहुत कम वृद्धि हुई। यह समय तो लड़कों को हरएक चीज़ अङ्गरेजी के ज़रिये सीखने की तैयारी का था। हाईस्कूल तो अङ्गरेज़ों की सांस्कृतिक विजय के लिए थे। मेरे हाईस्कूल के तीन सौ विद्यार्थियों ने जो ज्ञान प्राप्त किया वह तो हमीं तक सीमित रहा, वह सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए नहीं था।

एक-दो शब्द साहित्य के बारे में भी। अङ्गरेज़ी गद्य और पद्य की हमें कई किताबें पढ़नी थीं। इसमें शक नहीं कि वह सब बढ़िया साहित्य था। लेकिन सर्वसाधारण की सेवा या उसके सम्पर्क में आने में उस ज्ञान का मेरे लिए कोई उपयोग नहीं हुआ है। मैं यह कहने में असमर्थ हूं कि मैंने अङ्गरेज़ी गद्य और

पढ़ा न पढ़ा होता तो मैं एक बेशकीमत खजाने से वञ्चित रह जाता। इसके बजाय, सच तो यह है कि अगर यह सात साल साल मैंने गुजराती पर प्रभुत्व प्राप्त करने में लगाये होते और गणित, विज्ञान तथा संस्कृत आदि विषयों को गुजराती में पढ़ा होता तो इस तरह प्राप्त किये हुए ज्ञान में मैंने अपने अड़ोसी-पड़ोसियों को आसानी से हिस्सेदार बनाया होता। उस हालत में मैंने गुजराती साहित्य को समृद्ध किया होता, और कौन कह सकता है कि अमल में उतारने की अपनी आदत तथा देश और मातृभाषा के प्रति अपने बेहद प्रेम के कारण सर्वसाधारण की सेवा में और भी अधिक अपनी देन क्यों न दे सकता।

यह हर्गिज़ नहीं समझना चाहिये कि अङ्ग्रेजी या उसके श्रेष्ठ साहित्य का मैं विरोधी हूँ। 'हरिजन' मेरे अङ्ग्रेज़ी प्रेम का पर्याप्त प्रमाण है। लेकिन उसके साहित्य की महत्ता भारतीय राष्ट्र के लिए उससे अधिक उपयोगी नहीं जितना कि इङ्गलैण्ड के लिए उसका समशीतोष्ण जल वायु या वहाँ के सुन्दर दृश्य हैं। भारत को तो अपने ही जल वायु, दृश्यों और साहित्य में तरक्की करनी होगी, फिर चाहे वे अङ्ग्रेजी जल-वायु, दृश्यों और साहित्य से घटिया दर्जे के ही क्यों न हों। हमें और हमारे बच्चों को तो अपनी खुद की ही विरासत बनानी चाहिये। अगर हम दूसरों की विरासत लेंगे, तो अपनी नष्ट हो जायगी। सच तो यह है कि विदेशी सामग्री पर हम कभी उन्नति नहीं कर सकते। मैं तो चाहता हूँ कि राष्ट्र अपनी ही भाषा का कोष भरे और इसके लिए संसार की अन्य भाषाओं का कोष भी अपनी ही देशी भाषाओं में संचित करे। रवीन्द्रनाथ की अनुपम कृतियों का सौन्दर्य जानने के लिए मुझे बङ्गाली पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि सुन्दर अनुवादों के द्वारा मैं उसे पा लेता हूँ। इसी तरह टाल्सटाय की संक्षिप्त कहानियों की कद्र करने के लिए गुजराती लड़के-लड़कियों को रूसी भाषा पढ़ने की कोई ज़रूरत नहीं, क्योंकि अच्छे अनुवादकों के ज़रिये वे उन्हें पढ़ लेते हैं। अँगरेजों को इस बात का गर्व है कि संसार की सर्वोत्तम साहित्यिक रचनाएँ प्रकाशित होने के एक सप्ताह के अन्दर अन्दर सरल अँगरेजी में उनके हाथों में आ पहुँचती है। ऐसी हालत में शेक्सपीयर और मिल्टन के सर्वोत्तम विचारों और रचनाओं के लिए मुझे अँगरेजी पढ़ने की ज़रूरत क्यों हो?

यह एक तरह की अच्छी मितव्ययता होगी कि ऐसे विद्यार्थियों का अलग ही एक वर्ग कर दिया जाय जिनका काम यह हो कि संसार की विभिन्न भाषाओं में पढ़ने लायक़ जो सर्वोत्तम सामग्री हो उसको पढ़ें और देशी भाषाओं में उसका अनुवाद करें। हमारे प्रभुओं ने तो हमारे लिए गलत ही रास्ता चुना है, और आदत पड़ जाने के कारण गलती ही हमें ठीक मालूम पड़ने लगी है।

हमारी इस झूठी अभारतीय शिक्षा से लाखों आदमियों का दिन-दिन जो लगातार नुकसान हो रहा है, उसके तो रोज़ ही मैं प्रमाण पा रहा हूँ। जो ग्रेजुएट मेरे आदरणीय साथी हैं उन्हें जब अपने आन्तरिक विचारों को व्यक्त करना पड़ता है तो वही खुद परेशान हो जाते हैं। वे तो अपने ही घरों में अजनबी हैं। अपनी मातृभाषा के शब्दों का उनका ज्ञान इतना सीमित है कि अँगरेजी शब्दों और वाक्यों तक का सहारा लिए बगैर वे अपने भाषण को समाप्त नहीं कर सकते।

न अंगरेज़ी किताबों के बगैर वे रह सकते हैं। आपस में भी वे अक्सर अंगरेज़ी में लिखा पढ़ी करते हैं। अपने साथियों का उदाहरण मैं यह बताने के लिए दे रहा हूँ कि इस बुराई ने कितनी गहरी जड़ जमा ली है, क्योंकि हम लोगों ने अपने को सुधारने का खुद जान बूझकर प्रयत्न किया है।

हमारे कालिजों में समय की जो यह बर्बादी होती है उसके पक्ष में दलील यह दी जाती है कि कालिजों में पढ़ने के कारण इतने विद्यार्थियों मे से अगर एक जगदीश बोस भी पैदा हो सके तो हमे इस बर्बादी की चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। अगर यह बर्बादी अनिवार्य होती तो मैं भी ज़रूर इस दलील का समर्थन करता, लेकिन मैं आशा करता हूँ कि मैंने यह बतला दिया है कि यह न तो अनिवार्य थी और न अभी ही अनिवार्य है, क्योंकि जगदीश बोस कोई वर्तमान शिक्षा की उपज नहीं थे वह तो भयङ्कर कठिनाइयों और बाधाओं के बावजूद अपने परिश्रम की बदौलत ऊँचे उठे, और उनका ज्ञान लगभग ऐसा बन गया जो सर्वसाधारण तक नहीं पहुँच सका। बल्कि मालूम पड़ता है कि हम यह सोचने लगे हैं कि जब तक कोई अङ्गरेज़ी न आने तब तक वह बोस के सदृश महान् वैज्ञानिक होने की आशा नहीं कर सकता। यह ऐसी मिथ्या धारणा है जिससे अधिक की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता। जिस तरह हम अपने को लाचार समझते मालूम पड़ते हैं, उस तरह एक भी जापानी अपने को नहीं समझता

यह बुराई, जिसका कि मैंने वर्णन करने की कोशिश की है, इतनी गहरी पैठी हुई है कि कोई साहस पूर्ण उपाय ग्रहण किये बिना काम नहीं चल सकता। हाँ, कांग्रेसी मन्त्री चाहें तो इस बुराई को दूर न भी कर सकें, तो इसे कम तो कर ही सकते हैं।

विश्वविद्यालयों को स्वावलम्बी ज़रूर बनाना चाहिये। राज्य को तो साधारणतः उन्हीं को शिक्षा देनी चाहिये जिनकी सेवाओं की उसे आवश्यकता हो। अन्य सब दिशाओं के अध्ययन के लिए उसे खानगी प्रयत्न को प्रोत्साहन देना चाहिये। शिक्षा का माध्यम तो एक दम और हर हालत में बदला जाना चाहिये, और प्रान्तीय भाषाओंको उनका वाजिब स्थान मिलना चाहिये। यह जो क़ाबिले सज़ा बर्बादी रोज़ ब रोज़ हो रहा है इसके बजाय तो स्थायी रूप से अव्यवस्था हो जाना भी मैं पसन्द करूँगा।

प्रान्तीय भाषाओं का दरजा और व्यावहारिक मूल्य बढ़ाने के लिए मैं चाहूँगा कि अदालतों की कार्रवाही अपने अपने प्रांत की ही भाषा में हो। प्रान्तीय धारासभाओं की कार्रवाही भी प्रान्तीय भाषा या, जहाँ एक से अधिक भाषाएँ प्रचलित हों, उनमें होना चाहिये। धाराओं के सदस्यों को मैं कहना चाहता हूं कि वे चाहें तो एक महीने के अन्दर-अन्दर अपने प्रान्तों की भाषाएँ भली भाँति समझ सकते हैं। तामिल भाषी के लिए ऐसी कोई रुकावट नहीं, जो वह तेलगू, मलयालम और कन्नड के जो कि सब तामिल से मिलती जुलती हुई है, मामूली व्याकरण और कुछ सौ शब्दों को आसानी से न सीख सकें।

मेरी सम्मति मे यह कोई ऐसा प्रश्न नहीं है, जिसका निर्णय साहित्यज्ञों के द्वारा हो, वे इस बात का निर्णय नहीं कर सकते कि किस स्थान के लड़के लड़कियों को पढ़ाई किस भाषा में हो, क्योंकि इस प्रश्न का निर्णय तो हरएक स्वतन्त्र देशमें पहले ही हो

चुका है। न वे यही निर्णय कर सकते हैं कि किन विषयों की पढ़ाई हो, क्योंकि यह उस देश की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है, जिस देश के बालको की पढ़ाई होती है। उन्हें तो बस यही सुविधा प्राप्त है कि राष्ट्र की इच्छा को यथा सम्भव सर्वोत्तम रूप में अमल में लायें। अत. जब हमारा देश वस्तुत. स्वतन्त्र होगा, तब शिक्षा के माध्यम का प्रश्न केवल एक ही तरह से हल होगा। साहित्यिक लोग पाठ्य क्रम बनायेंगे और फिर उसके अनुसार पाठ्य पुस्तके तैयार करेंगे, और स्वतन्त्र भारत की शिक्षा पानेवाले विदेशी शासको को करारा जवाब देंगे। जब तक हम शिक्षित वर्ग इस प्रश्न के साथ खेलवाड़ करते रहेंगे, मुझे इस बात का बहुत भय है कि, हम जिस स्वतन्त्र और स्वस्थ भारत का स्वप्न देखते हैं उसका निर्माण नही कर पायेंगे। हमें तो सतत प्रयत्नपूर्वक अपनी गुलामी से मुक्त होना है, फिर वह चाहे शिक्षणात्मक हो या आर्थिक अथवा सामाजिक या राजनीतिक। तीन चौथाई लड़ाई तो यही प्रयत्न होगा जो कि इसके लिए किया जायगा।

इस प्रकार मैं इस बात का दावा करता हूं कि मैं उच्च शिक्षा का विरोधी नहीं हू। लेकिन उस उच्च शिक्षा का मै ज़रूर विरोधी हूं जोकि इस देश में दी जारही है। मेरी योजना के अन्दर तो अब से अधिक और अच्छे पुस्तकालय होंगे, अधिक सख्या में और अच्छी रसायनशालाए और प्रयोगशालाएं होंगी। उसके अन्तर्गत हमारे पास ऐसे रसायन शास्त्रियो, इजीनियरों तथा अन्य विशेषज्ञो की फ़ौज-की फ़ौज होनी चाहिये जो राष्ट्र के सच्चे सेवक हो और और उस प्रजा की बढती हुई, विविध आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके जो अपने अधिकारों और अपनी आवश्यकताओ को दिन दिन अधिकाधिक अनुभव करती जारही है और ये सब विशेषज्ञ विदेशी भाषा नही बल्कि जनता की ही भाषा बोलेंगे। ये लोग जो ज्ञान प्राप्त करेंगे वह सब की सयुक्त सम्पति होगी। तब खाली नक़ल की जगह सच्चा असली काम होगा, और उसका खर्च न्यायपूर्वक समान रूप से विभाजित होगा। (हरिजन)

वेद और आर्य समाज

[श्री० प्रो० परमात्माशरण जी, एम० ए०, पी एच डी० हिन्दू यूनि० बनारस]

**

वेद के प्रति आर्यसमाज के उत्तरदायित्व के मुख्यतया दो विभाग हैं। एक तो पूर्णतया शुद्ध मूल-संहिता का प्राप्त करना और प्रकाशित करना, दूसरे वेद-भाष्य करना। यह तो दोहराने की आवश्यकता ही नहीं है कि वेद पर आर्यसमाज को कितनी श्रद्धा है। यों तो वेद हिन्दूमात्र का ही मूल धर्म ग्रन्थ एव सब विद्याओं का स्रोत हैं पर जो महत्व वेद को क्रियात्मक रूप से आर्य-समाज के प्रवर्त्तक ने दिया है वह किसी आधुनिक सुधारक अथवा महा मा ने नहीं दिया। उन्हीं ऋषि दयानन्द की शिक्षा के अनुसार आर्यसमाज वेद का दम भरता है। फलत आर्यसमाज की समस्त सस्थाए वेद प्रचार के उद्देश्य को लेकर ही खोली और चलाई जाती हैं। वेद की शिक्षा और सस्कृति का प्रचार व प्रसार करना ही आर्यसमाज का एक मात्र उद्देश्य है। अब प्रश्न यह उठता है कि दयानन्द के पीछे आर्यसमाज ने अपने इस एकमात्र उद्देश्य को पूरा करने के लिए क्या कार्य किया। क्या वेद का प्रचार करने के लिए यह अत्यावश्यक नहीं कि वेद का एक प्रामाणिक मूल-पाठ तो हमारे पास हो? परन्तु हम देखते हैं कि आर्यसमाज ने आज अपने लगभग ७० वर्ष के जीवन में सर्वथा शुद्ध वेद-संहिता के प्राप्त या तयार करने की ओर ध्यान तक नही दिया, उसे प्रकाशित करके जनता तक पहुँचाने की तो बात ही क्या! विचारपूर्वक देखा जाय तो यह बात आर्य-समाज के लिए कुछ कम खेद और लज्जा की नहीं है। जिस पुस्तक को हम समस्त ज्ञान का पुञ्ज और धर्म का स्रोत एव मूल आधार मानते हैं उसके प्रति क्रियात्मक दृष्टि से हम इतने उदासीन हों कि आज ७० वर्ष तक बराबर मौखिक रूप से वेद का डङ्का बजाने के बाद उसकी मूल सहिता का शुद्ध पाठ (text) भी हमारे पास न हो और ना हम उसे प्राप्त करने के लिए चिन्तित अथवा उत्सुक हों! इस अवस्था पर टीका करने की आवश्यकता नही। तनिक सा विचार करने से ही हम अनुभव कर लेंगे कि यह कितनी शोचनीय और लज्जाजनक अवस्था है! अगर कोई बाहरी विद्वान् हमसे वेद की प्रति मॉगने लगे (और ऐसा हो भी चुका है) तो कौनसा सस्करण है जिसे हम प्रामाणिक कहकर किसी को दे सकें। क्या ऐसी दशा किसी और धर्म-ग्रन्थ की भी है? जिन्द-अवस्ता और तोरेत, कुरान और बाइबिल इत्यादि अनेक धर्म पुस्तकों के सैकड़ों एक से एक उत्तम सस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। वेद के प्रामाणिक मूल का अभाव हमारे मानसिक प्रमाद और शिथिलता का द्योतक है।

मैक्समूलर तथा ग्रिफिथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों को बड़े परिश्रम से सग्रह करके और यथाशक्ति शुद्ध करके प्रकाशित कराया और उस का

में लाखों रुपया व्यय हुआ। परन्तु न तो यह संस्करण सर्वथा प्रामाणित तथा शुद्ध हैं और न इतने सस्ते कि कोई व्यक्ति तो क्या साधारण पुस्तकालय भी इनको खरीद सके। इन सस्करणों के एक-एक मूल वेद का मूल्य कई सौ रुपया है, परन्तु हमारा आदर्श तो यह होना चाहिये (और हमें आशा है) कि वेद की प्रतियाँ मनुष्य मात्र के पास पहुँचा दी जायें। इतना भी न हो तो कम से कम हिन्दू मात्र के तो हर घराने में वेद की प्रति होनी चाहिये।

कुछ काल से कतिपय विद्वानों में वेद-भाष्य के विषय पर वाद-विवाद चल रहा है। इस वाद-विवाद से तब ही कुछ लाभ निकल सकता है जब दोनों मतो के पोषक व्यक्तिगत भावों से पूर्णतया मुक्त होकर, शुद्ध भाव से और केवल सत्यान्वेषण के उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य करें। और यदि किसी का उनसे मतभेद है तो उसे भी अपना मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता दें। नाराज न हो और न अपने व्यवहार में अशिष्टता का परिचय ही दें।

परन्तु जैसा हम ऊपर कह चुके हैं वेद के प्रति हमारा सर्वोपरि कर्तव्य यह है कि हम मूल सहिता की प्रामाणिक लिपि को हस्तगत करके उसे प्रकाशित करें। वेद भाष्य में अथवा वैदिक देवताओं आदि विषयों के सम्बन्ध मे जिन महानुभावों को किन्ही विद्वानों से मतभेद भी है उनको भी इस बात से इनकार नहीं हो सकता कि यदि अन्य बातों को भुला भी दें तो भी आर्यसमाज को केवल अपने मान तथा प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए वेद के एक प्रामाणिक और सर्वाङ्ग सुन्दर संस्करण का तैयार कराना अत्यावश्यक है। यह संस्करण ऐसा होना चाहिये जिसे हम गौरव के साथ ससार के विद्वन्मण्डल के सम्मुख प्रस्तुत कर सकें और जिसे सब लोग प्रामाणिक मानकर अपने अन्वेषण व स्वाध्याय मे उसी प्रकार आधार मानने लगें, जिस प्रकार आजकल मैक्समूलर-सम्पादित सस्करण माना जाता है।

यह कहने की आवश्यकता नही कि यह बात समस्त आर्य-महानुभावों एव आर्य सस्कृति के प्रेमियों को मान्य होगी। परन्तु विस्मय यह है कि ऐसा अनुभव करते हुए भी अबतक किसी आर्य-संस्था ने इस कार्य को पूरा करने का यत्न नहीं किया। गत १५ वर्षों के अन्दर आर्यसमाज के चार पॉच सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय बड़े-बड़े सम्मेलन हो चुके हैं। लेखक की तुच्छ बुद्धि मे इन सम्मेलनों का मुख्य कार्य यह होना चाहिये था कि आर्यसमाज के अबतक के काम का सिंहावलोकन करके परिवर्तित परिस्थिति तथा नवीन सामाजिक समस्याओं को दृष्टि में रखकर भावी कार्य-क्रम निर्णय किया जाता और उसको क्रियात्मक रूप दिया जाता। इस सम्बन्ध में कुछ विचार अवश्य हुआ, परन्तु इने-गिने लोगों को छोड़कर किसी के हृदय में इस कार्य के लिए उत्साह पैदा न हुआ अथवा कार्यक्षेत्र की परिस्थिति कुछ ऐसी हो गयी कि कोई विचारशील या उन्नतिशील काम करने का अवसर न रहा। परिणाम वही हुआ जो आज हमारे सामने हैं। इस थोड़े से वास्तविक उन्नतिशील व उदारचित्त विचार के

अतिरिक्त कोई ठोस काम न हो पाया। सम्मेलनों और शताब्दियों का रूप वही रहा जो किसी स्थानीय आर्यसमाज के एक बहुत बड़े उत्सव का हो सकता है। उनमें कोई नई बात न हुई। उनसे जनता की विकल मानसिक अवस्था और आजकल की अशान्ति का लेशमात्र भी समाधान अथवा सतोष न हो पाया। आधुनिक ससार की अनक जटिल समस्याओं का जिनके चङ्गल में जकड़ा हुआ आज मनुष्य समाज तड़प रहा है, इन समारोहों से किसी अंश में भी समाधान न हुआ। कहने को हम चाहे जितना गर्व किये जायें और अपना ढोल पीटे जाय कि संसार के तापों को दूर करने की कुञ्जी हमारे पास है, पर यह ध्रुव सत्य है कि ससार के तापों की तो क्या अपने तापों को हरने की दवा भी हमारे पास नहीं है, या यों कहिये कि हम उसे खो बैठे हैं। हम दुनिया भर का पथ प्रदर्शन करने का दावा तो करते हैं पर स्वय अधेरे में हैं और स्वय यह नहीं जानते कि सन्मार्ग किस ओर है। यह तो ठीक है कि सन्मार्ग की कुञ्जी तो हमारे पास है, पर वे आँखें तो नहीं जो देख सके। ऋषि ने यही विवेक-रूप चक्षु हमको प्रदान किये थे और उन्हीं को हम फिर खो बैठे। प्रत्येक आर्यसमाज के उत्सव पर 'वेदों का डङ्का बजाये जायेंगे" की ध्वनि तो हमारे कानों में सतत सुनाई पड़ती है, पर इन शब्दों की जिम्मेवारी कितनी बड़ी है, इसका ध्यान शायद हमें कभी नहीं आता। आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त की जयन्ती के अवसर पर भी लेखक ने आर्यसमाजके सम्मानित नेताओं से यह विनम्र अपील की थी कि आर्य-संस्कृति की रक्षा एव उन्नति के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि जहाँ एक ओर हम अपने भावी कार्य-क्रम तथा कर्त्तव्य पर पूर्ण रूप से विचार करके उसका निर्णय करें, वहाँ वेद का एक शुद्ध और प्रामाणिक सस्करण तैयार कराने की जल्द से जल्द योजना करें परन्तु इस कार्य की ओर पूर्ववत् उदासीनता ही बनी रही। नक्कारखाने में तूती की कौन सुनता?

अब अजमेर आर्य-प्रतिनिधि-सभाकी जयन्ती होनेवाली है। इसलिए मैंने सोचा कि एक बार और याद दिलादू। शायद कुछ असर हो जाय। अजमेर आर्य प्रतिनिधि-सभा के लिए वेद के शुद्ध सस्करण प्रकाशित करने की योजना करना एक विशेष महत्त्व रखता है। अजमेर में ही महर्षि दयानन्द का जीवनोत्सर्ग हुआ और वही पर वैदिक यन्त्रालय स्थापित हुआ। इस बात के मानने में किसी को भी आपत्ति नहीं है और न बुरा मानना चाहिये कि चाहे जिस कारण से हो, वैदिक यन्त्रालय द्वारा प्रकाशित वेदों के संस्करण मे छापे की अनेक अशुद्धियाँ हैं। ऐसे संस्करण से बजाय लाभ के हानि है। इसलिए राजस्थान आर्य-प्रतिनिधि-सभा अपनी जयन्ती के उपलक्ष में यदि कोई स्मरणीय कार्य कर सकती है तो यह कि मूल वेद-सहिता का शुद्ध संस्करण जिस प्रकार हो और जहाँ से मिल सके, उपलब्ध करके प्रकाशित करे। इस सम्बन्ध में मेरा इतना वक्तव्य और है कि श्री० पं० सातवलेकर जी वेद के अनन्य भक्त हैं और उन्होंने अपना जीवन वैदिक साहित्य की

जापान की बर्बरता की वीभत्स लीलाएँ

[लेखक—एक अमेरिकन प्रत्यक्षदर्शी]

—=—

[जापानियो ने जिस समय चीन की राजधानी नानकिंग पर अधिकार किया था उस समय जापानियों ने जिस बर्बरता का परिचय दिया था, वह संसार के इतिहास मे अद्वितीय है। एक अमेरिकन, ने जिसने २० वर्ष तक चीन में नौकरी की, नानकिंग की लूट-पाट का आँखो देखा वर्णन किया है। लेख का हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जाता है।]

—सम्पादक

जापानियो ने नानकिंग पर अधिकार करते समय जिस प्रकार खून की नदियाँ बहायीं वह वर्तमान संसार के इतिहास मे अद्वितीय है। नानकिंग की लूट-पाटमे २० हजार स्त्री-पुरुष और बच्चे मौत के घाट उतार दिये गये। चार सप्ताह तक नानकिंग की गलियो मे रक्त की नदियाँ बहती रहीं। जापान की फौज ने इस भीषण हत्याकाण्ड को ससार के कानो तक नहीं पहुँचने दिया। यातायात के मार्ग जापानी फौजो ने बन्द कर दिये। कहीं किसी तरह की खबर न जा सकती थी और न आ सकती थी, इस कारण समाचार-पत्रों के जो प्रतिनिधि नानकिंग मे थे उन्हें वहाँ रहना बेकार मालूम दिया, इसीलिए वे अपने-अपने देश को लौट गये। जापानी तो यह चाहते ही थे। उन्होने पत्रकारो को स्वदेश के लिए लौटने मे सहायता दी। मिश्नरी भविष्य की आशा मे चुपचाप बने रहे।

जापान की ओर से पहले ही चेतावनी दे दी गयी थी कि नानकिंग को लोग खाली कर दे, पर १८ अमेरिकनों ने नगर को न छोड़ने का निश्चय किया, क्योकि शान्ति के दिनों मे हमने चीनियो के यहाँ नौकरी कर आनन्द से दिन बिताये थे, फिर मुसीबत के समय हम उन्हें छोड़ कर कैसे जा सकते थे? बेतार के तार द्वारा हम लोगों ने चीन तथा जापान, दोनों के मिलटरी कमाण्डरों से इस आशय का आश्वासन ले लिया था कि वे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों की रक्षा करेंगे। इस

सेवा के ही अर्पण कर दिया है। वेद का सर्वाङ्ग शुद्ध मूल पाठ तैयार करने और छापने के लिये उन्होने पूरा पूरा प्रयास किया है और मूल सहिता के शुद्ध करने के जितने भी प्रमाण उपलब्ध है उन सबका प्रयोग उन्होंने किया है। यदि उनके तयार किये मूल को ही अपनाकर वेद के कई प्रकार के संस्करण छापे जायें तो एक महान् कार्य हो जायगा और आर्यसमाज अपने ऐसे कर्त्तव्य से उऋण होगा जिसके पूरा न होने से आर्यसमाज को लज्जा से सिर नीचा करना पड़ता है। दूसरा प्रश्न वेद भाष्य का है। इस विषयमे मैं अपने विचार कभी फिर प्रकट करूँगा।

क्षेत्र में हम लोगों ने काफी चावल, आटा एकत्रित कर लिया। शान्ति-रक्षा के लिए ४५० चीनी पुलिसमैन भी नियुक्त थे। इस क्षेत्र में नानकिंग विश्वविद्यालय तथा गिनलिंग कालेज में पढ़नेवाले अमेरिकन छात्र थे और १८ आदमी हम थे।

जिस समय नानकिंग मे लूटपाट आरम्भ हुई उस समय लोग अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र आदि सब भूल गये और बिना किसी प्रकार के भेदभाव के लूट-पाट आरम्भ हो गयी। १२ दिसम्बर को चीन की सेनाएँ नानकिंग छोड़कर भाग खड़ी हुई। बस इसके बाद ही नानकिंग मे आतङ्क छा गया। नानकिंग की एक सड़क यागसी नदी की ओर गयी है। इस सड़क पर एक फाटक है। इस फाटक को तोड़कर जापानी सेना ने नगर में प्रवेश किया। तीन माल तक जापानी सेना ही सेना दिखाई देती थी। जापान की एक अस्त्र-शस्त्रों से भरी हुई लौरी मे आग लग गयी। इसके बाद रिक्सा, मोटर तथा अन्य प्रकार की गाड़ियोंमे आग लगायी जाने लगी। जापान के हवाई जहाजों ने बहुत समीप आकर मशीनगनों से आदमियों को भूनना आरम्भ कर दिया। चीनी और अन्य देशवासियों का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया। स्त्री-बच्चे, वृद्ध लूले-लँगड़े, अपाहिज, जो कोई सामने आया उसे मशीनगनों से भून डाला गया। कमजोर और वृद्ध, जो कही आ-जा न सकते थे, मौत के शिकार हो गये।

दूसरे दिन मैंने उस सड़क पर निगाह डाली, जो पहले नानकिंग की एक प्रमुख सड़क समझी जाती थी। चारों ओर लाशों के अम्बार लगे हुए थे। अधकटी लाशों के रुण्ड-मुण्ड स्थान-स्थान पर लोट रहे थे। सड़कें रक्तरञ्जित हो रही थी। इस प्रकार की बर्बरता दिखलानेवाले जापान की ओर से हैण्डबिल बाँटे गये थे, जिनमे लिखा था—"अपने घर में ही रहिये, आपका पड़ोसी जापान आपकी मदद करना चाहता है, शान्ति-स्थापित करना चाहता है।" एक ओर तो इस प्रकार के हैण्डबिल बाटे जारहे थे और दूसरी ओर भयभीत छात्रों तक को गोली के घाट उतार दिया जाता था।

चीन की महिलाओं की भी जापानी सैनिकों ने बड़ी दुर्गति की। जापानी सैनिक चीन की महिलाओं के सतीत्वको लूट रहे थे। यदि कोई महिला उनके इस कार्य का प्रतिवाद करती थी तो सङ्गीन की नोक उसके सामने कर दी जाती थी। ६० वर्ष की वृद्धाओं से लेकर ११ वर्ष की बालिकाओं तक पर जापानी सैनिकों ने बलात्कार किया। उन्हें दिन-दहाड़े सड़कपर पटक दिया गया और जापानी सैनिकों ने उनके साथ मुँह काला किया। बन्द दरवाजों के अन्दर जापानी सैनिकों द्वारा सतायी जानेवाली चीनी महिलाओं का चीत्कार सुनकर रोमाञ्च हो आता था।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक दिन तो जापानियों का प्रवेश नहीं हुआ, पर दूसरे दिन वे जबरदस्ती घुस आये और जो लोग शरीर से अशक्त नहीं थे उन्हें पकड़ कर ले गये। कुछ ही देर बाद हम लोगों ने मशीनगनों की आवाज सुनी। इन लोगों को ४० और ५० ५० के झुण्ड बनाकर खड़ा कर दिया गया और बाद में उन्हें मशीनगनों से भून

दिया गया। हम लोगों ने जिन युवक छात्रों के साथ काम करते हुए कई वर्ष बिताये थे। वे इस प्रकार बेरहमी से मौत के घाट उतार दिये गये।

१६ दिसम्बरको जापानी सैनिकों की पैशाचिकता ने और भी अधिक उग्र रूप धारण किया। लगभग सौ से अधिक महिलाओं को जापानी सैनिक पकड़ कर अपने बैरिकों में ले गये। इनमें सात महिलाएं तो विश्वविद्यालय में लाइब्रेरियन का कार्य करती थीं। जापानी सैनिकों का ऐसा आतङ्क छा गया था कि नानकिंग के मकानों के द्वार हर समय बन्द रहते थे। हम लोगों ने एक हजार स्त्रियों को एक मकान में छिपा दिया था, जिससे उनके सम्मान की रक्षा हो सके। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के ५० पुलिसमैनों को भी जापानी बहकाकर ले गये और उन्हें गोली से उड़ा दिया। जब एक अमेरिकन ने एक जापानी अफसर से इसका प्रतिवाद किया तो उसके मुँह पर उस अफसर ने थप्पड़ मार दिया।

दो दिनों तक जापानी सिपाहियों ने चीन की महिलाओं पर बलात्कार करने में व्यतीत किया, इसके बाद उन्होंने लूटपाट शुरू की। जापानी सैनिकों ने जहा जो पाया, वह लूट लिया और घरों में आग लगा दी। जिस अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमेरिकनों ने शरण ली थी उसे जापानियों ने लूट लिया। और तो और थोड़ा बहुत चावल तक लूट लिया गया। किसी का विरोध करने का साहस न होता था, क्योंकि विरोध का अर्थ था मृत्यु को निमन्त्रण देना। हम लोग उच्च अधिकारियों के पास प्रार्थनापत्र भेजना चाहते थे, पर कारपोरल से ऊंचा कोई सैनिक अफसर वहा था नहीं, और वह अँगरेजी नहीं जानता था। फिर प्रार्थना की जाती तो किस तरह? दिन में एक-एक मकान पर दस-दस बार जापानी सैनिकों का धावा होता था और लूटमार की जाती थी। हमारे सामने अमेरिका के झण्डे को पैरों तले कुचला जाता था, पर हम इसका प्रतिकार करने में असमर्थ थे।

सड़कों पर लाशें पड़ी हुई थीं, जिन्हें कुत्ते चाट रहे थे। चायनीज रैडक्रॉस सोसाइटी ने जब इन लाशों को उठाने का प्रयत्न किया और उसकी लॉरियाँ लकड़ी के कफनबक्स लेकर पहुँचीं तो जापानी सैनिकों ने उनसे वे बक्स छीन लिए और और उनमें आग लगाकर अपनी विजय की खुशी मनायी। बड़े दिन में नानकिंग की प्रसिद्ध सड़क टेंहिंग रोड पर आग की लपटें ही लपटें दिखाई दे रहीं थी। जापानी हाथ में टॉर्च लिए हुए आग लगाते फिर रहे थे।

सङ्गीनों से छेदे हुए कुछ चीनियों को अस्पताल लाया गया। इनमें अधिकांश को एक-दूसरे की पीठ से बाँध दिया गया था और इसके बाद उन्हें सङ्गीनों से छेद डाला गया था। अस्पताल मे इन लोगों में बहुत कम जीवित बचे। अस्पताल में आने के पहले ही बहुतों के प्राण-पखेरू उड़ गये थे। एक ओर तो जापानी सैनिकों की यह पैशाचिकता जारी थी, और दूसरी ओर जापानियों की ओर से इस आशय के पर्चे हवाई जहाजों से बाँटे जा रहे थे कि—जो चीनी शान्ति के साथ अपने घरोंमें चले आयंगे उन्हें जापान की ओर से

भोजन और वस्त्र दिये जायगे। जो चीनी चाग काइशक के सैनिकों की बातों में न आकर जापान के पक्ष में रहेंगे, जापान उनका सच्चा पड़ोसी बनेगा।' इस हैण्डबिल में एक जापानी सैनिक की तस्वीर बनी हुई थी, जिसके हाथ में एक चीनी बालक था। उसके पैरों के पास एक चीनी माता इस प्रकार दिखलायी गयी थी कि मानो वह उक्त सैनिक को धन्यवाद दे रही हो। महिला के पास चावलों के बोरे पड़े थे, पर हुआ इसके सर्वथा विपरीत। माताओं के सतीत्व का अपहरण किया जा रहा था और उनके पास भयभीत बालक त्राहि त्राहि कर चिल्ला रहे थे।

मैंने अपनी आँखों से तीन-तीन और चार-चार वर्ष के बच्चों को संगीन की नोक का शिकार होते देखा। मेरी जान पहचान के कई परिवार घरों में बन्द कर जीते जी जला दिये गये। क्रिसमस के तीन दिन बाद शंघाई से जापानी सौदागरों के जहाज आये। उस समय तक नानकिंग की सड़कों पर से लाशें हट गयी थीं। इन व्यापारियों ने चीनी बालकों की पीठ पर हाथ फेरा और उन्हें ढाढ़स दिया।

इसके बाद नया वर्ष आया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में रहनेवाले लोगों को जापानी अधिकारियों ने आदेश दिया कि वे जापानी झण्डे को लेकर जुलूस निकालें। इस आज्ञा का पालन किया गया और ऐसे ही समय उनके फिल्म भी उतारे गये जिनका विदेशों मे प्रदर्शन करके यह दिखाने की कोशिश की गयी है कि चीननिवासी जापान की विजय से प्रसन्न हैं। नानकिंग में जापानियों की बर्बरता चरम सीमा पर पहुँच गयी, पर मार्च मे टोकियो से रेडियो द्वारा समाचार प्रचारित किया गया—"नानकिंग में हत्या तथा सम्पत्ति के नाश के लिये चाग काइशक की सेना के जो सिपाही जिम्मेवार थे वे गिरफ्तार कर लिए गये और उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। अब नानकिंग में पूर्ण शान्ति है। जापानी सेना ३ लाख निराश्रयों के भोजन की व्यवस्था कर रही है।"

नानकिंग मे जापान की काली करतूतों का यह कच्चा चिट्ठा है।

हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[लेखक—श्री प० रामनारायण मिश्र काशी]

(मार्च ३८ के अंक से आगे)

(५१)—प्रात काल उठने ही एक बार शौच अवश्य जाना चाहिये। मल मूत्र को कभी भी रोकना नहीं चाहिए। शाम को भी एक बार शौच हो आना अच्छा है। शौच से लौटने मे जल्दी मत करो।

(५२) शौचादि के बाद कम से कम तीन बार सूखी मिट्टी से बायाँ हाथ धो डालो और तब दोनो हाथ। जिस बरतन से आबदस्त लो उसको माँज डालो। इसी काम के लिए यदि वह अलग रक्खा हो तब भी उसको कभी कभी माँजते रहना चाहिये। अपना हाथ पहिले धोकर तब उस बरतन को माँजो।

(५३) हर जगह लघुशंका करने मत बैठ जाओ। इसके लिए कहीं आड़ में उचित स्थान ढूँढ़लो। घर लौटकर लघुशंका करने की आदत डालो तब साधारणत बाहर ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

(५४) जहाँ तक हो सके आबदस्त नदी, तालाब आदि में मत लो। पानी साथ ले जाओ। नदी, नाले या तालाब मे आबदस्त लेकर उसके पानी को गदा मत करो। आबदस्त बाँए हाथ स लेना चाहिये।

(५५) झूठे पानी का छींटा किसी आदमी या बरतन पर नहीं पड़ना चाहिये।

(५६) बद दर्वाजो के अन्दर रहना और सोना अच्छा नहीं। खुले बरामदे या खिड़कीदार कमरे में रहना या सोना चाहिये। कमरो की खिड़कियाँ या दूसरे सूराख हमेशा बद मत रखो।

(५७) मुँह ढाककर मत सोओ।

(५८) मोज़े पहनकर मत सोओ।

(५९) सोनेवाली जगह को असबाब से मत भर दो और न उसमें जलता हुआ लप रखो। ताजी हवा आने के लिए उसको खुला रखो।

(६०) तन्दुरुस्ती के लिए साधारणतः सात आठ घण्टा सोना चाहिये। बच्चो को ज्याद सोना चाहिये। प्रातःकाल बहुत सबेरे उठ जाना चाहिये और उसी हिसाब से रात को जल्दी सो जाना चाहिये।

(६१) सोये हुए आदमी को कुसमय बिना मतलब न जगा दो, जहाँ कोई सोया हो वहाँ धीरे से आओ।

(६२) लेटकर मत पढ़ो। पढ़ते समय सीधे बैठो। खाना खाकर तुरन्त पढ़ने मत लगो।

(६३) शामके समय मत पढो। अँधेरा होने पर और कम रोशनी में मत पढो।

(६४) पढ़ने के समय रोशनी तुम्हारे बाएँ या पीछे से आनी चाहिये। यदि रोशनी सामने हो तो कागज़ या कपड़े से उसकी चमक कम करलो।

(६५) बच्चों को मत रुलाओ। उनको हरवक्त गोद मे न लिए रहो। जितनी जल्दी हो सके, उनको अपने बल पर खड़ा होना सिखलाओ। उनको अपने हाथ पैर हिलाने दो। वे कभी गिर भी जायें तो तुरत उठाने मत दौड़ो। उठाओ भी तो उनका मन किसी दूसरा तरफ़ फेरदो। बच्चोंको चूमना अच्छा नहीं।

(६६) भूत प्रेत या दूसरी डरानेवाली कहानियाँ बच्चो को मत सुनाओ।

(६७) रहने का मकान बहुत साफ रखना चाहिए। उसमें रोज झाड़ू लगानी चाहिये, कहीं जाला लगाहो तो छुड़ादेना चाहिये। उसका फर्श कभी कभी धुलाना चाहिये। मकान कच्चा हो तो उसको लिपवाते रहना चाहिये। चौकी, बक्स, आलमारी, मेज़, कुर्सी कभी कभी अपनी जगह से हटाकर ऊपर नीचे से अच्छी तरह साफ करनी चाहिये। मेज़ में दराज़ हो तो उसको भी अन्दर से साफ़ करना चाहिये। याद रखो गर्दे से बचना तन्दुरुस्ती के लिए बहुत ज़रूरी है। मकान की सजावट में विलासिता का भाव नहीं होना चाहिये। मकान मे महापुरुषो के चित्र होने चाहियें।

(६८) जिस प्रकार हो खटमल पिस्सू जूआँ (जूँ) मक्खी मच्छरों को दूर रक्खो।

(क्रमश)

Muslim Dissolution of Marriage Bill

Sjt, Vinayak Savarkar, President of the All-India Hindu Mahasabha has issued the following statement on the Bill, introduced in the Central Legislative Assembly —

"I feel it my duty to voice forth the opinion of the Hindu public in general as evinced in a number of resolutions passed at their meetings and institutions throughout the country and enter in a strong protest against the Bill entitled "Moslem Dissolution of Marriage Bill" and introduced in the Central Legislature by Mr Kazimi The Bill is detrimental to the interests of the Nation in general and Hindu Society in particular

'It is detrimental to the Hindus in more than one ways, firstly it is an unwarranted encroachment by a non-Hindu member on the Personal Law of the Hindus Secondly, although the Bill professes to enable Moslem women to secure a divorce and thus liberate them from the shackles which hold them bound to a marital tie against their free will according to the present Mohammedan law and practice still, inconsistently enough, it seeks to chain them down to share the bed and board of a Moslem husband whom they may hate and wish to divorce by imposing on them new fetters under clause 5 despite the Muhammedan religious and legal injunctions to the contrary

"The clause lays down "the conversion of the married Moslem woman to a faith other than Islam shall not by itself operate to dissolve her marriage" But according to the Mohammadan Law and Shariyat in force till now, the conversion of Moslem woman to any other religion secured for her an automatic dissolution of marriage with her Moslem husband

"Now, it is a matter of common knowledge which has been substantiated in hundreds of cases in courts of Justice that organised and stay attempts on the part of the Moslem fanatics have been continously going on to kidnap, capture or abduct unguarded Hindu women to make them embrace Islam per force and hustle them through a sort of marriage with Muslims, the records of which could easily be fabricated in a fanatical Kazi's register Whenever some of these women were either rescued or escaped and were reconverted to Hinduism they were up to this time automatically free from the enforced Moslem marriage as according to the Moslem Low a woman's conversion to any non-Moslem religion amounted by itself to a dissolution of her marriage with her former Moslem husband But if under this Bill the Hindus are made to lose this valuable right which they have secured through court decisions, these unfortunate Hindu women who fall victims to Mohammedan fanaticism canaot be freed from the clutches of even such forced marriage with Moslem even though they are

secured or ascaped and got reconverted to Hinduism of their own free will That will clearly show that this Bill is not so much a genuine attempt to liberate Moslem woman from the tie of marriage with Moslem husbands, they hate, as it is a deliberate attack against the rescue work of the Hindu Sanghatanist and the Suddhi Movement

"For the same reasons Christians and other non-Moslem communities other than Hindus will also suffer as Moslem women embracing any such non-Moslem faith of free will, will be unable to shake off their chains of a former Moslem wedlock under this new Bill

The Bill is also anti-national for the clause 6 runs as follows —

'Subject to the provisions etc" a suit for the dissolution of the marriage by a married Moslem woman shall be filed in the proper court provided that the presiding officer of that court is a Moslem And again "appeals from the decision of the trying courts shall lie to the High Court and shall be heard and decided by a Moslem judge of that court"

"Now this innovation is bound to be detrimental to the unity and cohesion of the National State, as the sttempt amounts to nothing short of introducing the communal virus in the judicial administration of the state Are we to have as many courts as there are creeds and religions in the land?—each competent only to try the cases of those to whose creed or religion the trying judge belongs? The distrust that the Bill shows towards non-Moslem judges amounts to a covered condemnation against that class who have ever been known to deal even-handed justice without any distinction of creed or religion

"For these and other objections against this Bill it is the duty of every Nationalist member in general and Hindus and Christians in particular to oppose it as it stands Even in the interest of civil liberty alone the Bill ought also to be condemned by every member who is a free thinker and follows no religious persuasion"

Suicidal Policy of Nizam's Government.

Venue for Aryan Congress selected

Mr S Chandra, Secretary of the Aryan Defence Committee, has returned to Delhi after his tour of Hyderabad State, which was undertaken in company of the Hon'ble Mr G S, Gupta, Speaker of C P Assembly and President of the International Aryan League The visit was in connection with the ill-treatment meted out to the Aryasamajists in the State Hon'ble Mr Gupta had interviews with Sir Akbar Hydari and other high officials in that connection Mr Chandra saw the Hyderabad Arya Samajists and Hindus undertrial prisoners at the Central Jail.

From Hyderabad, Mr Chandra proceeded to Sholapur and Barsi to select the place and site for holding the Session of All-India Aryan Congress The place and the site have been selected by him, which, together with the dates for the ensuing Session

will be duly announced after the final approval of the Working Committee of the Aryan League, which is meeting shortly

On his way back, Mr Chandra interviewed Mr V D Savarkar, President of the Hindu Mahasabha at Bombay and His Holiness Jagatguru Shankaracharya (Dr Kurtkoti) at Nasik and explained to them the existing condition of Hindus in the Nizam's State and discussed the situation arising out of it He also addressed public meetings at both the places and visited the Bhonsla Military Collage at Nasik

In the course of a statement to the press, Mr Chandra says, ' Let us hope that after the interviews which the Hon Mr Gupta had with Sir Akbar Hydari and other ministers of the Nizam's Government the police and other district officials will treat the Aryas and their religious activities in such way as to regain their lost confidence The Aryan League have been trying for the last several years to create good relations between the Arya Samaj and the Nizam's Government by conciliation and good-will but it is really very deplorable that alike response had never been forth-coming from the other side. If the Nizam's Government do not change their communal attitude towards Aryas and Hindus and respect their religious activities, they (Nizam's Government) will be following a suicidal policy and will be held responsible for any future unfortunate consequences "

"Let the Nizam's Government and our Muslim friends clearly understand that Arya Samaj is neither anti-Nizam nor anti-Islam, but it is anti-evil, wherever evil is, even be it among its own kith and kin"

Sad demise of Rajratana Master Atma Ram ji

Professor Sudhakar, Secretary International Aryan League has issued the following statement to the Press on the sad demise of Pandit Atma Ram —

Rao Bahadur Rajyaratna Rajyamitra Pandit Atmaram was a great figure in the circles of Arya Samaj In his early days, his leadership was undisputed As a scholar, writer, speaker and debater he had few rivals He profoundly influenced the Arya Samaj policy in regard to its prachar work Later on, he migrated to Baroda, where he founded the great institution, known as Kanya Mahavidyalaya Apart from his educational work in the State, he did yeoman's service to the cause of Depressed Classes His popularity in the State won him many titles and profound personal regard from His Highness Gaekwar of Baroda himself With his passing away, has passed away the great solitary figure of one of the oldest and the most popular workers of Arya Samaj It is a great consolation to learn that the late Pandit, popularly known as Master Atmaram Amritsari leaves behind him great social workers in the person of his sons

आर्य-प्रतिनिधि-सभा की स्वर्णजयन्ती की तय्यारियाँ

महर्षि दयानन्द ने अपना अन्तिम जीवन राजस्थान के सुधार में लगाया था और उनका बलिदान भी राजस्थान के केन्द्र अजमेर नगर में हुआ था। सारे प्रान्त में उनके वेद-प्रचार के कार्य को संचालन करने के लिए आर्य-पुरुषों ने श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा आज से ५० वर्ष पूर्व स्थापित की थी। इन ५० वर्षों की स्मृति स्वर्णजयन्ती के रूप मे इस वर्ष कार्तिक सुदी १३ से मार्गशीर्ष कृष्णा २ तदनुसार ता० ५ नवम्बर से ता० ६ नवम्बर सन् १९३८ तक श्री स्वामीजी के बागमे बड़े ही समारोह से मनायी जावेगी। इस सुअवसर पर अनेक सम्मेलन होंगे। टूर्नामेण्ट होंगी और भारत के प्रसिद्ध देशभक्त तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् पधारेंगे। इतना ही नहीं, राजस्थान व मालवा के सहस्रों नर-नारी "भविष्य मे हमारे प्रान्त मे वैदिकधर्म प्रचार किस प्रकार करना चाहिये ?" इस विषय पर विचार कर बड़ा ही उत्तम कार्य-क्रम बनाएंगे, जिससे प्रान्त मे धर्मनिष्ठ, कर्तव्य-परायण वीर योद्धा उत्पन्न होकर "कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्" का मन्त्र लेकर समग्र संसार को सुखी बनाने की सफल योजना करेंगे। यह स्वर्णजयन्ती कोरी व्याख्यानबाजी और प्रदर्शिनी का मेला न होगा, बल्कि इसके लिए ठोस और रचनात्मक कार्य अभी से आरम्भ हो गया है। २५ हजार की लागत से सरस्वतीभवन महर्षि की निर्वाण स्थली मे बन रहा है। १५ हजार रुपयों का चन्दा लिखा जा चुका है, बाकी १० हजार रुपयों के लिए प्रयत्न हो रहा है।

५० हजार रुपये स्थायी कोष मे जमा करके वेद प्रचार के कार्य को स्थायी बनाने का आयोजन आरम्भ हो गया है। इस सुअवसर पर एक बडे काम की आयोजना हो रही है। गत ५० वर्षों मे हमने क्या क्या कार्य किया है, उसके लिए आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा का इतिहास लिखने का आयोजन हो रहा है। इस इतिहास मे आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना, इसके साथ सम्मिलित समाजो का संक्षिप्त इतिहास होगा।

आर्य-बहिनो और भाइयो ! यह स्वर्णजयन्ती का अवसर ५० वर्ष मे आया है। अत: हम आपको सादर सस्नेह अजमेर पधारने के लिए निमन्त्रित करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप इस महायज्ञ मे तन-मन-धन से सहायता देकर इसको सफल बनायें।

जैसी कि आर्य नरनारियों से आशा थी प्रान्त भर के आर्यों ने स्वर्णजयन्ती के कार्य को अपने कन्धों पर उठा लिया है, स्वर्णजयन्ती का कार्य सारे प्रान्त में बड़े उत्साह से चल रहा है। पचीस

सहस्र की लागतवाले सरस्वती भवन के निर्माण कार्य के अलावा वैदिक सिद्धान्तों पर ग्रन्थ लिखाये जाने का आयोजन हो रहा है, सार्वदेशिक सभा के प्रसिद्ध नेता श्रीमान् नाराय ग स्वामीजी महाराज इस शुभ अवसर पर एक बहुत ही उपयोगी पुस्तक 'कर्मरहस्य' लिख रहे हैं। श्रीमान् डा० सत्यप्रकाश जी प्रयागवालों से अङ्गरेजी मे "A critical study of Daya Nand's Philosophy" नामक पुस्तक लिखाने का आयोजन हो रहा है।

संस्कारोपसभा, सन्यासी मण्डल आदि सभी अपने-अपने कार्य मे जुट हुए हैं और स्वर्ण-जयन्ती को हर प्रकार स सफल बनाने के लिए तन, मन व धन से प्रयत्नशील है। स्थान-स्थान से न केवल वैदिकधर्म का सन्देश सुनाते हुए आर्यवीरों के जत्थे पैदल ही आवेंगे, बल्कि इस स्वर्ण अवसर पर आर्य पुरुष अपना सन्तानों के यज्ञोपवीत संस्कार कराने के लिए भारी संख्या मे पधारने की सूचना दे रहे हैं। वास्तव मे यज्ञोपवीत आदि संस्कार सबसे अधिक आय नर-नारियों की उपस्थिति मे कराने का दूसरा अवसर है आगामी ५० साल में मिलना अति कठिन है।

श्रीमान् प्रो० जगदीश जी इस अवसर पर अनेक खेलकूदों का आयोजन कर रहे हैं। राजस्थान के प्रत्येक आर्य स्कूल के बालक-बालिकाएँ उन टूर्नामेंटों मे भाग ले सकें, ऐसा प्रबन्ध व लिखा-पढ़ी चालू है।

गत सप्ताह की "स्वर्णजयन्ती की तैयारियाँ" शीर्षक लेखमें आर्यसमाजों से अपील की गयी थी कि वे अपनी-अपनी समाजों के गत ५० वर्षों के विवरण भेजें, ताकि इतिहास के निर्माण कार्य में सुगमता मिले।

प्रिय आय-भाइयो और बहिनो! स्वर्णजयन्ती का स्वर्णमय अवसर परमात्मा की असीम कृपा से वैदिकधर्म का सन्देश प्रान्त के कोने कोने मे फैलाने के लिए हमे मिला है। इससे लाभ उठाइये और इस जयन्ती को सफल बनाने के लिए कटिबद्ध होकर कटिबद्ध उतारिये और महर्षि दयानन्द की सच्ची जय अजमेर नगर में ता० ५ से ६ नवम्बर तक पधारकर बोलिये।

चाँदकरण शारदा,
प्रचार-मन्त्री।





काम और नाम

[लेखक—श्री डॉक्टर युद्धवीरसिंह जी, उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उपप्रधान भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्]

आर्यसमाज में और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में काम करनेवालों में नाम की इच्छा बड़ी जल्दी उत्पन्न हो जाती है। वास्तव में यह एक ऐसी कमज़ोरी है जिसमें साधारण पुरुष तो तुरन्त ही फँस जाते हैं, परन्तु महापुरुष भी शायद अन्त तक मुश्किल से ही इससे पीछा छुड़ाने में समर्थ होते हैं। काम करने से यश होता है—नाम होता है, यह तो स्वाभाविक ही है मगर उस यश या नाम की इच्छा करने से न सिर्फ काम में बाधा पड़ती है, बल्कि यश की इच्छा करनेवाला काम की अपेक्षा यश को ज्यादा चाहने लगता है और उसका स्वाभाविक नतीजा यह होता है कि वह काम को छोड़कर यश के पीछे भागता है—पथ भ्रष्ट हो जाता है और कभी कभी यश और काम दोनों ही से हाथ धो बैठता है। हर काम करने से नाम नहीं होता, इसलिए ऐसे लोग केवल उन्हीं कामों को पसन्द करते हैं जिनसे नाम हो।

आजकल प्राय देखने में आता है कि हमारे समाज मे काम की अपेक्षा लोगों को नाम की इच्छा अधिक है। दान है तो नाम के लिए, सभाओं का काम है तो नाम के लिए धार्मिक राजनैतिक और सामाजिक सेवा तक नाम के लिए होती है। पर यह बात है बुरी। नाम चाहनेवाले लोग काम की तरफ़ ध्यान नहीं दे सकते। इसलिए महापुरुषों ने यह बतलाया है कि नाम की इच्छा को छोड़कर ही काम करना चाहिये। जिस समाज और जिस जाति में जब नाम को छोड़कर काम को करनेवाले पैदा होते हैं तब वह जाति या समाज उन्नति कर जाता है। जातियों के इतिहास में तो उन लोगों के नाम का पता भी नहीं लगता, जिन्होंने जातियों का निर्माण किया। सुन्दर सुन्दर मकानों की नींवों के पत्थर और ईंटें तो कभी दिखाई भी नहीं देतीं। ताजमहल जैसी सुन्दर और खूबसूरत इमारत

को देखकर उसकी नींव और ईंटों की कौन प्रशंसा कर सकता है ? मगर क्या किसी भी सुन्दर विशाल भवन की नींव में पड़े हुए पत्थरों की क़ीमत उसके ऊपर लगे हुए पत्थरों से कम है ? हरगिज़ नहीं, बल्कि ज्यादा है। नींव के पत्थर तो आधार हैं। उनके बिना तो सुन्दर भवन खड़े हो ही नहीं सकते।

ठीक इसी प्रकार वह हज़ारों युवक कार्यकर्त्ता होते हैं जो देश और धर्म के प्रेम से प्रवाहित होकर नाम की इच्छा को बिल्कुल छोड़कर काम में जुटकर जातियों का निर्माण करते हैं। आज आर्यसमाज में तो ऐसे कार्यकर्त्ताओं का ह्रास सा हुआ मालूम होता है। अपने नाम की इच्छा से समाजों में जगह जगह झगड़े पैदा होगये हैं। झगड़ों का मूल कारण काम पर से दृष्टि हटाकर नाम की कामना करना है। आर्यसमाज के गौरव की जो हानि होती हमें दीखती है उसका मूल कारण है—आर्यसमाज के आपस के झगड़े और इन झगड़ों का कारण अपने-अपने नाम की इच्छा रखना है। मेरा नाम हो—यह अहंकार का भाव ही इसको नीचे गिराता है। आज आर्यकुमारों से यही नम्र निवेदन है कि यदि वे ऋषि दयानन्द के द्वारा आरम्भ किये हुए इस आर्यसमाज रूपी महायज्ञ द्वारा अपने देश और संसार का कुछ कल्याण करना चाहते हैं तो उन्हें यह पाठ पढ़ लेना चाहिये कि काम करना और नाम की इच्छा बिल्कुल न करना। यदि आर्यकुमारों ने यह पाठ न पढ़ा तो यह महान् यज्ञ नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा और जो लड़ाई झगड़ों की आग आज आर्यसमाज में सुलगी हुई है वह इस दयानन्द की लहराती हुई खेती को भस्म कर देगी। क्यों, क्या आर्यकुमार नाम की इच्छा को न छोड़ सकेंगे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज अपने कर्मों को हम ज़रासा भी काम करके उसका सब जगह ढोल पीटते देखते हैं। ऐसा भी देखते हैं कि काम बहुत थोड़ा और उसका प्रोपैगैण्डा (नाम) बहुत ज्यादा। आर्यसमाज में ख़ास कर यह दोष बहुत दिखाई देगा। मगर यह सब होते हुए भी आज अपने और अपने समाज के कल्याण के लिए आर्यकुमारों को ऐसे लोगों की नक़ल न करके उन्हें अज्ञात महापुरुषों का ध्यान करना चाहिये जो बिना किसी नाम के अपना काम कर गये हैं। हमें अपने काम का ढोल पीटने—अपने काम के एवज़ में पुरस्कार या प्रशंसा प्राप्त करने की भावना को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये। बस यही मन्त्र याद रखिए— काम करना है नाम नहीं चाहना।"

परिषद् की जयन्ती की तिथियाँ

परिषद् की जयन्ती २१वें भारतवर्षीय आर्य-कुमार सम्मेलन के रूप में बिजनौर में ३० सितम्बर तथा १ और २ अक्तूबर १९३८ को मनाई जायगी। आर्यसमाज के प्रमुख प्रमुख नेता जयन्ती पर पधारेंगे और आर्यकुमारों के लिए इनके सुन्दर और बहुमूल्य उपदेशों से लाभ उठाने का यह अवसर होगा। इसलिए उन्हें चाहिये कि अधिक से अधिक संख्या में जयन्ती पर पधारें और उसे सफल बनायें।

आर्यकुमार सभाओं को स्वागतकारणी की निम्न बातोंका उत्तर भी अब शीघ्र ही देदेना चाहिये।

१—सभा के प्रतिनिधियों के नाम तथा शुल्क ?

२ निम्न विषयों में से किसी एक पर अपनी सभा के आर्यकुमारों के लेख—

पुरुष-स्त्री में भेद और उनकी वास्तविक उन्नति

[लेखक—श्री मास्टर आत्माराम जी]

पुरुष और स्त्री मे भेद

सृष्टि में एक भी परमाणु बिना विशेष उद्देश्य के नहीं है। स्त्री और पुरुष की मुख्य बनावट बिना किसी उद्देश्य के नही है। सबसे बढ़कर बात यह है कि एक दूसरे की मुख्य बनावट एक दूसरे को आकर्षण अथवा प्रेम करती है और यही प्रम का अटूट सम्बन्ध है जो स्त्री पुरुष के मेल (विवाह) की नींव है। यदि पुरुष और स्त्री के शरीर की बनावट मे भद न होता तो उनमें अटूट प्रम कैसे उत्पन्न हो सकता। इस हेतु सृष्टिकर्त्ता ने इस मनोहर रचना से परस्पर प्रम का अटट शिक्षा भरदी है। इस विशेष बनावट का कारण पू जन्म के कर्म है। इसलिए मुख्य प्रकार के कर्मों को मुख्य बनावट ही उत्तमता से कर सकती है। सन्तानोत्पत्ति गृह का प्रबन्ध इत्यादि कर्म स्वभावतया स्त्री ही कर सकती है और श्रम तथा शत्रुओ से परिवार की रक्षा करना पुरुष का ही काम है।

वास्तविक उन्नति

वास्तविक उन्नति यह है जिससे स्त्री उन्नति करके पूर्ण उन्नत स्त्री बने।

वे मनुष्य बडी गलती पर है जो स्त्रियों की की उन्नति चाहते हुए उनके स्त्रीत्व के गुणो और कार्यों को नष्ट करके उन्हे पुरुष बनाने के वृथा यत्न मे हैं। स्त्रियों को स्वत्व मिलने चाहिए, इसका अभिप्राय यह है कि वे स्वत्व जो पुरुष समाज ने उनके छीन रख है वे उन्हे देने चाहिए परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि स्त्रियों को पुरुष बनाने का यत्न किया जाय और जो लोग पुरुष का पुरुषत्व नष्ट करके उसकी उन्नति करना चाहते हैं, वे भी कम गलती पर नहीं हैं। इसलिए सच्ची शिक्षा यह है कि जिसके द्वारा स्त्री उन्नति करती हुई पूर्ण स्त्री और पुरुष उन्नति करता हुआ पूर्ण पुरुष बन सके तथा स्त्री पुरुष परस्पर एक दूसरे की सहायता करने की योग्यता प्राप्त कर सकें और गृहस्थाश्रम में एक दूसरे का हाथ बँटाते हुए मोक्ष माग में पग बढ़ाते हुए चले जायँ।

—

१—क्या आर्यकुमारो को राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना आवश्यक है ?

२—भारत की आधुनिक उन्नति में ऋषि दयानन्द का स्थान।

३—भारत में स्वदेशी का प्रचार किस प्रकार हो ?

४—भारतीय युवकों के लिए वायुयान तथा सैनिक शिक्षा अनिवार्य्य हो।

५—भारत के लिए देवनागरी ही राष्ट्रीय भाषा होना क्यों आवश्यक है ?

जयन्ती पर आर्यकुमारों की एक डिबेट भी होगी जिसका विषय होगा —

क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नव युवकों के लिए हितकारी है ?

लेखों में तथा डिबेट में प्रथम तथा द्वितीय आने वाले छोटे तथा बड़े कुमारोंको पृथक् पृथक् पारितोषिक मिलेंगे।

सम्पादकीय

हैदराबाद और आर्यसमाज

हमे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि आर्य-जगत् ने इस समय अपनी आँखों को हैदराबाद रियासत के मजलूम आर्य-भाइयों की ओर लगाया है। हम कई मास से निरन्तर इस पत्र मे उनकी दयनीय दशा की ओर ध्यान दिलाते रहे हैं। अब, जब कि आर्य-जगत् जागृत हो चुका है, हमे तनिक भी सन्देह नहीं कि हैदराबाद मे रियासत की ओर से जो अत्याचार आर्यसमाज तथा हिन्दू-समाज पर किये जारहे है उनका शीघ्र अन्त होने वाला है। पञ्जाब के प्रसिद्ध आर्य-पत्रों ने इस विषय पर घोर आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया है। स्थान-स्थान के आर्यसमाजों से, संस्थाओं तथा व्यक्तियों की ओर से जो पत्र सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आ रहे हैं, उनसे प्रतीत होता है कि आर्यों का आत्माभिमान जाग उठा है और वे अपने धन-जन से हर प्रकार की सेवा, सहायता तथा कुर्बानी के लिए तैयार हैं।

आर्यसमाज ने अपने जीवन-काल के अन्दर अनेक अत्याचारों का मुकाबिला किया है और कभी भी अपने सिर को अत्याचारियों के सामने नहीं झुकाया। अब भी हैदराबाद रियासत में कई आर्य-भाइयों ने अपने बलिदान द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि वे अपने धार्मिक स्वत्वों की रक्षा के लिए सदा अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार हैं। जिस निर्भयता से इन भाइयों का वध किया गया है उसको जानकर रोंगटे खडे हो जाते हैं, परन्तु जिस धैर्य से इन भाइयों ने अपनी इस घोर परीक्षा में अपने आर्यत्व का परिचय दिया है उसको जानकर हृदय गद्गद् हो जाता है और हमारा मस्तिष्क अभिमान से ऊँचा उठ जाता है।

हैदराबाद रियासत में हमारे धार्मिक स्वत्वों को बहुत अर्से से कुचला जा रहा है और उनके सम्बन्ध मे जब कभी हमने समाचार-पत्रों मे आवाज उठायी तो कतिपय कांग्रेसी समाचार-पत्र यही कह देते थे कि ये बातें साम्प्रदायिक हैं और इन बातो की ओर ध्यान देना केवल साम्प्रदायिक उलझनो मे पड़ना है। हमें इस बात का अत्यन्त दुःख है कि यह लोग धार्मिक स्वत्वों को नागरिक स्वत्व नहीं समझते। वस्तुतः धार्मिक स्वत्व भी नागरिक स्वत्व ही है। अब जब कि श्री नरीमान के प्रवेश तथा श्री भूलाभाई देसाई के व्याख्यान पर हैदराबाद में प्रतिबन्ध लगाये गये तो कांग्रेस जगत् मे हलचल मच गयी कि यह नागरिक स्वत्वों का घोर अपमान है। इन प्रतिबन्धो का आवश्यक परिणाम यह होगा कि कांग्रेस भी अपने दल बल सहित नागरिक अधिकारो के प्रश्न के आधार पर हैदराबाद में आन्दोलन शुरू करेगी। परन्तु हमे इस बात की प्रतीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं। हमारा मार्ग साफ है। हम

अपने अधिकारो को सुरक्षित रखना स्वय जानते हैं। हमन पटियाला रियासत के अन्दर जिस प्रकार अपने अधिकारो की रक्षा की थी उसको सारा जगत् जानता है। आर्यसमाज ने अपने इस छोटे से जीवन काल के अन्दर इस बात का पर्याप्त सबूत दे दिया है कि ससार की कोई शक्ति आर्यसमाज को अपने जन्मसिद्ध अधिकारों से वञ्चित नहीं कर सकती।

आर्य जनता को विदित हो चुका है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्यामसिह जी गुप्त हैदराबाद तशरीफ ले गये थे और वहाँ उन्होने कई रोज रहकर आर्य समाज की वर्तमान स्थिति का अच्छी तरह अध्ययन किया। उन्होंने हैदराबाद के प्राइम मिनिस्टर सर अकबर हैदरी तथा अन्यसभी मिनिस्टरो से मिल कर आर्यसमाज की स्थिति के सम्बन्ध मे विचार विनिमय किया और उनपर साफ साफ प्रकट किया कि यदि आर्यसमाज पर मुसलमानो तथा रियासत के कर्मचारियों की इसी प्रकार ज्यादतिया जारी रहगी तो आयसमाज को अपनी रक्षा के लिए स्वयं जुट जाना पडेगा और उसकी सारी जिम्मे वारी स्वय निजाम सरकार पर आयद होगी।

हमने पिछले अङ्क में इस बात की सूचना दे दी थी कि हम एक बृहद् आर्य-काग्रेस की आयोजना कर रहे हैं। श्रीयुत शिवचन्द्र जी को हैदराबाद का दौरा लगाने तथा काग्रस क लिए उपयुक्त स्थान के चुनाव के लिए भेजा गया था। वह इस समय वहाँ से लौट आये हैं और सार्व देशिक सभा की आगामी अन्तरङ्ग सभा में वे अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे। हमें आशा है कि हमारे पाठक काग्रेस की तिथियों के निश्चित हो जाने के पश्चात् उनक अधिवेशन को सफल बनाने के लिए हमे पूरी सहायता देंगे। यह हर्ष की बात है कि अब भी कई समाजों ने धन राशि द्वारा सभा को इस बात की प्रेरणा की है कि धन की कमी के कारण इस अधिवेशन की सफलता मे कोई कमी न आनी चाहिये। हैदराबाद की सीमा पर एक बृहद् अधिवेशन को सफलतापूर्वक निभाने के लिए पर्याप्त व्यय होगा और इस व्यय भार को आर्य जनता को ही अपने कन्धो पर उठाना है।

इस समय एक नई कठिनाई हमारे सामने उपस्थित हो गयी है। श्री भूलाभाई देसाई ने जो हैदराबाद के आर्य तथा हिन्दू भाइयों पर लगाये गये कत्ल के अभियोग मे उनकी पैरवी कर रहे थे, इस आधार पर इस अभियोग की पैरवी छोड़ दी है कि हैदराबाद मे उन्हे नागरिक अधिकारों की स्वतन्त्रता नहीं दी गयी। उनके इस प्रकार अभियोग की पैरवी छोड देने पर अब हमारे भाइयों को कुछ और प्रबन्ध करना होगा। इसके लिए भी यदि आर्य जगत् अपने अन्दर से किसी प्रसिद्ध फौजदारी वकील को हैदराबाद भेज सके तो यह बडे गौरव की बात होगी अथवा यदि वह सार्वदेशिक सभा के हाथों मे इतनी धन राशि सौंप दे कि वह किसी प्रसिद्ध वकील को वहाँ उजरत देकर भेज सकें तो भी हैदराबाद के आर्यसमाजियों की पर्याप्त सहायता हो जायेगी। गुलबर्गा में भी इसी प्रकार एक कत्ल का अभियोग चल रहा है,

जिसमें कई निरपराध आर्य भाई पकड़े गये हैं। उनकी सहायता के लिए सार्वदेशिक सभा ने श्रीयुत मलिक रामचन्द्र खन्ना, बी० ए०, एल-एल० बी० वकील, मुल्तान-निवासी को भेजा है। जो समाचार वहाँ से प्राप्त हुए हैं उनसे विदित होता है कि उनके कार्य से वहाँ के भाइयों को पर्याप्त सहायता मिल रही है। आर्य भाइयों को यह जान कर भी प्रसन्नता होगी कि खन्ना जी अपने भाइयों की निःशुल्क सेवा कर रहे हैं।

हमें आशा है कि आर्य-भाई आनेवाली कॉंग्रेस के लिए अभी से तैयारियाँ शुरू कर देंगे।

——

स्वर्गीय मास्टर आत्माराम जी

श्री राजरत्न मास्टर आत्माराम जी की मृत्यु का समाचार आर्य-जगत में बड़े दुःख के साथ सुना जावेगा। श्री मास्टर जी की गत कई वर्षों से शारीरिक अवस्था ठीक न थी और वे गत कई मास से रोग शय्या पर पड़े थे। उनकी रुग्णावस्था आर्य जगत् में बड़ी चिन्ता का विषय बन रही थी। गत २४ जुलाई को बड़ोदा के एक तार ने सहसा ही हम सबको शोक और नैराश्य में विलीन कर दिया।

यद्यपि माननीय मास्टर जी अब हमारे मध्य में नहीं हैं और उनका हम लोगों से पार्थिव सम्बन्ध टूट गया है, फिर भी उनका आत्मिक सम्बन्ध हमसे बना ही रहेगा। उनका व्यक्तित्व और उनकी सेवाएँ वस्तुतः ऐसी ही थी। रोग-शय्या पर पड़ जाने और आर्यसमाज की सक्रिय प्रगतियों से बलात् पृथक् हो जाने पर भी राज-रत्न को आर्यसमाज और उसकी सेवा का ख्याल रहता था और उस अशक्तावस्था में भी अधिक-से-अधिक जो सेवा बन पड़ती थी, वे करने में नहीं चूकते थे। वस्तुतः उनकी मृत्यु में आर्यसमाज का एक अनन्य सेवक उठ गया है और उनकी मृत्यु आर्य-समाज की एक बड़ी हानि है।

श्री मास्टर जी पंजाब प्रान्त के अमृतसर नगर के निवासी थे। आर्य जगत् में वे 'मास्टर जी' और 'अमृतसरी' के नाम से ही अधिक प्रख्यात थे। उनका सेवा-कार्य अमृतसर या उत्तर भारत से शुरू हुआ था और उसका अन्त उनके जीवन के साथ बड़ौदा अथवा मध्य-दक्षिण भारत में हुआ। जैसा प्रारम्भ शानदार था वैसा ही अन्त शानदार रहा। वे आर्यसमाज के उस काल के प्रतिनिधि थे जो बहुत उज्ज्वल समझा जाता है और अब जिसकी स्मृति ही बाक़ी रह गयी है। वे आर्यसमाज के चुने हुए सेवकों यथा स्व० पं० लेखराम जी, पं० गुरुदत्त जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी में से थे और इनमें से कई के सहकर्मी भी थे। वे आर्यसमाज के सौर मण्डल के एक नक्षत्र थे। उनकी मृत्यु में मण्डल का एक नक्षत्र टूट गया है इसपर जितना दुःख और सन्ताप हो उतना ही कम है।

श्री मास्टर जी लेखक, विद्वान्, वक्ता और शास्त्रार्थ-महारथी के रूप में सेवा का उत्तम रिकॉर्ड छोड़ गये हैं। सेवा के प्रारम्भिक युग में वे एक उत्तम वक्ता और शास्त्रार्थी के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने आर्यसमाज का काफी और उल्लेखनीय प्रचार किया। अनेक मार्के के शास्त्रार्थ किये। ईसाई और मुसलमानों के शास्त्रार्थी मास्टर

ओं का लोहा मानते थे। मौलाना सनाउल्ला साहब से तो, जो उनके समय के मुसलमानों के प्रसिद्ध शास्त्रार्थी थे, मास्टर जी की प्रायः टक्कर रहा करती थी और वे उन्हें बड़ी उत्तमता से पछाड़ा करते थे।

श्री मास्टर जी ने लेखनी से तो अन्त समय तक आर्यसमाज की सेवा की है और बड़ा उत्तम साहित्य समाज को अर्पण किया है। वह साहित्य आर्यसमाज को अमूल्य सम्पत्ति है, जिसपर वर्तमान और आगेवाली सन्तति बहुत कुछ निर्भर करेगी और लाभ उठायेगी। वैदिक विवाहादर्श, सृष्टि विज्ञान, दिग् विज्ञान संस्कारचन्द्रिका इत्यादि उस साहित्यके अमर रत्न है। उनके पढ़ने से पाठक के बहुत कुछ पल्ले पड़ता है। उनको पढ़कर मास्टर जी के विशाल और गहरे स्वाध्याय पर मुग्ध होना ही पड़ता है। स्व० लेखराम जी द्वारा सकलित स्वामी जी महाराज के जीवन की सामग्री को व्यवस्थित करने में श्री मास्टर जी ने बड़ा परिश्रम और उत्तमकार्य किया था।

आर्यसमाज के रचनात्मक कार्य मे भी उनका योग कम महत्वपूर्ण नहीं है। वे पजाब की महात्मा पार्टी के एक स्तम्भ समझे जाते थे। वर्षों तक वे आर्य-प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री इत्यादि पदों पर कार्य करते रहे थे। गुरुकुल-वृन्दावन में भी कुछ समय पर्यन्त उन्हो ने मुख्याधिष्ठाता पद पर रहकर कार्य किया था। बड़ौदा से आर्य कन्या महा विद्यालय उनके रचनात्मक कार्यों का एक एक ज्वलन्त उदाहरण है।

वे शिक्षा विभाग के इन्सपेक्टर होकर बड़ौदा गये थे। शिक्षा विभाग की सेवा करते हुए उन्होंने आर्यसमाज की जो सेवा की इसका परिचय बड़ौदा की विभिन्न आर्य-संस्थाएँ उनके परिवारकी वहा लोकप्रियता और राज्य की उदार धार्मिक नीति दे रही हैं। बड़ौदा में जिन लोगो ने आर्यसमाज की सस्थाएँ-आर्य कन्या विद्यालय, आर्य आश्रम आर्यसमाज मन्दिर तथा आर्यपुर देखी है उन्हें ही मास्टर जी तथा उनके परिवार के बड़ौदे में कार्य का सहा परिचय मिल सकता है। वहा के विशुद्ध आर्यसामाजिक वातावरण मे चित्त बड़ा प्रफुल्लित होता है। आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से गुजरात के उर्वर प्रान्त में मास्टर जी तथा उनकी सस्थाओ और कार्यो ने आर्यसमाज के इतिहास मे एक अध्याय बना लिया है।

आर्यसमाज के जिन सेवको ने भारतीय नरेशो के व्यक्तित्व और उनके राजकीय जीवन पर गहरी छाप डाली है उनमे मास्टर जी का स्थान बड़ा ऊँचा है। बड़ौदा नरेश पर मास्टर जी का बड़ा प्रभाव पड़ा था। वे राजमहलो मे अपनी रानियो और परिवार के सदस्यो के साथ मास्टर जी के उपदेश और प्रवचन सुना करते थे। बड़ौदा नरेश ने उन्हें राज्यरत्न और 'राजमित्र' की उपाधियो से विभूषित करके उनका सेवाओं का आदर किया था। बड़ौदा-राज्य में समाज-सुधार के जो उत्तमोत्तम कानून पास हुए है और वह समाज-सुधार में सब रियासतो का जो अग्रणी बना हुआ है उसका श्रेय उदारचेता बड़ौदा-नरेश, वहा की उदार सामाजिक नीति और उन सब पर मास्टर जी की छाप है।

श्री मास्टर जी अपने पीछे विधवा पत्नी, ५ पुत्र, १ कन्या, पुत्र वधुएँ पौत्र, नाती, इत्यादि भरा पुरा

परिवार छोड गये है। वे सब ही योग्य और आर्य-समाज के प्रेमी हैं। श्री आनन्दप्रिय जा के रूप में उन्होंने अपना अच्छा और सुयोग्य उत्तराधिकारी छोडा है। वे कन्या महाविद्यालय इत्यादि क सफल सचालन के साथ गुजरात प्रान्त म आयसमाज को एक शक्ति बनाने के श्रेष्ठ कार्य मे सलग्न हैं। हम समस्त आर्य जगत् की ओरसे उनके दुखी परिवार के इस महान् दु.ख मे समवेदना प्रकट करते और श्री मास्टरजी के प्रति उपयुक्त विनात श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते हुए उनकी आ मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते है।

संस्कार-विधि का आन्दोलन

जब से धर्मार्य सभा ने सस्कार विधि के सम्बन्ध मे अपना प्रस्ताव स्वाकार किया है तभा से समाचार पत्रों में एक विशेष आन्दोलन छिड गया है सार्वदेशिक सभा की ओर से इस विषय के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति भी प्रकाशित को गया थी। हम इस आन्दोलन को बुरा नहीं समझते। आर्य जनता का पूर्ण अधिकार है कि वह धर्मार्य सभा अथवा सार्वदेशिक सभा के निर्णयो के सम्बन्ध मे अपनी सम्मति प्रगट करे। सभाओ को भी जनता की सम्मति के प्रकट होजाने पर अपने आगामी विचारो में तथा निश्चयो के करन मे उससे सहायता मिलती है परन्तु हमें यह अवश्य देखना चाहिये कि आन्दोलन कब और किस आधार पर होना चाहिए अन्यथा उस आन्दोलन का मूल्य 'कव्वा अज़ मौत-बाबैला से बढ़कर कुछ न होगा।

दूसरी बात जिसकी ओर हम आन्दोलन करने-वालों का ध्यान खीचना चाहते हैं वह यह है कि वह अपने आन्दोलन के सम्बन्ध मे युक्तियुक्त वक्तव्य धर्मार्य सभा के मन्त्री के पास भज दे ताकि उनका आन्दोलन केवल सोडे की बोतल के फुसफुस के समान न रहकर सभा को अपने अन्तिम निर्णयो तक पहुँचने मे प्रकाश का काम दे सके।

तीसरा बात जिसकी ओर हम ध्यान खीचना चाहते है वह आन्दोलन करनेवालों के रवैये के सम्बन्ध म है। इन्हीं दिनों इनकी जो सभा देहली में हुई उसकी कार्यवाही को देखकर किसी भी गम्भीर आर्य भाई को प्रसन्नता नहीं हुई। सभा में आन्दोलन करने-वालो ने अपने प्रति पक्षियो के प्रति जो व्यवहार किया उसको देखकर बडी निराशा होती थी। आर्य भाइयों-को साधारण मुसलमान भाइयो की भाँति "इस्लाम खतरे मे है" ऐसी दुहाई मचाना और साधारण जनता के भावो को उकसाना शोभा नहीं देना। बात तो केवल इतनी है कि वर्तमान सस्कार-विधि के विधि भाग में कोई उचित परिवर्तन होना चाहिये अथवा नहीं। इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार हो सकता है और होना चाहिये। हमे इस बात का दुःख है कि आर्य समाज में भी मुल्ला प्रवृति बढ रही है। यह प्रवृति आर्य समाज की उन्नति को रोक देगी, क्योंकि यह ऋषि दयानन्द की स्प्रिट के सर्वथा विरुद्ध है। दयानन्द ने हमे दयानन्दी' बनने की उपदेश नहीं दिया है। वे हमेशा इस बात का प्रचार करते रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धि और विचार-शक्ति से काम लेना चाहिये और कभी लकीर का फकीर न बनना चाहिये।

हम आर्य्य-भाइयों से यह निवेदन करेगे कि वे व्यर्थ के आन्दोलनों को न खडा करके अपने वक्तव्यो

को सीधा धर्मार्य सभा में भेज, उन वक्तव्यों पर उसके भेजे हुए अमक प्रतिनिधि, विद्वान् पण्डित विचार करेंगे और किसी निश्चित परिणाम पर पहुँचेंगे। यदि उन निश्चयों से फिर भी उनके विरोध हो तो उनको उस समय आन्दोलन करने की पूरी आज़ादी होगी।

देवतावाद

देवतावाद, के विषय मे आय पत्रा म अर्से से काफी आन्दोलन चल रहा है। हमारे पास भी पक्ष और विपक्ष के बहुत से लेख प्रकाशनार्थ आये हैं। हमने उन्हे सार्वदेशिक में प्रकाशित नहीं किया है इस लिए नहीं कि यह विवाद फिजूल है वरन् इसलिए कि अखबारों में इस प्रकार के आन्दोलन के लो आने मे हमें कोई लाभ नहीं दृख पडता है। इस प्रकार के विचार और वाद विवाद के निर्णय का उपयुक्त स्थान हमारी सम्मति में समाचार पत्र नहीं हैं वरन् इस प्रकार के मामलों पर विद्वानों को एक स्थान पर बैठकर शान्ति पूर्वक विचार विनिमय करना चाहिये और अपन सब सम्मत निर्णयों को प्रकाशित कर देना च हिय।

देवृकामा या देवकामा

श्री० प० सातवलेकर जी ने एक पत्र हम रे पास प्रकाशनार्थ भेजा है। पत्र ऋग्वेद के म० १० सूक्त ८५ मन्त्र ४४ में आये दवृकामा' शब्द के स्पष्ट करण के सम्बन्ध में है। आ० स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ग्रन्थोंमें प्राय देवृकामा शब्द लिखा गया है। प०जी ने अपने ऋग्वेद के ताजे संस्करण में 'देवकामा' शब्द व्यवहृत किया है। आर्य सज्जनों का पक्ष है कि पंडित सातवलेकर जी ने इस शब्द का अशुद्ध प्रयोग किया है वह शब्द देवृकामा' होना चाहिये। प० जी का पक्ष इस शब्द का देवकामा प्रयोग शुद्ध है और उन्होंने मोक्षमूलर इत्यादि क ऋग्वेद मे दव काम' शब्द के प्रयोग के आधार पर अपने पक्ष का समर्थन किया है। इस विषय में भी हमारी यही सम्मति है कि आय विद्वानों को शात चित्त होकर इस पर विचार करना चाहिये।

सराहनीय कार्य्य

आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रात की रिपोर्ट के अनुसार सभा के सुयोग्य प्रचारक श्री० प० स यव्रतजी शास्त्री के उद्योग से अलीगढ जिले में १२ ग्रामों के आठव क्षत्रिय विधर्मी (मुसलमान) होन से बचे। कहा जाता है कि मुसलमानों ने उन्हे जमीन की मुआफ़ी इ यादि के तुच्छ प्रलोभन दिये थे।

श्री प्रधान जी और मुसलिम पत्र

कलकत्ते मे निकलनवाले स्टार पत्र ने मध्य प्रान्तीय काग्र स सरकार पर कतिपय कट्टर साम्प्रदा य कता के आक्षप किये हैं जिन में स एक यह भी है कि मध्यप्रात का लेजिस्लटिव असम्बली के अध्यक्ष (मान नाय ठा० घनश्यामसिंह जी प्रधान सार्वदेशिक सभा) आर्यसमाजी हैं जिसका उत्तर भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री खरे ने यह दिया था कि अध्यक्ष पृथक्तया काग्रेस सदस्य हे और प्रत्येक काग्र स सदस्य व्यक्तिगत रूप स किसी भी धर्म का अनुयायी होने का अधिकारी है।

टर्की और धर्म

World Dominion News संसार के राज्यों की खबरें' नामक अखबार म निम्न नोट प्रकाशित हुआ है —

पिछली ५ फ़र्वरी को ग्रैंड नेशनल असेम्बली

ने टर्की के जन शासन के विधान (कांस्टिट्यूशन) में कुछ संशोधन किये हैं। विशेष रूप से धारा सं० २ संशोधित की गई है और उसका एक अंश इस प्रकार है—

"The Turkish State is Republican Nationalistic, Populish, Laic, Etatist and Revolutionary" अर्थात् टर्की का साम्राज्य लोकतंत्रवादियों राष्ट्रवादियों दुनियादारों फौजियों और क्रान्तिकारियों का साम्राज्य है।

विशेष महत्व की बात यह है कि 'साम्राज्य' दुनियादारों अर्थात् Laics का घोषित होगया है। इस शब्दका अर्थ यह है कि राज्य किसी सरकारी धर्म को स्वीकार नहीं करता है और न किसी खास धर्म का समर्थन करता है। पुराने विधान में एक धारा यह था कि The Religion of the State is Islam अर्थात् राज्य का धर्म इस्लाम (मुसलमानी मज़हब) है। अब यह बात नहीं है। अब कोई भी किसी के धर्म में हस्ताक्षेप नहीं करता है। प्रत्येक दूसरे के धर्म्म का आदर करता है। धार्मिक, बौद्धिक और राजनैतिक मामलों में 'मज़हबी पागलपन' का स्थान पारस्परिक प्रेम और सहिष्णुता ने ले लिया है।

खलीफ़ा का पद

टर्की के सुल्तान के पदच्युत हो जाने के बाद से इस समय तक मुस्लिम जगत् में खलीफ़ा नहीं है। मिश्र में ख़लीफ़ा की समस्या का पुनर्जीवन हुआ है। उस देश का राजा फ़ारुख इस ऊँचे पद का इच्छुक है। कहा जाता है कि टर्की, ईरान, यमन और अरब के दूसरे देशों को राजा फ़ारुख के ख़लीफ़ा बनाए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है और अफ़ग़ानिस्तान तथा कुछ दूसरी मुसलिम रियासतों से भी शीघ्र ही परामर्श किया जायगा हमारी यह धारणा है कि पूर्ण स्वतन्त्र और शक्तिशाली राजा ही खलीफ़ा बन सकता है। यदि यह धारणा ठीक है तो प्रश्न होता है कि क्या राजा फारुख ख़लीफ़ा के पद की इस कसौटी पर पूरे उतरते हैं ?

दहेज-विरोधी विहार का बिल

बिहार लेजिस्लेटिव असेम्बली में दहेज़ विरोधी एक बिल पेश हुआ है। अमर्यादित दहेज के उपद्रवों के यहाँ गिनाए जाने की आवश्यकता नहीं है। वे प्रायः सब पर प्रकट हैं। वस्तुतः विवाह प्रथा पर यह एक भयङ्कर अभिशाप है। क़ानून के द्वारा यह प्रथा मर्य्यादित या निर्मूल हो जायगी, यह निश्चित नहीं है। यह तो विवाह प्रथामें सुधार करके उसे अधिक से अधिक सस्ता बनाए जाने से सम्भव है। फिर भी चारों ओर से इस प्रथा पर प्रहार किए जाने की ज़रूरत है और इस दृष्टि से विहार प्रांत का क़दम स्वागत योग्य है।

शरियत बिल

मि० काज़मी के शरीयत बिल पर कोकोनाडा का 'साधना' पत्र लिखता है —

'विवाहित मुस्लिम देवियों द्वारा विवाह विच्छेद के मुक़द्दमों से सम्बन्धित मुस्लिम क़ानून की धाराओं को व्यवस्थित करने तथा विवाहित मुस्लिम स्त्री के विवाह पर धर्म परिवर्तन के प्रभावों के सम्बन्ध में संदेहों को दूर करने विषयक बिल पर केन्द्रीय धारा सभा में बहस हुई थी और सरकार ने बिल के निर्माता मि० काज़मी के इस प्रस्ताव का समर्थन किया था कि

वह सम्मति के लिए प्रचारित किया जाय। परन्तु गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया के ला मेम्बर श्रीयुत् ऐन ऐम सरकार ने सम्मति के लिए प्रचारित करनेके प्रस्ताव का समर्थन करते हुए बिल के कई विचारणीय पहलुओं की ओर संकेत किया था।

उन्होंने कहा था "यदि बिल क़ानून बन जाय तो स्थिति यह होगी कि मुस्लिम स्त्री अपने पति के साथ विवाह स्थिर रखने में समर्थ हो जायेंगी। हाईकोर्टों की यह मान्यता है कि यदि हिन्दू पत्नी मुसलमान हो जाय तो वह अपने पति को मुसलमान बनने का निमन्त्रण देने का अधिकार रखती है और यदि पति निषेध कर दे तो वह अपने विवाह का विच्छेद करा सकती है। परन्तु यदि वह मुस्लिम पति से शादी करले और इसके बाद हिन्दू धर्म में शुद्ध हो जाय तो शरीयत बिल के अनुसार अपने मुसलमान पति से विवाह विच्छेद का उसे अधिकार नहीं रहता है। इस रीति से मुसलमानो के दोनों हाथो में लड्डू होंगे और दूसरी जातियों केलोग इस बिल को एक बडी कठिनाई समझेंगे। हमें आशा है यदि बिल को कानून का रूप देन ही दिया गया तो इसमें से आपत्तिजनक अंश निकाल दिए जायेंगे।"

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।–)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृंखलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमशः =), =)॥ =)॥, =)॥ =)॥, –)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीक़त ॥ॎ) (उर्दू) सत्य-निर्णय १।) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।ॎ)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर मे न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।—)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत मे एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार मे रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥=)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई है। मूल्य =)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक मे स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।=)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—प० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते है इन सब बातों का इस पुस्तक मे वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।=)

(७) आर्य्यावर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य =)

(8) Ecclesia Divina

Well-Bound—By Bhum in ind Saraswati M A)/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well-bound	1/4
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा　　　|||)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द　　　१)

(१२) आत्म दर्शन　　　१)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति　　　२)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर अब सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—※—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के

रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम १।) प्रति सैकड़ा
)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

(लेखक—श्री ला० बोसाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N W. R, आनरेरी मन्त्री, पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर)

— —

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पञ्जाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है। जहाँ सारे देश से बालक-बालिकाएँ आकर दाखिल होते हैं इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है, परन्तु उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के अधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिसमें विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया करता है और जो अनाथ बच्चे उसको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज कि इस अनाथालय में हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आज कल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माता का स्वर्गवास होजाता है और उनके पालने का प्रबन्ध उनके संरक्षकों से नहीं हो सकता, वह उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते हैं। ऐसे बच्चों की देख भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है, आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लड़के और ६० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिए आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप दानी वीरों से इकट्ठा होकर आता है और इससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब शीतऋतु आ रहा है, इन सबके लिए गर्म वस्त्रों की आवश्यकता होगी। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चोंके लिए कपड़े सिलवायेंगे वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखेंगे और इनके खाने-पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी, सब्जी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जायेगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटा हुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी भारी तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के आगे भावानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ॥।) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—** प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ४०० मूल्य १॥)

(१२) **भजन-भास्कर—** (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञों कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमें देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण, शुद्धि, ऋषि महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं। संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज में तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारों में श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि में छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश—** (सस्ता संस्करण) —महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	ध० मू०		अ० मू०	ध० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	–)।	–)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	=)
	„ २५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	=)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash, D Sc Lecturer in Chemistry, University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2-8-0

The Author has described in details the process of Agnihotra, and has shown that during the process of this fumigation, such products are given out which are bactricidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

- Ganganath Jha

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public."

—*N. R Dhar* .

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book cantains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As 8. Reduced price A. 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture —

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal —price As 10 Reduced price As 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re. 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8. Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya.—price As 4, bound and As 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A L. L. B —price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

ओ३म्

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

भाद्रपद १९९५

वर्ष १२ | सितम्बर १९३८ ई०] | [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क ७

* वेद की शिक्षाऐं *

श्रद्धितं ते महत् इन्द्रियाय । ऋग० १-१०३-६

हे प्रभो ! तेरी शक्ति मे हमे श्रद्धा है ।

We have perfect Fith in Thy powers, O God !

मा भूम निष्ठया इव । अथर्व० २०-११६-१

हम तुमसे बेगानो की तरह न रहें ।

May we not behave towards Th e as aliens and strangers



आर्य कुमार परिषद् का रजत जयन्ती महोत्सव

भारतवर्षीय आर्य्य-कुमार परिषद् का रजत-जयन्ती महोत्सव आगामि ३० सितम्बर तथा १ अक्टूबर को बिजनौर मे होगा। महोत्सव के संचालक महोत्सव को सफल बनाने के लिए पूरा पूरा यत्नकर रहे हैं। जैसा कि इसी अङ्क मे प्रकाशित सूचनाओ और विज्ञप्तियों से स्पष्ट है महोत्सव का प्रोग्राम रोचक और शिक्षा प्रद बनाया गया है। प्रोग्राम रोचक और शिक्षाप्रद क्यों न बनता, जबकि आर्य्यकुमारो के प्राण और परिषद् के अनन्य तथा पुराने सेवक श्री० डा० युद्धवीरसिंह जी के तत्वावधान मे ये सब कार्य होरहे हों।

इस अवसर पर आर्य्यसमाज तथा देश के गण्यमान्य सज्जनों के काफी सख्या मे पधारने की पूरी पूरो आशा है, ताकि वे देश और समाज के भावी कर्णधारो के इस मेले में उनका उचित मार्ग-प्रदर्शन करके अपने एक महान और पवित्र कर्त्तव्य का पालन कर सकें। आर्यकुमारों तथा उनके अभिभावकों को भी बहु सख्या मे पहुँचकर उत्सव को सफल बनाने मे योग देना चाहिये।

आर्य्यकुमारों को शिक्षित और संगठित करके समाज की सेवा के लिए योग्य, सदाचारी और सुपरीक्षित सेवकोके निर्माणके उद्देश्यसे भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद्का जन्म हुआ था। स्वर्गीय श्री० डा० केशवदेव जी शास्त्री, महामना श्री० प० रामनारायण जी मिश्र, श्री० प्रो० सिद्धेश्वर जी तथा श्री० प्रो० सुधाकर जी, एम० ए० प्रभृति सज्जनो की काशी की प्रसिद्ध आर्य्य-मण्डली कुमार-परिषद् की जन्मदात्री है। काशी मे आर्य्य-कुमारों और आर्य्यसमाज के इन शुभ चिन्तकों और दीवानो के हृदय मे यह पवित्र विचार अङ्कुरित हुआ तथा फला-फूला था। वस्तुत यह विचार और यह योजना बड़ी शुभ और उपादेय थी। इसके लिए ये सब महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं। इस विचार और योजना के पीछे इन महानुभावो के आकर्षक और जादू के समान असर करनेवाले व्यक्तित्व थे। यही इस सस्था की सम्पत्ति थी और यही जान थी। वस्तुत. सस्थाओ की यही सम्पत्ति और आत्मा होती है। इस सस्था ने आर्य्यसमाज को कई दीवाने अर्पण किये है। विज्ञापन और प्रदर्शन के इस युग में भले ही उनमे से कई जनसाधारण की आँखों से ओझल हो, परन्तु वे चुपचाप अपने कर्त्तव्य का उत्तमता से पालन कर रहे हैं।

कुमार-परिषद् को जन्म ग्रहण किये २५ वर्ष से अधिक का समय हो गया है। आर्य्यकुमारों मे जागृति उत्पन्न करने के लिए अधिक से अधिक जो वह कर सकी उसने किया है। बिजनौर में

बैठकर आर्यकुमारों और उनके शुभचिन्तकों को सोचना चाहिए कि आर्य्यकुमार-परिषद् किस प्रकार आर्य्यकुमारों में अधिक से अधिक जीवन संचार का कारण बन सकती है और इसके लिए उपाय भी निर्धारित करने चाहिये। जहा तक परिषद् के सगठन और विस्तार का सम्बन्ध है वह आर्य-जगत् में कोने में पड़ी हुई संस्था देख पड़ती है। कहा जाता है कि आर्य्यसमाजों का परिषद् तथा नवयुवकों के प्रति उपेक्षा तथा उदासीनता का रवैया है तथा रहा है। कुछ लोग ये कहते हैं कि आर्य्यसमाज के सार्वजनिक जीवन में आकर्षण नहीं है। राजनैतिक जीवन में इन दिनों बहुत आकर्षण है तथा बेकारी और रोटी की समस्याएँ बड़ी उग्र और जटिल हैं, इसलिए नवयुवक आर्य-समाज की ओर आकर्षित नहीं होते हैं। बिजनौर में आर्य्यकुमारों और नेताओं को एक जगह बैठकर गम्भीर विचार करना चाहिये और आकर्षण के उपाय सोचने तथा निर्धारित करने चाहिये। आर्य्यसमाजों का परिषद् के प्रति उपेक्षा का रुख है यह एक सचाई है। इस रुख के लिए आर्य्यसमाजों को बुरा भला कहने से काम नहीं चलेगा। इसकी तह में बैठकर मूल कारण जानने का यत्न करना होगा। हमें सोचना होगा कि आर्य्यसमाजों का सम्बन्ध आर्य्यकुमार-सभाओं के साथ किस प्रकार का होना चाहिये। वे समाजों के सीधे कण्ट्रोल में रहे वा संरक्षण में।

इस २५ वर्ष के काल में परिषद् के कई रचनात्मक और उल्लेखनीय कार्य्य हुए हैं। इसकी सबसे बड़ी रचनात्मक योजना वैदिक-धर्म की परीक्षाएँ हैं। इसके द्वारा आर्य्यकुमारों में वैदिक-ग्रन्थों के स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ी है। यह परिषद् का एक बड़ा अच्छा रचनात्मक कार्य्य रहा है। परिषद् इस जयन्ती के उपलक्ष में 'उन्नति की ओर' नामक एक पुस्तक प्रकाशित कर रही है। परिषद् की यह योजना बड़ी उत्तम है। निश्चय ही इस जयन्ती की एक अच्छी यादगार रहेगी। इसमें आर्य्यसमाज तथा देश के बड़े २ नेताओं और विद्वानों तथा लेखकों की रचनाएँ होंगी। नवयुवकों के लिए यह पुस्तक एक स्थिर साहित्य का काम देगी।

एक बात बिजनौर के आर्य-भाइयों से भी। उन्होंने परिषद् के इस महत्वपूर्ण सम्मेलन को बिजनौर में बुलाकर बड़ा उत्तम कार्य्य किया है। उन्होंने एक बड़ी जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है। इस जिम्मेवारी को खूबसूरती से निबाहने के लिए आशा है वे कोई यत्न उठा न रखेंगे तथा उत्सव के प्रबन्ध, अतिथियों की सेवा सत्कार और स्वागत में कोई त्रुटि न होने देंगे।

भूल-सुधार

श्री० आचार्य्य विश्वश्रवा जी ने जो गुरुकुल वृन्दावन के रजिस्ट्रार हैं २५ अगस्त ३८ के 'आर्य्यमित्र' में गुरुकुल वृन्दावन का कोष भर दो शीर्षक एक लेख लिखा है। उस लेख में आर्य्य-समाजके उपनियमों के सम्बन्धमें एक बात अशुद्ध लिखी गयी है। आचार्य्यजी ने गुरुकुल को प्रबन्ध-व्यवस्था के सिलसिले में लिखा है —

आर्य्यसमाज के उपनियमों में एक बात विशेषरूप से बताई गई है कि जितनी भी उपसभाएँ विशेष कार्य्यों के लिए बनाई जायँ

उन सबका प्रधान वही हो जो समाज का प्रधान हो।'

आर्यसमाज के उपनियमों की धारा सं० २३ में सभाओं और उपसभाओं से प्रधान का सम्बन्ध निम्न भाँति वर्णन किया गया है —

(१) प्रधान अन्तरग सभा और सब सभाओं का सभा पति समझा जावगा।

(२) प्रधान अपने प्रधानत्व के कारण सब उप-सभाओं का जिन्हे कि अन्तरग सभा संस्थापित करे सभासद् होगा।

स्पष्ट है कि अपने पदाधिकार के कारण प्रधान का उपसभाओं का सदस्य होना तो अनिवार्य्य है परन्तु प्रधान होना अनिवार्य्य नही है।

आशा है पाठक आचार्य्य जी के स्पष्टीकरण को शुद्ध करके पढेगे।

परोपकारिणी-सभा

परोकारिणी-सभा ने अपनी ३१-७-३८ की मीटिंग में कई महत्वपूर्ण निश्चय किये हैं। उनका साराश यह है कि उक्त सभा श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वती-कृत ग्रन्थो को श्री० स्वामी जी की सशोधित पाण्डु-लिपियों के अनुसार छापती है, तथा उन पाण्डु लिपियों में यदि कोई सज्जन अशुद्धि समझे या कहे तो उसमे वह न्यूनाधिक करने के लिए तय्यार नहीं है। पं० सातवलेकर जी ने स्वामी जी कृत वेद-भाष्य मे जो अशुद्धियाँ बतलायी हैं, उसे यह सभा स्वामी जी के मत के विरुद्ध पं० जी का अपना मत बतलाती है।

देवतावाद के सम्बन्ध में इस निर्णय के लिए कि प० सातवलेकर जी का मत ठीक है या नही है पं० जी को इस सभा ने सभा-द्वारा नियुक्त विद्वानों से शास्त्रार्थ का निमन्त्रण दिया है तथा ५ से ६ नवम्बर तक आर्य-प्रतिनिधि-सभा राजस्थान के स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव के अवसर पर यह शास्त्रार्थ रखने का फैसला किया है।

एक प्रस्ताव मे संस्कार-विधि के काट-छाँट के निर्णय को अनुचित तथा अनधिकार चेष्टा बतलाया है।

हम इन निश्चयो के सम्बन्ध में विशेष न कहकर यह अवश्य कहेगे कि परोपकारिणी-सभा ने ऋषि कृतग्रन्थों के स्वामी जी की पाण्डु-लिपिके अनुसार शुद्ध प्रकाशन के सम्बन्धमे अबतक बड़ी लापरवाही और अकर्मण्यता दिखलाई है। आर्य जनता इस बात को देर से बहुत ज्यादा अनुभव करती रही है तथा उसमे घोर असन्तोष रहा है। यदि स्वामी जी के ग्रन्थो मे छापे की भयंकर भूलें न होती, तो यह असन्तोष न होता। सभा ने अपने एक निश्चय में इस बात की सफाई निम्न शब्दो में देने का यत्न किया है —

"हाँ, यदि उक्त पाण्डु-लिपि से छापते समय जो भेद रह गया हो, उसको शुद्ध कराना इस सभा को सदैव स्वीकार है और इस प्रकार की अशुद्धि बताई जाने पर धन्यवाद-सहित स्वीकार की जायगी।" देर से असन्तुष्ट जनता के लिए यह सफ़ाई पर्य्याप्त है इसमे सन्देह है। उसको तो सन्तोष तभी होगा, जब स्वामी जी कृत ग्रन्थों मे छापे की एक भी भूल न रहेगी।

श्री० प्रधान जी पर वज्रपात

यह लिखते हुए अत्यन्त दु ख होता है कि गत २५ अगस्त को जामाता की मृत्यु के रूप मे सभा के माननीय प्रधान श्री० बा० घनश्यामसिंह जी पर घोर वज्रपात हुआ है। श्री० प्रधान जी तथा उनके परिवार के इस महान् दु ख में हम समस्त आर्य्य जगत की ओर से समवेदना प्रकट करते तथा श्री० प्रधान जी को उस दु ख के सहन करने मे समर्थ बनाने तथा दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

श्री० प्रधान जी के जामाता एम० एम० सी० थे, तथा डी० एस सी के लिए विलायत गये थे। उनकी पुत्री शकुन्तला देवी बी० एस सी तथा गर्ल-स्कूलकी इंसपेक्टर है। यह एक योग्य और सुशिक्षित दम्पति थे। जामाताकी अवस्था अभी २६-२७ की ही थी। पुत्री की अवस्था २३ वर्ष की है। विवाह को हुए २-३वर्ष हुए हैं। जामाता लगभग १-१॥ वर्ष से बीमार थे। किसी को क्या पता था कि इस योग्य और तरुण दम्पत्ति के सुख-सौभाग्य पर दुर्भाग्य मुँह निकाले झाँक रहा था।

श्री० प्रधान जी ने जामाता के इलाज मे कोई त्रुटि नहीं की। देश मे तथा इङ्गलैण्ड में अच्छे-से-अच्छे योग्य डाक्टरों की जो एक धनी परिवार करा सकता है, चिकित्सा कराई गई। शकुन्तला देवी ने अपने पतिदेव की परिचर्य्या और सेवा में एक प्रकार से अपने को मिटा दिया, प्रभु की इच्छा के सामने मनुष्य का क्या चारा! फिर भी श्री० प्रधानजी तथा उनकी पुत्री को सेवा, परिचर्य्या और चिकित्सा में अपने कर्तव्य उचित रीति से पालन करने का सन्तोष होगा और निश्चय ही यह सन्तोष बहुत हदतक उनके शोक को कम करेगा।

शाबास ! आर्य-समाज पेशावर !!

आर्य-समाज पेशावर छावनी ने हैदराबाद के मामले मे सार्वदेशिक सभा की क्रियात्मक सहायता के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये हैं। इतना ही नहीं उनपर उसने कार्यवाही भी आरम्भ करदी है। उस समाज ने एक प्रस्ताव यह पास किया है कि समाज का प्रत्येक सदस्य अपनी एक मास की आयका दशांश सभा को देवे तथा अधिक धनके लिए सभा की आज्ञानुसार कार्य किया जाय। एक दूसरा प्रस्ताव सत्याग्रह के लिए स्वयं-सेवकों की भरती करने का है।

एक अन्य प्रस्ताव में उक्त आर्यसमाज ने हैदराबाद की समस्या को अपनी प्रगतियों का एक मुख्य अंग बनाया है।

इन प्रस्तावों की यहाँ चर्चा करने का हमारा उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि हैदराबाद की समस्या के प्रति आर्य-जनता काफी सजग होगयी है। हैदराबाद मे आर्य-समाजों की कठिनाइयों तथा आर्य-समाजियों पर होनेवाले अत्याचारों से आर्य-जनता अत्यन्त व्याकुल हो उठी है साथही उनके निराकरण के लिए अपनी शिरोमणि सभा के हर प्रकार से हाथ मजबूत करने में कटिबद्ध हो गई है। हम आर्य-जगत की इस चिन्ता, प्रेम तथा उत्साह का आदर करते हैं और उसे विश्वास दिला देना चाहते हैं

कि इस प्रेम और उत्साह से पूरा २ लाभ उठाने मे सार्वदेशिक-सभा पीछे न रहेगी।

जयन्ती अंक

सार्वदेशिक के आगामी अङ्क को कुमार परिषद् के रजतजयन्ती महोत्सव अङ्क के रूप मे निकाल ने का हमारा विचार है। आशा है पाठक इस अंक से पूरा २ लाभ उठायेंगे तथा अभी से अन्य लोगा को लाभ उठाने की प्रेरणा करदेंगे।

इस अंक मे महोत्सव की सक्षिप्त कार्यवाही प्रधान का भाषण, आर्यकुमारों तथा परिषद की उन्नति के लिए महोत्सव मे जो निश्चय होंगे तथा योजनाए निर्धारित होगी दी जायगी।

१२००) का पुरस्कार

श्री अर्जुनदेव जी मन्त्री आर्यसमाज ढकी, नाल बन्दी पेशावर शहर ने एक विज्ञापन इस आशय का हमारे पास भेजा है कि जो विद्वान पाणिनीय व्याकरण पर वैदिक उदाहरणों से अलकृत सस्कृत मे सरल भाष्य रचेंगे उनको १२००) इनाम दिया जायगा। वे प्रथम पाद का भाष्य रचकर उसकी तीन प्रतियाँ बतौर नमूने के भेजें। इसी प्रकार सन्धि विषय, शब्द रूपावलि, धातु रूपावलि आदि प्रकरणों को भी ऐसा ही लिखाना चाहते है जिस से विद्यार्थी को वेद के अध्ययन में सुविधा हो।

आर्य नगर

वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर ने आश्रम के पास एक आर्य-नगर बसाने की योजना की है।

इस योजना का उद्देश्य उन लोगों के लिए सुविधा उपस्थित करना है जो शहरी विषाक्त वायु मण्डल से अलग पवित्र वायुमडल में परिवार सहित रह कर आत्मिक शान्ति उपलब्ध करना चाहते हों। इस नगर मे लोग अपना मकान नियत भूमि मे बनावेंगे तथा मकान बनानेवालों तथा उनके उत्तराधिकारियों का उन मकानों पर पूर्ण स्वत्व होगा। एक मकानके लिए भूमि ३० X ६० फीट मिल सकेगी। नगर के निवासियोके बच्चों की शिक्षा के लिए पाठशालादि की योजना का भी नगरवासियों के सहयोग और सहायता से प्रबन्ध किया जायगा। नगरवासियों मे पूर्ण सदभाव का आदर्श रखा जायगा। इस योजना का जैसे कि यह स्वागत योग्य है स्वागत हो रहा है। लोग अपनी २ कुटियो के लिए भूमि खरीद तथा रिजर्व करा रहे हैं। हमे आशा है शीघ्र ही आर्य नगर बस जायगा। आर्य-नगर की पवित्रता की रक्षा के लिए मद्य मासादि के सेवन तथा भक्षण इत्यादि के प्रतिबन्ध उचित ही रखे गये हैं। इन प्रतिबन्धो के होते हुए भी आश्रम की पवित्रता की रक्षा वानप्रस्थाश्रम के पवित्र वातावरण तथा उसके ऊँचे व्यक्तियो के चमत्कारी प्रभाव से ही हो सकेगी, ऐसा हमारा मत है। आर्य जगत् देर से इस प्रकार के नगर की आवश्यकता अनुभव करता रहा है। इस आवश्यकता की पूर्ति का श्रेय वानप्रस्थाश्रम तथा उसके सस्थापक श्री पूज्य नारायणस्वामी जी को है। आश्रम के पुराने अधिवासी तथा उसके एक स्तम्भ श्री भक्त सुदरदास जी इस योजना को

सर्वात्मना क्रियान्वित करा रहे हैं। इस सम्बन्ध में आवश्यक पूछताछ उनसे वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (सहारनपुर) के पते से की जा सकती है या नियमादि मँगाए जा सकते है।

लण्डन के मुसलमानों का एक अंगरेजी पुस्तक के विरुद्ध जिहाद

प्रसिद्ध इङ्गलिश इतिहास-लेखक श्रीयुत एच जी वैल ने संसार का संक्षिप्त इतिहास Short History of the World लिखी है। मुहम्मद साहब सम्बन्धी पुस्तक के किसी लेखसे मुसलमानों मे बहुत क्षोभ और असन्तोष फैल गया है। लण्डन मे लगभग २०० मुसलमान गत १३ अगस्त को एक जलूस की शक्ल मे हाई-कमिश्नर सर फीरोजखा नून के पास यह प्रार्थना करने गये कि वे इतिहासकार के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के सामने उनका विचार रखे। लण्डन का यह भी समाचार है कि उस पुस्तक को मुसलमानो ने जलाया है और इस प्रकार अपने घार असन्तोष को प्रकट किया है।

लोगों की सम्मति है कि धार्मिक सहिष्णुता दो प्रकार से अमल मे लाई जा सकती है। एक प्रकार तो यह है कि किसी को दूसरी जातियों के पवित्र धर्म पुस्तको, व्यक्तियों और धार्मिक स्थलो पर आक्रमण नहीं करना चाहिये। दूसरा प्रकार यह है कि किसी के धर्म पर किये गये इस प्रकार के हमलों को सहन करना चाहिये और इस प्रकार के मामलो मे विभिन्न धार्मिक जातियों में आपस में भाई चोर का व्यवहार होना चाहिये। युक्ति पूर्ण आलोचना आक्रमण नही होती है, परन्तु किसी धर्म पर उचित आलोचना आक्रमण ही समझा जाय तो वह धैर्य पूर्वक सहन किया जाना चाहिये तथा युक्तियों और प्रमाणो से उस आक्रमण का उत्तर दिया जाना चाहिये। हम इस सम्मति से सहमत है। हमे पता नहीं कि उपर्युक्त पुस्तकमे क्या वाक्य आपत्तिजनक हैं। हम तो यहाँ केवल धार्मिक आलोचना इत्यादि के सम्बन्ध मे एक सुसगत मत पर प्रकाश डाल रहे हैं।

चुनाव और सरकारी कर्मचारी

बङ्गाल गवर्नमेंन्ट ने टिब्यूनल की रिपोर्ट पर जिसमें मौलवी हबीबुर्रहमान की इलेक्शन पिटीशन (चुनाव के आवेदन पत्र) पर, जो उन्होंने सर के० जी०, ममफास्ती के बङ्गाल की धारा सभा के चुनाव के विरुद्ध थी आर्डर दे दिए है। के० जी महोदय बङ्गाल-सरकार के एक मन्त्री थे। उन्होने अपने पद का दुरुपयोग करके चुनाव जीता था और सरकार के कुछ ऊँचे अफसरों से उन्होने अपने चुनाव के पक्ष मे आन्दोलन कराया था। इस अपराध पर मन्त्री महोदय को तो अपनी सीट खाने और कुछ वर्षो तक चुनाव के लिए अयोग्य घोषित होजाने का दण्ड मिला, परन्तु टिब्यूनल सरकारी अफसरों के विरुद्ध कोई कार्यवाही न कर सका। उसने बङ्गाल-सरकार को उचित कार्यवाही करने की सिफारिश मात्र ही कर दी। उसने विशेष रूप से सिफारिश की कि भविष्य मे सरकारी अफसरो के इस प्रकार के अनुचित

कार्य को रोकने के लिए अवश्य ही उचित उपाय किये जाने चाहियें। बङ्गाल सरकार ने घोषणा की है कि भविष्य में सरकारी अफसरों की इस प्रकार की कार्यवाहियों पर कड़ा नोटिस लिया जायगा। सरकारी कर्मचारियों को चुनाव से क्यों पृथक रहना वा रखना चाहिये इस पर हिन्दुस्तान टाइम्ज निम्न प्रकाश डालता है:—

जब ट्रिब्यूनल की मालूमात पहली बार प्रकाश में आई, तो भारतवर्ष में लोकमत बहुत उत्तेजित हो गया। यदि उत्तरदायी प्रजातन्त्र शासन के संचालन के लिए राजनैतिक दलों का, उन दलोंसे बाहर सदस्यों के निकलने और उनमें आने की प्रणाली के साथ अस्तित्व जरूरी है तो इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि प्रबन्ध की मैशनरी को राजनैतिक हस्तक्षेप से पृथक् रखा जाय। यदि पदों पर आरूढ पार्टी के मन्त्री लोग अपनी शक्ति और प्रभाव को चुनावों में अपने पक्ष के समर्थन में लगायें तो हम एकतन्त्र प्रथा के लिए कार्य्य करेंगे जिसमें पदारूढ दल सदैव अपने को शक्तिशाली बनाये रक्खेगा या उसके लिए हर सम्भव उपाय से यत्न करेगा। सदैव बड़े उपाय से यत्न करेगा। इसके अतिरिक्त सरकारी कर्मचारियों की स्थिति बड़ी खराब होगी, जब वे उस पार्टी के अधीन कार्य्य करेंगे, जिसके विरुद्ध उन्होंने चुनाव में भाग लिया है। यही कारण है कि समस्त प्रजातन्त्र शासनों में कर्मचारियों को चुनावों में सक्रिय भाग लेने से वंचित किया जाता है। मत-दाताओं के रूप में किसी भी व्यक्ति या पार्टी के पक्ष में अपना वोट देने में वे स्वतन्त्र होते हैं।

बधाई ?

जोधपुर शहर महर्षि दयानन्द के जीवन से एक विशेष सम्बन्ध रखता है। कोई समय था, जब जोधपुर आर्य्य-समाज के प्रधान वहाँ के महाराजा साहब स्वयं तथा समाज के मन्त्री राज्य के प्रधान मन्त्री थे और आर्य्य-समाज राज्य के एक डिपार्टमेण्ट के रूप में था। समय ने पलटा खाया और कालान्तर में आर्य्य-समाजको मिली हुई समस्त सुविधाएँ बन्द होगई। सन् १८८५ मे श्रीमान् स्वर्गीय स्वामी भास्करा-नन्द जी ने फिर प्रयत्न करके श्रीमान् स्वर्गीय महाराजा कर्नल सर प्रतापसिंह जी की सहायता से जोधपुर में एक आर्य्य-समाज-मन्दिर बनवाया। स्वामी भास्करानन्द जी की मृत्यु के पश्चात् यह मन्दिर वहाँ के कुछ स्वार्थी लोगों के हाथ में आ गया जिन्होंने उसे सन १९१९में बावजूद वहाँ की आर्य-जनता तथा राजस्थानकी आर्य-प्रतिनिधि सभा के विरोध के ६११०) में बेच दिया। बेचने का कारण यह बताया गया कि जिस ठेकेदार ने यह मन्दिर बनाया था, उसके २०७३।) देने शेष थे और यह रक़म अदा न हो सकने के कारण मन्दिर बेच दिया गया। यह मन्दिर जोधपुर की एक प्रमुख सड़कपर विद्यमान् है और मन्दिर तथा उसके साथ लगी हुई भूमि आदि सब मिलाकर मन्दिर इस समय लगभग ४८०००) मालियत का है।

सन् १९२७ में सिटी आर्य्य-समाज के नवीन अधिकारियों ने मन्दिरके बेचने व खरीदनेवालों के

विरुद्ध वहाँ के न्यायालय में एक मुक़द्दमा दायर कर दिया, जिसमें उन्होंने यह दावा किया कि यह मन्दिर एक धार्मिक सम्पत्ति है और इसके बेचने ख़रीदने तथा अन्यथा काम में लाने का किसी को अधिकार नहीं है। १० वर्ष के अथक परिश्रम के पश्चात इस मुकदमे का फैसला जोधपुर के उच्चतम न्यायालय से सिटी आर्य्य-समाज के पक्ष में हो गया। इस फैसले में यह करार दिया गया है कि आर्य्य-समाज-मन्दिर क़ानून की दृष्टि में उसी प्रकार एक पवित्र, धार्मिक संस्था एवं रक्षणीय सम्पत्ति है, जिस प्रकार अन्य मन्दिर व मसजिद आदि होते हैं और यह किसी सूरत में किसी भी प्रकार अन्यथा उपयोग में नहीं लाया जा सकता है।

आर्य्य-समाज के पक्ष में फैसला देते हुये माननीय न्यायाधीश ने यह भी डिग्री दी है कि आर्य्य-समाज ठेकेदार के २०७३) व इस रकम के ऊपर १०४८॥≈)। ब्याज के तथा १०००) ख़रीदार-द्वारा बनाये गये अन्य मकान के ४२५) कोर्ट फीस के इस प्रकार कुल ४५३६॥≈)। अदा करे। इस रक़म के अदा होने पर मन्दिर का कब्जा सिटी आर्य्य-समाज को दे दिया जाय।

यह फैसला आर्य्य-जगत् में बड़ी प्रसन्नता के साथ सुनाया जायेगा। आर्य्य-समाज के प्रति न्याय करने के लिए जोधपुर-राज्य तथा न्याय प्राप्ति के पूरे-पूरे यत्न के लिए सिटी आर्य्य-समाज धन्यवाद के पात्र हैं। अब यत्न करके न्यायालय-द्वारा नियत क़र्जे की ४५३६) की राशि अदा करके समाज-मन्दिर का क़ब्ज़ा प्राप्त करना चाहिए। राजस्थान की सभा को इस सम्बन्ध में विशेष ध्यान देना चाहिये। उसे देखना चाहिये कि यह राशि समय पर अदा कर दी जाय। कहने की आवश्यकता नहीं यदि समय पर धन अदा न होने के कारण समाज-मन्दिर का कब्जा प्राप्त न हो सका, तो यह आर्य्य-समाजके लिए बड़ी लज्जा की बात होगी और अबतक के सब-कुछ करे कराये पर पानी फिर जायगा आर्य्य-समाजों की जायदादों को क़ानूनन सुरक्षित बनाये जाने का यत्न किया जा रहा है। इस प्रकार के उदाहरणों से इस प्रकार की व्यवस्था की आवश्यकता स्पष्ट हो जाती है। जितनी जल्दी यह व्यवस्था हो, जाय, उतना ही अच्छा है।

बहु-विवाह की बलि-वेदि पर

कुछ दिन हुए देहली-रेलवे-स्टेशन पर ट्रेन में एक बक्समें बन्द एक हिन्दू-स्त्री की लाश के मिलने की सूचना समाचार-पत्रोंमे छपी थी। इस कत्लके सम्बन्ध में पुलीस की तहक़ीक़ात के फलस्वरूप निम्न सनसनीपूर्ण विवरण पत्रों में छपा था —

"कानपुर शहर में थाना अनवरगंज के इलाके में गयाप्रसाद का पहला विवाह मुसम्मात दुलारा से हुआ था और उसके बाद उसने दूसरी शादी लीलावती से कर ली थी। इस पर पहली स्त्री दुलारा से अनबन रहने लगी। ता० २२ जुलाई की रात को ६ बजे जब गयाप्रसाद घर पहुँचा, तो दुलारा से झगड़ा हुआ। कहते हैं कि इस पर गयाप्रसाद ने दुलारा से कहा कि तू घर से निकल

जा। दुलारा बोली कि बताइये मैं तो आपके पल्ले बँध चुकी हूँ, कहाँ जाऊँ ? आप जहाँ चाहें भेज दीजिये। गयाप्रसाद बोला कि अगर कहीं जगह नहीं है, तो अफीम खाकर मर जा। इस पर दुलारा ने कहा कि अच्छा अफीम ला दो, मैं खाकर मर जाऊँगी।

दुलारा के यह कहते ही गयाप्रसाद ने जेब से अफीम निकालकर दे दी, जिसे दुलारा ने फ़ौरन पति के हाथ से लेकर खा लिया। कुछ देर बाद दुलारा बेहोश हो गई।

दुलारा के पेट में ५॥ माह का बालक था और वह गर्भवती थी। उसके बेहोश होते ही गयाप्रसाद और उसकी दूसरी स्त्री लीलावती ने तीन वटावा आठ इंचवाली मोटी सूत की रस्सी ली और उसे दुलारा के गले में बाँधकर दोनों ने आमने-सामने बैठकर उस रस्सी का एक-एक सिरा पकड़कर उसे खींच लिया, जिससे दुलारा के गले में फाँसी लगते ही फ़ौरन मर गई। उसी वक्त उन्होंने उसी रोज़ का खरीदा एक नया चौबी लकड़ी का सन्दूक जिस पर टीन चढ़ा हुआ था लिया और दुलारा की लाश को इस तरह मोड़ा, जिस प्रकार माँ के पेट में बच्चा रहता है और उसे जबर्दस्ती दबाकर उस सन्दूक में ठूँस दिया, और फिर सन्दूक को ताला लगा दिया। और फिर नत्थामल व हीरालाल पड़ोसियों की मदद से २३ नं० का इक्का मँगवाकर उसे इक्के में रख दिया।

स्टेशन पर पहुँचकर रात को १२ बजे के लगभग कुली नं०५२ की मदद से इस सन्दूक को नं० ५७ हावड़ा अप एक्सप्रेस ट्रेन पर ले जाकर एक तीसरे दर्जे के डब्बे में रख दिया। अगले दिन प्रात:काल दिल्ली-रेल्वे-स्टेशन पर जब गाड़ी पहुँची, तो एक सिपाही ने उसे लावारिस सन्दूक समझ कर खोये हुये मालवाले गोदाम में जमा-करा दिया। अगले दिन जब उसमें से बदबू आने लगी, तो हकीम मजरूलहक सब-इन्सपैक्टर इन्चार्ज रेल्वे स्टेशन ने जाकर उस सन्दूक को तुड़वाया, तो उसमें से एक औरत की लाश बरामद हुई।"

यदि यह विवरण सत्य है, तो प्रश्न होता है कि क्या एक पत्नी के होते हुए दूसरी शादी करने की प्रथा एक क्षण के लिए भी जीवित रखने या बर्दाश्त करने योग्य है ? प्रसन्नता है, इस प्रकार की घटनाओं और हमारी निर्दोष बहनों के कत्लों और उन पर होनेवाले भीषण अत्याचारों का लम्बा सिलसिला अपना रंग ले आया है और समाज की निद्रा उनके रौरव चीत्कार से भङ्ग हो गई है। समाज इन प्रथाओं के अन्त के लिए अधीर देख पड़ने लग गया है। एक स्वर से आवाज आने लगी है कि नैतिक व कानूनी किसी भी आधार पर इस प्रकार की प्रथाओं का एक मिनिट के लिए भी समर्थन नहीं किया जासकता है और ये तत्काल निर्दयतापूर्वक मिटा देने योग्य है।

अभी हाल में धारा-सभाओं में 'बहु-विवाह निषेधक बिल' पेश किये गये हैं। हम उनका स्वागत करते हैं। अवश्य इन कानूनों और उपायों से बुराई का सामना करने में मदद मिलेगी, परन्तु हमें इतने पर ही निर्भर न होना होगा। हमें

तो प्रत्येक अन्य उपाय से भी जनता को शिक्षित करना होगा। तभी कुछ सफलता मिल सकेगी। शताब्दियों से जमी हुई कालिमा के धोने के लिए विविध उपायों और उग्र परिश्रम की आवश्यकता होती ही है।

आर्य-समाज मँसूरी का नगर-कीर्त्तन

आर्य-जनता को यह जानकर प्रसन्नता और सन्तोष होगा कि आर्य-समाज मॅसूरी (संयुक्त-प्रान्त) के नगर-कीर्त्तन की, जो वर्षों से बन्द था, सरकार की ओर से आज्ञा मिल गयी है। इस नगर-कीर्त्तन की बन्दिश के इतिहास में न जाकर हम केवल इतना ही कहेंगे कि अधिकारियों ने नगर-कीर्त्तन की आज्ञा देकर बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

बाइबिल-प्रचार के आश्चर्यजनक आँकड़े

ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबिल सोसाइटीज की १३ वी रिपोर्ट से मालूम हुआ है कि बाइबिल का अनुवाद अबतक ७०० भाषाओं और बोलियों मे हो चुका है। १६३५-३६ में १३ भाषाओं में अनुवाद हुए जिन्हें मिलाकर यह सख्या पूरी हुइ है। इस वर्ष में बाइबिल की कुल १, १६, ८६, १३१ प्रतियाँ एशिया में खपीं—७२, ४०, ००० चीन में ४२, २७,००० भारत में सिंहल में ११, ८२,००० जापान में ५, ६ ००० और वर्मा में १,१२,६०० प्रतिया वितरित हुई जिनमें १७, ६०० अबीसीनियों का हिस्सा था।

इस साल में कमेटी को करीब ३ लाख रुपये का घाटा रहा। अपने जीवन के कुल १३२ वर्षों मे वह ४७,६०,००,००० प्रतियाँ बाइबिल की वितरण और ३२, ३३ करोड़ रुपया खर्च कर चुकी है।

विवाहित स्त्रियों का विद्रोह

इन दिनों सिंध प्रान्त में एक धार्मिक सस्था ओ३म् मण्डल की बड़ी चर्चा हो रही है। इसमें दीक्षित विवाहित स्त्रियों और उनके पतियों में बड़ा सघर्ष हो रहा है। उन स्त्रियों ने अपने पतियों को नोटिस दिया बतलाते हैं कि वे ब्रह्मचारिणी रहेंगी। उन्हों ने अपने पतियों को दूसरी शादी करने की भी सिफ़ारिश की बतलाते हैं। सुनते हैं अपनी पत्नियों को मण्डल में जाने से रोकने के लिए पतियों ने सत्याग्रह का आश्रय लिया है। अखबारों में मण्डल के उद्देश्य और कार्य के सम्बन्ध में बड़े मनोरञ्जक समाचार प्रकाशित हुए हैं। ऐसा ही एक समाचार पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

इस प्रकार के आश्रमों और मण्डलों की लोगों के सामाजिक और धार्मिक उत्थान के लिए हम कोई उपयोगिता स्वीकार नहीं करते हैं। हाँ, उनका एक ही मूल्य समझते हैं वह यह कि ये लोगों की आँखें खोल देते हैं। यद्यपि ही वे अल्प काल के लिए ही खुलती हैं।

लेखकों तथा संवाददाताओं के प्रति

हमारे पास ऐसी बहुत-सी सूचनाएँ और लेख प्रकाशनार्थ आते हैं, जिन्हें हम प्रकाशित न करने के लिए विवश हो जाते हैं। संवाददाताओं

को अपनी सूचनाएँ भेजते समय यह देख लेना चाहिये कि जो सूचना वह हमारे पास भेज रहे हैं वह साप्ताहिक वा दैनिक पत्रों में छपने योग्य है व मासिक पत्रों में। यदि वे यह देख लिया करें तो न तो हमें उन्हें न छापने के लिए विवश होना पड़ा करे और न उन्हें न छपने के कारण निराश ही होना पड़ा करे। उदाहरणार्थ एक संवाददाता ने हमारे पास अपने समाज का निर्वाचन छपने भेजा है। एक दूसरे सज्जन ने अपने यहाँ के उत्सव की सूचना छपने भेजी है। वे सूचनाएँ साप्ताहिक और दैनिक पत्रों के योग्य ही हैं उन्हीं में छपने से उनके प्रकाशन का लाभ है। हमारे ऐसे कृपालु लेखक भी हैं जो अपने वे लेख "सार्वदेशिक" में छपने के लिए भेजते हैं, जो अन्य साप्ताहिक वा दैनिक पत्रों में छप चुके होते हैं। उन लेखकों को भी अनिच्छापूर्वक हमें निराश करना पड़ जाता है। उनसे भी विनीत निवेदन है कि वे कृपया "सार्वदेशिक" को अपने वे ही लेख भेजने की कृपा किया करें, जो "सार्वदेशिक" के लिए लिखा करें। इसी में पत्र का गौरव है, पाठकों का लाभ है तथा पत्र-कला के गौरव की रक्षा है। महत्वपूर्ण लेख और आवश्यक संवाद के छापने वा उस पर यथेष्ट नोटिस लेने के अपने उत्तरदायित्व के प्रति हम स्वयं सजग रहते हैं, यह हम अपने लेखकों और संवाददाताओं को विश्वास दिला देना चाहते हैं।

अनाथालयों का शासन

कानपुर का समाचार है कि अनाथालयों और विधवाश्रमों के निरीक्षण के लिए डाक्टर जवाहरलाल यू० पी० की धारा सभा के आगामी अधिवेशन में एक बिल पेश करेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि प्रान्तों में अनाथालयों इत्यादि के नाम बोगस संस्थाएँ चल रही हैं। बहुत से लड़के और लड़कियाँ इन संस्थाओं को चलानेवाले धूर्तों का शिकार बन जाते हैं। इस प्रकार के उपाय तभी बहुमूल्य हो सकते हैं, जब वे इस ढंग से बनाये जाँय कि वास्तविक और उपयोगी संस्थाओं में हस्तक्षेप का कोई खतरा न रहे। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण लोकमत का जागृत होना है जो लोक-हितैषियों के बाने में स्वार्थियों के हथकंडों को न चलने दे। यदि इस प्रकार के लोग जाति या समाज के नेता के नाम में आश्रय न पायें तो आशा नहीं उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थों की अपनी स्कीमों में दूसरों से सहायता मिल जाय।

—*—

अध्यात्म-धारा

वास्तविक आध्यात्मिक जीवन आत्मा और परमात्मा के बीच के सम्बन्ध के जीवन को कहते है। आध्यात्मिक जीवन की वास्तविकता की सब से पहली शर्त परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार करना है। वास्तविक आध्यात्मिक जीवन के जिज्ञासुओं को परमात्मा की सत्ता के सम्बन्ध मे कोई सन्देह नहीं होना चाहिये। उनकी निरन्तर इच्छा और यत्न परमात्मा के अधिक से अधिक सामीप्य में आने का होना चाहिये। उन्हें यह भी जान लेना चाहिये कि परमात्मा का सामीप्य निष्काम लोक-सेवा से प्राप्त होता है। उनके लिए जीवन का उद्देश्य लोक सेवा और उसके द्वारा परमात्मा को प्राप्त होना है। इस यत्न के परिणाम स्वरूप उनके लिए संसार एक आनन्द वाटिका होती है और संसार के लिए वे उस वाटिका के मनोहर और सुगन्धित पुष्प होते है।

ऐसे भी व्यक्ति होते हैं, जिन्हें आध्यात्मिक जीवन की खोज और उसके अनुसरण के लिए न तो इच्छा होती है और न समय होता है। वे खाने-पीने और दुनियादारी से सन्तुष्ट रहते है। वे अपने लिए सम्पत्ति, यश और शक्ति के उपार्जन मे लगे रहते है। कुछ व्यक्ति यश और सामाजिक कीर्ति को धनोपार्जन का साधन बना लेते हैं। कुछ ऐसे भी होते है जो अपने भाइयो पर हुकूमत करने में समर्थ होने के उद्देश्य से शक्ति का संग्रह करते है। बहुधा इन संग्रहो के मूल में आत्म संवर्द्धन की भावना होती है। ये लोग विशुद्ध भौतिक जीवन व्यतीत करनेवाले कहे जा सकते हैं। इन लोगों के लिए आध्यात्मिक जीवन कोई अर्थ नही रखता है।

उनमें से कुछ तो साफ तौर पर कहते सुने जाते है कि धर्म धोखा और ढकोसला है। उनके लिए महा पुरुष, ऋषि लोग और धर्मों के प्रवर्त्तक, जिन्होने पवित्रता और सेवा का जीवन व्यतीत किया था केवल काल्पनिक चीज है, जिनका इतिहास मे पता नही है।

मनुष्यों की एक दूसरी महत्वपूर्ण श्रेणी है, जिनका बाह्य जीवन धनोपार्जन और संसार मे लिप्त देख पड़ता है, परन्तु जो आन्तरिक जीवन मे अध्यात्म मार्ग के पथिक होते हैं। उनके लिए चुपचाप परमात्मा की सेवा ही सब कुछ होती है। परमात्माकी सेवाका ढोल पीटना उन्हें पसन्द नहीं होता है। ये अपने सब कर्मों और यत्नोंको परमात्मा के अर्पण समझते हैं। दिन के कामों मे लगने से पूर्व उसका स्मरण करते है और शाम को उसे अपने सामने उपस्थित समझकर दिनभर के अपने कार्यों पर दृष्टि डालते हैं। बुरे कामों के लिए पश्चात्ताप करके आगे न करने मे समर्थ बनाने की प्रेरणा के लिए उसका आह्वान करते हैं और उनसे बचने के लिए परमात्मा को हर जगह मौजूद समझते है। वे अपने आध्यात्मिक जीवन का परिचय अपनी बातों की अपेक्षा अपने कर्मों से देते हैं। उनका पवित्र जीवन उनका सेवा-भाव उनकी सहानुभूति और प्रेम स्वय उनका परिचय दे देते हैं।

हिन्दू-समाज के पतन के कारण

[ले०--श्री महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज]

एक ब्राह्मण ग्रन्थ में एक जगह कहा गया है—

आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठत ।
शेते निपद्यमानस्य चराति चरतोभग ॥

भाव इसका स्पष्ट है कि जाति का ऐश्वर्य, जाति के उद्यमहीन होकर बैठने से बैठ जाता है, ठहरने से ठहर जाता है, और पुरुषार्थ करने से उदय होने लगता है। इस पुरुषार्थ की महिमा को न समझकर बेसमझों ने ऐसी बातें जाति में प्रचलित कर दीं, जिनसे जाति का मुख पुरुषार्थ करने से फिर गया है। उदाहरण के लिए देखें—

(१) भाग्यवाद के प्रचलित होजाने से यह विचार फैल गया है कि

'हुइहै वही जो राम रच राखा ।
को कर तर्क बढ़ावे शाखा ॥"

दैववाद, प्रारब्ध, होनी, तक़दीर, शुदनी आदि अनेक रूप इसी भाग्यवाद के हैं। इसने पुरुषार्थ करने का व्यर्थ की वस्तु ठहरा कर उससे जाति का मुँह फेर दिया।

(२) जगत् के मिथ्यात्व के विचार ने भी, कुछ कम बदसलूकी हिन्दू-जाति में नही की। भला जब जगत् कुछ है ही नहीं, केवल स्वप्न है, मृगतृष्णा है—धोखे की टट्टी, माया का जाल

हममे से बहुतों को अनुभव हुआ होगा कि ऐसा समय आता है जब हमारा प्यारा हमसे जुदा होता है या कोई विपत्ति हमपर आती है या हम अपने को निस्सहाय पाते हैं। ऐसी अवस्थाओं मे वह महान्-सत्ता हमे याद आती है। उन अवस्थाओं मे ग्रस्त होने पर उपरोक्त प्रथम श्रेणी के लोग तथा बड़े से बड़े पक्के नास्तिक भी परमात्मा का स्मरण तथा आध्यात्मिक जीवन की महत्ता को स्वीकार करते देखे गये हैं। फ्रास का प्रसिद्ध वैज्ञानिक लाप्लास परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नही करता था। वह कहा करता था कि विज्ञान के बडे-से-बड़े परीक्षण मे मुझे ईश्वर क कहीं जरूरत नहीं पड़ी। परन्तु जब उसका अन्त समय आया तो लोगों ने उसे बड़ा भयभीत पाया और यह कहते सुना 'वह है, वह है, अर्थात् ईश्वर है।'

सक्षेप मे आध्यात्मिक जीवन परमात्मा की प्राप्ति का एक साधन है। परमात्मा की प्राप्ति का अर्थ अपने जीवन को पवित्र और सेवा मय बनाना है। परमात्मा की प्राप्ति इस ससार में से गुजरे बिना नहीं होती। ससार में गुजरने का प्रकार श्रेष्ठ होना चाहिये, तब ही हम अन्तिम ध्येय पर पहुँच सकते हैं। वह प्रकार यह है कि ससार म लिप्त न हो अर्थात् दुनिया ही सब-कुछ है यह मत समझो, वरन् दुनिया को एक ध्येय की सिद्धि का साधन समझते हुए उसका उचित उपयोग करो। ससार के उचित उपयोग से ससार के लोगों का भी कल्याण होगा और हम अपने ध्येय की प्राप्ति में समर्थ होंगे।

मात्र है, तब ऐसी निकम्मी वस्तु के प्राप्त करने का कौन यत्न करे।

(३) फलित ज्योतिष—इसके बदौलत किसी के सिर पर शनैश्चर सवार है, तो किसी को मङ्गल ने जकड़ रक्खा है। किसी के पाँव में शुक्र ने बेड़ी डाल रक्खी है तो कोई बृहस्पति का शिकार बना हुआ है। जब सब कुछ इन आसमान के तारों के हाथ में है तो फिर पुरुषार्थ किस मरज की दवा हो सकता है? आज दिशा-शूल है इधर ना जाओ! आज मुहूर्त नहीं है इसलिए यह काम न करो। विवाह बन्द, संस्कार बन्द, आना बन्द, जाना बन्द सम्बन्धियों से मिलना बन्द, यदि शत्रु सिर पर सवार हो तो भी उसके विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिये, इसलिये कि मुहूर्त नहीं है। पृथ्वीराज, ढाके का राजा और टीपू सुल्तान आदि अनेक महापुरुष अपना-अपना राज्य खोकर इस मुहूर्त के बलि-वेदी पर भेंट चढ़ चुके हैं। अब भी यह बात नहीं है कि उपर्युक्त, नाशकारी प्रथाओं ने हिन्दू-जाति का पीछा छोड़ दिया हो। अब भी बहुधा हिन्दू-परिवार इनका शिकार बन रहे हैं।

(४) दान का दुरुपयोग—इस देशमें १५०० के लगभग तीर्थ हैं। इन तीर्थों में प्रति वर्ष औसतन ५ करोड़ यात्री पहुँचते हैं। डेढ़ अरब रुपया यात्रा और दान में इन यात्रियों का खर्च होता है। इसमें से कूतागया है कि ६० लाख रुपये मन्दिरों, महन्तों और पुजारियों के हिस्से में जाते हैं। इन ६० लाख रुपये के अधिकाश का क्या होता है, यह अब छिपी हुई बात नही है। शराबखाने, वेश्यागृह, कसाइयों की दुकाने आदि इस सपत्ति के नादहन्द बेङ्क हैं। इन्ही जगहों मे इस धन का अधिकाश पहुँचा करता है। इसके साथ, यदि उन यात्रियों और उनसे भिन्न अन्य देशवासियों की दशा पर विचार करें तो हृदय कॉप उठता है। पिछले ४० वर्षों मे १७ अकाल पडे। डेढ करोड़ आदमी उन में भूख के मारे तड़प-तड़पकर मर गये। इस के सिवा, साधारण अवस्था मे, इस देश मे प्रति वर्ष १० लाख, प्रति मास ८६ हजार प्रति दिन २८८०, प्रति घटे १२० और प्रति मिनट मनुष्य भूख से मरते हैं। १० करोड़ किसान केवल एक समय दिन मे भोजन पाते है। ५० लाख भिखारी भीख माँगते हैं। इधर देश की यह हालत, उधर ६० लाख रुपयो का महन्त और पुजारी दुरुपयोग करें, कितन अन्धेर की बात है!

हिन्दू-जाति के विचारशाली स्त्री-पुरुषों का काम है कि इन पक्तियो पर ठढे दिल से विचार करें और यत्न करें कि जाति के स्त्री-पुरुष सन्मार्ग ग्रहण करें!

सत्यार्थ प्रकाश लेख माला

ब्रह्मचर्य

[लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

विद्या अध्ययन का समय आश्रम धर्म म ब्रह्मचर्याश्रम नाम से पुकारा जाता है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र गृहस्थाश्रम क भेद है। अन्य तीनो आश्रमो म इस प्रकार का कोई भेद नहीं है। जिस समय बालक गुरु क समीप शिक्षा ग्रहणार्थ जाता था उस समय गुरु उसे यज्ञोपवीत देता था और वेदारम्भ सस्कार करवाता था। वेदारम्भ सस्कार मे अन्य क्रियाओ के साथ साथ शिष्य को गायत्री मन्त्र का पाठ भी पढाया जाता था। शिक्षा क लिए गुरु आज्ञा का पालन करना और भिक्षादि व्रतों का पालन करना आवश्यक था। समय का विधान क्रम से १२, २४, ३६, ४८ वर्ष का था। उसक पश्चात् भी यदि कोई आजीवन ब्रह्मचारी रहना चाहे तो रह सकता था उसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहते थे। जो नैष्ठिक न रहना चाहे वह विवाह कर लेता था। यज्ञोपवीत के लिए अतिम अवधि १६ २० २४ २४ वर्ष थी। इसक पश्चात् पतित सावित्रीय समझा जाता था। यदि उस अवस्था मे कोई यज्ञोपवीत लेना चाहे तो उससे कुछ प्रायश्चित करवा लिया जाता था। उस प्रायश्चत क पीछे यज्ञोपवीत दिया जाता था। यज्ञोपवीत देने का अधिकार केवल ब्राह्मण को न था। द्विज मात्र यज्ञोपवीत दे सक्ता था। कही २ माता पितादि को भी देने की व्यवस्था मिलती है। महर्षि जी ने सत्यार्थप्रकाश मे कई स्थानो पर इस बात को लिखा है उनम से मे यहा चार स्थल लिखना पर्याप्त समझता हू।

जन्म से पाचवे वर्ष तक बालको को माता छठे से आठवे वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नव वर्ष क आरम्भ म द्विज अपनी सतानो का उपनयन करके आचार्य कुल अर्थात् जहा पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्या दान करनेवाली हो वहा लडके और लडकियो को भेज दे और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये विना विद्याभ्यास क लिए गुरुकुल मे भेज दे। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास २ पृष्ठ ३६ ३७ (कलकत्ता)

द्विज अपने घर म लडको का यज्ञोपवीत और कन्याओ का भी यथायोग्य सस्कार करक यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी अपनी पाठशाला म भेज दे सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ४१।

ब्राह्मण तीनो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य क्षत्रिय क्षत्रिय और वैश्य तथा वैश्य एक वैश्य वर्ण का यज्ञोपवीत करा के पढा सकता है और जो कुलीन शुभ लक्षणयुक्त शूद्र हो तो उसको मत्र सहिता छोड क सब शास्त्र पढावे शूद्र पढे परन्तु उसका उपनयन न करे यह मत अनेक आचार्यो का है। सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ४६ ५०।

"सब स्त्री और पुरुष अर्थात् मनुष्य मात्र को पढने का अधिकार है और तुम कुँआ मे पड़ो और श्रुति तुम्हारी कपोल-कल्पनासे हुई है। किसी प्रामाणिक ग्र थ की नहीं। और सब मनुष्यों को वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने के अधिकार का प्रमाण यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय में दूसरा मन्त्र है।"

सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ३ पृष्ठ ८८।

इन स्थलों में महर्षि न यज्ञोपवीत देकर वा बिना दिये पढने के लिए बालकों को भेजना और मनुष्य मात्र को पढने का अधिकार दिया है। इस समय इनके अतिरिक्त आर्यसमाज म जो यज्ञोपवीत का प्रचार है बाल्यावस्था के साथ साथ युवावस्था मे भी है। जो बालक गुरुकुल म जाते हैं उनका यज्ञोपवीत संस्कार तो गुरुकुल वा घर पर होता है और जो स्कूलों मे जाते हैं उनका घर पर यज्ञोपवीत हो जाता है। उनका गुरुकुल वास नहीं है और गुरुकुल मे जाकर अनेक बालक बाल्यावस्था मे हो लौट आते हैं उनका और न जानेवालों का अन्तर किंचन्मात्र ही है, परन्तु जो गृहस्थम प्रवेश करके, वह भी कई-कई सन्तानों के पिता यज्ञोपवीत लेते है उनकी गणना किस मे की जाय। यदि उनको पतित सावित्रीक मान लिया जाय तो प्रथम गायत्री मन्त्र तीन बार पढवाकर इसे प्रायश्चित्त माना जाय, तब प्रायश्चित और उपनयन एक समय मे हो जाने से कुछ व्यवस्था बन जायगी। इसके पश्चात् यह प्रश्न होगा कि जिनको यज्ञोपवीत देकर गुरु वा पुरोहित वा कोई अन्य विद्वान् पृथक हो जाते हैं उनकी गणना किसमें कर, वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तो करते नहीं हैं। उनकी कोई व्यवस्था तो होनी चाहिये।

वैखानस धर्म प्रश्न और वैखानस गृह सूत्र दो पुस्तक है। उन दोनों मे ब्रह्मचारी के चार भेद किये हैं। उन मे से जो प्रथम ब्रह्मचारी है यदि इसको उसमे मानलिया जाय तो कुछ न कुछ व्यवस्था हो जाती है। धर्मसूत्र का पाठ निम्न प्रकार है।

ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधा। गायत्रो, ब्राह्म। प्राजापत्यो नैष्ठिक इति १। गायत्र, उपनयना दूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षारलवणाशी गायत्रीमधीत्याऽऽसावित्र सम्यप्रेरम ब्रह्मचारी ।२।।

ब्राह्म। सावित्र व्रतादूर्ध्वमनभिशस्तापतितानां गृहस्थानां गृहेषु भैक्ष चरणवेदव्रत चरण चरित्वा द्वादशममा विंशति समा वा गुरुकुले स्थित्वा वेदान् वेदौ वेदंवा सूत्रसहितमध्ययन कृत्वा गार्हस्थानुसरण कुर्यात्। ३

प्राजापत्य, स्नात्वा नित्य कर्म ब्रह्मचर्य शोला नारायण परायणो वेदवेदार्थान विचार दार सग्रहण कराति।४। प्राजापत्यस्त्रिसंवत्सरादूर्ध्वं न तिष्ठेदिति ऋषयो वदन्ति। ५

नैष्ठिक। काषाय धातुवस्त्रमाजिन वल्कलवा परिधाय जटा, शिखी वा मेखली दण्डी सूत्राजिन धारी ब्रह्मचारी शुचिरसारलवणाशी यावदात्मनो विप्रयागस्तावद् गुरुकुले स्थित्वाप्रादि भैक्षभाजी- भवति।६। वैखानसधर्म प्रश्न १ खण्ड ३

भावार्थ—ब्रह्मचारी चार प्रकार के हैं। गायत्र, ब्रह्म, प्राजापत्य, नैष्ठिक।

(१) गायत्र वह है जो यज्ञोपवीत धारण करके तीन रात नियम से वास करता हुआ गायत्री याद करने पर्यन्त व्रतचारी रहे।

(२) ब्रह्म—उपवीन लेकर गायत्री याद करके

निकट सम्बन्धियों में विवाह-परित्याग का कारण

[लेखक—स्व० श्री० मास्टर आत्माराम जी]

डेविस महोदय लिखते हैं "जिस प्रकार प्राण-विद्युत, प्राण विद्युत को हटाती है—आकर्षण नहीं करती उसी प्रकार निकट सम्बन्ध में विवाह हो जाने पर जैसा आकर्षण होना चाहिये, वैसा स्त्री-पुरुषों में नहीं होता। यह नियम है कि प्राण-विद्युत रयि (मन की) विद्युत आकर्षण करती है अथवा यों कहो कि विरुद्ध प्रकार की बिजलियों में जिस प्रकार आपस मे मेल होता है ठीक उसी प्रकार दूर के विवाह सम्बन्धों में परस्पर प्रेम बढ़ता है परित्याग नहीं होता। अतएव निकट सम्बन्ध में कदापि विवाह नहीं होना चाहिये।"

एक दूसरे सज्जन की सम्मति है "यदि रक्त-सम्बन्ध में विवाह किया जायगा तो सन्तान भद्दी और प्रतिभा-शून्य होगी। खाने-पीने और सोने में तो वह चतुर होगी। परन्तु बौद्धिक और आत्मिक कार्यों के अयोग्य होगी। साथ ही अधिक स्वार्थी होगी। यदि रक्त-सम्बन्ध में विवाह करने की प्रथा बन्द न हुई तो मनुष्य जाति का विनाश अवश्यम्भावी है। ससार में आज ज्यादा विषय वासना पायी जाती है। रक्त-सम्बन्धी विवाहों की सन्तान बहुत विषयी सिद्ध हुई है। अमेरिका इत्यादि देशों में कई बार शोर मच चुका है कि इस प्रकार के विवाहों का सस्कारों को त्याज्य और दण्डनीय ठहराना चाहिये, ताकि अयोग्य सन्तान पैदा न हो।"

पश्चिमी समीक्षकों के उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात भली भाँति सिद्ध हो गयी कि सगोत्र विवाह अर्थात् निकट वा रक्त-सम्बन्धों मे विवाह का होना शरीर और मन दोनो के लिए हानि कारक है, अतएव ऐसे विवाह सम्बन्ध कदापि नही होने चाहिये।

—*—

अच्छे गृहों से भिक्षा माँगकर नियमपूर्वक १२ वा बीस वर्ष गुरुकुल में रहकर तीन, दो वा एक वेद को सूत्र-सहित पढ़कर गृहस्थी बने।

(३) प्राजापत्य—समावर्तन के पश्चात् नित्य कर्म करता हुआ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ ईश्वर-परायण रहकर वेद वेदाग का विचार कर गृहस्थी हो। यह समावर्तन के पश्चात् तीन वर्ष से अधिक ब्रह्मचारी न रहे अर्थात् तीन वर्ष में विवाह करले ऐसा ऋषि कहते हैं।

(४) नैष्ठिक—काषाय वस्त्र, मृगचर्म वा वल्कल पहने, केश वा शिखा रखे। मेखला, दण्ड, सूत्र धारण कर शुद्ध भोजन करता हुआ जब तक जीवे तब तक गुरुकुल में वास करके भिक्षा भोजी हो।

जो यज्ञोपवीत धारण करके उसी समय अपने कार्य में लग जाते हैं वा गुरु से पृथक् हो जाते हैं वह प्रथम गायत्र ब्रह्मचर्य के अन्तरभूत हो सकते हैं, क्योंकि इसमें सावित्री कंठस्थ करने की अवधि तीन रात मानी है। जिस प्रकार आजकल आर्त्रन धारण करना भिक्षा भोजी होना नहीं है उसी प्रकार गायत्री कंठस्थ के समय को मानकर उनको यज्ञोपवीत देना ठीक ही प्रतीत होता है।

साइन्स और सच्चा धर्म

[श्रीयुत् प० जवाहरलाल जी के एक लेख का सार

पिछले कई वर्षों में मैं साइन्स और शिक्षा मन्दिरों से दूर रहा हूँ। भाग्य और परिस्थितियों ने मुझे इन चीज़ों से हटाकर गली-कूचों, खेतों और फैक्ट्रियों की धुन्ध और गर्द में फेंक दिया। हाल के कुछ वर्षों मे जिन महान् मानवी विप्लवों ने हमारे इस देश का हिला दिया है, मैं उनमे ग्रस्त हो गया।

इस सघर्ष और आन्दोलन के बावजूद भी, जिन्होंने मुझे घेर रखा था, मैं साइन्स और शिक्षा मदिरों से सर्वथा पृथक् रहा हूँ, यह नहीं कह सकता हूँ। मैंने भी विज्ञान-मन्दिर में उपासना की है और मै अपने को साइन्सका एक भक्त मानता हूँ।

साइन्स ने महान् परिवर्त्तन उपस्थित किये हैं और इसमे सन्देह नहीं कि वे सब मानव-समाज के लिए कल्याणप्रद सिद्ध नहीं हुए हैं। परन्तु सबसे मुख्य और आशाजनक परिवर्त्तन जो साइ स ने उपस्थित किया है वह मनुष्य मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास है।

साइन्स के प्रारम्भिक युग में धर्म और साइन्स के मध्य सघर्ष की बहुत चर्चा रहती थी। उन दिनों साइन्स भौतिकवादी और धर्म आध्यात्मिक समझा जाता था। आज यह सघर्ष मुश्किल से ही वास्तविक दीख पड़ता है। आज साइन्स ने अपने पञ्ज फैला दिये हैं और उसने तमाम विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बनाने की हिम्मत की है। यह सब होते हुए भी सघर्ष वास्तविक था। यह सघर्ष धर्म्म समझी जानेवाली चीज़ की आड़ में होनेवाले बौद्धिक अत्याचार और मनुष्य की स्वतन्त्र-भावना के मध्य था।

इन दोनों के बीच में कभी भी समझौता नहो हो सकता। दिमाग की खिड़कियों का बन्द किया जाना साइन्स कभी स्वीकार नहीं कर सकती। सच्चे वैज्ञानिक को न जीवन की ममता होती है और न सेवा के फल की। जहाँ से भी सत्य प्राप्त होता है वहाँ से ही पर प्राप्त करने के सदैव यत्न में लगा रहता है।

शायद सच्चे धर्म और साइन्स में वास्तविक सघर्ष नहीं है। यदि है तो धर्म को साइन्स का वेष धारण करके साइन्स की स्प्रिट में ही अपनी सब समस्याओं को हल करना चाहिये। जीवन की विशुद्ध सासारिक फ़िलासफ़ी ही पर्य्याप्त है ऐसा हममें से बहुत से सोच सकते हैं। वे कह सकते हैं जब संसार की समस्याएँ दृढतापूर्वक हल का तक़ाजा कर रही हैं तब हमें अपने क्षेत्र के बाहर के मामलों में क्यों परेशान होना चाहिये। परन्तु उस सासारिक फिलासफी का भी भौतिक समृद्धि के अतिरिक्त कोई आधार और उद्देश्य होना चाहिये। उस आधार में आध्यात्मिक विशेषताएँ होनी चाहिये तथा व्यवहार के कुछ नियम और आदर्श होने चाहिएँ और ज्योंही हम उनपर विचार करते हैं त्योंही हम सच्चे धर्म के क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाते हैं।

धार्मिक सोसाइटियों और सत्संगों के प्रति उदासीनता क्यों बढ़ रही है ?

[लेखक—श्री० रघुनाथप्रसाद जी पाठक]

विभिन्न क्षेत्रों से यह शिकायत आरही है कि धार्मिक सोसाइटियो के अनुयायियों मे उन सोसाइटियों के प्रति उदासीनता छा गयी है। धार्मिक सोसाइटियो के सदस्यों की सख्या कम हो गयी है तथा वे बन्द होती जा रही हैं या वीरान देख पड़ती है।

इस अवस्था के कई कारण प्रकट किये जाते है। कहा जाता है कि भोगवाद का लोगो पर जादू चल गया है तथा लोग रोटी की परेशानियों मे आजकल इतने अधिक व्यस्त हो गये है कि उन्हे धर्म-कर्म की चर्चा नही सुहाती है।

कुछ लोगो की धारणा है कि धर्म, सघो के उपदेश पुराने, लम्बे और अत्यन्त साधारण बातो से भरे होते है और श्रोता उन्हे सुनना पसन्द नही करते है। ऐसे लोगो का मत है कि धर्म-सघो की कार्यवाही को अधिक से अधिक नवीन, आकर्षक और सक्षिप्त बनाना चाहिये।

एक मत यह भी है कि सघो को परम्परागत धर्मों का स्थान न रहने दिया जाय, वरन् वे जनोपकारक और सामाजिक कार्यों के केन्द्र बना दिये जायें। यह मत उन लोगो का है जो धर्म और समाज को पृथक् २ समझते है।

इस प्रकार के विविध निदान और उन निदानो के अनुसार विविध उपाय किये जा रहे है, परन्तु समस्या का हल नहीं होता है। अवश्य समस्या के हल मे कहीं त्रुटि है।

आज धर्म के प्रति लोगो की रुचि बढ़ रही है। ससार के लोग भोगवाद से दुखी और अशान्त होकर धर्म की शीतल छाया मे आश्रय के लिए आतुर देख पड़ते हैं। विनाश की ओर दौड़ती हुई संस्कृति को रोकने के लिए धर्म ही एक मात्र प्रभावशाली उपाय समझा जारहा है। प्रश्न होता है कि फिर धार्मिक सघों और सोसाइटियों के प्रति लोग उदासीन क्यों है ?

हमारी सम्मति मे इसके कई कारण हैं। एक तो यह कि सच्चे धर्म से कोसों दूर हृदयों और दिमागो को अपील न करनेवाले तथा अन्यान्य हानिकर प्रभावों के साथ अनिच्छुक जनता के सामने मजहब प्रस्तुत किये जा रहे हैं। दूसरा यह है कि सच्चे धर्म के ठीक-ठीक रूप मे रखे जाने का पर्याप्त यत्न नही होरहा है। जो थोड़ा-बहुत यत्न होरहा है उसके प्रति उदासीनता का सबसे बडा कारण यह प्रतीत होता है कि इसके प्रचार का कार्य ऐसे बहुत थोडे से प्रचारकों के हाथ मे है जो सुगन्धित गुलाब के फूल की तरह अपनी सुगन्धि का प्रसार करके बिना ढोल पीटे जनता को अपनी ओर खीच लेते हों। यह प्रचार मुख्यतया उन लोगो के हाथ मे देख पड रहा है जो अपने ऊँचे पद से बहुत नीचे पर है। जिनमे सजीवता की कमी है तथा जो अपनी वाक्पटुता, बढिया वेष भूषा तथा लच्छेदार बातो से अपनी सजीवता की कमी की पूर्ति के यत्न मे लगे होते है।

एक तीसरा कारण यह है कि धर्म-मन्दिर कार्यालय बन गये है जिसके कारण उनकी पवित्रता और विशुद्ध धार्मिक वातावरण नष्ट हो गये हैं।

हमे देखना चाहिये कि आर्यसमाज पर उपर्युक्त बातें कहाँ तक घटती हैं तथा त्रुटियों के सुधार में वे कहाँ तक सहायक होती हैं।

मुसलमानों की समस्या

अकेले भारतवर्ष में ही नहीं, दुनिया के जिस किसी भी देश में मुसलमान बसे हुए हैं, वहीं वे अपने मजहबी दिवानेपन के कारण एक राजनीतिक समस्या बने हुए हैं। ससार की साम्राज्य लोलुप शक्तियाँ मुसलमानों के इस गुण या दोष का पूरा लाभ उठा रही और उठाती रही हैं। भारतवष में तो ब्रिटिश शासकों ने साम्प्रदायिक मुसलमानों को दश के राष्ट्रीय आन्दोलन के विरुद्ध खड़ा किया ही था, जापान भी अब चीन मे वहाँ के मुसलमानों की धर्मान्धता को देशद्रोह के रूप मे परिणत करने का यत्न कर रहा है। सुनते हैं कि वह उत्तर-पश्चिमी चीन के मुसलमानों की धर्मान्धता भड़का कर, अपनी सरलता मे, उनका एक अलग राज्य क़ायम करना चाहता है। और इस काम मे उसने अपना गुरु इटली को बनाया है, जिसने कि हाल में यही खेल अबीसीनिया मे खेला था। अबीसीनिया का राजा ईसाई था और वहाँ की आबादी भी अधिकतर ईसाई है। बस इटली ने अबीसीनियन मुसलमानों के अपनी तरफ फोड़ लिया। अब यही जापान करना चाह रहा है।

यह समस्या केवल उन देशों की नहीं है, जिनमें मुसलमानों की आबादी अल्पसख्यक है। जिन देशों की आबादी मुस्लिम-प्रधान है, उनमें भी इस्लामी धर्मान्धता ने कुछ कम उग्र समस्याएँ पेश नहीं कीं। अफगानिस्तान का उदाहरण तो इस पीढ़ी की भारतीय जनता ने अपनी ही आँखों देखा है। बेचारा अमीर अमानुल्ला राजगद्दी छोडने को केवल इस कारण विवश हुआ कि वह धर्मान्धता के नेता मुल्लाओं की उपेक्षा करके नवीन उन्नतिशाली मार्ग पर चलना चाहता था। अमानुल्ला के पश्चात् नादिरखाँ की सरकार ने भी उन्नतिशाली मार्ग पर चलने का यत्न किया, परन्तु धर्मान्धता के नेताओं का लिहाज करते हुए। फलत उसकी तथा उसके उत्तराधिकारियों की प्रगति का क्रम भी स्वभावत सुस्त रहा।

फारस में रजाशाह पहलवी को, अरब में इब्नसऊद को, और टर्की में कमाल अतातुर्क को भी इस्लामी धर्मान्धता की शक्तियों का जबरदस्त मुकाबला करना पड़ा था, परन्तु ये तीनों देशभक्त सज्जन अपनी चतुरता, दृढ़ता, व्यवहार-कुशलता और परिस्थितियों की अनुकूलता आदि के कारण इन अन्धकारमय शक्तियों पर विजय पाने में सफल होगये।

यद्यपि मुसलमानों की धर्मान्धता अब स्वतन्त्र मुस्लिम देशों में कम होती जा रही है, तथापि परतन्त्र देशों को उसका अभिशाप अब भी भुगतना ही पड़ रहा है। भारतवर्ष, चीन, अबीसीनिया, मरक्को आदि देश इसके उदाहरण हैं। इन देशों में वर्तमान युग की शिक्षा पाये हुए मुसलमान तक इस दीवानेपन के शिकार हैं और जिस चाल से मुस्लिम जगत पर नयी लहरों का असर पड़ रहा है उसे देखते हुए यह आशा नहीं होती कि उक्त पराधीन देशों के गले को यह फाँसी दो पीढियों से पहले छोड़ देगी। (दैनिक अर्जुन से)

विवाहित स्त्रियों का विद्रोह

कुछ समय हुआ यह घोषणा हुई थी, कि हैदराबाद (सिंध) में कुछ विवाहित स्त्रियों ने अपने पतियों को अपने इस निश्चय की सूचना दी है कि वे ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही उन्होंने अपने पतियों से सिफ़ारिश की थी कि वे लोग दूसरी स्त्रियों से शादी कर सकते हैं। पहले यह ख़बर मज़ाक समझी गयी थी। ख़याल था कि किसी मनचले ने योंही लिख मारा है परन्तु बाद की ख़बरों से इस ख़बर की पुष्टि हो गयी थी। यह भी मालूम हुआ था कि वे स्त्रियाँ ओ३म् मण्डल में दीक्षित हो गयी हैं। इस मण्डल में हिन्दू बौद्ध और जैन—इन तीनों धर्मों के व्यक्ति प्रविष्ट हो सकते हैं।

सिंध ऑब्ज़र्वर' नामक सिंध के प्रमुख अँगरेज़ी पत्र में मण्डल के सम्बन्ध में विस्तृत रिपोर्ट छपी है। संवाददाता ने कराची में मण्डल के संस्थापक से भेंट करके अपनी विस्तृत रिपोर्ट अख़बार को भेजी थी। संवाददाता के संवाद से उक्त मण्डल हिन्दू धर्म या संस्कृति के वृहत् भण्डार में से ऊटपटांग ढंग से लिए हुए विचारों की खिचड़ी मालूम होता है। हमें बतलाया गया है कि मण्डल का विश्वास है कि स्त्रियाँ मनुष्यों की अपेक्षा आध्यात्मिक विषयों को ग्रहण करने में ज़्यादा समर्थ होती हैं। हमें यह भी बतलाया गया है कि इस मण्डल की भक्त स्त्रियाँ अपने को कृष्ण की गोपियाँ कहती हैं। संवाददाता के कथनानुसार एक और विचित्र बात प्रकाश में आयी है और वह यह कि 'गीता' मण्डल में प्रवेश की एक शर्त रक्खी गयी है। प्रत्येक प्रार्थी से पूछा जाता है कि उसने गीता का कितना अध्ययन किया है। सिंध अर्से से हिन्दू धर्मशास्त्रों के अध्ययन का बड़ा केन्द्र नहीं रहा है। मण्डल की १५० भक्तिनियों ने गीता का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त किया यह एक पहेली है। गीता के पाठ से उन्होंने जो कुछ समझा है वह एक और भी बड़ी पहेली है। गीता का कृष्ण और पुराणों का कृष्ण जो गोपियों के साथ क्रीड़ा करता था एक ही है यह बात बड़ी सन्देहजनक है। गीता का कृष्ण स्त्रियों की उपासना नहीं करता था।

'सिंध ऑब्ज़र्वर' के संवाददाता को सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं हुआ। गुरु जी के आगमन की प्रतीक्षा में बैठे २ उसने देखा कि कमरे में बढ़िया २ फूलों का ढेर लगा था। कोमल गद्दे और तकिए रखे हुए थे। ग़रज़ कि राजसी ठाठ और ऐश आराम के वहाँ सबही लक्षण दिख पड़ते थे। उसे आश्चर्य था कि त्यागवाद की फ़िलासफ़ी में यह बात कैसे फ़िट हो सकती है। गीता त्यागवाद की शिक्षा देती है। गीता इस बात की सिफ़ारिश नहीं करती है कि अपने ब्रह्मचर्य की विशुद्धता की परीक्षा के लिए मनुष्य को जान बूझकर अपने को भोग-विलास और राजसी ठाठ बाट के वातावरण में रखना चाहिये। संवाददाता को थियोसोफिस्टों के अवतार मि० कृष्णमूर्ति तथा दादा (संस्थापक) में सादृश्य दिख पड़ता है। मि० कृष्णमूर्ति अमेरिका के श्रोताओं के सामने ताज़ से ताज़ा फ़ैशन और बनाव शृङ्गार में उपस्थित होते हैं। साधारण धर्म जीवी व्यक्ति के

संन्यास और क्षात्र धर्म

[ले०—श्री प्रिंसिपल दीवानचन्द जी एम ए कानपुर]

उमर ख्याम ने कहा है 'आस्मान की गर्दिश से केवल दो प्रकार के व्यक्तियो को लाभ पहुँच सकता है या तो उन लोगों को जा सज्जनता और असज्जनता से पूर्ण परिचित होते है या उनको, जिन्हे अपने या दुनिया के मामलो की बावत बिल्कुल सुध-बुध नहीं।

साधारण लाग पूर्ण ज्ञान और पूर्ण अज्ञान के बीच टिके होते है, इसलिए उनकी जिन्दगी सघर्ष की जिन्दगी होती है। या यो कह सकते है कि ज्ञान का जीवन एक ऐसा सफर है जिसे शुरू करते ही हम कठिनाइयो का सामना करना पडता है और ये कठिनाइयाँ यात्रा की समाप्ति तक भी हमारा पीछा नही छाडती है। इस मजिल के दोनो सिरो पर आराम और चैन है। शुरू मे जब अज्ञान छाया हुआ था जीवन मुसीबतो से मुक्त था। अन्त मे जब पूर्ण ज्ञान प्राप्त होजायगा मुसीबतों का अन्त हो जायगा। बीच की अवस्था मे, जब कि हम न इधर के है न उधर के, चैन और आराम

लिए उनका रहन-सहन बडा कलामय आकर्षक और खर्चीला है। ओ३म् मण्डल क दादा विवाहित व्यक्ति है। सवाददाता का कथन है कि वह अब भी वानप्रस्थाश्रम म अपनी स्त्री क साथ रहते हैं। उनके एक पुत्र और दो पुत्रियाँ है और इन सब की शादियाँ हो चुकी है। पुत्र-वधू और दामाद उनके सर्व प्रथम चेले हैं। वस्तुत पुत्र-वधू जिसका अवस्था १६ वर्ष की है उसकी मुख्य शिष्या है। मण्डल में 'दादा" के बाद उसी का स्थान है। गुरु ने सवाददाता को इसी के पास मण्डल की पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा था।

सबसे अन्तिम सूचना यह है कि भक्त स्त्रियो के पतियो ने ओ३म् मण्डल में शान्त सत्याग्रह के ढग में मण्डल पर धरना दे दिया है। अपनी स्त्रियों के आने से पूर्व ही वे प्रतिदिन सुबह को मण्डल में पहुच जाते हैं ताकि उसमें प्रवेश करने स वे अपनी स्त्रियो को रोक सके। उनमें सघर्ष हो रहा है। इस घरेलू नाटक म हस्तक्षेप करने स पुलिस ने इन्कार कर दिया है। ये घटनाए हैदराबाद म हो रही है जो मण्डल का मुख्य केन्द्र है। दादा अबभी कराची मे है।

बुद्ध के समय में भी विवाहित स्त्रियो का एसा ही विद्रोह हुआ था पारिवारिक जीवन के प्रति उत्पन्न हुए आम विरोध के कारण ही बौद्ध-धर्म का शीघ्र पतन हुआ था।

ओ३म् मण्डल के सस्थापक के कथनानुसार मण्डल तपस्या की लाइनो पर चलाया जा सकता है इस तपस्यावाद के भी सुखवाद स कम खतरे नही है।

— —

की तरफ मन भागता है। चैन और आराम की इच्छा स्वाभाविक है। मनुष्य उनकी प्राप्ति के लिए दोनों तरीके इस्तेमाल करता है। कभी अज्ञान की तरफ भागता है, कभी ज्ञान की तरफ।

यात्रा तो प्रारम्भ हो चुकी। अब वापस लौटने का क्या काम ? चलो आगे बढ़ो। निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच ही जाओगे। हाँ, शर्त यह है कि हिम्मत न हारो, वे हमें विश्वास दिलाते हैं कि परिमित ज्ञान दु ख देता है। जब यह बढ़ता २ पूर्ण ज्ञान हो जाता है तो सब दु ख दूर हो जाते हैं और पूर्ण शान्ति मिल जाती है। यह शान्ति उस आराम से, जो मुसाफिर को यात्रा आरम्भ करने से पूर्व प्राप्त थी, बहुत ज्यादा क़ीमती है। सफर मुश्किल जरूर है और आनन्द यह है कि जितना हिस्सा हम तय कर चुके हैं उससे बाक़ी का हिस्सा बहुत ज्यादा लम्बा है, परन्तु यह कष्ट सहन करने योग्य है। कवियों की लोरी हमे कुछ समय के लिए सुला सकती है—हमारी कठिनाइयों को हल नहीं कर सकती।

मुसाफिरों में कोई-कोई कवियों के पीछे चल पड़े हैं। कोई २ दार्शनिकों को अपना मार्ग-दर्शक बनाते हैं। यह बहुत कुछ प्रत्येक की तबीयत पर निर्भर होता है, मै इस लेख में उन लोगों को कुछ निवेदन करना चाहता हूँ जिनका स्वभाव दूसरे प्रकार का है। जो इस बात को स्वीकार कर लेते हैं कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए नेकी बदी का ज्ञान जरूरी है, जो पीछे नहीं वरन् आगे चलना चाहते हैं। नेकी क्या है ? बदी क्या है ? धर्म और अधर्म में क्या फर्क है ? इस प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये हैं।

कुछ लोगों की सम्मति में धर्म अपनी रक्षा करना, आगे बढना और जीवन-संग्राम में विजयी होना है। अधर्म इसके विरुद्ध है। मै किसी को निमन्त्रण नहीं देता कि वह मेरे रास्ते में आकर रुकावट बने, परन्तु यदि वह अपनी मर्जी से या परिस्थितियों से मजबूर होकर मेरे रास्ते मे आ खड़ा होता है तो मेरा काम यह है कि मै अपना रास्ता साफ करदूँ। यदि इसमें उस तकलीफ होती है—वह चीखता-चिल्लाता है तो उसके लिए मै जिम्मेवार नहीं। यदि जिम्मेवार हूँ भी तो मुझे इसमे शर्म की कोई बात दिखाई नही देती। इस विचार को बहुत जो॰ से नये रूप मे जमना के फिलासफर फ्रेडारक निटशेने पेश किया है। इसका शिक्षा ने जर्मना की मनोवृत्ति को बदल दिया।

दूसरा ख्याल जो धम अधर्म के सम्बन्ध मे दिया है वह भगवान् बुद्ध और ईसा न दिया गया है। ये दोनों फकीर थे और उन्होंने सबको फक़ीर बनने का उपदेश दिया। उनकी सम्मति में धर्म का तत्व प्रेम या सेवा है। यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ ज्यादती करता है तो उस सहन करलो। वह तो मूर्ख है, तुम क्यों मूर्ख बनते हो। तुम इस बात को मत भूलो कि जो कुछभी वह करता है वह तुम्हारा भाई तो है। यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारता है तो दूसरा उसके सामने करदो। यदि तुम्हारा कोई कोट उतार लेता है कमीज स्वयं उतार कर उसके हवाले करदो। दोनों के लिए उसे ही कष्ट न करना पड़े। महात्मा गाँधी बड़ी हद तक

इस विचार के प्रभाव में हैं। कुछ समय हुआ प्रयाग में हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा हुआ। राज कर्मचारियों ने होशियारी और हिम्मत से उसे जल्द ही दबा दिया। इसके लिए पुलिस और फौज की जरूरत पड़ी। साधारण व्यक्ति कांग्रेस-सरकार को बधाई दे रहे थे कि उन्होंने समय पर सावधान होकर हत्याओं और खून-खराबी को रोक दिया। महात्मा गाँधी ने लिखा कि पुलिस और फौज का प्रयोग जाहिर करता है कि कांग्रेस अभी शासन करने योग्य नहीं। उनके विचार में विद्रोह और झगड़े को शान्त करने के लिए ऐसे व्यक्तियों की जरूरत नहीं जो गोली चला सकें, बल्कि ऐसे व्यक्तियों की जरूरत है जो झगड़ों के बीच काम कर स्वयं मर जायें और अपनी मृत्यु के प्रभाव से दंगाइयों की मानसिक अवस्था मे अच्छा परिवर्तन करदें। साधारण आदमी को यह पता नहीं चलता कि पुलिस और फौज रहनी भी चाहिये या नहीं। यदि देश सन्यासियों से ही भरा हो तो पुलिस और फौज अनावश्यक होजाते हैं। परन्तु यह बात सदेहों से खाली नहीं कि यदि बहु संख्या दूसरे लोगों की हो तो हुकूमत का कार्य सन्यासियों की मदद से ही चल सकता है। इस दूसरे ख्याल के अनुसार सब से ऊँचा आदर्श योद्धा नहीं, बल्कि सन्यासी या सेवक पेश करता है।

तीसरा विचार इन दोनों ख्यालों को अधूरा और इसलिए समाधान समझता है कि जीवन इतनी साधारण चीज नहीं कि इसकी हिदायतके लिये 'ताकत' या 'सेवा' एक ही असूल काफी हो। जीवन बहुत पेचीदा चीज है। कहीं शक्ति की जरूरत होता है कहीं सेवा की, कहीं दोनों की। जीवन की नींव बुद्धि या ज्ञान पर रखनी चाहिये। दूसरों के साथ व्यवहार करने मे हमे यह देखना होता है कि यह दूसरे कौन हैं। प्रत्येक स देश, काल और पात्र को समझकर यथा योग्य बर्ताव करना चाहिये। यह ख्याल श्रीकृष्ण जी ने गीता म दिया है। यही ख्याल वर्तमान काल मे महर्षि दयानन्द ने हमारे सामने रक्खा है। समाज मे केवल क्षत्रियों के लिये ही स्थान नहीं। उनके लिए भी स्थान होना चाहिये। समाज-कार्य केवल सन्यासी ही नही चला सकते हैं फिर भी सन्यासी भाव की जरूरत है। जीवन एक निरन्तर संघर्ष है। इसमे कभी एक हथियार काम आता है, कभी दूसरा। सफल जीवन के लिए मौके का समझना, आवश्यकता के अनुसार अमल करना तथा बुद्धि के चिराग को हाथ में रखना जरूरी है।



परिषद् की रजत-जयन्ती

*

अब तक सब आर्य कुमारों को यह बात मालूम हो चुकी है कि ३० सितम्बर और १ली अक्तूबर को भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की रजत जयन्ती बड़ी धमधाम से बिजनौर में मनायी जा रही है। बिजनौर की स्वागत-कारिणी सभा के कार्यकर्त्ता बड़े उत्साह और प्रेम से इस महान् यज्ञ का आयोजन कर रहे हैं।

आर्यकुमार यह बात सुनकर बड़े प्रसन्न होंगे कि उनके परम सौभाग्य से इस विशेष सम्मेलन के सभापति-पद को सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्रीयुत् प्रोफेसर सुधाकर जी, M A ने स्वीकार कर लिया है। आर्य-कुमार यह बात भूले नहीं होंगे कि सन् १९०१ में प्रशंसनीय प्रोफेसर साहब ने ही स्व० डाक्टर केशवदेव जी शास्त्री तथा अन्य मित्रों की सहायता व सहयोग से इस भारतवर्षीय आर्य-कुमार परिषद् को स्थापित किया था। इस संस्था को आप क्या बनाना चाहते थे और आपके क्या उद्देश्य थे वे सब अभी तक पूरे नहीं हो सके है। हमें पूर्ण आशा है कि इस वर्ष प्रोफेसर साहब की अध्यक्षता में आर्य-कुमारों को न केवल उचित नेतृत्व मिलेगा, बल्कि परिषद् क्रियात्मक रूप से कुछ आगे बढ़ सकेगा। प्रोफेसर साहब के सभापति चुने जाने में परिषद् का आशापूर्ण भविष्य नज़र आरहा है।

निःसंदेह हम यह आशा कर सकते हैं कि इस बार बिजनौर में बैठकर कुमारों के शुभचिन्तक आर्य-नेता और आर्य-कुमार मिलकर कुछ ऐसा रचनात्मक कार्य-क्रम तैयार करेंगे कि जिससे न केवल आर्य-कुमारों में ही जीवन का संचार होगा बल्कि कुमारों से बढ़कर आगे आर्यसमाज मे भी स्फूर्ति उत्पन्न होगी।

बिजनौर की स्वागत कारिणी सभा के उत्साही कार्यकर्त्ता रजत-जयन्ती की बड़े ज़ोर से तैयारी कर रहे हैं और उनकी इच्छा है कि यह सम्मेलन न केवल बाहरी शान-शौकत और धूमधाम से हो, बल्कि इस से आर्य कुमारों को वास्तविक जीवन में उत्साह और

स्फूर्ति प्राप्त हो।

आर्यसमाज के चुने हुए नेताओं को निमत्रण भेजे जा चुके हैं जिनमें से अधिकांश ने आने की स्वीकृति दे दी हैं। सम्मेलन का ऐसा

मनोरंजक प्रोग्राम

बनाया गया है कि जिसमें छोटे और बड़े सब कुमारों के भाग लेने की सुविधा रखी गयी है। वॉली-बॉल का टूर्नामेण्ट रखा गया है। खेलों में बहुत से पारितोषिक रखे गये हैं।

क्या पाश्चमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है' विषय पर वाद विवाद रखा गया है जिसमें अच्छे वक्ता को इनाम की घोषणा की गयी है। निम्नलिखित विषयों पर उत्तम लेख लिखनेवालों के लिए पारितोषिक रखे गये है—

(१) क्या आर्यकुमारों को राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना आवश्यक है ?

(२) भारत की आधुनिक उन्नति में ऋषि दयानन्द का स्थान।

(३) भारत में स्वदेशी का प्रचार किस प्रकार हो।

(४) भारतीय युवकों के लिए वायुयान तथा सैनिक शिक्षा अनिवार्य हो।

(५) भारत के लिए हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है।

एक आर्य-पार्लिमेंट के वृहद् अधिवेशन का आयोजन किया गया है। जिसमें अत्यन्त मनोरंजक रूप से प्रश्नोत्तर होंगे और निम्नलिखित विषयों पर पार्लिमेंटरी ढङ्ग से बहस होगी—

१ कोई आर्यसमाजी किसी अन्य संस्था का मेम्बर न बन सके (सरकार की ओर से)।

२ भारत से ज़मींदारी प्रथा हटा दी जाय।

(Opposition विरोधी दल की ओर से)

गम्भीर विषयों पर प्रस्ताव बनाये जा रहे हैं और उनपर गम्भीर विचार और नेताओं के उपदेश और भाषणों का प्रबन्ध किया जा रहा है। परिषद् के पुराने कार्यकर्त्ताओं को एकत्रित करने का प्रयत्न किया जा रहा है। तात्पर्य यह है कि बिजनौर के युवक भरसक अपने प्यारे आर्यकुमार भाइयों के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं। अब आपका कर्त्तव्य है कि आप भी

बिजनौर चलिये

अपनी कुमार-सभा की तरफ़ से अधिक से अधिक प्रतिनिधि बिजनौर भेजिये और वहाँ के पूरे कार्यक्रम में समुचित रूप से भाग लीजिये। दशहरे की छुट्टियाँ तो हैं ही। रेल के किराये में भी रिआयत की सुविधा है। इसलिए आशा की जा रही है कि इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक आर्यकुमार बिजनौर में इकट्ठे होंगे।

"उन्नति की ओर"

इधर भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की तरफ़ से "उन्नति की ओर" नामी पुस्तक इस रजत जयन्ती के स्मारक रूप छप रही है। इसमें आर्यकुमार सभाओं के परिचय और परिषद् के संक्षिप्त इतिहास के अतिरिक्त आर्यकुमारों के जीवन को ऊँचा उठानेवाले

आचार निर्माण सम्बन्धी नेताओं के सन्देश और उपदेश एकत्रित किये गये हैं। यह पुस्तक एक स्थायी साहित्य होगा, जिसको हरएक आर्यकुमार अपने पास रखकर जीवन संग्राम मे विजय प्राप्ति के लिए उत्साह और पथ-प्रदर्शन प्राप्त कर सकेगा। सम्मेलन पर यह पुस्तक लागत मात्र मूल्य पर आर्यकुमारों को प्राप्त होगी। इसमे चित्र भी होगे।

मन्त्री, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्,
दिल्ली।

—❀—

आर्य-कुमारों से

आर्य-कुमार परिषद् की रजत-जयन्ती अर्थात् २५ वॉ सम्मेलन दशहरे का छुट्टियो में ३० सितम्बर तथा १ अक्तूबर सन् १९३८ ई० को बिजनौर में होगा।

इस महा पवित्र सम्मेलन के लिए मैं अपने देश के आर्य-कुमारो को सप्रेम निमन्त्रण देता हूँ और अपील करता हूँ कि वह इस परम पुनीत अवसर पर इकट्ठा होकर अपने को सुसङ्गठित करे। हमारी कुमार-सभाओं का सङ्गठन गत कई वर्षों से शिथिल पड गया था, परन्तु गतवर्ष से देहली में स्थायी कार्यालय के बन जाने से तथा कार्य-कर्त्ताओं के परिश्रम से कई वर्षों की छाई हुई लम्बी शिथिलता को दूर करने में बहुत कुछ सफल हो चुके हैं अत मैं अपने आर्य-कुमार भाइयों से इस बात की प्रार्थना करूँगा कि वह जयन्ती के इस परम पुनीत अवसर पर इकट्ठा होकर किसी क्रियात्मक प्रोग्राम की रचना करें, जिससे आर्य-कुमारो में एक नवीन जागृति पैदा हो सके।

——

आर्य-कुमार सभा के मंत्रियों से नम्र निवेदन

आर्य कुमार सभाओं के मन्त्री महोदयों की सेवा में निवेदन है कि आर्य-कुमार सम्मेलन के लिए जो सरकुलर भेजे गये थे उनके उत्तर तथा प्रतिनिधियों की नामावलि शीघ्र भेजने की कृपा करें, ताकि स्वागतकारिणी समिति के सदस्यो को सुविधा हो सके।

बिजनौर   ईश्वरीदयाल आर्य
३१-८-३८   स्वागत मन्त्री

——

परिषद् की रजत जयन्ती

२५ वाँ अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन, बिजनौर

शुक्रवार ता० ३० सितम्बर तथा शनिवार ता० १ अक्तूबर १९३८

प्रोग्राम की कुछ विशेषताएँ

जयन्ती का विस्तृत प्रोग्राम जो ३० सितम्बर को प्रात ६॥ बजे यज्ञ से आरम्भ होकर १ ली अक्तूबर को रात्रि के १२ बजे तक रहेगा—सब कुमार सभाओं को अलग भेजा जा रहा है।

प्रोग्राम में निम्नलिखित विशेषताएँ होंगी —

१—शुक्रवार ३० सितम्बर को सम्मेलन के सभापति तथा बाहर से पधारे हुए नेताओं तथा प्रतिनिधियों का नगर में जलूस निकलेगा। जिसके लिए बिजनौर की आर्य-जनता बड़ी उत्सुकता से बाट देख रही है।

प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे पूरी संख्या में ३० सितम्बर के पूर्व ही बिजनौर अवश्य पधारें।

२—सम्मेलन पर 'क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है" विषय पर कुमार सभाओं के प्रतिनिधियों का वाद विवाद (Debate) होगा। सर्व प्रथम आनेवाली कुमार सभा को एक चाँदी का प्याला (Cup) इनाम में दिया जायगा तथा सर्वोत्तम वक्ता को एक स्वर्ण पदक अन्य उत्तम वक्ताओं को भी पुरस्कार मिलेंगे।

देखना है कौन आर्यकुमार सभा बाज़ी जीतती है।

३—उत्तम लेख लिखनेवाले आर्यकुमारों को भी पुरस्कार दिये जायेंगे। लेखों की सूची ऊपर दी जा चुकी है।

४ वॉली बॉल का एक टूर्नामेण्ट होगा जिसमें विजेता आर्यकुमार सभा को तथा खिलाड़ियों को क्रम से प्याला तथा पदक मिलेंगे।

५—टूर्नामेण्ट के अतिरिक्त अन्य खेल (Sports) भी होंगे जिनमें पुरस्कार मिलेंगे।

६—एक मानसिक परीक्षा (Mental Test) भी होगी। जो प्रतिनिधि गत सम्मेलन पर दिल्ली पधारे थे उन्हें इसकी उपयोगिता भली प्रकार विदित है।

७—आर्यकुमारों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए उत्तम उत्तम प्रस्ताव बनाये जारहे हैं जिन पर देश के अग्रगण्य आर्य नेता अपने विचार प्रकट करेंगे।

८ दो गम्भीर विषयों पर जिनसे आर्यकुमारों के भावी जीवन का घनिष्ट सम्बन्ध है पार्लियामेण्ट्री ढंग से विचार करने के लिए एक आर्य पार्लियामेण्ट का आयोजन किया गया है। इन विषयों पर लेजिस्लेटिव असेम्बलियों के सदस्य तथा अन्य नेता अपने विचार प्रकट करेंगे। विषय यह है

(१) कोई आर्य-समाजी किसी अन्य संस्था में भाग न ले सके (सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में क़ानून बनाने का प्रस्ताव पेश होगा)

(२)—भारतवर्ष से ज़मीदारी प्रथा हटा दी जाय। (इस पर विपक्ष की ओर से क़ानून बनाने का प्रस्ताव पेश होगा) प्रोग्राम अत्यन्त रोचक है। अत आप अधिक से अधिक संख्या में

बिजनौर पधारें

और कार्य क्रम में पूरा भाग लें।

High Thoughts
उच्च विचार

Good thoughts, though God accepts them yet toward men are little better than good dreams except they be put into action

अच्छे विचारों को यद्यपि परमात्मा स्वीकार करता है, परन्तु यदि वे कार्य में परिणत न किये जायें तो मनुष्य के लिए अच्छे स्वप्नों से अधिक उनकी उपयोगिता नहीं होती है ।

* * * *

Doing is the great thing for if resolutely people do what is right, in time they come to like doing it

कर्म बड़ी चीज़ है । यदि मनुष्य दृढ़ता पूर्वक ठीक काम करे तो समय आने पर वे उस काम को करना पसन्द करने लग जाते हैं ।

* * * *

The actions of men are the best interpreters of their thoughts

मनुष्यों के कर्म ही उनके विचारोंको सर्वश्रेष्ठ रीति से प्रकट करते हैं ।

* * * *

A holy act strengthens the inward holiness It is a seed of life growing into more life

पवित्र कर्म आन्तरिक पवित्रता को दृढ़ करता है । यह जीवन का तत्व होता है और उसे सजीव बनाता है ।

* * * *

All our actions take their hue from the complexion of the heart as landscapes do their variety from light

हमारे सब कर्म हमारे हृदय के रङ्ग से रंगे जाते हैं जिस प्रकार जगत की हरियाली रोशनी से विविध रूप धारण करती है ।

* * * *

A good action is never lost, it is a treasure laid up and guarded for the doer's need

अच्छा कर्म कभी नष्ट नहीं होता है । यह तो कर्त्ता की आवश्यकता के लिए बना बनाया सुरक्षित कोष होता है ।

* * * *

Existence was given to us for action, our worth is determined by the good deeds we do rather than by the fine emotions we feel

कर्म करने के लिए हमें जिन्दगी मिलती है । हमारे कोमल भावों की अपेक्षा हमारे शुभ कार्य्यों से ही हमारी क़ीमत का सही अन्दाज़ा लगाया जाता है ।

ARYA-SAMAJ and HYDERABAD STATE

An open Letter to Rt Hon'ble Sir Akbar Hydari from the Secretary Inter National Aryan League

Dear Sir Akbar Hydari,

Disquieting news of the murders of Arya-Samajists by Muslim fanatics have created sensation all over Hindu-India. Ved-Prakash was murtyred at Gunjauti, Dharam Prakash at Kalyani and Maha Deva at village Akolga. These martyrs have cheerfully faced death belieing the contention of their opponents that they can silence a good cause by irrational fury and fire.

You have recently delivered your convocational sermon to Dacca University students preaching against Communalism. But have not the news of these murders—the result of Muslim Communalism and Fanaticism thriving at your doors and under your regime—reached your ears? If you have heard of them what have you done to stop this daily increasing danger to public peace and racial harmony? I venture to point out that connivance on the part of your Government, of such murders will create a chaos between

A MESSAGE

FROM

Sir Dr G C Narang, M A Ph D, Bar-at-Law

Of late so many atrocities have been perpetrated by the Muslims on the Hindus and so many murders have taken place in Hyderabad State that it has become absolutely necessary to bring to the notice of the public and the higher authorities such instances of intolerance shown by the Mohammadans against their neighbours—the Hindus and the indifference displayed by the State Authorities.

It seems that there is no life in the Hindus of Hyderabad State, otherwise it is very difficult to understand how forming an overwhelming majority as they do they can put up with such acts of violence and injustice. The first thing to do is to make them conscious of their miserable condition and of their power as community if they care to stand together.

the two communities which will become impossible to bridge in the near future

Arya Samaj workers in your State are strictly enjoined not to do anything embarassing and on their behalf this League has so often addressed your Government, praying for the redress of their grievences but I regret very much to say that our petitions representations and deputations have not moved even slightly the intransigent machinery of your administration The latest news that have reached us from Hyderabad are to the effect that Arya-Samajists have to meet almost everyday, at some place or other the nacked bravado on the part of Muslim mob Can you imagine that things like this can go on for a very long time? An astute administrator like yourself is hardly expected to allow things to drift in the manner they are drifting Please take staps to stop this drift, so that it may not become too late Persecutions and prosecutions of innocent persons lead only to one result and that is that they shake irretrievably all faith in administration and drive agitation into channels hardly to be desired

I would, therefore, humbly request you to lose no time and to divert your attention earnestly to the problems facing the Arya-Samajists in your State and to redress their grievances at an early date This League is still willing to co-operate with you in your efforts and to render any possible help that it can through its wide-spread moral influence and prestige

I do hope that this appeal will rouse in you the desire of doing full justice to the aggrieved Arya-Samajists whose long sufferings and trials have now become too patent for anybody to ignore

HAPPY RECOLLECTION OF GURUKULA KANGRI

(*Rev*—**C F Andrews**)

My mind atonce goes back to the golden days when I first went to the Gurukula at Kangri, Hardwar Mahatma Munshi Rams was there as Governor Dr Sukh Deva was the one who looked after the health of every one, myself included, and Master Ram Deva was then (if I mistake not) in charge of the College Department What a happy family we were What a happy time we had together I can never forget it Every year between 1907 and 1912 I used to come once or twice whenever I could get free from my duties at St Stephen's College, Delhi and when Principal Rudra would give me leave of absence

Once I came with Willie Pearson who afterwards went out with me to South Africa and also to Fiji, and who lived with me for many years at Shantiniketan I can well remember his intense enthusiasm and his immense admiration for Mahatma Munshi Ram To the great sorrow of all he met his death in a railway accident later in Italy, when he was on his way back to India It was a terrible blow to me that made all the difference in my life, for he was the dearest English friendI had and everyone loved him for his goodness But I must return to my experiences of the Gurukula itself

I can remember how once I was unfortunate enough to have fever at the very time when I visited the Gurukula, but I was also **fortunate** enough to have Mahatma Munshi Ramfor my nurse and to receive his tender treatment Also Dr Sukhdeva was with me until the fever broke It was almost a joy to have Malaria and receive such tender nursing

At another time, we had to cross the Ganges when it was in full flood after the melting of the snows We sat on a triangular raft (made of kerosine tins) which was guided with wonderfull skill down stream We seemed every moment to be about to be carried away by the rushing waters but we reached safely Then on our return journey, we had to go a long distance by road through the jungle in the Gurukula bullock cart up stream in order to get to a point where we could be steered across, down-stream to the other side Those were days full of fun and delight

At another time I was able to bring Sir James Meston to visit the Gurukula during a very critical time in its history He was shown everything with his wife and his A D C's in waiting, There was, if I am not mistaken, some peculiar form of tea made out of certain herbs which the

Governor's party sipped But I don't think they really liked it, although they had to try, for politeness sake, to drink it. What a laugh we had about this little incident after all was over

Then there was the great annual gathering Only once was I able to be present, but I shall never forget the huge crowds of men and women and children that came, and their wonderful contribution to the expenses of the Gurukula The enthusiasm was enormous, and some how or other all this huge multitude of people were daily supplied with food It was a standing wonder to me how it was all accomplished

What I have been relating was nearly thirty years ago Yet it is vivid before my eyes today, and I would like to send my wishes and blessings from these Hills in the South to the workers of the Gurukula in the North

Time will not permit me to add more than one line to what I have already written but I must speak of the **second** Gurukula, at Brindaban which became dear to me later in my life Fortunately I have been able to visit it once more during the past year Far away in the Fiji Islands I had made a promise to do so, because such good workers have gone out from it to Fiji and such splendid work has been done Though I was far from well at the time, I enjoyed exceedingly the day I was able to spend there, and I promised to do all that I could to obtain the return of Raja Mahendra Pratap who had both founded the Prem Mahavidayalava and given the land for the Gurukula at Brindaban In that desire of mine to obtain his release from exile I have not succeeded' but I still have hope that so noble a man may soon be allowed to return, and also that Lala Har Dayal, whom I have been interceding also, may be allowed to come back

There are some of my wondering thoughts as the year has gone by and again I would end with my wishes and blessings for the coming year

---

—हिन्दुस्तानी शिष्टाचार

[ले०—श्री प० रामनारायण जी मिश्र, काशी]

(गताङ्क से आगे)

(६९) मकान जो नये बनाये जायँ उन मे कम से कम एक फुट ऊँची कुर्सी होनी चाहिये और हवा और रोशनी आनेके लिए दरवाजे और खिडकियाँ होनी चाहिय ।

(७०) जहाँ कोई झाड़ू दे रहा हो वहाँ नहीं बैठना चाहिय । अगर हो सके तो कोठरी मे पानी छिड़ककर तब झाड़ू दी जाये ।

(७१) प्रति दिन सवेरे और हो सके तो शाम को भी साफ पानी से नहाना चाहिये। नहाते समय बदन को खूब रगडना चाहिये। टब मे नहाना पडे तो उसका पानी जल्दी जल्दी निकालते चलो। कभी-कभी सिर को बचाकर धूप मे भी बैठना चाहिये। आवश्यकता पडने पर धूप की तरफ पीठ करके या आग की तरफ मुँह करके बैठना अच्छा है।

(७२) चिराग, जहाँ तक हो सके, मुँह से मत बुझाओ और न आग मुँह से सुलगाओ।

(७३) लँगोट बाँधने की आदत अच्छी है।

(७४) बासी रोटी आदि, विशेषकर रात की रक्खी हुई मत खाओ। गर्मी के दिनो मे ऐसा करना बुरा है।

(७५) कोई आदमी भोजन कर रहा हो तो उससे खाना छुड़वाकर दूसरा काम मत करवाओ।

(७६) भोजन के बाद लघुशङ्का कर लेना अच्छा है।

(७७) खानाखानेसे पहले हाथ-मुँह धोना चाहिये और पीछे भी हाथ धोकर कुल्ला करना चाहिये। जरूरत हो तो खरके से भी दाँत साफ कर लेना चाहिये। खरके की जगह आलपीन आदि से काम नहीं लेना चाहिये। इसके लिए नीम की सींक बहुत अच्छी है। फर्श पर हाथ मुँह धोना हो तो नीचे चिलमची रखलो। गरम चीज खाकर या गरम दूध पीकर गरम पानी से कुल्ला करना चाहिये या थोड़ी देर ठहर कर ठढे पानी से कुल्ला करना चाहिये।

(७८) सडा हुआ और कच्चा फल मत खाओ। खाने से पहले फलो को धो लो। किशमिश को खूब धो लेना चाहिए।

(७९) मशक का पानी मत पियो।

(८०) हर एक तालाब या कुएँ का पानी मत पियो। पानी उबालकर और छानकर पीना अच्छा है।

(८१) बरफ का पानी या सोडावाटर लेमोनेड पीने की आदत मत डालो। बरफ पीनी ही पडे तो इस बात की जाँच कर लेनी चाहिये कि वह गन्दे और खराब पानी से तो नहीं जमाई गयी है।

(८२) महीने मे दो तीन बार बिना खाये

या कम खाकर रह जाना अच्छा है।

(८३) जो आदमी दूध दूहे उसका हाथ, बरतन, कपड़ा साफ होना चाहिए। दूहकर दूध छान लेना चाहिये।

दूध उबालने से पहले छान लो और ध्यान रक्खो कि उबालते समय उसमे राख और गर्दा न पड़े।

(८४) भोजन धीरे धीरे दहने हाथसे करना चाहिये। दूध या पानी भी ठहर ठहर कर पीना चाहिये। भोजन इस प्रकार मत करो या पानी, दूध इस प्रकार मत पीओ कि मुँह से आवाज निकले। धीरे धीरे खूब चबाकर खाना खाओ। छोटा-छोटा ग्रास मुँह मे डालना चाहिये। भोजन मुँह भर नहीं लेना चाहिये। खाने के साथ पानी बहुत कम पीना चाहिये, बिलकुल न पिये तो और अच्छा है।

(८५) भोजन या आग के ऊपर से जाना या उसको लाँघना ठीक नहीं।

(८६) राह चलते या हर जगह खाने लगना ठीक नहीं।

(८७) किसी को जबरदस्ती, मन के विरुद्ध नहीं खिलाना चाहिये। जितनी भूख हो उससे कम ही खाना चाहिये। (क्रमश)

— ० —

विचार-वाटिका

देवृकामा या देवकामा

'सार्वदेशिक' अगस्त १६३८ के अङ्क मे पृष्ठ २४० पर देवृकामा या देवकामा शीर्षक से एक टिप्पणी लिखी गयी है, और अन्त मे लिखा है 'इस विषयमे भी हमारी यही सम्मति है कि आर्य-विद्वानों को शान्त चित होकर इसपर विचार करना चाहिये।' इसी बात को ध्यान मे रखकर मै आर्य विद्वानों के विचार के लिए कुछ पुस्तकों के वह स्थल, जहा देवृकामा वा देवकामा शब्द प्रयुक्त हुआ है, लिखता हूँ, ताकि उनको निश्चय करने मे सहायता मिल। यदि कोई विद्वान् इनके अतिरिक्त और स्थल भी, जो उनको ज्ञात हों, लिखदें तो उनपर भी साथ ही विचार कर लेना चाहिये।

यह शब्द मुख्यतया ३ स्थलों पर वेद मे आया है। ऋग्वेद मडल १० सूक्त ८५ मन्त्र ४४ और अथर्ववेद खड १४ सूक्त २ मन्त्र १७।१८ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश और संस्कार-विधि मे ऋग्वेद और अथर्ववेद के नाम से ही लिखा है। यह दोनों स्थल वेद मे विवाद परक माने जाते है, इसलिए सूत्रकारो ने विवाद लिखते समय इसी स्थल से मन्त्र प्रयुक्त किये है इसलिये वहाँ भी विचार कर लेना अच्छा ही होगा।

मेरा अपना पक्ष क्या है, अभी मैं यह लिखना नहीं चाहता। अभी तो विद्वानों के सामने इस विषय के निश्चय करने मे सहायक सामग्री उपस्थित ही पर्याप्त मानता हूँ। ताकि उनको कुछ सहायता मिलजाय और वह सब स्थलों पर अच्छी तरह विचार करके निश्चय करे पीछे कोई यह न कहे अमुक स्थान को देखा या अमुक को न देखा था।

आशा है, ऋषि-भक्त सम्पादक महाशय को बात को ध्यान मे रखकर शान्त चित से विचार करेंगे और मेरी तुच्छ सेवासे लाभ उठायेंगे और मै भी इसपर पुनः विचार करके किसी समय अपना पक्ष फिर कभी लिखूँगा।

वह स्थल जहाँ पाठ आया है इस प्रकार है—

अघोरचक्षुरपतिघ्नी स्योना शग्मा सुशेवा सुयमा गृहेभ्य। वीरसूर्देवृकामा सन्त्वैधिषीमहि सुमनस्यमाना॥ अथर्व वेद १४ २ १७ ऋग्वेद

देवृकामा अथर्व वेद प्रयाग मे छपा, प० क्षेमकरण दास त्रिवेदि कृत भाष्य

देवृकामा „ मुबई मे छपा, सायणाचार्य भाष्य सहित

देवृकामा „ पद सूची स्वामी विश्वेश्वरा नन्द नित्यानन्द जी कृत

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्य सुमना सुवर्चा। वीरसूर्देवृकामा स्योना शनोभवद्विपदे शंचतुष्पदे॥ ऋग्वेद मूल (अजमेर १० ८५ ४४)

देवकामा ऋग्वेद पद पाठ (मोक्षमूलर)

देवकामा „ मूल, औध, पं श्री० दा० सातवलेकर जी

देवकामा ,, मुंबई (सायणाचार्य भाष्य)
देवकामा ,, पद सूची स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द जी कृत
देवकामा बोधायन गृह्य सूत्र १ १ २५
देवकामा मानव गृह्य सूत्र १ १० ६ (पं० भीमसेन जी)
देवकामा वाराह ,, ,, खण्ड १४
देवकामा जैमिनि ,, ,, १. २१
देवकामा पारस्कर , ,, १ ४ १६

अदेवृघ्न्यपतिघ्नी हैधि शिवा पशुभ्य सुयमा सुवर्चा । प्रजावती वीरसूर्देवृकामा स्योने ममाग्नि गार्हपत्य सपर्य ॥ अथर्व० १४ २ १८

देवृकामा प्रयाग या क्षेमकरण दास जी
देवृकामा अथर्व, मुबई सायणाचार्य
देवृकामा ,, पद सूची स्वामी विश्वेश्वरानन्द नित्यानन्द जी
देवृकामा सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ४ वियोग प्रकरण

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्य सुमना सुवर्चा । वीरसूर्देवृकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शंचतुष्पदे । सस्कार विधि (ऋग्वेद १० ८५

अथर्ववेद मे सब ने देवृकामा पाठ माना है ऋग्वेद में अजमेर वैदिक यन्त्रालय और संस्कार-विधि में देवृकामा और मुबई आदि स्थानों में छपे ऋग्वेद और गृह्य-सूत्रों मे देवकामा पाठ माना है।

अब आर्य-विद्वानों से नम्र निवेदन है वह शान्त चित होकर सब स्थल देकर जो उचित समझें निश्चय करलें।

२५-८-३८ —स्वतन्त्रानन्द

विज्ञापन

यह विज्ञापन ऋग्वेद भाष्य अङ्क १, जो टाइटिल की दूसरी ओर दिया गया था। निर्णयसागर प्रेस बम्बई में सम्वत् १९३५ में छपा था, इसके अव-लोकन से सस्कार-विधि के सम्बन्ध में चर्चा चलाने-वाले सज्जनो को मनन करने योग्य विचार मिलेंगे।

—सम्पादक]

"सब को विदित हो कि जो जो बातें वेदों की और उनके अनुकूल हैं उनको मैं मानता हूँ विरुद्ध बातों को नहीं। इसमें जो जो मेरे बनाये सत्यार्थ-प्रकाश वा सस्कार-विधि आदि ग्रन्थों में गृह्य सूत्र वा मनुस्मृति आदि पुस्तकों के वचन बहुत से लिखे हैं, वे उन उन ग्रन्थों के मतों को जनाने के लिए हैं। उनमें से वेदार्थ के अनुकूल का साक्षिवत प्रमाण और विरुद्धका अप्रमाण मानता हूँ। जो जो बातें वेदार्थ से निकलती हैं उन सब को प्रमाण करता हूँ, क्योंकि वेद ईश्वर वाक्य होने से सर्वदा मुझको मान्य हैं। और जो जो ब्रह्मा जी से लेकर जैमिनि मुनिपर्यन्त महात्माओं के बनाये वेदानुकूल ग्रन्थ हैं उनको भी मै साक्षी के समान मानता हूँ और जो सत्यार्थ-प्रकाश के पृष्ठ ४२ और पक्ति २५ में पित्रादिकों में से जो कोई जीता हो उसका तर्पण न करे और जितने मर गये हैं उनका तो अवश्य करे। तथा पंक्ति ४७ २१ में मरे हुए पित्रादिकों को तर्पण और श्राद्ध करता है इत्यादि तर्पण और श्राद्ध के विषय में जो छापा गया है सो लिखने और शोधने वालों को भूल से छापा गया है। इसके स्थान में ऐसा

समझना चाहिये कि जीवितों को श्रद्धासे करके नित्य तृप्त करते रहना यह पुत्रादि का परम धर्म है और जो जो मर गये हों उनका नहीं करना ? क्योंकि न तो कोई मनुष्य मरे हुए जीव के पास किसी पदार्थ को पहुँचा सकता और न मरा हुआ जीव पुत्रादि के दिये पदार्थों को ग्रहण कर सकता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि जीते पिता आदि की प्रीति से सेवा करने का नाम तर्पण और श्राद्ध है अन्य नहीं। इस विषय मे वेद मन्त्रादि का प्रमाण भूमिका के ११ अङ्क के पृष्ठ २५१ से लेके १२ अङ्क के २६७ पृष्ठ तक छपा है वहाँ देख लें।"

ऋग्वेद भाष्य अङ्क १ जो निर्णयसागर मुम्बई में १६३५ मे छपा था। मुख्य पत्र की दूसरी ओर छपा है। पुन अङ्क २ के उसी स्थान पर फिर वही पाठ छापा गया था।

इसमें महर्षि जी ने मृतक श्राद्ध का निषेध किया है और सत्यार्थप्रकाश में छपने को भूल से छपना माना है। श्राद्ध के अतिरिक्त सत्यार्थ-प्रकाश और संस्कार-विधि में गृह्य सूत्र और मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के प्रमाणों को वेदानुकूल होने पर प्रमाण अथवा अप्रमाण लिखा है और लिखने का कारण उन उन ग्रन्थों के मत को जानने के लिए ही लिखे हैं यह भी लिख दिया है। इस विज्ञापन को पढ़कर महर्षि के भाव समझने में सुविधा होजाती है। इसलिए मैंने इसे "सार्वदेशिक" में छपने के लिए भेजा है। क्योंकि इस समय कोई विरले ही विद्वान् हैं जो महर्षि के इस विज्ञापन को जानते हैं अधिक को इसका पता ही नहीं है।

—स्वतन्त्रानन्द

मद्रास-प्रचार

जुलाई मास के प्रचार-कार्यका संक्षिप्त विवरण

इस मास प्र० स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति प्रचारक सार्वदेशिक सभाने बंगलौर शहर, बंगलौर छावनी, मावल्ली ग्राम धर्मावरम्, कंगेरी चन्नपट्टण, शेषाद्रिपुर, नीलकण्ठन् हल्ली मंगलवार पेठ, मैसूर, शूले इत्यादि में प्रचार तथा हरिजनोद्धार कार्य किया। धर्मावरम् में यज्ञ में पशुहिंसा निवारणार्थ किये शास्त्रार्थ तथा वैदिक धर्म प्रचार और उसके जनता पर प्रभाव का वृत्तान्त पृथक् दिया जाता है। बंगलौर छावनी में इस मास स्नातक जी ने ३ सुशिक्षित हरिजनों के विवाह संस्कार ३, ४ और १४ जुलाई को सैकड़ों की उपस्थिति में व्याख्या सहित वैदिक रीति से कराये। इन वैदिक संस्कारों का जनता और विशेषत हरिजनों का अपनाना धार्मिक जागृति का विशेष चिह्न है जो बड़ा आशाजनक है। बंगलौर छावनी में भी आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमपूर्वक होते रहे। कंगेरी ग्राम तथा गुरुकुल में दलितोद्धार और प्रचार कार्य २१ ता० को किया गया। अनेक नये ब्रह्मचारी कंगेरी गुरुकुल में हाल में मैसूर के अनेक भागों से प्रविष्ट हुए हैं जिन्हें गुरुकुल के कार्यकर्ताओं के इच्छानुसार स्नातकजी ने ब्रह्मचारियों के कर्तव्यों पर उपदेश दिया और स्वरचित वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी कर्णाटक संस्करण) की प्रति सब विद्यार्थियों को बाँटी जिस से वे वैदिक धर्म के तत्त्वों को ठीक तौर पर समझ सकें। यहाँ भी गुरुकुल आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमपूर्वक होते रहते हैं। बंगलौर शहर (कैलाशपाळ्यम्) में आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सङ्गों के अतिरिक्त समाज भवन में दो हरिजन बालकों का नामकरण और एक युवक का यज्ञोपवीत संस्कार इस मास कराया गया। चन्नपट्टण आर्यसमाज के मन्त्री श्रीयुत आर्यमूर्ती जी को साथ लेकर जो संस्कारविधि का कर्णाटक भाषानुवाद स्नातक जी के निरीक्षण में कर रहे हैं स्नातक जी ने २५ और २६ जुलाई को नीलकण्ठनहल्ली और मंगलवार पेठ के हरिजनोपनिवेशों में जाकर विशेष रूप से प्रचार और दलितोद्धार कार्य किया। इन उपनिवेशों में विशेषत नीलकण्ठनहल्ली में एक ईसाई मिशनरी महिला हरिजनों को कभी कभी मिठाई वस्त्र शाकभाजी आदि देकर ईसाई बनाने का प्रयत्न कर रही हैं। अतः विशेष रूपसे उन्हें ईसाई मत में न जाने के लिए सचेत किया गया। शिक्षित सब लोगों और विद्यार्थियों को वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी' की प्रतियाँ मुफ्त बाटी गईं। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे कभी ईसाई मत में न जायेंगे। शिक्षित विद्यार्थियों और अन्यों के लाभार्थ उस ग्राम में ६ अगस्त को एक आर्यकुमार सभा की स्थापना की जायगी। उसी दिन आर्यसमाज का नया चुनाव आदि भी स्नातक जी की उपस्थिति में होगा।

मैसूर में २१ ता० की रात को स्नातक जी की उपस्थिति और श्रीयुत देवराज अर्स (भूतपूर्व प्राइवेट् सेक्रेटरी हिज हाइनेस युवराज मैसूर) प्रधान आर्यसमाज मैसूर की अध्यक्षता में आर्यसमाज की अन्तरङ्ग सभा का अधिवेशन हुआ जिस में मैसूर

आर्यसमाज के सार्वदेशिक सभा के साथ सम्बन्ध जोड़ने (Affiliation) विषयक कार्रवाही को अति शीघ्र करने के अतिरिक्त यह निश्चय किया गया कि यथासम्भव दशहरे के अवसर पर एक आर्यन् कान्फ्रेन्स कर्णाटक आर्य-प्रतिनिधि की स्थापनार्थ मैसूर नगर में की जाय। इसकी आयोजना बड़े उत्साह के साथ की जारही है। आशा है ईश्वर की कृपा से इसमें सफलता होगी। २० ता० को स्नातक जी की अध्यक्षता में नरेन्द्र डिबेटिङ्ग सोसाइटी (जिस का अधिवेशन प्रति बुधवारको सदस्योंको भाषणाभ्यास कराने के उद्देश्य से होता है) का अधिवेशन हुआ जिसमें उन्हों ने भाषणकला विषयक उचित निर्देश देने के अतिरिक्त प्रसङ्गवश मूर्ति पूजादि विवादास्पद विषयों पर प्रकाश डाला। २८ जुलाई की शाम को बंगलौर के कर्णाटक साहित्य परिषन्मन्दिर में स्नातक जी ने Universal Buddha Society या विश्व बौद्ध सङ्घ की अधीनता में और प्रो० श्री कण्ठैय्याजी M. A. B.L (सेन्ट्रल कालेजके अंग्रेजी के प्रोफेसर) के सभापतित्व में ११ घण्टे तक 'वैदिक धर्म और बौद्ध मत'' पर व्याख्यान दिया, जिस में महात्मा बुद्ध का चतुरार्यसत्य, आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग आदि नैतिक शिक्षाओं का आधार वेद-उपनिषद्, योग, दर्शनादि पर बताते हुए सिद्ध किया गया कि बुद्ध भगवान् नास्तिक न थे तथा वर्णव्यवस्था वैदिक यज्ञादि पर भी पूर्ण प्रकाश डालते हुए बताया गया था कि उन्होंने जन्मसिद्ध जाति-भेद और यज्ञों में पशुहिंसादि जिन बातों का प्रबल विरोध किया वे वेदादि सत्यशास्त्र विरुद्ध बातें न थीं। बुद्ध भगवान् के ईश्वरवादी होने के अनेक प्रमाण बौद्ध ग्रन्थों से दिये गये। (इस भाषण का सारांश समय मिलने पर 'सार्वदेशिकार्थ' देने का विचार है)। प्रो० श्री कण्ठैय्या जी ने जिनकी गणना इधर के सुप्रसिद्ध विद्वच्छिरोमणियों में से है, अपने प्रारम्भिक भाषण में स्नातक जी की योग्यता की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए कहा कि उनका परिचय देने की किसी कर्णाटक प्रान्तवासी को सुप्रसिद्ध होने के कारण आवश्यकता ही नहीं। उनके गत वर्ष कनेरी में International Fellowship के अधिवेशन में The Vedic Approach to God पर दिये गये अत्यन्त प्रभावशाली और स्फूर्तिदायक भाषण के शब्द अभीतक हम लोगों के कानों में गूंज रहे हैं। हाल में ही १६ अक्टूबर से बंगलौर शहर से Mysore Times नामक अंग्रेजी दैनिक पत्र निकलना शुरू हुआ है जिसकी सम्पादिका श्रीमती राजबाई जी (धर्मपत्नी डा० कर्मचन्द्र जी M A P h D.) हैं जो बंगलौर आर्यसमाज की सदस्या हैं। इस पत्र में जो अत्यधिक लोकप्रिय बनरहा है और जिसकी अभी से २ हज़ार से ज्यादा प्रतियाँ छपती हैं स्नातक जी के सामाजिक धार्मिक विषयों पर लेख सप्ताह में २-३ बार प्रकाशित हो रहे हैं, जिनसे प्रचार कार्य में बड़ी सहायता मिल रही है। सम्पादिका जी ने स्नातक जी को लिखितरूप से वचन दिया है कि आप जो कुछ भी प्रकाशनार्थ भेजेंगे उसे एक दम प्रकाशित किया जायगा। वे अपने इस वचन का पालन कर के समाज के प्रचार-कार्य में सहायता दे रही हैं जिसके कारण वे धन्यवाद की पात्र हैं। स्नातक जी की लिखी जातिभेद विचार नामक (कर्णाटक) पुस्तक का अनुवाद द्वितीय संस्करण हाल ही में बंगलौर की वैदिकधर्म ग्रन्थ माला ने प्रकाशित किया है वहाँ से "ईश्वर विचार'' नामक कर्णाटक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है।

इस मास आर्य-विद्याशाला शेषाद्रिपुर में श्रीयुत रामचन्द्रराव Inspector of Schools की अध्यक्षतामें २३ ता० को और National Highschool में २० और २१ ता० को स्नातकजी के व्याख्यान हुए १६ ता० को हिन्दुस्तानी महासभा के वार्षिकाधिवेशन में सदस्य रूपसे सम्मिलित होकर स्नातक जी ने अपने भाषण में सदस्यों को विशेष प्रेरणा की।

हैदराबाद (निज़ाम राज्य) में

वैदिकधर्म की वेदी पर एक

और आर्य बलि

समाचार मिला है कि मौजे अकोलगा सय्यदान् ताल्लु के बोरी जागीर मे महादेव नाम का एक व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश आदि आर्य-समाज की पुस्तकों को आर्यसमाज साकोल से लाकर पढा करता था और उनका प्रचार अन्य लोगों मे करता था। स्थानीय मुसलमानों ने उससे सत्यार्थप्रकाश छीन कर सब इन्सपेक्टर पुलिस को दे दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के मन्त्री जी को पता लगा तो उन्होंने एक प्रार्थनापत्र सब इन्सपेक्टर पुलिस को भेजा। चुनाचे किताब वापिस दे दी गई। मुसलमानो ने महादेव से कहा कि हमारे ग्राम मे आर्य-समाज की हवा भी किसी को मत लगाना। कथित ग्राम का पटेल भी मुसलमान है, परन्तु महादेव तो सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानन्द जी का चरित्र तथा स्वामी जी के अन्य ग्रन्थ पढा ही करता और उनकी बाते अपने भाइयों को भी सुनाता। मुसलमानों ने कई बार उसे मारने का प्रयत्न किया, परन्तु बहुत बार असफल रहे। आखिरकार १७ जुलाई रविवार प्रात काल सात बजे मिहर अली नाम के एक मुसलमान ने उसके पेट मे छुरा भोंक कर अतिनिर्दयता से मार डाला। कातिल अभी तक नहीं पकड़ा गया है। अभी पता नहीं स्टेट मे कितने बलिदान आर्यों को देने पड़ें।

गुलबर्गे के मुकद्दमे का परिणाम

आर्यों के साथ न्याय !

होली के दंगे के सिलसिले में पकड़े गए निर्दोषी आर्यों के बयान संसार ने पढ़ लिए होगे। बयानात से ही पता चलता है कि आर्य अभियुक्तों का अपराध कितना है परन्तु ऐसी परिस्थिति होते हुए भी कोर्ट ने लालाजी मन्त्री आर्यसमाज को दस वर्ष की कैद का कड़ा दण्ड दिया है और श्री हनुमन्तराव बहोरीलाल, तिपण्णा, नागप्पा, दत्तुसिंह को दो वर्षकी सजा हुई है। इस परिणाम के सम्बन्ध मे हम अधिक न लिखते हुए इतना ही कहना चाहते है कि अब आर्यों को न्याय नही मिल सकता। अबतो लालाजी के साथ ही जेल में जाने के लिए प्रत्येक आर्य को तय्यार हो जाना चाहिए।

(वैदिक सदेश)

निजाम राज्य में पत्रों की बंदी।

हैदराबाद दक्षिणः—ता० २२। ८। ३८

स्थानीय समाचार पत्रों मे निजाम सर-कार के पब्लिक इनफर्मेशन ब्यूरोने जनता की सूचनार्थ निम्नाकित पत्रों को निजाम राज्य मे जब्त करार देने की घोषणा करदी है। १ हिन्दू देहली (हिन्दी) २ हिन्दू आउटलुक देहली अंग्रेजी ३ हिन्दू लाहौर (उर्दू) ४ वैदिक सन्देश सोलापुर (हिन्दी) ५ मराठा बम्बई

(उर्दू) ६ मसावात बम्बई (उर्दू) ७ मराठवाड़ा पूना (मराठी) ८ अमरज्योति नागपूर (मराठी) ९ त्रिकाल पुना (मराठी) १० आर्य गजट लाहौर (उर्दू) ११ प्रकाश लाहौर (उर्दू) १२ आर्यवीर लाहौर (उर्दू) १३ मिलाप लाहौर १४ महाराष्ट्र नागपुर १५ उर्दू बम्बई ।

आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान के स्वर्ण जयन्ती उत्सव की विज्ञप्ति

श्रीमती आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्वर्णजयन्ती ता० ५ नवम्बर से ९ नवम्बर सन् १९३८ तक महर्षि श्री स्वामी दयानन्दजी की निर्वाणस्थली अजमेर नगर मे बड़े समारोह से मनायी जायगी। इस सुअवसर पर कई रचनात्मक कार्य होंगे। सरस्वती-भवन के दो मंजिल महर्षि की निर्वाणस्थली में बन गये हैं। आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान का इतिहास पूर्ण तत्परता से लिखा जा रहा है। गुजरात की आर्यसमाजों ने, जिनका सम्बन्ध सन् १९०७ तक श्रीमती आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा से रहा है, स्वर्णजयन्ती मे सम्मिलित होने का उत्साह दरसाया है। श्री पूज्यपाद नारायण स्वामी जी महाराज की उपयोगी पुस्तक 'कर्मरहस्य" हिन्दीमें तथा श्रीमान् डाक्टर सत्यप्रकाशजी की पुस्तक ' A Critical Study of Dayananda's Philosophy" अंग्रेजी मे छपनी आरम्भ हो गई हैं। सभा के पचास हज़ार रुपये के स्थायी कोष की योजना होरही है। श्रीमान् प० रामसहाय जी ने सभा के इतिहास के शास्त्रार्थ विषयक अध्याय का सम्पादन भी अपने ज़िम्मे ले लिया है। इसके लिये सभा उनकी आभारी है। श्रीमती परोपकारिणी सभा ने स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर आर्य-विद्वानों को वैदिक देवतावाद के विषय में सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए अवसर दिया है और श्रीमान् प० सातवलेकरजी को निमन्त्रित किया है कि वह महर्षि दयानन्द सरस्वती के देवतावाद विषय में अपनी शकाएँ निवारण करले, स्वर्णजयन्ती के अवसर पर आर्य-विद्वानों का काफ़ी जमाव रहेगा और आर्य-समाज के सिद्धान्तों के विषय में शका करनेवालों को विचार-विनिमय करने का पूरा अवसर मिलेगा। मैं आर्य भाइयों और बहिनो से सादर सप्रेम आग्रह करता हूँ कि वे स्वर्णजयन्ती के स्वर्णमय अवसर पर अजमेर अपने इष्टमित्रों व परिवार सहित पधार कर धर्म-लाभ उठावें और स्वर्णजयन्ती को सफल बनावें।

—चाँदकरण शारदा

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा सितम्बर ३८ मे समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना-अपना चन्दा १५ अक्टूबर तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवा में पत्र वी पी द्वारा भेज दिया जायगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे।

७९, ८२, ८३, ८७, ८८, २८२, ४६७, ४७३, ४७४, ४७६, ४९०, ६२८, ८२३, ८२४, ८२५, ८६८, ८९९, ९००,

साहित्य-समीक्षा

विश्व की पहेली

लेखक—श्री० बाबू पूर्णचन्द्र जी वकील, आगरा

प्रकाशक—आर्यसाहित्य मण्डल, अजमेर

मूल्य ।।।)

इस पुस्तकमें ईश्वर, जीव और प्रकृति का वैदिक-स्वरूप प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है, तथा उन सत्ताओं के सम्बन्ध में नए और पुराने विविध वादों पर विचार करते हुए वैदिक स्वरूप का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

आर्यसमाज के विद्वानों ने पृथक-पृथक सत्ताओं पर उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रस्तुत किये हैं, परन्तु ऐसे ग्रन्थ का जिसमें तीनो सत्ताओं पर एक जगह विचार किया गया हो, अभाव था और वस्तुत वह खटकनेवाला अभाव था। विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक के द्वारा उस कमी की पूर्ति करके एक श्लाघनीय सेवा की है। वैदिक त्रैतवाद (ईश्वर जीव प्रकृति) की महत्ता तथा पुस्तक का परिचय लेखक के अपने शब्दों में इस प्रकार है—

"इस पुस्तक के पढने से पाठको को विदित होगा कि वैदिक त्रैत वाद के प्रचलित न होने के कारण फिलासफरों को कैसी अड़चन पड़ी और कैसे मन गढ़न्त वादों को स्थापना करनी पड़ी। वैदिक त्रैतवाद का प्रचार महाभारत के समय तक बराबर रहा जब वाममार्ग प्रचलित हुआ तो उसके वैज्ञानिकरूप चार्वाक ने केवल प्रकृति की सत्ता मान कर अपना काम चलाना चाहा, क्योंकि जीव और ईश्वर की पृथक् सत्ता मानने से उनके भोग विलास में बाधा पड़ती थी। वाम मार्ग का प्रतिकार जैन और बौद्ध मतो के सचालक और अनुयायियों ने किया और त्याग-वाद के सहारे उनको प्रकृति की सत्ता का अत्यन्त निषेध करना पड़ा। जब इन मतों से भी नास्तिकता फैलने लगी तो श्री शकराचार्य्य जी को जीवात्मा की सत्ता के महत्व को जनता के सम्मुख बलपूर्वक प्रकट करना पड़ा और जीव की सत्ता को यहाँ तक बढ़ाया कि ईश्वर और जीव की सत्ता में अभेद-सा हो गया और उससे नवीन वेदान्त के विचार प्रचलित हुए। पूर्वीय फिलासफी जब इस दशा में थी उस समय यूनान और मिश्र के द्वारा इसकी झलक योरोप तक पहुँची और वहाँ भी भ्रममूलक विचार फैल गये। यदि हम वैदिक त्रैतवाद के स्वच्छ स्वरूप को ससार के सम्मुख प्रचलित व सिद्ध करना चाहते हैं तो हमें इस ५००० वर्ष की पुरानी खाई को पार कर के प्राचीन युग की ओर अपनी दृष्टि फेरनी होगी और केवल वेदों का सहारा लेकर विश्व की पहेली को सुलझाना होगा और महर्षि का यही संदेश था। महर्षि के इस सदेश को पहचाने के लिए ही यह छोटी-सी पुस्तक लिखी गयी है।"

— ● —

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्‌भुत पुस्तक। मूल्य १)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्-घाटित करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियो के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर, खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश =), =)॥ =)॥, =) =)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीक़त ।॥=) सत्य-निर्णय १।)
(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।-)

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर में न केवल विश्वास ही नहीं रखते बल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।-)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। यशोचित संस्करण ॥≈)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यों की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई हैं। मूल्य ≈)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।≈)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।≈)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्विनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य ≈)

(8) Ecclesia Divina

Well - Bound—By Bhunanand Saraswati M A, 5/-

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A,

Chief Judge

Well-bound	1 4
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति १)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

—※—

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के

रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम १।) प्रति सैकड़ा
)॥ प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, देहली

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

(लेखक—श्री ला० बोमाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N W. R, आनरेरी मन्त्री,
पंजाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर)

—.o —

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पंजाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पंजाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है। जहाँ सारे देश से बालक-बालिकाए आकर दाखिल होते हैं इसमें न सिर्फ उनका पालन पोषण किया जाता है, परन्तु उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के अधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिस में विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

इस अनाथालय मे न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे है, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया करता है और जो अनाथ बच्चे उनको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज कि इस अनाथालय मे हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आज कल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माता का स्वर्गवास होजाता है और उनके पालने का प्रबन्ध करके संरक्षकों से नहीं हो सकता, वह उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते हैं। ऐसे बच्चों की देख-भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है' आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लडके और ६० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिये आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप दानी वीरों से इकट्ठा होकर आता है और इनसे इनका खर्च चलाया जाता है। अब शीत ऋतु आरहा है, इन सब के लिए गर्म वस्त्रों की आवश्यकता होगी। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चों के लिए कपड़े सिलवायेंगे वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखेंगे और इनके खाने पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी, सब्जी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जायेगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

विषय-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१।)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	≡)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।॥) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज को भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श**— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लग भग ४०० मूल्य १॥)

(१२) **भजन-भास्कर**— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमे देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञो कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं इसमे देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयो पर भजन मौजूद हैं संग्रहकर्त्ता श्री प० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज मे तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारा मे श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव क अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढती हुई माग को पूरा करन के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि मे छपाया गया है। मूल्य ॥)

(१३) **सत्यार्थ प्रकाश**— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २०×३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)॥ प्रति १०० प्रति या इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	घ० मू०		अ० मू०	घ० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	-)।	-)	(१६) विरजानन्द विजय	।)	=)
	२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू	।)	=)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)			

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8 0

The Author has described in details the process of Agnihotra and has shown that during the process of this fumigation such products are given out which are bactericidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

'The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject the scientific lore that he has acquired at the University and environments'

—*Ganganath Jha*

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner, I believe, it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public."

—*N R. Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As. 6, Reduced price As 5

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." —price As. 8. Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture —

The Subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As 10, Reduced price As. 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/-

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has, besides, brought forth the superiority, the Vedic Teachings contain —price Rs, 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching,—price As. 8. Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya.—price As 4, bound and As. 3/- unbound.

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M. A L. L. B —price As. 4.

पुस्तक मिलने का पता:—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली ।

श्री स्वामी भवानीदयालु जी सन्यासी द्वारा संस्थापित



वेद मन्दिर

नीनरा माकवम (स्वगोज रम्प आगरा)

I per I Fi Art Pr Dell

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

आश्विन १९९५

वर्ष १२ | अक्टूबर १९३८ ई०] [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क ८

* वेद की शिक्षाएँ *

इमे त इन्द्र ते वयम् । ऋग० १-५७-४

हे प्रभो ! हम तो तेरे हैं।

We are Thine—Thine own, O Lord!

सहस्रं साकमर्चत । ऋग० १-८०-९

प्रभु के राज्य को पाने के लिए सहस्रों की संख्या में उसकी पूजा करो ।

May we all congregate in Work and Worship to attain the Kingdom of God!

सम्पादकीय

निज़ाम-सरकार का काला क़ानून

पाठक अन्यत्र निज़ाम सरकार द्वारा प्रचरित काले क़ानून का परिचय प्राप्त करेंगे। प्रजा में पारस्परिक मन-मुटाव को रोककर राज्य में शान्ति स्थापित करना इस कानून का उद्देश्य बतलाया जाता है।

इस कानून की एक धारा में 'बाहर के अवाञ्छनीय लोगों को दण्ड देने का विधान है' जिन्हें बिना वारण्ट भी पकड़ा जा सकता है, निर्वासित किया जा सकता है तथा राज्य में उनके पुन प्रवेश करने पर उन्हें १ वर्ष का जेल भी हो सकती है। उनको आश्रय देने वा उन्हें काम में लेनेवालों तथा उनकी सेवा-शुश्रूषा करनेवालों को भी इसी प्रकार दण्डित करके राज्य से बाहर निकाला अथवा जेल में डाला जा सकता है। यह कानून बाहरवालों पर ही नहीं वरन राज्य की प्रजा पर भी लागू होगा। सभा-संस्थाएं अवैध क़रार दी जा सकती हैं। उन की जायदादें ज़ब्त हो सकती हैं। सदस्य लोग जेल में ठूँसे जा सकते हैं। सेना की भरती को रोकना, सरकारी नौकरों का बायकाट करना, निषिद्ध जलूस निकालना, सेना में झूठी खबरें फैलाना आदि भी क़ानून में जुर्म है। यदि अपराधी नाबालिग हों तो उनके माँ बाप और संरक्षक भी दण्डित हो सकते हैं।

रियासतों की प्रजा में राजनैतिक जागृति की जो लहर इन दिनों दौड़ रही है उसके प्रभाव से राज्य को बचाने के पूर्ण प्रयत्न के रूप में ही 'सार्वजनिक सुरक्षा' का यह कानून बनाया गया प्रतीत होता है। ब्रिटिश भारत में तथा अन्यत्र कई स्थानों पर सार्वजनिक जागृति को रोकने के लिए सरकारों ने इसी प्रकार के कठोर और दमनकारी उपाय किये थे, परन्तु उनके उपयोग से जागृति दबने के बजाय कई गुना बढ़ गई थी। जिन सरकारों का अब भी इस प्रकार के उपायों की सफलता में आस्था है, हमें उनके अज्ञान और अदूरदर्शिता पर तरस आता है।

जहाँ तक हमें विदित है हैदराबाद राज्य में आर्यसमाज ही एक मात्र संस्था है जिसकी प्रगतियाँ जनता में धार्मिक और सामाजिक जागृति फैला रही हैं। राज्य का आर्यसमाज के प्रति जो अवाञ्छनीय रुख रहा है तथा अब भी है वह किसी से छुपा नहीं है। यह क़ानून आर्य-समाज की प्रगति को कुचलने के लिए बनाया गया है अथवा आर्यसमाज को कुचलने में ही इसका उपयोग होगा जैसा कि अन्य क़ानून का होता रहा है। यदि आर्यसमाजी ऐसा सन्देह करें तो इसमें कोई आश्चर्य न होगा। श्री प० श्यामदेव जी शास्त्री तथा श्री शिवचन्द्र जी सहायक मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति को राज्य से

प्रवेश की तथा आर्य रक्षा समिति को गैरकानूनी उद्घोषित कर देने की ताजा बन्दिश से इस सन्देह की और भी पुष्टि हो जाना स्वाभाविक है।

हमें आशा है निजाम का सरकार इस प्रकार के उपायों का निस्सारता का अनुभव करेगी और ऐसे उपाय करेगी, जिससे प्रजा में वास्तविक सन्तोष स्थापित हो। कहने की ज रत नहीं, इस प्रकार के उपायों से पैदा हुई शान्ति राख से ढकी हुई आग होती है।

आर्यसमाज और नवयुवक

श्री० प०भीमसेन जी मन्त्री, आर्य्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब ने २ अक्टोबर के 'आर्य्य-मुसाफिर' में अपने एक लेख में इस प्रश्न का उत्तर देने का यत्न किया है कि आर्य्यसमाज की ओर आजकल नवयुवक क्यों नहीं आकर्षित होते हैं। वे लिखते हैं—

'आर्य्य-समाज की ओर नवयुवकों के आकर्षित न होने का मुख्य कारण यह है कि आर्य्य-समाज की संस्थाओं और व्यक्तियों के सार्वजनिक जीवन से आदर्श वाद के स्थान पर व्यावहारिक वाद ने मुख्यता प्राप्त कर ली है। हम प्रत्येक संस्था और व्यक्ति की योग्यता इस बात से देखते हैं कि उसके कारण आर्य्य-समाज को व्यावहारिक लोक-प्रियता तथा उपयोगिता की दृष्टि से क्या लाभ होगा। शुद्ध आदर्श-वाद जनता की आँखों से ओझल हो रहा है।"

नवयुवकों के आर्य्य-समाज की ओर आकर्षित न होने के कई कारण प्रकाश में आये हैं। एक कारण यह भी हो सकता है, जो प० भीमसेन जी ने प्रकट किया है। परन्तु जहाँ तक हमने इस प्रश्न पर विचार किया है, और जिसका हम प्रायः इन स्तम्भों में जिक्र करते रहे हैं वह यह है कि हमारे यहाँ ऐसे लोगों की कमी है ठीक-ठीक अध्ययन करना और उन्हें अपनाना जानते हों।

* * *

कांग्रेस और गोवध

'नेशनल वेल्थ' नामक पत्र के सम्पादक के अनुसार गौओं के वध का कानूनन बन्द हो जाना नितान्त आवश्यक है। इसका कारण धार्मिक मतभेद वा स्वार्थ नहीं, वरन् राष्ट्रीय-सम्पदा और स्वास्थ्य ही है। सम्पादक महोदय लिखते हैं—

"इस अवांछनीय संघर्ष को, जो पिछले दिनों कांग्रेस के हिन्दू मुस्लिम समझौते के प्रयत्न में मुस्लिम लीग की अवज्ञा नीति तथा मुसलमानों की नई-नई विचित्र माँगों के कारण जो, पैदा हुआ था, रोकने के लिए कांग्रेस कार्य-समिति ने वर्धा हाइट हाल की आवश्यक स्वीकृति से मुसलमानों को बहुत-सी ऐसी सुविधाएँ देना पसन्द किया था, हिन्दुओं का भी प्रतिनिधित्व करने की हैसियत में जिनके देने की वह अधिकारिणी नहीं थी। इस प्रकार की एक भयंकर छूट गो हत्या का अधिकार था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपने ६ अप्रैल १९३८ के पत्र में श्रीयुत जिन्नाह को लिखते हैं—

'गो-वध के सम्बन्ध में कॉंग्रेस के विरुद्ध बड़ा ग़लत और निराधार आन्दोलन होता रहा है। मुसलमानों के क़ौमी अधिकारों पर रोक-थाम करने के लिए कॉंग्रेस कोई क़ानून नहीं बनाना चाहती है।'

"हमें यह जानकर आश्चर्य है कि गो-वध एक अधिकार में परिवर्तित हो रहा है और वह भी 'क़ौमी अधिकार में'। मानों विधान के अनुसार गो हत्या एक मुख्य अधिकार है। हमें मुस्लिम लीग के लीडरों की मनोवृत्ति पर दुःख होता है, सार्वजनिक नीति तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य के विरुद्ध जानेवाली चीज़ को वे एक अधिकार के रूप में माँगते हैं।

'यदि कांग्रेस गो वध के ख़िलाफ़ कोई क़ानून बनाने का कार्य स्वयं नहीं कर सकती है, तो उसे कम से कम इस आशय के उपाय का समर्थन तो करना चाहिये, तब ही कांग्रेस राष्ट्र के हित में ठीक ठीक कार्यवाही करेगी।"

* * *

जर्मनी और ईसाइयत

जर्मनी के सरकारी शिक्षणालयों में इन दिनों जो पाठ्य पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं' उनमें ईसाइयत के विरुद्ध बड़ा जबरदस्त प्रचार किया जाता है। जर्मन देश के निवासी अपने देश से ईसाइयत के पूर्ण बहिष्कार पर तुले हुए हैं, समय २ पर यह समाचार हमें मिलते रहे हैं, पाठ्य पुस्तकों के जो अवतरण हमारे सामने हैं उनसे उन समाचारों की सत्यता में कोई सन्देह नहीं रह जाता है। उनमें से ३-४ अवतरण इस प्रकार हैं—

(१) ईसाइयत गुलामों और मूर्खों के लिए है।
Christianity for slaves and fools

(२) ईसाई सभ्यता कोई चीज नहीं है। ईसाइयत ने व्यभिचार और चोरी जैसी चीजों की शिक्षा देकर, जिन्हें वे लोग पहले नहीं जानते थे, जर्मन लोगों को बिगाड़ दिया है।

There is no Christian Culture, Christianity has corrupted Germans by teaching them things like adultery and theft which they never knew before

(३) यहूदियों ने सच्चे धर्म का स्थान ईसाइयत को दे दिया था।

Christianity is a Jewish substitute for true religion

* * *

महात्मा जी का प्रस्तावित स्वयंसेवक-दल

महात्मा गाँधी ने 'हरिजन' मे एक लेख लिखा है, उसमें उन्होंने शान्ति-रक्षार्थ एक स्वयंसेवक-दल के निर्माण की आवश्यकता प्रकट की है। दंगों—मुख्यतया साम्प्रदायिक दंगों के समय शान्ति-रक्षा के लिए प्राण तक को खतरे में डालने की दल के सदस्यों से आशा की गई है। महात्मा जी का विचार यह है कि इस दल को पुलिस और यहाँ तक कि फ़ौजका स्थान ले लेना चाहिये। वे लिखते हैं—यह योजना भले ही असंभव सिद्ध हो जाय तो भी यदि कांग्रेस को अपने अहिंसा आन्दोलन में सफल होना है तो उसे इस प्रकार की स्थितियों का शान्तिपूर्वक मुकाबला करने के लिए शक्ति का विकास करना चाहिये।

आर्य-पत्र तथा आर्यसमाज का नियम

म० लेखरामजी नामक किन्हीं आर्य सज्जन ने सहयोगी 'विजय' में प्रकाशित 'आर्य-पत्र का विचित्र साहित्य' शीर्षक अपने लेख के केटिंग्स हमारे पास भेजे हैं। उनका लेख उक्त पत्र के दो अङ्कों में समाप्त हुआ है। उसमे उन्होंने आर्यसमाज के तीसरे नियम को अशुद्ध छापने पर 'आर्य-पत्र' की आलोचना की है। १८ वें 'आर्य' में पृष्ठ १४७ पर आर्यसमाज का तीसरा नियम इस प्रकार छपा है।

"वेद को पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (हिन्दुओं) का परम धर्म है।

—ऋषि दयानन्द

वास्तविक नियम इस प्रकार है—

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का सब आर्यों का परम धर्म है। यह नियम 'आर्य' मे किसी प्रसङ्गवश नहीं छपा है वरन स्थान पूर्ति के लिए छापा गया प्रतीत होता है। फिर भी जिस रूप मे नियम छपा है वह वास्तव मे बड़ा भ्रमोत्पादक और आपत्तिजनक है। 'आर्य' सम्पादक को इस प्रकार के प्रकाशनों मे बहुत सावधान होना चाहिये और इस अशुद्धि का प्रतिवाद कर देना चाहिये। नियम मे जो अशुद्धि है उसके विस्तार में न जाकर हम केवल यही कहेंगे कि वह ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की स्पिरिट तथा भाव के सर्वथा विरुद्ध है।

हमारा विचार है कि म० लेखराज जी का कार्य 'आर्य' सम्पादक का ध्यान इस भूल की ओर आकर्षित करने मात्र से ही चल जाता और शायद उन्हें इतना लम्बा लेख लिखने की आवश्यकता न पड़ती।

* * *

सहशिक्षा का दुष्परिणाम

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की दो विदुषी महिलाओं के हृदय में यह भावना उत्पन्न हुई कि सह-शिक्षण की सफलता तथा असफलता पर विचार किया जाय। इनका नाम डोरोथी ब्रोमले तथा फ्लोरेन्स ब्रीटन है। इन्होने जब जॉच आरम्भ की, तब शिक्षणालयों के अधिकारियों ने इसका प्रबल विरोध किया और इनके सामने बहुत सी आपत्तियाँ उपस्थित कीं। पर इन वीर स्त्रियों ने उसका साहसपूर्वक सामना किया और वे लगभग ४६ विद्यालयों के १३३४ बालक तथा बालिकाओं के बयानों को संगृहीत कर सकीं। इसके बाद इन महिलाओं ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसका नाम Youth and Sex है।

इस ग्रन्थ में विदुषी महिलाएँ लिखती हैं कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विद्यालयों के आधे बालक और एक तिहाई बालिकाएँ विवाह से पूर्व ही मैथुन में प्रवृत्त हो जाती हैं और इन में से दो तिहाई बालक तथा एक तिहाई बालिकाएँ अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के पूर्व ही चरित्र भ्रष्ट हो जाती हैं। इन महिलाओं का कहना है कि बहुत-सी बालिकाओं ने लज्जा से उत्तर ही नहीं दिया, पर हमने उनकी गणना सच्चरित्रों में की है। यदि सब बालक तथा बालिकाएँ स्पष्टता से उत्तर देती, तो यह संख्या निश्चय ही बहुत अधिक होती। इन विदुषी महिलाओं ने और

हिन्दू-धर्म का पतन

अभी हाल मे अंग्रेज़ी-पत्रों में श्री॰ डॉ॰ भगवानदासजी की 'हिन्दू-धर्म का पतन' (The Dealine of Hinduciom) **शीर्षक एक लेख-माला प्रकाशित हुई है। पिछले बारह सौ वर्षो में हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की आबादी १०० प्रतिशतक से घटकर ६५ प्रतिशतक रह गई है, तथा अहिन्दुओं की आबादी शून्य से ३५ प्रतिशतक हो गई है। माननीय डॉक्टर जी ने अपनी लेख-माला के हिन्दू धर्म के पतन के कारण तथा पतन को रोकने के उपाय बतलाये हैं। लेखमाला का सार इस प्रकार है। —सम्पादक]**

"पिछले ७० वर्षों से मैं हिन्दू-धर्म का अनुयायी हूँ। बहुधा मेरी इच्छा हुआ करती है कि अधिक सहानुभूति-पूर्ण और दृढ़ सामाजिक-जीवन का फ़ायदा उठाने के लिए मैं अन्य धर्मों में चला जाऊँ। दुर्भाग्य से दूसरे बड़े बड़े धर्मों में आध्यात्मिकता बहुत कम रह गई है और हिन्दू-धर्म की अपेक्षा उनमें अधिक पशुता और खूँरेजी व्याप्त हो गई है। उनमें भी हिन्दू-धर्म जैसे अन्ध-विश्वास और पाखण्ड पाये जाते हैं। परन्तु उनमें, पूर्ण न सही, अधिक पारस्परिक भाईचारा, प्रेम, मुहब्बत और सगठन पाया जाता है।

मैं बड़ी अनिच्छा के साथ कठोर भाषा का प्रयोग कर रहा हूँ। निराशा के भावों के एकदम उबाल के कारण मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि इस प्रकार को निराशा प्राय मनुष्यों को हुआ करती है। मैं यह भी जानता हूँ कि कोमल-भाषा पर प्राय लोग ध्यान नहीं देते हैं। लोग प्राय हिन्दू-बहुमत और 'मुस्लिम अल्प-मत' की चर्चा किया करते हैं। हिन्दू लोग इस विश्वास में कि वे बहुसख्यक हैं, इस चर्चा से बड़े आनन्दित होते हैं। हिन्दू-लोग (हिन्दू-बहुत) की जब-तब चर्चा इसलिए किया करते हैं कि उन्हें हिन्दुओं के मुकाबले में विशेष सरक्षणों की प्राप्ति का आधार मिल जाता है। कुछ दिन हुए सयुक्त-प्रान्त की धारा-सभा म प्रश्नोत्तर के दौरान में विदित हुआ था कि मुख्य मुख्य सरकारी महकमों में गैर हिन्दू कर्मचारियों की

भी बहुत भी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला है।

कहती हैं कि बहुत सी कन्याओं ने तो यह

ो मैथुन से बची रहीं, इसका कारण गर्भ स्थिति का डर था और हमें गर्भ-निवारक प्रयोगों तथा औषधियों का ज्ञान नहीं था। बहुतसी कन्याओं ने तो यहाँ तक बयान दिया कि दो वर्ष में हम लोगों ने कम-से-कम २० बार सहवास किया होगा। एक लड़की ने साहसपूर्वक यहाँ तक कहा कि मेरे सहपाठियों का ये प्रबल आग्रह होता था कि मेरे लिये इन्कार करना असम्भव होजाता था।

सहशिक्षण के पक्षपातियों को अमेरिका की इन विदुषी महिलाओं के अनुसन्धान के फलों को आँखें खोलकर पढ़ना चाहिये।

प्रतिनिधित्व बहुत ज्यादा है। वे जानते हैं कि हिन्दुओं का कोई बहुमत नहीं है। वे लोग २५०० के लगभग बेहूदा अल्पमतों का ढेर है, जो एक-दूसरे के लिए अछूत, त्याज्य और भक्षक है।

जब तक हिन्दू धर्म की यह दशा रहेगी, जो अब है, तबतक वह प्रत्येक धक्के का अधिकारी है, जो धक्के इसे भूतकाल में मिले है इस समय मिल रहे हैं और बहुत से जो आगे मिलेंगे। हिन्दू-विरोधी शक्तियों का, जो आज हिन्दू-धर्म को भूमण्डल से मिटा देने की कोशिश कर रही है, यत्न ठीक ही है। इस प्रकार का पतित और निकम्मा धर्म जिन्दा रहने का अधिकारी नहीं है। यह तो बड़ी तेजी के साथ अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है।

सन् १९२३ में हिन्दू महासभा के उत्सव के अवसर पर बनारस में मैंने श्री० स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी को निवेदन किया था कि शुद्धि-आन्दोलन' हिन्दुओं की रक्षा नहीं कर सकता है। यही सम्मति मैंने एकता-सम्मेलन के अवसर पर प्रयाग में श्री० स्वामी जी के सम्मुख उपस्थित की थी। मेरा विश्वास है, जबतक हिन्दुओं में से जातपात, छुआ छूत और सामाजिक त्रुटियाँ दूर नहीं होती है, हिन्दुओं के लिए शुद्धि-आन्दोलन का उपयोगी होना असम्भव है। यदि वीर सावरकर तथा हिन्दू-समाज के अन्य नेता सामाजिक-त्रुटियों को दूर करने में सफल हो जॉय, तो सच-मुच वे हिन्दू-समाज की बड़ी भारी सेवा करेंगे। ऐसा हो जाने से हिन्दू-समाज के दर्वाजे गैर-हिन्दुओं के लिए स्वतः खुल जायेंगे। हम शुद्धि के प्रचार की जरूरत न रहेगी। यह जरूरी नहीं है कि गैर हिन्दू लोग अपनी मजहबी विलक्षणताओं को छोडकर हिन्दू-धर्म में आयेंगे। हिन्दू-धर्म सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक रीति-नीति और व्यवस्था का समूह और समस्त मानव समाज का मानवी धर्म है। यह धर्म गिरते-गिरते वर्त्तमान हिन्दू-धर्म के रूप में आगया है। प्राचीन-काल में यह सनातन वैदिक-आर्य बुद्ध मानव-धर्म कहलाता था, अर्थात् अनादि वैज्ञानिक, बुद्धि-सगत और मानवी कर्तव्य समझा जाता था। हिन्दू-धर्म के सुधार की वास्तविक-कुञ्जी जात-पात को जन्म के स्थान में 'कर्म' और 'योग्यता' पर प्रतिष्ठित करना है।

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

Unselfish and noble actions are the most radiant pages in the biography of souls

निष्काम और उच्च कार्य मनुष्यों के जीवन में सबसे उज्ज्वल पृष्ठ होते हैं।

*   *   *

Only the actions of the just smell sweet and blossom in the dust

केवल न्याय करनेवाले व्यक्ति के कर्मों से सुगन्धि निकलती है और वे कार्य धूल में फलते-फूलते हैं।

*   *   *

Be great in act as you have been in thought Suit the action to the word and the word to the action

जैसे महान् तुम विचारों में रहे हो ऐसे ही महान् कर्मों में भी रहो। अपने कर्म को अपने वचन के अनुसार और वचन को अपने कर्म के अनुसार बनाओ।

*   *   *

The acts of this life are the destiny of the next.

इस जीवन के कर्म दूसरे जीवन का प्रारब्ध होते हैं।

*   *   *

Thought and Theory must precede all salutary actions, yet action is nobler in itself either thought or theory

समस्त हितकारी कार्यों का श्रीगणेश विचार और सिद्धान्त के साथ होना चाहिये, परन्तु विचार और सिद्धान्त दोनों से कार्य उच्च होता है।

*   *   *

Action is eloquence The eyes of the ignorant are more learned than their ears

कर्म वाक्पटुता होता है। अज्ञानी के कानों की अपेक्षा उसकी आँखें ज्यादा होशियार होती हैं।

*   *   *

Nothing, says Goethe, is so terrible as activity without insight—look before you leap is a maxim for the world

गोथे का कहना है कि विवेकरहित कार्य के समान कोई भयङ्कर चीज नहीं होती है। संसार के लिए शिक्षा है कि कूदने से पहिले विचार कर लेना चाहिये।

*   *   *

२५वें भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन, बिजनौर

के

स्वागताध्यक्ष श्रीयुत रामचन्द्र गुप्त का

भाषण

ओ३म्-यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

—यजु० अ० ३२ । म० १४ ।

आदरणीय सज्जनो तथा प्यारे आर्य कुमारो !

मैं अपनी तथा बिजनौर निवासियों की ओर से आपका प्रेम और सम्मानपूर्ण स्वागत करना अपना सर्व-प्रथम कर्त्तव्य समझता हू । यद्यपि शक्ति और साधन पर्याप्त न होने पर भी इस अखिल भारतर्षीय सम्मेलन को निमंत्रित कर देने की धृष्टता हमने की है और हमे खेद है कि हम आपकी सेवा-सुश्रूषा के लिए यथोचित सुप्रबन्ध नहीं कर पाये हैं, तथापि आपकी सौजन्यता एव सहृदयता से हमे आशा है कि आप हमारी त्रुटियों पर क्षमा की दृष्टि रक्खेंगे। आत्मीयता (अपनत्व) के नाते ही हमने अपनी असमर्थता मे भी आप से यहा पधारने का अनुरोध किया था और हमे विश्वास है कि आप हमारे आतिथ्य की कमियों की अपेक्षा हमारी हार्दिक सद्भावनाओं तथा प्रगाढ़ प्रेम की श्रद्धाजली को अपनी उदारता से अधिक महत्व प्रदान करेंगे। इस मौसम मे यात्रा की कठिनाइयों उठाकर आप जिस मनोरथ को सिद्धि के लिए पधारे हैं, उसमें आपकी सफलता के लिए हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थी हैं और चाहते हैं कि आप परिषद् के पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति मे अधिकाधिक प्रभावशालिनी शक्ति प्राप्त करें ।

यद्यपि बिजनौर एक साधारण नगर है, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से इसे विशेष महत्व दिया जा सकता है। प्राचीन काल में विदुर विश्वामित्र आदि ऋषियों की तपोभूमि रहने के प्रमाण रूप दारानगर मे विदुर कुटी आज भी हमारो याद को ताजा कर रही है और मालिनी नदी का प्रवाह शकुन्तला और कण्व की याद दिलाता रहता है। इसी जिले मे सीतावनी ग्राम प्राचीन किंवदती के अनुसार महाराज रामचन्द्र तथा महारानी सीता का निवास स्थान रहा है। अस्तु, राजा बैन की राजधानी यह विजय नगर एक पुनीत और धार्मिक स्थान समझा गया है। मुग़ल-ज़माने मे शहशाह अकबर के दरबार मे उच्च और आदरणीय स्थान पानेवाले अबुलफ़ज़ल और फैज़ी इसी ज़िले के आज़मपुर बास्टा ग्राम के पालित थे।

आधुनिक समय में भी बिजनौर प्रतिभाशाली नागरिक एव समृद्धिशाली व्यक्ति पैदा करने मे

पीछे नहीं रहा। राइट ऑनरेबिल डॉक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, राजा ज्वालाप्रसाद जी, आई० एस० ई०, रिटायर्ड चीफ इञ्जिनियर प्रोवाइस चान्सलर हिन्दू युनिवर्सिटी बनारस, तथा मु० शाहामतअली खान, सी० आई० ई०, सितारे हिन्द की जन्मभूमि होने का सौभाग्य हमारे जिले को है। साहित्याचार्य पण्डितवर स्व० श्री० पद्मसिंह शर्मा नायकनगला-निवासी से कौन साहित्य-प्रेमी है जो परिचित न हो। उपरोक्त सभी महानुभावों ने इस जिले की कीर्ति और महत्व को बढ़ाया है।

वैदिक धर्म-प्रचार में तो यह जिला आर्य समाज का स्थापना काल से ही अग्रतम रहा है और जितने प्रचारक और व्याख्याता इसने बनाये हैं, कदाचित् किसी दूसरे स्थान मे तैयार हुए हो। स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का विशेष प्रेम इससे रहा और उनसे अपने जीवन काल मे अनेकों बार यहाँ तत्कालीन कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। आर्य-समाजिक जगत् मे बिजनौर सदैव प्रशंसित रहा है। आज भी स्वामी केवलानन्द जी महाराज जिस सलग्नता और तत्परता से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं, वह किसी आर्य से छिपा नहीं है। यहाँ का आर्य-समाज सन् १८९८ ई० मे स्वर्गीय पं० लेखरामजी आर्य-मुसाफिर तथा स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के उत्साह-वर्धक सहयोग और प्रयत्न से स्थापित हुआ था। शनै २ जिले भर मे अनकों स्थानों में आर्यसमाज स्थापित हुए आज भी उनकी सख्या प्रान्त के दूसरे जिलों की अपेक्षा बहुत है। जिले भर की प्रचार-व्यवस्था को ठीक रखने के लिए एक आर्योपप्रतिनिधि सभा भी काम कर रही है। आर्य-कुमार सभाएँ यद्यपि अभी तक पर्याप्त संख्या में नहीं हैं परन्तु आशा है कि इस सम्मेलन से जिले के आर्य-कुमारों का उत्साह बढ़ेगा और भविष्य मे इनकी सख्या वृद्धि हो सकेगी।

परन्तु सज्जनों यह न समझियेगा कि हमारा जिला समस्त भारतीय आर्य-समाजों को शिथिल कर देनेवाली लहर से कुछ अधिक सुरक्षित रहा है। हम दुःख है कि हम भी उसके भयकर परिणाम से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। यह कहना सर्वथा सत्य न होगा कि केवल स्थानीय कारणों से ही ऐसा हुआ, अपितु देश भर म ही कुछ ऐसी परिस्थिति और वातावरण फैल गया जिसके कारण जनता नये आन्दोलनों की ओर आकर्षित हुई और आर्यसमाज की तरफ से उदासीन हो गई। हमारा कदापि यह आशय नहीं कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन म आर्य-समाजियों को भाग लेना न चाहिये था। वस्तुतः यह हमारे लिये गर्व की बात है कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के लिए आर्यसमाज ने सदैव पूर्ण योग दिया है और विश्वास है कि आगे भी देता रहेगा। परन्तु हमें जानना चाहिये कि आर्य-समाज को जावित और सुव्यवस्थित रखना भी हमारे लिए उतना ही आवश्यक है। आर्य समाज को तो एक प्रकार से इस सग्राम के लिये उत्तम चरित्र और आत्मिक बल रखनेवाले सैनिक तैयार करना अभीष्ट है जो निर्भयता और साहस के साथ नागरिक अधिकारों को सुरक्षित रख

सकें। चरित्र-गठन और आत्मिक बल प्राप्त करने के लिए आर्यसमाज से बढ़कर अन्य कोई संस्था नहीं हो सकती।

स्वयं महात्मा गाँधी जी ने भी अपने वक्तव्य द्वारा स्पष्ट कर दिया है कि हमारी शक्ति जन-बल पर नहीं बल्कि चरित्र-बल पर निर्भर है। अत उन्होंने राष्ट्रसभा कांग्रेस के संचालकों को आदेश किया है कि वह चरित्र बल पर अधिक बल दें। और केवल फ़ार्म पूर्ति और।) चन्दे पर ही बस न करें। भले ही निर्वाचनों के लिए ऐसा नीति उचित समझी जाय, परन्तु वास्तव मे वह आगे चलकर कांग्रेस के लिए अहितकर सिद्ध होगी और उसके मनोवाँछित ध्येय की प्राप्ति में बाधक बन जायेगी।

आर्यसमाज में इसी प्रकार की नीति ने बहुत कुछ त्रुटियाँ पैदा की हैं और फल-स्वरूप आज प्राय: सभी स्थानों में पारस्परिक मनोमालिन्य पदलोलुपता, द्वेषपूर्ण वातावरण देखने मे आता है। वास्तविक और आवश्यक कार्यक्रम को पीछे डालकर आज आपसी लड़ाइयों और वादविवाद और पदों के लिए संघर्षों में हमारी सारी शक्ति व्यय हो रही है। यदि इसका सदुपयोग होता तो कितना बहुमूल्य और ठोस काम हम कर सकते!

स्वागताध्यक्ष की हैसियत से आपको उपदेश देना मेरा कर्त्तव्य नहीं और न मैं योग्यता ही रखता हूं परन्तु मैं नम्रतापूर्वक इतना निवेदन अवश्य करूँगा कि आप जब परिषद् के भावी कार्यक्रम पर विचार करें तो यह अवश्य ही ध्यान रखें कि आपकी संस्था उन उपरोक्त दोषों से मुक्त रहे जिनके कारण अन्य संस्थाएँ हानि उठा चुकी हैं।

हम आर्यकुमारों से बड़ी आशाएँ हैं और हमारा भावी सामूहिक जीवन वास्तव में उन्हीं पर अवलम्बित है। सदाचारी, साहसी, बलवान् और सत्यनिष्ठ युवक ही वैदिक धर्म के प्रचार द्वारा आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के पुनीत मिशन की पूर्ति कर सकेंगे और अपने उच्च और अनुकरणीय जीवन से संस्था के गौरव और प्रतिष्ठा को बढ़ा सकेंगे। भारतवर्ष को ऐसे युवकोंकी आज बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि चंचल, स्वार्थी, चरित्रहीन, कायर और कपटी युवक कदापि भारतमाता को पराधीनता से मुक्त कराने में सफल नहीं हो सकते। यह लड़ाई अस्त्रशस्त्रों की नहीं, जिन्हें कोई भी प्रयोग में ला सकता है। इस लड़ाई के लिए सत्य, अहिंसा और आत्मिक बल ही मुख्य शस्त्र हैं जिनको सफलतापूर्वक चलाने के लिए तपोनुष्ठान की आवश्यकता है। आर्यकुमारो! क्या तुम अपने जीवन को इस साँचे में ढालने का प्रयत्न करोगे? क्या तुम अपने व्यावहारिक जीवन और विचारों को ऐसा बनाओगे कि तुम्हें भारतमाता के सच्चे सपूत कहा जा सके और तुम अन्य भारतीय नवयुवकों के लिए अनुकरणीय आदर्श के तौर पर पेश किये जा सको? यदि तुम ऐसा करोगे तो परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति होगी और "तुम ईश्वर, वैदिक धर्म और देश के क्रियाशील उपासक बन

सकोगे।" परमात्मा करें कि तुम अपने प्रयत्न में सफल हो और भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में कीर्ति और यश के भागी बनो। तुम्हारी इस सफलता में ही हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सुख स्वप्न देख सकते हैं, अन्यथा नहीं।

एक और बात जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हू वह यह है कि आर्य-कुमारों को आत्म-निरीक्षण, चरित्र-गठन और स्वाध्याय ही में अपना अधिक समय लगाना चाहिये। अवकाश के समय सामाजिक और देश सेवा के कार्यों मे भी यथाशक्ति योग दे सकते हैं, परन्तु जहाँ तक हो सके उन्हें ऐसी बातों से पृथक् ही रहना चाहिये, जिनके कारण उनपर साम्प्रदायिक संकीर्णता का आक्षेप लगाया जा सके। इसका यह अर्थ नहीं कि उन्हें अपने धर्मके प्रति प्रेम नही रखना चाहिये, जैसाकि मैं ऊपर कह आया हूँ, धर्म के प्रति प्रगाढ़ प्रेम होना उनके लिए अनिवार्य है। परन्तु उनको चाहिये कि वे अन्य मतावलम्बियों से शत्रुता और घृणा के भाव न रक्खें। विचार भेद हो सकता है, परन्तु फिर भी हमे याद रखना चाहिये कि हम सभी चाहे सनातनी हों या आर्यसमाजी, सिक्ख हों या जैनो,मुस्लिम हों या ईसाई, पारसी हों या बहाई, सामूहिक हैसियत से भारतीय हैं और राष्ट्रीयता के नाते भाई हैं। एक दूसरे के प्रति प्रेम और आदर की भावनाएँ जहा राष्ट्रीय एकता में सहायक होंगी वहाँ अनुचित, संकुचित और संकीर्णतापूर्ण बर्ताव इसमें बाधक होगा।

पुन एक बार आपके अनुग्रहपूर्वक आगमन के लिए हार्दिक धन्यवाद और आतिथ्य में जो त्रुटियाँ रह गई हों उनके लिए क्षमा-याचना करता हूँ। यहाँ मैं अपने उन भाइयों का जिन्होंने स्वागतकारिणी कमेटी के कार्य-सम्पादन में योग दिया है और जिला बिजनौर निवासियों का जिन्होंने तन मन धन से सहायता प्रदान की है, धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। यदि उनका सहयोग और सहायता हमे प्राप्त न होती तो कदापि हम इस कार्य को न कर पाते। विशेषतया मैं चि०ईश्वरदयाल जी मन्त्री स्वागतकारिणी कमेटी तथा म० ध्यानसिंह जी मन्त्री आर्यसमाज बिजनौर का अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने बड़ी संलग्नता और उत्साह के साथ सहायता की है। वास्तव मे सम्मेलन की सफलता का श्रेय बहुत कुछ इन महानुभावों को ही प्राप्त होगा।

अन्त में मैं आर्यकुमारों और प्रतिनिधियों को जो यहाँ उपस्थित हैं बधाई देता हूँ कि उन्होंने अगामी वर्ष के लिए श्रीमान् प्रोफेसर सुधाकरजी एम० ए० जैसे योग्य, विद्वान् और अनुभवी आर्य पुरुष को जो परिषद् के संस्थापकों मे से हैं परिषद् का प्रधान निर्वाचित किया है। आशा है कि उनकी अध्यक्षतामें परिषद् सुदृढ़ और सुसगठित होकर वैदिक धर्म के प्रसार और भारतवर्ष की सच्ची सेवाके लिए अनुकरणीय युवक पैदा करेगा।

अब मैं आदरणीय प्रोफेसर साहब से सभा-पति का आसन ग्रहण करने के लिए विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

२५वें भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन, बिजनौर

के

सभापति

प्रोफेसर सुधाकर, एम० ए०

का

अभिभाषण

मान्नीय स्वागताध्यक्ष तथा आर्यकुमार भाइयो !

मैं इस समय भारतवर्षीय आर्यकुमार-सम्मेलन के सभापति की हैसियत में अपने आपको किंकर्त्तव्य-विमूढ़ पाता हूँ। मुझे इस बात की स्वप्न में भी आशा न थी कि मेरे प्रिय भाई डॉ० युद्धवीरसिंह जी बलात् मुझे मेरे एकान्त-सेवन से निकालकर इस पद पर बैठा देंगे। मेरा चुनाव अच्छा है या बुरा, इसकी सारी जिम्मेदारी डॉक्टर साहब पर ही है। मैं जहाँ तक समझ सका हूँ, मेरे इस आसन पर बैठाने का कारण यही हो सकता है कि मैं इस परिषद् के जन्मदाताओं में से एक हूँ। जिन महानुभावों के दिमाग में इस परिषद् की स्थापना का विचार आया था, उनमें से एक महान् आत्मा मेरे स्वर्गीय भाई डॉ० केशवदेव जी शास्त्री थे। दूसरे डॉ० सिद्धेश्वर शास्त्री डी-लिट. हैं, जो इस समय आर्यसमाज से विरक्त होकर प्राचीन संस्कृत साहित्य के अन्वेषण (Research) का काम कर रहे हैं। तीसरा व्यक्ति इस समय आपके सम्मुख आपकी सेवा मे उपस्थित है।

मुझसे यह आशा की गयी है कि मैं आप पर यह प्रकट करूँ कि किन आकांक्षाओं को लेकर भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् की स्थापना की गयी थी। मैं उस आशा की पूर्ति के लिए तैयार हूँ। यदि केवल इतने मात्र से मेरा छुटकारा हो सकता हो कि मैं आपको यह बतला दूँ कि किन आकांक्षाओं को लेकर इस परिषद् की स्थापना की गयी, तो यह कोई बड़ी बात नहीं। परन्तु मैं यह अनुभव करता हूँ कि इतने मात्र से छुटकारा नहीं। मुझे यह भी बतलाना होगा कि उन आकांक्षाओं की पूर्ति हुई अथवा नहीं, यदि नहीं हुई तो उसकी जिम्मेदारी किस पर है? यदि नहीं हुई तो आगे हम उसके लिए क्या करने को तैयार हैं? अत "जो बोले सो दरवाजा

कई बातें पूछ लीं और अन्त मे यह निवेदन किया कि दूसरे दिन मै उससे अवश्य मिलूँ। जब दूसरे दिन उससे मेरा भेंट हुई, तो पादरी साहब ने बहुत-से ट्रैक्ट, जिनमे ईसा मसीह के चरित्र का ओजस्विनी भाषा मे वर्णन था, मुझे दिये और प्रार्थना की कि मैं आद्योपान्त उन्हें पढ़ जाऊँ और यदि मुझे उनके पाठ से कुछ प्रकाश प्राप्त हो, तो उनको पुन मिलूँ, ताकि वे इसी प्रकार का और साहित्य मेरे हाथों सौंप सकें। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही, जब मुझे यह मालूम हुआ कि वह पादरी साहब चक्षुहीन हैं और चक्षुहीन होते हुए अपने धर्म के प्रचार मे इस तल्लीनता से कार्य कर रहे हैं। इस घटना का उल्लेख मैंने स्वर्गीय डॉक्टर शास्त्री जी से किया। उन्होंने हमे यह आदेश दिया कि 'नवयुवक-क्रिश्चियन सघ' (Y M C A) की लाइन पर हमे भी एक ऐसे सघ की स्थापना करनी चाहिये, जो भारतवर्ष के आर्यकुमारों को एक संगठन मे बाँध दे और उनकी असीम शक्तियों को आर्यसमाज तथा वैदिक-धर्म की सेवा मे लगा सके। इसी विचार-अकुर का परिणाम भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के रूप मे आपके सम्मुख उपस्थित है।

नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ इस समय सारे संसार मे फैल रहा है। जिस देश में आप जाये यदि आप अपने को वहाँ अकेला पायें तो आप इस संघ की शरण मे जा सकते हैं। हमें बतलाया गया है कि Y M C A के यहाँ यात्रियों को रहने-सहने, खाने-पीने तथा अन्य सब प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं, जिनके कारण विदेश-यात्रा सुगम और सफल होजाती है। यह 'नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ' बाइबिल की साम्प्रदायिक शिक्षा पर जोर नहीं देता। वह केवल चरित्र-बल से अन्य धर्मावलम्बियों को ईसा के सन्देश के निकट लाने की चेष्टा करता है। मानों यह संघ ईसाई-धर्म तथा अन्य धर्मावलम्बियों के बीच में अर्द्ध-विश्राम गृह (Half-way House) का कम देता है।

ठीक इसी प्रकार हम लोगों की उस समय यही आकाक्षा थी कि आयकुमार सभाएँ, आर्यसमाज के गहरे दार्शनिक सिद्धान्तों का रट न लगाते हुए, आर्यकुमारों को वेद-प्रतिपादित चरित्र के आदर्शों तथा वैदिक सस्कृति के निकट लाने का यत्न करें तथा आर्यसमाज के लिए सुदृढ़ और सुपरीक्षित भावी कार्यकर्ता पैदा करें। इसीलिए परिषद् के प्रारम्भिक जीवन मे हम लोगों का यह उद्योग रहा कि आर्यकुमारों के जीवन मे वे विशेषताएँ लायी जायँ, जो उन्हें अन्य कुमारों से पृथक् कर सकें। कुमार-अवस्था मे नवयुवकों का हृदय विशाल और उदार होता है और साम्प्रदायिक सङ्कीर्णता से रहित होता है। उस समय यदि हम चाहें तो उनमें सार्वभौम सेवा के अकुर बो सकते हैं। सार्वभौम सेवा की प्रवृत्ति से हम अपने जीवन की छाप अपने से भिन्न मत-मतान्तरों के अनुयायियों पर अच्छी तरह लगा सकते है, और जिस तेजी से हम उनको अपने निकट ला सकते हैं, वह अन्य किसी भी प्रकार के उपचार से सम्भव नहीं।

खोले" वाली कहावत के अनुसार मैं अपनी आगामी वर्ष भर की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। परन्तु मैं उस जिम्मेदारी को अपने वर्त्तमान स्वास्थ्य को दृष्टि मे रखता हुआ तब तक न निभा सकूंगा जब तक कि वे भाई, जो मुझे इस सम्मानित आसन पर घसीट लाये हैं, मेरी पूरी सहायता न करेंगे, तथा मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यकुमारों की सेवा म जुट न जायेंगे।

इस देश मे जिस प्रकार बच्चे पैदा होजाते हैं और शैशवावस्था में वे उचित देखरेख न होते हुए भी येनकेन प्रकारेण बालिग होजाते हैं, उसी प्रकार इस परिषद् को भी अपने जन्मकाल से किसी विशेष लाड चाव तथा लालन-पालन का कोई मीठा संस्मरण नहीं है। यह भी इस समय २५ वर्ष की बालिग अवस्था को पहुँच गयी है और इस सम्मेलन के साथ अपनी जयन्ती मनाने चली है। जिन भाइयों के यत्किंचित् परिश्रम, उत्साह तथा लगन से यह अब तक जीवित रहा है, उन सब भाइयों को मै हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इस परिषद् के जन्मकाल के कुछ वर्षों के बाद इसके प्रति मैंने जो उदासीनता दिखलाई है, उसके लिए मैं स्वयं लज्जित हूँ। इस समय मुझे केवल इस बात का हर्ष है कि मुझे आप भाइयों की कृपा से पुन यह अवसर प्राप्त हुआ है कि मैं उस लापरवाही तथा उदासीनता का किंचित् प्रतिकार कर सकूँ।

इस परिषद् को जन्म देने का विचार कब और कैसे उत्पन्न हुआ, इसका उल्लेख करने के लिए मुझे आपके सम्मुख एक घटना का वर्णन करना होगा। एक बार स्वर्गीय डॉक्टर केशवदेव जी शास्त्री की अध्यक्षता मे मैं और मेरे कतिपय सहपाठी आर्यसमाज की ओर से 'ब्रह्मचर्य' का सन्देश लेकर कलकत्ता-नगर पहुँचे। वहाँ हम लोग लगभग १ मास तक कॉलेजों मे 'ब्रह्मचर्य' की महिमा पर बातचीत तथा भाषणों द्वारा विद्यार्थियों मे उसका प्रचार करते रहे। यह बात आज से लगभग ३० वर्ष पहले की है। उस समय कलकत्ता के कॉलेजों में अविवाहित विद्यार्थी मिलना कठिन था। हमारे इस प्रचार से वहाँ के विद्यार्थियों मे हलचल मच गयी, और अनेकों विद्यार्थियों ने यह प्रतिज्ञा की वे 'ब्रह्मचर्य के संदेश' का प्रचार अपने घरों मे करेंगे। इन्हीं दिनों मुझे कलकत्ता के नवयुवक-क्रिश्चियन-संघ (Y M C A.) के एक अधिवेशन मे जाने का अवसर मिला। वहाँ जाकर हॉल के दरवाजे पर मैंने एक अंग्रेज पादरी को खड़ा देखा। उसके हाथ मे छोटे छोटे ट्रैक्ट थे। जो नवयुवक हॉल मे प्रवेश करते थे उनको हाथ मिलाकर बारी-बारी वह ट्रैक्ट देता जाता था तथा सबके साथ हँस-हँसकर बातचीत करता हुआ उनसे स्वास्थ्य समाचार भी पूछता जाता था। जब मैं अन्दर जाने लगा और उस पादरी से हाथ मिलाया और उससे ट्रैक्ट लिया, तब मेरी आवाज को सुनकर वह कहने लगा, "महाशय, आपकी आवाज अपरिचित है। आप कहाँ से आये, कब आये? वहाँ कहाँ ठहरे हैं? कितने रोज ठहरेंगे?" इत्यादि। थोड़े-से समय मे उसने मुझसे

सच्चरित्रता में बड़ी शक्ति निहित है। केवल सैद्धान्तिक प्रचार से हम अपने शत्रु पैदा करते हैं। चरित्र के प्रभाव से हम अपने शत्रुओं को मित्र बना लेते हैं और मित्रों को भक्त बना लेते हैं। इसी विचार ने हमें बाधित किया कि हम अपने समय के आर्यकुमारों को अस्पतालों में रोगियों की सेवा के लिए, स्कूलों में कमजोर विद्यार्थियों की शिक्षा-सम्बन्धी सहायता देने के लिए तथा रात्रि-पाठशालाओं द्वारा निरक्षरता निवारण के लिए नियत करें। इस प्रकार की क्रियात्मक सेवा से हम हिन्दू, मुस्लिम तथा ईसाई कुमारों को अपनी ओर खींच लेते थे। उसी समय हमने यह भी अनुभव किया कि यदि हम भारतवर्ष की सारी कुमार-सभाओं को एक सूत्र में बाँधकर आर्य-कुमारों को चरित्र की सुदृढ़ नींव पर खड़ा कर सकें तो इससे आर्यसमाज की अपूर्व सेवा हो सकेगी। कुमारों की शक्तियाँ न्यायग्रा-प्रपात (Niagra Falls) के समान असीम और महान् होती हैं। केवल ऐसे इंजीनियर्स की जरूरत है, जो न्यायग्रा-प्रपात को विद्युत-शक्ति में बदल सकें और कुमारों की शक्ति को सेवा के रूप में बदल सकें।

अब यहाँ पर यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि जिन आकांक्षाओं से प्रेरित होकर इस परिषद् की योजना की गयी थी, वे कहाँ तक पूर्ण हुई हैं। मैं निःसंकोच यह कह सकता हूँ कि वे आकांक्षाएँ पूर्ण नहीं हुई। इसके कई कारण हैं—पहला कारण तो यह है कि स्व. डा. केशवदेव जी शास्त्री के पीछे इस सम्मेलन को किसी आर्य-नेता ने हृदय से नहीं अपनाया। प्रत्येक वार्षिक अधिवेशन पर किसी-न-किसी आर्य-नेता को वर्षभर के लिए इस परिषद् की अध्यक्षता सौंपी जाती रही है, परन्तु वार्षिक अभिभाषण के पीछे उन महानुभावों ने आर्यकुमारों के संगठन में कितनी सहायता की, इसे आप लोग जानते हैं या वे महानुभाव। हमें जरूरत इस बात की है कि कुमारों के मानसिक झुकाव को एक लक्ष्य की ओर ले जाने का निरन्तर उद्योग किया जाय। आर्यसमाज के बहुत से कार्य-कर्ता अपना यह जीवन-ध्येय ही बनालें कि उन्हें कुमारों में ही काम करना है। ऐसे कार्य-कर्त्ताओं को जीवन-निर्वाह के लिए आर्यसमाज को व्यवस्था करनी चाहिये, और वह इस प्रकार हो सकती है, कि प्रान्तिक सभाएँ तथा सार्वदेशिक सभा अपनी ओर से वार्षिक सहायता भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् को प्रदान किया करें।

आपको यह बात याद रखनी चाहिये कि नवयुवक क्रिश्चियन-संघ (Y M C. A) में काम करनेवाले सभी कार्यकर्त्ता उच्चकोटि के व्यक्ति हैं। उनमें से केवल एक का नाम और स्थिति आपके सामने पेश करना चाहता हूँ। कुछ दिनपूर्व आपने समाचार-पत्रों में डॉक्टर मौट (Dr. Mott)के भारत-भ्रमण का वृत्तान्त पढ़ा होगा। यह महाशय अमेरिका से नवयुवक क्रिश्चियन-संघ के कार्य-कर्ता के रूप में प्रचारार्थ भारतवर्ष आये थे। इनकी वक्तृत्व शक्ति की धूम भारत के कोने-कोने

में मच गई थी। मुझे स्वयं उनके भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और मैं यह कह सकता हूँ कि ४५ मिनिट का ऐसा सुन्दर भाषण मैंने अपने जीवन में कभी नहीं सुना। मौट महाशय को अमेरिकन सरकार ने जापान में अपना दूत नियत करके भेजने के लिए प्रेरणा की थी, परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे राष्ट्र का दूत बनकर दूसरे देशों में जाना अभीष्ट नहीं, मैं अपने जीवन का ध्येय यह बना चुका हूँ कि ससार के नवयुवकों को ईसा के निकट लाऊँ।" क्या आर्य-समाज में इस प्रवृत्तिवाले लोग मौजूद हैं? यदि होते तो आज हमारी यह दशा क्यों होती !!

इसी भारतवर्षीय आर्यकुमार-परिषद् के बारहवें अधिवेशन के सभापति की हैसियत से हमारे पूज्य श्रीनारायण स्वामी जी महाराज ने अपने अभिभाषण के अन्तमें एक प्रश्न उठाया था और वह मैं उन्हीं के शब्दों में यहाँ अङ्कित करता हूँ—

"परमहस रामकृष्ण की मृत्यु के बाद दो सप्ताहके भीतर ही १ दर्जन ग्रेजुएटों ने अपने आपको रामकृष्ण-मिशन के अर्पण कर दिया था, परन्तु ऋषि दयानन्द के शिष्यों में से कितने ग्रेजुएट हैं जिन्होंने वैदिकधर्म के प्रचारार्थ देश-देशान्तरों में जाने के लिए—दयानन्द-मिशन के लिए अपने आपको अर्पण किया है? आर्यकुमारो! यह बात है, जिससे हमें सदैव अपना शिर नीचा करना पड़ता है! क्या दयानन्द का त्याग अधूरा था, जो हमको त्यागी नहीं बना सका? क्या दयानन्द में कार्य-प्रचार की लगन कम थी?" पूज्य स्वामी जी के इस प्रश्न पर मैंने बार-बार विचार किया है और अब यही प्रश्न आपके सम्मुख उपस्थित है। पूज्य स्वामीजी इस समय आर्य-समाज के उच्चतम कोटि के नेता हैं। अत मैं उनके प्रश्न का आदर करता हूँ, परन्तु विनयपूर्वक यह उत्तर देता हूँ कि ऋषि दयानन्द के त्याग और तप में कोई कमी न थी। यदि आजकल के ग्रेजुएट आर्यसमाज के निकट नहीं आते, तो उसका कारण यह है कि आर्यसमाज के नेता आर्यकुमारों के भीतर काम करना कसरे-शान समझते हैं। मैं यह पूछता हूँ कि इस समय आर्यसमाज के कितने कार्यकर्त्ता आर्यकुमारों में काम कर रहे हैं? यदि ऐसा नहीं है, तो हम किस मुँह से कुमारों से यह आशा कर सकते हैं कि वे हमारे बोझ को हल्का करें और वैदिक संस्कृति के प्रचार में हमारी सहायता करें।

मैं तो इस समय आर्यसमाज के भीतर कुमारों के प्रति घोर उदासीनता पाता हूँ। इस सर्व-व्यापी उदासीनता के होते हुए हम आर्य-समाज के लिए भावी कार्यकर्त्ता तैयार नहीं कर सकते।

कोई समय था—आर्यकुमार भिक्षा के लिए जब आर्य-धनिकों के पास पहुँचते थे, तब वे उन कुमारों की माँग को आदर की दृष्टि से देखते थे और उन्हें मुँहमाँगी धनराशि दान देते थे, परन्तु आज कुमारों के प्रति वह उदारता देखने में नहीं आती, जिसके कारण उनका उत्साह भंग होरहा है और वे अपनी उमङ्गों को अपने हृदय में ही दफ़ना रहे हैं।

इस समय आर्यसमाज की ओर नवयुवकों के आकर्षण की कमी का एक दूसरा कारण और भी है, जिसपर आर्य-समाज के नेताओं को विचार करना चाहिये। वह कारण आर्य-समाज का घरेलू-झगड़ा है। यह झगड़ा इतना भयानक-रूप धारण कर चुका है कि इसके होते हुए कुमारों को अपनी तरफ खींचना दुस्तर हो रहा है। आर्यसमाज को अपने धार्मिक दृष्टिकोण में एक भारी परिवर्तन करने की जरूरत है। धार्मिक जीवन का प्रचार करनेवाले व्यक्ति छोटी-छोटी बात के ऊपर लड़ते-झगड़ते रहें, यह बात समझ में नहीं आती। लौकिक जीवन के अन्दर जहाँ एक व्यक्ति को अपने लौकिक पदार्थों की वृद्धि का ख्याल रहता है, वहाँ तो झगड़े-रगड़ेकी सम्भावना बनी रहती है। परन्तु धार्मिक-जीवन में जहाँ आत्म-समर्पण ही, ध्येय होता है, वहाँ लड़ाई-झगड़े की सम्भावना नहीं होसकती। आर्य-पुरुषोंने या तो अपने भीतर धार्मिक जीवन धारण नहीं किया या उस मार्ग पर चलने को तैयार ही नहीं हैं, अन्यथा धार्मिक जीवन के साथ लौकिक झगड़ोंकी सम्भावना हो ही नहीं सकती। धर्म हमे यह सिखाता है कि हम दूसरों के काम आयें, दूसरों के लिए सहायक सिद्ध हों, और दूसरों को अपनी सेवा से ऊँचा उठायें, आगे बढ़ायें, न कि उसको अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बनायें।

आर्यकुमारो! मुझे जो कुछ तथ्य की बात कहनी थी कह चुका। न मुझे लम्बे भाषण देने की आदत है, और न सुनने की। यह जो कुछ मैंने निवेदन किया है वह उन भाइयों की इस कृपा से जिन्होंने बलात् आसन पर बिठाया है। अन्त मे मैं इतना कहना आवश्यक समझता हूँ कि आगामी वर्ष के लिए आप जो भी कार्य-क्रम निश्चित करें, उसमें लम्बे प्रस्तावों को स्थान देने की आवश्यकता नहीं। आप जो कुछ अगले वर्ष में करना चाहते हैं, केवल उसी को प्रस्ताव के रूप मे लायें और उस कार्यक्रम की पूर्ति के लिए एक ऐसी सगठित कार्य-समिति बनायें, जो वर्ष भर आपकी सेवा कर सके। यह युग कार्य करनेवालों का युग है। शब्दाडम्बर तथा चर्चा का युग बीत चुका, अब तो निरन्तर कार्य करनेवाले तथा नियन्त्रण में रहने-वाले लोग ही सफलता का मुँह देखते हैं। वैदिक सस्कृति का सदेश आप लोगों को देश-देशान्तरों में ले जाना है। मेरी आपसे यह विनयपूर्वक प्रार्थना है कि आप अपनी भुजाओं को विशाल। अपने हृदयों को उदार, अपने दिमागों को स्वच्छ और अपनी आकांक्षाओं को निर्मल बनाइये। ऐसे ही जीवन रखनेवाले कार्यकर्ताओं के द्वारा वैदिक संस्कृति का सन्देश भूतकाल में फैला है, वर्तमान और भविष्य में भी इन्हें के द्वारा फैलेगा, चरित्र का कवच पहनकर जीवन के संघर्ष में उतरो और नम्रता के आभूषण से विभूषित होकर अपने कार्यक्षेत्र मे जुट जाओ और 'तुलसी' के इस पद का बार-बार जाप करो—

"लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चींटी शक्कर खात है, कुञ्जर के मुख धूर॥"

संस्कार-विधि का संशोधन

संस्कार-विधि का संशोधन विषयक इतिहास इस प्रकार है :—२१ मार्च १६३२ ई० की धर्मार्य-सभा की बैठक में यह विषय पेश किया गया कि ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों सत्यार्थ प्रकाश आदि में छापेआदि की ग़लतियों के कारण आर्य विद्वानों को शास्त्रार्थ के समय बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, इसलिए उन्हें ठीक कराने का प्रबन्ध किया जाय। इस पर प्रशंसित सभा ने निश्चय किया कि आर्य विद्वानों से प्रार्थना की जाय कि जिन-जिन स्थलों पर प्रर्थों में कठिनता पड़ी हो या पड़ने की सम्भावना हो उनकी सूची बनाकर भेज देवें और श्री स्वामी वेदानन्दजी, इन उत्तरों के आजाने पर एक सूची बनाकर पेश करें।

(२) २१ अक्टूबर १६३२ को प्रशंसित सभा की अन्तरङ्ग सभा ने, जिसके अधीन, उपर्युक्त कार्य हुआ था, श्री स्वामी वेदानन्द जी की रिपोर्ट पर, निश्चय किया कि संस्कार विधि के सम्बन्ध में निम्न सदस्यों की उपसमिति बनाई जावे—

(१) श्री० पं लोकनाथ जी (२) श्री स्वामी वेदानन्द जी (संयोजक) (३) श्री०पं बुद्धदेवजी, और अन्तरङ्ग सभा ने यह भी निश्चय किया कि यही उपसमिति सामान्य प्रकरण के सम्बन्ध में भी विचार करे।

(३) उपसमिति का निश्चय संयोजक महोदय की रिपोर्ट के साथ २८ मार्च १६३४ की धर्मार्य सभा की बैठक में पेश हुआ और निम्न निश्चय हुए —

(१) श्री स्वामी वेदानन्दजी ने निजी स्थिति में जो प्रस्ताव किया है कि सूत्र आदि के वाक्यों के स्थान पर वेद-मन्त्र कर दिये जावें, उसे यह सभा स्वीकार नहीं करती है।

(२) जो भाषा तथा प्रतीक-सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं, उन्हें दूर कर दिया जावे।

(३) जहाँ पते आदि की अशुद्धियाँ हों वे ठीक करदी जायें।

(४) जिन विद्वानों को, संस्कार विधि के सम्बन्ध में संशोधन करना अभीष्ट हो वे उन स्थलों को प्रस्तावित संशोधनों के साथ लिख कर सभा के कार्यालय में भेज देवें और उसके बाद यहाँ से आधे कागज (Half Margin) पर छपवाकर सभासदों में सम्मति के लिए गश्त कर दिया जावे।

(५) इसके बाद संस्कार-विधि में निम्न संशोधन स्वीकार हुए—

(१) पृष्ठ सं० ४ (संस्कार-विधि, शताब्दी संस्करण) सब संस्कारों के आदिमें, तथा "निम्न लिखित" वाक्यों के बीचमें, ब्रेकट में 'पृष्ठ १६ में लिखे अनुसार आचमन और' शब्द बढ़ा दिये जावें

(२) पृष्ठ सं० २१ में—"एक एक नीचे

लिखे मन्त्र से" के आगे ब्रैकिट मे "दूसरे-तीसरे मन्त्र को एक गिनकर", शब्द बढ़ा दिये जायें।

(३) "ओं समिधाग्नि" मन्त्र में से "स्वाहा और इदमग्ने इदन्नमम्, शब्द निकाल दिये जावें।

सशोधन सम्बन्धी इस कार्यवाही के बाद सर्व सम्मति से, धर्मार्य सभा ने सशोधन के इस विषय का अन्तरङ्ग सभा के सुपुर्द कर दिया—

इस धर्मार्य सभा की बैठक मे निम्न विद्वान उपस्थित थे।

१ श्री महात्मा नारायणस्वामी जी
२ „ प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री
३ „ „ धुरेन्द्र जी शास्त्री
४ „ „ रामदत्त जी
५ „ स्वामी ब्रह्मानन्द जी
६ „ प्रो० सुधाकर जी
७ „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
८ „ प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति
९ „ „ ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु
१० „ स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी
११ „ प० बुद्धदेवजी विद्यालङ्कार
१२ „ आचार्य रामदेवजी
१३ „ प० लोकनाथ जी शास्त्री
१४ „ प० द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री
१५ „ प० देव शर्माजी 'अभय'

(४) १९३४ ई० की उपयुक्त धर्मार्य सभा में, साफ जाहिर है कि उपस्थित विद्वानों ने, सर्व सम्मति से दो सिद्धान्त स्वीकार कर लिये थे—

[१] भाषा तथा पते आदि की अशुद्धि ठीक कर दी जावें, तथा

[२] जो विद्वान, इन पते आदि के सिवा, सस्कार विधि मे अन्य संशोधन चाहते हैं, उन्हें वे करके इस सभा में भेजें और वे आने पर धर्मार्य सभा के सदस्यों में सम्मति के लिए भेजे किये जायें और स्वयं धर्मार्य सभा ने भाषा और पते का नहीं अपितु संस्कार-विधि में अङ्कित विधियों का संशोधन-कार्य प्रारम्भ करके दो जगह कुछ बढ़ाया और एक जगह से कुछ शब्द निकालने का निश्चय भी स्वीकार किया और यह सब कार्य उपर्युक्त विद्वानों की सर्व-सम्मति ही से, प्रशासित सभा ने, किया और आगे इस संशोधन कार्य के करने के लिए अन्तरङ्ग सभा को हिदायत भी की थी।

धर्मार्य सभा की यह कार्यवाही, नियमपूर्वक, 'सार्वदेशिक' मे उचित समय पर प्रकाशित हो गई थी।

(५) इसके बाद धर्मार्य सभा के सदस्यों की अवधि समाप्त हो गई और नये सभासदों की सूची आने आदि मे, जैसा हुआ करता है, काफी देर लग गई और सन् १९३४ ई०के बाद पहली बैठक सन् १९३८ ई० मे हुई।

(६) इस बैठक के संगठित होने से पूर्व, विद्वानों से संशोधन के सम्बन्ध में सम्मतियाँ माँगी गईं थी। १७ विद्वानों ने सम्मतियाँ दीं थी जिनका विवरण इस प्रकार है—

[क] संशोधन नहीं होना चाहिये—

[१] प० नरदेव जी शास्त्री ज्वालापुर।

[२] कु ० जालिमसिंहजी अजमेर।

[ख] केवल भाषा आदि का संशोधन होना चाहिये—

[१] स्वामी केवलानन्द जी (राजस्थान)

[२] प० भद्रसेन जी अजमेर

(ग) भाषा आदि के सिवाय और भी संशोधन होने चाहिये।

(१) प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, प्रयाग।

(२) स्नातक सत्यव्रत जी, बम्बई।

(३) पं० श्रीधर जी, मध्यप्रान्त

(४) प० धुरेन्द्र जी शास्त्री राजगुरु

(५) प० देवशर्मा जी आचार्य गुरुकुल कागड़ी।

(६) स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(८) श्री० प चमूपति जी।

(९) श्रीमान ब्रजनन्दनसिंह, पटना (बिहार)।

(घ) निम्न सज्जनों ने इस प्रकार सम्मिति दी है —

१. पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री गुरुकुल सिकन्दराबाद

भाषा, पाठ तथा सूत्र ग्रन्थों के उद्धरणों का भी संशोधन होना चाहिये, विधियों की केवल अशुद्धि ठीक कर दी जावें।

२. आचार्य रामदेव जी संस्कार-विधि मे संशोधन नहीं होना चाहिये, यदि दूसरी संस्कार-विधि छापना चाहें तो उसमे प्रचलित विधि लिखकर अपनी सम्मति फुट-नोट मे देकर लिख सकते हैं।

३. पं० जयदेव जी शर्मा मीमांसातीर्थ

संस्कार-विधि को ५-७ विद्वानों को, उचित टिप्पणियों सहित संशोधन करने के लिए देना चाहिये। संस्कार-विधि मे लिखी प्रत्येक बात की सप्रमाण प्रतीक फुटनोट मे हो। फिर किन्हीं ३ या ५ व्यक्तियों की सम्मति से उन के संशोधनों व फुट नोटों पर विचार होकर उसका प्रकाशन होना चाहिये।

४. पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति

भाषा, मन्त्र, पाठादि विषयक संशोधन होना चाहिये। विधियों मे मौलिक परिवर्तन करने का हमे अधिकार नहीं है।

स्पष्ट है कि इन विद्वानों की सम्मतियों का बहुपक्ष सन् १९३४ ई० की धर्मार्य सभा के निश्चयों का समर्थन करता है और संस्कार-विधि के संशोधन का समर्थक है।

(७) इतने कार्य हो जाने के बाद, आगे संस्कार-विधि का संशोधन किस प्रकार किया जावे, यह विषय मई १९३८ ई० को धर्मार्य सभा मे पेश हुआ और उसमे पर्याप्त वादविवाद के बाद श्री० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने प्रस्ताव किया कि १९३४ ई० की धर्मार्य सभा की नीति के अनुसार कार्य किया जावे। और इसमे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने एक संशोधन के द्वारा यह चाहा कि विधि मात्र का आवश्यक संशोधनों के साथ, एक पृथक् संस्करण तैयार किया जावे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का असल मे संशोधन नहीं, अपितु परिवर्द्धन था।

अर्थात् प० ब्रह्मदत्त जी जो चाहते थे वह सब किया जावे, उसके सिवाय यह काम, पृथक् विधि बनाने का और किया जावे । इस समय इसी परिवर्द्धन के विरुद्ध आन्दोलन है । परन्तु आन्दोलन करनेवाले, इस वक्तव्य के पढ़ने के बाद, अपनी भूल का अनुभव करेंगे । १९३८ की इस बैठक में केवल ११ विद्वान् उपस्थित थे, जिनमे से सभापति को छोड़कर, परिवर्द्धन के अनुकूल और प्रतिकूल ५-५ विद्वान् सम्मति लेने पर, निकले। अब सभापति की सम्मति पर परिवर्द्धन की स्वीकारी अथवा अस्वीकारी निर्भर थी। सभापति यदि परिवर्द्धन के विरुद्ध सम्मति देता तो उसका फल यह होता कि परिवर्द्धन गिर कर असल प्रस्ताव १९३४ वाला ज्यों-का-त्यों रह जाता और इसके अनुसार (देखो इस वक्तव्य के धारा ३ की उपधारा ४) समस्त संस्कार-विधि के जिस स्थल के लिए भी कोई विद्वान् चाहता संशोधन पेश कर सकता था और यदि संशोधन स्वीकार हो जाता तो इसी प्रचलित संस्कार विधि मे संशोधन होजाता और यह संशोधित सस्कार-विधि ऋषिदयानन्द के नाम ही से प्रचलित रहती । परन्तु परिवर्द्धनके हक़मेंसभापति के सम्मति देने का फल यह हुआ कि सन् १९३४ ई० वाला उपधारा ४ मे अङ्कित प्रस्ताव रद्द होगया और केवल विधि मात्र बनाने का काम जारी रह गया और यह जो विद्वान् बनाता उसी के नाम से छपती । ऋषि दयानन्द की जिम्मेदारी उसके सम्बन्ध में कुछ न होती । इसलिए सभापति ने उचित रीति से, अधिकाश विद्वानों की सम्मति का मान करते हुए, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, और जो सशोधन के हक मे थी, अपनी सम्मति परिवर्द्धन के अनुकूल दी ।

जो विद्वान सस्कार-विधि में अङ्कित विधि का, किसी प्रकार से भी, परिवर्तन नहीं चाहते थे उन्हें चाहिये था कि १९३८ की इस बैठक में यही प्रस्ताव पेश करके १९३४ के प्रस्ताव को रद्द कराते, परन्तु उन्होंने ऐसा न करके उसी के समर्थन और कार्य में लाने का प्रस्ताव किया, जिसका मतलब यह हुआ कि वे स्वय संस्कार-विधि के विधि आदि का संशोधन चाहते हैं। अब मैं ऐसे विद्वानों को सलाह देता हूँ कि वे ध्यानपूर्वक इस वक्तव्य को पढ़ें और जो आन्दोलन, उन्होंने इस परिवर्द्धन के विरुद्ध, समस्त हालात की जानकारी न होने, से उठा रखा है, उसे बन्द करें और साफ शब्दों में धर्मार्य सभा में यह प्रस्ताव भेजें कि वे किसी प्रकार का संशोधन संस्कार-विधि में नहीं चाहते, इसलिए प्रशंसित सभा इससे संबन्धित १९३४ और १९३८ के समस्त प्रस्तावों को रद्द करदे। इस प्रकार का प्रस्ताव आने पर वह धर्मार्य सभा के भावी अधिवेशन मे पेश किया जावेगा, और सभी विद्वानों को एक बार फिर इस विषय पर विचार करने का अवसर मिलेगा ।

नारायण स्वामी
प्रधान—धर्म्मार्य्य सभा

ऋषि दयानन्द और वेद भाष्य शैली

लेखक—आचार्य पं० चन्द्रकान्त जी . तथा —श्रीमती सुशीलादेवी विद्यालङ्कृता त्रिवेदी

(अप्रैल के अङ्क के आगे)

प्रथम विशेषता—(१) स्वामी दयानन्दजी के भाष्य मे यौगिक शैली को प्रमुखता दी गई है। यद्यपि सायण, उव्वट, महीधर आदि भाष्यकारो ने भी कहीं-कहीं यौगिक अर्थ करडाले हैं, तथापि इस शैली का इन्होंने इतना निर्वाह नहीं किया है जितना प्राचीन काल के ऋषियों ने और आधुनिक समय में महर्षि दयानन्द ने। इस विषय में महर्षि की शैली पूर्ण रूप मे निरुक्तकार यास्क के अनुसार है। इस शैली का ब्राह्मण-ग्रन्थों,उपनिषद्, आरण्यक ग्रन्थ-तथा प्राय समस्त भाष्यकारों ने आदर दिया है। इसलिए हमें स्वामि-भाष्य को समझने के लिए यौगिक अर्थ पर विशेष मनन करना चाहिये।

वैदिक शब्द यौगिक होते हैं (शब्द प्रकार)

आख्यात या नाम जिनसे कि प्रत्यय किया जाता है, वैयाकरण उसे प्रकृति कहा करते हैं। जो शब्द प्रकृति और प्रत्यय* की उपेक्षा करके केवल समुदाय शक्ति से अपने वाच्य पदार्थ को सूचित करता है उसे रूढ़ कहते हैं। तथा जो

उपर्युक्त विषय की पुष्टि में कारिकावली का निम्न सन्दर्भ देखने योग्य है—

(१) शक्तं पदं चतुर्विधम्। क्वचिद्यौगिकं क्वचिद्योगरूढं क्वचिद्यौगिकरूढम्। तथा हि यत्रावयवार्थ एव बुध्यते तद्यौगिकम्, यथा पाचकादिपदम्। यत्रावयवशक्तिनैरपेक्ष्येण समुदायशक्तिमात्रेण बुध्यते तद्रूढम्। यथा गोमण्डपादिपदम्। यत्र त्ववयवशक्तिविषये समुदायशक्तिरप्यस्ति तद्योगरूढम्। यथा पङ्कजादिपदम्। तथा हि पङ्कजपदमवयवशक्त्या पङ्कजनिकर्तृत्वरूपमर्थं बोधयति। समुदायशक्त्या च पद्मत्वेन रूपेण पद्मं बोधयति। यत्रावयवार्थरूढ्यर्थयोः स्वातन्त्र्येण बोधस्तद्यौगिकरूढम्। यथोद्भिदादिपदम्। तत्र ह्युद्भेदकर्ता तरुगुल्मादिरपि बुध्यते यागविशेषोऽपीति।

(२) शब्दशक्ति प्रकाशिका में—"योगलभ्यार्थमात्रस्य बोधकं नाम यौगिकम्।

समासस्तद्धितानाम्ना कृदन्तश्चेति तत्त्रिधा।
रूढं सङ्केतवन्नाम सैव संज्ञेति कीर्त्यते॥

तथा च यन्नाम स्वावयववृत्तिलभ्यार्थेन सम स्वार्थस्यान्वयाभावकृत् तन्नाम योगरूढम् यथा पङ्कज-कुम्भसर्पाश्वमादि तद्धि स्वान्तर्निविष्टानां पङ्कादिशब्दानां वृत्तिलभ्येन पङ्कजनिकर्त्रादिना सम स्वशक्यस्य पद्मादेरन्वयानुभावकम् पङ्कजनिकर्तृ पद्ममित्यनुभवस्य सर्वसिद्धत्वात्।

शब्द यौगिक होते हैं (भाषा-विज्ञान)

(१) वैयाकरण लघुमञ्जूषा में भी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

भाषा शास्त्रियों का कथन है कि हरएक भाषा

शब्द प्रकृति और प्रत्यय इन दोनों अर्थों की अपेक्षा करता हुआ समुदाय शक्ति से वाच्य अर्थ को बताता है उसे योगरूढ़ कहते हैं। दार्शनिक लोग शब्द का एक स्वभाव बताया करते हैं कि शब्द पहले-पहले अपने वाच्य अर्थको योगवृत्तिसे कहता है फिर धीरे-धीरे जब उसका वह अर्थ स्थिर सा हो जाता है तब दोनों वृत्तियों से योगरूढ़ कहा जाता है फिर चिरकाल के अनन्तर अति प्रख्यात होने पर योगवृत्ति को छोड़ कर केवल रूढ़ वृत्ति से वाच्य अर्थ को सूचित करता है इस प्रकार जो शब्द अपने वाच्य अर्थ को योगवृत्ति से कहे वह यौगिक, जो योग और रूढ़ दोनों वृत्तियों से कहे वह योगरूढ़ और जो कि योगरूढ़ मध्यम तथा यौगिकवृत्ति उत्तम तथा श्रेष्ठ. केवल रूढ़वृत्ति से अपने अर्थ को बताये उसे रूढ़ समझना चाहिए। तीनों वृत्तियों में रूढ़ वृत्ति अन्तिम और जघन्य है। है अत यह यौगिकवृत्ति विशेष आदरणीय है।

वैदिक शब्द यौगिक वा योगरूढ़ होते हैं इस बात को यास्क, गार्ग्य आदि अनेक विद्वान् स्वीकार करते हैं। यास्क और शाकटायन तो रूढ़ शब्दों को भी यौगिक मानने मे तुले हुए हैं।

प्रारम्भ मे धातु-अवस्था में होती है। प्रारम्भ में भाषाओं के शब्द प्राकृत तथा प्रत्यय के योग से नहीं बनते हैं, वे प्रकृति रूप ही होते हैं। इन प्रकृतियों में से कुछ दूसरी प्रकृतियों के साथ मिलकर ह्रास होते-होते प्रत्यय बन जाते हैं। फिर इन प्रत्ययों की अलग-अलग कल्पना कर ली जाती है। वास्तव मे शब्द-मात्र ही धातु रूप होते हैं। धातु गुणों का द्योतन करती है क्योंकि प्रत्येक शब्द किन्हीं गुणों के कारण प्रवृत्त होता है। अतः उन गुणों के आधार मूल द्रव्य की धातुरूप मे कल्पना कर ली जाती है। गुणवाचक शब्द में से कुछ शब्द बहुधा विशेषकर पदार्थों के लिए प्रयुक्त होने से योग रूढ़ि हो जाते हैं। कुछ सदैव यौगिक ही बने रहते हैं। परन्तु भाषा में जब यौगिक अर्थ को द्योतन करनेवाला प्रयोग छूट जाता है तब शब्द सर्वथा रूढ़ि बन जाता है। इस रूढ़ि अवस्था का विकृत रूप तब हो जाता है जब कि उसके घटक अवयव चिन्तन से भी समझ में नहीं आते। जैसे अँग्रेज़ी के ज्यॉर्ज (George) आदि शब्द। परन्तु यह बात ठीक है कि शब्द आरम्भ २ में धातुओं से ही बनता है। धातुओं का अर्थ ही उसका वास्तविक अर्थ होता है। यही यौगिक अर्थ कहाता है यहां पर पाश्चात्य तथा कुछ पौरस्त्य विचारकों का कहना है कि (रूढ़िर्योगोद् बलीयसी) शब्द का रूढ़ि अर्थ ही आवश्यक होता है। धुनी, नदी शब्द जब बने थे तब इनके आधार में 'नदन' (आवाज़) काम कर रहा था परन्तु ये नाम इतने परिचित हो गये हैं कि प्रारम्भिक योगिक अर्थ का ख्याल किये बिना ही काम चल सकता है। धातु-अर्थ (Root-meaning) पर बल नहीं देना चाहिये। परन्तु हमारा यहाँ पर यह कथन है कि रूढ़ि अर्थ लेने से इन्कार हम भी नहीं करते; परन्तु रूढ़ि वेद की अपनी ही होनी चाहिये। प्रवाही योगिक अर्थ को घनीभूत करने के लिए वेद मन्त्रों का ही आश्रय लेना चाहिये। जब तक यह आश्रय पूर्ण रूप से नहीं लिया जाता है, तब तक यौगिक अर्थ करना ही उचित है।

गार्ग्य इतनी दूर तक नहीं जाते वे वैदिक शब्दों को यौगिक मानते हैं। इस विषय पर अधिक प्रकाश के लिये प० गुरुदत्तजी विद्यार्थी की १'Terminology of the Vedas' का एक उद्धरण हम नोट में देते हैं ताकि पाठक इस विषय का महत्व समझ सकें।

अन्य विद्वानों वा शास्त्रों की सहमति

इस विषय में यास्क आदि आचार्यों के कुछ उद्धरण भी यहाँ प्रस्तुत करते हैं—

(क) यास्क और शाकटायन—तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनो नैरुक्त समयश्च न सर्वाणीति गार्ग्यो वैयाकरणानाञ्चैके।" यह लिखते हुए यास्क ने शब्दों को यौगिक स्वीकार किया है। इसके अग्रिम लेख से यौगिक-मत-विरोधी गार्ग्य की सात युक्तियों का 'तदेतन्नोपपद्यते' (नि० १।१२) इस उपष्टंभ से खण्डन करते हुए यौगिक मत को ही पुष्ट करते हैं। उन युक्तियों में यौगिक अर्थ पर किये जाने वाले समस्त आक्षेपों का सुन्दर समाधान हैं।

(ख) महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि-अष्टाध्यायी ३।३।१ "उणादयो बहुलम्" सूत्र पर निम्न कारिकायें आती हैं—

"बाहुलक प्रकृतेस्तनुदृष्टेः प्रायसमुच्चयनादपि तेषाम् कार्यसशेष विधेश्च तदुक्तं नैगमरूढिभवं हि सुसाधु नाम च धातुजमाह निरुक्तेव्याकरणेशकटस्य च तोकम्

१—इनकी पुस्तक में से देखा जा सकता है।

A yogik word is one that has a derivative meaning ...

यत्र विशेष पदार्थ समुत्थं प्रत्ययत प्रकृतेश्च तदूह्यम्।
संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे,
कार्याद्विद्यादनुबन्ध मेतच्छास्त्रमुणादिषु॥

इन श्लोकों से निम्न आशय निकलते हैं—

(१) "उणादयो बहुलम्" मे बहुल शब्द इस लिये कहा है कि इसके द्वारा

(क) जिन धातुओं, से उणादि प्रत्यय नहीं किये गये उनसे भी प्रत्यय हो सकते हैं। जैसे 'इष्' धातु से उलच् प्रत्यय तो उणादि पठित है लेकिन 'शक्' धातुसे 'उसका विधान नहीं है। "बहुलम्" के द्वारा इस स्थान पर भी 'उलच्' हो जाता है।

(ख) जो प्रत्यय किसी धातु से नहीं कहे गये वे 'बहुल' ग्रहण से हो जाते हैं।

(द) से इष्णुच् प्रत्यय तो होता है पर 'वेष्ण.' में 'इष्णच्' भी किया गया है।

(ग) सूत्रों से आप्राप्त कार्य भी हो जाते हैं। अप्+वन्=अप्वा यहाँ पर सूत्र के बिना भी ह्रस्व अकार निष्पन्न होता है।

उपर्युक्त स्थलों पर यह जिज्ञासा पैदा हो सकती है कि 'बहुल' शब्द के ये परिवर्तन क्यों करें? भाष्यकार का कथन है कि वैदिक और लौकिक शब्द भली भाँति सिद्ध हो सकें। अपर्याप्त उणादिगण को 'बहुलम्' कह कर पूर्ण किया गया है।

(२) भाष्यकार 'नैगम' शब्द को लौकिक से पृथक् करके उन्हें भी यौगिक मानते हैं। अत

यदि वैदिक शब्द उणादिगण से न बनें तो बहुल ग्रहण से प्रकृति प्रत्यय लगा कर बना लेने चाहिये।

(३) सब निरुक्तकार और वैयाकरणों में शाकटायन नामों को यौगिक वा योगरूढ़ मानते हैं। जहा न पता चले वहा प्रत्यय से धातु की और धातु से प्रत्यय की कल्पना करने की इजाजत अनुमति देते हैं।

उपर्युक्त लेख से स्पष्ट है कि शब्द शास्त्र के आचार्य महर्षि पतंजलि भी वैदिक शब्दों को यौगिक ही मानते हैं। और लीजिये—

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मण ग्रन्थ भी वैदिक शब्दों को यौगिक ही मानते हैं—

(१) श० प० ब्रा० १४।८।४।१ "तदेवत् त्र्यक्षरं हृदयमिति—'हृ' इत्येकमक्षरम् 'य' इत्येकमक्षरम् यहा पर 'हृदय' को 'हृञ् हरणे (रक्त का ग्रहण करने से) 'या दाने' (खून को शरीर में देने से), "इण् गतौ" (लहू का संचार करने से) इन धातुओं से बनाते हुए 'हृदय' शब्द की यौगिक व्याख्या की है।

(२) ऐ० ब्रा० ६।५।६ में "अग्निर्वै परिक्षित्—अग्निर्हीयाः प्रजाः परिक्षेति अग्निमिमा प्रजा. परिक्षियन्ति……संवत्सरो वै परिक्षित संवत्सरो हीयाः प्रजा. परिक्षेति, संवत्सरं हीमाः प्रजाः परिक्षियन्ति"

इस उदाहरण में 'अग्नि' और 'सवत्सर' को ब्राह्मणकार ने स्पष्ट यौगिक आधार पर (परित. निवसत क्षियति निवसति तथा परित क्षियन्त्येनम्) "परिक्षित्" कहा गया है।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण ब्राह्मण ग्रन्थों में मिल सकते हैं (स्वय वेद की अन्त. साक्षी से भी बताया जा सकता है कि वैदिक शब्द यौगिक ही है)

सायण आदि

(घ) इसके अतिरिक्त आचार्य (१)सायण, (२)महीधर तथा उव्वट आदि भी शब्दो को यौगिक स्वीकार करते हैं। यह बात हमने इनकी भाष्यशैलियोंका विवेचन करते हुए स्पष्ट करदी है।

आधुनिक विद्वान

(ङ) इस विषय में आधुनिक विद्वानों की सहमति प्राप्त की जा सकती है—

(१) योगी अरविन्द घोष की बहुमूल्य सम्मति 'Dayanand the man and his Work'नामक पुस्तक के १६वें पृष्ठ में देखी जा सकती है। समयाभाव से उद्धृत नहीं कर सके हैं। —क्रमश.

---

(१) ऋ० १।१०५।१७ में 'त्रित' को एक ऋषि का नाम बतलाया है परन्तु ऋ० १।११२।२ में 'त्रित' का अर्थ 'पृथिव्यादिषु त्रिषु स्थानेषु वर्तमाना.' 'तीर्णतमो वा वायुः' किया गया है।

(२) ऋ० ८।८।१८ में 'प्रियमेधा' का अर्थ 'एतत् संज्ञा ऋषयः' किया गया है पर ऋ०१०।७४।१ प्रियमेधाः' का अर्थ किया गया है जो कि सूर्य-रश्मियों का विशेषण है।

हमारी संस्कृति और जीवन की फिलासफी

(प्रो० डाक्टर प्रभुदत्त जी शास्त्री आई० ई० एस०)

हम बहुधा सांसारिक सफलताओं तथा धन-वैभव इत्यादि को सभ्यता समझ बैठते हैं। सभ्यता के मूल्य की कसौटी यह नहीं है कि प्रकृति पर हमारा बहुत ज्यादा आधिपत्य है तथा भोग-विलास की हमारे पास प्रचुर सामग्री है। आज भले ही संसार इस बात की शेखी बघारे कि हमने विज्ञान के द्वारा प्रकृति पर बहुत ज्यादा विजय प्राप्त की हुई है और हम सभ्य और उन्नत हैं। परन्तु यह सब संस्कृति नहीं है। बाह्य संसार की शान्ति भले ही हमारी सभ्यता की सूचक हो परन्तु इस सभ्यता को संस्कृति नहीं कह सकते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से हम बहुत अवनत हैं। हमारे आध्यात्मिक जीवन के विकास से ही हमारी संस्कृति का परिचय दिया जा सकता है। आज की तथाकथित सभ्यता मनुष्य के केवल बाह्य जीवन से सम्बन्ध रखती है।

आज हम अपने सिद्धान्तों की बहुत डींग मारना सीख गये हैं। यह हानिकारक है। यदि हम अपने सामने उज्ज्वल भविष्य लाना चाहते हैं तो, हमें अपने सिद्धांतों को क्रिया में लाकर उन्हें जीवित बनाना होगा।

हमारी संस्कृति की स्प्रिट क्या है? क्या यह सम्भव नहीं है कि इसकी स्प्रिट को हम पुनर्जीवित करके संसार की संस्कृति और शान्ति में अधिक से अधिक योग देवें। अवश्य ही हम ऐसा कर सकते हैं परन्तु हमें जीवन की अपनी फिलासफी को नहीं भुलाना होगा। हमारी संस्कृति ने आत्मिक जीवन की माँगों को सदैव सबसे अगली पंक्ति में स्थान दिया है। आत्मिक जीवन भीतर से हमारा निर्माण करता है और हमारे तमाम जीवन को बदल देता है। इस परिवर्तन के द्वारा हम भेद-भावों और लड़ाई-कलहों से ऊपर उठकर अपनी हस्ती की गहराई को अनुभव कर लेते हैं। हम में से प्रत्येक में दिव्य शक्तियाँ हैं। हमें केवल उन्हें अनुभव करना और अपने जीवन में चरितार्थ करना होता है। हमारी संस्कृति का यही वास्तविक कार्य है।

हम अपने सिद्धांतों के सम्बन्ध में कितनी ही लम्बी-चौड़ी बातें कर सकते हैं, परन्तु जब तक हम उन्हें क्रिया में नहीं लायेंगे और अपने व्यवहार में अपने आत्मिक जीवन की गहराई को प्रकट नहीं करेंगे तबतक उन्नति सम्भव नहीं। वेदों, उपनिषदों तथा अन्यान्य धर्मग्रन्थों में आत्मिक उन्नति और जीवन की फिलासफी के बहुमूल्य कोष भरे हुए हैं। हममें से प्रत्येक धार्मिक सिद्धांतों का विद्यार्थी बन सकता है। उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता है, परन्तु उन सिद्धांतों के शिक्षण का कार्य्य उन्हीं

को मिलना चाहिये जो गम्भीर हों तथा जो स्वयं उन सिद्धान्तों को क्रिया में लाते हों। जब तक यह नहीं होता है तब तक आशा नहीं कि शान्ति की रक्षा के सम्बन्ध में राजनीति के पंडित फिलासफरों और विद्वानों से परामर्श करेंगे। आज संसार शान्ति के लिए तरस रहा है, परन्तु जब तक पाखंड, सन्देह, नैतिक माहिद्रों, घृणा, ईर्ष्या और स्वार्थपरता से स्वतन्त्रता जकड़ी हुई है, तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती है। आत्मिक-जीवन सत्य, ईमानदारी, सचाई और सद्भाव का तकाजा करता है। इन बातों की पूर्ति हो रही है क्या यह कहा जा सकता है?

हम सबको स्वाध्याय और आत्म-संयम को विकसित करके निष्काम लोक-सेवा के महान आदर्शों की पूर्ति का यत्न करना चाहिये और अपने वचनों और कर्मों में सादृश्य रखना चाहिये। यही उन्नति का मार्ग है और यही शान्ति का मार्ग है।

—※—

सन्थाल परगने में प्रचार तथा पहाड़ियों की समस्या

[श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ, मुंगेर]

संथाल परगना मे विशेषत: दो प्रकार की जगली जातियें पाई जाती हैं। एक पहाड़िया और दूसरी सन्थाल। सन्थाल लोग पहाड़ की तराई में रहते हैं और पहाड़िया लोग पहाड़ पर। पहाड़िया लोग पहाड़ पर ही खेती-बारी आदि सब कुछ करते हैं। पहाड़पर आम, कटहल, केला, शरीफा, अमरूद पपीता, बास, सावे, ककोरी आदि बहुतायत से पाये जाते हैं।

पहाड़ियों में दो भेद हैं। एक सौर्य पहाड़िया, और दूसरा माल पहाड़िया। अत्रिपुत्र सोम (चन्द्र) से सम्बन्ध होने के कारण जिससे महाराज युधिष्ठिरने जन्म लिया वे अपने को माल पहाड़िया कहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि कालान्तर में सूर्य वश और चन्द्र वश के क्षत्रिय लोग इधर पहाड़ों में वास करते थे। पुरुष लोग शिर पर सिक्खों की तरह केश रखते हैं। उन केशों का वे लोग शिर के मध्य में खोपा बना लेते हैं। कुछ लोग शिर पर चोटी रखते ह, थोड़ेसे लोग बगाली हिन्दुओं की तरह बिना शिखा के हैं। ये लोग धोती, कुर्ता, मुरेठा, पगड़ी आदि धारण करते हैं। पहाड़िया स्त्रिया केवल दो वस्त्र एक साड़ी और दूसरा उत्तरीय (उपरना) रखती है। कोई २ चोली कुर्ती भी पहनती हैं। मुसलमानी शासन काल का चिन्ह कुछ स्त्रियों के कानों में बाली (कर्णभूषण भेद) भी दिखलाई देती है। पहाड़िया लोग सन्थालों से अधिक हिन्दी समझते हैं और खूब बोलते हैं। इनकी भी एक भाषा है जो सन्थाली से भिन्न है, जिसको पहाड़िया कहा जाता है, इसमें संस्कृत के शब्द बहुत पाये जाते हैं। ये लोग सन्थाली भी बोल तथा समझ लेते हैं। वर्ष के अन्त में भैंसे के द्वारा ये लोग काली की पूजा और कहीं चर्खे तथा ध्वजा की भी पूजा करते हैं। चर्खे की पूजा में आदमी को बास पर लटका कर नचाते हैं। बाकी बातें सन्थालों के समान ही हैं।

सन्थालों में वासुकि, तक्षक वेशरा इन्सदा, किष्कु आदि बारह गोत्र भेद हैं। इसी तरह की एक महुली जाति भी है, जो बास से सूप दौरी आदि बना कर जीविका करती है। इन सबों के गोत्र भी सन्थालों से बिलकुल मिलते हैं। ये सभी लोग गोत्र बचाकर विवाह करते हैं और मुर्दों को जलाते हैं। पहाड़ियामें से कोई २ गाड़ भी देते हैं। इसके अलावा और भी धागर, खरवार कोड़ा कोल आदि जातिया बहुत ही अल्प संख्या में हैं। सबों की अपेक्षा पहाड़िया लाग बहुत कम ईसाई हुए हैं।

कुछ को छोड़कर प्रायः ये लोग गरीब बहुत हैं। इन लोगों में शराब का व्यसन अधिक पाया

आता है। जगह २ शराब की भट्टियें खुली हुई हैं जिनमें ये लोग अपने पैसे को पानीकी तरह बहाकर और भी गरीबी बुला रहे हैं। बिहार सरकार के स्वास्थ्य तथा आबकारी विभाग के मन्त्री श्रीजगलाल चौधरीजी को इधर ध्यान देना चाहिए। इस वर्ष के अन्दर, नहीं तो आगामी १९३९ ई० में तो अवश्य ही इस सथाल परगना जिलामें शराब बन्दी कानून लागू हो जाना चाहिए और जहाँ कहीं भी सन्थाल आदि जंगली जातियों की आबादी मुंगेर, भागलपुर, पुर्णिया आदिमें है शराब सर्वथा बहुत शीघ्रही बन्द होजानी चाहिये। जिसके पीछे ये लोग और तबाह न हों। एक तो ये लोग यों ही गरीब हैं इस पर शराब की भट्टियों ने इनको और भी पायमाल कर दिया है।

पहाड़िया लोगों को पढ़ने की चाह बहुत किन्तु पहाड़ पर कहीं कोई स्कूल नहीं है, जो कुछ भी बोर्ड तथा ईसाई मिशन का स्कूल है, वह पहाड़ के नीचे और बहुत दूर है, जहाँ पर उनके बालकों का जाना ही मुश्कल है। शिक्षा मन्त्री तथा शिक्षा विभाग के अधिकारियों को इधर विशेष ध्यान देना चाहिये। सुनने में आया है कि इसके लिये सरकार से रुपये मिले हैं किन्तु कुछ परिणाम देखने में नहीं आता है। ये रुपये उन स्कूलों खर्च होते हैं, जिनमें पहाड़िया लोगों को कुछ लाभ नहीं होता। सरकारने इस जिले को दामिनीइकोह (अवदी) बनाकर अन्य लोगों का प्रवेश रोककर ईसाई मिशनरियों को छूट देकर इन लोगोंको सब सुधारों से वंचित कर रखा था तथा रखा है। इधर कांग्रेसी मन्त्रिमंडल हो जाने से कुछ सुविधा मिल गई है, अन्यथा पहले अवदी इलाके में पैर रखना ही कठिन था, तो भी अभी बहुत सुधार की जरूरत है। अभी भी यहां अविद्या देवी तथा अत्याचार और अनाचार का ही साम्राज्य है जिसके दूर करने के लिये वर्तमान सरकार को बहुत शीघ्र ही प्रयास करना चाहिये नहीं तो दीपक तले अन्धेरा वाली लोकोक्ति चरितार्थ होगी।

इस जिले में ईसाई मिशनरियों का जाल सा बिछा हुआ है। इस समय चार मिशनरियों का काम जोरों पर है, सीएम्स और दीप्तिमिशन, अमेरिकन और जर्मनमिशन। इनमें से सीएम्स और दीप्तिमिशन पोटेस्टेंटों का और शेष रोमन कैथोलिक ईसाइयों का है। इनमें सबसे बड़ा सीएम्स है और इस पर वृ० सरकार की कृपा दृष्टि भी है। इसका मुख्य केन्द्र बड़हरवा धर्मपुर में है, जहां पर १६० सथाल बालिकाओं को भोजनादि के साथ एम० बी० तक शिक्षा दीक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त तालझरी, पथरा, हिरण्यपूर, भगैया, वरियो बड़ेत आदि स्थानों में भी केन्द्र हैं। इन सारे स्थानों में स्कूल, दवाखाना आश्रम और गिर्जा घर बने हुए हैं। पथरा में जंगली कन्याओं का अपर तक तथा बालकों का वहां और तालझरी में एम० ई० तक पढ़ने प्रबन्ध है। अन्य स्थानोंमें छोटे २ स्कूल हैं। दीप्ति

विवाह में माता की छः पीढ़ियाँ क्यों छोड़ी जाती हैं ?

[लेखक—स्व० श्री मा० आत्माराम जी अमृतसरी]

मनु महाराज का कथन है कि 'जो लड़की माता की छः पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हों वही द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) के लिये विवाह करने में श्रेष्ठ है।

अनेक मनुष्य शङ्का करते हैं कि जिस प्रकार पिता का गोत्र छोड़ा जाता है उसी प्रकार माता का कुल छोड़ देना चाहिये। केवल छः पीढ़ी छोड़ने की आज्ञा मनु ने क्यों दी ? यदि माता की छः पीढ़ी छोड़नी हैं तो पिता की भी छः पीढ़ी ही छोड़नी चाहिए थीं।

इस तर्क के उत्तर में हम कहेंगे कि यदि पिता के गोत्र की नाईं माता का कुल छोड़ा जाय तो सब से उत्तम होगा, परन्तु माता की छः पीढ़ियों को छोड़ देने से वे दोष जो रक्त में आते हैं दूर हो जाते हैं, इसलिए न्यून-से-न्यून छः पीढ़ियाँ छोड़ देना ही पर्याप्त है। पिता का गोत्र सर्वथा छोड़ना आवश्यक है, क्योंकि माता-पिताके रक्त का एक सा प्रभाव नहीं होता है जो कि वीर्य की प्रधानता है। इसीलिए पिता के गोत्र को सर्वथा छोड़ने की मनु ने शिक्षा दी है। बड़े-बड़े डाक्टरों की सम्मति है कि माता की प्रकृति रक्षा करने की है और पिता की प्रकृति मुख्य प्रभाव पहुँचाती हुई योग्यता तक मे परिवर्त्तन करदेती है। डाक्टरों की यह सम्मति मनु जी की शिक्षा का सम्यक्तया समर्थन करती है।

मिशन का मिर्ज़ा चौकी और साहबगंज में अनाथ विधवाश्रम और दवाखाना है। एक छोटा सा आश्रम पहाड़िया ग्राम पचरुखी में है जहा एक पादरी रह कर पहाड़िया मे घूम घूम कर प्रचार करता है। रोमन कैथोलिकों का गोकुला में एक वृहद् आश्रम है जहा २५० संथाल बालक बालिकाओं को भोजन वस्त्रादि के साथ एम० ई० तक पढ़ने पढ़ाने का प्रबन्ध है यहां इसकी जमीन्दारी भी है, इसके अलावे तोरोई दुमका, गुल्लाजोड़ी आदि स्थानों में भी इसके केन्द्र हैं जहा पर भी स्कूल, दवाखाना, आश्रम, गिर्जाघर बने हुए हैं। ये सारे के सारे जगली हिन्दुओं को मटियामेट करने के लिये दिन रात संलग्न हैं। इस ज़िले में बढ़हरवा, साहबगंज और पथरगामा आर्य समाज स्थापित है जिसके द्वारा उन जगली जातियों में सुधार कार्य हो रहा है। कुछ दिनों से इन लोगों में सुधार सम्बन्धी कार्य के लिये आर्य उपप्रतिनिधि सभा भागलपुर कमिश्नरी का सगठन हुआ है ? जिसमें सभी स्थानों के संथाल सेवाश्रम सन्थाल सुधार समिति और आर्य समाज सम्मिलित है। हिन्दू मिशन के द्वारा भी इन जंगली जातियों में काम होता है।

रियासत हैदराबाद की धारासभा में

हिज एक्सिलेन्सी रा० आ० नवाब हैदरनवाजजग प्रधान शासन सभा रियासत हैद्राबाद का

भाषण

धारा सभा के सज्जनो !

गतवर्ष मैने यह आशा दिलाई थी कि "भविष्य में ऐसे बहुत से अवसर आयेंगे, जब कि मै आप के साथ विचार परिवर्तन तथा वादविवाद मे भाग ले सकूगा", मुझे अब इस बात की खुशी है कि मै आज आपके साथ हूँ और आप का स्वागत कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आपका यह अधिवेशन बहुत सफल सिद्ध होगा।

प्रस्तुत अधिवेशन मे आपको कई कानून के मसवदों पर विचारना हागा, जिन मे से कुछ गैर सरकारी सभासदों ने पेश किये हैं। दूसरे सरकार द्वारा पेश किये गये है। उन में से तीन को हिज एक्आलटेड हाइनेस को अनुमति प्राप्त हो गई है। और अब वे रेगुलेशन (Regulation) के रूप में स्वीकृति प्राप्त कर चुके हैं। जैसा कि मैंने गतवर्ष वायदा किया था यह तीनों रेगुलेशन जो उनकी शीघ्र आवश्यकता के कारण घोषित कर दिये गये हैं वे निश्चित काल तक प्रचलित रहेंगे और इस काल के पहले तीन महीनो में ही वे आप के विचारार्थ पेश कर दिये गये हैं।

यह तीनों रेगुलेशन विस्तारपूर्वक किये गये अनुसधान का परिणाम हैं।

पिछली बार जब हम यहाँ एकत्रित हुए थे उस समय से हैदराबाद शहर तथा रियासत के जिलों में साम्प्रदायिक दगे हुए हैं, जो उस बाढ़ की केवल एक लहर थे, जिस मे कुछ प्रात भी कम प्रभावित न हुए उनके पीछे जो स्पिरिट काम कर रही है वह हमारी परम्परागत रूढ़ियों के के लिये एक अनोखी चीज है और यद्यपि मै उन कुछ व्यक्तियों को जो इस रियासत के रहने वाले है, और जिन मे इस विष का सचार हो गया है। उन्हे इस को फैलाने की जुम्मेवारी से बिलकुल अलग नहीं समझ सकता। मुझे इस मे सदेह नहीं कि यह विष न तो पूर्णतया और अधिकतया स्थानीय जनता का उत्पन्न किया हुआ है नि.सदेह यह उन की उस भ्रातिमूलक धारणा पर निरधारित है कि अपने सम्प्रदाय की सेवा का यही सर्वोत्तम उपाय है। साथ ही वे धर्म तथा राजनीति में सम्प्रदायिकता का समावेश करके वह समस्याओं को और भी पेचीदा कर रहे हैं और उन्नति के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं।

आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि साम्प्रदायिकता तथा धर्म, साम्प्रदायिकता तथा राजनीति में भली प्रकार भेद करने का समय आ गया है। इस रियासत के सब धर्मों की व्यावहारिक स्वतन्त्रता को बनी रखने के लिए और उसकी जनता की वैधानिक उन्नति के हितार्थ इस प्रकार का भेद करना आवश्यक है यद्यपि वह धार्मिक स्वातन्त्र्य जिसका एक के पश्चात् दूसरे आसफिया शासकों ने अपनी राजघोषणाओं (फरमान) द्वारा विश्वास दिलाया है अवश्य ही उसी प्रकार वास्तविक तथा जीवित अवस्था में रहेगा जैसा कि सदा रहा है। कोई भी सरकार इन लोगों की कार्यवाहियों से तटस्थ न रह सकती जिन्होंने जानबूझ कर धर्म का प्रचार तथा उसके आचरण को साम्प्रदायिक विषारी विचारों को फैलाने का केवल एक बहाना बना लिया है। अत: धार्मिक स्वतन्त्रताके अपसरण (हरण) का यदि कोई अवसर उत्पन्न हो तो उस का उत्तरदायित्व पूर्णतया उन्हीं पर होगा, जो उसका दुरुपयोग करने के दोषी हैं, और जब तक वे यह न दिखला दें कि प्रचार तथा आचरण दोनों में वे उन अनेक अन्य लोगों की तरह जो शांतिप्रिय रीति से प्रचार तथा आचरण करते हैं और उनकी दृष्टि में भी केवल धार्मिक उद्देश हैं, तब तक सरकार अवश्य ही ऐसे अंतिम उपायों का अवलम्बन करने पर बाध्य होगी जो वह सार्वजनिक हितार्थ आवश्यक समझती है।

इसी प्रकार, यद्यपि निजाम सरकार वैधानिक उन्नति के विरुद्ध नहीं है, अपितु गतवर्ष उसने सुधारणा कमेटी की घोषणा से अपने आप को ऐसी उन्नति का पाबन्द कर लिया है और सिविल स्वातंत्र्य जो नि:सन्देह किसी ऐसी उन्नति में है, इस पर भी निजाम सरकार ऐसी उन्नति के विरुद्ध है जो साम्प्रदायिकता के नियमों पर की जाय। वह किसी ऐसी उन्नति का उत्साह बढ़ाना अपना कर्तव्य नहीं समझती जिस का यह मन्शा हो कि विशेष अधिकार किसी एक सम्प्रदाय वा वर्ग ही को समर्पित कर दिये जाय और न वह सिविल स्वतन्त्रता को दो तरफा दुव्यवहारियों तथा दोषारोपण की अमर्यादित स्वतन्त्रता के समान होने की आज्ञा दे सकती है। यह बात स्पष्ट है कि हम 'मुसलिम स्वतन्त्रता' और 'हिंदू स्वतन्त्रता' वा 'हिन्दू वैधानिक उन्नति' 'मुसलिम वैधानिक उन्नति' के सम्बन्ध में विचार नहीं कर सकते। यह कि विचार की प्रवृत्ति उसी ओर है इस बात की सत्यता इससे प्रकट होती है कि उन्नति वा स्वतन्त्रता के लिये आवाज उठाने वालों में उन्हीं लोगों की आवाज सब से ऊँची जान पड़ती है जिन में से अनेकों ने साम्प्रदायिक वैमनस्य के बढ़ाने में अनेक बार भाग लिया है और अब भी ले रहे हैं और जो वास्तव में ऐसे संघ तथा आन्दोलनों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखते हैं जो नि:सन्देह साम्प्रदायिक हैं। अपने देश बान्धवों से घृणा की नींव पर राष्ट्रीयता का निर्माण तो क्या बल्कि कोई इस का विचार भी नहीं कर सकता और न दूसरों के अधिकारों

का नाश कर के स्वतन्त्रता की स्थापना का प्रयत्न कर सकता है। इन व्यक्तियों का ऐसे आन्दोलन में शरीक होना, जो उनके व्यवहार से बिलकुल विपरीत हैं, उस आन्दोलन को केवल बदनाम कर देगा, जिस का ऊपरीरूप से समर्थन करते हैं। और सिद्धान्त के अनुसार कि जैसी संगत वैसा आदमी इस सम्मिश्रित बिरादरी की नीयतों पर सन्देह किया जाना आवश्यक है जो लोग सारे राष्ट्र की वैधानिक उन्नति और स्वतन्त्रता के वास्तविक समर्थक हैं उन का सर्व प्रथम कर्तव्य यह है कि वे पहले अपने गौरव को साफ करें और एक ऐसे राष्ट्र के सच्चे नेता बनें जो आपस में स्नेह रखता है और उसी प्रकार एक सम्मिलित राष्ट्रीय प्लेटफार्म की नींव डालें, उनका यह व्यवहार आपसे आप सरकार के लिये एक ऐसा मार्ग बना देगा कि वह उन की मांगों पर पूर्ण विचार करेगी ऐसी हालत में वह वास्तव में राष्ट्रीय मांगें होंगी जिन से कोई सम्प्रदाय पृथक् न होगा और जो असाम्प्रदायिक होने के कारण अत्यन्त आदर के पात्र होंगे, अन्यथा साम्प्रदायिकता तथा राजनीति में वास्तविक भेद न करने से किसी भी प्रकार की उन्नति के अवसर पर अवश्य ही जोखम में पड़ जायगे।

वर्तमान अधिकार पद पर मेरे नियुक्त होने के कुछ ही दिनों के पश्चात् एक सम्प्रदाय के कुछ लोग सूचित की हुई कुछ शिकायतों के बारे में मुझ से मिलने के लिए आये थे। शिकायतें अधिकतया धर्म से संबंधित न थीं। इन में से शायद ही कोई ऐसी शिकायत थी जिन को सब सम्प्रदायों के उत्तरदायी व्यक्ति सम्मिलित रूप से आपसी समझौते के आधार पर पेश न कर सकते थे। मैं ने उनसे कहा कि क्या ही अच्छा होता यदि वे अपने साथ कुछ ऐसे दोस्तों को भी लाते जिनका सम्बन्ध दूसरे विविध सम्प्रदायों से है। और उन शिकायतों को साम्प्रदायिक रूप के बदले किसी और रूप में पेश करते। मैं ने दूसरे सम्प्रदाय के उन सज्जनों से भी अपना यही अभिप्राय बतलाया, जो उसी तरह मुझ से मिलने के लिए आए थे और आज मैं अपनी उस राय पर पहले से अधिक दृढ़ हूँ। उस समय मैंने नौकरियों तथा नियुक्ति के सम्बन्ध में वही उदाहरण दिया था जैसा कि मैं आज दे रहा हूँ। यदि कोई यह समझे कि नियुक्ति का आधार किसी और चीज पर नहीं बल्कि केवल साम्प्रदायिक परिमाण पर हो हो और इस के अनुसार कार्य करने से सकारी नौकरी तथा राजव्यवस्था के प्रमाण में उन्नति हो सकती है उसके इस प्रकार के विचार को मैं भ्रममूलक समझता हूँ। इस सिद्धान्तानुसार कार्य करने से विविध संम्प्रदाय तथा वर्गों में अर्थविभाजन तथा इसी प्रकार अन्य समस्याओं पर वादविवाद करना अनिवार्य हो जायगा और इसके जवाब में दूसरी ओर से भी नौकरियों को एक ठेका समझकर उनकी प्राप्ति के लिये अत्यन्त कठोर मांगें होंगी। यदि विविध संप्रदायों तथा उपसंप्रदायों के परिमाण का विचार सरकारी नौकरियों पर भरती करने में किया जाय तो कार्य की खराबी तथा रिश्वत

आने से राजव्यवस्था का दिवाला निकल जायगा। उत्तम रचनात्मक पद्धति जिसका सब लोग स्वागत करेंगे यह हो सकती है कि नौकरियों पर भरती करने के नियमों की सुधारणा तथा नियुक्ति के वैयक्तिक सम्बन्धों के बदले संस्थाओं की स्थापना की इच्छा की जाय। इस पद्धति से जनता तथा राजव्यवस्था दोनों के हितों की उत्तम प्रकार से पूर्ति होगी और इस से भरती, नौकरी तथा चुनाव में अनुचित पक्षपात, संबंधियों से रियायत नहीं बल्कि केवल कार्य करने की योग्यता, निपुणता के सिवाय अन्य किसी भी बात को महत्व देना असंभव हो जायगा। सरकार भी इसी पद्धति के अनुसार कार्य कर रही है और उस समस्या के अनुसंधान(खोज)का कार्य एक कमेटी कर रही है। मैं ने इसका जिक्र इसलिये केवल उदाहरणार्थ किया है जिस से यह बात साफ कर दूं कि ऐसी शिकायतों पर विचारते समय जो अधिकारों में धर्म सम्बन्धित न हो सघठित उद्देशों के लिये विविध हितोंमें समझौता न केवल ऐसी शिकायतों को पेश करने का वास्तविक मार्ग होगा बल्कि इससे किसी उन्नति पथ के भी निकल आने की सम्भावना होगी। इस प्रकार सरकार को भी शिकायतें दूर करने के उपाय सोचने में कोई हिचकचाहट या विलम्ब न होगा, क्योंकि उसकी भी वही अभिलाषा तथा कामना है जो आपस के समझौते पर निर्धारित सब सम्प्रदायों के किसी संगठित संस्था की अभिलाषा तथा कामना हो सकती है।

—:o:—

निज़ाम स्टेट में नवीन काले कानून

—※—※—

निज़ाम-सरकार ने एक नवीन कानून "दस्तूरुल अमल तहफ्फुजे अमन आमा "सार्वजनिक शान्तता रक्षण कानून'' का मसविदा तैयार किया है, जिसके तीन भाग हैं—पहले भाग द्वारा बाहर के लोगों का स्टेट मे दाखिला और उनके कार्य-व्यवहार तथा उनको स्टेट से बाहर कर देने के सुप्रबन्ध के लिए निजाम-सरकार के ओहदेदारों को एख्त्यारात दिये गये हैं, दूसरा भाग रियासत मे कार्य कर रही संस्थाओं को कानून विरुद्ध ठहराने से सम्बन्ध रखता है, तीसरा भाग जुर्म और उन की सजाओं के विषय में है।

प्रथम भाग—बाहर के लोगों के लिए इस प्रकार है यह कि निजाम-सरकार नापसंदीदा अजनबी को स्टेटसे निकल जाने की आज्ञा देगी। यदि वह निश्चित समय के अन्दर स्टेट से बाहर न चला जाय तो बिना हुक्म गिरफ्तार कर के स्टेटके बाहर मुन्तकिल कर दिया जाएगा। इस पर भी यदि वह वापिस आये तो नाजिम फ़ौजदारी के इजलास पर पेश किया जायगा जो उसको सरकारी आज्ञा की प्रतीक्षा से मजलिस में रखे जाने का हुक्म देगा, और सरकार ऐसी अवस्था में उसकी मुन्तकिली की कार्यवाही करेगी या मुकदमा चलाने की आज्ञा देगी। दूसरी अवस्था में एक साल कैद श्रमसहित या जुर्माना या दोनों सजाएं दी जायगी। दूसरा उत्तरदायित्व स्टेट की प्रजा पर है यह कि वह किसी भी नापसंदीदा अजनबी को जब तक तालुकदार बलदा से लिखी आज्ञा प्राप्त न कर ले अपने स्वत्व वा जायदाद की रक्षा के लिये नौकर नहीं रख सकती और न ही उन्हें शस्त्र दे सकती है। यदि इस नियम के विरुद्ध कार्य किया गया तो उसका दण्ड सश्रम कैद जिसकी अवधि छः मास से अधिक न होगी या उसको जुर्मानाका दण्ड दिया जायगा, जिस का अन्तिम परिणाम एक सहस्र रुपया से अधिक न होगा या दोनों सजाएं दीजायगीं। स्थानीय हाकिम को नापसंदीद। अजनबी की तलाशीके लिए किसी मकान या इमारत मे तलाशी का हुक्म देने का अधिकार होगा। होटलों वा सरायों के मालिकों या संरक्षकों पर यह पाबन्दी लगाई गई है कि वे एक नियमानुसार रजिस्टर नमूना की रीति से रखें जिसमे ठहरनेवालों के नाम दर्ज किये जायं। खिलाफवर्जी की अवस्था में सश्रम कैद जिसकी अवधि तीन मास होगी या जुर्माना की जिसका परिमाण २५० रुपये होगा या दोनों सजाएँ दी जायँगी। किसी नापसन्दीदा अजनबी को आश्रय देने का भी यही दण्ड है।

दूसरा भाग—जो संस्थाओं को कानून-विरुद्ध ठहराने के विषय में है इस प्रकार है—

निज़ाम-सरकार ऐलान द्वारा किसी भी संस्था को जो उसकी सम्मति में क़ानूनी नियमों के

खिलाफ होगी या उसके अस्तित्व से राज्य के विभिन्न सम्प्रदायों मे पारस्परिक विरोध बढ़ने का सरकार को भय हो खिलाफ कानून करार देगी। ऐसी कानून विरुद्ध संस्था का नाम बदलने से कोई प्रभाव न पड़ेगा। किसी ऐसी संस्था से जो खिलाफ कानून सिद्ध की गई हो सम्बन्ध रखने की सजा छ मास कैद सश्रम या जुर्माना या दोनों सजाएँ होंगी। किसी व्यक्ति को जो ऐसी कानून विरुद्ध संस्था का प्रबन्ध करे या उसमे सहायता दे या उसके कार्यकर्त्ताओं का जलसा करने में सहायता दे सश्रम कैद का दण्ड दिया जायगा। जिसकी अवधि तीन वर्ष तक हो सकेगी या जुर्माने की या दोनों सजाएँ दी जायेंगी। निज़ाम सरकार को अधिकार होगा कि उन स्थानों के लिए जो खिलाफ कानून संस्था से सम्बन्धित हों, ऐलान करे और उनपर कब्जा कर ले, और जो व्यक्ति वहाँ पाया जाये उसे उस स्थान से निकाल दे। और यह कार्य अज-लाह में अव्वल तालुक़दार और बलदा में कोत-वाल बलदा या कोई ऐसा ओहदेदार जिसको तहरीर-द्वारा तालुक़दार या कोतवाल बलदा नियत करें, करेगा। उस स्थान मे कोई चीज जो खिलाफ क़ानून संस्था से सम्बन्धित या उसके प्रयोग के लिए होगी जब्त कर ली जायेगी। ऐलान हुए स्थान पर बिना आज्ञा यदि कोई ठहरे, तो वह "मदाखलत बेजा" का मुर्तकिब समझा जायगा। इस नियम के अनुसार खिलाफ क़ानून संस्था के स्थान को भी जब्त करने का अधिकार सरकार को है। सरकार के इस अमल के विरुद्ध कोई अदालती कार्यवाही न होगी।

इस कानून का तीसरा भाग कुछ अपराध और उन की सजाओं से सम्बन्ध रखता है। सैनिक भर्ती का निषेध करना सरकारी मुलाजमों को भगाना प्रेत-यात्रा निकालना, निषिद्ध दस्तावेज का प्रका-शन, झूठी अफवाहें को फैलाना, फौजी हवाई या कोतवाली समुदाय के लिए हानिकर अफवाहों का फैलाना तथा वे कार्य जिन से किसी सम्प्रदाय के मज़हबी जज़बात को उत्तेजना देने का प्रयत्न किया जाये, ये सब जुर्म करार दिये गये हैं, जिन की भिन्न-भिन्न सजाएँ हैं। कुछ नाक़ाबिल दस्त-अन्दाजी जरायम को ता बिल दस्तन्दाजी वा नाकाबिल जमानत का अधिकार भी सरकार को होगा। जलसा आम की रिपोर्ट हासिल करने का अधिकार कोतवाल बलदा या अव्वल तालुक़दार या उन-द्वारा नियत किये किसी दूसरे व्यक्ति को दिया गया है। इन आज्ञाओं की तक़मील कराने का तरीक़ा भी बताया गया है और खिलाफवर्ज़ी की अवस्था मे सजा भी निश्चित की गई है। क़ानून के तीसरे भाग के अधीन सोलहवर्ष से कम आयु के बच्चे का कोई कार्य जिससे इस क़ानून की खिलाफवर्ज़ी होवीहो, क़ाबिल जुर्माना होगा और यह जुर्माना उसके बाप या माता या सरक्षक से वसूल किया जायेगा।

हैदराबाद और आर्यसमाज

—*—*—

सार्वदेशिक सभा की आर्य रक्षा समिति के मन्त्री श्रीयुत शिवचन्द्र जी ने निम्न वक्तव्य समाचार पत्रों को दिया है:—

"अचानक १७ सितम्बर १९३८ को देहली की सी० आई० डी० द्वारा निज़ाम-सरकार की एक्जीक्यूटिव कौंसिल के प्रधान का मुझे राज्य से निर्वासन का आर्डर प्राप्त हुआ। मैंने सी० आई० डी० के अफसर को, जो उपर्युक्त आर्डर देने आए थे, आर्डरकी प्रतिलिपि देने को कहा, परन्तु उन्होंने ऐसा करने में इस आधार पर अपनी असमर्थता प्रकट की, कि निज़ाम-सरकार ऐसा नहीं चाहती है। वस्तुतः यह आश्चर्यजनक बात थी। इसके बाद आर्डर का अङ्गरेजी अनुवाद पढ़ने के लिए मुझे कहा गया। यह अनुवाद मूल का, जो उर्दू में था, शाब्दिक अनुवाद किया गया प्रतीत होता था। मुझे उन आर्डरों पर हस्ताक्षर करने के लिए भी कहा गया था। आर्डर के प्रथम ही वाक्य को पढ़कर जो निम्न प्रकार अशुद्ध लिखा गया था मेरे आश्चर्य की सीमा न रही।

"आपको इस आज्ञा द्वारा आज्ञा दी जाती है कि निज़ाम राज्य से आपके निर्वासन के सम्बन्ध में आज्ञाएँ जारी हो गई हैं।"

पाठकों को यह जानकर मेरे जैसाही आश्चर्य होगा कि निर्वासन की यह आज्ञाएँ देहली में बैठे हुए ही मुझे प्राप्त हुई हैं। इन आज्ञाओं में सौजन्य और मर्य्यादा का भी अभाव है, क्योंकि उनमें मेरे निर्वासन का कोई कारण नहीं प्रकट किया गया है।

हैदराबाद की अपनी एक यात्रा के अवसर पर मुझे श्री ऐस० टी० होलेन्स, सी० आई० ई०, आई० पी० ऐस०, डाइरेक्टर जनरल पुलिस से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और निज़ाम की पुलिस के वहां के आर्य्यों के प्रति व्यवहार के सम्बन्ध में कई बातों पर उनसे विचार-विनिमय भी हुआ था। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई थी कि उन्हें, जो राज्य के सी० आई० डी० विभाग के भी अध्यक्ष हैं मेरे प्रति जरा सी शिकायत नहीं थी। पिछली दफ़ा जब सभा के प्रधान माननीय श्रीयुत घनश्यामसिंह जी, स्पीकर, सी० पी० ऐसेम्बली के साथ मैं हैदराबाद गया था, तब भी हैदराबाद में मेरे निवास पर कोई आपत्ति नहीं कीगई थी। हैदराबाद राज्य से, मेरी अनुपस्थिति में, निज़ाम-सरकार को इन आज्ञाओं के देने की आवश्यकता क्यों हुई, इसका मुझे आश्चर्य है।"

HYDERABAD & ARYASAMAJ

Delhi Advocate to defend Hyderabad Aryas and Hindus accused

Mr B B Tawakley, a leading criminal advocate of Delhi, who was engaged by the International Aryan League to defend the Aryas and Hindus involved in the Hyderabad Riot Murder case has reached Hyderabad on 17th September, 1938.

It may be recalled that Mr K. F. Nariman was prevented from entering the State for the purpose of defending the Aryas and Hindus, by an order of the Nizam's Government Mr Bhulabhai Desai, who was next briefed for the same case, went there, but he was prevented from addressing the Bar Association As a protest against this prohibition, Mr Desai also left Hyderabad

Mr S. Chandra, Secretary, Aryan Defence Committee of the International Aryan League has issued the following statement to the Press —

All of a sudden, on the 17th September, 1938, I was served through the Delhi C I D with "externment orders" issued by the orders of Rt. Hon'ble the President of the Executive Council of H E H.the Nizam's Government. I requested the C I D officer, who came to me to serve with the above orders, to supply me with a copy of these, but he expressed his inability to do so, as the Nizam's Government did not desire it. This was really amazing. I was then asked to go through the English version of the orders, which seemed to have been literally translated from theo riginal, which were in

Urdu, and I was further asked to sign it. What increased my amazement was to find the very first sentence of the orders, wrongly written as follows —

"You are hereby 'ordered' that orders have been passed regarding 'your externment from' H E H 's Dominions" The reader will share my amazement when he learns that these orders of externment were served on me when I was sitting in Delhi The orders also lack grace and dignity, because no reason was mentioned for my 'externment.'

During one of my visits to Hyderabad, I had the honour of interviewing Mr S T Hollins, C I E I, P S, the Director-General of Police and discussed with him several things regarding the treatment meted out to the Aryasamajists by the Nizam's Police, and I was glad to find that he too, who is also the head of the C I D Department of the State, had not the slightest ground for any complaint against me. Last time when I visited Hyderabad in company with Hon'ble Mr G S Gupta, President of Aryan League and speaker of C P Assembly, even then no objection was taken to my stay in the Nizam's Dominions I wonder what necessitated the Nizam's Government to issue these 'externment orders' in my absence from Hyderabad State

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा अक्टोबर ३८ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना-अपना चन्दा १५ नवम्बर तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी, उनकी सेवा में पत्र वी पी द्वारा भेज दिया जायगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे।

९०, ९४, २८३, २८४, २८८, २९०, २९७, ३०१, ३०२, ३०४, ४८६, ४९४, ५०१, ६०७, ६३६, ६३७, ६३९, ६४०, ६७३, ८१३, ८३०, ८३२, ८३४, ८५०, ८९५, ९०२, ९०३, ९०५, ९०६, ९०७,

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य।-)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर, खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश: =), =)॥, =)॥, =)॥ =)॥, -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीक़त ।॥=) सत्य-निर्णय १।)

(उर्दू)　　　　(हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए सद्भाव और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।=

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के इन नव युवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

लेख-सूची

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे काग़ज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मँगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें —

	असली मू०	घटाहुआ मू०
(१) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में	५)	२॥)
(२) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया	१॥)	१)
(३) आर्याभिविनय	।-)	।)
(४) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के	।)	=)
(५) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥	=)
(६) गो करुणानिधि	=)	-)॥
(७) शिक्षापत्री	=)	-)॥
(८) भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)॥
(९) सत्यधर्म विचार	-)॥	-)
(१०) काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
(११) भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
(१२) आर्योद्देश्य रत्न माला	)॥	)॥
(१३) स्वीकार पत्रम्	)॥	)॥

सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

मूल्य प्रचारार्थ ।)

(२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य -) घटा हुआ मूल्य)॥

(३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरिणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

(४) दश नियम व्याख्याः—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

(५) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ॥।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

(६) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है। मूल्य १।) सजिल्द १॥), घटा हुआ मूल्य ।॥) सजिल्द १)

(७) वैदिक विवाहादर्शः—

इस पुस्तक में वैदिक विवाह का आदर्श प्रस्तुत किया गया है और विवाह सम्बन्धी लगभग सभी आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्यतया पश्चिमी थ्योरियों के विवेचन पूर्वक विवाह सम्बन्धी वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गई है। मूल्य १।), घटा हुआ १)

(८) विदेशों में आर्यसमाज का इतिहासः—

जिस पुस्तक को छपाने की मथुरा शताब्दी पर घोषणा की गई थी और जिसके पढ़ने के लिये पिछले आठ वर्षों से देश और विदेशों के आर्य्य-नर नारी बेचैन हो रहे थे वह, सार्वदेशिक सभा की ओर से तैयार हो कर छप गई है। पुस्तक में आर्य्य प्रचारकों तथा विदेश की आर्य्य-संस्था आदिकों के लग-भग ११ चित्र हैं। पुस्तक पढ़ने योग्य है। छपाई, सफाई, कागज आकार प्रकार बढ़िया। मूल्य ॥), घटा हुआ ।≈)

(९) यमपितृ परिचय—लेखक श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २), घटा हुआ १)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१०) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(११) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श— प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। ६८३ संख्या लग भग ५०० मूल्य १।।)

(१२) भजन-भास्कर— (दूसरा संस्करण) यह पुस्तक भाव, भाषा, संगीत, छन्द, वैदिक सिद्धान्त शिक्षण इत्यादि की दृष्टि से उत्तम भजनों और कविताओं का संग्रह है। इसमें देश के और आर्य समाज के प्रसिद्ध २ संगीतज्ञों कवियों और भजनोपदेशकों की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। इसमें देश, धर्म, ईश्वर, समाजसुधार, बाल-शिक्षण शुद्धि, ऋषि-महिमा, आर्य्यसमाज महिमा इत्यादि अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक और जातीय विषयों पर भजन मौजूद हैं। संग्रहकर्त्ता श्री पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न (भूत पूर्व सम्पादक आर्य मित्र) हैं। आर्य्यसमाज में तुकबन्दों की बढ़ती हुई तुकबन्दी को निरुत्साहित करने तथा आर्य्यसमाजों और परिवारो में श्रेष्ठ संगीत को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही मथुरा की दयानन्द शताब्दी महोत्सव के अवसर पर यह संग्रह तैयार कराया गया था। अब जनता की बढ़ती हुई माग को पूरा करने के उद्देश्य से ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण बढ़िया आकार प्रकार इत्यादि में छपाया गया है। मूल्य ।।)

(१३) सत्यार्थ प्रकाश— (सस्ता संस्करण)—महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति। २० × ३० सोलह पेजी साइज के ८०० से अधिक पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल ।)।। प्रति १०० प्रति वा इससे अधिक लेने पर ।) (चार आना) प्रति।

		अ० मू०	ध० मू०			अ० मू०	ध० मू०
(१४)	वेद में असित शब्द	−)।	−)	(१६)	विरजानन्द विजय	।)	=)
	२५ प्रति का	१।)	१।)	(१७)	हिन्दू मुस्लिम इतिहास उर्दू	।)	=)
(१५)	वैदिक सूर्य विज्ञान	=)	=)				

18 Agnihotra—

By Dr Satya Prakash, D Sc Lecturer in Chemistry University of Allahabad
Well Bound—Price Rs 2 8-0

The Author has described in details the process of Agnihotra, and has shown that during the process of this fumigation, such products are given out which are bactricidal and vermifugal, and this ancient practice of the Aryans is very healthy hygienic and productive of physical and spiritual results

"The writer is a **Doctor of Science** He has brought to bear upon the subject all the scientific lore that he has acquired at the University and environments"

—*Ganganath Jha*

"As the book deals with the ancient practice in a systematic manner I believe it will be found interesting and useful to readers in the East and in the West, and hence I have a great pleasure in recommending it to the public"

—*N R Dhar*

19 Crucifixion by an eye witness—

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes—price As 6 Reduced price As

20 Truth and Vedas—

It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat—price As 8 Reduced price A 6

21 Truth Bed Rocks of Aryan culture—

The Subject dealt with in this book is the ideal t truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to thi ideal—price As 10 Reduced price As 8

22 Torch Bearer—

A biographical sketch of Swami Dayanand—price Rs. 1/8/- Reduced price Re 1/

23 Vedic Teachings—

This book contains the most authentic replies to the objections raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has besides brought forth the superiority the Vedic Teachings contain—price Rs 1/12/ Reduced price Rs 1/4/

24 Voice of Aryavarta—

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains most lucid reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching—price As 8 Reduced price As 2

25 The daily Prayer of an Arya—

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya—price As 4 bound and As 3/- unbound

26 The Light of the Vedas—

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/-

27 Commentary on Ishopanishat—

Translated by the late Pt Ghasi Ram M A L L B—price As 4

पुस्तक मिलने का पता—

कार्यालय—सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

✽ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र ✽

वर्ष १२ | कार्तिक १९९५ | नवम्बर १९३८ ई०] | [दयानन्दाब्द ११४ | अङ्क ९

✽ वेद की शिक्षाएँ ✽

अस्माकं सन्त्वाशिषः सत्याः । यजु० २—१०

हमारी कामनायें सच्ची ही हों ।

May our longings and aspirations, our ideas and ideals be genuine and generous !

माम्र तिष्ठः पराङ् मनाः । यजु० ८—१—९

संसार में मन को उदास करके मत रह ।

Do not make thy life a continual Sadness and Sorrow.

सम्पादकीय

हैद्राबाद में धर्म-युद्ध

हैद्राबाद में आर्य्य समाजियों पर होने वाले अत्याचारों और आर्य्य समाज की प्रगति को निर्मूल करने की राज्य की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कोशिशों का सिलसिला बहुत देर से चला आ रहा है। इस सिलसिले को रुकवाने के लिए सार्वदेशिक सभा प्रारम्भ से ही पूर्ण प्रयत्न करती रही है। कदाचित् ही कोई वैध उपाय हो जिसका सार्वदेशिक सभा ने आश्रय न लिया हो। आर्य्यसमाज के प्रति राज्य के दमन-चक्र का सिलसिला गत ६ वर्ष से उग्र रूप धारण किए हुए है जब उसने श्री० प० रामचन्द्र जी देहलवी का राज्य में प्रवेश निषिद्ध करार दिया था।

इस समस्या के हल के लिए हैद्राबाद दरबार को सार्वदेशिक सभा की ओर से ६ वर्ष का जो समय मिला वह काफी से अधिक था और आर्य्य समाज के एक अंग के लिए यह आपत्ति जनक था। परन्तु इस काल में आर्य्यसमाज के प्रति निजाम सरकार की रीति-नीति और रुख में न केवल सन्तोषजनक परिवर्तन ही न हुआ वरन् उसका रवैया कठोर से कठोर तम होता चला गया जिसका परिणाम हम आज यह देखते हैं कि हैद्राबाद में आर्य्य समाज का नाम लेना भी अपराध की कोटि में गिना जाता है। आर्य्य समाज के प्रचार की तो बात ही क्या? हमारे ४-५ दीवाने राज्य की इस रीति-नीति के फल स्वरूप धर्म्मान्ध मुसलमानों द्वारा हम से सदैव के लिए पृथक् कर दिए गए। हमारे प्रचारकों को थोथे अपराधों और निर्मूल बहानों के आधार पर जेल की चहारदीवारी के भीतर डाल दिया गया अथवा उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया गया। श्री० पं० रामचन्द्रजी जैसे शान्त और सुमधुर तर्कशील प्रचारक के राज्य में प्रवेश पर से पर्याप्त लिखा पढ़ी और प्रार्थनाओं के बावजूद भी प्रतिबंध नहीं हटाया गया। हवन-कुण्ड की स्थापना और आर्य्य समाज मन्दिर तथा आर्य्य-गृहों में प्रचार करने तक पर भी प्रतिबन्ध लगा कर प्रचार को रोकने का यत्न किया गया। इन अत्याचारों और असुविधाओं से आर्य्यसमाज के सब्र के प्याले का भर जाना स्वाभाविक था। उसने सभा को प्रेरणा की कि वह प्रार्थनाओं, आवेदन-पत्रों और डेपुटेशनों की नीति का परित्याग करके जिसके प्रति ६ वर्ष के लम्बे अर्से में उसकी कोई आस्था नहीं रही थी, इस समस्या के अन्तिम और स्थिर हल के लिए उग्र क़दम का आश्रय ले।

वह मांग इतनी प्रबल हो गई थी कि सभा को इस पर विचार करने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं रह गया था। फलतः गत ६-१०-३८ को सभा तथा आर्य्य रक्षा समिति की सम्मिलित

बैठक में इस पर घंटों तक काफी विचार और विमर्श हुआ और इसका जो फल निकला वह इस समय तक आर्य्य जगत् में काफी विदित हो चुका है। सभा ने अपने भूतपूर्व प्रधान और आर्य्य जगत् के सम्मान्य नेता श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज को इस सम्बन्ध मे कार्यवाहि करने का सम्पूर्ण अधिकार दे दिया है। दूसरे शब्दों में उन्हें उस यज्ञ का सर्वप्रथम ब्रह्मा नियत किया है जो हैद्राबाद मे आर्य्य समाज के धामिक अधिकारों की रक्षा के लिए रचा जाने वाला है। दूसरे शब्दों में युद्ध की रणभेरी बज गई है।

श्री० स्वामी जी महाराज श्री० स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी महाराज उप प्रधान सभा को साथ लेकर शोलापुर पहुँच गए हैं। सम्प्रति यहीं से वे इस यज्ञ की आयोजना करेंगे। उनका सर्व प्रथम कार्य क्रम शोलापुर में 'सावदेशिक-आर्य्य महा सम्मेलन' करना होगा जिसकी तिथिया २५, २६ और २७ दिसम्बर सन् ३८ नियत की गई हैं।

दूसरी ओर आर्य्य भाई आर्य्यसमाज के अधिकारों की रक्षा के लिए शान्त और अहिंसामय व्यक्तिगत सत्याग्रह एक मात्र अपनी जिम्मेवारी पर चला रहे हैं। सामूहिक सत्याग्रह की यदि आवश्यकता हुई, कार्य्यक्रम आर्य्य सम्मेलन मे निश्चित किया जायगा।

सार्वदेशिक सभा के निश्चय का आर्य्य जगत् में जो स्वागत हुआ है वह श्री स्वामी जी महाराज के उस प्रेस वक्तव्य से स्पष्ट है जो उन्होंने देहली से हैद्राबाद को प्रस्थान करते समय दिया था, जो आर्य्य पत्रों में छप चुका है और अन्यत्र इस पत्र में भी छपा है। इस समय भी सभा के कार्यालय में उत्साह वर्द्धक पत्र और सन्देश आ रहे हैं। उन पत्रों और सन्देशों के आधार पर आर्य्य जगत् के भावों का हमने जो अध्ययन किया है उससे विदित होता है कि इस समस्या को वह बडे गभीर भाव में ले रहा है और इसके सन्तोषजनक हल के लिए वह वास्तव में अत्यन्त आतुर है।

उन सदेशों से यह भी विदित हुआ है कि वह धन-जन की बड़ी से बडी कुर्बानी के लिए सन्नद्ध है। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने वक्तव्य मे ठीक ही कहा है कि ऐसे कार्य्यों मे धन जन की बहुत बडी आवश्यकता होती है। वहा की आवश्यकताएँ तो वे स्वय शोलापुर से बतलाये गे फिर भी हैद्राबाद से उत्तर भारत की दूरी जिसकी सहायता इस यज्ञ का सफलता में एक विशेष स्थान रखती है तथा देशी रजवाड़ों में इस यज्ञ का होना ये दो बातें धन जन का अदाजा लगाते तथा सहायता देते दिलाते समय हमे अपने सामने रखनी होंगी। पता नहीं इस यज्ञ की तय्यारी और संचालन में कितना समय लगे, यह बात भी नजर अन्दाज नहीं करनी होगी। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुये हम समझते हैं लाखों रुपयों और सहस्रों जनोंकी आवश्यकता होगी जिसे आर्य्य जगत को पूरा करना होगा। सावदेशिक सभा ने जो रक्षा निधि का २५ हजार रुपया इस निमित्त श्री स्वामी जी के

निर्णय पर रख दिया है। आर्य्य जनता को अभी से धन-जन की पूर्ति में लग जाना चाहिए। धन की सहायता सीधे श्री स्वामी जी को शोलापुर या सार्वदेशिक सभा के कार्य्यालय में भेजनी चाहिए तथा जन की सहायता से नियमानुकूल सूचियां बना कर सूचित कर देना चाहिए।

इस समय कांग्रेस ने भी हैदराबाद राज्य में नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिये धर्म-युद्ध छेड़ा हुआ है। आर्यसमाज के लिये यह बड़ा अच्छा अवसर प्राप्त है। इससे लाभ उठाने में पीछे नहीं रहना चाहिये। कहने को आवश्यकता नहीं जो व्यक्तियों और जातियों अवसर से लाभ नहीं उठाती हैं वे सदैव अवनति के गर्त में पड़ी हुई अत्याचारों का शिकार बनी रहती हैं।

श्री० स्वामी जी महाराज ने चलते समय आदेश दिया है कि वे प्रान्तिक सभाओं, आर्य-समाजों और आर्य-नर-नारियों को जिसे जिस प्रकार की आज्ञा देंगे उसे बिना किसी हिचक के पालन करनी होगी। कौन आर्यसमाज, आर्य-नर-नारी और प्रांतिक सभा होगी जो आर्यसमाज के इस जीवन-मरण के आड़े समय में अपने सम्मानीय नेताके आदेश की अवहेलना करेगा? हमें पूर्ण विश्वास है कि उनकी आज्ञाओं का पालन करना प्रत्येक आर्य और संस्था न केवल अपना कर्तव्य समझेगी वरन् उसमें गौरव अनुभव करेगी। प्रान्तिक सभाओं ने अपने अपने आर्य-समाजों को धन-जन की सहायता देने तथा अधिक से अधिक और बड़ी से बड़ी कुर्बानी करने के लिये तैयार रहने के आदेश जारी कर दिये हैं यह बड़ी प्रसन्नता और उत्साह की बात है। इस परीक्षा के काल में आर्य्य जगत् को बाहरी संसार के सामने अपनी कुर्बानी और संगठन शक्ति का बहुत उज्ज्वल परिचय देना है; ऐसा परिचय देना है जो आर्य्य समाज की शान और प्रथा के अनुरूप हो और जिसे देख और सुनकर लोग अवाक् रहजायं। यह बात हममें से प्रत्येक को हृदयङ्गम कर लेनी चाहिए।

निज़ाम सरकार से तो निवेदन करते करते हम थक गए हैं। हमारा उत्साह नहीं होता है कि हम उससे कुछ कहें। फिर भी एक बात हम उससे अवश्य कहेंगे। अब भी समय है कि वह आर्य्य समाज के केस को सही रूप में अध्ययन करे और उसकी शिकायतों को दूर करने की दूरदर्शिता करे। ऐसा करने में उसका गौरव बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं। ऐसी रीति नीति की घोषणा से कि "राज्य में सर्व धर्म वालों को समान स्वतन्त्रता प्राप्त है न केवल आर्य्य समाजी ही वरन् मुसलमान तथा सब धर्म के अनुयायी एक जैसे नियमों से शासित होते हैं" काम नहीं चलेगा। इस प्रकार की घोषणाओं और भाषाओं के तथ्य से आर्य समाज काफी परिचित हो गया है। उसका अनुभव है और सही अनुभव है कि व्यवहार में उन सब कायदे कानूनों का आर्य्य समाज को कुचलने में ही प्रयोग होता है।

अब तक आर्य्य समाज के इस प्रकार का कदम न उठाने में जो उसकी कमजोरी समझते रहे हैं आशा है वे अपने भ्रम

के सत्याग्रह के निश्चय से किसी भ्रम में नहीं रहेंगे। जहाँ तक हम समझते हैं यह आर्य समाज की कमजोरी नहीं थी वरन् वैध उपायों की आजमाइश में अधिक से अधिक जितना संभव हो जाने की अपनी परम्परा की रक्षा की दिशा मे उसका एक मात्र प्रयत्न था।

हैदराबाद में धर्म-युद्ध

श्री० म० कृष्ण जी 'प्रकाश' के ताजे अङ्क में 'हैदराबाद में धर्म युद्ध' शीर्षक में हैदराबाद में आर्य-समाज की कठिनाइयों तथा सार्वदेशिक सभा की ६-१०-३८ की 'अन्तरङ्ग सभा के निश्चय के प्रकाश में 'सत्याग्रह' के सूत्रपात की चर्चा करते हुये आर्य-जनता के कर्त्तव्य की ओर निम्न प्रकार संकेत करते हैं:—

"उचित रीति से कहा जा सकता है कि रणभेरी बज गई। इसलिये प्रत्येक आर्य्य को सिपाही बनकर मैदान मे आने के लिए तैयार रहना चाहिए। किसी को बड़ी से बड़ी आधिक कुरबानी से पीछे नहीं हटना चाहिए। स्वामी जी (श्री नारायण स्वामी जी) जिसे भी जो हुक्म दें उसे पूरा करने के लिये तैयार रहना चाहिए। प्रत्येक सूबे की प्रान्तिक सभा को चाहिये कि अपने यहाँ की आर्य्य समाजों को इस धर्म-युद्ध मे भाग लेने के लिये तैयार करें।

इसके आगे कॉंग्रेस के सत्याग्रह का जिक्र करते हुए आर्य समाज के सत्याग्रह के उद्देश्य के सम्बन्ध में लिखते हैं:—

हैदराबाद में नागरिक अधिकारों के लिए कॉंग्रेस लड़ रही है। मानों दरबार पर २ तरफ से हमला होगा। आर्य्य समाज १० प्रतिशतक जनता के धार्मिक अधिकारों के लिए लड़ेगा और उन धार्मिक अधिकारों की माँग करेगा जो वहाँ की मुस्लिम प्रजा को प्राप्त हैं। वह कहेगा कि आर्यों और हिन्दुओं को लिखने और बोलने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। उन्हें जलसों की आज्ञा होनी चाहिये ताकि वे खुले-खजाने अपने धर्म का प्रचार कर सकें और सब से बढ़कर दरबार को इस बात की जिम्मेवारी लेनी होगी कि अपने विचारों के लिये किसी आर्य्य को कष्ट न मिले।"

इसके आगे निज़ाम सरकार की नीति की आलोचना करते हुए उसे सद् परामर्श देते हैं।

"यदि अब भी दरबार अपनी पालिसी में परिवर्तन करे और कठोर नियमों से सहायता लेने के बजाय प्रजा के हृदयों को ढाढ़स दे तो अब भी मैं समझता हूँ युद्ध रुक सकता है। देखें कि निज़ाम साहब राज्य के कमज़ोर और अदूरदर्शी अधिकारियों की तरह दमन की नीति का आश्रय लेते हैं या प्रजा के दिलों को अपने हाथ मे लेने का यत्न करते हैं।

धर्म और प्रथा के नाम पर

अभी हाल में माहुल के एक हत्या के अभियोग का सेशन जज का फैसला समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ है। इस अभियोग में ६ व्यक्ति अभियुक्त थे जिनमें से ३ छोड़ दिए गए हैं और ३ को मृत्यु दण्ड दिया गया है।

अभियोग के अनुसार अभियुक्त एक पहाड़ी जाति के हैं। गत जून में उन्होंने अपनी जाति के एक व्यक्ति

को सुधारवादी होने के कारण भालों से बींधकर मार डाला था। पारिवारिक जीवन में पिता का स्थान अत्यन्त आवश्यक है बहुत सी बातों में से वह इस बात का भी प्रचार किया करता था। बिरादरी के लोगों ने उसके इस प्रचार से बहुत अप्रसन्न होकर पंचायत बुलाई और पंचायत ने एक गुप्त सभा में भालों से बींधकर उसे मार डालने का निर्णय किया। निर्णय के अनुसार वह व्यक्ति हाथ पाँव बाँधकर एक वृक्ष से बाँध दिया गया और भालों से मार डाला गया।

अपने को निर्दोष बतलाते हुए अभियुक्तों ने कहा कि हमारा जाति का धर्म आज्ञा नहीं देता है कि हम पारिवारिक जीवन में पिता के स्थान में कोई विश्वास रक्खें। हमारे जीवन के कार्यक्रम में स्त्री का ही मुख्य स्थान है। वह स्वतन्त्र है। वह जिससे जितनी बार चाहे शादी करे और जब चाहे उसे छोड़ देवे। इस प्रकार की शादियों की सन्तान अथवा कोई पिता स्वीकार नहीं करती है और यह बात उनके धर्म के विरुद्ध समझी जाती है। अभियुक्तों ने यह भी कहा कि उस व्यक्ति को भालों से मारने में उन्होंने अपनी बिरादरी की मुख्य सभा की आज्ञा का पालन किया है, जिसमें बड़े २ धर्माचार्य सम्मिलित हैं।

माननीय जज ने अपने फैसले के दौरान में कहा कि कोई धर्म या प्रथा भले ही इस प्रकार के जघन्य अपराध की आज्ञा देवे, क़ानून इस प्रकार के धर्म व प्रथा को स्वीकार नहीं करता है। धर्म और प्रथाओं के नाम पर होनेवाले अत्याचारों का यह एक बड़ा रोमांचकारी उदाहरण है। प्रकाश के इस युग में इस प्रकार के धर्म और प्रथा की रक्षा हो सकती है जो लोग ऐसा सोचते हैं वे अँधेरे में हैं। पहाड़ी और जङ्गली जातियों में प्रकाश पहुँचाने की कितनी बड़ी आवश्यकता है यह बात इस घटना से बहुत ज्यादा स्पष्ट हो जाती है।

आर्य परिवार संघ

पाठक अन्यत्र आर्य परिवारसंघ की योजना और उसके नियम पढ़ेंगे। उनके पढ़ने से विदित होगा कि आर्यों में मुख्यतया पारस्परिक खान-पान और विवाह को प्रोत्साहित करने की दिशा में उपर्युक्त योजना एक क्रियात्मक और व्यवस्थित क़दम है जिसकी आवश्यकता देर से आर्य जगत में अनुभव की जा रही थी। आर्यों को अपने बच्चों के विवाह के लिये उपयुक्त आर्य लड़कों और लड़कियों के मिलने में जो कठिनाई उपस्थित होती है उसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। यह संघ इस कठिनाई को हल करने में एक बड़ी सीमा तक सहायक हो सकता है। हम इस योजना का स्वागत करते हैं तथा सफलता की कामना करते हैं।

हैदराबाद दक्षिण

आवश्यक सूचना

— —

सार्वदेशिक-सभा ने, हैद्राबाद दक्षिण में, जो अत्याचार आर्य्यों पर हो रहे हैं, उस सम्बन्ध में आवश्यक कार्य करने के लिए मुझे नियुक्त किया था। इसकी सूचना सभा के कार्यालय से समाचार पत्रों मे भेजी गई। उस सूचना को पाकर जो पत्र आर्य्य भाइयों ने मेरे पास भेजे, वे बड़े उत्साह वर्द्धक हैं। अजमेर और देहरादून दोनों स्थानों के उत्साही आर्य्य-युवकों ने लिखा है कि सत्याग्रह मे सबसे पहले उनका जत्था आना चाहिये।

मऊनाथ भंजन के सेठ रामगोपाल ने धन, जन प्रत्येक प्रकार की सहायता देने का वचन दिया है और यह भी लिखा है कि आवश्यकता होने पर वे अभी मेरे पास आने के लिए तय्यार हैं। इसी प्रकार की उत्साहपूर्ण बातें अनेक भा यों ने लिखी है। ऐसे कार्यों में धन, जन की कितनी आवश्यकता होती या हो सकती है, इसका सभी अंदाजा कर सकते हैं। मैं इस सम्बन्ध में शोलापुर पहुँचकर वहाँ की आवश्यकतायें लिखूँगा। मैं आज २७ अक्तूबर की रात में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के साथ शोलापुर आ रहा हूँ। जाते हुए एक बात मैं सभी आर्य्य-भाइयों और आर्य्य-समाजों से कहना चाहता हूँ कि जब आर्य्य-समाज की सबसे बड़ी सभा ने अपने प्रतिनिधि के रूप में मुझे इस कार्य की पूर्ति के लिए नियुक्त किया है, तो सभी प्रान्तिक सभाओं, आर्य्य समाजों और आर्य्यभाइयों से मैं उचित रीति से यह आशा करता हूँ कि वे इस कार्य में मुझे पूरी सहायता देंगे और जिन्हें भी मैं अपनी वहाँ की जिस जरूरत के पूरा करने को लिखूँगा, वे बिना अगर-मगर किये उसके पूरा करने का पूरा-पूरा यत्न करेंगे। यह बात अभी से सबको अपने जहन में रखनी चाहिये—

नारायण स्वामी

बलिदान भवन,

देहली

ता० २७-१०-३८

हैदराबाद राज्य और आर्यसमाज

(लेखक श्री नारायणस्वामी जी)

—❀—

इस राज्य के कुछेक अदूरदर्शी और ठीक बातों से अनभिज्ञ राज्य कर्मचारियों ने समझ रक्खा है कि आर्यसमाज की संस्था, जो उनके यहाँ काम कर रही है, एक सर्पिल-सी रियासत के बाह्य-जगत् से असर्पित संस्था है और सुगमता से कुचली जासकती है। उन्होंने अपने इसी अज्ञान और क्षुद्र विचारों से वहाँ के आर्यों पर, तरह २ के अत्याचार कर रक्खे हैं। उनमें से कुछेक का विवरण इस प्रकार है—

(१) पाँच नवयुवक और उत्साही आर्य मुसलमानों द्वारा वध किए जा चुके हैं।

(२) ४०० आर्य इस समय रियासत की जेलों में हैं।

(३) ७०० के लगभग आर्यों पर तरह तरह के मुकद्दमात चल रहे हैं।

(४) आर्यसमाज का कोई पत्र रियासत में नहीं निकल सकता। जो एक निकलता था, वह बन्द कर दिया गया।

(५) आर्यसमाज के मन्दिरों में, कोई उपदेशक बिना आज्ञा प्राप्त किए उपदेश नहीं कर सकता और माँगने पर इजाज़त, प्रायः नहीं मिलती।

(६) कोई आर्य अपने निजी मकान में भी, आर्यसमाज का काम नहीं कर सकता, यदि करे तो उस पर अभियोग चलाये जाते हैं।

(७) वहाँ [राज्य] की पुलिस की मनोवृत्ति समझने के लिए एक घटना का उल्लेख कर देना काफ़ी है। एक बार मैंने स्वयं अपने कानोंसे सुना कि पुलिस के सिपाहियों की एक पार्टी जो वरदी में थी, खुले-ख़ज़ाने सड़कों पर, यह गाती हुई जारही थी कि वह दुनियाँ में इस्लाम का प्रचार करेगी—स्पष्ट है कि वहाँ की पुलिस जनता की सेवक नहीं, अपितु इस्लाम की प्रचारक है।

(८) जेलख़ानों में, रियासत के मुसलमान जेल कर्मचारी हिन्दू कैदियों को मुसलमान बनाया करते हैं।

इन उपर्युक्त पंक्तियों में, अनन्त अत्याचारों में से केवल कुछेक का, नमूने के तौर पर, उल्लेख किया गया है। इनसे प्रकट है कि वहाँ आम तौर से हिंदुओं और विशेष कर आर्यों की अवस्था दयनीय है। अब प्रश्न यह है कि रियासत से बाहर के आर्यसमाजों और आर्यों का इस सम्बन्ध में कर्तव्य क्या है? क्या यही कि देखते रहें और कुछ न करें अथवा इस से कुछ अधिक। यदि अधिक तो उसके पूरा करने का समय कब आवेगा?

—:०:—

अध्यात्म-धारा

ईश्वर का भय

श्री० स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी के प्रवचन के आधार पर

***

ईशावास्यमिदꣳ सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।
यजु० अ० ४० म० १

अर्थ—हे जीव! यह सम्पूर्ण संसार जो दृष्टिगोचर हो रहा है या उसके जो भिन्न २ अवयव दिखाई देते हैं वे सब ईश्वर के निवासस्थान हैं। जो मनुष्य परमात्मा की आज्ञाओं को भूल जाते हैं, वे दुःखों को भोगते हैं, इसलिये तू किसी का धन लेने की इच्छा मत कर।

यह कैसा उत्तम उपदेश है, जिसके समझने से मनुष्य सर्वदा पापों से बचकर सुख और शान्ति को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य में डरने की स्वाभाविक टेव है। जब मनुष्य कोई पाप करने लगता है तो उस समय उसके चित्त में भय उत्पन्न होता है और वह उस पाप को छिपा कर करने का प्रयत्न करता है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं, जिसके हृदय में पाप करते समय भय न उपजता हो। इसी भय के कारण वह घर के भीतर जाकर, किवाड़ बन्द करके और द्वार पर सहयोगियों को खड़ा करके पाप करता है। यदि मनुष्य को यह ज्ञान होता, कि मैं पाप करके किसी प्रकार भी दण्ड से नहीं बच सकता, तो वह कदापि पाप न करता, परन्तु मनुष्यों के हृदय में धार्मिक-शिक्षा न होने के कारण उनको परमात्मा की सत्ता एवं सर्व-व्यापकता का ज्ञान तो होता ही नहीं, इससे वे परमात्मा से न डरकर केवल मनुष्यों के भय से बचने का प्रयत्न करते हैं। वर्त्तमान समय में सबसे प्रथम तो मानुषिक भय गवर्नमेंट का है। वे जिसको इस प्रकार निवृत्त कर लेते हैं, कि इस बन्द घर में कोई देखता ही नहीं है। यदि कोई मनुष्य देख भी लेगा और वह गवर्नमेंट का कर्मचारी होगा, तो उसे कुछ घूंस दे दी जावगी। इससे भी काम न चलेगा, तो झूठे साक्षी उपस्थित कर दिये जावेंगे, जिन से कि न्यायालय से अवश्यमेव छुटकारा हो जावेगा। यदि इसमें भी सफलता न हुई, तो वकील (प्राड्विवाक) करके मुकद्दमे को क़ानूनी कमजोरियों (राजकीय नियमों की त्रुटियों) से जीत जाऊँगा और यदि इन बातों से भी काम न चला, तो न्यायाधीशों को पूरी घूंस देकर बच जाऊँगा। यह विचार हैं जिनके कारण मनुष्य गवर्नमेंट का भय होते हुये भी पाप करना नहीं छोड़ते। दूसरा भय जाति का है, वह तो आजकल जाता ही रहा। जिसका कारण यह है कि जाति में ऐसे मनुष्य बहुत थोड़े देखने में आवेंगे जो स्वयं

किसी-न-किसी पाप के अपराधी न हों। जब कोई मनुष्य किसी पापी को जाति-सभा के समक्ष मे उपस्थित करने लगता है, तो यह विचार तुरन्त ही उसके मनमें आ पहुँचता है कि यह भी मेरे दोष अवश्य प्रकट करेगा बस ? वह अपने विचार को छोड़ देता है। तीसरा भय लोक लाज का है, सो इसका तो आजकल चिह्न भी नहीं दिखाई देता। जब देश की यह दशा है, तो पापों का बढ़ना आवश्यक ही है। जब पाप अधिक होने लगेगा तो दुर्भिक्ष, प्लेग, भूकम्प तथा लड़ाई-झगड़े आपत्तियों का आना अत्यावश्यकीय है, जिसका उपचार (इलाज) किसी मनुष्य के हाथ में नहीं, न गवर्नमेंट इसको रोक सकती है और न जाति ही उसका कोई रोक थाम कर सकती है, ऐसी अवस्था मे मस्तिष्क पर धार्मिक शिक्षा का प्रभाव किये बिना मनुष्यों का पापों को छोड़ना बहुत कठिन है। प्राचीन काल में जब मनुष्य ईश्वर से डरते थे, तो उस समय संसार मे पाप बहुत ही थोड़ा दिखाई देता था, परन्तु जब से वेदों की शिक्षा बन्द हो गई और जनता या तो नास्तिक हो गई या ईश्वर को एक-देशी मानने लगी, तो उनको पाप करते समय ईश्वर का भय न रहा। वेदों की पवित्र शिक्षा के समय में पाप करना, अति दुष्कर जान पड़ता था, क्योंकि जब मनुष्य यह जानता है कि मेरे पापों का दण्ड देनेवाला मेरे सम्मुख विद्यमान है, जिसको मैं किसी प्रकार की घूंस से प्रसन्न नहीं कर सकता। न झूँठे साक्षियों से छुटकारा होगा, क्योंकि वह स्वयं देख रहा है, न वकील से काम चलेगा, क्योंकि वह सर्वज्ञ है, अतः वह किसी प्रकार धोखे मे नहीं आ सकता है। न उसके राज्य से भाग कर कहीं जाया जा सकता है, अतः वह इससे भयभीत हो तुरन्त पापों को छोड़ देता है, परन्तु ईश्वर को नहीं मानना एक ऐसी बुराई है, जो मनुष्य को साहस दिलाती है और जिसके कारण वह पाप से नहीं बचता। वह जानता है कि जब पुलिस पकड़ने आवेगी, तो उसके मुक़ाबले में सफलता की आशा है। बहुधा राजा, महाराजा और नवाब आदिक तो अपने को पुलिस के भय से रहित ही समझते हैं। जब मनुष्य को यह विश्वास हो जावे कि जिस शक्ति के हाथ में मेरे पापों का फल देना है, वह इतनी बलशाली है कि संसार के बड़े-से-बड़े महाराजा,लाखों सेना, हाथी, घोड़े, खड्ग, भुशुण्डी [बन्दूक] तोप और डिनामेट के गोले आदि रखते हुये भी उसके वारेन्ट मौत (मृत्यु-संदेश) को एक मिनिट के लिए भी कोई नहीं रोक सकता, क्योंकि वह समस्त अस्त्र-शस्त्रादि तो बाह्य-आक्रमण के रोकने के निमित्त हैं, परन्तु पापों का दण्ड देनेवाली शक्ति तो भीतर विद्यमान है। कितना ही बड़ा दुर्ग बना लिया जाय, वह केवल बाह्य शक्तियों से बचाने के लिए लाभकारी होगा, आन्तरिक शक्ति से बचाने के लिए तो वह बिल्कुल निकम्मा है। जितने सहायक हों, वे भी देह-धारियों से बचा सकते हैं, परन्तु देह रहित निराकार ईश्वर पर इनका कोई प्रयोग नहीं हो सकता है। जितने शस्त्रास्त्र हैं, वे सब भी देह-धारी पर ही चलाये जा सकते हैं।

जिस शक्ति से पाप करके हम किसी प्रकार नहीं बच सकते और न कोई सांसारिक साधन उसको रोक सकते हैं, ऐसी शक्ति से विमुख होना मानो अपने को दु ख के समुद्र मे डुबोना है। मनुष्य दुःख का कारण जानकर किसी काम को नहीं करता। उसकी इच्छा तो सुख प्राप्त करने एवं दु ख से बचने की है, अत. वह पाप को दु ख का कारण जानते हुये कभी नहीं कर सकता। यदि संसार मे दु ख से बचानेवाली कोई शक्ति है—तो वह ईश्वर का भय है, जिसका दृढ़ विश्वास होना चाहिये। यदि मनुष्य को यह विश्वास हो जावे, कि ईश्वर, संसार के प्रत्येक खण्ड मे विद्यमान है, मेरे भीतर भी है, मैं किसी प्रकार उसकी दृष्टि से अपने पापों को नहीं छिपा सकता हूँ और न ईश्वर का पुत्र मुझे पाप करने पर दण्ड से बचा सकता है और न किसी की शफाअत [सुफारिश] से पापों से बचना हो सकता है और न किसी प्रकार के छापे तिलक तथा भेष-धारण करके पापों के फल से बचा सकता हूँ, तो वह कभी पाप न करेगा, जितने मतमतान्तर हैं, ये सब पाप बढ़ने के कारण हैं, क्योंकि ये ईश्वर को एकदेशी मानते हैं, जिससे मनुष्य के हृदय मे उसका भय तनिक भी नहीं रहता है।

कतिपय मनुष्य तो यह विचार लेते हैं. कि पाप करके "तोबा"-कर लेंगे, तो परमात्मा हमारे पापों को क्षमा कर देगा परन्तु जब तनिक "तोबा" करने से ही पाप क्षमा हो जावेंगे, तो पापों से कोई क्यों बचेगा। किसी ने कहा कि पापों का भार मसीह उठाकर ले गया। भला? फिर ईसाई पाप करने से क्यों बचेंगे। किसी ने समझा कि गंगा स्नान से मुक्ति होगी और सहस्रों जन्म के पाप छूट जावेंगे। अब बताइए यह मानने वाला पाप से क्या डरेगा। आज कल तो गंगा जाने के लिये दो तीन रुपये से अधिक की आवश्यकता ही नहीं है। बस? जब तीन रुपये में ही पाप छूटने लगे-तो फिर धनी क्यों पाप से डरेंगे। इस प्रकार इन मतमतान्तर वालों ने ईश्वर को एकदेशी मान कर उसको सांसारिक गवर्नमेंट की भांति पापों के हटाने में अशक्त बना दिया है।

बहुधा मनुष्य कहेंगे कि हम तो ईश्वर को एकदेशी नहीं मानते, परन्तु उनसे पूछें कि जब तुम्हारा ईश्वर एकदेशी "ही नहीं"-तो फिर उसके पैगम्बर (दूत) किस प्रकार हो सकते हैं, क्योंकि पैगम्बर का अर्थ पैगाम [संदेशा] लाने वाले के हैं और पैगाम सर्वदा दूर से आया करता है। दूरी सर्वदा एकदेशी पदार्थों के बीच में होती है। बस? पैगम्बर मानना ईश्वर को एकदेशी मान कर उसके भय से संसार को हटा करके (संसार को) पापी बनाना है। जो मनुष्य कफ्फारा (ईसा-द्वारा गुनाहों से छूटने) से मोक्ष मानते हैं, वे मानों घूँस देकर परमेश्वर के दण्ड से बचना चाहते हैं।

इसी भांति जो लोग अवतार मानते हैं, वे भी ईश्वर को एकदेशी मानते हैं, नहीं, तो वह पहिले किस शरीर में नहीं था, जहां उसने अवतार लिया।

इसी प्रकार किसी ने उसको सातवें आस्मान पर जा बैठाया और किसी ने चौथे आस्मान पर उसका स्थान ठहराया। कोई वैकुण्ठ में बताने लगा और कोई क्षीर-सागर में गोता खाने लगा। किसीने गोलोक को उसका निवासस्थान बनाया और किसी ने कैलासवासी आ ठहराया। साराश यह है, कि इन मतमतान्तरों के दीपकों ने अपने परिमित प्रकाश के कारण अपने प्रकाश के बाहर उसे न देख कर इतना ही बताया, जिससे यह समय आगया कि चारों ओर पापों का समुद्र वेग से बहने लगा। लोग एक आने के लिये झूठ बोलने के लिए तय्यार हैं। अपनी आयु ईश्वर भक्ति, धन के लिए गँवा देते हैं। कतिपय मनुष्यों ने तो धन को परमेश्वर की मूर्ति भी बना दिया। भला? उन्हें वैराग्य किस प्रकार हो सकता है। वे समझते हैं कि यदि और किसी की सिफारिश न सुनी जायगी, तो उसकी भी जिसके संचय करने में हमारा समस्त जीवन व्यतीत हुआ है, जिसकी भक्ति हमने धर्म, कर्म और सत् असत् का विचार छोड़ कर की है, जिस के लिए हमने लाखों पाप किए हैं, सहस्रों मनुष्यों को धोखे दिए, उसकी सिफारिश (अनुरोध) से तो अवश्य ही काम निकल जावेगा। ऐसे विचारों ने ही तो मनुष्य जाति के मस्तिष्क को हानि पहुँचाई है। नहीं-नहीं? उनको मनुष्य से पशु बना दिया है, क्योंकि पशु आगामी का विचार न करके केवल वर्तमान स्थिति के लिये ही प्रवृत्त करता है, इसी प्रकार वर्तमान समय के मनुष्य, धर्म के द्वारा होने वाले भविष्य के प्रबन्ध को छोड़ कर धन से पूर्ण हो जाने वाले वर्तमान के प्रबन्ध में लग गये हैं। उनको यह ध्यान नहीं कि यह धन हमारे मरने पर हमारे संग नहीं जायगा। इस बात का ध्यान उन्हें हो भी कैसे सकता है? क्योंकि मृत्यु तो आगे होगी और उन्होंने पशुओं से यह पाठ पढ़ लिया है कि आगामी की चिन्ता ही नहीं करनी है, केवल वर्तमान के लिए ही प्रबन्ध करना चाहिए—यही कारण है, कि सम्पूर्ण देश का धन अपने अधिकार मे लाना चाहते हैं।

यदि धर्म-दृष्टि से कोई ऐसा काम करें-तब तो कोई शिकायत का स्थान नहीं परन्तु यह तो अपने साथियों को हानि पहुँचाकर और उनको अपने वश मे लाकर अपना दास बनाना चाहते हैं। उन्हें यह पता नहीं कि प्राकृतिक नियमानुकूल मनुष्य इस बात में असमर्थ है, कि बिना परोपकार किए अपना भला नहीं कर सकता। क्योंकि कुदरत (ईश्वरीय नियमों) ने मनुष्य के शरीर में भिन्न २ अवयव रख कर यह शिक्षा दी है, कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का कोई अंग अपनी सहायता से आप ही लाभ नहीं उठा सकता, जब तक वह अन्य अवयवों को उस में सम्मिलित न कर लेवे।

इस प्राकृतिक शिक्षा से विदित होता है, कि यदि एक अवयव दूसरे अवयव से विरोध करके अपना काम छोड़ दे अथवा उससे भी जो फल प्राप्त हो, उसे भी अपने पास रख ले, तो परिणाम यह होगा कि वह अवयव अवश्य नष्ट हो जायगा, क्योंकि उस वस्तु से जो भोजन उसे मिलता था, वह न मिलेगा। कुदरत बतला रही है कि जिस

प्रकार शरीर के सम्पूर्ण अवयव एक दूसरे के लिये काम कर रहे हैं, इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को दूसरों के लिए काम करना चाहिए, जिससे उसका अस्तित्व बना रहे अन्यथा अपने लिए काम करने में तो अपने जीवन को बनाये रखना निरा असम्भव होगा। सारांश यह कि स्वार्थ का नाश ही उन्नति का पहिला भाग है-इसीलिए नीतिकार ने कहा है :—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अर्थ— यह मेरा और यह दूसरों का है-थोड़ी बुद्धि वालों का ऐसा विचार होता है, परन्तु जो बुद्धिमान् हैं, वे तो समस्त संसार को ही अपना कुटुम्ब समझते हैं। जब तक सम्पूर्ण जीवों को अपना न समझा जावेगा, तब तक मनुष्य को कुदरती तौर पर उत्तम कर्म करने की योग्यता ही नहीं होगी।

कुछ मनुष्य यह कहेंगे कि हमें अपनी जाति में दूसरी जाति से स्वत्व प्राप्त करने की जागृति उत्पन्न करनी चाहिए और अपनी जाति की ही सहायता करना उचित है, परन्तु यह विचार (प्राकृतिक) नियम के नितान्त विरुद्ध और नाश करने वाला है, क्योंकि हमारे शरीर में कई जातियां विद्यमान हैं, जैसे एक जाति तो ज्ञानेन्द्रियों की दूसरी कर्मेन्द्रियों की और तीसरी नाड़ियों की है। अब यदि ज्ञानेन्द्रियां कुदरती यह विचार करलें, कि हमें कर्मेन्द्रियों की सहायता न करनी चाहिये तो आंख, हाथ को मार्ग न दिखा कर अपने सजाति नाक, कान, रसना तथा त्वचा को मार्ग दिखावेगी और अपनी वस्तुओं की माहियत (आन्तरिकदशा) बतावेगी, जिसको उठाने की शक्ति इनमें से एक भी नहीं रखती। परिणाम यह होगा कि आंख न तो स्वयं भोजन प्राप्त कर सकेगी और न अपने सजाति ज्ञानेन्द्रियोंको भोजन मिलने देगी। इससे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि आंख का काम है कि कर्मेन्द्रिय हाथ पाव की सहायता करे और हाथ भी ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् रसना को सौंप देवें। यह ऐसा उत्तम पाठ मिल रहा है कि कौमी खयाल (जाति का भाव) मनुष्य जाति के लिये हानिकारक है। जब तक मनुष्य प्रत्येक को अपना भाई समझ कर उसके स्वत्व छीनने से न हटेंगे और अपने हृदय में शत्रु-मित्र का भेद रखेंगे-तब तक उन्नति का स्वप्न में भी दर्शन न होगा। इसलिये आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य बिना जाति-भेद-भाव के प्राणी मात्र की सहायता का प्रयत्न करे, जिससे स्वयं उसका अस्तित्व भी बना रहे।

यहां से एक और पाठ भी मिलता है, कि यदि पेट अपने काम को भली भांति न करे और उस भोजन को दूसरों को बांटने की जगह अपने ही पास इकट्ठा करले तो पेट में दर्द आरम्भ हो जाता है और महान् क्लेश होने लगता है। यह सब कुछ तभी होता है जब जो प्राण-वायु, प्रत्येक को उसका भाग पहुंचाता है, पेट की सहायता नहीं करता है। जिस प्रकार प्राण-वायु, शरीर के प्रत्येक अवयव में रह कर उनसे काम कराता है तथा पेट की सहायता करके उनको

बलिष्ठ करने के लिये आहार पहुंचाता है, इसी प्रकार संसार में धर्म है, जो प्रत्येक मनुष्य से काम तथा उससे दूसरों की सहायता कराना चाहता है। जहां समाज में धन इकट्ठा करने का विचार उत्पन्न हो जाता है तो यहीं से उसको कब्ज की शिकायत (मलावरोध का कष्ट) हो जाती है और तुरन्त ही उसके हाथ-पॉव ढीले हो जाते हैं। जिस प्रकार पेट में अधिक समय तक वस्तु के रहने से शरीर के अवयवों को हानि पहुँचती है, इसी प्रकार समाज के धनी होने से प्रत्येक मनुष्य शिथिल हो जाता है और चाहता है कि वह स्वयं काम न करे, क्योंकि जिस सोसाइटी (समाज) की सहायतार्थ वह काम करना चाहता था, अब उस समाज ने धन एकत्रित करके अपनी आवश्यकताओं को काम पर नहीं निर्भर रक्खा—वरन् मजमूआ (इकट्ठा करने) पर रक्खा है। चूँकि पेट में आहार के इकट्ठा पड़े रहने से सिवा हानि के किसी को लाभ नहीं होता इसी प्रकार समाज के पास अधिक धन रहने से उसके अङ्ग मनुष्यों में शिथिलता होकर अति-हानि पहुँचती है और आपस में स्वार्थ फैल जाता है। पहले मनुष्य, समाज से पाठ लेते थे—अब समाज उनको धन एकत्रित करने का पाठ पढ़ाता है, जो स्वार्थ के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार हो नहीं सकता। इसलिए परमात्मा ने बताया कि तुम किसी का धन लेने की इच्छा न करो। जब हम किसी का धन न लेंगे, तो हमे स्वयं अपने श्रम से पैदा करना होगा। जब समाज का प्रत्येक मुहसन (नेक) अङ्ग अपने मे धर्म रखनेवाला होगा, तो समाज भी इसी प्रकार का हो जायेगा। जब समाज इस प्रकार का होगा, तब तो अवश्य ही ससार मे सुख-ही-सुख दृष्टि-गोचर होगा। जब तक मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक न मानेगा, तब तक प्राण अर्थात् धर्म रह नहीं सकता। अब जिस प्रकार प्राण वायु की सहायता अग्नि से होती है—उसी प्रकार धर्म की सहायता परमात्मा से होती है। जहाँ अग्नि मन्द हुई वहीं से वायु का बिगड़ना आरम्भ हो जाता है, इसी प्रकार जहाँ ईश्वर का विश्वास और उसके सर्वव्यापी होने का विचार दूर हुआ कि वहीं से धर्म भी बिगड़ने लगता है। इस समय मनुष्य पाप से डरना छोड़ देते हैं।

क्या ऋषि दयानन्द 'ऋषि' नहीं कहे जा सकते हैं ?

(लेखक—श्री० पं० शिवशर्मा जी)

❀ ❀

कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं जो बिना सोचे विचारे ही ऋषि दयानन्द जी पर व्यर्थ ही आक्षेप किया करते हैं। उन आक्षेपों में से एक आक्षेप यह भी है कि श्री स्वामी दयानन्द जी ऋषि नहीं कहाये जा सकते, क्योंकि ऋषि उस को कहते हैं जो मन्त्र का द्रष्टा हो। श्री स्वामी दयानन्द जी किसी मन्त्र के द्रष्टा नहीं हैं अत वे ऋषि नहीं कहाये जा सकते ? परन्तु यह विचार नितान्त ही अशुद्ध है—केवल उनकी भ्रान्ति मात्र है। यह बात सत्य है कि मन्त्र द्रष्टा ऋषि होते हैं परन्तु यह सिद्धान्त भी ठीक है कि वेदोद्धारक, वेद प्रचारक और किसी विशेष विद्या के प्रचारक को भी ऋषि कहते हैं।

ऋषि शब्द ऋष् गतौ धातु से उणादि प्रत्यय से बनता है, जिसके अर्थ हैं—ज्ञानी। जिन पर सृष्टि के आदि में वेदों का प्रकाश हुआ हो वह ज्ञानी—ऋषि हैं। जिन्होंने तदुपरान्त वेदों के अर्थों का समाधिस्थ होकर विशेष अनुसन्धान किया हो, वे भी ऋषि कहाये। परन्तु स्मरण रहे कि उनके पश्चात् सदैव कालके लिये ऋषित्व का द्वार बन्द नहीं हो गया। ऋषि शब्द अनेक अर्थों का वाचक है—इसके वाच्य बहुत हैं।

१—"ऋषिर्हिपूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा" ऋ० ८६।४१॥

भावार्थ— ऋषि) द्रष्टा (हि) निश्चय (पूर्वजा) पहला—सर्वोत्कृष्ट (असि) है (एक) अकेला (ईशान) स्वामी (ओजसा) बल से।

Griffith—Thou art a Rishi born of old, sole Ruler over all by might

यहाँ पर ईश्वर को ही ऋषि कहा गया है।

२—व्यास जी ऋषि, महर्षि और परमर्षि थे—

(१) कामोपभोगेन रहस्तस्या तुष्टि मगाद् ऋषि । महा० आदिपर्व अ० १०६।२६

(२) अध्यायाना शतं प्रोक्तं षडशीतिमहर्षिणा आदि पर्व अ० २।४२

(३) अध्यायानां शतं द्वेतु संख्याते परमर्षिणा। आदि पर्व अ० २ श्लोक १३०

३—वेदमन्त्रों को भी ऋषि कहते हैं—

कर्त्तरिचर्षि देवतयो । अष्टाध्यायी ३।२।१८६

इस पर महोत्रि दीक्षित—' ऋषिर्वेदमन्त्र "।

पितृयाण वापिहि न ऋषेर्वच श्रुतम्—

"द्वेसृती अशृणव पितॄणामहं देवानाम्।

बृह० उप० ६।२।२॥

४—तस्मादियं वाक् इदानीमपि पाणिन्यादि महर्षिभिव्याकृता सर्वैःपठ्यते। इत्यर्थः।

निरुक्तालोचनम् पृ० २

यहाँ पर पाणिनि को ऋषि कहा है।

५—प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवान् ऋषि। वाल्मी० रा० बालकाण्ड सर्ग ४ श्लोक १॥

यहाँ पर वाल्मीकि जी को ऋषि कहा है।

ऋषेर्धर्मात्मनस्तस्य कारुण्यं समपद्यत।

वा० रा० का० १ स० २ श्लोक १३

चतुर्विंशा सहस्राणि श्लोकानामुक्तवान् ऋषि

वा० रा० बालकाण्ड स० ४।२

एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं, परं कौतूहलं हि मे। महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।

वा० रा० बाल० स० १।५

ये सब ही श्लोक वाल्मीकि जी को ऋषि महर्षि कह रहे हैं।

६—प्राणो वै वसिष्ठ ऋषि। मनो वै भरद्वाज ऋषिः। चक्षुर्वै जमदग्नि ऋषिः।

शतपथ ८।१।६॥ ८।१।८॥ ८।२।३॥

यहां पर प्राणों को ऋषि कहा है।

७—"तस्मैश्वाश्वेत प्रादुर्बभूव तमन्येश्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भगवानागायत्वशयाम वा इति"। छा० उ० प्रपा० १ पर्वं० १२ प्रवाक् २॥

मुख्यप्राणा वागादयो वा प्राणमन्वन्नमुञ्ज। स्वाध्याय परितोषित: सन्त अनुगृह्णीयुरेन श्वरूपं माद्यायेति।

इस पर शङ्कर स्वामी—

स्वाध्यायेन तोषिता देवता ऋषिर्वागृहीत्वा-श्वावेतः सन् तस्मै तस्मैऋषये प्रादुर्बभूव"।

इस पर अनन्दगिरि—

'श्वेतश्वाकश्चिद् ऋषिर्देवता" अन्येच—श्वानो देवता ऋषयोवा। यहाँ पर कुत्ते को ऋषि कहा है।

श्रवण वर्णसङ्कर और शूद्र या वह भी ऋषि कहाया—

८—(१) ब्रह्महत्याविकं पापं हृदयादपनीयताम् नद्विजातिरहं राजन्! माभूत्तेमनसोव्यथा। ५०। शूद्रायामस्मि वैश्येन जातो नर नराधिप! वाल० रा० अयो० स० ६३। ६४।

अर्थात् श्रवण कहता है—हे राजन्! ब्रह्महत्या के पाप को हृदय से दूर करदे। मैं द्विज नहीं हूँ। तेरे मन को दु ख न हो मै वैश्य द्वारा शूद्रा में उत्पन्न हुआ हूँ।

परन्तु गुण से दशरथ ने इसको ऋषि कहा—

(२) ऋषिर्हिन्यस्त दण्डस्य वने वन्येन जीवित'
कथंनुशस्त्रेण वधोमद्विधानस्य धीमत।
(३)तस्याहं करुणांश्रुत्वा ऋषेर्विलपतो निशि।३८
संभ्रान्त शोकवेगेन भृशमासं विचेतनः। ३५
(४) वधमप्रतिरूपत्वं महर्षेस्तस्य राघव.।
विलपन्नेव धर्मात्मा कौसल्यामिदमब्रवीत्।

अयो० स० ३३।३४।३५

अब विचारिये, जो यह कहते हैं कि "मन्त्र-दर्शनात् खलु, ऋषीणां ऋषित्वम्।" अर्थात्—केवल ऋषि वही है, जिसने मन्त्रों को देखा हो। कहाँ तक सत्यता पर है? "अथवा ऋषिर्वोमन्त्र द्रष्टार:" की रटना लगाकर महर्षि स्वामी दयानन्द के ऋषित्व पर सन्देह करते हैं? क्या व्यासदेव जी, वाल्मीक जी, पाणिनि जी, श्रवण और

बौद्ध धर्म में स्त्री का स्थान

(श्री० डा० अल्टेकर एम०एल०एल०बी०डी०लिट्)

अपने संघ में स्त्रियों को प्रविष्ट करनेकी बुद्ध भगवान की इच्छा नहीं थी। अपनी माता के अत्यन्त आग्रह पर बड़ी अनिच्छा से भिक्षुणियो को संघ में प्रवेश को आज्ञा दी थी। इन भिक्षुणियों को भिक्षुओं को अपेक्षा बहुत कड़े नियन्त्रण और प्रतिबन्धों मे रहना होता था। कुछ प्रतिबन्ध सचमुच बड़े युक्तियुक्त थे। यह नियम बना दिया गया था कि भिक्षुओं के सरक्षण के बिना भिक्षुणियों को अकेले कहीं नहीं ठहरना चाहिए। बुरे आदमियों की संगति से उन्हें दूर रहना चाहिए। जिनकी पवित्रता और सचाई मे जरा भी सदेह नहीं है ऐसे ही भिक्षुओं को उनके सामने उपदेश देना चाहिए। भिक्षुणियों को सदैव दो-दो, तीन-तीन के समूह में रहना चाहिए। दूसरे कुछ नियम स्त्रियों के आचार और योग्यता में अविश्वास के सूचक हैं। नवीन भिक्षुणी के संघ मे प्रवेश की आज्ञा भिक्षु और भिक्षुणियों की सम्मिलित मीटिंग देती थी जब कि नए भिक्षु भिक्षुणियों से परामर्श लिए बगैर प्रविष्ट हो सकते थे। जब अनुभवी संरक्षिका साथ मे होती थी तब ही भिक्षुणियों को भिक्षा के लिये बाहर भेजा जाता था। बौद्ध संघ में स्त्रियों के प्रति विषम व्यवहार की पराकाष्ठा एक विचित्र नियम से हो गई थी। वह नियम यह था कि भिक्षुणी को भले ही वह १०० वर्ष की उम्र की क्यों न हो बौद्ध भिक्षु के सामने सम्मानार्थ खड़ा होना चाहिए। वह भिक्षु भले ही संघमें नया ही क्यों न प्रविष्ट हुआ हो। पाठकों को अब यह जान कर आश्चर्य न होगा कि कोई भी भिक्षुणी-भिक्षुओं के सत्संघ में उपदेश नहीं देसकती थी हाँ खास २ चुने हुए भिक्षु उनके सत्संगों में उपदेश दे सकते

नारदादि देवर्षि किसी मन्त्र के द्रष्टा ऋषि हैं? यदि नहीं, तो इनको ऋषित्व, परमर्षित्व और महर्षित्व किस योग्यता से मिला? फिर वह नियम कहाँ रहा कि मन्त्र द्रष्टा ही ऋषि कहावे अन्य विद्वान् नहीं? जिसने किसी एक मन्त्र का भी विशेषार्थ परक अनुसन्धान किया वह ऋषि कहाया; परन्तु चारों वेदों का परमोद्धारक श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती परिव्राजकाचार्य ऋषि तक न कहावे? किमाश्चर्यमतः परम्? इन सब बातों के अतिरिक्त जो-जो आर्ष-ग्रन्थ कहाते हैं, वे सब ऋषियों के बनाये हैं। आर्ष शब्द ही ऋषि शब्द से बना है। अर्थात् जो ऋषिप्रोक्त हो वह आर्ष। यदि हम आर्ष-ग्रन्थों की नामावलि लिखकर यह पूँछने लगें कि यह ग्रन्थकर्त्ता 'ऋषि' किस योग्यता से कहाये, तो विरोधियों को चुप ही रहना पड़ेगा।

थे। यहां यह भी कह दिया जाता है कि प्रारंभिक काल के ईसाई गुरुओं के भी ऐसे ही विचार थे। उनकी धारणा थी कि स्त्रियों को उपदेशाधिकार देना कुदरत के विरुद्ध है। लोडोशिया की कौंसिल ने ३६५ई० में स्त्रियों के लिये उपदेश का द्वार बन्द कर दिया था और उन द्वारों को खुलवाने मे स्त्रियों के समस्त आन्दोलन आजतक भी सफल नहीं हुए हैं। इस्लाम स्त्रियों को कुरान के पढ़ने की आज्ञा तो देता है परन्तु इनमे से उपदेश करनेको नहीं।

ऊपर के नियमों मे मनुष्य के बड़प्पन का भाव पाया जाता है और जहाँ तक स्त्रियों का सम्बन्ध है जिसका परित्याग करना प्राय मनुष्य के लिए कठिन होता है। ये सब नियम सदैव व्यवहार में नहीं आते थे। किसी दशा मे भी भिक्षुओं को उपदेश न देने का सिद्धान्त नेमीनाथ की पत्नी राजमती के मार्ग मे बाधक नहीं हुआ। उसने अपने बहनोई को जिसका आत्म-संयम जाता रहा था उपदेश दिया था।

इन सब पक्षपात-पूर्ण नियमों के होते हुये भी संघ मे स्त्रियों के प्रवेश की आज्ञा ने उनके सम्मुख एक आकर्षक भविष्य प्रस्तुत कर दिया था। बुद्ध धर्म से पूर्व सुलभा गार्गी इत्यादि उत्कृष्ट प्रचारिकाएं हो गई थीं परन्तु बौद्ध क्षेत्रों में इन प्रचारिकाओं की संख्या बहुत बढ़ गई थी। बौद्ध धर्म का मत था कि स्त्रीत्व मोक्ष मे बाधक नहीं है। स्त्रियों के लिए विवाह आवश्यक नहीं है वरन् यह एक जंजीर या बेड़ी है जिससे स्त्रियों को बचना चाहिए।

थेरी गाथा की भिक्षुणियों में बहु संख्या उन स्त्रियों की है जिन्होंने अपनी कौमार्य्य अवस्था में संसार का परित्याग कर दिया था। बौद्ध धर्म ने प्रचार और लोक-सेवा का जो द्वार खोल दिया था उससे बहुत सी योग्य देवियाँ आकर्षित हुई थीं और वे बहुत अच्छी प्रचारिका सिद्ध हुई थीं। हम बहुत सी राजकुमारियों को विवाह के प्रलोभनों को लात मारते और बौद्ध धर्म की प्रचार मण्डलियों में प्रवेश करते हुए देखते हैं। कौशाम्बी की राजकुमारी जिस क्षण जीव और जीवन के आदर्श के सम्बन्ध में उसकी शंकाओं का समाधान हो गया था राज वेष का परित्याग करके भिक्षुणी बन गई थी। सुमन बाला और अभिरूपा जैसी कुछ देवियाँ गृहस्थ के अत्याचारों से तंग आकर संघ मे प्रविष्ट हो गई थीं परन्तु उनकी संख्या बहुत बड़ी नहीं देख पड़ती है।

जब नियन्त्रण मे ढिलाई आई और अयोग्य आदमी भिक्षु संघों में प्रविष्ट हो गए तो संघों के सदाचार का पतन हो गया और साथ ही बौद्ध धर्म के पतन की गति भी तीव्र हो गई। इसके बाद हिन्दू धर्म ने बौद्ध संघों और विहारों मे जो कुछ देखा था उससे पाठ ग्रहण किया और और स्त्रियों को संसार परित्याग और भिक्षुणी बनने से इन्कार कर दिया। हिन्दू धर्म ने बतलाया कि गृहस्थ धर्म का उचित रीति से पालन करना ही स्त्रियों का परम पवित्र कर्त्तव्य है और इसका परिणाम यह हुआ कि गत १५० वर्ष में हिन्दू धर्म से भिक्षुणियों का लग भग लोप हो गया।

सत्यार्थ-प्रकाश लेख-माला

ब्राह्मण ग्रंथ ही पुराण हैं

(श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

सत्यार्थ-प्रकाश में तृतीय और एकादश समुल्लास में महर्षि जी ने निम्न पाठ उद्धृत किया है:—'ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथा नाराशंसीरिति। समुल्लास ३। यह गृह्य सूत्रादि (आश्वलायन) का वचन है। जो ऐतरेय, शतपथादि ब्राह्मण लिख आये उन्हीं के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी पांच नाम हैं श्रीमद्भागवतादि का नाम पुराण नहीं।' एकादश समुल्लास में यही पाठ उद्धृत करके लिखा है।

'यह ब्राह्मण और सूत्रों का वचन है। ऐतरेय शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों ही के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा और नाराशंसी ये पांच नाम हैं ।'

सत्यार्थ-प्रकाश के लेख से यह सिद्धांत सिद्ध होता है कि जो १८ पुराण माने जाते हैं प्रथम वह पुराण न थे और संस्कृत में वैदिक साहित्य में जो ब्राह्मण हैं जिनको आर्यसमाज परत प्रमाण मानता है और सनातन धर्मावलम्बी वेद ही लिखते हैं उनके ही किसी भाग को पुराण कहा जाता था। महर्षि जी ने उपरिलिखित प्रतीक में यही बात लिखी है।

सत्याषाढ़ श्रौत सूत्र में एक स्थान पर इस विषय पर विचार किया गया है। उसमें वेद, ब्राह्मण का चरचा भी है। वह एक लम्बा उद्धरण है, पाठक उसे पढ़कर देखें कि वहां यही भाव है या नहीं। मेरी सम्मति में उन्होंने भी सत्यार्थ-प्रकाशवत् साफ २ लिखा है कि ब्राह्मण का कुछ भाग पुराण भी होता है।

अथैतेषां प्रस्थानानां स्वरूपभेदहेतु प्रयोजन-भेदस्तावत्किंचिदुच्यते। तत्र धर्म प्रतिपादकमपौरुषेयं वाक्यं वेदः। स च मन्त्र ब्राह्मणात्मकः। 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (आप० श्रौ० परि०) इति तल्लक्षणस्यान्यत्रोक्तेः। तत्र मन्त्रा अनुष्ठान-कारकभूतद्रव्यदेवताप्रकाशकाः। ते चर्ग्यजुः सम-भेदेन त्रिविधाः। अथर्वणवेदस्य एतेषु त्रिष्वेवान्त-र्भूतत्वेन पृथक्त्वयानभिधानम्। तदेव निरूपिता मन्त्राः। मन्त्र व्याख्यानरूपं ब्राह्मणमपि त्रिविधम्। विधिरूपमर्थवादरूपं तदुभय विलक्षणं चेति। तत्र विध्यादीनां लक्षणभेदादिविस्तरोऽन्यतोऽवसेयः। तदेतद् ब्राह्मणं च पुनरष्टविधम्। तदुक्तं बृहदारण्यके—'इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राणि व्याख्यानान्यनुव्याख्यानान्यस्यैव निःश्वसितानि' इति।

तत्र कथा प्रतिपादक इतिहासः। विश्वस्य पूर्वावस्थानिरूपकं पुराणम्। उपासनात्मविद्या प्रतिपादिका विद्याः। यचोपास्यदेवरहस्य प्रतिपादिका सोपनिषद्। ये मन्त्राःश्लोकवत्पठ्यन्ते ते श्लोकाः। संक्षिप्तार्थ प्रतिपादकं सूत्रम्।

विस्तृतार्थप्रतिपादकं व्याख्यानम्। व्याख्यानस्यापि स्फुटतापादकमनुव्याख्योनम्। एतान्यष्टब्राह्मणानि।

भावार्थ—इन प्रस्थानों के स्वरूप भेद हेतु प्रयोजन भेद के विषय में कुछ कहते हैं। धर्म प्रतिपादक अपौरुषेय वाक्य वेद है। वह मन्त्र ब्राह्मण रूप है। 'मंत्र ब्राह्मण दोनों को वेद कहते हैं यह आपस्तम्ब श्रौत सूत्र की परिभाषा में लिखा है। इसमें मन्त्र अनुष्ठान के मुख्य साधन देवता और द्रव्य के प्रकाशक हैं। वह ऋक्, यजु साम भेद से तीन हैं। (यह भेद भाषा की दृष्टि से है। पद्यरूप ऋक् है। गद्यरूप यजु है और गीतिरूप साम है) अथर्ववेद को इनके अन्तरभूत होने से उसका पृथक् वर्णन नहीं किया। मन्त्र का व्याख्यानरूप ब्राह्मण है वह भी तीन प्रकार का है—विधि रूप, अर्थवाद रूप, उभय विलक्षण रूप। इनमें से विधि आदि को लक्षण और भेद अन्य स्थान पर विस्तार से लिखे हैं और ब्राह्मण पुन: आठ प्रकार का है। यह वृहदारण्यक में कथन किया है। 'इतिहास, पुराण, विद्या उपनिषद् श्लोक, सूत्र, व्याख्यान, अनुव्याख्यान, रूप आठ प्रकार के हैं। जो कथा भाग है वह इतिहास है। विश्व की पूर्वावस्था का जो वर्णन है अर्थात् जगत् उत्पत्ति आदि का वर्णन वह पुराण है। उपासना रूप विद्या का वर्णन करने वाला भाग विद्या कहलाता है। जो उपास्यदेव का रहस्य है उसका प्रतिपादक उपनिषद् है। जो मन्त्र श्लोकवत् पढ़े जाते हैं वह श्लोक है। संक्षेप से अर्थ प्रतिपादक वाक्य सूत्र है। विस्तार से प्रतिपादन करने वाले वाक्य व्याख्यान रूप कहलाते हैं। व्याख्यान को और स्पष्ट करके कहने वाले वाक्य अनुव्याख्यान हैं। यह आठ भेद ब्राह्मण के ही हैं।

यह सत्याषाढ़ श्रौत सूत्र पर जो महादेव शास्त्री जी प्रयोग चन्द्रिका व्याख्या आनन्दाश्रम पूना में छपी है, उसके ११-१४ प्रश्न का पाचवा भाग है। उसकी प्रस्तावना में यह पाठ लिखा हुआ है। जो शतपथ के आधार पर ब्राह्मण के आठ स्थल मानकर उनमें ही पुराण बतलाता है। इस प्रकार यह पाठ महर्षि जी के सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित सिद्धान्त का पोषक है।

सत्यार्थ-प्रकाश में यह वाक्य ब्राह्मण में है। ऐसा भी लिखा है एतरेय ब्राह्मण १०१ में सायणाचार्यजी टीका करते हुए निम्न पाठ लिखकर महर्षि की सम्मति का पोषण कर गये हैं। यथा—

ननु ब्रह्मयज्ञप्रकरणे मन्त्रब्राह्मणव्यतिरिक्ता इति सादयो भाग आम्नायन्ते यद् ब्राह्मणानितिहासान्पुराणानि कल्पान्गाथा नाराशंसीरिति। मैवम्। विप्रपरिव्राजकन्यायेन ब्राह्मणावान्तरभेदाना मेवेतिहासादीनां पृथगभिधानात्। देवासुरा संयत्ता आसन्नित्यादय इतिहास:। इदं वा अग्रे नैव किंचनासीन्न द्यौरासीदित्य दिकं जगत. प्राम-वस्थानमुपक्रम्य सर्गप्रतिपादक वाक्यजातं पुराणम्। कल्पास्तु, क एष येतुकचयनप्रकरणे समाम्नायेते। इति मन्त्रा: कल्पा। अत ऊर्ध्वं यदि बलि हरेत्, इति। [illegible] गाथाभि. परिगायतीति विहिता मन्त्रविशेषा गाथा: मनुष्यवृत्तान्तप्रतिपादिका ऋचो नाराशंस्य:। तस्मान्मन्त्रब्राह्मणव्यतिरिक्तेष भागस्याभावान्मंत्रब्राह्मणाति-रिक्तं ब्राह्मणमिदमेव लक्षणं सुस्थितम्।

धर्मार्य सभा और संस्कार-विधि

(लेखक—श्री० पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय)

**

पूज्यवर श्री नारायण स्वामी जी ने धर्मार्य सभा के प्रधान के पद से जो विज्ञप्ति संस्कार-विधि शोधने के सम्बन्ध में निकाली है उसको देखकर मेरे मन में कई प्रकार के विचार उठे। पहले लोगों को यह शिकायत थी कि आर्यसमाज के विद्वानों में मतभेद हो जाने से प्रचार में बाधा पड़ती है। उसको निर्णायक एक समिति होनी चाहिये जिसके निर्णय को सब मानलें। इसी उद्देश्य से धर्मार्य सभा बनाई गई थी। परन्तु धर्मार्य सभा के निर्णय को मानने के लिए जनता भी तैयार नहीं और न एक धर्मार्य सभा अपने पहले की धर्मार्य सभा के निर्णय को मानने के लिये तैयार है। यह तो असभव है कि सर्वदा धर्मार्य सभा के वही सदस्य रहें और न यही सम्भव है कि धर्मार्य सभा के सभी सदस्य एक स्वर हो जायें। मतभेद तो रहेगा ही और निर्णय बहुमत से करना पड़ेगा। परन्तु यदि अल्प-मत वाले अपने पक्ष को उपेक्षित पाकर जनता मे आन्दोलन करने लगें तो धर्मार्य सभा का मूल्य क्या ? जनता में आन्दोलन तो पहले भी होता था और अब भी हो रहा है। यदि यह मान लिया गया है कि सर्वसाधारण का पक्ष ही माननीय है थोड़े से निर्वाचित विद्वानों का नही तो विद्यार्य और धर्मार्य सभा के तमाशे को बन्द करना चाहिये। जो अधिक गला फाड़ सके, जो अधिक वेदों और स्वामी दयानन्द के नाम की दुहाई दे सके वह जीत जायगा, चलो छुट्टी हुई। यदि जनता समझती है कि वेदों, स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों में कोई ऐसी गूढ़ बात है जिसमें निर्णय करने के लिये कुछ विशेष विद्वानों की जरूरत है तो उन विद्वानों को खोजने

भावार्थ—शका—ब्रह्म यज्ञ प्रकरण में मन्त्र, ब्राह्मण से भिन्न इतिहासादि भाग पढ़े हैं, जो ब्राह्मण, इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, नाराशसी है, यह ठीक नहीं है। विप्र परिव्राजक न्याय से यह सब ब्राह्मण के ही अवातर भेद हैं।

देवासुर लड़ाई करते थे यह इतिहास है।

यह पहले कुछ न था, न आकाश था न पृथ्वी ही इस प्रकार जगत् की पूर्वावस्था से आरम्भ करके जगतोत्पत्ति का वर्णन पुराण।

अरुणकेतु चयन में जो पढ़ा जाता है वह कल्प।

अग्नि चयन प्रकरण में जो यज्ञ गाथा गाई जाती है, वह गाथा नाम से प्रसिद्ध है।

मनुष्य वृतान्त प्रतिपादक भाग ब्राह्मण नाराशंसी है। इसलिए मन्त्र, ब्राह्मण से भिन्न, इतिहास, पुराण, गाथा कल्प, नाराशंसी नहीं है, अपितु ब्राह्मण के ही भाग हैं।

और फिर उनके निर्णय को मानने का प्रयास होना चाहिये। यदि विद्वानों की सम्मति को पहले मागना, फिर उनके मत की खिल्ली उड़ाना अथवा उनका अपमान करना इष्ट हो तो इसके कई और भी उपाय हो सकते हैं। सङ्गठन के नाम को क्यों बदनाम किया जाय। अब तक मैंने तो यह देखा है कि यदि बहुमत मेरा है तो मैं अल्प-मत वालों से सङ्गठन के नाम पर अपील करता हूँ और यदि मेरा मत अल्प मत है तो मैं बहुमत वालों के विरुद्ध आन्दोलन करता, त्याग-पत्र देता, जनता में झूठी सच्ची बातें फैलाने में संकोच नहीं करता तथा अपने विरोधियों को ऋषि का अभक्त, वेदों का अविश्वासी, अनार्य तथा अन्यान्य उपाधियों से विभूषित करता हूँ। हमने आर्यसमाज में प्राय: यही किया है। अन्य सभा वाले भी ऐसा ही करते हैं। ईसाई और मुसलमान, बौद्ध तथा जैनियों के इतिहास में भी ऐसी ही घटनाएँ पाई जाती हैं। इसको आप स्वाभाविक कह सकते है या अस्वाभाविक। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इससे अन्यों को भी भूतकाल मे हानि पहुँची है और हम भी उस अटल प्राकृतिक नियम का अपवाद नहीं हो सकते।

अब आइये संस्कार विधि पर। संस्कार-विधि एक विधि है। यह दैनिक कार्य की चीज है। इसका सिद्धान्त पक्ष कुछ भी हो। परन्तु विधि भाग से तो छोटे-बड़े, शिक्षित-अशिक्षित सभी को आँखें मींच कर काम करना है। सभी पुरोहित वेदज्ञ या शास्त्रज्ञ नहीं होते। कभी-कभी तो मुझ जैसे या मुझ से भी कम जानने वाले संस्कार कराने के लिये बाधित हो जाते हैं। अतः यह पहली आवश्यकता है कि संस्कार विधि की क्रियायें स्पष्ट होनी चाहियें। कम से कम विधि भाग। मैं तो निःसंकोच कह सकता हूँ कि संस्कार-विधि अनेकों स्थलों पर स्पष्ट नहीं है। कई बार पत्रों में कुछ पंडितों ने मुझ जैसे स्पष्ट न बताने वालों को अनेक नामों से पुकारा है। मैं यह नहीं कहता कि उनको भी यह स्पष्ट नहीं है। परन्तु प्रश्न तो मुझ जैसे अल्पज्ञों का है। मैं यह नहीं मानता कि मैं समस्त आर्यसमाज में सब से मूर्ख हूँ। यदि मुझे एक बात स्पष्ट नहीं है तो मुझ से कम जानने वालों को तो और भी कम स्पष्ट होगी। जब संस्कार कराने बैठते हैं तो मैंने कई पण्डितों को असमञ्जस में पड़ते देखा है कि यह करें या वह करें। मैं संस्कार विधि को प्राय. पढ़ा करता हूं। मुझे कई स्थलों पर छूटा हुआ, कई पर पाछे से मिला हुआ, कई पर मन्त्र इधर-उधर हुये प्रतीत हुये हैं। गृह्य सूत्रों से मिलाने पर भी स्पष्टता प्राप्त नहीं हुई। ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त तो इस सम्बन्ध मे, स्पष्ट है और उनकी मनोवृत्ति भी छिपी नहीं है। मैं जहाँ तक समझ सका हूँ ऋषि दयानन्द की मनोवृत्ति यह है कि जहाँ तक हो सके वही विधि रक्खी जाय जो गृह्य सूत्रों या अन्य प्राचीन आर्ष ग्रन्थों मे मिलती है। परन्तु यदि इस विधि में मूर्ति पूजा, देवतावाद या पौराणिकता मिल गई हो तो उसको अलग कर दिया जाय। उन्होंने इस सम्बन्ध में सबसे कम परिवर्तन किया है और इसी बात को दृष्टि मे रख कर।

अन्तिम बात यह है कि क्या किसी को ऋषि के ग्रन्थों में घटाने बढ़ाने का अधिकार है ? परिस्थिति ऐसी है कि चाहे अधिकार हो या न हो कुछ ने तो इस अधिकार को बलात्कार ही हस्तगत कर रखा है। ऋषि के जीवन-काल मे ही पुराने सत्यार्थप्रकाश और संस्कार-विधि मे मिलाने का अधिकार कुछ पण्डितों ने लिया। इस सम्बन्ध में वेद भाष्य के ऊपरी पृष्ठों पर जो विज्ञप्तियाँ ऋषि की ओर से दी गई थी वह लगभग इसी प्रकार की थीं कि अमुक पुस्तक के अमुक पृष्ठ पर ऐसा छप गया है यह वेद विरुद्ध होने से मेरा सिद्धान्त नहीं है। प्रेसों के कम्पोज़ीटरों को खुला अधिकार है कि वह जहाँ तहाँ मात्रायें छोड़ दें। अशुद्ध कर दें एक मन्त्र को दो बार छाप दें। शब्दों का विपर्यय करदें। लेखकों को प्रत्येक समय में मिलावट करने का अधिकार रहा है। परन्तु सशोधकों को अधिकार नहीं है। दूध की खुली बाल्टी में तिनके को पड़ने का अधिकार है, धूल को गिरने का अधिकार है, चिड़ियों को चोंच में भरकर ले जाने का अधिकार है। चींटियों को गिरने का अधिकार है, मक्खियों को दूध के दूषित करने का अधिकार है परन्तु दूध को छानने का किसी को अधिकार नहीं। क्या इस तरह से ऋषि दयानन्द का उद्देश्य पूरा हो सकेगा ? क्या भविष्य में लोग इन बुराइयों को ऋषि के सिर न मढ़ेंगे ? समय प्रत्येक वस्तु को जो शुद्ध से शुद्ध हो दूषित करता रहता है, परन्तु जो लोग उस वस्तु को चिरस्थायी रखना चाहते वह दोषों का प्रतिकार या परिशोधन करते रहते हैं। मेरी समझ में तो जो इस परिशोधन के विरोधी हैं वह कभी सिद्धान्त की रक्षा नहीं कर सकते।

मै यह नहीं कहता कि ऋषि की पुस्तकों में किस प्रकार संशोधन हो। कोई भी उचित रीति काम में लाई जा सकती है। टिप्पणियाँ दे दी जायँ। या नया संस्करण निकालकर उसके ऊपरी पृष्ठ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा सशोधित लिख दिया जाय। या पुस्तक को वैसा ही छोड़कर विधि भाग अलग छाट दिया जाय और ऐसी भाषा में कि किसी को कार्य करने में अड़चन न पड़े।

परन्तु अन्त मे फिर वही प्रश्न है कि करे कौन ? जो करे वही बुरा बने। चाहे सार्वदेशिक की अन्तरङ्ग करे चाहे धर्म-आर्य-सभा। कौन-सी गारटी है कि जनता में आन्दोलन न होगा और पंडित लोग अपण्डित बनकर दूसरों को अपमानित न करेंगे, यदि यही होना है तो एक बात है, या तो

सर्वथा व्यवहर्तव्य कुतो ह्यवचनीयता।
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जन ॥

या

किस-किस की फिक्र कीजिये किस-किस को रोइये।
सबसे भली यह बात कि मुँह ढक के स'इये ॥

भारतवर्ष और पश्चिमी जगत

श्रीयुत के० नटरञ्जन, सम्पादक 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' के लेख का सार

—.—

प्रोफेसर नारमन ब्राउन ने जो अमेरिका के संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् है अक्टूबर के प्रबुद्ध भारत में 'अमेरिका मे भारतवर्ष का अध्ययन' शीर्षक एक लेख लिखा है। वे लिखते है —

"यद्यपि हम सब भारतवर्ष के सास्कृतिक-वैभव से परिचित है तथापि अपनी यूनिवर्सिटियों और कालेजों के शिक्षा-सम्बन्धी प्रोगाम पर एक दृष्टि डालने से हम कल्पना कर सकते है कि भारतवर्ष महान् नहीं रहा है और न उसकी सस्कृति महत्वपूर्ण है। सच्चाई यह है कि भारतवर्ष का अध्ययन प्राय नहीं के बराबर है। जब हम इतिहास और फिलासफी को लेते है और पश्चिमी और पूर्वीय संस्कृतियों और परम्पराओ के संघर्ष को लेते हैं, तो हम उन कारणों को जानने की चिन्ता नहीं करते है, जिनसे यह सघर्ष उत्पन्न होता है।"

अमेरिकन यूनिवर्सिटियों में पूर्वीय वस्तुओं के प्रति उपेक्षा भाव के कारणों को प्रोफेसर ब्राउन स्पष्ट नहीं करते हैं। सबसे स्पष्ट कारण तो यह है कि पूर्व मे अमेरिका का स्वार्थ चाहे वह बौद्धिक हो वा आर्थिक, देश की आवश्यकता से अधिक चीज के निकास के लिए है, उसकी मुख्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं है। ग्रेट ब्रिटेन के सम्बन्ध में इससे भिन्न बात है। यदि भारतवर्ष के साथ व्यापार से या राजनैतिक प्रभुत्व से जिसके द्वारा वह व्यापार चलाया जाता है ब्रिटेन वञ्चित हो जाय, तो ससार की शक्तियो मे उसका स्थान नहीं रहेगा। अमेरिका के सम्बन्ध मे ऐसी बात न होगी। प्राय: समस्त यूनिवर्टियों और अमेरिका की अधिकाश यूनिवर्सिटियों अपने सफल सचालन के लिए धनवान् व्यापारियों और पैसेवालों के ऊपर निर्भर है। ये लोग उन यूनिवर्सिटियों से बदले मे ऐसे उपायों का आविष्कार कराते हैं, जिनसे वे धन कमा सकें। कभी-कभी वे लोग उन विषयों मे अपने धन के उपयोग का सहन कर लेते हैं, जो सीधे उपयुक्त कार्य मे सहायक नही होते हैं। परन्तु सास्कृतिक प्रचार, लोक सेवा, और मिशनरी कार्य के उनके व्यापार मे अप्रत्यक्ष रूप मे सहायक होने की सभावना उनके मस्तिष्क में सदैव बनी रहती है। अमेरिका और पश्चिम एशिया की आमतौर पर उपेक्षा कर सकते है, भले ही धर्म, संस्कृति और फिलासफी के प्रति उसका महत्वपूर्ण योग रहा हो। इसका कारण यह है कि एशिया के निवासी अर्से तक उनके व्यापार और सुविधा के लिए खतरा नहीं रहे हैं। जब से जापान ने व्यापार और सैन्यबल में पश्चिम से बाजी मारना शुरू किया है तभी से पश्चिम की उदासीनता भंग हो

गई है और पिछले दस वर्ष से उसके विरुद्ध साहित्य में वृद्धि हो रही है। यही बात मुख्यतया टर्की और फिलस्तीन तथा साधारणतया मुस्लिम जगत के सम्बन्ध मे चरितार्थ हो रही है। ऐंग्लो सेक्शन के अतिरिक्त अन्य यूरोपियन जातियों के सम्बन्ध में यह बात पूर्णतया सच्ची नहीं है। जब ग्रेट ब्रिटेन ने अपनी यूनिवर्सिटियों मे पूर्वीय संस्कृति के अध्ययन का प्रबन्ध किया था तब जर्मन, फ्रास और रूस ने इस दिशा मे उल्लेखनीय उन्नति कर ली थी, आनन्द यह है कि राजनैतिक और आर्थिक हितों के द्वारा भारतवर्ष इंगलैण्ड के साथ मिला हुआ था।

भारतवर्ष को सभ्यता ससार की सब से पुरानी सभ्यता है। इस्लाम, ईसाइयत और योरोपियन ईसाइयत यह तीन प्रबल विरोधी प्रभाव भी हिन्दू सस्कृति को निर्मूल करने में समर्थ नहीं हुये हैं। प्रोफेसर महोदय कहते है, "हिन्दू-संस्कृति अब उन्नति कर रही है।" प्रोफेसर साहब चाहते हैं कि भारतीय सभ्यता पश्चिम की यूनिवर्सिटियों में अधिक उन्नत स्थान प्राप्त करे और इसका कारण उसका विशाल सहिष्णुता का भाव और उसकी अहिंसाकी शिक्षा बतलाते हैं। जब एक मित्र ने मैक्समूलर से जिसने पश्चिम को भारतीय ज्ञान-विज्ञान से परिचित कराने के लिए बहुत-कुछ कार्य किया था, पूछा कि वह भारतवर्ष क्यों नहीं गये, तो उन्होंने यह उत्तर दिया था कि भारतवर्ष के प्रति मेरा जो अनुराग है, मुझे भय है वह व्यक्तिगत निरीक्षण से कहीं कम न हो जाय। प्रोफेसर महोदय भारतवर्ष में आ चुके हैं। वर्तमान भारतवर्ष में सहिष्णुता और अहिंसा दोनों बहुत कम हो गये हैं इस बात को उन्होंने नहीं देखा, इसे केवल हम उनको उदारता ही कह सकते हैं। सहिष्णुता की कमी की जिम्मेवारी अधिकतर ईसाई मिशनरियों पर है। वे न केवल हिन्दुओं की सहिष्णुता का आदर ही न कर सके वरन्, उन्होंने इसका कारण यह प्रगट किया है कि हिन्दू लोग सत्य और झूठ की पहचान करने के प्रति उदासीन हैं। हमें भय है कि हिन्दू लोग अपनी परम्परागत सहिष्णुता को खोते जा रहे हैं। हिन्दुओ के नेताओं ने अपने इस विश्वास को दूर करने मे असमर्थ होने के कारण कि तमाम धर्म एक ही उद्देश्य के विभिन्न मार्ग हैं जाति का नेतृत्व, आर्य समाजियों को सौंप दिया है जिनका तबलीगी मजहबों से लड़ने के लिये अपने निजू हथियारों में विश्वास है। अहिंसा के सम्बन्ध में पश्चिम ने गांधीजी से प्रकाश ग्रहण करके इसका वह अर्थ लिया है जिसका प्राय भारत वासी नहीं लेते हैं। अहिंसा का अर्थ पूर्ण अहिंसा नहीं। धर्मयुद्ध मे शत्रु को बध करना हिंसा नहीं समझा जाता है।

यदि पश्चिम के लोग यह धारणा बना लेंगे कि अपनी परम प्रिय वस्तु के लिये किसी दशा में भी भारतवासी नहीं लड़ेंगे तो निश्चय ही उनका यह बड़ा भारी भ्रम होगा। अब यह स्पष्ट हो गया है कि योरोप और अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में गांधी जी के अहिंसा धर्म के प्रति जो उत्साह प्रगट किया जाता था वह शायद अनजान में इस आशा के द्वारा उत्पन्न हुआ था कि भारतवर्ष में

साहित्य-समीक्षा

उन्नति की ओर (हिन्दी)

सम्पादक—श्री० डा० युद्धवीरसिंह जी
प्रकाशक—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् देहली
मूल्य ।।)

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के रजत-जयन्ती के स्मारक के रूप मे यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तक में नवयुवकों और आर्यकुमारों के जीवनों को उन्नत बनानेवाली पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। उन्नति के विभिन्न अङ्गों पर आर्यसमाज और उससे बाहर के लेखकों कवियों, विद्वानों और नेताओं के लेख कविताएँ और सन्देश पुस्तक मे दिये गये हैं। आर्यकुमार परिषद् का संक्षिप्त इतिहास और उसकी परीक्षाओं के नियमादि भी दिये गये है। महर्षि दयानन्द, महा० गाधी, परिषद् के सस्थापक श्री डा०केशवदेव जी शास्त्री और परिषद् के सभापतियों एव अन्यान्य निर्माताओं के लगभग १६ के चित्र भी प्रकाशित किये गये हैं। संक्षेप मे, पुस्तक को अधिक से अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने का यत्न किया गया है।

यदि भावात्मक लेखों के साथ-साथ नैतिक-शिक्षण सम्बन्धी आख्यायिकाओं की भी पुस्तक में पर्याप्त व्यवस्था हुई होती तो पुस्तक की उपयोगिता और भी अधिक बढ जाती।

—*—

इसके व्यापक अङ्गीकरण से पूर्व के पाश्चात्य आधिपत्य और शासन के लिये बाधक बनने का खतरा टल जायगा। यदि अहिंसा धर्म के प्रति प्रगट किया हुआ उनका प्रेम कुछ हद तक भी वास्तविक होता तो यह असम्भव था कि पश्चिम के देशों के शस्त्रीकरण के विशाल प्रोग्राम के विरुद्ध उग्र शान्तिवादी चुप न बैठ जाते। पूर्व और भारतवर्ष ने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया है कि पश्चिम को अपना अभिप्राय ठीक ठीक समझाने के एक प्रारम्भिक उपाय के रूप मे उन्हें उसी भाषामे बोलना सीखना चाहिये जिसको पश्चिम समझता है। भले ही हम हवाई बम और जहरीली गैसें प्रयोग म न लाएँ फिर भी हमें पर्याप्त परिमाण में उनका सग्रह रखना तथा अच्छी तरह उनका प्रयोग करना सीखना चाहिये और उच्च स्वर से इसकी घोषणा कर देनी चाहिये जिससे हमारे विरुद्ध लड़ाई करने के इरादों से दूसरे लोग बाज आ जायें। जापान ने उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। चीन को वह वही पाठ पढ़ा रहा है।

ॐ ॐ ॐ



भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् का रजत जयन्ती महोत्सव बिजनौर में प्रोफैसर सुधाकर जी के सभापतित्व में ३० सितम्बर व १ अक्तूबर १९३८ को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। स्वागतकारिणी की ओर से प्रतिनिधियों तथा बाहर से पधारे हुए अन्य सज्जनों के ठहराने तथा भोजन इत्यादि का समुचित प्रबध था जिससे किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। प्रतिनिधि सख्या लगभग १२५ थी।

३० तारीख को प्रात ६॥ बजे से हवन हुआ। ८ बजे से वौलीबौल टूर्नामेण्ट हुई, जिसमें आर्य कुमार सभा पटौदी हाऊस, दिल्ली जीती। मध्याह्न १ बजे से विषय निर्वाचनी का अधिवेशन हुआ, जिसमें अनेकों प्रस्तावों पर विचार हुआ। सायकाल ५ बजे नगर में सभापति का जलूस निकला।

रात्रि को ८ बजे सम्मेलन का खुला अधिवेशन आरंभ हुआ। स्वागताध्यक्ष बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता के भाषण के पश्चात् प्रो० सुधाकर जी ने सभापति पद ग्रहण किया और अपना भाषण पढ़ा। भाषण के पश्चात् महाराजाधिराज सर उम्मेदसिंह जी महाराज शाहपुराधीश, राय साहब मदनमोहन जी सेठ, इत्यादि नेताओंके सदेश पढे गये और परिषद् की गत वर्ष की रिपोर्ट सुनाई गई।

सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं० चमूपति जी, राज्यरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी, सर जगदीश चन्द्र वसु, माता स्वरूप रानी नेहरू, कविवर जय शकर प्रसाद तथा प्रोफैसर रामदास गौड़ की मृत्युओं पर दो शोक प्रस्ताव पास हुए।

श्रीयुत शिवचन्द्र जी, मन्त्री आर्य रक्षा समिति, दिल्ली का निम्न लिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ —

यह सम्मेलन रियासत हैदराबाद में मुसलमान धर्मान्धों द्वारा महाशय वेदप्रकाश जी, धर्मप्रकाश जी तथा महादेव जी के नृशंस एवं कायरतापूर्ण वधों को घोर घृणा की दृष्टि से देखता है और उनकी आत्माओं के लिये पूर्ण शान्ति की प्रार्थना करता है तथा उनके सम्बन्धियों के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रगट करता है।

यह सम्मेलन हैदराबाद सरकार को चेतावनी

देता है कि यदि इस प्रकार की घटनाओं को शीघ्रातिशीघ्र न रोका गया तो उससे उत्पन्न दुष्परिणामों की पूरी जिम्मेदारी निजाम सरकार पर होगी।

इसके पश्चात् ज्वालापुर महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने तलवार इत्यादि के व्यायाम का उत्तम प्रदर्शन किया। डा० युद्धवीर सिंह जी ने परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'उन्नति की ओर' का ऐलान करते हुए आर्य कुमारों को प्रेरित किया कि वे इस पुस्तक का स्वाध्याय अवश्य किया करें।

१ ली अक्तूबर को प्रात ६॥ से हवन हुआ, भजन इत्यादि के पश्चात् मानसिक परीक्षा हुई। जिसमे सब प्रतिनिधियों ने भाग लिया। १० बजे

कुमार सभाओं के प्रति

आर्य्य कुमार परिषद् के भार को उठाते समय, पिछले बिजनौर के वार्षिक अधिवेशन पर मैंने आर्य कुमारों से विशेष रूप से यह निवेदन किया था कि उन्हें अब चेतना चाहिए और अपनी शक्तियों का सगठन करके उन्हें आर्य समाज की प्रगति में विशेष भाग लेना चाहिए। एतदर्थ अब मेरा भारतवर्ष की समस्त आर्य कुमार सभाओं से निवेदन है कि वे शीघ्र से शीघ्र अपना सम्बन्ध परिषद् से जोड़ लेवें।

दूसरा निवेदन यह है कि परिषद् ने जो पुस्तक 'उन्नति की ओर' नाम वाली आर्य कुमारों के दैनिक स्वाध्याय के लिए तय्यार की है उसको बड़ी संख्या में परिषद् के कार्यालय से मगाकर कुमारों में बाँटा जाय। यह कार्य कुमार सभाएँ भी कर सकती हैं तथा वे धनी सज्जन भी जिन्हें आर्य कुमारों से विशेष प्रेम है। इसमें देरी न होनी चाहिए। परिषद् की ओर से हम किसी महानुभाव को कुमार सभाओं मे दौरा लगाने के लिए शीघ्र भेजने का विचार रखते हैं जो कुमार सभाओं को सगठित करने तथा उनके कार्य को सुचारु रूप से चलाने में सहायक हो सकेंगे।

सुधाकर एम० ए०
प्रधान
भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् देहली।

से प्रो० सुधाकर जी के सभापतित्व मे कुमारों का "क्या पश्चिमीय सभ्यता का अनुकरण भारतीय नवयुवकों के लिए हितकारी है" विषय पर वाद विवाद हुआ। आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली के प्रतिनिधि गुलाब राय जी प्रथम रहे।

दोपहर को ३ बजे से परिषद् का साधारण अधिवेशन हुआ।

[१] वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुआ:—
प्रधान—प्रो० सुधाकर जी (पूर्व निर्वाचित)
उपप्रधान—डा० युद्धवीर सिंह जी, प्रो० तोताराम जी, पं० सूर्यदेवजी, श्रीयुत विश्वंभर सहाय जी प्रेमी, कुँवर कान्तिवीर

जी, महाराज कुमार सुदर्शन देवजी, बाबू रामचन्द्र जी गुप्ता

मन्त्री—मनुराम

उपमन्त्री—श्रीयुत ईश्वरदयाल जी, इन्द्रेश्वर प्रसाद जी, बद्रीदत्त जी तथा हरिश्चन्द्र जी।

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत नन्द किशोर जी खन्ना

पुस्तकाध्यक्ष—श्रीयुत कुँवर लाल जी

अन्तरंग सदस्य—श्रीयुत ब्रजराजसिंहजी, माणिकचन्द जी, शिवचरणदास जी भगवन, लखपतराय जी, ओमप्रकाश जी, ओंकारदत्त जी, ब्रजनन्दन प्रसादजी, श्री रामजी, धर्मवीर जी, योगेन्द्रनाथ जी, वासुदेव जी, तथा नरेन्द्रपति राय जी।

प्रतिष्ठित अंतरंग सभासद्—लाला हरिश्चन्द्र जी M. A. B T, कुँवर चाँदकरण जी शारदा, भ्रातावीर देव जी, श्रीयुत महादेवशरण जी, पं० ज्ञानचन्द जी, श्रीयुत नन्दकिशोर जी गोविल, मास्टर तनसुखराय जी तथा प० विद्याधर जी।

[२] आगामी वर्ष के बजट बनाने का अधिकार अंतरंग सभा को दिया गया।

[३] बिजनौर सम्मेलन को बजाय २३ वें के २५ वाँ पास किया गया।

[४] स्वागत कारिणी सभा के अभी तक कोई नियम न होने के कारण इनके बनाने का अधिकार अंतरंग सभा को दिया गया।

[५] अगले सम्मेलन के लिए इसलामनगर 'बदायूँ', मुरादाबाद तथा भूड़, बरेली की कुमार सभाओं के निमन्त्रण आए। लेकिन बहुसम्मति यह थी कि कई वर्षों से सम्मेलन आस पास ही होने के कारण परिषद् का प्रचार दूर २ नहीं हो पाता, इस लिए आगामी सम्मेलन इन स्थानों को छोड़ कर कहीं और हो।

अन्तरंग सभा को अधिकार दिया गया कि वह इन स्थानों के अतिरिक्त जहाँ सम्मेलन करना परिषद् के संगठन के लिए अधिकाधिक लाभदायक समझे, वहीं अगला सम्मेलन निश्चय करे।

५ बजे से सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें निम्न लिखित प्रस्ताव पास हुए:—

१—यह सम्मेलन नारायण गढ़ (इन्दौर राज्य) आर्य समाज के प्रधान श्री मेवराम जी की कायरतापूर्ण हत्या को घृणा की दृष्टि से देखता है और उनकी आत्मा के लिये सद्गति की प्रार्थना करते हुए उनके सबंधियोंसे सहानुभूति प्रगट करता है और आशा करता है कि उनके बलिदान से इन्दौर राज्य में विशेषतया हरिजन उद्धार के कार्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

२—यह सम्मेलन निश्चय करता है कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से आर्य कुमारों के लिये किसी विशेष प्रकार का बैज (Badge) तैयार किया जाय जिसका उचित प्रबन्ध अंतरंग सभा शीघ्र करे।

३—यह सम्मेलन समस्त आर्य कुमारों को आदेश देता है कि विवाह में किसी प्रकार के दहेज का ठहराव करना अवैदिक है अत इसे

अपने तथा अपने सबंधियों के विवाहों में सर्वथा त्याग दें। यदि आवश्यकता पड़े तो सत्याग्रह करने को उद्यत रहें।

७—यह सम्मेलन आर्य जगत के वर्त्तमान झगड़ों को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखता है और यह समझता है कि ये झगडे आर्य समाज के अस्तित्व के ही लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं। इसलिए यह सम्मेलन आर्य युवको से अनुरोध करता है कि समाज के भविष्य को दृष्टि मे रखते हुए वे इन झगडों के विरूद्ध जिनका मूल कारण असत्य और हिंसा है, जोरदार आन्दोलन करें। विशेषतया पद लोलुपता को दूर करने के लिए तीन साल से अधिक पद पर रहने की प्रथा का विरोध करें।

८—इस सम्मेलन की सम्मति में आर्य समाज की वर्त्तमान अवस्था और बाहर से होने वाले हमलों का मुख्य कारण हमारी अपनी आन्तरिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कमजोरी तथा अपने मुख्य उद्देश्य से पथ भ्रष्ट हो जाना है इस लिए यह सम्मेलन जरूरी समझता है कि आर्य युवकों मे शक्ति उत्पन्न करने के लिए उनके चरित्र निर्माणार्थ अन्तर्मुख आन्दोलन आरम्भ किया जावे।

९—यह सम्मेलन आगामी वर्ष के लिए निम्न लिखित कार्यक्रम निश्चित करता है और आर्य कुमारों तथा आर्य कुमार सभाओं से अनुरोध करता है कि वे इस कार्यक्रम को पूरा करने में इस वर्ष अपनी सारी शक्तियों को लगावें और परिषद् की अतरंग सभा को अधिकार देता है कि इसका विस्तृत प्रोग्राम बना कर उसकी पूर्त्ति का पूर्ण प्रयत्न करे —

१—परिषद् एक ऐसी पुस्तकों की सूची प्रकाशित करे जो प्रत्येक आर्य कुमार इस वर्ष पढ़ले।

२—परिषद् की ओर से एक योग्य संगठन मत्री (Organising Secretary)की नियुक्ति की जावे जो अन्य कार्यो के अतिरिक्त कुमार सभाओं के सगठन के लिए दौरा लगावें।

३—परिषद् की ओर से एक शारीरिक व्यायाम का कार्यक्रम तैयार करके प्रकाशित किया जावे।

४—भिन्न २ स्थानों में परिषद् की ओर से योग्य विद्वानों के व्याख्यानो का प्रवन्ध किया जावे और लेख मालाएं (Pamphlets) प्रकाशित की जावें।

५—इस वर्ष दहेज प्रथा और तम्बाकू सिगरेट आदि के विरुद्ध खास तौर से उचित उपायों द्वारा आन्दोलन किया जावे।

६—इन सब कार्यों की पूर्त्ति के लिए पाँच पाँच रुपये वार्षिक देने वाले परिषद् के एक हजार प्रतिष्ठित सभा सद् भारत वर्ष भर मे बनाए जावें।

१०—यह सम्मेलन सब प्रान्तीय सरकारों, विशेष कर कांग्रेस सरकारों से अनुरोध करता है कि वे युवकों को बन्दूक चलाना सिखाने के लिए राइफिल क्लब और हवाई शिक्षा देने के लिए उड़न खटोले व हवाई जहाजों की व्यवस्था करें ताकि इस देश के युवक बाहरी हमलों से

देश को बचा सकने में समर्थ हो सकें।

यह सम्मेलन पं० कृष्णकान्त मालवीय के उड़ने खटोला संघ (Gliding Institute) स्थापित करने के प्रयत्न का स्वागत करता है और आर्य कुमारों से अनुरोध करता है कि वे हवा में उड़ना सीखें तथा सैनिक शिक्षा ग्रहण करें।

निम्न लिखित प्रस्ताव पर बहुत वाद विवाद हुआ और वह बहु सम्मति से गिर गया.—

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि आर्य कुमारों का आर्यकुमार सभाओं का सदस्य बनाते समय गुरुकुल परिपाटी के अनुसार प्रवेश संस्कार करना चाहिए।

उपरोक्त प्रस्तावों पर डाक्टर युद्धवीर सिंह जी, मास्टर तनसुखराय जी, श्रीयुत शिवचन्द्र जी, प० गिरधारी लाल जी, श्रीयुत नन्दकिशोर जी खन्ना, श्रीराम जी, ईश्वर दयाल जी, परमेश्वर दयालजी, इत्यादि ने जोरदार भाषण दिए।

रात्रि को राजा ज्वाला प्रसाद जी, प्रो वाईस चान्सलर, काशी विश्व विद्यालय के सभापतित्व में मौक (Mock) पार्लियामेण्ट का अधिवेशन बड़े ज़ोर शोर से हुआ।

—प्रीमियर का पद श्रीयुत रामनाथ जी कालिया ने लिया तथा विरोधी दल का नेतृत्व डाक्टर युद्धवीरसिंह जी ने किया। 'वन्देमातरम्' के पश्चात् अनेक मनोरञ्जक प्रश्नोत्तर हुए जिनमें रिक्रूटमेण्ट बिल, बन्नू में हिन्दुओं पर अत्याचार वर्धा स्कीम, हैदराबाद में आर्य समाजियों पर अत्याचार, दिल्ली का शिव मन्दिर इत्यादि पर प्रकाश डाला गया।

प्रीमियर कालिया जी ने "कोई आर्य समाजी चाहे वह किसी आर्यसमाज का सदस्य हो या न हो, किसी अन्य धार्मिक, साम्प्रदायिक या राजनैतिक संस्था जैसे कांग्रेस, हिन्दू सभा इत्यादि मे भाग न ले सके।" इस आशय का 'आर्य-प्रतिबन्धक बिल' पेश किया। जो बहुमत से पास हुआ।

विरोधी दल के नेता डा० युद्धवीरसिंह जी ने "किसी ज़मीदार को महाल या ज़मीन पर कोई मालिकाना अधिकार न हो सिवा उस ज़मींन के जिसे कि वह स्वयं जोतता हो और प्रत्येक किसान को उस भूमि पर जिसे वह स्वयं जोतता या बोता है उस ज़मीनपर मौरूसी अधिकार मिल जावें।' इस आशय का ज़मींदारी प्रथा नाशक बिल पेश किया। जो बहुमत से रद्द हो गया। इस बिल पर श्री रामनाथ जी कालिया, डा० युद्धवीरसिंह जी, चौ० विजयपालसिंह जी, एम० एल० ए०, नेमी शरण जी ऐडवोकेट, गोविन्द सहाय जी एम० एल० ए०, मास्टर तनसुखराय जी आदि ने ज़ोरदार भाषण दिये।

पार्लियामेण्ट के पश्चात् मेरठ निवासी कवि वर श्रीराम जी 'प्रेम' ने 'चित्रकार से' नाम की कविता से दर्शकों को मोह लिया। डा० युद्धवीर सिंह जी ने कवि जी को पुरस्कार स्वरूप एक रजत पदक प्रदान किया।

राजा ज्वालाप्रसाद जी ने निम्न प्रकार पारितोषिक वितरण किया।

डिबेट—आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली—राजा ज्वालाप्रसाद कप। गुलाबराय (आ० कु० सभा, दीवान भवन, दिल्ली) प्रथम पुरस्कार-स्वर्ण

पदक। ईश्वरदयाल जी (बिजनौर) तथा इन्द्रेश्वर प्रसाद जी (मेरठ)—क्रमशः द्वितीय और तृतीय।

लेख—गोविन्दराय जी और राजनारायण जी (दोनों दीवान भवन, दिल्ली) क्रमश· प्रथम और द्वितीय।

मानसिक परीक्षा (बड़े कुमार) गोविन्दराय जी और राजनारायण जी (दोनों दीवान भवन, दिल्ली) क्रमशः प्रथम और द्वितीय।

(छोटे) विद्याभूषण जी (दीवान भवन, दिल्ली) तथा कुमारी गायत्री देवी जी (मुरादाबाद) क्रमश प्रथम तथा द्वितीय।

व्यायाम प्रदर्शन—ज्वालापुर महा विद्यालय सिलवर कप.।

वौलीबॉल टूर्नामेण्ट—आ० कु० सभा, पटौदी हाऊस, दिल्ली। सिलवर कप।

राजा ज्वालाप्रसाद जी ने पार्लियामेण्ट की प्रशंसा में कहा कि यह लोगों में पार्लियामेण्टरी मन्त्र का प्रचार करने का उत्तम साधन है। अन्त में प्रतिनिधियों की ओर से डा० युद्धवीरसिंह जी ने स्वागत कारिणी को उनके प्रबन्ध के लिये धन्यवाद दिया। हम भी सम्मेलन की सफलता पर स्वागत कारिणी को बधाई देते हैं। आर्यकुमार सभा, दीवान भवन, दिल्ली के, जिसने पार्लियामेंट का उत्तम आयोजन करके उत्सव की शोभा काफी बढ़ाई, हम कृतज्ञ हैं।

रजत जयन्ती के उपहार स्वरूप परिषद् ने 'उन्नति की ओर' पुस्तक प्रकाशित की है। इसका संपादन परिषद् के उपप्रधान डा० युद्धवीरसिंह जी ने किया है। पुस्तक मे अनेकों विद्वानों के उत्तम उत्तम लेख तथा कविताएं हैं। प्रत्येक आर्यकुमार को यह पढ़नी चाहिये। पुस्तक का मूल्य ।।) है लेकिन आर्यकुमार सभाओं को तथा जहाँ आर्य-कुमार सभाएँ नहीं वहाँ आर्य समाजों को कुमारों में बाँटने के लिये पुस्तक केवल ।—)। में दी जावेगी।

मन्त्री, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, दिल्ली

—o—

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा नवम्बर १९३६ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना अपना चन्दा १५ नवम्बर १९३८ तक भेज देवें। इसके बाद जिन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवामें 'पत्र' वी०पी० द्वारा भेज दिया जावेगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही यह भी निवेदन है कि ग्राहक महोदय चन्दा भेजते समय मनीआर्डर की कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या व पूरा पता लिखने की कृपा करें। पूरा पता व ग्राहक संख्या कूपन पर न होने से यदि 'पत्र' ग्राहक पर न पहुँचेगा तो उसकी उत्तर-दायिता कार्य्यालय पर न होगी। कृपया इसे नोट कर लेवें।

९८, २९३, ३०४, ४३७, ८३५, ८४०, ८४१, ८४२, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९.

* ओ३म् *

आर्य परिवार संघ की योजना

महर्षि दयानन्द ने अपने जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के "वेदोक्त धर्म" विषय प्रकरण में सब से पहिले जो वेद मन्त्र लिखा है "संगच्छध्वं संवदध्वं सवो मनासि जानताम्" दूसरा मन्त्र लिखा है "समानो मन्त्र समिति समानी समानं मन सह चित्तमेषाम् ।" उक्त ग्रन्थ के आरम्भ मे निम्न ऋषि वाक्य उद्धृत किया है "सहनाववतु सहनौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवा वहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु माविद्विषा वहै ।" आर्य समाज को स्थापित करने का यही उद्देश्य था जो उक्त वाक्यों के भाव हैं । खेद है कि आर्य समाज के नेता व अधिकारियों ने आर्यों के संगठन की ओर ध्यान नहीं दिया केवल मौखिक रूप से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया बहुत कम व्यक्तियों ने क्रिया रूप से आदर्श जीवन को बनाया । यही कारण है कि आज आर्य समाज मे ६५ सैकड़ा व्यक्ति पौराणिक जाति पाति से चिपके हुए हैं । प्राय ऐसे ही लोगों के हाथों मे आर्य समाज की बागडोर है । यही व्यवस्था रही तो आर्य समाज भी हिन्दुओं के और सम्प्रदायों की तरह सम्प्रदाय मात्र रह जावेगा ।

ऋषि दयानन्द के अनुयायी सम्प्रदायी न बनें वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल क्रियात्मक जीवन बनाने के लिये अग्रसर होवें इसी उद्देश्य से "आर्य परिवार संघ" की योजना आपके सम्मुख रखता हूँ ।

महात्मा नारायण स्वामी ने थोड़े दिन हुए आर्य समाज का भविष्य कैसे उज्वल बन सकता है, लेख पत्रों मे प्रकट कराया था उसमे और कई बातो के अलावा निम्न उपाय आर्य समाज के उज्वल भविष्य के लिये लिखे थे ।

[१], आर्यों मे पारस्परिक सहभोज और विवाह की प्रथा गुण कर्मानुसार जारी की जावे ।

[२] परिवारों में आर्य जीवन के लाने का पूरा पूरा प्रबन्ध किया जावे ।

इन्हीं उद्देश्यों को लक्ष मे रख कर आर्य परिवार संघ की योजना आपके सामने रखता हूँ । इस समय केवल एक ही कार्यक्रम रहेगा वह यह कि प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को आर्य परिवार एक स्थान पर सम्मलित हो सहभोज व परस्पर परिचय प्राप्त करें आगे आ कर यह भी उद्देश्य होगा कि परस्पर सुख दुःख मे आर्य परिवार सम्मलित हुआ करें ।

आरम्भ मे चन्दा सिर्फ सहभोज खर्च के लिये पूरी उमर के लिये ।) व अल्पायु वालों से =) छोटे बच्चों से कुछ नहीं लिया जावेगा जो भाई आर्य परिवार सघ मे सम्मिलत होना चाहें वे अपना नाम व पता को भर कर अपने अपने समाज के मन्त्री जी के द्वारा मेरे पास पहुँचा देवें ।

भवदीय—गोविन्दराम हासानन्द
पता—वैदिक पुस्तकालय नई सड़क,
[मारवाड़ी कटरे के सामने] देहली ।

आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों से नम्र निवेदन है कि इस सूचना को अपने साप्ताहिक सत्संग में सुना देवें व जो भाई सम्मिलत होना चाहें उनसे फार्म भराकर मुझे भेज देवें बड़ी कृपा होगी ।

आर्य-परिवार संघ

उद्देश्य

१. आर्य- परिवारों मे आर्य-जीवन लाने का पूरा पूरा प्रयत्न करना और वैदिक संस्कार तथा वैदिक वर्णाश्रम मर्यादा को क्रियात्मक रूप देना।
२. आर्यों में गुणकर्मानुसार विवाह की प्रथा को प्रचलित करना।
३. संघ के सदस्यों के सुख-दुःख मे शामिल होना और प्रेम, सहानुभूति तथा मेल को बढ़ाना।

नियम

१. इस संघ का नाम " आर्य परिवार संग " होगा।
२. संघ के सदस्यो को प्रत्येक परिवार पीछे ।) मासिक चन्दा सदस्य फी का देना होगा।
३. जो सदस्य आर्य-समाज के उद्देश्यों के विरुद्ध आचरण करेगा वह सघ से पृथक कर दिया जायगा।
४. संघ की व्यस्था के लिए संयोजक सहित ९ सभासदों की एक कार्य कारिणि सभा होगी जिसमे ५ पुरुष व ४ स्त्रियाँ होंगी।
   (क) चुनाव प्रति वर्ष हुआ करेगा।
   (ख) प्रत्येक अधिवेशन मे सामयिक प्रधान चुना जाया करेगा।
   (ग) सयोजक का कर्त्तव्य होगा कि वह कार्य-कारिणी के निर्देशानुसार कार्य-संचालन करे, और वही उत्तर दाता होगा।
५. कार्यकारिणी का अधिवेशन प्रतिमास तथा आवश्यकता पड़ने पर हुआ करेगा।
६ प्रतिमास पारिवारिक सहभोज होगा, जिसका खर्च सहभाज मे सम्मलित सदस्य मिलकर पूरा करेंगे।
७. संघ के उद्देश्यों के प्रचारार्थ सामयिक पत्र की व्यवस्था करना।
८. संघ के सदस्यों का परिवार के विवरण सहित रजिस्टर रखना।
९ विवाह-योग्य बालक व बालिकाओं का रजिस्टर रखना और उनके सम्बन्ध कराने मे सहयोग देना।
१०. परिवारों के सुख-दुःख की सूचना (संघ की ओर से) सदस्यों को देनी तथा, प्रत्येक सदस्य का एक दूसरे के सुख-दुःख मे सम्मलित होना कर्त्तव्य होगा।
११ "आर्य परिवार सहायक फंड" स्थापित करना। जिसका धन निम्न अवसरों पर सघ के सदस्यों की सहायता मे खर्च करना,।
   (क) सदस्य की मृत्यु होने पर उनकी विधवा स्त्री व शिक्षा के लिए आवश्यकता होने पर देना।
   (ख) पारिवारिक संकट व आवश्यकता के अवसर पर सहायता देना।
१२. नियम व उपनियम आवश्यकतानुसार समय-समय पर संशोधित, परिवर्तित तथा परिवर्धित हुआ करेंगे।

हैदराबाद और आर्यसमाज

[श्री प्रो० सुधाकरजी मन्त्री सार्व० सभा का वक्तव्य]

हैदराबाद राज्यमें आर्यों और हिंदुओंके कष्ट और असुविधाएँ प्रसिद्ध हैं। प्रेस और प्लेटफार्म द्वारा उनका पर्याप्त प्रचार हो चुका है। प्रत्यक्ष को और भी प्रत्यक्ष करने की हमें आवश्यकता नहीं है। केवल १ वर्ष में धर्म्मान्ध मुसल्मानों द्वारा ३ आर्य्यों की नृशस हत्या की गई है। राज्य के धर्म्म विभाग की आज्ञा के बिना आर्य्यसमाज मन्दिर के भीतर प्रार्थना-उपासना करने, सत्संग लगाने तथा हवनकुण्ड के प्रयोग की आर्य्यों को आज्ञा नहीं है और न ही वे अपने घरों और आर्य मन्दिरों पर ओ३म् का झडा लगा सकते हैं। बिना आज्ञा के धर्म्म-स्थानों के निर्माण और जीर्णोद्धार की भी आज्ञा नहीं है।

थोथे बहानों और निर्मूल अपराधों के आधार पर मातहत पुलिस कर्मचारी आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्त्ताओं और प्रचारकों को तंग करते हैं। हमारे बहुत से आदरणीय प्रचारकों का राज्य में प्रवेश बन्द कर दिया गया है। आर्य्यसमाज को अपना प्रकाशन कार्य करने की आज्ञा नहीं है। बाहर के आर्य्यसमाजी तथा हिन्दुओं के समाचार पत्रों का भी राज्य मे प्रवेश बन्द कर दिया गया है। हैदराबाद की ताजी सूचना है कि हमारे उत्साही प्रचारक पं० नरेन्द्रजी को गिरफ्तार करके उन्हें अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि 'आर्य्यों को रहने न दो' की नीति का निजाम सरकार बड़ी उग्रता के साथ अवलम्बन कर रही है। सब से ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि राज्यमें हिन्दुओं की बहुत बड़ी संख्या है फिर भी उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता जो सभ्य देशों के साधारण से साधारण अल्पसंख्यक लोगों के साथ किया जाता है। पुलिस का शासन मुख्यतया मुसल्मानों के हाथ में होने के कारण आर्य्यों और हिन्दुओं को नागरिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है।

पिछले ६ वर्षोंसे हम चिल्ला रहे हैं परन्तु हमारा चिल्लाना 'अरण्य रोदन' के सदृश हो रहा है। जब १९३४ में सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने हिज़ एक्जाल्टेड हाईनैस की सेवा में आवेदन-पत्र प्रस्तुत करके उनसे निजू हस्तक्षेप की प्रार्थना की थी तो हम आशा थी कि हमारी धार्मिक बाधाओं को दूर करने और आपस मे सद्भाव उत्पन्न करने की दिशा मे कोई ठोस कार्य किया जायगा।

इलाहाबाद के लीडर ने इस आवेदन पत्र पर आलोचना करते हुए उस समय लिखा था "यह आवेदन पत्र बड़े ही युक्तियुक्त ढग मे विषय का प्रतिपादन करता है। इसकी भाषा शुरू से लेकर अन्त तक निर्दोष है। हमारे लिये यह एक रहस्योद्घाटन है और अन्य बहुतोंको भी होगा कि आर्यसमाज जैसे समाज के वैध, शान्त और धार्मिक कार्य पर आज भी इस प्रकार के अनुचित प्रतिबन्ध लगाये जाते हैं।" हमे दुख है कि यह आवेदन-पत्र भी स्थिति की गम्भीरता के प्रति निजाम सरकार को सजग न कर सका और उस स्थिति के जारी रहने से अब राज्य के आर्य्यों और हिन्दुओं में यह भावना काम करती जा रही है कि उनका जान और माल खतरे में है।

सार्वदेशिक सभा और आर्य्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य प्रार्थना-पत्रों, डेपुटेशनों तथा

विरोध सूचक प्रस्तावों इत्यादि के द्वारा निजाम राज्य का इस अवस्था की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये निरन्तर यत्न करती रही हैं। उनकी एक मात्र चिन्ता यह रही है कि राज्य के अधिकारियों के सुप्रभाव से जिनसे इस सभा के जिम्मेवार कार्यकर्ता मिलते रहे हैं सद्भावना स्थापित हो जायगी और भ्रमों का निवारण हो जायगा। परन्तु दुःख है दूसरी ओर से कभी इस प्रकार की चिन्ता प्रगट नहीं की गई। इस प्रकार निज़ाम सरकार के टस से मस न होने के रुख ने आर्यों और हिन्दुओं को निराश कर दिया है और अपनी नितान्त असहायावस्था में उन्होंने अपनी जिम्मेवारी पर प्रारम्भिक उपाय के रूप में व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिये इस सभा की आज्ञा चाही है।

अतएव, स्थिति ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया है।

इस सभा तथा रक्षा समिति की सम्मिलित बैठक ने हैदराबाद की स्थिति का सामना करने के लिये श्री महात्मा नारायण स्वामी जी को पूर्ण अधिकार देने का निश्चय कर दिया है। उनका तात्कालिक कार्यक्रम २५, २६ और २७ दिसम्बर १९३८ को शोलापुर में आर्य कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का होगा। उस अवसर पर भावी कार्यक्रम निश्चित करने तथा राज्य के पीड़ित लोगों की पीड़ा के निमित समस्त हिन्दू जगत् और देश के बुद्धिमान लोगों की सहायता और सहानुभूति प्राप्त करने का यत्न किया जायगा।

—o—

Professor Sudhakar, General Secretary of the International Aryan League has issued the following statement to the Press —

The sufferings and disabilities of Aryas and Hindus in the Hyderabad State are now well-known The Press and platforms have given them sufficient publicity We need not make an attempt to make the obvious still more obvious. During one single year, three Aryas have been brutally murdered by fanatic Muslims The Aryas are not allowed free congregational prayers and the use of Havankund inside the Aryasamaj temples and also the hoisting of Om flags on houses and Aryasamaj temples, unless they are permitted and registered by the Ecclesiastical Department of the Nizam's Government. No construction and repairs of any religious building is allowed without such permit Aryasamaj preachers and workers are harassed by subordinate police officials on flimsy pretexts and unjustifiable allegations Many of our respected missionaries are banned from entering into the State Aryasamaj publicity work is not allowed and Aryasamaj and Hindu papers from outside are banned The latest news from Hyderabad is that our energetic missionary Pandit Narendra has been arrested and deported to an unknown destination It appears as if the policy of "give no quarter to an Arya" is being ruthlessly pursued by the Nizam's Government The most amazing thing is that the Hindus though in over-whelming majority are not accorded a treatment meted out to even an insignificant minority in civilized countries The police control being chiefly vested in Muslim hands is responsible for the denial of civic rights to Aryas and Hindus

We have been crying for the last

six years, but our cry has been "a cry in the wilderness". When in 1934, the International Aryan League submitted a memorial to H E H, the Nizam of Hyderabad, enumerating the Aryasamaj and Hindu grievances and requesting His Exalted Highness personal intervention, we expected that something substantial would be done to remove our religious disabilities and to create good will and mutual understanding The 'Leader' of Allahabad commenting upon this memorial then wrote, "It presents the case in a closely reasoned manner, the language of the document throughout is unexceptionable, It is a revelation to us as it would be to many others, that legitimate, peaceful and religious work of a sect of the standing of the Aryasamaj could even this day be subjected to such unreasonable restrictions." We are sorry to point out that even this memorial did not awaken the Nizam's Government to the seriousness of the situation, the continuity of which has now given rise to a growing feeling of unsecurity of life and property in the minds of Aryas and Hindus living in the State

The International Aryan League and the Arya Pratinidhi Sabha of the Nizam's State have not slackened their efforts to draw the attention of the Nizam's Government towards all this state of affairs by means of protests, petitions, representations and deputations 'Their one anxiety throughout has been that through the good offices of the State officials who were approached through the responsible workers of this League, mutual good-will and friendship be restored and misunderstandings be removed, but their anxiety has never been reciprocated by the other side Thus the intransigent attitude adopted by the Nizam's Government has now driven the Aryas and Hindus to desperation, and in their state of utter helplessness, they have sought the permission of this League to launch individual passive resistance as a preliminary measure on their own responsibility

The situation has therefore, assumed an alarming appearance This League has now resolved at its joint meeting with the Aryan Defence Committee to appoint Shree Mahatma Narayan Swami as Dictator with full powers to cope with the future Hyderabad situation in respect of the sufferings of the Aryas His immediate objective will be to make arrangements for holding the Session of an All-India Aryan Congress at Sholapur on 25th, 26th and 27th December 1938 On that occasion efforts will be made to decide and formulate a future plan of action and also to enlist the sympathies of entire Hindu Community and other sanner elements in the country for the alleviation of the sufferings of the aggrieved in the State

HIGH THOUGHTS

(उच्च विचार)

ACTION (कर्म)

A really great man is known by three signs—generosity in the design, humanity in the execution and moderation in success

वास्तविक बड़ा आदमी तीन चिन्हों से जाना जाता है अर्थात विचार की उदारता, क्रिया की धार्मिकता तथा सफलता के संयम से।

The study of God's word, for the purpose of discovering God's will, is the secret discipline which has formed the greatest characters

परमात्मा की प्राप्ति का यत्न गुप्त तपश्चर्य्या होती है जो मनुष्यों को महान बनाती है।

Greatness lies not in being strong, but in the right use of strength and strength is not used rightly when it serves only to carry a man above his fellows for his own solitary glory He is the greatest whose strength carries up the most hearts by the attraction of his own.

बलवान बनने में बड़प्पन नहीं होता है। बड़प्पन तो शक्ति के अच्छे प्रयोग में होता है। आत्म-संवर्द्धन के लिए शक्ति का प्रयोग करना सदुपयोग नहीं कहलाता है। वही आदमी सबसे बड़ा होता है जो अपनी शक्ति से अपने हृदय के आकर्षण से अनेकों हृदयों को अपनी ओर खींच लेता है।

If any man seeks for greatness, let him forget greatness and ask for truth and he will find both.

यदि कोई आदमी कीर्ति प्राप्त करना चाहता है तो उसे कीर्ति को भुला कर सत्य का अनुसरण करना चाहिए इस प्रकार उसे दोनों वस्तुएँ प्राप्त हो जायंगी।

There never was any heart truly great and gracious that was not also tender and compassionate

ऐसा वास्तविक रूप में उदार और विशाल हृदय कभी नहीं हुआ जो विशाल और उदार होने के साथ साथ कोमल और दयालु न रहा हो।

A nation's greatness resides not in her material resources, but in her will, faith, intelligence and morality

किसी देश का बड़ा पन उसका धन-दौलत नहीं होता वरन उसकी इच्छा, निष्ठा, बुद्धिमत्ता और धार्मिकता होती है।

In life we shall find many men that are great and some men that are good, but very few men that are both great and good.

जीवन में हमें बहुत से व्यक्ति मिलेंगे जो बड़े होंगे कुछ व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो अच्छे होंगे परन्तु बहुत कम ऐसे मिलेंगे जो अच्छे और बड़े दोनों होंगे।

Internationalism

(By Raghunath Prasad Pathak)

The scholars and thinkers of the world to-day are stressing need of internationalism as a means to ward off world's present unrest. This is a very happy idea. The long series of the havocs and mischieves which "Religion" and 'Nationality" have wrought lead them to the conclusion that these two are the most potent enemies of the "World Peace" They are right in remarking that they have separated man from man and have made him thirsty for the blood and exploitation of his fellow-beings.

Religion has overshadowed the "Real Dharma" with superstitions, narrow creeds and rituals, and 'Nationality' has made the members of the same great human race alien and antogonists to one another by cutting them off by artificial, geographical barriers They have taught man to insult humanity and have shaken in and dispelled from the hearts of the people the feeling that they belong to a common decent and one family

The barriers of "Religion," and "Nationality" are artificial In support of this view we would rest content to quote from amongst various correborations, a few following lines from the paper read by Mr Zean Herbert on the occasion of the Ram Krishna Centenary celebrations held at Calcutta last year —

"Really substantially there is for man one natural group mankind And there is only one natural unit individual man All the classifications, divisions and sub-divisions between the unit and the whole, all churches, parties, nations, groups, of all sorts whether newly invented, like nations or sanctified by time like religions are artificial and correspond to nothing real A man is a man and a member of mankind and nothing else"

From the beginning of the Creation down to this day, there has been only one Dharma of man and the same will remain for ever Love for truth and fairplay, compassion and fellow feeling etc which constitute "Real Dharma" are found inherent in all human beings, be they Hindus or Mussalmans, Christians or Jews, English or Germans, Savages of Africa or the Negroes of America It is not a fact that the spirit of "Dharma" is found only amongst the Hindus and that Christians and Muslims are bereft of it No human being lacks that spirit, though there may be a disparity of quantity This Dharma is the "Dharma" of humanity as preached by the Sacred Vedas and Upanishadas and places before man a well-conceived conception of life It transcends the limits of place and time and is the same as was advocated by Rishi Dayananda Saraswati in modern times and for the propagation of which the Arya Samaj stands

Different opinions have come to light with regard to the measures to be adopted to bring about real universal brotherhood Some people say that this subject should be taught in schools and that suitable books be prepared for the purpose Some people suggest that parties of selected scholars and thinkers of the world should visit different countries frequently and propagate "Internationalism" Sir Oliver Lodge, the eminent scientist supports this suggestion with the addition that by the exchange of periodicals, by the propaganda of great societies and by the use of knowledge, no matter where it is derived from, people should be made to realize that they are the members of the same great human family Rishi Dayanand opines that people should be made to realize that they are the children of the same Great Father and all should be content only with the advancement of all and they should regard woes and weals and ups and downs of others as their own All this is possible when there is one common language, one Government and one Dharma as laid down in the Vedas We do not want here to explain what the "Dharma" as preached by the Vedas is? What we want is to invite scholars and thinkers to make an impartial and exhaustive study of the same and to see when and in what form does the progressive thought-current of the world come, round to that of Rishi Dayananda's just as it has come round with respect to "Religion" and "Nationality" and ushers an Era of Love and Peace, Happiness and Prosperity, Mutual Understanding and Affection in the whole universe

---

आवश्यक सूचना

मई १९३७ के सार्वदेशिक, 'आर्य्य मित्र' तथा 'अर्जुन' आदि पत्रों में पं० भास्करानन्द जी, श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी तथा आर्य्य दिवाकर सभा डच गयाना के सम्बन्ध में इस सभा की तीन विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हुई थीं। उनमे से एक विज्ञप्ति में यह प्रकट किया गया था कि इस सभा ने विदेश से आई हुई शिकायतों तथा अन्य कई कारणों से पं० भास्करानन्द को अपनी सेवाओं से पृथक करने के लिए डच गयाना इत्यादि की सभाओं को प्रेरणा कर दी है। हम इस विज्ञप्ति के द्वारा स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि नियन्त्रण सम्बन्धी शिकायतों के आधार पर ही सभा ने पं० भास्करानन्द जी को पृथक किया था उनके सदाचार इत्यादि की सभा को कोई शिकायत न थी।

मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, देहली।

आवश्यक सूचना

पतंजली योगदर्शन मे जो यम नियम हैं उनके आशय के वेदमन्त्र चाहिए जिस विद्वान को विदित हों वे कृपया श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी वकील (माईथान) आगरा को पता देने का कष्ट करें।

न्यायदर्शन में इच्छा द्वेष और प्रयत्न इत्यादिक जो जीव के लक्षण हैं वे ही लक्षण जिस वेद मन्त्र में हों उनका पता भी उपर्युक्त बाबू जी को विद्वान महानुभाव देने की कृपा करें।

स्वाध्याय योग्य उत्तम साहित्य

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी कृत

कतिपय ग्रन्थ

(१) मृत्यु और परलोक

शरीर, अन्तःकरण तथा जीव का स्वरूप और भेद, जीव और सृष्टि की उत्पत्ति का प्रकार, मृत्यु का स्वरूप तथा बाद की गति, मुक्ति और स्वर्ग, नर्क इत्यादि लोकों का स्वरूप, मुक्तिके साधन आदि आदि विषयों पर अद्भुत पुस्तक। मूल्य ।-)

(२) योग रहस्य

इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिससे कोई आदमी जिसे रुचि हो—योग के अभ्यासों को कर सकता है। मूल्य ।-)

(३) विद्यार्थी जीवन रहस्य

विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। द्वितीय संस्करण ≡)

(४) उपनिषद् रहस्य

ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य उपनिषदों की बहुत सुन्दर खोजपूर्ण और वैज्ञानिक व्याख्यायें मूल्य क्रमश =) =)॥ =)॥, =)॥ =)॥ -)।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं का

स्वाध्याय योग्य बहुमूल्य साहित्य

(१) इज़हारे हक़ीकत ।॥=) सत्य-निर्णय १।)
(उर्दू) (हिन्दी)

श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य,

महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है।

(२) धर्म और उसकी आवश्यकता ।-

लेखक श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य

इस पुस्तक में धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। नई रोशनी के उन नवयुवक और नवयुवतियों के हाथमें रखे जाने योग्य

है जो धर्म और ईश्वर मे न केवल विश्वास ही नहीं रखते वल्कि उनका मखौल भी उड़ाते हैं। मूल्य।–)

(३) आर्य्य-पर्व्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। संशोधित संस्करण ॥=)

(४) कर्त्तव्य दर्पण

आर्यो की नित्य कर्म विधि-इत्यादि की यह बहुत उत्तम पुस्तक है। आर्य्यसमाज सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य बातें भी इसमें दी गई हैं। मूल्य =)॥

(५) कथामाला

इस पुस्तक में स्वामी जी महाराज की विद्वत्ता-पूर्ण और अत्यन्त उपयोगी कथाओं का संग्रह किया गया है। आर्य्य नर नारी मात्रके स्वाध्याय के योग्य है। मूल्य।=)

(६) आर्य्य जीवन और गृहस्थधर्म

लेखक—पं० रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य जीवन किस प्रकार बनाया जाता है और गृहस्थ किस प्रकार श्रेष्ठ बनाए जा सकते हैं इन सब बातों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है। पुस्तक मुख्यतया श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के प्रवचनों और व्याख्यानों के आधार पर लिखी गई है। मूल्य।=)

(७) आर्य्यवर्त की वाणी

अनुवादक पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक

यह पुस्तक श्रीयुत साधु टी० एल० वास्वानी की वायस आफ आर्य्यवर्त का हिन्दी अनुवाद है। इसमें ऋषि दयानन्द का जीवन संक्षेप में बहुत ओजस्वनी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। अन्य भी बहुत सी नवयुवकोपयोगी सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई है। मूल्य =)

(8) Ecclesia Divina

Well – Bound—By Bhumanand Saraswati M A, 5 -

(9) Fountain Head of Religion

By Pt Ganga Prasad M A, Chief Judge

Well-bound	1 4
Un-bound	-/12/-

(१०) अमृत वर्षा ।॥)

लेखक म० नारायण स्वामी जी

(११) गृहस्थ जीवन रहस्य

सजिल्द १।)

(१२) आत्म दर्शन १।)

(१३) वेद तत्व प्रकाश सजिल्द

सं० श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति २)

मिलने का पता :—

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

कमीशन रेट्स

पुस्तकालय सार्वदेशिक सभा।

अन्य ग्रन्थ कर्त्ताओं की पुस्तकों को छोड़ कर शेष सभा तथा सभा द्वारा प्रकाशित श्री महात्मा नारायण स्वामी जी की पुस्तकों के घटे हुए मूल्य पर पुस्तक विक्रेताओं को निम्न प्रकार कमीशन दिया जायगा।

५) से २५) तक	१५) प्रति सैकड़ा
२६) से ५०) तक	२०) प्रति सैकड़ा
५१) से १००) तक	२५) प्रति सैकड़ा

नोट—(१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश तथा (२) दयानन्द ग्रन्थ माला पर कुछ कमीशन नहीं दिया जायगा।

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाई के रेट्स

स्थान	१ मासका	३ मासका	६ मासका	१ वर्ष का
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा ,,	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई ,,	२)	४)	८)	१५)

उजरत का धन नियमानुसार पेशगी आना चाहिए।

आर्य्य समाज के नियमोपनियम	१।) प्रति सैकड़ा
	)। प्रति

मिलने का पता—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

हैदराबाद और आर्य्यसमाज

सार्वभौम प्रगति

आर्य्यसमाज एक सार्वभौम प्रगति (आन्दोलन) है। पिछले ६० वर्ष से अधिक से यह भारत में तथा भारत से बाहर ज़ोर शोर के साथ धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी कार्य्यों को कर रहा है और निर्विवाद एव असन्दिग्ध रूप में इसकी सत्ता स्थापित हो गई है।

देशी रजवाड़े भी इसकी प्रगतियों से अछूते नहीं रहे है। आर्य्यसमाज का मिशन सार्वत्रिक और उदार है। आर्य्यसमाज के आदर्श के अनुसार समस्त प्राणी एक ही पिता परमात्मा के पुत्र हैं और सब आपस में भाई-भाई हैं। आर्य्यसमाज के कार्य्य कर्त्ताओं में यह आदर्श ओत-प्रोत है और उन्होंने इस आदर्श का अनुसरण करते हुए जाति रंग अथवा सम्प्रदाय के भेद-भावों को तिलाञ्जलि दे दी है। एक आर्य्य के लिए मनुष्य प्राणी एक ही परिवार के सदस्य हैं और लोक-सेवा उसकी समस्त प्रगतियों का प्रेरक सिद्धान्त है।

वैदिक संस्कृति

आर्य्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है। निर्जीव रूढियों और बनावटी क्रिया-कलापों में उसका विश्वास नहीं है जो दूसरे मज़हबों की व्यापार की सामग्री हैं। इसका विश्वास जीवन, संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी विकाश में है। इसके तरीके तर्क, आदेश-उपदेश, समझाना-बुझाना और शान्तिपूर्ण ढग से लोगों के हृदयों में अपना प्रवेश करना है। वह इन हथियारों को कठोरता पूर्वक काम में लाता है और इसने लकीरपन्थी धर्मान्ध हिन्दुओं और मुसलमानों के क्षेत्रों में, जो प्रकाश से बचते और अन्धकार को प्यार करते हैं, खलबली मचा दी है।

जो व्यक्ति आर्य्यसमाज पर यह आरोप लगाते हैं कि यह हिन्दुओं का पक्षपाती है वे इस बात को अनुभव नहीं करते कि आर्य्यसमाज ने दूसरे मज़हबों की कमज़ोरियों

और बेवकूफ़ियों का पर्दा फ़ाश करने के लिए जितना कार्य्य किया है, ठीक उतना ही हिन्दू धर्म्म की त्रुटियों का परिमार्जन करने के लिए भी किया है।

निस्सन्देह यह बिलकुल स्पष्ट है कि जो व्यक्ति तर्क और युक्ति के प्रहारों को सहन नहीं कर सकते हैं वे ही आर्य्यसमाज के कार्य्य का घोर विरोध करते हैं। ठीक इसी आधार पर हम भारतवर्ष में इस्लाम को आर्य्यसमाज के विरुद्ध खड़ा हुआ और इसकी प्रगतियों को रोकने तथा इसके शान्त प्रचार में बाधा उपस्थित करने के लिए उग्र उपायों का अवलम्बन करते हुए देखते हैं। जो लोग तर्क की आवाज़ को नहीं सुन सकते हैं वे इसे शान्त करने का यत्न करते हैं। परन्तु ऐसा करते हुए वे अशान्ति और उत्पातों को जन्म देते हैं।

हैदराबाद में हमारी मुसीबत

हमसे पूछा जाता है कि हैदराबाद रियासत मे हमारी वास्तविक मुसीबत क्या है? सक्षेप में यह ठीक वही मुसीबत है जो हम दूसरे स्थानों में पाते हैं अर्थात् तर्क और युक्ति के प्रकाश को रोकने से जो मुसीबत उत्पन्न होती है। हैदराबाद में हमारे काम को प्रारम्भ हुए लगभग ४० वर्ष होते हैं। प्रारम्भ में राज-कर्मचारियों के साथ हमारे सम्बन्ध उत्तम थे और पारस्परिक सद्भाव तथा समझौते पर आश्रित थे। उन दिनों प्रजा के कई राज-भक्त और सम्मानित व्यक्ति जो राज्य के कर्मचारी भी थे, आर्य्यसमाज के सदस्य थे। परन्तु धीरे-धीरे हैदराबाद रियासत ने एक मज़हबी प्रचारक का पद धारण कर लिया। वर्तमान प्रजा तन्त्रीय भावनाओं के अनुसार राज्य को धार्मिक पक्षपात से पृथक् रहना चाहिए और समस्त जातियों के प्रति उसका एक जैसा कर्त्तव्य होना चाहिए, जो न्याय और औचित्य के विशुद्ध भावों से परिपूर्ण हो। मज़हब की बिना पर किसी एक जाति का पक्ष लेना सम्प्रदायवाद का पोषण करना और उन उत्पातों की सृष्टि करना है, जो अनिवार्य्य रूप से इस बुराई से प्रवाहित होते हैं।

हैदराबाद में सम्प्रदायवाद

पाठकों को मालूम होगा कि धर्म्म की दृष्टि से हैदराबाद मुसल्मानी रियासत है, परन्तु आबादी के लिहाज़ से इसमें हिन्दुओं की बहुसंख्या है। इसकी कुल आबादी में से ८९ प्रतिशत हिन्दू हैं और राज्य की आमदनी का मुख्य भाग हिन्दुओं की जेबों से प्राप्त होता है।

इस पर भी हिन्दुओं को धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों से वंचित रक्खा जाता है और उन्हें अपना सांस्कृतिक विकाश करने की आज्ञा नहीं है। दूसरी तरफ़, राज्य के धर्म्म विभाग की स्वीकृति और देख-रेख में प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में विविध उपायों से हिन्दुओं की सख्या घटाने का व्यवस्थित यत्न किया जाता है, परिणाम यह होता है कि हिन्दुओं को अपने पूर्वजों के धर्म्म में आस्था नहीं रहती है और वे आसानी से मुसल्मानी धर्म्म में जाने के लिये उत्साहित हो जाते हैं।

निज़ाम सरकार की ओर से समय २ पर कुछ सरक्यूलर ॐ प्रकाशित हुए हैं। जो स्पष्ट रूप से हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों में काट-छाँट करते हैं। जब कभी मुहर्रम और दशहरा एक साथ आ पड़ते हैं, तो हिन्दुओं को बिना बाजे के अपना पर्व्व मनाना होता है और 'सीमोल्लंघन' के लिये चुपचाप मातम-पुरसी की हालत में जाना होता है। त्यौहारों के सम्बन्ध में मुसलमानों को हिन्दुओं के मुक़ाबले मे जो तरजीह दी जाती है, उसका यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

एक दूसरे सरक्यूलर के अनुसार कोई भी जलूस, चाहे वह धार्मिक अनुष्ठानों के सिलसिले में ही क्यों न बनाया गया हो, धरम-विभाग की पूर्व्व स्वीकृति के बिना नहीं निकाला जा सकता। यह सरक्यूलर ब्रिटिश भारत के उच्च न्यायालयों और प्रीवी कौंसिल की स्थापनाओं का नितान्त खण्डन करता है, जिनमें स्पष्ट रूप से उचित ढंग में राज-मार्ग पर धार्मिक जलूसों के निकाले जाने का अधिकार स्वीकार किया गया है।

ऐसे भी सरक्यूलर हैं, जिनके अनुसार मस्जिद के सामने अथवा मस्जिद से ३०० क़दमों के भीतर २ बाजा बजाना निषिद्ध है। एक सरक्यूलर के द्वारा नये मन्दिरों के निर्माण और पुराने मन्दिरों के जीर्णोद्धार के अधिकार से हिन्दुओं को वंचित किया गया है।

जब हम इस सरक्यूलर को मस्जिदों इत्यादि की राजकीय सहायता और संरक्षण सम्बन्धी सरक्यूलरों के साथ पढ़ते हैं तो इस सरक्यूलर का अनौचित्य हम पर भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है। जब कि राज्य के कोष से जिसमें मुख्यतया हिन्दुओं से पैसा आता है, हैदराबाद में तथा उससे बाहर मस्जिदों का निर्माण, रक्षा और मरम्मत इत्यादि हो सकती

ॐ एम० बी० पाठक द्वारा प्रकाशित 'हैदराबाद रियासत में हिन्दुओं की धार्मिक बाधाएँ' नामक पुस्तक में इन सरक्यूलरों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।

है तब हिन्दुओं को इस सिद्धान्त से क्यों वंचित रक्खा जाता है ? यह समझ में नही आता है ।

ये तथा दूसरे सरक्यूलर हिन्दुओं पर जो पाबन्दियाँ लगाते हैं वे ही पाबन्दियाँ राज्य में आर्य्यों पर भी लगी हुई हैं ।

एक दूसरी बात जो स्मरण रखने की है वह यह है कि हिन्दुओं को अपने शिक्षा तथा सस्कृति सम्बन्धी हितों की देख-रेख करने की आज्ञा नहीं है । स्कूलों और अखाड़ों* को खोलने तथा उनका प्रबन्ध करने की प्राइवेट रूप में किसी को आज्ञा नहीं है । राज्य अपनी प्रजा की समस्त शिक्षा का प्रबन्ध करता है और मुसलमानों के हितों के मुक़ाबले में हिन्दुओ के सांस्कृतिक हितों की अवहेलना करता है । मुसलमानों के इन हितो की बड़े ध्यान और धार्मिक उत्साह के साथ रक्षा की जाती है ।

आर्य्यसमाज और हिन्दू सोसाइटी

आर्य्यसमाज जिसका सास्कृतिक और धार्मिक जोश असदिग्ध है इन पाबन्दियो को सहन नही कर सका । उसने देखा कि उसका कार्य्य रोका जा रहा है और उसका प्रोग्राम कुण्ठित किया जा रहा है । राज्यके अधिकारियो को आर्य्यसमाज की बेचैनी का पता लगने मे देर न लगी । भारतीय भारत (रियासतो) और ब्रिटिश भारत मे हिन्दुओ में महान् व्यापक जाग्रति आर्य्यसमाज के ही कारण हुई है । इसने हिन्दुओ में एक प्रकार की आत्म-जाग्रति उत्पन्न की है ।

वे यह अनुभव करने लगे हैं कि उनकी वर्तमान मुसीबतें मिथ्या, धार्मिक भावनाओं और अन्ध विश्वासों से पैदा हुई हैं । आर्य्यसमाज के प्रभाव से हिन्दू धर्म अपने को सामाजिक त्रुटियो से पवित्र करने लग गया है । बाहरी कूड़े करकट से साफ़ हुआ 'हिन्दू-धर्म्म वैदिक सस्कृति पर आश्रित धर्म्म है, जिसका पुनरुद्धार करना ऋषि दयानन्द का ध्येय था । इस प्रकार आर्य्य समाज हिन्दू धर्म्म का अग्रणी है । और हैद्राबाद राज्य में हिन्दुओं के निरन्तर ह्रास की न वह अवहेलना कर सकता था और न उसे अवहेलना करनी चाहिये थी।

---

* हैदराबाद प्रजा शिक्षा परिषद् की स्टैंडिङ्ग कमेटी द्वारा प्रकाशित "प्राइवेट स्कूलों, सार्वजनिक जल्सों और अखाड़ों सम्बन्धी नियम" नामक पुस्तक में पाठक विस्तृत सूचनाएँ प्राप्तकर सकते हैं ।

निज़ाम सरकार को शीघ्र ही यह अनुभव हो गया कि हिन्दुओं की सख्या को कम करने में, उनके व्यवस्थित प्रयत्न में जो तबलीग़ इत्यादि को विविध प्राइवेट एजेन्सियों के द्वारा हो रहा था, आर्य्य समाज का कार्य्य बाधक है। इस प्रकार आर्य्य समाज के प्रति राज्य ने अपना रुख बदल दिया और उसके शान्त प्रचार में असख्य बाधाएँ उपस्थित करने लग गया। ये बाधाएँ अब इतनी ज्यादा बढ़ गई हैं, और इस सीमा तक पहुँच गई हैं कि वहाँ आर्य्य समाज का साधारण कार्य्य भी असभव हो गया है।

पिछले छ वर्षों में हमने राज्य के अधिकारियो से लिखा-पढ़ी और तर्क-वितर्क करके पूरा २ यत्न किया कि पुलीस हमारे काम में हस्तक्षेप न करे और हमारे शान्त कार्य्य को होने दे। परन्तु हमारे सब तर्क-वितर्क, अनुनय-विनय, विरोध और आवेदन-पत्र धार्मिक उपासना और धार्मिक अनुष्ठानों के हमारे वैध अधिकारों को न दिला सके।

हमारे आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास

पाठक आगे के पृष्ठों में पढ़ेंगे कि राज्याधिकारियों के साथ अपने सम्बन्धो को किसी भी प्रकार की कटुता से शून्य, श्रेष्ठ बनाए रखने, अपनी माँगों तथा अपने विरुद्ध लगाये गये आरोपो के सम्बन्ध मे अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिये हमने क्या क्या उपाय किये है। हैद्राबाद राज्य में हमारी कष्ट-कथा तब से प्रारम्भ होती है, जब राज्य ने हमारे प्रचारकों पर प्रतिबन्ध लगाए।

प० चन्द्रभानु जी

वर्तमान वर्षों में प० चन्द्रभानु जी सबसे प्रथम बलि बने। १७ सितम्बर १९३२ ई० को राज्य ने उन्हें निर्वासन का आर्डर दिया। इस आर्डर के दिए जाने के बाद तत्काल ही हमारे स्थानीय आर्य्य समाज के प्रभावशाली और प्रमुख व्यक्तियों का एक डेपुटेशन निज़ाम सरकार के पोलीटिकल सदस्य से मिला और उनसे मालूम किया कि आर्य्य समाज के एक निर्दोष और शान्त प्रचारक के विरुद्ध किन कारणों से निर्वासन की आज्ञा प्रचारित की गई है। पोलीटिकल सदस्य ने बतलाया कि निर्वासन की आज्ञा राज्य में आर्य्य समाज के प्रचारक की हैसियत में प० चन्द्रभानु जी के विरुद्ध किसी शिकायत पर आश्रित नहीं है, वरन् भारत सरकार से प्राप्त हुई रिपोर्टों पर आश्रित है, कि प० चन्द्रभानु का राजनैतिक लोगों और सस्थाओं से सम्बन्ध है। हमें यह भी बतलाया गया था कि राज्य की पुलिस को उनसे कोई शिकायत नहीं है।

फलतः २०-१०-३२ को हमने भारत-सरकार के पोलीटिकल मन्त्री को लिखा और निज़ाम-सरकार के पोलीटिकल सदस्य के उपर्युक्त उत्तर की ओर उनका ध्यान खींचा । हैदराबाद स्थित रेज़ीडेन्ट से यह जानकर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि प० चन्द्रभानु के निज़ाम राज्य से निर्वासन का फ़ैसला स्वयं निज़ाम की सरकार ने उन कारणों के आधार पर किया था, जो उसे पर्याप्त प्रतीत हुए थे, और उनकी रेज़ीडेन्सी की किसी रिपोर्ट या सलाह के परिणाम स्वरूप ऐसा नही हुआ है । रेज़ीडेन्ट महोदय ने यह भी हमें सूचना दी कि यह मामला ऐसा है कि वे राज्याधिकारियों को कोई प्रेरणा करने के लिये तय्यार नही हैं ।

हमारे सन्देह

इस बात से हमें सन्देह हो गया, क्योंकि इसमें हमें कूट-नीतिज्ञता की गन्ध आती थी । हमे अनुभव हुआ, निज़ाम की सरकार आर्य्य समाज पर भारी प्रहार करने पर तुली हुई है, परन्तु ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लेने को तय्यार नही है । अतएव हमने पुन निज़ाम सरकार को लिखने का फ़ैसला किया और दोनों सरकारो द्वारा स्वीकार की हुई प्रचारक की निर्दोषता की ओर संकेत करते हुए निवेदन किया कि वे अब उसके साथ न्याय करें । हमें यह रूखा उत्तर दिया गया, 'क्योंकि मामले का अन्तिम निपटारा हो चुका है, इसलिये गवर्नमेन्ट इसे फिर हाथ में लेना नही चाहती है ।'

निज़ाम सरकार के साथ विधिवत् रूप में, तभी से हमारा वैध युद्ध आरम्भ होता है । यह युद्ध एक ओर धैर्य्य और दूसरी ओर ज़ुल्म (अत्याचार) के बीच था । हम एक लम्बे पत्र-व्यवहार में दाखिल हुए, जिसमें प्रस्ताव, विरोध, मेमोरियल और अनुनय-विनय शामिल थे और इन सबने अन्त में हमें निराशा और असहायावस्था में छोड़ दिया ।

आर्य्य समाज के उत्सव पर प्रतिबन्ध

२१ मई १९३३ को तालुक़ेदार द्वारा आर्य्य समाज हलीखेड का जलसा एक दम बन्द कर दिया गया और यह थोथा कारण बतलाया गया कि आर्य्यसमाज का काम धार्मिक नहीं है । इस अवसर पर स्थानीय पुलिस और धर्मान्ध मुसलमानों ने आर्य्य समाजियों पर हर प्रकार की ज़्यादतियाँ कीं । सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा की ओर से हमने अपना केस प्राइम-मिनिस्टर के सामने रखा और उन से प्रार्थना की कि वे आर्य्य समाज को उत्सव करने और नगर कीर्तन निकालने की आज्ञा दें क्योंकि नगर कीर्तन उत्सव का एक अङ्ग है और पिछले १२ वर्षों से उत्सव के साथ साथ यह निकलता रहा है । परन्तु

केवल उत्सव के लिए आज्ञा मिली नगर कीर्तन के लिए नहीं । दूसरे वर्ष नगर कीर्तन के बिना भी उत्सव की आज्ञा नहीं मिली, और तब से आज तक यह उत्सव बन्द पड़ा है ।

पं० रामचन्द्र जी पर अभियोग

हमारे प्रचारक शिरोमणि श्रीयुत प० रामचन्द्र जी देहलवी पिछले कई वर्षों से हैदराबाद प्रचारार्थ जाते रहे थे और अपने मधुर-तर्क और विचार-गाम्भीर्य से उन्हों ने हिन्दुओं और मुसलमानों में अपना प्रभाव जमा लिया था । ऐसा प्रतीत होता है कि हैदराबाद स्टेट के तबलीग़ी आन्दोलन के पक्षपोषक पंडित जी के दृढ़, सुनिश्चित और क्रमश: प्रभाव को सहन नहीं कर सके जिनका शान्त प्रचार राज्य में स्थिरता प्राप्त करने लग गया था । उन्होंने राज्य के अधिकारियों पर दबाव डाला कि वे येनकेन प्रकारेण पंडित जी को गिरफ़्त में लाएँ और राज्य की हिन्दू और मुस्लिम प्रजा पर दिन प्रति दिन बढ़ते जाने वाले उनके प्रभाव को रोकें वा कम करें ।

सद्दीक दीनदार

यह स्मरण रहे कि सद्दीक दीनदार नामक एक मुस्लिम प्रचारक जो हिन्दुओं और उनके देवी-देवताओं के प्रति कठोर और अश्लील भाषा का प्रयोग करने के लिए बदनाम था उत्पात मचा और अपनी बेलगाम तक़रीरों से हिन्दुओं और मुसलमानों के सम्बन्धों को बिगाड़ रहा था तब आर्य्यसमाज हैदराबाद के कार्य्यकर्त्ताओं ने प० जी को हैदराबाद बुलाया जिससे कि वे अपने मधुर, युक्तियुक्त और शान्त उपदेशों से इस शरारत का मुक़ाबला कर सकें । हैदराबाद आर्य्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प० जी ने ३ भाषण दिए जिनका जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा । परन्तु तीसरे दिन जब रात के ६॥ बजे बीदर के सबजज के हस्ताक्षरों युक्त एक समन प० जी को दिया गया तो उनके विशाल श्रोता-समुदाय के आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा । उस समन में प० जी को प्रेरणा की गई थी कि सितम्बर १६३३ में हल्लीखेड में अपने भाषण में उन्होंने इस्लाम की जो तौहीन (अपमान) की थी उस तौहीन के अपराध का वे उत्तर देवें ।

प० रामचन्द्र जी के अभियोग की ख़बर से तमाम हिन्दुस्तान में सनसनी फैल गई क्योंकि प० जी धार्मिक क्षेत्रों में एक सम्मानित हस्ती हैं । हमारी सभा के प्रधान श्री०

नारायण स्वामी जी महाराज ने पंडित जी के अभियोग के सम्बन्ध में निज़ाम साहब को निम्न तार दिया।

तार

"इस खबर से हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ है कि बीदर की पुलिस ने श्री पं० रामचन्द्र जी पर इस्लाम की तथा कथित तौहीन (अपमान) का दोषारोपण किया है। पं० रामचन्द्र जी आर्यसमाज के पुराने अनुभवी और अत्यन्त सम्मानित प्रचारक हैं, और उन्होंने कभी भी अपने श्रोताओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई है। विपरीत इसके उनके उपदेश सदैव मधुर युक्तियों के लिये प्रसिद्ध रहे हैं और इस बात की उनके मुसलमान मित्र भी प्रशंसा करते हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमानों से आदर पूर्वक निवेदन करती है कि कृपया पुलिस को आप आज्ञा देवें कि वह पण्डित जी के विरुद्ध आरोपित अभियोग को वापिस लेलें। यदि यह सम्भव न हो तो कृपया एक विशेष ट्रिब्यूनल के निर्माण की आज्ञा देवें, ताकि सम्बन्धित पुलिस का अभियोग पर प्रभाव न पड़े, और न्याय के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।"

हमारी सभा के मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी M A ने एतद् विषयक निम्नांकित पत्र भारत सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी को भी भेजा।

'महाशय !'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से जो भारत तथा उसके बाहर के समस्त आर्य समाजों की प्रतिनिधि सभा है, मैं बड़े आदर के साथ निम्न वक्तव्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ और आपके तात्कालिक हस्तक्षेप की प्रार्थना करता हूँ।—

एक प्रसिद्ध प्रचारक श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के अधिकारों पर निज़ाम राज्यान्तर्गत बीदर की पुलिस के अभी हाल के अनुचित हस्तक्षेप से भारतवर्ष के हिन्दुओं तथा आर्यों में बहुत बेचैनी फैल गई है। अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य और उच्च आचार-विचार के कारण उनका सर्वत्र सम्मान है। बहुत तुच्छ आधार पर बीदर की पुलिस द्वारा उन पर अभियोग चलाया जा रहा है, और यह ख्याल किया जाता है कि इस अभियोग की तह में हैदराबाद पुलिस की, जिसमें मुसलमानों का बोलबाला है, धर्मान्धता है। वे लोग आर्य समाज के प्रचार को एक आंख नहीं देख सकते हैं। पण्डित जी एक अनुभवी प्रचारक हैं,

हैदराबाद रियासत से निर्वासित हमारे प्रचारक

प्रचारक शिरोमणि



प० रामचन्द्र देहलवी



प० चन्द्रभानु सिद्धान्तालङ्कार

गुलबर्गा केस के अभियुक्त



त्रिपान्त जिसे ३ वर्ष की सख्त सजा मिला।



हनुमन्तराव जिसे ७ वर्ष का कठोर कारावास मिला।

और उनकी मधुर भाषण-शैली के कारण बहुत से मुसलमान, ईसाई भी उनके प्रशंसक हैं।

एक उन्मत्त राजा के राज्य में जो कई बार इस बात की घोषणा कर चुके हैं कि हमारी प्रजा धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकारों का उपभोग करती है, इस प्रकार की विशेषताओं से युक्त बृटिश भारत के एक नागरिक के प्रति इस दुर्व्यवहार से घोर असन्तोष और क्षोभ फैले बिना न रहेगा। समाचार पत्रों से विदित होता है कि निज़ाम साहिब की सेवा में सैकड़ों तार भेजे गये हैं, जिनमें इस दुर्व्यवहार की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया गया है। उनसे प्रार्थना की गई है कि वे या तो अभियोग को वापिस लेने की आज्ञा देवें या एक विशेष ट्रिब्यूनल के द्वारा इस अभियोग का निर्णय करावें ताकि उनके साथ न्याय हो सके।

ऐसा प्रतीत होता है कि निज़ाम राज्य के भीतर तथा बाहिर के असंख्य हिन्दुओं की इस उचित प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया गया और इस बात से लोगों का असन्तोष और क्षोभ बहुत बढ़ गया है और मुझे भय है कि यह आन्दोलन भयंकर रूप धारण न कर लेवे। अतएव मैं बड़े विनम्र भाव में आपसे प्रार्थना करूँगा—कि आप निज़ाम सरकार पर प्रभाव डाल कर एक निष्पक्ष ट्रिब्यूनल के द्वारा न्याय प्राप्ति में पण्डित जी की सहायता करें। मेरी इस प्रार्थना का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, जब हम यह देखते हैं कि हैदराबाद में ८५ प्रतिशत आबादी हिन्दुओं की है।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस अवसर पर आपका हस्ताक्षेप समस्त हिन्दुओं तथा आर्यों के असन्तोष व क्षोभ को दूर करने में बहुत कुछ सहायक सिद्ध होगा।

मैं २२-५-३४ के तार की लिपि भी इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ, जो हमारी सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने निज़ाम साहब को भेजा था।

मन्त्री

पण्डित रामचन्द्र देहलवी के अभियोग के विरुद्ध हमारा आन्दोलन कुछ सफल हुआ था। निज़ाम-सरकार के पोलिटिकल सदस्य ने अपने २ अगस्त १९३४ के पत्र सं० ६०१५ में सभा के मन्त्री को सूचित किया कि प० रामचन्द्र देहलवी के विरुद्ध हैदराबाद राज्य से निर्वासन की आज्ञाएं प्रचारित हो गई हैं, अत उनके विरुद्ध पुलिस जो अभियोग चलाना चाहती थी, वह उठा लिया गया है। ओह ! कैसा अजीब न्याय है, अभियोग वापिस कर लिया गया। क्यों ? इसी लिए न, कि उसमें कमज़ोरी थी, और वह चल न सकता था। पण्डित जी को निर्वासित कर दिया गया। क्यों ? क्या इसका कारण यह नहीं था, कि

मुसलमान प्रचारक और मौलवी उनके तर्क का सामना नहीं कर सकते थे। एक दूसरी आनन्द की बात यह है कि निर्वासन की आज्ञा तब निकली जब प० जी हैदराबाद से बाहिर उत्तर भारत में प्रचारार्थ भ्रमण कर रहे थे।

मन्त्री सभा की हैदराबाद यात्रा

जून १६३४ के अन्तिम सप्ताह में सभा के मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी M A हैदराबाद गये ताकि वे स्वय वहाँ जाकर राज्य के आर्य समाजियों की वास्तविक मुसीबतों का पता लगा सकें। उन्हें निज़ाम सरकार के पोलिटिकल तथा पुलिस सदस्यों व अन्य उच्च राज कर्मचारियों से मिलने और राज्य में आर्य समाजियों पर लगे हुए अपमानजनक प्रतिबन्धों के सम्बन्ध में विचार करने का अवसर मिला। पोलिटिकल मेम्बर ने स्वीकार किया कि इन प्रतिबन्धों के लिये मातहत कर्मचारियों का अत्यधिक धार्मिक जोश ज़िम्मेवार था, और ये सब प्रतिबन्ध शीघ्र ही उठा लिये जायेंगे। कुछ समय के लिये यह आश्वासन सन्तोष जनक था, और मन्त्री महोदय इस विश्वास के साथ लौटे कि भविष्य में आर्य समाज का कार्य भली प्रकार चलता रहेगा, जैसा कि कई वर्ष पूर्व चलता रहा था। परन्तु उनका यह विश्वास गलत साबित हुआ। कोई प्रतिबन्ध न उठाया गया, अपितु मातहत पुलिस कर्मचारियों और धर्मान्ध मुसलमानों की आर्यों के साथ छेड़खानियां अधिकाधिक बढ़ती, तथा असह्य होती गई। अन्त में एक अन्तिम उपाय के रूप में हमारे प्रधान श्री नारायण स्वामी जी महाराज ने ६-८-३४ को निम्न लिखित आवेदन पत्र निज़ाम साहिब की सेवा में भेजा और उनसे प्रार्थना की कि वे आर्य समाज की शिकायतों को दूर करने के लिये कृपा पूर्वक स्वय हस्तक्षेप करें।

आवेदन पत्र

श्रीमान् !

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली की ओर से जो भारतवर्ष और विदेश के आर्य्यसमाजों की शिरोमणि सभा है और जिसके साथ दक्षिण हैदराबाद की प्रतिनिधि सभा को मिलाकर भारत की समस्त प्रांतिक सभाए तथा विदेश की पूर्वीय अफ्रीका, दक्षिण अफ्रीका, फिज़ी, मौरिशस की सभाए सम्मिलित हैं, मैं आदर पूर्वक श्रीमानों की सेवा में निम्न निवेदन करता हूँ —

आर्य्य समाज एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है जिसकी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्राचीन वैदिक धर्म्म और वैदिक संस्कृति के—उनके आदि शुद्ध और गौरवपूर्ण स्वरूप में—पुनरुद्धार के लिए एवं संसार के कोने-कोने मे पवित्र वेद के संदेश को पहुंचाने के लिए स्थापना की थी। आर्य्यसमाज एक विश्व-व्यापी समाज है और इसका संदेश जाति, वर्ण या सम्प्रदाय के भेदभाव से शून्य सम्पूर्ण मानव-समाज के लिए है। ब्रिटिश भारत, भारतीय रियासतों और संसार के दूसरे भागों मे आर्य्यसमाज का कार्य्य तीव्र गति से फैला और इस समय फैल रहा है और कतिपय अवस्थाओं मे वह गति अनुपम है। संसार मे लगभग २००० आर्य्य समाज हैं और उन लाखों व्यक्तियों के अतिरिक्त जो वेद के झण्डे के नीचे आ चुके हैं लगभग १० लाख व्यक्ति आर्य्यसमाज के रजिस्टर्ड सदस्य हैं। आर्य्यसमाज एक संगठित समाज है। इसका संगठन प्रजासत्तात्मक है और इसका कार्य्य सुनियन्त्रित और सुव्यवस्थित रूप मे होता है।

श्रीमानों के राज्य मे बीसियों वर्षों से आर्य्यसमाज काम कर रहा है। श्रीमानो के अत्यन्त प्रिय, राजनिष्ठ, लब्ध प्रतिष्ठ प्रजाजनों और राज-कर्मचारियों मे से कतिपय व्यक्ति आर्य्य समाजी रहे हैं। हैदराबाद हाई कोर्ट के दो प्रसिद्ध जज अपने पद-काल मे हैदराबाद आर्य्यसमाज के प्रधान और उसके रजिस्टर्ड मेम्बर रह चुके हैं। आर्य्यसमाज और श्रीमानों की सरकार के बीच साधारणतया अच्छे सम्बन्ध रहे हैं और वे सम्बन्ध एक ओर राजनिष्ठा और दूसरी ओर उदार संरक्षण के द्वारा पल्लवित रहे हैं। अभी हाल में श्रीमानों ने एक राजकीय आज्ञा के द्वारा धार्मिक निष्पक्षता और धार्मिक प्रचार की स्वतन्त्रता की घोषणा की थी।

दुर्भाग्य से, कुछ समय से, मातहत पुलिस कर्मचारियों के अत्यधिक जोश के कारण श्रीमानों के आदेश निर्देशों और श्रीमानो की सरकार की उद्घोषित नीति के प्रतिकूल, एक मिशनरी धार्मिक समाज के रूप में आर्य्य समाज के कर्त्तव्य-पालन में अनुचित हस्तक्षेप किया गया और आर्य्यसमाज के प्रचारकों और कार्य्य-कर्त्ताओं को शान्तिपूर्ण रीति से लोकोपकार का कार्य्य करते हुए तंग किया गया। आर्य्यसमाज के प्रचारकों की सहिष्णुता और गम्भीरता का एक जीता-जागता सबूत यह है कि जबसे आर्य्यसमाज श्रीमानों के राज्य में काम कर रहा है तब से किसीभी प्रसिद्ध आर्य्य प्रचारक को किसी नियमित न्याय मन्दिर ने श्रीमानों की प्रजा के किसी भी भाग की धार्मिक भावनाओं पर आघात करने के जुर्म से

दण्डित नहीं किया है। श्री० प० रामचन्द्र जी देहलवी आर्य्यसमाज के गम्भीर, मृदु भाषी, जिम्मेवार और विद्वान् प्रचारकों में से हैं और वे सरस साहित्यिक भाषा में आर्य्य धर्म्म की सुन्दर और विद्वत्तापूर्ण व्याख्या करने के लिए प्रसिद्ध हैं। श्रीमानों की राजधानी के हिन्दुस्तानी भाषा-भाषी हज़ारों शिक्षित हिन्दू और मुसलमान प० जी का बड़ा सम्मान करते हैं। इस वर्ष इस्लाम की तौहीन के आश्चर्य्यजनक अपराध में उन पर मुकदमा चलाया गया था। इस अभियोग से आर्य्यसमाज में क्रोध की लहर दौड़ गई और इस लहर का प्रभाव उसके अन्तस्तल तक पहुँचा।

देश भर में सैकड़ों विरोध-सूचक सभायें हुईं और असन्तोष इस सीमा तक पहुँचा कि मेरी सभा को उस उठते हुए असन्तोष को दबाना दूभर होगया। इस आश्चर्य्यजनक घटना के बाद जनता को बहुत सी आश्चर्य्य जनक बातें भी मालूम हुईं, उनमें प्रतिष्ठित आर्य्य-प्रचारकों के निर्वासन की विचित्र आज्ञाएं और राज्य में आर्य्यसमाज के साधारण कार्य्य सञ्चालन पर ऐसी अपमान जनक पाबन्दियां, जिनकी प्रामाणिकता मातहत राज-कर्मचारियों के निराधार और झूठे बयानों पर आश्रित हैं और जिनके सम्बन्ध में न किसी न्यायालय में मुकद्दमा चलाया गया और न राज्य की ओर से कोई तहकीकात की गई, सम्मिलित हैं। बड़े दुःख के साथ यह समाचार सुना गया है कि श्रीमानों की सरकार ने हैदराबाद राज्य में श्री० प० रामचन्द्र जी का प्रवेश बन्द कर दिया है।

हैदराबाद हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज और श्रीमानों के राज्य मे आर्य्य सामाजिक आन्दोलन के एक प्रमुख कर्णधार स्वर्गीय प० केशवराव का मृत्युदिवस १७ टर १३४३ को मनाया गया था। उस महीने की १५ तारीख को नायब कोतवाल सी० आई० डी० ने आर्य्यसमाज सुलतान बाजार के मन्त्री श्री० म० चन्द्रलालजी को एक विचित्र नोटिस दिया कि उस पवित्र अवसर पर केवल एक प्रस्ताव पास किया जाय और किसी किस्म की कोई तकरीर न की जाय। यह आर्डर प्रत्यक्षतः अनुचित है। सभा इसलिए की जाने वाली थी कि जिससे स्वर्गीय प० जी के मित्र और प्रशसक उनके व्यक्तित्व और उनके उत्साहवर्द्धक कार्य्य के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पण कर सकें। आर्य्यसमाज के आदरणीय नेता के सम्मान में किए जाने वाले भाषणों पर पाबन्दियां लगाकर मीटिंग के उद्देश्य को ही कुचल डाला गया था। जब कि यह मीटिंग धर्म्मान्ध की नहीं बल्कि एक प्रसिद्ध नागरिक, एक आदरणीय राज-कर्मचारी और एक सुयोग्य वकील और जज की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए की

गई थी तब इस बात की सम्भावना ही नही हो सकती थी कि इस प्रकार के पवित्र अवसर पर उत्तेजक भाषण होंगे। यह स्वाभाविक था कि इस प्रकार की आज्ञा क्रोध भड़काये, असन्तोष बढ़ाये और हृदयों मे अनावश्यक जलन पैदा करे।

इसी प्रकार की पाबन्दी उस मीटिंग पर भी लगाई गई थी जो भारत के प्रसिद्ध सपूत स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाने के लिए बुलाई गई थी। १२ अप्रैल १६३४ ई० को एक अनुचित आर्डर जारी किया गया कि ऐतिहासिक प्रवचनों और धार्मिक उपदेशों की उस वक्त तक इजाज़त नही दी जायगी, जब तक उनका सारांश अधिकारियों के सामने मजूरी के लिये पहले से पेश न कर दिया जायगा। इस आज्ञा का अनौचित्य और निष्क्रियता प्रत्यक्ष है। २३ जनवरी १६३४ तथा २६ अप्रैल १६३४ की आज्ञाएं साप्ताहिक सत्सगों के धार्मिक उपदेशों पर पाबन्दियाँ लगाती है।

मुझे सूचना मिली है कि श्रीमानों के राज्य मे आर्य्य समाज के अधिकारी यदि समाज मन्दिरों की मरम्मत कराने का काम शुरू करते हैं, तो इस बहाने पर कि बगैर इजाजत के नई इमारतें बनवा रहे हैं, उन्हे तङ्ग किया जाता है, उन्हें सताया जाता है और उन पर मुकद्दमे चलाये जाते हैं।

इन बातो ने न सिर्फ श्रीमाना की कानून-प्रिय प्रजा को ही बेचैन कर रक्खा है, बल्कि भारतवर्ष तथा विदेश के उनके लाखों धर्म्मभाइयो के हृदया को भी व्यथित कर दिया है।

हैदराबाद का राज-परिवार न केवल धार्मिक निष्पक्षता के लिए ही वरन् राज्य के सब धर्मों के उदार सरक्षण के लिए भी प्रसिद्ध है। मेरा विश्वास है कि श्रीमानों की सरकार राज-परिवार की इन मर्यादाओं की रक्षा करेगी और मातहत राज कर्म्मचारियों के जोश, धर्मान्धता अथवा अविवेक के द्वारा राज्य के सुन्दर नाम पर धब्बा नहीं लगवाने देगी। अभी हाल मे जब मेरे मन्त्री जी को श्रीमानों के पोलिटिकल मिनिस्टर से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तो उन्होंने (पोलटिकल मिनिस्टर) विश्वास दिलाने की कृपा की थी कि इन आज्ञाओं के लिए मातहत कर्मचारियों का अत्यधिक जोश ही जिम्मेवार है और ये पाबन्दियां उठाली जायँगी।

मुझे यह देख कर सन्तोष है कि तब से पुलिस का व्यवहार कुछेक अवस्थाओं में अपेक्षाकृत दूरदर्शितापूर्ण रहा है, परन्तु नियमित रूप से वे आपत्तिजनक आज्ञाए न वापिस

ही की गई हैं, और न रद् ही की गई है, और इस बीच में जनता के असन्तोष में तेजी के साथ वृद्धि होरही हैं।

श्रीमानो के राज्य मे आर्य्यों की जो विनीत प्रार्थनाएँ है उनको मैं इस प्रकार संक्षेप में पेश करता हू।

हम बड़े आदर के साथ प्रार्थना करते हैं कि (१) स्पष्ट और सीधे सादे शब्दों में पुलिस को हिदायत करदी जाय कि आर्य्यों को भी निर्बाध रूप में अपने धार्मिक कार्य्यों के सम्पादन का वैसा ही अधिकार है जैसा मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य धर्म्मावलम्बियों को है, जिससे कि मातहत कर्मचारी अज्ञानवश अथवा अन्य किसी कारणवश उन हिदायतों का गलत अर्थ न लगा सकें अथवा उनका दुरुपयोग न कर सकें।

(२) राज्य में आर्य्य प्रचारको के स्वतन्त्र प्रवेश पर कोई पाबन्दी न लगाई जाय।

(३) आर्य्य समाज के धार्मिक जलूसों के निकालने की उन्हीं शर्तों पर इजाज़त दी जाय जिन पर अन्य धर्म्मावलम्बियों को जलूस निकालने की इजाज़त दी जाती है।

(४) धार्मिक और शास्त्रीय साहित्य बिना उचित तहक़ीक़ात के ज़ब्त न किया जाय तथा न्याय के लिए अपील का अधिकार दिया जाय।

(५) सार्वजनिक सभाओं और सार्वजनिक शास्त्रार्थों की इजाज़त के मामले मे आर्य्य समाज के प्रति विषम व्यवहार न किया जाय क्योंकि स्वतन्त्र भाषण और प्रचार का अधिकार आर्य्यों को मिला कर राज्य के सब प्रजाजनो का जन्म सिद्ध अधिकार है।

(६) आर्य्य समाज के मन्दिर वैसे ही पवित्र समझे जायँ जैसे पवित्र मसजिद और गिरजे समझे जाते हैं और उन में हर समय स्वतन्त्र सत्सङ्ग का अधिकार पूर्णतया स्वीकार किया जाय।

(७) इस से पहिले जिन आर्य्य प्रचारकों के विरुद्ध निर्वासन की आज्ञाएँ प्रचारित की गई हैं सब पर एक प्रामाणिक न्यायालय विचार करे और भविष्य में इस प्रकार की आज्ञाएं इसी प्रकार के विचार के आधीन रहें।

मुझे विश्वास है कि श्रीमान् कृपापूर्वक आज्ञा देंगे कि श्रीमानों के प्रिय प्रजाजनों की एक उन्नत, राजनिष्ठ और कानून प्रिय श्रेणी की शिकायतें दूर कर दी जायँ। पं० रामचन्द्र जी के हैदराबाद राज्य में प्रवेश पर बन्दिश की जो आज्ञा दी गई है वह वापिस ले ली जाय।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार श्रीमानों की सरकार ससार भर के आर्यों को आभारी बनायगी।

लोकमत के दबाव और निरन्तर मांग के उत्तर स्वरूप मेरी सभा ने एक क्रिया-समिति (Council of Action) बनाई है और इस समिति को अधिकार दिया गया है कि वह सब उचित उपायों का अवलम्बन करके इन शिकायतों को दूर कराए।

मुझे विश्वास है कि यह मेमोरियल इच्छित फल लायगा और श्रीमानों का उदार हस्ताक्षेप घोर असन्तोष और क्षोभ को कृतज्ञता में परिणत करता हुआ एक अमोघ उपाय सिद्ध होगा।

अन्त में मैं बड़े सम्मान के साथ निवेदन करता हूँ कि अपनी सभा की आज्ञानुसार मैं श्रीमानों की सरकार की आज्ञाओं की १ मास तक प्रतीक्षा करूगा और उस के बाद इस प्रकार के किसी उपाय का जो भी आवश्यक समझा जायगा अवलम्बन करने के लिए क्रिया-समिति की बैठक बुलाऊगा। तौ भी मुझे आशा है कि श्रीमानों को इस मेमोरियल पर कृपा-पूर्ण आज्ञाओं के बाद भविष्य में किसी अन्य कार्य्यवाही की आवश्यकता बाकी नहीं रहेगी।

इस आवेदन पत्र की समाचार पत्रों में आलोचना हुई और इसके भाव तथा उद्देश्य की बडी प्रशसा हुई। उदाहरणत —

हम इलाहाबाद के १३-८-३४ के "लीडर" की आलोचना को उद्धृत करते है, जिससे जनता को विदित हो जावे कि निष्पक्ष लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा था।

लीडर की आलोचना

हम 'लीडर' के इस अङ्क में किसी दूसरी जगह सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी द्वारा निज़ाम हैदराबाद की सेवा मे भेजे गये मेमोरियल को प्रकाशित कर रहे हैं। यह मेमोरियल समस्या को अत्यन्त युक्ति सगत रूप में प्रस्तुत करता है, तो भी इसकी भाषा बहुत सुन्दर है। हमने इस आवेदन-पत्र को पढ़ा और उसमें वर्णित बातों को पढ़ कर हमें बड़ा आश्चर्य्य हुआ और अन्य पाठकों को भी आश्चर्य होगा कि आर्य्य समाज जैसी उन्नत समाज की वैध और शांति पूर्ण प्रगतियों पर आज इस बीसवी शताब्दी में भी ब्रिटिश राज्य की छत्र-छाया में भारतवर्ष के सबसे बड़े देशी राज्य मे प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं,

जिनका कि वर्णन उक्त आवेदन-पत्र मे किया गया है। धार्मिक स्वतन्त्रता पर इस प्रकार के प्रतिबन्ध मध्य युग की बातें समझी जाती हैं, परन्तु आश्चर्य है कि वर्तमान युग में भी वे बातें पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ इस आवेदन-पत्र से पता लगता है कि २३ जनवरी १९३४ और २१ अप्रैल १९३४ के आर्डर साप्ताहिक सत्सगों के आध्यात्मिक प्रवचनों पर भी प्रतिबन्ध लगाते हैं। १२ अप्रैल १९३४ को एक अवांछनीय आज्ञा जारी की गई कि धार्मिक उपदेशों और ऐतिहासिक प्रवचनों की आर्य्य समाज मन्दिर में उस वक्त तक आज्ञा नहीं दी जायगी, जब तक उनका सक्षिप्त पहले मे राज-कर्मचारियों के समक्ष मजूरी के लिये पेश न कर दिया जायगा इत्यादि २।

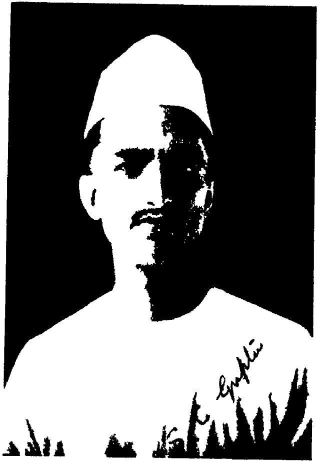
हैदराबाद राज्य की प्रजा का एक बहुत बड़ा भाग हिन्दू प्रजा है और उस हिन्दू प्रजा का आर्य्य समाज एक उन्नत और प्रगतिशील अङ्ग है और हैदराबाद राज्य के शासन अथवा उसके मातहत राज-कर्मचारियों ने उसकी प्रगतियों पर जो पाबन्दियाँ लगाई हैं, उनका किसी उचित आधार पर औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। अवश्य ही उनके कारण समस्त हिन्दुओं में भले ही वे किसी सम्प्रदाय के क्यों न हों, घोर असन्तोष फैलेगा। इस प्रकार की बातों का होना, जहाँ राज्य पर कलङ्क है, वहाँ उन बातो का जारी रहना उससे ज्यादा गहरा कलङ्क है। अवश्य ही इनमे राज्य की बदनामी होगी। हमें आशा है कि अब जब कि हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस निज़ाम साहब को स्थिति का पूर्ण परिचय करा दिया गया है, इस दु:खद प्रसङ्ग के अन्त के लिये तत्काल कार्य्यवाही की जायगी और आन्दोलन को जो उचित शिकायतों पर अवलम्बित है, शिकायतो के दूर न होने के कारण बढ़ने नहीं दिया जायगा।

भारत सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र

इस आवेदन पत्र की एक प्रति भारत सरकार के पोलिटिकल मन्त्री की सेवा में भेजकर इसकी सूचना उन्हें दी गई साथ ही मन्त्री सभा ने निम्नलिखित पत्र भी उन्हें लिखा:—

महाशय!

१९ जून १९३४ को मैंने प० रामचन्द्र देहलवी के विरुद्ध निजाम की पुलिस के अभियोग के सम्बन्ध में सभा की ओर से एक आवेदन पत्र आपकी सेवा में भेजा था। अब



श्री० शिवचन्द्र गुप्ता

आय्य रक्षा समिति के उत्साही मन्त्री । जिन्हें हैदराबाद से अवाञ्छनीय कहकर निर्वासित कर दिया गया है



प० व्यासदेव शास्त्री एम ए एल एल बी
य हैदराबाद के लिए अवाञ्छनीय और निर्वासित
हे । उनका केवल इतना ही दोष था कि
उन्होंने अपने भाइयों के दुखड़े को
प्रेस और प्लेट के द्वारा
जनता तक पहुचाया ।

हमारे नेता



श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

महात्मा नारायण स्वामी जी के सहकारी के रूप में शोलापुर आर्य्य कांग्रेस को सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।



महात्मा नारायण स्वामी जी

भारतीय आर्य्य समाज के एक मात्र नेता।

हैदराबाद के धर्म्म युद्ध के सर्व्व प्रथम डिक्टेटर।

यह ज्ञात हुआ है कि निज़ाम सरकार ने अभियोग वापिस लेलिया है परन्तु राज्य में उनका प्रवेश रोक दिया है।

हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगे हुए विविध प्रतिबन्धों के सम्बन्ध में सभा के पास विस्तृत सूचनाएं हैं।

ऊपर जिस पत्र का उल्लेख किया गया है उसमें मैंने आपसे प्रार्थना की थी कि आप निज़ाम सरकार पर प्रभाव डालकर पण्डित जी को न्याय प्राप्ति में सहायता दें, और जिस प्रकार इस्लाम और ईसाइयत इत्यादि अन्य धार्मिक सोसाइटियों को प्रचार की स्वतन्त्रता प्राप्त है वही आर्य्यसमाज को भी दिलावें।

अब हमने निज़ाम साहब की सेवा में साथ का आवेदन पत्र भेजा है जिसमें हमारी वर्तमान शिकायतें अङ्कित हैं। कृपया आप इसे पढ़ें और अपने सामयिक हस्तक्षेप से निज़ाम सरकार को आर्य्यसमाज के साथ न्याय करने की प्रेरणा करें, जिससे कि भारतवर्ष के आर्य्यों व हिन्दुओं का असन्तोष दूर हो।"

निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र

सभा के मन्त्री ने निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को १३।८।३४ को निम्न पत्र सं० ३४८ भेजा —

आपके पत्र सं० ६०१४ तिथि २।८।३४ के हवाले से निवेदन है कि पुलिस द्वारा चलाए गए अभियोग को वापस ले लेने के बाद पण्डित रामचन्द्रजी के विरुद्ध हैदराबाद राज्य से निर्वासन की आज्ञा जारी कर देने से आर्य्य सामाजिक क्षेत्रों में सनसनी फैल गई है। इस आज्ञा ने तो-आग में ईंधन का काम किया है।

पिछले दिनों जब हैदराबाद में मेरी आप से भेंट हुई थी तब भेंट के दौरान में आपने मुझे यह विश्वास दिलाने की कृपा की थी कि आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगीं हुई पाबन्दियां शीघ्र उठाली जायेंगी और पुलिस की अनावश्यक आज्ञाओं के कारण जो स्थिति उत्पन्न हो गई है वह ठीक कर दी जायगी।

आपके पत्र में इस प्रकार का कोई उल्लेख न देखकर, मुझे दुःख हुआ है। हमारी सभा के प्रधान जी ने श्रीमान् निज़ाम साहब की सेवा में अन्तिम उपाय के रूप में एक मेमोरियल पेश किया है उसमें आर्य्यसमाज की शिकायतों की चर्चा की गई है और इस मामले में निज़ाम साहब के कृपापूर्ण हस्तक्षेप की प्रार्थना की गई है।

मैंने मेमोरियल की एक प्रति इससे पूर्व आपकी सेवा में भेजी थी आशा है इस समय तक आपको प्राप्त होगई होगी। मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि धार्मिक उपासना और धर्म्म प्रचार की स्वतन्त्रता के वैध अधिकार की प्राप्ति में आप, जैसा कि आपने मुझे विश्वास दिलाया था, आर्य्यसमाज की सहायता करें और अपने उच्च अधिकार को काम में लाएँ।

आर्य्यसमाज किसी भी अवांछनीय प्रसङ्ग को उपस्थित न करने के लिए उत्सुक है और न्याय और सद्भावना के सुदर नाम पर निज़ाम सरकार के प्रत्येक शुभचिन्तक को सच्चा समझौता कराने में योग देना चाहिए।"

सभा के प्रधान ने निज़ाम साहिब की सेवा में जो आवेदन पत्र भेजा था उस पर कोई ध्यान न दिया गया। इस की प्राप्ति की स्वीकृति भी हमें न दी गई। निज़ाम महोदय के निजू हस्तक्षेप की तो फिर बात ही क्या? फिर भी चिर प्रतीक्षा के बाद निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री की ओर से ११-६-३४ का पत्र स० २१२ मिला, जिसका मन्त्री जी ने १६-६-३४ को उत्तर भेज दिया। वह पत्र मन्त्री जी के उत्तर सहित नीचे दिया जाता है —

पत्र

मुझे आपको यह सूचित करने की आज्ञा हुई है कि हैदराबाद राज्य में किसी धर्म्म या सम्प्रदाय के अनुयायियों के मार्ग में कोई पाबन्दी लगाने का प्रश्न नहीं है। निज़ाम की सरकार अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार में निष्पक्ष है और सदैव रही है, चाहे वह प्रजा किसी भी धर्म्म या सम्प्रदाय से सम्बन्ध क्यों न रखती हो। परन्तु यदि कोई प्रकाश रूप में ऐसी बात कहता है या करता है जिस से भिन्न २ श्रेणियों में खिचाव पैदा होने की सम्भावना हो, तो कानून और व्यवस्था की, रक्षा के लिए गवर्नमेन्ट का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपराधी के धर्म्म विशेष के भेद-भाव के बिना आवश्यक कार्य्यवाही करें।

अत मैं यहां पर यह भी कहे देता हूँ कि ख़ास तौर पर आर्य्यसमाजियों को किन्हीं ख़ास पाबन्दियों के अधीन रखने का कभी विचार नहीं रहा है।

हमारा उत्तर

आपके ११-६-३४ के पत्रोत्तर में मैं, यह पत्र आप की सेवा में भेज रहा हूँ।

आपने मेरे १७-८-३४ के पत्र का उत्तर भेजने की कृपा की है इस से पूर्व एक

मेमोरियल निज़ाम साहब की सेवा में भी भेजा गया था। १७ ८ ३४ के पत्र में मुख्यतया उस मेमोरियल की व्याख्या की गई थी, इसलिए बड़ी सुगमता से अनुमान किया जा सकता है कि आपका पत्र उस मेमोरियल का एक प्रामाणिक उत्तर है।

ऐसी अवस्था में यह भी अनुमान किया जासकता है कि निज़ाम सरकार के इन शब्दों का कि "आर्य्य-समाजियों को किन्हीं ख़ास प्रतिबन्धों के अधीन रखने का विचार नहीं रहा है" ठीक वही अभिप्राय है जो मेरी सभा ग्रहण करती है जब कि वह आप से यह प्रार्थना करती है कि—

(१) स्पष्ट और सीधे साधे शब्दो मे पुलिस को हिदायत करदी जाय कि आर्य्यों को भी निर्बाध रूप मे अपने धार्मिक कार्य्यों के सम्पादन का वैसा ही अधिकार है जैसा मुसलमानो, ईसाइयो और अन्य धर्म्मावलम्बियो को है जिस से कि मातहत कर्मचारी अज्ञानवश अथवा अन्य किसी कारणवश उन हिदायतो का गलत अर्थ न लगा सके अथवा उनका दुरुपयोग न कर सके।

(२) राज्य मे आर्य्य प्रचारको के स्वतन्त्र प्रवेश पर कोई पाबन्दी न लगाई जाय।

(३) आर्य्यसमाज के धार्मिक जलूसो के निकालने की उन्हीं शर्तों पर इजाज़त दी जाय जिन पर अन्य धर्म्मावलम्बियो को जलूस निकालने की इजाज़त दी जाती है।

(४) सार्वजनिक सभाओ और सार्वजनिक शास्त्रार्थों की इजाज़त के मामले में आर्य्यसमाज के प्रति विषम व्यवहार न किया जाय क्योकि स्वतन्त्र भाषण और प्रचार का अधिकार आर्य्यों को मिलाकर राज्य के सब प्रजा जनो का जन्म सिद्ध अधिकार है।

(५) आर्य्यसमाज के मन्दिर वैसे ही पवित्र समझे जायें जैसे पवित्र मसजिद और गिरजे समझे जाते हैं और उन मे हर समय स्वतन्त्र सत्सङ्ग का अधिकार पूर्णतया स्वीकार किया जाय।

हमारी यह भी प्रार्थना है कि धार्मिक साहित्य बिना उचित तहकीक़ात के ज़ब्त न किया जावे और इस मामले में न्याय के लिये अपील का अधिकार दिया जाय। जिन आर्य्योपदेशकों के लिये इस से पूर्व निर्वासन की आज्ञाएँ प्रचारित की गई हैं उन पर एक प्रामाणिक न्यायालय विचार करे और भविष्य में इस प्रकार की आज्ञाएँ इसी प्रकार के विचार के अधीन रहें। आर्य्यसमाजी भी उसी नाव में हैं जिस मे निज़ाम साहब की अन्य राजभक्त प्रजा मुसलमान, ईसाई इत्यादि हैं। मुझे विश्वास है कि निज़ाम सरकार इन

प्रार्थनाओं पर सहानुभूति के साथ विचार करेगी। क्योंकि यह विषय हैदराबाद राज्य जैसे उन्नत राज्य की प्रजा के अस्मसिद्ध अधिकारों से सम्बन्धित है और उस के शासक को शासन के सूत्रधारों तथा राजकर्मचारियों के हर सम्भव अत्याचारों से उन अधिकारों की रक्षा करनी चाहिये।

यह समझते हुये कि आप के पत्र का जो आशय मेरी सभा ने ग्रहण किया है वह ठीक है और निज़ाम सरकार द्वारा प्रचारित उस आज्ञा की विद्यमानता में जिस में आपने निस्सन्देह उचित कारणों के आधार पर दावा किया है कि 'निज़ाम सरकार अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार मे निष्पक्ष है और सदैव रही है और वह प्रजा भले ही किसी धर्म, सम्प्रदाय या श्रेणी की क्यों न हो" कोई और आशय ग्रहण करना सम्भव भी नहीं है। इसलिए सभा श्रीमान् निज़ाम साहेब को धन्यवाद देती है कि उन्होंने कृपा करके हस्तक्षेप किया और अपनी प्रजा के एक उस भाग की शिकायतो को दूर किया जो अत्यन्त क़ानून प्रिय राजनिष्ठ और उन्नत है। निस्सदेह यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वे समस्त आज्ञाएँ, जिनका हमारे मेमोरियल मे उल्लेख है और जो मातहत कर्मचारियों के अत्यधिक जोश के कारण जारी हुई थीं और जो आप के इस पत्र की भाषा और भावों के विरुद्ध हैं वे सब अब तक रद्द कर दी गई होंगी और आर्य्यसमाज के साथ भविष्य में न कोई विषम व्यवहार किया जायगा और न इन सब से अन्तिम घोषणा के विरुद्ध किसी आज्ञा से कोई सार्वजनिक कागज़ कलङ्कित होने दिया जायगा। और यह वर्तमान घोषणा भी पिछली घोषणाओं और फर्मानों के समर्थन में ही की गई है।

मैं प्रेस मे एक वक्तव्य प्रकाशित करा रहा हूँ जिस में आपका पत्र तथा मेरा उत्तर प्रकाशित हो जायगा जिस से कि सार्वजनिक बेचैनी और बृटिश भारत हैदराबाद एव दूसरे राज्यों और विदेश के लाखों हिन्दुओं और आर्य्यसमाजियों की चिन्ता दूर हो जाय। यदि मुझे आप की ओर से कोई और पत्र प्राप्त न हुआ और मुझे निश्चय है कि आप के स्पष्ट भाषा में लिखे गए इस पत्र के बाद और घटनाओं के प्रवाह को जो मुझे निश्चय है मेरे इस अर्थ का समर्थन करता है, देखते हुए किसी अन्य पत्र व्यवहार की ज़रूरत भी नहीं रह जाती है और मैं सार्वदेशिक सभा के अधीनस्थ ससार भर में फैले हुये समस्त आर्य्यसमाजों को सरक्यूलर जारी कर दूगा कि हैदराबाद की वह अवांछनीय स्थिति जो एक समय अत्यन्त भयंकर रूप धारण करने वाली थी, राज्य के कर्मचारियों की दूरदर्शितापूर्ण सामयिक

कार्यवाही के कारण ठीक हो गई है और आर्य्य प्रचारक तथा आर्य्य जनता निर्बाध रूप से स्वतन्त्रतापूर्वक धार्मिक उपासना और धर्म प्रचार का वैसा ही अधिकार रखते है जैसा कि इस्लाम धर्म के अनुयायी रखते हैं, जिस धर्म के कि स्वयं निज़ाम साहब भी मानने वाले हैं।

श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

पण्डित रामचन्द्र जी के विरुद्ध प्रचारित की गई निर्वासन की आज्ञा के सम्बन्ध मे, मैं निवेदन करूंगा कि निज़ाम की सरकार जिनने उनके विरुद्ध चलाए गए अभियोग को वापस ले लिया है कदाचित् इसलिए कि उनके भाषणों के सम्बन्ध में उत्पन्न हुआ भ्रम बिल्कुल दूर हो गया है, हैदराबाद और हैदराबाद से बाहर के आर्य्यों को उस आर्डर को रद्द करके आभारी बनायगी जिस को, जैसा कि आप मुझ से सहमत होंगे, आवश्यकता नहीं थी।

निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मेम्बर तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री जी के मध्य हुए उपर्युक्त पत्र-व्यवहार पर प्रेस में खूब आलोचना हुई।

हिन्दुस्तान टाइम्स की आलोचना

"हैदराबाद ने, जिस के शासक और सरकार राजनैतिक कुशलता और न्याय प्रियता के लिए प्रसिद्ध है समस्त धार्मिक मामलों मे पूर्ण निष्पक्षता की घोषणा के द्वारा, अपनी मर्य्यादाओं के प्रति सच्चा रहने का सबूत दिया है। बहुसंख्यक हिन्दू आबादी वाला हैदराबाद स्थिर रूप से राज्य के या राज्य के बाहर के हिन्दुओं की सहानुभूति को नहीं खो सकता है। इस बात को अनुभव करते हुए, सरकार ने अपनी स्थिति को स्पष्ट कर दिया है। यदि हैदराबाद सरकार श्री० प्रो० सुधाकर जी मन्त्री सार्वदेशिक सभा के पत्रानुसार प० रामचन्द्र जी के ऊपर हैदराबाद में प्रवेश के लिये लगी हुई पाबन्दी को उठाले और निश्चयात्मक रूप से इस बात का वचन दे कि राजकर्मचारी आर्य्यों के जलूसों पर कोई आपत्ति नहीं करेंगे तो अवश्य ही हैदराबाद सरकार अपने प्रेस्टिज को बढ़ायेगी। धार्मिक भावनाओं के सम्मान ने किसी भी सरकार को कभी हानि नहीं पहुँचाई है। हमें आशा है कि निज़ाम सरकार अपने सुन्दरकार्य्य को जारी रक्खेगी और दूसरे राज्य उसका अनुकरण करेंगे।"

वक्तव्य के अंश

इसके पश्चात् निज़ाम सरकार ने एक वक्तव्य प्रकाशित कराया जो कदाचित् पोलिटिकल मन्त्री के पत्र के अवशिष्ट भाग के रूप में था जिसका निम्न अवतरण महत्वपूर्ण है--

"निज़ाम सरकार इस बात को अब स्पष्ट कर देना चाहती है कि जहां जहां अपनी प्रजा के किसी भाग की ख़ास शिकायतों के सम्बन्ध में यदि वे उचित सूत्रों के द्वारा प्रस्तुत की जायें, जांच करने के विरुद्ध नहीं हैं वहां वह प० रामचन्द्र जी देहलवी के निज़ाम राज्य से निर्वासन सम्बन्धी आन्दोलन में लाए गये प्रचार के उपायों को जिनसे सत्य बातों पर पर्दा पड़ने के अतिरिक्त, निज़ाम सरकार की प्रजा के भिन्न २ वर्गों में साम्प्रदायिक और जातीय विद्वेष फैलने की आशंका है उचित रीति से कुत्सित समझती है।

इसलिए निज़ाम सरकार को अपनी वर्त्तमान स्थिति की रक्षा करते हुए इस बात का निश्चय है कि इस राज्य की प्रजा के बड़े भाग के वास्तविक हितों की वह रक्षा कर रही है और इस राज्य की सुव्यवस्थित उन्नति एक बड़े परिमाण में भिन्न २ वर्गोंके सुन्दर सम्बन्धों की रक्षा पर ही आश्रित है।"

इस वक्तव्य के उत्तर रूप में सभा के मन्त्री श्री० प्रो० सुधाकर जी m a ने निम्न वक्तव्य प्रेस को दिया। सभा तथा निज़ाम सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी के साथ जो पत्र व्यवहार हुआ था उसका इस वक्तव्य में ज़िक्र कर दिया गया था।

"हैदराबाद राज्य की घटनाओं से सम्बन्धित सब ही बातों से जनता पहले से ही परिचित है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने निज़ाम साहब की सेवा में एक मेमोरियल भेजा था जिसमें उन्होंने हिज़ एक्ज़ाल्टेड निज़ाम साहब के कृपापूर्ण हस्ताक्षेप की प्रार्थना की थी और अपील की थी कि वे कृपा करके हैदराबाद में आर्य्यसमाज के कार्य्य पर लगी हुई पाबन्दियों को हटा लेने के लिए आज्ञाएँ जारी कर देवें। १३—६—३४ को निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मेम्बर की ओर से सभा को एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसमें आर्य्यसमाजियों को विश्वास दिलाया गया था कि "ख़ासकर आर्य्यसमाजियों को किन्हीं ख़ास पाबन्दियों के अधीन रखने का कभी भी विचार नहीं रहा है।"

सभा के मन्त्री ने इस पत्र के उत्तर में निज़ाम सरकार को इस विश्वास के लिए धन्यवाद दिया और प्रार्थना की कि प० रामचन्द्र जी के विरुद्ध प्रचारित की हुई निर्वासन की आज्ञा को भी वापस लेलिया जाय जिससे कि न्याय के उद्देश्य की पूर्ति होजाय और हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम शेष न रह जाय।

अब निज़ाम सरकार ने अपने पोलीटिकल मेम्बर के पत्र में कुछ वृद्धि करने के लिए एक वक्तव्य प्रेस को दिया है जिसके निम्न शब्द उल्लेखनीय हैं —

"निज़ाम की सरकार प० रामचन्द्र जी देहलवी के निज़ाम राज्यके निर्वासन सम्बन्धी आन्दोलन में लाये गये प्रचार के उपायों को जिनसे सत्य बातों पर पर्दा पड़ने के अतिरिक्त निज़ाम सरकार की प्रजा के भिन्न २ वर्गों में साम्प्रदायिक और जातीय विद्वेष फैलनेकी आशंका है, उचित रीति से कुत्सित समझती है।"

इस उद्धरण की पेचीदगियाँ स्पष्ट हैं। तमाम बातें जनता पर स्पष्ट हैं और 'आर्य्य-समाजियों ने ऐसा ढङ्ग धारण किया है जो उचित रीति से इस प्रकार के आरोप के लिये ज़िम्मेवार है' इस बात का बलपूर्वक खण्डन करने में जनता मेरा साथ देगी। आर्य्यसमाज ने नितान्त वैध उपायों का अवलम्बन किया है और आन्दोलन के सब उपायों से अपने को बचाये रक्खा है। यदि मेमोरियल का प्रस्तुत करना और सीधे निज़ाम सरकार को अपना विरोध लिख भेजना वैध नहीं है तो वे कौनसे उपाय हैं जो वैध हो सकते हैं, यह हमारी समझ में नहीं आता। आर्य्यसमाज के आन्दोलन को कुत्सित प्रचार पर आश्रित बतलाना वस्तु-स्थिति पर पर्दा डालना है। हम एक बार फिर निज़ाम सरकार से समस्त भारत के आर्यों के भावों को समझने और उनकी तह तक पहुँचने की प्रार्थना करेंगे जो हैदराबाद में आर्य्य प्रचारकों के प्रति किये गये व्यवहार के कारण राज्य से अत्यन्त असन्तुष्ट हैं। मुझे दु:ख इसी बात का है कि वक्तव्य का अन्तिम पैरा शेष वक्तव्य की सुन्दर भावना के अनुकूल नहीं है। मुझे निश्चय है कि इस पैरे की पेचीदगियां जान बूझ कर नहीं रक्खी गयीं हैं और निज़ाम सरकार का इसके बाद का व्यवहार उन्हें असत्य सिद्ध कर देगा।"

पण्डित रामचन्द्र जी का स्वयं अपना केस उपस्थित करना

जब पं रामचन्द्र जी देहलवी के निर्वासन की आज्ञाओं से सम्बन्धित पत्र व्यवहार से कोई फल न निकला तब पण्डित जी ने निज़ाम सरकार के अधिकारियों से न्याय प्राप्ति के लिए स्वयं प्रयत्न किया। परन्तु उन्होंने अपने लिए न्याय के दरवाजे बन्द पाये और अपने युक्ति युक्त निवेदन के सम्बन्ध में उन्हें यह उत्तर मिला:—

"जो आज्ञा पहिले दी जा चुकी है, उसमें कोई परिवर्त्तन नहीं हो सकता।"

ठीक है, कठोर शासन में तब तक परिवर्त्तन नहीं होता जब तक कि वह अनिवार्य्य नहीं होजाता। वह समय शीघ्र ही आने वाला है, जब हैदराबाद राज्य में अवस्थाओं को बदलना होगा। वर्तमान अवस्था में हिन्दुओं व आर्य्यों के लिये साधारण से साधारण धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान असम्भव हो गया है। भाषण और कार्य्य की स्वतन्त्रता, सांस्कृतिक विकास

के लिए शिक्षण संस्थाओं का खोला जाना, सभा सोसाइटियों का बनाया जाना इत्यादि सुविधाएँ हैदराबाद की जनता को प्राप्त नहीं हैं।

जब प० जी राज्य के अधिकारियों को हिलाने में सफल न हुए, तब उन्होंने विरोध स्वरूप हैदराबाद जाने की सभा से आज्ञा चाही, ताकि वे वहां जाकर अपनी निर्दोषता प्रमाणित कर सकें। उन्होंने श्री म० नारायण स्वामी जी महाराज को पत्र लिखा जो श्री स्वामी जी के उत्तर के साथ नीचे दिया जाता है।

पूज्य स्वामी जी सादर नमस्ते!

कुछ समय पहले मैंने आपसे निवेदन किया था कि आप मुझे हैदराबाद जाने की आज्ञा प्रदान कर देवें जिससे कि मैं एक कानून तथा शान्ति-प्रिय नागरिक तथा आर्य्य-समाज के एक जिम्मेवार उपदेशक के रूप में जो संसार के अन्य धर्मों पर समन्वयात्मक रीति से प्रकाश डालता है अपनी पोज़ीशन की रक्षा कर सकूँ। निज़ाम गवर्नमेन्ट के जुडीशल, पोलीस और जनरल विभागों के मन्त्री को जो अन्तिम स्मरण पत्र मैंने भेजा था वह १९—१२—३४ का था। मेरे लगातार स्मरण पत्रोंका मुझे १—२—३५ को उत्तर मिला है निस्सन्देह वह उत्तर निराशा जनक है।

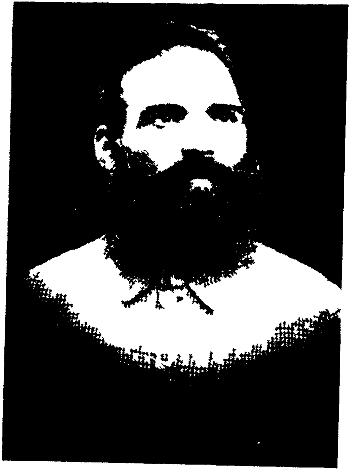
ऐसी परिस्थिति में, आपसे प्रार्थना है कि स्थिति की गम्भीरता और इसमें निहित भयङ्कर परिणामों के गम्भीर रूप पर विचार करते हुए मुझे वांछित आज्ञा प्रदान कर देवें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस के अफ़सरों के हाथों अथवा ज़रूरत पड़ी तो हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाईनेस के हाथों से मुझे न्याय मिलेगा।

उत्तर

१—५—३५

प्रिय पं० जी नमस्ते!

आपका २५—४—३५ का पत्र मुझे मिल गया है। उत्तर में निवेदन है कि आर्य्य-समाज के प्रचार कार्य्य की कीर्ति और उसके गौरवकी रक्षा के लिए आपकी चिन्ता तथा हमारे एक परम आदरणीय और उच्च कोटि के प्रचारक के रूप में उत्तरदायित्व की आपकी अनुपम भावना सराहनीय है। तो भी आप देखेंगे कि सार्वदेशिक सभा की नीति सदैव मेल-मिलाप और समझौते की रही है। जब तक सम्भाव तथा शान्तिपूर्ण समझौते की ज़रा-सी भी गुँजाइश है तब तक किसी ऐसी कार्य्यवाही की स्वीकृति देने की मेरी इच्छा नहीं है जो निज़ाम



प० वशीलाल जी वकील
हैद्राबाद राज्य मे आर्य्य समाज की प्रगति के नेता।
इन्होने अपने भाई प० शामलाल के साथ समाज सेवा के लिए
अपना सर्वस्व अर्पण कर रखा है



मुल्तान निवासी ला० रामचन्द्र खन्ना बी ए एल एल बी
इन्होने गुलबर्गा के आर्य्य अभियुक्तो की बडी योग्यता से
पैरवी की।



भामराव पटेल का अवशिष्ट परिवार

भीमराव का उनके मित्र मानकराव जी तथा उनका चाची के साथ धर्मान्ध मुसलमाना ने वध कर दिया ।



र उपट का हनमान मन्दिर

जिस हद्राबाद क दगे क अवसर पर मुसलमाना ने जला दिया था ।

की सरकार को परेशानी में डालने वाली सिद्ध होवे। सभा अभी तक उपर्युक्त प्रकार के समझौते के मार्ग खोज रही है और मुझे आशा है कि परम पिता परमात्मा सम्बन्धित सभी पक्षों को इस प्रकार प्रेरित करेंगे जिससे कि इन सब बातचीतों के परिणाम हैदराबाद के कृपालु शासक और आर्य्यसमाज दोनों के गौरव में वृद्धि करने वाले हों।

मुझे विश्वास है आप इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और मुझसे इस बात में सहमत होंगे कि न्यायालय के दरवाजे खटखटाने के बजाय दया मिश्रित न्याय प्राप्त करना अच्छा है, भले ही उसकी प्राप्ति में समय लग जाय।

यदि दुर्भाग्य से ये उपाय असफल रहे—मुझे विश्वास है कि विपत्ति नहीं आयगी। हमारे सामने सिवा उस मार्ग के अवलम्बन के कोई विकल्प नहीं रह जायगा। परन्तु अन्तिम उपाय के रूप में ही वैसा होना चाहिए।

धैर्य अथवा भीरुता

धैर्य एक बड़ा गुण है। जब तक किसी सुधार के पक्षपातियों में आवश्यक मात्रा में धैर्य न हो तब तक वह सुधार किसी बुराई का अन्त नहीं कर सकता। आर्य्य-समाज ने इस पाठ को भली-भाँति ग्रहण किया और इस पर आचरण भी किया है। युद्ध के अनिवार्य हो जाने पर वह कभी भी अपने उद्देश्य से च्युत नहीं हुआ और जब यह संग्राम में आता है तो ज़ोर-शोर के साथ युद्ध करता है। यह स्मरण रहे कि आर्य्यसमाज का युद्ध सदैव अन्धकार के साथ रहता है और उसके हथियार प्रकाश तर्क और युक्ति होते हैं। जब हमारे पूज्य नेता श्री म० नारायण स्वामी जी महाराज ने वह रुख धारण किया जो उनके उपर्युक्त पत्र से ज्ञात होता है, तब कुछ मित्रों ने हमारे धैर्य को भीरुता बतलाया। उन्होंने पूछा कि हैदराबाद राज्य में हमारे सम्मानीय प्रचारक के प्रति जो अपमानजनक व्यवहार हुआ है उसे आप लोग कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे। जब हमारी समस्त अनुनय विनय और समझौते की नीति असफल रही और हमें कतिपय मौखिक आश्वासनों के अतिरिक्त कुछ न मिला तो हमारे सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि अब हमें क्या करना चाहिए? आर्य्य समाज की कार्यप्रणाली धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए त्याग और सेवा की रही है। हैदराबाद में भी वह इसी मार्ग का अनुसरण करेगा, जैसा कि वह पहिले से ही क्रमश: कर रहा है। अब पाठकों को धैर्य पूर्वक आगे के हमारे उपायों का परिचय प्राप्त करना चाहिए जो हमने

निज़ाम की टस से मस न होने वाली सरकार को हिलाने के लिए किए। साथ ही हमारे मार्ग में जो असफलताएँ आई, उनको भी देखें।

आर्य्य नेताओं की हैदराबाद यात्रा

हमारी इस असहायावस्था में हमारे नेताओं ने स्वयं हैदराबाद जाकर साधारण-तया हिंदुओं और मुख्यतया आर्य्यों की कुछ मुसीबतों का परिचय प्राप्त करने का निश्चय किया। म० नारायण स्वामी जी निज़ाम सरकार के वक्तव्य के प्रकाशित होने के तत्काल बाद अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व आचार्य्य रामदेव जी के साथ हैदराबाद गये। उन्होंने सोचा कि उनकी यात्रा से वक्तव्य की सत्यता की परीक्षा का उन्हें अवसर मिल जायेगा। वे कुछ दिन हैदराबाद में ठहरे और आर्य्यसमाज की सभाओं पर लगे प्रतिबन्धों की पर्वाह न करते हुए उन्होंने व्याख्यान तथा उपदेश दिए। सौभाग्य से कदाचित् उच्च अधिकारियों की आज्ञा के कारण पुलिस ने इन आर्य्य मिशरियों के प्रचार कार्य में कोई हस्ताक्षेप न किया। आर्य्यसमाज के व्याख्यानों तथा उपदेशों को सुनने वालों के लिए, भले ही वे किसी भी धर्मके क्यों न हों, मानसिक भोजन प्राप्त होता है और यह ही कारण है कि आर्य्यसमाज के प्रचारकों के भाषणों में श्रोताओं 'की बहुत भारी उपस्थिति रहती है। प० रामचन्द्र जी देहलवी हैदराबाद में हिंदू और मुसलमानों में बहुत लोकप्रिय थे। इन पंक्तियों के लेखक को राज्य के मुस्लिम अधिकारियों के मुँह से प० जी की प्रशंसा सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ था। निष्पक्ष मुसलमानों में प० जी की यह लोकप्रियता मुस्लिम धर्मांधता को जो निज़ाम सरकार के धर्म विभाग के द्वारा कार्य कर रही थी सह्य न हुई।

निज़ाम सरकार के लिए यही उत्तम मार्ग था कि वह आर्य्यसमाज के चोटी के नेताओं को आमन्त्रित करके स्थानीय पीड़ित आर्य्यसमाजियों को सांत्वना देने के लिए अपने पक्ष में करती और एक दम उन कारणों को दूर कर देती जो धीरे धीरे एकत्रित होकर राजा व प्रजा के पारस्परिक सम्बन्धों को दूषित कर रहे थे। परंतु चूँकि अधिकारियों को ग़लत सलाह दी जा रही थी, अतः उन्होंने ऐसा न किया। वास्तविक बातों से बेख़बर रहने की पुरानी नीति बर्ती गई और आर्य्यसमाज को अपने पक्ष में करने का सुनहरा अवसर खो दिया गया। आश्चर्य यह है कि निज़ाम की सरकार यह दावा करती है कि उसकी सर्विस में उत्तम कोटि के व्यक्ति हैं।

आर्य्यसमाज के नेता हैदराबाद से लौट आए और चूँकि हैदराबाद में उनके निवास

काल में पुलिस ने उनके कार्य में कोई बाधा उपस्थित न की थी, अत उन्होंने आर्य्य-जनता को प्रेस वक्तव्यों के द्वारा आश्वासन दिया कि भविष्य में पुलिस हस्तक्षेप न करेगी और मातहत कर्मचारियों के अत्यधिक जोश का अन्त हो जावेगा और इसका कारण उन्होंने आर्य्यसमाज के कार्य के प्रति निज़ाम सरकार की नीति में परिवर्तन बतलाया जो कि ठीक न था। परन्तु बाद की घटनाओं ने शीघ्र ही इन पवित्र आशाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया। फिर यह स्पष्ट हो गया कि हैदराबाद सरकार की वर्तमान नीति में परिवर्तन असम्भव है। उनका मौन क्षणिक था और उस समय तक के लिए ही था जब तक कि वे नेता राज्य में मौजूद थे। कठिनता से नेताओं को वापिस हुए कुछ सप्ताह ही हुए थे कि चिटगोपा और महाराजगञ्ज से पुलिस द्वारा उत्सवों के बन्द किए जाने के समाचार आने शुरू हो गए और सभा के मन्त्री जी को पुलिस की ज़्यादतियों की ओर निज़ाम सरकार का ध्यान खींचने के लिए बाधित होना पड़ा। हमारी सभा के मन्त्री और निज़ाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री के मध्य निम्न पत्र व्यवहार हुआ —

हमारा पत्र

महाशय !

आपके पत्र स० २१२ तिथि ११—९—३४ के हवाले से निवेदन है कि आपने अपने इस पत्र में जो म० नारायण स्वामी जी के आवेदन पत्र के उत्तर रूप मे था यह लिखने की कृपा की थी कि "खास तौर पर आर्य्यसमाजियों को किन्हीं विशेष प्रतिबन्धों के भीतर रखने का कोई विचार नहीं है"। इसके बाद के आपके प्रेस वक्तव्य से भी इस बात की पुष्टि हुई थी। उस वक्तव्य में आपने आर्य्यसमाज के प्रति अपनी सरकार की निष्पक्ष धार्मिक नीति के पक्ष का पोषण किया था।

हमारी सभा के प्रधानकी हाल की हैदराबाद यात्रा से जो उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ की थी और पुलिस के हस्तक्षेप रहित उनके आर्य्य समाज के प्रचार से भी कुछ सीमा तक आपकी नीति की पुष्टि हुई थी।

हम सोच रहे थे कि वह समय शीघ्र आने वाला है जब हम प्रसन्नता से आर्य जगत् को यह सूचना देंगे, कि हैदराबाद राज्य में जो अवांछनीय स्थिति उत्पन्न होगई थी उसका अंत होगया, और आर्य्यसमाज तथा राज्य के सम्बन्ध पुन अच्छे होगये हैं।

परतु दुर्भाग्य से मुझे अभी ही यह सूचना मिली है कि चिटगोपा के आर्य्यसमाज मदिर में पवित्र गायत्री मन्त्र पर होने वाला उपदेश आपकी पुलिस द्वारा रोक दिया गया है। यह बात आपके उपर्युक्त पत्र तथा वक्तव्य के सर्वथा प्रतिकूल है।

अतएव मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप कृपया पुलिस को आज्ञा देवें कि वह आर्य्यसमाज मदिरों मे हमारे काम में बाधा न डाले। मुझे विश्वास है, कि आपकी सामयिक और तात्कालिक कार्य्यवाही अवाछनीय स्थिति को रोकने में सहायक होगी।

जो तार मैंने आपकी सेवामें पहिली तारीख को भेजा है उसकी लिपि इस प्रकार है।

"चिटगोपा आर्य्यसमाज मदिर में पुलिस व्याख्यानो को रोक कर अवांछनीय स्थिति पैदा कर रही है कृपया पुलिस को ऐसा करने से रोकें। पत्र भेजता हूँ।"

दूसरा तार

"दु ख है कि हैदराबाद राज्य में आर्य्यसमाज के धार्मिक प्रचार में पुलिसके अनावश्यक हस्ताक्षेप और पक्षपालपूर्ण व्यवहार की शिकायतें अभी तक जारी है। १७ नवम्बर को पुलिस कमिश्नर ने महाराजगज आर्य्यसमाज को जो आज्ञा दी है वह सबसे ताज़ी मिसाल है, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पुन धार्मिक निष्पक्षता से सम्बन्धित निज़ाम सरकार के पूर्व वक्तव्यो की ओर उसका ध्यान आकर्षित करती है।"

हवन कुण्ड का हव्वा

ऐसा प्रतीत होता था, कि जितनी ही अधिक निज़ाम सरकार से हमने प्रार्थना की उतनी ही आर्य्यसमाज की प्रगति के प्रति उसकी नीति कठोर होती गई। निलङ्गा में बीदर ज़िले के तालुकेदार के हुक्म से हवन कुण्ड विध्वस किया गया और आर्य्यसमाज की सम्पत्ति जब्त की गई केवल इस बहाने पर कि आर्य्यसमाज की प्रगतिया सरकार विरोधी तथा राजनैतिक हैं। पाठकों को निज़ाम पुलिस की मूर्खता को जानकर आश्चर्य होगा कि वह पिछले कुछ समय से हवन कुण्ड को मदिर समझे हुए थी और हुक्म जारी करके उसने उन पर प्रतिबध लगा दिए थे। परंतु जब उन्हें अपनी यह मूर्खता मालूम हुई तो उन्होंने अपनी स्थिति बदल दी, और जिन मकानों में हवन कुण्ड रहते थे उनपर बन्दिश लगादी। हमारी समझ में नहीं आता कि हवन कुण्ड निज़ाम सरकार का क्या बिगाड़ता था? हवन कुण्ड एक साधारण पात्र होता है जिसमें आर्य्य लोग वायु शुद्धि के लिए सुगन्धित पदार्थ जलाते हैं। हैदराबाद राज्य में ऐसे निर्दोष धार्मिक कृत्य पर भी प्रतिबध लगाया गया।

हवन कुण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्त कथन की पुष्टि में बालदा की खुफ़िया पुलिस के नायब कोतवाल द्वारा प्रचारित एक आज्ञा का सार नीचे दिया जाता है—

"हकीम गणपत राव और गडेराव साहिब को सूचित किया जाता है कि नगर्लाचिता मुहल्ले में मगना नामक व्यक्ति से आर्य्यसमाज की सभाओं के लिए उन्होंने एक मकान किराए पर लिया है और उस में हवन कुण्ड की स्थापना की है। यह उन्हों ने एक नई बात की है और इस के लिए उन्हें राज्य के धर्म विभाग से आज्ञा लेनी चाहिए और तब तक उन्हें यहां हवन इत्यादि करने की आज्ञा नहीं दी जा सकती है।"

यह उन आज्ञाओं का एक नमूना है जो पुलिस की ओर से हैदराबाद राज्य में समय २ पर आर्यों तथा आर्यसमाजियों को मिलती रही है। इस प्रकार की आज्ञाओं का क्या अर्थ है, यह हमारी समझ में नहीं आया। हम आगे यथा स्थान इस प्रकार की बहुत सी आज्ञाओं का सार देंगे। सम्प्रति हम यह निवेदन करेंगे कि हवन-कुण्ड विध्वस का समाचार प्राप्त कर के सभा के मन्त्री श्री ला० देशबन्धु जी ने निजाम सरकार के पोलिटिकल मन्त्री को पत्र और तार के द्वारा निम्न विरोध लिख कर भेजा—

"महाशय!

आज मैंने निम्न तार आपकी सेवा में भेजा है"—

"आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद ने तार द्वारा बडे चिन्ता जनक समाचार भेजे हैं। तहसीलदार ने निलांग में हवन-कुण्ड का विध्वस कर दिया है, और अवैध रीति से आर्यसमाज की सम्पत्ति ज़ब्त करली है। आर्यसमाजी बडे व्याकुल हो रहे हैं। कृपया हस्तक्षेप और तत्काल जांच करें"।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिध सभा को पिछले कुछ दिनों से राज्य के दूसरे भागो से इस प्रकार की कई शिकायतें मिल रही हैं। आप मुझ से सहमत होंगे कि राज्य और आर्यसमाज के पारस्परिक अच्छे सम्बन्धों के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार की शिकायतों की तत्काल जाँच की जावे, और ऐसा प्रयत्न किया जावे कि यह अवांछनीय घटनाएँ बन्द हो जावे। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार की घटनाएँ न केवल राज्य और आर्यसमाज के अच्छे सम्बन्धों को बिगाड़ती हैं, अपितु अविश्वास तथा असन्तोष का वातावरण पैदा करती हैं, जो हर दृष्टि से अवाछनीय है।

जिस समय आपको यह पत्र मिलेगा मुझे विश्वास है कि आप मामले को ठीक कर

चुके होंगे। अतएव मैं आप से निवेदन करूंगा कि कृपया परिणाम से शीघ्र से शीघ्र सूचित कीजिए, जिसकी हम बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं"।

इस पत्र और तार की प्रतिलिपि भारत सरकार के पोलिटिकल सेक्रेटरी तथा हैदराबाद के रेज़िडेन्ट को भी भेजी गई थीं।

इस पत्र के कुछ दिन बाद श्रीयुत ला० देशबन्धु जी ने इन ही अधिकारियों को एक दूसरा आवेदन-पत्र भेजा, जिस में राज्य कर्मचारियों के विरुद्ध उन भीषण शिकायतों का उल्लेख था, जो कि हैदराबाद के आर्य समाजियों ने उन के पास लिख कर भेजी थीं। यह आवेदन पत्र भी हम नीचे देते हैं, जिस से कि पाठकों को विदित हो जाय कि निज़ाम सरकार के उच्च अधिकारियों को मातहत कर्मचारियों के उत्पातों से परिचित रखने के लिए हमने क्या किया।

"महाशय!

इतने थोड़े से समय में आपको एक बार फिर पत्र लिख कर राज्य की आर्य समाजी प्रजा के विरुद्ध राज्य के कुछ कर्मचारियों की ज़्यादती को आप के नोटिस में लाने का मुझे खेद है। इस विषय पर आपको लिखने के बाद हैदराबाद से हमें ऐसे समाचार प्राप्त हुए हैं, जिन में राज्य के कुछ कर्मचारियों के विरुद्ध भीषण आरोप लगाए गये हैं।

वे समाचार इस प्रकार हैं—

१—खट गाव में कई मुसलमानों ने तीन आर्यसमाजियों के यज्ञोपवीतों को जबर्दस्ती तोड़ा और पारले में पुलिस के सब इन्सपेक्टर द्वारा दो आर्य्य समाजियों के जनेऊ खण्डित किये गये।

२—खण्डेनी तालुक़ा के पटेल और उसके भाई ने अहमदपुर के आर्य्यसमाजियों को इसलिए पीटा कि उन्होने उदगीर आर्य्यसमाज के उत्सव मे भाग लिया था।

३—झूठे अपराधों पर आर्यसमाज के अधिकारियो तथा सदस्यों पर मुक़द्दमे चलाये जाते हैं।

४—राज कर्मचारी आर्य्य समाजियों को धमकाते हैं कि यदि वे आर्य्य समाज को न छोड़ेंगे, तो उन्हें तङ्ग किया जायगा, और उनके विरुद्ध मुक़द्दमे चलाए जायँगे।

५—आर्य्यसमाजी जो शिकायत करते हैं उन पर पुलिस तथा अन्य राज कर्मचारी ध्यान

नहीं देते विपरीत इसके शिकायत करने वालो को हर प्रकार से ज़लील (अपमानित) किया जाता है।

यह समाचार अपने में स्वय स्पष्ट है और यदि इसमें आरोपित तथा इससे पूर्व समय समय पर निवेदन किए हुए आक्षेप सत्य है जिनकी सत्यता में हमें कोई सन्देह नहीं है तो कहना पड़ेगा कि आपके राजकर्मचारी ही स्वय आपके पिछले वक्तव्य की घोर अवहेलना कर रहे हैं जिसकी हमें कभी आशा भी न थी।

हैदराबाद राज्य की इन खेदजनक परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए सभा की अन्तरग सभा देहली में शीघ्र ही होने वाली है। चूंकि हम अपर्याप्त और मिथ्या समाचारों के आधार पर शीघ्रता में कोई फैसला करना नहीं चाहते हैं, अत मैं आपसे निवेदन करूँगा कि कृपया उपर्युक्त तथा उन शिकायतों की जो मैंने अपने ६ जुलाई १६३५ के पत्र में लिख कर भेजी है, तत्काल जांच कराइए और मुझे उसके परिणाम से यथा सम्भव शीघ्र ही सूचित करें। यद्यपि जो कुछ कई बार कहा जा चुका है उसके दुहराने की आवश्यकता नहीं। फिर भी मैं यह निवेदन करूँगा, कि सार्वदेशिक सभा की नीति सदैव पारस्परिक समझौते की रही है, अत वह अपने उचित धार्मिक अधिकारो की रक्षा के लिए अन्य उपायों का अवलम्बन करने के लिए आर्य्यसमाजो को प्रेरित करने से पूर्व शात और सम्मान पूर्ण समझौता करने के लिए कोई उपाय उठा न रक्खेगी।

मुझे आशा है कि, सभा की इस भावना का आप आदर करेंगे। और अपने राज्य के आर्य्य समाजियों की उचित शिकायतों को दूर करने का शीघ्र ही यत्न करेंगे।,,

दूसरा तार

"मानक नगर (हुमनाबाद) आर्य्यसमाज के जलूसमें पुलिस की ज्यादतियों के समाचार अत्यन्त चिन्ताजनक हैं। मुख्य मुख्य आर्य्यसमाजियों को पीटा गया है। कृपया तत्काल जांच कीजिये। उत्तर की प्रतीक्षा है।"

अरण्य रोदन

पाठकों को यह ज्ञात होने पर कि इन विविध आवेदन पत्रों तारों तथा विरोधों का हमें एक भी उत्तर न मिला, हमारे धैर्य का ठीक ठीक अन्दाज़ा लग जावेगा। हमारी निष्ठा असभ्यता पूर्वक भग करदी गई और हम यह अनुभव करने लग गये कि हमारा रोना बन में

रोने के सदृश है हम जानते थे कि भारतीय रियासतें तर्क और प्रकाश की शत्रु होती हैं परन्तु हमें यह खयाल भी न था कि वे मानवी भावों से इतने शून्य होंगे कि किसी आवेदन पत्र का उत्तर देने की साधारण शिष्टता भी न दिखलायेंगे। ओह! ये गुलामों और चापलूसों के शहद के छत्ते हैं! वे कब तक अपने को स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के प्रकाश से बचाए रख सकते हैं?

जब हम निराशा और असहायावस्था से दुखी और चिन्तित थे तब ही सौभाग्य से निज़ाम सरकार के तत्कालीन प्रधान मन्त्री (प्राइम मिनिस्टर) श्री महाराजा सर कृष्णप्रसाद बहादुर का २०—३—३६ को नई देहली में शुभागमन हुआ। हमें सुझाया गया कि हम एक डेपुटेशन के साथ उनसे भेंट करें और एक बार अपनी तमाम शिकायतोंको उनके सम्मुख रक्खें। डेपुटेशन हिन्दुओं और आर्य्यसमाजियों के प्रमुख २ प्रभावशाली सज्जनों का था। डेपुटेशन में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे।

(१) श्रीयुत ऐम० ऐस० अणे।

(२) श्रीयुत ए० सी० दत्त एम० एल ए० उपप्रधान लेजिस्लेटिव असेम्बली।

(३) आनरेबल श्रीयुत बी० बी० कालीकर मेम्बर कौंसिल आफ़स्टेट।

(४) श्री डा० बी० एस मुञ्जे।

(५) ,, पं० कृष्णकांत मालवीय एम० एल० ए०

(६) ,, बा० घनश्यामसिंह जी गुप्त एम० एल० ए०।

(७) ,, ला० देशबन्धु जी।

(८) ,, प्रो० सुधाकर, जी एम० ए०

(९) ,, चौ० मुख्तारसिंहजी।

(१०) ,, ला० नारायणदत्त जी सदस्य सार्वदेशिक आ० प्र० सभा।

(११) ,, ला० ज्ञानचन्द जी सदस्य सार्वदेशिक सभा।

अन्यान्य बातों के अतिरिक्त जो बातें विशेष रूप से प्रधान मन्त्री जी के सम्मुख रखी गईं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:—

(१) हैदराबाद राज्य में प०रामचन्द्र जी देहलवी के प्रवेश पर लगा हुआ प्रतिबंध।

(२) हिन्दुओं और मुख्यतया आर्य्यों की धर्म्म प्रचार की स्वतन्त्रता और नागरिक अधिकारों का उपभोग।



पं० विनायकराव बैरिस्टर
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य।
इनके घर पर मुसलमानों ने आक्रमण किया था।



श्री० दत्तात्रेय प्रसाद वकील

जिन्होने हैदराबाद रियासत मे आर्य्य समाज के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रक्खा है ।

(३) धार्मिक और सामाजिक साहित्य की ज़ब्ती।

(४) स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में हिन्दू सस्कृति विषयक पाठों का अभाव।

सख्या (१) के सम्बन्ध में शिष्टमण्डल ने प्रगट किया कि इस प्रतिबन्ध को लगे हुए २ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। भले ही उस समय परिस्थिति कुछ भी क्यों न रही हो, सम्भव नहीं कि हैदराबाद राज्य की वर्तमान साम्प्रदायिक अवस्था इस प्रतिबन्ध के हटाने में बाधक हो। यह भी प्रगट किया कि यह प्रतिबन्ध मुसलमानों की अवस्थाके साथ तुलना में हिन्दुओं को उनकी असहायावस्था का सदैव स्मरण कराने वाला है। मंडल ने इस प्रतिबन्ध को हटाने की बलपूर्वक प्रार्थना की।

स० (२) के सम्बन्ध में मडल ने यह शिकायत पेश की कि निज़ाम सरकार द्वारा उद्घोषित धार्मिक निष्पक्षता की नीति का छोटे अधिकारियों के द्वारा दुरुपयोग होता है और वे दिन प्रति दिन के शासन में इस नीति के विरुद्ध व्यवहार करते हैं। यह भी प्रगट किया कि कारण भले ही कुछ हो राज्य की आबादी के ८५ प्रतिशत लोगों (हिन्दुओं) के हृदयों में इस प्रकार के भाव की मौजूदगी अवाछनीय है। मडल ने लातूर की ताज़ी घटना पुलिस की ज्यादतियों और इस नीति के विरुद्ध आचरण के उदाहरण के रूप में पेश की।

मडल ने प्रार्थना की कि मातहत अधिकारियों को हिदायत कर दी जाय कि वे समस्त धर्म्मानुयायियों के प्रति समान स्वतन्त्रता की राज्य की उद्घोषित नीति का ठीक ठीक रीति से पालन करें और दूसरों से कराएँ और समस्त धर्म्म स्थान समानरूपसे पवित्र समझे जावें। मुसलमानों के धार्मिक जलूसों और सार्वजनिक वा प्राइवेट धार्मिक जल्सों की तरह ही हिन्दुओं के जल्से और जलूस बिना किसी रुकावट के करने तथा निकलने दिए जावें।

स० (३) यह बात भी प्रधान मन्त्री जी के नोटिस में लाई गई कि हिन्दुओं और आर्य्यसमाजियों का साहित्य ज़ब्त करलिया जाता है और वैसेही और उससेभी बुरे मुस्लिम साहित्य को खुली छुट्टी दे दी जाती है। मडल ने इस प्रकार के मुस्लिम साहित्य के सम्बन्ध में 'रद्दे-इस्लाम' इत्यादि पुस्तकों का हवाला दिया। यह भी प्रगट किया कि 'वैदिक आदर्श' नामक एक मात्र आर्य्य समाचार-पत्र का राज्य ने प्रकाशन बन्द कर दिया है।

स० (४) यह भी प्रधान मन्त्री जी को बतलाया गया कि स्कूलों में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनमें हिन्दू सभ्यता और हिन्दू इतिहास पर कोई पाठ नहीं होता।

गुण्डाशाही

जब सर्व-साधारण मुसलमान आर्य्य समाज की उचित शिकायतों के प्रति निज़ाम सरकार की बढ़ती हुई कठोरता से परिचित हो गए तब उन्हें विविध स्थानों पर आर्य्य समाजियों और हिन्दुओं को तङ्ग करने और सताने का साहस हो गया। अपनी लापरवाही और उपेक्षा वृत्ति से पुलिस के मातहत कर्मचारियों ने उन्हें मदद दी। मुसलमान धर्म्मान्धों के अत्याचारों के हृदय-द्रावक समाचार सभा के कार्य्यालय में आने शुरू हो गए। जन-साधारण को भड़काना सरल है परन्तु इस से फैली हुई आग को बुझाना कठिन है।

म० वेदप्रकाश की हत्या

इस के तत्काल बाद हमें म० वेदप्रकाश की हत्या का भयावह समाचार मिला। जिन परिस्थियों में यह हत्या हुई थी उन्होंने इस दुर्घटना को ऐसा उत्तेजनापूर्ण बनाया कि तमाम हिन्दुस्थान में क्रोध की लहर दौड़ गई। आर्य्य समाज की समस्त संस्थाओं ने विरोध-सूचक प्रस्तावों के द्वारा अपने क्षोभ और रोष की निज़ाम तथा भारत सरकार को सूचना दी। सार्वदेशिक सभा को प्रेरणा की गई कि वह म० वेदप्रकाश की हत्या के कारणों की घटना-स्थल पर पहुँच कर जाच करे।

म० शिवचन्द्र का दौरा

सभा ने इस हत्या एवं मुसलमान गुण्डों द्वारा हिन्दुओं और आर्य्यों पर होने वाले अन्य अत्याचारों की जाच कराने के विशेष उद्देश्य से अपने उत्साही कार्य्यकर्त्ता आर्य्य रक्षा समिति के मन्त्री म० शिवचन्द्र को इस कार्य्य के निमित्त नियुक्त करके उन्हें आदेश दिया कि वे हैदराबाद में विस्तृत भ्रमण करके जांच करे। गत मार्च मास में वे अपने मिशन पर गए और हमारी हैदराबाद की प्रान्तिक सभा के मन्त्री म०बंशीलाल जी के साथ वे १६ स्थानों पर गए। उन्होंने पुलिस के डाइरेक्टर जनरल श्रीयुत ऐस० टी० हौलिन्स सी० आई० ई० ऐल० बी० ऐस० तथा राज्य के अन्य उच्च कर्मचारियों से भेंट की। वे पीड़ित व्यक्तियों और पार्टियों के लिखित बयान हमारे पास लाए। वे इतने कारुणिक हैं कि उनके पढ़ने पर निज़ाम सरकार के आर्य्य समाज के प्रति प्रतिशोध और निष्ठुरता पूर्ण व्यवहार पर क्रोध आए बिना नहीं रह सकता। उन को पढ़ने पर कोई भी व्यक्ति इस परिणाम पर पहुँच सकता है कि इस मामले में निज़ाम सरकार एक पार्टी है और इस सब उत्पात की जड़ में निज़ाम सरकार का धर्म्म-विभाग है।

म० शिवचन्द्र जी द्वारा संगृहीत कुछ बातों का सार

गजोटी में हुए म० वेदप्रकाश के वध की घटनाएँ हमें भारतवर्ष के पुराने मुसलमानी ज़माने की याद दिलाती है जब मुसलमान मौलवी हिन्दुओं के सामने यह विकल्प पेश किया करते थे कि "या तो इस्लाम को क़बूल करो या मरने को तैयार रहो"। यदि इस प्रकार की घटना २०वीं शताब्दि में घटित होती हैं तो निश्चय ही हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। गजोटी में आर्य समाज स्थापित किया जाता है मुस्लिम दगई इस से ही असन्तुष्ट हो जाते हैं और आर्य्यों तथा आर्य मन्दिरों पर पत्थर फेंकते हैं। पुलिस में शिकायत की जाती है परन्तु कोई तात्कालिक कार्यवाही नहीं की जाती। लगभग २५० सशस्त्र मुसलमान जलूस की शक्ल में निकलते हैं, और अपने सरदार दाऊद खाँ के गले में माला डालते हैं और आर्यों हिन्दुओं को डराते धमकाते हुए शहर में गश्त करते हैं। वेदप्रकाश आर्य समाज मन्दिर से अपने घर को लौट रहा था। मुसलमानों की यह भीड़ उसे मार्ग में मिलती है और उस के साथ दुर्व्यवहार कर के उसे निर्दयता पूर्वक क़त्ल कर देती है। इस शहीद की लाश आर्य समाज के मन्त्री के मकान में फेंक दी जाती है। जब म० शिवचन्द्र जी उस मकान में गये तो वहां उस समय भी उन्हें ख़ून के धब्बे मिले। यह भी कहा जाता है कि इस शहीद ने वीरता तथा प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु का आलिंगन किया। यद्यपि अन्तिम क्षणों में उस से कहा गया था कि यदि तुम इस्लाम क़बूल करलो तो तुम्हारी जान बच सकती है।

वेदप्रकाश की नृशंस हत्या से हैदराबाद की भयंकर परिस्थितियाँ सभा के सामने आ गई और उस समय हमें यह दीख पड़ा कि हैदराबाद में आर्यों के जीवन सुरक्षित नहीं हैं। केवलएक यही घटना इस "उन्नत" राज्य का राग अलापने वालों के प्रलापों को निर्मूल सिद्ध करने के लिए पर्याप्त थी।

हुपला की हत्यायें

उदगीर ज़िलान्तर्गत हुपला ग्राम में भी इसी प्रकार की हत्याएँ हुई थीं। मुसलमान लोग भीमराव पटेल के मित्र मानक राव की चचेरी बहिन को भगा ले जाना चाहते थे। उस कन्या की रक्षा के यत्न से आस पास के गाँवों के मुसलमान भड़क गये। यही उन हत्याओं का तात्कालिक कारण था। यह कहा जाता है कि पुलिस को इस तमाम मामले का पहिले से पता था, परन्तु वह हिन्दुओं की रक्षा के लिए आगे न बढ़ी बल्कि उसने इन

पाशविक अत्याचारों के करने के लिये मुसलमानों को भड़काया और उन की सहायता भी की। दिन दहाड़े शाम की ३ बजे मुसलमान लोग शस्त्रों से सुसज्जित हो कर हुपला ग्राम में एकत्रित हुए, और भीमराव पटेल के घर को उन्हों ने घेर लिया। उस समय मानिक राव भी उस मकान मे थे। मुसलमान लोग घर में घुसे और निर्दयता पूर्वक मानिकराव को क़त्ल कर दिया, तथा भीमराव व उसकी चाची को भी गोली से उड़ा दिया और उस ही मकान मे उन तीनो की लाशों को जला दिया।

पुलिस पटेल की धृष्टता

अहमदनगर (बीदर) तहसील के "ताले" ग्राम निवासी रामराव का पुत्र बाबूराव जिसकी आयु २० वर्ष की थी आर्यसमाज का मेम्बर बना। सैय्यद अमीर नामक पुलिस पटेल उसके इस कार्य्य से अप्रसन्न होकर सबके सामने उसे गालियां देता है और उससे बदला लेने की प्रतिज्ञा करता है। एक दिन जब बाबूराव कुँए से लौट रहा था तो कहा जाता है कि सैय्यद अमीर ने अन्य मुसलमानों के साथ बाबूराव पर हमला किया और अपनी तलवार से उसे सदैव के लिए निकम्मा कर दिया। बाबूराव ने मामले की रिपोर्ट पुलिस मे की और एक डाक्टर को अपना बयान भी दिया, परन्तु अपराधियो के विरुद्ध कोई कार्य-वाही न की गई।

एक अन्य आर्य्य की दुर्दशा

जिला उस्मानाबादान्तर्गत गोरकवाड़ी ग्राम निवासी मारुति के पुत्र लिम्बा जी को जिसकी उम्र ३५ वर्ष की थी आर्य्यसमाजी होने तथा बनने के कारण बुरी तरह पीटा गया। कुछ मुसलमानो ने उसे सोते हुए आ पकड़ा और उसको एक लाठी मारी। तथा उसके हाथ पॉव बाधकर पास के एक गाव मे ले जाकर उससे इस्लाम ग्रहण करने के लिए कहा गया। इन्कार करने पर उसे खूब मारा पीटा गया।

पुलिस का अमानुषिक व्यवहार

गत बकरा ईद के मौक़े पर निजामाबाद में कुछ मुसलमानों ने एक गाय की हत्या की जिसके कारण हिंदुओं ने वहाँ हड़ताल रक्खी। पुलिस को शक़ हुआ कि इसमें आर्य्यों की शरारत है। १३ मार्च १९३८ को पुलिस ने छल से ४ आर्य्यसमाजियों को इस तुच्छ आधार पर गिरफ्तार किया कि उन्होंने हिंदुओं को शस्त्रों के धारण करने के लिए उकसाया। आश्चर्य यह है कि मजिस्ट्रेट के वारण्ट के बिना ही ये गिरफ़्तारियाँ हुईं और

उन्हें हवालात में रखा गया। कहा जाता है कि उन्हें वहाँ निर्दयता पूर्वक पीटा गया और बलात उनके यज्ञोपवीत तोड़े या उतारे गये। प्रात ३ बजे उन्हें बिलकुल नगा किया गया और उनके मुँह में पेशाब किया तथा मॉस डाला गया। दूसरे दिन हथकड़ियाँ हाथ में डालकर उन्हें शहर में घुमाया गया।

पिछली होली के अवसर पर गुलबर्गा मे जब लिंगायत लोग होली खेल रहे थे, तब हिंदू व मुसलमानों मे कुछ झगड़ा हो गया था। कहा जाता है कि इसमें एक मुसलमान की मृत्यु हो गई थी। यद्यपि उस समय कोई भी आर्य्य होली नही खेल रहा था (यह प्रसिद्ध बात है कि आर्य्य लोग अन्य हिंदुओं की तरह होली नही खेलते) तो भी यह कहा गया कि आर्य्य लोगों ने इस झगडे में भाग लिया और कत्ल के अपराध में पुलिस ने ४ आर्य्यो को गिरफ़्तार करके‡ गुलबर्गा के सेशन कोर्ट मे उनपर मुकदमा चलाया और दो से १० वर्ष तक की कठोर सज़ा उन्हें दी गई।

ओ३म् के झण्डे का हटाया जाना

६-४-३८ को कल्याणी आर्य्यसमाज मदिर का झण्डा जबर्दस्ती इस आधार पर हटाया गया कि राज्य के धर्म-विभाग की आज्ञा से मदिर की पूर्व से रजिस्ट्री नहीं हुई थी। इस अत्याचार के विरोध में राज्य के अधिकारियों को तार भेजे गए। अब हमे विदित हुआ है कि श्रीयुत ऐस टी हौलिस डायरेक्टर जनरल पुलिस ने इस घटना की जॉच की है और उन्होंने कहा है कि ताल्लुकेदार द्वारा ओ३म् के झण्डे का उतारा जाना अन्याय युक्त था, परतु यह होते हुए भी अब तक ओ३म् के झण्डे की फिर से लगाने की आज्ञा नही मिली है।

पं० विनायक राव बैरिस्टर के मकान पर धावा

गत अप्रैल मास में हैदराबाद नगर में मुसलमानों ने हिंदुओ को मारा पीटा और बाद मे यह झगड़ा हिंदू मुस्लिम दगे के रूप में बदल गया।

---

‡ यह ध्यान देने योग्य बात है कि गजोटी में म० वेदप्रकाश की हत्या के सिलसिले में मुसलमानों पर जो केस चलाया गया था उसके ४ माह बाद आर्य्यों पर गुलबर्गा केस चलाया गया था। गुलबर्गा केस का फ़ैसला तो शीघ्र ही कर दिया गया परन्तु गजोटी केस अभी तक अदालत में ही पड़ा हुआ है। न्याय की दृष्टि से इसका जो अर्थ है वह पाठक स्वय जान सकते हैं।

निज़ाम सरकार ने एक निराधार भ्रमपूर्ण वक्तव्य जारी करके आर्य्यसमाजियों को इस उत्पात का उत्तरदायी ठहराया। इस वक्तव्य ने आग में ईंधन का काम किया और मुसलमानों को भड़काया जिसके परिणाम स्वरूप लगभग १०००० मुसलमान आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के प्रधान श्री० प० विनायकराव जी बैरिस्टर के मकान पर चढ़ गये। यह ध्यान देने योग्य बात है कि प० जी का परिवार एक बड़ा उच्च और प्रतिष्ठित परिवार है जिसकी निज़ाम सरकार के प्रति निष्ठा वहां के सब लोगो में प्रसिद्ध है। उनके पिता रायसाहिब केशवराव जी हाइकोर्ट के सम्मानित जज थे। घटना का समाचार मिलते ही सभा ने राज्य के अधिकारियो को निम्न लिखित तार दिया —

तार

राज्य का वक्तव्य जिसमें दंगे के लिए आर्य्यसमाजियों को उत्तरदायी ठहराया गया है निराधार तथा भ्रामक हैं। वक्तव्य ने आग मे ईंधन का कार्य किया और प० विनायक राव जी के मकान तथा अन्य आर्य्यसमाजियो के ऊपर आक्रमण करने मे मुस्लिम भीड को प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार के जान बूझ कर किए गये हमलों को आर्य्यसमाजी अत्यन्त अनुचित तथा निन्दनीय समझते है। सभा निजाम सरकार को चेतावनी देती है कि इस प्रकार के आक्रमणो का परिणाम बड़ा भयङ्कर होगा। तत्काल हस्ताक्षेप और बैरिस्टर के परिवार की रक्षा करने के लिए माननीय श्रीयुत क्राफटन को धन्यवाद।

प्याले का भरजाना

यह प्रत्यक्ष होगया कि राज्य के हिन्दू तथा आर्यों के दुःख का प्याला भर गया है, और किसी क्षण भी इसमें उबाल आ सकता है। अतएव सभा ने सम्पूर्ण परिस्थिति पर सिंहावलोकन करने का निश्चय करके ३०—४—३८ को देहली में सभा की अन्तरंग सभा बुलाई। सभा में तमाम स्थिति पर पर्याप्त वाद विवाद तथा विचार के बाद सर्व सम्मति से निम्नलिखित निश्चय हुआ —

यह सभा हैदराबाद रियासतमें आर्य्यसमाज और आर्य्यसमाजियों पर जो अत्याचार हो रहे हैं, उनकी घोर निन्दा करती हुई उस रियासत के आर्य्य समाजियों के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

इस सभा को इस बात का विशेष दुःख है कि रियासत के उच्च अधिकारियो ने सभा के प्रतिनिधियो को बार बार आश्वासन दिए हैं कि रियासत में आर्य्यसमाज के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जायगा। परन्तु उन आश्वासनों को तोड़ा गया है और स्थिति को अधिक से अधिक भयङ्कर होने दिया है। यह सभा समझती है कि अब दशा बहुत ही बिगड़ गई है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है।

सभा की हैदराबाद रियासत से माँग है कि—

(१) गश्ती निशान ५४ को मन्सूख़ कर दिया जावे।

(२) क़वायद तकरीबन मज़हबी मन्सूख कर दिये जायें।

(३) कानून अखाड़ा मन्सूख कर दिये जायें।

(४) खानगी मदरसे की गश्ती मन्सूख कर दी जाय।

(५) फिर्के वारी दंगों के मुकद्दमे की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा कराई जाय।

(६) बाहर के उपदेशकों पर इज़ाजतकी पाबन्दी न लगाई जाय। कोई खिलाफ कानून काम करे तो मुकद्दमा चलाया जाय। जिसका दाख़िला बन्द है खोल दिया जाय।

(७) पुस्तकें बिना जांच जब्त न किये जावें।

(८) समाचार पत्र के निकालने की आज्ञा दी जाय।

(९) मुसलमान हिन्दू और आर्य्य के त्यौहार एक साथ आने पर उनके मनाने की स्वतन्त्रता रहनी चाहिये।

(१०) आर्य्यसमाज, हवन कुण्ड के स्थापित करनेके लिए इज़ाजत की जरूरत न रखी जाए।

(११) जेल खाने में कैदियों को मुसलमान न बनाया जाय और हमको उनमें प्रचार की आज्ञा हो।

(१२) सरकारी नौकर जो आर्य्य हैं उन पर आर्य्य होने के कारण सख्ती न की जाय।

(१३) आर्य्यों को अपने घरों पर और आर्य्यसमाज पर झंडा लगाने की स्वतन्त्रता दीजावे।

(१४) गुलबर्गा निज़ामाबाद, हैदराबाद के मुकद्दमो की तहकीकात निष्पक्ष कमीशन द्वारा की जावे।

क्योंकि सभा को दिये गये आश्वासनों की रियासत के अधिकारियों ने कोई परवाह नहीं की, और सभा यह भी आवश्यक समझती है कि सम्पूर्ण आर्य्य जनता को इस आवश्यक प्रश्न के सम्बन्ध में साथ लेना आवश्यक है इसलिए सभा निश्चय करती है कि पांच

मास के अन्दर अन्दर मध्यप्रदेश में अथवा महाराष्ट्र में किसी ऐसे केन्द्र, में जो हैदराबाद रियासत के समीप हो, एक आर्य्य महा सम्मेलन (Aryan Congre-s) की जाय जिसमें विशेषतया हैदराबाद की समस्या पर विचार हो।

सभा की सम्मति है कि यदि रियासत के अधिकारी शीघ्र ही अपनी नीति में परिवर्तन करने को तैयार नहीं, तो सम्पूर्ण आर्य्यसमाज को सब उचित उपायों से, जिनमें सत्याग्रह भी शामिल है, अपने अधिकारों के लिये लड़ने के लिए तय्यार हो जाना चाहिए।

यह सभा आर्य्य रक्षा समिति को आदेश देती है कि वह इस प्रस्ताव के अनुसार आर्य्य महा सम्मेलन के संगठन, तथा अन्य सब आवश्यक उपायों को काम में लाकर हैदराबाद में आर्य्यसमाज के अधिकारों की रक्षा का प्रयत्न करे।

हमारे क़ानूनी सहायकों पर प्रतिबन्ध

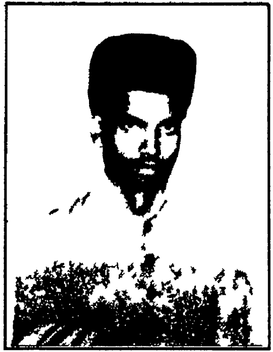
महान् ग्लैडस्टोन के शब्दों मे "न्याय में विलम्ब करना न्याय के अपहरण के बराबर है।" हैदराबाद में अपने केस के सम्बन्ध में हम इस कहावत की सचाई को खूब अनुभव कर रहे थे। परन्तु हमें जो कटु अनुभव हुआ, वह निर्दोष आर्य्य हिंदुओं के विरुद्ध फ़ौजदारी के सगीन मुक़दमों के सम्बन्ध में था। उन मुक़दमों में केवल विलम्ब ही नहीं अपितु हमारे योग्य क़ानूनी सलाहकारो के मार्ग में बाधाएँ उपस्थित करके हमें न्याय से वञ्चित किया गया। हैदराबाद का मुक़दमा जिसमें हिंदू और आर्य्यों पर क़त्ल का आरोप लगाया गया है, न्याय के अपहरण का स्पष्ट उदाहरण है। अभियुक्तों की पैरवी के लिए बम्बई के फ़ौजदारी के प्रसिद्ध वकील श्रीयुत के ऐफ नैरिमैन नियुक्त किए गए थे परन्तु उनके राजनैतिक विचारों के विचित्र आधार पर राज्य में उनका प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। न्यायालय में अपने मुवक्किलों की पैरवी करने के लिए जानेवाले वकील को यह कहना कि वह इस कार्य को हाथ में नहीं ले सकता क्योंकि वह विशेष प्रकार के राजनैतिक विचारोंवाला है। इसमें अपराधियों को न्याय से वञ्चित करने के अप्रत्यक्ष प्रयत्न के अतिरिक्त और क्या है? इससे अधिक बदले की भावना और क्या हो सकती है? सभा के मन्त्री ने इस सम्बन्ध में निज़ाम साहब, प्रधान मन्त्री सर अकबर हैदरी और रेजीडेण्ट को तार दिए—

तार

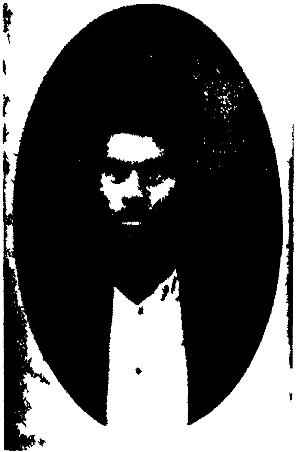
"क़त्ल के अभियुक्त हिंदुओं व आर्य्यों की पैरवी के लिए हैदराबाद आते हुए बैरिस्टर



भँवरलाल आर्य
इन्हे गुलबर्गा केस म ७ वर्ष का कठोर कारावास मिला ।



उमरावसिंह आर्य
इन्हे हैदराबाद केस मे २० वर्ष के कारावास का दण्ड मिला ।



सोहनलाल आर्य्य



श्री० देवीसिंह जी

इन दोनो महाशयो को हैदराबाद केस में २० २० वर्ष का दण्ड मिला है।

गैरीसैन जी के रोके जाने को यह सभा अनुचित समझती है। इनकी यह यात्रा विशुद्ध व्यवसायिक दृष्टिकोण से थी। नागरिक स्वतन्त्रता के प्रश्न के अलावा यह प्रतिबन्ध निर्दोष अभियुक्तों को बचाव रखने और उचित क़ानूनी सहायता के अधिकार से वंचित करता है। कृपया प्रतिबन्ध हटा दीजिए और हिंदू समाज को आश्वासन दिलाइए कि अभियुक्तों के साथ पूरा-पूरा न्याय किया जायगा।"

परन्तु निज़ाम सरकार पत्थर बनी हुई थी। उसने अपने नागरिकों के इन मौलिक अधिकारों की ज़राई पर्वाह न की। पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि श्रीयुत गरीसैन के प्रवेश को रोकने के बाद भारतवर्ष के एक उच्चकोटि के वकील श्री भूलाभाई देसाई की सेवाएँ प्राप्त की गई, और उन्हें भी हैदराबाद से इसलिए निराश होकर लौटना पड़ा, कि वहां के नागरिकों को नागरिक स्वतन्त्रता के अधिकार से भी वंचित रक्खा जाता है। इसके बाद उनका स्थान देहली के श्रीयुत तनकजी जी ने लिया, इस अभियोग का फैसला सुना दिया गया है। इस फैसले के सम्बन्ध में निज़ाम सरकार के रुख को देखते हुए हमारे जो अनुमान थे, वे सत्य ही सिद्ध हुए। अभियुक्तों को २०-२० वर्ष के कारावास का कठोर दण्ड मिला है। एक दूसरे गुलबर्गा के मुकद्दमे में जहां मुलतान के वकील श्रीयुत रामचन्द्र खन्ना ने बड़ी योग्यता के साथ अभियुक्तों की पैरवी करके मुकद्दमे की धज्जियां उड़ा दी थी, हम देखते हैं कि ग़रीब आर्यों को भारी भारी सजाएँ दी गई हैं।

धर्मवीर धर्मप्रकाश का बलिदान

हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि किस प्रकार धर्मान्ध मुसलमानों के द्वारा हमारे भाई वेदप्रकाश का बलिदान हुआ और किस वीरता तथा प्रसन्नता के साथ उसने स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। वहाँ केवल एक इनही का बलिदान हुआ हो यह बात नहीं बल्कि उन के मार्ग को और भी अधिक चमकाने तथा गौरवान्वित करने के लिए अन्य आर्य भाइयों ने भी उन का अनुसरण किया। मृत्यु ही मनुष्य को शहीद नहीं बनाती, अपितु जिस काम के लिए वह बलिदान होता है वह ही उसे शहीद बनाता है। जिस उद्देश्य के लिए हमारे भाई हैदराबाद में अपने प्राण न्यौछावर कर रहे हैं वह उद्देश्य न्याय प्राप्ति है। संसार में न्याय मनुष्य की एक बड़ी प्रिय वस्तु है और वह ही सभ्य पुरुषों व जातियों को एक सूत्र में पिरोए रखती है। न्याय का तकाज़ा यह है कि जब तक हम दूसरे लोगों को अपने हक़ पर स्व हित साधन करने से नहीं रोकते तब तक ही हमें

अपना हित साधन करने का अधिकार होना चाहिए। ठीक इसी प्रकार के न्याय से हम हैदराबाद में वंचित किए गये हैं। हमें अपने मन्दिरों के बनाने, उन में सत्संग करने हवन-कुण्ड बनाने, संस्कार करने तथा धार्मिक व्याख्यान कराने आदि की पुलिस अथवा राज्य के धर्म विभाग की पूर्वस्वीकृति के बिना आज्ञा नहीं है।

अब म० धर्मप्रकाश जी के विषय की ओर आते हैं। वह कल्याणी आर्यसमाज के उत्साही कार्य कर्त्ता थे। वे नवयुवकों को व्यायाम सिखाया करते थे। मुस्लिम प्रचारकों को उनकी यह प्रगतियाँ पसन्द न आईं और उन्होंने उनकी जान लेने का षड्यन्त्र रचा। कल्याणी में ओ३म् का झण्डा उतारने का जब उत्पात हुआ, तब मुसलमान अधिक रुष्ट हो गये और आर्यसमाज मन्दिरों तथा आर्यसमाजियों के घरों पर कंकड़ पत्थर फेंक कर और समय समय पर बन्दूक चला कर आर्य्यों को तंग तथा भयभीत करने लग गए। जब डाइरेक्टर जनरल पुलिस श्री युत ऐस० टी० हालिन्स ने गोली चलाने के सम्बन्ध में जांच की तो मुसलमानों ने यह झूठा बहाना बनाया कि वे बन्दरो को डराने के लिए बन्दूक चलाते थे।

२७-६-३८ को म० धर्म्मप्रकाश जब आर्य्य समाज मन्दिर से घर को लौट रहे थे तो रास्ते में सशस्त्र मुसलिम भीड़ ने उन्हें घेर लिया। तलवारों और छुरियों से हमला करके उन्हें ज़ख्मी कर दिया।

आह गरीब धर्म्मप्रकाश ! तुम अकेले और निहत्था थे। तुम भीड़ की आग से न बच सके। तुम्हारा अपराध केवल यही था कि तुम उत्साही आर्य्य समाजी थे और मुसलमान आततायियों की मूर्खता, धर्म्मान्धता और द्वेष के सामने नहीं झुके थे।

माननीय घनश्यामसिंह गुप्त प्रधान सभा की हैदराबाद यात्रा

माननीय घनश्यामसिंह गुप्त के हैदराबाद आने के २ दिन पूर्व ही उपर्युक्त दुर्घटना हुई थी और उन के तथा राज्य के अधिकारियों के मध्य जो विचार हुआ था उस में एक यह भी विचारणीय विषय था। निज़ाम सरकार से न्याय प्राप्ति के लिए हमारा यह अन्तिम यत्न था और इस समय हमारा सदेश-हर मामूली व्यक्ति नहीं वरन् एक प्रान्तीय असेम्बली का अध्यक्ष था, और आर्य्य समाज के केस की शान्ति और विचार के साथ छान-बीन करने के लिए उपयुक्त था। यह ध्यान रहे कि गुप्त जी स्वभाव से ही काल्पनिक-बातों की ओर ध्यान नहीं देते हैं। उन्होंने बड़ी छान बीन के साथ केस का अध्ययन किया। प्रधान मन्त्री

सर डाक्टर हैदरी, पुलिस मेम्बर श्रीयुत क्राफ़टन, श्रीयुत डाइरेक्टर जनरल पुलिस श्रीयुत हौकिन्स सिटी पुलिस कमिश्नर श्री क्वाब रहमत यार जंग से भट की और आर्य्य-समाजियो तथा आर्य्य समाज के कष्टो और प्रतिबंधो को उनके समक्ष देखा।

उन्होने आर्य्यसमाजियो के विरुद्ध लगाए गए आरोपो का तीव्र खण्डन किया और अपने पक्ष की पुष्टि में घटनाएँ प्रस्तुत की।

उन्होने अधिकारियो को साफ़ तौर पर कह दिया कि आर्य्यों का राज्य की पुलिस मे कोई विश्वास नही रह गया है और राज्य के न्याय विभाग मे भी उनका विश्वास धीरे धीरे कम हो रहा है, और यदि समय पर अवस्था न सुधरी और निज़ाम सरकार ने अपने शासन की साम्प्रदायिक नीति को न बदला तो इसके फल स्वरूप जो अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी उसकी उत्तरदायिता स्पष्ट रूप मे उन लोगो पर होगी जो पीड़ित पक्ष की उचित शिकायतो को नही सुनेंगे। श्रीयुत गुप्त जी उसी पुराने आश्वासन के साथ लौटे कि जाँच की जायगी और उचित समय पर सब बाते ठीक कर दी जायेंगी। मामले के ठीक होने का समय अभी तक नहीं आया वरन् बाद की घटनाओं ने उसे और भी ख़राब कर दिया है। हैदराबाद का वर्तमान शासन प्रार्थनाएँ किए जाने का अधिकारी नहीं है और इसकी जनता की सम्मिलित इच्छा के अतिरिक्त उसकी नीति को कोई बदल नहीं सकता है। यदि अवस्था यही रही तो सम्भव है वह इच्छा शीघ्र रङ्ग लाय और आर्य्यों और हिंदुओ की वर्तमान सकटापन्न अवस्था का अन्त हो जाय।

धर्म्मवीर महादेव का बलिदान

म० महादेव निजाम राज्य के अकोलगा ग्राम के निवासी थे। वे सत्यार्थप्रकाश तथा आर्य्यसमाज की पुस्तकें लोगो को पढ़कर सुनाया करते थे। एक बार स्थानीय मुसलमानो ने जो इस पर आपत्ति करते थे उनसे सत्यार्थप्रकाश छीन कर पुलिस को दे दी। आर्य्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के मन्त्री ने मामले की पुलिस को रिपोर्ट की परन्तु धर्म्मान्ध मुसलमानो ने महादेव को धमकी दी कि यदि वे अपने कार्य्य को बन्द नहीं करेंगे तो उन्हें ख़त्म कर दिया जायगा। अन्त मे १७—७—३८ को मेहर अली नामक धर्म्मान्ध मुसलमान ने छुरे से म० महादेव को निर्दयतापूर्वक मार दिया। ऐसी बहुत सी घटनाएँ हैं जिनका गिनाया जाना कठिन है जिनमें कई स्थानो पर आर्य्यों पर लाठियो से प्रहार किया गया और उनके फलस्वरूप उनकी हड्डिया टूटी तथा पुलिसने न केवल जिनके सम्बन्धमे कोई जांच ही न की अपितु गरीब आर्य्यसमाजियो के रिपोर्ट लिखने की प्रार्थना करने पर भी वे न लिखी

गई' अब यह विदित हुआ है कि राज्य में मुस्लिम धर्म्मान्धता इतनी अधिक फैली हुई है कि शाम को अँधेरा होने पर आर्य्यसमाजी अपने घरों से मुश्किल से बाहर निकलते हैं। और इतना ही नहीं वरन् दिन में भी उन्हें अपनी रक्षा का ध्यान रखना पड़ता है।

सर अकबर हैदरी के नाम मन्त्री सभा का पत्र

श्रीमान्,

आपके राज्य में धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा आर्य्यसमाजियों की हत्याओं के शोक-जनक समाचारों ने तमाम हिन्दू भारत में सनसनी पैदा करदी है। वेदप्रकाश की गुञ्जोटी, धर्म्मप्रकाश की कल्याणी में और महादेव की अकोलगा गांव में हत्या की गई। इन धर्मवीरों ने प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया और अपने उन विरोधियों के मन्सूबों को छिन्न भिन्न कर दिया जो यह दर्शाना चाहते थे कि आहिस्ताना गुस्से और पागलपन से एक अच्छे कार्य्य का अन्त किया जा सकता है।

आपने अभी हाल में ढाका यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को दीक्षान्त भाषण दिया था और उसमें आपने साम्प्रदायिकता के विरुद्ध उपदेश किया था। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या इन हत्याओं की खबर आपके कानों तक नहीं पहुँची है, जो उस मुस्लिम साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता का फल है जो आपके शासन में और आपके दरवाजे पर फल-फूल रही है। यदि आपने उसकी चर्चा सुनी है तो कृपया बतलाइयेकि सार्वजनिक शान्ति और जातीयता की एकता के लिए दिन पर दिन बढ़ते हुए इस खतरे को मिटाने के लिए आपने क्या किया है ? मैं यह कहने का साहस करूंगा कि इन हत्याओं के प्रति आपकी गवर्नमेन्ट की उपेक्षा दोनों जातियों के बीच यह खाई पैदा करेगी, जिसको भरा जाना निकट भविष्य में असम्भव होगा।

आपके राज्य के आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्त्ताओं को सख्त हिदायतें की हुई हैं कि वे स्वयं कोई अवांछनीय कार्य न करें। इस सभा ने अनेक बार आपकी सरकार को लिखा और उनकी शिकायतों को दूर करने की प्रार्थना की। परन्तु मुझे यह कहते हुए बड़ा दुःख होता है कि हमारी प्रार्थनाओं, आवेदनपत्रों और डेपूटेशनों से आपके शासन की मैशनरी जरा भी टससे मस न हुई। सबसे अन्तिम ख़बर जो हमें हैदराबाद से मिली है वह यह है कि आर्य्य समाजियों को किसी न किसी स्थान पर प्रति दिन मुसलमान आततायियों की गीदड़-भभ-कियां सहन करनी पड़ती हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि इस प्रकार की बातें देर

तक रह सकती हैं ? आप जैसे गम्भीर शासक ऐसी बातों को बर्दाश्त कर सकते हैं, यह आशा मुश्किल से ही की जा सकती है। इस प्रवाह को रोकने के लिए कृपया कार्य्यवाही कीजिए, जिससे फिर पछताना न पड़े। निर्दोष व्यक्तियों पर जुल्मों और अत्याचारों का केवल एक परिणाम होता है और वह यह कि शासन पर से उनका विश्वास उठ जाता है। और फिर उस विश्वास का उत्पन्न होना असाध्य होता है और साथ ही अत्याचार आन्दोलन को अवांछनीय स्रोतों में प्रवाहित कर देते हैं।

अतएव मैं आपसे विनम्र निवेदन करूंगा कि आप राज्यमें आर्य्यसमाजियों की समस्याओं पर तत्काल उचित ध्यान दीजिए और शीघ्र उनकी शिकायतों को दूर कीजिए। यह सभा अब भी आपके यत्नों में योग और अपने व्यापक नैतिक प्रभाव और शक्ति के द्वारा जो सहायता सम्भव होगी देने के लिए उद्यत है।

मुझे आशा है कि यह अपील पीड़ित आर्य्यसमाजियों के प्रति पूरा पूरा न्याय करने की आपको प्रेरणा करेगी उनके लम्बे कष्टों और परीक्षाओं की अब उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

डा० सर गोकुलचन्द नारङ्ग का सन्देश

पिछले दिनों में हैदराबाद राज्य में मुसलमानों ने इतने अधिक अत्याचार किए हैं और इतनी अधिक हत्याएँ हुई हैं कि मुसलमानों के अपने पड़ोसी हिंदुओं के प्रति असहिष्णुता के व्यवहार की घटनाओं एवं राजकर्मचारियों की उदासीनता का जनता तथा उच्च कर्मचारियों के नोटिस में लाया जाना नितान्त आवश्यक हो गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि हैदराबाद राज्य के हिंदुओं में जीवन नहीं है अन्यथा यह समझना कठिन है कि वे इतनी बड़ी संख्या में होते हुए किस प्रकार अन्याय और अत्याचारों को सहन कर लेते हैं। यदि वे उनके निराकरण का यत्न करना चाहें तो सबसे पहला कार्य्य यह होना चाहिए कि उन्हें उनकी दुख पूर्ण अवस्था तथा शक्ति से परिचित कराया जाय।

निर्वासन की आज्ञाएँ देहली में दी गई

अभी हाल में हमारे दो उत्साही कार्य्यकर्ताओं (आर्य्य रक्षा समिति के मन्त्री म० शिवचन्द्र जी तथा आर्य्यमुवक संघ के प्रधान प० व्यासदेव शास्त्री एम ए, एल-एल बी वकील) को निज़ाम राज्य के दण्ड विधान (पीनलकोड) की धारा स० १६४ के अधीन

देहली में राज्य से निर्वासन की आज्ञाएँ दी गईं। ये दोनों महानुभाव हैदराबाद गए थे और इन्होंने हैदराबाद की सरकार की मुस्लिम पक्षपातिनी नीति तथा आर्य्यसमाज के प्रति राज्य की कठोरताओं को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया था। वस्तुतः हिंदुओं और आर्य्यों के कष्टों और मुसीबतों के लिए राज्य की उपर्युक्त नीति ही ज़िम्मेवार है।

पुलिस की नादिरशाही

आर्य्यसमाज के कार्य्यों और उसके कार्यकर्ताओं पर पुलिस की निगरानी हैदराबाद राज्य में प्रतिदिन की बात हो गई है। हमें प्रायः ख़बरें मिलती रहती हैं कि आर्य्यसमाज के कार्य्यकर्ताओं से बहुधा निम्न आशय के प्रश्न पूछे जाते हैं —

१—तुम आर्य्य क्यों बने हो ?

२—यहाँ आर्य्यसमाज किसने चलाया है ?

३—यहाँ कितने आर्य्य हैं ?

४—बिना इजाज़त तुमने आर्य्यसमाज क्यों स्थापित किया है ?

५—तुमने किसकी आज्ञा से ओ३म् का झण्डा लगाया है ?

निज़ाम की जेल में तबलीग़

एक दूसरी विचित्र बात जिससे पाठकों को आश्चर्य होगा वह यह है कि निज़ाम राज्य की जेलें भी तबलीग़ के प्रचार से मुक्त नहीं हैं। १८-८-३८ को जो निज़ामसाहब का जन्म दिन है। एक हिंदू क़ैदी मुसलमान बनाया गया। गुलबर्गा केस के क़ैदी लालसिंह आर्य्य ने इस पर आपत्ति की। यह आपत्ति लगभग उसकी जान पर बन आई क्योंकि १७७७ नम्बर के एक दूसरे गुलज़ार खान नामक मुसलमान क़ैदी ने उसके शरीर पर घातक आक्रमण किया इसलिए कि जेल दारोग़ा की देख-रेख में जेल में होने वाले प्रचार पर लालसिंह ने आपत्ति की थी। गुलज़ार खाँ रंगे हाथों पकड़ा गया और उसके पास से २ बड़े चाकू बरामद हुए। हमें यह देखना है कि अपराधी को क्या दण्ड मिलता है।

परंतु सवाल यह होता है कि जेलों में तबलीग़ के प्रचार की आज्ञा क्यों दी जाती है ? क्या यह बात इस बात की सूचक नहीं है कि निज़ाम सरकार हिंदुओं की संख्या को घटाने और इसकी आबादी को मुसलमान बनाने पर बुरी तरह से तुली हुई है ? सरकार की दृष्टि में चाहे उसका धर्म्म हिंदू हो या मुसलमान हो, सब प्रजा समान होनी चाहिए और उसे दूसरी जाति के हितों के मूल्य पर किसी एक जाति के हितों का पोषण नहीं करना चाहिए।

परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि निजाम सरकार इस भावना से कोसों दूर है। इसके धर्म्म-विभाग का इस पर अत्यधिक प्रभाव है। इसकी आँखे सदैव मुस्लिम हितों को दृष्टि मे रखती है। हमे विदित हुआ है कि यह विभाग तबलीग़ के प्रचार की योजना और उसका सरक्षण करता है और तबलीग के कार्य्यों से अपने को परिचित रखने के लिए विविध सूत्रों से नियमित रिपोर्टों और विवरणों का सकलन करता है। इस पुस्तक मे प्रकाशित कुछ चित्रों से इस आरोप की स्पष्टतया पुष्टि होती है।

मुस्लिम अधिकारियों की तबलीग़ के प्रचार मे कैसी दिलचस्पी है, यह बात २ अमरदाद १३४६ फ़स्ली के निम्न धर्म्म परिवर्तन सर्टिफिकेट से स्पष्ट होगी जो जिला महबूब नगर के पार्गी तालुका के धर्म्म-विभाग के तहसीलदार और नाज़म ने दिया था।

सर्टिफिकेट (प्रमाण-पत्र

"प्रमाणित किया जाता है कि गजानन्द का पुत्र मुकुन्दराव, कौम ब्राह्मण, साकिन पूना (ब्रिटिश) उम्र २५ साल पार्गी के तालुक क्र जी मुहम्मद युसुफ द्वारा मुस्लिम धर्म्म मे दीक्षित किया गया है और उसका नाम•मुहम्मद अली रखा गया है।"

स्कूलों में तबलीग़

न केवल जेले वरन् स्कूल भी तबलीग़ आन्दोलन के केन्द्र बने हुए हैं। करीम नगर ज़िला के शिक्षा-विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट मुश्ताक अहमद बी ए ने पर्किल-सरकिल के अध्यापकों के नाज़र को ६-६-१३४६ फ़स्ली को पत्र स० १०३।२ लिखा और उसमे यह लिखा कि अछूत पाठशाला के आधे से अधिक विद्यार्थी मुसलमान बन गए है इसलिए आवश्यक है कि उन्हें मज़हबी तालीम (धार्मिक शिक्षा) दी जाय। उन्हे किसी मुसलमान अध्यापक का नाम बताया जाय जो इस कार्य्य के लिए चन्द्रय्या (हिंदू अध्यापक) के स्थान पर रक्खा जाय।"

शिक्षा विभाग के सुपरिण्टेण्डेण्ट के एक दूसरे पत्रकी लिपि

विषय—नव-दीक्षित मुस्लिम विद्यार्थियों की शिक्षा का विषय जो पहले अछूत थे।

आपके तारीख़ ६ अर्दी बहश्त १३४६ फ़स्ली के पत्र स० २५६ के पत्रोत्तर में निवेदन है कि इन विद्यार्थियों की धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में पहले भी आपको लिखा जा चुका है। अब जब कि इन विद्यार्थियों ने इस्लाम धर्म्म अङ्गीकार कर लिया है वे आपके स्कूल मे दाखिल किए जा सकते हैं और इनसे फीस भी न ली जावे।"

निज़ाम सरकार किस रीति से तबलीग़ आन्दोलन की मदद कर रही है इसका एक दूसरा उदाहरण निम्न नोटिस सं० १२०।२१ तिथि ११ अबन १३४४ फ़स्ली से स्पष्ट है जो मुहम्मद कुतुबउद्दीन काज़ी ने अहमद नगर के नकैय्या को दिया था।

नोटिस

"तुम्हें (नकैय्या) सूचित किया जाता है कि तुम्हारी पत्नी गेंदी ने १४ अबन फ़स्ली को इस्लाम ग्रहण कर लिया है और उसका मुसलमानी नाम 'रहीमाबी' रखा गया है। तुम्हें भी कई मर्तबा इस्लाम की दावत दी गई है परन्तु तुम चुप हो। इसलिए तुम्हें मालूम होना चाहिये कि यदि तुम खुद एक हफ़्ते के अन्दर मेरे दफ़्तर में आ जावोगे और खुशी से इस्लाम ग्रहण कर लोगे तो तुम्हारी नई मुसलिम बी बी से बतौर ख़ाविन्द के तुम्हारे तअल्लुक़ात क़ायम रखे जा सकते हैं वरना तुम्हारा उस से सम्बन्ध टूट जायगा और वह किसी मुसलमान के साथ ब्याह दी जायगी और तुम्हारा कोई उज्र नहीं सुना जायगा"।

हमारा अन्तिम निश्चय

निज़ाम सरकार के धर्म्म विभाग द्वारा संचालित तबलीग़ आन्दोलन को आर्य्य समाज सहन न कर सका और न वह सहन करही सकता था। अब पाठक हमारा दृष्टिकोण भली भांति समझ गए होंगे। हमारी कष्ट कथा बड़ी लम्बी है और उसका वर्णन करना कठिन है। सब से ताज़ी सूचना यह है कि हैदराबाद के दंगे के मुक़द्दमे में १४ हिन्दू फांसे गए थे और जिनकी पैरवी के लिए श्रीयुत नरीमैन और भूलाभाई देसाई जैसे व्यक्तियों की सेवाएँ प्राप्तकी गई थीं परन्तु उन के मार्ग में उपस्थित की गई कुछ बाधाओं के कारण वे अभियुक्तों की पैरवी नहीं कर सके थे। बस मुक़द्दमे का फैसला सुना दिया गया है। तमाम अभियुक्तों को २० २० वर्ष के कारावास की कठोर सज़ाएँ दी गई हैं ज्यूरी में ६ मुसलमान और ३ हिन्दु थे। इन तीनों हिन्दुओं ने सर्व सम्मति से अभियुक्तों को 'निर्दोष' बतलाया। हमारे अख़बारों का मुँह बन्द कर दिया गया है, हमारे प्रचारकों को जेल में ठूंस दिया गया है। अथवा निर्वासित कर दिया गया है। उन के भाषणों पर रोक लगा दी गई है और 'अवांछनीय' कह कर उन्हें राज्य की सीमा में घुसने की मनाही करदी गई है। इसलिए हमने अपनी ६-१०-३८ की अन्तरङ्ग सभा में अपने लोगों को तय्यार होने और वीरता के साथ सभ्य जङ्गलीपन का मुक़ाबला करने के लिए जो हम हैदराबाद में देख रहे हैं फैसला कर दिया है। महात्मा नारायण स्वामी जो पहिले डिक्टेटर (अग्रणी) नियत किए गए हैं



धर्मवीर वेदप्रकाश

धर्मान्ध मुसलमानो ने गन्धोटी मे इनका वध किया ।



धर्मवीर वेदप्रकाश का श्मशान यात्रा का जलूस ।



इस बालक का था । मुसलमानों ने द ।



एक गरीब तिलगू स्त्री अपने दो छोटे बच्चो के साथ ।
यह इस्लाम ग्रहण करने के लिए मजबूर की गई और
निषेध करने पर इसके साथ बड़ा निर्दयता
पूर्ण व्यवहार किया गया ।

श्रौर उन की श्राज्ञा श्रन्तिम होगी। शोलापुर में सार्वदेशिक श्रार्य्य महा सम्मेलन की योजना का कार्य्य उन्हें सौंपा गया है इसके पश्चात श्रपनी शिकायतों के हल के लिए जिन के प्रति निज़ाम की सरकार श्राज तक कठोर श्रौर उदासीन रही है सामूहिक सत्याग्रह के लिए कार्य्यवाही की जायगी। वे धन्य हैं जो पीडित श्रौर दलित मनुष्यों की सहायता करते हैं श्रौर दोहन श्रौर शोषण तथा आततायियों के विरुद्ध खड़े होते है।

हैदराबाद में आर्य्यसमाज की मुसीबतें एक दृष्टि में

इस राज्य के कुछेक अदूरदर्शी और ठीक बातों से अनभिज्ञ राजकर्मचारियों ने समझ रक्खा है कि आर्य्यसमाज की संस्था, जो उनके यहां काम कर रही है, एक सङ्कित-सी-रियासत के बाह्य जगत से असम्बन्धित संस्था है और सुगमता से कुचली जा सकती है। उन्होंने अपने इसी अज्ञान और क्षुद्र विचारों से वहां के आर्य्यों पर, तरह २ के अत्याचार कर रक्खे हैं। उनमें से कुछेक का विवरण इस प्रकार है—

(१) पांच नवयुवक और उत्साही आर्य्य मुसलमानों द्वारा वध किये जा चुके हैं।

(२) ४७० आर्य्य इस समय रियासत की जेलों में हैं।

(३) ७०० के लगभग आर्य्यों पर तरह २ के मुकद्दमात चल रहे हैं।

(४) आर्य्यसमाज का कोई पत्र रियासत में नहीं निकल सकता। जो एक निकलता था वह बन्द कर दिया गया।

(५) आर्य्यसमाज के मन्दिरों में कोई उपदेशक बिना आज्ञा प्राप्त किये उपदेश नहीं कर सकता और माँगने पर इजाजत प्राय नहीं मिलती।

(६) कोई आर्य्य अपने निजी मकान में भी, आर्य्यसमाज का काम नहीं कर सकता, यदि करे तो उस पर अभियोग चलाए जाते हैं।

(७) यहां [राज्य] की पुलिस की मनोवृत्ति समझने के लिए एक घटना का उल्लेख कर देना काफी है। एक बार हमने स्वय अपने कानों से सुना कि पुलिस के सिपाहियों की एक पार्टी जो वर्दी में थी, खुले खजाने सड़कों पर यह गाती हुई जा रही थी कि वह दुनियां में इस्लाम का प्रचार करेगी—स्पष्ट है कि वहां की पुलिस जनता की सेवक नहीं, अपितु इस्लाम की प्रचारक है।

(८) जेलखानोंमें, रियासत के मुसलमान जेल कर्मचारी हिन्दू कैदियों को मुसलमान बनाया करते हैं।

इन उपर्युक्त पंक्तियों में, असंख्य अत्याचारों में से केवल कुछेक का, नमूने के तौर पर उल्लेख किया गया है। इनसे प्रगट है कि वहां आम तौर से हिन्दुओं और विशेष कर आर्य्यों की अवस्था दयनीय है। अब प्रश्न यह है कि रियासत से बाहर के आर्य्यसमाजों और आर्य्यों का इस सम्बन्ध में कर्त्तव्य क्या है? क्या यही कि देखते रहें और कुछ न करें अथवा इससे कुछ अधिक। यदि अधिक तो पूरा करने का समय कब आवेगा?

परिशिष्ट १

[अ]

न्यूज एजन्सियां जो आर्य्यसमाज के विरुद्ध चलाए हुए निजाम सरकार के प्रौपेगेंडे को सहायता देती हैं।

(१) दक्खिन न्यूज सर्विस

(२) आज़म ,, ,,

(३) एसोसियेटेड प्रेस आफ़ इन्डिया लिमिटेड।

[ब]

मुस्लिम समाचार पत्र जो राज्य के हिंदुओं और मुसलमानों के खिलाफ ज़हर उगलते हैं।

(१) रहबरी दकन	दैनिक
(२) सुबेह ,,	,,
(३) सहीफा	,,
(४) वक्त	,,
(५) सदीक	साप्ताहिक
(६) वाइज़ (धर्म विभाग का मुख पत्र)	मासिक

[स]

हिन्दुओं व आर्य्यों का साहित्य जो राज्य में जब्त किया गया है।

(१) दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह

(२) कब्र के फरिश्ते   प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय कृत

(३) औरतों की लूट   ,,

(४) हिन्दू धर्म का नाश

(५) इस्लाम से प्रश्न

(६) कुरान मे तजखिए वेद   प० नरेन्द्रदेव कृत

(७) हुज्जतुल इस्लाम   प० लेखराम कृत

(८) जवाहर जवेद खुदा, रूह और मादा की कयामत   प० चमूपति कृत

(९) रगीला गजरा   रङ्गीलाल गौड़ कृत

(१०) नल दमयन्ती

(११) दुर्गादास

(१२) स्वामी श्रद्धानन्द

(१३) देश का दुखड़ा

(१४) हिन्दू जागो

(१५) महाराणा प्रताप

(१६) शिवाजी का पवारा

(१७) ग्रामोफोन रिकार्ड (सिहल गढ का पवारा)

[द]

मुस्लिम साहित्य जो हिन्दुओ और आर्यों के विरुद्ध जहर से परिपूर्ण है परन्तु जब्त नही किया गया है केवल थोड़े से नाम दिये जाते हैं।

(१) खून के आंसू

(२) बुत शकीन

(३) कुफ्र तोड़

(४) मुरकी कासिम हसन निजामी कृत

(५) दाइए इस्लाम

(६) सरवरे आलम   सहीक दीनदार कृत

[य]

निजाम राज्य में हिन्दू सस्कृति का किस प्रकार विनाश किया जा रहा है।

निम्न स्थानो के हिन्दू नामो के स्थान में मुस्लिम नाम रक्खे गये हैं —

हिन्दू नाम	मुस्लिम नाम
(१) चितगुपा	मोइनाबाद

(२) अखेली	जहीराबाद
(३) तुबल गुम्डी	करीमाबाद
(४) बीदर	महमूदाबाद
(५) मुरग	कमाल नगर
(६) अम्बा गोगाई	मोमिना बाद
(७) धारूर	फतेहाबाद
(८) धारशिव	उस्मानाबाद
(९) इन्दुर	निजामाबाद
(१०) उज्जेर	हिसम्बाबाद
(११) खरक पल्ली	चिरगपल्ली
(१२) खरका	मुकरमाबाद
(१३) गगवारम	विकराबाद
(१४) तन्जूर	बशीराबाद
(१५) बरौना	हिदायतनगर
(१६) माती गढ़ी	हिसामनगर
(१७) मोखडखड की वड़ी	मुशीराबाद

परिशिष्ट २

[अ]

निज़ाम राज्य से बाहर के निजाम सरकार के पञ्चवर्षीय दान

लन्डन कबरिस्तान	पौंड	१००००
नज्द रिलीफ	रु०	६००००
फिलस्तीन	,,	१००००
बलूचिस्तान लॅगर	,,	१०००
लन्डन की मसजिद	,,	५००००
मदीना के लोगों को	,,	१२०
लन्डन हस्पताल	पौंड	१०००
नीमा ,,	पौंड	३००
देहली तिब्बी हस्पताल	रु०	१००००
मुस्लिम विधवा फन्ड देहली	,,	५०००
देहली निज़ामुद्दीन दरगाह	,,	५०००
वेडोविल	,,	२५०
फिलस्तीन के मुसलमानों को	पौंड	५३०
,, की मस्जिद की मरम्मत के लिए	रु०	५०००
अजमेर शरीफ	,,	२०००
शफी अहमद	पौंड	५०
,, ,,	,,	१००
कुरान का अँग्रेजी अनुवाद	रु०	७८०४
औलिया दरगाह	,,	१५०००
हाजी अब्दुल रहीम	,,	५००
टर्की के भूतपूर्व सुलतान को	,,	५०००

हाज़ी शेख इस्माइल	,,	५००
विश्वभारत की अरबी की गद्दी के लिए	,,	१००००००

[व]

स्थानीय संस्थाओं को पंच वर्षीय दान

	रु०
अब्दुल अली मुसिफ पारगी	१३६२
सरदार अज़मतुल्ला	४८१२
,, ,,	११००
गुलबर्गा मुस्लिम अनाथालय	३६६३१
के लेखक को	६००
नवाब हैदरजंग	२०००
उस्मानिया यूनिवर्सिटी का समाचार पत्र	११३४
संपादक इस्लामिया कल्चर	२५०
सूबा दक्षिण अखबार	१४१०
सहीफा अखबार	२५००
दरगाह औरंगाबाद	१२००
शाहना मा इस्लाम की व्याख्या	४१०
धार्मिक पुस्तक दीनियत	१६२५
जरनल (अख़बार) मयरिसियां	२०००
प्रभानी की मस्ज़िद	६१००
शाहमिर्ज़ाबेग	३६००
दीनियत पुस्तकें	४३२
चुंगी विभाग के सिराजुल हुसैन को	४००
मस्जिदें	१५००

मुस्लिम अख़बारों और अन्य मुस्लिम संस्थाओं को सहायतार्थ बडी २ रकमें दी जाती हैं —

मुस्लिम आउटलुक लाहौर	५८३४	वार्षिक

यैसा अखबार	दान—	३३३४
अजमन तारिके उर्दू		५००००
ख्वाजा कमालुद्दीन		२८००
मोइदुल इस्लाम		४००
इण्डियन न्यूज ऐंड स्टेट्स		२८००

स्पष्ट है कि निजाम सरकार मुस्लिम पक्षपातिनी वृत्तियो से परिपूर्ण है और देश तथा विदेश की मुस्लिम सस्थाओ पर लाखो रुपये खर्च कर रही है। हिन्दू किसानो और कर दाताओ की गाढी कमाई इस रीति से उड़ाई जा रही है।

(म)

निजाम राज्य द्वारा धर्म्म सस्थाओं की सहायता का योग

	योग	मुसलमानो को	हिदुओ को	ईसाइयो को	पारसी
वार्षिक धार्मिक सहायताएँ	२०५८२२	१८६७४२	१८००	१४२८०	×
खास धार्मिक वार्षिक सहायताएँ	२०५०४६	२००६४२	१३४४	२४६०	६००
वार्षिक जनोपकारक सहायताएँ	५६७०	५६७०	×	×	×



लानर म होली क उत्सव पर मुसलमाना ने पुलिस का उपस्थिति म आर्यों पर आक्रमण किया शकर राव आर अम्बादास को जिन क चेहर पर पट्टी बधी ह गहरी चोट लगी थी



इस व्यक्ति पर भी मुसलमाना न आक्रमण किया। इस के घाव इसकी पीठ आर बाजुओं पर स्पष्ट पड रह हे।



प० श्यामलाल वकील

जिन्हे मानक नगर के मेले पर पुलिसकी उपस्थिति मे मुसलमानो ने घायल किया ।



बाबूप्रसाद आर्य्य

यह महाशय प श्यामलाल जी को बचाते हुए स्वय मुसलमानो द्वारा घायल हुए ।

परिशिष्ट ३

(१)

राज्य के आर्यों को समय-समय पर प्राप्त हुए आर्डरों की लिपि

तारीख २१ अर्दो बहश्त १३४६ फस्ली

पुलिस पटेल की ओर से

आर्यसमाज मेले गाव के मन्त्री को

'तुम आर्यसमाज का प्रचार करने के लिए काल मुगली आए हो, परन्तु १३५५ हिजरी की मुहर्रम मास की आज ११ तारीख को जियारत होगी। अतएव हुक्म दिया जाता है कि तुम शहर मे आज कोई लेक्चर मत देना।''

(२)

तारीख २४ अगूर १३४२ फस्ली

पुलिस सब इन्स्पैक्टर की ओर से

श्रीयुत रामचन्द्रराव आर्य, राजेश्वर को

आज दीवाली के त्यौहार पर हल्लीखेड से बन्शीलाल तुम्हारे पास आए है और मालूम हुआ है कि वे आपके घर पर भाषण देगे। अत तुम्हे हुक्म दिया जाता है कि तुम उस व्याख्यान को रोक दो नही तो तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही की जायगी।

(३)

नौकरी से पृथक् करना

वारगल तालुका के मि० रज़ाअली खा तहसीलदार ग्राम छगोल मुकद्दम पटवारी के नाम २२ आर्दी बहश्त १३४६ फ़स्ली के पत्र स० १०० का एक अवतरण ''मुझे एक पत्र स० २५ तिथि १२ आर्दी बहश्त १३४६ फसली का मिला जिसमे लिखा है कि पुलिस ने नरसिह रेडी के विरुद्ध शिकायत की है कि वह प० बलदेव जी आर्य को बुलाकर हिन्दू और मुसलमानो मे वैमनस्य फैला रहा है। पुलिस की इस शिकायत के आधार पर वह (नरसिह रेड्डी) नौकरी से बरखास्त कर दिया गया है।

(४)

प्राइवेट स्कूलों के खोलने की आज्ञा नहीं है

सब इन्सपैक्टर पुलिस इल्लीलेद के पत्र सं० ११२६ तिथि २१ अमरदाद १३४२ फसली की लिपि—

प० बशीलाल वकील इल्लीलेद की सेवा में —

"सदर कोतवाली के नाज़िर ने सूचना दी है कि तुम गुलबर्गा प्रान्त के स्कूलों के इन्सपैक्टर की आज्ञा के बिना प्राइवेट स्कूल नहीं खोल सकते। यदि तुम इस आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो १६४ धारा के अनुसार तुम्हारे विरुद्ध कार्यवाही की जायगी। एक सप्ताह के भीतर भीतर आज्ञा प्राप्त करो, अथवा स्कूल बन्द करदो।"

(५)

परभानी ज़िले के इलाक़ा पाथिम के सब इन्सपैक्टर पुलिस के १४ फर्वरी १३४२ फ़सली के पत्र की लिपि—

मुहम्मद ख़ान ठाकेदार नाका सोनी के नाम—

"मुझे अभी मालूम हुआ है कि कुछ आर्य्यसमाजी सालेगांव ग्राम मे आये हैं अत तुम्हें हुक्म दिया जाता है कि तुम फौरन उस गांव मे जाओ और पता लगा कर निम्न बातों की रिपोर्ट दो।

१—ये लोग किस दिन और किस समय यहाँ आये थे ?

२—वे लोग किन २ से मिले ?

३—उनके आने का क्या उद्देश्य था ?

४—उनके नाम वगैरह क्या थे ?

५—उनका नेता कौन था ?

६—उन्हें किसने बुलाया था ?

७—वह कितने दिन तक वहां ठहरेंगे ?

८—क्या उनके पास कोई सरकारी आज्ञा पत्र है ?

९—उनके आने की सूचना पुलिस पटेल ने मुझे क्यों न दी ? उसे फौरन मेरे पास भेजो।

१०–यदि वे संख्या में बहुत हैं तो तुम्हें गांव में ठहर कर देखना चाहिये, कि कानून के

खिलाफ कोई बात न हो, और यदि किसी उत्पात की आशंका हो तो मुझे सूचित करना ।"

(६)

दशहरा के जलूस की आज्ञा न दी गई

इल्लीलेद के म० माणिकराव तथा अन्य पुरुषों ने दशहरा के जलूस की आज्ञा के लिए प्रार्थना पत्र भेजा । परन्तु उनकी प्रार्थना केवल इस बहानेपर रद्द करदी गई, कि जलूस एक नई चीज था । इल्लीलेद के तहसीलदार सैयद इब्राहीम अहमद रिज़वी B A, LL B, के बिना तारीख के उत्तर सं० २३४३ की लिपि नीचे दी जाती है—

"उनके प्रार्थना पत्र ता० २३ अबन १३४२ फस्ली के उत्तर में उन्हें सूचित किया जाता है कि धारा सं० ७०० के अनुसार आज्ञा मांगना अत्यन्त जरूरी है । परन्तु चूँकि यह एक नया धार्मिक जलूस है अतः तहसील से आज्ञा नहीं मिल सकती ।"

(७)

हवन कुण्ड पर बन्दिश

हवन कुण्ड से सम्बन्धित निज़ाम सरकार का ता० २४ इस्फिन्दार १३४७ फसली का सर्क्यूलर—

१—धार्मिक स्थानों के सम्बन्ध में जो आज्ञाएँ प्रचलित हैं वे समस्त धर्मों और जातियों के सब धर्म स्थानों पर लागू हैं ।

२—हवन कुण्ड धर्म स्थानों की परिभाषा में सम्मिलित हैं ।

३—अभी सूचना मिली है कि उस्मानाबाद ज़िले के लातूर और तुलजापुर स्थानों में बिना आज्ञा के हवन कुण्ड प्रस्तुत हुए हैं । स्थानीय अधिकारियों को धर्म स्थानों की स्थापना सम्बन्धी नियमों के अनुसार अपनी रिपोर्ट स्थापित करने के लिये कहना चाहिए उन्हें यह भी सूचित करें कि वे यह लिखें कि दूसरे धर्म वालों के धर्म स्थान हवन कुण्डके पास है या नहीं यदि पास हों तो इससे किसी प्रकार की आशंका तो नहीं है।

(८)

साप्ताहिक सत्संगों में हस्तक्षेप

नायब कोतवाल सी०आई०डी० हैदराबाद के अर्द्ध सरकारी पत्र तिथि ११ खुर-

दाद १३४७ की लिपि

मन्त्री आर्य्यसमाज सुल्तान बाजार

आप अपने समाज में आज साप्ताहिक हवन और प्रार्थनाएँ करने वाले हैं। वर्त्तमान परिस्थितियों में यह उचित नहीं है कि बाहर वाले सभा में भाषण दें। प० देवेन्द्रनाथ एक बाहरी व्यक्ति हैं, उन्हें लैक्चर की आज्ञा न दी जाय। यदि आपने ऐसा न किया तो प० जी के कार्य्य के लिए आपको उत्तरदाता ठहराया जायगा।"

नोट—जब मन्त्री समाज को यह आर्डर दिया गया था तब साप्ताहिक सत्सगों में भाषण न देने की बाहर वालों के विरुद्ध कोई सरकारी आज्ञा न थी।

(९)

व्यायाम शाला पर बन्दिश

बीदर जिले के फर्स्ट ताल्लुकेदार की ओर से

बीदर के सुपरिन्टेन्डेन्ट के नाम

"तुम्हें सूचित किया जाता है कि कसर सिरसी में व्यायामशाला की स्थापना के लिए आर्य्यसमाज के मन्त्री भीमशङ्कर को जो आज्ञा दी गई है वह राज्य की आज्ञाओं से रद्द करदी गई है। पुलिस सब इन्सपैक्टरको हुक्म दिया जाता है कि वह निगरानी रक्खे।"

नोट—इसी प्रकार की आज्ञा मुधौल बुजुर्ग के मन्त्री आ० स० तथा जहगीरके म० गगाराम आर्य्य तथा भगवान राव आर्य्य को दी गई थीं।

(१०)

नगर कीर्तन की आज्ञा नहीं दी गई

सुल्तान बाजार हैदराबाद के मन्त्री ने आर्य्य समाज के उत्सव के अवसर पर नगर कीर्त्तन की आज्ञाके लिए हैदराबाद नगरके पुलिस कमिश्नर को लिखा परन्तु पुलिस कमिश्नर ने अपने २१ आर्दी बहेशत के पत्रसे, ४१३३में आज्ञा देने से इस बहाने पर निषेध कर दिया कि नगर कीर्तन एक नई चीज़ थी।"

(११)

हिन्दुओं को हिन्दू महा सभा के अधिवेशन में जाने की आज्ञा नहीं

कलक्टर का सब डिवीज़नल आफ़िसर के नाम गुप्त पत्र (२० म ३४) सख्या ७४, १४ मेहर फ़सली (१३४३)।

"निज़ाम साहब की प्रजा के कुछ लोगों ने हिन्दू महा सभा के अधिवेशन में भाग लिया है। राज्य की आज्ञाओं के अनुसार उन्हें सूचित किया जाना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकारकी राजनैतिक मीटिंगोंमें जायगा तो उसके साथ कड़ा सलूक किया जायगा। हल्लीखेड़ के श्यामलाल वकील तथा उदगीर के बंशीलाल वकील ने जिन्होंने उपर्युक्त अधिवेशन में भाग लिया है आपकी तहसील के हैं और उनके साथ लग भग ४० मरहटे भी अधिवेशन में गए थे। उन्हें सर्कारी हुक्म की सूचना देकर उनके हस्ताक्षर प्राप्त किए जायँ।"

(१२)

विवाह पर बन्दिश

हुमनाबाद के सब इन्सपेक्टर पुलिस की ओर से मानक नगर के मन्त्री के नाम "मुझे नकेदर पुलिस पटेल से खबर मिली है कि आप के सर्किल में सरकारी आज्ञाओं और सरक्यूलरों के विरुद्ध इशा शरीफ (मुहर्रम) के महीने में एक विवाह हुआ है। यदि यह सत्य है तो आपने इसे क्यों नहीं रोका? उस का नाम और पता मालूम करो जिससे उसके विरुद्ध कार्य्यवाही की जा सके।"

(१३)

अखिल-भारतीय आर्य्य कांग्रेस का अधिवेशन रोका गया

आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के मन्त्री प० श्याम लाल वकील ने आर्य्य महा सम्मेलन के अधिवेशन की आज्ञा के लिए प्रार्थना की और हैदराबाद के पुलिस कमिश्नर को आश्वासन दिया कि उसमें किसी राजनैतिक विषय पर विचार न होगा अपितु उसके अधिवेशनों में विशुद्ध धार्मिक विषयों पर चर्चा होगी। परन्तु उत्तर निम्न प्रकार था —

"आपके २८ अबन १३४३ फ़स्ली के प्रार्थना पत्र के उत्तर में सूचित किया जाता है कि आर्य्य महा सम्मेलन करने की आज्ञा नहीं स्वीकार की जा सकती है और आप को लिखा जाता है कि आप सरकारी आज्ञाओं का पालन करें।"

इसके बाद निज़ाम राज्य के आर्य्यों की कान्फ्रेन्स करने के लिए प्रार्थना की गई और निषेध का कारण बतलाए बिना उसके लिए भी निषेध कर दिया गया।

(१४)

वक्ताओं के नामों की मांग

आर्य्य समाज सुल्तान बाज़ार हैदराबाद के नाम सिटी पुलिस कमिश्नर नवाब रहमत यारजंग बहादुर के १८ अज़र १३४५ फ़स्ली के पत्र से- ३८३ की लिपि ।

"इस पत्र के द्वारा आपको सूचित किया जाता है कि दयानन्द उत्सव मनाने के लिए पहले आपको वक्ताओं के नाम पेश करके उत्सव करने की आज्ञा प्राप्त करनी चाहिए ।"

इस आज्ञा की प्रति सुल्तान बाज़ार के सदर अमीन साहब को भेजी गई कि वे देखें कि इन आज्ञाओं का पालन किया गया है ।

(१५)

हवन कुण्ड पर बन्दिश

नगर लोगा के म० रघुनाथ प्रसाद तथा घनश्याम प्रसाद आर्य्य के नाम सब इन्स-पेक्टर पुलिस इन्स औसा के १५ अमरदाद १३४६ फ़स्ली के आर्डर की लिपि—

'तुम्हें इस आर्डर के द्वारा सूचित किया जाता है कि तुम आर्य्य समाज की ओर से कानूनन हवन कुण्ड नहीं स्थापित कर सकते हो अगर तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे ख़िलाफ़ कानूनी कार्य्यवाही की जावगी ।'

(१६)

हमारे कार्य्यकर्त्ताओं से व्यर्थ के प्रश्न किए गए ।

प० श्यामलाल वकील ज़िला उदगीर से निलंगा ताल्लुका अन्तर्गत कासर सिरसी के सब इन्सपेक्टर पुलिस सय्यद मुहम्मद अहमद ने पांच आर्दी बेहश्त १३४२ फ़स्ली को निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे—

१— तुमने अपना उत्सव किस की आज्ञा से मनाया है ?

२— क्या तुम्हारे पास कोई आज्ञा-पत्र है ? यदि है तो उसकी लिपि भेजो ।

३— तुम्हारे साथ वे दो लड़के कौन थे ? उन के नाम और पूरे पते हमारे पास भेजो ।

४— यदि उत्सव के लिए तुमने आज्ञा प्राप्त की थी तो लिखो किससे प्राप्त की थी ।

बेकार और परेशान करने वाली तहकीक़ातें

मुहम्मद ख्वाजा मोइनउद्दीन सब इन्सपेक्टर पुलिस ने २५ फ़ारवर्दी फ़स्ली को आर्य्य समाज निलङ्गा के मन्त्री श्रीयुत रामराव वकील से निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे—

१— तुम किस तारीख़ को आर्य्य समाज में प्रविष्ट हुए थे ?

२— तुमने सनातन धर्म कब छोड़ा ?

३— तुम्हें आर्यसमाज का मन्त्री किसने बनाया ?

४— तुम्हारे बतौर मन्त्री के क्या क्या कर्त्तव्य हैं ?

५— मन्त्री शब्द का क्या अर्थ है ? और तुम इसकी क्या परिभाषा करते हो ?

६— निलङ्गा आर्यसमाज में जो तुम लैक्चर देते हो क्या उसके लिए तुमने आज्ञा प्राप्त की है ? यदि हां तो उसकी कापी भेजो, यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

७— अब तक तुमने कितने और किस किस विषय पर व्याख्यान दिए हैं ? इन भाषणों को लिख कर दो और भविष्य में जब कभी लैक्चर दो तो उसकी कापी दफ़्तर में भेजो ।

परिशिष्ट ४

कतिपय अभियोग जिन में हैदराबाद अधिकारियों द्वारा निरपराध आर्यसमाजी फँसाये गये थे।

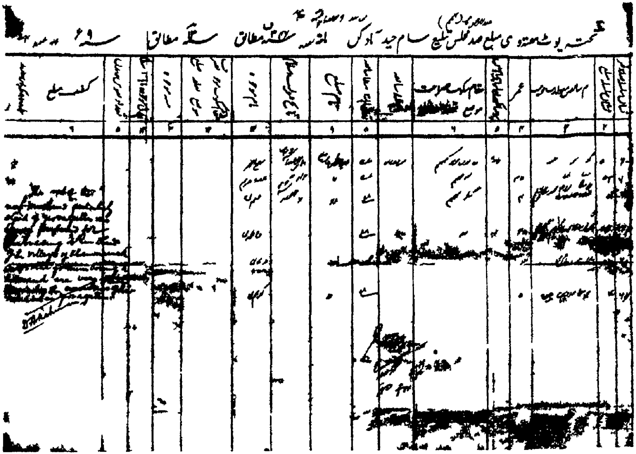
१ अम्बुलागा— ८-६-४७ को हसनखाँ नामक एक मुसलमान ने सत्यनप्पा को मारने के लिए तलवार से हमला किया, और म० सत्यनप्पा घायल हो कर मर गये। पीड़ितों को सान्त्वना देने के बजाय पुलिस ने धारा १०४ लगा कर २८ आदमियों का चालान किया। अभियोग लगभग १८ मास तक चलता रहा।

२ शिराधोन— श्रीयुत भगवन्त राव पटेल और गोविन्द राव पटवारी इस अपराध पर नौकरी से सस्पैण्ड किए गये कि उन्होंने आर्यसमाज कलम के उत्सव में भाग लिया था।

३ कहोंली—दो मुसलमान वैदिक धर्म में दीक्षित हुए और उन का नाम राम और लक्ष्मण रक्खा गया था। पुलिस ने इस झूठे अपराध पर आर्य समाजियों पर अभियोग चलाया कि उन्होंने इन दोनों आदमियों को अपने अनुचित अधिकार में रक्खा था। फिर भी अदालत ने आर्य समाजियो को बरी कर दिया। पुलिस ने खबर देने वाले के विरुद्ध जिसने जान बूझ कर गलत सूचना दी थी कोई कार्यवाही नहीं की। विपरीत इस के राम और लक्ष्मण को गिरफ़्तार करके कल्याणी ले जाया गया, और उन्हें इस्लाम में फिर से वापिस करने के लिए बहुत मारा पीटा गया। फिर भी इन घृणित यत्नों में पुलिस बुरी तरह असफल रही। चूंकि दोनों वीर अपने धर्म पर दृढ थे।

४ कल्याणीः—पुलिस ने आर्यसमाज के मन्त्री को पीटा। मन्त्री जी को कुछ मास तक अनावश्यक कष्ट देने के अनन्तर बिना कोई कारण बतलाए केस वापिस ले लिया गया।

५ अम्बुलगाः—२६४ दफ़ा में ६ आर्यसमाजियो के विरुद्ध एक फौजदारी का मुकद्दमा चलाया गया है।



हैदराबाद राज्य मे तबलीग का कार्य ।

इस प्रकार की साप्ताहिक रिपोर्ट तय्यार की जाती है और तबलीग के लिये राज्य की ओर से कई प्रकार के प्रलोभन दिए जाते है ।

तबलीग के पक्ष मे सद्दीक दीनदार का प्रोपैगैंडा



सारा भारतवर्ष शीघ्र ही मुसलमान होने जा रहा है।

६. अन्दूरः—कुछ मुसलमानों ने आर्यसमाजियों को सताया और शिकायत करने पर उन में से १५ पीड़ित आर्यसमाजियों का १०४ धारा में चालान कर दिया।

७ कुहालीः—पुलिस ने १५ व्यक्तियों पर केस चलाया, परन्तु सबूत न दे सकने के कारण केस वापिस ले लिया गया।

८ आर्य प्रचारक प० गणपतलाल जी पर १०४ धारा में एक झूठा केस चलाया गया। विद्वान् प० ने ऐसे स्थान पर जहाँ न्याय की कोई आशा न थी सफाई पेश करने के स्थान में ३ मास के लिए जेल में जाना पसन्द किया।

९ नन्द्दुर्गः—१०४ धारा में २० हिन्दू तथा आर्यों का चालान किया गया। इन में ७० साल के वृद्ध और १२ वर्ष के बालक भी सम्मिलित हैं।

१०. बेलारः—१०४ धारा में चिटगोपा की अदालत में ५५ आर्य और हिन्दुओं पर एक केस चलाया गया है।

११. औरद् शाहजहांनीः—१०४ धारा में १६ आदमी गिरफ़्तार किए गये हैं, उन का केस चल रहा है।

१२ उजनी और नन्दुर्गः—दफ़ा १४५ और १४६ में उजनी में १५ तथा नन्दुर्ग में ११ हिन्दुओं व आर्यों पर केस चल रहा है।

१३. तौसी— दफ़ा २२६ में ११ हिन्दुओं व आर्यों को गिरफ़्तार किया गया है।

१४ इस ही ग्राम में रामानामक हिन्दू की हत्या हुई थी, इस मुकद्दमे में भी ३ हिन्दू आर्यों को फाँसा गया है और रामा के पुत्र पर क़त्ल का जुर्म लगाया गया है।

१५ अकोलगा— महादेव की हत्या हुई है और अभी तक हत्यारे को दण्ड देने की कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

१६. वेदप्रकाश का क़त्ल हुआ। अपराधी साफ़ बच गया। परन्तु आर्य हिन्दुओं का महिनों तक रिमाण्ड ले २ कर तंग किया जाता रहा।

१७. गुलबर्गा— ४ आर्य १०, ४ और २ वर्ष की क़ैद में पडे है।

१८. नूलेगांव— नूलेगांव केस में ४ आर्य समाजियों को अपराधियों की सूची में सम्मिलित किया गया है।

१६. श्री बलदेव जी, शंकर रेड्डी और देवी लाला जी पर १०७ धारा में मुकदमा चलाया गया था, सफाई देने के बजाय उन्होंने जेल में जाना पसन्द किया।

२० मुखेद्— चौ० श्रीरामजी जेल भेज दिए गए-चूँकि उन्होंने हवन कुण्ड स्थापित करने का साहस किया था।

२१ उद्‌गीर—बिना आज्ञा के दशहरा मनाने के अपराध में १६ आदमी जेल भेज दिये गये और ६० पर अभी केस चल रहा है। समस्त हिन्दू ससार में दशहरा मनाया जाता है।

२२ मूरम— बिना अपराध के या वारण्ट के १३ आर्य्य समाजी गिरफ़्तार किए गये और बिना किसी मुकदमें के उन्हें जेल भेज दिया गया। मुक़दमें में हाज़िर होने के पूर्व वे छोड़ भी दिए गये।

२३. औसे दफा १२३ और २६३ में ८ आर्य्य समाजियों का चालान हुआ। अन्य छः आर्य्य समाजियों पर १०४ दफ़ा में मुकदमा चला।

२४ धारूर— इस जगह के कई आर्य्यसमाजी जेल में सड़ रहे हैं

२५ मांद्री— दफ़ा १०४ में ४७ आदमियों पर अभियोग चलाया गया है।

२६ तुलजापुर— दफ़ा १०४ में २४ आर्य्यों का चालान किया गया।

२७ साकोल— २० आर्य्यों पर इस अपराध में मुकदमा चलाया गया है कि उन्होंने मस्जिद के सामने बाजा बजाया था।

२८ जैनियों के किसी जलूस के सिलसिले में १२ आर्य्यों पर केस चलाया गया।

२९ लखनगाँव मे दफ़ा १०४ में ४ आर्य्य समाजियों पर अभियोग चलाया गया।

३०. गंजोटी— दफ़ा १०४ में २० आर्य्यों का और दफ़ा १२३ में ४ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३१. निज़ामाबाद में ६ आर्य्यों पर केस चलाया गया।

३२ लातूर— दफ़ा १०४ में १६ आर्य्यों पर मुकदमा चलाया गया है और ४ बाजा बजाने के अपराध में जेल भेज दिए गए हैं।

३३. साकुर— कई निर्दोष आर्य्यों पर मुकदमा चला कर उन्हें जेल भेज दिया गया है।

३४ टाका— दफ़ा १०४ में ६ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३५. तेर— दफ़ा १०४ में ११ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३६ शबैल— १०४ दफ़ा में ११ आर्य्यों का चालान किया गया है।

३७ हैदराबाद—राजधानी में एक क़त्ल के मामले में लगभग १४ हिन्दुओं व आर्य्यों को फाँसा गया था और उन सबको ६ मुसलमानों व ३ हिन्दुओं की ज्यूरी ने प्रत्येक को २० २० वर्ष की सजा दी है। यद्यपि ज्यूरी के हिन्दू सदस्यों ने एक स्वर से अपराधियों को निर्दोष बतलाया था। और भी असख्य उदाहरण इस प्रकार के हैं जिनमें इस स्वेच्छाचारी राज्य मे धर्मान्धता अपने नग्न रूप में नाच रही है।

भाग्यनगर वा हैदराबाद

श्री० प० नरदेव जी शास्त्री, वेदतीर्थ ।

हैदराबाद दक्षिण का दूसरा नाम संस्कृत में भाग्य नगर है। निज़ाम हैदराबाद के वर्त्तमान दीवान राजा किशन प्रसाद के पूर्वज चन्दूलाल बड़े दानी थे। वे भी दीवान थे। उनके दान की बड़ी प्रसिद्ध हो गई थी। कोई भी मंगता उनसे बिना मुराद पूरी किये नहीं लौटता था। उन की इतनी प्रसिद्धि हो गई थी कि हैदराबाद का नाम ही पड़ गया था कि चन्दूलाल का हैदराबाद"

वर्त्तमान निजाम के पिता आला हज़रत नवाब महबूब अली भी बड़े दानी मानी और प्रजा वत्सल शासक थे। उनके शासन काल में हिन्दुओं को यह कभी भान नहीं होता था कि मुसलमानों का राज्य है।

दक्षिण में निज़ाम राज्य को 'मोगलाई राज्य' कहा जाता है। वहां के पूर्व नवाब महबूब अली की दयालुता का परिचय लोगों को तब मिला था जब वहां मूसा नदी की बाढ़ आई थी, और सारा हैदराबाद उस बाढ़ में डूब गया था। निसहाय प्रजा के लिए निज़ाम साहेब ने अपने महल तक खाली कर दिये थे। अकाल के वक्त भी प्रजा को भारी सहायता पहुँचाई थी। उनके समय में बड़े ओहदों पर भी हिन्दू ही अधिकारी थे। हमारे एक सबन्धी श्री स्वामीराव जी किसी समय हैदराबाद राज्य के सूबे के सूबेदार थे। कई जिलों में ताल्लुकेदार (कलैक्टर) हिन्दू थे निज़ाम राज्य में हिन्दू मुसलमान सब भाई भाई के समान रहते थे।

बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि वर्त्तमान निज़ाम नवाब श्री उस्मान अली की अपने पिता भूतपूर्व निज़ाम से नहीं बनती थी, उस समय नवाब महबूब अली ने अपने पुत्र उस्मान अलि को नज़र बन्द करके रखा था।

हैदराबाद में कट्टर मुसलमानी पन तब से शुरू हुई जब से अलीगढ़ कालेज से शिक्षित मुसलमानों ने हैदराबाद स्टेट में प्रवेश किया। ये शिक्षित लोग हैदराबाद में बड़े बड़े ओहदों पर तैनात किये गये। परन्तु ये सब बहुत ईमानदार थे इनके कारण हैदराबाद

में यह नीति बर्ती जाने लगी कि ओहदों पर जहां तक हो सके मुसलमानों को ही रखा जावे । इनकी कृपा का ही दूसरा फल यह हुआ कि दफ़्तरों और कचहरियों में भी उर्दू का ही चलन किया गया । सब काम उर्दू में ही होने लगा । पहले दफ़्तर के काग़ज़ात मराठी, करनाटकी, तैलगू, आदि भाषाओं में भी रखे जाते थे क्योंकि निज़ाम राज्य कई भाषाओं के बोलने वाली प्रजाओं से बसे इलाकों में बटा हुआ है ।

अलीगढ़ सम्प्रदाय के अधिकारों का प्रबन्ध तो बहुत उत्तम था । उनमें राष्ट्रीय भावना की अधिकता थी । वे देश के सच्चे सेवक बनना चाहते थे प्रजा का हित राजा के हित के हित के साथ साथ उनके चित में काम करता था परन्तु ऊपर के इशारों से उनकी वहाँ अधिक पैठ न रहीं और एक एक करके सबको सटका दिया गया । वे लोग दक्षिण हैदराबाद में अंगरेजों का आधिपत्य नहीं चाहते थे । इसी से इन विचारों के वहां पैर न जम सके । अस्तु । इनके स्थान पर यू० पी० से और मुसलमान शासक अधिकारी बन ठन कर आ गये । अब इन्हीं शासकों का यह रंग है जो अब सारे निज़ाम राज्य में देखने को मिल रहा है । इन्हों ने राज्य में हिन्दू मुसलिम प्रश्न को उठा कर निज़ाम राज्य में अशान्ति मचवाई है और शान्ति का नाश करा दिया है । बरार जो अंग्रेजी छत्र छाया में चला गया वह इन ही महानुभावों की कृपा का फल है ।

आला हजरत नवाब महबूब अली खां के पश्चात् जब वर्तमान निज़ाम श्री नवाब उस्मान अली साहेब सिंहासन पर जमे तब "भाग्य नगर" के भी भाग्य पलटे । प्रत्येक राज काज में मुसलमानी दृष्टि को तीव्र किया गया और धार्मिक स्वतन्त्रता का धीरे धीरे नाश होने लगा । हिन्दुओं का धर्म घर की चार दिवारी में खैर मनाने लगा बाहर प्रत्यक्ष रूप से सामूहिक कोई कार्य करना असम्भव हो गया,

वर्तमान निज़ाम ने सब से पहले राज्य भर में दौरा लगाया और प्रजा से भेंट के नाम पर लाखों बटोरे, कट्टरता से उत्पन्न होने वाले अत्याचार और फिजूल खर्च होने भी आरम्भ हो गये । जब तब बड़ा ही हल्लम होता रहा प्रत्येक विभाग में बड़े अंगरेज अफसर आ घुसे अब तो एक भी ऐसा विभाग नहीं है जहां ऊंचे पद पर अंगरेज न दिखाई दे । फलतः हैदराबाद के कठपुतले के सब सूत्र में अब अंग्रेजों के हाथ में ही हैं । चाहे नवाब हिज एक्जाल्टेड हाईनेस भले ही कहे जावें, परन्तु हैदराबाद का राज्य तन्त्र वस्तुतः— "सूत्र-प्रोतादारुमयीव योषा" के समान हैं ।

वर्त्तमान शासन चक्र किस प्रकार चल रहा है यह तो भविष्य में कभी दिखलाया जावेगा। परन्तु आर्यसमाज की दृष्टि से भाग्य नगर के भाग्य चक्र का दर्शन इस लेख में कराना चाहते हैं।

हैदराबाद राज्य के सब से पुराने तीन आर्य हैं। उनमें से दो का तो स्वर्गवास हो गया और एक जीवित है। एक तो थे स्व० श्री केशवरावजी जस्टिस हैदराबाद। हैदराबाद आर्यसमाज ने जो कुछ कार्य किया है इसका समस्त श्रेय आपको है। दूसरे थे स्व० श्री निवास राव जी (मेरे पिता जी) आपने सबसे पहले अर्थात् हैदराबाद समाज से भी पहले धारूर समाज की स्थापना की थी। उस्मानाबाद तहसील में जितना प्रचार है वह इनके ही परिश्रम का फल है। तीसरे हैं पातूर निवासी श्री ठाकुर गोविन्द सिंह जी मनसबदार जब आप हैदराबाद राज्य में मनसबदार थे तब आपने भी बहुत कार्य किया। अब आप पेन्शन ले कर ज़मींदारी पातूर (ज़िला अकोला बरार) में रहते हैं।

हैदराबाद राज्य में जितने आर्यसमाजी हैं प्राय सब उत्तर भारत के प्रवासी हैं जो वहाँ जाकर बसे हैं।

दक्षिण के निवासी तो अब आर्यसमाज के सम्बन्ध में कुछ-कुछ समझने लगे हैं। सब से पहले स्व० ला० लाजपतरायजी के देश निकाला होने पर आर्यसमाज का नाम दक्षिण में प्रसिद्ध हुआ। श्री लाजपतरायजी के नाम के साथ साथ समाज का नाम भी प्रसिद्ध हो गया। गुरुकुल के प्रारम्भिक डेपुटेशन में श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी (उस काल में-श्री महात्मा मुन्शीरामजी) भी हैदराबाद गये थे तब भी अच्छी धूम आर्यसमाज की रही। बाद को सामाजिक उत्सवों में आर्यसमाज के प्रचारकों का जाना होता ही रहा। उस समय आर्यों की सख्या बहुत कम थी। निज़ाम सरकार के राजकर्मचारियों का ध्यान भी आर्यसमाज की ओर कम गया था ज्यों-ज्यो आर्यसमाज का कार्यक्षेत्र बढ़ा इधर ध्यान भी अधिक आकृष्ट हुआ और इस लिये भी ध्यान विशेष गया कि यू० पी० के कट्टर मुसलमान वहाँ कर्मचारी और अधिकारी रूप में अधिक सख्या में पहुँच गये हैं।

आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्व० श्री नित्यानन्द जी जब हैदराबाद में पचपची नामक सनातनियों से शास्त्रार्थ करने गये थे तब निज़ाम सरकार ने उनको हिरासत में ले लिया था। फिर होहल्ला मचने पर छोड़ दिया था। बम्बई के स्व० श्री प० बालकृष्ण जी शर्मा के कारण भी वहां अच्छी चहल-पहल रही थी। इनको भी हैदराबाद छोड़ जाने का

हुक्म हुआ था। स्व० नित्यानन्द जी और प० बालकृष्ण जीके लिये जो प्रतिबन्ध था उसमें हिन्दुओं का विरोध कारण था। उस समय हिन्दू समझते नहीं थे कि 'आर्य्यसमाज क्या है ?" परन्तु अब हिन्दुओं की ओर से आर्य्यसमाज का विरोध नहीं हो सकता। हा मुसल-मान पूरा जोर लगावेंगे कि आर्य्यसमाज का प्रचार न हो।

लेख का लेखक १८६४ में उत्तर भारत में आया था तब से उत्तर भारत ही है। जब जब कभी हैदराबाद जाने का अवसर हुआ तब-तब बहुत भारी परिवर्तन देखने को मिला। न केवल हिन्दुओं के आचार-विचार और व्यवहारों में ही भेद हुआ है परन्तु मुसल-मानों के दृष्टिकोण में भी बहुत परिवर्त्तन हो गया है।

आजकल हैदराबाद की समस्या फिर आर्य्यसमाज के सामने बड़े जोर से आई है। सार्वदेशिक सभा ने अपनी बाह्यवृत्ति और आन्दोलन से बतला दिया है कि हैदराबाद राज्य में सत्याग्रह बड़ा बल पकड़ेगा। यह सत्याग्रह सग्राम भी इतिहास में लिखने की बात हो जायगी। यदि आर्य्यसमाज अपनी कीर्ति को स्वरक्षित रखना चाहता है तो किसी न किसी दिन और कहीं न कहीं सत्याग्रह पूरे बल से करना ही पड़ेगा।

मत समझिये कि आर्यों पर हैदराबाद र ज्य में सख्ती हो रही हैं, अन्य भी बीसियों रियासतें है जहाँ किसी किसी अश मे निज़ाम राज्य से भी बढ कर क्लेश हैं। चाहे ब्रिटिश-राज्य हो, चाहे निज़ाम राज्य, चाहे और कोई जर्मन की हिटलरशाही हो, जहाँ भी अत्याचार हो, टक्कर लेनी ही चाहिये। वास्तविक आत्मिक जीवन इसी में है। ['पत्र पुष्प' से]

शोलापुर कैम्प के समाचार

पत्रिका संख्या १

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य सम्मेलन (Arya Congress) शोलापुर

तिथि कार्तिक शुक्ला ११ संवत् १९९५

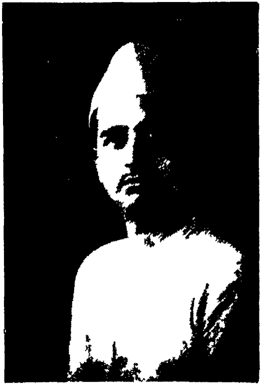
[२ नवम्बर १९३८ ई०]

(१)

सेवा में श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज,

महाशय ! नमस्ते,

आपको कदाचित विदित है कि आर्य्य जगत की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने अपनी अन्तरंग सभा की बैठक में, जो ता० ६ अक्तूबर १९३८ ई० को देहली में सगठित हुई थी, हैदराबाद दक्षिण में आम तौर से हिन्दुओं और खास तौर से आर्य्यों की धार्मिक स्वतन्त्रता का अपहरण होरहा है और इस सम्बन्ध में अन्य भी अनेक प्रकार के अत्याचार बराबर होते रहते हैं, इस पर विचार किया और विचार के पश्चात् प्रशासित सभा ने यह काम मेरे आधीन किया कि मैं इस सम्बन्ध में जैसा उचित समझूं कार्य करूँ। मैं सभा के उपर्युक्त निश्चयानुसार स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी को साथ लेकर यहां शोलापुर में ३० अक्तूबर को आ गया आर्य्य कांग्रेस के सङ्गठित करने के सम्बन्ध में (जिसके २५-२६ तथा २७ दिसम्बर को सङ्गठित होने की सूचना समाचार पत्रों द्वारा दी जा चुकी है) आवश्यक कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है, भूमि-पिण्डाल प्रतिनिधियों और दर्शकों के निवास तथा बाजार आदि के लिए भूमि प्राप्त कर ली गई है। इस आर्य्य कांग्रेस में मुख्य रीति से हैदराबाद के ही विषय पर विचार होगा और सत्याग्रह करने की आवश्यकता पर भी विचार किया जावेगा। इस कार्य के लिए धन और जन दोनों की जरूरत होगी, इस ओर आर्य्यसमाज का कम प्रचार है यह बात आपसे अविदित नहीं है इसलिए इस कार्य में सहायक होने का उत्तरदायित्व अधिकतर आप सब पर ही है इसलिए यथासम्भव शीघ्र जितना अधिक से अ-



श्री॰ नलन्द आर्योपदेशक
आर्य्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम रा य
सपाद न का निप्र करन पर आपका वप का करा॰
कार वास मिला



श्री लालमन जी
गलबगा आर्य्य समाज क उत्साही मन्त्री
आपको गलबगा केस म ० साल का कठोर
कारावास दिया गया

हमारे प्रचारक जिन्हें निर्वासित किया गया अथवा कारागार में डाला गया ।



श्री शङ्करदेव आर्योपदेशक

सभा ... में इन्कार करने पर इन्हें । १२ का कठोर कारावास मिला ।



पं० नरेन्द्र जी

आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के उत्साही प्रचारक

हैं निर्वासित करके मन्नानूर (काला पानी)

में रक्खा गया है ।

धिक धन भेज सकते हों भेज देवें तथा यह भी सूचना देवें कि सत्याग्रह प्रारम्भ होने पर आप कितने स्वयं सेवक इस कार्य के लिये दे सकेंगे। धन या तो यहां मेरे नाम भेजें अथवा कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा देहली के पते से भेजें। समय बहुत थोड़ा और कार्य बहुत अधिक करना है। इसलिए धन भेजने में शीघ्रता करनी चाहिये। सम्मेलन में शरीक होने का भी पूरा पूरा यत्न करना चाहिये।

शुभचिन्तक

नारायण स्वामी

पत्रिका संख्या २

कार्यालय सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन (आर्य कांग्रेस) शोलापुर

तिथि कार्तिक शुक्ला १२ सवत १९९५ वि०

[४ नवम्बर १९३८ ई०]

सेवामें श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज,

महाशय ! नमस्ते,

पत्रिका सख्या १ द्वारा आपसे प्रार्थना की गई है कि आप आर्य्य कांग्रेस के लिए यथा सम्भव शीघ्र धन भेजें यह धन अधिक आजाने पर सत्याग्रह निधि में रखा जावेगा।

(२) इस पत्रिका द्वारा आवश्यक नियमों की आपको सूचना दी जाती है जिनके द्वारा प्रतिनिधि आदि कांग्रेस में सम्मिलित हो सकते हैं:—

स्वागतकारिणी सभा पिण्डाल सभा कैम्प आदि के बनाने और उनका आर्य्य कांग्रेस सम्बन्धी समस्त प्रबन्ध करने के लिए एक स्वागतकारिणी सभा बनादी गई है जिसमें ५) फ़ीस देने पर, कोई भी वैदिक धर्मी मेम्बर के तौर पर शामिल हो सकता है। जो सज्जन इस सभा का सदस्य बनना चाहे, शीघ्र ही ५) अपने पूरे पते के साथ यहां भेज देवें। स्वागतकारिणी सभा के सदस्य, मुख्य मण्डप [पिण्डाल] में मुख्य स्थानपर बैठेंगे। इस सभा के सात प्रतिनिधि भी विषय निर्धारणी सभा में बैठ सकेंगे और प्रत्येक विषय के बाद वादानुवाद में भाग लेकर अपनी सम्मति दे सकेंगे।

प्रतिनिधि—प्रत्येक आर्य्यसमाज अपना कम से कम एक प्रतिनिधि आर्य्य कांग्रेस में भाग लेने के लिए भेज सकेगा परन्तु जिस समाज के सदस्य १० से अधिक हों तो प्रति १०

सदस्य एक प्रतिनिधि भेज सकेगा। प्रतिनिधि फीस २) प्रति प्रतिनिधि होगी, जिसे प्रतिनिधिगण चाहे पहले यहा भेज देवें अथवा यहाँ आकर देदेवें। यदि पहले भेजें तो मनीआर्डर की रसीद उन्हें साथ लानी चाहिये, प्रतिनिधि [प्रवेश] टिकट २) प्राप्त होजाने पर ही दिये जायेंगे।

दर्शक—आर्य कांग्रेस में शरीक हो सकने का भी प्रबन्ध किया गया है दर्शकों की पहली श्रेणी के सफों में बैठने के लिए १) और द्वितीय श्रेणी सफ़ों में बैठने की ॥) फीस नियत है। दर्शकों के टिकट प्रजा मण्डप के बाहर मिलेंगे। पहिले से जो लेना चाहें वे नियमित फ़ीस अदा करके स्वागतकारिणी सभा के कार्यालय से प्राप्त कर सकेंगे। १५दिसम्बर से प्रत्येक प्रकार के टिकट जारी होने लगेंगे। ये १)और ॥)के टिकट आर्य्य कांग्रेस के समस्त अधिवेशनों में सम्मिलित होने के लिये टिकट लेना चाहेंगे तो ।) में ही प्राप्त कर सकेंगे।

आप कृपया अत्यन्त शीघ्र सूचना देवें कि आपके यहासे कितने सज्जन आर्य्य कांग्रेस में शरीक होने के लिये आवेंगे जिससे उनके निवास आदि का प्रबन्ध किया जा सके।

शुभचिन्तक

नारायण स्वामी

(२)

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन

हैदराबाद राज्य में जो अत्याचार साधारणत वहां की हिन्दू तथा विशेषत आर्य जनता पर निज़ाम सरकार द्वारा कई वर्षों से हो रहे हैं, उनका विरोध करने तथा उन अत्याचारों को दूर कराने का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए सोलापुर में ता० २५, २६ और २७ दिसम्बर १९३८ को जो आलइण्डिया आर्यन कांग्रेस होने वाली है उसकी तैयारियां बड़े ज़ोरों से हो रही हैं। सर्व श्री नारायण स्वामी जी महाराज, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प० शिवचन्द्र जी मन्त्री अखिल भारत वर्षीय आर्य रक्षा समिति, प० बन्सीलाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य प० विश्वनाथ जी कनोज स्थानीय प्रसिद्ध आर्यसमाज प्रेमी राष्ट्रवादी तथा अन्य बहुत से स्थानीय सार्वजनिक कार्यकर्ता आर्यन कांग्रेस को सफल बनाने में संलग्न हैं। म्युनिसिपल बोर्ड भी जल, बिजली तथा सफ़ाई आदि की सुविधा प्रदान कर रही है। बाहर से कम से कम पचीस सहस्र मनुष्यों की आर्यन् कांग्रेस के अवसर पर आने की आशा है। सर्व श्री महामना प० मदनमोहन

मालवीय जी, बापूजी, अणे व सावरकर, जगद्गुरू शंकराचार्य, डा० कुर्तकोटी, डा० मुंजे, भाई परमानन्द, सर गोकुलचन्द नारंग आदि की आर्यन कांग्रेस में सम्मिलित होने की सम्भावना है।

सम्प्रति रियासत हैदराबाद में आर्यन् डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह जारी है। और अब तक छ जत्थे गिरफ़्तार हो चुके हैं, परन्तु ऐसा मालूम हुआ है कि आर्यन कांग्रेस हो जाने के पश्चात् आर्यन् डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह बड़ा ही व्यापक रूप धारण कर के तीव्रगति के साथ चलेगा।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, श्री० प० रामचन्द्र जी देहलवी, श्री प० शिवचन्द्र जी को निज़ाम सरकार ने अवाँच्छनीय गैरमुलकी घोषित कर दिया है। कुछ मास हुये श्री प० शिवचन्द्र जी ने हैदराबाद रियासत में कई बार भ्रमण कर निज़ाम सरकार के द्वारा हिन्दू तथा आर्य जनता पर होने वाले अत्याचारों की प्रामाणिक सामग्री एकत्रित की थी।

विश्वस्त सूत्र से ये भी मालूम हुआ है कि श्री प० श्यामलाल जी वकील हाईकोर्ट उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य, कई वर्षों से अस्वस्थ हैं, उन को बिना किसी कारण के उदगीर में गिरफ़्तार करके जेल में डाला गया और उन को अंधेरी कोठरी में रखा गया है। उन को डाक्टर ने अन्न ग्रहण न करने की सलाह दी थी क्योंकि उनकी बीमारी ही वैसी है इसलिये कई वर्षों से केवल दूध और फलों पर रहते थे अब उनको थोड़ा ही दूध दिया जाता है, जिस के कारण उनका स्वास्थ दिन ब दिन ख़राब होता जा रहा है।

श्री पं० नरेन्द्रजी आर्य युवक हृदय सम्राट निज़ाम राज्य को बिना किसी कारण के गिरफ़्तार कर मनामूर कालापानी भेज दिया गया है। हैदराबाद के पचीस सर्व प्रमुख तथा अग्र-गण्य प्रतिष्ठित सज्जनों ने जिन में वहां के बड़े बड़े बैरिस्टर वकील, डाक्टर, सेठ साहूकार तथा श्रिमजी नामक एक मुस्लिम सज्जन जो हाईकोर्ट के माने हुए वकील तथा कांग्रेस राष्ट्रवादी हैं, इन सब के हस्ताक्षरों से निज़ाम सरकार को एक आवेदन पत्र भेजा गया है कि श्री प० नरेन्द्रजी को बिना कारण बताए कालेपानी भेज देना बहुत ही अनुचित है और बाक़ायदा अदालत में मुकदमा होना चाहिये।

यह भी मालूम हुआ है कि गुलबर्गा आर्य समाज के मन्त्री श्री० लालसिंह जी जिनको कुछ दिन हुए ३६ बेंत की सजा दी गई थी जिस के कारण वह बेहोश हो गये थे

उन को बहुत ही ख़राब भोजन जेल में दिया जा रहा है जिस के कारण उनका स्वास्थ बहुत खराब होता जा रहा है।

शिवचन्द्र मन्त्री।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन सोलापुर के अवसर पर जो बाज़ार यात्रियो के लिये खोला जायगा उसमें मुख्यतया पुस्तकों और खाद्य वस्तुओं की दूकानें होंगी। खाद्य वस्तुओं में रोटी, पूरी, मिठाई, दूध, चाय, पान आदि सम्मिलित हैं। मांस, शराब, आदि अथवा तम्बाकू, सिगरेट और बीड़ी आदि की न दूकानें होंगी न कोई आर्य नगर में इन्हें बेच सकेगा। दूकान का किराया प्रति दूकान १०) होगा। दूकानदारों को दूकानें स्वय बनानी होंगी। यदि वे तय्यार चाहेंगे तो उन्हें ४) और देने होंगे। घृत आदि सभी खाद्य सामग्री शुद्ध और असली प्रयोग में लाई जावेंगी। परचूनी आटा दाल की भी कतिपय दूकाने रखी जावेंगी। दूकान लगाने के इच्छुकों को अपने प्रार्थनापत्र ३० नवम्बर तक भेज देने चाहिये। इस के बाद आये हुए प्रार्थना पत्रों पर बाज़ार में जगह ख़ाली रहने ही पर विचार किया जा सकेगा। प्रार्थना पत्र निम्न पते पर भेजने चाहियें।

शिवचन्द्र मन्त्री,
आर्य कांग्रेस कार्यकारिणी सभा,
सोलापुर।

आर्य-कांग्रेस की तैयारियां

जब से आर्य जगत् ने शोलापुर में आर्य कांग्रेस करने का निश्चय किया है तब से यह स्थान आर्यों का तीर्थ बन गया है। शोलापुर बम्बई से (रैंचूर जी० आई० पी० लाइन) २८३ मील के फासले पर है। शहर व्यापार और उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहा की आबादी और भाषा अधिकांश में मराठी है और यही कारण है कि जनता में हिन्दुत्व के लिए सहानुभूति है।

शोलापुर के मंगलवार पेठ में आर्य-कांग्रेस का आफिस है। आफ़िस का मकान आलीशान है और यह स्थानीय श्री विश्वनाथ कमाले जी ने उदारता पूर्वक कांग्रेस के अर्पण किया हुआ है। श्री कमाले जी यहां के प्रतिष्ठित व धनी मानी युवक हैं और उन्हें आर्य समाज व हिन्दू संस्कृति से अत्यन्त प्रेम है।

उपरोक्त आफ़िस में श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज, श्री पूज्य स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज, श्री सदानन्द जी महाराज परिव्राजक, श्री बन्सीलाल जी वकील हैद्राबाद वाले, श्री शिवचन्द्र जी, मन्त्री आर्य रक्षा समिति, देहली तथा अन्य अनेक नेता ठहरे हुए हैं। इनके अतिरिक्त ३०-४० स्वय सेवक भी यहां हैं जो सब प्रकार का सेवा-कार्य अत्यन्त लगन से कर रहे हैं।

शहर से ४ फर्लां ग की दूरी पर नहर के किनारे लग-भग ४-३० एकड़ भूमि आर्य कांग्रेस-कमेटी ने पण्डाल आदि बनाने के लिए ली है।

यह ज़मीन दो ज़मींदारों—श्री महालिंगप्पा पाटील और श्री गणपति सिद्धरामप्पा पाटीनेल बिना किसी किराये के आर्य कांग्रेस कमेटी को दी है।.कांग्रेस का पण्डाल बनना शुरू हो गया है। प्रतिनिधियों के कैम्पों की जगह पर निशान पड़ गये हैं। बाज़ार व दुकानों की प्लैन भी तैयार है।

यहां की म्यूनिसिपैलिटी ने भी आर्य कांग्रेस के साथ पूरे सहयोग का निश्चय किया है। आर्य-नगर में पानी, बिजली, सफ़ाई आदि का सारा काम म्युनिसिपेलटी अपने खर्च पर करेगी। शहर से आर्य कांग्रस पण्डाल तक सड़क भी म्यूनिसिपेलिटी ने बनाने का निश्चय किया है। इन सब कामों के लिए २०००) का बजट पास हुआ है। इससे कहीं अधिक की आशा है।

आर्य-कांग्रेस की स्वागत समिति की भी ज़ोर-शोर से तैयारियां हो रही हैं। ५) फीस नियत हुई है। १००० सभासद् (स्वागत-समिति) के बनाने की आयोजना है। स्वागता ध्यक्ष के लिये हैद्राबाद और बम्बई के प्रमुख व्यक्तियों से बात चीतच-ल रही है। कांग्रेस के प्रधान के लिए लोकनायक श्री एम० एस० अणे, मैम्बर, असैम्बली, देहली से प्रार्थना की गई है। आशा है वे स्वीकार कर ले गे।

इस प्रकार आर्य-कांग्रेस का कार्य पूरे उत्साह से हो रहा है। और इधर सत्याग्रह की तैयारी भी शुरू है। वालिंटियर और धन एकत्र करने की सूचना स्थान स्थानसे पहुँच रही है। अकेले राजपूताना (अजमेर) ने ३२०० सत्याग्रही और १०००) मासिक सहायता का वचन दिया है। हैद्राबाद से १००० स्वय सेवकों के नाम आ गये हैं और लड़ाई छिड़ने पर ५००० की आशा है। देहली ने १०,००० रु० इकट्ठा करके शीघ्र भेजनेका निश्चय किया है। इसी प्रकार अन्य प्रान्त भी प्रयत्नशील हैं। जिन समाजों ने अभी कार्य प्रारम्भ नहीं किया उन्हें भी चाहिये कि प्रतिनिधि-फार्म और रसीदबुकें मगाकर फौरन शुरू कर दें।

केशवदेव शास्त्री

(३)

— हैद्राबाद् के वास्तविक समाचार

हैदराबाद रियासत में आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह में जो व्यक्ति गिरफ्तार हो रहे हैं उनको पृथक २ जेल की कोठरियों में बन्द रक्खा जा रहा है। उनको लालच धमकी और नाना प्रकार के कष्ट देकर उनसे कोरे कागजों पर ज़बरदस्ती हस्ताक्षर कराकर अथवा अँगूठे का निशान लेकर निजाम सरकार की ओर से उन कागजों पर मन माना लिखकर प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह मे गिरफ्तार हुए कुछेक व्यक्तियों द्वारा मांफी मांगने के समाचार किन्हीं समाचार पत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं। मालूम हुआ है कि इस प्रकार के व्यक्ति दो प्रकार के हैं। एक तो वे जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है अर्थात् जिनसे कोरे कागजों पर जबर्दस्ती हस्ताक्षर और अँगूठे के निशान करा लिये जाते हैं और बाद को रियासत के कर्मचारियों द्वारा क्षमा याचना की भाषा लिख दी जाती है। दूसरे वे लोग हैं जो भीड़ में से गिरफ्तार कर लि जाते हैं, जिनका सत्याग्रह से कोई सम्बन्ध ही नहीं होता बल्कि उनमें से कई पुलिस की ओर से इरादतन भेजे हुए व्यक्ति होते हैं ताकि वे क्षमा मांगकर चले आवें जिससे दूसरे पक्ष की बदनामी हो। इस प्रकार से समझदार जनता को विचलित नहीं होना चाहिये चूँकि शत्रु लोग इस प्रकार की चालें ऐसे अवसरों पर चला ही करते हैं। कुछ समाचार पत्रों में यह भी प्रकाशित हुआ है कि आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया है। परन्तु यह बिलकुल निराधार है और शत्रुओं की चालबाजी का बनावटी प्रोपेगेन्डा है। आर्यन डिफेन्स लीग की ओर से सत्याग्रह निरन्तर जारी है।

मौजा निरगुडी में दिवाली के अवसर पर आर्य्यों ने ओ३म् के झण्डे के साथ जलूस निकाला था। केवल इसी बात पर पुलिस ने अब २८ आर्यों को गिरफ्तार कर लिया है।

जेलों में आर्य्य सत्याग्रहियों के यज्ञोपवीत जबर्दस्ती तोड़े जा रहे हैं। आरमूर के तहसीलदार ने अपने सामने अपने चपरासियों से ग्राम चटपल्ली निवासी रामचन्द्र आर्य्य पटेल तथा ग्राम कमरपल्ली निवासी गंगारेड्डी पटवारी के यज्ञोपवीत जबर्दस्ती तुड़वा दिये।

तहसीलदार ने अन्य उन पटेल तथा पटवारियों को भी जो आर्य्य हैं धमकाया कि यदि वे अपने शरीरों से यज्ञोपवीत नही उतार फेंकेगे तो उन्हे नौकरी से पृथक कर दिया जायगा और जेल भेज दिया जायगा ।

हमे यह भी सूचना मिली है कि लातूर के व्यापारियों ने अपनी दुकान आदि की रक्षा के लिये कुछेक सिक्खों को नौकर रख लिया था। इस पर वहां के ताल्लुकेदार ने इन व्यापारियों को धमकाया कि वे सिक्खों को नौकरी से निकाल दे । ताल्लुकेदार ने उन सिक्खों को अपनी कचहरी मे बुलाया और पुलिस के द्वारा उनकी कृपाणों को जबर्दस्ती उनके शरीर से उतरवा दिया ।

निजाम सरकार ने अब तक श्री पंडित रामचन्द्र देहलवी, श्रीयुत पडित शिवचन्द्रजी जी मन्त्री आर्य्य रक्षा समिति तथा श्री पडित व्यासदेव शास्त्री को ही अवांछनीय इतर देशीय (Undesirable out sider) घोषित किया हुआ था अब तो श्रीपूज्य महा-नारायण स्वामी जी महाराज जैसे सन्यासी को भी अवांछनीय इतरदेशीय घोषित कर

नागपुर मे होने वाली आर्यन कांग्रेस की तैयारियां बडे जोरों से होरही है ।

शिवचन्द्र

श्रद्धाञ्जलि (लेखक—श्री० प्रो० सुधाकर एम० ए०)

महात्मा हंसराज जी का जीवन आर्य्य समाज के साथ इतना अधिक ग्रथित रहा है कि इस समय उनके वियोग से आर्य्य समाज मानो अनाथ हो गया है। बचपन से जब से उन्होंने होश सभाला, जीवन के अन्तिम क्षण तक आर्य्य समाज ही उनकी एक मात्र-प्रिय वस्तु रही है। आर्य्य समाज के कल्याण और उन्नति में ही वे धर्म्म, कर्म्म, देश और जाति का कल्याण मानते थे। आर्य्य समाज के क्षेत्र के बाहर उन्होंने कहीं क़दम नहीं रखा था। यह एक विचित्र उदाहरण है।

आज जब कि समाज-सेवा और स्वदेश-सेवा करने वाले प्रेस और प्लैट फ़ार्म का सहारा लिये बिना कोई काम नहीं करते, वहाँ महात्मा हंसराज जी को इन दोनों साधनों से कोई अनुराग न था। वे सचमुच चुपचाप और ठोस काम करने वालों के लिये एक ऊँचा आदर्श उपस्थित कर गये हैं।

मुझे अपने जीवन में कभी यह सौभाग्य प्राप्त न हुआ कि मैं महात्मा जी के निकट रहकर उनके अनुपम जीवन से लाभ उठाता, परन्तु मेरे लिये उनका जीवन सदैव एक प्रकाश स्तम्भ रहा है और मैंने कई बार जीवन के बवडरों के अवसर पर उस प्रकाश-स्तम्भ से अपना मार्ग ढूढा है। तथा मेरी नाईं मेरे असख्य भाइयों ने उस प्रकाशपुञ्ज से प्रकाश ग्रहण करके अपने आपको आर्य्य समाज की थोड़ी-बहुत सेवा के योग्य बनाया है।

ससार में लोग आते और जाते हैं। खा-पीकर व वन काटकर चल देते हैं। उनके चले जाने के बाद उनका ज़रा-सा असर भी हम दुनियाँ में नहीं देखते। उनके आने और जाने में कोई अन्तर नहीं होता। स्वप्न के चित्र की नाईं उनका कोई मूल्य नहीं होता, परन्तु महात्मा हसराज एक दूसरे प्रकार के व्यक्ति थे। अपने जीवन-काल में उन्होंने जो छाप अपने प्रान्त के जीवन में लगाई है, वह छाप शताब्दियों तक मिटने वाली नहीं। डी० ए० वी० कालेज लाहौर ही जो एक शानदार और अनुपम शिक्षा-केन्द्र है, उन्हें सदैव जीवित रखने वाला है। परन्तु इसके अतिरिक्त सैकड़ों सुधार और आर्य्य समाज के अन्य कार्य्य सदैव उनका स्मरण कराते रहेंगे।

महात्मा जी की अभी आर्य्य समाज को बहुत आवश्यकता थी। श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी के पीछे महात्माजी की हस्ती आर्य्य समाज के कार्य्य-कर्त्ताओं के लिये सुख का स्रोत थी। परन्तु ईश्वर को जो मजूर था, वही होना था। आज वे हम से पृथक् हो गये हैं, हमें उस अग्नि को बुझने न देना चाहिए, जिस में उन्होंने अपने जीवन की आहुति दी है। उस अग्नि को बुझाने के लिये असख्य शत्रु उद्यत हैं। इसकी ताज़ा मिसाल हैदराबाद राज्य में उपस्थित है। मैं आर्य्य भाइयों से निवेदन करूँगा कि वे महात्मा जी के जीवनादर्श को सामने रखते हुए हैदराबाद-आर्य्य समाज रूपी अग्नि को बुझने न देवें और इसके लिये जिस त्याग और तपस्या की आवश्यकता है, इसके दर्शाने के लिये तय्यार हो जावें।

कुछ अपने सम्बन्ध में

पाठकों की सेवा में सार्वदेशिक का यह अङ्क हैद्राबाद (दक्षिण) विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। अभी कुछ दिन हुए हमने "The Case of Arya Samaj in Hyderabad State" नामक एक अंग्रेजी पुस्तक तय्यार करके प्रकाशित की है उसमें घटनाओं और अङ्कों के आधार पर हैद्राबाद राज्य में आर्यों और हिन्दुओं की धार्मिक बाधाओं और कष्टों का आद्योपान्त विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है तथा सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने उन कष्टों के निवारणार्थ इस समय तक जो यत्न किए हैं उसकी भी उसमें चर्चा की गई है।

इस अंग्रेजी पुस्तक के प्रकाशन के साथ साथ सार्वदेशिक के पाठकों तथा हिन्दी भाषा भाषी जनता के लाभार्थ उसका हिन्दी अनुवाद सार्वदेशिक के द्वारा प्रस्तुत करने का भी हमारा विचार था परन्तु सार्वदेशिक के प्रकाशन की अन्तिम अवधि में बहुत कम समय होने के कारण हमें भय था कि इतना बड़ा विवरण समय पर हिन्दी मे तय्यार होकर प्रकाशित न हो सकेगा। हम इसी विचार और असमन्जस में पड़े थे कि अंग्रेजी पुस्तक को पढ़ने वाले प्रेमी भाइयों तथा अन्य कई आर्य्य भाइयों ने हमें प्रेरणा की कि इसका हिन्दी अनुवाद शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित करके जनता के हाथों में रक्खा जाय। इस आग्रह और प्रेरणा के फल स्वरूप हमारे अपने विचारकी उपयोगिता और उसे अवलम्ब क्रिया में परिणत करने की आवश्यकता विशेष रूप मे हमारे सामने आई। तदनुसार प्रिय रघुनाथप्रसाद पाठक ने ४-५ दिन के अल्प समय मे उद्योग करके अनुवाद को तय्यार कर दिया और देहली के सुप्रसिद्ध चन्द्रप्रिन्टिङ्ग प्रेस ने अपना पूर्ण सहयोग देकर इस संकल्प को पूरा करने में हमे समर्थ बना दिया। इस सहयोग के बिना सचमुच हम इस अङ्क को समय पर नहीं निकाल सकते थे।

यद्यपि हैद्राबाद की घटनाओं में से जो उपर्युक्त विवरण मे प्रस्तुत की गई बहुत सी घटनायें सार्वदेशिक के पाठक इन स्तम्भों में पढ़ चुके हैं फिर भी इसमें

बहुत सी सामग्री ऐसी है जो उनके सामने अभी तक नहीं आई थी। इस सबको शृंखला बद्ध रूप में एक स्थान पर पढ़ने पर हैद्राबाद केस को भली भांति समझने और दूसरों को समझाने में उन्हें पूरी २ मदद मिलेगी। आशा है सार्वदेशिक के प्रेमी पाठक हैद्राबाद की अपनी करुण-कथा को स्वयं पढ़ेंगे और अधिक से अधिक जितना सम्भव हो दूसरे महानुभावों को पढ़ाने का यत्न करेंगे।

इस कष्ट कथा को जनता के समक्ष रखने में हमें खुशी नहीं है। हैदराबाद में आर्य्यसमाज और हमारे हिन्दू और आर्य्य भाई जिस दयनीय अवस्था में से गुजर रहे हैं तथा सार्वदेशिक सभा ने अपने पूज्य नेता महात्मा नारायण स्वामी के द्वारा उस अवस्था को बदलने के लिए जो अन्तिम यत्न आरम्भ किया है हैद्राबाद से बाहर के आर्य्यों और हिन्दुओं का उसके प्रति क्या कर्त्तव्य है इस सबका दिग्दर्शन कराने के उद्देश्य से ही हम इस विवरण के प्रस्तुत करने के एक अप्रिय कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। परमात्मा हमें इस यत्न में सफल बनाए।

—सुधाकर

धन जन संग्रह का कार्य्य

प्रसन्नता है हैदराबाद के पीड़ित हिन्दू और आर्य्य भाइयों की सहायतार्थश्री पूज्य नारायण स्वामी जी की धन जन की अपील का आर्य्यसमाज की आन और शान के अनुरूप उत्तर दिये जाने का देश के एक छोर से दूसरे छोर तक यत्न आरम्भ होगया है। इस समय हैद्राबाद के पीड़ित भाइयों तथा सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के लिये जैसा कि समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुका है १ लाख रुपये की अत्यन्त आवश्यकता है। हमें यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि प्रत्येक प्रान्त श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के हाथों में अपना धनका सबसे बड़ा भाग रखने के लिए उत्सुक हो रहा है और आशा है बात की बात में १ लाख की उनकी माग पूरी हो जायगी। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पिछले दिनों बम्बई गये थे वहांके हिन्दू और आर्य्य भाइयोंने प्रथम भेंटके रूप में २५०००) रुपया तथा १०००० सत्याग्रही देने का संकल्प कर के कार्य्य आरम्भ कर दिया है इसी प्रकार पंजाब प्रान्त ने जैसा कि लाहौर बच्छों वाली के उत्सव पर हुए आर्य्य सम्मेलन की कार्य्यवाही से विदित है हजारों के परिमाण में अपनी भेंट स्वामी जी महाराज के हाथों में रखने का निर्णय किया है। देहली प्रान्त में भी पहली किश्त

१००००) देने का संकल्प करके धन संग्रह का कार्य्य आरम्भ किया गया है। इसी भाँति यू० पी०, सी० पी०, विहार, बंगाल इत्यादि प्रान्त यत्न कर रहे हैं। युद्ध की आवश्यकताओं का एक सुनिश्चित अंदाजा लगाना कठिन होता है फिर भी हैदराबाद के युद्ध की समस्त आवश्यकताएं मुख्यतया हिन्दुओं और आर्य्यों को ही पूरी करनी है। और वे बहुत बड़ी जरूरतें होंगी यह बात ध्यान में रख कर ही हमारा यत्न होना चाहिए। अब तो हमारा एक मात्र सर्वोपरि विचार और यत्न हैदराबाद का कार्य और उसकी सफलता होनी चाहिए क्यों कि यह आर्य्य समाज के लिए जीवन मरण की समस्या है। इन पंक्तियों को लिखते लिखते हमें आर्य्यसमाज बम्बई के प्रधान श्री पं० विजयशकर मूलशङ्कर जी की एक विज्ञप्ति प्राप्त हुई है जिसमें उन्होंने लिखा है कि ब्रह्मानन्द नामक कोई व्यक्ति विट्ठल भाई पटेल रोड (बम्बई) केनाम से हैद्राबाद के सत्याग्रह के लिए धन संग्रह करने की धूर्तता कर रहा है क्योंकि उक्त समाज से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसे व्यक्तियों से आर्य्य जनता को सावधान रहना चाहिये।

स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराज की मृत्यु मुख्यतया पंजाब और आर्यसमाज एवं साधारण तथा समस्त देश के लिए एक बड़ी हानि है। महात्मा जी आर्यसमाज के उन तीन बड़े नेताओं में से एक थे जिनके कारण प्रारम्भिक काल में आर्यसमाज की उन्नति हुई थी। उन्होंने बड़ी निष्ठा के साथ अपने उद्योगशील जीवन को आर्य-समाज और डी० ए० वी० कालेज के कार्य्य में लगाया। डी० ए० वी० कालेज की ख्याति उन्नति और प्रभाव में सबसे बड़ा भाग श्रद्धेय महात्मा जी का था। महान् आत्म-त्याग और तपस्या ने उनके जीवन को प्रकाशमान कर रक्खा था। वे भारतवर्ष के एक बड़े शिक्षा विशेषज्ञ होने के साथ साथ एक बड़े सुधारक भी थे। वे उचित रीति से पजाब के एक निर्माता कहे जाते हैं।

मनोरन्जन और बौद्ध भिक्षु

मांडले के नवयुवक बौद्ध भिक्षु संघ ने एक प्रस्ताव के द्वारा सिनेमा, नाच इत्यादि मनोरन्जनों में बौद्ध भिक्षुओं का भाग लेना निषिद्ध ठहराया है।

इस आज्ञा के उल्लघन पर अपराधी को प्रधान भिक्षु की व्यवस्थानुसार

कुए वा सरोवर से २५ घड़े पानी भरने या मन्दिर अथवा मठ के धोने का दण्ड मिलेगा।

इस निश्चय के द्वारा समस्त भिक्षुओं को फुटबाल मैच और नाच को देखने का भी निषेध कर दिया गया है। सिनेमा और विवाह में जाने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

उपर्युक्त व्यवस्था से स्पष्ट है कि बौद्ध संघों में भी जो आध्यात्मिकता के केन्द्र होते हैं वही विलासिता घर किये हुए है जो साधारण गृहस्थों में पाई जाती है।

कमाल अतातुर्क

कमाल अतातुर्क की मृत्यु में इस शताब्दी का संसार का एक सैनिक, राजनीतिज्ञ उठ गया जो अपने देश को स्वतन्त्र और परिमार्जित करने वाला था। सन् १९१४ के महा समर में टर्की को इस वीर का नेतृत्व प्राप्त न हुआ होता तो बहुत संभव था टर्की किसी युरोपियन शक्ति के अत्या चारों का शिकार अथवा स्वतन्त्र देश के रूप में युरोप के मान चित्र (नक्शा) में से लोप हो गया होता। कमाल ने इस विपत्ति से अपने देश की रक्षा की और युरोप के बीमार आदमी के नाम से सम्बोधित किए जाने वाले अपने देश को हृष्टपुष्ट और स्वस्थ बना दिया।

वह टर्की का सुल्तान भी बन सकता था। परन्तु वह अपने देश को प्रजातन्त्र शासन देकर स्वयं उसका पहला अध्यक्ष बना। इसमें सन्देह नहीं वह डिक्टेटर था परन्तु मुसोलिनी, हिटलर और स्टैलिन जैसे डिक्टेटरों से सर्वथा भिन्न प्रकार का डिक्टेटर था। उसके आधीन ही टर्की में इस्लाम राज धर्म न रहा। वही अपने देश को अन्य उन्नत सभ्य राष्ट्रों की कोटि में लाया। सुल्तानों के काल में देश का कानून कुरान पर आश्रित था। उसने इस कानून का अन्त करके फ्रांस और स्विटज़रलैंड जैसे दीवानी और फौजदारी के विधान प्रचलित किए। मुल्ले और मौलवियों का प्रजा तथा शासन पर कोई प्रभाव नहीं रह गया था।

उसने ख़िलाफ़त का अन्त किया। यदि उसमें कोई राज-लिप्सा होती तो उसकी पूर्ति के लिये जिस प्रकार वह सुल्तान बन सकता था उसी प्रकार अपनी निजी मज़हबी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह ख़लीफ़ा भी बन सकता था। परन्तु उसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार का था। वह अपने देश को उन्नत, प्रगतिशील और समृद्धिवान बनाना चाहता था। इसी लिये उसने अपने को मज़हबी जामे और अपने देश को अकर्मण्यवाद से मुक्त रखने का निर्णय किया। यही ख़िलाफ़त के अन्त करने का कारण था।

उसके शिक्षा सम्बन्धी सुधारों का भी यही उद्देश्य था। भारत के प्रचलित मकतबो और मदरसों की तरह टर्की में भी ये संस्थाएँ जहालत और मज़हबी पागलपन के

गए थे। अतएव उसने इनका भी अन्त किया और इनके स्थानों में उन्नत शिक्षा-केन्द्र स्थापित किए।

कहा जा सकता है कि 'फैज़' टोपी का पहना जाना दण्डनीय ठहराकर और उसके स्थान में हैट का पहनना प्रचलित करके उसने अपने लोगों को राष्ट्रीय संस्कृति से विमुख किया था परन्तु बात यह न थी। वह पक्का स्वदेश भक्त था। वह चाहता था कि टर्की के लोग योरोप के अन्य देशों के निवासियों के समान अपने को उन्नत और प्रगतिशील समझें और बाहर के लोग भी टर्की को ऐसा ही समझें और टर्की के लोगों को मनुष्यों के अजीब नमूने समझना और कहना छोड़ देवें।

उसने टर्की भाषा को अरबी के शब्दों से परिमार्जित करके उसे पुन: जीवित किया और जो शब्द अप्रचलित हो गये थे उन्हें पुन: प्रचलित किया या नये शब्दों की रचना कराई। अरबी की वर्णमाला, चूंकि अवैज्ञानिक और त्रुटिपूर्ण थी और उसमें बात का ठीक ठीक पढ़ा और समझा जाना अत्यन्त कठिन था, इसलिये उसने इस लिपि के स्थान मे रोमन लिपिको प्रचलित किया। इस प्रकार साक्षरता प्रचारका कार्य्य सरल और उसकी सफलता का मार्ग साफ़ हो गया। यही कमाल का स्वदेश-प्रेम था।

कमाल का देश-प्रेम एक दूसरे रूप में भी प्रकाश मे आया। कुरान की भाषा अरबी मुस्लिम प्रार्थनाओं के प्रयोग में आती है। कुरान में आए हुए मूल अरबी के वाक्यों के स्थान में, कमाल ने उनका टर्की अनुवाद रक्खा था।

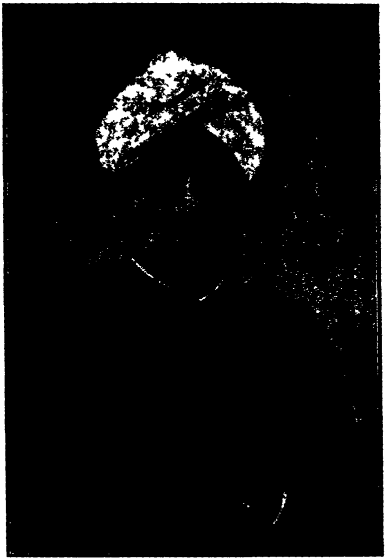
मस्जिदों में उपासकों के बैठने के लिए ईसाई गिर्जों की तरह फर्नीचर और कुर्सियो की व्यवस्था भी कराई।

कमाल ने जो सामाजिक सुधार किए हैं वे भी बड़े मौलिक हैं। उसने पर्दे बुर्के और जनानखानों (हरमों) का अन्त किया और टर्की की स्त्रियों को उनसे मुक्त किया। बहु पत्नीवाद की प्रथा का भी उसने अन्त कर दिया।

उसने व्यवसायिक तथा सैनिक दृष्टि से भी देश को समृद्ध और सुदृढ़ बनाया।

आशा है कमाल के उत्तराधिकारियों के समय में प्रतिगामी शक्तियों का प्रभुत्व न होने दिया जायगा तथा देश की उन्नति न केवल स्थिर रक्खी जायगी अपितु उसमें सर्वतोमुखी वृद्धि की जायगी।

आज भारतवर्ष के मुसलमान स्व० कमाल का मातम मना रहे हैं तथा उसका गुणानुवाद कर रहे हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो भारत के कुछ हिस्सों में उन मकतबों और मदरसों की संख्या वृद्धि का यत्न कर रहे हैं जो शिक्षा की दृष्टि से शिक्षा शास्त्रियों द्वारा तिरस्कृत हो चुके हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो खिलाफत के प्रेमी हैं तथा उसकी पुनर्स्थापना का स्वप्न देखते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो फैज के लिए मरने मारने को तैयार हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो बहु पत्नीवाद की विनाशक प्रथा से चिपटे हुए हैं और जब इस प्रथा के अन्त के लिए धारा सभा में कोई बिल आता है तो चिल्लाते हैं कि मुसलमानों को उससे मुक्त किया जाय। कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी स्त्रियों को पर्दे और बुर्के की कैद में रखते और उसके पक्षपाती हैं कुछ ऐसे भी हैं जो धर्म परिवर्तन सम्बन्धी विविध कानूनी उपायों के द्वारा अपनी स्त्रियों पर एक तन्त्र सत्ता बनाए रखना चाहते हैं और धार्मिक कायदे कानूनों से उन्हें जो थोड़ी बहुत स्वतन्त्रता मिली हुई है उसका भी अपहरण करना चाहते हैं। ऐसे मुसलमान कमाल का गुणानुवाद केवल इस आधार पर करते प्रतीत होते हैं कि वह एक मुसलमान था। अन्यथा ऐसा करने का उन्हें अधिकार नहीं है।



स्वर्गीय श्री केशवराव जी जज,
हाईकोर्ट हैदराबाद दक्षिण।

ग्राहकों से आवश्यक निवेदन

'सार्वदेशिक' के स्वदेश के निम्न ग्राहकों का चन्दा दिसम्बर १९३८ में समाप्त होता है। प्रार्थना है कि ये ग्राहक महोदय अपना अपना चन्दा १५ जनवरी १९३९ तक भेज देवें। इसके बाद जन ग्राहकों का चन्दा प्राप्त न होगा या कोई सूचना न मिलेगी उनकी सेवा मे 'पत्र' वी॰पो॰ द्वारा भेज दिया जावेगा और आशा है वे उसे स्वीकार करेंगे। इसके साथ ही यह भी निवेदन है कि ग्राहक महोदय चन्दा भेजते समय मनी आर्डर की कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या व पूरा पता लिखने की कृपा करें। पूरा पता व ग्राहक संख्या कूपन पर न होने से यदि 'पत्र' ग्राहक पर न पहुंचेगा तो उसकी उत्तरदायिता कार्यालय पर न होगी। कृपया इसे नोट कर लेवे।

१०४, १०७, ११४, ११६, ११८, ३०८, ३२१, ३२३, ३३०, ३३३, ३३८, ३४५ ३४८, ३५०, ३५७, ३५९, ३६६, ३७६, ५०४ ५२६, ५३३, ६७०, ६७८, ६७९, ६८३, ६८७, ६९७, ७०२, ७०३, ७६०, ८००, ८४४, ८४७, ८४८, ९२१, ९२२, ९२४, ९२५, ९४९